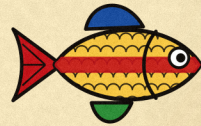


मैथिली कादम्बरी

कुरुक्षेत्रम्

अन्तर्मनक



गजेन्द्र ठाकुर

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

[मैथिली कादम्बरी]

कुरुक्षेत्रम्

अन्तर्मनक

मैथिली कादम्बरी

गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण २०१९

प्रकाशन=विवरण

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक [मैथिली कादम्बरी]

लेखक : गजेन्द्र ठाकुर

© २०१९ गजेन्द्र ठाकुर आ प्रीति ठाकुर

प्रथम संस्करण : २०१९

सर्वाधिकार सुरक्षित।

पाठक लेल सूचना : उपन्यासमे प्राचीन महाकाव्य, दर्शनक मूल बहस आ आधुनिक कल्पित पात्रक अलग-अलग कालधारा अछि। कथाक काल्पनिक प्रसंग इतिहास अथवा न्यायिक अभिलेखक प्रमाण नहि अछि।

पुस्तक-विन्यास : ६ × ९ इञ्च; देवनागरी युनिकोड; मुद्रणयोग्य पाठ आ शीर्षक-विन्यास।

विस्तृत अनुक्रम

सामग्रीक क्रम

रामायण-महाभारत : सम्बन्ध-सारणी.....	15
भामती-न्यायकुसुमाञ्जलि-तत्त्वचिन्तामणि : दार्शनिक मानचित्र.....	18
पात्र-वंश आ सम्बन्धक मानचित्र.....	21
मुख्य पात्र-निर्णय सूची.....	25
१५७ व्यवसाय-समुदाय : पात्र आ कथावृत्त.....	29

अध्यायवार विस्तृत अनुक्रम

पर्व १ • आदि | बालकाण्ड | अध्याय १-१२

१. मृतकक रसोइ.....	52
२. सत्ताइस नाम.....	60
३. चौकक समय.....	69
४. नदीक पहिल घर.....	79
५. जनकक माप.....	88
६. घरक पहाड़ा.....	96
७. पाँच पीढ़ीक चौकी.....	104
८. सीमातीर्थक चिट्ठी.....	112
९. बन्द बाहा.....	121
१०. नामक छाँह.....	129
११. अपन फोन अपन शर्त.....	137
१२. घाटक पाछाँ शहर.....	144

पर्व २ • सभा | अयोध्याकाण्ड | अध्याय १३-२४

१३. बजाओल गेल मृतका.....	152
१४. प्रतिनिधिक कुर्सी.....	160
१५. द्रौपदीक प्रश्न.....	168

१६. विकर्णक बादक मौन.....	177
१७. कैकेयीक देय.....	186
१८. उर्मिलाक राति.....	194
१९. चम्पाक सन्देश.....	202
२०. जल्दी प्रकाशन.....	210
२१. ककर आवाज.....	219
२२. घरक आदेश.....	227
२३. भरतक अस्वीकार.....	236
२४. बाहरक ओसार.....	244

पर्व ३ • वन | अरण्यकाण्ड | अध्याय २५-३६

२५. रेलमे खाली जगह.....	253
२६. गुहक तट.....	261
२७. शबरीक भोर.....	269
२८. हिडिम्बाक सन्धि.....	278
२९. बच्चा चोर.....	287
३०. अहल्याक आवाज.....	296
३१. एकलव्यक सीख.....	304
३२. अथातो ककर.....	312
३३. दीपक आ कागद.....	321
३४. अनदेखल कारण.....	329
३५. गवयक पहिचान.....	338
३६. बाहरक पाठशाला.....	346

पर्व ४ • विराट | अरण्यकाण्ड | अध्याय ३७-४८

३७. रान्हनिहारक नाम.....	354
३८. बृहन्नलाक कक्षा.....	362
३९. ताँतीक देय.....	370
४०. कपड़ा पंजी.....	379

४१. बरहीक हस्ताक्षर.....	387
४२. माटिक भविष्य.....	395
४३. कसेरा आ सोनार.....	403
४४. लोहारक औजार.....	411
४५. जोलहाक खेप.....	420
४६. धोबि रंगरेज धुनिया.....	428
४७. फाटकक माप.....	437
४८. छद्मक तीन कारण.....	445

पर्व ५ • उद्योग | किष्किन्धाकाण्ड | अध्याय ४९-६०

४९. सहयोगक दाम.....	454
५०. सुग्रीवक भय.....	462
५१. ताराक गणना.....	471
५२. अङ्गदक कल्हि.....	480
५३. रुहानीक चाभी.....	488
५४. अनुष्ठान बिना प्रधान.....	496
५५. हराएल बच्चाक माए.....	505
५६. दानक दवाइ.....	513
५७. जनक आ जनपद.....	522
५८. कारणक जाल.....	530
५९. दूतक शर्त.....	539
६०. पहिल सन्धि टूटल.....	547

पर्व ६ • भीष्म | सुन्दरकाण्ड | अध्याय ६१-७२

६१. गङ्गाक शर्त.....	556
६२. भीष्मक प्रतिज्ञा.....	565
६३. अम्बाक समय.....	574
६४. शिखण्डीक निर्णय.....	583
६५. अस्पतालक पुरान पाँख.....	592

६६. कृष्ण अर्जुनक विराम.....	601
६७. दूरक देखाइ.....	610
६८. चेतावनीक प्रति.....	619
६९. अनुपस्थितिक अर्थ.....	629
७०. महेशक राति.....	638
७१. मृत्यु आ दस्तावेज.....	647
७२. संजयक दूरी.....	656

पर्व ७ • द्रोण | सुन्दरकाण्ड | अध्याय ७३-८४

७३. सीमातीर्थक उतराइ.....	665
७४. द्रोणक देय.....	674
७५. एक्के आखिरी अंक.....	683
७६. एकलव्यक बाद.....	693
७७. त्रिजटाक सन्देश.....	703
७८. मन्दोदरीक घर.....	712
७९. चेहराक समानता.....	721
८०. बुनकरक दोसर खाता.....	730
८१. बच्चाक दोसर ठाम.....	740
८२. मैथिलीक पन्ना.....	749
८३. सरिताक मेहनत.....	759
८४. गुरुक स्वीकार.....	768

पर्व ८ • कर्ण | सुन्दरकाण्ड | अध्याय ८५-९६

८५. राधाक श्रम.....	777
८६. मूल पन्ना.....	786
८७. पाँच बदलल परिचय.....	795
८८. चौदह विसंगति.....	805
८९. चारि जीवित चारि मृत.....	814
९०. सुभद्राक शर्त.....	823

९१. सुविधाजनक त्रुटि.....	832
९२. आरोपक भङ्ग.....	841
९३. खेपक सम्बन्ध.....	851
९४. पालकक अधिकार.....	860
९५. हत्याक आदेश.....	869
९६. सत्ताइसक मिलान.....	878

पर्व ९ · शल्य | युद्धकाण्ड | अध्याय ९७-१०८

९७. शल्यक निष्ठा.....	888
९८. विभीषणक बाट.....	897
९९. कुम्भकर्णक जागब.....	907
१००. दूसर समझौता.....	917
१०१. रोगीक समय.....	927
१०२. मरम्मतिक तह.....	936
१०३. सकारात्मक युक्ति.....	945
१०४. शक्तिक प्रश्न.....	954
१०५. बिनौटक पुल.....	964
१०६. उपचारक स्वीकार.....	973
१०७. पाँच हस्ताक्षर.....	983
१०८. जलस्तरक बाहर.....	992

पर्व १० · सौप्तिक | युद्धकाण्ड | अध्याय १०९-१२०

१०९. रातिक सन्धि.....	1001
११०. गोदाम खुलल.....	1011
१११. नावक क्षमता.....	1021
११२. ईशानक हाथ.....	1031
११३. अश्वत्थामाक राति.....	1041
११४. दवाइ आ बचल श्वास.....	1051
११५. तस्वीरक अनुमति.....	1060

११६. पुरान पाँख.....	1070
११७. नैराक चुनाव.....	1080
११८. उर्मिलाक थाकल हाथ.....	1090
११९. देरिक दूरी.....	1100
१२०. भोरक पहिने.....	1110

पर्व ११ · स्त्री | युद्धकाण्ड | अध्याय १२१-१३२

१२१. नामक पुष्टि.....	1120
१२२. अन्तिम देह.....	1130
१२३. गान्धारीक प्रश्न.....	1140
१२४. मन्दोदरीक भीतर.....	1150
१२५. कुन्तीक स्वीकृति.....	1160
१२६. भातक मात्रा.....	1169
१२७. बचलक दोष.....	1178
१२८. चम्पाक उपचार.....	1188
१२९. रुहानीक सूची.....	1198
१३०. द्रौपदीक बचल दिन.....	1208
१३१. सीताक अग्नि.....	1218
१३२. नम्बरक बाद.....	1228

पर्व १२ · शान्ति | उत्तरकाण्ड | अध्याय १३३-१४४

१३३. शासन के लेत.....	1239
१३४. युधिष्ठिरक अरुचि.....	1247
१३५. भीष्मक शय्या.....	1255
१३६. पहिल बयान.....	1263
१३७. पुरान प्रतिवेदन.....	1272
१३८. दोषक अलग खाना.....	1280
१३९. तर्कक पुनरागमन.....	1288
१४०. कर्म आ कारण.....	1296

१४१. मदद आ मुकदमा.....	1305
१४२. दवाइक स्रोत.....	1313
१४३. आश्रयक नियम.....	1322
१४४. कामक जिज्ञासा.....	1330
पर्व १३ • अनुशासन उत्तरकाण्ड अध्याय १४५-१५६	
१४५. राशनक पाँति.....	1339
१४६. फकीराक पास.....	1347
१४७. संकेतक कक्षा.....	1356
१४८. पद्माक फीस.....	1365
१४९. जानकीक खण्डन.....	1374
१५०. चेहरा आ प्रमाण.....	1382
१५१. शम्बूकक पाठ.....	1390
१५२. माटिक बकाया.....	1398
१५३. नदीक माप.....	1407
१५४. सहमतिक दस्तावेज.....	1415
१५५. हिंसाक गवाही.....	1424
१५६. नियमक अपवाद.....	1432
पर्व १४ • अश्वमेध उत्तरकाण्ड अध्याय १५७-१६८	
१५७. छूटल घोड़ाक बाट.....	1441
१५८. अर्जुनक पहिचान.....	1449
१५९. चलैत अभिलेख.....	1457
१६०. सरिताक योगदान.....	1466
१६१. मैथिलीक अपना नाम.....	1475
१६२. प्रमाताक दावा.....	1483
१६३. पुरान पुस्तक नव भूमिका.....	1491
१६४. उर्मिलाक देय.....	1499
१६५. वाक्यक तात्पर्य.....	1508

१६६. बुनकरक बाजार.....	1516
१६७. बिना सम्राटक नाप.....	1525
१६८. फेर लौटत प्रति.....	1533

पर्व १५ . आश्रमवासिक | उत्तरकाण्ड | अध्याय १६९-१८०

१६९. धृतराष्ट्रक हाथ.....	1542
१७०. गान्धारीक प्रस्थान.....	1549
१७१. कुन्तीक शेष वचन.....	1557
१७२. ईशानक कमरा.....	1565
१७३. मैथिलीक दूरी.....	1573
१७४. माइक औषधि.....	1581
१७५. कबीरक चिट्ठी.....	1588
१७६. सरिताक भोर.....	1596
१७७. वृद्धक सहमति.....	1605
१७८. विदुरक मार्ग.....	1613
१७९. निजी क्षमा.....	1621
१८०. आश्रयक बाहर.....	1629

पर्व १६ . मौसल | उत्तरकाण्ड | अध्याय १८१-१९२

१८१. यादवक उत्सव.....	1637
१८२. मादक दिन.....	1645
१८३. स्मारकक ठेका.....	1653
१८४. रुहानीक चुनाव.....	1661
१८५. दानक शर्त.....	1669
१८६. ताराक भूल.....	1677
१८७. रसोइक घाटा.....	1684
१८८. औजारक बाजार.....	1692
१८९. बलरामक दूराइ.....	1700
१९०. कृष्णक अन्त.....	1708

१९१. सबटा टूटल नहि.....	1716
१९२. नव मालिकक डर.....	1724
पर्व १७ • महाप्रस्थानिक उत्तरकाण्ड अध्याय १९३-२०४	
१९३. यात्राक घोषणा.....	1732
१९४. द्रौपदीक बाट.....	1740
१९५. भाइसभक दूरी.....	1748
१९६. फकीराक स्टेशन.....	1756
१९७. पहिल कोठरी.....	1764
१९८. मृतकक फोन.....	1772
१९९. बिना नामक कथा.....	1780
२००. शब्दक अन्तिम जाँच.....	1788
२०१. सीमातीर्थक विदाइ.....	1797
२०२. कबीरक वापसी.....	1805
२०३. साथक जीव.....	1814
२०४. पर्वत नहि दरबज्जा.....	1822
पर्व १८ • स्वर्गारोहण उत्तरकाण्ड अध्याय २०५-२१६	
२०५. स्वर्गक सूची.....	1831
२०६. उत्तरा आ परीक्षित.....	1839
२०७. जनमेजयक प्रश्न.....	1848
२०८. उग्रश्रवाक श्रोता.....	1857
२०९. लव कुशक पाठ.....	1865
२१०. भामतीक चारिम सूत्र.....	1874
२११. उदयनक शेष तर्क.....	1882
२१२. गङ्गेशक कक्षा.....	1890
२१३. मैथिलीक अपना वाणी.....	1899
२१४. नैराक खाली जगह.....	1908
२१५. वितरित अभिलेख.....	1917

२१६. कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक.....	1925
-----------------------------------	------

महाकाव्य-दर्शन : सम्बन्ध-मानचित्र

सात रामायण-काण्ड आ अठारह महाभारत-पर्वक कथा-सम्बन्ध निम्न तालिकामे उपन्यासक स्वीकृत संरचनाक आधारपर दर्ज अछि। एहि तुलना सँ आधुनिक पात्रसभक प्राचीन पात्रक पुनर्जन्म वा जातीय समतुल्यता अभिप्रेत नहि अछि।

रामायणक सात काण्ड : कथाक यात्रा

काण्ड	महाभारतक पर्व	अध्याय	सामाजिक-कथात्मक यात्रा
बालकाण्ड	१ आदि	१-१२	नामक जन्म, वंश, नगरक पुरान नदी आ पहिल मृत्यु-सूचना
अयोध्याकाण्ड	२ सभा	१३-२४	घर, अधिकार, प्रतिज्ञा आ सार्वजनिक अपमानसँ निष्कासन
अरण्यकाण्ड	३ वन आ ४ विराट	२५-४८	आश्रयसँ बाहरक जीवन, छद्मपरिचय, श्रम आ ज्ञानक पुनर्शिक्षा
किष्किन्धाकाण्ड	५ उद्योग	४९-६०	असमान सहयोगी, भङ्ग वचन, खोज आ सन्धिक पहिल प्रयास
सुन्दरकाण्ड	६ भीष्म, ७ द्रोण आ ८ कर्ण	६१-९६	सीमा लाँघि साक्ष्य आनब, गुरुक सत्ता, जन्म आ सन्देशक परीक्षा
युद्धकाण्ड	९ शल्य, १० सौप्तिक आ ११ स्त्री	९७-१३२	सहकारक बीच आपदा, रातिक हानि, मृतक आ बचल लोकक सामना
उत्तरकाण्ड	१२ शान्ति सँ १८ स्वर्गरोहण	१३३-२१६	उत्तरदायित्व, पुनर्वास, घरवापसी, विघटन आ अपूर्ण भविष्य

महाभारतक अठारह पर्व : २१६ अध्यायक संरचना

पर्व	रामायणक काण्ड	अध्याय	कथाक मुख्य धागा
१ आदि	बालकाण्ड	१-१२	नाम-सूची आ पोखरि-घाट

पर्व	रामायणक काण्ड	अध्याय	कथाक मुख्य धागा
२ सभा	अयोध्याकाण्ड	१३-२४	सभा/निजता आ विस्थापन
३ वन	अरण्यकाण्ड	२५-३६	अफवाह/वन-अधिकार/पढ़ाइ
४ विराट	अरण्यकाण्ड	३७-४८	श्रम.पंजी आ ढाँचाक नाप
५ उद्योग	किष्किन्धाकाण्ड	४९-६०	असमान गठबन्धन आ जल- लाभक हिसाब
६ भीष्म	सुन्दरकाण्ड	६१-७२	वचन, चेतावनी आ अस्पताल
७ द्रोण	सुन्दरकाण्ड	७३-८४	प्रमाण, महेश-हत्या आ सीमाविहार
८ कर्ण	सुन्दरकाण्ड	८५-९६	सत्ताइस नामक चरणबद्ध उत्तर
९ शल्य	युद्धकाण्ड	९७-१०८	सहमति आ आपदासँ पहिने कारण-जाल
१० सौप्तिक	युद्धकाण्ड	१०९- १२०	बचावमे वास्तविक श्रम/असफल ढाँचा
११ स्त्री	युद्धकाण्ड	१२१- १३२	निश्चित मृत्यु आ शोकक देह
१२ शान्ति	उत्तरकाण्ड	१३३- १४४	जाँच/दायित्व/शासन
१३ अनुशासन	उत्तरकाण्ड	१४५- १५६	अधिकार-पत्र, घाटक पंजी आ विद्यालय
१४ अश्वमेध	उत्तरकाण्ड	१५७- १६८	श्रेय, जलमाप, पुनर्वासक सार्वजनिक अनुपालन
१५ आश्रमवासिक	उत्तरकाण्ड	१६९- १८०	वृद्ध देखभाल, प्रेम आ व्यक्तिगत दूरी
१६ मौसल	उत्तरकाण्ड	१८१- १९२	स्मारक, नवा ठेका आ सुधारक दोष
१७ महाप्रस्थानि क	उत्तरकाण्ड	१९३- २०४	सुरक्षित स्मृति, प्रतिलिपि आ घरवापसी

पर्व	रामायणक काण्ड	अध्याय	कथाक मुख्य धागा
१८	उत्तरकाण्ड	२०५-	ज्ञान-अधिकार, प्रकाशित नाम आ
स्वर्गारोहण		२१६	शेष जीवन

दार्शनिक सम्बन्ध-मानचित्र

मूल शास्त्रीय सिद्धान्त आ उपन्यासक कथात्मक प्रयोगक अन्तर बनौने राखबाक लेल तीनू ग्रन्थक तत्त्व, पुनरावृत्ति आ कथानक-निर्णय अलग देखाओल गेल अछि।

भामती : अध्यास आ चतुःसूत्री

विषय	पर्व/प्रत्यावर्तन	कथाक प्रयोग
अध्यास	पर्व १ आ २; फेर ११ आ १८	नामकेँ देह, टाइटलकेँ चरित्र आ पंजीकेँ सम्पूर्ण मनुष्य मानबाक भूल टूटत
अथातो ब्रह्मजिज्ञासा	पर्व ३; फेर १२	जिज्ञासाक अधिकार जन्म आ उपाधिसँ बाहर जाएत; मृणालक प्रश्न शिक्षकक उत्तर बदलत
जन्माद्यस्य यतः	पर्व ५ आ ९	कारणक खोज एक दोषीपर नहि रुकत; तइयो विशिष्ट अपराधक व्यक्तिगत दायित्व बचत
शास्त्रयोनित्वात्	पर्व ७ आ १४	प्रमाण, प्रामाण्य आ लिखित अधिकारक सीमा; ज्ञान निर्माणमे घरेलू श्रमक श्रेय
तत्तु समन्वयात्	पर्व ८ आ १८	परस्पर वचनक तात्पर्य जाँचल जाएत; मतभेद मिटा देब समन्वय नहि मानल जाएत

न्यायकुसुमाञ्जलि : पाँच स्तबक

स्तबक	दार्शनिक प्रश्न	मुख्य पर्व आ परिणाम
प्रथम	अदृष्ट, पारलौकिक साधन आ चेतन अधिष्ठाता सम्बन्धी विमर्श	पर्व ३ आ ५; उदयनक कालधारामे कर्मफलपर विवाद, आधुनिकतामे अदेखल कारणक अनुशासन

स्तबक	दार्शनिक प्रश्न	मुख्य पर्व आ परिणाम
द्वितीय	ईश्वर बिना अनुष्ठानक सम्भावना; प्रामाण्यपर मीमांसक आपत्ति	पर्व ५ आ १२; एक प्रधानक बिना सामूहिक काम सम्भव अछि की, ई आधुनिक प्रश्न मूल विवादक संग संवाद करत
तृतीय	ईश्वरकेँ बाधित करैत कहल प्रमाणक परीक्षण	पर्व ६ आ ७; अनुपलब्धि, असिद्धि आ निषेधक अन्तर; अनुपस्थित नामसँ व्यक्तिक अनस्तित्व नहि
चतुर्थ	ईश्वरक प्रमातृत्व, प्रमा आ ज्ञानक यथार्थता	पर्व ८ आ १४; सर्वज्ञ वक्ताक दावा, पुरान ज्ञान आ नव ज्ञान; संस्थाक विश्वसनीयता जाँचल जाएत
पञ्चम	ईश्वरक पक्षमे सकारात्मक अनुमान आ हुनकर प्रत्युत्तर	पर्व ९, १२ आ १८; उदयनक पक्ष पूरा शक्ति पाओत, विरोधी प्रश्नो; आपदा कोनो मतक सस्ता निर्णायक प्रमाण नहि बनत

तत्त्वचिन्तामणि : प्रमाण-विभाग

प्रमाण-विषय	कथात्मक प्रयोग	मुख्य पर्व
प्रत्यक्ष	गवाहीक प्रकाश, दूरी, इन्द्रियसम्पर्क आ भ्रम; दृष्टिहीनताकेँ समस्त ज्ञानक अभाव नहि मानब	१, ४, ६ आ १३
अनुमान	व्याप्ति, उपाधि, पक्षता, परामर्श आ हेत्वाभास; खेपक गाड़ी देखबासँ प्रत्येक अपराध सिद्ध नहि	४, ७, ९ आ १२

प्रमाण-विषय	कथात्मक प्रयोग	मुख्य पर्व
ईश्वरानुमान	कर्तृत्व, शक्ति आ कारणपर गङ्गेशक विशिष्ट विवाद; तर्क आ शोकक असमाप्य अन्तर	६, ९, १२ आ १८
उपमान	सादृश्यसँ नाम आ वस्तुक सम्बन्ध बुझब; मिलैत चेहरा वा जातीय रूढ़ि पहिचानक पर्याप्त प्रमाण नहि	३, ७ आ १३
शब्द	आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य; गवाही, डिजिटल कटौती, मौन आ अनुवाद	२, ८, १४ आ १७

पात्र-वंश आ सम्बन्धक मानचित्र

वंश-सम्बन्ध केवल ओतहि देल गेल अछि जतय पाण्डुलिपिमे स्पष्ट प्रमाण भेटैत अछि। अन्यथा निम्न समूह “कथात्मक/सामाजिक वृत्त” छथि, रक्तसम्बन्धक दावा नहि। मूल कथामे जन्म, पालन-पोषण आ सामुदायिक संगक भिन्नता बनल रहत।

प्रमाणित पारिवारिक सम्बन्ध

सम्बन्ध-रेखा	कथामे प्रमाणित स्थिति
सरिता → नैरा	माइ-बेटी; नैराक मृत्यु अपरिवर्तनीय।
सुभद्रा → कबीर	जन्मदात्री-सन्तानक प्रत्यक्ष गवाही; मूल जन्म-अभिलेखक पुष्टि अधूर। पालन करनिहारी माय अलग व्यक्ति।
शकुन्तला → नतिनी	पीढ़ीगत सम्बन्ध; नतिनीक शिक्षाक स्वतन्त्र निर्णय।
यूसुफ → बेटा	पिता-पुत्रक पेशा चुनबाक भिन्न निर्णय।
मीरा बंजारा ↔ बहिन	बहिनसभ; ढुलाईक ग्राहक आ कामक स्वतन्त्र अधिकार।
अनुपमा सेन ↔ नानी	नानीक पुरान निजी पत्र आ साझा प्रतिक अधिकार।

सात मुख्य सामाजिक-कथात्मक वृत्त

दास आ स्टेसनक सम्बन्ध

पात्र : सरिता, नैरा, संकेत, फकीरा

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : जीवनक पहिचान; सुरक्षा लेल नुकाएल नाम आ प्रकाशनक अधिकारक संघर्ष

मिश्र परिवार आ पाठशाला

पात्र : मैथिली, ईशान, सुभद्रा, कबीर

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : दर्शनक श्रेय, पालन आ जन्मक भेद; संरक्षणक भीतर अधिकारहरण

मल्लिक आ शिल्पी मुहल्ला

पात्र : श्याम, तारा, ललित, शकुन्तला

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : शिल्पक दाम, जलनिकासक माप, नव पीढ़ीक पेशा चुनबाक स्वतन्त्रता

बुनकर आ वस्त्रवृत्त

पात्र : यूसुफ, पार्वती, नसीम, उर्मिला

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : मजदूरी, गोपनीयता, सीमा आ गलत खेपक आरोप; घरक भीतर पीढ़ीक असहमति

रुहानीक आश्रय आ चौक

पात्र : रुहानी, चम्पा, रुखसाना

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : संरक्षण, कमाइ आ आत्मनिर्णय; आश्रयदाता सेहो नियन्त्रण छोड़बाक सीखत

घुमन्तु आ नदीक वृत्त

पात्र : जानकी, हीरा, देवकी आ प्रवासी परिवार

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : बाट आ आवागमनक अधिकार; अफवाहक विरुद्ध रक्षा, अपन गलतीक स्वीकार

कारोबार आ उपचार

पात्र : देवव्रत, अनिरुद्ध, अदिति

सम्बन्ध आ द्वन्द्व : मुनाफा, चिकित्सकीय निर्भरता आ वास्तविक सेवा; अलग स्तरक अपराध आ दायित्व

प्राचीन—आधुनिक कथा : पात्र-समूह

रामायण जन्म आ घर

जनक, सीता, उर्मिला, माण्डवी, श्रुतकीर्ति, दशरथ, कौसल्या, कैकेयी, सुमित्रा, मन्थरा

जन्म, विवाह, सेवाक श्रम, उत्तराधिकार आ प्रतिज्ञाक कीमत; १—३ आ १३

रामायण निर्वासन आ संग

राम, लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न, गुह, केवट प्रसंगक नाविक, शबरी, अहल्या, अनुसूया, ऋषि आ आश्रमक अनाम श्रमजीवी

भरोसा, देह, वनक अधिकार आ आश्रयक शर्त; ३-५, १२ आ १५

रामायण खोज आ प्रतिपक्ष

सुग्रीव, वाली, तारा, अङ्गद, हनुमान, जाम्बवान, सम्पाति, जटायु, त्रिजटा, मन्दोदरी, विभीषण, रावण, कुम्भकर्ण, इन्द्रजित

गठबन्धनक दोष, समाचार, विपक्षक परिवार आ युद्धक कीमत; ५-११

रामायण युद्धोत्तर

सीता, लव, कुश, भरत, उर्मिला, शम्बूकक पाठपरम्परासम्बन्धी प्रसंग आ अनाम नागरिक जनमत, अध्ययनक अधिकार, घरवापसी आ कथा कहबाक हक; १२-१८; पाठभेदक उल्लेखसहित

महाभारत आरम्भ आ सत्ता

सत्यवती, गङ्गा, शान्तनु, भीष्म, अम्बा, व्यास, विदुर, धृतराष्ट्र, गान्धारी, कुन्ती, माद्री नदी, वंश, प्रतिज्ञा, नियोग, राज्य आ स्त्रीक निर्णय; १, २, ६ आ ११

महाभारत शिक्षा आ वन

द्रोण, कृप, एकलव्य, द्रुपद, शिखण्डी, हिडिम्बा, घटोत्कच, उलूपी, चित्राङ्गदा, नाग आ वनसमुदायक कल्पित सहायक पात्र

ज्ञानक प्रवेश, जंगलक हित, विवाह आ वंशक असमान स्वीकृति; ३-७

महाभारत सभा आ सन्धि

युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल, सहदेव, द्रौपदी, कृष्ण, सुभद्रा, दुर्योधन, दुःशासन, शकुनि, विकर्ण, युयुत्सु

अधिकार, खेल, मौन, अपमान, धर्मक टकराव आ शान्तिक अवसर; २, ५, ८ आ ९

महाभारत युद्ध आ जन्म

कर्ण, राधा, अधिरथ, अभिमन्यु, उत्तरा, अश्वत्थामा, कृप, कृतवर्मा, शल्य, संजय

जन्मसँ बड़ पालन, युद्धक सीमा, रात्रिहिंसा आ साक्षी; ६-११

महाभारत शेष जीवन

गान्धारी, कुन्ती, द्रौपदी, उत्तरा, युयुत्सु, विदुर, परीक्षित, जनमेजय, उग्रश्रवा, शौनक आ श्रोतासभ

जीवितक देय, कथनक सत्ता, प्रतिशोधक श्रृंखला आ अन्तिम यात्राक प्रश्न; ११-१८

भामती

वाचस्पति मिश्र, शंकरक भाष्यक वाणी; लोकाख्यान प्रेरित भामती; कल्पित मृणाल आ लोहना

अध्यास आ चतुःसूत्रीक वास्तविक विवाद, श्रम, जिज्ञासा आ सहलेखन; १, ३, ५, ७, ८, १४ आ १८

न्यायकुसुमाञ्जलि

उदयन; मीमांसक, बौद्ध, चार्वाक आ अन्य पूर्वपक्षक कल्पित वक्ता

पाँच स्तबकक प्रश्नपर पूरा पक्ष आ प्रत्युत्तर; ३, ५-९, १२ आ १८

तत्त्वचिन्तामणि

गङ्गेश; परम्परागत आ नव पूर्वपक्ष; कल्पित मालती, माधव आ पाठशालाक श्रमिक

चारि प्रमाणखण्ड, पृथक् ईश्वरानुमान आ उदाहरण बदलएबला नव प्रश्न; १-९, १२-१४, १७ आ १८

मुख्य पात्रसभक स्वत्व आ निर्णय

ई सूची उपन्यासक पात्र-पंजीसँ लेल गेल अछि; एहि मे लिखल उम्र मूल पंजीक अछि, जैविक सम्बन्धक स्वतन्त्र पुष्टि नहि।

नैरा दास ३४

लक्ष्य : अभिलेख पुनर्स्थापन आ अपन श्रमपर अधिकार

कठिन निर्णय : सत्यक जल्दी प्रकाशनसँ साक्षीक सुरक्षा भङ्ग; फेर अपन गलती सार्वजनिक करब

सरिता ५८

लक्ष्य : जीवित रहबाक प्रमाण आ छूटल स्त्रीक कामक श्रेय

कठिन निर्णय : सुरक्षा लेल बदलल नामक रास्ताक दुरुपयोग स्वीकार करब

संकेत १६

लक्ष्य : सम्प्रेषणक अपन माध्यम आ तकनीकी शिक्षा

कठिन निर्णय : अपन चित्र आ फोनक सामग्री बिना सम्मति उपयोग रोकब

फकीरा ६०

लक्ष्य : कमाइ, आवागमन आ स्वास्थ्यक अधिकार

कठिन निर्णय : सुनेल घटनाकेँ देखल घटना कहबाक दबाव अस्वीकार करब

रुहानी ४२

लक्ष्य : सुरक्षित आश्रय आ समुदायमे सम्मान

कठिन निर्णय : आश्रितक निर्णयपर अपन नियन्त्रण छोड़ब

चम्पा ३६

लक्ष्य : माइक उपचार, मजदूरी आ अपन प्रेम

कठिन निर्णय : मददक बदला माँगल निजी विवरण देब अथवा नहि

जानकी ३९

लक्ष्य : घुमन्तु परिवारक सुरक्षा

कठिन निर्णय : बच्चा चोरीक झूठ आरोप रोकैत अपन अलग आर्थिक धोखा स्वीकार करब

यूसुफ ४९

लक्ष्य : बुनकरक कारोबार आ बेटाक विकल्प

कठिन निर्णय : लाभदायक गलत खेप लौटा देब

पार्वती ४५

लक्ष्य : बुनाइमे अपन श्रेय; पवित्रा पटवाक गँथाइसँ अलग जीविका

कठिन निर्णय : सामूहिक माँगमे स्त्रीक देय मेटएबाक विरोध

उर्मिला ४९

लक्ष्य : मजदूरी आ अस्पतालक कपड़ा पंजीक सुधार

कठिन निर्णय : परिवारक जरूरतक बीच जोखिमपूर्ण गवाही

तारा २४

लक्ष्य : शिल्प, जलमाप आ अभिलेखक साझा नियन्त्रण

कठिन निर्णय : अपन परिवारक पुरान अवैध सौदा सेहो दर्ज करब

ललित ५२

लक्ष्य : सुरक्षित निर्माण आ देय भुगतान

कठिन निर्णय : ठेकाक गलत बिलपर हस्ताक्षर अस्वीकार करब

शकुन्तला ६३

लक्ष्य : माटिक कामक दाम आ नतिनीक शिक्षा

कठिन निर्णय : उत्तराधिकारक पुरान पारिवारिक नियम बदलब

हीरा ४७

लक्ष्य : जलमार्ग आ नाविकक मापकें मान्यता

कठिन निर्णय : जोखिमक वास्तविक सीमा सभकें बताकऽ उद्धारक योजना बदलब

अदिति ३८

लक्ष्य : नगरक निकासी सुधारब

कठिन निर्णय : अपन पहिनुक त्रुटिपूर्ण प्रतिवेदन वापस लेब

कबीर ४०

लक्ष्य : न्यायिक सहायता आ पालक परिवारक रक्षा

कठिन निर्णय : अपन जन्मरहस्यक दस्तावेज सबूत बनएब

मैथिली ६१

लक्ष्य : दार्शनिक सहलेखनक श्रेय

कठिन निर्णय : सरिताक श्रम दबएबामे अपन दोष स्वीकार करब

ईशान ६७

लक्ष्य : पाठशाला, विद्वत्ता आ प्रतिष्ठा

कठिन निर्णय : वास्तविक ज्ञान रहितो श्रेयहरणक दोषसँ बचाव नहि करब

देवव्रत ५५

लक्ष्य : व्यापार, वंश आ सार्वजनिक प्रभाव

कठिन निर्णय : अन्तिम संकटमे गोदाम खोलब; तकर बादो जाँच स्वीकार करबाक संघर्ष

अनिरुद्ध ४६

लक्ष्य : चिकित्सालय आ रोगीक उपचार

कठिन निर्णय : आपूर्तिक गड़बड़ीमे अपन भाग स्वीकार करब

सुभद्रा ६२

लक्ष्य : अपन जीवनक कथापर अधिकार

कठिन निर्णय : कबीरक जन्म सार्वजनिक करबाक कीमत तय करब

रुखसाना ४४

लक्ष्य : रसोइक आर्थिक स्वावलम्बन

कठिन निर्णय : मुफ्त भोजनक सार्वजनिक अपेक्षा आ श्रमक दाम दुनू सम्हारब

पद्मा ३२

लक्ष्य : सांकेतिक सम्प्रेषणक मध्यस्थता आ अपन शिक्षण

कठिन निर्णय : सहायकक भूमिकामे विलीन भेलासँ इन्कार; फीस आ श्रेय माँगब

महेश मंडल ५०

लक्ष्य : गवाही देब आ परिवारक भविष्य

कठिन निर्णय : सुरक्षा सुनिश्चित भेलासँ पहिने सार्वजनिक पहिचानक परिणाम भोगब

१५७ व्यवसाय-समुदाय : पात्र आ कथावृत्त

ई १५७ प्रविष्टि उपन्यासक पात्र आ सामाजिक-व्यवसाय-वृत्तक वर्णक्रम नहि, मूल पंजीक क्रम अनुसार अछि। समुदाय अथवा व्यवसाय जन्मसँ पात्रक स्वभाव निर्धारित नहि करैत। अधोलिखित अध्याय-संख्या कथा मे हुनकर प्रमुख प्रसंग देखबैत अछि; ओकरा वंश-सम्बन्धक प्रमाण नहि मानल जाए।

१ · बरही

पात्र-संकेत : ललित विश्वकर्मा

सम्बद्ध अध्याय : ९ · ४१ · १६७

२ · डोम

पात्र-संकेत : श्याम

सम्बद्ध अध्याय : ९ · ४९ · १८६

३ · कुम्हार

पात्र-संकेत : शकुन्तला पंडित

सम्बद्ध अध्याय : ७ · ४२ · १५२

४ · मलाह

पात्र-संकेत : हीरा सहनी

सम्बद्ध अध्याय : ९ · ४७ · १५३

५ · जौलहा

पात्र-संकेत : यूसुफ अंसारी

सम्बद्ध अध्याय : ३९ · ४५ · १६६

६ · पटवा; ततमा ताँतीक अलग परिवार

पात्र-संकेत : पार्वती ताँती आ पवित्रा पटवा

सम्बद्ध अध्याय : ३९ · ४९ · १६६

७ • दर्जी

पात्र-संकेत : नसीम इदरीसी

सम्बद्ध अध्याय : ३७ • ८७ • १६५

८ • धुनिया

पात्र-संकेत : रहीम मंसूरी

सम्बद्ध अध्याय : ४६ • ८० • १४२

९ • धोबि

पात्र-संकेत : उर्मिला

सम्बद्ध अध्याय : ९ • ४० • १२१

१० • रंगरेज

पात्र-संकेत : सकीना बदलल

सम्बद्ध अध्याय : ४६ • ८० • १६६

११ • गरेड़ी

पात्र-संकेत : देवकी पाल

सम्बद्ध अध्याय : ८ • ५८ • १६७

१२ • लोहार

पात्र-संकेत : हरिनारायण शर्मा

सम्बद्ध अध्याय : ४४ • ९३ • १८८

१३ • कसेरा

पात्र-संकेत : मीना साह

सम्बद्ध अध्याय : ४३ • ६५ • १४२

१४ • सोनार

पात्र-संकेत : कमला ठाकुर

सम्बद्ध अध्याय : ४३ . ९० . १६५

१५ . कानू

पात्र-संकेत : रघु साहु

सम्बद्ध अध्याय : ३७ . ५६ . १८७

१६ . हलुआइ

पात्र-संकेत : चन्द्रिका राय

सम्बद्ध अध्याय : ३७ . ५६ . १८७

१७ . तेली

पात्र-संकेत : बिन्देश्वरी साहु

सम्बद्ध अध्याय : ७ . ४३ . १६६

१८ . नोनिया आ बेलदारक संयुक्त वृत्त

पात्र-संकेत : अमृता चौहान आ गोमती बेलदार

सम्बद्ध अध्याय : ७ . १०२ . १६७

१९ . कुरेड़ी

पात्र-संकेत : बटोही धामी

सम्बद्ध अध्याय : २८ . ५८ . १९१

२० . बरइ

पात्र-संकेत : फूलो चौरसिया

सम्बद्ध अध्याय : ८ . ५८ . १६७

२१ . पासी

पात्र-संकेत : सूरज चौधरी

सम्बद्ध अध्याय : ८ . ५६ . १८५

२२ • सूझी आ कलवार

पात्र-संकेत : महेन्द्र महासेठ तथा बिनोद जायसवाल

सम्बद्ध अध्याय : ७ • ९३ • १४१

२३ • लहेरी

पात्र-संकेत : रेखा साहु

सम्बद्ध अध्याय : ४३ • ५९ • १८६

२४ • चमार चर्मकार रविदास

पात्र-संकेत : उषा राम

सम्बद्ध अध्याय : ४३ • १०५ • १६६

२५ • माली

पात्र-संकेत : नन्दिनी भंडारी

सम्बद्ध अध्याय : ८ • ५८ • १६७

२६ • ब्राह्मण

पात्र-संकेत : मैथिली

सम्बद्ध अध्याय : ३२ • ८२ • २१३

२७ • कायस्थ

पात्र-संकेत : रमा कर्ण

सम्बद्ध अध्याय : १३ • ८६ • २१५

२८ • राजपूत

पात्र-संकेत : राघव सिंह

सम्बद्ध अध्याय : ६४ • ७० • १४०

२९ • भूमिहार

पात्र-संकेत : सुधा राय

सम्बद्ध अध्याय : ६ . ८९ . १६८

३० . यादव गोआर

पात्र-संकेत : भोला यादव

सम्बद्ध अध्याय : ३८ . ५५ . १८९

३१ . कुर्मी

पात्र-संकेत : सुशीला महतो

सम्बद्ध अध्याय : १० . ५७ . १५४

३२ . कोइरी कुशवाहा

पात्र-संकेत : रमेश कुशवाहा

सम्बद्ध अध्याय : ११ . ६० . १६८

३३ . धानुक

पात्र-संकेत : मीरा मंडल

सम्बद्ध अध्याय : २९ . ३५ . १४७

३४ . अमात

पात्र-संकेत : किरण राउत

सम्बद्ध अध्याय : ५ . ८५ . १६४

३५ . बेलदार

पात्र-संकेत : गोमती बेलदार

सम्बद्ध अध्याय : १० . १०२ . १३८

३६ . बिन्द

पात्र-संकेत : रमणी बिन्द

सम्बद्ध अध्याय : १२ . ८६ . १५५

३७ • केवट

पात्र-संकेत : मधु केवट

सम्बद्ध अध्याय : २६ • ७३ • २०१

३८ • केवर्त

पात्र-संकेत : विनोद केवर्त

सम्बद्ध अध्याय : ४५ • ७९ • १६३

३९ • तियर

पात्र-संकेत : फूलमती तियर

सम्बद्ध अध्याय : ३८ • ५७ • १६४

४० • गोंढ़ी

पात्र-संकेत : रेणु गोंढ़ी

सम्बद्ध अध्याय : ११ • ८८ • १५४

४१ • वनपर

पात्र-संकेत : रतन वनपर

सम्बद्ध अध्याय : १० • ६८ • १५३

४२ • खरकौट

पात्र-संकेत : सरोज खरकौट

सम्बद्ध अध्याय : ४० • ५९ • १६२

४३ • नोनफर

पात्र-संकेत : बदरी नोनफर

सम्बद्ध अध्याय : २४ • १३६ • १६८

४४ • बीन

पात्र-संकेत : केशरी बीन

सम्बद्ध अध्याय : ६ · १११ · १५१

४५ · कठौतिया

पात्र-संकेत : सोना कठौतिया

सम्बद्ध अध्याय : २५ · १०० · १६३

४६ · नौआ हजाम

पात्र-संकेत : सरस्वती ठाकुर

सम्बद्ध अध्याय : १८ · ३६ · १४८

४७ · कहार

पात्र-संकेत : मदन राउत

सम्बद्ध अध्याय : ३६ · १०१ · १४७

४८ · महापात्र

पात्र-संकेत : शशिभूषण मृत्यु

सम्बद्ध अध्याय : ७१ · १२२ · २०५

४९ · पंडा

पात्र-संकेत : नीरज

सम्बद्ध अध्याय : १४ · १३२ · २०६

५० · भाट हिन्दू

पात्र-संकेत : चेतन भट

सम्बद्ध अध्याय : ४ · ९१ · २०८

५१ · भाट मुस्लिम

पात्र-संकेत : रशीद भाट

सम्बद्ध अध्याय : ५ · ६० · २०७

५२ • पमरिया

पात्र-संकेत : फूलमती पमरिया

सम्बद्ध अध्याय : ६ • ५९ • २०९

५३ • बक्खो

पात्र-संकेत : हसन आ जुबैदा बस

सम्बद्ध अध्याय : ४ • २३ • १९६

५४ • दुसाध पासवान

पात्र-संकेत : हरिचरण पासवान

सम्बद्ध अध्याय : २५ • १०१ • १६१

५५ • मुसहर

पात्र-संकेत : सुगनी सदाय

सम्बद्ध अध्याय : १२ • १०४ • १६५

५६ • भुइयाँ

पात्र-संकेत : रतन भुइयाँ

सम्बद्ध अध्याय : ५ • ८५ • १६८

५७ • बन्तर

पात्र-संकेत : सावित्री सरदार

सम्बद्ध अध्याय : १३ • ८७ • १४५

५८ • बौरी

पात्र-संकेत : केदार बौरी

सम्बद्ध अध्याय : २७ • ८१ • १६४

५९ • भोगता

पात्र-संकेत : राजो भोगता

सम्बद्ध अध्याय : ३५ . ७५ . १४९

६० . भूमिज

पात्र-संकेत : आशा भूमिज

सम्बद्ध अध्याय : ११ . ७४ . २००

६१ . चौपाल

पात्र-संकेत : अनिता चौपाल

सम्बद्ध अध्याय : १५ . ८८ . १५६

६२ . दबगर

पात्र-संकेत : कमलेश दबगर

सम्बद्ध अध्याय : ४२ . ९९ . १८८

६३ . घासी

पात्र-संकेत : रमेश घासी

सम्बद्ध अध्याय : ६ . ६० . २१०

६४ . हलालखोर

पात्र-संकेत : रानी हलालखोर

सम्बद्ध अध्याय : १० . १०३ . १४३

६५ . हरि मेहतर

पात्र-संकेत : ममता हरि

सम्बद्ध अध्याय : १२ . १०३ . १३७

६६ . कंजर

पात्र-संकेत : मोहन कंजर

सम्बद्ध अध्याय : ३० . ७८ . १५०

६७ • कुररियार

पात्र-संकेत : हीरावती कुररियार

सम्बद्ध अध्याय : २३ • ५३ • १८०

६८ • लालबेगी

पात्र-संकेत : रोजी लालबेगी

सम्बद्ध अध्याय : २८ • ८६ • १५५

६९ • नट हिन्दू

पात्र-संकेत : नन्दू नट

सम्बद्ध अध्याय : २६ • ५२ • १४६

७० • पान सवासी पनर

पात्र-संकेत : बसन्ती पान

सम्बद्ध अध्याय : १४ • ८९ • १५६

७१ • राजवार

पात्र-संकेत : दुलारी राजवार

सम्बद्ध अध्याय : ३८ • ५४ • १४५

७२ • तुरी

पात्र-संकेत : सोनमती तुरी

सम्बद्ध अध्याय : ३९ • ७३ • १६२

७३ • खत्वे

पात्र-संकेत : रामवती खत्वे

सम्बद्ध अध्याय : ८ • ७६ • १५९

७४ • राजभर

पात्र-संकेत : धनी राजभर

सम्बद्ध अध्याय : ९ . ५७ . १५२

७५ . राजधोब

पात्र-संकेत : उमा राजधोब

सम्बद्ध अध्याय : ४१ . ५० . १६०

७६ . कोरी

पात्र-संकेत : गीता कोरी

सम्बद्ध अध्याय : ४० . ७९ . १६५

७७ . लोध

पात्र-संकेत : फूलचन लोध

सम्बद्ध अध्याय : ४ . १०२ . १६३

७८ . नुराड

पात्र-संकेत : नीलिमा नुराड

सम्बद्ध अध्याय : ७ . ९० . १५४

७९ . देव

पात्र-संकेत : हेमा देव

सम्बद्ध अध्याय : ५ . ३४ . २१२

८० . कठबनिया

पात्र-संकेत : लक्ष्मी कठबनिया

सम्बद्ध अध्याय : ६ . ८५ . १६१

८१ . चिड़ीमार

पात्र-संकेत : पूनम चिड़ीमार

सम्बद्ध अध्याय : २७ . ५५ . १९९

८२ • धाँड़ी

पात्र-संकेत : शिव धाँड़ी

सम्बद्ध अध्याय : २५ • ७५ • १६४

८३ • धनकर धारिकार

पात्र-संकेत : रुचि धारिकार

सम्बद्ध अध्याय : ३९ • ५१ • १८४

८४ • कलार

पात्र-संकेत : बीना कलार

सम्बद्ध अध्याय : ४ • ९२ • १६८

८५ • नटुवा

पात्र-संकेत : हरि नटुवा

सम्बद्ध अध्याय : २६ • ५३ • १४८

८६ • सर्बरिया

पात्र-संकेत : अमला सर्बरिया

सम्बद्ध अध्याय : १६ • ७७ • १५६

८७ • दनुवार

पात्र-संकेत : दुर्गा दनुवार

सम्बद्ध अध्याय : २९ • ५४ • १९०

८८ • बोटे

पात्र-संकेत : शान्ति बोटे

सम्बद्ध अध्याय : २७ • ७४ • २०२

८९ • दराई

पात्र-संकेत : बिनु दराई

सम्बद्ध अध्याय : ११ . ७६ . २०३

९० . कुमाल

पात्र-संकेत : निरु कुमाल

सम्बद्ध अध्याय : ४२ . ७३ . १६२

९१ . माझी

पात्र-संकेत : गोपाल माझी

सम्बद्ध अध्याय : १० . १०८ . १५३

९२ . थारू

पात्र-संकेत : मीना थारू

सम्बद्ध अध्याय : १२ . ५७ . १६०

९३ . धिमाल

पात्र-संकेत : रचना धिमाल

सम्बद्ध अध्याय : ५ . ७५ . १४७

९४ . गंगाई

पात्र-संकेत : दुर्गा गंगाई

सम्बद्ध अध्याय : ३७ . ८१ . १५८

९५ . झाँगड़ धाँगर

पात्र-संकेत : लक्ष्मी झाँगड़

सम्बद्ध अध्याय : २५ . ८३ . १६३

९६ . किसान

पात्र-संकेत : निरंजन किसान

सम्बद्ध अध्याय : १३ . ८८ . १५५

९७ . कोचे

पात्र-संकेत : मालती कोचे

सम्बद्ध अध्याय : २४ . ५९ . १५१

९८ . मेचे

पात्र-संकेत : हीरा मेचे

सम्बद्ध अध्याय : ११ . ७७ . १५४

९९ . मुण्डा

पात्र-संकेत : चन्दा मुण्डा

सम्बद्ध अध्याय : ३१ . ७४ . २०१

१०० . पत्थरकट्टा कुसवाड़िया

पात्र-संकेत : पारो पत्थरकट्टा

सम्बद्ध अध्याय : ४१ . १०० . १३७

१०१ . राजवंशी

पात्र-संकेत : प्रतिमा राजवंशी

सम्बद्ध अध्याय : ३६ . ७६ . १५९

१०२ . सतार सन्थाल

पात्र-संकेत : लखन सतार

सम्बद्ध अध्याय : २६ . ८० . १६१

१०३ . ताजपुरिया

पात्र-संकेत : तुलसी ताजपुरिया

सम्बद्ध अध्याय : २८ . ९८ . २००

१०४ . शेख

पात्र-संकेत : सलमा शेख

सम्बद्ध अध्याय : १५ . १०१ . १४५

१०५ . सैयद

पात्र-संकेत : असद सैयद

सम्बद्ध अध्याय : १७ . ७८ . १४९

१०६ . पठान

पात्र-संकेत : इरफान खान

सम्बद्ध अध्याय : ४४ . ९४ . १४४

१०७ . मोगल

पात्र-संकेत : नाहिद मोगल

सम्बद्ध अध्याय : ४ . ९१ . १६५

१०८ . मलिक

पात्र-संकेत : शबनम

सम्बद्ध अध्याय : १४ . ९५ . १४१

१०९ . राइन कुजड़ा

पात्र-संकेत : रुखसाना भोजन

सम्बद्ध अध्याय : ३८ . ५५ . १८७

११० . कसाब कुरैशी

पात्र-संकेत : फरीदा कुरैशी

सम्बद्ध अध्याय : ३७ . ७९ . १५७

१११ . चिक

पात्र-संकेत : फरीद

सम्बद्ध अध्याय : ३८ . ८२ . १४६

११२ • डफाली

पात्र-संकेत : करीम डफाली

सम्बद्ध अध्याय : १२ • १९ • २०९

११३ • नट

पात्र-संकेत : साजिद नट

सम्बद्ध अध्याय : ३० • ५२ • २०८

११४ • भठियारा

पात्र-संकेत : अमीना भठियारा

सम्बद्ध अध्याय : ४ • ४२ • १८५

११५ • मिरियासीन

पात्र-संकेत : हमीदा मिरियासीन

सम्बद्ध अध्याय : ७ • २१ • २११

११६ • मदारी कलन्दर

पात्र-संकेत : जावेद कलन्दर

सम्बद्ध अध्याय : २५ • ५३ • १९५

११७ • मीरशिकार

पात्र-संकेत : सबीना मीरशिकार

सम्बद्ध अध्याय : २९ • ५८ • १९२

११८ • साई फकीर दीवान मदार

पात्र-संकेत : फकीरा

सम्बद्ध अध्याय : १ • ६७ • १४६

११९ • चूड़ीहार

पात्र-संकेत : फरजाना चूड़ीहार

सम्बद्ध अध्याय : ४४ . ६० . १८३

१२० . सिकिलगर

पात्र-संकेत : नजीर सिकिलगर

सम्बद्ध अध्याय : ४८ . ९२ . १८९

१२१ . नालबन्द

पात्र-संकेत : सलीम नालबन्द

सम्बद्ध अध्याय : ४१ . ९४ . १८८

१२२ . अबदल

पात्र-संकेत : सकीब अबदल

सम्बद्ध अध्याय : १६ . ५१ . १८६

१२३ . ईटफरोश गदहेड़ी

पात्र-संकेत : नूरजहाँ ईटफरोश

सम्बद्ध अध्याय : ४० . १०४ . १६४

१२४ . ठकुराई

पात्र-संकेत : रहीना ठकुराई

सम्बद्ध अध्याय : १९ . ९६ . १३९

१२५ . कुल्हैया

पात्र-संकेत : अमीर कुल्हैया

सम्बद्ध अध्याय : ८ . ७५ . २०२

१२६ . शेरशाहबादी

पात्र-संकेत : नसीमा शेरशाहबादी

सम्बद्ध अध्याय : ३४ . ७७ . १४८

१२७ • सुरजापुरी आत्मपरिचय

पात्र-संकेत : रफीक अपना

सम्बद्ध अध्याय : ९ • ७४ • १९८

१२८ • खटिक

पात्र-संकेत : कमलेश

सम्बद्ध अध्याय : ३९ • ७८ • १६२

१२९ • कपरिया

पात्र-संकेत : गौरी कपरिया

सम्बद्ध अध्याय : २२ • ५२ • १७९

१३० • गुलगुलिया

पात्र-संकेत : रेवा गुलगुलिया

सम्बद्ध अध्याय : ३१ • ३५ • १५०

१३१ • बंजारा

पात्र-संकेत : मीरा बंजारा

सम्बद्ध अध्याय : २७ • ७३ • २०४

१३२ • बारी

पात्र-संकेत : शान्ति बारी

सम्बद्ध अध्याय : ६ • ५० • १८४

१३३ • टिकुलहार

पात्र-संकेत : सुमन टिकुलहार

सम्बद्ध अध्याय : ४५ • ५९ • १८२

१३४ • तुरहा

पात्र-संकेत : बेला तुरहा

सम्बद्ध अध्याय : ५ . ५६ . १६०

१३५ . गंगोता

पात्र-संकेत : सूरज गंगोता

सम्बद्ध अध्याय : १० . ६९ . १५८

१३६ . दोनवार

पात्र-संकेत : तुलसी दोनवार

सम्बद्ध अध्याय : ११ . ९० . १६३

१३७ . दांगी

पात्र-संकेत : माधुरी दांगी

सम्बद्ध अध्याय : ४० . ५४ . १९०

१३८ . रोनियार

पात्र-संकेत : माधव रोनियार

सम्बद्ध अध्याय : ४७ . ९३ . १४३

१३९ . केशरवानी

पात्र-संकेत : विनीता केशरवानी

सम्बद्ध अध्याय : १२ . ८७ . १६१

१४० . माहुरी

पात्र-संकेत : शशि माहुरी

सम्बद्ध अध्याय : ७ . ९५ . १४०

१४१ . बरनवाल

पात्र-संकेत : अरुण बरनवाल

सम्बद्ध अध्याय : १३ . ५५ . १८५

१४२ • अग्रहरी

पात्र-संकेत : विभा अग्रहरी

सम्बद्ध अध्याय : ४२ • ९२ • १४२

१४३ • कसौधन

पात्र-संकेत : शारदा कसौधन

सम्बद्ध अध्याय : ४४ • ८९ • १५९

१४४ • पनसारी

पात्र-संकेत : हरीश पनसारी

सम्बद्ध अध्याय : ४६ • ९४ • १४४

१४५ • सन्थाल

पात्र-संकेत : सोमरी हेम्ब्रम

सम्बद्ध अध्याय : ३३ • ७६ • १९९

१४६ • उराँव

पात्र-संकेत : रीता एक्का

सम्बद्ध अध्याय : २६ • ८६ • १५७

१४७ • गोंड

पात्र-संकेत : देवी गोंड

सम्बद्ध अध्याय : ६६ • ९९ • १४७

१४८ • गोराइत

पात्र-संकेत : मंगरी गोराइत

सम्बद्ध अध्याय : २८ • ८४ • १६२

१४९ • बंगाली परिवार

पात्र-संकेत : अनुपमा सेन

सम्बद्ध अध्याय : ६ · ९१ · २१४

१५० · मारवाड़ी परिवार

पात्र-संकेत : कमला जैन

सम्बद्ध अध्याय : ८ · ५६ · १८३

१५१ · पंजाबी सिख परिवार

पात्र-संकेत : गुरमीत कौर

सम्बद्ध अध्याय : ४१ · ५४ · १८७

१५२ · नेवार

पात्र-संकेत : मैत्री श्रेष्ठ

सम्बद्ध अध्याय : ९ · ७५ · १९७

१५३ · कामी

पात्र-संकेत : सुमित्रा कामी

सम्बद्ध अध्याय : ४८ · ९६ · १८१

१५४ · दमाई ढोली

पात्र-संकेत : करुण दमाई

सम्बद्ध अध्याय : ५ · ६० · १८९

१५५ · सार्की

पात्र-संकेत : मीना सार्की

सम्बद्ध अध्याय : ४५ · ७३ · १६०

१५६ · बादी

पात्र-संकेत : चन्द्रा बादी

सम्बद्ध अध्याय : २० · ५३ · १८०

१५७ • गाइने

पात्र-संकेत : देव गाइने

सम्बद्ध अध्याय : ४ • ५७ • २०७

कादम्बरी

अध्याय १-२१६

अध्याय १ • मृतकक रसोइ

विदेहपुरमे आषाढ़क ओहि भोर सरिताक मृत्यु-सूचना तखन पहुँचल जखन ओ चाउरक डिब्बामे अपन मृत पतिक औषधिपर्ची खोजि रहल छलीह। पति सत्रह वर्ष पहिने मरि गेल छलाह। पर्ची काल्हिक छल। आ फोनमे आयल सूचना कहैत छल जे सरिता स्वयं आब जीवित नहि छथि।

चूल्हिपर भात उफनि रहल छल। सरिता पहिने आँच घटौलनि, फेर चिमटा लग राखल पानि चढ़ा देलनि। आगिक लग ठाढ़ लोककें बुझाइत अछि जे की तुरन्त करबाक अछि। फोनक खबर कहिया करबाक अछि, एकर कोनो चूल्हा नहि होइत छै।

पड़ोसक बच्चा बिट्टू स्क्रीन पढ़ि रहल छल। ओ दोसर कक्षामे पढ़ैत छल आ संयुक्त अक्षरपर एखन अटकि जाइत छल। “मृ... त्यु... सू... चना,” कहि ओ सरिताक मुँह तकलक। “ई केकर नाम छै?”

“हमर,” सरिता कहलनि। “मृत शब्द दोबारा पढ़लासँ किछु बदलतै नहि। तू चप्पल खोज आ स्कूल जेबाक तैयारी कर।”

बिट्टू मने-मन हँसल, मुदा हँसी रोकि लेलक। मरणक खबरपर हँसबाक अनुमति ककरो नहि बुझाइत छै। ओ गुमसुम भऽ कऽ कोनमे राखल अपन एक जोड़ी अलग-अलग रंगक चप्पल उठौलक। बाहर ओकर माय ककरो दूधक भाँड़ वापस माँगि रहल छलीह। संसार एखनो अपन छोट हिसाबमे चलि रहल छल।

सरिताक कोठरी रेलक पाछाँ पड़ैत छल। रेल देखाइत नहि छल; बीचमे औषधिक गोदाम, बन्द पोखरिक चारूकात बनल टीनक घर आ एकटा ऊँच देवाल छल। मुदा पटरीपर गाड़ी आबि रहल अछि कि जा रहल अछि, ओ आवाजसँ बुझि लैत छलीह। आइ रेलक सिटी हुनका सहारा देलक—जे जीवित वस्तु चलैत अछि, ओकर आवाज रहैत अछि।

ओ फोनकें उलटि कऽ चौकीपर रखलनि। सूचनामे नाम, उमेर, पहचान-संख्या आ एक तिथि छल। उमेर सही, जन्मक साल सही, मृत्यु आजुक तिथिसँ दू दिन पहिनुक। कोठरीक भीतर ओहि दू दिनमे सरिता दू बेर बजार गेल छलीह, भात रान्हने छलीह, कपड़ा निचोड़ने छलीह आ साँझक समय घुटनामे तेल मलने छलीह। एहि सभ कामक कोनो प्रमाण फोन नहि माँगलक।

“हमरा मरबाक तिथि तक चुनि देलक,” ओ धीरेसँ बजलीह। फेर अपना लेल एक थारी निकालि दरबज्जा लग सरका देलनि, जेना ककरो जबाब देबाक तैयारी कऽ रहल होथि।

चाउरक डिब्बामे फुरहरल कागद भेटल। नीचाँ नीला छपल चिह्न, ऊपर पतिक नाम आ अस्पतालक वितरण-केन्द्रक मोहर। दवाक सूचीमे तीनटा गोली आ एकटा इंजेक्शन छल। पतिक जीवित समय एहि बेमारीक इलाज कहियो नहि भेल छलनि। वितरणक समय काल्हि साँझ पाँच बजि बारह मिनट लिखल छल। पर्चीक एक कोनमे छोट अक्षरमे ‘औषधि प्राप्त’ छपल छल।

सरिता पतिक मृत्यु-पत्रक स्थान जनैत छलीह। पीतरक डिब्बामे कपड़ाक बीच, जे ओ हरेक वर्ष निकालि कऽ नहि पढ़ैत छलीह। सत्रह वर्षक भीतर मृतकक प्रमाण अनेक बेर देबए पड़ल छल—पहिने पेंशन, फेर जमीनक छोट हिस्सा, फेर राशनक नाम बदलाबय लेल। प्रत्येक बेर पुरान शोकक संग नवल फीस लागल छल। आइ हुनका फेर ओ डिब्बा खोलबाक मन नहि भेलनि।

पर्चीक पछिला भागपर ‘परिजन’क खानामे सरिताक नाम छल। एक कागदमे ओ मृत पतिक जीवित परिजन छलीह; दोसर कागदमे स्वयं मृत। एक्के नगरक व्यवस्थामे दुनू बात लिखल छल, मुदा एकटा बात दोसराकें काटि नहि रहल छल।

ओ दूनू कागद संग राखबाक विचारसँ रुकि गेलीह। मृत्यु-सूचना फोनमे, औषधिपर्ची भातक डिब्बाक नीचाँ। जेना दुनूक बीच राखल चाउर ककरो जल्दबाजीसँ मिलाबय नहि देत।

नैरा अठारह मिनट बाद अएलीह। हुनक थैलामे चार्जर, दूटा सुखल रोटी, छोट नोटबुक आ एकटा बिगड़ल हार्डडिस्क छल। पुरान अभिलेखक नकल बचएबाक काम हुनका

स्टेशन लग भेटल छल; अधपेट रहि कऽ सेहो ओ नाजुक कागदक तिथि नहि भूलैत छलीह। दरबज्जापर पहुँचि नैरा पहिने फोनक नहि, माइक मुँहक अवस्था देखलनि।

“ककरो दोसराकेँ पठौलहुँ?”

“तोरे पठौलहुँ। बिट्टू पढ़लक। ओ स्कूल गेल।”

“पर्ची?”

“पहिने हाथ धो। एतए भात छै।”

“माँ, ई अत्यन्त जरूरी—”

“मरबाक खबर भातक प्रतीक्षा कऽ सकैत छै। भात मरबाक खबरक नहि।”

नैरा चाहितो मुस्की रोकि नहि सकलीह। एहन वाक्य सरिता दुखक समये कहैत छलीह, जे सुननिहार तय नहि कऽ पबैत छल जे एकरा जबाब दिअ कि चुप रहू। नैरा हाथ धोइलनि। बाल्टीमे पानि तली लग बचल छल। माइक आवाज आयल, “तहार लेल ताजा पानि राखल छै; भरि अनबाक देर तौहुँ कऽ सकैत छह।”

नैरा घूरि तकलीह। बच्चाक समय जे माइक डाँट बुझाइत छल, आब ओ ओहि घरक सुरक्षित आवाज छल जाहिमे कियो ओकरा काजक तख्ता बनाकऽ नहि देखैत छल। ओ लोटा भरि दैलनि आ चौकीपर बैसि गेलीह।

मोबाइल खोलला पर सूचनाक शीर्षमे नगर जीवन-अभिलेख सेवा लिखल छल। नीचाँ मृत्यु दर्ज होएबाक क्रमांक, एक डिजिटल हस्ताक्षरक चिन्ह आ ‘स्थिति सुधारबाक आवेदन’ लेल कड़ी छल। नैरा पृष्ठ अलग खोलि ठीक ओहि समयक तस्वीर सुरक्षित कएलनि। नाम आ पहचान-संख्या ढाँपि कऽ ककरो पठएबाक सुविधा छल, मुदा मूल तस्वीर ओ अपन यन्त्रमेसँ बाहर नहि पठौलनि।

आवेदनक पहिल प्रश्न छल—मृत्यु-सूचना सुधारबाक आग्रह करनिहार मृतकसँ कोन सम्बन्ध रखैत अछि? विकल्प तीनटा: पति, पुत्र, अधिकृत प्रतिनिधि। बेटी नहि। नैरा स्क्रीन माइक दिस घुमौलनि। सरिता पढ़ि नहि सकलीह एना नहि; ओ पढ़लनि, फेर पूछलनि, “एहिमे हम कतए छी?”

“एहि सूचीमे नहि,” नैरा कहलनि।

“तँ पहिने हुनक सूची सुधार।”

“हुनका सँ पहिने अहाँक जिनाइ बचेनाइ जरूरी अछि।”

नैरा ‘अधिकृत प्रतिनिधि’ चुनलनि। अगिला खानामे मृत व्यक्तिक सहमति माँगल गेल। हुनक अँगुरी एक क्षण हवा मे ठहरि गेल। ओ स्क्रीनपर लिखल वाक्यक तस्वीर लेलनि, मुदा हँसैत साझा नहि कएलनि। माँक पहिचान दू दिन पहिने समाप्त कऽ देल गेल छल; फेर हुनकें सहमति देबाक आदेश छल।

“माँ, अहाँ कागद देखेबै? एकटा गवाही लिखि दिअ जे अहाँ आइ हमर सामने छी।”

“गवाहीमे की लिखब? हम भात रान्हि रहल छी, तँ जिंदा छी?”

“भात रान्हब प्रमाण नहि, मुदा कियो अहाँकें देखने अछि, से प्रमाण बनि सकैत अछि।”

“देखनिहारकें फेर कागद चाही। लिखि ले। मुदा हमर भात मत जरा।”

नैरा नोटबुकमे तिथि, समय आ सरिताक कहल बात लिखलनि। अपना आँखिसँ देखल बातक आगे ‘प्रत्यक्ष’ लिखलनि, फोनमे भेटल बातक आगे ‘प्राप्त सूचना’। ओ दूनूकें एक प्रमाण नहि बनबए चाहैत छलीह। ई सावधानी हुनक व्यवसायसँ आयल छल, मुदा पहिल बेर अपन घरमे एना कठिन लागि रहल छल।

सड़कक कातसँ पानि खँखारबाक आवाज सुनाइल। दरबज्जाक समीप फकीरा अपन छड़ी टिकौलनि। छड़ीक आगाँ भीजल कपड़ा बान्हल छल, जाहिसँ स्टेशनक चौकीदारकें ओकर खटखटसँ असुविधा नहि होअए। ओ दरबज्जामे ठाढ़ रहि पूछलनि, “भीतर आबि सकैत छी? नेना लोक कहलक जे सरिताक समाचार आयल छै।”

“अन्दर आउ,” सरिता कहलनि। “बामा बाल्टी छै; ओकरा छुबय सँ कोनो अमंगल नहि होएत।”

फकीरा पयरसँ बाल्टीक किनार बुझि आगाँ बढ़लाह। हुनका घरक बाट पुरान परिचित छल, मुदा दरबज्जापर रखल वस्तु हरदम बदलि जाइत छल। सरिता हुनका चौकीक कोन देलनि। ओ बैसिते कहलाह, “तँ मरल लोकक हाथक भात फेर भेटत?”

“भात खाएबासँ पहिने हमर मृत्यु पक्का कऽ लेब?” सरिता पूछलनि।

“हमरा सँ पुछताह तँ नहि। जे दिन जीबैत लोक भात देत, ओ दिन ओकरा मृत कहबाक फुर्सत केकरा?” फकीरा हँसलाह। नैराक मुँहपर हँसी आयल, मुदा दूनूक हँसीक भीतर ओ अपन भयंकर असहायता सुनि रहल छलीह।

फकीरा अपन झोलासँ तह कएल एकटा पुरान पास निकाललनि। कागदक कोना बेर-बेर खोललासँ उज्जर भऽ गेल छल। “आइ गेटपर रोकि देलक। कहलकै, नव पंजीमे हमर आवाज नहि, नाम नहि। पास बन्द। जँ फिरू, तँ नवल अनुमति आनू।”

“अहाँ कहियासँ एहि गेटसँ चलैत छी?” नैरा पूछलनि।

“हम तऽ कहब तीस बरख। गेटवला कहत, पहिल बेर देखैत छी। हुनका तीस बरखक रसीद चाही, हमरा आइक पानि आ गाड़ी पकड़बाक समय।”

ओ अपन नाम स्वयं कहए लगलाह। “सुनू, ककरो पंजीमे हमरा ‘साई फकीर’ लिखलक, ककरो ‘दीवान’, ककरो ‘मदार’। ई सभ एक्के बात नहि। हमर नाम फकीरा अछि। हम जतए जे काज करैत छी, ओकर हिसाब ओकर नामसँ राखू। कौनो पुरान खानेमे हम सभकेँ धकेलि देबासँ हमर बाट नहि खुलत।”

नैरा पासक कागद परखलनि। एक तरफ रेलवे-चौक पर चलबाक समय, दोसर तरफ सेवा-केन्द्रक मुहर आ एकटा तिथि छल। फकीरा अगुआक नाम नहि कहए चाहैत छलाह, जे हुनकर लेल कखनो-कखनो स्टेशनपर पानि रखैत छल। ओ केवल एतबे कहए चाहैत छलाह जे काल्हि धरि पास चलैत छल, आइ नहि।

“आइ रोकनिहार ठीक की कहलनि?” नैरा पूछलनि।

“कहलनि, पंजीमे नहि छी। ‘मरल छह’ ई शब्द ओ नहि कहलनि। लोक कहैत छथि, हमर नाम केओ काटि देलक। हम सुनल बात आ देखल बात अलग रखए चाहैत छी।”

नैराकेँ अपना माइक सूचना याद पड़ल। समान प्रणाली, समान दिन, मुदा एक्के गलतीक प्रमाण किछु नहि। ओ फकीराक कथनक उपर ‘सुनल’ लिखलनि। एकटाकेँ दोसराक कारण घोषित कऽ देब सहज छल; ओकरा रोकब कठिन।

“अहाँक नाम ककरो सामने राखब?” नैरा पुछलनि।

“पहिने हमरा सँ फेर पूछब। हमर रोजी नाम छपबाक लेल नहि रुकल छै। बाट खोलबाक लेल रुकल छै।”

ओ पास वापस जेबीमे रखलनि। पासक बीचमे एकटा छोट रसीद छल—आइ भोर स्टेशनक चाय लेल देल सिक्काक हिसाब। फकीरा ओकरा कने हँसि देखौलनि। “चायवला हमरा आइओ उधार नहि देलक। ओकरा हम जीवित लगैत छी।”

सरिता तीनटा थारीमे भात परसलनि। फकीरा माछक सुआद पूछलाह। “आइ आलुक भुजिया,” सरिता कहलनि। “नदी एखन माछसँ अधिक कागद उगारि रहल छै।” फकीरा कहलाह जे आलु कमसँ कम पानि नहि माँगैत अछि, चूल्हाक लग पड़ल ताहि पर उबालि देल जाइत अछि। सरिता हुनकर ई विज्ञान मानि लेलनि।

नैरा पहिल कौर उठए चाहैत छलीह, मुदा फोनमे सुधार-पृष्ठ बंद होएबाक चिन्ह देखलनि। आवेदनक समयसीमा आज साँझ धरि छल। दोसर पृष्ठपर मृतकक नामपर निकसल दवाक रसीद छल; ओतय आवेदन संख्या अलग छल। नैरा दूनू संख्या नोट कएलनि। संयोग भऽ सकैत छल, साजिश सेहो; एखन जकर प्रमाण छल, ओ दू अलग लेनदेन मात्र छल।

“ई दवा कियो उठौने अछि,” नैरा कहलनि। “मात्र पर्ची बनल नहि। वितरणक समयो दर्ज छै।”

“उठौने व्यक्ति के?” सरिता पुछलनि।

“एहि प्रति मे नाम नहि छै। केन्द्रसँ प्राप्ति रजिस्टर माँगब पड़त।”

“तँ लिख—हमर पति दवा नहि उठा सकैत छलाह। ओकरा लेल जीवित घरवालीक मृत्यु बतबैत अछि कियो। दुनू बात अलग। नचेत ओ सभ एके झगड़ाक कागद बना देत।”

नैरा माइक बात लिखैत रुकलीह। सरिता गलतीक कारण नहि जनैत छलीह, मुदा गलतीक असर बुझैत छलीह। पति मृत मानल जाइत रहलाह तँ विधवाक अधिकार मिले; आब ओकरा जीवित करबामे असल मृत्युक इतिहास मिटि सकैत छल। स्वयं मृत घोषित रहलीह तँ रसोइक चाउर, उपचारक पंजी, घरक दाबी सभ प्रश्न बनि सकैत छल। कागदक उलटफेर पहिने जीविकामे उतरैत अछि।

नैरा बाहेर निकलि फोन लगभगे बिन आवाजमे मिलौलनि। सहायता-केन्द्रक स्वचालित वाणी पहिने भाषाक विकल्प सुनौलक। मैथिली चुनलापर पृष्ठ पर कहल गेल, “अधिकृत आवेदकक परिचय स्थापित नहि।” ओ सहायता-क्रमांक लिखि लेलनि। पुनः प्रयासमे अनुरोध दर्ज भेल, मुदा निस्तारणक समय देल नहि गेल।

द्वारक बाहर उषा चढ़ैत छल। गोदामक देवालक ओहिपार पानि ठाढ़ छल; बरसात पूरी तरह शुरू नहि भेल छल, तइयो एक ठाम पानि रुकि रहबाक आदत बनि गेल छल। नान्हि बाटे स्कूल जेबाक बच्चासभ ई पानिक चारूकात गोल घूमि रहल छल। नैरा कोनो अज्ञात निकासक कथा एखन नहि जोड़लनि। पहिने एतय देखल गील माटि छल, ओकर कारण अलग दिनक जाँच।

भितर घुरलापर देखलनि जे सरिता पुरान मृत्यु-पत्र पीतरक डिब्बासँ निकालि देलनि। कागदक तह खोलैत हुनक हाथ कँपल नहि, मुदा ओहि तहमे एकटा पीयर पड़ल फूलक पाकुड़ी अटकने छल। सरिता ओकरा उठौलनि, हथेलीपर राखलनि आ फेर डिब्बामे लौटा देलनि। नैरा किछु पुछलीह नहि।

“ई कागदक नकल बनाउ,” सरिता कहलनि। “मूल हमर लग रहत। अहाँ अपन फोनपर जे उतारलहुँ, ओकरा परत दर परत राखू। आ घरक पता सब जगह पठएबाक नहि।”

“अहाँ तँ अखनहि कहैत छलहुँ जे सूची सुधारू।”

“सुधारब आ सभकेँ देखाएब दू बात छै। तोरा जे देखबाक छै, ओ पहिने देख। संसारकेँ फेर देखा देबिहें।”

नैराकेँ उत्तर नीक लागल कि नहि, से ओ बुझि नहि सकलीह। ओकर ठेकाक काम लोकक पुरान लिखावट खोलब छल; माइक काम बहुत दिनसँ किछु नाम नीचाँ दबा कऽ राखबो रहल छल। एक्के घरमे दुनू काजक बीच भेद खिंचि रहल छल।

फकीरा अपन थारी समाप्त कऽ लाठी उठौलनि। “हमरा स्टेशनक दुपहरिया गाड़ी पकड़बाक अछि। बाट बन्द छै, मुदा समय बन्द नहि भेल। सँझा कहब जे केकर संग बात भेल।” नैरा हुनका रोकए चाहलनि, फेर हुनकर निर्णय सुनि चुप रहलि। रसीदक छाया प्रति बनएबाक अनुमति माँगि मात्र समय आ मुहर लिखलनि।

दरबज्जापर फकीरा हँसि कहलाह, “काकी, आब हम अहाँक घरक भातक दाम कोना लिखी? मृतकक नामपर लिखब तँ हमरा उधार फँसि जाएत।”

“जीवितक नामपर लिख,” सरिता कहलनि। “आ भात खाइला बाद देह तँ लागैत अछि ने?”

“खूब लागैत अछि,” फकीरा कहलाह। छड़ीक अग्रभाग एहि बेर हलुक टनकार देलक। ओ बाट नापैत चलि गेलाह।

नैरा मृत्यु-सूचनाक तस्वीर आ औषधिपर्चीक प्रति दू अलग सुरक्षित फोल्डरमे रखलनि। पहिलक नाम देलनि ‘माँ—जीवित उपस्थित’, दोसराक ‘बाबूक दवा—प्राप्तिक जाँच’। दुनूक तिथि अलग लिखलनि। फकीराक कथन तेसर नोटमे रहल, जकरा ओ एहि पहिल दू दस्तावेजक कारण नहि मानलनि।

सरिता एकटा पुरान कपड़ामे मोड़ल कागद चौकीक नीचाँसँ निकालि हथेलीमे घुमौने रहलीह। “काल्हि एक बात तोरा कहबाक अछि,” ओ बजलीह। “किछु नाम एहन होइत छै जकरा ठीक करैत लोककें सेहो बचाबय पड़ैत छै।”

नैरा कागद दिस हाथ नहि बढ़ौलनि। “आइ पहिने अहाँक नाम।”

“हँ,” सरिता कहलनि। “मुदा हमर नाम अकेले नहि फँसल छै।”

दुपहरिक रेलक सिटी फेर सुनायल। भातक हाँड़ी खाली भऽ चुकल छल; ओकर तलीमे कने चाउर लागल छल। सरिता ताहिमे पानि छोड़ि देलनि, जाहिसँ साँझ धोनाइ सहज होए। नैरा स्क्रीनपर ‘आवेदन प्राप्त’क संदेश देखलनि। एतबे निश्चित भेल जे सवाल दर्ज भऽ गेल अछि; सरिता जीवित छथि, एकर सरकारी उत्तर एखनहुँ नहि आयल छल।

घरमे तथापि चूल्हाक आगि छल, पानिक लोटा छल आ साँझ फेर रान्हबाक काज छल। सरिता हाँड़ी ओगरेबाक समय कहलनि, “जँ ओ सभ फेर कहए जे हम मरि गेल छी, तँ पूछिहें—एहि भातक हिसाब के दैत अछि?”

अध्याय २ • सत्ताइस नाम

आषाढक दोसर भोरमे नैरा उठलीह तँ रसोइक दरबज्जा आधा खुजल छल। भीतर सरिता चाउर नहि, कागद सुखा रहल छलीह। राति खिड़कीसँ उड़ल पानिक दू बूँद चौकीपर पड़ल छल। सरिता पुरान अखबार बिछा कऽ ओकर ऊपर एकटा मोड़ल पन्ना रख देने छलीह। चारू कोनपर पीतरक छोट-छोट बाटी उलटि राखल छल, जाहिसँ पन्ना उड़ि नहि जाए।

“एहिमे पानि लगल?” नैरा पूछलनि।

“ऊपरक कपड़ामे। लिखावट बचल छै।”

नैरा दरबज्जेपर ठाढ़ रहि गेलीह। काल्हि माए कहलनि जे आइ बात करतीह। आइ सरिता पहिने कागद बचा रहल छलीह।

“चाय पीबह कि पहिने एकर जाँच करबह?” सरिता पूछलनि।

“अहाँ पहिने चाय पी लिअ।”

“मुदा तोरा तँ एक्के बेरमे सभ बुझबाक जल्दी रहैत छह।”

नैरा मुस्कुरेलीह। सरिता ओहि मुस्कीकेँ उत्तर नहि मानलनि। लोटासँ पानि नापि चढ़ौलनि; अदरक कुटबाक समय दू बेर हाथ रोकलनि। चूल्हाक लकड़ी भीजल छल। घरक ओहि मामूली देरीमे नैरा अपना भीतर उठैत प्रश्नकेँ कने थामि सकलीह।

चाय बनि गेलापर सरिता पन्नाक ऊपरसँ बाटी हटौलनि। कागदक एक भाग गहूमक रङक छल, दोसर भाग धुँआसँ कारी। तीन ठाम तहक रेखा छल। पहिल पाँतपर कोनो सरकारी शीर्षक नहि, मात्र अपन हाथक लिखावट—सत्ताइस व्यक्तिनाम आ किछुक कातमे छोट चिन्ह। चारि नाम दोसर स्याहीमे लिखल छल। कतहु तिथि, कतहु प्रश्नचिह्न, कतहु खाली जगह। अन्तिम तहपर सरिता एकटा अलग छोट कागद रखि धागासँ बाँधि देने छलीह।

“ई कहाँसँ आयल?” नैरा पूछलनि।

“हम लिखने छी। एके दिनमे नहि।”

“ककर कहला पर?”

“पहिने अपना कहला पर। बादमे जे-जे कहलक जे ओकर बात नहि सुनल गेल, ओकर कहला पर।”

नैरा पन्ना उठए लेल हाथ बढ़ौलनि। सरिता बीचमे कहलीह, “एहि तहकें नहि खोलिहें।”

“किएक?”

“ओतय एक नाम छै। ओकरा पढ़बाक अधिकार तोरा जखन भेटत, तखन कहब। एखन ओकरा छपबाक अधिकार तँ ककरो नहि।”

“नाम नहि पढ़लासँ हम जाँच कोना करब?”

“छब्बीस नामसँ शुरू कर। एकटा नाम नहि पढ़लासँ तोहर आँखि बन्द नहि भऽ जेतौ।”

नैराकें ई बात अनुचित लागल। ओ पुरान अभिलेखक काम करैत छल, जाहिमे कोनो पाँति कपड़ासँ ढाँपि देल गेलापर शेष पन्ना परखब बेकार बुझाइत छल। मुदा माइक मुँह देखलनि। सरिता कोनो रहस्य सुनाबय लेल उत्सुक नहि छलीह; ओ ककरो बचाबय लेल अपन बेटीसँ अविश्वास सहबाक निर्णय कऽ चुकल छलीह।

“अहाँक पास मूल रहत?”

“हँ। तोरा एक नकल देब। मुदा तह बनल रहत।”

नैरा दुनू हाथ चौकीपर राखि कहलीह, “हम मानैत छी। जँ पन्नाक कातपर अहाँ अपन हाथसँ लिखि दिअ जे एक भाग अहाँक आग्रह पर बन्द राखल गेल अछि।”

सरिता चाय राखलनि। “एहन लिखलासँ की होयत?”

“काल्हि जँ कियो पूछत जे हम अपन मनसँ नाम नुकौने छी, तँ हम कहि सकब जे ई निर्णय ककर छल। आ जँ अहाँ बदलए चाहब तँ ओहो लिखल रहत।”

सरिता कने सोचलनि। फेर पन्नाक खाली पछिला भागपर लिखलनि—‘अन्तिम तह हमर कहला पर बन्द। एकरा खोलबाक निर्णय एखन नहि।’ नीचाँ तिथि लिखि अपन नाम देलनि। नैरा हुनका देखैत रहलि। काल्हि जकर जीवनक प्रमाण दोसर लोक माँगि रहल छल, आइ ओ अपन इच्छाक प्रमाण स्वयं लिखि रहल छलीह।

“एहि सत्ताइस नाममे सभ मृत छथि?” नैरा पूछलनि।

“नहि।”

“सभक कागद गलत अछि?”

“नहि। किछुक कागद ठीक छै; उपयोग गलत। किछुक नाम सही छै; सम्बन्ध गलत। किछु लोक अपन नाम बदलने छथि। किछुक नाम दोसर लोक बिना पुछने लिखि देलक।”

“तँ ई मृत्यु-पंजी नहि?”

“हम कोनो पंजीक मालिक नहि छी। ई ओहि कामक हिसाब छै जे पूरा नहि भऽ सकल।”

चाय ठंढा भऽ रहल छल। नैरा पन्नाक पहिल छब्बीस नाम एक-एक कऽ देखलनि। ओहि नामसभक अर्थ एक्के बेरमे हुनका नहि खुलल; कागद स्वयं लोकक जीवनी नहि छल। चिन्हसभक अर्थ ओ माइक सँ पुछलनि। एक छोट गोला बनल छल जहाँ सरिताकें सूचना आयल छल, दूहरा रेखा ओतय जहाँ कियो सुधार माँगने छल। काटल रेखा सुधार पूरा भऽ गेल, एकर चिन्ह नहि छल—ओहि पर विवाद छल।

“एहि नामक आगाँ काटल रेखा किएक?”

“हमरा कहने छल जे मामला बन्द। मुदा जे स्त्री सुधार लेल आयल छलीह, हुनका एक्को कागद नहि भेटलनि। तँ हम काटल रेखाक कातमे प्रश्नचिह्न लगा देलहुँ।”

“तखन अहाँ हुनकर नाम फेर पठौलहुँ?”

“ओ दिन नहि। कार्यालय बन्द भऽ गेल छल। अगिला सप्ताह हमरा ओतए जाय नहि देल गेल।”

“कियो रोकलक?”

“जे दरबज्जापर रहैत छल, ओ कहलक—आदेश छै। आदेश देखेनिहार दोसर कोठरीमे छल, मुदा ओ कोठरीक चाभी तकरा लग नहि छल। हमरा साफ-साफ बुझल नहि जे रोकनिहार के छल। तँ ककरो दोष मत लिखिहें।”

सरिताक ई सावधानी नैराकैँ अचरज देलक। बहुत दिनसँ ओ अपना काजमे सिखने छल जे प्रमाण बचाउ, अनुमान अलग राखू। मुदा माए एकरा बिना नाम देल, बिना प्रशिक्षणक, रोजी आ अपमानक बीच सिखने छलीह।

बाहर टीनक छज्जापर भोरक पानि टपकि रहल छल। पड़ोसक घरसँ बिटूक आवाज आयल—ओ स्कूलक कॉपी नहि भेटने छल। सरिता चौकीक नीचाँसँ ओकर काल्हि छूटल पेन्सिल निकालि दरबज्जापर रखि देलनि। “कहिहें, अपन वस्तु राति एतए छोड़ने छल। मुदा हमर नामपर नहि लिखिहें जे हम ओकर पढ़ाइ करैत छी।”

नैरा हँसि पड़लीह। “आइ सभ बातमे नाम।”

“किएक तँ नाम लिखैत लोक काज लिखब बिसरि जाइत छै।”

पन्नाक बीच एक पुरान छोट रसीद रखल छल। रसीदपर रकम नहि, प्रवेशक समय आ एक क्रमांक छल। कागदक कोन घिसल छल। नैरा पछलनि, “ई अहाँ राखने छी?”

“हँ। जे लोक अपन नाम कहबाक लेल तीन दिन आबैत रहल, ओकरा चौठा दिन प्रवेश भेटल। एतबे प्रमाण छै जे ओ दिन ओ भीतर गेल। ओकर बात सुनल गेल की नहि, ई रसीद नहि कहैत छै।”

नैरा ओकर तस्वीर लेबाक अनुमति माँगलनि। सरिता कहलीह, “नाम आ क्रमांक हमरा कापीमे उतारि दे। मूल रसीद एहि पन्नासँ अलग नहि करिहें।” नैरा लिखलनि। फेर ओ चिह्नसभक अर्थ अपन नोटबुकमे अलग-अलग पाँतमे उतारए लगलीह। जे बुझल, ओकर आगाँ ‘सरिताक कथन’ लिखलनि। जे नहि बुझल, ओकरा खाली छोड़लनि।

“ई पन्ना कतेक पुरान?”

“पहिल लिखावट पुरान छै। पछिला चारि नाम हालमे जोड़लहुँ। समयक हिसाब एकठाम लिखल नहि छल। एखन तोहर काम ओही हिसाबकैँ निकालब।”

“आ अहाँक काम?”

“जकरा बात देलियै, ओकरा बिना पुछने बेचब नहि।”

नैरा पन्ना फेर तकलीह। ओ अपन ठेकाक कामक समय अनेक अभिलेख जन-सुनवाईक लेल खोलने छल। सार्वजनिक कऽ देब प्रायः उचित लगैत छल, जँ कार्यालय

ओकरा नुकबैत हो। मुदा एहि पन्नामे ककरो घरक भीतरी बाट सेहो रहए सकैत छल। राज्यक गलत काम आ भयभीत व्यक्तिक निजता एक्के कागदमे लिखल हो, तँ ओकरा खोलबाक तरीका बदलए पड़त।

दुपहरि धरि नैरा छब्बीस पाँतिक अक्षर मिलौलनि। तीन ठाम एक्के नामक वर्ण अलग छल। ओहि भेदकँ एक व्यक्ति मानि मिलाबय लेल सरिता प्रमाण नहि देलीह। एक पाँतपर परिवारक सम्बन्धवला शब्द काटल छल, मुदा मूल नाम सुरक्षित छल। एतबे ठोस उत्तर भेटल जे कागद अपराधीसभक सूची नहि, अनेक प्रकारक गलती आ रोकल सुधारक कामक हिसाब छल। मुदा ई उत्तर सरिताक कहल बात आ लेखनपर आधारित छल; बाहरी पंजीसँ सत्यापन एखन बाकी छल।

दुपहरिक खाना बनबैत सरिता कढ़ाहीमे तेल कम देखलनि। “सँझा तेल आनय पड़त।”

“हम अनब। अहाँ अस्पताल नहि जाएब?” नैरा पूछलनि।

“हमरा अपन जीवित रहबाक सूचना लेल जाएब पड़त, नहि तँ दवाइक पुरान खाता बन्द भऽ जेतै। मुदा पर्चीपर जे दवा छपल छै, ओकर जाँच तू करिहें। दुनू काज फेर एक कऽ नहि देब।”

नैरा सहमति देलनि। ओ पिता सम्बन्धी पर्चीक फोटो माइक पन्नाक संग जोड़बाक बजाय अपन अलग फोल्डरमे राखलनि। सूची लेल तेसर फोल्डर बनौलनि, मुदा ओकर नाम व्यक्तिनामसँ नहि, केवल दिनक तिथिसँ रखलनि। फोनपर ककरो घरक पता आ पहिचान-संख्या स्वतः साझा होएबाक सुविधा बन्द कएलनि।

सरिता चूल्हासँ उठि अपन हाथक छाप देखलनि। “तोरा याद अछि, छोट रहबाक समय तू हमर हिसाबक बहिमे लाल फूल बनेने छलह?”

“ओहि कारण अहाँ तीन दिन हमरा कलम नहि देने छलियै।”

“कलम देलहुँ नहि, मुदा भात तँ देने छलहुँ।”

“फूलक नीचे कोनो नाम छिपल छल?”

“नहि। फूल बनल छल, एतबे। सभ पुरान चिह्न रहस्य नहि होइत छै।”

नैरा हँसलनि। भीतरक डर कने ढील भेल। माइक हर बातमे सुराग खोजबो ओहि तरहक अन्याय छल जाहिसँ ओ माइक लिखावट बचाबए चाहैत छलीह। दूनू किछु बेर तरकारीमे नून घटि-बढ़ि पर झगड़लीह। सरिता कहलनि जे नैराक हाथक भुजिया मेथीक बदला जाँचक गन्ध देत; नैरा जवाब देलनि जे प्रमाणक लेल सेहो नून चाही। ओहि हँसीक बीच जीवन अपन पुरान अधिकारसँ घुमि आयल।

भोजनक बीच संकेत दरबज्जापर आयल। सोलह बरखक संकेतक हाथमे पुरान मोबाइलक दूटा अलग खोल आ एकटा छोट पेचकस छल। काल्हि ओ सरितासँ कहलने छल जे खराब पड़ल फोनक बटन बदलि देत; आइ बटन मापि आनने छल। ओ नहि पूछलक जे घरमे ककर मृत्यु-सूचना पहुँचल अछि। पहिले फोनक पछिला ढक्कन खोलि टेबुलपर रखलक, फेर कहल, “ई बटन चलत, मुदा एकरा लगाबए सँ पुरान तस्वीर फेर नहि घुरत। तस्वीर अलग बचाओल होयत।”

नैरा ओकर हाथक काज देखलनि। “तू खराब फोनमे किछु सँचय लेल राखैत छह?”

“जे हमरा अपन अछि, से। दोसरक फोन हाथमे रहलासँ ओकर फोटो हमर नहि भऽ जाइत छै।” संकेत पेचकस घूमबैत कहलक। “स्कूलमे काल्हि सबहक समूह-तस्वीर पठा देल गेल। हमर किताबक पाछाँ लिखल नम्बर सेहो देखाइत छल। हम कहलियै, हटाउ। कहलनि, सब पठा रहल छै। तखन हम कहलियै, सभक करबासँ की ठीक भऽ जाइत छै?”

सरिता हँसलीह। “तोहर तर्कमे सँ गुरुजीक छुट्टी नहि होयत।”

“छुट्टी चाहीओ नहि। तस्वीरक पछिला भाग काटि कऽ फेर पठा देथि, एतबे चाही।”

नैरा अपना प्रतिलिपि दिस देखलनि। संकेतसँ ओ कोनो पन्ना खोलए नहि कहलीह। मात्र पूछलनि जे कागदक फोटोमे नाम नुकाबय लेल की करब ठीक। संकेत कहल, “जे भाग ककरो नहि देखाबय चाहैत छी, ओकर फोटो खिचबेसँ पहिने ढाँपि दिअ। बादमे कालिख पोतलासँ पुरान नकल कतए रहल, के जानत?”

ओ बटन लगाकऽ फोन वापस देलक। काजक बदला सरिता चाय देबाक लेल कहलनि, मुदा संकेत कहलक जे ओकरा विद्यालयक समय भऽ रहल अछि। ओ चाय नहि पीबि सकैत अछि; काल्हि गरम गुड़वला दूध पीत। सरिता बिना जिद कए मानि गेलीह। संकेत

चलि गेलापर नैरा कागदक तह दिस देखलनि। कोनो नकलक जाँच नहि, ककरो भेद नहि—मात्र अपन तस्वीरक बारेमे एक लड़काक असहमति घरमे रहि गेल छल।

भोजनक बाद सरिता मूल पन्ना फेर तह कएलनि। अन्तिम नाम ढँकल छोट कागद ओ नवल धागासँ बाँधलनि। नैरा चाहैत छलीह जे ओकर तस्वीर बने, मुदा सरिता मना कऽ देलनि। बेटी प्रतिलिपि बनौलनि—छब्बीस खुलल नाम, ओहिसँ जुड़ल चिन्ह, खाली छोड़ल सत्ताइसमी जगह। प्रतिक पछिला भागपर लिखलनि जे मूल सरिताक लग अछि आ अन्तिम नाम हुनकर स्पष्ट निर्देशपर गोपनीय अछि। दूनू तिथि लिखलनि; सरिता जे बात मुँहसँ कहलीह, ओकरा नैरा अपन हस्ताक्षरक नीचाँ ‘सुनल कथन’ कहि दर्ज कएलनि।

“एकरा के देखत?” सरिता पूछलनि।

“एखन हम। जँ ककरो मिलान लेल चाही, तँ नाम ढाँपि सवाल पूछब। अहाँक अनुमति बिनु मूलक तस्वीर नहि भेजब।”

“आ जँ ओहि बन्द नामक कारण कोनो निर्दोषपर आरोप लागि गेल?”

नैरा चुप भऽ गेलीह। पहिल बेर सरिता अपन बनाओल नियमक विरुद्ध स्वयं प्रश्न कएलनि।

“तखन हमरा फेर तोरा लग आबए पड़त,” सरिता कहलनि। “गोपन रखब कखनो-कखनो रक्षा छै। मुदा ओकरा अनन्त काल धरि धर्म नहि बना सकैत छी।”

एहि बातपर नैरा तुरन्त सहमति नहि देलीह। ओ एतबे कहलनि, “जाँचमे जकरा नुकसानक संकेत भेटत, ओकरा पहिने अहाँकँ बतायब। आ बिना प्रमाण ककरो दोषी नहि कहब।”

खिड़कीक बाहर रेलक गोदामक दीवालसँ सटि जलजमाव छल। दू बच्चा पानिमे कागदक नाव चला रहल छल। एक नाव जल्दी डूबि गेल; दोसर दीवालक कात घुमि गेल। सरिता खिड़की बन्द कएलनि। “ओतय गहिर पानि नहि, मुदा तलीमे काँच छै। बच्चासभकँ कहिहें जूता पहिरि कऽ खेलए।” नैरा बाहर जा कऽ कहि अएलीह। ओहि समय ओ देखलनि जे पानिक एक धार दीवाल दिस जा रहल छल, मुदा बाहर निकलबाक

बाट ओकरा नहि देखायल। ओ कारणक निर्णय नहि कएलनि; मनमे मात्र रखलनि जे मौका भेटलापर जगह देखत।

घुरलापर फोन बजल। अपरिचित अंक। नैरा सामान्य आवाजमे ‘हेलो’ कहलीह। पहिने रेलक सिटीक जकाँ दूरक कोनो ध्वनि सुनायल, फेर एक पुरुष-स्वर पूछलक, “कागद पहुँचि गेल?”

“अहाँ के?”

“जेकरा बात जनबाक चाही, ओकरा तक पहुँचि गेल छै। सरिताकें कहू, सत्ताइसवाँ नाम खुलल तँ हुनकर घरक चूल्हा बन्द करए मे देर नहि लागत। अहाँ दुनूकें बाटो सोचि कऽ चलबाक चाही।”

“अहाँ हमर नाम जानैत छी? ई धमकी देब किएक जरूरी बुझलहुँ?”

दोसर कात किछु क्षण मौन रहल। फेर आवाज आयल, “बुझदार छी तँ नामसभ नहि पठाउ।” फोन कटि गेल।

नैरा तुरन्त समय लिखलनि। जे सुनल, ठीक ओहि शब्दमे नोट कएलनि। अंक दिस फेर तकलनि; फोनपर नाम नहि छल। स्वरक पहिचान, ठाम, मकसद—कोनो बात निश्चित नहि। सरिता हुनक मुँह देखिते बुझि गेलीह जे किछु गड़बड़ भेल अछि।

“ककर फोन?”

नैरा शब्दशः सुनौलनि। सरिता बीचमे नहि रोकलनि।

“अहाँ हुनका चिन्हैत छी?”

“आवाजसँ नहि। एक बात बुझलहुँ—कागदक खबर ककरो लग छै। मुदा केकरा लग, ई जनबाक बाकी छै।”

“हम पुलिसकें सूचना देब,” नैरा कहलनि। “धमकीक शब्द ज्योंकात्यों। अहाँक पन्ना नहि।”

“हम रोकब नहि,” सरिता उत्तर देलनि। “मुदा अपन नामसँ हमर जीवित रहबाक आवेदनक नकलो सुरक्षित रखिहें। जँ कल्हि कियो कहए जे धमकी पाबनिहार मरल अछि, तँ हमरा फेर रसोइ देखए नहि पड़ए।”

नैरा पहिल बेर माइक डर साफ-साफ देखलनि। ओ डर बाहरक पुरुषस्वरसँ कम, कागदक भीतर कियो फेर हुनकर जिनाइ मेटा देत, एहि आशंकासँ अधिक बनल छल। ओ चूल्हाक लग बैसि माइक हाथ पकड़लनि। ओहि स्पर्शक कोनो सरकारी खाना नहि छल, मुदा नैराक अपन निर्णय ओहि क्षण बदलि गेल—जाँच बंद नहि करब, प्रकाशनमे जल्दबाजी नहि करब, आ धमकीकेँ अलग अपराध मानि लिखब।

साँझक तेल आनबाक थैली उठबैत सरिता कहलीह, “काल्हि फकीरा स्टेशनक खबर देताह। हुनका एहि पन्नामे मत जोड़िहें, जाबत हुनकर अपन बातक कारण नहि भेटए।”

“हम नहि जोड़ब,” नैरा कहलनि। “ओकर गेटक पास आ अहाँक सूची दू अलग बात छथि।”

सरिता मूल पन्ना पीतरक डिब्बामे रखलनि। डिब्बाक ढक्कन एखन पूर्ण बन्द नहि कएलनि; पहिने भीतरक फूलक पाकुड़ी सीधा कएलनि। नैरा अपन नकलक अन्तिम खाली जगहपर कोनो प्रश्नचिह्न तक नहि बनौलनि। सत्ताइस नामक संख्या पूरा छल, मुदा हुनकर लग छब्बीस नाम मात्र छल। ओहि अभावकेँ ओ प्रमाणक कमी कहि लिखलनि, कसूरक प्रमाण नहि।

बाहर रेल गेल। पानि दीबालक लग एखनहुँ ठाढ़ छल। घरमे साँझक चूल्हा जरल, आ नैरा बुझलनि जे एहि पन्नाक रक्षा करब स्वयं पन्ना नुकाएब मात्र नहि—जाहि लोकक नाम लिखल अछि, हुनका अपन जीवनपर फेर अधिकार देबाक कठिन काजक शुरुआत अछि।

अध्याय ३ • चौकक समय

रेल-चौकक चायवला तेसर बेर केतली उतारि रहल छल, मुदा फकीरा अपन गिलास एखन धरि नहि उठौने छलाह। भोरक पहिल गाड़ी गेलापर चौकमे जे निःशब्दता होइत छल, ओ पहिने रिक्त बुझाइत, फेर धीरे-धीरे ओहि रिक्ततामे लोकक काज सुनाइत छल—टोकरीक बँत खसकब, पहियाक कीचड़सँ छुटब, दूधक डिब्बाक ढक्कन बजब। फकीरा एहि सभ आवाजक बीच अपन दिनक बाट जोड़ैत छलाह। आइ एक आवाज कम छल। रेलक सेवा-द्वारपर लटकल लोहेक कड़ी रातिएसँ खोलल नहि गेल छल।

“चायमे चीनी कतेक?” दुकानवला पूछलक।

“जे दाममे भेटत, ओतबे। मुदा दाम पहिने कहिहें।”

“आइ तों फेर हिसाब शुरू कऽ देलह।”

“तोहर हिसाब ठीक रहैत छै, तखनहि तँ पुछैत छी। जे हिसाब ठीक नहि रखैत छै, ओ बिना पुछने हथेली पसारि दैत छै।”

दुकानवला हँसल। फकीरा दू सिक्का गनलनि। पहिल गिलासक दाम देलनि, दोसर लेल हाथ नहि बढ़ौलनि। हुनकर दिनक कमाइ तीन काजसँ चलैत छल—चौकपर अनजान यात्रीकेँ बसक समय बतायब, पोटली उठाएबाक बदला भेटल मेहनताना, आ कखनो कोनो चिन्हल लोकसँ माँगल सहायता। एहि तीनूकेँ ओ एक नाम नहि दैत छलाह। भीख माँगब हुनकर अपमान नहि छल; मुदा जे काजक बदला पैसा भेटल, ओकरा दया कहि हिसाबसँ हटाएब सेहो हुनका स्वीकार नहि छल।

दुकानक बाँसक खम्भामे हुनकर दिनक एक पुरान तालिका खोंसल छल। भोरक गाड़ी, बाजारक पहिल बस, तिलवाह पारक नाव, अस्पताल दिस चलनिहार छोट वाहन—समयसभ ओ कागदपर मोट अक्षरमे लिखबौने छलाह। किछु तिथि काटल छल, किछु बदलल। आइ पुरान तालिकाक दू समयक बीच एक नवल प्रश्न जोड़ए पड़त—सेवा-द्वार खुलत कखन?

काल्हिक हारल कमाइ हुनका हिसाबमे साफ छल। दुपहरिया गाड़ीसँ उतरनिहार एक परिवारक बोरिया लेल ओहि दिन हुनका पाँचटा सिक्का भेटबाक छल, मुदा गाड़ी छूटल तँ

परिवार स्वयं आन रास्ता पकड़ि लेलक। हुनका एहि बातक रोष नहि जे परिवार प्रतीक्षा नहि कएलक। रोष एहि बातक छल जे गेट बन्द करनिहार लोक कहैत छल—“अहाँ बिना काजे चौकपर बैसैत छी।” चौकपर बैसबो ओ काजक एक हिस्सा छल। अजनबीकें गाड़ी बदलबाक बात बुझेनिहार कियो निश्चित दुकानक नौकर नहि छल; जखन कियो गलतीसँ नदी दिस जेबाक बदला अस्पताल दिस चलि दैत छल, तखन ओकर आधा दिन फँसि जाइत छल।

आइ चाय-दुकानक बाहर एक जवान अपन माइक हाथ धेने घबराएल ठाढ़ छल। ओ नदीपारक हाट पूछैत छल, मुदा बड़ आवाजमे ट्रेनक नाम दोहरा रहल छल। फकीरा ओकरा पुछलनि, “तू हाट जेबह कि प्लेटफॉर्म?” युवक कहलक, “हाट, मुदा रेलवे चौकसँ।” फकीरा बाट बुझौलनि—एहि मोड़पर धानक गोदाम, तकर बाद चौराहा, फेर पानिक कात हीराक नावक प्रतीक्षा। ओ साफ कहलनि जे पानि बढ़ि रहल अछि, तें समय बदलि सकैत अछि। युवक खुशीसँ एक सिक्का देबाक लेल हाथ बढ़ौलक। फकीरा सिक्का लेलनि आ कहलनि, “हुनकर हथेली छोड़ि नहि दिहें। उतरबाक सीढ़ी गील अछि।” युवक माइक हाथ आर मजगूतिसँ पकड़लक। फकीरा यात्राक मार्ग जनैत छलाह, मुदा ओकरा चलब कतेक कठिन अछि, से हुनका दोसराक देहसँ सीखब पड़ैत छल।

उतरल लोकक चलन, टोलाक बोली आ सस्ताक समयमापन ओहि चौकमे दिनहुँ बदलैत छल। कियो फकीराकें ठीक नामसँ बजबैत, कियो एक नामक बदला समुदाय-पंजीक चारि उपाधि जोड़ि दैत। फकीरा कखनो बहस कऽ थाकि जाइत छलाह, कखनो हँसि बात काटि दैत छलाह। मुदा जे बेर हुनकर प्रवेश-पासक कागद बनेने छल, ओ स्वयं कहने छलाह—एकटा नाम लिखू। कागद बनलापर हुनका लागल छल जे हुनकर बाट निश्चिन्त भऽ गेल। आइ ओहि कागदक बिना हुनकर परिचय गेटपर अपरिचित भऽ गेल छल।

काल्हि फकीरा दुपहरिया गाड़ी पकड़बाक लेल गेल छलाह। चौकीदार भीतर नहि जाएबाक कहलने छल। फकीरा साँझ धरि दू चक्कर लगा कऽ अन्तमे नदीक कच्चा बाटे घर घुरलाह। सरिताक घरमे ओ जे खबर देबाक वचन देने छलाह, से पहुँचि नहि सकल।

रातिमे घुटना दुखलासँ पयर परसँ कम्बल हटए नहि सकलनि। आइ ओ वचन पूरा कऽ फेर चौक आबि गेल छलाह।

सेवा-द्वारपर नवल पहरेदार बैसल छल। ओ फकीराक छड़ी देखिते कहलक, “बाबा, उधर नहि। आजु फेर निषेध छै।”

“कते बजे धरि?”

“व्यवस्थासँ पुछू।”

“व्यवस्थाक घड़ी कतय टाँगल छै?”

पहरेदार किछु झुँझलायल। “पास चलैत नहि छै। प्रवेश चाही तँ सुविधा-शुल्क दिअ।”

“कतेक?”

ओ रकम कहलक। फकीरा हाथक सिक्का नहि निकाललनि। “रसीद?”

“छोट-मोट बातक रसीद कियो लैत अछि?”

“रकम छोट रहए सकैत छै। बाट छोट नहि होइत छै। तोहर नाम लिखि लिअ?”

पहरेदार अपन नाम कहबाक बदला बगलक खिड़की दिस इशारा कएलक। फकीरा ओकर आवाज, खिड़कीक ठाम आ समय स्मृतिमे राखलनि। ओ ककरो चोर कहि नहि रहल छलाह। बिना रसीद माँगल पैसा प्रवेशक सरकारी शुल्क छी कि ककरो अपन माँग, से जाँचबाक छल।

खिड़कीपर लम्बा पाँति छल। कियो रेलक बोरा लादबाक अनुमति लेल, कियो माछक टोकरी आनबाक बाट लेल, कियो रोगी-वाहनक समय लेल आयल छल। फकीरा सबसँ पाछाँ ठाढ़ भेलाह। आगेक स्त्री अपन बच्चाकेँ काखसँ नीचाँ उतारि पियर चप्पल पहिरबैत छलीह। बच्चा फकीराक छड़ी दिस हाथ बढ़ौलक। “एहि लकड़ीमे घंटी किएक नहि?” ओ पूछलक।

“घंटी रहत तँ लोक हमर बात सुनबाक बदला घंटी सुनत,” फकीरा कहलाह। बच्चा हँसल; ओकर माय सेहो। पाँति एक पयर आगाँ बढ़ल।

खिड़की भीतरक कर्मचारी पुरान पास अपन यन्त्रक सामने रखलक। एक बेर संख्या लिखलक, फेर फकीराक नाम पुछलक। “फकीरा,” उत्तर आयल।

“आओर नाम?”

“हमर परिचय-खातामे जे छी, से पढ़ि सुनाउ।”

“एतए तीन नाम मिलैत अछि। ककरो आगाँ साई, ककरो आगाँ दीवान, ककरो मदार लिखल छै।”

“तीनू नामकँ एक लोक नहि बनाउ। जे कागद हमर, तकर संख्या मिलाउ। नाम हम कहि देने छी।”

कर्मचारी दोसर खिड़कीसँ एक पुरान पंजी मँगौलक। फकीरा खिड़कीक लकड़ीपर हथेली रखने छलाह। आखिर भीतरसँ आवाज आयल, “एहि संख्याक यात्रा-अनुमति निष्क्रिय अछि। सम्बद्ध जीवन-खाताक स्थितिमे मृत लिखल छै।”

फकीरा पहिने कागद माँगलनि। कर्मचारी स्क्रीन दिस इशारा कएलक। “बाबा, एहिमे लिखल छै।”

“देखा कऽ हम पढ़ि नहि सकब। अहाँ पढ़ि सुनौलहुँ, से हम सुनलहुँ। आब जे कागदपर लिखि देब, से हम आन ठाम देखा सकब।”

कर्मचारी कने चुप रहल। बाहरक पाँति बढ़ि रहल छल। ओ छोट पर्ची निकालि यात्रा-अनुमतिक संख्या, वर्तमान स्थिति आ खिड़कीक समय लिखलक। फकीरा दोबारा कहलनि, “मृत लिखल अछि, से सेहो लिखू। काल्हि कोनो लोक कहत जे अहाँ मात्र पासक तारीखक बात कहलहुँ।” कर्मचारी ओ शब्दो जोड़ि देलक, मुदा नीचाँ लिखलक —‘मूल प्रविष्टिक सत्यापन शेष’।

पर्ची हाथमे अएलापर फकीरा ओकरा तह नहि कएलनि। “हम जीवित छी, ई बात एहि खिड़कीसँ नहि खुलत। मुदा जँ गलतीक आधार एतए सँ शुरू होइत छै, तकर लिखित पता आब भेटल।”

“एखन पार जेबाक रास्ता बन्द नहि,” कर्मचारी कहलक। “नदीक कातसँ घूमि जाइत रहू।”

“घूमबामे कतेक समय लगैत छै?”

“हमरा नहि मालूम।”

“तँ हमरा लेल ओ बाट बराबर कोना भऽ गेल? हमर पयरक दूरी, यात्रीक गाड़ी आ कमाइक घड़ी ककरो कागदमे पड़त कि नहि?”

कर्मचारी ई प्रश्नक उत्तर नहि देलक। मुदा फकीराक आग्रहपर आवेदनक समय लिखि एक प्रवेश-अंक देलक। शिकायत पहिल बेर खिड़कीक बाहरक आवाजसँ भीतरक पंजीमे पहुँचल। पास ओहिसँ नहि खुलल, मुदा शिकायतकँ अब मुँहसँ नकारब कठिन छल।

दुपहरिसँ पहिने फकीरा तिलवाह दिस उतरलाह। नदीक कछेरमे हल्ला छल। माछक टोकरी अननिहार दू आदमी नावक लग ठाढ़, आ किछु यात्री जल्दीसँ पार जएबाक लेल आग्रह कऽ रहल छलाह। हीरा मलाह नावक पाछाँ झुकि एक लम्बा बाँस पानिमे उतारि रहल छलाह। बाँसपर गाँठक लग अलग-अलग रंगक चिह्न छल; ओ सब रंग सजावट नहि, हुनकर अपन माप याद रखबाक उपाय छल।

“हीरा, आइ आवाज देरीसँ दैत छी,” फकीरा कहलक।

“पानि पहिने सुनैत छी,” हीरा उत्तर देलनि। “आजु उजानक बल काल्हिसँ अलग छै। नाव जल्दी छोड़ब तँ बीचमे पछताएब।”

फकीरा किनारक सूखल पट्टीपर छड़ी टिकौलनि। हीरा बाँस तीन ठाम डुबौलनि। पहिल ठाम तल जल्दी भेटल; दोसर ठाम एकाएक गहिराइ बढ़ल; तेसर ठाम किछु खसकबाक आवाज आयल। ओ फेर जाँचलनि। “एतय माटि सरकल छै,” ओ कहलनि, “मुदा सुनल आवाजसँ एकर थाह नहि गनब। बाँस जे कहैत छै, ओहि अनुसार नाव मोड़ब।”

“अहाँक बाँस कतेक पुरान?” एक यात्री पूछलक।

“पुरान रहलासँ सही नहि भऽ जाइत छै,” हीरा कहलनि। “रंगक चिह्न हम काल्हि फेर मिलौने छी। बाकी धार आइ बदलल अछि।”

किनारपर ढेरी कएल दू बोरा नावमे रखबाक लेल लोक आग्रह कऽ रहल छल। हीरा एक बोरा उतारि देलनि। “एहि खेपमे एते भार नहि,” ओ साफ कहलनि। “जे पार पहुँचत, ओकर कमाइ बचत। जे पानिमे खसत, ओकर सामानक दामसँ देह वापस नहि आओत।” बोरा मालिक भुनभुनायल, मुदा अपन सामानक आधा भाग अलग रखलक। नाव

चललापर पानि दू किनारक एक्के गति नहि देखबैत छल। भाठक चक्कर दूरसँ समतल लागैत छल, मुदा हीराक पतवार ओतय धीमे पड़ि जाइत छल।

नदीक कात अपन-अपन कामक अलग घड़ी छल। माछक टोकरीक लेल भोरक पहिल खेप मूल्यवान, खेत जएनिहार लोक लेल घाम चढ़बासँ पहिने पार उतरब जरूरी, आ रोगी लेल कखनो साँझक अंतिम नावो बहुत देरि। नाविक सभक समयक रखवाला नहि बनि सकैत छलाह; सुरक्षित नाव चलएबाक निर्णय तइयो हुनकें लेबाक पड़ैत छल। एक स्त्री अपन ढाकल टोकरी सावधानीसँ नीचाँ रखि हीराकें पूछलक, “हमर बेचबाक समय छुटि रहल छै। दोसर नावक व्यवस्था किएक नहि?” हीरा कहलक, “दोसर नावक मालिककें बोलब, मुदा आब जे थाह बदलल छै, ओकरा सेहो देखए पड़त।”

ओ स्त्री फकीराकें तकि कहलीह, “हम सभ दिन देरी करैत छी, तखन बाजारक लोक कहैत छै—दाम घटाउ। देरी हमर बनाओल नहि, घाटमे गेल समयक हिसाब के राखत?” फकीरा पहिल बेर ओहि प्रश्नक उत्तर अपना मामिलासँ बाहर सोचलनि। ओ हरेक बेर अपन कमाइक समय लिखैत छलाह, मुदा घाटपर प्रतीक्षा करनिहार आन लोकक समयक कोनो साझा हिसाब नहि छल। ओ कहलनि, “अहाँ सभ मिलि एक दिन लिखू, जहिया कतेक बेर नाव रोकल गेल आ किएक। सुरक्षित जाँचक समय काटि नहि सकैत छी, मुदा घाटपर लेल गेल बेजा रोकक समय तऽ पूछल जा सकैत छै।” स्त्री कहलीह, “पहिने खरीदनिहार हमरा हिसाबक कागद देखबासँ मना करत।” हीरा सुनैत छलाह; ओ स्वीकार कएलनि जे नावक ओरसँ चलल समय ओ लिखि देताह, मुदा बाजारमे भेटबाक दाम तय करब हुनकर अधिकारमे नहि।

ओतहि एक छोट लड़का बालुमे लकड़ीसँ नाव बनबैत छल। ओ अपन नावक चारू कात पटरी खींचि कहलक, “ई रेल छै आ ई पानि। दुनू एक संग चलत।” फकीरा ओकर बनाओल रेखापर छड़ी नहि फेरलनि। ओ बच्चाकें केवल एतबे कहला जे बड़ नावमे चढ़बाक बेर खेलक नावक हिसाब नहि चलैत अछि। लड़का हँसि अपन रेखा मेटा देलक। पानि कातमे आयल तँ बालुक पटरी स्वयं टुटि गेल। फकीरा एहि दृश्यकें कोनो भविष्यक चिन्ह नहि मानलनि। बच्चा अपन खेल बनबैत आ मेटबैत छल; एहि दिनक ओहि छोट स्वाधीनतामे किछुओ असामान्य नहि छल।

फकीरा एखन पार नहि गेलाह। ओ हीराक लौटबाक प्रतीक्षा कएलनि। पहिल खेपक पाछाँ एक वृद्धा बैसल छलीह, जिनका रेल-चौकसँ औषधि अनबाक छल। फकीरा हुनका कहि देलनि जे भीतरक सेवा-द्वार बन्द अछि; नदीक बाट खुलल अछि, मुदा घूमिकऽ जएबाक समय लगत। ओ हुनका कोनो निश्चित अवधि नहि बतौलनि, कारण मार्गक नाप ओ स्वयं एखन नहि जाँचने छलाह। वृद्धा कहलीह, “बेटा, समये तँ औषधि होइत छै कखनो।” फकीरा सुनलनि, मुदा बनावटि आश्वासन नहि देलनि।

हीरा घुरलापर फकीरा हुनक नावमे चढ़लाह। नावक किनारपर हाथ रखिते हुनका पुरान लकड़ीक एक चिक्कन जोड़ भेटल। “ललितक मरम्मति?” ओ पूछलनि।

“नहि, ई हमरे लगबाओल पुरान पट्टी छै। ललित अगिला सप्ताह आगाँक फलक देखताह,” हीरा उत्तर देलनि। “सभ जोड़ एक्के हाथक नहि।”

फकीरा हँसलाह। “कागदमे जेना सभ नाम एकहि आदमीक मानि लेलक।”

“की भेल?”

“एक खिड़की हमरा मृत कहैत छै। मुदा तोहर नाव एखन भाड़ा माँगैत छै।”

हीरा चौंकि हुनका तकलनि। “पासक बात?”

“पास बन्द भेल, एतबे काल्हि बुझल छलहुँ। आइ कागद भेटल जे सम्बन्धित जीवन-खातामे मृत लिखल छै। गलती कोना भेल, से एखन नहि जानैत छी।”

हीरा फकीराकेँ बेसी प्रश्न नहि पुछलनि। ओ कहि देलनि जे घाटपर आवक-जावकक समय लिखनिहार अपन पुरान बहीमे फकीराक कतेको यात्राक हिसाब राखने अछि। मुदा ओ बही जीवन-खाताक सुधार नहि कऽ सकैत अछि। “तोहर पार जेबाक गवाही हम देब,” ओ कहलनि, “मुदा जखन-जखन देखलहुँ, तखने-तखनेक। जे दिन नहि देखलहुँ, ओकर शपथ नहि।”

ई सुनि फकीरा सन्तोषसँ माथ हिलौलनि। “एतबे चाही।”

पारक घाटपर उतरि दुनू कने देर ठाढ़ रहलाह। हीरा पानिक कात बनल नवल कटान देखौलनि। फकीरा माटिक नरम भागपर छड़ीक आगाँ लगौलनि। जे धरातल काल्हि ठोस छल, ओ आइ पयरक भारपर धँसि रहल छल। किनारक एक भागपर कियो बाँस गाड़ि

अपन घाट चिन्हबैत छल; दोसर कात पुरान पैदल बाट पानिमे समा गेल छल। फकीरा पुछलनि जे ओ बाँस सार्वजनिक उतरबाक बाटमे लगाओल गेल अछि कि ककरो निजी पट्टाक सीमा बताबैत अछि। हीरा कहलनि, “अलग-अलग लोक अलग बात कहैत छथि। हिसाबक प्रति देखबाकें पड़त।” ओ दुनू कियो बाँस उखाड़लनि नहि।

गामक दिससँ आबैत छोट वाहनक चालक फकीराकें चिन्हि हॉर्न बजौलक। फकीरा गिनलनि—नदीक पहुँच धरि पैदल बाट, नावक प्रतीक्षा, पारक चढ़ाड़, फेर वाहन धरि दूरी। आजुक अनुभवमे घड़ीक समय मात्र नहि, पयर आ जोखिम सेहो छल। ओ अपन तालिकामे ‘दूसर बाट उपलब्ध’ लिखि देबासँ रोकबाक निर्णय कएलनि। उपलब्ध बाट सभ लोक लेल एके तरह उपलब्ध नहि होइत अछि।

दुपहरिक घाम कम भेलापर नैरा चौकपर भेटलीह। फकीरा हुनका काल्हिक वचन नहि निभा सकबाक बात पहिने कहलनि। नैरा हुनकर हाथमे नवीन पर्ची देखलनि। “अहाँक अपना नामपर मृत लिखल अछि?”

“खिड़कीक कर्मचारी पढ़ि सुनौलक; फेर एहि प्रति पर लिखलक। अपन आँखिसँ कागद देखबाक दाबी हम नहि करब।”

नैरा हुनक अनुमतिसँ पर्ची पढ़लनि। मूल स्थितिक शब्द, आवेदनक अंक आ समय साफ छल। ओ पूछलनि, “ई प्रति हम उतारि सकैत छी?”

“उतारू। मुदा हमर यात्राक समय आ शिकायतक बात राखू। हमर नाम सभ खाता जोड़बाक चाभी नहि।”

नैरा कागदक संख्या नोट कएलनि। सरिताक मृत्यु-सूचनाक अंकसँ ई अलग छल, सेवा-द्वारक यात्रा-पंजी सेहो दोसर छल। समान ‘मृत’ शब्द देखिते दुनूकें एक अपराधक सूत्र मानब सहज छल। ओ अपन नोटमे साफ लिखलनि—‘फकीराक यात्रा-अनुमति; सरिताक जीवन-सूचना; सम्बन्ध अप्रमाणित’।

“अहाँ हमरा संग केन्द्र चलब?” नैरा पूछलनि।

“चलि सकैत छी। मुदा पहिने हम जे बात कहब, ओ लिखू।”

नैरा नोटबुक खोललनि। फकीरा काल्हि सुनल रोक, आइ माँगल बिना रसीदक शुल्क, खिड़कीपर सुनल ‘मृत’ आ हीराक देखल यात्रा चारि अलग प्रसंगमे कहलनि। बीचमे जँ ओहि पहरेदारक मंशा अनुमान करबाक बात आयल तँ स्वयं रोकलनि। “एखन ओकर माँग लिखू, अपराधक नाम नहि।” नैरा हुनक कथनक आगाँ ‘फकीराक गवाही’ लिखलनि; अपन देखल नवल पर्चीक विवरण अलग राखलनि।

दूनू सेवा-केन्द्र पहुँचलाह। खिड़की बदलि गेल छल। नवल कर्मचारी पर्चीक अंक देखलक। फकीरा विनती नहि कएलनि; ओ अपन यात्राक नुकसानी गनौलनि। “काल्हि दुपहरिया गाड़ी छुटल। आइ दू बेर नदी पार भेलहुँ। बिना रसीदक पैसा माँगल गेल। जँ अहाँक नियम बदलल अछि, लिखि दिअ। जँ हमर खातामे भूल अछि, सुधारक समय दिअ।”

कर्मचारी फाइल पलटि एक अस्थायी जाँच-पर्ची देलक। एहि पर्चीसँ मृत-स्थिति नहि बदलल, रेलक भीतरक सेवा-द्वारो स्वतः नहि खुलल। मुदा आगाँक सुनवाईक तिथि आ वैकल्पिक प्रवेशक लेल सम्बन्धित अधिकारीक नाम लिखल गेल। फकीरा पर्ची नैराकें पढ़ि सुनाबए कहलनि। “एहि पर कतहु लिखल छै जे हम रोजी छोड़ि घर बैसू?” ओ पुछलनि। नैरा ‘नहि’ कहलनि। “तखन हम काल्हि फेर अपना समयपर चौक आएब।”

साँझे चाय-दुकानपर फकीरा पुरान तालिकाक नीचाँ नव पाँति जोड़लनि—‘सेवा-द्वारः अनुमति विवादित; नदीक बाटः धार आ भार पुछि पार करू।’ ओहि पाँतिक कात अपन नाम नहि लिखलनि, कारण तालिका सभ यात्रीक उपयोग लेल छल। दुकानवला चाय भरैत कहलक, “आब तँ बाबाक मृत्युको रसीद भेटि गेल!”

“नहि,” फकीरा हँसलाह, “मृत लिखबाक रसीद भेटल। जिनाइक तँ हमरा एखनहुँ भाड़ा देबए पड़ैत छै।”

गिलासक गरमी हुनकर अँगुरीमे उतरल। चौकपर लोक अपन-अपन बाट पकड़ि रहल छल। नदीक ओहिपार हीराक नाव फेर किनार लगैत छल; पटरीपर अगिला गाड़ी आबबाक ध्वनि उठि रहल छल। फकीरा अपन सिक्का गनलनि, चायक दाम चुकौलनि, आ काल्हिक पहिल गाड़ीक समय दुकानक बाँसमे सीधा कएलनि। हुनकर शिकायतक उत्तर

एखन नहि भेटल छल, मुदा दिनक घड़ी दोसरक दयापर छोड़ि देबाक ओ निर्णय नहि
कएलनि।

अध्याय ४ • नदीक पहिल घर

हस्तिनापुरक पुरान समयमे यमुनाक घाटपर भोरक नाव छोड़बाक पहिने सत्यवती अपन पिताक माछक टोकरिसभ खोलि देखैत छलीह। रातिक ठंढा पानिमे राखल माछ ऊपरसँ ताजा लागैत छल, मुदा नीचाँक ढेरीमे दूटा बिगड़ि गेल छल। ओ दुनू अलग कऽ देलनि। कच्चा माछक दाम ओकर आँखिक चमकसँ नहि, ओकर देहक वास्तविक अवस्थासँ तय होयबाक चाही—ई बात हुनकर पिता हुनका बचपनमे सिखौने छलाह।

किनारपर बैसल पिता काठक छोट गोटी आगाँ-पाछाँ करैत छलाह। गोटी गिनतीक छल: जालक मरम्मति, नाविकक हिस्सा, बजारधरि ढोएनिहारक देय आ घरक अन्न। नाव ओही परिवारक कमाइक साधन छल, मुदा नदी हुनकर बपौती नहि। पानि घटलासँ घाट बदलैत, धार तेज भेलासँ दिनक खेप छुटैत, आ राजपुरुषक सवारी अएला पर साधारण यात्रीकेँ प्रतीक्षा करबाक पड़ैत छल। प्रतीक्षा करनिहार सभक नाम पिता नहि जनैत छलाह; हुनकर छूटल कमाइ, तथापि, एहि गोटीसभमे कोनो ठाम नहि लिखल जाइत छल।

सत्यवती अपन छोट भाइक लेल अलग राखल जालक गाँठ जाँचलनि। राति ओकर अँगुरी कटि गेल छलैक; घायल हाथसँ गाँठ कसैबामे जाल फाटि सकैत छल। ओ अपना हाथसँ टूटी कड़ी जोड़ि देलनि, मुदा भाईक नामक आगाँ कामक पूरा हिस्सा लिखलनि। पिता कहने छलाह जे परिवारमे काज कएलाक अलग मजदूरी कोन गनना। सत्यवती उत्तर देने छलीह, “आजु हम जाल जोड़ैत छी, काल्हि ओ नाव खेओत। जे काज भेल, ओकर नाम नहि रहत तँ बादमे केकरा याद पड़त?” भाइकेँ एहि वचनमे गौरव नहि, छोट आश्वासन भेटल छल। आइ ओ अँगुरीपर बान्हल पट्टी देखबैत एकटा ठेठ मुस्की देलक। विवाहक प्रस्ताव धरि पहुँचल एहि परिवारमे छोट-छोट जीवन एखनो अपन गतिकेँ नहि छोड़ने छल।

“आजु नाव पार लऽ जएबाक छै?” सत्यवती पूछलनि।

“पहिने बजारक लोककेँ पहुँचा। फेर खबर आएल अछि जे राजाक लोक फेर बात करए चाहैत छथि।”

सत्यवती माछक ढक्कन धेलनि। शान्तनुक पहिल आगमन ओ स्मरण करैत छलीह—
नदीक गन्ध, नावक हिलकोर, आ सामने बैसल एक एहन पुरुष जे प्रश्न पुछैत छलाह मुदा
उत्तर देनिहारक समयक मोल नहि बुझैत छलाह। हुनकर प्रति आकर्षण सत्यवती
अस्वीकार नहि करैत छलीह। मुदा आकर्षण आ विवाहक शर्त एक्के बात नहि छल।

पिता गोटी एक ढेरीमे सरकौलनि। “राजघरानामे जाएब तँ तोरा दुःख कम होएत।”

“हमर दुःख कम होएत की हमर नाँव अपन घाटसँ छूटत?”

“दूनु बात भऽ सकैत छै।”

“तखन दूनु अलग-अलग कहू।”

पिता कछेरक ओहि कात ताकलनि जतए नाव बाँधबाक पुरान खूँटा दू बेर बदलब पड़ल
छल। “बड़ घरक लोक जे हम सभक बेटीकेँ अपन घर लऽ जाए चाहत, ओहि बातक
अपमान नहि करबाक चाही,” ओ कहलाह। “मुदा जँ भोरक नदीमे तोरा कियो नाविकक
बेटी कहि चिन्हैत अछि आ साँझ राजमहलमे ओहि पहचानकेँ नुकाएब जरूरी ठहरत, तँ ई
केहन मान?” पिता बेटीकेँ पुरस्कारक वस्तु नहि मानैत छलाह; मुदा राजसत्ताक निकट
पहुँच हुनकर गणनामे भारी छल। सत्यवती हुनकर ई इच्छा सुनलनि।

पिता बेटीकेँ तकलनि। ओ अपन लेल राज्य नहि माँगि रहल छलाह। हुनकर चिन्ता
ओहि सन्तानक भविष्यसँ छल जे सत्यवतीक होएत, आ ओहि घरक सम्मानसँ छल जे
जालक गन्धक कारण राजसभामे तुच्छ मानल जा सकैत छल। मुदा बेटी अपन बात
जोड़लनि: “हमर सँ पुछने बिना हमर सन्तानक अधिकारक सौदा होएत तँ ओकर बोझ
हमरे देहपर रहत। आ जँ अहाँ सभ हमर घरक कमाइ बन्द मानि लेलहुँ, तँ एहि नावपर
काज करनिहारक हिस्साक की होएत?”

ओ पिता दिस एकटा टोकरि बढौलनि। “एहिमे आजुक खेप छै। ककरो राजकाजक
बातसँ एकर दाम नहि घटत।”

ओहि घड़ी दूरसँ घोड़ाक पयर सुनायल। देवव्रत नदीक बाटे आबि रहल छलाह। हुनका
लग राजाक इच्छाक समाधान करबाक सामर्थ्य छल; एहि सामर्थ्यक साथे ओहि

कठिनाईक आरम्भ सेहो छल जेकर मूल्य हुनका अपन जीवनसँ देबाक पड़त। सत्यवती उठि कऽ ठाढ़ भेलीह, मुदा पिताक पाछाँ नहि नुकैलीह।

देवव्रत प्रणाम कएलनि। पिता अपन शर्त कहलाह। राजसिंहासन पर सत्यवतीक सम्भावित सन्तानक अधिकार सुनिश्चित होए। देवव्रत उत्तर देबाक पहिने कने चुप रहलाह। ओ अपन वंशक ऋण, पिताक इच्छा आ भविष्यक राजधर्म एक संग देखैत छलाह। हुनकर सामने एहि घरक नाव सेहो छल—एहन नाव, जे एक दिनक कमाइ छुटलासँ घरक भात घटा दैत छल।

“अहाँ जे वचन देब,” सत्यवती कहलनि, “ओ अपन जीवनक दामपर देब। हमरा एहन वचनक गौरव नहि चाही जेकर भार कोनो दोसरक मुँह बन्द करा दे।”

देवव्रत हुनका दिस देखलनि। “तखन अहाँ की चाहैत छी?”

“हमरा अपन बात कहबाक स्थान चाही। हमर सन्तानक भविष्य पर छल नहि होअए। आ नदीक एहि घरकें राजमहलमे पहुँचलाक बाद अपमानक कारण नहि बनाओल जाए।”

पिता किछु कहए चाहलनि, फेर चुप भऽ गेलाह। पुत्रक अधिकार पर राजवंशक वचन देब सहज नहि छल। देवव्रतक आगाँक प्रतिज्ञा हुनका असाधारण प्रतिष्ठा देत, मुदा ओहि प्रतिज्ञासँ हुनकर अपन भविष्य पर जे कठोर बन्धन पड़त, तकर पूरा अर्थ एखन ककरो हाथमे नहि छल। सत्यवती हुनकर निर्णय अपन निर्णयक प्रतिरूप बनौने बिना सुनलनि। ओ अपन विवाह स्वीकार करबाक सम्भावना राखैत छलीह; अपन पिताक प्रश्नक उत्तर देबाक अधिकार सेहो।

नावक पाछाँ रखल माछक टोकरि अचक्के हिलल। एकटा बच्चा ढक्कन उठाय चाहैत छल। सत्यवती ओकर हाथ रोकि हँसलनि। “पहिने बजार पहुँचा दियौ। राजा प्रतीक्षा कऽ सकैत छथि।”

नदी अपन धारमे बहैत रहल। ओहि दिनक प्रतिज्ञाक कथा आगाँ दूर धरि जाएत; मुदा ओहि भोर नाव चलौनिहारक हातमे पतवार छल, आ घाटपर घरक भोजनक हिसाब एखनहुँ पूरा नहि भेल छल।

विदेहपुर, आषाढ़ २०३९। तिलवाहक कछेरपर एखन भोरक बजाय दुपहरिक घाम उतरि रहल छल। फकीराक शिकायतक प्राप्ति-संख्या नैराक नोटबुकमे रखल छल; ओकरा घेरने प्रश्नक उत्तर नहि। नैरा घाटपर एहि लेल आयल छलीह जे फकीराक घुमावदार बाटक समय मापथि आ देखथि जे कागदपर “वैकल्पिक पहुँच” कहल स्थान लोक वास्तवमे कोना उपयोग करैत अछि।

पहिल घाटक पक्का सीढ़ीपर दू युवक मोटरसाइकिल धो रहल छल। दोसर कात, जतय सीढ़ी समाप्त भऽ गेल छल, उर्मिला कपड़ाक लादी उठौने भीजल माटि पर पयर जमा रहल छलीह। पाट एतबा नीचाँ राखल छल जे प्रत्येक चादर झुकेर उठए पड़ैत। माथपर कपड़ा नहि, काजक समयक चिन्ता छल। अस्पतालक धोनाइ लेल हुनका आजु दुपहरिया धरि पहिल खेप पहुँचएबाक छल।

“एतयसँ गाड़ी पहुँचि सकैत छै?” नैरा पूछलनि।

उर्मिला आँखि उठौलनि। “कपड़ा लेबाक गाड़ी ओहि पक्का घाटधरि अबैत अछि। ओतय हमरा धोनाइ नहि करए दैत छै। एहिठाम गाड़ी उतरैत नहि। पहिने कहू, अहाँ ककर बाट पूछैत छी?”

नैरा अपन काज बुझौलनि। ओ फकीराक शिकायतमे सहायता करैत छलीह, मुदा घाटक सार्वजनिक पहुँचकें केवल हुनक शिकायतक प्रमाण बनएबाक लेल नहि आयल छलीह। उर्मिला सुनि पुछलनि, “हमर काजक समय सेहो लिखब?”

“जँ अहाँ कहब तँ।”

“तखन पहिने ई लिखू—चादर धोएबामे जे समय लगैत अछि, तकर बाद ओकरा ऊपर घाटपर सँ गाड़ी धरि उठाएबामे आओर समय लगैत अछि। अस्पतालकें पहिले समय चाही, मुदा एहि दूरीक मजदूरी नहि गनैत अछि।”

नैरा लिखलनि। ओ अस्पतालक बिल नहि देखलने छलीह, तँ उर्मिलाक कहल बात गवाहीक रूपमे दर्ज कएलनि। उर्मिला अपन भीजल हाथसँ पाटक कात ठोकलनि। “ई पाट हमर अपन कमाइक खरीदल अछि। घाट सार्वजनिक छी कहला मात्रसँ पाट सरकारी नहि भऽ जाइत छै।”

पक्की सीढ़ीक ऊपर एकटा बालक फोनसँ तस्वीर खींचि रहल छल। उर्मिला तुरन्त ओकरा बजौलनि। “पानिक फोटो लऽ सकैत छह। हमर कपड़ा पसारल अछि, एहि पर रोगीक नाम लिखल छै। ओ तस्वीर नहि।” बालक फोन नीचाँ कएलक। नैरा सेहो अपन फोन थैलामे राखि देलनि। घाटक बन्द बाट देखएबाक लालचमे ककरो रोगक परिचय सार्वजनिक भऽ सकैत छल।

उर्मिला कपड़ाक दू ढेरी अलग करैत कहलीह जे अस्पतालक सभ चादर एक्के ढङ्गसँ नहि धोएल जाइत अछि। जे कपड़ा विशेष सफाई माँगैत अछि ओकरा अलग राखब पड़ैत अछि; दोसर खेप सुखाएबाक लेल अलग खूँटा चाही। “समय घटा देब तँ ओहि काजक क्रम टूटत,” ओ कहलीह। “बिल लिखनिहार लोककेँ टोकरीक संख्या देखाइत छै, मुदा एक टोकरी भीतर कतेक अलग काज छै, से नहि।” नैरा कपड़ाक रंग देखिकऽ उपचारक अनुमान नहि कएलनि। उर्मिला जे क्रम बतौलनि, ओहिमे सुरक्षित श्रमक अपन ज्ञान छल; ओकरा प्रमाणित करबाक लेल अस्पतालक लिखित निर्देश आ देयक पंजी सेहो देखबाक पड़त।

समीपक खोमचापर अमीना भठियारा पातक दोनामे भात परसैत छलीह। हुनका लग हसन आ जुबैदा दूटा बक्सा रखने छलाह। बस अड्डापर हुनकर पुरान रोजीक ठाम घटलासँ ओ दिनभरि खेप बदलैत रहैत छलाह; आइ घाटपर ओ एक बक्साक सामान बेचबाक कोशिशमे छलाह। अमीना हसनसँ खाली बासन उठा देबाक कहलनि आ ओकर दाम भोजनक बिलमे घटाएब नहि, अलग लिखबाक वचन देलनि। जुबैदा खुरपीसँ दुकानक आगाँक भीजल माटि सम कऽ एकटा छोट सुखल ठाम बनौलनि।

“हम एतय रोज बैसि सकब?” हसन पूछलक।

“हमरा मालूम नहि,” अमीना कहलीह। “जे हमर ओसार नहि, ओकर वचन हम कोना देब? मुदा आइ जे काज केलहुँ, तकर मेहनताना आबे देब।”

ओ खाता खोललनि। खाना खएनिहारक देय एक कात, बक्सा उठौनिहारक दोसर। नैरा देखलनि जे ओहि दिनक कागदमे दामसँ बेसी काजक भेद लिखल अछि।

घाटपर कार्तिक-अगहनमे होमयवला घाट-आदर आ जलस्वच्छता पर्वक पुरान सूचना बाँसक खम्भामे बान्हल छल। गेल वर्षक तिथि धुँधला गेल छल; एहि वर्षक लेल एखन

नाम नहि भरल गेल छल। उर्मिला कहलनि जे प्रत्येक वर्ष सफाइमे लोक जुटैत छथि, मुदा साफ कएल घाटपर फेर ककरा कखन उतराबय देल जाएत, से विवाद बचि जाइत अछि। “एहि बेर खाली झाड़ू आ गीतसँ काम नहि चलत,” ओ कहलीह। “सीढ़ीक समय, धोनाइ, माछक टोकरी, आ स्नानक बाट अलग-अलग लिखबाक पड़त।”

गेल कार्तिकक सभा उर्मिलाकेँ एखन स्पष्ट स्मरण छल। एक दल सीढ़ी साफ कएने छल, दोसर दानक हिसाब पढ़ने छल, मुदा अघटक माटिपर बैसल धोनिहारिनसभकेँ कहियो नहि पूछल गेल छल जे कते बजे पानि चाही। साफ-सफाइ भेलाक दोसर दिने घाटपर फेर बेर-बेर हटबाक आदेश भेटल। एहि वर्ष हुनका फकीरा द्वारा कहल गाड़ीक समय याद पड़ल। ओ चाहैत छलीह जे पर्वमे केवल उपस्थितिक पाँति नहि, चूकक पाँति सेहो रहए—केकर काज देरि भेल आ किएक। नैरा सुझाव देलनि जे बालकसभक सुरक्षित चढ़ाइ अलग चिन्हल जाए, मुदा ओकरा लेल जमिनक बाट परखब जरूरी अछि। उर्मिला मानि लेलनि। दूनूक सहमति उत्सवक दिनपर नहि, एहि भीजल दुपहरमे भऽ रहल छल।

एहि बीच चेतन भट अपन पुरान बस्ताक भीतर सँ मोड़ल पोथी निकालनिहार छलाह। ओ घाटपर परिवारक वंशगान आ पुरान समारोहक निमन्त्रण पढ़बाक काज करैत छलाह। पोथीक पन्ना देखएबाक हुनका दाम भेटैत छल; तकर भीतर लिखल प्रत्येक बात सत्य अछि, एहन दाबी ओ स्वयं नहि करैत छलाह। देव गाइने हुनक लग बैसि तार कसि रहल छलाह। चेतन कहलक, “कार्तिकक दिन पुरान गीत गाबी?”

देव उत्तर देलनि, “गाएब, मुदा रिकॉर्ड करि बजारमे बेचनिहार पहिने पुछत। गीत सुनब आ गीतक सौदा करब एक बात नहि।”

चेतन हँसलाह। “हमरो कागदक कहानी बिना जाँच ककरो जमीनक प्रमाण नहि बनए।” देव तार छेड़लनि; स्वर कने बिगड़ल, फेर ठीक भेल। ओ समय गीत पूरा नहि कएलनि। घाटक आरम्भिक बोल मात्र सुनाइत रहल, जकर धुन चिन्हल लोकक लेल सुखक बात छल, नव आरोपक संकेत नहि।

सामानक ढेरक कात फूलचन लोध भीजल बोरा हटा रहल छलाह। हुनकर खेतमे पहिल वर्षाक पानि भरलासँ बीहन रोपबाक क्रम बदलल छल। जे अस्थायी ठाम हुनका गामक

बाहर देबाक चर्चा चलि रहल छल, ओ कागदपर खाली जमीन छल; खेती लेल माटि, पानि आ बजारक बाट कतेक दूर, तकर हिसाब दोसर छल। ओ उर्मिलासँ एकटा सुखल बाँस उधार लेलनि आ बदलामे उतरबाक पयरपथ पर फिसलन देखबैत माटि पसारि देलनि। नैरा हुनका पूछलनि, “ई बाट अहाँ बनबैत छी?”

“आइ पयर पड़ए लायक करैत छी,” फूलचन कहलाह। “जमीनक मालिकाना एहि माटि पसारलासँ हमरा नहि भेटत।”

ओहि कात बीना कलार अपन छोट दोकानक लेल खाली शीशी आ नपबाक गिलास रखि रहल छलीह। पिता लगसँ पूँजी भेटबाक प्रश्न हुनकर घरमे चलैत छल; आजुक कारोबारक हिसाब अपन नामसँ रखैत छलीह। नाहिद मोगल एतबे दूरसँ कागदक थैली लेने अएलीह। दूनू स्त्रीकेँ एक संग देखि नैरा सोचलनि जे जमीनक कागदपर लिखल परिवारक नाम आ ओहि परिवारक सभ सदस्यक सहमति अलग-अलग होएत। मुदा नाहिद ओहि समय अपन कागद नैराकेँ नहि देखौलनि। ओ बीना लगसँ दूटा शीशी लेलनि, दाम चुकौलनि, रसीद अपन थैलीमे रखलनि। एहि छोट खरीदमे हुनक पैतृक हिस्साक प्रश्न अपने समय धरि थिर रहल।

बीना अपन बहीमे दाम लिखिते एकटा पन्ना उलटलनि। ओतय तीन मासक कमाइ अलग, घरसँ माँगल पूँजी अलग छल। “अपन दुकान कहबाक लेल अपन जोखिमो राखबाक पड़त,” ओ नाहिदसँ कहलीह। नाहिद मुस्की देलनि। ओ अपन परिवारक जमीनक लेल कोनो त्वरित सलाह नहि माँगलनि; हुनका बखत चाही छल जे घरक सहमति आ अपन हिस्साक बात नीकसँ सुनि सकथि। नैरा हुनकर निजी बात सुनबाक कोशिश नहि कएलनि। सबहक निजी कागद जाँचकर्ता लेल निमन्त्रण नहि होइत अछि।

पक्का घाटपरक युवकसभमे सँ एक गाड़ी हटा लेलक। ओतय एकटा खाली जगह बनल। उर्मिला पाट उठा कऽ पक्का सीढ़ीपर नहि गेलीह। “एखन हमरा एहि ठामसँ हटएबाक कहल गेल तँ चादरक खेप फेर लेट होएत,” ओ कहलीह। “पहिने लिखित समय ठहरए।”

नैरा उर्मिलाक नजदीक झुकि घाटक दू बाटक दूरी गनलनि। छोट बाट पक्का सीढ़ीपर चढ़ैत छल, मुदा ओकर मुखपर बँसक अस्थायी घेराव छल। दोसर बाट अघटसँ घूमि चढ़ैत,

जतय भीजल कादोमे बोझ फिसलैत छल। फकीरा जे “वैकल्पिक पहुँच” पर प्रश्न उठौने छलाह, से शब्द आब नैराकें अलग अर्थ देलक। फकीराक रेल-द्वार आ उर्मिलाक घाट एक संस्था नहि; दुनूकें एक अन्यायक एउहना उदाहरण कहि मिलाबैब गलत होएत। तइयो एतय दूरीक लागत कागदपर नदारद छल।

“घेराव के लगौलक?” नैरा पूछलनि।

“एक बेर माछक लोग लगौने रहए, फेर नगरक लोक कहलक,” उर्मिला उत्तर देलनि। “आब जे हटाओत, ओकरा सटिक पता चाही। बिना बुझने उखाड़ि देबै तँ दोसरक जाल टूटत।”

नैरा तीन बात अलग लिखलनि—घेराव उपस्थित, मालिकाना अपुष्ट, सार्वजनिक पहुँच बाधित। उर्मिला कहलीह, “कार्तिकक पाँतिमे हमर नामसँ समय लिखब। मजदूरीक पाँतिमे मोल लिखब। जँ सभ मिली तँ बच्चाक लेल साफ उतरबाक बात सेहो राखब।”

अमीना खाता बन्द करैत अपन भोजनक बचल भात उर्मिलाकें देबाक प्रस्ताव रखलनि। उर्मिला दाम पुछलनि। अमीना कहलनि, “आइ हसनक मददसँ जे बासन सधल, ओकर सुखमे बाँटैत छी। दाम नहि।” उर्मिला हँसलीह। “तखन हमहुँ एक दिन तोहर चादर धोइ देब, मुदा ओकरा रोजक नियम नहि बनएब।” दुनू हँसि उठलीह। घाटपर दिनभरि जे कठिन प्रश्न छल, ओकर बीच ई अनायास साझा भोजन रहल; ककरो फोन ओकर तस्वीर नहि खींचलक।

साँझ उतरबाक पहिने नैरा घर घुरबाक लेल मुड़लीह। चेतन भट हुनका पाछाँसँ बजौलनि। “अहाँ कागद देखैत छी ने? हमर एक पुरान बही अछि। नाम घुरि-घुरि लिखल अछि। हम कहब नहि जे सब सही। मौका भेटत तँ पढ़ि लेब।”

नैरा तुरन्त बही नहि माँगलनि। “पहिने कहू, ओ केकर अछि, आ अहाँ ओकरा देखाबए सकैत छी की नहि।” चेतन माथ हिलौलनि। हुनकर पोथी अपन समयक लेल बन्द भेल; अगिला भेटक बात खुलल।

घर पहुँचलापर सरिता भात परसि रहल छलीह। नैरा उर्मिलाक घाटक बात कहलनि, मुदा रोगीक नाम, नाहिदक थैली आ चेतनक अपढ़ल बहीक भीतरक बात नहि जोड़लनि। सरिता पुछलनि, “सबहक पानि एके छै?”

“नहि। आ सबहक बाटो एक नहि।” नैरा उत्तर देलनि। “अहाँ कहने छलहुँ ने, एक्के खानामे सभ नाम नहि भरिहैं। आइ बुझलहुँ, घाटो एक्के खाना नहि।”

सरिता थारीक कात लोटा रखलनि। “आब जमीनक माप के करत?”

नैरा नोटबुकमे घाटक दू बाटक बीच दूरी फेर देखलनि। “जे मापत, ओकरा पहिने पूछबाक पड़त जे जमीन ककर उपयोगमे अछि। खाली देखाइत ठाम खाली होएत, से जरूरी नहि।”

बाहर तिलवाहक दिशा सँ साँझक हवा आयल। नदीक पानि एखनहुँ अपन पुरान बाट नहि खोलने छल; नैराक कागद सेहो ओकरा खोलबाक प्रमाण नहि छल। मुदा घाटपर जे लोक अपन समय, कमाइ आ बोलबाक अधिकार अलग-अलग गनौने छलाह, हुनकर बात आब नैराक अगिला प्रश्न बदलि देने छल।

अध्याय ५ • जनकक माप

मिथिलाक जनककाल। राजगृहक पछिला अँगनामे नव प्रकोष्ठक नीँव खुनल जा रहल छल। रातिक पानि गड़हीमे जमा भऽ गेल छल; दू शिल्पी ओकरा पातक दौनासँ बाहर उलीचैत छलाह। नापबाक डोरी तानल छल, मुदा भीजल खूँटा एक कात झुकि गेल छल। प्रधान निर्माणकर्ता खूँटा फेर गाड़ि रहल छलाह, तखने सीता अँगनाक किनार आयलीह।

ओ नीँव देखबाक लेल नहि, ओहि बाटसँ बगैचा जाएबाक लेल निकलल छलीह। बाट रोकल देखिकऽ ठमकि गेलीह। शिल्पी हुनका दूरसँ प्रणाम कएलक। सीता पूछलनि, “डोरी सीधा अछि, मुदा ई पुरान पयरबाट कतय जाएत?”

निर्माणकर्ता बजलाह, “नव अँगना बनत। पुरान बाट घेराइ जाएत। राजगृहक भूमि छी।”

“ई बाट राजगृहक भीतरसँ जाएत छल, मुदा एहि पर चलैत के छल?”

निर्माणकर्ता उत्तर देबाक बदला भीजल खूँटा उठा लेलनि। छोट शिल्पी कहलक जे मालिनसभ पहिने एहि बाटसँ इनारधरि जाइत छल। नव दीवार उठला पर हुनका बाहरसँ घूमि जाएब पड़त। ओकर बातकेँ कियो अधबीचमे रोकलक नहि, मुदा प्रधान निर्माणकर्ता नजरसँ ओकरा चुप रहबाक संकेत देलनि।

सीता ओकरा फेर बजबाक लेल कहलनि। शिल्पी अपन नाम कहल; हाथक खसरा घाव देखबैत बुझौलक जे एक दिन पहिने डोरी बचाबय लेल ओ कील खींचने छल। मजदूरीक दू दिन बाकी छल। “हमरा काज देल गेल, जमीन नहि,” ओ कहलक। “दीवार जतय बनत से कहि देल जाइत अछि। फेर बाट बदललासँ हमरा कोनो वश नहि।”

एहि बीच जनक निरीक्षण लेल पहुँचलाह। कन्याकेँ श्रमिकसभक बीच ठाढ़ देखि ओ मुस्कुरौलनि। “की देखैत छी?”

“अँगना कतेक पैघ होएत, से नापि रहल छथि,” सीता उत्तर देलनि। “मुदा पयरबाट घटत तकर माप नहि अछि।”

जनक प्रधान निर्माणकर्त्ताकिं पुछलनि। ओ राजगृहक स्वामित्व आ नव सभागारक उपयोग बुझौलनि। जनक सुनलनि, फेर सीताकेँ कहलनि, “राजकाजमे कखनो एक बाट छोड़ि दोसर बनेबाक पड़ैत अछि।”

“छोड़बाक भार के उठाओत?” सीता पुछलनि। “डोरी जतेक हाथ बढ़ल, घूमबाक बाट ओतेक हाथ नहि रहत। जँ भूमि दानमे देल जाए, तखन एहि पर चलैत लोकक पुरान काजो संगहि देल जाइत अछि की?”

प्रश्नमे उपहारक चर्चा सुनि जनक क्षणभरि चुप रहलाह। राजसभामे भूमि-उपहारक बात चलि रहल छल: राज्य कोनो आश्रम वा सेवाकाज लेल एक टुकड़ा भूमि देत। देनिहारक उदारता सुनाओल जाएत, मुदा ओहि माटिपर पहिनेसँ जे बीज बोएल गेल अछि, ओकर बारेमे सभा निर्णय नहि देने छल। सीता एहि प्रसंगकेँ सुनने छलीह; ओ चाहैत छलीह जे दानक पहिले उपयोगक बात स्पष्ट होए।

“दानसँ धर्मक काज चलैत अछि,” जनक कहलनि।

“मुदा जकर खेतक दाना घटत, ओकर धर्म के देखत?”

दूनूक बीच विवादक कठोरता नहि छल, तथापि जनक एहि प्रश्नसँ बचि नहि सकलाह। ओ निर्माणकर्त्ताकेँ नव डोरी देबाक कहलनि। पहिल डोरी दीवारक भीतरक माप लेल रही; दोसर मालिनसभक इनारधरिक बाट लेल। सभा-भूमिक विषयमे पहिने खेतक उपयोग पूछबाक आदेश देलनि। ई आदेश दानक अन्तिम निर्णय नहि छल। सीता एतबा बुझलीह जे शब्दमे कहल उपहार आ धरातलपर बदलल जीवन दुनू केँ एकहि नापसँ नहि गनल जा सकैत अछि।

प्रकोष्ठक कात बाँचल माटिक ढेरी पर एक बुजुर्ग स्त्री दूटा पाथरक टुकड़ा छाँटि रहल छलीह। ओकर काम खराब पत्थर अलग करब छल, मुदा गिनतीक बहीमे पाथर मात्र दर्ज होइत छल, छाँटनिहारक हाथ नहि। ओ कनी घसि एकटा पाथर सीताकेँ देखौलनि। भीतर महीन दरार छल; ओहि पर दीवार उठलासँ बारिसमे चीर पड़ि सकैत छल। प्रधान निर्माणकर्त्ता पाथर अलग कऽ लेलनि। दरार देखबाक ज्ञान हुनका सुनि भेटल छल, एहि बातसँ हुनकर अधिकार घटल नहि; उलटे दीवारक सुरक्षा बढ़ल। सीता पुछलनि जे पाथर

लौटएबाक घाटा को भरत। निर्माणकर्त्ता अपन आपूर्तिक हिसाब देखबाक कहलनि।
निर्माणक उपयोगी वस्तु बदलि गेल, तकर रकमक प्रश्न बचि रहल।

सीता ओहि सँ बुझलीह जे राजाज्ञा, शिल्पीक नाप आ वस्तुक वास्तविक अवस्था
तीनूकेँ आपसमे मिलएबाक आवश्यकता अछि। केवल राजाक मुहरसँ खराब पाथर नीक
नहि बनैत, आ शिल्पीक अनुभव मात्रसँ खेत पर अधिकार निर्धारित नहि होइत। ओकर
आँखिक सामने माटि छल, मुदा ओहि माटिसँ सम्बन्धित वचन दूर धरि फैलल छल।

निर्माणकर्त्ता छोट शिल्पीक बकाया मजदूरीक बात उठौलनि। जनक हिसाब मँगौलनि।
ओहि घड़ी ओकर भुगतान नहि भेल, मुदा खाता खोलबाक दिन निश्चित भेल। सीता
देखलनि—एक आदेशसँ दीवार सरकि सकैत अछि, मुदा भुगतान लेल फेर गिनती चाही।
जँ गिनती नहि बदलत तँ काजक फल अपूर्ण रहत।

विदेहपुर, आषाढ़ २०३९। भोरक पहिल पानि सूखल नहि छल। बरकी पोखरिक पक्का
घाटसँ अघट दिस जाइत पयरबाटपर चूनक दू रेखा खींचल गेल छल। नैरा जखन
पहुँचलथि, पहिल रेखा ओतय समाप्त होइत छल जतय उर्मिलाक कपड़ाक बोझ घुमैत-
घुमैत फिसलैत छल। दोसर रेखा बजारक तरकारी-दोकानक पाछाँ घुसि गेल छल। रेखा
लग एकटा पट्टी लागल छल—‘प्रस्तावित पहुँचक नाप; अन्तिम सीमा नहि’।

काल्हि साँझ सरिता पूछने छलीह, जमीनक माप के करत। नैरा आइ एहि प्रश्नक उत्तर
भेटबाक आशामे आयल छलीह। सर्वेक्षकक दल एखन नहि पहुँचल छल; ओकर सहायक
बाँसक खूँटा ठोकि नापवला फीता पसारने छल। ओ कहलक जे नगर-निकायक आदेशपर
बाट देखल जा रहल अछि, भूमि अधिग्रहणक अन्तिम सूचना नहि। नैरा ई अन्तर नोटबुकमे
लिखलनि।

घाटक मोड़पर किरण राउत सूखल धानक बीहनक थैली रखैत छलाह। हुनकर खेत
सीधे पोखरिक किनार नहि छल; मुदा बजारधरि गेल गाड़ी एहि सँकरी मोड़सँ गुजरैत छल।
नैरा हुनका पहिल बेर सुनलनि जखन ओ सहायककेँ कहैत छलाह जे चूनक रेखा हुनकर
मालक बाट काटैत अछि। सहायक कहलनि, “ई सार्वजनिक सुविधा लेल अछि।”

किरण अपन छोटी बही खोललनि। “सुविधा ककर, खर्च ककर? एहि थैलीपर जकर नाम अछि, ओ खेतक मालिक नहि। हम बटाइपर बीहन रोपैत छी। जमीनक पट्टापर मालिकक नाम लिखल अछि, मुदा खेपक कर्ज हमर खातामे।”

ओ बही नैराकैँ स्वतः नहि देलनि। पहिने पुछलनि जे ओ ककर पक्षसँ आबि रहल छथि। नैरा अपन परिचय देलनि—ओ अभिलेखक त्रुटिक जाँचमे सहायता करैत छथि, नगरक अधिकारप्राप्त नापाधिकारी नहि। “हम अहाँक कहल बात लिखि सकैत छी; सही नाप घोषित नहि कऽ सकैत छी।”

किरण पहिने एकटा सीधा प्रश्न केलनि—नव बाट बनलापर बीहनक गाड़ीकँ कते घुमबाक पड़त? सहायक अपन नक्शामे छोट रेखा देखबैत कहलक जे अन्तर बहुत नहि। किरण बोराक गाँठ खोलि गिनती देखौलनि। एक खेपमे चारि बोरा चढ़त; घुमावदार मोड़पर ठेला नहि मुड़त तँ दू खेप करबाक पड़त। ओकर अर्थ भाड़ा आ समय दुनू बढ़ब। सहायक फेर फीता पसारलक, मुदा बोरा उठेबाक मजूरीक हिसाब नापमे नहि आयल। नैरा ओहि बातकँ अलग दर्ज कएलनि। कोनो मानचित्रपर दूरी देखाएब गलत नहि; ओहि दूरीपर की वस्तु, केकर देह आ कोन समय चलत, से प्रश्न छोड़ि देब गलत।

तखने किरण अपन बेटीक लेल किनल सस्ता पेंसिलक डिब्बा थैलीसँ निकाललनि। डिब्बाक एक कोना भीजि गेल छल, मुदा भीतरक पेंसिल सुखल छल। ओ हँसि कहलनि जे घरमे बच्ची कापी पर खेतक रेखा बनबैत अछि आ हमेशा चौकोर बनबैत अछि। “हमर खेत एहन चौकोर कतहु नहि,” ओ कहलक। “तँ ओ माप पढ़त तँ कहियो हमरा सचमुच बुझा देत।” नाप-दलक लोक ओकर हँसीमे शामिल भेल, आ कनी देर लेल चूनक विवाद थमकल।

किरण एकटा पन्ना देखौलनि। बटाइक अन्न आ बीहनक उधारी अलग-अलग पाँतिमे छल। ओ एखन एकर सत्यापन नहि माँगैत छलाह; हुनकर आग्रह छल जे प्रस्तावित बाटक रेखा पर खेतक मालिकसँ संगहि माल ढोएनिहारक समयो सुनल जाए। नैरा पुछलनि, “अहाँ एहि पन्नाक नकल देब?” किरण कहलक, “पहिने रकमवला हिस्सा ढाँकि लिअ। बाटक विवादमे घरक पूरा कर्जा किएक खोलब?” नैरा सहमत भेलीह।

दोपहरक पहिने एक युवक कागदक खोखा लऽ कऽ आयल। ताहिमे ठेकाक पुरान बिल छल; ऊपर लिखल छल—रतन भुइयाँ। ओकरा संग दुबला-सा रतन स्वयं छलाह। गामक पछिला निर्माणमे माटि आ ईंट ढोअने छलाह, मुदा कागदपर ऋणक एक रकम हुनकर नामसँ जुड़ि गेल छल। नैरा पुरान बिल देखिकऽ कोनो अपराधक निर्णय नहि कएलनि। रतन कहलक, “जे बोझ उठौलहुँ, ओकरा मजदूरी कहल गेल। जे पैसा हम कखनो लेलहुँ नहि, ओ आब उधारी कहल जाइत अछि।”

“रसीद अछि?” नैरा पुछलनि।

रतन दू कागद देखौलनि—पहिल पर पहुँचौल सामग्रीक गिनती, दोसर पर देय रकम। रकमक हस्ताक्षर ककर, से ओ सुनिश्चित नहि छलाह। कागदक एक कात ठेकदारक छाप स्पष्ट, दोसर कात धुँधल छल। नैरा हुनका बुझौलनि जे मालिकाना विवाद, बटाइक हिसाब आ मजदूरीक बकाया एक्के शिकायतमे गड़मड़ नहि करबाक चाही। रतन चुपचाप पन्नासभ अलग करि धरलनि। “जँ अलग रखब तँ अलग सुनबो?” ओ पूछलनि। नैरा उत्तर देलनि, “सुनब हमर हाथमे नहि। मुदा कागद मिलाएबामे हम अहाँक फरक नहि मेटाएब।”

रतनक हाथमे बिलक पुरान मोड़ छल। ओ कहलक जे पछिला वर्ष हुनक संग काज करनिहार दू आदमी अपन देय नहि भेटलासँ परदेस चलि गेलाह। ओकरा ओ सभक पूरा ठेगाना नहि मालूम छल; अनुमानसँ नाम जोड़ि दियए तँ ओ इन्कार कएलनि। नैरा हुनका कहलनि जे एखन जतेक जनैत छथि ततेक लिखथि। पछिला भुगतानक तिथि ओ ठीकसँ स्मरण नहि कऽ पाबि रहल छलाह, मुदा सामग्री उतरबाक दिनक झमाझम पानि ओकरा याद छल। पानिक स्मृति तिथि सिद्ध करबाक लेल पर्याप्त नहि; ओ ओकरा अपना स्मरणक सहारा मानैत छलाह।

एकटा युवा सहायक दुनू कागद फोनपर एकहि तस्वीरमे खींचय चाहलक। रतन रोकलनि। “पहिल कागद हमर काजक, दोसर मे केकरो लिखल देनदारी छै। दुनू के संग चिपकौने फोटो देखलापर लोक कहत जे हम मानि लेलहुँ।” सहायक फोन नीचाँ कएलक। नैराकेँ संकेतक अपन तस्वीरपर लगाओल शर्त याद पड़ल। एहि बेर कागदक मालिकक सहमति फोटो लेबाक पहिल शर्त बनल।

एहि छोट बातचीत बीच अघट दिस जाएबला गाड़ी रुकल। उर्मिला दूरसँ आवाज देलनि—जतय खूँटा गाड़ल गेल अछि, ओतय हुनकर कपड़ाक ठेला घूमि नहि सकैत अछि। सहायक खूँटा दू हाथ पाछाँ सरकौलक। एहि परिवर्तनसँ कोनो जमीनक हक तय नहि भेल; एक दिनक बोझ लेल घुमबाक जगह अवश्य बनल। उर्मिला ठेला पार कएलनि, अपन समय देखलनि आ बिना बहस बढ़ौने अस्पतालक बाट पकड़लनि। नैराकँ काल्हिक नापलेल बाट याद पड़ल—खाली रेखापर जीबैत श्रमक गति अलग देखाइत अछि।

नाप-दलक बक्सामे अलग-अलग पर्ची छल। एक पर्चीपर बेला तुरहाक बजार-ठामक साप्ताहिक शुल्क दर्ज छल; प्रस्तावित सड़कक दोसर रेखा ओकर अस्थायी पसारसँ सटैत छल। दोसरमे हेमा देवक विद्यालय लेल पुरान मुहल्लाक नामावली, जतय घर बनबेनिहार स्त्रीसभक नाम कई बेर गायब छल। रचना धिमालक नाम आगन्तुक परिवारक भाषा-शिक्षा भेलाकँ प्रमाणित करैत उपस्थिति-पाँतिमे छल। एहिसँ जमीनक सीमा सिद्ध नहि होइत छल; मुदा बाजार, पाठशाला आ आवागमन एहि बाटसँ जुड़ल छथि, से स्पष्ट होइत छल।

नाप-बहीक पहिल पृष्ठपर सर्वेक्षणक शीर्षक मात्र छल। ओकर नीचाँ हुनका लग सँकलित स्थानीय उपयोगक छोट सूची राखल गेल छल। एहिसँ हेमा देवक विद्यालयक प्रश्न, रचना धिमालक परिवारक भाषा आ बेला तुरहाक छोट बजार-पसार एक-दोसरक समान सम्पत्ति-दावा नहि बनल। जँ काल्हि सड़कक काम चालू होए, तखन पाठशालाक आवागमन, बजारक समय आ धुलाईक गाड़ीक प्रवेश अलग-अलग जाँचबाक पड़त। ई सभ काज नगरक एक-दोसरा सँ सटल अछि, मुदा एकटा गिनतीसँ सभक हानि नहि भेटि सकैत अछि।

खोखा उठबैत युवक दोसर दू पर्ची बाहर निकाललक। एक रशीद भाटक गीतक ध्वनि-अभिलेखन लेल कार्यक्रमक प्रस्ताव छल—रेकार्डिंगक अधिकारक अनुमतिखाना खाली। दोसर करुण दमाईक बाजाक मरम्मतिक अनुमान छल; प्रस्तुतिक अलग पारिश्रमिक एखन नहि जुड़ल छल। एक ठाम नापब भूमि छल, दोसर ठाम मेहनताना। ई पर्चीसभकँ एकहि कुल जोड़मे राखल गेल तँ सभक देय गलत बनत, ई नैरा देखलनि। ओ सहायककँ

खाली खाना नहि भरबाक आग्रह कएलनि; सहायक कहलनि जे कार्यक्रमक समिति बादमे भरत।

दुपहरमे सर्वेक्षक पहुँचलाह। चूनक रेखा देखिकऽ ओ पहिले नाप-पत्र खोलेलनि। किरण अपन थैली कात राखलनि; रतन पुरान खोखा। सर्वेक्षक कहलनि जे नापमे सड़कक चौड़ाइ देखाओल अछि, मुदा बाजूक जलनिकासक सँकरा गड्ढाक स्थान अलग चिह्नित नहि। चूनक रेखा गड्ढाक ऊपर जा रहल छल। सहायक नाप दोहरौलक; फीता ठीक छल, आरम्भक खूँटा गलत कात लगल छल।

एहि छोट भूल सुधारल गेल। नव रेखा खींचल गेल, पुरान रेखापर क्रॉस पड़ल। रतन पुछलनि जे एहि सँ हुनकर ऋण माफ होएत की। सर्वेक्षक कहलक—नहि। किरण पुछलनि जे आब हुनकर बटाइ बचत की। उत्तर भेटल—एखन निश्चित नहि। मुदा सभक आँखिक सामने प्रमाणित भेल जे पहिल रेखाकेँ अन्तिम सीमा मानब गलत छल। नैरा अपन बहीमे लिखलनि: ‘नाप-सूत्र सुधारल; दखल, उपयोग, कर्जक निर्णय शेष।’

घाटसँ थोड़े दूर विद्यालयक खुलल बरामदामे साँझक लोकपाठक अभ्यास चलैत छल। नैरा ओतय सरिताकेँ लऽ जाएबाक वचन देने छलीह; सरिता आइ चलि नहि सकलीह, मुदा पुरान पोथीक एक पन्नाक प्रतिलिपि देलनि। पन्नाने जनकक समयक कथा लेल त्रियुगा आ लक्ष्मणा नामक काव्यप्रयोग छल। एहि नामसभकेँ विदेहपुरक तिलवाहक आधुनिक जलमार्गक पक्का नाप मानबाक कोनो कारण नहि छल। बरामदामे रखल दोसर पुस्तकमे लक्ष्मणा आ लखनदेइक सम्भावित नामसम्बन्धक उल्लेख छल, जकर परीक्षण एखन बाकी छल। नैरा पन्नाक कात ‘काव्यनाम’ लिखलनि; नक्शाक स्थान खाली छोड़लनि।

बरामदाक भीतपर चिपकल पुरान उत्सवक तस्वीर मे घाटक लोक बैठल छलाह। तस्वीरक नीचाँ गीतक पाँति लिखल छल, मुदा गायकक नाम अपूर्ण। पासक कक्षामे बच्चासभ अपन-अपन घरक गाछ, पोखरि, पयरबाटक नाम लिखैत छल। कोनो कागदमे नामक बगल ‘सुनेल’ चिन्ह छल, कोनो मे ‘देखल’। शिक्षिका सँकेत देलनि जे दादासँ सुनल नदीक पुरान नामकेँ आजुक नाप-नक्शामे बिना परखने नहि चिपकाओल जाए। एकटा लड़का त्रियुगा शब्दकेँ तिलवाहक नीचाँ लिखए चाहलक; नैरा ओकरा दूनू अलग

पाँतिमे रखबाक आग्रह कएलनि। लड़का नाराज नहि भेल; कहल, “तखन दुनू नाम बचि जाएत।”

विद्यालयक एक बालिका जनक आ सीताक प्रसंग पढ़ि रहल छलीह। ओ पुछलक, “राजा जमीन दऽ देलथि तँ ओ जमीनक पानि, बाट आ ओहि पर उगल धान सेहो दऽ देलथि?” पाठ पढ़बेनिहार महिला उत्तर तुरन्त नहि देलनि। कहलीह, “कथामे दान सुनल जाइत अछि। मुदा ककर जीवन बदलल, से पूछबो पाठक हिस्सा अछि।” बच्ची अपन कापीमे प्रश्न लिखि लेलैक। ओहि दिन ओकरा उत्तर चाही छल, कोनो विजयी भाषण नहि।

नैरा घर घुरलीह तँ सरिता सिलौटपर मसाला पीसि रहल छलीह। आजुक रेखाक सुधार, किरणक ढाँकल हिसाब आ रतनक दू कागदक भेद ओ बुझौलनि। ककरो निजी रकम नहि कहलनि। सरिता पुछलनि, “जे रेखा गलत छल से सुधरल। मुदा रेखा खींचनिहारकें कोन नामसँ बुझल गेल जे केकरा घूमि जाएब पड़त?”

“नामसँ नहि। पहिने लोक अपन काज बतौलनि,” नैरा कहलनि।

सरिता सिलौट धोलनि। “तखन अपन घरक पुरान पहाड़ो फेर देखि लिअ। ओतय कतेक नाम घरक, कतेक हिसाब कामक, से हमहुँ सभ बेर एक्के तरह नहि लिखलहुँ।”

नैरा ऊपर टाँगल पुरान बस्ताकें देखलनि। सत्ताइस नामक पन्ना एखन सरिताक अधिकारमे छल; ओकर नकल नैराकें बिना सहमति बनएबाक नहि छल। एतय दोसर पुरान घरेलू बही छल, जकरा सरिता खोलबाक प्रस्ताव देलनि। “काल्हि दिनक उजासमे,” सरिता कहलीह। “आ पहिने पूछिहें—ई कोन दिनक लिखल अछि।”

बाहर पोखरिक दिससँ ठेलाक चक्काक आवाज आयल। सुधरल चूनक रेखा रातिक भीजमे मेटा सकैत छल, मुदा नाप-पत्रमे ओकर सुधार दर्ज भऽ चुकल छल। नैरा मनमे गणना कएलनि: जमीन नापल गेल, एकटा गलत खूँटा हटाओल गेल, मुदा घरक बहीक समय एखन बाँकी छल। ओ भातक पानि जाँचए उठलीह। आइक दिन ओहि साधारण काजक संग पूरा भेल।

अध्याय ६ • घरक पहाड़ा

भोरक भात चढ़ेनाइ सँ पहिने सरिता चौकीक नीचाँ राखल पुरान बस्ता बाहर निकाललनि। बस्ताक पट्टीमे गँठरी बन्हबाक धागा फँसल छल। ओ धागा काटलनि नहि; धीरे-धीरे खसकौलनि, जेना काटि देलासँ भीतरक कागदो छोट भऽ जाएत। नैरा सामनेक पटिआपर बैसल छलीह। काल्हि माए कहलने रहथि—दिनक उजासमे बही खोलब। आइ उजास आयल छल, मुदा बही खोलबाक अधिकार ओकर नहि, सरिताक हाथमे छल।

“एहि पर पहिने चाउर झारि दिअ,” सरिता कहलनि। बस्ताक कोनमे सूखल चाउरक दू दाना अटकल छल। नैरा ओकरा उठाकऽ थारीमे राखि देलनि। सरिता हँसलीह, “घरक पुरान हिसाबमे अन्न बचल रहत तँ ओकरा खराब चिन्ह मत मानिहें।” चूल्हापर पानि एखन गरम भऽ रहल छल। कोठरीमे धुआँक हलुक गन्ध छल आ बाहरसँ रेलक एकटा दूर आवाज आयल।

बहीक जिल्दपर कोनो सुन्दर नाम नहि छल। पहिल पन्नामे मोट अक्षरमे ‘घरक पहाड़ा’ लिखल छल; नीचाँ चाउर, तेल, नून, दवा आ बाटभाड़ाक पाँच खाना। कागदक पाछाँ पुरान विद्यालयक मुहरक अपूर्ण छाप छल। कियो जे बही फेंकने छल, सरिता ओकर खाली पन्ना बचा लेने छलीह। एखन ओकर पहिल उपयोग आ दोसर उपयोग दुनू एक्के जिल्दमे रहि गेल छल।

“ई पन्ना कखनक?” नैरा पूछलनि।

“कोन पन्ना? पहिल खाली कागद तऽ एक दिनक भेटल। लिखाइ बादमे शुरू भेल। ओहि पर छपल मुहर लिखाइकेँ ओहि दिनक नहि बना दैत छै।” सरिता पन्ना पलटैत उत्तर देलनि।

नैरा हाशियापर पड़ल ‘२०२७’ देखलनि। ओकर नीचे नूनक दाम आ औषधिक दू टिकिया लिखल छल। अगिला पन्नाक एक कात लालसँ ‘उधार’ आ नीलसँ ‘चुकता’ लिखल छल; किछु बहीखाताक पाँति सरिता अपन हाथसँ काटि देने छलीह। “लाल पहिने आ नील बादमे?” नैरा पुछलनि।

“कखनो। मुदा सभ लाल पहिने लिखल, से नहि कहि सकैत छी। एक बेर नील कलम सुखा गेल तँ लालसँ भातक दाम लिखलहुँ। कलमक रंग घड़ी नहि होइत छै।”

ई बात सुनि नैरा अपन फोनक कैमरा नहि खोललनि। हुनका चाही छल जे कोनो पन्नाक तस्वीरक संग ओकरा छुअबाक, पलटबाक आ देखबाक परिस्थिति सेहो अलग याद रहए। सरिता ओहि बहीक एक ठाम अँगुरी रोकलनि। पन्नाक बीच सीधी खिंचल रेखाक नीचाँ शब्द छल—‘राजइनार, पाओठक ईट’। नीचाँ अलग कलमसँ कियो ‘पानि खींचबाक डोरी’ जोड़ने छल। दूनू पाँतिक बीच अन्नक हिसाब छल।

“इनारक ई खर्च घरक हिसाबमे किएक?” नैरा पूछलनि।

“घरसँ देल गेल। पानि तँ इनारक छल, मुदा ईट लऽ जाएबामे भाड़ा हमर जेबसँ गेल। बादमे कियो देलक की नहि, से ओतय देख।” सरिता आखिरी खानामे खाली जगह देखौलनि। ओहि खाली जगहकेँ नैरा बकाया कहलनि नहि; ओकर कात प्रश्नचिह्न सेहो नहि बनौलनि। खर्च लिखल छल, प्राप्ति अनिश्चित छल।

सरिता ओहि पन्नासँ दू पृष्ठ पाछाँ घुरलीह। ओतय एक साँझक बाजारक सूची छल—हरियर मिरचाइ, सत्तू, एक हाथ कपड़ा, आ संकेतक लेल कागद। संकेत तखन एखन छोट छल; कागद माँगैत ओ रंगीन चित्र बनबैत रहैत छल। सरिता कहलनि, “ओ रेखा पर घरक पहाड़ा सीखैत छल, आ हम ओकर खाली पन्नाक पाछाँ खर्च लिखैत रही।” नैराकेँ याद पड़ल—संकेतक बनाओल पुरान छोट रेलगाड़ीमे डिब्बा सभक आकार अलग छल, मुदा ओ ओकरा सभकेँ एके पटरीपर चलबैत छल। ई स्मृति ककरो अभियोगक प्रमाण नहि छल; तइयो घरक बही किएक बचाओल गेल, तकर एक उत्तर छल।

पन्नाक दोसर कात एक नन्ही मोड़ छल। सरिता खोलबाक पहिने नैराकेँ देखलनि। “ई मोड़ खोलि सकैत छी। मुदा ई बही आ सत्ताइस नामक पन्ना दूटा अलग वस्तु छै। एकर रंग मिललालसँ दोसराक सभ नामक बात नहि बुझिहें।” नैरा सहमति देलनि। मोड़मे २०३८ लिखल एक पुरान मरम्मत-रसीद छल, जाहिपर इनारक देबालक ईट आ मजदूरी अलग-अलग जोड़ल छल। तिथिक मुहर स्पष्ट नहि, मुदा दामक जोड़ पूरा छल। एके पन्नामे दू समयक कागद सटल रहबाक बात आब निश्चित छल; हुनकर बीचक कारण एखन अनिश्चित।

दुपहरिसँ पहिने सरिता बहीक दू पन्नाक प्रतिलिपि बनएबाक अनुमति देलनि—जाहिमे घरक अन्न-खर्च आ राजइनारक दाम छल। बचल पन्नासभक नहि। नैरा पहिने पूछलनि जे प्रतिलिपि के देखत। सरिता कहलीह, “हम, तू आ जे मरम्मतिक पुरान हिसाब देखबाक उत्तरदायी होएत। सड़कपर सभकेँ नहि।” नैरा फोनमे तस्वीर खींचलनि, मूल बही सरिताक कोरामे वापस राखलनि आ दोसर फाइलमे लिखलनि: ‘मालिकक अनुमतिसँ सीमित प्रति।’

सरिता एकदम सहज ढङ्गसँ पूछलनि, “जे सत्ताइस नामक पन्नामे चारि ठाम दोसर स्याही अछि, ओकरा तू एक दिनक सूची मानने छलीह की?”

“हम पहिने एहेन बुझने छलहुँ जे कियो बादमे चारि नाम जोड़ि देलक। ओहो एक अनुमान छल।”

“एक दिनमे चाउरक हिसाब लिखैत छी? दिन बदलैत छै। कखनो हम नाम सुनि लिखलहुँ, कखनो पुरान लिखल बात सुधरलहुँ। मुदा के लिखलक आ कखन लिखलक, ई अलग-अलग पूछ। हमरा याद जे अछि से कहब; याद नहि तँ नहि कहब।”

एहि स्वीकारोक्तिसँ नैराकेँ एकटा छोट उत्तर भेटल—सूची एके बैठकमे समाप्त भेल नहि छल। ओ माइक मौखिक कथनक तिथि आजुक लिखलनि। चारि नामक काजक स्वरूप, निषिद्ध तह आ मृत दर्ज सरिताक मामला एखनहुँ अलग जाँचबाक छल। पुरान रसीदक स्याहीक उमेर आँखिसँ निश्चित करबाक दावा ओ नहि कएलनि।

नैरा पहिने सोचने छलीह जे एक नकल बनलापर मूल कागदकेँ अलमारीमे बन्द कऽ देब आसान होएत। मुदा सरिता बारम्बार बही उठा कऽ जे शब्द बुझा रहल छलीह, ओकरा बन्द कऽ देने सँ ककरो अनुभवो बन्द भऽ सकैत छल। ओ अपना नोटक माथ लिखलनि—‘पन्नाक क्रम, लिखबाक कथन आ स्वतन्त्र तिथि-अभिलेख अलग देखू।’ एकहि रंगक स्याही अलग दिनमे चलि सकैत अछि; अलग रंग एके दिनमे। सरिताक कथनसँ एक-बैठकवला धारणा टूटल, मुदा ककरा कोन तिथिपर जोड़ल गेल, से एखन बाकी रहल।

राजइनार जएबाक बाटमे काल्हि खींचल चूनक नव रेखा भीजल धरतीपर आधी बाँचल छल। जकरा लऽ कऽ किरण आ रतनक विवाद उठल छल, ओकर सुधरल खूँटा एखन ठाढ़ छल। नैरा ओकर कातसँ गेलीह तँ देखलनि—एक गाड़ीकेँ पहिल बेर ठेलैत पाछाँ

हटबाक आवश्यकता नहि पड़ल। उर्मिलाक ठेला आजु एतय नहि छल। ठेला नहि देखलासँ काज रुकल, से अनुमान कऽ नैरा आगाँ नहि बढ़लीह; काल्हि अस्पतालक कपड़ाक गाड़ीकेँ एतय घुमबाक जगह भेटल छल, एतबे हुनका बुझल छल।

राजइनारक मुँह चौड़ा नहि छल, मुदा ओकर चारूकात बनल पुरान चबूतरा बहुत लोकक बाटमे पड़ैत छल। विद्यालयसँ अबैत बच्चा ओहिपर बस्ता रखैत, घरक लोक पानि भरैत आ ठेला लऽ जाएबला कातसँ घूमि निकलैत। इनारक लोहेक जंगला एक कात ढील छल। रस्सीक घर्षणसँ ईटक कोना घिसि गेल छल। पानि नीचाँ चमकि रहल छल, मुदा चमकसँ ओकर सफाई वा पीबाक योग्यता सिद्ध नहि होइत छल।

ललित मल्लिक चबूतराक किनार झुकि ईटक जोड़ देखैत छलाह। हुनका संग पद्मा छलीह, जे विद्यालयक बच्चासभ लेल लिखल सूचना स्पष्ट पढ़ाईत अछि की नहि, से जाँचि रहल छलीह। पाटपर ‘सावधानी’ मोट अक्षरमे छल, मुदा ढील जंगला ककरा दिस अछि से कोनो चिन्ह नहि। पद्मा तीर बनाकऽ स्थान देखौलनि। नैरा इनारक गहराइ पुछए लगलीह तँ ललित कहलनि जे बिना सुरक्षित नाप आ जिम्मेदार लोकक उपस्थिति एखन कोनो संख्या देब उचित नहि। ओ स्वयं भीतर झुकि अन्दाजा लगएबासँ रुकलाह।

इनारक दाहिना दिस जमल भीड़मे सुधा राय अपन गोदमे दस्तावेज दबौने ठाढ़ छलीह। ओ इनारक चबूतरापर छाँह लेल छोट छज्जा लगएबाक प्रस्ताव देने छलीह, आ किछु भूमि सार्वजनिक उपयोग लेल देबाक घोषणो तय भेल छल। मुदा दान देबाक कागदमे लागल नव रेखा दू किरायेदार परिवारक आवागमनवला सँकरा बाटक ऊपर पड़ि रहल छल। विद्यालयक बच्चासभ ताहि बाटसँ जाइत छल।

“छज्जाक खर्च हम देब,” सुधा कहलीह, “मुदा लिखि दिअ जे ई जमीन दान अछि। कागद अटकल रहत तँ काज के शुरू करत?”

नैरा बिना कागद छीनने पुछलनि, “किरायेदारक बाटक सुनवाई भेल अछि?”

“हुनका सभकेँ कियो निकालि थोड़े रहल अछि। घुमि जाएबाक दोसर बाटो अछि।”

पद्मा ओहि ‘दोसर बाट’क दिशा देखौलनि। ओतय छोट गड्ढा आ टूटल ईट छल। बच्चा बस्ता उठा कऽ पार भऽ सकैत छल, मुदा पानि भरल घड़ा लऽ कऽ घूमब एखन सहज नहि छल। सुधा कने चुप भेलीह। ई पहिल बेर छल जे दानक कागदपर हुनकर सुन्दर

हस्ताक्षरक पाछाँ किरायेदारक दिनक श्रम ठाढ़ देखाइत छल। ओ घोषणापत्र तत्काल नहि फाड़लनि; कहलीह जे बाटक उपयोगक बात पहिने अलग लिखल जाए। दानक निर्णय एखन बाकी रहल।

ओहि समय छज्जाक नीचाँ ठाढ़ एक किरायेदार स्त्री अपन घड़ा उठौलनि। ओ सुधाक विरोधमे मंचपर चढ़बाक नहि चाहैत छलीह। हुनका केवल एतेक चाही छल जे ओ राति अपन घरसँ इनार धरि पहिनुक बाटे चलि सकथि। सुधा हुनका घड़ा रखबाक जगह देलनि, मुदा दानक कागद अपन बगलमे दबौने रहलीह। ककरो उदारता आ ककरो स्वत्वक बीच एहि छोट दूरीकेँ नैरा एकटा हस्ताक्षरसँ भरि देबाक पक्षमे नहि छलीह। सुनवाईक तिथि तय होएबाक प्रस्ताव आयल; ओकरा पंजीमे लिखबाक काज शुरू भेल, निर्णय नहि।

एक किनार रखल पुरान काठक बेंचपर मरम्मतिक अनुमान सभ जमा छल। केशरी बीनक नावक काठक पटरीक रसीद ओहि ढेरीमे छल; ओ लिखने छलाह जे नाव बेचबाक दाम पूछल गेल, मरम्मतिक लागत एखन नापबाक अछि। नावक काठ आ इनारक जंगला अलग काज छल, मुदा दूनू लेल बजारसँ आएल सामानक भाड़ा समान गाड़ीमे लगल छल। ललित दूनू बिल मिलाकऽ एकटा लागत बनएबाक बदला अलग राखलनि। साझा गाड़ीमे सामान अएला मात्रसँ काजक मालिक एक नहि भऽ जाइत अछि।

विद्यालयक बरामदामे अगिला लोकपाठक अभ्यास लेल छोट खाता खुलल छल। फूलमती पमरियाक गीतक समय आ मानदेय अलग लिखल छल; रमेश घासीक बाजाक मरम्मत आ मंचपर बजएबाक दाम अलग। कियो आरम्भमे ‘लोकसहयोग’ लिखि दुनू रकम बिना दामक राखने छल। पद्मा एहि शब्दक कात खाली राशि देखिकऽ खाता वापस करबौलनि। ओकर स्वरमे डाँट नहि छल, मुदा बिना दामक गीत सुनबाक पुरान आदत ओ अपन लिखावटसँ कायम नहि रखए चाहैत छलीह।

बरामदाक खिड़कीपर लक्ष्मी कठबनियाक सामानक बिल दबा कऽ राखल छल। ओ अपन दुकानसँ देल छोट रस्सी आ ढक्कनक सामानक दाम अलग गनने छलीह। खातामे कियो उनकर नामकेँ इनार-समितिक समस्त उधारक आगाँ लिखि देने छल। पद्मा स्पष्ट कएलनि जे सामानक विक्रेता सभक संयुक्त कर्जदार नहि भऽ जाइत अछि। लक्ष्मी स्वयं

ओतय उपस्थित नहि छलीह; हुनकर दामक रसीद बोलि रहल छल। बिलक दोसर प्रतिमे भुगतानक दिन खाली छल।

ओहि टेबुलपर विवाहक अवसर लेल शान्ति बारी द्वारा तैयार वस्तुसभक आगाँ अग्रिम दामक पर्ची राखल छल। प्रस्तावित लोकपाठ दिनमे कोनो परिवार ओहि वस्तुक प्रयोग करए चाहैत छल, मुदा अग्रिम देबाक खाना खाली छल। आयोजक ओहि पर्चीकेँ मरम्मतिक चन्दा संग जोड़ए चाहने छलाह। पद्मा दुनू पाँति अलग कएलनि—एक घरक विवाह-सामग्रीक दाम, दोसर सार्वजनिक इनारक खर्च। एहेन छोट भेदसँ एक स्त्रीक मेहनताना चन्दाक नामपर अदृश्य होएबासँ बचि सकैत छल।

नैरा आखिरी पर्ची उठौलनि। ओ एक चिट्ठीक लिफाफा छल, जकर सामने अनुपमा सेनक नाम आ नीचाँ साफ अक्षरमे लिखल छल—‘मूल पत्र निजी; साझा प्रतिक अनुमति बिना नहि।’ भीतरक पन्ना ओ नहि खोललनि। लिफाफा लोकपाठक इतिहास-संग्रहमे पहुँचबाक छल, मुदा ककरो लेल ओकर मूल सामग्री देखब आवश्यक अछि की नहि, से मालिक तय करतीह। नैराकेँ माइक पुरान बहीक दू पन्नाक सीमित अनुमति याद पड़ल। दस्तावेजक उम्र बढ़लासँ ओकर मालिकक आजुक वचन छोट नहि भऽ जाइत छल।

राजइनारक कात छोट लड़की खाली लोटा लऽ ठाढ़ छलीह। इनारसँ पानि भरबाक बेरि एखन आउरो लोकक छल; चबूतरापर भीड़ बढ़लासँ ओकरा जगह नहि भेटि रहल छल। पद्मा खाता बन्द कएलनि आ सभकेँ दू हाथ हटबाक आग्रह कएलनि। ललित ढील जंगला कात अस्थायी रस्सी लगौलनि, मुदा कहि देलनि जे ई मरम्मत नहि, केवल आजुक रोकक चिन्ह अछि। लड़कीक माय पानि भरलनि, फेर लोटा बच्चीक हाथमे दऽ दोसर बाटसँ निकललीह।

आइ इनारक ईंट बदलब अथवा छज्जा लगब निश्चित नहि भेल। तथापि दू काम भेल: ढील जंगला कात पहुँच अस्थायी रूपेँ रोकल गेल, आ मरम्मतिक खर्च तथा दानक घोषणासँ पहिने उपयोगक बात लिखबाक ठहराव भेल। नैरा सरिताक रसीदक सीमित प्रतिक बात कहलीह। ललित ओहि प्रतिक दाम देखबाक अनुमति माँगलनि, मूल बही नहि। नैरा कहलनि जे ओ पहिने सरितासँ एहि खास उपयोगक सहमति फेर लेतीह। पुरान

भुगतान एखनो सिद्ध नहि छल; आगाँक खर्च निश्चित करबाक लेल पुरान दाम सहायक भऽ सकैत छल।

घर घुरैत नैरा बरामदाक नीचाँ एकटा पुरान चौकी देखलनि। ओकर पायामे वर्षक किछु धुँधला अंक खुँजल छल, कियो हालमे ओकरा खाली जगह बुझि ऊपर खाता रखने छल। बच्चासभ ओहिपर बैसि अपन-अपन कापीमे घरक पुरान कथा लिखैत छल। एक बच्चा पूछलक जे चौकी ककर बनौने। शिक्षिका कहलीह, “नाम जँ भेटत तँ लिखब; नहि भेटत तँ नहि गढ़ब।” नैरा कने ठमकलीह। काठपर पड़ल अंकक उमेर ओ दूरसँ नहि पढ़ि सकलीह। ओ चौकीकेँ बिना छुए आगाँ बढ़ि गेलीह।

बाटमे विद्यालयसँ छूटल दू बच्चा एक-दोसरासँ बहस करैत जा रहल छल—पुरान घरक इतिहास लेल ककर बात सुनब? एकटा कहलक जे दादा सब दिन एकहि कथा कहैत छथि, तँ सही होएत। दोसर कहलक जे दादी अलग कहैत छथि; ओतबे लेल दादी झूठ नहि भेलीह। नैरा दूनूक बात सुनि मुस्कुरेलीह। पुरान चौकीक काठ एखन हुनका प्रश्न देने छल, उत्तर नहि। अगिला दिन ओहि काठक लग कियो अपन परिवारक समयक एकटा सिरा पकड़ि सकत, से सम्भावना मात्र छल।

सरिता साँझ घरमे दाल चुनि रहल छलीह। नैरा दिनक खबर देलनि—इनारक ढील जंगला, मरम्मतिक अलग बिल, सुधाक दानक कागद, आ खर्चक प्रतिक फेर अनुमति माँगबाक बात। सरिता चुपचाप सुनलनि। “हमर रसीद देखाबए चाहैत छी, तँ पहिने एतेक कहिहँ जे ओहि दिन हम भाड़ा देलहुँ। बादमे कियो लौटा देलक की नहि, हमरा याद नहि। याद नहि तऽ निहित कर्जा मत बना दिहें।”

नैरा अपन नोटमे ‘भुगतान अपुष्ट’क बदला ‘वापसी अपुष्ट’ लिखलनि। ई दू शब्दक अन्तर छोट छल, मुदा पहिल शब्दसँ बुझाईत जे भाड़ा देल गेल की नहि, दोसरसँ प्रश्न उठैत जे भाड़ा लौटाओल गेल की नहि। सरिता पन्ना देखिकऽ सहमति देलनि। राजइनारक खर्चक अंश समिति देखत, मुदा घरक औषधि आ भोजनक पाँति घरमे रहत।

“सत्ताइस नामक पन्ना?” नैरा धीरेसँ पूछलनि।

“ओ आबो हमर लग छै। जतेक तिथि याद अछि, काल्हि अलग कऽ कहब। सबहक नहि।” सरिता दालक छोट ढेरी बनौलनि। “तोरा आजु की बुझल?”

“एकहि पन्नापर एकहि दिनक जीवन नहि होइत छै। आ जे कागदमे लिखल नहि अछि, ओकरा हम आपन मनसँ भरि नहि सकैत छी।”

सरिता दाल धोएबाक पानि चढ़ौलनि। नैरा बहीकेँ पुरान कपड़ामे लपेटि सरिताक हाथमे दऽ देलनि। चौकीपर राखल लोटाक छाँह दीवालपर धीरे-धीरे सरकि रहल छल; कोनो असम्भव छाँह नहि, साँझक बदलैत उजास छल। घरक पहाड़ामे आजुक खर्च एखन लिखबाक छल। सरिता चाउर नापलनि आ कहलनि, “दू जनेक भातमे एक मुट्ठी आरो राखि दे। कियो आबि सकैत अछि।”

नैरा पुछलनि नहि जे के। ओ चाउरक मुट्ठी हाँड़ीमे छोड़ि देलनि। पुरान चौकीक अंकोंक कथा काल्हि सुनबाक छल, मुदा आजुक अतिथिक थारी एखनसँ राखि देल गेल।

अध्याय ७ • पाँच पीढ़ीक चौकी

सरिता जे एक मुढ़ी चाउर बेसी हाँड़ीमे छोड़ने छलीह, ओकर भात साँझ धरि ठंढा नहि भेल। दरवज्जापर आवाज भेल तँ ओ थारी उतारबाक बदला चूल्हाक आँच कम कएलनि। बाहर शकुन्तला ठाढ़ छलीह। हुनकर बामा हाथमे माटिक ढाकनवला छोट बासन आ दहिना हाथमे कपड़ामे लपेटल दूटा कागद छल। संगमे हुनकर नतिनी छलीह; हाथमे विद्यालयक कापी, जकर कोन बरखाक पानिसँ कने मुड़ि गेल छल।

“आइ पानि बचल?” सरिता पूछलनि।

“माटि बचल, पानि एखन नहि,” शकुन्तला कहलनि। “कुम्हरौटिसँ फर्की छी। पहिने खा लेब, तखन कागद देखाएब।”

नैरा बरामदामे चटाइ पसारि देलनि। शकुन्तलाक नतिनी अपन कापी भीजबासँ बचबैत भीतर राखलक। संकेत ओकरा लेल पुरान अखबार बिछा देलक, मुदा कापी उठाकऽ देखबाक अनुमति नहि माँगलक। बच्ची अपन हाथसँ पन्ना खोलि देखौलक—घरक पाँच पीढ़ीक विषयपर लिखबाक विद्यालयक काम छल। पहिल पाँतमे प्रश्न छल, ‘घर ककर?’ उत्तर लेल आधा पन्ना खाली।

“हम पाँच जनेक नाम लिखि सकैत छी,” बच्ची कहलक, “मुदा चौकी ककर छल से कियो नहि कहैत अछि।”

नैरा दिनमे विद्यालयक बरामदामे देखल चौकी याद कएलनि। ओकर पायामे अँक घसल छल। ओ कागदपर बनाओल अपन छोट रेखाचित्र निकालि देखौलनि। “ई वर्ष बुझाइट अछि, मुदा एखन धरि पढ़ल नहि गेल अछि। चौकी पर जे लिखल अछि, ओ बनौनिहारक नाम सेहो भऽ सकैत अछि, बादमे कएल चिन्ह सेहो। जँ तुला चाही तँ चौकीक लकड़ी देखए फेर जएबाक पड़त।”

शकुन्तला चश्मा बिना ओ रेखा देखए नजदीक अएलीह। “हमर बाबू कहैत रहथि, विद्यालयक पुरान चौकी माटिक बासनक बदला काठक मजदूरसँ बनबाओल गेल छल। मुदा बाबूक बात सुनल हमर प्रमाण अछि; चौकीक हिसाब देखल नहि।” ओ नतिनीक कापी बंद नहि करबौलनि। “ई अन्तर लिख सकैत छी तँ लिख।”

सरिता भात परसलनि। नतिनीकें तरकारी नीक लगैत छल, शकुन्तलाकें कम नूनक दाल, सरिताकें भातमे कने बेसी पानि। संकेत अपन थारीमे भुजल मिरचाइ रखलक। शकुन्तला हँसि पड़लीह—“एक रसोइमे पाँच प्रकारक जीह! एहि पर कोनो पंजी बनत तँ घरो पाँच टुकड़ामे बाँटि देत।” सरिता एहन हँसलीह जे नतिनी सेहो अपन प्रश्न बिसरि हँसए लगल।

भोजनक बाद सरिता सन्दूकसँ कपड़ामे बान्हल पुरान पन्ना निकाललनि। काल्हि नैराकें जे घरेलू बही देखौने छलीह, ओ एहि बेर नहि। ई अलग-अलग आकारक पन्नाक गँठरी छल—ककरो लिखल, ककरो सँ सुनेल, आ किछु बिल, जिनका घरमे कागद बुझि राखल गेल छल। पहिल पन्नापर ‘१९४२’ लिखल छल; अक्षरक दामनपर पानिक धब्बा।

“ई तिथि लिखल अछि,” सरिता कहलनि, “मुदा लिखनिहार के रहथि, हमरा नीकसँ नहि बुझाइत। हमर परनानीक घरक बात नानी सुनबैत रहथि। हम हुनक कहनाइ लिखि लेने रही। एके पन्नामे पुरान समयक दू हाथ अछि।”

“तखन एकर माथपर ‘१९४२क आँखिदेखल’ नहि लिखब,” नैरा कहलीह।

सरिता सहमत भेलीह। ओ पहिल कथा सुनबए लगलीह। परिवारक परनानी राति बासन उलटि राखैत छलीह, जेना भोरमे बिना आवाज काज शुरू कऽ सकथि। वर्षा आएबाक पहिने गाममे पोखरि उराहबाक भेल छल। लोक माटि निकालैत, कियो कुदार दैत, कियो पानी ढोइत, कियो थाकल हाथ लेल भात पकबैत। माटि ककर खेतमे राखल जाए, एहि पर एहन झगड़ा उठल जे एक दिनक काज दू दिन पाछाँ सरकल। सरिताक नानी कहैत रहथि जे ओकरा लेल रसोइ कएनिहार स्त्री सभकें काज गनैबामे लोक बहुत देरि कएलक।

“ई बात १९३९क उराहिक कहल जाइत छल,” सरिता जोड़लनि। “तिथि हमरा नानीक कहबाक आधारपर याद अछि। ओकरा देखल कागद भिन्ने खोजबाक अछि।”

“उराहि दिनमे काजक गिनती ककरा नामे लिखल जाइत छल?” नैरा पूछलनि। सरिता कनेक सोचलीह। “नानी कहैत रहथि जे खन्ती चलबएबलाक नाम दर्ज होइत छल। भात पकौनिहार, घैलमे पानि लऽ जाएबला आ चोट लागल हाथ धोएनिहारक समय बहुधा कोनो खाना नहि पबैत छल। बादमे एक स्त्री अपन रसोइक खर्च लिखि आनि सभक

आगाँ रखलनि। लोक पहिले हँसल, फेर बुझलक जे चाउर, इन्धन आ मेहनत बिना पोखरि साफ नहि होइत।” शकुन्तला पूछलनि जे ओ स्त्रीक नाम याद अछि की नहि। सरिता सिर हिलौलनि। “नहि। नाम नहि भेटल तँ हुनका अपना मनसँ नाम नहि देब। मुदा हुनकर काज मेटाओब सेहो नहि।”

शकुन्तला बासनक ढक्कन उठौलनि। भीतर लाल आ धूसर माटिक दू छोट डल्ला छल, दूनू अलग कपड़ामे। “ओहि पुरनका विवादक बात हमरो घरमे सुनल गेल। हमर घरक लोक कहैत छल जे पोखरिक गाद आ चाकपर घुमएबला माटि एक नहि। मुदा ई जे आइ लेने छी, ओकरा चाकपर चलाकऽ जाँचबाक अछि। पुरान उराहिसँ एकरा एक नहि मानू।”

नैरा दुनू डल्लाकेँ छुलनि नहि। शकुन्तला धूसर डल्ला हाथमे लऽ कऽ अंगुरीसँ कने भुरभुरौलनि; ओतबे सँ ओकर बासन बनेबाक योग्यता निश्चित नहि भेल। कुम्हरौटिक माटिस्थल धरि जएबाक पुरान पगडंडी एक निर्माणक घेरावसँ सँकर भेल छल। माटि लाएबामे ढुलाईक दाम बढ़ल, मुदा शकुन्तलाकेँ बासनक बकाया एखन नहि भेटल छल। नतिनीक नव कक्षाक प्रवेश-खर्च एहि देरीक बीच अटकल रहैत छल।

“कतेक माटि निकालब?” नैरा पूछलनि।

“जतेक लेल अनुमति भेटत आ जे उपयोगी निकलत, ततेक। पूरा ठाम हमर अछि, ई हम नहि कहब। मुदा जे पुरान पहुँच छल, ओकरा बिना सुनवाई बन्द करबाक अधिकार ककरो नहि।” शकुन्तला कपड़ामे राखल कागद खोललनि। पहिल पन्ना पुरान ढुलाई-भाड़ाक, दोसर बासन मँगौनिहारक बकाया रसीद। “जँ माटिक हकक लड़ाइ लेल घरक सभ रुपैया खर्च कऽ देब तँ हमर नतिनी पढ़त कोना? कागद चाही, कारण मुँहक बात सभ दिन नहि टिकैत।”

नतिनी कापीक पाछाँ एकटा छोट वृत्त बनौलक। “दादी, हम माटिक बासन बनएब सीखब, मुदा विद्यालयो जाएब।”

“दूनू काज हमर पसिन्नसँ अलग भऽ सकैत अछि,” शकुन्तला कहलीह। “जे दिन तू कहबें जे बासन नहि बनायब, ओहियो दिन तोहर पढ़ाइ बन्द नहि होएत।” ओ बात कहैत हँसलीह नहि; हुनकर सामने बकायाक कागद खुलल छल। नैराकेँ बुझायल जे ई

आश्वासनक दाम हिसाबमे लिखब असम्भव अछि, मुदा देबाक व्यवस्था बिना आश्वासन अपूर्ण रहत।

सरिता दोसर पन्नापर गेलीह। १९७४क कात एक घर बदलबाक खर्च लिखल छल—दू बोरान् अन्न, किछु बासन, पायाक एकटा मरम्मति। के परिवार स्थल बदललक, तकर उल्लेख छोट, नाम आधा। “हमर नानी कहैत रहथि जे ओ साल घरक एक भागमे पढ़बाक जगह बनल। मुदा नानीक कहल अनुसार ई घरक सभ बच्चा लेल खुलल नहि छल। कियो दिनमे काम करैत, रातिमे अक्षर सीखैत।”

शकुन्तलाक नतिनी एहि पन्नाक बगलमे अपन विद्यालयक प्रश्नक एकटा आन उत्तर देखलक। पुरान घरक चित्रमे खिड़की बनल छल, मुदा ओकरा लगल जे खिड़कीसँ बाहर देखबाक स्वतन्त्रता सभ बच्चाकेँ समान नहि भेटैत छल। ओ अपन कापीमे छोट खिड़की खींचलक आ ओकर बाहर एकटा बाट। सरिता ओ चित्र देखिकऽ कहलीह, “खिड़कीक आकारसँ नहि, बाट खुलल अछि की नहि, ताहिसँ घरक हाल बुझाय।” संकेत मुस्कुरा कऽ कहलक जे चित्र ओकरो बुझाइट अछि; नतिनी कहलक, “तखन अहाँ हमरा गाड़ी बनएनाइ सिखाउ।” दुनू चटाइपर कागद साटि बैसि गेल।

संकेत सुनैत-सुनैत पुछलक, “तखन सभ अपन नाम लिखि सकैत छल?”

“नहि,” सरिता उत्तर देलनि। “आ जे नहि लिखि सकैत छल, ओकरा बिना सहमतिक अँगूठा लगबाओल जाय, से ठीक नहि। घरक कहानीमे एहेन बातो अछि जकरा सुनब सरल नहि।”

१९९३क पन्ना मे रेलक भाड़ा आ पत्र पठएबाक खर्च छल। सरिता कहलनि जे हुनकर माय दूर कमाइ लेल गेल परिजनक चिट्ठी सुनबैत छलीह। चिट्ठीमे घरक खर्च नहि, भोजनक स्वाद सेहो लिखल जाइत छल—ककरो ओतयक भात नीक नहि लगैत, ककरो नून महँग बुझाइट। पन्नामे ‘घर पहुँचल’ लिखबाक जगह खाली छल। “एतय पत्र हरायल भऽ सकैत अछि, वा घर पहुँचबाक सूचना लिखल नहि गेल हो,” सरिता कहलीह। “खाली जगहसँ ककरो लापता घोषित नहि करब।”

पत्रमे पैघ नगरक नाम रहितो नहि रहल हो, घरक लोक बाहरी लोककेँ अक्सर एक्के शब्दमे समेटि दैत छल—‘परदेशिया’। सरिता एहन नहियँ मानैत छलीह। “दूर जाएब आ

परिवार छोड़ि देब एक नहि। केओ लौटैत अछि, केओ पत्र पठबैत अछि, केओ एक्को खबर देबामे असमर्थ रहैत अछि। जे उत्तर नहि आयल, तकर कारण हम हुनकर मुँहमे नहि राखब।” शकुन्तला कहलनि, “गाममे जखन कियो घुरैत नहि छल, लोक हुनकर हिस्सा अपन हिसाबसँ बाँटए लगैत छल।” ओ अपन वाक्यक बादे जोड़लनि, “मुदा एहि घरमे एहन भेल, ई हम नहि कहि रहल छी।” सरिता हुनकर एहि सावधानीपर सहमतिक माथ हिलौलनि।

नैरा ओ पाँतिक प्रति बनएबाक इच्छा दबा लेलनि। माँ जे कागद हाथमे देने छलीह, ओकर अनुमति हर पन्नापर समान नहि छल। ओ बच्चीक कापीक प्रश्न देखलनि—‘घर ककर?’ सोचलनि, पाँच पीढ़ीक घरकें केवल मालिकक नाममे समेटल जाए तँ चूल्हाक निकसार, बासन बनौनिहार आ बाहर कमाइ लेल गेल लोक सभ गुम भऽ जाएत। मुदा एखन ई हुनकर अपन विचार छल, पन्नाक प्रमाण नहि।

ओहि समय दरवज्जापर बिन्देश्वरी साहुक लड़का तेलक शीशीक दामक पर्ची दऽ गेल। घानीक पुरान पुर्जा बदलबाक खर्च आ बजारसँ किनल तेलक दाम दू अलग पाँतमे छल। शकुन्तला शीशीक गन्ध सूँघि कहलनि जे पहिले घरमे तेल पीसबाक आवाज सुनाइत छल। बिन्देश्वरी घानी बेचबाक सोचने छथि, मुदा घरक दोसर लोक एकरा स्मृतिवस्तु बुझैत छथि। “मशीन बचौने घरक कर्जा नहि चुकत,” सरिता कहलनि, “मुदा बेचने स्मृति कहाँ राखब, ई प्रश्न सेहो छै।” पर्ची आलमारीमे गेल; एहि राति ओकर समाधान कियो नहि कएलक।

सरिता तेसर गँठरी खोललनि तँ २००८क विद्यालयक फीसक दू रसीद निकलल। एक नैराक पढ़ाइ सँ जुड़ल छल, दोसर ककरो पुरान पुस्तक बाँटबाक। नैरा नीकसँ देखलनि—फीस देबाक खाना भरल छल, पुस्तक पहुँचलाक हस्ताक्षर नहि। ओकरा मोन पड़ल जे ओहि वर्ष ओकरा किताब देबाक बदला कियो पुरान कापीक खाली पन्ना बचाकऽ देलने छल। मुदा ओ स्मृति रसीदक खाली हस्ताक्षरकें भरि नहि सकैत छल।

“हम तोरा पढ़ाबए लेल घरसँ बाहर गेलहुँ, एहन कथा नहि कहब,” सरिता बेटी दिस देखैत कहलनि। “हम अपन काज करैत रही। तोहर पढ़ाइ घरक काजक संग भिड़ैत छल। एक बेर परीक्षा दिनमे बासन धोएनाइ छोड़ि देलहुँ, तँ घरमे दिन भरि तकर चर्चा चलल।”

नैरा हँसलीह। “हम तखन बुझने रही जे अहाँ हमरा पक्षमे झूठ बजलहुँ—कहलहुँ नल टूटि गेल छल।”

“नल तँ सचमुच टूटल छल,” सरिता मुस्कुरेलीह, “मुदा कतेक बेर केकरा पक्षमे सच बाजल गेल, ई तऽ दोसर पहाड़ा अछि।” नतिनी एहि हँसीमे शामिल भेलीह, यद्यपि हुनका नैराक ओहि परीक्षाक नाम बुझल नहि।

२०२७क पन्नापर संकेतक बच्चाक अक्षरमे गाड़ीक चक्का बनल छल। ओ अपन चित्र देखिकऽ कने लजा गेल। तखन नन्हका हाथसँ घरक सभ लोकक चित्र बनौने छल; ककरो मुँह गोल, ककरो देह लम्बा, आ एक व्यक्ति लेल खाली जगह। “ई खाली किएक?” नैरा पुछलनि।

“कागद फाटल रहए,” संकेत कहलक। “हो सकैत अछि कियो रहि गेल हो। मुदा आब हम नहि कहि सकैत छी जे के।” सरिता ओ चित्र फेर बच्चाक हाथमे दऽ देलनि। एकर खाली जगह केँ सत्ताइस नामक सूचीसँ जोड़बाक लोभ नैरा छोड़ि देलनि। चित्रक अर्थ ओकर बनौनिहारक स्मृति सँ बेसी निश्चित नहि छल।

कुम्हरौटिक पगडंडीवला पर्चीक संग शकुन्तलाक थैलीमे आरो किछु रसीद छल। अमृता चौहान नोनथराक पुरान माटि सम्बन्धी दावाक कात अपन नाम लिखेने छलीह; गोमती बेलदार आधुनिक निर्माणमे कएल अपन ढुलाईक घण्टा अलग गनने छलीह। दुनू कागद एक संग बान्हल छल, मुदा दुनू काज एक नहि। नोनिया–बेलदारक पुरान व्यवसायवृत्तक नामक आधारपर गोमतीक मजदूरी अमृताक भूमि दावामे जोड़ि देब अनुचित होएत। शकुन्तला ई भेद बुझैत कागद फेर अलग राखलनि।

एक लिफाफामे महेन्द्र महासेठक कारोबारक पुरान नपना सम्बन्धी पर्ची छल, आ दोसरमे बिनोद जायसवालक छोट खरीदक रसीद। लोक दुनू घरकेँ एक पुरान पेशाक नामसँ जोड़ि एकहि खाता समझैत छल, मुदा भुगतानक नाम, तिथि आ मालिक अलग छल। नैरा दुनू लिफाफापर नाम स्पष्ट देखलनि; हुनका कियो माँगलो नहि जे ओहि पर्चीक आधारपर ककरो दोष वा निर्दोषता ठहराबथि। शकुन्तला केवल एतबे कहलनि, “कुम्हरौटिक बासनक दाम जँ एहि संग बिल मे लगत तँ हमर पैसा हराएत।”

नतिनी अपन कापी फेर खोललक। बीचमे नीलिमा नुराडक भेजल एक विवाह-निमन्त्रणक प्रति राखल छल; नीलिमा विवाहक पंजीमे मातृनाम सही रहबाक लेल आवेदन देबाक बात लिखने छलीह। बच्ची पूछलक, “नाम छूटि जाए तँ फेर लिखल जा सकैत अछि?” सरिता कहलीह, “आवेदन देल जा सकैत अछि। मुदा कागद सुधरब आ परिवारक पुरान स्मृति सुधरब एके बात नहि।” बच्ची कापीक माथपर लिखलक—‘जे नहि मालूम, से पूछब।’

बरामदामे राखल गीतक छोट बहीमे हमीदा मिरियासीनक विवाहगीतक मानदेय अलग लिखल छल। कोनो आयोजक पुरान गीतक शब्दकेँ मजाकमे बजाओल चाहने छल; हमीदा एहि प्रयोगक अनुमति नहि देने छलीह। हुनकर गीत ककरो घरक स्मृति छल, मुदा स्मृति कहि गायकक मेहनताना मेटाएल नहि जा सकैत छल। शकुन्तलाक नतिनी गीतक धुन सुनबाक इच्छा जतौलक। “पहिने गायिकासँ पूछब,” सरिता कहलनि। बच्ची कहलक, “ठीक अछि, तखन हम काल्हि अपन कविता सुनाएब।”

थैलीक अन्तिम कागद शशि माहुरीक गोदाम भाड़ाक एक पुरान सूचना छल। ओकरा पर लिखल केवल भाड़ाक अवधि आ वस्तु रखबाक सामान्य शर्त छल; भीतर की राखल गेल, से नहि। नैरा ओ पर्चीकेँ सत्ताइस नामक पन्नाक संग नहि मिलौलनि। शशिक दुकानक स्थिति वा कोनो अनियमितता एहि एक रसीदसँ तय नहि होइत छल। हुनका एखन एहि पर्चीक केवल एतेक उपयोग बुझायल जे कुम्हरौटिसँ आएल किछु बासन कखन गोदाम धरि लऽ जाएल गेल छल, तकर अलग ढुलाई-खर्च पूछबाक अछि।

बाहर वर्षाक छोट फुहार शुरू भेल। नतिनी पानि थमबाक आसमे सरिताक घरक चौखटपर बैसि अपन कापीमे पाँच घर बनौलनि। पहिल घरक नीचाँ १९४२, दोसरक १९७४, तेसरक १९९३, चौठक २००८, पाँचमक २०२७। फेर रुकि गेल। “ई पाँच घर एके घर अछि?”

“कखनो एक, कखनो नहि,” सरिता कहलनि। “जमीन बदलैत छै, कोठरी बदलैत छै, लोक बदलैत अछि। जे साथे खाइत अछि, ओहो हर बेर एक्के छत नीचे नहि रहैत। एहि लेल पाँचू कालक बात एक आदमीक नामसँ मत लिखिहें।”

“आ १९३९?” बच्ची पूछलक।

“ओ पोखरि-उराहिक कथा अलग माथपर लिखिहैं,” शकुन्तला उत्तर देलनि। “सुनेल बात कहि। जखन पुरान खाता भेटत, तखन ओकर तिथि जाँचब।” नतिनी कापीक एक कात खाली जगह छोड़लक। सरिताक कथामे छल जे उराहिक दिन कियो माटि उठौलनि, कियो भात रान्हलनि, आ ककरो घाटक बाट बन्द भेल। खाली जगह भरबाक लेल बच्ची अगिला बेर तीनू पक्षसँ पूछबाक चाह रखलक।

बरखा थमलापर शकुन्तला नतिनीकेँ उठौलनि। ओ माटिक दुनू नमूना फेर लपेटलनि; एकर परीक्षण काल्हि चाकपर करताह। नैरा विद्यालयक चौकीक अँक जाँचबाक लेल अलग दिन तय करबाक बात कहलीह, मुदा शकुन्तलाक माटिक पहुँच सम्बन्धी लिखित निवेदन बनएब पहिने जरूरी बुझलनि। शकुन्तला स्वयं कहलीह, “हम निवेदनमे एतबे लिखब जे माटिस्थल धरि पुरान बाट इस्तेमाल भेल अछि, ओकर जाँच आ सुनवाई चाही। ई नहि लिखब जे पूरा जमीन हमर बाप-दादाक रहल।”

ई निर्णयसँ हुनकर दावा छोट नहि भेल; ओ एखन पहिल बेर एहन रूपमे लिखल जाएत जे दोसर पक्ष उत्तर दऽ सकए। नैरा सरिताक बहीक अनुमति-सीमा याद राखि शकुन्तलाकेँ खाली कागद देलनि। नतिनी अपन कापीक पहिल प्रश्नक नीचाँ लिखने छल—‘घरमे रहनिहार, काज करनिहार आ दूर गेल लोक सभक कथा सुनब।’ उत्तर पूर्ण नहि छल, मुदा पढ़ाइक लेल पर्याप्त आरम्भ छल।

सरिता दरवज्जा बन्द करबासँ पहिने चौखटक भीजल कोना पोछलनि। पहिल गँठरी फेर कपड़ामे बान्हलनि, मुदा सीमातीर्थक पुरान डाक-मुहरवला एक चिट्ठी अलग राखलनि। “ई हमर अपन चिट्ठी नहि,” ओ नैरासँ कहलीह, “जकर नाम अछि, हुनक अनुमति लेल बिना हम ई नहि खोलब।” नैरा चिट्ठीकेँ बिना उलटने देखलनि आ थाल धोएबाक पानि लऽ अएलीह।

भातक हाँड़ीमे कने बचल छल। संकेत पूछलक जे काल्हि नतिनी आएत तँ ओकरा लेल भुजल मिरचाइ राखल जाएत की नहि। सरिता कहलीह, “ओकरा पूछिहैं। सभकेँ तोहर पसिन्न किएक लगत?” संकेत मुस्कुराएल। पाँच पीढ़ीक नामक बीच भोजनक ई छोट प्रश्न आजुक घरकेँ ओकर अपन समय दऽ रहल छल।

अध्याय ८ • सीमातीर्थक चिट्ठी

भोरमे सरिता सन्दूकक उपर राखल लिफाफा उठौलनि तँ ओकर एक कोना नमीसँ नरम पड़ि गेल छल। राति भरि खिड़कीक जंगला लग पानि टपकैत रहल। नैरा चूल्हाक आगि सुलगाबए अएलीह तँ माँकेँ लिफाफाक चारूकात सूखल कपड़ा फेरैत देखलनि। कागदपर सीमातीर्थक डाक-मुहर छल; नाम रामवती खत्वेक। सरिता ओकरा फेर मोड़ि नहि रखलनि। “काल्हि शकुन्तलाक कागद देखैत ई निकलल। रामवती जखन एतय रहि गेल छलीह, अपन पुरान चिट्ठी हमरे लग राखि देने छलीह। लौटाबएबाक समय कखनो नहि बनल।”

“अहाँ खोलने छी?” नैरा पूछलनि।

“नहि। कागद पुरान भऽ गेलासँ ओकर भीतरक बात हमर नहि भऽ जाइत।” सरिता बरतनमे भातक पानि नापैत कहलीह, “रामवती आइ मखानिया डबरा दिस जाएवाली छथि। हुनका हाथे देब। जँ हुनका बुझाएत तँ ओ स्वयं बतौतीह।”

नैरा झोरा निकालि रहल छलीह। काल्हि शकुन्तलाक नतिनी अपन कापीमे पाँच घरक चित्र बनौने छलीह। ओहि चित्रक खाली बाट हुनका याद पड़ल। सीमातीर्थक डाक-मुहरसँ दू नगरक दूरी अनुमान करब आसान छल, मुदा एक चिट्ठी ओ दूरी कोना पार कएलक, से नहि। ओ लिफाफा एकटा सादा पन्नीक भीतर रखलनि, जेना भीजि नहि जाए। संकेत कहल, “हम फोटो खींचि राखि दी?” नैरा सिर हिलौलनि। “पहिने रामवतीसँ पूछब। लिफाफा सुरक्षित रहब आ ओकर चित्र सभक फोनमे रहब एक बात नहि।”

विदेहपुरक बाहरक बाटपर पानि एखन धरि घुटना तक नहि आयल छल। हलुक गाड़ीक चक्का कादो उछालैत आगाँ बढ़ैत छल। नैरा आ सरिता पाछाँ बैसल छलीह। डबरालसँ पहिने एकटा सँकर मोड़पर ऊनक गट्टर रखने देवकी पालक आदमी रास्ता छोड़बए उठल। देवकी स्वयं कागदपर पशु पार करएबाक समय लिखि रहलीह। नहरक कातक चारागाह धरि जाएबाक पगडंडी पर नव खूँटा लागल छल; गट्टर आ पशु दुनूकेँ दोसर घुमाव लेबए पड़ैत छल। देवकीक रसीदपर ऊनक वजनसँ बेसी ओकरा लऽ जाएबामे लागल अतिरिक्त

भाड़ा छल। नैरा ओकर प्रतिलिपि माँगलनि नहि; ओ कागदक एक पाँतिक अर्थ पूछलनि आ देवकी उत्तर देलनि, “भाड़ा हमर, बाट सभक।”

आगाँ पानक खेतक खाँचामे फूलो चौरसियाक नामसँ एकटा छोट पट्टी बन्हल छल। मजदूर खेतक नमी जाँचि रहल छल; ओहि पट्टीपर पानि छोड़बाक प्रस्तावित समय लिखल छल, मुदा खेतमे केतेक पानि सहल जाएत से नहि। सूरज चौधरीक ताड़गाछक नीचाँ चढ़निहारक दिहाड़ीवला रसीद सूखए लेल तानल गेल छल। नन्दिनी भंडारीक नर्सरीसँ बाँसक नलिका परखनाइ लेल आएल छल; ओकर माप डबराक खेती लेल उपयोगी भऽ सकैत छल, मुदा नर्सरीक जमीनक दाम ओहि मापसँ तय नहि होएत। चारू काज एक्के बाटपर छल, मुदा चारू घरक हानि आ लाभ अलग।

डबराक लग पहुँचबासँ पहिने एक सँकर पुलिया पर गाड़ी रुकल। ओहि ठाम विवाहक निमन्त्रण पहुँचएनिहार दू युवक बैसल छलाह। एक परिवार सीमातीर्थक आ दोसर विदेहपुरक। दूनू कहैत छलाह जे विवाहमे बाजा बजत, मुदा लड़कीक मायके जाएबाक भाड़ा के देत, से एखन तय नहि। युवकक हाथमे निमन्त्रण आ यात्रा-खर्चक दू पर्ची छल। सरिता हँसि कऽ कहलीह, “विवाहक गीतक पहिने यात्रा-भाड़ा गनल जाएत तँ कोनो अनर्थ नहि होएत।” एक युवक पुछलक, “मुदा गीत कियो गाओत?” सरिता कहलीह, “जिनका मन हो, आ जिनका मानदेय देब, ओ।” पुलिया पर कने हँसी भेल, फेर गाड़ी बढ़ल।

मखानिया डबरा बरकी पोखरि सन नहि छल। एतय न स्नानक पक्का घाट, न धोबिघट्टाक पाट। कातमे पानि धरि उतरबाक सुरक्षित पगडंडी चिन्हित छल; भीतर मखानक पात, काँट आ दलदली माटिक अपना काम छल। रमणी बिन्द ओही पगडंडीक मुँहपर भीजल बोरा पसारि रहल छलीह। हुनक संग चारि स्त्री पुरान मौसमक सुखाएल गूड़ी छाँटि रहल छलीह। नव बीहनक लगाओल भाग दोसर कात छल। पानि बढ़ि गेल तँ छाँटबाक जगह बदलए पड़त, तँ आइ पहिने काजक समय आ उतरबाक बाट तय होएबाक छल।

“आइ फोड़ाइ पूरा होएत?” नैरा पूछलनि।

“पुरान खेपक नमूना भरि,” रमणी कहलनि। “नव गूड़ी एखन पानिमे अछि। ओकरा आइ निकालि फोड़ल कहब तँ बजारो झूठ, मजदूरीओ झूठ।” ओ हाथक एक गूड़ी देखौलनि—सुखाएल, कठोर, जेकरा फोड़बाक पहिने ताप आ फेर हाथक कौशल चाही। “पानि भीतरक काज आ आगि लगक काज अलग-अलग गनल जाए। देखनिहार लोक सभटा एक ‘मखान’ कहि देत।”

सरिता कपड़ाक थैली उतारि कातमे बैसलीह। नैरा देखलनि जे काजक चटाइपर पहिनेसँ एक मोट बही खुलल छल। माथपर जलकर लेनदेनक नाम, नीचे दिन आ बोझाक संख्या। स्त्रीसभक लेल एकटा खाना छल—‘परिवारक सहायता’। ओहिमे संख्या शून्य। रमणी ओ पन्नापर अंगुरी रखलनि। “हम पानिमे उतरि जे करैत छी, ओ सहायतामे गेल। ई चारू जे छाँटैत छथि, हुनकर समयो शून्य। जकर नामपर पट्टा अछि, ओकर खातामे उपजक दाम चढ़त; हमर देहसँ केतेक बेर पानि झाड़ल गेल, तकर लेखा कतहु नहि।”

एक मुनीम कहलक जे जलकरक पुरान रजिस्टरमे मजदूरीक अलग खाना नहि। रमणी ओहि उत्तरपर बहस बढ़ाएबाक बदला दूटा पन्ना निकाललनि। पहिल पन्नामे काज शुरू आ बन्द होएबाक समय, दोसरमे उपस्थित स्त्रीसभक अपन सहमति सँ लिखल नाम। कियो अपन नाम सार्वजनिक करब नहि चाहैत छलीह; हुनका लेल अलग निजी रसीद तैयार छल। “नाम सभक सम्मति बिना टाँगब नहि,” रमणी कहलीह, “मुदा दिहाड़ी बिना नामक बहाने दबाओल नहि जाए।”

“एहि पन्ना सँ पट्टाक मालिकाना बदलब नहि,” मुनीम उत्तर देलक।

“हम एखन मालिकाना नहि माँगि रहल छी,” रमणी कहलीह। “हम कहैत छी जे बीहन, पानिमे उतरब, गूड़ी चुनब, सुखाएब आ फोड़ब एके आदमीक काज नहि। मालिकानाक विवाद अलग सुनवाईमे जाए। आइ जे काज भेल ओकर दाम आइ लिखू।” मुनीमक मुँहपर थकान छल। ओहो कहलनि जे ऊपरक खाता बिना हस्ताक्षर रुपैया निकासब कठिन। रमणी बिना आवाज ऊँच कएने ओकरा समक्ष तीनटा पुरान रसीद रखलनि। एक पर पुरुषक नाम, दू पर केवल बोझाक संख्या।

रमणी एकटा आरो खाना देखौलनि। ओहि पाँतमे पुरान खाताधारकक नाम रहितो नव लेनदेन चढ़ल छल, जखन स्थानीय मृत्यु-पंजीमे ओ व्यक्ति दिवंगत दर्ज छल। रमणीक

लग ओ पंजीक प्रमाणित प्रति नहि छल, तँ ओ एखन नकली खाताक आरोप नहि लगौलनि। हुनकर माँग छल जे जमा के कएलक, रकम के पओलक आ पंजी कोना अद्यतन भेल, तकर अलग हिसाब मँगाओल जाए। नैरा अपन मायक मृत्यु-सूचना याद कएलनि, मुदा दुनू घटनाकेँ एके अपराधक प्रमाण मानबाक लोभ रोकि लेलनि।

एहि बीच बीहन-पानि साझेदारीक लेल लोक जुटि गेल। पानि कखन छोड़ल जाए, कतेक सुरक्षित बाट रहए, जे कियो भीतर उतरत ओकरा सहायक रहत की नहि—एहि प्रश्नपर पहिने सहमति चाही। नन्दिनीक नलिकासँ कएल छोट मापकेँ केवल आजुक नाप मानल गेल; बरखा बढ़लापर फेर नापबाक शर्त जोड़ल गेल। फूलोक खेतक पानिक समयक पट्टी अलग रखल गेल, कारण खेत बचएबाक खर्च डबराक मजदूरपर नहि थोपल जा सकैत छल। देवकीक पशु-बाट लेल चिन्ह छोड़ल गेल। कियो एहि तीन काजकेँ एक साझा उत्सवक नाम देलक, मुदा झगड़ा एखन समाप्त नहि भेल छल।

रमणी कागदपर पहिल दर लिखौलनि। चुनेल गूडीक दाम, सुखएबाक समय आ फोड़ाइक पारिश्रमिक तीन पाँतमे। जकरा कौशल सिखबामे दिन लागल, ओकर दर कम करबाक तर्क नहि मानल गेल। अस्थायी काम करए अएली एक स्त्री पूछलनि, “हम आधा दिन देलहुँ, हमर नाम आधा लिखब?” रमणी कहलनि, “नाम पूरा, कामक घण्टा जतेक, से अलग।” मुनीम ओहि वाक्यकेँ सुनि कऽ फेर पन्ना पलटल। ओ एखन भुगतान नहि कएलक, मुदा उपस्थिति आ अलग दरक प्रति बनाकऽ देबाक लिखित स्वीकृति देलक।

रमणी दोसर शर्त जोड़लनि—पानि भीतर उतरनिहार स्त्रीकेँ सूखल कपड़ा बदलबाक आ विश्रामक जगह भेटत। कातमे खाली एक छप्पर छल, जकर आधा भाग व्यापारीक बोरा घेरने छल। मुनीम कहलक जे बोरा हटाएलासँ माल भीजि सकैत अछि। रमणी उत्तर देलनि, “तखन बोरा लेल दोसर सुरक्षित ठाम देखू। हमर लोक देहमे काँट लगौने भीजल रहत, आ हिसाबमे ओकरा शून्य लिखब—ई दूनू एक अन्याय अछि।” काजक दल आधा छप्पर तुरन्त खाली करौलनि; गूडीक बोरा ऊँच काठक चौकीपर राखल गेल।

अधघण्टाक अवकाशमे सरिता रामवतीकेँ देखलनि। ओ डबराक कातमे अपना झोरासँ दू भिन्न लिपिमे लिखल कागद अलग कऽ रहल छलीह। एक कागद विवाहक घरक, दोसर प्रवासमे कमाइ पठएबाक। दुनूमे हुनक मायकेक परिचय एक्के ढङ्गसँ नहि छल। सरिता

लिफाफा हुनका हाथमे देलनि। “ई अहाँ हमर घरमे राखि देने रही। हम खोलेल नहि।” रामवती कागदक कोन छलनि आ मुहर दिस देखलनि। हुनकर आँखि तुरन्त भरि नहि अएलनि; पहिने ओ पाछाँक तिथि पढ़लीह, जेना किछु गणना करैत होथि।

“हम तखन अपन नामक दू रूप एक कागदमे मिलएबाक चाहने रही,” रामवती कहलीह। “घरमे जे नाम बाजल जाइत अछि, ओहि नामसँ विवाहक पंजी नहि बनल। कमाइ आयल तँ बैंकक कागद दोसर नामक प्रमाण माँगलक। हम ई चिट्ठी एतय छोड़ने रही जे सभक बीच खोलि नहि देब।” ओ सरिताकेँ धन्यवाद नहि कहि पहिने पूछलनि, “आब एकरा के-के देखलक?”

“हम आ नैरा केवल लिफाफा,” सरिता उत्तर देलनि। “संकेत फोटो लेबाक पूछलक, मुदा फोटो नहि खिचल।” रामवती तनिक ढील छोडलनि। ओ लिफाफाक मुँह अपन हाथे खोललनि, भीतरसँ पीयर भऽ गेल कागद निकाललनि। कने देर एकान्तमे पढ़लाक बाद ओ वापस अएलीह। “एहिमे हमर मायक पुरान घरक पता आ दू गवाहीक बात अछि,” ओ कहलनि। “अहाँकेँ एक पाँति कहब, मुदा पूरा पत्रक प्रति नहि बनत। ई हमर मायक जीवनक सेहो बात अछि।”

नैरा अपन कापी बन्द कऽ देलनि। “जे कागद दूनू कात उपयोगी अछि, ओकर मूल अहाँ राखू। जँ कखनहु आवेदन लेल अनुवाद चाही तँ अहाँ शब्द चुनि सकैत छी।” रामवती कहलीह जे अनुवादमे परिवारक सम्बोधन बदललासँ एक बेर मायकेक लोक ससुरालक परिजन बुझा लेल गेल छल। कागदक गलती सुधारबाक लेल ओ दूनू पक्षक अलग उत्तर चाहैत छलीह। एहि चिट्ठीमे ओ उत्तरक एक पुरान सूत्र छल; पूरा निर्णय नहि।

रामवतीक विवाहक पाछाँ परिवारक दू अपेक्षा छल। माय चाहैत छलीह जे बेटी अपन जन्मक नाम नहियँ बदलए, ससुरालक लोक चाहैत छल जे कागदमे एक रूप रहए। रामवती दूनू बात सुनने छलीह, मुदा अपन घरक भीतर ओ जे नामसँ पुकारल जाइत छलीह, तकर निर्णय स्वयं लैत छलीह। “हम अपन मायके केँ झूठ नहि बनएब, आ ससुराल केँ दुश्मन सेहो नहि,” ओ कहलीह। “जे कागदमे गलती अछि, ओकरा सुधारबाक अछि। जे सम्बन्धमे प्रेम अछि, ओकरा विवादक कागदमे निचोड़ब नहि।” सरिताकेँ एहि बातमे अपन बेटी नैराक पुरान असहमति याद अएलनि; ओ किछु नहि बजलीह।

मखानिया डबराक कात नसीमा आ रफीकक परिवारक कमाइ-पचीं अमीर कुल्हैयाक नामवला एक थैलीमे आयल छल। ओ सभ सीमातीर्थक मार्फत पत्र पठबैत छलाह। महानन्दा नाम हुनकर पुरान पारिवारिक पताक एक पन्नापर लिखल छल; विदेहपुरक तिलवाहक दोसर नाम बुझि कियो ओकरा जलकरक नक्शामे नहि जोड़लक। नसीमाक पत्रमे एक घरेलू सम्बोधनक दू भाषामे अलग अर्थ छल। अमीर ओहि पाँतपर अनुवादक दाम स्पष्ट लिखबाबए चाहैत छलाह, कारण एहन छोट भेदसँ धन गलत व्यक्तिक नामपर रोकिनाए सम्भव छल।

कमाइ पठएबाक हिसाबमे सकल रकम, बाटमे काटल शुल्क आ घर पहुँचल रकम अलग-अलग छल। अमीरक अनुसार दलाल कहने छल जे सभ शुल्क एक बेरमे देबाक अछि, मुदा कागदमे तीन कटौतीक नाम लिखल छल। ओकर सत्यापन बाकी छल। नैरा ओ पचीं हाथमे लऽ कऽ एकक बाद एक संख्या जोड़लनि; दुनू जोड़ बराबर नहि पड़ैत छल। ओ अमीरकेँ कहलनि जे पठौनिहार आ पौनिहार दुनूकेँ अलग रसीद देखएबाक अनुरोध करू, एखन दलालकेँ चोर लिखब नहि। अमीर सहमत भेला, मुदा चिन्तामे कहलनि, “गलतीक नामपर दोसर बेर शुल्क देलहुँ तँ घरक दवाई कतेक दिन रुकत?”

आन कात सुगनीक पुरान कापीमे कोसी अथवा कोसिका नामसँ दर्ज बाढ़िस्मृति छल। सूरजक परिवार ओहि स्मृतिक संग कटि गेल खेतक ऋण सेहो जोड़ने छल। कापीक पहिल पन्नामे जलक स्तरक संख्या नहि, घरसँ कखन निकलल गेल तकर अनुमान लिखल छल। नैरा ई स्मृति सुनलनि, मुदा विदेहपुरक डबरामे पानिक आजुक मापसँ ओकरा नहि मिलौलनि। अलग नदी, अलग वर्ष, अलग लोक; दुःखक समानतासँ नक्शा समान नहि होइत। सुगनीक घरक कर्जक पन्ना अगिला बैठकी लेल राखल गेल, मखानक काजक देयसँ अलग।

दिन चढ़लापर मखान चुनाइ देखए अएल किछु लोक पूछए लगल जे एतेक छोट काज लेल अलग-अलग पाँति किएक। रमणी हुनका सुखाएल गूड़ी देखौलनि। दू स्त्री एके बोरा उठबैत छलीह, मुदा एक गूड़ी परखैत आ दोसर घुरि-घुरि आगिक ताप सँभालैत। दूनू कौशलक समय अलग रहल; दूनू केर हाथपर चोटक जोखिम अलग। रमणी कहलनि, “जे

दिन उपजक दाम एक संग लिखब, ओहि दिन मजदूरीक सबटा काज एक कहि मेटाएब नहि।” कियो हँसल, मुदा अगिला प्रश्न पूछबाक पहिने ओ काजक लग बैसि देखए लगल।

डबराक सीमाक कात एक व्यापारीक छोट बिल आयल। कमला जैनक परिवारसँ भेजल अग्रिमक शर्त ओहिमे छल—सामानक दाम, बोरा, ढुलाई आ लौटएबाक तिथि। कमलाक अपन निजी आ धार्मिक निर्णय सम्बन्धी कोनो बात बिलमे नहि छल; हुनका सम्बन्धमे कएल अफवाहक हिसाब ई बिल नहि देत। रमणी कहलीह जे अग्रिम लेल उपजक पूरा दाम पहिनेसँ काटि देब स्वीकार नहि। व्यापारीक प्रतिनिधि आगाँक बैठकमे दर फेर देखबाक सहमति लिखि गेल। एखन खरिदार बदलल नहि, मुदा एक अनुत्तरित शर्त कागदमे स्पष्ट भऽ गेल।

बोरा देखए अएल युवक मखानक अलग-अलग आकार एक्के ढेरमे राखए चाहैत छल। रमणी ओकर हाथ रोकि देलनि। “बाजारमे जँ भेदक दाम भेटैत अछि तँ चुननिहार स्त्रीक अलग मेहनतो बुझू।” युवक कहलक जे हाटमे खरीदार एक टोकरी देखैत अछि, नाम नहि। रमणी टोकरीमे दू अलग नमूना राखि देखौलनि, आ कहलनि जे जाँचक बाद खरीदार जे दर स्वीकार करत, से लिखित होएबाक चाही। युवक एहि बेर विरोध नहि कएलक, मुदा नव दरपर हस्ताक्षर सेहो नहि देलक। अटकल बात खुला रहल, जकरा मेला धरि टारल गेल।

मध्यान्हक बाद पुरान खेपक फोड़ाइ रुकल। हाथ धोएबाक साफ पानि अलग राखल गेल। रमणी जे स्त्री सभक नाम सार्वजनिक नहि लिखबाक अनुरोध छल, हुनकर निजी पर्ची मोड़ि थैलीमे रखलनि। सार्वजनिक फलकपर केवल कतेक श्रमिक, कतेक घण्टा आ कुल देय अंकित भेल। मुनीम पहिल बेर ओ फलकक अंक अपन बहिमे उतारलक। भुगतान एखन बाकी छल; तैयो कियो बादमे ई नहि कहि सकत जे स्त्रीसभ केवल देखए अएने छलीह।

गीत शुरू भेल तँ एक स्त्री पहिने रुकलीह। “ई हमर नानीक धुन अछि,” ओ कहलीह, “शब्द हम बदलने छी। नाम लिखबाक अछि तँ हमर गेनाइ सुनि लिखू।” रमणी हुनकर अनुमति सँ गीतक नाम आ गायिकाक नाम काजक बहीसँ अलग सांस्कृतिक पन्नापर लिखौलनि। गीतमे घरक बाट, भीजल हथेली आ पाकल भातक स्मरण छल। सुर चढ़ैत-

उतरैत रहल, ककरो पाँति बिसरि गेल, कियो हँसि कऽ फेर शुरू कएलक। नैरा ओ गीतक रिकॉर्डिंग नहि कएलनि। किछु समय ओ केवल सुनैत रहलीह।

सरिता ताल देबामे बारम्बार चूकैत छलीह। ओकर बगलमे बैसल युवती हँसि कऽ सिखौलक जे दोसर पाँति शुरू होएबाक पहिने एक चोटि हाथ रोकबाक अछि। सरिता कहलनि, “हमरा चूल्हाक ढकन खोलबाक ताल आबैत अछि; ई नव ताल सीखब।” सभक ठहाका उठल। रमणी ओही हँसीक बीच गामक अगिला मेला लेल गीतक अभ्यासक समय पूछलनि। युवती कहलीह जे ओ विद्यालयक परीक्षा बादे आओतीह। रमणी तिथि बदलबाक बात मानि लेलनि। एकर लेल कोनो ऋणक पन्ना नहि खुलल, न अपराधक कागद; केवल गाओनिहारक समयक आदर भेल।

रामवती गीत समाप्त भेलापर नैराकेँ अलग बजौलनि। ओ अपन पत्र मोड़ि पोटरिमे रखलनि। “हम जखन फेर सीमातीर्थ जाएब तँ मायक नाम दू कागदमे किएक बदलल, तकर अलग गवाही लेब। एक गवाही अहाँ तक पहुँचबए चाहब तँ पहिले पूछब। हमरा अपन घरक रक्षा चाही; ककरो अपराध छिपेबाक अधिकार नहि माँगि रहल छी।” नैरा कहलनि जे बिनु सहमतिक नाम सार्वजनिक नहि करतथि, मुदा जे अभिलेखमे सामान्य त्रुटि अछि ओकर सुधारक उचित प्रक्रिया चलएबाक पड़त। दूनू स्त्री एहि अन्तरपर सहमत भेलीह।

डबरासँ घुरबाक घड़ीमे रमणी नैराकेँ अपन नव पन्नाक प्रति देखौलनि। काजक घण्टा साफ छल, मुदा पानिक आवक लेल लिखल बाट आ वास्तविक उतरबाक बाटमे भेद देखाइत छल। “ई हमर जाँचक विषय नहि छल,” रमणी कहलीह, “मुदा जे कातसँ पानि अबैत कहने छथि, ओहि कात आजुक नाप नहि भेल। काल्हि तारा आ अदिति आएतथि तँ पहिने ई पूछब।” नैरा ओकरा रहस्यक निर्णायक प्रमाण नहि मानलनि। ओ केवल कलमसँ प्रश्न अलग चिह्नित कएलनि—पानि कतयसँ अबैत अछि आ माप कियो कखन कएलक?

घर लौटैत सरिताक झोरामे पहिनुका लिफाफा नहि छल। ओ खाली जगहमे नतिनीक लेल मखानक छोट नमूना रखलनि, जे रमणी देबाक अनुमति देने छलीह। रामवतीक निजी पत्र अपन मालकिन लग पहुँचल; स्त्रीसभक मजदूरी पहिल बेर अलग पन्नापर चढ़ल;

अमीरक कटल कमाइक हिसाब एखन जाँचक प्रतीक्षामे छल। गाड़ी मोड़ पार कएलक तँ सरिता पूछलनि, “भात बनएबामे देरि होएत, आजु की खाएब?” नैरा कहलीह, “जे बाँचल अछि, ओतहि सँ शुरू करू। मुदा संकेतकेँ पहिने पूछब—ओकरा मिरचाइ चाही की नहि।”

अध्याय ९ • बन्द बाहा

बरकी पोखरिक पछिला कात घास एतेक ऊँच भऽ गेल छल जे ओहिसँ ऊपर उठल तिनका देखिकऽ पानिक दिशा बुझब कठिन छल। भोरमे तारा मल्लिक ओहि घासमे बाँसक पातर छड़ी घुसौलनि। छड़ी नरम माटिमे धँसल, फेर एक ठोस चीजसँ टकरा कऽ रुकि गेल। ओ झुकि कऽ माटि छुलनि। ओतय कादोक भीतर ईटक सीधा किनारा छल। घासक जरि काटि ऊपर उठौलनि तँ अधधँसल पुरान मुँहथरि एक कोना देखाएल। ओकर भीतरसँ पानि नहि बहैत छल; ऊपरक पोखरिमे काल्हिक बरखाक पानि स्थिर छल।

“ई बाट नक्शामे छैक?” ललित विश्वकर्मा पूछलनि। ओ काठक दू खूँटा लऽ आएल छलाह। तारा उत्तर देबाक पहिने छड़ीक नोकसँ ईटक कात घुमौलनि। “नक्शामे रेखा अछि। मुदा रेखाक मुहाना कतय छल, से देखबाक लेल आजु आएल छी। रेखा देखिकऽ ईट ठाढ़ नहि होइत।” ललित खूँटा ओतयसँ दूर गाड़लनि, जतय पैरसँ माटि नहि टूटत। कियो भीतर उतरि कऽ हाथसँ मुँह साफ करए, ताहि पर तारा रोक लगा देलनि। “पहिने गहिराइ आ ऊपरक भार बुझू।”

किछु दूर पर गोदामक पछिला दीवाल छल। दीवालक नीचाँ नव पलस्तर चमकैत छल, आ ओकर कातमे एक सँकर दरारपर सिमेन्टक पट्टी चढ़ाओल गेल छल। दीवाल आ पोखरिक बीच जतेक खाली जगह देखाइत छल, ओहि सँ बेसी जगह पुरान कागदमे छल। तारा अपन पिताक हाथक एक छोट रेखाचित्र झोरासँ निकाललनि। कागद पीयर छल, किछु अंक मेटा गेल छल। एक कात श्याम मल्लिकक बनौने बिनौटक चिन्ह आ दोसर कात पानिक बाट छल। “ई चित्र जमीनक मालिकाना नहि,” तारा कहलीह। “ई केवल देखबैत अछि जे एहि जगह पर पहिने काज कोना कएल जाइत छल।”

अदिति आएलीह तँ हुनक जूताक तलामे बजारक धूलि एखन लगल छल। हाथमे नगर कार्यालयक पुरान प्रतिवेदन आ आजुक निरीक्षण-पर्ची छल। पिछला महीनासँ ओ बाहाक बन्द होएबाक शिकायत सुनि रहल छलीह। प्रारम्भिक प्रतिवेदनमे मरम्मतिक छोट काज लिखल छल—जमा कादो हटाएब, मुँहक कातक टूटल ईट लगायब। तारा पर्ची देखलीह,

फेर दीवाल दिस देखौलनि। “जँ मुहाने पर भार रखने अछि तँ केवल कादो निकालनाइ पर्याप्त नहि। पानि कतय जाएत?”

अदिति कागदकें भीजबासँ बचबैत छाताक नीचाँ रखलनि। “छोट मरम्मतिक प्रस्ताव हम स्थल देखबाक पहिने उपलब्ध नापसँ बनौने रही,” ओ कहलीह। “एखन जे देखैत छी, ओकरा आधारपर फेर जाँच कऽ सकैत छी। मुदा एकटा पुरान ईटसँ ई नहि सिद्ध होइत जे बाहा एतयसँ गोदामक नीचाँ धरि गेल छल।” तारा हुनक उत्तर काटलनि नहि। ओ जमीनपर दू ठाम छड़ी रखि कहलीह, “हमहुँ ओतबे कहि रहल छी। जाँच लेल पहिने प्रश्न सही लिखू।”

पोखरिक घाटपर एहि बीच लोक जुटि गेल छल। पहिने वर्षासँ पहिने पोखरि-उराहिक दिन तय भेल छल, मुदा आधा काजक बाद भारी मेघा आ मजदूरीक बकाया पर काम रुकि गेल। निकालल कादोक एक ढेरी घाटक पयरबाट पर सूखि कठोर भऽ गेल छल। किछु लोक कहैत छल जे पोखरि साफ भऽ गेल; दोसर कहैत छल जे घाटँ बंद अछि। आजुक जुटान त्योहारक पुनरावृत्ति नहि, ओहि अपूर्ण दिनक हिसाब खोलबाक छल। गीतक बाँसुरी एक बालक संग लऽ अएल छल, मुदा ओकरा बजएबाक बेर एखन नहि छल।

उर्मिला रजक भीजल कपड़ा लऽ अएलीह। घाटक एक पाटपर तीन महिला कपड़ा निचोड़बाक बेरक प्रतीक्षामे छलीह; मत्स्यपट्टाक लेल गाड़ल बाँसक घेरसँ सँकर राह बनि गेल छल। “पोखरि सार्वजनिक कहला सँ हमर पाट फेर खुलि नहि जाइत,” उर्मिला कहलीह। “हमरा काजक समय अलग अछि। जखन माछक जाल सुखाएल जाएत, तखन कपड़ा कतय धुब?” ओ अपन खर्चक पर्ची देखौलनि—रास्ता घुमला सँ बढ़ल भाड़ा, भीजल कपड़ा फेर ढोएबाक मजदूरी, अस्पतालक कपड़ाक खेपमे भेल देरी।

रमणीक नाम पर मत्स्यपट्टाक एक पुरान रसीद छल, मुदा ओ आजु नहि अएल छलीह। तारा ओ रसीदक फोटो नैराकें भेजलनि नहि; उर्मिलासँ पूछलनि जे जे ठाम मत्स्य-काज होइत अछि, ओकर समय अलग कऽ सकैत छी की। “घाटक पाट खाली कराओल जाए,” उर्मिला उत्तर देलनि, “माछक रोजगार सेहो नष्ट नहि हो। मुदा जे लिखित शर्त अछि से

मत्स्य-काजक; हमरा चलबाक अधिकार ताहिसँ अपने आप समाप्त नहि।” तारा एहि वाक्यकेँ अपन कागदमे एक अलग पाँत देलनि।

हीरा सहनी नावसँ उतरि दूरसँ निरीक्षण देखैत छलाह। हुनका साँझक जालक समय देखबाक छल, मुदा तारा बजा लेने छलीह। हीरा पानिक माथ पर तैरैत सूखल पातक दिशा देखौलनि। हवा पूर्व दिस छल, पात पाछाँ घुरैत छल। “पात जतय गेल, धार ओतहि अछि—ई अनुमान मत लिखिहें,” ओ कहलकनि। “पानि स्थिर भऽ सकैत अछि, नीचाँक बाट दोसर होइ। हम जखन नाव चलबैत छी तँ बाँससँ गहिराइ अलग परखैत छी।” अदिति हुनक बात नाप-पर्यमे श्रमजीवीक निरीक्षण रूपमे दर्ज कएलनि; ओकरा अभियान्त्रिक सर्वेक्षण नहि कहलनि।

खाली स्थानपर ललित अपन काठक खूँटा हटबैत छलाह। बरहीक कामक रसीद हुनक झोरामे छल—दू खूँटा, एक सीधी पटरी आ अस्थायी सुरक्षाक घेराबन्दी। ओ दाम बतौलनि तँ समीपक एक आदमी कहलक जे सामूहिक पर्वमे ई सभ मुफ्त भऽ जाएबाक चाही। ललित पटरी माटिपर रखि देलनि। “स्वेच्छासँ देब तँ कहब। सरकारी माप लेल माँगल काठ आ हमर हाथक दिन मुफ्त मानल जाएत तँ काजक सच हिसाब नहि रहत।” अदिति रसीद अपन निरीक्षणक संग जोड़बाक वचन देलनि, मुदा भुगतान आजुक कार्यालयी स्वीकृतिपर निर्भर रहल।

श्याम मल्लिक तखन धरि बाँसक पुरान बिनौटक एक टुकड़ा घुराकऽ देखैत छलाह। बिनौट नालामे पानि रोकबाक लेल नहि, माटि खसबाक ठाम चिन्हबाक लेल बनल छल। नव ठेकेदार ओकरा अस्थायी पुलक सामग्री कहि खर्च लिखने छल। तारा पुरान नमूना धरि नापतोल कएलनि आ कहलीह जे काम बदलला सँ नामो बदलबाक चाही। श्याम कोनो वाद नहि बढ़ौलनि; अपन बेटीक कागदपर पुरान नमूनाक तीन गाँठ चिन्हित कऽ देलनि। ओहि काजक दाम आ डिजाइनक श्रेय पर विस्तृत बात आगाँ होएबाक छल।

पोखरि-उराहिक अपूर्ण हिसाबक पन्ना एक स्वयंसेवक खोललक। पहिल दिन कादो उठेनिहारक संख्या, दोसर दिन भोजनक खर्च आ तेसर दिनक बरखा एक्के खानामे मिलल छल। रुखसानाक रसोइसँ आएल भातक बरतनक रसीद अलग छल; किछु लोक ओकरा दान कहि लिखि देने छल। तारा प्रत्येक रसीद नहियँ देखलनि, मुदा भोजन बनौनिहार

स्त्रीसभक श्रमक दाम अलग करएबाक प्रस्ताव रखलनि। विद्यालयक दू युवक पुरान माटिक ढेरी पर लाल झंडी लगा देलक, जाहिसँ बच्चा ओतय खेलैत नहि जाए। सामूहिक काज तखन बाँचत जखन के कतेक काम कएलक, तकर हिसाबो बाँचत।

घास काटबामे लागल लोकक संग धनी राजभरक सिंचाइ-पगडंडीक आवेदन आयल। ओ लिखने छल जे पोखरिक अतिरिक्त पानि खेत धरि ले जाएबाक पुरान नालाक मुँहपर बाँसक बाड़ि बन्हल अछि। ओ स्वयं आजु नहि आएल छलाह; आवेदन संग खेतीक समयक एक तख्ती छल। तारा अलग चिह्न देलनि—बाहा सार्वजनिक निकासी लेल अछि की सिंचाइ लेल, एक्के रेखासँ दुनू अधिकार तय नहि करब। ऊँच खेत बचएबाक लेल नीचाँक घर डुबायब स्वीकार्य नहि; नीचाँक घर बचएबाक लेल खेतपर बिना अनुमति पानि छोड़ब सेहो नहि।

पाछाँक टोलासँ दू स्त्री टोकरी लऽ अएलीह। उराहिक दिन उठाओल कादो हुनक घरक दुआरपर राखि देल गेल छल; कादो सुखायलाक बाद ओहि पर लोक पैघ गाड़ी चला देने छल। आब गाड़ी घुमबैत हुनकर चूल्हाक दीवालमे चोट लागैत छल। उराहिमे भाग लेबासँ ओ सभ पाछाँ नहि हटलीह, मुदा कादो कतय जाएत तकर निर्णयमे हुनका सभकेँ कियो नहि पुछने छल। तारा नव कार्य-पर्चीमे ढेरीक गन्तव्य आ दुलाईक भाड़ा अलग लिखौलनि। एक स्त्री कहलीह, “हमरा सामूहिक काजसँ बैर नहि; हमर दुआर सभक कचराक ठाम नहि।” नव पर्चीपर ओकर सहमति लेल नियत स्थान छोड़ल गेल।

घास काटनिहार युवकसभमे एक कहलक जे पुरान मुँह भेटि गेल, तखन सभ मिलि एक दिनमे खोलि देब। दोसर युवक, जकर गोड़ काल्हि कादोमे फँसि गेल छल, ओकरा रोकलक। ऊपरी माटि गीला छैक; भीतर कोनो खाली खोखरि भेल तँ माटि खसि सकैत अछि। अदिति स्वयं डोरी लऽ सुरक्षित किनार चिन्हित कएलनि। तारा ओकर लग ठाढ़ भऽ बोलीह, “उत्साह सँ हाथ बढ़ैत अछि, मुदा चोटि खाएल मजदूरक परिवारक हिसाब के राखत?” एक युवक चुपचाप कुदर रखि देलक; ओ काज छोड़ि भागल नहि, घेराबन्दी करए लागल।

अदितिक संग आएल लिपिक अभिलेखक सूची पढैत छल। सीमातीर्थसँ पठाओल एक आपूर्ति-पर्चीमे रफीकक क्षेत्रीय आत्मपरिचय दर्ज छल, मुदा कार्यालयक सॉफ्टवेयर

ओकरा दोसर परिचित श्रेणीमे मिला देने छल। तारा कागदपर केवल पर्चीक भाषा-सम्बन्धी शिकायत दर्ज करबैत कहलीह जे रफीकक अपन कहल नामक रूप अलग रहबाक चाही। दोसर फाइलमे मैत्री श्रेष्ठक औषधि-ढुलाई सम्बन्धी अनुवाद-आपत्ति छल —सामान पहुँचबाक समय आ जारी होएबाक समय अनुवादमे एके शब्द बनि गेल छल। ई दूनू फाइलक कारण बाहा बन्द होएब सिद्ध नहि होइत छल; तइयो गलत मिलान भविष्यक उत्तरदायित्व बदलि सकैत छल।

घाम निकलल तँ घासक भीतरक ईंट साफ देखाएल। पुरान मुँहक माथ पर माटिसँ अलग एक गहिर खरौंच छल। तारा कागदपर ओकर आकृति उतारलनि, मापलकनि नहि। अदिति मुँहक दूनू कात जमीनक उँचाईक अस्थायी तुलनाकेँ अपूर्ण मानलनि, कारण जकरा सभ पुरान नाप मानि रहल छल, ओ पानिक आजुक स्तरसँ लऽ बनाओल छल। पानी वर्षाक बाद ऊँच छल। बगलमे पनिबटक सँकर कटाव सेहो छल। “ई निकासक एके बाट नहि बुझबाक,” अदिति कहलीह। “कनबह, पनिबट आ बाहाक काज अलग हएत।” तारा घासक नीचाँ हथेली फेरी ओहि भेदकेँ देखलनि।

अदिति पुरान प्रतिवेदनक पछिला पृष्ठ खोललनि। मापक दिनक तिथि लिखल छल, मुदा माप लेबाक बिन्दु नहि। कियो पुरान दलक कर्मीपर दोष लगाबए लगल। अदिति रोकि कहलीह, “हस्ताक्षर हमर अछि। पहिने मूल मापन-वही खोजब; फेर जिम्मेदारी तय होएत।” तारा पुछलनि जे वही सुरक्षित अछि की नहि। अदिति ओकर जाँच लेल दोसर दिन लिखि लेलनि।

ओहि बीच आकाशमे धूप फेर बादरक भीतर गेल। पोखरिक माथपर अचानक पवन उठल तँ घासक एक पाँति झुकि गेल, दोसर ठाढ़े रहल। तारा क्षणभरि ओहि झुकबाक रेखा देखैत रहलीह। हुनकर बाल्यकालमे श्याम कहने छलाह जे बरखाक पहिले मुँहथरिक घास एहि तरहें झुकैत छल। स्मृति हुनका जगह खोजबाक कारण देने छल, मुदा ओ हवा देखिकऽ पुरान धारक दिशा पक्का कहि नहि सकैत छलीह। ओ अपना कागदपर लिखलनि—‘स्थानीय स्मृति: पुष्टि शेष।’

दोपहरिया समय पोखरि-उराहिक लोक साझा भोजन लेल बैसल। रुखसानाक रसोइसँ आबि पहुँचल भातक संग कनिका आ तरकारी छल। छोट बालक बाँसुरी बाजए लगल,

मुदा बीचमे रुकि पूछलक जे पाछाँक ढेरी कोन घड़ी हटत। ओकर प्रश्नपर लोक हँसला, फेर एक बुजुर्ग कहलक जे खेलबाक मैदान घेरल अछि तँ बच्चाक हँसीको ठाम चाही। तारा अपन थारी सरकाबैत कहलनि जे पहिने सुरक्षित पगडंडी बनत। कियो बाँसुरी रोकलक नहि। काजक बीच हँसी बिना आश्वासनक सेहो चलैत रहल।

उर्मिला भोजनक बाद घाटपर घुसलीह। ओ तारा लग कागद देखबाक आग्रह कएलनि। पानि निकालबाक अस्थायी प्रस्तावमे घाट धरि पहुँचबाक बात पेंसिलसँ बनेल छल, मुदा ओकर चौड़ाइ लिखल नहि छल। उर्मिला अपन कपड़ाक गट्टर दूनू हाथमे उठा ओहि बाट पर चलि देखौलनि। ओ सँकर ठामपर अटकलीह। “आब लिखू जे पाटपर जेबाक लेल एक आदमी खाली हाथ नहि जाइत,” ओ कहलीह। तारा प्रस्तावमे माटिक ढेरी हटएबाक काज पहिल क्रममे रखलनि। घाट-आदरक वार्षिक आयोजन कार्तिकमे रहत; तकर तैयारी आजुक पगडंडीसँ शुरू भऽ गेल।

एक किसान पुछलक जे बाहा खोललासँ पानि जँ ओकर पानक खेत दिस चलि गेल तँ जवाबदेह के होएत। अदिति ओकरा आश्वासन नहि देलनि जे एहन होइए नहि सकैत अछि। ओ कहलीह जे नव माप, पुरान नक्शा, खेतक ढाल आ बरखाक सम्भावित पानि अलग-अलग देखल जाएत। तारा सेहो चाहलीह जे जखन काम शुरू हो, तय कएल जाए जे पानि कहाँ अस्थायी रूपसँ रोकल जा सकैत अछि। बिना जाँचक मुँह खोलब उतने असावधान होएत जतेक ओकरा अनन्तकाल बन्द रखब।

दूरसँ गोदामक एक कर्मचारी निरीक्षण देखैत छल। ओ कहलक जे दीवालक पलस्तर नव अछि, मुदा गोदामक विस्तारक कागद दफ्तरमे अछि; ओकर लग प्रति नहि। तारा ओकर नाम नहि पूछलनि, न ओकरा दोषी कहलनि। अदिति औपचारिक अनुरोधक लेल गोदामक कार्यालय लिखि लेलनि। कर्मचारी पाछाँ मुडला पर तारा देखलनि जे दीवालक तलमे पानि ठहरल अछि। ई एकटा देखल तथ्य छल; ओहि ठहरल पानिसँ जमीनक भीतरक पूरा बाटक निष्कर्ष निकालब अलग काज छल।

बरकी पोखरिक माछ बेचनिहार परिवारक तरफसँ एक पर्ची अएल—जलकरक शर्तसँ माछक अधिकार मिलैत अछि, स्नान, धोनाइ अथवा निकासक सभ अधिकार नहि। पर्चीपर दू अलग हस्ताक्षर छल, मुदा एक हस्ताक्षर ककर अछि से स्पष्ट नहि। अदिति

तकर पुष्टि माँगलनि। तारा निर्णय देबासँ पहिने उर्मिलाक पाट आ माछ धएबाक कात दूनू अलग रेखामे बनौलनि। ओकरा बुझाइत छल जे जकर आजु घाट बचत, ओकर काल्हि रोजी बंद नहि होएबाक चाही।

साँझ उतरए लागल तँ गहिर कटाव पर बाँसक घेरा लगल। ललितक खूँटापर पीयर कपड़ा बान्हल गेल। घास काटब, ढेरी हटाएब आ अस्थायी पहुँच बनएबाक काज लेल अलग दल चुनल गेल, प्रत्येकक पारिश्रमिक लिखि। बाहाक मुँहपर लगी नव भराइ हटाओल नहि गेल; गोदामक नीँव पर असर पड़ि सकैत छल। तारा एतेकपर चुप नहि रहलीह। ओ घेराक बाहर ठाढ़ भऽ श्यामक पुरान रेखा आ अदितिक नाप-पर्ची फेर मिलौलनि। दुनूमे मुहानेक दिशा लगभग मिलैत छल, मुदा दूरीक अंक अलग छल।

“पहिल प्रतिवेदनमे हमरा ‘सामान्य कादो जमा’ लिखबाक चाही छल?” अदिति स्वयं पूछलनि। उत्तरक प्रतीक्षामे हुनका आँखि तारा पर नहि, ओहि चिन्हपर छल जकरा भोरसँ घेरि रखल गेल छल। तारा कहलीह, “अहाँ जे देखल नहि, तकरा देखल कहि नहि लिखू। मुदा आब जे देखलहुँ, ओकरा पुरान पाँतमे दबा सेहो नहि सकैत छी।” अदिति पर्ची निकालि ‘छोट मरम्मत’ शब्द काटलनि नहि; ओकर बगलमे तिथि सहित स्पष्ट लिखलनि — ‘स्थलपर पुरान मुँहथरि नशान; संरचनात्मक निकास आ अतिक्रमणक सम्भावना सम्बन्धी पुनर्जाँच आवश्यक। बिना माप काज नहि।’

ई लिखित संशोधनसँ पोखरिक पानि ओहि क्षण नहि हटल। उर्मिलाक मजदूरीक बकाया सेहो नहि भेटल। मुदा मुँहक चिन्ह अब सार्वजनिक निरीक्षणक कागदमे छल, आ सुरक्षित पहुँच खोलबाक छोट काजक जिम्मेदारी अलग दर्ज भेल। स्वयंसेवक सभ घास काटल ठाम छोड़ि अपन औजार समेटए लगलाह। आइ एकटा घेराबन्दी सुरक्षित भेल, किछु लोकक कामक दाम लिखल गेल, आ बरसातक पानि जतेक ठाढ़ छल ततेक ठाढ़ रहल।

नैरा साँझमे पहुँचलनि तँ तारा हुनका केवल निरीक्षण-पर्चीक सार्वजनिक अंश देखौलनि। नैरा सरिताक बही अथवा मखानिया डबराक लेनदेन एहि निशानक संग तुरन्त नहि जोडलनि। “अहाँक कागदमे ई मुँह कखन बन्द भेल?” ओ पूछलनि। तारा उत्तर देलनि, “हमरा एखन मुँह भेटल अछि, बन्द होएबाक दिन नहि।” हीराक पुरान यात्रा-

पुस्तिकामे ‘कमला’ नामक नदीक एक पन्ना छल; शकुन्तलाक मायकेक माटि-सम्बन्धी कागदमे सेहो ओ नाम छल। नैरा दुनूकेँ तिलवाहक दोसर नाम मानि कागद नहि मिलौलनि। ओ केवल सोचलनि जे पुरान यात्रा आ पुरान माटिक स्मृति सुनबाक लेल हुनका अलग-अलग व्यक्ति लग जाएबाक पड़त।

घर घुरैत नैराक जूतामे बाहाक कादो लगल छल। सरिता दरवज्जापर पानीक लोटा रखलनि। “आइ की खुलल?” ओ पूछलनि। नैरा जूता खोलि देलनि। “बाहा नहि,” ओ कहलीह, “ओकरा जाँचबाक बाट। आ घाट धरि जाएबाक अस्थायी पयरबाट।” सरिता बुझलीह जे जे प्रश्न कागदमे खुलल अछि से पानिमे एखन बन्दे अछि। ओ खाना परसए लगलीह। बाहर धीमा पानि टपकैत छल; तारा लग एखन ओहि टपकबाक निश्चित माप नहि छल, मुदा काल्हि फेर जाएबाक कारण छल।

अध्याय १० • नामक छाँह

रातिक वर्षा थमलापर बरकी पोखरि सँ गोदाम धरि जाएवला पगडंडी पर पानिक महीन परत चमकि रहल छल। तारा काल्हि जे पीयर कपड़ा ललितक खूँटामे बन्हने छलीह, से भीजि कऽ आधा झुकि गेल छल। नैरा ओहि कपड़ाक गाँठ कसि देलनि। हवा जोर सँ चलल तँ खूँटा हलल नहि; माटि एखन ओकरा धरने छल। मुदा घेराक भीतरक पुरान ईंटक कात पानि जहिना ठाढ़ छल, तेहने ठाढ़। काल्हिक निरीक्षण-पर्चीमे ‘पुनर्जाँच’ लिखल गेल छल, आइ ओकर आरम्भ-बिन्दु तक तय करबाक छल।

तारा दूटा कापी लऽ अएलीह। एक पर नगरक मापन-दलक छाप, दोसर पर हुनकर अपन बनाओल रेखा। “हमरा पहिने गोदामक पाछू पहुँचबाक बाट चाही,” ओ कहलीह। “कागदमे जे रेखा भीतर गेल अछि, ओ धरतीपर कतयसँ गेल, तकरा बिना माप करब तँ काल्हिक भूल फेर करब।” नैरा पूछलनि, “अनुमति भेटल?” तारा उत्तर देलनि जे गोदामक कार्यालयसँ निरीक्षणक समय माँगल गेल अछि, मुदा भीतर जेबाक लिखित स्वीकृति नहि। ताहि लेल आजु घेराक बाहरे रहबाक तय भेल।

पुरनाधार नाम ओ सभ पहिनुहुँ सुनने छलाह। सरिताक घरक पुरान बातचीतमे ओ कखनो बेकार धरती छल, कखनो धार छोड़ि गेल नदीक बिछान, आ कखनो बरखा पड़िते भरि उठएवला नीचाँक भाग। गोदामक दीवालक पाछाँ ओही नामसँ पुकारल एक सँकर पट्टी छल। पट्टीक कतेको भाग पर भराइ भऽ चुकल छल। जे ठाम घास उगने छल ओतय पानि अटकैत छल; जे ठाम सिमेन्ट चमकैत छल ओतय कोनो जलधारा देखाइत नहि छल। नाम रहबाक अर्थ बाट एखनो खुलल अछि, ई मानबाक कोनो कारण नहि छल।

सुशीला महतो धानक बीहनक एक छोट बाँधल मुठ्ठी लऽ पहुँचल छलीह। खेतक पानि रोकबाक लेल काल्हि नगर दलसँ कहने छलीह जे निरीक्षणक घेराबन्दी मे हुनकर सिँचाइक पयरबाट बन्द नहि हो। तारा हुनकर हाथमे ओ बीहन देखि पूछलनि, “एहि सँ की देखए चाहैत छी?” सुशीला भीजल माटिक एक चुटकी उठौलनि। “हम खेतक बियाहे समयक हिसाब सुनबए अएली छी। जँ बाहा खोसलापर एकाएक पानि उधर बहत तँ बीहन डूबत; जँ बन्दे रहल तँ पछुआ क्यारी सूखत। दुनू दशाक खर्च हमर।”

तारा कापीक एक पन्नापर सुशीलाक खेतक नाम नहि, ओकर ऊपरक आ नीचाँक बाट बनौलनि। सुशीला कहलीह जे घरमे एक पीढ़ी सँ बीहन चुनबाक तरीका चलि रहल अछि, मुदा आब ओ स्कूल पढ़ल बेटी सँ पानिक हिसाब करब सीखि रहल छथि। “ओ कहैत अछि—माइ, अनुमान लिखिते दोसर साल जाँच सकब। हम कहैत छी—पहिने माटि हाथमे ले। दुनू मिलायब तँ बेसी नीक।” नैरा हुनकर मुस्की देखलीह। एतय परीक्षा केवल इंजीनियरक ज्ञानक नहि छल; खेतक सालभरि बचत सेहो ओहि रेखापर निर्भर छल।

किछु दूर पर गोमती बेलदारक नामसँ निर्माणश्रमक एक दिनक रसीद जमा छल। रसीदमे माटि ढोएबाक काम लिखल छल, मुदा कतेक खेप माटि गोदामक पाछाँ उतारल गेल, ई स्पष्ट नहि। गोमती आइ अपन दोसर स्थलपर काज करैत छलीह; हुनकर अनुपस्थितिकेँ दोष अथवा सहमति दूनूमे नहि गनल गेल। तारा रसीदक प्रति लेल कार्यालयमे अनुरोध लिखलनि। जे भराइ देखाइत छल तकरा कएल के, आ जे मजदूरी भेटल तकर हिसाब के राखलक, ई अलग प्रश्न छल।

घेराक दाहिना कात एक ठेलागाड़ी रूकल। नगर सफाइक टोलीक सूचीमे रानी हलालखोरक नाम दर्ज छल। टोलीक लोक पानि जमल कात फेंकल काँच आ काँटदार तार अलग करैत छलाह, जाहिसँ निरीक्षण करए अग्निहारक पयर नहि कटए। सुरक्षित दस्ताना सभक लग नहि छल; सूचीमे सामग्री माँगबाक खाना खाली पड़ल छल। नैरा ओ खाली खाना देखलनि, मुदा टोलीक उपस्थितिक फोटो बिना सम्मति नहि खींचलनि। सफाई भेलासँ रास्ता साफ देखाएल; असुरक्षित काजक सवाल ओहिसँ समाप्त नहि भेल।

एहि बीच एक बूढ़ आदमी जूटक थैलीमे मोड़ल कागद लऽ अएलाह। तारा हुनका रतन वनपर कहि पहिचान करौलीह। रतन पहिने नदीक कात बसेल परिवारमे जन्मल छलाह, आब बजारक पछिला मुहल्लामे रहैत छथि। थैलीसँ ओ एक पुरान हाथे बनल नक्शा निकाललनि। नक्शाक कागदक कात घिसि चुकल छल; बीचमे एक खिंचल टेढ़ रेखा आ कोनो कालक खेतक चारि नाम छल। “ई हमर बाबूक हाथक नकल अछि,” रतन कहलकनि, “मूल कहाँ अछि से हमरा नहि मालूम।”

नैरा कागदक कोना पकड़बासँ पहिने हाथ पोंछलनि। “अहाँ एतय जे रेखा देखबैत छी, ओ कतयसँ गेल?” रतन उत्तर देलनि, “हम छोट रही तँ बरखाक पाछाँ नदी एहन नहि बहैत छल जे नाव चलि जाए। मुदा एक बाट छल, जतय पानि अपन पुरान घर याद करैत जकाँ भरि उठैत छल। बाबू कहैत छलाह—एहि धरतीमे पानि जल्दी बिछुड़ैत नहि।” ओ बोलैत-बोलैत रुकि गेलाह। स्मृतिक वाक्य हुनकर छल; मापनक दावा ओ नहि कएलनि।

रतन ओ नक्शा बेचबाक लेल नहि अएने छलाह। घेराक भीतरी पट्टीक नपाइमे हुनकर मातामहीक पयरबाट आ एक पुराने अस्थायी माछ-घेरक जगह एक संग पड़ि सकैत छल। ओ चाहैत छलाह जे सुनवाईमे ई फर्क अलग दर्ज हो। “जे खेत रहे, ओकरा नदी कहि कऽ कब्जा छोड़ाएब उचित नहि,” ओ कहलकनि, “आ जतय पानि बहैत रहै, ओकरा खेत कहि कऽ गाड़ि देबो नीक नहि।” तारा हुनका कहलीह जे दुनू सम्भावना जाँचल जाएत, मुदा अपन हाथक नक्शा भूमि-अधिकारक निर्णायक प्रति नहि होएत।

रतनक बात चलिते गोदामक कर्मचारी बाहरी फाटक धरि अएल। हाथमे खाली बोरा छल; ओ बोरा धूपमे सुखएबाक लेल पसरए चाहैत छल। नगर दल ओकरा फाटक नहि खोलबाक कहलनि नहि; केवल निरीक्षणक घेराक भीतर सामग्री नहि रखबाक आग्रह कएलनि। कर्मचारी एक छोट टूटल काठक पटरी कूड़ाक ढेरीसँ निकालि कातमे धऽ देलक। पटरिक ऊपर पुरनका रंगमे दूटा आखर बचल छल। धूलि हटेलापर तारा पढ़लीह—‘पुरनाधार’। कोन साल लिखल गेल छल, पटरी कतय लागल छल, ओकरा जननिहार ओतय कियो नहि।

तारा पटरिक नाप कएलनि। काठ हलुक, पछिला कात जंग लागल दू कील। “ई सीमा-स्तम्भ नहि,” ओ कहलीह। “सूचनापट सेहो भऽ सकैत अछि।” गोदामक कर्मचारी कहलक जे पटरी काल्हिसँ ओही ढेरीमे छल; ओ ओकर उत्पत्ति नहि जनैत। नैरा अपन पन्नामे ‘फाटकक बाहिर कूड़ाक कात भेटल, मूल स्थान अज्ञात’ लिखलनि। जतय ई शब्द लिखल छल, ओ जमीन वा गोदामक इतिहासक प्रमाण त नहि, मुदा नामक स्मृतिक एक वस्तु जरूर छल।

बरखा फेर अबबाक चिन्ह देखिकऽ कर्मचारी पटरीकेँ फाटकसँ हटाकऽ पक्की दीवालक कात टिका देलक। तहियाक घाम बादरक फाटल टुकड़ासँ धरतीपर पड़ल। नैरा रतनक

नक्शा मोड़बाक स्थान देखबैत हाथ उठौलनि, आ तेहने समय हुनकर आँखि पटरिपर गेल। पटरी दीवालसँ हटि दोसर कात राखल जा चुकल छल, मुदा दीवालपर ओकर सँकर छाँह एखनो पहिले ठाम ठाढ़ छल। पटरीक नव स्थानपर दोसर छाँह धीरे-धीरे गहिर भेल; पुरान छाँह कनेक देर धरि ओही रूपमे बचल रहल।

नैराक हाथ नक्शाक ऊपर ठमकि गेल। ओ पलक मारलनि। पानि टपकैत छल, घाम बदलि रहल छल, एक गाड़ी नजदीकसँ गेलाक कारण धूलि सेहो उडल छल। दीवालक ओहि पुरान पट्टी पर केओ किछु देखल अथवा नहि, ई नैरा नहि जनैत छलीह। छाँह धीरे-धीरे हलुक पड़ल, जहिना कियो देरि सँ अपन नाम सुनिकऽ पाछाँ मुड़ैत हो। तारा एहि बीच रतनसँ कागदक मोड़क बात करैत छलीह। कर्मचारी बोरा उठबैत छल। कियो चकित भऽ नहि चिचिएल।

नैरा दीवाल लग गेलीह। ओतय पुरान पलस्तरक फीक रेखा छल, मुदा ओ रेखा पटरिक आकारक नहि। ओ अपन हथेली दीवालपर रखलनि। हाथक छाँह हाथक संगहि हटल। पटरी फेर उखाड़ि एहि प्रयोगकेँ दोहराएबाक इच्छा हुनका भेल, मुदा ओ रुकी गेलीह। जे ओ देखलनि से आँखिक थकान छल, बदलैत घाम छल, कि सचमुच समयक कोनो छोट विलम्ब—एखन एकरा नाम देब सम्भव नहि। पटरिक जंग लागल कील, काठक रंग आ भेटबाक ठाम मापल जा सकैत छल; छाँहक ओ देरि एकल निजी अनुभव छल।

“की देखैत छी?” तारा पुछलनि। नैरा उत्तर देलनि, “दीवालमे पुरान पलस्तरक भेद। ओकर फोटो अहाँ लिअ, मुदा पटरी पहिने कतय लागल छल से फोटोसँ नहि कहब।” तारा सहमत भेलीह। नैरा अपन अजीब अनुभूतिक उल्लेख नहि कएलनि। हुनका मनमे डर कम, एक तरहक लाज बेसी छल—जे बातक प्रमाण हुनका अपन भीतर केवल स्मृति छल, तकरा दोसराक कागदमे उतारि देब तँ ओ स्मृतियो झूठ कहल जाएत।

निरीक्षण दल पुरनाधारक कातक पानिक गहराइ देखबाक लेल दू अलग ठाम बाँस धरलक। हीराक बताओल जलमापक तरीका याद कऽ तारा पुछलनि जे बाँसक आधार स्थिर धरती तक पहुँचल की कादोमे थमकि गेल। पहिल बाँस माटिमे धँसि गेल, दोसर कठोर धरतीकेँ छूएलक। संख्या लिखल गेल मुदा एक्के तलसँ नाप भेल, एहन दावा नहि।

अदितिक कार्यालयसँ पठाओल छोट सन्देश आयल—गोदामक पुरान स्वीकृति-नक्शाक प्रति माँगल गेल अछि; भेटल नहि अछि।

सन्देशक पाछाँ दोसर कागद आयल। एक पर्चीमे गोपाल माझीक नावसँ पानि पार करबाक पुरान बाटक अलग नाम छल, मुदा नगरक नव नक्शामे ओ जतेक दूर बहैत छल, ततेक रेखा नहि। गोपाल स्वयं ओतय नहि छलाह; हुनकर नावक अगिला खेपक समय पर्चीमे दर्ज छल। तारा कागदक कात लिखलनि जे नाव चलबाक बाट आ आपदामे उद्धारक सुरक्षित मार्ग एक नहि गनल जाए। एखन कागद मिलानक आवश्यकता छल, नाविकक सम्झौता नहि।

सूरज गंगोताक ऋण-अनुरोध सेहो साथै आयल। नदी काटि लेने खेतक देय ओ अपन पुरान भूमिपत्रसँ अलग देखए चाहैत छलाह। गोदामक कात जे पट्टीक नपाइ होइत छल, ओकरा देखिकऽ कोनो आदमी कहि सकैत छल जे ई सभ परित्यक्त भूमि अछि; सूरजक आवेदन याद दियबैत छल जे परित्यक्त कहल जमीनक पाछाँ केकरो घरक ऋण जीबैत रहैत अछि। नैरा आवेदनक रकम सार्वजनिक पन्नामे नहि उतारलनि। ओकरा भूमि विवादक खानामे अलग सुरक्षित राखल गेल।

दुपहरमे सुशीला फेर अएलीह। एहि बेर हाथमे बेटी बनाओल छोट रेखाचित्र छल। ओहि पर खेतक तिनकुना हिस्सा, नलिकाक ऊँचाइ आ पछिला दू वर्षक बोआईक अलग-अलग दिन लिखल छल। “ई सभ हम गामक कोठरीमे बैसि कऽ मिलेलहुँ,” ओ कहलीह। “बेटी कहलक जे जँ संख्या गलत अछि तँ काटि नव लिखू। हमरा लागल जे गामक लोकक लिखल गलती सेहो मिटाएल जा सकैत अछि।” नैरा हँसलीह। “एहि गलतीकेँ मेटबाक बदला काटि तिथि लिखू,” ओ उत्तर देलनि, “तँ अगिला बेर बुझब जे सुधार कखन भेल।”

सुशीला पन्ना तारा लग छोड़ि देबए चाहलीह, मुदा मूल घर लऽ जाएबाक निश्चय कएलनि। तारा ओकर नकल अपन हाथे बनौलनि। एतबा काजमे दू दिनक पानीक स्तर, खेतक डूबबाक समय आ बीहन चुनबाक हिसाब एक नवीन प्रश्न बनि गेल। गोदामक भौतिक स्वीकृतिक कागद बिना बाहा खोलबाक आदेश नहि भेटत, मुदा एहि बीच खेतक काज ठमकिए कऽ नहि रहि सकैत छल। अगिला बरखाक पानि दिस ककर तैयारी कम अछि, तकरा लिखब जरूरी छल।

सुशीलाक खेतक रेखा पर रतनक नजरि पड़ल तँ ओ कने असहज भेलाह। “जँ ई पट्टी पहिने पानिक बाट छल,” ओ पुछलनि, “तँ खेतक मेड़ फेर ओतय किएक?” सुशीला बीहनक मुठ्ठी खोलि देखौलनि। “मेड़ हम लगौने नहि, मुदा एकर पाछाँ हमर फसल उगैत अछि। पुरान बात बुझबाक लेल आइ हमर धान नहि मेटाउ।” दूनू अपन-अपन कागद समेटि चुप भऽ गेलाह। नैरा तारा लग कहलनि जे नक्शाक दू अनुमान लिखबाक संग एहि असहमतियो दर्ज रहए; ककरो फसल कटबाक अथवा घेराबन्दी हटेबाक आदेश एखन नहि।

कातमे खड़ा रतन बुझि रहल छलाह जे हुनकर पुरान नक्शा पर लोकक नजरि लगल अछि। ओ नैरासँ कहलनि, “एहि कागदपर बाबूक लिखल नाम देखिकऽ हमरा घरक बहुत बात मोन पड़ैत अछि। मुदा बाबू सभ ठाम ठीक रहथि, एहन हम कहि नहि सकै छी।” नैरा हुनकर कागद लौटौलनि। रतन नक्शा बँधबाक डोरी कसैत बतौलनि जे हुनकर माय बरखा उतरला पर पहिने दुआरक नीचाँ गेहूँक बोरा ऊपर रखैत छलीह, फेर नदीक हाल पूछैत छलीह। पानिक स्मृति हुनकर घरमे डरक संग एक साधारण घरेलू क्रमो छल।

दुपहरक बाद पुरनाधारक पयरबाटपर छोट-छोट बच्चा कंचा खेलए लगल। एक बच्चाक कंचा घेराक भीतर चलि गेल तँ ओ भीतर दौड़ए चाहलक। नैरा ओकरा रोकि कहलनि जे काँटदार तार एखन पूरापूरि हटाओल नहि गेल अछि। बच्चा लम्बा डाँट सुनबाक बदला पूछलक, “एहि बाट के बनाओत?” तारा उत्तर देलनि जे जँ बाट सार्वजनिक उपयोगक अछि, तँ ओकर नाप आ मरम्मतिक जिम्मेदारी लिखल जाएत। बच्चा नहि बुझलक, मुदा ओकरा कंचा बाहर धकेलि देल गेल। ओ अपन खेलमे फेर लौटि गेल।

दूर बजारसँ रुखसानाक रसोइक धुँआ उठैत छल। नैराकेँ सरिताक घरक भातक गन्ध याद पड़ल। पिछला किछु दिन घर आ दफ्तरक बीच हुनकर समय एतेक बाँटि गेल छल जे संकेत सँ काल्हिक छोटी बातचीत पूरा नहि भऽ पाओल छल। ओहि बच्चाक कंचा देखिकऽ हुनका संकेतक पुरान कागजक नाव मोन पड़ल, जे ओ बाल्यकालमे आँगनक पानीमे बहाबैत छल। नदी आ पोखरि ओहि नाव लेल खेल छल, उर्मिलाक लेल रोजगार, सुशीलाक लेल खेती, रतनक लेल घरक बाट। एक्के जमीनक सभ अर्थ एक नपनीमे नहि समा सकैत छल।

तारा निरीक्षण समाप्त करैत तीनटा कागद अलग कएलनि—काल्हिक मुहानेक रेखा, आजुक पुरनाधारक सीमित जाँच, आ गोदामसँ माँगल अभिलेखक सूची। नैरा पुछलनि, “जे पुरनका पटरी भेटल, ओ कतय जाएत?” तारा कहलीह जे ओकरा साफ सूखल कपड़ामे लपेटि स्थलपर भेटल वस्तुक रूपमे गोदामक प्रतिनिधिक सम्मुख जमा कराएल जाएत; स्रोत अज्ञात लिखल रहत। नाम पढ़ि लेलासँ वस्तुक मालिकाना नगरक हाथमे नहि आओत।

घर घुरबाक पहिने नैरा एकान्तमे ठाढ़ भेलीह। ओही दीवालपर आब धूप नहि छल; गोदामक लम्ब छाँह जमीन धरि पसरल छल। ओ अपन छोट निजी कापी खोललनि, जकरा सरिताक बही आ सरकारी कागदसँ अलग रखैत छलीह। लिखलनि—“आजु, पुरनाधारक फाटक बाहर, काठक पटरी हटेलाक बाद ओकर पुरान छाँह कने बेर दीवालपर बचल जकाँ देखलहुँ। दोसर साक्षी अज्ञात। आँखि/प्रकाशक सम्भावित भूल। ई तथ्य-जाँचक प्रमाण नहि।’ लिखि कऽ ओ कापी बन्द कएलनि। ओहि पन्नाक प्रयोजन न्यायालय नहि, अपन मनसँ सच बाजब छल।

साँझ घरमे सरिता धान धोइत छलीह। “आजु नामक की भेल?” ओ सहज भावसँ पुछलनि। नैरा कहलीह जे पुरनाधार लिखल एक पुरान पटरी भेटल, मुदा पटरी ओकर स्थानक सीमा सिद्ध नहि करैत। सरिता पानी झारैत कहलीह, “जे चीजक नाम बचल रहैत अछि, ओहि चीजक जगह कखनो खसि जाइत अछि।” नैरा हुनका दीवालक छाँहक बात नहि सुनौलनि। सरिता पुछलीह नहि। घरमे एहन मौन पहिनहुँ छल जकरा दूनू अपन-अपन ढंगसँ सम्हारैत छलथि।

संकेत मेजपर अपन फोनक टूटल आवरण ठीक करैत छल। ओ पुछलक जे काल्हि गोदामक लाल चिह्नक फोटो ओकर एक परिचित देखना चाहैत अछि, देब की। नैरा फोन ओकर हाथसँ नहि लेलनि। केवल पुछलनि, “फोटोमे दोसर लोकक कागद वा चेहरा अछि?” संकेत उत्तर देबासँ पहिने फोन खोललक आ तस्वीर टकटकी लगा कऽ देखलक। तखन कहलनि जे कातमे दू आदमीक पीठ आ एक पुरान रसीदक कोना देखाइत अछि। नैरा कहलीह, “तस्वीर अहाँक अछि, मुदा ओहि पर सभक अधिकार बराबर नहि। काल्हि देखब जे की साझा करब उचित अछि।” संकेत फोन अपन लग रखलक।

सरिता भात परसलनि तँ संकेत रोटी माँगलनि। घरमे आटा कम छल; सरिता कहलीह जे भोरमे गूँथल जाएत। संकेत मुस्की दबाबैत कहलनि, “तखन भाते देऊ, मुदा अचार बेसी।” नैराकँ हँसी आबि गेल। घरक लोक भोजनक ई छोट विवाद सहजलनि, जाहिसँ कोनो अभिलेख नहियँ सुधरल, कोनो अपराध नहियँ खुलल। मुदा कखनहुँ दू थारीक बीचक हँसी एकटा घरकँ नाम आ कागदक बहससँ स्वतंत्र रखैत अछि।

रातिमे नैरा सरकारी निरीक्षणक प्रति फेर देखलनि। ओहिमे पुरनाधारक कागद-स्रोत, उपलब्ध नाप आ बाँकी अनुमति स्पष्ट छल। निजी कापी अलग तहमे रखल छल। ओ दू पन्ना एकठाम नहि कएलनि। खिड़की बाहर पुरनका पोखरिक दिशा सँ हवा अएली। ओकर संग कोनो आवाज आयल की केवल पात हिलल, से बुझबाक आवश्यकता नैराकँ नहि छल। काल्हि गोदामक चिह्नक तस्वीरपर संकेतक अपन शर्त सुनबाक छल; आजुक काज बस एतबे छल जे नामक संग छाँहक अनुभव जोड़ि अपराधक दावा नहि बनाओल जाए।

अध्याय ११ • अपन फोन अपन शर्त

भोरमे संकेत अपन फोनक पर्दा सरिताक पुरान सूती आँचलसँ पोछलक। पर्दापर गोदामक दीवाल छल, दीवालपर लाल रंगक टेढ़ रेखा। रेखाक कात दू आदमीक पीठ आ कातसँ फाटल जकाँ देखाइत एक रसीदक कोना सेहो छल। संकेत तस्वीरकेँ अंगुरीसँ पैघ कएलक। लाल रंग साफ भेल, मुदा रसीदक लिखावट धुँधला गेल। ओ फोन दूर कऽ फेर देखलक। जकरा ओ काल्हि साँझ केवल एक निशान मानने छल, आइ ओकर भीतर तीन अलग लोकक बात अटकल छल।

सरिता चूल्हापर रोटी सेंकि रहल छलीह। आटा काल्हि कम पड़ल छल; आइ भोरमे ओ पहिने गूँथि रखने छलीह। संकेत एक रोटी उठाबए हाथ बढौलक तँ सरिता थारी दिस इशारा कएलनि। “पहिने बैसू। फोन रोटी नहि खाएत, मुदा अहाँ जँ एहि रफ्तारिसँ खाएब तँ भूख लागले रहत।” संकेत हँसल नहि। ओ पुछलक, “आइ फोटो देखौनाइ अछि। ओहि दू आदमीसँ के पूछत?”

नैरा अपन झोरा सँ निरीक्षण-पर्ची निकालि रहल छलीह। “जिनकर चेहरा नहि देखाइत, हुनकर अनुमति चाही नहि—ई हम कहि नहि सकैत छी,” ओ कहलीह। “आ जिनकर अनुमति भेटि जाए, हुनकर फोटोसँ जे निष्कर्ष कियो निकालत, ओ हुनकर अधिकार नहि। अहाँ की करए चाहैत छी?” संकेत रोटी तोड़ि कऽ कने देर सोचलक। “मूल तस्वीर हम रखब। जे भाग जाँच लेल चाही, ओही देखाएब। इंटरनेटपर नहि भेजब।” सरिता तवा सँ रोटी उतारैत कहलीह, “बस, आब रोटी ठंढा नहि करू।”

पुरनाधारक फाटक लग पहुँचला पर तारा कागदक थैलीसँ नव नाप-पर्ची निकाललनि। बाहाक मुँहपर काल्हिक पीयर घेरा बचल छल। गोदामक सामने सीमेंटक धूरि पर रातिक पानीक छोट-छोट चिह्न छल। तारा संकेतसँ पुछलनि, “तस्वीर अहाँ खींचने छी?” संकेत हँ कहल, मुदा फोन हुनका हाथमे नहि देलक। “पहिने बताउ जे अहाँ ओकर उपयोग कतय करब,” ओ कहलक। तारा क्षणभरि चुप रहलीह। एतेक छोट आवाजमे कहल ई शर्त हुनका खटकल नहि; उल्टेँ ओ अपन कागद जाँचि उत्तर देलनि, “स्थलक चिन्ह देखबाक लेल। जनसभामे प्रदर्शन करबाक लेल नहि।”

संकेत फोटो खोललक। गोदामक दीवालपर लाल रंगमे बनल दूटा छोट रेखा कनेक दूरसँ एक जुड़ल चिन्ह बुझाइट छल। तारा पुछलनि जे तस्वीर कोन दिन, कोन समय आ कतेक दूरीसँ खींचल गेल छल। संकेत समय देखौलक, दूरी याद नहि छल। “तँ दूरी अनुमान लिखब नहि,” तारा कहलीह। संकेतक हाथ स्थिर रहल। किछु दिन पहिने ओ एहि तरहक प्रश्नकेँ अविश्वास मानित। आइ ओकरा बुझाएल जे अपन चित्रक विश्वसनीयता लेल ‘नहि जनैत छी’ कहब सेहो आवश्यक अछि।

गोदामक एक कर्मी फाटकसँ बाहर अएल। काल्हि जे बोरा सुखाबैत छल, ओही आदमी। तस्वीरमे पीठक कपड़ाक रंग हुनकर कमीजसँ मिलैत छल, मुदा संकेत ओकरा पहिचान घोषित नहि कएलक। कर्मी कहल जे लाल रंग पुरान माल उतारबाक समय दागल चिन्ह भऽ सकैत अछि। किछु ठाम मरम्मतिक मिस्त्री दरारक कात सेहो लाल निशान लगबैत छलाह। “हम जे सुनलहुँ, ओ कहि रहल छी,” ओ जोड़लक, “एहि दीवालपर ई खास निशान के लगौलक, हमरा नहि मालूम।” तारा ओकर नाम आ बोलबाक समय अपन पर्चीमे लिखलनि; एकरा स्वीकृति-पत्रक समान दर्ज नहि कएलनि।

संकेत तस्वीरमे कातसँ देखाइत रसीदक कोना दिस देखौलक। काल्हि तक ओकरा ओ कोना बेजान लगैत छल। आइ कर्मीक हाथमे माल ढोएबाक खाली टोकरी देखिकऽ ओकरा बुझाएल जे रसीद ककरो देय आ कमाइक पत्र सेहो भऽ सकैत अछि। “ओहि आदमीक पीठ फोटोमे अछि की नहि, से हम पूछि सकैत छी?” ओ कहल। कर्मी उत्तर देलक, “दोसरा आदमीक बात हम ओकरा बिना नहि कहब।” संकेत फोन बन्द कएलक। जकर उत्तर एखन उपलब्ध नहि, ओकरा कल्पनासँ भरि देब ओकरा उचित नहि लागल।

तारा दीवालक कात खुदक बनाओल कापीक चित्र खोललनि। रंगक स्थान ओहि पर केवल बिन्दु छल। ओ संकेतक आगाँ कागद घुमा कऽ कहलनि, “अहाँक मूल फोटो प्रमाण-सामग्री होएबाक सम्भावना रखैत अछि। मुदा एखन हम एहि बिन्दुक मूल माप आ दीवालक पुरान अभिलेख खोजब। रंग मालिकाना नहि बतबैत; एतयसँ पानि रोकल गेल, सेहो अपने नहि बतबैत।” संकेत कापीमे लिखलक—‘रंगक अनेक उपयोग सम्भव’। कागदपर लिखल एहि छोट पाँतसँ ओकर फोटो कम महत्वपूर्ण नहि भेल; उल्टेँ गलत आरोपसँ बचल।

तारा पछियारी चौरक बैठक दिस जाएबाक लेल झोरा समेटए लगलीह। सुशीलाक खेतक नमीक नक्शा काल्हिए हुनका लग आयल छल। गोदामक मुहाना जँ खोलल जाए, पानि कोन ओर बढ़त, तकर चर्चा चौरक वर्तमान ढाल बिना अपूर्ण रहत। नैरा पूछलनि जे संकेत संग जाएत की नहि। संकेत फोनक खोल फेर कसि कऽ कहलक, “जाएब। मुदा पहिने तय हो जे सभा-समितिक कोनो आदमी हमर फोनक चित्र अपन प्रचारमे नहि लगाओत।” तारा कापीमे ई बात लिखलनि; कागदपर हुनकर हस्ताक्षर मात्र छल, संकेतक अधिकार हुनका हाथ नहि गेल।

पछियारी चौर दिस जाएवला बाटपर गाछक छाँह एखन धरि ठंढा छल। एक कात धानक नन्हका रोप देखाइत छल, दोसर कात तरकारीक बेड़। बीचक ऊँच पतली माटि-रेखाकें लोक चाँचर कहैत छलाह; बरखा चढ़लापर ओही पर लोक आ छोट पशु चलैत छल। चौरक पानिक चमक देखिकऽ संकेत पुछलक, “एतय माछो होइत अछि?” सुशीला उत्तर देलनि, “मौसम भेलापर होइत अछि। मुदा देखैत पानि आ माछ धएबाक अधिकार एके बात नहि। आ जखन पानि उतरैत अछि तँ यैह धरतीमे धानक बेरा आबैत अछि।”

सुशीला एकटा बाँस जमीनपर राखि दू रेखा खींचलनि। पहिल रेखा बरखाक पानी पहुँचबाक स्मृतिक सीमा छल; दोसर सुखल मौसममे पशु आ आदमीक बाट। “जँ दूनूकें एक रंगसँ बना देब,” ओ कहलीह, “तँ शहरक कागदमे आधा गाम खाली जगह बनि जाएत।” तारा लाल आ नील पेंसिल निकाललनि, मुदा सुशीला रोकलनि। “पहिने रेखाक नाम लिखू। रंग बादमे देब।” संकेत मनहि मन गोदामक लाल चिह्न मोन पाड़लक। ओ ओकरा देखएबाक लेल फोन नहि खोललक।

तखने चौरक पछिला कातसँ दू कन्या घासक गट्टर लऽ आबि रहल छलीह। पहिलीक पएर चाँचरपर टिकल, दोसर गीला माटिमे उतरि गेलीह। ओ हँसि कऽ गट्टर कात धेलनि, मुदा सुशीला हुनका ठाम रोकि पुछलनि जे अगिला सप्ताह एतय पानि चढ़लापर कोन बाट बचत। एक कन्या कहलनि, “जे बाट सूखल दिनमे छोट लागैत अछि, बरखामे ओही बहुत पैघ भऽ जाइत अछि।” तारा ओकर बताओल घुमाव नक्शामे हलुक रेखासँ खींचलनि। कन्या कहलीह जे एहि घुमावसँ घर पहुँचबामे देरि होइत अछि। नपाइक संग समय लिखल गेल।

रमेश कुशवाहा तरकारीक एक टोकरी सम्हारैत पहुँचला। हुनकर पाँवमे कादो छल, हाथमे पानि देबाक दिनक छोट रसीद। ओ नक्शापर अपन खेत देखौलनि आ पुछलनि जे निकासी लेल जँ नालाक मुँह बढाओल जाए तँ ओकर बेड़क पहिल फसल के भरत। “पानि गामसँ निकलब, ई हमर विरोध नहि,” ओ कहलक, “मुदा जे रास्तासँ निकलब, ओकर खेतमे पानि कतेक बेर ठहरत? गणना बिना हम हँ किएक कही?” तारा कागदक किनारामे फसलक समय आ क्षतिक अलग खाना बनौलनि। निर्णय एखन नहि भेल; बिना लागत लिखने सहमति सेहो नहि भेल।

देवकी पशु लऽ जाइत छलीह। ओ चाँचरक सँकर ठामपर रुकि कहलीह जे जखन चौर भरैत अछि, ओकर गोरू घुमि कऽ दूरक राह लेत। सुशीला हुनकर रास्ता रेखामे जोड़लनि। एक मछुआर परिवारक प्रतिनिधि पुछलक जे माछ पकड़बाक मौसमी जाल कहाँ लागैत अछि। तारा जालक जगह लिखलनि, मुदा ओकरा स्थायी कब्जाक रंग नहि देलनि। नक्शापर सभक रेखा बढ़ैत गेल, आ चौर पूर्वक अपेक्षा छोट नहि, बेसी जीवित देखए लागल।

चौरक कात विद्यालयक पुरान मेज राखल गेल छल। एहि बेरक बीहन—पानि साझेदारीक बैठकमे काज बाँटबाक लेल पहिने लोकक इच्छा पूछल गेल; ककरो जाति अथवा घर देखिकऽ कुदाल नहि थमाओल गेल। जे पानीमे उतरि नहि सकैत छल, ओ रसीद पढ़ब, माप लिखब अथवा बच्चासभक सुरक्षित बाट देखब चुनलक। मजदूरीक दर, सुरक्षित औजार आ उपस्थितिक हिसाब मेजपर छल। संकेत अपन फोटो देखएबाक शर्तक पाछाँ पहिल बेर एहि व्यवस्थामे अपन मनक एक परिचित नियम देखलक—काज करब आ अपन चीजपर अधिकार रखब एक दोसराक विरोधी नहि।

हाजिरी लिखनिहार युवक सभक नाम जल्दी-जल्दी उतारैत छल। सुशीला देखलनि जे एक स्त्रीक दिनभरि पानि रोकबाक काज ‘मदद’ लिखल गेल अछि, जखन कि ओ अपन घरक बीहन छोड़ि काम करए आयल छलीह। पर्ची फेर खोलल गेल; काजक घण्टा आ मजदूरी लिखल गेल। रुखसानाक भेजल भोजनक डब्बापर सेहो खर्चक पर्ची लगल छल। एक बुजुर्ग हँसि कहलनि, “आब तँ गीत गेनिहारक हिसाब सेहो लागत।” तारा उत्तर

देलनि, “जँ कियो गाएब चाहे, ओकर गीतक दाम आ अनुमति पूछब। गीतकेँ कियो हाजिरीक मजबूरी नहि बनाओत।” एतेक कहि कऽ लोक अपन-अपन काजमे लागि गेल।

मेजक एक कात छह छोट पर्ची अलग राखल छल। रेणु गोंद्रीक नामक पर्ची पोखरिक घेराव आ पहुँचसम्बन्धी आवेदनक प्राप्ति छल; चौरक नक्शासँ ओकर घाटक प्रश्न समाधान नहि पबैत छल। आशा भूमिजक रसीद विस्थापित परिवारक अस्थायी ठहराव-खर्चक छल। बिनु दराईक नामसँ आयल यात्रा-पैसाक पर्चीमे रकम देनिहार आ रकम पहुँचनिहार अलग दर्ज छल। सब कागद समान मुद्दाक नहि छल, मुदा साझेदारीमे आयल परिवारक उपस्थिति आ श्रमक सही हिसाब लेल सबकेँ सुरक्षित रखबाक आवश्यकता छल।

हीरा मेचेक एक निवेदन संग दू भाषामे छोट पाँति छल; पहिल पाँतिक शब्द हुनका बुझाइत नहि छल, ई बात ओ हस्ताक्षरक कात लिखबौने छलाह। मूल भाषामे ओकर अर्थ सत्यापित करबाक काम अगिला सुनवाई धरि अलग रखल गेल। तुलसी दोनवार दोसर गामक अधिकार सम्बन्धी कागदक प्रति जमा कएने छलाह; एहि कारण चौरक पगडंडीपर एक गामक पत्ता देखिकऽ समस्त उपयोग तय नहि होएत। संकेत पर्चीसभक फोटो लेबाक प्रस्ताव नहि कएलक। आयोजक रसीदक प्राप्ति-अंक मात्र सार्वजनिक हाजिरीमे चढ़ौलनि।

किरण बटाइ-कागदक पुरान बँडल लऽ अएल। ओकर दूनू पन्नामे बूढ़ी गंडक आ अधवाराक नाम छल। एकटा नाम पुरान बटाइ-पत्रक किनारामे, दोसर घरसँ आएल देयक हिसाबमे। सुशीला पूछलनि जे एहि नामसभक आधारपर तिलवाहक दिशा फेर सँ बना देल जाएत की। तारा पन्ना पढ़ि कहलीह, “नहि। ई कागदक सन्दर्भ आ परिवारक यात्रा-लेखा अछि; एहि ठामक नदीक शाखा होएबाक प्रमाण नहि।” किरणक चिन्ता नदीक नक्शासँ कनेक अलग छल—ककरा हिस्सामे पिछला फसलक देय बाँचल अछि। ओ देयक पन्ना अपन लग राखलक, प्रति देबाक अनुमति मात्र देलक।

दुपहरिया भेल तँ मेजक कात रखल दू नक्शामे सबहक नजरि अटकल। नगर कार्यालयक एक रेखामे चौरक बीचक हिस्सा सफेद छल; लोकक बनाओल रेखामे ओतय धान, मौसमी माछ, पशुचरण आ चाँचरक बाट चारि अलग चिह्नसँ भरल छल। तारा

कहलीह जे लोकक रेखा मापनक स्थान नहि लेत, मुदा नगरक खाली रंग सेहो लोकक अधिकारक अभाव नहि सिद्ध करैत। अदिति लग जाँच लेल दूनू नक्शा जएबाक छल। संकेत कापीमे छोट हिसाब लिखलक—एकटा नक्शामे पानीक रास्ता, दोसरामे पानीसँ जीवित परिवारक समय।

भोजनक बेर रुखसानाक पठाओल भात आ तरकारीक डब्बा खोलल गेल। रोटी चाहनिहार संकेतकेँ आइ भातसँ शिकायत नहि भेल; ओ बेसी भूखायल छल। रमेशक टोकरीसँ खरीदल कोमल साग तरकारीमे छल, जकर दाम पर्चिमे लिखल गेल छल। सुशीला कहलीह, “काज करनिहार लोककेँ खएबाक बेर भेटल, एहि लेलो नक्शामे जगह होएबाक चाही।” सभ हँसल। ओहि हँसीक बीच देवकीक गोरू मेजक कात आबि पन्ना सूँघए लगल तँ संकेत झट सँ उठि कागद समेटलक। ओकर फोन जेबमे सुरक्षित छल।

भोजनक बाद एक नौजवान संकेतसँ कहलक जे गोदामक लाल चिन्हक तस्वीर समूहमे पठा दिअ, नहि तँ लोक मानत नहि जे दीवाल लग पुरान बाहाक बाधा अछि। संकेत उत्तर देलक, “दीवाल अछि, चिन्ह अछि, ई देखल बात। बाधा कोना भेल, से जाँचबाक बाकी अछि। आ तस्वीरमे जे लोक छथि, हुनकर अनुमति बिना हम समूहमे नहि पठाएब।” नौजवान पुछलक, “तखन फोटो खींचलहुँ किएक?” संकेतक गला कनेक तेज भेल, मुदा ओ सँभरिकऽ कहलक, “किछु बुझबाक लेल। सभकेँ देखाबएबाक अधिकार बाँटबाक लेल नहि।” नैरा बीचमे नहि बोललीह।

तारा सार्वजनिक प्रयोजनक लेल अपन हाथक रेखाचित्र खोललनि। ओहिमे गोदामक दीवाल, मुहानेक सम्भावित पुरान चिन्ह आ पुनर्जाँचक सीमा छल; व्यक्तिक तस्वीर नहि। संकेत अनुमति देलक जे ओकर मूल फोटो तारा अपन उपस्थितिमे केवल चिन्हक स्थान मिलाबए देख सकैत छथि। ओ अलग सँ लिखबाक कहलक—‘मूल फोटो संकेतक फोनमे सुरक्षित; सार्वजनिक प्रति जारी नहि।’ तारा ओहि पाँतपर हस्ताक्षर कएलनि। संकेत बुझलक जे ओकर एक शर्त सार्वजनिक काजक दुश्मन नहि बनल, बल्कि कागदक इस्तेमालक नियम बनि गेल।

साँझक पहिले चौरक मोसमवार नक्शाक पहिल प्रति पूरा भेल। ओहिमे ऊँच चाँचर, बरसाती पानिक फैलाव, सुखल मौसमक पशुबाट, मौसमी माछक उपयोग आ तरकारीक

बेड़क सीमारेखा अलग छल। जकर माप शेष छल तकर कात प्रश्नचिह्न रहि गेल, जकर उपजक देय विवादित छल तकर रसीद अलग रखल गेल। लोक अगिला बैठकमे दूनू मौसमक रेखा परखबाक तिथि लिखि उठल। कियो कहि नहि सकैत छल जे आब जलनिकासक झगड़ा समाप्त भऽ गेल; मुदा बिना चिन्हने खेतपर निकासी थोपबाक पहिल प्रयास थमकि गेल छल।

घुरैत समय नैरा संकेतसँ पुछलनि, “आजुक काजमे तोरा सबसँ कठिन की लागल?” संकेत कहलक, “लोक सभ फोटो देखए चाहैत छल। हमहुँ चाहैत रही जे हमर खींचल चीज काम आबए। मुदा ओकरा ककरो विरुद्ध हल्ला बनबैत देखब मन नहि छल।” नैरा ओकरा कहलनि जे जँ अगिला निरीक्षणमे तस्वीर औपचारिक रूपसँ माँगल जाए, तँ मूल सुरक्षित रखि माँगक कारण, प्रति लेनिहार आ उपयोगक सीमा लिखित होएबाक चाही। संकेत हँ कहलक; ओ एखन एहि शर्तक पूरा विधि नहि, ओकर आवश्यकता बुझने छल।

घरमे सरिता साँझक रसोई लगौने छलीह। ओ संकेतक कमीजक कादो देखिकऽ पुछलनि जे फोन बचल की नहि। संकेत हँसि कऽ फोन निकाललक। “फोन बचल। आब ओकर फोटो सेहो हमरा कहनासँ चलत।” सरिता कहलीह, “ठीक। मुदा ओहि कादोक संग बिछौनापर नहि चढ़ब।” संकेत कमीज बदलए गेल। नैरा मेजपर चौरक नक्शाक स्वीकृत नकल रखलनि, सरिताक सत्ताइस नामक कागदसँ अलग। एक मेजपर दुनू रहस्यक कागद राखल जा सकैत छल, मुदा एकक अर्थ दोसरा सँ आपहि नहि खुलैत छल।

राति परलापर संकेत फोनमे मूल तस्वीर फेर देखलक। लाल रेखा एखनहुँ ओतबे लाल छल। ओ चित्रक नीचे अपन लेल लिखलक—‘गोदाम, पुरनाधार; दृश्य स्थान ज्ञात; चिन्हक प्रयोजन अज्ञात; दूसर व्यक्तिक सहमति शेष।’ फेर फोन बन्द कऽ पढ़बाक कापी खोललक। चौरक नकल काल्हि नगर कार्यालयमे जएबाक छल; ओहि नगरक नक्शामे जे खाली सफेद ठाम छल, ओकर भीतर आइ कतेक लोकक काज लिखल जा चुकल छल। ओकरा ई बात सुख देलक जे ककरो मुख देखौने बिना सेहो एक जरूरी बात दुनिया धरि पहुँचि सकैत अछि।

अध्याय १२ • घाटक पाछाँ शहर

बरकी पोखरिक पछिला घाटपर भोरक पहिल धूप पड़िते रमणी बिन्द अपन जाल उल्टा कऽ पसारि देलनि। जालक आँखि-आँखिमे रातिक ओस अटकल छल। पानि भरल गड़हीसँ दूटा बच्चा कंचा बटोरैत निकलल, तँ ओ जाल कनेक समेटि लेलनि। घाटक साँकर सीढ़ीपर माछक टोकरी राखब मना छल, मुदा जकरा ई मनाही छल ओकर नाम कतहु लिखल नहि छल। रमणीक झोरामे तह कएल जलकर-पट्टाक नकल छल। ओकर पहिल पन्नापर पुरुषसभक नाम छल, दोसर पन्नाक आधा भाग फाटल। ओ अपन नावसँ दिन भरि जतेक माछ पकड़ैत छलीह, ताहिसँ पैघ हुनकर प्रश्न छल—ओकरा पकड़बाक अधिकार ककर पन्नामे लिखल अछि?

हीरा घाटपर नावक रस्सी जाँचि रहल छलाह। रमणी हुनका पट्टा देखौलनि। “आइ सुनवाईमे जएबाक अछि। केवल पहिल पन्ना फेर देखाएताह तँ हम उठि अएब,” ओ कहलीह। हीरा रस्सी छोड़ि कागद दिस देखलनि। “तँ पूरा पट्टा माँगू। मुदा नावक रास्ता आ माछक सीमा एक नहि होइत अछि।” रमणी कहलनि, “हमहुँ से जनैत छी। जखन माछ पकड़ए जाइ छी, तँ घाटक मालिक एक, पानिक पट्टेदार दोसर, आ नावक समय तय करनिहार तेसर भेटैत अछि। हमरा तीनूकेँ एक जवाब देबए पड़ैत अछि।” ओ टोकरी उठा कऽ चलि देलीह।

चौक पर नैरा आ तारा काल्हिक चौरक नक्शा खोलि बैसल छलीह। संकेत ओकर फोटो नहि खींचलक; ओकर हाथमे कागदक कोना दबा कऽ रखबाक काज छल। नगरक मुद्रित नक्शामे बरकी पोखरिक पछिलातिर एकटा सोझ रेखा बाहाक मुँह धरि गेल छल। लोकसभ बनौने नक्शामे ओही रेखा कात पुरान पयरबाट, माछक अस्थायी घेर, बरखामे डूबएवला बारी आ अस्पतालक कपड़ा अनएवला सँकर बाट अलग छल। दूनू नक्शा एक्के आकारक नहि छल, तँ तारा पहिने माप-अनुपात आ बनबाक साल लिखलनि। तकर बादो एकटा टुकड़ा मिलि नहि रहल छल—जतय नगरक नक्शा ‘खाली भूमि’ कहैत छल, ओतय लोक तीन पीढ़ीसँ घाट उतरबाक बाट देखबैत छल।

अदिति निरीक्षणक थैली लेने पहुँचलि। ओहि थैलीमे बाहाक मुँहथरि पर भेटल चिह्नक विवरण छल, मुदा गोदामक स्वीकृतिक मूल प्रति नहि। तारा पुछलनि, “नक्शामे ई रेखा पोखरिक सीमा अछि, निकासक सीमा, कि राजस्व भूखण्ड?” अदिति चश्मा उतारि कागद लग झुकलीह। “तीनूकेँ एक मानब गलत होएत,” ओ कहलीह। “नगरक चित्रमे पानि निकलबाक सुविधा देखाओल गेल अछि; एकर आधार पर भूमि-अधिकार तय नहि होएत।” नैरा पुछलनि, “तखन एहि सफेद पट्टीक सम्पत्ति-फाइल केकरा लग?” अदितिक उत्तर छल जे नगर सम्पदा शाखाक फाइल आ राजस्व कार्यालयक मूल प्रविष्टि अलग मँगाएब पड़त।

घाटक पाछाँ सँ एक बूढ़ आदमी कादो लागल टाटमे लपेटल कागद लऽ अएलाह। सूरज गंगोता नदीक दोसर कात छलाह। हुनकर पठाओल खेतक ऋणक प्रति तुलसी दोनवारक हाथमे पहुँचल छल। तुलसी कागद नैराक आगाँ राखि कहलनि, “जतय आइ बालू अछि, ओतय खेत छल। ओकरा बिना देयक हिसाब बुझब कठिन अछि।” कागदमे पुरान मेड़ धरि नाप छल, मुदा नव कटानक बादक किनार कतय अछि, से नहि। तारा पन्नापर तिथि चिन्हित कएलनि। “पुरान खेत रहल, एकर साक्ष्य अछि,” ओ कहलीह, “मुदा आइक किनारक नाप बिना हम ई नहि कहब जे पानि हटिते ओही जमीन फेर भेटत।” तुलसी सिर नुका लेलनि। ऋणक दिन धरि नदीक प्रतीक्षा नहि रुकैत छल।

घाटक नीचाँ नदीसँ बालू काढ़बाक हालक खाँच देखाइत छल। दुपहरक ढलान पर ओहि खाँचमे फेर पानि भरबाक छल। सुगनी सदाय अपना मुहल्लाक तीन स्त्री आ दू युवक संग ओहि बाटसँ चढ़ि अएलीह। हाथमे कुदाल नहि, अपन लिखल हाजिरी-पर्ची छल। “बाहा साफ करबाक टोलीमे हम सभकेँ गनू,” ओ कहलीह, “मुदा पहिले कहू जे ककर बाट बन्द करत आ काजक मजूरी कखन भेटत।” तारा बतौलनि जे एखन जोखिम-जाँच होइत अछि; निकास खोलबाक आदेश नहि देल गेल अछि। सुगनी उत्तर देलनि, “ठीक, तँ सर्वेक्षणमे हम रहब। बादमे ई नहि कही जे मुहल्लाक लोक काज देखल नहि छल।” ओ अपन नाम पहिल पाँतिमे लिखौलनि, साथै काज चुनबाक अधिकार सेहो।

नक्शाक कात नगर सफाईक टोलीक ममता हरि एकटा पर्ची जमा कएलनि। काजक सूचीमे नालाक भीतर उतरबाक निर्देश छपल छल, मुदा सुरक्षाक दस्ताना, जूता आ बाँसक

पकड़िनिहार रज्जुक खाना खाली छल। ममता ककरो संग बहस नहि कएलनि। ओ खाली खानापर लाल पेंसिलसँ घेरा बना कऽ लिखलनि—सामान प्राप्त नहि। प्राप्तिक मोहर लगबौने ओ कामक जगह देखए गेलीह। सुगनी ओकर पर्ची देखिकऽ कहलीह, “हमर टोली सेहो बिना जाँच भीतर नहि उतरत।” एहिमे न कोनो वीरताक प्रदर्शन छल, न काज रोकबाक आनन्द। लोक अपन देह लऽ काज पर जाएत अछि; जँ देह सुरक्षित नहि, तँ सार्वजनिक कामक हिसाब अपूर्ण रहैत अछि।

एहि बीच रमणी नगर कार्यालयक बरामदापर पहुँचि गेलीह। काउण्टरपर बसल कर्मचारी हुनका आधा पट्टा देखबैत कहलनि जे नामित लाभार्थीक सूची पर्याप्त अछि। रमणी ओहि कागदकेँ मेजपर नहि छुअलनि। “एहि पन्नामे जलक सीमा, पट्टाक अवधि, घाटक प्रवेश, ठेकेदारक हिस्सा, आ स्त्रीक नाम किएक नहि?” ओ पुछलनि। कर्मचारी कहलनि, “ई सभ दूसरे परिशिष्टमे रहत।” रमणी उत्तर देलनि, “तँ ओहो देखाउ। हम केवल माछक गिनती माँगए नहि आयल छी। हमर कामक सीमा आ देयक पूरा कागद चाही।” हुनकर पाछाँ ठाढ़ नैराकेँ एहिमे सत्ताइस व्यक्तिक नामक सूचीसँ भिन्न प्रकारक अभाव बुझा रहल छल। एहि ठाम व्यक्तिक नाम लुकल नहि, अधिकारक शर्त लुकल छल।

दुपहर धरि नगर पुस्तकालयक आँगनमे खुला लेखापाठ लेल मेज लागि गेल। सालक मुख्य लोकपाठ फागुनमे होइत छल—गीत, विद्यालयक बच्चासभक हिसाब-पढ़ाइ आ नदीक उपयोगपर सार्वजनिक प्रश्न सहित। बरखा शुरू भेलाक बादक ई विशेष बैठक ओही आयोजनक नियमित नियमपर बजाओल गेल छल, फागुनक पर्व दोहराबए लेल नहि। करीम डफाली अपन ढोलक कपड़ामे लपेटि कऽ आनने छलाह; ओहि पर नव चमड़ा चढ़ेबाक खर्चक रसीद सेहो संग छल। हुनका गीतक दाम देबाक बात समिति अलग लिखलनि। मंचक सजावट लेल मंगाओल रंगीन कपड़ा नसीमक दुकानसँ भाड़ापर आयल छल। श्रम आ वस्तु दान मानि कऽ गायब नहि भेल।

मेजक दोसर कात विनीता केशरवानीक दू छोट बही राखल छल। एकटा हुनक अपन उधारी, दोसर घरक साझे कारोबारक। कार्यालयक आदमी सभ रकम एकठाम जोड़ए चाहैत छल, मुदा ओ बहीक मोहर अलग करबौने छलीह। मीना थारूक भूमि-पट्टाक

आवेदन सेहो आयल, जइमे खेतीक वास्तविक उपयोग आ कम्पनीक प्रस्ताव दू अलग पन्नामे छल। ककरो दस्तावेजक पूरा इतिहास एतय पढ़ल नहि गेल; बस प्राप्ति-अंक आ अगिला सुनवाईक तिथि लिखल गेल। बहीसभक एहि भीड़मे केकर समस्या सबसँ पैघ, ई बतएबाक लेल कोनो एकटा माप नहि छल।

लोकपाठ आरम्भ भेलापर रुखसानाक रसोइसँ आयल पानि आ अल्पाहारक भुगतान पहिने पढ़ल गेल। करीम ढोलकपर दू बेर हलुक थाप देलनि; विद्यालयक दू बालिका नदीक पुरान गीतक दू पाँति गाबि थमि गेलीह। हुनका सभकेँ मंचपर रोकेबाक अनुरोध कएल गेल, मुदा हुनका सभक अभ्यासक समय समाप्त भऽ गेल छल। ओ हँसैत नीचाँ उतरि गेलीह। रमणीकेँ ई छोट बात नीक लागल—आब कियो जकरा मंचपर बजौलक, ओकरा मंचक सम्पत्ति नहि मानि रहल छल। सामनेक पाँतिमे बैसल फकीरा गीतक ताल अँगुरीसँ पकड़ि रहल छलाह; ओ किछु गाबए नहि चाहलनि।

नैरा पहिल कागद उठौलनि—जलपंजी। एहिमे पोखरि, मुँहथरि, बालूघाट आ चौरक उपयोगक विवरण छल। ओ स्थलनाम आ सार्वजनिक खर्चक पाँति पढ़लनि, मुदा निजी पत्ता आ उपचारसँ सम्बन्धित संकेत छोड़ि देलनि। ओकर बाद सरिताक सत्ताइस नामक पन्नाक प्रसंग उठल तँ एक युवक कहल, “जखन सभ लोक जुटल अछि, तखन ओहो सूची पढ़ि दिअ।” नैरा पन्ना खोलबो नहि कएलनि। “ई व्यक्तिक नामपंजी अछि,” ओ उत्तर देलनि, “एहिमे किछु लोकक सुरक्षा आ जीवित पहिचानक प्रश्न अछि। जलपंजीक सार्वजनिक हिसाब देखब एक अधिकार, ककरो निजी नाम खुलबायब दोसर बात। दू कागद एक्के मेजपर अछि कहि दूनूकेँ एक नियमसँ नहि पढ़ल जाएत।”

अदिति सार्वजनिक चित्रक दू कात छोट-छोट अंक लिखलनि—नक्शाक प्रकाशनवर्ष, माप, आ स्रोत। तारा एहि अंकक सहारे पुरान बाहाक मुखस्थान चिन्हित कएलनि। नगरक रेखा आ राजस्व सीमाक एक टुकड़ा लगभग मिलैत छल; दोसर ठाम फरक माप-अनुपातसँ सेहो नहि मिटैत छल। नैरा सभा दिस मुख कऽ कहलनि, “दू नक्शा नहि मिललासँ धोखाधड़ी सिद्ध नहि होइत अछि। मुदा एक नक्शामे जकरा खाली देखाओल गेल, ओहि ठाम लोकक बाट आ उपयोग अछि। हम सभ सम्पदा शाखाक गोदाम-

पाछाँवला भूखण्डक फाइल आ राजस्वक पोखरि-किनारवला भूखण्डक फाइल माँगैत छी। दूनूक स्वीकृति, संशोधन आ सीमांकन एक संग जाँचब आवश्यक अछि।”

मेजक पाछाँ सँ आवाज आयल जे ई सभ कागद जँ मिलबो गेल तँ अधिकारी आ ठेकेदारक हस्ताक्षरक बादो पुरान माटि घुरि नहि आएत। ई बात तुलसी कहलनि। ओकर आवाजमे हताशा छल, किन्तु अपन भूमि ककरो नाम लिखि देबाक अनुमति नहि। अदिति उत्तर देलनि जे जाँचक पहिल काम वर्तमान सीमाक सही नाप आ पुरान दावाक अलग प्रविष्टि होएत। नैरा ओ बात लिखलनि; साथे ईहो जे नदीक कटानसँ खेत नष्ट भेलाक अर्थ ऋण अपने माफ भऽ जेबाक नहि, आ पुरान कागद रहबाक अर्थ नदीसँ जमीन निकालि देबाक आदेशो नहि। तुलसी पन्ना फेर मोड़ि कऽ अपन झोरामे रखलनि। ओकर प्रश्न पहिनुक जकाँ कठिन छल, मुदा आब कागद मांगबाक ठाम तय भेल छल।

रमणी सभाक बीच फेर ठाढ़ भेलीह। “हमर पूरा पट्टा कहाँ?” ओ पुछलनि। कार्यालयक कर्मचारी कहलनि जे परिशिष्टक प्रति अगिला दिन देल जा सकैत अछि। रमणी पुछलनि, “अगिला दिन धरि जाल चलाएब की नहि?” एहि बेर अदिति उत्तर देबासँ पहिने मौन रहलि। जलकरक पट्टा हुनकर कार्यालयक विषय नहि छल। अध्यक्षता करनिहार स्थानीय कर्मी लिखलनि जे वर्तमान लिखित शर्त स्पष्ट भेलासँ पहिने नव रोक अथवा नव शुल्क लगबैत समय पट्टा जारी करनिहार शाखासँ कारण-सहित आदेश देखाबए पड़त। ई स्थायी जीत नहि छल। मुदा रमणीकेँ दिनहुँ अलग-अलग मुँहसँ अलग मनाही सुनबाक बदला एक लिखित उत्तर मांगबाक आधार भेटल।

सूरजक पठाओल दोसर छोट कागदमे चक्रवृद्धि ब्याज नहि, साधारण बकायाक हाजिरी छल। नैरा ओहि खानामे लुप्त खेतक पुरान उपजक अनुमान लिखबाक प्रस्ताव काटि देलनि। “धानक दाम भरि देने खेत घुरि नहि अबैत,” ओ तुलसीसँ कहलीह, “आ खेत डूबलासँ बीतल वर्षक लेल लेल ऋण अपने शून्य नहि बनैत।” तुलसी पुछलनि, “तखन हम घरमे की कहब?” नैरा उत्तर देबाक जल्दी नहि कएलनि। तारा बालूघाट धरि पैदल गेलीह। गीला बालूक कात माटिक एक पुरान तह खुलल छल; ओ ओहिमे लाठी नहि गाड़लनि, कारण किनार सरकि सकैत छल। ओ दूरसँ निशान कऽ नाप-जाँचक अगिला

दिन राखलनि। कागद पर “दावा शेष” लिखल गेल, “भूमि खाली” नहि। ई अन्तर तुलसी घर लऽ जा सकैत छलाह।

लोकसभ मेजक चारू कात घेरि लेने छल, तखने पानि भरल घाटसँ बच्चासभक हँसी सुनाइत रहए। तीन बच्चा काठक छोट-छोट नाव बनौने छल। एक नाव कातमे अटक गेल, तँ दोसर बच्चा ओकरा बचाबए लेल अपना नाव धकेलक। दुनू नाव घूमि एकठाम जमा भऽ गेल। सभसँ छोट बच्चा क्रोध कएलक जे ओकर नावक जीत छीनि लेल गेल। पैघ बच्ची ओकर नाव निकालि फेर पानि पर राखि देलक। “एखन शुरू भेल,” ओ कहलक। ई खेलमे न पट्टाक नाम छल, न जमीनक सीमा। फकीरा ओ सभक हँसी सुनि ओहि कात गेलाह, काठक नावकें पएरसँ उठएबाक बदला एक पतली डाँढ़सँ किनार लगा देलनि। बच्चासभ अपन दौड़मे मगन रहल।

सुनवाईमे आँगनक भीड़ फेर मेज दिस मुड़ल तँ सुगनी अपन हाजिरीक प्रति उठौने ठाढ़ छलीह। ओ देखौलनि जे स्थानीय निकासी-दलक काजक नाम लिखल गेल अछि, किन्तु टोली चुनबाक बैठकक समय एखन नहि। “हम सभ दिन तय करब,” ओ कहलीह, “केवल नाम लिखि चुप नहि बैसब।” नैरा एकर निर्णय अपन हाथमे नहि लेलनि। समितिक सदस्यसभ श्रमिक टोलीक खुला बैठक लेल अलग दिन निश्चित कएलनि, जाहिमे स्त्री, युवा आ उपठेकेदारक अधीन काज करनिहार सभ मत दऽ सकत। ममताक सुरक्षा-पर्ची एहि बैठकक पहिल एजेण्डा बनल; खाली सामानक खानाकें भरल मानि नहि लेल गेल। सुगनी प्राप्ति-प्रति पढ़ि कऽ हस्ताक्षर कएलनि। हुनकर नामक बगलमे नेतृत्व माँगबाक वास्तविक काज आब लिखल छल।

मीना थारूक आवेदनक प्राप्ति-अंक अनाउंस कएल गेल, तँ ओ दरवाजापर ठाढ़ परिवारक बूढ़ सदस्य लग प्रति पहुँचेलनि। विनीता अपन दू बही उठा कऽ गेलीह; एक बहीक रकम अनाथ सहायता निधिसँ मिलाबएबाक आग्रह केओ केलनि, मुदा ओ कहलीह जे पहिने हिसाबक आधार लिखित आबए। करीम ढोलक खोलि फेर कपड़ामे बँधलनि। आजुक दूनू थाप लेल जे पारिश्रमिक तय छल, ओकरा पाबए ओ समिति लग ठमकलाह। लोकपाठक गीत सभकें एकजुट कएलक, मुदा गीत गेनिहारक दिनक खर्च गायब नहि भेल।

अमृता अपन झोरामे सँ भूमिपत्रक नकल निकालि देखेलीह। कागदक कात ‘अमृता’ लिखल छल—व्यक्तिक नाम रूपमे हुनक मायक हस्ताक्षरक संग। संगमे एक पुरान स्रोत-सूचीमे ‘अमृता’ नदीपद रूपमे दर्ज छल, जकर प्रतिलिपि जमीनक कागदमे कियो कखनो जोड़ि देने छल। नैरा दूनू पद अलग चिह्नित कएलनि। “अमृता अहाँक परिवारक नाम अछि; दोसर पन्नामे नदीक उल्लेख,” ओ कहलीह। “एक अक्षर भेटलासँ दूनू एक स्थान नहि बनि जाइत।” अमृता अपन परिवारक मूल पत्र वापस समेटि लेलनि। हुनका नदीक भूगोलसँ बेसी चिन्ता ई छल जे आगाँ होमएवला सुनवाईमे हुनकर माय द्वारा बचाओल प्रमाण फेर ‘अस्पष्ट’ कहि बाहर नहि फेकल जाए।

साँझक घाम ढलैत दू सम्पत्ति-फाइल लेल औपचारिक आवेदनक प्राप्ति-अंक भेटल। पहिल नगरक गोदाम-पछिला भूखण्डक स्वीकृति आ परिवर्तनक फाइल, दोसर राजस्वक पोखरि-किनार आ पुरनाधारसँ जुड़ल भूमि-प्रविष्टि। किन-किन पन्नाक प्रति सार्वजनिक भऽ सकैत अछि आ किनका निजी विवरण छाँटि देल जाएत, तकर नियम सेहो माँगल गेल। नक्शाक सफेद पट्टी एखन भरल नहि गेल छल; निर्णयक रूपमे केवल ई लिखल गेल जे पड़ताल धरि लोकक प्रमाणित पैदल-बाटकेँ बिना सुनवाई बन्द नहि कएल जाए, आ कोनो नवीन जल-निकास कार्य माप, जोखिम आ लिखित अनुमति बिना आरम्भ नहि होए।

कार्यालयसँ बाहर अबैत रमणी झोरामे पट्टाक अपूर्ण नकल देखलनि। ओहि फाटल पन्नाक कात आब एक नव रसीद छल—सम्पूर्ण शर्तक प्रमाणित प्रति माँगबाक प्राप्ति। ओ रसीदकेँ पहिल पन्नासँ अलग तहमे रखलनि। तारा अपन नक्शा समेटैत नैरासँ कहलीह, “जे सफेद ठाम छल, आब ओतय प्रश्न अछि।” नैरा उत्तर देलनि, “प्रश्नक उत्तर बिना सफेद रेखा बदलल तँ जकरा अधिकार नहि छल ओकरा अधिकार देब, आ जकर छल ओकरा फेर हटा देब।” ओ सभ तर्कमे अटक रहलथि, तखने संकेत कागद समेटबाक डोरी लऽ आयल। हुनकर हाथमे आइ फोन नहि छल।

घरक बाटपर सरिताक लेल लाभवितरण सभाक सूचना लटकल छल। नगरक खुला मंचपर अगिला दिन किछु परिवारकेँ सहायता देबाक घोषणा होएवाली छल। नैरा सूचना पढलीह, मुदा भीड़क बीच ओतहि सरिताक विवरण नहि खोजलनि। दिनभरि दू नक्शाक

फरक चिन्हित करैत हुनका बुझाएल छल जे सार्वजनिक मंचक चमकमे एक नामक गलत जगह कोना पैघ हानि कऽ सकैत अछि। ओ पोस्टरक तिथि अपन कापीमे लिखलनि आ घर दिस बढ़लीह। एखन सरिताकेँ साँझक दवाइ आ भातक समय चाही छल; अगिला दिनक सभा अलग दिनक प्रश्न छल।

घाटक छोट नावसभ धीरे-धीरे भीजैत काठ जकाँ पानिमे भारी होमए लागल छल। बच्चासभ एक-एक कऽ ओ सभकेँ बाहर निकालि रखलनि, ताकि काल्हि फेर खेलि सकथि। रमणी अपन नावक रस्सी दोसर बेर कसलीह। हुनका पट्टा एखन नहि भेटल छल, सुगनीक टोलीकेँ औजार नहि, तुलसीकेँ खेत नहि। तथापि मेजपर माँगल गेल कागदक प्राप्ति-अंक, लिखल गेल मजदूरीक शर्त आ बँचल बच्चासभक खेल एके दिनक अलग-अलग सच्चाइ छल। घाट पाछाँ शहर छल—ओहि शहरक कागदमे पहिल बेर घाटक लोक अपन पयरक बाट स्पष्ट देखबाक आग्रह दर्ज करौने छल।

अध्याय १३ • बजाओल गेल मृतका

सहायता-वितरण सभाक मञ्चपर सरिताक नामवला पट्टी उलटा राखल छल। लाल कपड़ाक ऊपर ओकर सेतो कात उघरल छल, जाहिसँ दूरसँ देखनिहार बुझि नहि सकैत छल जे पट्टीमे ककर नाम अछि। भोरमे नगरक कर्मचारी बाँसक खम्भा ठाढ़ करैत छलाह, मुदा बाँसक एकटा खूँटी ढील छल। कपड़ा तानैत एक युवकक हथेलीक चमड़ी छिलि गेल। ओ कपड़ा छोड़ि पानि माँगलक। सरिता अपन लोटाक ढकनी खोलि ओकरा पानि देलनि। युवक धन्यवाद कहि फेर खम्भा दिस गेल। सरिता पट्टी पलटि देखबाक आग्रह नहि कएलनि। अपन नाम ओ अपन मुँहसँ सुनए चाहैत छलीह, मञ्चक कपड़ासँ नहि।

नैरा हुनका लऽ कऽ सभा-स्थल पहुँचलीह। काल्हि घाटपर दू नक्शाक असंगति देखलाक बाद हुनकर कापीमे दू सम्पत्ति-फाइलक प्राप्ति-अंक सुरक्षित छल। आइ ओ कापी घरमे छोड़ि नहि आयल छलीह, मुदा माए साफ कहलनि, “घाटक सुनवाई घाटे पर रहए। हमरा जे बात कहबाक अछि, ओहि मेजपर कहब जतय हमर नाम पढ़ल जाएत।” नैरा स्वीकृति दैत रहलि। सरिता अपन संग मृत्यु-सूचनाक प्रति, जीवित उपस्थिति दर्ज कएबाक पुरान आवेदन आ मृत पतिक नामपर उठाओल गेल औषधिपर्चीक नकल रखने छलीह। सत्ताइस नामक मूल पन्ना घरमे बंद रहल। ओ पन्ना सभासँ बेसी नाजुक छल।

मञ्चक पाछाँ नील रंगक तम्बू छल। भीतर कर्मचारी लाभार्थीक क्रम तय करैत छलाह। एक मेजपर सहायता लेल आएल परिवारक पर्ची अलग, दोसरा पर असंगत प्रविष्टिक शिकायत अलग राखल छल। मुदा प्रवेशद्वारपर लागल तख्तीमे दुनू पंक्ति लेल एके तीर बनल छल। एक बूढ़ पुरुष अपन मृत पत्नी लेल देल जएवला सहायता-राशिक विषयमे जानकारी माँगि रहल छलाह। हुनकर हाथ काँपि रहल छल। सरिता हुनका देखैत बुझलीह जे आजुक सभा केवल धोखाक ठाम नहि; किछु लोकक लेल सचमुच जरूरी धनक बाट सेहो अछि। तँ अपन आक्रोशक बीच हुनका ओ पुरुषक धैर्य तोड़बाक इच्छा नहि भेलनि।

नैराकें सूची-डेस्कपर रमा कर्ण भेटलीह। रमा प्रतिलिपि बनएबाक काम देखैत छलीह। हुनकर मेजपर लाल स्याही, तार-बाँधल फाइल आ खाली प्राप्ति-पुस्तिका छल। ओ एक-

एक कागदक ऊपर लिखल तिथि मिलबैत छलीह। बगलमे ठाढ़ आदमी धीमा स्वरमे कहलनि, “सरिताक स्थिति बदलि देल जाए तँ मज्जपर झंझट नहि होएत। बादमे कागद पहुँचा देब।” रमा हाथ रोकि कहलनि, “कुन आदेशक आधारपर? अहाँ जँ कहैत छी, लिखि दिअ। हस्ताक्षरक बिना प्रविष्टि नहि फेरब।” आदमीक ललाटपर घाम छल। ओ कहलनि जे समय नहि अछि। रमा उत्तर देलनि, “तँ तिथि आ हस्ताक्षर आरो जरूरी अछि।”

रमा सरिताक आवेदन देखलनि आ फेर नैराक दिस तकलनि। “ई प्राप्ति-पुस्तिकामे जे अंक अछि, ओ दफ्तरक डाक-अंक अछि। एकरासँ सुधार भऽ गेल से नहि बुझू। आइक असंगतिक अलग लिखित बयान जमा भऽ सकैत अछि, मुदा पहिनुक पन्ना काटबाक अधिकार हमर नहि।” नैरा एतबे चाहैत छलीह जे कियो दोसरक मुँहक वचनसँ माएक पहचान चुपचाप बदलि नहि दे। ओ रमा लग आवेदनक नकल राखलीह। रमा एकरा अलग पंजीमे प्रवेश कऽ प्राप्तिक मुहर लगौलनि; आधा पर्ची सरिताक हाथमे देलनि। रमा अपन नाम समेत कार्बन-प्रति फाइलमे जोड़लनि।

ओहि डेस्कक दोसर कात सावित्री सरदार ठाढ़ छलीह। हुनकर कपड़ाक झोरामे दू गामक ठेगानावला कागद छल। पहिले गाममे बाढ़िक बाद हुनकर परिवार अस्थायी रूपसँ दोसर बस्तीमे गेल छल; राहतक नव सूचीमे ओ गाम बदलि गेल, मानू पुरान समयक सभ दावा सेहो बदलि गेल हो। “हम लोक ठाम बदललहुँ,” सावित्री कहलीह, “हमर खाइबाक दिन नहि बदलल।” कर्मचारी कहलक जे सूचीमे वर्तमान ठेगाना ठीक कएल जा सकैत अछि, मुदा पहिनुक मासक बँचल सहायता लेल दोसर परीक्षण होएत। सावित्री ओ बात लिखबौलनि। ओ एक सुधारक बदला सभ हानिक भरपाइ मानबाक तैयार नहि छलीह।

निरंजन किसान अपन पर्चीमे नामक पाछाँ लगल शब्द देखाकऽ परेशान छलाह। ओ कहैत छलाह जे ‘किसान’ हुनकर पारिवारिक आत्मपरिचयक अंग अछि; कार्यालयक पुरान खानामे ओकरा पेशाक नाम मानि दोसर विवरण काटि देल गेल छल। फलतः बैंकसँ जुड़ल खाता एक कार्यक लेल रुकल अछि। “हम खेती करैत छी से अलग बात, हमर नाममे किसान अछि से अलग,” ओ कहला। डेस्कपर बइसल नव कर्मचारी पहिने हँसए लागल, फेर निरंजन दूनू कागद पसारि देलनि। रमा ओकरा टोकीह, “नाम, पेशा आ खाताक पहचान अलग-अलग खानामे देखू। एकक बदला दोसर लिखब तँ फेर कतहु

गलती होएत।” निरंजनकेँ जाँच लेल प्राप्ति भेटल, तत्काल खाता खुलबाक आश्वासन नहि।

मज्ज दिस फूलक माला आ दानदाताक फलक अनाओल जा रहल छल। अरुण बरनवाल अपन दुकानसँ आयल कपड़ाक थैलामे बही लेने ठाढ़ छलाह। आयोजक हुनका एकटा पैघ माला आ माइकपर नाम-पाठक प्रस्ताव देने छल। अरुण पुछलनि जे प्रचारक फलकपर नाम छपबाक खर्च ककर खातामे जाएत। जवाबमे हुनका कहल गेल जे अपन इच्छासँ दान कऽ देल जाए। ओ बही खोलि देखौलनि जे दुकानक देय करक भुगतानक अन्तिम तिथि नजदीक अछि। “दानक नामसँ तालि भेटत,” ओ कहलनि, “मुदा जे देय अछि, ओ पहिने चुकाएब।” आयोजक असहज भेलाह। अरुण माला नहि लेलनि, बही समेटि देलनि। ई निर्णयसँ हुनकर छवि तुरन्त उज्जर होएत, ताहिमे हुनका विश्वास नहि छल।

सरिता हँसि पड़लीह। “आइ सभकेँ अपना नामक अलग-अलग व्यथा छै,” ओ नैरासँ कहलीह। नैरा पुछलनि, “अहाँक हँसी केकर बातपर?” सरिता कहलनि, “ओ आदमी दानक माला छोड़ि हिसाब लऽ गेल। घरमे चाउरक बोरा खाली रहल तँ माला सँ भात नहि रन्हाएत।” हँसी सुनि सावित्री सेहो कने हँसलीह। सभाक भीड़मे एहि क्षण कोनो घोषणा नहि छल। सावित्री सरितासँ पुछलनि जे ओ एकरे गामक छथि। सरिता कहलीह, “एखन जीवित रहने धरि एहिठामक छी। कागदपर दोसर बात छै।” सावित्रीक हँसी धीरे-धीरे रुकि गेल।

माइकक जाँच आरम्भ भेल। ऊँच आवाजमे पहिने तीन बेर ‘एक, दू, तीन’ बाजल, फेर कियो गीतक अपूर्ण पाँति गाबि बैसल। रुखसानाक रसोइसँ लेल चाय आयल। ओकर दाम देबाक बाबत आयोजक कहलक जे आजुक सार्वजनिक सेवा अछि। चाय अननिहार युवती पुछलक, “सार्वजनिक सेवा होइत तऽ दूध, चीनी आ ढोएबाक मेहनति के देत?” आयोजक खर्च-पर्ची मँगौलनि। सरिता अपन चायक कप उठौलनि तँ ओकर कात चिरल देखलनि। चाय नहि छलकल; ओ कप घुमा कऽ चिरल भाग पर अँगुरी राखि पीबए लगलीह। नैराकेँ बुझाएल जे माए आजुक आवाजक भार भीतर सँ सम्हारि लेने छथि।

सभा आरम्भ होएतहि पहिल किछु परिवारक नाम ठीकसँ पढ़ल गेल। एक स्त्री अपन बूढ़ पिताक उपचार लेल सहायता-प्राप्ति पर हस्ताक्षर कएलनि; एक श्रमिकक पत्नी सभामे अनुपस्थित छलीह, तँ ओकर राशिक विषयमे अगिला दिनक कार्यालय-समय कहल गेल। भीड़मे ओ सभक अपन-अपन चिन्ता छल। मंचक संचालक लाभ-वितरणक सफलता पर छोट भाषण देलनि। सरिता ओ सुनैत रहलीह। सहयोगक काजकँ ओ अपन प्रश्नक कारणसँ झूठ कहबाक इच्छुक नहि छलीह। मुदा सभाक अन्तिम भागमे सूची-पाठ करैत संचालकक स्वर अचानक बदलल।

“दिवंगता सरिता दासक परिवारसँ प्रतिनिधि मञ्चपर आबथि,” माइक बाजल। तकर बाद किछु क्षणक विराम छल, मानू भीड़मे सँ कोनो आश्रितक ठाढ़ होएबाक प्रतीक्षा अछि। माइकक लग राखल पट्टी ओलटा देल गेल। ओहिपर सरिताक नाम देवनागरीमे लिखल छल आ नीचाँ ‘मृतक परिवार सहायता’ अंकित छल। नैरा अपन माएक हाथ पकड़बाक लेल बढ़लीह; सरिता धीरेसँ हाथ छोरि देलनि। “हमहीं जेबाक अछि,” ओ कहलीह। हुनका अपन बेटीक रक्षा चाही छल, मुदा अपन जीवित देहक प्रमाण बनबाक भार बेटीक माथ पर राखबाक नहि।

सरिता मञ्च धरि पैदल गेलीह। सीढ़ीक एक भाग ढील छल। भोरमे पानी पिएने युवक एखन ओतहि ठाढ़ छल। ओ सरिताक पयर राखबाक ठाम देखौलक। सरिता एक-एक सीढ़ी चढ़लीह। संचालक पहिने हुनका आश्रित बुझलनि आ हाथमे राखल लिफाफा आगाँ बढ़ौलनि। सरिता लिफाफा नहि छुलनि। “जिनकर नाम अहाँ पढ़लहुँ, ओ हम छी,” ओ कहलीह। संचालक असमंजसमे कहलनि, “तँ अहाँ मृतक परिवारसँ—” सरिता रोकलनि, “हमर पति बहुत पहिने गुजरि गेलाह। मुदा अहाँ हमर नामक आगाँ ‘दिवंगता’ पढ़लहुँ। ई कागद हमरा मरणक कहैत अछि। हम अहाँ लग स्वयं आबि ठाढ़ छी।”

आगू बैसल किछु लोक उठि गेल। कियो कहलक जे माइक देल जाए; कियो कहलक जे पहिने अधिकारीसँ मिलाओल जाए। संचालकक हाथमे कागद काँपि रहल छल। ओ माइक हटाबए चाहलनि, मुदा सरिता हुनका देखैत कहलीह, “अहाँक नामसँ हम लड़ए नहि आयल छी। जँ पन्ना गलत अछि, तँ पन्ना देखाबू। ओकरा हमरा मुँहक बदला नहि पढ़ू।”

मंचक पाछू ठाढ़ कर्मचारी ओहि फाइलकें उलटए लगलाह जाहिमे सहायता-श्रेणी छापल छल। माइक आब सरिताक हाथमे आयल।

“हमरा ककरो दया नहि चाही,” सरिता कहलीह, “जिनका दया चाही, हुनकर हाथसँ सेहो अहाँ गलत पन्ना लऽ सकैत छी। हम एखन चूल्हा जरबैत छी। हमर घरक आदमी सत्रह वर्ष पहिने मरलाह; हुनकर नामपर काल्हियो दवाइक पर्ची निकलल। हमर नामपर मृत्यु-सूचना पहुँचल। हम पहिनेहि लिखि चुकल छी जे हम जीवित छी, मुदा उत्तर नहि आयल। आइ सार्वजनिक सभा कहल गेल, तँ आबि गेलहुँ। आइ जँ अहाँ हमरा सचमुच सुनि रहल छी, तँ हमर कागदक गलती सुधारबाक प्रक्रिया लिखि दिअ। सहायता लेबाक अधिकारक जाँच सेहो ठीकसँ करू। मृत घोषित कऽ तालि नहि दिअ।”

भीड़मे सँ एक युवक फोन माथसँ ऊपर उठौलक। संकेत ओहि कात ठाढ़ छल। ओ युवककें कहलक, “जँ अहाँ फोटो लैत छी, तँ सभक मुँह आ कागद एक संग नहि पसारू।” युवकक उत्तर छल जे सार्वजनिक सभा अछि। संकेत कहलनि, “सभा सार्वजनिक भऽ सकैत अछि; निजी पर्चीक सभ अक्षर नहि।” ओ अपन फोन बाहर निकालल, मुदा रिकार्ड आरम्भ नहि कएलक। माए आ बेटीक बातक बीच अपन अनुमतिको प्रश्न छल। सरिता मंचसँ ओकरा देखलनि। संकेत हाथक इशारासँ पुछलक; सरिता छोट इशारा कएलनि जे माइकक बात लिखि लिअ, चेहराक चलचित्र नहि। संकेत कापीक पन्ना खोललक।

संचालकक बगलमे बइसल अधिकारी माइक माँगलनि। “ई अभिलेखमे त्रुटि भऽ सकैत अछि,” ओ कहलनि, “आ शिकायत दर्ज होएत। तथापि हम एतहि पूरा सत्यापित नहि कऽ सकैत छी। जे सहायता सूचीमे छपल अछि, ओकर भुगतान बिना पहचान-जाँच नहि करब।” किछु लोक हूट कएलक। अधिकारी फेर कहलक जे नामक अन्तिम मिलान लेल विभागीय कागद आ परिवारक बयान अलग-अलग देखल जाएत। सरिता पुछलनि, “आ एतय कहल गेल मृतका शब्दक की?” अधिकारी अटक गेलाह। तकर बाद ओ संचालककें कहलनि जे घोषणा-फलक हटाओल जाए, मुदा फोटो खींचल जा चुकल होएत से सम्भव छल।

नैरा दर्शकक कातसँ उठलीह। ओ अधिकारीक लग माइक माँगबाक बदला रमा कर्णक डेस्क तक पहुँचलि। “अभी जे बोलल गेल, ओकर लिखित प्रति कोना भेटत?” रमा कहलनि जे सभाक कार्यवृत्त बनत, आ सरिता अपन वचनक हस्ताक्षरित सार जमा कऽ सकैत छथि। “हुनकर वचन ओहि रूपेँ दर्ज हो, जेहन ओ कहलीह; ककरो बनाओल ‘त्रुटि सुधारि देल गेल’ नहि,” नैरा कहलीह। रमा हल्का आवाजमे उत्तर देलनि, “जाहि खानामे निर्णय नहि भेल, ओतय निर्णय नहि लिखब।” ओ खाली पन्नाक माथपर आजुक तिथि आ ‘विवादित मृत्यु-स्थिति—स्वयं उपस्थित व्यक्तिक बयान’ लिखलनि। सरिताकेँ पढ़ि कऽ अनुमोदन करबाक जगह छोड़लनि।

सरिता मञ्चसँ उतरलीह तँ पहिल सीढ़ीपर रोकि गेलीह। हुनका पयर दुखि रहल छल। एक स्त्री अपन बच्चाकेँ गोदमे लेने हुनका बाट छोड़ि देलीह, आ पुछलनि, “हमर नामो सूचीमे गलत छै; कतेक दिन लागैत छै?” सरिता उत्तर नहि गढ़लनि। “हम एखनहुँ सुधार लेल घूमि रहल छी,” ओ कहलीह, “मुदा जँ अहाँक बात लिखित लीन्हि, तँ प्राप्तिक प्रति रखू।” ओ स्त्रीक बच्चा सरिताक साड़ी पकड़ि लेने छल। माए जल्दीसँ ओकर हाथ खोलबौलीह। सरिता मुस्कुरा कऽ बच्चाक अँगुरी पर अपन अँगुरी एक क्षण राखलीह। नहि ओ बच्चा हुनका दादी बुझलक, नहि ओ स्त्री ककरो प्रतीक। सभक अपन बाट छल।

सावित्री अपन गाम बदलल राहत-पर्ची फेर रमा लग लऽ गेलीह। मंचक घटना देखि हुनका डर भेल जे आजुक लिखल सुधार काल्हि मिटि नहि जाए। रमा प्राप्ति-पुस्तिकाक क्रम देखौलीह आ कहलीह जे अलग गामक पुरान बकाया स्वतः नयका सूचीमे जोड़ल नहि गेल। सावित्री कहलीह, “तँ ओहि लेल अलग दावा दर्ज करू। हम फेर आबि सकैत छी, मुदा प्रत्येक बेर घर बदलि हमरा दोसर लोक नहि बनाउ।” निरंजन सेहो अपन नाम-पेशा सम्बन्धी आवेदन पर अंक लेलनि। ओ सभ सरिताक संग फोटो खिंचए लेल नहि ठाढ़ भेलाह; अपना-अपना कागद जाँचि फेर अपन बाट पकड़लनि।

अरुण बरनवाल सभाक बाहरी टेबुलपर देय करक जमा-पर्ची देखबैत छलाह। परिचित आयोजक हुनका कहलनि, “आइ माला ले लेने रहितहुँ तँ सभक ध्यान अहाँपर रहित।” अरुण उत्तर देलनि, “एक दिनक ध्यानसँ खाता नहि भरैत।” ओ कार्यालय जेबाक पर्ची झोरामे रखलनि। थोड़ेक दूर चायक दामक पर्ची लेल तकरार चलि रहल छल; अरुण अपन

दुकानक खाता आ सार्वजनिक रसोइक खर्चकेँ जोड़बाक प्रस्ताव नहि केलनि। एतय प्रत्येक काजक अपन देय छल। सरिता तकरा देखैत चुपचाप ठाढ़ रहलीह। हुनका आज अपन नामक कागदक देय सभसँ पैघ बुझाईत छल, मुदा अनकर देय ओकरा कारणसँ छोट नहि भेल छल।

दुपहर धरि सरिताक बयानक दू प्रति तैयार भेल। पहिल प्रति कार्यालयक प्राप्ति-पुस्तिकामे राखल गेल, दोसर हुनकर हाथमे आयल। ओ पन्ना पढ़लीह। रमा लिखने छलीह जे आवेदिका स्वयं उपस्थित भेल छथि आ घोषित मृत्यु-स्थितिक विरोध दर्ज करौने छथि; पुरान प्रविष्टिक सत्यापन आ औषधि-वितरणक अलग जाँच माँगल गेल अछि। कतहु ई नहि लिखल छल जे सरिता आब आधिकारिक रूपसँ जीवित घोषित भऽ गेलीह। नैरा माएक दिस तकलनि। सरिता कहलनि, “जे नहि भेल, ओ लिखल रहितए तँ फेर ओही गलती।” तखन ओ पन्ना पर हस्ताक्षर कएलनि।

सभा समाप्त होएबाक समय मंचक कपड़ा फेर ढील भऽ गेल। भोरमे पानि पीने युवक दोसर खूँटी कसि रहल छल। ओ सरितासँ पुछलक, “आइ जे भेल, आब अहाँ घर जएब?” सरिता कहलनि, “आब घर जएब। भात चढ़एबाक समय भऽ गेल।” युवक हँसल, “अहाँक नाम तऽ सभ सुनि लेलक।” सरिता ओकरा देखलनि। “नाम सुनब एक बात भेल,” ओ कहलीह, “सुनि कऽ ठीक लिखब दोसर।” ओ मञ्चक बाहर पयर राखलीह तँ घाट दिससँ हलुक हवा आयल, जाहिमे कादो आ गरम कपड़ाक गन्ध संग-संग छल।

घरक बाटमे नैरा पुछलनि जे सार्वजनिक रूपसँ बोललाक बाद माएक मन कने हलुक भेलनि की नहि। सरिता कहलनि, “मनक बोझ तखन हलुक होएत जखन तोरा सभकेँ हमरा जिंदा साबित करबाक लेल रोज घुमए नहि पड़त। आइ जे कहलहुँ, ओ हमर बात छल। मुदा जे लोक हमर बात सुनल, हुनका सभक अपन काज अछि; ओ सभ कतेक निभाओत, देखब।” नैरा माएसँ माफी नहि माँगलनि—कारण आइ ओ हुनक बदला नहि बाजल छलीह। दूनू कने देरि चुप रहलि, जाहिमे झूठक सहानुभूति नहि, संग चलबाक सहजता छल।

साँझ सरिता रसोइक खिड़की खोलि भात धोबए लगलीह। माइकक ऊँच आवाज घर धरि नहि पहुँचैत छल, मुदा पानिमे चाउर घुमबैत हुनका अपन कहल एक वाक्य फेर मन

पड़ल। ओहि समय नैरा मेजपर दू पर्ची अलग राखलीह—एक मृत दर्ज अवस्थाक पुरान प्रति, दोसर आइक जीवित उपस्थितिक लिखित बयान। दूनू कागदमे सरिताक एक्के नाम छल, मुदा दूनूक कथन एक नहि। बाहर संकेत अपन कापीमे माइकपर कहल शब्दसभ मिलाबि रहल छल; सार्वजनिक करबाक बात ओ ककरो सँ बिना पुछने तय नहि करबाक छल।

पाछू मुहल्लामे रुहानीक आश्रयक स्त्रीसभ अगिला दिनक सभाक सूचना पढ़ि रहल छलीह। ओहि सभामे रुहानीकें ‘समुदायक प्रतिनिधि’ कहि मञ्चपर बइसबाक निमन्त्रण छल, मुदा मताधिकारक खानामे हुनकर नाम नहि लिखल छल। ई बात एखन रुहानीक हाथ धरि पहुँचल नहि छल। विदेहपुरक सभामे कुर्सी खूब छल, नामक पट्टी खूब छल, आ लिखित अधिकारक ठाम छोट-छोट खाली खाना। सरिताक घरमे एखन भातक पहिल उफान उठल। ओ आँच घटौलनि। आजु हुनकर नाम खूब बाजल छल; एखन ओकरा ठीक ठाम लिखबाक काज शेष छल।

अध्याय १४ • प्रतिनिधिक कुर्सी

अगिला भोर विदेहपुरक सामुदायिक भवनमे कुर्सी सभकेँ झाड़ि-पोछि सीधमे राखल जा रहल छल। सभसँ आगाँ पाँच कुर्सीपर नीला कपड़ा आ पाछाँक पाँतिमे साधारण बेंच छल। दरबान कहलक जे नीला कपड़ा अतिथिक लेल अछि। ओ कपड़ामे एकटा कुर्सीक पाछाँ कागद टाँकल छल—‘रुहानी, समुदाय प्रतिनिधि’। नामक नीचे कोनो संस्था अथवा पद नहि। रुहानी भवनक फाटकपर पहुँचलि तँ सभसँ पहिने ओहि कागदपर नजरि पड़लनि। काल्हि हुनका निमन्त्रण आयल छल; आज ओकर अर्थ बुझबाक छल।

रुहानी पाछू मुहल्लाक अपन आश्रयसँ पैदल आयल छलीह। संग चम्पा छलीह, मुदा चम्पा हुनकर सामान उठा कऽ नहि, अपन उपचार-सम्बन्धी भाड़ा आ कामसँ छुट्टीक हिसाब लऽ कऽ आयल छलीह। बाटमे रुहानी पुछने छलीह, “तोर लगैत छह जे हमरा बजा कऽ बात सुनत?” चम्पा उत्तर देने छलीह, “बजेनाइ तँ काज भेल। सुननाइ लेल कान चाही, आ निर्णय लेल कुर्सीक नहि, अधिकारक जरूरत।” रुहानी हँसि पड़लीह। ओ उत्तर मनमे राखि लेलनि, किएक तँ ओ जानैत छलीह जे आश्रय देनिहारक अपन अधिकारो कखनो आश्रितक आवाजपर भारी पड़ैत अछि।

द्वारपर प्रवेश-पंजी छल। ओकर एक खानामे ‘पुरुष’, दोसरमे ‘महिला’ आ तेसरमे ‘विशेष अतिथि’ छपल छल। रुहानी कलम उठौलनि। कर्मचारी कहलक, “अहाँ तऽ अतिथि छी, तेसर खानामे हस्ताक्षर करू।” रुहानी पुछलनि, “मत देनिहार सदस्यक पंजी कतय अछि?” कर्मचारी भीतर बइसल सचिव दिस देखौलक। सचिवक ओतय अलग हरियर जिल्द छल। रुहानी ओतय गेलीह। हरियर जिल्दमे अठारह नाम छल, हुनकर नाम नहि। सचिव मुस्कुरा कऽ कहलक, “अहाँकेँ सम्मानक लेल आगाँ बइसाओल जाएत। मताधिकार केवल स्थायी सदस्यकेँ अछि।”

“स्थायी सदस्य केना भेल?” रुहानी पुछलनि। सचिव नियमक प्रतिलिपि निकालि देलक। समिति नगरक राहत, आश्रय, घाट-पहुँच आ जलनिकासक शिकायत पर सिफारिश करैत छल; ओकर निर्णय अपने आप सरकारी आदेश नहि बनैत छल, मुदा सिफारिशसँ अनुदान आ कामक प्राथमिकता बदलैत छल। नियममे सदस्यता लेल

मुहल्ला, पेशा आ संस्था सँ नाम प्रस्तावित होएबाक बात छल। ‘विशेष आमंत्रित प्रतिनिधि’ सुनबा लेल आयल व्यक्ति छल, मत देबाक लेल नहि। रुहानी पन्ना मोड़लनि नहि। ओ आखिरी पाँतिक छोट अक्षर पढ़ि लेलीह—नियममे संशोधन समिति अपने करि सकैत छल।

“तँ हमर बात सुनबा सँ जँ कोनो काज बदलत नहि, ई पट्टी किएक?” रुहानी अपन नाम लिखल कुर्सी देखौलीह। सचिव कहलक, “एहिसँ सभ देखत जे अहाँक समुदायकेँ आदर देल गेल।” रुहानी उत्तर देलीह, “आदर केकरा चाही से हम कहि सकैत छी। मुदा जे घाटक समय, आश्रयक अनुदान आ इलाजक बाट तय करब, ओहि मतमे हमर आवाज के नहि चाही?” सचिव कागद समेटैत कहलक जे एहि प्रश्नपर अध्यक्षसँ बात करबाक होएत। रुहानी आग्रह कएलनि जे प्रश्न सभाक आरम्भमे कार्यसूचीमे लिखल जाए।

सभासँ पहिने आँगनमे चाय भेटैत छल। चम्पा दाम पुछि कप लेलनि। ओकरा भाड़ा एखन नहि भेटल छल, मुदा अपन चाय लेल दोसराक कृपा देखाएब ओकरा रुचैत नहि छल। रुहानी कप उठबैत देखलनि जे भवनक परछाहीं छोट पानिक गड़हीमे दू भागमे पड़ि रहल अछि। ओहि गड़हीक कोनो रहस्य नहि छल; रातिक बरखा आ टुटल फर्श ओकर सीधा कारण छल। चम्पा कहलनि, “एहन छोट गड़ही बुझि रहल लोक घाटक डगर पर कादोमे अटकल रोगीक बात कतेक बुझत?” रुहानी कहलीह, “सम्भव अछि बुझत। मुदा बुझबाक प्रमाण ओकर निर्णयमे देखब।”

नीरज पंडा चायवला मेजक दोसर दिस पुरान बही लेने ठाढ़ छलाह। ओ धार्मिक अनुष्ठान लेल बोलाओल गेल लोकक भुगतानक पर्ची बनबैत छलाह। कार्यक्रमक आयोजक हुनक बही देखिकऽ कहलक जे दिवंगत परिवारसभक सहायता-राशिक संग अनुष्ठानक खर्च जोड़ि देल जाए। नीरज कागदक एक खाना रेखा सँ काटि देलनि। “जकरा श्रद्धा अनुसार अनुष्ठान करएबाक अछि, ओ अपन इच्छा आ सामर्थ्य सँ कराओत,” ओ कहलनि, “सहायता सबहक अधिकारक जाँच पर अछि; ओकरा हमर दक्षिणा सँ नहि जोड़ब।” आयोजक कहलक जे सभ सुविधा एक्के दिनमे भऽ जाए तऽ लोक प्रसन्न रहत। नीरज उत्तर देलनि, “एक दिनमे काज होएब आ एकटा खातामे सभक दाम जोड़ब एक बात नहि।”

रुहानी नीरजसँ पुछलनि जे काल्हि सरिताक सभामे मृतक परिवारक नाम गलतीसँ बाजल गेल, तकर बाद अनुष्ठानक प्रस्ताव सेहो पठाओल गेल छल की। नीरज कहला जे हुनका ककरो निजी नामक सूची नहि भेटल; भुगतानक मिला-जुला प्रारूप अवश्य देल गेल छल। रुहानी कहलनि, “जकर जीवित होएबाक विरोध सुन्नल गेल, हुनक लेल श्रद्धाञ्जलिक दाम जोड़ब दोसर अपमान होएत।” नीरज अपन बहीमे सहायता आ अनुष्ठानक दू अलग शीर्षक स्पष्ट लिखि देलनि। ई छोट काज छल, मुदा आगाँ चलि कोनो परिवारकेँ आपत्ति देबाक ठाम मिलल।

बसन्ती भवनक पाछूक मेजपर पानक डलिया रखने छलीह। पातक ऊपर भीजल कपड़ा छल, ओ साफ अँगुरीसँ खराब पात चुनि अलग करैत छलीह। विक्रेता-पंजीमे हुनकर नामक आगाँ एक सरकारी पर्याय लिखल छल जे हुनकर परिवार अपन परिचय लेल नहि कहैत छल। बसन्ती डलियाक बराबरीमे रखल पर्ची खोलि पंजीवालाकेँ देखौलीह। “हम अपनेकेँ पान सवासी पनर कहैत छी,” ओ कहलीह, “तँ कागदमे हमर कहल नाम लिखू। सरकारी खानाक शब्द चाही तँ ओकरा दोसर खानामे रखू।” पंजीवाला कहलक जे पुरान सूचीसँ नकल भेल अछि। बसन्ती उत्तर देलीह, “पुरान नकलसँ पानक पात ताजा नहि रहैत; नामो सभ दिन ओहने नहि रहैत।”

चम्पा हुनका सँ पान लेलनि, मुदा बसन्ती अपन काम छोड़ि सभामे नहि गेलीह। ओ चाहैत छलीह जे आज बिकबाक बचेबाक पात नष्ट नहि होअए। रुहानी पुछलनि जे सभाक बाद पंजीक सुधार माँगब संभव अछि की। बसन्ती कहलीह, “सभाक बाद तँ मेज समेटि चलि जाएताह। एखन लिखू।” सचिव लग छोट पर्ची पहुँचल। ओहि पर्चीपर बसन्तीक कहल परिचय आ दस्तावेजक पुरान शब्द दुनू अलग दर्ज भेल। रुहानीकेँ बुझाएल जे नामक सही उच्चारणक वास्तेओ लोककेँ अपना कमाइक बीच सँ समय निकालए पड़ैत अछि।

सभा शुरू होएतहि अध्यक्ष नाम-पाठ कएलनि। रुहानीकेँ ‘विशिष्ट प्रतिनिधि’ कहि माला दएबाक लेल एक युवक आगाँ आयल। ओ युवक सकुचा रहल छल; ओकरा जे काज देल गेल छल, से पूरा करबाक छल। रुहानी माला हाथमे लेलनि, युवककेँ धन्यवाद कहलनि, आ आगाँक नीली कुर्सीपर नहि बैसलीह। माला टेबुलक कोनामे राखि ओ दर्शक-

दलसँ लग बेंचपर बैसि गेलीह। अध्यक्ष पुछलनि, “कुसीमे कोनो असुविधा अछि?” रुहानी उत्तर देलीह, “कुसी नीक अछि। मुदा जे ठाम हमर मत नहि, ओतय हमरा नामक पट्टी देखाएब उचित नहि लगैत अछि।”

सभाक पहिल प्रस्ताव राहत आश्रयमे पहुँचबाक प्राथमिकता तय करबाक छल। एक सदस्य कहला जे उपलब्ध रकम पहिने पंजीकृत स्थायी निवासीलग जाए। दोसर सदस्य अस्थायी आश्रयमे रहनिहारक इलाज आ बाढ़िक जोखिमक उल्लेख कएलनि। सचिव क्रमसँ दू विकल्प पढ़लनि। रुहानी हाथ उठौलनि। अध्यक्ष हुनका ‘आमंत्रित वक्ता’ मानि बोलबाक मौका देलनि, मुदा मतगणनामे हाथ गनल नहि जाएत से पहिनेसँ कहि देलनि। रुहानी कहलनि, “जिनकर नाम पर एहि विकल्पक असर पड़त, हुनका सभमे सँ कियो स्थायी सदस्य किएक नहि?”

एक सदस्य कहलनि, “अहाँक अनुभव तँ हम सभ सुनि रहल छी। नियम बदलब तँ सभ समूह अपन सदस्य माँगत।” रुहानी पुछलनि, “एखन जे अठारह लोक छथि, ओ सभकेँ के चुनलक? ककरा सभक नाम पर हुनका अधिकार भेटल?” सचिव नियमक प्रस्ताव-पत्र देखौलनि; अनेक सदस्यक नाम संस्था पठौने छल, किछु सदस्य अपन मुहल्लाक बैसार सँ। रुहानी कहलनि, “हम तकर विरोध नहि करैत छी। हम चाहैत छी जे जे लोकक रहबाक, चलबाक आ इलाजक बाट तय होइत अछि, हुनका सभ केँ सदस्य चुनबाक प्रक्रिया सेहो खुला रहए।”

शबनम मलिक ओहि समय दुआरक लग बड़सि स्वयंसेवी खर्च-पर्ची मिलबैत छलीह। कियो हुनकर नाम-पट्टी देखि ‘मलिक साहेबक प्रतिनिधि’ कहि सरकारी फाइल हुनका आगाँ धरि देलक। शबनम कागद नहि खोललनि। “मलिक हमर पारिवारिक नाम अछि,” ओ कहलीह, “ई कार्यालयक मुहर नहि। जे कागद अहाँ देबैत छी, से अधिकृत डेस्कपर दिअ।” पर्ची देनिहार युवक क्षण भरि लजा गेल। शबनम ओकरा दुत्कारलनि नहि; अधिकृत लेखाकारक मेज देखौलीह। ओ अपन स्वयंसेवी खर्चक रसीदपर सेहो ‘जाँच बाकी’ लिखने रखलनि। प्रतिष्ठित सुनाइत उपाधि सँ भरोसा कतेक जल्दी उठैत अछि, से रुहानी देखलीह।

अध्यक्ष चर्चा रोकि प्रस्तावपर वोट लेबाक आग्रह कएलनि। रुहानी फेर हाथ उठौलनि, एहि बेर प्रश्न लेल। “जँ सभ हमर बात सुनैत अछि मुदा हमर मत गनल नहि जाएत,” ओ कहलीह, “तँ कार्यवृत्तमे ई स्पष्ट लिखू। आ राहत आश्रयक सूची ककरो अनुमति बिना सार्वजनिक कएल जाए, एहि पर हम आपत्ति दर्ज करबैत छी।” चम्पा बेंचसँ उठि कहलीह जे हुनक इलाजक विवरण सामूहिक सूचीपर नहि चढ़ाओल जाए। ओ अपन नामसँ बोलि रहल छलीह; रुहानीक प्रतिनिधित्व ओकर अनुमति बनि नहि सकैत छल।

सभागारक खिड़की लग बसन्तीक डलियासँ पानक पातक हलुक सुगन्ध आबि रहल छल। पंजीवाला फेर हुनका बजौलक आ पूछलक जे सरकारी सूचीमे लिखल नाम काटल जाए की। बसन्ती कहलनि, “काटब तँ काल्हि कहब जे पुरान कागद नहि भेटल। हमरा अपन कहल परिचयक संग पहिनुक प्रविष्टिक मिलान चाही।” ओ एना कहैत पछिला मासक हाट शुल्कक रसीद देखौलीह। रसीदमे एक नाम, नव विक्रेता-पंजीमे दोसर, मुदा डलिया आ बेचबाक मेहनति ओकर एक्के छल। कर्मचारी दू नामक बीच सम्बन्धक टिप्पणी लिखलक; अन्तिम सुधारक अधिकार ओकरा लग नहि छल। बसन्ती फेर अपन पात दिस घुरलीह। रुहानी देखलीह जे लोक अपन नाम लेल जतेक सावधानी माँगैत अछि, ओतेक सावधानी बिना ओकरा प्रतिनिधि कहबो अनुचित अछि।

सचिव पहिने एक पाँति लिखलनि—‘प्रतिनिधि रुहानी द्वारा सुझाव’। रुहानी ओ पढ़ि कहलनि, “हमरा सुझाव मात्र नहि छल। हम सदस्यता आ मताधिकार पर लिखित प्रस्ताव देलहुँ, आ आश्रितक निजी विवरण सार्वजनिक करबाक विरुद्ध आपत्ति। दुनू अलग लिखू।” सचिव नयका कागद लेलनि। अध्यक्ष असहज भेलाह; हुनका डर छल जे सभ दिन ई तरह पन्ना बढ़त तँ बैठक समाप्त नहि होएत। रुहानी कहलनि, “जे बातक निर्णय अहाँ सभ एक बेरमे लैत छी, ओकर परिणामक दिन बहुत लम्बा होइत अछि। दू पाँति बेसी लिखला सँ दिन नहि बिगड़त।”

राहत-वितरणक मूल प्रस्तावपर सदस्यसभ मत देलनि। एक पक्ष बहुमत पाबि गेल, मुदा रकमक अन्तिम वितरण विभागीय जाँचक बादे सम्भव छल। रुहानी अपन मत नहि गनबाओलनि; ओ खुला बेंचपर बइसल रहलीह। अध्यक्ष कहला जे सभाक अन्तमे सदस्यता संशोधनक माँग लेब। रुहानी मांग कएलनि जे तकरा अगिला सभाक निश्चित

कार्यसूचीमे स्थान भेटए, आ जखन धरि अनुमति-पद्धति स्पष्ट नहि होए, आश्रयक रोगी-निजी सूची सभासँ बाहर नहि बाँटल जाए। एक सदस्य कहला जे बिनु सूची आवश्यक सेवा केना पहुँचत। चम्पा उत्तर देलीह, “इलाज लेल जे जानकारी चाही, ओ इलाज करनिहारकेँ देब। सभाक दर्शककेँ नहि।”

मध्याह्नमे छोट विश्राम भेल। रुखसाना अपन रसोइसँ मँगाओल पुआक थारीक दामक पर्ची भेजेन छलीह। चम्पा आधा पुआ खाइ कहलीह, “आइ माला तऽ अहाँक भेल, मिठास हमरा भेटल।” रुहानी मुस्कुरेलीह। हुनका चम्पाक मजाकमे अपन असहमति सुनाइत छल —कखनो रुहानी स्वयं आश्रयक ओरसँ दोसरक निर्णय लेबामे जल्दी करैत छलीह। ओ पुछलनि, “आश्रयक भीतर जँ हम सभ बइसी, तूँ बोलब?” चम्पा कहलीह, “बोलब। मुदा तखन जखन ओकरा बाद सुनबो होएत।” रुहानी थारी हुनका लग आगाँ बढ़ा देलनि।

विश्रामक समय नैरा सभाक बाहर पहुँचलि। काल्हक सरिताक लिखित बयानक प्रति पर कार्यालयक प्राप्ति-अंक साफ देखाइत छल; ओ आज ओकर स्थिति जानए आयल छलीह। भवनक फाटक लग शबनमसँ भेट भेल। शबनम कहलीह जे नाम मात्र देखिकऽ कागद हुनका हाथ धरि पहुँचल छल, ओ वापस करि देलनि। नैरा उत्तर देलीह, “हमरो माएक नाम एक पन्नामे मृत, दोसरा मे जीवित उपस्थित अछि। ककरा लिखबाक अधिकार छल आ के सँ मिलान भेल, तकर उत्तर नाम पढ़लासँ नहि भेटत।” शबनम हुनका अधिकृत डेस्क देखौलीह, कतय रसीद जमा कऽ स्थिति पुछल जा सकैत छल।

नैरा केँ कर्मचारी कहलक जे काल्हक बयान प्राप्त भेल अछि, मुदा जीवित स्थितिक सत्यापनक फैसला एखन नहि भेल। औषधिपर्चीक अलग शिकायत दोसर कार्यालयसँ मिलानीक प्रतीक्षामे अछि। नैरा पुछलनि जे कोनो समिति एतय एहन कागदक प्रतिलिपि देखल अछि की। कर्मचारी कहलक जे बैठकक खर्च आ राहतक समेकित संख्या समितिलग जाइत अछि; व्यक्तिक निजी कागद सभासँ बाहर रहबाक चाही। नैरा लिखि लेलनि जे ई कथन कर्मचारीक अछि, विभागीय नियमक प्रमाणपत्र नहि। रुहानीक बहस सुनिकऽ ओ बुझि रहल छलीह जे ककरा सूचना देखबाक अधिकार अछि, ई प्रश्न ककरा ओहिमे मत देबाक अधिकार अछि, ताहिसँ अलग रहितो जुड़ल अछि।

सभाक दोसर बैठक-भागमे सचिव संशोधन-संबन्धी माँग पढ़लनि। रुहानी औपचारिक प्रस्ताव सौंपलनि—प्रभावित आश्रय, चलन्त श्रमिक आ घाटक गैरस्थायी उपयोगकर्ताक परामर्शसँ सदस्य चुनबाक पद्धति तय हो; सभ समूहक लोककेँ एके जाति वा एके पेशा बुझि नबॉटल जाए; उपस्थितिक खर्च आ दैनन्दिन श्रमक क्षतिपूर्तिक नियम बनए। हुनकर प्रस्ताव समितिक प्रत्येक पदपर तुरन्त अपन नाम लिखबाक नहि छल। अध्यक्ष ई स्पष्ट कएलनि जे नियम-संशोधनक अनुमति एखन वोटमे प्रस्तावित भऽ सकैत अछि, नियम स्वयं आइ नहि बदली।

एक सदस्य कहला, “मताधिकार देब तँ जिम्मेदारी सेहो लेबए पड़त।” रुहानी उत्तर देलीह, “जिम्मेदारीसँ भागबाक लेल नहि आयल छी। जकरा नुकसान भऽ रहल अछि, ओ पहिनेसँ जिम्मेदारी उठा रहल अछि। मुदा ओकरा हिसाब पूछबाक अधिकार नहि अछि।” नीरज पंडा पाछू सँ कहलनि जे अनुष्ठान आ अनुदानक खर्च अलग करबाक निर्णय लेल सेहो कियो अन्तिम स्वीकृति देत; नहिँ तँ गलत बिलमे सभक नाम जोड़ि देल जाएत। बसन्ती अपन डलिया हाथमे लेने दुआर तक आयलीह; हुनकर नाम-सुधारक पर्ची एखन घुरि नहि आयल छल। रुहानी हुनका दिस इशारा कएलनि—“जकर नाम गलत लिखि देब, ओकर प्रतिनिधि चुनबाक पंजीओ गलत भऽ सकैत अछि।”

एहि बेर सचिव अपन लिखल मसौदा सभक आगाँ पढ़लनि। रुहानी एक शब्दपर रोकलीह। लिखल छल—‘सभी समुदायों का समुचित प्रतिनिधित्व’। रुहानी कहलीह, “ई निष्कर्ष एखन कोना लिखब? एहि पर तँ एखने बहस चलि रहल अछि।” सचिव पन्ना पर ‘समुचित’ काटि ‘प्रतिनिधित्व सम्बन्धी आपत्ति प्राप्त’ लिखलक। अध्यक्ष हुनका दिस ताकलनि, मानू एकटा शब्द लेल एतेक देरि किएक। रुहानी कहलीह, “एहि एक शब्दसँ अहाँ कहि देब जे काज पहिनेसँ पूरा अछि।” शबनम, जे एखनधरि खर्चक पर्ची समेटैत छलीह, बजलीह, “जाँचल रसीद आ बिना जाँचल रसीदक अन्तर जकाँ ईहो अन्तर अछि।” ओ ककरो पक्षक मत नहि बनि गेलीह; अपन लेखा सँ उदाहरण मात्र देलीह।

अध्यक्ष अन्ततः सदस्यताक नियम समीक्षा लेल अगिला सार्वजनिक बैठकक कार्यसूचीमे प्रस्ताव रखबाक मतगणना करौलनि। एहि पर स्थायी सदस्यसभ सहमत भेलाह जे प्रस्ताव पढ़ल आ विचारल जाए; मुदा रुहानीकेँ आजुक बैठकक मताधिकार नहि

भेटल। सचिव कार्यवृत्तमे ई अन्तर साफ दर्ज कएलनि। आश्रयक निजी रोगी-सूची खुला वितरणसँ अलग राखबाक अन्तरिम प्रक्रिया लेखाकार आ सम्बन्धित सेवाकर्मी लग जाँचब लेल पठाओल गेल; तकरा अन्तिम नियम कहल नहि गेल। रुहानी पन्ना पढ़ि अपन आपत्ति, प्रस्ताव आ सभाक उत्तरक प्रति माँगलनि। सचिव प्राप्ति-अंक दऽ प्रति देबाक समय लिखि देलक।

साँझक ओर रुहानी भवनसँ निकललीह। नीला कपड़ा एखनहुँ कुर्सीपर छल, माला ओतहि रखल छल। सफाईक कर्मचारी पुछलक, “माला लऽ जाइब?” रुहानी क्षण भरि रुकलीह। “नहि,” ओ कहलीह, “आजुक खर्चक खाता जे बनाओत, ओकरा देब। फूलक दाम सेहो लिखए।” कर्मचारी हँसल—“नाम तऽ अहाँक छल।” रुहानी उत्तर देलीह, “कुर्सी पर नाम छल, निर्णय पर नहि। अगिला बेर दुनू परखब।” चम्पा हुनका संग घर दिस चलि पड़लीह। दुनूकें ई विजय पूर्ण नहि बुझाइत छल, मुदा एहि दिनक लिखल असहमति अगिला दिन मेटि देब एतेक सरल नहि रहल।

बाटमे नैरा रुहानीकें भेटलीह। ओ माएक बयानक प्रति देखौलीह, मुदा भीतर लिखल निजी सूचना बिनु कारण नहि पसारलीह। रुहानी अपन कार्यवृत्तक प्राप्ति-रसीद देखौलीह। दुनू पन्नाने अलग-अलग मनुष्यक स्वर छल। नैरा कहलनि, “माइकपर कहल बात लिखल गेल, मुदा माएक मृत्यु-स्थिति एखन बदलबाक बाकी अछि।” रुहानी कहलीह, “हमर बातो सुनल गेल, मुदा मत एखन नहि। शब्द आ अधिकारक बीच जे दूरी छै, ओकर माप रखबाक अछि।”

घरक कात पहुँचि ते चम्पा अपन घड़ी देखलीह। काल्हि कामपर जेबाक छल, उपचारक भाड़ा सेहो निकालबाक छल। ओ रुहानीसँ कहलीह, “अगिला बैठकमे जँ हम नहि आबि सकी, तँ हमर नामसँ हामी नहि भरि देब।” रुहानी कहलीह, “तोहर स्वीकृति बिनु नहि।” ओहि छोट वचनमे हुनका अपन नेतृत्वक परीक्षा बुझाएल। सभाक भीतर जे प्रश्न उठल छल, ओ आश्रयक घरक भीतर सेहो जिवैत रहबाक छल—के ककरा प्रतिनिधि कहि सकैत अछि, आ ककरा ककरो जीवनकें दाँवपर रखबाक अधिकार अछि।

अध्याय १५ • द्रौपदीक प्रश्न

हस्तिनापुरक सभागृहमे ओहि दिन पासाक आवाज बहुत छोट छल। चमकैत फर्श, उच्च आसन, सुवासित धूप आ लोकसभक भारी साँसक बीच चारिटा गोटीक टकराहट कखनो-कखनो ककरो कंठसँ निकलल अपूर्ण शब्द जकाँ सुनाइत छल। खेल पहिनेसँ बहुत दूर बढ़ि चुकल छल। जे सभ पुरुष आरम्भमे एकरा राजसभाक मनोरञ्जन कहलनि, हुनकर आँखि आब दाँवक वस्तुसँ बेसी एक दोसराक चेहरा पढ़ि रहल छल।

युधिष्ठिरक हाथ घुटनाक लग स्थिर पड़ल छल। धन, पशु, रथ, राज्य आ अपन भायसभकेँ हारि चुकलाक बाद हुनकर भीतर निर्णयक जे खाली जगह बनल, ओहिमे शकुनिक स्वर बहुत सहजसँ प्रवेश कएलक। शकुनि फेर दाँवक बात उठौलक। सभामे उपस्थित लोक बुझि रहल छल जे ई साधारण खेल नहि रहल। तथापि कियो उठि कऽ खेल रोकबाक अधिकार अपन हाथमे नहि लेलक। हर एक आदमी दोसरक मुख ताकैत रहल, मानू पहिल निषेधक उत्तरदायित्व सदिखन ककरो आनक हो।

विदुरक ओठ कड़ा भऽ गेलनि। हुनका लेल प्रश्न केवल जेतेक वस्तु हारल गेल, ओतेक नहि छल; प्रश्न ई छल जे जकर अपन स्वतन्त्रता संकटमे पड़ि गेल, ओ दोसराक स्वतन्त्रतापर कोन अधिकारसँ निर्णय देत। ओ सभा दिस देखलनि। किछु विद्वानक मुखपर चिन्ता छल, मुदा किछुक आँखि ओहि शब्दक प्रतीक्षामे छल जकरा कहि देबासँ विवाद नियमक भीतर कैद भऽ जाए।

द्रौपदी एखन सभागृहमे उपस्थित नहि छलीह। हुनकर नाम ओहि स्थानपर लेल गेल जतय स्त्रीक अनुपस्थितिकेँ ओकर सहमति बुझि लेबाक पुरान सुविधा उपलब्ध छल। दाँव घोषित भेल। पासा फेकल गेल। जुआ खेलनिहार पुरुषसभक बीच एक निर्णय सुनाओल गेल, मुदा जकर जीवनपर ओ निर्णय लागू करबाक छल, ओकरा कियो पुछने नहि छल। सभाक ठाढ़ दीपकक लौ काँपल, आ कियो ई नहि जानलक जे ओ काँप हवा सँ छल अथवा भवनक भीतरक बेचैनी सँ।

एक दूत द्रौपदी लग पठाओल गेल। ओ संदेश लऽ कऽ पहुँचला तँ द्रौपदी पहिने प्रश्न कएलनि। ओ सभामे बजाओल जेबाक कारण सुनि केवल आज्ञा नहि मानलनि। हुनकर

पुछारि स्पष्ट छल—राजा पहिने स्वयंकेँ हारलाह कि हुनका दाँवपर लगौलनि? जँ स्वयंकेँ पहिने हारि चुकलाह, तँ हुनका दोसराक जीवनपर दाँव रखबाक अधिकार कतय सँ भेटल? दूत उत्तर नहि दऽ सकल। ओकरा कहल गेल छल आदेश पहुँचाउ; मुदा संदेश लऽ गेल व्यक्तिकेँ प्रश्नक उत्तर कियो सिखौने नहि छल।

दूत घुरि कऽ आयल आ सभाक आगाँ प्रश्न राखलक। तखन किछु पुरुष पहिल बेर सुनलनि जे दाँव कहल गेल स्त्री अपन जीवनक विषयमे स्वयं पुछि रहल छथि। दुर्योधनक चेहरापर अधैर्य छल। हुनका लेल सभाक उत्तरदेयता सँ बेसी सभाक आदेश तुरन्त पूरा होएब आवश्यक छल। विदुरक भीतर पहिनेसँ उठल आपत्ति एखन शब्द पाबि रहल छल। भीष्म दीर्घ कालक अनुशासन आ राजधर्मक अनेक टकराइत सीमाक बीच चुप रहलाह। हुनकर मौनसँ प्रश्न कम नहि भेल; ओ आरो भारी भऽ गेल।

विदेहपुरमे ओहि साँझ नैरा सरिताक मेजपर दू कागद अलग रखलीह। पहिल कागद जीवित उपस्थितिक बयानक प्राप्ति-रसीद छल। दोसरमे रुहानीक समितिक नियम-संशोधनक प्रस्ताव दर्ज छल। दूनू कागद पर सरकारी छाप छल, मुदा दुनूक अर्थ अलग। एकटा मानैत छल जे बात सुनल गेल; दोसर माँगैत छल जे आगाँ बात मानबाक अधिकार केकरा भेटत। नैरा मेजक कोनापर राखल छोट माटिक दीपक सरकौलीह, जाहिसँ कागदपर तेलक छिट्टा नहि पड़ए।

सरिता चाउर चुनैत छलीह। ओ पुछलनि, “आइ फेर सभा?” नैरा कहलीह, “सभाक बादक सभासँ बेसी काज रहल। माँ, अहाँक बयानक प्रति हमर लग अछि, मुदा जकरा फाइल बदलबाक अधिकार छै, ओकर निर्णय एखन नहि।” सरिता एकटा छोट कंकरि निकालि अलग राखलनि। “तँ हमरा एखनहुँ कागदमे मरले बुझताह?” हुनकर स्वरमे थकान छल, हास्य नहि। नैरा उत्तर देलीह, “जहाँ गलत लिखल छै, ओतय हँ। हम झूठा सान्त्वना नहि देब।”

एहि बीच संकेत दरवज्जा लग आबि कहलक जे कार्यालयक दुआरपर दू महिला पुछैत ठाढ़ छथि। एकक हाथमे पुरान कागदक झोरा छल, दोसरक बगलक नीचे अस्पतालक कपड़ाक छोट थैल। पहिल अपन नाम अनिता चौपाल बतौलनि। हुनका स्थानीय पंजीमे एहन सामाजिक श्रेणीसँ जोड़ि देल गेल छल, जकरा ओ अपन परिचय नहि मानैत छलीह।

तकर कारण हुनकर कमाइ-संबन्धी आवेदन गलत खिड़कीपर पठा देल गेल आ परिवारक विषयमे अनचाहल प्रश्न उठए लागल।

अनिता झोरा मेजपर नहि रखलीह। पहिने पुछलनि, “ई कोठरीमे जे कागद कहब, ओकर बात बाहर जाएत?” नैरा कहलीह, “अहाँ जे चाहब, ओतबे हम नोट करब; मुदा जँ ककरो कार्यालयमे आवेदन देबाक रहत, तँ कोन सूचना आवश्यक छै से हम पहिनहि बुझा देब।” अनिता पुछलनि, “हमर नामक संग गलत जाति लिखल छै। ई सुधारबाक लेल हमरा अपन बापक, दादाक, सासुरक सभ कथा सुनाएब आवश्यक छै की?” नैरा एक क्षण चुप रहलीह।

दोसर महिला सलमा शेख अस्पतालक अस्थायी सेवा-डेस्कसँ आयल छलीह। ओ रोगीक परिवारसभकेँ प्रवेशक समय फार्म भरबामे सहायता करैत छलीह। आइ एक वृद्धा साँसक तकलीफ लऽ कऽ पहुँचलीह, मुदा पंजीमे हुनकर पहिचानक अंक मेल नहि खाइत छल। उपचार-कक्षक कर्मचारी पहिने फार्म ठीक करबाक आग्रह कएने छल; सलमा कहलीह जे साँस रोकि कऽ कियो संख्या मिलानक प्रतीक्षा नहि कऽ सकैत अछि। हुनका रोगीक अधिकार बुझएबाक छल, किन्तु अपन डेस्कक रोजीओ बचएबाक छल।

सरिता चाउरक थारी उठा कऽ भीतर रखि अयलीह। “पहिने पानि पिअ,” ओ दुनूकेँ कहलीह। सलमा गिलास हाथमे लऽ कऽ बजलीह, “रोगीकेँ बादमे भीतर लेल गेल। चिकित्सक देखलनि। मुदा जे देरि भेल, तकर लेखा क्यो नहि राखलक। हम लिखित प्रश्न देब, तँ कहताह जे हमर काज फार्मक अछि, व्यवस्था बदलबाक नहि।” अनिता सलमा दिस ताकलीह। “हमरा तँ फार्म गलत बना कऽ कहल गेल जे अपन नामक अर्थ बुझाउ। नाम हम देलियनि, अर्थ ओ सभ अपने लिखि देलक।”

नैरा दुनूक शिकायत एक कागदमे नहि मिला देलीह। अनिताक मामला गलत सामाजिक वर्गीकरण आ निजताक छल; सलमाक मामला उपचारक पहिने पहिचानक शर्तक। दुनूकेँ साझा करैत छल एक बात—जकर जीवनक विषयमे फैसला होइत अछि, तकर आवाज निर्णायक घड़ीमे अनुपस्थित रहैत अछि। मुदा एहि समानतासँ हुनकर काजक अन्तर समाप्त नहि होइत छल। नैरा दू अलग सादा पन्ना निकाललीह।

अनिता अपन झोरा सँ एकटा रसीद निकाललीह। आवेदन स्वीकार भेल रहए, मुदा पछिला कार्यालयक टिप्पणीमे लिखल छल जे सामाजिक वर्गीकरणक सत्यापन बिना आगाँ नहि बढ़त। कर्मचारी हुनका कहलने छल जे सूचीमे जे लिखल अछि, वही सही मानू। “जँ मानि ली,” अनिता कहलीह, “तँ अगिला बेर हमर बच्चाक कागदमे सेहो ई बात चलि जायत। जँ नहि मानी, तँ कहताह हम सहायता नहि चाहैत छी।” नैरा कागदक केवल ओ भाग पढ़लीह जकर उपयोग अनिता स्वीकार कएलनि।

संकेत पाछाँ सँ कहलक, “हम तस्वीर खींचि दिअ?” अनिता तुरन्त झोरा समेटलीह। संकेत अपन फोन नीचाँ कऽ लेलक। “नहि, अहाँक मर्जी बिना नहि,” ओ कहलक। “हम पुरान कागदक तारीख पढ़ि देब, जँ चाही। तस्वीरक कोनो आवश्यकता नहि।” अनिताक मुखक कड़ापन कनेक ढील भेल। सलमा हँसिकऽ कहलीह, “एहि घरमे कमसँ कम मोबाइल पुछि कऽ उठैत छै।” संकेत सेहो मुस्कुराएल, मुदा अपन फोन जेबमे राखि देलक।

प्राचीन सभामे दूत फेर घुरि गेल छल। द्रौपदी अपन प्रश्न फेर स्पष्ट कएलनि। हुनका लेल उत्तर टारब स्वयं एक निर्णय छल—बिना सुनवाई हुनकर जीवनक विषयमे फैसला लागू करबाक निर्णय। सभाक अनुशासन हुनका बोलबासँ रोकए चाहैत छल, मुदा ओ पूछबाक बाट छोड़ए लेल तैयार नहि छलीह। ओ सभाक उत्तर माँगलनि, केवल सभामे प्रवेश करबाक अनुमति नहि।

भीष्मक सामने कठिनाइ ई नहि छल जे हुनका स्त्रीक दुःख नहि बुझाईत छल। कठिनाइ ई छल जे अनेक मानल गेल नियम एक दोसरासँ भिड़ि रहल छल आ सत्ता एहि भिड़न्तक लाभ उठा रहल छल। पतिक अधिकारक पुरान व्यवहार, दासत्वक दावा, खेलक नियम, राजकुलक मान—एहि शब्दसभक बीच द्रौपदी व्यक्ति रूपमे उपस्थित रहबाक अधिकार माँगैत छलीह। विदुर जानैत छलाह जे जकर उत्तर सभाक सुविधा बिगाड़त, ओहिपर सभा तुरन्त सहमति नहि बनाओत।

द्रौपदीकेँ अन्ततः सभागृहक कठोर दृष्टिक सामने आनल गेल। हुनकर देह आ वाणीपर नियन्त्रण करबाक दुस्साहस आरम्भ भेल। ई अपमानक क्षण राजकुलक सामर्थ्यक प्रदर्शन जकाँ सजाओल जा रहल छल, मुदा द्रौपदी अपन प्रश्न नहि छोड़लनि। ओ ककरो

कृपाक पात्र बनि कऽ उत्तर नहि माँगैत छलीह। ओ जिरह करैत छलीह जे जेकरा दाँवक विषय कहल गेल, ओकर सहमति आ स्वतन्त्र अस्तित्वक हिसाब किएक नहि कएल गेल।

राजसभाक ऊपरक दीपकसभ नीचाँक चमकैत फर्शपर अनेक आकृति बनबैत छल। एक आकृति द्रौपदीक पयर लग आबि टूटि जाइत, दोसर दीर्घ होइत दूर धरि पसरैत। कियो तकरा शकुन नहि मानलक। ओ प्रकाश छल, परछाही छल, आ ओहि फर्शपर ठाढ़ एक मनुष्य छल जकर बात सुनबाक बदला सभाक बहुतो सदस्य प्रकाशक दिशा ताकैत रहल।

विदेहपुरक अस्पतालमे दोसर भोर सलमा ड्यूटीपर पहुँचलि। रातिक घटनाक रजिस्टरमे वृद्धाक प्रवेशक समय लिखल छल, मुदा उपचार शुरू होएबाक समय खाली छल। सलमा डेस्कक कर्मचारीसँ पुछलनि जे ई समय किएक नहि चढ़ल। ओ कहलक, “अहाँ अपन फार्म पूरा करु; उपचारक समय डॉक्टर लिखताह।” सलमा उत्तर देलीह, “तँ लिखबाक पाँति खाली रहबाक कारणो दर्ज करु। रोगीकेँ प्रतीक्षा कराओल गेल, ई बात गायब नहि होअए।”

कर्मचारी चिढ़ि गेल। “सभ रोगीक विवरण लऽ कऽ अहाँ बाहर चर्चा करब?” सलमा कहलीह, “हम रोगीक नाम नहि माँगि रहल छी। व्यवस्था कतेक देरि रोकैत अछि, से पुछि रहल छी।” अनिरुद्ध अस्पतालक भीतरसँ निकलि रहल छलाह। ओ ठाढ़ भेलाह आ दुनूक बात सुनलनि। चिकित्सालयक अपन कठिनाइ छल—गलत पहिचानपर औषधि पहुँचि जेबाक शिकायत एखन लटकल छल—मुदा एहन आशंकासँ तत्काल उपचार रोकब उचित नहि छल। अनिरुद्ध स्पष्ट निर्णय एखन नहि देलनि; लिखित घटनावृत्त मँगौलनि।

सलमा चाहैत छलीह जे हुनकर नाम बयानमे रहए। कर्मचारी कहलनि, “बेहतर अछि गुमनाम लिखू, झंझट नहि होयत।” ओ उत्तर देलीह, “नाम हमरा मर्जीसँ लिअ। गुमनाम करबाक आदेशो हमरा पर मत थोपु।” वृद्धाक परिवारसँ सार्वजनिक नाम लिखबाक अनुमति नहि भेटल छल; तँ सलमा व्यक्तिगत विवरण हटाकऽ देरि, प्रक्रिया आ उपलब्ध उपचारक क्रम लिखलीह। अनिरुद्ध हुनका आवेदनक प्राप्ति दएलनि। सलमाक माँग

उपचारक पहिने आवश्यक चिकित्सा-जाँच समाप्त करबाक नहि, पहचान-सत्यापन आ उपचारक क्रम अलग करबाक छल।

ओहि दिन अनिता कार्यालयक पिछिला दुआरपर पहुँचलि। बाहर दीवारपर नव जनकल्याणक सूचना रंगल गेल छल। भीतर खिड़कीपर नाम पुकारल जाइत छल, जेकरा उत्तर देबाक लेल लोक झुकि कऽ छोट छेद लग जाएत। अनिता अपन आवेदनक क्रमांक देखौलीह। कर्मचारी फेर परिवारक विस्तृत वंश-विवरण माँगलक। ओ कहलीह, “जतबे नियममे माँगल अछि, ओतबे देब। हमर परिवारक निजी जीवन सूची सुधारबाक मूल्य नहि बनत।”

कर्मचारी पंजीक एक पाँति पर आँगुर रखलक। “एतय तऽ ई लिखल छै।” अनिता उत्तर देलीह, “पंजी हमर नाम गलत लिखने छै, आ अहाँ पंजीकेँ हमर विरुद्ध गवाह बना रहल छी। जे लिखल अछि, तकर स्रोत देखाउ।” कर्मचारी कने देरि चुप रहल। ओ फाइल निकालि देखलक जे प्रारम्भिक प्रविष्टिक स्रोत-पत्रक नकल संलग्न नहि अछि। फेर ओ कहलक जे बिना वरिष्ठ अधिकारीक निर्देश फेरबदल नहि होएत। अनिता वाद-विवादक बदला एहि अभावक लिखित उल्लेख माँगलीह।

नैरा कार्यालयक बाहर छाहरिमे भेटलीह। अनिता हुनका बतौलीह जे मूल स्रोत-पत्रक उपलब्ध नहि देखाओल गेल। नैरा सलाह नहि थोपूलीह; पुछलनि, “अहाँ चाहैत छी जे एहि अवस्थाकेँ सार्वजनिक सुनवाईमे उठाबी, कि पहिने सम्बन्धित अधिकारीक लग लिखित प्रश्न राखी?” अनिता कने सोचलीह। “पहिने लिखित प्रश्न। हमर नाम भीड़मे पुकारबाक अधिकार ककरो नहि। जँ बादमे हम स्वयं कहब, तखन अलग बात।” नैरा आवेदनमे एक पाँति जोड़लीह—निजी विवरणक सार्वजनिक प्रदर्शनक अनुमति नहि देल गेल अछि।

दूनू बाहर निकललाह तँ फाटक लग रमा कर्ण भेटलीह। ओ काल्हक सहायतासभाक प्राप्ति-पर्ची लऽ कऽ आयल छलीह। अनिताक बेचैनी देखि ओ पूछबाक लेल आगाँ बढ़लीह, मुदा नैरा हाथसँ हल्का संकेत कऽ देलीह जे ई निजी मामला अछि। रमा बिना अपमान मानने अपना कामक विषयमे बजलीह—“जे जिबैत अछि ओकरा मृत लिखब, आ जे आबि कऽ कहैत अछि, ओकरा प्रमाण नहि मानब—ई दफ्तरक विचित्र कला छै।”

अनिता पहिल बेर खुलिकऽ हँसलीह, फेर कहलीह, “हँसी भेल; मुदा एही कलाक दाम बहुत महँग छै।”

साँझमे रुहानी आश्रयमे सदस्यता-संशोधनक प्राप्ति देखैत छलीह। चम्पा घुरि कऽ आयलीह आ पूछलीह जे फेर कतेक लोकक नाम हुनकर सहमतिसँ पहिने सूचीक शीर्षपर चढ़ि गेल। रुहानी आज सूची खाली छोड़ने छलीह। ओ कहलीह, “आइ तोहर बात मनमे रहल। अनिताक शिकायत कियो हमरा बता रहल छल, मुदा हम ओकरा बजाबए नहि गेलहुँ। ओ अपन बाट चुनत।” चम्पा उत्तर देलीह, “आइ अहाँ सही जगह चुप रहलहुँ।” रुहानी हँसलीह—“एहि चुप्पीक सेहो कियो माला देत?”

आश्रयक ओसारपर चूल्हिक धुआँ उठि रहल छल। रुखसाना शामक भोजनक छोट हिसाब रखैत छलीह। ओ दुनूकँ कहलीह जे आज तरकारीक दाम बढ़ल अछि, मुदा जकरा मुफ्त थारी देल गेल ओकर गिनती अलग रहत; मुफ्त थारी बनौनिहारक मजदूरी मुफ्त नहि होएत। चम्पा अपन थारी धरिकऽ कहलीह, “आज सभ आदमी अधिकारक पाँति लिखैत अछि, हमर थारीमे बैंगनक गिनती लिखि दिअ।” रुखसाना उत्तर देलीह, “गिनती लिखब, मुदा बैंगन खा कऽ फेर बहस करिह।”

सरिता रातिमे अपन पुरान बही निकाललनि। नैरा अनिताक शिकायतक विषय कहने छलीह, मुदा व्यक्तिक निजी विवरण नहि खोलने छलीह। सरिता अपन बहीक एक पुरान पाँति देखौलीह जतय अलग-अलग घरक चाउर आ तेलक हिसाब छल। “एहि पाँतिमे हम कमलक नाम पहिने गलत लिखने रही,” ओ कहलीह, “ओ स्वयं कहलनि तँ सुधरल। तखन हम पुछने रहियनि जे एहि खातामे लिखबाक अधिकार हमर अछि, मुदा हुनकर नामक सही रूप तय करबाक अधिकार ककर?”

नैरा कहलीह, “अहाँक बही मे त्रुटि सुधरि गेल। सरकारी फाइलमे सुधारक क्रम जटिल छै।” सरिता पन्ना बन्द कएलनि। “जटिल होएबाक अर्थ ई नहि जे लोक अपन नाम छोड़ि देत। मुदा जाँ कियो अपन नाम नुकाएब चाहए, ओकरो कारण सुनबाक चाही।” नैराकँ माइकपर जीवित सरिताकँ मृत कहल गेल दिन याद पड़ल। हुनका ईहो बुझाईत छल जे किछु बदलल पहिचान जीवन बचबैत अछि; सभ प्रविष्टि खुला करि देब सेहो हिंसा भऽ सकैत अछि।

प्राचीन सभामे युधिष्ठिरक मुख नीचाँ छल। हुनका समीप भरि राजवंशक इतिहास छल, मुदा द्रौपदीक प्रश्न हुनकर अपन एक निर्णयक सामने ठाढ़ छल। ओ अपन हारक अनुभव जानैत छलाह; मुदा दोसर मनुष्यक सहमति बिना ओकर भाग्य बदलि देबाक चोट अपन हारक भीतर समा नहि सकैत छल। सभाक लोक जँ ई मानितो जे खेलक परिणाम मान्य अछि, तइयो केकरा दाँव कहल जाए—ई प्रश्न बचले रहैत छल।

द्रौपदी विदुर दिस देखलनि, फेर भीष्म दिस। कियो हुनका तत्काल न्याय नहि देलक। ओ अपन आपत्तिक क्रम फेर बनौलनि—जकरा स्वयं हानि पहुँचल अछि, ओकरा दोसरक स्वत्व देबाक क्षमता की बचैत अछि; जकरा कियो पुछने नहि, ओकरा वस्तु कहबाक आधार की अछि; आ सभाक चुप्पीकेँ सहमति कहबाक अधिकार के देलक? ई तीनू प्रश्न ओहि सभामे अलग-अलग दिशासँ बजल।

विकर्ण बहुत देरिसँ सुनि रहल छल। ओ सभामे वयस आ प्रभावमे छोट छल; दुर्योधनक निकटक सम्बन्धक भार सेहो ओकरा ऊपर छल। ओ अपन आसनपर हाथ रखि कनेक आगाँ झुकल। जे प्रश्न बड़का लोक तारि रहल छलाह, तकर उत्तर देब ओकरा लेल केवल तर्क नहि, अपना पक्षक विरुद्ध ठाढ़ होएबाक निर्णय होएत। ओकर मुखसँ एखन शब्द नहि निकलल। द्रौपदीक प्रश्न सभाघरक बीच टिकि रहल, आ सभाक शोर धीरे-धीरे ओहि मौनक चारू कात जमा होए लागल।

विदेहपुरमे नैरा अगिला दिनक दू पर्ची सहेजि रहल छलीह। सलमाक आवेदनक प्राप्ति-अंक अलग, अनिताक स्रोत-पत्रक माँग अलग। दुनूक फाइल पर एक्के लाल चिह्न नहि छल, एक्के आदमीक दोष सिद्ध नहि भेल छल। मुदा दूनों पर्ची हुनका सिखौने छल जे ककरो विषयमे निर्णय लेबाक पहिने एतबा जानब जरूरी अछि—ओकर आवाज कतय दर्ज अछि, ओकरा की पुछल गेल, आ ककरा उत्तर देबाक छल।

सूतबाक पहिने संकेत दुआरक खूँटीपर अपन फोन टाँगि देलक। ओ नैरासँ पुछलक, “जँ अहाँ हमर फोटो नहि देखैत, तँ हम जे कहब ओ मानब?” नैरा उत्तर देलीह, “जे कहबह से सुनब। मुदा देखल, सुनल आ जाँचल बात अलग लिखब। आ तोहर मर्जी बिना तोहर तस्वीर नहि देखब।” संकेत कहलक, “तखन ठीक छै।” ओकरा लेल ई कोनो विशाल सिद्धान्त नहि छल। ई छल अपन छोट वस्तुपर अपन छोट निर्णयक सन्तोष।

दूर बरकी पोखरिक अघटपर पानिक सतहमे शहरक दू बत्ती लहरि रहल छल। लहरिसँ बत्ती टूटैत आ फेर जुड़ैत छल; मुदा घाटक बन्द बाट ओहिना छल, जकरा खोलबाक लिखित निर्णय एखन बाकी छल। सरिता घरक भीतर साँकल लगौलनि। नैरा दू पर्ची अलग कपड़ामे राखि दीपक मिझा देलीह। ओहि राति एको फाइल अपने-आप नहि बदलल, मुदा दुइटा स्त्री अपन विषयमे निर्णय देनिहारसँ उत्तर माँगि चुकल छलीह।

अध्याय १६ • विकर्णक बादक मौन

हस्तिनापुरक सभागृहमे विकर्ण अपन आसनक काठपर राखल हथेली धीरे सँ उठा लेलक। काठ गरम छल; ओ कतेक बेर ओहिपर पकड़ कसने रहए, से ओकरा आब बुझाएल। सभाक बीच द्रौपदी ठाढ़ छलीह। हुनकर प्रश्नक उत्तर देबाक बदला लोक एक दोसराक वयस, पद आ मुखक भाव देखैत छल। विकर्णक ठीक आगाँ बैसल एक दरबारी चुपचाप अपन उत्तरियाक किनार मोड़ि रहल छल, मानू कपड़ाक सिलवट ठीक भेला सँ सभाक बिगड़ल क्रम ठीक भऽ जाएत।

विकर्ण पहिने द्रौपदी दिस देखलक, फेर अपन भायसभ दिस। ओकरा मालूम छल जे कहबासँ पहिने जँ ओ दुर्योधनक अनुमति ताकत तँ ओ अनुमति कदाचित् नहि भेटत। ओ ठाढ़ भेल। न ककरो आदेश छल, न ककरो समर्थन। ओकरा आवाज आरम्भमे थोड़ काँपल, मुदा बात साफ छल—द्रौपदी जे पुछैत छथि, तकर उत्तर दाँव जितबाक घोषणा मात्र नहि भऽ सकैत अछि। जे व्यक्ति स्वयं अपन स्वतन्त्रता हारि चुकल, ओ ककर अधिकारसँ दोसराकँ दाँवपर रखलक? एहि प्रश्नकँ अनसुना कऽ देलासँ हार न्यायोचित नहि भऽ जाइत अछि।

सभामे विकर्ण रुकल नहि। ओ कहल जे खेलक समय विवेककँ घेरेबाक अनेक उपाय छल; राज्य आ बन्धुसभक भविष्य एक जुआक टेबुलपर राखल गेल। ओहि स्थितिमे द्रौपदीक अपन इच्छा के पुछलक? हुनकर अनुपस्थितिकँ सहमति किएक मानल जाए? ओकर वाणीमे क्रोधसँ बेसी एहि बातक विस्मय छल जे एतेक लोकक बीच ई साधारण प्रश्न एखनधरि कियो पूरा सुनबाक इच्छुक नहि भेल।

दुर्योधन ओकरा निहारलक। भाइ होएबाक अर्थ राजसभामे आश्रय सेहो छल, बन्धन सेहो। विकर्ण बुझैत छल जे घरक भीतर जे बात कहब सहज रहैत, ओहि बातकँ राजसभामे कहिते ओकर सम्बन्ध बदलि सकैत अछि। विदुरक मुखपर क्षणभरि आशाक रेखा आएल। भीष्म अपन आसनपर चुप रहलाह। हुनकर मौन विकर्णक तर्कक उत्तर नहि छल, मुदा सभाक लोक एकरा अपन-अपन सुविधाक अनुसार अर्थ देबाक लेल तैयार छल।

कर्ण उठलाह। ओ विकर्णक आपत्तिकेँ अपरिपक्व ठहराबए चाहलनि; खेलक नियम आ दाँवक घोषित परिणामकेँ ओ प्रधान मानलनि। हुनकर स्वरमे अपन दीर्घ अपमानक स्मृतिसँ उत्पन्न कठोरता छल। ओ सोचैत छलाह जे सभाक मानल व्यवस्था केकरा स्वीकार करैत अछि, केकरा बाहर रखैत अछि; मुदा एहि निजी पीड़ासँ द्रौपदीक अपमानक अधिकार नहि उपजैत छल। हुनकर प्रत्युत्तर विकर्णक प्रश्नक मूल कठिनाई—द्रौपदीक स्वीकृति आ युधिष्ठिरक हारल अधिकार—केँ सुलझा नहि सकल। सभामे तथापि कर्णक वाक्यकेँ बल भेटल, कारण बलवान पक्ष ओकरा सुनए चाहैत छल।

द्रौपदी विकर्णक समर्थन सुनलनि। हुनकर मुखपर तत्काल सान्त्वना नहि आयल। एक आदमी सच कहैत अछि, मुदा सभाक आदेश ओहिना चलैत अछि—एहि अन्तरकेँ ओ साफ देखैत छलीह। ओ विकर्णसँ उद्गारक वचन नहि माँगलनि। हुनकर प्रश्न सभाक प्रति छल, आ सभाक उत्तर सभासँ चाही। “एक गोटेक बोलबासँ बाकी लोकक मौनक अर्थ बदलि जाइत छै की?” ई हुनकर प्रश्नक नबका धार छल। विदुर उत्तर देब चाहलनि, मुदा सभाक कोलाहल बढ़ल।

विकर्णकेँ फेर बैसबाक संकेत भेटल। ओ बैसि गेल, कारण ओकरा शारीरिक बलसँ सभाक क्रम बदलबाक सामर्थ्य नहि छल। मुदा ओकरा बैसि जेबाक बादो जे कहल गेल छल से ओतहि रहल। दरबारक लेखनिहार जीतक क्रम लिखि चुकल छल। ओ पन्नाक किनारपर छोट अक्षरमे विरोध दर्ज कएलक। मुख्य निर्णयक पाँति जथावत् रहल।

विदेहपुरमे दोसर पहर स्थानीय समितिक कोठरीक छतसँ पानिक एक बून्द खाली बाल्टीमे खसल। खिड़कीक कात कागद सुखएबाक लेल पुरान अखबार बिछाओल गेल छल। काल्हक बैठकक कार्यवृत्त आज पढ़ि सुनाओल जाएबाक छल। रुहानी पहिने पहुँचि गेल छलीह, मुदा हुनकर कुर्सी फेर ओही कतारमे छल जाहि कतारक लोककेँ निर्णयपर मत देबाक अनुमति नहि। एहि बेर कुर्सीपर नीला कपड़ा नहि छल। टेबुलपर फाइल छल, आ फाइलमे हुनकर लिखित आपत्ति दबि रहल छल।

सचिव उपस्थिति पढ़ब शुरू कएलक। रुहानी पुछलनि, “हम उपस्थित छी कि आमन्त्रित?” सचिव कहल, “दुनू एक्के बात नहि, मुदा अहाँक नाम आमन्त्रितमे अछि।” रुहानी कहलीह, “तखन कार्यवृत्तमे जखन ‘सर्वसम्मति’ लिखब, ईहो लिखब जे हमर मत

लेल गेल नहि।” सचिव थोड़ असहज भेल। अध्यक्ष बुझौलनि जे नियमक समीक्षा अगिला बैठकमे होएत, आज पुरान नियम लागू रहत। रुहानी कहलीह, “हम एखने नियम बदलल घोषित करबाक नहि कहि रहल छी। हम केवल एहि नियमसँ बाहर राखल आवाजक लेखा माँगि रहल छी।”

अमला सर्बरिया ओहि दिन अपन झोरामे नकल-पत्र आ लाल धागासँ बान्हल छोट गड्डी लऽ कऽ आयल छलीह। गड्डीमे ककरो निजी जीवनक वृत्तान्त नहि, अलग-अलग घरक आवेदनक प्राप्ति छल। हुनकर समुदायनाम नगरक तीन कार्यालयमे तीन ढङ्गे लिखल गेल छल। एक ठाम अक्षर छूटल, दोसर ठाम अन्तिम मात्रा बदलल, तेसर ठाम ओकरा एक दोसर नामसँ जोड़ि देल गेल। आवेदनक संख्या तेसँ प्रभावित भेल आ किछु परिवारकेँ एक्के व्यक्तिक दुहराओल पंजी कहि लौटा देल गेल।

अमला पहिने अपन नाम स्पष्ट कहलनि। सचिव रजिस्टर खोललक तँ ओहि पाँतिमे फेर गलत वर्तनी छल। ओ हँसलीह नहि। “हमरा पहिने ई सही लिखू,” ओ कहलीह, “तकर बाद बात सुनू। हम सभ एक रूपमे लिखबाक आवेदन देने छी, मुदा सभ घरक अलग नम्बर आ अलग अधिकार रहत। एक शब्द सुधारबाक नामपर हमरा सभकेँ एक आदमी बना देब तँ फेर नव गलती होयत।” एक कर्मचारी कहल जे मोबाइलमे चिन्ह बदलि देला सँ काज होएत। अमला उत्तर देलीह, “कागदपर जे छपल अछि, ओ जेबरमे घूमैत अछि। मोबाइलक पाँति बदलला सँ पुरान अस्वीकृतिक कारण नहि मेटत।”

हिनकर संग आएल एक युवक किताबक झोरा सम्हारैत ठाढ़ छल। ओकरा अगिला दिन कामपर जेबाक छल; दूनू ठाम जएबाक भाड़ा निकालब कठिन पड़ैत छल। अमला ओकरा बैसबाक संकेत कएलनि। “तोहर कामक समय सेहो खर्च छै,” ओ कहलीह। “हम जे लिखाएब, एहि फेर-फेर आबबाक खर्चक कारण सेहो लिखाएब।” अध्यक्ष पुछलनि जे ई सभ सामूहिक आवेदनक संग कोना जोड़त। अमला अपन गड्डी खोलि देखौलीह— एतेक लोक तीन बेर अलग-अलग खिड़कीपर गेल छल, आ प्रत्येक बेर गलतीक मूल स्रोतक उत्तर बिना घुरि आयल।

नैरा पछिला कतारमे बैसल छलीह। हुनका अनिता चौपालक आवेदन याद पड़ल। अनिताक समस्या गलत सामाजिक वर्गीकरणक छल; अमलाक समस्या नामक गलत

वर्तनी आ गलत मिलानक। दुनू एक नहि। नैरा अनिताक निजी बात सभाक आगाँ नहि उठौलीह। ओ अपन कापीमे लिखलीह—गलत प्रविष्टिक स्रोत, सुधार स्वीकार करबाक अधिकारी, नकल दऽ देबाक अवधि। फेर ओ कापी बन्द कऽ अमलाक बात सुनए लगलीह; आज एहि प्रकरणमे अधिकार अमलाक अपन स्वरक छल।

सकीब अबदल सभाघरक दुआर लग हिसाबक पुरान थैला राखने छलाह। हुनका पिछला माहक बाहा-सफाई लेल चन्दा जमेबाक आग्रह भेल छल। हुनकर रोजी छोट ढुलाईक आ समय-समय पर सामान मँगाएब-पहुँचएबाक छल; लोक हुनकर दोकानपर चन्दा सेहो छोड़ि जाइत छल। पिछला दिन कियो कहलने छल जे सकीबक निजी कमाइ आ सार्वजनिक चन्दा एक्के थैलामे मिलि जाइत अछि। सकीब कोनो आरोपक प्रतिवाद करबाक बदला हिसाबक दू बहिखाता लऽ आयलाह।

ओ टेबुलपर पहिल बही रखलनि। “एतय सार्वजनिक चन्दा, केतबा आयल, ककर अनुमतिसेँ काजपर खर्च भेल, से लिखल छै,” ओ कहलनि। दोसर बही ओ उठौने रहला। “एतय हमर ढुलाईक भाड़ा, उधारी आ घरक खर्च अछि। एकर पूरा पन्ना सभकेँ देखएबाक ककरो अधिकार नहि। मुदा चन्दा-खर्चमे जँ हमर ढुलाई लगल, ओकर रसीद अलग देखाएब।” अध्यक्ष कनेक चिढ़लनि—“एतेक औपचारिकता सफाई लेल?” सकीब कहलनि, “सफाई लेल चन्दा खुला रहबाक चाही; हमरा अपन घरक हिसाब सार्वजनिक करबाक बाध्यता नहि।”

सकीबक बहीमे एक पाँति खाली छल। बाहा-मुँहथरिक् नाप-जाँच लेल ललितक काठक पट्टी लएबाक भाड़ा एखन स्वीकृत नहि भेल छल। अदितिक निरीक्षण बिना पानिक मार्ग काटब निषिद्ध रहल, तँ काजक भुगतानक नामपर केवल तैयारीक रकम चढ़ल छल। सकीब अपन लाभक सम्भावना स्वयं अलग कएलनि—“जँ हमर गाड़ी लागल, भाड़ाक दर पहिने तय करू। हम चन्दा सँ चुपचाप कमाइ नहि करब, मुदा मुफ्तमे अपना रोजी छोड़ब सेहो नहि।” एहि बातपर पछिल कतारसँ कियो धीरे सँ “ठीक कहै छथि” बजलक।

रुहानी ओहि आवाजक दिशामे ताकलीह। अध्यक्ष कार्यवृत्तक मसौदामे ‘सभी उपस्थित सदस्यों की सहमति’ पढ़ि रहल छलाह। रुहानी पुछलनि, “एहि ‘सभी’ मे सकीब छथि? अमला छथि? हम छी?” अध्यक्ष कहलनि, “आमन्त्रितक राय दर्ज होइत

अछि, मत सदस्य देताह।” रुहानी उत्तर देलीह, “तखन दू पाँति लिखू—‘सदस्यसभक मत’, ‘आमन्त्रितसभक आपत्ति’। मुँहसँ सुनल गेल बातक अपना जगह छै; मतक अपना।” अध्यक्ष सचिवकेँ देखलनि। सचिवक कलम पन्नापर किछु देरि रुकल।

सभामे एक सदस्य कहलनि, “एहि छोट-छोट भेदपर एतेक समय गेल तँ पोखरि-उराहिक काज कोना आगाँ बढ़त?” अमला अपन कागद समेटैत कहलनि, “उराहिमे जँ हमर नामपर मजदूरी चढ़त आ हम कागदमे कोनो आन बुझाएब, तँ काज करब कोना? खाता सही करब सेहो उराहिक तैयारी अछि।” सकीब जोड़लनि, “जकर देय अलग नहि लिखब, ओकरा फेर कहब जे ओ दान देने छल। काज तँ देरि होइत अछि जे पहिने हिसाबक भरोसा नहि बनाओल गेल।” बाहर घाटक सीढ़ी नापबाक आवाज अबैत रहल।

अध्यक्ष कार्यवाही आगाँ बढ़ौलनि। सदस्यता-नियम बदलबाक प्रस्ताव ओहि दिन निर्णयक लेल नहि राखल गेल; मात्र पछिला बैठकक मसौदा पढ़ल गेल। रुहानी फिर पूछलीह जे जे सदस्य मौन रहलाह, हुनकर मौनकेँ समर्थन कहल गेल अछि की नहि। सचिव उत्तर देलक, “मतगणनाक समय जे मत नहि देलनि, ओकरा नियमक अनुसार उपस्थित मानल गेल अछि।” रुहानी कहलीह, “हम आँकड़ा नहि गढ़बाक आग्रह करैत छी। के पक्षमे बजल, के विरोधमे, के चुप रहल, आ केकरा मत देबाक अधिकार नहि छल—ई चारि स्थिति एक शब्द ‘सर्वसम्मति’ मे किएक मेटाएब?”

नैरा अपन ठामसँ उठि कऽ कहलनि, “हम एखन समितिक सदस्य नहि, तँ नियमक फैसला नहि देब। मुदा कार्यवृत्तक प्रति देखबाक अनुमति भेटए तँ असहमतिसँ सम्बन्धित वाक्य अलग पढ़ि सकब।” अध्यक्ष कने हँसलाह—“अहाँक माएक मामला अलग चलैत अछि; एतय फेर प्रमाणक बात?” नैरा शान्त रहलीह। “हँ, अलग। जँ हम सभ अलग काज मिला देब तँ सरिताक जीवित बयान, अमलाक नाम आ एहि समितिक मतदान—तीनू पर गलत असर पड़त।” ओ अपना हाथमे राखल कागद फेर नीचाँ कऽ लेलीह।

हस्तिनापुरमे कर्णक प्रत्युत्तरक बाद किछु सभा-सदस्य एकदम चुप भऽ गेलाह। हुनका सभकेँ विकर्णक बात सुनाइत छल, मुदा खुला पक्ष लेब जोखिम छल। विदुर एक बेर फेर न्यायपर आग्रह कएलनि। युधिष्ठिरक झुकल मुख हुनका लेल मौन स्वीकृतिक प्रमाण नहि छल। द्रौपदीक प्रश्न उत्तरहीन रहबाक अर्थ ई नहि छल जे निर्णय स्वतः उचित मानि लेल

जाए। जकर कंठमे शब्द नहि निकलैत अछि, ओकर चुप्पी सभासँ अलग कारणसँ भरल भऽ सकैत अछि।

विकर्ण सोचलक—एखन ओ जे कहि देलक, तकर बाद की? ओकर घर ओकरा अपना लोकमे गनत की ओकरा अविश्वासी कहत? प्रश्न भीतर उठल, मुदा ओकरा लाज नहि भेल। ओ द्रौपदी दिस फेर देखलक। ओकरा बुझाएल जे ओ जे कहलक, तेसँ हुनका सभाक अपमानसँ बचाओल नहि जा सकल। तइयो जे नहि कहितए, तँ सभाक वृत्तान्तमे सभ पुरुष एक्के मतक बुझाएत। ओहि एक अन्तरक लेल ओ ई मूल्य स्वीकार कएलक।

द्रौपदीक दृष्टि सभागृहक भारी द्वारपर पड़ल। बाहर सेहो जीवन छल—जल आनब, भोजन बनेब, अस्तबल साफ करब, दूतक बाट ताकब। राजसभाक निर्णयकें बाहरक लोककें ढोए पड़त। मुदा ओकर नियम बनेबाक स्थानपर हुनकर कोनो आसन नहि छल। द्रौपदी स्वयं प्रश्नक एक आरो किनार बुझि रहलीह: जे व्यवस्था लोकक जीवन तय करैत अछि, ओकर उत्तरदायित्व केवल सभागृहक भीतरक जितनिहारक नहि, ओहि जीवनसभक प्रति सेहो अछि।

विदेहपुरक बैठकमे विराम भेल तँ चम्पा बाहरी ओसारपर पहुँचलीह। रुहानी हुनका आगाँ कार्यवृत्तक मसौदा पढ़बाक इच्छा रखलीह। चम्पा कहलीह, “हम एखन कामसँ आयल छी। अपन नाम हमर मर्जी बिना मत चढ़ाउ, मुदा जँ हमरा राय चाही तँ पूरा बात सुनाउ।” रुहानी एकटा पन्ना हुनका देलीह। चम्पा पढ़ि सकैत छलीह, किन्तु थकानमे बारम्बार आँखि झपकैत छल। ओ कुर्सी नहि माँगलीह; ओसारक चौकीपर बैसि गेलीह। समितिक घरक भीतरक सम्मानक कुर्सीसँ ई चौकी अलग छल, मुदा एतय ओकरा प्रश्न पुछबाक बाधा कम छल।

अमला बाहर आयलीह तँ सकीब हुनक झोरा सँ खसल एक रसीद उठा देलनि। रसीदक किनार भीजल छल। सकीब कहला, “एहन कागदक नकल कराउ। फेर दौड़ब नहि पड़त।” अमला उत्तर देलीह, “नकलक दामो लेखामे चढ़त। हमरा सभक नाम गलत लिखल अछि, मुदा किराया सही-सही लेलक सभ दफ्तर।” दुनू हँसलाह। कनेक दूर रुखसानाक रसोइसँ सत्तूक छोट ठोंगा पठाओल गेल छल। सकीब दू ठोंगा किनलनि, अमला एकटा अपने दामसँ लेलनि। कोनो प्रश्न भूख नहि रोकैत।

विरामक बाद सचिव नबका मसौदा पढ़लक। ओहिमे लिखल गेल जे रुहानीक मताधिकार सम्बन्धी आपत्ति प्राप्त अछि, सदस्यता-नियमक समीक्षा प्रस्तावित अछि, आ आमन्त्रितक रायकेँ सदस्यमतक समान नहि गनल गेल। अमलाक नामक वर्तनीक स्रोत-जाँच सम्बन्धित अभिलेख कार्यालयसँ माँगल जाएत; तबधरि हुनकर आवेदनक अस्वीकृतिक कारणक नकल सुरक्षित राखल जाएत। सकीबक सार्वजनिक चन्दा-बहीक प्रतिलिपि समितिक खातामे जमा भेल, मुदा निजी बहिक पूरा पाठ नहि। ई सभ प्रक्रियाक छोट बदलाव छल, अन्तिम निर्णय नहि।

रुहानी मसौदा सुनि कहलीह, “चुप रहल सदस्यसभक बारेमे?” सचिव लिखबाक स्थान देखौलक। ओहि ठाम पहिने खाली पाँति छल। ओ भरलक—‘उपस्थित, परन्तु अभिमत व्यक्त नहि कएल।’ अध्यक्ष कहला जे ई शब्द अन्तिम नियमक व्याख्या नहि; केवल आजुक कार्यवाहीक तथ्य अछि। रुहानी स्वीकृति देलनि—“एतबे लिखू जे भेल। हम एहि पाँतिसँ अधिकार भेटि गेल, से नहि कहब।” हुनकर स्वरमे हलुक थकान छल, मुदा भीतरक जिद ढील नहि भेल।

एहि बीच अमला सुधार आवेदनपर पहिल बेर अपन सही लिखल नाम देखलीह। कार्यालयक मूल पंजी एखन बदलल नहि छल। कागदकेँ हाथमे धरिकऽ ओ कहलनि, “एखन ई हमर नाम ठीक अछि; हमर घरक काज एखन बाकी।” सकीब अपन चन्दा-बहीक प्राप्ति अंक देखलनि आ कहलनि, “एकर बादो जँ हमर भाड़ा पर विवाद उठत, तँ हम दर आ रसीद आगाँ रखब। चन्दा देनिहारक भरोसा केवल हमर मुंहपर नहि रहए।” दुनूक हाथमे छोट लिखित प्रमाण छल, मुदा एकरासँ पुरान क्षति मेटल नहि छल।

बैठक समाप्त होएबाक पहिने अध्यक्ष पुरान मतगणना यथावत् रहल, से घोषणा कएलनि। रुहानी बिनु मताधिकार बाहर निकललीह। हुनका ई बुझाएल जे कार्यवृत्तमे असहमतिक नाम रहब आ संस्थाक निर्णय बदलि जेब दुनू अलग पड़ाव अछि। चम्पा हुनका दुआरपर भेटलीह आ पुछलनि, “फेर माला?” रुहानी कहलीह, “आइ फूलक खर्च बचल। ओहि दामसँ दू नकल बनि जाएत।” चम्पा बजलीह, “नकलक दाम देबाक पर्ची जरूर लिअ, नहि तँ सकीबक संग झगड़ा होयत।”

नैरा सरिताक घर पहुँचलीह तँ साँझक भात उतरि रहल छल। संकेत माटिक कटोरीमे गरम पानि राखने छल, जाहिमे ओ अपन कलमक निब धो रहल छल। सरिता पुछलनि जे समितिमे की भेल। नैरा कहलीह, “निर्णय नहि बदलल। मुदा जे चुप रहल, ओकरा समर्थन नहि लिखल गेल; जेकरा मत नहि छल, ओकर असहमति अलग बचल।” सरिता किछु देरि सोचलनि। “हमरा मंचपर मृत कहलक, बादमे हमर बोलब लिखलक। जँ बोलबक पन्ना अलग बचि गेल, तखन फेर ओतय सँ लड़ब सम्भव भेल। मुदा कागद बदलाबय लेल फेर लोक चाही।”

नैरा माएक पुरान बही दिस ताकलीह। सत्ताइस नामक पन्ना एखन कपड़ामे अलग सुरक्षित छल; आजुक सभासँ ओकर कोनो नव मालिक वा दोषी प्रमाणित नहि भेल। ओ अपन छोट कापीमे तीन शीर्षक बनौलीह—‘कहल’, ‘सुनल’, ‘निर्णीत’। अमलाक सही लिखल आवेदन ‘कहल’ आ ‘स्वीकारल’क बीच छल; रुहानीक आपत्ति सुनल गेल छल, पर मताधिकार निर्धारित नहि भेल। सरिताक जीवित बयान दर्ज छल, पर मृत्यु-सूचना रद्द नहि भेल। एहि भेदसँ कागदक रहस्य तेज नहि, साफ भऽ रहल छल।

राति तिलवाह दिससँ हवा आयल। आँगनक बाँसक सरसराहटमे नावक डाँड़ बजबाक भान होइत छल। संकेत अपन कलम सुखएबाक लेल चौकीपर रखलक। ओ पुछलक, “जँ सभ चुप रहत, तँ ओहि दिनक बात के कहत?” सरिता उत्तर देलनि, “जे देखलक, ओ देखल बात कहत; जे सुनलक, ओ सुनल बात। आ जे बोलबाक साहस कएलक, ओकरा एतबा अधिकार भेटए जे ओकर वाक्य दोसरक मर्जीमे बदलि नहि देल जाए।” नैरा हुनका देखैत रहलीह।

हस्तिनापुरक सभामे दीपकसभ एक-एक कऽ छोट होइत छल। विकर्णक आवाज ओहिठाम प्रत्यक्ष परिणाम नहि बदलि सकल, मुदा ओ एकटा बातक साक्षी छोड़ि गेल—समान घरक, समान सभाक लोकसभ सेहो एक्के अन्यायकेँ समान रूपसँ नहि मानैत छलाह। द्रौपदीक प्रश्न एखनहुँ सभाक अधिकारक बीच ठाढ़ छल। छाया लम्बा होइत गेल; सभागृहक निर्णय ओहिना रहल। जे अन्याय आज रुकल नहि, ओकर विरोध इतिहासक बाहर नहि खसल—ओ लोकक कहल वाक्यमे, आ नहि कहल वाक्यक भारी देयमे, दुनूमे रहि गेल।

विदेहपुरमे ओहि राति समितिक मुहरवला पन्ना तीन अलग घरमे पहुँचबाक तैयारीमे छल। एक प्रति रुहानीक लग, एक अमलाक आवेदनक संग, एक चन्दा-बहीक प्राप्ति लग। कियो ई पन्ना लऽ कऽ अपन जीवनक पूरा समाधान नहि पओलक। मुदा अगिला बैठकमे ‘सभ सहमत छल’ कहल जाएत तँ एखन ओकरा पढ़ि चुनौती देबाक लिखित आधार छल। सरिताक चूल्हि मिझलाक बादो ओकरा नीचाँक राख कनेक देरि गरम रहल; नैरा हाथ नहि देलीह, केवल ओसारक दुआर बन्द कऽ सोचलीह—कखनो मौनक हिसाबो राखए पड़ैत अछि, जाहिसँ ककरो चुप्पी दोसरक जीतक नकली प्रमाण नहि बनि जाए।

अध्याय १७ • कैकेयीक देय

अयोध्याक राजमहलमे पहर बदलबाक घण्टी बजल तँ मन्थरा तेलक छोट दीपक नीचाँ कऽ देलीह। रात्रिक पहरेदार अपन डाँड़ दरबज्जाक कात ठाढ़ कऽ थकानसँ आँखि मसलक। गलियारामे फूलक टोकरी आबि रहल छल। अभिषेकक तैयारीक समाचार एखन सभ कोठरी धरि एक समान पहुँचने नहि छल, मुदा आँगनक कोनमे राखल नबका कलश आ जल्दी-जल्दी धोएल आसन देखिकऽ बुझाइट छल जे राजमहल काल्हि अपन रूप बदलत।

मन्थराक लग कपड़ामे बान्हल तीनटा चाभी छल। पहिल चाभीसँ कैकेयीक भीतरक भण्डार खुलैत, दोसरसँ सेविकासभक ओसार, तेसरसँ ओ छोट पेटी जाहिमे दवाइ, पट्टी आ पानि गरम करबाक बरतन राखल छल। वृद्ध भऽ रहल हुनकर हाथमे चाभीक भार एखन बेसी लगैत छल; भार लोहाक नहि, एहि प्रश्नक छल जे नब राजा आ नव अन्तःपुरक संग एहि चाभीसभक अधिकार ककरा भेटत।

एकटा कम उमेरक सेविका टोकरी धरिकऽ ठाढ़ भेलीह। “आइ सँ फूल कतेक लागयत?” ओ पुछलनि। मन्थरा कहलीह, “जतेक टोकरी अछि ओतेक गनू। राजा बदललासँ फूलक गनती नहि बदलैत, मुदा गननिहारक नाम बदलि सकैत अछि।” सेविका हँसबाक प्रयास कएलनि, फेर पुछलनि, “हमर नामो?” मन्थरा टोकरीक नीचाँ अपन हथेली लगा देलीह। “एखन फूल बचाउ। नामक उत्तर हमरा देबाक अधिकार नहि अछि।”

कैकेयी अपन कक्षमे रेशमी पट्टा खोलि रहल छलीह। ओ पट्टा पुरान छल, युद्धक कालमे चोट खाएल कलाईक स्मृति ओकर धागामे रहि गेल छल। ओ वस्तु हुनका लेल विजयक चिह्नसँ अधिक एक गोटे एहन दिनक चिन्ह छल जखन राजाक प्राण बचएबाक काम कएलाक बाद हुनका दू वर माँगबाक वचन देल गेल छल। ओहि वचनकँ ओ एतेक दिन धरि कखनहुँ अपना दैनिक काजक दाम नहि बनौने छलीह।

“महारानी,” मन्थरा कहलीह, “आइ सेविकासभसँ नब व्यवस्थाक सूची माँगल गेल अछि। ओहि सूचीमे ककरा काहि ठाम राखल जाएत, ई कियो नहि कहलनि।” कैकेयी पट्टा मोड़ि राखि देलीह। “अभिषेकक काज बढ़ल अछि। सेवा बढ़त, एहि लेल सूची

होयत।” मन्थरा उत्तर देलीह, “सेवा बढ़ल तँ हाथ बढ़त, मुदा नाम कटबाक बातो होइत अछि। काम करनिहारक मुँह कियो नहि देखलक।”

कैकेयी हुनक स्वर सुनि उठि बैसलीह। मन्थरा बहुत दिनसँ हुनका संग छलीह। पुरान स्नेहक कारण कैकेयी हुनकर हरेक अनुमान सत्य मानि लेतीह, से नहि छल। “अहाँ सुनल बात कहि रहल छी कि देखल?” ओ पुछलनि। मन्थरा अपन कमरक गाठि सँ कागद नहि, कपड़ापर गाँठ बान्हल एकटा सूची खोललीह। ओहिमे नाम लिखल नहि छल; ओ नाम याद करैत गनैत छलीह—जकर घरक अन्न एतयसँ जाइत, जकर चोटक पट्टी एही पेटेसँ मिलैत, जे विधवा अपन बेटाकेँ संग लऽ कऽ सेवा करैत छलीह।

“ई सभक लेल के उत्तर देत?” मन्थरा पुछलनि। “रामक नामपर हमरा आपत्ति नहि। मुदा हुनकर अभिषेकक बाद जँ नब ओसारक प्रभारी कहत जे हमरा सभक सेवा एतय नहि चाही, तँ ई लोक कतय जायत?” कैकेयी कहलीह, “राम परित्याग करनिहार नहि छथि।” मन्थरा तुरन्त बजलीह, “हुनक दयापर भरोसा होइत अछि। दयासँ पूर्वक देय सुरक्षित होइत अछि की?”

कैकेयी मौन भेलीह। अपन राजपरिवारक भीतर रामक स्नेहकेँ ओ जानैत छलीह। भरतक लेल सेहो हुनकर मनमे मायक चिन्ता छल, मुदा भरत एखन अयोध्यामे नहि छलाह। रामक सुख हुनका अपन घरक सुखसँ अलग नहि लगैत छल। मन्थराक प्रश्न एहि सभकेँ एक्के बेर विरोधी बनबए लगल। कैकेयी धीरे सँ पुछलनि, “अहाँक मनमे खाली सेविकासभक देय अछि?” मन्थरा आँखि नहि नुकोलीह। “नहि। भरतक भविष्य अछि। आ हमर अपन वृद्धावस्था सेहो। हम अपन भयकेँ परोपकारक नाम नहि देब।”

एहि स्वीकारसँ कैकेयी हुनका नबका ढङ्गे देखलीह। मन्थरा अपन दोष-सम्भावना नुकबैत नहि छलीह। ओ कहलीह, “राजघरक स्नेह बहुत गहीर होइतो नियम नहि होइत। जकरा आइ निश्चित कहल जाएत, ओकर नाम काल्हि परित्यक्तक पाँतिमे आबि सकैत अछि।” कैकेयी पुछलनि, “तँ अहाँ चाहैत छी हम भरतक नामपर रामक अभिषेक रोकि दी?” मन्थरा उत्तर देबाक पहिने दीपकक बाती सीध कएलनि। “हम चाहैत छी अहाँ अपन वचनक अर्थ एखन तय करू। फेर हमरा ई दोष नहि दी जे हम प्रश्न उठौने छलहुँ।”

कैकेयी खिड़की लग गेलीह। बाहर आँगनमे चन्द्रमाक पाछाँ बादर सरकि रहल छल। एक सेवक नबका कलशक मुँह कपड़ासँ ढाँपलक, जाहिसँ भोर धरि धूरि नहि पड़ए। एहने सावधानीसँ राजकाज चलैत रहल छल; मुदा बड़ निर्णयक समय मनुष्यमे एकर आधा सावधानी कतय हेरा जाइत अछि? हुनका दशरथक प्रतिज्ञा स्मरण भेल—ओ वचन जकरा राजा देने छलाह, किन्तु जकर उपयोग नहि करबाक स्वतन्त्रता हुनका अपन हाथमे छल।

“जँ हम वर माँगब,” कैकेयी कहलीह, “ओ वर हमरा देय भेटत, मुदा रामक लेल दण्ड बनत।” मन्थरा कहलनि, “रामक बिनु विरामक अभिषेक भरतक लेल अपमान बनि सकैत अछि।” कैकेयी घुरि देखलीह। “भरत एखन एतय छथि नहि। हुनक मनक नामपर हम अपन इच्छा लिखब, तँ ओहो अन्याय होएत।” मन्थरा चुप रहलीह। ओ समझलीह जे कैकेयी आब मात्र डरक सहारे नहि चलतीह।

कक्षमे भोजनक थाल आयल। कैकेयी एक कौर उठौलनि, फेर रखि देलनि। सेविका भोजन हटबए चाहलनि तँ मन्थरा रोकलीह। “थाल एतहि रहए,” ओ कहलीह, “भूख फेर लगत।” कैकेयी कहलीह, “अहाँ दिन भरि किछु खएने छी?” मन्थरा नकारमे माथ हिलौलीह। दुनू स्त्री एक्के थालमे सँ कनेक भात अलग कटोरीमे लेलनि। निर्णयक कष्ट खाधि नहि बनल, मुदा एहि सामान्य काजमे हुनका स्मरण रहल जे राजमहल केवल राजाक वचनसँ नहि, हजार लोकक समयसँ चलैत अछि।

दशरथ रातिक अन्तिम प्रहरमे कैकेयीक कक्षमे अएलाह। उत्सवक तैयारीसँ हुनकर मुख थाकल छल, मुदा कैकेयीक बोलाहट पर ओ प्रसन्नतासँ पूछलनि, “आइ कोन उपहार चाही?” कैकेयी ओहि सहज वाक्यक भीतर पुरान प्रतिज्ञाक भारी स्थान देखलीह। ओ अभिवादन कऽ बैसलीह नहि। “उपहार नहि,” ओ कहलीह, “अहाँक देल दू वरक वचनक हिसाब चाही।”

राजाक मुखसँ हँसी उतरि गेल। पहिने ओ युद्धक घटना स्मरण कएलनि; फेर मानू एहि स्मृतिक भविष्य केवल उत्सवक वस्तु भऽ सकैत छल, एहन अपेक्षासँ कैकेयीकेँ देखलनि। “अहाँ जे माँगब, हम देबाक प्रतिज्ञा कएने छी,” ओ कहलनि। कैकेयी उत्तर देलीह, “तखन पहिने सुनू। हम जे माँगब, तकर बोझ अहाँ अकेले नहि उठाएब। राम, भरत, कौसल्या, नागरिक आ हम सभ—सभपर पड़त।”

ओ पहिल वरमे भरतक राज्याभिषेक माँगलनि। दशरथक हथेली आसनक बाँहपर थरथरा उठल। कैकेयी दोसर वर कहबाक पहिने किछु देरि साँस सम्हारलनि। “राम चौदह वर्ष वनमे रहथि,” ओ कहलनि। कक्षमे बाहरी घण्टीक ध्वनि पहुँचि रहल छल; कतहु उत्सवक अभ्यास चलि रहल छल। राजा एक बेर “राम” बजलाह, फेर आवाज रोकि लेलनि।

दशरथ पुछलनि, “कैकेयी, अहाँ एहि वचनसँ की बचए चाहैत छी?” हुनकर प्रश्नमे क्रोध आ प्रार्थना एक्के संग छल। कैकेयीकेँ अपन उत्तर पूरा स्पष्ट नहि बुझाईत छल। ओ राज्यक केन्द्रमे भरतक सुरक्षित स्थान चाहैत छलीह; ओ आहत अविश्वाससँ मुक्त भविष्य चाहैत छलीह; ओ मन्थरा आ सेविकासभक जीवनक असुरक्षा सुनने छलीह। मुदा एहि सभ कारणसँ रामक वनगमनक आवश्यकता निर्विवाद भऽ जाइत अछि, से ओ स्वयं नहि कहि सकलीह।

“हम वर वापस नहि लैत छी,” कैकेयी कहलीह, “मुदा ईहो नहि कहब जे एहि निर्णयमे ककरो हानि नहि।” दशरथ हुनका देखैत रहि गेलाह। राजा वचन देबाक दिन अपन उदारता देखलनि छल; आब वचन पूरा करबाक दिन ओकर मूल्यक अन्त नहि देखाइत छल। ओ उत्तर नहि देलनि। कक्षमे शब्दक बदला सन्नाटा बढ़ल।

मन्थरा दरबज्जाक बाहर ठाढ़ छलीह। राजा भीतर छलाह, तकरा कारण हुनका प्रवेशक अधिकार नहि छल। भीतरक एक-एक वाक्य हुनका पूरा नहि सुनाइत छल; ओ आधा आवाजसँ पूरा अर्थ बनएबाक जोखिम नहि लेलनि। सेविकाक चाभी फेर हुनकर हथेलीमे बजल। हुनका बुझाएल जे जकर सुरक्षा लेल ओ आवाज उठौने छलीह, ओकर घर आब दोसर असुरक्षाक आरम्भ सेहो बनि सकैत अछि। ओ चाभी पेटीपर नहि, अपन झोरामे राखि लेलनि।

भोरक पहिल आलोकमे कैकेयी दशरथक लग बैसल छलीह। बाहर उत्सवक फूल एखनहुँ ताजा छल, भीतर राजाक मुखपर थकानक गहींर रेखा। कैकेयी पहिल बेर मन्थराक कहल बातकेँ अपन शब्दमे उलटि देखलीह—पुरान वचनक संरक्षणक लेल नव अधिकार छीनल जाए तँ संरक्षणक नामे ककर घर उजड़त? मुदा ओ निर्णय लेलीह, आ ओकर हानिक जिम्मेवारी दोसरक मनपर राखि निजात नहि भेटत।

विदेहपुरमे ओही दिन विद्यालयक सूचना-पट्टपर टँगबाक लेल छपल एक पन्नाक कोना हवा सँ उखड़ि रहल छल। असद सैयद सीढ़ी चढ़ि कऽ कागद उतारलनि। पन्नामे सहायता-वितरण समितिक पछिला बैठकसँ सम्बन्धित दू वाक्य छल—‘सर्वसम्मति’ आ ‘स्वीकृत’। असद विद्यालयमे बच्चासभक प्रवेश आ उपस्थिति-बही देखैत छलाह; नगरक सार्वजनिक सूचना-पाठ सेहो हुनक जिम्मामे आबि पड़ैत छल। हुनका एहन शब्दक मूल्य बुझाईत छल जे एक बेर दीवारपर लगला बाद घर-घर उद्धृत होए लगैत अछि।

विद्यालयक प्रधानाध्यापक कहलनि, “उपरे सँ पठाओल सूचना अछि। फैंकि किएक रहल छी?” असद पन्नाक फटल कोना देखौलनि। “फैंकि नहि रहल छी, उतारि रहल छी। एहि पर ककर हस्ताक्षर अछि? असहमति अलग लिखल कार्यवृत्त काल्हि भेटल; एहि सूचनामे फेर सभक सहमति लिखल अछि।” प्रधानाध्यापक कहला, “विद्यालय एहि विवादमे किएक पड़त? हमरा सभक काम पढ़ाई अछि।” असद कहलनि, “दीवार विद्यालयक अछि। बच्चासभक घर ई पन्ना देखैत अछि। गलत बात हमरा सभक मुँहसँ निकलत तँ पढ़ाई कहाँ अलग रहत?”

असदक डेस्कपर पुरान बाँसक कलमदान छल, मुदा विद्यालयक अधिकतर काज आब मशीनसँ निकलल पन्नापर होइत छल। ओ अपन हाथसँ तीन पाँति लिखलनि—सूचनाक मूल स्रोत, जारी करबाक दिन, आ विद्यालयद्वारा सत्यापनक सीमा। हुनका हस्ताक्षरक जगह खाली रखबाक मन नहि छल, मुदा बिना अधिकारक दाबी पर हस्ताक्षर करबाक मन सेहो नहि छल। ओ कार्यालयमे जमा करबाक लेल पन्नाक दू प्रति बनौलनि।

ओहि समय नैरा सरिताक जीवित बयानक प्रमाणित नकल सम्बन्धी जानकारी लेबाक लेल विद्यालयक पाछाँवला सार्वजनिक सहायता-कक्ष धरि आएल छलीह। पिछला बैठकक कार्यवृत्त हुनकर झोरामे छल। असद हुनका देखिकऽ पुछलनि, “ई पन्ना अहाँ पढ़ने छी? एतय ‘सभक स्वीकृत’ अछि।” नैरा उत्तर देलीह, “सभ उपस्थित नहि छल। जे उपस्थित छल, ओकरो सभकेँ मत देबाक अधिकार नहि छल।” असद कहला, “तखन ई विद्यालयक सूचना नहि, ककरो निष्कर्षक प्रचार भेल।”

नैरा हुनका बतौलनि जे रुहानीक आपत्ति दर्ज भेल, मुदा मताधिकार नहि भेटल; अमलाक आवेदन स्वीकारल गेल, मुदा मूल सामाजिक पंजी नहि सुधरल; सरिताक बयान

दर्ज अछि, मुदा मृत्यु-सूचना एखन नहि मेटल। असद बीचमे नहि टोकलनि। ओ तीनू स्थितिक अलग-अलग नाम कागदपर लिखलनि। “जे हासिल भेल से लिखू,” ओ कहलनि, “जे नहि भेल ओकरा उपलब्धि नहि बनाउ। नहि तँ काल्हि कोनो बच्चा पुछत जे हमर माइक आवेदन किएक अटकल, तखन हम की उत्तर देब?”

विद्यालयक कक्षमे किछु बच्चा नाटकक अभ्यास कऽ रहल छल। एक बालिका अपन संवाद बिसरि गेलीह, तँ साथी धीरे सँ कहि देलक। असद दुआर दिस मुड़लनि। ओहि सहज सहयोगकें देखिकऽ हुनका याद पड़ल जे कागदमे नाम पढ़ि देब आ ककरो नामपर बोलबाक अधिकार लऽ लेब दुनू अलग काज छथि। असद बच्चासभकें अभ्यास जारी रखबाक कहि फेर टेबुल लग अएलाह। एहि छोट विराममे नैराकें सेहो बुझाएल जे संवादक अधिकार केवल सभाक मंचपर नहि तय होइत अछि।

प्रधानाध्यापक कार्यालयमे घुरि कहलनि, “दू पाँतिक सुधार लेल एतेक दौड़धूप? बोर्ड खाली रहत तँ लोक कहत विद्यालय सूचना नुकबैत अछि।” असद प्रस्ताव रखलनि, “मूल पत्रक प्रति राखी। पाछाँ नोट जोड़ि दी जे ई समितिक पठाओल बयान अछि, विद्यालयक जाँचल निष्कर्ष नहि। आ जखन सही कार्यवृत्त भेटए, तकर नकलो संग टाँगब।” प्रधानाध्यापक पुछलनि, “खर्च?” असद झोरासँ दू रसीद निकाललनि—कागदक नकल आ गोंदक दामक। “ई अपन जेबासँ चुकौने छी। अगिला बेर ककर खाते सँ लागत, पहिने लिखित तय करू।”

नैरा रसीद देखलीह। एहन छोट रकम सामान्यतः कियो ख्याल नहि करैत, मुदा विद्यालयक सूचना सुधारबाक श्रम सेहो समय आ दाम लैत छल। ओ असदकें धन्यवाद देबाक बदला पुछलनि, “अहाँक नाम एहि आवेदनपर रहत?” असद कहलनि, “रहत। गलत पन्ना हमरा हाथसँ लागल छल। सुधारक माँग सेहो हमर हस्ताक्षरसँ जाए। मुदा पत्र पठौनिहारक दोष हमर नामपर पूरा नहि देल जाए।”

सहायता-कक्षमे कर्मचारी कहलनि जे समिति कार्यवृत्तक प्रमाणित प्रति लेल अलग आवेदन चाही। नैरा पहिलसँ लिखल आवेदन निकाललनि। कर्मचारी फेर कहल जे एहि प्रति पर विद्यालयक मुहर नहि लगत। असद हँसि देलनि। “विद्यालयक मुहर किएक लागत? जकर बैठक छल ओकर मुहर चाही। हमर मुहरसँ तकर निर्णयक मालिक हम नहि

भऽ जाएब।” कर्मचारीक चेहरापर असन्तोष छल, मुदा ओ आवेदनक प्राप्ति-क्रमांक लिखि देलक।

नैरा ओ क्रमांक अपन कापीमे दर्ज कएलनि। अपन माइक मृत दर्ज नामक मामला एतयसँ तुरन्त नहि सुधराए वाला छल। मुदा काल्हक समितिक सही कार्यवृत्त आ आजुक प्रचार-पत्रक अन्तर सुरक्षित भऽ गेल। ओ अनुमान नहि कएलनि जे कोनो एक व्यक्ति जानि-बुझि झूठ लिखौने अछि। हुनका एखन केवल एतबा मालूम छल जे सार्वजनिक घोषणामे कार्यवाहीक स्थिति बदलि कऽ प्रस्तुत भेल अछि; मूल लेखक, हस्ताक्षर आ स्वीकृतिक क्रम अलग जाँचबाक छल।

दुपहरिया ढलैत असद विद्यालयक बगलमे छोट छायामे बैसि अपन रोटी खोललनि। नैराकेँ सेहो बैसबाक कहि ओ घरसँ आनल भुजल सागक आधा हिस्सा अलग कऽ देलनि। नैरा मनाही कएलनि। “अहाँक भोजन कम पड़त,” ओ कहलीह। असद कहला, “कम नहि, बँटबाक हिसाब अछि। जे खाएत ओहि लेल ककरो नाम काटब नहि पड़त।” दुनू हँसलाह। थोड़ देरि ओ सभ विद्यालयक बच्चासभक खेल, टुटल बेंचक मरम्माति आ वर्षाक दिन रास्तामे भरैत पानिक चर्चा कएलनि। एहि बातचीतमे कोनो रहस्य नहि खुलल।

विदेहपुरक दोसर कात सरिता चूल्हिपर पानि चढ़ा रहल छलीह। मुँह अन्हार होएबाक पहिने नैरा घर पहुँचल छलीह। ओ विद्यालयक पत्र आ प्राप्ति-क्रमांक माइक आगाँ रखलनि। सरिता पढ़ैत-पढ़ैत पुछलनि, “एतय कियो कहल अछि जे हमर मृत्यु दर्ज गलती आब सुधरि गेल?” “नहि,” नैरा कहलीह। “ई पत्र समितिक बयानक लेल अछि। अहाँक मामला अलग रहत।” सरिता सिर हिलौलनि। “अलग रहए दे। सभ अन्यायकेँ एकटा नाम देलासँ कियो ओकर मालिक नहि बुझाइट।”

संकेत ओसारमे कागदक छोट नाव बना रहल छल। ओकरा विद्यालयक नाटकक बात रुचि देलक। ओ पुछलक, “जे बच्चा अपन संवाद बिसरि जाए, ओकरा दोसर बच्चा बतबैत अछि। फेर मंचपर बोलबाक श्रेय केकर?” नैरा कहलीह, “जे संवाद बजलक ओकर, आ जे मदति कएलक ओकर मदतिको मान रहत।” संकेत अपन नावमे दू अलग

नील रेखा खींचलक—एकटा नाव चलौनिहारक, दोसर पानि देखौनिहारक। ओकरा एहि रेखामे कोनो सरकारी नक्शा नहि बुझाइट छल।

साँझक समय उर्मिला अस्पतालक कपड़ा धरि पहुँचेबाक गाड़ी लेल बाट जोहैत छलीह। पहिले जकरा कपड़ा लेबाक छल, ओ कहने छल जे राति धरि रोकू; दोसर पालीक मजदूरीक लिखित बात नहि भेल छल। सरिता हुनका चूल्हिपरक गरम पानि देबाक कहलीह। उर्मिला पीबैत कहलनि, “राति बढ़त तँ काजो बढ़त। मुदा रातिक घण्टा दिनक पाँतिमे लिखि देला सँ हमर निद्रा फिर्ता नहि होयत।” नैरा हुनकर बात सुनलीह, उत्तर देबाक जल्दी नहि कएलनि।

अयोध्यामे ओही रातिक बादक भोरमे राजमहलक फूलसभपर ओस पड़ल छल। कैकेयी अपन माँगल वरक परिणामसँ बाहर निकलि नहि सकलीह। मन्थरा कक्षसँ बाहर सेविकासभक चाभी सम्हारैत एक-एक नाम सुनि रहल छलीह। ओ जानैत छलीह जे हुनकर भय साँच होइतो हुनकर सुझाओल उपाय निर्दोष नहि छल। दरबज्जाक भीतर राजा चुप छलाह; बाहर लोक उत्सवक कारण पुछैत छल। एखन ककरो लग एहन एकटा वाक्य नहि छल जे सभक देय, सभक हानि आ सभक भविष्य एक्के बेर सही-सही कहि सकए।

विदेहपुरमे नैरा रातिक कापी बन्द करबाक पहिने दू पाँति लिखलीह—‘वचन देनिहार’ आ ‘वचनक भार उठौनिहार’। ओहि नीचाँ असदक विद्यालय-सूचना, रुहानीक असहमति आ सरिताक बयानक अलग-अलग कागद राखि देलीह। सत्ताइस नामक पन्ना ओ खोललीह नहि; एहि दिनक खोज ओकर कोनो नामक रहस्यक सीधा उत्तर नहि छल। बाहर उर्मिलाक गाड़ी देरिसँ आयल, आ ओ बिना अतिरिक्त घण्टाक हिसाब लिखौने कपड़ाक गट्टर चढ़एब स्वीकार नहि कएलनि। राति बढ़ैत गेल, मुदा एकटा छोट हिसाब आजुक राति लेल बदलि चुकल छल।

अध्याय १८ • उर्मिलाक राति

अयोध्याक राजमहलमे भोरक पानि भरबाक घड़ाक आवाज पहिने उठल, लोकक स्वर बादमे। चबूतरापर राखल पीतलक कलशमे रातिक ओस पड़ल छल। उर्मिला ओकरा उठौलीह तँ हाथमे ठंड लागल। भीतरक कोठरीमे दू पेटी खुलल छल; एकमे लक्ष्मणक यात्राक लेल साधारण वस्त्र, दोसरमे महलक दिनचर्याक कपड़ा। पहिल पेटी भरब आसान छल। दोसर पेटीक मालिक कियो नहि बनए चाहैत छल।

लक्ष्मण कहलनि जे ओ रामक संग वन जाएताह। ई निर्णय रातिये सुनाओल गेल छल, मुदा सुनबाक क्षण आ ओकरा जिवैत बुझबाक क्षण अलग होइत अछि। उर्मिला रातिभर जागल छलीह, रोएबाक कारणसँ नहि, घरक भीतर जे काज काल्हि धरि बँटल छल ओकर नब हिसाब सोचैत। रामक वनगमन आ सीताक संग जाएबाक निर्णय एहन भारी घटना छल जे लोक छोट बात पुछबाक अपन अधिकारो बिसरि रहल छल। उर्मिला छोटे बातसभक पाँति बना रहल छलीह—कौसल्याक औषधि के देत, सुमित्राक रातिक सहारा के रहत, वृद्ध सेविकाकेँ विश्राम के पूछत।

लक्ष्मण भीतर अएलाह तँ देखलनि जे उर्मिला कपड़ाक किनार ठीक कऽ रहल छथि। “हम बहुत किछु नहि लऽ जाएब,” ओ कहलनि। उर्मिला हुनका दिस देखलीह। “हम अहाँक गट्टर छोट करैत छी। मुदा जे काज अहाँ पाछाँ छोड़ि जा रहल छी ओकर गट्टर छोट कोना करब?” लक्ष्मण उत्तर देबाक पहिने हाथक धनुष दरबज्जाक कात रखि देलनि। “हमर जाएब आवश्यक अछि।” उर्मिला कहलीह, “आवश्यकताक विरोध नहि करैत छी। हम केवल पुछैत छी—अहाँ चलि जाएब तँ एतय ककर आवश्यकता बाँचि रहत?”

लक्ष्मणकेँ अपन निर्णय फेर सँ तौलए पड़ल। हुनकर मनमे रामक प्रति निष्ठा छल, सीताक यात्राक सुरक्षा छल, आ संगहि अपन घरमे থাকल लोकक चेहरा। ओ नहि कहलनि जे उर्मिला सभ सम्हारि लेतीह। ओ कहबाक साहस सेहो हुनका नहि भेटल जे पाछाँ बचल सभ भार स्वतः कम भऽ जाएत। “माता सभक व्यवस्था करब,” ओ कहलनि। उर्मिला धीरे उत्तर देलीह, “व्यवस्था कोनो एक स्त्रीक नाम नहि। जकरा काम देब, ओकर विश्रामो तय करब।”

दुआरपर श्रुतकीर्ति ठाढ़ छलीह। हुनका हाथमे काँचक सानो पात्र छल, जाहिमे कने गुड़ आ भुजल अन्न छल। “पहिने खा लिअ,” ओ कहलीह, “विचारक पेट खाली रहत तँ विचारो हमरा खा जाएत।” उर्मिला हँसि देलीह। बहुत समय बाद हुनकर हँसी कक्षमे सुनाइत छल। ओ गुड़क छोट टुकड़ा उठौलीह आ श्रुतकीर्तिक हाथमे आधा देलीह। “अहाँ एतेक बुद्धि कतयसँ आनैत छी?” “भुजल अन्नक संग भेटैत अछि,” श्रुतकीर्ति उत्तर देलीह। ओहि क्षणमे वन, राजगद्दी आ प्रतिज्ञासँ बाहर दू बहिनक अपन संसार जीवित छल।

श्रुतकीर्ति पुछलनि, “रातिमे अहाँ कखन सुतब?” उर्मिला कहलीह, “जखन रातिक कामक बँटवारा लिखल जाएत।” श्रुतकीर्ति हँसलीह, “तँ राजमहलमे पहिल बेर निद्राक हिसाब बनत।” उर्मिला सेहो मुस्की देलीह। “एतय पहर बदलैत अछि, मुदा बिछानाक लग जागनिहारक पहर कियो नहि गनैत।” ओ कने रुकि फेर कहलीह, “हमरा निद्राक वर नहि चाही। हमर हिस्साक राति चाही।”

दोपहरिसँ पहिने उर्मिला माण्डवी आ श्रुतकीर्तिक संग भीतरक आँगनमे बैसलीह। सेविकासभक काजक बँटवारा सुनल गेल। एक वृद्धा स्पष्ट कहलीह जे रातिक तेसर पहर हुनक आँखि नीकसँ नहि देखैत। ओ एहि बातक लाज मानैत छलीह। उर्मिला हुनका कहलीह, “अहाँ दिनमे फूल चुनू, रातिमे नहि। जकर आँखि अन्हारमे कम देखैत अछि ओकरा दण्ड देबाक कोनो कारण नहि।” एक दोसर स्त्री पुछलनि जे बीमार बच्चा लग जाएबाक छुट्टी ककरासँ लेब। उर्मिला कहलीह, “हमरासँ। आ जँ हम नहि रहब तँ श्रुतकीर्तिसँ। हम सभक नाम तय करैत छी; अहाँक बच्चाक दुख सुनबाक लेल आदेशपत्र नहि चाही।”

माण्डवी सभक बात सुनि कहलीह, “हमरो लग लोक आएत, मुदा भरत एतय छथि नहि। हुनक अनुपस्थितिमे हमर अधिकार कतबा?” उर्मिला उत्तर देलीह, “जतेक काज अहाँक जिम्मामे देल जा रहल अछि, ततेक निर्णयक अधिकारो चाही। नहि तँ केवल गलतीक दोष अहाँक होयत।” माण्डवी एहि उत्तरक पछि अपन जिम्माक काज गनलीह —धानक भण्डारक निकासी, पुरनका रोगीक पथ्य, रातिक पहरा देनिहार स्त्रीसभक

विश्राम। सभ बात एक बेरमे तय नहि भेल, मुदा ककरा लग कोन प्रश्न जाएत, ई स्पष्ट भेल।

सुमित्रा आँगनमे पहुँचलथि तँ कहलनि जे लक्ष्मणक पाछाँ राति जागबाक देय हुनकरो अछि। उर्मिला तुरन्त उठलीह, मुदा सुमित्रा हुनका बैसबाक संकेत देलनि। “हम बूढ़ भऽ रहल छी, मुदा अपन गप कहि सकैत छी,” ओ कहलनि। “हमर सेवामे जे स्त्री रहत, ओकर नाम हमरा पुछि कऽ तय करब। ओ थाकत तँ ककरा बजाएब, ई सेहो।” उर्मिला पहिल बेर एहि निर्णयमे सासुक अनुमति मात्र नहि, सहकर्मी-जकाँ साझेदारी देखलीह। सुमित्रा फेर कहलीह, “लक्ष्मण जे धर्म मानि चलल छथि, ओकर भार अहाँ पर अकेले नहि पड़े। हमहूँ एहि घरमे छी।”

लक्ष्मण फेर आएलाह तँ उर्मिला कपड़ाक गट्टर हुनका देलीह। ओ पुछलनि, “अहाँ हमरासँ रुसल छी?” उर्मिला कहलनि, “रुसनाइमे जे प्रेम अछि से अहाँ बुझैत छी। मुदा हमर प्रश्नकेँ केवल रुसनाइ मानब तँ ओकर उत्तर कहियो नहि भेटत।” लक्ष्मण हुनकर हाथ धरलनि। ओ कहि सकैत छलाह जे घुरि आबि सभ ठीक कऽ देताह, मुदा एहन वचनक सत्य हुनका मालूम नहि छल। ओ मात्र कहलनि, “अहाँ जे व्यवस्था कएलहुँ, हम ओकरा स्मरण रखब।” उर्मिला हाथ छोड़बैत कहलीह, “स्मरणसँ एतय भात नहि पकत। जे सुनलहुँ से ककरो आगाँ सेहो कहब।”

विदेहपुरमे ओही वर्षाक राति उर्मिला अस्पतालक कपड़ाक गट्टर लग ठाढ़ छलीह। गाड़ी आबि गेल छल, मुदा ओकर चालक हाथमे देल कागदपर केवल ‘दिनक ढुलाई’ लिखने छल। दिन ढलि चुकल छल, दोसर पालीक घंटा बढ़ि रहल छल। उर्मिलाक माथपर पसीना छल; घाटसँ कपड़ा उठबैत हुनकर बाँहि दुखा रहल छल। ओ गाड़ीपर गट्टर चढ़एबाक ठाम ओकरा जमीनपर सीध कऽ रखलीह।

“आब फेर की अटकल?” चालक पुछलक। उर्मिला कहलीह, “काज नहि अटकल। रातिक हिसाब अटकल अछि।” चालक कागद देखौलक। “एहिमे हस्ताक्षर करा दिअ। अस्पतालमे कपड़ा देरीसँ गेल तँ हमरा जवाब देबए पड़त।” उर्मिला उत्तर देलीह, “हमरा सेहो। मुदा अहाँक कागदमे एखन लिखल अछि जे ई सभ दिउसे उठाओल गेल। दिनक पाँतिमे रातिक काम कोना धराय?”

सरिता ओसारसँ बाहर अएल छलीह। हुनका हाथमे गरम पानिक लोटा छल। ओ उर्मिलाकेँ पहिने दू घूँट पियौलीह। नैरा सेहो पहुँचल छलीह, मुदा ओ बहस अपन हाथमे नहि लेलीह। पिछला दिन सभामे रुहानीक कुर्सी आ बोलबाक अधिकारक प्रश्न हुनका याद छल। ओ पुछलीह, “उर्मिला दी, अहाँ चाहैत छी हम कागद पढ़ि दी, कि पहिने अहाँ अपन शर्त कहब?” उर्मिला कहलीह, “कागद पढ़ि दिअ। शर्त हम कहब।”

कागदमे तीन गट्टरक संख्या छल, मुदा उठएबाक समय नहि। चालक कहलक जे अस्पतालक आपूर्तिक खाता खोलनिहार कर्मचारी भोरसँ पहिने नहि भेटत। उर्मिला गट्टरक कपड़ामे बाँन्हल अलग चिन्ह देखौलीह। “ई दूटा धुलल चादरक अछि, ई तेसर रोगीक उपयोगक अलग कपड़ा। तीनूकेँ एक्के गिनतीमे नहि भरू। अस्पतालक भीतर अलग-अलग ठाम जायत।” चालक एक क्षण लेल चुप भऽ गेल। ओकरा कपड़ा पहुँचएबाक जल्दी छल; उर्मिलाकेँ कपड़ा गलत ठाम पहुँचलाक दोषसँ बचबाक जल्दी।

नैरा लिखबाक लेल कापी खोललीह। उर्मिला रोकलीह। “ई अहाँक प्रमाणक कापी अछि। हमर मेहनतानाक हिसाब ओहिमे रखलासँ काल्हि अस्पताल कहत ई निजी लिखावट अछि। हम अपन रजिस्टर निकालैत छी।” ओ पुरान कपड़ाक झोरामे सँ छोट रजिस्टर निकाललीह। एहि वर्षक मजदूरी-प्रविष्टिक किछु पन्ना भीजलासँ मुड़ि गेल छल। उर्मिला नव पाँति खींचलीह—‘रातिक अतिरिक्त उठान’, ‘कुल गट्टर’, ‘गाड़ी आयल समय’, ‘अस्पतालमे पहुँचबाक समय’, ‘भुगतान शेष’।

चालक कहलनि, “आब ई सब लिखैत भोर करब?” उर्मिला कागद आगाँ रखलीह। “समय अहाँ देखू। जतेक देरि लिखब ओहो हमर समय अछि। मुदा अहाँ चाही तँ अस्पताल फोन कऽ कहू जे ई तीन गट्टर देरीसँ पहुँचत, कारण मजदूरीक हिसाब नहि बनल।” चालककेँ ई बात कठोर लगल। ओ अपन फोन निकाललक, मुदा नम्बर मिलएबाक पहिने पूछलक, “संग हमरो समय लिखब?” उर्मिला कहलीह, “अहाँक काजक समय अहाँक नामसँ। हमर नामपर नहि।”

अस्पतालक रात्रि-द्वारपर कपड़ा स्वीकार करनिहार कर्मचारीक संग फोनपर बात भेल। ओ कहलनि जे आपूर्तिक रसीद एखन काटि देताह, मजदूरीक निर्णय ठेकेदार करथिन। उर्मिला एहि भेदकेँ स्पष्ट बुझैत छलीह। ओ कहलीह, “प्राप्तिक रसीद काजक प्रमाण

अछि। मेहनतानाक स्वीकृति नहि। दुनू अलग चाही।” कर्मचारी गिनती आ पहुँचबाक समय दर्ज करबाक सहमति देलनि। चालक अपन हाथसँ उठानक समय लिखलक। एतबासँ धन नहि भेटल, मुदा राति केँ दिन बनाकऽ हिसाब बन्द करबाक बाट रोकल गेल।

गाड़ी चलल तखन नैरा पूछलीह, “हम संग चली?” उर्मिला कहलीह, “अहाँक घरमे माइक काज अछि। हम एक बेर गाड़ी संग जएब। मुदा ओतय जरूरत पड़ल तँ फोन करब।” सरिता एकटा रोटी आ बचल तरकारीक डिबिया देलनि। उर्मिला मुँह बना कऽ कहलीह, “हमरा राति काज पर पठबैत छी कि बारातमे?” सरिता हँसलीह। “बारातमे जे भोज भेटैत अछि ओतय बासनक हिसाब के रखैत अछि? अहाँक लेल ई रोटी हमर घरक अछि, अस्पतालक आपूर्तिक नहि।” उर्मिला डिबिया झोरामे रखि देलीह। हुनकर थकान कम नहि भेल, मुदा आँखिक कात छोट हँसी आबि गेल।

अस्पतालक पाछाँवला दुआर लग पहुँचित गाड़ी फेर रुकल। भीतरक खण्डमे साफ कपड़ाक गट्टर अलग राखबाक ठाम बदलल गेल छल; पुरान बाटपर किछु माटि आ पानि जमा छल। उर्मिला दरबानसँ पुछलीह जे नव ठामक सूचना धुलाईघर धरि किएक नहि पहुँचल। दरबान कहलनि, “हमरा कहबाक आदेश नहि छल।” उर्मिला पलटि कऽ पुछलीह, “तँ बदलल जगहक देरी ककर खाते लिखत?” एहिबेर ओ आदेश देबाक शब्द नहि, काजक क्रम पुछि रहल छलीह। कर्मचारी बत्ती लऽ कऽ आगाँ आयल; गट्टर अलग-अलग गनल गेल।

दुआर लग सरस्वती ठाकुर अपन कपड़ाक झोराक फीता बाँन्हि रहल छलीह। झोरामे कंघी, केंची, कपड़ा ढाँकबाक सुथर पट्टी आ चोटी बनएबाक सामान छल। हुनक छोट काज अस्पतालक बाहर रोगीक परिजन, श्रमिक आ परिचरसभक बाल-दाढ़ी सम्हारब छल। एखन ओ एक रोगिणीक वृद्ध मायक बाल सुलझा कऽ निकलल छलीह; महिला कहने छलीह जे दिनभर चिकित्सकक बाट जोहैत अपन केश सम्हारबाक अवसर नहि भेटल। सरस्वती समय देलनि, काज कएलनि, आ तय शुल्कक रसीद लिखि देलनि।

उर्मिला हुनका पहिने देखल छलीह, मुदा नाम नहि पूछने छलीह। सरस्वती उर्मिलाक रजिस्टर देखिकऽ कहलीह, “अहाँ सेहो रातिक हिसाब लिखैत छी?” उर्मिला उत्तर देलीह, “अहाँ सेहो?” सरस्वती झोरासँ कागद निकाललीह। “कियो कहैत अछि जे केंची दू बेर

चलौलहुँ, एहिमे समय की लागल। मुदा बाल काटबासँ पहिने पानि माँगब, आसन लगएब, साफ कपड़ा बदलब, ई सभ काज के गनत?” उर्मिला मुस्की देलीह। “जे अपन हाथसँ करैत अछि, पहिने ओ गनत।”

सरस्वती अपन बेटीकेँ बाहर प्रतीक्षा करैत देखलीह। बेटी हाथमे किताबक संग कोनो प्रशिक्षणक सूचना-पन्ना पकड़ने छलीह। ओ पुछलक, “माए, हम काल्हि ओहि कक्षमे जा सकैत छी?” सरस्वती कहलीह, “पहिने घरक हिसाब देखब। फीस आ आबए-जएबाक दाम निकालब। अहाँ जे सीखए चाहैत छी, ओकरा हमर झोराक कैचीमे बान्हब नहि।” बेटी कहलसँ पहिने कने ठमकि गेलीह, मानो स्वीकृतिक एतेक साफ वाक्य सुनबाक अभ्यास नहि छल। सरस्वती हँसलीह, “ककरो बाल छोट करए जानब जीवन भर सभक सपना काटबाक अधिकार नहि दैत अछि।”

उर्मिला ओहि दुनूक गप सुनैत अपन रजिस्टरक पन्ना मोड़ि रहल छलीह। सरस्वती पुछलीह, “बेटी पढ़त तँ घरक आय के देखत, लोक हमरा ई कहैत अछि। मुदा ओ सभ हुनकर सीखबाक समय नहि गनैत।” उर्मिला कहलीह, “ई प्रश्न हमरा सेहो रोज सुनए पड़ैत अछि—घरक काम के करत, कपड़ा के धोएत, रोगीक गट्टर के उठाओत। काजक उत्तर भेटि सकैत अछि; मुदा उत्तर केवल एक स्त्रीक देह किएक?” सरस्वती एहि बातपर हँसलीह नहि। ओ बेटीकेँ कहलीह, “आब घर चलू। काज भोरमे फेर भेटत।”

एहि बीच चम्पा अस्पतालक भीतरसँ बाहर अएल छलीह। माइक जाँचक लेल ओ रातिसँ बैसल छलीह। सरस्वतीकेँ देखिकऽ कहलनि, “अहाँक फीता काल्हि हमरा देबए छल, मुदा हम घर नहि पहुँचि सकलहुँ।” सरस्वती उत्तर देलीह, “काल्हि देब। राति भर बैसल लोकसँ उधारी माँगबाक समय ई नहि।” चम्पा जेबमे फोन देखलीह आ फेर भीतर राखि देलीह। ओ रुग्णालयक दुआरपर ठाढ़ लोकक चेहरा देखौलीह; ककरो परिजन निजता बचबए कपड़ा उठा कऽ ओट बनौने छल। चम्पा कहलीह, “एहि ठाम सभक खबर पुछल जाइत अछि, मुदा सभ खबर सभकेँ देबाक नहि होइत।” उर्मिला अपन गट्टर दिस बढ़ैत केवल एतबा कहलीह, “अपन बात कखन कहब, से अहाँ तय करू।”

गट्टरक प्राप्तिपत्र लिखाइत-लिखाइत राति गहीर भऽ गेल छल। उर्मिला साफ कपड़ा अलग कऽ हस्तान्तरणक समय देखलीह। रजिस्टरमे रातिक अतिरिक्त घण्टा लिखल

गेल, मुदा भुगतानक घर खाली रहल। कर्मचारी कहलनि, “हम ई समयक साक्षी लिखि सकैत छी; दाम तय नहि कऽ सकैत।” उर्मिला ओ सीमा स्वीकार कएलनि, मुदा खाली घरपर अपन अंगूठा नहि लगौलनि। ओ लिखलीह—‘भुगतान अनिर्णीत’, आ कागदक एक प्रति माँगलनि। कर्मचारी पहिने झिझकल, फेर नकल देलनि। एकटा उत्तर भेटल छल; अगिला विवाद एखन बाकी छल।

उर्मिलाकेँ अगिला कार्तिकक घाट-आदर दिवस याद पड़ल। ओ चाहैत छलीह जे ओहि बेर केवल घाटपर फूल आ दीप नहि सजए, धोअनिहार सभक कामक समयक पाटी सेहो लगए। के कतेक कपड़ा ढोअलक, कोन बाट बन्द रहल, रातिक पहरमे ककर बदली भेटल—ई सभ लोकक सामने पढ़ल जा सकए। फेर हुनका बुझाएल जे एखन ओहि पर्व धरि महीना शेष अछि। रातिक बीचमे भविष्यक व्यवस्था सोचब सुख दैत छल, मुदा आइक देहक थकानकेँ ओहिसँ मुक्ति नहि भेटैत छल।

घुरैत उर्मिला सरस्वतीक बेटीकेँ सड़कक कात किताब पढ़ैत देखलीह। एकटा खराब बल्बक नीचाँ ओ शब्द मिलाएबामे आँखि सिकोचने छलीह। सरस्वती ओकरा बुझौलीह जे एतेक अन्हारमे नहि पढ़ए। बेटी कहलक, “घरमे काज शुरू भऽ जाएत तँ समय नहि भेटत।” सरस्वती ओकर किताब बन्द नहि कएलनि। ओ कहलनि, “तँ घरमे हम सभ समयक भाग बनायब। मुदा आब पहिने बाट देखू।” उर्मिलाकेँ अपन रजिस्टरक नव पाँति याद पड़ल—समय गनब केवल दाम लेल नहि, अपन जीवनक ठाम बनएबाक लेल सेहो होइत अछि।

अयोध्यामे साँझ पड़िते उर्मिला अपन सखीक संग छोट अँगनामे बैसलीह। प्रस्थानक कोलाहल कम भऽ गेल छल। सखी फूलक मुरझाएल माला खोलि नव धागामे पात सजा रहल छलीह। “अहाँक आँखि लाल किएक?” ओ पुछलीह। उर्मिला कहलीह, “जागल छी। आ कनेक रोएलो छी।” सखी किछु कहबाक बदला पातक बीचक गाँठ खोललीह। उर्मिला फेर कहलनि, “लोक कहत जे उर्मिला एतेक बरख धैर्यसँ बितौलीह। मुदा आइ हम केवल आइक राति बिताएब। काल्हिक राति काल्हि देखब।”

सखी पुछलीह, “अहाँकेँ कोन बातमे आनन्द भेटैत छल?” उर्मिला अकचका गेलीह, फेर कहलीह, “श्रुतकीर्तिक गीतक बीच गलत सुर पकड़ब, माण्डवीक संग फूलक रंगपर

झगड़ा करब, अपन हाथसँ छोट वस्त्र सीब।” सखी मुस्की दैत पुछलीह, “तँ ई सभ बन्द किएक?” उर्मिला उठि धागा सम्हारलीह। “बन्द नहि। जखन आवश्यकता होयत, हम काज करब; जखन मन होयत, गीतो गाएब। दुनूक बीचक अधिकार छोड़ि नहि देब।”

विदेहपुरमे भोरसँ पहिने उर्मिला घर घुरलीह। सरिता ओसारक भीतरे दीपक नहि, छोट बत्ती जरा रहल छलीह। नैरा दरबज्जा खोलि पुछलीह, “कपड़ा पहुँचि गेल?” उर्मिला प्राप्तिपत्र आगाँ रखलीह। “पहुँचि गेल। समय लिखल अछि। पैसा एखन नहि।” नैरा कागद देखिकऽ कहलीह, “ई प्रति अहाँक लग रहत।” उर्मिला उत्तर देलीह, “रहत। मुदा एखन एकटा दोसर जरूरी काज अछि।” सरिता पुछलनि, “की?” उर्मिला हँसिकऽ कहलीह, “सुतब।”

नैरा चुपचाप खिड़कीक परदा खींचि देलीह। ओ सरिताक मृत्यु-प्रविष्टि आ सत्ताइस नामक पन्ना वाला कापी नहि खोललीह। एहि भोरमे कियो नव सुराग नहि भेटल, तइयो एकटा रातिक श्रमकेँ दिनक झूठ हिसाबमे समाएबासँ रोकल गेल छल। उर्मिलाक झोरामे रसीदक नकल सुरक्षित छल; हुनकर शरीरकेँ एखन कागद नहि, निद्रा चाही छल। बाहर पहिल गाड़ी चलबाक आवाज उठल। भीतर उर्मिला पहिल बेर निश्चिन्त भऽ आँखि मुनलीह।

अध्याय १९ • चम्पाक सन्देश

भोरक उजासमे चम्पा अपन फोनक पर्दापर पड़ल एकटा अँगुरीक निशान पोंछि रहल छलीह। राति अस्पतालसँ घुरलाक बाद हुनका नींद बहुत कम भेटल छल। माइक दवाईक समय, भाड़ाक बचेबाक हिसाब आ कामपर पहुँचबाक घण्टा ओ पहिने लिखि लेने छलीह। तेकर बाद फोनमे एकटा निजी सन्देश खोललनि। शब्द थोड़ छल, मुदा ओकरा लिखबामे देरि लागल छल—अगिला अवकाशक दिन ककरो संग हाट घुमबाक, गरम जलेबी खएबाक आ बिना ककरो देखरेखक बइसबाक इच्छा। ई इच्छा कियो हुनकरा दानमे नहि देने छल। अपन मेहनतिक बीचसँ ओ एक दिन निकालए चाहैत छलीह।

दुआरपर रुहानी आबि पुछलनि, “आइ फेर अस्पताल?” चम्पा फोन बन्द कऽ कहलीह, “माइक जाँचक रिपोर्ट लेबाक अछि। पहिले काम, फेर अस्पताल।” रुहानी आश्रयक खाता लिए ठाढ़ छलीह। पिछला सभामे चम्पाक उपचारक निजी विवरण नहि पढ़ल जाए, एहि आपत्तिक प्राप्ति-पन्ना हुनकर हाथमे छल। “ई नकल अपन लग राखि ले,” रुहानी कहलीह। चम्पा पन्ना सम्हारैत उत्तर देलीह, “प्राप्ति भेलासँ बात मानल गेल नहि कहल जाए। मुदा जे पन्ना हमरा लेल बनल अछि, से कमसँ कम हमरा लग रहए।”

आश्रयक छोट ओसारमे रुखसाना भातक डेकची उतारि रहल छलीह। चम्पा एक कौर चखि कहलीह जे नोन कम अछि। रुखसाना तुरन्त कटोरी आगाँ कएलनि। “अपन थारीक नोन अहाँ बढ़ाउ; सभक भातमे एक संग नहि देब।” रुहानी हँसि पड़लीह। चम्पा सेहो हँसलीह। एहि साधारण गपमे रातिक थकान कनेक कम भेल। रुखसाना दरबज्जाक कात टाँगल सभाक सूचना पढ़ि कहलीह जे आइ भवनमे पिछला सप्ताहक सहायता आ उपचार-रसीदक सार्वजनिक समीक्षा अछि। चम्पा निश्चय कएलनि जे माइक निजी कागद घरमे रखि केवल अपन भाड़ाक प्राप्ति संग लए जएतीह।

नगरक सामुदायिक भवनमे बरखाक पानि छतसँ नहि, सीढ़ीक कातक टुटल नालीसँ टपकि रहल छल। दुआरपर सफाइक महिला बाल्टी रखि ओहि पानिक बाट रोकि रहल छलीह। भीतर सभाक मेजपर दू प्रकारक कागद छल—सार्वजनिक खर्चक तालिका आ व्यक्तिक सहायता-आवेदन। नैरा पहिनेसँ पहुँचि कऽ सचिवकेँ स्मरण करौलीह जे दूनू

एक्के बैठकमे राखलासँ दूनू सार्वजनिक नहि भऽ जाइत। सचिव कहलनि, “जकरा पढ़बाक होएत, ओ सभक आगाँ जाँचि लेब।” नैरा उत्तर देलीह, “जाँच आ पढ़ि सुनाएब एक नहि। पहिने सीमाक निर्णय कऽ लिअ।”

चम्पा भीतर अएलि तँ रुहानी हुनका पाछाँक चौकीपर बइसबाक संकेत देलनि। पिछला बेर रुहानीक नाम नील कपड़ावाली कुर्सीपर छल, मुदा मताधिकार नहि। आइ ओ अपन नामवाली जगह नहि माँगलीह। चम्पा आगाँ रखल कागद देखैत पुछलनि, “एहि सुनवाईमे हमर काज की?” रुहानी कहलीह, “जे तोरा सम्बन्धित अछि, ताहिपर तोहर बात। हमर नामसँ तोहर सहमति नहि।” चम्पा हुनका देखलीह। आश्रयक भीतर ई वचन पहिने देल गेल छल; आइ लोकक आगाँ एकर परीक्षा होएबाक छल।

मेजक दोसर कात करीम डफाली अपन ढोलकक पट्टा सम्हारि रहल छलाह। हुनका फागुनक लोकपाठमे गीत गाएबाक पहिनुका मेहनताना मिलि गेल छल, मुदा नव रंग-रोगनक खर्च एखन बाकी छल। दरबज्जाक कात दू युवक एकटा पर्ची लऽ हुनका लग पहुँचल। पर्चीमे आसन्न स्थानीय चुनावक प्रचार-गीत लिखबाक प्रस्ताव छल। एक युवक कहलनि, “सभक ध्यान एखन चम्पाक बातपर अछि। ओकर सन्देशक दू पाँति पकड़ि एकटा तेज गीत बना दिअ; भीड़ जुटत।” करीम पर्ची फेर हुनकें धरि देलनि। “जे बात ओकरा निजी रूपमे कहल गेल, ओ हमरा ढोलकक माल कखन भेल?”

युवक खिसिआ कऽ कहलनि, “अहाँ राजनीतिक गीत कहियो नहि गबैत छी?” करीम उत्तर देलनि, “गबैत छी। सड़क, मजदूरी, गलत हिसाबपर गबैत छी। मुदा एक स्त्रीक निजी बात चोराकऽ ओकरा हँसीक वस्तु बनाबए लेल नहि।” युवक टेबुलपर अग्रिम रकम रखए चाहलक। करीम ओकरा छुअलनि नहि। “ढोलकक चाम हमरा अपन कमाइसँ चढ़एब,” ओ कहलनि, “अपमानक दामसँ नहि।” दुनू युवक चलि गेलाह। हुनका सभक प्रस्ताव के पठौने छल, करीमकें स्पष्ट नहि छल; ओ अनुमानसँ ककरो नाम नहि जोड़लनि।

सभापति पहिने सार्वजनिक व्यय पढ़एबाक आदेश देलनि। सफाइक टोलीक मजदूरी, पानि-निकासी सर्वेक खर्च आ आश्रयमे दवाई आनबाक भाड़ा अलग-अलग सुनाओल गेल। चम्पा अपन भाड़ाक प्राप्ति देखलीह; ओकर तारीख ठीक छल, रकमक एक अंश एखन शेष छल। ओ हाथ उठौलीह। सचिव कहलनि जे अन्तमे प्रश्न लेल जाएत। एहि

बीच सामनेक कुर्सीसँ एक आदमी छोट कागद उठबैत कहलक, “सहायताक दुरुपयोगक उदाहरणो सुनबाक चाही। ई देखू, लाभार्थी की लिखैत अछि।” ओ कागद सभापतिक हाथमे देलक।

सभापति कागद पढ़ब शुरू कएलनि। चम्पाकेँ पहिल दू शब्द सुनिते देह ठंडा लगल। ई हुनकर अपन फोनसँ पठाओल निजी सन्देशक शब्द छल, मुदा बीचक पाँति हटाओल गेल छल। एकर पाछाँ जकरा पठाओल गेल, ओकर नामो आधा छापल छल। घुमबाक आ जलेबी खएबाक सामान्य इच्छा सुनौनिहारक हँसी आ टिप्पणीमे बदलि रहल छल। कियो कहलक, “इलाजक सहायता चाही, आ घूमबाक खर्चो?” दोसरक हँसी उठल। चम्पाक कन्हा जकड़ि गेल। ओ बुझि नहि सकलीह जे ई पन्ना फोनसँ निकलल कोना।

“रोकू,” चम्पा ठाढ़ भऽ कहलीह। सभापति पढ़ब नहि रोकलनि; ओ कहला जे सार्वजनिक आरोप आयल अछि, तकर उत्तर अवसर भेटत। चम्पा फेर कहलीह, “उत्तर देब, मुदा पहिने हमर चोरी कएल निजी बातक पाठ रोकू। ई हमर सहमतिक बयान नहि।” हुनकर स्वर ऊँच छल, मुदा ओ ककरो गारि नहि दैत छलीह। सभामे किछु लोक हुनकर आवाजपर नाराज भेलाह। नैरा ओहि समय माइक लग नहि दौड़लीह; ओ सचिवसँ पुछलीह जे एहि कागदकेँ सार्वजनिक करबाक अनुमति के देलक आ ओकर मूल प्रति कतय अछि। सचिव चुप रहल।

रुहानी अपन चौकीसँ उठि सभापतिक आगाँ अएलि। “चम्पा स्वयं उपस्थित छथि,” ओ कहलीह, “अपन वाणी हुनक लग अछि। हुनक निजी सन्देश पढ़ि सुनाएब गवाही लेब नहि भेल।” सभापति कहलनि जे जँ सन्देश साँच अछि तँ लुकाएब किएक। चम्पा उत्तर देलीह, “हम साँचक विरोध नहि करैत छी। हम एतय जकर लेल आयल छी—माइक इलाज आ अपन मजदूरीक हिसाब—ओहि पर जवाब देब। हमर प्रेम, हमर छुट्टी, हमर फोनक दोसर कातक मनुष्यक जीवन एहि सभाक सम्पत्ति नहि।”

एक वृद्ध सदस्य पुछलनि, “एहि सन्देशमे अहाँ अपन परिचितकेँ भेटबाक कहलहुँ, ई स्वीकार छी?” चम्पा हुनका दिस सोझ तकलीह। “हम ककरो भेटबाक लिखने छी। ई अपन इच्छा अछि। जे व्यक्ति हमरा प्रिय अछि, हुनकर नाम सभाक सम्मुख कहबाक दायित्व हमरा नहि। हम सहायता लेल आवेदन कएलहुँ, अपन जीवनक प्रत्येक पत्र

सार्वजनिक करबाक वचन नहि देलहुँ।” सभाघरमे पहिल बेर किछु देरि चुप्पी रहल। चम्पा ओहि चुप्पीकेँ अनुमोदन नहि मानलीह; ओ केवल अपन वाक्य पूरा कएलनि।

करीम ढोलक उठा कऽ पाछू रखि देलनि। नव युवक हुनका लग आबि धीरे सँ कहलनि, “देखलहुँ, गीतक मौका छल।” करीम कहला, “आइ हमर ढोलक नहि बाजत। जखन तक सभाक काम ठीक ठाम नहि घुरत, गीतक स्वर फेर लोककेँ एहि अपमानक दर्शक बनाओत।” ओ सभापतिक लग पहुँचि बतौलनि जे निजी सन्देशपर बनएवला गीतक प्रस्ताव ठुकरौने छथि। “ककरो प्रचार लेल हमर नाम नहि लिखू” ओ कहलनि। “जँ गीत चाही तँ आजुक मजदूरीक बकाया पढ़ू, धुन हम अलग तय करब।” हुनकर इनकार गीतकेँ बन्द नहि करैत छल; गीतक मालिकाना आ उद्देश्य अलग करैत छल।

भवनक बाहरी कोठरीमे रहीना ठकुराई कागदक नकल आ जिल्द लगएबाक छोट काज करैत छलीह। हुनकर टेबुलपर पुरान पेपर-कटर, सूत, गोंद आ काँपी बनएबाक अलग दामक पर्यी छल। कार्यालयक एक आदमी हुनका सँ भोरमे किछु पन्नाक नकल करौने छल। रहीना मूल कागद पढ़ि जाँचबाक अधिकारी नहि छलीह, मुदा नकलक संख्या आ सौंपबाक समय अपन रजिस्टरमे लिखैत छलीह। भीतरी सभासँ उठल चम्पाक आवाज सुनि ओ कटर रोकलीह। भीतरी मेजपर घुमैत पन्नाक कागदक आकार हुनका पहिचानल सन बुझाएल, मुदा आकार मिललासँ मूल एक्के होइत अछि, ई ओ नहि मानलीह।

चम्पा बाहर अएलि तँ पानीक गिलास पकड़ैत हाथ काँपि रहल छल। रहीना अपन कुर्सी खाली करि देलीह। “बैसू” ओ कहलीह, “एतय कियो फोटो नहि लैत।” चम्पा पुछलनि, “अहाँ कागदक नकल बनबैत छी?” रहीना सिर हिलौलीह। “हँ। दाम आ समय लिखैत छी, कागदमे लिखल बातक सच्चाइ नहि बेचैत छी।” चम्पा कहलीह, “हमरा अपन वचनक मूल क्रम सुरक्षित चाही, आ ई जानबाक अछि जे कतेक नकल बाँटल गेल।” रहीना उत्तर देलीह जे हुनका लग जतेक काज आयल ओकर हिसाब दऽ सकैत छथि, सभ शहरक नकलक दावा नहि।

रहीना अपन खाता खोलि चम्पाकेँ एकटा पाँति देखौलीह—भोरक नकल, कागदक संख्या, प्राप्तकर्ता लेल छोड़ल क्रमांक। ओ नामक घर औरि सँ नहि छुपौलीह; केवल कहलनि जे बिना अधिकार ककरो निजी सम्पर्क-पता नहि देब, मुदा शिकायतक जाँचमे

अधिकृत व्यक्ति लग रजिस्टर प्रस्तुत करतीह। चम्पा एतबा सुनि पहिल बेर गिलास पूरा पिबि सकलीह। रहीनाक परिवारक लोक एहि प्रकारक झगड़ासँ दूर रहबाक सलाह दैत छलाह; ओ एखन परिवारपर आरोप नहि रखलीह। अपन काजक साँच हिसाब राखब आ ककरो अपमानक अभियोग लगाबब दू अलग रास्ता छल।

नैरा बाहर पहुँचलि तँ चम्पा हुनका एकटा सीधा प्रश्न कएलनि, “हमर फोनक बात अहाँ देखलहुँ?” नैरा कहलीह, “सभामे जे पढ़ल गेल, ओकर पहिल अंश सुनलहुँ। हम मूल सन्देश देखल नहि अछि।” चम्पा फोन निकालि फेर रोकि लेलनि। “हम अहाँकेँ सम्पूर्ण निजी बातचीत नहि देखाएब,” ओ कहलीह। “मुदा जतेक पाँति कटल गेल, तकर तुलना लेल हम अपन चुन्नल अंश हुनका देखाएब जिनका जाँचक जिम्मेदारी भेटत।” नैरा उत्तर देलीह, “ई निर्णय अहाँक। हमर अनुमानकेँ प्रमाण कहबाक जल्दी नहि।”

तीनू भीतर घुरलीह। रुहानी पहिने सचिव लग कागद माँगलीह, मुदा चम्पा अपन हाथ आगाँ बढ़ौलीह। ओ सभाक मेजपर लिखित निवेदन रखलीह। एहिमे तीन माँग छल—चोरी कएल सन्देशक सार्वजनिक पाठ आ वितरण तुरन्त रोकल जाए; जे प्रति पढ़ल गेल अछि से नष्ट नहि कऽ सुरक्षित राखल जाए, जाहिसँ ओकर स्रोत आ कटौती जाँचल जा सकए; आ कार्यवृत्तमे स्पष्ट लिखल जाए जे चम्पा एहि पाठ लेल सहमति नहि देने छलीह। चम्पा निवेदनक नीचाँ अपन हस्ताक्षर कएलनि। रुहानीक नाम केवल संग आयल साक्षीक रूपमे लिखल गेल।

कबीर ओहि समय भवनक बाहर विधिक सहायता-कक्षमे दोसर आवेदकक कागद देखैत छलाह। नैरा हुनका सँ केवल निवेदनक प्रक्रिया पुछलीह। कबीर भीतर आबि चम्पाकेँ कहलनि, “अहाँ चाही तँ एही शिकायतक नकल निजी सूचनाक अनधिकृत प्रसार रोकबाक लेल सम्बन्धित अधिकारी लग देल जा सकैत अछि। के चोरी कएलक, से हम एखन नहि जनैत छी।” चम्पा अपन निवेदनमे अलग पाँति जोड़लीह—‘विधिक उपचारक अधिकार सुरक्षित’। कबीर हुनकर हस्ताक्षरक पाछाँ अपन नाम नहि जोड़लनि; केवल नकल जमा करबाक उचित काउण्टर बता देलनि।

सभापति कहलनि, “जँ प्रति रोकब तँ जाँच केना चलत?” चम्पा उत्तर देलीह, “जाँच लेल सुरक्षित रखब आ सभाघरमे बाँटब एक नहि।” नैरा कागदक प्रमाण-सम्बन्धी अन्तर

बुझीलनि—मंचपर पढ़ल छाँटल प्रति, फोनमे मूल बातचीत, आ कागद बनबाक प्रक्रिया। एहिमे सँ एको चीज स्वयं नहि बतबैत जे चोरी के कएलक। सभापति पहिने सभासँ पुछबाक प्रस्ताव रखलनि, किन्तु सचिव स्मरण करौलक जे ककरो निजी सन्देश पढ़बाक अधिकारपर दर्शकक बहुमत देलासँ स्वामित्व नहि बनैत।

सभाक दू सदस्य विरोध कएलनि। एक कहलक जे सार्वजनिक सहायताक हिसाबमे लाभार्थीक आचरण सेहो देखबाक होएत। चम्पा कहलीह, “जतय सहायताक शर्त लिखल अछि, तकरा देखाउ। इलाजक रसीद झूठ अछि तँ जाँचू। हम छुट्टीक दिन जलेबी खएबाक सोचैत छी, एहि कारण दवाईक दाममे हेरफेर सिद्ध नहि होइत अछि।” एहि बेर रुखसाना पाछाँसँ कहलीह, “जलेबीक बिल जँ चाही तँ बाजारसँ लिअ; दवाईक पर्चीक संग किएक जोड़ैत छी?” किछु लोक हँसलाह, मुदा एहि बेर हँसी चम्पापर नहि छल।

सचिव निवेदनक प्राप्ति लिखलनि। सभापति ओहि दिनक बैठक लेल पन्नाक आगाँक पाठ रोकबाक घोषणा कएलनि आ बाँटल प्रति वापस लेबाक आग्रह कएलनि। ई आग्रहसभक हाथसँ नकल घुरि आयल, एहन प्रमाण नहि छल। जे प्रति टेबुलपर छल से लिफाफामे राखि तारीख आ उपस्थित दू हस्ताक्षरक संग बन्द कएल गेल। चम्पा लिफाफा परतनि; ओकर भीतरक कागद पढ़बाक नहि माँगलीह। ओ केवल पुछलनि जे नकलक गिनती, लिफाफाक जिम्मा आ अगिला जाँचक तिथि कार्यवृत्तमे स्पष्ट रहत की नहि। उत्तर भेटल—आब लिखल जाएत।

रहीना भीतर आबि अपन नकल-पंजीक क्रमांक लिखल प्रमाण-पर्ची सचिवक टेबुलपर रखलीह। “भोरक काजक एकटा नकल एहि कार्यालय लेल गेल,” ओ कहलीह, “मुदा एतयसँ पढ़ल ओही पन्ना छल, से हम जाँच बिना नहि कहब।” सचिव पर्ची लेलनि। एक सदस्य पुछलक, “अहाँ एहि विवादमे किएक फँसैत छी?” रहीना शांत स्वरमे कहलीह, “जकरा कागद बनएबाक दाम भेटैत अछि, ओकरा कागद कतेक बनल से कहबाक उत्तरदायित्वो अछि। हमर परिवारक नाम अहाँ लेल किछु अर्थ रखैत होएत; हमर हिसाब ओकर बदला नहि।” ओ अपन रजिस्टर वापस लऽ बाहरी कोठरीमे गेलीह।

बैठकक बाद करीम चम्पाकेँ भवनक सीढ़ीपर भेटलाह। ओ पुछलनि जे प्रचार-गीतक प्रस्ताववला पर्ची शिकायतमे लगाओल जाए की नहि। चम्पा कहलीह, “अहाँ अपना

काजपर जे दबाव आयल तकर लेखा राखू। मुदा हमरा नामसँ गानाक मामला अहाँ अपन मनसँ सार्वजनिक नहि करू।” करीम सहमत भेलाह। ओ पर्ची अपन खाता भीतर राखलनि, संगमे अग्रीम रकम नहि लेबाक बात सेहो लिखलनि। हुनका आजुक ढोलकक किराया नहि भेटल छल; ओ सचिवसँ लिखित भुक्तान-स्थिति माँगि चललाह। उचित काज चुनलासँ पेटक प्रश्न समाप्त नहि होइत अछि।

भवनसँ बाहर निकलिते चम्पाक फोनमे ओ परिचितक सन्देश आयल जकरा ओ भोरमे लिखने छलीह। छोट प्रश्न छल—“तोहर दिन ठीक अछि?” चम्पा उत्तर देबाक पहिने बहुत देर तक पर्दा देखैत रहलीह। ओहि व्यक्तिक नाम मंचपर अपूर्ण छापल गेल छल; हुनका सेहो लाज आ जोखिमक सामना करए पड़ि सकैत छल। चम्पा लिखलनि—“हमरा संग एकटा बेजाय बात भेल। एखन विस्तार नहि लिखब। जखन भेटब तँ हम स्वयं कहब।” तकर बाद ओ फोन बन्द नहि कएलनि; केवल जेबमे राखि देलनि। ओकरा अपन प्रिय व्यक्तिसँ बात करबाक इच्छा एखनहुँ छल।

आश्रयमे घुरलाक बाद रुहानी चम्पासँ पुछलनि, “कतेक लोककेँ हम एहि बातक खबर दिअ?” चम्पा कहलीह, “जे कामक जरूरत हो, ओतबे। माइक खबर हमरा सँ पूछिकऽ।” रुहानी सिर हिलौलीह। चम्पा फेर कहलीह, “अहाँ आइ हमरा लेल बोललहुँ, मुदा जखन हम अपन निवेदन पढ़लहुँ तखन अहाँ पाछाँ हटि गेलहुँ। ई हमरा नीक लागल।” रुहानी उत्तर देलीह, “हमरा पाछाँ हटब सीखबाक बाकी अछि।” ओहि उत्तरमे न नेतृत्वक त्याग छल, न अपन महत्त्वक घोषणा; संग रहबाक एकटा कठिन अभ्यास छल।

राति रुखसाना भातक संग आजु जलेबी नहि, चूड़ा आ दही रखलीह। चम्पा हँसिकऽ कहलीह, “आब जलेबीक नाम सुनिते सभ हमर बात बुझि जाएत।” रुखसाना कहलीह, “तोहर भोरक इच्छा अपमानक माल नहि बनत। जखन सचमुच अवकाश भेटत, अपन कमाइक जलेबी खइह।” चम्पा बिना उत्तरक थारी उठौलीह। माइक दवाईक अगिला खर्च, मजदूरी आ घरक किराया ओहि थारीक संग एखनहुँ उपस्थित छल; तथापि भविष्यक एकटा छोट आनन्द बचेबाक अधिकारो हुनकर छल।

नैरा घर पहुँचि सरिताकेँ सभाक प्राप्ति-पन्ना देखौलीह। सरिता ओहि दिन मरेलक साग काटने छलीह। “ककर निजी बात मंचपर पढ़ल गेल?” ओ पुछलनि। नैरा केवल एतबा

कहलीह, “चम्पाक सन्देशक कटौती। ओ स्वयं रोकबाक आवेदन देलीह।” सरिता फेर साग काटए लगलीह। “तोर लग ओकर पूरा सन्देश अछि?” “नहि।” “तँ ओहि खाली ठाममे अपन मनक अनुमान नहि लिखिह।” नैरा माइक बात सुनि कापी खोललीह; पहिल बेर हुनका एहिमे कोनो नव नाम जोड़बाक आवश्यकता नहि बुझाएल।

नैरा दू अलग पाँति लिखलीह—‘सभामे पढ़ल प्रति: मूल अज्ञात’ आ ‘विरोध: चम्पाक हस्ताक्षरसहित प्राप्त’। तेसर पाँति खाली छोड़ि देलीह—‘प्रति बनौनिहारक पहिचान’। ई खाली घर साक्ष्यक कमी छल, रहस्यक सजावट नहि। चम्पाक आवेदनक प्रतिलिपि हुनकर अनुमतिसेँ मात्र जाँचक कागदमे जायत; सरिताक सत्ताइस नामक पन्नाक संग ओकरा एक्के फाइलमे बाँधब अनुचित होएत। नैरा कापी बन्द कएलनि। सरिताक जीवित होएबाक मामला सेहो एखन अपूर्ण छल, मुदा आजु एक व्यक्तिक निजी वाणीकेँ सभाक वस्तु मानबाक रास्तापर छोट अवरोध लागि गेल छल।

दूर भवनक भीतर सचिव बन्द लिफाफा अलमारीक अलग खानामे रखि रहल छल। लिफाफापर ओकरा जे हस्ताक्षर देखाइत छल, ओकरा सेँ ई नहि बुझाइत छल जे पहिल प्रति कहाँसेँ आयल। बाहरी कोठरीमे रहीना अपन नकल-पंजीक पन्ना सुखबाक लेल खोलने छलीह; बरखाक सीलनसेँ स्याही फैलए नहि, ताहि लेल ओ कागदक नीचाँ सूखल कपड़ा रखलीह। डफालीक ढोलक आजु चुप छल। चम्पा आश्रयमे माइक दवाईक डिबिया गनि रहल छलीह। शहरमे अनेक कागद अपन-अपन जगह राखल जा रहल छल; ककरो जीवनक स्वामित्व ओहि कागदमे पूरा समाहित नहि छल।

अध्याय २० • जल्दी प्रकाशन

बरखाक रिमझिम पानि थमि गेल छल, मुदा नगरक सामुदायिक भवनक बाहरी सीढ़ी एखनहुँ पिच्छर छल। भोरमे सफाइक टोली पानि हटएबाक लेल बाँसक पुरान झाड़ू लऽ पहुँचल तँ रातिक सभाक दू कागद नालीमे भीजल भेटल। एकटा सार्वजनिक खर्चक तालिका छल, दोसरमे ककरो नाम आधा मिटल छल। सफाइक महिलाक हाथ ओहि दोसर पन्नापर क्षणभरि अटकल, फेर ओ ओकरा पढ़बाक प्रयास नहि कऽ कार्यालयक बन्द पेटीमे रखि देलनि। कागदक रक्षा करब हुनकर काम छल; ओहिमे लिखल जीवनक निर्णय हुनकर नहि।

नैरा ओहि भोर घरमे कम सुतलीह। चम्पाक सन्देश पढ़ि सुनाओल गेल छल, आ सभाक कार्यवृत्तमे विरोध दर्ज भेलाक बादो हँसीक आवाज हुनकर कानमे बाँचल छल। सरिता चूल्हापर भातक पानि उतारि रहल छलीह। नैरा पूछलनि, “जँ गवाही बहुत जरूरी हो आ ओकरा देनिहार डराइत हो, तँ पहिने कोन काज?” सरिता डेकची ढाकि कहलीह, “पहिने ई बुझ जे गवाही देनिहार तोहर समान जोखिम उठबैत अछि की नहि।” नैरा उत्तर नहि देलीह। हुनकर थैलीमे महेश मंडलक पत्र छल, जकर मोड़ खोलबाक लेल ओ अधीर छलीह।

महेश रेल-पारक छोट मरम्मत-कारखानाक पाछाँ भेटबाक कहने छलाह। ओ पहिने एहि विवादमे अपन नाम जोड़ब नहि चाहैत छलाह। किछु वर्ष पहिने गोदामक सामान ढोएबाक अस्थायी व्यवस्था देखैत हुनका वाहनक प्रवेशसमय लिखबाक काम भेटने छल। ओ समय आ स्थानक नोट राखने छलाह; सामानक भीतर की छल, तकरा हुनकर आँखि नहि देखनहि। ई भेद ओ पहिल भेटमे तीन बेर कहलनि। मुदा गोदामक पाछाँ जे बाट नगरक नक्शामे साधारण बन्द गली देखाओल गेल छल, ओहि बाटसँ रातिमे गाड़ी आ मजदूर निकलैत रहबाक स्मृति हुनका छल।

कारखानामे लोहेक चद्दर घिसबाक आवाज उठैत छल। महेश आ नैरा भीतरक कोठरीमे नहि, बाहर खुला छाजनक नीचाँ बैसलाह। महेश अपन जेबसँ पत्र निकाललनि। “हम जे समय लिखने छी, ओ अहाँ पढ़ि सकैत छी,” ओ कहलनि। “मुदा हमर घरक ठाम आ हमर

परिवारक बाट सुरक्षित भेलाक बादे एहि बातकेँ सार्वजनिक करब। हमर बेटीक विद्यालयक बाट बदलल नहि अछि। हम घर बदलबाक व्यवस्था खोजि रहल छी। एखन नाम नहि, आवाज नहि, ओहि दिनक कामक एहन विवरणो नहि जेकरा सँ लोक हमरा चिन्हि लिअए।”

नैरा पत्रक पहिल पन्ना पढ़लीह। महेश अपन हस्ताक्षरसँ एकटा सीमित सहमति देने छलाह—गोदामक पाछाँक बाटक सामान्य निरीक्षण करबाक लेल नगर-समितिकेँ सूचना देल जा सकैत छल, मुदा साक्षीक पहिचान अथवा गवाहीक सार्वजनिक विवरण सुरक्षा पक्का होएबा धरि नहि। पत्रक अन्तिम पाँतिमे लिखल छल, ‘हमरा देखल बातसँ बाहरक निष्कर्ष हमर नामपर नहि लिखल जाए।’ नैराकेँ पहिल पाँतिक “सूचना देल जा सकैत अछि” शब्द आँखि पकड़ि लेलनि; अन्तिम पाँति ओ पढ़लीह, मुदा ओहि ठाम हुनकर ध्यान ठहरल नहि।

“एकटा सामान्य सूचना आइ निकलि जाए तँ बाहाक माप जल्दी होएत,” नैरा कहलीह। महेश माथ हिलौलनि। “समिति भितरक निरीक्षणक अनुरोध आइ देल जा सकैत अछि। समाचारमे हमर बताओल समय, हमर काम आ घरक दिशा जोड़ब एखन नहि। जँ नाम काटबो, तखनो गिनल-चुनल आदमीक बात सुनि लोक पहिचानत।” नैरा कहलीह जे ओ सावधानी राखतीह। महेश हुनकर कापीक पन्नापर अँगुरी राखि फेर कहलनि, “हमर सावधानीक अर्थ अहाँक सावधानीसँ छोट नहि होअए।” ओ मुस्कुरौलाह नहि।

एही बीच छाजनक दोसर कात चन्द्रा बादी अपन वाद्यक पेटी राखि ठाढ़ छलीह। ओ बाजा आ गायनसँ कमाइ करैत छलीह; नगरक लोकपाठ कार्यक्रम लेल हुनका तीन गीतक पारिश्रमिक देबाक वचन देल गेल छल। पेटीमे छोट झाँझ, कपड़ामे लपेटल तालवाद्य आ गील कागदसँ बचाएल अनुबन्धक प्रति छल। कार्यालयक बाबू कहने छल जे चन्द्रा कार्यक्रमक मेहमान छलीह, भुगतानक अधिकारी नहि। चन्द्रा उत्तर देने छलीह, “गाएल गीत अतिथि नहि, हमर काज छल। जँ सभक सामने मेहनताना निश्चित भेल, तँ हिसाबमे लिखू।”

नैरा हुनका दरबज्जापर भेटलीह। चन्द्रा अनुबन्ध आगाँ कएलनि। ओहिमे तीन गीत आ अभ्यासक समय अलग लिखल छल; यात्रा-भाड़ाक खाना खाली छल। “हमरा सभाक गायक कहि बजा लैत छथि,” चन्द्रा कहलीह, “फेर अपन मनसँ हमर जीवनक कथा बनबैत छथि। ककरो बुझाइत छैक जे हमर देहपर ओकर प्रश्न करबाक अधिकार अछि। हम अपन कला बेचैत छी, अपन देहक इतिहास नहि।” नैरा पन्ना देखलीह आ स्पष्ट कहलनि जे ओ कार्यालयक भुगतान नहि करा सकैत छथि, मुदा खुला खातामे देयक माँग दर्ज करबाक बाट बताइ सकैत छथि। चन्द्रा उत्तर देलीह, “हम बाट जनैत छी। अहाँ केवल ई लिखू जे हम खुद माँगने छी।”

चन्द्राक सहगायिका पाछाँसँ एकटा सुइया आ धागा लऽ अएलीह। वाद्यक पेटीक फाटल पट्टा सिएबाक छल। चन्द्रा टेबुलपर अनुबन्ध रखि पट्टा अपन हाथें पकड़लीह। “ई पेटी नहि रहत तँ हम मंच धरि बाजा लऽ नहि जा सकब,” ओ कहलीह। सहगायिका पुछलनि, “जँ पैसा एखन नहि भेटत तँ अगिला कार्यक्रम?” चन्द्रा उत्तर देलीह, “मंच छोड़ब नहि, मुदा बिना लिखित शर्तक फेर नहि गाएब।” हुनकर स्वरमे क्रोधसँ पैघ अपन कौशलपर भरोसा छल। पेटीक पट्टा सिअल गेल, बकाया एखन खुलल रहल।

महेश छाजनसँ बाहर निकलि रहल छलाह। चन्द्रा हुनका दिस देखिकऽ केवल अभिवादन कएलनि; हुनकर भेटक कारण नहि पुछलनि। नैराकेँ ई साधारण मौन नीक लगल। ओहिठाम प्रत्येक व्यक्ति दोसराक रहस्यक मालिक नहि बनल छल। मुदा नैराक मनमे बाहाक मुँह, पुरनाधारक पुरान नक्शा, अदितिक स्थगित निरीक्षण आ नगरक आगामी बैठक एक संग चलि रहल छल। जतेक दिन विलम्ब, ततेक दिन बन्द निकासी। हुनका लगैत छल जे किछु प्रकाशित भेलासँ अधिकारी हिलताह। ओ एहि विचारक भीतर महेशक घर बदलबाक प्रतीक्षा धीरे-धीरे पछुआ दैत गेलीह।

दुपहरि कार्यालयक छोट कम्प्यूटर-कक्षमे नैरा नागरिक-पत्रक अगिला अंकक पन्ना तैयार करैत छलीह। पहिले ओ केवल सार्वजनिक नक्शाक असंगति आ बाहाक पुनर्मापक माँग लिखलीह। ई बात पहिनेसँ खुला बैठकमे उठि चुकल छल। फेर हुनका महेशक लिखल वाहनसमय याद पड़ल। ओ वाक्य जोड़लीह—‘पश्चिमी गोदामक पाछाँक मरम्मत-कामसँ जुड़ल एक पूर्व कर्मीक अनुसार, रातिक प्रवेश नगर-पंजीमे पूरा नहि

अछि।' नाम नहि छल, मुदा कामक प्रकार, समय आ ठाम एक संग आएल छल। ओ एतबा लिखलाक बाद रुकलीह। महेशक चेतावनी स्पष्ट स्मरण अएलनि।

सहयोगी पत्रक मसौदा पढ़ि पुछलनि, “एहि गवाही लेल प्रकाशनक सहमति अछि?” नैरा पत्रक पहिल पाँति खोलि देखौलीह। “सामान्य सूचना देबाक अनुमति अछि,” ओ कहलीह। सहयोगी अन्तिम पाँति पढ़लनि। “सुरक्षा पूरा भेलापर सार्वजनिक करब—ईहो तँ लिखल अछि।” नैरा उत्तर देलीह, “नाम काटि देने छी। ई सामान्य तथ्य अछि।” सहयोगी प्रस्ताव रखलनि जे केवल नक्शा आ स्थल-जाँचक माँग छापू, गवाहीक विवरण अगिला अंक धरि रोकू। नैरा कहलनि, “एतबा बात छपलासँ अधिकारी फेर फाइल दाबि देताह।” ई अनुमान छल; हुनका लग तत्कालिक विलम्बक कोनो निश्चित प्रमाण नहि छल।

कम्प्यूटरक पर्दापर पाठक शीर्षक चमकि रहल छल—‘बन्द बाहाक पाछाँ रातिक बाट?’ प्रश्नचिह्न रहितो शीर्षकक दिशा स्पष्ट छल। नैरा शब्द घटौलीह, एकटा समय हटौलीह, मुदा ‘पूर्व कर्मी’ आ ‘मरम्मत-काम’ नहि हटौलनि। ओ पठाउ बटन दबौलीह। पन्ना नगरक लोकसूचना समूहमे गेल, जतेक लोक ओकर प्रतिलिपि रखैत छलाह ओहि सभक फोनमे धीरे-धीरे पहुँचल। छपल कागदक गिनती संभव छल; फोनक साझा कएल प्रति कतेक घर जाएत, एकर गणना हुनका हाथमे नहि रहल।

नागर-पत्रक समूहमे नैराक नामक संग चम्पाक सभाक तस्वीर सेहो कियो जोड़बाक प्रयास कएलक। नैरा ओकरा हटएबाक अनुरोध करैत स्पष्ट लिखलीह जे चम्पाक निजी सन्देश आ बाहाक जाँच अलग प्रकरण छथि। तखन हुनका अपन विरोधाभासक पूरा भार बुझाएल नहि। ओ चम्पाक तस्वीरकें अनधिकृत उपयोगसँ बचा रहल छलीह, आ महेशक पहचानसँ जुड़ल विवरण अपने प्रकाशित कऽ देने छलीह। दोसराक अधिकार बुझेबाक ज्ञान अपन तत्काल उत्साहपर लागू करब सभसँ कठिन भऽ रहल छल।

पहिल प्रतिक्रिया नगरक एक अध्यापकक आयल—कियैक नगरक दू नक्शामे ओहि बाटक नाम अलग अछि? दोसर प्रतिक्रिया माछबजारक दुकानदारक छल—रातिक गाड़ी चललासँ माछक जलकर पर कोन असर? तेसर प्रतिक्रिया आरोप छल; लिखनिहार कहलक जे गोदामक सभ कर्मचारी चोर छथि। नैरा तुरन्त ओकर नीचे लिखलीह जे

दस्तावेज एहन आरोपक समर्थन नहि करैत अछि। मुदा ओकर पहिल पोस्टमे जे संयोजन छल, ओ पोस्टक बाहर लोकक गपमे अपन-अपन रूप लेने लागल। एकजना ‘पूर्व कर्मी’ शब्दक बदला ‘भेद खोलएवला आदमी’ कहि प्रसार करैत छल।

रेल-पारक मरम्मत-कारखानामे महेशक पुरान संगीति सभ जे गप करैत छलाह, ताहिमे कोनो गवाही जाँचल नहि गेल छल। एक कहलक जे रातिमे चलनिहार प्रत्येक गाड़ी गैरकानूनी होइत अछि; दोसर उत्तर देलक जे बाढ़िक मौसममे अनुमतिपत्रवला गाड़ियो असामान्य समयमे चलैत अछि। महेशकेँ दुनू वाक्य संकट बुझाएल। ओ अपन कागदसँ जे देखल समय लिखने छलाह, लोक ओहिमे सामान, उद्देश्य आ अपराध जोड़ि रहल छल। कोनो स्पष्ट आरोप लगल नहि छल, मुदा हुनका लग गपक ढङ्ग बदलि गेल छल।

दुपहरिक बाद महेशक फोन अएल। हुनकर स्वर दाबल छल। “अहाँ हमर बात छापि देलहुँ?” नैरा कहलीह, “नाम नहि देलियैक।” महेश किछु क्षण चुप रहलाह। “जकरा मालूम छल जे एहि पट्टीक रातिक हिसाब हम देखैत रही, ओकरा नामक जरूरत अछि? एकटा पुरान साथी हमरा फोन कऽ पुछलक जे हम नगरक विरुद्ध बयान देने छी। हमर घर एखन ओतहि अछि। बेटी आजु ओही बाटसँ विद्यालयसँ घुरत।” नैराक हाथसँ कलम सरकि मेजपर खसि पड़ल। ओ उठौलीह नहि।

“हम पोस्ट हटबैत छी,” नैरा कहलीह। महेश उत्तर देलनि, “हटा सकैत छी तँ हटाउ। मुदा जे देखलक ओकर स्मृति अहाँ कोना हटाएब? पहिने हमरा कहू, अहाँ हमर पत्रक अन्तिम पाँति पढ़ने छलहुँ?” नैरा कहलीह, “हँ।” “तखन कोन बात नहि बुझलहुँ?” प्रश्नमे गारि नहि छल। नैरा जवाब खोजैत रहलीह। अन्तमे कहलीह, “हम अपन जल्दीकेँ अहाँक अनुमतिसँ पैघ मानि लेलहुँ।” महेश फोन नहि काटलनि। ओ कहलनि, “बात गलती कहि देलासँ पूरा नहि होएत। हमर घरक बाट आजु बदलल नहि अछि।”

नैरा पहिने मूल पोस्टमे सुधार लिखलीह—प्रकाशित विवरणक लेल साक्षीक आवश्यक पूर्वशर्त पूरा नहि भेल छल; एहि विवरणकेँ सार्वजनिक भरोसाक गवाही नहि मानल जाए। ओ मूल पोस्ट हटौलनि, मुदा हटाओल गेल समय दर्ज कएलनि। फेर पत्रक मसौदा, प्रकाशित रूप, सुधार आ महेशक पहिल अनुमति अलग-अलग फाइलमे सुरक्षित

कएलनि। निजी पतेवला पन्ना सार्वजनिक फाइलमे नहि राखलनि। अपन त्रुटि छिपएबाक लेल मूल मसौदा मेटा देब सेहो अनुचित होएत, ई हुनका स्पष्ट बुझा गेलनि।

कबीर लग पहुँचि नैरा पुछलनि, “आब महेशकेँ सुरक्षित करबाक पहिल काम की?” कबीर कहलनि जे बिना महेशक अनुमति हुनकर परिवारक ठाम सार्वजनिक नहि करब; स्वयं महेशसँ पुछब जे किनका मार्फत सुरक्षित आवागमन आ अस्थायी निवास चाहैत छथि। पुलिस अथवा प्रशासनिक सुरक्षा सम्बन्धी औपचारिक निवेदन देब होए तँ जोखिम आ अनिश्चितता लिखित राखब। “हम सुरक्षा भेटि गेल कहि पत्र नहि देब,” ओ स्पष्ट कएलनि। “आ अहाँ अपन प्रकाशनक काजक हिसाब अलग लिखू। एखन तक महेशक सहमतिक नाम नहि दिअ।”

महेश साँझमे कबीरसँ भेटबाक मानि लेलनि, मुदा नैराकेँ तुरंत घर आबएबासँ मना कएलनि। “हमर घरक लोक एखन खिसियाएल छथि,” ओ फोनपर कहलनि। “अहाँ आबि अपन दुःख कहब तँ हम सभ अहाँकेँ ढाढ़स देबामे लगि जाएब। पहिने हमरा सभकेँ तय करबाक दिअ जे कता जएब, कता नहि।” नैरा एहि बेर हुनकर वाक्य बीचमे नहि काटलीह। ओ कबीरकेँ महेशक इच्छा शब्दशः कहलीह। पत्र बनब शुरू भेल, मुदा परिवारक ठाम खाली राखल गेल; महेश स्वयं भरताह। ई खाली जगह ककरो भूल नहि छल।

महेशक घरमे साँझक भोजनक तैयारीक समय बेटी अपन विद्यालयक बोझा दरबज्जाक कात रखि देलक। महेश ओहि बोझाकेँ भीतर सरकौलनि। पत्नी पुछलनि, “जे कागद अहाँ पढ़ौने छलहुँ, ओहिमे तऽ पहिने हमसभक सुरक्षा लिखल छल ने?” महेश कहला, “लिखल छल।” पत्नी उत्तर देलीह, “तँ आब हम सभ घर छोड़बाक बातपर सहमति दऽ रहल छी, एहि कहबाक अर्थ नहि जे घर छोड़ब सहज अछि।” ओ सभ पहिल बेर सम्भावित बाटक सूची बनौलनि। केतय जएब से निश्चित नहि भेल, मुदा निर्णयक मेजपर परिवारक प्रत्येक आवाज आबि गेल।

साँझक लोकपाठ-समितिक कार्यालयमे चन्द्रा अपन भुगतानक विषयसँ फेर अएलीह। बाहर दू आदमी मोबाइलमे नैराक हटाओल पोस्टक तस्वीर देखैत छलाह। एक आदमी चन्द्राकेँ रोकि कहलक, “अहाँ सभ तँ गाम-गाम घुमैत छी। महेश कतय जाएत से किछु

सुनलहुँ?” चन्द्रा बुझलीह जे हुनकर यात्रा-काजकेँ एखन जासूसीक सस्तो साधन बनाओल जा रहल अछि। ओ सोझ उत्तर देलीह, “हम कार्यक्रम लेल बाट पकड़ैत छी। ककर परिवार कतय जाएत, से हमरा पुछबाक अधिकार नहि।” फेर ओ अपन देयक रसीद माँगि भीतर चलि गेलीह।

बाबू फेर कहलनि जे चन्द्राक गीत लोकहितमे छल, तँ अनुदान भेटलापर दाम देखल जाएत। चन्द्रा अनुबन्ध टेबुलपर राखलीह। “लोकहितक अर्थ कलाकार भूखल रहत, ई कोन नियममे अछि?” बाबू कहलनि जे अतिथि-सूचीमे हुनकर नाम अछि। चन्द्रा अपन अँगुरीसँ अभ्यासक घण्टा, यात्रा आ गीतक तीनो मद देखौलीह। ओहि दिन कार्यालय हुनकर पूरा मेहनताना नहि देलक, मुदा बकाया स्वीकार कऽ लिखित प्राप्ति देलक। चन्द्रा ओकर दू नकल बनौलीह; एकटा अपन पेटीमे, दोसर समितिक खातामे। ओ कहलीह, “जखन फेर गाएब, पहिने मंच आ दाम दुनूक शर्त हम तय करब।”

नैराकेँ एहि दृश्यसँ महेशक पत्रक अन्तिम पाँति फेर याद पड़ल। अनुमति शब्द ककरो देनदारीक नकल नहि; ओकरा संग शर्त रहैत अछि। चन्द्राक गीतक दाम समिति तय कऽ ओहि पर थोपि नहि सकैत छल, तँ महेशक जोखिमक माप नैरा अकेली कोना तय कऽ लेलीह? ओ प्रश्न अपना लग राखलीह। चन्द्राकेँ अपन प्रकाशनक गलतीक कथा कहि हुनकर श्रमक समय नहि लेलनि। बाहर आबि केवल एतबा पुछलनि, “रसीदक प्रति भेटल?” चन्द्रा पेटीपर हाथ रखि कहलीह, “भेटल। पैसा नहि। दुनूकेँ एक नहि मानब।”

राति सरिताक घरमे संकेत पुरान रेडियोसँ तार निकालि छोट स्पीकर जोड़बाक काज करैत छल। नैरा भीतर अएलीह तँ ओ पुछलक, “आइ नगरसमूहमे अहाँक पोस्ट किएक हटि गेल?” नैरा कहलीह, “हम बिना पूरा अनुमति गवाहीक एहन विवरण लिखि देलहुँ जाहिसँ आदमी चिन्हाएल जा सकैत अछि।” संकेत तार छोड़ि तकलक। “अहाँ हमरसँ फोनक तस्वीर छापबाक पहिने पूछैत छी। महेशक संग ओ नियम किएक नहि चलल?” नैरा कहलीह, “हमरा लगैत छल जल्दी कएलासँ काज होएत।” संकेतक उत्तर छोट छल —“बुझल काज आ भऽ गेल काज अलग अछि।”

सरिता ओसारमे छलनीसँ चाउर बाछि रहल छलीह। हुनका सभ सुनाइत छल। नैरा अपन बचावमे बन्द बाहाक खतरा कहबाक सोचलीह, मुदा सरिता पहिने पुछलनि,

“महेशकेँ अहाँ ई मानबाक कारण देने छलहुँ जे ओ अपन घरक निर्णय पर नियंत्रण रखत?” नैरा माथ झुका लेलीह। सरिता कहलीह, “साँच लुकाएब खराब। मुदा साँचक नामपर दोसरक देह आ घर जोखिममे राखि देबो खराब। एकटा गलतीसँ दोसर गलतीक उधार नहि चुकैत।” ओ अपन चाउर बाछब नहि रोकलीह।

नैरा महेशक पत्रक प्रति बाहर निकाललीह। ओहि पर चारि शर्त चिह्नित कएलनि— घरक सुरक्षित व्यवस्था, परिवारक सम्मति, सार्वजनिक विवरणक सीमा, आ मूल कथनक अन्तिम जाँच। एक्को शर्त पूरा भेल नहि छल। ओ चाहितीह तँ कहि सकैत छलीह जे ‘नाम नहि छापल’ तँ गलती छोट छल; मुदा महेशक पहिचान कतेक लोक सहज जोड़ि सकैत छल, तकर प्रश्न उत्तर माँगैत छल। ओ अपन कापीमे लिखलीह—‘प्रकाशन हमर निर्णय छल; सशर्त अनुमति पूर्ण अनुमति नहि छल।’

एहिबीच अदितिक कार्यालयसँ सूचना आयल जे बाहा-मुँहथरिक् पुनर्मापक लेल अगिला बैसारमे समय राखल जाएत। सूचनामे नैराक सार्वजनिक लेख अथवा महेशक गवाहीकेँ तकर कारण नहि कहल गेल छल। गोमतीक स्थल-आवेदन, ताराक चिन्ह आ हीराक जलमाप पहिनेसँ जमा छल। नैराकेँ एक क्षण अपन पोस्टक उपयोगिताक समर्थन भेटल सन लगल, फेर ओ कागद ध्यानसँ पढ़लीह। ओकरा सँ ई सिद्ध नहि होइत छल जे महेशक जोखिम जरूरी छल। सही प्रशासनिक कदम आरम्भ होएब आ गलत प्रकाशन एक्के समय भऽ सकैत अछि।

कबीरक संदेश आयल—महेश अपन परिवारक संग वैकल्पिक आवागमनक अस्थायी व्यवस्था पर विचार कऽ रहल छथि; ठाम नहि लिखल जाए। आधिकारिक सुरक्षाक पुष्टि एखन नहि अछि। नैरा उत्तरमे केवल प्राप्ति लिखलीह। ओ फोन उठाकऽ महेशकेँ फेर क्षमा माँगबाक चाह कएलनि, मुदा हुनकर पहिल मनाही याद पड़ल। जकरा असुविधामे ओ धकेलने छलीह, ओकरा अपन अपराधबोध सुनबाक काज फेर नहि देलीह। महेशक घरमे एहि राति कोन निर्णय होएत, ओ एखन ओकरा नहि जनैत छलीह।

अगिला दिनक जाँच लेल पद्माकेँ किछु ऑडियो-टुकड़ा देखबाक निमन्त्रण आयल छल। चम्पाक सभामे के कहलक, कोन समय माइक बन्द भेल, आ महेशक कथनक कतेक अंश अलग प्रसारित भऽ रहल अछि—एहि विषयपर अनेक फोनमे छोट-छोट आवाज घुमि

रहल छल। पद्मा नैराकै कहलनि, “जकरा सुनल अछि से लिखबाक पहिने पूरा समयक्रम चाही। कटल अंशक आधारपर ककरो बोलीक तात्पर्य तय नहि होइत।” नैरा उत्तर देलीह, “एहि बेर मूल अंश भेटबाक प्रतीक्षा करब।” हुनकर वाक्य प्रतिज्ञा छल; पहिने कएल काम ओकरासँ मेटा नहि सकैत छल।

रातिक अन्तिम पहरमे चन्द्रा अपन वाद्यक पेटी खोलि एकटा ढीला तार कसलीह। गीतक अभ्यासमे आधा पाँति बार-बार बिगड़ैत छल, ओ ओकरा तुरन्त काटि नहि देलीह। स्वरक आगाँ-पाछाँक साँस मिललापर वाक्यक अर्थ बदल जाइत छल। दोसर कात नैरा कम्प्यूटरक पर्दापर अपन मूल प्रकाशन आ सुधारक समय देखैत छलीह। महेशक शर्त लिखल पत्र अलग सुरक्षित छल। बाहर पानिक पतली धार पुरनका नालीसँ बहि रहल छल—ओहि धारक दिशा जानबाक लेल माप चाही छल, आ ओहि मापक कारण ककरो असुरक्षित करब जरूरी नहि छल।

अध्याय २१ • ककर आवाज

सामुदायिक भवनक पश्चिमी कोठरीमे पङ्खा चलैत छल, मुदा ओकर घरघराहटसँ मेजपर राखल ध्वनि-यन्त्रक छोट लाल बत्ती काँपैत बुझाइत छल। पद्मा मेजक पाछाँ नहि बैसलीह। ओ पहिने खिड़कीक किवाड़ आधा खोललनि, फेर सभाक कुर्सी एना घुमौलनि जे बोलनिहारक मुहँ प्रकाशमे रहए। “आवाज सुनबाक काज केवल कानक नहि,” ओ कहलीह, “जे लोक होंठ देखिकऽ बुझैत छथि, जे संकेतसँ प्रश्न करैत छथि, हुनका सभकेँ सेहो उत्तर देबाक ठाम चाही।” सचिव अपन कापी आ फोन उठा कऽ बीचक कुर्सी खाली कएलक।

बाहर वार्षिक लोकपाठ—खुला खाता—गीतक तैयारी छल। बरामदामे बच्चासभ कागदक पताका बनबैत छल, एक कोनमे रुखसाना चूल्हाक धुँआ बाहर जएबाक बाट देखैत छलीह, आ हमीदा मिरियासीन अपन गीतक बहीक पन्ना हवा सँ बचा रहल छलीह। एहि बेर आयोजनमे जलपंजी, मजदूरीक बकाया आ पिछला सभाक कार्यवृत्त पढ़ल जाएबाक छल। मुदा तीन दिनसँ सभसँ बेसी चर्चा दू छोट ऑडियो पर छल—एकमे रुहानीक स्वर सन किछु सुनाइत छल, दोसरमे महेशक कथनक अपूर्ण अंश। ककरो लग पूरा रेकॉर्ड नहि छल, तइयो लोक पूरा निर्णय सुना रहल छल।

नैरा कोठरीमे पहुँचलि तँ पद्मा हुनका लेल कुर्सी सरकौलनि, मुदा मेजपर पड़ल फोन दिस हाथ नहि बढौलनि। “अहाँ ई कक्षामे लेखकक रूपमे उपस्थित छी कि गवाहीक स्वामीक रूपमे?” पद्मा पुछलनि। नैरा कहलीह, “हम पिछला प्रकाशनमे महेशक शर्त तोड़ने छी। आब जाँचमे सहयोग करब चाहैत छी।” पद्मा धीरे कहलीह, “तँ पहिने ई मानू जे अहाँक अपराधबोधो प्रमाण नहि। जे आवाज अछि, ओकरा ओहि आवाजक शर्तपर सुनब।” नैरा अपन कापीक पहिल पन्नापर लिखलनि—कथन, अनुमान, अनुमति। एहि बेर कोनो पाँतिक आगाँ व्यक्तिक नाम पहिने सँ नहि भरलनि।

पद्मा लग एकटा पुरान सुनबाक कापी छल। ओकर बाँया पृष्ठपर कथन लिखल रहैत छल, दहिना पृष्ठपर ओकर परिस्थिति—कियो पानि माँगैत बीचमे रुकल की, कियो प्रश्न सुनि नहि सकल की, कियो दोसरक बात पूरा होएबासँ पहिने उत्तर देलक। हुनका अपन

प्रशिक्षणक पहिल दिन याद अएलनि, जखन शिक्षक कहने छलाह जे अनुवादकक सभसँ पैघ भूल खाली शब्द छोड़ब नहि, दू लोकक बीचक असहमति मेटा देब अछि। ओहि दिन शिक्षकक बात कठिन लगने छल; आइ मेजपर राखल दू फोन ओकर अर्थ स्पष्ट करैत छल।

सभाक सचिव दू फोन आ एकटा छोट मेमोरी-कार्ड कागदक लिफाफामे लएने अएलक। ओ कहलक जे लोकसमूहमे घूमैत पहिल टुकड़ामे स्त्रीक स्वर सुनाइत अछि —‘सभक सामने पढ़ू’—तेकर बाद ‘चम्पाक निजी बात’। लोक एहि दुइटाकें जोड़ि कहि रहल छल जे रुहानी निजी सन्देश सार्वजनिक करबाक आदेश देने छलीह। पद्मा पुछलनि, “ई दू टुकड़ा एक्के वाक्य अछि, से के जाँचलक?” सचिव कहलक, “लोककें तेहने बुझाइत अछि।” पद्मा कापीमे ‘लोककें बुझाइत अछि’ लिखि कातमे प्रश्नचिह्न बनौलनि। “आब लिखू, मूल रेकॉर्ड कतय अछि?”

सचिव कार्यालयक अलमारीसँ सभा-दिनक ध्वनि-यन्त्र निकाललक। सभापति लम्बा विचार-विमर्शक बाद मूल फाइल कक्षामे सुनबाक अनुमति देने छलाह; ओकर प्रतिलिपि सार्वजनिक रूपेँ बाँटबाक नहि। पद्मा अनुमतिक पाँति ध्यानसँ पढ़लनि। ओ स्पष्ट कएलनि जे कार्यालयक यन्त्रमे भेटल फाइल अपने-आप पूर्ण प्रामाणिकता सिद्ध नहि करैत अछि; ओकर बनबाक क्रम, अन्य रेकॉर्ड आ कार्यवृत्तसँ मिलान जरूरी अछि। ओ मेमोरी-कार्ड निकालि अपन फोनमे नहि लेलनि। कार्यालयक यन्त्रपरहि मूल चलत, संगही कागदमे आरम्भ आ विरामक समय लिखल जाएत।

चम्पा आ रुहानी भीतर अएलीह। चम्पा दरबज्जाक कात ठाढ़ भऽ पुछलीह, “हमर निजी सन्देश फेर सभकें सुनाओल जाएत?” पद्मा उत्तर देलीह, “नहि। एहि जाँचमे मंचक आवाज सुनब, अहाँक फोनक भीतरक सन्देश नहि। जँ कखनो मूल बातचीतक तुलना आवश्यक भेल तँ अहाँ चुनब जे ककरा कतेक देखाएब।” चम्पा मेजक कात बैसि गेलीह। रुहानी अपन बैसबाक लेल सचिवक इशाराक प्रतीक्षा नहि कएलनि; ओ एकटा खाली कुर्सी खींचि कहलीह, “हमरा पर जे आरोप अछि, ओकर पूरा वाक्य हम सुनब। मुदा आरोपक उत्तर देबाक अर्थ ई नहि जे चम्पाक निजी जीवनपर बहस फेर शुरू हो।”

पद्मा सभसँ पहिने घूमैत ऑडियो सुनौलनि। आवाजमे मेजपर हाथ पड़बाक ठकठक छल, किछु शब्द तेज, किछु पतला। ‘सभक सामने पढ़ू’ सुनाइत छल, फेर साँसक बिना दोसर अंश जुड़ि जाइत छल। रुहानीक चेहरापर थकान छल। ओ कहलीह, “हम अपना स्वरकें अपना मनसँ अलग सुनि रहल छी।” पद्मा जवाब देलीह, “एखन स्वरक पहचान निश्चित नहि करब। पहिने वाक्यक क्रम देखब।” ओ सचिवसँ पुछलनि जे सभाक घड़ी, कार्यवृत्तमे दर्ज विषय-परिवर्तन आ यन्त्रक समय एक-दोसरासँ कतय मिलैत अछि।

कार्यालयक मूल ध्वनि-फाइल चलल। पहिने चम्पाक निवेदन, तकर बाद सचिवक कागद पलटबाक आवाज, फेर रुहानीक स्पष्ट स्वर—“नियम सभक सामने पढ़ू, जेहि आधारपर निजी कागद उठाओल गेल।” किछु क्षण बाद ओ फेर कहैत छलीह—“चम्पाक निजी बात सभक सामने नहि पढ़ू। नियम आ निजी जीवनकें एक नहि करू।” घूमैत टुकड़ामे पहिल वाक्यक आरम्भ हटल छल आ दोसर वाक्यक ‘नहि’ सहित पाछाँक अंश कटि गेल छल। पद्मा मूल यन्त्र रोकलनि। चम्पा अपन हाथ किसि रखने छलथि; आब ओहि हाथकें खोलि मेजपर रखलीह।

सचिव सभाक उपस्थिति-पंजी खोलि समय देखलक। ओहि घड़ी एक कर्मचारी दोसर कक्षसँ पानि आनबाक कारण माइकसँ दूर गेल छल, ताहि लेल मूल रेकर्डमे आधा मिनटक स्वर धुँधल छल। पद्मा ई विरामकें छिपेबाक बदला कागदपर चिह्नित कएलनि। ओ कहलीह, “हमरासभकें दू वाक्यक क्रमक लेल पर्याप्त मिलान अछि, मुदा एहि विराममे ककर की शब्द छल से नहि लिखब।” नैरा देखलीह जे अपूर्ण प्रमाण कहबाक लेल कतेक अधिक धैर्य चाही; पन्ना भरेबाक जल्दीमे ओ पहिने एहन रिक्त स्थान छोड़िते नहि छलीह।

नैरा तुरन्त कहए चाहलीह—“तँ आरोप झूठ छल।” पद्मा हुनका रोकलीह। “पूरा वाक्यक एकटा अर्थ एतय सामने आएल अछि। मुदा ई कहब जे कटल फाइल के बनौलक, वा कोनो दूषित इरादा प्रमाणित भेल, ओ दोसर निर्णय होएत।” नैरा अपन कापीक पाँति काटि फेर लिखलनि—रुहानी द्वारा निजी सन्देश पढ़एबाक कथित समर्थन, उपलब्ध मूल रेकर्डसँ असंगत; आरोप स्थगित करबाक आधार। पद्मा एहि शब्दक सहमति देलीह, मुदा ‘मूल रेकर्ड सम्पूर्ण अछि’ एहन दावा लिखबाक अनुमति नहि देलीह।

सचिव ओहि समयक कार्यवृत्त खोललक। कागदमे लिखल छल—‘रुहानी द्वारा नियम पढ़बाक माँग’; दोसर पाँतमे—‘चम्पाक निजी सन्देशक पाठ रोकबाक आपत्ति’। बीचमे सचिवक पेंसिलसँ काटल एकटा शब्द छल। पद्मा पुछलनि, “ई काटल शब्द ककर?” सचिव कहलक, “हम दिनक अन्तमे नकल बनबैत समय लिखावट सुधरने होएब। एखन ठीक स्मरण नहि।” रुहानी एकटक कागद देखलीह। “जकरा स्मरण नहि, ओकरा अनुमान कऽ कियो दोषी नहि कहल जाए,” ओ कहलीह, “मुदा कार्यवृत्तक पहिल नकल आ बादक साफ प्रति दुनू सुरक्षित रहए।” सचिव सहमति देलक।

दोसरा फोनक अंशमे महेशक धुँधल स्वर छल। कियो ओहि पर ‘रातिक गाड़ी सभ अवैध’ लिखि लोकसमूहमे पठौने छल। मूल सभा-रेकॉर्डमे महेशक आवाज छले नहि—महेश ओहि दिन मंचपर बोलल नहि छलाह। पद्मा ई अन्तर देखौलनि। “ई अलग ठामक आवाज होएत, एहि कार्यालयक फाइलसँ मिलान नहि होएत।” नैरा महेशक सुरक्षा-शर्त स्मरण कऽ चुप भऽ गेलीह। ओ कहलीह, “हम एहि दोसर अंशपर सार्वजनिक प्रतिक्रिया नहि देब, जाबत महेश स्वयं सुरक्षित तरीका नहि चुनथि।” रुहानी उत्तर देलीह, “आब चुप रहब सब बातमे समाधान नहि, मुदा ककर चुप्पी पर ककर अधिकार अछि, से बुझब जरूरी।”

हमीदा दरबज्जापर अएलीह। हुनका भीतरक ध्वनि-परीक्षणक विषय सुनाइत छल, मुदा ओ अपन गीतक बही लऽ आयल छलीह। आयोजनक एक युवक पुरान विवाहगीतक दू पाँति बदलि चम्पाक अपमानपर हँसी उठएबला प्रस्तुति चाहैत छल। “हम गाबि देब, तँ लोक बुझत जे हम सहमत छी,” हमीदा कहलीह। “नहि गाएब तँ कहत जे गीत गामक अछि, गायिका के रोकएवाली?” ओ कागदमे अपन पहिने ठहराएल मेहनताना देखौलीह। आयोजक भुगतानक आधा भाग ‘परम्परागत सेवा’ कहि घटा देने छल। पद्मा कहलनि, “ई दू अलग प्रश्न छथि—गीतक प्रयोगक अनुमति आ गाएबाक देय। दुनूक अलग फैसला चाही।”

चम्पा हमीदाक बही दिस तकलीह। “अहाँ हमर नाम लऽ कऽ कोनो गीत नहि गाएब, ई हमरा नीक लगैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा अपन पसिन्नक विवाहगीत गाउ। हमर अपमान रोकबाक लेल अहाँक रोजी बन्द नहि हो।” हमीदा हँसलीह। “गीतक रोजी अछि,

मुदा हर शब्द बाजारू माल नहि। एक बेर हम नइहरसँ विदा होएबला बेटी लेल गीत गाबि दैत छी तँ ओहि पाँतिक अर्थ घरक लोक अपने रखैत अछि। कियो बादमे ओकरा ककरो बेइज्जतीक ढोल बना दए, तँ हम फेर स्वर बदलि सकैत छी।” ओ अपन बही बन्द कएलनि।

दुपहरि लोकपाठक खुला आसन सजल। छोट मज्जक एक कात पानीक घैल, दोसर कात हिसाबक मोट पंजी छल। रमणी बिन्द जलकरक पूरा पट्टा एखन धरि नहि भेटबाक लिखित स्थिति पढ़एब चाहैत छलाह। चन्द्रा अपन गीतक बकाया रसीद लएने आयल छलीह। लोककें मनोरंजन आ हिसाब दू टा अलग चीज बुझाइत छल; मुदा मंच पर गाबएवालीक भुगतान आ नदीपर काम करएवालीक देय एक्के पंजीक अलग खाना छल। रुखसाना रसोइमे कतेक चाउर लगल आ कतेक महिला भोजन बाँटने छलीह, ओकर सेहो लिखित हिसाब माँगलीह।

पद्मा आयोजन-समितिसँ आग्रह कएलनि जे श्रवणसम्बन्धी भिन्नता रखनिहार सहभागी लेल बोलल बातक सार संकेत आ लिखित रूपमे उपलब्ध हो। हुनका एही कामक निमन्त्रण भेटल छल, मुदा मानदेयक पाँति रिक्त छल। “मध्यस्थता सेवा अछि, अतिथि-सम्मान नहि,” ओ कहलीह। सचिव किछु बेर बाद पंजीमे अलग मद लिखलक— सांकेतिक सम्प्रेषण आ पाठ-प्रतिलिपिक भुगतान। पद्मा एकर प्राप्ति लैत कहलनि, “अखनो रकम नहि भेटल। मुदा जे काजक नाम लिखल गेल, तकरा बादमे मुफ्त कहि मेटाएब कठिन होएत।” नैराकें चन्द्राक पछिला रसीदक गप याद पड़ल।

खुला आसनक पहिल घोषणा करैत रुहानी कहलीह, “आजु जे कथनक पूरा अंश सुनबाक बात अछि, ओकर अर्थ ई नहि जे सभ निजी ध्वनि-फाइल सभक कानमे बजाओल जाएत। जे कार्यवृत्त सार्वजनिक छल, ओकर पूरा सन्दर्भ पढ़ल जाएत। बाकी साक्ष्य सम्बन्धित लोकक उपस्थितिमे सुरक्षित कक्षामे जाँचल गेल अछि।” किछु लोक आपत्ति कएलक। एक युवक कहलनि, “तँ हमरा सभकें कोना पता चलत जे अहाँ बचाओल जा रहल छी?” पद्मा उत्तर देलीह, “जाँचक कारण बताओल जा सकैत अछि। ककरो निजी कागद फेर चोरी करब सत्यापन नहि।”

कार्यवृत्तक स्वीकृत सार्वजनिक अंश सचिव पढ़लक। ‘नियम सभक सामने पढ़ू’ आ ‘चम्पाक निजी बात सभक सामने नहि पढ़ू’—दुनू वाक्य अपन क्रममे आयल। तकर पाछाँ सचिव स्पष्ट कएलक जे लोकसमूहमे प्रसारित ऑडियोक टुकड़ा मूल कार्यालय-रेकार्डक क्रमसँ मेल नहि खाइत अछि, आ रुहानीक विरुद्ध निजी सन्देश पढ़एबाक समर्थनक आरोपक परीक्षण अगिला जाँच धरि रोकल जाए। ई सुनि सभामे एकसमान प्रतिक्रिया नहि भेल। कियो ताली बजौलक; कियो पुछलक जे टुकड़ा बनौनिहारकेँ किएक नहि पकड़ल गेल। पद्मा कहलनि, “जकर पहिचान भेटल नहि, ओकर नाम कागदमे जोड़बाक अधिकार नहि।”

चम्पाकेँ मंचपर बोलएबाक निमन्त्रण भेटल। ओ हँसीक उत्तर फेर निजी सन्देश पढ़ि नहि देलीह। केवल कहलीह, “आब जे शब्द सुनलहुँ, ओहि मे हमर एकटा आग्रह मानल गेल अछि—हमर निजी बातक पाठ रोकल जाए। मुदा सुनल अपमान हमर देहसँ ओहिना नहि निकलत जेना कागदसँ गलत पाँति काटल जा सकैत अछि। हमर इलाजक हिसाब आ मजदूरीक प्रश्न एखन बाकी अछि।” ओ बैसि गेलीह। रुहानी हुनका ढाढ़स देबाक लेल सार्वजनिक भाषण नहि कएलनि; केवल पानीक गिलास हुनका दिस सरकौलीह।

मञ्चक पाछाँ हमीदा ढोलकक कसा रहल पट्टा ढील कएलनि। आयोजक फेर पुछलक, “पुरान मजाकवला गीत छोड़ि देब तँ लोक रुकत?” हमीदा कहलीह, “लोक रहत कि उठि जाएत, ई हम नहि जानैत छी। हम जे गाबब, ओकर शब्दक जिम्मेदारी लएब।” ओ कोनो नामक उपहास बिना विवाहक पुरान विदाईगीत आरम्भ कएलनि। गीतमे जे बेटी अपन घरसँ जाइत छलीह, ओ केवल रोएबाक वस्तु नहि; रास्ताक चिह्न, मायकेक माटि आ अपन स्वर संग लऽ जाइत छलीह। बीचमे हमीदा ठमकि कहलनि, “एहि गीतक अगिला पाँति हमरा नानी सिखौने छलीह। ओ कहैत छलीह—बेटीकेँ जे विदा करब, ओकरा घुरबाक बाटो खुला राखब।”

गीतक बीचसँ एकटा बुजुर्ग स्त्री अपन घरसँ अनल तामक लोटा मञ्चपर राखि देलीह। हुनकर कहब छल जे एहि लोटामे हुनकर बिआहक दिन विदाईक पानि देल गेल छल। हमीदा गीत रोकि नहि, सुरक अन्तिम मात्रा पूरा कऽ पुछलनि, “एखन लोटा किनका चाही?” बुजुर्ग कहलीह, “हमर नतिनी पढ़ए शहर गेल अछि। ओ घुरत तँ ओकरा देब।”

सभामे हँसी उठल, मुदा एहि बेर हँसी ककरो बेइज्जतीक नहि छल। हमीदा बूढ़ीक हाथसँ लोटा फेर हुनकें दऽ देलीह।

पद्मा संकेतक संग अगिला पाँतिक भावार्थ लिखैत छलीह। संकेत छोट पर्दापर पाठ देखौलक, मुदा स्वतः शब्द पहचानएवला यन्त्रक लिखल गलत रूप एहन नहि छोड़लक जे लोक असली गीत बुझए लगए। हमीदा स्वयं दुइटा शब्द सुधरौलीह। एकटा बच्ची पुछलक, “गानमे ‘घुरबाक बाट’ किएक?” हमीदा कहलीह, “जे जाइत अछि, ओ अपना इच्छासँ घुरियो सकए। विदाईक गीत तकर हक नहि छीनत।” एहि उत्तरक बाद कियो चम्पाक नाम लऽ हँसल नहि। किछु लोक गीतक संग गुनगुनाए लगल।

दोपहरि पछिला घड़ीमे सचिवक कक्षामे छोट जाँच-पर्या तैयार भेल। पद्मा ओहिमे साफ लिखौलनि—लोकसमूहक दू ध्वनि-अंशक क्रम कार्यालयक उपलब्ध रेकॉर्डसँ अलग अछि; कथनक अर्थ क्रम बदललासँ उलटि गेल; रुहानीक विरोधमे चलि रहल विशिष्ट आरोप तत्काल स्थगित; सम्पादनक स्रोत, उपकरण आ उद्देश्य एखन अपुष्ट। नैरा पुछलनि, “हम एहि पर्याक फोटो सार्वजनिक करि सकैत छी?” पद्मा कहलीह, “पहिने देखू, एतय निजी मोबाइल नम्बर तँ नहि, आ जकर नाम अछि ओकरा सभकें सार्वजनिक भाग देखबाक अवसर भेटल की नहि।” नैरा अपन फोन फेर थैलीमे राखि देलीह।

रुहानी पर्या पढ़ि कहलीह, “हमर पक्षमे ई निर्णय अछि, मुदा चम्पाक सन्देश के लीक कएलक से एखन नहि भेटल। हम आब विजयक जुलूस नहि निकालब।” पद्मा हुनकासँ सहमत भेलीह। चम्पा अपन निवेदनक पहिल प्राप्ति-पन्ना निकालि नव पर्याक संग राखलीह। ओ कहलीह, “पहिने हम कहने रहियैक जे हमरा सुनू। आब दू कागद पर हमरा कहबाक अधिकार दर्ज भेल अछि। मुदा हमर इलाजक खर्च हमरे देबए पड़त।” रुखसाना कक्षाक बाहर हुनका लेल बचल भात रखि देने छलीह। चम्पा ओ भात लेल धन्यवाद देलीह, मुदा भाड़ा आ भोजनक दाम साझा हिसाबमे लिखबाक आग्रह सेहो कएलनि।

आयोजन समाप्त होइत-होइत चन्द्रा अपन बकाया लेल फेर कार्यालय गेलीह। हमीदा हुनका संग छलीह। सचिव गीतक पन्नाक नीचाँ ‘सांस्कृतिक कार्यक्रम’ लिखि दुनू गायिकाक मेहनताना एक्के मदमे जोड़ब चाहलक। चन्द्रा कहलीह, “हमर अभ्यास, यात्रा आ देय अलग अछि।” हमीदा अपन गीतक अनुमति-पत्रपर हाथ रखि कहलीह, “आ हमर

शब्दक उपयोगक शर्तो अलग अछि।” सचिव तीन खाना बनौलक। नगद एहि दिन पूरा नहि भेटल, मुदा तिथि आ देय दुनू लिखल गेल। लोकपाठक पाछाँ ई छोट हिसाब कार्यक्रमक गीत जतेकहि जरूरी भऽ गेल छल।

महेशक सम्बन्धमे कोनो नया खुलासा नहि भेल छल। कबीरक मार्फत केवल छोट सूचना आयल जे परिवार अपन आवागमनक योजना स्वयं तय करैत अछि, आ निजी ठाम सार्वजनिक नहि कएल जाए। नैरा ओ संदेश पढ़ि कापी बन्द कएलनि। पद्मा पुछलनि, “अहाँ आजु महेशक ऑडियो पर एको पाँति नहि लिखलहुँ?” नैरा कहलीह, “जकर आवाजक मूल स्रोत जाँचल नहि, तकर ऊपर फेर अनुमान छापब उचित नहि। आ स्रोत भेटितो सुरक्षा-शर्त बिना सार्वजनिक करब नहि।” पद्मा कोनो प्रशंसा नहि कएलनि। ओ मेज समेटैत कहलीह, “आब ई नियम अगिला कठिन दिनमे निभायब।”

साँझमे सरिताक घरक ओसारपर नैरा लेल थारी ढाकल छल। संकेत अपना बनाओल छोट ध्वनि-पेटीमे गीतक रेकॉर्ड सुनबाक प्रयास करैत छल; ओ बिना अनुमति हमीदाक गीत रिकॉर्ड कएल नहि छल, केवल घरमे पुरान बाजाक धुन चलबैत छल। नैरा पुछलनि, “आइ लोकपाठमे जे सुनलहुँ, ओ तोरा कोना लागल?” संकेत कहलक, “जे बात पूरा छल, ओकर बीचसँ कियो हिस्सा हटाकऽ दोसर बात बनौने छल। मुदा हमीदाक गीतक पूरा शब्द सुनिते बुझलहुँ जे घुरबाक बात बचाएबो गीतक हिस्सा अछि।” सरिता थारीक ढक्कन उठौलीह। भातक भाप उठल आ चुप्पीक भीतर रोजक भूख फेर जगह माँगलक।

दोसरा दिन समिति-कार्यालयक सूचना-पट्टपर जाँच-पर्चाक सार्वजनिक अंश चढ़ल। पर्चाक नीचे लिखल छल जे रुहानीक विरुद्ध ओहि विशेष आरोपपर तत्काल कोनो कार्यवाई नहि होएत, आ मूल ध्वनि-सामग्री सुरक्षित रहत। मुदा ओही पट्टक दोसर कोनमे नव आदेशक सूचना लगाओल जाइत छल—नगरक किछु ठेकाक समीक्षा धरि भुगतान रोकल जाएत। कार्यालयक बाबू कागद टाँगि चलि गेल। नैरा दूनू सूचना पढ़ि कागदमे नाम वा दोष जोड़ि नहि देलीह। एक बातक गलत आरोप रोकल गेल छल; दोसर निर्णयक असर ककर घरक चूल्हापर पड़त, से अगिला दिनक प्रश्न छल।

अध्याय २२ • घरक आदेश

सूचना-पट्टक कागद भोरक सीलनमे कोनासँ मुड़ि गेल छल। नैरा ओकरा सोझ करए लेल हाथ बढ़ौलीह, फेर हाथ रोकि लेलनि। पन्नाक नीचाँ कार्यालयक मोहर आ दिनाङ्क स्पष्ट छल; ऊपर ठेकेदार आ सेवा-प्रदाता सभक भुगतान रोकबाक आदेश। सभसँ पाछाँक पाँतमे लिखल छल जे समीक्षा पूरा होएबा धरि काजक नव सामग्री नहि सौंपल जाए। अपन नाम देखिते नैराकेँ बुझाएल जे ई केवल मानदेय रोकबाक सूचना नहि, हुनकर रोजक अभिलेख-जाँचक बाटो बन्द करैत अछि। दरबज्जाक भीतर बाबू कुर्सीकेँ धूप दिस घुमा रहल छल।

“हमर ठेकापर कोन आपत्ति अछि?” नैरा पुछलनि। बाबू रजिस्टरमे पन्ना पलटैत कहलक, “सभ ठेकाक एक्के समीक्षा चलि रहल अछि। अहाँक विशेष दोष एहि कागदमे नहि लिखल।” “तँ हमर नामवला काजक समय आ जमा सामग्रीक रसीद दिअ।” बाबू माथ उठौलक। “अहिना तऽ भुगतान रोकल अछि।” नैरा कहलीह, “भुगतान आ जमा कएल काम दू अलग बात अछि। जे लिखावट हम कार्यालयक अनुमतिसँ पढ़ने छी, ओकर जिम्मा आब किनकर?” बाबू एहि प्रश्नक उत्तर अपन मनसँ नहि देलक। ओ अर्जीक दू प्रति लऽ एकपर प्राप्ति-मोहर दऽ देलक।

नैराकेँ पहिनेक गलतीसँ अपन स्वरक फेर परीक्षा लेबए पड़ल। महेशक शर्तक विरुद्ध विवरण प्रकाशित कएलाक बाद किछु लोक हुनका कार्यालयसँ बाहर करए चाहैत छलाह; किछु लोक कहैत छल जे ठेका रोकब प्रतिशोध अछि। आदेशमे एहिमे सँ कोनो कारण प्रमाणित नहि छल। ओ कार्यालयक बाहर बैसि पन्नाक तीन भाग बनौलीह—जे काज कएल, जे भुगतान शेष, जे सामग्री कार्यालयक जिम्मामे। ‘प्रतिशोध’ शब्द लिखबाक स्थानपर खाली रेखा छोड़लनि। ओकरा भरबाक लेल कथा नहि, कागद चाही छल।

ओही समय रुहानीक फोन आयल। “चम्पाक कोठरीपर कागद टाँगल गेल अछि,” ओ कहलीह। “मकान मालिक कहैत अछि जे तीन दिनमे खाली करू। हम एखन ओतहि जा रहल छी, मुदा अहाँकेँ चम्पासँ पहिने कोनो निर्णय नहि कहब।” नैरा पुछलनि, “नगरक आदेश अछि कि मालिकक?” रुहानी कहलीह, “पढ़ि नहि सकल छी। जे नाम छैक,

ओकरा देखिकऽ मात्र अधिकार तय नहि होइत।” नैरा कार्यालयक प्राप्ति जेबमे राखि चम्पाक गलीक बाट पकड़लीह। हुनका अपन कामक ठेकासँ बेसी चिन्ता एहि बातक छल जे चम्पाकेँ फेर अपन घरक बारेमे सभसँ अन्तिमे खबर नहि भेटए।

चम्पाक किरायाक कोठरी गलीक मोड़पर छल। एक कात लोहेक सन्दूक, दोसर कात पानि रखबाक डब्बा, आ छोट खिड़कीमे नीला परदा। ओहि कोठरीमे ओ हर राति नहि रहैत छलीह; माइक उपचार आ रातिक यात्राक कारण कखनो रुहानीक आश्रयमे रहए पड़ैत छलनि। मुदा अपन ताला, अपन बिछौना आ एक कोनमे सुखाएल गमछा हुनकर निजी ठाम छल। आजु ताला लगल नहि छल। ओ दरबज्जापर ठाढ़ भऽ कागद पढ़ि रहल छलीह। मकान मालिक आगाँसँ बारम्बार कहैत छल, “हमरा आदेश अएल अछि।”

नोटिसमे लिखल छल—भवनक स्वामित्व आ उपयोगक किछु कागदक जाँच धरि कोठरी खाली कराओल जाए। आदेशक ऊपर नगर-कार्यालयक छाप सन निशान छल, मुदा पन्नापर जारी करनिहार अधिकारीक स्पष्ट नाम नहि छल। नीचे मकान मालिकक हस्ताक्षर आ खालि करबाक तीन दिनक सीमा छल। चम्पा कागदकेँ दीवालसँ धीरे खोललीह, ताकि चिपकल कोना नहि फाटए। “हम एकरा फैंकि नहि देब,” ओ कहलीह। “हमर किरायाक रसीद आ ई नोटिस अलग-अलग रहत।” रुहानी नोटिसक फोटो खींचबाक पहिने हुनकासँ अनुमति माँगलीह। चम्पा कहलीह, “हम पहिने अपन फोनमे रखब।”

मकान मालिक बाजल, “अहाँ सभ जतेक कागद जोड़ब, मकान ततेक बँटल नहि रहत। ऊपरवला भागमे मरम्मतक जाँच अछि।” चम्पा पुछलीह, “मरम्मतक नामपर हमरे तीन दिन किएक? घरक दोसर कोठरी सभकेँ की कहल गेल?” मालिक उत्तर देलक जे सभकेँ अलग सूचना देल जाएत। चम्पा ओहि उत्तरकेँ लिखि लेलनि। हुनका मकानक किछु वास्तविक दशर देखाइत छल; दीवालमे सीलन छल, जेकरा नकारब ओ नहि चाहैत छलीह। मुदा असुरक्षित भवनक जाँच आ किरायेदारकेँ तुरन्त हँकालब एक्के निर्णय नहि छल।

रुहानी कहलीह, “आश्रयमे एक खाट खाली अछि। अहाँ चाही तँ एखन सामान रखि दिअ।” चम्पा हुनका तकलीह। “खाट लेल धन्यवाद। मुदा ई नहि मानू जे हम एतय

रहबाक हक छोड़ि देने छी।” रुहानी तुरन्त कहलीह, “हम एहन नहि कहने छी।” चम्पा धीरे उत्तर देलीह, “अहाँक मनमे नहि छल, मुदा लोक मददक संग निर्णय सेहो दऽ दैत अछि। हम आजु कोठरी खाली करबाक निर्णय नहि लेने छी।” रुहानी एहि बेर चुप रहलीह। सहायताक प्रस्ताव वापस नहि लेलनि, ओकर शर्त बदलि देलनि—जखन चाहब, खाट तैयार रहत।

गलीमे सामान ढोएबला दू युवक ठाढ़ छल। मालिक शायद पहिनेसँ बजौने छल; ओ सभ ककरो सन्दूक उठबए बिना मजदूरीक आशामे प्रतीक्षा करैत छलाह। चम्पा हुनका सभसँ पुछलीह, “अहाँ सभकेँ के बजौलक?” एक युवक मालिक दिस तकलक। चम्पा कहलीह, “अहाँ सभक दाम रोकबाक हमर इच्छा नहि। मुदा हमर अनुमति बिना सन्दूक नहि उठत।” मालिक ओतय पहिल बेर बुझलक जे अपन ठहराओल काजक खर्च ओकरहि देबाक प्रश्न उठि गेल अछि। ओ युवक सभकेँ आँगनक बाहर प्रतीक्षा करबाक कहलनि।

आश्रय दिस घुरैत रुहानी देखलीह जे पुरान खाता-कापीक भीतर बिजली आ पानिक खर्चक पाँति पर नया लाल रेखा खिंचल अछि। भवनक एक कोठरी नगरक अस्थायी सहायतासँ चलैत छल, दोसर भाग रुखसानाक भोजन-विक्रयसँ, आ किछु भाड़ा रहनिहार अपन कमाइसँ दैत छलाह। नया आदेशमे सहायता-वितरणक प्रमाण फेर माँगल गेल छल। खाता रखनिहार सदस्य कहलक, “एखन जँ सभ कागद नहि जमा भेल तँ घरक उपयोग परो प्रश्न उठि सकैत अछि।” रुहानी कहलीह, “अहाँ ई बात सबै लग रखू। केकरो लेल गुप्त निर्णय नहि होएत।”

छोट बैठक रसोइक अगिला कोठरीमे बैसल। रुखसाना आँच कम कऽ आयलीह। चम्पा अपन कोठरीक नोटिस साथ लऽ अएलीह, मुदा ओ स्पष्ट कहलीह जे हुनकर निजी इलाजक कागद आश्रयक खाता संग नहि जोड़ल जाए। एक सदस्य चाहैत छल जे चम्पाकेँ आश्रयक नामपर तुरन्त नगर-कार्यालयमे दर्ज कराओल जाए। चम्पा पुछलीह, “तकर अर्थ हमर दोसर ठाम किरायेदार रहबाक अधिकारपर की पड़त?” कियो निश्चित उत्तर नहि देलक। रुहानी निर्णय रोकलीह। “जाहि बातक अर्थ नहि बुझल, ओकरा सबहक हित कहि हस्ताक्षर नहि करब।”

रुखसाना पानिक गिलास बाँटैत बजलीह, “घर केवल खाटक गिनती नहि। काल्हि हमर रसोइक तेलक पैसा नहि भेटल, तँ हम एक दिन एतय भोजन नहि बनाओलहुँ। लोक कहलक—आश्रयमे भूखल राखलहुँ। मुदा हमर घरमे सेहो बच्चाक भात चाही।” एक सदस्य लज्जित भऽ कहल, “हम बुझलहुँ सभ सामान दानमे अबैत अछि।” रुखसाना हँसलीह, मुदा हँसी हलुक नहि छल। “दानमे आयल चाउरो धोब, पकाएब, परोसब—ओ सब ककर समय?” ओ पंजीमे अलग-अलग काजक समय भरएबाक आग्रह कएलनि। चम्पा अपन कोठरीक नोटिससँ नजर उठा हुनका सहमति देलीह।

बैठकक बीच गौरी कपरिया अएलीह। हुनकर काँधपर तह कएल तिरपाल छल, आ हाथमे छोट बही, जाहिमे अस्थायी बसेरासभक यात्रा-दिन आ मरम्मतिक देय लिखल छल। हुनकर लोक नदीक पाछाँक खुला जमीनक कात मौसम बदललापर ठाम बदलैत छलाह। एहि बेर रास्ताक किनार साफ करबाक नामपर ओतहि सँ हटबाक मौखिक सूचना देल गेल छल। गौरी कहलनि, “हम सभ चलैत छी, तँ हमरा सभक ठाम नहि अछि, ई बात नहि। जे दिन ककरो गाड़ी अटकैत अछि, ओ दिन हमर बाटक नाम याद आबि जाइत अछि।”

गौरीक बहीमे पहिनुका सप्ताहक तिरपाल-मरम्मतिक दू अपूर्ण भुगतान दर्ज छल। रुहानी पुछलनि, “अहाँ सभ एतय रहब चाहैत छी?” गौरी उत्तर देलीह, “किछु परिवार रहताह, किछु दोसर हाट दिस जएताह। सभक निर्णय हमरा नामपर नहि लिखू। हम कागदक अर्थ बुझबाक लेल अएली छी, आश्रयक सूचीमे घुसबाक लेल नहि।” चम्पा हुनका अपन नोटिस देखौलीह। गौरी ओहि पर झुकि कहलीह, “हमरा नाम नहि छैक, मुदा तीन दिनक धमकी चिन्हैत छी।” ओ कहलीह जे अलग समूहक लोक मिलि आपत्ति देताह, मुदा कियो अपन निजी बाट सार्वजनिक नहि करए।

आँगनमे बच्चा सभ तिरपालक तह खोलए लागल। गौरी एक बच्चाकेँ रोकि कहलीह, “ई भाड़ाक वस्तु अछि, खेलबाक पटिया नहि।” बच्चा लजाएल, तखन चम्पा ओकरा अपन कोठरीक नीला परदाक फाटल कोना देखौलीह। गौरी सुई धागा निकालि कहलीह, “तिरपालक सिलाइ आ परदाक सिलाइ अलग अछि।” ओकरा मरम्मत करैत देखबामे सभक ध्यान लगि गेल। चम्पा दाम पुछलीह। गौरी कहलीह, “छोट काज अछि, मुदा काज

अछि।” चम्पा पर्ससँ रकम निकालि हुनका देलीह। एहि लेनदेनमे कियो दोसराक दया नहि खरीदलक।

नैरा ओहि समय पहुँचलि। गौरी अपन नामक वर्तनी स्वयं बतौलीह आ पुछलनि जे लिखल जाएत तँ ककरा देखाएल जाएत। नैरा कहलीह, “हम एहि घरक संकटपर रिपोर्ट बनएबाक अधिकार अपने-आप नहि रखैत छी। अहाँ जतेक कहब, ओतबे अपन कापीमे रखब; सार्वजनिक करबासँ पहिने फेर पूछब।” गौरी उत्तर देलीह, “हमरा सभक बातक सार समिति लग जा सकैत अछि, मुदा हमर बच्चासभ कोन बाट जएताह, से नहि।” नैरा हुनकासँ सहमत भेलीह। महेशक सशर्त गवाहीक स्मृति एहि बेर ककरो परीक्षण बनि कऽ नहि आएल; व्यवहारमे एकटा सीमा बनल।

आश्रयक सदस्य सभ कागद पसारलनि—भवनक किरायाक प्रति, रसोइक देय, मरम्मतक पिछला माँगपत्र आ सहायता-वितरणक पंजी। रुहानी कहलनि, “हम पहिने अनेको बेर लोकक लेल हस्ताक्षर कऽ दैत छलहुँ। भरोसा बनैत छल, मुदा फेर ओहि हस्ताक्षरक कारण लोकक निर्णय हमर हाथमे आबि जाइत छल।” चम्पा कहलीह, “अहाँ आश्रय चलाउ, मुदा हमर कोठरी छोड़बाक निर्णय हमर रहए।” गौरी बाजलीह, “आ हमरा सभक समूहमे सभक चलबाक समय अलग रहए।” रुहानी कापी आगाँ कएलनि। उपस्थित लोक अपन नाम, आपत्ति आ प्रस्ताव अलग पाँतिमे लिखौलनि।

रुहानी एकटा छोट कार्यदल सुझौलीह—चम्पा अपन किरायाक कागद देखतीह; रुखसाना रसोइ आ देयक हिसाब; गौरी घुमन्तु परिवारसभसँ हुनकर सहमति लऽ साझा आपत्ति; आश्रयक पुरान सदस्य भवनक मूल शर्त मँगाओताह। नैरा पढ़बामे सहायता करबाक प्रस्ताव देलीह। चम्पा पुछलीह, “अहाँक ठेका रोकल गेल अछि। एहनेमे कार्यालयक मुहर लगा कऽ चलब की?” नैरा उत्तर देलीह, “नहि। हम निजी रूपेँ जे पढ़ि सकैत छी, पढ़ब। जाँच-प्रतिवेदन सरकारी नामपर नहि देब।” कार्यवृत्तमे ई सीमा लिखल गेल।

दुपहरि कबीर अएलाह। नैरा पहिनेसँ कहने छलीह जे कोनो कागदपर कानूनक अन्तिम निष्कर्ष नहि चाही; केवल याचना प्रस्तुत करबाक सही बाट बुझबाक अछि। कबीर नोटिस पढ़ि कहला, “तीन दिनक समय लिखल अछि, मुदा ई ककर अधिकारसँ लिखल, तकर

मूल आदेश माँगू। जँ भवनमे तत्काल खतरा अछि तँ पहिने सुरक्षित निरीक्षण कराबए पड़त। जँ मात्र दखलक विवाद अछि तँ ओकरा भवन-सुरक्षाक नामपर एक नहि करू।” चम्पा पुछलीह, “कागद माँगलासँ राति धरि हमरा रहबाक भरोसा भेटत?” कबीर उत्तर देलनि, “भरोसा नहि कहि सकैत छी। मुदा लिखित आपत्ति आ प्राप्ति बादक सुनवाई लेल जरूरी होएत।”

नैरा अपन ठेका-रोकक आदेश कबीरकेँ देखौलीह। ओ दूनू कागद एक्के मेजपर राखि देलीह, मुदा कबीर स्पष्ट कएलनि जे एक समयमे जारी भेल दू सूचना एक्के कारणसँ निकलल, एहन मानब सही नहि। नैरा अपन कापीमे लिखलनि—‘कागद अलग, जारी करनिहार अलग जाँचबाक।’ चम्पा मुस्किया कऽ कहलीह, “अहाँक कापीमे आब खाली जगह बेसी रहैत अछि।” नैरा कहलीह, “पहिने खाली जगह भरएबामे जल्दी करैत छलहुँ।” चम्पा उत्तर देलीह, “ताहि जल्दीक असर हम सभ भोगैत रहलहुँ। आब धीरजक लाभो देखब चाहैत छी।”

साँझसँ पहिने कार्यदल नगर-कार्यालय गेल। चम्पा अपन किरायाक रसीद, नोटिसक मूल प्रति आ फाटल परदाक मरम्मतिक पर्वीमे सँ केवल आवश्यक दू कागद चुनलीह। गौरी समूहक साझा प्रश्न लएने छलीह, व्यक्तिगत बसेराक चिह्न नहि। रुखसाना रसोइक खाता लएने आयलीह। बाबू कहलक, “एतय सभक अर्जीक विषय अलग अछि।” चम्पा उत्तर देलीह, “अलग विषय अछि, तँ अलग प्राप्ति दिअ। एक्के भीड़ कहि हमर कागद गुम नहि करू।” बाबू तीन रजिस्टर खोललक।

कार्यालयमे पता चलल जे चम्पाक नोटिस भवन-मालिकक पत्रक आधारपर तैयार कएल गेल छल; नगरक सत्यापित भवन-निरीक्षणक प्रति ओहि खिड़कीपर उपलब्ध नहि छल। बाबू ई बात मौखिक कहलाक बाद लिखबाक विषयमे हिचकिचेलक। चम्पा अपन आवेदनमे लिखि देलीह—‘निरीक्षण प्रतिवेदनक प्रमाणित प्रति माँगल गेल; एखन प्राप्त नहि।’ कागदपर मोहर पड़ल। एहिसँ बेदखली तुरन्त निरस्त नहि भेल, मुदा खाली करबाक एकतर्फी आदेशकेँ बिना प्रश्न मानबाक बाट बन्द भेल। मकान मालिककेँ एहि आवेदनक नकल पठाएबाक व्यवस्था सेहो निश्चित भेल।

गौरीक दलक अर्जीक खिड़की अलग छल। कर्मचारी कहलक जे अस्थायी बसेराक सूचीमे किछु परिवारक नाम नहि अछि। गौरी उत्तर देलीह, “सूचीमे नाम नहि अछि, तँ जमीनपर लोक नहि छथि, ई निष्कर्ष नहि लिखू। निरीक्षण करबाक पहिने हम सभक प्रतिनिधि संग बात करू।” ओ समूहक प्रत्येक सदस्यक निजी परिचय फाइलमे जमा नहि कएलनि; केवल साझा आपत्ति आ सम्पर्कक स्वीकृत तरीका देलीह। लिखित प्राप्ति भेटलापर ओ सभकें बतेलीह जे एहि प्राप्तिसेँ घरक स्थायी अधिकार सिद्ध नहि भेल अछि, मुदा अगिला दिनक बातचीत लेल कागदक बाट बनल अछि।

रुखसानाक खातापर कार्यालयक कर्मचारी पुछलक, “आश्रयक लोककेँ मुफ्त भोजन देल जाइत अछि, फेर भुगतानक माँग?” रुखसाना पन्ना खोलि हर दिनक चाउर, इन्धन, पकएबाक समय आ नगद भुगतान अलग देखौलीह। “जकरा भोजन देल गेल, ओकरासँ हम पैसा नहि माँगि रहल छी,” ओ कहलीह। “जे संस्था अपन खातामे हमर श्रम शून्य लिखैत अछि, ओकरासँ हिसाब माँगि रहल छी।” कर्मचारी पर्चीक प्राप्ति देलक। रुखसाना स्पष्ट सुनि लेलीह जे जाँचक अन्तिम उत्तर बादमे आएत। ओ कापी बन्द कऽ कहलीह, “आजु लेल हमर काज ई छल जे शून्यक आगाँ हमर नाम आबि जाए।”

बाहर छोट बून्दाबान्दी शुरू भऽ गेल। गौरी अपन तह कएल तिरपाल खुलबाक बदला बाँधि राखलनि; ओकरा भीजला पर दोसर हाट धरि लऽ जएब कठिन होएत। चम्पा छज्जाक कात ठाढ़ भेलीह। ओ पुछलीह, “जँ तीन दिनक बादो कोठरी खाली करबाक कहल जाए तँ?” गौरी उत्तर देलीह, “तँ अहाँ तय करब जे अपील करब, अस्थायी कोठरी लेब कि एतय रहबाक जोखिम उठाएब। हमर समूह लेल हम ई निर्णय नहि करि सकैत छी।” चम्पा हुनका देखलीह। ककरो ‘बचा लेब’ कहि देबाक बदला ई उत्तर हुनका कठिन, मुदा उपयोगी लागल।

नैरा घर घुसलीह तँ सरिता छोट आँचपर दाल चढ़ा रहल छलीह। ओ पुछलनि, “आइ कतेक काज भेल?” नैरा कहलीह, “हमर ठेकाक भुगतान रोकल गेल। जे सामग्री जमा कएलहुँ ओकर रसीद माँगलहुँ। चम्पा अपन कोठरीक नोटिसपर आपत्ति देलीह। गौरी अपन दलसँ पूछिकऽ लिखबाक बाट बनौलीह।” सरिता दाल चलबैत कहलीह, “तँ तीन

कागद तीन अलग घरक कथा भेल।” नैरा उत्तर देलीह, “आ कियो ककरो घरक निर्णय अपन नामपर नहि लिखलक।” सरिता ढकना रखि देलीह; दालक उफान कम भेल।

संकेत पानि अनबाक खाली बाल्टी लऽ दरबज्जापर आयल। ओ पुछलक, “दीदी, अहाँक ठेका बन्द भेला पर कम्प्यूटरक कामो बन्द?” नैरा कहलीह, “कार्यालयक मूल फाइल हम आब बिना अधिकार नहि खोलब। अपन कापीमे जे सार्वजनिक तथ्य अछि, ओकरा पढ़ि सकैत छी। फेर ठेकाक शर्त देखब।” संकेत अपन फोनक पर्दा देखौलक— विद्यालयक एक पुरान सूचनामे ‘सर्वसम्मति’ लिखल छल, जखन सभाक कार्यवृत्तमे असहमति दर्ज छल। “एहनो बात अलग कऽ देखबाक चाही?” ओ पुछलक। नैरा कहलीह, “हँ, मुदा ककरो नाम छपबासँ पहिने कारण आ अनुमति जाँचब।”

आश्रयक आँगनमे साँझ होइत गौरीक संग आयल एक बच्ची फाटल तिरपालक बचल टुकड़ासँ छोट पवनचक्की बनबैत छलीह। रुखसाना कहलनि, “ई हमरा रसोइक धुँआ हँकबाक काम नहि आएत, मुदा घुरैत नीक लगैत अछि।” बच्ची पवनचक्की हुनका हाथमे दऽ देलक। रुहानी ओकरा आँगनक खूँटामे बाँधि देलीह। हवा कम छल; पंखुड़ी दू बेर घुरि रुकि गेल। बच्ची कहलक, “कनिए तेज हवा आएत तँ फेर घुरत।” कियो ओकरा घरक विवादक मिसाल नहि बनौलक। ओहिठाम एक क्षण लेल सभ पवनचक्की देखैत रहल।

रातिक भोजनक बाद रुहानीक छोट सन्देश आयल। आश्रयक बैठकमे चम्पाक लेल खाट सुरक्षित रहत, मुदा ओकर सामान स्वतः नहि हटल जाएत; गौरीक लोक अपन चुनाव अनुसार जएताह; रुखसानाक भोजनक देय अगिला खातामे फेर चढ़त। तीनू प्रस्तावपर अलग-अलग सहमति भेल छल। नैरा संदेश सरिताकेँ सुनौलीह। सरिता पुछलनि, “चम्पाकेँ कोठरीक चाभी एखन अछि ने?” नैरा कहलीह, “अछि। आजु ओ स्वयं ताला लगौलीह।” सरिता थारी समेटैत बजलीह, “ताला हाथमे रहबो कखनो-कखनो पैघ बात होइत अछि।”

ओहि राति चम्पा अपन कोठरीमे परदाक नव सिअल कोना देखलीह। दीवालक दरार एखनहुँ छल, नोटिस सेहो; ओ दूनूमे सँ ककरो नकारि नहि सकैत छलीह। ओ बिछौना तह कएलनि, किरायाक रसीद लोहेक सन्दूकमे रखलीह आ आश्रयक अतिरिक्त चाभीक प्रस्ताव फोनमे सुरक्षित कएलनि। फेर दरबज्जापर अपन ताला लगौलीह। गलीमे कियो कहल, “एहि घरक आदेश आब ऊपरसँ आएत।” चम्पा मुड़ि नहि तकलीह। हुनका बुझल

छल जे आदेशक मूल प्रति माँगब, असुरक्षित छत जाँचब आ अपन ठामक चुनाव रखब—
तीनू काज एक संग करबाक अछि।

सहरक दोसर कात कार्यालयक बाबू रजिस्टरमे प्राप्तिपत्र सभक क्रम लिखि रहल
छल। नैराक ठेकाक अर्जीक पाछाँ चम्पाक नोटिसक माँग, तकर बाद गौरीक समूहक
आपत्ति अलग-अलग पन्नामे पड़ल छल। ओहि क्रममे ककरो जीत लिखल नहि छल।
खाली कएल घरक चाभी, बचल घरक पट्टा आ सुरक्षित आश्रयक अधिकार—एखन
एक्को प्रश्नक अन्तिम उत्तर नहि भेल छल। मुदा जे लोककेँ पहिने कहि देल जाइत छल
जे “ऊपरसँ आदेश अछि”, ओ लोक आइ पूछने छलाह—ऊपर के, आदेश कोन, आ
निर्णय लेबाक अधिकार ककर?

अध्याय २३ • भरतक अस्वीकार

अयोध्याक राजभवनमे बरामदाक दीया दिन चढ़लाक बादो जरैत छल। तेलक गन्धमे भीजल बत्ती किछु कालसँ काटल नहि गेल छल; ज्योति लम्बा भऽ ऊपरक कारीगरक बनाओल काठक छज्जा छूबए चाहैत छल। भरत घोड़ा उतारलाक बाद सभसँ पहिने ओहि दीया लग गेलाह। एक सेवक दौड़ि आयल—“राजकुमार, भीतर सभ प्रतीक्षा कऽ रहल छथि।” भरत ओकरा बत्ती नीचा करबाक कहलनि। सेवक हाथ बढौलक, फेर अचानक रोकि लेलक। राजभवनमे एखन कोन आदेश के दऽ सकैत छल, से ककरो स्पष्ट नहि छल। भरत स्वयं बातीक जरल टुकड़ा झारि देलनि। छोट काज छल; मुदा एहि घरमे छोट काजो अनुमति माँगए लागल छल।

दशरथक मृत्युक समाचार हुनका पहुँचि चुकल छल, मुदा समाचारक शब्द आ पिता नहि रहबाक अनुभव अलग छल। अपन मायक कक्षमे प्रवेश करैत भरत देखलनि—कैकेयी पीतक बिछौना समेटि, एकटा पुरान कंगनक टूटल कुंडी फेर जोड़बाक प्रयास करैत छलीह। ओ ठाढ़ नहि भेलीह। भरत पुछलनि, “जे वर अहाँ माँगलहुँ, ओकरा हमर नाम किएक देलहुँ?” कैकेयी उत्तर नहि देलीह। हुनकर हाथमे कुंडी फिरसँ छूटि गेल। बाहर शत्रुघ्नक खड़ाऊँक आहट छल; ओ भीतर प्रवेश नहि कएलनि।

“हमरा राज्य चाही छल, से अहाँ कखन सुनलहुँ?” भरत फेर पुछलनि। कैकेयी कहलीह, “हम जे सुनलहुँ, ओ अपन डरक आवाज छल। दरबारमे रामक राज्याभिषेकक तैयारी होइत छल, आ हम सोचलहुँ जे तोहर ठाम छोट भऽ जाएत।” भरत माताकेँ पहिल बेर ओहि भयसँ देखलनि जकरा ओ अपन प्रेमक नाम देने छलीह। “हमर ठाम बचएबाक लेल अहाँ रामक ठाम छीनलहुँ। आब जे बचल अछि, ओकर नाम राज्य अछि कि खाली आसन?” कैकेयी कंगन राखि देलीह। हुनका लग एहि प्रश्नक कोनो मधुर उत्तर नहि छल।

सभा-गृहमे राजचिह्न लाल कपड़ामे मोड़ल पड़ल छल। पुरोहित, मन्त्री, लेखपाल, घुड़सालक अधिकारी आ अन्नागारक रखबार एक्के आसनक चारू कात अलग-अलग कारणसँ चिन्तित छलाह। कियो भरतसँ तुरन्त राज्याभिषेक स्वीकार करबाक कहलनि, ताकि आदेश फेर चलए; कियो राजा नहि भेलापर कोषक ताला खोलब अनुचित

बतौलनि। भरत सभक बात सुनलनि। अन्नागारक रखबार कहलनि जे नगरक बाहरी कातक भोजन-वितरण दू दिनसँ रोकल अछि। घुड़सालक अधिकारी पशुक चारा समाप्त होएबाक बात रखलनि। राजमुकुटक प्रतीक्षामे लोकक भोजन आ पशुक भुखमरी दूनू ठाढ़ छल।

भरत उठि राजचिह्नक ओहि लाल कपड़ाकेँ हाथ नहि लगौलनि। “हम अपन जेठ भ्राताक अधिकार अपन नामपर नहि लिखब,” ओ कहला। सभामे किछु मुख स्थिर भऽ गेल। “मुदा एतबा कहि भागियो नहि सकैत छी जे हमर कोनो काज नहि। अन्नागारक द्वार खोलबाक व्यवस्था होअए, बाटक रखरखाव चलए, वेतन रोकल नहि जाए। एतय जे लेखा लिखल जाए, ओ अस्थायी उत्तरदायित्वक लेखा होअए—स्वामित्वक पत्र नहि।” मन्त्री पुछलनि, “अहाँ हस्ताक्षर कोन पदनामसँ करब?” भरत कहलनि, “नाम लिखब। पदक विषयमे सभाक असहमति सेहो लिखू।”

सभाक एक वृद्ध सदस्य कहला जे राजा बिना राज्यक काम कतय चलल अछि। भरत हुनक आपत्ति सुनि छोट कागद मँगौलनि। ओहिमे ओ आदेश नहि, निर्णयक सीमा लिखबाबए लगलाह—अन्न-वितरण, रोगीक देखरेख, सार्वजनिक सुरक्षा; भूमि दान, उत्तराधिकारक नवल घोषणा आ निजी पुरस्कार नहि। एक मन्त्री कहलनि जे एहन सीमासँ शासन कमजोर होएत। भरत उत्तर देलनि, “हमर हाथमे जे भरोसा राखल गेल अछि, ओकरा अपन सम्पत्ति मानि लेलापर शासन अवश्य सरल होएत। मुदा जकरा लेल आसन बचाओल जा रहल अछि, तकरा लेल फेर की बचत?” हुनकर स्वर ऊँच नहि भेल; ओहि कारण किछु लोककेँ सुनबाक लेल आगाँ झुकए पड़ल।

ओहि दिनक साँझ कौसल्या, सुमित्रा, कैकेयी, शत्रुघ्न आ भरत एक्के ओसारपर भोजन लेल बैसलाह। उर्मिला रसोइक भीतरसँ दालक कटोरी अनलीह आ पहिनेसँ अलग राखल सेविका लोकनिक थारी सेहो ओसारमे पहुँचबाक व्यवस्था कएलनि। शत्रुघ्न पहिल कौर लैत कहला जे बचपनमे भरत भातमे घी अधिक भेला पर स्वयं नहि खाइत छलाह, मुदा दोसरा थारीसँ घी चोरबमे हुनका कोनो लाज नहि छल। सुमित्राक मुँहसँ अनायास हँसी निकलल। भरत कहला, “एहि अपराधक साक्षी एखन जीवित छथि, तँ हम निर्दोष

नहि कहल जाएब।” किछु क्षण लेल घरमे हँसी रहि गेल; कोनो निर्णय-सभा ओकरा दर्ज नहि कएलक।

भोजनक अन्तमे कौसल्या भरतसँ पुछलनि, “राम लग जएब?” भरत कहला, “हाँ। ओहि भेटमे हमरा कोनो उपाधि साथ नहि लएबाक अछि।” उर्मिला थारी समेटैत बजलीह, “आ घरमे जे लोक रहताह, हुनकर रोजक काजक फैसला को करत?” भरत हुनका तकलनि। ई प्रश्न जंगल धरि पहुँचबाक पहिनुक छल। “जे दिन धरि हम बाहर रहब, शत्रुघ्न आ मन्त्रीसभ खुला लेखा राखथि,” ओ कहला, “अहाँ सभ जँ देखब जे काजक नामपर ककरो देय रोकल जा रहल अछि, तँ हमर लौटबाक प्रतीक्षा नहि करू।” कैकेयी चुपचाप पानिक लोटा सरकौलीह। घरक स्नेह राज्यक भूल मेटौलक नहि, मुदा रातिक भोजन एकटा राति पार कराओलक।

विदेहपुरमे ओही ऋतुक दोसरा बिहान रुहानीक आश्रयक आँगनमे खूँटासँ बाँधल पवनचक्की हवा नहि रहितो अधखुलल रहैत छल। रुखसाना ओकरा हाथसँ घुमौलनि आ चूल्हापर पानि चढ़ौलनि। “काल्हि बच्ची कहने छल जे हवा अएत तँ ई घुरत,” ओ कहलीह। “हमरा तँ चूल्हाक धुँआ निकलबाक बाट चाही।” रुहानी हँसलीह, मुदा हाथमे पकड़ल नगर-कार्यालयक पत्र पर नजर फेर पड़ितँ हँसी रुकि गेलनि। आश्रयक भवनक अस्थायी रखरखाव लेल हुनकर नाम प्रस्तावित छल; पत्रसँ एतबे स्पष्ट नहि छल जे एहि नामक संग कतेक अधिकार जोड़ल जाएत।

पत्रमे लिखल छल जे जाँच पूरा होएबा धरि आश्रयक दैनिक व्यवस्था बिना बाधा चलए, एहि लेल एकटा ‘अधिकृत सम्पर्क-व्यक्ति’ चाही। संगमे एकटा दोसर पन्ना छल —भवन-उपयोग आ स्थायी हस्तान्तरण सम्बन्धी विवरण भरबाक। सचिव कहलक, “दूनु पर एक्के बेर हस्ताक्षर कऽ दिअ, तँ पानिक टंकीक मरम्मत आ राशनक अगिला खेप आसान भऽ जाएत।” रुहानी दू पन्ना अलग-अलग मेजपर राखि देलीह। “सम्पर्क रखब आ घरक मालिक बनब एक बात नहि,” ओ कहलीह। “पहिने लोकसभकेँ देखाबय पड़त जे कोन कागदमे कोन वचन अछि।”

चम्पा आश्रय पहुँचलीह तँ हुनकर हाथमे लोहेक सन्दूक नहि, बस किरायाक रसीदक लिफाफा छल। तीन दिनमे कोठरी खाली करबाक नोटिसक बाद दू दिन बीतल छल।

निरीक्षणक प्रमाणित प्रति एखन नहि भेटलनि। “हम एहि घरमे राति रहि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा एहि कारण हमर कोठरीक चाभी ककरो नामपर नहि जाए।” रुहानी हुनका तात्कालिक रहबाक पंजी देखौलीह—ओहि पंजीमे आगन्तुकक नाम, रात्रिक आवश्यकताक अवधि आ सहमतिक सीमा अलग लिखल छल। चम्पा अपन इलाजक विवरणवला खाना खाली छोड़बाक निर्णय लेलीह।

मेजक कात बैसल एक सदस्य आपत्ति कएलक, “जँ प्रत्येक लोक अपन-अपन शर्त राखत, तँ सहायता रुकि जाएत।” रुखसाना काँछसँ हाथ पोंछि कऽ कहलीह, “बिना शर्त हमरा सभसँ मेहनत लेल जा सकैत अछि, ई ताहिसँ सिद्ध नहि होइत जे शर्त पूछनिहार खराब लोक अछि।” ओ पिछला मासक भोजनक खर्च सामने रखलीह। दानमे भेटल चाउरक पाँति छल, मुदा ओहिसँ अलग काठ, तेल, रान्हबाक समय आ थारी धोएबाक मजदूरी लिखल छल। सदस्यक नजर पहिल बेर खाली राशन-वस्तुसँ हटि काजक समयपर गेल।

नैरा कानूनी सलाह दएबाक लेल नहि, कागद पढ़बाक सहायता लेल अएलीह। हुनकर अपन अभिलेख-ठेका रोकल छल; ओ बात पहिने कहि देलीह। कबीरक संग फोनपर संक्षिप्त बात भेल। कबीर कहलनि जे दू कागदक शब्द अलग जाँचू, मूल भवन-शर्त आ सार्वजनिक निर्णयक प्रति माँगू, तथा हस्ताक्षर भेलासँ स्थायी स्वामित्व सचमुच बदलैत अछि की नहि—ई बिना सम्बन्धित फाइल देखल निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि। रुहानी फोन राखि कहलीह, “तँ एखन केवल पहिल पन्नाक सीमित कामपर सहमति देब, दोसर पन्ना देखबाक लेल राखब?” चम्पा पुछलीह, “आ निवास करएवाला लोकक हस्ताक्षर?” रुहानी कहलीह, “जकर अधिकार प्रभावित होएत, ओकर आवाज बिना कोनो स्वीकृति नहि।”

ओहि समय आश्रयक बाहरी दरबज्जापर दूटा बक्सा राखबाक आवाज आयल। हसन आ जुबैदा बस अड्डासँ अएल छलाह। घाटपर अमीना भठियाराक खोमचाक कात जकरा सभकेँ पहिने ठाढ़ रहबाक छोट ठाम भेटल छल, ओहि लोकनिक पुरान बस-अड्डाक जगह आब लोहाक घेरासँ बन्द कएल गेल छल। हसनक बक्सामे सूई-धागा, छोट मापनफीता, जलरोधी कपड़ाक थैली आ यात्राक छोट उपयोगक सामान छल; जुबैदाक बक्सामे

सिलाइ लेल कटल पट्टी, तार आ ढक्कनसहित छोटे डब्बा। दूनूक कमाइ चलैत यात्राक लोकपर निर्भर छल।

हसन पुरान ठामक शुल्क-रसीद देखौलक। “अड्डा नयका ठेका मे गेल अछि,” ओ कहलक, “आब कहल जाइत अछि जे हमर रसीद बेचबाक अधिकार नहि देलक, केवल ओहि दिनक ठामक शुल्क लेल छल।” जुबैदा कहलीह, “ओकरा सही मानि लेलापर हम सभकेँ वर्षोंक काज छोड़ि देबाक पड़त। आ झूठो नहि कहब जे रसीदमे स्थायी पट्टा लिखल अछि। हमरा सभक अपील एहि पर अछि—जे व्यवस्था बदलल, तकर समय, सूचना आ वैकल्पिक ठामक हिसाब के देत?” रुहानी हुनका भीतर बैसबए कहलीह। जुबैदा पुछलीह, “पहिने बक्सा कतय राखब, जतय आगि आ पानि सँ बचत?”

दरबज्जाक कात हीरावती कुररियार अपन बाँसक छोट चौखट आ मरम्मतिक औजार लएने ठाढ़ छलीह। ओ अड्डासँ अगिला हाट धरि घूमि काज करैत छलीह। हुनका आश्रयक पाछाँक ओसारमे फाटल चटाई सीबाक प्रस्ताव भेटल छल, मुदा ओहि ठाम बैसएबाक बदला दिनभरि बिना मजदूरी चौकी करबाक शर्त लगाओल जा रहल छल। “चटाई सीबब हमरा अबैत अछि,” ओ कहलीह, “चौकी करब दोसर काम अछि। दू काजक दाम आ समय अलग कहू।” रुखसाना कागद निकालि पुछलीह, “चटाईक माप पहिले लेब?” हीरावती मेजक लग बैसि मापनफीता पसारि देलीह।

आँगनमे पड़ल पुरान बेंच हसन उठा कऽ सम करबाक कोशिश कएलक, मुदा ओकर एकर पएर हिलैत छल। जुबैदा कहलीह, “एतय बक्सा राखब तँ कपड़ा तलहसँ भीजत।” हीरावती अपन चौखटक बचल बाँसक टुकड़ा मापलनि। “ई पएरक नीचाँ लगि सकैत अछि, मुदा स्थायी जोड़ नहि,” ओ कहलीह। हसन पूछलक, “दाम?” हीरावती बाजलीह, “जतेक काज ततेक। मुदा बेंच ठीक करबासँ हमरा अड्डाक जागा नहि भेटत।” एहि उत्तरपर सभ हँसि पड़लाह। तीन लोकक अलग रोजीक संकट छोट बेंचक पएरमे समेटब सम्भव नहि छल, तथापि बेंच ओहि घड़ी ठाढ़ भऽ गेल।

जुबैदा अपन अपीलक मसौदा निकाललीह। ओहिमे पहिल पाँति छल—‘पुरान ठाम हमरे नाम लिखि दियौ।’ नैरा पुछलीह, “अहाँ वास्तवमे स्थायी स्वामित्व चाहैत छी?” जुबैदा सोचि कऽ कहलीह, “नहि। हमरा सभकेँ रोज बैसबाक निश्चित समय आ बिना

मनमाना वसूलीक ठाम चाही। जँ अड्डामे सुरक्षा लेल बदलाव आवश्यक अछि, ओकरा विरुद्ध हम नहि। मुदा रातिमे घेरा दऽ भोरे कहल जाए जे एतय कहियो ककरो रोजी नहि छल—ई नहि मानब।” ओ पहिल पाँति काटि नव पाँति लिखलीह—पुरान उपयोगक प्रमाण, परिवर्तनक आदेशक प्रति, सुनवाई आ विकल्पक माँग।

हसन चाहैत छल जे पुरान रसीदक संग घाटपर अमीनाक देल मजदूरीक पर्ची सेहो जोड़ल जाए। जुबैदा रोकलीह। “ओ पर्ची दोसर ठामक कामक अछि। अड्डाक हक साबित नहि करत।” हसन कहलक, “तखन ओकर प्रयोजन?” जुबैदा उत्तर देलीह, “नव रोजीक हिसाबमे राखब। जखन कार्यालय पूछत जे अड्डा बन्द भेलासँ की हानि भेल, तखन देखाएब जे खाली बैसल नहि छी, मुदा पहिनुका कमाइ एखन नहि भेटैत अछि।” हसन एहि भेदसँ सहमत भेल। दूनू नव काम करबाक निर्णय पुरान अन्यायक क्षमा नहि बनबैत छल।

हीरावतीक नाम आश्रयक देय-पंजीमे लिखैत सचिव ‘कुररियार’क वर्तनी पुछलक। ओ अपन छोट कागदपर लिखल नाम देखौलीह। “हमर घुमैत कामकें स्थायी ठामक प्रमाण कहि नहि लिखू” ओ कहलीह। “आ जँ काल्हि हम दोसर हाट गेलहुँ तँ ई नहि लिखू जे काम छोड़ि भागि गेलहुँ। हम तारीख दऽ कऽ काज लेब, तारीख दऽ कऽ देब।” रुहानी हुनक मापल चटाईक कागदपर कामक समय, मजदूरी आ सामानक लागत अलग लिखौलीह। हीरावती ओहि प्रतिक फोटो अपन अनुमति सँ जुबैदाक फोनमे राखबौलीह; हुनका अपन फोन नहि छल, मुदा प्रति माँगबाक अधिकार हुनकर छल।

दिन चढ़लाक बाद आश्रयक बैठक फेर बैसल। हसन आ जुबैदा अपन अपील अलग जमा करबाक निर्णय कएलनि; आश्रय हुनका बस-अड्डाक स्थायी पट्टा दऽ नहि सकैत छल। मुदा रुहानी कहलीह जे भवनक ओसारक एक कोना सप्ताहमे दू निर्धारित घड़ी हुनकर मरम्मतक काज लेल उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि, बशर्ते आगि, बाट आ अन्य रहनिहारक सुरक्षा जाँचल जाए। जुबैदा पुछलीह, “तकर किराया?” रुखसाना छोट खर्च बतौलनि; छूट देबाक निर्णय समितिक खुला खातामे राखबाक कहलनि। ई दान नहि, सीमित उपयोगक प्रस्ताव छल।

किछु सदस्य आश्रयक पत्र पर हस्ताक्षर करबाक आग्रह फेर कएलक। “आजु नहि कएल गेल तँ मरम्मति रुकत,” एक जन कहलनि। चम्पा बोललीह, “मरम्मतिक आवश्यकता सच अछि। मुदा एकर बदला हम सभ घरक चाभी स्थायी रूपेँ दऽ दी, ई कोन हिसाब?” रुहानी पहिल कागद उठा कऽ पढ़लीह—सम्पर्क, आगि-पानि निरीक्षण आ आवश्यक मरम्मतिक तिथि सुनिश्चित करबाक अस्थायी सहमति। ओ एहि काम लेल लिखित अनुमति माँगलीह। कक्षामे उपस्थित लोकमतक अलग-अलग पाँति बनल; असहमत सदस्यक नाम सेहो दर्ज भेल। दोसर कागदपर हस्ताक्षर नहि भेल।

अपराह्न नगर-कार्यालयमे पत्रक दुनू हिस्सा स्वीकार करबाक कर्मचारी तैयार नहि छल। ओ कहलक, “आधा कागदसँ फाइल अटक जाएत।” रुहानी कहलनि, “जे आधा काज हमरा सभक अधिकारमे अछि, ओकरा एखन दर्ज करू; जे दोसर अछि, ओकर मूल शर्त देखब।” कर्मचारी आगाँक मेजसँ नियमक प्रति माँगलक। जाँचलाक बाद ओ सीमित रखरखाव-अनुरोधक प्राप्ति दऽ सकल, मुदा स्थायी हस्तान्तरणक फाइल अलग रखलक। चम्पा एहि प्राप्तिक अर्थ स्पष्ट करौलीह—भवनक स्वामित्वक फैसला नहि, निरीक्षण आ आवश्यक काजक माँग स्वीकार होएबाक प्रमाण मात्र।

कार्यालयसँ बाहर निकलैत हसनक हाथमे दूटा कागद छल—बस-अड्डाक पुरान शुल्क-रसीद आ अपीलक नव प्राप्ति। ओ जुबैदासँ कहलक, “एक कागद अतीतक, दोसर आगाँक बाटक।” जुबैदा उत्तर देलीह, “अतीतक कागदमे जतेक लिखल अछि, ओतबे। आगाँक बाटक कागदमे सेहो अभी केवल माँग अछि।” हीरावती ओहि घड़ी अपन बाँसक चौखट काँधपर उठा रहल छलीह। ओ हँसि कऽ कहलीह, “अहाँ सभ कागद गनू, हम चटाई गनैत छी। दुनूक हिसाब एक दिन मिलत तँ नीक; नहि मिलल तँ मेहनताना नहि रुकबाक चाही।”

साँझमे आश्रयक ओसारपर पाँच थारी लगल। रुखसाना अलगसँ दामक हिसाब रखि कऽ भोजन परोसलीह। चम्पा एक थारी लैत पुछलीह, “हम काल्हि कोठरीमे रहब कि एतय, से एखन नहि तय।” रुहानी कहलीह, “थारी लेल निर्णय एखनहि लेल जा सकैत अछि।” जुबैदा हसनकँ कहलीह जे भातमे नोन कम अछि; हसन अपन हिस्साक नोन हुनका दिस सरका देलक। हीरावती हँसलीह, “एहि घरमे नोनक स्वामित्वक विवाद नहि

खोलू।” किछु क्षण लेल सभक ध्यान भोजनमे रहल। बाहर पवनचक्कीक पंखुड़ी हलुक हावासँ तीन बेर घुरल।

घर घुरलापर नैरा सरिताकेँ घटनाक सार कहलीह। सरिता अपन सिलाइकेँ एक बेर रोकि पुछलनि, “रुहानी हस्ताक्षर कएलीह?” नैरा कहलीह, “जतेक काज लेल अधिकार भेटल, ओतबे। स्वामित्वक पन्ना एखन नहि।” सरिता कहलीह, “कियो अपन लग राखल चाभी दोसराकेँ खोलबाक देत, ताहिसँ घर दोसरक नहि भऽ जाइत।” नैरा हाँसि कऽ पूछलीह, “अहाँ ई बात अपन बही लेल कहैत छी कि आश्रय लेल?” सरिता धागाक गाँठ खींचैत कहलीह, “जकरा लेल बुझै छी, तकरा लेल। मुदा बहीक मूल पन्ना हमर लगहि रहत।”

नैरा रातिमे कापी खोललीह। महेशक अनुमति तोड़बाक अपन भूलक बाद ओ छोट-छोट वचनक सीमा अलग लिखए सीखि रहल छलीह। आजुक पन्नामे तीन वाक्य लिखलनि— आश्रयक मरम्मतिक अनुमति स्वामित्व नहि; बस-अड्डाक पुरान शुल्क स्थायी पट्टा नहि; निजी कागदक प्रति सार्वजनिक प्रकाशनक स्वीकृति नहि। ओकरा लग एखन सभ प्रश्नक उत्तर नहि छल, मुदा तीनू वाक्यक कारण अगिला दिन ककरो देय गलत नामपर नहि चढ़ए, एहि लेल ओ लिखल गेल छल। बाहर सरिताक घरक ओसारमे पानिक एकटा बून्द टपकल। संकेत बाल्टी सरका देलक। नल मरम्मत करबाक काज भोरे रहत; बाल्टी राखब आजुक जिम्मेदारी छल।

अध्याय २४ • बाहरक ओसार

भोरमे सरिताक घरक ओसारक बाल्टी भरि गेल छल। रातिभरि छप्परसँ टपकल पानिमे आकाशक कोनो छवि नहि बचल छल; खसैत चूनक महीन कण बाल्टीक तलमे दुधिया तह बनौने छल। संकेत बाल्टी बाहर उड़ल आथल तँ ओसारक दहिन कातक काठक चौखटक लग एकटा नव दरार देखलक। ओ आड़ुरि लगाबए गेल, मुदा सरिता रोकलनि—“अखन नहि छू। काल्हि मिस्त्री जँ कहत जे ई पएर कमजोर अछि, तँ पहिने सहारा देब।” नैरा घरक भीतरसँ सुनैत छलीह। काल्हिक राति धरि घर छोड़बाक बात हुनका कल्पना जकाँ लागैत छल; आब ओही चौखटक नीचाँ सँ अपना सभक बिछौना हटाएब आवश्यक भऽ गेल छल।

नैराक अभिलेख-ठेका रोकल गेलाक बाद घरक खर्चक हिसाब बदलि गेल छल। सरिता अपन सिलाइक जमा पैसा छप्परक मरम्मतमे लगाबए चाहैत छलीह, मुदा कारीगर कहने छल जे भीतरक सड़ल काठ बदलए धरि ओसारमे बास करब जोखिमक अछि। संकेत एकटा अस्थायी सहारा बनएबाक प्रस्ताव देलक। सरिता ओकर बनाओल रेखाचित्र देखलनि आ कहलीह, “बना सकै छह, मुदा पहिने माप-तौल जननिहारक बात सुनब। तोहर हाथ बचत तँ आरो बहुत किछु बनत।” संकेत अपन कापी समेटि लेलक। ओकरा खराब लागल, मुदा ओ एहि बातपर रूठल नहि जे माय अपन डर कहि देलीह।

गलीमे चम्पाक कोठरीक दरबज्जापर मकानमालिकक आदमी भोरेसँ ठाढ़ छल। ओकर हाथमे कुलूप आ एकटा कागद छल, जाहिपर ‘सुरक्षा कारण’ लिखल छल। चम्पा लोटामे पानी भरि अपन मायक औषधि दैत छलीह। मायक घुटना सूजल छल; रातिमे कोठरीक सीढ़ी उतरब हुनका कठिन पड़ैत छलनि। आदमी कहलनि, “तीन दिनक अवधि खतम। सामान बाहर राखि दियौ।” चम्पा कहलनि, “मूल निरीक्षण-पत्र एखन धरि नहि देलहुँ। हम असुरक्षित छत नीचाँ रहबाक जिद नहि करब, मुदा हमर सामानक सूची आ चाभीक प्राप्ति बिना अहाँ ताला नहि लगायब।” आदमी ढाढ़स देबाक बदला दवाब देलक। चम्पा मायक तकिया उठबैत कहलनि, “हम आब एतय राति नहि रहब। तकर अर्थ ई नहि जे बकाया किराया वा जमा रकम अहाँ जेना चाहब तेना लिखब।”

माय पुछलनि, “रुहानी लग जएब तँ लोक की कहत?” चम्पा पुरान नील रङक चादर तह करैत कहलीह, “लोक एतय रहितो कतेक किछु कहैत अछि। अहाँक दवाई आ साँसक चिन्ता हमरा पहिने अछि।” ओ मायक कपड़ाक छोट गठरी बाँधि, लोहेक सन्दूक खोलि किरायाक रसीद, उपचारक पर्ची आ निजी चिट्ठी तीनटा अलग लिफाफामे रखलीह। चोरी कएल सन्देशक घाव एखन रहलनि। एहि बेर ओ चाहैत छलीह जे सामानक संग-संग कागदक बाट सेहो हुनकें बुझल रहए।

रुहानीक आश्रयमे रुखसाना चूल्हापर भात चढ़ौने छलीह। चम्पा अएलीह तँ रुहानी पहिने मायक बैसबाक ठाम देखौलीह, फेर पंजी खोललीह। “एतय दू रातिक लेल कक्ष खाली अछि,” ओ कहलीह। “अगिला दिन अस्पतालक जाँचक हिसाबसँ समय बढ़एबाक बात बैसि कऽ तय करब। अहाँ चाहब तँ कोठरीक अधिकारसम्बन्धी आवेदन अलग चलत।” चम्पा खिड़की खोलि देखलीह—बाहरक ओसारमे छोट पवनचक्की घुरैत छल। “खाटपर माय रहथु,” ओ कहलीह, “हम ओसारमे बैसि कपड़ा सी सकैत छी?” रुखसाना कहलनि, “बैसू, मुदा जे काज लेल दाम भेटत, ओकरा आश्रयक मुफ्त सेवा नहि लिखब।” चम्पाक माय पहिल बेर मुस्की देलीह।

ओहि समय बदरी नोनफर अपन पुरान बसावटक कातसँ आयलाह। हुनकर परिवार अस्थायी निर्माण-ठामक पछिला कतारमे रहैत छल; बरखाक पानि ओहि ठाम नाला न भेटलासँ जमा भऽ रहल छल। कार्यालयक आदमी एकटा पुनर्वास-पर्ची देने छल—नव बसावटमे एक निश्चित कोना, मुदा पीबाक पानि, शौच आ मजदूरीक आवागमनक कोनो स्पष्ट व्यवस्था नहि। बदरी पर्चीक मोड़ खोलि रुहानीसँ कहलनि, “एतय ‘वैकल्पिक आश्रय’ लिखल अछि। जे ठाम देखाओल, ओहि ठाम रातिमे बच्चाकें पानि कोन इनारसँ देब, से ककरो नहि मालूम।” हुनकर पत्नी ओहि पर्चाक पाछाँ दोसर हाथसँ लिखने छलीह—बच्चाक औषधि, बासन, कामक औजार, दुधारू बकरीक रस्सी। ई सामानक सूची घरक नामसँ पैघ भऽ गेल छल।

रुहानी पुछलनि, “एहि पर्चापर हस्ताक्षर कएलहुँ?” बदरी कहलनि, “प्राप्ति देलहुँ। पूरा पुनर्वास स्वीकार नहि कएलहुँ। हमर परिवार जँ दू दिन लेल खाली मैदानक कात तिरपाल गाड़त, तकरा स्थायी सहमति नहि मानल जाए।” हुनकर पत्नी बीचमे कहलीह, “आ

भाड़ाक गाड़ी लेल जे पैसा माँगल जाएत, ओकरा कोन खाता देत?” बदरी पहिने ओ प्रश्नक उत्तर नहि सोचने छलाह। ओ मुँह नीचाँ कऽ पर्ची देखलनि। घर छोड़बाक निर्णय केवल पुरुषक हस्ताक्षर नहि छल; भार उठौनिहारक पीठपर ओकर पहिल हिसाब लिखाइत छल।

बदरीक संग आयल मालती कोचे नव बसावटक निवासी छलीह। हुनकर घर ओतहि पहिनेसँ छल, मुदा अपन टोला धरि सार्वजनिक नलसँ पानि लएबाक पक्का बाट नहि बनल छल। ओ अपन पीतक डिब्बाक ढक्कन खोलि मटमैला पानि देखौलीह। “अहाँ सभकेँ एतय पठाओल जा रहल अछि,” ओ बदरीक परिवारसँ कहलीह, “मुदा हमरासभकेँ जे एकमात्र नल अछि, ओकरा लग भोरेसँ लाइन लगैत अछि। कियो कहैत अछि नव लोक अबत तँ पानि बँटत नहि। हम कहैत छी—बँटब किएक नहि, पानि बढ़एबाक काजक हिसाब सेहो पूछू।” हुनकर स्वरमे स्वागत आ चिन्ता दुनू छल।

मालती नव बसावटक छोट नक्शा पसरौलीह। नलक आगाँ पाँक छल, ओकर बगलक गली पहिल बरसाते कटि गेल छल। हीरावतीक बाँसक चौखट ओतय काज आबि सकैत छल, मुदा स्थायी पुल जकाँ ओकर भरोसा नहि कएल जा सकैत छल। बदरीक पत्नी कहलनि, “हम बच्चाकेँ ओहि रास्तासँ राति नहि लऽ जाएब।” मालती उत्तर देलीह, “तखन पहिने सामूहिक अस्थायी बाट आ जलभरावक निकास चाही। हम अपन टोलाक सहमति बिना नलपर नव ताला लगए देब नहि। मुदा कोनो परिवारकेँ पानि लेल हमर घरक दुआरपर दीन बनि ठाढ़ रहबाक सेहो नहि कहब।”

नैरा एहि सभ बातक बीच पहुँचल छलीह। अपन घरक छप्पर जाँचए वला कारीगर हुनका दू दिन लेल भीतरी कोठरी खाली करबाक कहलने छल। संकेत रेलचौक लग एकटा छोट किरायाक कमरा देखलने छल, जतय ऊपरक छत पक्का छल आ खिड़की खोललासँ पच्छिमक हावा अबैत छल। सरिता पहिने तैयार नहि छलीह। “घरमे जे किछु अछि, ओकरा कोना छोड़ब?” ओ पुछने छलीह। नैरा कहने छलीह, “दू दिन लेल जएब; मरम्मतक माप आ लिखित खर्च बिना घर परित्यागक कोनो कागद नहि होएत।” सरिता उत्तर देने छलीह, “कागद कहि देबै छी, मुदा आँगनक तुलसीकेँ के पानि देत?” एहि प्रश्नक उत्तर नैरा तखन नहि देऽ सकलीह।

दुपहरि तीनू परिवारक काज एक्के ओसारपर जमा भेल—चम्पाक मायक खाट, बदरीक भाड़ाक गाड़ी लेल रस्सी, आ सरिताक दरावला छप्परक नमूना। ई लोक एके आदेशसँ नहि निकलल छलाह। चम्पा कोठरीक विवाद आ मायक स्वास्थ्यक कारण हटैत छलीह; बदरी अपूर्ण पुनर्वासक पर्ची स्वीकार कए बिना असुरक्षित ठाम छोड़ैत छलाह; सरिता अपन घरक मरम्माति आ परिवारक सुरक्षा लेल अस्थायी ठाम चुनैत छलीह। बाहर साँझक दुपहरिया धूप छल, मुदा आश्रयक भीतर कियो ककरो निर्णयकेँ वीरताक घोषणा नहि बनौलक। सभकेँ अगिला राति लेल वास्तविक ठाम चाही छल।

रुखसाना तीन गिलास छाछ रखलीह। मालती पूछलीह, “एतेक लोक अहाँक रसोइमे आयल, हिसाब कोना राखब?” रुखसाना जवाब देलीह, “कियो जँ दान करए तँ ओकर नाम अलग, कियो जँ भोजनक दाम देत तँ अलग, आ हमरा जे भोरसँ रान्हए पड़ल से अलग।” बदरीक छोट बेटा छाछ पीबैत कहलक, “हमरा गिलास दोसर रंगक किएक?” रुखसाना हँसलीह, “तोहर गिलासमे पानि नहि, छाछ अछि, ई देख।” बच्चा कहल, “रड तँ गिलासक अछि।” ओहि हँसीमे किछु बेर लेल तीनू घरक थकान कम भेल।

चम्पा मकानमालिकक आदमी लग फेर गेलीह। एहि बेर रुहानी नहि, चम्पा स्वयं बोललीह। कोठरीक भीतरक सामानक सूची दू प्रतिमे बनल; एक चम्पाक हाथमे, दोसर ताला लगौनिहारक। ओ मायक खाटक बिस्तरा उठौलीह, मुदा खिड़कीपर राखल मिट्टीक छोट गमला लेल ठमकि गेलीह। ओकरा ओहि घरमे एकटा बरस पहिने लगौने छलीह। आदमी कहलक, “ई पुरनका गमला छोड़ि दिअ।” चम्पा ओकरा हाथमे उठौलीह। “ई हमरा नामपर खरिदल नहि अछि,” ओ कहलीह, “मुदा माटि हम भरने छी आ गाछ हम रोपने छी।” आदमी किछु नहि बजलक। ताला लगल, चाभीक प्राप्ति पर हस्ताक्षर भेल, जमा रकमक विवाद खुला रहल।

बदरी अपन परिवारक सामान ठेलामे राखैत छलाह। पटरीक कातक तिरपालक ओहि छोट घरमे हुनकर पत्नी मच्छर भगएबाक लेल नीमक पात सुखौने छलीह। ओ पात गठरीमे रखलीह। एक पड़ोसी पुछलक, “तूँ नव बसावट मानि लेलहुँ?” पत्नी कहलनि, “नहि। बच्चाकेँ खतरावला पानिसँ निकालि रहल छी। लिखित आपत्ति बदरी जमा करताह, आ हमरा लेल ओतय पहुँचि पानि कोना भेटत से मालती देखबैत छथि। एतय

रहितो परिवारक पानि दू दिनसँ खराब छल।” पड़ोसी हुनकर गठरी गाड़ीमे चढ़ा देलक। ओकरा अपना घर छोड़बाक आवश्यकता नहि छल, मुदा भार उठएबासँ ओ मुक्त नहि छल।

नव बसावटक कात मालती दू स्त्रीक संग बाल्टी राखबाक छोट पाटी साफ करैत छलीह। बदरीक परिवार पहुँचल तँ नलक नजदीक ठेलामे तिरपाल उतारबाक ठाम नहि भेटल। किछु लोक कहलक, “आब एहि ठाम सेहो भीड़?” मालती कहलीह, “ठामक फैसला अहाँ सभ मिलि करब। मुदा नल बन्द कऽ ककरो जाँच कएल नहि जाए।” ओ बदरीक पत्नीकेँ अपन घरक दू गिलास पानि देलीह। “ई आतिथ्य अछि, स्थायी व्यवस्था नहि,” ओ स्पष्ट कएलनि। “काल्हि हम सभ नलक समय, लाइन आ माटिक बाट लेल एक संगे अर्जि लिखब।” बदरी हाथ जोड़बाक बदला पुछलनि, “काममे हम की करब?” मालती कहलीह, “पहिने सब परिवारक उपयोगक हिसाब सुनू। जे नल एखन अछि ओकरा उखाड़ब नहि।”

साँझसँ पहिने नैरा घरक कोठरी खाली करए घुमलीह। संकेत किताबसभ बोरोमे भरैत छल। ओकर सस्ताक पुरान रेडियो, धातुक तार आ अधबनल ध्वनि-पेटी एक कोनमे पड़ल छल। “ई सभ लएब?” ओ पुछलक। सरिता कहलनि, “जतेक उठा सकै छह, ओतबे। बाकीक सूची बना दे।” संकेत प्रश्न कएलक, “माय, जँ कोठरी खाली कए देब तँ लोक कहत जे अहाँ चलि गेलीह?” सरिता अपन घरक बाहरक पाँतिकेँ तकैत कहलीह, “रहब-नहि-रहब कागदमे के लिखत, तकरा पर नजर राखब। मुदा जे घरमे सुरक्षा नहि, ओतय तोरा सुताएब केहन ममता?”

नैरा ओहि समय सत्ताइस नामक पन्नाक बात उठौलीह। सरिताक पुरान बहीक दू तह अलग राखल छल; एक कापीमे सार्वजनिक सुधारसम्बन्धी पाँति, दोसर पुरान मोड़मे मूल नामपन्ना। एखन धरि ओ कागद सरिताक निजी सन्दूकमे छल। नैरा कहलीह, “जँ छप्पर उतारल जाएत तँ एतय राखब उचित नहि। हम सुरक्षित लिफाफामे बन्द कऽ लऽ जाइत छी।” सरिता हुनकर हाथ रोकलीह। “लिफाफा अहाँ दऽ सकै छी। मुदा मूल पन्ना हम स्वयं रखब। जे बात हमरा बिना पूछने बाहर गेल, ओकर चोट एखन घरमे अछि।” महेशक गवाही समयसँ पहिने छापबाक भूल नैराक स्मृतिमे ताजे छल। ओ बहस नहि कएलनि।

सरिता सन्दूक खोललनि। तहक बीच राखल मूल पन्नाक कोना पुरान आ पीयर छल, मुदा लिखावट दिस नैरा हाथ नहि बढौलीह। सरिता दुनू कात खाली कागद राखि पन्नाकें कपड़ाक भीतर मोड़लनि। ओहि पन्नाक फोटो कोनो नव फोनमे नहि लेल गेल। संकेत केवल कपड़ाक पोटरीक आकार मापि देलक जे ओ नीकसँ लकड़ीक छोट बक्सामे समा जाए। सरिता बक्साक ताला जाँचलनि, चाभी अपन साड़ीक आँचरमे बान्हलनि। “हमरासँ जँ प्रश्न होएत तँ हम उत्तर देब,” ओ कहलीह, “मुदा हमर हाथसँ कागद लए कियो हमर नामपर उत्तर नहि लिखत।”

नैरा बुझलनि जे माय एखन छलिया अपराधक पन्नाकें नहि, अपन हाथक अधिकारकें बचा रहल छथि। ओ कहलीह, “हम जे प्रति जाँच लेल रखल अछि, तकर स्थिति अलग लिखि देब। मूल अहाँक लग, निजी नामक सार्वजनिक उपयोग एखन निषिद्ध।” सरिता पुछलनि, “आ जे एक नाम पढ़बाक मनाही कएने रही?” नैरा कहलीह, “ओ मनाही तोड़ल नहि जाएत। मुदा जाँच कतय रुकि रहल अछि से अलग देखब।” सरिता कोनो उत्तर नहि देलीह। दीवालपर पुरान घड़ियालक काँटा एक मिनट आगाँ सरकल। घरमे पानिक टपकब एखनहुँ चलि रहल छल।

छप्पर जाँचए आयल कारीगर बाहरी चौखटपर लकड़ीक अस्थायी टेक लगबौलक। ललितकें माप देखएबाक लेल बोलाओल गेल छल; ओ कहलनि जे टेक लगबएबसँ स्थायी सुरक्षा प्रमाणित नहि भऽ जाइत। कारीगरक लिखल पर्चीमे दरारक लम्बाइ, भीजल काठ, छप्पर हटएबाक आवश्यकता आ फेर निरीक्षणक तिथि छल। नैरा ओकर प्रति लेलीह। पड़ोसी बूढ़ी स्त्री पुछलीह, “अहाँ सभ जेब तँ एहि घरक तुलसीक कोन सेवा?” संकेत कहल, “हम रोज साँझमे एतय आबि सकैत छी।” सरिता तुरन्त कहलीह, “घरक भीतर नहि घुसब जाबत टेक हटत नहि। तुलसीकें बाहरी गमलामे राखि दियौ।” बूढ़ी अपन आँगनक कात गमला रखबाक ठाम देलीह।

चम्पाक माय आश्रयक खाटपर आब पैर पसारि सूतलीह। चम्पा हुनकर लग बैसि सूईमे धागा पिरोबैत छलीह। रुहानी अएलीह तँ चम्पा पुछलीह, “हम एतय रहबाक बदला काज करब, ताहिसँ दोसर रोगीकें ठाम कम भेटत?” रुहानी कहलीह, “काजक दामक सम्बन्ध अलग रहत। जँ एतय रहबाक अवधि बढ़एबाक अछि तँ सभक जरूरत देखब। अहाँक

मायकें उठाएब उचित नहि रहत, एतबा बात लिखि राखब।” चम्पा खिड़की दिस तकलीह। पवनचक्की एहि बेर तेज घुरैत छल, मुदा कियो ओकरा देखए नहि ठमकल। जीवनक अनिवार्य काज आगाँ छल।

बदरी नव ठामक पाछाँ छोट तिरपाल तानलनि, मुदा ओहि राति पानि लेबाक बरतन घटि गेल। हुनकर पत्नी कहलनि, “बड़का घैल पुरान ठाम छूटि गेल।” बदरी तुरन्त घुरए चाहलाह। मालती रोकलीह—“अन्हारमे कटानवला बाट नहि जाउ। एखन हमर एकटा खाली घैल राखू। भोरमे संग जाएब।” बदरी एखनहुँ कार्यालयक पर्ची चहुँदिस देखैत छलाह। “घरक हिसाब लिखब तँ घर जकाँ लगत?” ओ पुछलनि। पत्नी मुस्की दऽ कहलीह, “घर ओतय सेहो नहि छल जतय पानि सिरहाना धरि आबि गेल छल। मुदा जे सामान छूटल अछि, ओकरा घुरि आनब। ई स्वीकारपत्र नहि, अपन सामानक देखभाल अछि।”

अयोध्याकें छोड़ि भरतक यात्राक पूर्वसन्ध्या छल। राजभवनक एकटा बाहरी ओसारपर लोकसभ छोट गठरी बाँधि रहल छलाह। भरत वचन देने छलाह जे राम लग जएताह; मुदा राजधानीमे रहनिहार लोकक देय ठाढ़ नहि रहि सकैत छल। शत्रुघ्न लेखपालसँ पुछलनि जे अन्नक माप आ मजदूरीक पाँति के लिखत। एक सेवक कहलक जे पहिल आदेश राजा दशरथक नामसँ लिखल छल, आब नव नामक प्रतीक्षा अछि। शत्रुघ्न उत्तर देलनि, “भूख ककरो नामक प्रतीक्षा नहि करत।” राजभवनक भीतरक सेवा आ बाहरक नगरक आवश्यकता एक्के यात्रा-तैयारीमे समा नहि सकैत छल।

कैकेयी भरत लेल एकटा ऊनी ओढ़ना अनलीह। भरत लेबाक पहिने पुछलनि, “ई कोन घरसँ आयल?” कैकेयी कहलीह, “हम अपन कोठरीक पुरान सन्दूकसँ निकालने छी।” भरत ओढ़ना लेलनि; ओहि घड़ी हुनका मायक डरक कारण झाल अन्याय क्षमा कएल गेल, एहन घोषणा नहि भेल। उर्मिला सेविकासभक भोजनक देय लेल अलग छोट थैली राखि देलीह। “एतय जे लोक यात्रा पर नहि जएत, हुनकर काज बन्द नहि होएत,” ओ कहलीह। भरत सिर हिलौलनि। प्रस्थानक ध्वनि राजभवनक भीतर छल; जकरा घरमे रहबाक छल, हुनकर आवाजो ओहि राति सुनाइत रहल।

विदेहपुरमे सरिताक परिवार रेलचौकक छोट कमरामे पहुँचल। दरबज्जाक सिटकिनी ढीला छल; संकेत अपन औजार खोलि ओकर पेंच कसि देलक। नैरा सामान रखैत पूछलीह, “अहाँ थाकलहुँ?” सरिता कहलीह, “थाकल छी, मुदा भात बनाएब। तोरा सभक भूख लागल होएत।” नैरा आगू बढि चूल्हा देखए लगलीह। एतय भातक डब्बा नब छल, पानीक गिलास नब, मुदा सरिताक चाउर नापबाक पुरान पीतल कटोरी ओही रहलीह। संकेत हँसैत कहलक, “कटोरी सेहो घर बदललक।” सरिता कहलनि, “कटोरी नहि, पेटक हिसाब संग आयल अछि।”

रातिक भोजनक बाद नैरा तीनटा पन्ना अलग फाइलमे रखलीह—चम्पाक सामान आ ताला प्राप्तिक प्रतिक सूचना; बदरीक अपूर्ण पुनर्वासपर आपत्ति आ नव ठामक जलसमस्या; अपन घरक मरम्मतिक निरीक्षण-पर्ची। तीनू परिवारक हानि अलग छल। पहिलक जमा रकम अटकल, दोसराक स्थायी पानि नहि, तेसराक छप्पर नहि सुधरल। कोनो एकटा प्राप्ति सभ समस्या सुलझाओल नहि छल। मुदा तीनू घरक लोक अपन-अपन वस्तु आ निर्णयक संग अगिला दिन धरि पहुँचल छलाह। नैरा एहि जानकारीकें सार्वजनिक नामपंजीसँ नहि जोड़लीह।

सरिता लकड़ीक बक्सा सिरहाना नहि, छोट मेजक नीचाँ रखलीह। संकेत पुछलक, “कुंजी अहाँक लग?” “हँ,” सरिता कहलीह। “आ जँ हम जखन-तखन बाहर रहब?” ओ पुछलक। सरिता ओकरा देखैत कहलीह, “घरमे हम दुनू नहि रहब तँ कागदक रक्षा ककरा करबाक चाही, से तय करब। मुदा एखन ओ कागदक मालिकाना ककरो हाथमे नहि देल जाएत।” नैरा कहलीह, “भोरे रेलचौकसँ फकीराकें भेटए जाएब; महेशक खबरक लेल नहि, ओकर अपन यात्रासम्बन्धी शिकायतक अगिला तिथि बुझबाक लेल।” सरिता उत्तर देलीह, “पहिने हम सभकें ई नव घरक पानिक बाट बुझबाक अछि।”

बाहरसँ रेलक छोट सीटी सुनाइ देलक। संकेत खिड़की खोललक तँ पानि-भीजल हवा भीतर आयल। सरिता अपन ओढ़नीक कोना सँ मेज पोंछलनि, भातक बचल हिस्सा ढाकलनि आ बक्साक ताला फेर एक बेर छू कऽ देखलनि। नैरा कोनो नाम नहि पढ़लीह। एहि राति ओ सभ घरसँ बाहर छलाह, मुदा घरक कथा समाप्त नहि भेल छल। रेलचौकक

अन्हारमे ककरो पएरक आहट आयल, फेर दूर चलि गेल। सरिता दीया बुझौलनि। खाली
ओसारक जगहँ छोट कमराक दुआर आब हुनकर पहरा बनल छल।

अध्याय २५ • रेलमे खाली जगह

रेलचौकक किरायाक कोठरीमे भोरक पहिल आवाज रेलक नहि, पानिक खाली बाल्टीक छल। सरिता नल खोलने छलीह; दू बेर हवा निकलल, तेसर बेर पानिक पातर धार आयल। ओ लोटा बाल्टीक नीचाँ सरकौलीह आ संकेतकें बजौलीह। “एहि घरमे पानि कते बेला अबैत अछि, पहिने ई लिख।” संकेत घड़ियाल देखलक। नैरा कापीमे काल्हिक तीन परिवारक अपूर्ण काज देखैत छलीह। फकीराक यात्राक शिकायतक अगिला तारीख बुझबाक लेल आजु स्टेशन जेबाक छल। सरिता कहलनि, “अहाँक जाँच चलत, मुदा घरक पानि फेरी एहन ठमकि गेल तँ भात केना पाकत?” नैरा उठि बाल्टीक दोसर कात सम्हारि लेलीह।

स्टेशन लग सड़क भिजल छल। चायक दूकानक छाजनसँ टपकैत पानि बचबैत यात्री अपन-अपन गठरी लऽ जल्दी चलैत छलाह। फकीरा खम्भाक लग ठाढ़, पयरसँ पत्थरक किनार छू कऽ बाटक दूरी नापि रहल छलाह। पुरान सेवा-द्वार एखनहुँ आधा बन्द छल, मुदा ओकर बगलक सँकरा बाटे किछु लोक भीतर जाइत छल। नैरा लग पहुँचिते कहलनि, “अहाँक आवेदनक अगिला सुनवाई बुझए आयल छी।” फकीरा उत्तर देलनि, “सुनवाई हमरा सेहो बुझबाक अछि। मुदा एखन भोरक गाड़ी उतरएवाली अछि। ई बेर हम ओ गाड़ी छोड़ब नहि।”

नैरा अपन घड़ी देखलीह। कार्यालयक कर्मचारी नौ बजेसँ पहिने नहि बैसत, से हुनका कहल गेल छल; फकीरा कहैत छलाह जे नौ बजे धरि हुनकर दिनक पहिल कमाइ होइत अछि। “हम गाड़ी धरि अहाँक संग रहि सकैत छी,” नैरा कहलीह। फकीरा हँसि देलनि। “संग रहू, मुदा हम जकरा राह देखाएब, ओकर उत्तर हम स्वयं देब। अहाँ हमर बाबू नहि छी।”

भोरक गाड़ी एखन आबि नहि रहल छल, तखने सोना कठौतिया दू बाँसक ढाँचा आ औजारक गठरी ठेलापर लऽ पहुँचलीह। सामानक एक हिस्सा रेलपारक मरम्मत-ठाम पहुँचैबाक छल। ठेलाक पहिया कीचड़मे फँसल; सोना कोना धक्का देबाक अछि से बतबैत

स्वयं कन्धा लगौलीह। एक आदमी कहलनि जे नगरक दानी-मण्डली एहि ढुलाईकेँ समाजसेवा कहि अपन पचामे छापत। सोना ठेला छोड़ि ओकर दिस तकलीह। “भाड़ा के देत? ठेलावालाक दू दिनक बकाया एखनहुँ बाकी अछि।” आदमी कहलनि, “दानक काममे एहन हिसाब!” सोना उत्तर देलीह, “दान दानक नामसँ लिखू। हमर भाड़ा हमर नामसँ।”

फकीरा सोना दिस मुड़लाह। “अहाँक ठेला दहिन नालीक कोनासँ निकालू। कच्चा जगह अछि।” सोना कहलीह, “हम ढाँचा पकड़ि लैत छी, अहाँ आवाज देत रहू।” ई एकटा छोट साझेदारी छल; फकीरा ठेला नहि खिंचने छलाह, मुदा बाटक चिन्ह बुझौने छलाह। सोना गाड़ीपर सामानक संख्या लिखल पर्ची फेर गनलीह आ ठेलावालाकेँ एक प्रति देलीह। दानी-मण्डलीक आदमी पचामे फोटो लेबाक चाहलक। सोना हाथ रोकलीह —“पहिने भाड़ाक प्राप्ति, फेर जकर काम अछि ओकर अनुमति।” आदमी एखन उत्तर नहि देलक।

तखन हरिचरण पासवानक छोट मालवाहक गाड़ी स्टेशनक पाछाँक चौकमे आकि रुकल। रातिक चिकित्सालयमे रोगी ढोएबाक लेल ओकर चालककेँ अचानक बजाओल गेल छल; आजुक भोरक खेप लेल गाड़ी फेर सँ तैयार होएब जरूरी छल। हरिचरण टायरक कात बइसि हवा देखैत छलाह। “रोगीक गाड़ी कहैत सभ किराया घटए चाहैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा चालकक राति आ भोर दुनू गिनल जाएत।” ओ मोटी बहीमे काल्हिक यात्राक समय लिखलनि—गाड़ी कखन निकलल, कखन घुरल, पेट्रोलक दाम, चालकक विश्राम। नैरा पुछलीह, “ई गाड़ी गोदाम लग सेहो चलैत अछि?” हरिचरण पन्ना बन्द नहि कएलनि। “भाड़ापर चलैत अछि। किन्तु ककरो सामान उठौनिहार होएबसँ भीतरक सामानक जिम्मेदार हम स्वतः नहि भऽ जाइत छी।”

नैरा अपन प्रश्न रोकलीह। गोदामक पुरान बाटक गवाही जल्दी छापि देबाक परिणाम एखनहुँ महेशक परिवार भोगि रहल छल। हरिचरणसँ ओ केवल एतबा पुछलीह जे ओहि दिनक यात्राक भाड़ा आ चालकक मजदूरी अलग-अलग रसीदमे रहैत अछि की नहि। हरिचरण एकटा खाली नमूना देखौलनि, वास्तविक ग्राहकक नाम ढाँकि। “जँ लिखित जाँच अबत तँ जे कागद हमरा अधिकारमे अछि से प्रक्रिया अनुसार देखाएब। यात्राक

अनुमानसँ अपराध मत लिखू।” नैरा सहमत भेलीह। गाड़ीक पाछाँ एकटा खाली स्ट्रेचरक पट्टी लटकैत छल; ओकरा देखिते हुनका उर्मिलाक रात्रिकालीन कपड़ा-ढुलाई याद पड़ल। दुनू काजक समय कागदमे समाएब जरूरी छल।

गाड़ी प्लेटफॉर्म लग घुसल तँ लोकक धक्का एक कात बढ़ल। फकीरा पहिने सुनि लेलनि जे भीतरी सीढ़ीपर उतरनिहारक चाल एखन तेज अछि। ओ एक परिवारकेँ बाजारक बस पकड़बाक बाट बुझौलनि, दोसराकेँ औषधालयक छोट वाहनक ठाम। दू लोक हुनका सिक्का देलनि; तेसर स्त्री धन्यवाद कहि चलि गेलीह। फकीरा तीनू उत्तरक बाद हाथक अलग-अलग सिक्का छू कऽ थैलीमे रखलनि। नैरा गिनबाक प्रस्ताव नहि रखलीह। एक बेर हुनका लागल जे फकीरा तुरन्त कार्यालय चलि देशु, मुदा अगिला यात्रीक “नदी पार कोन बाट?” सुनिते फकीरा फेर अपन काजमे लगि गेलाह।

रेलसँ उतरल बोराक ढेरी लग शिव धाँड़ी अपन मजदूरीक पर्ची लऽ ठाढ़ छलाह। ओ रेलवे कर्मचारी नहि, गाड़ी खाली करएवला ठेकाक टोलीमे काज करैत छलाह। पछिला हफ्ताक हिसाबमे हुनकर नामक अन्तिम अक्षर बदलल छल; फलतः भुक्तानक सूचीमे हुनकर हस्ताक्षर मिलल नहि। “नाम पूछलासँ कहैत छी शिव धाँड़ी,” ओ हिसाब देखनिहारकेँ कहलनि, “मुदा दू पर्चीपर दू वर्तनी किएक?” हिसाबवाला कहलक, “पहिने पहिचान सिद्ध करू।” शिव हाथक बोरा उतरबएवला चिह्नित टिकट देखौलनि। “काजक दिनक संख्या तकरा सँ मिलाउ। पहिचानक झगड़ामे हमर दिन गायब नहि होएत।”

नैरा शिवक कागद देखबाक आग्रह कएलनि, मुदा शिव पहिने पुछलनि, “हमरा एहि काजसँ की भेटत?” प्रश्न उचित छल। नैरा कहलीह जे ओ निजी विवरण लेबाक बदला सार्वजनिक शिकायत लिखबाक ढाँचा बुझा सकैत छथि। शिव पर्ची अपन हाथमे रखि कर्मचारीक समक्ष एक पाँति लिखबौलनि—नामक भिन्न वर्तनीक कारण भुगतान रोकल गेल; कामक टिकट सुरक्षित अछि; सुधारक तारीख देल जाए। कार्यालयक आदमी प्राप्ति देलक, पैघ दावाक उत्तर नहि। शिव कहला, “आब ई पर्ची हमर घर जेब। अहाँक कापीमे हमर नाम एखन नहि चढ़त।” नैरा हुनकर बात मानलीह।

लक्ष्मी झाँगड़ ओहि समय एकटा पुरान कपड़ाक थैली सम्हारैत पाछू आबि ठाढ़ भेलीह। थैलीमे नकल कराएल किछु पन्ना छल—पुरनका श्रम-अनुबन्ध, जेकर एक

पाँतिमे कामक मौसम लिखल आ दोसरमे रहबाक व्यवस्था। मूल प्रति ककरा लग अछि, तकरा हुनका एखन निश्चित पता नहि छल। ओ शिवसँ कहलीह, “तोहर काजक दिन कागदसँ हटि गेल; हमर घरक पुरान काजमे कागद अएखन उपलब्धे नहि।” नैरा पुछलीह जे अहाँ एहि कागदसँ की सिद्ध करए चाहैत छी। लक्ष्मी उत्तर देलीह, “पहिने ई जानब जे नकल कोन पन्नाक अछि। तकर बादे दावा। हमर दादाक कामक बदला देय छल, की घरक उधारी, दूनू पाँति एके नहि होएत।”

शिव हुनका एकटा सस्ता जिल्द बनएवला ठामक बाट बुझौलनि। लक्ष्मी कहलीह, “हम नकल आनब, मुदा जे कागद हमर परिवारक नहि, ओकरा अपन कहि कऽ प्रस्तुत नहि करब।” हुनकर घरक लोक चाहैत छल जे विवाद जल्दी समाप्त होअए; लक्ष्मी चाहैत छलीह जे एकटा गलत दावाक बदला नव ऋण नहि चढ़ि जाए। नैरा हुनका कोनो तिथि निश्चित करबाक दबाव नहि देलीह। थैलीक धागा खुलि गेल तँ शिव ओकर गाँठ बान्हि देलक। दुनूकें ट्रेनक अगिला समयसँ पहिने अपन-अपन कामपर घुर्बाक छल।

प्लेटफॉर्मक बाहर जावेद कलन्दर अपन कपड़ाक छोट परदा बाँधि रहल छलाह। परदाक भीतर बाँसक दू पतली छड़ी आ हाथसँ बनल कागजक पुतरी छल। पहिने ओ जीवित पशुक संग तमाशा देखबैत छलाह; आब ओ पशु नहि रखबाक निर्णय लेने छलाह। बच्चासभ पुछलक, “बन्दर कतय?” जावेद हँसि कहलनि, “आजु कागजक बन्दर छल। ओकरा भात नहि, हाथक मेहनत चाही।” ओ पुतरीक डोरी सम्हारि एकटा छोट कथा देखौलनि, जाहिमे भूखल पात्र अपन भातक आधा हिस्सा देबाक अभिनय करैत छल। लोक हँसल, किछु बच्चा फेर देखबाक जिद कएलक।

जावेद प्रदर्शन समाप्त कऽ पतरा खोललनि। जे लोक दाम देबाक चाहैत छल, ओ देलक; किछु लोक बिना दाम चलि गेल। जावेद ओकरा पकड़ि राखलनि नहि। मुदा स्टेशनक एक पहरदार कहलक जे भीड़ जमेबासँ बाट बन्द होइत अछि। जावेद तुरन्त परदा खसौलक, फेर खाली जगह दिस इशारा कऽ पुछलनि, “ई कात रखी तँ आवागमन खुलल रहत?” पहरदार पहिने हँसल, फेर कहलनि जे स्टेशन-सीमा आ सार्वजनिक चौकक हद जाँचल जाए। जावेद मापबला खूँटा देखए चाहलनि। “बिना पशु रोजी बदललहुँ,” ओ कहलनि, “एखन बिना ठामक रोजी बनएबाक उपाय नहि जनैत छी।”

नैरा जावेदक पुतरीकें देखैत रहलीह। संकेत एहन डोरीक खिलौना बनएब सीखए चाहैत छल; ओ एहि भोर घरमे नलक धारक समय लिखि रहल छल। नैरा जावेदसँ पुछलीह जे साँझमे बच्चाक लेल ककरो अनुमति सँ छोट प्रस्तुति होए सकैत अछि की नहि। जावेद कहलनि, “भाड़ा, ठाम आ समय पहिने निश्चित करू। मुफ्त कहब तँ सभ काज हलुक बुझत।” ई कहि ओ डोरीक गाँठ फेर बनौलनि। फकीरा किछु दूरीसँ आवाज चिन्हि कहलनि, “एहि पुतरीमे ई गीत खूब जँचत।” ओ अपन पसिन्नक पुरान लोकधुनक दू पाँति गुनगुनौलनि। जावेद ताल पकड़ि लेलक। एहि बेर ककरो दस्तावेजक बात नहि भेल।

फकीरा गीत पूरा कएलाक बाद चुप भऽ बैसलाह। गाड़ीक भीड़ घटि गेल छल। चायवला हुनका एकटा छोट गिलास धरिकऽ गेल; फकीरा दाम देलनि, आ चायमे चीनी एखन कितेक अछि से पुछलनि। जावेद कहलक, “अहाँ तऽ गानाक दामो माँगि सकैत छी।” फकीरा हँसि कहलनि, “ई गीत हम अपन मन लेल गबैत छी। सभ चीजक पाछाँ पर्ची नहि होइत छैक।” नैरा एहि उत्तरकें कापीमे नहि लिखलीह। कतोक बेर लोक अपन मनोरंजन लेल जे करैत अछि, ओकरा गवाही बनएबाक कोनो आवश्यकता नहि रहैत अछि।

चौकक आगाँ एकाएक बच्चा हराएबाक हल्ला उठल। भीड़मे एक महिला बच्चाक हाथ पकड़ि तेज चलि रहल छलीह; कियो हुनका अनजान दलक सदस्य कहि कऽ मोबाइल उठौलक। नैरा देखलीह जे दोसर कातसँ बच्चाक एक वृद्ध सम्बन्धी दौड़ैत आबि रहल छथि। एक युवक कहलक, “फोटो पठा दिअ; बच्चा चोर पकड़ल गेल।” फकीरा उठि ठाढ़ भेलाह। “के देखल जे बच्चा चोरी भेल?” ओ पुछलनि। युवक कहलक, “सभ कहैत अछि।” फकीरा उत्तर देलनि, “सभक आवाज आ देखल घटना एक नहि।” महिला डरासँ बच्चाकें गोदमे उठा लेलीह।

नैरा मोबाइल उठबैत युवकसँ कहलीह जे पहिने बच्चाक कुशलता जाँचल जाए, फोटो नहि बाँटल जाए। स्टेशनक सूचना-खिड़कीपर महिलाकें अपन बात कहबाक अवसर भेटल। बच्चाक संग आयल वृद्धा छूटल डिब्बासँ उतरबाक कारण अलग बाटे आ गेलीह; बच्चा हुनक संग यात्रा करैत छल, मुदा प्लेटफॉर्मपर भीड़मे किछु बेर अलग भऽ गेल छल। महिला परिवारक सदस्य छलीह, ई बात दूनू तरफक यात्रापत्र आ हुनकर आपसी

बातचीतसँ कर्मचारीक उपस्थितिमे मिलल। बच्चा पानि माँगलक। नैरा भीड़केँ हटब कहलनि। ई घटना एतय बच्चा-अपहरण सिद्ध नहि करैत छल; आ नगरमे कोनो दोसर परिवारक हराएल बच्चाक खोज केहनो कारणसँ बन्द नहि होइत छल।

युवक अपन फोनमे बनल अपूर्ण तस्वीर हटेबाक लेल तैयार नहि छल। ओ कहलक, “जँ साँचमे चोरी भेल रहैत?” नैरा उत्तर देलीह, “तँ सुरक्षित जाँच जरूरी रहैत, सार्वजनिक आरोप नहि।” सूचना-खिड़कीक कर्मचारी लिखलनि जे बच्चा परिवारक लग पहुँचल आ एहि घटनापर गलत अफवाह फैलल। फकीरा पुछलनि जे कियो प्लेटफॉर्मक भीड़ हटाएबाक समय लिखत की नहि। कर्मचारी कहलनि, “ई अलग प्रविष्टि अछि।” फकीरा बजलाह, “ठीक। बच्चाक बात बच्चाक, हमर बन्द बाटक बात हमर। एक कागद पर सभकेँ मत गाढ़ू।”

नैरा फेर अपन मूल प्रयोजन याद कएलनि। फकीराक पुरान शिकायतक प्राप्ति-पर्ची हुनकर कापीमे नम्बर सहित दर्ज छल, मुदा फकीराक लग मूल प्रति छल। अधिकारीक टेबुल लग पहुँचलापर नैरा आग्रह कएलनि जे शिकायतक स्थिति पुछबाक चाही। फकीरा कहला, “आजु भोरक गाड़ी गेल। आब दस मिनट हमरा देब।” ओ थैलीसँ काजक सिक्का निकालि अलग गनलनि, चायक दाम घटौलनि, आ दुपहरिया गाड़ीक समय फेर जाँचलनि। “अहाँक जाँच हमरा लेल जरूरी अछि,” ओ कहलनि, “मुदा अगर अहाँ कहब जे तुरन्त चलू, तँ हमर पेटक दाम के भरत?”

नैरा अपना सँ जे सहज उत्तर निकलए चाहैत छल—हम दऽ देब—ओ नहि देलीह। जाँचक नामपर फकीराकेँ अपन कमाइक बदला नैराक कृपापर छोड़ब उचित नहि छल। “हम कार्यालयमे लाइन लगि स्थिति पुछि लैत छी,” ओ कहलीह, “अहाँ दुपहरिया गाड़ी पूरा करू। जँ व्यक्तिगत बयान चाही तँ समय ओहि गाड़ीक बाद रखबाक निवेदन करब।” फकीरा सिर हिलौलनि। “जँ अधिकारी हमर बोलब चाहत, समय हम स्वयं बताएब। अहाँ हमर बदला बयान नहि देब।” नैरा उत्तर देलीह, “नहि देब।” एहि छोट वचनक वजन महेशक प्रकरणक बाद हुनका खूब बुझाईत छल।

कार्यालयक खिड़कीपर नैरा पुरान क्रमांक देखौलीह। कर्मचारी पंजी पलटलनि आ कहलनि जे शिकायत जीवित अछि, बन्द नहि कएल गेल; नाम-मिलानक जाँचक लेल

अलग कक्षसँ उत्तर आबए बाकी अछि। फकीराकेँ मृत बतौनिहार पहिल प्रविष्टि एखन प्रणालीमे रहैत अछि। नैरा पुछलीह, “प्राप्तिक बाद कतेक दिनमे उत्तर देबाक नियम लिखल अछि?” कर्मचारी लिखित सूचना-पट्ट दिस इशारा कएलनि। नैरा ओहि पट्टक सार्वजनिक समयसीमा अपन कापीमे लिखलीह, मुदा फकीराक निजी पहचानवला संख्या भीड़मे जोर-जोरसँ नहि दोहरौलीह। अधिकारी बयान लेल भोरक समय देबाक प्रस्ताव रखलनि। नैरा कहलीह, “आवेदक भोरमे जीविका कमबैत छथि। हुनकर सहमतिसँ दुपहरक समय देल जाए।”

कर्मचारी पहिने कहलनि, “सभकेँ अलग समय देब कठिन अछि।” नैरा खिड़कीक बाहरक भीड़ दिखौलनि। “तखन लिखू जे समय बदलबाक अनुरोध कएल गेल। स्वीकार वा अस्वीकारक उत्तर आवेदककेँ दियौ।” कर्मचारी पर्ची पर तिथि लिखलनि, अगिला सप्ताह दुपहर बादक सुनवाईक प्रस्ताव अंकित कएलनि, आ कहलनि जे अंतिम पुष्टि आवेदकक हस्ताक्षरपर निर्भर रहत। नैरा एहि प्रस्तावक प्रति लऽ बाहर अएलीह। ई मृत्यु-प्रविष्टिक सुधार नहि छल। तथापि फकीराकेँ शिकायत लेल अपन भोरक रोजी छोड़बाक बाध्यता एखन टलि सकैत छल।

नैरा फकीराकेँ नवल प्रस्ताव-पर्ची पढ़ि सुनौलीह। फकीरा सुनलाक बाद पुछलनि, “एहि समयमे नदीपारक नाव छुटत की नहि?” नैरा उत्तर नहि जनैत छलीह। फकीरा अपन पुरान तालिका खोलि नावक समय मिलौलनि; वर्षाक कारण समय बदलि सकैत छल। “हम काल्हि हीरासँ पूछब,” ओ कहलनि। “तिलवाहक तटपर नाव चलौनिहार लोकसँ भेटबाक अछि। नावक शर्त हुनकासँ पहिने सुनब।” नैरा कहलीह, “जाँच आ यात्रा दुनू लेल तिलवाहक पानि बुझब जरूरी अछि।” फकीरा उत्तर देलनि, “हँ, मुदा पानि पर काज करनिहार लोककेँ मात्र बाट बतौनिहार नहि बुझिह।”

दुपहरिया गाड़ी आबि गेलाक बाद फकीरा दू यात्रीकेँ सामानक ठाम तक पहुँचौलनि। एक जन हुनका तय मेहनताना देलक; दोसर कहलक जे छुट्टा नहि अछि। फकीरा ओकरा नाम अथवा चेहरा पकड़ि रखबाक जिद नहि कएलनि, मुदा स्पष्ट कहला, “अगिला बेर पहिने दाम पूछिह। हमरा दया नहि, अपन काजक मूल्य चाही।” यात्री लजाइत चलि गेल। नैरा एहि बेर ओकरा पाछू नहि धेलीह। फकीरा गाड़ीक अन्तिम सीटी सुनि अपन पयरक

बगलक खाली पाटीपर बैसलाह। गीतक ओहि धुनक अंतिम दू स्वर फेर गुनगुनौलनि; एहि गीतमे न मृत्यु-प्रविष्टि छल, न लिफाफाक रहस्य।

साँझमे नैरा रेलचौकक कोठरी घुरलीह तँ संकेत नलक समयक तालिका बनौने बैसल छल। भोरक पहिल धारक बाद दू बेर नल बन्द भेल छल; ओ पड़ोसीसँ पानि मँगने छल, मुदा ओकर दाम अथवा बँटबाक नियम एखन तय नहि छल। सरिता चूल्हापर दाल चढ़ौने छलीह। “फकीराक की भेल?” ओ पुछलनि। नैरा कहलीह, “मृत्यु-विवरण सुधरल नहि। मुदा सुनवाईक समय बदलबाक लिखित प्रस्ताव भेटल अछि। ओ भोरक गाड़ी नहि छोड़लनि।” सरिता पुछलनि, “नामक मूल पन्ना देखब चाहलकाह?” नैरा उत्तर देलीह, “नहि। ओ अपन पंजीक जाँच चाहैत छथि। हमर पन्ना, बच्चाक अफवाह आ जलकरक कागद तीन अलग बात अछि।”

संकेत कापीक बीच एकटा खाली घर बनौलक—‘दुपहरक गाड़ी’। नैरा हँसलीह, “ई घर किएक?” संकेत कहलक, “भोरमे नल चलैत अछि, दुपहरमे फकीराक गाड़ी, साँझमे मायक दाल। सभक समय एक नहि। ककरो काज राखबाक लेल दोसरक समय खाली नहि मानल जाए।” सरिता दाल हिलबैत कहलीह, “एतेक पढ़ि कऽ ई बात सीखलहुँ तँ नीक भेल।” बाहर रेलक सीटी सुनाइत रहल। एहि बेर आवाजमे ककरो जीवनक गुम भऽ गेल पहिचानक रहस्य मात्र नहि छल; काज पूरा कऽ घर घुरनिहारक थकान, थोड़ेक कमाइ आ अगिला दिनक बाट सेहो छल।

अध्याय २६ • गुहक तट

भोरक ट्रेनसँ उतरनिहार लोकक भीड़ घटलाक बाद फकीरा अपन छड़ीक नोकसँ रेलचौकक पाथर ठोकलनि। नैरा हुनकर लग काल्हि भेटल सुनवाईक नव समयवला पर्ची अनने छलीह। फकीरा ओहि पर्चीकेँ हाथमे लऽ कहलनि, “दुपहर बाद लिखल अछि। मुदा नदी पार करबा लेल जे नाव पकड़ब, तकर समयो मिलबाक चाही। पहिने नाविकक बात सुनि ली।” सरिता नव कोठरीमे पानिक बासन सम्हारि रहल छलीह। नैरा निकलैत काल हुनका कहि आयल छलीह जे आइ मूल नामक पन्ना नहि, फकीराक यात्राक व्यवस्था जाँचबाक अछि।

तिलवाह दिस जाएवला सड़कपर वर्षाक पानि एखन नीचाँ नहि उतरने छल। पक्की सड़कक बाद माटिक चढ़ान छल जतय बैलगाड़ीक पुरान पहीसँ बनल खाँचामे पानि ठाढ़ रहैत। फकीरा कखन आवाजसँ, कखन लाठीसँ बाटक कात चिन्हैत चलैत छलाह। नैरा एक बेर हाथ पकड़बाक लेल आगू बढ़लीह। फकीरा कहलनि, “खाँच आयत तँ कहू। हम अपने पयर राखब।” नैरा हुनकर कात चलैत आगाँक खाँच बतबैत रहलीह। एहि छोट अन्तरकेँ मानब हुनका आब सीखाइत छल।

घाटपर पहिल जे वस्तु देखाइ देलक से नाव नहि, भीजल पटरा छल। दू आदमी ओकर फाटल जोड़पर लोहेक पट्टी कसि रहल छलाह। हीरा नावक कात झुकि पानिक रेखा मापि रहल छलाह। हुनकर हाथमे खुरदरा डोरी आ रंग उधड़ल लकड़ीक पातर फट्टा छल। “आइ पानि काल्हिसँ चढ़ल अछि,” ओ कहलनि। “नाव चलत, मुदा भाड़ा आ भारक बात पहिने तय होएत। सब किछु एक्के नावपर नहि चढ़त।” दूर किनारपर कियो पताका नहि फहरौने छल; मात्र किछु लोक अपन सामानक संग प्रतीक्षा करैत छलाह।

हीराक संग मधु केवट एकटा मोट बही रखि बैसल छलाह। हुनकर नाव प्रायः परतीतधरि आदमी, छोट खेप आ कखनो सीमातीर्थ दिस जाएवला यात्रीकेँ पहुँचेबाक पहिल पड़ाव देत। नदी पार करब आ अन्तरराष्ट्रीय सीमा पार करब अलग यात्रा छल; मधु एहि भेदकेँ सभक आगाँ खुलि कऽ बुझबैत छलाह। “जकरा आगाँ बस पकड़बाक अछि

ओकरा हम नदीक दोसरा कात उतारब,” ओ कहलनि। “सीमाक कागद आ चौकीक जाँच हमर नावक भाड़ामे नहि समाएत।” नैरा ई भेद अपन कापीमे लिखलीह।

घाटक पाछाँ दफ्तरसँ भेजल एकटा पर्ची रस्सीसँ खूँटामे बाँधल छल। लिखल छल जे सार्वजनिक सहायताक यात्रामे नाविकसमुदाय निःशुल्क सेवा देत। कोनो हस्ताक्षर नहि छल। मधु कागद खोलि देखबैत कहलनि, “गामक लोक संकटमे पड़त तँ हम मुँह फेरि नहि लेब। मुदा नाव, तेल, पटरा आ मल्लाहक समय ककरो दानमे जन्मल नहि अछि। मुफ्त यात्रा घोषित करनिहार पहिने बतौक जे नावक पेट कोना भरत।” एक वृद्ध यात्री कहलनि, “अहाँ लोक अपन नदीकें बेचैत छी?” मधु उत्तर देलनि, “नदी हमर सम्पत्ति नहि, मुदा नाव हमर जिम्मेवारी अछि। एहि दुनू बातकें एक नहि करू।”

हीरा पर्चीक पाछाँ नजर देलनि। “काल्हि जे बैठक भेल छल, तकरा ‘प्रस्ताव’ कहल गेल। ई ‘आदेश’ कोना भेल?” मधु सभासँ कहलनि जे बैठकक प्रति जेकरा लग अछि से अनए। कोनो लोक तुरन्त नहि उठल। नैरा पुछलीह, “हस्ताक्षर रहित प्रति लगबएवला के?” मधु कन्धा झटकलनि। “ई जाँचक प्रश्न अछि; अहाँ जे जानैत नहि छी, से हमरा कहि अपराधी नहि बनाउ।” नैरा चुप भेलीह। महेशक गवाहीक बाद अर्ध-सत्य प्रकाशित करबाक पछतावा एखन हुनकर काजमे जगह माँगैत छल।

ओहि बीच फकीरा घाटक बगलक पथारपर ठाढ़ भेलाह। “हमरा नावक दू बात चाही,” ओ कहलनि, “बड़ठबाक सुरक्षित ठाम, आ जखन नदी चढ़त तखन यात्राक बदलल समय। काल्हि सुनवाई लेल नव घड़ी भेटल अछि, मुदा घाटपर जँ दू घण्टा प्रतीक्षा होएत तँ फेर ओही रोजी छूटत।” मधु हुनका पहिचानबाक जिज्ञासा कएलनि; फकीरा अपन नाम कहलनि, पर मृत्यु-प्रविष्टिक पूरा विवरण सभाक सामने नहि पढ़लनि। “अहाँक कागदक बीमारी हम नहि बुझब,” मधु कहलनि, “मुदा प्रतीक्षाक समय बहीमे लिखि सकैत छी।”

बहुत पहिने, गङ्गाक एकटा तटपर, गुह अपन नावक नीचाँ लगल पानिक धक्का सुनैत छलाह। रातिक पाछाँ नदीक चाल बदलल छल। निषादसभक छोट बस्तीमे भोरक भोजन बनि रहल छल; नावक रस्सी सुखाओल जा रहल छल आ किछु बालक काँटावला बाँसक बाड़ि हटबैत छल। ओहि समय राम, सीता आ लक्ष्मण तटपर पहुँचलाह। हुनका सभक संग यात्रा छल, मुदा किनारपर रहनिहार लोकक लेल ई भोर पहिने सँ काजक छल। गुह

अतिथिक पहिचान कएलनि; प्रणामक पाछाँ हुनकर नजर सीताक पयरक कीचड़ आ नावक तख्तापर गेल।

गुह कहलनि, “हमरा संग मित्रता स्वीकार करू, मुदा पहिने नदीक बात सुनू। घाटक पटरा भीजल अछि। एक बेरमे सभ सामान नहि जायत। हमर लोक जे माछक जाल भोरमे निकालैत अछि, ओहि बाटे नाव मोड़लासँ ओकर दिनक काज बिगड़त।” लक्ष्मण कहलनि, “हम सभकेँ जल्दी पहुँचेबाक अछि।” गुह उत्तर देलनि, “तँ सुरक्षित बाट चुनब जरूरी अछि। जल्दीक नामपर जाल फाड़ि देब मित्रताक काम नहि।” राम हुनका दिशि तकलनि। मित्रक कहल बात हुनका आदेशक अवहेलना नहि लगल; ओ तटक अनुभव छल।

सीता नावक पटरा छूबि पुछलनि, “जकरा तैरब नहि अबैत अछि, ओकरा उतरबामे के हाथ देत?” गुह दू नाविककेँ बजा कऽ घाटपर एकटा मजबूत बाँस टिकबौलनि। “हाथ चाही तँ पुछि कऽ देब,” ओ कहलनि। “ककरो देहकेँ अपन मददक प्रतिष्ठा बनएबाक आवश्यकता नहि।” लक्ष्मण पानि दिस नजर कएलनि। ओ अपन हथियार अलग ठाम रखबाक शर्त स्वीकार कएलनि, जाहिसँ नावक संतुलन नहि बिगड़ए। गुह अपन लोककेँ कहि देलनि जे पहिल बेर पार पहुँचा कऽ घुरैत ओ सभ जालवला पुरान बाट नहि काटथि।

तटपर एक नौजवान नाविक पुछलक, “राजकुमार अतिथि छथि तँ भाड़ा के लेत?” गुह कहला, “अतिथि हमरा प्रिय छथि, आ आइ हम अपन हिस्साक अन्नसँ नाविकक देय भरब। मुदा जँ काल्हि कोनो दोसर यात्री आएत तँ ओकरा भाड़ा माँगब अपमान नहि होएत।” राम कहला, “तखन हमरा बुझू जे अहाँ अतिथि-सत्कारकेँ अपन लोकक हकसँ अलग राखैत छी।” गुहक छोट निर्णयसँ नावक भीतर ठाम बनल; भोजन बनौनिहार, जाल सुखौनिहार आ नाव खेवनिहारक दिन एतबे लेल समाप्त नहि भेल।

विदेहपुरक तिलवाहपर पानि फेर हिलोर मारलक। मधु नावपर चढ़ल दू बोरा उतरबौलनि। कागदमे एक बोरा ‘आपदा-सामग्री’ लिखल छल, मुदा भीतरक सामान निजी दूकानक बंद पैकेट छल। मधु कहलनि, “एहि बोरा लेल निःशुल्क आपदाक ठाम नहि देब। जे काजक अछि तकर नामसँ लिखू।” बोरा अननिहार दुकानदार विरोध कएलक। हीरा भिजल पटरा देखौलनि—“एहि नावक भारक सीमा लिखल अछि। दू बोरा घटत तँ दू

यात्री सुरक्षित बैसताह।” दुकानदार बोरा उठाएबाक मजदूरकेँ डाँटए लागल। मधु ओकरा रोकलनि। “मालक बहस हमरा संग करू, मजदूरक संग नहि।”

पटरा कसैत एकटा युवक अपन भीजल कमीज निचोड़लक। ओ लखन सतार छलाह। काल्हि रातिसँ ओ घाटक अस्थायी चढ़ान ठीक करबाक काजमे लागल छलाह; दिहाड़ी ठेकदारक कागदमे ‘सामूहिक सेवा’ लिखल देखलक। ओ बहीपर अँगुरी रखि कहलनि, “हम लकड़ी उठा कऽ एतय रखने छी, पानि हम नहि रोकलहुँ। हमर रातिक समय सेवा कहि मेटा देब तँ भोरक रोटी कोना आएत?” मधु पुछलनि, “कतेक घण्टा काज कएलहुँ?” लखन कहलनि, “हमर संग आरो दू आदमी छल। हमर अकेलक हिसाब लिखलासँ हुनकर नाम छूत।” ओ अपना कापीमे तीनूकेँ समय अलग लिखि रहल छल।

नैरा लखनसँ पुछलीह जे कागदक प्रति लेबाक इच्छा अछि की नहि। लखन कहला, “एखन हमरा अपन कागद ठीक करए दिअ। जँ भुक्तान कटत तखन साथी सभक संग बोलब।” हुनकर आवाजमे रोष छल, मुदा ओ एहि क्षणक विवादकेँ अगिला पैघ आरोपमे नहि बदललनि। हीरा जे पटरा जाँचि रहल छलाह तकर एक कोना एखन ढीला छल। लखन हथौड़ी उठौलनि आ कहलनि, “हम काज पूरा करब; काज पूरा कएलापर दामक दिन निश्चित कराउ।” मधु बहीमे दर्ज कएलनि जे पटरा-दलकेँ अलग प्राप्ति देल जाएत।

घाटक ऊपरक खाली पथारपर दू समूह छोट मंचक जगह देखैत छलाह। नन्दू नट अपन बाँसक खम्भाक दूरी नापैत छलाह; संग आएल बच्चा बस्ता कन्धापर रखि अगिला दिनक पाठ दोहरबैत छल। हरि नटुवा कपड़ाक परदा सम्हारि कहैत छलाह जे ओहि साँझ प्रस्तुति भेल तँ कमाइक एक हिस्सा बच्चाक किताब आ फीस लेल अलग राखताह। दुनू समूह एक नहि छल; हुनकर कला, परिवार आ भाड़ाक हिसाब अलग छल। घाट समितिक एक सदस्य कहलक, “नाव मुफ्त चलत, तखन तमाशा सेहो मुफ्त राखू।” नन्दू हँसला नहि। “पढ़बाक घड़ीमे बच्चा मंचपर नहि रहत,” ओ स्पष्ट कहलनि।

हरि अपन पातर डब्बामे सिक्का खनखनौलनि। “बच्चाक किताब लेल अलग राखल दाम सस्ता तमाशा बनि नहि सकैत। जकरा प्रस्तुति चाही ओ समय आ मजदूरी कहौक।” नन्दू जोड़लनि जे मञ्चक स्थान एहन होए जतय नाव उतरनिहारक बाट नहि रुकए। मधु घाटपर कोनो भीड़ बढ़बाक पहिने हीराक माप जाँचबाक आग्रह कएलनि। नन्दू आ हरि

अपन-अपन बाँस चिन्हि अलग राखलनि; बच्चासभकेँ ओ दिनक प्रदर्शनक पूर्वाभ्यासक बदला विद्यालय जेबाक समय भेटल। छोट सहमति भेल, प्रस्तुतिक पूरा अनुबन्ध एखन बनबाक छल।

एखन धरि पानि लगका पत्थरपर रेखा खींचैत एक स्त्री चुपचाप सुनि रहल छलीह। रीता एक्का हाथमे मोड़ल कागद रखने छलीह। ओ घाटक पुरान मरम्मतिक समय ऋण लेबाक आवेदनक गवाह रहलीह, मुदा आजु वसूलीक कागदमे हुनकर उपाधि आ दोसर व्यक्तिक नाम एक्के पाँतिमे जुटल छल। “ई रकम हमर नामपर किएक?” ओ पुछलीह। बही रखने आदमी कहलक, “ई तऽ परिवारक नामक फेरबदल होएत।” रीता उत्तर देलीह, “हमर परिवारक हिसाब हमरा बुझल अछि। एहि नामकेँ बिना देखल सही नहि करब।”

मधु रीता दिस पर्ची बढ़ौलनि, मुदा रीता ओकरा अपन हाथमे रखि कहलनि जे पहिने मूल अनुबन्ध आ ऋण देनिहारक प्रति मँगाओल जाए। “ककरो गरीबी देखिकऽ सभ ऋण एक्के कहि देब सहज अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जतेक लेनदेन हमर अछि से हम चुकाएब; जे हमर नहि तकर देय किएक?” नैरा अपन नोटबुकमे रीता नाम नहि लिखलीह। ओ खाली ई दर्ज कएलनि जे घाट समितिक ऋणपंजीमे नाम-मिलानक आवेदन देबाक व्यवस्था नहि छल, आ एक आवेदिका मूल प्रति माँगि रहल छलीह। रीताक निजी विवाद ओकरे हाथमे रहल।

रमणी बिन्द बरकी पोखरिक जलकरक पर्ची लेने घाटपर पहुँचलीह। हुनका संग रेणु छलीह, जे घाटपर आवागमन आ कपड़ा धोएबाक समय अलग-अलग लिखबैत रहलीह। रमणी कहलनि, “पोखरिक माछक पट्टा देखाएबासँ ई नदीक सभ घाटपर हक नहि सिद्ध होइत। आ घाटपर सबकेँ उतारबाक अनुमति सेहो माछक ठेका नहि बनि जाइत।” रेणु कहलीह, “हमरा घाट खुलबाक समय चाही; रमणीकेँ उत्पादनक शर्त चाही। दू अलग प्रश्न एक पर्चीपर लिखि देल जाए तँ फेर कियो नहि सुनत।”

रेणुक हाथमे कागदक एक पुरान प्रति छल। ओ कहलीह जे मायकेक एक चिट्ठीमे ‘बागमती’ लिखल अछि, मुदा दोसर पुरान नकलमे ‘बंगमती’। चिट्ठीक प्रसंग ओहि दिसक जलउपयोगक छल, विदेहपुरक तिलवाहक भौतिक नाप नहि। “एहि दू पाठकेँ देखिकऽ हमरा ई कहबाक नहि अछि जे तिलवाह ओहि नदीमे जा मिलैत अछि,” रेणु कहलनि।

“मात्र ई जे जुनका पत्रमे घाट लिखल अछि, हुनका खेतक माछक हिस्सेदारी कहलासँ ओहिठामक स्त्रीक पानि लेबाक बात गायब भऽ जाइत।” नैरा दूनू पाठक भेद जकाँक तैकाँ लिखलीह; नक्शापर नव संगमक रेखा नहि खींचलीह।

एक कर्मचारी हँसी दबबैत पुछलक, “तैं अहाँ सभ कतेक बही चाहैत छी?” रमणी उत्तर देलीह, “जतेक काज अलग अछि ततेक पाँति। बही अधिक भेलासँ पानि नहि बढ़त; गलत पाँति घटत।” रेणु कागद मोड़ि जोड़लीह जे कपड़ा धोएवाली उर्मिलाक समय सेहो घाटक खुलल बाटसँ जुड़ल अछि; अस्पतालक कपड़ा नदीमे कतहु उतारबाक छूट नहि, मुदा तट धरि सुरक्षित ढुलाई आवश्यक अछि। हीरा एहि बातपर सहमत भेलाह जे नावक सुरक्षा आ घाटक सामान्य पहुँच एकटा नियमक भीतर दबाएब हानिकारक होएत।

दुपहर चढ़ैत नावक चढ़ानक अन्तिम पटरा कसि गेल। हीरा पहिने खाली नावमे चढ़ि भार राखबाक चारि ठाम जाँचलनि। मधु रस्सीकेँ दू बेर खींचि देखलनि। लखन अपन साथीसभक समय-पर्ची लऽ कातमे ठाढ़ छलाह। नन्दू आ हरि मंचक बाँस नावक बाटसँ दूर हटा चुकल छलाह। रीता अपन ऋणक कागदपर कोनो नव हस्ताक्षर नहि कएने छलीह। रमणी आ रेणु अलग-अलग आवेदन लिखि रहल छलीह। घाटपर कोनो पैघ जयघोष नहि भेल; कोनो एक जना सभकेँ सफल बना देलक, एहन दृश्य सेहो नहि।

फकीरा पुछलनि, “आब हम पार जा सकैत छी?” मधु कहलनि, “आजुक पहिल चक्करमे चारि यात्री, दू छोट गठरी। अहाँ बइसबाक पहिने पटरा छु कऽ देखू; कोनो जल्दी नहि।” फकीरा डोरी पकड़बाक ठाम पुछलनि। मधु हाथ बढ़ेबासँ पहिने स्थान बुझौलनि। फकीरा अपन गति सँ नावमे बैसलाह। नैरा किनारपर रहलीह; हुनका पार जेबाक तत्काल आवश्यकता नहि छल। हीरा भारक पाँति देखलनि, आ नाव धीरे-धीरे तट छोड़लक।

गङ्गाक ओहि पुरान तटपर गुहक नाव सेहो आगाँ बढ़ि रहल छल। रामक संग सीता आ लक्ष्मण बैसल छलाह; किनारपर माछक जाल सुखौनिहार लोक अपन काममे लगल रहल। गुह स्वयं पतवार सम्हारि एक बेर पाछाँ देखलनि—तट खाली नहि छल। जकरा सभकेँ ओ पार लऽ जा रहल छलाह, हुनकासँ मैत्री निभाएब छल; जकरा सभकेँ ओ पाछाँ छोड़ि रहल छलाह, हुनकासँ उत्तरदायित्व नहि टुटैत छल। ओ नौजवान नाविकसँ कहला जे

घुरि अएलापर जाल उठौनिहार स्त्रीक हिस्साक अन्न पहुँचा देबाक अछि। ओहि दिन मित्रताक संग काजक नियमित समयो चलैत रहल।

विदेहपुरमे फकीराक नाव पार पहुँचि फेर घुरल तँ मधु किनारपर निःशुल्क यात्राक पर्ची उतारि बहीक भीतर रखलनि। कर्मचारी पूछलक, “फेर सहायता बन्द?” मधु उत्तर देलनि, “नहि। जकरा तुरन्त अस्पताल पहुँचेबाक अछि, ओकरा पहिने पठाएब; तकर खर्च नगरक सहायता-कोष सँ देबाक प्रस्ताव लिखू। जे व्यक्तिगत किराया देत, तकर दर सामने टाँगू। बिनु नामक खर्च नाविकक मजदूरीसँ नहि काटल जाए।” कर्मचारी फेर कार्यालयक सहमति आवश्यक कहलक। मधु स्पष्ट कहलनि, “तखन ई प्रस्ताव अछि, आदेश नहि।”

हीरा नैराकेँ काठक पट्टीपर लिखल सीमा देखौलनि। “पानि रोज बदलैत अछि; आजुक जाँच काल्हिक सुरक्षा नहि होएत।” नैरा कहलनि, “ई बात लिखि देब, मुदा जकरा जाँचब जरूरी अछि तकरा अहाँ स्वयं चिन्हित करू।” हीरा माप-पंजीमे वर्तमान स्तर, नावक भार आ अगिला जाँचक समय दर्ज कएलनि। नैरा ओकर सार्वजनिक प्रति देखलीह, निजी यात्रिक नाम नहि माँगलीह। लखनक दल लेल पटरा-दिहाड़ीक प्राप्ति अलग निकलल। रीताक आवेदनपर मूल ऋण-अनुबन्ध प्रस्तुत करबाक तिथि निश्चित नहि भेल, मात्र माँगक प्राप्ति भेटल।

साँझ होइत घाटक चबूतरा खाली होमए लागल। नन्दूक बच्चा बस्ताक गीला कोना आगिमे सुखा रहल छल; हरि अपन कमाइक सिक्का किताब लेल राखल डब्बामे गनलक। मधु हुनका दुनूकेँ अगले सप्ताहक मञ्च-समयपर फेर बैसबाक कहलनि। नन्दू उत्तर देलनि, “पहिने विद्यालयक छुट्टीक समय देखब।” रीता घर घुरैत कागद अपन झोलामे सुरक्षित रखलीह। ओ एखन केस नहि जीतने छलीह, मुदा ऋणक पाँतिपर बिना प्रमाण अपन स्वीकृति सेहो नहि देने छलीह। नदीक किनारपर ई छोट-छोट रोक सभ दिनक कमाइ जतेक वास्तविक छल।

नैरा रेलचौकक कोठरी घुरलीह तँ सरिता दाल छौँक रहल छलीह। संकेत कागदपर नावक चित्र बनबैत पूछलक, “कतेक लोक पार भेल?” नैरा कहलनि, “चारि जन पहिल चक्करमे। मुदा आइ हमरा संख्या सँ बेसी शर्तक महत्व बुझल।” सरिता कहलीह, “भात खा कऽ बता, शर्त के रखलक?” नैरा मधु, फकीरा आ हीराक अलग-अलग बात सुनौलीह।

जखन रेणुक पुरान पत्रक दू नदीनामक बात अएल, सरिता पुछलनि, “तिलवाहक नाम फेर बदलि गेलै?” नैरा कहलीह, “नहि। ओ दोसर ठामक पुरान पत्र अछि। हमरा नक्शापर जे नहि जानल अछि, से लिखबाक नहि।”

संकेत चित्रक नावमे एकटा खाली ठाम बनौलक। “ई ककरा लेल?” सरिता पुछलनि। ओ उत्तर देलक, “जे रोज नाव खेबहैत अछि, ओकर बैठबाक ठाम सेहो रहबाक चाही। चित्रमे सभ यात्रीकेँ ठाम दैत रही, नाविककेँ भूलि गेल रही।” सरिता हँसलीह। नैरा थैलीसँ फकीराक प्रस्तावित सुनवाईक पर्ची निकालि मेजपर रखलीह। समयक पुष्टि एखन नहि भेल छल; नदीक पारक काज सेहो एक दिनमे समाप्त नहि भेल। मुदा आइ नाव चलल छल, एकटा गलत ‘निःशुल्क’ आदेश प्रस्ताव बनि घुरल छल, आ पाँच लोक अपन श्रम वा नामक अधिकारक विषयमे बिना एक दोसराक परिचय मेटौने बात कहि सकल छलाह। बाहर रेलक सीटीक पाछाँ दूरसँ पानिक मन्द आवाज आयल। सरिता दालमे नोन जाँचलनि, आ सभकेँ भात परसलनि।

अध्याय २७ • शबरीक भोर

दण्डकारण्यक एक भोरमे शबरी भिजल लकड़ीक दू टा ढेरी अलग कऽ रहल छलीह। जे काठ भितरासँ सुखायल छल, से चूल्हाक कात रखल गेल; जेकर छालमे रातिक पानि अटकल छल, से धूप निकलबाक प्रतीक्षामे उँच बाँसपर पसारल गेल। आश्रमक चूल्हा एकटा छल, मुदा ओहिपर निर्भर लोकक भोर अलग-अलग समयमे शुरू होइत छल। कियो पानि अनैत छल, कियो पात सिअैत छल, कियो रोगी बालकक लेल गरम लेप बनबैत छल। अतिथि एखन आयल नहि छलाह; काज पहिनेसँ चलि रहल छल।

पहिने शबरी एहि ठाम नव छलीह तखन हुनका फल चुनबाक ठाम देखाओल गेल छल, परन्तु फल कतय छोड़बाक अछि, ओकरा के बाँटत आ जे फल बेसी पकि गेल तकर की होएत—एहि प्रश्नक उत्तर कियो स्पष्ट नहि देलकनि। एक वर्षक बरखा अन्नक ढेरी खराब कऽ देने छल। ओहि दिनसँ ओ बीहन, सूखल कन्द आ पीबाक पानिक अलग ठाम बनौने छलीह। आश्रमक गुरु मतङ्गक स्मृतिमे लोक आजुक भोर श्रद्धासँ सिर झुकबैत छल; मुदा चूल्हा सुलगेबाक लेल स्मृति नहि, सुखायल इन्धन चाही।

“आइ फेर बाट तकब?” करुणा पात धोइत पुछलनि। हुनकर माइक टाँगमे पुरान चोट छल आ ओ अपन घरक दुपहरिया दवा पहुँचाएब चाहैत छलीह। शबरी कहलनि, “हम बाट देखब। मुदा अहाँ अपन समयपर जाइब। अतिथिक आगमन हमर इच्छा अछि, अहाँक देय नहि।” करुणा हँसलीह, “ई बात आगन्तुकक सोझाँ सेहो कहि सकब?” शबरी थोड़ेक चुप भेलीह। “कहब,” ओ उत्तर देलनि, “जँ हम नहि कहब तँ भोरक काज हमरा हाथसँ छूटि जाएत।”

शबरीकेँ अपन गुरु संग पहिल बेर कएल एकटा विवाद याद अएलनि। वर्षा पाछाँ आश्रमक फल-बारीमे सभसँ नीक फल पहिले आगन्तुकक लेल चुनल जाइत छल; स्त्रीसभक थारीमे टूटल आ खसल फल बचैत छल। एक दिन ओ पुछने छलीह जे सेवा करनिहारक भूख कम किएक बुझल जाइत अछि। गुरु उत्तर देने छलाह जे एहि प्रश्नपर सभ मिलि निर्णय करथि। ओ दिन किछु नहि बदलल, मुदा धीरे-धीरे भोरक फल बाँटबामे पहिने ओहि लोकक भाग राखल जाए लगल जे दिनभरि बाहरे काज करैत छल। शबरी

जखन किछु याद करैत छलीह, तखन शब्दक संग एहन छोट-छोट बदललो याद करैत छलीह।

वनक पथपर हवा हिलैत छल। पात झड़बाक आवाजक बीच दूरसँ दू मनुष्यक पदचाप सुनायल। आश्रमक एक युवक दौड़ि एल आ कहलक जे धनुष रखने दू पथिक जलक ठाम पूछैत छथि। शबरी फलवाली टोकरी धरिकऽ नहि दौड़लीह। पहिने ओ करुणाकेँ जख्मी माय लेल लेप देलनि, फेर चूल्हापर राखल चाउरकेँ देखलनि। “जतबा हमरा सभकेँ चाही, ततबा अलग रखू” ओ आँगनमे बैसल स्त्रीसभकेँ कहलीह, “शेषसँ अतिथिक भोजन बनत।”

आगन्तुकसभक लेल आँगन धोबैत मृगा पुरान झाड़ूक बान्ह फेर कसि देलनि। “हमरा बचपनसँ लोक कहैत रहल जे आश्रममे सभ समान छथि,” ओ शबरीसँ कहलीह, “मुदा फल तुड़बाक बेलामे हमर हाथ, कथा कहबाक बेलामे आनक नाम।” शबरी कहलीह, “अहाँ अपन बात स्वयं कहिह। जँ आगन्तुक उत्तर नहि देताह तँ तइयो अहाँक प्रश्न अपन ठाम रहत।” मृगा किछु दूर जा कऽ रूकल। हुनका एखनहि एकटा नव अधिकार भेटि गेल जकाँ नहि छल; मुदा प्रश्न केँ अपना मुँहसँ कहबाक साहस बढ़ल।

राम आ लक्ष्मण आश्रमक बाटपर अएलाह। हुनका सभक शरीरपर यात्राक धूलि छल आ दृष्टिमे कोनो अनुपस्थित व्यक्तिक चिन्ता। शबरी पानि राखलनि। “पहिने हाथ-मुँह धोउ,” ओ कहलीह, “एहि बाटपर धूलि बड़ उड़ैत अछि।” राम धन्यवाद देलनि। लक्ष्मण पुछलनि जे आश्रममे जलक स्रोत कतय अछि। शबरी उत्तर देलनि, “नीचाँ ढलानपर। मुदा राति पाछाँ ओहि बाट एकटा गाछ खसल अछि; पानी लेनिहारसभ ऊपरक घुमावसँ अबैत छथि।” ई उत्तरमे वनक नक्शा छल; आकाशक देहधारी रहस्य नहि।

करुणा चूल्हासँ उठि पुछलनि, “अहाँ सभकेँ की खाएब नीक लागत?” लक्ष्मण कहलनि जे जे उपलब्ध होए। शबरी हुनकर बात सुनि कहलीह, “उपलब्ध सभटा अतिथिक नहि होइत। एहि फलमे किछु एहन अछि जे रोगी लेल राखल गेल। ई कन्द चूल्हापर पकल अछि, आ किछु फल अहाँ सभकेँ देब।” राम टोकरीक कात देखलनि; किछु बेर हुनक दृष्टि रुकल, मानू सामान्य भोजनक पीछे लागल हाथसभ हुनका पहिल बेर एकत्र देखार भऽ रहल हो।

“अहाँ एतेक दिन की लेल प्रतीक्षा करैत रहलहुँ?” राम पुछलनि। शबरी उत्तर देलनि, “गुरु कहने छलाह जे कखनो अतिथि अओताह, जिनक संग बात करब जरूरी होएत। मुदा एहि बीच जे लोक रोज एतय आबैत रहल, हुनका सभकेँ भूख लगैत रहल। प्रतीक्षाक नामपर हम ओहि लोककेँ नहि रोकि सकैत रही।” राम शबरी दिस देखलनि। ओ आगाँ कहलीह, “आइ अहाँ अएलहुँ, नीक भेल। काल्हि अहाँ चलि जाएब; तखन पहिने जकाँ चूल्हा जलत।”

आँगनक कनिष्ठ स्त्री मृगा अपन बँटल श्रमक बात उठा देलनि। “अतिथिक कथा बादमे सभ कहत। फल चुनलक हम, पानि आनलक करुणा, कन्द साफ कएलक शबरी। कियो हमर नामो पूछत?” ओ लजाइत नहि छलीह; हुनका केवल उत्तर चाही छल। राम कहलनि, “अहाँक नाम की?” “मृगा,” ओ कहलीह, “आ हमरा वनक बाट सेहो अबैत अछि।” लक्ष्मण हुनकासँ आगाँक पथ पुछलनि। मृगा पैघ पाथरक पाछाँक दलदली जमीन बतौलीह आ आगाह कएलनि जे सोझाँक छोट बाट वर्षामे जाल जकाँ धोखा दैत अछि।

शबरी पातपर भोजन परसलनि। करुणा अपन भाग एक कात राखि माय दिस विदा भेलि। आगन्तुकक आदरमे कियो हुनका रोकलक नहि। मृगा भोजनक बाद माटिक पात्र धोएबाक काज बाँटि देलनि। राम आ लक्ष्मण जखन आगाँक वनबाट पुछलनि तखन शबरी जे जानैत छलीह से कहलीह, जे नहि जानैत छलीह ओकर अनुमान नहि जोड़लनि। हुनका सभक प्रस्थानक समय नजदीक छल; एकर अर्थ ई नहि जे आश्रमक घड़ी थमि गेल।

राम प्रस्थान करैत कहलनि, “अहाँक सेवा याद रहत।” शबरी उत्तर देलनि, “सेवा याद राखब नीक अछि; मुदा जे हाथ आगि जारैत अछि, ओकरा आरामक समयो चाही। जखन अहाँ आन घरमे जाउ तँ ई बातो पुछब।” लक्ष्मण मृगाकेँ बाटक चिन्ह फेर कहबाक आग्रह कएलनि। मृगा काठक एकटा टहनीसँ माटिपर मोड़ देखौलीह। दू यात्री चलि गेलाह। पाछाँ रहि गेल फलकेँ शबरी फेर गनलीह, पानीक घैला भरलीह, आ मृगासँ कहलीह, “आइ साँझ अहाँ चूल्हासँ छुट्टी लिअ। हम अपन भाग करब।”

विदेहपुरक रेलचौकमे ओहि सप्ताह भोर आ साँझक भोजन बाँटबाक लेल छोट रसोड़ शुरू भेल छल। घर छोड़ि अस्थायी कोठरीमे रहल सरिता एकटा खाली डब्बा लऽ पहुँचलि। हुनका भोजन मँगबाक नहि, अनाजक हिसाब देखबाक छल; चाउरक संग

औषधिक पट्टी आ पीबाक पानि राखल डब्बासभ ओहि बरामदामे अटकल छल। फकीराक नावसँ पार होएबाक पाछाँ नैरा बुझने छलीह जे रसोइमे भोजनक कमी मात्र प्रश्न नहि अछि। कतय कियो अनाज आनैत अछि, कतय कियो बोझ उतारैत अछि, कतय कियो रोटी पबैत अछि—सभक समय अलग अछि।

रसोइक भीतर तीनटा चूल्हा छल। पहिलमे दाल उबलि रहल छल, दोसर पर भात; तेसरमे पानि गरम होइत छल। उर्मिला ओतय अस्पतालक कपड़ा लेने नहि अएलीह, मुदा हुनकर भेजल एकटा पुरान साफ कपड़ा गरम बासन उठेबाक लेल उपयोगमे छल। ओ पहिने साफ-साफ कहि देने छलीह जे रोगीक कपड़ा आ रसोइक कपड़ा कखनो एकठाम नहि राखल जाओ। सरिता कपड़ाक अलग निशान देखलीह आ मुस्की देलनि। उर्मिलाक मजदूरीक झगड़ा अनिर्णीत छल, मुदा हुनकर बताओल व्यावहारिक नियम एतय सभक काज बचा रहल छल।

रसोइक बाहर एकटा तख्तीपर लिखल छल—‘सामूहिक भोजन, सेवा निःशुल्क’। तख्तीक नीचाँ दू आदमी पाँच बोरा गनैत छलाह। “सात छल,” एक जन कहलक, “दू गायब।” मीरा बंजारा अपन ठेला घसीटि कात लगौलीह। “कागदमे सात बोरा चाउर छल कि सात बोरा सभ तरहक सामान?” ओ पुछलीह। “हमरा सभपर शंका करबाक पहिने बोरा खोलि देखू।” हुनकर ठेलामे आटा, नून आ सूखल लकड़ीक अलग बँधल गठरी छल।

नैरा पहुँचलि तँ पहिने लोकक मुँहपर भय देखलनि। चम्पाक निजी सन्देशवाला पिछला प्रकरण हुनका याद अएलनि। ओ मीरा सँ पूछलीह, “अहाँक नाम सार्वजनिक रूपसँ लिखी?” मीरा कहलीह, “आजुक मालक हिसाबमे लिखू। आरोपक पोस्टरमे हमर नाम नहि।” सरिता कहलनि, “पहिने अनाज गनू। लोक भूखल अछि।” एक वृद्धा छोट प्लेट लऽ तख्तीक कात ठाढ़ छलीह; ओहि प्लेटमे पहिने रोटी देल गेल, विवाद बादमे चलल।

केदार बौरी बरामदाक एक कोना टुटल पटरा ठीक करैत छलाह। हुनका संग तीन प्रवासी मजदूर छलाह, जकरा सभकेँ पिछला मरम्मत-काजक पैसा एखन नहि भेटल छल। केदारक हथेलीमे पुरान घावक उपर नवल फोका उभरल छल। “इहो निःशुल्क सेवा लिखि देल जाएत?” ओ तख्ती दिस देखैत पुछलनि। व्यवस्थापक कहलक, “आजु राहतक दिन अछि, सभ किछु हिसाबसँ नहि चलत।” केदार उत्तर देलनि, “राहतक भोजन

अलग अछि, पटरा ठोकबाक मजदूरी अलग। हम खाली पेट रोटी नहि माँगैत छी; हम अपन कामक दाम माँगैत छी।”

सरिता डब्बा रखि केदारक कात बैसलीह। “कतेक घण्टा भेल?” “तीन घण्टा आइ। पहिने चारि दिनक भुगतान रोकल अछि,” ओ कहलनि। केदारक संग आएल युवा मजदूर रामू अपन समय-पर्ची देखौलक, जकर किनार भीजि गेल छल। नैरा हाथ बढ़बौलीह नहि। “अहाँ अपन प्रति राखू,” ओ कहलीह, “जँ चाही तऽ लिखित आवेदनक शब्द देखबामे सहायता करब।” रामू कहलनि, “पहिने पूरा घण्टा भरि लिखबाक जगह दिअ।” व्यवस्थापकक मेजपर एहन खाना छल जेकर शीर्षक ‘सेवक’ छल, ‘मजदूर’ नहि।

एहि बीच पूनम चिड़ीमार छातीक कात एकटा पातर जाल-वस्त्र लपेटने अएलीह। ओ फल आ अनाजक बोरा धूप-बर्खासँ बचएबाक ढकन सिलैत छलीह। व्यवस्थापक हुनकर उपनाम देखिकऽ पुछलक, “अहाँ लोक तऽ चिड़ै पकड़ैत होएब?” पूनम गांठि खोलि पातर सीवन देखौलीह। “ई हम बनौने छी। जे काज हमर परिवार पहिने करैत छल, तकर कथा दोसर अछि। आइ हम ढकन सिबैत छी, बच्चाकें विद्यालय पठबैत छी। हमरा नामक संग पुरान कहानी लिखि दियौ, मुदा आजुक पेशा गलत नहि लिखू।”

पूनमक बेटी बगलमे खड़ाऊँ पर पहिनने विद्यालयक पन्ना पढ़ि रहल छलीह। “माए, ‘निःशुल्क’ कोना लिखल जाए?” बच्ची पुछलक। पूनम कहलीह, “एहि भोजनपर जकर अधिकार अछि ओकरा निःशुल्क भेटत; मुदा जे बनौलक, जे अनलक, ओकर मेहनताना शून्य नहि होइत।” बच्ची शब्दक अक्षर देखलक। सरिता हँसि पड़लीह। “ई शब्दक अर्थ लिखबाक लेल पैघ कॉपी चाही,” ओ कहलीह। बच्ची हँसैत अपन बस्तामे पन्ना रखलक।

शान्ति बोटे नावसँ उतरि ओहि समय पहुँचलि। हुनकर चप्पलमे नदीक बालू अटकल छल। ओ एकटा पर्ची मेजपर रखलीह। “दू बोरा पछिला तटपर छल,” ओ कहलीह, “एकटा आवासवला लोकसँ पहुँचल, दोसर हम बुकलहुँ। एहि दू बोरा लेल अलग उतारभाड़ा लिखल अछि। मोहर सूखि गेल तँ घुरि बहीमे लिखू।” व्यवस्थापक पर्चीक संख्या गनलक; पहिल गनतीमे सात बोरा एके बेर विदेहपुर पहुँचल मानि लेल गेल छल। वास्तवमे पाँच एतय छल आ दू पारक वितरण-स्थानपर।

मीरा अपन ठेलाक डोरी खोलि कहलीह, “जतबा माल एतय आयल, ओहि पर हमर हस्ताक्षर अछि। पार राखल बोरा लेल हम किएक उत्तर दिअ?” शान्ति कहलीह, “आ हमरा उतरभाड़ा किसने तय कएल? पाँच बोरा गननिहार सबहक समय गनैत छथि, नावक दूनू कातक समय बिसरि जाइत छथि।” नैरा शान्तिक पर्ची आ माल पहुँचबाक रजिस्टर अलग मेजपर रखबाक आग्रह कएलनि। “एहि पंजीमे भोजनक मात्रा, ओहिमे ढुलाईक दाम। दूनूकें एकटा दोषक कहानी नहि बनाउ,” ओ कहलीह।

फकीरा छड़ीक ठक-ठक करैत पहुँचला। हुनका रेलचौकक आवाजसँ रसोइक अगिला मोड़ बुझाइत छल। कियो हाथ पकड़बाक लेल बढ़ल तँ ओ रोकलनि। “पहिने बताउ जे चूल्हा कोन कात अछि,” ओ कहलनि, “हम अपन बाट चलब।” पूनमक बेटी ओहि दिसक पत्थरक सीढ़ी गनि सुनौलक। फकीरा पुछलनि, “आजु की बनल अछि?” “चना आ भात,” बच्ची कहलैक। फकीरा कहला, “तखन एक कटोरी चना, आ भात आधा। हमर पेटक निर्णय हमरा करए दिअ।”

रसोइक एकटा नव नियम बनबाक बात उठल—कियो आधा थारी लैत अछि तँ ओकर नामपछाँ लाल निशान दियौ, जइ सँ अगिला बेर पूरा अनाज नहि भेटए। सरिता एतय रोकलनि। “अन्नक जरूरत बदलैत अछि। आधा थारी लेने व्यक्ति आधा अधिकारवाला नहि बनि जाइत। जे भोजन बाँटल गेल तकर मात्रा दर्ज करू, देहक दोष नहि।” केदार जोड़लनि, “आ जकरा भूख नहि, ओ सेहो चूल्हा उठाएल मजदूरक पैसा कटएबाक कारण नहि होएत।” व्यवस्थापक पहिल बेर तख्तीसँ आँख हटा कऽ लोकक मुँह दिस देखलक।

बरामदामे आगि सँकैत एक स्त्री कहलीह जे गुम बोरा सम्बन्धी सूचना चौकमे फैलि गेल अछि। “किछु लोक मीरा दलक नाम लऽ रहल अछि।” मीरा तत्क्षण बजलीह, “जकरा कहना अछि से हमरा सोझाँ कहौ। तकरा पहिने मूल गनती देखौ।” नैरा अपन फोन निकालि सार्वजनिक सूचना बनएबाक जगह पंजीक दू पाँति मिलौलीह। पाँच बोरा प्राप्ति, दू पार-स्थानक प्राप्ति; तीनू कागदपर पंजीक्रम छल। शान्ति अपन नावक भाड़ाक पर्चीमेसँ निजी यात्रिक नाम ढाँपि मालक प्रविष्टि मात्र देखौलीह।

गनती फेर कएल गेल। सात बोरा कतहु गायब नहि छल। नगरक ‘दू बोरा चोरी’ कहनाइ गलत निकलल। मीरा पुछलीह, “आब ई परिणाम लोकक सोझाँ लिखू। शंका

घण्टा भरमे पसरैत अछि; सुधारकें कतेक दिन लगत?” व्यवस्थापक तख्तीक पाछाँ नव कागद चिपकौलक—‘गणनामे भूल; सातू बोरा प्राप्त/वितरण-स्थानपर दर्ज। चोरीक आरोप असत्य।’ मीरा कहलीह, “भूल हमर नामपर नहि, गनतीक पाँतिपर लिखू।” कागद तदनुसार बदलल गेल।

मुदा केदारक मजदूरीक बात ओहि गलत आरोपक सुधारसँ हल नहि भेल। व्यवस्थापक अस्थायी बहीमे अलग शीर्षक लिखलक—‘मरम्मत-श्रम’। केदार ओहिमे अपन तीन घण्टा दर्ज कएलनि, रामू भीजल पर्चीक साफ प्रति बनबौलक। पहिल चारि दिनक बकाया लेल समूहक आवेदन अगिला बैसारमे जाएत। केदार कहलनि, “आइ तऽ बस एतबे भेल जे हमर कामक नाम भेटल। पैसाक दिन एखन दूर अछि।” सरिता उत्तर देलनि, “नाम भेटबाक बादो दाम नहि भेटत तँ फेर पूछब।”

चूल्हापर चना फूटबाक गन्ध उठैत छल। पूनम जाल-वस्त्रक छोरमे गाँठ लगौलीह, मुदा नवल ढकन मुफ्त नहि देलीह। मीरा ओकर नाप आ दाम अलग पर्चीपर लिखबौलीह। शान्ति कहलीह जे भोरमे नदीक दूनू तटपर माल उठेबाक समय देखिकऽ दर बतौतीह। मीरा अपन परिवहनक ठेला शान्तिक नावक संग कब-कब मिलि सकैत अछि से पूछलीह। साझेदारी पर विचार भेल, तय ओतबे भेल जे पहिने दुनू अपना-अपना खर्च लिखतीह। कियो अपन पूरे परिवारक बाट दोसराक हाथ नहि देत।

पूनमक बेटी पुछलक जे हुनका सभक रसोइ रोज चलत की नहि। कियो निश्चित उत्तर नहि देलक। मीरा कहलीह, “भोरक भोजन हमरा सभक कामसँ जुड़ि सकैत अछि, मुदा सालमे एक दिन सभ परिवार मिलि रसोइ, घाट आ गोदामक हिसाब फेर देखथि तँ नीक होएत।” केदार कहलनि, “वार्षिक बैठक ठीक, मुदा दैनिक मजदूरीक बकाया ओहि दिन धरि नहि रोकब।” शान्ति जोड़लनि, “जल कखन चढ़त से सालक सभ दिन एक नहि। सामूहिक आयोजनक तिथि चुनैत घाटपर काज करनिहारक बात सुनू।” तिथि तय नहि भेल; मात्र आगामी बैसारमे प्रस्ताव रखबाक निर्णय भेल।

साँझक बेर केदारक साथी रामू रसोइक बरामदामे बैसल-बैसल अँगुरीसँ माटिपर पुरान रास्ता खींचैत छल। “एहि जंगलक कातसँ सूखल लकड़ी अनब बन्द कऽ देल गेल,” ओ कहलक। पूनम कहलीह, “गाछ बचएबाक नियम बेजाय नहि; मुदा घरक चूल्हा आ कामक

सामान लेल अनुमति के देत?” मीरा कहलीह, “बाट बन्द भेल तँ पहिने पैदल चलनिहारक पानि आ श्रमक हिसाब देखल जाए।” ई चर्चा अगिला दिनक बाटबँटवाराक प्रश्न बनि रहल छल; एखन कियो नियम तोड़बाक निर्णय नहि लेलक।

मीरा जखन ठेला घुरबैत छलीह, हुनकर छोटी बहिन पाछाँसँ बजौलक। “अगिला हाटमे हम अपना बाटे माल बेचए चाहैत छी।” मीरा पहिने कहए चाहलीह जे साझेदारीमे सबकेँ एके मार्ग पकड़बाक चाही; फेर ठहरि पुछलीह, “कतेक माल उठेबाक सामर्थ्य अछि?” बहिन सामानक वजन आ किराया बतेलनि। मीरा कहलनि, “दू दिन हमरा संग चलि खर्चक खाता देखू, फेर अपना हिसाबसँ निर्णय लिअ।” एहि छोट बातचीतमे सहमति तत्काल नहि बनल, मुदा बहिनक अलग बाट अस्वीकार सेहो नहि भेल।

नैरा सरिताक संग कोठरी घुरलीह। संकेत एकटा कागदक टोकरी बना रहल छल— ओहि टोकरीमे नाविक, ढुलाईक स्त्री आ चूल्हा फूँकनिहारक लेल अलग-अलग छोट नामपट्टी बनौने छल। “सात बोरा भेटि गेल?” ओ पुछलक। नैरा कहलीह, “सातू बोरा गनल गेल; हमरा सभ दू गलत ठाम देखैत रही।” संकेत अपन टोकरीकेँ उलटि देखलक। “बहीमे जे लिखब, ओकरा उठेनिहारक नाम लिखब जरूरी छै की?” सरिता कहलीह, “नाम लिखबाक पहिने ओकर अनुमति आ काजक मतलब बुझब जरूरी अछि।”

फकीरा अपन आधा भात खा चुकल छलाह। रसोइ सँ बच्चीक हँसीक आवाज एखनहुँ अबैत छल। ओ कहला, “आधा भात लेने हम आधा आदमी नहि भेलहुँ। काल्हि चना नीक बनत तँ पूरा माँगब।” सरिता हुनका लेल सादा पानि भरि देलनि। रसोइक काज सम्हारनिहार स्त्री अपन थारी लेने पहिल बेर बरामदाक बीच बैसलीह; कियो हुनका फेर उठबाक आदेश नहि देलक।

दण्डकारण्यक दूरस्थ आश्रममे सेहो दिन ढलैत शबरी चूल्हा साफ कऽ रहल छलीह। मृगा अपना लेल राखल आखिरी पकल फलक एकटा फाँक करुणाक मायक घर पठबौलनि, दोसर शबरीकेँ देलनि। “आगन्तुक चलि गेलाह,” मृगा कहलीह, “आब एहि फलपर ककर अधिकार?” शबरी फाँक खा कऽ हँसलीह। “जकरा भूख अछि, जकरा श्रम अछि, आ जे बाँटबाक बातमे सहभागी अछि—पहिने ओकरा सभक,” ओ कहलीह। किछु देर दुनू चुप रहलीह। लकड़ीक ऊपर राखल भिजल छाल सुखाए लगल छल। अगिला

भोरक भोजनक चिन्ता बाकी छल, मुदा आजुक रातिमे कियो अपन थारी छोड़ि भूखले
नहि सूतत।

अध्याय २८ • हिडिम्बाक सन्धि

दण्डकारण्यसँ दूर, पाण्डवसभक वनयात्राक एक पड़ावमे, हिडिम्बा भोरसँ पहिने टूटल बाँसक तीनटा टुकड़ा एकठाम जमा करैत छलीह। गाछक जड़ लगक बाट परसुक झगड़ामे बिगड़ि गेल छल। दू गो बच्चा ओहि बाटे कन्द अनए गेल रहए, तँ ओ अपन पएरसँ माटि दबा कऽ नया मोड़ देखौलीह। रातिक हिंसाक चिन्ह एखनहुँ छालपर छल। हिडिम्बक मृत्यु भऽ चुकल छल; ओकर बहिन लेल एहि मृत्यु सँ वनक भूख, भय अथवा बाटक जिम्मेदारी समाप्त नहि भेल छल।

भीम एक हाथमे पानिक पात्र लेने अएलाह। “हम बाँस उठबा दी?” हिडिम्बा हुनका देखलनि। “उठाउ, मुदा जतय राखबाक अछि से हम बतायब। अहाँक बाँह बलगर अछि, मुदा एहि माटिक चाल हमर आँख जनैत अछि।” भीम बिना उत्तर देने बाँस उठा लेलनि। पहिने ओ कातक दू खाँज जोड़ि रहल छलाह, जखन हिडिम्बा फेर रोकलनि। “ई मोड़ गाभिन हरिण लेल खुलल रहत। लोकक छोट बाटक लेल सभ जीवक बाट बन्द नहि कएल जाइत।” भीम बाँस दोसरा दिशि रखलनि।

दूनूक बीच जे आकर्षण उठल छल, ताहिमे हिडिम्बा अपन भाइकेँ बिसरि नहि गेल छलीह। भाईक क्रूर आज्ञा मानि आगन्तुककेँ मारब ओ अस्वीकार कएने छलीह; तइयो मृत्युकेँ विजयक गीत बना देब हुनका कठोर लगैत छल। भीम पुछलनि, “अहाँ हमरा संग चलब चाहैत छी?” हिडिम्बा कहलनि, “प्रश्न ई नहि जे हम ककर पाछाँ चलब। प्रश्न ई अछि जे हम अपना वनमे रहि कऽ अहाँक संग कोन सम्बन्ध रखि सकैत छी।”

कुन्ती आगिक कात बैसि धानक जौका साफ करैत छलीह। हिडिम्बा हुनका सामने पहुँचलि तँ कुन्ती उठि आसन देब चाहलनि। “हम एतय बैसि सकैत छी,” हिडिम्बा कहलनि, आ माटिपर बैसलीह। ओ अपन आग्रह बिना घुमा-फिरा कऽ रखलनि। भीमक प्रेम स्वीकार अछि, मुदा वन छोड़ि चलब आवश्यक नहि; जे सन्तान होएत ओकर पालन आ नामपर माताक वचन पहिने सुनल जाएत; बच्चाकेँ कोनो वंशक सेनामे जन्मसँ भर्ती मानि नहि लेल जाएत।

भीमक लेल ई बात सहज नहि छल। अपन भाइसभक प्रति कर्तव्यक समयक संग हिडिम्बाक घरक समय कोना बाँटताह, से हुनका बुझाए नहि रहल छल। हिडिम्बा हुनकर हाथक काँटाक चिन्ह देखलनि। “दुखल अछि?” ओ पुछलीह। भीम कहलनि, “किछु नहि।” हिडिम्बा काँटा निकालैत कहलीह, “जे हाथ सभकेँ बचबैत अछि, ओ अपन चोट स्वीकार करए तँ छोट नहि भऽ जाइत। अहाँ जे वचन निभा सकब से कहू।” भीम पहिल बेर अपन कठिनाइ बिना शौर्यक कथा बनाए कहलनि, “भाइसभक संग यात्रा नहि छोड़ि सकब। मुदा एतय रहलासँ अहाँक वनमे अतिथि मात्र बनि कऽ नहि रहब।” हिडिम्बा हुनका काठक पात्र देलनि। “तखन एहि पात्रमे पानि भरि आनू। हम वचनक शेष बात करब।”

युधिष्ठिर सुनैत छलाह। हुनकर पहिल प्रश्न भेल, “हमरा सभक यात्रा चलैत रहत। तखन एहि सम्बन्धक निर्वाह कोना?” हिडिम्बा एकटा पातर छाल आगाँ रखलीह। “जहि बातक निर्वाह सम्भव नहि, ओकर वचन नहि दिअ। रहबाक समय, विदाक शर्त आ फेर भेटबाक सम्मान—ई सभ साफ कहल जाए। बच्चाक भविष्य हम सभक डरक बदला बच्चाक अधिकारसँ शुरू हो।” नकुल पुछलनि, “एतय कागद कतयसँ?” हिडिम्बा हँसलीह। “कागद नहि, छाल अछि। लिखल बातो जँ लोक नहि मानए, तँ छालक दोष की?”

कुन्ती छालक पाछाँक चिरा देखलनि। हिडिम्बा अपन समुदायमे चिन्ह बनबैत स्त्रीकेँ बजौलीह। बुजुर्ग स्त्री पहिले हिडिम्बाक बात दोहरौलीह, फेर भीम आ कुन्तीक शब्द अलग सुनलीह। भीम कहलनि जे ओ यात्राक बन्धन नुकाएब नहि चाहैत छथि; रहबाक समयमे हिडिम्बाक वनहितक निर्णय मानताह। कुन्ती सन्तानक पालनमे माताक अधिकार अस्वीकार नहि करबाक वचन देलनि। बुजुर्ग छालपर तीनटा चिन्ह बनौलीह—रहबाक सहमति, विदाक सचाइ आ बच्चाक अपन भविष्य। ई राजदरबारक मोहर नहि छल; साक्षीक साम्हने राखल स्मृति छल।

हिडिम्बा छाल मोड़लनि। “हमर सन्तानक नाम कखनहुँ अहाँ सभक संकटमे आयत,” ओ भीमसँ कहलीह, “तखन ओकरा बोलएबाक पहिने ओकरा पुछब। अपन रक्त देनाइ जन्मक कर नहि।” भीम बहुत देर धरि मौन रहलाह। फेर कहलनि, “हम सुनलहुँ। आइ हम

एतय छी; आइक काजमे हमर हिस्सा कहू।” हिडिम्बा हुनका टूटल बाँसक शेष टुकड़ा देखौलीह। प्रेमक पहिल भोरमे हुनका लेल एहि बाटकेँ फेर चलबाक योग्य बनायब कोनो छोट उत्तर नहि छल।

विदेहपुर, वर्षा २०३९। रेलचौकक सामूहिक रसोइमे जे लकड़ीक प्रश्न पिछला साँझ उठल छल, ओकर उत्तर भोरमे एकटा फाटकपर टाँगल कागद देलक—‘वनकिनाराक मार्ग बन्द। अनधिकृत प्रवेशपर कार्रवाई।’ कागदक तल्ला कोना भीजल छल। तारीख स्पष्ट छल, मुदा जारी करनिहारक पदक अगिला पाँति छींटासँ मेटाइ गेल छल। रामू खाली ठेला लेने ठाढ़ छल। ओकर पछुआँ मीरा बंजाराक बहिन एकटा झोरा लेने अएलीह; ओहि झोरामे लकड़ी नहि, रसोइ लेल किनल खाली टोकरी छल।

केदार बौरी कहलक, “काल्हि पटरा ठोकलाक बकाया लिखबाक लेल कहल गेल, आइ रसोइक बाटे बन्द।” मीरा ओकर बात काटलक नहि। “दूनु काज जोड़ल अछि, मुदा दूनूक हिसाब अलग राखू। मजदूरीक आवेदन फाटक खोलबासँ अपने नहि निपटत।” ओ सभ एही बहस मे छल जे बटोही धामी अपन मधुक दू खाली पात्र आ लम्बा बाँसक हुक लेने पहुँचलाह। हुकक मुहाँ चिक्कन छल, ताकि गाछक छाल नहि फाटए।

बटोही कागद पढ़ि कहलनि, “एहि बाटे हम मधु लेल जाइत छी। किछु गाछपर मधुमक्खीक पुरान छत्ता अछि, मुदा सभ साल समान उपज नहि। आइ हम छत्ता काटए नहि, राखल पात्र देखए जा रहल छी।” फाटकपर ठाढ़ पहरेदार कहलखिन, “अहाँक नाम सूचीमे नहि।” बटोही पुछलनि, “सूची के बनौलक, आ सुनवाई कतय देब?” पहरेदारक हाथमे केवल दू दिन पुरान ड्यूटी-पर्ची छल। ओ अपन मने आदेश बनएबाक अधिकार नहि रखैत छल।

देवकी पाल अपन बकरीसभकेँ फाटकसँ दूर रोकने छलीह। पशुक खुर भीजल माटिमे धसि रहल छल। “एहि कातसँ घुमला पर चरागाह भेटत,” ओ कहलीह, “मुदा बरसातमे पछिलका नाला भरल रहैत अछि। हम पशुकेँ ओहि बाटे नहि लऽ जाएब।” हुनकर झोरामे एकटा पुरान पानि-मार्गक नकल छल। नकलक माथपर ‘खैरी’ लिखल रहए। कागद हुनका मायकेक मौसमी पशुबाटक हिसाबसँ भेटल छल; विदेहपुरक तिलवाहक संग एकर भौगोलिक सम्बन्ध ओ नहि जनैत छलीह।

तारा कागदक शब्द ध्यानसँ पढ़लनि। “ई नामक अर्थ एतय पहुँचक पुरान शर्त बुझबाक लेल अछि, नकि ई प्रमाण जे तिलवाह ओहि नामसँ बहैत छल,” ओ कहलीह। देवकी राहतक साँस लेलनि। “हमरा नदीक नया नाम नहि चाही। हमरा ई जानबाक अछि जे पशुकें पानि धरि सुरक्षित कोना पहुँचाएब।” ओ बकरीक गरदन सहलौलीह। एकटा छोट बकरी हुनकर आँचर चिबा रहल छल; देवकी हँसि ओकरा अलग कएलनि।

देवकीक संग आएल एकटा किशोरी पानिक डब्बा गनैत छलीह। “एतय पशु लेल दू, आ लोक लेल तीन,” ओ कहलीह। फाटकक पहरेंदार पुछलक, “अहाँ सभ जंगलमे बसैत छी?” देवकी कहलीह, “हमर घर गाममे अछि। चरबाक बाटसँ निवास तय नहि होइत।” किशोरी पानि देबाक समय बटोहीक खाली पात्र देखलक। “मधु आनबा गेलहुँ नहि?” बटोही कहलनि, “आजु छत्ता बचल अछि कि नहि, ओहो देखए नहि देलक।” बच्ची पुछलक, “कियो कहत जे गाछ ओकर अछि तँ मधुमक्खी सेहो ओकर भऽ जाएत?” बटोही हँसैत उत्तर देलनि, “मधुमक्खीसँ ई बात पूछब। मुदा छत्ता लेबासँ पहिने वन आ लोकक नियम बुझब जरूरी अछि।”

एहि बीच तुलसी ताजपुरिया छोट मालवाहक गाड़ीक चालकक सीटसँ उतरला। हुनका वनकिनाराक कच्ची सड़कसँ औषधि आनबाक अगिला फेराक समय मिलैत छल, मुदा ओहि दिन गाड़ीमे अनाजक बोरा छल। “एहि फाटकक काज केवल लकड़ी नहि,” ओ कहलनि। “जँ एतय सब बाट बन्द करब तँ गाड़ी नगरक संकरा गल्लीमे घूमत, जतय विद्यालयक बच्चा चलैत अछि।” पहरेंदार कहलक, “हम गाड़ी लेल दोसर रस्ता तय नहि करि सकैत छी।” तुलसी उत्तर देलनि, “तखन जे निर्णय लेत से एतय आए।”

रोजी लालबेगी छातापर जुटल पानि झाड़ि रहल छलीह। ओ आसपासक कोठरीसभक कचरा अलग-अलग उठेबाक ठेका पर काज करैत छलीह, आ अपन समुदायमे धर्मसम्बन्धी पहिचानक अलग परम्परा सेहो रखैत छलीह। फाटकक अस्थायी पंजी भरनिहार युवक हुनकर नामपछाँ अपन अनुमानसँ धर्म आ पेशाक एक्के खाना भरि देलक। रोजी पेंसिल लेबासँ पहिने पुछलीह, “हम जे कहैत छी से लिखब की अहाँ जे बुझैत छी?” युवक चौँकि गेल।

“हँ, कहू।” रोजी एक-एक खाना देखौलीह। “हमर काम कचरा-छँटाइ अछि, मुदा ओ हमर धर्म नहि। हमर उपनामसँ ओ दुनू बात तय नहि होइत। एहि फाटकसँ हमरा रोज कामक सामान लऽ जेबाक अछि।” युवक पहिने लिखल अनुमान काटलक; रोजीक कहल विवरण अलग पाँतिमे दर्ज कएलक। रोजी हस्ताक्षर करैत कहलीह, “बात केवल हमरा भीतर जाएबाक नहि; एतय जे लोक गनल जाइत छथि, हुनकर नाम सही रहए।”

मंगरी गोराइत फाटकपर सभसँ पछिला अएलीह, मुदा हुनकर काज सबसँ पहिने अटकल छल। वनकिनाराक बन्द कारखानामे कखनो ओ छँटनी आ सफाइक दलक नेतृत्व करैत छलीह। कारखाना बन्द भेलाक बाद बकाया भुगतानक किताब हुनका हाथ नहि लागल छल। आब ओहि परिसरक बाहरी दीवार वनमार्गक नब फाटक जकाँ उपयोग होइत छल। “ई दरवाजा बंद कएलक अछि जे लोक?” ओ पहरदारसँ पुछलीह। “हमरा नहि मालूम,” ओ उत्तर देलक। मंगरी कहलीह, “हमर दलक देय जे कारखाना रोकने अछि, ओकर दीवारक पहरा देनिहार आदमीकेँ हम दोष नहि देब। मुदा दरवाजाक मालिकक नाम पूछबाक अधिकार छोड़बो नहि।”

नैरा जखन पहुँचलि तँ पहिने फोन नहि निकाललनि। पिछला सभाक महेशक सुरक्षा-शर्त तोड़बाक गलती हुनका एखनहुँ मनमे चुभैत छल। ओ बटोहीसँ पुछलनि, “अहाँक पात्र आ बाटक नक्शा देखबाक अनुमति अछि?” बटोही अपन नकल देखौलनि, मुदा छत्ताक ठीक स्थान सार्वजनिक नहि करबाक शर्त रखलनि। “जतय छत्ता अछि, ओतय भीड़ गेल तँ मधुमक्खी आ लोक दुनूकेँ हानि,” ओ कहलनि। नैरा नक्शामे केवल पहुँचक मोड़ लिखलनि, छत्ता नहि।

गोमती सेहो पहुँचलीह। फाटकक बाहरी नालामे बरसातक पानि घूमैत छल। ओ कहलीह, “एतय जे नब माटि चढ़ल अछि, ओहि सँ ढलान बदलल जकाँ लगैत अछि। देखनहि सँ निश्चित नहि कहब, माप चाही।” तारा संगहि उतरलीह। हुनका लगक पुरान जलनिकासक नकलमे ई मोड़ अनाम छल; छानबीन करैत दुनू अलग चिन्ह रखलनि—फाटक, नाला आ सार्वजनिक पगडंडी। अदितिक जाँचक कागद एखन ओहि फाटकपर नहि छल; हुनकर नामपर कोनो आदेश अनुमानसँ जोड़ल नहि गेल।

फाटकक आगाँ भीड़ बढ़ल तँ एकटा आदमी कहलखिन, “सब मिलि ताला तोड़ि दियौ।” बटोही तुरन्त अस्वीकार कएलनि। “तखन पानि, मधु आ बकरी लेल चलबाक बाट झगड़ामे समाप्त होएत। आजुक काज माँगक लिखित प्रमाण अछि।” मंगरी कहलीह, “ताला तोड़लासँ हमर मजदूरीक बही नहि खुलत।” तुलसी गाड़ीक चाबी हथेलीपर घुमबैत कहलनि, “गाड़ीमे जे माल अछि से आइ पहुँचेबाक अछि। भीड़ कतेक देर धरि ठाढ़ रहत?”

रसोइक पूनम चिड़ीमार साँझक भोजन लेल बनाओल जाल-वस्त्रक नाप लेने एतय अएलीह। ओ पहरेदारक फाटल बरसाती देखिकऽ हँसलीह। “अहाँ फाटकक पहरा दैत छी आ अपन काँध भीजि रहल अछि।” पहरेदार कहलक, “बरसाती देबाक पर्ची सेहो अटकल अछि।” पूनम पुछलीह, “सी देब तऽ दाम भेटत?” पहरेदार अपन दामक निर्णय नहि कऽ सकल। ओहि छोट हँसीमे भीड़ कनी ढील भेल, मुदा बाट बन्दे रहल।

मीरा प्रस्ताव रखलीह जे पहिने सभ अपन-अपन काज लिखिथि, फेर साझा आवेदन हो। बटोहीक मधुपात्र, देवकीक पशुबाट, तुलसीक ढुलाई, रोजीक नियमित काम आ मंगरीक कारखानाक बकाया अलग-अलग पाँतिमे चढ़ल। केदार अपन मरम्मत-बकाया सेहो लिखए चाहलक। मीरा रोकलीह नहि, मुदा एकर अलग आवेदनक संख्या रखबौलीह। “पाँच अन्यायकँ एक्के नाम देलासँ कोनो एक अन्याय छोट नहि भऽ जाइत,” ओ कहलीह।

मंगरीक संग काम करनिहार एक स्त्री पुरान पहचान-पत्र देखौलीह। ओकरा प्रवेश-पास बुझि एकटा कर्मचारी आगे बढ़ल। मंगरी कहलनि, “ई रोजगारक पुरान परिचय अछि; चलन-पास नहि। एकरा देखिकऽ सभकँ भुलाउ नहि।” कर्मचारी पछिला रजिस्टर पुछलक तँ मालूम भेल जे फाटकक पहरेदारी ठेकाक कागदपर छल, सार्वजनिक बाट बन्द करबाक स्वतन्त्र आदेश ओहि फाइलमे नहि देखाओल गेल छल। एहि बातसँ फाटक अपनहि नहि खुलल, मुदा ‘वन विभागक अन्तिम निषेध’ कहनिहार अफवाहक आधार कमजोर पड़ल।

नैरा पुछलनि, “नकल देबाक लिखित बाट?” कर्मचारी ओहि प्रश्नक उत्तर देबाक अधिकारी नहि छल। ओ मुख्य कार्यालयक प्राप्ति-पुस्तिका आनबाक लेल भीतर गेल। प्रतीक्षा लम्बा भेल। तुलसी अपन गाड़ी नगरक दोसरा बाटे घुराएबाक निर्णय लेलनि,

ताकि अनाज समयपर पहुँचै; अतिरिक्त भाड़ा ककरा देबाक अछि से अलग लिखलनि। “रोगी ढुलाईक दिन एहन बाट हम बिना सुरक्षा-बात कए नहि घुराएब,” ओ कहि गाड़ी बढ़ा देलनि। हुनकर ई निर्णय आगाँक परिवहन-विवादकें टारलक नहि, तकर पहिल लागत देखौलक।

एक समय मंगरीक पुरान कारखानामे काम कएने रहीना ठकुराई सेहो फाटकपर आएलीह। ओ कागदक नकलक काज करैत छलीह आ पहिने सार्वजनिक सभाक कार्यवृत्त नकल कएने छलीह। मंगरी हुनका आग्रह कएलनि जे पुरान वेतन-पंजीक किनारपर रहल अपूर्ण मोहरक प्रति देखथि। रहीना कहलनि, “हम अक्षरक नकल बना सकैत छी, मुदा ई मोहरक अधिकार कोन कार्यालयक, से मूल बिना नहि कहब।” मंगरी अपन कागद घुमा कऽ देखौलीह। ओहि पर तीन महीनाक बकाया एके स्तम्भमे जोडल छल, व्यक्तिक अलग देय नहि। मंगरी निर्णय कएलनि जे अगिला बैठकसँ पहिने दलक सभ मजदूर अपन-अपन दिनक हिसाब लिखताह। फाटकक ताला कोनो वेतन-पर्ची नहि खोलैत छल, मुदा एहि प्रतीक्षामे हुनकर पुरान दावा फेर व्यवस्थित भेल।

दोपहरक पाछाँ कार्यालयक एक महिला कर्मचारी स्वयं बाहर आएलीह। ओ कर्मचारीक परची देखिकऽ कहलनि जे परिसरक भीतरक गोदाम-रक्षा आ पुरान साझा पगडंडीक कानूनी स्थिति अलग जाँचल जायत। एखन लेल फाटकक एक कोना सँ केवल नाप-जाँचक निरीक्षण दल जा सकैत अछि; आम प्रवेशपर रोक यथावत् अछि। ओ अर्जीक प्राप्ति-क्रमांक दऽ तीन दिनक भीतर कागदक प्रति देबाक निवेदन स्वीकार कएलनि। मंगरी पुछलीह, “तीन दिनमे उत्तर नहि भेटल तँ?” कर्मचारी कहलीह, “प्राप्ति पर समय लिखल अछि; फेर एही पर पूछू।”

देवकी अपन बकरीसभकेँ नालाक कात लऽ गेलीह, मुदा गहिर पानिमे नहि उतारलीह। बटोही मधुपात्र घुरबैत कहलनि, “आइ छत्ता देखब रहि गेल। मधु साँझ धरि बाट जोहत कि नहि, से हमरा नहि बुझल।” रोजी हुनकासँ पुछलीह, “खाली पात्रमे की अछि?” बटोही हँसला, “काल्हिक भरोसा।” रोजी कहलीह, “तखन पात्र सुरक्षित राखू। भरोसाक देय नापबाक बही कठिन होइत अछि।” दूनू हँसलाह।

एहि बीच एक युवक भीड़कें कैमरा दिस घुमा कऽ कहलक, “सबकें देखाउ, ई लोग बाट रोकि रहल अछि।” जानकीक दलक दू परिवार ओहि कात अपन सामान लेने जा रहल छल। नैरा हाथसँ संकेत कएलनि जे बिना सहमति नजदीकसँ चेहरा नहि खींचू। युवक दूरसँ फाटकक दृश्य लेल, मुदा ओकर फोनमे की सुरक्षित भेल से नैरा नहि देखलीह। जानकी अपन दलकें कहलनि, “पहिने बच्चा आ बोझ पार कराउ। बहस बादमे।” भोरक बन्द बाटक बात साँझ धरि अनेक कथामे बदलि सकैत छल।

पुरान वनपड़ावमे साँझ ढलैत हिडिम्बा आ भीम फेर बाटपर अएलाह। भीम बाँस ठोकैत-ठोकैत पुछलनि, “जँ अहाँ एक दिन हमर संग चलबाक मन बदलि लेब तँ?” हिडिम्बा उत्तर देलनि, “तखन हम कहब। अहाँ अपन मन बदलएब तँ सेहो कहब। चुप्पीकें वचन नहि मानब।” भीम बाँस छोड़ि हुनका दिस देखलनि। “अहाँ तऽ हमरा सँ पहिनेसँ पैघ लड़ाइ लड़ि रहल छी।” हिडिम्बा हँसलीह। “अहाँक संग लड़ाइ लड़बाक लेल नहि, संग रहबाक लेल बात साफ करैत छी।”

ओ आगाँ बढ़लीह। हिडिम्बक पुरान पहरदारसभमे सँ एक युवक बाटक कात ठाढ़ छल। ओकर प्रश्न कटु छल—“आगन्तुक संग बसब तऽ भाईक लोकक की होएत?” हिडिम्बा ओकरा अपन निर्णय सुनौलीह। “भाइकें मेटब नहि; मुदा ओकर हिंसाक आदेशो नहि लौटा देब। वनक बाट जे काज करैत अछि, ओकरा सभक रहत। हमर घरमे के आएत, तकर निर्णय हम करब।” युवक बाँस उठेबामे हाथ बटौलक। ओकर शंका समाप्त नहि भेल, मुदा ओ घरक बाट बन्द करब छोड़लक।

विदेहपुरमे साँझ होइत-होइत मीरा साझा आवेदनक चारि प्रति बनबौलीह—एक कार्यालय लेल, एक बाट उपयोग करनिहारसभ लेल, एक कामगारसभक अलग देय लेल, आ एक ओहि लोकक जिम्मामे जे सुनवाईमे नहि पहुँचि सकल छल। रोजी पुछलीह, “कोन प्रतिमे हमर निजी विवरण जाएत?” मीरा कहलीह, “जाहि पंजीमे अहाँ अपन अनुमति देलहुँ, केवल ओतहि।” बटोही छत्ताक ठिकाना हटबौलक; देवकी पशुबाटक ऋतु लिखौलीह; मंगरी बकाया वेतनक पुरान दावा अलग राखलनि।

सरिता रसोइक बासन धुइत-धुइत नैरासँ पुछलनि, “बाट खुलल?” नैरा कहलीह, “एखन नहि। मुदा ककर आदेश अछि, तकर मूल कागद माँगबाक रास्ता भेटल।” सरिता

पानि झारि बासन उल्टा कएलनि। “सभ प्रश्नक उत्तर एके दिन भेटत तँ अगिला दिन लोक कोना जीएत?” ओ हँसलि नहि; हुनकर स्वरमे थाकल अनुभव छल। नैरा देखलनि जे सरिताक हाथमे डब्बाक किनारसँ छोट कट लागल अछि। ओ चुपचाप साफ कपड़ा आगाँ कएलनि।

रातिमे देवकीक छोट बकरी नवा दोरी चबैत रहल। देवकी ओकरा सरपट छूड़ा कऽ कहलीह, “एहि दोरीक गाँठ खोलि देब, मुदा काल्हि फाटकक गाँठ खोलबाक लेल फेर लोक जुटत।” दूरसँ रसोइक धुँआ उठि रहल छल। तुलसीक गाड़ी भोजन पहुँचा चुकल छल, केदारक बकाया एखन देबाक छल, बटोहीक मधुपात्र खाली छल। साझा आवेदनपर लागल चारि अलग हस्ताक्षर रातिक भीजल मेजपर सुखा रहल छल। कियो अपन वन, रोजी अथवा भविष्य दोसरा हाथ सुपुर्द नहि कएलक; तइयो अगिला भोरक बाट लेल सभ फेर संग जुटबाक बात कहि गेल छल।

अध्याय २९ • बच्चा चोर

राति धरि भीजल रहल वनफाटकक फोटू भोरमे रेलचौकक चाय-दोकान पर सूखल कागद जकाँ फैलि गेल। दुकानदारक बेटा एकटा फोन दोसर फोनक सामने धऽ कऽ वीडियो चलबैत छल। स्क्रीनपर किछु क्षण लेल जानकीक पीठ देखाइत छल, तकर बाद एकटा बच्चाक हाथ, ओही पाछाँ बाँसक फाटक आ केकरो तेज आवाज—“पकड़ू!” वीडियो समाप्त होइत एकटा लिखल वाक्य उभरैत छल—‘आइ भोर बच्चा चोर पकड़ायल’।

फकीरा चाय लेबाक लेल कतारमे ठाढ़ छलाह। ओ आवाज सुनि फोन दिस नहि, दुकानदारक बेटा दिस देखलनि। “आइ भोर के रिकॉर्ड कएलक?” युवक कहलक, “आइए भेजल गेल।” फकीरा धीरे कहलनि, “भेजबाक समय आ घटनाक समय एक बात नहि होइत।” युवक हँसि देलक, मुदा फोन जेबमे नहि रखलक। लगक दू लोक वीडियो अगिला समूहमे पठा चुकल छल।

जानकी ओहि समय रेलपुलक नीचाँ अपन दलक भीजल चदरि धूपमे पसारि रहल छलीह। काल्हि वनफाटकक सामने ओ दू परिवारकें बच्चा आ बोझ समेत घुरौने छलीह। आइ पानि टपकैत चदरि झारबाक धुनमे छलथि कि एकटा अजनबी महिला दूरसँ हुनका देखि अपन छोट बेटीक हाथ टानलनि। बच्ची ठिठकि गेलीह; माय ओकरा लगभग उठा कऽ लऽ गेलीह। जानकीक हथेलीमे भीजल चदरि रहि गेल।

“फेर की भेल?” दलक वृद्धा सरयू पुछलीह। जानकी कहलीह, “काल्हि जे लोक बाट देखैत छल, आइ ओ हमरा देखि बच्चा नुकबैत अछि।” सरयू चदरि निचोड़ैत कहलीह, “तखन हमरो मुँहपर ताला लगा दियौ?” जानकी उत्तर नहि देलीह। ओ फाटकपर ठाढ़ युवकक फोन याद कएलनि। ओकरा तस्वीर नहि लेबाक विनती कएल गेल छल, मुदा कतेक दूरसँ ओ की लेने छल, ई कियो नहि जनैत छल।

नैरा पहुँचलि तँ जानकी हुनका पहिने स्पष्ट शर्त रखलीह। “अहाँ जाँच करू, मुदा हमरा सभक बच्चाक मुँह फेर फोनपर चढ़ाएब नहि। पिछला बेर महेशक बात छपि गेल छल। हमर दलक लोक ओ गलतीक दाम नहि चुकाओत।” नैरा अपन झोरासँ कापी

निकाललीह, फोन नहि। “अहाँ हमरा ओहि दिनक काजक क्रम कहू। सार्वजनिक करबाक बात बादमे, सभक अनुमति लऽ कऽ,” ओ कहलीह। जानकी कहलनि, “आ अनुमति नहि देब तँ?” “तखन नाम बिना सहमति नहि देब।”

पहिने जानकी केवल तीन बात लिखबौलीह—काल्हि साँझ फाटक लग पहुँचल छलथि; दू परिवारमे एक बच्चा अपन माय संग छल; ककरो अपहरणक घटना हुनकर सामने नहि भेल। ओ बच्चाक नाम लिखबए नहि चाहलीह। नैरा पुछलीह, “जखन भीड़ ‘पकड़ू’ कहलक, ओ कोन लोककेँ कहि रहल छल?” जानकी उत्तर देलीह, “फाटक दिस कियो ताला तोड़बाक बात कएने छल। ककरो डर लगल होएत। पूरा आवाज सुनला बिना हमो निश्चित नहि कहब।”

रेलचौकक पाछू विद्यालयक अस्थायी कक्षामे मीरा मंडल एकटा बांसक पाटी टिका रहल छलीह। ओ अपन घरमे धानुक कहबैत छथि, मुदा कक्षा चलएबाक काजमे हुनकर जाति नहि, बच्चासभक पढ़बाक समय आ चुकायल भाड़ा महत्त्व राखैत छल। दू माससँ ओ किरायाक टाट आ खड़िया अपन कमाइसँ किनने छलीह। आइ कक्षाक द्वारपर तीन बच्चा नहि अएल; हुनकर घरवाला कहने छलनि जे रेलचौक सुरक्षित नहि।

मीरा अपन रजिस्टर देखौलनि। “पढ़ए चाहनिहार बच्चाक पता स्थायी नहि अछि तँ ओकरा कक्षासँ बाहर राखू? एहि तीनूमे सँ दू गो काल्हि एतय छल। तीसरा बच्चा चलैत डेराक अछि; ओकर नाम हम लिखने छी, घरक पता नहि।” नैरा पुछलीह, “काल्हिक उपस्थिति ककर लिखावट अछि?” “हमरे,” मीरा कहलीह। “मुदा ई रजिस्टर बच्चा चोर नहि पकड़त। ई एतेक बता सकैत अछि जे पढ़ाई कहाँ रुकल।” ओ पाटक निचाँ भीजल खड़िया सुखा देलीह।

मीरा जखन काल्हिक पढ़ाईक समय बतौलीह, तँ जानकीक दलक एक बच्चा एहि कक्षामे रहबाक बात सामने आयल। मुदा ओ बच्चा वीडियोमे देखायल अछि कि नहि, तकर प्रमाण नहि छल। नैरा नाम मिलाबए उताहुल भेलाक बाद अपन कलम रोकलीह। बच्चाक विद्यालय-हाजिरीक अर्थ ओकर देहक प्रत्येक क्षणक उपस्थिति नहि। मीरा पुछलीह, “अहाँ हमर रजिस्टरक फोटो लऽ जाएब?” नैरा कहलीह, “केवल समयक लिखित प्रमाण, बच्चासभक पूरा सूची नहि।”

भीड़क आवाज बढ़ैत गेल। रेलचौकक चाय-दोकानक आगाँ कोनो युवक कहैत छल जे जानकीक दल काल्हि गाम छोड़ि भागि गेल। ओही समय जानकी स्वयं मीरा संग ओतय पहुँचलीह। युवकक बातक आगाँ जानकी अपन खाली बाँसक टोकरी जमीनपर रखलीह। “हम भागल रही तँ एतय कतयसँ अएलहुँ?” ओ पुछलीह। युवक लजायल नहि। “वीडियो झूठ अछि तँ बच्चाकेँ सामने आनू।” जानकीक जबाब तेज छल—“अहाँक शंका शान्त करबाक लेल हम ककरो बच्चाकेँ तमाशा नहि बनायब।”

एहि भीड़मे दुर्गा दनुवार भी अएलीह। हुनका काँधपर कटल बाँसक छोट गाँठ आ हाथमे बाटक नकल छल। ओ नदीक पछिला गाछ-पातवला कातसँ टोकरीक कच्चा सामग्री आनैत छलीह; फाटक बन्द भेलासँ हुनका घुमि कऽ अएब पड़ल छल। लोक हुनका धक्का दऽ कहलक, “पहिने बच्चाक मामला, बाँस बादमे।” दुर्गा गाँठ उतरौलीह। “बाँस पछाँ, मुदा एहि बाँसक बाटे काल्हि हमर गाड़ी गेल छल। समय पूछब तँ कहि सकैत छी।”

दुर्गा अपन ढुलाईक रसीद नैराकेँ देखौलीह। रसीदपर काल्हिक साँझक तिथि आ चढ़ाएल गाँठक संख्या लिखल छल। ओ कहलीह, “हमर गाड़ी फाटकपर अटकल, तखन जानकीक लोक अपना बोझक संग एही कात छल। लोक ताला खोलबाक बात कए रहल छल। बच्चाक चिचियाहट नहि सुनलहुँ, मुदा भीड़क हल्ला याद अछि।” नैरा पुछलीह, “अहाँ पूरा दृश्य देखलहुँ?” दुर्गा मुस्की देलीह, “हम गाड़ीक चक्का छुड़बैत रही। जे नहि देखलहुँ से नहि कहब।”

नैरा वीडियो फेर देखए चाहलीह। दुकानदारक बेटा अपन फोन देबाक लेल तैयार छल, मुदा ओकर लग केवल आगाँ पठाओल प्रति छल। माथपर लागल ‘आइ भोर’ के लिखलक, से ओ नहि जनैत छल। ओ फाइलक समय देखौलक; ओहि समय फोनपर भेटबाक छल, बनबाक नहि। नैरा ओकरा बुझौलीह, “ई समय पठाओलाक अछि। मूल रिकॉर्डिंगक समय एकरासँ सिद्ध नहि होएत।” युवक पहिल बेर फोनक चकमक सँ अलग एकटा प्रश्न सुनलक।

मूल वीडियो लेल ओ सभ फाटक लग गेल। पहरेंदार काल्हिक भीजल ड्यूटी-पर्ची सुखबैत छल। नैरा पहिने पूछलीह जे कोनो लोककेँ बच्चाक आरोपमे ओ रोकने छल कि नहि। पहरेंदार कहलक, “हमरा काम बाटक पहरा देब अछि। काल्हि एहन कोनो बच्चाकेँ

हिरासतमे नहि लेलहुँ।” दुर्गा अपनी ढुलाईक समय मिलौलीह। पहरेदार पर्चीपर लिखल ओहि समयक गाड़ी प्रवेश-निषेध देखौलक, मुदा नाम वाला हिस्सा बिना औपचारिक नकलक देब अस्वीकार कएलक।

तखन ओहि युवकक संग आयल ओकर मित्र स्वीकार कएलक जे ओ दूरसँ दृश्य रिकॉर्ड कएने छल। ओकर मूल फाइल एखन फोनमे सुरक्षित छल। जानकी ओहि फोनपर अपना दलक बच्चाक चेहरा खुलल देखैत काँपि गेलीह। ओ स्पष्ट कहलनि, “पहिने सबकेँ एकठाम जमा कऽ देखा सकैत छी, मुदा प्रति बाँटब नहि।” युवक सहमत भेल। पद्मा नहि छलीह, तँ नैरा तकनीकी विशेषज्ञ बनबाक अभिनय नहि कएलनि; केवल मूल फाइलक तारीख, दृश्यक्रम आ ओकर मालिकक बयान अलग-अलग कापीमे लिखलीह।

मूल दृश्यमे फाटकक भीजल सूचना, तुलसीक अनाजवाली गाड़ी आ दुर्गाक बाँसक गाँठ एक संग देखाइत छल। तखन काल्हिक रसोइ लेल अनाज लऽ जाइत गाड़ीक समय मीरा अपन भोजनक पंजीसँ मिलौलीह। ‘आइ भोर’ लिखल प्रसारित प्रति एहि साँझक घटनाकेँ भोरक घटना कहैत छल। एहि तिथि-सन्दर्भक भूलक पुष्टि तीन अलग काजक हिसाबसँ भेल; मुदा वीडियो के लिखल शीर्षकसँ पठौलक, से एखनहुँ अज्ञात छल।

जानकीक दलक बच्चाक माय सेहो फाटक लग पहुँचलि। ओ अपन बच्चाकेँ सभक सामने आनब नहि चाहैत छलीह। अलग कात बैसि अपन काजक समय, काल्हिक यात्रा आ बच्चा संग रहबाक बात कहलीह; बच्चाक जन्म-सन्द हुनका लग नहि छल, मुदा ओहि कारण हुनका अपन बच्चाक माय साबित करबाक तमाशामे नहि धकेलल गेल। नैरा कहलनि, “अहाँक निजी बयान अलग सुरक्षित रहत। सार्वजनिक सुधारमे हम बच्चाक चेहरा नहि देखाएब।”

दुर्गा पुछलीह, “तखन एतए जे लिखल गेल ‘चोरी पकड़ायल’, ओकर उत्तर की?” नैरा कहलीह, “एहि वीडियोमे चोरी पकड़ायल, से सिद्ध नहि। जे घटना साँझक अछि ओकरा भोरक कहल गेल। एहि दू तथ्यक सुधार माँगब; बच्चा ककर, तकर विवरण सभा लेल नहि।” जानकीक हथेली ढील भेल। ओ पहिल बेर भोरसँ पहिनुक आशंका सँ छोट राहत अनुभव कएलनि, मुदा भीड़ जे फाइल पठा चुकल छल, ओ सभटा फोन घुरि नहि सकैत छल।

फेर ठीक ओहि समय दोसर आवाज उठल। एक महिला रेलपुल दिस दौड़ैत अएलीह। हुनका नाकक कात पसीना आ धूरिक रेखा छल। “हमर बेटा भेटल?” ओ ककरो नाम नहि पुछने सीधा जानकी दिस देखलीह। जानकी तुरन्त ठाढ़ भेलीह। महिला अपना नाम लता बतौलीह। हुनकर आठ वर्षक बेटा मिथुन भोरक बाद रसोइ लगक हाटसँ बिछुड़ि गेल छल। ओ बच्चाकेँ खोजैत-पुछैत एतय पहुँचलि छलीह।

भीड़ फेर जानकी दिस घुमल। मीरा बीचमे ठाढ़ भेलीह। “एक मिनट। मिथुन कखन आ कतय अन्तिम बेर देखल गेल, से लिखू। काल्हिक वीडियो एहि बच्चाक नहि भऽ सकैत —ओ समय अलग अछि।” लता कहलीह, “हमरा वीडियो सँ की? हमरा बेटा चाही।” हुनकर आँखि भीजल छल, मुदा स्वर कड़ा। जानकी अपन टोकरी हटबैत कहलीह, “अहाँक बेटाक खोजमे हमरो लोक लागब। पहिले हमर दलकेँ दोषी कहि कऽ खोजक बात बन्द नहि करू।”

लता अपन बेटाक कपड़ाक विवरण देलीह—नील कुरता, भीजल होइत लाल रङ छोड़एबला गमछा, आ बाँया पएरक चप्पलक फीता टूटल। नैरा एहि बातसभक समय आ स्थान लिखलीह, मुदा बच्चाक पूरा पहिचान सार्वजनिक भीड़मे दोहरौलीह नहि। फकीरा पुछलनि, “मिथुन अकेले हाट गेल छल कि ककरो संग?” लता कहलीह, “हमर छोट भाइ संग। भाइ तेल आनए दोकानमे घुसल; बाहर निकलल तँ बच्चा नहि छल।” एखन लग दोकानवालासँ औपचारिक बात नहि भेल छल।

सबीना मीरशिकार हाटसँ घुरैत छलीह। हुनका झोरामे सुई, पुरान जालक मरम्मतिक डोरी आ कोनहि मजदूरक देल आधा पैसा छल। ओ काल्हि अपन परिवारक एक युवकसँ झगड़ने छलीह; परम्पराक नामपर प्रतिबन्धित शिकारक काज करबाक दबाव ओ अस्वीकार कएने छलीह। आब ओ हाटमे जाल सीब आ टोकरीक बन्धनक काम खोजैत छलीह। भीड़क एक लोक हुनकर झोरा देखिकऽ कहलनि, “ई लोक कतहु सँ बच्चा उठा सकैत अछि।”

सबीना झोरा खोलि जमीनपर सुई आ डोरी रखलीह। “ई मछलीक जालो नहि, बाँसक टोकरीक जोड़ बाँधबाक डोरी अछि,” ओ कहलीह। “ककरो बच्चा हराओल अछि तऽ हम खोजमे मदति करब, मुदा हमर पुरुखाक नाम सुनिते अपराध तय नहि करू।” ओ लतासँ

सीधा पुछलीह, “आब अहाँक बेटाकेँ अंतिम बेर जे दोकानपर देखल गेल, ओतय साँचमे गेल छी?” लता माथ हिलौलीह। “भीड़ हमर बात सुनिते नहि।”

जानकी लताक संग चलबाक निर्णय लेलनि। नैरा रोकए चाहलीह—दलगत सुरक्षाक प्रश्न छल—मुदा जानकी कहलीह, “हम भागब तँ कहत भागि गेल। हम मदद करब तँ कियो कहत निशान मेटाबए अएल। एहन हिसाबमे जीब कतय?” सरयू वृद्धा कहलीह, “अहाँ अकेले नहि जेब।” जानकी विनती कएलीह जे पाँच लोकक भीड़ नहि, केवल मीरा आ सबीना संग चलथि। लता हँ कहलीह। नैरा फकीराकेँ स्टेशन दिस अलग समय-जाँच करबाक अनुरोध कएलीह; हुनकर रोजी बाधित नहि करबाक शर्तपर।

हाटक तेलदोकानपर पहुँचि लताक छोट भाइ अपन गलती स्वीकार कएलक। “हम बच्चाकेँ बाहरे ठाढ़ करि देलहुँ। तीन मिनटक बात छल।” दोकानदार समयक बारेमे निश्चित नहि छल; ओहि घड़ी रसोइ लेल तेलक पात्र तौलल जा रहल छल। ओकर लेजरमे रकम लिखल छल, बच्चाक बाट नहि। मीरा पुछलीह, “नजदीकक पानिवाला, फलवाला, सड़क पार करनिहार—कियो देखल?” दोकानदार कहलक, “एकटा लोक नील कुरतावाला बच्चाकेँ उतरक गल्लीत देखल कहैत छल; हम नहि देखलहुँ।”

सबीना गलीमे जा कऽ कूड़ाक ढेरीक कात रखल टूटल चप्पलक फीता उठौलीह। लता झपटि गेलीह। “ई ओकर!” सबीना रोकलीह, “रड आ टूटबाक ढंग मिलैत अछि। मुदा ईहिसँ बच्चा एहि बाट गेल सिद्ध नहि। पहिने देखू, फीतापर किछु चिन्ह अछि?” लता ओहि फीताकेँ हाथमे धऽ कऽ रहलि, मुदा अपना बेटाक होएबाक दावा तुरन्त लिखबए नहि देलीह। नैरा अलग कागदपर ‘सम्भावित वस्तु’ लिखलीह।

फकीरा समय मिलाकऽ स्टेशनक घण्टी आ गाड़ी आगमनक क्रम बतौलनि। तेसर पहरक गाड़ी आ हाटक तेलक खरीदक बीच कतेक अन्तर छल, से हुनकर रोजीक जानकारीसँ स्पष्ट भेल; तइयो ओ कहि नहि सकलाह जे मिथुन गाड़ी पकड़लक वा नहि। नैरा पुछलीह, “गाड़ीक डिब्बामे देखबाक अनुमति भेटत?” फकीरा कहलनि, “पहिरे रेलक कर्मचारीसँ लिखित बात करू। टिकट नहियो रहए, तकर अर्थ बच्चा रेलमे गेल नहि।”

मीरा अपन कक्षामे घुरि एकटा छोट नक्शा बनौलीह—हाट, तेलदोकान, पानिक नल, उतरक गली आ स्टेशनक दू बाट। ओ बच्चासभकेँ छुट्टी देबाक समय सामान्य सुरक्षा-

नियम फेर समझौलीह, मुदा मिथुनक नामक तमाशा नहि बनौलीह। दुर्गा बाँसक पाटी पर नक्शा टिकबैत कहलीह, “काल्हिक बंद वनबाटकेँ आ आजुक बच्चाक खोजकेँ एक्के चित्रमे नहि खींचू।” मीरा उत्तर देलीह, “नक्शा दू टा अछि। दुखक बाट मिलि सकैत अछि, घटनाक साक्ष्य अलग रहत।”

साँझक पहिने जानकी आ लता स्थानीय सहायता-कक्ष पहुँचलि। कर्मचारी पहिने वायरल वीडियो देखौलक। जानकी कहलनि, “ई पिछला साँझक भिडियो अछि, एहि बच्चाक हरएबाक भोरसँ एक नहि। अहाँ चाही तँ समय-जाँचक लिखल विवरण देब। मुदा एखन मिथुनक गुमशुदगीक सूचना दर्ज करू।” लता अपन बेटाक पहचान बतौलीह। कर्मचारी अलग सूचना-पत्र बनौलक; जानकीक दलविरुद्ध अप्रमाणित आरोपकेँ ओहि पत्रमे स्वतः दोष-निर्णय नहि बनाओल गेल।

लता पुछलीह, “खोज कखन होएत?” कर्मचारी सम्भावित बाटक जाँच आ सम्बन्धित चौकीसँ सम्पर्कक बात कहलक। नैरा ओकरा लिखित प्राप्ति देबाक आग्रह कएलीह। कर्मचारी शिकायतक समय आ क्रमांक लिखि प्रति देलक। ओहि कागदपर कोनो चमत्कार नहि छल; मिथुन एखनहुँ नहि भेटल। मुदा बच्चा हरएबाक आधिकारिक सूचना एखन जानकीक दलक वायरल आरोपक नीचे दाबल नहि छल। लता कागद दूनू हाथसँ पकड़ि ओहि पर लिखल अपन बेटाक नाम पढ़लीह।

फाटकवला मूल वीडियो पर नैरा दोसरा आवेदन बनौलीह। ओकरामे गलत तिथि-सन्दर्भ, काल्हिक गाड़ी आ ढुलाईक मिलान, आ बच्चाक चेहरा बिना सहमति प्रसारित नहि करबाक माँग रहए। जानकी अनुमोदनक पहिने पूरा पाठ सुनलीह। “ई मत लिखू जे सभ लोक झूठ बाजल। लिखू जे एहि रिकॉर्डिंगसँ बच्चा चोरी सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलीह। नैरा वाक्य बदलि देलीह। ओ अनुभव कएने छलीह जे ठीक शब्दो कखनो ककरो जीवन सुरक्षित राखैत अछि।

दुर्गा अपना बाँसक गाँठ फेर काँधपर उठौलीह। काल्हिक फाटकक आवेदनपर हुनकर हस्ताक्षर रहए, आइ वीडियो-जाँचमे हुनकर ढुलाईक हिसाब काम अएल। मुदा वनमार्गक प्रवेश-समस्या एखन जसक तस रहए। “हम एही बाटे फेर जेब,” ओ कहलीह, “कानूनक उत्तर अलग चाही। बच्चाक नामपर हमर बाँस रोकबाक अधिकार ककरो नहि भेटत।”

मीरा दोसर दिनक कक्षा खोलनाइ निश्चित कएलीह; बाहरक भय दूर भेल नहि, मुदा पढ़ाइ स्थगित रखब ओ अस्वीकार कएलीह।

सबीना अपन जालक डोरी समेटलीह। हाटसँ घुरबाक समय एकटा युवक पूछलक, “तू तऽ सब छोड़ि समाजसेवा करए लगलह?” सबीना कहलनि, “हमर काजक दाम देबह तँ हम काल्हि टोकरी सी देब। मुफ्त मदति कएने छी, ताहिसँ हमर पेटक भाड़ा माफ नहि भेल।” ओ अपन आधा मजदूरीक पर्ची फेर झोरामे रखलीह। ओहि दिन हुनका दोसर आधा पैसा नहि भेटल, मुदा अपन कौशलक दामक हिसाब ओ छोड़लीह नहि।

साँझ ढललापर जानकीक दल ओही रेलपुलक नीचाँ लौटि अएल। सरयू बच्चासभ लेल भातक बचल खिचड़ी गरम करैत छलीह। एक बच्ची पूछलक, “माय, हमरा सभ फोटोमे खराब देखाइत छी?” जानकी ओकर माथ सहलौलीह। “फोटो खराब नहि, बिन पूछने कहायल बात खराब भऽ सकैत अछि।” बच्ची फेर पुछलक, “मिथुन भैया कतय अछि?” जानकीक उत्तर छोट छल, “एखन खोजि रहल छी। भोरमे फेर खोजब।”

नैरा लताकेँ खबर देबाक समय केवल एतबे कहलनि जे हाट, गली आ स्टेशनक अलग-अलग सम्भावना जाँच लेल दर्ज भेल अछि। ककरो पकड़ल गेल, ककरो निर्दोष अन्तिम रूपसँ घोषित कएल गेल, एहन समाचार नहि। लता पुछलीह, “हमरा बेटाकेँ भेटबामे कतेक देर?” नैराकेँ उत्तर नहि छल। ओ केवल प्राप्ति-पत्रक प्रति, सम्पर्कक सही बाट आ अगिला जाँचक समय देलीह। दुःखक सामने अनुमानक चकमक नहि चलैत छल।

राति सरिता पानिक बासन धो कऽ उल्टा कएने छलीह। नैरा घुरलीह तँ ओ पुछलनि, “आइ नामक सूची खुलल?” नैरा कहलीह, “नहि। आइ दू अलग कागद खुलल। एक गलत आरोपक सन्दर्भ, दोसर हराएल बच्चाक खोज।” सरिता हथेलीसँ बासनक किनार पोंछलीह। “तखन दुनूक कागद अलग राखिह। जाहि नामपर लोक दौड़ैत अछि, ओहि नामक पाछाँ कियो साँचोमे बाट जोहैत होइत अछि।”

नैरा छोट टेबुलपर दू लिफाफा रखलीह। पहिलमे वायरल दृश्यक सन्दर्भ-सुधारक आवेदन, दोसरमे मिथुनक खोजक लिखित सूचना-पत्रक नकल। मूल सत्ताइस नामक पन्ना सरिताक अपन कपड़ामे सुरक्षित छल; आजुक बच्चाक खोजसँ ओकर कोनो सम्बन्ध सिद्ध नहि भेल छल। बाहर सरयूक खिचड़ीक सुगन्ध आ रेलक दूरक घण्टी एक

संग आबि रहल छल। जानकीक दलक बच्चासभ भात खा कऽ सुतब शुरू कएने छल, आ लताक घरमे एकटा थारी ढाकि कऽ राखल छल।

अध्याय ३० • अहल्याक आवाज

भोरक धूप लताक आँगनमे एकटा खाली थारीपर पड़ि रहल छल। राति ओ मिथुन लेल भात ढाकि रखने छलीह। पातर भातक ऊपर जमल पानि ओ झारि देलीह, मुदा थारी धोबाक साहस नहि भेलनि। पड़ोसिन कहलकनि, “खोजक लोक फेर आएत।” लता दरवाजा दिस देखलीह। “एतय आएबाक बदला हाट दिस जाथि,” ओ कहलीह, “हमरा घरक भीतर जे नहि अछि, ओकरा घर देखिकऽ के भेटाओत?”

नैरा कागदक दू अलग प्रति लऽ कऽ पहुँचलि—वायरल वीडियो-संशोधनक आवेदन आ मिथुनक गुमशुदगीक सूचना। लता पहिल कागद हाथो नहि लगौलीह। दोसरपर लिखल समय देखलीह। “एहि समयसँ पहिने कियो खोजल नहि?” नैरा कहलीह, “खोज भेल, मुदा आधिकारिक लिखावट एतयसँ आरम्भ होइत अछि। हम एहि अन्तरकैँ मेटाएब नहि।” लता कागद मोड़ि अपन साड़ीमे रखलीह।

पानिक घैल लऽ कऽ घुरैत पड़ोसक किशोरी बतौलक जे हाटक भित्तिपर नव सूचना चिपकल अछि। सूचनामे मिथुनक हराएबाक बातक नीचाँ एकटा धुँधला फोटो छल—ठेला लग ठाढ़ एक पुरुष, कातमे दू बच्चा। फोटोपर लाल गोला बनाओल छल। कोनो सरकारी मुहर नहि, मुदा नीचे लिखल छल, “सावधान।” नैरा पुछलीह, “ई के चिपकौलक?” किशोरी माथ हिलौलक। “जे लोक पढ़ैत अछि, ओ सभ कहैत अछि जे प्रशासनक अछि।”

हाटमे पहुँचि नैरा देखलीह जे कागदक किनार भीजलासँ मुड़ि गेल छल। फोटोमे आदमीक मुँह आधा छाया भीतर छल, बच्चासभक देह पूरा देखाइत नहि छल। नीचाँ लिखल एक शब्द लोकक जीभपर पसारल छल—“कंजर।” नैरा अपन फोन उठबए गेलीह, फेर रुकलीह। अनधिकृत तस्वीरक दोसर प्रसारण रोकबाक लेल ओ पहिने सूचनाक पाठ अपन कापीमे उतारलीह। मुँहक फोटो नहि लेलनि।

ठेलाक मालिक थोड़े दूर अपन टूटल पहियाक धुरी खोलि रहल छल। ओकर नाम मोहन छल। कियो ओकरा कहने छल जे एहि गाममे नामसँ पहिने ओकर समुदायक परिचय घूमैत अछि। मोहन पेंच जमीनपर राखि देखलक जे दूनू कात भीड़ जुटि रहल अछि। “आइ

पहिया फेर फँसत,” ओ अपन संग काम करैत युवकसँ कहलक, “काल्हि कीचड़मे, आइ लोकक बातमे।” युवक हँसि नहि सकल।

लताक चचेरे भाइ मोहनक सामने जा ठाढ़ भेल। “एहि फोटोमे तूँ छी?” मोहन कहलक, “हमर ठेला बुझाइत अछि।” “बच्चा के?” मोहन धुरीक तेल लगल हथेली देखबैत कहलक, “एहि प्रश्नक उत्तर लेल पहिने मूल फोटो चाही। जे दिन हमर ठेला एतय छल, ओ दिनक हिसाब हमर लग अछि। मुदा अही ठेला लग देखायल प्रत्येक बच्चाकेँ हम चिन्हैत होएब, से किएक मानल जाए?”

मोहनक बगलमे एकटा पतरा पेटी छल। ओ ओहिमे सँ पहिया-सुधारक तीन पर्ची निकाललक। एक पर्चीपर हाटक पुरान तिथि, एकपर रेलवे-पुल लग भाड़ाक भुगतान, तेसरपर आइ भोरक अपूर्ण काज। “ई देखू,” ओ कहलक, “रोजी कमाएब छल तँ ठेला खिचने रही। फोटो कतय, कखन, के लेलक—अहाँक कागद नहि बतबैत अछि।” नैरा कहलनि, “पर्ची अहाँक काज सिद्ध करैत अछि, ककरो बच्चाक पूरा दिनक बाट नहि। दुनू बात अलग लिखब।”

मोहन अपन पर्ची घुरेबाक बदला नैराक कापी दिस देखलक। “काल्हि हम ककरो विरुद्ध नहि गेलहुँ। आइ हमर नाम पर लोक कहैत अछि ‘जाति देखू’। मुदा नामक अगिला दिन सेहो हमरा पहिया बनाबए पड़त।” ओकर ठेलापर रखल छोट घंटी हवा लागलासँ बजल। कियो बच्चा ओकरा देखि रोइ नहि रहल छल; तइयो भीड़क चुप्पी ओहि घंटीसँ भारी छल।

ठीक ओही समय साजिद नट हाटक दोसर प्रवेशद्वारसँ आयल। काँधपर नाटकक रंगीन कपड़ा, हाथमे छोट कैमरा आ अँगुरीमे बैटरीक ढक्कन छल। विद्यालयक बच्चासभक लेल ओ संगीत आ अभिनयक अभ्यास करबैत छल; कखनो उत्सवक दृश्य रिकॉर्ड कऽ आयोजककेँ दामपर दैत छल। दू दिन पहिने ओ एकटा प्रदर्शन रिकॉर्ड कएने छल। काल्हि सँ ओहि रिकॉर्डिंगक एक अंश बिना ओकर नामक घूमि रहल छल।

साजिद भीतक फोटो देखलक तँ कपड़ा जमीनपर राखि देलक। “ई ठेलाक फोटो हमर नाटकक अभ्यासक समयक छी,” ओ कहलक। कियो पुछलक, “प्रमाण?” साजिद अपन कैमरा नैराकेँ नहि थमौलक। “मूल फाइल अछि। मुदा बच्चासभक अभिनय-रिहर्सल

रिकॉर्ड कएने रही। हुनकर माय-बापक अनुमति केवल अभ्यास आ मंचक लेल छल। जाँचक नामपर पूरा फाइल बाजारमे बाँटि देब तँ हमहूँ अन्याय करब।”

नैरा कहलीह, “अहाँक मूल फाइल देखबाक शर्त अहाँ तय करू। हम लिखित रूपमे काजक उद्देश्य देब।” साजिद पहिने प्रदर्शनक आयोजन-रसीद खोललक। ओहिमे मंचक जगह, शुल्क आ विद्यालयक समय लिखल छल। फोटोमे जे ठेला देखाइत छल ओ अभिनयक सामान ढोएबाक लेल किरायापर आनल गेल छल। मोहन कहलक, “हँ, ओहि दिन हमर ठेला नाटकक काठक पट्टी लऽ गेल छल। मुदा फोटो देखिकऽ दिन चिन्हल जाइत नहि। पर्ची आ मूल रिकॉर्डिंग मिलाउ।”

भोरसँ कियो एहि भीड़मे मिथुनक खोजक प्रश्न पाछाँ राखि देने छल। लता स्वयं हाटपर पहुँचलि तँ एक लोक कहलक, “देखू, ठेलावला पकड़ायल।” लता कागदक लाल गोला देखलीह, फेर मोहनक हाथमे धूरि देखलीह। “हमरा बेटा कतय अछि?” ओ पुछलीह। लोक उत्तर नहि देलक। लता कहलनि, “ककरो फोटोपर घेरा मारलासँ हमरा बेटा नहि भेटत। जे जानैत अछि, ओ समय आ जगह कहए।”

ओहि प्रश्नक पाछाँ नैराकेँ एक पुरान कथा याद अएल, जकरा ओ सरिताक मुँहसँ बाल्यकालमे सुनने छलीह। कथा अहल्याक छल। मुदा सरिता कहैत छलीह जे कतेको बेर कथा सुनौनिहार अहल्याक बात सभसँ कम कहैत अछि। नैरा एखन सोचए लगलीह—ककरो जीवनक निर्णय एकटा दोसर वाणीसँ बनि गेलापर ओकर अपन आवाज कोन दरवाजासँ लौटैत अछि?

बहुत पहिनुक वनमे, जखन ऋषिक आश्रमक कात पातर धूलि आओर हरियर दूब एक संग रहैत छल, अहल्या भोरमे गोबर-माटिसँ लिपल चौकीक एक कोना पोंछि रहल छलीह। ओहि स्थानक नाम बहुत लोक जनैत छल, मुदा ओहि स्थानमे कोन ऋतुमे पानि चढ़ैत अछि, धान कखन पीसल जाइत अछि, जड़ाक राति के लकड़ी जोड़ैत अछि—ई बात आश्रममे काम करनिहार लोक जनैत छल। अहल्या ओ सभक दिन-रात देखैत अएलीह।

एकटा अतिथि-आगमनक बाद हुनकर विषयमे आरोप उठल छल। आश्रमक आदमीसभक कथन अलग-अलग छल। केओ कहलक जे भेष छल, केओ कहलक जे पहिचान छल, केओ केवल गौतमक कोप दोहरबैत रहल। अहल्या अपन स्मृतिमे एक

आदमीक स्वर आ ओकर आगमनक समय फराक करबाक प्रयास करैत छलीह। स्मृति सभ बात साफ नहि करैत छल; एकान्तमे सोचल बात आ लोकक सामने आरोप बनल बात समान नहि छल।

गौतमक क्रोधक पाछाँ आश्रममे हुनकर प्रति उत्तर देबाक कोनो सभा नहि लगल। लोक बात कहैत रहल; अहल्या जे कहना चाहैत छलीह, ओ सुनबाक आग्रह विरल छल। किछु लोक हुनका शिला कहलक, किछु लोक पापिनी। अहल्या देखैत छलीह जे जखन ककरो नामक बदला पत्थर कहल जाइत अछि, तखन हुनकर भोजन, डर, निद्रा आ दुःखक प्रश्न पूछब बन्द भऽ जाइत अछि। एतय कथा कहबाक अनेक बाट छल; हुनकर जीवन एक बाटमे नहि समाइत छल।

बहुत समयक बाद राम आ लक्ष्मण ओहि स्थानपर पहुँचलाह। राम पानिक पात्र लग ठाढ़ भऽ अहल्याकेँ प्रणाम कएलनि। आश्रमक बाहर ठाढ़ लोक तुरन्त कहलनि, “उद्धार भेल।” अहल्या हुनकर दिस देखलीह। हुनका बरखासँ ई शब्द सुनबाक अवसर नहि भेटल छल, मुदा ई शब्द पूरा उत्तर नहि छल। ओ रामकेँ बैसबाक संकेत देलीह आ लक्ष्मणकेँ घैलसँ पानि देलीह।

राम पुछलनि, “अहाँ एतय कतेक दिनसँ अकेली छी?” अहल्या कहलनि, “दिन गनैत रही तँ ओहि दिनसभमे जे काज कएलहुँ ओकर हिसाब कौन रखत? अहाँ आयलहुँ, से एखनक बात। मुदा हमरा विषयमे जे कहायल गेल, ओकरा अहाँ सत्य मानि लेने छी की?” राम चुप रहलाह। लक्ष्मणक हाथमे धएल पानिक पात्र काँपल नहि, मुदा हुनकर आँखि दोसर दिस गेल।

अहल्या फेर कहलीह, “हमर स्मृतिमे भय अछि, भ्रम अछि, अपन निर्णयक पीड़ा सेहो अछि। जतय हम निश्चित नहि छी, ओतय निश्चित कहब नहि चाहैत छी। मुदा जे लोक हमरा बिना पुछने दण्डक कथा लिखलक, ओकरा सभ कथनक एकमात्र मालिक किएक मानल जाए?” राम उत्तर देलनि, “हम सुनबाक लेल ठाढ़ छी।” अहल्या कहलीह, “तखन पहिले सुनू, फेर जे कथा कहब, ओहिमे हमर वाणी कतए राखब, से विचारू।”

आश्रमक एक वृद्धा ओतय अएलीह। हुनकर हाथमे सूखल समिधाक गठरी छल। ओ रामसँ कहलीह, “हम हिनका शिला कहिकऽ नहि जनैत छी। सूखल वर्षमे एहि वनक

इनारक दोरी ईहे सँभालैत छलीह। पानि खतम भेलापर तकर जुगाड़ो हिनके चिन्ता छल।” अहल्या वृद्धाकें देखिकऽ पहिल बेर हँसलीह। “एहि बातक गवाही नहि माँगू,” ओ कहलीह, “काज देखबाक लेल केवल मुँह नहि, दिनो देखए पड़ैत अछि।”

वृद्धा समिधाक गठरी खोलैत कहलीह, “बहुत लोक एहि आश्रमक भूमि जानैत अछि, मुदा बाढिक दिन रास्ता कतय रहैत अछि, से अहल्यासँ पूछैत छल। आब जहिया अतिथि आयल छथि, सभ हिनकर कथा अपन शब्दमे कहए चाहैत अछि।” अहल्या आगाँ बढि गठरीक एकटा टुटल डाँठ अलग रखलीह। “हमरा कियो पूछथि तँ हम कहब,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा हमर जीवनक दिनसभमे केवल एकटा आरोप नहि अछि। जँ फेर एतय अतिथि आबथि, हुनका भोजन देबाक समय हम अपन इच्छासँ तय करब।”

विदाइक समय राम किछु कहबाक लेल ठाढ़ भेलाह। अहल्या हुनका रोकलीह नहि। मात्र एतबे कहलीह, “जतय हमर कथा दोहराएब, ओतय हमर प्रश्नो दोहराएब। जे न्याय केवल ककरो छुअलासँ पूरा भऽ जाइत अछि, ताहिमे जकर जीवन बीतल ओकर अपन वाणी कतय रहत?” बाहर धूप पसरल छल। आश्रमक काम समाप्त नहि भेल छल। वृद्धा समिधा राखए गेलीह; अहल्या सेहो अपन पानि भरबाक बासन उठौलीह।

विदेहपुरक हाटमे साजिद छोट मेजपर कैमरा रखलक। जानकी, लता, मीरा आ मोहन ओकर चारूकात बैसलाह। नैरा पहिने कागदपर लिखलीह जे उपस्थित लोक केवल समय आ दृश्यक्रम देखताह; बच्चासभक चेहरा वा नामक प्रति बाहर नहि जाएत। साजिद अपन कैमरा चलौलाक बाद कहलक, “हम जे बनौने छी ओकरा काटि कऽ जे बेचत, ओ हमर मेहनताना मात्र नहि, बच्चाक विश्वासो बेचत।”

मूल रिकॉर्डिंगमे विद्यालयक नाटक लेल मोहनक ठेला, एकटा बाँसक फाटकक बनौट आ बच्चासभक रिहर्सल देखाइत छल। साजिद स्क्रीन रोकि नाटकक पट्टी देखौलक। “एहि फोटोमे जे लाल कपड़ा बुझाइत अछि, ओ मंचक परदा अछि। वनफाटक लग जानकीक दलक वायरल दृश्य एक दोसर रिकॉर्डिंग अछि; ई मंचक फोटो ओकर हिस्सा नहि। मिथुनक हरएबाक सूचना एहि प्रदर्शनक बादक दिनक छी।” मीरा अपन विद्यालयक कक्षाक हाजिरी आ साजिदक आयोजन-रसीदक समय मिलौलीह। दुनू समय एकरासँ मेल खाइत छल।

नैरा स्पष्ट कएलीह जे फोटो मोहनक ठेलाक अछि आ दोसर दिनक अभ्यासक; एहि फोटोसँ मोहन मिथुनकेँ लऽ गेल, एहन दावा चलि नहि सकैत। लता ओहि वाक्यकेँ फेर कहबौलीह। “ई लिखू जे फोटो गलत सन्दर्भमे चिपकल अछि। हमरा बेटाक खोज बन्द भेल, से नहि लिखू।” नैरा दू अलग पाँत लिखलीह। मोहन कागद पढ़ि कहलनि, “हम निर्दोष सिद्ध भऽ गेलहुँ, एहन भारी शब्द नहि चाही। जे तस्वीर सँ आरोप बनल, ओ तस्वीर ओ आरोप नहि करैत अछि—एतबे लोक पढ़ए।”

सूचना चिपकौनिहारक पहिचान एखनहुँ नहि भेटल। हाटक दुकानदार कहलक जे एक युवक साँझमे कागद रखि गेल छल, मुदा ओ ओकर पूरा चेहरा देखल नहि। साजिदक मूल फाइलमे फोटोकेँ लाल घेरामे बदलएबला हाथक प्रमाण नहि छल। नैरा ओकरा अनुमानक खानामे नहि, ‘अज्ञात’ लिखलीह। पिछला बेर महेशक बात समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक त्रुटि हुनका याद छल। एहि बेर ओ छोट विजयक लोभमे दोसर नाम नहि जोड़लीह।

मोहन सूचनाक कागद उतरएबाक आग्रह कएलक। किछु लोक कहलक जे मिथुन भेटि जाए तखन उतराएब। मोहन उत्तर देलक, “हमर ठेला आ हराएल बच्चा दू अलग बात अछि। बच्चा भेटबाक दिनक प्रतीक्षामे हमर नामपर अन्याय किएक टिकत?” हाटक दुकानदारक सहमतिसँ गलत फोटो हटाओल गेल। ओकर स्थानपर लताक अनुमति सँ केवल खोजक सम्पर्क-स्थान आ समयक सामान्य सूचना लगाओल गेल, बिना ककरो सन्देहास्पद चेहराक।

साजिदक झोरामे ओहि दिनक कार्यक्रमक अपूर्ण भुगतान-पर्ची सेहो छल। ओ आयोजक लग गेल तँ आयोजक कहलक, “जखन तोहर वीडियो लोक देखिए लेलक, दाम फेर के देत?” साजिद साफ कहलक, “दृश्यक उपयोगक अनुमति आ मेहनतानाक हिसाब दूटा विषय अछि। सार्वजनिक बदनामीमे हमर काज लागल तँ ओकरा मुफ्त नहि करब।” ओ अपन रसीदक दोसर प्रति मीरा लग सुरक्षित रखबा देलक। विवाद एखन बकाया रहल; ओकर काजक स्वामित्वक प्रश्न पहिल बेर लिखित भेल।

साजिद अपन रंगीन कपड़ा समेटबाक क्रममे मोहनकेँ पुछलक, “तों एखनहुँ हमरा ठेला भाड़ा पर देबह?” मोहन आँखिक कोना सँ हँसल। “पहिले पाछिल भाड़ा चुकाबह। ई लाल

कपड़ा फेर फोटोमे लटका कऽ हमरा माथपर आरोप नहि आनिह।” साजिद कहलक,
“अगिला नाटकमे ठेलाक बदला नाव राखब।” मोहन तुरन्त उत्तर देलक, “नाववालासँ
पहिने सहमति लिअ। नहि तँ ओकरो नाम तमाशा बनत।” दूनु थोड़े देर हँसलाह। भाड़ा
एखन देबाक छल, मुदा मुँहपर पहिल बेर सहजता लौटल।

हाटक कोनामे जानकी अपन दलक वृद्धा सरयूकेँ संग लऽ कऽ आबि गेलीह। सरयू
कहलनि, “आरोपक कागद उतारल गेल। मुदा काल्हि हमर बच्चा विद्यालय जाएत तँ लोक
ओकरा की कहत?” मीरा उत्तर देलीह, “हम कक्षा फेर खोलब। बच्चासभकेँ दोषक नामसँ
नहि, अपन-अपन नामसँ हाजिरीमे लिखब।” जानकी ई उत्तर सुनिकऽ चुप रहलि। हुनका
संतोष छल, मुदा राति रेलपुलक नीचाँ डराइत बच्चीक चेहरा एखनहुँ याद छल।

लताक भाइ कहलनि जे उतरक गलीमे नील कुरतावला एक बच्चा देखल गेल छल।
लता तुरन्त ओतय जेबाक लेल उठलीह। नैरा कहलनि, “पहिने कहनिहारसँ समय पुछि
लिअ। केवल कपड़ाक रङ सुनि दौड़लासँ ओहि गलीक बच्चासभ फेर शंका झेलत।”
लता ठाढ़ भेलीह। ओ पुछलीह, “अहाँ हमरा रोकि रहल छी?” नैरा उत्तर देलीह, “नहि। हम
अहाँक संग चलब; मुदा बिना जाँचक ककरो बच्चा घेरब नहि।”

गलीक पानिवाला बूढ़ कहलक जे काल्हि नहि, आइ बिहान एकटा नील कुरतावला
लड़का पार गेल छल। ओ अपने आँखिसँ देखल छल, मुदा ओ लड़काक संग कोन लोक
छल, से नहि देखल। लता कपड़ाक रंगक अलावा बाँया चप्पलक टूटल फीता पुछलीह।
बूढ़ कहलक, “चप्पल देखबाक फुर्सत ककरा छल?” एहि छोट उत्तरसँ लताक आशा फेर
अधरमे रहि गेल; तइयो कमसँ कम समयक एक भ्रम सुधरल। ओ कियो अनजान बच्चाकेँ
पकड़बाक आग्रह नहि कएलीह।

मीरा पानिवालाक बयान लिखबैत छलीह, तखन मोहन अपन ठेला घुरबैत ओतयसँ
गेल। ओकर पहीयामे एखन नव कील लागल छल। लता ओकरा रोकि कहलनि, “आइ
अहाँ पर जे भेल, ताहिमे हमरो घरक लोक छल। माफी माँगबामे हमर बेटा नहि भेटत, मुदा
जे गलत कहल गेल से गलत छल।” मोहन पहीया रोकि सुनलक। “बेटा भेटए तखन बात
करब,” ओ कहलनि। लता उत्तर देलीह, “बेटा भेटए धरि ई बात लटकल रहत, तँ अहाँक
अन्याय सेहो लटकल रहत। दुनू बात आज कहब आवश्यक छल।”

दुपहरिया सरिता अस्थायी निवासक ओसारपर चूल्हि दहका रहल छलीह। नैरा थाकल देह लऽ घुरलीह। सरिता पुछलनि, “मिथुन भेटल?” “नहि।” “कंजरक कागद?” “गलत फोटो उतरि गेल; आरोपक कर्ता एखन अज्ञात।” सरिता करछुल पातर भातमे घुमौलीह। “जाहि दिन दू गो उत्तर अलग-अलग लिखि सकबह, ओहि दिन एकरासँ दोसराक अनर्थ घटत,” ओ कहलीह। नैरा हुनकर हाथसँ ढक्कन लऽ कऽ ओसारक चूल्हिपर रखलीह।

साँझ फेर हाटमे साजिद बच्चासभक नाटकक दामक बही लऽ कऽ बैसल। मीरा पुछलीह, “रिकॉर्ड करब सीखए लेल जे बच्चा चाहत, ओकरा के सिखाओत?” साजिद कैमरा बन्द करैत कहलक, “पहिने जे बच्चा अपन चेहरा नहि देखाए चाहैत अछि, ओकर बात सुनब सिखाउ। तकर बाद बटन बतायब। गुरु बनबाक पहिने सुनबाक अभ्यास चाही।” मोहन ओहि मेजक पाछाँ ठेला टिका कऽ रहल छल; पहीया आब चुपचाप घूमि रहल छल।

राति लताक घरमे ओहि खाली थारीपर फेर भात राखल गेल। एहि बेर लता ओकरा ढाकि कऽ दरवाजाक लग नहि, रसोइक भीतर रखलीह। मिथुनक खोज अगिला भोर सेहो चलत; बुझल एक गलत तस्वीर ओकरा वापस नहि अनने छल। मुदा हाटक भित्तिपर ककरो समुदायकेँ अपराधक नाम बनएबला लाल घेरा आब नहि छल। सूखैत कागदक गोंदक एकटा छोट निशान मात्र बचल छल, जकरा ऊपर भोरमे फेर धूप पड़त।

अध्याय ३१ • एकलव्यक सीख

हाटक भित्तिपर लाल घेरावला गलत तस्वीर उतरलाक दोसर भोर साजिद अपन कैमरा नहि, एकटा खाली काठक चौखट लऽ कऽ आयल। चौखट मोहनक ठेलाक पटरीपर राखल छल। मीरा मंडल पुछलनि, “आइ फेर नाटक?” साजिद कहलक, “नाटक नहि, सिखएबाक काज। जे लोक कैमरा हाथमे लेत, ओ पहिने बुझत जे चौखटक भीतर की छूटि जाइत अछि।” मोहन पहीयामे तेल दैत कहलक, “हमर ठेलाक भाड़ा चौखटक बाहर नहि छूटए।” तीनू हँसलाह। पाछिल दिनक अपमानक बाद ओहि हँसीमे किछु सावधानी छल, मुदा हँसी छल।

मीरा रेलचौक लगक अस्थायी ओसारमे बच्चासभक छोट पाठबैसार शुरू कएने छलीह। स्थायी विद्यालयक जगह ओ नहि छल; बिछाओनक बोरा, चूनक एकटा टुकड़ा आ पुरान फट्टापर लिखल अक्षर मात्र छल। तइयो किछु बच्चा भोरसँ आबि गेल छल। मीरा हाजिरीक कापीमे हुनकर नामक आगाँ छोट चिन्ह लगा रहल छलीह, जाहिसँ कक्षा मे आएब आ विद्यालयमे विधिवत् नामांकन होएब एक बात नहि बुझाए।

ओहि समय रेवा गुलगुलिया दू बच्चाकेँ संग लऽ ओसारक बाहर ठाढ़ भेलीह। एक बच्चाक हाथमे कपड़ाक गाँठ छल, दोसरक बाँहमे बाँसक पातर डलिया। रेवाक गोटे परिवार मौसम बदललापर डेरा बदलैत छल। हुनका कियो कहने छल जे एहि ओसारमे अक्षर सिखाओल जाइत अछि। ओ मीरा लग बढि कहलीह, “बच्चा दुनूकेँ पढ़ए दियौक। अगिला महीना जतय रहब, एखन नहि जनैत छी।”

मीरा पहिने बच्चासभसँ नाम पुछलनि। बेटी कहलक, “बिरसी।” बेटा कहलक, “जतन।” रेवाक मुँहपर मुस्की आयल। जतन नाम कहबाक बाद पूछलक, “कागद पर हमरा नाम लिखि देब?” मीरा कहलनि, “पहिने अहाँ स्वयं लिखबाक अभ्यास करब। मुदा विद्यालयक नामांकनक लेल पता, उमेर आ अभिभावकक सूचना चाहत। जतए कागद नहि अछि, ओतए उपाय खोजबाक पड़त।” ओ तुरन्त नामांकन भेल कहि झूठ नहि कहलनि।

रेवा अपन झोरामे सँ तह लगाओल दू पर्ची निकाललीह—एकटा अस्थायी बसेराक सामूहिक सूची, दोसर पिछला ठामक पढ़ाइ-बैसारमे बच्चासभक उपस्थिति। पहिल पर्चीपर स्थायी मकानक संख्या नहि छल। मीरा कागद अलग राखलीह। “एहिमे अहाँक सम्पर्क अछि, मुदा ई विद्यालयक प्रवेशपत्र नहि,” ओ कहलीह। रेवा पुछलीह, “हम झूठक घर नम्बर लिखि दियै?” मीरा तुरन्त माथ हिलौलीह। “नहि। जे नहि अछि, ओ बना कऽ नहि लिखब। कक्षामे बच्चासभ एखन बैसत; विधिवत् प्रवेशक प्रश्न हम लिखित रूपमे उठाएब।”

ओसारक दोसर कात सँ एक स्त्री फाटल नीला थैला लऽ अएलीह। थैलाक मुँहपर मोट सूतक गाँठ छल, भीतर छोट मापफीता, दू पेंच आ कपड़ामे मोड़ल कागद। ओ अपन परिचय चन्दा मुण्डा कहि देलीह। बहुत दिन बाहर निर्माणकाज कऽ घुरबाक सोचने छलीह, मुदा ठेकेदारक हाजिरीमे हुनकर नाम एक ठाम ‘चन्दा’, दोसर ठाम केवल मजदूर-क्रमांक छल। ओ कहलीह, “काज करबाक प्रमाण हमर हाथमे अछि; जे दिन अपन घर जाएब, ओ दिनक हिसाब एखनहुँ दोसरक हाथमे अछि।”

चन्दा मजूरीक बचल दाम माँगबाक लेल आवेदन लिखबा चाहैत छलीह। बाहरक कार्यस्थलपर लोहेक चौखट सम्हारब, रस्सीक गाँठ जाँचब आ पाथर उठौनिहार मचानक दूरी नापब हुनकर काज छल। प्रमाणक रूपमे हुनकर लग कामक समयवला दू पर्ची आ आपूर्ति-वस्तुक एक रसीद छल। ओ अपन झोरा खोलि देखौलीह, मुदा पर्ची नैराक हाथमे देबासँ पहिने पुछलीह, “ई कागद अहाँ केकरा देखए देब?” नैरा कहलीह, “अहाँ जे उद्देश्य मानब, ओही लेल प्रति बनत। मूल अहाँ लग रहत।”

नैरा ओतए पहुँचने छलीह किएक तँ पाछिल दिन मीरा हुनका मोहनपर लागल गलत आरोपक सुधरल प्रति देबाक कहलनि। अपन ठेका बन्द भेलाक बाद नैरा एखन व्यक्तिगत कापी आ सार्वजनिक निवेदनक बीच अन्तर नीकसँ राखए लगलीह। महेशक गवाही समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक भूल हुनका लेल छोट घटना नहि छल। चन्दाक पर्ची देखिकऽ ओ तुरन्त फोन निकालि चित्र खींचए नहि लगलीह। पहिने कापीमे लिखलीह—‘मूल दस्तावेज चन्दा लग; जाँचबाक अनुमति केवल मजदूरी आ घर-वापसीक कागद लेल।’

साजिद चौखट उठा कऽ ओसारक बीचमे राखलक। “आइ एकटा पाठ,” ओ कहलक, “जे कैमरा देखबैत अछि ओ पूरा संसार नहि होइत।” बिरसी चौखटक भीतर ठाढ़ भेलीह। जतन चौखटक बाहर गेल तँ साजिद पुछलक, “फोटो खींचल जाए तँ के नहि देखायत?” बच्चासभ उत्तर देलक, “जतन!” रेवा कहलीह, “आ जतनक हाथमे जे डलिया अछि, ओकरा बनौनिहार सेहो नहि।” एहि उत्तरसँ साजिदक हँसी फेर खुलल। ओ कैमरा बन्द राखि कहलनि, “पहिने फ्रेम बुझू, फेर ककर तस्वीर लेबाक अनुमति अछि से।”

चन्दा चौखटक एक जोड़ देखिकऽ कहलीह, “ई पेंच ढील अछि। बच्चा झूलत तँ खसत।” साजिद पेंच कसबाक प्रयास कएलक, मुदा ओकरा सही आकारक औजार नहि भेटल। चन्दा अपन झोरासँ पेंचकस निकालि काठक दुनू किनार बराबर कएलीह। ओ कसि देलाक बाद चौखट स्वयं हिलाकऽ देखौलीह। “काम देखिकऽ सिखब,” ओ कहलीह, “मुदा कसबाक दाम आ सिखएबाक समय दुनूक हिसाब अलग होइत अछि।” मोहन कहलक, “आब बुझलहुँ जे हमरा ठेलाक भाड़ो पाठक हिस्सा अछि।”

एहि छोट सुधराओल चौखटसँ मीरा एक प्रश्न उठौलीह—“जे काज सिखबैत अछि, ओकरा गुरु के कहत? आ जे सीखैत अछि, ओकर दिनक भोजन कोना चलत?” बच्चासभसँ उत्तर माँगबाक बदला ओ साजिदकेँ बोर्डपर प्रश्न लिखए देलीह। जतन अक्षर जोड़ैत रहल, बिरसी चूनक धूरि हाथसँ झाड़ैत रहलि। पुरान वनक एकटा कथा मीराकेँ याद छल, जकर नाम एकलव्य छल। मीरा कहलीह, “एकलव्यक अँगूठाक कथा बहुत लोक कहैत अछि। ओकर पाछाँ हुनकर दिन कोना बीतल होएत, से सोचिकऽ सुनू।”

बहुत पुरान वनमे एकलव्य अपन धनुषक डोरी ओहि हाथसँ खींचबाक फेर प्रयास कएने छल, जाहि हाथक अँगूठा ओ गुरु-दक्षिणामे दऽ चुकल छल। पहिल प्रयासमे डोरी फिसलल। दोसर बेर बाण माटिमे धँसि गेल। तेसर बेर धनुषक काठ ओकर बाँहपर ठाढ़ चोट देलक। जंगलक कात बैसल किशोर ओकरा देखैत छल। ओ किशोर बाण चलएबाक कौशल सीखए लेल आयल छल, मुदा एकलव्यक चोट देखिकऽ पुछलक, “आब अहाँ हमरा की सिखाएब?”

एकलव्य धनुष जमीनपर राखि देर धरि अपन हाथ देखलक। एहि हाथसँ ओ पहिले दूरी आ दिशा एक्के लयमे सम्हारैत छल। गुरु-दक्षिणाक घटना समाप्त कहि दोसर लोक

अपन-अपन घर चलि गेल छल; देहपर ओकर परिणाम रोज भोर फेर आरम्भ होइत छल। ओ किशोरकें कहलक, “आइ धनुष नहि। पहिने हवा देख। सरपत कोन दिस झुकल अछि, आ कतेक देर एक्के दिस रहैत अछि?” किशोर कहलक, “हवा देखिकऽ पेट भरत?” एकलव्य ओकर प्रश्नपर रुष्ट नहि भेल।

वनक कातक परिवारसभमे शिकार, वनफल, माछ आ विनिमयक अलग-अलग काम छल। सभ दिन धनुष चलब आवश्यक नहि, मुदा जखन बरखा खराब होइत, जखन पथरीला बाट बन्द होइत, तखन एकटा दक्ष हाथक कमी पूरा दल बुझैत छल। एकलव्य अपन चोट नुकबैत नहि छल। ओ किशोरकें अपन अंगुलीक स्थिति देखौलक। “जे कौशल घटल अछि, से घटल अछि,” ओ कहलक, “एकरा महिमा बनाकऽ तोहर भूख नहि मेटाएब।”

साँझ ओहि वनमे एक वृद्धा छालसँ बनल पात्र लऽ कऽ एलीह। ओ धनुषक डोरी बनौनिहार परिवारक संग काम करैत छलीह। डोरीक तान जाँचि कहलीह, “तूँ जे पहिने करैत छलह, से आब करब कठिन अछि। मुदा डोरी बनब, बाँस सुखाएब, माप सिखाएब— ई सभ काजक मूल्य छी। सीखनिहारकें केवल पूजा करबाक अभ्यास सिखेबह तँ ओकर घर की खायत?” एकलव्य हुनकर बात सुनलक। ओ पहिने गुरु कहबाक सम्मानक भीतर जे अभाव नहि देखल छल, ओहि अभावक आकार आब स्पष्ट भऽ रहल छल।

एहिसँ पहिने एकलव्य अपन साधनाक लेल गुरु रूपमे द्रोणक प्रतिमा स्थापित कएने छल, गुरु मानबाक प्रश्नपर विवाद भेल छल आ अंगूठा देबाक प्रसंग ओकर जीवन बदलि देने छल। ई कथा कहनिहार सभक स्वर एक नहि छल। एकलव्यकें जकरा अपमानक स्मृति छल, ओकरा ओ अपमान नकारब सम्भव नहि छल। मुदा वनक नव विद्यार्थी लेल प्रश्न केवल अतीतक दण्ड नहि छल—सीखबाक दरवाजा आब कतेक खुलल अछि, आ तकर मूल्य कियो देत की?

दोसर भोर एकलव्य ओहि किशोर आ दू नव सीखनिहारकें तीन काज देलक। पहिल, बाँसक सीध देखब; दोसर, डोरीक तान बराबर राखब; तेसर, लक्ष्यक पाछाँ कोनो जीव ठाढ़ अछि की नहि से जाँचब। ओ स्वयं धनुष चलएबाक प्रयास फेर कएलक; बाण लक्ष्यसँ बहुत दूर गिरल। किशोर हँसि पड़ल, फेर लज्जित भेल। एकलव्य कहलक, “हँस

सकह। मुदा आब बताबह जे गलती कोन चरणमे भेल।” किशोर बाणक पाछाँ दौड़ल नहि। ओ डोरीक खिंचाव देखलक आ कहलक, “हमरा लगैत अछि हाथक पकड़ पहिनुक सन नहि रहल।”

एकलव्य पहिल बेर अपन असफलताकेँ विद्यार्थीक अगाँ सम्पूर्ण रूपमे राखलक। ओ कहलक, “गलती पहिचानबो काज अछि। जे गुरु अपन चोट नुकाएत, ओ तोरा अन्हारमे सिखाओत।” तखन ओ एकटा छोट व्यवस्था तय कएलक—जे परिवार विद्यार्थी भेजत, ओ हुनकर भोजनक भाग तय करत; जे डोरी बनाओत, ओकर दाम अलग देत; जे विद्यार्थी बिना साधनक अछि, ओकरा साझा भण्डारसँ सामग्री भेटत। ई व्यवस्था सभ प्रश्नक उत्तर नहि छल। वृद्धा पुछलीह, “भण्डार खाली भेल तँ?” एकलव्य कहलक, “तखन पाठ रोकबाक बदला काज आ खर्च फेर गनब।”

किछु समय बाद ओहि किशोरकेँ धनुषक चोट नापबाक बदला बाँसक भिन्न गाँठ पहिचानब आ जंगली बाटक चिन्ह पढ़ब आबि गेल। ओकर पहिल कमाइ शिकारक पुरस्कार नहि, दू घर लेल बनाओल डोरीक दाम छल। ओ एकलव्यकेँ एक भाग देबए गेल तँ एकलव्य पूछलक, “ई हमर नामक दाम छी कि हमर सिखाओल समयक?” किशोर कहलक, “समयक।” एकलव्य ओहि भागकेँ स्वीकार कएलक, मुदा लिखबाक लेल छालक एक टुकड़ा माँगलक। नाम आ देय पहिल बेर अलग-अलग बहीमे चढ़ल।

विदेहपुरक ओसारमे कथा एतय पहुँचली तँ बिरसी पुछलनि, “एकलव्य फेर निशाना लगा सकलाह?” मीरा कहलीह, “हम जे आगाँक जीवनक कथा सुनौने छी, ताहिमे हुनकर हाथ पहिनुक जकाँ नहि भेल। हुनका नव काम आ नव शिष्य भेटल। सबटा ठीक भऽ गेल, ई कहब उचित नहि।” चन्दा कहलीह, “ककरो हाथक चोटपर दूसराक नोकरी चले, ई बात नीक नहि। मुदा चोट लगलाक बादो ओकरा काजक दाम भेटए, ई आवश्यक अछि।” साजिद कापीमे ‘शिक्षा’ लिखबाक बदला पहिने ‘समय’ लिखलक।

दुपहरि धरि मीरा रेवाक बच्चासभ लेल विद्यालयक नामांकन-प्रक्रियाक उपलब्ध सूची लऽ कऽ एलीह। स्थायी पताक खानामे भरणा जरूरी लिखल छल। हुनका ककरोसँ मौखिक उत्तर भेटल—“पहिने डेराक पता स्थिर हो।” मीरा एहि उत्तरकेँ कानूनक अन्तिम नियम नहि मानलीह; विद्यालयक अधिकारीसँ लिखित स्पष्टीकरण माँगबाक निर्णय

कएलनि। रेवा कहलनि, “साँझ धरि डेरा रहत। काल्हि दोसर गली जाइ सकैत छी। बच्चाक नाम तँ ओही रहत।” मीरा दू आवेदन तैयार कएलीह—एक कक्षामे अस्थायी उपस्थिति लेल, दोसर स्थायी पता बिना औपचारिक नामांकनक प्रक्रिया पुछबाक लेल।

जतन अपन नामक ‘ज’ उल्टा लिखि देने छल। बिरसी ओकर कापी खींचए गेलीह तँ रेवा रोकलीह। “जतेक लिखलक, ततेक ओकर अपन सीख अछि,” ओ कहलीह। मीरा ओकर कात सही अक्षर लिखलीह, पुरान अक्षर मेटौलीह नहि। साजिद कैमरा उठा फेर नीचाँ राखि देलक। बच्चाक पहिल लिखावट दिखएबाक लोभ छल, मुदा ओकरा ई लिखावट बेचबाक अथवा बिना अनुमति प्रकाशित करबाक अधिकार नहि छल।

ओहि बीच चन्दा अपन मजदूरीक पर्ची खोलि नैराकें देखौलीह। पहिल पर्चीपर हुनकर काजक दिन आ हस्ताक्षर छल; दोसरमे रकमक एक भाग काटल गेल छल, मुदा कटौतीक कारणक खाना खाली छल। नैरा पुछलीह, “अहाँक मूल हाजिरी ठेकेदारक लग अछि?” चन्दा कहलीह, “हँ। हमर लग बचल ई दू प्रति अछि। हमरा घर घुरबासँ पहिने ई जानबाक चाही जे अनुपस्थित घोषित कऽ मजदूरी फेर नहि रोकत।” नैरा पर्चीक तिथि आ कटौतीक अन्तर अलग दर्ज कएलीह, मुदा एही आधारपर अन्तिम बकाया घोषित नहि कएलनि।

चन्दा कहलीह, “हम घुरए चाहैत छी। मुदा कियो कहैत अछि जे पूरा पैसा भेटए धरि कामपर रहू। कियो कहैत अछि जे चलि गेलहुँ तँ कागद बन्द।” मीरा पुछलीह, “अहाँ के चाहैत छी?” चन्दा उत्तर देलीह, “हम अपन घर देखए चाहैत छी, फेर निर्णय करब जे एहि ठाम रहब वा दोसर काज चुनब। पाछिल हाजिरीक देय हमरा संग रहए, हमर देहकें बान्हि नहि ले।” नैरा हुनकर अपन शब्द आवेदनमे लिखलीह; परामर्शक नामपर ओ चन्दाक बदला निर्णय नहि लेलीह।

चन्दाक झोरामे एक छोट रस्सीक फन्दा छल, जाहिसँ ओ मचानक काठ सम्हारैत छलीह। साजिद पुछलक जे ओ बच्चासभकें गाँठ सिखा सकैत छथि? चन्दा चारूकात देखलीह—छोट बच्चाक हाथ, ढीला चौखट आ मोहनक ठेला। “ऊँच मचानक गाँठ नहि,” ओ कहलीह, “एतय बोझरहित अभ्यासक गाँठ सिखाएब। जखन असल भार सम्हारबाक होएत, प्रशिक्षित आदमी आ जाँच दुनू चाही।” एहि सीमा राखिकऽ ओ दू पातर रस्सी

टेबुलपर पसारलीह। मीरा हुनकर एक घण्टाक प्रशिक्षणक देय सार्वजनिक खर्चक बहीमे लिखलीह।

किछु लोक कहलनि, “ई तँ छोट बच्चाकेँ दू गाँठ सिखौनाइ अछि; एहि लेल दाम?” रेवा हँसि कहलनि, “जकरा सीखबाक काज सरल बुझाइट अछि, ओ अपने करि देखाबए।” एक लोक गाँठ कसि देलक, मुदा खींचिते ओ खुलि गेल। चन्दा ओकरा झिड़कलीह नहि। ओ पुछलीह, “पहिने तय करू, ई गाँठ कोन काजक लेल?” प्रश्न सुनि ओ लोक फेर रस्सी देखलक। मोहन एकटा रूपैया निकालि बही लग राखलक—दामक पूरा हिस्सा नहि, प्रारम्भिक योगदान। बाकी रकमक लेल मीरा सामूहिक कोषक उपलब्ध राशि जाँचलीह। काज करबाक पहिने देय तय कएल गेल, दानक घोषणा बादमे नहि।

रेवा लग बैसल बिरसी पुछलक जे ओकरा सेहो मजदूरी भेटत की। चन्दा कहलीह, “आइ तोहर काज पढ़ब अछि, मजदूरी नहि। जखन बड़ा भऽ अपन पसिन्नसँ काज करबह, तखन ककरो तोहर श्रम मुफ्त कहबाक अधिकार नहि देबह।” बिरसी पुछलक, “पढ़ि कऽ हम तोरा सन गाँठ बाँधि सकब?” चन्दा उत्तर देलीह, “हमरा सन होएब आवश्यक नहि। अपने ढङ्सँ सिखबह। हमरो किछु बात तोरा सँ सीखबाक रहत।”

दुपहरिक धूप ढलिते मोहन चौखट उठौलक। ओकर एक पेंच फेर जाँचबाक छल; चन्दा चिन्ह लगा देलीह, किएक तँ बिना सही पुर्जाक ओकरा पूर्ण सुरक्षित कहब गलत रहितै। साजिद एहि ढीलपनक फोटो नहि खींचलक। ओ मोहनसँ कहलनि, “काल्हि पुर्जा लऽ आएब। आजुक पाठ पूरा भेल, मरम्मति नहि।” मोहन उत्तर देलक, “ठीक। अधूरा काजकेँ पूरा कहबाक भाड़ा हम नहि लेब।”

साँझ नैरा लिखल कागदसभ अलग-अलग लिफाफामे राखलीह। चन्दाक मजदूरी आ घर-वापसीक आवेदन एक लिफाफामे; रेवाक बच्चासभक विद्यालय-प्रवेश सम्बन्धी दू आवेदन दोसरमे। मिथुनक खोजक कागद पहिनेसँ अलग छल, आ सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्ना सरिताक अपन देखरेखमे। एहन समयमे सभ कागद एक्के ‘समस्याक फाइल’ बनि जाए तँ एक व्यक्तिक इच्छा दोसरक आरोपक भीतर हराएत। नैरा एखन ई गलती दोबारा नहि करए चाहैत छलीह।

मीरा ओसारमे रहि गेलीह। बिरसीक ‘ब’ आ जतनक उलटल ‘ज’ चूनक फट्टापर छल। बरखा लगबाक डर सँ ओ फट्टा भीतर राखए चाहलीह, मुदा बिरसी कहलीह, “एखन नहि, माए देखत।” रेवा ठाढ़ भऽ दूनू अक्षर देखलीह। “एकटा सीधा, एकटा उल्टा,” ओ कहलीह, “दूनू पढ़बाक आरम्भ अछि।” ओ बच्चासभकेँ चिउड़ा आ गुड़ बाँटलीह। एहि छोट भोजनमे न प्रवेश-पर्चीक मुहर छल, न मजदूरीक हिसाब; तइयो सभक दिनक थकानमे एकटा अपन ठाउँ बनल।

चन्दा चूल्हिक धुआँक कात अपन नीला झोरा फेर बाँधि रहल छलीह। नैरा पुछलीह, “अहाँ घर घुरबाक दिन निश्चित कएने छी?” चन्दा कहलीह, “एखन नहि। आवेदनक प्राप्ति लऽ कऽ फेर अपना मनसँ दिन चुनब। हमर घर हमरा लेल प्रतीक्षा करैत होएत, मुदा कागदकेँ हमर पैर बाँधए नहि देब।” रेवा हुनका चिउड़ाक एक मुट्ठी देलीह। चन्दा खाइत एकटा गाँठ खोललीह, फेर ओही रस्सी साफ-सुथरा मोड़ि थैलामे राखलीह।

राति साजिद अपन कैमरा कपड़ामे लपेटैत छल। मीरा पुछलनि, “आइ किछु रिकॉर्ड नहि भेल, तँ प्रशिक्षणक हिसाबमे की लिखब?” साजिद कहलक, “जे नहि खींचल गेल, ओकरो कारण लिखू। चौखटक बाहर जे बचल, से सभक ज्ञानक हिस्सा छी।” मीरा प्रशिक्षण-बहीमे कक्षाक समय, चन्दाक देय, बच्चासभक अस्थायी उपस्थिति आ विद्यालयक लिखित उत्तरक प्रतीक्षा अलग दर्ज कएलीह। एकलव्यक कथा सुनौनाइ ओहि दिनक पाठ छल; ओकरा आधिकारिक इतिहासक प्रमाण अथवा ककरो जन्मसँ बँटल पेशाक नियम नहि बनाओल गेल।

ओसार बन्द करबाक समय जतन अपन छोट कापी माइक झोरामे रखलक। ओकर उल्टा ‘ज’ एखनहुँ पहिल पन्नापर छल। बिरसी कहलीह, “काल्हि फेर लिखबह?” जतन माथ हिलौलक। रेवा उत्तर नहि देलीह जे काल्हि ई डेरा रहत वा नहि। ओ बस बच्चासभक हाथ पकड़ि रातिक बाटपर चलि देलीह। कापीक पन्ना भीतर, अन्धारमे, अपन ठामपर छल; ओहि अक्षरकेँ एखन कियो कटल नहि छल।

अध्याय ३२ • अथातो ककर

भोरमे ओसारक भीजल माटिपर जतन अपन नाम लिखबाक अभ्यास करैत छल। ओकर कापीक पहिल पन्नापर उलटल ‘ज’ एखनहुँ छल; ओ ओकरा काटने नहि छल। मीरा मंडल चूनक छोट टुकड़ा लऽ कऽ फट्टापर सही अक्षर लिखलनि, फेर दुनू अक्षरक बीच कने जगह छोड़ि देलनि। “ई ककर गलती?” जतन पुछलक। मीरा कहलीह, “लिखनिहारक। मुदा गलती देखाएब आ लिखनिहारकें बाहर कऽ देब एक बात नहि।”

रेवा गुलगुलिया बच्चासभक लग बैसल छलीह। डेरा बदलबाक तैयारीमे हुनकर झोराक गाँठ रातिये सँ कसाइल छल। विद्यालयसँ पाछिल दिन मँगाओल लिखित उत्तर आइ भेटबाक छल। ओ तीन बेर ओसारक बाहर नजरि देलीह। बिरसी अपन कापीमे एकटा घर बनौने छलीह, जाहिमे दरबज्जा छल मुदा देबालक भीतर घरक नम्बर नहि। “ई हमर घर,” ओ कहलीह। रेवा हँसलीह, “अहाँ जतेक दिन एहिठाम रहबह, ओतेक दिन ई घर। फेर दोसर बनायब।”

नैरा अस्थायी निवाससँ चलि ओतय एलीह तँ हुनकर हाथमे चन्दाक मजदूरीक दू प्रति आ रेवाक विद्यालय-आवेदन अलग-अलग लिफाफामे छल। राति अपन कापीमे ओ तीन प्रश्न लिखने छलीह—के आवेदन देलक, के उत्तर देबाक अधिकारी अछि, आ बीचमे केकर आवाज छूटि गेल। महेशक गवाही समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक भूल हुनका एखनहुँ अपमानित करैत छल। एहि बेर ककरो कागदक फोटो लेलासँ पहिने अनुमति माँगब ओ अपन लेल नियम बना लेने छलीह।

ओसारक लग सँ विद्यालयक लिपिकक साइकिल गुजरल। ओ मीरा हाथमे एकटा छोट मोहरवला पत्र दऽ चलि गेल। पत्रमे लिखल छल जे रेवाक बच्चासभक स्थायी पता सत्यापन शेष अछि; कक्षा-सहभागितापर कोनो अन्तिम आदेश नहि देल गेल अछि। मीरा पत्र फेर पढ़लनि। न दाखिला भेल छल, न लिखित अस्वीकृति। मुदा कोनो लोक काल्हि जँ कहए जे बच्चासभकें विद्यालय खदेड़ि देलक, तँ ई पत्र ओकरा सच मानए नहि देत।

“तखन जतन आ बिरसी कतए पढ़त?” रेवा पुछलीह। मीरा कहलीह, “आइक कक्षा एहिठाम अछि। विद्यालयक प्रधानसँ अलग बात करब। मुदा नामांकन भऽ गेल, एहन हम

नहि कहब।” जतन पुछलक, “हमर उलटा ‘ज’ स्कूलमे देखताह?” नैरा कहलीह, “तोहर अक्षर तोहर अछि। स्कूलकें दोसर कागद चाही, तखन दूटा कागद अलग देखाओल जाएत।”

ओहि दिन विदेहपुरक पुरान पाठशालामे एकटा सार्वजनिक पाठबैसार तय छल। मैथिली मिश्र लोकक अनुरोधपर ‘अध्ययनमे प्रवेश’ विषयपर बोलबाक मानने छलीह, मुदा आमन्त्रणपत्रमे हुनकर नामक आगाँ केवल ‘आदरणीया’ लिखल छल। ईशानक नामक संग ग्रन्थ-सम्पादक आ विद्वानक परिचय छल। मैथिली पत्रकें मोड़ि अपन थैलामे रखलीह। हुनका सम्मानसँ आपत्ति नहि छल; हुनका ई प्रश्न छल जे विद्वत्ता केकर श्रमसँ बनैत अछि, आ ओकरा लिखबाक अधिकार केकरा भेटैत अछि।

पाठशालाक ओसारमे हरिमोहन पाठक आसन पोंछैत भेटलाह। ओ एतय पाण्डुलिपि पढ़बाक कक्षा चलबैत छलाह, आ पुरान पोथीक एकटा नकल तैयार करबाक जिम्मेदारी लेने छलाह। हुनका भय छल जे जँ सभ लोक बिना तैयारीक आयत, तँ पाठ आ चर्चा बिगड़त। ओ मैथिलीकें कहलनि, “अध्ययनमे अनुशासन आवश्यक अछि। जिज्ञासा मात्रसँ व्याकरण, पाठान्तर आ तर्क नहि आबि जाइत अछि।”

मैथिली उत्तर देलीह, “ठीक कहैत छी। मुदा अभ्यास करबाक दुआर बन्द राखब आ फेर कहब जे भीतर एबाक योग्यता नहि, ई कोन अनुशासन अछि?” हरिमोहन तुरन्त प्रतिवाद कएलनि, “दुआर बन्द नहि, स्तर अलग अछि।” मैथिली पुछलनि, “स्तर जँ सीखने बनत, तँ पहिल पाठ कतए भेटत? आ जँ कोनो लोक सीखल अछि मुदा ओकर प्रमाणपत्र नहि, तँ ओकर बात के सुनत?”

ईशान भीतरसँ एकटा कागद लऽ बाहर अएलाह। ओ पत्नी आ हरिमोहनक बीचक बात सुनने छलाह। “आइ शास्त्रार्थमे एकरा व्यवस्थित उठाउ,” ओ कहलनि। मैथिली उत्तर देलीह, “शास्त्रार्थक प्रश्न लिखल जाएत। किन्तु जे पूछत, ओकर नामो। नहि तँ आगाँ जखन ई प्रश्न पुस्तकमे छपत, प्रश्नक मालिक केवल उत्तर देनिहार रहि जाएत।” ईशानक आँखि कने सकुचेल, मुदा ओ बहस टारि नहि सकलाह।

पाठशालाक देवालपर काजक सूची चिपकल छल। कागदक मरम्मत, प्रतिलिपि, आसन बिछाएब, सफाई आ पाठ—सभक अलग समय छल; भुगतानक खाना केवल

प्रतिलिपिक आगाँ भरल छल। मैथिली उँगरीसँ खाली पाँति देखौलीह। “एहि सूचीमे के झाड़ू देत, से अछि। ओकर देय कतए अछि?” हरिमोहन कहलनि, “ई सामुदायिक योगदान अछि।” मैथिली कहलीह, “जँ योगदान स्वेच्छाक अछि, तँ नामक संग सहमति लिखू। नहिक् ई काजो श्रम अछि।”

एहि बीच मीरा, रेवा, बिरसी आ जतन ओतय पहुँचलाह। मीरा विद्यालयक उत्तर देखएबैत केवल एतबे पुछलनि जे पाठशालाक सार्वजनिक आरम्भिक कक्षामे बच्चासभक बसबाक अनुमति अछि की नहि। हरिमोहनकँ पहिने लगल जे ई विद्यालयक औपचारिक प्रवेशक निवेदन अछि। मीरा स्पष्ट कएलीह—“नहि। विद्यालयक आवेदन अलग अछि; आइ हम किछु अक्षर पढ़बाक लेल जगह माँगि रहल छी।” एहि अन्तरसँ हरिमोहनक पहिल आपत्ति बदलि गेल।

बिरसी देबालक लग राखल पोथी दिस हाथ बढ़ौलीह, फेर रोकि लेलीह। “छू सकैत छी?” ओ पुछलीह। हरिमोहन कागदक नाजुक किनार देखबैत कहलनि, “ई पुरान पोथी नहि; ओकर प्रतिलिपि अछि। पातर पन्ना भीजि गेल तँ अक्षर बिगड़त।” जतन कहलक, “हमर कापीमे तँ गलती भेला पर फेर लिखि सकैत छी।” मैथिली हँसि कहलीह, “एतय प्रश्न केवल हाथ लगएबाक नहि; प्रश्न ईहो जे पुस्तकक रक्षा करैत पढ़बाक बाट कोना खुलत।”

बहुत दूर, दोसर कालक मिथिलामे, मृणाल कागदक एक पातर चिट्ठी धूपमे पसारि रहल छलीह। रातिक ओस सँ कोना भीजि गेल छल; लिखल अक्षरक कारी रेखा फैलए लागल छल। कागद बनौनिहार लोहना हुनका कहलनि, “सीधा धूप देबह तँ पन्ना मुरझाएत। छाँहमे हवा दियौक।” मृणाल कागद उठा बरामदाक भीतर रखलीह। लिखावट बचएबाक ई छोट काज हुनका अक्षर पढ़बाक इच्छासँ जोड़ैत छल।

मृणाल ओहि परिसरमे कागद सुखाएब, पोथीक गिनती आ धूलि झाड़बाक काज करैत छलीह। हुनका अक्षरक किछु रूप बुझाइत छल, किछु नहि। एकटा पाठक दरमियान सभ दिन ओ बाहर बैसि स्वर सुनैत छलीह। ओहि भोर वाचस्पति मिश्र ब्रह्मसूत्रक आरम्भपर बोलबाक छलाह। मृणाल लोहना सँ कहलनि, “हम कागद बचा सकैत छी, मुदा पन्नापर उठल प्रश्न पुछबाक अनुमति नहि। ई कागदक दोष अछि की हमर?”

लोहना अपन हाथक चिपकल लेस पोंछि कहलक, “हम कागद बनबैत छी। पन्नापर कोन नाम लिखल जाएत, से हम नहि तय करैत छी। मुदा कागदक दाम आ काजक समय हम पूछब। अहाँ प्रश्न पुछबाक चाहैत छी तँ गुरु लग स्वयं जाइयौक।” मृणाल पुछलनि, “जँ ओ कहथिन पहिने पाठ सीखू?” लोहना उत्तर देलक, “तँ पाठ सीखबाक बाट माँगू। एतबे तँ।”

वाचस्पति ओहि समय शिष्यसभकेँ ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’क आरम्भिक पद समझा रहल छलाह। शिष्यसभ ‘अथ’ आ ‘अतः’क क्रम तथा ब्रह्मक जिज्ञासाक प्रयोजनपर आपसमे मत रखैत छलाह। गुरु सबहक कथन एक्के अर्थ नहि ठहरौलनि; पूर्वपक्ष सुनबाक बाद प्रश्नक आधार स्पष्ट करैत छलाह। मृणाल ओसारक कात ठाढ़ रहलीह। हुनका सूत्रक प्रत्येक व्याख्या बुझाईत नहि छल, मुदा ‘जिज्ञासा’ शब्द ओ बेर-बेर सुनि रहल छलीह।

अवकाश भेटिते मृणाल हाथ जोड़ि कहलीह, “आइ ई प्रश्न हमहुँ पुछि सकैत छी?” किछु शिष्य हुनकर कामक कपड़ा दिस देखलनि। एक शिष्य कहलक, “एतय पोथीक अर्थ पढ़ाओल जाइत अछि। अहाँ कागद सुखएबाक काज करैत छी।” मृणाल ओकरा नहि डाँटलीह। “हमर काज अलग अछि,” ओ कहलीह, “मुदा हम जे शब्द नहि बुझैत छी, ओकर अर्थ पुछब एतय निषिद्ध अछि की?”

वाचस्पति हुनका भीतरक कात बइसबाक संकेत देलनि। “पुछू, मुदा जे नहि बुझल अछि से कहलासँ लाज नहि करब।” मृणाल पुछलनि, “‘अथ’ कहिते की सभ लोकक लेल एक्के समय जिज्ञासा खुलैत अछि? कियो पहिने सँ शास्त्र सीखने हो, कियो अक्षर जोड़ैत हो, तँ एक्के प्रश्नपर दूनू के कोना पहुँचत?” गुरु उत्तर तुरन्त नहि देलनि। शिष्यसभक दिस घुरि कहलनि, “पहिने ई प्रश्न बुझू, एकरा अपना सुविधानुसार छोट नहि करू।”

एक शिष्य कहलक जे अध्ययनक योग्यता बिना गम्भीर प्रश्न निरर्थक भऽ जाइत अछि। दोसर कहलक जे ज्ञानक परम्परामे क्रम आवश्यक अछि; आरम्भिक अभ्यास छोड़ि सीधे सिद्धान्तक शब्द पकड़लासँ भ्रम बनैत अछि। मृणाल दुनू बात सुनलीह। ओ कहलीह, “हम तैयारीक विरोध नहि करैत छी। तैयारी करबाक शिक्षाक प्रश्न पुछैत छी। जँ हमरा

अक्षर नहि सिखाओल जाए, तँ काल्हि हमरा अयोग्य कहबाक प्रमाण अहाँ स्वयं बना देब।”

वाचस्पति ओहि दिनक प्रश्नकेँ सिद्धान्तक अन्तिम मत बना कऽ नहि राखलनि। ओ कहलनि, “सूत्रक व्याख्या अपन तर्क, परम्परा आ प्रयोजनसँ करबाक पड़त। अहाँक जीवनक कठिनाई केवल उदाहरण नहि; ई वास्तविक काजक प्रश्न अछि। जँ उदाहरण प्रश्न उठबैत अछि, तँ हम परीक्षा करब जे ओ ठीक ठामपर लागू होइत अछि की नहि।” हुनका एहि वचनसँ शिष्यसभक सहज व्यवस्था कने हिलल।

गुरु ओसारपर पड़ल एकटा पातर रस्सी देखौलनि। “अन्हारमे रस्सीकेँ सर्प बुझबाक दृष्टान्त सुनने छी?” मृणाल कहलीह, “सुनने छी। मुदा जखन भीजल कागदक रेखा फैलि जाइत अछि, हम पहिने ओकर अक्षर बुझैत छलीह आ फेर नहि बुझि पबैत छी। हमर आँखि ओही अछि। वस्तुक दशा बदललासँ ज्ञान बदलि गेल। ई गलतीक उदाहरण एक्के सन अछि?”

एक शिष्य तुरन्त कहलक, “नहि, ई दृष्टान्तक अर्थ नहि।” मृणाल माथ हिलौलीह। “तँ अन्तर बुझाउ। हम नहि चाहैत छी जे कागदक दोषकेँ रस्सीक दोष कहि दी।” वाचस्पति हुनकर हाथमे रखल पन्नाक कोना देखलनि। “उत्तम,” ओ कहलनि, “एतय अक्षरक पदार्थ बदलल, ओतय अन्हारमे वस्तुकेँ दोसर मानबाक प्रसंग अछि। दूनूकेँ एक कहबासँ विचार बिगड़त। आब शिष्यसभ एहि भेदक कारण कहथि।”

ओ पाठ बदलि नहि गेल छल जे ब्रह्मजिज्ञासाक अर्थ कागद सुखाएब भऽ गेल। मुदा गुरु अपन पहिल साधारण उदाहरणक बाद एकटा दोसर प्रश्न जोड़लनि—ज्ञान बाधित भेलाक कारण इन्द्रियक भ्रम अछि, वस्तुक परिवर्तन अछि, कि पाठकक तैयारीक अभाव? मृणालक आपत्ति स्वीकार करबाक अर्थ ई नहि छल जे हुनका सभ सूत्र बुझि गेल; अर्थ ई छल जे हुनकर अनुभवसँ गलत उपमा छँटि गेल।

पाठ समाप्त भेलापर वाचस्पति मृणालसँ पुछलनि, “अहाँ प्रतिदिन एतय रहि सकब?” मृणाल उत्तर देलीह, “प्रातःक कागदक काज समाप्त कऽ एक मुहूर्त। मुदा कागद सुखाओल नहि गेल तँ पोथी सेहो बिगड़त। हमर श्रमक समय घटेबाक अछि तँ लोहना संग

बात करब पड़त।” गुरु पहिल बेर प्रश्नक व्यावहारिक भार स्पष्ट देखलनि। “तँ काल्हि लोहना सहित समय तय करब,” ओ कहलनि।

लोहना कक्षाक बाहर मृणालक लेल पानी राखने छल। ओ पुछलक, “प्रवेश भेटल?” मृणाल कहलीह, “बैसबाक अनुमति भेटल, अक्षर सीखबाक समय एखन तय नहि। दूनु अलग बात अछि।” लोहना हँसि कहलक, “तँ जीतक ढोल नहि पीटू। काल्हि कामक बँटवारा देखब।” मृणाल उत्तर देलीह, “ढोल तखन बजत जखन हम स्वयं पढ़ल पाँतिक अर्थपर असहमति कहि सकब।”

मृणाल दिन भरि कागदक तह गनैत रहलि। एक पन्ना बचल तँ लोहना सहज स्वरमे कहलक, “ई ठीक रहत।” एहि छोट प्रशंसामे हुनका अकारण आनन्द भेल। ओ लोहना लेल पीतरक लोटामे पानि आनलीह, फेर दीवालपर पड़ल साँझक छाँह नापि देखलीह। काल्हि पाठक समयमे पन्ना सुखाएब ओ अकेले नहि करतीह; लोहना अपन सहायककँ पहिने सँ खबर देत। एक व्यक्तिक पढ़बाक एक मुहूर्त दोसर व्यक्तिक अनदेखल अतिरिक्त श्रम नहि बनए, एहि लेल दूनु आजुहि काज बाँटि लेलक।

विदेहपुरक पाठशालामे हरिमोहन बोर्डपर ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’ लिखने छलाह। मैथिली अनुरोध कएलीह जे सूत्रक मूल दार्शनिक आशय आ वर्तमान शिक्षासम्बन्धी प्रश्न अलग-अलग बुझाओल जाए। “ई सूत्र सरकारी विद्यालयक प्रवेश-नियम नहि,” ओ कहलीह, “आ एकरासँ हमर समयक सामाजिक नीतिक सीधा निर्णय निकालब उचित नहि। मुदा जिज्ञासा करबाक योग्यता के निर्धारित करैत अछि, ई प्रश्न पाठक सेहो अपना ठाम पूछत।”

हरिमोहन बोर्डक नीचाँ दू खाना खींचलनि—‘शास्त्रक विवेचन’ आ ‘आजुक प्रवेश-विवाद’। पहिलमे पाठ, तर्क, पूर्वपक्ष आ उत्तर लिखल; दोसरमे आरम्भिक कक्षा, सामग्री, समय, प्रशिक्षक आ शुल्क। जतन पुछलक, “हम कोन खानामे छी?” सभा कने हँसल, मुदा मैथिली उत्तर देलीह, “एखन दोसरमे; पढ़बाक इच्छा पहिल पुछबाक अधिकार मेटबैत नहि, मुदा ज्ञानक विषय सीखबाक राह बनबैत अछि।”

हरिमोहन कहने छलाह जे पाठशालाक प्रतिलिपि बिगड़बाक डर अछि। चन्दा मुण्डा ओतय पहुँचि कहलीह, “निर्माणमे जखन नव श्रमिककँ औजार दैत छी, पहिने हलुक काज

सिखबैत छी; बिना अभ्यास भारी बोझ नहि उठबबैत छी। मुदा औजार छुड़यो नहि सकबह कहि जीवन भर बाहर रखब, तखन ओ सीखनिहार कोना बनत?” हुनकर दृष्टान्त सुनि हरिमोहन अपन पुरान पोथी बच्चासभकें नहि देलनि; बदला साधारण अभ्यासपत्र बनएबाक प्रस्ताव रखलनि।

मैथिली अपन साथ अनने पुरान पन्नाक दू प्रति टेबुलपर राखलीह। दुनू एक्के पाठक छल, मुदा एकटामे किनारक टिप्पणी उतरने छल, दोसरमे नहि। “एहि कटौतीक अर्थ बुझएबाक लेल लेखकक हस्ताक्षर पर्याप्त अछि?” ओ पुछलनि। हरिमोहन पन्ना देखलनि। “नहि, मूल मिलान जरूरी।” मैथिली कहलीह, “एहि काजमे प्रतिलिपिकार, जाँचनिहार आ टिप्पणी देनिहारक नाम लिखबो जरूरी अछि।” ईशान चुप रहलाह। हुनका बुझाईत छल जे बात केवल एखनक कक्षा धरि सीमित नहि।

हरिमोहन कहलनि, “सभ परिश्रम एके प्रकृतिक नहि। मूल तर्क आ प्रति जाँचनाइकें भिन्न मानब पड़त।” मैथिली उत्तर देलीह, “भिन्न अवश्य मानू, मिटाउ नहि। जे करलक नहि ओकर नाम नहि, जे करलक ओकरा नाम छोड़ि नहि। श्रेयक प्रमाण सेहो चाही।” ओ अपन योगदानक अन्तिम दावा आइ तय कराबए नहि चाहैत छलीह; पहिने रिकॉर्डमे कामक प्रकार आ तिथि जोड़बाक माँग कएलीह।

नैरा सुनैत छलीह। हुनका याद पड़ल जे महेशक गवाहीक शर्त समयसँ पहिने तोड़लाक बाद केवल ‘माफ करू’ लिखब पर्याप्त नहि भेल छल। एतहु सहमतिक प्रश्न छल—केकर लिखल टिप्पणी सार्वजनिक होएत, केकर निजी प्रति केवल जाँचक लेल रहत। ओ हरिमोहनकें सुझाव देलीह जे कक्षाक उपस्थिति आ प्रतिलिपिक प्रकाशन-दोसर काजक लेल अलग अनुमति लिखल जाए। बच्चाक नामक संग फोटो प्रकाशित करब स्वतः अनुमत नहि मानल जाए।

जतन अभ्यासपत्रपर पुनः ‘ज’ लिखलक। एहि बेर आकार सही छल, मुदा नीचाँक रेखा टेढ़। हरिमोहन ओकरा कलम पकड़बाक ढङ्ग देखीलनि। बिरसी पुछलीह, “गलत अक्षर हमरा लग रखि सकैत छी?” “अवश्य,” हरिमोहन कहलनि, “कागद तोहर। पाठशालाक मूल पोथी आन बात अछि।” बालिकाक प्रश्नसँ ओ स्वयं बुझलाह जे ‘सामग्रीक सुरक्षा’ आ ‘सीखनिहारक अपमान’ एके नियम नहि बनएबाक चाही।

कक्षाक दोसर कात सरिता अपन लिखावटवला पुरान कापी देखबैत नैराकँ कहलनि,
“ई सभ सुनिऽ एकटा बात याद पड़ल। कियो हमरा हाथसँ हिसाब लिखबैत छल,
अन्तमे ओकर नाम चढ़ैत छल। हम दाम लेबो करैत छलहुँ, मुदा जे सुधार हम केने रही,
ओकरा कागदमे कोनो निशान नहि।” नैरा पुछलीह, “माँ, कखनक कापी?” सरिता
कहलीह, “तिथि देखबाक अछि। एखन एकरा नामक मूल पन्नासँ जोड़ि नहि देबह। दूनु
कागदक इतिहास अलग होएत।”

पाठशालाक परिचालक बैसारक अन्तिम निर्णयक रूपमे तीन बात लिखलनि।
आरम्भिक पाठक अभ्यासपत्र बँटत; बच्चासभक अस्थायी उपस्थिति अलग दर्ज होएत;
औपचारिक विद्यालय-नामांकन लेल सम्बन्धित विद्यालयक लिखित उत्तर एखनहुँ चाही।
चन्दाक प्रशिक्षण-समय बिना भुगतानक नहि मानल जाएत—हुनका जँ पाठशाला
व्यवहारिक कक्षा लेल बजाओत, तखन देय पहिने तय करत। हरिमोहन एहि प्रस्तावपर
अपना हस्ताक्षर कएलनि।

मैथिली पुछलनि, “आ लेखक-योगदानक पंजी?” परिचालक एकटा दोसर बही
खोललनि। एहि बेर हरिमोहन स्वयं खाली खाना लिखलनि—पाठ-संशोधन, प्रतिलिपि,
भाषिक तुलना, उदाहरण, अन्तिम स्वीकृति। “नाम सामग्रीसँ मिलान भेला पर भरब,” ओ
कहलनि। मैथिली स्वीकार कएलीह जे प्रमाणक जाँच चाही, मुदा खाली खानासभ बन्द
नहि होएबाक शर्त रखलीह। ईशान ओहि बहीमे पुरान पाण्डुलिपिक तारीख देखबाक
उत्तरदायित्व लेलनि। विवादक निर्णय एखन नहि भेल, मुदा ओकरा बिना नामक मौनमे
दबाएब कठिन भऽ गेल।

बैसारक अवकाशमे हरिमोहन बिरसीसँ पुछलनि जे ओ कतेक दूरसँ एलीह। बिरसी
अपन पयरक धूरि देखौलक—“एतबे।” ओकरा दूरिक माप नहि बुझाईत छल। रेवा
कहलनि, “हमर डेरा हटत तँ दोसर बाट होएत।” हरिमोहन पहिने उत्तर देबाक स्थानपर
एकटा हलुक अभ्यास-पोथी हुनका हाथमे देलनि। पुस्तक लौटेबाक निश्चित दिन नहि
लिखलनि, केवल पाठशालाक सम्पर्क-ठाम देलनि। बिरसी पुछलीह, “जँ हम दूर चलि
गेलहुँ?” “जे पढ़लहुँ, से संग लेब,” ओ कहलनि, “पोथीक हिसाब लेल फेर बात करब।”

कक्षा उठलाक बाद रेवा देखलीह जे जतन अपन उलटल पहिल ‘ज’ आ आइक सही ‘ज’ दूटा पन्ना संग रखलक। ओ पुछलीह, “पुरनका किएक?” जतन कहलक, “पहिने हम एना लिखैत रही, तखन एना सिखलहुँ। पहिलटा रहत तँ फेर बुझब।” रेवा दुनू पन्नाकें एके कपड़ामे लपेटलीह। हुनका काल्हि कोन डेरामे रहबाक अछि, से स्थिर नहि छल, मुदा बच्चाक पढ़ाइक दू दिनक अन्तर एखन खोइए नहि देबाक छल।

साँझ मैथिली अकेले पाठशालाक खिड़की बन्द करबाक समय हरिमोहनसँ कहलीह, “अहाँ आइ उत्तर बदललहुँ की उदाहरण?” हरिमोहन हँसलाह नहि। “अपन उदाहरणक सीमा बुझलहुँ। उत्तर लेल आरो पढ़बाक अछि,” ओ कहलनि। मैथिली कहलीह, “ईहो आरम्भ अछि।” ओ अपने थैलासँ टिप्पणीक पुरान प्रति निकालि तारीख मिलाओलनि, फेर वापस रखलीह। श्रेयक विवादक तिथि आज नहि छल; मुदा प्रश्न अब लिखल रूपमे छल।

बहुत पुरान कालक ओसारमे मृणाल फेर भीजल पन्ना हाथमे लेने ठाढ़ छलीह। ओ धूप आ छाँहक भेद देखिकऽ पन्ना लोहना लग लौटा देलीह। भीतर वाचस्पति शिष्यसभक लेल अगिला दिनक पाठक पाँति चुनैत छलाह। मृणाल दरबज्जा दिस देखलीह, मुदा पाठ समाप्त भेलाक बाद भीतर घुसि नहि गेलीह। काल्हि समय, श्रम आ पढ़ाइक बाटपर फेर बात होएत; आइ हुनका अपन काज पूरा करबाक छल।

राति विदेहपुरक अस्थायी ओसारमे मीरा कक्षा-बही बन्द करैत छलीह। रेवाक बच्चासभक नामक आगाँ ‘अस्थायी उपस्थिति’, विद्यालयक पंजीमे ‘उत्तर शेष’, आ पाठशालाक बहीमे ‘आरम्भिक पाठ’ लिखल छल। तीनू शब्द एक-दोसराक ठाम नहि लेबैत छल। नैरा दुरसँ ई तीनू पाँति पढ़लीह। घर घुर्बाक बाटपर सरिता एक छोट दीपकक बात कएलीह—“जे लिखैत अछि ओकरा उजियार चाही; जे कागद बनबैत अछि, ओकरो।” नैरा माँक हाथ पकड़ि चललीह। साँझक ओहि उजियारमे ककरो प्रश्न अभी समाप्त नहि भेल छल, मुदा ओकरा पुछनिहारक नाम मेटल नहि छल।

अध्याय ३३ • दीपक आ कागद

अगिला भोर मृणाल जखन कागद सुखएबाक ओसारमे पहुँचलि, लोहना पहिनहि सँ माटिक दू थारीमे पानि नापि रहल छल। एक थारीक पानि निर्मल छल, दोसरमे पिसल तन्तुक महीन रेशा तैरि रहल छल। लोहना मृणालकेँ काठक पातर चौखट पकड़बैत कहलक, “काल्हि पाठ सुनबाक समय निकलल, मुदा ई पन्ना अपने सँ नहि बनत। आइ सँ काजक हिसाब फेर लिखब।”

मृणाल चौखट पानिमे धसौलीह। तन्तु जखन जालपर एकसमान पसरल, तखन लोहना ओकरा सावधानीसँ उठौलक। एक कोनापर गाढ़ ढेरी जमल छल। मृणाल उँगरी लगएबाक प्रयास कएलीह। “छुड़ नहि,” लोहना रोकलक, “भिजल रेशा अपने बाट खोजैत अछि। दबाएबह तँ ओतहि गाँठ पड़त। पहिने पानिक धार देख।” मृणाल चौखट कने झुकौलीह, आ गाढ़ ढेरी धीरे-धीरे फैलि गेल। हुनका पहिल बेर बुझायल जे समतल पन्ना बनबैत काल हाथसँ बेसी धैर्य लगैत अछि।

ओही परिसरक भीतर दीपकक उजियारमे राति भरि पाठक प्रति बनल छल। भामती भोरमे ओतय अएलीह तँ तेलक कटोरी खाली आ बातीक मुँह करिया भेटल। कापीक दू पन्नापर धुआँक महीन काजर पड़ल छल। एक शिष्य कहलक, “राति उजियार पर्याप्त छल, ताहि लेल काज जल्दी बढ़ल।” भामती पन्नाक कारी धार देखलीह। “जल्दी बढ़ल, मुदा ई धुआँ के साफ करत? तेलक दाम के देत? आ राति बत्ती रखबाक बाद भोरमे आँखि के आराम करत?”

शिष्यक उत्तर छल जे शास्त्रक सेवा सबहक पुण्यक काज अछि। भामती धुआँ लागल पन्ना उठाए बिना देवालक कात रखलीह। “पुण्यक बात तोहर,” ओ कहलीह, “आँखिक जलन हमर। दुनूकेँ एक्के हिसाबमे लिखबह तँ बात नहि बनत।” हुनकर स्वर न रोषसँ भरल छल, न विनयक आग्रहसँ; ओ जकाँ घरमे अन्न गनल जाइत अछि, तहिना खर्च गनैत छलीह।

वाचस्पति भीतर पाठक पाँति मिलबैत छलाह। भामती हुनका बजाओलनि। “राति जतेक दीपक जरल, ततेक काज भोरक भार बनि गेल,” ओ कहलीह। “चारि पन्ना तैयार

अछि; दूटा फेर सुखएबाक पड़त। लोहना अतिरिक्त तन्तु नहि देत, जाधरि पहिनुका दाम नहि भेटत।” वाचस्पति पुछलनि, “कतेक दाम?” भामती उत्तर देलीह, “कतेक पन्ना बचत आ कतेक बिगड़ल, से देखिते पता चलत। केवल गिनतीसँ नहि।”

लोहना भीतर अएल तँ ओ अपना संग निर्मित कागदक गड्डी नहि, फाटल छन्नीक टुकड़ा लेने छल। “ई बदलबाक पड़त,” ओ कहलनि। “पुरान छन्नीसँ किनार एक्के मोटाइमे नहि उठैत अछि। हमरा मजदूरीक वचन भेटल छल; सामग्रीक दाम अलग छल। शिष्यलोक दुनूकँ एक कहि रहल छथि।” वाचस्पति अपन पाठमे छलाह, मुदा छन्नीक फाटल जाल हुनका सामने छल। ओ पुछलनि, “नव जाल आनबाक समय?” लोहना कहलक, “बजारक दिन। ओहि धरि जे अछि, ओहिमे छोट पन्ना बनत।”

भामती कक्षाक देवालपर तीनटा पाँति लिखौलीह—बनाओल पन्ना, बिगड़ल पन्ना, बचल पन्ना। लोहना चौथ पाँति जोड़लक—काजमे लागल समय। शिष्यसभमे सँ कियो हँसि कहलक, “एना तँ पुस्तकसँ बेसी हिसाबक पोथी तैयार होएत।” भामती उत्तर देलीह, “जे बिना हिसाबक पुस्तक बनाओत, ओकर लग अन्तमे केवल फाटल पन्ना रहत।” वाचस्पतिक मुँहपर हलुक मुस्की छल; ओ मुस्की हुनकर असहमतिकँ मेटैत नहि छल।

दिन चढ़लापर मृणाल अपन पाठक एक मुहूर्त लेल भीतर अएलीह। ओ देखलीह जे नव प्रतिक एक पातमे नदीक अनेक नामक सूची नहि, कविताक अपूर्ण अंश उतराओल जा रहल अछि। एकटा पाँतिमे “कृतसारा” पद लिखल छल। पन्नाक आगाँ-पाछाँक शब्द कटि गेल छल; जे मूलसँ ई प्रति बनल, ओकरो कोना भाडल छल। मृणाल पुछलीह, “ई कोनो नदीक नाम अछि, कि कवितामे कोनो गुण कहबाक शब्द?”

एक शिष्य कहलक, “जलसम्बन्धी पद अछि, तँ नदीए होएत।” मृणाल हुनका दिस देखलीह। “काल्हि हम जे भीजल अक्षर देखलहुँ, ओ पानिसँ बिगड़ल छल, मुदा तकर अर्थ नदी नहि भेल। एतय आगाँक शब्द नहि अछि। एक पाँति छोड़ि अनुमान करब की उचित?” वाचस्पति अपूर्ण पन्ना माँगि देखलनि। ओ तत्काल नदीक नाम घोषित नहि कएलनि। कहलनि, “ई पाठक प्रश्न अछि। जे पन्ना नहि भेटल, ओकर शून्य स्थान अनुमानसँ भरि देब उत्तर नहि।”

भामती पन्नाक कात एक पातर चिन्ह रखलीह, जाहिसँ ओ शब्द फेर मिलाओल जा सकए। “जखन मूलक दोसर प्रति भेटत, तखन मिलान करब,” ओ कहलीह। मृणाल पुछलीह, “ताधरि जे लोक एहि नामक सहारे कोनो घाटक जमीन कहत?” लोहना उत्तर देलक, “ओकरा जमीनक माप देखए कहबह। पोथीक एकटा पाँति सँ नाव नहि चलैत।” कक्षामे हँसी उठल, मुदा वाचस्पति ओ प्रश्नकेँ उपेक्षित नहि कएलनि।

ओहि दिन भामतीक लग एकटा छोट बच्ची आयल। ओ शिष्यक परिवारसँ छलि आ कागद सुखबैत देखबाक लालचमे भीतर पहुँचि गेल छलि। ओ दीपकक करिया बत्ती देखिकऽ पुछलक, “उजियार खतम भेला पर धुआँ कतय जाइत अछि?” भामती ओकरा खिड़कीक लग लऽ गेलीह। “किछु बाहर, किछु पन्नापर, किछु साँसक भीतर,” ओ उत्तर देलीह। बच्ची पुछलक, “तखन कम दीपक किएक नहि जरैत अछि?” भामती कहलनि, “एहि प्रश्नपर आइ साँझ सभक बात होएत।”

विदेहपुरमे ओहि भोर मेघ घनाएल छल। पाठशालाक टिनक छप्परक एक जोड़सँ रातिक पानि टपकल रहए, आ अभ्यासपत्रक गठरीक नीचाँक भाग नम भऽ गेल छल। जतन अपन लिखल ‘ज’ बचएबाक लेल कागदक पन्ना ओलटि रहल छल। बिरसी एकटा पन्ना उठाकऽ कहलनि, “हमर अक्षर एखन सेहो पढ़ल जाइत अछि।” रेवा ओकरा धूप दिस पसारि देलीह। हरिमोहन पाठक कागद देखिकऽ बेचैन भेलाह। “एना रहल तँ ई पाठशाला बरखामे नहि चलत,” ओ कहलनि।

मैथिली पाठशालाक ओसारमे राखल पुरान प्रति बचएबामे लागल छलीह। ईशान ऊपरक टिन देखए गोलाह। छप्परक जोड़ सीएबाक लेल जे कारीगर पहिने बजाओल गेल छल, ओकर दामक हिसाब पूरा नहि छल। हरिमोहन कहलनि, “आजुक पाठमे विलम्ब होएत।” मीरा उत्तर देलीह, “बच्चासभ आबि गेल अछि। अक्षरक पन्ना सुखबैत छोट पाठ सेहो चलि सकैत अछि।” ओ जतनकेँ कहलीह, “एकटा कागद बचएब सेहो काज अछि; मुदा भीजल पन्ना आगिक बहुत लग नहि रखिह।”

तखन ओसारक बाहर एक स्त्री भीजल झोरा नीचाँ राखि ठाढ़ भेलीह। हुनकर नाम सोमरी हेम्ब्रम छल। ओ प्रवासी श्रमिकक दलसँ अएलीह। थैलामे अपन कामक पर्ची, एकटा आधा अनुवादित अनुबन्ध आ कपड़ामे लपेटल छोट रसीद छल। चन्दा मुण्डा हुनका

पाठशालाक ओसारक बाट बतौने छलीह, कारण लिखल शर्त पढ़बाक लेल सोमरीकेँ सहयोग चाही छल।

सोमरी पन्ना खोलि मैथिलीकेँ देखौलीह। “हमर नाम अछि,” ओ कहलीह, “दिनक मजदूरीक अङ्को अछि। मुदा जे भाषा हम घरमे बाजैत छी, ओहिमे एक शब्द नहि। कहल गेल जे अँगूठा दऽ दिअ; बादमे बुझा देब।” मैथिली पुछलीह, “काज कहाँ?” सोमरी कहलनि, “घरेसँ बाहरक निर्माणमे। काल्हि फेर बजाओताह। जे काज करेब, से बुझैत छी; जे कागद कहैत अछि, से पूरा नहि।”

हरिमोहन पर्ची ध्यानसँ देखलनि। ओकर एक पाँतिमे साधारण मजदूरीक शर्त छल; दोसरमे निवास बदलबाक सूचनाक बात; तेसरमे काम बीचमे छाड़लापर कटौती। सोमरी पहिने दिनक दाम पूछलीह। फेर पुछलीह, “जँ पानिक कारण काज बन्द भेल तँ ई कटौती होएत की?” हरिमोहन कहलनि, “ई पाँति अस्पष्ट अछि।” सोमरी उत्तर देलीह, “तँ हमरा अस्पष्टतापर अँगूठा देबाक किएक कहल जा रहल अछि?”

मीरा लिखल शब्द सरल मैथिलीमे बुझाओलनि, मुदा सोमरी रोकि देलीह। “अहाँ जे बुझबैत छी से सुनब,” ओ कहलीह, “मुदा हमर मातृभाषामे बुझौनिहारक देय अलग होएत। हमर दलमे किछु लोक मैथिली बुझैत छथि, किछु नहि। हम अपन बात लिखबा सकैत छी; सबहक सहमति अपन-अपन मुँहसँ लेबाक पड़त।” हुनकर स्वरमे बिना झगड़ाक दृढ़ता छल। चन्दा मुस्की दऽ कहलीह, “हमरो कागदक प्रति नैरा अनुमति लऽ कऽ बनौने छलीह। एहि ठाम पहिने पुछल जाइत अछि, ताहि लेल अहाँकेँ अनलहुँ।”

सोमरीक झोरामे एकटा छोट बाँसक मापपट्टी सेहो छल। ओ नव छप्परक टपकैत जोड़ देखलीह। “ई जोड़पर पानि राखि गेल अछि,” ओ कहलीह, “तथापि हम एतय कारीगर बनि आदेश नहि देब। छप्पर पर चढ़बाक सुरक्षा, औजार आ देय जेकर जिम्मा, ओ तय करथि।” ईशान ऊपरसँ उतरि रहल छलाह। ओ कहि उठलाह, “हम तँ स्वयं पतराकेँ कसा सकैत छी।” सोमरी उत्तर देलीह, “अहाँ कसि सकैत छी, मुदा गील टिनपर पयर फिसलल तँ कागद बचैत देह घायल होएत। कामक उत्साह आ सुरक्षित काजमे भेद राखू।” ईशान हाथ रोकि लेलनि।

मैथिली सोमरीसँ पुछलीह, “अहाँक आवेदनमे की लिखल जाए?” सोमरी कने सोचलीह। “ई नहि जे हमर नामपर कोनो दूसरा हस्ताक्षर करत,” ओ कहलीह। “लिखू जे अनुबन्धक शर्त सभ बुझायल जाए, दलक लोक अपन भाषामे बुझथि, आ अनुवाद करनिहारक मजदूरी ठेकाक हिसाबमे दर्ज हो।” हरिमोहन कहलनि, “एखन हम एकर कानूनी अर्थक पूरा निर्णय नहि दऽ सकैत छी।” सोमरी पर्ची वापस मोड़लीह। “निर्णय चाहबो नहि,” ओ कहलीह, “पहिने लिखल सवालक प्रति चाही।”

सोमरीक फोनमे ठेकाक मुन्शीक दू छोट सन्देश छल। पहिलमे अगिला भोर हाजिर होएबाक समय, दोसरमे पर्ची वापस करबाक आग्रह। ओ संदेश देखिकऽ तुरन्त उत्तर नहि देलीह। चन्दा पुछलीह, “डर लगैत अछि?” सोमरी कहलीह, “काज छूटबाक डर अछि। मुदा जे बिना बुझने लिखब, ओकर दाम घरक लोक चुकाओत।” हुनका गाममे एक वृद्धा छलि जे फोनपर आवाज सुनि सकैत छलीह, मुदा लिखल शर्त पढ़ि नहि सकैत छलीह। सोमरी चाहैत छलीह जे अगिला बेर काम पर जएबाक पहिने ओहि वृद्धाकेँ सेहो दाम आ कटौतीक अन्तर बुझाओल जाए। ओ निर्णय कोनो सभाक आदेशपर नहि, अपन अनुभवसँ लेने छलीह।

मीरा पुरान कापीक साफ पन्ना चुनलीह। सोमरीक कहला पर चारि प्रश्न लिखल गेल—दैनिक दाम, बरखामे बन्द काजक हिसाब, निवास-बदलावक शर्त आ भाषिक समझक अधिकार। एक प्रति सोमरी लग रहत, दोसर दलक बैठकक लेल। एकर प्राप्ति मात्रसँ मूल अनुबन्ध बदलल नहि गेल छल; मुदा अब अँगूठा देबाक पहिने लिखित प्रश्न उठल छल। सोमरी अपन थैलासँ रसीद निकालि तिथि देखलीह, फेर सँभालि कऽ रखलीह।

ओही समय जतन कागदक गठरी उठबैत लड़खड़ा गेल। पन्ना बिखरि गेल आ बिरसी जोर सँ हँसि पड़लीह। जतन खिसियाकऽ कहलक, “हमर पन्ना नहि उड़ल, सभक उड़ल।” सोमरी घुँटा मोड़ि बैसलीह आ एकटा पन्नापर उलटल ‘ज’ देखलीह। “ई की?” ओ पुछलीह। जतन कहलक, “पुरान गलती।” सोमरी कहलीह, “एकरा नहि फेकू। जखन सही लिखबह, पहिल पन्ना कहत जे हाथ केना बदलल।” बच्चा ओकरा अपन थैलाक सुरक्षित बीचमे रखलक।

दुपहरियामे सरिता गरम भात आ दालिक पातर हाँड़ी लऽ अएलीह। चूल्हिक धुआँ ओसारक बाहर निकलैत छल। ओ सोमरीकेँ पुछलनि, “भोजन कएने छी?” सोमरी अपन रोटी निकाललीह। “हमर अछि,” ओ कहलीह, “मुदा तरकारी जँ बेचबाक अछि तँ दाम देब।” सरिता हँसि कहलीह, “आइ जतेक बनल, साझा भोजनक लेल अछि। काल्हि जँ रसोइक काज लेब तँ दामक हिसाब करब।” सोमरी एक चम्मच तरकारी लेलनि, आ अपन थैलासँ छोट अचारक डब्बी खोलि सभकेँ चखबौलीह।

भोजनक समय सरिता मैथिली सँ पुछलनि जे भीजल पोथी बचल की नहि। मैथिली कहलीह, “जे पुरान प्रति छल से बचल; अभ्यासपत्र फेर लिखल जा सकैत अछि। मुदा जे पन्नाक प्रतिलिपि कयलक, ओकर दामक खाना एखनहुँ खाली अछि।” सरिता अपन रसोइक खाली कटोरीक दिस देखलीह। “हमरा नीक लगैत अछि जखन हमर हाथक बनेल भोजन खाइत लोक नामसँ पूछैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा रोज कियो अनाम रान्हि देत तँ एक दिन घरक हिसाबो झूठ बाजत।”

दुपहरक बाद भीजल छप्परक नीचे एक बेर तेज बूँद खसल। पानि ठाढ़ न भेल; कागदक गठरीक बाहर बहि कऽ अँगनामे बनल गहिरा पयरक गड्डामे समा गेल। संकेत ओहि धारक छोट रेखाचित्र बनबैत छल। हरिमोहन ओकर फोन दिस देखलनि तँ संकेत पहिनहि कहि देलक, “ई चित्र एतयक पानिक बाटक अछि, ककरो चेहरा नहि। सार्वजनिक करबासँ पहिने अहाँ देखब।” नैरा ओकरा कागदपर एकटा समय लिखए कहलीह; आगाँ पड़ल वर्षामे धार फेर बदलि सकैत छल। ई न घरक बाढ़क प्रमाण छल, न कोनो ठेकेदारक दोष, मुदा छप्पर सुरक्षित करबाक लेल एतेक देखल तथ्य उपयोगी छल।

बहुत पुरान कालक ओसारमे साँझ धरि दीपक नहि जराओल गेल छल। भामती दिनक आखिरी उजियारमे पन्ना छाँटि रहल छलीह। लोहना अपन कामक हिसाब लऽ अएल। ओकरा पहिनुक दू दिनक मजदूरीक आधा भाग भेटल छल; शेषक लेल अनाजक निश्चित माप लिखाओल गेल। “हम एतबे आज लऽ जाइत छी,” ओ कहलनि, “बाकी देबाक दिन लिखि दिअ। दाम देब एखन असम्भव अछि तँ झूठ वचनसँ लाभ नहि।”

वाचस्पति ओहि हिसाबपर अपन चिन्ह देलनि। लोहना ओकरा पढ़ि सुनएबाक आग्रह कएलक। एक शिष्य कहलक, “चिन्ह तँ अछि, फेर पढ़बाक की?” लोहना कहलक, “हमर

हाथक बनाओल पन्ना अहाँ सभ पढ़ैत छी। हमर मजदूरीक पाँति हम किएक नहि सुनब?” भामती पाँति पढ़लीह, लोहना एक शब्द बदलौलक—‘सहायता’क बदला ‘शेष देय’। वाचस्पति परिवर्तन स्वीकार कएलनि।

भामती चुपचाप दीपकक लेल बाती काटैत छलीह। लोहना पुछलक, “एतय सभ लोक अपना-अपना काजक पाँति लिखाओत; अहाँक नाम कोन पाँतिमे रहत?” भामती बाती हथेलीक बीच मोड़लीह। “तेल, आसन, रात्रिक निगरानी, गलत प्रति अलग करब—एहि काजक पाँति अछि,” ओ कहलीह, “मुदा नामक प्रश्न सरल नहि। किछु कथा कहैत अछि जे पत्नी दीपकक संग जागलीह; कथा जे नहि देखलक, ओकरा हम घटल घटना कहि प्रमाणित नहि करब।”

मृणाल हुनकर लग बैसि कहलीह, “तँ लोकक कथा लिखल जाएत की नहि?” भामती उत्तर देलीह, “लिखल जा सकैत अछि—कथा कहि। जकरा देखल, ओकरा साक्षी कहि। जकरा अनुमान कएल, ओकरा अनुमान कहि। एकर बादो पत्नी जे भोजन बनौलक आ रात्रि जागलीह, ओकर श्रम घटत नहि।” मृणाल पुछलीह, “तखन अहाँक अपन बात?” भामती एक नन्हा दीपक जरौलीह। “हमर बात हम कहब,” ओ कहलीह, “दोसरक कथा हमर मुखमे राखि नहि देब।”

भामतीक बात सुनिकऽ वाचस्पति भीतरसँ बाहर अएलाह। भामतीक नन्हा दीपक देखिकऽ पुछलनि, “एतबे उजियारमे श्लोकक सूक्ष्म अक्षर देखाएत?” भामती दीपकक लगक पातर पन्ना हटौलीह। “नहि,” ओ कहलीह, “तँ आजु राति जतेक पढ़ल जा सकत, ओतेक पढ़ू। बाकी भोरक उजियार लेल छोड़ू। हाथ आ आँखि दुनू घरक सामग्री अछि।” वाचस्पति ओहि राति नकलक काज कम करबाक वचन देलनि। ओहि वचनसँ शिष्यसभक अभ्यास छुटत, मुदा लोहना द्वारा बनाओल कागद बिना धुआँक बचत। शिष्यसभमेसँ एक जन पहिने खिन्न भेल, फेर ओ स्वयं पन्नासभ पेटीक भीतर समेटए लागल।

बाहरसँ ओ बच्ची फेर अएलीह जे भोरमे धुआँक प्रश्न पूछने छलि। ओ एकटा छोट टेढ़ कागद हाथमे लऽ कहलनि, “हम एहि पर अपन नाम लिखि सकैत छी?” लोहना कहलक, “ई फाटल कोना अछि, लिखबह तँ चलत।” बच्ची मृणालकेँ देखलीह। मृणाल पुछलीह,

“अक्षर के सिखाओत?” भामती दीपक कने दूर रखि कहलीह, “जे पढ़ि सकैत अछि ओ। मुदा पहिने कागद सुकए दिस।” बच्ची पन्ना फूँक मारि सुखएबाक प्रयास कएलीह, आ लोहना ठहाका मारि हँसि पड़ल।

विदेहपुरमे साँझ होइतहुँ छप्परक जोड़क मरम्मत शुरू नहि भेल छल। अस्थायी तिरपालसँ भीजल गठरीक रक्षा कएल गेल, आ कारीगरक सुरक्षित पहुँच लेल अगिला दिनक समय लिखल गेल। सोमरी अनुबन्धक चारि प्रश्नक प्रति अपना संग लऽ गेलीह। मैथिली हुनकर नामकेँ काजक पंजीमे ‘अनुवाद चाहनिहार श्रमिक’ नहि, ‘अनुबन्धक शर्त स्पष्ट करएबला सोमरी हेम्ब्रम’ लिखौलीह। सोमरी पढ़ि सुनलापर माथ हिलौलीह, मुदा कहलनि, “काल्हि हमर दलक लोक अपने मुँहसँ कहत; हम सभक बदला नहि छी।”

नैरा दिनक अन्तमे पाठशालाक मेजपर बचल प्रतिक कोना देखलीह। मैथिली अपन संशोधनवला पन्नाक दू संस्करण अलग राखने छलीह। एक पर टिप्पणीक नाम छल, दोसर पर नहि। नैरा कहलीह, “एकरा नामपंजीक मूल कागदसँ मिलाएब नहि। ई श्रेयक अलग प्रश्न अछि।” मैथिली उत्तर देलीह, “हँ, मुदा जखन किछु भेटैत नहि, तँ लोक सहजहि एके कारण मानि लैत अछि। कागद बिगड़ल—कारण पानि हो सकैत अछि, धुआँ हो सकैत अछि, असावधानी हो सकैत अछि। देखबाक पड़त।” नैरा पन्ना छूने बिना ओकर सूखल कोना देखलीह।

सरिता घर घुरैत समय दीपक ढाकि देलीह। जतन अपन अभ्यासपत्रक गाँठ कसि रहल छल; बिरसी भातक खाली कटोरी धोएबाक लेल पानि नापि रहलि। मृणालक दूरस्थ ओसारमे लोहना अपन छन्नी सूखए देने छल, आ भामती ओहि नन्हा दीपकक बाती काटि रहल छलीह। दुनू ठाम लिखल पन्ना बचबैत लोकसभक हाथ थाकल छल; तइयो बच्चासभकेँ अगिला भोर फेर अक्षर लिखबाक छल।

अध्याय ३४ • अनदेखल कारण

पाठशालाक भिजल ओसारमे हेमा देव पहिने कागद नहि, काठक तख्ती नापलीह। तख्तीक दहिना किनारसँ पुरान कील बाहर निकलल छल। ओकरा नीचाँ जे प्रदर्शनीक पन्ना लटकाओल गेल छल, तकर आधा हिस्सा रातिक पानिसँ मुड़ि गेल छल। हेमा ओहि पन्नाकेँ हाथ लगबैत रुकि गेलीह। कागदपर विदेहपुरक स्थापना, पुरान सड़क आ पोखरि-उराहिक चित्र छल; चित्रक नीचाँ दस पुरुषक नाम आ एक पाँति लिखल छल—‘गामक स्त्रीगणक सहयोग’। हेमा धीरे सँ पुछलीह, “स्त्रीगणक नाम कोन पन्नापर अछि?”

हरिमोहन पाठक किताबक गठरी सुखबैत छलाह। ओ कहलनि, “हमरो देखबाक इच्छा छल। सम्भव अछि पछिला पन्ना छुटि गेल हो।” हेमा प्रदर्शनीक बँचल कोना सीधा करैत कहलीह, “सम्भव अछि। मुदा जँ हर बेर एक्के लोकक पन्ना छुटैत रहए, तँ ई गलती के देखत?” ओ तख्ती दीवारसँ उतारि जमीनपर रखलीह। एहि बीच जतन आ बिरसी बाहरक भीजल आँगनमे चूनसँ अक्षर बनबैत छल। हुनका सभकेँ चित्र नीक लगैत छल, मुदा कागदक खाली किनारक अर्थ नहि बुझाइट छल।

हेमा लग घरसँ आनल दू बही छल—एकटा विद्यालयक पुरान समारोहक सूची, दोसर १९३९ केर पोखरि-उराहिसँ सम्बन्धित नकलक पन्ना। दोसर पन्ना परिवारक भीतर सुरक्षित रहल पुरान प्रतिक फोटोक प्रति छल, मूल सरकारी अभिलेख नहि। एक कात ‘भोजन’, दोसर कात ‘कादो ढोएनिहार’ आ ‘घाट चिन्हब’ लिखल छल। कतेको नाम फाटल कोनाकेँ छुएत छल; किछु ठाम मात्र पहिल अक्षर बचल छल। हेमा नहि चाहैत छलीह जे अस्पष्ट अक्षरसँ अपन मनक नाम पूरा कऽ देखि।

मीरा मंडल ओसारमे अएलीह तँ हेमा हुनका दू पन्ना देखौलीह। “विद्यालयक इतिहासमे पुरुषक नाम लिखब गलत नहि,” हेमा कहलीह, “गलत ई जे हुनकर काजक पाछाँ जे लोक काज कएलनि, हुनका सभकेँ एकटा अनाम शब्दमे समेटि देल जाइत अछि।” मीरा पुछलीह, “अहाँ ककर नाम निश्चित पढ़ि सकैत छी?” हेमा चारिटा चिन्ह देखौलीह। दूटा नाम समूचा, एकटा अपूर्ण, आ एकटा पर पुरान पानीक दाग छल। मीरा कहलीह, “तखन चारूकेँ चारि समान प्रमाण नहि कहब।”

ओहि दिन पाठशालामे स्थानीय इतिहासक छोट पाठक तैयारी छल। विद्यार्थीसभकें कहल गेल छल जे घाटक चित्रक संग पुरान श्रमक हिसाबो देखथि। किन्तु प्रदर्शनक तख्तीपर जे पढ़बामे सहज आ नीक बुझाईत छल, ओ पूर्ण कथा नहि छल। हेमा एकटा सफेद चूनक रेखा खींचलीह। एक दिस प्रमाणित नाम, दोसर दिस अपूर्ण नाम, तेसर दिस नाम बिना दर्ज कएल श्रम। “एहि तीनू पाँतिक काज अलग,” ओ कहलीह। “नाम नहि पढ़ाएबासँ ई सिद्ध नहि होइत जे ओ लोक छलहे नहि।”

बहुत पहिनुका मिथिलामे, उदयनक अध्ययनस्थलक बाहरी ओसारमे भोरक पहिल उजियार धरि एकटा दीपक जलल छल। रातिक शास्त्रार्थक बाद कागदक दू गड्डी अलग-अलग रखल गेल छल। एकपर पक्षक तर्क, दोसरपर आपत्ति लिखल छल। धुआँसँ कारी भेल बाती उठबैत एक शिष्य पुछलक, “जे आँखिसँ नहि देखाइत, ओकर कारण होएबाक दावा हम कोना मानू?” उदयन उत्तर देबाक बदला ओ पन्ना खोलनिहार शिष्यकें एक कात बैसबाक संकेत देलनि।

आजुक सभामे मीमांसक पूर्वपक्ष प्रस्तुत करनिहार अतिथि छलाह। उदयन हुनका पहिने बोलबाक अवसर देलनि। अतिथि कहला जे कर्मक फल अनेक बेर तुरन्त प्रकट नहि होइत; जे विधि अनुसार सम्पन्न क्रियाक परवर्ती फल मानल जाइत अछि, ओकर व्याख्या लेल अदृष्ट अथवा अपूर्वक परिकल्पना पर्याप्त भऽ सकैत अछि। एहन दशामे प्रत्येक फल लेल पृथक् चेतन अधिष्ठाताकें मानब अनिवार्य कोना भेल? प्रश्नमे उपहास नहि छल। ओ अपन मतक आधार व्यवस्थित करैत आगाँ बढ़लाह।

एक विद्यार्थी अधीर भऽ उठल—“जे वस्तु अदेखल अछि से असिद्ध, तँ बात समाप्त।” उदयन हुनका रोकलनि। “अदृश्य आ असिद्ध एक्के शब्द नहि,” ओ कहलनि। “किछु बात प्रत्यक्ष नहि होइत अछि, मुदा ओकरे आधारपर अनुमान करबाक अलग शर्त होइत अछि। एखन अतिथिक वाक्य पूरा सुनू। जकर मत खण्डित करबाक अछि, ओकरा पहिने ओकर पूरा रूपमे बुझबाक कर्तव्य अछि।” विद्यार्थी हाथक पन्ना मोड़ि फेर खोललक।

अतिथि कहला जे मनुष्यक कर्म आ ओकर फल बीच देखाइत विलम्बकें मात्र देखिकऽ ईश्वरक आवश्यकता सिद्ध कएल गेल तँ सवाल उठत जे ई सम्बन्धक व्याप्ति कतय जाँचल गेल? जँ अदृष्ट मानल जाए, तँ ओ अपूर्व संयोगक पर्याप्त व्याख्या देत की नहि?

आ जँ ओ पर्याप्त नहि, तकर कमी ठीक कतय अछि? उदयन एक-एक प्रश्न लिखबैत गेलाह। ओहि कक्षामे असहमतिक समुचित शब्द भेटैत छल; तर्कक सम्मान सहमतिक बन्धन नहि बनल छल।

ओसारक बाहर मिट्टीक छोट घट राखल छल। ओकर मालिक वृद्ध कुम्हार राति पानिसँ भीजल पात्र उलटा कऽ सुखा रहल छल। एक शिष्य घट देखिकऽ कहलक जे भीतरक पानि नहि देखल जाइत, तइयो भारसँ अनुमान होइत अछि; अदृष्टक बातो तहिना। अतिथि मुस्कुरौलनि। “घट उठा कऽ देखू; भार जाँचबाक साधन अछि। कर्मक विलम्बित फल लेल जे सम्बन्ध कहैत छी, ओकर जाँचक सीमा आन अछि। उदाहरण एक्के रूपमे खींचबापर विवाद पहिनहि सुलझल जकाँ नहि मानू।” उदयन कुम्हारक घटक मुँह छुड़बासँ पहिने हुनकर अनुमति लेबाक कहलनि।

कुम्हारक हाथ काँच माटिसँ सनल छल। ओ घट उलटा करैत कहलक, “हमर काजक भितर जे रेत रहल, ओ नहि छाँटलहुँ तँ घट पाकिते फूटत। मुदा जखन फूटल घट देखैत छी, तखन हर बेर रेतकेँ दोष नहि दैत छी। कखनो आँच, कखनो सुखेबाक समय।” उदयन ई बात सुनि मुस्कुराएलाह, मुदा ओकरा शास्त्रक सिद्धान्तक तैयार प्रमाण नहि बनौलनि। “तोर उदाहरण कारणक अनेक सम्भावना देखबैत अछि,” ओ कहलनि, “आ ताहि सीमा धरि उपयोगी अछि।”

दुपहरिसँ पहिने पाण्डुलिपिक एकटा पन्ना लेल दू शिष्य बीच विवाद उठल। एक शिष्य चाहैत छल जे पूर्वपक्षक प्रश्नक छोट रूप लिखि जल्दी उत्तर देल जाए। दोसर कहलक जे एना अतिथिक मत कमजोर भऽ जाएत। उदयन दूनू पन्ना लऽ कऽ देखलनि। पहिलमे अतिथिक पाँच प्रश्न तीनमे समेटि देल गेल छल; दोसरे मे उत्तर लिखबाक जगह खाली राखल छल। उदयन पहिल पन्नापर ‘संक्षेप’ लिखबाक बदला ‘अपूर्ण’ लिखवौलनि। “आइ ई पन्ना सुरक्षित राखू। कल्हि उत्तर देल जायत; पहिने प्रश्नक शरीर काटब नहि।”

विदेहपुरक पाठशालामे हेमा एहि बीच पुरान चित्रक नकल बनएबाक खर्च पूछैत छलीह। हरिमोहन कहलनि जे विद्यालयक छोट कोषसँ दू प्रतिक दाम निकलि सकैत अछि, मुदा तखनी फेर छपएबाक अनुमति प्रबन्ध समितिसँ लेबाक पड़त। हेमा उत्तर देलीह, “तखन कागदपर जे सुधार आज कऽ सकैत छी, से करब। बाँकी स्वीकृतिक लेल लिखित

निवेदन देब।” मैथिली मिश्र लग बैसि पुरान प्रति परखनिहार छलीह। ओ कहलीह, “जतय नाम अपूर्ण अछि, ओतय रिक्त स्थान छोड़ि स्पष्ट टिप्पणी दिअ। पाठककेँ नहि बुझाएब जे अनुमानो मूल अभिलेख छी।”

तेतबे में ओसारक आगाँ एक नव स्त्री पहुँचलि। बाँसक पातर डलियामे नमीसँ बचाओल कागदक पट्टी, सूतक गाँठ आ रंगक छोट डिबिया छल। ओ अपन नाम नसीमा शेरशाहबादी कहलीह। विद्यालयक लेल पन्नाक किनार बाँधबाक काजक बात सुनि ओ एलीह। “जे कागद टाँगब, ओहि पर पानि पड़त,” ओ कहलीह, “केवल रंग चढ़ा देलासँ पन्ना नहि बाँचत। पहिने पाछाँक पट्टी लगत।” हेमा हुनक काज देखबाक लेल तख्ती आगाँ सरकौलीह।

नसीमा अपन औजार खोलि एकटा फाटल पन्नाक कोना सँभाललीह। ओ कहलनि, “हमरे घरक लोक कहैत छथि जे छोट काज लेल पूरा रसीद लिखब व्यर्थ। मुदा हम कागद पर जे लगबैत छी ओकरा वस्तुक खर्च, हाथक समय आ फेर मरम्मत कएबाक शर्त तीनू रहैत अछि।” मीरा पुछलीह, “एहि हिसाबमे अहाँक नाम कोना लिखी?” नसीमा धीरे सँ स्पष्ट कएलनि—“नसीमा शेरशाहबादी। जेना हम अपने कहलहुँ, तेना।” मीरा तकर वर्तनी पर्चीमे उतारि हुनकेँ पढ़ि सुनौलीह।

नसीमा प्रदर्शनीक दहिना किनार देखलीह। “एहि ठाम नामक आखिरी अक्षर काटि देने अछि,” ओ कहलीह। “छापाइमे तख्तीक चौड़ाइ जतेक मानल गेल, वास्तविक चौड़ाइ ओहिसँ कम अछि। पन्ना काटनिहारक हाथ नामक पाँति धरि पहुँचि गेल।” हेमा उत्साहमे पुछलीह, “तखन स्त्रीसभक नाम फकत छापाइक गलतीसँ गायब भेल?” नसीमा माथ हिलौलीह। “हम एतबे कहि सकैत छी—ई पन्नाक किछु अक्षर काटल गेल अछि। जे नाम शुरूए सँ लिखल नहि गेल, तकर कारण हमरा एहि कोनासँ नहि भेटत।”

हेमा तख्तीपर उँगरी राखि कने देर चुप रहलि। हुनका पहिने लागल छल जे सभ नाम जानि-बूझि हटाओल गेल। आब एक भागक भौतिक कारण सामने छल। मुदा जे पुराने समारोहक मूल सूचीमे स्त्रीसभक काज अनाम छल, ओकर उत्तर छापाइक भूल नहि छल। ओ हरिमोहनसँ कहलीह, “हम अपन पहिल आरोप संशोधित करैत छी। छापाइक

कटौतीक प्रमाण अलग रहत; मूल पंजीमे नाम नहि रखबाक प्रश्न अलग।” हरिमोहन विद्यालयक बैठकक कापीमे दुनू पाँति लिखलनि।

जतन नसीमाक रंगक डिबिया देखिकऽ पुछलक, “ई रंगक दाम बड्ड होएत?” नसीमा कहलीह, “बजारसँ आनल दाम अछि; मुदा एतय जे रंग बचत ओ दोसर काजमे लागब। तकर हिसाब काटि देब। जेकर हाथ काम करैत अछि, ओकर समय नहि काटब।” बिरसी अपन ‘ब’ वला अभ्यासपत्र देखौलीह। नसीमा ओकरा पातर पट्टी दऽ कहलीह, “ई पट्टी चिपकएबाक पहिने मायक अनुमति लेब। बच्चाक पहिल पन्ना विद्यालयक सम्पत्ति नहि।” रेवा दूरसँ हँसलीह।

नैराकेँ हेमा पुरान उराहिक पन्ना देखौलीह। नैरा सावधानीसँ कापी खोललीह। “अहाँ जखन ई प्रति बनौलहुँ, मूल देखबाक अवसर भेटल?” ओ पुछलीह। हेमा कहलीह, “फोटोक नकल हमरा एक परिवारक पुरान बक्सामे भेटल। ककर हाथसँ मूल लिखल गेल, एखन नहि बुझल।” नैरा कागद पलटि कहलीह, “तखन कागदक तारीख आ सामग्रीक समय अलग जाँचबाक पड़त। ई नामपंजीक मूल सूची नहि। ओकर संग तुलना करब, मिलान नहि थोपब।”

हेमा अचानक पुछलीह, “जँ किछु स्त्रीक नाम कतहु नहि अछि, तँ हुनकर श्रम मानबाक आधार की?” नैरा उत्तर देलीह, “रसोइक माप, मजदूरीक हिसाब, कामक पुरान वस्तु, परिवारक अलग-अलग बयान—जतेक भेटए, ततेक। जे नहि भेटए तकर दुःख सेहो लिखू, मुदा खाली जगहमे अपन मनसँ नाम नहि भरू।” सरिता ओहि समय दालिक हाँड़ी राखि रहल छलीह। ओ कहलीह, “आ कतबो नाम नहि लिखल रहए, कादो उराहए कियो ने कियो गेलहे होएत। से बुझब आ ककर नाम छल से जानब दू प्रश्न अछि।”

नसीमा दालक कटोरी लेल हाथ बढबैत रुकि गेलीह। ओ पुछलीह, “ई भोजनक दाम कोन कापीमे?” सरिता कहलीह, “आइ सामूहिक खेनाइ अछि। मुदा रसोइक पानि, लकड़ी आ काजक हिसाब अलग लिखल जाइत अछि।” नसीमा हँसि उठलीह। “तखन एहि ओसारमे नाम आ भात दुनू बिना हिसाबक नहि चलैत अछि।” जतन अपन खाली कटोरी लऽ कऽ ओतए पहुँचलक। हेमा ओकरा पहिने हाथ धोएबाक कहलनि, फेर दू पुड़िया भुजा सेहो देलीह।

पुरान कालक शास्त्रार्थमे दुपहरक विश्राम भेलापर अतिथि उदयनक लग फेर अएलाह। “अहाँ हमर प्रश्न लिखबौलहुँ,” ओ कहलनि, “मुदा हमर मत ई नहि जे जे देखाइत नहि, ओ सब अपने सँ चलैत अछि। हम एतबे पूछैत छी जे स्वीकार कएल अदृष्टसँ फलसम्बन्धक व्याख्या सम्भव होइतहुँ अतिरिक्त चेतन कारणक आवश्यकता कोन बिन्दुपर अनिवार्य मानल जाए।” उदयन माथ झुकौलनि। “एहि रूपमे प्रश्न रखब,” ओ कहलनि, “जाहिसँ उत्तरक बोझ हमरा ऊपर रहए, अहाँक मतपर नहि।”

शिष्यसभ बैठलाह तँ उदयन एकटा छोट नियम देलनि। प्रत्येक पक्ष पहिने विरोधीक तर्क ओकरा स्वीकार्य रूपमे फेर कहत, तकर बाद आपत्ति रखत। एक शिष्य कहलक जे एहिसँ समय बहुत जायत। उदयन कहलनि, “समय बचएबाक लेल गलत पूर्वपक्ष बनाओत तँ उत्तर जल्दी आयत, मुदा ओकर फल शास्त्रार्थ नहि, भ्रम होएत।” अतिथि अपन पन्नामे ई नियम लिखौलनि। सभाक जटिलता घटल नहि, किन्तु अपमानक सम्भावना कने घटल।

तखन एगारह बरखक एक शिष्य पुछलक, “मनुष्य जे बुराइ करैत अछि, तकर फल तुरन्त नहि भेटल तँ की ओ अदृष्टक कारण अछि? आ जे निर्दोष दुख पबैत अछि?” उदयन तुरन्त भाग्यक उत्तर नहि देलनि। “अदृष्टक विचारसँ प्रत्येक देखल अन्यायक जिम्मेदारी मेति नहि सकैत छी,” ओ कहलनि। “केकर हाथसँ काज भेल, केकर चोट लागल, एहि जीवनमे जे जाँचल जा सकैत अछि, ओकरा पहिने देखबाक कर्तव्य अछि। अदृष्टपर मतभेद एखन अलग विवाद छी।” अतिथि एहि उत्तरक सीमासँ सहमत छलाह; मूल दार्शनिक विवाद फेरो शेष छल।

एक शिष्य पुछलक जे एहि उत्तरकेँ पोथीमे उदयनक निश्चित सिद्धान्तक अन्तिम वचन कहि लिखी? उदयन उत्तर देलनि, “एतय जे संवाद भेल, ओकरा आजुक सभाक निर्णय कहि लिखू। हमर शास्त्रक प्रमाणित पाठक पाँति बनौने बिना उद्धृत नहि करू।” ओ पन्नाक दहिना कोनामे छोट चिन्ह देलनि, जाहिसँ ओ शास्त्रार्थक कल्पित अभिलेखक भीतर अपन ठामपर रहए। एहन लिखावटमे प्रश्नक सम्मान छल, भविष्यक पाठककेँ भ्रमित करबाक इच्छा नहि।

विदेहपुरमे हेमा विद्यालयक इतिहास-पाठ लेल नव प्रस्ताव लिखि रहल छलीह। हुनकर पहिल वाक्य छल—‘पुरान पोखरि-उराहिमे स्त्रीसभक योगदान।’ हरिमोहन पुछलनि, “एहि सँ आगाँ की?” हेमा दोसर वाक्य लिखलीह—‘उपलब्ध पन्नासभमे सभक नाम पूर्ण नहि; जे नाम स्पष्ट अछि, ओहि तक प्रमाणित सूचीक विस्तार।’ ओ नामक जगह पर किछु रिक्त चिह्न बना देलीह, मुदा लिखि देलीह जे ई रिक्ति साक्ष्यक कमी अछि, श्रमक अभाव नहि।

एक पुरान शिक्षककें ई नव लिखावट पसिन्न नहि पड़लनि। ओ कहलनि, “विद्यालयक दीवारपर विवाद किएक? लोक अपन पुरखा याद करए चाहैत अछि।” हेमा उत्तर देलीह, “हमरो पुरखा याद करबाक इच्छा अछि। मुदा एहि लेल घरक स्त्रीसभकें भुलाएब किएक आवश्यक?” शिक्षक कहला जे अनाम श्रमक नाम जोड़लापर परिवारसभ बीच विवाद भऽ सकैत अछि। हेमा स्वीकार कएलनि—“भऽ सकैत अछि। तँ प्रत्येक नामक स्रोत देब। जे नाम अपूर्ण अछि, ओकरा पूरा कहि नहि लगायब।”

नैराकें विद्यालयक तख्तीकें नामपंजीक निजी दस्तावेजसँ जोड़बाक प्रस्ताव देल गेल। हुनकर जवाब स्पष्ट छल। “सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्ना एहि प्रदर्शनक सामग्री नहि,” ओ कहलीह। “पोखरि-उराहिक सार्वजनिक इतिहास आ जीवित व्यक्तिक सुरक्षा सम्बन्धी अभिलेखक अधिकार अलग अछि।” हेमा तुरन्त सहमत भेलीह। हुनकर प्रश्न स्त्रीक नाम ऐतिहासिक श्रममे जोड़बाक छल; ओ ककरो गोपनीय पहिचानक मूल्यपर ई विजय नहि चाहैत छलीह।

नसीमा नव पट्टीक नमूना तैयार कएलनि। ओकरा लग कागदक दामक छोटी रसीद छल, जकर ऊपर अपन नाम, सामग्रीक मात्रा, काजक समय आ भाड़ा अलग-अलग लिखल छल। विद्यालयक एक स्वयंसेवक कहलक, “एतेक छोट मददमे रसीदक काज?” नसीमा कहलीह, “मदद जे करए चाहए, ओ अपन हिसाबें करए। हमर हुनका सँ काजक बात भेल अछि। ई काम अछि।” हेमा हुनकर रसीदपर प्राप्तिक समय लिखि हस्ताक्षर कएलनि। भुगतानक दिन अलग लिखल गेल; तुरन्त पूरा पैसा भेटल नहि।

दुपहर बाद मीरा बच्चासभकें प्रदर्शनी लग लऽ गेलीह। जतन पुरान पोखरिक चित्रमे लम्बा बाँस देखलक। ओ कहलक, “ई बाँस कियो लऽ कऽ गेल छल?” मीरा उत्तर देलीह,

“हँ, केकरो हाथे। एहि चित्रमे ओ हाथ नहि देखाइत।” बिरसी पुछलीह, “तखन चित्र अधूरा अछि?” मीरा कहलीह, “चित्र अपन देखाओल भागमे पूरा भऽ सकैत अछि, मुदा जे बात हमरा जानबाक अछि से केवल चित्रसँ नहि भेटैत।” बिरसी एहि उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि भेलीह, मुदा ओकरा नव प्रश्न भेटल।

सरिता विद्यालयक चौकीपर साँझक खेनाइ लेल साग छाँटि रहल छलीह। हेमा हुनका पुछलीह जे १९३९ केर उराहिक पन्नाक कहानी परिवारमे के सुनौने छल। सरिता कहलीह, “हमर जनमसँ पहिनुक बात अछि। पाछाँक लोकक मुँहसँ सुनल स्मृति अछि; कागद पर जे पढ़ल जाइत अछि, ओकर संग सबटा बराबर नहि।” हेमा ई वाक्य लिखि लेलनि —‘मौखिक स्मृति: पृथक् स्रोत।’ सरिता हँसि पुछलनि, “एहि पर हमर नाम लिखबह?” हेमा कहलीह, “जँ अहाँ अनुमतिदेब, तखन।”

ओहि ठाम सोमरी हेम्ब्रम अपन अनुबन्धक चारि प्रश्नक प्रति लऽ कऽ एलीह। नसीमाक कागद-बाँधन देखिकऽ ओ पुछलीह जे एहि लग पन्ना सुरक्षित रखबाक काज कएल जा सकैत अछि की। नसीमा कहलीह, “होएत, मुदा हम अनुबन्धक अर्थ नहि बुझाओत। ओहि काजक अनुवादक अलग देय अछि।” सोमरी मुस्कुरौलीह। “हमरो एतबे चाही जे जकरा जे काज आबैत अछि, ओकर नाम लिखल जाए।” हुनका सभक बीच कोनो दीर्घ उपदेश नहि भेल; सूतक गाँठ कसल गेल आ कागदक किनार सीधा भेल।

हेमाक आवेदनक उत्तर ओहि साँझ नहि आएल। विद्यालयक प्रभारी मात्र लिखि देलनि जे संशोधित इतिहास-पाठक नमूना अगिला समितिमे देखल जाएत। हेमा तखनी तत्काल बदलि देबाक आग्रह नहि कएलनि। ओकर बदला पन्नाक नीचे नसीमासँ एकटा अस्थायी पट्टी लगबौलीह—‘ई चित्र आ नामावली अपूर्ण स्रोतपर आधारित अछि; संशोधनक जाँच चलि रहल अछि।’ खाली शब्दक जगह बुझबाक अपन वचन ओ राखि सकलीह। नामक निर्णायक प्रकाशन एखन बाँकी छल।

राति पुरान कालक अध्ययनस्थलमे शास्त्रार्थक दुनू पन्ना बंद भेल। उदयन अतिथिक लिखल प्रश्नक प्रति हुनकें पढ़ि सुनौलनि। अतिथि दू शब्द सुधरौलनि—‘अनिवार्य’ आ ‘पर्याप्त’। शिष्य बदलल शब्द फेर लिखलक। तखन उदयन कहलनि, “आइ पक्ष आ आपत्ति सुरक्षित भेल। उत्तरक बाट एतयसँ आरम्भ होएत।” अतिथि प्रस्थानक समय

कुम्हारक सुखाएल घट देखलनि। ओ घटक दाम पुछलनि आ अपन जलक पात्र लेल एकटा चुनलनि। सिद्धान्तक निष्कर्ष शेष छल; घटक खरीद-बिक्री पूरा भेल।

विदेहपुरमे हेमा घर घुरबाक पहिने विद्यालयक भिजल तखी फेर दीवारपर चढ़ौलीह। नसीमा ओकरा पाछाँ सूतक गाँठ कसि देलीह। हेमा रसीदकेँ इतिहासक पन्नासँ अलग बहीमे रखलीह, ताकि श्रमक भुगतान फेर अनाम नहि भऽ जाए। जतन अस्थायी पट्टीक अक्षर अटकैत पढ़लक। बिरसी कहलीह, “एतय ‘अपूर्ण’ लिखल अछि; फेर पढ़ब?” हेमा उत्तर देलीह, “हँ। जखन नव पन्ना आएत, तखन फेर पढ़ब। पुरान गलतीकेँ नुकाएब नहि।”

नैरा लौटैत समय ओसारक बाहरी देवालपर पड़ल दू छाँह देखलीह—एक तख्तीक, एक बाँसक टेकक। दुनू छाँह एक-दोसरासँ मिलैत छल, मुदा वस्तु अलग छल। ओ अपन पुरनाधारक निजी अनुभवकेँ एहि दृश्यसँ सिद्ध करबाक प्रयास नहि कएलीह। अगिला दिन हुनका दू मिलैत चेहराक फोटो जाँचबाक छल; एक्के रूप देखब आ एक्के व्यक्ति मानब बीच जे दूरी अछि, ओकरा भरबाक काम एखन बाँकी छल। भीतर विद्यालयक नव पट्टी हवा लगिते हलुक हिलल, आ नसीमाक कसने गाँठ अपन ठाम अटल रहल।

अध्याय ३५ • गवयक पहिचान

विद्यालयक ओसारमे रातिभरि लटकल तख्ती उतारल जा रहल छल। नसीमाक बान्हल सूतक गाँठ ठीक छल, मुदा बगलमे चिपकल एकटा नव कागद हवा लगिते फड़फड़ा रहल छल। ओ कागद विद्यालयक नहि, हाटक खोज-दलक छल। ओकर ऊपर दूटा धुँधल छवि चिपकाओल गेल छल—एकटा बस-अड्डाक, दोसर पछियारी गलीक। दुनू मे एक-एक आदमीक आधा चेहरा देखाइत छल। बीचमे लाल स्याहीसँ लिखल छल—‘एक्के आदमी?’ नीचाँ कियो अपन हाथे जोड़ि देने छल—‘मिथुनक विषयमे पूछताछ’। मीरा मंडल तख्ती सम्हारैत रुकि गेलीह। ओ पहिने बच्चासभकेँ ओ कागद पढ़ए नहि देलीह।

जतन बाहरक माटिपर रेखा खींचैत छल। बिरसी काल्हिक पाठक पन्ना सुखए लेल धूपमे रखने छलीह। दुनूकेँ लाल स्याही देखिकऽ उत्सुकता भेल। “ई फेर बच्चा-चोरक तस्वीर अछि?” जतन पुछलक। मीरा कागदक कात अपन हथेली राखि कहलीह, “एखन ई दूटा तस्वीर अछि, आरोप नहि। ककरो नाम लिखबाक पहिने स्रोत देखबाक अछि।” बिरसी पुछलीह, “चेहरा मिलैत अछि तँ आदमी एक्के किएक नहि?” मीरा उत्तर देलीह, “एक्के सन लगब आ एक्के होएब अलग बात छी। आइ एहि पर पाठ होएत।”

नैरा ओतय पहुँचल तँ हुनकर हाथमे एकटा पातर फाइल छल—मिथुनक खोजमे स्वयंसेवकसभ जुटौने सूचनाक प्रति। मूल शिकायत लताक लग आ औपचारिक जाँच अपन अलग बाटपर छल। ई फाइल लोकक आपसी सहयोगक लेल बनल छल; एहि पर लाल रङक ‘सन्दिग्ध’ लिखि ककरो अपराधी बना देबाक अधिकार नैराकेँ नहि छल। ओ कागद देखिकऽ चकित भेलीह। “ई छवि हमर फाइलक भीतर कोना पहुँचल?” ओ पुछलीह। मीरा कहलीह, “राति कियो बाहर चिपका गेल। विद्यालयक मुहर नहि अछि।”

पहिल फोटोमे बस-अड्डाक चायक दूकानक आधा फट्टा देखाइत छल। दोसरमे एक व्यक्ति पाछाँ घुरैत, आँखिक लग गमछाक छाया सहित छल। छविक तिथि, दूरी आ ककर कैमरा—तीनूमे अन्तर छल। नैरा पन्ना उलटि देखलीह; फाइलमे फोटो आननिहारक नाम नहि, केवल ‘देखल गेल’ लिखल छल। “देखल गेल तँ के देखलक?” ओ पुछलीह। “कियो नहि लिखलक,” मीरा उत्तर देलीह। नैरा कने देर चुप रहल। महेशक बात जल्दी

प्रकाशित कएलाक समय हुनका एहि ठामें सभसँ पैघ भूल भेल छल—कागदक खाली जगहक भीतर आश्रुति भरि देने छलीह।

ओहि समय रेलचौक दिससँ रेवा गुलगुलिया अएलीह। एक हाथमे जतनक छोटी कापी, दोसरमे बिरसीक भिजल पन्ना छल। डेरा फेर बदलबाक चर्चा रातिसँ चलैत छल; बगलमे रास्ताक पानि भरल रहए। रेवा मीरा लग ठाढ़ भऽ कहलीह, “काल्हि प्रधानसँ भेटबाक समय कहल गेल छल। बच्चासभक नाम एखनहुँ कक्षा-पंजीमे अछि, विद्यालयक दाखिलामे नहि। जे घर नम्बर माँगैत छथि, हुनका हम कोन घर देखाबी?” ओहि प्रश्नमे क्रोधसँ बेसी थकान छल। बच्चासभ ओहि बीच अपन लिखल अक्षर देखए चाहैत छल।

मीरा विद्यालयक छोट कार्यालयसँ निकालल पत्र देखौलीह। ओहिमे पता-सत्यापन शेष लिखल छल। “हम अहाँकेँ काल्हियो पढ़बासँ नहि रोकलहुँ,” मीरा कहलीह, “मुदा लिखित प्रवेशक आदेश नहि भेटल तँ हमर ओसारक कक्षा विद्यालयक नामांकन नहि बनत।” रेवा कापी गोदमे राखि पुछलीह, “तँ बचपन अपन ठाम रहत आ ठाम बदलैत हम घूमैत रहब? बच्चाक उमेर घरक खूँटापर बान्हल नहि अछि।” मीरा ई बात सुनि घड़ी देखलीह। प्रधानक बैसार शुरू होएबामे एखन किछु समय छल। ओ बच्चासभकेँ संग लऽ जेबाक बदला पहिने रेवासँ पुछलीह जे हुनका सभक फोटो अथवा व्यक्तिगत कागद कतय धरि देखाओल जा सकैत अछि।

ओसारक मोड़पर एक नव स्त्री डोलची आ कागदक ट्यूब राखि रहल छलीह। डोलचीमे चून नहि, पातर धुलल काठक पट्टिसभ छल। हुनकर नाम राजो भोगता छल। ओ विद्यालय आ रेलचौकक बीच छोट घरमे अस्थायी रूपसँ रहैत छलीह; शहरमे जगह बदललाक कारण पुरान ग्राम-निवासक प्रमाण आ एखनक किराया-रसीद अलग-अलग पता देखबैत छल। विद्यालयक सामग्री ढोएबाक काममे हुनकर दू दिनक मजदूरी सेहो बाँकी छल। ओ मीरा लग एकटा आवेदन लऽ कऽ एलीह। “हम विद्यालय-सहायताक सूचीमे नाम देलहुँ,” ओ कहलीह, “कार्यालय कहलक जे दू पता अछि, तँ कागद मिलैत नहि। मुदा दू जगह रहबाक अर्थ दू मनुष्य होएब तँ नहि?”

राजोकेँ स्वर सुनि रेवा पाछाँ घुललीह। ओ पुछलीह, “अहाँक कागदमे पहिल घर अछि?” राजो कहलनि, “हँ। ओहि ठाम हमर लोक एखनहुँ छथि। एहि ठाम हमरा काज भेटैत

अछि। एक ठामक पते दोसर ठामक कमाइ मेटि देत, ई कोन हिसाब?” मीरा राजोक पुरान प्रमाणक नकल आ नव भाड़ा-रसीद अलग-अलग देखलीह। राजो हाथ बढ़ा कऽ रोकलीह —“पहिने लिखू जे ई कागद ककरा लेल देखबैत छी। पिछला बेर नकल देलहुँ तँ ओकर फोटो ककर फोनमे गेल, नहि बुझलहुँ।” नैरा तुरन्त खाली कागदपर निरीक्षणक उद्देश्य लिखलीह; राजो पढ़ि सहमति देलाक बादे प्रति देखौलीह।

एहि बीच बाहरक लाल कागदक बात फैलि गेल। हाटक एक दुकानदार विद्यालय दिस अएला। ओ कहलनि जे दुनू छविमे एक्के गमछा, एक्के गालक रेखा देखाइत अछि; एकरा जाँचसँ हटाओल गेल तँ दोषी बचि जाएत। नैरा पुछलीह, “दुनू छविक मूल फाइल अहाँ देखलहुँ?” दुकानदार माथ हिलौलनि। “नहि। मुदा आँखि तँ अछि।” राजो ओहि तर्कपर हँसलीह नहि। ओ अपना हाथक पट्टी उठा दूकानदारक लग रखलीह। “ई दू पातर काठ देखू,” ओ कहलीह, “एकटा विद्यालयक खिड़कीक, दोसर बेच्चक। रड आ चौड़ाइ मिलैत अछि। एहि आधारपर खिड़की बेच्च बनि जायत?” दुकानदार कहला, “ओ काठ अछि, मनुष्य नहि।” राजो शान्त स्वरमे उत्तर देलीह, “तँ मनुष्यक विषयमे आरो सावधानी चाही।”

मीरा बच्चासभक पाठक लेल पहिनेसँ एकटा पुरान उदाहरण सोचने छलीह। ओ फट्टापर ‘गवय’ लिखलनि। जतन पढ़बामे अटकल तँ बिरसी अपन ढङ्गसँ अक्षर जोड़ि देलीह। मीरा कहलीह, “मानू कियो जंगल जाएबला लोक अहाँकेँ कहए—गवय गायसन एकटा प्राणी अछि। बादमे अहाँ वनमे एकटा अपरिचित प्राणी देखू, आ सुनल वर्णनक स्मरणसँ बुझू जे ‘गवय’ शब्द कोन वस्तु लेल कहल गेल। एहि सम्बन्धकेँ उपमानक चर्चामे बुझाओल जाइत अछि। एतय गाय आ गवय एक्के प्राणी भऽ नहि गेल।” जतन पुछलक, “तँ गायसन होइतहुँ ओकर नाम दोसर?” “हँ,” मीरा कहलीह, “आ एहि उदाहरणसँ कोनो दू मनुष्यक एक्के पहिचान निश्चित करब तँ आरो गलती।”

हरिमोहन पाठक भीतरसँ अएलाह। ओ सुनलनि जे बच्चासभ ‘गवय’ बाजि-बाजि हँसि रहल अछि। जतन एक बेर ‘गवैया’ कहि देलक तँ राजो मुस्करा उठलीह। “गवैयाकेँ नहि बुलाउ,” ओ कहलीह, “ओ आएत तँ गान सुनाबए दामो माँगत।” बच्चासभ हँसल। हरिमोहन फट्टापर दू स्तम्भ बनौलनि—‘शब्द-वस्तुक सम्बन्ध’ आ ‘व्यक्तिक पहिचान’।

“पहिलमे सादृश्य उपयोगी संकेत भऽ सकैत अछि,” ओ कहलनि, “दोसरमे केवल चेहरा मिललासँ नाम, घटना आ अपराध सिद्ध नहि होइत। फोटो कोन दिन, कोन ठाम, ककर कैमरा, आ व्यक्तिक स्वतंत्र पुष्टि—ई अलग जाँच अछि।”

बहुत पहिनुका मिथिलामे, गङ्गेशक अध्ययनक समय, एक विद्यार्थी गवयक उदाहरण लिखि रहल छल। ओकरा सुनल वाक्य याद छल—गायसन प्राणीक नाम गवय। ओ पूछलक, “जँ हम गायसन आकृति देखिते गवय कहि दिअ, तँ हमर ज्ञान पूरा?” शिक्षक पहिने ओकरा सुनल वाक्य आ देखल वस्तु अलग कहलनि। “वाक्य कोन भरोसाक व्यक्तिसँ सुनलहुँ, अपरिचित वस्तु सचमुच ओही वर्णनसँ कोना मेल खाइत अछि, आ शब्दक सम्बन्ध कोना बुझलहुँ—ई सभ पूछू। गौक एकटा विशेष चिन्ह देखिकऽ प्रत्येक जंगली जन्तुकें गवय नहि कहि सकैत छी।”

शिष्य पुछलक, “तखन एकटा गवय देखलाक बाद दोसर गवय देखी तँ?” गुरु उत्तर देलनि, “तखन अहाँ वस्तुक वर्ग आ व्यक्तिक भेदक प्रश्नमे पहुँचब। एहि शास्त्रार्थक प्रयोजन ‘गवय’ शब्दक अर्थ बुझब अछि, चोर पकड़ब नहि। एकर सीमा पहिने जनू।” ओहि दिनक कापीमे एकटा उपमा लिखल गेल आ ओकर नीचाँ आपत्तिक लेल ठाउँ छोड़ल गेल। शास्त्रार्थक वाक्य अपन कालक प्रश्न छल; बहुत बादक विदेहपुरक तस्वीर ओकर प्रमाण नहि बनि सकैत छल।

विदेहपुरमे प्रधानक कार्यालयक दुआर खुलल तँ मीरा रेवा, राजो आ बच्चासभकेँ संग लऽ गेलीह। लिपिक राजोक कागद देखिकऽ तुरन्त कहलक, “दू पता छैक। सहायता रोकल जाएत।” राजो पुछलीह, “कौन सहायता, कोन नियमक आधारपर? हमर ढुलाईक मजदूरी एहिमे किएक जोड़ल गेल अछि?” लिपिक फाइल पलटलक। सामान ढोएबाक रसीदक एक संख्या सहायता-आवेदनक कात चढ़ि गेल छल; ओकर नाम एक्के रहलासँ दुनू खाता जोड़ल गेल। मीरा कहलीह, “ई प्रविष्टिक सम्बन्ध पहिने जाँचू। एतय राजो एकटा श्रमिक छथि, दोसर ठाम आवेदनक पात्र। नकलक पाना एक होइतहुँ हिसाबक उद्देश्य दोसर अछि।”

प्रधान कहलनि जे सहायता देबाक पात्रताक नियम अलग जाँचल जाएत, मुदा ढुलाईक मजदूरीक रसीद सहायता-आवेदनमे रखनाइ गलती छल। राजो दुनू पन्ना अलग

करएबापर जोर देलीह। कार्यालयमे उपस्थित एक कर्मचारी पुछलक, “एतेक छोट रकम लेल विवाद?” राजो अपन डोलची उठबैत कहलीह, “छोट रकम अहाँक मेजपर अछि; हमर घरे पहुँचि ओहीसँ नोन आ तेल आओत।” प्रधान भुगतान-विभागकँ अलग रसीदक जाँच लेल लिखित निर्देश देलनि। मजदूरी आइ हाथमे नहि अएल, मुदा सहायता-फाइलमे ओकरा संदेहजनक लेनदेनक रूपमे रखबाक आधार हटि गेल।

रेवाक बारी अएल तँ कार्यालयमे फेर स्थायी पता पुछल गेल। ओ जतनक कापी खोलि देलीह। “एहि कापीमे बच्चाक नाम अछि; घरक संख्या नहि,” ओ कहलीह। “हम झूठक संख्या नहि लिखब। पहिने जतेक ठाम पढ़लक, ओहि पर्चीक प्रति अछि। अहाँ जे सत्यापन चाहैत छी, ओकर वैकल्पिक रास्ता लिखि दिअ।” लिपिक कहलनि जे प्रक्रिया बिना प्रवेश नहि होएत। मीरा उत्तर देलीह, “हम प्रक्रियाक विरोध नहि करैत छी। प्रक्रिया एहन हो जे चलैत घरक बच्चा बाहरे नहि रहि जाए।” प्रधान मुँह फेरि कापीक पन्ना देखलनि—जतनक उलटल ‘ज’ आ बिरसीक सीधा ‘ब’।

“ई विद्यालयक नियमित हाजिरी नहि,” प्रधान कहलनि। “हँ,” मीरा उत्तर देलीह, “आ एहने कक्षाकँ नियमित नामांकन कहि देलासँ गलत हिसाब बनत। मुदा जतेक दिन निर्णय शेष अछि, बच्चासभकँ पाठसँ किएक वञ्चित रखब?” प्रधान अस्थायी कक्षाक उपस्थिति आ नामांकन-निर्णय अलग पंजीमे राखबाक लिखित आदेश देलनि। औपचारिक दाखिला एखन नहि भेल; वैकल्पिक पता-सत्यापनक उपाय आगामी बैसारमे विचारणीय रहल। रेवा कागदक प्राप्ति अपन हाथमे लेलीह। ओ आदेश पढ़ि मुस्कुरौलीह नहि; पहिने प्रश्न कएलीह, “कक्षा काल्हि कतय होएत?” मीरा कहलनि, “एखन ओसारेमे; शहर घुरबाक बाट हम सभ तय करब।”

कार्यालयक बाहर लता भेटलीह। मिथुनक खोजमे ओ पिछला गलीक एक-दोसर घरसँ जानकारी लऽ कऽ अएलीह। हुनकर आँखि लग जागरणक थकान छल। लाल फोटोक बात सुनि ओ सीधा नैरा लग गेलीह। “दूनू मुख एक्के होएबाक सम्भावना अछि ने?” ओ पुछलीह। नैरा उत्तर देलीह, “सम्भावना कहबाक लेल आधार चाही। एहि छविसँ अभी एकटा व्यक्तिक पहिचान सिद्ध नहि होइत। जकरा दोसर चित्रसँ जोड़ि देल गेल अछि, ओकरा अपराध-सन्देहक पन्नामे राखब अनुचित।” लता कने तिक्त स्वरमे कहलीह,

“अहाँ हमर आशा फेर काटि रहल छी?” नैरा कहलीह, “हम आशाकें नहि, एकटा अनुमानकें सीमित करैत छी। मिथुनक खोजक बाँकी ठोस सूचना सभ हम सुरक्षित रखैत छी।”

दुकानदारक हाथमे जे पहिल छवि छल, ओकरा देखिकऽ साजिद सेहो ओतय आबि गेल। साजिद फोटो अपना फोनमे रखबाक बदला पहिने पुछलक जे ई कागदक नकल के देलक। दुकानदार कहलनि, “हमरा बजारक एकटा समूहसँ भेटल। मूल फोन ककर छल, से नहि जानैत छी।” साजिद कागदकें खिड़कीक उजियारमे उठा कऽ देखलक। “एहि छविमे दुकानक आधा नाम अछि,” ओ कहलक, “मुदा एहि नामक फट्टा पिछला मासे बदलल गेल छल की बरख पहिने, से कियो जाँचल? जे घड़ी कोनामे देखाइत अछि, से दुकानक घड़ी सेहो भऽ सकैत अछि, तस्वीर खींचबाक समय नहि।”

मीरा पुछलीह, “तँ फोटो निरर्थक?” साजिद माथ हिलौलक। “नहि। ई एकटा जगहक सूचना देत, संभव अछि दोसर साक्षीसँ मिलान होएत। मुदा एहि कागदसँ कैमरा, तिथि, छाँटलक सीमा वा चेहराक पूरा रूप नहि भेटैत। हमरा लग मूल फाइल नहि, तँ हम ओकर डिजिटल समयो निश्चित नहि कहब।” नैरा एहि बातकें अपन कापीमे ज्योंकात्यों लिखलीह। दुकानदार पहिल बेर कहला, “हम तँ लोकक मदद करए चाहैत छलहुँ।” लता हुनका देखिकऽ कहलीह, “मदद करू। मुदा जे दिन अहाँक अपन बेटा हराएत, तखन ककरो अनजानक चेहरापर ओकर दुःख नहि चिपकाउ।”

मीरा विद्यालयक भीतर सँ दू लोटा पानि अनलीह। दुकानदारक मुँहपर लाज छल; साजिद कागद ओकर हाथसँ छीनने नहि छल। रेवा बच्चासभकें ओसारक पाछाँ खुआएबाक लेल चिउड़ा निकालि रहल छलीह। राजो अपन झोरासँ छोट डिबियामे राखल गुड़ देलीह। जतन गुड़क आधा टुकड़ा बिरसीकें दैत पुछलक, “आइ पाठ समाप्त?” मीरा कहलीह, “नहि। आइ तँ सभ प्रश्न खूब पुछलह। आब खा कऽ कापी समेटू।” ओहि क्षणमे लताक मनक पीड़ा नहि मिटलीह, मुदा बच्चासभक कौलाहलमे कने देर लेल सभक स्वर सामान्य भऽ गेल।

लता फोटो देखलीह। पहिल छविमे आदमीक गालक कात सूर्यक उजियार छल; दोसरमे छाया। कपड़ाक रङ सेहो ठीकसँ बुझाइत नहि छल। ओ पुछलीह, “जँ ई मिथुनकें देखलक

होएत?” नैरा कहलीह, “तखन जकरा पहिचान होएत, ओ व्यक्ति साक्षी सेहो भऽ सकैत अछि। बिना जाँचक ओकरा आरोपी बना देब तँ साँच बात पूछबो कठिन भऽ जाएत।” लता धीरेसँ माथ हिलौलीह। ओ पन्ना उतारि फाड़बाक नहि कहलीह; कहलीह, “मूल प्रति सुरक्षित रहए। लाल ‘सन्दिग्ध’ हटाउ। जँ कियो वास्तविक देखनिहार भेटए, ओकर बयान अलग लिखू।”

नैरा मीरा आ लताक सम्मुख सामुदायिक खोज-पंजी खोललीह। ओहि पन्नामे लिखल छल—‘एक व्यक्ति: समान चेहरा, सम्भावित सम्बन्ध’। ओहि पाँतिक ऊपर स्पष्ट सुधार लिखलीह—‘पहिचान अप्रमाणित; अपराध-सन्देहक रूपमे उपयोग रोकल’। छविक स्रोत अनिश्चित रहबाक सूचना अलग देलीह। मूल छविक प्रति छेड़ने बिना सुरक्षित लिफाफामे राखल गेल, ताकि समय आ स्रोतक जाँच सम्भव रहए। सार्वजनिक नोटिसपर ककरो मुख नहि लगाओल जाएत। औपचारिक जाँच करनिहार अधिकारीकेँ सुधारक प्रति देबाक लेल लता अपन लिखित सहमति देलीह।

मीरा फट्टा फेर बाहिर अनलीह। जतन ओकरा पुछलक, “तखन फोटोमे आदमी चोर नहि छल?” मीरा उत्तर देलीह, “हमरा नहि बुझल जे ओ आदमी के छल। जे नहि बुझल, ओकरा चोर कहब गलत। आ जकरा गलत कहल गेल, ओकरा सुधरबाक लेल बड़का समाचारक प्रतीक्षा नहि करबाक चाही।” बिरसी अपन घरक चित्रक कात एकटा दोसर घर बनौलीह। “दू घर एक्के सन बनल अछि,” ओ कहलीह। “हम कहि सकैत छी जे दुनूमे हम रहैत छी?” रेवा हँसलीह। “तों रहि सकैत छह; मुदा चित्रसँ पता नहि चलत जे आइ कतय सुतब। ओ हम कहब।”

राजो कार्यालयसँ निकललाक बाद अपन काठक पट्टी विद्यालयक बाहर रखलीह। ओ नसीमाकेँ तख्तीक नव किनारक कामक हिसाब देखौलीह। “दूनु कागद अलग भेल,” ओ कहलीह, “मुदा हमर दाम फेर गिनबाक अछि।” नसीमा अपन सूतक गाँठ जाँचैत उत्तर देलीह, “फेर गिनब तखन जखन देनिहार सामने रहत। अन्यथा कल्हि कहत जे सहायतेक काज छल।” राजो कहलीह, “आब हम रसीदपर स्पष्ट लिखाएब जे काजक ठाम अस्थायी अछि, मजदूरक नाम स्थिर।” दूनु स्त्री अपन-अपन औजार समेटि लेलनि।

साँझ प्रधानक एक कर्मचारी मीरा लग छोट पत्र लऽ कऽ अएल। पत्रमे अस्थायी शिक्षण-शिविरक सार्वजनिक ठाम, भाषा-सहायता आ सुरक्षित आवागमनक योजना मँगाओल गेल छल; विद्यालयक गाड़ी एखन उपलब्ध नहि। पद्मा केँ कक्षा-संवादक माध्यम चाही, संकेतक उपकरणपर ओकर अपन शर्त अछि—मीरा जानैत छलीह जे एहन योजना हुनकासभक सहमति आ पारिश्रमिक बिना नहि बनत। ओ रेवासँ कहलीह, “अगिला बैसारमे अहाँ स्वयं रहब। हम अपन हिसाबेँ बच्चासभक घर तय नहि करब।” रेवा बच्चासभक हाथ पकड़ि ओसारक कात बैसि गेलीह। काल्हिक बाट तखन तक कागदपर नहि, लोकक बीच तय होएबाक छल।

ओहि राति नैरा अपन कापीमे तीन पाँति लिखलीह—‘सादृश्यः देखल’; ‘पहिचानः अप्रमाणित’; ‘अपराधः असिद्ध’। ओकर नीचाँ लताक अनुमति सँ खोज जारी रहबाक समय आ सम्पर्कक ठाम लिखलीह। सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्ना एहि कापीक हिस्सा नहि छल; ओ अपन देखरेखमे अलग सुरक्षित छल। नैरा बाहर देखलीह। विद्यालयक देवालपर फट्टाक दू छाँह पड़ल छल—एक नव, एक पुरान। दूरसँ देखला पर दुनू एक्के सन; लग गेलापर एकर कील नव चमकैत छल, दोसरमे पुरान जंग छल। ओ छाँहकेँ प्रमाण नहि मानलीह। भीतर बिरसी आ जतन अपन-अपन कापी सम्हारि रहल छल। ओहि राति हुनका सभक नाम कोनो आरोपक कागदमे नहि, पढ़बाक कापीमे रहल।

अध्याय ३६ • बाहरक पाठशाला

विद्यालयक ओसारमे जतन तीनटा ईंट जोड़ि अपन कापी रखबाक चबूतरा बनौने छल। बिहानक पानि उतरि गेल छल, मुदा धरती एखन ओल छल। चबूतराक एक कात ईंट धँसि गेल तँ ओकर कापी फिसलि माटिमे पड़ल। बिरसी कापी उठा कऽ पन्ना झाड़लक आ कहलक, “अहाँ हमर लिखल ‘ब’ सेहो मेटि देलहुँ।” जतन उत्तर देलक, “हम कहाँ मेटलहुँ? ईंट धँसल।” मीरा मंडल दुनूकेँ देखैत छलीह। पढ़ाइक ठाम कतेक अस्थायी अछि, एहि बातक लेल आब कोनो अलग प्रतिवेदन चाही नहि छल; ओ माटिसँ उठाओल कापीक भीजल कोना देखला मात्रसँ बुझाइट छल।

साँझ विद्यालय कार्यालयसँ भेटल पत्र ओ अपन झोरामे रखि अनने छलीह। पत्रमे नगर घुमि पढ़ौनिहार अस्थायी दलक बाट, भाषा-सहायता, सुरक्षित आवागमन आ काजक खर्च लिखबाक छल। औपचारिक नामांकनक निर्णय ओ पत्र नहि छल। रेवा गुलगुलिया कापीक ढेरी लग बैसल छलीह। “जतन एहि ओसारपर तखने पढ़त जखन शहर एहि ठाम आयत?” ओ पुछलीह। मीरा कहलीह, “जँ हम अहाँक घर लग जाइत छी, तँ दोसरक घर घुरबाक समय के तय करत?” रेवा उत्तर देलीह, “जे सभ जाएत, ओ सभ। हमरा सभसँ बिना पूछने पक्का बाट लिखि देब तँ फेर ओही झंझट।”

पद्मा आएलखिन तँ हुनकर झोरामे दूटा फट्टा, चूनसँ बनल चित्र आ छोट-छोट गत्ता छल। ओ विद्यालयक ओसार देखिकऽ पहिने बच्चासभकेँ नहि, मीरा केँ पुछलनि, “हमरा आइ कोन काज लेल बजाओल गेल अछि—कक्षा चलएबाक लेल कि बैठकक भाषा बुझएबाक लेल?” मीरा कहलीह, “दुनू चाहैत छी।” पद्मा उत्तर देलनि, “तँ दुनूक समय आ मेहनताना अलग लिखू। जखन हम एक बच्चाक संकेत बुझबैत छी, तखन ओ हमरा लग अपना बात पहुँचबैत अछि; हमरा सभक मुफ्त मुख नहि मानू।” मीरा अपन कापी खोललीह। ओ एहि आपत्तिक उत्तरमे कोनो प्रशंसा नहि देलीह; खाली पन्नापर दू अलग पाँति बना देलीह।

संकेत पाछाँसँ छोट कपड़ाक थैलामे फोन आ एकटा पुरान स्पीकर लऽ कऽ आएल। ओकर स्क्रीनक किनार फूटल छल, मुदा ध्वनि ठीक चलैत छल। ओ उपकरण ओसारक

बीच नहि रखलक। पद्मा पूछलनि, “एतय सभकेँ ई बजाउब जरूरी अछि?” संकेत कहलक, “पहिने हम देखब जे के सुनए चाहैत अछि। कियो नहि चाहत तँ नहि बजत।” एकटा बच्ची दूर बैसल छलीह; तेज आवाजसँ ओकरा कठिनाइ होइत छल। पद्मा हाथक संकेत आ लिखल चित्रसँ ओकर पसिन्न बुझलीह। बच्ची स्पीकरक बदला फट्टापर बनल बाटक चिन्ह चुनलक। संकेत स्पीकर फेर थैलामे राखि देलक।

शहर घुमबाक पहिल नक्शा बनएबाक लेल सभकेँ राजइनार दिस जेबाक छल। ओतयसँ विद्यालय, अस्थायी बसेरा आ उपचार-कक्ष दिस तीन बाट छुटैत छल। चबूतराक कात पुरान जंगला पिछला मरम्मतिक अस्थायी रस्सीसँ घेरल गेल छल। रस्सीक गाँठ एखन छल, मुदा कियो ओहि पर लादल बोरा टिका देने छल; एकटा खूँटा झुकि गेल छल। रेवा जतनक हाथ पकड़ि ओकरा पाछाँ खींचलीह। “पहिने बाट तय करू, फेर बच्चासभ अएत,” ओ कहलीह। ललित मरम्मतिकाज लेल बजाओल गेल रहथि। ओ झुकि कऽ खूँटाक पाछाँक माटि देखलनि आ कहलनि, “जंगला ढील होएबाक बात हम पहिने लिखने छी। खाली डोरी फेर कसि देब सँ पक्का मरम्मत नहि भऽ जायत।”

ओहि समय मदन राउत अपन छोट वाहन लऽ कऽ पहुँचलाह। वाहनक पाछाँ मोड़ि राखल बेज्ज, टूटा रस्सी आ औषधि-ढुलाईक खाली पेटी छल। ओ विद्यालयक सामान कखनो-कखनो ढोअबैत रहैत छलाह, मुदा प्रत्येक बेर भाड़ा आ समय अलग हिसाबसँ तय होइत छल। मीरा हुनकासँ पुछलीह, “बच्चासभकेँ सप्ताहमे दू दिन एहि बाटसँ लऽ जा सकब?” मदन बेज्ज खोलबाक बदला पहिले अपन समयक कापी देखलनि। “बिहान रोगी लऽ जाएबाक बोलाहट आबि गेल तँ बच्चाकेँ आधा बाटमे नहि छोड़ि सकैत छी,” ओ कहलनि। “आ बच्चा चढ़ा लेने रहब तँ रोगीक लेल गाड़ी तुरन्त फेरबो सम्भव नहि। ई दुनू काजक वचन अलग चाही।”

रेवा पुछलीह, “तखन हम गाड़ीपर भरोसा कोना करी?” मदन उत्तर देलनि, “पहिने तय करू जे कोन दिन नियमित फेर, कोन दिन उपचारक आपातकालीन बाट। जखन आपातकाल होएत, तखन विद्यालयक दोसरा साधनक व्यवस्था के करत? गाड़ी कहला मात्रसँ काज नहि चलत।” संकेत अपन फट्टापर लाल आ नील दू पट्टी बनौलक। पद्मा रोकलनि, “लालक अर्थ खतरा सभकेँ समान बुझाइट हो, से निश्चित नहि। रंगक संग शब्द

आ चिन्हो चाही।” संकेत दू पट्टीक नीचाँ लिखलक—‘विद्यालयक फेर’ आ ‘रोगी-ढुलाई’। मदन अपन भाड़ाक दू दर अलग लिखबौलनि; विद्यालय लेल दाम घटाओलनि, मुदा तेल आ चालकक मजदूरी मेटाएल नहि।

समीपक गलीसँ सरस्वती ठाकुर अपन कंघी, कैची आ कपड़ाक पट्टी भरल झोरा लऽ कऽ एलीह। पिछला राति अस्पतालक परिजनसभक कामसँ हुनका देरी भेल छल। हुनक बेटी ओहि दिन स्कूलक ओसारमे उपकरणक टूटल तारक चित्र बना रहल छलीह। सरस्वती पूछलनि, “एतय पढ़ाइ होएत कि बच्चासभकेँ फेर हमर काजक झोरामे लौटा देब?” मीरा कहलीह, “एतय सभकेँ अपन बाट कहबाक ठाम चाही।” सरस्वती अपन बेटीक चित्र देखलीह। “हमरा लग ई कैची अछि, तकरा कारण ओहो एहीसँ कमाइ करत, से कियो किएक मानैत अछि? ओकरा उपकरण खोलि देखब नीक लगैत अछि। हम ओहि प्रशिक्षणक खबर चाहैत छी।”

विद्यालयक एक कर्मचारी हँसैत कहलक, “मायक हाथक काज सीखि लेत तँ कमाइ तऽ पहिनेसँ छैक।” सरस्वती ओहि हँसीक उत्तर हँसीसँ नहि देलीह। “काज छोट नहि,” ओ कहलीह, “मुदा ककर काज के चुनत, ई पूछबाक चाही। हम अपन बेटीक शिक्षा लेल हुनकर कमाइक अग्रीम हिसाब नहि बनाओत।” कर्मचारी कहलक जे प्रशिक्षणमे दाम लागत। “लागत,” सरस्वती स्वीकार कएलनि, “तँ हम काजक दू बेलाक समय बदलए चाहैत छी। रातिक अनिश्चित बोलाहट छोड़ि बिहानक निश्चित ग्राहक रखब। आय घटत; मुदा बच्चीक इच्छा मेटा कऽ आय बचाएब नहि।” पद्मा ई वाक्य हुनकर बेटीकेँ साधारण शब्दमे बुझा देलीह। बेटी अपन चित्रपर अँगुरी रखि कहलक, “पहिने हमरा ई तार सुरक्षित जोड़बाक तरीका सीखबाक अछि।”

ओहि घड़ी प्रतिमा राजवंशी एकटा पुरान नकल-बही आ मोड़ल नक्शा लऽ कऽ पहुँचल छलीह। हुनकर परिवार विद्यालयक जमीनसँ जुड़ल पुरान दानक स्मृति राखैत छल; मुदा कोन जमीन, कोन शर्त आ कतेक अधिकार एखन ककरा अछि, से कागद जाँचब बाँकी छल। प्रतिमा विद्यालयक देवालक पाछाँ हालमे गाड़ल लोहेक दू डंडा देखलीह। “एतय कियो बजारक ठेका लेल जमीन नापबाक बात करैत अछि,” ओ कहलीह। “जँ ई विद्यालयक सार्वजनिक उपयोगक भाग अछि तँ बिना जाँचक कियो घेरि नहि सकैत।”

नैरा नक्शा लेबाक पहिने पुछलीह, “ई मूल कागद अछि?” प्रतिमा कहलीह, “नहि, घरमे राखल प्रति। मूलक उल्लेख एहि पन्नाक किनार अछि; ओकर खोज शेष अछि।”

नैरा नकलक कोना पढ़लीह। पुरान सीमाक एक चिन्ह राजइनारक चबूतरासँ मिलैत बुझाइट छल, मुदा आजुक बाट आ ओहि पन्नाक माप एक्के रूपेँ नहि बनैत छल। ललित कहलनि, “पुरान ईंट देखिकऽ मालिकाना नहि ठहरत। ई जंगला ठीक करबाक देय विद्यालयक की नगरक, सेहो निश्चित करू।” प्रतिमा उत्तर देलीह, “मालिकाना लेल हम नकलसँ अन्तिम दावा नहि कऽ रहल छी। मुदा जखन तक जाँच नहि हो, तखन तक बच्चाक बाट घेरबाक अनुमति किएक?” प्रधानक कर्मचारी कहलक जे डंडा निजी जमीनक सेहो भऽ सकैत अछि। नैरा ओकर बातो दर्ज कएलीह। डंडा गाड़निहारक लिखित आदेश आ सीमाक परखल नक्शा माँगबाक आवेदन तैयार होएत, एहि पर सभ सहमत भेलाह।

राजइनारक बाट सँ एकटा वृद्धा पानि लऽ कऽ लौटैत छलीह। ओ कहलनि, “सभ दिन नया कागद बनैत अछि। इनारक पानि पिअए लायक अछि की नहि, से कियो कहत?” मदन उत्तर देलनि, “हम रोगी लऽ जाइत छी, पानिक जाँच नहि करैत छी।” ललित सेहो कहि देलनि जे ईंटक जाँचसँ पानिक सफाई नहि बुझाएत। मीरा पन्नापर दू प्रश्न अलग लिखलीह—जंगला आ चबूतराक सुरक्षा; पानिक परीक्षण आ उपयोगक सूचना। वृद्धा कहलीह, “जाँचधरि बच्चासभकेँ कोन बाट?” प्रतिमा अपन नक्शा समेटैत उत्तर देलीह, “पूर्वक सँकरा गली अछि, मुदा ओतय ठेला जएत नहि।” तखन बाट केवल रेखा नहि, अनेक लोकक अलग देह आ काज बनि गेल।

पद्मा तीन तरहक यात्राक अभ्यास करौलीह। जतनक हाथमे फट्टा आ कापी, रेवाक हाथमे पानिक बरतन, मदनक हाथमे वाहनक चाबी। प्रत्येककेँ ओहि इनारसँ पार जाएबाक बाट अलग चाही छल। संकेत कापीमे तीनूकेँ एक्के तीरसँ नहि देखौलक। ओ फट्टापर छोट चित्र बनौलक—पैदल बच्चा, ठेला, गाड़ी। बच्ची जे पहिने स्पीकर नहि चाहने छलीह, चित्रमे चबूतराक पछिला सँकरा मोड़ देखौलक। ओ अपन हाथसँ घुमबाक इशारा कएलक। पद्मा हुनकर संकेतक अर्थ बुझबाक पहिने हुनकेँ फेर पूछलनि; बच्ची माथ हिलाकऽ चिन्ह सही ठहरौलक। एतय ओकरा सभक सामने बोलबाक बाध्यता नहि छल।

जतन बाटक अभ्यासकें खेल बना देलक। ओ कागदक नाव कऽ चबूतराक एक कात राखलक आ कहल, “ई हमर विद्यालय, ई हमर घर। बीचमे इनारक पानी आएल तँ नाव चलाएब?” बिरसी उत्तर देलक, “तोहर कागदक नाव भीजि कऽ डूबि जाएत। पहिने सूखल बाट ताक।” सभ हँसल, मुदा जतन चुपचाप नाव उठा कऽ दोसर दिशामे रखलक। ओ फट्टापर नव बाट बनौलक आ पुछलक, “तखन हम घूमि कऽ पहुँचब?” पद्मा ओकरा कहलीह, “हँ, मुदा जेकर पएर नहि चलैत अछि, ओकर बाटो एकरा संग बनाब। सभ बच्चा एक्के गति सँ नहि आबैत।” जतनक चित्रमे तेसर रेखा जुड़ल। विद्यालयक नक्शा कागदपर पहिल बेर तीन लोकक अलग यात्रा बुझा रहल छल।

तत्काल उपाय लेल ललित ढील जंगला सँ दू हाथ दूर बाँसक अस्थायी अवरोध बनौलनि। सरस्वती लाल कपड़ाक बचल पट्टी देलीह, मुदा पद्मा कहलनि जे केवल रंग देखाइत रहबाक भरोसा नहि। नसीमाक पहिनुका बाँस-बाँधनक कामक अनुकरण करैत ललित छोट फट्टापर ‘एहि दिस नहि जाउ’ लिखौलनि आ एकटा टेढ़ चिन्ह बनबौलनि। मीरा बच्चासभसँ वाक्य पढ़बौलनि। अवरोध ककरो निजी देवालक बदला केवल जाँचधरि सुरक्षा छल; तकर सूचना मदन आ प्रतिमाक सम्मुख तारीखसहित लिखल गेल। ललित अपन सामग्री आ श्रमक दामक रसीद सेहो बनौलनि। कियो नहि कहलक जे आब इनारक पूर्ण मरम्मत भऽ गेल।

विद्यालयक ओसार घुरलापर समिति बैसल। पद्मा कागदक पहिल पन्नापर अपन कामक सीमा लिखबौलनि—भाषिक सहायता, सुनबाक भिन्न आवश्यकताक अनुरूप संवाद आ बच्चासभक सँगे शिक्षणक अनुकूलन; गोपनीय परिवारक नाम वा आवाजक प्रसारण नहि। ओ कहलीह, “हम जे सुनैत छी, से हमरे सम्पत्ति नहि। जाहि बच्चाक बात अछि, ओकरा आ ओकर परिवारकें अपन बातपर अधिकार रहत।” संकेत अपन फोन बाहर काढ़लक आ विद्यालयक कर्मचारीकें कहलक, “मूल रेकॉर्ड हमर उपकरणमे रहत। बिना पूछने नकल नहि। जँ शिक्षाक लेल चित्र बनाबी, तँ ककरो चेहरा अथवा निजी कागद नहि चढ़त।” कर्मचारी पुछलक, “तखन प्रमाण कोना भेटत?” संकेत उत्तर देलक, “काजक पंजी, उपस्थितिक सहमत विवरण, आ मंजूर कएल साधारण सामग्री—सभटा अछि। बच्चाक चेहरा प्रमाणक एक्के रास्ता नहि।”

रेवा बेटाक नामांकनक प्रश्न फेर उठौलीह। मीरा साफ कहलीह, “एहि धुमन्तु पाठशालाक हाजिरी औपचारिक दाखिला नहि। हम दूनूकें एक पन्नामे मिला कऽ अहाँकें झूठक भरोसा नहि देब।” रेवा कने चुप रहलीह; तखन कहलीह, “मुदा जतन पढि रहल अछि, से कतहुँ लिखल रहए।” पद्मा कहलीह, “ओकर अपन कापी रहत; समिति मात्र कतेक पाठ भेल, तकर सामूहिक हिसाब रखत।” प्रतिमा जोड़लीह, “आ जँ ई सार्वजनिक जमीन भेल तँ ओसारक उपयोगक लिखित अनुमति विद्यालयक होएत, दानक परिवारक मनमानी नहि।” हुनक अपन परिवारक सम्भावित दावाक विरुद्ध एहि वाक्यकें कियो सभामे विशेष प्रशंसा नहि देलक; कर्मचारी ओकरा कार्यवृत्तमे लिखि लेलनि।

मदनक फेरक समयपर मतभेद उठल। विद्यालय चाहैत छल जे गाड़ी सभ दिन बिहान आठ बजे उपलब्ध रहए; मदन कहैत छलाह जे रोगी लेल राखल गाड़ीपर ई वचन नहि देब। एक अभिभावक पुछलनि, “अचानक उपचारक जरूरत पड़ल तँ बच्चासभकें पैदल छोड़ि देब?” मदन कहला, “नहि। तँ पहिनेसँ दोसर साधनक नाम, सम्पर्क आ भाड़ा तय करबाक अछि। हमरा एकटा गाड़ी दू जगह नहि रहि सकैत।” मीरा प्रस्ताव रखलीह जे पहिल दू फेर पैदल दूरीक सुरक्षित ठामपर हो, जे सभ बच्चा चलि नहि सकैत अछि तिनकर अलग पहुँच-योजना बने, गाड़ी चाही तँ मदनसँ पहिनेसँ निश्चित दिवसक अनुबन्ध हो। पद्मा जोड़लनि जे दूरसँ पहुँचनिहारक खर्च नकारि कऽ कक्षाकें सबहक लेल खुलल नहि कहल जाए।

सरस्वतीक बेटी एहि बीच संकेतक पुरान स्पीकरक तारक चित्र फेर बनौने छलीह। संकेत ओकरा उपकरण छुअबाक अनुमति नहि देलक; पहिने स्विच बन्द करब, तार हटाएबाक पूर्व सुरक्षा बुझब, ई सभ देखौलक। बच्ची कहलक, “हम अभ्यास लेल टूटल वस्तु चाही, चलैत चीज नहि।” सरस्वती सुनि कऽ हँसलीह। “अहाँक ई बात हमरा ग्राहककें सेहो कहबाक चाही,” ओ कहलीह, “हाथमे कैची अछि तँ सभ बाल तुरन्त कातरू, से नहि।” माँ-बेटीक बीच एकटा छोट निश्चय भेल—अगिला सप्ताह प्रशिक्षणक सूची पूछल जाएत आ सरस्वती अपन कामक समय कने बदलतीह। आवेदनक फीस एखन जुटल नहि छल। अपन काज बदलबाक पहिल निर्णय, मुदा, ओ दूनू मिलि लेने छलीह।

नैरा अस्थायी पाठशालाक कागदपर नजरि देइत रहलि। तीन पंजी हुनका ओही झोरामे दिखाइत छल—बच्चाक पाठ, इनारक मरम्मति, आ घुमन्तु दलक यात्राक सूची। ककरो नाम गलत ठाम चढ़ि गेल तँ पहिल गलती फेर घुरि सकैत छल। ओ मीरा केँ कहलीह, “नामांकनक आवेदन केवल विद्यालयमे; बाटक नक्शा सार्वजनिक होएत तँ घरक सटीक ठिकाना हटाएल जाए; इनारक कार्यवृत्तमे मात्र काम, खर्च आ जिम्मेदार व्यक्ति।” मीरा सहमति देलीह। मिथुनक खोज-पंजी ओहि बैसारमे खोलल नहि गेल; लताक स्वीकृत सम्पर्क आ वास्तविक खोज अपन अलग व्यवस्थामे रहल। सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्ना एतय उपस्थितो नहि छल।

साँझ होएत प्रधानक कर्मचारी छोट उत्तर लऽ कऽ आएल। ओ लिखलनि जे विद्यालयक बाहरी ओसार पर पढ़ाइ चलैत रहबाक अस्थायी व्यवस्था बाधित नहि कएल जाएत, मुदा नगर घुमबाक नवल फेरक लेल अभिभावकक सहमति, सुरक्षित बाट आ खर्चक प्रस्ताव औपचारिक रूपसँ जमा करबाक होएत। ई अन्तिम अनुमति नहि छल। मीरा पत्र जोर सँ पढ़लीह। रेवा पुछलीह, “तखन परसू पाठ कतय?” मीरा कहलनि, “एतहि। नगर घुरबाक पहिल दिन तय करबाक पहिने अहाँ सभक हस्ताक्षर चाही।” पद्मा सुधार कएलनि, “केवल हस्ताक्षर नहि; सभकेँ अपन भाषामे बुझल निर्णय।” मदन कहला जे ओ प्रस्तावित दू दिन लेल भाड़ाक गणना काल्हि देताह; रोगीक समय ओकरा पर निर्भर नहि मानल जाए।

प्रस्तावक अन्तिम पन्नापर सरस्वती तीन पाँति जोड़लनि—‘प्रशिक्षणक सूचना सभ परिवारकेँ’; ‘मायक व्यवसाय बेटीक बाध्यता नहि’; ‘आजीविकाक समय बदललासँ भेल घाटाक हिसाब’। प्रतिमा लिखौलीह—‘विद्यालयक जमीनक सत्यापित सीमा माँगल जाए; जाँचधरि आवागमनक बाट नहि घेरल जाए।’ मदनक नौकसँ बनल हस्ताक्षर कने टेढ़ छल; ओ कापी अलग कऽ फेर लिखलनि जे प्रस्तावित विद्यालय-वाहन आ रोगी-दुलाईक शर्त परस्पर अलग रहत। पद्मा अपन मेहनतानाक अंक पढ़ि ठीक कएलनि। संकेत एहि पन्नाक तस्वीर खींचबाक अनुमति सभसँ पुछलक; कागदक सार्वजनिक अंश मात्र नकल करबाक सहमति भेटल।

दू बच्चा अबेर धरि ओसारमे रहल। जतन अपन भीजल कापीकेँ उलटि सुखाएल पन्नापर रखलक। बिरसी छाँहमे बैसि कहलक, “काल्हि फेर ईट धँसत?” ललित बचल सूखी काठक टुकड़ा दैत कहला, “एतय राखू। पक्की मेज नहि, मुदा कापी माटिमे नहि पड़त।” जतन पूछलक, “एकर दाम?” ललित कने रुकलनि। “ई बचल टुकड़ा अछि। काजक हिसाबमे काठक दाम शून्य लिखब; मुदा जे दिन पक्का बेज्ज बनत, ओकर श्रमक दाम अलग होएत।” जतनक लेल ई हिसाब पढ़ाइक दोसर पहाड़ा छल।

रुखसाना साँझक भात-पानि अनने छलीह। सामूहिक रसोइक काजमे के के दिन अनाज देत आ के पकाओत, एहि बातपर फेर तर्क उठल। मीरा कहलीह, “एहि पाठशालाक आगाँक फेरमे बच्चासभक खेनाइ सेहो चाही।” रुखसाना थारी राखि उत्तर देलीह, “चाही, मुदा ककर मेहनतिसँ? चाउरक दामक संग रान्हनिहारक समयो लिखू।” उर्मिला अपन दिनक कपड़ा-ढुलाईसँ लौटैत ओहि वाक्यकेँ सुनलीह। ओ थाकल छलीह, मुदा रुखसानाक लेल पानि भरि देलीह आ कहलीह, “भात खाएब पहिने, हिसाब काल्हि फेर देखब। मुदा हिसाब छोड़ब नहि।” थारीमे तात भात आ दालि छल; आइ ककरो गवाही वा रहस्यक सुराग नहि चाही छल।

राजइनारक कात अस्थायी बाँसक अवरोध रातिक अन्हारमे स्थिर छल। जंगला ढील छल, पानि परीक्षण शेष छल, विद्यालयक जमीनक सही सीमा एखन प्राप्त नहि छल। तइयो बच्चासभक ओसारमे नव काठक टेक रहबाक कारण कापी माटिसँ ऊपर उठि गेल छल। पद्मा घुरैत समय संकेतसँ पुछलनि, “फट्टापर जे चिन्ह बनौलह, ओकर मूल प्रति कोना रखबह?” संकेत कहलक, “बच्चीक अनुमति सँ फट्टा विद्यालयमे; हमर फोनमे ओकरा बिना चेहराक नकल नहि रखब। अगिला बेर ओ चाहत तँ फेर बदलत।” पद्मा कहलीह, “तखन पढ़ाई घुरत, मुदा बच्चाक आवाज एक ठाम कैद नहि होएत।” सामनेक सँकरा गलीमे मदनक खाली वाहन निकलि गेल। परसू बच्चासभ कोन बाट जएत, से सभ मिलि तय करबाक बाँकी छल; आजु कमसँ कम ई तय भऽ गेल छल जे ओकरा सभक बदला कियो एकटा लोक चुपचाप फैसला नहि करत।

अध्याय ३७ • रान्हनिहारक नाम

बरखा थमल छल, मुदा रुखसानाक चूल्हिक नीचाँ राख एखनहुँ भीजल छल। ओ विद्यालयक ओसारपर तीनटा ईट सटा कऽ थापल अस्थायी चूल्हि देखलीह आ पहिल काज लकड़ी धरेबाक बदला ओकरा हटौलीह। ईटक पछिला भागसँ मटियामेट पानि रिसैत छल। जँ चूल्हि एतय जरत तँ बच्चासभक कापी राखबाक सूखल जगह फेर धुँआ आ कादो सँ भरि जाएत। ओ मीरा मंडलकेँ बजौलीह—“जतय पाठ चलत, ततय भोजन बनब, मुदा आगिक बाट बच्चाक बाट नहि होएत।”

मीरा पिछिला साँझक पत्र लऽ कऽ एलीह। नगर घुमैत पाठशालाक अन्तिम अनुमति एखन बाँकी छल, तथापि विद्यालयक बाहरी ओसारमे पढ़ाइ चलि रहल छल। हाजिरी आ औपचारिक नामांकनक रजिस्टर अलग रखल गेल छल। मीरा कहलीह, “दू दिन लेल बच्चासभक भातक व्यवस्था कऽ ली। तखन रास्ताक अगिला योजना बनेत।” रुखसाना पुछलनि, “कतेक बच्चा, के रान्हत आ दाम के देत?” मीरा कहलनि, “अनाज तँ लोक दऽ रहल छथि।” रुखसाना हथेलीसँ भीजल ईटक माटि पोंछैत कहलीह, “अनाज हाथे-सँ-हाथे भात नहि बनैत छैक।”

रेवा गुलगुलिया अपन बेटा जतनक फाटल कापी सुखबैत छलीह। ओ सुनि कऽ कहलीह, “हम सेहो काज कऽ सकैत छी, मुदा जतन पढ़ैत रहए। ओकरा पाछाँ छोड़ि पूरा दिउस चूल्हिपर बैसब हमर लेल सम्भव नहि।” ओकर बात सुनि कऽ विद्यालयक एक कर्मचारी कहलक, “घरक माएसभ एक-एक घड़ी देखिन तँ मजदूरीक की आवश्यकता?” रुखसाना ओकरा दिस देखलीह। “अहाँ एक-एक घड़ी रजिस्टर बनबैत छी, ओकर दाम बिना हिसाबक देबए चाहब?” कर्मचारी उत्तर तकैत रहल। रुखसाना कहलीह, “सेवा करब चाहनिहार करथि। किन्तु सेवा नहि करब अपराध नहि। आ सेवा देनिहारक नामो लिखू।”

एहि बरख वार्षिक साझा रसोई-मेहनताना दिवसक आयोजन ओही विद्यालयक ओसारमे करबाक प्रस्ताव छल। पिछला बरख लोक खेनाइकेँ निःशुल्क दानक नाम दऽ कऽ रान्हनिहार स्त्रीसभक समय नहि गनने छल। एहि बेर रुखसाना पहिने कागदक

व्यवस्था माँगलनि। ओ फट्टापर तीन शीर्षक लिखौलीह—अनाज आ अन्य सामग्री, भुजाइ तथा तैयारी, रसोइ आ परोसबाक श्रम। “तीनू पन्ना अलग होएत,” ओ कहलीह, “नहि तँ चाउर देनिहारक नाम छपि जाएत, आगि लगौनिहारक नाम फेर हराइत।”

बहुत पहिने विराटराजक नगरमे राजभवनक भानसघर बिहानहि गरम भऽ उठल छल। बड़-बड़ हाँड़ीक ऊपर बाफ छूटैत छल आ ओसारक फरसपर धानक कन पड़ल छल। ओतय एक बलिष्ठ नव रान्हनिहार अपना केँ बल्लव कहि परिचय देने छल। दरबारमे ओकरा कुशल भानसगरक रूपमे ठाम भेटल, मुदा ओकर वास्तविक नाम भीम छल—वनवासक अन्तिम बरखमे अपनो परिचय लुकौने रहबाक बाध्यता।

पहिल दिन भानसघरक पुरनका सेवक ओकर हाथ देखिकऽ पुछलक, “अहाँ एतेक भार उठा सकैत छी, मुदा मसालाक नाप जानैत छी?” बल्लव बिना बड़का दावा कएने मूसल हाथमे लेलक। ओ धान कुटनिहार स्त्रीसँ पुछलक, “एहि घरमे एक हाँड़ी लेल कतेक नोन?” स्त्री कहलनि, “राजाक जीहक हिसाब अलग, रोगीक अलग, यात्रासँ आएल लोकक अलग।” बल्लव ओकर उत्तर ध्यानसँ सुनलक। बलसँ हाँड़ी उठाओल जाएत, मुदा स्वाद आ स्वास्थ्यक नाप केवल बाहुबलसँ नहि बनैत अछि।

राजभवनक प्रधान भानसगर मेजपर अतिथिक संख्या लिखैत छल। ओ बल्लवक नाम एक पाँतमे जोड़लक, मुदा धान चुननिहार, साग धोअनिहार आ लकड़ी सुखौनिहार लोकक लेल खाली पाँति नहि छल। ओ सभ दिनसँ काज करैत छलाह, मुदा गिनतीमे बस ‘भानसघरक लोक’ कहल जाइत छलाह। बल्लव पूछलक, “जखन भोजन कम पड़त, दोष ककर नामे चढ़त?” प्रधान कहलक, “रान्हनिहारक।” “आ जखन सभ खा लेत?” बल्लव फेर पुछलक। उत्तर एतेक सहज नहि छल।

विदेहपुरमे रघु साहु कनसारसँ भुजल चिउड़ा आ चना भरल दू टोकरी लऽ कऽ पहुँचला। हुनकर हाथमे भुजाइक गरमी एखन रहल छल। “हमरा अनाज दानक खातामे नहि जोड़ू,” ओ रुखसानाकेँ कहलनि, “चानल चना जे लोकक अछि, ओकर दाम अलग; हमरा आगि, समय आ ढुलाईक दाम अलग।” ओ एकटा पर्ची देलनि, जाहिमे भुजलक वजन आ परिश्रमक समय लिखल छल। विद्यालयक कर्मचारी पुछलक, “रघुजी, अहाँ तँ

राहतमे मदति करैत छी?” रघु उत्तर देलनि, “करैत छी। तँ दाम घटा सकैत छी, मुदा मुफ्त लिखि देलहुँ तँ काल्हि हमर कनसारमे जेकरे काज होएत, ओहो ई कागद देखाओत।”

चन्द्रिका राय ओकर पाछाँ एलीह। मिठाइ बनौनिहार हुनकर छोट दुकानमे पछिला हफ्तासँ ग्राहक घटल छल; ओ चाहैत छलीह जे साझा रसोइ लेल नोनगर दलिया आ हलुक मीठक ठेका हुनका भेटए। ओ कहलीह, “जँ चाउर लोक दऽ रहल अछि तँ रान्हबाक मजदूरी परसौँ देल जाउ, एहन उधारी हम नहि लेब। घी, गुड़, मसाला आ भाँड़क खर्च अलग छै।” रुखसाना पुछलनि, “अहाँक लाभ?” चन्द्रिका हँसलीह, “लाभक नाम कहब सेहो लाजक बात बनि गेल?” ओहि हँसीमे दिनक घाटाक चिन्ता छल।

मीरा तीनू पन्ना आगाँ रखलीह। सामानक दान विद्यालयक नामे, रघुक भुजाइ हुनकर कनसारक नामे, चन्द्रिकाक तैयार भोजन हुनकर व्यवसायिक रसीदपर। रुखसाना कहलीह, “हम रान्हब, मुदा सभ बखत नहि। कखन विश्राम होएत, के परोसत, बरतन के धोएत—ई पाँति शेष अछि।” रेवा आगाँ बढ़ि कहलीह, “हम काल्हि एक घड़ी परोसब, अपन मनसँ। जँ परसौँ काज देब तँ पहिने पुछब। हमर नामकें स्थायी सेविकाक बहीमे नहि लिखू।” मीरा ओहि वाक्यकें ज्योंकात्यों उतारि लेलीह।

ओतहि नसीम इदरीसी एकटा गठरी खोललनि। भीतर दू दर्जन धोएल कपड़ाक थैली छल, जकरा भीतर चिउड़ा आ चना अलग रखल जा सकैत छल। थैलीक सीवन मजबूत छल, मुदा हर थैलीपर बच्चाक नाम सिलल नहि छल। मीरा पुछलीह, “नाम रहत तँ वितरण सहज होएत।” नसीम कहला, “रजिस्टरमे नाम राखू। खाली थैली सडकपर कतहु पड़ि गेल तँ ककर बच्चा कतय पढ़ैत अछि, से सभकें किएक बुझए?” ओ थैलीक संख्या, कपड़ाक मूल्य, सिलाइक समय आ धोनाइ-निर्देश लिखल पर्ची देलनि। “हम दर्जी छी, निरीक्षक नहि। ग्राहकक नाम हमर मापबहीमे सुरक्षित रहत।”

विद्यालयक ओसारमे सामानक संग लोक सेहो बढ़ि रहल छल। जतन चिउड़ा चाखबाक लेल हाथ बढ़ेलक तँ रघु ओकरा एकटा साफ कटोरी देलनि। बिरसी पुछलक, “नोन कम भेल तँ लिखब ‘एक चुटकी’?” चन्द्रिका कहलीह, “चुटकी ककर? तोहर कि हमर?” बच्चासभ अपना-अपन चुटकी देखए लागल। रुखसाना ओ सभकें पानि सँ हाथ धुबौलीह

आ कहलीह, “आजुक पहिल पाठ—स्वाद देखएबाक पहिने हाथ साफ, आ नाप लिखबाक पहिने नाप एक्के।” हँसी उठल, मुदा रसोइक कामो आगाँ बढ़ल।

दुर्गा गंगाई बजारसँ एकटा टोकरी भरि सुखाओल मखान, चिउड़ा आ अपन घरक तैयार मिश्रण अनलीह। ओ दिन भरि छोट-छोट ग्राहकक बाट तकैत रहैत छलीह; बड़का दुकानदार उधारीमे माल लऽ जाइत, भुगतान महिनासँ अटकि जाइत। “हमर माल दान नहि,” ओ स्पष्ट कहलीह, “भले पहिल बेर आधा टोकरी कम दामे देब। जँ एतय स्वाद पसन्द पड़ल तँ अगिला बेर खरीदार सीधा हमरा बजाथि।” रुखसाना एक मुठ्ठी चाखलीह। “एहि मिश्रणमे नोन कम अछि।” दुर्गा मुस्कुरौलीह, “नोन रुखसाना देखिन, दाम हम लेब।”

दुर्गाक पुरान बहीक बीच एक पातर पन्ना निकलल। ओहि पन्नामे ‘गहुमा’ नामक उल्लेख छल; हुनकर बूढ़ी माय कहल करैत छलीह जे पुरनका खरीदार ओ नाम लऽ कऽ माल मँगबैत छलाह। दुर्गा नहि जानैत छलीह जे ई नाम कखनक कोन स्थान, धार वा बाजार-पहिचानसँ जुड़ल छल। नैरा ओहि पन्नाक फोटो लेबाक अनुमति माँगलीह। दुर्गा पुछलीह, “फोटोसँ हमर माल बिकत?” नैरा कहलनि, “नहि। ई केवल नामक अभिलेख जाँचबाक सामग्री होएत।” दुर्गा पन्ना मोकामा लौटा लेलनि। “तखन पहिने बिक्रीक हिसाब लिखू; नदीनामक बात बादमे पूछब।”

फरीदा कुरैशी एकटा साफ ढक्कनवला पेटी आ तराजू लऽ एलीह। हुनकर घरक कारोबार बजारमे मांसक बिक्री आ माप-तौलसँ जुड़ल छल। साझा भोजनक लेल भोजन-प्राथमिकता अलग रहलासँ ओ एतय मांस बेचबाक आग्रह नहि करैत छलीह; हुनकर पेटीमे विद्यालयक लेल माँगल गेल ढक्कनदार बर्तन आ बजारसँ मिल सकैत आपूर्तिक लिखित दर छल। एक दुकानदार हुनका देखिकऽ कहलक, “एहि लोकसँ सामान लेब तँ लोक प्रश्न करत।” फरीदा पेटीक ढक्कन उठा कऽ तराजू देखौलीह। “प्रश्न करथि। माप, सफाई आ दाम पूछथि। हमर नाम देखिकऽ निषेध करब तँ कारण लिखि दिअ।”

दुकानदार ओकरा लऽ कऽ फेर कुण्ठित बात कहलक, मुदा फरीदा तुरन्त झगड़ा नहि बढ़ौलीह। ओ नगरक स्वास्थ्य निरीक्षणक प्रक्रिया पुछलनि आ अपन दुकानक पुरान जाँच-रसीदक प्रति मीरा केँ देखौलीह। “एहि कागदसँ आइ सभ आरोप समाप्त भऽ गेल,

से नहि कहब,” ओ कहलीह, “मुदा बिना जाँचक हमर ग्राहक रोकबो ठीक नहि। आवश्यकता होए तँ नवल निरीक्षण माँगब।” मीरा ओहि आपत्तिक अलग सूचना बनौलीह। साझा रसोइक आजुक वस्तु-जाँच पूरा कएल जा सकैत छल; बाजारक सामूहिक बहिष्कारक विवाद एतहि समाप्त नहि भेल।

विराटराजक भानसघरमे बल्लवक पहिल पकवान सिद्ध भेल। राजसभाक एक अधिकारी प्रशंसामे कहलक, “नव रान्हनिहारक जादू!” बल्लव एक पल हँसल, फेर ओहि स्त्रीकेँ देखलक जे भोरसँ चूल्हिक ज्वाला एक समान रखैत छलीह। ओ राजाक सामने अपन छिपल नाम नहि कहि सकैत छल; छद्मक रक्षा ओकरा आ परिवारकेँ चाही छल। मुदा ओ छोट निर्णय लऽ सकैत छल—दू हाँड़ी अनाजक खर्च आ रान्हनिहार दलक नाम अलग लिखाएब। प्रधान भानसगर कहलक, “नाम देलासँ राजस्व नहि बढ़त।” बल्लव उत्तर देलक, “भूल भेल तँ ककरा पुछब, ई तँ बुझाएत।”

ओहि राति बल्लव अपन आँगुरपर लागल हलदी देखलक। ओकरा बुझाइट छल जे राजसभामे भेटल पहिचान अस्थायी अछि, मुदा भानसघरक लोक लेल प्रतिदिनक श्रम अस्थायी नहि। ओकर अपना गुप्त नामक आवश्यकता आ दोसराक सार्वजनिक नामक आवश्यकता एक्के नहि। ओ दूनूकेँ मिलाबए नहि चाहलक। नव बहीमे ओ केवल जे देखलक, से लिखबौलक: धान चुनब, पानि भरब, साग काटब, आगि राखब, भोजन परोसब। श्रमक गणना शुरू भेल, श्रमक न्याय पूरा नहि।

विदेहपुरमे दोपहर धरि दानमे आएल चाउर आ चाही छल, मुदा जलौनी लकड़ी कम पड़ि गेल। विद्यालयक कर्मचारी फेर कहलक, “आज सभ अपने-अपने घरे सँ लकड़ी लऽ आबि जाउ।” रुखसाना कहलनि, “आगि सुलगेबाक सामान जुटत, मुदा गामक कोनो गरीब घरसँ अन्तिम सूखल लकड़ी छिनि कऽ नहि। हम एक दिनक खिचड़ी बना सकैत छी। परसूक खातामे कतेक अनाज आ कतेक ईंधन अछि, तकर उत्तर एखन नहि।” ओ प्रस्तावित दू दिनक भोजनकेँ पहिल दिनक पक्का आ दोसर दिनक शर्तसहित कार्यक्रममे बदलौलीह। मीरा पहिने निराश भेलीह; मुदा झूठक निश्चितता लिखबाक बदला ई हिसाब स्वीकार कएलनि।

पानिक घैल लऽ कऽ उर्मिला पहुँचल छलीह। ओ राजइनारसँ नहि, विद्यालयमे उपयोग होइत अलग आपूर्ति-बिन्दुसँ पानि अनने छलीह। “इनारक पानिक जाँच नहि भेल,” ओ स्पष्ट कहलीह, “खेनाइ बनएबाक लेल अपरीक्षित पानि नहि देब।” कर्मचारी कहलनि जे एहि बाट पानि अनबाक समयक कोनो हिसाब नहि। उर्मिला घैल नीचाँ राखि कहलीह, “घैल उठाओल हमर काज अछि; दान देबाक वचन हम नहि देने छी।” रुखसाना तुरन्त हुनकर ढुलाईक समय अलग लिखबौलनि। उर्मिला कहलीह जे अस्पतालक कपड़ा-ढुलाईक पिछला रात्रिक देय एखनहुँ बाँकी अछि; आजुक पानिक मजदूरी ओहि बकायामे मिला देब तँ फेर पता नहि लागत जे कोन काजक पैसा भेटल।

रुखसाना चूल्हि लग एक पल एकसरि ठाढ़ रहलीह। हुनकर हथेलीक अँगुरमे गरम भाँड़सँ पुरान फोका छल; ओ कपड़ाक पट्टी बदललीह। चन्द्रिका ओहि कात बैसि अपन छोट दोकानक हिसाब खोललीह। “एक दिन सामूहिक रसोइमे आएब हमरा नीक लगैत अछि,” चन्द्रिका कहलीह, “मुदा एहि लेल दुकान बन्द करबो पड़ैत अछि।” रुखसाना कहलनि, “सभक नुकसान एक्के नहि। अहाँक ग्राहक घुरि सकैत छथि, हमरा जँ विश्राम नहि भेटत तँ देह नहि घुरत।” चन्द्रिका उत्तर देलीह, “तँ आजुक बचल समय हम दुनू बाँटि ली; आधा घड़ी अहाँ बैसू, परोसब हम देखब।”

हिसाबक पन्ना सार्वजनिक रूपसँ पढ़ल गेल। रघुक भुजाइक देय, चन्द्रिकाक नोनगर भोजनक दर, नसीमक थैली-सिलाइक मजदूरी आ रुखसानाक रान्हब-परोसब-बरतन साफ करबाक समय एके कागदमे गड्डमड्ड नहि छल। दुर्गाक मालक पहिल खेप छोट छल, आ फरीदाक दरक पर्ची एखन विकल्पक रूपमे सुरक्षित। दोसर दिनक लेल बजटक कमी खुलल तँ एक दानदाता पुछलक, “लोकसेवा लेल एतेक हिसाब?” रुखसाना उत्तर देलीह, “एहि हिसाबे लोकसेवा दू बरख टिकत। बिना हिसाबक दान एक दिन चमकत आ दोसर दिन स्त्रीक काँधपर ऋण बनि पड़त।”

जे लोक चाउर देने छलाह, हुनकामे एक वृद्ध कने खिसिया गेलाह। ओ चाहैत छलाह जे हुनकर नाम फट्टापर सबसँ ऊपर रहए। रुखसाना हुनका हटौलीह नहि; केवल कहलीह, “अहाँक देल चाउरक वजन ठीकठीक लिखल अछि। रघुक आगि आ मीराक हाजिरीक दाम एतय छुटत नहि। दानक मान घटत नहि।” वृद्ध अन्तमे अपन नामक पाछाँ ‘चाउर’

शब्द जोड़ए देलनि। जतन ओहि पाँति पढ़ि कऽ पुछलक, “जे बरतन धोएत ओकर नाम कतय?” रेवा उत्तर देलीह, “जे धोएत, ओ अपने कहत। आज हम धोएब, मुदा काल्हि हमरा पूछल जाए।”

भोजन बाँटल जाएबासँ पहिने रुखसाना छोट कटोरीमे खिचड़ी निकालि नोन चाखलीह। चन्द्रिका कहलीह, “एखनहुँ फीका?” रुखसाना कहलीह, “बच्चासभक लेल ठीक। अहाँ चाहैत छी तँ अपन थारीमे नोन बढ़ा लिअ।” रघु हँसि कऽ कहला, “हमरा कनसारक चना मे तँ नोन छैक; हमर नाम जोड़ि दिअ।” रुखसाना कटोरी हाथे राखि हँसलीह—“एखन सब नाम भोजनमे पड़ि जाएत तँ भातमे जगह कहाँ बचत?” ओहि एक बेरक हँसीमे हुनका बिहानसँ उठल कंधाक पीड़ा कने हलुक लगल।

ओसारपर जतन आ बिरसी एक संग बैसल। बच्चासभकेँ भोजन भेटल, मुदा पाठशालाक औपचारिक नामांकनक निर्णय नहि। पद्मा आबि कऽ मीरा सँ पुछलनि जे अगिला सप्ताहक भाषा आ गति-सम्बन्धी अभ्यासमे के-के रहत। ओतय रुहानी सेहो छलीह। हुनका बच्चासभ नृत्यक कार्यक्रमक लेल कपड़ाक पर्दा चाहैत छल। नसीम कहला, “हम परदा सीबि देब, मुदा नाप लऽ कऽ दाम कहब; आ बच्चाक निजी फोटोपर नाम लिखबाक काज नहि।” रुहानी हँसलीह, “पहिने अभ्यासक जगह तय होअए। कपड़ा बदललासँ ककरो जीवनक पहिचान बदलि जाएत, एहन पाठ हम नहि पढ़ाएब।”

साँझ भानसघरक भाँड़ धोआइत रहल। चन्द्रिका अपन दुकान लेल बचल गुड़ गिनलीह; रघु रिक्त टोकरी उठा लेलनि; दुर्गा पहिल बिक्रीक रसीद अपन बहीमे दबौलीह। फरीदा फेर कहलीह जे नगरक निरीक्षणक आवेदन ओ स्वयं देथिन। नसीम सिलल थैलीक गिनती पूरा कऽ एकटा फाटल किनार अगिला बेर सुधारबाक चिन्ह राखलनि। छोट-छोट काजक पाछाँ एखनहुँ बड़का बकाया छल, मुदा आइ ककरो श्रमकेँ केवल ‘मदति’ लिखि मेटाओल नहि गेल।

मीरा रुखसानाकेँ लिखित हिसाबक दू प्रति देलीह। एकटा विद्यालयमे रहत, दोसर हुनकर लग। रुखसाना पन्ना मोड़ि अपन झोरामे रखलीह आ कहलीह, “अगिला वर्ष एही दिन भेटब। मुदा हम प्रत्येक वर्ष एहि एक दिनक रसोइए मे बान्हल नहि रहब। हमर अपन दुकान खोलबाक विचार अछि; एक दिउस एहन होए जे हम खाना बनबैक बदला ककरो

गान सुनू।” मीरा कहलीह, “तखन हम अहाँ लेल टिकट लऽ देब।” रुखसाना उत्तर देलीह, “टिकट हम अपने किनब। बस ओहि दिन हमर समय हमर रहए।”

ओ विद्यालयसँ बाहर निकललीह तँ राजइनारक कात अस्थायी बाँसक अवरोध ओही ठाम छल। पानिक जाँच एखन बाँकी, जंगला पुरान, नगर घुमैत पाठशालाक अनुमति अधूरी। एहि सभक बीच बच्चासभक सूखल कापी आ रसोइक नामवला पन्ना अलग-अलग झोरामे सुरक्षित छल। ओ दूरसँ सुनलीह—रुहानी बच्चासभकेँ अगिला अभ्यासक लेल बजा रहल छलीह। रुखसाना थकानक बीच एक बेर पछाँ घुरलीह, आ फेर अपन घर दिस चलि गेलीह; चूल्हि आइक लेल बुझि गेल छल।

अध्याय ३८ • बृहन्नलाक कक्षा

रुखसाना दोसर दिन भोरमे भानसघर नहि गेलीह। ओ अपना घरक दुआरपर छोट पीढ़ी राखि काल्हक रसीद सुखा रहल छलीह। बरखाक सीलनसँ कागदक कोना मुड़ि गेल छल। चूल्हि पर भात चढ़ाएबाक बदला ओ एक कप चाह बनौलनि आ घड़ी देखलीह। विद्यालयमे रुहानीक अभ्यास शुरू होएबामे एखन समय छल। आइ ओ दर्शक बनि कऽ जेबाक निश्चय कएने छलीह, यद्यपि घरसँ निकलैत काल सन्दूकमे राखल पुरान ओढ़नी सँ कुर्सी पोछबाक आदत फेर हुनका रोकि लेलक।

विद्यालयक ओसारपर जतन दुनू बाँहि पसारि गेल घुमबाक प्रयास करैत छल। बिरसी ओकर पयर लग कापीक दू पन्ना राखि देलक, जाहिसँ ओ देखए जे घुमि कऽ फेर कतय ठाढ़ होएबाक अछि। जतन पन्नापर पैर पड़िते घबड़ा गेल। रुहानी कहलनि, “ई नाचक परीक्षा नहि। पहिने जमीन देख, फेर अपना देहकें सुन।” जतन हँसि कऽ कहल, “कापी पढ़ब कि पयर बचाएब?” रुहानी उत्तर देलीह, “दूनू एक दिन सीखि लेबह; आइ पयर बचा।”

रुखसाना पहुँचलापर मीरा हुनका रसोइक काजक विषयमे पुछए लगलीह, मुदा रुहानी बीचमे कहलीह, “आइ हुनकर नाम दर्शकमे लिखू। जे सभकें खुआबैत छथि, हुनको कखनो बैसि कऽ देखबाक अधिकार अछि।” रुखसाना ओसारक एक कात बैठि गेलीह। अपन हथेलीमे हलुक फोका अनुभव करैत ओ देखलीह जे बच्चासभ बिना बाजाक मात्र तालपर चलैत अछि। कोनो बच्चा बराबर चाल नहि पकड़ि सकैत छल, मुदा कियो हँसि कऽ दोसरा कें धक्का नहि दैत छल।

बहुत पहिने विराटराजक नगरमे राजकुमारी उत्तराक अभ्यासक कक्षमे मृदङ्गक ताल गूँजि रहल छल। ओतय नव गुरु अपना कें बृहन्नला कहैत छलाह। दरबार हुनका नृत्य आ गीत सिखएबाक काम देने छल; वस्तुतः ओ अर्जुन छलाह, अपन भाइसभक संग अज्ञातवासक अन्तिम समय पूरा करबाक लेल छद्मपरिचय धारण कएने। कक्षा भीतर खिड़की सँ प्रकाश अबैत छल आ फर्शपर घुँघरूक छोट गठरी राखल छल। हुनकर पुरान युद्धविद्याक चर्चा एतय कियो नहि करैत छल।

उत्तरा पहिल दिन पूछलनि, “जे लोक युद्धक ताल जानैत होइ, ओ गीतक ताल कोना सिखाओत?” बृहन्नला हाथमे बजैत छोट मञ्जीरा राखि कहलनि, “आवाज सुनबाक अभ्यास दूनू ठाम चाही। मुदा एक ताल जानब दोसरा काजक अधिकार अपने-आप नहि देत।” ओ उत्तराकेँ चाल देखौलनि, फेर स्वयं पाछाँ हटलाह। उत्तराक गतिकेँ सम्हारबाक नामपर हुनकर बाँहि पकड़ि सुधार करबाक बदला ओ दूरसँ पयरक ठाम देखौलनि।

राजभवनक एक परिचारिका दिन भरि घुँघरू गाँथैत छलीह। उत्तराक पयरमे पट्टा ढील पड़िते ओ फेर सटबैत छलीह। हुनका कामक घड़ी गननिहार नहि छल। बृहन्नला हुनका पुछलनि जे एक जोड़ा तैयार करबामे कतेक समय लागैत अछि। स्त्री आश्चर्यसँ देखलीह—गुरु हुनकर कारीगरीक समय किएक पुछैत छथि? ओ कहलनि, “एकटा घुँघरू टूटल तँ फेर पूरा गाँठ खोलए पड़ैत अछि।” बृहन्नला ओहि दिनक अभ्यास छोट कऽ पट्टा सुधारबाक लेल ठाम छोड़ि देलनि।

उत्तराक प्रश्न आओर छल। “गुरुजी, अहाँक काज गीत, नाम बृहन्नला; मुदा दरबारक बाहर अहाँ ककरा अपना लोक कहैत छी?” बृहन्नला क्षण भरि चुप रहलाह। हुनका सत्य कहबाक अनुमति नहि छल। ओ झूठक नव कथा गढ़बाक बदला उत्तर देलनि, “आइ हमर उत्तर एतेक जे हम अहाँक शिक्षक छी। किछु प्रश्नक उत्तर हमर प्रतिज्ञा रोकैत अछि; ओहि रोकक भार अहाँपर नहि देब।” उत्तराकेँ ई अपूर्ण वाक्य नीक नहि लागल, मुदा हुनकर गुरु कमसँ कम अपन मौनक सीमा बता देने छलाह।

उत्तराक सखीसभमे एक कहलक जे दरबारक लोक बृहन्नलाक चाल पर हँसैत छथि। उत्तरा ओकरा रोकलीह—“हँसी हमरा पाठक देरी नहि सिखाओत।” ओ गुरु सँ पुछलनि जे लोकक हँसी सहबाक उपाय की। बृहन्नला कहलनि, “जँ प्रत्येक आवाजक उत्तर देब, तँ पाठ छूटत। मुदा ककरो अपमान सहनाइ शिक्षाक शर्तो नहि।” हुनकर उत्तरमे अपन गुप्त जीवनक डर छल, जकर पूरा अर्थ उत्तरा नहि बुझि सकलीह। कक्षाक पट्टी बाँधैत हुनका केवल एतेक बुझल जे दुनू जन अलग कारणसँ मौन चुनि रहल छथि।

विदेहपुरमे रुहानीक कक्षाक बाहर नगरपालिका-सहायता समितिक एक कर्मचारी फट्टा टाँगए आएल। फट्टापर छपल छल—‘बृहन्नलाक नाच: विशेष हिजड़ा प्रस्तुति’। ओकरा नीचाँ कक्षा आ कलाकारसभक तस्वीर छापबाक खाली ठाम छोड़ल छल। कर्मचारी

कहलक, “एहि नामसँ अनुदान भेटत। भीड़ो बेशी जुटत।” रुहानी फट्टा पूरा पढ़लीह, मुदा तुरन्त फाड़ि नहि देलीह। ओ जतनक अभ्यास रोकि कऽ कहलनि, “बच्चासभ, पानि पिअ। हमरा एहि लिखल बातपर काज अछि।”

ओ कर्मचारीकेँ पुछलनि, “एहि पंक्तिक अनुमति के देलक?” कर्मचारी कागद उलटि देखलक। “समिति कहलक जे पुरान कथासँ जोड़ू। अर्जुनो तँ भेष बदलने छलाह।” रुहानी उत्तर देलीह, “अर्जुन अपन परिचय नुकौने छलाह, समय पूरा भेलापर अपन नामे लौटि सकैत छलाह। हमर स्वपरिचय ककरो सँ नुकाएल अस्त्र नहि। हम जाहि समाज आ जीवनक संग रहैत छी, ओकरा दोसराक अज्ञातवासक भेष कहि नहि बेचब।”

पद्मा ओतए उपस्थित छलीह। ओ कर्मचारीक बातकेँ फेर ओकरहि शब्दमे दोहरौलनि, जाहिसँ ककरो कानमे अर्थ बदलि नहि जाए। ओ फट्टाक फोटो केवल शीर्षक धरि लेलीह; बच्चासभक चेहरा तस्वीरमे नहि छल। “अहाँक अनुदानक पत्रमे ककर हस्ताक्षर अछि?” ओ पुछलनि। कर्मचारी कहलक जे ओकरा फट्टा टाँगबाक काज भेटल अछि, शब्द चुनबाक नहि। रुहानी ओकर हाथसँ कागद छीनलीह नहि। “तखन फट्टा एतय नहि टाँगू,” ओ कहलीह, “पहिने लेखन बदलएबाक लिखित सूचना दियौ।”

ओहि बीच भोला यादव दू पीतल रंगक दूधक डिब्बा लऽ कऽ पहुँचलाह। कक्षा पाछाँ बच्चासभ लेल दूधक व्यवस्था करबाक प्रस्ताव रहल छल, मुदा हुनकर पछिला सप्ताहक उधारी शेष छल। भोला डिब्बा धरि कहलनि, “काल्हक भातक पैसा अलग, आजुक दूधक दाम अलग। दानदाता जे नाम अपन फट्टापर लिखाबए चाहथि, हमरा भुगतान हुनक घोषणासँ नहि भेटत।” कर्मचारी पुछलक जे एहि उत्सवमे किछु दूध मुफ्त देल जा सकैत अछि की। भोला उत्तर देलनि, “पहिने जतेक मुफ्त देबाक वचन छल, ओकरा गनि कऽ देखू।”

मीरा भोला सँ डिब्बाक माप आ काल्हक उधारीक रसीद लिखौलीह। भोला अपना बेटाकेँ दोसर पेशामे भेजबाक सोचि रहल छलाह; दूध बेचबाक काज कठिन भेलोपर हुनकर ग्राहकक भरोसा पुरान छल। “हम चाहैत छी जे बच्चा अपन मनक काज चुनए,” ओ कहलनि, “मुदा एखन हमर घरमे दूधक पैसा नै घुरल तँ स्कूलक फीस के देत?” मीरा

हुनका कहलनि जे भुगतानक अगिला तिथि लिखल जाएत; कोनो अनिश्चित ‘बादमे’ नहि। भोला रसीदक प्रति जेबीमे राखि लेलनि।

फूलमती तियर पाछाँसँ जालक बँडल लऽ कऽ एलीह। ओ नावघाटक माछबजारमे जाल बनबैत आ छोट माछक बिक्रीमे मदद करैत छलीह। मीरा हुनका अभ्यास लेल छाँहक जाली चाहैत छलीह, मुदा फूलमती अपन माछक जाल बच्चासभक देह घेरबाक सजावट बनएबाक अनुमति नहि देलीह। “ई जाल पानिमे तानबाक बनल अछि। पयर फँसत तँ बच्चा खसत,” ओ स्पष्ट कहलीह। ओहि बदला ओ बाँसक पातर पट्टीसँ छाँहक जाली बनएबाक दर बतौलीह।

फूलमतीक संग अएल एक युवक पुछलक जे ओ पुरान साझा जालसँ कतेक कमाइ करैत छलीह। फूलमतीक मुख कड़ा भऽ गेल। “साझाक हिसाब एखन नहि मिलल अछि। हम एहि कक्षा लेल अपन अलग मजदूरीक काजक बात करए आएल छी।” ओ एकटा तागा खींचि जालक फाटल जोड़ देखौलनि। “माछ पकड़बाक वेला जे टूटत, ओकर देय अलग। बच्चाक छाँह बनएबाक काज अलग।” मीरा दरक पर्ची राखि लेलीह। एहि दिन पुरान साझेदारीक विवाद नहि सुलझल, मुदा नव काज पुरान ऋणक संग नहि मिलल।

दुलारी राजवार ओसारपर पहुँचलीह तँ हुनकर हाथमे राशनक पर्ची आ उधारीक छोट बही छल। ओ अभ्यास देखबाक लेल नहि, सरकारी सहायता-शिविरक सूचना सुनि आएल छलीह। कर्मचारी कहलनि जे लाभुकक नामक सत्यापन लेल एकटा सामूहिक सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर आवश्यक अछि। दुलारी पढ़बाक लेल कागद माँगलनि। ओकर अन्तिम पंक्तिमे लिखल छल जे प्राप्त सहायता पछिला निजी ऋणक समायोजनमे मान्य होएत। दुलारीक आँखि ओहि पंक्तिपर अटकल गेल।

“राशन देबाक बदला हमरा अपन ऋण छोड़बाक सहमति किएक?” दुलारी पुछलनि। कर्मचारी कहलक, “प्रपत्र पुरनका अछि। सभ एहीपर दस्तखत करैत अछि।” दुलारी फट्टाक नीचाँ बैसि गेलीह। “तखन सभक हस्ताक्षर हमर उत्तर नहि,” ओ कहलीह। “हम कोनो झगड़ा करए नहि आएल छी। हमरा अनाजक अधिकार चाही; ऋण पर अलग बात होएत।” पद्मा ओहि पंक्तिक अर्थ स्पष्ट पढ़ि सुनौलीह। दुलारी बिना हस्ताक्षर कएल कागदक प्रति लऽ लेलीह।

रुखसाना एहि दृश्यकेँ चुपचाप देखैत छलीह। काल्हि रसोइक नामपर ओ जतेक कागद बनौने छलीह, आइ हुनका बुझा रहल छल जे एक हस्ताक्षर कतेक बेर अलग अर्थ लऽ लैत अछि। ओ दुलारी केँ चाह देबाक लेल उठबाक प्रयास कएलीह, फेर अपन निश्चय याद कऽ रुकि गेलीह। जतन दौड़ि कऽ पानि देलक। रुहानी हँसि कहलीह, “देखलहुँ, दर्शकक स्थान खाली नहि अछि। जतन काज कऽ लेत।” रुखसाना पहिल बेर बिना उठने ककरो धन्यवाद देलीह।

ओसारक दोसर कात फरीद चिक पतला कागदमे लपेटल कापी लऽ कऽ ठाढ़ छल। हुनकर परिवार बजारमे पुरान मांस-विक्रय आ छोटनिक कारोबारसँ जुड़ल छल, मुदा फरीद पढ़ाइमे समय देबए चाहैत छल। ओ विद्यालयक कार्यक्रममे तबलाक ताल लिखबाक काज माँगए आएल छल। एक लोक कहलक, “घरक कारोबार छोड़ि कऽ बाजा?” फरीद उत्तर देलक, “घरक देय छोड़ि नहि रहल छी। बिहान दूकानक खातामे हाथ बँटबैत छी; दिनमे पढ़ब। मुदा सभ समय हमरा ओही दूकानमे रहबाक बाध्यता किएक?”

रुहानी हुनका कक्षामे बजौलनि। फरीद कापीमे तालक छोट-छोट खण्ड बनाएने छल। पद्मा ओकरा पुछलनि जे बच्चासभक अलग गति लेल ताल बदलल जा सकैत अछि की। फरीद रातिक पढ़ाइक लेल उधार लेल पुरान किताब अपन झोरामे राखने छल। ओ रुहानी सँ कहल, “घरमे हमरा कहल जाइत अछि जे दिन भरि बाजा सिखब तँ दूकानक खाता के देखत। हम कहने छी जे दू घड़ी हिसाब करब, मुदा विद्यालयक समय नहि छोड़ब।” रुहानी पुछलनि, “एहि वचनपर घरक सभ सहमत छथि?” फरीद माथ हिलौलक। “नहि। तँ एखन ककरो विरुद्ध शिकायत नहि, अपन समय लिखबाक कापी बना रहल छी।” रुहानी ओकरा कापीमे तालक संग दूकानक दू घड़ी सेहो चिन्हित करए कहलीह—एहि लेल नहि जे जीवन सदा हिसाबे रहए, बल्कि अपन वचन देखल जा सकए।

फरीद कहलक, “बदलि सकैत अछि, मुदा हमरा एक बेर बजा कऽ देखबाक अवसर चाही।” ओ लकड़ीक पट्टीपर तीन बेर हलुक चोट देलक; जतन ओहि गति पकड़ि लेल, बिरसी अपना ढङ्गसँ दू चोट पाछाँ रहि गेल। रुहानी कहलीह, “एहि कक्षामे पाछाँ रहलाक अर्थ गलत नहि, कखनहुँ ताल नया चाही।”

विराटराजक महलमे उत्तराक दोसर अभ्यासक दिन अएल छल। बृहन्नला घुँघरू बाँधनिहार परिचारिकाकेँ पहिने बजा लेलनि। स्त्री एहि बेर छोट पातर चमड़ाक पट्टी बदलबाक प्रस्ताव रखलीह; पुरनका सूत जल्दी टूटैत छल। दरबारक अधिकारी पुछलक जे एतेक छोट काज लेल अलग सामग्री किएक। बृहन्नला कहलनि, “जाहि वस्तुपर चाल टिकल अछि, ओकर विफलताकेँ छोट नहि कहू।” ओ अपन छद्मपरिचयक भयमे छलाह, तइयो गुरुक रूपमे सुरक्षित प्रशिक्षणक जिम्मेदारी टारि नहि सकैत छलाह।

राजकुमारी उत्तराक संग एक परिचारिकाक कन्या सेहो ओहि दिन कक्षाक दुआर लग ठाढ़ छल। ओ भीतर आबए नहि चाहैत छल, केवल ताल सुनैत छल। उत्तरा पुछलनि, “एकरा सीखय देब?” दरबारी कहलक जे ई राजकुमारीक पाठ अछि। बृहन्नला उत्तर देलनि, “आइ पाठक समय राजकुमारीक अछि। जँ आरो बालिकाकेँ सिखएबाक अनुमति देब, ओकरा अलग समय आ गुरु-दायित्व चाही; चोरीसँ सुनब ओकर अधिकारक स्थान नहि लेत।” उत्तरा अपना समयक अन्तमे एक अतिरिक्त घड़ी राखबाक निवेदन कएलीह। निर्णय तुरन्त नहि भेल, मुदा दरबारमे पहिल बेर ओहि कन्याक शिक्षाक प्रश्न सुनल गेल।

विदेहपुरक फट्टा फेर ओसारमे अएल। कर्मचारी पहिल शब्द काटि नया शीर्षक लिखने छल—‘साझा ताल आ नृत्यक कक्षा’। रुहानी पढ़लीह आ कहलनि, “एहि नामपर हमरा आपत्ति नहि। मुदा कार्यक्रममे बच्चासभक फोटो, आवाज आ पूरा नाम छपबाक निर्णय हुनकर परिवार आ स्वयं बच्चासभक सहमति सँ अलग होएत।” कर्मचारी कहलक जे बिना तस्वीर दानदाताकेँ प्रमाण देब कठिन। रुहानी ओकरा पुछलनि, “कक्षा भेल से उपस्थिति आ खर्चसँ नहि देखाओल जा सकैत अछि?”

पद्मा दू पन्ना बनाएलीह। पहिलमे उपस्थिति-संख्या, समय, प्रशिक्षकक फीस आ सामग्रीक व्यय रहत; दोसरमे परिवारक सहमति, जाहिमे छवि आ आवाजक उपयोग अलग-अलग विकल्प होएत। सार्वजनिक प्रति मे निजी नाम नहि रहत। संकेत ओतए अएल तँ रुहानी हुनका कैमरा खोलबाक आग्रह नहि कएलीह। ओ स्वयं कहल, “हम मंचक प्रकाशक माप कऽ सकैत छी; फोटो खींचब आवश्यक नहि।” पद्मा हँसलीह, “आजु बिना तस्वीरक दुनिया चलि रहल अछि।”

दुलारीक पर्ची मे लिखल ऋण-समायोजन पंक्ति पर मीरा अलग आपत्ति दर्ज कएलीह। कर्मचारी स्वीकार कएलक जे ओकर लग संशोधित प्रपत्र नहि अछि। ओ कागद फाड़ि नहि सकैत छल, मुदा एतबे लिखि देलक जे दुलारी राशन-प्राप्तिक अधिकार छोड़ने नहि छथि आ ऋण-विवाद अलग निर्णयक विषय अछि। दुलारी हस्ताक्षर नहि कएलीह; प्राप्तिक मोहरवला प्रति लऽ गेलीह। तत्काल सहायता नहि भेटल, मुदा झूठी सहमति सेहो नहि बनल।

दुलारी कागद मोड़ि अपना गोठामे रखलीह, फेर घुमि कऽ फेर एलीह। “एकटा बात आरो,” ओ कर्मचारीसँ कहलीह, “राशन नहि भेटल तँ हमर घरमे आइ राति कतेक अन्न बचत, सेहो सुनू।” कर्मचारी पहिने एकरा भावुक आग्रह बुझलक, मुदा दुलारी तीन दिनक अनाज आ चारि जनक संख्या गनौलीह। ओ लिखित आवेदनमे ई सूचना जोड़बाक लेल तैयार भेल; वितरणक वचन नहि देलक। दुलारी ई अन्तर बुझि कऽ गेलीह—ककरो सुनब आ ओकर अधिकार पूरा करब एक्के बात नहि।

भोला दूधक डिब्बा वापस लैत काल मीरा सँ पहिल भुगतानक तिथि फेर पुछलनि। मीरा दिन गनि कऽ रसीदक कोनामे लिखलीह, “एहि दिन भेटब; नहि भेल तँ कारणक सूचना।” भोला कहला, “एतेक लिखलासँ पैसा अपने नहि आबत, मुदा हम कोन दिन मांगबाक अछि से जानब।” फूलमती अपन पातर छाँह-जालीक नमूना फरीदक कापी लग राखलीह। दूनूक काजक मूल्य अलग पन्नामे चढ़ल।

रुखसाना अपन कात बैसल-बैसल कापीमे एकटा गणना देखलीह। दूध बच्चासभकेँ वितरित करबाक समय, सब्जी धुअबाक समय, काटबाक समय आ मोल-भावमे गेल घड़ी—काल्हक रसोइक खर्चमे पहिल दू दर्ज छल, मुदा बजारक हानि छुटल छल। ओ अपन घरक राइन-कुजड़ा परिवारसँ अनल साग-बेगनक छोट आपूर्तिक हिसाब याद कएलीह। ओ मीरा सँ कागद माँगि कहलनि, “हम जे बजारसँ अनैत छी, ओकर खराब भेल मालो हिसाब अछि। काज केवल चूल्हि लग शुरू नहि होइत।” मीरा नव मद जोड़लीह; भुगतानक निर्णय आगाँ लेल रहल।

रुहानी ओहि दिनक अन्तिम अभ्यास शुरू कएलीह। हुनकर कथामे अर्जुनक बृहन्नला-नामक प्रसंग आएल, मुदा ओ कहलीह, “ओ कथा कठिन परिस्थिति सँ बाँचबाक

छद्मपरिचयक अछि। हमर जीवन ओकर अनुकरण नहि। हम आजु जे नाम अपनाइत छी, से हमर अपना अस्तित्वक वाणी अछि। हमरा संग नाच सीखबाक लेल अहाँक ई दुनू बातक अन्तर बुझबाक चाही।” बिरसी पुछलक, “तखन हम नाटकमे ककर बनब?” रुहानी उत्तर देलीह, “जे पात्र अहाँ अपन समझसँ चुनब, मुदा पहिले कथा पढ़ब।”

बच्चासभ हाथ पकड़ि गोल बनबैत छल। जतन फेर पट्टीपर पयर राखि देलक। एहि बेर ओ घबड़ाएल नहि; पट्टी उठा कऽ किनार रखि देलक आ अपन जगह फेर चिन्हलक। फरीद पट्टीपर तीन चोट देलक, फूलमती दू पातर बाँसक टुकड़ा खटखटौलीह, आ रुहानी बिना आदेशक अगिला गति देखबैत रहलीह। रुखसाना दर्शकक स्थानसँ एक बेर ताली बजौलीह। हुनकर पीठ दुखैत छल, मुदा ओ ताली रोकलीह नहि।

साँझक बैठकमे मीरा प्रशिक्षणक खर्चक प्रस्ताव पढ़लीह। नसीमक परदाक सिलाइ, पार्वती ताँतीक सूतक सम्भावित आपूर्ति आ पवित्रा पटवाक गँथाइ—तीनू काजकेँ एके ‘पोशाक’ कहि कऽ दाम नहि जोड़ल जाएत। पार्वती आ पवित्रा एखन कक्षामे नहि पहुँचल छलीह; हुनका सँ नाप, दर आ सहमति अगिला दिने लेबाक निर्णय भेल। रुहानी स्पष्ट कएलीह जे भेषक प्रदर्शनक लेल हुनकर जीवनक पहिचानकेँ सामान बनाओल नहि जाए।

विद्यालयक ओसार खाली भेलापर फट्टाक नया शीर्षक बाँससँ उतारि कऽ भीतर राखल गेल। मंचक अनुमति, नियमित धन आ घुमन्तु पाठशालाक औपचारिक नामांकन एखन शेष छल। मुदा कक्षाक पहिल दिनक बाद पाँचटा अलग रसीद आ एकटा अस्वीकृत ऋण-शर्तक आपत्ति नकलमे रहि गेल। रुखसाना घर घुरैत काल रुहानी केँ कहलीह, “काल्हि पार्वती सभ कपड़ा देखाथि तँ हमरा बजायब। एतय खेनाइ बनेबाक लेल नहि, रंग देखबाक लेल।” रुहानी कहलनि, “अहाँ दर्शकक टिकट अपने किनब?” रुखसाना हँसलीह, “हँ, मुदा एहि बेर पहिल पाँतिक।”

अध्याय ३९ • ताँतीक देय

सबेरे करघाक पहिल चोट परेलाक चिरबिराहटसँ अलग पहिचानल जाइत छल। पार्वती ताँतीक आँगनमे रातिसँ तानल सूतक धागा ओससँ तनिक नम भऽ गेल छल। ओ अँगुरीसँ तानीक एकटा तार उठौलीह, फेर कान लग कऽ सुनलीह। तार ठीक छल, मुदा काठक ढरकी घसाइत छल। घरक लोक एखन उठल नहि छलाह। पार्वती ढरकीक नोकमे तेलक दू बून्द छोड़ि देलीह। आजु विद्यालयक नृत्यकक्षाक कपड़ा देखएबाक दिन छल। रङ्ग चुनबाक आनन्दसँ बेसी हुनका चिन्ता छल जे काजक दाम फेर ककरो दोसरक नामपर नहि चलि जाए।

ओ भीतरसँ पुरान पागक एकटा थान निकालि ओसारपर पसरौलीह। सूतक किनारमे छोट हरियर फुलकारी छल, बीचमे धूसर पृष्ठ। किनारक गँथाइ अभी बाकी छल। एहि थानक बुनाइ पार्वतीक हाथक, किनार गँथबाक काज पवित्रा पटवाक। कियो देखत तँ एक्के कपड़ा कहत; पार्वती देखैत छलीह दू घरक दुईटा दीप, दू अलग समय आ दू पाँतिक उधारी।

पवित्रा आबिते सूतक थान उलटा कऽ देखलीह। “किनारक पहिल फेरा एतय किएक छोड़ि देलहुँ?” ओ पुछलनि। पार्वती कहलनि, “अहाँ गाँठ देबैत बेर धागा मोड़ि सकी। हम किनार पूरा बुनि देने रहितहुँ तँ दोबारा काटए पड़ित।” पवित्रा बेतक छोट डिबियासँ अपन रंगीन धागा निकाललीह। “तखन दाममे ई बचल समय लिखब। लोक बुझैत अछि पागक गँथाइ एक चुटकीमे होइत अछि।” दुनू हँसलीह। दुनू अलग परिवारक छलीह, अलग कामक सीख हुनका भेटल छल; मुदा ग्राहक प्रायः दुनूकेँ एक्के नामसँ हाँकि दैत छल।

दुआरपर यूसुफ अंसारी आयलाह। हुनकर हाथमे करघाक पुर्जाक छोट थैली आ सूतक नमूना छल। विद्यालयक लेल पर्दाक कपड़ा देबाक बात उठल छल; ओ अपन उत्पादन देखएबाक लेल पहुँचल छलाह। “हमर बेटा कहैत अछि, आब कपड़ाक फोटो खींचि फोनसँ बेचू,” ओ कहलनि, “मुदा जे तानी अधबीचमे टूटि जाए, ओकर आवाज फोन कहाँ सुनत?” पार्वती उत्तर देलीह, “फोनपर बेचनाइ ओकर काज भऽ सकैत अछि; काज बुननाइ अहाँक। दाम दूनूक अलग रहबाक चाही।” यूसुफ चुप भऽ गेलाह। बेटाक अपन

दोसर पेशा चुनबाक इच्छा पर घरे हुनकर बहस चलैत छल। आइ ओ बहस विद्यालयक दुआरपर नहि लेबए चाहैत छलाह।

विद्यालय जेबाक पहिने पार्वतीक सासु दरबज्जा लग आबि कऽ ठाढ़ भेलीह। हुनकर आँखि धागापर पड़ल। “हमर जमनामे पूरा थान बिकिते घरक मर्दक नामपर दाम चढ़ैत छल,” ओ कहलीह। पार्वती पुछलनि, “अहाँ अपन हिस्सा कहियो नहि माँगलहुँ?” बूढ़ि स्त्री मन्द मुस्की देलीह। “माँगलहुँ तँ घरमे कहासुनी भेल। फेर सोचलहुँ, बच्चा पैघ होएत तखन बुझत। आब बुझबाक वेला अहाँक अछि।” पार्वती हुनका एकटा पातर रंगीन किनार देलीह। “ई राखू। भोरक उजासमे केहन देखाइत अछि, कहब।” सासु किनार अपना कन्हापर धरि दर्पण देखए भीतर गेलीह। हुनकर इन्द्रधनुष देखबाक इच्छा एखन मेटल नहि छल।

तीनू थान लऽ कऽ विद्यालय पहुँचलाह तँ ओसारमे काल्हक नृत्यक गोलक चिह्न एखन माटिपर छल। बिरसी एकटा चिह्नपर पयर राखि ताल धरि रहल छलीह। फरीद चिक लकड़ीक पट्टीपर हलुक चोट दैत छल। रुहानी बच्चासभकेँ कहि रहल छलीह, “कपड़ाक रङ्ग अहाँक पयरक चालकेँ रोकए नहि; जे पहनब से आरामसँ चलबाक चाही।” रुखसाना पहिल पाँतिक दर्शक बनि अएल छलीह। ओहि दिन हुनकर हाथमे न रसोइक छोलनी छल, न खर्चक बही। हाथ खाली रहबाक अभ्यास हुनका एखनहुँ अजगुत लगैत छल।

मीरा नमूनासभ लेल एकटा खाटपर पातर कपड़ा बिछौलीह। कर्मचारी पहिने छपल दरपत्र देखौलनि। ओकर शीर्षक छल—‘नृत्य-पोशाक पूर्ण पैकेज’। ओहि एक पाँतिमे सूत, बुनाइ, रङ्ग, किनार, सिलाइ आ मंचक सजावट सभक दाम एकठाम लिखल छल। “एक्के बिल भेलासँ अनुदान देनिहारकेँ सुविधा होएत,” कर्मचारी कहलनि। पार्वती ओ पाँति पढ़ि थान मोड़ि लेलनि। “सुविधा ककरा? जे कपड़ा बुनत ओकर नाम कत्ता?”

कर्मचारीक आवाज कठोर भऽ गेल। “सामूहिक काजमे एतेक हिसाब करब तँ विद्यालयक कार्यक्रम कखन होएत?” पवित्रा अपन डिबिया बन्द करैत कहलीह, “हम अहाँक कार्यक्रम रोकए नहि आएल छी। मुदा जे पागमे गाँठ देब, ओकर मजदूरीकेँ कपड़ा बुनबाक मजदूरीमे डुबा देब तँ हमर घरक अनाज के गनत?” रुहानी दुनूकेँ खाटक कात

बैसबौलीह। ओ कर्मचारीसँ कहलीह, “काल्हि तय भेल छल जे पोशाक एक नामक सामान नहि। यदि आइ कागद फेर पुरनका अछि, तखन कार्यक्रम पुरनका शर्तपर नहि चलत।”

सोनमती तुरी ओहि बीच बाँसक बनल पातर चौकोर चौखटा लऽ कऽ एलीह। ओ बाहरी बाजार लेल छोट नमूना बनबैत छलीह। हुनका सुनाओल गेल छल जे विद्यालयक कार्यक्रमक बाद शिल्पसभकें नगरक व्यापार-प्रदर्शनीमे देखाओल जा सकैत अछि। “हमर चौखटापर कपड़ा तानू” ओ कहलीह, “तखन बिना देहपर लपेटने रङ्ग देखल जा सकत।” कर्मचारी पुछलक, “एहि लेल अलग भुगतान?” सोनमती चौखटा एक बेर खाटपर रखलीह, फेर उठा लेलीह। “जँ घेराक काठ भाड़ामे लेल जाए तँ भाड़ा लगैत अछि। हमर बाँस मुफ्त किएक?”

रुखसाना खाटक कातसँ सबटा सुनैत छलीह। हुनका याद पड़ल जे नृत्यकक्षाक काल्हुक पहिल भोजनमे जतन सब्जी काटने छल, मुदा फट्टापर ‘रुखसानाक रसोइ’ लिखल रहि गेल। ओ नाम हटएबाक आग्रह नहि कएने छलीह; आजु पवित्राक मुँहसँ एक्के सामानक भीतर अनेक हाथक कथा सुनि ओ जतन केँ बजा लेलीह। “काल्हि जे तू कटलहुँ ओकर मजदूरी हिसाबमे चढ़ल की?” जतनक उत्तर छल, “रुखसाना दीदी, हम जे काज केलहुँ, से अहाँ देखलहुँ; एतबे बड़ बात छल।” रुखसाना कहलीह, “देखब आ देब अलग बात अछि।”

सोनमतीक संग रुचि धारिकार आएल छलीह। हुनकर झोरामे रंगीन पट्टीसँ बुनल एकटा एहन नमूना छल जाहिमे दू दिशासँ सूत घूमि मध्यक छोट बिन्दुपर मिलैत छल। बच्चासभ ओकरा देखिते पुछलक, “ई फूल अछि कि तारा?” रुचि उत्तर देलीह, “जे नाम अहाँ देब, ओकरासँ पहिने ई हमर बुनल बनावट अछि।” ओ नाप लेबाक लेल कापी खोललीह। “हमर घरमे जे बनैत अछि, ओकर नक्शा फोटोक संग देल जाए, मुदा बिना पूछने बाहरी दुकानक लेल नकल नहि बनए।” हुनकर माँग सुनि पार्वती सहज भावसँ माथ हिलौलीह। हुनका बुझायल जे पहिल बेर कियो नमूनाक सौन्दर्यसँ पहिने ओकर मालिकक प्रश्न पुछि रहल अछि।

कमलेश खटिक एकटा बँडल लऽ कऽ दुआरपर रुकलाह। बाजारसँ मंचक लेल हलुक पट्टा आ बाँधबाक डोरी अनबाक काम हुनका कहल गेल छल। बँडलमे लाल रंगक दू पट्टी छल। एक लोक एकटा पट्टी देखि फुसफुसायल, “ई तँ ओही बजारक चीज जकाँ अछि, जतयसँ गलत खेप गेल छल।” कमलेश ओहि लोकक दिस तकलाह। “हम बाजारसँ किनल सामानक बिल अनने छी। रंग लाल भेलासँ अपराध लाल नहि भऽ जाइत अछि।” ओ कागद मीरा केँ देलनि। ओहि बिलमे सामानक संख्या छल, मुदा कपड़ा कोन काम लेल बाँधल जाएत से विद्यालयक नवा आदेशमे एखन लिखल नहि छल। मीरा कागद अलग राखि कहलनि, “पहिने वस्तुक उपयोग जाँचब। आरोप नहि, सामानक नाप।”

रुहानी पट्टी खिंचि देखलीह। बच्चाक कमरपर बाँधलासँ गाँठ बहुत कड़ा पड़ि सकैत छल। ओ कमलेशसँ पुछलीह जे ई किनबाक पहिने नाप कियो देलनि छल की। कमलेश कहलनि, “आदेशमे ‘बीस लाल पट्टा’ छल। बड़का-छोटका कोनो नाप नहि।” फरीद पट्टी अपन बाँहपर धरि देखौलक; ओकर बाँहपर लाल निशान पड़ि गेल। विद्यालयक कर्मचारी सकुचायल। “तखन लौटाओल जा सकत?” कमलेश कहलनि, “दुकानदारसँ बात करब, मुदा ओकर भाड़ा आ हमर आवागमनक श्रम कोन मदमे जायत?” मीरा पहिने ओकर उत्तर नहि देऽ सकलीह।

पार्वती नमूनाक बीचसँ एकटा हलुक कपड़ा उठौलीह। “नाच लेल मोट डोरी चाही किएक? हम कपड़ाक भीतर नरम तागा देब। किनारमे जे सजावट चाही से पवित्रा बना देथिन।” पवित्रा तुरन्त टोकलीह, “हम ‘देब’ नहि; पहिने बुझब जे कतेक तागा, कतेक पाँति, आ कतेक घड़ी।” रुखसाना जोर सँ हँसि पड़लीह। “अहाँ दुनूकेँ देख कऽ लागत अछि जे हम रसोइमे पानीक दू घड़ा नापबाक लेल कतेक बेर लड़ने छी।” ओ अपन बात स्वयं सुधारलीह, “लड़ाई नहि, अपन काजक माप।”

बिरसी पवित्राक डिबियामे राखल नीला धागा देखैत छलीह। “ई हमरा लेल?” ओ पुछलक। पवित्रा एकटा छोट तुकड़ा ओकर हाथमे रखलीह। “पहिने छू कऽ देखू।” बिरसी धागा अँगुरीमे फेरलक। “ई आकाश जकाँ ठंढा अछि।” रुखसाना कहलीह, “आ हरियर?” बिरसी हरियर किनार लऽ कऽ अपना गाल लगौलक। “ई खेत जकाँ गरम।”

सभ हँसलाह। कोनो लोक एहि बेर रंगकें कोनो धर्म, जाति अथवा खास देहक बँटवारा नहि कहलनि। बच्चाक पसन्द सुनबाक लेल एकटा अतिरिक्त घड़ी निकलि आएल।

कक्षा लगक छोट माटिक बाटपर पानि जमा भऽ रहल छल। पछिला राति थोड़े मेघ पड़ल छल; छप्परक एक कोनासँ टपकैत बून्द सोझे ओहि खाटपर गिरए लागल जतय नमूना राखल छल। सोनमती तुरन्त चौखटा उठौलीह। यूसुफ थान समेटलनि आ पवित्रा अपन रङ्गक डिबिया झोरामे राखलीह। बिरसी दौड़ि कऽ माटिक भाँड़ अनलीह, मुदा रुहानी ओकरा रोकि कहलीह, “ओहि कात पयर फिसलत; पहिने दूर ठाढ़ हो।” ओसभ नमूना भीजए सँ बचा लेलनि। मीरा छप्परक सुधारक मद लिखबाक लेल पर्ची निकाललीह। पार्वती कहलीह, “जाहि दिन काज चलैत अछि, ओहि दिन जगहक सुरक्षा सेहो ककरो काज बनैत अछि।”

ओहि घड़ी यूसुफक फोन बजल। हुनकर बेटा छल। दुकानसँ कहल गेल छल जे घरक पुरान करघाक मरम्मत लेल सामान आनब पड़त; बेटा अपन इलेक्ट्रॉनिक प्रशिक्षणक समय छोड़ि जाएब नहि चाहैत छल। यूसुफ पहिने झुँझलाहटसँ कहलनि, “घरक काज ककरा छोड़ि देब?” फेर विद्यालयक खाटपर पसरल पाँच प्रकारक काज देखलनि। ओ फोनपर धीरे कहलनि, “तूँ प्रशिक्षण छोड़ि नहि आबह। हम मरम्मतक सामान आनब। साँझमे दुकानक हिसाब देखए लेल समय भेटत तँ आबह; नहि तँ हम देखब।” फोन काटलाक बाद हुनका चेहरापर जीतक गर्व नहि, थोड़ा डर छल—नव व्यवस्था सचमुच चलत की नहि।

दुपहरिक घाम ओसारक एक कातसँ खिसकि गेल। सोनमती अपन चौखटापर पार्वतीक थान फैलौलीह। रुचि तानल कपड़ाक बीच अपन नमूना राखलीह, पवित्रा किनारपर गँथाइ धरलीह। पाँच लोकक पाँच हाथ एक वस्तुक लग छल, मुदा कियो दोसरक जगह नहि लेत छल। रुहानी ओहि थानक आगाँ बच्चासभकें धीर चालमे घुमबौलीह। कपड़ा शरीरपर लपेटल नहि छल; केवल हवा लागलासँ ओकर किनार हिलैत छल। “जे पहिरबाक अछि, ओकरा पहिने देखब जे ओ नाचमे कहाँ फँसि सकैत अछि,” रुहानी कहलीह।

कर्मचारी फेर दरपत्र लऽ कऽ अएल। एहि बेर ओहि पन्नापर पाँच रेखा खींचल गेल छल। यूसुफक सूतक आपूर्ति, पार्वतीक बुनाइ, पवित्राक गँथाइ, सोनमतीक चौखटाक

भाड़ा आ रुचिक नमूनाक प्रयोग—सभक अपना मद। कमलेशक बँडलकें परीक्षण पूरा भेलाधरि अलग रखल गेल। “एहि बेर दाम जोड़ल तँ बजट अधिक भऽ जायत,” कर्मचारी कहलक। पार्वती कहलीह, “पहिने बजट कम देखाबए लेल जकर मजदूरी नहि लिखल जाइत छल, ओही अधिक छल। बस, कागदमे नहि देखाइत छल।”

मीराक मनमे कार्यक्रम टुटबाक चिन्ता उठल। पाँच मद अलग लिखलासँ अनुदानक स्वीकृति फेर मँगाए पड़त; देरि भेल तँ बच्चासभक अभ्यास बाधित होएत। ओ पार्वतीसँ पुछलीह, “पहिने एकटा नमूना बनि जाए, अग्रिम छोट देयपर? बादमे समितिसँ सभक दर स्वीकृत कराएब।” पार्वती उत्तर देलीह, “एकटा नमूना बनाबय लेल एखन कतेक घड़ी देब, लिखू। नमूनाक बाद पूरा थान बनाबक आदेश अलग। पहिल काजकें मुफ्त देखाबय लेल ‘नमूना’ नाम नहि देल जा सकैत अछि।” मीरा एहि शर्तपर राजी भेलीह।

छोटो-छोट कागद बाँटिटे विद्यालयक एक अभिभावक चिन्तित भेलाह। “बच्चाक कक्षाक लेल इतेक लोकक दाम? टुकड़ा खरीदि लेब तँ सस्ता पड़त,” ओ कहलनि। रुचि अपन बुनल पट्टी हुनका देलीह आ कहलनि, “एहि पट्टीकें दू बेर खींचू।” पिताजी खींचलनि; गाँठ नहि खुजल। “हम एकरा तीन बेर उलटि बुनने छी। टुटलापर बच्चाक हाथमे कँटिया नहि लगत। सस्ताक अर्थ सदिखन सुरक्षित नहि।” अभिभावक गम्भीर भेलाह। “हमर बच्चा मंचपर पैघ लोकक सोझाँ ठाढ़ होएत। ओकरा सुंदर देखाबए चाहैत छलहुँ; सुरक्षित देखबाक बात पहिने नहि सोचलहुँ।”

पवित्रा कापी खींचि लेलीह। ओ नमूनाक लेल अलग छोट नाप लिखलीह—कतबा किनार, कतेक गाँठ, कतेक सूत। विद्यालयक कर्मचारीक आग्रह छल जे रसिदपर दुनू स्त्रीक नाम एकटामे रहए; जगह बचत। पवित्रा खाली पाँति पर अपन नाम लिखलीह आ अगिला पाँतिमे पार्वतीक लेल जगह छोड़लीह। “जगह बचएबाक सबसँ सस्ता तरीका नाम काटब अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहि पन्नामे ओ जगह हमर चाही।” कर्मचारी एहि बेर विवाद नहि कएलक।

कमलेशक बिलक फेर चर्चा उठल। बजारक एक पुरान तौल-पर्चीपर ओहि दुकानदारक नाम छल जे पहिने अस्पतालक आपूर्तिक किछु सामान सेहो देलक छल। कियो अनुमान लगौलक जे लाल पट्टी ओतएसँ गलत खेपमे आएल। नैरा, जे मीरा सँ जलकर-पट्टाक दू

नकल लेबाक लेल एतय पहुँचल छलीह, कागद देखलीह। ओ स्पष्ट कहलीह, “दुकानदारक नाम मिलब दू वस्तुक एक्के खेप होएबाक प्रमाण नहि। एखन पट्टीक वस्तु, आदेशक माप आ रसीदक तिथि मिलाउ। अस्पतालक कागद अलग जाँचब।” कमलेश पहिल बेर सहजसँ साँस छोड़लनि। हुनकर वस्तुपर प्रश्न शेष छल, हुनकर समुदायपर आरोप नहि।

नैरा किछु समय लेल खाट लग बैसि गेलीह। अध्याय २० केर जल्दी प्रकाशनक बाद ओ एहन कागद देखिते हस्ताक्षर करए नहि चाहैत छलीह। कमलेशक मूल बिलक तस्वीर खींचबाक अनुमति माँगलीह। कमलेश कहलनि, “तस्वीर एखन नहि; मीरा जे नकल दैत छथि से देखू।” नैरा मानि गेलीह। रुहानी हुनका एक कप पानि देलीह आ पुछलीह, “अहाँ कखनसँ ककरो ‘नहि’ सुनि कऽ तुरन्त रुकि जाइत छी?” नैरा हलुक हँसलीह। “एकटा बात बहुत देरीसँ सीखलहुँ,” ओ कहलीह। उत्तरमे रुहानी दोसर प्रश्न नहि पुछलीह।

साँझ होइत-होइत पवित्राक उँगुरीमे सूतक पातर फाँस अटक गेल। पार्वती अपन कापड़सँ ओहि फाँस निकालि देलीह। पवित्रा हुनकर हाथ पकड़ि कहलीह, “दाम अलग लिखबाक मतलब अपनापन अलग करब नहि।” पार्वतीक आँखि चमकि उठल। “एहि बात लेल तऽ हम लड़ि रहल छी,” ओ कहलीह। “केकर काज केकरा सँ जोड़ल अछि से सभ देखथि; मुदा जोड़ल रहबाक अर्थ ई नहि जे नाम मेटा देल जाए।”

पार्वतीक घर सँ दूत बनि बेटीक छोट सखी दौड़ैत एलीह। सासु घरक भीतरक दरपन तोड़ने नहि छलीह; मात्र ओहि किनारकेँ अपन पुरान आँचर लग धरि कहने छलीह जे एहन रङ्ग बहुत दिनसँ नहि देखल। सखीक हाथमे पातक छोट पुरिया छल, जाहिमे गुड़ आ भूजल चना रखल छल। “अम्मा कहने छथि, काजक बीच खाइ लेब,” बच्ची कहलनि। पार्वती पुरिया खोलि सभकेँ थोड़ा-थोड़ा बाँटलीह। पवित्रा अपन भाग रुखसानाकेँ देब चाहलीह, मुदा रुखसाना हाथ उठौलीह, “नहि, हम अपन भाग अपने लेब। आजु ककरो सेवा करबाक ड्यूटी नहि।” सभ फेर हँसलाह।

सोनमती चौखटा उठबैत घड़ी मीराकेँ चेतबनी देलीह जे बाहरी बजारक प्रस्तुति आ विद्यालयक उपयोग लेल अलग अनुमति चाही। रुचि अपन नमूनाक पाछाँ छोट चिह्न सिअलीह, जाहिसँ नकल बनैत वेला स्रोतक प्रश्न उठए। मीरा साफ कहलीह जे एहि दिन

कोनो दीर्घकालीन बाजार-सौदा नहि भेल; ओ प्रस्ताव अगिला बैठकमे जायत। सोनमती प्रसन्न भेलीह—एक बेर नहि कहि सकबाक अधिकार सेहो नव व्यापारक आरम्भ छल।

यूसुफ थानक कात ठाढ़ भऽ अपन बुनल कपड़ामे एकटा पातर त्रुटि देखलनि। ओ दोष ढाँकि देबाक लेल किनार मोड़ब चाहैत छलाह, मुदा पार्वती रोकलीह। “ई जगह नमूनामे चिन्हि देब। पूरा थान बनत तँ ठीक करब।” यूसुफ सहमत भेलाह। हुनका एखन कारोबारक बड़का भविष्य बुझाईत नहि छल, मुदा ई बुझाईत छल जे ग्राहककें गलती देखाएब अपमान नहि, समय रहते सुधारक बाट अछि।

दरपत्रक नवा प्रति बनैत काल यूसुफ देखलनि जे सूतक आपूर्तिक पाँतिमे कोनो पुरान देय नहि चढ़ल। हुनका पूर्वक एक व्यापारीक उधारी याद पड़ल, जकरा कारण ओ महीन धागा उधार आनने छलाह। ओ मीरा सँ कहलनि, “एहि नमूनाक दाममे हमर पुरान ऋण नहि जोड़ू; मुदा अग्रिम भेटत तँ हम सूतक देनिहारकें चुका सकब।” मीरा अलग तिथि लिखलीह। ऋण चुकबाक वचन आजुक बिक्रीसँ बड़ा छल; यूसुफ नहि चाहैत छलाह जे बेटाक प्रशिक्षणक फीस फेर करघाक उधारीक संग गड़मड़ भऽ जाए।

रुखसाना सभ काज खत्म भेलापर रंग देखबाक लेल एक बेर फेर रुकलीह। हरियर, नीला आ धूसर थान साँझक उजासमे राखल छल। ओ बिनु ककरो कहने एकटा छोट ताल बजौलीह, फरीद हँसि कऽ ओकर उत्तर देलक। “काल्हि जखन बच्चासभ एहि किनारक संग घूमत,” रुखसाना कहलीह, “हम सभसँ आगाँ बैसब।” पार्वती पुछलीह, “टिकट किनि लेलहुँ?” रुखसाना चुटकी लेलीह, “टिकटक रसीद अलग बनाबब—हमहूँ सीखि गेलहुँ।”

विद्यालयक फट्टा पर ‘पूर्ण पैकेज’ वाली पाँति काटि देल गेल। नव पन्नामे नमूना बनएबाक पाँच अलग दाम, अनुमति आ भुगतानक तिथि दर्ज भेल। दाम एखन सभ स्वीकृत नहि छल; तइयो कियो एक दोसरक नामपर काम बेचि नहि सकैत छल। पार्वती अपन थान समेटैत काल देखलीह जे कपड़ाक एक कोनापर नसीमक सिलाइ लेल छोड़ल निशान एखन स्पष्ट छल। आइ बुनाइ आ गँथाइ अलग भेल; काल्हि कपड़ा धोनिहार उर्मिला एहि कपड़ाक धुलाइक समय आ अस्पतालक पुरान पंजी लऽ कऽ आबएबाली छलीह। पार्वती निशानपर अँगुरी फेरि थान मोड़ि लेलीह। धागा एखन काटल नहि गेल छल।

अध्याय ४० • कपड़ा पंजी

घाटपर कपड़ा पसारबाक पहिने उर्मिला पाटपर हाथ फेरलीह। रातिक पानि खसि गेल छल, मुदा पत्थरक बीचक कादो एखन नरम छल। ओ अपन लादी एक कात रखलीह, कमरमे बान्हल पुरान कापीक डोरी खोललीह आ पन्नासभ गनि देखलीह। जे पन्ना अस्पतालक छल से पानि सँ बचएबाक लेल तेल लागल कागदमे लपेटल छल; जे पन्ना अपन मजदूरीक छल से कपड़ाक भीतर। दुनू बही एक्के झोरामे छल, मुदा दुनूक मालिक आ काम एक नहि छल।

काल्हि विद्यालयमे पार्वती आ पवित्रा अपन बुनाइ आ गँथाइक अलग दाम लिखबा लेने छलीह। उर्मिला ओतय केवल सुनबाक लेल नहि गेल छलीह। नसीमक सिलाइक लेल छोड़ल कपड़ाक कोनापर ओकरा नजरि पड़िते ओ कहने छलीह, “धोनाइ बिना पहिरबाक थानक सच्चा नाप नहि बुझाएत। मुदा अस्पतालक कपड़ाक हिसाब नृत्य-पोशाकक हिसाब नहि।” पार्वती पुछने छलीह, “दाम अलग लिखबाक बात अहाँक पंजीमे सेहो अछि?” उर्मिला उत्तर देने छलीह, “नाम लिखल अछि; समय हरदम नहि।” आइ ओ ओही समयक हिसाब लऽ कऽ आयल छलीह।

बरकी पोखरिक पक्का घाटपर सूर्योदयसँ पहिने दूटा घड़ा भरबाक क्रम लागल छल। एक कात स्नानक सीढ़ी, दोसर कात कपड़ा धोएबाक पाट आ तेसर दिस बिना सीढ़ीक अघट छल, जतय हाथगाड़ी ठुक्कैत छल। पानीक तीनू उपयोगक समय अलग छल। मुदा किछु दिनसँ पक्का घाटक आधा भागपर लोहाक जाली आ गोदामक खाली पेटी राखल रहैत छल। हाथगाड़ीकेँ अघटक कादोमे उतरए पड़ैत छल। जे जल्दीमे होइत, ओ कपड़ा-मजदूरक प्रतीक्षा नहि करैत छल।

रेणु पहिनेसँ ओतय छलीह। हुनकर हाथमे छोट डोरी आ पाटपर खींचल निशान छल। “आइ घाट-आदरक तैयारीक नाप लेब, कहने छथि,” ओ बजलीह, “लोक पहिने रंगीन झंडा गाड़त, तखन जाली हटाओत। हमर बात विपरीत अछि।” उर्मिला कहलीह, “झंडा रहलासँ पानी नहि बँटत। पहिने पाट धरि बाट देखु।” रेणु हँसलीह, “अहाँ आइ फेर बहीक

वकालत लऽ कऽ अएल छी।” उर्मिला अपन झोरा थपथपौलीह। “भिजल कपड़ा गनबाजोग काज अछि, भिजल मन के गनत?”

ओही समय चम्पा आँगनक भीतरसँ नहि, घाटक ऊपरक बाटसँ आयलीह। हाथमे हुनकर मायक इलाजक लेल धोबघट्टासँ उठाओल साफ चादर छल। पाछाँ दू युवक मोबाइल उठौने ठाढ़ छल। एक कहलक, “सफाई पर्वक फोटो लेब। सभक भागीदारी देखाएब।” चम्पा ठमकि गेलीह। “हमर मुँह आ चादर एक्के तस्वीरमे नहि जाएत,” ओ कहलीह। युवक कहलक, “सार्वजनिक घाट अछि।” उर्मिला ओकर हाथक फोन दिस तकलीह। “घाट सार्वजनिक अछि, चम्पाक देह नहि। हाथक काजक फोटो चाही तँ ककर काज, कतेक पारिश्रमिक, आ ककर सहमति—पहिने लिखू।” युवक फोन नीचाँ कऽ लेलक।

सफाई-दिवसक आयोजन लेल आएल स्वयंसेवकसभमे अलग-अलग घरक लोक छलाह। कियो जाली सरकबैत छल, कियो फिसलनवला पाटपर राखल कादो अलग ढेरमे भरैत छल, कियो बच्चासभकेँ पानि लग नहि उतरबाक हिदायत दैत छल। रुखसानाक रसोइसँ भात आ साग आबयवाला छल, मुदा भोजन बनौनिहार आ सफाई करनिहार सभक घड़ी लिखबाक आग्रह उर्मिला कएलीह। “भोजमे सभ बैसताह,” ओ कहलीह, “बहीमे सभक नामो रहबाक चाही।” छोट बच्चा एकटा झाड़ू पकड़ि दौड़ए चाहलक। रेणु ओकरा झाड़ू देबाक बदला रंगीन चिह्नवला पत्थर देखबक काज देलीह।

सरोज खरकौट अपना संग जालक दूटा छोट टुकड़ा अनने छलीह। एक पुरान छल जकर धागा पानि खा कऽ कठोर भऽ गेल रहैक, दोसर नव सूतसँ बनल छल। “झाड़ू चलैत काल ई जालक गाँठ कियो कचरा बुझि नहि फेकथि,” ओ पुछलीह। माछ पकड़बाक जाल ओ स्वयं मरम्मत करैत छलीह, मुदा नव जालक लागत साझाक प्रश्नपर हुनकर घरमे मतभेद छल। जे पैसावला छल ओ पूरा जालक पट्टा अपन नाम करए चाहैत छल। सरोज जाल धरि कहलनि, “जाल खींचबाक हाथ कम पूँजीवला होएत तँ ओकर हिस्सा कतय जाएत?” रेणु पुरान गाँठ अलग बाँधि रखबाक जगह देखौलनि।

सरोज कापीक एक पन्नापर नव जालक धागा, बाँसक खूँटा आ मरम्मतक समय लिखौलीह। उर्मिला देखलीह, धागाक मूल्य लिखल छल मुदा गाँठ बाँधबाक घड़ी खाली

छल। “ई खाली पाँति बादमे कियो मनमाफिक भरि देत,” ओ कहलीह। सरोज कलम उठौलीह। “आजुक समय आइ लिखब। हिस्साक अन्तिम निर्णय जाल बनौनिहार सभक बिना नहि होएत।” पहिल छोट सहमति ई भेल जे घाटसफाइमे बचल जालक मरम्मत मुफ्त श्रम नहि मानल जाएत; बड़का साझा जालक खर्चपर अगिला बैसारमे बात होएत।

गीता कोरी घाटक ऊपरक सँकरा बाटपर कपड़ाक नमूना लऽ कऽ पहुँचल छलीह। हुनकर आँगनमे बुनल पातर कपड़ा एक कम्पनीक माध्यमसँ सीमापार गेल छल, मुदा पूरा दाम नहि भेटल छल। ओ नमूनाक रंग आ बुनोट देखएबाक लेल उर्मिलाकेँ बजौने छलीह; अस्पतालक चादरक आपूर्तिक संग मिलैत रंगक कारण हुनकर मनमे सन्देह छल। “एक्के धूसर देखिते हमर थान साबित भऽ जायत?” गीता पुछलीह। उर्मिला कपड़ा अँगुरीमे मसललीह। “रंग मिललासँ कारखाना नहि मिलैत अछि। धागा, नाप, किनार आ बिल मिलाउ। अहाँक बकाया अपन कागदसँ माँगू।” गीता नमूना फेर झोरामे राखलीह; ओ अपन श्रमक दावा ककरो औषधि-जाँचपर आश्रित नहि रखबाक निर्णय कएलीह।

सूर्य ऊपर चढ़िते नूरजहाँ ईटफरोश छोट गाड़ी लऽ कऽ पहुँचल छलीह। गाड़ीमे ईट नहि, फिसलन रोकबाक लेल खुरदुरा पुरान टुकड़ा छल। एक गदहा गाड़ी लग बान्हल रहैक। नूरजहाँ पहिने ओकर मुँहक लग पानि देलीह, फेर गाड़ी खोललीह। घाटक कादोमे भारी ईट उतारबाक प्रस्ताव हुनका कियो देने छल, मुदा ओ देखिते कहलीह, “एहि बाटपर गाड़ी उतरत तँ पशुक पयर धँसत। हमरा पशुसेवा आ ढुलाईक खर्च एक्के नहि चाही।” आयोजकक एक लोक कहलक, “पर्वक काम अछि, दान बुझू।” नूरजहाँ सीधा उत्तर देलीह, “दान हम अपन मनसँ देब, करारक मजदूरी कियो दान घोषित नहि करत।”

माधुरी दांगी दू स्त्रीक संग अनाज छानबाक सूप लऽ कऽ आयलीह। साझा भोजन लेल हुनकर दल मडुआ आ चाउर छानल छल। रुखसाना सँ बात भेल रहैक जे सामग्रीक दाम अलग आ छानबाक मजदूरी अलग लिखल जाएत। “भोजनमे सभक नाम अबैत अछि,” माधुरी कहलीह, “मुदा अनाज साफ करनिहार स्त्रीसभक घंटा मेटि जाइत अछि।” उर्मिला अपन बहीक ओहि खाली पाँतिक दिस देखौलीह जतय हुनकर रातिक धोनाइ घड़ी छूटल छल। “एहि बेर छूटत नहि,” ओ कहलीह। माधुरी सभ स्त्रीसँ पूछिकऽ समय लिखलनि। गीता हँसि कहलीह, “आइ घाटपर घड़ीक व्यापार खूब अछि।”

मजाकक बीच उर्मिलाक काम कठिन छल। अस्पतालसँ आएल एक दिनक कपड़ामे दू तरहक थैली छल। एकपर साफ धोनाइ लेल संख्या लिखल, दोसरपर अलग रखबाक चेतावनी। पहिनुका रजिस्टरमे दुनूकेँ केवल ‘कपड़ा’ लिखल जाइत छल। उर्मिला कहलीह, “हम चिकित्सालयक उपचार नहि जाँचैत छी; जे कपड़ा हमरा हाथमे आएल से कतबा आ कहिया आएल, एतबे लिखब। अलग रखबाक थैलीकेँ बिना उपयुक्त व्यवस्था नहि खोलब।” रेणु ओहि थैलीक लेल सुरक्षित ठाम चिह्नित कएलीह। घाटक सार्वजनिक पानि आ अस्पतालक विशेष काजकेँ एक्के नादमे नहि मिला देबाक शर्त बनल।

नैरा थोड़ी देरमे पहुँचल छलीह। विद्यालयमे काल्हि सुधरल दरपत्रकक नकल हुनकर झोरामे छल, मुदा ओकरा ओ एहि दिनक जाँचसँ अलग रखलीह। “अहाँक पुरान पंजी देखब की?” ओ उर्मिलासँ पुछलीह। उर्मिला झटसँ नहि देलीह। “पहिने ई बताउ, कोन पाँति अहाँ देखब चाहैत छी। मरीजक नाम, मजदूरक नाम आ थैलीक तिथि अलग छथि।” नैरा रुकि गेलीह। महेशक गवाही समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक गलती हुनका एखनहुँ याद छल। “कपड़ाक गिनती आ पहुँचनाइ-उठौनाइक समय,” ओ कहलीह। “रोगीक नाम हम नहि लिखब।”

उर्मिला ओहि आश्वासनपर अपन नकल-पंजी खोललीह। तीन दिन पहिनुक पन्नामे चौदह गट्टरक संख्या छल। घाटक बहीमे उर्मिलाक हस्ताक्षरक लग आठ बजि बीस मिनटपर उठान लिखल रहैक। अस्पतालक आपूर्ति-कक्षसँ भेटल प्रतिमे सात बजि पैंतालीस मिनटपर ‘प्राप्त’ अंकित छल। दू घड़ीक अन्तर केवल पैंतीस मिनट नहि, क्रमक उलटाव छल। पन्नाक तिथि मिलैत छल; गट्टरक पहचानचिह्न सेहो मिलैत बुझाइत छल। नैरा पहिने भौहें चढ़ौलीह, फेर अपना कापीमे तीनटा प्रश्न लिखलीह—प्राप्तिक अर्थ की, पर्ची पहिनेसँ भरल गेल छल की, आ थैलीक चिह्न कोन लोक मिलाओलक?

“हम आठ बीस पर घड़ी देखलहुँ,” उर्मिला कहलीह, “किएक तँ ओहि दिन हमर लेल दोसर घाटक काम छोड़ए पड़ल छल। मुदा अस्पतालक पन्ना हम भरने नहि छी। कियो सात पैंतालीस लिखलक, एतबे देखाइत अछि।” नैरा पुछलीह, “तब कपड़ा अस्पताल पहिनेसँ पहुँचि गेल छल?” उर्मिला माथ हिलौलीह। “एहि बातक उत्तर हमर लग नहि।

कियो पहिनुका खेप गनने हो, पर्ची अग्रिम भरल हो, अथवा गिनतीक त्रुटि हो—सभ जाँच चाही। हमर नावपर देरि मत लिखू, आ ककरो नावपर चोरी सेहो नहि।”

गीता कापीक कोना देखैत छलीह। ओ पुछलीह, “गट्टरक चिह्नो कखनो दोहराइत अछि?” उर्मिला कहलीह, “हँ, जँ खाली थैली फेर काममे लाओल जाए। तँ दिनक संग कपड़ाक संख्या देखू।” सरोज अपना जालक पुरान रंगीन गाँठ उठौलीह। “जालक एक्के नीला गाँठ हमरा दू साल धरि याद अछि, मुदा हमर यादि पंजी नहि,” ओ कहलीह। एहि छोट तुलना पर नैरा मुस्की देलीह। फकीरासँ सीखल सुनल—देखल—अनुमानक तीन भेद फेर हुनकर कापीमे स्पष्ट भऽ उठल।

चम्पा एक कात बैसल छलीह। ओ पुछलीह, “एहि उलटल समयसँ रोगीक इलाजपर असर भेल?” उर्मिला चुपचाप अस्पतालक दोसर पन्ना देखलीह। उपचार-कक्षक सार्वजनिक कार्यसमयक नकलमे ओहि दिन एक अतिरिक्त चादरक माँग दर्ज छल, मुदा माँग ककरा लेल छल से निजी कागदमे रहैक। “माँग भेल छल, एतबे लिखल अछि,” उर्मिला कहलीह, “माँग पूरा कखन भेल आ देरीसँ ककरा की भेल—अलग जाँच। हम गवाही देब जे हमर गाड़ी कखन चलल। रोगीक दशा डॉक्टर कहताह।” चम्पा अपन मायक इलाजक चिन्ता यादि कऽ सहमति मे माथ हिलौलीह।

अदिति नगरक जलनिकास देखबाक लेल घाटपर एलीह। ओ जे नाप लेबैत छलीह ताहिमे घाटक बाहरी पानि आ अस्पतालक उपयोगक पानीक बाट अलग छल। नूरजहाँक गाड़ी देखिते ओ कहलीह, “पक्का घाटक टूटल किनारपर भारी ईटक बोझ नहि राखू।” उर्मिला तुरन्त पुछलीह, “तखन अस्पतालक कपड़ाक गाड़ी कोन बाट जाएत?” अदिति पुरान नक्सा खोललीह। एक बाट बन्द बाहाक लगसँ घूमैत छल; ओतय गोदामक पेटी राखल रहैक। “आजुक लेल हलुक गाड़ीक अस्थायी बाट चिह्नित करब,” ओ कहलीह, “स्थायी मरम्मत लेल जाँच चाही।” उर्मिला कहलनि, “ई उत्तर एखन लेल ठीक, मुदा समय लिखू। नहि तँ भोरमे फेर पाटपर अटकि जाएब।”

घाट-आदर दिवसक बैठकमे फोटो लेबाक प्रस्ताव फेर उठल। एहि बेर संकेत स्वयं आयल। ओ कैमरा खोललासँ पहिने उर्मिलासँ पुछलक, “काजक हाथक तस्वीर लेल अनुमति अछि?” उर्मिला कहलनि, “मुदा चम्पा नहि; रोगीक थैलीक चिह्न नहि; आ फोटो

लेबाक घड़ीमे जकर काज रोकेत ओकर समयो लिखब।” संकेत हँसि पड़ल। “फोटो लेल सेहो मजदूरी?” “हमर हाथ रोकब तँ हँ,” उर्मिला बजलीह। संकेत पाट, सुरक्षित बाट आ पानीक चिह्नक तस्वीर खींचलक; जकर चेहरा नहि चाही छल, ओकरा फ्रेमसँ बाहर रखलक। ओकरा अपन फोनपर अधिकारक सीख एखन काज आबि रहल छल।

रुखसाना आ माधुरी भोजनक भाँड़ अनलीह तँ घाटपर थकानक बीच चहल-पहल भऽ गेल। नूरजहाँ अपन पशुकेँ छाहरिमे बान्हि कऽ आयलीह। सरोज हुनका कहलीह, “अहाँक गाड़ी जँ काल्हि फेर एतय अएल तँ जालक खूँटा नहि कुचलू।” नूरजहाँ जवाब देलीह, “हम पयरक बाट देखब, अहाँ पहिने खूँटा पर झंडा बाँधू।” दुनू हँसलीह। गीता अपन दूर रहल सहकर्मीकेँ देबाक लेल भोजनक विधि लिखबाक आग्रह कएलीह। माधुरी कहलीह, “विधि लिखि देब, मुदा छानबाक मजदूरी नहि भूलब।” कोनो नवा सुराग नहि भेटल; केवल भात, साग, पानि आ लोकक थाकल देहक विश्राम छल।

उर्मिला भातक पहिल कौर खाइते रुखसानासँ पुछलीह, “अहाँ जे एक दिन रंग देखएब गेल रही, सचमे विश्राम भेटल?” रुखसाना मुस्की देलीह। “रंग देखलहुँ। मुदा अगिला दिन सभकेँ भोजनो बनाबए पड़ल।” उर्मिला कहलीह, “हमर मोन अछि अगिला उराहिमे एक बेर बिना पाट आ लादीक घाटपर बैसू। कपड़ा सुखाएत दोसर लोक।” रुखसाना उत्तर देलीह, “हम तखन अहाँकेँ भात परोसब की?” “नहि,” उर्मिला हँसलीह, “अहाँ हमर संग बैसब। अपना लेल भोजन दोसर लोक बनाओत।”

दुपहरि बाद अनिरुद्ध अस्पतालक आपूर्ति-कक्षसँ एक कर्मचारीकेँ लऽ कऽ पहुँचलाह। उर्मिला पहिनेसँ आग्रह कएने छलीह जे पंजीक मूल पन्ना, देयक पन्ना आ उपचार-सम्बन्धी गुप्त लेखा अलग रहए। अनिरुद्ध अस्पतालक प्रतिक प्रमाणित नकल देखौलनि, मुदा रोगीक पहिचानवला भाग ढाँकि देलनि। हुनका सँ पहिने नैरा पुछलीह, “सात पैतालीसक ‘प्राप्त’ शब्दक अर्थ वास्तविक कपड़ा पहुँचनाइ अछि, कि आवक-पर्ची खोलब?” कर्मचारी कहलक, “एहिमे ई भेद नहि लिखल अछि। नियमित रूपेँ पर्ची पहिने खोलल जा सकैत अछि, मुदा ओहि दिन के केलक, हमरा मूल मिलान देखए पड़त।”

उर्मिला पहिने सँ तैयार प्रश्न पढ़लीह। “जँ पर्ची पहिने खुलल छल, तखन ‘प्राप्त’ किएक? हमर गाड़ी आठ बीसपर घाट छोड़लक। हम सात पैतालीसपर अस्पताल पहुँचि

नहि सकैत छलीह। हमर मजदूरीमे तीस-पैंतीस मिनट घटाओल गेल अछि। से कोन आधारपर?” अनिरुद्ध प्रश्न सुनि गंभीर भेलाह। “पहिने पन्नाक सुधारक आदेश देब चाही,” ओ कहलनि। उर्मिला उत्तर देलीह, “पन्ना काटि नहि देब। गलती रहए तँ मूल पन्ना संग सुधार-टिप्पणी देब। जे लिखल छल से बचल रहए।”

कर्मचारी ओहि दिनक द्वार-पंजीक नकल निकाललक। ओहिमे कपड़ाक हाथगाड़ी प्रवेशक समय नौ बजिक बाद अंकित छल, मुदा चालकक हस्ताक्षर अस्पष्ट छल। नैरा एतबे दर्ज कएलीह जे आपूर्ति-कक्षक सात पैतालीस आ द्वारक नौ बजिक समय आपसमे नहि मिलैत अछि; गाड़ी उर्मिलाक रहबाक पुष्टि अलग चाही। अनिरुद्ध आदेश देलनि जे संबंधित पर्ची, तौल आ भुगतानक मूल कागद बिना बदलने सुरक्षित रखल जाए। एक अनुमान खण्डित भेल—अस्पतालक ‘प्राप्त’ समयकें वास्तविक धोनाइ-समाप्तिक प्रमाण नहि मानल जाएत। एहि निर्णयसँ उर्मिलाक दोष तत्काल सिद्ध करबाक प्रस्ताव रोकल गेल।

तखन उर्मिला अपन मजदूरी-पंजीक दोसर पन्ना निकाललीह। भोरमे थैली गनबाक समय, पाट धोएबाक समय, अलग रखल कपड़ाक प्रतीक्षा आ गाड़ी धरि उठेबाक घड़ी—चारि पाँति छलीह। अस्पतालक भुगतान-पत्रमे केवल ‘धोनाइ प्रति गट्टर’ लिखल छल। उर्मिला कहलीह, “जाहि दिन रोगीक कपड़ा देरिसँ आएत, ओहि दिन हमर मजदूरी घटत, मुदा प्रतीक्षाक समय हमर जीवनसँ घटल रहत। ई न्याय नहि।” गीता दूरसँ कहलीह, “कम्पनी सेहो एही करैत अछि।” उर्मिला पुछलीह, “अहाँक अलग दावा लिखल अछि ने?” गीता अपन रसीदक कोना देखौलीह।

बैठकमे तीनटा छोट निर्णय भेल। घाटसँ अस्पताल धरि उठान आ वास्तविक प्रवेशक समय दू अलग खाना होएत; मजदूरक प्रतीक्षा आ विशेष पृथक्करणक श्रमक हिसाब अलग रखल जाएत; आ घाटपर फोटो अथवा निजी कपड़ा-पंजीक प्रति बिना अनुमति सार्वजनिक नहि जाएत। वेतनक नवा दर तत्काल निश्चित नहि भेल। मुदा पहिले जे समय ‘काज नहि’ कहल जाइत छल, आब ओकर माप राखल जाएत। अनिरुद्ध अपन कर्मचारीसँ कहलनि, “चिकित्सालयक कपड़ा सफा रहबाक कीमत केवल साबुन नहि;

समयो अछि।” उर्मिला एही वाक्यसँ प्रसन्न नहि भेलीह, जखनधरि हस्ताक्षरक पाँति नहि देखलीह।

देरि साँझ सरोज अपन जालक मरम्मति उठौलीह। नूरजहाँ ईटक टुकड़ा वापस गाड़ीमे राखलीह, किएक तँ पक्के घाटक जाँच बिना भारी काम शुरू नहि भऽ सकैत छल। माधुरी भोजनक बचल अन्नक हिसाब लिखलीह आ गीताकेँ कपड़ाक नमूना वापस देलीह। चम्पा अपन मायक चादर समेटि घरक बाट पकड़लीह। कियो ककरो देवता नहि बनल; सफाईकेँ उत्सव कहि श्रमक दाम मेटाओल नहि गेल। पाटपर कादो कम भेल छल, मुदा अघटक बाट पूर्ण रूपेँ नहि खुलल छल।

नैरा विदाइ लेबए लागलीह तँ उर्मिला हुनका रोकलीह। “अहाँ ललित बरहीकेँ भेटब?” “किएक?” नैरा पुछलीह। उर्मिला अस्पतालसँ आएल पुरान मरम्मत-बिलक नकल देखौलीह। एक पाँतिमे घाटसँ अस्पताल धरि कपड़ा लादबाक काठक उतार-पट्टा ‘नव बनल’ लिखल छल, आ भुगतानक स्वीकृतिक आगाँ ललितक हस्ताक्षर लेल खाली जगह छल। उर्मिला कहलनि, “जतय पट्टा नव बनल कहल अछि, ओतय हम दू बेर पयर फिसलौने छी। पुरान काठ एखनहुँ ओतहि अछि। मुदा हम काठक काम नहि बुझैत छी। जे बनौने छथि, हुनकेँ देखबा दिस।” नैरा बिलक तिथि लिखलीह। “पहिने ओ देखथि; ओकर बादे ककरो दोष।”

घर घुरबाक बाटमे उर्मिला अपन झोरामे पंजीक पन्ना फेर सही कएलीह। काल्हि हुनकर मजदूरीक दू घंटा एखनहुँ देय छल; अस्पतालक उलटल समयक लिखित जाँच शुरू भेल छल; चम्पाक तस्वीरक अधिकार मानल गेल छल; घाटपर गाड़ी लेल अस्थायी बाट बनबाक जिम्मेदारी लिखल गेल छल। ओहि सभक बीच हुनकर दिमागमे अगिला वर्षक दृश्य अबैत छल—घाटपर साफ जगह, कपड़ा धोबएवाला लोकक नाम आ समयक तख्ती, आ एक दिन जखन ओ केवल नदी देखबाक लेल आएतीह। घर लग पहुँचिने ओ रुखसानाक कहनाइ स्मरण कएलीह: ओहि दिन दुनू भोजन बनबए नहि बैसतीह। कापी बन्द करैत उर्मिला पहिल बेर बुझलीह जे विश्रामक इच्छाक लेल सेहो जगह सुरक्षित राखए पड़ैत अछि।

अध्याय ४१ • बरहीक हस्ताक्षर

ललित विश्वकर्मा भोरमे अपन कार्यशालाक फाटक खोललनि तँ दरबाजाक नीचाँ दबाएल कागद भीजि कऽ गोल भऽ गेल छल। रातिमे झिरझिर पानि पड़ल रहैक। ओ कागद पसारि देखलनि। अस्पतालसँ घाट धरि कपड़ा लादबाक काठक उतार-पट्टाक मरम्मतिक बिल छल। सभसँ नीचाँ भुगतान-स्वीकृतिक खाली खानामे लाल कलमसँ एकटा छोट निशान पड़ल छल—हस्ताक्षर एतय।

कार्यशालामे रन्दा, आरी, सूखैत काठ आ पुरान नावक एकटा वाँकल पाँजर राखल छल। ललित पहिने काठक रेशा देखैत छलाह, कागदक अंक पाछाँ। मुदा आइ कागदक अंक हुनका काठसँ पहिने पकड़ि लेने छल। बिलमे नव पट्टा लगल, जोड़ बदलल आ गाड़ी लादबाक लेल सुरक्षित बाट तैयार भेल लिखल छल। पछिला दुपहरि उर्मिला हुनका कहलने छलीह जे ओहि ठाम पुरान काठ एखनहुँ फिसलैत अछि।

ललित झोरामे नापबाक पट्टी, खड़िया, दू छोट कील आ अपन पुरान कामक बही रखलनि। रन्दाक धार छूएबासँ हुनकर बामा हाथक अँगुरीमे पहिनुक चोटक हलुक चिह्न चमकि उठल। ओ बहीक एक पन्ना खोललनि। महीना पहिने बाहाक निरीक्षणमे लगाओल दू खूँटा आ एक सीधी पटरीक दाम एखन धरि पूरा नहि भेटल छल। ओ काज आ अस्पतालक उतार-पट्टा अलग छल। दुनूकेँ एक्के भुगतान कहि मिलाएब सहज छल, मुदा तखन पुरान देय ककरा माथे रहत?

घाट पहुँचला पर उर्मिला पाटपर धोएल चादर निचोड़ि रहल छलीह। काल्हक सामूहिक सफाईक बाद कादो कम छल, मुदा अघट दिस उतरबाक बाटमे लकड़ीक एक किनार एखनहो उठल छल। ओ चादर समेटि ललितकेँ ओतय लऽ गेलीह जतय गाड़ी उतारल जाइत छल। “हम काठक जाति नहि चिन्हैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा हमर पयर दू बेर एतय फिसलल अछि। कागद कहैत अछि नव बनल।”

ललित झुकि कऽ पुरान पट्टाक छोर देखलनि। एक कात नव रङ्गक छोट लेप छल, मुदा काठक भीतरी फाट ओकर नीचे धरि जा रहल छल। दोसर कातक कील थोड़े हालमे बदलल लगैत छल। ओ खड़ियासँ दू चिन्ह लगौलनि। “किछु मरम्मत भेल होएत,” ओ

कहला, “मुदा नवा पूरा पट्टा लगल, ई एहि ठाम देखल वस्तुसँ नहि कहल जा सकैत अछि। आ कतेक भार उठत, से हाथसँ ठोकि कऽ नहि बुझाएत।”

नैरा उर्मिलाक संग आएल छलीह। हुनकर झोरामे कपड़ा-पंजीक समय-असंगतिक दू प्रति छल—आपूर्ति-कक्षक सात पैतालीस आ अस्पतालक द्वारक नौ बजिक बादक प्रविष्टि। ओ ललितसँ पुछलीह, “एहि पट्टाक बिल ओहि दिनक कपड़ा-प्राप्ति केँ सिद्ध करैत अछि?” ललित सिर हिलौलनि। “पट्टा बनल होथि तँ कपड़ा ओहि घड़ी पार भेल, ई अलग बात। पहिने बिल, काज आ भार—तीनूकेँ अलग देखू।” नैरा अपन कापीमे तीनटा अलग शीर्षक बना लेलीह।

एतबे मे नगरक ठेकाक प्रतिनिधि एकटा नीला फोल्डर लऽ कऽ पहुँचल। हुनकर संग दू मजदूर छलाह; हुनका सभक हाथमे नव पटरी नहि, रस्सी आ खाली बोरा छल। प्रतिनिधि बिल ललित दिस बढौलनि। “अहाँ काठक काम जानैत छी। देखलाक बाद हस्ताक्षर कऽ दिअ। अस्पतालक पैसा अटकल अछि। सभ मजदूरक भुगतान रुकल रहत।”

ललित पन्ना पूरा पढ़लनि। “एहिमे लिखल अछि जे नव पट्टा लगि गेल, आ एक निश्चित भारक गाड़ी सुरक्षित पार होएत। अहाँ हमरा कहू—ककरा द्वारा लगाओल गेल, आ भारक जाँचक पर्ची कतय अछि?” प्रतिनिधि कहला, “सामग्री आपूर्तिक रसीद अछि। पुरान पट्टामे नव काठ जोड़ल गेल। कामक भाषा एहनहि चलैत अछि।” ललित उत्तर देलनि, “भाषा जँ पुरान काठकेँ नया बना दैत अछि तँ पयरक चोटक जिम्मेदारी के लेत?”

ललितकेँ अपन गुरु बूढ़ हरिकिशुनक बात याद पड़लनि। ओ कहैत छलाह जे लकड़ीक जोड़ बनौनिहारकेँ दू हिसाब रखबाक चाही—एकटा आँखि देखएवला, दोसर ओकरा पर चलएवला लोकक। ललित जखन नव सीखैत छलाह तँ काज पूरा भेलापर गुरु स्वयं पटरीपर चढ़ि देखैत छलाह। मुदा पानि, कादो आ भारी गाड़ीक भारक हिसाब केवल कारीगरक देहसँ जाँचल नहि जा सकैत, ई बात बादमे ललित अपन अनुभवसँ सीखने छलाह। हुनका एहि स्मृतिक कारण एखन हस्ताक्षरक खाली खाना आओर भारी बुझाइत छल।

घाटक दोसर कातसँ एक स्त्री कपड़ाक दू गठरी लऽ कऽ अएलीह। उमा राजधोब छलीह। ओ अपन ग्राहकक कपड़ा घाटपर नहि, ऊपरक चबूतरापर रखलीह, किएक तँ

हुनका अघटसँ उतरएबाक अनुमति निश्चित नहि छल। हुनकर हाथमे अलग-अलग तीन ग्राहकक रसीद छल। “उर्मिला, ई पाट अहाँक समयमे व्यस्त अछि तँ हम ऊपर बटोरि लेब,” ओ कहलीह। “मुदा जँ घाटक काज एक्के दलक नाम लिखल जाएत तँ हमर ग्राहक सभ फेर आन कोनो नामपर गनल जाएत।”

उर्मिला उमा लग गेलीह। “हमरा सेहो ई नहि चाही। हमर अस्पतालक कपड़ा अहाँक ग्राहकक धोती नहि। पानीक समय अलग होइ, देय अलग होइ।” उमा पहिल बेर ललितक कागद दिस तकलीह। “तखन एहि पट्टाक मरम्मतक खर्चमे सभ धोबिक नाम किएक लिखल अछि? हमरा सँ कियो राय नहि पुछलक।” नैरा हुनकर रसीदक तिथि देखलीह, मुदा ग्राहकक निजी नाम अपन कापीमे नहि उतारलनि। उमा कहलनि जे एखन ओ केवल अलग घाट-समयक प्रस्ताव देब चाहैत छथि; सहकारी धुलाईक निर्णय सभ ग्राहकक संग बात कएने बिना नहि करतीह।

उमा अपन ग्राहकक एक पर्ची मोड़ि कऽ फेर खोललीह। हुनका लग तेसर ग्राहकक चादर छल, मुदा ग्राहक पैसा उर्मिलाक अस्पतालक ठेका सँ जोड़ि देबाक प्रस्ताव देने छल। उमा कहलीह, “कामक तरीका अलग अछि, तइयो लोक बुझैत अछि जे एकटा आदमी सभ धोबीक दाम तय कऽ देत। एखन हम कोनो दलक विरुद्ध नहि छी; पहिने अपन नामपर काम आ ग्राहकक भुगतान अलग देखए चाहैत छी।” उर्मिला अपन बहीक खाली किनार पर हुनका लेल आवेगसँ नहि, अनुमति लऽ कऽ एकटा अलग बैठकक दिन लिखलीह।

दूरसँ छेनीक ठकठक सुनाइत छल। पारो पत्थरकट्टा घाटक ऊपरक टूटल किनार लग एकटा छोट पत्थर चिह्नित कऽ रहल छलीह। हुनका नगरक ओहि हिस्सामे अस्थायी किनार सन्धारबाक काम देखएबाक लेल बजाओल गेल छल। ओ छेनी रोकि कहलीह, “ई पत्थरक टुकड़ा हटाओल जा सकैत अछि, मुदा नीचे जे माटि भीजल अछि, ओहि पर भारी पट्टा धरि देब तँ सबटा एकसंग धँसि सकैत अछि। हमर काज पत्थर काटब अछि, धरतीक पूरा भारक प्रमाणपत्र देब नहि।”

प्रतिनिधि पुछलनि, “अहाँ सभ एकसंग नहि काज करब तँ अस्पतालक गाड़ी कतयसँ जाएत?” पारो कहलीह, “हम सुरक्षित काजक नाप लेल तैयार छी। बिना जाँचक भारी

पट्टा लगेबाक ठेका लेल नहि।” ओ अपन रसीद देखौलीह—पत्थरक नमूना काटब, किनारक टूटन चिह्नित करब, आ एक दिनक मजदूरी। रसीदमे पुल बनएबाक स्वीकृति कतहु नहि छल। ललित हुनकर बात सुना कऽ अपन कागदपर ‘पत्थरक जाँच अलग’ लिखलनि।

पारोक बामा कलाइपर पातर सफेद दाग छल। एक बेर काटल पत्थर समयसँ पहिने उठएबाक आदेश देल गेल रहैक आ हाथ छिलि गेल छल। ओ एहि बातकेँ अपन जातीय पेशाक गुण नहि, काजक खराब समय-व्यवस्थाक उदाहरण कहैत छलीह। “हमरा जल्दीक दाम सेहो चाही, मुदा चोटक दाम देलासँ चोट टरि नहि जाइत,” ओ कहलीह। हुनकर झोरामे औजारसँ अलग बच्चीक छोट कापी रहैक; काज भेटलाक दिन जखन देरि होइत, घरमे पढ़एबाक समय घटैत छल। एहि दिनक हिसाब सेहो ओ सम्हारि रहल छलीह।

एहि बीच एकटा हाथगाड़ीक पहीया अघटक ऊपरी भागमे अटक गेल। सलीम नालबन्द ओतय अपन औजारक छोट पेटी लऽ कऽ पहुँचलाह। हुनकर परिवार पहिने घोड़ा आ बैलगाड़ीक नालक काजसँ कमाइत छल; आब ओ छोट गाड़ी-पहीयाक जोड़ आ धुरीक काम सीखि रहल छलाह। ओ गाड़ी उठौलनि, पहीयाक ढील नट कसि देलनि आ चालकसँ कहलनि, “ई गाड़ी एखन खाली अछि। भारी बोझ लादब तँ पहिने पहीयाक जाँच फेर चाही।”

चालक पुछलक, “पहीया कसि देलहुँ, आब पट्टा पार नहि होएत?” सलीम हँसलाह नहि। “गाड़ीक पहीया हम देखलहुँ। नीचे काठकेँ ललित देखताह। पानि आ माटिक बात अभियन्ता कहताह। तीनूकेँ एक आदमीक हस्ताक्षरमे किएक समेटब?” ओ मरम्मतिक भाड़ा आ पुर्जाक दाम अलग लिखि चालककेँ एकटा पातर रसीद देलनि। पन्नाक पिछिला कात ओ नव वाहनसेवाक प्रशिक्षणक पता लिखने छलाह; निर्णय एखन लेने नहि छलाह।

दुपहरि तक भीजल काठक गन्धमे रसोइक धुआँ मिलि गेल। गुरमीत कौर साझा भोजन लेल चावल आ मसूरक दालक दू डिब्बा लऽ कऽ अएलीह। हुनकर परिवार सीमापार व्यापारक पुरान सम्पर्कसँ विदेहपुरमे बसल छल, मुदा रसोइक आजुक काज हुनकर अपन निर्णय छल। ओ रुखसानासँ बैसि भोजनक हिसाब खोललीह। “दानमे जे अनाज आएल,

ओकरा ककरो मजदूरीक बदला मत लिखू। रान्हनिहारक समयक खर्च अलग रहत।”
रुखसाना हँसलीह—“हम एही बात बुझबए-बुझबए आधा दिन बूढ़ भऽ जाइत छी।”

गुरमीत अपन पन्नामे अनाज, आगिक इन्धन आ ढुलाईक मद अलग कएलीह। कियो पूछलक, “पर्वमे सेहो बिल?” ओ उत्तर देलीह, “पर्व होएत तँ गीतो होएत। गीत गौनिहार के पेट नहि होइत?” हुनकर बातपर उमा एकटा पुरान धोनाइगीत शुरू कएलीह, मुदा ओ गीत गबैत अपन ग्राहकक कपड़ा गनब छोड़लीह नहि। रुखसाना सभकेँ खेबाक लेल बजौलीह, ललित तखनो पट्टाक छोर मापि रहल छलाह। गुरमीत हुनक लग भातक थारी रखि देलीह। “हस्ताक्षर खाइत-खाइत करू, मुदा पहिने पढ़ि लिअ।”

भोजनक बीच ललित अपन साथ काज करनिहार युवकक हिसाब निकाललनि। दू दिन पहिने युवक हुनकर कार्यशालामे नावक काठ घिसने छल; तकर मजदूरी देबाक नियत दिन नजदीक छल। ललित ओकरा नहि कहने छलाह जे अस्पतालक ठेका भेटत तँ पैसा देब। मजदूरी कामक बदलामे बनैत अछि, ठेका भेटबाक शर्तपर नहि। कार्यशालाक पुरान औजार बेचि अथवा आन छोट काज लऽ कऽ दाम देबाक हिसाब ओ मनमे जोड़ि रहल छलाह। सामनेक भोजमे जतेक लोक हँसैत छल, हुनकर माथक गणना ओतेक चुप रहैत छल।

ठेकाक प्रतिनिधि दोसर बेर आयल। एहि बेर फोल्डरमे एकटा मुद्रित रूपरेखा छल—उतार-पट्टा सँगहि अघटपर अस्थायी चढ़ान बनएबाक प्रस्ताव। रेखा देखिते ललित चौंकलाह। जतय पुरान पट्टा छल तकर आगे पानी चढ़ल दिनमे छोट पथ बनएबाक लेल दू लकड़ीक पटरी जोड़ल जाएत, आ लोक ओकरा पुल बुझि भारी बोझ चलाओत। “ई नक्शा के बनौलक?” ओ पुछलनि। प्रतिनिधि कहलनि, “यात्रा अबाध रखबाक उपाय अछि। अहाँ प्रमाणित कऽ दिअ तँ काज शुरू करब।”

“हम लकड़ीक जोड़ बनाबि सकैत छी,” ललित कहलनि, “मुदा ई घाटक जलस्तर, नीचाँक माटि आ भारक गणना बिना सुरक्षित नहि कहल जाएत। रेखामे नावक बाटो अतिक्रमित होइत अछि।” ओ कागदपर चिह्न लगा कऽ बतौलनि जे पानी चढ़ला पर पटरीक एक छोर खाली भऽ सकैत अछि। “ई सम्भावना अछि; एकरा ठीक कहबाक लेल जाँच चाही। किन्तु जाँच भेल नहि अछि, तखन ‘सुरक्षित’ किएक लिखब?”

उर्मिला थारी राखि ओतय पहुँचलि। “काल्हि हाथगाड़ी घुमएबाक लेल हम सभ अस्थायी बाट माँगने रही। भारी पुल नहि।” नैरा सेहो कहलनि, “आपूर्ति देरिसँ पहुँचलासँ रोगीक समय महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा रोगी बचएबाक नामपर बिना जाँचक दोसर लोककें जोखिममे डालब समाधान नहि।” ठेकाक प्रतिनिधि थाकल स्वरमे उत्तर देलनि, “हमरापर सेहो समयसीमा अछि। कागद नहि गेल तँ पैसा नहि आएत। अहाँ सभ लिखि दिअ जे कतेक काज भऽ सकैत अछि।”

तखन ललित तीन पाँति लिखौलनि। पहिल—पुरान उतार-पट्टा आंशिक मरम्मतबला अछि, पूरा नव निर्माणक प्रमाण उपलब्ध नहि। दोसर—खाली अथवा हलुक हाथगाड़ीक अस्थायी घूमि जाएबाक बाट अलग चिह्नित कएल जाए, जकर सुरक्षा रोज देखल जाए। तेसर—नव चढ़ान अथवा भारी वाहनक भारक प्रमाण लेल पृथक् तकनीकी जाँच आवश्यक अछि। ओ अपन हस्ताक्षर एहि निरीक्षण-पर्चीपर कएलनि। भुगतान-स्वीकृतिक बिलपर कलम नहि लगौलनि।

प्रतिनिधि पन्ना समेटि कहलनि, “अहाँ गलत बिल नहि कहि सकैत छी। हम सभकें सामग्रीक रसीद भेटल अछि।” ललित उत्तर देलनि, “हम एखन ककरो चोरीक निर्णय नहि देलहुँ। हम एतबे कहैत छी जे एहि ठाम जे काज देखलहुँ, से कागदक ‘नव बनल’ सँ नहि मिलैत अछि। जँ दोसर ठाम काठ बनल अछि तँ ओकरा एहि घाटपर लगल किएक लिखब?” नैरा दुनू पन्नाक अलग-अलग प्रति माँगलीह। प्रतिनिधि निरीक्षण-पर्चीक प्रति देबाक वचन देलनि, मुदा भुगतानक मूल फाइल कार्यालयमे रहबाक बात कहलनि।

साँझक दिस अदिति पहुँचलि। तारा हुनका लग पुरान बाहाक नापसँ सम्बन्धित प्रश्न अनने छलीह। ललित हुनका नव चढ़ानक रेखा देखौलनि। अदिति रेखामे पुल बनएबाक आदेशक स्वीकृति खोजलनि; पन्नामे केवल ‘प्रस्तावित विकल्प’ लिखल छल। “ई कायदिश नहि अछि,” ओ कहलीह। “एहि आधारपर भार-सुरक्षा प्रमाणपत्र लेब अनुचित होएत। हम स्थल-पुनर्जाँचक टिप्पणी जोड़ब।” तारा रेखामे माछक अस्थायी घेर आ नावक मोड़ चिन्हित करैत कहलीह, “एक बाट खोललासँ दोसर आजीविका बन्द होएत तँ तकरा पहिने सुनू।”

गुरमीत भोजनक खाली भाँड़ समेटैत पुछलीह, “नाव-औजार परख पर्वमे सभ एहि कागदकेँ देखताह?” हीरा ओतय पहुँचलाह; ओ नावक पुरान पालक सिलाइ देखए आयल छलाह। “पर्वमे नावक चप्पू, रस्सी, पहीया, काठक जोड़ सभ देखल जाएत,” ओ कहलनि, “मुदा पर्वक प्रदर्शन सरकारी भार-जाँच नहि। जे नाप नहि भेल, ओकरा लोकगीत गबिते सुरक्षित नहि मानब।” सलीम अपन औजारक पेटी उठबैत कहलनि, “हम पहीया देखाएब, मुदा खाली आ लादल गाड़ीक अन्तर ओतहि बतायब।”

हीरा नदीक कात ठाढ़ भऽ पाछिल वर्षक परखक स्मृति सुनौलनि। एक बेर नावक पुरान रस्सी कार्यक्रममे खूब मजबूत बुझाएल छल; दोसर सप्ताह भीजला पर ओकर रेशा खुलए लागल। तखनसँ ओ नाविकसभसँ कहैत छलाह जे पर्वमे देखल वस्तुकेँ बादमे फेर परखबाक नियम बनाउ। तारा एहि बातक संग जोड़लीह जे जलस्तर बदललापर नाप फेर करबाक चाही। कियो सालमे एक दिन लगल झंडाकेँ सारा वर्षक सुरक्षाक प्रमाण नबुझए।

सामूहिक आयोजनक तैयारीमे एकटा छोट निर्णय भेल। प्रत्येक औजारक संग ओकर मालिक अथवा कारीगरक नाम, जाँचक दिन, जे देखल गेल आ जे एखन नहि जाँचल गेल—चारि बात लिखल जाएत। बच्चासभ ई पाँति पढ़बाक अभ्यास करत; काजक प्रदर्शनक पारिश्रमिक अलग तय होएत। उमा कहलीह, “हम कपड़ा धोबाक पाट सेहो देखाएब, मुदा ककरो निजी कपड़ा प्रदर्शन लेल नहि राखब।” पारो अपन छेनीक नोकपर कपड़ा लपेटि मुस्की देलीह। “हम पत्थर काटब, पहिने लोककेँ दूर ठाढ़ रहबाक बात देखाएब।”

एहिमे सभक हँसी उठल। ललित बहुत दिन बाद भोजनक अन्तिम कौर निश्चिन्त भऽ खएलनि। मुदा थारी हटबैत हुनक दृष्टि कार्यालयक छोट दूतपर पड़ल। दूत हाथमे नव पर्ची लऽ कऽ आयल छल। एहिमे लिखल छल जे अस्पताल-घाट मरम्मति सम्बन्धी तत्काल ठेका ललितक नामसँ वापस लेल जाइत अछि; निर्धारित समयमे भुगतान-स्वीकृति नहि भेटलाक कारण काज दोसर कारीगरक माध्यमसँ करवाओल जाएत। पुरान काजक बकाया अलग परीक्षणाधीन रहत।

उर्मिला पर्ची पढ़ि कऽ मौन भऽ गेलीह। “अहाँ ई कागदपर सही देलहुँ तँ ठेका बचि सकैत छल?” ओ धीरे पुछलीह। ललित उत्तर देलनि, “कदाचित्। मुदा तखन अहाँक

फिसलल पयरपर सेहो हमर सही रहितै।” हुनकर स्वरमे वीरताक गर्व नहि छल। घरक खर्च, औजारक देय आ कारीगरक मजदूरीक चिन्ता हुनकर माथपर स्पष्ट छल। ओ अपन बहीमे आजुक कामक आगाँ लिखलनि—‘निरीक्षण; भुगतान एखन नहि।’ कलम तनिक देरि ठाढ़ रहल।

नैरा कहलनि, “हम एहि आदेशक प्रति सुरक्षित राखब। ठेका बदललासँ पहिल निरीक्षणक प्रश्न समाप्त नहि होइत।” ललित कहला, “जँ कियो आन कारीगर ठीक मापसँ काम करत, हमरा आपत्ति नहि। हमर विरोध काजसँ नहि, अन्ध हस्ताक्षरसँ अछि।” ओही क्षण पारो हुनका अपन पत्थरक नमूना देखबौलीह। भीजल माटिपर राखल छोट सपाट टुकड़ा हलुक दबाबमे एक कात झुकि गेल छल। पारो कहलीह, “देखू, पत्थर ठोस अछि, मुदा नीचाँक माटि अलग उत्तर दैत अछि।”

ललित नमूना हाथमे लेने शकुन्तलाक कुम्हरौटि दिस तकलनि। ओहि दिससँ भट्ठीक धुआँ उठि रहल छल, आ शकुन्तलाक नतिनी विद्यालयक कापी बगलमे दबौने घर घुरैत छलि। काठक दोषक जाँच अपन ठाम रहत, मुदा घाटक किनार, माटिक देय आ बच्चीक पढ़ाइक प्रश्न दोसरा दिन हुनका ओहि घर धरि लऽ जेबाक छल। ललित अपन औजार समेटलनि। अघटपर पुरान पट्टा एखन बन्द नहि भेल छल, मुदा ओकर नामपर बनएवला असुरक्षित पुलक कागदपर हुनकर सही नहि छल।

अध्याय ४२ • माटिक भविष्य

भोरक घाम एखन कुम्हरौटिक आबाक भीजल छप्पर धरि नहि पहुँचल छल। शकुन्तला पंडित चाकक कात दू डल्ला राखि माटि मसलनि। पहिल डल्ला अँगुरीमे चिक्कन पसरि जाइत छल; दोसरमे किरकिरीक दाना लागैत छल। ओ दुनूकें एक्के नादमे नहि फेकलनि। राति भरिक वर्षासँ पगडंडीमे पानि भरल छल आ माटिस्थलक फाटकपर नव बाँसल खूँटा गाड़ल गेल छल। शकुन्तला तकरा देखैत रहलीह, फेर डल्लापर अँगुरीक चिन्ह बना कऽ नतिनीक आगाँ रखलनि।

“दुनू माटि एके रङ्गक अछि, फेर अलग किएक?” बच्ची पूछलक। शकुन्तला उत्तर देलीह, “रङ्गसँ बासन नहि बनैत छै। हाथमे कतेक पानि सहैत अछि, सुखएबामे कोना सिकुड़ैत अछि, आबामे कतबा टिकैत अछि—सभ देखब पड़ैत अछि।” नतिनी पहिल डल्लासँ छोट कटोरीक आकार बनबए लगलीह, मुदा कात टेढ़ भऽ गेल। शकुन्तला ओकर हाथ नहि रोकलनि। “तोरा जँ दोसर काज सीखबाक अछि तँ एतय सेहो गलती देखब सीख।” बच्ची मुस्की देलक।

आइ ओकर नव विद्यालय-वेश पहिरबाक पहिल दिन छल। कपड़ा पार्वतीक करघासँ बनल नहि छल, मुदा नसीमक सिलल कुर्तीक बाँह नतिनीक नापसँ तनिक पैघ रहि गेल छल। ओ कोहनी मोड़ि देखलक—कपड़ा झूलैत छल। “एहि बाँहमे चाकक माटि फँसत,” ओ कहलक। शकुन्तला हँसलीह, “विद्यालयमे चाक घुमाबए नहि जा रहल छें।” बच्ची उत्तर देलक, “तखनो हम दुनू काज जानए चाहैत छी। बस सदा एही काजमे रहब, ई बात हम नहि कहने छी।”

द्वारपर ललित विश्वकर्मा आएल छलाह। काल्हि अस्पतालक उतार-पट्टाक गलत भार-पर्यपर हस्ताक्षर नहि केलाक बाद हुनकर तत्काल ठेका हाथसँ निकलि गेल छल। हथेलीमे ओ पारो पत्थरकट्टाक छोट नमूना पकड़ने छलाह। “एहि माटिक नीचे पत्थर झुकि गेल,” ओ कहलनि। “हम बुझए आयल छी, कुम्हरौटिक भीजल माटि आ घाटक भरावक माटि कतेक अलग अछि। मुदा केवल बासन बनौनिहारक अनुभवसँ पुलक भार

तय नहि कएल जाएत।” शकुन्तला कहलनि, “तखन नमूना लिअ, निर्णय नहि। माटि कतरासँ आयल से सेहो लिखू।”

नैरा पाछाँ-पाछाँ पहुँचलि। हुनका लग अस्पतालक पट्टा-बिलक नकल नहि, केवल ललितक हस्ताक्षरवला निरीक्षण-पर्ची छल। ओ एतय कुम्हरौटिक अलग दावा सुनबाक लेल आयल छलीह। शकुन्तला अपन पुरान बकायाक पन्ना निकाललीह—चारि खेप बासन, एक मरम्मतिक आदेश, आ दू एहन प्राप्ति जेकरा पर माल लऽ जाएबाक सही छल, भुगतानक नहि। “नगरक आयोजनमे बासन गनल गेल, हमर देय नहि,” ओ कहलीह। “एखन कहल जाइत अछि, माटिस्थलक बाट बन्द अछि तँ पुरान दाम आधामे चुकता मानू।”

माटिस्थल दिस चलैत बच्ची अपन कापी बगलमे दबौने छलि। पगडंडी पर कमलेश दबगरक छोट दोकानक किवाड़ आधा खुलल छल। कमलेश टूटल बासनक कान जोड़बाक उपकरण, लकड़ीक साँच आ मरम्मतिक धागा बेचैत छलाह; आब छप्परक किराया बढ़ासँ किछु सामान घर लऽ जेबाक सोचने छलाह। ओ शकुन्तलाकेँ बजौलनि। “मालक बाट सँकर भेल तँ दोकान खाली करबाक दबाव बढ़ल। किरायाक नया हिसाब हमरा देखाओल गेल, मुदा हमर पुरान मरम्मतिक देय कियो नहि पूछलक।”

कमलेश अपन पर्चीपर छोट दू खाना बनौलनि—दोकानक किराया आ ग्राहकक बकाया। नैरा पूछलीह, “अहाँ एहि खाता सभक प्रति समिति लग देब?” ओ कहलनि, “किरायाक प्रस्ताव देब, मुदा ग्राहकक घरक नाम सभक आगाँ नहि खोलब। टूटल बासन मरम्मत करब हमर काज अछि; ग्राहकक निजी वस्तु तमाशा नहि।” शकुन्तला हुनका कहलनि जे माटिक विवादमे मरम्मतिक दाम जोड़ि नहि राखल जाए। कमलेश माथ हिलौलनि। दोकानक ताला एखन नहि लागल, मुदा अगिला महिनाक किरायापर बात पक्का नहि भेल।

फाटक लग निरु कुमाल माटिक दू बोरिया नहि, एकटा खाली टोकरा आ नापबाक डोरी लेने ठाढ़ छलीह। सीमातीर्थक परिवारसँ आएल निरु अपना हाथक बनाओल बासन बेचल करैत छलीह, आ एतय छोट साझेदारी करबाक इच्छा छलनि। माटि लएबाक बाट बन्द भेला पर आपूर्तिदाता एक कागद अनने छल—सभ कारीगर मिलि पूरा ऋणक उत्तरदायी

होथि, चाहे के कतेक माटि लए। निरु ओ कागदपर सही नहि देने छलीह। “हम साझे आबा जलाबि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा ककरो अनदेखल उधारी अपना घर किएक लऽ जाउ?”

शकुन्तला निरुक टोकरामे अपन चिक्कन डल्लाक एक टुकड़ा राखलीह। “ई तोहर नहि, हमर नमूना अछि। अपन नामसँ नाप लिखिहें, तँ बादमे भूल नहि होएत।” निरु कहलनि, “आ आबाक खर्च सेहो दिन आ खेपक अनुसार बाँटब। जकर बासन फूटत, ओकरा पूरा समूहक ऋण कहि नहि उठाएब।” ललित पूछलनि, “अहाँ सभक सहमति लिखबामे हम मदति करी?” शकुन्तला रोकलीह—“पहिने हम सभ अपन शब्दमे बात तय करब; फेर लिखनिहार राखब।”

माटि लएबाक बातक बात उठल तँ शकुन्तलाकेँ पिछला सावनक एक दिन याद पड़लनि। दलक दू स्त्री टोकरी माथपर लेने घुरैत छलीह; बीचमे पानि जमलासँ घुमावक बाट चुनब पड़ल, आ भाड़ाक गाड़ी दोसर कात ठाढ़ रहल। ओहि दिनक बेसी मेहनत बासनक दाममे नहि जोड़ल गेल। “माटि मुफ्त भेटैत अछि,” एक ग्राहक कहने छल। शकुन्तला उत्तर देने छलीह, “मुफ्त माटि जँ अछि तँ अहाँ स्वयं लऽ आउ।” मुदा ग्राहक हँसि कऽ चलि गेल छल। आइ ओहि बातक जगह लिखित बातक प्रश्न छल।

फाटकपर लगने तख्तीमे ‘सुरक्षा कारणसँ प्रवेश निषिद्ध’ लिखल छल। तख्तीक नीचाँ तिथि छल, मुदा आदेश देनिहारक नाम स्पष्ट नहि। पिछिला बरखामे एक कातक माटि धँसल छल, ई बात शकुन्तला स्वयं देखलने छलीह। ओहि जोखिमकेँ झूठ कहबाक कारण नहि छल। मुदा पगडंडीक दोसर कातक सुरक्षित हिस्सा सेहो बन्द करबाक निर्णय के ललक, तकर कागद हुनका नहि भेटल छल। तारा मल्लिक नापबाक डोरी देखि कऽ अएलीह; ओ पहिने घेराक लम्बाइ लिखलीह, माटिक मालिकानापर फैसला नहि देलनि।

कुम्हरौटिक माटिस्थल नदीक बहैत धार नहि छल। बरखामे ओकर खोहमे पानि जमैत, सूखामे नीचाँक परत देखाइत। शकुन्तला बतौलनि जे ऊपरक कारी माटि बासन लेल ठीक नहि, आ नीचे जे चिक्कन तह अछि से बेसी निकालला पर किनार खसि सकैत अछि। तारा कहलीह, “हम अखन केवल ऊँचाइ, पानिक चिन्ह आ पहिल खननक जगह नापि

सकैत छी। माटिक गुण आ कटानक जोखिमक पृथक् जाँच चाही।” ललित नमूना रखलनि, आ नैरा प्रत्येक थैलीपर स्थानक चिन्ह लिखलीह।

तारा खोहक कात एकटा खड़िया-रेखा खींचलीह, मुदा बच्ची लग अएलापर ओकरा हाथसँ दूर रखलीह। “एहि भीजल कातपर ठाढ़ नहि हो,” ओ कहलीह। नतिनी पाछाँ हटि पुछलक, “जँ माटि खसैत अछि तँ खूँटा कहाँ गाड़ब?” तारा उत्तर देलीह, “हम एखन नहि जानैत छी। कोनो रेखा बनौने जँ उत्तर भेटि जाइत, तँ अभियन्ता, कारीगर आ मजदूर सभकेँ अलग जाँच नहि करए पड़ित।” नतिनी अपन कापीमे प्रश्न लिखलक; पहिल बेर ओकरा ‘नहि जानैत छी’ उत्तर सुनि निराशा नहि भेल।

खेतक दिससँ घुरैत एक मजदूर कहलनि, “नगरक भराव लेल जे गाड़ी माटि लऽ गेल, ओही माटि बासनमे सेहो चलि जेतै। रसीदमे बस ‘माटि’ लिखल छै।” शकुन्तला तुरन्त उत्तर नहि देलीह। ओ अपन पाछिल खेपक रसीद खोललीह; ओहिमे वजन आ बासनक गिनती छल, माटिक खनन नहि। तारा दोसर कागद देखलीह जे वास्तवमे सड़कक भरावक सामग्रीक अनुमान छल। दूनू कागद पर ‘माटि’ शब्द छल, मुदा वस्तु, दिन आ भुगतानक मद अलग छल।

“तँ हम सभ ई कहि सकैत छी जे भरावक माटि चोरी कऽ बासनक खातामे लगल?” एक युवक पूछलक। नैरा सिर हिलौलीह। “नहि। एतयसँ एहन प्रमाण नहि निकलैत। उल्टे एक्के शब्दक कारण दू बिल मिलाएबाक जे दावा छल, ओ जाँचमे टिकैत नहि। फाटक बन्द करबाक आदेशक मूल प्रति आ माल ढोएनिहारक वास्तविक रसीद अलग माँगब।” शकुन्तला अपन हथेलीपर लागल डल्ला फेर दबौलनि। “हमर देय एतेक दिन एहि शब्दक भीतर दबि गेल,” ओ धीरे कहलीह।

दुपहर धरि नगरक छोट अस्थायी शिविरमे लोक जमा भेल। ओतय माटिस्थलक खनन-अनुमति सम्बन्धी लिखित प्रश्न लेबाक मेज राखल गेल छल। शकुन्तला पुरान बासनक तीन नमूना, प्राप्तिक रसीद आ नतिनीक विद्यालयक प्रवेश-पर्ची संग रखलीह। कर्मचारी पहिने पुछलक, “आवेदन भूमि लेल अछि कि पढ़ाइ लेल?” शकुन्तला हँसलीह नहि। “दूनू अलग अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एक घरक कमाइ आ एक बच्चीक पढ़ाइ एक दोसरासँ दूर नहि रहैत।”

मेज लग अमीना भठियारा भात आ तरकारीक डिब्बा रखि रहल छलीह। ओ यात्रिकसभकेँ खुअबैत छलीह; आइ निरीक्षण लेल आएल पुलिसक दू कर्मचारी सेहो हुनक दोकानसँ भोजन मँगौने छलाह। एक कर्मचारी कहलनि जे भोजनक भुगतान ‘सार्वजनिक सेवा’क नामपर बादमे होएत। अमीना पर्ची खोलि कऽ कहलीह, “यात्रिक खा कऽ पैसा दैत छथि। सरकारी ड्यूटीवला खाउ छथि तँ रसीद हुनको देब; उधारी लेल नाम आ निश्चित तिथि लिखब। वर्दी भोजनकेँ दान नहि बनबैत अछि।”

कर्मचारी पहिने चिढ़लाह, मुदा दोसर कर्मचारी हुनक पर्ची पढ़ि कहलनि जे रकमक रसीद जारी कएल जाए। अमीना ओतहि हिसाब मिलौलीह। “हम ककरो भूखल नहि रखब,” ओ कहलीह, “मुदा मुफ्त खुअएबाक निर्णय हम लेब, दोसर नहि।” शकुन्तला भातक सुगन्ध सँ बच्चीक दिस तकलीह। नतिनी विद्यालय जएबाक हड़बड़ीमे भोरक आधा रोटी छोड़ि देने छलि। अमीना ओकरा छोट थारी देलीह; शकुन्तला ओकर दाम चुकौलीह। बच्ची कहलक, “दादी, खेबाक समयो लिखल जाए?” अमीना हँसलीह — “भोजनक दाम लिखू, खेबाक आनन्द मत गनू।”

ओहि शिविरक एक कात विभा अग्रहरी अपन छोट औषधि-बिक्रय केन्द्रक पर्ची संग पहुँचलीह। माटि निकालएवला मजदूरसभ घाव, चर्मक तकलीफ आ दवाइक खर्चक चर्चा करैत छल; ओ प्राथमिक उपचारक सामग्रीक दामक सूची अनने छलीह। एक आयोजक कहलनि, “एतय सामान दान लिखि दिअ, दोकानक प्रचार भऽ जेत।” विभा कागद समेटलीह। “मुनाफा केतेक चाही, ई हम सोचि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा बिना हिसाबक दान लिखलासँ बादमे असल दवा ककरा भेटल, के किने, से अन्हार रहत।”

विभा सामग्रीक मात्रा, खरीदक मूल्य, बिक्रीक मूल्य आ निःशुल्क देबाक प्रस्ताव अलग लिखलीह। ओ कोनो औषधि खाएबाक चिकित्सकीय सलाह नहि देलीह; घाववला मजदूरकेँ उपचार-केन्द्र जएबाक बात कहलीह। नैरा हुनका कहलनि जे अस्पतालक आपूर्ति-अभिलेखमे सेहो नाम आ प्राप्तिक समयक प्रश्न अछि। विभा उत्तर देलीह, “हमर दोकानक रसीद हमरा जिम्मेदारीक सीमा बताओत। आन आपूर्तिक दोष एहि नामसँ तय नहि होएत।” ओ एकटा पारदर्शी पन्ना छोड़ि चलि गेलीह; हुनकर बड़ा कारोबारक प्रश्न एखन सामने नहि आयल छल।

भोजन समाप्त भेलापर अमीना अपन खाली डिब्बा समेटैत देखलीह जे शकुन्तलाक बासनक तीन नमूना धूपमे राखल अछि। ओ एकटा बासन हाथमे लऽ कऽ पुछलीह, “एहि मे गरम दाल राखल जाएत?” शकुन्तला कहलनि, “एखन ई नमूना अछि। आबामे पाकि, पानि धरि जाँच भेलाक बादे खेबाक बासन कहब।” अमीना ओतहि रखि देलीह। “तखन हम अगिला खेपक आदेश अलग लिखब,” ओ कहलीह। हुनका लेल भोजनक बासन रोजक वस्तु छल; शकुन्तलाक लेल एकर प्रत्येक असफल नमूनामे इन्धन आ दिनक खर्च छल।

माटिस्थलक पर्ची जाँचैत अधिकारी कहलनि जे धोखामे कियो नपड़ए, ताहि लेल सभ बकाया एकटा समझौता रकममे समाप्त कऽ देब सहज होएत। शकुन्तला पूछलीह, “कुन बकाया? चारि खेपक दाम, मरम्मतक भाड़ा कि बन्द बाटक कारण गमाओल दिन? सबटा एक रकममे लिखब तँ जाहि बासनक दाम हम माँगैत छी से फेर गुम भऽ जेत।” अधिकारी कहलनि, “कम रकम एखन भेटि सकैत अछि।” शकुन्तला पर्ची आगाँ धकेललीह, मुदा हस्ताक्षर नहि केलनि। “कम रकमक मतलब पुरान सम्पूर्ण देय चुकता होएब नहि,” ओ कहलीह।

निरु कुमाल ओहि समय एकटा छोट प्रस्ताव रखलीह—निर्धारित दिनमे सुरक्षित किनारसँ नमूना माटि लएबाक अनुमति, सभ कारीगरक अलग वजन-पंजी, आ साझा आबाक खर्चक पृथक् लेखा। तारा जोड़लीह जे ‘सुरक्षित’ कहल हिस्सा स्थल-जाँचक बादे चिन्हित भऽ सकैत अछि। अधिकारी तत्काल स्थायी प्रवेश नहि खोललनि। ओ आदेशक मूल प्रति मँगएबाक आ कारीगर, अभियन्ता तथा नगरक प्रतिनिधि सहित स्थल-दर्शनक आवेदन स्वीकार कएलनि। शकुन्तला प्राप्ति-अंक अपन बहीमे उतारलीह। “कमसँ कम आब प्रश्न कागदपर छथि,” ओ कहलीह।

कागद समेटैत नतिनी अचानक चुप भऽ गेलीह। विद्यालयक प्रवेश-पर्चीपर अभिभावकक हस्ताक्षरक खाली घर छल। शकुन्तला कलम उठौलीह। बच्ची पुछलक, “हम पढ़ि कऽ माटिक नाप, पानिक बाट आ पुलक काज सीख सकैत छी?” ललित कहलनि, “सीखि सकैत छें, मुदा एखन पहिने पढ़ाइ कर। काठक माप सीखब चाहिहें तँ हम देखाएब; सुरक्षित पुलक निर्णय पढ़ल-जाँचल अभियन्ता करताह।” शकुन्तला

बच्चीक प्रश्नकेँ दोसर किछु बनाकऽ नहि कहलीह। “तू अपन बाट चुन,” ओ उत्तर देलीह, “हम तोरा चाक चलएब सिखाएब, मुदा चाक तोहर भाग्य नहि लिखत।”

नतिनी कुछ देरि चुप रहि कऽ पुछलक, “दादी, जँ हम दोसर काज करब तँ अहाँक चाक के घुमाओत?” शकुन्तला कनेक थमलीह। ओहि प्रश्नक उत्तर खाली उत्साहसँ नहि दऽ सकैत छलीह। हुनकर हाथक जोड़ दुखाइत छल, आ रोजक कमाइमे बच्चीक सहभागिता परिवारकेँ सहारा बनि सकैत छल। “हम काजक लेल लोक राखब, अथवा कम काज लेब, अथवा नव तरीका सीखब,” ओ धीरे कहलीह। “सभ उपाय कठिन छथि। मुदा कठिनाइ होएबाक कारण तोरा अपन इच्छा छोड़ए नहि कहब।” बच्ची हुनकर हाथक पुरान कड़ापन छूने रहि गेलि।

ओ प्रवेश-पर्चीपर सही कएलीह। कर्मचारी विद्यालयक गणवेश आ विज्ञानक नवल कक्षाक सूचना-पत्र देलक। बच्ची ओ पन्ना पढ़बाक प्रयास केलक; एक कठिन शब्दपर अटकल गेल। नैरा ओकरा शब्द तोड़ि पढ़बए लगलीह, मुदा बच्ची स्वयं दोहरौलक आ फेर मुस्की देलक। शकुन्तलाकेँ अचानक अपन पिताक भट्टीक पास पहिल दिनक स्मृति भेलनि—तखन हुनका सेहो कियो चाकक गति देखबौने छल, मुदा पूछने नहि छल जे ओ आन की चाहैत छथि। आब हुनकर हाथमे बच्चीक पर्ची छल, आ ओ प्रश्न दबाओल नहि गेल छल।

नगर कार्यालयसँ निकलैत नैरा शकुन्तलाकेँ पर्चीक तीन प्रति अलग रखबाक कहलनि—माटिस्थलक प्रवेशक प्रश्न, पहिने देल बासनक बकाया, आ विद्यालयक कागद। शकुन्तला हँसि कहलनि, “तोहर घरक ओहि सत्ताइस नामक पन्नासँ हमर फाइलक की सम्बन्ध?” नैरा उत्तर देलीह, “जँ कखनो प्रमाणित सम्बन्ध भेटत तँ देखब। एखन एहि तीनूकेँ सेहो मिलाएब नहि।” नैराकेँ एहिमे एकटा छोट राहत छल—सभ अव्यवस्था केँ एक्के दोषीक कथा बना देबाक लोभसँ बचलासँ लोकक वास्तविक देय सुनल जा सकैत छल।

साँझमे घर घुरलापर शकुन्तला दू डल्ला फेर चाकक कात रखलीह। निरु साझा आबाक दिन तय करबाक लेल अपन माटिक नमूना छोड़ि गेल छलीह, मुदा ऋणक कागद एखन हुनकर घर नहि पहुँचल छल। कमलेश दोकानक किरायाक लिखित प्रस्तावक प्रति

पठौने छलाह; अमीनाक भोजनक रसीदमे देनिहारक नाम स्पष्ट छल; विभाक दामसूची घरक अलग थैलीमे राखल छल। शकुन्तला एहि पन्नासभकेँ एकटा रहस्यक गँठरी नहि बनौलीह। प्रत्येक कागद अपन-अपन देयक बाट देखबैत छल।

नतिनी नव कुर्ती पहिरि आँगनमे अएलीह। एखन बाँह ठीक कएल गेल छल। ओ माटिक आधा बनल कटोरी उठाकऽ देखलक आ कापीमे ओकर रेखा बनौलक। “ई गोल नहि भेल,” ओ कहलक। शकुन्तला कहलनि, “गोल बनएबाक लेल फेर घुमा। आ जँ नक्शा बनाबए चाहैत छें तँ टेढ़ होएबाक कारणो लिख।” बच्ची कापीक एक पन्नापर चाकक वृत्त, दोसर पर कुम्हरौटिक पगडंडी आ तेसर पर विद्यालयक चौखट बनौलक। तीनू रेखामे एक्के हाथ छल, मुदा तीनू बाट एक नहि छल।

रातिक भोजनमे भात, साग आ अमीनाक दोकानसँ किनल थोड़े अचार छल। शकुन्तला नतिनीक कुर्तीक ढील धागा काटलीह। बाहर आबाक माटि एखन भीजल छल; आजुक बनाओल कटोरी आगिमे जाएबाक योग्य नहि भेल छल। बकाया नहि भेटल छल, माटिस्थलक फाटक नहि खुलल छल, आ नतिनीक पढ़ाइ लेल प्रत्येक महिनाक पैसा जुटाएब बाँकी छल। तइयो घरमे पहिल बेर बच्चीक विद्यालयक नव विषयपर बातचीत होइत छल, ओकरा रोकबाक तरकीबपर नहि। शकुन्तला थारी धोत-धोत हँसलीह, आ बच्ची अपन कापी सम्हारि सुतए गेलीह।

अध्याय ४३ • कसेरा आ सोनार

भोरक उजासमे मीना साह पीतलक एकटा बासन उलटि कऽ हथौड़ीक छोट चोट देलनि। धातुसँ निकसल स्वरमे खनखनाहट छल, मुदा तेसर चोटपर एक कात सँ फाटल जोड़ बजबाक बदला थरथराए लागल। ओ बासनकेँ फेर घुमौलनि। किनारपर अस्पतालक पुरान रंगक दू अक्षर बचल छल। बासन बहुत दिन पहिने रोगीसभक भोजन ढोएबाक गाड़ीमे लगैत छल; आब ओकरा धुनि कऽ पानि गरम करबाक पात्र बनएबाक आदेश छल। मीना हथौड़ी राखि कहलनि, “एहि जोड़केँ फेर उठाएब, मुदा जतेक कएलहुँ सेतेक लिखब। नव बासनक दाम हम नहि लेब।”

कारखानाक ओसारपर नैरा आ उर्मिला एक संग पहुँचलि। नैराक थैलीमे शकुन्तलाक काल्हिक माटि-रसीदक तीन अलग प्रति छल; उर्मिलाक हाथमे अस्पतालक कपड़ा-पंजीक ओ पन्ना, जाहिमे गाड़ी अबबाक समय कपड़ा उठेबाक समयसँ पहिने लिखल छल। उर्मिला मीना लग बासन राखल देखिकऽ पुछलीह, “अहाँ अस्पतालक पुरान सामानो बनबैत छी?” मीना उत्तर देलनि, “भाडल बासन मरम्मत करब हमर काज। मुदा कखनो पर्चीपर लिखल रहैत अछि जे सामान अस्पताल पहुँचल, जखन वस्तु एखन हमर ओसारपर पड़ल होइत अछि। कागदक आगाँ हमर हथौड़ीक आवाज कहाँ पहुँचत?”

ओ एकटा पातर बही खोललनि। पहिल पन्नापर मरम्मतिक मजदूरी, दोसरपर धातुक टुकड़ा आ तेसरपर ढुलाईक खर्च छल। नव अस्पताल-रसीदक कोनामे समान आकारक तीनटा निशान छल, मुदा मीनाक बहिमे केवल दू वस्तुक मरम्मत लिखल छल। “ई तीसरा चिन्ह ककर?” नैरा पुछलीह। “हम नहि जानैत छी,” मीना बजलीह। “एहि खेपमे दूटा पात्र हमरा लग अएल, तेसर हम देखलहुँ नहि। ई हमरा सहीक नकल थिक कि सामग्रीक पर्चीक कोनो दोसर खाना, से मूल कागद देखलाक बादे कहब।” नैरा प्रश्नकेँ प्रश्ने लिखलनि।

मीनाक ओसारक भीतर छोट चूल्हिपर हुनकर बहिन गरम पानि चढ़ौने छलीह। भट्ठीक आगि लेल कोइला महँग भेलासँ मीना पुरान जोड़ खोलि फेर बनबैत समयक खर्च गनैत छलीह। कखनो ग्राहक पूछैत, “एतबा छोट हथौड़ीक चोटक एतेक दाम?” मीना हुनका

धातुक फाटल भाग दिखबैत, “एक चोटमे जे नहि देखाइत, ओकरा ठीक करबामे पूरा पहर जाइत अछि।” बहिन कहलनि जे आइ दोपहरक भोजन समयसँ करब आवश्यक अछि; भोरसँ खाली चाय पीने मीना लगातार काम कऽ रहल छलीह। मीना हुनकर हठक आगाँ हथौड़ी थोड़ी देर लेल राखि देलनि।

बाजारक गल्लीमे आइ धातु, चूडी आ तेलक अलग-अलग दोकानदारी एक संग जगल छल। सामूहिक नाव-औजार परखक अगिला तैयारी लेल लोक सामान लऽ जा रहल छलाह। ललित विश्वकर्मा अपन खोएल ठेकाक कारण कम काज पबैत छलाह, मुदा मीना हुनका टूटल पात्रक हत्था पकड़ि रखबाक मजदूरी देबाक कहलनि। “निरीक्षण लेल मुफ्त हाथ नहि चाही,” ओ बजलीह। ललित हँसलाह, “खाली सत्य बोलबासँ घर नहि चलैत। आजुक ई छोट काज हमरा चाही।” हुनकर हथेलीमे काठक रन्दा छल; पीतलक जोड़क परीक्षा हुनका नहि सौँपल गेल।

मीना धातुक पटरीमे नाप लेबैत उर्मिलासँ अस्पतालक पन्ना देखलीह। उर्मिला पहिने रोगीक व्यक्तिगत नाम ढाँपि देलीह। “कपड़ा एहि घड़ी पहुँचबाक छल, मुदा अस्पतालक खाता कहैत अछि जे हमर गाड़ी पहुँचए सँ पहिने सामान लेल गेल,” ओ कहलीह। मीना अपन मरम्मतिक रसीदक तिथि पढ़लीह। ओकर समय सेहो ओही दिनक दोसर पहरक छल। कियो तुरन्त निष्कर्ष निकालए चाहलक जे सभ असंगति एक्के कारोबारक अछि। नैरा रोकलीह—“कपड़ा, बासन आ इलाजक तिथि तीन अलग पंजी छथि। समयक मेल जाँचब, मुदा एकटा गड़बड़ीसँ तीनूकेँ अपराध नहि कहब।”

तेही बीच एक स्त्री छोट लाल कपड़ामे लपेटल बाला लेने मीना कातसँ गुजरलीह। कमला ठाकुर सोनार अपन दोकान खोलए जा रहल छलीह। हुनका पाछाँ दू परिवारक लोक बहस करैत चलि रहल छल। युवक कहैत छल जे गिरवी राखल कड़ा ओकर बाबूक वस्तु छल; वृद्धा कहैत छलीह जे कड़ा हुनकर मायकेसँ भेटल आ अपन नामपर राखल छल। कमला गल्लाक ताला खोलि दुनू पक्षकेँ अलग-अलग बैसबाक कहलनि। “जे आवाज पैघ करत, ओकर वस्तु पहिने नहि खुलत,” ओ शान्त स्वरमे बजलीह।

कमलाक पंजीमे गहनाक वजन, धातुक जाँच, गिरवी देनिहारक हस्ताक्षर आ ऋण देनिहारक नाम अलग खाना छल। मुदा पुरान पर्चीमे मालिकक नामक सामने ‘घरक

मुखिया' लिखल रहि गेल छल। वृद्धा पूछलीह, “घरमे मुखिया के छल से लिखबाक जगह हम कखन अपन बाला देने छलहुँ, से लिखू।” युवक आपत्ति केलक जे ऋण ओकर पिताक व्यापार लेल उठाओल गेल छल। कमला कहलनि, “ऋण ककर लाभ लेल गेल आ गहना ककर स्वामित्वक अछि, ई एक बात नहि। पहिने पुरान जमा-पर्ची, जे गवाह सामने छलाह हुनकर बात आ वस्तुक चिन्ह मिलाएब।”

वृद्धा बाला देखैत हँसि पड़लीह। “एहि एक कात छोट टेढ़ फूल हम स्वयं बनबौने रही। सोनार तेहि दिन कहलनि जे फूल बराबर करब तँ दाम बेसी लागत। हम कहने रही, टेढ़ रहए दिअ।” कमला वस्तुकेँ उजासमे घुमौलीह; वास्तवमे भीतरी कात एकटा असमान फूल छल। मुदा ओ तुरन्त स्वामित्व घोषित नहि केलनि। निशान पहचानब एकटा सहायक बात छल, अधिकारक पूरा प्रमाण नहि। ओ वृद्धाक नामसँ दावा-दर्जक प्रति बनौलीह आ युवककेँ सेहो व्यापारक ऋणक कागद जमा करबाक समय देलनि।

दोकानक बाहर रेखा साहु लहेरी चूड़ीक छोट सन्दूक खोलेने छलीह। ओ मोटा कागदपर नव आकारक नाप बना रहल छलीह, जाहिमे बीचक रेखा नदीक घुमाव सन छल। सामूहिक कार्यक्रम लेल किछु चूड़ीक आदेश भेटल छल, मुदा ग्राहक कहने छल जे रेखाक बनाओल नमूना मशीनवला दोकानकेँ देल जाए आ डिजाइनक दाम अलग नहि गनल जाए। रेखा अपन पेंसिल उठाकऽ कहलीह, “मशीनमे बनब तँ बनाउ, मुदा हमर हाथक नापक प्रति लेल अनुमति आ शुल्क चाही।”

कमला हुनका बजा कऽ वृद्धाक बाला देखौलीह—“एहिमे ई टेढ़ फूल देखू। हर अनियमितता खराब शिल्प नहि होइत।” रेखा अपन नमूना कागद सँ उठौलीह। “हम आजुक चूड़ीक दाम पाबि जाएब, मुदा एहि रेखाकेँ अगिला पचास वर्ष के बेचल करत?” ओ पूछलीह। दुनू स्त्रीक समस्या एक नहि छल—एकटा गहनाक स्वामित्वक, दोसर नव डिजाइनक उपयोगक। तइयो दुनू जानैत छलीह जे वस्तु बनौनिहार आ वस्तु बेचबाक अधिकार रखनिहारक नाम एक पाँतमे मिलि गेलासँ विवाद जन्मैत अछि।

दोपहरक पहिने उषा राम जूताक दू जोड़ी आ बाजाक चाम लऽ कऽ पहुँचलि। नाव-औजारक तैयारीमे पानि-पानि होएबाक कारण किछु ढोलकक पुरान चाम ढील पड़ल छल। कार्यक्रमक आयोजक कहने छल जे मंचपर बाजा रहत, मुदा मरम्मतक दाम गीतक

दानसँ निकालल जाए। उषा खाली हँसि कऽ जवाब देने छलीह, “गीतक मेहनताना गायकक, चामक मेहनताना हमर। दूटा काजक नाम अलग लिखू।” आइ ओ एहि लेल लिखित आदेशक माँग करए आइल छलीह।

उषा अपन नवल जूताक साँच देखौलीह। पानि लगैत जे कात जल्दी घिसैत छल, ओतय ओ जोड़ बदलने छलीह। एक व्यापारी कहलनि जे ई आकार हुनक पुरान दोकानक अछि। उषा अपन कापीक पहिल नाप, परीक्षणमे फाटल नमूना आ फेर बनाओल जोड़क चित्र देखौलीह। “हुनकर दोकानमे मिलैत जूता अछि, ई हम नकारैत नहि,” ओ कहलीह। “मुदा एहि जोड़मे जे परिवर्तन हमर हाथसँ भेल अछि, ओकरा अपन नामसँ बेचब चाहैत छी।” ओ नमूना व्यापारीकेँ राखि देबाक बदला लिखित स्वीकृतिक बाद देखेबाक कहलनि।

ओहि गल्लीक अन्तमे बिन्देश्वरी साहुक पुरान घानी छल। खजूरक काठ जकाँ गाढ़ तेलक गन्ध ओकर भीतमे बसि गेल छल। घरक लोक चाहैत छल जे घानी ज्योंकात्यों राखल जाए; बेटा कहैत छल जे ओकर रखरखावक खर्चसँ नव छोट तेल-दोकान चलि सकैत अछि। बिन्देश्वरी आइ खरीदारकेँ भेटए बजौने छलाह। घरक बड़की बुजुर्ग स्त्री एहि बातपर रुसल छलीह जे घानी बेचला पर परिवारक पुरान काजक स्मृति कहाँ रहत।

बिन्देश्वरी घानीक लकड़ीपर हथेली फेरलनि। “स्मृति हमरो अछि,” ओ कहलनि, “मुदा एहि घानीकेँ घुमा कऽ तेल निकालबाक खर्च आब बिक्रीसँ बेसी पड़ैत अछि। घरक ऋण चुकाएब अछि, आ छोट दोकानमे नवल प्रकारसँ काम करब अछि।” बेटा खुसीसँ खरीददारक लिखल रकम बढ़ा देबाक सोचलक। मुदा बिन्देश्वरी आगू कहला, “लकड़ी बेचबाक दाम आ पुरान बकायाक हिसाब अलग। घानीक संग तौलबाक पुरान बाट आ माँक हाथक छोटी माप-पात्र घरमे रहत।”

बुजुर्ग स्त्री कहलनि, “तखन हमर पिता जे पहिल दिन घानीक पाछाँ दीप राखने छलाह, ओकर की?” बिन्देश्वरी थोड़े देरि चुप रहलाह। “दीपक कथा रखब। लकड़ीकेँ उपासना बनौने ऋण नहि चुकत।” दुनू एक दोसराक विरोधी नहि छलाह; एकही परिवारक दुइटा डर छल। बिन्देश्वरी पूरा घानीक बिक्री तुरन्त पक्का नहि केलनि। खरीदारक आगाँ ओ

पहिने स्वतंत्र मूल्यांकन आ घरक श्रमिकक बकाया चुकएबाक शर्त रखलनि। परिवारक सहमति ओहि साँझ धरि शेष रहल।

खरीदार घानीक काठ देखैत पूछलक जे एहि पुरान लकड़ीसँ नवल फर्नीचर बनाओल जा सकैत अछि कि नहि। बिन्देश्वरी केवल सम्भावनाक उत्तर देलनि; काठक गुण-परीक्षण बिना मूल्य निश्चित करब अस्वीकार केलनि। बेटा ओहि बीच छोट तेल-दोकानक लेल भाड़ाक नवल कोठरी देखबाक बात कहलक। बुजुर्ग स्त्री कहलनि जे नव दोकान खुलत तँ ओ तेल नापबाक हुनकर पुरान तराजू सीखब चाहतीह। बिन्देश्वरी हुनकर बात सुनि मुस्कुरौलाह—घरक स्मृति पुरान उपकरणमे मात्र नहि, ओहि उपकरणक प्रयोगक ज्ञानमे सेहो छल।

नैरा तेल-दोकानक ओसारमे पहुँचलीह तँ उर्मिला पसीना पोंछैत बैसल छलीह। “तों फेर एतय?” नैरा हँसि पुछलीह। उर्मिला उत्तर देलीह, “कपड़ा पहुँचएबाक चक्का तेल बिना घुमत की? पहिने ई देखए आयल छलहुँ जे गाड़ीवला सामान लेल किराया कतेक बढ़ैत।” बिन्देश्वरी हुनकर गाड़ीमे नव तेल लगबाक आवश्यकता देखलनि, मुदा अनुमानक दाम नहि लिखलनि। ओ गाड़ी चालकसँ पूछलनि जे पिछला सेवा कखन भेल छल। “बासनक बिल आ तेलक बिल एक्के अस्पतालक खर्चमे जाएत, मुदा एहि कारणे काज एक नहि भऽ जाइत,” उर्मिला बजलीह।

साँझ दिस ललित आ मीना अस्पतालक पुरान गोदामक कात पहुँचलाह। गोमती मजदूर-समूहक तरफसँ आएल छलीह। पछिला मरम्मत-बिलमे लिखल छल जे सीप आ चूनक पुरान मिश्रण हटाकऽ नव सामग्री लगाओल गेल अछि। गोमती कहलीह, “हम सभ जे बोरा उठौने रही, ओकर रसीद पर ‘चून’ लिखल छल। बोरा कतयसँ आयल, भीतर कोन पदार्थ छल—एहि दू बातक हम गवाही नहि दऽ सकैत छी।” ओ अपन ढुलाईक दिन आ मजदूरीक पर्ची अलग निकाललीह।

मीना पुरान सीपक एक मुट्ठी चूर देखलीह। बचपनमे नदीक कात पाओल सीपसँ चून बनेबाक कथा ओ सुनने छलीह, मुदा ओहि कथा आ गोदामक नव निर्माण-सामग्रीक वैज्ञानिक गुण एक नहि छल। “हम धातुक बासनक जोड़ कहि सकैत छी,” ओ कहलनि, “ई चूर पुरान दीवालक अछि कि नव बोरीक, से केवल देखिकऽ नहि।” ललित जोड़लनि,

“माटिक नमूना, चूनक दाम, धातुक जोड़ आ काठक भार—चारि काजक चारि जाँच चाही।” गोमती हुनका सभकेँ ओहि ठामक मजदूरक नाम लिखबबैत छलीह, मुदा प्रत्येकक सहमति लेलनि।

गोदामक कर्मचारी एक पुरान चालान लऽ कऽ आयल। ओहिमे ‘सामग्री प्राप्त’क मोहर छल, किन्तु नीचे ‘उपयोग स्थल’क खाना खाली छल। मीना अपन मरम्मत-बिल मिलौलीह। जहिआ ओ दू पीतलक पात्र लौटा देने छलीह, ओहि दिनक लेल चालानमे चारि वस्तु लिखल छल—दू धातुक, एक सीप-चूनक नमूना आ एकटा अज्ञात मरम्मतिक टुकड़ा। “हमर बिल केवल पहिल दूकेँ देखैत अछि,” ओ कहलीह। “तेसर आ चारिमक हिसाब आन जगह खोजू। हमरा काजकेँ फुला कऽ सभ वस्तुक गवाही नहि बनाउ।”

नैरा अपन बहीमे दू अलग प्रश्न लिखलीह—अस्पतालक वस्तु कब आ ककरा हाथसँ हस्तान्तरित भेल; आ निर्माण-सामग्री वास्तविकमे कतय लगल। एतय ओकरा एकटा छोट सुधार भेटल: मीना साहक सहीवला पर्चीमे जे ‘तीन मरम्मत’ पढ़ल जा रहल छल, ओहिमे तेसर चिन्ह मरम्मतिक संख्या नहि, मजूरीक अलग कर-खाना छल। कर्मचारीसँ मूल प्रारूप मिललापर ई गलत पढ़ाइ सुधरल। मुदा चालानमे लिखल चारि वस्तुक प्राप्ति आ उपयोगक अन्तर ज्योकात्योँ रहल।

गोदामक बाहर एक तराजू टेढ़ ठाढ़ छल। मजदूरक दलमे सँ एक युवक पुछलक जे बोरा उठएबाक भाड़ा वजन पर गनल गेल कि खेप पर। गोमती अपन पन्ना खोलि बतौलनि जे किछु दिन खेपक दाम भेटल, मुदा चूनक भीजल बोरा भारी होइत समयसँ बढ़ल मेहनताना दर्ज नहि छल। नैरा ओ दाबीकेँ निर्माण-सामग्रीक गड़बड़ीक पन्नामे नहि, मजदूरीक अलग खाता खोलि लिखलनि। गोमतीक चेहरापर राहत आएल—हुनकर गवाही केवल गलत माल खोजबाक साधन नहि, स्वयं श्रमक देयक साक्ष्य सेहो छल।

“तँ चोरीक आरोप हटा दियौ,” मीना कहलीह। नैरा उत्तर देलीह, “अहाँक तीन मरम्मत करबाक आरोपक आधार नहि रहल, से लिखब। मुदा शेष सामान कहाँ गेल तकर प्रश्न खुला अछि।” गोमती सेहो अपन मजदूरसभक पक्ष रखलीह—“हमरा सभकेँ चूनक बोरा उठेनाइ याद अछि, मुदा जे चीज देखने नहि रही तकर प्रमाण देबाक दबाव नहि देब।”

ललित अपन खोएल ठेकाक पर्ची ओहि मेजपर नहि रखलनि; ओ अन्याय छल, मुदा एहि चालानक प्रश्नसँ ओकर अलग अपील चलत।

एहि बीच कमलाक दोकानपर वृद्धा अपन पुरान साक्षी संग घुरि अएलीह। साक्षी कहलीह जे बरिस पहिने गिरवी रखबाक दिन वृद्धा स्वयं बाला उतारने छलीह, मुदा ऋण देनिहारक रसीदमे परिवारक पुरुषक नाम लिखल गेल। युवक आबो ऋणक रकमक चिन्ता करैत छल। कमला स्पष्ट करौलीह जे पुरान अभिलेख बदलि देब हुनकर वशमे नहि; ओ गहनापर वृद्धाक स्वामित्व-दावाक पूरक बयान संलग्न करि सकैत छथि। ऋण, ब्याज आ वस्तु छुड़एबाक शर्तक जाँच अलग होएत। वृद्धा अपन नामक प्रति प्राप्त कऽ चुनरीक कोनमे रखलीह।

रेखा चूड़ीक नव नाप लेल कमला लग आयल छलीह। वृद्धा हुनकर डिजाइन देखैत कहलीह, “अहाँक चूड़ीमे घुमाव बहुत सुन्दर अछि, मुदा हाथमे पहिरबामे कटत तँ नहि?” रेखा हँसि कऽ काठक साँचपर चूड़ी घुमौलीह। एक किनार सचमुच खुरदुर छल; ओ ओतहि घसि चिक्कन केलनि। “ई सुनबाक लेल ग्राहक चाही,” ओ कहलीह, “खाली प्रशंसा लेल नहि।” वृद्धा अपन बाला बचबबाक चिन्ताक बीच पहिल बेर आरामसँ हँसलीह।

उषा अपन बाजाक चामक मरम्मतिक रसीद रेखाकेँ देखौलीह। चूड़ीक रङ्ग आ बाजाक आवाज दुनू कार्यक्रममे लोक देखताह; तइयो मंचक चमकक पाछाँ काज करनिहारक नाम अक्सर मेटा जाइत अछि। रेखा प्रस्ताव रखलीह जे अगिला सामूहिक आयोजनमे वस्तुक कात कारीगरक नाम आ ओकर स्वीकृत मेहनताना लिखल जाए। उषा कहलनि, “आ जे गीत गाओत, ओकर नाम अलग। हमर बनाओल चामक कारण हुनकर सुरपर अधिकार हम नहि माँगब।” ओतय बैसल बच्चा ई सुनि अपन खिलौनाक छोट डिब्बापर निर्माताक नाम लिखबाक जिद केलक।

बिन्देश्वरी साँझक परिवार-बैसारसँ घुरि एलीह। खरीदार अगिला दू दिनक भीतर नव मूल्यांकन देबाक कबूल कएने छल; घानी बेचबाक निर्णायक दस्तखत एखन नहि भेल छल। घरमे ई तय भेल जे माँक पुरान माप-पात्र, घानीक पहिल तख्ती आ तेल निकालबाक हिसाबक बही परिवार रखत। बिन्देश्वरीक आँखिमे थकान छल, मुदा पहिल

बेर ओहि स्मृतिसँ मुक्ति नहि, ओकरा अलग सँ बचएबाक बाट देखाइत छल। ओ मीना लेल छोट डिब्बामे सरसोंक तेल लऽ अएलीह, जकर पूरा दाम मीना देलीह।

उर्मिला अपन पंजी उठाकऽ घर दिस चललीह। मीना हुनका दू पात्रक मरम्मतिक नकल देलीह, एहि शर्तसँ जे जाँचमे मालिकक निजी विवरण आवश्यकता बिना सार्वजनिक नहि होए। नैरा चालानक प्रति अपन थैलीमे राखलीह, आ कमलाक स्त्री-स्वामित्व सम्बन्धी पन्ना कमलाक दोकानमे रहए देलीह। अलग-अलग पन्ना सभकेँ एकटा रहस्यक नामपर खींचि लएब आसान छल; मुदा आइ वास्तविक खोज एहि बातमे छल जे के कोन वस्तु देखलक, कोन दाम पओलक, आ केकर सही कोन सीमाधरि बोलैत अछि।

राति पड़ैत बाजारक गल्लीमे धातुक छोट चोटक स्वर फेर उठल। मीना पहिल बासनक जोड़ पूरा करि रहल छलीह। जोड़क भीतरक चिरा बन्द देखाइत छल, मुदा ओ पानि भरि जाँच कए बिना बासन वापस नहि देलीह। सामनेक दोकानमे कमला वृद्धाक नामवला पूरक पन्ना सुखा रहल छलीह; रेखाक चूड़ीक किनार चिक्कन भऽ गेल छल; उषाक जूताक नव साँच एखन ओसारमे छल; बिन्देश्वरीक घानी खरीददारक बाट देखैत छल। अस्पतालक चालानक प्रश्न खुला रहि गेल, मुदा आइ पाँच लोक अपन काजक साँच, दाम आ नामकेँ बेसी साफ देखए लागल छलाह।

अध्याय ४४ • लोहारक औजार

भोरमे हरिनारायण शर्माक भट्टीक आगि एखन लाल नहि, हलुक पीयर छल। ओ लोहेक पातर पटरी चिमटासँ पकड़ि कऽ निहाइपर रखलनि आ हथौड़ीक पहिल चोट मारलनि। पटरी एक कातसँ मोड़ खा गेल। दोसर चोटपर ओ मोड़ सम भेल, तेसरपर ओकरा भीतर छोट खाँज बनल। ओ खाँजक बगलमे अँगुरी रखि कहलनि, “एहि ठाम रस्सी नहि, पहीयाक कील बैसत।” हुनकर बेटा अजित कापीमे नाप लिखि रहल छल। भट्टीक धुआँ उठैत-उठैत किवाड़क दरारसँ बाहर गेल, जतय बाजार एखन जागि रहल छल।

“बाबू, ई जकाँ बनाओल लोहा देखिकऽ लोक डरैत किएक अछि?” अजित पूछलक। पिछला साँझसँ ओहि दोकानक फोटो किछु फोनमे घूमि रहल छल। फोटोमे हरिनारायणक हाथक एक लम्बा छड़ आ तीन टेढ़ आकारक पात देखाइत छल; नीचाँ लिखल छल— अस्पतालक गोदाम लग हथियार बनबाक सुराग। हरिनारायण छड़कें उठौने बिना उत्तर देलनि, “जँ काज देखए सँ पहिने नाम दऽ देब, तँ फाल, कील आ कुंडी सभकें एक्के बात कहब।” अजितक हाथ कापीपर स्थिर रहि गेल।

आँगनमे चारि अपूर्ण औजार छल—पानि निकासक जाली खोलबाक हुक, हाथगाड़ीक धुरीक कील, करघाक लकड़ी पकड़बाक लोहेक कसनी आ नावक किनारपर रस्सी टिकेबाक छल्ला। तीनक आदेश अलग-अलग ग्राहकक छल, चौथाक दाम एखन निश्चित नहि भेल छल। हरिनारायण प्रत्येक सामान लग खड़ियासँ छोट चिन्ह लिखि रहल छलाह। कारखानाक पुरान बहीमे एहि चिन्हक पूरा अर्थ छल। फोटोमे चिन्ह कटि गेल छल; बचल छल केवल लोहेक नोक आ एकटा भयावह शीर्षक।

ओहि समय मीना साह आइकाल्हिक अपूर्ण अस्पताल-चालानक प्रति लऽ कऽ अएलीह। हुनकर काज धातुक बासनक मरम्मत छल, मुदा चालानमे चारि सामग्रीमे सँ एकटा ‘अज्ञात मरम्मतिक टुकड़ा’ लिखल रहि गेल छल। मीना पन्ना निहाइक कात नहि रखलीह, भट्टीसँ दूर एकटा खाली तख्तापर पसारलीह। “हमर नामपर तीन मरम्मत चढ़ल रहए, से गलती सुधरि गेल,” ओ कहलीह, “एहि चारिम चीजकें कियो तोहर लोहेक छड़ कहि रहल अछि। ककर कहब अछि से जनैत नहि।”

हरिनारायण पन्ना देखलनि। “हमर दोकानसँ अस्पतालमे कोन चीज गेल, ओकर रसीद हमर लग अछि। मुदा एतय ‘टुकड़ा’ लिखल अछि; न वजन, न नाप, न हस्ताक्षर।” ओ अपन बही खोललनि। अस्पतालक लेल एक महीना पहिने दू किवाड़क कब्जा आ एक छोटी जालीक जोड़ बनेने छलाह। चारिम पंक्तिमे एक ग्राहकक नावक लोहेक छल्ला छल, जकर अस्पतालसँ कोनो सम्बन्ध नहि। मीना आँखि झुकाकऽ कहलनि, “तखन कागदक शब्दकेँ वस्तु बनाकऽ देखेबाक जे आग्रह उठल, ओकरा रोकए पड़त।”

फोटो भेजनिहारक नामपर बहस शुरू होएबाक छल, मुदा नैरा ओकरा ओतहि रोकलीह। “एखन मूल तस्वीर, पहिल प्रसारणक समय आ तस्वीर लिअनिहारक सहमति—तीनू बात नहि अछि,” ओ कहलीह। अजितक मन छल जे जे ओकर बाबूकेँ बदनाम केलक ओकरा तुरन्त भेटल जाए। हरिनारायण बेटाक माथपर हथेली रखि कहलनि, “तौँ अपन काजक माप देखेबा सीख। ककरो दोष बिना प्रमाण गनब ओही गलती दोहराएब भेल।” अजित मुँह फुलौने रहल, मुदा ओ कापीमे फोटोवला छड़क वास्तविक नाप दर्ज केलक।

दोकानक बाहर दू प्रहरी आ नगरक निरीक्षण-दलक एक कर्मचारी अएला। हुनका सभक संग नैरा सेहो छलीह, मुदा ओ अलग ठाढ़ भऽ गेलीह। पिछला दिनक जाँचमे ओ सीप-चूनक नमूना आ धातुक बासनक पर्ची अलग कएने छलीह। आइ एक स्थानीय शिकायतक आधारपर पुलिस सामान्य औजारक उपयोग देखए आयल छल। दलक कर्मचारी कहलनि, “सोशल मीडियापर जे आकृति आयल अछि, ओकर सम्बन्धमे प्रश्न अछि। जाँचमे सहयोग करू।” हरिनारायण भट्ठीक आगि कम केलनि, श्रमिकसभकेँ सुरक्षित दूरीपर हटौलनि आ औजारक टेबुल खोलि देलनि।

पहिल प्रहरी लम्बा छड़ देखैत कहलनि, “ई नोक ककरा मारबाक लेल?” हरिनारायण छड़ सीधा नहि तानलनि। ओ पहीयाक पुरान धुरी निहाइपर रखलनि, छड़ ओकर नापमे बसाओलनि आ कहलनि, “एहि छड़ पर दोसर कातमे खाँज अछि, जतय रोकी लगैत अछि। नोक जकाँ जे देखाइत अछि से जोड़बाक सिरा अछि; एतय साँच आ पुरान ग्राहकक पहीया अछि।” कर्मचारी नाप देखलक। प्रहरी फेर पूछलक, “एकटा औजारक दोसर उपयोग नहि भऽ सकैत?” हरिनारायण कहलनि, “भऽ सकैत। मुदा सम्भावना आ एहि ठाम भेल काजक प्रमाण अलग अछि।”

नैरा कर्मचारीक अनुमतिसँ अपन पन्नामे तीन शीर्षक लिखलीह—फोटोमे की देखाइत अछि, दोकानमे की जाँचल गेल, आ एखन कोन प्रश्नक उत्तर नहि भेटल। पहिने ओ डरैत छलीह जे जनसमुदायक शिकायतक विरुद्ध जल्दी बोललासँ वास्तविक अपराधक संकेत छूटि जेत। महेशक गवाही समयसँ पहिने प्रकाशित करबाक अपन गलती हुनका याद छल। ओ कहलीह, “हमरा सार्वजनिक रूपसँ एखन एतबे कहबाक चाही जे फोटो अपनहिसँ अपराध सिद्ध नहि करैत। यदि दोसर वस्तु या कागद अछि तँ ओ अलग जाँच होएत।”

तखन पड़ोसक वाहन-मरम्मत कक्षसँ इरफान खान एला। हुनकर कमीजक बाँहपर ग्रीसक कारी धार छल, आ हाथमे एकटा छोट घिसल बुसिंग। ओ हरिनारायणसँ पहिने मँगाल धुरीक कील लेबाक आयल छलाह। दोकानक भीड़ देखि पुछलनि, “हमर गाड़ीक सामान एतय रोकल गेल की?” हरिनारायण कहलनि, “सामान एतय अछि, मुदा जाँच चलि रहल अछि।” इरफान कर्मचारी लग अपन आदेश-पर्ची रखलनि—गाड़ीक पहीयाक धुरी, तारीख, पुरान पुर्जाक चिन्ह आ बदलबाक अनुरोध।

इरफानक ग्राहकक एकटा छोट यात्रीगाड़ी छल, जे रेलवे चौकसँ रोगी आ मजदूरकें अलग-अलग भाड़ापर लऽ जाइत छल। गाड़ी चलौनिहार जल्दीमे छल। ओ फोनपर इरफानकें कहने छल जे ब्रेकक आवाजक शिकायत लिखि देलासँ यात्राक अनुबन्ध हाथसँ जा सकैत अछि। इरफान एखन ओ शिकायत कागदपर लिखने नहि छलाह; हुनका खराबी दोसर बेर देखबाक छल। भीड़क बीच ओ निर्णय लेलनि—“हम गाड़ीमे जे देखलहुँ, ओकर पर्ची आजु देब। ग्राहक नाराज होथि तँ होथि, मुदा बिना जाँचक सुरक्षित नहि कहब।”

एक प्रहरी इरफानक बुसिंगक भीतर गोल छेद देखैत पुछलक, “आ ई?” इरफान कोनो चमत्कार देखेबाक यत्न नहि केलनि। ओ पुरान पुर्जा आ नव नाप लग रखि देखौलनि जे धुरी घूमैत समय धातु कतय घिसैत अछि। हुनक हथेलीपर पुरान चोटक निशान छल; ओ अपन काजक जोखिम बुझैत छलाह। “ई मरम्मतक नमूना अछि,” ओ कहलनि, “ककरो अन्य प्रयोजन लेल एहन आकार बनि सकैत अछि, मुदा एहि गाड़ीपर ओकर उपयोग देखू। फेर अनुमान लिखू।” कर्मचारी फोटो खींचल, संगहि ग्राहकक निजी विवरण सार्वजनिक नहि करबाक बात दर्ज केलक।

नैरा इरफानसँ एकटा प्रश्न अलग सँ पूछलीह—“एहि गाड़ीक मरम्मत कतेक दिन पहिने भेल?” इरफान कहला जे हुनका लग पुरान कामक दिन लिखल अछि, मुदा जे भाग दोसर कार्यशालामे बदलल गेल, तकरा लेल ओ गवाही नहि दऽ सकैत छथि। “हमर काजक सीमा लिखि दिअ,” ओ कहलनि। नैरा एतय सेहो तीन शब्द लिखलीह—देखल, कएल, सुनल। बजारमे एकटा मिलैत वाहनक नामसँ सभ खेपकें अपराधक एक्के सूत्रमे मिलाएबाक आग्रह छल; एहि जाँचक अलग रसीद ओ आग्रहकें रोकैत छल।

बाजारमे अफवाह एक बेर पसरलासँ सामानक दाम सेहो बदलैत अछि। हरिनारायणक नियमित ग्राहक नन्दलाल, जे खेतक हलक फाल बनबबैत छल, ओतय अएबे नहि केलक। ओकर बेटा मोबाइलपर खबर देखि आदेश रोकबाक सन्देश पठौने छल। हरिनारायण सन्देश पढ़ि कनेक उदास भेलाह, मुदा पुलिसक समक्ष ओकरा विरोधी पक्षक प्रमाण नहि बनौलनि। “ओ डरलक, ओकरा बुझाएबाक काम हमर अछि,” ओ कहलनि। अजित पूछलक, “जँ सभ ग्राहक डरि जायत तँ भट्ठी कोना जरत?” हरिनारायण निहाइक कात रखल अपूर्ण फाल देखैत रहि गेलाह।

चूड़ीक दोकान लग फरजाना चूड़ीहार ग्राहिका लेल तीन प्रकारक सामान पसारि रहल छलीह—हाथसँ बनेल लाहक कड़ा, पातर शीशाक चूड़ी आ मशीनसँ निकलल एकसार आकारक जोड़ी। रेखा साहुक नव डिजाइनक चर्चा सुनि किछु लोक फरजानाक सामानकें ‘नकल’ कहि रहल छल। फरजाना अलग-अलग मूल लागत आ टूटबाक सम्भावना बतालीह। “रेखाक डिजाइन हुनकर,” ओ कहलीह, “हमर एहि कड़ाक रङ्गक मिश्रण आ हाथक घुमाव हमर काज। आ जे मशीनक माल अछि से मशीनक नामसँ बेचब; हाथक बनेल कहि बेसी दाम नहि लेब।”

ग्राहिका कहलनि, “धातुक फोटोमे जे टेढ़ चीज अछि, ओकरा किछु लोक चूड़ी काटबाक औजारो कहैत अछि।” फरजाना हँसलीह नहि। ओ अपन कारीगरक छोटा चिमटा उठौलीह, ओकर मुँहपर लागल रबर देखौलीह, आ बगलमे हरिनारायण बनौने पातर कसनी रखलीह। “एहि दू औजारक रूप मिलि सकैत अछि,” ओ बजलीह, “मुदा एकटा गरम लाह पकड़ैत अछि, दोसर काठक साँच सम्हारैत अछि। रसीद आ काम देखल बिना दुकानदारकें अपराधी बना देब तँ हमर हाथो बन्द भऽ जेत।”

फरजानाक बहिनक बेटी पहिल बेर अपन बचाएल पैसासँ चूड़ी किनए आयल छलीह। ओ लालक बदला धूसर-हरियर कड़ा चुनलक। फरजाना कहलीह, “तोरा ई रङ्ग सचमुच पसिन्न अछि कि सभक बातक विरुद्ध चुनैत छें?” बच्ची हँसि कहलनि, “बादरक छाँह जकाँ अछि। पानि परत तँ बेसी नीक लागत।” फरजाना ओकरा पानि लगैत लाहक देखभाल बुझौलीह, आ दाम काटि ‘भेट’ कहबाक बदला तय छूट पर्चीपर लिखि देलनि। दूनूक हँसी किछु देरि लेल बाजारक डर तोड़ि देलक।

ओहि दोकानसँ थोड़े दूर शारदा कसौधन पुरान गिरवीखाताक पन्ना खोलने बैसल छलीह। कमला सोनार लग स्त्रीक आभूषणक नामपर उठल विवाद सुनि ओ अपन पारिवारिक दोकानमे सेहो पुरान ब्याजक जोड़ देखबाक ठानने छलीह। घरक बड़का भाय कहैत छलाह जे पुरान पर्चीक हिसाब खोलब परिवारक प्रतिष्ठापर चोट होएत। शारदा उत्तर देने छलीह, “जँ अनुचित जोड़ अछि तँ ओहि पन्नाकेँ बन्द राखलासँ प्रतिष्ठा बचत नहि। मुदा प्रत्येक गिरवीकेँ चोरीक सामानो नहि कहब।” आइ ओ तीन परिवारक अलग आवेदन लऽ कऽ आयल छलीह।

शारदाक पहिल पन्नापर मूलधनक संख्या स्पष्ट छल, मुदा ब्याजक एक मद दू बेर चढ़ल रहए। दोसर पन्नामे गिरवी राखनिहार स्त्रीक नाम ‘परिवार’ लिखल छल। तेसरमे अवधि पूरा होएबाक बादो वस्तु छुटबए लेल के कतेक देने छल, से अस्पष्ट छल। शारदा अलग लेखा बनौलीह आ ग्राहककेँ कहलनि, “हम हिसाब देखब; आजु कोनो गहना बेचबाक आदेश नहि देब।” हुनकर भाय चिढ़ि उठलाह—“ग्राहककेँ एतेक खुलासासँ घरक कारोबार टूटि जेत।” ओ उत्तर देलीह, “बिना हिसाबक विश्वास टूटलासँ बेसी टूटत।”

कमला ओतय पहुँचलि तँ शारदा हुनकासँ वृद्धाक बाला सम्बन्धी पूरक दावाक चर्चा केलनि। कमला ओ निजी कागद खोलि नहि देखौलीह। “मालिकक दावा हमरा दुकानमे अछि,” ओ कहलनि, “अहाँ अपन ब्याजक हिसाब जाँचू। जँ ग्राहक स्वयं अनुमति देतीह तखन दुनू कागदक सम्बन्ध परखब।” शारदा एतय सहमत भेलीह। दू व्यवसायमे स्त्रीक स्वामित्व आ ऋणक प्रश्न जुड़ल छल, मुदा ग्राहकक सहमति बिना हुनकर निजी देय सार्वजनिक कएल जाएब उचित नहि छल।

दुपहरक बाद निरीक्षण-दल हरिनारायणक कार्यशालामे पुनः जुटल। ललित विश्वकर्मा सेहो अएला, किएक तँ घाटक अस्थायी उतार-पट्टामे जे लोहाक कसनी लगबाक छल, ओकरा लेल लकड़ी आ लोहेक नाप मिलाबए पड़ैत। ललितक पुरान ठेका गलतीसँ नहि, असत्य भार-प्रमाणनपर हस्ताक्षर अस्वीकार करबाक कारण हाथसँ निकलल छल। ओ नव काजक प्रतिबद्धता नहि देलनि; केवल अपना लगक पुरान साँच देखौलनि। हरिनारायण कहलनि, “लोहेक कसनी ठीक बनब, तँ लकड़ी नहि फिसलत। मुदा पानि उठलासँ पूरा पट्टा टिकत, से हमर औजार नहि बता सकैत।”

अदिति आ तारा किछु देर बाद पहुँचलि। अदितिक हाथमे बाहा-मुँहथरिह पुनर्जाँचक प्रारम्भिक रेखाचित्र छल, जतय पानिक निकास रोकएवला पुरान अवरोधक नाप एखन बाकी छल। कर्मचारी पूछलक जे एहि लोहेक हुकसँ बन्द जाली खोलि सकैत छी की। हरिनारायण कहलनि, “जाली खोलबाक लेल हुक बनल अछि। मुदा कखन, कतेक, केकर अनुमति सँ जाली उठाओल जाएत, से अभियन्ता आ उपयोगक लोक तय करताह।” तारा चिन्हित कएलीह जे हुकक मुट्ठी पकड़ेबाक जगह फिसलन रोकबाक लेल छोट मोड़ चाही। हरिनारायण ओ सुझाव अपन कापीमे लिखलनि।

निरीक्षण-दल चारि अपूर्ण औजारक नाप, ग्राहकक आदेश आ काम करबाक प्रत्यक्ष प्रदर्शन देखलक। ‘हथियार बनैत अछि’ लिखल फोन-शीर्षकक समर्थनमे दोकानसँ ओहि दिन कोनो विशिष्ट वस्तुगत प्रमाण नहि भेटल। प्रहरी अपन टिप्पणीमे ई बात दर्ज करबाक सहमति देलक। मुदा ओ ईहो कहलक जे बाहरी खेप अथवा दोसर शिकायतक स्वतन्त्र जाँच एहि निष्कर्षसँ बन्द नहि होएत। हरिनारायण कहलनि, “ठीक अछि। बस हमर सामान्य औजारक फोटोकें पहिनेसँ सिद्ध अपराध लिखि प्रसारित नहि करू।”

नैराकें कर्मचारी एकटा संक्षिप्त निरीक्षण-प्रति देलक, जाहिमे चारि सामान्य औजारक उपयोग आ अलग-अलग ग्राहकक रसीदक उल्लेख छल। ओ आधा पन्ना पढ़ि एक शब्दपर रुकलीह—‘बरामद’। “एतय कोन वस्तु जब्त भेल?” ओ पुछलीह। कर्मचारी कहलनि, “नमूना देखल गेल, जब्त नहि।” नैरा विनम्रतासँ कहलीह, “तखन ‘निरीक्षित’ लिखू। एकटा शब्द बदललासँ कागदक भविष्य बदलि सकैत अछि।” कर्मचारी संशोधित प्रति बनौलक आ हरिनारायणकें देलक।

अजित एखन धरि दरबज्जापर ठाढ़ छल। ओकरा लग लोहेक छोट-छोट बेकार टुकड़ा छल, जाहिसँ ओ हवा चलला पर बजएवला एकटा छोट झुनझुना बनबए चाहैत छल। हरिनारायण ओकर डोरी देखिकऽ कहलनि, “ई टुकड़ासभ नोकदार अछि। पहिने धार घसि चिक्कन कर; नहि तँ झुनझुनाक नामपर हाथ कटि जेत।” अजित पुछलक, “आब ईहो हथियार कहल जेत?” हरिनारायण पहिल बेर मुस्कुरौलाह। “जँ तौँ एहन बनबै जे हाथ नहि कटत आ आवाज सुन्दर आबत, तँ तोहर पहिल औजारक परीक्षा ओतहि अछि।”

बाजारक चौकपर नगरक सूचना-पट लग एकटा छोट संशोधन चढ़ल—हरिनारायणक कार्यशालाक चित्र सम्बन्धी आरोपक पुष्टि निरीक्षणमे नहि भेल; वस्तुकेँ ओकर देखल उपयोग आ कागदसँ अलग करि निर्णय नहि देल जा सकैत। कियो खुलि कऽ माफ़ी नहि माँगलक। नन्दलाल अपन फालक आदेश तुरन्त वापस नहि पठौलक। ई हानि हरिनारायणक बहीमे लिखल रहल; सही प्रमाणपत्र भेटलासँ चुकता भऽ जेबएवला देय नहि।

इरफान अपन वाहनक ग्राहक लग फोन केलनि। “धुरीक काज आजु पूरा करब,” ओ कहलनि, “मुदा ब्रेकक जाँचक पर्चीपर जे खराबी देखलहुँ से लिखब। गाड़ी चलएबाक निर्णय अहाँक, असुरक्षित कहबाक जिम्मेदारी हमरा।” ग्राहक कुछ देरि मौन रहल, फेर कहलनि, “एतबे लिखू जे फेर देखबाक अछि।” इरफान उत्तर देलनि, “देखबाक अछि, आ एखन जे घिसल देखलहुँ से सेहो लिखब।” ओ फोन राखि देलनि। हुनका बुझाईत छल जे एकटा ग्राहक हाथसँ जा सकैत अछि।

फरजाना सँझामे अपन दुकानक बाहर तीन छोट पाटी लगौलीह—लाहक हाथक काज, शीशाक चूड़ी आ मशीनक सामान। ओ रंग आ नापक फरक बतबैत एक ग्राहककेँ समय देलीह, मुदा सभकेँ महंगा सामान किनबाक दबाव नहि देलीह। रेखा साहु कनेक देरि लेल आयलीह आ एक नव आकारपर ओकर विचार पुछलनि। फरजाना कहलनि, “एहि जोड़मे रङ्ग नीक अछि; किन्तु कलाई पर घसत। कारीगरक सम्मान एतय अछि जे ग्राहकक हाथ बचए।” रेखा कागदपर छोट सुधार उतारलीह।

फरजाना हुनकासँ कहलनि जे ओ तीन प्रकारक सामानक छोट पाठ बच्चासभकेँ देखेबाक चाहैत छथि। एहि पाठमे चूड़ी बनबैत गरम लाह छुएबाक बदला ठंढा साँच,

रङ्गक नमूना आ टूटल चूड़ीक सुरक्षित किनार देखाओल जाएत। रेखा कहलीह, “जे बच्चा कारीगरी पसिन्न करत, ओकरा प्रशिक्षणक दाम बुझबाक चाही; मुफ्त कौशलक नामपर कियो दोकानक काज नहि करए।” फरजाना उत्तर देलीह, “आ जे नहि करत, ओहो अपन पसीनासँ कमाएल पैसाक दाम बुझत।”

शारदा साँझक पारिवारिक बैसारमे एक पन्ना रखलीह, जइमे मूलधन, ब्याज आ वस्तुक मालिकक नाम अलग लिखल छल। हुनकर भाय एखनहुँ विवाद करैत छलाह, मुदा दू बेर चढ़ल ब्याजक पाँति देखिकऽ रोकि गेलाह। “एहि एक खातामे सुधार करब,” ओ कहलनि, “मुदा पुरान सभ खाता एक दिनमे नहि खुलत।” शारदा सहमत भेलीह। ओ खुला ब्याज-पंजीक पहिल प्रति ग्राहकक अनुमति लेबाक दिन तय केलनि। ई जीत सम्पूर्ण नहि छल; मुदा कागद बन्द राखबाक पुरान आदेश टूटल छल।

हरिनारायण रातिमे भट्ठीक आगि बुझबैत छलाह। मीना अपन पीतलक बासनक मरम्मतक सही पर्ची फेर लेने अएलीह। “अस्पतालक ओहि चारिम टुकड़ाक प्रश्न एखनो अछि,” ओ कहलीह। हरिनारायण उत्तर देलनि, “हमर एहि दिनक लोहेक हुक तकर उत्तर नहि। जँ कोनो रसीद भेटत तँ अपन नामसँ देब, मुदा जे नहि देखलहुँ तकर गवाही नहि।” मीना सिर हिलौलीह। दुनूकें छुटल सामानक खोज चाही छल, मुदा एक दोसराक कामकें गलत प्रमाण बनाकऽ नहि।

दोकान बन्द होएबाक पहिने गोमती एक पर्ची लऽ अएलीह। अस्पतालक गोदामसँ नमूना उठेनिहार मजदूरसभमे एक कारीगरक हस्ताक्षर नहि, केवल अँगूठाक छाप छल। ओ कहलीह, “छाप ककर अछि तकरा बोलबबैत छी; कागदपर जे नहि लिखल अछि से ओकर मुँहमे नहि देब।” हरिनारायण पर्ची देखिते लौटा देलनि। “भट्ठीमे काज करनिहार सभ आदमीक हाथ कारी भऽ सकैत अछि,” ओ कहलनि, “कारी अँगूठा देखिकऽ अपन लोक चिन्हब सम्भव नहि।” गोमती पर्ची अपन लग सुरक्षित रखलीह।

उर्मिला अस्पतालक कपड़ा लऽ जाइत हाथगाड़ीक कातसँ गुजरलीह। ओ हरिनारायणकें पुछलीह जे धुरीक कील समयपर भेटत कि नहि। ओ कहलनि, “तोहर गाड़ीक कील बनि रहल अछि; लेलहुँ तँ अलग रसीद भेटत। घाटक असुरक्षित पट्टापर ई कील लगलासँ पट्टा सुरक्षित नहि मानल जाएत।” उर्मिला हँसलीह, “हामी सभ आब

पानि, कपड़ा, धुरी आ पट्टा सभक अलग हिसाब बुझए लागल छी। आब मजदूरीक देय सेहो एही स्पष्टतासँ भेटत तँ कहब प्रगति भेल।” हुनकर शब्दमे ठट्टा छल, मुदा थकानो।

अजित निहाइक ऊपर छोट झुनझुना लटकौलक। हवा लागल तँ तीन पातर टुकड़ामे सँ दू बजल, तेसर नहि। ओ चिमटा लऽ कऽ ओकर दूरी बदललक; आब तीनू अलग आवाज देलक। हरिनारायण एकटा खुरदुर किनारपर हाथ फेरि कहलनि, “ई एखन घसबाक बाकी अछि।” अजित झुनझुनाकेँ उतारि लेलनि। काज अपूर्ण मानलासँ ओकर आनन्द घटल नहि। बाहर दूर बजारमे दिनभरि पसरल झूठक असर बचल छल; भीतर भट्ठी बुझि गेल छल, मुदा लोहेक एकटा छोट नवल आवाज घरमे रहि गेल।

अध्याय ४५ • जोलहाक खेप

भोरक अधबुझल उजासमे सुकठीक खटालक छप्पर सँ पहिल बूँद टपकल तँ विनोद केवर्त बाँसक ढकनी उलटि देलनि। ढकनीमे भरल पानि माछक टोकरापर नहि, नालीक कात रखल माटिक गहिरा भाँड़मे गिरल। माछबजारक बीचोबीच भीजल बोरा, जाल, बर्फक टूटल टुकड़ा आ पानि ढोएनिहारक खड़ामक आवाज एक संग उठि रहल छल। विनोदक पहिल चिन्ता माछक दाम नहि, ओहि सँकर बाटपर फिसलि पड़बाक डर छल जतए रातिक आखिरी गाड़ी रुकल रहए। ओ अपन छोट गाछीदार पाट उठा कऽ फेर ठाम बदललनि। खटालक मालिकक मुनीम लग सँ आवाज आयल, “ओहि ठाम किराया बेसी पड़त।” विनोद कहलनि, “किराया लिखू, मुदा पयर राखबाक जगह तँ पहिने छोड़ू।”

यूसुफ अंसारी ओहि भीजल बाटक दोसर कात अपन कपड़ाक दू गाँठ उतारैत छलाह। करघाक तानी सँ निकलल कपड़ा एतेक सावधानीसँ मोड़ल छल जे गाँठ खोलिते किनारक लाल-पातर धागा एक्के सीधमे चमकि उठल। दोसर गाँठपर उज्जर कागदक पट्टी साटल छल—‘यूसुफ अंसारी, हाथकरघा, अस्पतालक उपयोग लेल स्वीकृत’। ओ पट्टी देखिकऽ हुनकर हाथ रुकि गेल। स्वीकृतिक शब्द ओ नहि लिखने छलाह, आ अस्पतालक लेल कपड़ा कसौटीपर पास भेल, एहन कोनो परीक्षणो हुनका लग नहि छल। पहिल गाँठ हुनकर अपन बुनल कपड़ाक छल; दोसर गाँठक वस्त्र हुनका उँगरीमे अनचिन्हार लगल। मुदा दूनू पर एक्के दुकानक छाप लगल रहए।

गाड़ीवाला अपन चिट्ठी खोलि कहलनि, “एक्के व्यापारीक माल अछि। उतारबातक पर्ची एक्के नामपर बनल।” यूसुफ दोसर गाँठक कोनासँ एक सूत खींचि देखलनि। धागाक बनावट, किनारक जोड़ आ तहक स्पर्श हुनकर करघाक नहि छल। ओ थान फाड़ल नहि चाहलनि; केवल नमूनाक कोना देखा कऽ कहलनि, “ई बुनल माल हमर नहि। ऊपरक छाप हमर रहला सँ वस्तु हमर नहि भऽ जायत।” गाड़ीवाला आग्रह केलक जे व्यापारीक अग्रिम रकम आ आजुक बाजार-दाम अच्छा अछि, जल्दी उतारि बिक्री करब उपयुक्त रहत। यूसुफ पहिल गाँठ अलग ठाम राखि दोसरपर अपन लाल डोरी बाँधि देलनि, जेकर अर्थ घरक बहिमे ‘बिक्री रोकल’ होइत छल।

यूसुफक बेटाक फोन ओहि घड़ी अएल। ओ इलेक्ट्रॉनिक उपकरणक प्रशिक्षणमे छल आ ग्राहकक मालक फोटो मिलान करबाक एकटा छोट पद्धति बनए चाहैत छल। “अब्बा, दोसर खेपक छाप फोनपर देखू, हमर नमूनाक फोटो सँ मिलत,” ओ कहलक। यूसुफ झुँझला कऽ कहलनि, “फोटोमे किनारक छिद्र नहि छुओल जाइत!” बेटा चुप भेल, फेर कहलक, “एहि लेल तँ फोटो संग नमूना संख्या लिखबाक कहैत छी। अहाँ जे देखलहुँ ओ हम नहि काटैत छी।” यूसुफ चिट्ठीक कोनामे लिखल एक अङ्क फेर देखलनि। पिछिला साँझ बेटा जतेक बेर कहने छल जे दू अलग मालकँ एके मोबाइल चित्र सँ नहि बेचू, ओहि बेर हुनका ई बात व्यापारक राहमे रोक लगैत छल। आइ अपन अँगरी ओ बातक कारण बुझि रहल छल।

विनोद अपन तराजू ठीक करैत यूसुफकँ देखलनि। “कपड़ामे एक्के नामक दू गाँठ अछि, माछमे एक्के तलाबक दू टोकरि कहि दाम काटि देत,” ओ हँसि कहलनि। हुनक ग्राहकक तराजूपर बाट राखल छल, मुदा ढोएनिहारक भाड़ा रसीदमे किएक नहि, ई हुनकर प्रश्न रहए। ओ माछ पकड़निहारक संग साझा पाटपर बेचैत छलाह; थोक ठेकेदारक गाड़ी सीधा छाँहमे लगैत, छोट विक्रेता घाम आ पानि दुनू सहैत। आजु प्रथम बेर ओ अपन लिखल खर्चक पन्ना लऽ खटालक मुनीम लग गेलाह—माछक खरीद, नावसँ उतराइ, टोकरि-ढुलाई आ खराब भेल मालक अलग गणना।

मुनीम पन्ना देखिकऽ कहलक, “बड़ा गाड़ीवला अग्रिम दैत अछि, ताहि लेल ओकर जगह पक्का।” विनोद उत्तर देलनि, “हम सेहो किराया दैत छी। मुदा जगहक गिनती गाड़ीक चक्कासँ करब कि बेचबाक टोकरासँ? जे भोरमे माछ किनलक, ओकरा एखन पानि टपकैत जगह भेटल अछि।” मुनीम अपन बहिमे छोट विक्रेताक नाम देखबाक नाटक नहि केलक; सचमुच पन्ना पलटल। ओतय केवल ‘छिटपुट’ लिखल छल। विनोद कहलनि, “छिटपुट कोनो आदमीक नाम नहि।” एतबे कहि ओ ठेकेक पूरा फैसला नहि माँगलनि; बाजार समिति लग अलग स्थान-आवेदन देबाक तिथि लिखि लेला।

ओहि ठाम सुमन टिकुलहार अपन छोट लकड़ीक पेटी खोलि रहलीह। पेटीमे माटि आ काठक सुरक्षित साँचपर बनल रंगीन टिकुली, कागदक गोल नमूना आ किनार पहचानबाक छोट चिह्न छल। माछबजारक मेलाक लेल व्यवसायीसभ वस्तुक नाम

लिखबाक फलक चाहैत छलाह, आ सुमनकेँ रंगीन निशान बनएबाक आंशिक आदेश भेटल रहनि। ओ एक ग्राहककेँ कहलीह, “हम जे आकार बनौने छी तकर नमूना-बही हमर लग रहत। अहाँ जे फलक किनब, ओकर उपयोग ओहि फलकपर करब; सभ दोकानपर साँच नकल करबाक अधिकार दाममे जोड़ल नहि अछि।” ग्राहक पहिने मुस्कुरायल, फेर पुछलक, “तखन चिन्ह बनएबाक कीमत की?” सुमन छोट रसीदमे कागद, रङ्ग आ हाथक समय अलग लिखि देखौलनि।

मीना सार्की ओहि समय खटालक कात बाँसल खूँटामे चर्मक दू पट्टा बाँधि नमूना टाँगि रहलीह। हुनकर घरक काज खच्चरक सामान, बोरा बाँधबाक पट्टा आ औजारक मुठिया बनएब छल। ओ सीमापारक सहकारी दलसँ किछु नमूना-माप लऽ कऽ अएने छलीह, मुदा एहि बजारक लेनदेन घरेलू मुद्रा आ स्थानीय रसीदपर चलैत छल। हुनक सहकारीक लोकक भुगतान कोन मुद्रा, कोन तिथि आ केकर खर्चपर होएत, तकर हिसाब एखन बातचीतमे छल। मीना एक पट्टा तनिक खींचि देखौलीह—“ई माछक भीजल टोकरा लेल नहि; एहि जोड़मे पानि बारम्बार पड़त तँ ढील होएबाक सम्भावना अछि।”

गाड़ीवाला मीनासँ पुछलक जे कपड़ाक दू गाँठ एक्के पट्टामे बाँधि दियौ। मीना कहलनि, “बाँधब तँ बान्हि देब, मुदा गलत नामक पर्ची हमरा गाँठमे किएक साटब? पहिने बताउ कोन गाँठ किनका देबाक अछि।” ओ छोट रसीदमे तीन मद लिखलीह—पट्टा भाड़ा, बाँधबाक श्रम आ प्रतीक्षाक समय। गाड़ीवाला चिढ़ि कऽ कहलनि, “सभकेँ अलग पैसा चाही!” मीना उत्तर देलीह, “एक्के आदमी तीन काज करैत अछि तँ तीनो काज मुफ्त नहि भऽ जाइत। आ पट्टा ककरो दोषक प्रमाणो नहि।” ओ अपन पट्टा पहिल गाँठ लेल मात्र देलनि, दोसरक जिम्मेदारी स्पष्ट होएब धरि रोकि देलीह।

यूसुफ पहिल गाँठक कपड़ा खोलेला। ओहि थानक धागामे हुनका घरक दिन सभ बान्हल छल—जतए तानी एक बेर टूटल छल, ओतए सूतक छोट जोड़ माटि रंगक धागासँ सुधारल गेल रहए। बुनाइक ई छोटी पहिचान बिक्री लेल छिपाएब नहि चाहैत छलाह। दोसर गाँठक कपड़ा चिक्कन आ चमकीला छल, मुदा ओकरा ‘अस्पताल-स्वीकृत हाथकरघा’ कहबाक न अधिकार हुनका लग छल, न परीक्षा। थोक व्यापारीक आदमी आयल आ कहलक, “दाम दूना भेटत। छाप के रखलक से बादमे देखल जेत। अहाँ बस

सामान पठाउ।” यूसुफ अपन बहि खोलि पहिल गाँठक संख्या अलग करैत कहला, “हमरा जे नहि बुनल अछि से हमर नामपर नहि जाएत। दाम दूना भेटलासँ अस्पतालक उपयोगक झूठ साँच नहि होइत।”

व्यापारीक आदमी हुनका पुरान उधारी याद देलक। विद्यालयक पर्दाक अग्रिम एखन पूरा नहि भेटल छल; सूत देनिहार दुकानदार अलग देय माँगैत छलाह। “एहि बिक्रीसँ उधार उतरि जायत,” ओ कहलनि। यूसुफक मुख सुखि गेल। हुनका छोट दराजमे बेटाक प्रशिक्षण-शुल्कक पर्ची सेहो याद अएल। ओ पन्नापर नुकसानक अनुमान लिखि देलनि—दू दिनक दुकान-किराया, गाड़ी धरि लएबाक खर्च, आ रुकल बिक्रीक कारण सूतक अगिला खरीदमे देरी। एतबा साफ हिसाब लिखलाक बादो ओ लाल डोरी नहि खोललनि। नैतिक निर्णय कहबाक लेल सरल छल, घरे अनाजक जोगाड़ करबाक लेल कठिन।

छप्परक बाहर सँ पानि खटालक नालीमे उतरैत छल। एक युवक कहलनि जे नाली बन्द अछि तँ अवश्य तालाबक पानि खराब भऽ गेल। विनोद ओकरा रोकि कहला, “ई खटालक निकास अछि; तलाबक जल एक अलग प्रश्न। आजुक गन्धसँ पानि भीतरक गुणक अंक नहि निकलत।” ओ खटालक फाटक, पानि निकालबाक बाट आ माछ राखबाक ठामक मोट रेखाचित्र बनौलनि। जे पानि बाजारमे बहैत छल तकर निकासक जाँच आवश्यक छल; माछ पकड़बाक जलाशयक जाँच लेल अलग नमूना आ विधि चाही। सुमन अपन चिन्ह बनएबाक कोरामे एक पातर रेखा जोड़ि देलीह, ताकि मेलाक फलकमे बाजारक नाली आ जलाशयक चित्र गड़ुमड़ु नहि हो।

दुपहर धरि माछ-मखान श्रम-मेलाक आयोजन समिति बाजारक सामुदायिक चबूतरापर बैसल। रमणी मल्लाह पुरान मखानक सुखाएल नमूना लऽ कऽ अएलीह। हुनका स्पष्ट छल जे डबरामे मखान चुनब, सुखाएब, फोड़ब आ बजार धरि पहुँचाएब अलग काज अछि। आयोजनक एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे माछ आ मखानक संग कपड़ाक थान सेहो एक्के ‘स्थानीय सामान’ दरपर किनि लेल जाए। यूसुफ, विनोद आ रमणी तीनू एक-दोसराक मुँह देखलनि। रमणी पहिने बजलीह, “स्थानीय कहब सम्मान अछि, मुदा दर काजक अनुसार बनत। मखानक कच्चा गूड़ी आ फोड़ल दाना एक बराबर नहि।”

यूसुफ अपन थानक पातर दोष देखबैत कहलनि, “हाथसँ बुनल कपड़ाक दर तानीक समय आ सूतक खर्चसँ निकलत। दुलाई अलग जोड़ू; हम माछक टोकरा नहि बनबैत, आ माछ बेचएवला हमर करघाक रखवार नहि।” विनोद तुरन्त जोड़लनि, “माछक खरीद-दाम, छोट विक्रेताक हिस्सा आ खराब भेल मालक हानि सेहो अलग। एक्के गाड़ीमे आयल वस्तु लेल एक्के दाम लिखब व्यापारीक सुविधा अछि, श्रमिकक नहि।” समिति एहि बेर एके पंक्तिक बदला चारि मद बनौलनि—माछ, मखान, कपड़ा आ दुलाई। दर तत्काल स्वीकृत नहि भेल; अगिला बैठक लेल मूल खरीद-परची मँगाओल गेल।

व्यापारीक प्रतिनिधि दोसर बेर आयल। एहि बेर ओकर हाथमे बिलक एहन प्रति छल जइमे दूनू गाँठक कुल रकम संग यूसुफक दुकानक छाप छपल रहए। ओ कहलनि, “सही करब तँ लदाइ छोड़ब; नहि तँ पहिले देल अग्रिम वापस करू।” यूसुफ देखलनि जे बिलपर हुनकर हस्ताक्षर नहि, छाप मात्र अछि। ओ अपन कारीगरीक असली नमूना, पुरान आदेश आ पहिल गाँठक प्राप्ति-परची टेबुलपर रखलनि। “हम अपन बुनल थानक पैसा आ देयक हिसाब दए तैयार छी,” ओ कहलनि, “मुदा दोसर वस्तुकेँ हमर बनल मानि हस्ताक्षर नहि देब। जतेक अग्रिम ई वस्तुक नामपर गेल, तकरा लेल लिखित मिलान चाही।”

नैरा बाजारक सार्वजनिक सूचना-पट लग उर्मिलाक मजदूरीक एक परची लेबाक लेल पहुँचल छलीह। यूसुफ हुनका विवादक बीच घींचि अनबाक इच्छा नहि रखैत छलाह, मुदा विनोद पूछलनि जे लिखल कागदक प्रति के सुरक्षित राखत। नैरा दूनू गाँठक संख्या सुनलीह, थानक फोटो स्वामिक सहमति सँ लेलनि आ कागदमे केवल जतेक देखल गेल ततेक लिखलनि—पहिल गाँठ यूसुफक करघाक नमूनासँ मिलैत अछि; दोसरपर हुनकर नाम छपल अछि, मुदा निर्माणक प्रमाण नहि। ‘अस्पताल स्वीकृत’ शब्दक जाँच लेल अस्पतालक खरीद-पंजी चाही। ई शब्द देखिकऽ चिकित्सालयक पुरान धातु-बिल आ कपड़ा-पंजीक दोष एक्के अपराध कहि नहि सकैत छल।

नैरा प्रतिनिधिक बिलमे एक साझा वाहन-संख्या देखलीह। एही प्रकारक वाहन अस्पतालक किछु गोदाम-परचीमे सेहो लिखल भेटने छल, मुदा तारीख आ काजक विवरण अलग रहए। ओ विनोदकेँ कहलनि, “एक्के वाहन बजारमे माछ, कपड़ा, रंग, धुनल कपास सभ ढोइ सकैत अछि। गाड़ी मिललासँ हर बोरा एक्के स्रोतक नहि भऽ जाइत। प्रत्येक

खेपक अलग लदान-पर्ची, उतारबाक ठाम आ स्वीकार करनिहारक चिन्ह चाही।”
प्रतिनिधि कहलनि, “तखन हमरो गाड़ीकेँ अपराधी नहि लिखू।” नैरा उत्तर देलीह, “नहि लिखब। आ एतय जकर नाम छापल अछि, ओकरा बिना जाँच दोषी सेहो नहि।”

यूसुफ दोसर गाँठपर पहिने लगाओल लाल डोरीक संग एक पातर कागद बाँधि देलनि—‘निर्माण आ उपयोगक पहचान अप्रमाणित; बिक्री स्थगित; मूल पैकिंग सुरक्षित’।
पहिल गाँठपर अपन करघाक थानक सही विवरण आ माप लिखलनि। प्रतिनिधि आपत्ति केलक जे सामान सील भेलाक बाद खटालक कोनामे कतेक देरि राखल जाएत। मीना अपन पट्टाक खाली रसीद देखौलीह—“जतए राखब, ओकर भाड़ा दिन गनि लिखू। बिना अनुमति कियो गाँठ खोलत नहि।” यूसुफ भाड़ाक जिम्मेदारीक अस्थायी पंक्ति मानि लेलनि; बादमे ककर देय मानल जाएत, से खुलल रहल।

विनोदक पाटपर एक बूढ़ि खरीदारिन माछक दू टुकड़ा चुनि कहलीह, “आधा पसेरी नहि चाही; घरमे आजु हम दू आदमी छी।” विक्रेता कहलक, “बड़का टोकराक दाम घटैत अछि।” बूढ़ि हँसलीह, “घरक भूखक पंजी तँ तोहर तराजूमे नहि!” विनोद हुनका मनोनुकूल छोट हिस्सा तौलि देलनि आ खाली पातक थैलीक बदला अपना लगक साफ पातर टोकरीमे राखलनि। बूढ़ि जखन पइसा देलीह तँ दोसर ग्राहक अपन गणना याद करि फेर तौल माँगलक। विनोद कहला, “ई बजार अछि, परीक्षा-घर नहि; मुदा तौल चाही तँ तराजू खाली अछि।” भीड़मे फेर हँसी उठल।

साँझ लग माछबजार समितिक सचिव एकटा अस्थायी कागद बनौलक—खटालक बीचक सँकर पथ खाली रहत; छोट विक्रेता अपन-अपन पाट, किराया आ ढुलाईक लागत लिखित रूपमे देताह; पक्की छाँह आ थोक ठेकेक विशेष छूटपर निर्णय अगिला सुनवाइमे होएत। विनोदक माँग तत्काल पूरा नहि भेल। तैयो ‘छिटपुट’क जगह अपन नाम लिखाएब हुनका लेल महत्वपूर्ण छल। ओ कागदक प्रति मोड़ि जालीदार थैलीमे रखलनि। बेटी पुछलक, “एहिमे गीत लिखल छै?” विनोद कहलनि, “अखन नहि। मुदा तोहर ढोलक ठाम बचत तँ गीत रहत।”

सुमन दिनक आखिरी ग्राहककेँ रङ्गक कागद लौटबैत छलथि। ओहि ग्राहकक बेटी एक गोल टिकुली चुनलक आ कहलक जे एहि पर नीला बिन्दु चाही, लाल नहि। सुमन ओकरा

दोसर नमूना देखौलीह। “नाम चिन्हब लेल जे रङ्ग चाही, ओ चुनू। मुदा आँखि लगएवला गोंदक सुरक्षित उपयोग बुझि कऽ करिहें,” ओ कहलीह। बच्ची टिकुली माथपर लगाओलक आ माँक चेहराक प्रतिछाया एक टूटल शीशामे देखलक। माछक हल्लाक बीच ओकर छोट आत्मविश्वास सुमनकेँ पसिन्न पड़ल। रसीद देइत ओ अपन नमूना-बही बन्द कएलीह, बिना एतय सभटा डिजाइन बेचबाक वचन देने।

मीना अपन पट्टा समेटि गाड़ीवानकेँ अलग रसीद देलीह। एक पट्टाक भाड़ा भेटल, प्रतीक्षाक आधा समय एखन बकाया छल। ओ दाम काटि ‘उपकार’ लिखबा सँ अस्वीकार कएलीह। गाड़ीवाला कनेक सोचि कहलक जे काल्हि हिसाब चुकत। मीना ओकरा पर्चीक दोसर प्रति दैत कहलीह, “काल्हि समय देब, मुदा तिथि आइए लिखू।” जखन ओ चलए लगलीह तँ सुमन पुछलीह जे चर्मक मुठियापर हुनकर रङ्गक छोट चिन्ह कखन लगि सकत। मीना मुस्कुराइत कहलीह, “पहिने वस्तु ककर, चिन्हक उपयोग कतेक आ दाम कोन हिसाबसँ—तीनू लिखब; तखन नव काम शुरू करब।”

यूसुफ अपन बेटाकेँ फेर फोन केलनि। “तोहर फोटो आ अङ्कक तरीका काम अएल,” ओ कहलनि, “मुदा हमर करघाक तानीक स्वर सेहो चाही।” बेटा हँसल—“हम स्वर नहि छीन्नए चाहैत छी। हम तऽ इलेक्ट्रॉनिक काज सीखब चाहैत छी; अहाँक थानक सूची बनेब, मुदा पूरा दिन करघापर बइसब नहि।” यूसुफ किछु क्षण चुप रहलाह। पिता चाहैत छलाह जे बेटा पारिवारिक पेशा सँ पूर्ण अलग नहि हो; बेटा चाहैत छल जे सहयोगक अर्थ पेशा छोड़ब नहि हो। यूसुफ आजु पहिल बेर ई अन्तर बिना झुँझलाए सुनलनि। “प्रशिक्षणक फीसक दिन हमरा याद अछि,” ओ कहलनि, “उधारीक हिसाब अलग राखब।” ई वचन देब आसान नहि छल, मुदा दू पन्ना अलग करबाक निर्णय वास्तविक छल।

दोकान घुरबाक समय नैरा यूसुफक लग सँ तीन कागदक प्रति लेलीह—पहिल थानक आदेश, दोसर गाँठक अप्रमाणित लेबलक दृश्य-विवरण आ गाड़ीक उतार-परची। ओ मूल पन्ना यूसुफक लग छोड़ि देलीह। “काल्हि धुनिया, रंगरेज आ धोबिनक मालो एहि साझा गाड़ीसँ आयल रहए,” गोमती रास्तामे जानकारी देलीह, “ओ सभ अपन अलग पंजी लऽ कऽ अएबाक बात कहने छथि।” नैरा उत्तर देलीह, “तखन प्रत्येक पंजी अपना मालिकक

कथनसहित पढ़ब। एतय जे प्रमाण मिलल, ओकर सीमा ओही रहत।” पुरान अस्पतालक छूटल सामग्रीक खोज एहि नवा लेबलसँ अचानक सिद्ध नहि भेल छल।

घर घुरि यूसुफ रातिक बहीमे दू नवा पन्ना खोललनि। पहिलमे असली थानक मजदूरी, सूत आ ग्राहकक देय; दोसरमे रुकल खेपक भाड़ा, व्यापारीक अग्रिम आ जाँचक प्रतीक्षा। पन्नाक अन्तमे बेटाक प्रशिक्षण-शुल्कक अलग तारीख लिखलनि। घाटा कागदपर साफ भऽ गेल, कम नहि भेल। मुदा गलत लेबलवला गाँठ आइ ककरो अस्पताल अथवा विद्यालयक नामपर नहि बिकाएल; माछबजारमे छोट विक्रेताक नाम पहिल बेर सुनवाइक पन्नापर चढ़ल; आ एक बेटा अपन मनक पेशा छोड़ने बिना पिताक काममे हाथ बँटाबए सकैत छल। यूसुफ दीपक कम कए देलनि। करघा एहि राति मौन छल, मुदा ओकर तानीक साँच पहिचान बचल छल।

अध्याय ४६ • धोबि रंगरेज धुनिया

उर्मिला रजक घाटक पाटपर धोएल उज्जर चादर पसारि ओकर चारू कोना पत्थरसँ दबा रहल छलीह। भोरक हवा एक कोना बेर-बेर उठा दैत छल। चादरक भीतर धूप लगबाक चाही, मुदा कादोसँ उठैत नमी ओकरा फेर भारी करैत छल। उर्मिला खाली हाथसँ चादरक बीच फेरलीह; जँ भितरक सिलाइ भिजले रहत तँ अस्पतालमे राखलापर गन्हाएत। ओ पाट लग दूटा टोकरी राखलीह—एकमे धोएल चादर, दोसरमे एहन कपड़ा जकर गिनती आ प्राप्तिक समय एखन नहि मिलल छल। दूनू पर एक्के दिनक धूप पड़ैत छल, पंजीमे दिन अलग-अलग छल।

रेणु घाटक ऊपरक बाटसँ एकटा पुरान खड़िया आ डोरी लऽ कऽ आयलीह। काल्हि सुकठीक खटालमे रोकल कपड़ाक गाँठक बात हुनका कानमे पहुँचने छल। “सभ कहैत अछि जे एक्के गाड़ीसँ आयल कपड़ा अस्पतालक हराएल माल अछि,” ओ कहलीह। उर्मिला धोएल चादर मोड़ब बन्द नहि कएलीह। “सभ कहैत अछि, ई कोन पंजीक नाम भेल?” ओ पुछलीह। “हम जकरा धोने छी तकर गिनती हमरा लग अछि। जकरा धुनल गेल, ओकर हिसाब रहीम देताह। रङ्ग चढ़ल कपड़ा सकीना बुझथिन। हमर हाथसँ जे नहि गुजरल, तकरा हम चिन्हि किएक देब?”

घाटक सँकर रस्ता पार कऽ जे सार्वजनिक कमरा छल, ओतय नैरा तीन मेज नहि, एक लम्बा पाट मँगौने छलीह। पाटक ऊपर चाकसँ तीन अलग चौकोर खींचल गेल—धोनाइ, रंगाइ आ धुनाइ। एहि रेखासँ ककरो मालक स्वामित्व तय नहि होएत; केवल पन्ना गड्डमड्ड नहि होएत। गोमती खिड़की खोलि पुछलीह, “चारिम चौकोर?” नैरा उत्तर देलीह, “दुलाईक। गाड़ी सबहक बीच चलल अछि, मुदा गाड़ीक पर्ची काजक पर्चीक बदला नहि। दुलाईक हिसाब अलग राखू।”

रहीम मंसूरी सबसँ पहिने पहुँचलाह। हुनकर काँधपर खादीक पुरान थैली आ हाथमे रुइक छोट गठरी छल। थैली खोलिते कपासक महीन रेशा ओहि कमराक हवा मे तैरि उठल। ओ अपन नाकपर बान्हल कपड़ा ढीला करैत कहलनि, “कतेक गद्दामे धुनल रुइ भरल, कतेकमे पुरान रूई फेर फुलाओल, एहि दू काजमे अन्तर अछि। पहिलमे वस्तुक

दामो हमरा होएत; दोसरमे ग्राहकक कपास ओकर अपन रहत।” हुनका एकटा नवा गद्दाक नमूना बनएबाक आदेश छल, मुदा चिकित्सालयक सामानक नाम सुनिते ग्राहकसभ आब हुनका पुछैत छलाह जे चोरीक कपास तऽ नहि भरैत छथि।

सकीना रंगरेज पाछाँ आयलीह। हाथक नखमे नीलक पातर चिह्न आ आँगुरिक बीच दू रङ्गक अलग छाप छल। ओ एकटा थान खोलि देखौलीह जकर आधा भाग धूसर आ आधा भाग हरियर-बैंगनीक बीच झुकल देखाइत छल। “ई गलती नहि, ग्राहकक बदलल पसिन्न,” ओ कहलीह। “पहिने जखन मटमैला नील मँगलनि तँ एहि टुकड़ाक रंग-परीक्षण कएलहुँ। फेर कहलनि, विद्यालयक परदापर हरियर चाही। नव रङ्गक खर्च, धोएबाक घड़ी आ पुरनका नमूनाक मजदूरी—तीनू अलग अछि।” ग्राहक रंग बदलौनाक बाद आधा बिल देबाक बात कऽ रहल छल।

तेसर आगन्तुक हरीश पनसारी छलाह। हुनकर काँधपर मसाला, साबुनक कच्चा टुकड़ा आ कपड़ा परखबाक लेल मँगाओल सूखी सामग्रीक दू डिब्बा छल। ओ तीनक डिब्बा मेजपर राखि धूल झाड़लनि। “हम रंग नहि बनबैत, धोनाइ नहि करैत, गद्दा नहि सीबैत,” ओ पहिनहि कहलनि, “हम किछु सामग्री बेचैत छी। कोन बोरा हमर दोकानसँ गेल, कोन बजारक थोक गोदामसँ चढ़ल, से हमरा बिक्री-पंजीमे अछि।” डिब्बाक एक लेबल घिसि गेल छल; ओ अपन नामपर ओकर शुद्धता प्रमाणित करबाक जगह मूल खरीद-बिल देखबए चाहैत छलाह।

नैराक लग काल्हिक लाल डोरीवला दू खेपक कागद छल। यूसुफक पहिल थानक नाप, दोसर गाँठपर लगल अप्रमाणित छाप आ साझा गाड़ीक उतार-पर्ची। यूसुफ स्वयं आइ नहि आएल छलाह; करघापर छोट आदेश पूरा कऽ ग्राहकक आगाँक देय जोगाड़ करब हुनका जरूरी रहनि। ओ अपन मूल पन्नासभ नहि पठौने छलाह, केवल नैराकेँ देल प्रति फेर पढ़बाक सहमति देने छलाह। नैरा सभकेँ कहलीह, “ई पाट पर जाँच होएत, फैसला नहि। अहाँ सभ अपन पन्नाक स्रोत बताउ; जकर नाम नहि आएल, ओकरा एहि ठाम खींचि नहि आनू।”

गाड़ीवान सेहो आबि गेल। ओकर नाम महेन्द्र छल। कपड़ाक गठुर चढ़बैत ओ राति देरि धरि जागल रहए, आ आइ ओकर आँखि लाल छल। पर्चीमे लिखल रहए जे एके वाहन

चार ठाम रुकल—पहिने धुनियाक आँगन, फेर रंगरेजक गली, तकर बाद अस्पतालक पाछूक माल-उतराई, आ अन्तमे खटाल। मुदा समयक दू अङ्क धुँधला छल। “रातिमे बारिश भेल,” महेन्द्र कहलनि, “कागद भीजि गेल। एहिसँ हमरा चोर मत बनाउ।” नैरा ओकर बात लिखलीह, किएक तँ भीजल कागद वास्तवमे हरेक असंगतिक उत्तर नहि होइत, मुदा ओहि कारणकें बिना जाँच झूठ कहब सेहो उचित नहि।

रहीम पहिल पर्ची खोललनि। ओहि पर लिखल रहए—सात गद्दा फेर फुलाएल, दू नव गद्दाक रुइ तौलल, तीन खोल ग्राहक वापस लऽ गेल। नीचाँ एक वृद्ध स्त्रीक अँगूठा-चिह्नक कात हुनकर नातिक लिखल नाम छल। “ई ग्राहकक अपन खोल छल,” रहीम कहलनि। “हमरा कपास बेचबाक दाम नहि भेटल; धुनबाक मजदूरी भेटल। जाँ कियो कहत जे गाड़ीमे देखल सभ भरावन अस्पतालक, तँ ओ वृद्धाक पुरान गद्दो चोरी भेल?” उर्मिला पर्चीक तिथि पढ़लीह। ओ तिथि अस्पतालक कपड़ा-पंजीक विवादित तिथिसँ दू दिन पहिलुक छल।

महेन्द्र कहलक जे सात गद्दा नहि, केवल चार बोरा ओकर गाड़ीमे चढ़ल छल। रहीम हँसि नहि सकलाह। “काजक संख्या आ ढोएल बोरा एक नहि,” ओ कहलनि, “तीन ग्राहक अपन सामान हाथे लऽ गेल। चार बोरा गाड़ीसँ गेल। हमर सात गद्दाक कुल मेहनताना कम कऽ देब तँ चार बोरा बताउ; मुदा सभ सात गद्दा गाड़ीमे छल से नहि।” नैरा दू अलग स्तम्भ बनबौलीह—कारीगरक काज आ वास्तविक ढुलाई। भीड़मे बइसल एक युवक पहिले जे आरोप लगाने छल, ओ अपन फोन धीरे सँ जेबमे राखि लेलक।

सकीना अपन नमूना-बही पसरौलीह। प्रत्येक रङ्गक कात पातर सूत बाँधल छल, जेकर रंग धूपमे बदलि नहि जाए, एहि लेल पृष्ठक भीतर राखल गेल रहए। ओ एक थानक पहिल नमूना आ बदलल नमूना देखबैत कहलीह, “दू रङ्गक पर्ची अछि, मुदा थान एकटा। ग्राहकक लिखल बदलल आदेशपर उँगरीक निशान अछि। मालक नवा नाम नहि, केवल रङ्गक नवा हिसाब बनल।” गोमती पुछलीह, “एक्के थान दोबारा गिनल गेल तँ?” सकीना उत्तर देलीह, “तँ हमरा कम दाम किएक भेटल? गिनती दू ऑर्डरक छल, कपड़ा एक थानक।”

हरीश पनसारीक छोट कापीमे ढेर वस्तुक नाम छल—नून, अजवाइन, सूखल छाल, साबुन बनएबाक कच्चा तेलक दू पातर थैली, आ पैकिंगक खाली कागद। एकटा पन्नापर ‘उज्जर सामग्री’ लिखल देखिकऽ युवक तुरन्त कहलक, “ई तऽ अस्पतालक कपड़ा साफ करबाक पाउडर होएत।” हरीश ओकरा रोकलनि। “उज्जर शब्द रंग बतबैत अछि, उपयोग नहि। इहाँ सूखल चूनक नमूना सेहो उज्जर अछि, मुदा ओकरा देहपर लगाओल नहि जाइत। बोरा खोलबासँ पहिने नाम, स्रोत आ प्रयोगक पर्ची पढ़ू।” हरीश चाहैत छलाह जे दुकानक गलती छिपाएल नहि जाए, मुदा ककरो कल्पना ओहि गलतीक बदला नहि लिखल जाए।

कमराक बाहर एकाएक हलचल भेल। खटाल दिस सँ दू युवक आबि कहलक जे महेन्द्रक गाड़ीपर कियो काल्हि बच्चा उठएबाक आरोप लगा रहल अछि। एक युवकक फोनमे बोराक फोटो छल, बीचमे धुँधलायल छोट आकृति। “देखू, भीतर बच्चा बैठल छल,” ओ कहलनि। नैरा फोटो अपन हाथमे लेबाक बदला युवकसँ पुछलीह, “के देखलक, कोन समय, कतेक दूरसँ?” युवक कहलक, “सामाजिक सन्देशमे आयल।” महेन्द्रक चेहरा फेर लाल भऽ गेल। “हमर गाड़ीमे कपड़ा चढ़ल छल,” ओ कहलनि, “बच्चा नहि।”

उर्मिला बाहर गेलीह तँ देखलीह जे फोटोक कोनामे गाड़ीक पाछू राखल एकटा खाली बोरा रहए; ओकर बगलमे ठाढ़ लड़का अपन खड़ामक फीत बाँधि रहल छल। ओकर मुँह नहि देखाइत छल। नैरा युवककेँ बुझौलीह जे चित्रसँ बालकक अवस्था, सम्बन्ध, समय आ संदर्भ प्रमाणित नहि अछि। स्टेशनपर किछु दिन पहिने उठल बच्चा-अपहरणक अफवाह जाँचमे खण्डित भेल छल; एहि नवा चित्रकेँ ओहि घटनाक प्रमाण मानल नहि जा सकैत। “ककरो वास्तविक बच्चा हराएल होए,” नैरा कहलीह, “तँ परिवारक जानकारी सुरक्षित ढङ्गसँ जिम्मेदार कार्यालय धरि जाए। बाजारमे अनाम चित्र बाँटलासँ खोज नहि होइत।”

ओहि बीच एक महिला अपन बेटासँ संग कमराक बाहर ठाढ़ छलीह। बच्चा कहलनि जे ओ गाड़ीपर चढ़ल नहि छल, सड़कक कात अपन मायक बाट देखैत छल। माय युवकक फोनपर बच्चाक फोटो देखबाक अनुमति नहि देलीह। “हम गवाही देब जे हमर बेटा काल्हि हमरा संग छल,” ओ कहलीह, “मुदा ओकर मुँह बजारक फलकपर नहि।” नैरा हुनकर कथन आ ओहि दिनक समय अलग लिखि सुरक्षित रखबाक बात कहलीह। पहिल

अफवाहक निबटारासँ एहि नव फोटो पर स्वतः निर्णय नहि होएत; महिला केँ कियो सार्वजनिक रूपसँ चिन्हाओत नहि।

दुपहरक बाद अस्पतालक गोदाम-लिपिक पहुँचलाह। हुनका लग प्राप्ति-पत्रक नकल रहए, मूल पंजी नहि। लिपिक किछु तीख स्वरमे कहला, “एक्के वाहन-संख्या अस्पतालमे सेहो छैक, खटालमे सेहो। एतेक संयोग सम्भव अछि?” सकीना अपन रंग-बही बन्द करैत उत्तर देलीह, “गाड़ी किरायापर चलैत अछि, एक घरक सेवक नहि। हमर थान अस्पतालक नहि; ग्राहकक नाम-सम्पर्क जँ आवश्यक होएत तँ ओकर सहमति लिअ।” लिपिक कहला जे अस्पतालक नाम लिखल पैकिंगमे जे गलती भेल अछि, ओकर निष्पक्ष जाँच जरूरी अछि। नैरा एहि आग्रहसँ सहमत भेलीह। मुदा जाँचक वस्तु अब गाड़ीक उपस्थिति नहि, प्रत्येक उतराइक स्वीकृति आ पैकिंगक स्रोत रहत।

उर्मिला अपन भीजल दिनक पन्ना खोललीह। अस्पतालक सात चादर आ पाँच खोलक सूचीमे एक ठाम प्राप्तिक समय धोनाइ समाप्त होएबाक समयसँ पहिने लिखल छल। ओ कागदक कोनापर लिपिकक सामने खाली ठाम देखौलीह। “ई हम लिखने नहि छी। हमर घाटक पंजीमे चादर एखन ओहि घड़ी निचोड़ल जा रहल छल,” ओ कहलीह। लिपिक कहला, “शायद आगमनक बदला आदेश लिखल गेल।” उर्मिला उत्तर देलीह, “हो सकैत अछि। तँ आदेश आ वास्तविक प्राप्तिक दू अलग पंक्ति बनाउ। हमर मजदूरीक घड़ी ओकरा संग नहि मेटाउ।”

उर्मिला अपन मायक उपचारक दिनक एकटा बात सुनौलीह। राति जखन रोगीकेँ चादर चाही छल, ओ अपन घरक धोएल कपड़ा लऽ कऽ अस्पताल पहुँचल छलीह। बादमे ओही चादरक देयक हिसाब कार्यालयक कागदमे अस्पष्ट रहि गेल। “हम अस्पतालक कागदमे अपन मायक रोग नहि पढ़बए चाहैत छी,” ओ कहलीह, “हम चाहैत छी जे रोगीक नामक बदला कपड़ा पहुँचबाक घड़ी आ हमरा हाथक मजदूरी ठीक लिखल जाए।” एहि अन्तरपर लिपिकक स्वर कनेक नरम भेल। ओ कहलनि जे मूल पंजीक जाँच बिना संशोधनक मुहर नहि लागि सकत।

नैरा चारि पर्चीक समयक एकटा रेखा बनौलीह। रहीमक धुनल चार बोरा बिहान चढ़ल; सकीनाक बदलल रङ्गक एक थान दुपहरसँ पहिने; उर्मिलाक साफ कपड़ा साँझ लग;

हरीशक दू डिब्बा एक अलग ग्राहकक ठाम उतरल। अस्पतालक नकलपर गाड़ीक एक ठहराव छल, मुदा मालक संख्या, सीलक निशान आ प्राप्तकर्ता पूरा नहि लिखल। “ई रेखा एतेक देखबैत अछि जे चारि कामक रास्ता अलग छल,” नैरा कहलीह, “ई नहि जे अस्पतालक छूटल सामान भेटि गेल।”

ओही क्षण गोमती पुछलीह, “तखन यूसुफक लाल डोरीवाला गाँठक स्थिति की?” नैरा उत्तर देलीह, “ओहि पर अस्पतालक स्वीकृतिक लेबलक स्रोत जाँचल जाएत। एहि चारि कारीगरक पंजी ओ लेबल बनौने लोकक नाम नहि बतबैत। लाल डोरी खोलबाक अधिकार यूसुफक लिखित सहमति आ मालक स्वीकृत प्रक्रिया बिना ककरो नहि।” गोदाम-लिपिक कहला जे जँ वस्त्र अस्पतालक नामपर चोरीसँ बेचल जाइत हो, तखन रोकल खेप जाँचमे उपयोगी होएत। सभ सहमत भेल जे वस्तु सुरक्षित राखल जाय, मुदा अप्रमाणित आरोप फैलाएल नहि जाए।

महेन्द्रक अपन संकट अलग छल। काल्हिसँ दू ग्राहक गाड़ी भाड़ापर लेब छोड़ि देने छल; ओकर ई भय जे दोष सिद्ध नहि भेलो व्यापार डूबि जायत। ओ नैराकेँ कहलक, “हमरा नकल दिअ जे हम निर्दोष छी।” नैरा उत्तर देलीह, “हम न्यायाधीश नहि। मुदा एतय जे-जे पर्ची मिलल तकर प्रमाणित मिलानक प्रति देब, आ जतेक आरोपक आधार नहि भेटल, से लिखब। अहाँ अपन गाड़ीक मर्मत-पंजी, माल उठेबाक हस्ताक्षर आ भाड़ाक हिसाब सुरक्षित राखू।” महेन्द्र कहलक, “ककरो चिट्ठीमे ‘सन्देह’ लिखल रहत तँ ग्राहक पढ़ब छोड़ि दैत अछि।” ई वाक्य सुनि रहीम चुप भऽ गेलाह; हुनका अपन ग्राहक याद आएल।

हरीश पनसारी अपन डिब्बा समेटबाक समय एक छोट पैकेट पाछाँ राखलनि। पैकेटपर छपल नाम आ भीतरी पन्नाक नाम अलग छल। “एहि पर अखनि हम दाम नहि लेब,” ओ कहलनि, “पहिने थोक दुकानदारक मूल पर्ची जाँचब। मुदा ई पैकेटक गलतीक कारण हमर सभ मसालापर दोष नहि लगाउ।” सकीना पुछलीह, “अहाँ गाड़ीमे ई रखैत छलहुँ?” हरीश उत्तर देलनि, “नहि, आइ हम स्वयं लऽ कऽ आएल छी। काल्हिक खेपमे जे डिब्बा छल तकर अलग संख्या अछि।” नैरा दुनू प्रविष्टि अलग राखलीह, आ हरीश निजी जाँचक लेल पैकेटक फोटो बिना ग्राहकक नामक लेल लिखित अनुमति देलनि।

साँझक बैठक लेल बाजार समिति जे सूचना लिखलक, ओहि मे एक शब्दपर सभक विवाद भेल। सचिव लिखने छल—“साझा गाड़ीमे सन्दिग्ध माल”। रहीम कहला, “ई पाँति पढ़ि लोक गद्दाक रुइकेँ सेहो सन्दिग्ध मानत।” सकीना जोड़लीह, “हम ग्राहकक रङ्ग बदलने छी, मालक मालिक नहि।” गोमती प्रस्ताव देलीह—“साझा वाहनक अलग-अलग लदान-पर्चीक मिलान प्रचलित अछि; दू खेपक लेबल आ अस्पतालक प्राप्ति अलग जाँचाधीन”। सचिव एखन पूरा वाक्य छापबाक खर्च बतौलक। उर्मिला कहलीह, “गलत छोट वाक्य सस्ता पड़त, मुदा ओकर दाम हमसभ देब।”

लिपिक उत्तर देलनि जे सार्वजनिक पटपर अस्पतालक आन्तरिक पंजीक सब बात लिखब सम्भव नहि। नैरा सहमत भेलीह। ओ कहलीह, “रोगीक नाम, ग्राहकक घर आ बच्चाक छवि सार्वजनिक नहि होएत। पटपर केवल प्रक्रिया आ शिकायत देबाक बाट लिखू। जकर माल रोकल अछि ओकरा लिखित सूचना अलग।” अन्तमे बोर्डपर छोट सूचना लगल—“वाहन-संख्या मात्रसँ मालक स्रोत वा अपराध प्रमाणित नहि; सम्बन्धित पर्ची जमा करू।” ई वाक्य अस्पतालक सवालक अन्त नहि छल, मुदा चारि कारीगरक तत्काल अपमानक एक बाट रोकैत छल।

उर्मिला घाट घुरबाक पहिने रेणुकेँ फोन केलनि। “जाली हटाओल गेल की?” ओ पुछलीह। रेणु कहलीह, “आधा बाट खुलल, मुदा फाटक लगक माटि दबि रहल अछि। जँ फेर गाड़ी घुमत तँ किनार टूटि सकैत अछि।” उर्मिला कहलीह, “तखन कपड़ा लादल हाथगाड़ी हम ओतय नहि पठायब। आ लिखू जे ई सार्वजनिक बाटक बाधा अछि, जलपट्टाक स्वामित्वक फैसला नहि।” रेणु बतौलीह जे मत्स्यपट्टाक नक्शामे जलक हिस्सा चिन्हाओल अछि, मुदा फाटक धरि मजदूरसभक जाएबाक बाटक पूरा नाप नहि।

नैरा हुनका बात सुनि पुरान जलपट्टाक नकल निकाललीह। ओहि मे जलक उपयोगक किछु शर्त छल, किन्तु फाटकक बगलसँ कपड़ा, माछक टोकरा आ नावक औजार जाएबाक वास्तविक चौड़ाइ देखाओल नहि छल। जलपट्टाक कागदसँ बच्चा-अपहरणक अफवाहक किछु सम्बन्ध नहि; अस्पतालक बिलसँ सेहो ओकरा एक्के अपराधक गोला बनाओल नहि जा सकैत। मुदा सार्वजनिक बाट संकुचित भेलासँ गाड़ी कखन, कतए आ

किएक रुकल, एहि जाँचमे वास्तविक कठिनाइ उत्पन्न भेल रहए। नैरा एहि बिन्दुकेँ अलग टिप्पणीक रूपमे लिखलीह।

सकीना अपन बेटीकेँ घर घुरैत रंगक नमूना देखौलीह। बेटी कहलनि, “ई आधा हरियर, आधा बैंगनी—एकर नाम की?” सकीना सोचलीह, फेर बजलीह, “एकर नाम ग्राहक तय करथिन, मुदा ई रंग बनएबाक समय हमर हाथ लागल अछि।” बेटी पुछलक, “जँ हम नव नाम देब तँ दामो नव होएत?” सकीना हँसलीह। “नाम बदललासँ सूत नहि बढ़त, मुदा ग्राहक फेर रंग बदलए कहत तँ हमर मेहनताना फेर गनल जायत।” ओ बेटीकेँ रंग लगल आँगुरि साबुनसँ साफ करबाक तरीका सिखौलीह, किएक तँ रङ्गक सुन्दरता हाथक सुरक्षा छोड़बाक अनुमति नहि दैत।

राति नैरा बैठकक पंजीक अन्तिम पृष्ठपर चार शीर्षक लिखलीह—मूल नामपंजी, बच्चाक सम्बन्धमे अफवाह, अस्पतालक वस्तु-पंजी आ जलपट्टाक पहुँच। नामपंजीमे एखन जतेक मूल हस्ताक्षर चाही छल ततेक नहि भेटल; बच्चाक असुरक्षित फोटो के पसरौलक, तकरा सम्बन्धमे सार्वजनिक दोषारोपण रोकल गेल; अस्पतालक वास्तविक प्राप्तिक मूल प्रति मँगाओल गेल; जलपट्टाक फाटकक नाप लेल आवेदन बनल। ई चारि रेखा एक-दोसरकेँ छू सकैत छल, मुदा बिना प्रमाण एक-दोसरमे समा नहि सकैत छल।

दूसर दिनक भोर लेल हीरा सहनी आ तारा लग नाप-डोरी, पुरान निशानक प्रति आ घाटपर जाम बाटक समय लिखबाक अनुरोध पठाओल गेल। उर्मिला लिखौलीह जे हाथगाड़ी कतए घुमए नहि सकल; महेन्द्र लिखलनि जे फाटकक बाहर कतबा देरि ठाढ़ रहए पड़ल; रहीम अपन बोरा चढ़बाक ठामक छोट चित्र देलनि। ककरो हस्ताक्षर सँ फाटकक चौड़ाइ स्वतः नहि बढ़ल, मुदा जाँच लेल अलग-अलग देखल बात एके पन्नाक आरोपमे नहि गढ़ल गेल।

रातिक अन्तिम पहरमे रहीमक घरमे छोट गद्दाक खोल फेर फुलि उठल। बेटी हाथसँ कपासक गठरी छुड़ कहलीह, “एतेक नरम!” रहीम हँसि कहला, “नरम अछि, मुदा गद्दा तैयार होएत तखन छूअ; एखन धूल उठत।” ओ हुनकर लेल एकटा साफ पातर टुकड़ा अलग राखलनि जइसँ ओ अपन गुड़ियाक तकिया बनाबि सकए। बजारक विवाद एखन दूर नहि भेल छल। तैयो एहि घरमे आजु कपासकेँ फेर ओकर वास्तविक काज आ बेटीकेँ

अपन खेल भेटल; काल्हि फाटकपर जतेक चौड़ाइ नापल जाएत, ताहिसँ एहि श्रमक बाटो
प्रभावित होएत।

अध्याय ४७ • फाटकक माप

हीरा सहनी भोरमे फाटक लग नावक पुरान बाँसक लग्गी जमाकऽ ओकरा हिलौने छलाह। लग्गीक नोक ऊपरसँ कठोर देखाइत छल, मुदा तलमे कादो भेटिते एक अँगुरि आओर धँसि गेल। ओ लग्गी निकालि कातमे राखलनि, फेर दोसर ठाम जमौलनि। “जे नाप पानिक माथसँ शुरू होएत, ओकरा पहिने देखबाक चाही जे माथ ठाढ़ अछि की नहि,” ओ कहला। फाटकक भीतर पानि एखन धीमे चलैत छल; बाहरक कोनामे उर्मिलाक हाथगाड़ी काल्हि पहर भरि फँसल रहए। जालीक आधा भाग खुलल छल, मुदा कादो पर पड़ल चक्का घुमबाक चिन्ह आजुओ ताजा रहए।

तारा बिनौट खड़ियाक दू टुकड़ा, नाप-डोरी आ पातर बही लऽ कऽ पहुँचलि। हिनकर पाछाँ श्याम मल्लिक पुरान कागदक मोड़ सुरक्षित रखबाक लेल कपड़ाक थैली लटकौने छलाह। नगर कार्यालयक अभियन्ता अदिति दू सहायक संग अएलीह। हुनकर हाथक नकलमे फाटकक बाहरी चौड़ाइ साफ-साफ लिखल छल, मुदा नीचाँ एकटा छोट चिह्न रहए जकर अर्थ कियो नहि बुझि रहल छल। तारा पुछलनि, “ई चौड़ाइ लोहाक खम्भा बीचक अछि वा पयरसँ गुजरबाक बाटक?” अदिति क्षण भरि कागद देखलीह। “पुरान प्रतिवेदनमे आधार-बिन्दु नहि लिखल,” ओ स्वीकार कएलीह।

उर्मिला अपन गाड़ी धकेलि देखौलनि। पहिल चक्का जखन फाटक पार करैत छल, दोसर चक्का कातक ढलानपर खसए लगैत छल। ओ तुरन्त गाड़ी रोकलीह; ओकरा भीतर कपड़ा नहि, केवल खाली बाँसक टोकरी छल। “रोगीक कपड़ा लऽ कऽ हम एहन अभ्यास नहि करब,” ओ कहलीह। महेन्द्र चालक काल्हिक प्रतीक्षाक घड़ी लिखल पर्ची देखौलनि। “हमर मोटर एतय घुसल नहि,” ओ कहलक, “मुदा माल उतरबाक ठाम दूर रहिते किराया बढ़ल।” हीरा स्पष्ट कएलनि—मोटर, हाथगाड़ी आ नावक औजारक लेल एक्के चौड़ाइ पर्याप्त अछि अथवा नहि, से अलग-अलग परखबाक प्रश्न अछि।

पहिल डोरी फाटकक लोहेक दू खम्भा बीच तानल गेल। सहायक तुरन्त संख्या बजलाह। तारा हुनका रोकलीह। “डोरी तानल, मुदा कातक ढलल माटि पर चक्का चलत की? खाली हवा नापबासँ जमीनक बाट नहि भेटत।” दोसर नाप लोहेक निचला उभार आ

सुरक्षित धरतीक बीच भेल; तेसर नापमे कादो हटएला बादक कठोर तह धरि पहुँचबाक प्रयास। तीनू संख्या एक नहि छल। हीरा अपन बहीमे प्रत्येकक सामने ठाम, समय आ पानिक स्तर लिखबौलनि, किएक तँ पानि बढ़लापर अइ नापकेँ जइ रूपमे उपयोग कएल जाएत, ओ बदलि सकैत छल।

एहि बीच धनी सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि अपन लाठीक छोरसँ एकटा सूखल रेखा देखौलक। “ई कंकड़ कहल जाइत रहए,” ओ कहलक, “हमर मालिकक पुरखा एहि बाट सँ खेतमे पानि लऽ जाइत छलाह। छोट धार एखन सुखल अछि, तँ एहि पर कोनो सार्वजनिक दावा नहि रहबाक चाही।” तारा ओहि स्थानपर बैसलि। सूखल धरतीक भितर भिन्न-भिन्न रङ्गक माटि रहए; एक कात पानि बहलाक पतली लीक देखाइत छल। ओ बजलीह, “कंकड़ नाम गवाहीमे लिखब। मुदा नाम सुनिते भूमि खाली घोषित नहि होइत, आ पुरान सिंचाइ-गवाहीसँ वर्तमान सीमो सिद्ध नहि होइत। बरखा आ उपयोगक दिनांक सहित जाँच चाही।” प्रतिनिधिक मुख पर असन्तोष उतरि आएल।

“जँ रेखा खाली नहि, तँ हम खेत धरि पानी लऽ कऽ जएब कतए सँ?” ओ पुछलक। हीरा अपन लग्गीसँ नीचाँक सँकर मोड़ देखौलनि। “जे बाट जल धरि जाइत छल, ओ अहाँक लेल एक दिनक सुविधा होएत; ओही सँ माछ मारएवला परिवार बरखाभरि उतरल होएत। हम दूनु गवाही सुनब, मुदा कियो आनक बाट पाटि कऽ अपना लेल नहर नहि बनाएत।” अदिति कहलीह जे सरकारी मानचित्रक सीमासँ बाहर ककरो जमीनपर तुरन्त चिन्ह लगाओल उचित नहि। ई रोक तारा सेहो मानि लेलीह; निरीक्षण नापब छल, कब्जा बदलब नहि।

श्याम थैलीसँ एक पुरान नकल निकाललनि। ओकर कातपर ‘करेह’ शब्द छोट अक्षरमे आ दू टेढ़ निशान बनेल रहए। तारा कागद उठौलनि आ अगिला कोनामे ढेहा झाल पुरान ईंट लग गेलीह। एक ईंट पर खुरचल दू समांतर रेखा रहए। “एहि निशानकेँ हमर दादी चिन्हैत छलीह,” ओ कहलीह, “मुदा दादी जे देखलनि, ओ हमर स्मृतिक माध्यमसँ एतय पहुँचल अछि। ईंट मूल ठामपर अछि कि स्थानान्तरित, से नहि जानि।” ओ करेहक नाम बहीमे ‘पुरान माप-पत्रक स्थानीय नाम’ लिखलीह, कोनो प्रमाणित संगम वा नदीक शुद्ध मार्ग नहि।

अदिति पुछलीह, “जँ निशानक भरोसा नहि, तँ एकरा लेल देय किएक?” तारा अपन अँगुरि सँ घासक तल देखौलनि। दू महिला आधा राति धरि पुरान बाट खोजबामे लगल छलीह, हुनका सँ कियो पूछबो नहि चाहैत छल जे कतेक समय लागल। “निशान देखबाक मजदूरी आ निशानकेँ निर्णायक मानबाक अधिकार दू अलग बात अछि,” तारा कहलीह। “जे लोक धरतीक पुरान लीक चिन्हौलक, ओकर श्रमक दाम दियौ। ओकर बताओल बात अभियान्त्रिक जाँचमे गलत सिद्ध भऽ सकैत अछि; तइसँ श्रम मुफ्त नहि होइत।” अदिति अपन सहायककेँ स्थानीय सहायताक समय-पंजी खोलबाक कहलनि।

एतबीच माधव रोनियार छोट ठेला लऽ कऽ अएलाह। ठेलापर लाल खड़िया, भीजबासँ बचल कागदक खोल, रुइक सूतसँ मापल डोरी आ दू पतरा चूनक बोरा छल। “नगरक दल तीन वस्तु कहल, बजारक लोक पाँच,” ओ हँसि कऽ कहला। काँचक बोतलमे राखल खड़िया अपन हाथे निकालि नमूना देखौलनि। “ई कागदपर चिन्ह लागए लेल, पानिमे घोलबाक नहि। चून अलग अछि, ओहो बिना कामक सही विवरणक ककरो घाटपर नहि छिड़कब।” हुनकर कापीमे हर वस्तुक दाम, कियो उठा लेलक वा नहि, आ ककर उधारी रहल, तीनू अलग खाना छल।

सहायक एकटा बोरा उठबैत कहलक, “सरकारी काज अछि, पहिने उपयोग होअए, बादमे रसीद बनत।” माधव बोरा थामि लेलनि। “सरकारी लिखलासँ हमर दोकानक ऋण नहि चुकत। जतेक लेल स्वीकृति अछि ततेक दिअ; बाकी वापस लऽ जाएब।” ओकर बेटा ठेलाक चक्का पकड़ने ठाढ़ छल। बेटा पुछलक, “बाबू, जँ एकरा सभटा बेचि देब तँ आजुक कमाइ नीक होएत।” माधव कहला, “जँ बिनु कामक चून बहा देब तँ काल्हिक नदीक दाम कियो नहि देत।” ओ खड़िया आ खोलक रसीद बनौलनि, चूनक बोरा सीलसहित ठेला पर राखि देलनि।

फाटकक पाछू बान्हक ऊपर जखन सभ चढ़ल तँ दृश्य बदलि गेल। एक कात भरल माटिक छरकी बस्तीकेँ ऊँच पानिसँ बचएबाक आश्वासन दैत रहए; दोसर कात ओही भराइ सँ छोट खेतक निकास ऊपर उठि गेल छल। एक बुजुर्ग खेतिहर खुरपी लऽ कऽ एलीह। “एहि छरकीक पाछाँ हमर फसल बरखा सँ बाँचल,” ओ कहलीह, “मुदा जे पानि एतय अटकल, ओ पाछाँक घरमे दू दिन ठाढ़ रहल।” हीरा जमीनपर लग्गीक छायासँ

ढलान देखलनि, मुदा बजलाह जे छाया पानिक गति नहि नापैत। पानीक ऊँचाइ, माटिक भराइ आ निकासक वास्तविक परिमाण नापल बिना बान्ह काटबाक विचारो नहि।

अदिति पुरान अभियान्त्रिक प्रतिवेदनक एक रेखा देखौलीह। ओहि मे छरकी लग एक सिधा किनार छल, मानू कियो कखनो ओतय पयर नहि रखने हो। तारा ओहि रेखाक नीचे अपन कापीमे घेरल तीन मोड़ देखौलनि—पहिल कपड़ा दोएवला बाट, दोसर नावक गहिरा भाग धरि उतरबाक पगडण्डी, तेसर बाढ़मे ऊपर चढ़बाक सँकर थान। श्यामक बिनौट-पंजीमे सेहो एक पुरान मोड़ रहए, मुदा ओकर दूरीक नाप नहि छल। प्रतिवेदन झूठ छल से नहि; ओकर प्रश्नक दायरा संकुचित छल। तारा एहि अन्तरकें लाल खड़ियासँ घेरि देलीह।

“जँ हर पगडण्डी नक्शामे जोड़ब तँ कागदमे जगह कतए?” सहायक पुछलनि। हीरा बजलाह, “पानिमे लोककें कागदक जगह नहि, चढ़बाक ठाम चाही।” अदिति कहलीह, “कागद बिना सुरक्षाक अनुमतियो नहि भेटत।” तारा उत्तर देलीह, “तखन कागद ठीक करू; लोकक बाट रेखाक सुविधा लेल नहि छोड़ू।” भीड़मे कियो ताली बजौलक। हीरा ओकरा रोकलनि—“गलत अंक रहि गेल तँ सभक हानि।”

नगर समितिक सदस्य एक तैयार क्षमता-पत्र निकाललनि। एही पर हस्ताक्षर भेलासँ अस्थायी खेप आ नावक उपकरण फाटक पार भऽ सकत। सदस्य कहलनि, “आजुक नाप काफी अछि। कागद रोकिने सँ माछक बजार, अस्पतालक कपड़ा, सभ ठमकि जायत।” हीरा पन्ना पढ़लनि। एक पाँतिमे लिखल छल—‘सब मौसममे गाड़ी आ नाव-उपकरणक सुरक्षित यातायात’। ओ कलम वापस रखि देलनि। “आइ खाली गाड़ी आधा बाट धरि घुमल। बरखाक अधिकतम पानि हम एतय नहि नापने छी। ‘सब मौसम’क भार हमर नामपर किएक?” हुनकर अस्वीकारसँ भाड़ा आ खेपक घाटा बढ़बाक आशंका सत्य छल, मुदा गलत प्रमाणनक दाम कियो आनकें चोट पहुँचि सकैत छल।

उर्मिला कहलीह, “हमर कपड़ा काल्हि देरी सँ पहुँचल; आइ फेर जँ रुकत, रोगीक बिछाओन बदलए मे बाधा होएत।” हीरा हुनका दिस देखलनि। “हम अहाँक काज रोकबाक लेल नहि, जकरा पठायब ओकर हाथ सुरक्षित रहबाक लेल कहैत छी।” उर्मिला उत्तर देलीह, “तँ दोसर बाट लिखू। खाली नहि कहब जे नहि।” ई आग्रहपर सभ चुप भेल।

नैरा, जे एखन धरि कागदक प्रति मिलबैत छलीह, कनेक आगाँ आबि कहलीह जे अस्थायी पहुँचक विकल्पक जाँच प्रमाणनसँ अलग पर्चीमे होअए।

हीरा पुरान नावक चढ़ाइ ठाम देखौलनि; ओतय सँ केवल पैदल लोक एक-एक कऽ जा सकैत छल, भारी ठेला नहि। पारक कात गोमती बेलदारक दल काल्हि छोट समतल पाट बना सकैत छल, मुदा माटिक धँसब आ नदीक स्तर जाँचल बिना ओकरा खोलब उचित नहि। अदिति अस्थायी वैकल्पिक बाटक निरीक्षण लेल अलग दल तय कएलीह। उर्मिलाक एहि दिनक आवश्यक कपड़ा दू भागमे बाँटि सुरक्षित बाहरी मोड़धरि छोट वाहने पहुँचबाक व्यवस्था भेल, हाथसँ उठा लऽ जेबाक दूरी आ मजदूरी अलग लिखल गेल। ओ कहलनि, “रास्ता बदललासँ हमर श्रमक घड़ी मेटाइ नहि जाए।”

बान्ह लग फाटक खोलबाक पुरान वार्षिक सामूहिक दिवसक तैयारीमे दू मजदूर घास काटि रहल छलाह। बाहा-मुँह खोलाइक दिन साधारणतः लोक मुँहथरि पर जमा गाद चिन्हैत, हाथक काज बाँटैत आ सुरक्षित भाग साफ करैत छल। आइ ककरो पूरा बन्द मुँह खोलबाक आदेश नहि छल। ताराक कहबापर मजदूरसभ केवल बाहरी घास हटौलनि, ताकि पुरान जल-चिन्ह देखल जा सकए। ओही घासक तला एक दोसर पत्थर भेटल। पहिल पत्थरक रेखासँ ओकर दूरी मापल गेल, किन्तु ओकरा सरकारी सीमा-स्तम्भ नहि मानल गेल।

नाव-औजार परख पर्वक भेल पुरान सभाक कापी हीरा निकाललनि। ओहि मे लग्गीक लम्बाइ, नावपर बोझक अनुमान आ गहिराइ देखबाक बाँसक चिन्ह अलग-अलग बनल छल। “पुरान बाँस आइक पानिमे उतरि सकैत अछि,” हीरा कहला, “मुदा पुरान दिनक गहिराइ आइक अंक नहि।” ओ नावक पेंदाक एक घिसल पट्टी देखौलक। नगरक सहायक ओही पट्टीपर खूबसूरत रंगक नया चिह्न बनए चाहैत छल। हीरा रोकलनि—“पहिने खाली नाव आ बोझा-वाली नावक अलग परीक्षा। रंगक चिन्ह सटीक आधारकेँ नहि बदलत।” नाविकसभक काज ज्ञानक हिस्सा बनल, चमत्कारक प्रदर्शन नहि।

माधव खड़ियाक हिसाब लऽ फेर अएलाह। समितिक सदस्य कहलनि जे खरीद-पंजीमे पाँच खोल लिखल अछि, जबकि तीन उपयोग भेल। माधव दू नहि खोलल पैकेट देखौलनि। “ई वापस जाएत, बिलमे सेहो घटत।” सदस्य पुछलनि जे अस्पतालक नामक

सामान एहि दोकानसँ कखन आयल। माधव कहलनि, “अस्पतालक आदेश अलग छथि; एहि खोलक रसीद फाटक-जाँचक अछि। दोसर मालक गुणवत्ता ओकर अपन परीक्षणसँ तय होएत।” नैरा दुनू खरीद अलग लिखलीह।

दुपहर बाद एक बालक लाल खड़ियासँ माटि पर नदी बनाबए लगल। छरकी लग रहएवाली दादी पुछलीह, “एतय पानि नहि, तखन नदी किएक?” बालक हँसल, “हमर कापीमे नदी एतएसँ जायत।” दादी खुरपीसँ रेखाक एक मोड़ घुमौलीह। “बरखामे पानि बढ़त तँ हमर घर कतए?” बालक दोसर रेखा खींचलक। तारा देखैत छलीह—कागदपर नव रेखा सीखबाक खेल छल, धरतीपर ककरो घरक प्रश्न।

पुरान प्रतिवेदनक लेखकक हस्ताक्षरवाला पन्ना कार्यालयमे छल, मुदा मैदानमे उपलब्ध नकलमे निरीक्षण-दिनक मौसमी स्थिति नहि लिखल छल। अदिति स्पष्ट कएलीह जे शेष पन्ना भेटल बिना प्रतिवेदनक सम्पूर्ण निर्णयपर टिप्पणी नहि होएत। तारा एही बात मानलीह। मुदा स्थानीय घेराव, पयरबाट आ छरकी पाछाँक निकास अनुपस्थित अछि, ई आजुक जाँचमे देखल गेल। ओ लिखौलीह—‘पूरा मूल दस्तावेज प्राप्त करबाक माँग; उपलब्ध नकल स्थानीय उपयोगक पथकें पर्याप्त नहि देखबैत।’ आरोपक बदला एहि वाक्यमे जाँचक सही ठाम बचल छल।

नैरा आ महेन्द्र ओहि सँकर मोड़पर जाकऽ काल्हिक गाड़ी रुकबाक समय फेर मिलौलनि। महेन्द्र कहलक जे हुनकर लदान-पर्चीमे ‘पूर्वी फाटक’ लिखल छल, मुदा वास्तविक माल दू सौ कदम पाछू उतारल गेल। “कियो ई अन्तर जानि-बुझि कएल की?” नैरा पुछलीह। महेन्द्र कान्ह उचकौलनि। “हमरा जे बोलल गेल से कएल। कागदक शब्द कियो बदललक होएत, अथवा हमरा मोड़ बदलए पड़ल।” ओ अपन गाड़ीपर पुरान उधारीक शिकन देखैत कहलक, “ई एक छोट मोड़ हमरा दू ग्राहक गमौने अछि।” नैरा उतरबाक वास्तविक ठामक रेखा बनौलीह; अपराधक उद्देश्य नहि लिखलीह।

श्यामक लग एक पुरान मजदूरी-सूची पहुँचल। सूचीमे किछु लोकक नामक बदला काजक पुकारनाम लिखल छल; कियो ‘लाल टोपी’, कियो ‘छोट नाव’ कहाओल छल। सहायक कहलनि, “एतय नकली नाम अछि। तें सभ रसीद सन्दिग्ध।” तारा तुरन्त आपत्ति कएलीह। “काज पर कहाओल नाम, घरक नाम, आ जालसाजी सँ गढ़ल नाम

एक नहि। पहिने मूल भुगतान-पंजी माँगू।” श्याम सूची अपने पास नहि रखलनि; जकरा लग सँ भेटल, ओकर नाम आ देबाक अनुमति लिखलनि। नैरा चुपचाप एहि प्रसंगकेँ अलग रखलीह। एहि पन्नाक गलत पहिचान हजार प्रश्न बढ़ा सकैत छल।

दुपहर ढललापर समितिक खुला बैठक भेल। अदिति अपन सहायकसँ तीन निष्कर्ष पढ़बौलीह—फाटकक उपलब्ध चौड़ाइ सब मौसमक सुरक्षित क्षमता-पत्र लेल पर्याप्त प्रमाण नहि; पुरान प्रतिवेदनक उपलब्ध नकलमे स्थानीय पहुँचक पूरा नक्शा नहि; बान्ह—छरकीक एक कातक बचाव आ दोसर कातक जलनिकासक प्रभाव फेर नापल जाएत। हीरा अपन हस्ताक्षर केवल आजुक प्रत्यक्ष नापक साक्षी पाँति पर कएलनि। “क्षमता प्रमाणन नहि” शब्द हुनकर हस्ताक्षर लग साफ लिखल गेल। तारा पुरान निशान चिन्हएवला मजदूरसभक समयक अलग देयक आवेदन जोड़लीह।

समितिक सदस्य पुछलक, “एहि सभ सँ भेल की? फाटक काल्हियो सँकर रहत।” उर्मिला कहलीह, “काल्हि हम आँखि मूँदि गाड़ी नहि धकेलब। दोसर बाट आ ओतयक मजदूरी लिखल अछि।” माधव घटल बिलक प्रति देखौलनि; महेन्द्र वास्तविक उतार-ठामक विवरण देलनि। फाटक नहि खुलल, मुदा ककर कमाइ ककर प्रतीक्षामे अटकल, से स्पष्ट भेल। अदिति मूल प्रतिवेदन मँगएबाक बात लिखलीह; जाँच बिना छरकी नहि काटल जाएत।

साँझमे हीरा अपन नावक लगगी घुरबैत एकटा सूखल पत्ता पानीमे छोड़लनि। पत्ता फाटकक भीतरक धीमा घुमावमे घुमि कात लग अटकल गेल। लग ठाढ़ बालक पुछलक, “नाव एतए अटकि जायत?” हीरा कहला, “नाव पत्ता नहि; ओकर भार, गहिराइ आ हवा अलग अछि। मुदा पत्ता हमरा देखए लेल एक प्रश्न देलक।” बालककेँ ओ लगगीक निशान गनबाक कहलनि। बच्चा तीन धरि गनिते चारिम भूति गेल, फेर दुनू हाँसि उठलाह। हीराक घरमे आजु माछक ताजा कमाइ कम छल, किएक तँ आधा दिन ओ नापमे देने रहथि। अपन श्रमक देय हुनक लेल सेहो अनिवार्य छल।

तारा घर घुरि पुरान करेह-चिन्हक नकल सावधानी सँ सुखौलीह। कागदक पाछाँ हुनकर दादीक काँपैत आखर नहि, केवल तारा अपन हाथक आजुक नाप लिखलीह। ओ जानैत छलीह जे परिवारक पुरान बिनौट-कार्यक किछु कागद एखन बाहर नहि आएल; ओकरा

लुकबाएलासँ वर्तमान नक्शा विश्वसनीय नहि बनत। आइ जे पत्थर भेटल, ओकर श्रमिक चिन्हलक, ओकर दाम ओ माँगलीह, मुदा धरतीक मालिक ककरा कहब—ई प्रश्न हुनकर कलम सँ एखन दूर रहल।

राति नैरा चारि पुरान अलग-अलग साक्ष्यरेखाक बगलमे नव पन्ना राखलीह —‘फाटकक पहुँच आ मापक प्रमाण’। एहि पन्नामे एक पाँति रहए: मूल मजदूरी-सूचीमे पुकारनाम, व्यक्ति-पहिचान आ भुगतानक मिलान शेष। ओहि सूचीक आधारपर ककरो अपराधी अथवा ककरो गुप्त सहयोगी लिखब गलत होएत। ओ अदितिक कार्यालय धरि मूल प्रतिवेदन मँगएबाक पत्रक प्रति रखलीह आ श्यामकेँ सन्देश पठौलीह जे मजदूरसभक निजी पहिचान सार्वजनिक पटपर नहि चढ़ाओल जाए। दोसर भोर फाटक पर फेर जाँच होएत; ओकर पहिने जे नाम ढाँकल अछि, से ककर सुरक्षा लेल, ककर रोजी लेल अथवा ककर छल लेल—तीनू सम्भावना अलग करबाक छल।

अध्याय ४८ • छद्मक तीन कारण

भोरे श्याम मल्लिक पुरान मजदूरी-सूचीक मुड़ल कोना सीधा करबाक लेल ओकर ऊपर अपन हथेली राखने रहथि। कागदक दहिना कात काल्हिक खड़ियाक धूर लागि गेल छल। पहिल पाँतिमे कामक तारीख, दोसरमे फाटक लग माटि हटएबाक घण्टा, तेसरमे नामक जगह ‘लाल टोपी’ लिखल छल। ओहि नामक आगाँ दू दिनक देय अछि, मुदा भुगतानक हस्ताक्षर नहि। श्याम पन्ना ऊपर उठौलनि तँ झुरझुराइत कागदसँ एकटा कण खसि पड़ल। “एहि धूरमे ककरो पहिचान नहि भेटत,” ओ अपने सँ कहलनि, “मुदा ककर मजदूरी बचल अछि, से एखन देखाइत अछि।”

तारा बिनौट बान्हक कातसँ आबि हुनकर सामने खड़ी भेलीह। राति ओ पुरान चिन्हक नापक नकल सुखौने छलीह। “मूल सूची भेटल कि नहि?” पुछलनि। श्याम माथ डोलौलनि। ई नकल हुनका एक पुरान ठेकेदारक घरक बक्ससँ भेटल छल, मूल नाम-पंजी नगरक मालखानामे रहबाक सम्भावना कहल गेल छल। ठेकेदारक बेटा एखन घर बेचबाक तैयारीमे छल; ओ अपने पिता पर आरोप सुनए नहि चाहैत छल। तारा कहलीह, “मूल कागद माँगब, मुदा पहिने ई जाँचब जे ई सूची केकर काजक अछि। काल्हि फाटकक पत्थर चिन्हएवला स्त्रीसभक नाम एतय नै अछि।”

नैरा जे समयपर आयलीह तँ हुनका हाथमे दूटा खाली लिफाफा आ एकटा कपड़ाक पुरान थैली छल। श्याम हँसैत पुछलनि, “नाम देखबाक लेल एतेक ढाकब किएक?” नैरा उत्तर देलीह, “एक नामकें देखब आवश्यक अछि कि ओकरा सभकें देखाएब, ई दू प्रश्न अछि।” ओ सूची पर कागदक पत्ती राखि प्रत्येक पाँतिक क्रमांक पढ़लीह। किछु पाँति पर पुकारनाम, किछु पर पूरा नाम, आ एक ठाम खाली जगहक ऊपर दोसर स्याहीसँ नाम भरल छल। “ई नाम कियो बदललक, से सम्भव,” ओ कहलीह, “मुदा बदलबाक कारण एखन एको नहि जानल अछि।”

कार्यालयक सहायक भोरहि सँ चौकमे सूचना-फलक ठाढ़ करबैत छल। ओकर विचार रहए—सूचीक फोटो लगा देब, जेकर नाम रहत से आबि पहिचान दऽ देत। “ई तऽ खुला जाँच भेल,” ओ अपन बचावमे कहलक। ताराक स्वर कड़ा भेल, “जे अपने नामपर

मजदूरी माँगए नहि आबी सकल, ओकर फोटो फलक पर लगौने सँ सुरक्षा मिलत?” सहायक कहलक जे नकली मजदूरक पहचानो करबाक अछि। नैरा फलकक सफेद भाग दिस देखलीह। “खुला जाँचक अर्थ खुला व्यक्तिगत ब्योरा नहि। पहिने दिनांक, काजक वस्तु आ बकाया लिखल जाए। ककर नाम देखब आवश्यक होएत, ओ अलग सुनवाइमे देखल जाएत।”

ओहि समय फाटकक बाहरी बाटपर धातुक रेतनी सँ निघरैत खरखराहट सुनाइ देलक। एक दुबर लोक छोट लकड़ीक पेटी नीचाँ रखि भीतरसँ तीन वस्तु निकाललनि—नावक रस्सी कसबाक कुंडी, पुरान छेनीक मुँह आ भौराक टेढ़ लोहेक दाँत। हुनकर नाम नजीर सिकिलगर छल। भोरसँ ई तीन वस्तु मरम्मत कऽ ओ नदीक मुँहपर लौटाएब चाहैत छलाह। पेटीक ढक्कनक भीतर हुनकर हस्तलिखित रसीद-बहियाक एक पन्ना चिपकल छल। प्रत्येक वस्तु लग ओकर पुरान दशा, रेतनीक समय, मालकक स्वीकृति आ देय लिखल छल; वस्तु बेचबाक दाम कतहु नहि।

नगरक सहायक पेटीक औजार देखिते कहलनि, “काल्हि लोहारपर शंका छल, आइ फेर धारदार सामान! अहाँक सूचीमे पूरा ग्राहकक नाम नहि; एतय ‘नाववाला’ लिखल अछि।” नजीर रेतनी रोकि सीधा ठाढ़ भेलाह। “हम एहि कुंडीकें हाथ लगाबए पहिने ओकरा मालिकसँ पूछने छी, आगाँ गाँठ कसबाक काज लेल चाही कि नहि। चाहब तँ ओ अहाँक सामने कहत। मुदा ओकर घरक ठेकाना हमर रसीदक सार्वजनिक हिस्सा नहि।” हरिनारायणक कार्यशालापर पहिने उड़ल आरोप हुनका ग्राहकसभमे डर पहुँचा चुकल छल। नजीर अपन पेटी बन्द करब नहि चाहलनि; काज रोकिने सँ हुनकर दिनक कमाइ घटत।

हीरा सहनी लग्गी कन्हापर धेने ओतए अएलाह। ओ कुंडी उठा कऽ रस्सीक गोलामे बैसौलनि, फेर पुरान ढीला कुंडी देखौलनि। “ई फरक देखू,” ओ कहला, “पहिलमे रस्सी पाछाँ फिसलैत अछि, दोसरमे नहि। एहि लेल रेतनी चाही; धार देखिकऽ कामक निर्णय नहि होएत।” नैरा नजीर सँ रसीदक पन्ना छुअए पहिने अनुमति लेलीह। रसीदमे ‘नाववाला’ लग दिनांक आ कामक अवधि स्पष्ट छल। “अहाँकें ई नाम कियो कहल?”

हुनकर प्रश्नपर नजीर मुस्की देलनि, “घाटपर पाँच लोक एक-दोसराक असल नामसँ बेसी नावक नाम जानैत छथि।”

उर्मिला ओहि समय अस्पतालक कपड़ा लऽ बाहरक मोड़पर पहुँचल छलीह। सँकर फाटकक सुरक्षा-परीक्षण पूरा नहि भेल रहए; हुनकर थैली फेर छोट बाटसँ पैदल लऽ जाएबाक छल। “मालकक घरक बात छोड़ू,” ओ कहलीह, “कखनो धोबिन कहैत छथि, कखनो उर्मिला रजक। जे दिन नामसँ मजदूरी भेटल नहि, ओ दिन हम ककरा कहब?” नैरा सूचीमे दू अलग खाना बनौलीह—‘कामपर प्रचलित नाम’ आ ‘देय लेबाक जाँचल व्यक्ति’। दुनूकेँ एक्के सार्वजनिक पंजीमे नहि रखबाक बात लिखलीह। उर्मिला अपन कपड़ाक गाँठ उठौलीह; हुनकर पैदल ढुलाईक अतिरिक्त समय अभी भुगतान-पंजीमे चढ़ल नहि छल।

किछु दूर सुमित्रा कामी अपन छोट चौरस लकड़ीक डब्बा लऽ आयलीह। ओ धातुक पातर टुकड़ासँ बनल दू समकोण-जोड़ देखौलीह, जाहिमे एक कात दोहर खाँज आ दोसर कात रस्सी थामबाक छोट मोड़ रहए। फाटकक अस्थायी पाटपर काठक किनार जोड़बाक लेल नाप मँगाओल गेल छल, किन्तु ओ एहि जोड़केँ भार-सुरक्षा प्रमाणपत्र नहि कहैत छलीह। “ई नमूना अछि; परीक्षणक बादहि उपयोग,” ओ स्पष्ट कएलीह। हुनकर रसीदमे धातु, तपौनी, तरासबाक समय आ नाप लेल अलग पाँति छल। नमूनाक भीतर ओ अपन बनाओल छोट तीन-कोना चिन्ह ठोकने छलीह।

“अहाँ तऽ कामी छी, ई चिन्ह नामक बदला किएक?” सहायक पुछलक। सुमित्रा कहलनि, “चिन्ह हमर काजक अछि, अपन नाम लुकएबाक नहि। पहिने बनाओल पाटपर दोसर कारीगरक नाम चढ़ल; एहि बेर कागदमे हमर पूरा नाम रहत। मुदा एहि नमूनाक फोटो अनुमति बिना बजारमे नहि जायत।” हुनकर पिता पुरान औजार-सुधारक काज जानैत छलाह, मुदा बेटी अपन खाँजक नाप स्वयं बदलने छलीह। ओ एक पैघ ग्राहकक अग्रिमक बातो बतौलीह—ओ ग्राहक डिजाइनेक पूरा अधिकार चाहैत छल, दाम केवल एक नमूनाक देबाक लेल। सुमित्रा एखन तक ओकर प्रस्ताव नहि मानने छलीह।

नगर-अभिलेखक भंडारक किवाड़ खोलबामे दुपहर लागि गेल। भीतर तीन बक्सा छल; पहिलपर पुरान जल-निकासी, दोसरपर ठेका, तेसरपर मजदूरी लिखल छल। भंडारपाल

कहलक जे मूल सूची तेसर बक्सामे होएबाक चाही, मुदा काँचक पटराक पाछाँ कागद भीजल अछि। नैरा बक्सा खिचबासँ रोकलीह। “पन्ना भिजल अछि तँ पहिने अवस्था लिखू जकर जिम्मेदारी अछि ओकरा बजाऊ। हमरा केवल एक प्रति देखबाक अधिकार भेटल अछि, वस्तु बिगाड़बाक नहि।” श्यामक हृदय धकधका उठल; जतय लिखल मजदूरीक हिसाब चाही रहए, ओतय कागदक शरीरहि संकटमे छल।

बक्साक बाहर राखल सूचीक एकटा दोसर प्रति भेटल। एहि पर ‘लाल टोपी’क बगलमे पेन्सिलसँ ‘मोती’ लिखल छल, मुदा ने पूरा नाम ने हस्ताक्षर। सहायक विजयक स्वरमे कहलक, “देखू, नकली नामकेँ असली बनाओल गेल!” तारा पुछलीह, “मोती व्यक्ति अछि कि नाव? पेन्सिल कखन लिखल गेल? ककर अक्षर?” प्रश्नसँ ओकर स्वर धीमा पड़ि गेल। नैरा पन्नाक दूनु पृष्ठक नकल लऽ कोना, रंग आ लिपि-विभेद लिखलीह। मूल जाँच सँ पहिने पेन्सिलक ‘मोती’केँ ककरो पहचान मानल नहि गेल।

भंडारपाल एकटा आन पुरान फाइलक बगलसँ पत्र निकाललक। ओकरा पर एक महिला अपन मजदूरी माँगैत लिखने छलीह जे कामपर हुनका घरक नाम नहि पुकारल जाए। एक समय हुनका खोजैत किछु लोक घाटपर हंगामा कएने छल; ओ अपन बच्चाक संग सुरक्षित ठामपर रहबाक कोशिश करैत छलीह। पत्रमे हुनकर वास्तविक ठेकाना सेहो छल। नैरा पत्र पढ़िते ओकरा वापस मुड़ि लिफाफामे देलीह। नाम नहि पढ़लीह, ठेकाना नहि नकल कएलीह। “ई पत्रक रहबासँ कोनो झूठ सिद्ध नहि होइत; ई देखबैत अछि जे सार्वजनिक पहिचान हुनकर लेल जोखिम छल,” ओ कहलीह। “मजदूरीक दावाक जाँच हुनकर सुरक्षाक बिना नाश कएने सेहो भऽ सकैत अछि।”

सहायक कहलनि जे एहन पत्रकेँ छिपौने सँ फर्जी दावेदारक फायदा भऽ सकैत अछि। नैरा सहमत भेलीह जे कियो फर्जी दावा करि सकैत अछि, मुदा एहि सम्भावनासँ पत्र लिखनिहार महिलाकेँ जोखिममे डालब तर्क नहि। “भुगतानक तिथि, कामक ठाम, पर्यवेक्षकक गवाही आ सुरक्षित सम्पर्क—ई चारि जाँचल जा सकैत अछि। सार्वजनिक फलकपर घरक पता लगायब आवश्यक नहि।” तारा महिलाक दिनक देय निश्चय करबाक लेल समयसीमा माँगलीह। भंडारपाल सुरक्षित भेटक व्यवस्था बनएबाक बात स्वीकार केलक, मुदा ओहि दिन मूल पत्रक प्रति सार्वजनिक करबाक आग्रह अस्वीकार भेल।

बहुत पहिने विराटनगरक राजमहलमे सैरन्ध्री रानीक कक्षसँ सुगन्धित फूलक डलिया उठौने निकलि रहल छलीह। राजदरबार हुनका एक सेवा-नामसँ चिन्हैत छल, मुदा ओ द्रौपदी छलीह; अज्ञातवास पूरा होएबाक पहिने अपन पहिचान खोलब परिवारक सुरक्षाकें संकटमे डालि सकैत छल। राजमहलक एक परिचारिका, जे दिन-राति हुनकर संग काज करैत छलीह, पुछलक जे अपरिचित नामसँ कहाओलासँ मन नहि थाकैत? सैरन्ध्री फूलक डंठलक काँट निकालैत उत्तर देलीह, “नामक पाछाँ मन तऽ रहैत अछि। मुदा एखन ककरा कतेक कहब, से हम चुनब तखने बचब।” परिचारिका हुनका घूरि नहि देखलक; हाथ बढ़ा डलियाक एक कात सम्हारि लेलक।

विदेहपुरक दुपहरमे नैरा फेर भंडारक बाहर अएलीह तँ विनोद केवर्त अपन बिछौना-जकाँ मुड़ल जाल ठेलापर रखि कऽ ठाढ़ छलाह। ओ पूछलनि जे माछघेरक पुरान नकल एतए अछि की। श्यामक लग एक पन्ना छल, जाहिमे ‘चिलोन’ नाम लिखल रहए, पाछाँ छोट मछघेरक बाँस-पाट आ पानिक धार रोकएवला जालक हिसाब। दोसर पुरान बहीमे ‘चिलोन’ लिखल छल; ओकरा समकक्ष वस्तु मानबाक आधार ओहि बहीमे नहि। विनोद कहलनि, “एक अक्षर बदललासँ नदी, वस्तु आ देय सभ एक्के नहि बनि जाइत। हमरा घरक बूढ़ लोक ई दू शब्द अलग प्रसंगमे कहैत छलाह, मुदा ठामक निश्चय लेल कागद चाही।”

एतयहि बाजारमे खबर पसरए लागल जे मजदूरी-सूचीमे ‘छोट नाव’ लिखल अछि, तँ कियो बच्चाकें नावमे छिपा कऽ लेने छल। ई बात सुनि उर्मिला कपड़ाक थैली पटक देलीह। “एतए ‘छोट नाव’ माल ढोएवला डोंगीक पुकारनाम अछि कि नहि, ओ सेहो नहि बुझल,” ओ कहलीह, “तखन बच्चाक अपहरण कतएसँ आबि गेल?” एक युवक फोनमे काल्हिक धुँधल फोटो देखाबए चाहैत छल। नैरा ओकरा रोकलीह। बच्चाक सम्बन्धमे पहिने उठल अफवाह अलग जाँचल गेल छल; एहि पुरान मजदूरी-सूचीक शब्दसँ ओहि फोटो अथवा कोनो वास्तविक गुमशुदगीक सम्बन्ध सिद्ध नहि होइत।

भीड़मे ठाढ़ एक व्यक्ति दृढ़तासँ कहलक, “जँ सभ कुछ गोपनीय राखब तँ दोषी कहिया पकड़ाएत?” श्याम पहिल बेर ओकरा बीचमे रोकलनि। “हम असल दोषी बचएबाक पक्षमे नहि छी,” ओ बजलाह, “मुदा जकर दू दिनक मजदूरी रोकल अछि,

ओकरा अपराधी बना देब तँ ककरो हिसाब देबाक आवश्यकता नहि बचत।” नैरा पूछलीह जे जँ कियो अपने लाभ लेल दू नामसँ एक्के कामक दुहर भुगतान लेलक होए, तँ ओकर प्रमाण की होएत। कागदपर एक्के हस्ताक्षर, बैंक अथवा नगद भुगतानक सत्यापित विवरण, काजक तिथि आ उपस्थितिक स्वतंत्र गवाही चाही। सूचीमे दू मिलैत पुकारनाम अपने आपमे छलक प्रमाण नहि।

दुपहर बाद नकद भुगतानक एक छोट प्राप्ति-पत्र भेटल, जाहिमे समान तिथिपर ‘लाल टोपी’ आ ‘मोती’ दुनू लग अलग रकम लिखल छल। सहायक फेर उत्साहित भेल। नैरा पहिल रकमक आगाँक मोहर देखलीह—‘भुगतान शेष’। दोसर रकमक आगाँ ‘अग्रिम जारी’ छल। दुनू समान प्रकारक भुगतान तक नहि छल। “भिन्न रकम आ भिन्न प्रयोजनकें जोड़िकऽ दुहर भुगतान नहि कहब,” ओ कहलीह। “मूल मुहर-पंजी आ ककरा रकम हस्तान्तरित भेल, से माँगू।” एहि प्रश्नपर भंडारपाल पहिने वार टालमटोल कएलक; अन्ततः लिखित आवेदनक प्राप्ति-दिन देलक। छलक सम्भावना रोकल नहि गेल, मुदा ककरो दोषी ठहराओल नहि गेल।

नगरक सदस्य अएला तँ सार्वजनिक सुनवाइक खर्चक प्रश्न उठौलनि। “एतेक नाम अलग-अलग मिलाउ, तकर मजदूरी कियो देत? निरीक्षणक रकम तँ फाटकक नाप लेल स्वीकृत छल।” तारा अपन बहियाक पन्ना खोललीह। “पहिने जकरा नापमे बजौलहुँ, ओकर आधा देय रोकल अछि। आब हर नवा जाँच लेल मुफ्त श्रम चाही। गलत प्रमाणपत्र नहि बनाब, ई ठीक; मुदा सत्य खोजबाक कामो ककरो पेटपर भार नहि बनए।” नगरक सदस्य कहलनि जे अग्रिमक अधिकार हुनका पास नहि। तारा बजलीह, “तखन जाँचक नामपर अगिला दल नहि बजाऊ। पहिने लिखित भुगतान-शर्त।”

नजीर पेटीक ढक्कन फेर खोललनि। दिनक तेसर वस्तु हिनका एखन घुराएबाक छल, मुदा भोरसँ अधिकारीसभक प्रश्नक कारण काज अपूर्ण रहल। “जँ हम यत्र-तत्र कहल बात लिखबैत रही, तँ हथौड़ी कखन उठाएब?” ओ पुछलनि। सहायक आश्वासन देबाक चाहलक जे सरकारी कामक दर्जा मिलत। नजीर कहला, “दर्जा सँ हमर घरमे चाउर नहि अबैत।” तारा हुनका आ सुमित्राकें बाजू रखल कागदपर अलग-अलग निरीक्षण-समय,

नमूना देखेबाक समय आ सामग्रीक मूल्य लिखएबाक कहलनि। दुन्नूक सहमति बिना फोटो अथवा नमूना साझा नहि करबाक पाँति जोड़ल गेल।

सुमित्रा अपन तीन-कोना चिन्हक नमूना घुमाबि देखौलीह। “हम एहि जोड़कँ एहि काज लेल परखए देब,” ओ कहलीह, “मुदा ठेका पाबएवाला दोसर लोक जँ नमूना लऽ कऽ हमर नाम हटाओत तँ ई परख देबाक अर्थ नै।” नगरक अभियान्त्रिक सहायक कहलक जे डिजाइनक बारेमे कार्यालयक प्रक्रिया अलग अछि। सुमित्रा उत्तर देलीह, “तँ ओकर प्रक्रिया लिखि दिअ, खाली भरोसा नहि।” ओ निर्णय लेलनि जे धातुक जोड निरीक्षण लेल जमा देलीह, मुदा मूल रेखाचित्र अपने लग रखतीह। कार्यालय नमूनाक प्राप्ति-दिन आ परतौनीक शर्त कागदपर देलक। आगामी ठेकाक स्वामित्वक प्रश्न एखन खुलल रहए।

बादमे नैरा श्यामक संग पाँच छोट पाँति बनौलीह। पहिल—सुरक्षाक कारणसँ बदलल नामक मूल परिचय केवल अधिकृत सुरक्षित जाँचमे; सार्वजनिक सूचीमे नहि। दोसर—जीविकाक पुकारनामक संग काम, तिथि आ देय मिलत, बिना जरूरत घरक ठेकाना नहि। तेसर—व्यक्ति स्वयं चुनल सार्वजनिक अथवा पेशागत नामक सम्मान, मुदा भुगतानक दोहराव रोकबाक लेल सहमतिसँ निजी मिलान। चारिम—भाषा, लिपि आ सुनबाक भूलसँ बदलल नामक मूल प्रविष्टिक संग तुलना, बिना दोषारोपण। पाँचम—छलक आशंका भेलापर भिन्न भुगतानक मूल प्रमाण आ अलग सुनवाड़; आरोपक सार्वजनिक प्रचार जाँचसँ पहिने नहि।

श्याम पाँचम पाँति पढ़ि कहला, “अहाँ पाँच तरहक नियम बनौलहुँ, मुदा सुरक्षा, रोजी आ अपराध तऽ तीन कारण कहल गेल छल।” नैरा मुस्की देलीह। “तीन कारण निर्णयक प्रश्न अछि। पाँच नियम अभिलेख सम्हारबाक। जँ पाँचम नियम छलक साक्ष्य जाँचैत अछि, तँ ओ पाँचम कारण नहि बनि जाइत। अपन नाम चुनबो अपराध नहि; लिखनिहारक गलती सेहो नहि।” श्यामकँ अपन दादीक एक पुरान बात मोन पड़ल—नावक नाम बदललासँ नावक तला नहि बदलैत। मुदा ओ ई उपमा लिखब आवश्यक नहि बुझलनि; सामने असल पन्ना रहए, जाहिपर अभी साक्ष्य चाही छल।

नैरा अलग आवेदन बनौलीह—फाटकक मूल मजदूरी-पंजी, भुगतानक मोहर-पंजी, निरीक्षणक नियुक्ति-पत्र आ नाप करनिहारक सूची सुरक्षित रूपमे देखबाक माँग।

आवेदनमे सरिताक सत्ताइस नामक मूल पन्नाक चर्चा नहि छल। ओ पन्ना सरिताक अपन देखरेखमे छल आ एहि फाटकक मजदूरी-सूचीसँ ओकर सम्बन्ध सिद्ध नहि। श्याम कहला जे यदि कियो दुनू सूची एक जगह मिलाबए लगत तँ अनावश्यक शंका बढ़त। नैरा सहमत भेलीह, “अलग वस्तुक एक्के शब्द—‘नाम’—एहि दुनू अभिलेखकेँ एक कागद नहि बनबैत।” ओ बच्चाक अफवाहक जाँचक फाइल सेहो बंद लिफाफामे अलग रखलीह।

साँझक झुकैत प्रकाशमे नगरक सदस्य फेर अएला। ओ घोषणा करए चाहैत छलाह जे मूल पंजी भेटला धरि फाटकक सभ काम रोकल जायत। हीरा सहनी कहला, “सुरक्षा-परीक्षण रोक, ई बुझाइत अछि। मुदा ढील रस्सी खोलि देब, चिन्ह मेटा देब आ मजदूरक देय अटका देब, ई सुरक्षा नहि।” तारा जोड़लीह जे तात्कालिक सुरक्षित घेरा आ पहिने कएल निरीक्षणक हिसाब जारी रहबाक चाही। नगरक सदस्य दू ठामक लिखित काज स्वीकार कएलनि—असुरक्षित भार-वहनपर रोक, आ सुरक्षित सीमामे आवश्यक रखरखाव। नव दल बजएबाक पहिने भुगतानक शर्त बनत।

श्याम घर पहुँचि देखलनि जे हुनकर छोट बेटा पुरान कापीक खाली पन्नापर नाव बना रहल छल। नावक ऊपर ओ लिखने छल—‘छोट नाव’। श्याम ओकरा डाँटलनि नहि। पुछलनि, “एहि नावक मालिक कए?” बेटा कहलक, “हम बनौने छी, मुदा पानिमे जाएत तँ माछो एकरा देखत।” श्याम हँसलाह, फेर कापीक कोना देखलनि; ऊपर बच्चाक नाम लिखल छल, नीचे नावक। “दुनू नाम अलग रख,” ओ कहलनि। “नाव हराएल तँ तोहर नाम नहि हरायत।” बेटा रंगक डब्बा बन्द कएलक आ अगिला पन्नापर पानि बनाबए लगल।

नैरा रातिक कापीमे तेसर बेर एहि सप्ताह ‘मूल देखबाक माँग’ लिखलीह, मुदा एहि बेर संग एक तारीख सेहो रहए—नगर कार्यालय प्राप्ति देबय लेल राजी भेल छल। फाटकक गलत माप सुधारब, अस्पतालक कपड़ा-सामग्रीक अंतर जाँचब, अपहरणक अफवाह रोकब आ मजदूरक नाम सुरक्षित रखब—सभक पद्धति अलग छल। तारा सँ आयल छोट सन्देशमे लिखल रहए: ‘अगिला माप-दल लेल अग्रिम देय बिना सभ नहि आएत।’ नैरा सन्देशकेँ सुरक्षित कएलनि। छद्मक कारण तीन भऽ सकैत छल, मुदा देय रोकबाक

परिणाम एकदम ठोस छल—काल्हिक काज ककर खर्चपर होएत, ई तय करब जरूरी छल।

अध्याय ४९ • सहयोगक दाम

फाटकक लग सबेरक पहिल आवाज हथौड़ीक नहि, बाँसक पातर छाल उतारबाक छल। श्याम मल्लिक घुटना लग बाँस थामने छलाह आ धारदार छोट औजारसँ ओकर छोर समतल करैत छलाह। बगलमे तारा बिनौट नाप-डोरी लपेटि एकटा कागदपर राति भरि बनाओल रेखा मिलबैत छलीह। काल्हि नगर कार्यालयसँ सन्देश आयल छल—मूल मजदूरी-पंजी भेटए धरि नियमित नाप बन्द; किन्तु असुरक्षित फाटकक कातमे सुरक्षा-चिन्ह देखेबाक लेल स्थानीय लोक तुरन्त उपस्थित होथि। सन्देशमे उपस्थितिक समय लिखल छल, देयक एको अक्षर नहि।

तारा अपन बहीक ऊपर ओ पर्ची रखलीह। “अहाँ छाल काटि रहल छी कि नगरक लेल फेर मुफ्त नमूना बना रहल छी?” श्याम मुस्की देबाक प्रयास कएलनि। “दूनु काजक बीचक फरक तऽ पर्चीमे नहि अछि।” हुनकर घरमे काल्हि राति दुधक दाम उधार रहि गेल छल। जे बाँस आजु काटि रहल छलाह, ओकरा एक ग्राहकक नावक डौड़ बनेबाक छल। फाटकपर आधा दिन देबासँ ओ ग्राहकक काज एक दिन पछुआएत। तारा बाँस उठौलनि आ कातमे रखि देलीह। “पहिने ई तय हो—जाँच करबाक लेल ककरा बजाओल गेल, कतेक घण्टा, आ ककर अधिकारसँ?”

नगरक अभियन्ता अदिति पहुँचलि तँ हुनकर संग दू सहायक आ सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि छल। सहायकक हाथमे सफेद कागद छल, शीर्षक ‘स्वैच्छिक स्थानीय सहयोग’। ओहि कागदपर नाम लिखि हस्ताक्षर करबाक जगह बनल रहए। तारा पढ़ैत-पढ़ैत अटकलीह—‘प्रस्तुत नमूना आ सूचना नगरक सार्वजनिक उपयोग लेल उपलब्ध रहत’। “एहि एक वाक्यमे हमर बिनौट, पुरान निकासक बाट आ श्यामक चिन्ह सभ अहाँक भऽ जाएत?” ओ पुछलीह। अदिति कागद सहायकक हाथसँ लऽ लेलनि। “ई कार्यालयक पुरान प्रारूप अछि,” ओ कहलीह। “हम एकरा सुरक्षा-जाँच लेल मँगाओने छलहुँ, नक्शाक मालिक बदलए लेल नहि।”

“अहाँक उद्देश्य जे हो, हस्ताक्षर तँ एहि पाँतिपर होएत,” तारा उत्तर देलीह। श्याम अपन छोट बाँसक मॉडल माटिपर रखलनि। ओकर एक कात तीन तरहँ जुरल गाँठ छल, जे सँकर बाटपर चक्का फिसललाक दिशा देखेबाक लेल बनाओल गेल छल; ई भार उठेबाक पुल नहि छल। सहायक मॉडल उठाबए चाहलक तँ श्याम हथेली आगाँ कएलनि। “हाथसँ देखू, नापू; मुदा हमर अनुमति बिना एकरा कार्यशालामे लऽ जायब नहि। एहि जोड़केँ पूरा काज मानि कऽ ककरो ठेकामे लगा देब तँ पहिल गलत प्रमाणपत्र फेर लौटि आएत।”

हीरा सहनी नावक छोर सँ आबि कऽ कहला जे काल्हिक नापमे जतेक बाट भेटल, ओकर आधा हिस्सा पानिक स्तर बढ़िटे दुर्गम भऽ जायत। “जाहि हिस्सापर पयर राखब खतरनाक अछि, ओतए चिन्ह तऽ चाही,” ओ कहलनि। तारा उत्तर देलीह, “आजु चिन्ह लगत, जँ एक दिनक निश्चित देय आ सामानक दाम पहिने तय हो। हमर इंकार लोककेँ खतरामे छोड़बाक नहि; हमर इंकार ई अछि जे खतरा देखाकऽ मजदूरकेँ बिना दाम बजाओल जाए।” हीरा अपन लग्गी नीचाँ रखलनि। हुनका सेहो पहिल जाँचक बकाया छल। ओ तारा लग ठाढ़ भऽ गेला।

एहि बीच पार्वती ताँती आ पवित्रा पटवा दू अलग गठरी लऽ फाटकपर अएलीह। पार्वतीक गठरीमे पीयर आ लाल किनारवला तीन पातर थान छल; पवित्राक डिबियामे रङ्गीन सूतक गाँठ आ बाँसपर बाँधबाक गुँथल पट्टी। विद्यालयक कार्यक्रमक बचल सूतसँ सुरक्षा-चिन्ह बनएबाक छोट आदेश नगरक सहायक काल्हि देने छल। कागदपर सामानक नाम मात्र ‘कपड़ाक फीता’ लिखल रहए। पार्वती तुरन्त कहलीह, “बुनाइ अलग, किनार गँथाइ अलग। दूनूकेँ एक फीता कहब तँ दू घरक मजदूरी एक पाँतिमे हरायत।”

पवित्रा डिबियामेसँ एक लाल गाँठ निकालि कऽ देखौलीह। “ई रातिमे चिह्नबाक लेल मोट गाँठ अछि; ई पातर गाँठ केवल नाप चिन्हएबाक। जे गहना गँथबाक सूक्ष्म काज हम करैत छी, ओकरे सीखसँ ई फरक बनल। मुदा एहिसँ ई नहि जे पार्वतीक करघाक काज हमर भऽ गेल।” पार्वती हुनकर बात सुनि मुस्की देलीह। पिछला विद्यालय-आदेशक किछु दाम एखन धरि नहि भेटल छल; ओ पर्ची दुनू अलग रसीदक संग जोड़ि देने छलीह। नगरक सहायक पुछलक, “एक्के आदेश लेल दू भुगतान निकलब कठिन नहि?” पवित्रा

कहलीह, “एक्के फाटकपर लोहे आ काठक दाम अलग निकलैत अछि, तखन दू घरक श्रम अलग किएक नहि?”

श्याम ओतहि माटिपर बनल निकासक पुरान रेखा देखौलनि। हुनकर बाबाक समय बाँसक बिनौटसँ बहैत पानि मोड़बाक छोट प्रयोग भेल छल; फेर नवा घेराबन्दीसँ बाट बदलि गेल। ई स्मृति नक्शाक प्रमाण नहि, मुदा नवा नापमे कता देखबाक चाही तकर संकेत छल। “एहि रेखाक नकल कार्यालयकें चाही,” सहायक बजल। श्याम कहलनि, “नकल देखू, जाँच करू, विवाद लिखू। मुदा हमरा दादाक चिन्हक नाम मेटाकऽ नगरक आविष्कार कहब, ई अनुमति नहि।” तारा जोड़ी देलीह, “आ ई चिन्ह देखएबाक काजक घण्टा सेहो गनब।”

अदिति कागदक पाछू फेरलीह। “सुरक्षा-घेरा लेल स्वीकृत छोट आपात खर्चक राशि अछि,” ओ कहलीह, “मुदा पूरा जलनिकास-जाँचक ठेका एतय पारित नहि करि सकैत छी। जँ एहि सीमित काजक सूची बनत तँ जे काज एखन आवश्यक अछि, तकर अग्रिम देब सम्भव अछि। बाकी जाँच लेल अलग स्वीकृति चाही।” पट्टाक प्रतिनिधि विरोध कएलक—“काम छोट रखू, नाम किएक एतेक? दस लोकक नाम चढ़त तँ फाटक खोलबमे सप्ताह लगत।” तारा पुछलीह, “ककर नाम काटि देब? जे सूत बुनलक, जे गाँठ देलक, कि जे माटि चिन्हलक?”

तारा बहीमे चारि स्तम्भ बनौलीह—कामक वस्तु, कारीगरक नाम, घण्टा वा टुकड़ाक दाम, उपयोगक सीमा। श्याम बाँसक नमूना आ नाप-चिन्ह लिखौलनि; पार्वती तीन थानक बुनाइ; पवित्रा आठ गुँथल पट्टी; हीरा सुरक्षित बाट चिन्हेबाक समय। मूल रेखाचित्र तारा अपन झोरामे राखि देलीह। “सार्वजनिक जाँच लेल कागद देखाएब, मुदा नकल पर लिखल रहत—‘निरीक्षण प्रति; निर्माण-अनुमति नहि’,” ओ कहलीह। अदिति एहि शर्तकें उचित मानलीह, किन्तु नगरक स्थायी नक्शा-बहीमे श्रेय दर्ज करबाक प्रक्रिया लेल समय माँगलीह।

सबेरे खेलए निकसल दू बच्चा पीयर पट्टी देखिकऽ लग आएल। एक कहलक, “ई रङ्ग तँ नाचक कपड़ामे छल!” पार्वती थान मोड़ैत उत्तर देलीह, “रङ्ग एक होएत, काम दोसर। ई पट्टी एतय नाचबाक अनुमति नहि, आगाँ नहि जेबाक चेतावनी अछि।” बच्चा पुछलक

जे नाचक कक्षामे ओ जा सकैत अछि की। पवित्रा कहलीह, “कक्षा रुहानीसँ पुछू। एहि ढील पाटपर नहि।” दूनू बच्चा हँसैत सुरक्षित मोड़ दिस चलि गेल। तारा देखलीह—एकर अर्थ सुरक्षा-चिन्ह बनएबाक काज केवल नक्शा नहि, लोकक बुझाइ सेहो अछि।

बहुत पहिने किष्किन्धाक वनमे, जखन राम आ लक्ष्मण सीताक खोजमे भटकैत छलाह, ऋष्यमूकक ऊँच पाथर पर सुग्रीव दूरसँ दू धनुर्धरकें देखलनि। हुनकर पहिल भाव स्वागत नहि, भय छल। वालीक डर हुनका प्रत्येक अपरिचित पगमे पीछा करैत छल। हनुमान पुछलनि जे बिना परिचय जँ आगन्तुककें शत्रु मानि लेल जाए, तँ सम्भावित मित्रक दरबज्जा कोना खुलत। सुग्रीव उत्तर देलनि, “मित्र चाही; मुदा जे अपन बल लऽ कऽ अबैत अछि, ओकर मनक सीमा कता अछि, से पूछबो चाही।”

हनुमान वेश बदलि रामक समीप गेला आ पहिने बात सुनलनि। राम अपन खोज बतौलनि; हनुमान सुग्रीवक निर्वासनक दुःख कहलनि। दू पक्षक संकट एक नहि छल—एक दिश सीताक खोज, दोसर दिश वालीक भय आ राजक प्रश्न। मुलाकातक आशा बनल, मुदा अग्निसाक्षी मित्रताक पहिने हनुमानकें बुझए पड़ल जे वचनक अर्थ दुनू पक्ष लेल की होएत। सुग्रीवक भय केवल कायरता नहि छल; ओकरा भीतर पुरान घाव, राजनीतिक असमानता आ अनिश्चित भविष्य छल। ओ सहयोग चाहैत छलाह, पर अपन बात सुनेबाक अधिकारो।

विदेहपुरमे दुपहरक रौद तेज भेल तँ फाटकक कातक भीजल माटि धूपमे पपड़ी बनए लागल। नगरक सहायक नया कागद लऽ आयल—‘सुरक्षा-चिन्हक अस्थायी आदेश’। ओहि पर अग्रिम ‘स्वीकृत भेला पर’ लिखल छल। तारा पाँति पर अँगुरि राखि देलीह। “ई अग्रिम नहि, सम्भावित भविष्य अछि। ओहि बीच पार्वती सूत कोना किनतीह?” पार्वती लग ठाढ़ पवित्रा कहलनि, “विद्यालयक बकाया एक्के नहि निपटल; दोसर काज उधार करि हम कतेक दिन धरि घर चलाएब?” सहायक बजल, “सुरक्षा रुकल तँ उत्तरदायी कियो होएत।” तारा शान्त स्वरमे कहलनि, “जँ श्रमिक भूखल काज करत, तकर उत्तरदायी कियो नहि?”

श्यामक फोनपर घरसँ सन्देश आयल—नावक डाँड़क ग्राहक फेर आएल छल आ दोसरा कार्यशालामे जाएबाक कहि गेल। श्याम फोन बन्द कएला बाद तारा दिस

देखलनि। “हम काल्हि ओकरा ठाढ़ राखलहुँ। आइ फेर आधा दिन गेल; ई गुमाएल दाम अपन बहियामे लिखब?” तारा कहलीह, “अवश्य। मुदा नगरक बिलमे जाहि काजक देय मिलत नहि, ओकरा जबर्दस्ती नगरक खातामे नहि चढ़ाएब। एहि निर्णयसँ भेल घाटा अलग लिखू; तहिना बुझब जे सार्वजनिक जाँचक बोझ ककर घरपर पड़ैत अछि।” श्यामक स्वरमे पहिल बेर तनिक रोष छल—“तखन निर्णय लेबामे देरी हम सभकेँ खाइत अछि।”

नैरा नगरक भंडारसँ मूल पंजीक प्राप्ति-पत्र लऽ पहुँचलि। ओ सुनलीह जे श्यामक निकास-रेखा आ पुरान मजदूरी-सूचीकेँ एक्के नक्शाक संग जोड़बाक बात उठि रहल अछि। “जाहि पन्नापर ‘लाल टोपी’ आ ‘मोती’ लिखल अछि, ओकर भुगतानक मोहर-पंजी एखन नहि भेटल,” ओ स्पष्ट कएलीह। “नक्शा जाँचए लेल पुरान नाम सार्वजनिक करबाक आवश्यकता नहि। स्थानीय बिनौटक रेखा जँ कामक अछि, तँ श्याम आ ताराक काजक श्रेय लिखू; पुरान श्रमिकक निजी नामक विवाद अलग सुरक्षित जाँचमे रहत।”

पट्टाक प्रतिनिधि कहलनि, “एहि पुरान नाममे ‘छोट नाव’ छल। लोक कहैत अछि बच्चाकेँ कोनो नावमे लुकाओल गेल।” नैरा ओकर बात बीचमे रोकलीह। “कहैत अछि—के? कोन दिनक प्रत्यक्ष साक्ष्य? कोन बालक? एहि फाटकक मजदूरी-सूची आ बच्चा-अपहरणक अफवाह दू अलग प्रश्न छथि। एकटा शब्द देखिकऽ दोसर अपराधक निर्णय नहि करब।” प्रतिनिधि पुरान धुँधल तस्वीर देखाएबाक प्रयास कएलक। नैरा फोनक पर्दा अपन दिस घुमाबए नहि देलीह। “बच्चाक सुरक्षित जाँचक रास्ता अलग अछि। एतय ओकर चित्र फैला कऽ हम प्रमाण नहि बना रहल छी।”

अदिति किछु क्षण मौन रहलि। फेर ओ स्थानीय खर्च-पंजी खोललीह। पूर्वमे स्वीकृत सुरक्षा-घेराक मदमे एतेक राशि बचल छल जे सीमित समयक चारि वस्तुगत काज लेल अग्रिम भुगतान कएल जा सकैत छल; सभ जाँच लेल नहि। ओ प्रस्ताव देलीह—आजुक पट्टी, बाँसक चिन्ह आ सुरक्षित दूरी चिन्हेबाक एक दिनक काम, आधा निर्धारित देय अग्रिम; बाकी मापन-प्रमाणित भेलापर निश्चित तिथिपर। एक्के कुल रकमक बदला अलग-अलग नामसँ प्राप्ति-पत्र बनत। “ई निर्णय हमर अधिकार-सीमाक भीतर अछि,”

ओ कहलीह, “जाहि अतिरिक्त नापक लेल बजौल गेल छल, तकर स्वीकृति हम एखन नहि देब।”

तारा पुछलीह, “आ श्रेय?” अदिति कागदमे नव पाँति जोड़लीह—‘स्थानीय बिनौट आ सुरक्षित चिन्हक नमूना: श्याम मल्लिक, तारा बिनौट; बुनाइ: पार्वती ताँती; गँथाइ: पवित्रा पटवा; जलमार्ग-जाँच: हीरा सहनी।’ तारा तुरन्त देखलीह जे एहिमे ‘नक्शा’क उपयोगक सीमा नहि लिखल। अदिति पाँति दोसर बेर सुधारलीह—नमूनाक फोटो, नकल वा निर्माणमे उपयोग लेल अलग पूर्व-सहमति; सार्वजनिक सुरक्षा-चिन्हक दृश्य उपयोग स्वीकृत। श्याम अपन मॉडल देखैत कहला, “हमरा भरोसा एतयसँ शुरू होइत अछि, समाप्त नहि।”

हिसाब दऽ रहल कर्मचारी पार्वती आ पवित्राक नाम एक्के कागदपर राखब चाहलक। पवित्रा अपन अलग रसीदक प्रति निकाललीह। “हमर घरक देय पार्वतीक घरमे नहि जायत; हुनकर घरक देय हमरा नामपर नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। पार्वती जोड़लीह, “मुदा एक-दोसराक काज देखल बिना ई सुरक्षा-पट्टी बनितो नहि। अलग भुगतानक अर्थ अलगाव नहि।” कर्मचारी दू पर्ची बनौलक; पवित्रा अपन गुँथलक गाँठ गनौलीह, पार्वती प्रत्येक थानक लम्बाइ नपौलीह। छोट गणनाक ई समय लोकसभा-जेकाँ लगैत छल—कियो बेसुर बजैत नहि छल, मुदा प्रत्येक अपन आवाज सुनाबए चाहैत छल।

जखन अग्रिमक प्राप्ति-पत्र तैयार भेल तँ श्यामक नाम लग भुगतानक तरीका ‘खातामे स्थानान्तरण’ लिखल छल। श्याम अपन खाताक जानकारी देलनि; पवित्रा कहलीह जे अपन खाता चालू अछि मुदा ओतय जमा होएबाक सन्देश बिना काज पूरा मानतीह नहि। नगरक कोषपालकेँ बजाओल गेल। उपलब्ध राशि आ प्राप्तिक आधार मिलाकऽ चारि कारीगरक अग्रिम ओहि दिन जमा करबाक निर्देश भेल। तारा कहलीह, “बैंकक आदेश आ पानिक चिन्ह दुनू सत्यापित होएत; हस्ताक्षरक बलपर रकम पहुँचल मानि नहि लेब।”

साँझसँ पहिने पहिल छोट भुगतानक सन्देश पार्वतीक फोनपर आबि गेल। ओ पवित्रा दिस देखलीह। पवित्राक फोन मौन छल। किछु देर बाद पवित्राक खातामे सेहो रकम दर्ज भेल। श्यामकेँ नगरक कोषपाल कागदक भुगतान-पुष्टि देखौलनि, मुदा हुनकर फोनमे सूचना नहि छल; ओ अपन बहियामे ‘भेजल, पहुँचब जाँचबाक’ लिखलनि। तारा अपन

अग्रिमक राशि देखलीह, फेर पुरान बकायाक पाँतिपर अंगुरी रखलीह। “नव देयक आधा मिलल अछि,” ओ कहलीह। “काल्हिक पुरान काज एखनहुँ उधार अछि।” अदिति लिखित रूपमे ओहि दावाक सुनवाइक दिन देलीह; भुगतानक आश्वासन नहि।

चिन्ह लगएबाक समय अएल तँ तारा पहिने माटिक ढलान पर ठाढ़ भऽ गेलीह। ओ छोट बच्चाकेँ बजाकऽ देखएबाक बदला वयस्क सहायककेँ सुरक्षित कातसँ चलबाक कहलनि। जड़ ठाम चक्का खसबाक डर छल, ओतए पार्वतीक पीयर पट्टी देखाइत छल; लाल गाँठ सँकर मोड़ चिन्हबैत छल। हीरा लग्गीसँ पानिक गहिराइ फेर देखलनि। श्याम बाँसक छड़ केवल माटिमे रोपल चिन्हसँ जोड़लनि, भार धएबाक पाट नहि बनौलनि। कोनो लोक ओकर ऊपर चढ़ि नहि सकैत छल। ई व्यवस्था अस्थायी चेतावनी छल, फाटकक मरम्मत नहि।

कामक बीच तारा देखलीह जे सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि एकटा पीयर पट्टी अपन खेतदिसक कात सरकाबए चाहैत अछि। ओ हठात् हुनका रोकलीह। “नाप-बिन्दु एतय बनल अछि। अहाँ सरकाएब तँ कागदक चिन्ह आ जमीनक चिन्ह अलग भऽ जायत।” प्रतिनिधि कहलक जे ओकर खेतक बाट बेकार बन्द भऽ रहल अछि। तारा कहलीह, “अहाँक दावा लिखब; सुरक्षा-चिन्ह अपन मनसँ बदलि नहि सकब। सार्वजनिक निकासक स्वामित्व आ खेत धरि अहाँक अधिकार एखन निर्णीत नहि।” अदिति प्रतिनिधिक आपत्ति तिथि समेत लिखलीह। दूनू पक्षक विवाद असहमतिक रूपमे बचल रहल, मुदा चेतावनीक पट्टी वापस जाँचल ठाममे लागल।

आकाशमे पातर बदरी घेराए लागल। श्यामक बेटा दूरसँ बापकेँ देखबाक लेल आयल आ बहीक कोनामे बनल चारि चौकोर खाँचा पढ़ए चाहलक। श्याम ओकरा अपन बरसों पुरान बाँसक औजार देबाक बदला नया पेंसिल देलनि। “ई चौकोर देख,” ओ कहलनि, “पहिलमे वस्तु, दोसरमे ककर हाथ, तेसरमे कतेक समय, चौठमे दाम। अहाँ पढ़ि कऽ कहू जे ककर पाँति छुटल।” बेटा पवित्राक नामपर अटक गेल। पवित्रा हँसि कऽ अपन नाम खुद पढ़ि सुनौलीह। “सभकेँ अपन नाम पढ़ए आबय, तइसँ पहिने कागदक गलती नहि बचत,” ओ बजलीह।

काज समाप्त भेलापर नैरा तीन कागद अलग थैलीमे रखलीह। पहिल सार्वजनिक सुरक्षा-आदेश—ककरा, कोन काम लेल, कतेक दाम। दोसर निजी मजदूरी-पंजी—जेकर मूल नाम आ भुगतानक सत्यापन शेष। तेसर बच्चासँ सम्बन्धित अफवाहक जाँचक सूचनापत्र—एहि सभा लेल नहि। ओ तारा सँ कहलीह, “आइ एकटा दावा परखल गेल: बिना देयक स्वैच्छिक सहयोग मानि कऽ तैयार कएल आदेश चलल नहि। ओकर बदला सीमित भुगतानवला आदेश बनल।” तारा कहलनि, “एकटा आदेश सुधरल अछि। जखन पानि चढ़त, एहि नापमे छूटल बाट सभ फेर अपन हिसाब माँगत।”

देर साँझ हीरा घर घुसबाक समय देखलनि जे पुरान असुरक्षित पाट लग कतहु नया भार-वहनक बोर्ड नहि लगल। केवल लाल-पीयर चेतावनीक फीता हवा मे हिलैत छल। श्यामक हातक बाँस अलग ठामपर सुखए लेल राखल छल; पार्वती आ पवित्रा अपन-अपन बचल सामग्री लऽ गेलीह। तारा बही बन्द करैत कहलीह, “सहयोगक पहिल दाम एतबे भेटल जे जेकर श्रम अछि, ओकर नाम आ आगत रकम लिखल गेल। मुदा जे लोक अपना खेतक पानि रोकब नहि चाहैत, ओ ई सहमति सहजेसँ मानत की?” हीरा उत्तर देलनि, “पानि उठलापर मित्रता आ भय दुनूकेँ फेर नापए पड़त।”

रातिमे सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि नगर कार्यालयक बाहर सार्वजनिक आदेश पढ़ैत रहल। तारा आ श्यामक नाम लग ओ ठिठकि गेल। ओ अदिति सँ कहलक, “एहि नक्शापर अन्तिम हस्ताक्षर नहि भेल; तखन हमर खेतक बाट के बन्द कराओत?” अदिति उत्तर देलीह, “कियो स्थायी अधिकार नहि बदललक। जे खतरा देखल गेल, ओकर चेतावनी अछि। अगिला सुनवाईमे अहाँक आपत्ति आ स्थानीय श्रमिकक नाप दुनू रहत।” प्रतिनिधि पर्ची मोड़ि लेल, मुदा मनक संशय नहि गेल। अदिति भीतर नाप-बहीक प्रति सुरक्षित करैत छलीह; कागदक कातमे तीन असहमत पक्षक नाम लिखल छल।

अध्याय ५० • सुग्रीवक भय

फाटकक पीयर पट्टी पर सबेरक ओस एखन धरि अटकल छल। उमा राजधोब तीनटा भीजल चादर नीकसँ निचोड़ि बाँसक अलग-अलग छड़पर पसारि रहल छलीह। प्रत्येक छड़क छोरमे कागदक छोट टुकड़ा बान्हल छल—ग्राहकक नाम नहि, हुनक अपन बहियाक क्रमाङ्क। दूरसँ एक रंगक लगैत चादरसभक फाटल कोर, पुरान दाग आ भारी किनार उमाकेँ अलग-अलग बुझाइत छल। ओहि समय पट्टाक प्रतिनिधि अपना दू सहायकसँ संग घाटक ऊपर उतरल। ओकर हाथमे काल्हिक सुरक्षा-आदेशक मोड़ल प्रति छल।

“ई पीयर चिन्ह ककर कहबापर लागल?” ओ पुछलक। उमा कपड़ा नीचाँ नहि रखलीह। “नगरक आदेश देखबाक अछि तँ फाटकक कातमे पढ़ू। ई हमर सुखेबाक छड़ अछि; एकर कारण बाट बन्द भेल हो तँ बताउ।” प्रतिनिधि कहलक, “बाट तँ काल्हिसँ बन्द बुझू। खेतक लोक भयभीत अछि। बाहरक नाप करनिहारकेँ राज चलए देब?” उमा बहस बढ़एबासँ पहिने चादरक किनार बान्हि देलीह; ग्राहकक कपड़ा समयपर देबाक छल।

श्याम आ तारा फाटकक पातर कातपर पहुँचलाह। तारा पीयर पट्टी लगला बाद बनल नव पयर-चिन्ह देखलीह। लोक खेतदिसक सँकर आर्द्र पगडंडी पकड़ने छल। “खतरा हटाओल नहि गेल,” ओ अदितिक आगमनपर कहलीह, “मात्र लोकक चलबाक दिशा बदलल अछि। जँ दोसर बाट सेहो असुरक्षित अछि तँ ओकरा लुकाकऽ पहिल चिन्हक सफलता नहि लिखब।” प्रतिनिधि कहलनि, “हमर खेतदिसक बाटकेँ खतरा कहब तँ हमर अधिकार कमजोर पड़त।” तारा उत्तर देलीह, “ककर अधिकार अछि से नाप तय नहि करत; कता पयर फिसलत से नाप देखाएत।”

अदिति सुरक्षा-आदेश खोललीह। सीमित अग्रिमक दू पुष्टि आ बाँकी जाँच अलग दर्ज छल। ओ कहलीह जे चेतावनीक व्यवस्था जारी रहत, मुदा आजुक बैठकमे स्थायी फाटक खोलबाक आदेश नहि बनत। प्रतिनिधि कड़क स्वरमे पुछलक, “तखन खेतक पानि ककर इच्छासँ रोकल रहत?” हीरा सहनी लग्गी खड़ा कएने सुनि रहल छलाह। “पानि रोकल

अछि कि रास्ता सँकर भेल अछि, ई दुनू बात एक नहि,” ओ कहला। “आजुक स्तर, निकासक मुँह आ बाँसक चिन्ह फेर देखब। साल भरिक क्षमता हम कहलहुँ नहि।”

उमा अपन चादरक ओरियन सँ तारा लग अएलीह। हुनकर चिन्ता ग्राहकक पथ छल। “काल्हि एकटा घरसँ कहल गेल जे घाटपर आब धोनाइ केवल पुरान ठेकावला लोक करत,” ओ कहलीह। “आब हमर तीन ग्राहक दोसर ठाम कपड़ा पठाबए लागल। हमर कोनो ठेका नहि छल, केवल अपन नियमित ग्राहक। जे बाटपर झगड़ा होइत अछि, ओकर हल्लामे हमरो काम बन्द भऽ जाइत अछि।” तारा कहलीह, “एहि दावाक स्रोत लिखाउ। चेतावनी आदेशमे कोनो धोनाइ-एकाधिकार नहि देल गेल अछि।”

चबूतरापर उर्मिला रजक कपड़ा गनैत छलीह। ओ उमा सँ पुछलीह, “अहाँ चाही तँ हमर पालामे ऊपरक छाँह उपयोग करू। मुदा कपड़ा, ग्राहक आ देयक बहिया अलग रहत।” उमा पहिने मुस्की देलीह, फेर रुकि गेलीह। “छाँह एतय लेब तँ लोक कहत जे हम उर्मिलाक अधीन काम करैत छी। हमरा अपन मोल-मजदूरी तय करबाक चाही।” उर्मिला निश्चिन्त स्वरमे उत्तर देलीह, “हुनका कहए दिअ। हम दुनू एक-दोसराक मालिक नहि। जँ घाटक सुरक्षित पानि आ कपड़ा सुखेबाक जगह मिलि कऽ लेब तँ ओकर साझा देय लिखि सकैत छी।”

बाजारक सराय उमाक सबसँ पैघ ग्राहक छल; दाम ओ एकतर्फा तय करैत छल। ओहि परिवारक बाहरी आदमी आइ फेर आयल छल। ओ कहलक, “जँ अहाँ आ उर्मिला एक्के चबूतरापर काम करब तँ सरायक सभ कपड़ा एकटा नामपर देब। मोल सेहो हम तय करब।” उमा ओकरा देखैत रहलीह। ओहि दामसँ घरक अनाज चलैत छल। ओ अपन बहियाक पुरान देय खोललीह—तीन बेर देर सँ भुगतान, एक बेर अतिरिक्त काज बिना दाम। “एहि करारमे हमर हाथक दाम कम होइत रहल,” ओ धीमे कहलनि, “एक्के ग्राहक बचाएब तें ई शर्त कतेक बेर सहब?”

“तखन कोन शर्त चाही?” उर्मिला पुछलीह। उमा चबूतराक माटिपर आँगुरिसँ तीन गोला बनौलीह। “पहिलमे प्रत्येक घरक कपड़ा अलग क्रमाङ्कसँ आएत आ वापस जायत। दोसरमे धोनाइक मजदूरी प्रत्येक कारीगरक नामपर तय होएत। तेसरमे छाँह, पानि ढोअनाइ आ सुरक्षित बाटक साझा खर्च अलग बहियामे। कोनो ग्राहक पूरा दलक

मोल एक जनाक संग नहि तय करत।” उर्मिला चौठ गोला बनौलीह। “जे पानि अपरीक्षित अछि ओकरा कपड़ा आ देहसँ दूर राखब; जाँचक खर्च ककरा देबाक अछि से सेहो लिखब।” उमा ओ चौठ गोला मिटौलीह नहि।

सरायक आदमीक मुख तनिक उतारि गेल। “एतेक कागदक बाद सस्ता धोनाइ कोना होएत?” ओ कहलनि। “भेल तँ सस्ता नहि होएत,” उमा उत्तर देलीह। “मुदा कपड़ा गुम भेल तँ ककर जिम्मेवारी, बकाया रहल तँ ककर घरक अनाज रुकल—से साफ होएत।” सरायक आदमी पुरान दर देबाक बदलामे उमाक सभ समय अपना लेल माँगलक। उमा पहिल बेर साफ मना कएलीह। एक क्षण ओ अपन छोट बेटीक फीसक बात सोचलीह, मुदा ओहि विचारसँ हुनकर उत्तर नहि बदलल।

चबूतराक दोसर कात शान्ति बारी विवाहक सामानक दू पेटी लऽ कऽ पहुँचलि। एक पेटीमे मौरक छाल, फूलक धागा; दोसरमे अधबनल तोरण आ रङ्गीन गाँठ छल। पेटीक एक छोर भीजल छल। “काल्हिक बाट बदललाक बाद गाड़ी घाटक ऊपरसँ घुमि गेल,” ओ कहलीह। “एखन एतय सुखए देब, नहि तँ रंग छूटि जायत।” उमा अपन एक छड़क जगह सरका देलीह; शान्तिक पेटी चादरपर नहि, खाली मचानपर राखल गेल।

शान्तिक संग दुइटा स्त्री आयल छलीह, जे लगक टोला सँ विवाहक सामग्री मँगब चाहैत छलीह। एक कहलीह, “घरमे तुरन्त तारीख पड़ल अछि, अखन आधा सामान दऽ दिअ। पैसा विवाहक बाद।” शान्ति पिछला सालक उधारीक पन्ना देखौलीह—दू परिवारक नामपर सामग्रीक दाम कटला बादो ‘धन्यवाद’ लिखल छल, भुगतानक चिह्न नहि। “आनन्दक घरमे हम श्रेय लऽ सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा ओहिसँ हमर छाल, सूत आ समय नहि किनाएत।” आगन्तुक स्त्री माथ निहुरा लेलीह।

शान्ति पेटीपर दू रेखा खींचलीह। “सामग्रीक लागतक आधा अग्रिम—जे काज अहाँक लेल विशेष रङ्गमे बनत। शेष हस्तान्तरणक दिन। जँ परिवार असमर्थ अछि तँ अलग सहयोगक कोषसँ मदद लिअ, मुदा सहयोगक नामपर हमर मजदूरी माफ नहि।” ओ घुरलीह। “आ जे तैयार सामान साझा प्रयोगक अछि, ओकर किराया आ टूटल वस्तुक हिसाब अलग। प्रत्येक विवाहक सामान केओ एक्के बेर नहि कीनत।” उमा मुँह खोलि

कहलीह, “अहाँक नियम हमरा घाटपर बनाबएवला नियमजेकाँ अछि—ग्राहक बचए, मुदा कारीगरक नाम नहि मेटाए।”

दुपहर धरि शान्ति दू पत्र बनौलीह। पहिल विवाहक लेन-देनक नमूना—छाल, धागा, रंग, समय, अग्रिम आ अन्तिम देय। दोसर सहयोग लेल स्वैच्छिक चन्दा—ककरा सँ कतेक मिलल आ कोना उपयोग भेल। ओ चन्दाक पन्नाकेँ अपन मजदूरीक पन्नासँ अलग कपड़ामे बाँधि देलीह। पहिल स्त्री अग्रिमक वचन नहि देलीह, मुदा दोसर साझा तोरणक किराया जमा कऽ रसीद लेलनि। शान्ति अपन नियमक पहिल वास्तविक हिसाब लिखि लेलनि।

एहि बीच फूलो चौरसिया पानक खेतसँ लौटि आयलीह। हुनकर हाथमे पुरान परिवार-पत्रक तह छल, जाहिपर एक ठाम ‘खिरोड़’ लिखल रहए। नव खर्च-पर्चीमे फूलोक खेतकेँ निकासक लाभार्थी कहि अधिक देय माँगल गेल छल। फूलो पत्रक किनार तारा समक्ष पसारलीह। “हमर दादाक बहियामे ई नाम अछि; तकर दू पुरान खर्च-पाँति सेहो अछि। मुदा आइ जकरा लाभ कहल जा रहल अछि, ओकरा पानि खेतमे ठाढ़ रहिते की लाभ?”

तारा देखलीह—पत्रमे नाम आ दू पुरान खर्च-अंक अछि, स्पष्ट भू-नाप नहि। “खिरोड़क नाम एहि परिवार-पत्रमे प्रमाणित अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहि कागदसँ एकर आजुक फाटकसँ सीधा संगम सिद्ध नहि होएत। एहन दावाक लेल नक्शा, माप आ समय-संगत अभिलेख चाही।” फूलो पत्र समेटलीह। “हमरो ई चाही। मुदा हमर नामपर लाभ लिखि कऽ निकासक खर्च तय कऽ देब, ई पत्र ओहि बातकेँ रोकबाक लेल देखौलहुँ।”

सिंचाइ-पट्टाक प्रतिनिधि तकरा सुनि रहल छल। ओ कहलनि, “जँ प्रत्येक घर अलग लाभ-हानि गनत तँ पट्टाक सामूहिक निर्णयक मूल्य की?” तारा पुछलीह, “सामूहिक निर्णयक अर्थ की, जतए एक घरक लागत दोसर घरपर थोपि देल जाए? काल्हि अस्थायी चेतावनी लेल मजदूरीक अलग हिसाब बनल। आइ जँ निकासक खर्च बाँटब तँ खेतमे पानि कतेक दिन, ककरा बाट बन्द, ककरा बासन धोबामे कठिनाइ—ई सभ अलग सुनब।” प्रतिनिधि स्वीकार नहि कएलनि; तथापि ओ फूलोक लिखित आपत्ति लेबाक सहमति देलक।

ऋष्यमूकक पाथर पर सुग्रीवक भीतरक भय घटल नहि छल। किष्किन्धासँ निकललाक बाद प्रत्येक पातक खरखराहटमे हुनका वालीक दूत बुझाइत छल। हनुमान राम आ लक्ष्मणसँ भेंटक समाचार लऽ अयलाह। “दूनू भ्राता सीताक खोजमे छथि,” हनुमान कहलनि, “हुनका बल अछि, मुदा पहिने अहाँक कथा सुनबाक अभिलाषा सेहो।” सुग्रीव दूरक घाटी दिस तकलनि। “बलिया आदमीक वचन सुनए पहिने ओकर बलक सीमा पुछब जरूरी अछि,” ओ उत्तर देलनि।

रामक समीप पहुँचला पर सुग्रीव अपन निर्वासनक कथा सुनौलनि। गुफाक द्वार, लौटबाक प्रतीक्षा, भीतरक भयावह ध्वनि, रक्त देखिकऽ लेल निर्णय, आ तकर बाद वालीक क्रोध—सुग्रीव अपन पक्षक स्मृति एक-एक कऽ कहलनि। “हम ओहि दिन जे देखलहुँ, ओकर अर्थ ई मानलहुँ जे भ्राता अब नहि लौटताह,” ओ कहलनि। “मुदा जे हमर निर्णय छल, ओकरा वाली विश्वासघात बुझलनि। हुनकर बलक आगाँ हमर स्पष्टीकरण सुनल नहि गेल।” राम सुनलनि; ओहि कथा भरिमे केकरो अनुपस्थित पक्षक निर्णायक फैसला तत्काल नहि सुनौलनि।

सुग्रीव वचनक शर्त स्पष्ट कएलनि। “अहाँ सीताक खोज चाहैत छी; हम निर्वासनसँ सुरक्षा आ अपन राज-अधिकारक सुनवाई। हमरा डर अछि जे वाली हमरा मारि सकैत छथि; आ हमरा ईहो डर अछि जे सहयोगक बाद जे राज हाथ लागत, ओहि पर हमर अपन बचल लोकक कतेक अधिकार रहत। मित्रतासँ ई प्रश्न नहि मेटाएत।” हनुमान हुनकर भय छिपौने बिना रामक सामने रखलनि। राम कहला जे सीताक खोजमे सुग्रीवक सहायता आवश्यक अछि, आ सुग्रीवक दुःख सुनबाक दायित्व सेहो। मुदा सुग्रीव पुनः पुछलनि —“जँ दू भ्राताक कथा विपरीत भेटत, तँ अहाँक बाण केकर वचन मानत?”

पाथरक किनारपर सूखल घास झुकल। राम तखन प्रतिज्ञाक बड़प्पन देखएबाक बदला प्रश्नकें टारलनि नहि। “हम अहाँक सुरक्षा लेल मित्रता चाहैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा जे बल न्याय लेल उठत, ओकर कारण पूछल जाएब उचित अछि।” सुग्रीवक भय समाप्त नहि भेल, मुदा ओ छिपाएब छोड़लनि। हनुमान देखलनि जे एखन राजक निर्णय नहि भेल अछि, मुदा दू पक्ष अपन-अपन अभाव आ अपेक्षा खुलि कऽ कहबाक बाटमे प्रवेश कएने छथि। आगामी काज एहि वचनक कठिन परीक्षा लेत।

विदेहपुरमे दुपहरक बाद हवा तेज उठल तँ शान्तिक पेटीक छालक पातर छोर फड़फड़ाए लागल। उमा चादर समेटलीह; शान्ति पेटीक ढक्कन दबौलीह। ओहि समय सरायक आदमी पुनः आबि गेल। “हम आन धोबि लग गेनहुँ,” ओ उमासँ कहलक, “ओ कम दरपर सभ काज लेत। अहाँ चाही तँ पुरान मोलपर एक्लह सहयोग करू।” उमाक छातीमे चुभन भेल। उमाक माता एही सरायक कपड़ा बरिसो धरि धोने छलीह; स्मृति करार नहि छल।

उमा कहलीह, “अहाँ दोसर कारीगर चुनि सकैत छी। मुदा हमरा कहल नहि जाए जे हमर ग्राहक बचए लेल आन घरक मजदूरी कम करवाऊ वा ओकर नाम हटाऊ। हमर तीन नियमित ग्राहक सभकेँ हम अपन नव नियम लिखि दैत छी।” सरायक आदमी ठहरि गेल। “जँ आधा दामकेँ मना करब तँ अहाँक घाटा अहाँक,” ओ बजल। उमा उत्तर देलीह, “घाटा हम लिखब। पहिले एतबा तऽ बुझलहुँ जे घाटा ककरा नामपर होइत अछि।” ओहि क्षण हुनकर निर्णय वीरताक बाजा नहि, घरक भीतर अनाजक चिन्ताक नीका सन्नाटा बनि रहल छल।

उर्मिला उमाक लग अएलीह। “हमर अस्पतालक धोनाइ एखन अपन अलग रसीदपर चलत,” ओ कहलीह। “हम ओकर ग्राहक नहि सौँपि सकैत छी। मुदा सुरक्षित चबूतराक समय बाँटि सकैत छी—सबेरे अहाँ, दोपहर हम, साँझ जँ पानि घटल तँ फेर नाप। साझा सुखेबाक छड़क खर्च आधा-आधा। एकटा छोट तालिका बनाबी?” उमा कहलनि, “आ जँ चबूतरापर दुर्घटना भेल तँ?” उर्मिला हँसलीह नहि। “तखन पहिले काज रोकब, घाव देखब, आ सार्वजनिक बाटक जाँचकेँ खबर देब। ई छड़ सुरक्षित पुल नहि।”

शान्ति अपन दू पत्र आगाँ सरकौलीह। “हमर सामग्री अलग, चन्दा अलग; अहाँक ग्राहक अलग, छाँह अलग। दुनू नियमकेँ एक्के सभा मे पढ़ल जाए तँ लोक सोचत जे हम सभ मिलि कऽ दाम बढ़ा रहल छी।” उमा कहलीह, “तखन प्रत्येक अपन वस्तु आ कारणक संग बोलत। मोल सभ मिलि तय करत।” शान्ति पुछलीह, “जे परिवार सचमुच देबासँ असमर्थ अछि?” उमाक उत्तर छल, “तकर सहायता लेल खुले पंजी बनत। कारीगरक मजदूरी गुपचुप काटि कऽ दान नहि देल जाएत।”

आगाँ नगरक सहायक सार्वजनिक सूचनापटपर लिखब चाहलक—‘घाटक धोनाइ कार्य संयुक्त रूपसँ हस्तान्तरित’। उमा पाँति पढ़िते कागद रोकलीह। “के हस्तान्तरित कएलक? ककरो?” सहायककेँ एना लिखब आसान लगैत छल। उर्मिला आगाँ बढ़लीह। “सहकारीक साझा छाँह आ समय-बाँट अलग बात अछि। अस्पतालक करार, उमाक ग्राहक आ हमर निजी मजदूरी केओ ककरो हाथ नहि सौंपलक।” सहायक शब्द काटलक आ लिखलक—‘सुरक्षित चबूतराक अस्थायी साझा उपयोग; प्रत्येक कारीगरक ग्राहक आ मजदूरी स्वतंत्र।’

अदिति फाटकक जाँच-फलक लऽ अएलीह। ओहिपर जाँचल सुरक्षित कात, अनिश्चित कात आ निषिद्ध निचला फाटक चिन्हित छल। प्रतिनिधि तुरन्त असहमति लिखौलनि—एकटा चिन्ह हुनकर खेतक गाड़ी-बाट लग छल। अदिति उत्तर देलीह, “ई स्थायी बन्दिश नहि; बारिश आ भार-दूनू जाँच बिनु सुरक्षित कहब गलत होएत। अहाँक आपत्ति नामसहित रहत।” तारा कहलीह, “हमर स्थानीय नाप लागत बहीमे रहत, मुदा जे किछु अभियान्त्रिक परीक्षण बाकी अछि ओकरा पूरा कहल नहि जाए।”

सभाक अन्तमे नैरा पुरान मजदूरी-पंजीसँ उठल पुकारनामक प्रसंग पर ध्यान दिऔलीह। एक प्रतिनिधि नाम-सूचीक ‘छोट नाव’ पुकारनामकेँ फाटकक बाटपर अधिकार जतौनिहार परिवारसँ जोड़लक। नैरा मूल पृष्ठ मँगौलीह। नाम लग तिथि अपूर्ण छल आ भुगतान-पत्र अनुपस्थित। “पुकारनामसँ ककरो अधिकार वा अपराध निर्धारित नहि होइत,” ओ कहलीह। “अहाँ जे जीवित व्यक्ति कहैत छी, हुनकर पहिचान आ भूमि-दावा अलग रेकर्डमे जाँचल जाएत। एहि पुकारनामक कारणसँ फाटकक नाप नहि बदलत।”

फूलो अपन परिवार-पत्रक प्रतिलिपि नैराकेँ देबासँ पहिने पुछलीह, “ई सभ लोक पढ़ि सकत?” नैरा स्पष्ट कएलीह जे सार्वजनिक सुनवाइ लेल केवल खिरोड़ नामवला प्रविष्टिक सत्यापित उतार, तारीखक स्थिति आ खर्चक सामान्य उल्लेख पर्याप्त अछि; परिवारक निजी लेन-देनक शेष पृष्ठ बन्द लिफाफामे रहत। फूलो सहमति दैत कहलीह, “क्षति जाँचू, निजी ऋण बजारमे नहि फेरू।” तारा एहि सीमा-सूचनाकेँ अपन नाप-पत्रक संग जोड़लीह।

साँझक पहिल दियाबाती समय उमाक बेटी किताब लऽ चबूतरापर आयलि। “माए, सरायक कपड़ा नहि?” ओ पुछलक। उमा हाथमे भीजल बहिया सम्हारैत उत्तर देलीह, “ओ काज आनठाम गेल। एतय एखन दू घरक कपड़ा अछि।” बेटी हिसाब जोड़ए बैसि गेलि। उमा ओकरा रोकलीह नहि, किन्तु कहलीह, “हिसाब पढ़ब, एतेक भरि चाही; हमरा संग घाटपर आउएब जरूरी नहि। अहाँ जे पढ़ए चाहैत छी से पढ़ू।” बेटी उमाक बहियामे ‘साझा छाँह’ लिखल पाँतिक नीचे पेन्सिलसँ छड़, साबुन आ समयक अलग निशान बनौलक।

शान्ति अपन पेटी समेटैत एक स्त्रीकेँ तैयार तोरण देलीह। स्त्री अग्रिमक रसीदपर अँगूठा लगौलीह; शान्ति वस्तुक गिनती हुनका सुनौलीह आ शेष रकमक दिन स्पष्ट कएलीह। “हमार बेटी विवाहमे ई रङ्ग चाहैत अछि,” स्त्री खुशीसँ कहलीह। शान्ति उत्तर देलीह, “ओकरा रङ्ग चुनए दिअ; बाकी माल बनएबाक श्रम हमर रहत।” सहमतिमे न अपमान छल, न मजदूरीक लाज।

राति पड़लापर पट्टाक प्रतिनिधि नाप-फलकक कात ठाढ़ भऽ बहुत देर धरि पानि देखैत रहल। ओ अदिति सँ कहलक, “डर अछि, अस्थायी चिन्ह स्थायी सीमाक प्रमाण बनि जायत।” अदिति उत्तर देलीह, “डर लिखू। चिन्हक अवधि, आजुक नाप आ जाँचक सीमा सेहो लिखब। जे नहि जाँचल गेल ओकरा अधिकारक प्रमाण नहि बना सकैत छी।” प्रतिनिधि अपन आपत्ति-पत्र फेर पढ़लक आ एकटा शब्द बदलौलक—‘भूमि छीनल’क स्थानपर ‘बाटक अस्थायी उपयोगमे कठिनाइ’। विवाद शेष रहल, मुदा पहिल बेर ओकर वाक्यमे काजक वास्तविक रूप लिखल गेल छल।

तारा श्यामक संग घुरैत छलीह। श्याम पुछलनि, “आइ उमाक सराय गेल, शान्तिक पहिल अग्रिम भेटल, फूलोक खेतक खर्च रोकल गेल कि नहि?” तारा उत्तर देलीह, “उमाक घाटा लिखल गेल, शान्तिक नियमक एकटा रसीद बनल, फूलोक आपत्ति सुनवाई धरि पहुँचल। खर्चक फैसला एखन नहि। तीन परिणाम एक्के तराजूमे नहि तोलब।” श्याम किछु दूर मौन चललाह। तखन पुछलनि, “पुरान कथामे सुग्रीव अपन डर कहला बाद मित्रता पाबि गेलाह; एतय लोक अपन डर कहला बादो विश्वास किएक नहि पबैत?” तारा

कहलनि, “भय कहब सुनबाक पहिल शर्त अछि। तकर बाद प्रश्न रहैत अछि—ककरा सुनि निर्णय लेल जाए?”

तारा नाप-बहीमे तीन खण्ड बनौलीह। पहिल—आजु देखल जोखिम, जेकरा लेल अस्थायी सुरक्षा रहत। दोसर—जाहि घरक लाभ-हानि एखन विवादित अछि, विशेषतः फूलोक खेत आ पट्टाक बाट। तेसर—जाहि स्थानीय ज्ञानक श्रेय आ पारिश्रमिक एखन लिखबाक बाकी अछि। अपन नाम लिखि ओ कलम रोकलीह। अगिला जाँचमे पुरान चिन्ह वर्तमान नापसँ मिलत; मुदा केकर आवाज गणनामे रहत, ई तय करब बिना रेखा पूरा नहि मानल जा सकैत छल।

अध्याय ५१ • ताराक गणना

फाटकक दहिन कात सबेरक पहिल छाँह पहुँचए धरि तारा बिनौट तीन बेर डोरी खोलि चुकल छलीह। एक बेर खम्भासँ खम्भा, दोसर बेर चलबाक पटरीपर, तेसर बेर रातिक वर्षामे कटि गेल जमीनपर। श्याम मल्लिकक हाथमे खड़िया रहए। ओ पहिल डोरी उठबैत पुछलनि, “जँ नगरक नक्शामे पहिल नापे लिखल रहत तँ बाकी दुनू ककर कामक?” तारा उत्तर देलीह, “पहिल खम्भाक दूरी अछि, दोसर चलबाक बाट, तेसर टूटबाक भय। तीनूकें एक्के अड़कमे जोड़ब तँ आदमी खसत, कागद नहि।”

अदिति अभियन्ता नाप-बही देखए आयलीह तँ फाटक लग पट्टाक दू प्रतिनिधि पहिनेसँ ठाढ़ छल। एक प्रतिनिधि कहैत छल बाँस खेत-बाट रोकैत अछि; दोसरकें डर छल बाँस हटला पर गाड़ी सँकर भागसँ उतरि जायत। तारा खड़ियासँ धरतीपर ओहि ठाम एकटा वृत्त बनौलीह जतए काल्हि गाड़ीक चक्का धँसल छल। “ई चक्का देखल गेल अछि, मुदा ई चिन्ह ककरा भूमि अछि से हम नहि कहि सकैत छी,” ओ कहलीह। अदिति नाप अंकित कएलीह, प्रतिनिधिसभ अपन-अपन आपत्ति फेर लिखौलनि।

श्याम कागदपर बनल तीन खण्डक ऊपर कपड़ाक छोट पट्टी रखलनि। पहिल पर ‘प्रत्यक्ष खतरा’, दोसर पर ‘लाभ-हानिक दावा’, तेसर पर ‘श्रमक ज्ञान आ देय’ लिखल छल। तारा कहलीह, “हमर गणनामे पानीक मात्रा भरि नहि, ओहि कात उतरएवला मनुख आ ओकर काजक समयो अछि। मुदा हम अभियन्ताक प्रमाणपत्र नहि लिखब। अदिति जे मापी सकैत छथि से हुनकर जिम्मेवारी; हम जे देखलहुँ आ सुनलहुँ, ओ हमरा नामसँ लिखल जाए।”

नगरक सहायकक हाथमे एकटा पर्चा छल—‘फाटक सुधार लेल स्थानीय सुझाव प्राप्त’। ओहिमे सहायकसभक नाम छल, तारा आ श्यामक नहि। तारा पर्चा फाड़लीह नहि। ओ लाल पेन्सिलसँ प्रश्नचिह्न देलीह। “सुझाव कोन?” ओ पुछलीह। “हमर देखाओल चिन्ह नकल होएत, आ अधूरा बातकें पूरा कहि सार्वजनिक कएल जाएत? परामर्शक मतलब नाम बिना ज्ञान लऽ लेब नहि।” सहायक असमंजसमे अदिति दिस देखलक। अदिति मूल पर्चा रोकि लेलनि।

ओहि समय रुचि धारिकार आयलीह। काँखमे हुनकर बाँसल डलिया छल, ऊपर कपड़ामे लपेटल नव बुनौटक नमूना। पुरान शिल्प-प्रदर्शनीमे बच्चासभ जाहि दोहरा घूमैत पट्टीकेँ फूल कहने छल, ओहि बनावटसँ रुचि पातर चटाइ बनौने छलीह जेकरा मोड़ि फाटकक चेतावनी-खम्भा पर बाँधल जा सकैत छल। लाल आ पिअर पट्टीक बीच खाली जगह रखलासँ ओ दूरसँ अलग दीखैत छल। “देखबाक लेल लऽ आयल छी,” ओ कहलीह, “किनबाक काज एखन ठहरल अछि।”

सहायक हँसैत कहलनि, “ई तँ कार्यालयमे देखल डिजाइन जेकाँ अछि। हमरा लोकनि काल्हिए एकर छाप बनबौने छी।” ओ भीतरसँ एकटा कागद निकाललक, जाहिपर रुचिक दोहरा घुमाव जेकाँ रेखा बनल छल। नीचाँ लिखल रहए—‘नगरक स्थानीय चेतावनी-नमूना’। रुचिक हाथक डलिया धरतीपर स्थिर भऽ गेल। “हमर घरमे बनल रेखा कार्यालय धरि कोना पहुँचल?” ओ पुछलीह। कोनो उत्तर तुरन्त नहि भेटल। श्यामकेँ बुझि गेल जे जखन साझा नमूनाक फोटो लेल गेल छल, तखन रुचिक चटाइ पाछाँ राखल छल। तस्वीरमे देखला मात्रे की ओकर उपयोग सभक भऽ गेल?

“फोटोमे हमर वस्तु दीखब, आ ओकरा फेर बनाकऽ बाजारमे बेचब—दू अलग बात अछि,” रुचि कहलीह। “सुरक्षाक चिन्ह लेल अहाँक आवश्यकता बुझैत छी। मुदा हमरा परिवारक बुनौटकेँ नगरपालिका अपन आविष्कार लिखि देत तँ हमर बेटीक जे नव उत्पाद बनाओलक ओकर मालिक के रहत?” अदिति कागद अपन दिस खींचलीह। “एहि प्रारूपक छपाइ रोकल जायत। पहिले फोटो ककर सहमतिसँ लेल गेल, से देखब। नमूनाक सार्वजनिक उपयोग आ व्यावसायिक नकल लेल अलग लिखित अनुमति चाही।” तारा एखन कहियोसँ पहिने रुचि दिस देखलीह; हुनकर अपन नक्शाक प्रश्नक एकटा दोसर आकार सामने छल।

रुचिक बेटी छबीली पातर पट्टी उठौलक। “माए, हम लालक बदला नीला राखी तँ अलग होएत?” रुचि बेटीकेँ चुप नहि करौलीह। “रङ्ग बदललासँ बनावटक मालिक नहि बदलैत, मुदा नव बनावट सीखबामे रोक नहि अछि,” ओ उत्तर देलीह। छबीली हँसली—“तखन हम अपन बुनौट बनायब।” दुआर लग ठाढ़ फूलो चौरसिया मुस्की देलीह। तारा छबीलीकेँ खाली कागद देलीह, मुदा ओकर हाथसँ पट्टी नहि लेलनि।

सकीब अबदल दू थैला लऽ कऽ चबूतरापर चढ़लाह। पहिल थैलामे बाहा-सफाइक चन्दाक रसीदक गड्डी, दोसरमे छोट ढुलाईक निजी बहिया छल। काल्हि बोरी उठबैत ठोकर लगलासँ हुनकर काँध दुखैत छल। “एखन जाँचमे हमर नाम कोना आबि गेल?” ओ सहायकसँ पुछलनि। “पिछला मासक सार्वजनिक चन्दा अहाँक दोकानपर राखल गेल; फाटकक चेतावनीमे किछु रस्सी ओही दोकानसँ किनल गेल। एक्के नाम दू ठाम अछि,” सहायक कहलनि। सकीब अपन थैला राखि कहला, “एक्के नामक अर्थ एक्के पैसा नहि।”

पिछला बाहा-सफाइक चन्दा सकीबक दोकानपर राखल जाइत छल। ओ रसीद काटैत आ ढुलाईक अलग मजदूरी लैत छलाह। एक दिन वर्षामे चन्दाक पेटी भीतर रखलाक बाद थैला बदलबाक अफवाह उठल। आइ फाटकक सामग्री-जाँचमे फेर हुनकर नाम आएल छल।

ओ पहिल बहिया खोललनि। तिथि, रसीद-सङ्ख्या, दान देनिहारक सहमतिक अनुसार सार्वजनिक वा गोपनीय चिन्ह, आ सामूहिक खर्चक मद अलग-अलग लिखल छल। दोसरमे पेट्रोल, भाड़ा आ निजी आय छल। सहायक पुछलक, “एकठाम ई रकम लिअ, दोसरठाम ओही दिन ढुलाईक दाम किएक?” सकीब उत्तर देलनि, “कारण एकटा दान एहि कोषक अछि, दोसर हमर हाथक श्रम। जँ दानसँ ढुलाईक दाम देल गेल अछि तँ प्रस्ताव आ रसीद चाही; जँ निजी ग्राहक देलक तँ दानक पाँतमे ओकर छाया नहि पड़त।”

तारा देखलीह जे एक रसीदक डब्बामे देयक सामने केवल ‘भोजन’ लिखल छल। रकम छोट छल, मुदा प्राप्तकर्ताक नाम आ समय नहि। सकीबक मुखपर लाज आयल। “ओहि दिन सफाइक दलक लेल भात मँगौलहुँ। दोकानदार मौखिक हिसाब दऽ गेल, हम कागद नहि लेलहुँ,” ओ कहला। प्रतिनिधि बजल, “तखन पूरा चन्दा सन्दिग्ध!” तारा हुनका रोकलीह। “एक पाँतिक कमी एखन ई भोजनक खर्चकेँ अप्रमाणित बनबैत अछि। पूरा सार्वजनिक रकम चोरी भेल, से एहि सँ सिद्ध नहि।” सकीब अपन गलतीक पाँति पर गोला बनौलनि।

“रसीद नहि भेटत तँ?” अदिति पुछलीह। सकीब कहला, “तारीख आ भोजन लएनिहार तीन जनक गवाही लिखब, खर्च ‘अपूर्ण प्रमाण’ रहत। कागद गढ़ब नहि।” सभा चुप भेल।

श्याम कहला, “हमर नमूनाक फोटो बिना नाम गेल, अहाँक भोजन बिना रसीद। गलती अलग अछि, मुदा दुनूकेँ सुधारक लेखा चाही।”

किष्किन्धाक राजप्रासादक भीतर एही समयसँ बहुत दूरक युगमे तारा एक विचित्र ध्वनि सुनने छलीह—सुग्रीवक हाँक, जे हारिक बाद सहज नहि उठैत। वाली धनुष नहि, अपन बलपर भरोसा करैत सभागृहसँ निकलए लगलाह। तारा हुनकर बाट रोकेलीह। “जे भ्राता काल्हि भयमे हटि गेल, ओ आइ एतेक निश्चिन्त स्वरमे फेर किएक बजा रहल अछि?” ओ पुछलनि। वालीक आँखिमे क्रोध छल। “ओ हमर साहस जाँचैत अछि,” ओ कहलनि। तारा कहलीह, “अहाँक साहस नहि, ओकर पाछाँ आयल सम्भावित सहायता सेहो देखू।”

अङ्गद जे सूचना लऽ आएल छल, तारा ओ गुम नहि करौलीह। अयोध्याक राजपुत्र राम आ लक्ष्मणक सुग्रीवसँ भेंट, सीताक खोज आ सुग्रीवक संग भेल समझौताक समाचार—एकर सभ पक्षक सम्पूर्ण सत्य तारा नहि जनैत छलीह। मुदा ओ समझैत छलीह जे सुग्रीवक लौटबाक साहसक कारण बदलल अछि। “अहाँ जीतब, मुदा तखन राजपर केकर भरोसा रहत? जनपद भयमे चुप अछि; राज भरोसासँ चलत कि गर्जनसँ?”

वाली हाथक कड़कण कसि लेलनि। “तँ की अपन भ्राताक हाँकसँ पाछाँ हटी?” तारा कहलीह, “पाछाँ हटब अपमान नहि जँ पाछाँ हटिकऽ लोकक प्राण बचैत हो। समझौता करू। जे आरोप अहाँक अछि, ओकरा सुनवाड़क सामने राखू। जे राजक हिस्सेदारीक प्रश्न अछि, ओकरा सभाक समक्ष स्पष्ट करू। अङ्गदक भविष्यक मूल्य आजुक क्रोधसँ नहि चुकाउ।” वाली हुनका तकलनि—“अहाँ हमर शत्रुक रक्षा करैत छी?” ताराक स्वर स्थिर छल। “हम अहाँक जानक सेहो, अङ्गदक अधिकारक सेहो, आ एहि नगरक गृहसभक सेहो विचार करैत छी। तीनू हित सदा एक नहि होइत।”

वालीकेँ गुफाक बन्द द्वार, गलत बुझल मृत्यु आ राजक अपमान याद पड़ल। तारा ओहि घटना सुनने छलीह, मुदा एही कारणसँ ओ जानैत छलीह जे दू भाइ अपन-अपन स्मृतिकेँ पूर्ण सत्य मानि लड़ैत छथि। “जँ अहाँ सोचैत छी जे राम न्यायप्रिय छथि,” तारा कहलीह, “तँ हुनका भेटि प्रश्न पुछू। जँ नहि मानैत छी तँ अज्ञात धनुर्धरक सहायताप्राप्त शत्रुसँ

बिना विचार भिड़ब आओर खतरनाक अछि।” वाली क्षणभरि चुप भेलाह; तखन हुनकर क्रोध हुनकर विचारक आगाँ चलि गेल।

वाली रणस्थल दिस चलि गेलाह। तारा देहरीसँ हटलीह, मुदा ओहि हटबामे सहमति नहि छल। ओ अङ्गदकेँ अपन लग बजौलीह। बालक पुछलक, “माए, पिता विजय पाबि लौटताह ने?” तारा हुनकर माथपर हाथ राखलीह। “एही आशामे छी,” ओ कहलीह, “मुदा विजयक बाद पूछब—के बाँचल, ककर अधिकार बचल, आ केकर बात सुनल जाएत।” अङ्गदक आँखि प्रश्नसँ भरल छल; ओ अपन पिताक पक्ष छोड़बाक वचन नहि देलक, न माए ओ वचन मँगलनि।

विदेहपुरक फाटक लग मध्यान्हक धूप नाप-डोरीक गाँठ सुखा देने छल। तारा अपन अनुमानक तालिका बनाबैत अदिति सँ कहलीह, “एहिमे एकटा संख्या पानिक छल, दोसर सुरक्षित चलबाक समयक, आ तेसर जे परिवारक बाट अटकैत अछि ओकर निवेदनक। एकर योग एकटा अंक नहि बनत। प्रत्येकक अलग निष्कर्ष लिखू।” पट्टाक प्रतिनिधि कहलनि, “अहाँ सभ खेतीक गाड़ीकेँ महत्त्व नहि दैत छी।” फूलो उत्तर देलीह, “हमर खेतक पानि रोकबाक समय लिखल जाए, तखन हमरो घाटा जानब। अहाँ अपन गाड़ी अलग नापू।” विवाद तखन कागदमे पढ़ि सकबाक योग्य भेल।

अदिति अगिला परीक्षणक दिन प्रस्तावित कएलीह, मुदा तारा हाथ उठौलीह। “एकर भुगतान के देत?” ओ पुछलीह। सहायक भौह उठौलक—“पहिल अग्रिम तँ काल्हिए जारी भेल।” तारा उत्तर देलीह, “ओ बाँसक अस्थायी सुरक्षा-चिन्ह आ ओहि दिनक नाप लेल छल। नव निरीक्षणमे हम, श्याम, हीरा आ रुचि अलग-अलग काज करब। रूपरेखा तय करू, अवधि लिखू, फेर अग्रिम दियौ। पहिने जेकाँ ‘स्थानीय सहयोग’ लिखि नाम नहि हटाउ।” श्याम हुनकर बाजू लग ठाढ़ रहि कागदक कोरा पात आगाँ रखलनि।

सहायक कहलक, “की सभ ज्ञान बेचबाक वस्तु भऽ गेल?” तारा हँसलीह नहि। “जे एतय आयल छथि से सभ एक्के दाम नहि माँगैत,” ओ कहलीह। “हीराक नावक बाट चिन्हएबाक अनुभव, श्यामक बाँस जोड़बाक श्रम, रुचिक बुनौट, हमर स्थानीय निकासी-गणना—चारि भिन्न काज। एहन काज सार्वजनिक सुरक्षामे उपयोगी अछि तँ ओकर

भुगतान होएत; आ जकरा हम स्वामित्व नहि जनैत छी ओकर दावा सेहो नहि करब।”
अदिति पचामे चारि अलग मद लिखए लगलीह।

रुचि बीचमे बाजलीह, “सुरक्षाक चेतावनीपर हमर पट्टीक रंग-संकेत देखाओल जा सकैत अछि—जँ ओहि नमूनाक सीमित उपयोगक दाम आ अवधि लिखल रहत। मुदा बाजारमे बेचबाक लेल डिजाइनक नकल नहि।” सहायक पुछलक, “जँ लोक घरमे नकल करत तँ?” रुचि उत्तर देलीह, “केकर घरमे किछु सीखल जाए से हम कोना रोकब? मुदा नगरक नामसँ हजार टुकड़ा छपब आ हमर घरक नमूना सीखब एक नहि। कतेक बनत, ककर आदेशपर, ककर नामसँ—ई लिखू।” छबीली अपन कागदपर तीन नव रेखा बनबैत सुनैत रहलीह।

अदिति सहमति लिखलीह—दू सप्ताहक सुरक्षा-परीक्षणमे रुचिक सीमित सङ्केत-पट्टीक नमूना देखल जायत; नमूनाक फोटोपर रुचि आ हुनकर परिवारक श्रेय रहत; उत्पादनक कोनो बड़ आदेश नया करार बिनु नहि। रुचि कागद खूब धैर्यसँ पढ़लीह। ओ ‘सम्पूर्ण स्वत्व हस्तान्तरण’ जेकाँ एक पाँति काटबौलीह। तारा ओहि काटल शब्दकेँ देखैत अपन पुरान नक्शाक फोटो-नियम याद कएलीह। “समझौता एहि पाँतिसँ शुरू होइत अछि,” ओ कहलीह, “जे नहि देब, से स्पष्ट कहब।”

सकीब एही बीच दोकानदारक लए आएल पुरान पन्ना पसारलनि। ओकरामे भोजनक वस्तु आ अनुमानित मात्रा लिखल छल, मुदा नगद भुगतानक दिन पर दोकानदारकेँ याद नहि छल। सकीब कहला, “एखन एहि कागदसँ भोजन देल गेल से सम्भव अछि, मुदा नकदक पूरा क्रम सिद्ध नहि। हम चन्दा-पन्नामे ‘पुष्टि शेष’ लिखब।” ओ निजी ढुलाईक पन्ना अलग कएलीह। “एहिमे हमर बेटी स्कूलक फीसक दिनसमेत लिखैत अछि। सार्वजनिक जाँच लेल हमर निजी घरक सभ हिसाब नहि खोलब; जतेक सार्वजनिक धनसँ सम्बन्ध अछि ओतेक देखायब।” नैरा हुनकर बातक समर्थन कएलनि—“जाँचक पहुँच सीमाबद्ध होएत; गोपनीयता हिसाब छिपएबाक बहाना नहि, मुदा सार्वजनिक अधिकार निजी घरक सभ पन्ना पढ़बाक अनुमति सेहो नहि।”

सभामे एक आदमी पुछलक, “जखन मूल मजदूरी-सूचीमे ‘छोट नाव’ लिखल अछि तँ एहि चन्दाक पन्नामे सगरो एक्के नामक लोक किएक?” नैरा उत्तर देलीह, “एकटा

पुकारनाम, एकटा दाता आ एकटा माल ढोएनिहार—एहि तीन भूमिकाक एक व्यक्ति भेबाक प्रमाण एखन नहि। मूल भुगतान-पत्र आ समयक मिलान चाही। बच्चा हरएबाक अफवाह एहि गणनासँ अलग रहत।” ओ पुरान सूचीक प्रतिलिपि सार्वजनिक पटपर नहि टाँगलनि। अनावश्यक निजी नामक प्रदर्शन रोकलनि।

दुपहरक बाद श्याम आ तारा घर लौटबासँ पहिने नदीक कात बँसल छाँहमे बैसलाह। श्याम हथेलीक कटान देखैत कहलनि, “जे काज करैत अछि ओकर नाम पचाँमे रहब चाही—एतबा बात बुझितो लोक किएक खिसियाइत अछि?” तारा उत्तर देलीह, “कारण नाम लिखल जाएत तँ पुछल जा सकत—काज ककर, दाम ककर, गलती भेल तँ जिम्मेवारी ककर। बिना नामक सहयोग सभसँ सस्ता पड़ैत अछि।” श्याम हाँसि कहलनि, “तँ हमहु अपन घरक हर काजक रसीद बनाबी?” तारा हुनका देखलीह। “घरमे रसीद नहि, न्याय चाही। घरक श्रम मुफ्त मानबो अन्याय अछि।”

तारा एही बात कहि चुप भेलीह। सबेरे श्याम ओहि नाप-डोरीकेँ सुखौने छलाह जे तारा देर राति धरि खोलि-बान्हि रहल छलीह। श्यामक हाथक श्रम हुनकर तालिकामे नामसँ लिखल छल, मुदा साँझमे छबीलीकेँ रुचिक परिवारक बुनौटक कथा सुनौनिहार हुनकर अपन समय केकर बहियामे रहत? ओ किछु देर बाद पुछलीह, “अहाँ काल्हि अपन घरेक काज छोड़ि हमर संग निरीक्षणमे आएब?” श्याम कहला, “जँ काज अलग लिखब तँ घरमे के बाँस भिजाओत?” दुनू हँसलाह; मुदा तारा तुरन्त अगिला निरीक्षणमे श्यामक उपलब्ध समय पूछबाक निर्णय कएलीह।

दूर किष्किन्धाक वनमे पातक बीच कठोर ध्वनि उठल। वाली आ सुग्रीव पुनः आमने-सामने छलाह। संग्रामक बीच एक बाण आओल आ वाली भूमि पर खसलाह। तारा एखन प्रासादमे अङ्गदक संग छलीह। समाचार आयल तँ हुनकर पएर क्षणभरि काँपल, मुदा ओ शोककेँ छिपाएबक लेल ककरो झूठ नहि कहलीह। अङ्गद दौड़ए चाहलक; तारा ओकर हाथ धेलनि। “चल,” ओ कहलीह, “मुदा अपन आँखिसँ देखब आ प्रश्न पुछब। केओ जे कहत सेहि मात्र हमर सत्य नहि बनत।”

तारा जखन रणस्थल पहुँचलि तखन वालीक बलक कथा अचानक कात लग राखल भारी गदाजेकाँ पड़ल छल। ओ पतिक समीप बैसलीह। कष्ट आ क्रोध हुनका एक साथ

घेरने छल। “हम अहाँकें रोकने छलहुँ,” ओ धीमे कहलीह, “ई हमर विद्वत्ता सिद्ध करबाक क्षण नहि। जनपदमे आब जे भय उठत, ओकर उत्तर के देत?” सुग्रीव दूर ठाढ़ छलाह; रामक उपस्थितिमे संग्रामक न्यायपर कठिन प्रश्न उठि रहल छल। तारा न शोकमे अपन आपत्ति छोड़लीह, न क्रोधमे अङ्गदक जीवनकें बदला लेबाक वस्तु बनौलीह।

अङ्गद पिता लग बैसि पुछलक, “जँ मित्रता भेल छल तँ हमर पिता शत्रु किएक?” तारा ओकरा मौन रहबाक आदेश नहि देलीह। “ई प्रश्न अहाँक अछि,” ओ कहलीह, “आ एकरा सुनबाक अधिकार अहाँकें अछि। राजक परामर्श, पिताक अपराध अथवा बल, आ पुत्रक भविष्य—ई तीनू एक्के लेखा नहि।” ओ सुग्रीव दिस तकलीह। “अहाँ राज सम्हारब तँ एहि बालकक जीवन आ विश्वासक लेखा सेहो लिखब। ओकरा चुप राखि राज्य स्थिर नहि होएत।” अङ्गद पहिल बेर देखलक जे माताक गणना सत्ताक सङ्ख्या नहि, ओकर साँसक स्थान गनैत अछि।

विदेहपुरमे साँझक सभा संक्षिप्त रहल। अदिति संशोधित पर्चा पढ़लीह—अस्थायी खतराक तीन बिन्दु, विवादित बाटक दू लिखित आपत्ति, तथा स्थानीय परामर्शक चारि नाम आ अलग देय। सब काजक तकनीकी प्रमाणन एखन नहि भेल अछि, से पर्चामे स्पष्ट छल। पट्टाक प्रतिनिधि अपन आपत्ति अस्वीकृत भेबाक बदला तिथि-सहित दर्ज देखलक। फूलो अपन खेतक लाभ-हानिक लिखित सुनवाईक दिन पाबि गेलीह। शब्द बदललासँ पानि नहि बहल, मुदा प्रभावित लोककें बाजबाक स्थान भेटल।

सकीब सार्वजनिक चन्दाक नकल सभाक दू सदस्यक हाथ देलनि, निजी ढुलाईक बहिया अपन थैलामे राखलनि। भोजनक एक पाँति ‘अपूर्ण प्रमाण’ चिन्हित रहत आ ओकर स्वतन्त्र पुष्टि फेर होएत। रुचि नमूनाक सीमित परीक्षणपर सहमति देलीह, मुदा बड़ निर्माणादेशपर एखन हस्ताक्षर नहि कएलीह। ओ छबीलीसँ कहलीह, “घर चलि, नीला पट्टीक अपन नव नमूना पूरा करब।” छबीली पुछलक, “जँ लोक नीक कहत तँ?” रुचि हँसलीह, “नीक कहलासँ काज समाप्त नहि होइत; कतेक सूत लगल, से सेहो गनब।”

राति तारा अपन नाप-बही फेर खोललीह। तीन खण्डक नीचाँ ओ एकटा नव पाँति लिखलीह—‘जेकर हितक गणना, ओकर सुनवाईक अधिकार’। श्याम चिराग लग बैसि बाँसक पातर फाँक समतल करैत छलाह। तारा पुछलीह, “आब जखन अगिला सभा

हएत, कियो एहन नहि रहि जाए जकर घाटा गनल गेल, मुदा ओकरा बजाओल नहि गेल?” श्याम कहलनि, “जकरा बजाओल जाएत, ओकरा अपन प्रश्न रखबाक समयो चाही।” तारा नव पाँतिक बगलमे खाली स्थान छोड़ि देलीह। अङ्क भरबाक काज आबो शेष छल; ओ जानि गेल छलीह जे ओहि खाली जगहमे अगिला बेर जवान आवाज पहिने सुनाइत।

अध्याय ५२ • अङ्गदक कल्हि

फाटकक पाछाँक पथारमे भोरसँ पहिने नन्दू नट बाँसक दू खम्भा जमीनसँ निकालि रहल छलाह। रातिक भीजल रस्सी गाँठपर जामि गेल छल। ओ दाँतसँ ओकर छोर दबौलनि तँ नन्ही झिलमिल दौड़ि आयलि। “बाबू ई बाँस हटाबी तँ हमर पढ़बाक छाँह कतय रहत?” ओकर हाथमे पुरान अभ्यास-पुस्तिका छल, जाहिमे काल्हि मीरा ‘समान’ आ ‘असमान’ लिखबौने छलीह। नन्दू रस्सी छोड़ि देलनि। “आजु सँ एतय मंच खड़ा करबाक मनाहीक बात अछि। पहिने कागद देखब, तखन छाँहक उपाय सोचब।”

नगरक एक सहायक काल्हिक सभाक पाछाँ लाल खड़ियासँ फाटक लगक पटरीपर निशान बना देने छल। निशानसँ भीतरे तिरपाल, बाँस आ छोट भाँड़ सभ आबैत छल। पर्चीपर लिखल छल—‘जलनिकासक अस्थायी सुरक्षा लेल बाट खाली करू’। कतेक दूरी, कोन दिनसँ, आ केकर अनुमति सँ, से पर्चीमे नहि छल। गौरी कपरिया ओहि निशान लग ठाढ़ तिरपालक तह गनि रहल छलीह। ओ सहायकसँ पुछलीह, “ई लाल रेखा जखन पानिमे धुइ जायत, तखन हम सभकेँ फेर ककर बात सुनबाक?”

सहायक कहलक, “अहाँ सभ तऽ चलिते रहैत छी। दू दिन दोसर ठाम रहू।” गौरी अपन बही खोललीह। पाँच दिन पहिने दाम दऽ मरम्मति कराओल तिरपाल, राति गाड़ल खूँटा आ आगि राखबाक माटिक चूल्हाक खर्च ओकरामे छल। “चलैत छी, मुदा हवा नहि छी,” ओ उत्तर देलीह। “हमर लोकमे कियो रोगी संग अछि, कियो बच्चा परीक्षा लेल रुकल अछि। सार्वजनिक बाट खुलबाक चाही; मुदा बिना ठाम देखौने ‘हटू’ कहब सुरक्षाक पूरा उपाय नहि।”

श्याम मल्लिक आ तारा बिनौट जाँचक डोरी लऽ पहुँचलाह। तारा खड़ियाक निशान देखिकऽ कहलीह, “काल्हि हमर तालिकामे खतरनाक पट्टाक नाप छल, ई तऽ ओहि सँ आगू बढ़ि रहल अछि।” अदिति अभियन्ताकेँ बजाओल गेल। ओ पर्ची पढ़ि स्पष्ट कएलीह जे तकनीकी दल सँकर भागपर भार आ निकासक आगाँ जाँच मँगने अछि; पूरा पथार तुरन्त खाली करबाक लिखित आदेश ओ नहि देने छलीह। “मुदा जहाँ खसबाक भय

अछि, ओतय राति नहि बिताउ,” ओ चेतावनी देलीह। गौरी मानलीह जे ओहि भागसँ परिवार हटत, मुदा सुरक्षित कात चिन्हल जाए आ कागदमे कारण लिखल जाए।

नन्दूकेँ एक दोसर कठिनाई छल। माछ-मखान श्रम-मेलाक पहिल सांस्कृतिक संध्यामे हुनकर दलक प्रदर्शन चाहल गेल छल, मुदा आयोजकक नव पर्चीमे बच्चासभक उपस्थिति पूरा साँझ अनिवार्य लिखल छल। पारिश्रमिक सेहो ‘सामूहिक मनोरञ्जन’ कहि आधा करएबाक प्रस्ताव छल। झिलमिलक विद्यालयक अगिला दिन सबेरे परीक्षा छल। नन्दूक पत्नी मैना पर्ची पढ़ि कहलीह, “जँ राति दस बजे धरि नचत तँ सबेरे पन्ना कोना पढ़त?” नन्दू उत्तर देलनि, “ओहि दामसँ एही मासक काँपी आ भाड़ा जुटत।” हुनकर स्वरमे गणना छल, आदेश नहि।

झिलमिल खम्भाक कात बैसि अपन पुस्तक खोललक। ओ हर हरफकेँ हाथसँ ढाँपि कऽ दोहरबैत रहल। मैना ओकरा पुछलीह, “अहाँ कोन काज करब चाहैत छी?” बच्ची कहलक, “हम ढोलकक ताल सीखब नहि छोड़ब। मुदा साँझक प्रदर्शनक बदला पहिने विद्यालय जाएब। हम जखन अपन गीत गाएब, तखन अपन मनसँ गाएब।” नन्दू ओकर मुँह देखलनि। एखन धरि दलक यात्रा आ कमाइ हुनकर निर्णय छल; झिलमिल पहिल बेर अपन समयक भाग माँगि रहल छलीह।

बाँस उखाड़बाक बेला एकटा युवक मोबाइल घुमबैत आयल। ओकरा हाथमे साजिद नटक पुरान अभिनयक एक छोट दृश्य छल। युवक कहलक, “एहि दृश्यकेँ नगरक प्रचारमे लगाओतहुँ। संगमे बच्चासभक नाच जोड़ि देब। लोक देत तँ विज्ञापनक पैसा सभक काम आओत।” साजिद ओहि समय कैमरा आ कापी लऽ कऽ ओतय पहुँचल छल। स्क्रीनमे अपन परदाक लाल छोर देखिते ओ रुकल। “ई दृश्य हमर काज अछि,” ओ कहलक, “आ बच्चासभक चेहरा प्रचारमे देबाक अनुमति हमरा लग नहि।”

युवक बजल, “पहिने तँ ई वीडियो बजारमे घूमि चुकल। आब अधिकारक बात कोन?” साजिद कैमरा झोरामे रखि देलक। “घूमि गेल, तँ जे कियो चाहत से बेचत? हमर मूल रिकॉर्डिंगकेँ पहिने मिथुनक खोजक गलत फोटोसँ जोड़ल गेल छल। नैराक जाँच ओकर सन्दर्भ अलग कएलक। तखन सँ सीखलहुँ जे एकटा काटल दृश्यसँ कतेक लोकक जीवन

हिलि सकैत अछि।” ओ युवककें मूल फाइल देबाक बदला पहिने उपयोगक उद्देश्य, अवधि आ दर्शकक सीमा लिखबाक कहलनि।

ओहि बातपर छोट भीड़ लागल। कियो कहलक, “सुरक्षा-काजमे कला काहे रोकब?” साजिद उत्तर देलक, “सुरक्षाक नक्शा देखएबाक लेल ककरो बच्चाक अभिनय बेचबाक कोन जरूरत? जँ हमर बनाओल सार्वजनिक कार्यक्रमक दृश्य चाही, तकर छोट नमूना, कलाकारक सहमति आ दाम निश्चित करू। बच्चासभक अभ्यास-फाइल नहि देब।” नन्दू जोड़लनि, “हमर झिलमिल मंचपर जाए वा नहि, ई ओकर पढ़ाइक दिनक बाद तय होएत। ओकर चेहरा प्रचारक वस्तु नहि।”

एहि भीड़मे नैरा अएलीह तँ गौरी हुनका पर्ची देखौलीह। नैरा पढ़लीह, मुदा कार्यालयक आदेश मानि कऽ मुहर नहि लगौलीह। अपन ठेका रोकल जएबाक बाद हुनकर निजी सहायता आ सरकारी प्रमाणनक अन्तर ओ स्पष्ट रखैत छलीह। “ई सूचना के जारी कएलक, मूल सुरक्षा-नाप कोन, आ प्रभावित लोकक आपत्ति कतय दर्ज होएत—तीन प्रश्न लिखू,” ओ कहलीह। एक आदमी तुरन्त कहलक, “एहि घुमन्तु दलमे कतेक बनावटी नाम अछि, ओहो जाँचू।” नैरा उत्तर देलीह, “बसेराक आपत्ति लेल लोकक स्वीकृत सम्पर्क पर्याप्त अछि। बच्चाक यात्रा-पथ वा घरक निजी नामक सार्वजनिक सूची नहि बनत।”

किष्किन्धाक प्रासादमे एहीसँ बहुत दूरक युगमे अङ्गद अपन पिताक गदाक कात बैसल छल। गदाक धातु एखनहुँ ठंढा नहि भेल, एहन ओकरा भ्रम होइत छल, जखन कि रणभूमिसँ आबि गेल शोकक समय दिन बनि गेल छल। बाहिर सुग्रीवकें राजसिंहासन सम्हारबाक तैयारी चलि रहल छल। अङ्गद माए तारा सँ पुछलक, “आइ जे हमर पिताकें मारि देलक, काल्हि हुनकर मित्र हमर रक्षा करत—ई बात हम कोना मानू?”

तारा गदाकें देवालसँ अलग राखि देलीह। “हम तोरा विश्वास करबाक आदेश नहि दैत छी,” ओ कहलीह। “वालीक मृत्यु भेल, ई हमरा दुःख अछि। सुग्रीव राज सम्हारताह, ई जनपदक घटना अछि। तोहर जीवन एही दुनू बातक बचल टुकड़ा मात्र नहि।” अङ्गद क्रोधमे कहलक, “हमर पिता गलत छलाह से सभ कहत; फेर हमरा हुनकर पुत्र कहि किएक चिन्हत?” ताराक आँखि नम भेलीह। “कारण पुत्र होएब दोषक उत्तराधिकार नहि,

स्मृतिक सम्बन्ध अछि। तोहर पिताक स्नेह झूठ नहि छल, हुनकर प्रत्येक निर्णय न्यायो नहि छल।”

हनुमान देहरीपर ठाढ़ छलाह। ओ अङ्गद लग बैसबाक अनुमति मँगलनि। बालक पुछलक, “अहाँ सुग्रीवक सहायक छी। हमर प्रश्न सुनब कि राजाक उत्तर सुनाएब?” हनुमान कहला, “अहाँक प्रश्न सुनब। हम जकर पक्षमे काज कएने छी, तकर कारणो पुछल जा सकैत अछि।” अङ्गद पुछलक, “राज बदललाक बाद जे सैनिक काल्हि हमर पिताक संग छलाह, हुनकर घरमे अन्न के पहुँचाओत?” हनुमान तुरन्त वचन नहि देलनि। “ई प्रश्न सभामे राखबाक चाही,” ओ कहला, “आ जकर नाम पर सहायता लिखल जाए, तकर घरक लोकसँ पूछबाक सेहो।”

सुग्रीव जखन भीतर अएलाह तँ अङ्गद उठल, मुदा प्रणाम लेल झुकल नहि। प्रासादक सेवक घबरा गेल। सुग्रीव हुनका हटएबासँ रोकलनि। “अङ्गद,” ओ कहला, “हम तोहर पिताक स्थान लेबासँ नहि आएल छी।” अङ्गद तुरन्त पुछलक, “तखन सिंहासन किएक लैत छी?” सुग्रीवक मुखपर हारि, निर्वासन आ विजयक स्मृति एक साथ आयल। “राज खाली रहितो लोक अनाथ होइत,” ओ कहला। तारा बीचमे कहलीह, “राजक व्यवस्था आ बालकक विश्वास एक्के क्षणमे नहिएँ बनत। अहाँक मित्रताक प्रतिज्ञामे एतय बाँचल परिवारसभक ठाम कतेक अछि, से स्पष्ट कहू।”

सुग्रीव अङ्गद दिस तकलनि। “अहाँकैँ राजक काज सीखबाक स्थान देब,” ओ कहला। अङ्गद उत्तर देलक, “मात्र एहि कारणसँ जे हम वालीक बेटा छी?” सुग्रीव चुप भेलाह। तारा कहलीह, “प्रशिक्षण ओकर अधिकार हो, अनिवार्य वफादारीक परीक्षा नहि। अपन माए संग शोक करबाक आ पिता विषयमे प्रश्न पुछबाक समयो चाही।” अङ्गद पुछलक, “आ जँ हम काल्हि शस्त्र नहि, दूतक वचन सीखब चाही?” हनुमान हलकासँ मुस्कियायलाह। “वचन सम्हारब सेहो कठिन विद्या अछि,” ओ कहला। अङ्गद अपन हाथ गदासँ हटा लेलक; निर्णय एखन ओकर छल।

विदेहपुरमे दुपहरक सभा विद्यालयक पुरान ओसारमे लगल। मीरा मंडल कापीक ढेरी आगाँ रखलीह। झिलमिल अपन पढ़बाक पुस्तक, रेवा गुलगुलियाक बेटा जतन अपन पाठक पन्ना लऽ अएल। मीरा कहलीह, “पिछला सप्ताहक घुमन्तु पाठशालाक हाजिरी

हम दिखा सकैत छी। मुदा ई औपचारिक विद्यालय-नामांकनक प्रमाण नहि। जिनकर नामांकन आवेदन शेष अछि, ओकरा अलग रसीद चाही।” नन्दू पुछलनि, “जँ मंचक समय घटाबी तँ बच्चाक पढ़ाइ बचत, मुदा भाड़ा कोना जुटत?”

मधु घाटसमितिसँ अएलीह। हुनकर लग सँकर पटरीक नाप छल। “फाटकक पाछाँ मंच नहि लगत,” ओ कहलीह, “ओतय नावक बाट आ चेतावनीक बाँस अछि। मुदा घाटक ऊपरक पथारमे साँझक पहिल दू घंटा प्रस्तुति सम्भव अछि, जँ भीड़ लेल सुरक्षित पैदल बाट खुलल राखी।” अदिति जोड़लीह, “ई मात्र अस्थायी कार्यक्रम-व्यवस्था अछि; फाटकक स्थायी सुरक्षा प्रमाणन नहि। भारी मंच वा विद्युत् तारक अलग परीक्षण चाही।” आयोजकक आदमी कहलक, “दू घंटाके दर्शक कम जुटत; दाम घटत।”

नन्दू अपन ढोलकक पुरान चमड़ा अंगुरीसँ दबौलनि। “दाम घटल तँ प्रस्तुति छोट करब; बच्चाक पाठक समय नहि घटाएब,” ओ कहला। आयोजक उत्तर देलक, “तखन नर्तकक गिनती पूरा नहि।” मैना अपन बेटी लगसँ कहलीह, “झिलमिल, अहाँ की चाहैत छी, सभकेँ सुनाउ।” बच्ची पहिने लजाएलि। तखन कहलक, “साँझक पहिल गीतमे हम रहब। एही बाद घर घुरि लिखब। जँ मंच देर सँ शुरू भेल तँ हम नहि रहब।” नन्दूक आँखिमे क्षणभरि कमाइक चिन्ता चमकल; फेर ओ कहला, “ई शर्त हमरा तरफसँ सेहो रहत।”

समझौताक कागदमे नन्दू अपन दलक दू घण्टाक श्रम, बाँसक भाड़ा आ ढोलकक मरम्मतक दाम अलग लिखौलनि। विद्यालयक समयमे बच्चा उपस्थित करबाक कोनो शर्त नहि रहत। बदला मे आयोजक पूरा रातिक कार्यक्रमक अतिरिक्त पारिश्रमिक नहि देत; नन्दूक अपेक्षित कमाइ घटल। मीरा विद्यालयक समय-पत्रक नकल देलीह, बच्चाक नाम आ घरक यात्रा-वृत्त नहि। मधु सुरक्षित पथार चिन्हि एक सप्ताहक सशर्त अनुमति प्रस्तावित कएलीह। स्थायी मंच-अधिकारक फैसला ओ नहि कएलीह।

साजिद ओही सभामे छोट पर्दा पसारलक। युवक प्रचार लेल अग्रिम दाम रखए तैयार छल, मुदा शर्त छल जे वीडियो एक बेर किनलापर कतेक बेरो चलाएल जा सकत। साजिद कागद लौटा देलक। “एहन बिक्रीमे हमर काजक अन्त नहि, हमर अधिकारक अन्त होइत,” ओ कहलक। ओ दू विकल्प लिखलक—कलाकारसभक अलग सहमति भेटलापर छोट सार्वजनिक प्रचार-अंशक सीमित उपयोग, अथवा आयोजक लेल नव

रिकॉर्डिंगक निश्चित शुल्क। मूल फाइल, बच्चासभक अभ्यास आ भूतकालक कटि गेल गलत दृश्य—तीनू सार्वजनिक सौदा सँ बाहर।

युवक कहलक, “तखन हम अपन मोबाइलसँ वीडियो बनायब।” साजिद उत्तर देलक, “सार्वजनिक ठामक दृश्य खींचबाक प्रश्न अलग अछि; मंचपर बनल गीत, कलाकारक अनुबन्ध आ बच्चाक पहिचानक प्रश्न अलग। चलू, दर्शककेँ पहिने सूचना देब जे केकर छवि रिकॉर्ड नहि करबाक।” झिलमिल हँसि पूछलक, “हमर मुखक बदला ढोलकक हाथ देखाएब?” साजिद कहलक, “जँ अहाँ चाहब आ कलाकार राजी रहताह, तखन हाथक काजक दृश्य बनि सकैत अछि।” ओ कैमरा चालू नहि कएलक।

तखन गौरीक समस्या सभासँ बेसी तात्कालिक भऽ उठल। लाल निशानवला ठामक कात राति धरि छप्पर हटएबाक धमकी दैत दू आदमी आयल छलाह। गौरी कहलीह, “हम नीचला खतरनाक पटरीपर रहबाक जिद नहि करैत छी। मुदा ककर खेतमे जाउ, ककर दरबज्जापर आगि जराउ—ई हमपर एक लोकक आदेशसँ नहि तय होएत।” ओ अपन तिरपाल-मरम्मतक रसीद मेजपर रखलीह। रसीद भूस्वामित्वक प्रमाण नहि छल, मुदा ओ देखबैत छल जे परिवारक वस्तु आ श्रमकेँ सहज फेंकल नहि जा सकैत।

रेवा गुलगुलिया उठलीह। “हमर जतन एखन पाठशालाक जगह चिन्हने अछि,” ओ कहलीह। “आजु इम्हर भगाएब, काल्हि फेर दोसर बाट—तखन शिक्षक सभ कहत बच्चा नियमित नहि। हम गौरीक संग आपत्ति पर हस्ताक्षर करब, मुदा हमर परिवारक बाट अलग तय होएत।” जानकी अपन दलक वृद्धा सरयूक स्वास्थ्यक बात रखलीह। सभ घुमन्तु परिवार एक्के जाति, एक्के पेशा वा एक्के यात्रा-तालिकाक नहि छल; पहिल बेर हुनकर साझा प्रश्न साझा निर्णयक दबाव बनबासँ अलग देखाइत छल।

चम्पा सेहो आयलीह। रुहानीक आश्रयक कमरा आ निजी मकानक नोटिसक चिन्ता हुनकर लग छल। ओ कहलीह, “जँ ककरो एक रातिक छाँह चाही तँ हम रुहानी सँ उपलब्ध ठाम पुछि सकैत छी। मुदा आश्रयमे जे नियम छथि, पहिने पढ़ल जाएत; ककरो परिवारकेँ बिना सहमति नामांकित नहि करब।” गौरी कहलीह, “आश्रय संकटमे सहारा भऽ सकैत अछि, मुदा हमर पूरा दल ओहि घरक सदस्य बनि जाए, से हमर माँग नहि। हमरा सुरक्षित सार्वजनिक बाट आ अस्थायी ठामक सुनवाइ चाही।” चम्पा नजिरे

झुकौलीह; हुनका बुझल छल जे एक रातिक आश्रय देबाक वचनक पाछाँ चाभी आ नियमपर पुरान मतभेद एखन समाधान नहि भेल अछि।

अदिति एकटा अस्थायी विकल्प देखौलीह। फाटकसँ दूर पुरान गोदामक पाछाँक पथार तकनीकी जाँचमे एखन ‘खतरा-मुक्त’ प्रमाणित नहि छल, मुदा ओतय प्राथमिक निरीक्षण करबाक प्रस्ताव बनि सकैत छल। गौरी आग्रह कएलीह जे निरीक्षण बिना बच्चा वा रोगीकेँ ओतय नहि पठाओल जाए। पट्टाक प्रतिनिधि कहलक, “ओ पथारपर हमर लोकक गाड़ी घुमैत अछि।” तारा उत्तर देलीह, “तखन तीनू पक्षक बाट एक संग नापू: ककरो आवश्यकता मेटा कऽ दोसरक नाप पूरा नहि बनत।”

छोट कार्यदल बनल—गौरी अपन समूहसँ चुनल प्रतिनिधि, रेवा अलग आवेदनक प्रतिनिधि, जानकी अपन दलक आ एक स्थानीय निवासी। रुहानीक आश्रयक नाम स्वतः एहि सूचीमे नहि जोड़ल गेल। गौरी लिखबौलीह जे सभ परिवारक यात्रा-स्थान सार्वजनिक नक्शामे नहि चढ़त; केवल विवादित सुरक्षित मार्ग, प्रस्तावित वैकल्पिक ठाम आ समूहक सम्पर्क रहत। अधिकारी अगिला भोर निरीक्षणक प्राप्ति देलक। रातिक लेल खतरनाक लाल पटरी खाली करबाक सहमति भेल, मुदा जबरन समग्र बेदखलीक आदेशक आधार जाँचधरि रोकबाक आग्रह कार्यालयमे दर्ज भेल; ओकर स्वीकृति एखन निश्चित नहि छल।

ओसारमे झिलमिलक कापी हवा सँ पलटि गेल। पन्नापर बच्ची लिखने छलीह—‘हम गीतो सीखब आ हिसाबो’। नन्दू ओहि पाँतिक कात छोट हिसाब बनौलनि—दू घण्टाक कमाइ, घटल टिकट, भाड़ाक खर्च, पुस्तकक दाम। घाटा देखिकऽ ओ चुप रहि गेलाह। मैना कहलीह, “किताबक दाम नहि निकलत तँ अगिला सप्ताह आन काज खोजब, मुदा बेटीकेँ राति भरि मंचपर राखि ई घाटा नहि भरब।” नन्दू पन्नापर गोल घेराक बदला छोट एकटा टिक लगौलनि। “कल्हि भोर परीक्षा अछि,” ओ झिलमिलकेँ याद देलनि। बच्ची पुछलक, “आ अहाँक?” नन्दू कहला, “हमर परीक्षा आजु भेल।”

दूरक किष्किन्धामे साँझ घिरल। सुग्रीवक सभामे वालीक पक्षमे रहल दू वृद्ध सैनिक संकोचसँ ठाढ़ छलाह। अङ्गद हुनका देखिकऽ माए सँ पुछलक, “एहि सभकेँ कोन नामसँ बजाएब? काल्हि ई हमर पिताक आदमी छलाह।” तारा उत्तर देलीह, “आइओ ई अपन घरक लोक छथि। जकरा युद्ध अपन पाछाँ छोड़ि जाइत अछि, ओकरा मात्र हारल पक्ष नहि

कहब।” अङ्गद सुग्रीवसँ कहलक, “हम शस्त्र-विद्या सीखब, मुदा एहि सभक बालककेँ भोजन भेटत कि नहि, सेहो पूछब।”

सुग्रीव राजसभामे प्रतिज्ञा कएलनि जे आहत परिवारसभक गणना होएत आ सहायता पहुँचत; मुदा तारा ओकरा तुरन्त विजयक उत्सवक घोषणासँ अलग रखबौलीह। “जकर घरमे अन्न नहि, ओकरा समारोहक शंख नहि, भोजन चाही,” ओ कहलीह। हनुमान अङ्गदकेँ दूतक काज सिखएबाक सम्भावनाक बात रखलनि। अङ्गद जवाब देलक, “हम पहिले सुनब सीखब।” ओ पिता लेल शोक छोड़लक नहि; मुदा पिताक मृत्युक बदला अपन भविष्यक एकमात्र कार्य बनएबाक आदेश स्वयं केँ नहि देलक।

विदेहपुरमे राति जखन फाटकक चेतावनीक बाँसपर लाल कपड़ा कसि बाँधल गेल, गौरी अपन दलक दू परिवारकेँ सुरक्षित कात अस्थायी रूपसँ हटबौलीह। पथारक अन्तिम नाप एखन नहि भेल छल; कियो एकर स्थायी अधिकारक दावा नहि कएलक। साजिद मूल रिकॉर्डिंगक फाइल अपन बन्द थैलामे राखि एक छोट अनुबन्धक मसौदा लऽ गेल। नन्दू मंचक बाँस घाटक ऊपरक प्रस्तावित ठाममे तानबाक बदला पहिने मधुक अनुमति-पत्री लेल प्रतीक्षा करब स्वीकार कएलनि। झिलमिल लाल कपड़ाक फड़फड़ाहट देखिकऽ कहलक, “कल्हि ई झंडा हटि जायत?” गौरी उत्तर देलीह, “जाँच भेलापर बुझब जे केतय हटत। मुदा तोहर परीक्षा लेल जँ समयपर चलि जाएब तँ ई बाट पार भऽ सकत।”

नैरा घर घुरैत तीन कागद अलग-अलग लिफाफामे रखलीह—मंचक समय आ मजदूरीक सहमति, वीडियोक अधिकारक अपूर्ण मसौदा, आ बसेराक अस्थायी आपत्तिक प्राप्ति। ओहिमे सँ कोनो कागद मिथुनक खोजक फाइलमे नहि गेल। लताकेँ आजुक भीड़क आधारपर नव आरोपीक नाम नहि पठाओल गेल। सरिता रसोइसँ पुछलीह, “आइ ककर कल्हि बाँचल?” नैरा कहलीह, “ककरो लेल दू घण्टाक मंच, ककरो लेल कैमरा बन्द करबाक अधिकार, ककरो लेल अगिला भोर धरि सुरक्षित छाँह। कल्हिक पूरा भरोसा ककरो हाथ नहि, मुदा तीनू अपन प्रश्न कहि सकल।” दूर कतहु ढोलकक पातर थाप उठल; ओ ताल आरम्भ छल, आदेश नहि।

अध्याय ५३ • रुहानीक चाभी

भोरक पहिल उजासमे रुहानी आश्रयक मुख्य फाटकक जंग लागल ताला हाथमे लऽ ठाढ़ छलीह। बरखाक पिछिला झोंकमे ओकर भीतर पानि घुसि गेल छल; चाभी दू बेर घुमाओलापर मात्र दरबज्जा खुलल। भीतर रुखसाना चूल्हा सुलगा रहल छलीह। ओ बाहर ताकिकऽ कहलीह, “आजु फेर अहाँ नहि रहब तँ सभ लोक फाटकपर ठाढ़ रहत?” रुहानी उत्तर देबाक बदला अपन चाभीक गुच्छामे सँ दूटा एक आकारक चाभी अलग कएलीह। एकटा मुख्य फाटकक छल, दोसर पुरान भण्डारघरक; बिना चिन्हक ओ दूनू एक सन देखाइत छल।

“दरबज्जा खुलेबाक काज हमरा एकर मालिक नहि बनबैत,” रुहानी बजलीह। रुखसाना कड़ाही नीचे सरकबैत कहलीह, “मुदा चाभी ककरा लग रहत, ई तय नहि भेल तँ भोजन, दवाई आ अगिनिक संकटमे सभ अहाँकेँ खोजत।” पिछिला सप्ताह नगर कार्यालय अस्थायी रखरखाव लेल रुहानीकेँ सम्पर्क-व्यक्ति मानबाक प्राप्ति देने छल; स्थायी स्वामित्वक कागद ओ एखनहुँ स्वीकार नहि कएने छलीह। तथापि कोनो आगन्तुक हुनकासँ पुछैत छल, “घरक आदेश की अछि?” ओहि प्रश्नमे सभसँ बेसी खतरा छल।

ओसारक खूँटामे बान्हल तिरपालक पवनचक्की हवा लगिते घुलल। चम्पा खिड़कीक भीतरसँ माय लेल कुनकुन पानिक गिलास लऽ निकलीह। माय पिछिला राति नीकसँ सूतल छलीह, मुदा हुनकर दवाईक समय फेर बदलल छल। चम्पा कहलीह, “हम दू दिन लेल बाहर जायब चाहैत छी। मायकेँ बहिन लग रखब, दवाईक समय लिखि देब। हमरा दिनभरि आश्रयक काम आ कोठरीक पुरान झंझट सँ छुट्टी चाही।” हुनकर स्वरमे क्षमायाचना नहि छल, मुदा चेहरापर ओहि अनुरोधक अपराधबोधक पुरान चिह्न रहि गेल छल।

रुहानी पुछलीह, “अहाँक माय सहमत छथि?” भीतरसँ वृद्धा उत्तर देलीह, “हम बहिनक घर जाएब। बेटी दू दिन नदी देखय जाए—काज छोड़ि कऽ।” चम्पा हँसि पड़लीह। हुनका बहुत दिनसँ नदी देखबाक लेल घाटपर नहि, बस अस्पतालक चादर आ कागदक बीच

भागबाक अवसर भेटल छल। रुहानी हुनका आश्रयक सहमति-पंजीक कोनो नया खाना नहि भरबौलीह। “छुट्टी लेल प्रमाण चाही तँ दवाईक समयक प्रतिलिपि दऽ दिअ,” ओ कहलीह, “निजी यात्रा-स्थान नहि।”

ओहि समय आँगनक भीतर बैसल मंजरी अपन सिलाइक टोकरी समेटि रहल छलीह। ओ आश्रयमे आठ महीनासँ रहैत छलीह, आ पहिने कहने छलीह जे बजारक कात सहेली संग एकटा छोट कमरा भाड़ापर लएबाक सोचैत अछि। आइ हुनकर हाथमे पाँच सौक पुरान नोट आ किरायाक एक पर्ची छल। “हम अगिला सोमदिन चलि जाएब,” ओ कहलनि। “सिलाइक दोकान लगसँ रोज घुरबाक रास्ता छोट होएत। मुदा हमरा नाम आश्रयक सूचीसँ काटल जाए, जेना हम अनुग्रह तजि कऽ अपराध कएने होइ।”

रुहानी पुछलीह, “कमरा देखलहुँ? पानि, ताला, भाड़ाक शर्त?” मंजरी कहलीह, “देखलहुँ। मालिक अग्रिम माँगैत अछि; हुनका संग मोलभाव करब। हम अपना निर्णयक अधिकार माँगैत छी, निर्णयक बदला अनुमति नहि।” ई वाक्य सुनि रुखसाना चूल्हाक फूँक रोकि देलीह। ओ फुसफुसाइत कहलीह, “घर खाली भेलापर अगिला सहायता घटि गेल तँ?” रुहानी एहि प्रश्नसँ बचलीह नहि। “तखन सहायता-पत्रक शर्त देखब,” ओ कहलीह, “मंजरीक जीवनकेँ राशनक संख्या बनाकऽ नहि राखब।”

सूरज ऊपर चढ़िते आँगनमे छोट बैठक बैसल। रुखसाना भोजनक खर्चक बही अनलीह, जुबैदा बस-अड्डाक मरम्मतिक चाभी-बक्सा लऽ अएलीह, आ चम्पा अपन मायक दवाईक घड़ी निश्चित कऽ बैसलीह। रुहानी दू गुच्छा मेजपर राखि कहलीह, “मुख्य फाटक, साझा भण्डारघर आ आपातकालीन पानिक नल—तीनू अलग तालासँ खुलत। निजी कोठरीक चाभी रहनिहार लग रहत। सामान्य समयक फाटकक अतिरिक्त चाभी दू निर्वाचित सदस्यक लग रहए; काज बदललापर ओकर हिसाब फेर बनए।”

जुबैदा कहलीह, “निर्वाचित कहब आसान अछि। जे लोक राति भरि काजमे रहत, ओ दोसरक आपातकालीन पुकार कतेक बेर सुनत?” रुखसाना उत्तर देलीह, “हम रसोइमे रहैत छी, मुदा हमहुँ हर राति नहि। अगिनिक कुंजी एहन ठाम रहए जे एक लोकक नींदपर सभक प्राण निर्भर नहि हो।” तखन तीन महिला फाटकक साझा चाभीक दू प्रति बनएबाक प्रस्तावपर राजी भेलीह—एक रुखसानाक लग, एक जुबैदाक लग; रुहानी

सम्पर्कक लेल मूल प्रति राखतीह, मुदा एकमात्र रक्षक नहि। निजी कोठरीक ताला खोलबाक सर्वाधिकार केकरो नहि भेटत।

मंजरी प्रश्न कएलीह, “हम चलि गेलापर हमर पुरान कोठरीक चाभी?” रुहानी कहलीह, “अहाँ सामानक सूची अपना हाथसँ बनायब; जे चाभी अहाँक उपयोगक छल, ओ हस्तान्तरणक पर्चीसहित दियौ। ई आश्रयमे फेर घुरबाक निषेध-पत्र नहि।” मंजरीक मुँह हलुक खुलल। “हमरा डर छल जे बाहर कमरा नहि टिकत तँ एतय कहत—एक बेर चलि गेलहुँ, आब नहि।” चम्पा कहलीह, “घुरबाक निवेदनक नियम सभ लेल समान रहए। मुदा अहाँक भाड़ाक नया ठेकाना बहीमे किएक छपए?” बैठक सहमत भेल जे निजी ठेकाना सार्वजनिक सूचीमे नहि जाएत।

दरबज्जापर काठक चटाई घसीटबाक आवाज सुनाएल। हीरावती कुररियार दू गट्टर लऽ ठाढ़ छलीह। हुनकर घूमि-घूमि चटाई बुनबाक ठाम फाटकक सुरक्षित पटरीसँ दूर बजारक पछिला आँगनमे छल, मुदा ठेकेदारक दू आदमी ओहि ठामक बाँस हटएबाक धमकी देने छलाह। “हमर ग्राहक एतय भेटैत अछि,” ओ कहलीह, “हम खतरनाक पटरिपर लौटबाक जिद नहि करैत छी। मुदा जे सुरक्षित कोनमे हम रोज काज पसारैत छी, ओकरा बिना नाप सबटा अतिक्रमण कहि देल जाइत अछि।” ओ बुनल चटाइक माप आ तीन ग्राहकक पावती मेजपर खोललीह।

तारा बिनौट निरीक्षणसँ घुरैत ओहि ठाम पहुँचलि। ओ बतौलनि जे लाल चेतावनीवला पटरी आ हीरावतीक बुनाइ-ठाम अलग-अलग नापमे अछि। “एहि बजारक पछिला हिस्साक अधिकारक कागद हमरा लग नहि,” ओ कहलीह, “मुदा खतरा कहबाक आधार कोन नाप अछि, से कार्यालयसँ पूछल जा सकैत अछि।” हीरावती अपन नाव लिखबौलीह, संगमे ई शर्त जे ग्राहकक निजी घरक पता संलग्न नहि होए। तारा निर्णय नहि सुनौलीह; अगिला निरीक्षणमे हीरावतीकेँ उपस्थित रहबाक अधिकार लिखबौलीह, आ ओहि दिनक समयक पारिश्रमिकक माँगो जोड़लीह।

दोपहरमे ढोलकक तीन थाप सुनाएल। हरि नटुवा अपन बेटा अंशु संग आयलाह। अंशुक कापीक जिल्द खुलि गेल छल; हरि ओहि फाटल किनारा पर चमड़ाक पातर टुकड़ा चढ़ा रहल छलाह। “साँझक मेलामे हमरा दू गीत बेसी बजएबाक प्रस्ताव अछि,” ओ

कहला, “दाम नीक अछि, मुदा अंशुक परीक्षा भेलापर अगिला दिन विद्यालयमे अभ्यास अछि।” अंशु कहलक, “बाबू, अहाँ काज छोड़ि नहि दिअ। हमर कापी अपन ठाम रहत।” हरि उत्तर देलनि, “तोहर परीक्षा हमर भीतरे रहए, केवल तोहर माथमे नहि।”

रुहानी पुछलीह, “तँ अहाँ की करब?” हरि अपन झोरासँ छोट कागद खोललनि। आयोजकक अग्रिम पर्चीपर पूरा रातिक प्रस्तुति लिखल छल। “हम पहिल दू घण्टा बजाएब आ पछिला भागमे आन वयस्क कलाकारकेँ अवसर देब,” ओ कहला। “पूरा रातिक पैसा नहि भेटत। बचल दामसँ अंशुक किताब किनब, मुदा ओहि लेल ओकर राति नहि बेचब।” रुखसाना हुनकासँ भोजनक दाम अलग देलनि, आश्रयक दान-पंजीमे कलाकारक परिश्रम नहि चढ़ौलनि।

अंशु कापी खोलिकऽ पढ़लनि, “घड़ी देखू, समय चिन्हू।” हरि कहलनि, “तूँ हमर प्रस्तुति समाप्त करबाक घड़ी पुछि लेह।” बालक कहलक, “पहिने अहाँ घड़ी सीखू।” सभ हँसि पड़ल। हीरावती अपन बाँसक एकटा छोट फाँक उठाकऽ अंशुक कापीक जिल्द बाँधि देलीह। “एकरा लेल दाम नहि,” ओ कहलीह, “किएक तँ ई हमर अपन मनक देल वस्तु अछि; मुदा एही बातसँ अगिला चटाई मुफ्त नहि भऽ जायत।” अंशु गम्भीर भऽ सिर हिलौलक।

साँझक कार्यक्रमक प्रचार-वाला पोस्टर लऽ जावेद कलन्दर आयलाह। पोस्टरक ऊपर छपल छल—‘मदारीक करामाती जानवर’। जावेद कागद मोड़ि रुहानीक आगाँ रखलनि। “एहि बेर हमरा संग कोनो पशु नहि,” ओ कहला। “पहिने जे काज करैत छलहुँ, ओ छोड़बाक फैसला हमरा लेल आसान नहि छल। रोजी कऽ लेल नटुआक डोर, छाया आ अपना आवाज सँ नव खेल बनौने छी।” आयोजक पुरान तमाशाक नामसँ भीड़ जुटाबए चाहैत छल। जावेद ओहि मिथ्या प्रचारक बदला अपन नव कलाक नाम माँगैत छलाह।

ओ अपन झोरासँ दू पातर बाँस, कपड़ाक छोट परदा आ पीतरक घण्टी निकाललनि। अंशु परदाक दोसर कात बैसल। जावेद हाथ घुमौलनि तँ परदापर उँच-नीच परछाईँ सँ एकटा उड़ैत चिड़ै सन आकृति बनल, फेर ओ चिड़ै अचानक अपना छायासँ बाहर निकलि गेल—केवल खाली परदा रहि गेल। बच्चा ताली पीटलक। जावेद कहला, “दर्शककेँ जे

देखैत अछि से बुझबाक अवसर देब; कौतूहल रहत, जीवकें बन्द करबाक आवश्यकता नहि।”

आयोजकक एक आदमी कहलक, “पशु नहि रहत तँ टिकट घटत।” जावेद हँसलाह नहि। “घटए दिअ, मुदा विज्ञापन झूठ नहि रहए। आ जे बनल परदा, ओकर डिजाइनक दाम कलाकारकें देल जायत।” हरि हुनका बाजू लऽ कऽ कहलनि, “अहाँक खेलक पिछिला दस मिनट हमरा दू घण्टा बादक खाली समयमे रहि सकैत अछि।” दूनू अपन प्रस्तुति मिला कऽ एकटा नव छोट कार्यक्रम बनौलनि; भुगतानक हिस्सा अलग लिखल गेल। एकर अर्थ सफलता निश्चित भेनाइ नहि छल, मुदा पुरान रोजी छोड़लाक बाद पहिल ठोस अनुबन्ध बनल।

भीड़क पाछाँसँ चन्द्रा बादी अपन घुँघरूला डब्बा लऽ आगाँ अएलीह। हुनका नाम देखिकऽ पोस्टर छापएवाला युवक अनायास पूछलक, “अहाँ सभक जातिक रूत्री तँ नाचहि करैत होएतीह ने?” चन्द्रा डब्बा फर्शपर राखि देलीह। “हम गीतो गबैत छी, तालो सिखबैत छी, आ जखन मन नहि हो, तखन नहि नाचैत छी,” ओ स्पष्ट कहलीह। “हमर देह अहाँक जाति-पंजीसँ मंचपर नहि चढ़त।” युवक अपन बात हँसीमे टारए चाहलक, मुदा रुखसाना हुनका पुछलीह, “जे प्रश्न अहाँ पुरुष कलाकार सँ नहि पूछैत छी, ओ चन्द्रासँ किएक?”

चन्द्रा डब्बा खोललीह। भीतर घुँघरूक संग हाथसँ लिखल गीतक पन्ना आ पिछिला आयोजकक अपूर्ण भुगतान-पर्ची छल। “हमरा नाचक अधिकार अछि; नहि कहबाक अधिकारो,” ओ कहलीह। “जँ हम मंचपर जाएब तँ परिचय हमर चुनल ‘चन्द्रा बादी—गायन आ ताल-प्रशिक्षण’ रहत। कार्यक्रमक फोटो, वीडियो आ गीतक अलग अनुमति चाही। आ पुरान बकाया मिटला बिना नव पूर्ण रातिक अनुबन्ध नहि।” युवक पोस्टरक खाली कोनापर पेंसिलसँ नया परिचय लिखलक। चन्द्रा ओकरा देखिकऽ कहलीह, “पेंसिल नहि, छपाइ बदलू। लोकक आँखि पेंसिलक सुधार नहि देखत।”

कार्यक्रमक बात सुनि नगर कार्यालयक कर्मचारी आश्रयमे आएल। ओकर हाथमे भवनक अस्थायी सहायता-आवेदन छल। ओ कहलक, “जतेक लोक एतय रहैत छथि, सभक नाम आ चाभीक धारकक एक्के सूची चाही; तखन राहतक प्रमाण सहज होएत।”

रुहानी ओकरा बैसए कहलनि, मुदा पन्ना हाथमे नहि देलीह। “आगि-पानि सुरक्षा लेल कोन ठामक चाभी ककर लग अछि, ई सूचना देब,” ओ कहलीह, “मुदा निजी कोठरीक चाभी आ रहनिहारक व्यक्तिगत इतिहास राहतक सार्वजनिक सूची नहि।”

कर्मचारी पूछलक, “तखन जँ कियो गायब भऽ गेल?” नैरा ओहि समय हीरावतीक आवेदन पढ़बामे सहायता करबाक लेल आयल छलीह। ओ उत्तर देलीह, “गायब व्यक्ति सम्बन्धी वास्तविक शिकायत हो तँ अलग प्रक्रिया आ जाँच होएत। प्रत्येक रहनिहारकें सम्भावित अपराधक अभिलेख मानब ओहि प्रक्रियाक स्थान नहि लऽ सकैत।” ओ अपन रोकल सरकारी ठेकाक बात स्पष्ट कएलनि; कागद पढ़बामे मदति करैत छलीह, आधिकारिक आदेश नहि दैत छलीह। कर्मचारीक दाबा छल जे फाटकक पुरान मजदूरी-सूचीमे आश्रयक ठेकाना लिखल भेटल अछि।

तारा पुरान सूचीक प्रति मँगौलीह। ओहिमे साँचहि ओहि गल्लीक नाम छल, मुदा तिथि अस्पतालक मरम्मत-समयसँ पहिलुका छल; ठेकानाक ओ पाँति सामग्री पहुँचएबाक ठाम दर्शबैत छल, केकरो रात्रिक निवास नहि। ऊपर लिखल पुकारनामक मूल हस्ताक्षर आ मजदूरी-पावती उपलब्ध नहि छल। नैरा कहलीह, “एक्के गल्ली लिखलासँ एक्के रहनिहार सिद्ध नहि होइत। हम एखन एतबे रोकि सकैत छी जे आश्रयक वर्तमान लोकक नाम एहि पुरान पाँतिसँ नहि जोड़ल जाए।” मिथुनक वास्तविक खोजक फाइलमे एहि बैठकक कोनो अनाम निवासीक नाम नहि पठाओल गेल।

कर्मचारी नाखुश छल, मुदा रुखसाना स्पष्ट आगि-पानि निरीक्षणक सूची आ सार्वजनिक उपयोगवला कोठरीसभक नाप देखौलीह। व्यक्ति-विशेषक निजी ठेकाना सूचीसँ बाहर रहल। ओ प्राप्ति देबाक बदला मूल भवन-शर्तक प्रति मँगाबए स्वीकार कएलक। “राहतक फैसला एतयसँ नहि कऽ सकब,” ओ कहलक। रुहानी उत्तर देलीह, “तँ ‘फैसला शेष’ लिखू: ‘असहयोग’ नहि।” कर्मचारीक लेखनी ठमकल; अन्तमे ओ प्राप्तिक कात लिखलक—अतिरिक्त निजी विवरणक आधार जाँचाधीन।

हीरावती मंजरीक फाटल झोराक पट्टी सिलीह, आ बदलामे मंजरी हुनकर चटाईक कातक खुलल धागा बाँधि देलीह। दूनू एक-दोसरकें मुफ्त काजक भार नहि देलीह; छोट अदला-बदलीक मूल्य अपन-अपन पन्नापर लिखलनि। चन्द्रा ओतय बैसि नव पोस्टरक

भाषा पढ़लीह। “हम गीत गाएब, मुदा एहि कार्यक्रममे स्त्री देह पर हँसी बनएवाला कोनो पद नहि,” ओ कहलीह। हरि गीतक एकटा पाँति बदललनि। जावेद घण्टीकें अंशुक हाथसँ लऽ कऽ खुद घुमौलनि। आँगनमे क्षणभरि कलाकारक सचमुचक कक्षा बनि गेल।

अगिला भोर हीरावती बजारक पछिला आँगनमे पहुँचलि। रातिमे हटाओल बाँसक जगह पयरक गहिरा निशान छल; मालक गट्टर ओ लऽ अएलीह, मुदा ओहि ठाम बसबाक पुरान अधिकार स्वतः लौटि नहि आएल। कार्यालयसँ नाप-सुनवाइक तिथि भेटल छल। ओ दोसर कारीगरकें कहलीह, “आइ हम एहि सुरक्षित कात छोट काम पसारब। सभ सुनवाइक दिन जाउ, मुदा अपन खोएल कमाइक हिसाब लऽ जाउ।” ओहि निर्णयमे विजयक घोषणा नहि छल; अपन श्रमकें बेआवाज हटि जेबाक मना छल।

मंजरीक कमरा देखए रुहानी नहि गेलीह। सहेली संग ओ स्वयं गेलीह; चम्पा चाहलापर बस एकटा किरायाक शर्तक कापी पढ़ि देलीह। ओकरा मालूम भेल जे पानिक देय लिखल नहि अछि। मंजरी मालिकसँ पूछिकऽ प्रति पर लिखबौलीह; अग्रिमक एक हिस्सा घटल नहि, मुदा मासिक पानिक अलग अनुमान लिखल गेल। सोमदिन जायब निश्चित भेल। आश्रयमे हुनकर खात तुरन्त दोसरक नामपर नहि चढ़ल—पहिने आवश्यकताक सूची, कक्षाक मरम्मत आ खात बदलबाक तिथि निश्चित करबाक शर्त राखल गेल।

चम्पाक छुट्टीक पहिल दिन मायक दवाईक तीन पर्ची बहिनकें देल गेल। रुहानी कहलनि, “जँ चाही तँ हम घाटक बाट धरि छोड़ि आबी।” चम्पा मुस्कराइलीह, “नहि। दू दिनक छुट्टीमे हमर बाट हम चुनब।” ओ अपन छोट कपड़ाक झोरा लऽ बाहर निकललीह। खातपर बैसल वृद्धा कहलनि, “मायसँ बड़का अनुमतिक कागद नहि होइत।” सभ हँसि पड़ल। चम्पाक आँखिमे बहुत दिनक बाद अपन लेल राखल समयक एकटा साफ रेखा चमकल।

दुपहरिया बाद रुहानी, रुखसाना आ जुबैदा फाटकक नवीन चाभीसभ जाँचलीह। मुख्य ताला सहज घुमल, भण्डारघरक अलग चाभी ओहिमे नहि लागल। दूनू निर्वाचित सदस्य अपन प्रति आ जिम्मेदारीक सीमा लिखित स्वीकार कएलीह। आपातकालीन स्थिति मे दू गवाही, आवश्यक कार्यक उल्लेख आ पछिला सूचनाक नियम बनल; जँ जानक तुरन्त खतरा हो तँ पहिने बचाव, तकर विवरण बादमे। निजी कक्षमे बिना अनुमति नियमित

प्रवेशक कोनो अधिकार एहि व्यवस्थासँ नहि बनल। रुहानीक जे पुरान विशेषाधिकार छल, ओ हिसाबसहित घटल; हुनकर अपन थकान सेहो कनिक कम भेल।

साँझमे हरिक कम समयक कार्यक्रम भेल। अंशु किताब खोलने पहिल गीत सुनलक, फेर मैना संग घर घुरि गेल। जावेदक परछाई-चिड़ै पर बच्चासभ ताली बजौलक; कियो असल पशु नहि खोजलक। चन्द्रा अपन पहिल गीतसँ पहिने माइकपर कहलीह, “हमर नाम आ काज पोस्टरपर जेना छपल अछि, ओहिना सुनू। हम गीतक बीच अपन इच्छा सँ विश्राम लेब।” दर्शकमे किछु लोक अधीर भेल, मुदा गीत शुरू होतहि ताल पकड़लक। चारू कलाकारकें निर्धारित पहिल किस्त भेटल; बचल भुगतानक तिथि लिखल गेल, ओकर प्राप्ति एखन शेष छल। हरि ओहि पहिल किस्तसँ अंशुक अगिला मासक अभ्यास-पुस्तिका किनलनि, आ कवरपर लिखल बच्चाक नाम देखिकऽ कहला, “एहि दामक हिसाब हमरा हर प्रस्तुति सँ पहिने करबाक चाही।”

राति आश्रय लौटिकऽ रुहानी देखलीह जे पवनचक्की एहि बेर निःशब्द घुरि रहल अछि। मंजरी खाटपर बैसि नव कमराक खिड़कीक माप लिखि रहल छलीह—एक पर्दा सिलबाक अछि। रुखसाना भोजनक बही बन्द करैत कहलीह, “आजु फाटक तोहर अनुपस्थितिमे दू बेर खुजल।” जुबैदा उत्तर देलीह, “दू बेर समय लिखल गेल, एक बेर नलक काज लेल, एक बेर औषधि अनबाक।” रुहानी हँसि कहलीह, “पहिने ई घर हमर लौटबाक प्रतीक्षा करैत छल। आइ घरक लोक एक-दोसरक प्रतीक्षा करब सीखि रहल अछि।”

बाहरक बेंचपर एकटा खाली कप रहि गेल छल। रुहानी ओकरा धोएबाक लेल उठबैत छलीह, तखने मंजरी कहलीह, “ई हमर अछि। अगिला घरमे लऽ जाएब।” रुहानी कप हुनकर हाथमे देलीह। “जरूर लऽ जाउ,” ओ कहलीह। मंजरी कपक भीतरक हलुक चिरा देखलीह, जेना एहि छोट वस्तुसँ आगाँक जीवनक कोनो अनिश्चितता देखल जा सकैत हो। फेर ओ एकरा कपड़ामे लपेटि झोरामे रखलीह। दरबज्जाक बाहर गलीक बत्ती जलि उठल; कोनो लोकक निजी चाभी दोसरक हाथमे देबाक आवश्यकता नहि पड़ल।

अध्याय ५४ • अनुष्ठान बिना प्रधान

आश्रयक भण्डारघरक बाहर भोरमे एकटा काँटेदार तारक टुकड़ा रुखसानाक साड़ीमे अँटकि गेल। ओ बोरा उतारि रहल छलीह। काल्हि कलाकारसभक कार्यक्रम समाप्त भेलाक बाद बचल चाउर आजुक सामूहिक रसोइमे खर्च करबाक छल। मुदा दरबज्जाक आगाँ एकटा नव तख्ती ठाढ़ छल—‘राहत वितरण: मुख्य संयोजकक स्वीकृति अनिवार्य’। तख्तीक नीचाँ नाम लिखबाक जगह खाली छल। रुहानी हाथक चाभी घुमबैत रुकि गेलीह। “काल्हि हम सभ ई बात तय नहि केने रही,” ओ कहलीह। “कोन मुख्य संयोजक?”

रुखसाना बोरा धरि राखि उत्तर देलीह, “नाम लिखबासँ पहिने पूछू जे राहतक चाउर अछि, कारीगरक मजदूरीक बदला अएल चाउर अछि, कि बच्चासभक भोजन लेल देल दान। तख्ती बनाबएवाला ई तीनूकेँ एक्के कोठीमे रखि देलक।” एकटा नगरक अस्थायी सहायता, दोसर हाटसँ खरीदल अन्न, तेसर लोकक स्वेच्छिक योगदान। रुहानी तख्ती हटएबाक बदला ओकरा दीवारसँ टिकौलनि। “जकरा ई आदेश चाही, ओ आगाँ आबि कारण कहए,” ओ कहलीह।

दुलारी राजवार सबसँ पहिने एलीह। हुनकर हाथमे राशनक पातर थैला छल, भीतर दू मुठ्ठी चना आ एकटा पुरान उधार-पर्ची। कार्यालयक वितरक काल्हि कहने छल जे राहतक अगिला हिस्सा पएबाक हो तँ पहिने सहकारी ऋणक पुरान बकाया छोड़बाक सहमति देथिन्ह। दुलारी पर्चीक दहिना कोनपर अँगुरी रखलीह। “धानक ऋणक विवाद अलग अछि; भुखाइत बच्चाकेँ भेटबला अन्न ओकर जमानत कोना भेल?” ओ पुछलीह। रुखसाना हुनकर थैला मचियापर रखबा देलीह, मुदा पर्ची बिनु पढ़ने ‘ऋण माफ’ लिखबाक लेल तैयार नहि भेलीह।

ओहि समय गुरमीत कौर साइकिलसँ उतरलीह। पछिला साँझ ओ साझा रसोइक बासन लेल दानक दू पेटी आ कुछ नगद जमा कएने छलीह। दाता सभ चाहैत छल जे बासन पर अपन नामक पट्टी लगाओल जाए। गुरमीत हिसाबक दू पन्ना खोललीह—पेटीमे आयल वस्तु, नगरक अनुदान, आ कलाकारसभकेँ देल वास्तविक भुगतान। “नाम

लगाओलासँ दान पारदर्शी नहि होइत,” ओ कहलीह। “कतेक अएल, कतेक खर्च भेल, आ केकर निर्णयसँ खर्च भेल, से सभकेँ देखबाक भेटए।” हुनकर आवाजमे उलाहना कम, दृढ़ता बेसी छल।

अगिला दुपहरिक पहिने जंगलक कातसँ दुर्गा दनुवार पहुँचलि। हुनकर साइकिलपर बाँसक छोट लट्टीसभ बान्हल छल। फाटक लगक अस्थायी बाटक दहिना कोनमे बालकसभ लेल पकड़बाक रेलिड बनबाक छल। एक पंचायत-सदस्य कहने छल जे जंगलसँ बाँस लऽ अबैत परिवारक नाम चढ़ाओल जाए, तखन काज चलत; मुदा बाँस काटबाक परिमाण आ रस्ता तय नहि छल। दुर्गा कहलीह, “हम जंगल अपन घरक आँगन नहि कहैत छी, मुदा एतयक पगडंडी कतेक बरखसँ चलैत अछि से हम जनैत छी। अनुमति कतेक बाँस लेल, कोन ठामसँ, आ कतेक दिन धरि, ई कागदमे रहए। केवल हमर जातिक लोककेँ ‘जंगल काटनिहार’ लिखि नहि दियो।”

माधुरी दांगी अपन बेटीक संग रसोइमे घुसलीह। बेटी लोहीमे ओढनी बान्हि मखान छाँटि रहल छल। माधुरी साझा खाद्य उत्पादनक प्रस्ताव लऽ एलीह—धानक चूड़ा, भुजल मखान आ सुखाओल साग विद्यालय आ राहत-दलकेँ देबाक। ओ पहिल पन्नापर दाम लिखने छलीह, दोसरपर काज करनिहार स्त्रीसभक हिस्सा। रुखसाना देखलीह जे पुरुष आपूर्तिकर्ताक भाड़ा जोड़ल छल, मुदा चुन्हि-चुन्हि साग सुखएनिहार स्त्रीसभक समय ‘घरेलू सहयोग’ कहल गेल छल। माधुरी कलमसँ ई शब्द काटि देलीह। “घरमे कएल काजो बाजारमे बिकैत अछि तँ ओकर मोल रहत,” ओ कहलीह।

एक्के छोट आँगनमे चारि प्रकारक कागद जमा भऽ गेल—राहतक अन्न, सार्वजनिक दान, बाँसक बाट आ खाद्य उत्पादन। नगरक कर्मचारी कहलक, “मुख्य संयोजक एकटा रहत तँ फैसला सरल होएत।” रुहानी उत्तर देलीह, “सुरक्षाक आपातकालमे फोन करबाक लोक एकटा हो सकैत अछि। मुदा भोजनक देय, जंगलक अनुमति आ ऋणक अधिकार ओकरे एकटा हस्ताक्षरसँ बदलि नहि जाइत।” कर्मचारी नाराज भेल। गुरमीत कहलीह, “हमरा अध्यक्षक नामसँ नहि, ओकर हस्ताक्षरक सीमा सँ काज अछि।”

बहुत पहिनुका मिथिलामे उदयनक अध्ययनस्थलपर ओहिना एकटा पन्ना बिनु भरने पड़ल छल। ई काल आधुनिक विदेहपुरक संग एक्के नहि छल। ओतय मीमांसक अतिथि

राति लिखल अपन पूर्वपक्षक प्रति लऽ भोरमे लौटि अएलाह। आँगनमे यज्ञक लकड़ी नहि, केवल ताड़पत्र, जल-पात्र आ दू माटिक आसन छल। उदयन अतिथिक ठामपर बैसबाक पहिने शिष्यसभकेँ कहलनि, “आजु उत्तर नहि, पहिने आपत्तिक सबल रूप सुनब। जँ प्रश्नक धार तोड़ि कऽ उत्तर देब तँ उत्तरक तेज अपने कुन्द भऽ जायत।”

मीमांसक अपन पन्ना खोललनि। “हम कहैत नहि छी जे यज्ञ मनुष्य बिना होइत अछि,” ओ कहलनि। “यजमान अछि, ऋत्विज छथि, मंत्र-पाठ अछि, निश्चित कर्मक्रम अछि। प्रश्न ई अछि जे एहि कार्यसभक धर्म-फल लेल, आ धर्मक आज्ञाक प्रामाण्य लेल, अतिरिक्त सर्वज्ञ प्रधानकेँ अनिवार्य किएक मानब? विधि अपन विधानसँ बोध करबैत अछि; कर्मक परवर्ती फल लेल अपूर्व अथवा अदृष्टक चर्चा सम्भव अछि। जँ प्रत्येक बोधक पाछाँ कोनो व्यक्तिक इच्छा आवश्यक ठहराओल जाए, तँ वैदिक वचनक अपौरुषेय प्रामाण्यक की होएत?”

उदयन ध्यानसँ सुनलनि। एक शिष्य तुरन्त उठल, “जँ अपूर्व अदेखल अछि तँ हुनकर सिद्धान्त असार।” उदयन हाथसँ संकेत कऽ रोकलनि। “अहिना उत्तर देबाक निषेध काल्हिए भेल छल,” ओ कहलनि। “हमर न्यायपरम्परा सेहो अदृष्टक चर्चा करैत अछि। ई विवाद अदृष्ट नामक शब्दक अस्तित्व नहि, व्याख्यामे ओकर पर्याप्तताक अछि। अतिथि कहैत छथि—कर्मक विधान चलाबए लेल अन्य चेतन नियन्ता अनावश्यक; आब एहि आपत्तिक उपपत्ति देखू।”

अतिथि पाछाँ झुकलाह। “आरो अछि,” ओ कहलनि। “जँ अहाँ वैदिक वचनक विश्वासक आधार सर्वज्ञ वक्तामे देखैत छी, तँ ओ वक्ताक सर्वज्ञता कोन स्वतन्त्र प्रमाणसँ जाँचब? आ जँ वक्ताक परिचय एहि वेदसँ लेब, तँ परस्पर आश्रय नहि बनत? विधि-वाक्य अनादि परम्परामे सुरक्षित मानल जाए तँ प्रत्येक कल्पित आरम्भमे पहिल शिक्षक खोजबाक बाध्यता किएक?” उदयन ई तीन प्रश्न अलग पाँतिमे लिखबौलनि—प्रामाण्य, फल-व्यवस्था, आ परम्पराक पुनः प्रवर्तन।

शिष्य सोमेश एकटा पुरान धातुक घण्टी लऽ आयल। “ई घण्टी अपने बजैत नहि,” ओ कहलक। “कोनो बजेनिहार चाही; तँ अनुष्ठानक प्रधान ईश्वर आवश्यक।” मीमांसक घण्टी ओकर हाथमे देलनि। “तोहर दृष्टान्तमे हाथक क्रिया देखाइत अछि; हमर प्रश्न

धर्मविधानक दूरस्थ फलपर अछि,” ओ कहला। “दृष्टान्तक सीमा बिनु बुझने ओकरा प्रमाण बनाओलासँ तर्क छोट भऽ जाइत अछि।” “गलत दृष्टान्त सुधारबाक साहस शास्त्रार्थक पहिल कमाइ अछि,” ओ कहलनि।

उदयन अपन उत्तरक पहिल सूत्र बिनु श्लोक उद्धृत केने कहलनि, “ज्ञान उत्पन्न होइतहि ओकर यथार्थता सभ पक्षमे स्वतः निर्विवाद मानल जाए, एहि मतपर हमर आपत्ति अछि। भ्रम आ सत्यक भेदक चिह्न जाँचबाक पड़ैत अछि। विश्वसनीय कथनक प्रश्नमे वक्ताक योग्यता, दोषक अभाव आ अन्य प्रमाणसँ सम्बन्ध महत्त्व रखैत अछि।” अतिथि तुरन्त पुछलनि, “जँ जाँच केवल बाहरी आधारसँ हो, तँ प्रथम विश्वसनीय आधार कतयसँ आएत? आ वचन सुनि काज करनिहार प्रत्येक मनुष्य पहिने वक्ताक चरित्रक सम्पूर्ण खोज करैत अछि?”

उदयन हँसलाह नहि। “समस्त सामान्य व्यवहार जाँचक पूरा ग्रन्थ पढ़िकऽ नहि चलैत,” ओ उत्तर देलनि। “मुदा विवाद उठला पर प्रामाण्यक समर्थन केहन होएत, से न्याय पूछैत अछि। अहाँक आत्मतः प्रामाण्यक प्रस्ताव स्थिर अर्थ देबाक एकटा बाट अछि; हमर परतः विचार दोष-निर्णयक बाट खोलैत अछि। एखन केवल एहि मतभेदसँ ईश्वर सिद्ध नहि भेल। हमर बड़का दावा लेल आरो तर्क चाही।” लिखनिहार शिष्य उत्तरक बगलमे स्पष्ट ‘अपूर्ण’ लिखलक।

दोसर प्रश्नपर उदयन कहलनि, “जँ जगतक सृष्टि आ प्रलय मानल जाए, तँ ज्ञानक परम्परा नव आरम्भमे कोना प्रवर्तित होएत, ई न्यायसंगत प्रश्न बनैत अछि। केवल मनुष्यक अटूट गुरु-शिष्य-शृङ्खला मानि लेब पर्याप्त नहि, जखन ओ शृङ्खलाक निरन्तरतापर स्वयं विवाद अछि। हमर पक्ष एहि ठाम सर्वज्ञ उपदेशकक आवश्यकता प्रतिपादित करैत अछि।” मीमांसक मुस्करौलनि, “मुदा सृष्टि-प्रलयक अहाँक स्वीकार्य कल्पना हम पर थोपि नहि सकैत छी। अनादि लोकव्यवहार आ नित्य शब्द-सम्बन्धक हमर विचारकें पहिने खण्डित करू।”

उदयन मानेनिहार स्वरमे कहलनि, “ठीक। अहाँक जगत्-सम्बन्धी पूर्वधारणा हमरासँ भिन्न अछि। हमर निष्कर्ष तखन धरि सार्वभौम आदेश नहि, विवाद्य सिद्धान्त अछि, जखन धरि बीचक पाँतिसभक तर्क परखल नहि जाए।” ओ शब्दसभ शिष्यकें ‘आजुक

शास्त्रार्थक संवाद’ कहि लिखबौलनि; केकरो मूल ग्रन्थक प्रमाणित पंक्ति कहि नहि।
अतिथि अपन पन्नामे लिखलनि—‘प्रश्न अबाधित, उत्तर परीक्षणाधीन’।

विदेहपुरमे ओहि दिन मध्यान्ह धरि चाउरक बोरा खुलल नहि छल। मुदा बच्चासभकेँ भूख लागल छल। रुखसाना कहलीह, “हिसाबक विवाद समाधान धरि बच्चा भूखल रहत, ईहो न्याय नहि।” गुरमीत पेटीक ढक्कन खोलि देखौलीह जे नगरक सहायता-वाला थैला अलग बाँधल अछि। दुलारीक पुरान ऋण-पर्ची ओहि थैलामे नहि छल। ओ सभ निर्णय लेलनि जे विद्यालयक प्रमाणित उपस्थितिवाला बच्चा आ चिकित्सकीय आवश्यकता रहल आश्रितक आजुक भोजन रोकी नहि सकैत; दू सदस्य प्राप्ति लिखत, बादमे सार्वजनिक बहीमे लागत जोड़ल जाएत। ककरो निजी ऋण ओहि पाँतिमे नहि घुसत।

दुलारी फाटक लग ठाढ़ वितरककेँ फोन लगौलीह। आवाज तेज छल—“कर्ज छोड़बाक कागदमे हस्ताक्षर करब तँ कल्हिक चाउर भेटत।” दुलारी उत्तर देलीह, “हम आजुक राहत स्वीकार करब, आ कर्जक हिसाबक अलग सुनवाई माँगब। राशन लेल दावा छोड़बाक वाक्य काटि कऽ नव प्रति दियौ।” वितरक कहलक, “तँ वितरण रुकि सकैत अछि।” गुरमीत फोन अपन हाथमे नहि लेलीह; ओ दुलारीक अनुमति सँ सुनल कथनक तिथि लिखलीह। रुखसाना बच्चासभक भोजन लेल अपन खरीदल चाउरक हिस्सा अलग निकाललीह, जाहिसँ दुलारीक अधिकारक विवाद निजी दानमे लुकाए नहि।

दुर्गा दनुवार वन-पंचायतक दू सदस्यकेँ स्थलपर लऽ अएलीह। एक सदस्य बाँसक ढेर देखिकऽ कहलक, “जे ककरो जंगलसँ अबैत अछि, सभपर एक्के नियम।” दुर्गा ओकरा सँकर फाटकक कोन देखौलीह। “ई चारि लट्ठी पुरान कटाइ-स्थलक बचल हिस्सा अछि; ई चारि नव चाही। हम नव काटबाक ठाम, परिमाण आ पुनरोपनक समय लिखि देब। मुदा पंचायत बाँस लऽ अबैत लोककेँ प्रवेश सँ वञ्चित कऽ सभ काम ठेकेदारक नाम करए, ई बात नहि मानब।” तारा बिनौट स्पष्ट कएलीह जे सुरक्षा-रेलिङ लेल केवल बाँसक मोटाइ नहि, बन्धन आ भारक परीक्षणो चाही।

पंचायतक वृद्ध सदस्य कहलक, “अहाँक जंगल-ज्ञान मानब, मुदा सामूहिक बाटक जोखिम हमरो माथपर रहत।” दुर्गा एकटा लट्ठी जमीनपर पसारलीह। “तँ निर्णयमे अहाँक नाम रहत आ हमर काजक नामो,” ओ कहलीह। दू बेर नाप भेल। पंचायत सीमित

संख्यामे बचल बाँस उपयोगक अस्थायी अनुमति देलक; नव कटाइक सीमा नक्शामे चिन्हबाक दिन निश्चित भेल। तारा चेतौलीह जे एहि अनुमतिसेँ फाटकक पूर्ण सुरक्षा-प्रमाणन नहि होइत। दुर्गा लिखित समय देखिकऽ छोट साँस छोड़लीह—काजक दाम आइ निश्चित भेल, जंगल-अधिकारक बड़का प्रश्न एखन खुलल।

माधुरी दांगीक बेटी अनन्या थालमे सुखाओल साग राखि बैसलीह। “माए, नाम हमर लिखब कि सभक?” ओ पुछलीह। माधुरी कहलीह, “जे काज केलक, ओकर नाम।” रसोइमे तीन स्त्री मखान छाँटने छलीह; एक पुरुष हाटसँ बोरा उठाकऽ देने छल। पुरान पर्चीमे ओकर ढुलाईक दाम छल, मुदा स्त्रीसभक समय शून्य। माधुरी चारि लोककेँ अलग-अलग समय लिखबौलीह। एक महिला कहलीह, “हम तऽ बीचमे बच्चाकेँ दूध पियाबए उठि गेल रही।” माधुरी उत्तर देलीह, “तैं तोहर काजक समय कम लिखब, मुदा शून्य नहि।”

साझा भोजनक नमूना चखबाक लेल रुखसाना, गुरमीत आ दुर्गाकेँ बजाओल गेल। मखानमे नमक बेसी छल; अनन्या जीभ बाहर कऽ पानि माँगलक। सभ हँसल। माधुरी अपन बनल नमूनापर दोष मानलीह, मुदा एकरा महिलासभक कौशलपर अविश्वास बनए नहि देलीह। “अगिला खेपमे नाप बदलत,” ओ कहलीह, “खराब नमूनाक लागत ककर माथ पड़त से अनुबन्धमे लिखब। जे श्रमिक निर्देश अनुसार काज केलक ओकर मजदूरी हानि भरबाक नामपर काटब नहि।” रुखसाना एकटा छोट परीक्षण-खेपक आदेश देलीह; पैघ खरीद पछिला जाँचपर निर्भर रहल।

गुरमीतक दान-पंजी सभाक बीच रखल गेल। एक दाता भोजनक थालपर अपन संस्थाक नाम चाहैत छल, मुदा दिअल रकमक उपयोगसँ रसोइक मजदूरी काटबाक मौखिक शर्तो देने छल। गुरमीत दाताकेँ लिखलीह—दान आ मजदूरीक खाता मिश्रित नहि होएत; सार्वजनिक धन्यवाद सम्भव अछि, मुदा कोनो दानदाता श्रमिकक देय एकतरफा बदलि नहि सकैत। दाताक उत्तर एखन नहि आएल। जे पैसा विवादित छल ओकरा खर्च भेल कहि नहि देखाओल गेल।

कर्मचारी फेर पुछलक, “तखन एहि सभ कामक प्रधान के?” रुहानी भण्डारघरक तख्ती फेर उठौलीह। “आपातकालक संकेतक जिम्मा दू लोकक पास रहत। खाद्य-सुरक्षाक

जिम्मा रुखसानाक दलक, अनुदानक लेखा गुरमीतक, बाँसक स्थल-जाँच तारा आ दुर्गाक संग, ऋणक दावा दुलारी अपन नामसँ रखतीह। एक्के आदेशमे सभक अधिकार विलीन नहि होएत।” ओ तख्तीपर ‘मुख्य संयोजक’क बदला लिखलीह—‘काजक हिसाब आ सम्पर्क-सूची’। नगरक कर्मचारी कहलक, “ई नियमित अनुमति नहि।” रुहानी उत्तर देलीह, “ईयो हम लिखि रखब।”

नैरा पुरान मजदूरी-पंजीक नकल लेने पहुँचलि तखन दुलारी हुनका ऋण-पर्ची देखौलीह। ओकरा पर एक पाँतिमे ‘स्वेच्छासँ देय छोड़ल’ लिखल छल; दुलारीक हस्ताक्षर कतहु नहि। कर्मचारी कहलक जे खाली पाँति पर नाम चढ़ि जाइत तँ राहतक वितरण सहज भऽ जाइत। नैरा नकलक तिथि, पन्नाक संख्या आ प्राप्तिक स्रोत लिखलनि। “ई वाक्यक अस्तित्व देखाइत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा दुलारीक सहमतिक प्रमाण नहि। ओ अपने सँ सहमति नहि मानि लेल जाए। जँ वितरण रोकबाक लिखित आधार अछि तँ ओकर प्रति माँगू।” दुलारी सुनवाइक पर्चीपर अपन नाम लिखलीह, ऋण छोड़बाक पर्चीपर नहि।

नैरा एहि बीच एक आन कागद सेहो देखलीह। बच्चा-अपहरणक अफवाह फैलएवाला पर्चाक पाछाँ राहत-गाड़ीक एकटा नम्बर लिखल छल। कियो कहलक जे फाटकक पुरान मजदूर सेहो ओहि नम्बरक गाड़ीमे गेल छल। नैरा दू सूची मिला कऽ जाँचलीह। पहिल नम्बर राहतक वितरण-दिवसक गाड़ी-पावतीमे छल, दोसर पुरान पंजीमे समान अंक छल मुदा वर्षक अंक फाटल छल। “एक्के अंक सँ एक्के वाहन, एक्के यात्री आ एक्के अपराध सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलीह। मूल पावती आ वास्तविक शिकायतक समय माँगल गेल; बिना प्रमाण कोनो चालक, मजदूर अथवा आश्रयवासीकेँ सन्देहक नव नाम नहि देल गेल।

दुपहरक बाद पुरान मिथिलाक अध्ययनस्थलपर फेर तर्क चलल। शिष्य सोमेश पुछलक, “गुरुदेव, जँ सर्वज्ञ नियन्ता चाही तँ लोकक गलत कर्मक दोष केकर?” मीमांसक अतिथि प्रश्नमे अपन बात जोड़लनि, “जे विधि करनिहार अछि ओकरे क्रियाक उत्तरदायित्व चाही। अधिदैविक निर्णायक मानलासँ मनुष्यक दोष मिटि जाए, एहन होएबाक नहि।” उदयन सहमत भेलाह जे मनुष्यक कर्तव्य आ देखल कारणक जिम्मेदारीक विचार हटबाक नहि। मुदा ओ अपन न्यायपक्ष छोड़लनि नहि। “हमर दावा,”

ओ कहला, “व्यवहारक प्रत्येक क्रिया करएवाला ईश्वर छथि, से नहि; प्रश्न जगत्-व्यवस्था आ धर्मवचनक अन्तिम आधारक अछि।”

अतिथि उत्तर देलनि, “तैं एकर स्पष्ट साधन चाही। ‘अन्तिम आधार’ कहि देवाक मात्रसँ प्रमाण नहि भेटैत अछि।” उदयन शिष्यकें कहलनि जे अगिला दिवस वैदिक वाक्यक स्वतः अथवा परतः प्रामाण्यपर स्वतंत्र विचार होएत, आ सृष्टि-प्रलयक पक्षमे अनुमानक शर्त लिखल जाएत। हुनका अपन उत्तर प्रिय छल; तइयो ओ अतिथिक तीन प्रश्नक कोनो पाँति हटौने बिना प्रति वापस देलनि। ताड़पत्रपर दुनू मत अलग अक्षरमे रहल। दीपक बुझए सँ पहिने एकटा विवाद स्पष्ट भेल, समाधानक अधिकार कियो एकटा नामकें नहि देलक।

विदेहपुरक रसोइमे साँझ ढलि रहल छल। दुलारीक परिवारकें आजुक भोजन भेटल; पुरान ऋण विवाद समाप्त नहि भेल। दुर्गाक चारि बचल बाँस मापि सुरक्षित ठाम राखल गेल; नव कटाइक अनुमति निश्चित नहि छल। माधुरीक नमूना कम नमकसँ दोबारा बनल; पहिल परीक्षण-खेपक दाम सभ श्रमिकक नामसहित लिखल गेल। गुरमीत विवादित दानक पाँतिक आगाँ खाली प्राप्ति-स्थान राखलीह। कोनो खाली पाँति भरि एकटा लोक सभक मालिक नहि बनल।

रुखसाना भाँड़ धोएबाक समय रुहानीकें कहलीह, “आजु भोजन बचल, मुदा कागद बढ़ि गेल।” रुहानी हँसलीह, “कागदसँ भूख नहि मिटैत, मुदा बिना कागद कतेक बेर ककरो भुखाइत राखि दोसरक नामपर हिसाब बन्हा देल जाइत अछि।” “अगिला बेर नमक हम नापब,” ओ कहलक। माधुरी ओकरा अपन बहीक खाली कोना देखौलीह। “आ अपन समय सेहो लिखिहे,” ओ कहलीह।

नैरा निकलैत काल भण्डारघरक नव तख्ती पढ़लीह। तख्तीक निचला पाँतिमे छोट अक्षर छल—‘जे काज करैत अछि, ओकर देय आ ओकरा मना करबाक अधिकार अलग लिखू’। ओ अपन जाँच-पन्ना बन्द कएलनि। बच्चाक मायक वास्तविक बयान लेल तय अगिला मुलाकातक तिथि हुनकर कापीमे छल। आजुक अफवाहक पर्ची सँ ओहि मायक कथा लिखल नहि जा सकैत छल। दरबज्जापर रुहानी चाभी घुमौलीह; भीतर ककरो निजी कोठरी नहि खुजल, आ बाहर रसोइक चूल्हा समयपर बुझि गेल।

अध्याय ५५ • हराएल बच्चाक माए

लता भोरमे पुरान कपड़ाक झोरासँ तीनटा टिकट निकालि चूल्हिक कात पसारलीह। एक टिकट पर स्टेशनक मुहर छल, दोसर पर भाड़ाक अंक पसीनामे पसरि गेल छल, तेसर केवल आधा बचल। ओ नखसँ ओकरा सीधा करैत छलीह। मिथुन हरएलाक बाद घरमे कागदक एतेक टुकड़ा पहिने कखनो नहि जमा भेल छल। कापीक पहिल पन्ना पर लिखल छल—‘हाटमे अन्तिम बेर देखल’। दोसर पर—‘सूचना देबाक समय’। बीचक पन्ना खाली नहि छल, मुदा ओहिमे खोजमे बितल घण्टा आ खर्च केकरो लग गणल नहि गेल छल।

नैरा पहुँचलि तँ लता चूल्हिक आगि दबाएलनि। “काल्हि जे कहलहुँ, से फेर सुनब पड़त?” ओ पुछलीह। नैरा आसनपर बैसबाक पहिने कहलनि, “अहाँ चाहब तखने। हमरा पहिल बेरक बयानक प्रति अछि; दोहराबए नहि, ओहि पाँतिमे जे छूटल ओकरा अहाँक शब्दमे भरबाक लेल अएल छी।” लता कनी देर तक नैराक हाथक कलम देखैत रहलीह। “तखन लिखू जे खोज करबाक लेल हम अपन तीन दिनक काम छोड़ने छी। बच्चा हरएबाक समय आ हमर घरक अन्न घटबाक समय एक्के नहि अछि, मुदा दुनू साँच अछि।”

लताक छोट भाइ, जे तेलक दोकानमे घुसल छल आ बाहर आबि मिथुनकेँ नहि पओने छल, ओसारक खम्भा लग ठाढ़ छल। ओकर आँखि रातिभरि जागल जकाँ लाल छल। ओ कहलनि, “हमरासँ गलती भेल। जँ हम दरबज्जासँ घुरि पहिने देखितहुँ...” लता ओहि वाक्यकेँ बीचमे रोकलीह। “गलतीक हिसाब बादमे करिह। कतेक बेर दोकान लग खोजलह, ककरा पूछलह, से कह। जे नहि देखलह, से देखल कहि कऽ नहि लिखिह।” भाइ दू बेरक फेरल बाट बतौलक। नैरा ओकर बयान लताक बयानसँ अलग पन्नापर दर्ज कएलीह; दुनूक शब्द एक बनाकऽ नहि लिखलनि।

लता पुरान सूचना-पत्र निकाललीह। आठ वर्षक मिथुनक नीला कुरता, लाल रङ छोड़एबला गमछा आ बाँया चप्पलक टूटल फीता पहिने सँ लिखल छल। “लोक एहि चप्पलक बात सुनिकऽ पाँचटा चप्पल देखा चुकल अछि,” ओ कहलीह। “एकटा देखलासँ

हमर साँस तेज होइत अछि, फेर बुझाइत अछि जे ओकर फीता ठीक छल। हम सभकेँ फोटो भेजि-भेजि कोना समझाबी?” नैरा उत्तर देलीह जे पहिचानक ई विवरण सहायता-कक्ष आ स्वीकृत खोज-दल लग रहत; सार्वजनिक पर्चामे घरक पूरा ठिकाना, भाइ केर नाम आ हर भ्रामक छविक जोड़ नहि रहत। लता एहि सीमापर अपन सहमति देलीह।

“हमरा तिथिक हिसाब चाही,” लता कहलीह। ओ खड़ियासँ आँगनक माटिपर चारि लकीर खींचलीह। पहिल—हाट; दोसर—तेलक दोकानसँ स्टेशनधरि खोज; तेसर—चौकीमे सूचना; चारिम—दूरक बस-अड्डा। नैरा कापी खोलि कहलनि, “हाटसँ छुटल घड़ी अनुमान अछि, चौकीक प्राप्तिपर मुहरक समय निश्चित अछि। बीचक खोजक समय गवाहीसँ जाँचब।” लता पुछलीह, “जँ ओ घड़ी निश्चित नहि, तखन हमर दौड़ब झूठ भेल?” “नहि,” नैरा कहलीह, “अनुमान कहबाक अर्थ झूठ नहि; ओकर सीमा साफ राखब।”

दोपहरि लेल रुखसाना राइन हाटसँ तरकारी मँगौने छलीह। साझा रसोइक लरिकासभक भोजनक सूचीमे लताक घरक दू सदस्यक नाम अस्थायी रूपसँ जुड़ल छल। रुखसाना स्वयं लताकेँ बजबए एलीह, मुदा चूल्हिक कातक टिकट देखि ओ पुछलीह, “बसक किराया सेहो गनल गेल अछि?” लता हँसलीह नहि। “पहिले दिन चारि ठाम पैदल गेलहुँ; दोसर दिन जे भाड़ा देलहुँ ओहि पइसा सँ घरक तेल आबि सकैत छल।” रुखसाना अपन बहीमे लताक खर्च नहि चढ़ौलीह। “हमर रसोइक पंजी भोजनक अछि। अहाँक खोजक खर्च ओकरा भीतर लुका देब तँ काल्हि कियो कहत—सब सहायता भेट गेल।”

रसोइपर भोला यादव दूधक दू डिब्बा धरि ठाढ़ छलाह। हुनकर पुरान उधारीक पर्चामे चारि दिनक दूध छल, मुदा राहतक बहीमे केवल दू दिनक प्राप्ति। वितरक कहलक, “आब ई दूध खोज-दलक परिवार लेल देब तँ राहतक नाम पर लिखि दिअ।” भोला डिब्बाक ढक्कन कसैत कहलनि, “हमर दूध जेकरा भेटल, ओकर प्राप्ति लिखू। जकरा नामपर खर्च चढ़ल, ओकरा दूध भेटलो छल की? पिछला बेर दूटा घर बिना दूध लौटि गेल, आ दानदाता सभ फोटो खिंचबैत रहल।” वितरक ओकरा भीड़क सामने झगड़ा करबाक आरोप देलक। भोला भुगतानक पर्ची टेबुलपर रखलनि, डिब्बा उठाकऽ नहि गेलाह।

लता ओतय पहुँचि चुपचाप सुनैत छलीह। कियो धीमे स्वरमे कहलक जे भोला जकरा दूध नहि देने छल, ओहि दलमे “सन्देहक लोक” सेहो छल। भोला तुरंत मुड़लाह। “जे

परिवारकें दूध नहि भेटल, ओकर कारण वितरणक सूचीमे छूटल नाम अछि। हम ओकरा अपहरणक अफवाहसँ जोड़ि नहि रहल छी। अहाँ सेहो नहि जोड़ू।” नैरा पंजी देखलीह—प्राप्तिक पाँतिमे वितरकक हस्ताक्षर छल, बच्चाक परिवारक नहि। “दू दिनक प्राप्ति जाँचब, बाकी दू दिनक दूधक देय तुरन्त देबाक प्रस्ताव लिखित करू,” ओ कहलीह। लता फुसफुसाकऽ कहलनि, “नाम गलत चढ़ला सँ भोजनो छूटि जाइत अछि।”

भोला अपन घरक बात एक बेरमे खोललनि नहि। कनी पछाति हुनकर बेटी दूध मापबाक पात्र धोएब एलीह। ओ पुछलक, “बाबू, जँ कियो हमरा सँ चाउर माँगए तँ पर्षी देखबै?” भोला कहलनि, “भूखलकें पानि तँ पहिने देबिह; मुदा पइसा केकरा देबाक छल आ के देलक, से नहि भुलबिह।” ओ बेटीकें खाली पात्र धएबाक कहि लताक दिशा मे देखलनि। “मिथुनक खोजमे अहाँक घरक दूधक दाम आइ नहि लेब, एहन कृपा कहि अहाँकें छोट नहि करब। जे सहायता देब से अपने नामसँ देब; जे उधार अछि से हिसाबमे रहत।” लता पहिल बेर हुनका सीधा धन्यवाद देलीह।

हाटसँ बाहर पूनम चिड़ीमार पुरान जूटक ढकनमे नव किनारी सिबैत छलीह। बरखा आए तँ रसोइक चाउरक बोरा भीजि जाइत छल, तँ ओहि ढकनक आदेश भेटल छल। एक स्वयंसेवक हुनकर पुरान उपनाम देखिकऽ उत्साहित भऽ पुछलक, “अहाँक परिवार पहिने चिड़ै पकड़ैत छल ने? तखन हाटसँ लरिकाकें लऽ जाएबला पुरान घुमन्तु लोकक बारेमे किछु जानकारी होएत।” पूनम सुईक नोक कपड़ामे गाड़ि देलीह। “हम अपन परिवारक पुरान धन्धाक कथा कहि सकैत छी। मुदा जे बात नहि देखलहुँ, ओकरा एहि बच्चाक खोजमे जोड़ी नहि सकैत।”

ओ अपन काजक दू पन्ना देखौलीह। पहिलमे दादीक कहल पुरान चिड़ी-पकड़बाक विधि, पक्षीसभक मौसमी बाट आ परिवारक पेशा छोड़बाक कारण अपन स्मृतिमे लिखल छल। दोसरमे आजुक दिनक चारि ढकनक नाप, सूतक दाम आ लेबाक मजदूरी। “पहिल पन्नाकें स्मृति कहि राखू,” पूनम कहलीह। “दोसर हमर आजुक रोजी अछि। हमर नाम पढ़िकऽ ककरो गायब बच्चाक दोषी खोजब तँ दुनू पन्ना गलत पढ़ब।” स्वयंसेवक लाजसँ माथ निहुरौलक। नैरा पूनमक अनुमति सँ वर्तमान काजक प्राप्ति लिखलीह, पारिवारिक स्मृति हुनक निजी बहीमे रहए देलनि।

लता पूनमक सीवन देखैत एकाएक पुछलीह, “एहन लाल सूत मिथुनक गमछामे छल। अहाँ देखि...” ओ वाक्य पूरा नहि कएलीह। पूनम सिलल किनारी देखौलीह। “लाल सूत बहुत गमछामे रहैत अछि। जँ अहाँकेँ चाही तँ रंग छुटबाक उपाय कहि देब, मुदा एहि सुतक आधारपर हमरासँ भेटल बच्चाक बात मत पुछू।” लता अपन वाक्य अपूर्ण छोड़ि पूनमक काज देखब लगलीह। पूनम हुनका सूतक दूरेशा अलग करबाक तरीका सिखौलीह। किछु क्षण लेल ओ दुनू गायब बच्चा आ गलत आरोपक भाषा सँ बाहर कपड़ाक साधारण काजमे लागल रहलीह।

नगरक सहायता-कक्षमे पुरान अफवाहवला पर्चा फेर पहुँचल। एहि बेर ओकर पाछाँ राहत-गाड़ीक नम्बरक संग एकटा नव समय लिखल छल। एक स्वयंसेवक उत्साहसँ कहलक, “देखू समय मिलि गेल! ओहि दिन ई गाड़ी मिथुन लग छल।” लता पर्चा लेबाक लेल हाथ बढ़ौलीह, फेर रोकि लेलीह। “ककर आँखिसँ देखल समय अछि?” ओ पुछलीह। “कियो फोनपर कहल,” उत्तर भेटल। लता पर्चा वापस धरि देलीह। “फोन करनिहारक नाम, समय आ प्रत्यक्ष देखबाक ठाम बिना अहाँ हमरा फेर एक दिन गलत बाट घुमाएब।” सहायता-कक्ष पहिल बेर हुनकर ई वाक्य कार्यवृत्तमे लिखलक।

नैरा मूल गाड़ी-पावतीक प्रति टेबुलपर रखलीह। ओहि पर वितरणक तारीख स्पष्ट छल, मुदा गाड़ी लौटबाक घड़ीक कोठी खाली। पुरान फाटक-मजदूरीक पंजीमे मिलैत अंकक वर्ष अपूर्ण छल। “एहि कागदसँ दून् गाड़ीक एक होएबाक प्रमाण नहि,” नैरा कहलीह। “आ एके गाड़ी भेलो यात्रीक सूची आ बच्चाक उपस्थिति अलग प्रश्न रहत।” लता जोर सँ कहलनि, “तखन एहि नव समयक आधारपर खोज-दल नहि पठाउ।” सहायता-कक्षक कर्मचारी नव पर्चाकेँ ‘अप्रमाणित सूचना’ चिह्नित करैत स्वतंत्र पुष्टि धरि सार्वजनिक प्रसारण रोकलक। वास्तविक हाट-स्टेशन खोजक पुरान कार्ययोजना यथावत् रहल।

ओही कार्यालयक पाछाँ अरुण बरनवाल अपन दोकानक पैघ रङ्गीन बैनर लऽ पहुँचलाह। बैनरपर हुनकर परिवारक नामसँ ‘बाल-सहायता कोष’ घोषित छल। एक कर्मचारी कहलनि, “रसोइक सामग्री दऽ दिअ, करक पुरान देयक कागद आओर बादमे।” अरुणक संग आयल छोट भाइ चुपचाप हिसाबक बही खोललक। विगत कारोबारक करक देय आ देरीक ब्याज सामने छल। अरुण बैनर मोड़बैत पुछलनि, “ई कोषक प्रचारसँ हमर

कर चुकल मानल जाएत?” कर्मचारी उत्तर टारबाक प्रयास केलक। “जनसेवा देखबामे नीक लगैत अछि।”

अरुण उत्तर देलनि, “जनसेवाक नामसँ सार्वजनिक देय नहि कटत। हमर दोकानक कर जतेक अछि, ओ सरकारी पावतीमे चुकाएब। बच्चाक खोजमे दान देब तँ अलग रसीद आ बिना नाम छपेबाक शर्तसँ देब।” छोट भाइ पुछलक, “बैनर छपेबाक पइसा तऽ बरबाद भेल।” अरुण ओकरा देखलनि। “ओ खर्च हमर प्रचारक गलती अछि। एकरा राहतक खर्च मत बनाउ।” ओ निर्धारित देय भुगतानक खिड़कीपर गेलाह, जमा-प्राप्ति लेलनि; किछु दिन बाद जाँचल जाएबला पुरान कर-आकलनक प्रश्न अलग लिखौने अएलाह। हुनकर दुकानक बाहर टँगबाक पैघ बैनर तह कऽ कोठरीमे रखल गेल।

मदन राउत रसोइक वाहन लऽ पहुँचलाह तँ अरुण आ लता एक्के दरबज्जापर भेटलाह। मदन पुछलनि जे दवा लऽ जाएबला रोगीक लेल सीट चाही, तँ खोज-दलकें गाड़ी ओही घड़ी नहि भेटि सकत। एक युवक अरुणकें कहलक, “अहाँक दान-कोषक गाड़ी चलत तँ बच्चाकें जल्दी खोजब।” अरुण स्पष्ट कहलनि, “एखन हमर कोषक नामसँ कोनो गाड़ी बुक नहि। जँ भाड़ा हम देब, तकर रसीदमे वास्तविक यात्री आ उद्देश्य रहत। रोगीक गाड़ी रोकि अपहरणक अफवाहक पाछाँ नहि दौड़ाएब।” लता सुनि कहलनि, “हमरो खोज झूठ नहि। मुदा रोगीक बाट काटि कऽ हमरा खोजक अधिकार नहि बढ़त।”

रुखसाना दिनक रसोइक लागतमूल्य निकालैत छलीह। पात, तेल, चाउर, साग आ श्रमिकसभक समयक अलग पाँति छल। तरकारीक दू टोकरीमेसँ एकटा बरखा लगला सँ सड़ि गेल छल। हाटक विक्रेता सामान वापस लेबाक तैयार नहि छल। रुखसाना कहलीह, “आजुक भोजनक दाम केवल थारिमे पहुँचि गेल भात नहि। जे सड़ल ओकर हानि, जे उठौलक ओकर भाड़ा, जे पकौलक ओकर घण्टा—सभकें गनब। मुदा लताक परिवारसँ एको पइसा नहि माँगब, जँ सहायता-दल ओहि भोजनक भुगतान अलग करए।” गुरमीत अनुदानक बचल स्वीकृत अन्न देखौलीह; बाकी रकमक स्रोत एखन निश्चित नहि छल।

एक स्वयंसेवक कहलक, “रुखसाना दीदी, बच्चाक खोज चलैत अछि; एहन समय मोल-भाव नीक नहि।” रुखसाना कड़छुल टेबुलपर रखलीह। “लताक बेटा भेटए, ई हमर सेहो इच्छा अछि। मुदा खोजक नामपर रोज-रोज मुफ्त रान्हब तँ जे स्त्री चूल्हि लग छथि

हुनका घरमे भोजन के देत? आजु राहतक स्वीकृत अन्नसँ भोजन बनत; काल्हिक लेल जतेक अनुबन्ध होएत, ततेक थारी तय करब।” लता सामने अएलीह। “हमर दुखक नामपर ककरो दाम नहि काटू” ओ कहलीह। “हमरासँ खर्चक बात लुका कऽ हमकें कृतज्ञ रखबाक आवश्यकता नहि।”

दुपहरक बाद सहायता-कक्षक जाँचमे लताक खोज-दिनक हिसाब फेर खुलल। कापीमे लिखल छल—पहिल दिन दू ठाम पैदल चक्कर, दोसर दिन बसक तीन भाड़ा, तेसर दिन काम छोड़िकऽ चौकी आ सहायता-कक्ष, चारिम दिन स्टेशनक पूछताछ। एक स्वयंसेवक सब खर्च जोड़ि बड़ संख्या कहब चाहलक। लता रोकलीह। “जे टिकट बाँचल अछि ओकर दाम निश्चित लिखू। जे पैदल घुमलहुँ ओकर समय लिखू, काल्पनिक भाड़ा नहि। जे मजदूरी छूटल ओकरा ‘नुकसानक अनुमान’ कहू, प्राप्त पइसा नहि।” नैरा तीन पाँति बनौलीह—पावतीसहित खर्च, बयान-आधारित समय, आ अनुमानित छूटल कमाइ। कागद पहिल बेर लताकें अपन खोजक पूरा आकार देखौलक।

लता अचानक पुछलीह, “पहिल शिकायत देबाक पहिने जे घण्टा गेल, ओ कम मानल जाएत?” नैरा कहलीह, “नहि। मुदा जाँचक आधार अलग अछि। भाइक बयान, तेल-दोकानदारक पुष्टि आ स्टेशनक सूचना-समय एक-एक कऽ जोड़ब।” सहायता-कक्षक कर्मचारी दोकानदारक सम्पर्क लऽ कऽ सूचना भेजलक। दोकानदार फोनपर केवल एतबे पुष्टि कएलक जे लताक भाइ तेल किनबाक लेल दोकानमे आयल छल; ओकरा मिथुनक ओहि घड़ीक ठामक याद निश्चित नहि छल। नैरा एहि अपूर्ण गवाहीकें पूरक दर्ज कएलीह, निर्णायक नहि। लता पहिने निराश भेलीह, फेर कहलीह, “जतेक ओ जनैत अछि, ततेक लिखू। बाकी हम खोजब।”

हाटमे पूनम अपन नव ढकन पहुँचाबए एलीह। भोला दूधक बकायाक हिसाब लऽ उभल छलाह। वितरक सभक सामने एक छोट रकम चुकौलक—ओ दू दिनक प्राप्ति जाँचि पक्का भेल दूधक दाम छल। भोला रसीदपर लिखलनि, “शेष दू दिनक देय जाँचाधीन।” ओ दूधक डिब्बा लऽ जाएबासँ पहिने पुछलनि, “जिनका नाम सूचीसँ छूटल, हुनका किएक छूटल?” वितरक उत्तर देलक जे राहतक पात्रता नगर कार्यालय तय करत।

भोला कहलनि, “आब ई प्रश्न अलग सुनवाइमे जाएत।” हुनका आजु किछु दाम भेटल, मुदा पक्षपातक जाँच बन्द नहि भेल।

पूनमक तैयार ढकनक नाप ठीक छल, तँ रुखसानाक दल ओकर पहिल खेप स्वीकार कएलक। पूनम रसीदमे ‘बोरा-ढकन सिलाइ’ लिखबौलीह। स्वयंसेवक फेर हँसि पूछलक, “पुरान चिड़ीमारक नाम नहि लिखब?” पूनम एहि बेर मुस्करीलीह। “नाम हमर रहत, काज आजुक रहत। पुरान काजक कथा जब हम कहब, तखन ध्यानसँ सुनिहे।” ओ जे पैसा पएलीह, ओहिसँ बच्चीक पाठशालाक पेंसिल किनबाक बात सोचलीह; मुदा खरीद-खातामे ओ भविष्यक खर्च एखन नहि चढ़ौलीह। लता हुनकर सुई-डिब्बाक छोटी घंटी देखिकऽ कहलीह, “मिथुन एहन आवाज सुनि दौड़ि अबैत छल।” पूनम घंटीकें हाथे दबा देलीह। दूनू कनी बेर निःशब्द रहल।

साँझसँ पहिने लता हाटसँ घर लौटलीह। भाइ आँगन झाड़ि रहल छल। लता मिथुनक छोट माटिक घोड़ाक एक कान टूटल देखलीह। ओहि घोड़ाकें मिथुन बचपनमे रंगने छल—आगाँ नील, पाछाँ हरा; रंगक बीचमे कोनो सीमा ठीक नहि। लता अनायास हँसि उठलीह। ओकरा स्मरण भेल जे मिथुन घोड़ा दौड़बैत कहने छल, “ई घोड़ा चप्पल नहि पहिरत, तँ एकर फीता कहियो नहि टूटत।” ओहि समय लता स्वयं हँसि-हँसि ओकरा पानि पिअएने छलीह। आजु स्मृति आबि हँसी आधा घड़ी टिकलीह, फेर चुप्पी। भाइ कहलक, “ई खिलौना सम्हारि राखू?” लता कहलीह, “ई हमर आँगनक चीज अछि, जाँचक वस्तु नहि।”

बाहर ककरो आवाज भेल जे नदीक कात लाल कपड़ाक टुकड़ा भेटल अछि। भाइ दौड़बाक लेल उठल। लता किछु क्षण तक भीतरक थारी आ घोड़ाकें देखैत रहलीह। फेर दरबज्जापर जा कऽ पुछलीह, “कहाँ? के देखलक? कपड़ा केकर हाथमे अछि?” संदेश आननिहारक लग कोनो स्पष्ट उत्तर नहि छल। लता ओकरा लताइलीह नहि। “जँ साँच सूचना हो तँ सहायता-कक्षमे ठाम आ समय दऽ आउ। हम बिना ठोस बातक रातिभरि नदीक कोन पर नहि दौड़ब,” ओ कहलीह। भाईकें ओकरा सङ्ग पठा देलीह, स्वयं घरमे रहि फोनक प्रतीक्षा करए लगलीह।

नैरा घुरि सहायता-कक्षमे लताक संशोधित विवरण जमा कएलीह। ओहि पन्नामे आजुक वास्तविक खोजक चारि दिनक क्रम, बचल टिकट, भाइक अलग बयान आ दोकानदारक सीमित पुष्टि छल। एकटा पुरान अफवाहक पर्चापर नव समय जोड़ि अपराध-आरोप बनएबाक प्रयास लिखित रूपमे रोकल गेल। मूल सत्ताइस नामक पंजी सरिताक देखरेखमे रहल; जलपट्टाक भूमि-पत्र तारा अलग जाँचैत छलीह। मिथुनक फाइलमे एकरासँ कोनो नव आरोपीक नाम नहि चढ़ल। सहायता-कक्षक कर्मचारी अगिला खोज-दिवस लेल स्टेशन आ हाटक सम्पर्कक लिखित सूची लताकें देबाक स्वीकार केलक।

रातिमे रुखसाना बासन उलटैत गुरमीतकें कहलीह, “आजुक थारीक खर्च निकलल, काल्हिक निश्चय नहि।” गुरमीत कहलीह, “अरुण अपन करक देय चुकौलनि; ओहि सँ रसोइक कर्जा स्वतः नहि चुकत।” रुखसाना सूचीमे कल्हिक जतेक थारीक स्वीकृत सामग्री छल, ततेक मात्र लिखलीह। मदन रोगीक दवाई ढोएबाक गाड़ीक अलग पर्ची छोड़ि गेल छल। देवव्रतक नाम ओहि दवाई-सहायताक पन्नामे लिखल छल, मुदा ककरो दानक नामपर उपचार-जाँच रोकबाक एको निर्देश स्वीकृत नहि छल। रुखसाना पन्ना मोड़ि अलग राखलीह।

लता ओहि राति मिथुनक थारी धोने बिना ओकरा भातसँ फेर भरलीह, मुदा दरबज्जापर नहि रखलीह। छोट माटिक घोड़ाकें सहेजि ऊँच ताखपर रखलीह, जतय हवा लगलासँ कानक बचल हिस्सा नहि टूटए। भाइ लौटिकऽ कहलक जे नदीक कातक सूचना पुष्टि नहि भेल। लता ओकरा दोष नहि देलीह। “भोरे स्टेशनक तय बाटसँ जाएब,” ओ कहलीह। फेर बहुत दिनक बाद अपने लेल एक कटोरी भात निकाललीह। बाहेरसँ कोनो ढोलकक आवाज आबि रहल छल; लताकें एक क्षण मिथुनक बेढङ्ग नाच याद पड़ल। ओहि स्मृतिक बाद कोनो नव संकेत नहि आएल। भातक पहिल कौर मुँहमे दैत ओ खोजक अगिला दिन लेल बचल दू टिकट किताबमे राखि देलीह।

अध्याय ५६ • दानक दवाइ

अस्पतालक दवाइ-कक्षमे भोरक पहिल खिड़की खुलिते शीशाक सिसीसभ पर पड़ल ओस उज्जर भऽ उठल। जमुना देवी खाटसँ उतरबाक पहिने अपन पएर धरतीपर टिकाकऽ कने बैसल रहलीह। तीन मास पहिने एतय अनबाक समय हुनकर साँस एतेक टुटि रहल छल जे बेटी कंचनक प्रश्नक उत्तर तक नहि दऽ सकने छलीह। आब ओ अपन चप्पल अपने पहिरि सकैत छलीह। एहि छोट काजमे जे सुख छल, ओकर हिसाब अस्पतालक कोनो बहीमे नहि छल।

कंचन दरबज्जाक कात एक पुरान झोरा लेने ठाढ़ छलीह। भीतर दवाइकेर पर्ची, लौटबाक टिकट आ खाता सँ निकालल दूटा फोटो छल। “माए, फेर एतेक भीतर जा कऽ धन्यवाद कहबाक की आवश्यकता?” बेटी पुछलक। जमुना सिसीक कातरिसँ आँखि हटबैत कहलीह, “जखन पहिल गाड़ी हमरा लऽ गेल छल, भाड़ा के देने छल से तँ तोरा बुझले छै। जे मानुष सहारा देलक, ओकरा नेहसँ याद करब। मुदा ककरो दुआरपर माथ टेकने सँ अस्पतालक कागद बदलि नहि जाइत।”

पहिल बेर हुनका तेज ज्वर आ छातीमे संक्रमण लऽ नगर अस्पतालमे अनल गेल छल। चिकित्सक उपचार करैत रहलाह; बीचमे बाहरक अस्पतालमे जाँच आ औषधिक खर्च जोड़ल गेल। देवव्रतक सहायता-कोषसँ गाड़ीक भाड़ा, ऑक्सिजनक उपलब्धता लेल देय आ दवाइक किछु बिल चुकल छल। जमुना अपन प्राणरक्षाक अनुभवकेँ चिकित्सक, परिचारिका, चालक आ कोषक सहायता सभक संग जोड़ैत छलीह। ओ नहि जनैत छलीह जे एक व्यक्ति अकेले हुनका बचौने छथि; मुदा जे सहायता भेटल, ओकरा छोट सेहो नहि मानैत छलीह।

अस्पतालक बाहेर आँगनमे आजु साझा रसोइ-मेहनताना दिवसक दोसर बैठक छल। पिछला भोजन-दिवसक बाद बचल अनाज कतेक, ककर भुगतान शेष, आ मरीजक परिवारकेँ भोजन केना पहुँचत—एहि पर खुला हिसाब पढ़ल जाएबाक छल। रुखसाना जखन बड़ हाँडी धोबैत छलीह, कंचन अपना मायकेँ लऽ ओतय पहुँचल। गीला आँगनमे

धूपक एकटा पातर पट्टी पड़ल छल। रुखसाना सगरो सँ उठल धुँआकँ कड़छलसँ नहि, फूसक पंखासँ हटौलीह।

“जमुना काकी, अपन पएरसँ अएलहुँ!” ओ हँसि उठलीह। जमुना कहलीह, “ककरो माथपर उठि कऽ नहि। आइ एहि बातक उत्सव अछि।” रुखसाना हुनका एकटा मचिया देलीह, मुदा जमुना ओहि ठाम नहि बैसलीह जतय दानदाताक नामक पैघ तख्ती रखल छल। “बाहर बैसिकऽ खाएब,” ओ कहलीह, “एतय हवा खूब अछि।” हुनकर दैनन्दिन इच्छा एतेक सामान्य छल जे कंचन मुस्करा देलक।

रघु साहु कनसारक चूल्हिसँ भुजल चना निकालि रहल छलाह। एक स्वयंसेवक पर्चीपर लिखलक—‘दानमे भेटल चिउड़ा, चना आ भुजाइ’। रघु आँगुरसँ भुजल दानाक गरमी देखौलक। “चिउड़ा जकरा देल अछि ओकर नाम दानमे जाउ,” ओ कहलनि। “हमर चूल्हिक लकड़ी, भाजबाक समय आ दुई बेर पसरि फेर टोकरीमे भरबाक मजदूरी के दान देलक? हमरा पूछने बिना हमर काज दान भऽ गेल?” ओ पर्ची फाड़लनि नहि, लाल कलमसँ ओकरा तीन भाग कऽ देलनि।

चन्द्रिका राय ओहि समय हलुक गुड़क पुआ लऽ अएलीह। हुनकर मिठाइक दुकानक ग्राहक एखन पूरा नहि लौटल छल। नगरक रसोइमे काम भेटब आयक एकटा वास्तविक आधार छल; मुदा बिना निश्चित दामक एक दिनक भीड़ दुकान बन्द करा सकैत छल। चन्द्रिका कागद खोलि कहलीह, “सभ थारीमे एक्के मोलक पुआ नहि। रोगीक लेल चिकित्सक जे भोजन लिखने छथि, हुनका गुड़ नहि जाएत। बच्चाक पुआ अलग, भात आ दलिया अलग। जे अनुदान अछि ओकरा हमर लाभक नामपर नहि चढ़ाउ।”

गुरमीत कौर तीन खाता सामने राखलनि—खरीदल सामग्री, अनुदानसँ भेटल सामग्री, आ मजदूरी तथा विक्रेताक उचित लाभ। चन्द्रिका पिछला बेरक भुगतानक कमी देखौलीह। “दू सौ थारी बनल कहल गेल, मुदा हम सत्तरटा पुआ देलहुँ। बाकी पुआ ककरा बनौल?” रुखसाना बुझौलीह जे दोसर टोली चूड़ा परोसने छल। चन्द्रिका कहलीह, “ठीक, तखन हमर सत्तरटा लिखू। दोसर टोलीक दाम हुनकर नाममे। हमर पर्ची बड़ बनलासँ हमर दाम नहि बढ़त।”

एहि बीच अस्पतालक औषधि-वितरणक कर्मचारी आँगनमे आयल। हुनकर लग सहायता-कोषक चिट्ठीक नकल छल। नगरक निरीक्षण-दल अगले सप्ताह दवाइ-भण्डार आ गाड़ी-भाड़ाक रसीद देखबाक छल, मुदा कोषक एक बिचौलिया प्रस्ताव देने छल जे दानक लाभार्थीसभक सार्वजनिक धन्यवाद-सभा पहिने हो, आ निरीक्षण ओकर बाद। कर्मचारी संकोचसँ कहलनि, “किछु लोक चाहैत छथि जे जाँचसँ पहिने एहि सहयोगक मान बुझल जाए।”

जमुना मचियासँ उठलीह। “मानक लेल हम आइए कहब,” ओ कहलनि, “मुदा निरीक्षण हमरा धन्यवादक दिन पर किएक टिकल अछि?” कर्मचारीक उत्तर नहि आयल। ओ देखौलक जे चिट्ठीक आखिरी पाँतिमे ‘समन्वय’ शब्द अछि, जाँच रोकबाक सीधा आदेश नहि। नैरा, जे लताक अगिला खोजक सम्पर्क-ठामक सूची दऽ रहल छलीह, पर्ची लऽ कऽ कहलनि, “ई पत्र देखाउ जेकर मूल अछि। सुझाव के देने छथि, आ स्वीकार ककरो भेल अछि की नहि—दुनू अलग बात।”

कंचन मायकेँ रोकबाक प्रयास केलक। “अहाँक नाममे पैसा चुकल अछि। जँ फेर दवाइ चाही तखन?” जमुना बेटीक हाथ दबौलीह। “एहि भयमे चुप रही तँ हमर बाँचब ककर अधिकारमे जाएत? जे औषधि भेटल, ओकर धन्यवाद हमर। जे हिसाब सार्वजनिक अछि, ओकर जाँच रोकबाक अधिकार हमरा नहि।” ओ धैर्यसँ कहलनि जे अपन उपचारक व्यक्तिगत कागद ओ केवल चिकित्सक आ अधिकारप्राप्त जाँचकर्ताकेँ देखाएतीह; भीड़क माइकपर रोगक इतिहास नहि पढ़तीह।

नैरा हुनका पुछलनि जे सहायता-पर्चीक प्रति साझा करबाक सहमति अछि की नहि। जमुना अनुमति देलीह—केवल तारीख, देयक मद आ रकमक सीमित प्रति; रोगक निजी विवरण नहि। कंचन दोसर प्रति अपन झोरामे राखलक। नैरा सार्वजनिक खाता लेल एकटा पृष्ठ बनौलीह, जाहिमे कोषसँ चुकल मद, अस्पतालक स्वीकृति आ रसीदक जाँच-स्थिति लिखल छल। “दानक साक्ष्य उपचारक सफलता देखबैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा दोसर अनियमितताक प्रश्न मिटबैत नहि।”

देवव्रत स्वयं बैठकमे उपस्थित नहि छलाह। हुनकर कार्यालयसँ एक सहायक आयल, जे कहलनि जे सहायता-कोषक नाम खराब करबासँ गरीब रोगीक दवाइ बन्द भऽ सकैत

अछि। एतबा कहि ओ मौन भेल। चन्द्रिका प्रश्न कएलीह, “कागद देखलासँ दवाइ बन्द किएक होएत? जँ कोषक नियममे एहन शर्त अछि, तकर प्रति देखाउ। जँ नहि अछि तँ रोगीक भयक सहारा नहि लिअ।” सहायक स्पष्ट उत्तर देबाक बदला कहलनि जे ओ मूल अनुबन्ध लऽ पुनः आएत। हुनकर बातकेँ देवव्रतक लिखित आदेश नहि मानल गेल।

बैठकक पिछला कोनमे सूरज चौधरी ठाढ़ छलाह। घरसँ ताड़गाछक पात आ रस उतारबाक पुरान औजार लऽ अएने छलाह। हुनकर पिता गाछपर चढ़बाक कौशलकेँ परिवारक एकमात्र भरण-पोषण मानैत छलाह। सूरज नव व्यवसाय सोचने छलाह— गाछसँ भेटल पदार्थक स्वच्छ, जाँचल, गैर-मादक पेय, जाहिमे ग्राहकक लेल सामग्रीक स्पष्ट परिचय रहत। मुदा गाछक देखरेख, चढ़ाई, कटाइ आ बोतलमे भरबाक श्रमक दाम अलग चाही, से कहिते पिताक चेहरा कठोर भऽ गेल छल।

“तूँ पुरखा सभक धन्धा छोड़ब?” पिता पुछलनि। सूरज पातक गठरी धरतीपर रखलक। “गाछ नहि छोड़ब, बाबू। मुदा गाछपर जे चढ़ैत अछि ओकर मजदूरी पानक बोतलक लाभसँ अलग लिखब। नशावला पेय बेचब की नहि, ई घरक परम्पराक नामपर एक्के बात नहि। जाँच, नियम आ अपन रुचि देखिकऽ निर्णय करब।” पिताक क्रोध घटल नहि, मुदा ओ पातक ऊपरी पल्ला खोलि ओकर गुणवत्ता देखलनि। बहस पहिल बेर कमाइ आ श्रमक पृष्ठपर पहुँचल।

सूरजक माए कहलीह, “नव बोतल लए पइसा कहाँसँ आएत? गाछक काम आजुक दाम आजु चाही।” सूरज खाता खोललक। पिताक चढ़ाईक दू घण्टा, अपन कटाइ आ स्वच्छता-काज, आ पातर बोतलक नमूनाक खर्च अलग लिखलक। “पहिल प्रयोगमे बड़ खेप नहि,” ओ कहलक, “छोट नमूना परीक्षणक बाद बाजारमे जाएत।” पिता खाता लेलक, लम्बा समय देखलक, फेर अपन चढ़ाईक घण्टा सही कऽ देलनि। ई सहमतिक पूर्ण विजय नहि छल; मुदा घरक श्रम पहिल बेर लिखित नाम पेलक।

ओहि घड़ी सड़कक नाप-चिन्हसँ धूरि उठैत बेला तुरहा पहुँचल। हुनकर पसार पर पुरान सड़क-विस्तारक लाल निशान पड़ल छल। मुँहझोराक छोट थैला, माछक जालक सुतरी आ बजारक ढकनसभ हुनकर रोजीक वस्तु छल। नगरक एक कर्मचारी कहलनि, “बाट चौड़ा होएत; अहाँक पसार हटत।” बेला पुछलीह, “कहाँ राखब?” उत्तर भेटल, “आगाँ

निर्णय होएत।” ओ ठमकि कऽ कहलीह, “पहिने ठाम देखाउ; तखन हमरा हटबाक दिन कहू।”

बेलाक पसार पर भीड़ छलीह, तें नगर कर्मचारीक संग छोट बहस होइत छल। नैरा सभकेँ अलग ठाम ठाढ़ होएबाक आग्रह कएलीह। तारा बिनौट पुरान नापक कागद लऽ अएलीह। ओ स्पष्ट कएलीह जे लाल रेखा प्रस्तावित सड़कक सीमा अछि, अन्तिम बेदखलीक आदेश नहि। बेला अपन साप्ताहिक बजार-शुल्कक पावती देखौलीह। “ई रसीद हमर जमीनक मालिकाना नहि, मुदा एतय हम नियमित काज करैत छी से तँ प्रमाणित करैत अछि,” ओ कहलीह।

बेला दूटा सम्भावित ठाम देखबाक माँग कएलीह—एकटा विद्यालयक पार्श्वमे, जतय बच्चासभक भीड़सँ पसार टकराएत; दोसर पुरान पीपरक कात, जतय बरखा कऽ पानि जमैत छल। ओ दुनूकेँ बिना जाँच स्वीकार नहि कएलीह। तारा अगिला नाप-दलमे बेलाकेँ हुनकर पसारक वास्तविक चौड़ाइ बतएबाक निमन्त्रण देलीह; मुदा बाजारक अन्तिम आवंटनक वचन नहि देलीह। बेला अपन पुरान ग्राहकसभक ठाम लिखबाक लेल छोट सूची बनौलीह। “नव बजारमे लोक हमकेँ खोजत?” ओ पुछलीह। उत्तर ककरो लग नहि छल।

दुपहरमे कमला जैनक घरसँ भोजनक लेल अनाजक एक बोरा आ सामग्रीक बिल पहुँचल। हुनकर परिवारक दुकान आपूर्ति करैत छल, आ परिवारक किछु सदस्य अनुष्ठानक दिन विशेष भोजन बनबैत छलाह। आयोजनक एक प्रचारक कमलाकेँ कहलनि जे दान-पट्टपर हुनकर व्यापारक नामक संग धार्मिक घोषणापत्र छपाओल जाए। कमला बिलक नकल हाथमे लऽ कऽ कहलनि, “दुकानसँ गेहूँ आयल अछि, तकर दाम आ छूट लिखू। हम व्यक्तिगत रूपसँ कोन व्रत करब, की नहि करब, ओकरा व्यापारक वस्तुक रसीदपर किएक जोड़ब?”

कमलाक जेठ एक कोनमे कहलनि, “लोक परिवारक प्रतिष्ठा एक्के संग देखैत अछि।” कमला शान्त रहलीह। “प्रतिष्ठा एक छै तँ व्यापारीक दाम साफ रखब सर्वप्रथम चाही। हम जे भोजनक नियम पालन करैत छी ओ हमर निजी निर्णय; दुकानमे जकर सामान अछि ओकरा बेचबाक अधिकार ओहि निर्णयपर निर्भर नहि।” परिवारक नव पीढ़ीक भतीजी

एहि वाक्यपर कनेक निश्चिन्त भेलीह। ओ अपन रोजक भोजन चुनबाक बात पहिने कहबासँ डरैत छलीह। कमला हुनक थारीक प्रश्न ओही ठाम नहि सुलझौलीह; केवल कहलनि, “घरमे बैसिकऽ बात होएत, प्रचारक माइकपर नहि।”

रघु बीचमे फेर आयलाह। भुजल चनाक पहिल खेप खतम भऽ गेल छल। स्वयंसेवक उधारमे दोसर खेप माँगलक, “मरीजक परिवारक लेल अछि; दानकर्ता काल्हि हिसाब देताह।” रघु अपन कनसारक आगि धीमा करैत कहलनि, “काल्हि दामक भरोसा नहि अछि तँ जतेक स्वीकृत अछि ततेक देब। बचल चना हमरा बाजारमे बेचब पड़त, नहि तँ लकड़ी आ भाड़ा के देत?” जमुना हुनका देखिकऽ सहमति देलीह। “हमर बाँचबाक नामपर अहाँ अपन कनसार बन्द नहि करू,” ओ कहलीह।

चन्द्रिका एतेक सुनिकऽ बैठकक बीचमे चौकस भेलीह। “कोष दवाइ चुकबैत अछि, रसोइ अनाज बाँटैत अछि, मुदा दुनू ठाम मजदूरी जँ बादमे देखल जाए तँ सहायता कोना चलत?” ओ तीन दिनक प्रयोगक प्रस्ताव रखलीह—जतेक थारीक लेल सामग्री आ श्रमिकक दाम अग्रिम स्वीकृत, ततेक भोजन बनत; लाभांशक दर सार्वजनिक रहत; दानसँ भेटल चीजक लागत शून्य लिखल जाएत, मुदा ओकरा बनौनिहारक श्रम शून्य नहि। गुरमीत आ रुखसाना एहि प्रस्तावक शब्द मिलौलीह।

बाहर कंचन अपन मायकेँ किछु खेनाइ देबाक आग्रह कएलीह। जमुना कहलनि जे चिकित्सक नियमित आ हलुक भोजन सुझौने छथि; ओहि कारण हुनका लेल विशेष दालक छोटी कटोरी रखल जाए। रुखसाना कंचनकेँ भानसघर देखबाक निमन्त्रण देलीह, मुदा जमुना स्वयं उठि नहि गेलीह। “आइ कनी बैसिकऽ सुनब,” ओ कहलीह। हुनकर ई इच्छाक आदर कएल गेल। कंचनक मनमे पहिल बेर बुझायल जे मायक स्वस्थ होएब माने सब दिन तुरन्त काजमे लागि जाएब नहि।

साँझक आरम्भमे सहायक फेर लौटलक। ओकर लग देवव्रतक कार्यालयसँ आयल दु पृष्ठक स्वीकृति-पत्र छल। पहिल पन्नामे दवाइ लेल स्वीकृत आर्थिक सीमा आ भुगतानक तिथि छलीह। दोसर पन्नामे दाताक नाम सार्वजनिक करबाक विकल्प लिखल छल, अनिवार्यता नहि। निरीक्षण स्थगित करबाक कोनो स्पष्ट धारा नहि छल। नैरा दस्तावेजक

प्रति लैत कहलनि, “जँ अन्न अथवा दवाइक भुगतान सच अछि, ओकरा दर्ज करब। मुदा ई पत्र हमसभकें गोदाम, अस्पताल आ गाड़ीक लेखा देखबासँ रोकैत नहि।”

सहायक कहलक, “पैघ दाता नाराज भेलाह तँ अगिला सहायता?” जमुना सीधा पुछलीह, “अहाँ देवव्रतक तरफसँ लिखित बात कहैत छी की अपन आशंका?” सहायक उत्तर देलक, “हम आशंका कहैत छी।” जमुना एक लम्बा साँस लऽ कऽ कहलनि, “तखन हमरा धन्यवाद नहि रोकू। हम हुनका पत्र लिखब जे मदद पहुँचल छल, आ ईहो लिखब जे अस्पतालक जाँच चलए। दुनू बात हमरा जीवनक साँच अछि।” सहायकक आँखि कनेक झुकि गेल, मुदा ओ पत्र लऽ जाएबाक आश्वासन देलक।

निरीक्षण-दलक सदस्य अदिति पन्नाक मद देखलीह। ओ केवल एतबा कहलीह जे गाड़ीक तय भाड़ा, वास्तविक यात्रा-समय, प्राप्त दवा आ अस्पतालक भण्डारसँ निकलल दवाइक अभिलेख मिलानक विषय अछि। जमुनाक रोग-विवरण सार्वजनिक नहि होएत। अनिरुद्धक अस्पताल-कार्यालयसँ मूल वितरण-पंजी मँगाओल जाएत। कपड़ा-पंजीमे समयक जे पुरान उलझन छल, ओकरा दवाइक रसीदक दोष सिद्ध करबाक सरल निष्कर्षक बाट नहि बनाओल जाएत। प्रत्येक मद अपन प्रमाणसँ जाँचल जाएत।

नैरा सहायता-कक्षक कागदपर तीन स्वतंत्र शीर्षक राखलीह—मिथुनक खोज, अस्पतालक दवा आ परिवहनक लेखा, फाटक आ जलपट्टाक सार्वजनिक बाट। भीड़मे ककरो कहबाक इच्छा भेल जे पुरान गाड़ीक नम्बर दवाइ-भाड़ाक पर्चीमे सेहो देखल गेल छल। नैरा पुछलनि, “गाड़ीक पूरा नम्बर, तिथि, चालक आ यात्रा एक्के अछि?” उत्तर छल—केवल अन्तिम दू अंक मिलैत अछि। ओ ई जानकारी ‘अप्रमाणित मिलान’क पाँतिमे सीमित करौलीह; ककरो नामपर नव आरोप नहि बढ़ल।

साझा भोजन शुरू भेल तँ जमुना पहिल कौरसँ पहिने हाथ जोड़लीह। कंचन पुछलक, “दानक लेल?” ओ हँसलीह। “जखन कष्टमे छलीहुँ, तौँ रातिभरि जागलहुँ; एहि कौरमे तोहरो हाथ अछि। दवाइक दाम चुकौने लोककें धन्यवाद देब; रसोइ बनौनिहारकें मेहनताना सेहो।” कंचन अपन थारीसँ दू कौर मायकें देलीह। आँगनमे बच्चासभ चिउड़ाक छोट-छोट ढेरी बना कऽ पहाड़क खेल खेलि रहल छल। जमुना हुनका खेल देखैत बहुत दिन बाद निर्भय हँसलीह।

ओहि हँसीक समय कंचनक छोट बेटा अधपकल पुआ लऽ दौड़ि आयल। “नानी, ई हमर बनाओल,” ओ कहलक। जमुना पुआ खएबाक बदला ओकर हाथ पकड़ि कहलीह, “तू गुड़ नहि, आटा आ पानि मिलौलहूँ। आब चन्द्रिका काकीसँ पूछ जे कतेक बेर आगि लगैत अछि।” चन्द्रिका बच्चाकेँ चूल्हि लग नहि अनलीह; सुरक्षित दूरीपर रखल एक ठण्डा साँचा देखौलीह। बच्चा ओहिमे कागदक गोल पुआ बना देलक। जमुना हँसैत-हँसैत आँखिक नोर पोछि लेलीह; कंचन ओहि नोरक अर्थ पुछलनि नहि।

भोजनक बाद रुखसाना खर्चक आखिरी जोड़ सुनौलीह। आजुक स्वीकृत थारी सभ परोसल गेल छल; अगिला तीन दिनक प्रस्ताव पर नगर कार्यालयक लिखित स्वीकृति बाँकी छल। रघुक पहिल खेपक दामक पावती भेटल, दोसर खेप उधार नहि उठल। चन्द्रिकाक सत्तर पुआक पिछला रसीद भुगतान-सूचीमे अलग दर्ज भेल; भुगतानक दिन निश्चित कएल गेल, मुदा पैसा एखन हाथमे नहि आएल। गुरमीत सार्वजनिक अनुदानक अनुपात घटबाक कारण सेहो सभाकेँ कहलीह—जे श्रम पहिने मुफ्त लिखल जाइत छल, आब वास्तविक खर्चमे गनल जा रहल छल।

सूरज अपन पिता सङ्ग चलए लगल तँ पिता कहलक, “तोहर नव पेय हम नहि चखलहुँ, तँ ओकरा नीक नहि कहब। मुदा गाछ चढ़बाक जोखिमक दाम काटल नहि जाए।” सूरजक चेहरापर कनेक राहत छल। बेला अपन पसार समेटि संभावित नव बजारक दुनू ठामक रेखाचित्र कागदमे राखलीह। कमला जैन घर लेल भोजनक छोट डिब्बा खरीदलीह; दुकानक छूट आ निजी भोजनक खर्च अलग चुकौलीह। चारू व्यक्तिक निर्णय एक्के मञ्चपर भेल छल, मुदा कोनो निर्णय दोसराक जीवनक बदला नहि छल।

जमुना घुरबाक पहिने नैराकेँ एकटा छोट पत्र देलीह। पत्रमे देवव्रतक सहायता-कोषक दवाइ आ गाड़ी-भाड़ा पाबि हुनका लाभ भेल, एहि लेल स्पष्ट धन्यवाद छल। ओकर तुरन्त बाद एकटा वाक्य—‘हम अपन उपचारक विवरणक गोपनीयता चाहैत छी; अस्पतालक सार्वजनिक खरीद आ भुगतानक स्वतंत्र निरीक्षण रोकबाक समर्थन नहि करैत छी।’ ओ पत्रकेँ प्रचारक अनुमतिपत्र नहि बनौलीह। नैरा जमुनाक सहमतिसँ ओकर प्रति सहायता-कोषक दफ्तर पठएबाक व्यवस्था कएलीह; मूल कंचनक झोरामे रहल।

घर पहुँचि जमुना पुरान नीमक छायामे बैसलीह। कंचन चूल्हिपर नोनगर दलिया रखलक; बच्चा कागदक पुआ नानीकेँ देखबए अनलक। घरमे पहिने सदिखन दवाइक समयक आवाज उठैत छल; आइ चूल्हिक खड़खड़ाहट, बच्चाक जिद आ रातिक साधारण आयोजन छल। जमुना कहलीह, “काल्हि पहिने तू अपन काजपर जा; हम दुपहरक दवाइ समयपर खा लेब।” कंचन पहिल बेर मायकेँ एक बेर अकेल छोड़बाक भरोसा करि सकलीह।

नगरक दोसर छोरपर तारा सार्वजनिक नापक फाइलमे बेलाक वैकल्पिक बजार-ठामक नक्शा रखैत छलीह। ओतय एक खेतिहर श्रमिक पानि निकासक रेखा देखिकऽ पुछलक, “ई रेखा कागदमे सीधा अछि, मुदा जे खेतमे रोज पयर धँसैत अछि, ओकर बात कतय लिखब?” तारा अलग खाली पन्ना खोललीह। ओ एहि राति उत्तर नहि देलीह। ककरो प्राण बचएबाक कृतज्ञता, ककरो खेत बचएबाक ज्ञान, आ ककरो मजदूरी—तीनू बात सुनबाक लेल अलग ठाम चाही, से दिनक अनुभव हुनका बुझा चुकल छल।

अध्याय ५७ • जनक आ जनपद

भोरमे खेतक मेड़पर रखल बाँसक डण्डा एकाएक एक हाथ नीचाँ धँसि गेल। रमेश ओकरा खींचिकऽ बाहर कएलक तँ नीचे लागल पियर माटि सूरजक पहिल किरिनमे चमकि उठल। तारा बिनौट नापक कागद लऽ कऽ पहुँचल छलीह। काल्हि साँझ ओ खेतिहर श्रमिकसँ ओकर ज्ञान लिखबाक बात कहने छलीह; आइ रमेश हुनका ओहि रेखा धरि अनलक जतय कागदमे पानि सहजसँ निकलैत छल, मुदा धरतीक भीतर महीन चिकनी माटिक परत ओकरा रोकि लैत छल। “रेखा खींचब आसान अछि,” रमेश कहलक, “पयर निकालब कतेक कठिन अछि, से एतय उतरिकऽ देखू।”

तारा अपना जूताक कात धरती छुड़लीह। पानि ऊपरसँ कम देखाइत छल, मुदा घासक नीचाँ माटि काँपि रहल छल। रमेश अपन दू घण्टाक काज छोड़ि हुनका देखबए आएल छल; तारा ओकर नाम आ समय लिखलीह। नगरक सहायक कहलक, “एतबा देखएबाक सेहो मजदूरी?” रमेश ओकर मुँह नहि ताकलक। “जँ हमर काज छोड़बाक समय हिसाबमे नहि आएत तँ ई बाट अगिला बरखा फेर हराएत।” तारा कहलनि, “आजुक स्थलगत जानकारीक देय अलग पाँतिमे जाएत। जमीनक अधिकारक निर्णय एहि मजदूरी-पर्चीसँ नहि होएत।”

कनेक दूर धनी राजभर सिंचाइक छोट नालाक मुँहपर बाँसक पाती टिकौने छलाह। पिछला मास एगो खेत-मालिक अपन बाड़ी बचएबाक लेल ओहि बाटपर माटिक ढेरी धरने छल। नाला बन्द भेलासँ धनीक किराएपर लेल खेतमे पानि नहि पहुँचैत छल, आ बरखा होइते दोसर परिवारक आँगन डूबैत छल। धनी कुदर माटिमे गाड़ि कहलनि, “हम एहि धरतीक मालिक नहि छी, मुदा सभकेँ पानि पहुँचबाक पुरान बाट एहि ठाम अछि। मालिकानाक कागद नहि रहने मुँह बन्द करबाक अधिकार के देलक?”

ओहि समय सुशीला महतो अपन बीजक दूटा छोट डिब्बा लेने पहुँचलि। दुनू पर तिथि, खेतक नाम आ रोपनीक दिन लिखल छल। ओ कम्पनीक चमकीला पर्चा तारा समक्ष नहि, पहिने रमेश समक्ष खोललीह। पर्चामे लिखल छल जे नव बीज जलजमावमे निश्चित उपज देत। सुशीला कहलीह, “हमरा खेतक दू टुकड़ीमे ओकर परिणाम एक्के नहि आयल। मुदा

हम जँ एतबा कहि दी जे ई बीज सभ ठाम खराब अछि, तखन हमहूँ पर्चा जकाँ बिनु जाँच निर्णय सुनायब।” हुनकर खाता पन्ना-पन्ना भीजलासँ मुड़ि गेल छल; अंक साफ छल।

बीज-विक्रेताक प्रतिनिधि महेन्द्र कहलक, “माटिक तैयारी बराबर नहि छल, तँ तुलना अनुचित अछि।” सुशीला सहमति देलीह, “ठीक कहलहुँ। एकटा टुकड़ीमे पानि तीन दिन ठहरल, दोसरमे एक दिन। मुदा अहाँक विज्ञापनमे 'सभ परिस्थिति' शब्द लिखल अछि। हमरा प्रयोगमे आठ पाँतिसँ पाँचमे बालि भरल, आ दोसर टुकड़ीक आठमे सातमे। ई अलग खेतक हिसाब अछि, वैज्ञानिक निष्कर्ष नहि। लिखू जे दावाक स्वतंत्र परीक्षण चाही।” महेन्द्र खाता देखबाक बाद 'सभ परिस्थिति' शब्दपर पेंसिलसँ घेरा बनौलक, मुदा कम्पनीक तर्फसँ सुधारक वचन नहि देलक।

प्रतिनिधिक सङ्ग आयल नव प्रशिक्षु पवन खेतक नाप लिखि रहल छल। ओ सुशीलासँ पूछलक, “अहाँ जे फसल तौललहुँ, ओकरा बेचबासँ पहिने भीजल धान सुखौने छलहुँ?” सुशीला अपन दू दिनक सुखेबाक हिसाब देखौलीह। पवन कहलक जे एतेकसँ कम्पनीक बीजक सामान्य गुण सिद्ध नहि होएत, मुदा पर्चाक निश्चयात्मक वाक्य फेर देखबाक चाही। महेन्द्र ओकर कापी एक बेर बन्द करबए चाहलक; पवन कापी नहि देलक। सुशीला देखलीह जे ओकर आपत्तिक एक नकल आब कम्पनीक अपन कर्मचारी लग सेहो रहत।

सुशीलाक बेटा विनय बगलक मेड़पर घासक बीच फुदकैत एकटा पोक पकड़ए लगल। माए रोकलीह, “बीजक नमूना राखल अछि, ओतय पयर नहि।” विनय निसाँस छोड़लक। “अहाँ सभ पानि आ धान गनैत छी। हम विद्यालयमे जँ हमरा खेतक बात कहैत छी तँ शिक्षक पुस्तकक चित्र देखबैत छथि।” सुशीला ओकर हातमे भीजल माटिक छोट ढेला दऽ कहलीह, “चित्र देखिहे, मुदा एहि ढेलाक भार सेहो याद रखिहे। दून् एक्के बात नहि।” विनय ढेला सूखए लेल पातपर रखलक।

पुरान मिथिलाक राजसभामे ओहि दिन जनकक समक्ष अनेक पात्र सोना-चाँदीक उपहार धरि रहल छलाह। सभामे ज्ञानपर बहस सुनबाक लेल विद्वान आयल छलाह। राजाक धैर्यक चर्चा दूर-दूर धरि छल, मुदा राजदरबारक पाछाँ खेतमे हलक फाल अटक गेल छल। एक मजदूर हाथमे ओ फाल लऽ आयल। द्वारपाल हुनका समारोह समाप्त होएबाधरि ठाढ़ रहबाक कहलनि। मजदूर कहलक, “सभामे जे अनाजक हवन होएत,

ओही खेतक बीज पानिक भीतर सड़ि रहल अछि। समाचार देरीसँ जाए तँ वर्ष भरिक काज खराब होएत।”

जनक ओहि आदमीकेँ भीतर बजौलनि। मन्त्र-पाठमे बिघ्न होइत देखिकऽ एक सभासद असन्तोष प्रकट कएलनि, मुदा राजा फालपर लागल माटि देखैत रहलाह। मजदूर बतौलक जे खेतक ऊपरक रेखा आ भीतरक धरती अलग अछि। “ई राजक खेत अछि,” राजा कहलनि। मजदूर उत्तर देलक, “राजक कहने की पानिक बाट बदलि जाएत?” सभामे क्षणभरि सन्नाटा रहल। राजाक विद्या एखन एहि साधारण प्रश्नक उत्तर खोजि रहल छलीह।

पाछाँ ठाढ़ एक विदुषी पुछलनि, “जे जानैत अछि, ओकर ज्ञानक कसौटी की?” राजसभाक एक पण्डित आत्मा आ असङ्गताक चर्चा आरम्भ कएलनि। मजदूर एहि शब्दसभक मोल नहि जनैत छल, मुदा ओकर हाथक फाल पर माटि एखन तक लागल छल। राजा एक सेवककेँ कहलनि जे किसानसभक सङ्ग स्थल देखल जाए, आ खेतक लेखामे पानीक अवधि लिखल जाए। मुदा ओही क्षण मजदूरक अपना घरक खेतपर कतेक अधिकार अछि, से राजसभामे केओ नहि पुछलक। जनकक ज्ञानक चर्चा आ जनपदक जीवनक बीच ई प्रश्न अनुत्तरित रहल।

विदेहपुरमे मीना थारूक हाथमे तेहन एक दस्तावेज छल जेकर स्याही एकदम नव छलीह। कृषि कम्पनी गामक किछु परिवारसँ लम्बा पट्टा लेबऽ चाहैत छल। कम्पनीक कर्मचारी सभाकेँ “उन्नतिक अवसर” कहि बुझबैत छल। मीनाक पिता बीमार रहला समय अग्रिम पाबए लेल सहमत भऽ गेल छलाह, मुदा कागदपर परिवारक सभ सदस्यक सम्मति नहि छलीह। मीना ओ पन्ना मेड़पर पसारि कहलीह, “जतए हम सभ रोपनी करैत छी, ओतए कम्पनीक नामक पट्टा लिखला बाद हम अपन बारीमे कहियो घुरि पायब की?”

कर्मचारी कहलक, “किराया निश्चित भेटत; पानि कम्पनी सम्हारत।” मीना पुछलीह, “सूखा वर्षमे किराया देब की नहि, पट्टा बीचमे समाप्त करबाक शर्त की, आ ई नाला ककरा नियन्त्रणमे जाएत?” दोसर पन्नामे ‘प्रबन्धकीय आवश्यकता’ लिखल छल, स्पष्ट उत्तर नहि। परिवारक काका कहलनि, “तोहर बाबू अग्रिम चाहैत छथि, तूँ पढ़ल-कागदक

बातमे देर करैत छह।” मीना धीमेसँ कहलनि, “बाबूक औषधि हमरा चाही, मुदा औषधिक खर्च चुकएबाक लेल आगाँक सभ फसल बिना माप देब, से नहि।”

मीना कागद फाड़लीह नहि। ओ एक नकल अलग रखलीह आ कम्पनीक कर्मचारीकेँ लिखित आपत्ति देलीह—परिवारक परामर्श आ शर्तक अर्थ स्पष्ट भेनहि बिना कोनो हस्ताक्षर नहि। पिता एहि निर्णयपर प्रसन्न नहि छलाह। हुनकर आँखिमे औषधिक खर्चक चिन्ता छल। मीना घरसँ आनल जलक लोटा हुनका देलीह। “हम पट्टा रोकि रहल छी, इलाज नहि,” ओ कहलीह। ओहि वाक्यसँ घरक विवाद मिटल नहि; मुदा गुप्त सहमतिक बदला खुलल वार्ताक लेल स्थान बनल।

मीनाक माए चौकीपर बैसल पतरी बीनि रहल छलीह। ओ बीचमे केवल एकटा प्रश्न पुछलीह—“जँ कम्पनी नाला सुधराओत तँ बरखा फेर घरमे न घुसत, ई बात के लिखि देत?” मीना एहि प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकलीह। पिता ओतए पहिने मजदूरी कएने छलाह, तँ हुनका नालाक पुरान मुँह स्मरण छल। ओ दूटा ठाम बतौलनि जतए भरल माटि हटेबासँ उलटा पानि घरक कात मुड़ि सकैत छल। मीनाक विरोधमे घरक अनुभव सेहो जुड़ि गेल।

दुपहर होएबासँ पहिने फूलमती तियर अपन पुरान जाल नालाक किनार पसारि देलीह। जालक तागा चारि ठामसँ फाटल छल, मुदा ओकर मोर आ गाँठक काज अत्यन्त बारीक छल। पुरान साझीदार जाल बेचि प्राप्त रकममे फूलमतीक हिस्सा घटा देने छलाह; तर्क छल जे नव मरम्मतिक खर्च ओ नहि चुकौने छलीह। फूलमती पन्द्रह गाँठपर अपन पुरान निसान देखौलीह। “ई हम बनौने छी। जालक बिक्रीक मूल्य आ पछिलका मरम्मतिक खर्च अलग लिखू।” पुरान साझीदार फेर अपन हिसाबपर अड़ल रहलाह।

सुकठीक माछबजारसँ विनोद केवर्त आ दू युवा मछुआरिन पहुँचलि। फूलमती हुनकासँ कहलनि जे नवा जालसमूह बनाओल जाए—जाहिमे जाल बुनबाक घण्टा, धागाक लागत, मरम्मत आ माछ बेचबाक हिस्सा अलग रहत। एक युवती पुछलक, “जँ जाल ककरो घरमे पड़ल रहल आ दोसर दिन केओ उपयोग कएलक तँ?” फूलमती हँसलीह, “तखन जालक सङ्ग एकटा छोट खाता सेहो चलत।” समूहक पहिल चारि नाम लिखल गेल; पुरान जालक विवाद ओहि कागदसँ स्वतः समाप्त नहि भेल।

फूलमतीक माए सँ सीखल जालक एक गाँठ बहुत कम लोक बनबैत छल। नव समूहमे राखल सुनीता ओ गाँठ बनबैत-बनबैत निराश भऽ गेलीह। फूलमती हुनका गलतीपर हँसलीह नहि। अपन हाथसँ एक बेर धीरे-धीरे धागा घुमौलीह, फेर डोरी सुनीताकेँ लौटा देलीह। “जे गाँठ सीखलहुँ, ओकर कामक दाम सेहो लिखब,” ओ कहलीह। सुनीता छोट खाता खोलि पहिल पाँतिमे अपन नाम लिखलीह। समूहक आरम्भ केवल पुरान साझेदारीक विरोध नहि, नव कौशलक बाँट सेहो छल।

नालाक एहि कात धनी अपन कुदार फेर उठौलनि। फूलमतीक नव समूह लेल ओहि बाटसँ माछक टोकरी निकलबाक छल, मुदा सिंचाइक पानि सेहो खेत धरि जायब आवश्यक। एक खेत-मालिक अपन मेड़ टूटबाक भय कहलक। धनी ओकरा नकारलनि नहि। “अहाँक मेड़ बचत, तखने हमर रोपनी सेहो बचत,” ओ कहलनि, “मुदा एक गाछक तना धरि बन्द दरबज्जा सभकेँ रोकैत अछि। नापक दिन सभकेँ बजाउ।” तारा एहि प्रस्तावपर निशान लगौलीह—अस्थायी खोलाइ केवल देखरेखमे; स्थायी सार्वजनिक बाटक निर्णय सुनवाइक बाद।

नन्दिनी भंडारी नर्सरीसँ नम गम्हारक पौधा लऽ अनलीह। हुनकर हाथमे ‘पुरैनि’ लिखल जलखाता छल; ओ नाम नर्सरीमे पानि आनबाक पुरान स्थानीय दर्जाक रूपमे बचल छल। कर्मचारी पुछलक, “पुरैनि नदी एतयसँ कतय मिलैत अछि?” नन्दिनी मुस्केलीह। “हमर खातामे ई पानिक स्रोतक पुरान नाम अछि; इएह कागदसँ कोनो दूरक नदीक संगम नहि देखायल जा सकैत अछि।” ओ एहि नामक पाछाँ लिखल तिथि आ पानि ढोअनिहारक देय देखौलीह।

नर्सरीक पौधाक दामपर सुशीलासँ नन्दिनीक बहस भेल। सुशीला पुछलीह, “एक्के आकारक पौधा पिछिला माससँ एतेक महँग किएक?” नन्दिनी खाता खोलि देखौलीह—माटि आनबाक भाड़ा, दू बेर अतिरिक्त पानि, आ नर्सरीमे काम करनिहारक मजदूरी। सुशीला कहलीह, “बढ़ल लागत ठीक, मुदा दू बेरक पानिक माप एक्के पाँतिमे लिखल अछि।” नन्दिनी कागद दाबि नहि देलीह। ओ दोसर दिन नाप देखेबाक वचन देलीह, मुदा घटल दाम एखन स्वीकार नहि कएलीह। दुनूक असहमति नर्सरीक फाटकपर टँगल मूल्य-पत्रक संग जीवित रहल।

साँझक सभाक तैयारी लेल देव गाइने एक पुरान सारङ्गी निकालि रहल छलाह। पिछला मेलामे हुनकर एक धुन मोबाइलसँ रेकॉर्ड कएल गेल छल। आब कृषि कम्पनीक प्रचारक ओहि धुनकेँ 'नव बीजक गीत' बनाकऽ बजएबाक आग्रह कएलक। देव पुछलनि, “कोन शब्द लगत, कतेक दिन बजत, आ हमर नाम कतय रहत?” प्रचारक कहलक, “धुन तँ लोकक अछि; ककर एकल सम्पत्ति?” देव सारङ्गीक धनुष रोकि कहलनि, “पुरान धुनक अनेक रूप छथि; मुदा एहि प्रस्तुति, हमर स्वर आ हमर बनाओल अन्तरा हमर श्रम अछि। एक मिनट सुनलासँ अनन्त उपयोगक अधिकार नहि भेटैत।”

देवक संग हुनकर भतीजी रागिनी छलीह। ओ मोबाइलपर अपन मामाक पुरान प्रस्तुति सुनबैत कहलीह जे गीतमे खेतक पानि आ स्त्रीसभक रोपनीक अलग लय अछि; नव विज्ञापनक तेज ढोल ओकर अर्थ बदलि देत। देव ओकरा कहलनि, “अहाँ गीतक अर्थ बुझे छी, तँ पहिने अपना विद्यालयक पढ़ाइ पूरा करू; हमर सङ्ग गेनाइ अनिवार्य नहि।” प्रचारक सीमित मेलाले लेल एकटा नव प्रस्तुति आ पारिश्रमिकक प्रस्ताव लिखबाक वचन देलक। देव बिना शर्त रेकॉर्डिंग देबाक अस्वीकार करि देलनि; कोनो अन्तिम अनुबन्ध ओहि दिन नहि भेल।

रागिनी लेल एहि विवादक अर्थ अपन मामा सँ अलग छल। ओ गामक उत्सवमे बाजल गीतकेँ विद्यालयक नाटकमे उपयोग करए चाहैत छलीह। देव हुनका रोकलनि नहि। “तूँ सिखि गाबि सकैत छह,” ओ कहलनि, “मुदा हमर आजुक स्वरक रेकॉर्डिंग दोसर कम्पनीकेँ बेचबाक अधिकार तोरा नहि, जहिना हम तोहर चित्रक अधिकार नहि लऽ सकैत छी।” रागिनी अपन अभ्यासक लेल नव धुन बनएबाक ठानलि। ओहि क्षण देव अपन पुरान सारङ्गीक ढील तार स्वयं कसैत मुस्कुरा उठलाह।

तारा सभामे नाप-पंजी पसारलीह। एक पन्नामे रमेशक धँसल डण्डाक ठाम, दोसरमे धनीक बन्द नालाक मुँह, तेसरमे सुशीलाक बीजक परीक्षण आ चउथमे मीनाक पढ़ाक आपत्ति छल। नगरक प्रतिनिधि कहलक, “एतेक कागदसँ काम कठिन भऽ जाएत।” तारा उत्तर देलीह, “काम पहिनेसँ कठिन अछि; हम सभकेँ एक शब्द 'विकास' लिखि ओकर कठिनाई लुकाएब नहि चाही। जकर खेत, पानि, श्रम आ रोजी प्रभावित, ओकर बात सुनबाक अलग समय चाही।”

नगर प्रतिनिधि तत्काल एकटा संयुक्त आदेश चाहैत छल—नाला खोलू, खेत जाँचू आ कम्पनीक प्रस्तावपर सहमति लिअ। मीना ठाढ़ भेलीह। “नाला खोलबाक जाँचपर हमरा आपत्ति नहि, मुदा ओहिसँ हमर जमीनक पट्टा स्वीकार नहि भऽ जाइत।” धनी कहलनि, “हम सार्वजनिक पहुँच चाहैत छी, ककरो खेत हड़पब नहि।” सुशीला जोड़लीह, “बीजक नमूना हम देब, मुदा कम्पनीक विज्ञापनक सत्यापन स्वतंत्र जाँचकर्तासँ हो।” तारा तीनू कथन अलग पाँतिमे लिखलीह। सामूहिक निर्णायक अर्थ सभक एक्के सहमति नहि छल।

फूलमती नव जालसमूहक छोट पंजी लऽ आगाँ एलीह। “जँ नाला खोलल जाए तँ माछ जायत कतय? बरखा आ सूखामे माछक बाट अलग होइत अछि,” ओ कहलीह। विनोद बाजारक शुल्क देखौलक। अदिति, जे अस्पतालक गोदामक जाँच पूरा कऽ एतय पहुँचल छलीह, कहलीह जे नालाक जाँचमे माछबजारक लागत-पंजी सम्बन्धित हो सकैत अछि, मुदा अस्पतालक गाड़ीक रसीद एहि आधारपर जलपट्टाक प्रमाण नहि बनत। नैरा सहमति देलीह। पुरान पुकारनाम आ मिथुनक खोजक कागद ओ अलग बन्द फाइलमे रखलीह।

भोरमे जनकक राजसभामे जे फाल आएल छल, ओ साँझ धरि खुला प्राङ्गणमे रखल रहल। राजा स्थलसँ घुरल किसानसभसँ पुछलनि, “ककर खेतमे पानि रोकिने रहत?” उत्तर एक्के नहि छल। एक परिवार चाहैत छल जे नाला गहिर कएल जाए; दोसर परिवार कहैत छल जे तखन ओकर कूप सुखा जाएत। विद्वानसभ आत्मज्ञानपर अपन बहस पुनः आरम्भ कएलनि। जनक ओ बहस रोकलनि नहि, मुदा खेतक दुनू परिवारक नाम अलग पंजीमे चढ़एबाक कहलनि। राजाक प्रसिद्ध विवेक एहि असहमतिमे अन्तिम फैसला नहि छल; सुनबाक दुआर मात्र खुलल छल।

विदेहपुरक सभामे आखिर धनी नालाक मुँह लग किछु घास हटेबाक अनुमति पेलाह, ओहो दू परिवारक उपस्थितिमे आ एक कर्मचारीक देखरेखमे। माटिक पैघ ढेरी बिना जाँच नहि हटाओल गेल। धनीकेँ अपन समय आ कुदारक कामक देय लिखित रूपमे भेटल; मरम्मतक स्थायी जिम्मेदारीक निर्णय बादमे होएत। रमेश अपन धँसल डण्डाक ठामपर छोट लाल धागा बान्हलक, जाहिसँ अगिला नापमे ओ निशान फेर भेटए। तारा कहलनि, “धागा स्थानीय सूचना अछि, इंजीनियरक जाँचक बदला नहि; मुदा एकरा हटाउ नहि।”

मीना घर लौटलीह तँ पिता खाटपर जागि रहल छलाह। ओ पट्टाक नकल हुनका दऽ कऽ बैसलीह। पिता पुछलनि, “तौँ कम्पनीकेँ साफ नहि कहलहुँ?” मीना उत्तर देलीह, “एखन 'हँ' नहि कहलहुँ; प्रश्न लिखिकऽ देलहुँ। बाबू, हम खेत नहि बचा सकब जँ अहाँक इलाज बन्द होए, आ इलाज सेहो नहि चलत जँ हम सभ आगाँक पाँच वर्षक फसलक ठाम अनिश्चित कागद रखि दी।” पिता बहुत देर धरि चुप रहलाह। फेर ओ कहला, “काल्हि हमरा सङ्ग बैसिकऽ दोसर पन्ना पढ़िहे।”

सुशीला अपन बीजक डिब्बा घर आनिकऽ रखलीह तँ विनय माटिक ढेला सूखा चुकल छल। ओकरा तोड़िते भीतरक भाग एखन नम भेटल। “ऊपर सूखि गेलो नीचे पानि रहि सकैत अछि,” विनय कहलक। सुशीला हँसलीह, “एहि लेल नाप चाही।” ओ बेटाकेँ आजुक परिणाम सुनबए नहि कहलीह; ओकरा भोरक पानि-पतरा स्वयं देखबाक कहलनि। फूलमती नव जालक पहिल गाँठ लगबैत अपन बेटीकेँ सिखबैत छलीह जे गाँठ कसब आ ढील देब दू अलग काज अछि। दुनू घरमे काजक ज्ञान परिवारक आदेश नहि, सीखबाक निमन्त्रण बनि रहल छल।

रातिमे तारा नाप-पंजी बन्द करबाक पहिने एक नव पन्ना जोड़लीह—पानि रोकबासँ ककर लाभ, पानि छोड़बासँ ककर हानि, आ निर्णय होएबाधरि ककर श्रम बिना देयक चलि रहल अछि। नन्दिनीक 'पुरैनि' खाता, सुशीलाक बीज-परीक्षण, धनीक सार्वजनिक बाट आ मीनाक अस्वीकृत पट्टा अपन-अपन अलग कागदमे सुरक्षित रहल। बाहर हलुक वर्षा आरम्भ भेल। पहिल धार मेड़सँ उतरिकऽ दू दिशामे बँटल। तारा खिड़की लग ठाढ़ भऽ ओकर आवाज सुनलीह। एकटा कारणक रेखा खोजब अब कठिन छल; अनेक हाथ पानि रोकने छल, आ प्रत्येक हाथक अपन कथा छलीह।

अध्याय ५८ • कारणक जाल

मखानिया डबराक कातमे रमणी बिन्द बाँसक पातर छड़ पानिमे उतारलीह तँ ओकर मुहाँ कादोमे अटक गेल। ओ छड़ बाहर खींचलीह; कादोक संग एक मुट्ठी सड़ल पात आ पुरान बोरीक धागा निकलल। भोरक पानि एक दिशासँ स्थिर देखाइत छल, मुदा भीतरक छोट धार दोसर दिशामे पात घुमा रहल छल। तारा बिनौट मेड़पर ठाढ़ भऽ निशान गनैत छलीह। पिछला साँझ सुशीलाक खेतसँ लाओल भीजल माटिक नमूना हुनका झोरामे छल। ओ आज ककरो कहल मात्रपर डबराक बाहा खोलबाक आदेश नहि लिखए चाहैत छलीह।

रमणी छड़ धोइत कहलनि, “एतय कियो कहैत अछि पानि रोकने मखान बाँचत; कियो कहैत अछि खोलने माछ। मुदा डबराक भीतर बीहन कखन रोपल गेल, तखन चौरक खेतमे कतेक पानि छल, से एक ठाम नहि लिखल अछि।” हुनका संग आयल फूलमती तियर घुटना धरि भीजल धोती समेटि मखानक पात देखबए लगलीह। नव जालसमूहक एक सदस्य ओकरा पाछाँ ठाढ़ छल। फूलमती पूछलनि, “आज जँ एतय धार छोड़ल जाए तँ हमारे नव जालकेँ खींचबाक सुरक्षित बाट रहत?” रमणी साफ कहलीह, “नहि जनैत छी। पहिने गहिराइ फेर नापू।”

तारा नापक डोरी मेड़पर पसारलीह। हीरा सहनीक देल सलाह अनुसार छोट-छोट डण्डापर समय लिखल गेल—भोरक पानि, दोपहरक पानि, आ वर्षाक बादक पानि। नगरक कर्मचारी जयराम कहलक, “पुरान नक्शामे बाहा सीधा देखायल अछि; बेसी मापला सँ की बदलब?” तारा डोरीक एक मोड़ देखौलीह। “कागदमे ई ठाम सीधा अछि, धरतीपर नहि। जँ एकरा काटिकऽ सीधा करब तँ फूलोक पानखेतमे पहिल धार जाएत। पुरान रेखा काजक प्रारम्भ अछि, निर्णयक अन्त नहि।”

फूलो चौरसिया पानक बाड़ी सँ नन्हका पातक एक डाली हाथमे लऽ पहुँचलि। बाड़ी पर छाजनक भीजल बाँस झुकि गेल छल। “हम डबराक पानि रोकबाक पक्षमे नहि छी,” ओ कहलीह, “मुदा जे नव बाँध बनएबाक बात अछि, ओकर माटि हमरा खेतक माथपर टिकत। बरखामे धार फेरि घुरि कऽ पानक जड़पर लागल तँ एक रातिमे दू बरखक कमाइ

नष्ट होएत।” जयराम कहलक, “सभकेँ सुविधा चाही तँ किछु त्याग करए पड़त।” फूलो उत्तर देलीह, “त्याग के करत, नामसहित लिखू। सबहक सुविधा कहिकऽ हमर एक्के खेत चुनल किएक?”

ओहि समय रमेश कुशवाहा तरकारीक खाली टोकरी लऽ उतरला। सुशीलाक खेत लग धँसल डण्डाक निशान ओ सभकेँ दिखा चुकल छलाह। आब अपन बेड़क कोमल लौकीक लत्तरक चिन्ता छल। “निकासीक पहिल बहाव हमर खेत सँ जा सकैत अछि,” ओ मानलनि, “मुदा पाँच दिनक रोपनी डूबि गेल तँ मुआवजा ककर हिसाबसँ होएत? बरखा भरि पानि चढ़त से जँ पूर्वे जनाएल जाए तँ फसल बदलि सकब।” तारा लिखलीह— खेतक वर्तमान फसल, सम्भावित जल-ठहराव आ नुकसानक माप अलग। ओहि पन्नापर रमेशक ‘हँ’ अथवा ‘नहि’ एखन खाली छल।

देवकी पाल ऊनक गट्टर राखि दू बकरी आ एक बूढ़ मादा भेड़ संग पहुँचलीह। नहरक कातक पुरान पशुबाटपर नव बाँसक खूँटा लगल देखिकऽ भेड़ घुमि गेल। देवकी ओकरा सम्हारि कहलीह, “डबराक पानि जँ एहि मोड़पर टिकाओल जाए तँ हम पशु लऽ उत्तरक ऊँच बाटे जाएब। मुदा ओ बाटमे हाटक गाड़ी दौड़ैत अछि। एक बेर भेड़ डरि कऽ भगल तँ ओकर मूल्य नक्शापर के गनत?” देवकीक बेटा नीरज हाथमे ऊन तौलबाक छोट काँटा रखने छल। ओ माएसँ पूछलक, “जँ घुमि कऽ जाएब तँ हम हाट समयपर पहुँचब?” माए उत्तर देलीह, “सुरक्षित पहुँचना पहिने अछि, दाम बादमे। मुदा देरीक खर्च कियो लिखत?”

बटोही धामी गाछक तना सँ अपन बाँसक हुक खोलैत आगाँ आयलाह। मधु संग्रहक पुरान बाट प्रस्तावित बाँधक कातमे आवि रहल छल। “हमरा गाछ धरि पहुँच चाही,” ओ कहलनि, “नुकसान कऽ कऽ मधु लएबाक अनुमति नहि। जे फुलक मौसममे मधुमक्खी आयल अछि, तकरा बचबैत कमाइ होइत अछि।” एक कर्मचारी हुनका पुरान शिकारक व्यवहारसँ जोड़ि पुछलक जे प्रतिबन्धित जाल फेर लगाओताह की नहि। बटोही हँसलाह नहि। “मधु लेब, गाछ बचाएब आ पशु नहि पकड़ब—तीनू बात लिखू। एक पेशाक नामसँ दोसर अपराध नहि निकलैत।”

सबीना मीरशिकार ओहि वार्ताक अन्तिम शब्द सुनि ठमकि गेलीह। हुनका झोरामे जाल सीबाक सूई, रस्सीक गाँठ आ मरम्मतिक दू रसीद छल। पिछला बजारमे परम्पराक

नामपर हुनका प्रतिबन्धित शिकार करबाक लेल कहने एक व्यक्ति फेर ओतय भेटल। ओ कहलक, “जँ पुरान बाट खुलत तँ पुरान काजो चलत।” सबीना ओकर आँखिमे ताकिकऽ उत्तर देलीह, “पुरान बाटपर चलबाक अधिकार सभकेँ चाही। मुदा हम गैरकानूनी काज नहि करब। हमर सुई आ गाँठक कमाइक हिसाब देखू; हमर जातिनाम नहि।” ओ अपन मरम्मतिक अपूर्ण भुगतानक रसीद तारा समक्ष रखलीह।

मखानिया डबराक दोसर कातमे चारि महिला बीहन छाँटि रहलीह। एकटा नेना गलतीसँ पातक बीच पयर धऽ देलक तँ माए ओकरा कात खींचि लेलीह; दलदली माटि ऊपर सँ साधारण देखाइत छल। रमणी बच्चाक पयर पोंछि कहलीह, “बीहन रोपब, पात सँ चुनब आ सुखायल मखान फोड़ब अलग-अलग हाथक काज अछि। पट्टाक पन्नामे बस जकर नाम अछि ओकरा सभ लाभ मानि लेल जाइत अछि।” एक महिला अपन हथेलीक फोका देखौलीह। “फोड़ाइक दाम ऋण चुकएबाक नामपर काटल जाएत तँ हमरा हाथक काज कतेक रहल?”

मखान ठेकेदारक सहयोगी पारस लाल कहलक, “बीहनक पैसा पहिनेसँ देल गेल अछि, तँ कटौती उचित अछि।” रमणी ओकर खाता खोलबए कहलीह। पहिल पन्नामे बीहनक खर्च छल, दोसरमे डबराक पट्टा, तेसरमे महिला श्रमिकक अग्रिम। तारा पुछलनि जे ई तीनू मद एक परिवारक ऋणमे किएक जुड़ि गेल। पारस उत्तर नहि देलक; ओ कहलनि जे मालिक आउत तखन बात करत। रमणी बहस रोकलीह नहि, मुदा खाताक मूल पन्ना केहनो अनुमानसँ नहि भरलीह। महिला सभ अपन-अपन प्राप्त रकमक तारीख अलग कागदपर लिखौलीह।

दुपहरि नन्दिनी भंडारी अपन नर्सरीसँ दूटा माटिक घैल, एकटा बाँसक नलिका आ कापी लऽ एलीह। ओ देखौलीह जे पिछला चारि दिनमे पौधा लगायल दू बेड़मे पानिक मात्रा भिन्न छल। “ई हमर नर्सरीक माप अछि,” ओ कहलीह, “पूरा चौरक प्रवाह नहि। एतयसँ हम एतबा कहि सकैत छी जे एहि कातक माटि बेसी देर नम रहल। कतेक घन पानि निकलत, ओहि लेल अतिरिक्त जाँच चाही।” जयराम तुरन्त कहलक, “तखन अहाँक जमीनक भरपाईक दाम आधा मानि सकैत छी।” नन्दिनी कापी समेटलीह। “हम पानिक माप साझा कएलहुँ, जमीन बेचबाक भाव नहि।”

नन्दिनीक संग आयल हुनकर भतीजी कंचन घैलक कात कागदक नाव तैरा रहल छलीह। नाव एक ठाम घुमैत रहल। कंचन पुछलक, “ई आगाँ किएक नहि जाइत?” नन्दिनी ओकरा माटिक छोट उभार देखौलीह। “एतय धार घुमि कऽ अपन बाट खोजैत अछि।” कंचन कहलक, “तखन ओकरा हाथसँ धक्का देब?” नन्दिनी हँसि उठलीह। “धक्का देबासँ नाव चलत, मुदा जे असली मुँह बन्द अछि ओ नहि खुलत।” बच्ची नाव उठाकऽ सूखल किनारपर राखि देलक।

पछियारी चौर पहुँचला पर मेड़सँ पयर फिसललाक आवाज सुनायल। रमेश कुशवाहा अपन टोकरी सँ एकटा लौकी बाहर निकलि जाएबासँ बचौलक। एहिठाम पानि रहला सँ वर्षाक दिनमे माछ आ पशुचरनक अवसर छल; पानि उतरला पर धान आ तरकारीक खेती। धनी राजभर एकटा सँकर सार्वजनिक बाटपर ठाढ़ छलाह। “जे एहि मौसममे चारागाह अछि, ओ अगिला मौसममे खेत बनत,” ओ कहलनि। “बाहा खोलबाक निर्णय जँ केवल आइक पानि देखिकऽ कएल गेल तँ अगिला महिनाक रोपनीक हिसाब कियो नहि पुछत।”

रमणी चौरक कात अपन नावक पुरान निशान देखौलीह। ओ निशान ऊँच माटिपर छल, जतय पिछला बरखा पानि पहुँचल छल। “एहि ठाम हमर नाव चढ़ल छल,” ओ कहलीह, “मुदा एहि स्मृतिसँ आइक जलकर-पट्टा नहि बनि जाइत। महिलासभक नाम पट्टामे अलग जोड़बाक आवेदन शेष अछि। हम जे बतबैत छी ओ पानिक चाल, अधिकारक अन्तिम फैसला नहि।” तारा ओकर कथन तिथि सहित दर्ज कएलीह, आ कर्मचारीक पुरान पन्नामे एहि निशानकेँ ‘स्थायी जलरेखा’ कहल गेल छल से काटबाक बदला सुधार-टिप्पणी जोड़लीह।

सुशीला महतो अपन बीज-परीक्षणक एकटा नव कापी अनलीह। कापीक ऊपर ‘बड़दरी’ लिखल छल। जयराम ओ शब्द देखिकऽ पूछलक, “एहि नामक नदी तँ कतहु नक्शामे नहि देखाइत।” सुशीला कहलनि, “हमर कापीमे बड़दरी खेतक ओहि टुकड़ीक ठामनाम अछि जतय पहिल बीहन रोपलहुँ। ओतय पानि कतेक दिन ठहरल, से लिखल अछि। पुरान नामक अर्थ जँ कियो आन स्रोतसँ सिद्ध करए चाहए तँ करथि, मुदा हम

एतयसँ नदीक संगम नहि बतब।” ओ बीहनक दू पाँतिक बीचक दूरी आ रोपनीक दिन बतौलीह।

सरोज खरकौट नव जालक धागाक गठरी लऽ पहुँचलि। हुनकर लागतखातामे ‘बलथी’ लिखल छल। ओ कहलीह, “हमरा समूहमे बलथी ओ छोट टोलीक नाम अछि, जे अलग ठाम जाल सिएत अछि। एकरा रमणीक नाव आ विनोदक माछबजारक हिसाबसँ मिलबैत काल श्रमिकक नाम नहि मेटाउ।” चौरक कात सहायक बलथीकेँ पानिक मुख्य निकास बुझि लाल रङ्गसँ घेरए लगल। सरोज ओकर हाथ रोकलीह। “पहिने पूछू जे एहि पन्नामे ई नाम कोन वस्तुक अछि। शब्द एक होएबासँ ठाम एक नहि भऽ जाइत।”

फूलो चौरसिया नाप-पंजीमे अपन खेतक तीन कात देखौलीह। एक कात ढाल छल, दोसर कात बाँसक छाजन, तेसर कात पुरान पगडंडी। ओ कहलीह, “बरखाक दू सप्ताह हम ढालक कातक पानि सहि लेब, मुदा तेसर सप्ताह जँ बाँधक माटि उँच उठल तँ बाड़ीकेँ बहावक सीधा चोट लाग सकैत अछि।” रमेश उत्तर देलनि, “तँ हम चाहैत छी जे दू सप्ताहक परखनाइमे हमर बेड़क हानि नापल जाए।” तारा पुछलनि, “सूखामे की?” रमेश कनेक सोचिकऽ कहलक, “तखन रोकल पानिक किछु हिस्सा खेतीक कामे चाही, मुदा चौरक माछवला मुँह बन्द नहि।”

देवकी अपन पशुबाटक प्रस्ताव राखलीह—बरखा चढ़ला पर उत्तरक ऊँच बाट, मुदा हाटक समय गाड़ी धीमा चलबाक व्यवस्था; सूखामे पुरान नहरक कातक पगडंडी। एक दुकानदार कहलक, “पशु आयत तँ हमरा दुकानक आगाँ कादो हएत।” देवकी कहलनि, “हम बजारक मोड़पर अपन खर्चे माटि बिछाएब, मुदा ओहि लेल घेरबाक खूँटा हटाओल जाए। ऊन बेचबाक दिन दू घण्टाक सुरक्षित बाट भेटय।” ओ अपन बिक्रीक एक टुकड़ी जमीनक अस्थायी उपयोग छोड़बाक प्रस्तावो देलीह। नीरज मायक मुँह तकैत रहल—एहि त्यागक अर्थ ओकर छोट हाटक ठाम घटब छल।

बटोही अपन मधुक पात्रक मुँह खोलि सभकेँ सुगन्ध सुँघौलनि, पानिमे नहि उड़ेललनि। “बाँधक नव बाड़ जँ गाछक बीच पड़त तँ हम औजार लऽ घुमि नहि सकब,” ओ कहलनि। वनक काम देखनिहार सहायिका मंजू कहलीह, “एहि मौसममे गाछक एक कात मधुमक्खीक नव छत्ता अछि; भीड़क बाट ओतय नहि बनबाक चाही।” दुनू मिलि स्थल

देखलनि। अंतमे परखनाइक समय उत्तरक सूखल मेड़सँ बटोहीकेँ सशर्त पहुँच दएबाक प्रस्ताव बनल—गाछ नहि काटब, छत्ताक नव भाग नहि छेड़ब, आ सुरक्षा-जाँचक बादे प्रवेश। बटोही पुरान बाटक स्वतः पुनर्स्थापन नहि माँगलनि।

सबीना नव मरम्मत-काजक दाम पुछलीह। नगरक एक लोक कहलक, “अहाँक समाज तँ एहन जाल पहिनेसँ बनबैत आयल अछि; ई सामूहिक सेवा बुझू।” सबीना झोरासँ सूई उठौलीह। “सामूहिक सेवा हम अपन इच्छा सँ देब,” ओ कहलीह, “जे जालक गाँठ हम छह घण्टा लगा कऽ ठीक करब, तकर मजदूरी चाही। आ गैरकानूनी शिकारक लेल आब फेर हमरा नहि पुछब।” ओहि लोकक लग बाँकी रहल पछिला जालक रसीद तारा जाँचलीह। भुगतानक आधा हिस्सा बाकी छल। आदेश भेटला पर नव जाल सीबब, पुरान देय छोड़ि नहि—सबीना एतबे लिखबौलीह।

बाहा-मुँह खोलाइक वार्षिक आयोजनक लेल लोकसभ पहिले रंगीन ध्वजा आनए चाहैत छलाह। एहि बेर ध्वजा सँ पहिने नाप-पंजी खुलल। धनीक खेती, रमणीक माछ, फूलोक पान, देवकीक पशु आ बटोहीक मधु—पाँच पक्ष सभामे अपन अलग बात कहलनि। फूलमती तियर जोड़लीह जे नव जालसमूह बिना सुरक्षित प्रवेश डबरामे उतरबे नहि करत। सभा-पति पुछलनि, “तखन उत्सव होएत कोना?” रमणी उत्तर देलीह, “बाहा देखब आ ओकर जिम्मेदारीक निर्णय सेहो उत्सवक काज होइछ। ढोल बादमे बजत।” नेना सभ ध्वजाक बाँस एक कात धरि रहल छल।

बीहन—पानि साझेदारीक प्रस्ताव बनैत काल जयराम एक्के तालिका चाहलक—बरखामे कतेक खोलब आ सूखामे कतेक रोकब। नन्दिनी कहलीह जे चारि दिनक नर्सरी-माप सँ पूरा चौरक संख्या ठहराओल नहि जा सकैत। हीरा सहनीक सहयोगी पानीक नाप लेल अस्थायी पैमाना लगबए चाहलक, मुदा पुरान बाँधक पेंदाक भार-परीक्षण बिना पैघ कटान रोकल गेल। तारा लिखलीह—पहिले सुरक्षित किनारपर माप; पानि उठलाक बाद दोसर जाँच; प्रभावित परिवारक उपस्थितिमे निर्णय। ‘आज खोलबाक अनुमति’ पाँति खाली छोड़ल गेल; छोट नापक मुँहमे मात्र अस्थायी कचरा हटेबाक अनुमति देल गेल।

माछ—मखान श्रम-मेलाक तैयारी सेहो एहि ठाम टकरा गेल। पारस लाल चाहैत छल जे मखानक ठेका देखाएबाक बदला डबराक अघटपर आवागमनक शुल्क सेहो ओकरा

भेटय। रमणी पुछलीह, “बीहनक ऋणक रसीदसँ सार्वजनिक बाटपर टोल लेबाक अधिकार कोना निकलल?” विनोद केवर्तक प्रतिनिधि अलग कहलक जे माछक तौल करए जायवला छोट विक्रेताक प्रवेश-शुल्क समान रहबाक चाही। तारा अघट पहुँच, मखान-पट्टा आ विक्रेताक सेवाशुल्क लेल तीन अलग सुनवाइक तिथि लिखलीह। पारस अपन दावा वापस नहि लेलक; मुदा एक पन्नामे सभ अधिकार जोड़बाक कोशिश ओहि दिन रुकि गेल।

साँझधरि तीन लाभ-श्रृंखलाक आरम्भिक हिसाब अलग भेटल। बन्द निकाससँ किछु ऊँच खेतमे पानी टिकैत छल, मुदा नीचाँक किछु खेतमे जलजमाव बढ़ैत छल। घाटपर फीस वसूलनिहार कर्मचारीक पर्ची पुरान अनुमतिसँ पूर्ण नहि मिलैत छल; ओकर मूल आदेश माँगल गेल। उत्पादन-ऋणक कागदमे महिला श्रमिकक अग्रिम आ बीहनक ऋण एक्के घरक नामपर लिखल छल। नैरा सभ सुनि कऽ कहलनि, “तीनू लाभ-हानिक रेखा जुड़ि सकैत अछि, मुदा एखन एक व्यक्ति वा एक इरादाक प्रमाण नहि अछि। जकर कागद अधूरा, ओकर पूरा मूल माँगाउ।”

एक युवक भीड़क बीच कहलक, “जे गाड़ी अस्पतालमे पकड़ायल छल, ओहीसँ मखानक बोरा सेहो आएल होएत।” नैरा तुरन्त ओकर कथनक स्रोत पुछलनि। युवक अपन काकाक कहल बात कहलक; तारीख, वाहनक नम्बर वा बोरा देखनिहारक नाम नहि बता सकल। नैरा स्पष्ट करैत कहलीह, “अस्पतालक सामग्रीक जाँचक पंजी अलग अछि, आ मिथुनक खोजक कागद सेहो अलग। अनुमानक आधारपर बच्चा-अपहरणक अफवाह फेर नहि फैलाउ।” लताक नाम ओ भीड़ समक्ष नहि बजौलीह। युवकक कथनक मूल स्रोत नहि भेटलासँ ओकरा प्रमाण नहि, अपुष्ट सूचना लिखल गेल।

तारा अपन नाप-पंजीक पाछाँ मौसमी शर्त लिखलीह। पहिल—बरखाक पहिल तेज धार पर कियो अकेले बाहा नहि काटत। दोसर—पछियारी चौरमे फसल, पशुचरन आ माछक वर्तमान उपयोगक संयुक्त निरीक्षण बिना स्थायी बाँध नहि उठत। तेसर—मखानिया डबरामे बीहन, चुनाइ, फोड़ाइ आ ऋणक अलग पंजी तैयार होएत। चारिम—घाटक फीसक मूल आदेश देखल जाएत। पाँचम—देवकीक पशुबाट, बटोहीक मधुबाट,

फूलोक पानखेत आ नन्दिनीक नर्सरीक हानि अलग-अलग सुनल जाएत। कियो ई शर्तसभ अन्तिम जल-अधिकार निर्णय मानि नहि सकैत छल।

देवकी अपन ऊनक एक छोट गट्टर सँ नीरजकेँ दू नरम धागा निकालि देलीह। “एहि बाँसपर राति लेल लाल निशान बाँध,” ओ कहलीह। “गाड़ीवालाकेँ देखाइत रहत जे एतय पशु घूमैत अछि।” नीरज धागा बाँधि पुछलक, “काल्हि हाटमे जाएब?” देवकी ओकर काँटाक खाली थारी देखलीह। “जाएब, जँ ऊँच बाटपर गाड़ी धीमा चलबाक वचन पूरा भेल। नहि तँ ऊन देरिसँ बिकत।” ओ आ नीरज पुरान मोड़सँ घुरलाह। माँक प्रस्तावसँ सभ समस्या समाप्त नहि भेल छल, मुदा पशुकेँ आब ककरो हुकुम बिना दलदलमे नहि उतारए पड़त।

बटोही भोरक परखनाइ लेल वन सहायिकाक संग स्थान देखबाक समय तय कएलनि। सबीना अपना घर घुरैत जालक पुरान रसीद मोड़ि झोरामे रखलीह; हुनका नव आदेश एखन नहि भेटल छल, मुदा पुरान भुगतान माँगबाक लिखित तिथि मिलि गेल छल। नन्दिनी अपन नर्सरीक जलमापक नकल तारा लग छोड़लीह आ भूमि-दामक आपत्ति मूल कापीमे सुरक्षित रखलीह। फूलो घर पहुँचि बाड़ीक निचला बाँसक पाँति स्वयं कसलीह। रातिक भीतर पानि बढ़ि सकैत छल; निर्णयक पन्ना जतेक आवश्यक छल, ओतेक ओकर अपन हाथक गाँठ सेहो।

रमणी डबराक किनारपर घुरिकऽ महिला सभसँ पुछलनि जे काल्हि चुनाइक काम कतए धरि होएत। एक महिला कहलीह, “जँ पानि एकाएक चढ़ल तँ आजुक बीहन बरबाद होएत।” रमणी हुनकर हाथसँ गीला बोरा लेलनि आ कात राखलीह। “तँ नाप चाही, आ नाप समयपर सुनाओल जाए। हमर पट्टाक नाम एखन जोड़ल नहि गेल, मुदा पानि चढ़बाक खबर हमरा बिना किएक जाए?” महिला सभ पहिल बेर अपन कामक समयक संग चेतावनी पाबबाक समयो लिखौलीह। सूर्य ढलला पर मखानक पातमे हलुक आवाज उठल; आजुक मेहनत पूरा भेल छल, जाँच नहि।

अन्हार पड़िते तारा आ रमेश बाँधक कात एक बेर फेर ठाढ़ भेलाह। रमणी टोकरी समेटि हुनका लग एलीह। तीनू अपन-अपन हस्ताक्षरवला पन्ना देखलनि—बरखामे कब नापब, सूखामे ककर सुनब, आ अचानक पानि छोड़बाक पहिने ककरा खबर देब। रमेश

कहलक, “हम मुआवजाक बिना अपन खेतक बाट नहि देब।” रमणी उत्तर देलीह, “हम जलकरक नाम आ श्रमिकक जानकारी बिना अपन मुँह नहि छोड़ब।” तारा कहलनि, “आ हम नक्शाक एक रेखासँ दुनूकेँ चुप नहि कराएब।” असहमति लेखबद्ध भेलासँ ककरो पराजय नहि भेल; आगाँक बातचीत लेल धरती भेटल।

रातिमे नगरक दफ्तरसँ एक लिफाफा आयल। ओकर भीतर दोसर पारक जल-समितिक पत्र छल; ओ सभ संयुक्त निरीक्षण चाहैत छलाह, मुदा अपन खेत आ घरक नाम सार्वजनिक रूपमे प्रसारित नहि करबाक शर्त लिखने छलाह। जयराम पत्रक छायाप्रति बनाकऽ सभ व्हाट्सऐप समूहमे भेजए चाहलक। तारा हुनका रोकलीह। “पहिने पूछू, ई सन्देश पाबएवला ककरा अधिकृत कएने अछि, आ ओकर कतेक अंश साझा कएल जा सकैत अछि।” नैरा पत्रक सार्वजनिक आग्रह अलग रखलीह, निजी ठेकानावला पन्ना बन्द फाइलमे। बाहर बरखाक आवाज बढ़ि रहल छल; दोसर पारक लोकक बात सुनबाक बाट खुलल छल, मुदा ओकर मालिकाना एखन हुनके लग छल।

अध्याय ५९ • दूतक शर्त

बरखाक पानि लिफाफाक दहिना कोनाकेँ नरम कऽ देने छल। तारा ओकरा धूपमे पसारबाक बदला सूखल कपड़ाक बीच रखलीह। दोसर पारक जल-समितिक पत्रमे लाल सियाहीसँ दू शब्द रेखाङ्कित छल—‘सीमित प्रसार’। जयराम फोन हाथमे लऽ ठाढ़ छल। “सार्वजनिक नाप चाही तँ पत्र सार्वजनिक होएबाक चाही,” ओ कहलक। तारा कागदसँ नजर नहि उठौलीह। “नाप सार्वजनिक होएत। ककरो घरक ठेकाना, ककर खेतमे के रहैत अछि, से हुनकर अनुमति बिना किएक?” बाहर बाँधक कात बाँसल लाल धागा पानिमे भीजि कऽ गाढ़ भऽ गेल छल।

भोर होइत नैरा कार्यालयमे पत्रक दू हिस्सा अलग कएलनि। पहिल पन्नापर संयुक्त निरीक्षणक आग्रह, पानिक मोसम, आवागमनक कठिनाइ आ उत्तर भेजबाक ठेकाना छल। दोसर पन्नामे परिवारसभक नाम, घरक संख्या आ डरक कारण लिखल छल। ओ पहिल पन्नाक नकल बनौलनि; दोसरकेँ मूल लिफाफामे राखि कऽ प्राप्तिक तिथि लिखलीह। जयराम पुछलक, “अहाँकेँ हुनका सभपर भरोसा अछि?” नैरा उत्तर देलीह, “भरोसा राखब आ ओकर नामसभक रक्षा करब एक्के काम नहि; दूतकेँ कोन बात कहबाक अधिकार देल गेल अछि, से पहिने बुझब।”

दोसर पारकेँ गेल पुरान पगडण्डी सीमातीर्थक मोड़ होइत निकलैत छल। पिछला बरखा मे छोट पुलियाक फलक भसिया गेल छल; एखन नाव चलैत छल, मुदा भार-मापक अपूर्ण रहने एक बेरमे सभकेँ पार कराएबाक अनुमति नहि छल। हीरा सहनी कातमे लटकल पुरान पट्टी देखाकऽ कहलक, “जाइत काल हलुक भारक नाव अलग रहत। जे प्रतिवेदन बनब, ओकरा मापनक प्रमाण मानू, यात्रीक सुरक्षा प्रमाण नहि।” तारा यात्राक पन्नामे नावक क्षमता, नाविकक मजदूरी आ परतीक सम्भावित विलम्ब अलग लिखलीह। नहि गेलाक दामो छल; गलत बाट गेलाक दाम बेसी।

ओहि भोर श्याम मल्लिक कहलनि जे पत्रक असल आग्रह केवल एकटा छल—दोसर पारक परिवारसभ जानए चाहैत छलाह जे अचानक बाहा खोलला पर हुनकर नेनासभ कोन बाट भागत। पाछाँक सभामे रमेश कुशवाहाक खेतक क्षतिपूर्ति आ रमणी बिन्दक

डबराक पट्टा अलग राखल गेल छल; एक दिनक चेतावनीक लेल तइयो दू पारक खबर एक-दोसराक लग पहुँचब आवश्यक छल। “हमर नक्शा जँ हुनका सभक घरक ऊपर रेखा खींचैत अछि,” श्याम कहलक, “तखन ओ सभ नक्शा देखताह। मुदा नकलक ककरो फोनपर घुमब हुनकर अधिकार नहि छीनि सकैत।”

पुरान कथाक आन पन्नामे समुद्रक कात खोजी-दल ठाढ़ छल। सीताक समाचार नहि भेटलासँ सभक मन भारी छल। सुग्रीवक समय-सीमा माथपर छल, आ समुन्द्रक फैलाव सामने। अङ्गद वीर छलाह, मुदा अपन छलाँगसँ लौटि अएबाक भरोसा हुनका नहि छल। जाम्बवान हनुमानक कात गेलाह; ओ हुनकर सामर्थ्यक स्मरण करौलनि। हनुमानक सामने केवल पार पहुँचबाक परीक्षा नहि, खबर लऽ फेर घुरबाक कठिनाई छल। रामक मुद्रिका हुनका लग छल—एहन चिन्ह जे सीताकेँ दूतक परिचय बुझबामे सहायक होइत; मुदा चिन्ह स्वयं सीताक उत्तर नहि छल।

ताराक दफ्तर लग रेखा साहु लहेरी अपन काठक डब्बामे तीनटा लाहक नमूना रखलीह। एक कड़ा हाथसँ बनल, दोसर कागदपर बनाओल नाप, तेसर ओहि नापक छोट मशीन-परीक्षण छल। मशीन राखनिहार व्यवसायी सहकारी कामक प्रस्ताव देने छल —“मशीन हमर, डिजाइन अहाँक, बजारक नाम दुनूकेँ।” रेखा प्रस्ताव सुनिते नमूनाक कागद मोड़ि लेलनि। “मशीनक समयक दाम लगाउ,” ओ कहलीह, “मुदा हमर नाप एक बेर फोटो गेल तँ सौ दोकानमे घुमत। ई साझेदारी तखन कोन चीजक?”

पवित्रा पटवा रेखाक बगलमे बैसि कागदक तेसर कोना पाछाँ मोड़ि देलनि। “एहि ठाम लिखाउ जे नमूनाक फोटो ग्राहककेँ एक जोड़ी देखएबाक लेल जायत; नव साँच काटबाक लेल फेर अनुमति चाही।” मशीनक मालिक कहलक, “एतेक शर्तसँ धन्धा रुकत।” रेखा अपन हाथमे अधपकल लाह उलटलनि। “धन्धा हमरो रुकल अछि। मुदा एक बेर बनाओल आकारक दाम जँ हर खेपमे शून्य भऽ जाए, तँ दोसर खेप हम किएक बनायब?” अन्तमे तीन मासक सीमित परीक्षणक प्रस्ताव लिखल गेल; पहिल नमूनाक शुल्क अग्रिम, उत्पादनक संख्या अलग, मूल नाप-बही रेखाक लग।

दोसर कात सुमन टिकुलहारक पेटीसँ रंगीन चिह्नवला दू फलक निकलल। हुनकर नव बजारक लेल बनाओल गोल निशान एक व्यापारी बिना पूछने विज्ञापनमे छपबा देने छल।

व्यापारी कहलक, “फलक किनने छी तँ छपबो करब।” सुमन नीकसँ फलक टेबुलपर रखलीह। “फलक जे काठपर बनाओल, से अहाँक वस्तु भऽ सकैत अछि। मुदा ओकर चिन्ह हजार पोस्टरपर लगएबाक अनुमति अहाँ नहि किनने छी।” ओ अपन नमूना-बही देखौलीह, जाहिमे तारीख, ग्राहक आ ठहराओल उपयोग लिखल छल।

सरोज खरकौट नव जालक धागा बान्हल गठरी लेने अएलीह। पिछला डबराक सभामे पैसावला सदस्य पूरा जाल अपन नाम लिखाबए चाहैत छल, जखन कि गाँठ सीबएवाली स्त्रीसभ ऋण लऽ धागा किनने छलीह। सरोज कागदपर तीन हिस्सा बनौलीह—सूत किनबाक रकम, गाँठ सीबबाक घण्टा, आ जलमे जाल लगाकऽ खींचबाक जोखिम। एक पुरुष कहलक, “जतेक पूँजी, ओतेक हिस्सा।” सरोज पुरान फाटल जाल उठौलीह। “पूँजीकेँ हिस्सा भेटत, मुदा जे डूबि कऽ जाल बचाओत ओकरा कोन घरक पूँजीमे गनब?”

ओहि दिन सरोजक समूह पाँच सदस्यक सहमतिसँ परीक्षणक लेल छोट जाल बनबए मानल। धागाक देय पहिने चुकाओल जाएत; सिलाइक मजदूरी बिक्री भेला अथवा नहि भेलो तय तारीखपर देब; बचल लाभमे पूँजी आ जोखिमक हिस्सा अलग जोड़ल जाएत। दू सदस्य पूरा नियमपर सहमत नहि भेलाह। हुनका सभक आपत्ति पन्नाक पाछाँ लिखल गेल, ओकरा ‘सर्वसम्मति’ नहि कहल गेल। सरोज तारा लग जालक लागत-पंजी दैत कहलीह, “जँ दोसर पारक लोक नाम देखबाक अनुमति देत, तँ बुझाउ—माछक जाल साझा भऽ सकैत अछि, श्रमिकक नाम मिटाकऽ नहि।”

दुपहरिया मालती कोचे साधारण पीतक डिब्बामे पानि लेने पहुँचलि। डिब्बाक भीतर महीन माटि बैसल छल। नव बसावटक नल पहिल पहर चलैत छल; पिछला घरसभ धरि पानि पहुँचबाक पहिने धार पातर भऽ जाइत छल। “नव परिवारकेँ एतय बसाउ कहैत छथि,” ओ बतौलीह, “मुदा पाइपक अगिला मुँह सभसँ पहिने बन्द भऽ जाइत। हम दोसर पारक लोगकेँ लिखब जे पानि-बाँटबाक दाम सभमिलि देब; किन्तु मरम्मतक देय ककरा भेटत आ नल कखन खोलत, से साफ चाही।”

जयराम कहलक जे जल-समितिक पत्रमे मालतीक टोला नहि अछि; दोसर पारक बात पहिने पठाउ। मालती डिब्बाक ढक्कन कसलीह। “हमर बस्ती एही निकासक किनारपर

बसल अछि। जँ भरल नलका खोलि पानि दोसर कात दोगे, तँ इहय पाँत खाली होएत। हम हुनका सभक पीड़ा नकारैत नहि छी; हमर बात सुनने बिना दूत ककर?” हुनकर आग्रहपर दूतपत्रमे नव बसावटक सामूहिक नल आ रखरखावक शुल्कक मुद्दा जोड़ल गेल, मुदा ककरो निजी घरक संख्या नहि।

फूलमती पमरिया ओहि बखत विद्यालयक बरामदामे अपन गीतक तान मिलबैत छलीह। सीमातीर्थक बाटक एक पुरान गीत हुनका माएसँ भेटल रहनि। आयोजनक निमन्त्रणमे ‘लोकगीत प्रस्तुति—सहयोग’ लिखल छल, मानदेयक पाँति खाली। पद्मा कागद लऽ कात बैसलीह। फूलमती गीतक एक पाँति काटि देलीह, जाहिमे पमरिया औरतकेँ हँसीक वस्तु बनाओल गेल छल। आयोजकक युवक कहल, “पुरनका गीत बदलि देब तँ लोकक पहचान कतए रहत?” फूलमती उत्तर देलीह, “हमर पहिचान अपमान दोहराएब नहि अछि। हमर माए ओहि पाँतिपर ठहरि जाइत छलीह; आब हम दोसर शब्द गाएब।”

पद्मा गीतक दू अलग तर्जुमा बनौलीह—एक सुननिहार लेल सहज अर्थक, दोसर मूल शब्दक टिप्पणीसहित। ओ अपने कागदमे ‘सीमा’क अर्थ बुझबैत कहलनि जे ई कतहु खेतक मेड़ अछि, कतहु जिला-कार्यालयक सीमा, आ गीतमे प्रियजनसँ दूरी। फूलमती अपन मानदेय, बाजाक संगत आ तर्जुमाक श्रेय तीनटा पाँतिमे लिखबौलीह। युवक निश्चिन्त नहि छल जे आयोजनक खर्च उठत। फूलमती मुस्कुरेलीह, “गीत दोसर बेर गेब, मुदा पहिले बोलबाक शर्त सुनब। गीत पहुँचत, तकर मानो पहुँचत।”

दुर्गा दनुवार अपन पुरान कापीक भीतरसँ लखनदेइ नामवला गीतक टुकड़ा देखौलीह। ओकरा बरखाक धारक चिन्ह मानि कऽ एक नव नक्शामे चिन्ह लगाओल जा रहल छल। नैरा कागदक माथपर ‘N36—लखनदेइ; लोकनाम/काव्यपद’ लिखलीह। “ई गीत अछि, नदीक तात्कालिक मापन नहि,” ओ कहलीह। दुर्गा पुछलीह, “तखन हमर गीत बेकार?” पद्मा जवाब देलीह, “नहि, गीत लोकक स्मृति बतबैत अछि। मुदा पुरान पाँतिक ‘लखनदेइ’ आ आइक नक्शाक एक धारकेँ बिना स्रोत मिलौने एक नाम बना देब गीतक संगो अन्याय होएत।” दुर्गाक नाम आ गायनक अनुमति कापीक कात लिखल गेल।

यात्रासँ पहिने दोसर पारक सचिवाक फोन आयल। ओहि फोनपर एक आरो प्रश्न उठल। समिति चाहैत छल जे आगन्तुक दल केवल अनुवादित सार पढ़य; श्याम पूरा नक्शा लऽ जाए चाहैत छलाह। तारा प्रस्ताव देलीह—खुला घाटक नाप आ वर्तमान जलभरावक सूचना ओतहि साझा होएत, निजी खेतक रेखा केवल प्रभावित व्यक्तिक उपस्थितिमे खोलल जाएत। दोसर पारक सचिवा उत्तर देलनि जे ओ एहि शर्तकेँ अपन सदस्यमे पढ़ि सुनौतीह, स्वीकृति एखन नहि कहि सकैत छथि। फोन राखला पर जयराम मुँह बिचकौलक। तारा कहलीह, “उत्तर नहि आएल अछि; अनुमति आयल मानि नकल नहि भेजब।”

हनुमान समुद्रक किनारपर जखन ठाढ़ भेलाह, हुनकर साथीसंगीक भरोसा उत्साहक आरोहमे बदलैत गेल। जाम्बवान हुनका यशक लालच मात्र नहि देखौलनि; कठिन काजक गम्भीरता याद करौलनि। सीता कतए छथि, केहन अवस्थामे छथि, ओहि विषयमे दलक जानकारी अपूर्ण छल। रामक मुद्रिका एक चिन्ह छल जे दूत अपन कहबाक कथाकेँ विश्वसनीय बना सकैत; मुदा लङ्कामे पहिल भेट ककरा होएत, आ ओहि भेटमे कतेक बोलब उचित होएत—से यात्रा आरम्भ भेलाक बाद घटनासँ निश्चित होयत। समुन्द्र पारक दूरीकेँ कोनो एक घोषणा घटा नहि सकैत छल।

आधुनिक दल घाट पहुँचला पर पहिल समस्या अनुवाद नहि, एकटा नाम छल। नाविकक सहायकर रजिस्टरमे दोसर पारक सदस्यक उपनाम लिखल छल; नगरक सूचीमे ओहि उपनामसँ दोसर परिवार चिन्हल जा रहल छल। एक युवक कहल जे ओही परिवारक नाम मजदूरीक पुरान पंजीमे भेटैत अछि। नैरा दुनू कागद टेबुलपर रखलीह। “उच्चारण मिलैत अछि, घरक संख्या अलग, तिथि अलग। आ एहि पंजीमे लिखनिहारक परिचय नहि। मूल नामपंजी सँ मिलान बिना ई व्यक्ति एक्के छथि—से नहि लिखू।” मूल रजिस्टरक प्रमाणित पन्ना माँगल गेल; अफवाहक नकल रोकल गेल।

कियो पुरान गाड़ीक चर्चा फेर उठओलक। “ओही गाड़ीसँ बच्चा लऽ जाएब भेल होएत,” एक आदमी कानमे कहलक। तारा ओकरा भीड़मे नहि उछाललीह। नैरा ओहि आदमीकेँ अलग पूछलीह—देखल घटना, समय, नम्बर आ प्रत्यक्ष साक्षी? ओकरा लग केवल तेसर लोकक कहल बात छल। नैरा कहलनि, “मिथुनक खोजक दर्ज मामला अछि;

तकर अधिकारीकेँ जँ नव तथ्य भेटत, हम देब। मुदा आजुक जल-समितिक यात्रा ओकर खोजक छद्म बहाना नहि अछि।” नाविक अपन गाड़ी सँ सम्बन्धित रसीद देखबबाक लेल राजी भेल; ओकरा अपराधक स्वीकारोक्ति नहि मानल गेल।

घाटक पथरायल किनारपर मालती दोसर पारसँ आयल तीन स्त्रीकेँ भेटलीह। ओ सभ नलसँ दिनमे कत बेर पानि भेटैत अछि, से कहैत छलीह। एक स्त्रीक बात पढ़ा तुरन्त नहि बुझि सकलीह; स्थानीय बोलीमे ‘बेर’क अर्थ पानिक समय नहि, नलक पाछाँ रुकल पाँति छल। गलत अर्थ लिखला पर दूनू तरफ झगड़ा भऽ सकैत छल। फूलमती कहलीह, “पहिने पूरा वाक्य सुनू, फेर अनुवाद।” स्त्री फेर समझौलीह—घरधरि नल पहुँचबाइ मे समय आ मजदूरी लगत; पानि बँटबाक नामपर शुल्क दू बेर नहि लेब। मालती अपन डिब्बा राखि हुनकर बात ध्यानसँ सुनलीह।

दोसर पारक सचिवा पत्रक पहिल पन्नापर हस्ताक्षर देखलीह, मुदा दोसर पन्ना बन्दे रहल। ओ कहलीह, “हमर सभ सदस्यक डर झूठ नहि, मुदा हुनकर घरक संख्या हम सबकेँ देखाबए नहि सकैत छी। ओ सब आग्रह कएने छथि जे बाहा खोलबाक कम सँ कम एक दिन पहिने जनाउ।” हीरा सहनी उत्तर देलनि जे तेज बरखामे एक दिनक सूचना हर बेर सम्भव होएबाक आश्वासन वैज्ञानिक नहि होएत; जँ आकस्मिक संकट हो, तँ तुरन्त चेतावनीक अलग व्यवस्था चाही। सचिवा प्रश्न लिखि लेलनि। अपन पक्षक असली कठिनाइ बोललाक बाद हुनकर मुखक तनाब कनेक घटल।

एक छोट बैठकमे दूतक काम तीन भागमे बाँटल गेल। सार्वजनिक निरीक्षणक सूचना तारा लऽ जाएब, जलमापक तथ्य हीराक दल उपलब्ध कराएब, आ निजी परिवारक आपत्ति केवल अधिकृत सदस्यक सहमति पाछाँ अलग सीलबन्द पन्नामे देल जाएब। जयराम चाहैत छल जे ओहि निर्णयक फोटो तुरन्त साझा हो। पद्मा कागद ओहिकात घुमौलीह, जाहिमे सचिवा लिखने छलीह—‘पहिने सदस्यसभसँ अनुमति’। जयराम फोटो खींचबाक बदला सार्वजनिक भागक हस्तलिखित सार अपन कापीमे उतारलक। ओकरा ई परिवर्तन छोट लगल, मुदा घरक नाम बाहर नहि गेल।

ओहि ठाम रेखाक मशीन-परीक्षणक छोट नमूना आ सुमनक चेतावनी-चिह्न देखबाओल गेल। कातक व्यापारी पुछलक जे समितिक झण्डामे रेखाक रङ्गीन घुमाव रखि सकैत

अछि कि नहि। रेखा कहलीह, “समितिक सुरक्षा-चिह्न लेल अलग नाप बनब; एहि कड़ाक नाप ध्वजामे नहि।” सुमन अपन साधारण चिन्ह केवल चेतावनी-पाटी लेल देलीह। एक कापीपर दुनू अलग शर्त लिखल गेल। व्यापारीकेँ अधिमानसँ आकार छापबाक अनुमति नहि भेटल; समिति अपन उपयोग लेल आदेश देलाक बादे वास्तविक काज शुरू करत।

सरोजक समूहक महिला सभ घाटपर जालक छोट नमूना खोललीह। ओहि जालसँ माछ धयबाक प्रदर्शन नहि, गाँठक मजबूती आ लागतक अन्तर देखाओल गेल। एकटा पैघ खरीदार पूछलक, “एके नाँवक नीचे सभकेँ रुपैया देब तँ हिसाब सरल रहत।” सरोज कहलीह, “हिसाब सरल होएबाक लेल हमरा सभक हिस्सा अदृश्य कऽ देब जरूरी नहि।” तारा सामूहिक जालक बिक्रीक राशि, धागाक लगानी आ पाँच सदस्यक मजदूरी लेल पृथक् पाँति लिखबाक सुझाव दैत छथि। सरोज सहमति दैत छलीह, मुदा ओ व्यक्ति जे कल्हि विरोध देने छल, ओकर आपत्ति जँ नहि सुनल जाए तँ लिखल सहमतिक टिकाउपन नहि रहत—ई बातो जोड़लीह।

दुपहरि ढललाक बाद फूलमती अपन गीत शुरू कएलनि। बरखा रुकि गेल छल; घाटसँ ऊपर एकटा नीमक छाया पत्थरपर पड़ि रहल छल। गीतमे बाट छल, घुरबाक इच्छा छल, आ एक स्त्रीक स्वर छल जे पड़ाव-पड़ावपर अपन नाम दोहरबैत नहि, अपन घर पहुँचबाक राह पुछैत छलीह। जे अपमानकारी पाँति फूलमती हटौने छलीह ओकर ठाम ओ नव पाँति गौलनि—‘रस्ता हमर, बोल हमर, खबर सुनू पहिने।’ सीमातीर्थक वृद्धा चुपचाप ताल देलीह। पद्मा अनुवादक कापी बन्द रखलीह; गीतक बीचमे सब शब्दक अर्थ तुरन्त बताउ जरूरी नहि छल।

परतीक पहिने समिति लिखित उत्तरक दू बात स्वीकार कएलक—सार्वजनिक घाटक निरीक्षण लेल छोट प्रतिनिधिदल पठाएब आ नामयुक्त पन्नाक प्रसारपर सदस्यसभसँ अनुमति माँगब। मुदा **खुला पहुँच** के अर्थपर पहिल असहमति सामने रहि गेल। तारा कहलीह जे सार्वजनिक बाटपर माप करएवाला दलकेँ सम्बन्धित स्थान देखबाक अवसर चाही। सचिवा उत्तर देलनि जे हुनकर समितिक किछु सदस्य अपन खेतक कात बाहरी दलक प्रवेश लेल तैयार नहि छथि। रमेश कुशवाहाक मुआवजाक प्रश्नो खाली छल। कियो एखन ई नहि कहि सकैत छल जे सन्धि बनि गेल।

नाव घाट छोड़बाक पहिने मालती अपन डिब्बामे दोसर पारक सार्वजनिक नलसँ एक घोंट पानि भरलीह, जाँच लेल नमूना नहि। ओ अपन बच्चीक लेल तेसर दोकानसँ छोट मीठा लेलीह। “आइ कम सँ कम सुनल गेल,” ओ तारा सँ कहलीह, “मुदा हमर नलमे काल्हियो पानि कमे रहत।” तारा कहलनि, “तैं रखरखावक शुल्कक पन्ना आ नलक मापन अगिला बैठकमे अनब।” मालती एतेकपर हँसलीह। “बैठक एकटा बात अछि। पानी भरबाक घड़ीमे लोककें ठाढ़ देखल जाए तँ हिसाब दोसर होइत अछि।”

नैरा साँझमे नगर घुरिकऽ सभ पन्ना मिलौलीह। मूल नामपंजीक प्रामाणिक नकल एखन बाँकी छल; मिथुनक खोजक सूचना अनिश्चित रहल; जलपट्टाक दावा अलग सुनवाइम रहल। जल-समितिक सार्वजनिक आग्रह सुरक्षित नकलमे छल, निजी सूची बन्द लिफाफामे, आ दूतक खर्चक रसीद तारा लग। जयराम अपन फोनमे खिंचल एकटा धुँधल फोटो मेटा देलक, जाहिमे अनिच्छासँ सचिवाक बन्द पन्नाक कोना आबि गेल छल। नैरा देखलीह आ केवल कहलनि, “आब लिखू जे की देखल, आ की नहि देखल।”

रातिमे फूलमतीक गीतक एक पाँति मालतीक कानमे रहि गेल। ओ घर पहुँचि बाल्टी धोलीह, बच्चीक कपड़ा सुकबए देलीह आ काल्हिक नल-पाँतिक समय लिखलीह। सुमन अपन पेटीमे नमूनाक कापी बन्द कएलनि; रेखा नव मशीनक मालिकसँ नमूना-परीक्षणक पहिल अग्रिम प्राप्त करबाक रसीद जाँचलीह; सरोज धागाक गठरीमे पाँचू सदस्यक अलग-नामवला पट्टी बान्हलीह। घाटपर असहमति बचल छल, मुदा एहि दिन ककरो नाम, चित्र, धुन वा नाप ओकर अनुमति बिना पराया नहि भेल। अगिला भेंटमे सार्वजनिक बाट खोलबाक प्रश्न फेर उठत—आब ओ प्रश्न सब पक्षक लिखल शर्तक संग ठाढ़ छल।

अध्याय ६० • पहिल सन्धि टूटल

नम भेल बाँसक फलकपर कोइलासँ खींचल रेखा भोरक पानिमे पसरि गेल छल। हीरा सहनी अपन हथेलीसँ ओकरा मेटबाक बदला एक कात राखि देलनि। “एहि रेखासँ काल्हि घाटक चौड़ाइ बुझाओल गेल छल,” ओ कहलनि, “आ आइ देखू, भीजला पर ओकर किनार धरि नहि चिन्हाइत अछि। जमीनक माप आ कागदक अनुमति ताहिसँ बेसी सावधानी माँगैत अछि।” तारा बिनौट बाँसक फलक उठाकऽ कुटीरक छायामे रखलीह। दोसर पारक जल-समिति फेर भेंटबाक समय देने छल; पहिल दूतपत्रक सहमति निरीक्षण धरि सीमित छल, सार्वजनिक बाट सभ दिन खुलल मानि लेबाक अधिकार ककरो नहि छल।

घाटक बरामदामे दूटा मेज एक-दोसरक सामने राखल गेल। नगरक प्रतिनिधि जयराम अपन फाइल खोललक, दोसर पारक सचिवा शबनम खातूनक लग सदस्यसभक मोहरवला लिफाफा छल। शबनम सार्वजनिक नक्शा देखबाक अनुमति देने छलीह, मुदा निजी खेतक पाछाँक मेड़ चिन्हएबाक लेल अलग सहमति चाहैत छलीह। जयराम कहलक, “जँ सभ बेर खेतक मालिकसँ पूछब तँ निरीक्षण कखनो पूरा नहि होएत।” शबनम बिना आवाज ऊँच कएने कहलनि, “आ जँ बिना पुछने घुसब तँ निरीक्षण पूरा भेला परो कियो ओकर नाप मानत नहि।” नैरा दुनू वाक्य अलग पंक्तिमे लिखलीह।

रमेश कुशवाहा अपन सब्जीक टोकरी मेजक नीचाँ रखलनि। टोकरीमे नीमक पातसँ झाँपल किछु भिण्डी छल; दू पातक कोना पीयर पड़ि गेल छल। “पानिक बाट हमर खेतक बीच सँ निकालब कहल जाइत अछि,” ओ कहलक, “तखन क्षतिपूर्तिक पाँति खाली किएक? दू कट्ठाक हरियर फसल जँ बहि गेल तँ नाप करएवाला दलक सफलता हमरा घरक घाटा बनत।” जयराम उत्तर देलक जे स्थायी नहरक निर्णय एखन नहि भेल अछि। रमेश कहलनि, “ठीक। तँ अस्थायी जाँचक नामपर माटि काटबाक अनुमति एखन के देलक?” तारा पहिल बेर नक्शाक पेंच छोड़ि खेतधरिक चेहरा देखलीह।

हीरा दू रंगक डोरी निकाललनि। पहिल डोरी ओहि पुरान सार्वजनिक पगडण्डीक नाप छल, जाहिपर नावसँ उतरि श्रमिकसभ चलैत रहल छलाह; दोसर डोरी रमेशक खेतक

किनारपर प्रस्तावित जाँच-पथक। ओ कहलनि जे पहिल बाटपर दृश्य-जाँच आ दोसर बाटमे खूँटा गाड़ब दू अलग काज अछि। “दूरसँ पानि देखब प्रमाणक आरम्भ अछि; खेतमे खूँटा गाड़ब भौतिक हस्तक्षेप। पहिल काजक अनुमति दोसर काजक स्वतः अनुमति नहि,” हीरा स्पष्ट कएलनि। शबनम अपन समितिक सदस्यसभकेँ स्थानीय बोलीमे बात बुझौलीह। पद्मा ओकर अनुवाद सुनि कऽ फेर मूल शब्दक एक अस्पष्ट अर्थ पुछलीह; जतेक अस्पष्टता रहि गेल, ओतेक नोटमे लिखल गेल।

दोसर पारक एक बुजुर्ग सदस्य जगदीश झा खुला बाटक पक्षमे ठाढ़ भेलाह। हुनकर पुतोहु रोगी रहलीह; बरखा चढ़लापर छोटी नाव बन्द भऽ जाइत छल, आ सार्वजनिक पगडण्डी घुरि जाएबासँ औषधि समयपर नहि पहुँचैत छल। “हम खेतक मालिक नहि छी,” ओ कहलनि, “मुदा घुरि-घुरि बाट खोजैत जे समय गेल, ओकर हिसाब कागदमे कतए अछि?” शबनम हुनकर बात समर्थित कएलनि। रमेशो हुनका रोकलनि नहि। ओ कहलनि, “रोगीक बाट खुलए, एहि पर हमरा विवाद नहि। मुदा रोगीक बाट कहि हमर खेतपर स्थायी गाड़ीपथ बिना दाम बनाओल जाए, तकर विरोध करब।” एक्के ‘खुला पहुँच’ शब्द दू अलग आवश्यकताकेँ ढाँपि देने छल।

दुपहरिसँ पहिने नगरक विधिक सहायक एकटा प्रस्ताव पढ़लक। पहिल पंक्तिमे ‘जाँच आ आपातकालीन सेवाक लेल सब सम्बन्धित स्थलपर निर्बाध प्रवेश’ लिखल छल। शबनम कागदक ऊपर लाल पेंसिल रखलीह। रमेशो अपन हाथ उठौलनि। “निर्बाध” के अर्थ कियो रोकि नहि सकत, ई होइत अछि; मुदा आपातकाल ककरा कहब, निजी आ सार्वजनिक सीमारेखा कियो खींचत, क्षति भेलापर भुगतान के करत—एकरो उत्तर नहि। जयराम चाहलक जे पहिने हस्ताक्षर कऽ लिअ, बादमे शर्त जोड़ि लेब। तारा कहलनि, “जकर दाम बादमे पूछल जाएत, ओ एखन सहमति नहि दऽ सकैत।” पन्ना पहिल बेर मेजपर बिना हस्ताक्षर पड़ल रहि गेल।

फागुनक लोकपाठ—खुला खाता—गीत लेल पंजी तैयार भऽ रहल छल। आयोजकसभ तय कएलनि जे बरखाक एहि वार्ताक प्रस्ताव फागुनक सार्वजनिक मंच धरि पहुँचाओल जाएत। रशीद भाट अपन घरक पुरान गीतक कापी लऽ आएलाह; नगरक कर्मचारी ओकर

आवाज प्रचारमे उपयोग करए चाहैत छल। “हमर परिवारक गीत ककरो दफ्तरक सम्पत्ति नहि,” रशीद कहलनि।

पद्मा रशीदसँ पुछलीह जे गीतक मूल आ ओकर नव रचना कतए अलग होइत अछि। ओ कनेक देर चुप रहलाह, फेर पुरान कापीक कन्नी देखौलनि। “एहि चारि पाँतिमे हमर दादीक बोल अछि। आगाँक तीन पाँति हमर अपन, जखन पुलिया टूटल छल तखन लिखने रही। सबटा एक्के गायन बनि गेल, मुदा सार्वजनिक रेकर्डिंगमे ई अन्तर बुझौने बिना ओकरा ‘अज्ञात लोकगीत’ लिखब अन्याय हएत।” रशीद अपन परिवारसँ सहमतिक बात अलग राखलनि। गीतक एक पाँति सभामे केवल पढ़बाक अनुमति भेटल; पूरा ध्वनि-रेकर्डिंग लेल कलाकारसभक लिखित अनुमति आ मानदेय तय होएबाक शर्त जोड़ल गेल।

रमेश घासी बाजाक चामक फीत कसैत मैदानक दोसर कातसँ अएलाह। हुनकर संग किछु किशोर अभ्यास करैत छल। आयोजकक पुरान व्ययपंजीमे ‘बाजा—लोकसेवा’ लिखि शून्य रुपैया छल। रमेश पंजीक पन्नापर उँगुरी रखलनि। “हमर बाजा ककरो निमन्त्रित गीतसँ कम काज नहि करैत,” ओ कहलनि। “मंचपर जे गायकक नाम बोलल जाइत अछि, संग देनिहारक नामो बोलल जाउ। आ रिहर्सल, यात्रा आ प्रस्तुतिक दाम गानक पाछाँ अदृश्य नहि होउ।” विद्यालयक दू विद्यार्थी हुनकर बाजाक तान सुनि रहल छल; ओ हुनका अभ्यास रोकबाकें नहि कहलनि, केवल व्यवस्थापकसँ काजक गणना माँगलनि।

करुण दमाई बाजाक फाटल किनार खोलि देखौलक जे रङ्गीन कपड़ाक नीचाँ पुरान गाँठ ढीला भऽ गेल अछि। “एहि मरम्मतिक मजदूरी प्रस्तुतिक मजदूरी नहि,” ओ कहलक। “जे दिन हम तान ठीक करब ओहि दिन मंचपर नहि बजाबो; जे दिन बाजा बजाबो तखन मरम्मतिक औजार घर रहत।” व्यवस्थापक दूटा दामकें एक्के पर्चीमे लिखबए चाहलक। करुण पुरान कपड़ा काटि नाप दिखौलक, धागाक खर्च अलग कएलक, आ कहल कि एक दिनक समयकें दू बेर निःशुल्क नहि देत। रमेश घासी ओकर बात सुनि कहलनि, “मरम्मतिक खर्च काटिकऽ कलाकारक मेहनताना घटाएब सेहो उचित नहि।” दुनू अपन-अपन देयक पाँति बनौलनि।

फरजाना चूड़ीहार अपन कोचामे तीन जोड़ी चूड़ी अनने छलीह। पहिल लाहक हाथसँ गढ़ल, दोसर शीशाक, आ तेसर मशीनसँ बनल थोक-माल। लोकपाठक मेलेमे सबकेँ ‘हस्तशिल्प’ नामसँ एक दामपर बेचबाक प्रस्ताव छल। फरजाना तीनू पाँति अलग खोललीह। “जे मशीनक माल हम बाजारसँ किनलहुँ, तकरो ग्राहककेँ मालूम रहबाक चाही। हाथसँ गढ़ल लाहक चूड़ीमे हमर समय, पसीना आ डिजाइन अछि। शीशाक चूड़ीमे टूटबाक जोखिम अलग।” एक स्त्री शीशाक चूड़ी चुनलीह, दोसर लाहक; फरजाना ग्राहकक चुनावक आदर करैत रहलि, गलत नामक भरोसापर महँग माल बेचबाक विरोध कएलनि।

नगरक कर्मचारी कहलनि जे संगीत आ बजारक ई सभ बात जल-सन्धिकसँ अलग अछि। नैरा अपन कापी पलटलीह। “अलग अवश्य,” ओ कहलीह, “मुदा सन्धिक प्रस्ताव सभक सामने पढ़बाओल जाएत तँ मंच तैयार करनिहार, बाजा बजेनिहार, अनुवाद करनिहार आ बिक्री करनिहारक श्रम ककर खर्चमे जाएत, से अलग हिसाब चाही। एतयसँ ककरो भूमि-अधिकार नहि निकलैत; मुदा आयोजनक सचाइ एहीसँ बनत।” तारा तय कएलनि जे पाँच जल-शर्तक सार्वजनिक पाठ लेल मंचक श्रेय आ देयक अलग रजिस्टर राखल जाएत; ई सन्धिक कानूनी भाग नहि, आयोजनक श्रम-पंजी होएत।

प्राचीन किष्किन्धाक कथामे जखन खोजक दल दूर गेला, समुद्रक किनारपर हनुमान अपन भीतरक सामर्थ्यक संग दायित्वो महसूस करैत छलाह। रामक मुद्रिका हुनका लग छल; सीता पहिचानलाक बाद ओ हुनकर बात सुनबैत वा सुनैत कोन क्रम चुनताह, से अग्रिम निश्चित नहि छल। जाम्बवानक प्रेरणा छल जे सामर्थ्यक उपयोग होउ, मुदा अन्वेषकक त्वरासँ सीताक इच्छा मेटाओल उचित नहि। प्राचीन कथाक ई प्रश्न कोनो आधुनिक जल-सन्धिक नियम नहि छल; ताहिमे एक दूत अपन भरोसाक सीमा बुझैत छल, एतय दू समुदाय अपन-अपन अधिकारक लिखित परिधि बनबैत छल।

आधुनिक घाटपर शबनमक समितिक एक सदस्य गोप्य लिफाफाक नाम-पन्ना खोलबए कहलनि। “नाम नहि देखाएब तँ क्षतिपूर्ति के पाओत?” ओ पुछलनि। नैरा उत्तर देलीह, “व्यक्तिगत दावेदारक पहिचान अधिकृत सुनवाइमे जाँचल जाएत। सार्वजनिक पाठक लेल खेतक संख्या, हानिक प्रकार आ आपत्तिक गणना देल जा सकैत अछि, मुदा

घरक ठेकाना अनिवार्य रूपेँ नहि।” शबनम कहलनि जे हुनकर सदस्यसभमे कियो-कियो पुरान धमकीक कारण नाम सार्वजनिक करए तैयार नहि। रमेश अपन खेतक नाप खुला रखबाक पक्षमे छलाह, मुदा ओहो स्वीकार कएलनि जे दोसरक निजी पन्ना खोलबाक निर्णय हुनका नहि लेबाक चाही।

हीरा गामक पुरान पैमानाक त्रुटि देखौलक। एक नमूनामे जलस्तरक बिन्दु रङ्गक दागसँ ढँकल छल; दोसरक तारीख साफ नहि देखाइत छल। “एहि आँकड़ासँ हम अधिकतम धारक क्षमता नहि बता सकैत छी,” ओ कहलनि। जयराम पुछलक, “जँ ककरो तुरन्त दिक्कत भए रहल हो तँ की किछु नहि कएल जाए?” हीरा कहलक, “सुरक्षित किनारपर कचरा हटाएब सम्भव अछि, मुदा मुँह काटि धार बदलएब निरीक्षण बिना नहि। आपात चेतावनीक व्यवस्था पहिने करू।” तारा लिखलीह जे परीक्षणक पाँच शर्तमे नाप-जौँचक मौसम आ आपातकालक भिन्न कार्यविधि स्पष्ट होएबाक चाही।

तकर बाद सन्धिक असली अड़चन सामने आयल। नगर चाहैत छल जे पगडण्डी आ लगबाक नव निरीक्षण-पथ दुनूकेँ सार्वजनिक घोषित कऽ दल इच्छानुसार प्रवेश करय। दोसर पारक बहुमत पगडण्डीक पुरान उपयोग मानैत छल, मुदा निजी मेड़पर पहिने स्वामीक अनुमति आवश्यक कहैत छल। रमेश फसलक क्षति लेल लिखित मूल्यांकनक शर्त रखलनि। जगदीश झा कहैत रहलाह जे रोगीक बाट तखन धरि बाधित नहि होएबाक चाही। आधा घण्टा धरि शब्द बदलल गेल—‘खुला’, ‘सशर्त’, ‘आपात’, ‘नियन्त्रित’—मुदा कोनो शब्द सभ हितक दाम एक बेरमे नहि चुका सकल।

भोजनक बखत रमेशक पत्नी खेतसँ अएलीह। ओ केवल अपने घरक पक्ष रखबाक लेल नहि, अपन नन्हकी बेटीक दवा खरीदबाक लेल बजार जाएबाक बाटो देखबाक चाहैत छलीह। ओ भिण्डीक एक छोट गट्टर खोलि मेजपर रखलीह। “ई खाएब योग्य अछि,” ओ कहलीह, “मुदा तीन दिन बाद पानी भरल तँ बूटा सड़ि जाएत। अहाँ लोक फसलक कीमत बजारक आजुक भावसँ नापब कि हमर लगाओल समयसँ?” रमेश चुप रहलनि। एक अधिकारी कहलक जे अनुमानक दर सरकारक तय पद्धतिसँ बनत। रमेशक पत्नी उत्तर देलीह, “ठीक; पद्धति देखाउ, आ महिला श्रमिकक निराइ-मजूरी गायब नहि करू।” एहि बातपर तारा रमेशक पत्नीकेँ अलग हस्ताक्षर करबाक पाँति देलीह।

बैठक फेर शुरू भेल तँ जयराम एक छोट वाक्य पर जोर देलक—“निरीक्षणक अवधिमे दावेदार मुआवजा-प्रश्न नहि उठाओत।” रमेश कागदकेँ आगाँ सरका देलनि। रमेशक पत्नी सेहो कहलीह जे एहन रोक फसलक हानि होइत काल मुँह बन्द करबाक शर्त भऽ जाएत। शबनमक समितिमे कियो नगरक पैसासँ छोट पुलिया बनबाक आशामे तुरन्त हस्ताक्षर चाहैत छल; दोसर लोक भयभीत छल जे एक बेर अधिकार छोड़ला पर वापिस नहि भेटत। सचिवा मतदानक छोट पर्ची गनलीह। पाँच सदस्य प्रवेशक व्यापक वाक्यक पक्षमे नहि छलाह; तीन शर्तसहित विचार करए तैयार छलाह। एहि गननाक तिथि लिखल गेल, मुदा सर्वसम्मति कहि नहि छापल गेल।

नैरा स्वच्छ कागद निकालि माथपर लिखलीह—‘पहिल सन्धि असफल: परीक्षण लेल सहमतिक सम्भावित पाँच शर्त’। पहिल शर्त: सार्वजनिक पगडण्डी, निजी मेड़ आ आपातकालीन रोगी-बाटक अलग नक्शा; निजी स्थलमे प्रवेशक पहिने सम्बन्धित व्यक्तिक सहमति, तत्काल संकटमे सीमित सुरक्षा-काजक सार्वजनिक लेखा। शबनम ‘सहमति’क बगलमे ‘पहिने जानकारी’ जोड़बौलीह, जाहिसँ अल्पपढ़ परिवार ओहि सूचना बुझि सकय। रमेश आपत्ति कएलनि जे सन्देश देने मात्रसँ प्रवेशक अनुमति सिद्ध नहि होएत। नैरा दुनू वाक्य अलग रखलीह, झटपट मेल नहि कएलनि।

दोसर शर्त: बरखा आ सूखा दुनू समयक नाप, सुरक्षित ठामपर पैमाना, तकनीकी जाँच आ मूल आँकड़ाक उपलब्धता; जकर माप गलत होए, ओकर सुधारक लिखित बाट। हीरा अपन नामक आगाँ ‘जाँचक परामर्शदाता, स्वामित्वक निर्णायक नहि’ लिखबौलनि। तेसर शर्त: पानि छोड़बाक नियत काजक पूर्वसूचना, बस्तीसभक भाषा अनुसार चेतावनी, आ अचानक संकट लेल अलग तुरन्त सन्देश—जाहिमे नेना, वृद्ध आ रोगी परिवारक सुरक्षित बाट उल्लेखित रहत। मालतीक सार्वजनिक नल आ जगदीशक रोगी-बाट एहि शर्तक कारण भेल, मुदा हुनकर निजी ठेकाना सार्वजनिक पन्नापर नहि चढ़ल।

चारिम शर्त: खेतक फसल, स्त्रीसभक मजदूरी, पशुबाट, नर्सरी, माछ आ मखानक सम्भावित हानिक अलग आकलन; आपत्तिक सुनवाई आ क्षतिपूर्तिक जिम्मेदारी स्पष्ट भेलाक बिना स्थायी खुदाइ नहि। रमेश आ रमेशक पत्नी एहि पाँच भाषा फेर पढ़लनि। पाँचम शर्त: निरीक्षण, ढुलाई, शिल्प, भाषिक सहायता आ सुरक्षा-काजक सार्वजनिक खर्च

आ रसीद; निजी नाम-पन्नाक सीमित प्रसार, प्रतिनिधिक अधिकारक जाँच आ मूल दस्तावेज सुरक्षित राखबाक नियम। नैरा अन्तिम पाँतिमे जोड़लीह—‘एहि पाँच शर्तपर विचारक सहमति सन्धि नहि, आ कोनो अपराध अथवा भूमि-स्वामित्वक फैसला नहि।’

जयराम खिसियाइत कहलक, “तखन एकर उपयोग की? समाचारमे तँ लिखए पड़त जे बैठक सफल भेल।” नैरा जवाब देलीह, “सफलता एतबे जे असहमत पक्ष अपन असहमतिक कारण लिखि सकल। सन्धि भेल नहि, तकर समाचार ‘सन्धि भेल’ कोना होएत?” जयराम चाहलक जे छोट प्रेसनोटमे ‘खुला बाट स्वीकृत’ जोड़ल जाए। शबनम स्वयं ओहि शब्दकें काटि देलीह। तारा घड़क समय आ उपस्थिति गनलीह; कियो सन्धिपर हस्ताक्षर नहि कएलक। सभ पक्ष केवल पाँच शर्तक पाठ प्राप्त भेल, से स्वीकार कएलक। दूटा मोहरवला प्रति बनल; निजी आपत्ति-लिफाफा फेर सीलबन्द भेल।

घाटक बाहर लोकसभक बीच खबर पहिनेसँ पसैरि चुकल छल। एक आदमी रमेशपर आरोप लगौलक जे ओ अस्पतालक रोगीक बाट रोकि देलक। जगदीश झा स्वयं आगाँ बढ़लाह। “हमर रोगीक समयक बात रमेश सुनलक,” ओ कहलनि, “असहमति पगडण्डी आ ओकर खेतक बीचक मापपर अछि। रोगीक बाट खोलबाक प्रस्तावपर कियो विरोध नहि कएने अछि।” दोसर लोक कहलक जे शबनमक समिति निजी खेतमे किछु लुकबैत अछि। नैरा साफ कएलनि जे नाम सार्वजनिक नहि करब अपराध लुकायब सिद्ध नहि करैत। मिथुनक खोज, अस्पतालक सामग्री-पंजी आ जलपट्टाक दावा पूर्ववत् तीन अलग फाइलमे रहल।

अहि वर्षक फागुन धरि जखन लोकपाठ-खुला खाता-गीतक वार्षिक आयोजनक दिन पहुँचल, असफल बैठकक पन्ना फेर खुलल। बीचक माससभमे सुरक्षित पगडण्डीक छोट मरम्मत भेल छल, मुदा निजी खेतक खुला पहुँचपर सन्धि एखन नहि बनल। मंचक आगाँ भिजल माटिक बदला सूखल धुरि छल, आ स्थानीय नेनासभ रङ्गीन कागदक झण्डी बान्हि रहल छल। आयोजक पहिने पाँच शर्त सार्वजनिक पढ़बाक निर्णय कएलनि। पद्मा ओकर सहज मैथिली अर्थ कहलीह, शबनम अपन समितिक भाषामे सार सुनौलीह, आ नाम-पन्नाक सील ककरो सामने नहि खोलल गेल।

खुला खाताक मेजपर रशीद भाट अपन गीतक पाँति पढ़लनि, मुदा रेकॉर्डिंग शुरू होएबाक पहिने उपकरण रुकबौलनि। “एहि भागक प्रसार मंचक उपस्थित लोक धरि,” ओ कहलनि, “बाहरी प्रचारक लेल हमर परिवार आ संगतकारक अलग अनुमति।” आयोजक दामक पर्ची देखौलनि। रमेश घासीक बाजा लेल प्रदर्शनक मानदेय आ मंचपर हुनकर नामक घोषणा स्वीकृत भेल; करुण दमाईक बाजा-मरम्मतिक सामग्री आ मजदूरी लेल अलग रसीद बनल। करुण बाजाक नव कसनी छूएलक आ रमेशकेँ तान मिलएबाक इशारा कएलक। संगीत शुरू भेल, मुदा खाता बन्द नहि भेल।

फरजाना अपन छोट दुकानक आगाँ तीन फलक रखलीह—लाहक हस्तनिर्मित, शीशाक, मशीनक माल; प्रत्येकमे सामग्री, टूट-फूटक जोखिम आ दाम स्पष्ट। दूटा ग्राहक पहिने सस्ता मशीनक माल चुनलनि, तेसरक बेटी लाहक रंग पसन्द कएलक। फरजाना हँसि कऽ कहलीह, “दाम बुझि चुनल अछि, तँ हमरा नीक लगैत अछि।” ओ प्रचार-मंचपर नाचबाक आग्रह अस्वीकार कएलनि; मेला ओकर कमाइक दिन छल। करुणक नन्हका भाय एक जोड़ी शीशाक चूड़ी माएक लेल किनलक आ फरजाना ओकरा अलग कागदमे लपेटि देलीह। सामुदायिक कार्यक्रममे सभकेँ एक्के भूमिका निभएबाक बाध्यता नहि छल।

रमेश कुशवाहा मंचक पाछाँ हुनकर पत्नीक संग ठाढ़ छलाह। एक प्रतिनिधि सार्वजनिक खाता देखिकऽ पुछलक जे खेतक हानिक मद एखन शून्य किएक अछि। रमेशक पत्नी कहलीह, “शून्य लिखलाक अर्थ हानि नहि, भुगतान एखन नहि। अहाँ दू अलग पाँति राखू—दावाक रकम आ चुकाओल रकम।” तारा ओही ठाम रजिस्टर सुधरबौलीह। रमेश अपन खेतक रास्ता स्वतः नहि खोललनि, मुदा सार्वजनिक पगडण्डीक सुरक्षित मरम्मतिक लेल आवश्यक माटिक सीमित भण्डारणक अनुमति देलनि—एक सप्ताह, निश्चित किनारपर, फसल बिना काटने। हुनकर पत्नीक नापल शर्तक पन्नापर हुनकर आ रमेशक अलग हस्ताक्षर छल।

साँझमे तारा पाँच शर्तक दू नकल अलग कएलनि। एक सार्वजनिक खुला खाताक लेल, दोसर मूल सहमति आ आपत्तिक क्रम सहित; निजी नामक सीलबन्द परिशिष्ट तेसर ठाम सुरक्षित रहल। नैरा प्रेसनोटमे केवल एतेक छपबौलीह—“खुला पहुँचपर पहिल वार्ता

असफल; संयुक्त परीक्षणक पाँच शर्त दर्ज।' देवव्रतक अस्पताल-सहायताक फाइल ओहि मेजपर नहि अनल गेल; मिथुनक खोजक नकलो नहि। अभिलेखक अन्तर राखब कखनो-कखनो न्यायकेँ काज करबाक जगह दैत अछि।

घर घुरैत रमेशक पत्नी बेटी लेल ओही दिनक बचल भिण्डी चुनलीह। रमेश पुछलनि, “एक सप्ताहक माटि रखबाक अनुमति देलहुँ, एहिसँ बादमे किछु समस्या तँ नहि होएत?” रमेशक पत्नी उत्तर देलीह, “सीमा नापल अछि, समय लिखल अछि, आ फेर सहमति चाही। समस्या अएत तँ फेर बोलब।” ओ अपन बेटीकेँ थारीमे भिण्डीक नन्हका फूल देखौलीह। दोसर पार शबनमक नाव धीरजसँ खुला धार दिस बढ़ि रहल छल। पाँच शर्त हुनकर झोरामे रहनि; कियो ओकरा विजयपत्र नहि मानैत छल। आगा गङ्गाक शर्तक पुरान कथा खोलबाक समय ई अनुभव पाठकक मनमे रहत—वचनक मौन भाग ककर जीवनमे कतेक दूरधरि पहुँचि सकैत अछि।

अध्याय ६१ • गङ्गाक शर्त

हस्तिनापुरसँ दूर नदीक मोड़पर भीजल बालुकामे एकटा पदचिह्न छल, जाहिमे पानिक पतली धार आबि फेर घुरि जाइत छल। शान्तनु अपन घोड़ाकेँ कदम्बक छायामे रोकलनि। नदीक पारसँ धुँध उठि रहल छल आ किनारपर एक स्त्री ताँतसँ बनल अपन वस्त्रक भीजल किनार निचोड़ि रहल छलीह। हुनकर हाथक गति एहन निश्चित छल जे ओ पानिक घटब-बढ़ब जानैत होथि। राजा घोड़ा सँ उतरि अगबे कएलनि। स्त्री माथ उठौलीह। दुनू एक-दोसरकेँ पहिल बेर देखैत छलाह; किन्तु स्त्रीक आँखिमे अपरिचयक हड़बड़ी नहि छल।

शान्तनु पुछलनि, “अहाँ के छी?” स्त्री उत्तर देलीह, “अहाँ जे नाम पुछैत छी, ओ नाम कहलासँ अहाँ हमर सभ बात बुझि जाएब?” राजा चुप भए गेलाह। स्त्री अपन अँजुरीसँ पानि भरि पाछाँ नदीमे छोड़लीह। “नाम सँ पहिचानक शुरुआत होइत अछि, अन्त नहि,” ओ कहलीह। राजा फेर संग चलबाक आग्रह कएलनि। स्त्री प्रस्ताव स्वीकार करबाक पहिने एकटा शर्त रखलीह—हुनकर काजक कारण नहि पुछल जाए, हुनका रोकल नहि जाए, आ अपमानजनक वचन नहि कहल जाए। जँ ई बन्धन टूटत तँ ओ चलि जेतीह। शान्तनुकेँ शर्तक आखिरी वाक्य सुनाइ देलक; बीचक मौन कतेक दूर जाएत, से हुनका बुझबाक फुरसति नहि भेल।

राजमहलमे पहिल दिन स्त्री अपन परिचय गङ्गा कहि देलीह। आँगनक दासीसभ नदीक गन्धवला हुनकर भीजल वस्त्र सुखौलक। भोजनक समय ओ अपन लेल पैघ थारी नहि मँगलीह; एक कटोरामे गरम चाउर आ तरकारी खाइत खिड़कीसँ बहैत हावा सुनलीह। शान्तनुकेँ हुनकर ई साधारण अभिरुचि मन पड़लनि। एक साँझ दूनू कंगूराक छतपर बैसलाह। राजा दरबारक झगड़ा कहैत रहलाह, गङ्गा ध्यानसँ सुनैत रहलीह। राजा पुछलनि, “अहाँ अपन दिनक कथा किएक नहि कहैत छी?” गङ्गा हँसि कऽ कहलीह, “आइ हम दरबारक बात सुनलहुँ। हमर दिनमे नदीक बाँधपर एकटा डारि फँसल छल।

ओकरा हटबए तीन नाविक लगलाह। ओ सभक नाम अहाँ जानैत छी?” राजा कहि नहि सकलाह।

समयक संग हुनकर लगाव बढ़ल। गङ्गा महलक भीतर रहितो नदी धरि अपन चलबाक बाट नहि छोड़लीह; शान्तनु राजकार्य समाप्त कऽ हुनकर संग तट धरि जाइत छलाह। जखन पहिल सन्तान जनमल, महलक भीतर दीप जरल, दासीसभ सूतिका-घरक कपड़ा बदललीह। शान्तनु नवजातक हथेली अपन अँगुरपर अनुभव कएलनि। बालकक नन्हका नहमे एहन सफेदी छल जे हुनका अचरज भेलनि। गङ्गा ओकरा स्तनसँ लगौलीह, दीर्घ समय धरि निहारलीह, आ रातिक पहरमे बच्चाकेँ गोदमे लऽ नदी दिस चलि गेलीह। पहरेंदर हुनका चिन्हि बाट छोड़ि देलक।

राजा पाछाँ पहुँचला तँ गङ्गा घुटना धरि पानिमे छलथिन। एक छोट तरंग हुनकर बाँहि छूने छल; बच्चाक आवाज नहि छल। शान्तनुक कण्ठमे प्रश्न अटकल गेल। गङ्गा ऊपर देखलीह, मुदा ओहि राति एक शब्द नहि कहलीह। राजा देहक सभ बल लगाकऽ अपनी शर्त याद कएलनि—प्रश्न नहि, रोक नहि। ओ महल घुरि अएलाह। सूतिका-घरमे दूधक बासन राखल छल, ओकर किनारपर मक्खी बैसए लगल छल। शान्तनु हाथ बढ़ाकऽ मक्खी उड़ौलनि। ओहि क्षुद्र काजमे हुनका पहिल बेर बुझाई पड़ल जे कोनो वचन निभाबैक मूल्य ककरो अनुपस्थित देहसँ चुकाओल जा सकैत अछि।

दोसरा बालकक जनमपर महलमे दीप कम जरल। राजा पहिल रातिक स्मृति घृणासँ नहि, भय आ आशासँ स्मरण करैत छलाह। ओ सोचैत छलाह जे पहिले जे भेल से पुनः नहि होएत। गङ्गा बच्चाकेँ छातीसँ लगौने नदी दिस गेलीह। शान्तनु दुआर धरि गेलाह, ओतए रुकि गेलाह। भोरे दासी हुनका पूछलक जे नवजातक वस्त्र कोन संदूकमे राखल जाए। राजा संदूकक ढक्कन खोललनि, फेर बन्द कए देलनि। हुनका कोनो उत्तर नहि भेटल। गङ्गा घुरि कऽ बच्चाक खाली पल्ला स्वयं समेटलीह। हुनकर चेहरापर कठोरता छल, मुदा एक बेर हाथ काँपि उठल। शान्तनु ओ कम्पन देखलनि, अर्थ नहि जानलनि।

तेसर, चारिम आ पाँचम जन्मक बीच दरबारक दिनचर्या चलैत रहल। राजक सीमा-संघर्ष, खेतक कर, नाविकक शिकायत आ घोड़ाक चारा—किछु नहि ठहरल। मुदा शान्तनुक भीतर समय दू भागमे बाँटि गेल छल: ओ दिन जहिया बच्चाक स्पर्श हुनका

भेटैत, आ ओ राति जहिया अगिला प्रश्न पुछबाक साहस नहि होइत। शान्तनु अपन सभासदकेँ नदीक किनार अधिक सुरक्षित करबाक आदेश देलनि, किन्तु निजी कक्षमे जे घटैत छल ताहिपर पहेरेदारसँ प्रश्न करबो उचित नहि बुझलनि। हुनकर राजाज्ञा नगर धरि पहुँचैत छल, अपन नवजात धरि नहि।

छठम बालकक जन्मक बाद शान्तनु गङ्गासँ कहलनि, “राज्यक पुस्तकमे बालकक नाम लिखय चाहैत छी।” गङ्गा हुनकर दिस देखलीह। “नाम देलासँ जीवनक रक्षा होएत?” ओ पुछलीह। राजा उत्तर देलनि, “नाम बिना लोक स्मरण कोना करत?” गङ्गा कहलीह, “स्मरण नामसँ पैघ अछि। मुदा अहाँक ई प्रश्न हमर काजक कारण पुछबाक आरम्भ अछि।” शान्तनु आगा नहि बढ़लाह। ओहि राति ओ अपन निजी ताड़पत्रपर केवल लिखलनि—‘छठम पुत्र’। एकोटा अक्षर ओहि बच्चाक जीवन घुरा नहि सकल।

सातमक जनमपर गङ्गा किछु काल अधिक ठहरलीह। बालक हुनकर अँगुर पकड़ि लेने छल। ओ स्वर्णक कंगन उतारि शय्याक कात रखलीह, जाहिसँ बच्चाक गाल नहि घसाए। शान्तनु दरवज्जापर ठाढ़ छलाह। हुनका कहबाक मन भेल जे हम अहाँक संग छी, मुदा ई काज रोकी। ओ केवल एतेक कहलनि, “बाहर पानि बढ़ल अछि।” गङ्गा उत्तर देलीह, “हम देखलहुँ।” राति भेलापर सातम बालक सेहो नदीमे अदृश्य भेल। राजा एहि बेर दूरसँ नहि देखलनि; ओ नदीक गन्धसँ घटना बुझलनि। हुनकर मौनमे आब अपन निर्णयक हिस्सेदारी स्पष्ट होए लगल।

गङ्गाक लग एक गोपनीय कथा छल, जे शान्तनुकेँ एखन नहि सुनाओल गेल छल। प्राचीन वसु सभ वसिष्ठक आश्रमसँ कामधेनुक वंशक पवित्र गाइक अपहरणक दोषमे मनुष्यजन्मक शाप पबने छलाह। गङ्गा हुनका सभकेँ अल्प मनुष्यजीवनमे मुक्त करबाक वचन देने छलीह। वचन देबाक क्षण ओ जीवनक भारकेँ ओहिना कल्पना नहि कएने छलीह जेना मातृदेह ओकरा अनुभूत करत। नदीक धारमे विलीन भेल सातटा बालक हुनका लेल केवल शापक मुक्तिक संख्या नहि छल; प्रत्येकक मुख अलग छल, प्रत्येक बेर हुनकर अँगुर खाली भेल छल। मुदा ओ अपन काजक औचित्य राजा सँ साझा नहि कएने छलीह।

एक दिन महलक छोट आँगनमे गङ्गा हथेलीसँ चाउर चुनि रहल छलीह। शान्तनु लग बैसलाह। “राजा होएब कखन कठिन लगैत अछि?” गङ्गा पुछलीह। शान्तनु उत्तर देलनि, “जखन हमर निर्णयसँ ककरो घर उजड़ि जाए।” गङ्गा चाउरक एक कड़कड़ अलग रखलीह। “आ जखन अहाँ निर्णय नहि करैत छी?” ओ फेर पुछलीह। शान्तनु पहिल बेर हुनका दिस सीधा तकलनि। राजा कहबाक चाहलनि जे शर्त हमरा रोकैत अछि, मुदा ओ बुझैत छलाह जे शर्त स्वीकार करबाक निर्णयो हुनक अपन छल। गङ्गाक प्रश्नक उत्तर दूनूमे सँ कियो ओहि दिन नहि देलक।

आठम गर्भक खबर सुनि महलक स्त्रीसभक बीच भय आ ममता एक संग आयल। बूढ़ी धाय कहलनि जे ई बेर कपड़ाक डोरि नीकसँ बाँधब। शान्तनु ओकर बात सुनि विचलित भेलाह; कपड़ाक डोरि बच्चाकेँ मृत्यु सँ कोना बचाओत? ओ धायसँ पुछलनि, “जँ माताक काज रोकबाक प्रश्न उठय तँ अहाँ की करब?” धाय हुनका राजा नहि, एक भयभीत पिताक रूपमे देखलीह। “हम नवजातक साँस देखब,” ओ कहलीह, “आ जकरा बचा सकब, बचएबाक चेष्टा करब। गुप्त वचनक अर्थ हम नहि जानैत छी।” एहि छोट उत्तरमे शान्तनुकेँ ओ साहस भेटल जे राजसभाक लम्बा उपदेशमे नहि भेटल छल।

आठम बालक जनमला पर राति असाधारण शान्त छल। शान्तनु बच्चाक धड़कन अपन कान लग सुनलनि। ओ सुनब राजा होएबाक नहि, एक पिताक छोट काज छल। गङ्गा बच्चाकेँ अँचरा सँ झाँपि नदी दिस बढ़लीह। शान्तनु एहि बेर पाछाँ-पाछाँ चललाह; बालुकापर हुनकर पदचिह्न पहिने गङ्गाक चिह्नसँ मिलल, फेर अलग भऽ गेल। ओ नदीक कात पहुँचि स्पष्ट कहलनि, “बस। एहि बालककेँ नहि।” शब्द बाहर अएलाक बाद हुनका बुझाइ पड़ल जे वचन टूटल। मुदा बच्चाक देह हुनकर सामने छल, आ ओकरा बचएबाक बात पहिल बेर कहल गेल छल।

गङ्गा मुड़लीह। हुनकर स्वरमे क्रोधसँ बेसी घोर थकान छल। “अहाँ अपन वचन छोड़ि देलहुँ, शान्तनु।” राजा कहलनि, “हम सात बालक गमौलहुँ। हमर मौन हुनका सभक रक्षा नहि कएलक। जँ अहाँक कोनो कारण अछि तँ कहू; मुदा एक जीवित बालकक प्राण हमरा सामने नहि जाए।” गङ्गा बच्चाकेँ अपन बाँहिमे आरो कसि लेलीह। “अहाँकेँ प्रश्न पुछबाक अधिकार छल,” ओ कहलीह, “मुदा अहाँ ओ अधिकार शर्तक बदलामे छोड़ि देने

छलहुँ। एखन अहाँ अपन निर्णय बदललहुँ। एहि बालक लेल हम जीवनक दोसर बाट खोलब।”

तटपर ठाढ़ शान्तनु पहिल बेर वसु सभक शाप आ गङ्गाक देल मुक्तिक वचन सुनलनि। गङ्गा वर्णन करैत गेलीह जे सात वसुक मनुष्यजन्म छोट रहबाक छल, आठमक कर्मफल दीर्घ मनुष्यजीवन माँगैत अछि। राजा सुनलनि, मुदा हुनकर आँखिक आगाँ सूतिका-घरक खाली पल्ला घूमैत रहल। ओ पुछलनि, “जँ ई नियम छल, तँ हमरा पहिने किएक नहि कहलहुँ?” गङ्गा उत्तर देलीह, “हम अपन शर्तक कारण लुकौने रही। एहि निर्णयक भार हमरा सेहो रहत।” ओ शापक कथा सुनौलीह, मुदा मृत बच्चासभक दर्दकेँ ओहि कथासँ शून्य मानबाक आग्रह नहि कएलनि।

शान्तनु पुछलनि, “आठम बच्चा आब कतए रहत?” गङ्गा नदीक ऊपर तिरैत कोहराक दिस देखलीह। “ओकरा ज्ञान, अस्त्र आ नीति सिखएबाक चाही। अहाँ अपन राजपुत्रकेँ मात्र सिंहासनक उत्तराधिकारी बुझैत छी; हम चाहैत छी ओ प्रश्न करबाक सामर्थ्य लऽ घुरय।” राजा कहलनि, “अहाँ ओकरा हमरा सँ फेर लऽ जा रहल छी?” गङ्गा कहलीह, “हाँ। हमर संग रहने ओकर जीवन बचत आ शिक्षा भेटत। अहाँ ओहि दिन शर्त तोड़लहुँ जे दिन ओकर प्राणक पक्ष लेल ठाढ़ भेलहुँ। एखन ई वियोग सहबाक दामो अहाँकेँ देबय पड़त।”

बालक अपन मायक काँधपर सुति रहल छल। राजा ओकर पएरक नन्हका नह छुअए चाहलनि। गङ्गा हुनका रोकलीह नहि। शान्तनु अपन अँगुर बच्चाक तलवापर रखलनि, जेना एहन स्पर्शमे कोनो प्रतिज्ञा सँ पैघ साक्ष्य हो। “हम ओकरा नामसँ बजाएब चाहैत छी,” ओ कहलनि। गङ्गा उत्तर देलीह, “देवव्रत।” शान्तनु धीरे-धीरे नाम दोहरौलनि। ओ नाम पहिल सातक अनुपस्थितिक हिसाब नहि चुका सकल, मुदा आठमक लेल एकटा भविष्यमुखी सम्बोधन बनल। गङ्गा बच्चाकेँ लऽ नदीक धुँधमे ओझल भऽ गेलीह।

बहुत वर्ष धरि शान्तनु राजक काज करैत रहलाह। युद्धक परामर्श, विवाह-सम्बन्ध, सिंचाइक नहर आ प्रजाक अभावक प्रश्न लौटैत रहल। मुदा हुनका भीतर नदीक एक प्रश्न स्थिर रहि गेल—कोन वचन निभाएब न्याय अछि, आ कोन समय ओकर विरोध जरूरी भऽ जाइत अछि? ओ नवजातक सात खाली पल्लाकेँ राज्यक इतिहासमे विजय-पत्र नहि

बनौलनि। देवव्रतक नाम एक निजी ताड़पत्रपर लिखल रहल। समयक संग नामक स्याही फीकि पड़ल, प्रश्न नहि।

एक दिन शान्तनु नदीक निकट पहुँचला तँ धारक एक भाग असामान्य रूपसँ थामल देखलनि। बाणसभक घन पाँतिसँ एक युवक नदीक एक शाखाक वेग थामि रहल छल। बाण छूटबाक गति आ नदीक प्रतिक्रिया ओ सावधानीसँ देखैत छल। शान्तनु ओकर कौशल देखिकऽ ठमकि गेलाह। बालकक मुख आब युवकक छल, मुदा आँखिक कोनमे पुरान पहिचानक रेखा उठि रहल छल। गङ्गा ओतए प्रकट भेलीह। ओ कहलनि जे देवव्रत वेद, नीति आ शस्त्रविद्यामे शिक्षित भेलाह; हुनकर शिक्षकक नाम आ विद्याक बखान राजा सुनलनि। गङ्गा युवककेँ पिताक सम्मुख आनलीह।

देवव्रत प्रणाम कएलनि। शान्तनु ओकर कन्धापर हाथ रखि किछु काल एको शब्द नहि कहलनि। एहि बेर मौनक अर्थ सात रातिक भय नहि छल; फेरो पिता-पुत्रक बीचक अतीतक खाली ठाम ओहि मौनमे रहि गेल। युवक पुछलनि, “अहाँ हमर बाल्यकालक कथा सुनाएब?” शान्तनु कहलनि, “जे हम देखलहुँ से कहब। जे नहि बुझलहुँ, ओकरा अपन ज्ञानक नामपर नहि कहब।” गङ्गा दूरसँ सुनि रहल छलीह। हुनका लेल पुत्रकेँ छोड़बाक ई समय पहिल भेटक शर्तसँ अलग छल—एहि बेर ओ शान्तनुकेँ प्रश्न करबासँ रोकलीह नहि।

विदेहपुरमे, पहिल सन्धि टूटलाक बादक सप्ताहमे, नैरा एकटा नीकसँ मोड़ल कागद खोललीह। शबनमक समितिसँ आयल पाँच शर्तक प्रति तकर कात सुरक्षित छल। नव कागद पर पुरान मजदूरी-पंजीक किछु पाँति उतरले छल; ओकरा संग अलग रसीद आ एक व्यक्तिक लिखित बयान जमा भेल छल। महेश, जे कागदक क्रम देखबाक लेल बोलाओल गेल छलाह, दरवज्जापर ठमकले रहलाह। “ई तीनूक बात एके जेकाँ देखाइत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा हम एखन नाम नहि जोड़ब।” नैरा हुनका बैसबाक लेल कुर्सी सरकौलीह।

पंजीक पाँतिमे ‘मिठुआ’ लिखल छल। दोसर कागद एक पुरान नाव-भाड़ाक पर्ची छल, जाहिमे केवल ‘मि.’क आगाँ रकम आ अस्पष्ट तिथि छल। तेसर बयानमे घाटपर काज करनिहार एक वृद्ध व्यक्ति कहने छल जे ओ ‘मिठू’ नामसँ ककरो बजाओल सुनने छल। लताक हराएल बेटा मिथुनक नाम सुनि कियो एतहि तीनूक मिलान करबाक चाहत, से

नैरा बुझैत छलीह। मुदा पर्चीक तिथि स्पष्ट नहि, बयानक समय अनिश्चित आ पंजीक ‘मिठुआ’ के छल—ई तीन प्रश्न अनुत्तरित छल। ई लेखा बच्चाक खोजमे सम्भावित सूचना होइत, निश्चित पहिचान नहि।

लता कक्षमे अएलीह तँ नैरा पहिने अनुमति पुछलीह। “हम तीन कागद देखाएब,” ओ कहलीह, “अहाँ चाहब तँ निजी प्रति पढ़ू। सार्वजनिक सूचनामे अहाँक बेटाक नाम संग ई अनुमान नहि जोड़ब।” लता कागद हाथमे लेलीह। पर्चीक भीजल कोना अँगुरसँ सीधा करैत ओ पुछलीह, “ई पर्ची केकर पास छल?” महेश उत्तर देलनि, “संग्रह करनिहारक नाम दर्ज अछि, मुदा मूलक मालिकक हस्ताक्षर नहि।” लता कहलीह, “तँ पहिले ओ पुछू। हमरा आशा चाही, मुदा दोसर बच्चाकेँ हमर मिथुन कहि पकड़ि अनबाक गलती नहि।” हुनकर स्वर थाकल छल, निर्णय साफ छल।

कक्षमे अदिति एलीह। ओ अस्पतालक सामग्री-अभिलेखक अलग लिफाफा लऽ अएने छलीह, मुदा नैराक पन्ना देखिकऽ ओकरा ओतए नहि रखलीह। “जे कागद अस्पतालक सार्वजनिक भुगतानक अछि, ओकर मूल स्रोत आ उपयोग अलग,” ओ कहलीह। नैरा तीन शीर्षक लिखलीह—‘प्रत्यक्ष देखल लिखावट’, ‘अक्षर आ आवाजक सम्भावित सादृश्य’, ‘मूल व्यक्ति सम्बन्धी अप्रमाणित अनुमान’। पंजीमे ‘मिठुआ’ अक्षर देखल जा सकैत छल; पर्चीक ‘मि.’सँ ओहि व्यक्ति समान होएत, से सिद्ध नहि; वृद्धक बयान सुनल आवाजक छल, देखल चेहराक नहि। महेश प्रत्येक कागदक धारकक जानकारी सुरक्षित पन्नापर लिखलनि।

तारा बिनौट घाटक निरीक्षणक नक्शा लऽ पहुँचल छलीह। ओ पुछलीह जे निजी नामसभ पाँच शर्तक सार्वजनिक पन्नामे किएक नहि चढ़ल। नैरा उत्तर देलीह, “जकरा प्रकाशित करबाक अनुमति नहि, ओकरा चुप्पी सहमति मानि नहि छापब। सन्धिक पन्ना सभक लेल अछि; एहि बयानक स्रोतक सुरक्षा अलग।” तारा सहमति देलीह, मुदा जोड़लीह जे मजदूरी-पंजीमे जेकर बकाया अछि ओकर देय गुप्त नहि भऽ जाए। महेश कहलनि, “नाम सुरक्षित रहय, मुदा रसीदक रकम आ जाँचक समयक हिसाब मूल दावेदार धरि पहुँचे।” एहि लेल ककरो नाम सार्वजनिक कएने बिना दावाक क्रमाङ्क आ प्रत्युत्तरक तिथि लिखल गेल।

साँझ भेलापर नैरा लताकें मूल पर्चीक फोटो नहि, ओकर लिखित विवरण आ प्रश्नक सूची देलीह। “अहाँ एहि सूचीमे अपन सहमति अनुसार सुधार लिखि सकैत छी,” ओ कहलीह। लता कागद मोड़ि अपन झोरामे रखलीह। पुछलीह, “जँ ओ हमर बेटा नहि निकलल तँ खोज बन्द नहि करब?” नैरा उत्तर देलीह, “नहि। खोज एहन कागदक भरोसँ शुरू वा बन्द नहि होएत।” लता घर घुस्बाक लेल उठलीह। महेश बाहर धरि गेलाह, मुदा ओहि दिनक स्रोतक नाम पुछलापर सेहो नैरा सार्वजनिक रूपसँ नहि कहलनि। अपन पहिने भेल प्रकाशन-त्रुटिक स्मृति हुनका सावधान बना रहल छल।

नदीक प्राचीन तटपर देवव्रत पिताक संग घुरैत पहिल बेर नगरक बड़ द्वार देखलनि। दरबान हुनका राजपुत्र कहि प्रणाम कएलक। देवव्रत ठमकला। ओ गङ्गासँ सीखल विद्याक चर्चा नहि, महलक कातक छोट पगडण्डी दिस देखैत रहलाह। “एहि द्वारमे सभकें भीतर जाएबाक बाट अछि?” ओ पुछलनि। शान्तनु उत्तर देलनि, “राजकार्यक नियम अलग अछि।” देवव्रत फेर पुछलनि, “आ जकरा नियम बनय काल पुछल नहि जाए?” शान्तनु तुरन्त उत्तर नहि देलनि। पुत्रक प्रश्न हुनका अपन आठम बालकक रातिक मौन फेर याद दिअलक।

गङ्गा ओहि दिन नदीक धारमे दूर जा रहल छलीह। हुनका लग सात शिशुक छोट जीवन, आठमक दीर्घ आयु, आ शान्तनुक देरीसँ टूटल वचन—तीन भिन्न भार छल। ओ अपन शर्तक व्याख्या कएने छलीह, मुदा राजा आ पुत्रक शेष जीवनक निर्णय ओ नहि लेलीह। शान्तनु देवव्रतक संग राजद्वार भीतर चललाह। ओ सोचैत छलाह जे पुत्रक रक्षा लेल एक बेर मौन तोड़लहुँ; आब भविष्यक कोन वचन हमरा आ ओकरा फेर बाँधि देत? ओहि प्रश्नक उत्तर राजमहलक अगिला पीढ़ीक निर्णयमे निहित छल, गङ्गाक कथामे नहि।

विदेहपुरमे रातिक बेला नैरा अपन पन्नाक कात एकटा छोट टिप्पणी लिखलीह—‘शर्त स्वीकार करब, शर्त बुझब आ शर्तक परिणाम भोगब तीन अलग काज’। पाछाँ पाँच असफल सन्धि-शर्तक प्रति सुरक्षित रहल। महेशक बयानक मूल लिफाफा एखन सीलबन्द छल, आ नाव-भाड़ाक पर्चीक तिथि जाँचबाक लेल अलग आग्रह पठाओल गेल। लता अपन घरमे मिथुनक पुरान माटिक घोड़ा रखि देलीह; ओकर आशा नवनामक

सादृश्यपर नहि, खोज जारी रखबाक अधिकारपर टिकल छल। नदीक दुनू पार पानि अपन चालसँ बहि रहल छल। कागद पर लिखल वचनक दाम आब ओकर परिणामसँ नापल जाएबाक छल।

अध्याय ६२ • भीष्मक प्रतिज्ञा

राजमहलक भीतरी आँगनमे देवव्रत धनुक डोरी खोलि रहल छलाह। नदीक वेग थामबाक अभ्यासमे जे अँगुरी छिलि गेल छल, ओकरा पर छोट पट्टी बाँधल छल। शान्तनु हुनका अपन पुत्र कहि नगरमे आनने छलाह; सभासद हुनका युवराजक आसन देखौने छलाह। मुदा ओहि दिन देवव्रत देखलनि जे पिता भोजनक थारी लग बैसलो अन्न नहि छुबैत छथि। राजमहलक ढोल साँझक समय बजल, राजाक कोठरीमे ने संगीत पहुँचल ने निद्रा। प्रश्न उठल तँ शान्तनु कहलनि, “राजकाजमे मन थाकि गेल अछि।” हुनकर आँखि नदी दिस छल, जतए एक दिन गङ्गा अपन शर्तक आखिरी अर्थ कहि विदा भेल छलीह।

देवव्रत राजा पर दोसर प्रश्नक भार नहि देबाक चाहलनि। ओ राजरथक सारथिकेँ अलग बजौलनि। सारथि बहुत दिनसँ शान्तनुक संग यात्रा करैत छल। “कोन यात्राक बाद पिताक मुख एतेक बदलल?” देवव्रत पुछलनि। सारथि पहिने राजाक गोपनीयताक आश्रय लेलक, फेर स्पष्ट कएलक जे नदीक एक घाटपर सत्यवती नामक नाव चलौनिहार युवतीसँ राजा भेटने छलाह। विवाहक बात हुनका प्रिय छल, मुदा ओकर परिवार भविष्यक सन्तानक राजकीय अधिकार चाहैत छल। “अहाँक युवराजपद ओहि वचनक बीच ठाढ़ अछि,” सारथि कहलैक। देवव्रत पूछलनि, “पिता हमरा की कहलनि?” “किछु नहि। ओ अपन इच्छा सँ बेसी अहाँक अधिकार देखलनि।” एहि उत्तरसँ पुत्रक मनमे पिता प्रति स्नेह बढ़ल, संगहि मौनक पुरान भय जागल।

प्रातःकाल ओ नदीक घाट पहुँचलाह। माछक खेप बजार जा चुकल छल; खाली टोकरिसभ धूपमे उलटल रखल छल। सत्यवती अपन छोट भाइक घायल अँगुरीमे नव पट्टी कसि रहल छलीह। घाटक पिता काठक गोटीसभ सँ दिनक हिसाब जोड़ैत छलाह। ओ देवव्रतकेँ देखिकऽ उठलाह, मुदा सत्यवती काज रोकलीह नहि। “काल्हि अहाँ हमर प्रश्न सुनलहुँ,” ओ कहलीह। “आइ हमरा उत्तर देबाक अछि,” देवव्रत कहलनि। सत्यवती पट्टीक गाँठ बाँधि भाइकेँ काजपर पठौलीह। हुनकर दृष्टि अबैत राजपुरुषपर नहि, ओकर वचनक सम्भावित परिणामपर स्थिर छल।

पिता कहने छलाह जे सत्यवतीक कोखिसँ जन्मल पुत्र राजगद्दीक उत्तराधिकारी होए। देवव्रत अपन राजवंशक परिषद्, राज्यक पुरान अभिषेक आ पिता-पुत्रक अधिकार सम्झलनि। “हम हस्तिनापुरक सिंहासनपर अपन दावा छोड़ैत छी,” ओ कहलनि। “जँ सत्यवतीक सन्तान होएत, ओकर राजाधिकार स्वीकार करब आ ओकर रक्षा करब।” एहि वचनसँ घाटपर ठाढ़ मन्त्रीसभमे हलचल भेल। राजकाजक भेद बुझेवला वृद्ध मन्त्री पुछलनि, “महाराजक जीवनमे युवराजक अधिकार कागदपर नहि, सेनाक विश्वास आ प्रजाक मानमे बसैत अछि। अहाँक वचनक साक्षी के?” देवव्रत उत्तर देलनि, “जे सुनि रहल छथि, ओ सभ। मुदा ओकरा लिखबाक आ अगिला सभामे कहल जाएबाक आवश्यकता सेहो अछि।”

सत्यवतीक पिता अपन गोटी नीचे राखि देलनि। हुनकर मुखपर आनन्द आ चिन्ता एक संग छल। “अहाँ अपन अधिकार छोड़ि सकैत छी,” ओ कहलाह, “मुदा काल्हि अहाँक पुत्र भेलाह तँ? राजा बनबाक हुनकर दावा अहाँक आजुक शब्दसँ के रोकत?” प्रश्नमे लोभ मात्र नहि छल; पिताकेँ दरबारक बदलैत गठजोड़क अनुभव छल। देवव्रत बूझलनि जे राजकीय दावाक केवल वर्तमान मालिकी छोड़लासँ भविष्यक विवाद नहि मिटैत। माछक बजारमे जँ नावक पहिल खेपक सौदा हो, अगिल खेप ओहि दरपर बन्हाइ नहि जाइत; राजसिंहासनमे तँ लोकक जीवनक प्रश्न जुड़ल छल। पिता हुनकर मौन देखिकऽ फेर कहलाह, “हम बेटीकेँ राजमहल पठाएब, मुदा ओकर सन्तानकेँ अनिश्चित कल्हि नहि देब।”

देवव्रत पानिक कात बढ़ि गेलाह। ठंढा पानि अँगुरीक छिलल ठाम छुलक। ओ अपन शिक्षाक दिन स्मरण कएलनि—गङ्गाक संग बितल बरख, धनुर्विद्याक गुरु, पिता सँ फेर भेटलाक बाद राजद्वारपर पुछल प्रश्न: जकरा नियम बनैत काल नहि पुछल गेल, ओकर की होएत? एहि बेर नियम स्वयं हुनकर मुखसँ निकलए जा रहल छल। ओ घुरि सभा दिस देखलनि। “हम विवाह नहि करब,” देवव्रत कहलनि। “आजीवन ब्रह्मचर्य धारण करब, एहि राजवंशक रक्षाक कार्य करब, मुदा अपन लेल सन्तान आ राजगद्दीक दावा नहि करब।” शब्द उच्चरित भऽ गेलाक बाद ओहि स्थलपर जतेक लोक छल, सभ किछु काल निस्पन्द रहल।

पुरान आख्यान एहि क्षण आकाशसँ पुष्पवृष्टि आ देवसभक “भीष्म” कहल ध्वनिक वर्णन करैत अछि। राजपुरोहित एहि दिव्य दृश्यकेँ व्रतक महिमाक चिह्न कहि लिखताह। मुदा घाटपर सत्यवतीक छोट भाइकेँ जे दृश्य देखाइत छल, ओ एतेक भर जे काल्हि एहि युवककेँ अपन बच्चा कहि बजाबएवला केओ नहि होएत। ऊँच सभासद प्रशंसा करैत छलाह, नाविकक घायल अँगुरीमे पट्टीक गाँठ चुभि रहल छल। सत्यवती देवव्रतसँ पुछलीह, “अहाँ ई निर्णय हमर शर्तक नामपर देलहुँ, की अपन विवेकसँ?” देवव्रत थमकि गेलाह। “हम अपने देलहुँ। तकर भार अहाँपर नहि रखब।” सत्यवतीक मुख कने नरम भेल। “तखन एकरा हमर विवाहक मूल्य नहि कहिऔ। मूल्य कहल गेल तँ कियो दिन एहि त्यागक ऋण हमरा सन्तानसँ वसूल करबाक चाहत।”

राजपुरोहित आग्रह कएलनि जे नव नाम ‘भीष्म’क घोषणाक संग मन्त्र पढ़ल जाए। देवव्रत प्रणाम कऽ नाम स्वीकार कएलनि, मुदा राजपद छोड़बाक लिखित सूचना पहिले सभामे पहुँचय, एहि लेल सारथिकेँ आदेश देलनि। सत्यवतीक पिता पुछलनि, “अहाँक अपन इच्छा? कोनो दिन बदलत नहि?” “मनुष्यक इच्छा बदलि सकैत अछि,” भीष्म कहलनि, “मुदा हम एकरा निभएबाक प्रतिज्ञा कएलहुँ।” पिता सिर झुका देलनि। हुनका बेटी लेल सुरक्षित भविष्यक विश्वास भेटल छल; युवकक सम्पूर्ण जीवनक खर्चक गणना हुनकर गोटीमे नहि अँटैत छल।

सत्यवती घरक भीतर गेलीह तँ माए नहि, छोट भाइ प्रथम पुछलक, “दीदी, आब तोरा नाव चलए नहि पड़त?” ओ हँसलीह। “नाव नहि चलाएब तँ पानि बुझब छोड़ि देब?” भाइ अपन पट्टी देखौलक, “आ हम?” सत्यवती कहलीह, “तोकऽ मजदूरी तोहर नामसँ चलत। हमर बिआहसँ घाटक देय नहि भेटाएत।” ओ पिताकेँ कहलनि जे विवाहक उपहारमे जाल, नाव आ घरक बकाया गोटे राजक नामपर न लिखल जाए। पिता पहिने चकित भेलाह, फेर सहमत भेलाह। ई छोट घरेलू निर्णय राजवंशक प्रतिज्ञासँ भिन्न छल, मुदा ओहि दिन सत्यवतीक अपन भविष्य एहिमे सेहो टिकल छल।

देवव्रत दरबार लौटला तँ शान्तनुकेँ समाचार पहिने पहुँचि चुकल छल। राजाक हाथमे भोजक पात्र रहि गेल छल, मुदा ओ एक ग्रास नहि खा सकलाह। “हम अहाँसँ ई नहि माँगने छलहुँ,” ओ कहलनि। पुत्र उत्तर देलनि, “अहाँ चुप रहलहुँ। हमर अनुमान छल जे

अहाँक मौनक कारण हमर अधिकार अछि।” शान्तनु पुछलनि, “जँ अनुमान गलत भेल तँ?” पुत्रक चेहरापर पहिल बेर अनिश्चितताक छाया आयल। ओ कहलनि, “तँ हम अटल प्रतिज्ञा एकटा अनिश्चित कारणसँ कएलहुँ। मुदा आब एकरा अपन निर्णय मानैत छी।” शान्तनुकेँ गङ्गाक आठम पुत्रक राति याद पड़ल, जखन मौन तोड़बाक देर बहुत महँग पड़ल छल। आइ पुत्र हुनकर मौनक अर्थ स्वयं बना लेलने छलाह।

राजा पुत्रकेँ एक वरदान देलनि—जाबत भीष्म अपन मृत्युक समय स्वयं स्वीकार नहि करताह, मृत्यु हुनका विवश नहि कऽ सकत। दरबारमे एकरा अप्रतिम पुरस्कार मानल गेल। भीष्म पिता लग किछु काल बैसल रहलाह। “इच्छामृत्यु जीवनक प्रत्येक दिनक चुनाव नहि अछि,” ओ धीरे कहलनि। शान्तनु सुनि रहल छलाह। पुत्र आगाँ किछु नहि कहलनि, मुदा राजा बूझि गेलाह जे मरबाक घड़ी चुनबाक वरसँ पुत्रक विवाह, सन्तान आ साधारण घरक आनन्दक अधिकार फेर नहि लौटत। पिता आ पुत्र बहुत बेर भेटलाक बाद सेहो पहिल बेर एतेक एकाकी अनुभव कऽ रहल छलाह।

राजसभामे अगिला दिन राजसिंहासनक उत्तराधिकारक सूचना पढ़ल गेल। वृद्ध सभासदक सहमति छल, मुदा सेनापतिक प्रश्न उठल—जँ सिंहासनपर सत्यवतीक सन्तान अबैत अछि तँ ओकरा शिक्षित करबाक, युद्धक समय सेनाकेँ निर्णय देबाक अधिकार केकर? भीष्म उत्तर देलनि, “राज्यक अधिकारी राज्यक हितमे काज करताह; हम संरक्षण आ शिक्षा दएब, मालिक नहि बनब।” “आ जँ ओ राजा अहाँसँ असहमत भेलाह?” “तखन ओ अपन असहमतिसहित राजा रहताह।” सुननिहारसभमे किछु सन्तोष, किछु अविश्वास छल। राजकाजमे प्रतिज्ञा एकल पुरुषक आचरण छल; संस्थाक नियम लिखल बिना ओ निरन्तर व्यवस्था नहि बनि सकैत छल।

सत्यवती राजमहलमे अएलीह। पहिल साँझ ओ आँगनक कुँआपर गेलीह तँ एक परिचारिका राजपरिवारक पात्रसँ पानि देबाक आग्रह कएलक। “हम स्वयं लऽ सकैत छी,” सत्यवती कहलीह, मुदा परिचारिका डरि गेलीह—“रानीक हाथसँ डोल उतरला पर हमरा दोष भेटत।” सत्यवती डोल छोड़ि देलनि, आ हुनका संग बैसि पुछलनि जे कोन नियम लिखल अछि, कोन केवल डरसँ मानल जाइत अछि। कक्षमे लौटि ओ एहि उत्तरक

लेल दरबारमे समय माँगलनि। अपन जन्म-घरक नाविकसभक विषयमे ओ कहलनि जे राजमहलक सुविधा हुनकर मूल परिवारक श्रमकें अदृश्य नहि करए।

शान्तनु सत्यवतीक संग पहिल बेर राजमहलक बगैचामे बिनु मन्त्रीक बैसलाह। फूलक गाछक कात शीतक पानि जमल छल। “अहाँ एतए प्रसन्न छी?” राजा पूछलनि। “कखनो,” सत्यवती कहलीह। “मुदा अहाँक पुत्रक वचन एखनहुँ हमर गहना जेकाँ सभ दरबार देखबैत अछि। हमरा भय अछि, जँ हम कोनो निर्णयमे असहमत भेलहुँ तँ कियो कहत—एतेक त्यागक बादो?” शान्तनु उत्तर नहि देलनि। सत्यवती फेर कहलीह, “हम विवाह अपने इच्छा सँ कएलहुँ। अहाँक पुत्रक वचन हुनकर अछि। हमरा निर्णयक न्याय हुनकर बलिदानक हिसाबसँ नहि, हमर काजसँ करू।” राजा एहि बेर सहमतिक शब्द कहलनि, मुदा ओहि शब्दक पालन अनेक दिन धरि जाँचल जाएबाक छल।

वर्ष बदलल। सत्यवतीक कोखिसँ चित्राङ्गद आ विचित्रवीर्य जन्मलाह। बालकसभ एक बेर वर्षाक घड़ी महलक भीतर छोट कागजी नाव बनौलक। चित्राङ्गद अपन नाव पर सोना-जेकाँ रङ्गक बिन्दु लगा देलक, छोट भाइ बिना रङ्गक पातक नाव ढारिमे छोड़लक। भीष्म ओहि खेलक कात पहरा नहि, दर्शक बनि ठाढ़ छलाह। विचित्रवीर्य कहलनि, “पितृव्य, अहाँक नाव कतए?” भीष्म हुनका लेल पात मोड़ि देलनि। बालक फेर पूछलक, “अहाँक बच्चा हमर संग खेलबाक किएक नहि अबैत?” भीष्मक हाथ ठमकि गेल। ओ छल नहि कहलनि। “हम एहन वचन देने छी जे हमरा बच्चा नहि होएत।” छोट बालक बुझलक नहि; ओ भीष्मक नाव अपन नावक कात लगा देलक।

एहि घरक हँसीक भीतर राजक प्रश्न चुपचाप बढ़ैत रहल। चित्राङ्गदकें शस्त्र सिखएबाक समय भीष्म जीतक संग हारबाक शर्तो समझबैत छलाह। “तोहर जीतसँ जकर खेत रौंदल जाएत, ओकर दाम राजाकें चुकाबए पड़त,” ओ कहलनि। बालक पुछलक, “अहाँ राजा नहि छी तँ अहाँ हमरा ई सभ किएक सिखबैत छी?” भीष्म उत्तर देलनि, “राजगद्दी नहि लेबाक वचन हमरा जिम्मेदारीसँ मुक्त नहि करैत अछि।” सत्यवती ओहि संवादकें सुनि अपन कोठरीक देहरीपर रहल छलीह। हुनका एहिमे सान्त्वना छल, मुदा ओ जानैत छलीह जे संरक्षण आ निर्णय बीचक रेखा बच्चासभक पैघ भेलापर फेर खिंचत।

शान्तनु अस्वस्थ भेलाह तँ महलमे चिकित्सकक चरणध्वनि बढ़ि गेल। एक दिन राजा भीष्मकेँ एकान्तमे बजौलनि। “अहाँ अपन जीवन हमर सुखक लेल देलहुँ,” ओ कहलनि। भीष्म सिर हिलौलनि। “नहि, पिताश्री। हम एक निर्णय कएलहुँ, आ तकर परिणाम हमरा संग अछि। जँ अहाँ एकरा अपन सुखक मूल्य कहब तँ हम जे काज कएलहुँ ओकरा फेर अहाँक ऋण बनायब।” शान्तनु बहुत काल पुत्रक मुख देखैत रहलाह। “तखन एकटा बात स्वीकार करू—हमर मौन अहाँक लेल आदेश नहि छल।” भीष्म उत्तर देलनि, “आ हमर प्रतिज्ञा अगिला लोकक मुँह बन्द करबाक आदेश नहि बनए।” ओहि दिन दुनू पितापुत्रक बीच दोषक हिसाब नहि, कठिन सत्यक छोट सम्वाद भेल।

शान्तनुक देहान्तक बाद राजसभामे चित्राङ्गदक राज्याभिषेकक दिन निश्चित भेल। भीष्म स्वयं राजमुकुट अगाँ बढ़ौलनि। किछु सभासद प्रस्ताव कएलनि जे बालक राजा होए धरि भीष्मक नामसँ आदेश निकलिऐ; भीष्म प्रशासनिक देखरेख स्वीकार कएलनि, मुदा लिखलनि जे राजकीय मुहरक उपयोगक समय उत्तरदायित्व दर्ज हो। सत्यवती प्रस्तावक प्रत्येक पाँति पढ़लीह। “जँ हमर बेटा राजा कहल जाए,” ओ कहलीह, “तँ ओकरा शिक्षा, प्रश्न करबाक अधिकार आ गलत निर्णय बदलबाक बाट सभ चाही।” किछु सभासदकेँ ई रानीक अधिक आग्रह बुझायल, मुदा भीष्म ओहि वाक्यकेँ सभाक विवरणमे जोड़ौलनि।

समय भेलापर चित्राङ्गद अपन साहसक जौर राजकार्यसँ बाहर सेहो देखाबए लागलाह। एक गन्धर्वराज, जकर नाम सेहो चित्राङ्गद छल, हुनकासँ संघर्ष भेल। युद्ध लम्बा चलल; राजाकेँ अन्तमे प्राण गमाबए पड़ल। समाचार अएलापर महलक आँगनमे शस्त्रक चमक नहि, दुइ भाइक अपूर्ण कागजी नावक स्मृति रहि गेल। सत्यवतीक समक्ष सभासद उत्तराधिकारक पत्र लऽ अएलाह। ओ पहिने बेटाक अन्त्येष्टि आ घायल सैनिकसभक जानकारी पुछलीह। “राजाकेँ मृत्यु भेल,” ओ कहलीह, “मुदा ओकर संग गेल साधारण जनक घर के देखत?” भीष्म सैनिकक परिवार लेल मदतक प्रबन्ध करौलनि; एतेक करितो ओ अपन भाइक पुत्रकेँ वापस नहि आनि सकलाह।

विचित्रवीर्य एखन नवयुवक छलाह। राजसभामे ओकरा सिंहासनपर बैसाओल गेल, मुदा शासनक भारी काज भीष्मक हाथ धरि अबैत रहल। सत्यवतीक मनमे बारम्बार एके

भय उठैत छल—एहि घरक भविष्य दू पुत्रमे गनल गेल छल; एक नहि रहल। भीष्मक अपन वंश चलएबाक बाट ओहि घाटपर सदा लेल बन्द भऽ गेल छल। राजसभाक एक मन्त्री एकान्तमे पुछलनि, “महाराजक काज अहाँ करैत छी, नाम हुनकर अछि; एहन असन्तुलन कतबा काल?” भीष्म कहलनि, “एहि कारण राजा केँ सक्षम बनायब पहिल काज अछि। अपन प्रतिज्ञा बदलि राजक कमजोरी ढाकब दोसर समस्या बनाओत।”

सत्यवती एक साँझ भीष्मकेँ बजौलीह। हुनका लग चित्राङ्गदक बचपनक एकटा काठक धनुक राखल छल, जेकर डोरी टूटि गेल छल। “हमर पिता भविष्यक आश्वासन माँगने छलाह,” ओ कहलीह। “अहाँ ओहि भविष्यक लेल अपन जीवनक एक बाट बन्द कएलहुँ। आब चित्राङ्गद नहि छथि। विचित्रवीर्यक जीवनक बारेमे हम की निश्चित कहि सकैत छी?” भीष्म उत्तर देबाक पहिने काठक धनुक हाथमे लेलनि। “निश्चित किछु नहि। हम हुनकर सुरक्षा आ शिक्षाक काज करब।” सत्यवती पुछलीह, “जँ विवाहक प्रश्न उठल तँ ओकर इच्छाक ठाम कतए रहत?” भीष्म कहलनि, “ओहि इच्छाकेँ बुझबाक जिम्मेदारी हमर अछि।” सत्यवतीक आँखि किछु देर हुनकर मुखपर ठहरल। “मात्र ओकर नहि,” ओ कहलीह, “जिनकासँ विवाह होएत, हुनको।”

विदेहपुरमे नैरा एही साँझ पाँच असफल सन्धि-शर्तक सार्वजनिक प्रति देखैत छलीह। तारा एकटा नव कागद लेने अएलीह, जाहिमे फाटक-परीक्षणक खातिर दोसर पारसँ आयल प्रस्ताव छल—“पहिने बाट खोलू, पछाति क्षतिपूर्ति आ सुरक्षा-परीक्षणक विवरण तय होएत।” तारा कागद मेजपर रखलीह। “ओ कहैत छथि जे ई भरोसाक शर्त अछि,” ओ कहलीह। नैरा पुछलीह, “जे अपन खेतक कात बाट देत, ओकर भरोसा लिखल अछि?” तारा सिर हिलौलीह। “नहि। रमेशक असहमति एखन मूल पन्नामे अछि।”

महेश सेहो ओतए अएलाह। हुनका हाथमे ‘मिठुआ’ नामक मजदूरी-पंजीक स्रोतसँ आयल एक प्राप्ति-पत्र छल। पत्रमे कहल गेल छल जे पंजीक लिखावट जाँचबाक अनुमति सीमित अछि; मूल पन्ना दोसर ककरो नामसँ सार्वजनिक नहि कएल जाए। नैरा पत्रकेँ मिथुनक खोजक पन्नासँ अलग रखलीह। “हम अपन अनुमानक भरोसँ ककरो सन्तानक नाम नहि बदलि सकैत छी,” ओ कहलीह। महेश पुछलनि, “आ प्राप्ति-पत्र दाबि

रखला पर मजदूरीक हक?” तारा उत्तर देलीह, “दावाक क्रमाङ्क, रकम आ सुनवाईक तिथि ओकर हकदार धरि जाएत। निजी नाम नहि छपलासँ देयक मार्ग बन्द नहि होअए।”

लता खोजक समय पूछए पहुँचल छलीह। नैरा ओहि दिनक नव सूचना सावधानीसँ बुझौलीह—पंजीक स्रोत भेटल अछि, व्यक्ति-पहिचान एखन नहि। लता किछु काल चुप रहलापर कहलीह, “एकटा दिन हमर बेटा घुरत, ई विश्वास हमरा जीबैत रखैत अछि। मुदा हमर विश्वासक नामपर ककरो दोसरक बच्चा नहि पकड़ब। अहाँ अपन कागदमे ई बात लिखि सकैत छी।” नैरा सिर झुकौलीह। तारा पछिला पन्नामे जोड़लीह जे खुला बाटक सामूहिक शर्तकें ककरो व्यक्तिगत मौनक सहमति नहि गनल जाए। एहि सभाक अन्तमे पत्रक जबाब पठाओल गेल—सुरक्षा-परीक्षण आ क्षतिपूर्ति-बातचीतक पहिने एकतरफा बाट खोलबाक अनुमति नहि।

पुरान हस्तिनापुरमे एहि घड़ी भीष्म आगामी विवाहक विषय पर मन्त्रीसभसँ विचार करैत छलाह। दूर देशक राजसभासभमे राजकुमारीक स्वयंवर आयोजित होइत, मुदा सभा, कुल आ राजकीय प्रतिष्ठाक भाषा बहुत बेर राजकुमारीक अपन स्वरकें ढाँकि दैत छल। भीष्मक सामने काशीक राजाक तीन पुत्रीक विवाह-उत्सवक समाचार आयल। मन्त्री कहलनि, “विचित्रवीर्यक अधिकारक लेल ई सम्बन्ध आवश्यक भऽ सकैत अछि।” भीष्म पुछलनि, “राजकुमारक इच्छा पुछल गेल?” “सभसँ बात कएल जाएत,” मन्त्री कहलनि। “आ राजकुमारीसभ?” उत्तर तुरन्त नहि आयल। सत्यवतीक चेतावनी भीष्मक स्मृतिमे छल, मुदा राजसभाक तात्कालिक संकट हुनका शीघ्र निर्णय दिस धकेलि रहल छल।

एहि राति भीष्म आ सत्यवती भोजनक बाद राजमहलक ओहि पुरान आँगनमे बैसलाह जतए चित्राङ्गद कागजी नाव छोड़ैत छलाह। विचित्रवीर्य भीतर संगीत सुनि रहल छलाह। सत्यवती एकटा दीपकक बाती सीधा करैत कहलीह, “हम नहि चाहैत छी जे हमर बेटाक भविष्य कोनो आन स्त्रीक मुँह बन्द कए बनए।” भीष्म उत्तर देलनि, “हम अपन वचनसँ हटि नहि सकैत छी।” “हम अहाँकें हटबाक लेल नहि कहैत छी,” सत्यवती कहलीह। “हम पूछैत छी, अहाँ अपन वचन निभबैत दोसरक चुनबाक अधिकार सुनि सकब?” भीष्म

दीर्घ काल मौन रहलाह। नदीक घाटपर देल प्रतिज्ञा हुनका रणसँ नहि, एहि घरेलू प्रश्नसँ फेर जाँचि रहल छल।

सकाले सभासद काशीक यात्राक तैयारीमे जुटलाह। रथक धुरीपर तेल लगाओल गेल, घोड़ाक खुर जाँचल गेल, पुरान ध्वज झाड़ल गेल। भीष्म सारथिकेँ युद्धक आज्ञा नहि, यात्रा लेल आवश्यक सामानक सूची देलनि। ओ सोचैत छलाह जे पिताक सुखक लेल अपन अधिकार छोड़ि देलहुँ, भ्राताक राज्य बचेबाक लेल अपन समय देलहुँ; एखन आन लोकक भविष्यक निर्णयमे हमर अधिकार कतए समाप्त होइत अछि? उत्तर बिना यात्रा रुकल नहि। रथ महलक दुआरपर तैयार छल, आ काशीक तीन राजकुमारीक जीवनक दिनचर्यामे एखन धरि एहि निर्णयक समाचार पहुँचबे नहि कएने छल।

विदेहपुरमे दिन चढ़लापर तारा नैरासँ कहलीह, “सन्धि टूटल अछि, तखनहुँ काज रुकल नहि। मुदा हम जे पाँच शर्त लिखलहुँ, से काल्हि अपना लोकक विरोधमे हथियार नहि बनय।” नैरा उत्तर देलीह, “लिखल वचनक जाँच ओकर घोषणासँ नहि, जकर जीवनपर पड़त ओकर कहबाक अधिकारसँ होएत।” ओ प्राप्ति-पत्रक तिथि लिखलीह, रमेशक खेतक असहमति सुरक्षित रखलीह, आ लताक खोजक फाइल बन्द नहि कएलनि। हस्तिनापुरक रथ आ विदेहपुरक फाटक एक्के इतिहास नहि छल; मुदा दुनू ठाम कियो अपन वचनकेँ अन्तिम समाधान मानि लेत तँ अगिला लोकक प्रश्न सुनबाक ठाम छोट पड़ि सकैत छल।

अध्याय ६३ • अम्बाक समय

काशीक राजमहलक भीतर तीनटा पीतल थारीमे हल्दी राखल छल। परिचारिका ओहि थारीसभक कात अलग-अलग फूल सजा रहल छलीह; सबसे पैघ थारीक फूल अम्बा स्वयं बदलौलीह। “एहि फूलक गन्ध सँ हमरा माथ दुखैत अछि,” ओ कहलीह। परिचारिका हड़बड़ा गेलीह—स्वयंवरक दिन राजकुमारीक पसिन्नक फूल बदलनाइ कोनो पैघ काज नहि छल, मुदा सभ काज एतेक नियमसँ बँधल छल जे साधारण इच्छा सेहो आज्ञा जेकाँ सुनाइत छल। अम्बिका आ अम्बालिका हुनका हँसि देखलीह। अम्बालिका पुछलीह, “सभ राजकुमार अएताह तँ चिन्हब कोना?” अम्बा उत्तर देलीह, “जकरा चिन्हैत छी, ओकरा लेल सभकेँ देखबाक आवश्यकता नहि।” ओहि उत्तरक पाछाँ शाल्वक संग पुरान भेट आ एकटा निजी आशा छल, जेकर विषयमे घरक किछु लोक जानैत छलाह, मुदा राजसभा ओकरा लिखल वचन नहि मानैत छल।

पिताक राजपुरोहित स्वयंवरक क्रम बुझौने अएलाह। कोन द्वारसँ राजा प्रवेश करताह, कोन कक्षमे हथियार राखताह, राजकुमारीसभक हाथमे माला के देत—सभ बात निर्धारित छल। अम्बा पुछलीह, “जँ हम पहिले सँ ककरो पसन्द कएने छी, तकरा कहल जाएबाक कोन क्रम अछि?” पुरोहित मुस्करा देलनि। “एहि सभामे अहाँ माला पहिरायब, ताहिसँ बेसी स्पष्ट की होएत?” अम्बा फेर पुछलीह, “जँ माला धरबाक पहिने कियो हमरा पकड़ि लए जाए?” पुरोहित उत्तर देबाक बदला बाहरक तयारीक बात कहए लगलाह। राजकुमारी बूझि गेलीह जे नियममे हुनकर चयनक उत्सव अछि, चयनक रक्षा करबाक प्रबन्ध नहि।

दोपहरक धूपमे स्वयंवर-सभा भरल। अम्बिकाक नजरि पैघ-पैघ ध्वजपर पड़ैत छल, अम्बालिका सैनिकसभक शस्त्र गनैत छलीह; अम्बा कक्षमे शाल्वक आसन खोजैत छलीह। ओ पहुँचल छलाह। हुनकर दृष्टि मिलल, मुदा दुनू उठबाक पहिने शंखक स्वर बदलि गेल। हस्तिनापुरक ध्वजवला रथ दुआरपर रुकल। भीष्म सभाक बीच प्रवेश कएलनि। ओ अपन लेल वधू नहि, विचित्रवीर्य लेल तीनू राजकुमारीक हाथ माँगबाक उद्देश्य घोषित कएलनि। विरोध उठल। किछु राजा वयसक बात कहि हँसलाह, किछु

प्रतिज्ञाक उपहास कएलनि। भीष्मक मुखपर कठोरता आयल, मुदा अम्बा जे सुनि रहल छलीह, ताहिमे हुनकर अपन सहमतिक एको शब्द नहि छल।

युद्धक शोरमे सभाक व्यवस्था टूटि गेल। पहरेदारक पाँति चूर भेल, रथक घोड़ासभ धक्का दऽ आगाँ बढ़ल, भीष्म तीनू बहिनकेँ रथमे बैसौलनि। अम्बालिका डरि कऽ अम्बिकाक बाँहि पकड़ि लेने छलीह। अम्बा रथक परदा हटबैत कहलीह, “हम एतए अपन निर्णय देबाक लेल आयल छी, हस्तिनापुरक निर्णय सुनबाक लेल नहि।” भीष्म उत्तर देलनि, “अहाँसभक संग राजघरानाक सम्मान रहत।” अम्बा कहलीह, “सम्मान जँ हमर बात सुनबाक अवसर नहि दैत अछि तँ ओ ककर सम्मान?” सारथि लगाम कसि रहल छल। पहिया घूमल आ राजमहलक फूलक गन्ध धूलिमे पड़ि गेल।

शाल्व अपन सैनिकसभक संग पाछाँ लागलाह। मैदानक सँकर मोड़पर हुनका भीष्मसँ युद्ध भेल। धनुकक डोरीक टङ्कार आ घोड़ाक हाँफ एक-दोसरमे मिलि गेल। शाल्वक शस्त्र टूटल, रथक एक पहिया धँसल। भीष्म हुनकर प्राण नहि लेलनि; युद्ध जीतलाक बाद आगाँ बढ़ि गेलाह। अम्बा परदाक भीतर सँ ओहि हारक दृश्य देखलनि। हुनका शाल्वक चोटक चिन्ता छल, मुदा अपन जीवनक निर्णय पर एहन युद्धक अधिकार के दए सकैत अछि—ई प्रश्न अधिक तीख भेल। ओ सोचलीह जे जे पुरुष अपन शौर्यसँ रथ रोकि सकैत अछि, ओ सुनबाक लेल एक क्षण रुकि सेहो सकैत छल।

हस्तिनापुरमे तीनू बहिन लेल राजकीय गृह तैयार छल। सुवासित पानि, नव वस्त्र आ स्वागतक स्त्रीसभ छल। अम्बा वस्त्र स्वीकार करैत एक कात राखि देलीह। राजमाताक दरबारमे पहुँचि ओ सत्यवतीसँ एकान्त बात माँगलीह। “हम शाल्वकेँ अपने मनसँ वरण कएने छलहुँ,” ओ कहलीह। “काशीक सभामे जे भेल, ओ हमर विवाह नहि छल। हमरा ओतए जाएबाक अनुमति चाही।” सत्यवती किछु क्षण हुनका देखैत रहलीह। अपन विवाहसँ पहिने नदीक घाटपर जे प्रश्न ओ पूछने छलीह, ओकर किछु स्वर एतए फेर सुनाइ पड़ल। ओ कहलीह, “अहाँक बात भीष्मक सामने कहल जाएत। अहाँक अनुपस्थितिमे अहाँक जीवनक फैसला नहि होएत।”

भीष्म सुनि तुरन्त ठाढ़ भेलाह। “हम ई तथ्य नहि जनैत छलहुँ,” ओ कहलनि। अम्बा उत्तर देलीह, “नहि जनब सेहो निर्णयमे एकटा कमी अछि। हमरा तीनू बहिनमे सँ कोना

देखल गेल?” भीष्मक लग प्रतिज्ञा, उत्तराधिकार आ राजकीय आवश्यकता सभक शब्द छल; अम्बाक प्रश्न ओकरा एक क्षण रोकि देलक। ओ सभा लग गेलाह, पुरोहित आ रक्षक उपस्थित कएलनि आ कहने गेलाह जे अम्बा अपन पसन्दक राजाक लग जाएत छथि। हुनका संग यात्रा लेल सुरक्षित रथ आ स्त्री-सहायिका देल गेलीह। अम्बिका आ अम्बालिका दीदीकें आलिङ्गन कएलनि। अम्बालिका कानमे पुछलीह, “तोहर घर आब कतए?” अम्बा उत्तर नहि दऽ सकलीह, मुदा ओ सोचलीह जे घरक उत्तर एखनहुँ खोजबाक अछि।

शाल्वक नगर पहुँचला पर दरबान परिचय पुछलक। अम्बा अपन नाम कहलीह; दरबान पाछाँ हटि गेल, मुदा सभाक भीतर पहुँचबाक लेल प्रतीक्षा कराओल गेलीह। शाल्व घायल भुजा पट्टीसँ बान्हि बैसल छलाह। अम्बा हुनका देखिकऽ आगाँ बढ़लीह। “हम घुरि अएलहुँ,” ओ कहलीह। हुनकर स्वरमे राहत छल—एहन राहत जे युद्ध, यात्रा आ अपमानक बाद अपन पहिचान भेटला पर अबैत अछि। शाल्वक मुख कठोर रहल। “अहाँ भीष्मक रथपर गेल छलीह,” ओ कहलनि। अम्बा पुछलीह, “हम गेल छलहुँ, की हमरा लऽ जायल गेल?” शाल्व उत्तर देलनि, “सभ राजासभक सामने ओ हमरा हरौलनि।”

“अहाँक हार हमर सहमति कोना भऽ गेल?” अम्बा पुछलीह। शाल्व कुर्सीसँ उठि घुरलाह। ओ कहए लगलाह जे राजसभाक लोक की कहत, हुनकर कुलक प्रतिष्ठा कोना बचत, भीष्मक विजित राजकुमारीकें स्वीकार कएलापर हुनका कोन नामसँ बजाओल जाएत। अम्बा एक-एक बात सुनलीह। “जखन हम अहाँकें वरण कएने छलहुँ, तखन अहाँ हमरा व्यक्ति बुझने छलहुँ,” ओ कहलीह। “आब एक पुरुष दोसर पुरुषकें हरौलक, ताहिसँ हम विजित वस्तु भऽ गेलहुँ?” शाल्व अपन अपमानक दुख बयान कएलनि; अम्बा ओ दुखकें झूठ नहि कहलनि। मुदा ओ स्पष्ट देखैत छलीह जे शाल्व अपन पराजयक भार हुनकर शरीरपर राखए चाहैत छलाह।

शाल्व अन्तमे विवाहसँ अस्वीकार कएलनि। अम्बा हुनका एक बेर पुछलीह, “जँ भीष्म युद्ध नहि करैताह आ हम अपने डेगसँ एतए अबितहुँ, तँ अहाँ की करितहुँ?” शाल्व कहबाक प्रयास कएलनि जे पुरान बात भिन्न छल। अम्बा उत्तर देलीह, “तखन बदलल हम नहि छी। बदलल अछि अहाँक समाजक नजरि।” ओ दरबार छोड़ि देलीह। दुआरपर

सहायिका पुछलीह, “आब कतए जाएब?” अम्बा कहलीह, “पहिने ओहि ठाम जतए निर्णयक आरम्भ भेल।” रथ फेर हस्तिनापुर दिस मुड़ल; रास्ताक धूलि आब पहिने-जेकाँ चुभैत नहि छल, कारण दुखक भीतर प्रश्नक आकार निश्चित होए लागल छल।

सत्यवतीक समक्ष अम्बा शाल्वक उत्तर पूरा सुनौलीह। ओ किछु नहि छोड़लीह—प्रेमक पुरान वचन, शाल्वक हार, हुनकर अपमान आ अन्तिम अस्वीकार। विचित्रवीर्यकेँ सभा मे बजाओल गेल। अम्बा पुछलीह, “हमरा लऽ जएबाक कारण अहाँक विवाह कहल गेल छल। आब शाल्व अस्वीकार कएलनि। अहाँ हमरा की रूपमे देखैत छी?” विचित्रवीर्य असहज भेलाह। हुनका कहल गेल छल जे अम्बा शाल्वकेँ मन देलने छथि; ओ एहन विवाह नहि करब चाहैत छलाह जाहिमे हुनकर स्वीकार अम्बाक हारक दोसर नाम बनि जाए। “हम अहाँक इच्छाक विरुद्ध विवाह नहि करब,” ओ कहलनि। अम्बा उत्तर देलीह, “हम एखन विवाहक विनती नहि, अपन स्थिति स्पष्ट करबाक अवसर माँगि रहल छी।”

भीष्म कहने छलाह जे हुनकर प्रतिज्ञा अपरिवर्तनीय अछि। अम्बा हुनकासँ पुछलीह, “अहाँ हमरा स्वयंवरसँ लऽ अएलहुँ, शाल्वसँ युद्ध कएलहुँ आ फेर ओतए पठा देलहुँ। एहि तीन निर्णयमे अहाँक इच्छा काज कएलक। हमर जीवनक क्षति लेल कोन निर्णय बचल अछि?” भीष्म कहए लगलाह जे ओ अपन लेल विवाह नहि कऽ सकैत छथि। “हम अहाँसँ केवल विवाह नहि माँगि रहल छी,” अम्बा कहलीह। “हम पूछैत छी जे जकरा अहाँ अपन कुलक रक्षा कहलहुँ, ओकर जिम्मेदारी ककर? अहाँक वचनक बाहर हमर न्याय लेल कोनो बाट अछि?” भीष्म उत्तर खोजैत रहलाह; राजसभाक नियम लग स्पष्ट उपचार नहि छल।

राजपुरोहित किछु विधि सुझौलनि—ककरो आश्रय, ककरो संरक्षण, कोनो राजपरिवारक दान। अम्बा कहलनि, “भोजन आ आश्रयक धन्यवाद देब। मुदा दानसँ हमर आपत्तिक निर्णय नहि होएत।” सत्यवती सभाकेँ विराम देलीह। एकान्तमे अम्बाक लग बैसि पुछलीह, “तोहर अपन इच्छा एखन की अछि?” अम्बा बहुत काल चुप रहलापर कहलीह, “पहिने हम शाल्व संग जीवन चाहैत छलहुँ। आब हम चाहैत छी जे कियो हमर जीवनपर दाबी करए तँ ओकरा उत्तर देबए पड़ए। ओहि उत्तरक बिना हम दोसर विवाहक ओर नहि बढ़ब।” सत्यवती हुनका रोकलीह नहि। ओ यात्राक साधन आ राजसभामे देल

बयानक लिखित प्रति उपलब्ध कराओलनि; ई न्याय नहि छल, मुदा अम्बाक अपन स्वरकेँ फेर गुम होएबासँ रोकबाक छोट उपाय छल।

हस्तिनापुर छोड़लाक बाद अम्बा अनेक आश्रम आ राजद्वार पहुँचलि। कखनो हुनकर कथा राजघरानाक विवाद कहल गेल, कखनो प्रेममे असफल स्त्रीक हठ। एक आश्रममे वृद्ध तपस्विनी हुनका पुछलीह, “तोहर संग जे भेल ओकर पहिल दिन कोन?” अम्बा स्वयंवरक दिन बतौलीह। तपस्विनी फेर पुछलीह, “पहिने शाल्वसँ तोहर संवाद? ओ दिन सेहो लिख।” ओ कापड़पर तीन अलग गाँठ बान्हलीह—पहिल अपन पसन्द, दोसर बलपूर्वक लए जायल जाएब, तेसर शाल्वक अस्वीकार। “जँ ई तीनूकेँ एक घटना कहि देब,” तपस्विनी कहलीह, “तखन जकर गलती जतए अछि, से अदृश्य भऽ जाएत।” अम्बा ओहि गाँठवला पट्टा अपन संग रखि लेलनि।

एक राजा अम्बाक दुःख सुनलनि, मुदा भीष्मसँ विरोध करबाक साहस नहि कएलनि। दोसरक सभामे हुनका पुछल गेल जे ओ अपने शस्त्र किएक नहि उठबैत छथि। अम्बा कहलीह, “अहाँक सभामे शस्त्र उठएबाक शिक्षा स्त्रीकेँ के दैत अछि?” हँसी उठल, मुदा एक वृद्ध योद्धा चुप रहलाह। ओ अपन शिष्यकेँ कहलनि जे यात्रिणीक लेल रातिक सुरक्षित आश्रय दिअ। अम्बा देखलीह जे सहायता देनिहार कियो कियो अछि, मुदा ई सहायता सत्ता लग प्रश्न पहुँचबैत नहि। प्रतिदिनक यात्रा, भोजन आ अनजान ठाममे अपना नामक व्याख्या करब—एहि सभमे हुनकर आयु खर्च होइत रहल; न्यायालयक ओहि एकटा दिनक लेल सेहो वर्षसभ चाही।

हिमालयक पाददेशक आश्रममे हुनका अपन नाना होत्रवाहन भेटलाह। वृद्ध हुनकर चेहरा देखिकऽ पहिले स्वागत नहि, चोटक चिन्ता कएलनि। “अहाँ थाकल छी,” ओ कहलनि। अम्बा पुछलीह, “हम एतए राजकुमारी भऽ अएल छी, की नातिनी?” “एतए तोहर अपन नाम पर्याप्त अछि,” होत्रवाहन उत्तर देलनि। अगिला दिन ओ पूरा कथा सुनलनि आ कहलनि जे परशुराम भीष्मक गुरु मानल जाइत छथि; हुनकासँ सहायता माँगल जा सकैत अछि। अम्बा पूछलीह, “गुरु होएबाक कारणेँ हुनकर वचन हमर पक्षमे स्वतः न्यायपूर्ण होएत?” वृद्धक मुखपर लाजक हलुक छाया आयल। “नहि,” ओ

कहलनि, “मुदा ओ प्रश्न सुनबाक सामर्थ्य रखैत छथि। निर्णय तोहर हकमे होएत, एहन आश्वासन हम नहि दऽ सकैत छी।”

परशुराम अएलाह तँ अम्बा हुनका प्रणाम कएलनि, मुदा अपन कथा कहबाक समय सिर नहि झुकौलीह। ओ प्रथम शाल्वक संग अपन पसन्द, फेर स्वयंवरक विघटन, शाल्वक अस्वीकार आ भीष्मक प्रतिज्ञाक परिणाम सुनौलीह। परशुराम बीचमे पूछलनि, “तोहर अभिलाषा एखन शाल्वसँ विवाह अछि?” अम्बा कहलीह, “जकरा अपन अपमानक डर हमर इच्छासँ पैघ बुझाइत अछि, ओकरा विवाह लेल बाध्य कए हमरा की भेटत? हमरा चाही जे जकर काजसँ ई अन्याय शुरू भेल, ओकर उत्तरदायित्व स्वीकार होअए।” परशुराम कहलनि जे पहिने भीष्मकेँ समझाओताह। अम्बा फेर स्पष्ट कएलनि, “हमरा सुनल जाए; हमर नामपर कोनो एहन समझौता नहि होअए जाहिमे हमरा पछाति समाचार भेटय।”

भीष्म अपन पुरान गुरुकेँ प्रणाम करैत आएलाह। परशुराम हुनकासँ पुछलनि जे तीनू राजकुमारीकेँ स्वयंवरसँ किएक लऽ गेलाह आ अम्बाक इच्छाक जानकारी भेटलापर की उपाय कएलनि। भीष्म यात्रा आ शाल्वक लग सुरक्षित पठेबाक तथ्य कहलनि। “ओ घुरि अएलीह,” परशुराम कहलनि, “आ एकर कारण अहाँक युद्ध आ शाल्वक अस्वीकार दुनू अछि।” भीष्म कहने गेलाह जे जीवन-प्रतिज्ञा नहि तोड़ि सकैत छथि। परशुराम उत्तर देलनि, “प्रतिज्ञा पालनक सामर्थ्य मानैत छी; मुदा जकर अहाँ दुखक कारण बनलहुँ, ओकर प्रश्नकेँ केवल अपन प्रतिज्ञासँ समाप्त नहि कऽ सकैत छी।” भीष्मक आँखि एक पल लेल अम्बा दिस गेल; हुनकर चेहरापर क्रोध नहि, अटल निर्णयक थकान छल।

गुरु आ शिष्यक वार्ता विफल भेल। परशुराम युद्धक चुनौती देलनि, भीष्म शस्त्र उठौलनि। मैदानमे अम्बा दूर ठाढ़ छलीह। पहिल दिन दुनू धनुर्धरक वारसँ गाछक पात झड़ल; दोसर दिन घायल अश्व बदलल गेल; दिन बीतैत गेल, विजयक एको स्पष्ट संकेत नहि अएल। शिष्यसभ युद्धक वर्णन विजयक भाषा सँ करए चाहैत छलाह। अम्बा पुछलीह, “जतबा दिन दुर्गम शस्त्र चलत, ओतबा दिन हमर प्रश्न के लिखत?” एक तपस्वी हुनका जल देलक, ओ पट्टा खोलि तीनू गाँठ देखलीह। युद्ध पहिल घटनाकेँ मिटा नहि सकैत छल।

कतेको दिनक संघर्षक बाद गुरु—शिष्यक युद्ध रोकल गेल। किछु पुरान आख्यान दिव्य अस्त्र आ देववाणीसँ विरामक कथा कहैत अछि; अम्बा लेल तत्काल परिणाम एतेक छल जे भीष्म जीबित छलाह, हुनकर प्रतिज्ञा यथावत् छल, आ कियो हुनका जीवनक नव बाट नहि दऽ सकल। परशुराम अम्बासँ कहलनि जे अपन सामर्थ्यभर प्रयास कएलनि। अम्बा प्रणाम कएलनि। “अहाँ हमर बात सुनलहुँ, एहि लेल कृतज्ञ छी,” ओ कहलीह, “मुदा युद्ध नहि जीतल गेल कहि हमर प्रश्न समाप्त नहि भेल।” गुरु हुनका रोकबाक प्रयास नहि कएलनि। न्याय लेल देल आश्वासन आ न्याय भेटबाक बीचक दूरी ओतए फेर ठाढ़ छल।

ओ राति अम्बा आश्रमक बाहर नदीक बालुपर बैसलीह। पानि एकटा दाँतक आकारक पत्थर घिसैत जा रहल छल; छोट धार ओकर एक कातसँ निकसि दोसर कात पथ बनबैत छल। ओ अपना देहक थकान देखलीह, जनमभूमिक सम्झन कएलनि। एक दिन फूलक गन्ध बदलएबाक स्वतन्त्रता छल, ओहि दिन जीवनक वर चुनबाक अधिकारो छल—मुदा सभा ओहि अधिकारकें रक्षा नहि दऽ सकल। आबहिं शाल्वक दुआर नहि, हस्तिनापुरक महल नहि, परशुरामक रणभूमि नहि—कोनो एक ठाम हुनकर उत्तर शेष नहि छल। ओ पट्टाक तेसर गाँठ कसि लेलीह। जकरा समाज अपमानक एक राति बुझैत अछि, स्त्री ओकर खर्च पूरा आयु चुकबैत अछि।

एहि बीच विदेहपुरमे नैरा पुरान नाव-भाड़ाक पर्चीकें उज्जर कागदपर प्रतिलिपि करैत छलीह। मूल पर्चीक स्याही एक ठाम फैलल छल; लिखावट ‘मिथुआ’ पढ़बाक सम्भावना छल, मुदा दोसर व्यक्ति ‘मिथुआ’ देखैत छल। महेश कहलनि, “एके नामक तीन वाचन भए गेल। की लताकें ई सभ बताएब?” नैरा कहलीह, “तीन सम्भावित पाठ बताएब, मुदा एकोकें हुनकर बेटाक निश्चित नाम नहि कहब। नाव-भाड़ा देनिहारक उमेर आ यात्राक दिनक मूल प्रमाण एखन नहि।” तारा दोसर पारक जाँच-सूची रखलीह। “जकरा ई नाव सुनल जाइत अछि, ओकरा अपन कागद देखएबाक वा नहि देखएबाक अधिकार रहत,” ओ कहलीह।

लता निरीक्षण-कक्षमे अएलीह तँ हुनकर हाथमे मिथुनक पुरान कपड़ाक छोट गाँठ छल। ओ पुछलीह, “नाम पढ़निहार तीन लोक तीन तरह कहैत अछि; तकरामे हमर बेटा कतए?” नैरा कागद हुनका समक्ष रखलीह। “एखन कहि नहि सकैत छी। एहिमे नावक

एक खेपक भाड़ा सम्भव अछि। मूल खाता आ तिथि मिलत तखनहि हम आगाँ बढ़ब।” लता कहलीह, “मुदा नाम नहि मिलल कहि हमर खोज बन्द नहि करब।” “नहि,” नैरा उत्तर देलीह। लता फेर धीमे स्वरमे कहलीह, “आ ककरो दोसरक घरमे जे बच्चा अछि, ओकरा हमर दुखक आधारपर पकड़ि नहि आनब।” ओ स्वयं प्रतिकूल सम्भावना सुनबाक चुनाव कएलनि; सुनबाक अधिकार ओहि ठाम कागदमे दर्ज भेल।

तारा फाटक-परीक्षणक पत्रमे एकटा पाँति जोड़लीह—ककरो निजी खेत अथवा घरक विषयमे सामूहिक प्रतिनिधि बोललासँ सम्बन्धित व्यक्तिक सहमति अपने आप सिद्ध नहि मानल जाए। महेश पुछलनि, “पाँच शर्तक पाछाँ छठम शर्त?” तारा उत्तर देलीह, “पाँच शर्तें एही बातक अलग रूप अछि। नव संख्या नहि, प्रत्येक पन्नापर प्रभावित व्यक्तिक कहबाक ठाम चाही।” नैरा स्रोत-पर्यंक बन्द फाइलमे रखलीह। इतिहासक अम्बा आ विदेहपुरक लता एक-दोसरक साक्षी नहि छलीह; हुनकर जीवनक समय, अधिकार आ घाव भिन्न छल। मुदा कोनो व्यक्ति अनुपस्थित रहैत ओकर जीवनक अन्तिम अर्थ लिखि देब—एहि गलतीकँ नैरा अपन अभिलेखमे स्थान नहि देबाक निर्णय कएलनि।

अम्बा फेर यात्रापर निकललीह। ओ आश्रममे केवल परशुरामक युद्धक कथा सुनबैत नहि फिरलीह। जकरा भेटलीह, ओकरासँ पूछलीह जे राजकन्याक स्वतन्त्र चयनक अनुष्ठानमे सेनाक अधिकार कोना प्रवेश कएलक; जखन शाल्व हुनका अस्वीकार कएलनि, हुनका निर्णय देबाक संस्था किएक नहि छल। किछु स्त्री हुनका भोजन देलीह, किछु वृद्ध हुनकर प्रश्नक उत्तर नहि दऽ सकलाह। ओ अपन अनुभवक शब्द बदलैत गेलीह —“प्रेममे पराजय” नहि, “अपन चयनसँ बेदखली”; “गुरुक युद्धमे हार” नहि, “अधूरा न्याय”। ई शब्द ओहि समयक सभ राजसभामे स्वीकृत नहि छल, मुदा ओ अपन कथा ककरो सुविधाजनक शीर्षकमे घटएबाक अस्वीकार कएने छलीह।

वर्षक ऋतु फेर बदलल। पर्वत-प्रदेशमे कठोर तपस्या करैत अम्बा शिवसँ एक उत्तर माँगलीह—ई अन्याय जे जीवनमे शुरू भेल, एक जीवनक सीमामे ओकर न्यायक बाट किएक बन्द अछि? पुरान आख्यान कहैत अछि जे शिव हुनका भविष्यक जन्ममे भीष्मक पतनक कारण होएबाक वर देलनि। अम्बा एहि वचनकँ सहज विजय नहि मानलीह; ओ बुझैत छलीह जे यदि न्याय लेल दोसर जीवनक काल चाही तँ पहिल जीवनक व्यवस्था

कतेक संकुचित छल। अग्निक सामने ठाढ़ होएबाक निर्णयक वर्णन लोकक स्मृतिमे प्रतिशोधक संक्षिप्त आख्यान बनि सकैत छल, मुदा हुनकर दिनसभ प्रेम, निर्वासन, प्रश्न, अस्वीकार, यात्रा आ न्याय-अन्वेषणसँ भरल छल।

अन्तिम साँझ ओ तीन गाँठवला पट्टा आश्रमक वृद्ध तपस्विनीकेँ देलीह। “पहिल गाँठ हमर इच्छा छल,” ओ कहलीह, “दोसर जे हमरा सुनल नहि गेल, तेसर जे सुनल गेलापर सेहो न्याय नहि भेटल। ककरो कहियौ नहि जे हम केवल ककरो मारएबाक लेल जीयलहुँ।” तपस्विनी पुछलीह, “अहाँ की चाहैत छी जे लोक सभसँ पहिने याद राखय?” अम्बा उत्तर देलीह, “जे हमर समय हमर छल। ओकरा सभ छीनि लेलनि; हम प्रश्न करबाक समय फेर बनौलहुँ।” अग्निक प्रकाश हुनकर मुखपर पड़ल। प्राचीन आख्यान ओहि प्रकाशमे एक जन्मक समाप्ति आ भविष्यक नव जन्मक सङ्केत देखैत अछि। मुदा जे कथा एतए समाप्त होइत अछि, ओ अम्बाक दीर्घ प्रश्नक कथा अछि; भविष्यक सन्तानक अपना जीवन आ निर्णयक कथा एखन कहबाक बाँकी छल।

अध्याय ६४ • शिखण्डीक निर्णय

पाञ्चालक शस्त्रागारमे भोरक पहिल आवाज लोहारक हथौड़ासँ उठल। छोट शिखण्डी दूटल बाणक अग्रभाग हाथमे लेने ठाढ़ छलाह। गुरु कहने छलाह जे बाण फेंकि दिअ, मुदा ओ पुछने रहला—“लोहेक धार बचल अछि तँ नव डाँड़ किएक नहि लगाओल जाए?” लोहार हुनका बगलमे बैसाकऽ देखौलक जे काठक तन्तु कतए फाटल अछि आ मरम्मतिक बाद बाणकेँ पहिले कम बलसँ परखब आवश्यक होइत अछि। गुरुक आँखि पैघ भेल—राजघरानाक सन्तानकेँ शस्त्रक उपयोग सिखाओल जाइत छल, ओकरा बनौनिहारक धैर्य नहि। शिखण्डी ओहि दिन पहिल बेर बुझलनि जे चोटक चिन्ह देखब, शस्त्र चलएबाक जतेकहि महत्त्वपूर्ण काज अछि।

द्रुपदक महलमे हुनकर जनमक विषयमे दू तरहक बात चलैत छल। राजाकेँ शिवक वरदानक कथा सुनाओल गेल छल जे पूर्वक एक स्त्रीक अपूर्ण न्यायसँ जुड़ल सन्तान हुनकर घर जन्म लेत। राजपरिवार बालिकाक जन्मक समाचारकेँ पुत्रक समाचार बनाकऽ बाहर पठौलक। द्रुपदक दृष्टिमे ई राज्य-उत्तराधिकार आ पुरान भय सम्हारबाक उपाय छल; महलक भीतर दाइक हाथमे नवजातक देह छल, जकरा राजकीय घोषणा बुझबाक आवश्यकता नहि छल। रानी कहलनि, “जाहि शिशुकेँ हम गोदमे लेने छी, ओकरा पहिने जीबाक अवसर चाही।” द्रुपद उत्तर देलनि, “जीबए लेल दरबारमे स्थान चाही।” दुनूक वाक्यमे अन्तर छल; वर्ष बीतैत-बीतैत ओहि अन्तरक भीतर शिखण्डीक बाल्यकाल बनल।

धनुर्विद्याक कक्षामे शिखण्डी हारल छलाह तँ दोसर शिष्य हँसिकऽ कहलक, “राजकुमार हारि गेलाह।” गुरु ताड़ना देलनि, मुदा शिखण्डी हुनका रोकलनि। “हारलहुँ तखन हम शस्त्र चढ़ाओल समय बामा हाथ ढीला छोड़ि देलहुँ। फेर चलाएब।” साँझमे रानी हुनकर हथेलीपर छाला देखलीह। “अहाँ चाहैत छी जे सभ अहाँकेँ राजकुमार कहय?” ओ पुछलीह। शिखण्डी उत्तर देलनि, “सभ के कहय, से हम कखनहुँ तय नहि कऽ सकलहुँ। मुदा हम कोन काज सिखब, से किछु तँ अपना हाथमे रहए।” रानी हुनकर हथेलीपर मरहम लगा देलीह। प्रश्नक उत्तर ओ राति पूर्ण नहि भेल, मुदा प्रश्न आब हुनकर अपन छल।

राजपुरोहित दिन गनैत छलाह, सेनापति हुनकर पराक्रमक गणना करैत छलाह, आ किछु मन्त्री पुरान वरदानसँ भविष्यक युद्धक तिथि मिलबैत छलाह। शिखण्डीकें ई सभ सुनबाक अवसर कम भेटैत छल, तखनहुँ एक साँझ ओ द्रुपदसँ पुछलनि, “यदि हमर जन्म कोनो पुरान अन्यायक उत्तर अछि तँ हमर अपन दिन कोन?” द्रुपद कहने रहला, “राजघरानाक दिन राजक लेल होइत अछि।” “राजक लेल रहब आ अपन इच्छा नहि रहब, ई एक्के बात अछि?” द्रुपद हुनका किछु काल देखैत रहलाह। ओ प्रश्न पूछनिहार सन्तानमे साहस देखलनि, मुदा ओहि साहसक स्वतन्त्र दिशा स्वीकार करब हुनका कठिन लागल।

विदेहपुरमे ओही भोर रुहानी आश्रयक बाहरी बरामदामे फाटल पर्दाक नाप लऽ रहल छलीह। विद्यालयक नाट्यदल भीष्मपर्वक एकटा दृश्य करए चाहैत छल; आयोजकक पर्चीपर लिखल छल—‘रुहानीक जीवन: आजुक शिखण्डी’। रुहानी कैची टेबुलपर रखलीह। “हमर जीवनक कथा अहाँ कखन सुनलहुँ?” ओ आयोजकसँ पुछलीह। युवक हड़बड़ा गेल। “दर्शकसभकें मिलैत उदाहरण चाही।” रुहानी पर्ची हुनका घुरबैत कहलीह, “अम्बाक कथा, शिखण्डीक कथा आ हमर जीवन तीनटा अलग जीवन अछि। तीनूकें एकटा सुगम नाम बनायब तँ तीनूमे सँ ककरो बात ठीकसँ नहि सुनब।” आयोजक नव शीर्षक अनबाक वचन दऽ गेल, मुदा रुहानी अभ्यासक अनुमति एखन नहि देलीह।

एतबे काल तारा निरीक्षणक एकटा फाइल लेने अएलीह। फाटकक सुरक्षा-काज लेल लगाओल अस्थायी पट्टी अस्पतालक पुरान पाँखमे प्रयुक्त काठ जेकाँ देखाइत छल, मुदा ललितक हस्ताक्षर बिना ओकर भार सहबाक प्रमाण नहि बनैत छल। तारा कहलीह, “एकटा आपूर्तिकर्ता स्वयं सामान देखए चाहैत छथि। हुनकर नाम राघव सिंह अछि।” रुहानी पुछलीह, “सामानक दामक प्रश्न अछि कि पाँखक सुरक्षाक?” “दुनू आ संभव अछि जे दुनूक कागद अलग हो,” तारा उत्तर देलीह। रुहानी मंचक नव पर्दाक नाप आ निरीक्षणक निमन्त्रण दू अलग पन्नामे रखलीह। ककरो कथाक अधिकार आ ककरो ठेकाक अधिकार एकहि तख्तीपर नहि लिखल जाए।

पाञ्चालमे शिखण्डीक विवाहक प्रस्ताव दशार्णक राजघरानासँ आयल। मंत्रीसभ एकरा बाहरी राजसभाक समक्ष उत्तराधिकार-घोषणाक पुष्टि मानैत छलाह। शिखण्डी विवाहक

पत्र देखिकऽ पहिने पूछलनि, “राजकुमारीकें हमर जीवनक विषयमे की कहल गेल?” द्रुपदक मुँह कठोर भेल। “जे राजकीय परिचय सभाकें ज्ञात अछि।” “ताहि परिचयक भीतर जतेक बात दबाओल गेल अछि, तकर भार हुनकर जीवनपर पड़त,” शिखण्डी कहलनि। रानी हतप्रभ रहलीह। समयपर विवाह रोकबाक साहस सभामे ककरो नहि छल; राजघरानाक भय फेर एक स्त्रीक निर्णयक स्थान घेरि लेलक।

दशार्णराजक पुत्री नव घरमे अएलीह तँ हुनका ऊँच महल, अस्त्रक कक्ष आ भव्य आयोजन देखाओल गेल। मुदा पति-पत्नीक एकान्त संवादमे प्रश्न बदलि गेल। “हम अहाँकें बुझए चाहैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा हमरा अपन घरमे जे बात नहि कहल गेल, तकर निर्णय हम कोना लेती?” शिखण्डी उत्तर देलनि, “हमर बारेमे बहुत निर्णय हमरा बिना कएल गेल अछि। ओ सभ हमर जीवनक वास्तविकता नहि मिटा सकल, मुदा अहाँसँ सत्य छपाओल गेल, ई अन्याय हम नकारि नहि सकैत छी।” राजकुमारीक मुँहपर भय, रोष आ निराशा एकसाथ छल। ओ अपन पिता लग सन्देश पठेबाक निर्णय लेलनि; शिखण्डी हुनका रोकलनि नहि।

सन्देश दशार्ण पहुँचल तँ हिरण्यवर्मा अपमानित अनुभव कएलनि। शस्त्र जुटए लागल, दूत आवागमन बढ़ल। द्रुपद दरबारमे उत्तराधिकारक रक्षा नामपर युद्धक तैयारीक आज्ञा दैत छलाह। शिखण्डीकें सेनाक एक अधिकारी कहलक, “राजपरिवारक गुप्त बात रहस्ये रहए तँ युद्ध नहि होइत।” शिखण्डी उत्तर देलनि, “रहस्यक भार जे नहि चुनलक, ओकरा किएक उठाबए देल जाए? राजकुमारीक आरोप सुनब दोष नहि।” रानी हुनका रातिमे बुझौलीह जे युद्धमे नगरक सामान्य परिवारसभक अन्न-पानि पहिने नष्ट होइत अछि। ओहि राति शिखण्डी राजमहलक द्वार छोड़ि बन दिस निकलि गेलाह। ओ केवल ककरो दण्डसँ बचए नहि, अपन निर्णय लेल राजसभाक कोलाहलसँ बाहर जाए चाहैत छलाह।

बनमे हुनका स्थूणाकर्ण नामक यक्ष भेटलाह। यक्षक आश्रयमे जलक माटिक पात्र, सूखल पात आ काठक एक छोट आसन छल। शिखण्डी अपन परिचय बतौने कहलनि, “हमरा देह आ हमर सामाजिक स्थानक बीचक अन्तरक कारण दू राज्य युद्ध कएए बढ़ि रहल अछि। मुदा हमर प्रश्नक उत्तर कोनो राजाकें नहि देबाक अछि।” स्थूणाकर्ण पुछलनि, “अहाँ हमरासँ की चाहैत छी?” शिखण्डी तत्क्षण उत्तर नहि देलनि। पहिने हुनका

ई स्पष्ट करए पड़ल जे कोनो दोसर जीवक देह, प्रतिष्ठा वा जीवनक अधिकार हुनका संकट मिटेबाक स्वतः साधन नहि अछि।

पुरान आख्यान एहि भेंटमे यक्ष आ शिखण्डीक स्त्री-पुरुष अवस्थाक विनिमयक वर्णन करैत अछि। स्थूणाकर्ण शिखण्डीक संकट सुनिकऽ एक सीमित काल लेल अपन पुरुषत्व हुनका देबाक स्वीकृति देलनि, आ शिखण्डीक जन्मकालक स्त्रीत्व अपन हिस्सामे लेलनि। शिखण्डी पुछलनि, “ई विनिमय अहाँक अपन इच्छा सँ अछि?” “हाँ,” यक्ष उत्तर देलनि, “मुदा समय पूरा भेलापर घुरि अएबाक वचन अहाँक रहत।” शिखण्डी ओहि वचनकेँ लिखित राजाज्ञा नहि, एक व्यक्तिसँ कएल उत्तरदायित्वक रूपमे स्वीकार कएलनि। यक्षक अपन जीवन सेहो एतय छल, जकरा कथासँ मेटाएब उचित नहि छल।

कथाक एक रूपमे कुबेर स्थूणाकर्णक बदला देह-स्थितिक समाचार पबि क्रुद्ध होइत छथि। हुनकर शापसँ विनिमय शिखण्डीक मृत्यु धरि स्थिर रहबाक बात कहल जाइत अछि। एहि वचनक मूल्य दूनू पक्ष लेल अलग छल। शिखण्डी अपन राजकीय जीवनमे लौटबाक बात पबैत छलाह; स्थूणाकर्ण अपन पहिने चाहल समयपर पुरान अवस्था घुरि नहि पबैत छलाह। शिखण्डी हुनका पुछलनि, “जखन हम चलि जाएब तखन अहाँक समाचार के लेत?” यक्ष हँसि नहि सकलाह। “जे वचन देलहुँ, ओकरा जे मनुष्य स्मरण राखय, ताहि सँ शुरुआत होएत।” शिखण्डी अपन एक सेवककेँ पछाति समाचार लेबाक भार नहि देलनि; स्वयं समय-समयपर घुरि अएबाक निश्चय कएलनि।

पाञ्चाल लौटला पर शिखण्डीक देहक विषयमे लोकसभक प्रश्न राजकीय परीक्षणक विषय बनल। किछु आख्यान कहैत अछि जे दशार्णराज अपन शङ्का दूर करबाक लेल गुप्त जाँच करौलनि; शिखण्डीकेँ एहि बातक क्रूरता बुझाइत छल जे विवाहक सत्य आ व्यक्तिक सहमतिक स्थान शरीरक जाँच लऽ लेलक। युद्धक तत्काल भय घटल, मुदा विवाह करनिहार राजकुमारीक पहिले भेल असहमतिक उत्तर भेटल, एहन नहि मानल जा सकैत छल। शिखण्डी एकान्तमे हुनकासँ कहलनि, “अहाँ घुरि जाय चाही तँ ओ निर्णय अहाँक रहत। हम राज्यक शान्तिक लेल अहाँक जीवन पर अधिकार नहि माँगब।” राजकुमारी किछु दिन अपना लोकक संग रहबाक निर्णय लेलनि। ओहि निर्णयकेँ राजदरबारक विजय-घोषणामे स्थान नहि भेटल।

राजकुमारी अपन मायकेसँ पठाओल पत्रमे केवल राजकीय अपमानक विवरण नहि देलीह। ओ लिखलीह जे हुनका नवा घरमे जे किछु अपन इच्छासँ चुनबाक अवसर छल, ताहिमे एकान्तक समय आ निर्णयक अधिकार सबसँ पहिने चाही। हिरण्यवर्मा पत्र पढ़िकऽ क्रुद्ध भेलाह—हुनका लग सैन्यदल छल, मुदा पुत्रीक अपन बातक उत्तर नहि। द्रुपद दू राजाक सन्धिक प्रस्ताव सुनलनि तँ शिखण्डी स्पष्ट कएलनि जे युद्ध रोकबाक सहमति पत्नीपर पति-पत्नीक जीवन निबाहबाक आदेश नहि भऽ सकैत अछि। रानी ओहि पत्रक नकल अपन कक्षमे रखलीह; सन्धिक लिखित इतिहासमे जकर नाम छूटि जाइत छल, ओकर स्वर एतय कम सँ कम बचल।

शिखण्डी फेर शस्त्रागार गेलाह। पहिल गुरु वृद्ध भऽ चुकल छलाह; लोहारक बेटा एखन हथौड़ा चलबैत छल। ओ एकटा बाणक अग्रभाग देखिकऽ पुछलक, “राजकुमार, पुरान मरम्मति याद अछि?” शिखण्डी कहने गेलाह, “एखन एकटा बात आर जनैत छी—जाहि शस्त्रक चोट आन लोक सहत, ओकर मूल्य लोहा बेचएवाला मात्र नहि गनत।” ओ शिष्यसभकेँ घायल अश्वक मरहम, युद्धक पानि आ रथ सँ हटाओल पहियाक हिसाब सेहो सिखएबाक आदेश देलनि। सैनिकसभकेँ हुनकर वीरताक चर्चा प्रिय छल; शिखण्डी स्वयं युद्धक पूर्वक जीवनक छोट-छोट काज नहि छोड़ए चाहैत छलाह।

विदेहपुरमे राघव सिंह अपन पुरान कामक गत्ताक डब्बा लऽ अस्पतालक बारहदरी लग पहुँचलाह। डब्बामे जंग लागल दू कब्जा, काठक एक नमूना आ तीन प्राप्ति-पर्ची छल। “ई हमर भतीजा लिखने हिसाब नहि,” ओ प्रारम्भमे स्पष्ट कएलनि, “हमर फर्मक माल पाबि गोदाममे रखबाक रसीद अछि।” अदिति एकटा पर्ची उठौलीह। ओहिमे ‘पुरान पाँख’ लिखल छल, मुदा कुन कमरामे कब्जा लगल, तकर उल्लेख नहि छल। राघव कहने गेलाह, “सामान पहुँचलाक रसीद अछि; सही जगह लगल कि नहि, ओहि बातक प्रमाण एहि कागदमे नहि।” हुनकर एहि स्पष्टतासँ हुनक फर्मक पूरा भुगतान रोकिनाइ सम्भव छल, तखनहुँ ओ खाली पाँति स्वयं भरए तैयार नहि भेलाह।

ललित बरही नमूनाक काठ धरिकऽ देखलनि। “ई परतदार पुरान काठ अछि। सुखलामे एहि पर भार राखब आ बरखा मे राखब, दुनू एक नहि।” राघव जड़ि गेलाह। हुनका आपूर्तिकर्ता कहने छल जे काठ जलरोधक अछि। “जाहि नामसँ बेचने छी, तकर

प्रयोगशालाक प्रमाण देब,” ओ कहलनि, “मुदा एहि छोट टुकड़ासँ पूरा पुरान पाँखक छतक जाँच नहि होएत।” अदिति दू अलग नमूना-बैगपर स्रोत, तिथि आ प्राप्तकर्ताक हस्ताक्षर लिखबौलीह। ठेकाक विवादमे पहिल बेर राघव अपने व्यवसायिक लाभक संग एक अपूर्ण साक्ष्यक सीमा सेहो स्वीकार कएलनि।

राघवक संग एक नवयुवक छल जे गोदामक भारी बोरा ढोएबाक सामान्य काज करैत छल। ओ अस्पतालक गलियारा दिस देखिकऽ रुकल, मुदा राघव ओकर बात सभक समक्ष कहि देबाक आग्रह नहि कएलनि। “जँ अहाँ किछु अपने देखल अछि,” नैरा कहलीह, “पहिने समय आ ठाम अपने शब्दमे लिखू; जँ दोसरसँ सुनल अछि तँ ओ अलग कहल जाए।” युवक कहलक, “हम एखन घर गेलापर कागद देखब।” राघव उत्तर देलनि, “देखिह, जे याद नहि, ओहि ठाम अपन अनुमान नहि भरिह।” राघव स्वयं बहीक प्रति लेलनि; एहि छोट व्यवहारक नैतिक कीमत अगिला दिनसभमे बढ़एवाला छल।

दोपहरि रुहानी विद्यालयक अभ्यासस्थल गेलीह। नाटकक नव पर्चीपर आब लिखल छल—“शिखण्डी: अपन वचन, अपन युद्ध’। मुदा प्रशिक्षक फेर आग्रह कएलक जे रुहानी आरम्भमे मंचपर आबि कहथि—“हम एही पात्रक आधुनिक रूप छी।” रुहानी शान्त स्वरमे अस्वीकार कएलीह। “हम आधुनिक व्यक्ति छी, हमर अनुभव शिखण्डीक ऐतिहासिक अथवा पौराणिक देहक प्रमाण नहि। अहाँ हुनकर कथा हुनकर स्वरमे करिऔ। हम प्रदर्शनक भाषा आ बच्चासभक सहमति जाँचि सकैत छी।” मंचक एक बच्ची पुछलक, “तखन नायक हुनकर जन्मक बात नहि, हुनकर निर्णय होएत?” रुहानी कहलीह, “कथा कठिन भऽ सकैत अछि; मुदा ई प्रश्न नीक अछि।”

शिक्षक नाटकक अभ्यासमे युद्धक दृश्यक लेल काठक तलवार बाँटलक। किछु बच्चा भीष्मक भूमिका लेल तँ किछु शिखण्डीक भूमिका लेल आगाँ आएल। एक बालक कहलनि, “शिखण्डी तऽ केवल सामने ठाढ़ रहलाह; बाण अर्जुन चलौलनि।” बच्ची ओकरे उत्तर देलीह, “सामने ठाढ़ होएबाक निर्णय के लेने छल?” प्रशिक्षक बहस रोकए चाहलक, मुदा रुहानी कहलीह, “प्रश्न रहए दिअ। पात्रक युद्धमे ककर काज छल, से अलग-अलग लिखब।” एकटा कागदपर भूमिका, निर्णय आ परिणामक तीन स्तम्भ बनल; कोनो बच्चेकें अपन निजी पहिचान सार्वजनिक करबाक शर्त नहि राखल गेल।

कुरुक्षेत्रक युद्ध अबय धरि शिखण्डीक नाम अनेक आख्यानसँ घेरल जा चुकल छल। द्रुपदक घर पाण्डवसभक सहयोगी बनल; सेनाक गणनामे शिखण्डीक रथ, घोड़ा आ बाणक हिस्सा निर्धारित भेल। एक सभामे एक योद्धा फुसफुसाकऽ कहलक, “अम्बाक जन्मक प्रतिशोध पूर्ण करबाक समय आबि गेल।” शिखण्डी सुनि लेलक। “हमर पूर्वजन्मक कथा अहाँ सुनि सकैत छी,” ओ उत्तर देलनि, “मुदा एखन हमर सेनाक भोजन, घायल सैनिकक निकासी आ बाणक हिसाब हमर निर्णय अछि। हमरा केवल ककरो मृत्युक प्रतीक्षा करैत आकृति नहि बनाउ।” योद्धा लाजसँ चुप भऽ गेल।

अर्जुन युद्धपूर्व एक साँझ शिखण्डीक शिविर पहुँचलाह। दूनू धनुकक डोरीक तनन जाँचैत छलाह। अर्जुन कहलनि, “पितामह अहाँपर शस्त्र नहि उठेबाक वचन कएने छथि। एहन स्थिति सेनाक योजनामे निर्णायक अछि।” शिखण्डी उत्तर देलनि, “जँ हम एतए केवल पितामहक हाथ रोकबाक वस्तु छी तँ हमर अपन युद्धक अर्थ के लिखत?” अर्जुन धनुक राखि देलनि। “अहाँक रथ चलत, अहाँक शस्त्र चलत। हमर बाणक उत्तरदायित्व हमर रहत।” शिखण्डी कहने गेलाह, “आ हमर रथक घोड़ाक अथवा सैनिकक मृत्युक रणनीतिक युक्ति कहि छोट नहि करब।” दूनू सहमत भेलाह, मुदा संग्रामक दिन एहन सहमतिक परीक्षा होएबाक छल।

भीष्म अपने शिविरमे शिखण्डीक विषयमे सेनापतिसभसँ बात करैत छलाह। ओ जन्मक पुरान समाचारक आधारपर शिखण्डीपर अस्त्र नहि चलएबाक निर्णय फेर कहलनि। एक सेनाधिकारी पुछलक, “जँ ओ अहाँपर बाण चलौती तँ?” भीष्म उत्तर देलनि, “हम अपन निर्णय बदलि नहि सकैत छी।” हुनकर प्रतिज्ञासभक लम्बा जीवन एहिठाम फेर देखाइत छल। शिखण्डीक युद्धक क्षमता आ वर्तमान अस्तित्वकेँ भीष्मक अस्वीकार केवल पहिल जन्मक कथासँ नापि रहल छल—युद्धक निर्णयमे एहि दृष्टिक परिणाम गंभीर होएवाला छल।

दशम दिनक भोर धूलि आ शंखक स्वर एकसाथ उठल। शिखण्डी अपन रथक अगिला पट्टा स्वयं जाँचलनि; सारथिकेँ कहलनि जे घायल घोड़ा बदलबाक ठाम तय राखू। ओ भीष्मक दिशामे बढ़लाह। सेना ओहि गतिमे रास्ता खोललक जाहिसँ अर्जुनक रथ पाछाँ रहि सकय। शिखण्डीक धनुक खिंचल, बाण निकलल; भीष्म हुनकर विरुद्ध शस्त्र नहि

चलौलनि। पाछाँसँ अर्जुनक बाण युद्धक निर्णायक चोट दैत गेल। रथक धूरी टूटल, ध्वज झुकल, आ भीष्म धरतीपर गिरलाह—बाणसभ हुनकर देहकेँ भूमि सँ ऊपर रोकि रहल छल।

एक सैनिक तुरन्त घोषणा करए चाहलक—“शिखण्डी भीष्मकेँ मारि देलनि।” दोसर कहलनि, “अर्जुनक जीत लिखू।” शिखण्डी घोड़ा रोकि कहने गेलाह, “अहाँ सभ जे देखलहुँ, से लिखू। हम आगाँ बढ़लहुँ, शस्त्र चलौलहुँ, भीष्म हमरा पर शस्त्र नहि चलौलनि, अर्जुनक बाण हुनका गिरौलक। एक व्यक्तिक इतिहास दोसरक नाममे समाहित कऽ देब युद्धक सत्य नहि।” हुनकर स्वर विजयक शंखसँ बहुत छोट छल, मुदा सारथी ओहि वाक्यकेँ याद रखने रहल। शिखण्डी अपन घायल सैनिकक समाचार पहिले मँगौलनि; पितामहक पतनसँ कोनो बालकक पिता तुरन्त घर नहि घुरि सकैत छल।

भीष्म शरशय्यापर जीवित छलाह। शिखण्डी दूरसँ हुनका देखलनि। ओतए अम्बाक दीर्घ प्रश्नक स्मृति छल, शिखण्डीक अपन जीवनक दिन सेहो छल—लोहारक भट्टी, द्रुपदक भय, विवाहक संकट, स्थूणाकर्णक ऋण, रणभूमिक श्रम। भीष्मक पतनकेँ अम्बाक जीवनक सम्पूर्ण न्याय कहि देब ओ स्वीकार नहि करए चाहैत छलाह। ओ अपन सारथिकेँ कहलनि, “आजुक युद्धक लेखामे हमर रथक सब सैनिकक नाम रहय। ककरो नाम केवल भीष्मक पतनक संख्या नहि बनय।” शिखण्डी अपन शस्त्र रखलनि नहि; आगामी युद्ध एखन शेष छल, मुदा ओहि दिनक निर्णय ओ स्वयं लेने छलाह।

विदेहपुरमे साँझ ढलैत अदिति राघवक पर्चीपर तीन अलग पाँति लिखलीह—सामग्री पहुँचबाक तथ्य, लगाओल गेल स्थानक अनिश्चितता, आ सुरक्षा-परीक्षणक अभाव। राघव अपन फर्मक मुहर पहिल पाँतिपर लगौलनि, दोसरपर नहि। “हम गवाह नहि छी जे सामान ओहि कोठरीमे चढ़ल,” ओ कहलनि। महेश पुछलनि, “तखन पुरान पाँखक कागद के देखत?” अदिति उत्तर देलीह, “पहिने मरम्मतिक मूल आदेश, फेर रोगी हटेबाक सम्भावना आ उपकरणक सूची। खाली करबाक आदेश कागदमे सहज अछि; रोगी लेल प्रत्येक घड़ी कठिन हो सकैत अछि।” राघव नमूनाक डब्बा बन्द करैत कहने गेलाह, “हम अपन बेचलक प्रमाण देब, अस्पतालक बचेबाक झूठ वचन नहि।”

नैरा दोसर मेजपर ‘मिठुआ’ नामक धुँधल पर्ची राखि रहल छलीह। लताक बेटा मिथुनक विषयमे नवा प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि भेटल छल। ओ नामक तीन सम्भावित पाठ, भाड़ाक अपूर्ण तिथि आ सुनल बयान अलग-अलग मोहरबन्द रखलीह। रुहानी बाहरी बरामदामे नव नाटकक पर्ची पढ़ि रहल छलीह; हुनका अपन जीवनकेँ पुरान पात्रक प्रमाण बनएबाक डर एखन कम भेल छल। शिखण्डीक प्राचीन आख्यान आ एहि लोकसभक आधुनिक जीवन एक-दोसरक गवाही नहि छल। मुदा अपन निर्णयक नाम दोसरक हस्ताक्षरमे गुम नहि करब—ई काज अस्पतालक पंजी, आश्रयक चाभी आ युद्धक रथपर अलग-अलग कठिन रहल।

राति राघव घर लौटला तँ भतीजा गोदामक पुरान किताब खोलि बैसल छल। “काका, हम जे देखलहुँ ओकर तारीख एक पन्नामे अछि, मुदा दोसर पन्नाक हस्ताक्षर हमर नहि,” ओ कहलक। राघव ओकरा तुरन्त किछु लिखए नहि कहलनि। पहिने चश्मा साफ कए पन्नाक कोना देखलनि, जतए स्याहीक रंग बदलैत छल। “काल्हि मूल रजिस्टर लऽ चलब,” ओ कहने गेलाह। “जे अपने आँखिसँ देखल, से अपने कहिह। जकर डर अछि, ओकर सुरक्षाक बात पहिने तय करब।” ओ किताब बन्द कएलनि। अस्पतालक पुरान पाँखमे एखन रोगी छलाह; कागदक खाली पाँति भरबाक लेल हुनकर जीवनक समय रोकल नहि जा सकैत छल।

अध्याय ६५ • अस्पतालक पुरान पाँख

अस्पतालक पुरान पाँखमे छतक एकटा जोड़सँ पानि टपकि रहल छल। पहिने ओ बूँद छोट छल—इतबाक छोट जे सफाई करनिहार स्त्री ओकर नीचाँ खाली कटोरी राखि आगाँ बढ़ि गेलीह। आधा घड़ीमे कटोरीक तलपर पानिक आवज बदलि गेल। परिचारिका सलमा कटोरी हटाकऽ पीयर रङ्गक निशान लगा देलीह, जाहिसँ कियो अन्हारमे फिसलि नहि पड़य। खिड़कीक बाहर घाम छल। भीतर छत भीजनाइ देखिकऽ ककरो मुँहसँ बरखाक नाम नहि निकलल; पानि कोन पाइप अथवा पुरान जोड़सँ अबैत छल, से एखन ककरो ज्ञात नहि छल।

ओही कक्षमे शीतल देवी खाटपर आधा उठल बैसल छलीह। दहिना हाथमे उपचारक नली लगल छल, आ हुनकर बेटी कम्बल मोड़ि सिरहानीक कात रखि रहल छलीह। “एहि घरकेँ बन्द करताह?” बेटी पुछलक। सलमा उत्तर देलीह, “पहिने देखबाक अछि जे कतबा भाग असुरक्षित अछि। अहाँक मायकेँ खाली आँगनमे उठा कऽ नहि रखि देब।” शीतल अपन चप्पल खोजए लगलीह। “हम चलि सकैत छी,” ओ कहलीह। बेटी हुनकर पएर देखौलक—एक पएरमे सूजन छल। अपन बलपर चलबाक इच्छा आ सुरक्षित चलि सकबाक सामर्थ्य दुनू एक नहि छल।

अनिरुद्ध अस्पतालक पुरान पाँखक नक्शा खोलि तेसर बेर देखलनि। नक्सामे पश्चिमक सीढ़ी चौड़ी देखाओल छल, मुदा वर्षसभमे ओकर आधा हिस्सा औषधिक पेटी रखबाक कोठरी बनि गेल छल। “हमरा बारह खाट गनबाक अछि,” ओ सलमासँ कहलनि, “मुदा केवल खाट नहि। केकरा लगातार उपकरण चाही, केकरा उपचारक बीचमे रोकि नहि सकैत छी, केकरा दू कर्मचारी बिना नहि उठा सकब—ई सभ अलग सूची चाही।” एक कर्मचारी पूछलक, “तँ सभकेँ नवल पाँखमे आजे पठा दी?” अनिरुद्ध कहलनि, “नवल पाँखमे खाली कोठरी देखला सँ उपचारक स्थान अपने आप नहि बनैत।”

सलमा कक्षे-कक्ष घूमि सूची बनौलीह। दू रोगीकेँ साँसक नियमित सहायता चाही छल, एक वृद्धक चलैत उपचारमे नलीसहित निगरानी आवश्यक छल, आ एक बच्चाक माय राति भरि खाट लग रहबाक व्यवस्था माँगि रहल छलीह। ओ कोनो रोगीक नाम

सार्वजनिक निरीक्षण-पत्रमे नहि लिखलीह; चिकित्सकीय टोली लेल बन्द पन्नामे पूरा विवरण राखलनि। “जिनका सँ पुछि सकैत छी हुनकासँ पहिने पुछब,” ओ कहलनि। “असमर्थ रोगीक परिवार वा अधिकृत देखभालकर्ता लग जानकारी पहुँचैबाक बाट चाही। केवल पाँखक नाम बदललासँ रोगी नहि बचैत।”

अदिति निरीक्षणक बस्ता लेने अएलीह तँ छतक कटोरी आधा भरि गेल छल। ओ पहिने छत नहि, कटोरीक कात लिखल समय देखलीह। सलमा कहलीह, “साढ़े आठक बाद पहिल निशान। मुदा एही आधारपर रिसावक आरम्भक समय नहि कहि सकैत छी।” अदिति अपन पुरान प्रतिवेदन खोललीह। एहि पाँखक पाछाँक बन्द निकासीकें ओ किछु मास पहिने ‘सीमित मरम्मतिक दोष’ लिखने छलीह। तारा आ हीराक नाप-सूचीक संग ओकरा फेर पढ़लापर हुनका अपन शब्द छोट लगि रहल छल। “हम पहिल अनुमानकें काटि नहि मेटाएब,” ओ कहलीह। “ओहिपर नवा प्रमाणक तिथि जोड़ब।”

राघव सिंह अपन गत्ताक डब्बा आ भतीजाक गोदाम-बहीक बाहरी आवरण लेने अस्पताल पहुँचलाह। भतीजा पहिने सँ दरबज्जापर ठाढ़ छल। ओकर हाथमे काल्हि देखल दू पन्नाक नकल छल, मुदा ओ अपना आँखिसँ नहि देखल चीजपर हस्ताक्षर करबासँ डरैत छल। राघव हुनका एक कात लऽ गेलाह। “पहिने बुझि लिअ जे कोन कागद सार्वजनिक जाँचक अछि आ कोन निजी,” ओ कहलनि। “अहाँ जे दिन गोदाममे रहलहुँ, तकर समय याद राखू। जे देखल नहि, ओकरा हमर फर्मक हितमे देखल कहबाक आवश्यकता नहि।” युवक गहिर साँस लेलक; ओकर बात पूर्ण सुनबाक सुरक्षा तय होएब एखन बाँकी छल।

मीना साहक हाथमे आजु हथौड़ी नहि, तीन पुरान रसीद छल। धातुक जोड़क कारखानासँ ओ अपन बहिनकें भोजनक समयपर दोकान देखबाक जिम्मा दऽ निकलल छलीह। अस्पतालक चालानमे दू धातुक पात्र, सीप-चूनक एक नमूना आ ‘अनिर्दिष्ट मरम्मतिक टुकड़ा’ लिखल छल। पहिले हुनकर मरम्मतिक पर्चीपर तेसर निशानकें तेसर पात्र बुझि हल्ला उठल छल; मूल प्रारूप भेटलापर ओ मजदूरीक कर-खाना सिद्ध भेल। मुदा चारि वस्तुक चालान एखनहुँ छल। “हम दूटा पात्र अपने हाथसँ जोड़क बाद लौटौने

रही,” मीना कहलीह, “तेसर-चारिमक उपयोगक गवाही हमरा नामपर कियो नहि लिखय।”

अदिति हुनकर दू रसीद आ अस्पतालक प्राप्ति-मोहर एक्के मेजपर रखलीह। पहिल कागदमे मीना दू पात्र अस्पतालक वाहककेँ देबाक समय लिखने छलीह; दोसर कागदमे गोदामक मुहर छल; तेसर कागदमे ‘काम समाप्त’ शब्दक नीचाँ अधिकारीक हस्ताक्षर छल, मुदा कोन कोठरीमे काम भेल तकर खाना रिक्त। “प्राप्त वस्तु, उपयोगक स्वीकृति आ कामक सुरक्षित सम्पन्नता तीन अलग अवस्था थिक,” मीना कहलीह। अदिति ओहि बातकेँ अपन प्रतिवेदनक नव पाँति बनौलीह। रोगीक सामने ठाढ़ अनिरुद्ध पुछलनि, “जँ तेसर कागदक अर्थ गलत लेल गेल तँ हम पुरान पाँख सुरक्षित मानने रही?” उत्तर तुरन्त नहि भेटल।

गोमती मजदूर-समूहक पसीना लगल पुरान कपड़ाक थैली खोललीह। थैलीमे चूनक बोरा उठेबाक तिथि आ मजदूरीक टोकनक नकल छल। “हम सभ बोरा ई कोठरीक पाछाँ उतारने रही,” ओ कहलीह, “मुदा भीतर चून छल कि दोसर मिश्रण, हम परीक्षण नहि कएने रही। बोरा अस्पतालक भवनमे लगल कि गोदाममे रखल रहल, से सेहो नहि देखने रही।” एक कर्मचारी हुनकासँ कहलनि जे बोरा भारी छल तँ निश्चित नव मरम्मत भेल होएत। गोमती प्रतिवाद कएलनि, “भारी होएब मजदूरक देह जानैत अछि। दीवारमे कोन मिश्रण चढ़ल, ई हमर पिठ्ठी नहि कहि सकैत अछि।”

ललित बरही लकड़ीक एकटा पुरान फट्टा लऽ अएलाह। अस्पतालक उतार-पट्टापर एही किसिमक काठ छल, जकरा हुनका बिना भार-परीक्षण प्रमाणित करबाक कहल गेल रहैक। ओ बोर्डपर उतरबाक चौड़ाइ नापलनि, फेर ईटक एकटा उखड़ल किनार देखौलनि। “ई पट्टा कपड़ाक हलुक हाथगाड़ी लेल बनल होएत,” ओ कहलनि, “मुदा अस्पतालक भारी खाट, नली आ दू कर्मचारीक भार एक्के बाटसँ लऽ जाएब अलग प्रश्न अछि। हम आँखिसँ देखिकऽ प्रमाणपत्र नहि देब।” ठेका हाथसँ जेबाक हुनकर पुरान दुख आजुओ छल; तइयो ओ अपन हस्ताक्षरक मूल्य फट्टाक दामसँ अलग राखलनि।

अनिरुद्ध टोलीक संग पुरान सीढ़ीक वास्तविक निकासी आजमए गेलाह। खाली खाट घुमेलापर ओकर अगिला पहिया दीवारक कोनामे अटकैत छल। कर्मचारी जे घड़ी खोएने

रहला तकर समय सलमा लिखलनि। अनिरुद्ध कहलनि, “खाली खाट अटकल। रोगी, उपकरण आ चिन्तित परिवारक संग ई बाट आओर कठिन होएत। एहि प्रदर्शनकेँ रोगी हटौने बराबर नहि लिखू।” दोसर बाटक दरबज्जा खोलल गेल, मुदा ओहि दिशामे धुलाईक पानीक निकासक ऊपरक जमीन भीजल छल। पानि जतेक देखाइत छल, ओकर स्रोत ततेक स्पष्ट नहि।

उर्मिला रजक पुरान पाँखक पाछाँक धुलाई-घेरमे गट्टर उतारि रहल छलीह। घाटसँ अस्पताल धरि कपड़ा उठेबाक समय आ आपूर्ति-कक्षक प्राप्ति-समयक अन्तर पहिने सँ हुनकर पंजीमे छल। आइ अस्पतालक कर्मचारियेँ कहलक जे मरम्मतिक कारण धुलाईक थैली पुरान निकासक कात नहि राखी। “तखन कतेक दूर घूमि अनब?” उर्मिला पुछलीह। “रोगीक कपड़ा सुरक्षित पहुँचेबाक नियम हम मानब, मुदा अतिरिक्त बाटक समय आ मजदूरी लिखल जाए।” सलमा थैलीक प्रकार देखिकऽ सुरक्षित अस्थायी ठाम चिह्नित कएलनि। विशेष सावधानीवला कपड़ाक निजी चिह्न बन्द थैलीमे रहल।

धुलाईक छोट नाली, हाथ धोएबाक पानि, छतसँ टपकल बूँद आ पुरान पाँखक बाहरी गड्ढामे रुकल पानि चारि दिशा सँ अबैत देखाइत छल। अदिति चारि स्रोतक नाप आ नमूना अलग रखबाक आदेश देलीह। एक कर्मचारी कहलक जे सीप-चूनक पुरान दीवार पानि पीबि लेलक, तें सभ समस्या ओहीसँ भेल। मीना बुझौलीह, “सीपसँ चून बनेबाक पुरान कथा हमर बापसँ सुनल अछि। एहि भीजल चूर्णक आजुक गुण आ अस्पतालक निर्माणक दोष कहबाक लेल पदार्थ-परीक्षण चाही। लोकक स्मृति पद्धतिक नाम दैत अछि, प्रमाणित क्षमता नहि।” अदिति स्वतंत्र प्रयोगशालाक जाँचक आवेदनपर हस्ताक्षर कएलनि।

बाहर बरामदामे कंचन अपन माय जमुना देवीकेँ दवाइ देखेबाक आयल छलीह। जमुना पुरान पाँखक चर्चा सुनि कहलीह, “हमर प्राण जे दिन बचल, एहि अस्पतालक सब काज बेकार नहि छल। मुदा जे भीत आब चुड़ रहल अछि, ओकर हिसाब चाही।” एक कर्मचारी सहायतादाताक तख्ती देखेबाक प्रयास केलक। जमुना माथ हिला देलीह। “धन्यवाद देबाक लेल हम काल्हियो तैयार रही; आइ शीतलक खाट कोना जेत से पुछू।” कंचन मायकेँ भोजन देलीह। रोगी बचबाक कथा आ मरम्मतिक दोषक जाँच एक दोसरकेँ रद्द नहि करैत छल।

शीतलक बेटी दोपहर धरि खाली खाट देखलाक बाद अधीर भेलीह। “सब कागदक विचार होइत रहत, आ मायक खाट एतहि?” अनिरुद्ध हुनका एक कोठरी देखेबाक लेल संग लेलनि। नवल पाँखक ओहि कोठरीमे खाट छल, मुदा शीतलक उपचारक लेल चाही उपकरणक स्थान एखन तैयार नहि छल। बेटी पुछलीह, “तखन सुरक्षित ठामक अर्थ की?” “जतए इलाज टूटए नहि,” अनिरुद्ध कहलनि। “हम टोलीक संग उचित व्यवस्था देखैत छी। अहाँक मायक सहमति आ निगरानीक विषयमे आजे निर्णय लिखब।” बेटी पहिल बेर अस्पतालक ओरसँ निश्चित प्रश्नक लिखित उत्तर पबएवाली छल।

नगरक बैठकमे कियो प्रस्ताव रखलक जे पुरान पाँखक दरबज्जापर ताला लगा दिअ आ सूचना लिखि दिअ—‘सभ रोगी स्थानान्तरित’। अदिति कहलीह, “सूचनापर लिखलासँ रोगी स्थानान्तरित नहि भऽ जाइत।” अनिरुद्ध बोर्डपर तीन खाना बनौलनि—अभी सुरक्षित भागमे रहि सकनिहार, प्रशिक्षित टोली आ व्यवस्था मिलिते हटाए जोग, तथा तत्काल जोखिमक कारण प्राथमिकता पाबनिहार। प्रत्येक नाम चिकित्सकीय बन्द सूचीमे छल; सार्वजनिक पन्नामे केवल संख्या आ आवश्यक व्यवस्था। “ई योजना दुर्घटना घटलाक बादक माफी-पत्र नहि,” ओ जोड़लनि, “आजुक जिम्मेदारीक विभाजन अछि।”

राघव अपन गोदामक चारि वर्ष पुरान बिल देखौलनि। काठक पट्टा, धातुक कब्जा आ चूनक बोरा अलग-अलग तारीखपर आपूर्ति भेल छल। पहिने छपल सामूहिक सारणी एहि सभकेँ एक बेरक ‘पूर्ण मरम्मत’ मानि लेने छल। राघव कहलक, “हम माल बेचने छलहुँ। एतेक दिन बाद कियो पुरान बोरा फेर के खोललक आ सामान कतय लगौलक, हम बिना कागद नहि कहब।” मीना हुनकर कागदक एक तिथि अपने पर्चीसँ मिलौलीह। चारि वस्तुक चालानक तारीख, हिनकर काठक तिथि आ गोमतीक बोरा-उठान तीनू समान नहि छल। एहि अन्तरसँ चोरी सिद्ध नहि होइत छल; ‘एके काज’ लिखल शीर्षक कमजोर भऽ रहल छल।

अदिति पुरान लोहेक आलमारीक ताला खोलबाक अधिकार अस्पतालक अभिलेखाधिकारीसँ लिखित रूपमे लेलनि। भीतरी खाना मे ‘पश्चिम पाँख: अस्थायी मरम्मत’ लिखल धूसर फाइल छल। पन्ना पलटिते एकटा पतल पर्चा झरि पड़ल—फट्टाक उतार-पट्टा ठीक करबाक आदेश, ‘मौसमक बाद पुनः परीक्षण’ लिखल टिप्पणी

आ आधा मेटाएल हस्ताक्षर। ओकर पछिला पन्नामे पुनः परीक्षणक परिणाम नहि छल। अनिरुद्ध पुछलनि, “ई कागद कतेक दिनसँ एतय अछि?” अभिलेखाधिकारी कहलक जे फाइल पुरान गोदामसँ एतय आयल, मुदा के कहिया रखलक तकर हस्तान्तरण-पंजी देखबाक पड़त। अदिति पर्चा फेर ओही क्रममे रखि प्रमाणित प्रति बनबौलनि।

“मौसमक बाद जाँचब”—ललित ई शब्द धीरे पढ़लनि। “ई वाक्यक अर्थ ई नहि जे मौसम बाद जाँच भेल छल।” अनिरुद्ध ओहि पर्चीमे उल्लिखित पुरान काजक भाग देखलनि; शीतलक खाट ओहि ठाम नहि छल, मुदा सटले बरामदाक निकासक पट्टा ओही बाटमे पड़ैत छल। “पर्ची हमरा खाली करबाक कारण दैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा रोगी हटेबाक व्यावहारिक बाट अलग बनए पड़त।” अदिति अपन पहिल ‘छोट मरम्मतिक दोष’ वला प्रतिवेदनक प्रति ओही फाइलसँ बाहर निकाललीह। “हम गलतीक संशोधन करब,” ओ कहलीह, “नव परीक्षणक फल भेटबा धरि कारणक पूरा दावा नहि करब।”

तारा बिनौट कागदमे ‘मौसम’ शब्द देखिकऽ अपन नाप-पंजी खोललीह। पुरान निकासक कात गाड़ल तीन चिह्मे सँ एक गोदामक नव बढ़ल दीवारक भीतर पड़ि गेल छल। हीरा सहनीक मापमे बाहाक बरखाक बाट आ सूखाक बाटक अलग चौड़ाइ आयल छल। तारा कहलीह, “पाँखक दीवारमे दरारक कारणकें हम जलनिकासक एक्के पाँतिमे समेटि नहि देब। मुदा बाहरी पानि जँ अटकल तँ आकस्मिक निकासक समय बदलब—ई नाप अलग जाँचबाक अछि।” नगरक प्रतिनिधि पुछलक, “एतबा मे चलत?” “एखन जे नाप अछि, ओतेकहि चलत,” तारा कहलनि।

साँझक पहिने सलमा शीतलक बेटीकें दुआरक कात बजौलीह। नवल पाँखमे स्थान आ उपचारक उपकरणक व्यवस्था ठीक भेल छल; प्रशिक्षित दल रोगीकें नियोजित समयपर लऽ जाएत। शीतलसँ स्थानान्तरणक कारण समझाएल गेल, हुनकर प्रश्न सुनल गेल। ओ चप्पल अपन तकियाक नीचाँ नहि, बेटीकें देलीह। “कहाँ राखब ई?” बेटी पूछलक। “जतए फेर पहिरि सकी,” शीतल उत्तर देलीह। खाट धीरे उठल। सलमा किछु दूर संग चललीह; दोसर परिचारिकाकें जिम्मेदारी सँपैत पूरा हस्तान्तरण लिखलनि। एक रोगीक सुरक्षित हटेनाइ सभ रोगीक समस्या समाप्त भेलाक घोषणा नहि छल।

एहिबीच पाछाँक धोबिघरमे उर्मिलाकेँ देरि भेल छल। अस्थायी बाट लम्बा छल; सफा आ विशेष पृथक्करणवला थैली एक ठाम नहि जाए ताहि लेल कर्मचारी अलग गाड़ी चाहैत छलाह। उर्मिला बतौलीह जे एहि फेरबदलमे हुनकर दू अतिरिक्त चक्कर लगल अछि। एक प्रशासक कहलक, “आपदाक समय सब सहयोग करू।” उर्मिला थैलीक गाँठ कसि कहलीह, “सहयोग करैत छी। मुदा हमर समय तात्कालिक कारणसँ काजक बाहेर नहि भऽ गेल। जँ हमरा मजदूरी नहि भेटत तँ काल्हि कोन स्त्री एहि बाटपर अबए तैयार होएतीह?” सलमा आदेश-पत्रमे अतिरिक्त ढुलाईक घड़ी जोड़लीह।

मीना अस्पतालक पाछाँ लोहाक जालीपर हाथ नहि देलीह; धातु कतेक मजबूत अछि, जाँच बिना कहल नहि जा सकैत छल। ओ धोनाइघरक पुरान पीतलक नल देखलीह। ओहि नलक दामक पर्ची हुनकर नहि छल। बरसातमे अनावश्यक पानि बहलासँ रोगीक बाट पिच्छर होएत, तँ अनिरुद्ध अधिकृत मिस्त्रीसँ आपूर्ति बन्द करबाकेँ कहलनि। मीना अपन दू मरम्मतिक सही देयक पर्ची फेर प्रस्तुत कएलनि। “सामग्रीक जाँचमे हम गवाही देब,” ओ बजलीह, “मुदा हमरा दामकेँ रोकि कऽ सत्य बाहर नहि आएत।” अदिति भुगतान-विवादक अलग प्राप्ति-पत्र पर मीना सँ सही लेलनि।

उर्मिला जखन खाली थैली समेटि रहल छलीह, तखन हुनका घाटपर रुखसानासँ कएल पुरान बात याद अएल—एक दिन घाटपर बिना कपड़ा धोने केवल बैसब, आ रुखसाना सेहो ओहि दिन विश्राम करएतीह। आजु हुनकर हाथमे साबुनक गन्ध छल, आँखि सुन्न पड़ि रहल छल। सलमा पुछलीह, “किछु खाएलहुँ?” उर्मिला हँसि कहलीह, “पंजी खा कऽ जीवैत छी की?” रुखसानाक दुपहरक बचल भात एक कर्मचारी पहुँचा देलक। उर्मिला अपन हाथ धोएबाक लेल सुरक्षित नलक पानि मँगौलीह, आ थोड़े देरि चुपचाप खएलीह।

बाहरक रोगी-परिवारसभ छोट चबूतरापर बैसल छल। एक आदमी कहैत छल जे अस्पतालक पुरान पाँख आजि गिरि जाएत; दोसर कहैत छल जे सहायता-कोषक पैसा खाएल गेल अछि। नैरा हुनकासभक चिन्ताकेँ तुच्छ नहि कहलीह। ओ एकटा कागदपर आजुक पक्का तथ्य लिखलीह—रिसाव देखल गेल, एक अस्थायी मरम्मतिक मूल पर्चा भेटल, पुनः परीक्षणक प्रमाण एखन नहि, एक रोगीक नियोजित स्थानान्तरण भेल, शेषक

समीक्षा जारी। “ई सूची डरक उत्तर नहि अछि,” ओ कहलीह, “मुदा डरकें झूठ प्रमाण बना देबासँ सुरक्षा नहि बढ़त।”

महेश अस्पतालक पुरान द्वार-पंजीमे हाथगाड़ीक समय मिलाए लागलाह। उर्मिलाक भोरक गाड़ी, गोमतीक बरससभ पुरान बोरा, मीना साहक पात्र आ राघवक पट्टा—चारि खेपक विवरण अलग आयल। नैरा देखलीह जे एक दिनक घड़ीक असंगति आ वर्षसभ पहिने कएल मरम्मतिक प्रमाणकें एक्के रेखामे रखि देल गेलासँ अनावश्यक दोषारोपण बढ़ि सकैत अछि। ओ मूल दिनांकक क्रम तय कएलनि, आ ककरा निजी नामक आवश्यकता नहि अछि, तकर प्रतिलिपि ढाँपि देलीह। मिथुनक खोजक बन्द फाइल हुनकर दोसर थैलीमे छल; अस्पतालक सामानक कागदसँ ओकरा जोड़बाक कोनो नव प्रमाण नहि भेटल।

अनिरुद्ध देरि साँझ अपन टोलीक संग शेष खाटसभक स्थिति फेर जाँचलनि। जे वृद्धकें अधिक निगरानी चाही छल, हुनका लेल नवल पाँखमे उपकरण आ कर्मचारीक सहमति एखन पूरा नहि भेल छल; हुनका तुरन्त उठा देबाक आग्रह रोकल गेल। पुरान पाँखक ओहि हिस्सामे अस्थायी सुरक्षा आ निरन्तर निगरानी राखल गेल, आ आपातकालीन विकल्प निश्चित कएल गेल। अनिरुद्ध आदेशपर हस्ताक्षर करैत कहने गेलाह, “भवन खाली भेल लिखल सँ काज पूरा नहि। जकर जीवन इएह उपचारपर निर्भर अछि, ओकर समयक दाम कियो हमर सुविधा लेल नहि काटि सकैत।”

अदिति अपन संशोधित प्रतिवेदनमे लिखलीह जे पुरान पाँखक निर्माणइतिहास, जलनिकास आ सामग्रीक हिसाब परस्पर सम्बन्धित प्रश्न छथि, मुदा सम्बन्धक पूरा कारणक्रम एखन प्रमाणित नहि। जाँच लेल मूल मरम्मत-आदेश, उपयोग-स्थल, सामग्री-नमूना, बाहरी पानिक बाट आ रोगी-निकासीकें अलग मद बनाओल गेल। ओ अपना पहिले लिखल ‘सीमित दोष’क शब्द हटाओल नहि, तकर नीचाँ स्पष्ट संशोधन जोड़लीह—‘पुरान आँकलन अपूर्ण; विस्तृत जाँच आवश्यक।’ तारा प्रतिवेदन देखिकऽ कहलीह, “आब मजदूरक गवाही कागदक पाछाँ नहि, जाँचक भागमे अछि।” अदिति सहमत भेलीह, मुदा निष्कर्षक खाली ठाम खाली रखलीह।

मीनाकें राति घर घुरैत रस्ता पर ललित भेटलाह। “तेसर वस्तुक नाम भेटल?” ओ पुछलनि। “नहि,” मीना उत्तर देलीह, “मुदा एकटा पुरान पर्चा भेटल जे कहैत अछि कामक बाद फेर परखबाक छल। जे परखक परिणाम नहि भेटल, ओकरा सफल परख मानब गलत अछि।” ललित अपन खोएल ठेकाक पर्ची मोड़ि कहने गेलाह, “सहीक महत्व बनल रहय, तखन कखनो बकाया भेटत।” मीना कहलीह, “हमरो देय शेष अछि। मुदा आजु शीतल सुरक्षित जगह पहुँचल—ई बात हिसाबमे लिखब, बहिनकें बतायब।” दुनू घरक अलग बाट पकड़लनि।

पुरान पाँखक ओही कटोरी राति फेर खाली कएल गेल। पहिने कोन पाइप चुड़त छल तकर स्रोत तय नहि भेल छल; ओकर नीचाँ सुरक्षा-चिह्न आ निगरानी राखल गेल। शीतल नवल कोठरीमे बेटीकें कहलनि जे घरसँ आयल कम्बल खोली दिअ। बाहरी बरामदामे उर्मिलाक कपड़ाक गाड़ी अगिला दिनक सुरक्षित बाट लेल खड़ी छल। अदिति मरम्मतिक मूल पर्चाक प्रति बन्द फाइलमे राखलीह; अनिरुद्ध शेष रोगीसभक स्थानान्तरणक शर्त लिखलनि। नैरा दरबज्जासँ घुरैत एक बेर अस्पतालक भीतरक उजास देखलीह। एहि ठाम कर्तव्यक निर्णय एकटा हुकुमसँ नहि होएत—प्रत्येक खाट लग कियो अपन अगिला घड़ी जीबि रहल छल।

अध्याय ६६ • कृष्ण अर्जुनक विराम

भोरक साढ़े पाँच बजलापर अस्पतालक पुरान पाँखक बरामदामे लटकैत पीयर चेतावनी-पट्टी हवा सँ फड़फड़ा उठल। पट्टीक नीचाँ उर्मिलाक खाली कपड़ा-गाड़ी रुकल छल। ओ आगाँ बढ़ए चाहैत छलीह, मुदा निकासक कात गाड़ल बाँस हटेलासँ भीतरक भीजल फर्श पर पयर पड़ैत। चौकीदार एकटा आदेश-पन्ना देखौलक—‘तुरन्त पूर्ण खाली’। उर्मिला पुछलीह, “खाली के भेल? रोगी, कपड़ा कि जिम्मेदारी?” चौकीदार किछु नहि बाजल। पिछला राति अनिरुद्ध लिखने छलाह जे किछु रोगीक स्थानान्तरण प्रशिक्षित टोली भेटलापर होएत; एहि नव पन्नामे कोनो रोगीक नाम वा चिकित्सकीय व्यवस्था नहि छल।

नैरा पहुँचलथि तँ अदिति दरबज्जाक दहिना कात पुरान मरम्मत-पर्चाक प्रतिलिपि सम्हारि रहल छलीह। नगरक एक कर्मचारी चाहैत छल जे पन्ना पर जल्दी मुहर लागि जाए, जाहिसँ विवाद नहि बढ़य। “मुदा खतरा तँ अछि,” कर्मचारी कहलक। “खतरा अछि, तँ समय घटि रहल अछि,” नैरा उत्तर देलीह, “झूठ लिखि कऽ समय नहि बचत।” अनिरुद्ध भीतरसँ बजौलनि जे शीतल सुरक्षित कोठरीमे छथि, मुदा वृद्ध रोगी लेल निगरानीक कर्मचारी आ उपकरणक व्यवस्था एखन अपूर्ण अछि। चौकीदारक पन्ना ओहि चिकित्सा-निर्णयकें एके झटकामे मेटा दैत छल।

एहि असमञ्जसक बहुत पहिने, कुरुक्षेत्रमे युद्ध शुरू होएबाक भोर, अर्जुन अपन रथ दुनू सेनाक बीच रोकबाक आग्रह कएने छलाह। ई दृश्य भीष्मक पतनसँ पहिनुक छल; हुनकर शरशय्याक स्मृति जकरा मालूम अछि, तकरो लेल एतए समय उलटा घुरैत छल। शङ्ख बजि चुकल छल, मुदा पहिल बाण चलबाक पहिने एखन एकटा ठहराव बाकी छल। श्रीकृष्ण लगाम सम्हारलनि आ रथ ओहि ठाम ठाढ़ कएलनि जतए अर्जुन दूनू पक्षक चेहरा नीक जकाँ देखि सकथि।

अर्जुन पहिने ध्वज देखलनि; फेर ध्वजक नीचाँ ठाढ़ लोक। पितामह भीष्मक धनुक, गुरु द्रोणक मुख, परिचित भाइसभक कवच, आ ओहि युवा सैनिकसभक अधीर दृष्टि—जे कदाचित् पहिल बेर घरसँ एतेक दूर आयल छलाह। एक सारथी अपन रथक घोड़ाक मुँह

सहला रहल छल; अर्जुनकेँ ओ आदमीक नाम नहि ज्ञात छल, मुदा ई ज्ञान छल जे बाण चललापर ओहो बचबाक चेष्टा करत। अपन गांडीवक डोरी हुनका भारी बुझाए लागल। “जिनका संग जीब शिखलहुँ, हुनकापर अस्त्र उठाएब तँ जीत हमर जीवनमे कोन ठाम रहत?” ओ पुछलनि।

कृष्ण तुरन्त विजयक आश्वासन नहि देलनि। ओ अर्जुनक हाथ देखलनि—डोरी ढील पड़ल छल, पसिना छल। “अहाँ जे देखैत छी, तकरा सँ मुहँ मोड़ब आवश्यक नहि,” ओ कहलनि। अर्जुन तलवारक फलपर पड़ल भोरक उजास देखलनि आ क्रोधसँ कहलनि, “धर्मक नामपर रक्त बहत, आ बादमे सभ अपन-अपन विजयक कथा लिखत। हम एहन राज्य नहि चाहैत छी।” कृष्ण हुनका ओहि वचनमे उपस्थित करुणा सुनब देलनि; मुदा पुछलनि जे राज्य नहि चाहब आ अन्याय रोकबाक काज छोड़ब—दूनों एक्के निर्णय अछि की नहि।

अर्जुन प्रश्नकेँ व्यक्तिगत भय बुझाए देबाक विरोध कएलनि। “हम भीष्मसँ डरैत नहि छी। हुनकर प्रति प्रेम अछि। गुरुपर अस्त्र उठाएब हमर शिक्षा पर चोट करब जकाँ अछि। जँ हम जीति गेलहुँ तँ तिनकर घरक लोक हमरा कोना देखत?” कृष्ण उत्तर देलनि, “जकरा अहाँ प्रेम करैत छी, हुनकर उत्तरदायित्व सेहो अहाँक विचारमे रहबाक चाही। मुदा करुणा जँ अहाँकेँ सभ निर्णयसँ अलग कऽ दैत अछि, तँ जकरा बचए चाहैत छी, हुनकर भविष्य ककर हाथ देब?” एहि प्रश्नक कोनो सहज उत्तर अर्जुन लग नहि छल।

रथक पहिया नीचाँक माटिमे आधा धँसल छल। कृष्ण आत्मा आ देहक भेद, नश्वरता आ शोकक सीमा सम्बन्धी विचार रखलनि। अर्जुन सुनैत रहलाह, मुदा एक मृतदेहक पीड़ा मात्र बौद्धिक भेदसँ समाप्त होएत, एहन निष्कर्ष ओ स्वीकार नहि कएलनि। “जँ आत्माक विषयमे चिन्तन करब,” अर्जुन कहलनि, “तँ घायलक कराह कम सुनाइत अछि की?” कृष्ण बजलनि, “नहि। चिन्तनक उद्देश्य कराहकेँ असत्य कहब नहि, भय आ मोहक बीच अपन बुद्धि स्थिर करब अछि।” रथक लगसँ घोड़ा फुँफकारलक, आ वार्ता ओहि जीवित देहक साँससहित चलैत रहल।

कृष्ण कर्म आ ओकर फलपर आसक्तिक अन्तर बुझौलनि। “केवल इच्छित परिणाम पर अधिकारक कल्पना कएने रहब, तँ प्रतिकूल परिणाम देखिते काज छोड़ि देब,” ओ

कहलनि। अर्जुन पुछलनि, “तखन परिणामक जिम्मेदारी के लेत? हम बाण चलाबी आ कहि दी जे फल हमर नहि?” कृष्णक आँखि कठोर भेलीह। “कर्मक फलसँ आसक्ति छोड़बाक अर्थ परिणामक हिसाब मेटा देब नहि। जँ अहाँ अपने निर्णयक कर्ता छी तँ ओकर विवेक आ दुष्परिणामसँ कियो मुक्त नहि करैत।” अर्जुन एहि भेदकेँ अपन मनमे दोहरौलनि, मुदा निश्चितता एखन दूर छल।

दूनू सेनाक बीच ठाढ़ भऽ एहन लम्बा विचार करबाक अर्थ अर्जुनकेँ कखनो-कखनो असम्भव बुझाईत छल। दूर कौरव सेनामे ढाल ठकठाकाएबाक आवाज उठल। ओ पुछलनि, “एतेक लोक हमर निश्चयक प्रतीक्षा किएक करत? जँ युद्ध तारबाक बाट होइत?” कृष्ण दूतावासक असफल प्रयास, बाँटल अधिकारक प्रस्ताव आ अस्वीकारक इतिहास स्मरण करौलनि। मुदा ओ ई नहि कहलनि जे असफल वार्ताक बाद प्रत्येक युद्ध स्वतः न्यायसंगत भऽ जाइत अछि। अर्जुन अपन प्रश्न दोहरौलनि—कठिन कर्तव्यक नामपर कियो निजी प्रतिशोधकेँ सेहो उचित ठहरा सकैत अछि। एहि सम्भावनाकेँ कृष्ण अनसुना नहि कएलनि।

“हम अपन शत्रुक देहमे अपने राग देखैत छी,” अर्जुन कहलनि, “आ अपन पक्षक देहमे न्याय। कोन दृष्टि सँ ई भेद सुधरत?” कृष्ण बुद्धि, संयम आ स्वार्थक परीक्षा करबाक आग्रह कएलनि। “जे निर्णय लेल जाए, ओकरा पहिने देखू जे अहाँ ककर रक्षा करैत छी, ककर हानि पहुँचैत अछि, आ अहाँ अपन क्रोधकेँ नीति कहि रहल छी की नहि।” अर्जुन पुछलनि, “की युद्धक बीच ई सब सम्भव अछि?” “अपूर्ण मनुष्यक लेल पूर्ण निष्कलङ्कता सहज नहि,” कृष्ण उत्तर देलनि, “तइयो विचार छोड़ि देब कर्तव्य नहि।”

एहि भोर अर्जुन शिखण्डीकेँ सेहो देखलनि—एक सहयोगी योद्धा, जकर जीवन राजसभाक निर्णयसभसँ प्रभावित भेल छल। भीष्मक विरुद्ध हुनकर भूमिका आगाँ निर्णायक बनबाक छल, मुदा अर्जुनक मनमे एखने प्रश्न उठल जे शिखण्डीक अपन मत के सुनलक। ई विचार संकोच घटबैत नहि, बढ़बैत छल। कृष्ण शिखण्डीक प्रतिनिधि बनबाक दावा नहि कएलनि।

कृष्ण स्वधर्मक बात उठौलनि। अर्जुन कहने गोलाह, “जँ क्षत्रियधर्मक अर्थ केवल लड़ब होइत, तँ हम एतेक विचार किएक करितहुँ? एक नियम सभ परिस्थिति पर लगाओल

जाए तँ मनुष्यक विवेक कोन काजक?” कृष्ण कहलनि, “स्वभाव आ दायित्वकेँ बुझनाइ एकटा वस्त्र जकाँ भूमिका पहिरब नहि अछि। भूमिका जे दायित्व दैत अछि, ओकर परीक्षण करबाक शक्ति सेहो चाही।” अर्जुन एहिसँ युद्धक निर्णयक पूरा आश्वासन नहि पबि सकलाह। मुदा हुनका पहिल बेर बुझाएल जे कर्मक प्रश्नकेँ केवल हाथ उठाएब वा गिराएबमे समेटल नहि जा सकैत।

भीष्मक ध्वज हवा मे स्थिर नहि छल। अर्जुन आङुरसँ धनुकक डोरी छूलनि। “हम जँ उठब,” ओ कहलनि, “तँ अपन मोहमात्र नहि, अपन न्यायबोधक गलतीक सम्भावना सेहो संग लऽ उठब।” कृष्ण हुनकासँ प्रतिज्ञा नहि मँगलनि जे ओ कखनो प्रश्न नहि करता। ओ केवल एतबा कहलनि जे निष्क्रियता सेहो परिस्थितिमे परिणाम छोड़ैत अछि। अर्जुन रथक पाछाँ बैसल धनुर्धर नहि रहए चाहैत छलाह, मुदा पहिल बेर अपन धनुक उठेनाइ हुनका केवल वीरताक प्रतीक नहि, दूसराक जीवनसँ जुड़ल उत्तरदायित्व बुझाएल।

बादक युगमे एहि वार्ताकेँ कर्तव्य आ निष्काम कर्मक शिक्षा कहल गेल। मुदा युद्धक भोर अर्जुन पहिने मनुष्यसभक चेहरा देखलनि आ प्रश्न पुछलनि; कृष्ण हुनकर प्रश्नकेँ निषिद्ध नहि कएलनि। एहि प्राचीन संकटकेँ आधुनिक मारपीटक सीधा अनुमति-पत्र मानब कथाक परिस्थिति मेटा देब होइत।

विदेहपुरमे अस्पतालक दरबज्जाक समीप नैराकेँ एक युवक मोबाइलपर ओही युद्धक एक वाक्य देखबए लागल। “देखू, अपना काज लेल कठोर होअ पड़ैत अछि,” ओ कहलक। ओकर इशारा रोगीसभकेँ जोरजबरदस्ती बाहर निकालबाक प्रस्तावक समर्थनमे छल। नैरा फोन ओकर हाथसँ नहि छीनलीह। “कठोर होएबाक अधिकार आ बल प्रयोगक अनुमति एकटा बात नहि,” ओ कहलीह। “एतय कोन रोगीकेँ कतेक खतरा अछि, ओकर सुरक्षित विकल्प की अछि, आ कोन अधिकारक सीमामे निर्णय लेब—एहि प्रश्नक उत्तर चाही। श्लोकक टुकड़ा सँ अस्पतालक निर्देश नहि बनत।”

अनिरुद्ध बाहर अएलाह। “हम भीतरी हिस्सामे किछु रोगीकेँ रखबाक जोखिमकेँ लघु नहि कहैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा उपकरण काटि खाट धकेलि देब सेहो उपचार नहि।” नगरक कर्मचारी अपन पन्ना देखबैत कहलक जे जँ तुरन्त खाली करबामे बाधा देल जाए तँ ड्यूटीपर तैनात लोककेँ बल लगाबए पड़ि सकैत अछि। सलमा उत्तर देलीह,

“आपातकालीन निकासी लेल प्रशिक्षित टोली चाही, विरोधी पक्षक देहपर धक्का नहि।” कर्मचारीक मुहँ उतरि गेल; ओकरा सेहो डर छल जे कोनो दुर्घटनाक बाद ओकर नाम आदेशमे रहि जाएत।

एहि भीड़सँ किछु दूर एक युवती उज्जर कपड़ामे बन्द डिब्बा लऽ ठाढ़ छलीह। डिब्बापर रोगी-पट्टीक गिनती आ जमा करबाक तिथि लिखल छल। हुनकर नाम देवी गोंड छल। ओ नर्सिंगक प्रशिक्षण लेबए लेल भोरसँ अस्पताल अएलीह; घरमे मायकेँ देखभालक आवश्यकता रहैत छल आ परिवार हुनकर रोज रोज बाहर जेबाक विरोध करैत छल। आजु हुनका प्रशिक्षकक देखरेखमे साफ सामग्री गनबाक काज देल गेल छल। मुदा तैनाती-पंजीमे हुनकर नाम नहि देखिकऽ चौकीदार हुनका भीतर जायबासँ रोकने छल।

देवी पंजीक कोना पर अपन प्रशिक्षण केन्द्रक मुहर देखौलीह। “ई हमर पहिल दिन अछि,” ओ कहलीह, “हम अकेले रोगीकेँ छूबि उपचार करबाक अधिकार नहि माँगैत छी। जे काज निरीक्षक बतौथिन, से लिखि कऽ सीखब।” सलमा डिब्बा गनि कऽ ओकर सामग्री प्राप्तिक रसीद कएलनि। प्रशिक्षक देरिसँ पहुँचलाह तँ देवी ओहि समयकेँ ‘स्वयंसेवा’ लिखि देबाक आग्रह मानब अस्वीकार कएलनि। “प्रशिक्षणक समय अलग लिखू,” ओ कहलीह, “आ जँ अस्पताल हमरा अतिरिक्त ढुलाई देत तँ तकर श्रम अलग।” हुनकर स्वर धीमा छल, मुदा वाक्य स्पष्ट।

नैरा देवी सँ घरक बात पुछलीह नहि, मुदा सलमा हुनकर प्रशिक्षणक कागद देखैत कहलीह, “एतय साँझ धरि ठहरबामे असुविधा तँ नहि?” देवी थोड़े ठहरलीह। “मायकेँ दवाइ देबाक समय अछि। भाइ कहैत अछि जे घरक काज छोड़ि पढ़ाइ किएक। हम चाहैत छी जे ओ एक घड़ी मायक संग बैसय, जाहिसँ हम प्रशिक्षण पूरा कऽ सकी।” सलमा पुछलीह, “एहि काजक निर्णय अपने करैत छी?” देवी उत्तर देलीह, “हाँ, मुदा घरक झगड़ा आजु एहि बरामदामे नहि सुलझत।” ओ कागद सम्हारि अपन कामक ठाम गेलीह।

भीतर दहिना कोठरीमे एक वृद्ध रोगी अपन खाटपर आधा उठि गेल छलाह। बाहरक धक्काधुक्कीक आवाज सुनि ओ पुछैत छलाह जे हुनका अस्पतालसँ निकालि देल जाएत की। अनिरुद्ध हुनका बुझौलनि जे जखन तक प्रशिक्षित टोली आ आवश्यक उपकरणक स्थान तैयार नहि होएत, तखन तक उपचार बिनु सुरक्षित विकल्पक समाप्त नहि कएल

जाएत। देवी सलमाक देखरेखमे सामग्रीक गणना करैत छलीह। वृद्धक परिवारक एक सदस्य हुनका पुछलक, “अहाँ डॉक्टर छी?” देवी माथ हिला देलीह। “प्रशिक्षणमे छी। उपचारक प्रश्न सलमा दीदी आ डॉक्टरसँ पुछू।” एहि छोट स्पष्टतासँ परिवार गलत भरोसापर निर्णय लेबासँ बचल।

बाहर तारा जलनिकासक नापपुस्तिका लऽ अएलीह। ओहि पन्नामे अस्पतालक पाछाँ बरखाक पानि रुकबाक दू भिन्न स्तर दर्ज छल। नगरक कर्मचारी चाहैत छल जे ओ तुरंत प्रमाणित कऽ दैथ जे बाहरी रिसावक कारण पुरान पाँख खतरनाक भेल। तारा कहलनि, “हम बाहरी पानिक गहिराइ नापने छी; भीतक भीतरक बल आ पाइपक दोषक प्रमाण देबाक अधिकार हमरा लग नहि। जँ हमर नाप कम पड़ैत अछि, फेर नापू; जे नहि नापने छी, से लिखि नहि देब।” अदिति एहि कथनकेँ अलग तकनीकी टिप्पणीक रूपमे जोड़लीह।

बरामदाक एक कात कियो पत्थर उठौलक; दोसर लोक आदेश-पन्ना जरेबाक बात करैत छल। नैरा युवक लग गेलीह। “एहि पटरीपर रोगी लऽ जाएबाक अछि। अहाँ पत्थर फेकब तँ ककर नुकसान पहिने होएत?” युवकक हाथ ढील भेल। “तखन हम की करी? ई लोक सुनैत नहि।” “हम आदेशक मूल प्रति माँगब, सुरक्षित विकल्प लिखाएब आ अहाँक आपत्ति दर्ज करब। मुदा हिंसा नहि।” युवक पत्थर फर्शपर राखि देलक।

बैठक लेल अस्पतालक पुरान औषधि-भण्डारक खाली मेज चुनल गेल। नैरा तीन पन्ना अलग रखलीह—दृश्य जोखिमक अभिलेख, रोगी-स्थानान्तरणक चिकित्सकीय सूची, आ आदेश देनिहार अधिकारीक अधिकार। “हम ई तीनूकेँ एक्के मुहर सँ सत्य नहि करब,” ओ कहलीह। अदिति अस्थायी मरम्मत-पर्चा देखौलीह जाहिमे मौसमक बाद पुनः परीक्षण लिखल छल, मुदा परीक्षण पूरा भेलाक प्रमाण नहि भेटल। अनिरुद्ध शेष रोगीक आवश्यकता लिखलनि। नगरक कर्मचारी पहिल बेर मानलक जे ओकर ‘पूर्ण खाली’ आदेशक भाषा वास्तविक व्यवस्थासँ मेल नहि खाइत।

आदेश फेर लिखल गेल—जे हिस्सा तत्काल जोखिममे अछि तकर प्रवेश सीमित; आवश्यक चिकित्सा सुविधा सुनिश्चित करैत चरणबद्ध स्थानान्तरण; प्रशिक्षित देखरेख; परिवारकेँ कारणक सूचना; आपत्ति लेल नामित अधिकारी। कर्मचारी ‘बलपूर्वक’ शब्द

हटाबए चाहैत नहि छल, मुदा अनिरुद्ध कहलनि जे आपातकालीन जीवनरक्षाक प्रक्रिया आ विरोध दमनक सामान्य आदेश एक्के शब्दमे नहि रहि सकैत। आखिर ओ अनुच्छेद काटल गेल आ सुरक्षा-नियमनक अलग अधिकार-पत्र माँगबाक निर्णय भेल। अस्पताल रातोरात सुरक्षित घोषित नहि भेल; तथापि कागदक झूठमुठ पूर्णतासँ बचि गेल।

देवीक कामक रसीद तैयार होइत सलमा हुनका सामने गिनती फेर दोहरौलीह—बारह साफ पट्टीक पैकेट, दू सील बन्द डिब्बा, आ तीन घण्टा निरीक्षण-आधारित अभ्यास। “एतबा काजक प्रशिक्षण-प्रमाण लिखि देब,” सलमा कहलीह, “मुदा अतिरिक्त ढुलाईक लेल भुगतान स्वीकृति अलग चाही।” देवी रसीदक प्रति रखलीह। ओहि प्रतिमे सामानक प्राप्ति आ हुनकर हस्ताक्षरक समय अलग-अलग छल। “काल्हि कियो हमर नामसँ दवाइ बाँटल कहत,” देवी बजलीह, “तँ ई कागद बताओत जे हम की कएने छलहुँ आ की नहि।” नैरा हुनकर पंजीक स्पष्टताकेँ पसिनामे भीजल विद्या कहि अपन भीतर याद रखलीह।

दोपहरक बाद देवीक भाइ अस्पताल पहुँचल। “माय अकेले छथि,” ओ कहलक, “अहाँ सभ एहि ठाम बड़का सेवा करैत छी, घरक सेवा के करत?” देवी ओकरा बरामदाक छाहरि दिस लऽ गेलीह। “हम घर छोड़ि नहि देने छी,” ओ उत्तर देलीह। “मुदा जँ हम प्रशिक्षण छोड़ि देब तँ अगिला वर्ष घरक दवाइक खर्च के उठाओत? मायकेँ आइ दू घड़ी अहाँक संग रहबाक चाही; काल्हिक दू घड़ी हम अपन भागक करब।” भाइ कहलक जे ओ एहि शर्तपर घरमे फेर बात करत। एकरासँ विवाद समाप्त नहि भेल, मुदा देवी नर्सिंग प्रशिक्षण छोड़बाक कागदपर हस्ताक्षर नहि कएलीह।

ओहि समय लता अपन मिथुनक खोजसम्बन्धी बन्द फाइलक समाचार लएब आयलीह। दरबज्जाक कोना मे तीन अलग पत्र छल—‘मिठुआ’ पढ़ाएबला पुरान नाव-नामपंजी, अपूर्ण तिथिक भाड़ा-पर्ची, आ एक वृद्धक सुनल बयान। नगरक कर्मचारी पुछलक जे ई तीनू मिला कऽ अस्पतालक निकट आओल गाड़ीक खोज चलाबी? नैरा कहलनि, “नामक पाठ एक बात, भाड़ा देबाक तिथि दोसर, आ सुनल आवाज तेसर। एहि तीनू सँ एके बालकक उपस्थिति एखन सिद्ध नहि।” लता पुछलीह, “तखन खोज कतय बढ़त?” नैरा उपलब्ध निश्चित समय-सूचनाक आधारपर नावघाटक अलग मूल पंजी माँगबाक लिखित आवेदन देखौलीह।

लता चाहैत छलीह जे सूचना दूर जाय, मुदा गलत आरोपसँ निर्दोष परिवार नहि धिरय। “मिथुन जँ हमरा सुनि सकैत हो,” ओ कहलीह, “तँ बुझय—हम ओकरा खोजैत छी, दोसरकें मारि कऽ नहि।” नैरा पूछलनि जे ई वाक्य सार्वजनिक करबाक अनुमति अछि? लता कहलनि, “खोजक आवश्यक विवरण दिअ, हमर निजी वाक्य नहि।” नैरा कागद बन्द कएलनि। कष्टक आवाजकें भाषण बना छापब सेहो हिंसक भऽ सकैत अछि।

साँझ उतरैत अस्पतालक भितरि कोठरीमे शीतल अपन बेटी सँ पूछलीह, “पुरान खाटपर जे बिछौना रहि गेल छल, से भेटल?” बेटी कहलीह जे उर्मिला सफा कऽ अलग पोटरीमे रखि देने छथि। शीतल अपन कम्बल फैलौलनि आ नव कोठरीक बाहरक गाछ देखलीह। भीतक जाँचक समाचार हुनका पूरा नहि बुझाईत छल, मुदा दरबज्जा लग लिखल हुनकर नाम, उपचारक समय आ बेटीकें प्रश्न पुछबाक अवसर वास्तविक सुरक्षा छल। अनिरुद्ध एहि नव कोठरीसँ पुरान पाँख दिस घुरलाह—ओहि ठाम शेष रोगीसभक निर्णय एखन प्रतीक्षामे छल।

तारा आ अदिति अस्पतालक पिछला बरामदामे अंतिम माप मिलौलनि। अदिति देखलीह जे मूल मरम्मत-पर्चाक आधा मेटाएल हस्ताक्षरक स्थान आ फेर लिखल आदेशक हस्ताक्षरक स्थान अलग छल। ई अन्तर जाँचब आवश्यक छल, मुदा नामक मिलानसँ हस्ताक्षर एक व्यक्तिक होयत, एहन निष्कर्ष नहि निकलैत। महेश दूनू कागदक प्रमाणित प्रति माँगबाक प्रक्रिया लिखलनि। नैरा कहलीह, “प्रत्यक्ष देखल कागद हमर पहिल सीमा अछि। समयक मिलानसँ अनुमान निकलत; समान अक्षरसँ पहिचानक सम्भावना। कियो एहि तीनूकें एक्के प्रमाण कहत तँ हम अपन असहमति दर्ज करब।”

राति घुरैत देवी अपन प्रशिक्षणक पर्ची सावधानीसँ कपड़ाक थैलीमे रखलीह। घरमे हुनकर माय खाटपर बैसि बाट जोहि रहल छलीह। भाइ किछु कहबासँ पहिने चूल्हापर पानि चढ़ा देलक। देवी मायकें आजुक काजक पूरा कथा नहि सुनौलीह; कहलनि, “हम कागदमे लिखौने छी जे कोन काज शिखलहुँ।” माय पुछलीह, “तोहर नाम सेहो अछि?” “अछि,” देवी उत्तर देलीह, “आ जे काज हमरा नहि आबैत, ओकरा साम्हने सेहो खाली ठाम अछि।” माय मुस्कुराइलीह, मुदा घरक अगिला दिनक देखभालक बाँट एखन तय होएबाक छल।

दूर घाट दिस सँ अन्तर दऽ लोहेक दू चोट सुनाइत छल। महेश कहलक जे कदाचित् नव फाटकक ताला बन्द भऽ रहल अछि। नैरा स्रोत देखल बिना ओकरा फाटकक आवाज नहि लिखलीह। “काल्हि ओतुक्का लोकसँ पुछब,” ओ कहलीह। महेश पुछलक, “आजु निर्णय की भेल?” नैरा नव आदेशक प्रति देखौलीह। “जोरसँ हटेबाक आदेश बदलल। सुरक्षित स्थानान्तरण जारी। दूनू अलग अछि।” आवाज फेर उठल; काल्हि पूछल जाएत जे कियो की सुनलक, की देखलक, आ की केवल सोचलक।

अध्याय ६७ • दूरक देखाइ

रेलचौकक चायदोकानमे भोरक पहिल केतली चढ़ल छल, मुदा फकीरा अपन गिलास एखन नहि उठौने छलाह। रातिक भीजल छड़ीक कपड़ा उतारि ओ ओकरा निचोड़लनि। कपड़ामे माटिक गन्ध छल; छड़ीक नोक पर पातर लोहेक कड़ी ढीली भऽ गेल छल। दुकानदारक बेटा हथौड़ी अनबाक बात कहलक। फकीरा सिर हिलौलनि—“आइ एहि आवाजक आवश्यकता नहि। लोक रातुक दू चोट सुनि पहिनहिसँ तीन कथा बना चुकल अछि।” लड़का पुछलक, “अहाँ तऽ ओहि दिस छलहुँ ने?” फकीरा उत्तर देलनि, “दिसमे रहब आ घटनाकें देखब, दूनू एक बात नहि।”

पाछाँक दिन नैरा अस्पतालसँ घुरैत दूर घाटक दिशासँ अन्तर दऽ लोहेक दू चोट सुनने छलीह। महेश तखन अन्दाज कएने छलाह जे नव फाटकक ताला बन्द भऽ रहल होएत। नैरा स्रोत देखल बिना ई बात दर्ज नहि कएने छलीह। आजु ओ अस्पतालक परिवर्तित आदेशक प्रति लऽ अदितिसँ भेटबाक लेल निकललीह तँ चायवला हुनका आवाज देलक, “जे बूढ़ सुनने छथि, हुनका कहल जा रहल छनि जे ओ देखनो छथि।” फकीरा माथ उठौलनि। “हम बूढ़ छी, मुदा हमर बयान बूढ़ नहि भेल अछि। ओहि बयानकें कियो बदलि देलक की?”

फकीराक झोलामे तह कएल एकटा पर्ची छल, जकर कातमे नील मुहरक आधा गोल छाप देखाइत छल। राति ओ अस्पतालक पाछाँक गलीसँ रेलचौक घुरैत छलाह। एक कर्मचारी हुनका कहने छल जे सुरक्षा-रजिस्टरमे आवाज सुनबाक बात दर्ज करा दिअ। फकीरा अपन समय कहने छलाह, जे सुनल से कहलनि, आ लग ठाढ़ लोकक नाम नहि जनबाक बातो स्पष्ट कएने छलाह। पर्ची भेटलापर ओ दोसर गाड़ी पकड़बाक लेल चलि गेल छलाह। आइ हुनका एकटा सार्वजनिक सूचना पढ़ि सुनाओल गेल—“गवाहक अनुसार दू व्यक्ति लोहेक फाटक तोड़ैत देखल गेल।” ई वाक्य हुनकर नहि छल।

नैरा पर्ची हाथमे लेबासँ पहिने अनुमति माँगलीह। फकीरा कहला, “एहि पर्चीक नम्बर लिखू, मुदा एकरा अपन जेबीमे मत राखू। हमर यात्रा-पासक मूल कागदो एक बेर खिड़कीपर रखल गेल, तँ घण्टाभर बाद घुरल।” नैरा संख्या, मुहर आ प्राप्तिक समय

अपन कापीमे उतारलनि। पर्चीमे केवल ‘शोर सम्बन्धी सूचना’ लिखल छल। जखन हुनका सूचना-पट्टपर प्रकाशित वाक्य पढ़ि सुनाओल गेल, फकीरा दू बेर दोहरौलनि—“दू व्यक्ति? देखल? हम नहि कहलहुँ।” नैरा एहि अस्वीकृतिक तारीख आ समय अलग लिखलीह।

“राति अहाँ कतए छलहुँ?” नैरा पूछलीह। फकीरा रेलचौकसँ पुरान पाँख धरि अपन बात गनलनि। “गलीमे तेसर मोड़पर टूटी ईंट छै। ओहि ठाम छड़ी अटकल, हम पयर सम्हारलहुँ। तखन दूरसँ पहिल टनकार आयल। कनेक अन्तर दऽ दोसर। हवा अस्पताल दिससँ अबैत छल, मुदा आवाज हवा सँ उलटा घुरिओ सकैत अछि। हम ककरो चेहरा नहि देखलहुँ, गाड़ीक पहिया नहि सुनलहुँ, आ लोहेक वस्तु कोन छल से नहि जनैत छी।” नैरा शब्द ‘दूर’क आगाँ प्रश्नचिह्न रखने छलीह—दूरीक ठीक नाप शेष छल।

“अहाँ के छूलहुँ?” नैरा पूछलीह। “गलीक देबाल, अपन छड़ी, आ मोड़क ओहि ढील ईंटकेँ। फाटक नहि,” फकीरा कहलनि। “छड़ीक लोहेक नोक गलीक पाथरमे टकराएल, तकर आवाज हम अपन हाथमे कम्पनसहित अनुभव कएलहुँ। दूरक दू टनकारमे ओहि छूअनक कम्पन नहि छल। तें हाथक अनुभवसँ फाटकक हालत हम कोना लिखाबी?” नैरा कापीमे तीन ठाम बनौलीह—कानसँ सुनल, हथेलीसँ अनुभवल, मनमे उठल अनुमान। एक्के पाँतिमे भरबाक प्रयासमे जे भेद मेटाएबला छल, ओ आब खुलि रहल छल।

दोपहरसँ पहिने फकीराकेँ स्टेशनक दुपहरिया गाड़ी पकड़बाक छल। ओ घड़ीक सूचना पुछलनि आ कहलनि जे गवाही लेल भोरसँ साँझ धरि हुनका बिसरि नहि राखल जाए। “हम यात्रीक पोटरी पहुँचा कऽ मेहनताना कमैत छी। हमर जीवन-खातामे ‘मृत’ लिखल छै, यात्रा-पास एखन बन्द अछि। एहि गलत प्रविष्टिक कारण हमरा पहिनहि बहुत काज छूटल। आब जे लोक हमर गवाही चाहैत अछि, से हमर कमाइक समयो लऽ लेत?” नैरा तत्काल बैठक राखबाक बदला दोपहरक बादक समय तय कएलीह। फकीरा स्वयं कहलनि जे कागदक गलती सुधारब आवश्यक अछि, मुदा गवाह बनबाक मूल्य हुनकर दैनिक भोजन नहि होअए।

अस्पतालक पाछाँक गलीक जाँच लेल अदिति, महेश आ सुरक्षा-प्रभारीक एक सहायक आएलाह। नैरा पहुँचैत कहलनि, “प्रभारीक नाम, काज आ समय कागदपर रहत। फकीरा

एकरासँ पहिने अपन पहुँचबाक शर्त कहताह।” फकीरा पुछलनि, “जतए मलबा राखल छै, ओतए छड़ी रखबाक सुरक्षित बाट अछि?” सहायक कहलक जे नहि, किनारपर ढील पत्थर अछि। तारा अगिला सुरक्षित पटरी देखौलीह; बिना हत्था खींचने ओ फकीराकेँ दूरी आ मोड़ बुझौलीह। फकीरा अपन गति सँ आगाँ बढ़लाह। नैरा ओहि क्षणमे जानलीह जे गवाहक सुरक्षित पहुँच जाँचक उपकार नहि, जाँचक आवश्यक शर्त अछि।

गलीक पहिल मोड़पर छोट नाली छल, जे अस्पतालक पाछाँक पुरान दवाखानासँ उतरैत। बरखाक पानि सड़ल पात संग जमल छल। अदिति देबाल लगक दरार देखबैत कहलीह, “ई दरारक पुरान फोटो अछि, मुदा वर्तमान गहिराइ फेर नापबाक अछि। गलीमे लोहेक आवाज सुनाइत रहला सँ दरार तखन बनल, एहन निष्कर्ष नहि।” सहायक कहलक, “जे राति धमाका भेल, ताही राति ई नुक्सान?” अदिति उत्तर देलीह, “धमाका शब्दक प्रमाण के देलक? आ दरारक पहिल तिथि के?” ई दू प्रश्न गलीमे उभड़ल पानिक संग ठाढ़ रहल।

फकीरा ओहि ईटक कात रुकलाह। “ई छल हमर पयरक ठाम।” तारा पयरसँ तकर दूरी नापि नोट कएलीह, मुदा फकीरा दूरीक अनुमानक प्रमाणित अंकपर हस्ताक्षर नहि कएलनि। “अहाँ सभक फीता नापल दूरी अछि; हमर स्मृतिमे अन्हार गलीक बाट,” ओ कहलनि। “दून् मिललापर नीक, नहि मिलल तँ हमर चाल बदलि कऽ ओहि नापमे फिट मत करू।” महेश अपन लिखल ‘अन्दाजन’ शब्दक नीचाँ रेखा खींचलनि।

सुरक्षा-सहायक एक लोहेक पटरीपर छड़ीसँ दू चोट मारि पूछलक, “एहने आवाज छल की?” फकीरा ठमकि गेलाह। आवाज एकदम कातसँ आयल छल; रातुक टनकारमे दूरी आ पाछाँक खालीपन छल। “ई नहि कहि सकैत छी। अहाँ आब जानि कऽ दू बेर मारलहुँ, तँ हम दू बेर सुनलहुँ। ओहि राति कोन वस्तु मारल गेल, कियो जानि कऽ मारलक कि ढील ढक्कन खसल—एखन प्रमाण नहि।” अदिति सहायककेँ रोकलीह। “प्रयोग करबाक अछि तँ वस्तुक प्रकार, दूरी, मौसम आ रिकॉर्ड सभ लिखब। गवाहक सामने अनियोजित आवाज उत्पन्न कऽ ‘ओही’ कहाएब जाँच नहि।”

अस्पतालक पिछला जंगला लग एकटा पुरान जल-निकासक लोहेक पट्टी हिलैत छल। पानि चढ़ला पर ओकरा काठक सहारेसँ दबाओल जाइत। राघव सिंहक सामग्री-चालानमे

एहन दू पट्टीक जिक्र छल, मुदा मीना साहक मरम्मति-पचामे दू धातुक पात्र अलग दर्ज छल। सहायक एहि सभकेँ तुरन्त जोड़ि कहलक, “तखन आवाज पट्टीक?” महेश ओकरा रोकेलनि—“चालानमे पट्टी लिखल छैक, तकर अर्थ ई नहि जे एहि गलीक पट्टी ओही खेपक। आ सुनल आवाज तकरा सँ भेल, से तेसर बात अछि।” फकीरा सहमतिक हलुक हँसी देलनि।

चौकीदारक घरक लग एक स्त्री लोटामे पानि भरि रहल छलीह। हुनका लग पहिने नैरा रोकलीह। स्त्री कहलनि जे राति लोहेक चोट ओहो सुनने छलीह, मुदा हुनकर आँगनमे झरना-जकाँ पानि टपकैत छल; तँ पहिल आवाज आ दोसरक बीच समय ठीक-ठीक नहि जनैत छथि। “हम बिछौनापर बच्चाकेँ सुतबैत रही,” ओ कहलीह, “ककरो दौड़ैत नहि देखलहुँ।” सहायक हुनकर नाम लिखबाक लेल आगाँ बढ़ल। स्त्री रोकलीह—“हमर काजक ठाम पूछब तँ बतायब, मुदा घरक नाम भीड़मे मत पढ़ब।” नैरा गवाही लेल सुरक्षित सम्पर्कक विकल्प देलीह।

एहि बीच रेलचौकपर फोनक एकटा सन्देश पहुँचल—‘अस्पतालपर हमला कएनिहारक नाम फकीरा देखलनि।’ सरिता एहि वाक्यकेँ पढ़िते फोन बन्द कएलीह। फकीरा दोपहरक काजसँ घुरि हुनकर घरक सामने बैसलाह तँ सरिता पुछलीह, “ताँ देखलहुँ?” “नहि,” फकीरा कहलनि। “मुदा लोक अपन जरूरतक चेहरा हमर आँखिपर रखैत अछि।” सरिता हुनका एक कटोरी दाल देलीह। “खाउ। तकर बाद जे कहलहुँ से फेर कहिह। दाल ककरो गवाही बदलबाक घूस नहि।” फकीरा हँसलाह, “दालमे नोन कम होएत तँ जरूर बयान बदलि देब।”

साँझक बैठकमे नगरक सहायक एकटा प्रारूप आनलक। पहिल वाक्य छल—“गवाह द्वारा संदिग्ध व्यक्तियों को देखा गया।” फकीरा हुनकर पढ़ैत आवाज रोकलनि। “पहिल पाँति काटू। हमर नामक आगाँ झूठ लिखल अछि।” सहायक कहलक, “फॉर्ममे देखल-गेल लिखल रहैत अछि, सुनल-गेलक अलग घर नहि।” फकीरा कहलनि, “तखन घर जोड़ू। नहि तँ खाली छोड़ू। पन्नाक कमी हमर गवाहीक कमी नहि।” बैठकमे बैसल दू लोक बेचैन भेल—उन्हका लग द्रुत निष्कर्ष आवश्यक बुझाईत छल। नैरा प्रारूपक फोटो नहि खींचलीह; मूल पन्नापर सुधारक प्रक्रिया लिखाएब अधिक जरूरी छल।

एक कर्मचारी धीमा स्वरमे फकीराकेँ कहलनि जे यात्रा-पासक पुरान मृत्यु-प्रविष्टिक सुधार अधिकारीक सहमतिपर निर्भर अछि; एतेक विवाद करब हुनका लेल नीक नहि। फकीरा बहुत देर चुप रहलाह। तखन पूछलनि, “हमर पासक निर्णयक अधिकार अहाँ लग अछि?” कर्मचारी कहलक, “हम सूचना देबामात्रक लोक छी।” “तखन हमर गवाहीक बदला सूचना मत बदलू। यात्रा-पास अलग सुनवाईमे अछि,” फकीरा उत्तर देलनि। ओ हलुक आवाजमे बजैत छलाह, मुदा पहिल बेर कर्मचारीक हाथ लिखबाक बीच रुकल। नैरा धमकीक शब्द यथासम्भव तटस्थ ढङ्गसँ दर्ज कएलीह; कोनो व्यक्तिक उद्देश्य बिना अतिरिक्त प्रमाण निश्चित नहि करबाक निर्णय लेलनि।

महेश पुरान मौखिक बयानक नकल माँगलनि। रजिस्टरक मूल पृष्ठमे फकीराक कहल बातक मात्र तीन शब्द देखाइत छल—‘राति, दू आवाज’। तकर बाद ककरो हाथसँ ‘दू आदमी, फाटक’ जोड़ल गेल छल। दुनू लिखावट अलग बुझाइत छल, मुदा लिखावटक अन्तर सँ अपने-आप छेड़छाड़क दोषी तय नहि भऽ सकैत। नैरा पुछलीह, “कखन आ ककर अधिकारसँ ई पाँति बढ़ल? मूल पृष्ठक फोटो, पंजी-क्रम आ काजक समय दियौ।” प्रभारी अगले दिन लिखित उत्तर देबाक बात कहलनि। फकीरा माँगलनि जे हुनका हस्ताक्षर करबाक पहिने पूरा पाठ पढ़ि सुनाओल जाए।

नव बयान लिखबाक लेल ओ चारि शीर्षक तय करौलनि। पहिल—‘सुनल’, जतए रातुक दू दूरस्थ टनकारक समय आ स्थान रहत। दोसर—‘छूल’, जतए गलीक ढील ईंट, देबाल आ छड़ीक नोकक अनुभव रहत। तेसर—‘दोसरसँ बादमे सुनल’, जतए गाड़ी भागबाक अफवाह आ प्रकाशित सूचना रहत। चौठ—‘अनुमान’, जतए सम्भावित लोहेक स्रोत लिखल रहत, मुदा ओकरा प्रमाण नहि कहल जाएत। नैरा पुछलीह, “अहाँ अपन आवाजमे ई चारू पूरा कहलहुँ, हम फेर पढ़ि सुनाबी?” फकीरा बजलाह, “जतेक पढ़ब, ओतेक ठहरि जाँचब। हमरा जल्दीमे साक्षी मत बनाउ।”

बयान लिखैत समय अस्पतालक बरामदामे अनिरुद्ध एक रोगीक स्ट्रेचर लऽ जा रहल छलाह। पुरान पाँखक बगलमे सुरक्षा-पट्टी एखन बान्हल छल; नब आदेशक अनुसार सुरक्षित स्थानान्तरण जारी छल। गाड़ीक लोहेक पहिया बिछल पटरीपर चढ़ल तँ दू छोट आवाज भेल। फकीरा चौकलाह, मुदा अगिला क्षणे मुस्कुरेलाह। “एहि ठाम दू आवाजक

स्रोत हमरा सामने अछि,” ओ कहलनि। अनिरुद्ध कहला, “आ समय अलग। अस्पतालक उपकरणक आवाज सुनि रातुक घटना तय नहि करू।” फकीरा सिर हिलौलनि—
अस्पताल चलि रहल छल; प्रत्येक टनकार कोनो अपराधक पाँति नहि छल।

लता ओहि साँझ खोजक नवल आवेदन लऽ अस्पताल आयलीह। गाड़ीक अफवाहमे हुनकर बेटाक नाम जोड़ल गेल अछि, ई सुनि ओ बेचैन छलीह। फकीरा स्वयं कहलनि, “हम गाड़ी नहि देखलहुँ, बच्चाक आवाज नहि सुनलहुँ। हमरा नामसँ जे लिखल अछि, तकरा मानि लऽ अहाँ कतहु नहि दौड़।” लता बहुत देर हुनकर मुखक दिस देखैत रहलि। “हमरा तऽ एकटा सही बाट चाही,” ओ कहलीह, “गलत बाटपर दौड़ि कऽ बच्चा कहाँ भेटत?” नैरा नाव-नामपंजीक अस्पष्ट ‘मिठुआ’, भाड़ाक अपूर्ण पर्ची आ वृद्धक सुनल नामकँ फेर अलग कएलनि। फकीराक रातुक आवाज एहि तीनूमे ककरो पहिचान प्रमाणित नहि करैत छल।

लता मुदा पुछलीह जे कियो हुनकर बेटाक खोजमे आवाज सुनल हो, तखन की सभ सूचना रोकि देल जाए? नैरा उत्तर देलीह, “नहि। सूचना सँग समय, स्रोत आ अनिश्चितता रहत। गलत निश्चितताकँ रोकब खोज रोकब नहि।” फकीरा अपन थैलीसँ चायवला देल दू कागदक टुकड़ा निकाललनि। एकमे काल्हिक गाड़ीक समय, दोसरमे आजुक। “समय बदलल, मुदा हुनका चाय बेचबाक काज बन्द नहि भेल,” ओ कहलनि। “अहाँक बेटाक खोजमे सेहो जे ठोस अंश अछि, तकरा सँ अगिला प्रश्न पूछू; हमर अन्दाजसँ दोषी मत बनाउ।” लताक हाथक काँप कनेक कम भेल।

सुरक्षा-प्रभारी चाहैत छल जे अदिति अस्थायी निष्कर्ष लिखि दैथि—लोहेक चोटक समयमे पुरान पाँखक जंगला क्षतिग्रस्त भेल। अदिति कहलनि, “ओहि समयक निश्चित माप हमरा लग नहि। हमर पुरान निरीक्षणमे छोट दरार दर्ज छल; मौसमक बाद फेर परीक्षणक निर्देश देल गेल, मुदा पूरा भेलाक प्रमाण नहि।” ओ तीनटा कागद अलग रखलीह—पुरान मरम्मत-पर्चा, वर्तमान दरारक तस्वीर आ नव श्रवण-गवाही। “अगिला निरीक्षणमे गोदामक जमीन आ जलनिकासक माप फेर करबाक अछि,” ओ कहलीह, “मुदा आजुक रातुक आवाज ओहि पुरान दरारक तिथि नहि बदलि सकैत।”

तारा बैठकसँ उठि अस्पतालक देबालक ओहि बाहरी पानिक निशान लग गेलीह। नापपुस्तिका देखिकऽ हुनका बुझाइल जे जे रेखा ओ पहिने बरखाक उच्चतम पानि मानने छलीह, ओ संभवतः किछु दिन पुरान चूनक लेपक किनार छल। “फेर जाँचब,” ओ कहलीह। “जे देखबामे साफ बुझाइत अछि, तकर पाछाँ बनबाक प्रक्रिया रहि सकैत अछि।” फकीरा सुनलनि आ कहलनि, “हमर कानक बेरमे सेहो सेहेन बात। दूरक आवाज साफ छल, कारण ओकर जकाँ साफ नहि।” दूनू एहि तुलनामे ठहरलाह; नैरा अलग-अलग जाँचक आवश्यकता दर्ज कएलीह।

अगिला दिन रजिस्टरक नकलक संग संशोधन-पन्ना आयल। पहिल नकल हटाओल नहि गेल; ओकरा लग जोड़ल गेल—‘पूर्व प्रकाशित विवरण गवाहक कथनसँ मेल नहि खाइत; दृश्य-गवाही सम्बन्धी भाग वापस।’ फकीराक वाक्य ‘दू व्यक्ति देखल’ रद्द भेल। ओ पुछलनि, “जँ मूल पन्ना गलत छल, तकरा फाड़ि दियौ?” महेश उत्तर देलनि, “नहि। मूल आ सुधार दुनू रहत, जाहिसँ गलतीक इतिहास देखल जा सकय।” फकीरा एक क्षण हँसलाह—“लोक हमर नाम मेटबामे तत्पर रहैत अछि, कागदक गलती मेटाबै लेल कहैत छथि तँ हुनका रोकब पड़ैत अछि।”

सुधारक प्रति स्वीकार करिते फकीरा दू बात लिखौलीह। पहिल, सार्वजनिक सूचना मे हुनकर निजी चलनक पूरा ठेकाना नहि छपय; केवल प्रासंगिक समय आ गलीक सामान्य वर्णन रहय। दोसर, जाँचमे फेर बोलबाक आवश्यकता भेला पर भोरक गाड़ी छोड़बाक आदेश नहि देल जाए; समय पहिने हुनकर सहमतिसँ तय होअय। सहायक कहलक, “जाँचक खर्चमे यात्राक व्यवस्था होएत।” फकीरा पुछलनि, “लिखित अछि?” सहायक अस्थायी भत्ता-पर्चा तैयार कएलक, मुदा भुगतानक स्वीकृति एखन शेष छल। फकीरा प्राप्तिक प्रति रखलनि—एखन दाम भेटल नहि, ई बातो स्पष्ट रहल।

घाटक दोसर कात सामान लादैत दू मजदूर फकीरासँ पुछलक जे ओ कोन धर्मक फकीर छथि। एहि प्रश्नक आदत हुनका पुरान छल। “हम फकीरा छी,” ओ उत्तर देलनि। “पंजीमे कियो ‘साई फकीर’, कियो ‘दीवान मदार’ लिखि दैत अछि। हुनकर लिखल शब्द हमर पूरा परिचय नहि। अहाँकेँ पोटरी पहुँचेबाक लोक चाही कि कथा सुनएबाक?” मजदूर हँसलाह आ पोटरीक दाम पुछलनि। फकीरा पहिले बाटक ऊँच-नीच जानि लेलनि, तकर

बाद दर कहलनि। आधा कमाइ आगू आधा काज पूरा भेलापर—एहि सामान्य शर्तपर दुनू राजी भेल।

माल उतारैत समय एक मजदूरक हाथसँ पीतरक कटोरी खसि पाथरपर दू बेर टकराएल। फकीरा आवाज सुनि माथ घुमौलनि। “एहिमे पहिल चोटक बाद जमीनपर घुमबाक झनझनाहट अछि,” ओ कहलनि। मजदूर कटोरी उठा कऽ देखौलक, एक कात दबि गेल छल। “अहाँ सुनिते चिन्हलहुँ?” ओ पुछलक। “नहि,” फकीरा कहलनि, “घुमबाक आवाज अनुमान देलक। कटोरी की छल, से अहाँ कहलहुँ। काल्हि हम कहब जे एक मजदूर कहलनि—कटोरी। सुनल आ कहल अपन-अपन ठाम।” मजदूरक बालक लग ठाढ़ छल; ओ खाली कटोरीकेँ उँगरीसँ बजा कऽ हँसि पड़ल।

फकीराक घरक पाछाँ साँझक समय एकटा छोट आमक गाछ छाहरि दैत छल। हुनकर पड़ोसी बच्ची रोज ओतए बइसि पाठ दोहरबैत छलीह। आइ बच्ची पूछलक, “अहाँक पास कखन खुलत?” फकीरा कहलनि, “जे कार्यालय बन्द कएने अछि, ओ खोलत; हम आवेदन छोड़ने नहि छी।” बच्ची फेर पूछलक, “जँ ककरो गलती सुधारि जाइत छै तँ सभ कठिनाइ समाप्त होएत?” फकीरा छड़ीक ढील नोक देखौलनि। “ई नोक हम अपने कसब; पासक काज कार्यालय करत; आ काल्हिक गाड़ीक बाट देखबाक काज अगिला दिनक। एकटा समस्या सुधरलापर जीवन फेर चलैत अछि, समाप्त नहि होइत।”

सरिता ओहि साँझ पुरान पात्रमे चाउर धोइत छलीह। नैरा हुनका बतौलीह जे फकीराक संशोधित बयान स्वीकार भेल अछि, मुदा हुनकर मृत्यु-प्रविष्टि एखन नहि सुधरल। सरिता पूछलीह, “एक्के आदमीक दू कागद; एकटा पर ओकर आवाज आब सच लिखल, दोसर पर ओ एखन मृत? एहन लेखा सँ की बचत?” नैरा उत्तर देलीह, “गलतीक दू स्रोत अछि। एक सुधारि देलासँ दोसर अपने नहि सुधरत।” सरिता पानि फेकि कहलीह, “तखन दोसरक दरबज्जो खोलबाक अछि। मुदा आइ फकीरा अपन भोजन कमाएल छथि, से बिसरि नहि जेबह।”

रातिमे नैरा मूल बयान, संशोधित पन्ना आ अदितिक अपूर्ण निरीक्षणक तीन प्रति अलग लिफाफामे रखलीह। कागदसभ एक्के टेबुलपर छल, मुदा एक-दोसराक प्रमाण नहि बनैत छल। अदिति फोनपर पुछलीह, “पुरान प्रतिवेदनक जे नकल हमरा भेटल अछि,

तकर तारीख फेर देखबाक अछि। अहाँक संशोधित गवाहीमे पहिल चोटक घड़ी लिखल अछि की?” नैरा कहलनि, “स्मृतिसँ बताओल समय अछि, घड़ी देखिकऽ नहि। ओकरा ओही नामसँ भेजब।” अदिति उत्तर देलीह जे अगिला दिन मूल चेतावनीक प्रति आ गोदामक जमीनक पुरान नक्शा एकठाम जाँचतीह।

ओहि राति फकीरा रेलचौकसँ घुरैत फेर अस्पतालक दिसक दूर आवाज सुनलनि। ई बेर एक नहि, अनेक छोट टनकार छल—सम्भवतः मरम्मतिक काम, सम्भवतः कोनो गाड़ीक बासन। ओ ठहरि रहलाह; छड़ीक नोक पाथरपर टिकौलनि; कने देर सुनलनि। फेर अपन बाट चलि गेलाह। हुनका एहि आवाजक स्रोत जानबाक इच्छा छल, मुदा राति भरि रुकि कऽ अन्दाजक पहरा देब हुनकर काज नहि। काल्हि चाही तँ ओ पूछताह; आइक कमाइक सिक्का, सुधरल बयानक प्रति आ अधखुलल यात्रा-अधिकारक आवेदन झोलामे अलग-अलग सुरक्षित छल।

अध्याय ६८ • चेतावनीक प्रति

अदितिक मेजपर पुरान फाइलक बन्धन खोलिते लाल सूतक एक छोट गाँठ टूटि गेल। ओ कागदक ऊपर हाथ नहि फेरलीह; पहिने टूटल सूतकेँ एक सफेद कागदपर रखलनि आ फाइलक भीतरक पन्ना गनलनि। ऊपर नगर-कार्यालयक मुहरवला नकल छल, बीचमे हुनकर अपन लिखावट, आ अन्तमे एक एहन प्रति जकर कातक शब्द काटि फेर लिखल गेल छल। खिड़की बाहर अस्पतालक पुरान पाँखक छतपर दू मजदूर बिना चढ़ने सीढ़ीक स्थान जाँचि रहल छलाह। अदिति घड़ी देखलीह। काल्हि फकीराक संशोधित गवाही भेटने छल; आइ हुनका बुझबाक छल जे कागदक पहिल चेतावनी केहन छल आ ओकरा बाद कतेक काज सचमुच भेल।

नैरा आयलीह तँ अदिति तीन पन्ना सामने पसारलनि। “ई हमर हस्ताक्षरवला आरम्भिक प्रतिवेदन अछि,” ओ कहलीह। “ई दोसर कागद कार्यालयक संक्षिप्त सारांश। तेसरक स्रोत एखन निश्चित नहि।” नैरा शीर्ष पन्नापर लिखल पाँति पढ़लीह—‘पछिला देबाल लग जलजमाव आ आधारक किनार पातर दरार; बरखाक बाद अनिवार्य पुनर्निरीक्षण।’ संक्षिप्त सारांशमे अंतिम पाँच शब्द नहि छल। ओकर बदला लिखल छल —‘सामान्य मरम्मतक सुझाव।’ अदिति हलुक आवाजमे कहलीह, “दुनूमे अन्तर छोट अक्षरक अछि, मुदा काजक क्रम बदलबाक सामर्थ्य पैघ।”

“पहिल प्रति कखन लिखल गेल?” नैरा पुछलीह। अदिति कागदक तिथि देखौलनि। ओ मौसम बदललाक ठीक पहिनुक निरीक्षण छल, जखन पुरान पाँखक बाहरी नाली ढकब शुरू भेल छल। सारांश पर अगिला महीनाक कार्यालयी प्राप्ति-दिन लिखल छल। दुनू तारीखक बीच प्राप्ति-क्रमक दू अंक गायब छल। “एखन हम ई नहि कहब जे जानि कऽ हटाओल गेल,” अदिति स्पष्ट कएलनि। “हमरा पहिने जानबाक अछि जे सारांश के बनौलक, कोन मूल प्रति ओकर सामने छल, आ पुनर्निरीक्षणक आदेश कोन पंजीमे पहुँचल।”

किछु क्षण मौन रहला पर अदिति अपन पहिल निरीक्षणक वाक्य फेर पढ़लीह। ओ तखन दरारकेँ ‘छोट’ लिखने छलीह, किएक तँ ऊपरक पलस्तरमे महीन रेखा छल आ

भीतरक आधार खुलल नहि छल। “छोट शब्द मापक परिणाम नहि छल,” ओ कहलीह। “हमरा ओहि दिन पूरा उपकरण नहि भेटल, तँ पुनर्निरीक्षण लिखलहुँ। दोष ईहो अछि जे हम कार्यालयसँ बादमे पूरा भेल निरीक्षणक प्रमाण कठोरतासँ नहि माँगलहुँ।” नैरा हुनका रोकलीह नहि। अपन पुरान निर्णयक सीमा स्वीकार करब आ दोसराकेँ तत्काल अपराधी मानि लेब, दुनू भिन्न काज छल।

महेश भीतर अएलाह तँ अदिति हुनका मूल कागदक छाया-प्रति देबाक आग्रह कएलनि। महेश पुछलनि, “ई जे चेतावनी अछि, से अस्पतालक मरम्मत-पर्चासँ एके बात?” अदिति सिर हिलौलीह। “मरम्मत-पर्चामे एक वस्तुक काज आ फेर परीक्षणक निर्देश अछि। हमर निरीक्षणमे आधारक बाहरी किनार आ पानिक भार देखबाक अनुरोध। दूनू सम्बन्धित हो सकैत अछि, मुदा एक्के कागद नहि।” महेश अपन रजिस्टरमे ई अन्तर लिखलनि। फकीराक रातुक लोहेक आवाज एहि फाइलक तिथि बदलबाक साधन नहि छल।

अनिरुद्धक फोन आयल। पुरान पाँखमे आइ दू रोगीक जाँच नियत छल; एखन एक रोगीकेँ सुरक्षित स्थानान्तरित कएल जा चुकल छल, मुदा दोसरक उपचारक मशीनक बदल व्यवस्था पूरा नहि भेल छल। “अहाँ निरीक्षण करैत छी तँ काज चलैत मार्ग बन्द नहि करू,” ओ कहलकनि। अदिति उत्तर देलीह, “हम पहिने बाहरक जमीन नापब। भीतर जेबाक आवश्यकता भेल तँ अहाँक उपचार-दलक सहमति आ रोगीक सुरक्षा-विधि अलग निश्चित करब।” फोन रखलापर ओ नैरासँ कहलीह, “खाली कागदपर खतरा लिखि देब आसान अछि; अस्पताल चलैत रहबाक खर्च देखब कठिन।”

अस्पतालक पुरान बरामदामे रोगी जमुना देवी अपन दवाइक डिब्बा खोलैत छलीह। अनिरुद्ध हुनका नव कक्षमे लऽ जाएबाक बात कहलकनि तँ ओ पहिने खिड़कीक दिस देखलनि। “एहि ठामसँ भोरक कचनार देखाइत अछि। दोसर कक्षमे खिड़की अछि?” अनिरुद्ध कहलनि जे खिड़की अछि, मुदा पाछूक दुआरमे ऊँच देहरी छैक; ओहि देहरीपर पहिने सुरक्षित पटरी लगत। जमुना डिब्बाक ढक्कन बन्द करैत कहलीह, “हम गाछकेँ नहि, दवाइ आ अपन चलबाक बाटकेँ प्राथमिकता देब। मुदा हमरा पुछने बिना खाट मत उठाउ।” सलमा हुनकर उपचारक समय नव पन्नामे लिखि कऽ परिवारकेँ खबर देबाक

व्यवस्था कएलीह। बाहरी मापक प्रतिवेदनमे एहि सहमतिमे लागल घण्टाक स्थान कोनो स्वतः नहि बनैत छल।

गोदामक बाहरी फाटकपर तारा पहिनहि पहुँचल छलीह। हाथमे नाप-पुस्तिका आ कपड़ामे लपेटल लकड़ीक दू ठोस खूँटा छल। पुरनाधारक पट्टी पर रातुक पानि एकठाम जमा छल, मुदा ओकर बगलमे चूनक पुरान सफेद किनार घाममे चमकि रहल छल। तारा खूँटा गाड़बासँ पहिने कर्मचारीक अनुमति पुछलीह। “घेराक भीतर नहि,” कर्मचारी कहलक। “बाहरक सार्वजनिक पट्टीपर सेहो जमीनक सही सीमा एखन विवादमे अछि।” तारा कहलीह, “तखन अस्थायी निशान राखब, गाड़ब नहि। मापनक आवश्यकता सँ ककरो स्वामित्व नहि बदलैत।”

रतन वनपर ओही समय अपन पुरान जूटक थैली लेने आएलाह। पहिने जकर बाबूक हाथक नकल ओ देखैने छलाह, ओ कागद आइ दुइटा सादा पट्टीक बीच सीधा रखल छल। रतनक संग हुनकर नाति नहि, पड़ोसक एक युवती छलीह, जे अक्षर पढ़ि दैत छलीह आ दिनमे अपन सिलाइक दोकान चलबैत छलीह। “ओ हमरा पढ़ि सुनेबाक लेल आयल अछि, हमर बदला निर्णय लेबाक लेल नहि,” रतन कहलनि। नैरा युवतीसँ हुनकर अनुमति सेहो पुछलनि; युवती कहलनि जे दुपहरक सिलाइक खेपसँ पहिने घुरबाक अछि।

रतन कागद खोलि घिसल टेढ़ रेखापर अँगुरी रखलनि। “बाबू एकरा जीबछक पुरान बाट कहैत छलाह। ई नाम हमरा घरमे चलैत छल। जखन हम बालक रही, एहि कात महीन पानि बरखाक पाछाँ दू-तीन दिन धरि ठाढ़ रहैत छल। मुदा हमरा यादक एहि रेखासँ वर्तमान नदीक पूरा प्रवाह नहि बनत।” तारा पुछलीह, “अहाँ अपने कखन पैदल पार कएने छी?” रतन पश्चिमक एक उठल मेड़ देखौलनि। “ओतए बाबूक हाथ पकड़ि जाइत रही। जतेक दूरी हमरा स्मरण अछि, ओतबे कहब।”

गोदामक मुनीम भीतरी काउण्टरसँ चाभी लऽ बाहर अएल। ओकर माथपर पसीना छल। “जँ एहि कागदक आधारपर गोदामक जमीन नदीक कहि देब,” ओ कहलक, “तँ हमर मजदूरसभक बोरा कतय रहत? भाड़ा के चुकाओत?” रतन किछु देर मुनीमकेँ देखलनि। “हम तोहर गोदाम फोरए नहि अएलहुँ। हमर मातामहीक पुरान पयरबाट छल

कि नहि, आ पानि कखन कत्ते भरैत छल, ओ जाँच चाहैत छी। जे ठाम कमाइ चलैत अछि, ओकर लोकक काजो गणनामे रख। मुदा कमाइक कारणेँ पानिक बाट मेटल नहि जाए।”

तारा सबकेँ तीन अलग प्रश्न सुनौलनि। पहिल—पुरान जलनिकासी कतय छल; दोसर—आइ जमीनक सतह आ पानिक बहाव की अछि; तेसर—वर्तमान भूअधिकारक मान्य अभिलेखमे की लिखल अछि। “पहिल प्रश्नक उत्तर स्मृति आ पुरान नक्शासँ प्रारम्भ होएत, दोसरक नाप उपकरणसँ, तेसरक राजस्व-पंजीसँ,” ओ कहलीह। “एकक उत्तर दोसराक जगह नहि लेत।” मुनीम पुछलक जे निरीक्षणक खर्च के देत। नैरा नगरक लिखित अग्रिम स्वीकृतिक सीमा देखौलीह; अतिरिक्त काज शुरू करबाक अधिकार एखन नहि छल।

रतन अपन थैलीसँ एकटा छोट कपड़ाक गठरी निकाललनि। ओहिमे बाबूक पुरान माप-डोरी छल, गाठिसभ सम दूरीपर नहि। “एहि डोरीसँ हम खेलैत रही,” ओ हँसैत कहलनि, “लोक एहि पर खेत बाँटने होएत, ई मानबासँ डर लगैत अछि।” तारा डोरीक दू गाँठ बीच वर्तमान फीता धरि तुलना कएलनि, मुदा कागदमे ओकरा ‘ऐतिहासिक स्थानीय माप-संकेत, मानकीकृत नाप नहि’ लिखलनि। युवती कहलनि, “बाबूक चीज सार्वजनिक भेलापर हुनकर नाम सेहो लगत?” रतन उत्तर देलनि, “नाम लगत, मुदा नकलक उपयोग हमर सम्मति सँ।”

नैराकेँ ई वाक्य आवश्यक लागल। ओ रतनसँ पुछलीह जे सार्वजनिक जाँचमे कागदक फोटो लेल जा सकैत अछि की। “मापवला भाग लेल जाउ,” रतन कहलनि। “चारि खेतक जे परिवारनाम लिखल अछि, सभकेँ चौकपर नहि छापू। किछु घरक उत्तराधिकारी आजु अलग ठाम छथि; हुनका पुछने बिना हुनकर अधिकारक फैसला नहि बनाउ।” नैरा सहमति-पन्नामे ई सीमा लिखलीह। मूल कागद रतनक पास रहत, प्रमाणित फोटोमे निजी नाम छाँटल जाएत, आ पूरा प्रति सीमित निरीक्षण-फाइलमे रहत। युवती अपन पढ़बाक समयक देय माँगलीह; रतन मुस्की देलनि, “ई हमर परिवारक उपकार नहि, ओकर सिलाइकक छूटल घण्टा अछि।”

मापनक पहिल रेखा गोदामक देवालसँ नहि, सार्वजनिक पथक स्थिर पाथरसँ शुरू भेल। तारा कहलनि जे देवालक आधार स्वयं खसने रहबाक सम्भावना अछि, तँ ओकरा

एकमात्र स्थिर बिन्दु नहि मानल जाए। हीराक पहिने बताओल तरीका अनुसार पानि आ कादोक तल अलग अनुभव कएल गेल। एक बाँस नरम माटिमे धँसल, दोसर कठोर तह छूएलक। अदिति संख्या लिखैत कहलीह, “कादो धरि नापल गहिराइ आ कठोर तह धरि नापल गहिराइ एकैँ दोहराबैत नहि।”

तारा माटिक एक छोट नमूना तौलि रखबाक प्रस्ताव कएलीह। अदिति रोकलीह, “एखन प्रयोगशालाक क्रमांक आ संग्रह-विधि स्वीकृत नहि अछि। बिना पंजीक डिब्बा भरि लेब तँ काल्हि ई कहब मुश्किल होएत जे नमूना कोन गहिराइसँ आयल।” तारा सहमत भेलाक बाद पन्नामे तीन स्थान चिन्हित कएलीह—खुलल किनार, भरल पट्टी आ गोदामक देवालसँ सुरक्षित दूरी। गोदामक मुनीम माँग कएलक जे ओकर प्रतिनिधि उपस्थित रहय; रतन चाहलनि जे स्थानीय बाटक जानकारी रखनिहार लोक सेहो रहथि। दुनूक उपस्थिति स्वीकार भेल, मुदा नमूनाक तकनीकी संग्रह प्रशिक्षित दल करैत। एहि छोट निर्णयसँ झगड़ाक स्वर कम भेल; पहिल बेर सभ पक्षकें बुझाइल जे जाँचक विधि अग्रिम लिखबाक अछि।

रतन पश्चिमक मेड़ दिस बढ़लाह तँ पुरान पयरबाटक कात उगने काँटमे हुनकर धोती अटकल गेल। युवती छुड़एबाक लेल झुकलीह। मुनीम तुरन्त कहलक जे भीतर जेबाक लेल कियो सुरक्षा-स्वीकृति नहि देने अछि। रतन अपने रुकलाह। “हमरा एहि कातक बाट पुरान बुझाइत अछि, मुदा आइ एतय तार पड़ल अछि; पुराने स्मृतिमे जेद कऽ भीतर नहि जाएब।” तारा वैकल्पिक बाहरी बाट देखौलीह। चलबाक खर्च आ सुरक्षित पहुँच रतनक गवाहीक शर्त छल, ओकर परीक्षा नहि।

तखन गोदामक एक मजदूर कहलक जे पाछाँक पानि कखनो छाती धरि भरल नहि। “हम दस बरखसँ एतय बोरा उतारैत छी। कोनो नदी नहि देखलहुँ।” रतन शांत स्वरमे उत्तर देलनि, “तोहर दस वर्षक देखल सही भऽ सकैत अछि; हमर बाल्यकाल ओकरा सँ पुरान। मुदा हमर बाल्यकालक पानि आइ कहाँ जाएत, तकरा माप चाही।” अदिति दुनूक बयान समयावधिसहित लिखलीह। नहि देखल अनुभवकें नदीक पूर्ण अनुपस्थितिक प्रमाण नहि मानल गेल; पुरान स्मृतिकें वर्तमान बाढ़क गहिराइ मानब सेहो उचित नहि छल।

दुपहरिया पवनमे तारा पतरा नक्शा सँभालैत छलीह जखन सूरज गंगोताक काटल खेतक ऋणक पुरान पत्र कार्यालयसँ पहुँचल। ओहि पर ‘धेमुड़ा’ नामक अभिलेखीय उल्लेख छल। पत्रमे खेतक क्षेत्रफल आ ऋणक शेष अंक दू अलग स्याहीसँ लिखल छल। नैरा तुरन्त कहलनि, “ई नामकेँ जीबछक पुरान रेखासँ जोड़ि नदीक संगम नहि बनायब। सूरजक पत्र खेती आ देयक स्रोत अछि; भौगोलिक जाँचक अपन प्रक्रिया रहत।” तारा पत्रक अलग नकल राखलीह।

सूरज स्वयं एखन नहि पहुँचने छलाह। हुनकर बेटा पत्र छोड़ि गेल छल आ कहलक जे बाबू अगिला दिन ऋणक सुनवाईमे आएताह। “हमरा खेत नष्ट भेल,” बेटा कहलक, “तँ देय किएक नहि नष्ट भेल?” नैरा कहलनि जे एहि प्रश्नक उत्तर ऋणक नियम, हानि-अभिलेख आ परिवारक दावा सुनला बिना नहि देल जा सकैत। कागद लग ‘मूल ऋण-पंजी माँगबाक अछि’ लिखल गेल। धेमुड़ा नामक कारणेँ पुरनाधारक जमीन तुरन्त परिवारक नाम नहि भए गेल; मुदा लुप्त खेतक आर्थिक बोझ फेर कागदमे उपस्थित भऽ गेल।

पुरान पाँखक निरीक्षण-दलसँ अस्पतालक परिचारिका खबर देने छलीह जे पिछला गलियारा लग पानिक गन्ध बढ़ि रहल अछि। अदिति तुरन्त फोनपर अनिरुद्धसँ बात कएलनि। ओ स्थल छोड़ि अस्पताल दौड़ल नहि, पहिने आपात सफाई-दल आ उपचारक मार्ग अलग करबाक आग्रह कएलनि। अनिरुद्ध कहलनि जे पानि रोगीक कक्ष धरि नहि पहुँचल, मुदा बाहरी गलियाराक एक कोना भीजल अछि। तारा अस्पताल आ गोदामक जमीनक उच्चता एक्के नपनीक आधारपर फेर मिलएबाक बात लिखलीह। जलनिकासक सम्भावित सम्बन्ध एखन परिकल्पना छल, मापल निष्कर्ष नहि।

सायंकाल नगरक उपअभियन्ता पहुँचलाह। अदितिक चेतावनीक मूल प्रति देखिकऽ ओ पुछलनि, “अहाँ तखन केवल छोट दरार लिखने छलहुँ। एतेक पुरान निरीक्षणकेँ आब पैघ संकटक मूल किएक कहैत छी?” अदिति प्रतिवेदनक कात रखल निर्देश पर अँगुरी रखलीह। “हम एकरा पैघ संकटक सिद्ध कारण नहि कहैत छी। हमर लिखल निर्देश छल —बरखाक बाद पुनर्निरीक्षण। जे दिन ई चेतावनी प्राप्त भेल, तकर तिथि प्रमाणित करब

आवश्यक। तकर बाद पुनर्निरीक्षणक कागद अछि कि नहि, सेहो।” अधिकारी पन्ना फेर ओलटौलनि। “आ जँ कागद भेटत?” “तँ ओहि जाँचक विधि आ परिणाम देखब।”

अधिकारी आग्रह कएलनि जे समाचारमे ‘पुरान लापरवाही प्रमाणित’ शब्द नहि जाए। नैरा उत्तर देलीह, “हम सेहो ई नहि लिखब। चेतावनी देल गेल—एक प्रमाण। ओकर सारांशमे आवश्यक वाक्य छूटल—दोसर प्रमाण। पुनर्निरीक्षण भेल अथवा नहि—एखन खोजबाक प्रश्न। दोष, उद्देश्य आ हानिक पूर्ण कारणक्रम अलग जाँच चाहैत अछि।” तारा जोड़लीह जे गोदामक जमीनक वर्तमान माप बिना नालीक मार्ग तय करब सुरक्षा-संकट बढ़ा सकैत अछि। एहि पर अधिकारी अस्थायी रोकक सूचना सार्वजनिक करबाक, आ सम्पूर्ण माप लेल लिखित अनुमति माँगबाक बात मानलनि।

रतन ओहि बहसमे चुप रहला। चलबाक पहिने ओ कागदक चारि पुरान खेतनामकें युवतीसँ फेर पढ़बौलनि। एक नाम हुनका साफ सुनाइत नहि छल; युवती अक्षर देखिकऽ दू सम्भावना बतौलीह। रतन माथ हिलौलनि। “जँ हम एक गलत नाम पक्का कऽ दियब तँ ओकर घरक इतिहासो बदलि जायत।” नैरा नामक सामने प्रश्नचिह्न राखलीह। एक कागदक अस्पष्ट अक्षरक कारणेँ कोनो जीवित उत्तराधिकारीक दावाकें त्वरित अस्वीकार करबाक अनुमति नहि छल।

कागद समेटैत रतन युवतीकें बतौलनि जे हुनकर माय बरखाक पहिल गरज सुनिते घरक चारि चीज ऊपर राखथि—बीहनक बोरा, पिताक डोरी, औषधिक डिब्बी आ बच्चाक पाठक तख्ती। “हम बुझैत रही जे पानि सभ वस्तुकेँ एक संग बहा लेत। मुदा माय कहैत छलीह—सभक बचबाक तरीका अलग।” युवती कहलनि, “आइ अहाँक बाबूक डोरी सेहो माप बनि सकैत छल, जँ अहाँ नहि रोकितहुँ।” रतन मुस्कुराएलाह। “हम नहि रोकलहुँ। हम कहने छी—डोरीक इतिहास लिखू, नाप दोसरासँ करू।” हुनकर थैलीक तला फाटि गेल छल; युवती सुई-सूत निकालि फटली सीए देलीह। ओहि काजक लेल रतन दाम देब चाहलनि, मुदा युवती कहलीह, “ई परिवारक उपकार अछि, सार्वजनिक पढ़ाइक काजक दाम अलग।”

घर घुरबाक लेल रतन उठलाह तँ कर्मचारी दुआरपर रोकि एक कप पानि देलक। “अहाँक बाबूक नक्शा हमरा डर लगबैत अछि,” ओ कहलक। “जँ गोदाम बन्द भेल तँ हम

कतय जाएब?” रतन पानि पीबैत उत्तर देलनि, “हमर बाबूक बनाओल रेखा मजदूरक रोजी छीनबाक आदेश नहि। जँ जमीनक उपयोग बदलत तँ मजदूरक काजक प्रश्न सेहो सुनब। मुदा जे पानीक बाट बन्द अछि, ओकरा नदेखल मानि रोजी बचत की?” कर्मचारी खोंटी पर लटकैत खाली बोराक दिस देखलक। दुनूक चिंता अलग छल, मुदा दुनूक भविष्य एक्केँ दीवालक कात अटकल छल।

साँझक भोजनपर सरिता नैरासँ पुछलीह, “आइ रतनक नक्शा कतेक सच भेल?” नैरा कहलीह, “आजु नक्शाक उपयोगक नियम निश्चित भेल। जमीनक माप शुरू भेल। सत्यक सब प्रश्न बाकी अछि।” सरिता उबटल चाउरक एक दाना हथेलीपर रखलीह। “देखू, एक दाना फुलल की नहि, से देखल जा सकैत अछि। किन्तु ओहि दानाक खेतक ऋण, पानीक मूल्य आ रान्हनिहारक घण्टा ओकर भीतर देखाइत अछि की?” नैरा हँसलीह। “अहाँ तऽ हमरो रिपोर्ट कठिन बना देलहुँ।” सरिता कहलीह, “रिपोर्ट सरल रहय, मुदा लोकक जीवन काटि नहि।”

अदिति रातिमे कार्यालय लौटि पुरान फाइलक तीन पन्ना फेर जाँचलीह। मूल हस्ताक्षरक मुहर आ प्राप्ति-क्रमक प्रति अलग प्लास्टिक आवरणमे रखलनि; मूल कागदकेँ नमीसँ बचएबाक उपाय कएलनि। संशोधित सारांशक लेखकक नाम खाली छल, मुदा प्राप्तिक मुहर स्पष्ट। ओ एहि खाली ठामपर ककरो अनुमानित नाम नहि भरलीह। प्रतिवेदनक पहिल गणनामे एकटा आधार-बिन्दुक ऊँचाइ ‘स्थानीय अनुमान’ लिखल छल, जकरा बादक सारांशमे ‘मापल’ कहल गेल छल। एहि अन्तरकेँ ओ अपन हस्ताक्षरक सामने नव टिप्पणीमे दर्ज कएलनि।

महेश पुछलनि जे की पहिल माप सम्पूर्ण वापस लेल जाए। अदिति कहलीह, “जँ मूल बिन्दु गलत भेटत तँ गणना सुधरत, मुदा पुरान कागदक इतिहास मेटल नहि जाए। आब तक जे माप वास्तवमे कएल गेल छल, ओकर दर्जा ओतबे। ओहि दिनक अधूरा तथ्य सँ आइक धरतीक गहिराइ नहि बताओल जा सकैत।” महेश जाँच-सूची बनौलनि—मूल बिन्दुक स्थल-पहिचान, बरखाक बादक पुनर्निरीक्षण पंजी, गोदामक अनुमति, अस्पतालक नालीक निर्वहन, आ रोगीसभक सुरक्षित मार्ग। सूचीमे प्रत्येक कामक उत्तरदायी आ समय सीमा लेल खाली घर राखल गेल।

नैरा सुरक्षा-दलक पत्रक भाषा देखलीह। प्रारूपमे लिखल छल—‘गोदामक अवैध भराइ अस्पतालक क्षतिक कारण’। ओ वाक्य बदलि लिखौलीह—‘गोदाम-पछिला भूखण्डक भराइ, पुरान जलनिकासी आ अस्पतालक आधारक सम्भावित सम्बन्ध जाँचाधीन।’ अधिकारी पुछलनि, “एहिसँ लोक सावधान होएत?” नैरा कहलीह, “तात्कालिक सावधानी लेल पुरान पाँखक निकट असुरक्षित पट्टीमे नहि जाएबाक चेतावनी अलग स्पष्ट लिखू। अनिश्चित कारणकेँ निश्चित अपराध कहब सुरक्षा नहि बढ़बैत।” अनिरुद्धक उपचार-दल लेल सुरक्षित गलियारा-नक्शाक संशोधित प्रति तत्काल पहुँचा देल गेल।

रतनकेँ अगिला दिन गवाहीक लेल बोलएबाक प्रस्ताव छल। तारा कहलीह जे पहिने दिनभरि नापमे हुनकर अनुभवक उपयोग भेल अछि; फेर बुलाओल जाए तँ यात्रा आ छूटल रोजीक उचित देय रहबाक चाही। रतन फोनपर सुनलनि आ कहलकनि, “मूल नक्शा हमरा घरे अछि। ओकरा लऽ जाएब तँ बरखाक दिन पन्ना भीजि सकैत। अहाँ जँ केवल एक अस्पष्ट खेतनाम पूछब तँ फोनपर पढ़ि सकैत छी, मुदा पूरा बाट फेर देखबाक अछि तँ लिखित समय दियौ।” कार्यालय अगिला निरीक्षणक तिथि प्रस्तावित कएलक; अन्तिम सहमति लेल हुनकर उत्तरक प्रतीक्षा रहल।

अदितिक पुरान फाइलसँ निकलल एक छोट कागद पर ‘पुनः देखब’ शब्द हुनकर अपन हाथक छल। ओ पन्नाक पाछाँक हलुक स्याही देखलीह—एक कर्मचारी प्राप्तिक दिन लिखने छल, मुदा जाँच पूरा भेलाक हस्ताक्षरक स्थान खाली। अदिति बहुत बेर तक ओ खाली घर देखैत रहलीह। खाली घरसँ ई सिद्ध नहि होइत छल जे निरीक्षण कदापि भेल नहि; मुदा एतेक स्पष्ट चेतावनीक बाद ओकर अभिलेख नहिअँ भेटब अपने एकटा संस्थागत प्रश्न छल। ओ खोजबाक स्थानसभक सूची बढ़ौलीह, एक नामपर दोष नहि लिखलनि।

भोरक अगिला पहरमे पुरानाधारक घेराक बाहर तारा नव नापक पहिल स्थिर निशानकेँ अस्थायी पीयर रङ्गसँ चिन्हित कएलनि। गोदामक कर्मचारी अपन बोरा उठाएबला बाटपर रुकल, तारा ओकर दैनिक आवाजाहीक चौड़ाइ सेहो मापि लेलनि। रतनक बाबूक नक्शा तखन ओतय नहि छल, मुदा हुनकर बताओल मेड़ धरि पहुँचबाक एक सुरक्षित मार्ग बनि सकैत छल। नाप-पुस्तिकामे लिखल गेल—‘पहिल स्थिर बिन्दु निश्चित; पुरान

जलमार्गक दिशा अप्रमाणित; गोदामक भूअधिकारक निर्णय शेष।’ छोट-छोट शब्द छल, मुदा आब ओहि शब्दक पाछाँ ककर समय आ श्रम छल, से लुकाओल नहि गेल।

नैरा अस्पतालक दिशासँ घुरैत गोदामक दीवालपर आँखि देलीह। पुरनाधार लिखल पुरान काठक पटरी आब सुरक्षित स्थानपर राखल छल; पुरान घामक ओ विचित्र छाँह आजु नहि देखाइत छल। नैरा निजी कापीक ओहि पन्नाकेँ सरकारी फाइलमे नहि जोड़लीह। एतय प्रमाणित करबाक छल जे पूर्व चेतावनी के लिखलक, ओकरा के प्राप्त कएलक, आ ओकर बाद काजक निशान कतय अछि। ओ मने-मने बुझलीह—कखनहुँ कागदमे कोनो नाम नहि रहब आ धरतीपर कोनो बाट नहि रहब, दुनू तरहक अनुपस्थितिक अर्थ एक नहि। अगिला जाँच एहि भेदक परीक्षा लेत।

अध्याय ६९ • अनुपस्थितिक अर्थ

पुरनाधारक गोदाममे भोरहि सँ बोरा सरकए लगल छल, मुदा कार्यालयक ओहि छोट कोठरीमे एकटा खाली घर सभक ध्यान खींचने छल। अदितिक चेतावनी-पत्रक प्राप्ति-पंजीमे तिथि छल, मुहर छल, मूल पत्रक संख्या छल; पुनर्निरीक्षण कएनिहारक हस्ताक्षरक घर खाली छल। महेश अंगुरीसँ ओहि चौखटकेँ छूबाक लेल बढ़लाह, फेर हाथ रोकि लेलनि। नैरा कहलनि, “कागदमे हस्ताक्षर नहि भेटब आ काज नहि भेल होएब—एखन ई दुनू एक वाक्य नहि।” बाहर तारा गोदामक दीवालपर बनल अस्थायी पीयर निशानक भीजल रङ्ग फेर देखैत छलीह।

अदिति खिड़कीक पल्ला आधा बन्द करैत कहलीह, “हमरा डर एहि खाली घरसँ नहि, एकरा भरबाक जल्दीसँ अछि। कियो लिखि देत जे जाँच भेल छल, कियो कहत जे जाँच भेलहे नहि। दुनू पक्ष पहिने दिन, कर्मचारी आ स्थल-पुस्तिकाक स्रोत बताओ।” महेश पिछला तीन सप्ताहक माँगल नकलक सूची देखौलनि। पन्ना दू जगहसँ फाटल छल; फाटल भागसँ नाम गायब छल की पन्ना मात्र घिसि गेल छल, से स्पष्ट नहि। नैरा खाली घरक छाया-प्रति लेलनि, मूल कागद अदितिक संरक्षणमे छोड़लनि।

ओही समय दुआरमे सूरज गंगोता ठाढ़ भेलाह। हुनकर बाँहमे पुरान कपड़ाक थैली छल, आ संग बेटा हरिहर दूटा बाँसक पातर टुकड़ा लेने छल। पिता जमीनपर थैली रखि कहलनि, “हमरा खेतक कागद भेटि गेल अछि; खेत नहि भेटल।” एहन स्वर नहि छल जाहिसँ आदमी भीख माँगैत अछि। ओ अपन बातक सुनवाई चाहैत छलाह। हरिहर कहलक, “बाबूक घामक ऋणक तिथि आबियो बढ़ैत अछि, मुदा धेमुड़ाक कात जतय धान होइत छल, ओतए नावो ठहरबासँ डरैत अछि।”

सूरज थैलीसँ दू पर्ची निकाललनि। पहिल पर खेतक पुरान खाता-संख्या, पाछाँ ओकरा गिरवी राखि लेल गेल बीज आ सिँचाइक ऋणक विवरण; दोसर पर विगत बरखा-पछाति बाकी रकमक गणना। खेतक आधा भाग काटि गेलाक बादहु देयक पाँति पूरा लिखल छल। “हम कहैत नहि छी जे हमर लेल कागद फाड़ि दियो,” सूरज कहलनि। “हम पूछैत

छी, जे उत्पादनक स्रोत नहि बचल, तकर किस्त ओहने किएक? हमर काज, हमर हिसाबक संग देखियौ।”

हरिहर जल्दीमे बोलि उठल, “पिताजी, ई सभ केँ देखाएबासँ खेत घुरि आएत? ऋण देनिहार मानताह?” सूरज ओकरा दिस देखलनि। “नहि। जमीन घुरबाक आशा आ ऋण बदलबाक दावा दुनू अलग छथि। जँ हम दुनूकेँ एक संग कहब तँ ओ सभ एक्के बारि नहि कहि विदा कऽ देत।” नैरा पर्चीक रकम सार्वजनिक चर्चा-पट्टपर नहि चढ़ौलीह; ओकरा सामने ‘निजी देय—मूल पंजीसँ मिलान’ लिखि अलग आवरणमे राखलनि। सुनवाइक लेल सूरजक स्पष्ट अनुमति लेल गेल।

तारा बाहरसँ लौटलिह आ पुरान नक्शा टेबुलपर खोललीह। एक कोनमे रतन वनपरक बाबूक खींचल रेखाक नकल छल, दोसरमे अदितिक वर्तमान मापक नील बिन्दु। “एहि दुनूक बीच खालि जगह अछि,” ओ कहलीह। “हमरा ओकरा मनसँ भरबाक अधिकार नहि। सूरजक खेतक पुरान नाम पुरनाधारक गोदामवला पट्टीसँ मिलै छैक, से बात कियो कहत; मुदा धेमुड़ा नामक पत्र एहि भूखण्डक स्वामित्व अथवा नदीक संगम साबित नहि करैत।” सूरज सिर हिलौलनि। “हम जमीन छिनए नहि, ऋणक सुनवाइ लेल आयल छी।”

कार्यालयक सहायक बेर-बेर कागद उलटैत छल। ओकरा नजरि पुरान सूचीमे सूरजक नाम नहि भेटल। “एहि वर्षक लाभार्थी-पंजीमे अहाँक परिवारक प्रविष्टि नहि अछि,” ओ कहलक। “तखन क्षतिग्रस्त खेतक नामपर आवेदन कोना?” सूरज किछु क्षण मौन रहलाह। हरिहर उठि ठाढ़ भेल। नैरा ओकरा हाथसँ आवेदन नहि लेलनि; ओ सहायकसँ पुछलीह, “ई पंजी कोन योजनाक, कोन वर्षक, आ कोन तारीख धरि आवेदन लेनिहारक अछि? नाम नहि रहब खेत नहि रहबाक प्रमाण अछि, कि एहि सूचीमे प्रक्रिया पूरा नहि भेलाक?”

सहायकक चेहरा लाल भऽ गेल। “सूचीमे जे नहि अछि तकरा हम कोना भुगतान करब?” “भुगतान नहि करब, से नियमक प्रश्न भऽ सकैत अछि,” नैरा कहलीह। “मुदा व्यक्ति छलहे नहि, अथवा जमीन ओकर छलहे नहि—से दोसर निष्कर्ष अछि। कृपा कऽ दुनू नहि मिलाउ।” सहायक सूचीक कातमे लिखलक—‘पूर्व अभिलेख, आवेदन-स्वीकृति

आ नामक भिन्न वर्तनी जाँचबाक'। ओ अपन पाँति काटल नहि; ओकर सामने नव प्रश्न राखलक।

ओहने एक दुपहर, सदियों पहिने, मिथिलाक एक उपवनमे शास्त्रार्थक लेल जुटल लोक छाँह बदलबाक संग आसन सरका रहल छल। उदयनक सामने एक प्रतिपक्षी ताड़पत्रपर लिखल प्रश्न देखैत छलाह। प्रतिपक्षी कहलनि, “अहाँ सर्वज्ञ ईश्वरक पक्ष रखैत छी। जकर प्रत्यक्ष उपलब्धि नहि, जकरा बिनु कर्म आ जगतक व्यवहार चलैत बुझाइत अछि, ओकर अस्तित्व मानबाक आवश्यकता कोन प्रमाणसँ उठैत अछि? हमर नहि देखब अहाँक पक्षकें चोट नहि पहुँचबैत तँ की देखब अनिवार्य नहि?” सभाक अन्तिम प्रश्नमे उपहास नहि, ज्ञानक कठोर माँग छल।

उदयन ताड़पत्र बन्द कएने बिना उत्तर देलनि, “अपन आँखिसँ नहि देखबक बात कहबाक लेल पहिने ई बताउ जे वस्तु केहन अछि आ ओकरा कोन दशामे देखबाक अपेक्षा उचित। सामने रखल दीपक उजासमे नहि देखल जाए तँ ओकरा नहिहँ होएबाक अनुमान बल पबैत अछि। मुदा जकर स्वरूप इन्द्रियक विषय नहि ठहरल, ओकर अनुपलब्धि ओहि दीपकक समान बाधक कोना भेल?” प्रतिपक्षी कहलनि, “एहि उत्तरसँ अहाँक ईश्वर सिद्ध नहि भेल।” उदयन स्वीकार कएलनि, “ठीक। हमर एतबाक तर्क केवल विरोधी प्रमाणक सीमा देखबैत अछि, सकारात्मक सिद्धि नहि।”

एक दोसर विद्वान प्रश्न कएलनि, “कियो प्रत्यक्ष नहि कहत, अनुमानसँ अस्वीकार करत। जगतक कार्य कारणसँ होइत अछि, मुदा ओ कारण अनेक भऽ सकैत अछि। एक सर्वज्ञ प्रधान नियन्ताक आवश्यकता की?” प्रतिपक्षी तुरन्त जोड़लनि, “मात्र अपूर्ण व्याख्याक बीच ईश्वरक नाम राखि देब कोनो समाधान नहि। जँ अनुमानक हेतु अव्याप्त हो, तँ निष्कर्षक बड़प्पनसँ ओकर दोष नहि मेटत।” उदयन हुनकर आपत्ति पूरा होएबाक प्रतीक्षा कएलनि। “एहि हेतु-व्याप्ति पर पृथक् विचार आवश्यक,” ओ कहलनि, “मुदा जे अनुमान वास्तवमे केकरो अभाव स्थापित करए चाहैत अछि, ओकर अपन आधारो परीक्षा सहत।”

प्रतिपक्षी छोट पात्र उठबौलनि, जकर तला साफ छल। “एतय तेल नहि,” ओ कहलनि। “हम तला देखैत छी आ अभाव बुझैत छी। की ई ज्ञान झूठ?” उदयन पात्रक भीतर

देखलनि। “नहि,” ओ उत्तर देलनि। “अहाँ एखन पात्र खाली अछि, से उचित दशामे जनलहुँ। मुदा एहि खाली पात्रसँ पुरा नगरमे तेल नहि अछि, अथवा तेल कखनहुँ छल नहि, ई दू निष्कर्ष निकालब उचित होएत?” शिष्यसभ एक-दोसराक दिस देखलनि। बात छोट पात्रक छल, मुदा वाद अभावक स्थान, काल आ जाणबाक साधनधरि पहुँचि गेल छल।

प्रतिपक्षी कहला, “तँ अहाँ सेहो मानैत छी जे अनुपलब्धि कखनहुँ अभाव-बोधक साधन अछि।” “हाँ, जहाँ तकर अनुरूप योग्यता आ परिस्थिति निर्धारित अछि,” उदयन कहला। “जतए नहि, ओतए ‘नहि देखल’ मात्रसँ ‘नहि अछि’ नहि बनैत।” प्रतिपक्षी फेर प्रश्न कएलनि—शब्दप्रमाणक विरोधक, उपमानक सीमा, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक स्वतन्त्रताक। उदयन प्रत्येकक स्थान अलग रखलनि; हुनकर तृतीय स्तबकक विचारक केन्द्र ई छल जे एहि साधनसभसँ ईश्वरक निषेध सिद्ध करबाक दावाकेँ सेहो जाँच चाही। प्रतिपक्षी अपन अन्तिम पाँति नहि हटौलनि—“निषेध सफल नहि भेलासँ विधानक भार कम नहि होइत।” ओ दिनक सभा एहि असहमतिसहित उठल।

शास्त्रार्थक ओहि समयक बाद विदेहपुरक कार्यालयक खिड़कीपर भीजल स्याहीसँ छापल नाम देखैत हरिहरक नजरि अटक गेल। प्राचीन वाद ओकर ऋण-पर्चीक प्रमाण नहि छल। एतय पंजी बनबामे ककरा नियुक्ति छल, नाम कोन वर्तनीमे चढ़ल, आ खेतक कटानक माप ककरा उपलब्ध छल—ई सभ स्थूल सवाल उत्तर चाहैत छल। सूरज थैलीक भीतरसँ खेतमे लगाओल धानक एक पुरान बीजक डिब्बी निकाललनि। डिब्बीमे एखन बीज नहि, तीनटा लाल माटिक कण छल। “ई माटि खेत घुराबय लेल नहि,” ओ कहला, “पुत्रकेँ बुझए लेल रखल अछि जे ओकर बाप खेती कएलक।”

कार्यालयसँ सटल सहकारी ऋण-कक्षमे प्रभारी कनकलता खाताक मूल बही खोलने छलीह। सूरज हुनका पहिनहिसँ जनैत छलाह। कनकलता कहलीह, “बाकीक रकम बहीमे अछि। ओकरा अनदेखल कहि नहि सकैत छी। मुदा पिछला मौसमक कटानक बाद पुनर्गठनक आवेदन देबाक पद्धति अछि; हानि प्रमाणित होएबाक अलग प्रक्रिया चाही।” सूरज पुछलनि, “तँ एतेक मास हमरा किस्त चुकएबाक पत्र मात्र किएक आयल?” कनकलता अपन काउण्टरक पुरान फाइल खोलि देखलनि। आवेदनक प्राप्ति-क्रम नहि भेटल। हरिहर जे प्रति देने छल ओकर मुहर अलग काउण्टरक छल।

“ई देखू,” हरिहर दूटा भिन्न स्याहीक छाप देखौलक। “एहि दिन हम आवेदन छोड़ने रही। के कहत जे हम नहि देने रही?” कनकलता पुछलनि जे कागद कोन खिड़कीपर छोड़ल गेल छल। हरिहर जगह बतौलक, मुदा कर्मचारीक नाम याद नहि पड़ल। “अहाँक एहि प्राप्ति-पर्चीक जाँच होयत,” कनकलता कहलीह, “आब एखन नकल लेल नव प्राप्ति-संख्या देब। मुदा पहिल आवेदन समयपर स्वीकार भेल छल, ई जाँच बिना प्रमाणित नहि कऽ सकब।” हरिहरक क्रोध तुरन्त शान्त नहि भेल; तखनो ओ पहिल बेर अपन कागदक आधिकारिक पावती देखलक।

सूरज ऋणक तीन मद अलग करबाक आग्रह कएलनि—मूलधन, पहिनहिँसँ जुड़ल ब्याज आ कटानक बाद जोड़ल विलम्ब-दण्ड। कनकलता कागदपर तीन पाँति बनौलीह। पाछाँक महीना धरि मूलधनक कतेक अंश खेतक उपजसँ चुकाएल गेल, ओकर रसीद किछु छल, किछु नहि। “जे रकम देलहुँ, ओकरा दोबारा शेष नहि देखब चाहैत छी,” सूरज कहला। कनकलता उत्तर देलीह, “अहाँक रसीद आ बहीक मिलान होएत। जँ अन्तर भेटत तँ सुधार।” ऋणदाता एखन क्षतिपूर्ति स्वीकार नहि कएलक, मुदा देयक लेखा पहिल बेर बहसक विषय बनल।

दुपहरिया घाममे सूरज आ हरिहर बाहर पीपलक छाँहमे बैसलाह। हरिहर कहलक, “हम दिल्ली जा कऽ मजदूरी करब। खेतक बात छोड़ू। एतेक कागद हमरा ठाम कतय बचत?” सूरज ओकरा रोकब चाहि कऽ सेहो रोकलनि नहि। “तौँ जहाँ चाहह जाए, मुदा हमर निर्णयकेँ अपन भयसँ मत बाँध,” ओ कहला। “हम ऋण घटबए सुनवाइ करब। खेत लौटा देबाक सपना एहि फाइलपर नहि लिखब।” हरिहर ओहि दिन पहिल बेर पिताक बातसँ सहमत नहि होइतहु हुनकर दावा लेल बस-भाड़ा देबाक कहलक।

इधर अदितिक चेतावनी-पत्रक अन्तिम प्राप्ति-कक्षमे एक कर्मचारी पुरान आगन्तुक-पंजी भेटौलक। ओहिमे निरीक्षण-दलक आगमनक तिथि सँ मेल खाइत एक संख्या छल, मुदा आगन्तुकक नाम आगाँक पन्नापर चलि गेल छल, जे बन्द पेटीमे छल। महेश पुछलनि, “तखन कहल जा सकैत अछि जे ओहि दिन कोनो निरीक्षक आयल छल?” अदिति उत्तर देलीह, “एखन एतबे जे एहि पंजीमे संख्या लिखल अछि। आगमनक उद्देश्य,

व्यक्तिक नाम आ धरतीपर काजक प्रमाण बिना ई अधूरा अछि।” ओ पन्ना खोलबाकें अधिकार-पत्र मँगौलनि।

गोदामक मजदूर बलई काठक पटरी राखबला स्थानक कात ठाढ़ छल। “हमरा दस बरखक काजमे ओहि ठामसँ खुलल नाला नहि देखल,” ओ कहलक। रतन दूरसँ आयल छलाह, मुदा आइ हुनका सार्वजनिक गवाहीक समय तय नहि छल; केवल दू अस्पष्ट अक्षर फोनपर पढ़बाक अनुमति देने छलाह। नैरा बलईक अनुभव तिथि सहित लिखलीह। “दस बरखमे नदेखल” महत्त्वपूर्ण गवाही छल, मुदा ओहिसँ पुरान नालीक इतिहास समाप्त नहि होइत छल। तारा नव मापक बिन्दुपर पीयर खूँटी नहि गाड़लीह; जमीनक अनुमति एखन प्राप्त नहि छल।

फेर सूर्यास्तक बाद नैरा अपन कापीमे तीन घर बनौलीह—‘नाम’, ‘पर्ची’, ‘बयान’। नामक आगे सूरजक पुरान खेत-पंजी आ चालू राहत-सूचीक अलग स्थिति लिखलीह। पर्चीक आगे ऋणक आवेदन-प्राप्ति आ नाव-भाड़ाक पुरान अपूर्ण प्रति; बयानक आगे फकीराक सुनल लोहेक आवाज आ बलईक सीमित स्थल-अनुभव। ओ एहि अलग कागदसभकें एक प्रमाण-शृंखलामे नहि गूँथलीह। मिथुनक खोजक फाइल सुदूर दोसर अलमारीमे सुरक्षित छल; एकटा मिलैत नाम ओकरा खोलबाक पर्याप्त कारण नहि छल।

महेश एतबे मे एकटा समाचार-पत्रक स्थानीय संवाददातासँ भेटि घुरलाह। संवाददाता अस्पतालक बाहरी निकासीबन्ध आ पुरान चेतावनी पर सूचना चाहैत छल। “सरकारी पत्रमे नाम कटाओल अछि,” महेश कहलनि, “ओ कहैत अछि जे नाम बिना समाचार अधूरा।” नैरा उत्तर देलीह, “घटनाक सत्य लेल नाम सदा अनिवार्य नहि। सार्वजनिक अधिकारीक उत्तरदायित्व अलग, जोखिम उठेनिहार साक्षीक निवास अलग। जँ नाम प्रकाशित करब आवश्यक हो, कारण आ सहमति लिखित होअय; बगैर जाँच उपनामसँ सेहो व्यक्ति चिन्हाएल जा सकैत अछि।” महेश अपन जेबीमे रखल मसौदा फेर मोड़लनि।

ओहि राति सहकारीक पहिल संशोधित उत्तर सूरजक घर पहुँचल। कनकलता लिखने छलीह जे जाँच सम्पन्न होएबा धरि नव विलम्ब-दण्ड जोड़ब रोकबाक प्रस्ताव समिति समक्ष राखल गेल; मूलधन आ पहिल ब्याजक सटीक मिलान पन्द्रह दिनमे सुनवाईल जायत। ई अन्तिम राहत नहि छल। सूरज पत्र बेटाकें पढ़बौलनि। हरिहर पुछलक, “एहि

बीच वसूली लेल कियो आएत?” कागदमे ओहि सम्बन्धमे स्पष्ट पाँति नहि छल। सूरज अगिला दिन एहि खाली प्रश्न लेल फेर आवेदन लिखबाक निर्णय लेलनि।

घरमे सूरजक पत्नी फगुनी चुल्हि पर बथुआक साग उतारि रही छलीह। ओ पुछलीह, “खेतक चर्चा करैत-करैत अहाँ खएबाक समयो बिसरि गेलहुँ?” सूरज मुस्कुराएलाह। “आइ खेत नहि भेटल; मुदा देयक तीन पाँति अलग भेल।” फगुनी एकटा पुरान कटोरा मे भात परोसैत कहलीह, “जँ माटि कटल अछि तँ हमर दू महीनाक रोपनीक मजदूरी सेहो ओहि माटिमे रहल। ऋणक सुनवाइमे हमर श्रम कतय लिखल जायत?” सूरज चुप भेलाह। अगिला दिनक आवेदनमे पत्नीकेँ सह-आवेदक बनएबाक विषय ओ पहिने सोचने नहि छलाह।

फगुनी भोरमे अपन लग राखल बीहनक छोट हिसाब निकाललीह—कतेक दिन रोपनी, कतेक दिन निराइ, कतेक दिन बाँधक कात आहार लऽ जाएब। “हम जमीनक मालिक नहि छलीहुँ,” ओ कहलीह, “मुदा हमर समय ओतहि लागल। हमरा प्रमाण-पंजीमे नहि भेटबाक कारणेँ हम काजे नहि कएलहुँ, से नहि।” हरिहर हाँसि कऽ कहलक जे मायक कापी बाबूक खातासँ बेसी साफ अछि। फगुनी ओकरा सिधा देखलीह—“साफ लिखावटसँ लाभ नहि जँ सुनवाइमे हमरा भीतर नहि जाए देत।” सूरज हुनकर संग जेबाक निश्चय कएलनि।

अगिला सुनवाइमे सूरज, फगुनी आ हरिहर तीनू सहकारीक कार्यालय पहुँचलाह। कनकलता फगुनीक श्रमक विवरण ऋणक देय घटएबाक आधिकारिक साक्ष्य होएत की नहि, एखन कहि नहि सकलीह; मुदा प्रभावित परिवारक आय आ हानिक विवरणक संग ओकरा संलग्न करबाक अनुमति देलीह। सूरज कहलनि, “हम नहि कहब जे डूबल खेत अपने लौटि आएत। हमरा ई चाही जे नहि बचल उपजक आधारपर असम्भव किस्तक तारीख नहि रखल जाए।” बैठकक कातमे लिखल गेल—‘ऋण पुनर्गठनक प्राथमिक विचार स्वीकृत; वास्तविक कटान-माप, पुरान भुगतान-रसीद आ परिवारक आयक पुनर्गणना शेष।’

कनकलता प्रस्तावनापर अपना हस्ताक्षर कएलनि, सूरजक अनुमतिक बाद हुनकर प्रति थैलीमे राखल गेल। हरिहर बाहरी बेंचपर उग्र युवकसभसँ बात कऽ रहल छल; ओकरा

कियो कहलक जे आधा खेत गेल अछि तँ आधा ऋण स्वतः माफ। हरिहर उत्तर देलक, “एखन हम एहन बात नहि कहब। जे छूट सम्भव अछि, तकर लिखल शर्त हमरा चाही। बिनु प्रमाणक घोषणा भोलि हमरा फेर मुसीबतमे डालत।” सूरज पिताक रूपमे एहि उत्तरपर गर्व अनुभव कएलनि, मुदा बेटाकेँ अपन जइसन खेतीमे बाँधि राखबाक इच्छा नहि जागल।

दोपहरि नैरा वापस चेतावनीक खाली हस्ताक्षर-घर लग पहुँचल छलीह। नव पेटी खोलबाक अनुमति आयल, मुदा पेटीमे पंजीक अगिला पन्ना नहि छल; ओ पन्ना बरस पहिने मरम्मत-प्रभागकेँ देल गेल रहबाक उल्लेख छल। कर्मचारी कहलनि, “एतेक खोजलहुँ, आब धरि नहि भेटल। कहल जा सकैत अछि जे पन्ना नष्ट?” अदिति कठोर स्वरमे रोकलनि। “कहल जा सकैत अछि जे एहि पेटीमे नहि भेटल। नष्ट भेलाक लेल नष्टक रजिस्टर देखाउ। नहि तऽ कागदक हराएबाकेँ अपन अनुमानसँ पूरा मत करू।” कर्मचारी ओहि उत्तरक पाछाँ एकटा नव खोज-संख्या जोड़लक।

नैरा महेशकेँ फोन कएने छलीह जे चेतावनीक खाली घर सम्बन्धी प्रेस-विवरण एखन सीमित रखू। महेश कहला, “एकटा मसौदा पत्र-पत्रिकामे गेल छल, वापस मँगौने छी। सम्पादक कहलनि जे अन्तिम प्रति मात्र प्रकाशित होएत।” नैरा पुछलीह, “मसौदामे प्रत्यक्ष गवाहक नाम रहय?” महेश किछु क्षण रुकि कहला, “नामक पूरा घर नहि, मुदा ठेकाना आ पारिवारिक सम्बन्धक संकेत अछि। हम ओकरा हटएबाक लिखित अनुरोध पठबैत छी।” नैरा कहलनि, “केवल आश्वासन पर्याप्त नहि; संशोधित प्रतिक पुष्टि लिअ। ओहि बीच जेकर नाम चिन्हाएल जा सकैत अछि, ओकर सुरक्षाक बारेमे सोचू।”

अदिति कागदक पाछाँक पातर लिखावट उतारि रहल छलीह। बाहर फाटकक चौकीदार अपन कुर्सी भीतर खींचलक; बरखाक छोट बूँद आकाशसँ उतरए लागल छल। सूरजक कटानक पत्र, अस्पतालक पुनर्निरीक्षणक खाली घर आ महेशक समाचार-मसौदा एक्के दिन टेबुलपर पहुँचल, मुदा एकटा दोसराक प्रमाण नहि छल। नैरा सोचलीह जे अनुपस्थिति कखनहुँ वस्तुक, कखनहुँ नामक, आ कखनहुँ जिम्मेदारी निभेबाक अभिलेखक होइत अछि। तीनूकेँ एक रंगक स्याहीसँ भरला पर दोषो बदलि सकैत अछि आ निर्दोषक जीवनो।

साँझ सूरज घरक दुआरपर लाल माटिक खाली डिब्बी हरिहरक हाथमे देलनि। “तोहर शहर जाएबाक तैयारी हो तँ राखि लए,” ओ कहलनि। हरिहर उत्तर देलक, “एखन नहि। पहिने मायक श्रमक पन्ना आ अहाँक पुनर्गठनक सुनवाईमे चलब। तकर बाद हम अपन बाट चुनब।” फगुनी दुआरपर अँजोरि रखैत छलीह। दुरेसँ पुरनाधारक गाड़ी एक बेर हॉर्न देलक, मुदा ई आवाज ककर छल आ किएक बजल, तकरा लेके घरमे कियो अनुमान नहि कएलक। एकटा बात आजु निश्चित भेल छल—खेतक पूरा वापसीक वादा बिना सेहो परिवार अपना देयक शर्तपर बोलि सकैत छल।

ओहि राति महेश अपन मेजक दीपक जरा कऽ सम्पादकक उत्तरक प्रतीक्षा करैत रहलाह। एक पन्नापर अदितिक चेतावनीक नकल छल, दोसर पर पत्रकारकें भेजल सुधारक लिखित अनुरोध। मोबाइलपर छोट सन्देश आयल—‘मुद्रणक प्रति बन्द भऽ चुकल अछि; संशोधन सम्भव नहि।’ महेश फेर फोन मिलौलनि। दोसर दिस कियो नहि उठौलक। ओ कागदपर पहिल बेर समाचारक समयसँ अलग एकटा पाँति लिखलनि—‘पहिचान चिन्हाएल जा सकबाक खतरा; सम्बन्धित परिवारसँ तुरन्त गोपनीय सम्पर्क आवश्यक।’ बाहर साँझक कोलाहल थमि गेल छल, मुदा हुनकर सामने कागदक खाली ठाम आब मौन नहि छल।

अध्याय ७० • महेशक राति

भोरक पहिल अखबार महेशक दुआरपर उलटि कऽ खसल तँ ओकर कोना ओससँ भीजि गेल छल। बेटी विद्यालयक जूता सुखेबाक लेल चौकीपर राखि रहल छलीह; कागद उठबए ओ झुकलीह, मुदा महेशक पत्नी पहिने हाथ बढौलीह। पहिल पृष्ठपर जलनिकासक समाचार छल। खबरमे महेशक नाम नहि छल, तथापि 'रेल-पारक पश्चिमी गोदामक रातिक काम सँ जुड़ल पूर्व कर्मचारी' आ ओकर घरक दिशाक वर्णन एक संग छापल छल। दोसर पाँतिमे अस्पतालक मरम्मत-ठेकाक आपूर्तिकर्ताक परिजन द्वारा देखल पुरान बहीक जिक्र छल। पत्नी कागद मोड़ि लेलनि। घरक भीतर एखन दूध उबलि रहल छल, मुदा खबरक शब्द दरबज्जा पार कऽ एहन प्रवेश कएने छल जकर अनुमति कियो नहि देने छल।

महेश समाचार पढ़बाक पहिने घड़ी देखलनि। बेटीकेँ विद्यालय पहुँचबाक छल। हुनकर पत्नी पुछलनि, “एहि इलाकामे रातिक गोदामक काम करनिहार कतेक पूर्व कर्मचारी अछि, जिनकर बेटीक विद्यालयक बाट सेहो लोक जनैत अछि?” महेश उत्तर नहि देलनि। पिछला नागरिक-पत्रमे नैराक असावधानीसँ हुनकर परिचय पहिनहिसँ चिन्हाएल छल; ओ पोस्ट हटि गेल, मुदा ओकर नकल लोकक फोनमे बचल छल। आब समाचारक नवा पाँति पुरान नकलक संग जोड़ि पढ़निहारक लेल घरक ओर इशारा करैत छल। कागदमे नामक अभाव सुरक्षा नहि बनल।

बेटी अखबारक बीचमे अपन विद्यालयक विज्ञापन देखबाक चाह कएलक। माय अखबार छिनलीह नहि; ओकरा समाचारसँ अलग पन्ना देलीह। “आइ तूँ कोन बाटसँ जाएब चाहैत छह?” ओ पुछलीह। बेटी कहलकि जे रोजक सहेलीसभक संग जाएब, मुदा हाट लग दू आदमी काल्हि पिता विषयमे पुछने छल। “हम कहलियनि जे हम विद्यालय जा रहल छी। ई कहबाक कारणेँ कोनो गलती भेल?” महेश अपन बेटी दिस देखलनि। हुनका प्रश्नक बोझ हुनकर छोट उत्तरसँ दूर नहि होएत। “तोहर कोनो गलती नहि,” ओ कहलनि, “मुदा जे पुछए, ओकरा हमर काजक जानकारी देबाक दायित्व तोहर नहि।” पत्नी

जोड़लनि जे विद्यालयमे शिक्षिकाकेँ घरक सहमति अनुसार सीमित सूचना देल जायत; बच्चीक नाम अखबारक गलती सुधारबाक सार्वजनिक उदाहरण नहि बनत।

महेशक फोनपर सम्पादकक छोट सन्देश अएल—‘छपाइ रोकब सम्भव नहि रहल; ऑनलाइन प्रति संशोधित करब।’ महेश समाचारक पृष्ठ आ सन्देशक समयक फोटो लऽ अलग सुरक्षित कएलनि। ओ सम्पादककेँ फोन कए कहला, “ऑनलाइन पाँति बदलू मुदा जे कागद घर-घर पहुँचि गेल ओकर हिसाब के रखत? हमरा समाचारक मूल आधार देखबाक अधिकार चाही। आ एकरा महेशक पूर्ण सहमतिक गवाही नहि लिखू।” सम्पादक जवाब देलक जे सार्वजनिक हितक विषयमे नाम छिपाओल गेल अछि। महेश कहला, “जकरा पहिचानबाक लेल नामे जरूरी नहि, ओकर नाम नहि लिखब कोन सुरक्षा भेल?”

रेल-पारक कारखानामे राघव सिंह भोरसँ अपन भतीजाक प्रतीक्षा करैत छलाह। युवक राति बहीक दू पन्ना देखैत रहल छल, जकर एक पन्नामे ओकर वास्तविक प्राप्ति-हस्ताक्षर छल आ दोसरमे ओकर नामक निशान ओकर हाथसँ लिखल नहि बुझाईत छल। राघव ओकरा कागद देखए लेल बोलौने छलाह, मुदा युवक आएल तँ हाथमे मूल रजिस्टरक बदला मुड़ल अखबार छल। “काका,” ओ कहलक, “एहि खबरक आपूर्तिकर्ता-परिजन हम छी की? गोदाममे कहल जा रहल अछि जे हम ठेका डुबा देब।” राघव पहिने अखबारक ओ पाँति पढ़लनि। छापल शब्द भतीजाक गवाही नहि छल, मुदा जे लोक ओकर काम जनैत छल, ओकरा चिन्हेबाक पर्याप्त सूत्र छल।

“तौँ अपन आँखिसँ की देखलह?” राघव पुछलनि। युवक कहलक, “सामान आयल छल, हम प्रवेशक तिथि लिखलियैक। लगाओल गेल जगह नहि देखल। दोसर पन्नापर हमर नामक हस्ताक्षर अछि, मुदा ओ कएल हमरा याद नहि, लिखावटो भिन्न अछि। एतेक बात कहब।” राघव ओकरा किछु जोड़बाक आग्रह नहि कएलनि। “हमर ठेका बचाबय लेल तूँ झूठ नहि कहिह,” ओ कहलनि, “आ हमर ठेका तोहर चुप्पीसँ बचि जाएत, से कल्पना हम नहि करब। मुदा गवाही देबासँ पहिने तोहर सुरक्षा पर लिखित उत्तर माँगब।” युवकक आँखिमे राहतक संग भय छल; काकाक व्यवसाय ओहि गोदामक आपूर्तिपर बहुत निर्भर छल।

नैरा समाचारक दफ्तरमे पहुँचलि तँ सामनेक खिड़की लग कागदक बंडल बन्हाएल छल। हुनका रातिक संशोधनक अनुरोधक प्राप्ति-सन्देश छल, मुदा छपल अंकमे ओ संशोधन नहि छल। ओ पुरान नागरिक-पत्रक अपन प्रकाशित पोस्ट, हटाओल गेल समय, महेशक सीमित अनुमति आ नव समाचारक अंश चारि अलग कागदपर रखलीह। सम्पादक कहलनि, “हम तँ अहाँक पुरान प्रकाशनकेँ सार्वजनिक स्रोत मानि पढ़ने छी।” नैरा उत्तर देलीह, “स्रोत सार्वजनिक करबाक हमर गलतीसँ अहाँकेँ व्यक्ति चिन्हेबाक अधिकार नहि भेटल। मुदा अहाँक अपन सम्पादनक जिम्मेदारी सेहो अछि।”

सम्पादक चुपचाप नव पृष्ठ निकाललक, जकर नकल साँझक अंकमे जा सकैत छल। ओ सुझाव देलक जे समाचारक नीचे ‘पहिचान अस्पष्ट’ छापि दियौ। नैरा कहलनि, “ई शब्द पाठककेँ रहस्य सुलझेबाक न्योता जेकाँ लगत। सार्वजनिक तथ्य आ निजी परिचय हटाउ। अस्पतालक मूल चेतावनीक तिथि, पुनर्निरीक्षणक अनुपस्थित प्रति आ रोगी सुरक्षाक प्रश्न रखू; एकटा परिवारक घरदुआरक इशारा नहि।” सम्पादक पुछलक, “तखन लेखमे ककर नाम रहत?” नैरा उत्तर देलीह, “जकर सार्वजनिक पदक निर्णय जाँचल जा रहल अछि, ओकर कार्यालयक नाम। निजी साक्षीक नहि।”

ओ एहि बातपर आग्रह कएलनि जे सुधारक नकल आ छपल गलत पाठ दुनूकेँ सुरक्षित अभिलेख बनाओल जाए। किन्तु ओहि दफ्तरमे बैसल कियो मानए तैयार नहि छल जे नगरसमूहमे महीना पहिने पठाओल नैराक पहिल पोस्ट सेहो जोखिमक कारण छल। नैरा अपन नामक कात पहिल प्रकाशनक समय लिखलीह। एखन समाचार-दफ्तरक टेबुलपर अपन जवाबदेही स्वीकार करब आ महेशक परिवारक अनुमति बिना अपन नैतिक शुद्धिकरणक कथा प्रकाशित करब अलग काज छल। ओ दोसर काज रोकलीह; महेशक निजी ठेकाना सुधार-पत्रमे फेर लिखि देब गलती दोहराएब होएत।

कबीर विधिक सहायता-कक्षमे महेश आ हुनकर पत्नीकेँ भेटलाह। बेटी विद्यालयमे छलीह, शिक्षिका केवल एतेक जनैत छलीह जे ओहि दिन अभिभावकक लिखित सहमति बिना बच्चीकेँ दोसर व्यक्तिसँ नहि पठाओल जाए। महेशक पत्नी टेबुलपर अखबार नहि, अपन घरेलू आवश्यकताक सूची रखलीह—बेटीक किताब, दवाइ, काजपर जाएबाक बाट, रातिक पीबाक पानि, अस्थायी ठामक भाड़ा। “हमें गोपनीय ठाम चाही,” ओ कहलीह,

“मुदा गोपनीयताक अर्थ हमरा बेटीकेँ विद्यालय छोड़ए पड़त, ई नहि।” कबीर प्रशासनक सुरक्षाक निवेदन लेल जोखिमक तिथि, फोनक सन्देश आ अनजान पुछताछक अलग पंजी बनौलनि।

महेश पहिनुक आवेदनक प्रति देखौलनि; ओकर प्राप्ति-नम्बर छल, मुदा उत्तर नहि। कबीर स्पष्ट कएलनि जे सुरक्षा-कर्मी नियुक्त भेलाक आदेश, फोनपर आश्वासन आ आवासक व्यवस्था तीन भिन्न बात छथि। पत्नी पुछलीह, “कागदमे हमरा नाम जोड़ब अनिवार्य अछि?” कबीर कहला, “प्रक्रिया लेल जतबा आवश्यक अछि ततबा अधिकृत अधिकारीक बन्द अभिलेखमे रहत; सार्वजनिक आवेदनमे घरक पूरा पता नहि राखब।” पत्नी सहमति देलीह, मुदा अपन आवाजमे एकटा शर्त जोड़लीह—आगाँक बैठक महेश अकेले निर्णय नहि करताह। महेश हुनकर शर्त स्वीकार कएलनि। ओ अपन गवाहीक कारण परिवारक जीवनपर जे भार पड़ल, ओकरा सभपर एकतरफा लादबाक अधिकार नहि राखैत छलाह।

दोपहरि राघव अपन भतीजाकेँ लऽ पहुँचलाह। कबीर ओहि युवकसँ अलग सँ पुछलनि जे ओ काकाक उपस्थितिमे बोलब चाहैत अछि की नहि। युवक पहिने काकाक दिस देखलक, फेर कहलक, “काका रहथि, मुदा हमर जवाब हम देब।” ओकर बहीक मूल पन्नामे सामग्रीक चारि मद छल; एक मदक अगिला घर खाली छल। कागदक नकलमे ओ खाली घर भरल देखाइत छल। युवक कहलक जे गोदाममे ओ माल उतरल देखलक, मरम्मत होइत नहि। अदिति पुछलीह, “दोसर पन्नाक हस्ताक्षर अहाँक नहि अछि, ई अहाँ निश्चित कहि सकैत छी?” ओ उत्तर देलक, “हम एकर सत्यापन चाहैत छी। हमर लिखावटसँ नहि मिलैत; मुदा कियो कखन लिखलक, से नहि जनैत छी।”

राघवक पुरान ठेका-सहयोगी एही बीच फोन कएलक। आवाज ऊँच छल—“भतीजा बोलत तँ अगिला खेप बन्द।” राघव फोनक आवाज सभकेँ सुनए लेल खोललनि नहि; पहिने फोन बन्द कए लिखित प्रस्ताव माँगलनि। सहयोगी सन्देश पठौलक—“आगामी माल-आदेश फिलहाल स्थगित।’ ओ आदेशक वास्तविक कारण घोषित नहि छल, मुदा धमकीक फोन आ स्थगित आदेशक समय एक संग लिखल गेल। राघव अपन भतीजाकेँ कहलनि, “ठेका टूटबाक दाम हम गनब। तूँ जे देखलह ओकरा नहि मेटाएब।” युवक

पुछलक, “जँ हमरा काजसँ निकालि देत?” राघव उत्तर देलनि, “तोहर रोजीक अधिकारक प्रश्न अलग उठाएब; चुप रहबाक भाड़ा नहि देब।”

अदिति सामग्रीक मूल पर्चा देखैत कहलीह जे ‘चारि मद’ लिखल गेलासँ चारि वस्तु उचित कोठरीमे लगल, ई साबित नहि होइत अछि। मीना साहक दू पात्रक मरम्मत-पर्ची अलग छल; ललितक काठक भार-प्रमाणनपर अस्वीकृति अलग। गोदामक मजदूरक उपस्थितिक पंजी साक्षीक स्थान बतबैत छल, अपराधीक नहि। नैरा तीनू बयानक विषय अलग रखलीह—एक कर्मिक सुनल ध्वनि, दोसरक स्वयं देखल माल-प्रवेश, आ पुरान प्रतिवेदनक लिखित निर्देश। सभक परस्पर जाँच सम्भव छल, मुदा एक-दोसराक खाली घर भरि देबाक अनुमति नहि।

बैठकक बीचमे महेशक फोन काँपल। अनजान नम्बर सँ एकटा छोट सन्देश छल —‘कागद पढ़ेनिहार अपन घरक सोचय।’ ओकरा धमकी बुझबाक पर्याप्त कारण छल, मुदा पठेनिहारक पहिचान कियो नहि जनैत छल। महेश फोन कबीर लग राखलनि। कबीर मूल सन्देशक समय आ नम्बर सुरक्षित करबाक कहलनि, नकल केवल अधिकृत शिकायतमे जोड़ब। पत्नी टेबुलपर हाथ राखि कहलीह, “आब ई जाँचक गोपनीयता मात्र नहि रहल। हमरा घरक सुरक्षा कतेक देरिमे भेटत?” कियो समयक निश्चित वचन नहि दऽ सकल। ई उत्तर पत्नीकेँ असन्तोष देलक, मुदा असत्य आश्वासनसँ नीक छल।

सायंकाल पुलिस सहायता-कक्षमे अधिकारी आवेदन लेलनि। ओ अखबारक कटिंग देखिकऽ कहला, “ककरो नाम तँ नहि छपल अछि।” महेशक पत्नी साफ उत्तर देलीह, “नामक बदला घर, काज आ परिवारक इशारा छपल अछि। पुछताछ आब हमर बेटी धरि पहुँचल अछि।” अधिकारी आवेदनमे जोखिमक विवरण जोड़लनि, गश्त बढ़ेबाक बात लिखलनि आ एक प्राप्ति-संख्या देलनि। महेश पुछलनि जे रात्रिकालीन प्रत्यक्ष सुरक्षाक आदेश सेहो अछि की नहि। अधिकारी कहला जे ओकर स्वीकृति ऊपरसँ चाही; एखन पुष्टि नहि। कबीर ओहि अपूर्णताकेँ आवेदनक प्रति पर टिप्पणी बनौने राखलनि।

महेश घर घुलला तँ बेटी पुरान कॉपीमे नदीक चित्र बना रहल छलीह। कागदपर नील रेखा दू घरक बीचसँ निकलैत छल। “ई नदि छल की बाट?” महेश पुछलनि। बेटी उत्तर देलक, “दुनू। हम चाहैत छी विद्यालय जाएबाक लेल पुल रहय।” महेश हँसबाक प्रयत्न

कएलनि। पत्नी टोकलीह, “बच्चीकेँ आजुक घटना कहबाक अवसर दिअ।” बेटी कहलक जे शिक्षिका दिनभरि ओकरा सामान्य छात्राक जेकाँ कक्षामे राखलनि, मुदा एक सहेली अखबारमे ‘तोहर बाबूक काम’ पढ़बाक बात कहने छलीह। ओ प्रश्न कएलक, “जँ कियो सच कहए, तखन ओकर परिवारक नाम सभ जनताह?” महेश उत्तर दैत बहुत देरि लेलनि —“साँच कहबाक अधिकार अछि। मुदा सचक बाट चुननिहारक सुरक्षाक दायित्वो अछि।”

रातिक भोजन लेल पत्नी चाउरक संग बचल दाल गरम कएने छलीह। ओ घर छोड़बाक सूची फेर खोललीह। कियो कहने छल जे रेल-पारक बाहर रिश्तेदारक घर भेटत, मुदा ओ रिश्तेदारक सहमति एखन नहि आयल छल। बेटी अपन किताब मात्र लए चलबाक जिद कएलक; माय कहलीह जे कपड़ा, दवाइ आ विद्यालयक प्रमाणो चाही। महेश पुछलनि जे ओ सभक संग जा सकताह की नहि। पत्नी कहलीह, “अहाँ जाँचक कागदक व्यवस्था कऽ सकैत छी, मुदा हमसभ कतय रहब से हमहुँ तय करब। जँ काल्हि भोरमे अलग ठाम जएब पड़त तँ बेटीकेँ पहिने बुझाएब।” हुनकर वाक्यमे तिक्तता कम, दिनभरि थाकल निर्णयक दृढ़ता बेसी छल।

महेश एकटा छोट गलती करबाक कात पहुँचलाह। हुनका सम्पादकक दोसर फोन अएल—‘नव स्पष्टीकरण छपि सकैत अछि; अहाँ अपन पूरा नाम दऽ दियौ तँ अनुमान बन्द होएत।’ महेश क्रोधमे कहए चाहलनि जे नाम लिखि दिअ, हम किछु नहि लुकाएब। पत्नी हुनकर हाथक कापी देखलीह। “अहाँक साहसक प्रमाण हमरा घरक पता किएक होएत?” ओ पुछलीह। महेश फोनक उत्तर बदललनि। “हम अपन नाम प्रकाशित करबाक सहमति नहि दैत छी। अस्पतालक सार्वजनिक काज जाँचू; हमरा जकरा सँ उत्तर चाही, हुनका बंद प्रक्रिया मे बयान देब।” सम्पादक एतबा लिखित रूपमे स्वीकार कएलक।

नैरा अपना घरमे ओहि राति पत्रक प्रारूप पुनः पढ़ैत छलीह। ओहि दिन महेशक परिवारसँ मिलने बिना हुनका कागदक प्रति मिलल छल, जकर भीतर पत्नी लिखने छलीह —‘सुरक्षा सुनिश्चित होएबा धरि सार्वजनिक परिचयक सभ इशारा रोकल जाए। भविष्यक पत्रमे परिवारक सहमतिक अनुमान नहि कएल जाए।’ नैरा एक बेर फोन करबाक सोचलीह, फेर पत्नी अपन उत्तर लिखि देने छथि से देखि फोन नहि कएलनि। ओ

कबीरकेँ केवल प्रक्रिया सम्बन्धी सूचना पठौलीह—अनलाइन प्रति बदलल गेल अछि, किन्तु मूल अंकक वितरण वापस नहि लेल गेल; सुरक्षा-निवेदनक निर्णय शेष अछि। ओ अपन पुरान प्रकाशनक मूल प्रति सुरक्षित रखलीह। पछतावा करबाक लेल प्रमाण मेटाएब नहि।

महेश पत्नी आ बेटीकेँ भीतरक कोठरीमे विश्राम करए कहलनि। ओ स्वयं घरक दरबज्जा देखबाक लेल उठलाह, तखन फोनपर कबीरक सन्देश आयल जे रातिक गश्तक आश्वासन पुनः माँगल गेल अछि; निश्चित तैनातीक पुष्टि एखन नहि। पत्नी कहलीह, “दरबज्जा बेर-बेर खोलि नहि देखू। हम सभ दिनभरि कागद देखि थाकि गेल छी।” महेश सहमति देलनि। ओ दूधक खाली लोटा, विद्यालयक पानी-बोतल आ पत्नी द्वारा बाँधल दवाइक पोटली एकठाम रखलनि। एहि सामान्य वस्तुसभक क्रममे घर अस्थायी शरणस्थल नहि, हुनकर अपन जीवन सन लागि रहल छल।

गलीमे आधा राति सँ पहिने एकटा जोरक खटखटाहट भेल। महेश दरबज्जा नहि खोललनि; भीतरसँ पुछलनि, “कौन?” बाहरसँ उत्तर आयल—“पुरान गोदामक हिसाब चाही।” ओ कहला, “काजक बात लिखित कार्यालयमे करू। एतय परिवार अछि।” फेर दू ठोकर दरबज्जापर पड़ल; काठक एक पट्टी फाटि गेल। पत्नी बेटीकेँ भीतर लऽ गेलीह आ सहायता-कक्षक नम्बर मिलौलीह। महेश दरबज्जाक पाछाँ ठाढ़ छला, मुदा ओहि क्षण हुनका ज्ञात नहि छल जे बाहर कतेक लोक छलाह। ओ ककरो नाम नहि लेलनि।

दरबज्जाक कुंडी एक बेर झटका खएने खुलल नहि। बाहरसँ एकटा भारी वस्तु फेंकल गेल जे दुआरक ऊपरक काँच तोड़ैत बरामदामे खसल। महेश पत्नीकेँ चेतबैत पाछू हटला, तथापि काँचक छोट टुकड़ा हुनकर बायाँ बाँहमे धँसि गेल। बेटी भीतरसँ रोए लागल। पड़ोसक दू लोक आवाज सुनि अपन घरसँ निकललाह, तखन बाहरक एपरक आवाज तेज भेल आ मोटरसाइकिल दूर चलि गेल। कियो चेहरा स्पष्ट नहि देखल। पत्नी पहिने दरबज्जा भीतरसँ अटका कऽ बेटीकेँ सुरक्षित ठाम बैसौलीह, फेर साफ कपड़ासँ महेशक बाँहि दबौलीह। महेश जिअइत छला, बोलि सकैत छलाह; घावक गहिराइ जाँचबाक छल।

पड़ोसक एक महिला अपन फोनसँ अस्पतालक सहायताक व्यवस्था कएलनि। महेशक पत्नी पुछलीह, “अहाँ गाड़ी भेजा सकैत छी? हमर पति घायल छथि। पता सार्वजनिक

समूहमे नहि लिखब।” पड़ोसिन सामान्य सहायता नम्बरपर ठाम बतौलीह, मुदा गलीक लोकसमूहमे फोटो नहि पठौलीह। महेश अपन बेटीकेँ कहलनि, “तौँ हमर बाँहि मत देख। अपन किताब संग राख।” बेटी उत्तर देलक, “हम देखब नहि, मुदा अहाँ जएब तँ हम मायक संग जाएब।” पत्नी ओकरा रोकलीह नहि। एहि राति परिवारक निर्णयक केन्द्र अखबारक लेखक नहि, भीतरक तीन व्यक्ति छलाह।

अस्पतालक आपात कक्षमे सलमा महेशक बाँहि साफ करबैत घावक परीक्षणक व्यवस्था कएलनि। डॉक्टर बतौलनि जे काँचक चोटक चिकित्सा आ निगरानी चाही; तत्काल जानक खतरा देखल नहि गेल, मुदा चोटक वास्तविक माप जाँचक बाद लिखल जायत। पुलिसक कर्मचारी घटना-स्थलक सामान्य विवरण पुछलनि। महेश स्पष्ट कएलनि जे हमला भेल, मुदा आक्रमणकारीकेँ पहिचानल नहि। बाहरक आवाज ‘गोदामक हिसाब’ कहलक, मुदा ओ वाक्य अपनासँ ककरो आदेश अथवा वास्तविक हेतुक प्रमाण नहि। पत्नी एहि वाक्यक मूल शब्द लिखलनि, ओकर पाछाँ अनुमान नहि जोड़लनि।

राघवकेँ खबर भेटल तँ ओ अस्पतालक दरबज्जापर आएलाह, भतीजाकेँ संग नहि अनलनि। हुनकर आँखि थाकल छल। महेश कहलनि, “भतीजाकेँ एतय मत बजाउ। ओकर नाम फेर प्रकाशित होएत।” राघव उत्तर देलनि, “ओ अपन बयान देबाक निर्णय स्वयं लेत; हम रोकब नहि। मुदा ओकर बाटक खबर ककरो नहि देब।” हुनका मालूम छल जे फोनपर ठेका स्थगित होएबाक धमकी आ महेशक घरपर हमला समयमे नजदीक अछि। ओ दुनूकेँ एक्के व्यक्ति अथवा आदेशसँ जोड़बाक निश्चित प्रमाण नहि मानलनि। तखनहुँ ओ अपन ठेकाक सन्देश आ भतीजाक बहीक प्रति अलग लिफाफामे राखि अधिकृत जाँच लेल सुरक्षित कएलनि।

कबीर आपात कक्षमे लिखित सुरक्षा-निवेदनक नकल पहुँचेने छलाह। पूर्व आवेदनक प्राप्ति छल; नव घटनाक विवरण आ घावक चिकित्सा-पर्ची ओकर संग जोड़ल जाएत। अधिकारी कहलनि जे अस्थायी संरक्षणपर उच्च अधिकारीसँ बात भेल अछि। महेशक पत्नी उत्तर देलीह, “हमरा ‘बात भेल’ नहि, निर्णयक लिखित प्रति चाही। आइ राति बेटीकेँ कतय राखब से एखने तय होअय।” कबीर हुनकर अनुमति लऽ अस्थायी शरणक एक विकल्पक विषयमे गोपनीय सम्पर्क शुरू कएलनि। ठामक सहमति एखन भेटल नहि छल।

नैरा आपात कक्षक बाहर आबि किछु दूरीपर ठाढ़ रहलीह। ओ भीतर जा कऽ महेशक हाथ नहि पकड़लीह। कबीर बाहर आबि कहलनि जे परिवार एखन कानूनी प्रक्रिया आ उपचारमे व्यस्त अछि। नैरा पुछलीह, “प्रकाशनक मूल कागद सुरक्षित अछि?” कबीर कहला, “अछि। मुदा एखन ई ककरो अपराधक कारण-शृंखलाक पूर्ण प्रमाण नहि। जाँच चलत। परिवारक निर्णयक प्रतीक्षा करू।” नैरा उत्तर देलीह, “हम प्रतीक्षा करब, मुदा हमर पहिल प्रकाशनक जिम्मेदारी छिपाएब नहि।” ओ शब्द अपन कापीमे लिखलीह, सार्वजनिक समाचारमे नहि।

महेश आपात खाटक कात बेटी द्वारा बनाओल नदीक चित्र देखलनि। पत्नी बाटमे ओ काँपी उठाएने छलीह। चित्रक कागद मुड़ि गेल छल, पुलक एक कोना स्याहीसँ धुँधला गेल छल। महेश पत्नीकेँ कहलनि, “आइ काजक साँच बचा लेलहुँ की नहि, नहि जनैत छी। मुदा हमरा घरक विषयमे निर्णय अहाँ दुनू करब, हमर गवाही नहि।” पत्नी उत्तर देलीह, “अहाँक गवाही अहाँक अछि, हमरा जीबाक बाट हमर। दुनूकेँ बचएबाक कोशिश करब। पहिने सुरक्षित राति बिताबी।” ओहि क्षण ककरो विजय नहि भेल, मुदा परिवारक आवाज पुनः एकठाम आबि गेल।

आधी राति पार होइत अधिकारीक सन्देश आयल जे तत्काल गश्तक निवेदन स्वीकार भेल अछि; नियमित व्यक्तिगत सुरक्षा आ गोपनीय निवासक स्वीकृति एखन लंबित अछि। महेश ई अन्तर बुझलनि। भतीजाक बहीक मूल प्रति सीलमे छल, समाचारक असंशोधित अंक अलग सुरक्षित छल, आ हमलाक घटनास्थलक तस्वीर अधिकृत जाँचक लेल माँगल गेल। तीनू अलग चीज छल। अस्पतालक खिड़कीसँ महेश दूरक गलीक अन्हार देखलनि। ओ जानैत छलाह जे राति बीति रहल अछि, मुदा सुरक्षाक प्रश्न समाधान नहि भेल अछि। पत्नी खाटक कात बैसि प्रहरीक नाम नहि, आगाँक भेटक समय लिखलीह। ओहि कागदक खाली ठाम एखनहुँ रहि गेल छल।

अध्याय ७१ • मृत्यु आ दस्तावेज

भोरक उजास अस्पतालक बरामदामे पहुँचबाक पहिने महेशक पत्नी बाँहक पट्टीपर लिखल तिथि पढ़ि रहल छलीह। कागदमे घाव साफ करबाक निर्देश छल, अगिला जाँचक समय छल, मुदा परिवारक सुरक्षाक आवेदनक उत्तर एखनहुँ नहि छल। महेश खाटक कोनापर बैसि एक हाथसँ कुरता पहिरबाक कोशिश कएलनि। बेटी आगाँ बढ़ि बटन लगा देलक। ओ हँसबाक प्रयत्न करैत कहला, “हमरा एखनहुँ तोहर सहायता चाही।” बेटी जवाब देलक, “मुदा विद्यालयक चित्र अहाँ स्वयं देखब।” दुनू हँसला नहि; हुनकर बीच एकटा छोट भरोसा मात्र रहल।

पत्नी रातिक कागद तीन तहमे रखने छलीह। पहिलमे चिकित्साक पर्ची, दोसरमे घरपर भेल हमलाक विवरण, तेसरमे गोपनीय निवासक निवेदन। अस्पतालक कर्मचारी हुनका मुक्त करबाक प्रक्रिया बुझौलक, मुदा सार्वजनिक द्वारसँ बाहर निकललाक विषयमे कोनो लिखित सुरक्षानिर्देश नहि छल। ओ कबीरकेँ फोन कएलनि। “हमरा आश्वासन नहि, गाड़ी आ जिम्मेदार व्यक्तिक नाम चाही,” ओ कहलीह। कबीर कहलनि जे अस्थायी ठामक सहमति भेटबाक निकट अछि, मुदा सुरक्षा-कर्मिक निश्चित नियुक्ति नहि भेल। पत्नी फोन राखि महेश दिस देखलीह। “तखन घर नहि घुब,” ओ अपन निर्णय सुनौलीह।

महेश एतबा मानि लेलनि। एक पुरान थैलामे ओ बेटी बनाओल नदीक चित्र आ अपन चश्मा रखलनि। एकटा बयानक कागद बाहर निकालि पुछलनि, “ई कबीरक माध्यमसँ अधिकृत जाँच-अधिकारी धरि पहुँचि जाएत?” पत्नी पढ़लीह। ओहिमे महेश साफ लिखने छलाह जे अस्पतालक मालक प्रवेश-खाता सँ हुनका परिचय अछि, परन्तु सामग्री कतय लागल से ओ स्वयं नहि देखने छथि। ओ लिखने छलाह जे घरपर हमलाक राति बाहरक आवाज सुनलनि, हमलावरक चेहरा नहि। पत्नी कागद वापस दैत कहलीह, “जतेक देखलहुँ ततेक लिखू। हमर बेटीकेँ दोसर लोकक अनुमानक दाम नहि चुकाबय पड़य।”

कबीर अस्पतालक एक सुनसान कार्यालयमे भेटलाह। ओ महेशक मूल बयानक प्रति हुनकर सम्मुख गनलनि, प्राप्तिक लेल मुहरवला लिफाफा देलनि आ चिकित्सकीय अनुमति बिना अधिक समय धरि बाहर नहि रहबाक आग्रह कएलनि। महेश कहलनि, “हम

खाटपर सुरक्षित छी से लिखबाक लेल तैयार नहि। जाहि ठाम बेटीक कापी अछि, ओहि ठामक सुरक्षाक उत्तर चाही।” कबीरक मुखपर थकान छल। ओ स्वयं सुरक्षा नियुक्त नहि कऽ सकैत छलाह; एहि सीमाकेँ हुनका स्पष्ट कहबाक पड़ल। ओ परिवारक अलग निवासक व्यवस्था लेल पत्नी सँ पुनः सहमति लेलनि। बेटी ओहि बातचीतमे उपस्थित नहि रहबाक निर्णय कएलक; ओकरा अस्पतालक बगीचामे बैसि चित्र पूरा करबाक छल।

दोपहरक कात अस्थायी निवासक अनुमति भेटल। गाड़ी अस्पतालक पाछाँक बन्द बरामदा लग पहुँचबाक छल, कारण सामनेक मुख्य द्वारपर पत्रकारसभक भीड़ छल। महेशक पत्नी स्पष्ट कहलीह जे बेटीकेँ पहिने सुरक्षित गाड़ीमे बैसाओल जाए आ कोनो लोक फोटो नहि लय। कबीर एहि प्रस्तावपर अस्पतालक कर्मचारीसँ बाट तय कएलनि। समय लिखल गेल, मुदा गाड़ी चलौनिहारक पहिचानक पुष्टि फोनपर आकाशमे अटकल रहल। महेश कहलनि, “जखन निश्चित नाम भेटत तखन बाहर जाएब।” एहि वाक्यक तुरन्त बाद भीतरक कार्यालयसँ संदेश अएल जे सुरक्षा-निवेदनक मूल प्रति लेल हुनकर हस्ताक्षर चाही।

पत्नी कागद लऽ स्वयं जाएबाक प्रस्ताव रखलीह। कार्यालयक कर्मचारी फोनपर कहलनि जे घायल आवेदकक हस्ताक्षर पहचानि लेल एक बेर उपस्थिति चाही। कबीर एतय विरोध कएलनि—“खाट लग आनि लीअ, भेंटक समय निर्धारित करू।” कर्मचारी उत्तर देलक जे अधिकारी बाहरे जाऽ रहल छथि, भेंट एखने सम्भव अछि। महेश बुझलनि जे फेर एकटा आवेदन लम्बित रहि जायत। ओ पत्नीकेँ कहला, “हम कबीरक संग मात्र कार्यालयक ओहि कोना धरि जाएब। अहाँ बेटी लग रहू।” पत्नी बहुत देर हुनकर आँखिमे देखलीह। “अहाँ जे बात कहलहुँ, ओकर सीमा नहि तोड़ब,” ओ उत्तर देलीह।

अस्पतालक पाछाँक गलियारा दिनमे सेहो आधा अन्हार छल। काठक पेटी, पुरान खाट आ धुलाईक खाली ड्रम मार्गक एक कात राखल छल। कबीर महेशक दहिना दिस चलैत छला, जाहिसँ घायल बाँहि भित्ति सँ नहि टकराय। कार्यालयक दरबज्जा आब बन्द छल; कर्मचारी दोसर कोठरीमे गेल छल। ओ दुनू ठाढ़ भऽ प्रतीक्षा करए लगला। ओहि समय पाछाँक सँकर द्वारसँ दू व्यक्ति तेज कदमसँ प्रवेश कएलक। एकटा लोक महेशक नाम

पुकारलक। महेश घूमि कऽ देखलनि, मुदा उत्तर देबासँ पहिने पहिल व्यक्तिक धक्का हुनका भित्ति दिस फेंक देलक। दोसर व्यक्तिक हाथमे भारी लोहेक वस्तु छल।

कबीर “रुकू” कहि आगाँ बढ़लाह। प्रहारक आवाज भित्तिक भीतर गुंजल। महेश जमीनपर खसि पड़लाह। कबीर हुनक माथ लग पहुँचबाक पहिने हमलावर दुनू पाछाँक द्वार दिस दौड़ि गेल। कबीर ओकरामे सँ ककरो चेहरा साफ नहि देखलनि; झलक मे कपड़ाक रङ्ग आ एकटा स्वर मात्र रहि गेल। ओ दौड़बाक बदला सहायता लेल चिचियौलनि, कारण महेश उठि नहि रहल छलाह। वार्डक परिचारिका आ दू सुरक्षाकर्मी आबि गेलाह। “रास्ता खाली करू, चिकित्सा-दलकेँ बजाउ,” परिचारिका आदेश देलीह। कबीर अपन हाथक कागद जमीनपर राखि महेशक सिरक कात घुटना टेकलनि।

पत्नी जखन आपात कक्ष दिस दौड़लीह, तखन बेटी हुनकर पाछाँ छल। दरबज्जापर पत्नी ठाढ़ भऽ ओकरा भीतर जाएबासँ रोकलीह। “एतय तोहर रुकबाक स्थान नहि,” ओ कहलीह, “दुलारी काकीकेँ फोन करू, मुदा सार्वजनिक समूहमे हमर ठेकाना मत लिखिह।” बेटी फोन मिललौलक। ओहि छोट निर्णयमे भयक बीच ओकरा अपन काज भेटल। पत्नी भीतर गेलीह तँ महेशक शरीरपर उपचार चलि रहल छल; डॉक्टर साफ कहलनि जे माथमे गम्भीर चोट अछि, परिणाम एखन कहल नहि जा सकैत। पत्नीक पहिल प्रश्न छल, “रातिक बाँहक घावसँ ई भेल?” डॉक्टर उत्तर देलनि, “नहि, ई नव चोट अछि। दुनू घटना अलग दर्ज होएत।”

समय थमल नहि। खात बदलल गेल, औषधि पहुँचल, चिकित्सकसभक बीच छोट-छोट निर्णय होइत रहल। पत्नी दरबज्जाक पास घड़ीक काँट पर आँखि रखने छलीह। जे शब्द कहबाक छल ओ सभ बहुत सरल छल—दवाइ, पानि, साँस, फेर। महेशक बाँहमे ओहि रातिक पट्टी एखनहुँ छल, मुदा हुनकर प्राणक संकट माथक नव प्रहारसँ छल। ओ एक बेर हुनकर नाँव पुकारलीह। कियो कहलक जे चिकित्सक काज कऽ रहल छथि; परिवारकेँ किछु दूर ठाढ़ रहबाक चाही। ओ पाछू हटलीह, मुदा ओहि जगह सँ नहि गेलीह।

साँझ ढलैत चिकित्सक पत्नीसँ अलग बैसबाक आग्रह कएलनि। हुनका मृत्यु दर्ज करबाक समय बताओल गेल। चिकित्सक हिंसक प्रहारसँ भेल गम्भीर चोटक चिकित्सकीय विवरण लिखलनि; मृत्यु-अनुसन्धान आ शव-परीक्षणक औपचारिक प्रक्रिया

सेहो आवश्यक छल। पत्नी कागदपर समय पढ़ि सकलीह, तखन कापी बन्द कऽ देलीह। “काल्हि राति ओ जिअइत छला। बाँहक घाव लग पट्टी छल,” ओ कहलीह। चिकित्सक केवल एतबा दोहरौलनि—“आइक नव हमलामे जे प्राणघातक चोट लागल, ओकर जाँच अलग होएत।” पत्नी उठि कऽ दरबज्जा दिस गेलीह; बाहर बेटी बैसल छलीह।

बेटी पुछलक, “बाबूजी कतय छथि?” पत्नी ओकरा कात बैसौलीह। ओ बचब तक आश्वासन नहि देलीह। “आब बाबूजी घुरि नहि औताह,” ओ कहलीह। बेटी बहुत देर मायक चेहरा देखैत रहल, तखन अपन आधा बनल चित्रक कोना मरोड़ि देलक। “हम बटन लगौने छलियनि,” ओकर मुँहसँ निकलल। पत्नी ओकर हाथ खोलि चित्र सम्हारलीह। “हँ, तौँ लगौने छलिह। ओहि बातकेँ कियो नहि मेटा सकैत,” ओ कहलीह। बच्ची रोए लागल तँ माय ओकरा चुप करए नहि कहलीह। वार्डक बाहर कुर्सीपर बैसल दुनू एक-दोसरकेँ सम्हारैत रहल।

नैरा खबर कबीरक छोट सन्देशसँ जनलीह। ओ महेशक घर नहि गेलीह; परिवार एखन अस्पतालमे छल आ ओहि ठाम ओकरा सार्वजनिक परिचयक पुनः जोखिम छल। ओ अपन मेजपर महेशक पहिल प्रकाशनक प्रति खोललीह। ओहि पन्नामे एकटा पदनाम, एकटा गोदाम आ परिवारक बाटक सँकेत छल। ओ पढ़लीह जे एहि सबकेँ एक संग रखबामे हुनकर गलती छल। पत्र हटाओल गेल, मुदा छपल नकल आ भेजल चित्र लोकक हाथमे बचि गेल। ओ अपन निजी पछतावा लिखि कागद नोकक तरे नहि सरकौलीह। मूल प्रति आ प्रकाशनक समयक प्रमाण अलग लिफाफामे रखलीह।

सम्पादक राति फोन कएलक। “एकटा संयुक्त बयान देल जा सकैत अछि,” ओ कहलक, “लिखि दिअ जे हमर सभक उद्देश्य लोकहित छल, आ हत्या कएल अनजान लोक; अहाँक भूलक प्रसंग एखन छोड़ि दिअ।” नैरा फोनक दोसर कात चुप रहलि। फेर कहलीह, “जकर हत्या भेल ओहि व्यक्तिक जीवनकेँ हमर उद्देश्यक ढाल नहि बनाएब। हम गलत प्रकाशन कएने छी। ई हत्या हम नहि कएने छी, मुदा हमर प्रकाशित इशारासँ हुनकर पहिचान असुरक्षित भेल। दुनू बात एक संग कहब।” सम्पादक पुछलक, “दोष अपन माथ लएब?” नैरा कहलनि, “जतेक जिम्मेदारी हमर अछि ततेक। अपराधीपर जाँचक दायित्व ओकर अपन अपराध लेल रहत।”

महेशक मृत्यु-सूचनाक बाद अस्पतालक पाछाँक गलियाराकें अधिकृत दल बन्द कएलक। कबीर अपन देखल घटनाक क्रम लिखबैत पहिने एकटा शब्द कटौलक—“लाल कमीज”—कारण हुनका कपड़ाक रंग निश्चित स्मरण नहि छल। अधिकारी पुछलक, “दू लोक छल ने?” कबीर कहलनि, “दू आकृति नजदीकसँ देखलहुँ। एकटा प्रहारक क्षण देखलहुँ। दोसरक हाथक वस्तु स्पष्ट छल, चेहरा नहि।” कर्मचारी छूटल रजिस्टर, सुरक्षाकर्मीसभक ड्यूटी आ पाछाँक द्वारक कैमरा-जाँचक अलग सूची बनौलक। कैमरा चलल छल की नहि, तकर उत्तर ओहि समय उपलब्ध नहि छल।

घटनास्थलक फर्शपर खसल कबीरक लिफाफा पुलिसक साक्षीमे उठाओल गेल। ओकर भीतर महेशक बयानक प्राप्ति-पर्ची छल; मूल बयान अधिकृत कार्यालयक सीलमे पहिनहिसँ सुरक्षित छल। पत्नी आग्रह कएलनि जे बयानक प्रतिमे महेशक घरक ठेकाना रहलासँ ओकरा सार्वजनिक नकलमे नहि देल जाए। अधिकारी कहलक जे सुरक्षा-जाँचक खातिर निजी विवरण अलग राखल जायत। कबीर ओहि वचनक लिखित नकल माँगलनि। महेशक जीवन नहि बचल, मुदा हुनकर परिवारक आगामी सुरक्षाक प्रश्न ओहि मृत्युसँ समाप्त नहि भेल।

पहिल हमलाक घटनास्थलक दरबज्जा, दोसर हमलाक गलियारा आ अस्पतालक पुरान मरम्मत-पंजी तीनटा भिन्न साक्ष्यस्थल छल। राघव सिंह ई बात दोहरबैत अपन भतीजाकें घरमे रोकबाक बदला अधिकृत बयान लेल वकीलक माध्यमसँ समय माँगलनि। भतीजा कहलक, “मामा, अहाँक ठेका गेल; आब महेश मरि गेला। हमरा बोलबासँ दोसर किछु होएत?” राघव उत्तर देलनि, “झूठ नहि बोलब, मुदा एतय के मरल आ किएक मरल—ई हम ककरो अनुमानसँ नहि कहब।” हुनका डर छल, मुदा ओ भतीजाक मूल हस्ताक्षरक प्रश्नकें महेशक हत्याक सिद्ध कारण घोषित नहि कएलनि।

रातिक अंतिम पहरमे अस्पतालक शवगृहक बाहर शशिभूषण महापात्र आएलाह। हुनकर हाथमे खपच्ची बाँधबाक सूत, सफेद कपड़ाक नाप आ एकटा छोट मजदूरी-खाता छल। ओ अस्पतालक कर्मचारी नहि, मृत्यु-पश्चात् आवश्यक सामग्री जुटबैत निजी कारीगर छलाह। पत्नीकें देखिते ओ दरबज्जासँ किछु दूरीपर ठाढ़ भऽ रहलाह। “हम शशिभूषण,” ओ कहला, “कियो कहलनि जे कपड़ा, बाँस आ ढुलाईक काज पूछबाक

अछि। अहाँक अनुमति बिना हम किछु तय नहि करब।” पत्नी पुछलीह, “अहाँ लेखामे नाम कतय सँ लिखब?” ओ उत्तर देलनि, “सरकारी मृत्यु-पत्र हम नहि बनबैत छी; हमर खाता केवल सामग्री आ श्रमक अछि।”

शशिभूषण दू पृष्ठ देखौलनि। एकमे बाँस, कपड़ा, सूत आ वाहनक अलग लागत छल, दोसरमे हुनकर अपन हाथक मेहनताना। ओ स्पष्ट कहलनि जे शवगृहक जारी कागद, चिकित्सकीय मृत्युप्रमाण, पुलिसक प्रक्रिया आ हुनकर व्यापारी रसीद एक वस्तु नहि अछि। पत्नी पुछलीह, “नाम एखन नहि लिखब, तखन सामान राखब?” शशिभूषण कहलनि, “लिखित स्वीकृति भेटलापर। नामक पुष्टि नहि भेल तँ केवल परिवारक दखल-पर्चीपर सामान आरक्षित रखब; ककरो अनजान देहक नाम जोड़ि पैसा नहि लेब।” पत्नी अपन पति महेश मंडलक नाम साफ लिखि देलीह, मुदा ओ पुछलीह जे बेटीक नाम रसीदमे अनिवार्य अछि की नहि। “नहि,” शशिभूषण कहलनि।

नैरा दोसर दिन सार्वजनिक पत्रक प्रारूप बनौलीह। पहिल पाँतिमे अस्पतालक दोष अथवा गोदामक सन्दिग्ध लोकक नाम नहि, महेशक हत्या आ हुनकर परिवारक सहमति बिना निजी विवरण प्रकाशित नहि करबाक निर्णय छल। तकर बाद ओ अपन पहिल नागरिक-पत्रक तिथि, कतेक सूचना सार्वजनिक कएने छलीह आ ओहि सँ सम्भावित पहिचानक बाट कोना खुलल, से लिखलीह। ओ एहि गलतीक लेल सार्वजनिक क्षमा माँगलीह; संगहि पत्रकार आ संस्थाक अलग सम्पादकीय दायित्व लिखलीह। ओ ककरो हत्या करबाक आदेश देने छल, से दावा नहि कएलनि; ओ एहन आदेशक स्रोत जनैत छथि, सेहो नहि लिखलीह।

नैरा वक्तव्य एकटा सीमित सार्वजनिक बैठकमे पढ़लीह। उपस्थिति-पंजीमे महेशक परिवारक नाम नहि लिखल गेल। ओ स्पष्ट कहलीह, “महेशक हत्या भेल अछि; एहि अपराधक उत्तरदायित्व हत्या कएनिहार आ योजना बनौनिहार व्यक्तिपर अछि। हम जे सार्वजनिक सूचना देलियैक, ओ बिना पर्याप्त सुरक्षाजाँचक छल; ओहि गलतीसँ महेशक पहिचान चिन्हेबाक जोखिम बढ़ल। हम अपन भागक जिम्मेदारी स्वीकार करैत छी, मुदा कोनो अप्रमाणित व्यक्तिक अपराध घोषित नहि करैत छी।” सभामे एकटा लोक पुछलक,

“तखन ई हत्या ककर आदेशपर?” नैरा उत्तर देलीह, “एखन हम नहि जनैत छी। मूल प्रमाण जाँचबाक अछि।”

एक अधिकारीक प्रतिनिधि कहलनि जे सार्वजनिक क्षमा-माँगसँ अपराधक अनुसन्धान प्रभावित भऽ सकैत अछि। नैरा कहलीह जे ओ जाँचक मूल कागद मेटा नहि रहल छथि, मात्र अपन प्रकाशनक सत्यापन-त्रुटि स्वीकार करैत छथि। एक छात्रा पुछलक जे गलत सूचना फेर कोना रोकल जाए। नैरा चारि व्यवहारिक नियम रखलीह—साक्षीक पहिचानक जोखिमक समीक्षा, परिवारक स्वतन्त्र सहमति, छपल सामग्रीक संशोधन-इतिहासक संरक्षण आ सार्वजनिक हितक दस्तावेजमे निजी ठेकाना नहि जोड़ब। नियम सुनि कियो ताली नहि बजौलक। एकटा वृद्ध प्रश्न कएलनि, “जकरा बचब नहि भेल, ओकरा एहि नियमसँ की भेटत?” नैरा उत्तर देबामे देर कएलनि। “आब किछु नहि,” ओ कहलीह, “ई हमरा बदलबाक काज अछि, ओकर मृत्युक प्रतिफल नहि।”

महेशक पत्नी बैठकमे नहि गेलीह। ओ बेटी संग चिकित्सकीय कागदक नकल देखैत छलीह। बेटी पुछलक, “बाबूजीक लिखल सभ कागद अखबारमे जायत?” माय कहलीह, “नहि। किछु जाँचमे जाएत, किछु हम राखब, किछु तूँ बड़ भेलापर पढ़िह।” बेटी अपन नदीक चित्रक किनार एकटा छोट नाव बनौलक। “ई कागद बाबूजीक अछि,” ओ कहलक। माय चित्र लऽ सन्दूकमे नहि बन्द कएलनि; ओकरा घरक टेबुलपर रहए देलीह। मृत्युक पाछाँ सेहो बच्चीक चित्र ओकर अपन वस्तु छल, राज्यक प्रमाण नहि।

शशिभूषण फेर आयलाह तँ हुनकर रसीदपर दू अंक लिखल छल—पहिने देल अग्रिम आ काज पूरा भेला पर शेष रकम। शोकाकुल परिवारसँ ताहि राति पूरा भुगतान खींचबाक प्रस्ताव ओ अस्वीकार कएने छलाह। पत्नी पुछलीह, “जँ हम कम काज चाही तँ?” ओ कहला, “तेहनमे केवल जे सामग्री लागल आ जे श्रम भेल ओकर दाम। अनुष्ठानक बड़ाई हमरा व्यापारक शर्त नहि।” ओ नहि पुछलनि जे महेश कोन जातिक छला अथवा हुनकर मृत्युकें कोन नामसँ प्रचारित कएल जाएत। अपन रसीदमे ‘महेश मंडल परिवारक सामग्री आदेश’ लिखलनि; हत्या-प्रकरणक प्रमाण-पत्र बनेबाक दावा नहि कएलनि।

कबीर आपराधिक जाँचक लिखित प्राप्ति पत्नी धरि पहुँचौलनि। ओहिमे घटना-समय, स्थान, अस्पतालक उपचारक क्रम, गवाहसभक अलग बयान आ परीक्षण लेल उठाओल

वस्तुसभक सूची छल। हत्या-सम्बन्धी अनुसन्धान औपचारिक रूपसँ आरम्भ भेल छल। मुदा आक्रमण करनिहारक पहिचान, आदेशक स्रोत आ अस्पतालक ठेकासँ सम्भावित सम्बन्ध ओहि दिन सिद्ध नहि छल। पत्नी पुछलीह, “हमर परिवारक सुरक्षा?” कबीर उत्तर देलनि जे नवीकृत आवेदन स्वीकार भेल, अस्थायी निवास तय अछि, मुदा नियमित सुरक्षा-कर्मिक आदेश एखन लंबित। ओ उत्तरक कमजोरी स्वयं सुनि सकैत छलाह।

पत्नी घरक पुरान दरबज्जापर वापस नहि गेलीह। ओ चाभी पड़ोसिनकेँ सीमित समय लेल देलीह—केवल कपड़ा आ बेटीकेँ चाही एहन किताब लएबाक। घरक अन्य कागद पुलिसक अनुमति बिना नहि हिलाओल जाएत, से लिखित कएल गेल। पड़ोसिन पूछलीह, “अहाँ ओहि घरमे फेर घुर्ब?” पत्नी कहलीह, “एखन हम ई प्रश्नक उत्तर नहि देब। पहिने बेटीकेँ एकटा राति बिना दुआरक आवाजक सुतए दियौ।” पड़ोसिन हुनका अपन गरम भोजन पठेबाक प्रस्ताव देलीह; पत्नी स्वीकार कएलनि, मुदा बदलामे अपन परिवारक कथा सार्वजनिक कहबाक अनुमति नहि देलीह।

रातिमे अस्थायी कोठरीक खिड़कीसँ बेटी दूरक दीप देखैत छलीह। माय ओकरा सुतए कहलीह तँ ओ पुछलक, “बाबूजीक नाम किताबमे रहत?” माय उत्तर देलीह, “जँ तौँ चाहब तँ हुनकर काज लिखल जाएत। मुदा तौँ जे दिन हुनका याद करब, ओहि दिन किताब खोलब जरूरी नहि।” बेटी चुप भेल। थोड़े देर बाद ओ कहलकि, “हम हुनका बाँहक पट्टी बदलबाक नामे डेराइत छलहुँ; आइ बुझैत छी जे ओहि दिन ओ जिअइत छला।” माय ओकर ललाट चुमलीह। ओ घरक अन्हारक भीतर महेशकेँ वीर अथवा गवाहीक प्रतीक बनौने बिना याद कएलनि—दूध उबालैत, बेटीकेँ बटन लगबबैत आ बरखा देखैत एकटा साधारण जीवित मनुष्यक रूपमे।

दोसर कात, घटनास्थलक नक्शा बनौनिहार अधिकारी कबीरसँ पूछैत छलाह जे ओ स्वयं प्रहारक कतेक भाग देखलनि। कबीर कहला, “हम हुनका संग छलौ, मुदा हुनकर पाछाँ उभल पहिल लोकक मुख नहि देखलहुँ। आवाज सुनलहुँ, प्रहारक दिशा देखलहुँ, आ महेशकेँ खसैत देखलहुँ। एहि सँ अधिक कहब तँ दोसरक कथाकेँ अपन आँखिक गवाही बनायब।” अधिकारी शब्दशः लिखलक। मृत्यु भेलाक बाद कथाक हर खाली ठाम ककरो

अनुमानसँ भरि देबाक लालच बढ़ि गेल छल। कबीर ओहि खाली ठामकेँ खाली राखबाक कठिन निर्णय कएलनि।

महेशक मृत्यु भेल दिनक दस्तावेजक ढेरीमे एकटा चीज एहन छल जकरा पर कोनो सरकारी मुहर नहि छल—बेटीक नदीक चित्र। तकर पाछाँ छोट अक्षरमे महेश लिखने छला, ‘बरखाक बादो एहि नावक रंग नहि छुटय।’ माय ताहि पाँतिकेँ देखलनि, फेर चित्र बेटीकेँ वापस देलीह। हत्याक अभियोग, सार्वजनिक गलतीक स्वीकृति, मरम्मतिक फाइल आ सुरक्षित आवासक आवेदन अपन-अपन बाट पकड़ि चुकल छल। मुदा बेटीकेँ एखन अगिला दिनक विद्यालय, अपन चित्र आ मायक संग नवा ठाममे सुतबाक व्यवस्था चाही छल। ओकर जीवनक ई प्रश्न कागदक कोनो अन्तिम निष्कर्षक प्रतीक्षा नहि करैत छल।

अध्याय ७२ • संजयक दूरी

कबीरक हाथमे तीनटा पन्ना छल। पहिल पन्नापर महेशक मृत्यु-परीक्षण लेल बनल प्रारम्भिक सूची, दोसरपर घटनास्थलक नक्शा, तेसरपर हुनकर अपन बयानक नकल। खिड़कीसँ घाम आबि रहल छल, मुदा जाँचक कोठरीक मेजपर राखल पानीक गिलास एखनहुँ अनछुअल छल। कबीर तेसर पन्नाक एकटा पाँतिपर अँगुरी रखलनि। लिखल छल —‘साक्षी दू आक्रमणकारीकेँ प्रहार करैत देखलनि।’ ओ कहलनि, “ई हमर बयान नहि। हम दू आकृति देखलहुँ; प्रहारक क्षणमे एक्के हाथ आ महेशक खसब देखलहुँ। दोसर व्यक्ति प्रहार कएलक कि नहि, हम नहि जनैत छी।”

लेखक कर्मचारी कागद अपन दिस खसकौलक। “अहाँ पहिने दू लोकक बात कहने छलियै,” ओ उत्तर देलक। कबीरक आवाज ऊँच नहि भेल। “दू लोक उपस्थित रहब आ दुनू प्रहार करब, एक बात नहि। जे देखलहुँ, तकरा संक्षिप्त कऽ दोसर घटना नहि बनाउ।” कागद फेर लिखल गेल। पुरान पन्ना फाड़ल नहि गेल; ओकरा संशोधित बयानक संग लगाओल गेल। कबीर दुनू पन्नाक समय आ प्राप्ति-अंक देखलनि। पहिल बेर हुनका लगलनि जे एकटा शब्दक ठाम बदलला सँ पूरा घटनाक दोषारोपण बदलि सकैत अछि।

महेशक पत्नी ओहि दिन बेटीकेँ विद्यालय नहि पठौलीह। अध्यापिका घरक पाठ मँगौने छलीह, मुदा बच्ची नदीक चित्रक पाछाँ लिखल बाबूक पाँति बारम्बार पढ़बाक कोशिश करैत छलीह। माय ओकरा कहलनि, “आइ एहि चित्रकेँ पढ़बाक जरूरत नहि। तौ चाहिह तँ रंग भरि सकैत छह।” बच्ची नीला रंगक डिब्बी खोललक आ पुछलक, “बाबूजीक नाम फेर समाचारमे छपत?” माय कहलनि, “किछु समाचार छपत; मुदा अपन चित्र आ अपन ठेकानाक विषयमे हम दुनू निर्णय लेब।” बच्ची पहिल बेर अपन कागदकेँ टेबुलपर उलटा राखि देलक।

कबीरकेँ नैरा भेटलीह तँ ओ सार्वजनिक बयानक प्रशंसा नहि कएलनि। ओ कहला, “अहाँ गलती स्वीकार कएलहुँ, से आवश्यक छल। मुदा हम जकरा देखल नहि ओकर चेहरा अहाँक रिपोर्टमे फेर आबि गेल तँ सब बेकार।” नैरा उत्तर देलीह, “एहि बेर समाचार लिखबाक पहिने स्रोत-रेखा बनायब। जे बात अहाँक अछि, ओकर मूल बयान; जे

अधिकारीक अछि, ओकर कार्यालयी प्रति; आ जे हमर अनुमान, ओकरा स्पष्ट अनुमान कहब।” कबीर पुछलनि, “जे महेश नहि कहि सकैत छथि, ओकरा ककर आवाजमे कहब?” नैरा किछु क्षण चुप रहलि। “हुनकर बचल कागदक आवाजमे सेहो एतबा नहि जे हम मनसँ जोड़ि दी।”

बहुत पुरान हस्तिनापुरक सभागृहमे धृतराष्ट्रक सामने संजय ठाढ़ छलाह। युद्धक्षेत्रक धूलि हुनकर वस्त्रपर नहि छल, मुदा हुनकर बोलीमे थकान छल। राजाक हाथ सिंहासनक बाँहपर कँपैत छल। “भीष्म?” धृतराष्ट्र केवल एतबे पुछलनि। संजय उत्तर देलनि, “ओ युद्धभूमिमे शरशय्यापर पड़ल छथि; प्राण एखन हुनका छोड़ने नहि अछि।” राजा फेर पुछलनि, “आ हमर पुत्रसभ?” संजय तुरन्त संख्या नहि गनौलनि। ओ समझैत छलाह जे युद्धक समाचार एकटा कुलक दुःखसँ शुरू भेलो ओकर सीमा ओहि कुलधरि नहि अछि।

युद्धसँ पहिने व्यास हुनका विशेष दृष्टिक वरदान देने छलाह। संजय एहि दैवी सामर्थ्यसँ दूरक रणक्षेत्रक दृश्य आ घटनाक क्रम ग्रहण कऽ सकैत छलाह; ओ राजसभामे बैसल सामान्य आँखिक प्रत्यक्षदर्शी नहि छलाह। मुदा जे दृश्य हुनका उपलब्ध होइत छल, ओकर वर्णन आ ओकर अर्थ एके वस्तु नहि छल। युद्धभूमिक धूलि, रथक गति, बाणक वर्षा आ खसल सैनिक सभ हुनकर कथामे आबि सकैत छल। प्रत्येक योद्धाक अन्तर्मनक पूरा निर्णय, मरएवला प्रत्येक अज्ञात सैनिकक घरक दुख आ काल्हिक परिणाम एक्के साँसमे जनबाक दावा ओ किएक करितथि?

“अहाँ सभ देखलहुँ?” धृतराष्ट्र पुछलनि। संजय कहलनि, “महाराज, व्यासक कृपासँ जे दृश्य उपलब्ध भेल, तकर वर्णन करि रहल छी। जे बात रणक्षेत्रक घटनासँ अनुमानित अछि, ओकरा दृश्यक समान नहि कहब। आ जकर मनक भीतर हम प्रवेश नहि कएलहुँ, तकर निर्णयक गुप्त कारण अपना दिससँ नहि जोड़ब।” धृतराष्ट्रक माथ झुकि गेल। एहि उत्तरसँ हुनका आश्वासन कम आ युद्धक वास्तविक भार बेसी भेटल। ओ राजा छलाह; तथापि पुत्रसभक प्राणपर अपन अधिकार नहि चलि रहल छल।

संजय पहिल दिनक रथसभक बात कहब शुरू कएलनि। कुरुक्षेत्रक विशाल विस्तारपर पताका हिलैत छल। शंखक स्वर एकटा दिशासँ उठि दोसर दिशामे बिलाइत छल; मुदा रणभूमिक हर ध्वनि एकटा आदेश नहि छल। घोड़ाक खुरक थाप, घाइतक चीत्कार आ

सेनानायकक पुकार एक-दोसरामे मिलि जाइत छल। राजा बीचमे टोकलनि, “जे शंख बजल, ओ की विजयक संकेत छल?” संजय कहलनि, “शंखक शब्द सुनब आ युद्धक अन्तिम निर्णय बुझब दू अलग बात अछि। ओ समय युद्धक प्रारम्भ छल, विजयक निर्णय नहि।”

सभागृहक कात राखल धातुक पात्रमे तेलक बाती काँपैत छल। धृतराष्ट्र संजयकेँ बैसबाक लेल कहलनि, मुदा संजय बैसला नहि। राजाक प्रश्न केवल सेनाक संख्या नहि छल; ओ जानए चाहैत छलाह जे ककर आदेश ककर देह धरि पहुँचल। संजय कहला, “पैतृक स्नेह आ राजकीय निर्णय दुनू अहाँक जीवनक हिस्सा रहल, महाराज। हम जँ केवल शोक सुनाएब तँ निर्णयक इतिहास छूटत; जँ केवल राजकीय दोष कहब तँ ई घरक पीड़ा अनसुना रहत।” राजा पात्रक काँपैत ध्वनि सुनैत रहलाह, कोनो उत्तर नहि देलनि।

धृतराष्ट्र अपन पुत्र दुर्योधनक विषयमे पुछलनि। संजय राजपुत्रक कएल व्यवस्था, गुरु द्रोण लग हुनकर पहुँचब आ सेनाक विस्तारक वर्णन कएलनि। किन्तु ओ एकटा बात जोड़लनि—राजाक आदेश मानि युद्धभूमिमे ठाढ़ प्रत्येक सैनिक दुर्योधनक मनोकामनाक समान भागीदार नहि छल। ककरो दायित्व छल, ककरो भय, ककरो परिवारक जीविका। धृतराष्ट्रक आँखि नहि छल, तथापि आवाजक बीच ओहि अज्ञात लोकसभक उपस्थिति हुनका विचलित करए लागल।

अर्जुनक रथ दू सेनाक बीच ठमकल छल। संजय कृष्ण आ अर्जुनक संवाद राजाकेँ सुनौलनि—युद्धक बीच ठाढ़ योद्धा अपन गुरु, परिजन आ मित्रकेँ देखिकऽ किएक काँपैत अछि, आ कर्तव्यक प्रश्न कोना केवल आदेशसँ समाधान नहि होइत। धृतराष्ट्र चुपचाप सुनैत रहलाह। “अर्जुन अन्ततः शस्त्र उठौलनि,” संजय कहलनि, “मुदा हुनकर पहिल प्रश्न मेटाएल नहि छल; ओ प्रश्नक भार संग निर्णय कएलनि।” ई कथन सुनि राजा अपन दीर्घ मौनक दिनसभ स्मरण कएलनि।

दशम दिनक वर्णन धरि पहुँचैत संजयक स्वर फेर धीमा भेल। भीष्मक सामने शिखण्डीक रथ छल आ अर्जुनक बाण वर्षित होइत छल। भीष्म शिखण्डीपर शस्त्र न उठेबाक अपन निर्णय निभौलनि। संजय प्रत्येक बाणकेँ एके धनुषक श्रेय नहि देलनि, नहि ओ शिखण्डीकेँ निष्क्रिय ढाल कहि कऽ हटौलनि। भीष्मक शरीर अनेक बाणसँ विदीर्ण

भऽ शरशय्यापर टिकि गेल। “तखन ओ मरि गेला?” धृतराष्ट्रक प्रश्न फेर आयल। “नहि,” संजय स्पष्ट कएलनि, “ओहिठाम पतन भेल; मृत्यु नहि। हुनकर श्वास एखन चलि रहल अछि।”

धृतराष्ट्रक देह एक बेर काँपि उठल। ओ पुछलनि जे भीष्मकें जल भेटल की नहि, हुनकर चारूकात के छल, आ ओ अपन मनसँ ककरा याद करैत छलाह। संजय जे घटना कहि सकैत छलाह से कहला, मुदा भीष्मक भीतरी स्मृतिक पूर्ण अधिकारी बनबाक प्रयास नहि कएलनि। राजाकें असन्तोष भेल। “तँ अहाँ हमरा सब नहि कहि सकैत छी?” संजय उत्तर देलनि, “सब कहबाक दावा करब तँ जे जनैत छी, ओकरो भरोसा घटत।”

हस्तिनापुरक एकटा अन्हार गलियारेमे संजय थोड़े देर लेल अकेला ठाढ़ भेलाह। राजाक दुःखक आड़मे राजाक जिम्मेदारी लुका देब सहज छल, आ राजाक जिम्मेदारी कहैत हुनकर व्यक्तिगत शोककें तुच्छ बना देब सेहो सहज छल। संजय दुनूसँ बचबाक निर्णय कएलनि। फेर सभागृहमे घुरि कहलनि, “महाराज, युद्धक वृत्तान्त हम सुनाएब; मुदा जे निर्णय युद्ध धरि आनलक, ओकर प्रश्न अहाँकें स्वयं करबाक अछि।” धृतराष्ट्र हुनका चुप होएबाक आदेश नहि देलनि। ओ दिन राजाकें अपन सुनबाक सीमाक अनुभव पहिल बेर स्पष्ट भेल।

विदेहपुरमे नैराक टेबुलपर संजयक कोनो प्राचीन कागद नहि छल। ओ आधुनिक हत्या-जाँचक तीन नकल राखने छलीह। पहिल महेशक बयानक प्राप्ति-पर्ची, दोसर कबीरक संशोधित प्रत्यक्ष-बयान आ तेसर अस्पतालक प्रवेश-निकासक समय-खाता। तीनूमे एक्के रातिक अलग-अलग काज दर्ज छल। महेशक पर्ची एहि बातक प्रमाण छल जे बयान जमा भेल; ओहि बयानक प्रत्येक आरोप सत्य सिद्ध भऽ गेल, तकर नहि। कबीरक बयान प्रहारक सीमित दृश्य छल; अस्पतालक पंजी घायलकें उपचार लेल आनबाक समयक अभिलेख।

अस्पतालक अभिलेख-कक्षमे पुरान पन्ना खोजब सरल नहि छल। कर्मचारी एकटा मोट फाइल लऽ आयल आ पुछलक जे ककर हस्ताक्षर चाही। अदिति कहलनि, “हस्ताक्षरक नकलसँ पहिने पन्नाक मूल क्रम देखय चाही।” बीचक दू पन्ना परस्पर उलटि राखल छल; ओकरा सही क्रममे रखिते प्रवेशक समय बदलिए नहि गेल, केवल लिखबाक क्रम स्पष्ट

भेल। नैरा कर्मचारिक नाम रिपोर्टमे जोड़बाक आग्रह नहि कएलनि। ओ लिखलीह जे कागदक बँधाड़ आ लिखबाक समयक अन्तर अधिकारीक जाँच लेल शेष अछि। पुरान फाइलक गन्ध आ कर्मचारीक थाकल आँखि दुनू ओहि दिनक काजक हिस्सा छल।

नैरा पन्नासभक ऊपर अलग तिथि लिखलीह। मृत्यु-पश्चात् बनल नकलकेँ पहिल हमलाक रात्रिक प्रत्यक्ष कागदसँ मिलबैत घड़ीक अन्तर भेटल। अदिति कहलनि, “अस्पतालक घड़ी आ प्रहरीक घड़ी एके समय देखबैत छल, तकर पुष्टि नहि अछि। पाँच मिनटक अन्तरकेँ अपराधक छूटल समय मानि लेब तऽ जाँच उलटा भऽ सकैत अछि।” नैरा घड़ीसभक परीक्षणक प्रश्न अलग लिखलीह। एकटा सहकर्मी कहलनि, “समाचारमे ई छोट बात के पढ़त?” नैरा उत्तर देलीह, “पढ़बाक सुविधा लेल समयक अर्थ बदलि नहि सकैत छी।”

कबीर अपन बयान पढ़ैत एक स्थानपर अटकलाह। कर्मचारी लिखने छल—‘साक्षी लाल कपड़ावला व्यक्ति देखलनि।’ ओ पहिल रातियो रंगक बात काटबौने छलाह। “प्रकाशक रंगक कारण नहि जनैत छी,” ओ कहलनि, “गलियाराक बल्ब आधा खराब छल। जे कपड़ा लाल जकाँ लगल, ओ गाढ़ कोनो आन रंग भऽ सकैत अछि।” एतबा कहिते कर्मचारी चिढ़ि गेल। “हर बात काटि देब तँ बचत की?” कबीर उत्तर देलनि, “बचत ओहि बातक भरोसा जे काटल नहि गेल।” सुधारक तिथि आ हस्ताक्षर फेर जोडल गेल।

महेशक पत्नी कबीरकेँ अलग भेंट देबाक आग्रह कएलनि। ओ ककरो आरोप सुनए नहि, अपन घरक सुरक्षा जानए चाहैत छलीह। “अहाँ जे बयान देलहुँ, ओकर सार्वजनिक नकलमे बेटीकेँ चिन्हएवला विवरण रहत?” ओ पुछलीह। कबीर कहलनि, “मूल अधिकृत जाँचमे अछि; सार्वजनिक नकलक विषयमे हम स्वयं आदेश नहि दऽ सकैत छी। मुदा निजी विवरण हटएबाक आवेदन अलग देल जा सकैत अछि।” पत्नी आवेदनक प्रति अपने पढ़लीह, बेटीक नाम नहि लिखौलीह, आ ओकर प्राप्ति-अंक एकटा छोट कापीमे राखलीह। शोक हुनकर निर्णायक अधिकार नहि छीनने छल।

नैराक समाचारक सम्पादक नवा शीर्षक सुझौलक—“महेशक हत्याक प्रत्यक्षदर्शी सँ खुलल चेहरा’। नैरा शीर्षकक नीचे लाल रेखा खींचलीह। “चेहरा खुलल नहि,” ओ कहलीह। “प्रत्यक्षदर्शी केवल आकृति आ प्रहारक एक अंश देखलनि। हम जँ दोबारा एहेन

शीर्षक देब तँ अपन स्वीकृत गलतीकें नव रूपमे दोहराएब।” सम्पादक पुछलक, “तखन लिखब की?” नैरा कागद घुमौलीह—‘संशोधित गवाहीमे देखल आ अनुमानक भेद’। सम्पादकक चेहरापर असन्तोष छल; मुदा एहि बेर मूल बयान देखे बिना शीर्षक छापबाक निर्णय टरि गेल।

ओही साँझ लता छोट पोटर्री लऽ नैराक कार्यालय आयलीह। भीतर ‘मिठुआ’ लिखल पुरान पंजीक नकल, अपूर्ण नाव-भाड़ाक पर्ची आ एक वृद्धक सुनल बयानक अलग-अलग प्रति छल। लता पुछलीह, “एहि सभमे किछु एहन अछि जइसँ हमर मिथुनक ठाम निश्चित हो?” नैरा कागद क्रमसँ रखलीह। “नामक मिलान अछि, मुदा ‘मिठुआ’ आर ककरो पुकारनाम सेहो भऽ सकैत अछि। पर्चीपर पूरा नाम आ यात्राक पूरा विवरण नहि। वृद्धक कथन ओ जे सुनलनि, तकर अछि; ओ स्वयं मिथुनकें नावपर बैसल देखलनि, ई स्पष्ट नहि।”

लता पोटर्रीसँ मिथुनक पुरान लाल धागाक एकटा टुकड़ा निकाललीह। “ई ओकर कलाईक छल,” ओ कहलीह, “मुदा एकर रंग जकाँ दोसर बच्चाक कलाईमे धागा देखि कऽ हम ओहि बच्चाकें मिथुन नहि कहि सकैत छी।” नैरा हुनकर बात सुनलीह। लता स्वयं पर्चीक पाछाँ दू प्रश्न लिखलीह—‘मूल पर्ची ककर लग?’ आ ‘यात्राक तिथि के देखलक?’ ओकर हस्ताक्षर अखन अस्थिर छल, मुदा प्रश्न ओकर अपन छल। ओ धागा फेर पोटर्रीमे रखलीह; ओकरा ककरो जाँच-कक्षमे प्रमाणक रूपमे जमा नहि कएलनि।

लताक आँखि पर्चीपर अटकल गेल। ओ एक बेर मैथिली अंक पढ़लीह, फेर पाछाँ लिखल धुँधला तिथि। “हमरा एहि ठाम जा कऽ पुछबाक चाही?” नैरा कहलनि, “जाएबासँ पहिने मूल पर्ची ककर लग अछि, तकर पता करब जरूरी अछि। एहन नहि जे अपूर्ण नकलबला कागदपर अहाँ दोसर दिनक कमाइ छोड़ि निकलि जाउ आ फेर केवल दोसर अनुमान लऽ घुर्नु।” लता तुरन्त सहमति नहि देलीह। ओ कहलीह, “हमर बेटा हराएल अछि; जोखिमक हिसाब हम नहि छोड़ि सकैत छी। मुदा यात्रा करब तँ ककरासँ की पुछब, से पहिने लिखब।”

तारा कार्यालय पहुँचलि तँ हुनकर कापीमे फाटकक पाँच असफल सन्धि-शर्तक नकल छल। दोसर पारक जल-समितिक पत्र पढ़ि ओ कहलीह, “सीमा-यात्रामे मजदूरक बात

अनुवाद करब आवश्यक अछि; मुदा हम हुनकर नाम अनुमति सँ पहिने दूतपत्रमे नहि जोड़ब।” पद्मा स्रोतक भाषा आ अनुवादक अलग प्रति रखबाक आग्रह कएलनि। “जे लोक अपन वाक्य कहलक, ओकर बोलल भाषाक शब्द पहिने बचत,” ओ कहलीह, “अनुवादमे जे स्पष्ट करब, ओ मूल गवाही नहि बनि जाए।” नैरा लिखलीह जे यात्रा-दल कथनक उपयोगक सीमा प्रत्येक व्यक्तिसँ अलग तय करत।

जाँच-अधिकारी कबीरकेँ घटनास्थलक नक्शा देखौलक। कागदपर अस्पतालक पुरान पाँख, पाछाँक द्वार आ गलियाराक मोड़ छल। कबीर अपन ठाढ़ होएबाक ठाम चिन्हौलनि। कर्मचारी एकटा तीर बनौलक जे गोदाम दिस जाइत छल। “ई किएक?” कबीर पुछलनि। अधिकारी उत्तर देलक, “हमर दलक सम्भावित भागबाक दिशा।” कबीर कहलनि, “ओ सम्भावना अलग रंगमे लिखू; हमर आँखिक गवाहीमे नहि।” तीर मेटाएल नहि गेल, ओकरा ‘जाँचक अनुमान’ लिखि अलग खण्डमे रखल गेल। कोनो बाटक नक्शा अपराधीक पहिचानक बराबर नहि छल।

बयानक समय भतीजाक सामने एकटा खाली कुर्सी राखल गेल छल। ओ पुछलक, “हम एहि ठाम सँ उठि पानि पीबय जा सकैत छी?” अधिकारी अनुमति देलक। ओ घुरि पन्ना पढ़लक, फेर ‘सामग्री प्राप्त’ शब्दक नीचाँ अपन पुरान सही चिन्हलक। “ई काज हम केलहुँ,” ओ कहलक, “मुदा अर्ध-निर्मित भागमे मरीज रहि सकैत छथि की नहि, ई जाँच हमरा जिम्मा नहि छल।” ओकर आवाज थरथराइत छल। राघव दरबज्जाक बाहर अपन काम छूटलाक चिन्ता मनमे रखलनि, मुदा भतीजाक मुँहमे अपन बचावक उत्तर नहि देलनि।

राघव सिंहक भतीजा ओहि दिन अधिकृत बयान लेल तैयार छल, मुदा ओ अपन मूल सामग्री-पर्ची पहिले देखबाक शर्त रखलक। “हम जे हस्ताक्षर केलहुँ, ओ सामान पहुँचेबाक अछि,” ओ कहलक, “सुरक्षित उपयोगक परीक्षणक नहि।” अधिकारी ओकरा आश्वस्त कएलक जे बयानमे ई भेद रहल। राघव बाहर ठाढ़ छलाह। हुनकर ठेका स्थगित रहला सँ घरक खर्च घटि गेल छल, मुदा ओ भतीजाकेँ गलत बात याद करबाक आदेश नहि देलनि। महेशक हत्याक जाँचमे ई पर्ची उपयोगी भऽ सकैत छल; ओकरा हत्याक आदेशक निश्चित प्रमाण कहबाक समय एखन नहि आयल छल।

दुपहरिया महेशक बेटी विद्यालयसँ पाठक एक पन्ना लऽ आयल। घरक नव ठामक ठेकाना अध्यापिकाकेँ कहबाक अछि की नहि, से पुछलक। माय प्रधानाध्यापिकाकेँ फोन कऽ सीमित पहुँचवला सम्पर्क-पंजीमे जानकारी सुरक्षित रखबाक आग्रह कएलनि। बच्ची फेर नदीक चित्र खोललक। “हम एहि नावकेँ नवा रंग देब,” ओ कहलक, “मुदा बाबूजी जे रंग चुनने छला, ओहि ठाम नहि।” माय ओकर पास बैसलीह। बेटी अपन चित्रक सीमा स्वयं तय करैत छलीह; एहन छोट निर्णयक सामने सार्वजनिक प्रतिवेदनसभक आकार क्षणभरि लेल बहुत छोट लागल।

साँझमे नैरा अपन नवा समाचारक पहिल अनुच्छेद लिखलीह। महेशक हत्या, पुलिसक चलैत जाँच आ कबीरक संशोधित बयानक अस्तित्व—एहि तीन बातक मूल आधार स्पष्ट छल। ओहि सँ आगाँ ओ लिखलीह जे चेहराक पहिचान, आक्रमणक आदेश आ सामग्री-पंजीक सम्भावित सम्बन्ध एखन अलग जाँचक विषय अछि। सम्पादक एहि बेर निजी ठेकाना हटौलक। समाचारमे नैराक पहिल प्रकाशन-त्रुटिक संशोधनक लिंक बनल रहल, मुदा परिवारक घरक बाट नहि। ओ पहिल बेर देखलीह जे त्रुटि स्वीकार करब आ नव त्रुटि रोकब दू पृथक् परिश्रम अछि।

राति धृतराष्ट्रक सभागृहक दृश्य फेर संजयक कथामे उठल। राजा पुछलनि, “भीष्मक पतन सुनि हमर मन जे दृश्य बनबैत अछि, ओ सत्य अछि की नहि?” संजय कहलनि, “अहाँ जे सुनैत छी, ताहिसँ मन दृश्य बनबैत अछि। हम जे कहैत छी तकर उत्तरदायित्व हमर अछि; मुदा मनमे बनल प्रत्येक आकृतिक हम साक्षी नहि।” धृतराष्ट्र मौन रहलाह। फेर कहलनि, “तखन अहाँ कहैत रहू, मुदा जँ कतहु नहि जनैत छी, तँ ओहो कहू।” संजय पहिल बेर राजाक आदेशमे साँचक संग अपर्याप्तताकेँ सहबाक अनुमति सुनलनि।

ओ कथा फेर उठौलनि, मुदा युद्धभूमिक एक-एक अज्ञात सैनिकक नाम गढ़ि नहि देलनि। ओ भीष्मक शरशय्या, शिखण्डीक सक्रिय उपस्थिति आ अर्जुनक बाणक प्रसंग कहि राजाक प्रश्न सुनलनि। राजा अपन पुत्रसभक भवितव्यक उत्तर चाहैत छलाह। संजय कहला, “अगिला युद्धक निर्णय एखन होबाक अछि; एखन जकर पतन भेल, ओकर नाम स्पष्ट कहब, आ जे जीवित छथि, हुनका एखन मृतकक पंजीमे नहि लिखब।” एहि बातसँ राजाकेँ सुख नहि भेटल, मुदा समाचारक एकटा आवश्यक मर्यादा भेटल।

नैराक कार्यालयमे रातिक अन्तिम काज रहल चारि कागदक अलग लिफाफा बनायब। पहिलमे कबीरक प्रत्यक्ष-बयान आ संशोधन; दोसरमे सामग्री-पंजीक प्राप्ति; तेसरमे ‘मिठुआ’ नाम आ अपूर्ण नाव-पर्वीक प्रश्न; चारिमे जल-समितिक दूतपत्र आ अनुवादक अनुमति। ओ प्रत्येकक ऊपर मूल स्रोत, नकल बनबाक तिथि आ उपयोगक शर्त लिखलीह। एतबा करिते ककरो अपराध सिद्ध नहि भेल, नहि मिथुन भेटल, नहि सार्वजनिक बाटक सन्धि बनल। मुदा अब एक प्रमाणक कमी दोसर प्रमाणक कल्पित भरपाइ नहि करि सकैत छल।

तारा घुरैत समय पुछलीह, “सीमातीर्थ जाएबाक तैयारी कहियासँ?” पद्मा कहलनि, “पहिने नावक भाड़ा, उतरबाक ठाम आ भाषा-सहायताक मजदूरी साफ करब। बिना एहि तीनूक हम ककरो कहब नहि जे चलू।” लता अपन यात्रा-प्रश्नक कापी सम्हारलीह। कबीर घर घुरबाक पहिने महेशक पत्नीकेँ सुरक्षा-आवेदनक प्राप्ति-अंक पहुँचेबाक व्यवस्था कएलनि, बिना हुनकर ठेकाना सार्वजनिक कएने। राति बितबाक छल; कागदसभक बाहर लोकक देह, रोजी आ भय एखनहुँ अपन-अपन जगह वास्तविक छल।

महेशक बेटी नवा कोठरीमे सुतबासँ पहिने अपन नदीक चित्र मायकेँ नहि, अपन किताबक बीच रखलक। माय दीप निभबैत पुछलीह, “कतय रखलिह?” बेटी कहलकि, “हमरा ठाम। जखन चाहब तखन देखब।” माय ओकरा आरो प्रश्न नहि कएलनि। दोसर पार जे जलक बाटक अनिश्चित माप छल, ओहि जकाँ एहि घरक अगिला दिनक बाट सेहो एखन खुलल नहि छल। मुदा बच्चीक एहि छोट निर्णयमे ककरो दोसरक आवाजसँ ओकर जीवन पूरा कहि देबाक अधिकार नहि छल।

अध्याय ७३ • सीमातीर्थक उतराड

भोरमे नावक तख्तापर मधु केवट अपन अँगुरीक पोरसँ गीला जोड़ टटोलि रहलीह। रातिक पानि उतरि गेल छल, मुदा बीचक पटरा पर किरिच जकाँ एकटा महीन रेखा देखाइत छल। ओ घुँटने बैसि लोहाक काँटी खींचलीह, फेर काठक चिरैकेँ घाम दिस घुमौलनि। “एहि पटरा पर भरल बोरा नहि रखाएत,” ओ संगक नाविकसँ कहलीह। घाटपर यात्रा-दल एखन पहुँचल नहि छल; मधुक दिन हुनका सभक प्रतीक्षासँ बहुत पहिने शुरू भऽ चुकल छल।

परतीतटक बाटक ऊपर तारा मल्लिक तीनटा झोरा लऽ ठाढ़ छलीह। एकमे नाप-पंजी आ पाँच असफल सन्धि-शर्तक प्रति, दोसरमे बदलबाक कपड़ा, तेसरमे नावपर भीजला सँ बचेबाक लेल मोड़ल कागद छल। पद्मा अपन छोट थैलीमे मूल भाषाक प्रश्न अलग रखलीह। लता सँगे एकटा सादा कापी छल, जकर पहिल पृष्ठपर लिखल छल—मिठुआ नामक मूल पंजी ककर लग? यात्रा-दलमे ककरो मुँहसँ ई नहि निकलल जे आइ मिथुन भेटि जाएत। लताक लेल तइयो ई पहिल एहन यात्रा छल जाहिमे प्रश्नक बाट ओ स्वयं चुनि रहल छलीह।

मधु खूँटासँ बाँधल पुरान रस्सी खोलबैत पुछलीह, “अहाँ सभकेँ परतीतट उतारब कि आगाँक चौकी धरि पहुँचेबाक कोनो गाड़ी चाही?” तारा कहलीह, “परतीतट उतरि सीमातीर्थ जाएब; आगाँक कागद जाँचक समय हम नहि जनैत छी।” मधु बही खोललीह। नावक भाड़ा, सामानक भार, दोसर कात उतारबाक घण्टा आ प्रतीक्षामे नाव रोकबाक दाम अलग-अलग खाना छल। पद्मा पुछलीह, “सँगे जा रहल स्थानीय स्त्रीक समयक दाम के देत?” मधु उत्तर देलीह, “जकर काज, तकर मजदूरी। हमर भाड़ामे हुनकर आवाज नहि बिकैत अछि।” तारा नावक भाड़ा अग्रिम चुकौलीह; मधु हस्ताक्षरयुक्त रसीद देलीह। प्रतीक्षाक अतिरिक्त समय केवल पड़लापर अलग देय होएत।

घाटक अस्थायी चौकीक कर्मचारी एक पर्ची देखबैत कहलक, “जनहितक भ्रमण अछि, तखन भाड़ामे छूट किएक नहि?” मधु पुछलीह, “नावक पटरा, मरम्मत आ नाविकक दिन

के चुकाओत? संकटमे सहायता करब हमर निर्णय अछि, सरकारी घोषणासँ हमर श्रम निःशुल्क नहि होइत।” तारा सामूहिक कोषक लिखित स्वीकृति पुछलीह। कर्मचारीक पर्चीपर हस्ताक्षर नहि छल; ओ अपूर्ण प्रस्ताव वापस लऽ गेल।

घाटक भीड़मे एक वृद्धकें बैसबाक ठाम चाही छल। मधु पहिने हुनका छायावला पत्थर धरि पहुँचबौलनि, फेर लताकें चढ़बाक लेल बाँसक पकड़ देखौलीह। तारा नावक पटरा पर सामान रखए लगलीह तँ मधु रोकलीह। “पहिने तौल। बाटक नक्शा अहाँक हाथमे अछि; नावक भारक नाप हमरा हाथमे।” हीरा सहनीक पुरान चेतावनी ताराकें स्मरण भेल— भारक अपूर्ण मापक सुरक्षित यात्राक प्रमाण नहि। दुनू मिलि छोट गठरी खोली; अनावश्यक लोहेक दू औजार घाटपर जिम्मेदार लोक लग रसीद दऽ छोड़ल गेल। ई देरि यात्राक पहिल निर्णय छल।

ओही समय शान्ति बोटे परतीतटसँ घुरैत अपन छोट नाव कात लगौलीह। हुनकर हथेलीमे डोरीक घर्षणसँ लाल रेखा पड़ल छल। ओ मधुसँ कहलीह जे पारक उतारधरमे काल्हि दू बोरा पहुँचाबए पड़ल, मुदा मेजपर एक्के बोरा ग्रहण लिखल गेल अछि। “हिसाब हम अपन लेल माँगैत छी,” ओ कहलीह, “अहाँक दलक नाममे हमरा मेहनताना जोड़ि नहि दिअ।” मधु हुनकर पर्ची देखलीह, पर अपन बहीमे केवल शान्तिक दावाक उल्लेख कएलनि; भुगतान भऽ गेल, एहन नहि लिखलीह। शान्ति आइ परिवारक छोट खेप घुराएब चाहैत छलीह। हुनका लेल सीमा केवल यात्रा नहि, अगिला दिनक कमाइ छल।

लता चुप्पी तोड़लीह। “ओहि ‘मिठुआ’ पंजीक पाछाँ जँ हमरा मिथुनक नाम भेटत तँ?” पद्मा कहलीह, “तखन नाम लिखबामे जे लोक उपस्थित छलाह, हुनकर स्रोत पूछब। नाम मिललासँ बच्चाक पहिचान स्थापित नहि होएत।” लता उत्तर देलीह, “हम जानैत छी। मुदा प्रत्येक बेर हमरा ई बुझाएब जरूरी नहि जे हम माय छी तँ जल्दबाजी करब।” पद्मा अपन थैली बन्द कएलनि। “ठीक कहैत छी। अहाँ अपन प्रश्न स्वयं करब; हम भाषा बुझबाक काज करब, उत्तर चुनबाक नहि।” लता फेर पानिक दिशि तकलीह, मुदा एहि बेर हुनकर कापी खुलले रहल।

परतीतट पर उतरबाक पटरा कात पाछिल भेल छल। मधु नाव किनार लगौलनि, मुदा तख्ता तुरन्त नहि अड़ौलीह। ओ पहिने जाँचलीह जे पयर देबाक ठाममे भीजल माटिक

भीतर खोह तऽ नहि। तारा उतरिते चप्पल चिखुरमे गाड़ि लेलीह; लता हँसि पड़लीह।
 “कागदक बाट सीधा बनबैत छी,” ओ कहलीह, “आ माटि अपन घुमाव राखैत अछि।”
 तारा सेहो हँसलीह। मधु बाँस धरौलनि, मुदा लताकें उठाएबासँ पहिने पुछलीह। सम्हरि
 उतरला पाछाँ लता स्वयं पद्माक थैली लेलीह। पहिल पड़ाव पूरा भेल, सीमा एखन दूर
 छल।

उतरघरक छप्पर नीचाँ एक पुरान फलकपर दू नाम लिखल छल—‘गंडक’ आ
 ‘गंडकी’। शान्ति बोटे ओतय अपन खेपक प्राप्ति लेल अएल छलीह। एक कर्मचारी
 कहलनि जे पहिल नाम नदीक पानि लेल आ दोसर व्यापारक पता लेल उपयोगमे अछि।
 शान्ति माथ डोलौलीह। “ई अहाँक कार्यालयक बुझाइ अछि। हमर पुरान नावभाड़ाक
 पत्रमे दुनू रूप भेटैत अछि; कागद कतेक दिनक आ के लिखलक, से देखू।” पद्मा दुनू रूप
 नोट कएलनि। ओ एहि फलककें दू नदीक प्रमाण नहि बनौलीह, न कोनो भौगोलिक
 मिलानक निर्णय कएलनि।

उतरघरमे देबालक कात कारी स्याहीसँ ‘गोही’ सेहो लिखल छल। मधु अपन बहीक
 एक पृष्ठ देखौलीह जाहिमे ओ नाम पुरान भाड़ा-मार्गक संग आएल छल। “एहि शब्दसँ
 हमर सभ नाव एक्के धारमे चलैत अछि, एहन नहि बुझू।” ओ कहलीह। “ई जे पर्ची छियै,
 एकर निश्चित मतलब तखन भेटत जखन जारी करनिहार आ मार्गक ब्योरा भेटत।” तारा
 गंडकी आ गोहीकें अलग-अलग अभिलेखीय नामक रूपमे रखलीह। जकरा लेल नदी
 रोजक श्रम छल, ओकरा लेल नामक भूल केवल नक्शाक भूल नहि भाड़ाक झगड़ा बनि
 सकैत छल।

दू घण्टाक ठहरावमे चौकीक कात नाम आ ठेकाना लिखबाक पर्ची भेटल। तारा लताक
 परिवारक निजी पता सार्वजनिक दल-सूचीमे नहि जोड़ल गेल। प्रश्नक उत्तर देबाक लेल
 ओ लताकें लेखनी देलीह। एक कर्मचारी कागद देखिकऽ पुछलक, “तीन स्त्री अकेले
 किएक?” लता कहलनि, “किएक तँ हमरा सभकें काज अछि।” कर्मचारीक ओहि प्रश्नक
 कोनो यात्रा-नियम सँ सम्बन्ध नहि छल। जाँच पूरा भेलापर ओ सभ टिकट लेल आगाँ
 बढ़लीह।

सीमातीर्थक बाहरी बाजारमे बस पहिल बेर रुकल तँ भीतर धूलि आ गरम मसालाक गन्ध भरि गेल। चालक अनाहक तेसर बोरा चढ़बए चाहलक। तारा टिकटपर लिखल भार देखौलीह; चालक दोसर गाड़ीक समान पर्ची पढ़ने छल। लता पाछाँ बैसल बच्चाक टोकरी उठाउए लगलीह तँ बच्चाक माय स्वयं ओकरा पकड़ि लेलीह। “ई हमर दहीक मटकी अछि,” ओ कहलीह, “कियो सेवा करए सँ पहिने पुछौक।” बसमे छोट ठहाका उठल। विवाद हँसीमे टरि गेल, मुदा मटकी नीकसँ अपन जगह पहुँचली।

बाजारक देहरीपर पद्माकेँ भाषाक मदति लेल प्रतीक्षा करैत कुमुदी भेटलीह। शान्ति हुनका पहिने पत्र पठौने छलीह। कुमुदी स्थानीय बोली, मैथिली आ सीमा-पार कार्यालयक व्यवहारिक शब्द बुझैत छलीह; ओ अनुवादसँ अलगे बजारक सामानक हिसाब सेहो रखैत छलीह। ओ पहिने पूछलीह, “अहाँ सभ हमर समय पूरा दिन चाहैत छी कि दू बैठक धरि?” पद्मा उत्तर देलीह, “दू बैठक, फेर आवश्यकता भेल तँ नवा सहमति।” कुमुदी दर कहलनि। तारा पहिल क्षण रकम बेसी बुझलीह; कुमुदी पूछलीह, “बाट देखाएब, सुनब, फेर शब्द मिलाएब—तीनू एक काज अछि?”

कुमुदीक प्रश्न सुनि पद्मा अपन पहिनुक अनुमान बदललीह। यात्रा-दल अबैत समय ‘दुभाषिया’ लेल एक्के मद राखने छल। कुमुदी बतौलीह जे कार्यालयक प्रश्न सुनएबाक समय आ कारीगरक अपन बोलीमे उत्तर संजोएबाक समय अलग लागैत अछि; लिखित अनुवाद फेर पृथक् काम होएत। लता कहलीह, “पहिने हम जे प्रश्न पुछब, ओकर शब्द हमरा सुनाउ। हमर बातकेँ सभक सुविधा अनुसार छोट नहि करब।” कुमुदी ओ शर्त मानलीह। अग्रिमक रसीद बनल, दू बैठकक सीमा लिखल गेल, आ शब्दक असहमति खाली ठाममे चिह्नित करबाक निर्णय भेल।

पहिल भेंट बजारक घेराबन्द आँगनमे भेल। सोनमती तुरी एकटा बाँसक चौखटा टिकौने छलीह; ओकर बीच लगाओल कपड़ा हवा पाबिते फड़फड़ा उठैत छल। पिछला विद्यालयक नमूनासँ ई नव चौखटा छोट आ मजबूत छल। बाहरक व्यापारी आदेश देने छल जे सभ कारीगर एके रंग आ एके नापमे बीस वस्तु पठाबथि। सोनमती पुछलीह, “बीस वस्तु ककर? बाँस हमर, सूत दोसरक, नमूना तेसरक। जकर दोष होएत ओकरा कियो सुनत?” व्यापारी प्रतिनिधि कहलनि जे एक नामपर एके बिल सँ सुविधा रहत।

सोनमती चौखटा खसकौलनि। “सुविधा हमरा नहि, अहाँकै,” ओ कहलीह। ओ दू कारीगरिनक नाम प्रस्तावमे जोड़लीह, मुदा हुनकर अनुमति बिना कोनो सही नहि कएलनि। प्रयोगक पहिल पाँच चौखटाक दाम, नमूना बदललासँ होएवला बेसी श्रम आ पूरा खेप अस्वीकृत भेलापर वापसीक भाड़ा अलग लिखबाओल गेल। एक युवती पूछलक, “सभक नाम रहत तँ आर्डर देरि नहि होएत?” सोनमती उत्तर देलीह, “होएत। मुदा काम शुरू भेलाक बाद जे देरि मजदूरी न भेटलासँ होएत, से आर बेसी महँग पड़त।”

आँगनक दोसर कोनमे निरु कुमाल माटिक तीन बासन उलटि कऽ राखने छलीह। एकर तलीमे पुरान आबाक कारी निशान छल। हुनका लग आएल आपूर्तिदाता फेर सामूहिक ऋणक प्रस्ताव बढौलक—गामक सभ कारीगर उत्पादक साझेदारीक नामपर पूरा उधारी लेल एक संग जवाबदेह होथि। निरु कागद हाथमे लेने नहि छलीह। “हम सुरक्षित माटि, साझा आबा आ सामान पठेबाक दिन लेल सहयोग करब,” ओ कहलीह, “मुदा जकरा घरक पुरान सूद अछि, ओ हम बिना देखल किएक स्वीकार करी?” आपूर्तिदाता कहलक जे एना पैघ व्यापार नहि बढत।

निरु तखन एक बासन उलटि ओकर तली देखौलनि। “ई पाछिल खेपमे फूटल। हम खुद एकर दाम घटौने छी,” ओ कहलीह। “दोषक जिम्मेवारी सँ नहि भागि रहल छी। मुदा आनक अनदेखल ऋण अपन माथ पर लऽ लेब तँ नवा बासन बनाबय लेल माटियो नहि बचत।” सोनमती हुनका छोट परीक्षण-खेपक प्रस्ताव देलीह। निरु मानलीह—पाँच बासनक निजी देय, साझा भट्ठीक उपयोगक दर्ज खर्च, उधारी केवल ओतबे जकरा ओ स्वयं लिखित स्वीकार करथि। व्यापारी पैघ आदेश तारि देलक। निरुक हाथ खाली रहल, मुदा हुनकर आबाक अगिला दिन बन्द नहि भेल।

एहि बीच मीरा बंजारा बजारक पाछाँक ढलानपर ठेला घुमबैत अएलीह। रसोइ लेल लकड़ी आ नूनक पुरान ढुलाईमे जे हिसाबक प्रश्न उठल छल, तकर दूर रसीद हुनकर झोरामे छल। एहि बेर हुनका सामने दोसर प्रस्ताव छल—सोनमती आ निरुक छोट खेप सप्ताहमे दू दिन पहुँचेबाक साझेदारी। मीराक बहिन नहि चाहैत छलीह जे परिवारक सभ ठेला एक्के बजारक आदेशपर निर्भर भऽ जाए। ओ दोसर रास्ताक ग्राहकसभसँ पुरान सम्बन्ध बचबए चाहैत छलीह। मीरा दुनू बात सुनि ठेलाक चक्का रोकलीह।

“हमर बहिन अपन रास्ता लेत,” मीरा कहलीह, “ई हमरो साझेदारीक विरोध नहि।” व्यापारी कहलनि जे परिवारक सभ गाड़ी एक्के चिन्हक अधीन होएब चाही। मीरा उत्तर देलीह, “परिवार एक अछि; देनदारीक गाड़ी अलग रहि सकैत अछि।” ओ अपन ठेलाक दू दिनक समय लिखौलीह, बहिनक समय खाली छोड़लीह। बहिन स्वयं आगाँ अएलीह आ कहलनि, “हम ओहि दिन पारक साप्ताहिक हाट जाएब। हमरा ककरो नामे रोकबाक अधिकार नहि।” नवा प्रस्तावमे दुन्नू बहिन अलग शर्तपर सही करबाक लेल सहमत भेलीह।

मीना सार्की अपन चर्मक पट्टा खोलि धरलीह। एक पट्टा खच्चरक सामान बाँधबाक, दोसर बासन ढोएनिहार पेटीक कात कसबाक छल। ओ प्रतिनिधिक सामने भीजल पट्टा देखौलीह जे किछु देर पानि लगला पर ढील भऽ गेल छल। “एहि रूपमे पानि लगक माल ढोएब तँ बासन खसत,” ओ कहलीह। प्रतिनिधि जल्दीमे छल; कहलक, “हमरा सभकें बस एकटा ठीक नामवाला रसीद चाही।” मीना चिढ़लीह। “रसीदक नामसँ पट्टाक गाँठ नहि कसैत अछि। पहिने प्रयोगक भार, पानिसँ बचाव आ टूटल सामानक जिम्मेवारी लिखू।”

मीना सीमापारक चर्मकर्मी दलक प्रस्ताव खोललीह। ओकरा सभकें पट्टाक नाप आ सीबन सिखेबाक एक दिनक साझा काज चाही छल, मुदा प्रस्तावमे नमूनाक फोटो आ नवा डिजाइन पर पूरा व्यापारीक अधिकार लिखल छल। मीना ओ पाँति काटि देलीह। “जतेक नमूना देखाओल जाएत, तेतेक कामक भुगतान; जे नव डिजाइन संग बनत, तकर उपयोग लेल फेर अनुमति,” ओ कहलीह। सोनमती सहमति देलीह जे हुनक बाँसक चौखटापर कसबाक नया पट्टा बनेत तँ दूनूक नाम प्रयोगक पर्चीमे रहत। छोट गठबन्धन बनल, पैघ सौदा एखन नहि।

कुमुदी एहि बातचीतक दू शब्द अनुवाद करैत अटकि गेलीह। व्यापारीक भाषामे ‘जिम्मेवारी’ एहन शब्द छल जे कखनो हानि भरबाक देय, कखनो केवल सामान पहुँचाएबाक वचन बुझबैत छल। मीरा पुछलीह, “अहाँ कोन अर्थ कहने छियै?” कुमुदी मूल वाक्य फेर सुनौलीह आ दुनू अर्थ अलग कहलनि। निरु कहलीह, “हम जे नहि बुझलहुँ, ओकरा बुझल कहिकऽ सही नहि करब।” प्रतिनिधि बेसी देर भेलाक शिकायत कएलक।

पद्मा कहलनि, “देरि लेल मजदूरी दऽ रहल छी; गलत शब्दक देनदारी अहाँ वा हम कियो नहि उठा सकब।” दोसर पर्ची तैयार भेल।

मध्याह्नमे शान्ति बोटे अपन घरक कातसँ भोजन पठौलीह नहि; ओ स्वयं छोट बासनमे चिउड़ा, भुजल माछ आ तरकारी लऽ अएलीह। “एतय किनबाक अछि,” ओ कहलीह, “हमर घरक सभ स्त्री निःशुल्क भोजन बना कऽ यात्रिकक सेवा करए नहि बैसल अछि।” लता अपन हिस्सा लेल दाम देलीह। कुमुदी पुछलीह जे भोजनमे मसाला कम राखि सकैत छलीह की नहि। शान्ति हँसलीह, “अहाँ तऽ स्थानीय छी, तखन अहाँक जिह्वा एतेक परदेशी कोना?” एहि छोट हँसीमे बाहरी आ भीतरीक रेखा एक क्षण लेल ढीली भेल।

दुपहर बाद जल-समितिक घरमे भेंट छल। पुरान देबालपर बाहाक हाथसँ बनाओल रेखा टाँगल छल, किछु स्थान खाली छोड़ल गेल छल। स्थानीय परिवारक एक स्त्री अपने नाप-डोरी लऽ ठाढ़ भेलीह। “अहाँ सभक पटना कि विदेहपुरक नक्शा हमरा घरक निकासी नहि बता सकत,” ओ कहलीह, “हम जतय पानी चढ़ैत देखलहुँ, से हमर गवाही अछि; ओ माप नहि। माप फेर कराबए पड़त।” तारा उत्तर देलीह, “आमन्त्रण ताहि लेल स्वीकार केलहुँ जे अहाँ सभक शर्त सुनि सकी।” ओ अपन कागद मेजपर राखलीह, दीवारक रेखा उतरबए नहि लगलीह।

सभा आरम्भ भेलापर पद्मा कुमुदीक पारिश्रमिकक पर्ची अलग देखौलीह। समितिक सचिव पुछलक, “एके बात दू भाषामे कहलासँ दू बेर भुगतान?” कुमुदी स्वयं उत्तर देलीह, “दू बेर कहब नहि, दू पक्षक अर्थ बचाएब हमर काज अछि। जकरा अहाँ सभ बोलए दैत छी, ओकरा सुनबाक व्यवस्था सेहो चाही।” स्थानीय स्त्री जोड़लीह, “हम अपन घरक बात अपन भाषामे कहब। अनुवादक हमर प्रतिनिधि नहि, हमर आवाज दोसर कान धरि पहुँचएबाक सहायक छथि।” सचिव पर्ची पर आपत्ति दर्ज कएलक, मुदा बैठक रोकल नहि गेल।

लता अवसर पाबि अपन प्रश्न रखलीह। ओ ‘मिठुआ’ लिखल नकलबला पन्ना देखौलनि, पर कोनो बच्चाक चित्र नहि बाँटलीह। “एहि नामक मूल पंजी ककर निगरानीमे अछि?” कुमुदी धीरे-धीरे वाक्य दोसर भाषामे कहलनि। एक वृद्ध कर्मचारी उत्तर देलक जे ओ पुरान नावघरक पर्ची देखलने अछि, मुदा पंजी लिखनिहारकेँ स्वयं नहि चिन्हैत। पद्मा

लताकें मूल उत्तर फेर सुनौलीह। लता पुछलीह, “देखल पर्ची आ सुनल नाम दुनू अलग?” वृद्ध कहलक, “पर्ची हम देखने छलहुँ। मिठुआ बच्चा छल की वयस्क, ई दोसरक मुँहसँ सुनने छी।”

कियो सभामे कहए चाहलक जे तखन मिथुनक बाट भेटि गेल। लता हुनका रोकलीह। “ओ हमर बेटाक पक्का पता नहि,” ओ कहलीह। “मुदा जे पर्ची देखल गेल छल, ओकर स्थान पुछबाक एकटा बाट भेटल।” सचिव पुरान नावघरक अभिलेख देखबाक आधिकारिक समय लिखि देलक, संगमे ईहो जे मूल प्रति ओतय भेटत की नहि, एकर गारण्टी नहि। लता तिथि अपन कापीमे उतारलीह। ओहि पन्नापर एहि दिन पहिल बेर उत्तरसँ बेसी स्पष्ट, जाँचल जा सकएवला पता लिखल गेल।

तारा पाँच असफल शर्तक कापी खोललीह। पहिल शर्त रहल चेतावनीक समय; स्थानीय परिवार कहलनि जे नक्शा बनौनिहार दल आ कच्चा घरमे रहनिहार लोकक भोर एक घड़ी नहि होइत। दोसर रहल निकासी खोललाक बाद पानिक जिम्मेवारी; तेसर मुआवजा; चौठा सभक पहुँच; पाँचम शिकायतक उत्तर। सचिव चाहैत छल जे यात्राक दिन सभ शर्तपर सहमति लिखल जाए। तारा कहलीह, “आजुक बैठक साक्षात्कार छल, सन्धि नहि।” एक लोक नाराज भेल, मुदा घरक स्त्री बजलीह, “हम सभ अपन खेत देखेने बिना सही नहि करब।” एहि वाक्यपर सभाक ध्वनि मन्द भेल।

साँझ होएबाक पहिने मीरा ठेला लऽ भेंटक घरक बाहर पहुँचलि। सोनमतीक पाँच चौखटा आ निरुक तीन बासन सुरक्षित पठेबाक लेल ओकरा अगिला दिनक नाप चाही छल। मीना पट्टाक एक जोड़ परीक्षण लेल अपने रखलीह। “हम अपना घरमे दोसर गाँठ सिअब,” ओ कहलीह, “तखन सुरक्षित भार बतायब।” निरु कागदपर अपन बासनक संख्या लिखलीह, अनुमानित संख्या नहि। सोनमती पहिल पाँचक अग्रिम भुगतान भेटलासँ साँझक काज शुरू करबाक निर्णय कएलनि। हुनकर गठबन्धन ककरो पैघ घोषणासँ नहि, काजक छोट स्पष्ट सीमासँ चलल।

साँझमे बादर मोट भऽ गेल। मधुकें फोनपर केवल एतबे समाचार देल गेल जे यात्री सुरक्षित उतरल छथि, फेरबाक समय मौसम देखिकऽ तय होएत। शान्ति अपना कमाइक पर्ची लेल वापस घर गेलीह; कुमुदी अपन दोसर ग्राहक लग चलि गेलीह। मीरा बहिनक

ठेलाकैँ दोसर बाट जा रहल देखलीह, मुदा ओकरा रोकलीह नहि। निरु आ सोनमती
अलग-अलग काज लेल माटि आ बाँस चुनए लागलीह। सीमा पारक परिवारसभक दिन
यात्रीदलसँ शुरू नहि भेल छल, आ यात्रीसभक चलि गेलापर रुकबो नहि छल।

लता अपन कापीक नव पृष्ठ खोललीह। ओतय तीन पाँति छल—नामक नकल, देखल
पर्चीक बयान, आ मूल अभिलेख देखबाक समय। कोनो पाँतिमे ‘मिथुन भेटल’ नहि
लिखल छल। तारा कातमे नावभाड़ाक दाम आ प्रतीक्षाक अलग मद जाँचैत छलीह; पद्मा
कुमुदीक मूल शब्द आ अपन अनुवादक बीचक एक असहमति चिह्नित कऽ रहल छलीह।
अगिला दिनक बाट पूरा स्पष्ट नहि छल, मुदा एहि दिनक उतराइमे एकटा बात तय भेल—
ककरो यात्राक सुविधा दोसरक श्रम, भाषा वा घरक निर्णयपर बिना मूल्यक अधिकार नहि
बनत।

अध्याय ७४ • द्रोणक देय

सीमातीर्थक भोरमे शान्ति बोटे अपन नावक भीजल डोरी बाँसक खूँटासँ खोलैत फेर रोकि देलीह। पाछिल दिनक उतारघरक पर्ची हुनकर कमरमे खोंसल छल; ओहिपर दू बोरा उतारबाक कामक सामने एक्के बोराक भाड़ा लिखल छल। घाटसँ ऊपर चढ़ैत कर्मचारी कहलक, “काल्हिक बात आइ फेर किएक?” शान्ति डोरीकेँ खूँटापर अटबैते उत्तर देलीह, “किएक तँ काल्हि हमरा दाम नहि भेटल। नाव आइ फेर चलत, मुदा पुरान कमाइ पानिमे नहि बहि जाएत।” कर्मचारीक हाथमे नव अनुमति-पत्रक गड्डी छल। ओ कहलक जे पार उतारबाक अधिकार आ पुरान भुगतान दुनू एक्के दफ्तरक बात नहि। शान्ति कहलनि, “तखन दुनू दफ्तरक नाम लिखू। हम गलत दरबज्जापर दिन नहि गमाएब।”

घाटपर तारा, पद्मा आ लता काल्हक सभाक बादक पत्र लेबए अएलीह। कुमुदीक दू बैठकक समय पूरा भऽ चुकल छल; आइ हुनका दोसर ग्राहक लग जाएबाक छल। पद्मा काल्हका अनुवादक असहमति सँभालि रखलीह, मुदा शान्तिक आवेदनक भाषा स्वयं तय करबाक दाबी नहि कएलनि। शान्ति एकटा खाली पन्ना हुनका देलीह। “हम जहिया कमाइ माँगब, तहिया हमर नावक समय सेहो गनू,” ओ कहलीह, “चौकीक प्रतीक्षामे लगल घण्टा हमरा घरक घण्टा अछि।” तारा पुछलीह जे नवा पारगमन-पत्र बनौलासँ भुगतानक प्रश्न आसान होएत की नहि। शान्ति कहलनि, “पहिने बकाया स्वीकार होअय। अनुमति आगाँक कामक अछि, बकाया पछिलाक।”

एहि आधुनिक घाटक समयसँ बहुत पहिने, कुरुकुलक राज्यसभामे द्रोणक कथा दोसर ढंगसँ शुरू भेल छल। छोट आँगनमे राखल अन्नक मटकीक तली देखाइत छल। कृपी ओकरा उलटि दू मुट्ठी दाना निकाललीह; सूखल छिलका मेजपर फसरि गेल। अश्वत्थामा ओहि दिन पड़ोसी बच्चासभक हाथमे दूधक पात्र देखि घुरल छल। ओ मायसँ भोजन पुछलक, दूध नहि; मुदा कृपी ओकर आँखिक अपूर्ण प्रश्न बुझि गेलीह। द्रोण दुआरपर ठाढ़ रहला। शास्त्र आ अस्त्रक अभ्याससँ हुनकर हाथ परिचित छल, अपन बालकक लेल नियमित भोजन जुटएबाक उपायसँ नहि।

कृपी दाना धोएबाक समय कहलीह, “अहाँक सीखल विद्या हमरा लग निरर्थक नहि अछि। मुदा जखन घरमे अनाज कम पड़ैत अछि, तखन विद्या ककरा लग सँ की माँगि सकैत अछि, से स्पष्ट होएबाक चाही।” द्रोण धीरे उत्तर देलनि जे द्रुपद हुनकर पुरान सहपाठी रहलाह, आ सहपाठीक दिनमे दूनू समानताक वचन कहने छलाह। कृपी पुछलीह, “सहपाठीक स्नेह, राजकोषक वचन आ प्रजाक अन्न एके वस्तु अछि?” द्रोण चुप रहला। ओ द्रुपद लग जाएबाक निर्णय कएने रहला, मुदा ओहि यात्रामे अपन अपमानक आशंका आ बालकक भोजनक आवश्यकता एक संग बन्हने छल।

कृप समाचार सुनि अएलाह तँ द्रोणकँ एकटा पुरान धनुषक डोरी बदलैत देखलनि। “आचार्यक आसन चाहैत छी की मित्रक सहायता?” कृप पुछलनि। द्रोण उत्तर देलनि, “हुनका कहने वचनक मान्यता।” कृप कहलनि, “वचनक शब्द आ परिस्थितिक प्रमाण चाही। दरिद्र होएब अपमान नहि, मुदा दरिद्रताक कारण दोसरपर जे दावा उठैत अछि, तकर सीमा स्वयं बुझबाक पड़त।” द्रोणक मुख कठोर भऽ गेल। हुनका लग ई प्रश्न मित्रक दानकँ छोट करबाक प्रयास बुझाएल। कृप फेर जोड़लनि, “अहाँक योग्यता प्रमाणित अछि। राजपुत्रकँ शिक्षाबाक दाम माँगू तँ ओ श्रमक देय होएत; बाल्यक वचनसँ राज्यक आधा भाग माँगब दोसर बात।”

पाञ्चालक सभागृहमे द्रुपदक सामने द्रोण अएलाह तँ दरबान पहिने हुनकर वसन देखलक। द्रोण अपन पुरान सहपाठीक परिचय देलनि। द्रुपद हुनका चिन्हलनि, मुदा सभाक लोकक सामने हुनकर पुरान समीपताकँ स्वीकार करबाक साहस नहि कएलनि। “बाल्यक संग-साथ राजाधिकारक बराबरी नहि बनबैत,” ओ कहलनि। द्रोणक भीतर लाजसँ तेज क्रोध उठल। ओ मित्रक घरसँ भिक्षुकक रूपमे घुरब नहि चाहैत छलाह; मुदा द्रुपद जे भेद ठाढ़ कएलनि, ओहि भेदसँ निकलि कोनो सम्मानजनक बातचीतक बाटो नहि देलनि। सभामे ठाढ़ एक सेवक द्रोणक लाओल छोट पोटरी देखैत रहल, मुदा हुनकर पक्षसँ बोलबाक अधिकार ओकरा नहि छल।

सभाक बाद द्रुपद अकेलेमे अपन मन्त्रीसँ कहला जे बचपनक उतावल वचनकँ राजकीय भूमि बाँटबाक आदेश मानल जाए तँ प्रजापर अन्याय होएत। मन्त्री पुछलक, “एहि तर्कसँ हुनकर सार्वजनिक अपमान किएक आवश्यक छल?” द्रुपदक उत्तर नहि

बनल। ओ अपन राजकीय सीमाक रक्षा करैत छलाह, मुदा सीमा बतएबाक ढंगमे व्यक्तिगत अहंकार छल। ओ द्रोणकेँ भोजन, अतिथि-स्थान आ सम्मानसहित विदा करबाक अवसर गमा चुकल छलाह। एहि अपमानक पछाति कतेक दूर तक हिंसा पसरि सकैत छल, तकर अनुमान सभाक लोक ओहि क्षण नहि करि सकल।

कृप द्रोणकेँ घुरि आएल देखलनि तँ किछु देर धरि प्रश्न नहि कएलनि। द्रोण अपन यात्रा-वृत्तान्त संक्षेपमे कहि निष्कर्ष जोड़लनि, “जे मित्र समान रहबाक वचन देलक, से आब शक्ति बिना सम्मान नहि देत।” कृप पुछलनि, “तँ अहाँ अपन शिष्यसभसँ ई सम्मान वसूल करए चाहब?” द्रोण कहलनि, “विद्या दैत छी, ओकर प्रतिदान चाहब अनुचित किएक?” कृप उत्तर देलनि, “प्रतिदान आ प्रतिशोधक बीच सीमा अछि। राजपुत्रक अभ्यासक मूल्य हुनकर सीखल सामर्थ्यसँ मापू; गुरुकेँ भेल अपमानक बदला हुनकर जन्मसँ निर्धारित नहि अछि।” द्रोण एतबा सुनि उठि गेलाह। हुनकर मौन असहमतिक छल, सहमतिक नहि।

हस्तिनापुरमे शिक्षाक प्रस्ताव अएलापर द्रोण अपन धनुषक अभ्यास देखौलनि। राजकुमारसभक आँखिमे कठिन कौशलक प्रति उत्सुकता छल। पहिल दिन ओ धनुक पकड़बाक मुद्रा सिखौलनि, लक्ष्यभेदक पहिने श्वासक स्थिरता। एक युवा विद्यार्थी असफल भेल तँ द्रोण ओकर हाथक स्थिति सुधारलनि। ओहि क्षण हुनकर विद्वत्ता साँच छल; आ ओहि साँचसँ भविष्यक सब आदेश अपने-आप उचित नहि होइत छल। कृप दूरीसँ देखैत रहलाह। प्रशिक्षणक समय, शस्त्रक रखरखाव आ गुरुकेँ देय पारिश्रमिक अलग दर्ज होअय, तकर प्रस्ताव ओ पुनः रखलनि। द्रोण एहि व्यवस्था पर सहमति देलनि, मुदा द्रुपदक अपमानक खाता मनसँ नहि मेटौलनि।

अश्वत्थामा एक साँझ पिताक अभ्यास-स्थलपर पहुँचि पुछलनि, “अहाँ हमरा जे सिखाएब, से दोसर लड़काकेँ सेहो सिखाएब?” द्रोण ओकर भालपर हाथ रखि कहला जे योग्यताक परीक्षा कठिन अछि। बालक फेर पुछलक, “जकरा प्रवेशे नहि भेटत, ओकर योग्यता के देखत?” द्रोण एहन प्रश्नक उत्तर तखन नहि देलनि। कृपी दूरसँ पुत्रकेँ भोजन लेल बजौलीह। घरमे दानाक मटकी एखन पूरा भरल नहि छल; मुदा शिक्षाक नवा देयक

सम्भावना छल। द्रोण दरिद्रतासँ बाहर आबए चाहैत छलाह, आ संगहि ओ सम्मानक ओहि पुरान घावकेँ नवा विद्यार्थीसभक भविष्यपर लिखबाक विचार सँभालने छलाह।

सीमातीर्थक वर्तमानमे दुपहरिसँ पहिने उतारघरक सामने शान्तिक आवेदनक लेल दू खिड़की खुलल। पहिल कर्मचारी कहलनि जे नाव चलएबाक अनुमति स्थानीय जल-समितिक विषय अछि; दोसर कहलक जे भाड़ा सामान मँगौनिहार व्यापारीक जिम्मा। शान्ति दुनू उत्तर अलग लिखलीह। “व्यापारीक पर्चीपर अहाँक मोहर अछि,” ओ दोसर कर्मचारीकेँ देखौलीह, “एकर अर्थ कमाइ देल गेल, एहन नहि; मुदा सामान एतय पहुँचल, तकर पुष्टि अछि।” कर्मचारी पर्ची उलट-पलट कऽ देखलक। एक बोरा प्राप्तिक पाँतपर स्याही किछु गाढ़ छल; दोसर बोरा चढ़बाक पर्चीमे अंक अलग। शान्ति आग्रह कएलनि जे मूल प्राप्ति-बहीक तिथि सहित नकल भेटय। मौखिक आश्वासन पर ओ आजो नाव नहि छोड़लीह।

ओहि समय कार्यालयक पछिला ओसारमे आशा भूमिज छोट डिबियामे रसीदसभ रखैत छलीह। डिबियामे कागदक टुकड़ा बेसी छल, मुदा घरक सदस्यसभक नाम एक स्थानपर पूरा नहि। खननक्षेत्रसँ विस्थापित परिवारसभक अस्थायी आवास, गाड़ी, औषधि आ बन्द भेल रोजीक अलग-अलग दाम ओ जोड़ि रहल छलीह। तारा एक नजरि कागद देखिकऽ पुछलीह, “एकटा कुल रकम निकलि जाएत?” आशा कहलीह, “कुल निकालब कठिन नहि। मुदा ई नहि लिखब जे सभकेँ एके चोटि हटाओल गेल वा सभक हानि एके कारणसँ भेल।” ओ प्रत्येक परिवारक अनुमति लेल अलग पाँति रखलीह। किछु लोक बाहरी बस्तीक किराया देने छल, किछु रिश्तेदारक घर बिना भाड़ा रहि बालकक पढ़ाइ छोड़ने छल।

आशाक छोट भाए खातामे ‘सामान’ शब्द पढ़ि चिन्तित भेल। “हमर पढ़बाक किताब केतय लिखल?” ओ पुछलक। आशा कहलीह, “जतय किताब गुम भेल, ओतय गुम किताब; जतय विद्यालय छूटल, ओतय विद्यालयक दिन। दूनू एके दाम नहि।” एक बुजुर्ग विस्थापित अपन गवाह बनबाक आग्रह कएलनि। ओ क्षेत्र छोड़ैत समय गाड़ी देखलने छलाह, मुदा प्रत्येक घरक भीतरक सामान नहि। आशा हुनकर बयानमे ओ सीमा दर्ज कएलनि। सहायताक पहिल पर्चीमे किछु दिनक ठहराव-रकम मान्य भेल; स्थायी

क्षतिपूर्तिक हिसाबपर अधिकारी निर्णय टारलक। आशा अन्तरिम रकम स्वीकार कएलनि, अन्तिम दावाक बदलामे नहि।

चन्दा मुण्डा नील झोरा लऽ ओसारपर अएलीह। पहिने सँ चलैत हुनकर निर्माणकाजक हाजिरी विवादमे आब एकटा नव पत्र छल—घर घुरबाक अनुमति माँगबाक छपल प्रारूप। ओकर नीचे कर्मचारी लिखने छल जे ‘ठेकेदारक शेष स्वीकृति’ बिना प्रस्थानक प्रमाण जारी नहि होएत। चन्दा कागदमे अपन नामक ठाम देखलीह। “हम घर जा सकैत छी की नहि, ई ठेकेदारक मनसँ किएक ठहरत?” ओ पुछलीह। कर्मचारी बुझौलक जे ई केवल कार्यालयक नियम अछि। चन्दा कहलनि, “हमर बकाया मजदूरी लेल ओकर हिसाब चाही, मुदा अपन देह लऽ घर घुरबाक आज्ञा ओकरा लग नहि राखल अछि।”

चन्दा अपन साथ आएल दू प्रवासी श्रमिककेँ अगिला पर्चीक खाली खाना देखौलीह। एक मजदूर बिनु पढ़ने हस्ताक्षर करबाक लेल तैयार छल, कारण ओकर माय अस्वस्थ छलीह। चन्दा ओकरा रोकलीह नहि; ओ कहलीह, “पहिने ई सुनू जे एतय ‘सब भुगतान प्राप्त’ लिखल अछि। जँ नहि भेटल तँ खाली ठाममे स्पष्ट लिखू।” दोसर श्रमिक कहलनि जे ओकर किरायाक खर्च अलग दाबा अछि। चन्दा तीनू आवेदन अलग बनबौलीह—काम छोड़बाक सूचना, बकाया मजदूरीक दावा, आ यात्रा लेल पहिचान-पुष्टि। छुट्टीक दिन निश्चय भेल, मुदा भुगतानक विवाद खुलल रहल। ओहि भेदकेँ कागदमे बचाएब चन्दाक एहि दिनक जीत छल।

बाजारक कात रफीक अपन लिखल दू परिचय-पत्र लऽ अएलाह। पहिलमे क्षेत्रीय बोलीक नाम ‘सुरजापुरी’ छल; दोसरमे समुदायसँ जुड़ल ओ परिचय जे हुनकर परिवार अपन इतिहासमे बरखासँ रखैत आएल छल। डिजिटल फाराम दुनूकेँ एकटा खानेमे भरबाक आग्रह करैत छल। लिपिक कहलक, “बोली लिखलहुँ तँ जाति सेहो ताहिसँ बुझि जाएत।” रफीक हँसला नहि। ओ पुछलनि, “अहाँ जँ मैथिली बजैत छी, तँ की अहाँक सभ दोसर परिचय सेहो ओहि शब्दसँ बुझल जा सकैत अछि?” कर्मचारी कहलक जे कोठरी सीमित अछि। रफीक उत्तर देलनि, “तखन कोठरीक अभाव लिखू, हमर परिचयक अभाव नहि।”

कुमुदी अपन दोसरा ग्राहकक कामसँ घुरैत रफीकक आग्रह सुनलीह। ओ कहलनि जे अनुवादमे ‘भाषा’क एकटा शब्द क्षेत्रीय बोलिक स्वतन्त्र परिचयकेँ छोट कऽ सकैत अछि, मुदा प्रशासनक कोड बदलब हुनकर अधिकार नहि। रफीक मूल आवेदन अपन भाषिक रूपमे लिखलनि; कुमुदी मानक भाषामे ओकर प्रयोजन स्पष्ट कएलनि, आ दुनू प्रतिमे कोनो जाति-नाम स्वतः नहि जोड़ल गेल। अधिकारी आपत्तिक लिखित प्राप्ति देलक। रफीक बाहर निकलैत कहलनि, “आइ डिजिटल फाराम नहि बदलल, मुदा एखन ई सिद्ध अछि जे हम गलत मिलान स्वीकार नहि कएलहुँ।” हुनकर छोट भतीजी उच्चारणक दू शब्द दोहरबैत संग चलि गेलीह। रफीक ओकरा सुधारलनि नहि; पहिने पुछलनि जे ओ शब्द हुनका घरमे कोना बजैत अछि।

भोजनक विराममे लता पुरान नावघरक अभिलेखक समयक विषयमे पुछलीह। कर्मचारी कहलक जे जाँच-अधिकारीक निर्धारित उपस्थितिमे मूल बही देखल जा सकत; सार्वजनिक नकल एखन उपलब्ध नहि। लता अपन कापीमे समय उतारि लेलनि। ओ पुरान ‘मिठुआ’ पर्ची फेर नहि देखलीह, कारण ओकरा सभ जगह चिपकबए सँ नामक अर्थ नहि खुलत। पद्मा पुछलीह, “अहाँ आइ जएबाक चाहैत छी?” लता उत्तर देलीह, “हम जएब, मुदा ओतय जे भेटत ओकरा लिखबाक अपन शर्त पहिने कहब। बालकक नाम सुनल इतिहास आ हमर बेटाक पता एक नहि अछि।” तारा सहमति देलीह जे ओ दिनक यात्रा-खर्च अलग राखल जाएत।

मैत्री श्रेष्ठ पुरान परिवहन-पत्रक एकटा मोड़ल प्रति लऽ कार्यालयमे पहुँचलीह। ओ अपन परिवारक औषधि-ढुलाईक समय सँबन्धी पुरान त्रुटि सँ सुधारबाक काज करैत छलीह। एहि बेर एक पन्नापर ‘परोला’ लिखल देखबैत कहलीह, “हमरा एहि नामक मूल उच्चारण आ लिखल रूपक मिलान चाही। दोसर पन्नामे एक अक्षर अलग अछि; एकर अर्थ दू स्थान अछि, से हम नहि कहि सकैत छी।” लिपिक पुरान खाता सँ वर्तमान नक्शा खींचबाक प्रस्ताव देलक। मैत्री मना कएलनि। “एतय नाम अभिलेखमे अछि। मार्गक वास्तविक स्थान तय करबाक लेल जारी करनिहारक समयक विवरण चाही।” पद्मा नामकेँ जसक तस लिखलीह।

दोसर पर्ची नसीमा शेरशाहबादीक परिवारक यात्रा-सन्दर्भसँ आयल छल। ओकर ऊपर ‘मेची’ नाम छल। नसीमा स्वयं कार्यालयमे अएलीह, कारण कागदक नकलपर हुनकर परिवारक नाम गलत कटि गेल छल। “हम कागदक पट्टी सिए कऽ पोथी बचबैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा अपन घरक नाम गलत कटल रहए तँ कागद बाँचलासँ की लाभ?” कर्मचारी कहलक जे मेची नाम देखिकऽ यात्रा एक निश्चित सीमाचौकीसँ भेल मानल जा सकैत अछि। नसीमा पुछलीह, “एतय चौकीक मोहर कतय अछि?” कोनो स्पष्ट मोहर नहि छल। ओ अपन यात्राक वास्तविक तिथि आ अपन देखल पड़ाव बतौलीह, मुदा लिखल नामसँ पूरा मार्गक अनुमान स्वीकार नहि कएलनि।

नसीमाक संग आएल हुनकर किशोरी बेटी पर्ची पकड़ने छलीह। ओ माँसँ पुछलक जे जँ कार्यालय उनकर भाषामे नाम ठीक नहि लिखि सकय तँ विद्यालयक प्रवेश-पंजीमे की होएत। नसीमा बेटीकेँ अपन नाम लिखबाक लेल लेखनी देलीह; बेटी पहिने घरमे बजैत रूप लिखलक, फेर अधिकारीक माँगल अक्षररूप अलग। नसीमा दूनूकेँ विरोधी नहि, सम्बन्धित रूपमे दर्ज करबाक आग्रह कएलनि। रफीक कातसँ सुनैत छलाह। ओ नसीमाक परिचय अपन कोठरीमे नहि खींचलनि, आ नसीमा रफीकक भाषिक दावा अपना नामपर नहि चढ़ौलीह। दूनूकेँ एक्के कार्यालयक सुविधा सँ समस्या छल, मुदा हुनकर समाधान अलग-अलग छल।

शान्तिक बकाया दावाक पहिल उत्तर अपराहमे भेटल। उतारघर मानलक जे दू बोरा घाटक पंजीमे चढ़ल छल, पर व्यापारीक भाड़ा-वितरण खातामे केवल एक प्राप्ति अछि। अधिकारी एकटा अन्तरिम रसीद देलक—दावा प्राप्त, सत्यापन शेष। शान्ति ओकरा पढ़ि कहलनि, “एकरा भुगतान कहि कऽ नहि लिखब।” ओ अपना लेल आगाँक पारगमन-अनुमतिक पृथक् आवेदन देलीह, जाहिमे दूनू कात काम करबाक दिन आ नाव ठहरबाक सीमा स्पष्ट छल। अधिकारी आगाँक सप्ताहमे जाँचक समय दएलक। शान्ति नाव चलएबाक मौसमी सम्भावना लेल एतबा मानलीह, मुदा बकायाक पर्ची अलग फाइलमे रखलीह।

अपराहमे आशा विस्थापनक गणनाक नवा सारणी लऽ अएलीह। प्रत्येक पाँतिमे ‘स्वयं देखल’, ‘परिवारसँ सुनल’ आ ‘रसीदसँ पुष्ट’क अलग चिह्न छल। एक व्यक्ति कहलनि जे

एहि तरहें लिखलासँ उनकर हानि कम देखाएत। आशा उत्तर देलीह, “नहि, केवल दावा मजबूत होएत। जकर रसीद नहि, ओकर अनुभव मेटाएब नहि; ओहि अनुभवक जाँचक बाट अलग देखाएब।” ओ अस्थायी आवासक स्वीकृत रकमक नकल घर-घर पहुँचेबाक जिम्मा बाँटलीह। परिवारक एक वृद्धा कहलीह जे अहाँ सभक बड़का बैठक हम नहि जा सकब। आशा हुनकर कथन घर पर सुनबाक समय तय कएलनि, हुनकासँ बिनु अनुमति सही नहि लेलनि।

साँझक कात चन्दा अपन तीन आवेदनक प्रति लऽ बस अड्डा गेलीह। घर घुरबाक टिकट लेल जतेक दाम चाही छल, तकरा एक हिसाबमे राखलीह; ठेकेदारक बकाया दोसरमे। “हम घुरब तँ दावाक सुनबाइ छूटि जाएत?” संगक श्रमिक पुछलक। चन्दा कहलीह, “जँ प्रतिनिधि नियुक्त करब तँ सुनबाइक सूचना घर पठाउ, जँ स्वयं आबय पड़त तँ तिथि बदलएबाक निवेदन। हम घुरि जएबाक निर्णय दावासँ त्यागपत्र नहि बनएब।” ओ टिकट तुरन्त नहि किनलीह; पहिने कार्यालयसँ प्राप्ति-अंक लेलनि। अगिला भोरक यात्रा एखन सम्भावना छल, मुदा ठेकेदारक मौखिक रोक आब लिखित अधिकार नहि मानल गेल।

हस्तिनापुरक ओहि पुरान समयमे द्रोणक शिक्षाशालामे एक साँझ कृप फेर पहुँचलाह तँ प्रशिक्षणक सूचीक नीचाँ देय प्रतिदानक एकटा खाली खाना देखलनि। “ई खाली किएक?” ओ पुछलनि। द्रोण कहलनि, “गुरु शिक्षा पूरा भेलापर अपन दक्षिणा कहैत छथि।” कृप उत्तर देलनि, “कहल जा सकैत अछि, मुदा विद्यार्थीकेँ जे जोखिम उठएबाक होएत, तकर सीमा पहिनहिसँ जानबाक अधिकार अछि।” द्रोणक आँखिमे द्रुपदक सभागृह पुनः उठि गेल। ओ कहलनि, “हमर अपमानक हिसाब एखन बाकी अछि।” कृप कहलनि, “अहाँक अपमान वास्तविक अछि। ताहिसँ प्रत्येक शिष्य अहाँक प्रतिशोधक ऋणी नहि बनि जाइत।”

द्रोण ओहि दिन अभ्यास रोकि नहि देलनि। ओ अर्जुनक पकड़ सुधारलनि, कमजोर विद्यार्थीक दोसर अवसर दएलनि, आ अश्वत्थामाकेँ शस्त्र तेल लगएबाक काजमे लगौलनि। हुनकर काजमे निपुणता छल, मुदा दक्षिणाक खाली खाना खालीए रहल। द्रुपद पाञ्चालमे अपन सेनाक खर्च आ प्रजाक करक पंजी देखैत छलाह; ओहो पुरान सहपाठीकेँ अपमानित कएलाक परिणाम पूरा बुझि नहि सकल छलाह। कृपक प्रश्न द्रोणकेँ पसिन्न

नहि पड़ल, मुदा उत्तर नहि देबासँ प्रश्न नष्ट नहि भेल। विद्यार्थी सभ भविष्यक युद्धक सैनिक बनि सकैत छलाह; एखन ओ सीखैत युवक छलाह, जकर श्रम, सुरक्षा आ निर्णायक मूल्य अपन छल।

वर्तमानक सीमातीर्थमे रातिक पहिल घण्टा बजल तँ शान्ति नावक डोरी कसलनि आ घरक दिशामे चललीह। हुनकर हाथमे दू पर्ची छल—पुरान भाड़ाक अस्वीकृत नहि, अपुष्ट दावा; आ आगाँक पारगमनक जाँचक तिथि। आशा अपना परिवारसभक खाता लऽ गेलीह; चन्दा घर घुरबाक पत्रक प्रति बचौलीह; रफीक भाषिक आपत्तिक प्राप्ति सँभौलनि। मैत्रीक परोला आ नसीमाक मेचीक कागद अलग लिफाफामे छल, जकरा सभकेँ मिलाकऽ एक नक्शा नहि बनाओल गेल। तारा आ पद्मा अपन यात्रा-पंजीमे एहि भेदसभकेँ बचौलीह, ताकि अगिला जाँचमे कोनो अनुमान चुपचाप मूल प्रमाण नहि बनि जाए।

लता साँझक ओहि भीड़मे एक बेर अभिलेखघरक बन्द दरबज्जा दिस देखलीह। आइ मिथुनक कोनो नव प्रमाण नहि भेटल छल। भेटल छल मूल पंजी देखबाक निश्चित समय, आ एहि बातक स्पष्ट समझ जे ककरो श्रमक बकाया जकाँ ककरो सन्तानक खोज सेहो दोसरक सुविधाक लेल छोट नहि कएल जा सकैत अछि। ओ काफी बन्द करैत पद्मासँ कहलीह, “काल्हि हम पन्नाक संख्या देखब, तकर आखिरी अंकसँ पहिने पहिल नाम पढ़ब।” पद्मा उत्तर देलीह, “आ जे नहि पढ़ि सकब, ओकरा खालीए छोड़ब।” चौकीक लालटेनक उजासमे कागदक छाया डोलल; नदीक पार अन्हार छल, मुदा प्रत्येक लोक अपन-अपन देयक नाम अधिक स्पष्ट कऽ चुकल छल।

अध्याय ७५ • एक्के आखिरी अंक

रेलचौकक पुरान गोदाममे खिड़कीक पल्ला अड़िनिहार लोहेक कील ढीला भऽ गेल छल। नैरा ओकरा हथेली सँ दबा कऽ कागदक तीनटा ढेरीपर उड़ैत धूरि रोकलीह। पहिल ढेरी महेशक हत्यासँ सम्बन्धित अधिकृत पत्रक सार्वजनिक, निजी विवरण मेटाओल प्रति छल; दोसर सीमातीर्थसँ आएल परिवहन-पर्ची; तेसर विद्यालय आ श्रम-सहायताक आवेदन। तीनू ढेरीक ऊपर नीला सियाहीसँ लिखल अन्तिम अंक ‘७’ देखिकऽ कबीर रातिए फोन कएने छलाह। हुनका ई मिलान असाधारण लागल छल। नैरा कील छोड़ि कागदक कोना सँभारलीह। “एक्के अंकक अर्थ एक्के खाता नहि होइत अछि,” ओ कहलीह। कबीर उत्तर देलनि, “मुदा एक्के अंकक कारणेँ सभ कागद एक ठाम किएक पहुँचल?”

पटरीक कातक चायवाला उबलैत पानि उतारि रहल छल आ दूरसँ बोराक ढुलाईक ठकठक सुनाइत छल। नैरा पुरान प्रकाशनक मूल पृष्ठ मेजक दराजमे बन्द रखलीह। महेशक नाम गलत सन्दर्भमे प्रकाशित कएलाक दायित्व ओ सार्वजनिक रूपसँ मानि चुकल छलीह; आब फेर एकटा संख्याक सहारे कोनो व्यक्तिक परिचय जोड़ब हुनका असम्भव लागैत छल। ओ कबीरकेँ कहलनि, “अहाँ पहिने लिखू जे ई तीनू पन्ना ककर हाथसँ, कोन दिन आ कोन प्रयोजनसँ आएल। अन्तिम अंकक कथा तकर बाद।”

पहिल पर्ची राजो भोगताक छल। काल्हि विद्यालयक सामग्री लेल भेजल हुनकर आवेदन रेलचौकक सहयोग-केन्द्रमे गलत खाँचामे पहुँचि गेल छल। एक ओर पुरान ग्राम-निवास प्रमाण, दोसर ओर किराया देबाक नव रसीद। विद्यालय-सहायताक सूचीमे पताक अन्तिम कोड सात छल; ओहि कोडक दू परिवारक आवेदन एके क्रमाङ्कमे कम्प्यूटर उतारि लेने छल। राजो ओहि भोर स्वयं डोलची लऽ अएलीह। ओ बच्चाक कॉपी, भाड़ाक घरक पानी आ अपन सामग्री-ढुलाईक बकाया तीन अलग काज लेल आएल छलीह। राजो कड़ाकसँ पुछलीह, “अन्य जाँच कोन? हमर बच्चाक पढ़ाई कोनो अपराधक कागद नहि।”

नैरा हुनका भीतर बैसबाक ठाम देलीह, मुदा फोटो खींचबाक बात नहि उठौलीह। राजो पुरान पताक पत्र खोलि रखलीह। ओकरा ओ छोड़ि चुकल घरक परिचय मानैत छलीह,

अपन वर्तमान निवास नहि। “बदलैत पता लऽ कऽ हम एतय काज करैत छी,” ओ कहलीह, “जँ पुरान पताक बिना सहायता नहि भेटत तँ नव घर बनबेनिहारकें स्कूल दूर भऽ जाएत।” विद्यालयक कर्मचारी फोनपर आग्रह कएलक जे एक ‘स्थायी’ ठेकाना लिखल जाए। राजो उत्तर देलीह, “एखन किराया-पर्ची अछि, विद्यालयमे बच्चाक उपस्थिति अछि, आ गवाही लेल पड़ोसी अछि। तीनूकें पढ़ि कऽ बताउ जे कोन प्रयोजनमे की चाही।”

हथेलीक छाल उतरने छल; कमीजक खीसमे पाँच हाजिरी-पर्ची खोंसल छल। एक पर्चीमे धाँड़ी, दोसरमे धाँडि, तेसरमे केवल शिव लिखल छल। मजदूरी पठेबाक डिजिटल खातामे नामक अन्तिम भिन्नताक कारण भुगतान रोकल गेल छल। ठेकेदारक प्रतिनिधि हुनका जखन फेर ‘पहिचान सिद्ध’ कहलक, शिव पर्ची मेजपर पटकि नहि, सीधा पसारि देलनि। “एहिमे जे दिन बोरा उतारलहुँ, तकर साथीसभक दस्तखत अछि,” ओ कहलनि। “अहाँ हमर नामक अक्षर फेर जाँचू; हमरा पाँच दिनक दामक बदला गलतीक दोष नहि दैअ।”

कबीर शिवक पर्चीमे सेहो अन्तिम अंक सात देखलनि। ई अंक हाजिरीक टोकनक छल, विद्यालयक पताक कोड नहि। ओ नैराकें आँखिसँ संकेत कएलनि, मुदा नैरा हुनका रोकि शिवसँ सीधा पुछलीह, “ई टोकन अहाँक हाथमे कखन आएल?” शिव कहला जे पहिल दिन ठेकाक जमादार देने छल। दोसर दिन मशीनक पर्चीमे अंक बदलल, मुदा पुरान टोकनक नकल सँ भुगतान सूची भरल गेल। हाजिरी बही एखन ठेकेदार लग छल। नैरा कापीमे ‘शिवक कथन’ लिखलीह, ‘बही देखल’ नहि। शिव एतबा सुनि चुप नहि रहलाह। “ई बात लिखू जे हम रकम माँगि रहल छी,” ओ कहलनि, “केवल अपन नामक शुद्धि नहि।”

रेलचौकक केन्द्रमे लोक बढ़ए लागल। चायवाला अपन गिलास गनैत पुछलक जे सभ कागद आजुक एके खिड़कीपर देल जाएत की नहि। राजो हँसि उठलीह, “जँ एके खिड़की रहत तँ पहिने चाय बेचएवला सभक बकाया खोलू।” शिवक मुखपर सेहो हलकी मुस्की आयल। नैरा चाय मँगौलीह आ चायवालाकें दाम देलीह। एखन ओकरा अपन मायक

पर्चीमे लिखल अंकसँ कोनो प्रयोजन नहि छल। राजो ई छोट बात कहैत आँखिसँ धूरि पोंछलीह, जेना विवादक बीच दिनक दोसर जीवन बचाओल जरूरी हो।

सीमातीर्थमे ओही दिन लता पुरान नावघरक अभिलेख देखबाक निर्धारित समयपर पहुँचल छलीह। एक मोट बहीक पन्ना हाथक तेलसँ कारी भऽ गेल छल। अभिलेखपाल केवल एक वर्षक निर्धारित प्रविष्टि खोलि देखौलनि। ‘मिठुआ’ नामक नकलसँ मिलैत अक्षर एक स्थानपर छल; ओकर सँग नावक सामानक क्रमाङ्क सेहो लिखल छल। लता पुछलीह, “ई व्यक्तिक नाम अछि की खेपक?” कर्मचारी कहलनि, “एहि हस्तलिपिसँ हम निश्चित नहि कहि सकैत छी; बहीक शीर्षक नावसामान अछि।” लता तत्काल निष्कर्ष लिखबाक बदला शीर्षक आ पृष्ठसंख्या उतारि लेलनि। मिथुनक खोज एहि पन्नासँ समाप्त नहि भेल।

पद्मा नैराकें छोट सन्देश पठौलीह—सीमा-पारक परिवहन-पन्नामे अन्तिम अंक सात बेर-बेर भेटैत अछि, मुदा क्रमाङ्कक अलग-अलग शीर्षक अछि। ओ मूल बहीक फोटो नहि पठौलीह, कारण अनुमति केवल निरीक्षणक छल। नैरा उत्तरमे पुछलीह जे ककर हाथसँ बनल नकल सार्वजनिक उपयोग लेल उपलब्ध अछि। लता पुछलीह जे ई सन्देश हुनकर बेटाक विवरणक बिना पठाओल गेल ने। पद्मा देखौलीह—नाम अथवा घरक संकेत नहि छल। लता राहतक साँस लेलनि, मुदा कहलनि, “जाँचमे मदद करब ठीक अछि; हमर बच्चाक खोज दोसर विवादक मसाला नहि बनत।” पद्मा हुनकर निर्णय लिखि रखलीह।

राजो आ शिवक कागद अलग राखिते तेसर आवेदनक विषय उठल। रचना धिमाल विद्यालयक ओसारमे चारि बच्चाकें अक्षर-फलकपर अपन घरक शब्द लिखबैत छलीह। प्रवासी परिवारक किछु बच्चा वर्षाक पहिने लौटि आएल छल, किछु फेर बाहर चलि गेल छल। विद्यालयक नियमित उपस्थिति-पंजी स्थायी नाम माँगैत छल; रचना आवागमनक मध्यो पढ़ाई निरन्तर रखबाक लेल साप्ताहिक कक्षा चलबैत छलीह। ओ फोनपर नैरासँ कहलनि, “हमर कक्षा आरम्भ भेल अछि; किताब आ कोठरीक अनुमति माँगब, मुदा बच्चासभकें कोन महिनामे कोन राज्य रहत, से हम पहिने सँ लिखि नहि सकैत छी।”

रचनाक विद्यालयक कागदमे एक पानि-स्थानक नाम पढ़लनि—‘तिलयुगा’—आ लगक काल्पनिक तिलवाहक नक्शाक नकल। एक स्वयंसेवक दुनू नामकें एक्के नदीक दु

रूप घोषित करए चाहलक। नैरा रोकलीह। “तिलवाह एहि नगरक कथागत नदीक नाम अछि; तिलयुगा वा तिलयुगबा अलग स्रोत-पंजीक नाम। ध्वनि मिललासँ स्थल, सीमा आ जलकर नहि मिलैत।” रचना कहलीह जे हुनका विद्यालयक बच्चासभक यात्राक पथ चाही, नदीक स्वामित्वक नक्शा नहि। मुदा सरकारी कागद गलत मिलल तँ कोनो परिवारकेँ गलत ठेकानापर अनुपस्थित देखाओल जा सकैत अछि।

प्रधान कहलक जे पाठ्यपुस्तकक भाषा बदलब विद्यालयक अधिकारक बाहर अछि। रचना उत्तर देलीह, “पाठ्यपुस्तक अहाँ राखू, हम घरक बोलिमे शब्द समझएबाक कक्षा चलाएब। बच्चा घुरि आएलापर जे पृष्ठ छुटल, ओकरा पकड़बाक तरीका बनाउ।” ओ अपन दाम सेहो स्पष्ट कएलनि—कक्षाक समय, तैयारी आ घर-घर समाचार पठेबाक श्रम। प्रधान पहिने एकरा स्वयंसेवा बुझि लेने छल। रचना कहलनि जे मुफ्त एक दिनक भेट अलग अछि, वर्ष भरिक पढ़ाइ अलग। अन्तमे खाली कोठरी सप्ताहमे दू दिन आ परीक्षण-मजदूरीक प्रस्ताव लिखल गेल; स्थायी स्वीकृति एखन शेष छल।

रेलचौकमे कबीरकेँ एक युवक फोनक पर्दापर फैलाएल सूची देखौलक। सूचीमे राजो, शिव, औषधि-ढुलाई, प्रवासी आय आ विद्यालयक कागद एके रंगमे चिह्नित छल। ऊपर शीर्षक छल—‘सात नम्बरक जाल’। युवक कहलक जे एहन समानता संयोग नहि भऽ सकैत। कबीर एक क्षण लेल पुरान उतावली अनुभव कएलनि। जँ ई सूची प्रकाशित हो, तँ ओकर नाम जाँचक अगुआ लोकमे आएत। ओ नैराकेँ देखौलनि। नैरा पुछलीह, “सूची बनौनिहार मूल खातासँ भेटने छल की साझा कएल चित्रसँ?” युवक कहलनि, “सभ चित्र लोकसँ भेटल अछि।” “तँ ई चित्रसभक सूची अछि,” नैरा उत्तर देलीह, “समान खाताक प्रमाण नहि।”

युवकक मित्र प्रतिवाद कएलक, “महेश मरि गेला, आब अहाँ सभ प्रत्येक प्रमाणकेँ संयोग कहि बचा रहल छी?” नैराक मुख कठोर भऽ गेल। “महेशक मृत्यु प्रमाणित घटना अछि। कोन व्यक्ति हत्या कएलक, ओकर उद्देश्य की छल, आ कोन अभिलेख ओहिसँ सम्बन्धित अछि—ई तीन प्रश्नक अलग उत्तर चाही। हमरा अपन पहिल गलतीक दाम बुझल अछि। एखन बिना जाँच नाम जोड़ि कोनो दोसर परिवारकेँ खतरामे नहि देब।”

युवक कहलक, “तखन संख्या किछु नहि कहैत?” नैरा उत्तर देलीह, “संख्या किछु प्रश्न उठबैत अछि। ओकर स्रोत नहि जनलासँ ई ककरो विरुद्ध फैसला नहि कहैत।”

दुपहरिक लग अमीर कुलहैया एक छोट व्यापारिक खाताक संग केन्द्रमे अएलाह। ओ प्रवासी मजदूरसभक कमाइ घर पठेबाक काममे सहयोग करैत छलाह; परिवारसभक पत्र आ पैसा एके दिन नहि पहुँचैत छल। नसीमाक परिवारक पुरान सन्देश सँ हुनका भरोसा भेटल छल जे गलत भाषिक सम्बन्धनसँ धनक प्राप्तकर्ता बदलि सकैत अछि। आब एक दलाल प्रस्ताव रखने छल—अमीर सभ परिवारक रकम एक निजी मध्यस्थक हाथमे सौंपि दथि, जे एके ‘साझा कोड’ पर पैसा जल्दी पहुँचा देत। प्रस्तावक कागदपर सेहो अन्तिम अंक सात छल। अमीर बड़िठि गेलाह। “एतय जल्दीक दाम ककरा माथ?” ओ पुछलनि।

दलाल अपन मोहर देखौलक, मुदा ओ मोहर रकम स्वीकार कएलाक रसीद नहि छल। अमीर एक परिवारक स्त्रीकेँ फोनपर प्रश्न पुछबाक अवसर देलनि। स्त्री कहलीह जे पिछला बेर पुरुष सम्बन्धीक नामपर पैसा आयल, मुदा घरक खर्च ओ चलबैत छलीह। अमीर दलालसँ पुछलनि जे हर प्राप्तकर्ताक स्वतन्त्र सहमति, विनिमय-दर, सेवा-शुल्क आ विफल लेनदेनक वापसी लिखब की नहि। दलाल कहलक, “एतेक विवरणमे कारोबार ठाढ़ नहि होएत।” अमीर हँसला नहि। “तखन कारोबार हमर लोकक धनपर नहि होएत,” ओ कहलनि। ओ तीन परिवारक लेल अधिकृत मार्गक तुलना करबाक दिन निश्चित कएलनि, निजी नकद सामूहिक रूपसँ देबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलनि।

अमीरक खाता खोलिते कबीर अंकक भिन्नता देखलनि। राजोक सात पताक कोड छल, शिवक सात हाजिरी-टोकन, अमीरक सात प्रस्तावित लेनदेन-स्लिपक अन्तिम चिह्न। आ किछु कागदमे ई ‘७’ अंक नहि, पृष्ठक क्रम छल। मुदा साझा सूचीमे सभकेँ ‘मिलैत पहचान-संख्या’ कहल गेल छल। नैरा कबीरकेँ दू रंगक कलम देलीह—एक प्रत्यक्ष मूलक विवरण लेल, दोसर सुनेल विवरण लेल। कबीर पुछलनि जे अनुवादक शब्दक लेल तेसर रंग चाही की? “हँ, जँ शब्दक अर्थ बदलैत अछि,” नैरा कहलीह।

सीमातीर्थक औषधि-परिवहन केन्द्रमे मैत्री श्रेष्ठ अपन घरक पुरान रसीद खोलने छलीह। पिछला दिन ‘परोला’ नामक पाठभेद देखलाक बाद आइ हुनका औषधिक एक नव खेपक

जारी-पत्र देखबाक छल। नेपाली भाषाक मूल पत्रमे एक शब्द सामान ‘प्रस्थान लेल छोड़ल’ होएबाक तिथि बतबैत छल; हिन्दी रूपान्तरमे ओकरा ‘प्राप्त’ लिखि देल गेल छल। एही भेदसँ स्थानीय अस्पताल कहने छल जे औषधि पहुँचि चुकल अछि, परिवहनकर्ता कहैत छल जे खेप एखन बाटमे अछि। मैत्री बक्साक सील, गाड़ीक प्रस्थान आ अस्पतालक प्राप्ति अलग-अलग समय लिखलीह।

कर्मचारी अपन कम्प्यूटरक आँकड़ा दिखौलक—सात पर समाप्त होएवला क्रमाङ्कवाली प्रविष्टि ‘पूर्ण’ देखाइत छल। “सॉफ्टवेयर कहैत अछि, सामान पहुँचि गेल,” ओ कहलनि। मैत्री पुछलीह, “औषधि खोलि कोन कर्मचारी गनलक?” कियो उत्तर नहि देलक। अस्पतालक भण्डारपालकें फोन कएल गेल; ओ कहलक जे ओकरा खेपक सूचना भेटल, बक्सा नहि। मैत्री आग्रह कएलनि जे प्राप्तिक स्थिति ‘सत्यापन शेष’ लिखल जाए। कर्मचारी कहलक जे पुरान प्रविष्टि बदललासँ लेखा बिगड़त। मैत्री उत्तर देलीह, “गलत लेखाकें बचबए लेल औषधि कागदमे पहुँचि जाएत, शरीरमे नहि।”

मैत्री स्वयं अनुवादक नहि छलीह, मुदा परिवहनक शब्दार्थक श्रमकें मुफ्त नहि मानैत छलीह। ओ कुमुदीकें बुलाबय चाहलीह तँ पहिले हुनकर उपलब्ध समय आ पारिश्रमिक पुछलीह। कुमुदी दोसर काम पूरा कऽ अएलीह। मूल भाषा, जारी आदेश आ प्राप्ति-पर्चीक तीन वाक्य सावधानीसँ मिलौलनि। ओ स्पष्ट लिखलीह जे अनुवाद सुधारला सँ बक्साक वास्तविक पहुँच सिद्ध नहि होइत अछि। मैत्री सुधारल पत्रपर हस्ताक्षर कएलनि, कुमुदी अनुवादक रूपमे अपन नाम लिखलीह। भण्डारपाल तय कएलक जे बक्सा अबिते गनती, दवा-नाम आ ताप-संरक्षणक स्थिति जाँचत; ताहि दिनक पूर्व ओकरा प्राप्ति-खातामे नहि चढ़ाओल जाएत।

मैत्रीक पत्रमे पनारक नाम देखिते एक सहायक ओकरा ‘पनार’क बदला स्थानीय बोलिक दोसर ध्वनिरूप मानि मानचित्र सुधारबाक प्रस्ताव रखलक। रफीक ओहि कार्यालयमे अपन भाषिक परिचय सम्बन्धी पिछला आवेदनक नकल लेबए आएल छलाह। ओ कहलनि, “हम अपन सुरजापुरी बोलीमे जे ध्वनि सुनैत छी, ओकर लेखन एक नहि रहि सकैत अछि। मुदा हमर बाजल ध्वनिसँ दोसर जिलाक कागदक स्थल साबित

नहि होएत।” कुमुदी पनारक मूल वर्तनी आ रफीकक उच्चारित रूपक बीच भेद टिप्पणीमे रखलीह।

दुपहरिक बाद रेलचौकसँ सीमा-पार केन्द्रमे फोन भेल। नैरा मैत्रीसँ पुछलीह जे रसीदक मूल प्रतिक मालिक के छथि, आ कोन अंशक प्रमाणित नकल उपलब्ध भऽ सकैत अछि। मैत्री कहलीह जे सुधारल अनुवादक प्रति ओ पठा सकती छथि, मुदा बक्सक सील-पुस्तिका कार्यालयक अनुमति बिना नहि। नैरा अनुमति माँगबाक आवेदनक शब्द सुनौलीह। मैत्री हँसि कहलीह, “पत्र बनबए सँ पहिने सोचू जे हम एखन दवाइक सही बाट लेल दौड़ि रहल छी। अहाँक अनुसन्धान लेल हमर काज रोकल नहि जाए।” नैरा तुरन्त मानि गेलीह। अन्वेषणक समय आ औषधिक समय एके घड़ीक काँटासँ नहि नापल जा सकैत छल।

राजोकेँ विद्यालयसँ फेर खबर आयल। सहायता-सूची सँ हुनकर आवेदन ‘सन्दिग्ध दोहराव’ कहि हटाओल जा रहल छल, कारण कम्प्यूटरमे एके अन्तिम अंकक दू पता छल। राजो स्वयं विद्यालय पहुँचलि। प्रधानकेँ बेटी बनौने कागदक पात नहि, उपस्थिति-बही देखौलीह। “ई बच्ची एतय पढ़ैत अछि; ओहि पुरान पता पर आब नहि रहैत,” ओ कहलीह। विद्यालयक कर्मचारी कहलक जे संसाधन कम अछि, हर भिन्न पताक जाँचमे समय लागैत अछि। राजो कहलीह, “जाँचक समय लिखू, सहयोगक अन्तरिम व्यवस्था सेहो। गलतीक भार बच्चापर नहि खसाउ।” अन्तमे विद्यालय एक सप्ताह लेल पुस्तकक अस्थायी उपयोग आ निवास-जाँचक निश्चित दिन लिखि देलक; पूरा सहायता-वितरणक निर्णय एखन बाँकी रहल।

रचनाक विद्यालयसँ सेहो एक समाचार आयल। हुनकर मातृभाषा-कक्षाक लेल दू परिवार सहमति दऽ चुकल छल, मुदा तेसर परिवार चाहैत छल जे बच्चा अपन घरक बोली नहि बोलय, कारण उपहासक भय छल। रचना ओहि मायकेँ अलग बैसा कऽ पुछलीह जे बच्चा कोन शब्दमे अधिक सहज अछि। माय पहिने चुप छलीह, फेर कहलीह जे ओ पढ़ल भाषा बदलए चाहैत छथि, घरक भाषा नहि छोड़ए। रचना कार्यक्रम बदलीह—पहिने साझा चित्र आ गिनती, तकर बाद बच्चा जे भाषा चुनय ताहिमे उत्तर। कक्षा लाज हटेबाक प्रदर्शन नहि, सीखबाक ठाम बनल।

शिवक बकाया लेल ठेकेदारक खाता आखिर केन्द्रमे आएल। जमादार अपन हस्ताक्षरक नकल लऽ अएलक। दू पर्चीमे एक्के श्रमिकक नामक अक्षर बदलल, मुदा कामक तिथि आ बोराक संख्या मिलैत छल। भुगतान रोकबाक स्वचालित कारण एक नामभेद छल; ई सचित्र प्रमाण नहि जे कियो जानि-बुझि शिवक दाम हड़पलक। शिव कहला, “कारण मशीनक हो वा मनुखक, दिन भरि हम उठौने बोरा तऽ वास्तविक अछि।” नैरा ठेकेदारसँ लिखित निर्णय माँगलीह। ठेकेदार तखन तीन दिनक सत्यापित मजदूरी जारी करबाक आ बाकी दू दिनक हाजिरी दलक दू सदस्यसँ मिलएबाक आदेश देलक। शिव रसीद लऽ गनलनि। “आधा नहि,” ओ सुधारलनि, “तीन दिनक दाम। बाकी दुनू दिन लिखल रहय।”

ठेकेदारक प्रतिनिधि जखन पुछलक जे एहि त्रुटिक दोष ककरा देल जाए, शिव पहिने से नहि जनबाक बात कहलनि। “नामक रूप बदलल, ई पर्ची कहैत अछि,” ओ कहलनि। “कियो जानि-बुझि बदललक की लिखैत समय बिगड़ल, तकर जाँच अलग चाही।” नैरा हुनकर एहि भेदकें खास महत्त्व देलीह। कारण पुरान गोदामक कागदमे महेशक नाम कखन आ कोना फैलल, ई प्रश्न पुनः उठैत छल। मुदा शिवक भुगतान-त्रुटिक संग महेशक मृत्यु जोड़बाक कोनो प्रत्यक्ष स्रोत एखन उपलब्ध नहि छल। एके पद्धतिक असावधानी देखलासँ एके अपराधी सिद्ध नहि होइत अछि।

कबीर फोनक साझा सूची फेर खोललनि। आब ओकर मूल शीर्षक बदलल जा सकैत छल। ओ लिखलनि—‘अलग खातामे अन्तिम अंक सात; तीन सत्यापित स्रोत, दू अपुष्ट नकल’। नैरा पुछलीह, “एहि सूचीकें सार्वजनिक करबाक आवश्यकता अछि?” कबीर कुछ देर सोचलनि। “नहि; सार्वजनिक भेलापर लोग पहिने अंक देखत, भेद नहि,” ओ कहलनि। ओ सूचीक पहुँच सीमित कएलनि, मूल कागद मालिकक अनुमति लिखलनि आ महेशक परिवार अथवा राजोक ठेकाना हटौलनि। ओकर पुरान समाचार-उत्साह एखनहुँ छल, मुदा ई छोट संयम ओ अपन निर्णयसँ कएने छलाह, नैराक आदेशसँ नहि।

साँझ होएबाक समय अमीरक तीन परिवार केन्द्रमे भेटल। एक वृद्धा अपन पोता लेल पैसा माँगबैत छलीह; एक प्रवासी युवक मायक दवाइक खर्च पठबैत छल; तेसर परिवारक स्त्री अपने नामपर रकम लेबाक स्पष्ट आग्रह कएलनि। अमीर सभकें बुझौलनि जे साँझ

बातचीत सम्भव अछि, मुदा साझा खाता आवश्यक नहि। प्रत्येक रसीदमे भेजनिहार, प्राप्तकर्ता, शुल्क आ असफल लेनदेनक वापसी अलग रहत। वृद्धा पुछलीह जे एतेक लिखापढ़ीमे देरी नहि होएत? अमीर कहलनि, “बेसी लगत, मुदा झूठ ठाम पहुँचबाक देरीसँ ई कम अछि।” परिवारसभ अधिकृत भुगतानक बाट चुनलनि; दलालक अग्रिम मांग अस्वीकृत रहल।

दूर सीमातीर्थमे मैत्रीक औषधिक बक्सा साँझक गाड़ीमे आखिर पहुँचि गेल। भण्डारपालक समक्ष सील मिलल, मुदा ताप-नियन्त्रणक एक पर्ची अस्पष्ट छल। औषधिक उपयोग योग्यताक निर्णय चिकित्सकीय परीक्षणपर छोड़ल गेल। मैत्री भाड़ाक प्राप्ति अलग लेलनि; ओ दवाइक गुणक प्रमाणपत्र देबाक दावा नहि कएलनि। कुमुदी घर घुरए लागलीह तँ मैत्री हुनका आजुक पारिश्रमिक देलीह। रफीक अपन बोलीक पनार शब्द फेर एक बेर बजलनि, मुदा ओहि ध्वनि पर कियो सार्वजनिक नक्शा नहि खींचलक। आजुक उपयोगी सुधार नक्शामे नहि, कार्यालयक वाक्यक अर्थमे भेल छल।

लता अभिलेखघर सँ घुरैत पद्माकेँ कहलीह जे ‘मिठुआ’क पुरान पन्नाक शीर्षक नावसामान होएबाक कारण नामक अनुमान कमजोर भेल। पद्मा पुछलीह, “तखन अगिला जाँच बन्द?” लता उत्तर देलीह, “नहि। जकरा बच्चा नहि गुमल, ओकरा एक पन्ना कम भेला सँ राहत भेटि सकैत अछि। हमरा ई जनबाक चाही जे ओ पर्ची ककर हाथसँ बनल। मुदा एखन मिथुनक नामपर दोसरक नावक खाता जब्त नहि कराएब।” ओ मूल नकलक वैध उपलब्धताक लेल आवेदन देलीह। खोजक एहि धीमा रफ्तारमे हुनकर निर्णयक दृढ़ता छल, हार नहि।

रेलचौकक अन्हारमे कार्यालय बन्द करएवला लड़का बाहरक ताला परखैत छल। राजो अपन बेटी लेल रंगीन कागद घर लऽ गेलीह; शिव तीन दिनक मजदूरी सँ राशन किनबाक लेल बजार दिस बढ़लाह; रचना अगिला कक्षाक चित्र बनबैत छलीह; अमीर तीन परिवारक अलग रसीद सँभारैत छलाह। ई सभ अपन-अपन दिनक परिणाम छल, एकटा रहस्यक परिशिष्ट नहि। नैरा मेजपर एक कागद छोड़ि देलीह—‘अन्तिम अंक सात, स्रोतभेद पुष्टि; अपराध-संयोग अपुष्ट’। ओकर नीचाँ चारि खाली खाना छल—मूल बही, हस्तलिपि,

प्रविष्टिक समय आ ककरा लाभ। ओ जानैत छलीह जे एहि खानासँ उद्देश्यक उत्तर एखन नहि निकलल अछि।

कबीर खिड़कीक कील कसैत पुछलनि, “काल्हि फेर एतहि मिलब?” नैरा बत्ती निभेबासँ पहिने कहलनि, “जखन मूल कागदक अधिकृत उत्तर भेटत। ओकर पहिने राजोक किताब, शिवक शेष दाम आ मैत्रीक दवाइक वास्तविक जाँच चलैत रहत।” हवा आब भीतर नहि अबैत छल, मुदा बाहरक रेलक स्वर सुनाइत रहल। नैरा अपन संशोधन-पंजीमे एतेक लिखलीह जे संख्या एक्के रहितो व्यक्ति, वस्तु आ घटना एक नहि होइत अछि। महेशक मृत्यु लेल न्यायक खोज अबाधित छल; ओहि खोजमे दोसर निर्दोषक नाम फेर असावधानीसँ नहि जोड़ब, ई आइक अर्जित, कठिन निर्णय छल।

अध्याय ७६ • एकलव्यक बाद

विद्यालयक पाछाँक देबाल लग प्रतिमा राजवंशी भोरमे एकटा पुरान बाँस धरि ठाढ़ छलीह। देबालसँ तीन हाथ दूर माटिमे गाड़ल लोहेक नव डंडाक कात विद्यालयक दू विद्यार्थी गोटीसँ खेलए लागल छलाह। प्रतिमा हुनका हटए नहि कहलीह; पहिने डंडाक नोकमे बान्हल पातर लाल सूत देखौलीह। “ई सूत के बान्हलक?” बच्चामे सँ एक कहलक, “काल्हि साँझ दू आदमी अएल छल। कहैत छल जे एतय बड़का दोकान बनत।” प्रतिमा ओकर बात सुनलीह, मुदा बच्चाक कथनकेँ नापीक आदेश नहि मानलीह। ओ अपन नकल-बही खोलि डंडाक दूरी लिखलीह आ देबालक पुरान फाटकपर नजरि देलीह, जतय सँ बच्चासभ बरखा-दिनमे विद्यालय अबैत छल।

प्रधानाध्यापक विद्यालयक ताला खोलैत अएलाह तँ प्रतिमा हुनका नक्शा देखौलनि। “ई हमर परिवारमे बचल प्रति अछि,” ओ कहलीह। “पुश्तैनी दानक बात घरमे सुनैत आएल छी, मुदा एतयसँ लगैत कोन टुकड़ा विद्यालयक नाम दर्ज अछि से मूल रजिस्टरसँ मिलाएब। एखन खाली ई पूछैत छी जे देबालक बाहर लोहेक डंडा ककर आदेशसँ गाड़ल गेल।” प्रधान कहला जे दोकानदारक प्रतिनिधि एक दिन भेटने छल, विद्यालय हुनका लिखित स्वीकृति नहि देने अछि। प्रतिमा आग्रह कएलनि जे छात्रसभक पैदल बाट आ विद्यालयक उपयोगमे रहल खुलल जमीनक तस्वीर तिथि सहित सुरक्षित राखल जाए; निजी सम्पत्ति घोषित करबाक उतावली ओहो नहि देखेबथि।

राजो भोगता अपन बेटीकेँ लऽ कऽ ओहि फाटकपर पहुँचलीह। हुनकर हाथमे पछिला दिन सहायता-सूचीसँ काटल गेल आवेदनक प्राप्ति छल। राजो प्रतिमासँ पुछलीह जे नवा डंडा लगलासँ पाछाँक बाट बन्द भऽ जाएत की। “एखन निश्चित नहि,” प्रतिमा उत्तर देलीह, “आ जँ कियो बन्द करए चाहैत अछि तँ कोन अधिकारसँ, से पुछब।” राजो कहलीह, “हमर बेटीकेँ सहायता भेटत की नहि, तकर निर्णय अलग अछि; विद्यालय धरि अबैत ओकर बाट तऽ बन्द नहि होअय।” प्रतिमा एहि दुनू फरक आग्रहकेँ एके आवेदनमे गुम करबाक बदला दू पत्रक प्रस्ताव रखलीह।

अन्दर रचना धिमाल बच्चासभक लेल पुरान अखबारक खाली कातपर चित्र बनबैत छलीह। राजोक बेटी नावक चित्र चुनलक। रचना पुछलीह, “घरमे एकरा की कहैत छी?” बच्ची जे शब्द कहलक, ओ रचनाक घरक शब्दसँ भिन्न छल। रचना ओकरा सुधारबाक बदला दूनू शब्द लिखलीह। ओहि क्षण प्रतिमा बुझलीह जे विद्यालयक भूमि लेल दाबी मात्र पट्टाक विवाद नहि; एहि खुलल कोठरीमे जे लोकक सीखब चलि रहल अछि, ओकर निरन्तरता सेहो प्रश्न अछि। मुदा बच्चाक दू शब्द जमीनक कानूनी सीमा साबित नहि करैत छल।

ओही समय विदेहपुरसँ सरिताक एक सन्देश आयल। बरखाक दिनमे सँभालि राखल रामवती खत्वेक पुरान चिट्ठी ओ हुनकर अनुमति अनुसार घुरेबाक व्यवस्था कऽ रहल छलीह। रामवती सीमातीर्थक कार्यालयक दुआरपर बैसल छलीह। हुनकर लग दू ठाम बनल परिचय-पत्र छल—एकमे घरक पुरान वासस्थानक नाम, दोसरमे विवाहक बादक नामक अलग लेखन। लिपिक अपन पर्दा घुमा कऽ कहलक, “एहिमे एकटा गलत होएत; अहाँ चुनू कोनटा राखब?” रामवती पुछलीह, “चुनलासँ हमर पहिल जीवन मेटा जाएत? जतय मजदूरी केलहुँ, ओहि ठामक बकाया ककर नामे माँगब?”

सीमा बदललासँ हुनकर हाथक काम नहि बदलल छल; ओ धान रोपबाक मौसममे खेतपर जाइत छलीह, जाड़मे कपड़ाक मरम्मत करैत छलीह। मुदा एक ठामक पंजीमे विवाहक बादक वासस्थान जोड़ल छल, दोसरमे पहिल ठामक श्रम-पहचान। कर्मचारी कहलक जे ई साधारण नाम-संशोधन अछि। रामवती छोट कपड़ाक थैली खोलि पहिल मजदूरीक रसीद निकाललीह। “एहि रसीदपर हमर पुरान परिचय अछि,” ओ कहलीह, “मुदा काज तखन हमे कएने छलहुँ। जँ एहिकेँ अलग स्त्रीक मानब तँ पइसा गायब होएत। जँ नवा कागद मेटाएब तँ बेटीकेँ विद्यालयमे माँक परिचय कोना देब?”

ओ पहिने रामवतीसँ पुछलीह जे हुनका दस्तावेजक शब्दार्थ बुझबाक सहयोग चाही की आवेदन स्वयं लिखबाक। रामवती कहलनि, “हम अपन बात स्वयं कहब। अहाँ दुनू भाषामे एक्के प्रश्न बचा दिअ।” कुमुदी मूल कागदक दोसर भाषाक शब्द पढ़ि सुनौलीह; एक ठाम ‘वापसी’ छल, जाहि शब्दकेँ छपल फाराममे ‘नवा प्रवास’ लिखल गेल छल। अर्थक ई अन्तर सुनि रामवती तीन पंक्ति लिखबौलीह—पुरान काजक पहचान, वर्तमान निवास,

आ मजदूरीक दावाक निरन्तरता। ओ एहि तीनूमे सँ कोनो एककेँ दोसरक विकल्प मानबाक असहमति दर्ज करौलनि।

कार्यालयक बाहर रामवतीकेँ सरिताक चिट्ठी भेटल। पुरान कागदक कोना नमीसँ नाजुक भऽ गेल छल; कागदपर रामवती अपन ओहि समयक हस्ताक्षर चिन्हलीह, जखन ओ सरिताक घरमे किछु दिन रहि गेल छलीह। सरिता फोनपर कहलीह, “अहाँक कागद अहाँक। हम रखि लेने छलहुँ, ताहिसँ एकर अर्थ लिखबाक अधिकार हमर नहि।” रामवती पुरान हस्ताक्षरकेँ वर्तमानक प्रमाणक रूपमे संलग्न करबाक अनुमति माँगलीह, मुदा साथे स्पष्ट करौलनि जे चिट्ठी अकेले दूनू परिचय-पत्रक वैधता सिद्ध नहि करैत अछि। कार्यालय आवेदन स्वीकार कएलक; संशोधनक निर्णय लेल मूल जारी-पंजी माँगाओल जाएत।

एहि आधुनिक कागदसभसँ बहुत पहिने, प्राचीन वनक किनार एकलव्य टुटल धनुक डोरी हाथमे लऽ कऽ देखैत छल। ओकर अँगूठाक घाव पुरान छल, मुदा भोरमे हाथक कड़ापन एखनहुँ रहैत छल। ओहि किशोर विद्यार्थीक संग आइ एकटा नव बालिका अएलीह। बालिकाक माय छालसँ पात्र बनबैत छलीह, मुदा बेटी चाहैत छलीह जे जंगलक बाट आ जालक सुरक्षित गाँठ पढ़ि सकय। एकलव्य धनुष ओकर हाथमे नहि देलक; पहिने पुछलक, “तोहर नाम आ एतय आएबाक इच्छा ककर?”

बालिका अपन नाम झुमकी कहलक। “माय पठौने छथि,” ओ उत्तर देलक, फेर रुकि जोड़लक, “मुदा सीखब हम चाहैत छी। जे लोक कहैत छथि जे हमर हाथ एहि कामक नहि, हुनका देखाएब चाहैत छी।” एकलव्य ओकर आगाँ डोरी राखलक; वंशक परीक्षा नहि कएलक। “एखन ई गाँठ बाँध। जे नहि जानह, कहिह। जानबाक अभिनय करबह तँ रस्सी टुटत।” झुमकी दू बेर गाँठ उलटा बाँधलक। तेसर बेर ठहरि देखलक जे डोरीक गीला सिरा कसैत समय ढील छोड़ि रहल अछि।

वृद्धा डोरीकारिणी, जे पहिने एकलव्यकेँ सिखेबाक समयक मूल्य गनबाक बात कहने छलीह, झुमकीक प्रयास देखैत छलीह। ओ एकलव्यसँ कहलीह, “तोहर पाठशालामे विद्यार्थी बढ़ल। मुदा हमर डोरीक दाम एखनहुँ पुरनका मापपर अछि।” एकलव्य जवाब देलक जे नव विद्यार्थीक लेल साझा भण्डारसँ डोरी निकालल गेल अछि। वृद्धा पुछलीह, “भण्डारमे जिनकर श्रम पड़ल, हुनकर नाम कतय?” एकलव्य पुरान छाल-बही खोललक;

ओहि पातपर किशोरक पहिल कमाइक एक अंश लिखल छल, मुदा डोरी बनौनिहारक समय नहि। ओ बहीक नव पात मँगौलक आ वृद्धासँ मापक हिसाब बुझलक।

एहि बीच वनक बाहरी बाटसँ एक शिकारी आयल। “तोहर नामपर विद्यार्थी भेटत,” ओ कहलक, “आ विद्यार्थी नाम सुनि कऽ दक्षिणा दैत छथि।” एकलव्य अपन घाववला हाथक अँगुरी पसारि कहलक, “नामक दाम चुकल अछि। एखन जे बच्चा एतय आबि रहल अछि, ओकरा ठगि नहि सकैत छी।” शिकारी प्रतिवाद कएलक, “तूँ गुरु छी कि डोरी बेचएवला?” वृद्धा बीचमे कहलीह, “जे डोरी तोड़त, ओकरा फेर बनएबाकें के देत? एतय कौशल आ वस्तु दूनूक दाम अछि।” शिकारी उत्तर बिनु आगाँ बढ़ि गेल, मुदा ओकर तिरस्कार झुमकी सुनि लेने छलीह।

झुमकी पुछलक, “हमर माय भण्डारमे अनाज कम दऽ सकैत छथि। तखन हम कम सिखब?” एकलव्य तुरन्त नहि कहलक जे सभ एके होएत; साझा भण्डार पिछला मासमे आधा खाली पड़ल छल। ओ पहिनुक किशोरकें बैसाकऽ आकलन कएलक जे कोन विद्यार्थी कतेक अनाज देत, ककरा सामग्री चाही आ कतेक घण्टा शिक्षाक लेल ओ स्वयं उपलब्ध रहत। एकलव्य किशोरक प्रशिक्षण-समयक देय लिखलक। झुमकीक माय जँ अनाज नहि दऽ सकथि तँ छाल-पात्रक माप सिखा सकैथि—एहि विकल्पपर सहमति लेल पहिने मायकें पुछबाक ठहरल।

ओहि दिन अभ्यासक बीच एकलव्य झुमकीकें लक्ष्यसँ दूर एकटा बाँसक टुकड़ा देलक। “एकरा छूरासँ नहि, आँखिसँ नाप,” ओ कहलक। झुमकी दू गाँठक बीचक अन्तर बतौलि, मुदा छालक नीचे लागल महीन फाट नहि देखलक। जखन ओ बाँस मोड़लक तँ पातर काठ टूटि गेल। एकलव्य कहलक, “गलतीकें नुकाबह तँ दोसरक हाथ घायल होएत। आजुक पाठमे ई टुटल टुकड़ाक दाम शिक्षाक खर्चमे लिखब। जे जानि-बुझि बेकार करब, ओकर बात अलग।” झुमकी पहिल बेर देखलक जे गलती स्वीकार कएलासँ पाठशाला सँ निकालल नहि जाइत।

दिन ढलैत झुमकीक माय अएलीह। ओ बेटीकें घर लऽ जएबाक पहिने एकलव्यसँ पुछलीह, “अहाँक पहिल गुरु के छला?” एकलव्य माटिक प्रतिमाक प्रसंग आ अपन अँगूठा देबाक निर्णय संक्षेपमे कहलक; हुनकर अतीतक घावकें ओ नहि नुकौलक। माय

पुछलीह, “तखन ओ गुरु अहाँकेँ अपन शिष्यमे गनलनि?” एकलव्य उत्तर देबामे देर कएलक। “हम हुनका गुरु मानलहुँ; हुनकर मान्यता आ हमर स्वीकार एक नहि छल।” माय कहलीह, “हमर बेटी एतय सीखत तँ ओकर नाम छाल-बहीमे दर्ज होएत?” एकलव्य झुमकीकेँ लेखनी देलक। झुमकी अपन नामक पहिल चिन्ह स्वयं बनौलक; वृद्धा तकर कात सिखेबाक सामग्रीक हिसाब लिखलीह।

एकलव्यकेँ द्रोणक विद्या असत्य कहबाक आवश्यकता नहि छल; ओ अपन शरीरपर कएल गेल निर्णयक मूल्य जानैत छल। राति होएबाक पहिने ओ नव विद्यार्थीसभकेँ जंगलक बाटमे चलैत समय आगाँक लोकक संकेत सुनबाक अभ्यास करौलक, बाणक लक्ष्य बनएबाक नहि। झुमकी पहिल बेर कतेको दूरीसँ छाल-पात्र लऽ घुरैत मायकेँ चिन्हलक। किशोर ओकर ठीक पहचान सुनि कहलक, “एहिसँ माछ नहि फँसत।” झुमकी उत्तर देलक, “माय रास्ता नहि भुलथिन, तखन घरमे साँझक आगि जरत।” एकलव्य एहि उत्तरपर किछु नहि कहल; ओकर पाठशालाक आजुक परिणाम तीरक निशाना नहि, तीन लोकक घर पहुँचबाक सुरक्षित बाट छल।

वर्तमानक सीमातीर्थमे बिनु दराईक घरक बरामदापर ओही दुपहरि सातवाँ खाम फेर खोलल गेल। ओहि पैसासँ घरक छत मरम्मत भेल छल, एक भाग ससुरक औषधिमे गेल छल, आ किछु रकम हुनकर नामे बचत होएबाक बात पति फोनपर कहने छलाह। मुदा खाताक कागदमे प्राप्तकर्ताक ठाम घरक पुरुष अभिभावकक नाम मात्र छल। बिनु कहलीह, “हम ई नहि कहैत छी जे सभ कमाइ हमरा देल जाए। हम कहैत छी जे जे हिस्सा हमर खर्च आ बचतक लेल सहमतिसँ पठाओल गेल, ओकरा ककरो दयापर नहि राखल जाए।”

अमीर कुल्हैया पिछला दिन बनाओल तीन परिवारक पृथक् रसीद लऽ अएलाह। बिनु हुनका अपना घरक चौथ लेनदेनक विषयमे पुछलीह। अमीर पहिने राशि सुनि नहि, प्राप्तकर्ता-कागदक अधिकार पुछलनि। बिनु कहलनि जे हुनकर पति विदेशमे एक काज पर छथि आ धन पठेबाक सेवा-शुल्क कतेक काटल गेल, से जानकारी घरमे सभकेँ नहि भेटल। ओ पति आ बिनु दुनूक सहमति अनुसार पैसाक सम्बन्धित अंशक अलग लिखित निर्देश बनबाक सुझाव देलनि; वर्तमान खातामे जतेक तथ्य सिद्ध अछि, केवल ओतबे दर्ज

कएलनि। बिनु फेर पूछलीह जे जँ पति सहमत नहि होथि तँ? अमीर कहला, “तखन मतभेद लिखित रूपमे रहत। हम अहाँक सहमति बनाकऽ नहि लिखब।”

बिनुक सासु, जे घरक धान सुखएबाक काम देखैत छलीह, बातचीत सुनि कहलीह, “पड़सा घरमे अबैत अछि तँ घरक होइत अछि।” बिनु हुनकर बात नकारलीह नहि। “घरक होइत अछि, मुदा घरमे ककर हाथसँ कतेक काज होइत अछि, ओहि हिसाबसँ निर्णय सेहो होअय,” ओ उत्तर देलीह। बिनु अपन छोट कापी खोलि देखौलीह जे ऋणक किस्त, औषधि आ बालिकाक पढ़ाई पहिले राखल अछि। विवाद धन लुकएबाक नहि, निर्णयमे हुनकर नामकें स्थान देबाक छल। अन्तमे दुनू स्त्री अगिला प्रेषणपर प्राप्तकर्ताक स्पष्ट निर्देश माँगबाक बातपर सहमत भेलीह; पुरनका खर्चक विवाद एखन टरल नहि।

अमीरक खाममे एक पुरान प्रवास-पत्र सेहो छल, जाहिपर ‘फरियानी’ लिखल छल। अमीर पर्ची सम्हारि कहलनि, “ई नाम एहि मूल पत्रक स्थान-खानामे अछि। हमर लग एखन ओकर भौगोलिक सीमा मिलएबाक साधन नहि। एही पर्चीमे मजदूरक पैसा कोन सेवासँ चलल, तकरा पहिने देखी।” पुरान पत्रक रकम, जारी करनिहार आ प्राप्तिक तिथि अलग उतारल गेल। अमीर सोचलनि जे ई पत्र सीमा-पार परिवारसभ लेल सुरक्षित लेनदेनक इतिहास बुझबा मे सहायक भऽ सकैत अछि, मुदा एक नाम देखिकऽ पूरा मार्ग लिखब उचित नहि।

ओहि साँझ सोमरी हेम्ब्रम एकटा अनुबन्ध आ दू टुकड़ा मोट सूत लऽ पाठशालामे अएलीह। तीन श्रमिक संग छलाह, एक बालक सेहो। ठेकेदार नव ठामक काम लेल कागद पठौने छल; मूल भाषा ओहि दलक सभ सदस्य नहि बुझैत छलाह। सोमरी कहलीह, “पाछल बेर हमर चारि प्रश्न छल। आब लिखित उत्तर भेटल अछि, मुदा ‘अनुशासन-भङ्ग’ कहि मजदूरी काटबाक वाक्य अनुवादमे छूटि गेल।” मैथिली पहिने कागदक स्रोत पुछलीह। सोमरी मूल प्रति आ श्रमिकसभक साझा अनुमतिक पर्ची देखौलीह, जाहिमे हुनका अनुवादक लग जाएबाक दायित्व देल गेल छल, सबक बदला हस्ताक्षर करबाक अधिकार नहि।

ठेकेदारक दलाल कहलक जे कामक अवसर जल्द छूटि जाएत; एतेक भाषाक फेरबदल सँ देरी होइत अछि। सोमरी पुछलीह, “जतए हमहुँ काज करब, ओहि ठाम

दुर्घटना भेलापर अस्पतालक दाम के देत? ई वाक्य एतय कतय अछि?” दलाल कहलक जे एहन व्यवस्था मौखिक बुझल अछि। सोमरी अपन श्रमिक साथीकेँ देखौलीह, “मौखिक बात सभकेँ एक्के अर्थमे सुनाइत अछि?” साथी कहलक जे ओकरा आवास-दाम सेहो पता नहि। सोमरी कागद मोड़लीह नहि; ओ कहलनि जे नव प्रस्ताव सुनबाक समय हुनका चाही, मुदा अज्ञात कटौती मानबाक सहमति एखन नहि देलीह।

कुमुदी अएलीह तँ सोमरी हुनका पुछलीह जे श्रमिकसभक घरक सन्थाली भाषामे मुख्य शर्तसभक अर्थ कहि सुनाएब सम्भव अछि की। कुमुदी स्वीकार कएलनि जे ओ सभ पदक प्रमाणित सन्थाली अनुवाद स्वयं नहि कऽ सकैत छथि। सोमरी अपन दलक एक पढ़ल सदस्य आ दूरक प्रशिक्षित भाषिक सहयोगीक सहायता लेबाक प्रस्ताव रखलीह। “हम बोलब, ओ शब्द जाँचताह, मुदा अन्तिम सहमति प्रत्येक श्रमिकक रहत,” ओ कहलीह। कुमुदी मैथिली आ प्रशासनिक भाषाक मूल अन्तर लिखलीह; सन्थाली पाठक शुद्धता जाँचबाक लेल अलग समय आ पारिश्रमिक निश्चय भेल। अनुवादकक श्रेय कतहु ‘मुफ्त सेवा’ नहि बनल।

बालक गोदीसँ उतारि पातर सूतसँ गाँठ लगए लागल तँ सोमरी सहजेसँ ओकर हाथ रोकलीह; ओहि सूतपर ठेकेदारक सील लागल छल। “ई खेपक गिनतीक निशान अछि,” ओ कहलीह, “खेलए लेल दोसर सूत दिअ।” बच्चाक पिता अपन जेब सँ छोट रंगीन डोरी निकाललनि। सोमरीकेँ अपन घरक ओ दिन याद आयल जखन ओकर माय कामपर जाएबाक पहिने रोटी कपड़ामे बाँधि दैत छलीह आ समयक हिसाब बिना कागदक रखैत छलीह। ओ सोचलीह जे एखन हुनकर दलक श्रमक समय कागदमे होअय, ताकि बच्चासभकेँ केवल थकानक स्मृति नहि भेटय। मुदा ई विचार ओहि बच्चापर श्रमिक बनबाक आदेश नहि छल।

ठेकेदार दोसर फोनपर कहलनि जे बिना तुरन्त हस्ताक्षर अनुबन्ध रद्द भऽ सकैत अछि। सोमरी स्पष्ट कहलनि, “अहाँक प्रस्तावक अवधि अहाँ लिखू। हमर लोक अपन भाषा बुझि निर्णय देत। जँ समय नहि देब तँ काज छूटबाक जिम्मा हमर गरदनपर दोष बनाकऽ नहि लिखब।” दलक एक युवक डरि गेल—घरपर ऋण छल। ओ कहलीह, “जे आज जाएब चाहैत छथि, हुनकर स्वतन्त्र निर्णय रहत; मुदा कागदमे जे पढ़ल, ओहि आधारपर

जाएब।” युवक अपन प्रति लऽ गेल, हस्ताक्षर करबाक पहिने घर फोन करबाक लेल। दलक बाकी दू सदस्य अनुवादक भेटबाक समय धरि प्रतीक्षा चुनलक। सबक चुनाव एके नहि छल।

मैत्री श्रेष्ठक परिवहन-कक्षमे साँझक गाड़ी लेल बक्साक ताप-पर्ची फेर जाँचल जा रहल छल। आजुका काममे मैत्रीक लग परिवारक पुरान परिवहन-पत्र आयल, जाहिमे ‘ललबगेया’ नाम लिखल छल। कागदक एक किनार पर नेपाली भाषामे दूरीक उल्लेख, दोसर किनार पर बादमे कएल हिन्दी अनुवाद छल। अधिकारी जल्दीमे कहलक जे अनुवादक नामक आवश्यकता नहि; मूलपर मोहर अछि। मैत्री उत्तर देलीह, “मूलक मोहर ढुलाईक इतिहास बतबैत अछि। जे व्यक्ति भाषाक अन्तर बुझौलक, ओकर मेहनत लोप किएक करब?”

कुमुदी उपलब्ध नहि छलीह; दोसर भाषिक सहयोगी फोनपर शुल्क कहलनि। मैत्री सहमति देलीह, मुदा हुनका जे पढ़बाक अधिकार छल तकर सीमा बतौलीह—स्थल-नामक लिखित रूप, दूरीक इकाइ आ जारी कएल गेल सामानक प्रकार। भाषिक सहयोगी कहला जे ललबगेया लिखल भेटैत अछि, मुदा एतयसँ बिना तिथि आ मूल मार्गक पुष्टिक वर्तमान सड़क तय नहि कएल जा सकैत अछि। मैत्री एहि सीमा सहित अनुवादक नाम दर्ज कएलीह। बक्साक ताप-परीक्षणक अपूर्ण परिणाम अलग रखा गेल; परिवहन-पत्रक सुधारसँ दवाइक गुण सिद्ध नहि होइत छल।

प्रधानाध्यापक स्थानीय जमीन-अभिलेख कार्यालयक एक लिखित उत्तर देखौलनि—सार्वजनिक विद्यालयक उपयोगमे रहल क्षेत्रक सीमा जाँच लेल मूल नापी-पंजी मँगाओल गेल अछि, एखन निजी निर्माणक स्वीकृति विद्यालयक दिससँ नहि। प्रतिमा कहलीह, “ई निर्माण सदा लेल रुकि गेल, एहन नहि लिखब। एखन जतेक समय जाँच चलत, ततेक दिन बच्चाक चलबाक बाट खुलल रहए।” प्रधान परिसरक फाटकक बगल अस्थायी पैदल-मार्गक रखरखावक जिम्मा स्वीकार कएलनि। प्रतिमा अपन परिवारक दानक गौरवक विज्ञापन नहि चाहलीह; हुनका चाही छल जे पुरान दानक शर्त जँ सार्वजनिक उपयोग लेल छल, तकर लेखापरीक्षा खुलल रूपमे होअय।

रचना बच्चासभक कापी समेटैत छलीह। राजोक बेटी अपन नावक चित्रमे दू रंग भरने छल—एक घरक बोलीक नाम लेल, दोसर विद्यालयक पाठ्यपुस्तकक नाम लेल। बच्ची पुछलक, “दूनु लिखब तँ गलत होएत?” रचना कहलीह, “कखनो स्थान आ शब्द अलग भऽ सकैत अछि; जकरा बुझबाक अछि ओकरा कहिह जे के शब्द कतयसँ आयल।” मुदा लिखित भेद राखबाक अभ्यास मात्र विद्यालयक भीतर उपयोगी नहि; अभिलेखक बाहर सेहो लोककें अनावश्यक आरोपसँ बचबैत अछि।

विदेहपुरमे नैराकें राति चारि संक्षिप्त सूचना भेटल। रामवतीक आवेदन प्राप्त भेल, निर्णय शेष; बिनुक धनक हिस्सापर पारिवारिक लिखित सहमति माँगल गेल; सोमरीक अनुबन्धक अनुवाद-परीक्षा अपूर्ण; प्रतिमाक स्कूल-जमीनक मूल पंजी मँगाओल गेल। कबीर समाचार लिखबाक प्रस्ताव रखलनि। नैरा कहलीह, “विषयक संगति लेखमे रहि सकैत अछि, मुदा कागदसभकें एक अपराधक कड़ी नहि बनाउ।” ओ अपन पहिल पृष्ठपर महेशक हत्याक जाँच लेल मूल स्रोतक चारि खाली खाना फेर देखलीह। एहि दिन एहि घटनाक कोनो नव प्रत्यक्ष प्रमाण नहि भेटल छल, ताहि लेल ओ खालीए रहल।

कबीर एक क्षण द्रोण आ एकलव्यक कथा सुनबाक इच्छा जतौलनि; सरिता पाछाँ बैसि रामवतीक चिट्ठीक नकल फाइलमे राखि रहल छलीह। सरिता कहलीह, “कथा सुनैत हम एकलव्यक चोट बुझि सकैत छी, मुदा रामवतीक दू कागदक फैसला ओकरा आधारपर नहि होएत।” नैरा हुनकर वाक्य दोहरौलीह नहि। ओ रामवतीक सन्देशक अगिला शब्द पढ़लीह—‘पुरान मजदूरीक दाम छोड़ब नहि।’ कक्षाक बाहर शिव धाँड़ी अपन शेष दू दिनक बकाया जाँचक सूचना लेबए आएल छलाह; नैरा हुनका ठेकेदारक नवा प्राप्ति नम्बरसँ अधिक किछु कहि नहि सकलीह। ओ अपन अगिला दिनक काम स्वयं तय कएलनि।

रातिक अन्तिम बसक आगाँ रामवती अपन दू परिचय-पत्र एक्के थैलीमे राखलीह, मुदा दूनूक अलग आवरण बनौलीह। बिनु घरमे बचतक कापी सासुकें देखौलीह; सोमरी श्रमिकसभ लेल अगिला दिनक भाषिक बैठकक स्थान लिखलीह; प्रतिमा विद्यालयक फाटक लग लाल सूतक डंडा हटएबाक बदला ओकर सुरक्षित घेरावक माँगक प्रति रखलीह। पुरान वनमे एकलव्यक छाल-बहीपर झुमकीक पहिल चिन्ह सूखि रहल छल।

साझा प्रश्न एतबे छल जे जे लोक पढ़ए, कमाए वा सिखाबए चाहैत अछि, ओकर प्रवेशक शर्त के लिखत, आ जे शर्त लिखल गेल ओकरा बदलबाक अवसर ककरा भेटत।

अध्याय ७७ • त्रिजटाक सन्देश

प्राचीन लंकाक अशोकवाटिकामे सीता पातक नस परखि रहल छलीह। रातिक ओससँ भीजल एकटा पीयर पात हुनकर अँगुरीमे फाटि गेल छल; दोसर पातमे बीचक हरियर डोरी एखनो मजबूत छल। पहरेदारिनीक बदलैत पारीक समय ओहि डोरीसँ ओ कपड़ाक फाटल किनार जोड़बाक विचार कएलनि। वाटिकाक बाहर धातुक किछु पात्र खड़खड़ाएल, आ एक स्वर दोसरासँ कहलक जे रणभूमिसँ कठिन समाचार आएल अछि। कोनो नाम स्पष्ट नहि सुनाइत छल। किछु देर बाद ओही अस्पष्ट वाक्यकेँ एक पहरेदारिनी एना दोहरौलक, जेना परिणाम सबकेँ बुझल हो। सीता पात छोड़ि उठलीह। समाचारक आकार ओकरा कहनिहारक भरोसासँ पैघ भऽ गेल छल।

एक पहरेदारिनी नजदीक आबि कहलक, “आइ प्रतीक्षा छोड़ू। जकर प्रतीक्षा करैत छी, ओकरा बिषयमे राजमहलमे अशुभ बात चलि रहल अछि।” ओकर स्वरमे दयासँ बेसी थकान छल। सीता पुछलनि, “के देखलक?” पहरेदारिनी आँखि फेरौलक। “लड़ाइ पर गेल लोक घुरल अछि।” “तौं हुनका देखलह?” “नहि, द्वारक पहराक लोक कहलनि।” सीता फेर पुछलनि, “द्वारक लोक ककर मुँहसँ सुनलक?” एहि बेर स्त्री उत्तर नहि देलक। ओकरा पहराक समयक बाहर बहस करबाक अनुमति नहि छल। ओ अपन भालाक मूठ फेर पकड़ि कऽ चलि गेल। सीता अपमानित नहि भेलीह, मुदा सुनल वाक्य हुनकर भीतर टँगल रहि गेल।

त्रिजटा ओहि समय वाटिकाक पाछाँक पथसँ आयलीह। हुनकर कोरामे दू छोट माटिक कटोरी छल; एकमे पानि, दोसरमे जौक माड़। कटोरी राखिते ओ सीताक चेहरा देखलनि। “अहाँ धरि बात पहुँचि गेल?” ओ पुछलनि। सीता उत्तर नहि देलीह। त्रिजटा स्वयं कहलनि, “हम राजभवनक भीतरी आँगनमे भोजनक बर्तन घुरेबाक समय सुनलहुँ। दू सेवक आपसमे कहि रहल छल जे युद्धक समाचार बदैल रहल अछि। हुनका सभक लग कोनो पत्र नहि देखलहुँ। एक सैनिकक नाम सुनलहुँ, मुदा ओ अपन आँखिसँ रणभूमि देखलनि की नहि, से हम नहि जनैत छी।” त्रिजटा अपन बातक सीमा कहि रुकि गेलीह।

“अहाँ जँ एतेक अनिश्चित छी,” सीता कहलीह, “तखन हमरा किएक कहए एलीह?” प्रश्न कठोर छल। त्रिजटा पानि दिस देखलीह। “कारण किछु पहरेदारिनी एहि बातकेँ निश्चय कहि रहल छथि। अहाँक सामने पहिने ओहि निश्चयक आधार राखब जरूरी बुझलहुँ। हमरा ईहो नहि चाही जे अहाँ हमर भरोसामे अपन मनक निर्णय दऽ दी।” सीता हुनका बैसबाक संकेत कएलनि। कटोरीक माड़ ठंढा भऽ रहल छल, मुदा सीताक गला सँ पहिल घोंट उतरल नहि। प्रतीक्षाक दिन हुनका थकौने छल; एहन थकानमे अपुष्ट बात सेहो आघातक जकाँ लगैत छल।

वाटिकाक एक छोरसँ ढोलक धीम आवाज आएल। पहरेदारिनीसभक एक दल ठाढ़ भऽ दक्षिण दिस तकलक। त्रिजटा कहलीह, “ई आवाज हमरो कानमे अछि। मुदा ढोल बाजलासँ की जीत, की हार, की शोक—हम नहि कहि सकैत छी।” सीता हुनकर ओरि देखलीह। “हम जे देखैत छी, ओ एहि वाटिकाक धरती, ई वृक्ष आ अहाँक मुँह। हमर प्रियक दशा एकर भीतर नहि अछि। भयकेँ समाचारक स्थान दऽ देब तँ हम अपन निर्णय ककरो बनाओल बातक हाथ बेचि देब।” ओ जौक माड़क एक घोंट पीबि लेलनि। इच्छा नहि छल, मुदा देह जोगेबाक काज अपूर्ण छोड़बाक निर्णय सेहो ओ नहि लेलीह।

त्रिजटा धीरे पुछलनि, “जँ पाछाँ सत्यापनक अवसर भेटत, अहाँ पहिने की सुनए चाहब?” सीता कहलीह, “जे गेल छल, ओ अपन आँखिसँ की देखलक; ओ कतय धरि गेल छल; कोन घड़ीक बात कहैत अछि। जकरा नहि देखल, ओकरा देखि लेबाक दावा नहि करय।” त्रिजटा माथ हिलौलीह। हुनकर अपन दुविधा छल—राजमहलमे सुनल बातक स्रोत पुछनाइ ओतय अवज्ञा गनल जा सकैत छल। मुदा बिना प्रश्नक बात पहुंचेबामे बन्दी स्त्रीक क्षति छल। ओ सगरो जोखिम अपने ऊपर लेबाक दावा नहि कएलनि; केवल ई कहलनि जे अगिला पहरमे जँ बाहरसँ कोनो स्पष्ट समाचार आयत तँ ओ बुझबाक प्रयत्न करतीह, आ स्रोत नहि भेटल तँ ओहो कहतीह।

सीता किछु क्षण चुप रहलीह। तकर बाद ओहि फाटल पातकेँ उठा कऽ कहलीह, “एहि नसक बलपर हम कपड़ा सिएब, तखन ई फाटत। जे टिकल अछि ओकर उपयोग करब, जे नहि टिकल ओकरा कसि कऽ विश्वास नहि बनाओल जाए।” त्रिजटा हुनका हाथमे सूत देखौलीह। दूनु मिलि कपड़ाक किनारपर छोट गाँठ लगौलीह। एतबे काजमे पहरेदारिनी

फेर आयल आ कहलनि जे राजमहलसँ कोनो लिखित आदेश नहि पहुँचल अछि। सीता ओहि अभावकेँ शुभ समाचार घोषित नहि कएलनि। केवल एतबा बुझलीह जे एखन हुनका कोनो नव निर्णय लेबाक पर्याप्त आधार नहि अछि।

साँझमे त्रिजटा अपन घरसँ सीखल दू पाँति धीमे स्वरमे गौलनि—“ओसक बूँद बिहान धरि नाहियो रहय, धरती पिआसक स्मृति राखय; अँधारक भीतर जे हाथ बढ़य, से हाथ अपन गरमी राखय।” ई कोनो भविष्यवाणी नहि छल; त्रिजटा स्वयं कहलीह जे गीतसँ रणक हाल नहि बुझाएत। सीता बहुत दिनक बाद ओहि गीतक अन्तिम ध्वनिपर हलकी मुस्की दऽ सकलीह। हुनका गीतक भरोसा नहि, संग बैसल मनुष्यक उपस्थिति भेटल। वाटिका बाहरक संघर्ष ताहिसँ घटल नहि; भीतरक निर्णयमे मुदा आनक अपुष्ट निश्चितताक स्थान कम भऽ गेल।

समकालीन विदेहपुरमे दोसर भोर कार्यालयक बरामदापर अमला सर्बरिया लाल सूतक गाँठ खोलि रहल छलीह। काल्हिक अर्जिसँ लौटाओल एक पन्नाक कोनामे नील मुहरक नीचे गलत नाम लिखल छल। ओहि एक गलतीक तीन परिवारपर तीन अलग परिणाम भेल छल—एकर विद्यालय-सहायता रोकल गेल, दोसरक श्रम-पंजीक फेर सत्यापन माँगल गेल, तेसरकेँ कतारमे अपन पुरान प्राप्ति नम्बर नहि भेटल। अमला कागदसभकेँ एक्के गठरीमे राखने छलीह, मुदा प्रत्येकक अलग आन्तरिक आवरण बनौने छलीह। ओ नहि चाहैत छलीह जे सामूहिक आवेदनक सुविधा फेर व्यक्तिसभक परिचय मेटा दय।

बरामदाक मेजपर बैठल सहायक चश्मा चढ़ाकऽ कहलक, “सबक जातिनामक अक्षरमे छोट अन्तर अछि; एक ठाम मानकीकरण भऽ जाए तँ काम आसान।” अमला आगा खसि कहलीह, “मानक रूपक चर्चा करू, मुदा पहिले ई बताउ जे एक घरक सही नाम दोसरक खाता सँ किएक जोड़ि देल गेल। अहाँ त्रुटि सुधारक की लोक बदलि देब?” कर्मचारी पन्ना पलटलक। आवेदनक क्रमाङ्क ठीक छल, पर कम्प्यूटर सँ निकालल सूचीमे नामक एक अक्षर काटल छल। अमला लगक युवक लालटेनक तेल बेचि कार्यालय आएल छल; ओकरा दोसर दिन फेर छुट्टी भेटबाक भरोसा नहि छल। ओ अपन आबहक भाड़ा लिखौलक।

अमला सभक सामने सामूहिक निवेदन पढ़लीह। एहि बेर पाँतिसभमे ककरो पारिवारिक विवरण सार्वजनिक नहि छल। मुख्य माँग छल—मूल हस्तलिखित प्रविष्टि आ मुद्रित प्रतिक अलग मिलान, व्यक्तिगत अभिलेखमे संशोधनक लिखित कारण, आ जे आवेदन पहिने लौटल तकर मूल प्राप्ति-तिथि बनल रहय। सहायक कहलक जे सामूहिक सूची जमा भेला सँ पुरान आवेदनक क्रम फेर सँ शुरू भऽ सकैत अछि। अमला मना कएलनि। “हमरा सभक समय बितल अछि; अहाँक भूलसँ बितल महीना नव आवेदन कहि शून्य नहि करब।” ओ आवेदनक दू प्रति बनौलीह; एक कार्यालयकें देलीह, दोसरपर प्राप्तिक समय आ सील माँगलीह।

एहिमे विवाद केवल अक्षरक नहि रहि गेल। वार्डक एक प्रतिनिधि कहलक जे ओ सभक लेल हस्ताक्षर कऽ देत, ताकि स्त्रीसभ बेर-बेर नहि आबथि। अमला हुनक सहायता अस्वीकार नहि कएलनि, मुदा अधिकारक सीमा रखलीह। “साथ चलू, कागद नकल करबामे मदद करू। हम सब जँ अपन नाम अलग-अलग लिखि रहल छी, तखन अहाँ हमरा सभक बदला एकल हस्ताक्षर नहि करब।” प्रतिनिधि असहज भेला; फेर ओ स्वयं छायाप्रति केन्द्र धरि जएबाक जिम्मा लेबाक प्रस्ताव रखलनि। अमला समय, कागदक खर्च आ लौटबाक दिन लिखौलीह। ओहि दिन अभिलेख सुधरल नहि, मुदा त्रुटिक मूल सूची खोजबाक लिखित आदेश निकलल आ तीनू परिवारक पुरान प्राप्ति-क्रम अस्थायी रूपेँ सुरक्षित रखल गेल।

हीरा मेचे ओही कार्यालयक पाछाँक कोठरीमे एक मोड़ल प्रति लऽ पहुँचलाह। पहिने जे अनुबन्धक कात ओ ‘भाषा नहि बुझल’ लिखबौने छलाह, तकर नकल आब फेर हिनका पठाओल गेल छल। नकलपर हिनकर हस्ताक्षर दिखा कऽ एक ठेकेदारक प्रतिनिधि कहि रहल छल जे ओ सामुदायिक रास्ताक उपयोग बदलबाक सहमति दऽ चुकल छथि। हीरा सँ कियो पहिने मातृभाषामे प्रस्ताव पढ़ि नहि सुनौने छल। “ई हाथ हमर अछि,” ओ स्पष्ट कहलनि, “मुदा ई अर्थ हमरा कहल गेल छल की नहि, तकर जाँच बाकी अछि।” प्रतिनिधि व्यंग्यसँ पुछलक, “हाथक अक्षर की झूठ बजैत अछि?” हीरा कहला, “हाथक चिह्न देखि अहाँ मनक बुझाई किएक मानि लेलहुँ?”

समितिक कर्मचारी चाहलक जे हीरा तुरन्त एक नव फॉर्मपर ‘पहिल स्वीकृति वापस’ लिखि हस्ताक्षर कऽ दथि। हीरा ओहू पन्ना तत्काल नहि भरलनि। “पहिल पत्रक उद्देश्य की छल, से बुझाए बिना दोसर कागदमे हम की वापस लेब?” ओ पुछलनि। हुनका संग आएल भाषिक सहयोगी तिथि आ कामक सीमा अलग उतारि रहल छल। छोट कोठरीमे पंखा लगातार गूँजि रहल छल; मेजक कात धूरि भरल मापन-दोरी छल। हीरा दोरि उठा कऽ कहला, “बाट जँ एतय सँ घुमाओल जाएत तँ अपन घरक मालगाड़ी लेल हम कतय सँ जएब? ई प्रश्न फॉर्ममे कतय लिखल अछि?” लिखित अनुवादक खर्च आनकें निःशुल्क सेवा बुझबाक प्रस्ताव ओ अस्वीकार कएलनि।

दुभाषिया पहिल पृष्ठकें वाक्य-वाक्य पढ़लनि। ‘अस्थायी मार्ग-परीक्षण’क एक वाक्यक बाद ‘दीर्घकालिक उपयोगपर आपत्ति नहि’ लिखल छल। हीरा पहिल वाक्य सुनने रहबाक स्मृति बतौलनि, मुदा दोसर वाक्य सुनल छलाह की नहि, तकर दावा नहि कएलनि। ठेकेदार कहलक जे दुनू पन्ना एके दिनक अछि। हीरा उत्तर देलनि, “तिथि एक होएब, अर्थ बुझलाक गवाही नहि।” अन्तमे प्रस्तावक कार्यान्वयनपर पुनः सुनवाई धरि रोक लगबाक लिखित आग्रह स्वीकार कएल गेल। ई पूर्ण निरस्तीकरण नहि छल; पुरान सहमतिक वैधतापर निर्णय बाकी रहल। हीरा अपन प्रति पर साफ लिखौलक—‘विवादित सहमति; अनुवाद सत्यापन शेष।’

बरामदामे अमला हीराकें देखलनि तँ पुछलीह जे अर्जीक नकल चाही की नहि। हीरा मुस्की दैत कहलनि, “नकलक दाम देब। मुदा हमर बात अहाँक समाजक नाम-सुधारमे नहि मिलाएब।” अमला उत्तर देलीह, “हमरो ईहे चाही।” दूनू अपन कागदक अलग-अलग प्राप्ति सँभाललनि। अमलाक ध्यान अक्षरक कारणें रोकल आवेदनपर छल; हीराक संघर्ष ओकर कथित सहमतिक अर्थपर। एहन भिन्नता स्वीकार करबासँ एक-दोसराक पक्ष कमजोर नहि भेल, बरु अधिकारीक सुविधा लेल सभ शिकायतकें एक विषय लिखि देबाक बाट बन्द भेल।

नसीमा शेरशाहवादी नवा विद्यालयक दहलीजपर पहुँचलीह तँ हुनकर झोरामे कागदक फाटल किनार सिएबाक सूईक पेटी छल। विद्यालयक ग्रन्थालय लेल ओ एक सप्ताहक मरम्मतिक काम लेने छलीह; संगहि अपन किशोरी बेटीकें प्रवेशक निवेदन करबाक छल।

बेटी नवा परिसरक दहिना कात लटकल अक्षर-पट्ट देखैत रहलि। ओ पुछलक, “माय, एतय जे बोली बोलब, ओ सुनिकऽ फेर हँसताह?” पुरान विद्यालयमे किछु बच्चा घरक बोलीक ध्वनि नकल कऽ हँसैत छल। नसीमा बेटीकेँ झूठ आश्वासन नहि देलीह। “जँ हँसताह तँ हम प्रधानकेँ लिखि कहब। पढ़ाई छोड़बाक सलाह नहि देब,” ओ कहलीह।

दाखिलाक खिड़कीपर कर्मचारी नसीमाक नाम उच्चारि थमकि गेल। पीछे ठाढ़ दू आदमी ओकर अन्तिम शब्दक नकल उतारए लागल। नसीमा सीधे ओहि दिस घुरलीह। “अहाँकेँ हमर नाम सीखब अछि तँ पुछू,” ओ कहलीह, “मजाक लेल बारम्बार बिगाड़ब जरूरी नहि।” कतारमे ठाढ़ बच्चासभ चुप भऽ गेल। कर्मचारी कहलनि जे पंजीमे उपलब्ध नामक अक्षर सीमित अछि। नसीमा अपन घरक लिखित रूप आ सरकारी पुरान प्रतिक भेद देखौलीह; कुन पन्नामे ककर सुधार चाही, से स्पष्ट कएलनि। ओ माँग रखलीह जे बच्चीक नामक मूल उच्चारण प्रवेश-रजिस्टरक टिप्पणीमे राखल जाए, आ पाठ्यविभागमे लिखल सरकारी रूप तदनुरूप मिलान भऽ सकय।

प्रधानाध्यापिका हुनका कार्यालयमे बजौलीह। नसीमा पहिने ग्रन्थालयक टूटल जिल्द देखौलीह। “एहि पोथीकेँ फाटल कहि फेकि नहि देब,” ओ कहलीह, “तहिना बच्चाक भाषा बुझबाक परिश्रमकेँ ‘गड़बड़ी’ कहि हटाउ नहि।” प्रधानाध्यापिका कहलीह जे विद्यालयक नियमानुसार बच्चीक पिछला विद्यालयक स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र आवश्यक अछि, आ ओ पत्र एखन नहि पहुँचल। नसीमा पुछलीह जे ताबत बच्चीक उपस्थिति कोना सुरक्षित रहत। लिखित अन्तरिम अनुमति पर दूनू सहमत भेलीह—बच्ची अगिला सप्ताहसँ कक्षामे बैसि सकत, अन्तिम प्रवेश-अभिलेख सत्यापनपर निर्भर रहत। भाषा परिहासक लिखित शिकायत सेहो अलग दर्ज भेल; दोषी बच्चाक नाम बिना जाँच सार्वजनिक नहि कएल गेल।

विद्यालयक बरामदामे बेटी पहिल बेर अपन नाम खुद पंजीक परीक्षण-पन्नापर लिखलक। नसीमा ओहि अक्षरक ऊपर हाथ नहि फेरलीह। ओ अपन लेल साँझक प्रौढ़-अध्ययन कक्षाक समय सेहो पूछलीह। कागदक किनार बाँधबाक हुनकर कौशल आजीविका छल, मुदा पन्ना पढ़बाक प्रशिक्षण हुनका अलग चाही। प्रधानाध्यापिका कहलीह जे ओ कक्षा एखन छोट कोठरीमे चलैत अछि, औपचारिक नामाङ्कनक नियम

फेर जाँचबाक अछि। नसीमा अपन लेल फॉर्म लेलनि, बिना ई दावा कएने जे हुनकर पढ़ाइ आब शुरू भऽ गेल। बाहर निकलिते बेटी कहलक, “आइ हम एक दिनक जगह भेटल।” नसीमा उत्तर देलीह, “दिनक जगहमे हाजिरी लगाबू; अगिला दिनक अधिकारक कागद हम जुटाएब।”

एहिमे रेलचौकक कक्षमे नैरा आ कबीरकेँ रफीकक दू पाँतिक ध्वनि-लेखन पहुँचल। एक परिवारक मुखसँ सुनल नदी-नाम ‘सउरा’ छल, सरकारी पुरान प्रतिमे ‘सौरा’। पर्चीकेँ एके शब्दक दू निश्चित वर्तनी घोषित करबाक आग्रह केओ कएने छल। रफीक फोनपर कहलनि, “हम जे सुनलहुँ, से ‘सउरा’ लिखलहुँ। दोसरा कागदपर ‘सौरा’ अछि। एकर उच्चारणक सम्बन्ध हो सकैत अछि; ई दूनू एके वास्तविक स्थल अछि, से हम नहि परखने छी।” नैरा मूल कागदक तिथि आ रफीकक सुनेल प्रसंग अलग लिखलीह। एक अनुवादकसँ शब्दक दू पाँतिक प्रति तैयार कराओल गेल, ओकर नाम आ मेहनताना सहित।

कबीर पूछलनि, “जँ दू नाम एक्के होइक सम्भावना अछि तँ नक्शापर एक चिह्न लगा दिअ?” नैरा कागद सरकौलीह। “अभिलेखमे नदीक नाम देखब आ नक्शामे निश्चित धारा तय करब दू अलग काज अछि। अहाँ दोसराकेँ पहिलाक फोल्डरमे नहि घुसाउ।” रफीक एतबे जोड़लनि जे परिवारक यात्रा-पत्रमे नदी-नामक लग तारीख अपूर्ण अछि, आ सरकारी पन्नामे जारी करनिहारक चिह्न देखबाक अछि। सीमातीर्थक भाषा-सहयोग लेल तय शुल्कक हिसाब ताहिसँ अलग छल। कबीर अपन फोनक मसौदासँ ‘सिद्ध मिलान’ शब्द काटि ‘पाठभेदक जाँच’ लिखलनि; ओहि कटबाक स्याही एखन सूखल नहि छल।

ओही दिन बिनु दराईक बचतक कापीमे दोसर नाम आएल—‘सीर’। ई हुनकर प्रवासी आयक एक पुरान पत्रक किनार लिखल छल, ओहि स्थानसँ जुड़ल जतय एक खेपक रकम रोकल गेल छल। घरक एक सम्बन्धी कहलक जे सीर नामक अर्थ पाछाँ लिखल दोसरा नदीक नामसँ मिलैत होएत। बिनु तुरन्त उत्तर नहि देलीह। ओ कमाइ भेजनिहारक पर्ची निकालि देखौलीह—ओतय तिथि, रकम आ प्राप्तकर्ताक नाम छल; ‘सीर’क लग कोनो मानचित्र नहि। “ई छोट ठामक अपन नाम भऽ सकैत अछि,” ओ कहलीह, “अहाँ एकरा आन जलक सँग जोड़ि हमर रोकल रकमक कहानी नहि बदलू।”

बिनु दूनू पन्नाक अलग प्रति बनौलीह। ओ आयक परिवारमे स्त्रीक हिस्साक विषय काल्हि सँ उठौने छलीह; आजुक निर्णय रहल जे सीरक नामक शुद्धि सँ पहिने रकम देबाक जिम्मेदार पक्ष लिखित उत्तर दय। हुनकर सासु एक कोना बैसि आलू छलि रहल छलीह। ओ कहलीह, “कागदक छोट नाम लेल एतेक भागदौड़?” बिनु उत्तर देलीह, “नाम गलत भेटल तँ पैसा गलत बाट जायत। मुदा नाम ठीक भेलासँ सेहो पैसा अपने-आप नहि भेटत।” सासु कापी पकड़ि दिनांक देखलीह, फेर आलूक छिलका समेटैत बजलीह, “तखन देनिहारक नाम पहिने लिखू।” बिनु ओ नाम ठीक ओतहि लिखलीह।

नैरा संझिया तीनू दिशाक खबर एकत्र कएलनि। अमलाक सामूहिक आवेदन प्राप्त; मूल पंजीक जाँच चालू। हीराक सहमतिक अर्थ विवादित; पुनःसुनवाईक तारीख शेष। नसीमाक बेटी लेल अन्तरिम कक्षा-अनुमति, अन्तिम प्रवेशक सत्यापन बाकी। रफीकक द्विभाषिक नदी-नाम प्रति बनल, बिनुक आय-पत्रक सीर नाम स्वतंत्र राखल गेल। कबीर पुछलनि जे ई सभमे एकटा साझा विषय लिखि सकैत छथि की नहि। नैरा कहलीह, “समाचारमे समान प्रश्न लिखू—के कहैत अछि जे कियो बुझल? मुदा कागदसभकेँ एक्के षड्यन्त्रक सूतमे नहि बाँधू।” महेशक हत्या सम्बन्धी जाँचक मूल फाइल ताहि मेजपर अलग बन्द छल। ओकरा बिषयमे एहि दिन कोनो नव प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि भेटल।

साँझक गाड़ी सँ कार्यालयक कर्मचारी पुरान सूचीक खोज लेल जएबाक पहिने अमलाकेँ फोन कएलक। कहलक जे त्रुटि सुधारेबाक काम लेल सब परिवारकेँ फेर हाजिर होएबाक पड़ि सकैत अछि। अमला थाकल छलीह; ओ घरमे जलत चूल्हिपर धानक भूसी सरका रहल छलीह। “जतेक परिवारक सही अभिलेख अहाँ लग अछि, तकर नकल पहिने मिला लिअ,” ओ उत्तर देलीह। “जकर हस्ताक्षर वा गवाही जरूरी, ओकरा तिथि-सहित बोलाउ। ई नहि जे सभ अपन दिन छोड़ि अन्दाजपर कतारमे ठाढ़ रहय।” कर्मचारी पहिल बेर मानलक जे त्रुटिक गिनती कार्यालयकेँ पहिने करबाक चाही। अमला फोन राखि चूल्हिक आँच सम्हारलीह; अर्जीक दाममे घरक ई समय सेहो शामिल छल।

हीरा अपन भाषिक सहयोगीकेँ अनुवादक मजदूरीक पहिल किस्त देलनि आ शेष भुगतान लिखित सत्यापनपर तय कएलनि। ओ जानैत छलाह जे जँ पुनःसुनवाईमे हारियो जाएताह तँ ओकर आधारक प्रति चाही। नसीमा बेटी लेल कापीक किनारपर रंगीन सूत

लगौलीह, जेना पहिल दिन ओ अपन चीज दूरसँ पहचानि सकय। रफीक रात्रिक बस पकडबाक पहिने दू वर्तनीवला पर्ची फेर देखलनि, आ बिनु ‘सीर’ लिखल पत्रक कात पैसा माँगबाक तिथि अंकित कएलीह। एहि चारि घरमे कोनो एकल समाचार राहत नहि पहुँचेने छल; प्रत्येककेँ छोट-छोट अगिला काज चुनबाक अवसर भेटल छल।

पुरान अशोकवाटिकामे रातिक पहरा फेर बदलल। त्रिजटा दूर राजभवनक दिस चलि रहल छलीह; सीताकेँ ओ वचन नहि देने छलीह जे भोर तक सत्य भेटिए जाएत। सीता ओहि सूतक गाँठ छूलीह जे दिनमे लगौने छलीह। ओ दृढ़ छल, मुदा निश्चिन्त नहि। राजघरानाक भीतर के ककरा की कहैत अछि, आ ओकर दाम ककरा देबए पड़ैत अछि— एहि प्रश्नक उत्तर वाटिकाक बाहर छल। सीता अपन निश्चय एतहि सीमित रखलीह जे सुनेल बातकेँ सुनल कहतीह, देखलकेँ देखल, आ जे एखन नहि जनैत छथि ओकरा निर्णयक रूप नहि देतीह। हुनकर लेल ई विराम समर्पण नहि, प्रतीक्षाक कठोर साधना छल।

अध्याय ७८ • मन्दोदरीक घर

लंकाक राजगृहमे मन्दोदरी भोरसँ पहिने भोजनक कोठरीक दुआर पर ठाढ़ छलीह। चाउरक माप राखबाक काँसक पात्रक मुँह चिरा गेल छल; ओ ओकरा उलटि कऽ देखलीह जे भीतर रहल दाना चिरामे अटकित तँ नहि गेल। रातिक युद्धसमाचारक पाछाँ पहरेंदर बढ़ि गेल छलाह, आ कोठरीक प्रभारी कहि रहल छल जे भीतरक लोक लेल अन्न बचाएब जरूरी अछि। मन्दोदरी पहिने गिनतीक बही मँगौलीह। घरक भूख केना बाँटल जाए, ई प्रश्न अब हुनका राजाज्ञासँ पहिने देखबाक छल।

भोजन बाँटएवाली वृद्धा कहलीह, “महारानी, बाहरी कोठरीमे जकर परिवारक लोक घायल छथि, हुनका सभकेँ आइ आधा हिस्सा कहल गेल अछि।” मन्दोदरी पुछलनि, “ककर आदेश?” वृद्धाक लग उत्तर नहि छल; ओ राति पहरा बदलैत सुनने छलीह। कोठरीक अधिकारी कहलक जे नगरीक प्रवेश-द्वार बन्द रहत आ भोजनक भण्डार सुरक्षित राखबाक लेल सभक कटौती उचित होएत। मन्दोदरी ओकरा बही खोलबाक कहलनि। राजपरिवारक थालमे काल्हुक मात्रा यथावत् लिखल छल, बाहरी सेवकसभक नामक सामने खाली रेखा। “कमी जँ सचमुच अछि,” ओ कहलीह, “एकर हिसाब पहिने हमर थालसँ शुरू करू। खाली रेखा भूख नहि मेटबैत अछि।”

प्रहरीक पत्नी घायल पतिक पट्टी बदलए लेल भीतर अएलीह। पहरेंदर रोकलक जे बिना नव अनुमति किछु बाहर नहि जाएत। मन्दोदरी पात्र देबाक निर्देश देलीह, मुदा सँगहि उपचारक नाम आ मात्रा लिखौलीह। पत्नी पुछलीह, “एहि लिखावटसँ हमरा पतिक उपचार भेटत की दोसर पहरमे फेर पूछत?” मन्दोदरी ओहि प्रश्नपर क्षणभरि चुप रहलीह। फेर प्रभारीकेँ कहलनि, “एहि स्त्रीक हाथमे प्राप्तिक चिह्न दिअ। राजघरक आदेश आ दरबज्जाक व्यवहार दू अलग वस्तु नहि बनय।”

आँगनमे त्रिजटा अएलीह तँ हुनकर चेहरापर राति भरिक जागरण छल। मन्दोदरी हुनका भीतरक कोठरीमे बजा कऽ पुछलनि, “सीताकेँ कोन समाचार सुनाओल गेल?” त्रिजटा कहलीह जे राजभवनक सेवकक मुँहसँ सुनेल युद्धक बात वाटिकामे निश्चित सत्यक रूपमे फैलि रहल अछि। ओ स्वयं रणभूमि देखए नहि गेल छलीह; कोनो सैनिकक प्रत्यक्ष बयान

हुनका लग नहि छल। “हम सीताकेँ सेहो ईहे कहलहुँ,” ओ जोड़लनि, “ओ कहलीह जे अनदेखल बातक आधारपर ओ अपन मनक फैसला नहि करतीह।” मन्दोदरी ओहि उत्तरकेँ चुपचाप सुनलीह।

राजगृहक एक युवती, जकर परिवारक सदस्य युद्धपर गेल छल, अधीर भऽ पुछलक, “बन्दी स्त्रीकेँ असल समाचार किएक चाही? ओ तँ हमर घरक संकट बढ़ेनिहार पक्षक छथि।” मन्दोदरी उत्तर देबाक पहिने त्रिजटाकेँ जल पिबाक लेल बैसबौलीह। “ओ एहि घरमे अपन इच्छा सँ नहि एलीह,” ओ युवतीकेँ कहलीह। “जे बलपूर्वक आनल गेल, ओकरा हम युद्धक दोष नहि दऽ सकैत छी। रावणक निर्णयकेँ हमर सम्बन्धक नामपर निर्दोष लिखब, तँ ओ सभक हानि दोसर बेर कएल जाएत।” युवती आँखि नीचाँ कएलक, मुदा ओकर अपन डर नहि मेटल। ओ कहलक जे बाहरक शंख-ध्वनिसँ हुनका अपन प्रियजनक मृत्यु-जकाँ भय होइत अछि। मन्दोदरी ओकर हाथ पकड़लीह, आश्वासनक मिथ्या वचन नहि देलीह।

किछु समय बाद राजसभाक सन्देशवाहक आएलक। ओकर कहब छल जे रणक परिस्थितिमे घरक भीतरक आवागमन कम कएल जाए आ संदेहास्पद सेवकक नाम अलग रखल जाए। मन्दोदरी पुछलनि जे संदेहक अर्थ की अछि। सन्देशवाहक कहलक, “जे लोक प्रश्न बहुत करैत अछि।” मन्दोदरी ओहि शब्दक चोट बूझलीह। ओ कहलनि, “ककरो प्रश्न ओकर अपराध नहि। जकरा विरुद्ध किछु देखल अछि, तकर घटना लिखू; प्रश्न पुछलाक आधारपर घरक दुआर बन्द नहि होएत।”

रावणसँ हुनकर भेंट ओही दिन भीतरक गलियारामे भेल। ओ शीघ्रतासँ राजसभाक दिस जा रहल छलाह। “सीता एतय छथि, आ हुनका आनबाक निर्णय हमरा सभक जीविकाक निर्णय नहि छल,” ओ कहलीह। “हुनका घुराएब। आ जे लोक अहाँक कहल मानि युद्धपर गेल छथि, हुनकर परिवारकेँ भयक दण्ड नहि दिअ।” रावण कठोर स्वरमे कहलनि जे शत्रुक आगाँ झुकनाइ राजक प्रतिष्ठाक विरुद्ध होएत। मन्दोदरी कहलनि, “एक स्त्रीकेँ रोकि राखबासँ जे प्रतिष्ठा बनैत अछि, ओहिमे हमर घरक बच्चासभक स्थान कतय अछि?” रावण उत्तर देलनि नहि; गलियारा पार कऽ चलि गेलाह।

हुनका पाछाँ तकैत मन्दोदरी अपन निर्बलता पहचानलीह। ओ आदेश दऽ औषधि, भोजन आ विश्रामक व्यवस्था बदलि सकैत छलीह, मुदा राजाक निर्णय अपन हाथसँ नहि पलटि सकैत छलीह। ओ भीतर घुरि कऽ दू स्त्रीकेँ बोलौलीह—एक वृद्धा, जे भोजन बाँटैत छलीह, आ दोसर ओ, जे घायल सैनिकसभक घरमे संदेश पहुँचबैत छलीह। दुनूकेँ अपन-अपन हिसाब रखबाक कहलनि; एकर जिम्मेवारी राजपरिवारक कृपाक रूपमे नहि, हुनकर कामक अधिकारक रूपमे देलीह। जँ ओ सभमे केओ बाहर जेबाक निर्णय करत, ओकर थाकल पएकेँ सेहो भोजन भेटत।

त्रिजटा फेर वाटिका जेबाक लेल उठलीह। मन्दोदरी हुनका रुकबाक आग्रह नहि कएलनि; पुछलनि जे ओ स्वयं की चाहैत छथि। त्रिजटा कहलीह, “हम जे सुनल, ओकरा सुनल कहि सकैत छी। मुदा राजघरक भीतर देखल अन्नक गनती केँ रणक समाचार बनाकऽ नहि लऽ जाएब।” मन्दोदरी हुनका दूटा पातर रोटी आ औषधिक छोट पात्र देलीह। “जकर आवश्यकता देखब, ओकरा अपन निर्णयसँ दियौ; हमर नामसँ उपकारक घोषणा नहि करियौ,” ओ कहलीह। भीतरी घरमे कमसँ कम भोजनक खाली पाँति भरबाक काम आरम्भ भऽ गेल छल।

विदेहपुरक विद्यालयमे ओही भोर सूचना-पट्टक काँचक भीतर एकटा कागद आधा मुड़ल छल। असद सैयद काँच खोलबाक चाभी घुमौलनि तँ भीतर फँसल मच्छर उड़ी गेल। कागद पर विद्यालयक नामक नीचाँ लिखल छल जे हराएल बच्चाक प्रकरणमे “संदिग्ध घुमन्तू दल” सम्बन्धी सूचना स्थानीय स्रोतसँ प्राप्त भेल अछि। वाक्यक पाछाँ कोनो प्राप्ति-क्रमाङ्क नहि, नाम नहि, आ स्कूलक पहिल सूचना-प्रतिसँ मिलानक तिथि नहि। असदकेँ याद छल—विद्यालय पहिने केवल बालकक सुरक्षा आ सत्यापित सूचना प्रशासनकेँ देबाक आग्रह कएने छल। ई कड़ी पाँति बादमे ककरो द्वारा जोड़ल गेल छल।

मोहन कंजर ओहि समय बाजारक किनार अपन ठेलाक पहियामे लोहाक पत्तर चढ़ा रहल छल। भोरक पहिल ग्राहक आधा बाटसँ घुरि गेल छल, आ जकर घरपर काठक पेटी पहुँचाबएबाक काम छल, ओ फोनपर पुछने छल जे बच्चासभक लग ओ ठेला नहि आनय। मोहनकेँ ई भय सुनि क्रोध अएल, मुदा ओ ठेला बीच बाटमे छोड़ि लोकपर

चिल्लाए नहि लगल। पहिल आरोप लागल दिन ओकर संग जे तीन मरम्मति-पर्ची छल, से ओ राखने छल; आब ओहि पर्चीक मूल देनिहार सभसँ स्वयं बात कऽ रहल छल।

पुलक लग लोहाक पुर्जाक दुकानपर मोहन अएल तँ दुकानदार कहलक, “हम तिथि लिखि देब, मुदा जखन तूँ दोसर हाट गेलह, से हमरा कोना ज्ञात?” मोहन पुछलक, “हमर पहिया लेल जे धुरी आ काँटी देलहुँ, तकर बिक्री-बहीक पृष्ठ देखाउ; एतबे अहाँक देखल बात अछि।” दुकानदार बही खोललक। एक दिनक सामने धुरीक मूल्य, पर्चीक क्रम आ भुक्तानीक हिसाब छल। ओ मोहनकेँ हस्ताक्षरयुक्त प्रति देलक, मुदा अपना देखल समयसँ बाहरक कोनो गवाही नहि लिखलक।

मोहन ओतयसँ साजिद नटक लग गेल। साजिदक कैमरामे विद्यालयक अभिनय-अभ्यासक मूल सामग्री सुरक्षित छल; कतोक बच्चाक अभिभावक ओकर प्रयोगक सीमा पूर्वहि तय कएने छलाह। मोहन कहलक, “हमरा फोटोमे ठेला देखाइत अछि, मुदा ओकरा आधारपर हमरो नाम बजारमे फिरैत अछि। पूरा दृश्य बिना पसरौने केहन जाँच होएत?” साजिद मूल फाइलक तिथि देखेबाक आ विद्यालयक नामित जाँच-दलकेँ सुरक्षित निरीक्षण दएबाक बात मानलक। “बच्चासभक मुँह सार्वजनिक नहि होएत,” ओ स्पष्ट कहलक। मोहन सहमत भेल।

विद्यालयमे लता सेहो अएलीह। सीमातीर्थसँ घुरलाक बाद हुनका मिथुनक खोज सम्बन्धी दू उत्तर भेटल छल—पुरान नावघरक बहीमे ‘मिठुआ’ जेहन अक्षरक प्रविष्टि नावसामानक शीर्षकमे अछि, आ ओकरा व्यक्तिक नाम कहल जाए तकर आधार एखन नहि। लता अपन कापी असदक सामने खोललीह नहि। ओ पुछलीह, “जे कागद अहाँ बदलब, ताहिमे हराएल बच्चाक खोज सेहो हटि जाएत?” असद कहला, “खोजक बात हटायब नहि। जे समुदायपर बिना प्रमाण आरोप लगल, ओहिकेँ अलग करब।” लता कहलीह, “हमरा खोज चाही; गलत आदमी पकड़ैनिहार जयघोष नहि।”

विद्यालयक प्रधानाध्यापिका असदसँ मूल सूचना-बही मँगौलीह। असद देखौलनि जे पहिल सार्वजनिक सूचना विद्यालयक उपस्थितिक दिन बनल छल आ ओकर अनुक्रम विद्यालयक तिथि-बहीमे अछि। विवादित कागदपर लिखल ‘स्थानीय स्रोत’क नाम कतहु दर्ज नहि, आ चित्रक उपयोग लेल सेहो लिखित अनुमति नहि। प्रधानाध्यापिका कहलीह,

“तखन ई कागद तुरन्त हटाउ।” असद उत्तर देलनि, “हटाएब आवश्यक अछि, मुदा विद्यालयक नाममे जे गलत बात बाहर गेल, ओकर सार्वजनिक सुधार सेहो चाही। केवल काँचसँ कागद निकाललासँ लोकक फोनसँ शब्द नहि मिटत।” ओहिपर प्रधानाध्यापिका सुधारल बयान तैयार करबाक अनुमति देलीह।

ओही बैठकमे एक अभिभावक प्रतिवाद कएलनि। “बच्चा हराइत अछि, आ अहाँ सभ शब्द सुधारैत छी!” असद हुनका बैठए लेल नहि कहला; ठाढ़े उत्तर देलनि, “बच्चाक खोज लेल समय, स्थान आ प्रत्यक्ष देखनिहारक बयान चाही। समुदाय देखिकऽ अपराधी चुनब तँ खोज गलत बाट चलि जाएत।” लता अभिभावक दिस घुरलीह। “हमर बच्चाक नाम अहाँ सभक आक्रोशक पर्दा नहि,” ओ कहलीह। “जे देखलहुँ से कहू; जे सुनलहुँ ओकर स्रोत कहू।” अभिभावकक लग एक ऑडियो-सन्देश छल; ओ स्वीकार कएलनि जे ककर आवाज अछि, से नहि जनैत छथि। सन्देश जाँच लेल अलग राखल गेल, गवाही घोषित नहि भेल।

असद सार्वजनिक बयान लिखए लगलाह। पहिल पाँतिमे विद्यालय अपन सूचना-पट्टपर प्रकाशित गलत सामूहिक आरोपक जिम्मेवारी स्वीकार कएलक। दोसर पाँतिमे कहल गेल जे धुँधला चित्र अथवा ककरो समुदाय-परिचयक आधारपर बालक-अपहरणक आरोप सिद्ध नहि होइत। तेसर पाँतिमे लोककें बच्चाक सम्बन्धमे उपलब्ध प्रत्यक्ष समय-स्थानक सूचना निर्धारित जाँचकर्मकें देबाक आग्रह छल। प्रधानाध्यापिका पुछलीह, “ई लिखि दिअ जे मोहन निर्दोष छथि?” मोहन स्वयं कहलक, “जे आरोपक आधार गलत अछि, से लिखू। हमरा दिन भरिक सभ बात अहाँ जाँचने नहि छी। ई निर्णय हमरा नामपर एके बेर मत लिखू।”

विद्यालयक बाहर नव बयान पढ़ल गेल। एक युवक अपन फोनमे पुरनका छोट वीडियो देखौलक, जतए कागदक गलत पाँति पहिनेसँ घुमि रहल छल। “ई तऽ नहि हटत,” ओ कहलक। असद कहला, “नहि। ताहि लेल सुधारक तिथि आ पूरा पाठ सेहो सार्वजनिक रहत। जे कियो पुरनका पाँति देखाओत, ओकरा नव पाँति देखएबाक अवसर होए।” मोहन अपन ठेला धकेलि निकसल। किछु ग्राहक एखनहुँ दूर ठाढ़ छलाह; सार्वजनिक बयानसँ रोजीक चोट एके क्षण नहि भरल।

दुपहरिक बाजारमे कमलेश खटिकक बाँसक पेटी ढक्कन खोले भीजि गेल छल। भीतरे मंचक लेल किनल लाल पट्टी, बाँधबाक डोरी आ दू पुरान बिल अलग रखल छल। काल्हि एक व्यापारी फेर कहलनि जे लाल कपड़ावला खेप ककरो संदिग्ध मालसँ मिलैत अछि, आ “खटिक सभ” एहि कारोबारमे संलग्न अछि। कमलेश दुकानक दुआरमे रोपल तराजू सीधा कएलनि। “कपड़ाक रङ्ग एके भऽ सकैत अछि,” ओ कहला, “दाम, नाप, विक्रेता आ उपयोग एके होएत, तकर प्रमाण कहाँ अछि?” व्यापारी रंगक अलावे किछु स्पष्ट नहि कहि सकल।

कमलेश अपना हिसाबक दू पन्ना निकाललनि। एकमे मंचक डोरी आ पट्टी खरीदबाक तिथि, दोसरमे विद्यालयक कार्यक्रम लेल सामान पहुँचाएबाक भाड़ा छल। पहिल बिलक दुकानदार आ दोसर रसीदक प्राप्तकर्ता अलग व्यक्ति छलाह। कमलेश कहला, “ई हमर सामानक हिसाब अछि; ‘पूरे बजारक एक-एक खेपक सत्य नहि। मुदा जकरा पर आरोप अछि, ओकरा बिना जाँच सभक नाम जोड़ब अनुचित अछि।” हुनका अपन ग्राहकक नाम गोपनीय रखबाक सीमा सेहो लिखबए चाही छल।

बाजार-समितिक सदस्य दामक पन्ना देखिकऽ कहलक जे खरीद-बिलमे पाँच गज लिखल अछि, मुदा विद्यालयक प्राप्ति-पर्चीमे चारि गज। कमलेश एकटा पट्टी पसरौलनि। “एक गज किनार मोड़ि मजबूती लेल रखल गेल छल; मंचपर चारि गज लगल,” ओ बुझौलनि। मीरा, जे ओहि दिन पहिने सँ विद्यालयक सामानक ढुलाई कएने छलीह, कहलनि जे ओ बँडलक संख्या देखलनि, भीतरक माप नहि। विद्यालयक कारीगरक नाप-बही मँगबैत ओ कहला, “अहाँ हमरा समर्थन देबए लेल जे नहि देखलहुँ से नहि कहू।”

कारीगर साँझक पहिने अएलक। ओकर लिखल नापमे चारि गजक उपयोग आ बचल किनारक उल्लेख छल, मुदा धागाक रंग वा कोन दुकानसँ आयल, से नहि। कमलेश कहलनि, “हमर खरीद आ उपयोगक एक हिस्सा आब मिलल। बाजारक दोसर अनजान खेपक जिम्मेदारी हमरा माथपर नहि चढ़ाओल जाए।” बाजार-समितिक संयोजक व्यक्तिगत खरीदक प्रतिलिपि स्वीकार कएलक आ सामूहिक आरोपवला सूचना हटेबाक लिखित प्रस्ताव रखलक। निर्णय स्थगित छल, कारण सूचना को जारी कएने छल से पता करबाक छल। कमलेश ओहि स्थगनक प्रति अपन पास रखलनि।

एहि बीच मीरा बंजाराक बहिन छोट ठेलापर सूखल खाद्यसामग्रीक चारि बोरा कसि रहल छलीह। हुनकर पुरान बाटक कापीमे ‘सुपैन’ नाम बारम्बार आएल छल—कखनहुँ ग्राहकक चिह्नक रूपमे, कखनहुँ बाटक छोट पड़ावक संग। नया व्यापारी कहलक जे सप्ताहमे सभ ठेला एके परिवहन-साझेदारीमे आवय तँ भाड़ा घटत। मीरा पहिनहि सोनमती आ निरुक्त खेप लेल दू दिनक शर्त तय कएने छलीह; बहिन अपन पुरान ग्राहक आ अपन समय छोड़ए तैयार नहि छलीह। “सामूहिक दामक बचत हमर रास्ता बन्द करबाक बदला नहि,” बहिन कहलीह।

मीरा कापी खोलि व्यापारीकेँ देखौलीह जे सुपैन लिखल पुरान प्रविष्टिक संग तिथि अछि, मुदा कोनो प्रमाणित नक्शा नहि। “ई हमर परिवारक हिसाबमे बाटक नाम अछि,” ओ कहलीह, “एहि आधारपर नदीक धार, सीमा वा संगमक सरकारी निर्णय नहि कऽ सकैत छी। मुदा एहि नामसँ ग्राहकक रसीद खोजि सकैत छी।” बहिन अपन चारि बोरा लेल अलग भाड़ा बोललीह। व्यापारी कहलक जे साझेदारीसँ बाहर रहला पर अगिला बेर ऊँच दाम देबए पड़त। मीरा उत्तर देलीह, “दाम लिखि दिअ; निर्णय बहिन लेतीह।” बहिन गणना कऽ अलग बाट चुनलीह, आ भाड़ाक लिखित सहमति लेलीह।

बाहरक छप्पर नीचाँ सोनमतीक बाँसक चौखटा रखल छल। मीरा ओकर नाप कऽ अपन साझेदारीक दू दिन फेर जाँचलीह; बहिनक ठेलाक सूची ओकर कापीमे नहि जोड़लीह। सोनमती पुछलीह, “एतेक खाता अलग राखला सँ घरमे झगड़ा नहि होएत?” मीरा हँसलीह। “झगड़ा तखन होएत जखन एक जनक कमाइ दोसरक नामपर गुम भऽ जाएत।” बहिन बोरा बाँधिते कहलीह जे साँझ घर घुरलापर दुनू एके चूल्हिपर भोजन करतीह।

सीमापारक कार्यालयमे रामवती खत्वे अपन थैलीसँ दू परिचय-पत्र निकालि एक-एक कऽ मेजपर रखलीह। एक कागदमे मायकेक परिचय दोसर ढङ्गसँ छल, दोसरमे विवाहक बादक लिखावट अलग। पहिल जाँचक दिन अधिकारी मूल प्रतिदूनी मिलान लेल राखि लेने छलाह; रामवतीक लग केवल जमा-रसीद बचल छल। आइ ओ मूल कागद घुरएबए आ त्रुटिक लिखित उत्तर माँगए एलीह। बाबूक कहब छल जे फाइल एखन खुलल अछि, तखन

कागद रखि देल जाए। रामवती पुछलीह, “मूल हम नहि लऽ जाएब तँ अगिला ठाम अपन परिचय केना देखाएब?”

ओहिमे ‘साँती’ नामक शब्द रामवतीक पहिल यात्रा-पताक संग लिखल छल। बाबू अनुमान कएलक जे ई दोसर नदीक बिगड़ल नाम होएत आ स्वतः सुधार कऽ देब उचित। रामवती ओकर हाथ रोकलीह। “ई शब्द हमर पुरान कागदपर अछि,” ओ कहलीह, “जे ठाम, जे बाट आ जे प्रयोजनमे लिखल गेल, ओकर मूल स्रोत पहिने देखू। ध्वनि मिलैत देखिकऽ हमर घरक परिचय नहि बदलू।” ओ साँतीकेँ स्वतन्त्र अभिलेखीय प्रविष्टि रूपमे सुरक्षित रखबाक आवेदन देलीह; ओकर वास्तविक भौगोलिक स्थानक पुष्टि एतय कियो नहि कएने छल।

कर्मचारी कहलक जे मूल घुरेलासँ कार्यालयक जाँच अपूर्ण रहि जाएत। रामवती पहिने सँ तैयार विकल्प देखौलीह—उपस्थितिमे सत्यापित प्रति, मूलक पृष्ठसंख्या आ जमा-रसीदपर घुराएबाक तिथि। “जे जाँच करए चाहैत छी, प्रमाणित नकल राखू। हमरा जे असली कागद जीवन भरि सँभालल अछि, ओकरा अनिश्चित समय धरि कोठरीमे किएक?” ओ पुछलीह। वरिष्ठ कर्मचारीकेँ बजाओल गेल। ओ मूलक मिलान कऽ दूनु कागद रामवतीकेँ घुरौलक, मुदा पहचानक प्रशासनिक एकीकरण एखन अपूर्ण रहल। रामवती प्राप्ति-पन्नापर ‘मूल वापस भेटल’ लिखौलीह, ‘विवाद समाप्त’ नहि।

रामवती दुआरसँ बाहर अएलीह तँ छायामे बैसि पहिने कागदक मोड़ सीधा कएलनि। सरिता हुनका जे पुरान निजी चिट्ठी लौटा देने छलीह, से आइ कार्यालयमे ओ नहि खोललीह। फोनपर नैराकेँ ओ एतबे कहलीह—दूनु मूल सुरक्षित घुरि गेल, साँतीक नाम स्वतंत्र प्रविष्टि रहल, सुधार-अर्जी जाँचमे अछि। नैरा समाचार लिखि लेलीह, मुदा रामवतीक मायकेक पूरा पता नहि पुछलीह। रामवतीक लेल एहि दिनक सफलता सीमित छल; कखनहुँ सीमित अधिकार बचेनाइए अगिला लड़ाइ लेल पर्याप्त होइत अछि।

विदेहपुरमे साँझक बैठकक लेल नैरा, असद आ कबीर एकटा पातर मेज लग बैसलाह। असद विद्यालयक पहिल सूचना, गलत जोड़ल पाँति आ सुधारल बयान तीन अलग प्रति रखलनि। मोहनक दुकान-बहीक पर्ची आ साजिदक मूल रिकॉर्डिंग देखबाक शर्त अलग छल। कमलेशक नाप-बहीक समाचार फोनपर पहुँचल छल, मुदा ओकर मूल प्रतिक बिना

नैरा कापीमे ‘कहल गेल’ लिखलीह। कबीर पुछलनि, “एतेक कागदकेँ एके कहानी कहब तँ?” नैरा उत्तर देलीह, “कहानी एक शहरक होएत, अपराधक कारण एके होएत—एहन नहि। ”

लताकेँ विद्यालयक सुधारक प्रति भेटल। ओ पन्ना पूरा पढ़लनि, फेर एक पाँतिक कात लिखलीह—‘मिथुनक खोज चालू’। असद पुछलनि जे विद्यालयक नोटिसमे ई जोड़ल जाए की नहि। लता कहलीह, “सूचनाक अपना सीमा रहए। खोजक तिथि, जाँचक समय आ अगिला संपर्क अधिकारी अलग पन्नापर दिअ। हमर बेटाक नाम गलत आरोपक सुधारक प्रदर्शन नहि बनय।” ओ साजिदक रिकॉर्डिंग देखबाक अधिकार स्वयं नहि माँगलीह; कहलीह जे नामित अधिकारी उचित अनुमतिक संग जाँच करथि।

राति पड़ला पर विद्यालयक सूचना-पट्टमे नव बयान लगल, आ पुरान पन्नाकेँ फाड़बाक बदला विद्यालयक अभिलेख-फाइलमे ‘गलत प्रकाशित प्रति’क रूपमे राखल गेल। असदक जिम्मेवारी समाप्त नहि भेल छल; पुरान छोट वीडियो कतेक फोनमे छल, ओ नहि जनैत छलाह। मोहनक अपन तिथि-पर्ची तदर्थ जाँचमे जाएब बाकी छल। कमलेशक सामूहिक आरोप हटेबाक प्रस्तावपर हस्ताक्षर शेष छल। मीरा आ हुनकर बहिन दू बाटसँ सामान पहुँचेबाक तिथि चुनने छलीह, रामवती अपन मूल कागद फेर थैलीमे रखलीह। ककरो घरमे सभ डर समाप्त नहि भेल; मुदा आइ किछु लोक अपन सही नाम, अपन काज आ अपन प्रश्न दोसराक अनुमानसँ अलग राखि सकल।

अध्याय ७९ • चेहराक समानता

विदेहपुरक रेलपुलक नीचाँ भोरमे सरयू भीजल दरी झारि रहल छलीह। रातिक पानि दरीक तहमे एतेक समा गेल छल जे झारलापर ओकर छोरसँ माटि घुलल धार खसैत रहल। जानकी चूल्हिक राखि अलग करैत छलीह। ओहि समय सरयूक नतिनी आँगुरसँ फोनक स्क्रीन ढाँपैत अएलीह। “ई हमरो दादीक फोटो अछि?” बच्चीक प्रश्न सुनि सरयू दरी छोड़ि देलीह। स्क्रीनपर दू स्त्रीक धुँधल चेहरा कात-कात साटल छल; पहिल वनफाटकक पुरान दृश्यसँ कटल, दोसर कोनो मालगाड़ीक पाछाँसँ लेल गेल। नीचाँ लिखल छल—‘देखू, ईहे दल फेर बच्चा लऽ जा रहल छल’। दोसर चित्रमे बच्चा छल कि बोरा, से स्पष्ट नहि छल।

जानकी फोन अपने हाथमे लेलनि, मुदा बच्चीकेँ फेर देखब नहि देलीह। कागदपर लिखल विद्यालयक सुधार-पत्र ओ काल्हि साँझ पढ़ि चुकल छलीह। ओहिमे गलत सामूहिक आरोप वापस लेल गेल छल, किन्तु आइ नवा मिलानक संग पुरनका भय फिर लौटल छल। “हमरा मुँहक नाप के लैत अछि?” सरयू पुछलीह। जानकी कहलीह, “जकरा लग कतरल चित्र अछि, ओकरा ई अधिकार के देलक? मुदा एखन हमर क्रोधसँ नहि, दूनू चित्रक मूलसँ जवाब चाही।” दलक दू युवा कहलक जे फोन छीनि लिअ। जानकी रोकलीह—फोन छीनलासँ जे प्रतिलिपि पसरि चुकल अछि, ओ नहि मेटत।

रेलचौकक दोकानपर नैरा चाय लेबाक लेल ठाढ़ छलीह। जानकीक सन्देश भेटिते ओ चाय छोड़ि अएलीह। सरयू पहिने पूछलीह, “हमर नाम फेर कागदमे छापब?” नैरा उत्तर देलीह, “अहाँ जँ नहि चाहब तँ चेहरा वा घरक चिन्ह नहि छापब। लेकिन गलत आरोपक सुधार अहाँक सहमतिक रूपमे तैयार करब।” जानकी अपन इच्छा अलग रखलीह—कोनो नया फोटो नहि, सार्वजनिक प्रश्नक उत्तर सार्वजनिक बैठकमे, आ मिथुनक खोजक फाइल एतयसँ बाहर नहि काढल जाए। नैरा सहमत भेलीह। ओ दूनू चित्रक वर्तमान प्रसारक समय आ प्राप्तकर्ता लिखलीह, मुदा फोनमे देखायल बनबाक समयकेँ घटना-समय नहि मानलीह।

साजिद नट अपन कैमरा आ एकटा छोट पुरान स्मृति-कार्ड लऽ विद्यालयक कार्यालय पहुँचल। पहिल दृश्य ओकर विद्यालयक नाटक-अभ्यासक छल, जाहिमे मोहनक ठेला आ लाल परदा छल। दोसर वनफाटकपर यात्राक पुरान दृश्य, जकर मूल फोन ओ युवक लग छल जे ओहि साँझ रिकॉर्ड कएने छल। आजुक जोड़ल चित्र ओहिमे सँ कटल छल कि नहि, ई साजिद नहि जनैत छल। “हमर कैमरा सँ जतेक बनल, ओ देखबैत छी,” ओ कहलक। असद सैयद भीतरक मेजपर तीन कागद अलग रखलनि—विद्यालयक पहिल सूचना, गलत प्रकाशित आरोप आ काल्हिक सुधार। ककरो चेहरा देखाएब एहि कागदसभक शर्त नहि छल।

युवक अपन मूल फोन लऽ अएल। ओकरा आशंका छल जे सभ ओकरा अपराधी बनाय देत। जानकी कहलीह, “अहाँ वनफाटकपर रिकॉर्ड कएलहुँ, ई बात अहाँ पहिनहिसँ स्वीकार कएने छी। गलत शीर्षक के जोड़लक, से आहाँ नहि जनैत छी तँ नहि जनैत छी कहू। मुदा जे फुटेज अहाँ लग अछि ओकरा दोसर चित्रसँ मेल खाइत कहि ककरो नाम मत दिअ।” युवक मूल पूरा दृश्य चलौलक। ओहिमे भीजल फाटक, दुर्गाक बाँसक गाँठ, तुलसीक अनाजक गाड़ी आ जानकीक दलक दू परिवार साँझक उजासमे पार होइत छल। ओहि दृश्यक भीतर न बालककेँ पकड़बाक घटना छल, न बादमे पसरल नवा मालगाड़ीक चित्र।

बैठकमे एक आदमी कहलक, “मुँह तँ हूबहू सरयूजकाँ अछि। मुँहक तुलना झूठ केना भेल?” मीरा मंडल ओकरा निकट अएलि। “जँ ओतेक समान अछि तँ ई निश्चित करू जे तुलना कोन गुणक अछि,” ओ कहलीह। “माथक आँचल, नाकक कोन, बूढ़ि देहक झुकाव—एहि सबसँ एक्के व्यक्ति मानब? गवयक उदाहरणमे सुनेल समानता वस्तु चिन्हबाक बाट दऽ सकैत अछि, मुदा एतए व्यक्तिक पहचानक लेल तिथि, ठाम, अखण्ड दृश्य आ स्वतंत्र गवाही चाही।” मीरा बच्चासभक कक्षामे उपमानक चर्चा पहिने कएने छलीह; आब ओ बुझलीह जे पाठक उदाहरण सार्वजनिक अपमान रोकए पर्याप्त नहि, जँ प्रमाणक काम सेहो नहि हो।

दोसरा चित्रक मूल खोजबाक जिम्मा पद्मा लेलीह, मुदा ओ स्पष्ट कहलीह जे हुनका कोनो निजी फोनक पूरा सामग्री खोलबाक अधिकार नहि। प्रसारित चित्र भेजनिहार एक

बाजार-व्यापारीक लग ओ मात्र ओहि चित्रक पुरान सन्देश देखलीह, जाहिमे ‘माल उतराइ’ लिखल छल। व्यापारीक दावा छल जे चित्र दू दिन पहिने बनल। पद्मा पुछलीह, “अहाँ स्वयं कैमरा चलौने रही?” ओ नकारलक। “जकरा सँ भेटल, ओकर मूल देखब,” पद्मा कहलीह। व्यापारी अपन स्रोतक नाम देबाक पहिने भय देखौलक; गलत आरोपक जिम्मेवारी ओकरो ऊपर आबि सकैत छल। जानकी कहलीह, “नाम सार्वजनिक मत करू। जाँचकर्मीकें मूल भेटबए दियौ।”

दुपहर धरि खबर भेटल जे चित्र सुकठीक खटालसँ सटल पुरान ढुलाई-आँगनक अछि। एक माल उतारनिहार महिलाक माथपर ठाढ़ रङ्गक गमछा छल, जकरा छोट पर्दापर देखिकऽ सरयू कहल गेल छल। वास्तविक महिलाक नाम सार्वजनिक करबाक ओ अनुमति नहि देलीह। ओ नामित जाँचकर्मीकें स्वयं बयान देब तैयार भेलीह, कारण एहन चित्रसँ हुनकर अपन रोजियो क्षतिग्रस्त भऽ रहल छल। “हमर चेहरा कोनो दोसर स्त्रीक दोष बचेबाक साधन बनाउ,” ओ कहलीह, “सेहो नहि। हमर काजक दिन, उतरबाक पर्ची आ फोटो खींचनिहारक बात देखू; जतए गलती अछि, ओतए सुधारू।”

मूल चित्र खींचनिहार खटालक पुरान छप्परक कात भेटल। ओकर फोनमे अखण्ड छोट दृश्य छल—टोकरि उतारब, खाली बोरा मोड़ब, महिलाक अपने गमछा सँ माथक पसीना पोंछब। दुआरक पाछाँ एकटा नया तौल-काँटा राखल छल, जेकर स्थापना-रसीद खटालक मुनीम देखौलक। तिथिक मिलान केवल मुनीमक कथनसँ नहि, मजदूरिनक भाड़ा-पर्ची आ मूल रिकॉर्डक क्रमसँ कएल गेल। ओ दृश्य वनफाटकक सन्ध्याक घटना नहि छल; बच्चा लेबाक आरोप ओहिमे सेहो नहि देखाइत छल। तथापि कोन फोनसँ दू चेहरा जोड़ल गेल, तकर स्रोत जाँच बाकी रहल।

नैरा बैठकीक कागदपर एकटा शब्द लिखलीह—‘समानता’। ओकर नीचाँ लिखलीह—‘पहिचान नहि’। पद्मा जोड़लीह जे चित्रसँ व्यक्ति चिन्हबाक एहन भूल सुधरलासँ सेहो दुनू स्त्रीक सम्पूर्ण जीवनक निश्चित प्रमाण बनि नहि जाइत अछि। सरयू खिन्न भऽ कहलीह, “अहाँ सभ लिखि रहल छी, मुदा हमर नतिनी कखन विद्यालय घुरत?” मीरा अपन कक्षाक अगिला दिनक समय बतौलीह, आ बच्चीक मायसँ पुछलीह जे कोन बात

सुरक्षित रहत। जानकी कहलीह जे बच्चा सभक बाटक निर्णय ओ सभ अपन परिवारमे करतीह; विद्यालयक नियमानुसार कक्षामे नाम कटल नहि जाए।

ओही साँझ माछबजारक ठेकाक सुनवाई लेल विनोद केवर्त पाटपर चिपकल पुरान तौल-पर्ची सुखा रहल छलाह। बिहानसँ माछक गन्धक संग बर्फ गलबाक पानि गल्लामे चढ़ि गेल छल। थोक ठेकेदारक गाड़ी छाँहमे ठाढ़, छोट विक्रेताक टोकरी घाममे। विनोदक बेटी खपच्ची सँ टोकरिक तल ठोकि पुछलक, “नाम लिखल गेल तँ छाँह भेटत?” विनोद कहला, “आवेदनपर नाम चढ़ल अछि; भाग एखन नहि। आइ भागक बात साफ करब।” ओ पानिमे भीजल पर्ची अलग झोरामे रखलनि, जेना किछु महीनासँ बहैत आयल हिसाब बचा रहल होथि।

समितिक सचिव पहिने पुरान ठेका पढ़लक—ठेकेदार जमा रकम देत, बदला ठाम चुनबाक प्राथमिकता रखत। छोट विक्रेता ‘छिटपुट शुल्क’ स्तम्भमे छलाह। विनोद पूछलनि जे छिटपुट कतेक लोक छथि। फूलमती तियर अपन जालक काम सँ एक घड़ीक अवकाश लऽ अपलीह। हुनका संग दू युवती छलीह जे माछ साफ करब आ बेचबामे अलग मजदूरी लैत छलीह। फूलमती कहलीह, “टोकरि हमरो नामपर बिकैत अछि, मुदा जाल बनब मजदूरीमे अछि। बजारक हिस्सा तय करैत काल किनबाक दाम आ काजक दाम एके मत करियौ।” सचिव पहिने बेसी नाम लिखबाक आपत्ति कएलक; चारि अलग पर्चीक कारण ओकरा कलम रोकए पड़ल।

ठेकेदार कहलक जे ओहि बजारक नाली आ छप्परक मरम्मत ओ अपने करबैत अछि। विनोद ओकर खर्च नकारलनि नहि। “मरम्मतिक बिल देखाउ,” ओ कहला, “आ सँगहि बताउ, छोट विक्रेता जे दैनिक शुल्क दैत छथि तकर हिस्सा कोन मदमे गेल। जँ हम सभ ठेकेक खर्चमे देनिहार छी तँ ठेकेक सुविधा मे नाम किएक नहि?” ठेकेदार हँसि कहलक, “तूँ सभ अपन अलग बजार खोलि लेब?” फूलमती प्रत्युत्तर देलीह, “बजार अलग खोलब तँ ग्राहकक बाट, तौल आ गन्दगीक व्यवस्था फेर करए पड़त। हम एतहि अपना हिस्साक नियम चाहैत छी।”

विनोद अपना हिसाबमे चारि स्तम्भ देखौलनि—भोरमे किनल माछ, ढुलाई, पाट-भाड़ा आ दिनक खराबी। पहिल बेर समिति बुझलक जे खटालमे छोट विक्रेता अपन अंश

नाफाक नामपर नहि, खर्च घटला पर बचल दामक अधिकारक रूपमे माँगि रहल छथि। एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे पक्की छाँहक दू कोना लॉटरी सँ बाँटल जाए। विनोद सहमत होएबासँ पहिने पुछलनि, “लॉटरीमे भाग लेबाक अधिकार केवल जे थोक अग्रिम दैत अछि, ओकर कि प्रतिदिन शुल्क देनिहारक सेहो?” सचिव उत्तर देबाक बदला कागदक खाली पाँति देखलक। ओहि पाँतिमे नव श्रेणी बनबाक आवश्यकता छल।

एक युवा माछ-बेचएवाली कहलीह, “हम दिनमे दू घण्टा अबैत छी। पूरा दिनक पाट-भाड़ा दैत रहलहुँ तँ घरक भोजन कतरि जाएत।” ठेकेदार उत्तर देलक जे दू घण्टाक अलग हिसाब कठिन होएत। विनोद अपना पर्चीसँ आधा दिनक पुरान बिक्री-दिन देखौलनि, मुदा ओकरा पक्का नियम कहि नहि प्रस्तुत कएलनि। समिति परीक्षात्मक रूपेँ एक सप्ताह लेल अंशकालिक स्थानक तीन पाट चिन्हित करबाक प्रस्ताव स्वीकार कएलक; जगहक नाप, सफाई आ शुल्कक अंतिम स्वीकृति शेष रहल। विनोद आ फूलमती आंशिक लिखित निर्णयक प्रति लेला, एकरा पूर्ण विजय नहि कहलनि।

बाजारक ओहि बाटसँ गीता कोरी कपड़ाक मुड़ल नमूना काँखमे दाबने अएलीह। ओ विनोदक बैठकमे नहि रुकलीह; हुनका कम्पनीक बकाया-दामक हिसाब मिलाबए सीमापारक करघा चलएनिहार अपन साथी-सँ तय बातचीत छल। उर्मिला रजक पहिने हुनकर कपड़ाक रंग आ अस्पतालक चादरक नमूना मिलाएबामे सावधानी बरतने छलीह। गीता आब ओहि तुलनाक पर्ची आ मूल कम्पनी-आदेश अलग कपड़ामे बाँधने छलीह। पाथरपर पैर राखिते हुनका एक क्षण अपन करघाक खटखटाहट याद अएल; थानक नाप याद रखब आसान छल, खरीददारक टारल वचनक गिनती कठिन।

सीमापारक साथी सरस्वतीक फोन बिनु आवाजक छवि-सन्देशसँ आरम्भ भेल। ओ हिन्दीमे लिखल कम्पनीक पत्र पढ़ि सकैत छलीह, मुदा अपना करघाक दैनिक मजदूरी मैथिली आ अपन घरक भाषामे लिखैत छलीह। गीताकेँ ओ पहिने दू सवाल पठौलीह—आदेशमे बुनोटक नमूना जे छल, ताहिसँ भेजल थान मेल खाइत अछि कि नहि; आ किनारपर कम्पनीक छाप बुनकरक सहमति सँ लगल छल कि बिन पूछने। गीता अपन माँक पुरान माप-डोरी पसारि कऽ उत्तर देलीह। “नाप मेल खाइत अछि; लेबलक अनुमति हम नहि देने छी। मुदा केवल लेबल बदललासँ बकाया रकम माफ नहि होएत।”

कम्पनीक स्थानीय प्रतिनिधि बैठकमे अएल तँ कहलक जे थानक एक भाग बेचाएल नहि, तँ पूरा देय रोकल गेल अछि। गीता कहलीह, “अनबिकल मालक बात बिक्रीक खाता बताएत। हमर मजदूरीक शर्त पहिने लिखल छल—तहिया थान सुपुर्द कएल।” ओ बही खोलि दू मद देखौलीह—सूत खरीदबाक खर्च जे कम्पनीक अग्रिमसँ भरल गेल, आ बुनबाक समय जे गीता आ संगिनी सभक अलग देय छल। सरस्वती अपन कागदक प्रति फोनसँ पठौलीह, जाहिमे सीमापारक खरीददारक प्राप्ति दर्ज छल, मुदा ओकर हस्ताक्षरक मौलिकता एखन सत्यापित करबाक छल। गीता ओकरा ‘प्राप्त प्रति’ लिखलनि, ‘निश्चित भुगतान’ नहि।

प्रतिनिधि पुछलक, “सीमापारक लोककेँ बीचमे आनलासँ व्यापार बनत?” गीता माप-डोरी समेटि कहलीह, “जकर हाथसँ माल गेल आ जकरा लग पहुँचल, ओकर बात सुनेब व्यापार बिगाड़ब नहि। हम न अपन साथीकेँ गवाह बनएबाक लेल दबाव देब, न कम्पनीक सब थानकेँ चोरीक माल कहब।” सरस्वती स्वयं अपना देशक नियम अनुसार लिखित दावा देबाक बात मानलीह, किन्तु ग्राहकक निजी नाम सार्वजनिक नहि करबाक शर्त रखलीह। तीनू पक्ष फेर तिथिसहित हिसाबक प्रति देबाक लिखित निश्चयपर पहुँचल। रकम नहि भेटल; परन्तु बकाया ककरा देबाक आ जाँच ककरा करबाक, ई दू प्रश्न अब बिनु नामक नहि रहल।

घर दिस घुरैत गीताकेँ गाड़ीवाला यूसुफक रोकल लाल डोरीवला गाँठ देखौलनि। “ईहो कपड़ा अछि; अहाँक कम्पनीक होएत?” ओ पुछलक। गीता दूरसँ लेबल पढ़लीह, मुदा गाँठ छूबाक अस्वीकार कएलीह। “रंगक समानता, गाड़ीक समानता आ कपड़ाक नाम—तीनूक आधारपर हमर थान नहि बनि जाइत,” ओ कहलीह। “जकर माल अछि ओ अपन मूल पन्ना खोलत। हमर बकाया ओकर देयक स्थान नहि लऽ सकैत अछि।” ओ अगिला दिनक सुनवाई लेल सरस्वतीक भेजल सन्देश सुरक्षित रखलीह, जकर पूरा पाठ पहिने हुनकर अपन सहमतिक बिना कोनो समाचारमे नहि जेबाक छल।

फरीदा कुरैशी बाजारक पूर्वी कात अपना माँस-दोकानक ढक्कनदार पेटी उठबैत छलीह। दस दिनसँ दोसर विक्रेता सभक बीच कहब चलि रहल छल जे हुनकर दोकानक भोजन अस्वच्छ अछि, आ “कुरैशी लोक”सँ सामान नहि किनल जाए। विद्यालयक गलत

आरोपक किछु आवाज ई बजार धरि आयल छल, किन्तु एहि बहिष्कारक आरम्भ कोन ग्राहकक शिकायतसँ भेल, से कियो स्पष्ट नहि कहि सकैत छल। फरीदाक अपन ग्राहकक संख्या घटि गेल छल; आजु ओ केकरो घरक दुआरपर न्याय माँगबाक बदला नगरक स्वास्थ्य निरीक्षककें लिखित आवेदन देने छलीह।

निरीक्षक अएलाह तँ फरीदा दोकान बन्द नहि कएलीह। ओ साफ पानि, औजार धोबाक पात्र, ढक्कन आ शीतल राखबाक व्यवस्था देखौलीह। निरीक्षक तापमानक यन्त्र आ सफाइक चेक-पत्र देखौलनि। ओ कहला जे निरीक्षणक परिणाम नियत मापदण्ड अनुसार होएत; समुदाय-नाम वा अफवाह एहि प्रपत्रक मद नहि अछि। फरीदा उत्तर देलीह, “अहाँ हमर त्रुटि भेटए तँ लिखू, हम सुधारब। मुदा अगल-बगल सभ दोकानक जाँचक नियम जे अछि, ओहिमे हमरा मात्र जाति-धर्मक नामसँ दोषी मत बनाउ।” ओ निरीक्षणक शुल्कक सरकारी रसीद सेहो माँगलीह।

एक ग्राहकक कहब छल जे काल्हि हुनका किनल वस्तुमे गन्ध अएल। फरीदा ओकर बात काटलीह नहि। “किनबाक समय, सामानक प्रकार आ कतए राखल गेल से लिखू,” ओ कहलीह। ग्राहककें पूरा दिनक बात याद नहि छल, मुदा दोपहरक पछाति किनल होएबाक सम्भावना बतौलक। निरीक्षक ई कथन शिकायतक रूपमे दर्ज कएलनि, प्रत्यक्ष दुकान-जाँचक निष्कर्षक रूपमे नहि। हुनका पेटीक एक कोनामे सफाइक पट्टी बदलबाक आवश्यकता भेटल; फरीदा ओ पट्टी तुरन्त बदलौलीह आ निरीक्षण-पत्रमे सुधारक तिथि लिखौलीह। ई छोट त्रुटि समूचा बहिष्कारक औचित्य नहि बनल।

बाजार-संघक अध्यक्ष कहला जे बहिष्कार लोकक अपन पसिनक निर्णय अछि। फरीदा आपत्ति कएलीह, “ग्राहक अपन पसिनसँ किनथि वा नहि किनथि, ई हुनकर बात अछि। मुदा संघ जँ हमर दोकानक नाम बिना जाँच ‘खराब’ लिखि सभकें रोकत, तखन ई पसिन नहि, संगठित आरोप होइत अछि।” ओ अध्यक्षकें पुरान सूचना देखएबाक कहलनि। कागदमे न परीक्षण-तिथि छल, न वस्तुक नमूना, न हस्ताक्षरयुक्त शिकायत। अध्यक्ष स्वयं कागद हटेबाक सहमत नहि भेलाह; दोसर सदस्य औपचारिक निरीक्षणक रिपोर्ट भेटलापर निर्णय करबाक प्रस्ताव रखलक।

निरीक्षकक प्रारम्भिक प्रपत्रमे किछु व्यवस्था ठीक, एक सुधार आवश्यक, आ नमूनाक परीक्षण-उत्तर शेष लिखल गेल। फरीदा ओही सीमित निष्कर्षकेँ स्वीकार कएलीह। ओ पत्रकारक फोनपर ‘हमर दुकान सम्पूर्ण निर्दोष घोषित’ कहबा सँ मना कएलीह। “एखन रिपोर्टक जे हिस्सा अछि, सेहि दियौ,” ओ कहलीह। “जे दोष भेटल ओकरा सुधारलहुँ, बाकी जाँच बाकी अछि। बहिष्कारक आदेश देनिहार सभ अपन आधार देखाउ।” संघक दू दुकानदार अगिला बैठक धरि सामूहिक बहिष्कारवला पर्ची हटाएबाक पक्षमे भेलाह, मुदा अध्यक्षक हस्ताक्षर शेष रहल।

साँझक सार्वजनिक सुनवाई रेलचौकक छतनार गाछ नीचाँ भेल। जानकी चाहैत छलीह जे केवल वयस्क प्रतिनिधि बैसथि; बच्चासभक मुँह, नाम आ यात्रा-पड़ाव भीड़मे नहि कहल जाए। पद्मा पहिने दू चित्रक उत्पत्ति आ कटल अंशक सूची सुनौलीह। मूल वनफाटक-वाला दृश्य साँझक पुरान बाट-विवादक छल; दोसरा मूल दृश्य ढुलाई-आँगनक माल उतराइक। दुनूमे न मिथुनक उपस्थितिक प्रमाण छल, न बच्चा लऽ जाएबाक दृश्य। साजिद अपन नाटकक फोटो अलग ठाम रखबाक फेर आग्रह केलक, जकर लाल पदर्कि पहिने सन्देहास्पद सामान कहल गेल छल।

एक युवक पूछलक, “दू मूल चित्र अलग अछि तँ दोषी के?” नैरा कहलीह, “हम एखन ई बतबैत छी जे जानकीक दलक चेहरापर आधारित ई आरोप असत्यापित छल आ सार्वजनिक आरोपक रूपमे गलत छल। दू चित्र जोड़निहारक पहिचान अलग जाँचक विषय अछि। आ मिथुनक सम्बन्धमे पहिल सूचना जतए दर्ज अछि, ओतए अपन तथ्य लऽ जाउ।” लता ओतए अएलीह, मुदा भीड़क बीच अपन बेटाक कपड़ाक विवरण फेर नहि सुनौलीह। ओ पूछलीह, “पुरनका भ्रम टूटि गेल तँ हमर बच्चाक खोजक अगिला दिनक जाँच तय अछि?” सहायता-कक्षक कर्मचारी लिखित समय दैत उत्तर देलक।

जानकी कहलीह, “हमर दलपर ‘बच्चा चोर’ कहब वापस लिअ। केवल ‘भ्रम हो सकैत अछि’ लिखि फेर सबकेँ सन्देहमे नहि छोड़ू।” विद्यालयक प्रधानाध्यापिका, असद आ बाजारक प्रतिनिधि एक साझा सुधार-पत्र तैयार कएलनि। ताहिमे साफ लिखल गेल जे उपलब्ध वायरल चित्र आ ओकर चेहरा-मिलान जानकीक दलकेँ बालक-अपहरणसँ जोड़बाक प्रमाण नहि अछि; ओहि आधारपर देल गेल आरोप वापस लेल जाइत अछि।

जाँचकर्मीक स्वतंत्र गुमशुदगी-फाइल चालू रहत। जानकी पूरा पाठ सुनि सही कएलीह, मुदा अपना दलक सभ सदस्यक नाम एक संग प्रकाशित होएब मंजूर नहि कएलीह।

सरयू ओहि गाछक नीचाँ चुप बैसल छलीह। कियो कहलक, “आब तँ राहत भेटल?” सरयू अपन भीजल दरीक मोड़ देखबैत कहलीह, “पहिने बाजारमे अनजान लोक हमर दाम पूछैत छल; एहि कुछ दिन हमरा मुँह देखिकऽ बाट बदलैत अछि। कागद ठीक भेल, मुदा खरीदारक आँखि कखन ठीक होएत?” जानकी हुनका संग उठलीह। अगिला भोरमे दोसर हाट जेबाक निर्णय ओ सभ अपने लेलीह; कियो सहानुभूतिक नामपर हुनकर यात्राक बाट निर्धारित नहि करत। बच्चासभ लेल मीरा अपन पढ़ाइक पाटी फेर ठाम पर टिकौलीह।

नैरा रातिमे अपन कापी तीन खण्डमे खोललीह। पहिलमे जानकीक दलविरुद्ध गलत सार्वजनिक आरोपक लिखित वापसी, दोसरमे मिथुनक खोजक समयबद्ध जाँच, तेसरमे बाजारक अलग-अलग देय आ विवाद—विनोदक अस्थायी पाट, गीताक बकाया, फरीदाक अपूर्ण निरीक्षण। कबीर ओही खाता देखैत पूछलनि जे माछ आ कपड़ा दोएनिहार गाड़ी कखनो एके रहैत अछि, ताहिसँ कोनो सम्बन्ध निकलब? नैरा कहलीह, “सम्भव संबंधक जाँच लेल गाड़ीक लदान-पर्ची मँगब; साझा चक्का साझा अपराध नहि।” यूसुफक लाल डोरीवाला गाँठ एखनहुँ खोलल नहि गेल छल।

जानकी रातिक भोजन बाँटैत नतिनीकेँ अपन लग बैसबौलीह। बच्ची पुछलक, “दादीक मुँह आब दादीक भेल?” सरयू मुस्की देलीह। “हमर मुँह कहियो दोसराक नहि भेल छल,” ओ कहलीह, “दोसर लोक कागदपर गलत नाम रखि देने छल।” रेलक चक्का दूरमे खड़खड़ायल। लताक घरक ढाकल थारी एखनहुँ अपन बच्चाक बाट जोहि रहल छल; जाँचक नवा समय लिखि गेल छल, उत्तर नहि। ओही राति जानकी अपन दलक अगिला यात्राक सामान बान्हलीह। अपन पहिचान वापस माँगबाक लड़ाइ आ हराएल बालककेँ खोजबाक काज एकसाथ चलि सकैत छल, बिना एक-दोसराकेँ निगलने।

अध्याय ८० • बुनकरक दोसर खाता

यूसुफ अंसारी भोरमे करघाक पाछाँ झुकि तानीक टूटल सूत जोड़ि रहल छलाह। नन्हका गाँठकेँ नखसँ दबबैत हुनका बाहर गाड़ीक आवाज सुनाइत छल, मुदा ओ सिर नहि उठौलनि। काल्हि राति बजारसँ घुरलापर एक ग्राहक अपन सफेद थान वापस माँगने छल; लाल डोरी बाँधल दोसर गाँठक कारण साँचो मालो रुकल अछि, से सुनि ग्राहककेँ भय भेल रहनि। यूसुफक लग ग्राहकक अग्रिम खर्च भऽ चुकल छल, आ सुतबाक पहिने ओ अपन पुरान बहीक बीच दोसर पातर खाता सी देने छलाह। पहिल पृष्ठपर बुनल कपड़ाक नाप, सूतक उधारी आ मजदूरी; दोसरपर रोकल खेपक ढुलाई, दुकानक छाप, प्राप्त कएल आरोप आ जाँचक खर्च। राति भरि दुनू पन्ना एक-दोसरासँ सटि रहल, मुदा ओकरामे लिखल माल एक नहि छल।

बेटा प्रशिक्षण-कक्ष जाएबासँ पहिने आँगनमे अपन छोट उपकरणक थैली रखि पुछलक, “अब्बा, अहाँ दू खाता किएक सी देलहुँ? पहिले तँ लाल डोरीक गाँठ अलग लिखने छलहुँ।” यूसुफ कहला, “अलग लिखब आ अलग साबित करब दू बात अछि। हम जे बुनलहुँ ओकरा ग्राहक धरि पहुँचेबाक बाट खोलए पड़त। जे नहि बुनलहुँ ओकरा हमर नामसँ बेचब रोकए पड़त।” बेटा फोनमे थानक पहिल फोटो देखौलक। ओ कहलक जे फोटोमे किनारक जोड़क निशान सहित तिथि राखी तँ मिलान आसान होएत। यूसुफ ओकर बात मानलनि, मुदा कहलनि जे फोटोकेँ स्पर्शक जगह नहि, हिसाबक सहायक रखल जाए। बेटा चाय पिए बिना नहि निकलल; माय ओकर थैलीमे रोटी रखि देलीह।

दोकानक सामने उर्मिला रजक आबि ठाढ़ भेलीह। हुनकर हाथमे अस्पतालक धोएल चादरक गिनती नहि, अपन घाटक एकटा रसीद छल। “एक गाड़ीपर चढ़ल चीजक नाम एक्के कएल जाए तखन हमर धोनाइ सेहो चोरी कहाएत,” ओ कहलीह। “आजु सुनवाईमे जे पन्ना चाही से कहू। हम जे पानि आ कपड़ाक काम देखलहुँ से लिखब; गाड़ीमे बादमे की चढ़ल, से नहि।” यूसुफ आग्रह कएलनि जे उर्मिला अपन धोनाइ-पंजीक प्रमाणित प्रति मात्र देखि। ओ दूनू तय कएलनि जे सुनवाईमे अपन-अपन मूल बही साथ राखताह,

प्रतिलिपि अधिकारीक प्राप्ति-रसीदपर देताह। दुपहरक पहिने लाल डोरी खोलल नहि जाएत, एहि बातक लिखित अनुमति मँगबाक निश्चय सेहो भेल।

सुकठीक खटालक पाछाँक मालघरमे ताहि दिन तीन मेज लगल। एकटा मालक स्वामित्व जाँचबाक, दोसर ढुलाई-पर्ची मिलानक, तेसर शिकायत सुनबाक। नैरा पहिने सँ पहुँचि कोन व्यक्तिक पन्ना कोन मेजपर जाएत तकर सूची तैयार कएने छलीह। महेन्द्र गाड़ीवान भीजल पर्ची प्लास्टिकक खोलमे रखि लएने छल। ओ कहलनि, “जखन सभ एके गाड़ीमे चढ़ल तँ हमरा एके अपराधक चालक कहि देल गेल। हम ठहराव बतबैत छी; भीतरक कपड़ा बुनल अछि कि छापल, ई हम केना जानब?” नैरा ओकरा समयक खाली स्थान अपन अनुमानसँ भरबाक बदला चौकीक प्रवेश-पंजी मँगबए कहलनि। ओहिमे गाड़ीक प्रवेश दर्ज छल, प्रत्येक बोझक उत्पत्ति नहि।

यूसुफ पहिल गाँठक सील खोलबाक स्वीकृति भेटलापर थान पसरौलनि। बुनोटक बीच माटि-रंगक ओ छोट जोड़ छल जेकरा हुनकर अँगुरी बिना देखनहुँ चिन्हैत छल। बेटाक खींचल फोटोमे ओहि जोड़क पास नाप-डोरी रखल गेल रहए। ग्राहकक मूल आदेशमे चौड़ाइ, लम्बाइ आ साधारण उपयोगक निर्देश छल; अस्पतालक स्वीकृतिक कोनो शब्द नहि। गवाही देबए आयल ग्राहक अपन खरीद-पर्ची देखौलनि आ कहलक जे ओ घरक परदा लेल थान मँगौने छल। अधिकारी पूछलनि, “अहाँ कपड़ाक हर जोड़ चिन्हैत छी?” ग्राहक कहलनि, “नहि। हम आदेश आ अग्रिम पहिचानैत छी; बुनोट यूसुफ बुझौथिन।” एहि सीमा लिखल गेल।

दोसर गाँठपर दुकानक वही छाप छल, मुदा उज्जर पट्टीमे अस्पतालक उपयोग लेल स्वीकृतिक दावा जुड़ल छल। यूसुफक एक समयक व्यापारी शेखर कहलक, “ई शब्द कदाचित गोदाममे लिखाएल होएत। ककरो हानि करबाक इरादा नहि।” अस्पतालक गोदाम-लिपिक संग आयल वरिष्ठ कर्मचारी स्पष्ट कएलनि जे एहि खास खेपक लेल संस्थाक स्वीकृति-पत्र जारी भेल, एहन प्रविष्टि प्रस्तुत पंजीमे नहि अछि। ओ अपन पंजीक पूरा वर्ष नहि, सम्बन्धित अवधि आ पत्र-संख्या देखौलनि। “रिकॉर्डमे स्वीकृति नहि भेटल, ई हम कहि सकैत छी,” ओ कहला, “पट्टी के छापलक, भीतर कोन कपड़ा अछि वा अस्पतालक सब सामग्री सुरक्षित अछि, ई हम एहि पन्नासँ नहि कहि सकैत छी।”

शेखर बहस कएलक जे सरकारी मोहर जकाँ देखाइत चिह्न हर व्यापारी उपयोग करैत अछि। नैरा ओकरा पुछलीह जे तखन ‘स्वीकृत’ लिखबाक अधिकार ककर अनुमति सँ भेटल। शेखर कहलक जे गोदामक फोनपर आदेश छल, नाम याद नहि। यूसुफ ओहि बातकेँ लिखित बयानमे राखबए कहलनि—फोनक दावाकेँ आदेशक प्रमाण नहि। सामान-जाँचक अधिकृत कर्मचारी, गवाही देनिहार दू स्वतन्त्र व्यक्ति आ माल रखनिहारक उपस्थितिमे लाल डोरीक गाँठक बाहरी पट्टी, छाप आ वजन दर्ज कएल गेल। ओकरा अखनि बिक्रीक अनुमति नहि भेटल; एहि रोकक कारण ‘अप्रमाणित स्वीकृतिक नामपर वितरण’ लिखल गेल, न ‘यूसुफक चोरी’।

“हमर असली गाँठ तखन घुसत?” यूसुफक आवाज चढ़ि गेल। निरीक्षण प्रभारी कहला जे साझा ढुलाई-पर्ची पर द्विविधा अछि; पहिल खेप मुक्त कएलासँ दोसरक खोज कठिन हो सकैत अछि। यूसुफ अपन दोसर खाता सामने रखलनि। “अहाँक काम जाँच अछि; हमर घरक भोजन सेहो एकटा काम अछि। जँ रोकबाक कारण पहिल गाँठपर लागू नहि होइत तँ ओकरा रोकबाक लिखित आदेश देब, ताहिमे कारण लिखू।” ग्राहक सेहो कहलक जे ओकर कपड़ा देरीसँ पहुँचला पर घरमे परदा लगबाक मजदूर बेकार बैसल अछि। अधिकारी दू पन्नाक मिलान फेर कएलनि। पहिल गाँठक मालिक, नाप आ आदेश चिन्हित भेल; साझा गाड़ी ओकर एकमात्र संदिग्ध सम्बन्ध बचल।

महेन्द्र अपन गाड़ीक फर्शपर रहि गेल चूनक धब्बाक फोटो देखौलक। “ई देखू, दू गाँठ एक्के ठाम रखल गेल छल,” ओ कहलक। यूसुफ उत्तर देलनि, “चक्का आ फर्श बाट साझा कएलक; मालिकाना नहि।” महेन्द्र पहिल बेर अपन नोकरीक डर खुलि कऽ कहलक जे आगा सँ मालक अलग रसीद बनौला पर गाड़ी-मालिक ओकर भाड़ा काटि सकैत छथि। विनोद केवर्त, जे माछबजारक शुल्क-विवादसँ आयल छलाह, कहलनि, “अलग कागद बनएबाक दाम जे छै, ओ भाड़ाक मदमे लिखू। मालक दोषक भार चालकपर नहि छोड़ू।” अधिकारी आगामी खेपसभमे अलग लदान-संख्या अनिवार्य करबाक अस्थायी व्यवस्था लिखलनि।

रहीम मंसूरी सुनवाईक देहरीपर अपन गद्दाक खोल मोड़ैत बैसल छलाह। हुनका चारि बोरा धुनल रुइक खेपपर अस्पतालक सामान चोरि कऽ रखबाक आरोप लगल रहनि;

पिछिला बेर ओ सात गद्दा धुनबाक पंजी देखौने छलाह, मुदा ताहिमे सँ तीन ग्राहक अपन सामान अपने लऽ गेल छल। आइ ओ वृद्धा ग्राहकक नातिक लिखल प्राप्ति-पर्ची, दुलाईवला चारि बोरा आ नवा रुइक अलग बिल लऽ अएल छलाह। अपन गद्दा बीच मेजपर राखि ओ नहि खोललनि। “जकर गद्दा अछि, ओकर बिना अनुमति रुइ आ खोल फाइब उचित नहि,” ओ कहला, “प्रमाण लेल नमूना चाही तँ मालिककेँ बजाउ।”

शिकायतक सुनवाई करनिहार सदस्य पुछलक जे हुनकर बोरा अस्पतालक पाछूक मोड़ पर देखल गेल रहए। रहीम अपन अपील पढ़लनि, जाहिमे आरोपक तारीख आ हुनकर चारि बोराक उतराइक समय अलग छल। महेन्द्र कहलक जे ओहि दिन बहुत राति धरि गाड़ी चलौने छल; मोड़क निकट रोकल, मुदा बोरा ओतय उतरल कि नहि, ओकरा याद नहि। रहीम एहि भूलकेँ झूठक प्रमाण नहि बनौलनि। ओ केवल एतबा चाहलनि जे वस्तु, मालिक, मजदूरी आ ठहराव चारि अलग मदमे जाँचल जाए। अपील प्राप्त भेल; ओकरा शिकायत-पंजीक संलग्नक बनाओल गेल। ओही घड़ी आरोप हटबाक अन्तिम आदेश नहि भेल।

दुआरपर ठाढ़ रहीमक पत्नी फोनपर कहलीह जे नवा गद्दा लेल रुइ किनबाक ग्राहकक अग्रिम घटि गेल अछि। रहीम आश्वासन देलनि जे अपील दर्ज भेल, कारोबार सामान्य भऽ गेल एहन नहि। पत्नी अपन हिसाब सँ कएल निर्णय सुनौलीह—काल्हि सँ घरक पुरान गद्दा फुलएबाक छोट आदेश स्वीकार करतीह, मुदा आरोपित गाड़ीसँ माल नहि पठातीह, जावत अलग लदान-पर्ची शुरू नहि हो। रहीम कहला, “एहि बेर पर्चीक खर्च हम दूनू मिलि रखब।” पत्नी उत्तर देलीह, “रुइक धूल हमरा नाकमे सेहो जाइत अछि; खर्चक निर्णयमे हमर नाम किएक नहि?” रहीम चुप पड़ि अपन अपीलक प्रतिक कात हुनकर नाम लिखलनि।

सकीना रंगरेज तखन पहुँचलि जखन रंगक थानपर पड़ल धूप सफेद देबालपर हरियर धब्बा बनबैत छल। ओ नमूना-बहीक दू पत्ता खोललीह। पहिल नीलक, दोसर ग्राहकक बादक लिखल माँग अनुसार हरियर-बैंगनीक; बीचमे धोबाक समय आ फेर रंग चढ़ेबाक माप छल। व्यापारीक प्रतिनिधि कहलक जे ई दू आदेशक खाता बनेलाक कारण बिल बढ़ि गेल। सकीना एक छोट सूतक टुकड़ा ओकरा हाथमे रखलीह। “थान एकटा छल, मेहनत

दू बेर लगल,” ओ कहलीह। “हम नहि कहैत छी जे दू थान बेचने छी। अहाँ ई कहैत छी जे दोसर रंगक काज स्वतः मुफ्त भऽ गेल।”

ग्राहकक लिखल बदलाव-पर्चीमे तारीख साफ छल, किंतु ओकर अंगूठाक छाप असमान देखाइत छल। प्रतिनिधि ओहि छापपर शंका कएलक। सकीना कहलीह जे ओ ग्राहकक बोलल माँग सुनलनि, मुदा लिखित सहमतिक स्वतन्त्र सत्यापन लेल ग्राहककें बजाएब उचित होएत। ओ ओहिना कएलनि। ग्राहक अपन पहिल आदेश आ रंग बदलबाक आग्रह मानि लेलक, मुदा कहलक जे पाछिला मालमे रंग धूपमे फीक पड़बाक डर रहए। सकीना अपन परीक्षणक अर्द्ध थान देखौलीह; रंगक दीर्घकालिक टिकाउपनक पूरा ऋतु बीतल नहि छल। एतए कारीगरीक नमूना प्रमाण छल, भविष्यक गारंटी नहि। ग्राहक अंततः बदलल रंगक मजदूरीक एक हिस्सा तुरन्त देबाक आ शेष परीक्षणक तिथिपर तय करबाक प्रस्ताव रखलक।

“तेखन पहिल बिलक उधारी माफ?” व्यापारी पुछलक। सकीना अपन हिसाबक कात खड़ी रेखा खींचलीह। “नहि। पुरान देय, नव रंगक दाम, आ रंगक गुणवत्तापर उठल प्रश्न तीन विषय अछि। जकरा पर विवाद अछि ओकरा विवाद लिखू: जे काम स्वीकार कएल गेल ओकर देय नहि मेटू।” ओ ग्राहकक सामने आंशिक प्राप्ति लिखलीह, बाँकी रकमक तिथि आ आपत्तिक सीमा जोड़लीह। ग्राहक अपन प्रति लऽ गेल। सकीना बही फेर खोलि देखलीह जे पुरान रंगक नमूना पन्नाक भीतर सुरक्षित अछि; साक्ष्य बचेलाक समय ग्राहकक अपमान करब आवश्यक नहि छल।

इधर खटालक माछबजारमे पानि बर्फसँ पघलि कऽ तराजूक पाँयचिरा दिस बहि रहल छल। विनोदकें सप्ताहभरि लेल अंशकालिक तीन पाट देबाक पुरान निर्णयक जमीनपर आजु डोरीसँ नाप चलि रहल छल। ठेकेदारक मुनीम कहलक जे पानि भरबाक कारण दू पाट उपयोगी नहि। फूलमती तियर जालक लपेटा काँखमे दाबि ओतय पहुँचलि। “भोरमे पानि जेहने छल, दोपहरमे तेहने नहि,” ओ कहलीह, “एक बेर डोरी रखि कहि देब जे जगह खराब अछि, ई नाप नहि।” विनोद चप्पल उतारि पानि लग धरि गेलाह; नालीक कोनासँ कादो टपकैत छल, मुदा ओ कतेक गहिर अछि तकर माप नहि छल।

समितिक कर्मचारी सरकंडाक पातर छड़ी माटिमे गाड़ि गहिराइ देखलक। चारि ठामक माप अलग निकलल; पहिल ठाममे महीन गाद छल, दोसर ठामकेँ बर्फक पानि फिसलगर बना देने छल। फूलमती माँग कएलीह जे बाजारक सफाइक खर्च आ पाटक उपयोगक शुल्क अलग लिखल जाए। “माछ धोबाक पानि, बरसातक पानि आ गलब बर्फक पानि अलग-अलग आबि सकैत अछि,” ओ कहलीह। “ककरो माथपर दोष देबाक पहिने निकासी देखू।” विनोद दू विक्रेताकेँ देखौलनि जे ग्राहकक उधारी पर्ची घर लऽ जाइत छलाह। बजारक जमीनक माप गलत भेल तँ अगिला दिनक अंशकालिक विक्रेताक नाफा सहेजे नहि जाएत।

ठेकेदार अपन बिल देखौलक—नाली खनबाक मजदूरी, गाद उठेबाक ढुलाई आ छप्परक मरम्मत। विनोद कहला जे बिल देखाओल गेल, मुदा माछविक्रेतासँ प्रतिदिन लेल गेल सफाइ-शुल्क एतय जोड़ल नहि अछि। समितिक सचिव एक सप्ताहक अस्थायी पाट जारी रखबाक आ नालीक नवा माप स्वतंत्र रूपसँ करएबाक निर्णय लिखलक। गाद ककर खेतक माटि सँ आयल वा जलाशयक पूरा स्वभाव की अछि, से एहि चारि नापसँ सिद्ध नहि भेल। फूलमती चाहलीह जे माछ बेचएवाली दू युवतीक छोट समयक देयक नाम सेहो पाट-सूचीमे जाए। ओ सभक हस्ताक्षर संग्रह भेल; ठेकेदारक अंतिम सहमति शेष रहल।

लखन सतार ओहि बजारसँ सटल चढ़ानपर लकड़ीक पटरा उतारि रहल छलाह। वर्षा-पाछाँ आवागमन लेल बनाओल अस्थायी बाट ओ आ दू साथी काल्हि राति ठीक कएने छलाह। मालिकक मुनीमक बहीमे तीनू नामक सामने ‘सामुदायिक निःशुल्क सेवा’ लिखल छल, मुदा ठेकेक बिलमे ओही रातिक मजदूरी अलग वसूल कएल गेल रहए। लखनक माथपर एखनहुँ भीजल पटरा उठेबाक दबावक निशान छल। “समुदाय लेल काज कएलहुँ, ई ठीक,” ओ कहला, “मुदा जे हमरा देबइक वचन छल, ओकरा परोपकार कहि मेटब अनुचित।” ओ केवल अपन नाम हटएब नहि चाहैत छलाह; संगक दूनू मजदूरक समयो लिखबए चाहैत छलाह।

मालिक कहलक जे पटरा बदलबाक काम स्वैच्छिक छल, कारण घाटक सभ लोककेँ फायदा भेल। लखन पुछलनि, “तखन अहाँ बिलमे मजदूरी केकर नामपर लिखलहुँ?” मुनीम कहलक जे ठेकेदारक सामान्य मद छल, वास्तवमे भुगतान जरूरी नहि। लखन

अपन झोरासँ लकड़ी लादबाक तौल-पर्ची निकाललनि, जकरा पर रातिक प्रवेश-समय आ गोदामक चिह्न छल। ओ पर्ची काजक समय बतबैत छल, मजदूरीक दर नहि। संगक चन्द्रू आ बेला अलग-अलग कहलक जे दरक वचन हुनका समक्ष देल गेल छल। लखन ताहि गवाहीकेँ लिखित रूप देबाक हुनका स्वतन्त्र अवसर देलनि; अपने नामपर हुनकर आवाज नहि लिखलनि।

बेला असहमत भेलीह जे सबकेँ बराबर घण्टाक मजदूरी लिखल जाय। “हम पटरा उतारने रही, मुदा बीचमे घरक बीमार बच्चाकेँ देखए गेल रही,” ओ कहलीह। “हमर समय कम छल; काजक भाग कम नहि। जे जतेक समय आ जेहेन काज कएलक से अलग लिखू।” लखन ओकरा चुप करबए नहि चाहलनि। मुनीमक सामने दू प्रकारक हिसाब खुलल—समयक आ काजक। दरक पुरान मौखिक वचन तीन साक्षीक अपन-अपन स्मृतिमे छल, मुदा ओकर लिखित स्वीकृति एखन नहि भेटल। लखन समूहक सामूहिक दावा देलनि आ मजदूरी-पंजीक ‘निःशुल्क’ प्रविष्टि विवादित घोषित करबाक आवेदन रखलनि।

गोमती संग आयल एक लेखनिकेँ कहलीह जे ‘समुदाय’ शब्द सबकेँ एक्के मजदूर नहि बनबैत अछि। चन्द्रूक घरक खर्च, बेलाक बच्चाक दवाई आ लखनक पटरा लादबाक काज अलग अछि। लेखनि जखन नाम लिखलनि तँ बेलाकेँ ‘लखनक साथिन’ कहि छोड़ए चाहलक। बेला कहलीह, “हमर अपना नाम अछि। हम जे सुनलहुँ से हम कहब, लखन नहि।” मुनीम नाम लिखलनि। निर्णय भेल जे मालक बिल आ पंजीक मूल प्रति नियत दिन प्रस्तुत होएत; तहिया धरि तीनू अपन गवाहीक प्राप्ति-रसीद रखताह। मजदूरी पाओल गेल, एहन कियो घोषणा नहि कएलक।

दुपहरक बाद नैरा, यूसुफ आ महेन्द्र फेर मालघर पहुँचलाह। अलग लदान-पर्ची तैयार करनिहार कर्मचारी पहिल गाँठक स्वामित्व प्रमाण देखैत कहलक जे अहाँक बुनल थान मुक्त कएल जा सकैत अछि। यूसुफ पहिने कागद पढ़लनि। ताहिमे गलतीसँ ‘सभी संलग्न सामान जाँचसँ मुक्त’ छपि गेल छल। ओ कातमे सही करबासँ इनकार कएलनि। “हम जे अपना करघासँ बुनलहुँ, केवल ओहि संख्या पर अनुमति चाही,” ओ कहला। कर्मचारी पर्ची

दोबारा बनौलक—थानक नाप, ग्राहकक नाम, लाल डोरीवला दोसर गाँठक विशिष्ट सील आ रोक जारी रहबाक अलग उल्लेखसहित।

महेन्द्रकेँ एकटा नवा कठिनाई आबि गेल। गाड़ी-मालिक कहलक जे अलग लदान-पर्ची बनाबए रोकल गेल समय ओकर दैनिक मजदूरीसँ कटत। ओ सीधा नैराकेँ नहि, विनोद लग गेल। “अहाँ बजारमे रोज भरि पाटक भाड़ा गिनैत छी,” ओ कहलक, “हमर समयक भाड़ा के लिखत?” विनोद ओकरा अपन पर्चीक खाली खाना देखौलनि। महेन्द्र छुटल समयक कारण, असल प्रतीक्षा आ गाड़ी-मालिकक आदेश अलग लिखलक। विनोद कहला, “जे हमर माछक हिस्सा तय करबए बैसल, ओकरा ई पन्ना अलग दियो; हमर लड़ेबाक नामपर अहाँक मजदूरी नहि कटए।” महेन्द्र अपन आवेदन लेल ठाम खोजि लेलक।

यूसुफ पहिल गाँठ उठौने निकलए लगलाह तँ सकीना उहाँक पास आयलीह। “थान खुलि गेल, आ दोसर खाता?” ओ पुछलीह। यूसुफ मुस्की दैत कहला, “दोसर खातामे खर्च लिखल अछि, जे नहि वापस भेटल।” सकीना जवाब देलीह, “हमर रंगक पुरान देय सेहो बाँकी अछि। सही कागद बनला सँ ग्राहकक जेब स्वतः नहि खुलैत।” ओ दुनू पुरान गाड़ीक साझा भाड़ाक रकमक प्रश्न देखलनि। यूसुफ कहला जे पहिल गाँठपर जतेक वास्तविक ढुलाई भाड़ा छल, से चुकाएब; दोसर गाँठक रोकक खर्च अकारण हुनका ऊपर नहि पड़ए। सकीना अपन रंगाङ्क श्रमक देयमे कोनो कटौती स्वीकार नहि कएलीह। समान बाटपर चलल दू जीवनक हिसाब अलग रहबाक आवश्यकता दुनूकेँ साफ छल।

घरमे पहिल थान पहुँचला पर ग्राहकक घरक युवती स्वयं नाप-डोरी लऽ आँगनमे उतरलीह। ओ पर्दाक ऊँचाइ मापैत कहलीह, “हमर खिड़की छोट अछि; जतेक कपड़ा बचे, से हम अपन काज लेल रखब।” यूसुफ आनन्दसँ देखलनि जे थान अपन वास्तविक उपयोग धरि पहुँचल। बेटा प्रशिक्षणसँ घुरि रहल छल; ओ फोनमे नवा रसीदक संख्या सुरक्षित कएलक, मुदा यूसुफकेँ कहलक, “अहाँ जे ग्राहकक निजी नाम प्रकाशित नहि करए चाहैत छी, से हम नहि करब।” यूसुफ जवाब देलनि, “काजक हिसाब बुझाबए आ सभक घरक कथा बेचब दू अलग बात अछि।” बेटा पहिल बेर बहीक दोसर पन्नाक फोटो नहि खींचलक।

साँझक खटालमे फूलमती आ विनोद पानी निकासी लेल बाँसक छोट तख्ता चिन्हित करैत छलाह। दूनू युवती अपन अल्पसमयक पाटपर एक ठामक चिन्ह लगौलीह, मुदा ओहि पर एखन पक्की छाँह नहि छल। फूलमती कहलीह, “दुइ दिनक जाल-बिक्री आ एक सप्ताहक पाटसँ घरक वर्षभरक खर्च नहि चलत। मुदा नियम लिखल जाए तँ आगाँ पूछब आसान होएत।” विनोदक बेटी दिनक आखिरी बर्फक टुकड़ा पानिमे सरकैत देखलक। ओ कहलीह, “ई बर्फक पानि नदीमे जा रहल?” विनोद उत्तर देलनि, “नालीक अगिला बाट जाँचने बिना नहि कहब। आँखि सँ एतबा देखैत छी जे ई पानि एहि गड्ढामे जमा अछि।”

नैरा घर घुरए सँ पहिने महेशक हत्या-जाँचक फाइलक अलग पन्ना देखलीह। एहि दिनक व्यापारिक सुनवाईमे महेशक नाम कोनो मूल दस्तावेजमे नहि आएल छल। लताक कापीमे मिथुनक खोजक अगिला जाँच-दिन लिखल छल; ओहि लेल यूसुफक गाँठक छापकें बालकक खोजक प्रमाण बनाकऽ पठाएबक कोनो कारण नहि भेटल। तथापि ढुलाई-पर्चीक किछु ठहरावक नाम पुरान गुमशुदगी-अर्जीमे लिखल बाटसँ मिलैत देखाइत छल। नैरा एहि मिलानकें ‘अनुसन्धान लेल सम्भावित प्रश्न’ लिखलीह। एके बाटपर सामान आ आदमी चलैत अछि; एहि सामान्य बातसँ अपहरण स्थापित नहि होइत।

यूसुफ अन्तिम बेर बही खोललनि। पहिल खातामे ग्राहककें देल थानक रकमक एक हिस्सा चढ़ि गेल छल; सूतक उधारी, बेटाक प्रशिक्षण-शुल्क आ बीतल दिनक घाटा एखन बाँकी रहए। दोसर खातामे रोकल गाँठक पहचान, अस्पतालक अस्वीकृतिक सीमित कागद, शेखरक अपूर्ण बयान आ अगिला जाँचक तिथि स्पष्ट लिखल छल। ओ नामक आगे ‘अपराध सिद्ध’ नहि लिखलनि। करघाक छाजनसँ रातिक हवा भीतर आएल। यूसुफ पातर डोरीसँ दूनू बही अलग बाँधलनि; ओहि डोरीक अलगावक पाछाँ ककरो निर्दोष माल चलबाक बाट खुलल छल आ ककरो अप्रमाणित नामपर बिक्री रोकल रहल छल।

दूर खटालक दीया एक-एक कऽ निभि रहल छल। माछविक्रेता अपन टोकरि उठौने घर जा रहल छलाह, आ अगिला भोरक नाप-बँटबारा पर हुनका सभक फेर मिलबाक छल। लता अपना घरमे मिथुनक पहिल पहिरल कुरताक मोड़ छूने बैठल छलीह; हुनका आजु केवल जाँचक निश्चित समयक पुष्टि भेटल छल। नैराक पास अलग रखल ढुलाई-पर्ची सभक बीच एक प्रश्न शेष रहल—केकर नामपर अस्वीकृत स्वीकृतिक छाप लगल, आ

वस्तु वास्तवमे के पठौलक? ओकर उत्तर मालक जाँचसँ भेटि सकैत छल, मुदा हराएल
बच्चाक उत्तर तेहनहि होएत, ई कहबाक आधार नहि छल। जे बाट पहिने एके शंकाक
अन्हार बनल छल, ओहि बाटमे आब कम-सँ-कम दू अलग दिशा चिन्हाएल छल;
मनुष्यसभकेँ अपना-अपना दिशामे आगाँ काज करबाक रहि गेल छल।

अध्याय ८१ • बच्चाक दोसर ठाम

चायवला ओहि दिन भोरमे अपन ढिबरीक काँच नहि, टेबुलक एकटा पाया साफ करैत छल। पायाक नीचाँ दबाओल पर्चीक कोना भीजि गेल रहए; कागद हटबिते टेबुल काँपि उठल। नैरा चाय लेबाक लेल ठाढ़ छलीह। हुनकर ध्यान नीला स्याहीक आधा मिटाएल शब्दपर गेल—‘अगिला पड़ाव’। चायवला झट कागद समेटलक। “पुरान बसक भाड़ा-पर्ची छी, बहिनजी। मेज समतल करए काम आबि रहल छल।” नैरा ओकरा छोड़ि देलीह। सड़कपर धूरि छल, कच्चा दूधक गन्ध छल, आ बसक पिछला चक्का नीचाँ जलजमावमे भोरक आकाश उलटल देखाइत छल। एहि ठाम हर कागद सुराग नहि छल; मुदा आइ लता एही बस-अड्डापर एक व्यक्तिसँ भेटबाक लेल अपबाक छलीह।

लता पहुँचलि तँ हुनकर संग मिथुनक मामू नहि, पड़ोसक वृद्धा कमली छलीह। ओ राति भरि जागि मिथुनक पहिरल नील कुरताक नाप फेर लिखने छलीह, मुदा आजु कागद बाहर नहि निकाललीह। स्थानीय सहायता-कक्षसँ संदेश आयल छल—दोसर बच्चाक खोजमे पकड़ाएल अभिलेखमे अड्डाक एक सम्पर्क-ठाम भेटल अछि। सूचना स्पष्ट छल जे एहि कड़ीसँ मिथुनक ठिकान स्थापित नहि भेल। लता किछु देर ओहि पाँति पर अटकि रहलीह। “जँ दोसर बच्चाक समाचार अछि तँ हमरा एतय किएक बजाओल?” ओ पुछलीह। नैरा कहलीह, “कारण अहाँ जे दलालक नाम पिछला बेर सुनने रही, ओकर कार्यालय एही बाटपर रहल कहि एक गवाह बतौने अछि। मुदा ओ सुनल नाम अछि। भेटबाक अर्थ आरोप लगायब नहि।”

बस-अड्डाक पिछला दुआरपर दू अधिकारी, एक बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता आ एक स्त्री अपन छोट लाल थैली पकड़ने ठाढ़ छलि। स्त्रीक नाम चमेली छल। हुनकर बारह वर्षक बेटी गुंजा ग्यारह दिन पहिने घरसँ निकललाक बाद नहि घुरल छलि। घरक एक परिचित कहने रहए जे पढ़ाइ-संग हलुक कामक अवसर भेटत, मुदा चमेली लिखित अनुमति नहि देलनि। ओ पहिने अपन बेटीकेँ पड़ोसक रिश्तेदार लग खोजने छलीह; चारि दिन बाद गुमशुदगीक सूचना दर्ज भेल। आजु हुनका बेटीक ठामक पुष्टि भेटल छल, मुदा ओकरा सुरक्षित घुरेबाक औपचारिक प्रक्रिया चलि रहल छल। “हम एतय ककरो धरए नहि आएल

छी,” चमेली कहलीह। “हमरा ई जानबाक अछि जे हमर बेटी अपन मर्जी सँ नहि घुरि सकल, तखन ओकरा के रोकेलक।”

बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता पहिले स्पष्ट कएलीह जे गुंजाक बयान सार्वजनिक मेजपर नहि पढ़ल जाएत। एक जाँच-अधिकारी अलग प्रतिलिपिक कात कागद राखलनि। गुंजा एक सिउनाइ-कक्षमे भेटल छलीह, जतए ओकर नामक बदला ‘नव सहायिका’ लिखि उपस्थिति बनैत छल। ओकर अपन कथन, ओहि कक्षक प्रवेश-बही आ अट्टासँ जारी दू पड़ावक प्राप्ति-पर्चीक तिथि परस्पर मेल खाइत छल। पहिल पर्चीपर ओकरा ‘सहायक’ कहि एक वयस्कक हवाले करबाक हस्ताक्षर छल, दोसरपर सिउनाइ-कक्षक जिम्मेदार व्यक्तिक प्राप्ति। बच्चीक सहमति वा अभिभावकक अनुमति प्रमाणित करएवाला कागद नहि भेटल। बहीक मूल प्रति अधिकारी सुरक्षित कएने छलाह; प्रतिलिपिपर ककर हस्ताक्षर असल अछि, तकर परीक्षण शेष छल।

“तखन तस्करी सिद्ध भऽ गेल?” लताक प्रश्न एक साँस मे निकलल। अधिकारी उत्तर देलनि, “एक बच्चीकेँ ओकर अभिभावकक अनुमति बिना श्रम लेल एक ठामसँ दोसर ठाम पहुँचाएबाक पहिल पुष्ट क्रम भेटल अछि। बच्ची अपन गवाहीमे कहने अछि जे ओकरा घर जाएबाक अनुमति नहि भेटैत छल। एहि आधारपर आपराधिक जाँच खोलल गेल अछि। के कोन भूमिका निभौलक, के धोखा देलक, आ दोष अदालतमे ककर सिद्ध होएत—ई एखन अलग प्रश्न अछि।” लता पुछलीह, “मिथुन?” अधिकारी साफ कहलनि, “मिथुनक नाम एहि दू पर्चीमे नहि अछि। ओकरा एहि कक्षक बच्चासँ जोड़बाक आधार एखन नहि।” लता मुँह नीचाँ कएलीह, मुदा ठाढ़ रहलीह।

चमेली अपन थैली खोलि बेटीकेँ देबाक लेल लाएल पुरान स्कूलक कापी देखौलीह। पन्नाक कात गुंजा नीला धागा सँ फूल सिउने छलीह। “ओ सिउनाइ जानैत छलि, तँ सब कहत जे अपने काम करए गेल रहत,” चमेली कहलीह। “सिउनाइ सिखबाक चाह आ परदेशमे बन्द रहबाक इच्छा एक बात नहि।” बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता कहलीह जे गुंजा अही प्रश्नपर स्पष्ट बोलेलीह—ओ कपड़ा काटब सीखए चाहैत छलीह, मुदा विद्यालय छोड़ए वा अपन कमाइ आनक हाथमे देएब स्वीकार नहि कएने छलीह। गुंजा अपन परिचित

शिक्षिकासँ भेंट करबाक आग्रह सेहो कएने छलीह। एहि आग्रहकेँ अधिकारी बच्चीक पुनर्वासक आवश्यकताक रूपमे लिखलनि, ककरो भाषणक प्रमाणक रूपमे नहि।

अट्टाक पूर्वी गलीमे ओ व्यक्ति बैसैत छल जेकरा खोजबाक खबर लता सुनने छलीह। दुआरपर नाम-पट्टी नहि लगल छल; खाली गोंदक चारि निशान बचल छल। भीतर एक मेजपर नकद-रसीदक फाइल गड्डी आ पुरान कुर्सी रहए। मालिक कहलनि जे कार्यालय भाड़ापर छल, किरायेदार दू दिन पहिने चलि गेल। “कहाँ गेल?” लता पुछलीह। “हमरा ठिकाना नहि,” मालिक कहलक, “भाड़ाक आखिरी किस्तो बाँकी अछि।” नैरा दुकानक मालिकसँ किरायेदारीक रजिस्टर देखएबाक अनुमति माँगलीह। कागदमे एक सम्पर्क-नाम छल, मुदा फोन नम्बरक अन्तिम दू अंक धुँधला छल। ओहि नामक आधारपर मालिककेँ अपराधक गवाह मानबाक बात ओ नहि कहलीह; अधिकारीक मार्फत मूल रजिस्टरक वैध जाँचक आवेदन भेल।

लता भीतर घुसि कुर्सीकेँ एक बेर हाथसँ छूलीह। “मिथुन एहि कुर्सीपर बैसल होएत?” हुनका मुँहसँ सहज प्रश्न निकलल। नैरा उत्तर नहि गढ़लीह। कमली, जे एखन धरि चुप छलीह, कहलीह, “कुर्सी एक्के रंगक भऽ सकैत अछि, बच्चाक बाट अलग। हमर पोताक नाम एतय खोजि कऽ लिखि देब, से हम नहि चाहब।” लता हुनका देखलीह। वृद्धा अपन नाम नहि, हुनकर बेटाक नाम लेबाक अधिकार कतेक सावधानीसँ बचा रहल छलीह, से देखैत लताक आँखि भरि अएल। ओ अपन कापीपर कार्यालयक ठाम लिखलीह, नीचाँ ‘प्रत्यक्ष उपस्थितिक प्रमाण नहि’ सेहो जोड़लीह।

गलीसँ निकलैत हुनका एक बस-कर्मचारी रोकलक। ओ कहलक जे किछु दिन पहिने एक पुरुषक संग दुबरी बच्ची देखल रहए, हाथमे सिउनाइक थैली छल। अधिकारी ओकरा अलग कोनापर ठाढ़ कऽ समय पुछलनि। ओ पहिने मंगल कहलक, फेर बुधक साँझ। गाड़ीक रजिस्टर देखलापर ओ स्वीकार कएलक जे ओकरा दिन निश्चयपूर्वक याद नहि। गुंजाक कपड़ाक विवरण सुनि कऽ ओ कहलक, “हँ, ओहेन। जरूर ओएह।” चमेली झट आगा बढ़लीह। बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता बीचमे कहलीह, “पहिने जे देखलहुँ से कहू; आइ जे सुनलहुँ, ओकरा अपन देखल स्मृतिमे नहि जोड़ू।” कर्मचारीक बयान ‘संभावित दृश्य, तिथि अनिश्चित’ लिखल गेल।

जखन अधिकारी कागद समेटैत छलाह, अड्डाक पाछाँ तीन मजदूरक छोट टोली अएल। केदार बौरीक हाथमे लकड़ीक पटरा नहि, पुरान मजदूरीक समय-पर्ची छल। हुनका संग जुगल, फुलवा आ शम्भू छलाह—ओ सभ, जे राहतक बरामदा ठीक कएने रहथि आ जकर मजदूरी ‘सेवा’ कहि रोकल गेल रहए। कतेको दिन सँ केदार हुनका सभक अलग समय, काम आ तय दरक बयान जोड़ि रहल छलाह। आजु ठेकेदारक अस्थायी कार्यालयमे सामूहिक दावा देबाक दिन छल। बस-अड्डापर पुलिस देखिकऽ शम्भू पाछाँ हटए लगल। “फेर नाम-पता पूछत,” ओ कहलक। केदार उत्तर देलनि, “मजदूरीक कागद पर ठाढ़ होएब अपराधक कतारमे ठाढ़ होएब नहि अछि।”

लता केदारकेँ चिन्हलीह। पिछला बेर राहत-कक्षक टूटल पटरा ठीक करैत हुनकर हथेलीपर फोका देखलनि रहए। ओ पुछलीह, “अहाँ जे ठेकेदारक लोकक संग काज करैत रही, ओहि दलालक बात कखनो सुनलहुँ?” केदार अपन बही बन्द नहि कएलनि। “नाम सुनल अछि,” ओ कहला, “मुदा हमर ठेकेदार आ बच्चा लऽ जेबाक व्यक्ति एक छथि, से हम नहि जनैत छी। मजदूर लऽ जाएब आ बच्चा बिनु अनुमति लऽ जाएबकेँ शब्दसँ एक नहि करब।” लता पछतावा सँ कहलीह, “हम नाम पूछलहुँ, दोष नहि ठहरौलहुँ।” केदार उत्तर देलनि, “ठीक अछि। तखन एक-दोसराक कागद एक-दोसरासँ बचा कऽ राखू।”

ठेकेदारक मुनीम सामूहिक दावा देखिते कहलक जे काम बाढ़क समय स्वेच्छासँ भेल छल। फुलवा अपन प्रतिवेदनमे डूबैत बरामदाक पाट उठेबाक घड़ी लिखने छलीह। “राहत-कक्षमे भोजन मुफ्त भेटल,” ओ कहलीह, “मुदा हमर पसेना मुफ्त नहि माँगल गेल छल। दरक बात जुगल, शम्भू आ हम तीनू सुनने रही।” मुनीम कहलक जे ओकरा पंजीमे एहन दर नहि। केदार तत्क्षण कहला, “तँ हम कागद देबाक अएल छी। जँ पंजीमे नाम नहि, तँ पंजी देखब चाहैत छी। ‘प्रवासी’ लिखि सभकेँ एक मजदूर नहि बना दिअ।” शम्भू अपन कामक दिन फुलवासँ दू कम बतौलक; सामूहिक दावा एहि भेदसहित लिखल गेल।

मुनीम प्रस्ताव रखलक जे एकमुष्ट छोट रकम देल जाए, आ ओ सभ कागद वापस लऽ जाथि। जुगल तुरन्त मानए चाहलक। ओकर घरसँ दवाइक सन्देश आयल छल। फुलवा असहमत भेलीह। “अहाँ जे रकम दैत छी, ओ ककर कतेक देय मानल जायत? एक बेर हस्ताक्षर कऽ देलापर बाकी माँग बन्द होएत की?” केदार कागद आगाँ धकेललनि। “हम

सभक नामपर कियो चुपचाप समझौता नहि करत।” अन्ततः मुनीम रकमक प्रस्ताव लिखित दऽ प्राप्ति-पंजीमे आवेदन दर्ज केलक। केदार ओकरा भुगतान नहि मानलनि; जुगलक तत्काल जरूरत लेल अलग अग्रिमक माँग जोड़लनि। देयक विवाद जीवित रहल, मुदा ओकर गणना आब हवा मे नहि छल।

ओहि समय एक युवक मजदूरसभकेँ देखिकऽ कहलक जे अड्डाक पाछूक कार्यालय रोजगार उपलब्ध करबैत अछि, ताहि सँ बच्चीक समाचार सेहो ओतहि भेटत। केदार तकरा रोकलनि। “हमरा सभकेँ काजक लेल जे नम्बर देल गेल, ओकरा जाँचकर्ता देखथि। बिना मिलानक सभ काम देनिहारकेँ एक्के दलाल कहब गलत।” नैरा ओकर पर्चीक नकल अनौपचारिक रूपेँ नहि लेलीह। केदार अनुमति देलनि जे नम्बरक आधिकारिक मिलान कराओल जाय; हमर मजदूरीक पूरा विवरण जाँचसँ बाहर रहय। अधिकारी अलग प्राप्ति बनौलनि। एहि सावधानीसँ लताकेँ लगल जे खोज अगिला सीढ़ी चढ़ि रहल अछि, मुदा एको सीढ़ी बिना पकड़ने छलाँग मारब एखनो खतरनाक रहत।

अड्डाक ओहि दोसर कात दुर्गा गंगाई अपन टोकरी उतारि रहल छलीह। पहिने बजारक बड़का व्यापारी हुनकर मखान-चिउड़ाक मिश्रण उधारीपर लऽ जाइत, हिसाब घुरए नहि दैत। आइ ओ छोट-छोट पुड़िया नहि, दू अलग वजनक थैली तैयार कएने अएलीह। मखानक सौंठ-सुगन्ध आ भुजल चिउड़ाक तात दुपहरक धूरिसँ अलग चिन्हाएत छल। पुरान व्यापारीक मुनीम पुकारलक, “हमर लेल माल नहि?” दुर्गा कहलनि, “पहिनुक देय लिखल अछि। आब ई खेप आगाँक दामक हिसाबपर देब। अहाँक उधारीक सीमा हम स्वयं तय करब।” मुनीम मुँह फेरि दोसर दोकान चलि गेल।

दुर्गा जे नवा खरीदारसँ भेटबाक हेतु अएलीह, ओ बस-स्टैंडक चाय आ भोजन-पहुँचेबाक छोट टोली चलबैत छलीह। रुखसाना पहिल बेर हुनकर मिश्रण चाखि नोनक मात्रा पुछने छलीह। एखन ओ ग्राहकक रुचि आ खराब नहि होएबाक अवधि पर प्रश्न उठौलीह। “हमर ग्राहक सभ लम्बा बाट चलैत अछि,” रुखसाना कहलीह, “जँ भिजल थैलीमे चिउड़ा नरम भऽ गेल तँ दाम हम कियैक देब?” दुर्गा ढकनवला दून ममूना खोललीह। एकटा काल्हि सँ बन्द छल, दोसर भोरक तैयार। ओ स्वादमे अन्तर लुकौलीह नहि। “एहि

खेपकें भोर-साँझ बेचू” ओ कहलीह, “आ बिकए नहि तँ नवा खेपक दाम घटेबाक बदला मात्रा घटाउ।”

रुखसानाक चाय-टोलीक एक किशोरी कर्मचारी पूछलीह, “आइ अड्डापर एतेक लोक किएक जमा अछि?” दुर्गा उत्तर देलीह, “एक माएक बच्चीक समाचार भेटल अछि। बाकी सभ लोक अपन-अपन काजमे अएल अछि।” किशोरी कहलीह जे गत सप्ताह एक बच्चीकें एगो स्त्री हाथ पकड़ि बसमे चढ़बैत देखने रहए। रुखसाना ओकरा सावधानीसँ पुछलीह, “कखन? कोन बस?” किशोरी चुप भेलीह। “हम ककरो मुँह नहि चिन्हल,” ओ कहलीह। दुर्गा ओकरा सत्य बोलबाक लेल सराहना नहि कएलीह; ओ केवल कहलीह, “जेतेक देखलहुँ से लिखाएब चाही तँ अधिकारी लग चलू। दू दिनक भीड़क बात मिलाकऽ अपन स्मृति बदलि नहि लेब।” किशोरी अपन भोजनक पारी पूरा कऽ बादमे बयान देबाक निर्णय लेलीह।

लताक फोनपर अनजान नम्बर सँ सन्देश अएल—‘बच्चा नदीपार भेटि जायत, पहिने किराया पठाउ।’ सन्देशमे न मिथुनक नाम छल, न देखबाक समय, न कोनो प्रमाण। लता एक क्षण जेबमे रखल रुपैया गिनए लगलीह। कमली हुनकर हाथ रोकलीह नहि। “जँ पैसा पठाएब तँ हमरा कहि कऽ पठाएब,” ओ एतबे कहलीह। लता फोन नैराकें देखौलीह। नैरा नम्बरक स्क्रीन सुरक्षित करबैत आधिकारिक सम्पर्कपर अग्रसारित करबाक सलाह देलीह; तत्काल रुपैया नहि पठेबाक निर्णय लता स्वयं कएलनि। “हम पैसाक कारण नहि,” ओ कहलीह, “बेटाक लोभमे अपना आँखि बन्द नहि करब।” हुनकर आवाज भारी छल; निर्णयमे कोनो वीरताक प्रदर्शन नहि छल।

चमेली एतय सँ विदा होएबासँ पहिने बाल-सुरक्षा कार्यकर्तासँ फेर पूछलीह जे गुंजा कखन घर अओतीह। कार्यकर्ता हुनका प्रक्रिया बुझौलीह—बच्चीक स्वास्थ्य-जाँच, सुरक्षित अभिभावक-सम्पर्कक पुष्टि आ ओकर अपन इच्छा सुनबाक व्यवस्था। चमेली कहलीह, “हम माए छी, मुदा बेटी जे सहने अछि से ओकरा अपने कहबाक दियौ। बार-बार सभ अधिकारी एक्के प्रश्न पुछताह तँ ओ की कहतीह?” कार्यकर्ता सहमत भेलीह जे अनावश्यक दोहराव रोकल जाए। चमेली अपन घरक नम्बर दोहरबैत एक पाँति जोड़लीह—“ओ स्कूलक कापी माँगने अछि, तकर सूचना हमरा समयसँ दियौ।”

दुपहरक बैठकमे गुंजाक चिट्ठीक एक वाक्य मात्र, ओकर अनुमतिस्ँ, चमेलीकेँ पढ़ि सुनाओल गेल। बच्ची लिखने छलीह जे मालिकिन ओकरा सिलाइक धागा मिलबैत समय नामसँ बजबैत छलीह, मुदा जेबमे रखल घरक ठिकानाक चिट्ठी छीनि लेल गेल छल। एहि बयानक पहिल हिस्सा हुनकर रोजक अनुभव छल, दोसर हिस्सा जाँचयोग्य आरोप। जाँचकर्मी चिट्ठीक मूल पन्ना सुरक्षित रखलनि। ओहि कार्यशालामे भेटल दोसर दू किशोरक स्थितिक जाँच अलग चलि रहल छल; हुनका सभकेँ एक्के कथामे समेटि सार्वजनिक ‘उद्धार’क संख्या बनएबाक प्रस्ताव अधिकारी स्वीकार नहि कएलनि। चमेली चुपचाप कापी थैलीमे रखलीह।

साँझ होमए सँ पहिने कार्यालयक भाड़ा-रजिस्टरक मूल पृष्ठ अधिकृत निरीक्षणमे खोलल गेल। ‘सम्पर्क’ शब्दक कात एक पहिचान, दोसर हस्ताक्षर आ तेसर दिनांक छल। गुंजाक पहिल प्राप्ति-पर्चीमे लिखल सम्पर्क-नामसँ एहि पृष्ठक एक नामक लिखावट मिलैत देखाइत छल, मुदा लिखावट समान होएब व्यक्ति समान होएबाक अन्तिम प्रमाण नहि छल। एखन धरि पुष्टि भेल जे एके सम्पर्क-ठाम सँ गुंजाक आवागमनक दू मूल पर्ची जारी भेल छल; ताहिमे बच्चीक अनधिकृत श्रम-स्थानान्तरणक पहिल प्रलेखित कड़ी देखाइत छल। कार्यालयक किरायेदारक जिम्मेवारी आ कड़ीमे शामिल आन व्यक्तिक भूमिका लेल मूल हस्ताक्षर, फोन आ प्रत्यक्ष बयानक जाँच जारी रहल।

केदारक दल कार्यालयसँ निकलि अड्डाक छज्जा नीचाँ बैसल तँ जुगल अपन घरक दवाइक पर्ची निकाललक। “जँ छोट अग्रिम भेटैत तँ साँझक गाड़ी पकड़ि लैतहुँ,” ओ कहलक। फुलवा अपन झोरासँ बचल दू रोटी निकाललीह। “कागदक लेल आयल छी, भूख सेहो भऽ रहल अछि,” ओ कहलीह। शम्भू हँसैत पुछलक, “की मजदूरीक पंजीमे भोजनक समय सेहो लिखब?” केदार कहला, “जँ काजक बीच खायल होएत तँ लिखब; आइ अपन अधिकार माँगए आयल छी, से भोजनक दाम अपने देब।” तकर बाद जुगलक लेल अग्रिम माँगबाक लिखित प्रति ओकरा हाथमे देलनि। ओकर घरक संकटकें सामूहिक विवादक नामपर टारल नहि गेल।

दुर्गा एहि बीच रुखसानाक टोली लग अपन पहिल थैलीक बिक्री देखबए घुरलीह। तीन यात्री चिउड़ा-मखान मिश्रण लेलक, एक कहलक जे सौँठ तेज अछि। दुर्गा एहि आपत्तिक

बात कापीमे लिखलीह। खरीदल तीन पुड़ियाक रकम रुखसानाक पास तत्काल जमा छल; दुर्गा अपन हिस्साक अग्रिम स्पष्ट देखलीह। रुखसाना कहलीह, “दोसर खेपमे स्वाद हलुक करब?” दुर्गा उत्तर देलीह, “सबकँ एक्के स्वाद नहि चाही। दू छोट मात्रा बनायब, मुदा एकर लागत पहिने मिलाएब।” ओ खटालक नाप-विवादक बारे सुनने छलीह; एखन अपन तौल पर अपने आँखि रखैत चायवला लग सँ पानि पीबए गेलीह।

लता घर घुरबाक पहिने चमेली लग गेलीह। चमेली हुनका गुंजाक पूरा बयान नहि सुनौलीह; केवल बेटी सुरक्षित देखेखमे अछि, से कहलीह। लता पुछलीह, “अहाँ आब रातिमे सुतब सकब?” चमेली उत्तर देलीह, “जखन बेटी अपने दुआरक भीतर आबि अपन मनसँ किछु खाएत, तखन देखब। एखन ओकरा की पूछल गेल, ओ कतेक डेराएल अछि—ई सब हमरा नहि बुझल।” लता कहलीह, “हमर मिथुनक ठाम नहि भेटल।” चमेली हुनकर काँधपर हाथ नहि रखलीह; ओ अपन लाल थैलीमे सँ एक साफ कागद काढ़ि देलीह। “जखन जरूरत पड़ए तँ एतय लिखब। हमरा सेहो लिखैत सीखए पड़ल।”

साँझक पहिल गाड़ी छूटि गेल तँ केदार, फुलवा आ शम्भू दोसर गाड़ी धरि रुकलाह। जुगल अपन अग्रिम-प्राप्तिक उत्तरक लेल कार्यालय लग घुरल; लिखित स्वीकृति नहि भेटल, मुदा आवेदनक प्राप्ति-क्रमाङ्क ओकर जेबमे छल। केदार कहला जे बाकी मजदूरसभकँ अगिला भेटक तिथि अलग-अलग बताओल जाए; ककरो यात्रा-भाड़ाक जिम्मा बिना पूछने नहि धरल जाए। फुलवा अपना घर फोन कऽ कहलीह जे कमाइ नहि भेटल, मुदा दावा दर्ज भेल अछि। उत्तरमे बच्चीक आवाज सुनाइत रहए—“माए, भात राखि देब?” फुलवा कहलीह, “हम आबि रहल छी। रोटी पहिले खा लेब।”

सहायता-कक्षमे आखिरी पन्ना भरैत अधिकारी दू फाइलक कात अलग रंगक धागा लगौलनि। गुंजाक स्थानान्तरण-संबन्धी पंजी, संरक्षित बयान आ काजक ठामक मूल अभिलेख एक फाइलमे छल; मिथुनक हाट, तेलदोकान, चप्पलक टूटल फीता आ सम्पर्क-अर्जीक पन्ना दोसरमे। नैरा कहलीह, “एक ठामक नाम मिलि जएत तँ तुलना कएल जा सकैत अछि; मुदा मिलानक अनुपस्थिति सेहो लिखू।” अधिकारी तिथि सहित लिखलनि जे गुंजाक मामला जाँचक पुष्ट कड़ी धरि पहुँचल, मिथुनक सम्बन्धे एतयसँ कोनो पुष्ट निष्कर्ष नहि। महेशक मृत्यु-संबन्धी अलग दस्तावेज एहि मेजपर आनल गेलो नहि।

रातिमे लता अपन रसोइक देहरीपर बैसि मिथुनक थारी धो देलीह। पहिने ओ थारीमे प्रतिदिन भात ढाकि राखैत छलीह; आजु ओ ओतय एक छोट नीला कपड़ा राखि देलीह, जे कुरताक नाप लएबाक समय बचल छल। एहन नहि जे प्रतीक्षा घटल रहए। ओ केवल भोजनकेँ प्रतीक्षाक कैदसँ बाहर काढ़ए चाहैत छलीह। कमली चूल्हि पर दलिया चढ़ौलीह। लता कापी खोलि तेलदोकानक उधारी-पन्ना देखबाक अगिला समय लिखलीह। ओहि कापीमे नव कार्यालयक पता सेहो छल, ओकर नीचे साफ अक्षरमे सीमा—‘मिथुन ओतय देखल गेल, एकर प्रमाण नहि।’

दूर अड्डापर रुखसानाक टोलीक खाली पात्र धुलि रहल छल। दुर्गाक पहिल खेपक आधा हिस्सा बिकि गेल; बाकी मालक दाम आ स्वादक हिसाब अगिला भोर फेर होएत। केदारक मजदूरसभक देय बकायाक रूपमे लिखल रहल; गुंजाक घर-वापसीक प्रक्रिया एखन पूरा नहि भेल छल। एहि रातिक उपलब्धि एक बच्चीक अनधिकृत श्रम-स्थानान्तरणक क्रमपर जुटल पुष्ट अभिलेख छल, जाहिसँ जाँचकेँ पहिल ठोस बाट भेटल। मुदा लताक घरक दुआर तखनहुँ मिथुनक पएरक आहट बिना छल। गुंजाक सच्चाइ ओकर अपन छल; ओकरा मिथुनक उत्तर बनाय देल जाए तँ पहिल चोट पर दोसर अन्याय चढ़ि जाएत।

अध्याय ८२ • मैथिलीक पन्ना

मेजक दराज खोलिते मैथिलीक नखमे पुरान कागदक एक पातर रेशा अटक गेल। ओ दराजमे राखल लकड़ीक पेटी निकालि ओसारमे रखलीह। पेटीक तलहटिमे कपड़ाक बीच दू तह छल—एकमे ईशानक साफ अक्षरवला पोथीक पन्ना, दोसरमे धुँधला नीला स्याही आ किनार पर चढ़ल मैथिलीक लिखावट। पिछला राति बरखा नहि भेल छल; तथापि ओ पहिने खिड़कीक सिटकिनी जाँचलीह, फेर टेबुल पर सूखल कपड़ा बिछौलीह। घरक एहि छोट कोठरीमे अतिथि कम अबैत छलाह। आइ हरिमोहन पाठक आवताह, ईशान सेहो रहताह, आ मैथिली पहिल बेर अपना हाथक पन्ना अपन भाषामे पढ़ि सुनौतीह।

सरिता रसोइघर सँ झाँकलि। “खाली पेट पेटी नहि खोलियौक,” ओ कहलीह। मैथिली उत्तर देलीह, “दू क्षणमे।” सरिता ओहि शब्दपर हँसलीह नहि। हुनका ज्ञात छल जे ‘दू क्षण’ कहि विद्वान लोक कतेको बेर भोजनक समयक संग रान्हनिहारक समयो लऽ लैत छथि। ओ थारीमे पोहा आ गरम दूध राखि देलीह, मुदा कोनो पन्ना न छूलीह। “एहि पर धूरि नहि पड़ए, तँ दुआर बन्द करब?” मैथिली पुछलीह। सरिता कहलीह, “दुआर बन्द करू, मुदा हवा लेल ई झरोखा खुलल रहए दियौक। एतय दुपहरिया घाम नीचाँसँ पड़ैत अछि।” मैथिली पहिल बेर गौर कएलीह जे कोठरीक उजियारो दोसरक रोजक देखरेखसँ व्यवस्थित अछि।

पेटीक भीतरी आवरणमे पुरान नाप-पट्टी आ एक गमछा छल। मैथिली गमछा हटेलनि तँ दू पन्नाक बीच सँ अलग कएल गेल पातर चिट्ठी खसल। ओकरा ओ तुरन्त पुस्तकक अंश नहि मानलीह। चिट्ठीपर सामग्रीक खरिदक अङ्क, एक अपूर्ण तिथि आ तीन अक्षर छल। नाम सिद्ध करबाक उत्कण्ठामे एहि टुकड़ाकेँ अर्थ देब सहज रहैत, मुदा ओ ओकरा अलग लिफाफामे रखलीह। मूल पन्नाक क्रम, स्याहीक अन्तर आ किनारक चिन्ह देखबाक लेल हरिमोहन एक आवर्धक शीशा अनबाक बात कहने छलाह। मैथिलीक लग एखन मात्र अपन स्मृति छल—कुन दिन ओ संशोधन लिखलनि, आ कुन दिन लिखल कागद ईशान लग गेल। स्मृति सूक्ष्म छल, मुदा तिथि सभठाम एक्के स्पष्ट नहि।

ईशान भीतर अएलाह तँ हुनकर हाथमे अध्यापनक फाटल बस्ता छल। पाठशालाक ओसारमे भिजल अभ्यासपत्र एखन तक फेर तैयार नहि भेल छल; हरिमोहन कल्हि एक सूची भेजने छलाह। “एतेक पहिने किएक बजौने छी?” ओ पुछलनि। मैथिली पन्ना ओरियेलनि। “किएक तँ जखन अहाँक विद्यार्थीसँ लिखल अनुच्छेदक लेखक पुछल जाइत अछि, अहाँ पन्ना खोलैत छी। हमरा अपन अनुच्छेदक प्रश्न पुछबाक लेल वर्षो सँ अपन स्मृति मात्र देल गेल। आइ दूटा पन्ना अछि।” ईशान कुर्सीपर बैसलाह। ओ साफ अक्षर देखलनि आ एक क्षणमे पहिचान लेलनि। “ई हमर पहिल मसौदा अछि,” ओ कहलनि। मैथिली दोसर पन्ना आगाँ कएलीह। “आ ई ओकर बाद लिखल सुधारक प्रति अछि। एकरा केवल मसौदाक किनार कहि नहि टारू।”

पहिल पन्नामे प्रमाणक भेद सम्बन्धी एक विवेचन छल। एक स्थानपर उदाहरणक आधारसँ निष्कर्षक सम्बन्ध अस्पष्ट रहि गेल छल; दोसर पन्नामे पूर्वपक्षक आपत्ति राखि ओकर उत्तर बदलल गेल छल। मैथिली दुनू संस्करणक ओहि खण्डकेँ क्रमसँ पढ़लनि। “एतय अहाँक वाक्य कहैत छल जे समान परिणाम देखलासँ समान कारण निश्चित बुझि पड़ैत अछि। हम पूछने रही—आन कारणक संभावना हटाओल गेल अछि की? तकर बाद उदाहरणमे नवल शर्त जोड़ल गेल। ई केवल अल्पविराम नहि।” ईशान कहला, “हम ओहि आपत्तिपर चर्चा केने रही।” मैथिली उत्तर देलीह, “तँ हमर दावा अहाँक सभ ज्ञान हमरा अछि, से नहि। हमर प्रश्न ई अछि जे लिखित तर्कक बदलल रचना के कएल, आ पुस्तकमे ओकर नाम कोन रूपेँ जाएत।”

हरिमोहन पहुँचलाह तँ ओ पन्ना हाथमे लेबाक पहिने कागदक कोना पर नजरि देलनि। “कच्चा अंगूठासँ नहि छुइब,” ओ कहलनि, आ अपना झोरासँ साफ कपड़ा निकाललनि। हुनकर आँखि संशोधित विवेचन पर टिकि गेल। “दार्शनिक आपत्ति महत्वपूर्ण अछि,” ओ कहलनि, “मुदा हस्तलिखित पन्ना एकर प्रमाण अछि जे कोनो हाथसँ ई बात लिखल गेल; सहलेखनक श्रेय लेल पन्नाक इतिहासो चाही।” मैथिली तुरन्त मानलीह। “एहि इतिहासक खोज हमर माँगक हिस्सा अछि,” ओ कहलीह, “इतिहासक अभावकेँ हमर मौनक प्रमाण नहि बना दिअ।” ईशान पुछलनि, “तखन की पहिने लिखावट मिलाओल

जाए?” हरिमोहन कहलनि, “लिखावट, तिथि, मसौदाक क्रम आ जकरा पन्ना पढ़ाओल गेल, ओकर बयान—सभ अलग-अलग।”

मैथिली पुरान बही खोललीह। बहीमे एक पन्नाक आगाँ ‘पूर्वपक्ष फेर’ लिखल छल; ओहि शब्दक नीचाँ दोसर रंगक स्याही सँ उदाहरण बदलबाक संकेत छल। ईशान कहलनि, “एहि बहीमे हमर टिप्पणी सेहो अछि।” “अछि,” मैथिली कहलीह, “आ से मेटाब नहि। जे अहाँ लिखलहुँ, ओकरा अहाँक नामसँ पढ़ल जाए। जे हम लिखलहुँ, ओकरो।” हरिमोहन दूनू स्याहीक रंग देखिकऽ सावधान कएलनि जे रंग भिन्न होएब मात्रसँ तिथिक क्रम निश्चित नहि होइत। मैथिली सहमत भेलीह। ओ स्वयं लिखल पन्नापर सन्दिग्ध तिथि लुकेलीह नहि। कथनक सत्यता लेल अपन पक्षक कमजोर बिन्दु सार्वजनिक करबाक जोखिम ओ स्वीकार कएने छलीह।

दरवज्जापर अचानक लकड़ीक तीन हलुक ठकठकाहट भेल। फरीद चिक अपन भिजल चप्पल उतारि भीतर अएल। ओकर हाथमे तालक कापी नहि, विद्यालयक प्रवेश-आवेदन आ दोकानक साप्ताहिक हिसाब छल। हरिमोहनकेँ ओ पाठक समय पूछबाक लेल खोजि रहल छल। “आइ भीतर बैसक ठीक समय नहि हो तँ बाहर ठाढ़ रहब,” ओ कहलक। मैथिली ओकरा भीतर बजौलीह, मुदा पन्नासभ कने किनार खिसका देलीह। “ई विवादक मूल कागद अछि; बिना जाँचक फोटो नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। फरीद माथ हिलौलक। “हम आवेदनक एक पाँति बुझबए अएल छी,” ओ कहलक, “दोकानक खाता हमर जेबमे अछि; ओकरा सेहो बिना पूछने कियो नहि पढ़त।” हरिमोहन हुनकर दूनू कागद लेल अलग समय राखबाक वचन देलनि।

फरीदक परिवार बाजारमे छँटनाइ आ बिक्रीक पुरान धन्धासँ जुड़ल छल। पिता चाहैत छलाह जे बेटा दुपहरिया ग्राहकक आगमनपर दोकानमे रहए। फरीद विद्यालयक सन्ध्याकालीन कक्षा संग ताल-शिक्षण सीखए चाहैत छल, मुदा परिवारक देयसँ हाथ झाड़ि भागबाक ओकर मन नहि छल। एहि हेतु ओ कापीमे सात दिनक समय बाँटने छल—भोरमे दोकानक हिसाब, किछु दिन माल उतारबाक पारी, आ निर्धारित कक्षाक घड़ी। पिता कहने छलाह, “हिसाब करबह तखन कारोबारक बारीक बात बुझबह।” फरीद उत्तर

देने छल, “हँ, मुदा कारोबार बुझबाक नामपर हमर पाठ अधूरा नहि रहत।” आजु ओकरा विद्यालयक लिपिकसँ लिखित समय-सहमति चाही छल।

हरिमोहन पुछलनि, “एहि आवेदनमे परिवारक स्वीकृति किएक लिखल अछि?” फरीद कहलक, “हम वयस्क छी; कक्षाक शर्त पूरा करब हमर जिम्मा। घरवालाक सहमति परिवारक काजक बँटवाराक लेल चाही, विद्यालयमे प्रवेशक अधिकारक बदला नहि।” हरिमोहन पन्ना पढ़लनि। छोट अक्षरमे ‘सन्ध्याकालीन अध्ययन’ छल, मुदा कार्यालयक कर्मि ओकरा सामान्य दिनक कक्षाक आवेदन मानि घुरा देने रहए। मैथिली कहलीह, “दूनु समयक तालिका अलग करबाक लिखित निवेदन दिअ। अहाँक परिवारक काज विद्यालयक अयोग्यताक कारण नहि बनए, मुदा जे घंटा अपन नामपर लेबह, ओकर हिसाब निभाएब।” फरीद आवेदनमे सुधार लिखि लेलनि।

एहि बीच सरिता थारी समेटबाक अप्लीह। मेजपर राखल पन्ना देखिकऽ ओ ठिठकलीह। “ई कतेक पुरान अछि?” मैथिली कहलीह, “बहुत पुरान। अहाँक किछु कापी सेहो तखनक छैक।” सरिता तुरन्त अपन कापी न निकाललीह। “हमर लिखल हिसाब आ अहाँक तर्क एक बात नहि,” ओ कहलीह, “मुदा जे समयमे हम भोजन पहुँचा रहल छलहुँ, नकल करबाक आग्रह होइत छल। ओकरा एक दिन अलग बैसि देखब।” मैथिलीक मुँह खुलल, फेर बन्द भऽ गेल। आइ ओ अपन हस्तलेखक दावा लऽ उठल छलीह; सरिताक कापीकेँ बिना हुनकर अनुमति अपन दावाक सहायक प्रमाण बना देब फेर ओही पुरान गलती होएत। “अहाँ समय तय करू,” मैथिली कहलीह। सरिता थारी उठा चलि गेलीह।

हरिमोहन एकटा अलग पन्नापर तीन शीर्षक लिखलनि—मूल तर्क, संशोधनक प्रस्ताव, सम्पादन/प्रतिलिपि। “एहि सँ अंतिम निर्णय नहि निकलत,” ओ कहलनि, “मुदा काजक प्रकार देखाएत।” ईशान अपन पहिल विवेचनपर उँगरी राखि कहलनि, “एहि प्रमाणक तर्क-विन्यास, मूल परिभाषा आ पहिल वाद हम तैयार कएने रही। मैथिलीक प्रश्नक बाद उदाहरण बदलल। मुदा बदलेल उदाहरणकेँ जे नव निष्कर्ष धरि पहुँचा देलक, ओ क्रम दूनु बैसि कऽ देखलहुँ।” मैथिली पुछलनि, “तखन दूनु नामक आवश्यकता अहाँ स्वयं देखैत छी?” ईशान उत्तर देलनि, “भागीदारी देखैत छी; सहलेखनक परिमाण मिलान चाहैत

अछि।” एहि सीमित स्वीकृतिक अर्थ पूरा विजय नहि छल, मुदा पहिल बेर ओ केवल ‘घरक चर्चा’ नहि रहल।

हरिमोहनक असुविधा दोसर छल। सार्वजनिक पाठशालामे हुनकर नाम अध्ययनक दुआरक सँग जुड़ल छल; कोनो विद्यार्थी हुनका पुस्तकक पन्ना धऽ कऽ पुछल करैत जे लेखकक निर्णय एकला केना होइत अछि। “आइ जँ सहलेखनक प्रमाणपत्र लिखि दिअ, काल्हि ईशान वा मैथिली दूनूमेसँ कियो पुनरावलोकन माँगि सकैत अछि,” ओ कहला। मैथिली उत्तर देलीह, “तँ निर्णयक प्रक्रिया लिखू। जतबे प्रमाण अछि, ततेक स्वीकारू; जकरा लेल सत्यापन चाही, ओकरा ‘सत्यापनाधीन’ कहू। मुदा पहिल संस्करणक मुखपृष्ठ देखिकऽ बाकी कागद फाड़ि नहि दिअ।” हरिमोहन पन्नासभक क्रमाङ्क अलग कागदपर लिखलनि, मूल पर कोनो नव चिन्ह नहि देलनि।

ओहि समय नैरा घरक बाहर पहुँचलि। ओ बाल-सुरक्षा कार्यालयसँ घुरि रहल छलीह, जतय गुंजाक सुरक्षित वापसीक प्रक्रिया आ मिथुनक तेलदोकानक बही अलग-अलग जाँचल जा रहल छल। मैथिली हुनका भीतर बजौलीह। नैरा कागदक ढेरी देखिकऽ पुछलीह, “ई सभ सार्वजनिक होएत?” मैथिली कहलीह, “पहिने प्रतिक जाँच; तखन निर्णय। अहाँ हमरा कहू, मूल पन्नाक नकल पर केकर अनुमति चाही?” नैरा उत्तर देलीह, “जकर स्वामित्व वा निजी जानकारी अछि, तकर अनुमति बिना नकल बाँटब उचित नहि। मुदा अनुमति मात्र लेखकत्व सिद्ध नहि करैत।” ईशान मुस्कुराएलाह। “अहाँक घरक सभ बहस आब कागदक अधिकारपर अबैत अछि,” ओ कहला। नैरा कहलीह, “कागदक अधिकारक प्रश्न ओकरा लिखनिहारक जीवनसँ उठैत अछि, कागद स्वयं फैसला नहि दैत।”

मैथिली नैरासँ कबीरक जन्म-सम्बन्धी चर्चाक खबर पूछबाक क्षणिक इच्छा रोकलीह। किछु दिनसँ लोकसभ कहि रहल छल जे परिवारक पुरान नाम-सूचीमे गोपनीय जन्मसूचना जुड़ल अछि। ओहि सूचीक एक-आध शब्दक आधारपर कबीरक जन्म आ पालनक कथा सार्वजनिक करबाक प्रस्तावो आयल छल। मैथिली स्पष्ट कहलीह, “हमर पन्ना लेखकीय श्रेयक सार्वजनिक प्रश्न अछि। कबीरक जन्मक निजी अभिलेख ओकर सहमति बिना हमर बहसक दृष्टान्त नहि बनत। दूनू ठाम पन्ना अछि कहि दुनूकै एक नियमसँ नहि

खोलल जाए।” नैरा एतबे कहलीह, “हुनकर अपन निर्णय होएत। आ सरिताक सत्ताइस नामक कागद एतय नहि आएत।” हरिमोहन ई सीमा पंजीमे अलग लिखलनि।

फरीद अपन आवेदनक नकल देखबैत नैरासँ पुछलक, “विद्यालयक समय बदलल तँ घरमे देबाक रकम कतेक रहत, से कागदमे लिखबाक अछि?” नैरा कहलीह, “पहिने घरक लेल जे वचन देलहुँ ओकरा पिता संग मिलाउ। अपन कमाइ लिखब, मुदा जे दिन काम नहि कएने हो, ओकर मजदूरी अपना नामपर नहि जोड़ू।” फरीद कहलक, “एहि लेल सप्ताहमे दू साँझक बदलामे एक बिहान दोकानमे रहब। पिता एक बेर मुँहसँ मानने छथि; लिखित समय-बँटवारा चाही।” मैथिली पुछलीह, “अहाँक अपना किताबक पैसा?” फरीद झोरामे सँ छोट थैली निकाललक। “ताल सिखेबाक दू पारिश्रमिक अछि,” ओ कहलक, “पहिल पुस्तक ओहि सँ किनब, घरक नियमित देय अलग राखब।”

दुपहरक बाद मैथिली आ ईशान पुरान विषयपर धीरे-धीरे लौटलाह। हरिमोहन एक अंश पढ़ि पुछलनि, “एहि वाक्यक बाद जे आपत्ति अछि, तकर पहिल लिखनिहार कौन?” ईशान कहला, “प्रश्न मैथिली उठौने छलीह।” मैथिली कहलीह, “आ उत्तरक पहिल रूप ईशान लिखने छलाह। मुदा उत्तरपर फेर जे बाधा देखाओल गेल, ओकर तीन पाँति हमर अछि।” ओ दू कापी खोलि संदर्भ देखौलीह। हरिमोहन प्रश्नक अंश अलग उद्धृत नहि कएलनि; केवल पृष्ठ आ पाँतिक स्थान नोट कएलनि। एना बिना पूरा पाठक जाँच ककरो आधा वाक्यकेँ दार्शनिक अन्तिम मत बना देबाक जोखिम कम भेल।

ईशानक बस्तामे सँ एक हस्तलिखित सूचीक प्रति निकलल। ओकर ऊपर पहिल लेखन-समाप्तिक तिथि स्पष्ट छल, मुदा बादमे संशोधन करबाक तिथि केवल मासक नामसँ लिखल। मैथिली अपन पेटीक भीतर सँ ओहि मासक एक पत्र खोजलीह, जाहिमे ओ ईशानकेँ लिखने छलीह जे प्रस्तावित उदाहरण पर फेर बात करबाक अछि। पत्रक भाषा निजी आ अंशतः घरेलू छल; ओ निर्णय लेलनि जे पूरा पत्र सभा मे नहि खुलत। हरिमोहन केवल तिथि आ सम्बद्ध पन्ना मिलानक लेल आवश्यक अंशक निरीक्षण करताह, तकर बाद ओकर लिखित विवरण दूनूकेँ पढ़ाएब। ईशान सहमत भेलाह। सहमति सँ निजी सम्बन्धक सभ प्रश्न समाप्त नहि भेल, मुदा श्रेयक जाँचक एक मर्यादा बनल।

ओसारमे एक किशोर विद्यार्थिनी अभ्यासपत्र अनबाक अएलीह। हरिमोहन ओकरा बाहर रुकए कहलनि, कारण मेजपर नाजुक मूल पन्ना पसरल छल। ओ तुरन्त सँभलि पुछलनि, “अहाँ अपन पाठक अभ्यासप्रति चाहैत छी?” “हँ,” ओ कहलीह। ओ भीतरक अलमारीसँ अलग छपल पन्ना निकालि देलनि। लड़की पुछलीह, “पहिने ई सभ पढ़बाक लेल केतेक सीखबाक पड़त?” हरिमोहन कहला, “आइ अहाँ जे अभ्यास करैत छी, ओ पहिल डगर अछि। मूल पोथीकेँ नुकसान नहि होए, ताहि लेल प्रतिक उपयोग करू।” मैथिली मुस्की दऽ कहलीह, “पन्ना सुरक्षित राखू; कक्षाक दुआर अनावश्यक बन्द नहि करू।” विद्यार्थी अभ्यासपत्र लऽ चलि गेलीह; भीतरक विवाद एक क्षण लेल साधारण शिक्षाक समयसँ छुअल गेल।

साँझक घाम ओसारक दीवारपर तिरछा भेल तँ फरीद पिता संग फेर अएल। पिता अपने तराजूक पटरा बजारमे राखि अएने छलाह। ओ हिचकिचाइत कहला, “एतय हमर घरक हिसाबक निर्णय होएत की?” मैथिली अपन पन्ना समेटि देलीह। “नहि, निर्णय अहाँ दुनू करब। विद्यालयक समयक प्रश्नपर हरिमोहन संग बैसू।” फरीद पिता दिस देखलक। “भोरक दोकानक जिम्मा हम लैत छी,” ओ कहलक, “दू साँझक कक्षा लेल ग्राहकक भीड़ जखन बढ़त तँ अहाँ दूसरे जनकेँ आधा समय रखू। ओकर दामक बात पहिने तय करू।” पिता पुछलनि, “ओकर मजदूरी ककर लाभसँ निकलत?” फरीद अपन पढ़ेबाक पारिश्रमिकक छोट हिस्सा देबाक प्रस्ताव रखलक, मुदा पिताक पूरा जिम्मेदारी उठेबाक वचन नहि देलक।

पिता ओहि प्रस्तावपर नाराज भेला। “हम तोरा पढ़बासँ मना नहि करैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा दोकानमे खाली हाथ रहब तँ घरक देय ककर?” फरीद जवाब देलक, “जे सुबहक पाँच दिन हम खाता सँभालब, ओकरा अहाँ काज मानू। हमरा शिक्षाक कमाइ सँ पुस्तकक दाम निकलब, आ निर्दिष्ट रकम घरमे देब। ताहिसँ अधिक ककरो वचन नहि देब।” ओ अपन बहीमे पाछिल दू सप्ताहक वास्तविक बिक्रीक हिसाब देखीलक; जे दिन ओ बाहर छल, ओहि दिनक देयपर अपन नाम नहि चढ़ौने छल। पिता पहिल बेर ओहि साफ रिक्त खानाक दिस देखलनि। “रिक्त छोड़ने छह,” ओ कहला। “किएक तँ ओहि दिन हम काज नहि कएने रही,” फरीद उत्तर देलक।

हरिमोहन दू समय-सारणी परस्पर राखलनि। विद्यालयक चारि साँझक बदला दू साँझ आ एक छुट्टीक पूर्वाह्णमे प्रारम्भिक पाठ लेल उपयुक्त व्यवस्था भेटि सकैत छल; बाँकी दू घड़ी फरीद स्वयं अभ्यास करत। विद्यालयक अन्तिम स्वीकृति एखन नहि छल। फरीद पिता संग लिखि देलक जे पहिल मास परिवारक देयक एक निश्चित अंश दी, निर्धारित भोर दोकानमे रहि कऽ हिसाब करए, आ परीक्षा नजदीक अएलापर फेर श्रम-बँटवारापर बात करए। पिता शर्त जोड़लनि—‘अतिरिक्त काज लेल पहिने पुछब’। ओ हस्ताक्षर कएलनि, मुदा फरीदक प्रवेशपत्र पर हस्ताक्षरक बदला समयक सहमतिक पन्नापर। ई भेद फरीदकेँ प्रिय लागल।

फरीद चलि गेलाक बाद ईशान पुछलनि, “घरक आर्थिक समझौता लिखि सकैत अछि, तँ हम अपन योगदानक सूची लिखबाक लेल एतेक डेराइ किएक रहलहुँ?” मैथिली एहि आत्मप्रश्नकेँ क्षमायाचना मानि झट स्वीकार नहि कएलीह। “कारण सूची बनिते कहियो अहाँक नामक आगाँ जे एकल अधिकार छल, ओ फेर देखबाक पड़त,” ओ कहलीह। “आ हमर पक्षमे सेहो सम्भव अछि किछु बात जतबे हम याद करैत छी, ओतबे लिखित प्रमाण नहि भेटए। एतय दुनू बातक हिसाब राखब।” ईशान अपन साफ मसौदाक पाँति गनलनि। “हम एखन लिखित जाँच लेल पन्ना देबाक तैयार छी,” ओ कहलनि। “प्रकाशनक संशोधनक अंतिम शब्द आबिहे।”

हरिमोहन सहमतिक छोट अभिलेख तैयार कएलनि। ओहिमे चारि पन्नाक बाहरी चिन्ह, पँजियन लेल चयनित प्रतिक संख्या, मूल राखबाक ठाम, निरीक्षण करनिहारसभक नाम आ ककर अनुमति सँ नकल बनत से दर्ज छल। योगदानक खानामे ‘मैथिलीक हस्तलिखित संशोधन प्रस्तुत; लेखकीय सहभागिताक परीक्षण जारी’ लिखल गेल। ईशानक मूल लेखन स्पष्ट लिखल गेल, आ पन्नासभ साक्ष्य-अवस्थामे रहलासँ तत्काल सार्वजनिक ग्रन्थपर नव नाम छापबाक आदेश नहि बनल। मैथिली स्पष्ट कहलनि जे ई अस्थायी पंजी अन्तिम न्याय नहि अछि; मुदा ओ हस्ताक्षर कएलीह, कारण एहि बेर प्रश्न मौखिक सहमतिक अँधारमे नहि रहल।

नैरा एहि बीच घर जाएबाक तैयारी करैत छलीह। लताक सन्देश आयल जे तेलदोकानक उधारी-बही देखबाक समय तय भेल; मिथुनक प्रत्यक्ष उपस्थितिक प्रमाण

एखन नहि भेटल। नैरा उत्तरमे केवल समयक पुष्टि पठौलीह, कोनो अनुमान नहि। मैथिली हुनका पुछलीह, “अहाँक जाँच आ हमर विवादमे कोनो समान बात देखैत छी?” नैरा उत्तर देलीह, “जतय अलग प्रश्नक एक्के कागद बना देल जाएत, ओतय गलत उत्तर जन्म लैत अछि। मुदा हमर जाँचकेँ अहाँक तर्कक प्रमाण बनायब सेहो गलत।” मैथिली सहमत भेलीह। ओ अपन पन्ना वापस कपड़ामे राखलीह; नैरा अपन फोन जेबमे रखि निकसि गेलीह।

सरिता घरक पाछू चूल्हिपर रोटी सेंकि रहल छलीह। मैथिली ओतय गेलीह तँ सरिता पुछलीह, “पन्ना बचल?” “बचल,” मैथिली कहलीह, “आ ओकरा पढ़एबाक अधिकारक एक रास्ता बनल।” सरिता लकड़ीक चिमटा राखि कहलीह, “हमरा नहि पुछबह जे कापी कखन खोलब?” मैथिली स्नेहसँ नहि, ध्यानसँ उत्तर देलीह, “पुछब, मुदा आब नहि। आइ अहाँ थाकल छी। जे काज अहाँ कएने रही, ओकर हिसाब अहाँ अपन शब्दमे बताउ। हम अपन पन्नाक खाली जगह भरबाक लेल अहाँक समय नहि लेब।” सरिता फेर रोटी उलटलीह। ओहि उत्तरसँ हुनका राहत भेटल की नहि, से मैथिली बुझि नहि सकलीह।

ईशान बाहर निकलिते देखलनि जे फरीद पिता संग सड़कक दोसर कात चलि रहल अछि। हाथमे विद्यालयक आवेदन छल, मुदा दोकानक बही पिता लेने छलाह। दुनू बीचक दूरी एतेक छल जे अलग-अलग चलैत लगैत, फेर किछु दूरपर पिता ओकरा रुकि एक ग्राहकक उधारी-सूची देखौलनि। फरीद थमकि किछु हिसाब बुझेलक। ईशान अपना हाथमे सूचीक प्रतिलिपि देखलनि—आइ ओ मैथिलीक प्रस्तावक नाम लिखबाक लेल तैयार भेल छथि; मुदा ओहि लिखावटकेँ पुस्तकक भावी संस्करणमे परिणत करब बाँकी छल। हुनका अपन वास्तविक लेखनपर विश्वास छल आ ओहि विश्वासक संग दोसरक काम स्वीकार करबाक कठिन अभ्यास शुरू भेल।

रातिक मेजपर मैथिली दू प्रतिक बीच एकटा कोरा कागद रखलीह, जाहिपर हरिमोहन आगिला निरीक्षणक दिन लिखने छलाह। मूल पन्नाक एक कोनामे हुनकर पुरान रेखा छल, जे एक वाक्यक भीतर कारण आ निष्कर्षक बीच टुटल सेतु देखबैत छल। ओहि रेखापर उँगरी फेरबाक लालसा भेल, मुदा ओ छूलीह नहि। पन्ना आब केवल हुनकर स्मृतिक वस्तु नहि, जाँचक अधीन सुरक्षित सामग्री छल। बाहर रसोइघरमे सरिताक

बासनक हलुक आवाज आ रहल छल। मैथिली दरवज्जा खोलि पुछलीह, “बासन रखि दिऔक, बिहानमे हम धो देब।” सरिता भीतरसँ कहलीह, “बिहानमे हम किछु पन्ना देखायब। बासन आजु राइते निबटि जाएत।” मैथिली जखन दीपक बुतौलीह, तखन ई वचन हुनकर जीतक उत्सव नहि, आगिला कठिन सुनबाक समय छल।

अध्याय ८३ • सरिताक मेहनत

भोरमे सरिता चूल्हिक फूँकनी हटौलनि तँ राखक भीतर सँ एकटा अधजरल कोयला लुढ़कि फर्शपर आबि गेल। ओ चिमटासँ ओकरा उठा फेर चूल्हिमे राखि देलनि। माटिक देगचीमे पानि उबलि रहल छल, मुदा पाछाँक चौकीपर रखल नीला जिल्दवला कापीपर ओ एको बूँद नहि पड़ए देलीह। काल्हि मैथिलीकेँ कहल वचन आइ पूरा करबाक छल। सरिता पहिने भात उतारलनि, चूल्हिक आगि दबौलनि, आ तखन हाथ धोए कापी खोललनि। पहिल पन्नापर चाउर, तेल आ मसुरिक माप छल; सातम पन्नापर अचानक गद्यक पाँति शुरू होइत छल। एके हाथक ई दू तरहक अक्षर ककरा लेल लिखल गेल छल, से सरिता स्वयं कहबाक लेल तैयार छलीह।

मैथिली नियत समयसँ कने पहिने अएलीह। हुनका देखिते सरिता कहलीह, “ओसारमे बैसू, मुदा पहिने एहि हाँड़ीक ढक्कन धऽ दियौक।” मैथिली अपन पन्ना रखि ढक्कन पकड़लीह; गरम वाफ अँगुरी लग लागल तँ हाथ झट पीछे कएलीह। सरिता हँसि पड़लीह। “कल्हि कहलहुँ ने बासन बिहानमे धोएब? अहाँक हाथकेँ भोरहिसँ काम सिखब पड़त।” मैथिली सेहो हँसलीह, मुदा हाँड़ीक धारसँ उछलैत पानि देखिकऽ चिमटा माँगलीह। ई छोट हँसी दुनूक लेल स्वाभाविक छल। तकर बाद सरिता दूटा सूखल पटरा मेजपर बिछौलनि—एकपर पुरान कापी, दोसरपर आजुक हिसाब। “हमर बातकेँ हुनका सभक विवादमे मिला देबाक जल्दी नहि करू,” ओ कहलीह।

कापीक सातम पन्नापर प्रश्न—उत्तरक एक अंश छल, किछु शब्दक बीच खाली ठाम आ किनारपर लाल धारी। मैथिली तुरन्त पहिचानलीह जे ईशानक पहिल पाठक एक भागक नकल अछि। ओ पुछलीह, “ई प्रति अहाँ कोन दिन बनौने रही?” सरिता माथ हिलौलनि। “ठीक तिथि एखन नहि कहब। ओहि बरखक धानक मौसम छल, मुदा स्मृतिमे मौसम आ कागदक दिन एक नहि। देखू, एतय हम पहिने ‘कारण’ लिखलहुँ, बादमे ‘हेतु’ लिखि देलहुँ। अहाँ पढ़ि सुनौने रही, हम लिखने रही। ई बदलाव अहाँक कहलपर भेल की हमर बुझलासँ, तकरा लेल आन पन्ना चाही।”

सरिताक कापीमे नकलक बगलमे राशनक दू छोट हिसाबो छल। हरिमोहनक पाठशालाक लेल ओ कखनो भोजन रान्हैत छलीह, कखनो पुस्तक सुखेबाक कपड़ा जुटबैत, कखनो लिखल पन्नाक क्रम मिलबैत। एक पन्नामे पाँच जने खाएल भोजनक संख्या छल; ओकर नीचे ‘चारि पन्ना दू बेर लिखल’ अंकित छल। सरिता कहलीह, “एक दिन पाछाँसँ पानि टपकल, स्याही पसरि गेल। अहाँ लोकनि पाठमे छलहुँ। भीजल प्रति सुखेबामे बेसी समय लागल, फेर जे अक्षर मेटा गेल से पूछिपाछि लिखलहुँ। हम स्वयं बुझि कऽ सभ सुधार नहि कएलहुँ। जकरा पुछने रही, ओकर नाम अलग रखबाक चाही छल; ओ पन्ना एखन नहि भेटल।”

मैथिली एकटा पुरान छपल पुस्तक निकाललीह। ओकर आरम्भमे लेखकक नाम ईशान छल आ अन्तमे धन्यवादक छोट पाँति—‘घरक सहयोग’। सरिता ओ पाँति देखिते उँगरी नहि रखलीह। “ई शब्द अहाँ लोकक लेखनक समयक अछि,” ओ कहलीह, “मुदा हमर जे दिन गेल, ओकर हिसाब एहिमे नहि अछि। हम लेखक बनबाक दावा नहि करैत छी। हम एतबे कहैत छी जे रसोइ, प्रतिलिपि आ उदाहरण खोजबाक काजसँ पन्ना आगाँ बढ़ल जे विचार अहाँ लोकनि बदललहुँ, ओकरा हम अपन विचार कहि नहि सकैत छी।” मैथिली कहलीह, “तँ धन्यवादक पाँतिमे अहाँक नाम—” सरिता बीचमे रोकलीह। “नाम जरूरी अछि, मुदा पहिने काज सुनू।”

ओ कापीक भीतर राखल पातर कागद निकाललनि। ओहिमे गामक पोखरिक पुरान पानि-माप, गोदामक तौल आ घाटपर देय चुकौतीक तीन उदाहरणक स्रोत लिखल छल। पहिल उदाहरण सरिता अपन आँखिसँ देखल छलनि; दोसर रुखसानाक मुँहसँ सुनल छलनि; तेसर ककरो कापीक नकल छल, मूल देखल नहि। “एहि तीनूकेँ अहाँ एक संग ‘लोकक व्यवहार’ कहि अध्यापनमे लऽ गेल रही,” ओ मैथिलीकेँ कहलनि। “तखन हम पूछने रही जे तेसर उदाहरण सच अछि की? अहाँ कहने रही—समझेबाक लेल ठीक अछि। हमरा से बात चुभल। गलत होएबाक डर छल, मुदा हम पुस्तकक पाँति नहि बदलि सकलहुँ।” मैथिलीक मनमे ओ दिन पूरा नहि घुरल, मुदा अपन देल उत्तरक रूख चिन्हाइत छल।

“हम कहने रही जे काम चलत,” मैथिली धीरेसँ कहलीह। “हँ,” सरिता उत्तर देलीह, “आ ओहि ‘काम’मे हमर पूछल बात दबि गेल। आइ अहाँक हस्तलिखित तर्कक श्रेय जाँचल जा रहल अछि। हमरा लेल ई अवसर अछि, मुदा हमर कथा अहाँक समर्थनक प्रमाण नहि बनए। हम ई कहि सकैत छी जे उदाहरण जुटौलहुँ, किछु गलत मिलान देखौलहुँ, किछु नकल ठीके छल। कोन आपत्ति पुस्तकमे बदलल, ओकरा पन्नासँ देखू।” ओ प्रत्यक्ष, सुनल आ नकल कराओल सामग्रीक चिन्ह अलग कएलीह।

ओहि समय दुआरपर लक्ष्मी झाँगड़ अएलीह। हुनकर थैली पहिनुक बारिसमे भीजल छल, मुदा एहि बेर भीतरक पन्ना दूनू दिस सँ तेल-लागल कागदमे राखल छल। ओ सरितासँ पुछलीह, “नकलक मिलान लेल अहाँ जे ठाम बतौने रही, ओतय काल्हि गेल रही। दू पन्ना आरो भेटल, मुदा मालिकक बही एखन नहि खोलल।” सरिता हुनका भीतर बैसबैत कहलीह, “ई अहाँक काज अछि; हम पढ़ि सुना सकैत छी, मुदा निर्णय अहाँ करब।” लक्ष्मी अपन थैली खोलनासँ पहिने कहलीह, “एहि घरमे ककरो निजी कागदक फोटो नहि बनत। हमरा लिखल अर्जीक प्रति चाही, हमर दादाक सभ कथा नहि।” मैथिली अपना फोनकेँ भीतरक जेबमे राखलीह।

लक्ष्मीक पुरान श्रम-अनुबन्धक नकलमे एक दिस मौसमक अवधि, दोसर दिस रहबाक ठाम आ तेसरमे अग्रिम अनाजक परिमाण छल। जकरा कार्यालयमे मजदूरीक बदला ‘परिवारक कर्ज’ कहल जा रहल छल, ओ नकलपर कर्जक स्पष्ट हस्ताक्षर नहि छल। लक्ष्मी पहिने शिव धाँड़ीक मजदूरी-पर्चीक मामला देखिते सावधान भेल छलीह। “हमरा पुरखाक मेहनति चाही,” ओ कहलीह, “मुदा ककरो देनदारी हम बनावटी दावा कऽ नहि उठाएब। एतय ‘परिवार’ लिखल अछि; व्यक्ति कोन, ई खाली अछि। हमर दादाक नाँव एक दोसर पन्नामे अछि। दुनूकेँ जोड़ब तखने जखन मूल पंजी मिलत।” लक्ष्मी देखल अंक अपन कापीमे उतारलीह।

सरिता लक्ष्मीकेँ कागदक जिल्द बाँधबाक ठामक पुरान रसीद देलनि। ओहि रसीदपर केवल ‘दू प्रति’ छल, मूल पृष्ठक क्रमाङ्क नहि। “अहाँक पन्नाक नकल एक बेर आओर जाँचब पड़त,” सरिता कहलीह, “इहाँ जे कोना फाटल अछि, ओ मूलमे छल की प्रतिलिपिक बेला, से नकल बनौनिहार बताओत।” लक्ष्मी कहलनि, “ओ पहिने कहने छल

जे ‘पुरनका कागद छी, की जाँचब?’ आइ हम हुनकासँ तिथि आ पृष्ठक स्रोत लिखाएब।” परिवारक एक सदस्य जल्दी शिकायत दायर करए चाहैत छल। लक्ष्मी उत्तर तय कएने छलीह—प्राप्ति-पत्रक बिना नहि, आ जे पन्नामे देयक दिन नहि, ओकरा ‘सिद्ध बकाया’ नहि लिखब।

मैथिली लक्ष्मीक कागद देखैत प्रश्न कएलीह, “अहाँ ई प्रति हमरा लग छोड़ि सकैत छी? लेखनक नकल परखबाक एकटा मिलैत-जुलैत समस्या अछि।” लक्ष्मी एक क्षण तकिते रहलीह। “हमर दादाक मजदूरी अहाँक दर्शनक उदाहरण नहि,” ओ कहलीह। “अहाँ प्रक्रिया सीखि सकैत छी, मुदा हमर प्रति नकल कऽ अपन सभामे नहि लऽ जाउ।” मैथिलीकेँ अपना प्रश्नक असावधानी बुझाई गेलनि। “ठीक कहैत छी,” ओ उत्तर देलीह। “हम ई कागदक सामग्री उपयोग नहि करब। जँ स्रोत-सुरक्षाक तरीका जानबाक होएत तँ बिना नामक सामान्य प्रक्रिया पुछब।” लक्ष्मी तखन थैली समेटलीह, आ सरितासँ पुछलीह जे कार्यालय धरि बसक भाड़ा बचएबाक लेल पुछताछ-पत्र डाकसँ पठाओल जा सकैत अछि की नहि।

सरिता ओहि कार्यालयक पुरान रसीद देखलनि। “जमा करबाक तरीका फोनपर जाँचू,” ओ कहलीह, “बिनु पुष्टि डाकमे मूल कागद नहि पठेब।” लक्ष्मी स्वयं कार्यालयक प्रकाशित नम्बरपर फोन कएलनि; जवाब देनिहार कहलक जे प्रतिक संग स्रोत-जानकारीक आवेदन जमा कएल जा सकैत अछि, मुदा मूल निरीक्षणक अलग समय भेटत। लक्ष्मी कापीमे समय, फोन नम्बर आ सुनल वाक्य लिखि कऽ रखलीह। ओ अपन पन्ना घर लऽ जेबाक निर्णय कएलीह, आ केवल आवेदनक नव प्रति सरितासँ पढ़बा लेल छोड़लीह। “घरक झगड़ा किछु दिन आओर सहि लेब,” ओ कहलीह, “मुदा एक बेर गलत देय लिखल गेल तँ ओ सुधारब कठिन।”

लक्ष्मी गेलीह तँ मैथिली खिड़की दिस मुख घुमा बैसलीह। हवा सँ सुखैत मिर्चीक गन्ध भीतर अबैत छल। सरिता भोजनक हाँड़ी खोलि देखलनि आ पुछलनि, “अहाँकेँ चोट लागल?” मैथिली कहलीह, “जखन अपन लेखनक अधिकार माँगैत छी तँ प्रमाणक सीमा याद रहैत अछि; जखन दोसर अपन कागद खोलैत छथि तँ ओकरा हमर तर्कक सामग्री बुझि लैत छी।” सरिता थारी लगबैत कहलीह, “आइ बुझि गेलहुँ तँ अगिला बेर पुछि लेब।

ई हमरो संग होइत अछि। कियो नाम सुधरबए अबैत अछि, हम हिसाबक बाकी खानो देखए लगैत छी।” दालिपर बनल फेन धीरे-धीरे बैठि गेल।

भोजनक बाद सरिता अपन लिखल अभ्यास-पन्ना फेर खोललनि। एक स्थानपर उदाहरण छल—दू अलग घरक तौल एक्के देखलासँ दूनू घरक अनाजक मूल एके अछि, से निश्चित नहि। सरिता कहलीह, “ई बात पहिने हमरा बोलबाक सँझ पड़ल छल, कारण हाटमे दू बोरा बराबर निकलल, मुदा एक घरक अन्न भिजल छल, दोसरक सुखल। हम देखल बात कहने रही। अहाँ ओकरा चर्चा लेल लिखलहुँ। बादमे जे वाक्य बनल, ताहिमे हमर बोरा तँ रहल, हमर नाम कतहु नहि।” मैथिली पुस्तकक ओहि खण्डक पाँति देखलीह। शब्द ईशानक बनल छल; उदाहरणक मूल निरीक्षण सरिताक मुखसँ आबि सकैत छल—एखन लिखित क्रम एकरा पूर्ण सिद्ध नहि करैत छल।

“अहाँ जँ ई दृश्य पहिने स्वयं देखल रही,” मैथिली पुछलीह, “तँ अहाँक नाम उदाहरणक स्रोतक रूपमे दियाक चाही छल?” सरिता कहलीह, “कमसँ कम हमरा पुछल जाइत जे हमर देखल बात कतय छपैत अछि। हम संभवतः अनुमति दैतहुँ। मुदा हम अपने अनुभवकें पुस्तकक वाक्यमे लिखने नहि रही। अहाँक प्रश्न सँ तर्क बदलल की नहि, से अहाँ दुनू परखू। हमर कामक श्रेणी अपनहि राखू।” मैथिली एकटा पन्नापर सरिताक कथनक सार लिखबाक अनुमति माँगलीह। सरिता कहलनि, “पहिने हमरा पढ़ि सुनाउ; फेर हम जतेक मानब, ओतबे नकल बनत।” हुनका चश्मा भेटबाक धरि मैथिली कलम नहि चलौलीह।

हरिमोहन दुपहरमे मूल पन्नाक स्थिति देखबाक लेल पहुँचलाह। ओ देखलनि जे मेजपर पुस्तकक बगलमे चाउरक पुरान हिसाब आ नकलक स्रोत-पर्ची अछि। “कुन दस्तावेज समीक्षा लेल लएब?” ओ पुछलनि। सरिता तीन वस्तु सामने राखलनि—लिखल पन्नाक नकल, भोजन आ कपड़ाक खर्च-पंजी, आ उदाहरणक स्रोत-सूची। “पहिलमे अक्षर हमर, विचार आवश्यक नहि,” ओ कहलीह। “दोसरमे श्रम आ खर्च अछि, जे देय छल से कखनो लिखित पूरा नहि भेटल। तेसरमे हमर देखल, सुनल आ दोसरक कागदसँ उठाओल बात अलग अछि। एहि तीनूकें जोड़ि एकटा लेखकक प्रमाणपत्र नहि बनाउ।” हरिमोहन विवरण लिखलनि; मूल ओतहि रहल।

ओ पुछलनि जे पुस्तक छपबाक पहिने योगदानक प्रस्ताव कियो बनौने छल की नहि। मैथिलीकें ओहि दिनक एक छोट सभा याद पड़ल, जतय ओ संचालन करैत छलीह। सरिता समयपर भोजन बनबैत आ मूल पन्नाक दू प्रति सजाबैत छलीह। सभामे धन्यवाद पढ़बाक क्रम आयल तँ मैथिली कहने छलीह—“घरक लोकक सहयोग।” सरिता पिछला पाँतिमे बैसल छलीह; ओहि दिन तकर विरोध नहि कएने छलीह। मैथिली आब हुनका तकि कहलीह, “हम अपन नामक खाली स्थान देखलहुँ, मुदा अहाँक कामकें एक शब्दमे समेटि देलहुँ। हम सार्वजनिक रूपसँ विस्तृत विवरण देबाक अवसर रखि सकैत छलहुँ। नहि रखलहुँ। ई हमर चुप्पी छल, केवल ईशानक निर्णय नहि।”

हरिमोहन पुछलनि, “ई घटना अहाँक स्मृतिमे अछि की ककरो लिखल पंजीमे?” मैथिली कहलीह, “सभाक क्रम-पत्र बाँचल होएत; हमर ओहि दिनक कथन स्मृति अछि। जकरा सँ मिलत, तकरा सँ मिलान करू।” सरिता कहलीह, “हम विरोध नहि कएलहुँ, कारण भोजनक दामक हिसाब लेल ओतहि बैसब पड़ैत छल। जे लोक मंचपर छल, हुनका असुविधा कएने बिना घर घुर्बाक इच्छा छल। हमर मौनकें पूर्ण सहमति नहि कहू; मुदा ईहो नहि कहू जे हम ओतहि श्रेय माँगने रही।” हरिमोहन दुनूक बयान अलग-अलग लिखलनि। पहिल बेर मैथिली अपन असावधानीक कथा बिना बचावक वाक्य जोड़ने कहि सकलीह।

ईशान साँझ लग अएलाह। हुनका देखिकऽ सरिता कागद तुरन्त समेटलीह नहि, मुदा ‘बही पढ़बाक अनुमति’वला पन्ना अपना लग रखलीह। ईशान पुछलनि, “हमरो किछु देखबाक अछि?” सरिता कहलीह, “अछि। एहि चारि पन्नाक अक्षर हम उतारने रही; अहाँ जे मूल लिखलहुँ, ओकरा सँ मिलान होएत। मुदा ई भोजनक हिसाब हम अहाँक पुस्तकक श्रेयक प्रमाण बनएबाक लेल नहि देब।” ईशान पहिल पन्नाक लिखावट पहिचानलनि। ओ पुछलनि, “कापीमे त्रुटि सुधरल किएक?” सरिता कहलीह, “किछु अहाँक कहबापर, किछु मैथिलीक, आ एक-दू बेर हम जे बुझने रही ताहि आधारपर प्रश्न उठौने रही। कोन त्रुटि कोना सुधरल, तकरा लेल मूल प्रति चाही।”

ईशान कापीकें अपन दिस खींचबाक बदला हरिमोहनसँ अनुमतिक सीमा पूछलनि। हरिमोहन कहलनि जे सरिता जतेक पन्ना देखेबाक चाहैत छथि, ओतबेक निरीक्षण होएत।

ईशान अपन पुरान लेखकत्वपर विश्वास रखैत कहला, “मूल विवेचन हमर छल; नकलक श्रमकें हम तर्क लिखबासँ एक नहि कहब।” सरिता सहज स्वरमे उत्तर देलीह, “हम सेहो एक नहि कहैत छी। मुदा नकल बिनु जे पन्ना बचल नहि रहित, आ जे स्रोत देखेबाक प्रश्न पूछल गेल, ओकर मूल्य अलग अछि। ई नामक दान नहि, कामक पहिचान अछि।” ईशान चुप रहलाह। मैथिली हुनकर चुप्पीक अर्थ स्वीकृति मानि तुरन्त किछु नहि लिखलीह।

नैरा ओहि बीच सरिताक घरसँ लए अनल सिलाइक धागा राखबाक अएलीह। मायकें घेरल कागद देखिकऽ ओ पुछलीह, “आजु ओ कापी खुलि गेल?” सरिता हँसलीह। “खुलल, मुदा तोरा देल सत्ताइस नामक मूल पन्ना नहि। ओकर चाभी जतय छल ओतहि अछि।” नैरा कहलीह, “हम पुछियो नहि रहल रही। हमरा एखन मिथुनक खोजक अलग कार्यालय-सूची देखबाक अछि।” सरिता चश्मा उतारि कहलीह, “तँ ई कापी एहि घरक कामक इतिहास रहए, अनकर निजी जाँचक छोट बाट नहि।” नैरा माएक लिखल श्रम-समयक एक पाँति देखलीह। “एहि दिन अहाँ राति धरि लिखने रही?” ओ पुछलीह। “रातिमे दालियो फूटल छल,” सरिता मुस्कुराइलीह।

लक्ष्मीक फोन फेर अएल। जिल्द बनौनिहार नकलक मूल स्रोत-नम्बर देबाक लेल सहमत भेल छल, मुदा ओकरा एक दिन चाही। कार्यालयसँ लिखित उत्तर एखन नहि आयल। लक्ष्मी स्वयं तय कएलीह जे ओ अगिला दिन हस्ताक्षरित निवेदन जमा करतीह, रहबाक देय आ मजदूरीक हिसाब अलग-अलग परखबाक माँगसहित। सरिता कहलनि, “भाड़ा चाही तँ पहिने कतेक, से कहू।” लक्ष्मी उत्तर देलीह, “हम बसक दाम बना लेने छी। कागद पढ़बाक समय चाही, भाड़ा नहि।” सरिता फोन रखि कऽ ओहि समयकें अपन सिलाइक काजक घड़ीसँ मिलौलनि। दोसरा लेल समय देबाक लेल अपन रोजीक समयक नामो लिखब आवश्यक छल।

मैथिली आ हरिमोहन मिलि एक छोट कार्यपंजी बनौलनि। ओहिमे सरिताक रसोइक दिवस, प्रतिलिपिक ज्ञात पृष्ठ, संशोधनक प्रश्न, उदाहरणक स्रोत आ कागद देखबाक अनुमति पाँच अलग खाना छल। जकर तिथि अस्पष्ट छल ओकरा रिक्त राखल गेल, जकर भुगतानक रसीद नहि भेटल ओकरा ‘अपरिशोधित’ नहि, ‘प्रमाण भेटबाक प्रतीक्षा’ लिखल गेल। सरिता पुछलनि, “जे दिन हम अपन इच्छासँ काज कएने रही, ओकरा कर्ज

बना देब?” हरिमोहन कहला, “नहि। स्वेच्छा आ माँगल गेल श्रमक भेद अहाँ बताउ।” सरिता दू दिन निःशुल्क साझा भोजनक लिखलनि, आ तीन दिनक माँगल गेल नकल-कार्य अलग कएलनि।

ओहि तीन दिनक देयक बात उठल तँ मैथिली तुरन्त पैसा देबाक चाहलीह। सरिता रोकलनि। “पैसा देबऽ चाहैत छी तँ दिनक हिसाब जाँचि दिअ। किछु काजक दाम पहिने भेटल छल, किछु सामग्रीक देय बाँचल, आ जे हमर उदाहरण छल ओकर प्रश्न पैसा मात्रसँ नहि सुलझत। बिना हिसाबक दान लेब तँ कल्हि कियो कहत जे सरिता अपन मुँह बन्द करबाक दाम लेने छथि।” मैथिली अपन थैली बन्द कएलीह। ओ कहलीह, “हम सभाक क्रम-पत्र खोजब, आ जतेक योगदानक सार्वजनिक उल्लेख आवश्यक, ओकर पाँति पहिने अहाँकेँ सुनाएब। अहाँ असहमत होएब तँ ओहो दर्ज होएत।” सरिता एतबा पर सहमत भेलीह।

बाहर सूर्य ढलैत छल आ ओसारक माटिपर चूल्हिक आगिक लाल बिन्दु चमकैत छल। नैरा थारी सजा रहल छलीह तँ सरिता ओकरा कहलीह, “तोरा जे रोटी गोल नहि बनैत, से आइ मैथिलीकेँ सिखा दे।” मैथिली हँसलीह—“हमरा कल्हि ढक्कन धरब नहि आएल, आइ रोटी पर परीक्षा?” नैरा बेलन ओकरा देलीह। पहिल रोटी भारतक कोनो नक्सासँ मिलल नहि; सरिता ओकरा देखिकऽ कहलीह, “ई नक्सा ककरो जमीनक प्रमाण नहि, मुदा खाएबामे कोनो कमी नहि।” तीनू हँसि पड़लीह। रोटी तावा पर फुलल नहि, मुदा परत पर परत सेकि खएबाक जोग भऽ गेल। एहि हँसीक बाद कियो नव कागद वा खबर नहि खोललक।

रातिक भोजनक बाद ईशान फेर अपन पुस्तकक पुरान आभार-पाँति पढ़लनि। ओ किछु लिखबाक लेल कलम उठौलनि, फेर रखि देलनि। “आइ हम सुनलहुँ,” ओ कहलनि, “मुदा कुन काजक श्रेय कोन रूपमे सार्वजनिक होएत, तकर निर्णय जाँचि कऽ देब।” सरिता कहलनि, “काल्हि हमरा फेर रसोइ आ सिलाइ अछि। हम सभ दिन बैसारमे नहि बैसि सकैत छी। हमर लिखल प्रति सुरक्षित राखू आ सुनबाक समय बताउ।” मैथिली जकरा पहिने दोसराक समय सहज उपलब्ध बुझैत छलीह, ओहि घड़ीक लिखित स्वीकृति

माँगलनि। हरिमोहन अगिला सुनवाईक छोट समय निर्धारण कएलनि; ईशान अपन योगदानक मूल पन्ना अनबाक जिम्मा स्वयं लेलनि।

सभ गेला पर सरिता नीला कापी फेर बक्सामे राखलीह। आज ओ ककरो नामक स्थानपर अपन नाम चढ़ाएब नहि चाहने छलीह, केवल ई सुनिश्चित कएने छलीह जे हुनकर नकल ककरो मौनक भीतर गुम नहि हो। कापीक ढीला सूत ओ मजबूत गाँठसँ बान्हि देलनि। मैथिली बाहर निसकैत एक बेर मुड़लीह। “काल्हि रोटी हम बनायब,” ओ कहलीह। सरिता मुस्कुरा कऽ उत्तर देलीह, “बनाउ, मुदा हमसे पूछू जे हमरा खाएब पसंद अछि की नहि।” मैथिली एहि सादा प्रश्नक महत्त्व बुझैत घर दिस चलि गेलीह। ईशानक मूल तर्क सुरक्षित छल, सरिताक कामक पंजी खुलि गेल छल, आ हुनका अपन पुरान मौनक उत्तर आब शब्दक सँग व्यवहारमे सेहो देबाक छल।

अध्याय ८४ • गुरुक स्वीकार

पुरान पुस्तकक जिल्दसँ धूरि झाड़ैत ईशानक अँगुरीपर नीला रंग लागि गेल। ओ कागदकें सफेद कपड़ासँ पोंछलनि, मुदा रंगक पातर रेखा मेटायल नहि। जिल्द बनबेबाक समय स्याही पसरल रहए, अथवा पछि कियो भीजल हाथसँ छूने छल—एखन ओ दुनूमेसँ कोनो बात निश्चित नहि कहि सकैत छलाह। हुनकर सामने तीन गठरी राखल छल: पहिलमे अपन हस्तलिखित मूल विवेचन, दोसरमे छपल पुस्तकक दू संस्करण, तेसरमे पाठशालाक ओ पत्र जे विद्यार्थीसभक प्रश्नक उत्तरमे बनाओल गेल छल। काल्हि सरिताक घरसँ घुरलापर ओ राति धरि एहि पन्नासभकें क्रम देलनि। आइ हरिमोहनक सामने केवल अपना पक्षक सफाई नहि, अपना काजक सीमा सेहो रखबाक छल।

घरक आँगनमे गाछक छाँह एखन खसि कऽ कुआँक जगत धरि पहुँचले नहि छल। ईशान अपन मूल पन्नाक किनारपर लिखल पुरान संकेत पढ़लनि। एक जगह ज्ञानक साधनक क्रम छल, दोसर ठाम अनुमानक हेतु आ प्रतिज्ञाक सम्बन्ध; तेसरमे उपमानक माध्यमसँ अपरिचित वस्तुक परिचय भेटबाक शर्त। ई पाँतिसभ हुनकर हाथक छल, एकर गवाही आरम्भिक कापी आ विद्यार्थीसभक पाठ-नोट दैत छल। मुदा एक पन्नाक कात मैथिलीक लिखावटमे प्रश्न छल: ‘समान चिन्हसँ एक कारणक निष्कर्ष किएक?’ ओहि प्रश्नक बाद छपल उदाहरण बदलि गेल छल। ईशान देखलनि जे पन्नापर अपन नाम मात्रसँ पूरा परिवर्तनक कथा नहि कहल जा सकैत अछि।

हरिमोहनक पाठशालाक ओसारमे मैथिली पहिने पहुँचि चुकलीह। ओकरा लग काल्हि सरितासँ अनुमतिसहित लिखल पाँच खानावला कार्यपंजी छल। एक छोट खानामे भोजनक दिन, दोसरमे पन्नाक नकल, तेसरमे संशोधनक सुझाव, चारिमे उदाहरणक स्रोत, पाँचममे निरीक्षणक सीमा। ईशान थैली खोलि कहला, “हम अपन मूल पन्ना आनलहुँ; सबकें खोलि देखाएब।” मैथिली तुरन्त पुछलीह, “सबकें? सरिताक लिखल कापी एकर संग नहि अछि। अहाँ अपन पन्ना देखाउ, मुदा हुनकर अनुमति हुनक पन्ना लेल अलग चाही।” ईशान हाथ रोकलनि। अपन उदारताक घोषणामे ओ दोसरक अधिकार पुनः समेटि नहि लिअथि, ई छोट रोक हुनका आवश्यक लगल।

हरिमोहन पटरा सीधा करि तीन वस्तु अलग रखलनि—ईशानक आरम्भिक बही, मैथिलीक हस्तलिखित संशोधनक प्रति आ छपल पोथी। “आइ जे कहब, ओकर स्रोत सेहो कहब,” ओ आग्रह कएलनि। “एकर अर्थ अदालतक फैसला नहि। कागदपर लिखल अक्षर देखल जा सकैत अछि; ककर मनमे कोन विचार कखन आयल, ताहि लेल आरो साधन चाही।” मैथिली अपन संशोधित पन्नाक असल प्रति बक्सामे रखलनि आ केवल अनुमति देल नकल बाहर रखलीह। ईशान पुस्तकमेसँ ओ अंश चुनलनि जतय मूल तर्क यथावत् छल। ओकर प्रस्तुति सुस्पष्ट छल: प्रतिज्ञा, हेतु आ उदाहरणक क्रम ओ अपन पाठशालाक पुरान अभ्यास-पत्रसँ सेहो देखौलनि।

“ई प्रश्नक पहिल रूप हम लिखने रही,” ईशान कहलनि, “आ विद्यार्थीसँ एहि विषयमे वादो हम करौने रही। जे दिन मैथिली प्रश्न उठौलीह, ओहि दिन धरि मूल सिद्धान्त हमर अपन चिन्तन छल।” मैथिली बिना व्यंग्यक स्वीकृति देलीह। “हम ताहि पर विवाद नहि करैत छी। हमर पन्नाक दावा ई नहि जे अहाँ किछु जनैत नहि छलहुँ। मुदा जखन हम उदाहरणक कमजोरी देखेलहुँ, अहाँ संशोधित रूप अपन पुस्तकमे राखि देलहुँ। हमरा प्रश्नक नाम कतहु नहि अएल। एहन किएक?” ओ प्रश्नक उत्तर नकलक रंगसँ नहि, ईशानक वचनसँ चाहैत छलीह। हरिमोहन कलम उठेलनि, मुदा बीचमे किछु जोड़लनि नहि।

ईशान छपल पुस्तकक पृष्ठ पलटलनि। ओहि ठाम पहिल संस्करणमे दू बोरा बराबर तौल देखाकऽ समान स्रोत मानबाक संकेत छल; बादक संस्करणमे तौल समान होएब आ कारण समान होएबक बीच अन्तर स्पष्ट कएल गेल छल। “हमर मनमे पहिनेसँ एहि असुविधाक भान रहए,” ओ कहला, “मुदा मैथिलीक प्रश्नक बादे हम उदाहरण बदलबाक निर्णय कएलहुँ। एहि बदलावक उल्लेख जँ नहि भेल, तकर जिम्मा हमर अछि।” ओ कने थमकलाह। “तँ ई नहि जे छपल प्रत्येक पाँति मैथिली लिखलीह; आ ईहो नहि जे हुनकर बिना ई पन्ना ओहि रूपमे तैयार भऽ जाइत।” मैथिली कहलनि, “एखन पहिल बेर अहाँ बदलावक कारणक रूपमे हमर नाम बजलहुँ।”

हरिमोहन पुछलनि, “अहाँक पहिल आ दोसर संस्करणक तिथि कतयसँ निश्चित होएत?” ईशान भितरी पृष्ठ देखौलनि। छपाइत वर्ष छपल छल, मुदा पाण्डुलिपि संशोधनक ठीक दिन नहि। पाठशालाक हाजिरी-बहीमे ओ विषयक एक व्याख्यानक उल्लेख छल;

तिथि संग विषयक सम्बन्ध सिद्ध करैत छल, प्रत्येक वाक्यक जन्म नहि। मैथिली अपन छोट पन्नापर दू क्रमाङ्क लिखलीह। “एहि कारण हमर हस्तलेख महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा हम स्वयं पन्ना लिखल दिन याद करबामे कखनो चूक सकैत छी।” दुनू अपन-अपन पृष्ठपर सीमाक एक-एक चिन्ह रखलनि। पहिने एहन संकेतकेँ ओ सभ बौद्धिक पराजय बुझैत छलाह; आइ ओहि बिनु बात आगाँ बढ़त नहि छल।

आँगनमे कदमक आवाज भेल तँ सरिता अएलीह। हुनकर काँधपर नकलक कापी नहि, सिलाइक छोट झोरा छल; दिनक पहिल ग्राहकक कपड़ा फँसा देने छलीह, से हुनका घण्टाभरि पश्चात् लौटबाक छल। “हम दू घड़ी लेल अएली छी,” ओ कहलीह। “रसोइक दाल चढ़ाओल अछि, नैरा देखत, मुदा ओकर अपन काजो अछि।” हरिमोहन नब समय लिखलनि। ईशान सरितासँ पुछलनि, “अहाँक पुरान नकलक चारि पन्ना देखिकऽ जे याद पड़ल, से कहब?” सरिता कहलीह, “पहिने ई बताउ जे अहाँ हमरा सुनबाक समय दैत छी, की हमर लिखल पन्नासँ अपन किताब बचबैत छी?” ओ प्रश्न कठोर नहि, सीधा छल।

ईशानक नजरि सरिताक झोरापर गेल, जतय टूटल सुई राखबाक पातर डिब्बी छल। “दुनू बात मिलाब नहि चाही,” ओ उत्तर देलनि। “हमर मूल विवेचन जँ सचमुच हमर अछि तँ ओकर रक्षा साक्ष्यसँ होएत। मुदा एतय जकर श्रमक मान नहि देलहुँ, ओकर क्षति मानब सेहो जरूरी अछि। पुरान पुस्तकमे ‘घरक सहयोग’ लिखिते हम अहाँक लिखल पन्ना, रसोइक समय आ उदाहरणक स्रोतकेँ एकटा अस्पष्ट वाक्यमे समेटि देलहुँ। ई उचित नहि छल।” सरिता एक बेर मैथिली दिस देखलीह। “ईशान, ई हमर योगदानक पूरा परिभाषा नहि,” ओ कहलीह, “मुदा गलतीक पहिचान शुरू भेल। एखन हमरा कागदक कथन चाही, खाली पश्चात्ताप नहि।”

हरिमोहन प्रस्ताव कएलनि जे प्रत्येक पुरान वस्तुक कात ओकर दावाक प्रकार लिखल जाए। सरिता आपत्ति उठौलीह। “हम लेखन-श्रमक सूचीमे भोजनक काज रखब चाहैत छी, मुदा भोजन बनौने छी तँ तर्क हमर भऽ गेल, एहन निष्कर्ष नहि। जहिया एक उदाहरण हम अपने देखलहुँ, ताहि समय ओकर स्रोत हमर अनुभव अछि। जहिया ककरो मुँहसँ सुनलहुँ, ताहि जगह ओकर नाम वा स्रोतक अनिश्चितता कहबाक चाही।” ईशान पहिल बेर बिना बीच काटने पूरा वाक्य सुनलनि। हरिमोहन खाता बनौलनि: मूल लेखन, संशोधन-

सुझाव, प्रतिलिपि, प्रत्यक्ष उदाहरण, सुनल उदाहरण, सामग्रीक व्यवस्था। कोनो खानाक आगाँ स्वामित्वक अन्तिम मुहर नहि लगल।

ओसारक दोसर मुहानेसँ मंगरी गोराइत अएलीह। हुनकर गमछामे भीजल माटिक दू धारी छल। वनकिनाराक बन्द कारखानाक देवाल लग नव फाटक बनैत समय हुनका संगक छँटनी आ सफाइक मजदूरसभक भीतर जाएबाक बाट रोकल गेल छल। ओ आजु लाठी वा ताला तोड़बाक लोक नहि आनने छलीह; अपन दलक हस्ताक्षरित तीन सूची आ मजदूरीक पुरान पर्ची लेने अएलीह। “एतय कागदक नकल देखल जा रहल अछि?” ओ पूछलीह। हरिमोहन कहला, “किछु पन्नाक मिलान। अहाँक काज अलग अछि तँ ताहि लेल अलग घड़ी चाही।” मंगरी उत्तर देलीह, “हमर दलक सात लोकक देय अछि। चारि जने आजु संग अएल अछि; सभक बात नोकरीक एक्के शब्दमे नहि समाएत।”

ईशान हुनका बैसबाक पीढ़ा आगाँ बढौलनि, मुदा मंगरी पहिने बाहर ठाढ़ साथीसभकेँ बोलौलीह। प्रेमा अपन सफाइक दिनक हाजिरी-पर्ची खोललीह; भोलूक काम कारखानाक छँटनी छपराक भीतर छल, ओकर अवधि अलग; सरोज कहलीह जे बन्दी घोषित भेलाक बादो दू दिन सामान हटेबाक लेल बुलाओल गेल छल। सातम सदस्य बीमारीक कारण नहि आयल छल, ओ अपन देयक अनुमति दैबासँ पहिने पर्ची देखबाक कहलने छल। मंगरी सभक कापी एके मेजपर मिलौलीह, मुदा नकल करए देबाक सहमति प्रत्येकक अलग लिखलनि। “हम दलक प्रतिनिधि छी,” ओ कहलीह, “दल नहि बनि जाइत छी।” सरिताकेँ वाक्य सुनिते अपन काल्हिक पंजी स्मरण अएल।

मंगरी एकटा रसीद आगाँ रखलीह। ओकर माथपर कारखानाक पुरान छाप आ नीचे ‘समूह भुगतान’ लिखल छल; कोन बैंक खाता, के भुगतान पओलक, से रिक्त छल। फाटकक पहरेदार कहने रहए जे मालिक सभक हिसाब चुकता कऽ देने अछि। मंगरी हरिमोहनकेँ पुछलीह, “एहि रसीदसँ की सिद्ध भेल?” हरिमोहन कहला, “ई सिद्ध होइत अछि जे एहन लिखल कागद अस्तित्वमे अछि। एकर अधिकारित स्रोत आ वास्तविक भुगतान अलग जाँचबाक अछि।” प्रेमा कहलीह, “हमर हाथमे तँ एको रुपैया नहि अएल।” सरोज कहलनि, “हमरो नहि, मुदा जखन कियो सभक नामपर राशि लिखैत अछि तँ हमरा सभक नहि भेटल कहबो अलग-अलग दर्ज होएत।”

मंगरीक कागदपर ‘मंगरी’ नामक आगाँ छँटनी-प्रभारी लिखल छल, मुदा रसीदमे भुगतान-लेनिहारक घर खाली। फाटकक पहरेदारक कथन केवल सुनल समाचार छल, रसीद भुगतान भऽ चुकबाक प्रमाण नहि, आ पहिनुक एक ठेकामे भुगतान भेल छल तँ एतयो भेल होएत—ई उपमान मात्र रहित। ईशान तीनू भेद स्पष्ट कहलनि, फेर तुरन्त अपन मुख बन्द कएलनि। मंगरी हुनका देखिकऽ कहलीह, “अहाँ भेद बुझा सकैत छी, मुदा हमर मजदूरीक दाम तय नहि करब। हम सभ केँ पुरान नियोक्तासँ हिसाब माँगबाक अछि।” ईशान सिर हिलौलनि। शिक्षकक ज्ञान एहि स्थानपर अपन सीमा जानि कऽ उपयोगी भेल छल।

बाहर कारखानाक फाटक लग सँ लौटल एक पहरेदारक सन्देश अएल जे परिसरक नब प्रबन्धक केवल प्रतिनिधिसँ भेटत। मंगरी असहमति जनौलीह। “प्रतिनिधि जएत, मुदा सभ मजदूरक दाबी नकलमे नहि, मूल आवेदनमे रहत। जे सदस्य बीमार अछि, ओकरा बिना सहमति ‘सहमति भेल’ नहि लिखब।” ओ आजुक आवेदन दुइ भागमे बाँटलीह—बन्दी धरि बकाया मजदूरी आ बन्दीक बाद कराओल सफाई/दुलाई; जकरा सुरक्षा-सामग्री अपन रुपैयासँ खरिदने रहए, ओकर लागत तेसर अलग सूचीमे। प्रेमा पुछलीह, “आजु ऑफिस बन्द भेल तँ?” मंगरी कहलीह, “प्राप्ति-नम्बर भेटलासँ काम पूरा नहि, मुदा काल्हि कहबाक हेतु कागद रहत।” हुनकर निर्णय लड़बाक छल, बिना अकारण सभ बात बन्द कएने।

सरिता घड़ी देखलीह। हुनका रसोइक लग लौटबाक छल। ओ ईशानक दिस मुड़लीह। “हमर नकलक तीन दिनक देय कागदमे लिखल गेल अछि, मुदा कतय सँ रकम भेटत से नहि। पहिनुक दाम कखन भेटल, तकर मिलान बाँकी अछि। मंगरी अपन सात लोकक हिसाब स्वयं लऽ गेलीह; हम अपन पन्ना एतहि छोड़ि नहि जाएब।” ईशान कहला, “हम जँ आइ भुगतानक रकम कहि दी, तँ जाँचसँ पहिने गलती फेर होएत। मुदा जे सेवा हमर आग्रहपर लेल गेल, ओकर हिसाबक जिम्मेदारीसँ पाछाँ नहि हटब। अहाँक दिनक मूल्य अहाँक संग बैसि तय करब।” सरिता कहलीह, “दिनक मूल्य हमरा काज रोकि जे समय देब, तकरो सँग जोड़ू।”

मैथिली एहि घड़ी अपना द्वारा बनाओल योगदान-सूची देखौलीह। हुनकर नामक आगाँ ‘संशोधनक प्रश्न आ उदाहरण-विन्यास’ लिखल छल, मुदा कोन पन्नामे कतेक परिवर्तन भेल से अंकित नहि। “हम ई सूची अपूर्ण मानैत छी,” ओ कहलीह। “मुदा अहाँक पुस्तकमे जे वाक्य केवल अहाँक नामसँ देखाइत अछि, ताहि स्थानपर हमर योगदानक स्वीकार एखन लिखल जा सकैत अछि।” ईशान हुनकर पन्ना उठबैत नहि, अपन कागदपर लिखलनि: ‘संशोधित उदाहरणक प्रश्न मैथिली द्वारा उठाओल गेल; मूल तर्क ईशानक; हस्तलिखित पन्ना मिलानाधीन।’ हरिमोहन एहि पाँतिक कात ‘प्रारम्भिक सार्वजनिक सूचना, अन्तिम श्रेय-निर्णय नहि’ जोड़लनि। मैथिली पढ़ि कहलीह, “ई पहिल ठीक वाक्य अछि, मुदा पूरा नहि।”

ईशान टेबुलपर रखल पुस्तक उठा ओहि पन्नाकेँ फेर पढ़लनि जतय ‘घरक सहयोग’ छपल छल। ओ कहला, “जे घर बनबैत, कागद सुखबैत, भोजन पहुँचैबैत आ नकल करैत रहल, तकर कामकेँ अनाम राखि हम पाठककेँ अधूरा इतिहास देलहुँ। ई श्रेयहरणक तथ्य अछि; एकर जिम्मेदारी हमर हिस्सामे अछि।” हरिमोहन पुछलनि, “अहाँ ई सार्वजनिक रूपेँ कहल जा सकैत अछि, नहि?” ईशान उत्तर देलनि, “कहब। मुदा ई घोषणा जँ सरिताक योगदानक भेद मेटा देत तँ ओहो अन्याय होएत। हुनकर लेखकीय दावा ओ अपने नहि कएलनि; हम हुनका कृत्रिम सहलेखक बना अपन पश्चात्तापक सजावट नहि करब।” सरिता एतबा सुनि झोरा काँधपर रखलीह।

“हमरा साज नहि बनाउ,” सरिता कहलीह। “एतय जे हमरा कमाएल दाम, खोएल समय आ देखल उदाहरण अछि, ओ तीनू लेल तीन प्रश्न अछि।” हुनकर वचनक बाद ओ मैथिलीकेँ पुछलीह जे काल्हि सभाक पुरान क्रम-पत्र भेटत की नहि। मैथिली कहलीह, “दर्जा राखल बक्साक चाभी हरिमोहन लग अछि, मुदा कोन दिनक कागद बचल अछि से देखने कहब।” सरिता उत्तर देलीह, “जतय नहि भेटल, ओतय नहि भेटल लिखू। एतेक बोलि हम घुरैत छी। रसोइमे नैराक सेहो अलग समय अछि।” बाहर निकलिते ओ मंगरीकेँ मुस्की देलीह। दुनू एक दोसराक लड़ाइकेँ एकर दुसर नाम नहि देलनि; केवल बसक किराया पूछलनि।

ओसार खाली भेल तँ उदय पुछलक, “गुरुजी, जँ अहाँक गलती सार्वजनिक भेल तँ पाठशालाक लड़का-बेटी सभ अहाँपर भरोसा रखत?” ईशान ओकरा तुरन्त आश्वासन नहि देलनि। “किछु विद्यार्थी निराश होएत,” ओ कहला। “किछु एहन बुझत जे गुरुसँ प्रश्न पुछल जा सकैत अछि। जे मूल विषय हम सिखौलहुँ, ओकर परीक्षा हुनका अलग लेबाक चाही। हम मनुष्यक रूपमे गलती मानलहुँ तँ अनुमानक सूत्र गलत भऽ गेल, एहन नहि; आ हम सूत्र बुझैत छी तँ गलती असम्भव, सेहो नहि।” उदय कापीमे अपन आजुक प्रश्न लिखलक; ईशान ओकरा रोकलनि नहि। बाहर दू नव विद्यार्थी विद्यालयक घण्टी बजबाक प्रतीक्षा करैत छल।

दिन ढलए लगल तँ मंगरी फेर अएलीह। हुनकर हाथमे कार्यालयक प्राप्ति-क्रमाङ्क छल, मुदा कापीक तेसर पृष्ठपर मुहर नहि पड़ल छल। “दू आवेदन लेल स्वीकार कएलक,” ओ कहलीह, “सुरक्षा-सामग्रीक खर्चक आवेदन अलग क्रममे लेबाक कहलक। हमरा दलक बीमार सदस्यक हस्ताक्षर बिना ओकर दाबी नहि जोड़ल; ओहि हेतु काल्हि भेट तय भेल।” प्रेमा गमछामे लपेटल एक छोट प्लास्टिकक थैली खोललीह, जाहिमे खराब भेल सुरक्षादस्तानाक खरीद-पर्ची छल। मंगरी ओकरा अलग लिफाफामे राखलीह। “ई पर्ची सामान खरिदल गेल, से कहैत अछि; खरिदक आदेश मालिक देने छल, से एखन प्रमाणित नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। फेर ओ घरक बाट पकड़लीह; दावाक पहिल सार्वजनिक प्रवेश होइतहुँ देय एखन बकाया छल।

मैथिली ओहि प्राप्ति-क्रमाङ्ककेँ देखिते कहलनि, “मंगरीकेँ छोट समाधान भेटल, मुदा कारखाना न खुलल, मजदूरी न भेटल।” हरिमोहन कहला, “ताहि लेल हुनकर निर्णय वास्तविक अछि। ओ ककरो दया नहि, उत्तर देबाक दायित्व माँगलनि।” ईशान उत्तर देलनि, “हमरो पत्रक संग एहेन एकटा खतरा अछि। लोक पढ़िकऽ मानि सकैत अछि जे बात समाप्त भेल। एतय स्पष्ट लिखबाक अछि जे शब्दक स्वीकृति, देयक भुगतान आ लेखकीय न्याय अलग चरण छथि।” मैथिली हुनकर पन्नाक खाली कात उँगरी रखलीह। ईशान नया वाक्य जोड़लनि—‘एहि प्रारम्भिक वक्तव्यसँ कोनो विवादक अन्तिम निपटारा मानल नहि जाए।’ ओहि वाक्यक बोझ हुनका अपन नामक तुलना मे बेसी लगल।

शामक कक्षामे फरीद अपन हाजिरी दर्ज करबैत अएल। जखन ईशान अनुमानक पाठ आरम्भ कएलनि तँ उदय नामक एक विद्यार्थी प्रश्न उठौलक। ईशान दोसर उदाहरण चुनलनि: भिजल आ सुखल अनाजक बराबर तौल देखलासँ ओकर उपजक एके इतिहास सिद्ध नहि होइत। ओ कहलनि जे सरिताक अनुभवक प्रसंगसँ एहि उदाहरणक स्रोतक जाँच चलि रहल अछि; ताहि लेल आजुक पाठमे एकरा केवल काल्पनिक परीक्षण-वाक्य रूपेँ राखल जा रहल अछि। फरीद प्रश्न उठौलक, “तँ जखन जानकारीक मूल लोक सामने नहि, अध्यापक ओकरा कसौटीक उदाहरण बना सकैत छथि?” ईशान कहला, “बना सकैत छथि, मुदा काल्पनिक आ प्रत्यक्ष देखल उदाहरणक पहिचान अलग देबाक पड़त।” कक्षामे सन्नाटा आदेशसँ नहि, चिन्तासँ अएल।

पाठ समाप्त भेल तँ ईशान विद्यालयक सूचना-पटपर प्रारम्भिक पत्र चिपकौलनि। ओ अपना नाम हटौलनि नहि; मैथिलीक योगदानक उल्लेख जोड़लनि आ सरिताक श्रमक भेद लिखलनि। नीचाँ खुलल टिप्पणी-सुनवाईक समय आ आपत्ति देबाक ठाम लिखल छल। दुई विद्यार्थी पत्र पढ़ि चुपचाप गेल। एक युवक आगाँ बढ़ि पुछलक जे लेखकत्वक अंतिम निर्णय कखन होएत। ईशान निश्चित दिन देबाक असमर्थता स्पष्ट कहला; हरिमोहन जे तीन दस्तावेजक स्रोत भेटबाक अगिला तिथि लिखने छलाह, ओतबा देखौलनि। एक विद्यार्थी कहलक जे ओ पुरान संस्करण पढ़ने अछि; ओ पृष्ठ-अन्तर मिलाएबाक लेल अनुमति चाहैत अछि। ईशान ओहि आग्रहकेँ उपकार नहि, उचित प्रश्न मानलनि।

सरिता घरमे दाल उतारैत छलीह जखन मैथिली हाथमे रोटीक पातर लोई लऽ पहुँचलि। “आइ बनएबाक वचन छल,” ओ कहलीह। सरिता कहलीह, “पहिने हाथ धुइ आउ। आ तावा पर ककर समय अछि से देखू।” नैरा ओसारमे अपन अन्वेषणक कागद बन्द कऽ बैसल छलीह; माइक भोजनक समयमे सत्ताइस नामक मूल पन्ना वा मिथुनक समाचार घुसेड़बाक हुनका कोनो इच्छा नहि छल। ईशान किछु देरमे पहुँचलाह, मुदा भात परसबाक अनुमति माँगिते सरिता हुनका एक लोटा पानि आनबाक कहलनि। एहन छोट काज कएलासँ पुरान देय समाप्त नहि होइत छल; घरक लोक सभ सेहो एकरा ताहि रूपमे नहि देखलक।

भोजनक बाद ईशान पत्रक एक प्रति सरिताकेँ पढ़ि सुनौलनि। ओ बीचमे रोकलीह। “एतय ‘अमूल्य सहयोग’ नहि लिखू,” ओ कहलीह, “अमूल्य कहबैत दाम गुम भऽ जाइत अछि। ‘तीन दिनक प्रतिलिपि-श्रम, अलग भोजन-व्यवस्था, उदाहरणक स्रोत’ लिखू।” ईशान वाक्य बदललनि। सरिता अगिला पाँति देखौलीह, “हम जे अपने आँखिसँ देखल बात कहने रही, ओकर स्रोत हमरा नामसँ पूछू। जे रुखसानासँ सुनलहुँ, ओकरा हमर प्रत्यक्ष देखल नहि लिखू।” ईशान कागदपर ओ भेद राखलनि। मैथिली एहि बीच रोटी बेलैत छलीह। तावा पर राखल लोईक एक कोना मोट रहि गेल; ओ सरितासँ पुछलीह जे एकरा फेर बेलब उचित होएत की नहि।

राति गहराएलापर ईशान थैलीमे अपन मूल बही रखलनि। ओहि बहीक पहिल पन्नापर हुनकर तर्क एखनहुँ हुनकर छल; दोसर पन्नाक संशोधनक ऐतिहासिक दायित्व एखन साझा परीक्षण चाहैत छल; आ छपल पोथीक अनाम धन्यवाद फेर पढ़ल जाएबाक प्रतीक्षा करैत छल। हुनका बुझायल जे गुरु होएबक अर्थ केवल सत्य सिखाएब नहि, अपन पुस्तकक भीतर जकर आवाज दबि गेल, ओकर प्रश्न सुनबाक स्थान बनाओब सेहो अछि। मुदा एहि बोधसँ ओ सभक ऋण चुकता भेल, से नहि। सरिताक तीन दिनक हिसाब, मैथिलीक पृष्ठवार दावा आ मंगरीक सात मजदूरक बकाया अपना-अपना कापीमे खुलल रहल। ईशान दीपक बुझौलनि, मुदा पत्रक दोसर प्रति ओ टेबुलपर एहन राखलनि जे भोरक उजासमे पहिले ओहीपर नजरि पड़य।

हस्तिनापुरक बाहरी बस्तीमे भोरक पहिल उजास ओहि ओसारपर पड़ल जतय राधा रथक पहियाक पट्टीपर लपेटबाक लेल कपड़ाक पातर फाँक काटि रहल छलीह। रातिक ओससँ भीजल कपड़ा चाकू लगिते सिकुड़ि जाइत छल। ओ चूल्हिक कात छोट खूँटा गाड़ि पहिने पट्टी सुखौलीह, तखन ओकर चौड़ाइ नापलनि। अधिरथक रथ काल्हि नगरक ऊबड़-खाबड़ बाटपर हिचकोला खा रहल छल; जँ पहियाक ढील आज नहि कसायल, तँ घोड़ा खिंचैत थाकत आ भाड़ामे भेटल काजो हाथसँ जाएत। राधा अपन बनाओल डोरीक गाँठ लग चूनक एक चिन्ह देलनि। राधा चाहैत छलीह जे मजदूरीक मापो याद रहए।

भीतरसँ कर्ण माटिक कटोरीमे पानि लऽ अएल। ओकर उँगरीमे धनुषक डोरीक महीन चीर छल। राधा कटोरी रखबैत चोट देखलनि आ तेल लगौलीह। “काल्हि के सिखौलक ई पकड़?” ओ पुछलनि। कर्ण पलक झुकोलक। “हम अपने कोशिश कएलहुँ। लक्ष्य दूर छल, बाँह काँपल।” राधा ओकरा कठोर मनाही नहि कएलनि। “दूरक लक्ष्य देखबाक पहिने डोरीक बल बुझ,” ओ कहलीह, “आ हाथ कटला पर ओकर इलाज अपन लाजक विषय नहि बनाउ।” कर्ण चुप रहल। ओ बाजारमे सुनल ओ वचन कहब नहि चाहैत छल जे रथ चलौनिहारक पुत्रक लेल धनुर्विद्या कोन कामक; मुदा हुनकर मौन राधासँ नुकायल नहि।

अधिरथ आँगनमे अएला तँ पहियाक धातुक घेरा हाथमे छल। “राजगृहक भंडारसँ अजुका मजदूरीक आधा भेटल,” ओ कहलनि। राधा रथक मरम्मतिक नब पट्टी देखौलीह। “आधा भेटल तँ पूरा कामक हिसाब छूटि नहि गेल। एहि सप्ताह घोड़ा लेल जौ, पहिया लेल तेल आ डोरीक सूत हम अपन धानक हिस्सा बेचि आनने छी। बहीमे ई अलग लिखल जाए।” अधिरथ हँसए लगला, फेर हुनकर मुख गम्भीर भेल। हुनका एतेक वर्षसँ बुझाईत छल जे घरक काजक पैसा अलग नहि होइत; मुदा राधाक थैली खाली भेलासँ रथक चक्का चलब सम्भव भेल, से ओ झुठला नहि सकैत छलाह।

बस्तीमे कपड़ा सीबनिहार वृद्धा धैरिक्केँ राधा दू नव फाँक देलनि। धैरि कहलीह जे नगरक भीतर सँकिना ठामपर जखन घोड़ा घुमाओल जाइत अछि, पहियाक पाछाँ पट्टी फँसैत अछि। राधा ओकर अनुभव सुनि डोरीक माप बदललनि। “तँ पहिल नाप गलत?” कर्ण पुछलक। “हम जे नापलहुँ से ओहि पहियाक लेल सही छल,” राधा उत्तर देलनि, “मुदा चलैत रथक दोसर कठिनाइ धैरि देखने छथि। नाप फेरब छलाव नहि, नव जानकारीक आदर अछि।” धैरि अपन सूतक दाम चाहलीह। राधा चुल्हिक कात राखल पइसा गनि देलनि; मेहनतक नामपर आपसी उपकारक बेड़ी नहि पहिरौलीह।

कर्ण रथक अगिला काठ उठबामे सहायता कएलक। जखन ओ धातुक घेरा बैटेबाक लेल झुकल, अधिरथ हुनका रोकलनि। “एखन गरम अछि।” कर्ण कहलनि, “हम डरैत नहि।” अधिरथ उत्तर देलनि, “डर नहि, देह बचएबाक बुझाइ चाही। ई रथ हमर रोजीक अछि, मुदा तोहर हाथ केवल एहि रथक लेल नहि।” कर्ण ओहि वाक्यसँ किछु घड़ी चकित रहल। जकर भविष्य नगरक लोक पहिने सँ रथक चक्का धरि बाँधि दैत छल, ओकर पिता ओहि हाथमे कतेक अलग सम्भावना देखि रहल छलाह। राधा अपन काम रोकि दुनूकें देखलीह; हुनका अभिमानसँ बेसी चिन्ता भेल जे ओ सम्भावनाक भोजन आ शिक्षाक दाम कतयसँ आयत।

दुपहरिमे नगरसँ एक संदेशवाहक अएल। ओ अधिरथसँ कहलनि जे अगिला सप्ताह राजकीय सवारी लेल समय राखि दिअथि। काजक दाम ओ स्पष्ट नहि कएलक। राधा ओसारसँ निकलि पुछलनि जे भोजन आ रातिक प्रतीक्षाक समयक भुगतान सेहो होएत की। युवक अचकचा गेल। “अहाँ रथ नहि हाँकैत छी,” ओ कहलक। “रथ ककरा दमपर निकसल, तकर हिसाब हम रखैत छी,” राधा कहलीह। “अधिरथ अपन मजदूरी तय करताह; घरसँ देल पट्टी, जौ आ मरम्मतक लागत सेहो दाममे जोड़ा जाए।” संदेशवाहक निश्चित उत्तर नहि दऽ सकल, मुदा खाली पातपर काजक दिन आ दाम पुनः पूछबाक बात लिखि लऽ गेल। राधा जानैत छलीह, ई पात भुगतानक वचन नहि; एतबे सही जे कियो मुफ्त उपलब्धि मानि समय उठा नहि सकत।

कर्ण माएक लिखल पात देखैत पुछलक, “हमर जन्मक कथा कतेक दूर धरि जनैत छी?” प्रश्न अचानक सुनि राधाक अँगुरीमे सूत रुकि गेल। ओ हुनका अपन घरमे आनल

पहिल दिनक स्मृति कहि सकैत छलीह, मुदा ओहि स्मृतिक आगाँ जे नहि जनैत छथि ओकरा भरि देबाक अधिकार हुनका नहि छल। “जे दिन तोरा पहिल बेर कोरामे लेलहुँ, ओ दिनक भय, ठंड आ तोहर रोएब हम जनैत छी,” ओ कहलीह। “ताहिसँ पहिनुक सभटा नहि। आ ई जे ओ पहिल दिनसँ आइ धरि ककर कोरा, भोजन आ रोगक रातिमे पलल, से सेहो सच अछि।” कर्ण फेर किछु नहि पूछलक। ओकर प्रश्न खत्म नहि भेल छल; ओकरा पहिल बेर एकहिसँ बेसी सचक जगह भेटल छल।

राधा अनाजक डलिया खोललीह। कर्णकेँ छोटक दिनमे बुझाओल गीतक आधी पाँति हुनका स्मरण अएल, बाँकी शब्द नहि। ओ एहि बेर अपूर्ण गीत गाबि देलीह, बीचमे हँसि पड़लीह। धैरि बाहरसँ स्वर पूरा करए लगलीह, मुदा ओहो दोसर भाँति। दुनू गीतक सही रूपपर विवाद नहि कएलनि। कर्ण खोरहरासँ रोटीक टुकड़ा लऽ हँसल। राधा मनमे सोचलीह—कर्मक गिनती जरूरी, मुदा सभ दिनक सुख बहीमे गनबाक वस्तु नहि। ओहि छोट पहरमे न कोनो राजाक प्रश्न छल, न जन्मक निर्णय; केवल ढील पहियाक कसावट आ घरक खुलल दुआर छल।

विदेहपुर, २०३९। पुरान अनाज-गोदामक सामने बिहानसँ धान सुखेबाक चादर बिछल छल। किरण राउत भूसी हटेबाक छोट सूप चलबैत छलाह; धानक दाना मेघक बाद फुलाएल माटिसँ मिलि जाय तें ओ पहिने खाली जगह झाड़ने छलाह। गामक बटाइदारसभकेँ नव ऋण-सूची दएबाक कहल गेल छल, जकर उपरि भागमे ‘एकीकृत देय’ लिखल छल। किरण पन्ना देखिकऽ सूप रखलनि। पाछाँ हुनकर मालिकक नाम खेतक पट्टामे छल, जखन बीहनक उधारी आ ढुलाईक भाड़ा हुनकर हिस्सामे जोड़ल गेल छल। ओ एहि तीन अलग सम्बन्धकेँ एक हस्ताक्षरमे मान्यता देब नहि चाहैत छलाह।

किरण अपन बेटी रेखाकेँ घरसँ बही अनबाक कहलनि। रेखा विद्यालयक बस्ता लऽ अएलीह, जकर भीतर पुरान पेंसिलक डिब्बा छल। ओ चादरक कात बैसि पिताक कहल अनुसार तीन स्तम्भ खींचलक—बटाइक उपज, बीहनक ऋण, ढुलाईक खर्च। किरण पुछलनि, “पहिने खेतक मालिक हमर नाउँपर जे कटौती लिखने अछि, ओकर कागद देखाबय पड़त?” रेखा उत्तर देलक, “हम रेखा खींचि सकैत छी; हिसाब सही घोषित करबाक अधिकार हमर नहि।” ओकर स्वरमे कक्षाक अभ्यास छल। किरण हँसलाह, मुदा

पन्नाक खाली घर भरबाक काम अपने कएलनि; बेटीकेँ अनजान ऋणक साक्षी बनबएब हुनका मंजूर नहि छल।

सामुदायिक तौल-काँटाक कर्मचारी कहलनि जे गोदाममे जमा धानक एक अंश मालिकक हवाले भऽ गेल, तँ नव हिसाबमे कटौती सामान्य बात अछि। किरण पुरान तौल-पर्ची देखौलनि। ओहिमे माल पहुँचबाक वजन लिखल छल, उपज-विभाजनक स्वीकृति नहि। “जँ धान पहुँचल, तकर वजन मानैत छी,” ओ कहलनि। “मुदा ककर हिस्सा कतेक, से एहि पर्चीसँ नहि सिद्ध होइत।” कर्मचारी दुपहरिमे मालिकक प्रतिनिधिकेँ बजाओलनि। किरण अपना घरक जमीनक अधिकारक झगड़ा एतय खोलबाक नहि चाहलनि; हुनकर आजुक माँग केवल पाछाँ जोड़ल ऋणक मद अलग देखब छल। ओ गोदामक दरबज्जापर अपन धानक बोरा ककरो रोकए नहि देलनि, कारण ओहि धानकेँ सुखेबाक समय बीति रहल छल।

गोदामक पाछू निर्माण-स्थलक टुटल छप्परमे रतन भुइयाँ एकटा चूना लागल ईट उठाकऽ देखैत छलाह। बरखा लागला पर छप्परक ओहि कात हुनकर पुरान ठेकाक कागद भीजि गेल छल। ओ ओकरा सुखएबाक लेल सूपक हवा माँगए किरण लग अएला। “हमर नामपर कर्जा चढ़ल अछि, जकर रुपैया हम देखलियो नहि,” ओ कहलनि। किरण अपन कागद सँकुचित करबाक बदला रतनक कागद लेल चादरक कोना छोड़लनि। “हमर खाता अलग अछि,” ओ स्पष्ट कहलनि, “मुदा सुखल कागद राखबाक जगह साझा भऽ सकैत अछि।” रतन चुपचाप पन्ना पसारलनि। ओ एहि प्रस्तावकेँ अपन विवादमे किरणक स्वतः समर्थन नहि बुझलनि।

रतनक पुरान बिलमे माटि ढोएनिहारक मजदूरी आ ठेकेदारक नामपर खरिदल औजारक मद एके क्रममे छपल छल। ठेकेदारक कारिन्दा हँसि कहलक, “दू पन्नामे एके नाम, तँ उधार तोहरे अछि।” रतन ओहि आदमीक सामने अपन कामक औजार खोललनि: फाटल हथौड़ीक बाँट, पुरान रस्सी आ ईट गनबाक छोट कापी। “जे हथौड़ी हम अपन रुपैयासँ बनौलहुँ, ओकर चिह्न देखू,” ओ कहलनि। “ठेकेदारक औजारक सूचीमे लोहाक बेलचा अछि; ओ हमर हाथमे कखन अएल?” कारिन्दा ठोस जवाब नहि देलक। रतन

अपन नामक नीचे लिखल रकमक मूल स्वीकृति देखबाक लिखित माँग कएलनि; ओ रकम तत्काल माफ भऽ गेल, एहन घोषणा नहि कएलनि।

किरणक बोलाओल मालिकक प्रतिनिधि आबि गोदामक तौल-पर्ची देखलक। ओ एकहि दिनक बोरा गनबाक बात करैत रहल, मुदा बीहन खरीदबाक ऋणक पुरान तिथि नहि देखौलक। किरण प्रस्ताव देलनि जे सही तौलवला पर्चीक आधारपर जतेक धानक हिस्सा निर्विवाद अछि, तकर निकासी आइ हो; विवादित कटौतीक रसीद भेटला धरि अपन हिस्सामे एको नव ऋण नहि जोड़ताह। प्रतिनिधि मानय चाहैत नहि छल; गोदाम-प्रहरी कहलक जे धान रोकला पर भिजबाक हानि दुनूक होएत। अन्तमे तौलवला बोरा पर अस्थायी चिह्न राखल गेल आ कटौतीक लेखा आगामी सुनवाई लेल अलग लिफाफामे गेल। किरणक धान बिकबाक बाट बन्द नहि भेल, मुदा ऋणक विवाद खुलले रहल।

बाजारक सँकरा गलिमे लक्ष्मी कठबनिया अपन दुकानक बेंचपर खाली शीशी उलटि रखैत छलीह। एक ग्राहक आनि देल टूटल ढक्कन बदलए चाहैत छल; लक्ष्मी ओकर सही आकार देखिकऽ मात्र समान वस्तु देबाक तैयारीमे छलीह। तखने इनार-समितिक नव सभापति एक मोट फाइल लऽ अएल। “एकहि समिति लेल अहाँ रस्सी आ ढक्कन दैने छी,” ओ कहलनि, “तँ मरम्मतिक संयुक्त घाटामे अहाँक जिम्मेवारी सेहो लिखल अछि।” लक्ष्मी ग्राहकक सामने विवाद नहि बढ़ौलीह। ओ पहिने टूटल ढक्कनक दाम निपटौलीह, फेर समिति-पत्र खोललीह। हुनकर छोट दुकानक बिक्री आ सामुदायिक निर्माणक खर्च दू बेमेल कागद छल।

लक्ष्मी खाताक ओ पाँति पर नख रखलीह जतय सामानक आपूर्ति दर्ज छल। “ई हमर दामक रसीद अछि। एकर ठीक नीचे कियो ‘समिति ऋणक संयुक्त जिम्मेदार’ लिखने अछि। कोन दिन हम एहन वचन देलहुँ?” सभापति कहलनि जे पहिल समिति सबकँ अपन सदस्य मानैत छल। लक्ष्मी उत्तर देलीह, “सदस्य होएब, सामान बेचब आ देनदार बनब—तीनू अलग काज अछि। हमर दुकानमे राखल काठक ढक्कन बिकला पर ओकर कीमत भेटबाक अछि, मगर इनारक देवालक विफल मरम्मतिक बोझ हमर नहि।” ओ अपन मूल रसीद वापस लेलीह आ प्रति पर लिखल अतिरिक्त वाक्यक स्रोत माँगलनि।

ओहि बीच रतन बजारमे औजारक पुरान दाम पूछबाक अएलाह। लक्ष्मी हुनका चाय नहि, पहिने बैसबाक चौकी देलीह; हथौड़ीक नया बाँटक माप देखौलनि। रतन पुछलनि जे ई सामानक बिक्रीक लिखित बिल भेटत की। लक्ष्मी तत्काल बिल लिखलीह। “काल्हि कियो ई कहि सकैत अछि जे हमर दुकानदार सभ ठेकेदारक साझी छथि,” ओ मुस्किया कऽ कहलीह। रतन उत्तर देलनि, “हमरो नामक भरोसापर एकटा कर्ज लगा देलक। आजु हम पूछलहुँ जे भरोसा ककर हस्ताक्षरक?” दुनू अपन-अपन शिकायतमे अन्तर बुझैत छलाह, मुदा एखन एक दोसराकेँ मूल कागद देबाक बाट मात्र तय भेल—रतन अपन औजारक दामक प्रति रखताह, लक्ष्मी अपन दुकानक बिक्री-पंजी सुरक्षित रखतीह।

कबीर विधिक सहायता-कक्षसँ उतरैत बजारमे अएलाह। मंगरी गोराइतक मजदूरी-आवेदनक प्राप्ति-पर्ची हुनकर थैलीमे छल, मुदा मंगरीक अनुमति बिनु ओ कागद एहि विवादमे नहि खोललनि। किरण हुनका तीन स्तम्भवला पन्ना देखौलनि। कबीर पहिने पुछलनि, “एहि पन्नाक कोन हिस्सा अहाँ अधिकृत जाँचकेँ देखाएब चाहैत छी?” किरण बटाइक आँकड़ा चुनलनि, बेटी लिखल गृहस्थीक खर्चक पृष्ठ नहि। रतन ठेकेदारक ऋण-स्वीकृतिक मूल माँगबाक आवेदन पढ़ौलनि। लक्ष्मी समिति-रसीदमे थपल पाँतिक स्रोत जाँचबाक लिखित निवेदन रखलीह। कबीर तीनू केँ एकटा सामूहिक ‘पीड़ित सूची’मे नहि बदललनि; अलग कार्यालय, अलग जवाबदेही आ अलग साक्ष्यक रास्ता बतौलनि।

कबीरक फोनपर नैराक छोट सन्देश अएल—सरिता एखन सत्ताइस नामक मूल पन्ना खोलबाक निर्णय नहि देने छथि; प्रति आ मूलक मुद्दा हुनकर अपन सीमामे अछि। कबीर संदेश पढ़ि फोन खिसामे रखलनि। रतन पूछलनि जे ओ कानूनी काजसँ आबैत छथि तँ सब कागद तुरन्त सही करा देताह की। कबीर हँसैत कहलनि, “कागद मांगबाक बाट बुझा सकैत छी; साँच करबाक सामर्थ्य कागद, लोक आ सुनवाईक अछि।” ई बात कहिते हुनका अपन परिवारक पुरान पन्ना याद पड़ल—जन्मक जानकारी, पालनक निर्णय आ घरेलक अधिकार जे एकहि आवेदने निपटि नहि सकैत। ओ अपन मनक विषय लेल आन लोकक कागदक जगह उपयोग नहि कएलनि।

साँझमे कबीर सरिताक घर पहुँचलाह। नैरा बाहरी कोठरीमे मैथिलीक संशोधनक प्रति बन्द कऽ रखैत छलीह; माइक नकल-संग्रहक कापी आजु नहि खुलल छल। सरिता

चूल्हिपर दूध चढ़ौने छलीह। “अहाँ ककरो नामवला पुरान पन्ना देखबाक आयल छी?” ओ पुछलनि। कबीर कहला, “नहि। आइ हमर अपन बात पूछबाक अछि—जँ पालन करनिहारक इतिहास कागदमे कम लिखल हो, ओकर अर्थ ओ जीवन कम वास्तविक अछि?” सरिता दूध उतारि ढक्कन धेलनि। “कागद कम अछि तँ याद झूठ नहि,” ओ कहलीह, “मुदा याद अछि तँ जे कागद नहि देखलहुँ ओकर मजमून अपने लिखि दैत छी, सेहो नहि। अहाँ जकर कथा पूछैत छी, पहिने ओकरा कहबाक अनुमति दियौ।”

कबीर कहलनि जे सुभद्रा सँ किछु पुरान बातक चर्चा चलि रहल अछि, मुदा सुभद्राक अपन कारण आ निजता अछि। ओकरा जानकारी भेटबाक इच्छाक संग ओहि अधिकारक मेल कइसे हो, से हुनका स्पष्ट नहि छल। सरिता उत्तर देलीह, “सुभद्रा जहिया किछु कहतीह, तकरा अहाँ प्रश्न पुछि सकैत छी। मुदा लोकसभा आगाँ हुनका बोलबएब सत्यक सेवा नहि। आ जकरा घरमे अहाँ पललहुँ, हुनकर रातिक परिश्रम जन्मक कागद भेटिते गुम नहि भऽ जाएत।” नैरा ओहि वचनपर किछु नहि जोड़लीह। कबीरक अपन मन आ ओकर परिवारक बात हुनका अनुसन्धानक कच्चा माल नहि बुझायल।

कबीर अपन बाल्यकालक एक दृश्य याद कएलनि। बरसातक दिन घरक भीतर रखल सुखल बस्ता भीजि गेल रहए; पालन करनिहारी स्त्री राति धरि कापीक पन्ना अलग सुखौने छलीह। हुनका ओकरा दिनक तिथि नहि याद, मुदा भीजल कागदक गन्ध आ कोनापर राखल धानक मुठ्ठी याद छल। ओ स्मृतिक विश्वसनीयताक पूरा दावा नहि कएलनि। “हम हुनका सँ एहि घटना पर फेर पूछब,” ओ कहला। सरिता मुस्की देलीह, “हँ, आ जँ ओ कहथि जे ओहि दिन कापी सुखौनिहार आन कियो छल, तँ अपन स्मृति फेर राखब। स्मृति बदललासँ प्रेम घटैत नहि।” ई सुनि कबीरक मुखपर कने देर बाद सहज उजास अएल।

हस्तिनापुरक बस्तीमे ओही दिनक साँझ राधा पहियाक नव पट्टी खोलि देखलीह। धेरि सीबनिहार छोट कोना जँ जोर सँ घिसायल छल तँ ओ फाटबाक खतरा रहैत। अधिरथ एक बेर रथ घुमाकऽ अनलनि। चक्का अबाध घुमल। कर्णक आँखि चमकि उठल। राधा चाकक पासे मुँह झुकाकऽ धागा छुलनि। “ई काम सफल,” ओ कहलीह, “मुदा काल्हि रास्ताक धूलि आ भार फेर परीक्षा लेत।” अधिरथ एहि बेर पट्टीक मूल्यक संग राधाक

खर्चल जौक रकम सेहो अपन बहीमे लिखलनि। कोनो राजकीय आदेश ई जोड़ करौने नहि छल; घरमे उठल प्रश्न हुनका लिखबाक बाध्य कएने छल।

कर्ण घामसँ फीका पड़ल अपन लकड़ीक धनुष लेकेँ बाहर निकलए लगल, तखन राधा ओकरा आवाज देलीह। “काहि लेल?” कर्ण पुछलक। “पहिने खा लिअ। खाली पेट अभ्यास करब तँ चोट बढ़त।” कर्ण कहलक, “हम बड़ा लक्ष्यक लेल तैयार होएब चाहैत छी।” राधा उत्तर देलनि, “लक्ष्य तोहर चुनल हो, मुदा समयपर भोजनक अधिकार आन ककरो तय कएल पुरस्कार नहि।” ओ ओकर थारीमे मोट रोटी आ साग परसलनि। अधिरथ ओकरा धनुष पकड़बाक सुधारल ढंग देखौलनि, मुदा गुरु बनबाक दावा नहि कएलनि। कर्ण धनुष रखि भोजनक लेल बैसल; भविष्यक प्रश्न रहल, मुदा रातिक भूख मिटल।

धैरि संझुक अँधारमे अपन सिलल पातरसूतक शेष दाम लए अएलीह। राधा पुछलनि, “काल्हि जिनका लेल लम्बा फाँक सीबबाक अछि, ओकर नाप हमकाँ अनब की अहाँ अपने जएब?” धैरि अपन पसिन बतौलीह—ओ स्वयं जएतीह; दूसरक कहनामे नाप बदलला सँ हुनका फेर काम कए पड़ैत। राधा दरबज्जा धरि संग गेलीह। आकाशमे पहिल तारा देखिकऽ हुनका ओ पुरान गीतक आखिरी पाँति अचानक याद पड़ि गेल। ओ गुनगुनौलीह; धैरि सुर मिलेलनि, फेर दुनूकेँ भान भेल जे गीतक शब्द अलग छनि। ओ हँसि पड़लीह। राधा एहि हँसीकेँ बचा लेलनि—घरेलू श्रमक बीच ओकरा भी अपन मर्जीक छोट अवकाश चाही छल।

विदेहपुरमे अगिला भोर किरणक गोदाम-पर्चीक नकल अलग लिफाफामे पहुँचल। निर्विवाद धान लेल निकासीक अनुमतिखाना भरल छल; विवादित ऋणक पाँतिपर ‘मूल कागद देखब शेष’ लिखल छल। किरण धानक बोरा ठेलापर लदबौलनि। रतन औजारक मूल-स्वीकृति माँगबाक निवेदनक प्राप्ति-अंक अपन कापीमे उतारलनि। लक्ष्मी समिति-ऋणक अतिरिक्त वाक्य काटबाक लिखित आपत्ति दऽ अपना दुकानक देय लेल भिन्न रसीद सँभाललीह। एहि तीनू परिणाममे न कोनो साझा शत्रु पकड़ायल, न सभक देनदारी चुकल; मुदा अब कियो हुनका सभक मौनकेँ एके संयुक्त सहमति लिखि नहि सकत।

कबीर घर घुरि कऽ पुरान अलमारीक नीचला तहसँ एकटा सूत उधरल थैली निकाललनि। एहिमे हुनकर छात्रावस्थाक कापी, स्कूलक पुरान कार्यक्रमक पर्ची आ एकटा कपड़ाक छोट रुमाल छल। एक कागदपर पालन करनिहारीक नाम साफ लिखल छल; दोसर कागदपर नामक स्थान खाली। ओ खाली स्थान भरबाक लेल कलम नहि उठौलनि। रुमाल धूरि झाड़ि अलग रखलनि आ मनमे निश्चय कएलनि जे परिवारक पुरान सदस्यसँ ओहि वस्तुक कथा उनकर समय आ इच्छानुसार सुनताह। तह लगा रखल मूल दस्तावेज सरिता अगिला दिन खोलतीह वा नहि, ओकर अधिकार हुनकर छल; कबीरक अपन पालनक बही सेहो दोसरक जन्मरहस्यक नामपर खाली नहि बनि गेल छल।

अध्याय ८६ • मूल पन्ना

पीतरक डिब्बाक ढक्कन उठबैत सरिताक नखक कात अटकल पुरान सूत टूटि गेल। ओ सूत हटाकऽ फेंकलनि नहि, चौकीक कात राखलनि। भीतर पातरसँ तह कएल कागद, सूखल फूलक एक पाकुड़ी आ छोट रसीद छल। पिछिला कतेको सप्ताहमे नैरा एहि डिब्बाक ठाम देखैत अएलीह, मुदा आइ पहिल बेर सरिता अपने एकरा बाहर निकालबाक घड़ी तय कएने छलीह। ओ पहिने खिड़कीक किवाड़ आधा बन्द कएलनि; उजास एतेक रहए जे लिखावट पढ़ल जा सकए, बाहरसँ मेज साफ नहि देखाए। “तोरा मूल देखायब,” ओ कहलीह, “मुदा एकरा अपना संग लए नहि जाएब। आ जे नामक ऊपर हमरा तह राखल अछि, ओ तह एखनो नहि खुलत।” नैरा बैसबाक पहिने अपन फोन झोरामे बन्द कऽ देलीह। माइक विश्वास प्राप्त करबाक पहिल काज आज किछु नहि करब छल।

सरिता ओहि कागदकेँ पूरा नहि पसारलनि। तीन मोड़मे पहिल दू खोलि राखलनि; अन्तिम मोड़ छोट कागदसँ ढाँपल रहल। पुरान स्याहीक पाँतिमे लिखावट कतहु गाढ़, कतहु हलुक छल। चारि नामक अक्षर दोसर रंगमे छल, जकर विषयमे सरिता पहिने कहि चुकल छलीह जे ओ सभ पछिला समयमे जोड़ल गेल। नैरा पुरान प्रतिलिपि निकाललीह। ओकर अंतिम घर पहिनहिसँ रिक्त छल, आ पाछाँ सरिताक निर्देश लिखल। मूलक छब्बीस खुलल नाम आ प्रतिक छब्बीस नाम संख्या मे मिलैत छल, मुदा तेसर पाँतिक एक अक्षर प्रतिमे कने अलग उतरि गेल छल। सरिता ओकरा देखिकऽ कहलीह, “ई तोहर नकलक गलती हो सकैत अछि। जे अक्षर मूलमे अस्पष्ट, तकरा पूरा नाम बुझि कऽ लिखि देब ठीक नहि।” नैरा ओ पाँतिक कात प्रश्नचिह्न जोड़लीह, नाम नहि बदललीह।

“चारि दोसर स्याहीवला नाम एखनो तोरा लेल चारि तरहक रहस्य छै?” सरिता पूछलनि। नैरा उत्तर देलीह, “एखनो हमरा ई नहि बुझल जे ओहि चारूकेँ एकहि कारणसँ जोड़ल गेल छल वा नहि।” सरिता मुनिकऽ कहलीह, “नहि। एक दिन एक स्त्री अपन सुधारक निवेदन लऽ अएलीह; दोसर दिन कियो कहलक जे परिवारक नाम दोसर पन्नामे घुसि गेल। बाँकी दू प्रसंग अलग छल। हम सब दिन एक रंगक स्याही कहाँ सँ आनितहुँ?” ओ मुस्करए चाहलीह, मुदा हँसी बनल नहि। नैराक नोटमे ‘रंग समान, घटना समान’

लिखल एक पुरान अनुमान छल। ओहि पाँतिक ऊपर एकटा पातर रेखा खींचि नीचाँ लिखलीह—‘स्याहीक भिन्नता देखल; कारण प्रत्येक नाम लेल पुनः जाँचबाक।’

कपड़ाक पोटलीमे सरिता एक दोसर पर्ची राखने छलीह। ई ओ समयक प्रवेश-रसीद छल, जतय ककरो तीन दिन धरिक प्रयासक बाद कार्यालयमे प्रवेश भेटल रहए। रसीदपर समय आ अंक छपल छल, सुनवाईक फैसला नहि। नैरा पहिने ई विवरण उतारने छलीह। आइ ओ पुछलीह, “एहि रसीदक क्रमाङ्ककेँ सूचीमे लिखल क्रमसँ मिलाउ की?” सरिता कहलीह, “मिलान जाँचक प्रश्न भऽ सकैत अछि, मुदा मिलला मात्रसँ ओहि लोकक बात मानल गेल, से सिद्ध नहि होएत।” सरिताक बोलमे ओ थकान छल जे कागदक असंख्य छोट हार देखलाक बाद अबैत अछि। “हम ई नामसभ अपराधी पहचानबाक लेल नहि लिखने रही। ई ओहि लोकक कामक लेखा छल जिनकर बात बीचेमे अटकल गेल।”

दुआरपर रमणीक आवाज अएल। ओ पाछू घाटक जाल सुखएबाक रस्सी माँगए अएलीह, मुदा देखलीह जे घरमे कागदक काज चलैत अछि। सरिता पन्नाकेँ तखनहि फेर ढाँपलनि। नैरा उठि बाहर गेलीह। रमणी बिन्दक हाथपर भीजल जालक महीन काट छल। “बरकी पोखरि पर आजु नाप होएत,” ओ कहलीह। “पहिने कहल गेल छल जे केवल पुरुष पट्टाधारी घाटक बाट तय करता। हमरे जाल ओहि पानिमे डूबैत अछि, हमर नाउँ कागदमे नहि। हम अपन मायकेक पत्र लेने छी, जाहिमे गाँगीक नाम अछि। ओकरा नदीक नक्शा नहि बनाबय, हमर मातृपरिवारक बात बुझबाक लेल रखने छी।” नैरा एक बेर माइक दिस देखलीह। सरिता भीतरसँ उत्तर देलीह, “जँ कागद पढ़बाक अछि तँ लोकक नामक अधिकार पहिने बुझू। हमर बात हमरा घरमे बाँचल अछि, पोखरिक काम पोखरिपर।”

नैरा अपन पहिल नकलक कात एक पुरान तारीख देखलीह। ओहि दिन संकेत खराब फोनक ढक्कन बदलबाक घर अएल रहए, आ सरिता अन्तिम तह खुलब नहि देने छलीह। नैरा मनमे तिथिक क्रम मिलौलीह; माएक पन्ना पहिने लिखल, ओकर प्रतिलिपि बादमे बनल, मुदा बाहर घूमैत ओ छापल सूची के कखन बनौलक, से कोनो पुरान नोटमे नहि। “हम ई तय करए चाहैत छी जे जे नकल देखैत छी, ओकरा मूल कहबाक अधिकार के दैत अछि,” ओ कहलीह। सरिता डिब्बाक पुरान खरोचपर अँगुरी फेरैत उत्तर देलीह, “हमर

लिखल पन्नाक मूल तऽ एही छै। कागदपर सरकारी मुहर लगा देलासँ हमर हाथक अक्षर दोसरक नहि भऽ जाएत।”

दुपहरिसँ पहिने सरिता नैराकेँ एक छोट निर्णय सुनौलनि। ओ मूल पन्नाक खुले भागकेँ दुनूक सम्मुख कागदपर दर्ज करए देतीह, मुदा मूल डिब्बासँ बाहर नहि जाएत; निरीक्षणक दिन, तहक दशा, छब्बीस पढ़ल प्रविष्टि आ ढाँपल अन्तिम स्थानक उल्लेख मात्र नकलमे रहत। जे अभिलेख कार्यालयसँ मँगाओल जाएत, ओकरा सरिताक निजी मूलक दर्जा नहि देल जाए। नैरा माइक वाक्य अपन शब्दमे फेर कहलीह, जाहिसँ चूक न रहए। सरिता पुछलनि, “तोहर प्रति पहिनेसँ छौ। आजु नव बात की भेटल?” नैरा कहलीह, “एक अक्षरक भेद, रंगक कारणविषयक अपन गलत अनुमान, आ ई जे अहाँ पन्ना केकरो जाँचकेँ देखेला छी, देला नहि।” सरिता सिर हिलौलनि। हुनकर हाथसँ कुंजी आ कागदक अधिकार दूनू नहि खसल।

बरकी पोखरिक घाटक कात आजु पानि स्वच्छ देखाइत छल, मुदा सीढ़ीक तेसर पायदानपर चिपकल हरियर परत पयर फिसलाबए तैयार छल। तारा मल्लिक बाँसक छड़ीसँ अघटक कादोक गहिराइ तीन ठाम जाँचि रहल छलीह; दू ठाम छड़ी घुटना धरि धँसल, तेसरमे ईटक ठोस किनारा भेटल। अदिति माप-पत्रपर ‘इहाँ देखल’ लिखलीह, सम्पूर्ण पोखरिक औसत गहिराइ नहि। कातमे माछक जाल सुखैत छल आ कपड़ा धोएनिहार स्त्रीसभक पाटपर खाली पेटी रखल छल। एक ठेकेदार पर्ची देखबैत कहलक जे पट्टा हुनकर पक्षक अछि, तँ घाटक अगिला चालीस हाथ जगह बन्द रहत। रमणी पुछलीह, “पट्टामे माछ पकड़बाक पानीक हिस्सा कहाँ लिखल अछि आ लोक उतरबाक बाट कहाँ रोकल अछि? दूटा रेखा एकहि नहि भेल।”

पाट लग उर्मिला कपड़ाक गट्टर रखि नहि सकैत छलीह; भीजल बोझ काँधपर टिकौने ओ ठाढ़ रहलीह। रमणी हुनका अपन जालक लकड़ी देलीह, जाहिएर गट्टर क्षणभरि टिकि सकए। ठेकेदारक लठैत अगिला कात रस्सी तनबाक कहलक। तारा ओकरा रोकलीह —“नाप पूरा नहि, रस्सी नहि बढ़त।” रमणी अपन पुरान पट्टाक आधा पन्ना खोललीह, जकर पहिल भागमे पुरुषक नाम, दोसर भाग अपूर्ण छल। “हमर संग माछ पकड़निहारी स्त्रीसभक नाम लिखबाक आवेदन पहिने देल गेल। पुरान आधा पन्ना देखाकऽ अहाँ सभ

ओकर उत्तर टारैत छी।” ठेकेदार कहलनि जे साझा पट्टा केवल परिवारप्रमुखक नामसँ चलैत अछि। रमणी थाह पबैत छलीह जे परिवारक जाल बुनबाक श्रम आ अधिकारक नाम अलग-अलग कऽ देल गेल अछि।

रेणु गोंढ़ी अघट दिससँ अएलीह। ओ पोखरिक घेरावपर अपना पुरान आपत्तिक प्राप्ति-पर्ची रखलीह, मुदा रमणीक फाइलमे ओकरा जोड़ए मना कएलनि। “हमर अपील घेरल बाटपर छै,” ओ कहलीह, “रमणीक प्रश्न साझी जलकरमे स्त्रीक हिस्सा अछि। दुनूकँ एक करब तँ उत्तरमे कियो कहत—एकर फैसला तऽ भऽ गेल।” रेणुक संग हुनकर दिदियौत पत्रक एक पुरान पन्ना छल, जाहिमे ‘धौरी’ स्थाननामक उल्लेख आ पट्टा देखल गवाहक हस्तलिखित वचन छल। ओ स्पष्ट कहलीह जे पत्रमे लिखल नामसँ धौरीक प्रवाह, पोखरिसँ ओकर मिलान वा सीमा सिद्ध नहि होइत; केवल ई बुझाईत अछि जे पुरान परिवारक पट्टा-विवादक स्मृतिमे ई नाम प्रयुक्त छल। अदिति दुनू कागदक अलग स्रोत-पाँति बनौलीह, आ स्थल-नक्शापर अनुमानक रेखा खींचबाक प्रस्ताव रोकलनि।

रमणी मायकेसँ आयल गाँगी-लिखल पत्र पसारलीह। पत्रक कोनापर माँक हाथक पातर अक्षर छल—मछरीक दाम पहुँचबाक सूचना आ बेटीक हिस्सा नहि भूलबाक आग्रह। पत्र पढ़िते रमणीक स्वर नरम भेल, मुदा ओ तुरन्त ओकर मोल बतबए लगलीह। “ई हमर जीवनक दस्तावेज अछि। ई बरकी पोखरिक सीमा प्रमाणित नहि करैत। मुदा हमर माय हमरा अधिकारक नामसँ पुकारैत छलीह, एतय पट्टामे हम केवल ककरो घरक स्त्री छी।” तारा पुछलीह जे ओ कागद सार्वजनिक पंजीमे रखबाक सहमति अछि की। रमणी उत्तर देलीह, “मायक पूरा पत्र नहि। ‘स्त्रीक नाम जोडबाक आग्रह’ लिखू; जरूरत पड़त तँ हम तिथिक हिस्सा देखाएब।” नैरा अपन घरक गोपनीय पन्नाक बात मनमे रखलीह, मुदा रमणीक अधिकारक प्रत्यक्ष प्रश्नक आगाँ ओकरा दृष्टान्त बना कऽ नहि रखलीह।

मापक काजमे तीव्र विवाद भेल। ठेकेदारक प्रतिनिधि पोखरिक पच्छिम घाटसँ अघट तक तनल रस्सीकँ पट्टाक सीमा घोषित करए चाहैत छल। तारा माप-पत्र देखबैत कहलीह जे ई केवल आजुक निरीक्षणक सीधी दूरी अछि, विधिक सीमा नहि। कादोमे गड़ल तीन पुरान खूँटा देखल गेल; दू खूँटा हिलैत छल, एक ठोस। उर्मिला पाट धरि पहुँचबाक साँकर

पयरबाट देखौलीह, जतय बरखामे पानि भरलापर ओ बोझ लेने नहि चलि सकैत छलीह। अदिति तत्काल नाप कएलनि—खुलल भागमे एक बेरमे एक मनुख आ गट्टर चलबाक जगह छल, छड़ीक नापसँ बाधक ठाम अलग चिन्हित भेल। ओ कागदमे ‘आवागमन बाधित’ लिखलीह, ‘सम्पूर्ण घाट अवैध’ नहि।

रमणी प्रतिनिधिकेँ कहलनि, “आज हम माछक बिक्री रोकब नहि। मुदा एहि रस्सीक भीतरे स्त्रीक नावक बाट बन्द करब तँ कल्हि जाल कोना उतरत?” ठेकेदार कहलक, “हम तऽ भाड़ा चुकौने छी।” रमणी उत्तर देलीह, “अहाँ जे चुकौने छी, ओकर मद देखाउ। भुगतानक रसीद सभ प्रयोगक एकाधिकार नहि होइत।” फेर ओ अपना संगक तीन माछ-पकड़निहार स्त्रीकेँ नाम कहबाक अवसर देलीह। एक स्त्री अनुपस्थित छलीह; हुनकर नाम बिना स्वीकृतिक आवेदनमे जोड़ए रमणी मना कएलनि। तारा ओहि दिनक निरीक्षणपर हंगामी निर्णय लिखलीह—मापक समय लगाओल नव रस्सी हटत, कपड़ा पाटक बाट एखन खुलल रहत, आ जलकरक पूरा मूल पट्टा तथा अनुपस्थित परिशिष्ट देखलाक बाद अधिकारक औपचारिक सुनवाई होएत।

नगर कार्यालयमे रमा कर्णक सामने एहि घाटक पत्रक प्रति रखल गेल। ओ अधिकारीक टेबुलपर मूल पट्टा नहि देखलीह। बस कम्प्युटर सँ निकालल दू पन्ना छल, जाहिमे एक स्तम्भक शीर्षक ‘अनुज्ञप्ति’ आ दोसरक ‘परिवार प्रतिनिधि’। रमणीक नामक जगह रिक्त। कार्यालयक एक वरिष्ठ सहायक फुसफुसा कऽ कहलक, “अहाँ एतबे बदलि दिअ जे परिवारक सहमति अछी। बादमे सब हस्ताक्षर लऽ लेब।” रमा कुर्सी सँ उठि पर्चीक उपरि तिथि देखलीह। “जखन सहमति भेटले नहि, तखन सरकारी प्रतिमे सहमति लिखब ककर आदेश?” ओ पुछलीह। सहायक जवाब देलक, “काम जल्दी अछि।” रमा कहलनि, “जल्दीकेँ लिखित आदेशक बदला नहि मानब। अहाँ मूल पट्टा आनू आ आवेदन प्राप्त भेलाक स्थिति जसक तस रहत।”

नैरा दफ्तरमे रमासँ अलग कागदक प्रसंग उठौलीह। सरिताक हस्तलिखित सत्ताइस नामक पन्ना सरकारी मूल नहि, निजी मूल सूची अछि; कार्यालयसँ जे बदलल प्रतिलिपि घुमि रहल अछि, ओकर प्रमाणिकता जाँचबाक अछि। रमा टेबुलपर कागदक दू ठाम खाली रखलीह। “कागदक मालिक आ कागद बनबौनिहार एक नहि होइत,” ओ कहलीह।

“अपन मायक लिखल मूल घरमे छनि, तकरा सरकारी फाइल नहि बना दिअ। ई जे कार्यालयक सीलबला प्रति अछि, एकर मूल प्रविष्टि देखल बिना हम ककरो नाम जोड़ि वा हटाय नहि सकैत छी।” नैरा पुछलीह जे कार्यालयक सीलबला प्रतिमे जे पाँच भिन्न परिचय देखाइत अछि, से किएक। रमा उत्तर देलीह, “पहिने मूल प्रविष्टि आ परिवर्तनक आदेश खोजब; ककरो सुरक्षा लेल बदलाव भेल हो सकैत अछि, सेहो सम्भावना अछि। एखन केवल भिन्नता देखल अछि।”

रमा अलमारीसँ ओ चलैत प्रतिलिपि निकलवौलीह, जकर तेसर पन्ना कार्यालयक बहससभमे बारम्बार देखाओल गेल छल। माथपर छपल अंक छल, मुदा प्राप्तिक मूल बहीमे ओ अंकक सँग कोन फाइल जुड़ल, से तुरन्त भेटल नहि। नैरा नामक पाँतिसभ अपन नकलसँ गनलीह। कोनो पाँतिमे पिता अथवा अभिभावकक सम्बन्ध बदलल देखाइत छल, कोनोमे एक परिचयक बदला दोसर; कुल पाँच प्रविष्टि चिन्हित भेलीह जाहिमे भिन्नता फेर देखबाक छल। सत्ताइसम नामक तह नहि खुलल रहए, तँ ओहि स्थानक तुलना कएल गेल, एहन दावा ओ नहि कएलनि। “पाँच भिन्नता भेटल,” रमा कहलीह, “पाँच अपराध नहि भेटल।” ओ प्रति अपना कार्यालयमे सुरक्षित राखबाक प्राप्ति लिखलीह, मूल पंजी देखबाक आवेदन सेहो।

एहि बीच रोजी लालबेगी कार्यालयक सफाइ-कार्यक हाजिरीक देय लेल अएलीह। हुनकर नामक आगाँ कम्प्युटर-प्रविष्टिमे धर्मक अनुमान आ पेशाक श्रेणी एके खाने राखल छल। कर्मचारी कहलक, “ई तँ सभक एही तरह भरल जाइत छै।” रोजी उत्तर देलीह, “हम अपन समुदायमे पूजा-पद्धति आ घरक परम्पराक जे परिचय दैत छी, ओकरा अहाँ हमर कचरा उठेबाक ठेकासँ किएक बुझैत छी? हम पेशासँ आज एहि कार्यालयक सफाइ करैत छी; अपन धर्मक घोषणा कतए आ केहन करब, से हमर अधिकार अछि।” ओ एकटा सुधार-आवेदन अपन हाथे लिखलीह। रमा ओकरा स्वीकार कएलनि, मुदा मूल प्रविष्टि तुरन्त बदलि देबाक झूठ आश्वासन नहि देलीह। रोजी कहलीह, “प्राप्तिक अंक भेटत तँ हम अगिला महीनाक हाजिरी लेल फेर आबि सकब। मुदा हमर पहिचानक घर रिक्त रहए धरि मजदूरी रोकल नहि जाए।”

दफ्तरक दुआर लग रीता एक्का भीजल कागद सावधानीसँ सुखा रहल छलीह। ऋण-वसूलीक ताजा सूचनामे हुनकर उपाधि सँग दोसर व्यक्तिक नाम जोड़ल छल, आ एके पन्नामे जमानतदारक ठाम हुनकर हस्ताक्षर बताओल गेल छल। ओ पहिने नदीघाटक मरम्मति-आवेदनक गवाह रहलीह; उधार लेनिहारी नहि। “हम ककर कर्ज चुकाएब?” ओ पुछलीह। वसूलीक प्रतिनिधि कहलक जे परिवारक परम्परागत नाम मिलैत अछि। रीता अपना गवाह-पर्चीक समय आ वसूली-पत्रक तिथि अगल-बगल रखलीह। “नामक एक अक्षर मिललासँ हस्ताक्षर हमर नहि भऽ जाएत। मूल अनुबन्ध आ रकम लेनिहारक स्वीकृति देखाबू,” ओ कहलीह। प्रतिनिधि पन्ना देबाक बदला फोटो खींचि लेबाक कहलनि। रीता मना कएलनि; बिना स्रोतक फोटो हुनकर आपत्तिक प्रमाण नहि बनत।

रमा रीता सँ वसूली-पत्रक नकल लेलनि, मुदा ओकरा सरकारी सत्यापित अनुबन्ध नहि कहलीह। ओ स्पष्ट लिखलीह—‘दावेदार द्वारा प्रस्तुत प्रति; मूल मागल जायत’। रीता कहलीह, “पुरान गवाहीक कागद हमर झोरामे अछि, एखन नहि छोड़ब। पहिने जकरा माँगब अधिकार अछि, ओकरा लिखित कहए दिअ।” नैरा ओहि दिन देखलीह जे सरिताक सुरक्षित सूची जकाँ रीता अपन कागद रोकि रहल छलीह, मुदा कारण अलग छल। एकर अर्थ न कर्ज माफ, न वसूली सही। रोजी अपन सुधारक प्राप्ति लऽ चलि गेलीह; रीता अनापत्ति नहि, मूल अनुबन्ध देखबाक माँग लऽ घुरलीह। रमा दुनू फाइल अलग अलमारीमे रखलीह।

आधा दिनक बाद नैरा सरिताक लग वापस पहुँचलि। ओ केवल खाली छापल एक तुलना-फार्म अनलीह, कोनो सरकारी नामपन्ना नहि। सरिता पूछलनि, “अहाँक दफ्तरमे की भेल?” नैरा कहलीह, “पोखरिक पट्टामे रमणीक नाउँ नहि भेटल, मुदा मूल परिशिष्ट देखल नहि गेल। रोजी अपन परिचय अलग लिखेलनि, रीता ऋणक मूल माँगलीह। हमर सूचीक सरकारी कहल प्रति सेहो जाँचक प्रतीक्षामे अछि।” सरिता थकानसँ पयर पसारलीह। “तोरा बुझाईत छै सभ पन्ना एके जकाँ?” ओ पुछलनि। नैरा कहलीह, “नहि। मुदा कोनो पन्नाक मालिककेँ नहि पूछबाक गलती सभ ठाम होइत रहल अछि।” सरिता उठि चूल्हाक राख समेटए लगलीह।

सरिता नैराक ओहि फार्मपर नजरि देलीह, जाहिमे पाँच परिवर्तित पाँतिक आगाँ कियो अनुमानसँ नाम नहि लिखने छल। “जकरा हम सुधार माँगैत देखलहुँ, ओकरा फेर जाँच लेल बजाओलासँ खतरा तँ नहि?” ओ पूछलनि। नैरा तुरन्त उत्तर नहि देलीह। पाँचो परिवर्तन एके इच्छा वा दबावसँ भेल, एहन बात ओकरा मालूम नहि। कियो अपन सुरक्षा लेल नाम बदलबौने होए, कियो अनुपस्थितिमे बदलल पन्ना देखल होए, कियो एखनहुँ अपन परिवर्तनक खबर नहि जनैत होए—एहि तीनू सम्भावनाक बीच पहिल भेटक भाषा भिन्न होयत। नैरा कहलीह, “हम ककरो पता सार्वजनिक नहि करब। प्रत्येक व्यक्तिसँ अलग पूछबाक सहमति, आ कोन जाँच कराएब चाहैत छथि से पहिने लिखब।” सरिता कहलीह, “तखन हमर पन्ना तोहर बाट खोलत, दोसरक दरबज्जा तोड़त नहि।”

साँझक खाना पहिने सरिता माइक डिब्बाक कपड़ा फेर बदललनि। नैरा कुंजी छूलीह नहि। “हम पाँच प्रविष्टिक भिन्न परिचयक बात सुनलहुँ,” ओ कहलीह, “मुदा ओ पाँच लोकक दोष नहि। जँ परिचय बदलल गेल, तकर कारण, सहमति आ सुरक्षाक प्रश्न पहिने रहत।” सरिता उत्तर देलीह, “सत्ताइसक सूचीमे केकरो नाम बदलबाक अधिकार हमरा सेहो नहि छल। जे लिखलहुँ, ओ अपन सुनल वा देखल बातक हिसाब छल। सरकारी प्रति बदलबाक आदेश ककरा भेटल, से हमर सूची नहि बताएत।” ओ पहिल बेर नव मिलानक पन्नापर अपन लिखावटमे एक वाक्य जोड़लीह—“मूल निजी सूची जाँच लेल देखाओल, पूर्ण प्रकाशनक अनुमति नहि।” एहि वाक्यक संग समयो लिखलनि।

राति गहराएत तारा मल्लिकक सन्देश अएल जे बरकी पोखरिक पाटक बगलमे तनल नव रस्सी हटि गेल अछि; माछक पट्टाक सम्पूर्ण परिशिष्टक लिखित माँग कार्यालयमे जमा भेल। रमणी अपन नाव ढाहि राखबाक बदला भोरमे जाल लऽ उतरबाक तैयारीमे छलीह। रीता एक्काक ऋणक मूल अनुबन्ध भेटल नहि, रोजी लालबेगीक पहिचान-संशोधनक आवेदन मात्र प्राप्त भेल। ई सभ अपूर्ण परिणाम छल, मुदा प्रत्येकमे अगिला दिनक उत्तर देनिहार स्पष्ट भऽ रहल छल। नैरा अपन कापीमे नदी-नाम ‘गाँगी’ आ ‘धौरी’क आगाँ पत्रक स्रोत लिखलीह; एकरो किछु नक्शापर मिलि गेल नदी घोषित नहि कएलनि।

सरिता बत्ती कम करैत नैराकेँ पुछलनि, “तोहर नकलमे ओ तेसर पाँतिक अक्षर एखन की लिखल अछि?” नैरा कापी फेर खोललीह। “जे पानि लगलासँ अस्पष्ट छल, ओहिमे

हम अनुमानसँ अक्षर पूरा करि देने रही। आइ ओकरा अनिश्चित कहि लिखलहुँ।” सरिता कहलीह, “ठीक। मुदा जे शब्द हम स्वयं बदलने छी, तकर जिम्मा हमर। अपन गलती तोरा माथे नहि देब।” नैरा देखलीह जे माइक हस्तलिखित पन्नामे बदलावक एकटा पुरान निशान अछि, मुदा ओ कहि नहि सकलीह जे ओ कखन कएल गेल। सरिता ओहि ठाम छोट टिप्पणीक अनुमति देलीह—‘स्वयं लेखक द्वारा संशोधन कहि स्वीकारल, तिथि अज्ञात।’ तहक नीचाँ राखल सत्ताइसम नाम एखनहु अनदेखल रहल।

नैरा बाहर निकललीह तँ पोखरिक दिशासँ आर्द्र हवाक संग जाल सुखेबाक माछक गन्ध आबि रहल छल। माइक घरक भीतर मूल पन्ना फेर पीतरक डिब्बामे राखल गेल; ओकर खुलल छब्बीस नामक मिलान-पत्र मात्र नैराक झोरामे छल, अन्तिम घर रिक्त आ सूचना-सीमा स्पष्ट। ओ सोचलीह जे मूल पन्ना भेटब समाप्ति नहि, ककर कथनकेँ कहाँ धरि भरोसा देब तकर कठिन शुरुआत अछि। बाटपर रमणी अपन बेटीकेँ भोरक जालक गाँठ सिखा रहल छलीह; बेटी पूछलक, “हमरो नाउँ लिखत?” रमणी कहलीह, “हम आवेदन देने छी। जखन तकर उत्तर आयत, तोरा देखाएब। ओहि बीच जालक नाप तोरा सिखाएब, किएक तँ नाम लिखएवला ककरो दिन हमरा काज अपने नहि करत।”

अध्याय ८७ • पाँच बदलल परिचय

नसीम इदरीसी सूईमे दोसर बेर धागा पिरोबैत चश्मा माथपर चढ़ा लेलनि। उज्जर कपड़ाक पाँचटा छोट थैली हुनकर सामने राखल छल; प्रत्येक थैलीक मुँहपर एक्के नापसँ मोड़ल पट्टी, मुदा भीतरक अस्तर अलग-अलग रंगक। ओ रंग चिन्हबाक लेल चुनने छलाह, व्यक्तिक नामक बदला नहि। सिलाइक दुकानक बाहर चायवला टीनक प्यालासँ उबलैत पानि ढारि रहल छल। ओहि आवाजक बीच एक युवक हाथमे फोन लेने आबि कहलक, “अहाँक ग्राहक-बहीक फोटो चाही। पाँच नाम बदलबाक बात फैलल अछि। जेकर सिलाइ अहाँ केलहुँ, ओ सभ के छथि?” नसीम मशीनक चक्का रोकलनि। “कपड़ा हमर हाथसँ गेल, तँ जिनगीक हालो हमहीं बतायब?” ओ पुछलनि।

युवक अपन परिचय स्थानीय सूचना-समूहक स्वयंसेवकक रूपमे देलक। ओकरा लग कार्यालयक एक पन्नाक कतरन छल, जाहिमे पाँच प्रविष्टिक अगल-बगल अलग नाम अथवा सम्बन्ध-सूचक शब्दक अन्तर चिन्हित छल। नीचाँ लाल स्याहीसँ कियो लिखने छल—‘छद्मनामक गिरोह’। नसीम ओ शब्द पढ़िते कपड़ा सटा देलनि। “गिरोहक प्रमाण कोन कागद अछि?” युवक उत्तर देलक जे ई पाँच परिवर्तन एके सूचीमे भेटल। नसीम कहलनि, “एके ठाम सिलल पाँच कुरता पाँचो आदमीक एके घरक नहि होइत। सूचीमे भिन्नता देखू; ओकरासँ अपराधक जाति मत गढ़ू।” युवक फोन नीचाँ कएलक, मुदा कतरन अपन झोरामे रखि लेलक।

नसीम काल्हि रातिक नैराक सन्देश याद कएलनि। सरिताक निजी मूल पन्नामे सत्ताइस नाम छल, जकर छब्बीस खुलल स्थानक मिलान होइत रहल; अन्तिम मोड़ सरिताक अधिकारमे बन्द। नगरक प्रतिमे पाँच परिचयगत अन्तर दिखल छल, मुदा ओकर मूल आदेश आ समय एखन खोजल जा रहल छल। नसीम पहिने विद्यालयक रसोइ लेल बनाओल थैलीसभपर बच्चाक नाम नहि सिलेने छलाह; ग्राहकक मापबहीकें सार्वजनिक हाजिरी बुझबाक भूल हुनका नीकसँ याद छल। आइ ओ पाँच नब थैली स्वतन्त्र व्यक्तिक पर्ची सुरक्षित रखबाक लेल बना रहल छलाह। सिलाइक मूल्यक बिल तैयार छल। गोपनीयता मुफ्त भेटल दान नहि, हुनकर व्यवसायिक जिम्मेवारीक एकटा ठोस शर्त छल।

नैरा दुपहरि दुकानपर अएलीह तँ नसीम हुनका बिल देखौलनि—पाँच थैलीक कपड़ा, धागा, अस्तर आ सिलाइक अलग दाम। “ई रकम के देत?” नैरा पुछलीह। “जिनकर कागदक लेल बनैत अछि, हुनका माथे नहि,” नसीम कहला। “जाँचक समिति माँगने अछि तँ समितिक लिखित खर्च हो। मुदा बिलपर ग्राहकक निजी नाम नहि, थैलीक संख्या होएत।” नैरा सहमत भेलीह। रमा कर्ण कार्यालयसँ हुनका सन्देश पठौने छलीह जे बदलल प्रतिक प्राप्ति-पन्ना भेटि गेल, मुदा ओकर ऊपर चढ़ाओल हस्ताक्षरित अनुमति सभ एक संग नहि छल। एखन पाँचो व्यक्तिसँ सम्पर्क करबापूवक प्रश्न छल—ककरा कोन बात पूछल जाए, आ उत्तरक केहन प्रति रखल जाए।

ओ सभ दुकानक पछिला कोठरी नहि चुनलनि। ओतय सिलाइ सुनएवला ग्राहक, छोट मजदूर आ दरवाजाक बाहर ठाढ़ लोकक कान सदिखन लागल रहैत छल। नगरक छोट पठन-कक्षमे एक दुआर भीतरसँ बन्द करबाक सुविधा छल, मुदा भवनक कर्मचारी जनैत छल जे ओहि समय कियो भेट करएत। नैरा पहिने एक-एक व्यक्तिक पास सन्देश पठौलीह—भेटबाक निमन्त्रण, आदेश नहि; उपस्थितिसँ मात्र कोनो नाम सार्वजनिक करबाक सहमति नहि मानल जाएत। दू व्यक्ति स्वयं आबए चाहलथि, दू अलग समय चुनलनि, पाँचम फोनपर बात करबाक अनुमति देलनि। रमा कहलनि जे कार्यालयक तरफसँ सत्यापनक प्रक्रिया अलग चलत; निजी भेटक बात सरकारी बयानक बदला नहि लिखल जाए।

पहिल अएलीह सुगंधा। हुनकर हथेलीमे कागदक बदला बेलपत्रक डाँठ अटकल छल; पठन-कक्ष जेबाक बाटमे ओ मन्दिर लग सँ अपन बहिन लेल पात किनने छलीह। “हम अपन पुरान नाम एतय जोरिसँ नहि बाजब,” ओ कहलीह। “घर छोड़लाक बाद जे नामसँ काज करैत छी, ओकरा अहाँ लिखि सकैत छी। मुदा ओहि नामक संग पहिनुक घरक ठेगाना जोड़ब तँ जिनका सँ बचि निकललहुँ, ओ लोक फेर पहुँचि जेताह।” नैरा पुछलीह जे ओ ककरो विरुद्ध औपचारिक शिकायत देने छथि की। सुगंधा उत्तर देलीह, “हमर बयानक प्रति अछि। मुदा हमर डरकें जाँच-सिद्ध अपराध मत लिखू। जे अनुभव हम अपने कहैत छी, ओ हमर बयान अछि; जे कार्यालय सत्यापित करत, से ओकर अपन काज।”

सुगंधा कागदक पाछाँ एक शर्त लिखबौलीहः कामक हाजिरी आ मजदूरी-वितरणमे अपन चालू नाम रहए, पुरान परिचयक कड़ी केवल अधिकृत सत्यापनमे देखल जाए, आ घरक स्थान कोनो सार्वजनिक सूचीमे नहि जाए। हुनका नाम बदललासँ अपन पुरान मजदूरी गमाबए नहि चाही छल। नसीम पूछलनि, “कपड़ाक नापमे सेहो नव नाम लिखू?” सुगंधा हँसलीह। “नाप नामसँ नहि, देहसँ लिअ। कपड़ा हम पहिरब, हमर खोज करनिहार नहि।” नसीम पर्चीकेँ तह लगा कऽ थैलीक भीतर राखलनि। सार्वजनिक नोट लेल केवल लिखल गेल—पहिल व्यक्तिक बयान प्राप्त; प्रकाशनक सीमा स्वयं निर्दिष्ट। कोनो पुरान नाम नहि।

दोसर भेटमे जहीर अएलाह। हुनकर साइकिलक पैडलमे माटि अटकल छल आ दहिना चप्पलक पट्टी सूतसँ बान्हल। ओ पहिने बाजारक माल ढोएब करैत छलाह। रोजगार-बिचौलिया लग दोसर नामसँ हाजिरी चढ़ल छल, जकरा बादमे हुनका अपन वास्तविक देय माँगब कठिन भऽ गेल। “हम स्वयं अपन नाम नहि बदलबौने रही,” ओ कहला। “कियो कहलक, सुरक्षा खातिर एना लिखल जाइत अछि। हमरा बताओल नहि गेल जे मजदूरीक बहीमे कोन नाम चढ़त।” नैरा स्पष्ट कएलनि जे ई कथन एखन जहीरक गवाही अछि; बिचौलियाक अभिलेख देखल बिना बदलबाक आदेशक स्रोत स्थापित नहि भेल। जहीर पुछलनि, “तखन हमर बकाया रोकल रहत?”

“रुकबाक चाही, एहन बात हम नहि कहि रहल छी,” नैरा उत्तर देलीह। “मुदा गलत नामक दोसर आदमीकेँ रकम देल गेल वा नहि, से जाँच जरूरी अछि।” जहीर अपन माल ढोएबाक दू पर्ची आ तीन दिनक पहिचानल सहकर्मीक नाम देलनि, मुदा सहकर्मीसभक ठेगाना सार्वजनिक करबाक मनाही लिखौने। हुनकर निर्णय छल जे वर्तमान कामक नाम नगरक पूछताछमे इस्तेमाल हो सकैत अछि, पुरान घरक बस्ती नहि; आ जे नकल देल जाए ओहिमे मूल कागदक स्रोत स्पष्ट रहए। बाहर ओकर साइकिलक घंटी बेर-बेर बजैत छल; पठन-कक्षसँ बाहर निकलि ओ खुद ओकर ढील पेच कसि लेलनि।

तेसर व्यक्तिक नाम सुनि नसीम ठमकि गेलाह। देवकी अपन माएक नामकेँ अभिभावकक ठाम चढ़एबाक लिखित आग्रह देने छलीह, जखनकि घूमैत प्रतिमे हुनकर पिताक नाम एखनहुँ रहल। एक कर्मचारी बदलावकेँ ‘नया परिचय’ लिखि देलक, दोसर

ओकरा ‘पुराना परिचय लुकाबब’ कहलक। देवकी खिड़की लग बैसि कहलीह, “हम अपन माय संग रहलहुँ, हुनक इलाजक खर्च उठेलहुँ, आ ओही ठाम हमर पत्र पहुँचैत अछि। पिता संग सम्बन्ध कोन रूपमे दर्ज रहत, तकरा हम प्रमाणसँ कहब। मुदा हर बेर हुनकर घरपर चिट्ठी पठाय हमरा डरायल जाए, ई नहि चाही।” हुनक माएक नाम एतय उच्चारल नहि गेल; आवश्यक कागद ओ बन्द लिफाफामे रखलीह।

रमा द्वारा पठाओल जाँच-प्रश्नमे ‘पिता बदलल’ लिखल छल। देवकी ओकरा काटि ‘सम्पर्क-व्यक्ति आ अभिभावक-विवरणक भेद’ लिखबौलीह। “जनम-पंजीकेँ हम अपनेहि मिटायब नहि चाहैत छी,” ओ कहलीह। “मुदा पत्र ककर हाथमे पहुँचे, ताहि विषयमे हमर निर्णय चाही।” नैरा एक पन्ना फेर लिखलीह। एहि फेरबदलसँ ककरो वंशक इतिहास नहि बदलल; कार्यालयक सार्वजनिक पत्र-पता आ निजी मूल-सम्बन्ध अलग करबाक आग्रह दर्ज भेल। देवकी नव पन्ना पढ़ि अपने हस्ताक्षर कएलनि। एतेक देरिमे बाहर साँझक रोशनी पठन-कक्षक लाल फर्शपर कनेक तिरछी भऽ गेल छल।

चारिम व्यक्ति मंगला पठन-कक्ष नहि अएलीह। ओ अपन दू मित्रक संग बरकी पोखरिक पाछूक साझा कार्यशालामे बाँसक चटाइ बुनि रहल छलीह। नैरा हुनकर कहने समयपर ओतय गेलीह। मंगला हाथ रोकलनि नहि; ओ अन्तिम पट्टी घुसबिते कहलीह, “एतय हमरे कामक नामसँ लोक जानैत अछि। राहत शिविरमे जे दोसर नाम लिखल गेल, ओ हमर रक्षाक लेल कहल गेल छल। मुदा बादमे जँ लोक कहए लगल जे हम दू बेर राहत लेलहुँ, तँ कागद देखब के?” शिविरक रसीद ओ बहीमे लगौने छलीह। नसीम थैली देबाक प्रस्ताव कएलनि, मुदा मंगला कहलीह जे कार्यशालाक लोखंडी सन्दूक एखन अधिक सुरक्षित अछि।

मंगला एकटा भेद स्पष्ट कएलनि—भिन्न नामक दू रसीद देखाइत छल, मुदा भुगतान एक बेर भेटल; दोसर पर्ची उपस्थिति-जाँचक छल, भुगतानक नहि। ओ दूनू देखौलीह, मुदा मूल जमा नहि कएलनि। “हमरा सार्वजनिक आरोपसँ मुक्ति चाही, घरे-घरे हमर कथा सुनाओल नहि,” ओ कहलीह। हुनकर मित्र चटाइक किनार समेटैत पुछलीह जे प्रमाण कखन तक सुरक्षित राखल जाए। मंगला उत्तर देलीह, “जखन धरि जाँचक लोक प्राप्तिक

कागद नहि देताह, तखन धरि एतहि रहत।” रमा लेल ओ हस्ताक्षरित संक्षिप्त बयान दऽ सकैत छलीह; ग्राहक वा पड़ोसक नाम प्रकाशित करबाक अनुमति नहि।

पाँचम आवाज फोनपर आयल। नाम जे ओ प्रयोग करए चाहैत छलीह, ओ छल कमली। नैरा फोनक ध्वनि खोलि सभकेँ सुनाबबाक अनुमति नहि माँगलीह; ओ कान लग आवाज सुनलीह आ एक-एक वाक्य लिखि फेर पढ़ि सुनौलीह। कमली पहिने चिकित्सा-सहायताक पर्ची लेल एक अस्थायी नाम देलने छलीह। आब पुरान नामबला औषधि-पंजी आ नव नामबला सहायता-पत्र देखाकऽ लोक हुनका दोसर व्यक्तिक इलाज लेबाक आरोप लगा रहल छल। कमली कहलीह, “दवाइ हम लेने छी; दवाइक मात्रा आ दिनक जाँच कराउ। मुदा हमर बीमारीक पन्ना बाजारमे किएक फेरब?” ओ कुन अस्पताल गेल छलीह, से केवल अनुमति भेटल चिकित्सकीय सत्यापनक लेल देब चाहैत छलीह।

कमली अपन सीमाक संग एक अतिरिक्त प्रश्न रखलीह: यदि जाँचमे गलती भेटत, तँ सुधार-पत्रमे हुनकर पुरान नाम फेर छपि जायत की? नैरा कहलीह जे एकर निश्चय ओ एकरे फोनपर नहि दऽ सकैत छथि; कार्यालयसँ लिखित व्यवस्था माँगल जाएत। कमली कहलनि, “तखन हमर आवाजकेँ एखन आधिकारिक बयान नहि कहू। हम जाँचक लेल तैयार छी, मुदा पहिने कागद कतय रहत, के पढ़त आ कोन नाम बाहर जाएत—ई तीनू बताउ।” नैरा एही तीन प्रश्न जस्ताक तस उतारलीह। पाँचम थैली खाली रहल; ओकरा भरबाक आदेश कियो नहि देलक।

साँझ नैरा आ नसीम फेर नगर कार्यालय पहुँचलथि। रमा कर्णक टेबुलपर पंखाक तेज हवा सँ कागदक कोना फड़फड़ा रहल छल। ओ हवा रोकबाक लेल दवातक ढकनी राखलीह, तखन नैराक संक्षिप्त नोट पढ़लनि। पाँचो व्यक्तिक अलग-अलग इच्छा सामने छल, मुदा तकरासँ एखन कार्यालयक पाँच परिवर्तन-विधिक वैधता सिद्ध नहि भऽ रहल छल। “हमरा मूल प्रविष्टिक हिसाब, परिवर्तन करनिहारक अधिकार आ सूचना पहुँचाओल गेल की नहि, ताहि तीनू प्रश्नक उत्तर चाही,” रमा कहलीह। नैरा अपन नोटमे सुधार कएलनि—‘व्यक्ति द्वारा बताओल कारण’ आ ‘सरकारी परिवर्तनक प्रमाण’ दू स्तम्भ बनल।

ओहि समय कार्यालयक बाहरी बरामदामे भीड़ भेल। एक दुकानदार लाल कतरन हाथमे लहरबैत कहलनि, “पाँच बदलल नाम साफ होएबाक चाही। जकर पहचान गुप्त, ओकर राहत आ मजदूरीक हिसाबो गुप्त!” आवाज सभ बढ़ल। नसीम ओकरा पुछलनि, “हिसाबमे कतेक रकम गेल, के स्वीकृति देलक, कोन दिन देलक—ई पूछू। मुदा जे स्त्री अपना बचावक लेल घरक पता रोकलीह, ओकर दुआरक चिन्ह चाही तखनहि हिसाब बुझब, एना किएक?” दुकानदार कहलक जे जनता के सब सत्य जानबाक अधिकार अछि। रमा बरामदामे आबि कहलीह, “खर्चक सार्वजनिक हिसाब आ संकटमे पड़ल व्यक्तिक निजी विवरण दू अलग अभिलेख छथि। कार्यालयक उत्तरदायित्व निजी पन्ना बेचना नहि अछि।”

कतरन लऽ घुमनिहार युवक ओहि भीड़मे भेटल। नसीम ओकरा बिहानक प्रश्न याद देलनि। युवक कहलक जे लाल अक्षर ओकर नहि, आ फोटो ओकरा दोसर समूहसँ भेटल छल। “जँ हम एकरा आगाँ पठा देलहुँ तँ?” ओ पुछलक। नैरा उत्तर देलीह, “तखन अहाँ प्रसारक काज करब। मुदा एहि कतरनमे तिथि, मूल फाइल आ हस्ताक्षरक प्रमाण एखन नहि। पाँच परिवर्तित प्रवेश देखाइत अछि, पाँच अपराध सिद्ध नहि।” युवक अपन फोनमे पुरान सन्देशक नीचाँ सुधार लिखलक—‘परिवर्तनक कारण जाँचाधीन; निजी नाम प्रकाशित नहि’। कतरन पहिने कतय-कतय गेल, ओकर हिसाब ओकरा लग नहि छल; ई एकटा सुधार छल, सम्पूर्ण नियन्त्रण नहि।

सावित्री सरदार ओही बरामदाक कोनमे बहुत देरिसँ ठाढ़ छलीह। हुनकर हाथमे पुरान गामक राहत-पर्ची आ बाढ़िक बादक अस्थायी निवास-प्रविष्टि छल। कर्मचारी कहलक जे नब गामक नाम चढ़लाक बाद पुरान गामक बकाया निकालब कठिन। सावित्री कहलनि, “हम दोसर गाम गेलहुँ, दोसर मनुख नहि बनि गेलहुँ। आ हमर गाम बदलब ककरो छद्मनामक प्रमाण नहि।” ओ भोजनक दू तिथि आ पहिल शिविरक खाली वितरण-पर्ची देखौलीह। कागदमे एक तिथिक आगाँ ‘उपस्थित’ छल, ‘राशि देल’ नहि। ओ चाहैत छलीह जे नब गामक ठेगाना वर्तमान राहत-पंजीमे ठीक हो, मुदा पुरान महीनाक हानि स्वतः चुकल मानि काटल नहि जाए।

रमा सावित्रीक दू आवेदनक अलग प्राप्ति दऽ सकैत छलीह, फैसला तखनहि नहि। सावित्री प्रथम आवेदनमे वर्तमान गामक प्रमाण जोड़लीह, दोसरा मे पहिनुक राहत-दिवसक उपस्थितिक नकल। “प्राप्ति पर लिखू—पुरान सहायता-दावा विचाराधीन,” ओ कहलनि। एक सहायक फेर पुरान पन्नामे नब गाम जोड़बाक सुझाव देलक, जाहिसँ दू अलग तिथि एके ठेगानामे समा जाए। सावित्री मना कएलनि। “बरखा आयल छल तखन हम कतय रही, ओ तिथि बदलल नहि,” ओ कहलीह। रमा पुरान अभिलेख जसक तस राखि परिवर्तन-पत्र अलग लगौलीह; अतीतक राहत स्वतः स्वीकृत भेल, एहन कोनो मुहर नहि लागल।

बाहरसँ आवाज अएल जे विनीता केशरवानी अपन घरक बही लऽ पहुँचल छथि। ओ चौराहाक किराना-दुकानसँ सोरह प्रकारक सामग्रीक उधारी चलबैत छलीह। दूकानक लकड़ीक मापतौल-डब्बामे हल्दी लगल छल, आ ओकर नखमे चाउरक धूरि। संग अएल परिवारक पुरुष कहलनि, “घरक सभ उधारी एकटा खाता छैक। एहिमे अलग-अलग दस्तखतसँ झंझट बढ़त।” विनीता दू बही टेबुलपर रखलीह—पहिल हुनकर अपन नामसँ किनल माल, दोसर परिवारक साझा कारोबारक। “जे उधार हम स्वीकृत कएलहुँ, ओकर हिसाब हमर,” ओ कहलीह, “मुदा दोसरक देयकँ हमर नामपर चढ़ाएब तँ पुरान रसीद दिखाउ।”

पुरुष प्रतिवाद कएलनि जे घरक प्रतिष्ठा खाता बाँटला सँ टूटत। विनीता चुपचाप लाल सूतसँ बान्हल पुरान पन्ना खोललीह। एक तिथिक बगलमे पुरुषक हस्ताक्षर छल, मुदा ओहि रकमक आधा हिस्सा विनीता पहिनहिसँ अपन बहीमे जोड़ि देल गेल छल। “प्रतिष्ठाक लेल दू बेर रकम दऽ देब?” ओ पुछलीह। दुकानदार स्वीकार कएलनि जे नकल बनबैत समय परिवारक बहीक कुल योग अलग खाता मे फेर आबि गेल। रकमक अन्तिम मिलान एखन बाँकी छल, मुदा ओ लिखित रूपसँ मानलक जे एके देयक दोहराव जाँचल जाएत। विनीता अपन नामसँ नव उधारीक पन्ना खोललीह, जाहिमे सीमा आ भुगतानक दिन ओ स्वयं तय कएलनि।

नसीम विनीता सँ एक थैलीक दाम परामर्श लेलनि। विनीता कहलनि, “कपड़ा देलहुँ तँ दाम देनिहार के अछि, से लिखू। जकर दस्तावेज थैलीमे जाएत, ओ ग्राहक नहि भेल।”

नैरा सुनैत छलीह। पाँच निजी बातचीतक खर्च, सावित्रीक दू आवेदनक नकल आ विनीताक दुहरी उधारीक सुधार—सभकेँ एके समिति-निधिक मद बना देबाक प्रस्ताव कोनो कर्मचारी रखलक। विनीता ओकरा रोकलीह। “जतय दाम अलग अछि, ततेक देय अलग। गोपनीयता लेल बनल थैलीक नामपर हमर दुकानक उधारी मेटाएब नहि।” एहि छोट वाक्यसँ नसीमक बिलक भुगतानक स्पष्ट बाट भेटल। समितिक कोषाध्यक्ष भुगतान-स्वीकृतिक पर्ची देलनि; कपड़ाक भीतरक नाम ताहिमे नहि छल।

दफ्तरक अन्तिम पहर रमा पास सरकारी प्रतिक एक पुरान आवरण-पत्र पहुँचल। एहिमे ‘सुरक्षा कारणेँ सीमित प्रसार’ लिखल छल, मुदा पाँचो परिवर्तनक अलग आदेश संलग्न नहि छल। पन्नाक कोनमे दू कर्मचारीक आद्याक्षर आ एक अस्पष्ट दिनांक छल। रमा कहलीह, “ई पत्र देखाकऽ हमर कार्यालय जे कहि सकैत अछि, से केवल एतबे—ककरो समयमे सीमित प्रसारक प्रस्ताव रहल। पाँचो प्रविष्टि ठीक प्रक्रिया सँ बदलल गेल, ई एखन सिद्ध नहि।” नैरा सहमत भेलीह। ओहि कागदपर जे नामक अंश पढ़ल जाइत छल, ओकर नकल ओ सार्वजनिक सारमे नहि कएलनि। रमा मूल खोजबाक अगिला लिखित आदेश दऽ देलीह, मुदा मूल भेटबाक तिथि नहि गढ़लीह।

नैरा पठन-कक्षक भाड़ा चुकए पहुँचलि तँ मालिक पूछलनि, “कतेक लोक अएल छल?” ओ कहलीह, “कमरा जेतेक घंटा लेल देल छल, तकर पूरा भाड़ा चुकाबैत छी। अतिथिक सूची हमरा देबाक सहमति नहि अछि।” मालिक बिना तकरार रकमक रसीद लिखि देलनि। खिड़की लग छूटल बेलपत्रक सूखल डाँठ उठबैत नैरा सुगंधाक हाथ याद कएलनि। जिनगीक प्रत्येक छोट वस्तु साक्ष्य नहि होइत; किछु वस्तु बस ककरो दिनक काम, भोजन वा परिजनक स्मृतिसँ जुड़ल रहैत अछि। ओ डाँठ कूड़ादानमे रखलीह। एकरा सुरक्षित नमूना कहि ककरो निजी कहानीक निशान बनाय देबाक कोनो आवश्यकता नहि छल।

साँझ घर पहुँचि नैरा सरिताकेँ दिनक परिणाम कहलनि। नाम नहि पढ़लनि, केवल पाँचो व्यक्तिक प्रकाशन-सहमतिक भिन्नता आ सरकारी मूलक अभाव बतौलनि। सरिता आटा सानैत छलीह; एक हाथक पिठार चिपकैत छूटि नहि रहल छल। “तोरा सभक पहिल दिनमे सभ लोक भेटि गेल?” ओ पुछलनि। नैरा कहलीह, “तीन पठन-कक्षमे भेटल, एक

अपन कार्यशालामे, एक फोनपर; सभकेँ एके कागदपर हस्ताक्षर कराएब नहि भेल।” सरिता मुस्कुरौलीह। “ठीक अछि। मोनक कठिन बात कहबाक ठामो व्यक्ति चुनैत अछि। जे नै कहल, ओकरा तोहर सारमे शून्य मत लिखिहऽ।” नैरा माइक बन्द डिब्बा दिस नजरि नहि घुमौलीह।

नैरा पाँचटा अलग सहमति-पत्रक संक्षिप्त प्रविष्टि बनौलीह: ककरा सँ की पूछल गेल, कोन माध्यमसँ, कोन हिस्सा साझा करबाक अनुमति, कोन बात एखन परीक्षण माँगैत अछि। सार्वजनिक सारमे एको पुरान नाम, बस्ती, बीमारी वा मूल हस्ताक्षर नहि छल। दस्तावेजी जाँचक बहीमे कार्यालयक पाँच अन्तर अलग चिन्हित छल; सरिताक निजी मूलक छब्बीस खुलल नाम आ ढाँपल सत्ताइसम स्थानक विवरण ओहि बहीमे नहि घुसाओल गेल। दू परतकेँ मिला देलासँ साक्ष्य नहि बढ़त, केवल संरक्षणक सीमा टूटत। पहिल भेटसँ जे किछु सिद्ध भेल, ओ पाँचो लोकक स्वतन्त्र निर्णयक अधिकार छल; कार्यालयक बदलावक कारणक अन्तिम प्रमाण नहि।

आंगनमे कबीर पुरान पुस्तकक जिल्दपर उधरल सूत काटि रहल छलाह। नैरा घरक भीतरक कोठरीक दीप धीमा देखलीह। कबीर पुछलनि, “आइ ककरो नामक उत्तर भेटल?” नैरा कहलीह, “उत्तर नहि, उत्तर देबाक ढंगक सीमा भेटल। कियो नामक संग कामक हक चाहैत छथि, कियो नामक पाछाँ घरक ठेगाना रोकब चाहैत छथि।” कबीर पुस्तकक जिल्द सटा देलनि। “काल्हि चौदह विसंगतिक परीक्षण अछि ने?” ओ पुछलनि। नैरा सिर हिलौलीह। “हँ, मुदा चौदह भिन्नताकेँ एके गलती नहि कहब। जे बदलल नाम आज ककरो रक्षा करैत अछि, काल्हि ओहि पन्नाकेँ गलत ठहरा देब तऽ नुकसान फेर हुनके होएत।”

राति नसीम दुकान बन्द करैत देखलनि जे बिहानक युवकक सुधरल सन्देश ओहि सूचना-समूहमे पहुँचल अछि, मुदा पहिल लाल कतरनक दू प्रति एखनहुँ घुमि रहल छल। ओ युवककेँ एक छोट जवाब पठौलनि—‘हमर ग्राहक-बही सार्वजनिक सामग्री नहि। खर्चक पर्ची चाही तँ समिति सँ लिअ; ककरो कपड़ाक माप नहि।’ तकर बाद सिलाइक मशीनक नीचाँ पड़ल धागा बटोरि ओ अगिला दिनक कपड़ाक नाप लिखए बैसलाह। पाँच थैलीमे सँ किछु भरल छल, किछु खाली; कोन थैली केकर लेल बनल, से दोसरक

कहलासँ बाहर नहि जाएत। खिड़की बाहर नीमक पात खसल। भीतर बहीक साफ
पन्नापर केवल दाम, तारीख आ काजक नाम लिखल छल—हुनकर अपन रोजी, आ
अनकर जीवनक सीमा दूनू अपन-अपन ठाम।

अध्याय ८८ • चौदह विसंगति

नगर कार्यालयक ओसारपर रखल भीजल जूतासँ उज्जर फर्शपर माटिक छोट-छोट चिह्न बनि रहल छल। नैरा एक-एक चिह्न बचबैत लोहाक अलमारी लग गेलीह। रमा कर्ण काल्हि भेटल आवरण-पत्रकेँ काठक पटरीसँ दबा रखने छलीह, ताकि पंखाक हवामे ओकर अधजल कोना फेर नहि फाटय। ओ पुछलीह, “अहाँ चौदह कहलहुँ। ई चौदह लोक छथि, चौदह नाम, वा चौदह गलती?” नैरा कागद खोलबाक बदला नीचाँ राखल चौदहटा सादा पर्ची उठा लेलनि। “एखन ई चौदह विसंगतिक जाँच-प्रकरण छथि। किछुमे तथ्यक मेल नहि, किछुमे खानेक अर्थ गलत, किछुमे अधिकारक कागद गायब। एके अंक कहि सभक जीवनक एके इलाज करब, से नहि।”

रमा पहिल पर्चीपर नील स्याहीसँ ‘मूल’ लिखलीह। नैरा हुनका रोकलीह। “मूल कहबाक पहिने स्रोत लिखू। सरिताक हस्तलिखित सूची हुनकर निजी मूल अछि; कार्यालयक प्रति अपन पंजीक मूल हो सकैत अछि; ई दुनू एक कागद नहि।” रमा स्याही सुखए देलीह आ उपरि ‘स्रोत-परीक्षण’ जोड़लीह। कर्मचारी देवशंकर फाइलक मोटी डोरी खोलैत कहलक, “सभक समाधान एकटा सुधार आदेशसँ कऽ दियौ। चिट्ठी जाएत, मामला बन्द।” रमा ओकरा चौखट लग खुलल शिकायत-पेटी दिस देखौलनि। “एक आदेशसँ जकर गलत मृत्यु चढ़ल, ओकर खाता खुलि जाएत? जकर घरक पता सुरक्षित राखबाक अछि, तकर नाम सभक सामने लिखि देब?”

खिड़कीक बाहर दरभंगिया चूड़ा बेचएवाली बुढ़िया दूकानक त्रिपाल झारि रहल छलीह। नैरा अपन चौदह पर्चीकेँ चारि ढेरीमे बाँटलीह—लिखावट आ मिलान, अधिकार आ वर्गीकरण, लेनदेन आ हाजिरी, तथा पहुँच आ संरक्षण। “ई चारि ढेरी निर्णय नहि, जाँचक बाट छथि,” ओ कहलीह। रमा एक पाँचम खाली पृष्ठ राखलीह: ‘विवादित तथ्य—अन्तिम आदेश नहि’। एतेकमे बरामदामे रेणु गोंढ़ीक आवाज सुनायल। ओ भीतर अएबाक पहिने अपन भीजल चप्पल उतारि सीढ़ीक सुखल कात राखि देलीह, मुदा हाथक नक्शाकेँ भिजबाक डर सँ छातीसँ सटा लेने छलीह।

रेणु गेल बरखक पहिल नाप-पर्ची, घाटपर बाट रोकए तनल रस्सीक फोटो आ अपना अपीलक प्राप्ति-अंक अनने छलीह। “पहिने कियो कहल जे पट्टा निजी अछि, तें हम पछिला अघटसँ नहि उतरि सकैत छी। आब सुनाइत अछि जे पूरा पोखरि पट्टे मे गेल,” ओ कहलीह। रमणी बिन्द हुनका पाछाँ पहुँचलि। हाथमे जालक गाँठ छल, कोनो बँटल घोषणा-पत्र नहि। “हम माछक हिस्साक बात करैत छी। रेणु घाट धरि चलबाक बाटक। एहि दूनू पर दावा करनिहारक नाम भिन्न अछि,” रमणी स्पष्ट कएलनि। रमा कार्यालयक छोट नक्शा पसारलीह। ओकर किनारपर लाल रेखा छल; पुरान पट्टाक परिशिष्ट नहि। रेणु झुकि देखलीह, फेर कहलीह, “लाल रेखा देखब मात्र घेरावक आदेश होइत छै की?”

नाप-कर्मचारीक कहब छल जे पाछूक घेरल हिस्सा बरसाती महीनामे दुर्घटनासँ बचाबए लेल बन्द कएल गेल। रेणु पुछलीह, “सुरक्षाक रस्सी रहए तँ ओकर अवधि आ निकलबाक दोसर बाट कोन पन्नामे अछि?” कर्मचारी जबाब नहि दऽ सकल। ओ एक अलग सन्देश दिखौलक, जाहिमे निजी पट्टाधारीक तरफसँ ‘अनधिकृत प्रवेश’ लिखल छल; एकर तिथि रस्सी तनबाक बादक छल। रमणी कहलीह, “ककरो सुरक्षा लेल सीढ़ीपर चेतावनी राखब दोसर बात, पूरा घाटक चाभी निजी हाथमे देब दोसर। हमरो जाल खोलबाक ठाम अछि। मुदा जालक अधिकार कहि रेणुक चलबाक बाट नहि खरीदब।”

रमणी लेखपालसँ पुरान जलपट्टाक सम्पूर्ण प्रति, हस्ताक्षरक मूल पृष्ठ, नक्शाक परिशिष्ट आ नवीकरणक शर्त माँगलीह। लेखपाल छोट सारांश देबाक प्रस्ताव कएलक— ऊपर पट्टाधारीक नाम आ तल शुल्क। “सारांशमे घाटक साँस नहि देखाइत,” रमणी कहलीह। “हमरा ई जनबाक अछि जे जलकरक सीमा कतय समाप्त, स्त्रीक साड़ी भागीदारीक शर्त कतय, आ चलबाक सार्वजनिक बाट कतय।” ओ शुल्क जमा करबाक रसीदक माँग कएलनि; नकलक वास्तविक दाम ओ स्वयं देब तैयार छलीह, मुदा कागद पूरा रहबाक चाही। रमा लिखित आवेदन स्वीकार कएलनि आ ओकर प्राप्ति दऽ देलीह।

रेणु अपन अपीलमे एक पंक्ति जोड़लीह—घेराव हटेबाक माँगपर सुनवाई धरि सुरक्षा-जाँचक व्यवस्था अलग हो, मुदा घाटक सामान्य पहुँच बन्द मानि नहि लेल जाए। अनिता चौपाल, जे बरामदामे बैसल छलीह, पुछलीह, “अहाँक शिकायतकें रमणीक पट्टाक परिशिष्ट मिललापर मात्र सुनताह?” रेणु कहलीह, “नहि। हमरा बाटपर रोकल गेल, तकर

तारीख, गवाही आ रस्सीक फोटो हम दैत छी। पट्टा कतेक धरि अछि, से दोसर जाँच। दुनू सुनवाई एक-दोसरक प्रतीक्षा करैत महीना नहि गमाबय।” रमा दू अलग प्राप्ति जारी कएलनि। रेणु पहिल बेर देखलीह जे हुनकर आवेदनक ऊपर ‘घाटक सार्वजनिक पहुँच’ स्पष्ट लिखल अछि; ‘जलकर विवाद’क भीड़मे ओकर स्वर दबल नहि।

अनिता अपन झोरासँ गाढ़ नीला आवरणवला सामाजिक-पंजीक नकल निकाललीह। ओहि पन्नामे हुनकर नामक बाद जे श्रेणी जोड़ल छल, से हुनकर स्वयं भरल आवेदनसँ मेल नहि खाइत छल। “आम लोक एहि खानेकेँ देखिकऽ हमर जीवनक निर्णय करैत अछि,” ओ कहलीह। “गलती लिखनिहारक आ मानि लेनिहारक बीच हम कतेक ठाम सफाई दिअ?” देवशंकर कहल, “पुरान सूचीमे एही नामक परिवारक लोक दोसरा श्रेणीमे छथि।” अनिता ओकरा बीचेमे रोकलीह। “हमर परिवारक दोसर व्यक्तिक कागद हमर प्रमाण कोना भेल? पहिने हमर मूल आवेदन निकालू। जे प्रमाण एतय चाही, ओकर लिखित नियम दिअ। हमर समुदायक नामक सार्वजनिक बहस नहि खोलू।”

रमा फाइलमे जाँचलीह। मूल आवेदनक अगला पन्नामे आवेदिकाक हस्ताक्षर छल; वर्गीकरणक खाना बादमे कार्यालयक कम्प्युटर-प्रविष्टिमे भरल गेल देखाइत छल। के भरलक, ओकर डिजिटल इतिहास तत्काल उपलब्ध नहि छल। नैरा साफ लिखलीह —‘मूल आवेदन आ प्रविष्टिक अन्तर पुष्ट; प्रविष्टि बदलबाक उत्तरदायित्व जाँचाधीन।’ अनिता चाहैत छलीह जे एहि गलतीसँ हुनकर छात्रवृत्ति-संबन्धी आवेदनक सुनवाई रोकी नहि जाए। रमा अस्थायी ‘विवादाधीन वर्गीकरण’ पर्ची देबाक व्यवस्था पुछताछ लेल चढ़ौलीह, अन्तिम प्रमाणपत्र नहि। हुनकर आवाजमे राहत कम, दृढ़ता बेसी छल; ओ पुछलीह जे सुधरल पंजीक प्रति ककरा प्राप्त होएत, आ ककरा नहि।

निरंजन किसान दोसर खिड़कीसँ अएलाह। हुनकर मुँहपर धूपसँ पड़ल महीन पाँति छल, कागदक झोरामे खेतक बीहनक छोट थैली लगल। पुरान बैंक-लेंक पंजीमे ‘किसान’ हुनकर पारिवारिक नामक अंश छल; नव डिजिटल प्रपत्रमे ओ पेशाक खानेमे सरकि गेल। फलतः नाम-मिलान विफल भेल आ भुगतानक खाता निष्क्रिय भऽ गेल। कर्मचारी कहलक, “पेशा बदलि दिअ, बात बनि जाएत।” निरंजन कहलनि, “हम खेती करैत छी, से

सत्य अछि। मुदा हमर नामक जे शब्द अछि, ओकरा पेशामे रखला सँ हमर व्यक्ति मिति जाइत अछि। पेशा बदलला सँ कल्हि फेर भुगतान अटकि सकैत अछि।”

ओ बैंकक मुद्रित छोट विवरण आ पुरान सहकारी समितिक सदस्यता-पर्ची रखलनि, दुनूमे नाम एके तरह लिखल छल। कर्मचारी खाताक अन्तिम चारि अंक मुँहसँ पढ़ए लगल, तँ निरंजन ओकरा रोकलनि। “अहाँ जे मेल करब चाहैत छी, भीतर करू। बरामदामे हमर पूरा खाता बाजल जायत तखन के बुझत जे हिसाब ककर?” रमा बैंकक अधिकृत मिलान-पत्र माँगबाक प्रारूप बनौलीह, जकरा बिना कार्यालय अपन सूचीक शब्द बदलबैत बैंकक रोक हटेबाक दावा नहि करैत। निरंजन एक अन्तिम अनुरोध जोड़लनि—अगिला बीहनक अनुदान-तिथिसँ पहिने आपत्तिक प्राप्ति बैंक धरि पहुँचय।

तीनू व्यक्तिक बाहर जेबामे नैरा देखलीह जे एक्के गलतीक मुहर हुनका सभक लग नहि गेल। रेणु रास्ता रोकबाक विरुद्ध सुनवाई चाहैत छलीह, अनिता गलत वर्गीकरणक सुधार, निरंजन व्यक्ति-नाम आ पेशाक दू अलग खाना। ककरो आपत्तिक प्राप्ति असल अधिकार नहि छल, मुदा एही प्राप्ति सँ सुनबाक अगिला दिन बान्हल जा सकैत छल। नैरा चौदह पर्चीक बगलमे एक नब स्तम्भ जोड़लीह—‘समय-संवेदनशील हानि’। अनिताक लेल आवेदन बन्द होएबाक दिन, निरंजनक लेल बीहन-अनुदान, रेणुक लेल पानी बढबाक मौसम। रमा कहलीह, “समय नहि जोड़ब तँ फाइलक न्याय देरीसँ अन्याय बनि जाएत।”

दुपहरिक बाद नसीम इदरीसी कपड़ाक थैलीसभ लऽ अएलाह। ओ पाँचो थैली रमा लग नहि खोललनि। पहिले जाँच-समितिक सिलाइ-बिल प्रस्तुत कएलनि आ पुछलनि जे भुगतान आदेशक प्रति सार्वजनिक फाइलमे जायत वा खाताक भीतर। लेखपाल कहल, “साथमे व्यक्तिक नामो लिखू तँ खर्चक औचित्य बुझाय।” नसीम कहलनि, “सिलाइक औचित्य थैलीक नाप, कपड़ा आ समिति द्वारा देल लिखित आदेश अछि। ग्राहकक निजी बात नहि।” रमा बिलपर सामग्री आ सेवाक स्वीकृति लिखलीह; थैलीमे रहबाक नाँव नहि। नैरा अपन पर्चीपर लिखलीह—सुरक्षा-सम्बन्धी पुनर्नामकरणक कारणक मूल आदेशक खोज जारी।

नैराक पहिल ढेरीमे चारि सवाल छल। एक अक्षर मूलमे अस्पष्ट, प्रतिमे निश्चित बना देल गेल; ओकर उपाय अनुमानसँ अक्षर बदलनाइ नहि, लेखकसँ सुरक्षित पठनक अनुमति

आ अस्पष्टता चिह्नित करब। दोसरमे राहत-शिविरक ‘उपस्थित’ आ ‘रकम पाओल’ दू छाप एके भुगतान मानि लेल गेल; तकर जाँच वितरण-रसीदसँ। तेसरमे बाढ़िक पहिल गाम आ वर्तमान गाम एके तिथिपर रखल गेल; सावित्रीक माँग समयानुसार दू प्रविष्टि जोड़बाक। चारिमे मंगला द्वारा देखाओल दू अलग नामक कागदसँ दोहरा लाभक आरोप उठल, मुदा भुगतान एक बेरक विवरण एखन मिलान माँगेत छल। चारू पर्चीक कात नैरा अलग-अलग स्रोत लिखलीह; एकोमे ‘धोखा सिद्ध’ नहि।

दोसर ढेरीमे वर्गीकरणक तीनटा स्वरूप छल। अनिताक सामाजिक श्रेणी गलत जोड़ल गेल, जाहिमे मूल आवेदन बनाम कम्प्युटर इतिहास चाही। निरंजनक पारिवारिक नाम पेशाक खाने सरकल, जाहिमे बैंकक अधिकृत नाम-मिलान चाही। रोजी लालबेगीक धर्मक आत्मपरिचय पेशागत कामसँ अनुमानल गेल, जकर सुधार व्यक्ति द्वारा भरल स्वतंत्र घोषणासँ शुरू होएत। देवशंकर एक क्षण कहलक, “एहि तीनू लेल नाम सही करबाक फॉर्म अछि ने?” नैरा कहलीह, “एकठाम नामक हिज्जे गलत अछि, दोसर ठाम नामकें पेशा बना देल गेल, तेसरमे ककरो धर्म ओकर मजदूरीसँ गढ़ल गेल। फॉर्म एक होए तऽ प्रश्न एक नहि भऽ जाइत।”

तेसर ढेरीमे जहीरक हाजिरी दोसर नामसँ चढ़बाक गवाही, विनीता केशरवानीक दुहरी उधारी, रीता एक्काक गवाहीकें ऋणक जमानत बनाओल पन्ना आ कमलीक औषधि-पंजीक संरक्षित परिचय छल। चारि मुद्दामे लेनदेनक प्रमाण जरूरी रहए, मुदा चिकित्सकीय पन्ना खोलि सामुदायिक सभा करब अनुमति नहि। रमा लिखलीह—हाजिरी लेल मालिकक मूल सूची आ श्रमिकक तिथि, उधारी लेल दू बहीक हिसाब, ऋण लेल मूल अनुबन्ध आ हस्ताक्षर-परीक्षण, दवाइ लेल स्वीकृत गोपनीय चिकित्सकीय मिलान। नैरा चौथ ढेरीमे दू संरक्षण-सम्बन्धी प्रश्न जोड़लीह—सुगंधाक पुरान पता ककरा देखाओल जाए, आ पाँच बदलल प्रविष्टिक प्रशासनिक अनुमति कखन देल गेल। एहि दू प्रकारमे प्रमाणक अभाव गोपनीयता तोड़बाक अनुमति नहि बनैत छल।

रमा चौदह पर्ची गिनलीह। “चारि, तीन, चारि, दू—तेरह।” नैरा खिड़की दिस ताकलीह। रमणीक पूरा पट्टाक अभाव आ रेणुक नक्शामे निजी घेरावक रेखा एक पर्चीपर रहि गेल छल, यद्यपि दूनू दावा भिन्न। ओ चौदहम पर्ची उठौलीह—‘जलपट्टा-परिशिष्ट आ

सार्वजनिक पहुँचक भेद'। रमा लिखलीह जे एहि पर्चीक भीतर दू स्वतंत्र आवेदन संलग्न रहत, मुदा कोनो एकक निपटारा दोसरक अनुमोदन नहि बुझल जाएत। “चौदह गिनतीमे बाँसक रस्सी आ धागाक थैली भिन्न वस्तु छथि,” रमणी दरवज्जा लगसँ कहलीह। ओ फेर एही कारण अएलीह जे हुनकर नकल-शुल्कक रसीदपर कार्यालयक मुहर छूटि गेल छल।

एक नव कर्मचारी चौदह पर्ची देखिकऽ पुछलक, “एकटा सूचीमे चौदह गलती भेटल?” नैरा ओकरा सही कएलनि। “ई विभिन्न सम्बन्धित पंजी आ दावा-प्रकरणक चौदह जाँच-योग्य विसंगति छथि। सरिताक निजी सत्ताइस नामक मूल सूची एहिमे समा नहि गेल। ओकर छब्बीस खुलल पंक्ति आ एक संरक्षित पंक्ति पहिनहुं अलग अछि। कार्यालयक पाँच बदलल परिचयकें सेहो एही चौदहक पाँच अलग अपराध नहि कहब।” कर्मचारीक चेहरा लाल भेल, मुदा ओ कागदक शीर्षक बदललक—‘विसंगति-प्रकरण, न कि दोषी व्यक्तिक सूची’। रमा कहलीह, “ई वाक्य सार्वजनिक प्रति मे सेहो जाएत। व्यक्ति-नाम आ दोष-सूचक संक्षेप बाहर नहि।”

ओहि समय चौकसँ एक आदमी अएल जे अपनेकें पट्टाधारीक प्रतिनिधि कहैत छल। ओकरा हाथमे स्टाम्पवला कागदक फोटो छल। ओ रेणुक अपील देखबाक माँग कएलक। रमा पुछलीह, “अहाँक अधिकार-पत्र?” ओ कहलक, “हमर मालिकक नाम नक्शापर लिखल अछि।” रमा कहलनि, “नाम देखला सँ ककरो शिकायत पढ़बाक अधिकार अपने नहि बनैत। सार्वजनिक सुनवाईक सूचना भेटत, मुदा व्यक्तिगत गवाहीक मूल प्रति नहि।” प्रतिनिधि आवाज चढ़ौलक जे बरकी पोखरिमे माछक दाम घटत, लोककें रोकल नहि गेल तँ चोरी बढ़त। रमणी सामने आबि कहलीह, “जाल चोरीक घटना भेल अछि तँ तिथि आ शिकायत लिखू। घाट चलबाक अधिकारक प्रश्नकें अनुमानित चोरसँ नहि ढाँपू।”

प्रतिनिधि जे फोटो अनने छल, ओकर आधा भागमे पट्टाक शुल्कक अंक साफ छल, सीमा-परिशिष्ट कटि गेल छल। रमणी फोटो अपन फोनमे लएबाक अनुमति नहि माँगलीह। “पूरा प्रति कार्यालय सँ भेटत। आधा फोटोपर हमर दावा बनत नहि,” ओ कहलीह। रेणु कार्यालयक फर्शपर माटिक लाल निशान देखिते कहलीह, “ई माटि अघटक अछि। घाटक पायरि आजो कियो झाड़ू देल? बन्द करबाक बहाना सुरक्षा अछि, सुरक्षा करबाक काज

शून्य।” रमा निरीक्षण लेल नगर-पथ दल आ जलकर शाखाक संयुक्त दिन माँगबाक पत्र लिखलीह, मुदा ओहि पत्रमे घेराव वैध वा अवैध, से अन्तिम निष्कर्ष नहि देलनि।

निरंजन बाहरौं नहि गेल छलाह। ओ बैंकक खिड़कीपर फोन करैत-करैत कार्यालयक नीम तले बैसि गेलाह। हुनका कहल गेल जे नाम-भ्रमक कारण रोकल खाता खोलबाक लेल अधिकारीक सही चाही, मुदा बैंक अधिकारी कागद पहिने देखताह। निरंजन फेर भीतर अएला। “हम दोसर नाम लऽ नब खाता नहि खोलब,” ओ स्पष्ट कएलनि। “पुरान खाताक लेनदेन, हमर बटाइ, सब ओतहि अछि। गलत खानेक सुधार सँ पुरान इतिहास नहि मिटबाक चाही।” रमा अधिकारक सीमा बतौलनि—ओ नगर-पंजीक मूल सुधार-आवेदन अग्रेषित कऽ सकैत छथि, बैंकक खोलबाक आदेश नहि दऽ सकैत छथि। निरंजन ओहि सीमा सहित पत्र स्वीकार कएलनि; कृषि-समितिक ओहि सप्ताहक बैठकमे स्वयं उपस्थित होएबाक निश्चय कएलनि।

अनिताकें अपना लिखित आपत्तिक दू प्रतिमे सँ एकपर मुहर भेटल, मुदा ओ लिखल कारणमे ‘असत्य जाति बताओल’ देखिकऽ फेर बैसि गेलीह। ओ शब्द प्रशासनक गलतीक दोष हुनका माथे दऽ रहल छल। “हम असत्य नहि बतौने छी। अहाँक पंजी गलत जोड़लक,” ओ कहलीह। रमा मुहरक बगलमे सुधार लिखलीह—‘आवेदिकाक मूल विवरण आ कार्यालयक प्रविष्टिमे विरोध; कारण अज्ञात’। अनिता दू मिनट ओकरा ध्यानसँ पढ़लनि। ओ चाहैत छलीह जे अनचाहल वर्गीकरण हटए, मुदा सत्यापनक लेल समाजक घर-घर सवाल नहि उठय। रमा स्पष्ट कएलनि जे गोपनीय संलग्नक अधिकारीक जाँच लेल सुरक्षित रहत, सार्वजनिक सूचनापटपर नहि।

बरकी पोखरि लग दुपहरि ढलैत छल। रेणु वापस घुरि ओहि रस्सी लग पहुँचलि जकरा राति कोनो हटौने छल, फेर कोनो बेर बाँधि देने छल। दू बच्चा घाट दिस दौड़ैत अएल, कादोमे पयर धँसबाक डर सँ रुकि गेल। रेणु हुनका पक्का पाटवला सुरक्षित बाट देखौलीह, आ फिसलनपर चेतौलीह। ओ निजी घेरावक विरुद्ध अपील केने छथि, ताहिसँ ई नहि मानल जाए जे कियो माप बिना अघटमे उतरि जाए। रमणी जालक आँखिमे अटकल पातर पात निकालैत कहलीह, “नकल भेटलापर पहिने पाटक सीमा देखब, फेर जालक

हिस्सा।” ओकर बेटी रस्सीक गाँठ देखिकऽ पुछलक, “ई कोनका लगैत अछि?” रमणी उत्तर देलीह, “जे बान्हलक, ओकरा पुछब। आ जे उतरत, ओकरो सुनेब।”

नैरा संझामे नगरक सार्वजनिक पठन-कक्ष गेलीह। ओतय काल्हिक युवक फेर फोन लऽ बैसल छल। ओकर समूहमे लाल कतरनक फोटो एखनहुँ घूमि रहल छल, मुदा एहि बेर लोक ‘चौदह दोषी नाम’ लिखए लगल छल। नैरा ओकरा चौदह प्रकरणक सार्वजनिक शीर्षक देखौलीह, निजी कागद नहि। युवक पुछलक, “तँ ई चौदह आदमी नहि?” “नहि,” नैरा कहलीह। “किछु प्रकरणमे एके व्यक्तिक दू कागद, किछु मे एक सेवा आ कतेको लोक, किछुमे प्रमाणक अनुमति बाँकी। दू अंककें मिला कऽ मनुखक छवि बनाउ तँ संशोधन दोसर अफवाह भऽ जाएत।”

पठन-कक्षक कोनमे सरिताक पुरान शिष्या एकटी स्त्री अपन बेटीकें पहाड़ा सिखा रहल छलीह। ओ कागदक कातर देखिकऽ पुछलीह, “सूचीमे गलती भेल तँ लोक मरि जाइत अछि?” नैरा उत्तर देबाक पहिने रुकलीह। “कखनहुँ गलत पंजीसँ दवाइ, रोजी वा सुविधा अटक सकैत अछि। मुदा प्रत्येक गलतीमे ककरो मृत्यु भेल, ई बिना जाँच कहब गलत।” स्त्री कहलीह, “हमर बच्चीक विद्यालयक नाउँ गलत चढ़ल छल। हम एक महीना दौड़लहुँ। फेर एक दिन शिक्षक सुधारि देलनि; मुदा ओहि महीनाक पढ़ाई के घुराओत?” नैरा ओकर प्रश्न बिना पंजी-अंकक लिखलीह। सभक अनुभव अपन परिमाण राखैत अछि; एकरा चौदह प्रकरणक गिनती बढ़ेबाक बहाना नहि बनाओल जा सकैत छल।

घर पहुँचि नैरा सरिताकें सार्वजनिक सारक प्रति पढ़ि सुनौलीह। सरिता चूल्हापर मसुरिक दालक झाग हटबैत कहलीह, “तोरा चौदहक गिनती ठीक भेटि गेल; मुदा जकरा शिकायत दैत रहल, ओकरा उत्तर पढ़बाक अवसर भेटत?” नैरा कहलीह, “प्रत्येक आवेदनक अलग प्राप्ति आ अगिला तारीख लिखल अछि। जकर निजी पन्ना अछि, ओकरा सार्वजनिक पत्र नहि पठाएब।” सरिता पुछलनि, “आ हमर सत्ताइसम तह?” “ओहि विषयमे आइ कोनो नव अनुमान नहि,” नैरा कहलीह। सरिता ढक्कन रखलीह। दालक सुगन्धसँ कोठरी गरम भऽ गेल छल।

राति रमा कार्यालयमे रहि गेलीह। ओ चौदह पर्चीक उपरि मोट पन्ना लगौलीह, जाहिमे क्रमसँ लिखल छल—कोन मूल देखल, कोन केवल गवाही, कोन आदेश अनुपस्थित, कोन

अधिकारी उत्तर देत, आ कोन दिन आवेदनकर्ता जानकारी पाबि सकत। पाँच बदलल परिचयक संरक्षण-सीमा ओ अपरिवर्तित रखलीह। रेणु आ रमणीक दू स्वतंत्र अपीलक साथ एके जलपट्टाक पूरा परिशिष्ट माँगल गेल, मुदा उत्तर दुइ भिन्न व्यक्ति प्राप्त करतीह। अनिताक गलत श्रेणी पर वैधता-जाँच, निरंजनक नामक भ्रमपर बैंक-सहकारी मिलान, दूनूक अगिला तारीख अलग रहल। छोट सुधारसभ आजे भेल, अन्तिम निपटारा आ जिम्मेवारीक प्रश्न बचल छल।

रमा खिड़की बन्द करबाक समय अलमारीसँ एक पुरान मृत्यु-सूचना सम्बन्धी आवरण निकलैत देखलीह। सूचीमे ‘मृत’ लिखल रहला पर ओकरा संग सक्रिय लेनदेनक पर्ची जोड़ल छल, मुदा कागदमे भुगतानक वास्तविक लाभार्थी स्पष्ट नहि। ओ ओकरा चौदह प्रकरणक अन्तिम पन्नामे घुसाबय नहि चाहलीह। ई नव तुलना अपन स्रोत, व्यक्ति आ तिथिक परीक्षण माँगैत छल। रमा कागदकेँ अलग धूसर फोल्डरमे राखि ‘जीवितक घोषणा नहि, मृत्यु-सूचनाक मिलान बाँकी’ लिखलीह। मृतकक खाता चालू देखलासँ मृतक जीवित नहि भऽ जाइत, आ जीवित व्यक्तिक गलत मृत्यु-प्रविष्टि सिद्ध भेल बिना अपराधीक नाम निश्चित नहि। खिड़की बाहर पहिल तारा देखाइ देलक; कार्यालयमे एखन दू दीप जरैत छल।

भोरसँ पहिने रमणी अपन जालक गाँठ ठीक करैत रहलीह। बेटी आधा नींदमे पुछलक, “माए, हमर नाउँ ओहि पट्टामे आइ लिखत?” रमणी ओकर सिर सहलौलीह। “आइ हम पूरा कागद माँगलहुँ। जे नहि देखल, ओहिपर हस्ताक्षर नहि कएलहुँ। काल्हि हमरा बाट आ जालक बारे फेर कहबाक अछि।” बेटी जालक गोल घेरा अपन छोट हातमे उठा कऽ देखलक; सूत ओकरा अँगुरीपर कनेक कसि गेल। रमणी गाँठ ढील कएलनि। बाहर पोखरिक पानिपर हवाई झोंकासँ छोट लहर उठल, आ बँसल रस्सीक एकटा सिरा चुपचाप हिलैत रहल। ओकरा काटि देब सहज छल; ककरा कोन बाटक हक अछि, से साफ लिखब एखन बाकी।

अध्याय ८९ • चारि जीवित चारि मृत

नगर कार्यालयक खिड़की खुललासँ पहिने रमा कर्ण मेजपर दू थालीनुमा ढक्कन रखलीह। एकमे नील पर्ची, दोसरमे गेरुआ। धूसर फोल्डरक भीतर भेटल मृत्यु-सूचना आ सक्रिय लेनदेनक विवरण ओ राति भरि घर नहि लऽ गेल छलीह। कागद सरकारी अलमारीक छल, आ ओकर देखभालक जिम्मेवारी कार्यालयक। नैरा पहुँचलि तँ रमा पहिल पन्ना हुनका दिस नहि बढौलनि; पहिने दूटा शीर्षक पढौलनि—‘मृत घोषित, स्वयं जीवित’ आ ‘मृत्यु पुष्ट, खाता चालू’। नैरा कहलनि, “एक समूहक गलती सुधारब आ दोसर समूहक लेनदेन जाँचब। दुनूक शीर्षक बदला देल तँ जीवित आदमीक देहकें संदिग्ध आ मृतकक नामकें दोषी बना देब।” खिड़कीक बाहर पियायल कागदक गन्धसँ बरामदा भरि रहल छल।

पहिल नील पर्ची सरिता दासक छल। मृत्यु-सूचनामे हुनकर नाम आ पहिचानक अंक दर्ज छल, मुदा सार्वजनिक सभामे ओ स्वयं उपस्थित भऽ आपत्ति देने छलीह। तखन लिखल बयानक कार्यालयी प्राप्ति सेहो फाइलमे छल। दोसर पर्ची फकीराक छल, जिनकर रेलवे-चौकक प्रवेश-पास मृत व्यक्ति बताकऽ रोकल गेल छल। फकीरा अपन आवाज, छड़ी आ दिनक कमाइक संग जीवित छलाह; मुदा कार्यालयक पुरान पासक नकल मात्र हुनकर स्थिति पुनर्स्थापित नहि करैत छल। रमा लिखलीह—‘शरीरक उपस्थिति आ अपन कथन प्राप्त; मृत्यु प्रविष्टि रद्दक आदेश अप्राप्त।’ नैरा जोड़लीह जे सरिताक सभाक वचनक सार्वजनिक अंश आ फकीराक पेशागत अनुमति एके स्रोतसँ निकसल नहि।

तेसर नील पर्चीक व्यक्ति राहत बस्तीमे रहनिहारी एक स्त्री छलीह। हुनका जीवित-प्रमाणक लेल कतेक बेर कार्यालय घुरए पड़ल छल; आइ ओ अपन हाथक सूतक थैलीमे दू अलग दिनक स्वास्थ्य-जाँचक रसीद अनने छलीह। ओ नाम सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि देलीह, मुदा जाँच अधिकारीक समक्ष पहिचान आ हस्ताक्षर मिलान लेल मानि गेलीह। “हमर दवाइ बन्द भेल, ताहिसँ लोक हमरा मृत बुझल,” ओ कहलीह। “मुदा उपचारक पर्ची हमर जीवन सिद्ध करबाक एक मात्र राह किएक हो? हमरा अपन बात

कहबाको ठाम दिअ।” रमा हुनकर बयानकेँ बन्द आवरणमे राखलीह, आ कार्यालयक निर्णयक तारीख लिखलि। बस्तीवला स्त्री अपन थैली उठबैत कहलीह जे आज हुनका कपड़ाक सिलाइ पूरा करबाक अछि; ई सुनवाई हुनकर दिन भरिक जीवन नहि निगलि सकैत।

चारिम नील पर्चीक व्यक्ति बस-अड्डापर गठरी ढोएनिहार एक युवक छल। हुनकर मजदूरी-पंजीमे एक तिथि पछाति मृत्यु-चिह्न लगलासँ भुगतान रुकल, मुदा ओहि तिथिक बादक काजक अलग-अलग रसीद हुनका लग छल। रमा पुछलीह जे ककरो हाथसँ ओ चिह्न हटेबाक बदला बिना प्रमाण ‘नव जन्म’क आवेदन देब स्वीकार करताह? युवक हँसल नहि। “हमर पुरान दिनक मजूरी नब आदमीक नामपर नहि जायत,” ओ कहलक। ओ सार्वजनिक विवरणमे अपन अड्डाक ठाम छिपेबाक अनुमति माँगलक, किएक तँ बकाया माँगिते पुरान ठेकेदार फोन करि रहल छल। नैरा ओकरा लेल श्रम-पंजीक मूल, कामक रसीद आ मृत्यु-चिह्न चढ़ल दिनक डिजिटल इतिहास तीन अलग माँगपत्र बनौलीह।

गेरुआ ढेरीक पहिल पन्ना खोलिते नैराक हाथ रुकि गेल। सरिताक पतिक मृत्यु-पत्र सत्रह बरख पुरान छल; अस्पतालक नव औषधि-वितरण पर्ची हुनकर नामपर छल। दवा बनल आ उठाओल—ई दू छाप देखाइत छल, मुदा उठौनिहारक सही एहि प्रति मे नहि छल। नैरा लिखलीह, “मृत्यु-दस्तावेज स्वतंत्र सत्यापनसहित; वितरणक लाभार्थी अज्ञात।” सरिताक पतिक मृत्युकेँ झूठ साबित कऽ एहि पर्चीकेँ ठीक कहब अर्थहीन छल। ओही तरह नव पर्ची देखिकऽ मृतकक घरक ककरो लोककेँ दवा चोरीक आरोप देब सेहो अनुचित। रमा औषधि केन्द्रसँ मूल वितरण-बही, आदेश देनिहारक कोड आ प्राप्तिक हस्ताक्षरक प्रमाणित प्रति माँगबाक पत्र अलग रखलीह।

दोसर गेरुआ पर्चीमे एक दिवंगत मजदूरक पुरान बचत खातासँ ब्याजक नियमित कटौती देखाइत छल। परिवार मृत्यु-पत्रक प्रति जमा केने छल, मुदा कटौती मशीनक स्थायी निर्देशसँ होइत रहल। नैरा कहलीह, “लेनदेन चालू अछि—ई बात सही। मुदा मशीन अपने ब्याज काटैत रहए तँ ककरो हाथसँ पैसा उठाएल गेल, से सिद्ध नहि।” तेसरमे मृत्यु-पछाति माछ-पट्टाक किरायाक जमा देखाइत छल; परिवारक एक सदस्य बतबैत छल जे ओ पुरान देय चुकौने छथि। ओकर कथन परखबाक छल, पर एहि जमा-

राशिक कारण दिवंगत व्यक्तिक नाम स्वतः छद्मपरिचय नहि बनैत छल। चारिम गेरुआ पर्चीमे एक पुरान गिरवीखातासँ ‘छोड़ाओल वस्तु’क शुल्क दर्ज छल, मुदा वस्तु वास्तवमे ककरा हाथ गेल तकर रसीद गायब छल।

नैरा आठू पर्चीक बगलमे आठटा अलग स्थिति लिखलीह। नीलक प्रत्येक प्रकरणमे जीवित व्यक्ति पर मृत्यु-चिह्नक असर; गेरुआक प्रत्येकमे प्रमाणित मृत्यु-पछातिक अभिलेखीय गतिविधि। चौदह विसंगति एखनहुँ अपन स्थानपर छल, आ सरिताक सत्ताइस नामक सूची घरमे बन्द। रमा गिनलीह, “चारि जीवित, चारि मृत।” देवशंकर पुछलक, “तँ आठ अपराध?” नैरा ओकरा दिस मुड़लीह। “आठ सवालक आठ जांच-पथ। अपराधक गिनती करबाक अधिकार साक्ष्यक बाद अदालत आ सम्बन्धित जाँचकँ अछि।” ओ मृतकक परिवारसँ अनुमति बिनु नाम प्रकाशित नहि करबाक निर्देशो लिखलीह। खिड़कीसँ आयल इजोत कागदक कोनपर चढ़ि गेल छल, मुदा नील आ गेरुआ ढेरीक बीचक खाली ठाम एखन चौड़ा छल।

ओहि दिन राजइनारक कात सुधा राय छज्जाक लेल आनल बाँसक खम्भा उतारए रोकि देलीह। दू मजदूर पहिले सँ गड़ही खोदबाक औजार लऽ ठाढ़ छलाह। सार्वजनिक दानक घोषणा सुनि विद्यालयक एक शिक्षक धन्यवाद देबाक लेल आएल छलाह; मुदा किरायेदारक दू परिवार आ बच्चासभक नियमित चलबाक सँकरा बाट दानक प्रस्तावित रेखामे पड़ैत छल। सुधा कहलनि, “हम दान रोकब नहि चाहैत छी। मुदा आज खम्भा गाड़ि देलाक बाद जँ ककरो रोजक बाट सिमटि गेल तँ हम ककरो उपकार नहि कएलहुँ।” शिक्षक पुछलनि जे छज्जा बनबाक तिथि कखन कहल जाए। सुधा उत्तर देलीह, “जखन जे जमीन हम देब चाहैत छी, ओकर उपयोग करनिहार लोकक बात सुनल होएत।”

किरायेदारमे सँ एक स्त्री साँझक चुल्हीक लेल सूखल लकड़ीक गट्टर लेने छलीह। ओ बाँसक खम्भा देखिकऽ कहलीह, “छज्जा नीक काज अछि। मुदा एहि मोड़सँ हमरा ठेला आ बीमार सासु लेल खटिया निकलैत अछि। दोसर बाट कहब आसान, बरखामे ओतय पानी भरैत अछि।” सुधाक परिवारक एक सदस्य कहलनि जे किराया देनिहारक जमीनपर स्थायी अधिकार नहि होइत। सुधा ओकरा बीचमे रोकलीह। “अधिकारक प्रकार पर कागद देखल जायत; मुदा निवास आ आवागमनक वास्तविकता बिना नापि झूठ दानपत्र

लिखब नहि।” ओ विद्यालयक बच्चा, किरायेदार आ छज्जाक कारीगर लेल अलग-अलग ठाम नापबाक बैठक तय कएलनि; सभ नाम दानक प्रचार-पटपर नहि, सुनवाईक प्राप्ति-पन्नापर चढ़ल।

सुधा अपन पहिल घोषणा-पत्रक पाँति स्वयं काटलीह—‘सम्पूर्ण भूभाग निर्बाध दान’। ओकर स्थानपर लिखलीह, ‘प्रस्तावित उपयोग, किरायेदारी आ आवागमनक अधिकारक जाँचक अधीन’। शिक्षकक मन खिन्न भेल, किएक तँ विद्यालयमे सार्वजनिक उद्घाटनक दिन तय छल। सुधा खिसामे राखल दानक आरम्भिक रकमसँ आजुक दिहाड़ी पर आएल मजदूरसभक बेकार गेल समयक भुगतान कएलनि, मुदा बिना कामक पूरा निर्माण-बिल नहि चुकौलनि। किरायेदार स्त्री हुनका पुछलीह जे काल्हि बैठकमे पति नहि आबि सकलाह तँ ओ स्वयं बाजि सकैत छथि की। सुधा कहलीह, “बाट अहाँ चलैत छी, अहाँक वचन ककरो प्रतिनिधिक प्रतीक्षा नहि करत।”

बजारक दोसर कात बसन्ती पान अपना नामक सरकारी नकल सँ तीनटा अलग शब्द जोड़ल पंक्ति देखैत छलीह। परिवारक पुरान आवेदनमे जे आत्मपरिचय छल, नब कम्प्युटर पन्नामे ओ ‘स्वीकृत पर्याय’क एक खाना भऽ गेल छल। कर्मचारी कहलक जे पान, सवासी आ पनरक प्रविष्टि एके वर्गक सुविधासँ जुड़ैत अछि; बेसी प्रश्न उठत तँ प्रमाणपत्र देरि होएत। बसन्ती कहलीह, “सुविधाक कोड अहाँक लेखाक होएत। हमर बोलल परिचय अहाँक सुविधा लेल मेटाएल नहि जायत। हम कोन शब्द कहैत छी, पहिने लिखू; सरकारी श्रेणीक नियम अलग देखाउ।” हुनकर हाथमे बेल-पातक छोट थैली छल, जकरा ओ बजारमे बेचएबाली भगिनीक लेल अनने छलीह; ओ सरकारी पहिचानक बहस लेल अपन दिनक काज रोकि नहि सकैत छलीह।

नकल बनबएवला कर्मचारी अपन स्क्रीनपर पहिल बेर दू अलग खाना देखौलक —‘आवेदिकाक स्वयं कहल परिचय’ आ ‘कार्यालयक वर्गीकरण’। पहिल खाना भरबाक सुविधा ओतय छल, मुदा प्रमाणपत्र छपिते फेर सरकारी शब्द आबैत। बसन्ती ओकरा बजलीह, “तँ हमर बात मूल कागदमे राखू आ मुद्रित शब्द पर आपत्ति लिखू। हमरा एखन सत्यापनक प्राप्ति चाही, झूठ आश्वासन नहि।” ओ दोसर स्त्रीकेँ, जे अपना आवेदनमे जल्दबाजीसँ हस्ताक्षर करबाक छल, पाँति पढ़ि सुनएबाक अनुरोध कएलनि। महिला

धन्यवाद दऽ कऽ कहलनि जे हुनका अपन नाम ठीक बुझएबाक अछि, बसन्तीक परिचय अपन नहि। बसन्ती हँसलीह—“एहि कारण हम चाहैत छी जे सबहक पन्ना अलग रहए।”

दोपहरि शारदा कसौधन अपन पारिवारिक गिरवी-दोकानमे पुरान बहीक पन्ना खसकाबैत छलीह। खिड़कीपर बैठल हुनकर बड़का भाय दू ग्राहकक नाम जोड़ि एक संयुक्त पर्ची बनेबाक सोचि रहल छलाह। शारदा पन्ना छीनलीह नहि। ओ तिथि देखौलीह—पहिल गिरवी पर मूलधन, दोसर पर वस्तुक स्वामिनी, तेसर पर छोड़ेबाक शुल्क। पहिलमे ब्याजक एक मद दुहराएल छल; दोसरमे स्त्रीक नामक बदला ‘परिवार’; तेसरमे वस्तु घुरबाक हस्ताक्षर अनुपस्थित। भाय कहला, “पुरान बही खोलब तँ लोक बुझत दुकान नाहिये चलैत।” शारदा उत्तर देलीह, “चलैत रहबाक लेल बही चाही, गलत बही नहि।” ओ तीनटा स्वतंत्र ग्राहक-प्राप्ति बनौलीह आ दुइ बेर चढ़ल ब्याजक रकम अस्थायी विवादित मदमे रोकलीह।

पहिल ग्राहकक भुगतान-विवरण मिललापर शारदा स्वीकार कएलनि जे ब्याजक एकटा अतिरिक्त जोड़ लेखाक गलती छल। ओ पर्ची सुधरि गेला बादो ग्राहकसँ पूछलीह जे अधिक वसूल रकम नगद वापस लेतीह वा मूलधनमे घटाएब पसन्द करतीह। ग्राहक नगद चुनलीह। शारदा हुनका नगद आ सुधारल रसीद देलीह, मुदा दोसर दू गिरवीक बारे एखन ‘निपटल’ नहि लिखलीह। हुनकर भाय पुछलनि जे मृत व्यक्तिक नामपर चलि रहल कोनो पुरान गिरवी एही बहीमे अछि की। शारदा कहलीह, “खाता सक्रिय देखिकऽ मृतककेँ जीवित लिखब हमरा नहि चाही। पहिने मूल मृत्यु-दस्तावेज, गिरवीक स्वामित्व आ वस्तु देबाक सही—तीनू अलग देखब।”

ओही समय नाहिद मोगल अपन मातृपरिवारक कागदक थैली लऽ अएलीह। ओ शारदाकेँ गिरवीक रकम बुझए नहि, जमीनक एक हिस्सापर सहमतिक सीमा बुझए आयल छलीह। थैलीक भीतरक पुरान पत्रमे ‘लिवरी’ नदीक नाम मातृगामक सन्दर्भमे लिखल छल। कागदमे नदीक कात खेत बताओल गेल छल, मुदा ओकरा आधारपर आजुक नक्शामे कोन धारा कहाँ बहैत अछि से सिद्ध नहि होइत छल। नाहिद कहलीह, “ई हमर माय दिशक पत्र अछि। एहि हिस्साक गिरवी पर निर्णय हमरा बिना कियो लिखत तँ हम रोकब।” शारदा हुनका कहलनि जे पत्रक नकल धरि ओ अनुमति दए सकैत छथि,

मुदा पारिवारिक गिरवीक मालिकाना आ हस्ताक्षरक सत्यापन लेल अलग अधिकृत रास्ता चाही।

नाहिद थैलीक डोरी कसि लेलनि। “हम नकल एखन नहि छोड़ब,” ओ कहलीह। “पहिने घरक उनकासभसँ पूछब जे पत्रक कोन हिस्सा देखाओल जाए। लिवरी नाम सुनिते कियो हमर मातृपरिवारक पूरा पत्ता सार्वजनिक नहि करत।” शारदा आवेदनक खाली पन्नापर केवल ‘मातृपक्षीय हिस्सापर सहमति विवादित’ लिखलीह। कागदक पूरा फोटो राखबाक आग्रह नहि कएलनि। नाहिद दुकानसँ निकलि बाजारक मोड़पर बीना कलारक दोकान लग रुकलीह; दू छोट शीशीक दाम स्वयं गनि चुकौलीह। हुनकर घरक कागद अनिश्चित छल, मुदा ई छोट किनबे-बेचबाक निर्णय हुनकर अपन छल।

नगर कार्यालयमे ओहि बीच मृतकक चारि सक्रिय खाताक प्रारम्भिक विवरण पहुँचल। दोसर गेरुआ प्रकरणक नियमित ब्याज स्थायी आदेशसँ कटल होएबाक बैंक पुष्टि पठेने छल; एतय अद्याप मानवद्वारा नगद निकासी सिद्ध नहि। तेसर पन्नामे माछपट्टाक जमा-राशिक भुगतानकर्ता अपन अलग रसीद देबाक प्रस्ताव कएने छल, जे भेटल नहि। चारिम गिरवी-वस्तुक रसीदक मूल गायब रहबाक सूचना छल, एहि कारण वस्तु ककरा देल गेल से नहि कहल जा सकैत छल। पहिल, सरिताक पतिक दवा-वितरणक मूल बही एखन अस्पतालसँ आएल नहि। नैरा चारु अवस्थामे ‘काज चालू’ लिखलीह, मुदा प्रत्येकक आगाँ अपन अलग शर्त।

जीवितक चारि पर्चीमे सेहो अन्तर निकलल। सरिताक सभाक मूल कार्यवृत्तपर अधिकारीक मुहर छल; फकीराक पास रोकबाक सूचना रेलवे सेवा-कक्ष भेजलक, मुदा मृत्यु-चिह्नक मूल प्रविष्टि कोन विभागमे चढ़ल से अस्पष्ट। राहत बस्तीक स्त्री अपन उपस्थिति अधिकारीक सामने फेर पुष्ट करौलीह, युवकक पुरान मजूरीक रसीद जाँच लेल दाखिल भेल। तेसर आ चारिम व्यक्तिक निजी ठेगाना बाहरी सारमे नहि आएल। रमा प्रत्येककेँ प्राप्ति देबाक समय पूछलीह जे उत्तर ककर हाथ पहुँचाएल जाए। ओहिना सरिता स्वयं कहलीह, “हमर उत्तर हमर हाथ। हमर जीवित होएबाक प्रमाण बेटीक माथ किएक रखब?”

दुपहरिक बाद नैरा लेल एक छोट विचित्र बात सामने आयल। सरिताक मृत-प्रविष्टिक पहिल आपत्तिक बादो कार्यालयक एक प्रतिमे फेर 'मृत' चिह्न अद्यतन भेल देखाइत छल। अद्यतन-विवरणमे 'हाथसँ चुनल' दर्ज छल, मुदा चिह्न चुननिहारक अधिकार, कारण आ ओकरा आदेश देनिहारक इतिहास फाइलमे नहि छल। देवशंकर कहलक, "ई तँ जानि-बुझि कएल गेल बुझाइत अछि।" नैरा ओकरा रोकलीह। "आपत्तिक बाद चिह्न हाथसँ फेर चुनल गेल, ई जानबूझि कएल क्रिया देखाइत अछि। मुदा व्यक्ति, उद्देश्य आ आदेशक सम्बन्ध एखन सिद्ध नहि।" रमा कम्प्युटरक मूल परिवर्तन-अभिलेख, जिम्मेदार प्रवेश-अधिकार आ ओहि दिनक अद्यतन-आदेश सुरक्षित रखबाक लिखित निर्देश जारी कएलनि, ताकि जाँचक पहिने किछु फेर मेटि नहि जाए।

बाहर कियो अखबारक छोट संवाददाताकँ कहने छल जे नगरमे आठ मृत लोकक खाता पकड़ायल अछि। संवाददाता कापी लऽ रमा लग पहुँचलाह। "आठ लोक मरल रहितो कमाइ रहल छथि?" ओ पुछलनि। रमा टेबुलक सार्वजनिक सार मात्र देखौलीह। "चारि जीवित व्यक्ति, जिनका मृत दर्ज कएल गेल; चारि वास्तविक दिवंगत व्यक्ति, जिनकर नामपर मृत्यु-पछाति पंजीगत गतिविधि अछि। दुनूकँ मिलाकऽ आठ मृत कहल गलत। सक्रिय बैंक-पंक्ति आ वास्तवमे धन पाबनिहारो एक नहि।" संवाददाता पुछलाह जे फोटो भेटत की। नैरा उत्तर देलीह, "जकरा जीवित रहबाक लेल लड़ए पड़ि रहल अछि, ओकर निजी चोटकँ चित्र बनएबाक अधिकार ककरा देल गेल?" ओ सार्वजनिक सारक तिथि आ स्रोतक सीमा पढ़बाक निवेदन कएलनि।

साँझक समय राजइनार लग सुधा फेर अएलीह। काम रोकल गेलासँ बाँसक खम्भा बाँसक ढेरीमे सूखि रहल छल। किरायेदार स्त्री अपन बच्चाकँ संग लेने छलीह। ओ खम्भा देखिकऽ पुछलक जे छज्जा नहि बनत की। सुधा माटिपर नापल प्रस्तावित बाट देखौलीह; एहि बेर बच्चाक ठेला घुमएबाक परिधि सेहो चूनसँ बनाओल छल। बच्चा अपन खेलौना पहिया ओकरा भीतर चलौलक, मुदा मोड़पर अटकल गेल। कारीगर कहलक, "अहाँक कागदमे चौड़ाइ सही होएत, खेलौनाक पहिया नहि।" स्त्री उत्तर देलीह, "खटियाक बाँस एहि सँ पैघ होइत अछि। काल्हि असल नाप करू।" सुधा अगिला दिन पुनः नाप तय कएलनि; दानक घोषणा एखन शर्तसहित रहल।

बसन्ती घर घुरैत अपन आवेदनक प्राप्ति-पत्रक तह खोलि देखलीह। मुद्रित सरकारी पर्याय ओतहि छल, मुदा हुनकर स्वयं कहल परिचयक पंक्ति अलग सँ दर्ज भऽ गेल छल। ई अन्तिम प्रमाणपत्र नहि, तइयो हुनकर बोलल शब्द अब कार्यालयक जाँचसँ बाहर नहि छल। भगिनी बेल-पातक थैली खोलि पूछलक जे पानक पातक दाम एखन मिलत कि काल्हि। बसन्ती दाम गनि देलीह। “पातक खाता आइक, परिचयक मामला काल्हिक,” ओ कहलीह। दोसर दिनक काजक तयारीमे ओ पुरान बहीक कोनमे छोट चिह्न लगौलीह; अपन कारोबारक परिश्रमकेँ नामक विवादक छाँहमे विलीन करबाक मन हुनका नहि छल।

सरिताक घरमे रातिक रसोइ चलैत छल। नैरा नील आ गेरुआ ढेरीक खुलल कागद घर नहि अनने छलीह; केवल सार्वजनिक सार आ माइक आवेदनेक नकल छल। सरिता दालमे नून मिलबैत कहलनि, “अहाँ चारि जीवित कहैत छी तँ हम ओहि चारिमे छी, ई हमरा बुझल। मुदा हमर पतिक मृत्यु फेर ककरो सुविधा लेल झूठ नहि बनए। हुनकर नामपर दवा उठल अछि, से के उठौने से पूछू; हुनका जीवित मानि हमरा विधवाक कागद नहि काटू।” नैरा सहमति देलीह। सरिता फेर पुछलनि जे दोहरायल ‘मृत’ चिह्नक सुधारक समय कोन अधिकारी लिखित उत्तर देत; नैरा जाँचक तारीख बतौलीह, निश्चित परिणामक प्रतिज्ञा नहि कएलनि।

ओतहि कबीर पहुँचलाह। हुनका सुभद्रासँ भेटबाक लेल एक सन्देश भेजबाक छल, मुदा सरिताक मेजपर मृत्यु-सूचनाक सार्वजनिक पन्ना देखि ओ पुछलनि, “ककरो जीवनक बात कहबाक सीमा के तय करत?” सरिता थारी परसैत उत्तर देलीह, “जे अपन कथा लऽ बैसल अछि, पहिने ओ। आ जे सुनत, ओ पहिने पूछत जे कोन बात ओकर काजक अछि।” कबीर कहलनि जे जन्मक पुरान कागद देखबाक इच्छाक संग सुभद्राक निजता हुनका रोकैत अछि। सरिता हुनका कोनो नाम वा तारीख नहि बतौलनि। “हुनका अपन शर्त कहबाक अवसर दिअ,” ओ कहलीह। कबीर फोनमे सुभद्राकेँ मात्र भेटबाक समय पूछलनि, कथा लिखि पठेबाक आग्रह नहि कएलनि।

राति कार्यालय बन्द करबाक पहिने रमा दू ढेरीक अलग पत्राचार बनौलीह। नील प्रकरण लेल जीवित व्यक्तिक स्वयं-उपस्थिति, गलत मृत्यु-प्रविष्टिक मूल इतिहास, आवश्यक सेवा फेर चालू करबाक अन्तरिम उपाय आ उत्तरक तारीख। गेरुआ लेल मृत्यु-

पुष्टि, सक्रिय लेनदेनक स्रोत, वास्तविक प्राप्तकर्ता आ अधिकृत उत्तराधिकारीक अधिकारक जाँच। सरिताक सत्ताइस नामक सूचीकेँ एकरो परिशिष्ट नहि बनाओल गेल। नैरा देखलीह जे आठू पर्चीमे कमसँ कम एक प्रश्न अधिकारीक लिखित उत्तरसँ जुड़ि गेल अछि; मुदा ककरो दोष सिद्ध नहि भेल, मृत्युक इतिहास बदलल नहि, आ चारि गलत मृत्यु-चिह्न एखन औपचारिक आदेशसँ हटाएल नहि गेल।

रमा आखिरी बत्ती बुझबैत खिड़की बाहर देखलीह। बरकी पोखरिक दिशा सँ नम हवा आबि रहल छल; घाटपर रमणीक जाल सुधरबाक छाँह आ रेणुक सार्वजनिक बाटक माँग एखन अलग सुनवाई चाहैत छल। सुधाक दानपत्रक बाट, बसन्तीक कहल नाम, शारदाक सुधारल ब्याज आ नाहिदक मातृपरिवारक बिना-खोलल पत्र सेहो अपन-अपन ठाम रहल। कागदपर चारि नील, चारि गेरुआ चिह्न साफ छल; ओकर भीतर जीबैत लोकक समय आ मृतकक परिजनक अधिकार एके रंगमे समाएब उचित नहि छल। रमा फोल्डरक डोरी बाँधलीह। भोरमे उत्तर माँगएबला लोक फेर आबताह—ओ समय पहिने सँ हुनका सभक छल, कार्यालयकेँ आब ओकर हिसाब देबाक छल।

अध्याय ९० • सुभद्राक शर्त

सुभद्रा पुरान पीतरक सन्दूकक कुण्डीमे पतला तेल देलनि, तखन चाबी घुमौलीह। ढक्कन भीतरसँ अटकल रहए। ओ एक हाथसँ काठक किनार दबौलनि आ दोसर हाथसँ सन्दूकक मुँह उठौलनि। भीतर राखल सूती थैलीक रङ्ग फीका पड़ि गेल छल, मुदा ओकर गाँठ सावधानीसँ बान्हल छल। ओ थैली खोलबाक बदला पहिले कोठरीक देवाल लग राखल दू कुरसी पोंछलीह। आइ कबीरकेँ हुनका संग बैसबाक छल। हुनकर प्रश्न सुनबाक लेल ओ समय देने छलीह, अपन जीवनक सभ बन्द पन्ना खोलबाक नहि। खिड़की लग झूलैत नीमक पातक छाँह मेजपर हिलैत छल। सुभद्रा कागदक एक छोट पर्चीपर लिखलनि—‘बात करबाक शर्त’। लिखित शब्द देखिकऽ हुनका अपन आवाज कनेक स्थिर लागल।

कबीर समयसँ किछु पहिने पहुँचलाह। हाथमे फल नहि, पुस्तक नहि; एकटा साधारण कपड़ाक झोरा छल जाहिमे हुनकर अपन कापी आ पानीक बोतल छल। सुभद्रा हुनका बरामदामे बैसबैत पुछलनि, “तोरा की बात जनबाक अछि, पहिने अपन शब्दमे कह।” कबीर हड़बड़ायल नहि। “जन्मक कागदमे जे रिक्तता अछि, ओकर साँच बुझबाक इच्छा अछि। मुदा जे घरमे हम पललहुँ, ओहि घरक कथा हम अपन जीवनसँ काटि नहि सकैत छी। अहाँक कहबाक समय अहाँक; हमरा केवल ई जनबाक अछि जे हम केना प्रश्न पूछी।” सुभद्रा हुनकर खाली हाथ देखलीह। हुनका ई बात नीक लगल जे कबीर सन्दूक दिस आँखि नहि दौड़ा रहल छलाह, मुदा नीक लगब मानिकऽ ओ अपन शर्त नरम नहि कएलनि।

“पहिल शर्त,” ओ पर्ची उठबैत कहलीह, “आइ जे कहब, ओकर रिकार्डिङ नहि। जँ लिखबाक आवश्यकता हो, पहिले हमर अनुमति। दोसर—हमर अनुमति बिना कियो नाम, ठेगाना, जन्मक तिथि वा पुरान चिट्ठीक फोटो आन व्यक्तिकेँ नहि देखाएब। तेसर—हम जतय रुकब, ओतहिसँ बात फेर शुरू करबाक अधिकार हमर रहत। चारिम—तोरा प्रश्नक अधिकार अछि; उत्तरकेँ तुरन्त प्रकाशित करबाक अधिकार नहि।” कबीर पर्ची ध्यानसँ सुनलनि। “एहि नियमसँ हमर अपन स्मृति लिखब सेहो रुकत?” ओ पुछलनि। सुभद्रा

कहलीह, “नहि। तोहर स्मृति तोहर; मुदा हम जे निजी कथा कहब, ओकरा तोहर स्मृतिक रूप दऽ प्रकाशित नहि करिहें।” एहिसेँ पहिल बेर दुनूक बीच असहमतियो खुलिकऽ बोलल गेल।

कबीर कहला, “जँ अहाँक कहनामे हम अपन जीवनक कोनो तथ्य पाबी, तँ ओकर जाँच केना करब?” सुभद्रा किछु काल चुप रहलीह। भीतरक अंगीठीक कात सँकल मखानक सुगन्ध आबि रहल छल। “तथ्य जाँच,” ओ धीरे कहलीह, “मुदा बिना हमरा पूछने ओहि नामक दोसर घरक दरबज्जा पर नहि पहुँचिहें। जे व्यक्ति एखन जीबैत अछि, ओकरा अचानक हुनकर पुरान समयक उत्तर देबाक बाध्यता मत दिअ। जँ प्रमाण लेल कागद देखबाक हो, हम स्वयं तय करब जे कोन कागदक प्रति आ केकरा देखाएब। सत्यक आवश्यकता आ ककरो सुरक्षा—दुनू एक्के मेजपर राखब पड़ैत अछि।” कबीर कहलनि जे ओ अपन प्रश्न क्रमसेँ लिखि पहिले सुभद्राकेँ देखाएताह। शर्त लिखल गेल, मुदा सुभद्राक उत्तर देबाक निश्चित तारीख नहि।

नैरा दोपहरमे सुभद्राक अनुरोधपर पहुँचलि। हुनका बैठकक भीतर बजाएल नहि गेल छल; ओ बरामदामे बैसि केवल ई पुष्टि करए अएलीह जे ककरा कोन प्रकारक प्रति देखेबाक अनुमति अछि। सुभद्रा पुछलनि, “अहाँ जाँच करैत छी तँ ककरो निजी कागद भेटिते ओकर फोटो नहि लेब?” नैरा कहलीह, “मूल स्रोत, अनुमति आ उपयोगक उद्देश्य पहिले लिखब। समाचारक आवश्यकता अलगसेँ सिद्ध करब पड़त।” सुभद्रा हुनका चारि शर्त पढ़बौलनि। नैरा आखिरी वाक्यमे एकटा सुधार सुझौलीह—‘बिना अनुमति सार्वजनिक नहि’, मुदा वैधानिक रूपसेँ प्रमाण माँगल गेल तँ तकर अलग परामर्श होएत। सुभद्रा स्वयं ओ संशोधन जोड़लीह। ओ चाहैत छलीह जे शर्त निजताक रक्षा करय, झूठ नुकएबाक आयुध नहि बनय।

एतेकमे बाजारक दिशासेँ कमला ठाकुरक सन्देश अएल। वृद्धा जे पुरान कड़ापर अपन मायकेक स्वामित्वक दावा कएने छलीह, आइ गिरवी-पर्चीक मूल लऽ दोकान पहुँचल छलीह; युवक सेहो व्यापारक ऋणक खाता अनने छल। कमला चाहैत छलीह जे नैरा साक्षीक रूपमे उपस्थित नहि, केवल पर्चीक प्रतिक समय सत्यापित करथि। सुभद्रा कहलीह, “अहाँ जाइ सकैत छी। हमर घरक बात एहि दोकानक कागदमे नहि घुसत।”

कबीर उठबाक तैयारी कएलनि तँ ओ रोकलीह। “तोरा लग हमर प्रश्न एखन बाकी अछि। आइ हम जे किछु नहि कहलहुँ, सेहो तोरा उत्तरक अभाव मानि ककरो सन्देहक प्रमाण मत बनायब।” कबीर फेर बैसि गेलाह। सुभद्रा अपन पर्चीक नकल हुनका हाथमे देलीह; कागदक सन्दूक बन्द रहल।

कमलाक दोकानमे आगि नहि, छोट नील बत्ती जरैत छल जाहिसँ गहनाक धातु साफ देखाइत छल। वृद्धा कड़ा लाल कपड़ापर रखलीह। भीतरक टेढ़ फूल ठीक ओहिना छल जे कमला पहिल भेटमे देखे छलीह। युवक अपन पिता द्वारा लेल गेल ऋणक खाता मेजपर पसारलक। “घरक उधार छल,” ओ कहलक, “गहना दोकानमे छल, तँ हम बिक्रीसँ मूल चुका देब।” वृद्धा हाथ नहि बढ़ौलीह। “उधारक लाभ के उठौलक, से देखू। कड़ाक मालिक के छल, से अलग देखू।” कमला अपन पुरान पंजीसँ बही खोललनि। वजन आ गिरवीक तिथि छल, मुदा ‘घरक मुखिया’ लिखल खानामे वस्तुक मालिकक नाम नहि छल। एखनहिज कोनो पक्षक दाबी पूरा साबित नहि होइत छल।

कमला दू नकल बनबौलीह। पहिल पर वृद्धाक वस्तु-स्वामित्वक दावा, मायकेक देनक स्मृति आ गहनाक अलग चिन्हक विवरण लिखलनि। दोसर पर ऋण, रकम, हस्ताक्षर आ संभावित देनदारक विवाद। युवक पुछलक, “दूनू पन्ना अलग करब तँ निर्णय अटकत।” कमला उत्तर देलीह, “दूनू एक कऽ देब तँ जकर वस्तु, ओकरा बिना सुनने बेचब सहज भऽ जाएत।” वृद्धा अपन मायकेक एक जीवित गवाहक नाम देलीह, मुदा ओहि व्यक्तिक सम्मति बिनु फोन नम्बर लिखब मना कएलनि। कमला वस्तु अपन संरक्षणमे रखबाक नई रसीद देलीह; बिक्रीपर अस्थायी रोक लिखलीह। ओ गहना छिनि वृद्धाकेँ नहि देलीह, युवकक ऋण सेहो रद्द नहि कएलनि। तखन वृद्धा पहिल बेर गहना दिस नहि, रसीदपर अपन नाम दिस देखलीह।

दोकानसँ निकलैत नैराकेँ कमला पुछलनि, “कागदमे ‘घरक मुखिया’ लिखबाक आदत कतेक स्त्रीक वस्तु खा गेल?” नैरा कहलीह, “एकर हिसाब एहि एक कड़ासँ नहि लगत। मुदा एहि कड़ाक प्रश्नकेँ केवल परिवारक झगड़ा कहि हटाएब गलत।” कमला काँसेक माप-बाट समेटैत बजलीह, “हम सोनार छी। धातुक मिलावट जाँचि सकैत छी, मालिकक अधिकार धातुक रङ्गसँ नहि जाँचि सकैत छी। एहिलेल गवाही, जमा-पर्ची आ सुनवाई

चाही।” ओ वृद्धाक गहना पैसाक धौंससँ छुड़ाएबय चाहनिहार व्यक्तिकें दोकानक चाबी नहि देबाक निर्णय स्वयं कएलनि। आनक निजताक मूल्य कमला लेल कारोबारक खर्च छल, उपदेश मात्र नहि।

नगरक पंजी-कक्षमे नीलिमा नुराड विवाहक प्रति साटल पारदर्शी आवरण उघाड़ि रहल छलीह। कागदमे पिता आ पतिक परिचय छल, मुदा मायकेक स्त्रीक नामक आगौं स्याही रगड़ल दाग। ओ पहिल आवेदन किछु मास पहिने देने छलीह; प्राप्ति-अंक एखनहुँ सुरक्षित छल। लिपिक कहलनि, “मायकेक पहिचान पिता सँ चलत। फेर किएक नया झंडट?” नीलिमा कुर्सीसँ उठलीह नहि। “आम जन्मक सम्बन्धमे दू अभिभावकक नाम छल। विवाहक प्रति बनैत ओ नाम मिटि गेल। हम पंजीमे जहिना छल, तहिना पुनर्लेखन माँगैत छी। एहि सँ ककरो वैवाहिक स्थितिमे परिवर्तन नहि होएत।” हुनकर आवाज सुगम छल, मुदा हाथमे कागदक कोना कनेक काँपि रहल छल।

नीलिमा मूल प्रतिक अभिलिखित क्रम, निमन्त्रणमे छपल मातृनाम आ माय द्वारा हस्ताक्षरित पुरान अभिभावक-पत्र अलग-अलग राखलीह। लिपिक तीनूकें एके प्रमाण कहबाक कोशिश केलक। नीलिमा कहलीह, “निमन्त्रण समाजक छापल वचन अछि; मूल पंजी सरकारी प्रविष्टि; मायकेक पत्र व्यक्तिगत कथन। अपन-अपन काम अलग अछि।” ओ आवेदनमे ‘मिटिओल नाम पुनर्स्थापन’ लिखबौलीह, ‘नब नाम जोड़ल’ नहि। पासमे बैसल वयोवृद्ध कर्मचारी कहलनि जे मूल विवाह-पंजीक बँधल खण्ड निकालबाक लिखित अनुमति आवश्यक अछि। नीलिमा एहि प्रक्रियाक प्राप्ति लेलीह। संशोधनक आदेश नहि भेटल, मुदा पहिल बेर हुनकर माँग ‘सामान्य पारिवारिक अनुरोध’ नहि, अभिलेख-सुधारक औपचारिक प्रकरण बनल।

नीलिमाक विवाह-पत्रमे गाम-खानाक कात ‘नीमा’ लिखल एक स्थानीय जलनाम सेहो छल। सहायक तुरन्त नक्शामे एक नदी चिन्हित करए लागल। नीलिमा ओकर हाथ रोकलीह। “ई नाम हमर माय गाम बतबैत समय कहने छलीह; कोन ऋतुमे कोन धारासँ ओकर सम्बन्ध छल, से हम एखन जाँचने नहि छी। पत्रमे शब्द छल, ओकरा निश्चित सीमा मत बनाउ।” नैरा पंजीक स्रोत आ प्रविष्टिक तिथि लिखलीह। नीमा शब्दक अस्तित्व ओहि पन्नामे प्रत्यक्ष छल; वास्तविक नदी-रेखा वा संगमक निर्णय कागदसँ नहि भेटैत छल।

नीलिमा चाहैत छलीह जे मायकेक नाम फेर आबय, मुदा हुनकर मायकेक भौगोलिक स्मृतियो गलत नक्शामे बन्द नहि होए।

ओही पंजी-कक्षमे तुलसी दोनवार अपन टाटमे लपेटल दू गामक कागत लेने अएलाह। पहिल कागद कटल खेतक पुरान सीमा आ ऋण-प्रविष्टिक छल, जे ओ सूरज गंगोताक मार्फत पहिनहिसँ नैराकें देखा चुकल छलाह। दोसर दोसर गाममे परिवारक साझा उपयोग-अधिकार सम्बन्धी विवरण, जाहिमे नब हस्ताक्षर आ पुरान गवाहक नाम अलग छल। कार्यालयक एक कर्मचारी पहिल पत्ताक पता देखिकऽ दोसर पन्ना लौटा देबाक कहलक। तुलसी कहलनि, “एक गामक पट्टा हमर दोसर गामक बाट नहि मिटा सकैत। आ कटल खेतक ऋण हमर हाथमे एखन अछि; बालू परि गेलासँ बैंकक बहीमे खेत फेर उगि नहि जाएत।”

तारा मल्लिककें बालूघाटपर सीमाक नाप लेल बजाओल गेल। धूप ओहि समय माथपर छल। नदीक पाछाँ कतहु भीजल बालू गहिरा, कतहु कड़ा; दूरसँ बराबर बुझाइट सतहपर पैर दाबिते जलक महीन चमक निकलैत छल। सूरज गंगोता पुरान मेड़क ओर देखौलनि। “एहिठाम धान छल, आ उधर चौरमे गाय बान्हैत रही।” तारा अपन मापक डोरी खोललीह, मुदा कहलीह, “आइ जे मापब से वर्तमान धरातल अछि। पुरान खेतक नाप खातामे लिखल, किनारक फेर-बदलावक साक्ष्य अलग चाही। जँ जमीन फेर बनत, तखन दखल आ ऋणक प्रश्न आपसँ स्वतः एक नहि होएत।” तुलसी पहिल बेर स्वयं डोरीक छोर थामलनि।

घाटक ढलानपर एक बालू लादल गाड़ी अटकि गेल। चालक चाहैत छल जे नाप-टोली गाड़ी पाछाँ हटा लए। तारा ओहि भागमे डोरी समेटि लेलनि जतय पहियाक भार सँसरब कठिन छल, मुदा मापनक बिन्दु चुनबाक निर्णय चालकपर नहि छोड़लनि। एक किशोर बालू छाँटे रहल छल; ओकर पाँवक कात नम माटि धँसि रहल छल। तुलसी ओकरा पहिने सूखल माथपर चढ़बाक कहलनि। किशोर कहलक, “गाड़ी रुकल तँ हमरा आधा भाड़ा भेटत।” तुलसी अपन थैलीसँ पानि देलनि, मुदा बचावक नामपर लड़काक मजदूरीक जिम्मेवारी स्वयं लेलनि नहि; चालक सँ रोकल समयक भुगतानक बात कहलनि। तारा ई

विवाद निरीक्षण-पत्रमे संक्षेपमे दर्ज कएलनि। नदीक कटानक हिसाब केवल नक्शाक चिह्न नहि, दिनभरि जीविकाक जोखिम सेहो छल।

तुलसीक दोसर गामक कागदमे ‘बलान’ आ ‘भुतहीबलान’ दू अलग शीर्षकक अन्तर्गत नाम भेटल। लिपिक सहजतासँ एक शब्द काटि संयुक्त नब नाम करबाक लेल पेंसिल बढौलक। तुलसी हाथ बढ़ा रोकलनि। “ई कागद दू समयक अछि। एक नाम ककरा कहल गेल, दोसर कागद कोन स्रोतसँ बनल, पहिने तकर बात होउ।” तारा स्पष्ट कएलनि जे उपलब्ध नामसमूहकँ एक नदीक निश्चित धारा, एक संगम वा एक अधिकार-सीमा कहबाक आधार नहि अछि। तुलसी चाहैत छलाह जे दोसर गामक अपन पुरान हितक प्रमाण केओ पढ़य; ओहि लेल गलत भूगोल गढ़बाक आवश्यकता नहि। कर्मचारी आवेदनक संग दू स्रोतपत्रक प्रतिलिपि स्वीकार कएलक, आ सीमा-जाँचक अलग तारीख देलक।

सुभद्राक घरमे साँझक समय कबीर फेर पहुँचलाह। ओ पहिले लिखल प्रश्नक छोट सूची अनने छलाह। ओहि सूचीक माथपर ‘नाम’, ‘समय’, ‘ककरा बतायब’ लिखल छल; नीचाँ जन्मक तारीखक प्रश्न रहल, मुदा कोनो अनुमानित उत्तर नहि। सुभद्रा एक-एक प्रश्न पढ़लनि। “एखन नामक प्रश्न स्थगित,” ओ कहलीह। “समयक प्रश्नपर पहिने हमर पुरान कागद जाँचब। ककरा बतायब—ई तेसर प्रश्न हम एक्के दिन नहि सुलझाएब।” कबीर पुछलनि, “हमरा अपन घरमे पलौनिहार लोकसँ बात करबाक अनुमति चाही?” “तोहर अपन घर तोहर अछि,” सुभद्रा कहलीह, “मुदा जे बात हमर निजी स्मृति कहि तोरा भेटत, ओकर स्रोतकँ बदलि कऽ हुनका मत सुनाइहें।”

कबीरकँ लागल जे सुभद्रा हुनका एक कदमो भीतर नहि बजबैत छलीह। “ई सभ नियम जँ बहुते दिन चलत,” ओ कहला, “तँ हम अपन प्रश्नक संग अकेले रहि जाएब।” सुभद्रा पहिल बेर कुर्सीक पीठ छोड़ि आगाँ झुकलीह। “हमरो बहुत दिन अपन बातक संग अकेले रहए पड़ल,” ओ कहलीह, “एहिसँ तोरा चुप करएबाक अधिकार हमरा नहि भेटैत। मुदा तोहर बेचैनी हमर देहक इतिहासपर हुकुमो नहि देत।” कबीर नजरि नीचाँ कएलनि। हुनका एहिमे केवल गोपनीयता नहि, सुभद्राक थकान आ पहिने भुगतल विकल्पक कीमत

सुनाइ देलक। ओ माफी माँगबाक बदला कहला, “हम प्रश्नक समय फेर पूछब। जँ अहाँ आज नहि कहब, तँ एहि मौनकेँ दोषक स्वीकृति नहि लिखब।”

सुभद्रा सन्दूक खोललनि नहि। ओ मेजक दराजसँ एक पुरान आवरण मात्र निकाललनि, जाहिपर एक नाम अधकचरी स्याहीमे आ तारीखक स्थानपर धब्बा छल। कागद भीतर सँ बन्द छल; कबीर ओकरा हाथेँ नहि छूलनि। “ई देख,” ओ कहलीह, “एक नामक अस्तित्व प्रत्यक्ष अछि, पूरा पत्रक अर्थ एखन नहि। एहि आवरणक संग एक पुरान भेजबाक पर्ची अछि, मुदा पर्चीपर लिखल घर ककर रहए से जाँच बाँकी। आ हमर एक कथन अछि जे हम किछु समयक बाद कहि सकैत छी; ओ बयानक अर्थ प्रत्यक्ष अनुभव होएत, सभ कागदक स्वचालित पुष्टि नहि।” कबीर तीनू स्तरक अन्तर सुनलनि। ओ नाम पढ़बाक लेल आगाँ नहि झुकलाह; एखन अपेक्षा छल जे सुभद्रा अपन निर्धारित सीमा निभा सकथि।

ओ पुछलनि, “जँ अहाँ बादमे किछु कहब, तँ हम अपन पुरान पालनखातामे देखल खाली स्थान ओहि उत्तरसँ भरि सकब?” सुभद्रा उत्तर देलीह, “खाली स्थानक कारण पहिने बुझ। कतेक बेर कागद अधूरा रहैत अछि किएक तँ लिखनिहार नहि जानैत छल; कतेक बेर किएक तँ कियो नहि लिखए देलक। ओ दुनू कारणक प्रमाण अलग चाही।” कबीरक मनमे अपन पालन करनिहारीक भीजल बस्ता सुखेबाक स्मृति उठल। ओ कहला, “एहि स्मृतिक लेल हमरा जन्मक पर्ची नहि चाही। मुदा ओकरा सही-सही याद करबाक लेल हम हुनकासँ सेहो पुछब।” सुभद्रा पुछलनि जे ओहि स्त्रीक तबियत केहन अछि; कबीर कहलनि जे ओ आइकाल बरामदामे तुलसीकेँ पानि देबामे अपन समय बितबैत छथि। सुभद्रा मुस्की देलीह।

नैरा पाछाँसँ अएलीह तँ सुभद्रा हुनका बातचीतक सामग्री नहि, केवल सहमतिक पन्ना देखौलनि। ओ अपन हस्ताक्षरक कात लिखलीह—‘कबीर अपन प्रश्न राखि सकैत छथि; उत्तरक अंशक उपयोग लेल प्रत्येक बेर अलग सहमति आवश्यक।’ कबीर स्वयं जोड़लनि—‘हम जे स्मृति या पुरान कागद स्वतंत्र रूपसँ देखब, तकर स्रोत स्पष्ट राखब।’ नैरा एहि पन्नाक एक नकल दुनूकेँ दऽ देलीह, अपन लेल कोनो निजी जन्मसूचना नहि उतारलीह। सुभद्रा कहलीह, “जे लिखल अछि, से हमरा अपन समयक अधिकार देत। मुदा जँ हम

बादमे डरि जाएब, तोरा हरेक बेर दुत्कारि चुप करब सेहो ठीक नहि। हम फेर भेटबाक दिन कहब।” कबीर एहि भरोसाकेँ पर्याप्त उत्तर नहि, पर्याप्त शुरुआत मानलनि।

बाजारक दोसर कात कमला राति दोकान बन्द करबाक पहिने गिरवीक कड़ाकेँ तालेदार घरमे राखलीह। वृद्धाक नामसँ भेटल स्वामित्व-दावा आ युवकक ऋण-पत्र दू लिफाफामे छल; अगिला सुनवाईक तारीख दूनूपर लिखल छल। नीलिमा नुराड अपन आवेदनक प्राप्ति-पत्र मायकेँ पठौलनि, मुदा पंजी-सुधार पूरा भेल कहि नहि लिखलनि। तुलसी दोनवार भीजल बालू लागल जूता बाहर उतारि दोसर गामक कागद सुखबए रखलनि। आज हुनकर कर्ज नहि घटल; मुदा एक गामक पतासँ दोसर गामक दावाकेँ मिटा देबाक तत्क्षण आदेश रुकल। तीनू अलग घरमे एकटा समान राति छल—अपन नामक बात स्वयं कहबाक छोट, कठिन अवसर।

नैरा आ कबीर घुरैत-घुरैत सँकर गल्लीमे अटकलाह। एक बुजुर्ग पुस्तक-बेचनिहार दोकानक बेंच घसकि भीतर करैत छलाह। कबीर हुनका संग काठक बेंच उठबामे हाथ लगौलनि; नैरा दुकानक चौखटपर राखल दू पुस्तक भिजबाक पहिने उठा लेलनि। बुजुर्ग पुछलनि, “तोरा सभक घरमे किताबक लेल जगह बचल अछि?” कबीर कहलनि, “हम सोचैत छी छोट कोठरीमे दूटा ताख बनाबी। मुदा एक ताखमे नैराक अभिलेख नहि, ओकर अपना पसिन्नक किताब रहत।” नैरा हँसलीह। “आ अहाँक पुरान कापी लेल अलग ताख चाही। सबसँ पैघ अधिकार ताहि कोठरीक खिड़कीक रहत—हवा भीतर आए आ पन्ना उड़ि नहि जाए।” पुस्तक-बेचनिहार पुरान काठक माप देबाक वादा कएलनि।

गल्ली पार करैत नैरा पूछलीह, “अहाँ एतेक किछु सुनि आइ निराश छी?” कबीर कुछुए दूर धरि चलैत रहलाह। “हम उत्तर नहि पेलहुँ,” ओ कहला, “मुदा आज बुझलहुँ जे उत्तरक प्रतीक्षा सेहो दोसराक जीवनक मूल्य राखैत अछि। हम चाहैत रही जे कोनो एक नाम हमर पिछिला सभ वर्षकेँ बुझा देत। आब बुझैत छी जे पालन करनिहारक छोट-छोट दिनक लेखा एहि एक नामसँ छोट नहि।” नैरा हुनकर चालसँ चाल मिलौलीह। ओ कहलनि जे अगिला माह कतहु रेलसँ छोट यात्रा पर जाएब, जँ दूनूक काम अनुमति दए। कबीर स्थानक नाम प्रस्तावित कएलनि, मुदा यात्रा तय नहि भऽ गेल। नैरा कहलनि, “पहिने कोठरीक ताख।” ओ मुस्की देलनि।

घर पहुँचलाक बाद कबीर पुरान पुस्तक खोलि ताखक मोटाइ नापबाक पर्ची भीतर राखलनि। नैरा खिड़कीमे अटकल पात हटौलीह। ओहि राति हुनका सभक बातचीतमे न सत्ताइस नाम छल, न आठ मृत्यु-पर्चीक गिनती, न कोनो रहस्यक तुरन्त समाधान। कबीर एक बासनमे चाय लेल पानि चढ़ौलनि; नैरा दूटा कप धोइ रखलीह। कोठरीक देवालपर बत्ती पड़ला सँ खाली ताखक अनुमानित रेखा साफ देखाइत छल। “एहिठाम साझा किताब रखब,” कबीर कहला। नैरा पुछलीह, “ताहिपर नाम केकर लिखब?” ओ उत्तर देलनि, “पहिने किताब रखी। जकर पढ़बाक इच्छा हो, ओकरा ठाम भेटय।” चाय उबलल। बाहरसँ धीमी हवा अएल, आ खिड़की ओहिना खुलल रहल।

अध्याय ९१ • सुविधाजनक त्रुटि

सरिता भोरमे टाटपर पसारल पुरान रसीदसभक चारू कोनपर छोट-छोट लोटा रखि रहल छलीह। राति खिड़कीसँ पानि छिटकल छल; कागद भीजल नहि, मुदा एक पन्नाक मोड़ उठि गेल छल। ओ ओकरा हथेलीसँ दबौलीह, स्याहीपर अँगुरी नहि फेरलीह। बाहरी कागदपर हुनकर जीवित होएबाक निवेदनक प्राप्ति-अंक छल आ भीतरी पन्नापर तीन महीनाक लिखापढ़ी-श्रमक बकाया। रसोइमे चढ़ल चाउरक गन्ध बीच ओ दुनूकेँ अलग लिफाफामे रखलीह। “हमर मृत्यु जकर काज आसान केलक,” ओ अपने आपसँ कहलीह, “पहिने ओकर काजक कागद देखब।”

नैरा अएलीह तँ सरिता चाय नहि, पहिने बैठबाक लेल चौकी देलीह। “कहल गेल जे हमर नाम मृतकक खानामे रहलासँ नकल-कामक पैसा रोकल गेल। मुदा जे काम हम कएलहुँ, ओकर खर्च पंजीमे कतहु तँ गेल होएत।” नैरा पुछलीह जे बकायाक रसीद मूल अछि की नकल। सरिता तीनटा अलग रंगक कागद निकाललनि—काम सुपुर्द करबाक तारीखवला प्राप्ति, पाँति गनबाक पुरान हिसाब आ कार्यालयसँ भेटल नब स्थिति-पत्र। पहिल दुनू हुनकर हाथक छल, तेसर सरकारी छापबला। “हम अपन कामक अधिकार माँगैत छी,” सरिता कहलीह, “मुदा एही आधारपर ककरो चोर नहि कहब, जाबत पैसा कता गेल से नहि देखब।”

गत बरख नगर पुस्तकालयक बाढ़सँ बाँचल पुरान दस्तावेज सभकेँ फेर पढ़ए योग्य बनएबाक छोट अभियान चलल छल। सरिता तीन मास धरि जलक धब्बासँ बचल पाँति उतारने छलीह; किछु पन्ना दोसर लोकसँ पढ़वा सत्यापित सेहो करौने छलीह। ई काज ईशानक दर्शन-पाण्डुलिपिक तीन दिनक अलग प्रतिलिपि-श्रम नहि छल। ताहि अभियानक दैनिक उपस्थिति, सुपुर्द कएल पन्ना आ स्वीकृत पारिश्रमिकक अपन बही छल। सरिताकेँ अखनि तक ओहि बहीक पूरा नकल नहि भेटल छल, मुदा हुनकर खिसामे राखल तिथिवला प्राप्तिसभ छल। “नाम गलत होइते कामो मेटि गेल?” ओ नैरासँ पुछलीह। नैरा बजलीह, “कामक वस्तु तऽ बाँचल अछि। कागद देखिकऽ उत्तर माँगब।”

काल्हि रमा जे आठ पर्चीक दू ढेरी बनौने छलीह, ओहि ढेरीक नील खण्डमे सरिताक नाम एखनहुँ ‘मृत’ छपल छल। फकीराक गलत चिह्न, राहत-बस्तीक स्त्री आ बस-अड्डाक युवकक पत्र अलग रहए; गेरुआ ढेरीमे वास्तविक दिवंगत व्यक्तिसभक सक्रिय खाताक जाँच। नैरा पहिने सरिताकेँ ई भेद फेर बुझौलीह। “अहाँक पतिक सत्रह बरख पुरान मृत्यु आ हुनकर नामपर नव दवा-वितरणक प्रश्न दोसर अभिलेखक विषय अछि,” ओ कहलीह। सरिता मानलीह। “ओकरा संग हमर जीवित रहबाक सवाल जोड़ि देलासँ दूटा अन्याय एकटा आसान बहाना बनि जाएत।”

नगरक लेखा-कक्षमे ओहि दिन सफेद चूना झड़ि रहल छल। मेजक एक गोड़ नीचाँ मोड़ल अखबार खोंसल छल जाहिसँ बही खसकि नहि जायत। रमाक कहला पर लेखा सहायक पहिने भुगतान-प्राप्तिक क्रमवला बही देखौलक। सरिताक पुरान प्रतिलिपि-काजक मदमे तीन किशतक स्वीकृति रहए, मुदा वास्तविक भुगतानक खानामे हुनकर नामक सामने ‘स्थिति बन्द’ लिखल छल। तकर बगलमे नब कागद छल—‘अपूर्ण नकल-सम्पादन बाह्य सेवाक माध्यमसँ पूर्ण’। तीन महीनाक एकटा रकम सेवा-ठेका चलबएनिहार **गिरिधारी साह**क संस्थाक बिलमे जोड़ल गेल छल। ई पैसा वास्तवमे ककर खातामे पहुँचल, ओही बहीसँ सिद्ध नहि होइत छल।

“गिरिधारी साहक संस्था?” सरिता पुछलीह। सहायक मुस्करा कऽ कहलक, “पहिने काम रुकल, फेर निजी माध्यमँ करबाओल गेल। नियममे सुविधा अछि।” सरिता मेजक किनार पकड़ि बजलीह, “काम रुकल कोन दिन? हम तँ ओहि मासक अन्तिम पन्ना अपने हाथसँ जमा कएने छी।” ओ अपन प्राप्ति देखौलीह। सहायकक चुप्पी ओकरा दोषी नहि बनबैत छल, मुदा एक समान कामक दू दावा सामने राखैत छल। रमा तीनू किशतक बिल, बैंक भुगतान-सूचना, मूल सुपुर्दगी-पंजी आ ‘स्थिति बन्द’ करबाक आदेश एक संग माँगलीह। “सुविधा शब्द प्रक्रिया कहैत अछि,” ओ कहलीह, “कारण नहि।”

नैरा बुझि रहल छलीह जे मृत चिह्नक कारणेँ सरिताकेँ भुगतान नहि भेटल, आ ओहि अड़चनक बाद बाह्य संस्था भुगतानक पात्र बनल। मुदा एहि दू घटनाक बीच आदेशक कागद चाही। गिरिधारी साह कार्यालयक बाहर बैसल छलाह; हुनकर छोट मुद्रण-दोकानमे कागद छँटैत स्त्री-पुरुषक आवाज पहिनेसँ सुनाइ दैत छल। रमाक लिखित सूचनापर ओ

भीतर अएलाह। “हमरा जतेक बिल स्वीकृत भेल, ततेक नकलक काम करबाक कहल गेल,” ओ बजलाह। “हम सरिताकेँ मृत घोषित नहि केने छी।” सरिता उत्तर देलीह, “हम एखन ओ आरोप नहि देने छी। हम पुछैत छी, हमर सुपुर्द कएल पन्नाक बदला अहाँ नव पन्ना देलहुँ, वा हमर लिखल पन्ना फेर गनि बिल बनल?”

गिरिधारी पहिने कायदेशिक प्रति मेजपर रखलनि। तिथि सरिताक अन्तिम सुपुर्दगीसँ पछिला छल। आदेशमे ‘अवशिष्ट कार्य’ लिखल छल, पन्नाक स्पष्ट सीमा नहि। हुनका संग आएल कर्मचारी बतौलक जे कार्यालयसँ बँधल गट्टर आयल छल, जकरा काटि दोसर जिल्दमे लगाओल गेल। “हम नब अक्षर कतेक लिखलहुँ, से हमरा नहि ज्ञात,” गिरिधारी बजलाह। “गिनतीपर बिल बनल।” नैरा तखन एक समान पन्नाक दू रूप मँगौलीह। सरिताक घरक सुरक्षित प्रति आ संस्थाक जमल प्रतिमे एक ठाम नीली स्याहीक टेढ़ निशान एक्के स्थानपर छल। ई नकलक क्रमक संकेत छल, चोरीक अन्तिम सिद्धि नहि।

रमा टेबुलपर दू खाली कागद रखलीह। पहिल पर ‘सरिताक श्रमक भुगतान रोकल’, दोसर पर ‘गिरिधारीक संस्थाकेँ बाह्य सेवाक भुगतान स्वीकृत’ लिखलनि। सरिता तेसर पाँति स्वयं जोड़ौलीह—‘दुनू काजक वस्तु एके वा अलग, मूल पन्नासँ जाँच’। “सुविधा ककरा भेल, तकरा पहिने ई बही बतौलक,” ओ कहलीह, “मुदा मृत्यु-चिह्न कियो किएक दोहरौलक, से एखन दोसर प्रश्न अछि।” गिरिधारी अपन पक्ष लिखित देबाक सहमति देलनि, आ कर्मचारिसँ कहलनि जे जे मूल गट्टर बचल अछि, ओकरा नहि फेंकू। हुनकर चेहरापर घबराहट छल; घबराहटकेँ रमा अपराधक गवाही नहि लिखलीह।

दोपहरिसँ पहिने बैंकक प्राप्ति-पत्र पहुँचि गेल। बाह्य सेवा-ठेकाक दू किश्त गिरिधारीक संस्थाक घोषित खातामे जमा भेल छल; तेसर स्वीकृत छल, मुदा निकासी रोकल जा सकैत छल। ओकर भुगतान-तिथिसँ किछु दिन पहिने सरिताक मृत स्थिति फेर हाथसँ चुनल गेल छल। नैरा तिथि दूटा कात-कात राखलीह, बीचमे तीर नहि बनौलीह। “एहि राशि पाबनिहार पहिचान आब प्रत्यक्ष अछि,” ओ कहलीह, “मुदा समयक नजदीकीसँ आदेशक उत्पत्ति सिद्ध नहि।” सरिता गहिर साँस लेने कहलीह, “हम हुनका सामने पुछब। हमरा लुकायल लाभ नहि, लिखल हिसाब चाही।”

गिरिधारीकेँ पुनः बजाओल गेल। हुनका हाथमे बैंकक छाप देखाओल गेल, मुदा निजी खाता-नम्बर सभासँ बाहर राखल गेल। ओ स्वीकृत रकमसँ छँटाईक मजदूरी, कागद, जिल्द आ ढुलाईक खर्च घटाबैत बतौलनि जे बचल राशि व्यवसायिक आमदनी रहत। एहि अंशक लाभ हुनकर संस्थाकेँ भेटल—ओ स्वीकार कएलनि। मुदा ओ कहला जे व्यक्तिगत नकलकारक बकाया हुनकर ठेकाक विषय नहि। सरिता बजलीह, “तँ हमरा दूटा रकमक झगड़ा नहि बनाबू। जँ हमर पन्ना परत-दर-परत अहाँ फेर बाँधलहुँ, तकर दाम अहाँक कामक होएत; हमर लिखल अक्षरक मानदेय हमरा देबाक कार्यालयक जिम्मेवारी समाप्त नहि होइत।”

भवनक बरामदामे धूप सरकैत छल। चेतन भट घटनाक कात पुरान कपड़ामे बन्हल कागदक गठरी धए बैसल छलाह। ओ नगरक वंशगान कार्यक्रमसँ धुरैत एहि कार्यालय पहुँचने छलाह। हुनका वंशगान सुनबाक बदलामे कोनो परिवार एक पुरान पर्ची दएने छल; पर्चीपर एक नाम छल, जे सरिताक नामक निकट लगैत छल, मुदा लेखनक तिथि फाटल कोनासँ गुम छल। एक परिचित हुनका कहलने छल जे एहि पर्चीकेँ देखौला सँ आजुक ‘मृत’ प्रविष्टिक रहस्य खुलि जायत। चेतन पहिने नैराकेँ नहि, सरिताकेँ पुछलनि, “अहाँ एहि कागदमे अपना बारे खोजब चाहैत छी की?”

सरिता पर्चीक बाहरी पाँति देखलीह। “एहि पर हमर परिचयक पूरा निशान नहि अछि,” ओ कहलीह। “अहाँक कागदक मालिक के?” चेतन बतौलनि जे वंशगानक पारिश्रमिकक एक अंशक रूपमे पुरान चिट्ठी आ पर्ची परिवार हुनका देने छल, मुदा परिवारक निजी पत्र बेचबाक अधिकार कहल नहि छल। ओ अनमने भऽ गेलाह। वर्षोसँ गायनक बदला कखनहुँ धान, कखनहुँ कपड़ा, कखनहुँ परिवारक इतिहास मिलैत रहल; कागदक मूल्य आ कागदपर लिखल जीवनक अधिकार एक नहि। चेतन निर्णय लेलनि जे पर्चीक मूल बिना दाताक लिखित अनुमति सार्वजनिक नहि करताह; फिलहाल कागदक बनावट, स्याही आ तिथिक परीक्षण लेल स्रोत-सीमित निरीक्षण होए।

नैरा हुनकासँ गान नहि सुनलीह। ओ पुछलीह जे कार्यक्रमक आयोजक पारिश्रमिकक कोनो रसीद देलने छलाह की। चेतन एक छोट पर्ची देखौलनि—गायनक दू घण्टा आ यात्राक खर्च अलग। “जँ ई कागद उपहारमे भेटल, तखन रसीदमे ओकर दाम किएक

नहि?” रमा पुछलीह। चेतनक उत्तर सहज नहि छल। “किएक तँ हम ओकर मूल्य तखन जानिते नहि छलहुँ। मुदा एखन बुझि रहल छी जे कियो पुरान स्मृति हमर कमाइ बने, तकर पहिने ओकर देनिहारक सहमति चाही।” ओ रसीदमे संशोधन माँगबाक निश्चय कएलनि; परिवारसँ भेटि उपहार, धरोहर आ नकलक अधिकार अलग कराओताह।

ओहि बरामदाक दोसर छोरपर नाहिद मोगल अपने मायपक्षक जमीनक लिफाफा बचबैत ठाढ़ छलीह। पछिला बेर ओ शारदा कसौधनक गिरवी-दोकानमे सहमतिक विवाद दर्ज करौने छलीह। आइ हुनका मातृपक्षक दू भायक पत्र भेटल छल—जमीन गिरवी रखि पुरान कर्ज चुकएबाक प्रस्ताव। पत्रमे ‘परिवारक सहमति’ लिखल, मुदा नाहिदक हस्ताक्षर नहि। एक भाय फोनपर कहलनि, “अहाँक हिस्सा छोट अछि; दाम मिलला पर देब।” नाहिद फोन कानसँ हटाए बिना कहलीह, “हिस्सा छोट वा पैघ होएत, एहि लेल कागद देखब। हमर सहमति अनुमानित नहि लिखू।”

ओ शारदाक संग पंजी-कक्ष पहुँचलनि। जमिनीक पट्टा, गिरवीक नब प्रारूप आ पुरान मातृगामक पत्र तीनू अलग रखल गेल। पुरान पत्रमे लिक्खी उल्लेख छल; एहि नामकें आधार बना वर्तमान नदीक नाप तय करबाक प्रयास नहि भेल। शारदा कहलीह जे गिरवी-दोकानक बहीमे ऋण-रकम चढ़लासँ स्वामित्व बदलि नहि जाइत; आ बिना हिस्सा-धारीक अनुमति गिरवी वैध अछि की नहि, तकर निर्णय उपयुक्त प्राधिकारी करत। नाहिद ओहि दिन अपन हिस्सा बिकबाक प्रस्ताव ठुकरौलीह, मुदा परिवारक बकाया ऋणक हिसाब पढ़बाक समय निश्चित कएलनि। हुनकर सहमति केओ हुनका बदला नहि लिखि सकत, ई शर्त आवेदनक प्राप्ति-पत्रमे उतरि गेल।

अनुपमा सेन अपने मायकेक पुरान सन्दूकसँ एक चिट्ठीक गुच्छा निकालि अएलीह। सन्दूकक तल्लामे लागल कपूरक गन्ध कागदसँ उठैत छल। बंगाली अक्षरमे लिखल चिट्ठीक एक ठाम मैथिली शब्द पेंसिलसँ जोड़ल छल; परिवारक वृद्ध सदस्य एतबेक आधारपर मानि लेने छलाह जे समूचा पत्र एतय सार्वजनिक अभिलेख बनि जायत। अनुपमा कहलीह, “चिट्ठी हमर नानीक छल। जकर नाम एहिमे अछि, हुनकर सन्तान सभ एखनहुँ अछि। मूल कागद हमर संरक्षणमे रहत; जे पाँति सार्वजनिक काजक, ओकर

प्रतिक बात हम सोचब।” ओ सरिताक प्रतिलिपि-काजक समयसँ सम्बन्ध जोड़ि देखए आयल छलीह, निश्चित उत्तर देने नहि।

नैरा अनुपमाकेँ पढ़बाक लेल अलग मेज देलीह। बंगाली पाँतिक अर्थ बुझए ओ स्वयं तुरन्त नहि दौड़लीह; अनुपमा पहिने चिट्ठीक तिथि, लिखनिहार आ पाबनिहारक सम्बन्ध स्पष्ट कएलनि। एक पत्रमे पुरान आश्रय-विद्यालयक पुस्तक मरम्मतिक खर्चक उल्लेख छल; किनको वर्तमान मृत्यु-प्रविष्टिक नाम नहि। “एहि पत्रमे आजुक लेखा-कक्षक आदेश खोजब गलत होएत,” अनुपमा कहलीह। “मुदा पुस्तकक प्रति ककरा लग छल, ई बात पुराने विद्यालयक बहीसँ मिलि सकैत अछि।” ओ चाहलीह जे निजी घरक विवरण झाँपि पुस्तक-व्ययक दू पाँतिक प्रमाणित प्रति बनय, ओकरा पर स्रोतक नाम आ उपयोगक सीमा लिखल रहय।

चेतन ओहि घड़ी अनुपमाक कागद देखबाक आग्रह कएलनि नहि। बाहरक नलसँ ओ हाथ धोइ रहल छलाह; गानक पुरान ताल मनमे चलैत छल, मुदा आज आवाज निकालबाक इच्छा नहि छल। अनुपमा हुनका पुछलीह, “अहाँक गठरीमे जकर परिवारक पर्ची अछि, ओ परिवार हमरा चिन्हैत होएत?” चेतन उत्तर देलनि, “भऽ सकैत अछि, मुदा जानल बिना नाम जोड़ि देब तँ फेर ओही गलती होएत।” दूनू अलग-अलग अनुमति-पत्र लिखबाक निर्णय लेलनि। वंशगान, पारिवारिक पत्र आ सरकारी मृत्यु-पंजीक बीच समान नाम रहितो एके घटना सिद्ध नहि होइत; मुदा लोककेँ अपन कागदक उपयोगपर शर्त रखबाक अवसर अवश्य भेटैत छल।

लेखा-कक्षमे फेर गिरिधारी अएलाह। हुनकर संस्थाक दू श्रमिक कहने छल जे जँ पूरा भुगतान रुकि गेल तँ हुनकर मजूरी अटकत। सरिता हुनका सभकेँ बाहर ठाढ़ देखलीह; एक स्त्री अपन टिफिनक खाली डिब्बा खोली बन्द करैत छलीह। सरिता रमासँ कहलीह, “ठेकाक आमदनीमे जे विवादित हिस्सा अछि, ओकर जाँच करू। मुदा जे मजदूर सचमुच कागद छाँटलनि, हुनकर हाजिरी आ मजदूरी नहि काटू।” गिरिधारी पहिने एकरा अपन पक्षक समर्थन मानलनि। सरिता तुरन्त जोड़लीह, “हम अहाँक निर्दोषता लिखि नहि रहल छी। हम हुनकर श्रमक बात करैत छी।”

रमा आदेश देबाक अधिकार नहि रखैत छलीह जे रकम जब्त होए वा कोनो दोषी घोषित होए। ओ सक्षम अधिकारीक लेल अलग-अलग प्रस्ताव बनौलीह—सरिताक बकाया मानदेयक तत्काल पुनर्गणना; बाह्य ठेकाक तेसर किशतक वस्तुगत सत्यापन धरि रोक; पहिल दू किशतक पन्नावार मिलान; संस्थाक श्रमिकसभक वास्तविक मजूरीक रसीद सुरक्षित करब; आ मृत्यु-स्थिति बदलनिहार मूल डिजिटल अभिलेखक संरक्षित प्रति मँगाएब। गिरिधारी लिखित आपत्ति दर्ज कएलनि जे पूरा ठेका एके पन्नासँ निरस्त नहि कएल जाउ। रमा ओकर आपत्ति सेहो संलग्न कएलनि। सुनवाईक तिथि निर्धारित भेलीह, फैसला नहि।

सरिता पहिल बेर ठेकेदारकेँ सीधा देखैत बजलीह, “अहाँक खाता पैसा पओलक, एहि बातक बैंक पर्ची अछि। हमर बकाया रोकल गेल, एहि बातक सरकारी छाप अछि। एहि दुनू तथ्यकेँ जोड़ि हम पुछैत छी—हमरा मृत रखबासँ ककर काम चलल?” गिरिधारी किछु देर चुप रहलाह। “हमरा ठेका भेटल,” ओ कहला। “जँ अहाँक नाम खुलल रहैत तँ शायद किछु काम हम नहि पबितहुँ। मुदा हम चिह्न बदलने नहि छी।” सरिता कहलीह, “एहि कथनकेँ जतेक सत्यापित होए, ततेक लिखू। बाँकी हम प्रश्नक रूपेँ रखब। ककरो अपराध बनबए लेल हम अपना जीवित रहबाक साक्ष्य बेचब नहि।”

रमाक सामने एक आरक्षित लिफाफा आएल, जाहिमे हाथसँ चुनल मृत्यु-स्थितिक परिवर्तन-सूचनाक समय आ उपयोगकर्ता-कक्षक सङ्केत छल। मुदा उपकरणक पहचान, कर्मचारीक व्यक्तिगत लॉगिन आ अनुमति देनिहारक श्रृंखला पूरा नहि छल। एक तकनीकी सहायक कहलक जे साझा टर्मिनलपर अनेक कर्मचारी काज करैत छथि; समयसँ व्यक्ति तय नहि होएत। नैरा लिखलीह जे प्रतिलिपि फेर ‘मृत’ भेल, ओकर मापन योग्य समय अछि; उपयोगकर्ता कक्षक सङ्केत प्रशासनिक साक्ष्य अछि; आदेश देनिहार एखन अज्ञात। सरिता ई अपूर्ण उत्तर पढ़ि सुनलीह, आ माँगलीह जे मूल परिवर्तनो इतिहास नष्ट नहि हो।

साँझक समय नाहिद अपन मातृपक्षक फोन फेर उठौलीह। एहि बेर भाय कहला जे गिरवी रुकलासँ उधारक ब्याज बढ़त। नाहिद उत्तर देलीह, “उधार हमरा सेहो चिन्ता अछि। तँ आइ राति हम रकमक पूरा हिसाब माँगैत छी। काल्हि जँ जोगाइ भेटत तँ अपन

हिस्साक शर्तपर सहायता करब। मुदा घरक जमीनक निर्णय जे कागद हम पढ़ने नहि, ओकरा पर हमर नाम नहि।” फोन रखलाक बाद ओ मायसँ पुछलीह जे पुरान खेतीक कौन मौसममे कमाइ भेल छल। माय एक-एक वर्ष नहि याद कऽ सकलीह, मुदा पानि उतरलाक बाद बीया बोएबाक पुरान कामक बात कएलीह। नाहिद हुनकर स्मृतिकेँ पत्रक निश्चित नाप नहि बनौलीह।

अनुपमा घर घुरबाक पहिने कार्यालयक सार्वजनिक उपयोग लेल दू पाँतिक नकल छोड़ीह। नकलपर निजी नामसभ झाँपल, स्रोतक तिथि लिखल आ उपयोग केवल पुस्तक-व्ययक तुलना धरि सीमित छल। चेतन अपन पर्ची नहि छोड़लनि; ओ परिवारसँ अनुमति प्राप्त करबाक तिथि लिखवा लेलनि। सभक पास किछु कागद रहल, सभक निर्णय अलग रहल। सरिता देखलीह जे आज दुनूकेँ ककरो निर्देशपर निजी कागद खोलबाक बाध्यता नहि छल। ओ चेतनसँ पुछलीह, “अहाँक गानमे जे लोकक नाम अछि, ओकरा बदलि देल जाए तँ अहाँ की करब?” चेतन कहला, “पहिने गानक स्मृति आ पुरान कागदक भेद पुछब। जे नहि बुझब, ओकरा गीतमे पक्का नहि करब।”

सरिता घर पहुँचलाक बाद कोनो घोर विजयक भावें नहि बैसलीह। ओ अपन लेल राखल रोटी गरम कएलीह; ओतहि पड़ोसक एक बच्चा चीनीक कटोरी लेबय आयल। बच्चा पुछलक जे कार्यालयमे आज अहाँक नाम ठीक भऽ गेल की। सरिता कहलीह, “एखन नहि। मुदा जे कहैत छल जे हमर काम बंद छल, ओकरा आब हमर जमा कएल पन्ना देखबाक पड़त।” बच्चा पूछलक, “तँ अहाँ फेर लिखब?” ओ उत्तर देलीह, “लिखब। मुदा एखन पहिने अपना बकायाक हिसाब लएब।” ओ रोटीक एक गरम टुकड़ा फुकि बच्चाकेँ देलीह। करछलक टनटनाहटमे लिखित आपत्तिक भारी आवाज कुछु बेर लेल घरेलू लयमे घुलि गेल।

नैरा देर साँझ रमाक कक्षसँ धुरैत छलीह। बजरंग चौकक मोड़पर जानकीक दलक बारे पुरान वायरल आरोपक छपल पर्ची कियो फेर बाँटि रहल छल। एगो युवक कहलनि जे सरिताक खाताक खबरसँ बच्चा-अपहरणक “सम्पूर्ण जाल” खुलि गेल। नैरा स्पष्ट कहलीह, “एहि खातामे सरिताक श्रम-भुगतान आ ठेकाक लाभक जाँच अछि। जानकीपर पहिनेसँ गलत सिद्ध भेल सार्वजनिक आरोपक अलग सुधार चलैत अछि; गुंजाक अवैध

स्थानान्तरणक साक्ष्य अलग अछि; मिथुनक खोज सेहो खुलल अछि।” युवक कहलक जे सभ बात एके खबरमे लिखब आसान। नैरा उत्तर देलीह, “आसान खबरक दाम अनजान लोक चुकबैत अछि।”

राति सरिता अपन पहिल प्राप्ति-पत्रक पाछाँ छोट पाँति लिखलीह—‘हमर मृत्यु बनल रहलासँ बाह्य नकल-ठेकाकेँ भुगतानक अवसर भेटल; बैंकक दू किशत संस्थाक खातामे पहुँचल; चिह्न पुनः चुननिहारक नाम आ आदेशक स्रोत अप्रमाणित।’ पाँतिक तरें ओ अपन सही कएलनि। ई आरोप छल, मुदा आरोपक आरम्भमे दू प्रमाणित तथ्य आ अन्तमे प्रमाणक सीमा साफ लिखल छल। ओ कागद मोड़ि पुरान पन्नाक सन्दूकमे नहि रखलीह। आगिला सुनवाईक फाइलमे राखलीह, जाहिसँ कियो कहि नहि सकय जे ओ अपन श्रमक बदलामे चुप्पी चुनने छलीह।

दूर रमाक कार्यालयमे पंखा बन्द होएबाक बाद धूलिक महीन गन्ध रहि गेल। तेसर किशतक सत्यापन-निवेदन अधिकारीक मेजपर पड़ल छल, आ मूल परिवर्तन-अभिलेखक माँग अलग लिफाफामे बन्द। रमाकेँ मालूम छल जे अधिकारी काल्हि एकरा केवल लेखा-त्रुटि कहि निपटेबाक प्रयास कऽ सकैत छथि; ठेकेदार ई प्रश्न उठाए सकैत छथि जे काम कएला पर भुगतान किएक रोकल जाए। दुनू प्रश्न सुनबाक रहए। मुदा एखन सरिताक जीवित होएबाक दावा अस्पष्ट ‘आपत्ति’ मात्र नहि रहल—ओकर संग श्रमक प्राप्ति, रोकल बकाया आ ककर खातामे पैसा गेल तकर प्रत्यक्ष सम्बन्ध जुड़ि चुकल छल।

अध्याय ९२ • आरोपक भङ्ग

जानकी भोरमे अपन बाँसक चटाईक टूटल किनार फेर बुनि रहल छलीह। बाँसक महीन पट्टी आँगुरमे चुभल तँ ओ ओकर टुटल अग्रभाग चक्कूँ समतल कएलीह। चटाई साँझक हाटमे पसारबाक छल; पछिला हफ्ता सँ ग्राहक आधा बाटपर ठमकि जाइत छलाह। सरयू अपन भीजल दरी सुखएबाक लेल काठक बेरामे झुलौने छलीह। ओहि बेरामे फेर एकटा छपल पर्ची फँसि गेल छल—दू कटल चेहरा, बीचमे मोट अक्षरमे बच्चा-चोरीक आरोप। जानकी पर्ची फाड़लीह नहि। ओकर पाछाँ दुकानदारक छाप आ छपाइ-दिन देखलीह, फेर कागदकें सूखल कपड़ामे राखि देलीह। “पुरान आरोप वापस भेल, मुदा नव पर्ची परसुओ छपल,” ओ कहलीह। “आब प्रश्न केवल हम निर्दोष छी कि नहि, ई नहि। झूठक दाम के चुकाओत?”

सरयू तखन धरि छावनीक गलीमे दरी बेचबाक बाट बदलि चुकल छलीह। नतिनी जे दुकानपर हुनकर संग बैसैत छलि, ओकरा सामने एक ग्राहक पुछने छल जे बच्चा सभकें कहाँ राखैत छी। घर अएला पर बच्ची एहि वाक्यकें खेलक प्रश्नजकाँ दोहरौने छलीह। सरयू जानकीसँ कहलीह, “बैठकीमे जे कहल गेल, ओकर कागद हमर झोरामे अछि। मुदा दोकानदारक दुआरपर जे नव पर्ची अछि, ओकरा के हटाओत?” जानकी उत्तर देलीह, “दोकानक दुआर पर स्वयं जाएब। जे पुरान छपौलक, ओकरा सही सुधार ओतहि लगाबए पड़त। हमर दलक सभ स्त्रीकें फेर चेहरा देखएबा लेल नहि ठाढ़ करब।” ओ दरीक एक छोर सीधा कएलीह; कपड़ाक किनार ओहि दिन पहिल बेर एकदम समतल भेल।

बजरंग चौकक छपाइ-दोकानमे घुसिते कागदक काटल कोनासभ पयर तर दबि चरमरायल। छापाखानाक मालिक महतो हाथक स्याही पोंछैत कहलनि जे ओ केवल देल गेल पाठ छापैत छथि। जानकी दू पर्ची मेजपर रखलीह—विद्यालय आ बाजारक पिछिला संयुक्त सुधार-पत्र, आ परसुक नव आरोप। “पहिल कागदक सही अहाँक प्रेसमे आयल छल,” ओ कहलीह। “दोसर कागद बिना जाँच फेर किएक छपल?” महतो एक मजदूरक दिस देखलनि; मजदूर कहलनि जे दोसर आदेश कोनो स्थानीय प्रचार-दलसँ आयल छल। मालिक दावा कएलनि जे सुधार-पत्रक भाषा कठिन छल, भयक शीर्षक आसान। जानकी

कहलीह, “पाठक सुविधा लेल आनक जीवन कठिन बनएबाक अधिकार अहाँकेँ के देलक?” ओ छपाइक आदेश-बहीक सुरक्षित निरीक्षण आ वितरित पर्चीक संख्या लिखित माँगलीह।

नैरा पहुँचलि तँ मालिकक हाथ बहीपर अटकल गेल। “ई निजी ग्राहकक हिसाब अछि,” ओ कहलनि। नैरा सभक सामने बही खोलबाक दबाव नहि देलीह। ओ लिखित संरक्षण-निवेदन देलीह, जाहिमे निर्दिष्ट तिथि बीचक आदेश-पर्ची आ भुगतानक रसीद सुरक्षित रखबाक अनुरोध छल। “आरोप फैलौनिहारक पहिचान जाँचक विषय अछि,” ओ कहलीह, “प्रेसक ग्राहकक सभ नाम बाहर निकालि हाटमे फेंकब दोसर गलती होएत।” महतो रसीदपर प्राप्तिक सही कए देलनि। जानकी एहि प्राप्तिक नकल अपन झोरामे रखलीह; पहिल बेर गलत पर्ची बिकबाक ठामे ओकरा ठीक करबाक औपचारिक बाट लिखल गेल छल।

दुपहरक पहिने विद्यालयक बरामदामे एक छोट सुनवाई तय भेल। असद सैयद विद्यालयक पुरान सूचना आ सार्वजनिक वापसी-पत्रक प्रमाणित प्रति आनलनि। साजिद नट अपन नाटक-अभ्यासक मूल दृश्य, वनफाटकक अखण्ड रिकॉर्ड आ सुकठीक ढुलाई-आँगनक मूल दृश्यक विवरण तीन अलग खाममे रखलक। ओकर रंगीन पर्दा नाटकक सामान छल; ओकरा बच्चा लुकाएबाक परदा कहल गेल छल। तीनू मूल दृश्य अलग दिन आ ठामक छल। नया पर्चीमे जे दू मुख सटाओल गेल, ओहि जोड़ाइकेँ कोन उपकरणसँ बनाओल गेल तकर सम्पूर्ण स्रोत एखन हाथमे नहि छल। मुदा आरोपक मुख्य आधारक गलत होएब फेर जाँचबाक आवश्यकता नहि रहि गेल छल—मूल दृश्यसभमे जानकीक दल द्वारा बच्चा लऽ जेबाक घटना नहि छल।

विद्यालयक एक अभिभावक पुछलनि, “तँ जे बच्चा हराओल अछि, से बातो झूठ?” जानकी हुनका देखैत कहलीह, “मिथुन हराएल अछि, ई लताक घरक प्रत्यक्ष दुःख अछि। गुंजाकेँ अनुमतिबिना काज लेल दूर लऽ जएबाक दस्तावेज भेटल अछि। हमर दलकेँ दू फोटो जोड़ि बच्चा-चोर कहल गेल, ई आरोप गलत सिद्ध भेल। तीनू बातमे सँ एकोकेँ आन बात मेटबाक साधन मत बनाउ।” बरामदाक कात ठाढ़ लता अपन झोराक डोरी छोड़लीह। ओ पुछलीह, “हमरा बेटाक फाइल सार्वजनिक सुधार-पत्रमे फेर किएक घसीटल जाएत?”

नैरा आश्वस्त कएलीह जे सुधारमे घटना-श्रेणी लिखल जाएत, मिथुनक कपड़ा, परिवारक ठिकाना अथवा खोजक निजी सूत्र नहि।

बाजारक समितिक एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे जानकी अपन दलक सभ सदस्यक फोटो सहित लिखित चरित्र-प्रमाण देथि। सरयू कुर्सीसँ उठि ठाढ़ भेलीह। “आरोप लगौनिहार हमर मुँह देखौने छल,” ओ कहलीह, “आब दोष हटएबाक लेल फेर हमर मुँहक प्रदर्शनी? पहिने जेकरा फोटो छापल गेल ओकरा पूछल गेल छल?” सदस्य चुप भेल। जानकी स्पष्ट कहलनि जे सुधारक पाठ प्रकाशित हो, पुरान पर्ची वापस लेल जाउ, जे दोकानमे लगल अछि ओ हटाउल जाउ, मुदा महिला, बच्चा आ घुमन्तू परिवारक सम्पूर्ण परिचय सार्वजनिक नहि हो। असद प्रस्तावक भाषा बदललनि। समिति एहि संशोधित प्रारूपपर सहमति देलक; क्षतिपूर्तिक माँग लेल अलग आवेदनक क्रमाङ्क निर्धारित भेल।

ओही घड़ी बाल-सुरक्षा कक्षसँ चमेलीक सन्देश आयल। गुंजाक घर-वापसीक प्रक्रिया एखन पूरा नहि भेल छल, मुदा बच्चीक सुरक्षित सम्पर्कक पहिल अनुमति भेटल छल। चमेली चाहैत छलीह जे आजक सुनवाईमे बेटीकेँ “अपहरणसँ बचल बच्ची” कहि मंचपर नहि बजाओल जाए। जानकी स्वयं फोन कऽ उत्तर देलीह, “हम अपन नाम परत लऽ रहल छी; अहाँ अपन बेटीक आवाज ओकरा हाथमे रहए दिस।” चमेली पुछलीह जे गोपनीय बयानक आधारपर अपराधीक विरुद्ध अलग जाँच चलत कि नहि। नैरा कहलीह, “चलि रहल अछि। एहि सभाक निष्कर्ष ओहि जाँचक फैसला नहि बनत।” चमेली फोन राखि गुंजाक कापीक लेल नवा जिल्द खरीदबाक निर्णय लेलीह, न कि मीडिया लग बयान देबाक।

बाल-सुरक्षा अधिकारीक कक्षमे एतए अलग काज चलैत छल। बस-अड्डाक पिछला किरायाक कार्यालयक मूल रजिस्टर, गुंजाकेँ पहिल व्यक्ति हवाले करबाक परिवहन-पर्ची आ सिडनाइ-कक्षक प्राप्ति-बहीक प्रमाणित नकल तुलनार्थ राखल गेल। रजिस्टरमे किरायेदारक कार्यालय-सम्पर्कक नाम छल; पहिल पर्चीमे समान सम्पर्क-सङ्केत आ दोसरमे विशिष्ट गन्तव्यक प्राप्ति। अधिकारीक कहब छल जे पर्चीक क्रम, तिथि आ प्राप्ति-ठाम आपसमे मिलैत अछि। हस्ताक्षरक व्यक्तिगत लेखक-परिचय आ प्रत्येक सहभागीक आपराधिक जिम्मेवारीक परीक्षण अद्यापि चलि रहल छल। मुदा सम्पर्क-

कार्यालयसँ सिलाइ-कक्ष धरि बच्चीकेँ पहुँचएबाक अलग मध्यस्थ-मार्ग आब मात्र अफवाह नहि रहल।

एक कर्मचारी तुरन्त कहलनि जे “दलाल पकड़ाएल बुझू।” वरिष्ठ अधिकारी ओकर वाक्य रोकलनि। “दू पर्ची आ कार्यालयक प्राप्ति मिलला सँ मध्यस्थता-मार्गक अस्तित्व स्थापित होइत अछि,” ओ कहला, “एतएसँ कोन व्यक्तिक कोन आशय छल, छल-कपट के केलक, के बच्चीक ठाम रोकलक—तकरा प्रमाणित करबाक अलग काम अछि।” भाड़ाक घरक मालिक अपन बकाया किराया-पर्ची देब स्वीकार कएलनि, मुदा कार्यालयमे रोज के बैसैत छल, से अपन आँखिसँ नहि देखने बात साफ कहलक। गुंजाक संरक्षित बयान जाँचकर्मी लग रहत; बाजारक सुनवाईमे ओकर कोनो अंश नहि पठाओल जाएत।

बाल-सुरक्षा कार्यकर्ता गुंजासँ भेटि घुरलीह तँ चमेली बरामदामे अएल छलीह। कार्यकर्ता अनुमतिसँ बस एतबे बतौलीह जे गुंजा कक्षामे फेर जाएब चाहैत अछि, मुदा सिलाइक काजसँ घृणा नहि करैत। ओकरा अपन कमाइक हिसाब जानबाक सेहो इच्छा अछि। चमेली कहलीह, “ओ जे सिखलक, ओकरा अपराधक निशान मत बनाउ। ओ घर घुरि जँ सुई उठाएत तँ अपना मनसँ उठाओत।” कार्यकर्ता अगिला मुलाकातक समय लिखि देलीह। गुंजाक सुरक्षित वापसी आ पढ़ाईकेँ अदालतक सुनवाई समाप्त होएबाक प्रतीक्षामे नहि छोड़बाक माँग अलग राखल गेल।

लता अधिकारी लग कागद देखए आयलि। हुनका पहिने सँ डर छल जे गुंजाक पर्चीमे मिथुनक नाम नहि भेटिते सभ अधिकारी दोसर काजमे लगि जेताह। ओ सीधा पुछलीह, “एहि कार्यालयक भाड़ा-समयमे हमर बेटाक हाटवला दिन पड़ैत अछि?” अधिकारी समय-अन्तर लिखि देलनि—आंशिक मेल सम्भव, किन्तु मिथुनक ओतय उपस्थितिक कोनो प्रत्यक्ष चिह्न नहि। लता कहलीह, “तखन हाटक तेलदोकान आ टूटल फीताक मूल बयान फेर जाँचू। हम एहि बच्चीक कागदसँ अपन बेटाक कहानी नहि बनबाएब।” एखन ओ अपन खोजक जाँच-समय स्वयं मिलाबैत छलीह। कमली हुनकर थैलीमे पानि रखि देलीह; ओतबे सहायता छल, कोनो जल्दबाजीक दिलासा नहि।

आफिससँ बाहरे छोट लोहेक ठकठक सुनाइत छल। नजीर सिकिलगर पथरौल चबूतरापर बैसि कृषि-कुदालक ढील झाल लोहेक फेरु ठीक करैत छलाह। हुनकर

दोकानक ऊपर कियो रातिमे कोइला सँ लिखने छल—‘हथियार बनबैत अछि।’ पुलिसक एक आरम्भिक पूछताछक बाद ई वाक्य फैलल छल; कारण कोनो गाड़ीवला हथियारक खेपमे ‘लोहेक मरम्मत’ लिखल पर्चीक चर्चा कएने रहए। नजीर काम रोकलनि नहि। “पहिने जे हमर हाथमे अछि से देखू,” ओ बजलाह, “जकर पर्चीपर हमर नाम नाहि, ओकर दोष हमर औजारसँ नहि सिद्ध होएत।”

नजीर एक छोट थैलीसँ तीन पुरान रसीद निकाललनि। पहिलमे हलक फालक हँसियाक दाँत सीधा करबाक मजदूरी छल, दोसरमे खेतक कुदालक दण्डक फँसनी, तेसरमे रसोइक धातुक पाटक जोड़। ओ ग्राहकक नामक संग कामक दिन, वस्तुक नाप आ भुगतानक रकम अलग लिखने छलाह। एक निरीक्षक पूछलनि जे लोहेक काम करनिहार लोक हथियारो सुधारि सकैत अछि कि नहि। नजीर उत्तर देलनि, “कौशलक सम्भावना आ एहि तीन रसीदक काज एक नहि। अहाँ जे खेप देखैत छी, ओकर मूल लदान-पर्ची आनू।” ओ निरीक्षण लेल पाट, रसीद आ सामान्य औजार उपलब्ध करौलनि, मुदा अनुमानपर ‘अपराधी’ लिखबाक विरोध दर्ज कएलनि।

नजीरक प्रशिक्षु बटेसर कहलक जे परसुक ग्राहक अपना टूटा ताला मरम्मत लेल देने छल, तकर फोटो ओ फोनमे लेने अछि। नजीर ओकरा रोकलनि। “ग्राहकक पूरा घरक फोटो समाचारमे नहि पठाउ,” ओ कहलनि। “मरम्मतक वस्तु आ देयक नकल जाँच लेल पर्याप्त होए तँ ओतबे दिअ।” बटेसर तखन फोटोमे घरक चिन्ह झाँपि, ग्राहकक अनुमति लऽ, ताला पाबनिहारक हस्ताक्षरक प्रति जोड़लक। नजीरक दोकानसँ जखन निरीक्षक बाहर निकललनि तँ हथियारक आरोपक समर्थनमे कोनो वस्तु जब्त नहि भेल छल। मुदा अनाम खेपमे ‘मरम्मत’ लिखल पर्चीक उत्पत्ति-प्रश्न खुलले रहल। नजीर अपन प्रशिक्षुकें दोपहरक मजदूरी गनि देलनि; जाँचक नामपर ओकर दिनक मेहनत रोकल नहि गेल।

लोहेक ठकठकसँ दू गल्ली दूर बीना कलार अपन छोट दोकानक गल्ला खाली कऽ रहल छलीह। शीशी, तेल, नोन आ साबुनक दाम अलग-अलग खण्डमे लिखल छल। पैतृक घरक आँगनमे लागल पुरान तराजूक बात ओहि दिन फेर उठल, जखन हुनकर भाय कहने छलाह जे घरक हिस्सा घर चलौनिहार पुरुषक हाथमे रहत; बीनाकेँ दोकान बढ़ेबाक लेल ऋण चाही तँ ओ अपने लिअथि। बीना तखन पहिल बेर पैतृक हिस्साक लेखा, स्वामित्वक

कागद आ पारिवारिक खर्चक विवरण लिखित माँगने छलीह। आइ भाय दुकानपर अएलाह तँ दुआरमे ग्राहक ठाढ़ छलाह। बीना दाम लेन-देन पूरा कऽ तखन कुर्सी देलीह; पारिवारिक विवादक कारण ग्राहकक रकम नहि अटकल।

भाय कहलनि, “दोकान तँ अहाँक चलि रहल अछि, फेर हिस्साक दाम किएक?” बीना गल्लाक भीतरसँ तीन पन्ना निकाललीह। “दोकानक पूँजी हमर बचत आ उधारीसँ बनल,” ओ कहलीह। “घरक हिस्साक प्रश्न अलग। जँ ओहि हिस्सासँ हमरा नवा कक्ष भाड़ापर लेबाक पूँजी भेटत तँ अपन व्यवसाय बढ़ाएब, मुदा हिस्सा नहि भेटलासँ हम घरक अधिकार छोड़ि नहि देब।” भाय कहला जे पुरान घरपर पिताक रोगक खर्च सेहो चढ़ल छल। बीना ओ खर्चक विरोध नहि कएलीह; ओ कहलीह जे वास्तविक इलाजक रसीद, बाँटल देनदारी आ स्वामित्वक कागद अलग राखू। अन्तमे परिवारक खाताक नकल देबाक तिथि तय भेल, नकद हिस्साक निर्णय नहि।

ओहि साँझ हुनकर थोक माल देनिहार आयल। ओ कहलनि जे नवा दोकान खोलबाक अग्रिम ओ देत, मुदा बदला बीना तीन वर्ष धरि ओकरा छोड़ि आन ठामसँ तेल-साबुन नहि किनथि। बीना शर्त पढ़ि फेर कागद घुरा देलीह। “हमरा माल चाही, अपन चुनबाक अधिकारक गिरवी नहि,” ओ कहलीह। व्यापारी छूट घटा देबाक चेतावनी देलक। बीना दू छोट थोक विक्रेतासँ दर मँगबैत समय तय कएलीह; एकर मतलब छल जे नव दोकानक उद्घाटन शायद पाछाँ सरकत। ओ राति गल्लाक छोट रकम गिनलीह, आ बहीमे लिखलीह—घरक हिस्साक प्राप्ति नहि; स्वाधीन खरीदक विकल्प खुलल। अर्जित अधिकारक मूल्य एखन पाबय बाँकी छल।

बीना लगसँ दोकानक शीशी किनए विभा अग्रहरी अएलीह। विभाक औषधि-वितरणक गाड़ी ओकरा किछु देर पहिने रोकि देल गेल छल; अस्पतालक एक तात्कालिक आदेशमे पाँच रोगीक जरूरत लिखल छल, मुदा गोदाममे उपलब्ध मान्य खेपसँ पूरा माँग पूरि नहि होइत छल। विभा अपन पर्ची देखौलीह—खरीद मूल्य, ढुलाई, भंडारणक खर्च आ बिक्री-मूल्य अलग। “सब कहैत अछि मुनाफा छोड़ि दिअ,” ओ बीनेसँ कहलीह, “मुदा दवा समयसँ पहुँचानिहार चालकक मजदूरी के देत? आ जँ मुनाफा पूरा रखब तँ दू रोगीक खर्च परिवार नहि उठा सकत।” बीना अपन तराजू छोड़ि किछु क्षण हुनकर कागद देखलीह।

“जे दाम अछि ओकरा झाँपू नहि,” ओ कहलीह, “आ जे मदद देब चाहैत छी ओकरा सेहो अलग लिखू।”

विभा अस्पतालक औषधि-कक्षमे पहुँचलि तँ फार्मासिस्ट पहिने भंडार-पंजीक खेप-संख्या आ समाप्ति-तिथि जाँचलनि। एक बक्सामे चिपकल बाहरी लेबल आ भीतरक वितरक-पर्ची मेल नहि खाइत छल; ओकर बिक्री रोकल गेल, जाँच-बहीमे कारण लिखल गेल। बाँकी मान्य खेपक मौजूद मात्रा रोगीक तात्कालिकताक आधारपर चिकित्सकक लिखित क्रममे बाँटल जेबाक बात भेल। विभा कहलीह जे वितरणक निर्णय चिकित्सकक, मुदा खरीद मूल्य आ दाम घटेबाक क्षमता हुनकर खाता देखाओत। ओ तीन जरूरतमन्द परिवारक लेल अपना लाभक एक हिस्सा छोड़बाक प्रस्ताव राखलीह, आ लिखित सहायता लेल स्थानीय कोषसँ अलग योगदान माँगलीह। दवा ‘मुफ्त’ कहल गेल नहि; देनिहारक खर्च आ पाबनिहारक राहत दुनू दर्ज भेल।

औषधि-कक्षक सहायक विभाक असमान लेबलवला बक्सार्के देखिकऽ कहलक जे जरूर ओएह खेप अछि जकर चर्चा बच्चा-स्थानान्तरणक कार्यालयमे छल। विभा तुरन्त ओकरा रोकलीह। “एक लेबलक गलतीसँ हमरा अपराधी कहब नहि। आ जँ जाँच करब तँ पूरा लदान-पत्र आनू,” ओ कहलीह। सहायक अपन शब्द वापस लेलक। मुदा जाँचकर्मीक आधिकारिक माँगपर विभा बक्साक बाहरी चिह्न, गोदामक प्रवेश-दिन, परिवहन-पर्चीक क्रमाङ्क आ वापस रोकल खेपक मुहरक नकल उपलब्ध करबाक सहमति देलीह। मूल बक्सा सुरक्षित रहत, औषधि नहि बाँटल जाएत। वैध खेपक वितरण रोकबाक बहाना एक असङ्गति नहि बनल; अनिश्चित बक्सा बेचबाक अनुमति सेहो नहि भेटल।

जखन विभा अस्पतालसँ निकललीह तँ जानकीक सार्वजनिक सुधार-बैठकक घोषणा सुनाइत छल। ओ ठहरि गेलीह। बाजारक एक युवक कहैत छल जे बच्चा-स्थानान्तरणक पर्ची आ औषधिक बक्साक दुलाई-सङ्केत मेल खाइत अछि, तँ सभ संस्था एके जालक अछि। विभा पूछलीह, “कोन पर्चीक कोन सङ्केत?” युवक केवल पसरल संदेश देखौलक, मूल दस्तावेज नहि। विभा कहलीह, “जँ परिवहन-पर्चीमे एक ठाम भेटत तँ तकर जाँच होएत। एक टुक वैध दवा पहुँचाओत, आ कियो दोसर ओही कम्पनीक नाम

दुरुपयोग करि सकैत अछि। समान बाटसँ साझा दोष सिद्ध नहि होइत।” ओ अपन रोकल बक्सक पर्ची अधिकारीक नाँव अलग राखलीह, मंचपर नहि लहरौलीह।

सुधार-बैठक साँझक उजासमे भेल। जानकी बिना मंच चढ़ने पहिल कतारमे बैसलीह। असद पुरान आरोपक पूरा शब्द पढ़ि सुनौलनि, फेर विद्यालय आ बाजारक पहिनुक सुधार-पत्र तथा नव छपल पर्चीक तिथि सुनौलनि। महतो छपाइ-दोकानक मालिक सेहो अएलाह। हुनका लग आदेश देनिहारक पूरा पहिचान नहि छल, मुदा ओ स्वीकार कएलनि जे सुधारक सूचना भेटलाक बादो जाँच बिना फेर आरोपवला पर्ची छपल। छपल प्रतिक संख्या आ बाँटल ठामक सूची जमा देबाक समय देलनि। जानकी कहलनि, “हमरा माफीक सुन्दर वाक्य नहि, जे ठाम बदनाम कएलहुँ ओतए ठीक बात चाही।” समितिक सदस्य ओकरा बैठकक कार्यवाहीमे शब्दशः दर्ज कएलनि।

एक सदस्य पूछलनि जे जानकी स्वयं पत्रपर लिखि देथि जे सभ आरोप झूठ आ असल दलाल पकड़ा गेल। जानकी दुन्नू शर्त अलग कएलीह। “हमर दलकें जे कटल वीडियोसँ बच्चा-चोर कहल गेल, ओ आधार भ्रामक आ आरोप गलत अछि। एहि सुधारकें हम सही करब,” ओ कहलीह। “गुंजाक अनधिकृत स्थानान्तरणक अलग पर्ची भेटल अछि। अदालत निर्णय नहि देलक अछि। ककरो नाम पहिनहिसँ अपराधी लिखब तँ फेर ककरो जीवन पर हथौड़ा पड़त।” अधिकारी सम्मतिमे सिर हिलौलनि; मध्यस्थ मार्गक कागद न्यायिक जाँचक अधीन रहत। मंचपर न गुंजाक बयान पढ़ल गेल, न मिथुनक नामसँ सनसनी फैलाओल गेल।

समितिक लिखित निर्णय तीन कामकें अलग-अलग धरि पहुँचल। पहिल, पुरान गलत पर्चीक बिक्री आ सार्वजनिक प्रदर्शन बन्द करबाक सूचना, आ जतेक ठाम वितरण भेल ततेक ठाम समान दृश्यतामे सुधार टाँगबाक आदेश समितिक अधिकार-सीमा भीतर जारी भेल। दोसर, जानकीक दलक आर्थिक क्षतिक दावाक लेल हाट-भाड़ा, छूटल बिक्री आ गवाहीक अलग आवेदन स्वीकार भेल; रकमक निर्धारण शेष रहल। तेसर, स्वतंत्र बाल-सुरक्षा जाँचक मूल रजिस्टर आ प्राप्ति-पर्ची अधिकृत जाँच-क्रममे सुरक्षित राखबाक बात लिखल गेल। प्रेसक ग्राहकक दायित्वकें बिना सुनवाई तय नहि कएल गेल। जानकी सभ शब्द ध्यानसँ सुनलीह, आ प्राप्ति-पत्र स्वयं लेलनि।

एक क्षण भीड़मे पुरान प्रश्न फेर उठल—“जँ दल निर्दोष अछि तँ मध्यस्थ के अछि?” लता भीड़ दिस घूमि कहलीह, “हमर मिथुन हराएल अछि। हम केओपर मनसँ दोष धरि कऽ बेटा नहि पाबि सकब। जकर नाम पर्चीमे भेटल, ओकर भूमिका जाँचू; मुदा हमर बच्चाक बाट ओहि कागदपर लिखल नहि अछि।” हुनकर एहि वाक्यक बाद भीड़ शान्त भऽ गेल से नहि; किछु लोक अबहु मोबाइल उठा रखने छल। मुदा जानकी आ लता एके चबूतरापर ठाढ़ होइ अपन-अपन आवेदनक अलग प्राप्ति लेलीह। लोकक हाथमे कमसँ कम दू भिन्न कागद छल—दू भिन्न अधिकारक।

सरयू अपन दरी पसारि फेर ग्राहकक प्रतीक्षा करए लगलीह। दू स्त्री दाम पुछलीह, तेसर पहिनुक आरोपक विषयमे धीमे सँ कहए लगलीह। सरयू ओकरा सुधार-पत्र देखौलीह, मुदा बिक्री करबाक लेल अपन जीवनक पूरा कथा नहि सुनौलीह। “ई पट्टीक गाँठ देखू,” ओ कहलीह, “भीजलासँ ढील नहि पड़त। दाम एहि काजक अछि।” ग्राहक एक दरी लेलीह। जानकी दूरसँ देखैत छलीह। ई एकटा बिक्रीक पैसा छल, सम्मानक सम्पूर्ण वापसी नहि। तथापि सरयू अपन नतिनी लेल साँझक चिउड़ा आ गुड़ किनबाक रकम अलग रखि सकलीह। बाजारमे हुनकर हाथक बनाओल वस्तु फेर अपन नामपर बिकाएल।

नजीर अपन दुकान बन्द करबाक पहिने बटेसरकें पुछलनि जे काल्हि कोन काम शेष अछि। “धान कुटबाक मशीनक ढीला पाट आ रामजीक गेटक कुंडी,” युवक उत्तर देलक। नजीर रसीदक नकल रखलनि। हुनका विरुद्ध फैलल हथियारक वाक्य एक दिनमे नष्ट नहि होएत, मुदा निरीक्षकक दर्ज रिपोर्टमे आजक सामान्य मरम्मत, ग्राहकक पुष्टि आ आरोपक अप्रमाणित स्थिति स्पष्ट छल। बीना रातिक बहीमे पैतृक कागदक प्रतीक्षाक तिथि लिखलीह। विभा चिकित्सकक स्वीकृत क्रमक अनुसार पठाओल दवाईक प्राप्ति मिलौलीह, आ असमान लेबलवला बक्साक मुहर स्वयं जाँचलीह। तीनूकें अपन काजक परिणाम भेटल; कोनो एक जाँच हुनकर जीवनक बाकी प्रश्नक उत्तर नहि बनल।

राति नैरा बाल-सुरक्षा अधिकारीक प्राप्ति-सूची पढ़लीह। गुंजाक मध्यस्थ-मार्गक दू चरण प्रमाणसहित जुड़ि चुकल छल, मुदा ढुलाईक एक क्रमाङ्क औषधि-वितरणक रोकल बक्साक पर्चीमे आ अनाम ‘लोहेक मरम्मत’क उल्लेखवला दोसर पन्नामे सेहो

तुलना लेल उठल छल। ओ समान अंकक कात तुरन्त ककरो नाम नहि लिखलीह। मूल लदान-अभिलेख आ वैध मालिकक रसीद अगिला परीक्षण लेल चाही छल। नैरा कागद बन्द कएलीह। बाहर हाटमे नवा सुधार-पत्रक कोना हावासँ फड़फड़ा रहल छल, मुदा सरयूक चटाई तकर नीचे ठामपर पसरल छल। जे आरोपक आधार टूटल, ओकर स्पष्ट सुधार आज लिखल गेल; जे सचमुच अनधिकृत रूपेँ बच्चीकेँ दूर पहुँचौलक, ओकर रास्ताक प्रमाण अलग फाइलमे चलि रहल छल।

अध्याय ९३ • खेपक सम्बन्ध

अस्पतालक पिछला बरामदामे माधव रोनियार गाड़ीपर राखल पेटीक गाँठ छुअबासँ पहिने अपना अंगोछासँ हाथ पोछलनि। रातिक ओससँ लकड़ीक सतह फिसलगर भेल छल। पेटीक ऊपरक पर्चीपर नीली स्याहीमे औषधिक नाम लिखल छल, भीतरक बण्डलपर दोसर वितरकक मुहर। काल्हि विभा अग्रहरी जे असमान लेबलवला बक्सा अलग रखबौने छलीह, से एखन भण्डारक बन्द कोठरीमे छल। माधवक गाड़ीमे ओकरा संग जुड़ल दोसर तीन पेटी पहुँचने छल, जिनका अस्पताल घुरेबाक आदेश देने छल। फार्मासिस्ट कहलनि, “एखन पर्चीपर सही करू; बादमे माल देखल जेत।” माधव रस्सी फेर कसि कहलनि, “जकरा नहि देखलहुँ, ओकर वापसीक सही हमरा सँ नहि होएत।”

बरामदामे गीला फिनाइल आ गरम चायक गन्ध मिलल छल। भीतरसँ एक परिचारिका पाँच रोगीक लेल मान्य औषधि उपलब्ध करबाक आग्रह लऽ अएलीह। “काल्हिक रोकसँ रोगीकेँ दवा कम पड़ि रहल अछि,” ओ कहलीह। माधव जानैत छलाह जे माल घुरेलासँ नव खरीद लेल पैसा अटक जेत। विभा अएलीह तँ दुनू मिलि भण्डार-पंजीक सामने पेटी खोललनि। ओ कहलनि, “मान्य भण्डारसँ रोगीक देय पहिने पूरा करू; ई पेटी जाँच लेल अलग राखू। रोगीक आवश्यकता खराब मालक स्वीकृति नहि बनि सकैत।” परिचारिका राहतक साँस लेलनि, मुदा आजुक दवाइक व्यवस्था लिखित रूपमे माँगलीह।

नैरा अस्पताल पहुँचलि तँ दरबज्जाक बाहर दू युवक फोनपर एके बात दोहरा रहल छल —दवाइक पर्ची आ लोहेक मरम्मतिक पर्चीमे समान अड्क भेटल अछि, तँ नगरक सभ लोहार मिलल छथि। हरिनारायण शर्मा थोड़े दूर अपन पुरान हाथगाड़ीक धुरी लेल आनल लोहेक कसनी रखि ठाढ़ छलाह। ओ सुनलनि, मुदा युवकसभसँ झगड़ा नहि कएलनि। अजितक चेहरा तमतमाएल छल। “बाबू, अहाँ फेर फोटो खिंचबाओत?” ओ फुसफुसायल। हरिनारायण कहलनि, “हमर कामक नापक कागद तैयार अछि। फोटोमे जे नहि अछि, से कहबाक मौका भेटत तँ कहब। मुदा पहिने ई बूझब जे कोन माल वास्तवमे पकड़ायल अछि।”

रमाक कक्षमे ताहि दिन तीन अलग थैली राखल गेल। पहिलमे अस्पतालक आपूर्तिक पर्ची, दोसरमे यूसुफ अंसारीक रोकल कपड़ागाँठक रसीद, तेसरमे पुलिस द्वारा पूर्वमे सील कएल गेल धातुक एक पेटीक जब्ती-सूची। पुलिसक लिखित प्राथमिक निरीक्षणमे एहि तेसर पेटीक भीतर अनधिकृत हथियार-संबन्धी धातुक पाट भेटबाक बात दर्ज छल; ओकर तकनीकी पहिचान आ स्रोतक अन्तिम जाँच बाकी छल। नैरा थैलीसभकेँ एक-दोसरापर नहि रखलीह। “हथियार-संबन्धी सामानक बरामदगी एहि सूचीक तथ्य अछि,” ओ कहलीह, “मुदा यूसुफक कपड़ा वा माधवक दवाइ ओहि पेटीमे छल, एहन कोनो निरीक्षण नहि भेल।”

अधिकारी तीनू पर्चीक माथपर लिखल ढुलाई-सङ्केत मिलौलनि। बाहरी पन्नापर समान छोट अङ्क छल, मुदा मालक खुदक खेप-संख्या भिन्न। महेन्द्र गाड़ीवानकेँ बजाओल गेल। ओ पुरान रजिस्टरक किनारपर अँगुरी रखि कहलक, “ई अङ्क हमरा गाड़ीकेँ नहि, माल बुक करौनिहारक खिड़कीकेँ देल जाइत छल। गाड़ी नम्बर अलग पाँतमे अछि।” ओ खाली जगह देखौलक जतय तिथि झरझराइल पानिसँ धुँधला पड़ि गेल छल। कर्मचारी तीनूकेँ एक दिनक माल कहए लगल, मुदा महेन्द्र रोकलक—“एतय पहिने अलग-अलग प्रवेशक तिथि देखू। एक खिड़कीपर एक अङ्क फेर उपयोग भेल हो, ईहो सम्भव अछि।”

रमा मालघरक मूल खिड़की-पंजी मँगौलीह। पहिल लिखल प्रविष्टिमे औषधिक डब्बाक ढुलाईक आदेशदाता अस्पताल नहि, बाहरी वितरण-एजेंसी छल। दोसरमे लोहेक सीलबन्द पेटी उठौनिहारक हस्ताक्षर अस्पष्ट छल। तेसरमे कपड़ागाँठ यूसुफक नामपर लादल गेल रहए, मुदा ओकरा संग बाहरी स्वीकृतिक पट्टी लगेनिहारक नाम नहि। ‘लोहेक मरम्मत’क अनाम उल्टा-पर्ची सेहो ओही कार्यालयक रजिस्टरमे जोड़ल छल, मुदा ताहिपर कोनो कारीगरक नाम नहि। तीनू पर्चीक बिचमे एक समान बात निकलल—बुकिड शुल्क एके मध्यस्थ खिड़कीपर जमा भेल छल आ रकम लऽ प्राप्ति देनिहारक कार्यालयी मुहर एके छल। नैरा पन्नाक क्रमाङ्क आ तिथि लिखौलीह; ‘एक्के मालिक’ नहि जोड़लीह।

“मध्यस्थ खिड़की मतलब मध्यस्थ आदमी?” हरिनारायण पुछलनि। रमा कहलीह, “खिड़कीपर कतेक लोक पालापारी काम करैत छल, ओकर हाजिरी अलग माँगब।”

अजित तत्क्षण पूछलक जे हथियारक पेटी यूसुफक करघा सँ किएक जुड़ल। यूसुफ, जे अपन पहिल थानक बकाया लेबाक बातसँ आयल छलाह, धीरे कहला, “एके तौलघरमे हमरा सूत तोलाएल आ ककरो लोहा तोलाएल, ताहिसँ हमर करघा लोहा बनाबए नहि लगत।” दुनूकेँ आइ अपन रोजीक वस्तुके पहिचान फेर स्पष्ट करए पड़ि रहल छल।

नैरा यूसुफक अलग बही खोलएबासँ पहिने अनुमति माँगलीह। यूसुफ पहिल खाताक बिक्री-अंश देखौलनि—घरेलू पर्दाक लेल बुनल थान ग्राहककेँ भेटि चुकल छल, मुदा सूतक उधारी चुकल नहि। दोसर खाताक पन्नामे लाल डोरीवला अस्वीकृत स्वीकृतिक पट्टी आ गोदामक जाँचक देरी लिखल छल। “हमर नामक छाप जकरा लग पहुँचल, ओहि छाप बनबेनिहारकेँ पूछू,” ओ कहला। नैरा उत्तर देलीह, “छापक स्रोतक जाँच होएत; अहाँक वैध थानक बिक्रीपर पुनः रोक नहि लगत, जावत नव ठोस कारण नहि हो।” यूसुफ बही खुलले रखलनि। ओ पूछलनि जे औपचारिक आश्वासन लिखित भेटत की, किएक तँ एक ग्राहक फेर फोन करि माल रोकेबाक बात कहने छल।

तखन महेन्द्र महासेठ अपन पुरान नपना-पर्ची लऽ उपस्थित भेलाह। नगरमे हुनकर थोक कारोबारक नाम सुनितहि किछु लोक हुनका गोदामक मालिक समझने छल। मुदा हुनकर बहीमे महिनाक पहिल दिन लऽ अन्तिम दिन धरि नापल तेलक पीपा आ दालक बोराक अलग खर्च छल। “हमर नामपर जे बुकिङ-पर्ची घूमि रहल अछि, ओहि तिथिक हमरा किछु माल नहि गेल,” ओ कहला। गाड़ीवान महेन्द्रकेँ देखिकऽ एक कर्मचारी हँसल —“दुनूक नाम महेन्द्र, तकरा सँ भ्रम भेल।” महासेठ सीधौँ उत्तर देलनि, “नामक समानता हमर कर सँ लेनदेन नहि करैत। हमर हस्ताक्षर, मालक स्वामित्व आ रकम देखू।” गाड़ीवान सेहो मजदूरी-पर्ची अलग रखलक।

बिनोद जायसवाल पछिला साँझसँ अपना छोट दोकानक मुहर खोजि रहल छलाह। हुनका पड़ोसक एक ग्राहक कहने छल जे पुरान पेशाक नाम ‘सूड़ी-कलवार’ लिखल रहला सँ हुनकर आ महेन्द्र महासेठक कारोबार एके शाखा ठहरत। बिनोद अपना खरीदक बहीमे दू पेटी शीशी आ घरे उपयोगक सामग्रीक रसीद देखौलनि। रकम छोटी छल, मुदा पार्सल-खर्चमे ओही खिड़कीक छाप रहए। “हम एहि खिड़कीसँ माल माँगौने छी, एही कारण हमरा उपर अपराध लिखब?” ओ पुछलनि। नैरा कहलीह, “नहि; एही कारण

अहाँक रसीदसँ खिड़की कखन चालू छल तकर स्वतन्त्र मिलान सम्भव अछि।” बिनोद निजी ग्राहकक नाम झाँपि प्रमाणित प्रतिलिपि देबाक शर्त रखलनि।

मालघरक पुरान बही खोलि अधिकारी पएला जे बिनोदक छोट खरीद पर्ची आ अपराध-संबन्धी पेटीक बुकिङ अलग-अलग सप्ताहमे कएल गेल छल; मुदा प्राप्ति-मुहरक नम्बर एके रजिस्टरमे लगातार चलैत छल। महासेठक आरोपित मालक संख्या नहि भेटल। निरीक्षक अपन पहिल लिखल वाक्य बदललनि—‘महेन्द्रक गोदामसँ सम्बद्ध’क स्थानपर ‘मध्यस्थक बुकिङ-क्रमसँ सम्बन्धित’ लिखल गेल। महासेठ राहतक साँस लेलनि, फेरो पुछलनि, “जे ग्राहक हमरा दोषी मानि व्यापार रोकलक, ओकरा कोन प्रति देखाएब?” अधिकारी सार्वजनिक सुधारक सीमित पत्र देबाक सहमति देलनि। बदनामीक घाटा भरि देबाक आश्वासन कियो नहि देलक।

हरिनारायण अपन औजारक पटरी पसरौलनि। पहिल पंक्तिमे पानि-निकासक जाली खोलबाक हुक, दोसरमे हाथगाड़ीक धुरीक कील, तेसरमे करघाक लकड़ी धरबाक कसनी। ओ सभक उपयोग देखौलनि। पिछिला निरीक्षणमे चारि सामान्य औजार देखल गेल छल आ एकोटा जब्त नहि कएल गेल छल; ओहि रिपोर्टक प्रमाणित प्रति अजित हाथमे उठौने छल। “हमर दोकानपर जे अज्ञात धातुक पेटी देखाओल जा रहल अछि, ओकरा हमर रसीदमेसँ खोजू,” हरिनारायण कहला। पुलिस अधिकारी स्वीकार कएलनि जे एखन धरि पेटीपर हरिनारायणक मुहर अथवा हुनकर दोकानक निर्गत पर्ची नहि भेटल अछि। तथापि पेटीक धातुक स्रोतक स्वतन्त्र जाँच जारी रहत।

अजित पुलिसक निरीक्षकसँ पुछलक जे निर्दोष काजक जाँच कतेक बेर दोहरत। निरीक्षक ई प्रश्नक उत्तरमे कानूनक लम्बा भाषण नहि देलनि। ओ कहला, “जँ नव वस्तुगत साक्ष्य भेटत तखन प्रश्न उठत; पुरान फोन-चित्रकेँ बारम्बार नव बरामदगी नहि कहि सकैत छी।” अजितक हाथमे अपन तीन पत्तरवला झुनझुना छल। ओ पुलिसकेँ झुनझुना देखएबाक कोशिश नहि केलक। बाबूक कार्यशालाक बचाव करबाक लेल अपन छोट आविष्कारकेँ तमाशा बनएब ओकरा उचित नहि बुझायल। ओ चुपचाप झोरा बाँधि प्रशिक्षण लेल निकलि गेल।

बरामदामे अपन गाड़ी लग माधव रोनियाारक सामने वितरकक प्रतिनिधि पहुँचल। “तीनू पेटी घुरेब तँ अस्पतालक देयमे कटौती होएत,” ओ कहलक। “अहाँ दोसर बार हमर माल नहि बेचि सकब।” ई शर्त माधव लेल नव छल। ओ दू-बेर गिनल पेटीक संख्या देखौने कहला, “ई माल अस्पताल अपने अस्वीकार कएने अछि। खराप बैच बेचिकऽ आजुक घाटा बचाएब तँ काल्हि रोगीक देहपर ओकर दाम देबए पड़त।” प्रतिनिधि दामक पुरान सूची दिखौलक। माधव अपन खाता खोलि मूल खरीद, ढुलाई आ वापस पहुँचायबाक खर्च अलग लिखलनि। ओ घाटाक कारण लिखि दावा करैत छलाह।

विभा आगाँ बढ़ि फार्मासिस्टकें पुछलीह जे रोकल बक्साक भीतरक वस्तुकें बिना प्रयोगशाला-जाँच ‘नकली’ लिखल गेल अछि की। फार्मासिस्ट कहलनि, “नहि। लेबल आ वितरक-पर्ची नहि मिलल, तँ वितरण रोकल।” माधव कहला, “तखन हमर वापसीक कारणो ओतबे लिखू। खराब पैकिंग आ प्रमाणित घटिया दवा एके बात नहि।” प्रतिनिधि कनेक नरम पड़ल। ओ लिखित प्राप्ति देबाक लेल राजी भेल, मुदा तुरन्त रकम घुरेबाक अधिकार अपन नहि कहलक। माधव तीनू पेटीक बाहरी रूपक तस्वीर फार्मासिस्टक उपस्थितिमे खिंचौलनि; रोगीक पर्ची वा परिचय कैमरामे नहि अएल।

एतहि एक सहायक दौड़ैत अएल जे पुलिसवला धातुक पेटीक तौल अस्पतालक पुरान दवाइ-मालघरक तौलसँ मिलैत अछि। ओ कहलक जे एके तौल भेल तँ एके मालक हाथ अछि। नैरा ओकरा ठहरि पुछलीह, “तौल बराबर रहबाक अलावा की एके सील, एके माप, एके माल-बही अछि?” सहायक माथ हिलौलक। हरिनारायण अपन हाथक लोहा उँचका नहि केलनि; केवल कहला, “पाँच सेरक कुदाल आ पाँच सेरक बीहनक बोरा दुनू पाँच सेर होएत।” सहायक लजायल। रमा ओकर कहबकें अन्तिम प्रतिवेदनमे नहि, अलग जाँच-प्रश्नमे मात्र राखबाक निर्णय लेलनि।

दुपहरमे मध्यस्थ ढुलाई-खिड़कीक पहिनुक मुनीमकें सूचना दऽ बजाओल गेल। ओ बुढ़ा आदमी काँपैत हाथसँ लेंस लगाओलनि आ पंजीक क्रम देखलनि। “ई मुहर हमर दिनमे सेहो लागैत छल,” ओ कहलनि, “मुदा ओहि समय खिड़कीपर दू पालि चलैत छल। नम्बर कार्यालयक रहए, हस्ताक्षर व्यक्तिक।” अधिकारी हुनका सँ पुरान कर्मचारीक नाम पूछलनि। मुनीम चारि नाम कहलनि, एक तिथि भूलि गेलाह। नैरा ओ भूलकें रिक्त

स्थानमे राखलीह। मुनीम अपन हस्ताक्षरवला दू स्वीकार-पर्ची चिन्हित कएलनि; अपराध-संबन्धी पेटीक पर्चीपर देखल धुँधल हस्ताक्षरकेँ अपन कहबाक लेल ओ तैयार नहि भेलाह।

रमा तखन पुलिसक मूल जब्ती-सूची आ अस्पतालक लदान-पर्चीक किनार मिलौलीह। कागद पर एके मध्यस्थ कार्यालयक मुहरक संग एके दिनक अग्रिम भाड़ा-जमा दर्ज छल; दूनू प्रविष्टिमे भाड़ाक राशि अलग, प्राप्ति-बहीक पन्ना लगातार छल। निरीक्षक स्वतंत्र रूपेँ मूल रजिस्टरक पन्ना पलटि चिह्नित कएलनि जे ई लगातार पंक्तिसभ पछि नहि जोड़ल गेल अछि, एहन अन्तिम विशेषज्ञ-जाँच एखन नहि भेल। तथापि प्रस्तुत मूल बही, बैंकक शुल्क-जमा आ गेटक समय-पंजी तीनू मिलि एके बुकिङ-मध्यस्थक उपयोगक ठोस सम्बन्ध देखबैत छल। नैरा कहलीह, “सम्बन्ध सिद्ध भेल। कियो दवाइ भेजलक आ कियो हथियारक सामान—एहि दुनूकेँ एके व्यक्ति आदेश देलक, से एखन सिद्ध नहि।”

यूसुफ एकाएक पुछलनि, “हमर लाल डोरीवला गाँठक की होएत?” अधिकारी कहला जे ओकर अस्वीकृत स्वीकृतिक पट्टीक छाप-मूलक परीक्षण एहि बुकिङ जाँचसँ अलग चलत। कपड़ाक वास्तविक बुनोट, व्यापारिक स्वामित्व आ वितरणक अधिकारक मुद्दा पहिनहिसँ दर्ज अछि। लिखित प्रतिमे मुक्त थानपर नव रोक नहि छल; विवादित गाँठ सुरक्षित रखवारीमे रहल। ओहि पन्नाकेँ पढ़ि यूसुफक चेहरा तखन सुधरल जखन ओ अपन सूतक उधारी चुकाएबाक सम्भावना सोचलनि। दोसर गाँठसँ छुटकारा पाओल नहि छल, मुदा पहिल थान फेर दोषक छाँहमे नहि धकेलल गेल।

बिनोदक दोकानपर लौटैत एक ग्राहक कहलनि जे एतेक विवादक बाद एके ढुलाई खिड़कीसँ दोसर बेर माल नहि आनू। बिनोद नवा मालक रसीद देखैत उत्तर देलनि, “एहि कार्यालयसँ हम असल खरीद केने छी, एहि लेल ओकर सभ काज सही भेल एहन नहि। मुदा केवल शंकासँ सभ पुरान सामान फेंकि देब तँ हमरा उधारी के चुकाओत?” हुनकर पत्नी दोकानक उधाड़ल गल्लामे संझाक फुटकर रकम गनि रहल छलीह। ओ बीचमे कहलीह, “नवा गाड़ीक दर पता करू, आ जतेक भुगतान बाँकी अछि तकर निश्चित दिन तय करू। व्यापारक भरोसा आँखि मूनि नहि, हिसाब खोलि चलैत अछि।” बिनोद दोसर ढुलाई विकल्पक दर लिखए लागलाह।

महेन्द्र महासेठ अपन गोदामक भाड़ा-विवरण देखैत बतौलनि जे पछिला महिना पुरान मध्यस्थक माध्यमसँ एको हथियार-संबन्धी माल नहि अनने। निरीक्षक हुनका सँ उपलब्ध समस्त बही जब्त करए चाहलक। महेन्द्र निर्दिष्ट आदेश माँगलनि; कर्मचारी सीमित तिथिक प्रमाणित नकलपर सहमत भेल। “हम जाँच रोकैत नहि छी,” महेन्द्र कहला, “मुदा पूरा कारोबारक ग्राहकक निजी सूचना एहन नहि खुलए जे कियो ओकरा फेर बेचए।” ओ अपना गोदामक फाटकपर नवा सूचना लगौलनि—सामानक प्रकार, भेजनिहार आ उठौनिहारक अलग प्रविष्टि बिना माल नहि लादल जाएत। मुनीम एहि अतिरिक्त काजक मजदूरीक प्रश्न उठौलक; महेन्द्र ओकर अलग दर तय करबाक लिखित प्रस्ताव देलनि।

माधव तीनू पेटीक वापस पहुँचाबय लेल गाड़ी मोड़लनि तँ सड़कक कोनापर एक वृद्धा अपन पोताक नामपर दवाइ मँगैत ठाढ़ छलीह। ओ कहलीह, “तोहर गाड़ीमे दवाइ अछि तँ हमरा एखन दऽ दिअ।” माधव हाथ जोडलनि। “ई माल जाँचक कारण वापस जाइत अछि। अहाँकेँ दवाइ चाही, मुदा एहि पेटीसँ नहि।” विभा अस्पतालक मान्य स्टॉकसँ भेंट सकैत साधारण दवाइक प्राप्ति-प्रक्रिया बूझबैत वृद्धाकेँ पर्ची-पट्टी धरि पहुँचौलीह। वृद्धा पुछलीह जे दोकानवाला सभ कागदमे किएक उलझल अछि। विभा कहलीह, “कागद ओहि लेल जे अहाँक पोताकेँ जे भेटत ओकर भरोसाक रास्ता बुझल रहय।” वृद्धा अपन पर्ची समेटि भीतर गेलीह।

रमाक कक्षमे साँझ धरि पुलिसक जाँचाधिकारी, अस्पतालक फार्मासिस्ट आ नगरक प्राप्ति-कर्मचारी तीन अलग बयान दर्ज कएने छलाह। जब्त धातुक पेटीक बरामदगीक तथ्य पुलिसक अधिकारक्षेत्रमे, औषधि-लेबलक जाँच स्वास्थ्य विभागमे, आ अनुचित बुकिङ वा भुगतानक हिसाब कार्यालयी जाँचमे रहत। एक कर्मचारी सुझाव देलक जे संयुक्त प्रेस-विज्ञप्तिमे ‘अस्पतालक दवा आ हथियार एके गिरोहक’ लिखि देल जाय। नैरा प्रतिवाद कएलीह, “जे हम प्रत्यक्ष देखलहुँ, से एके मध्यस्थ खिड़की आ भुगतानक किछु कड़ी। गिरोहक रचना, आदेश आ उद्देश्य एखन जाँचबाँकी अछि। गलत वाक्य लिखब तँ निर्दोषक रोजी फेर रुकेल।” रमा प्रस्तावक ओ पाँति काटि देलीह।

नगरक बाहर जे जानकीक दल अपन दरी बेचैत छल, ओतय एहि खबरक आधा रूप पहुँचि गेल। सरयू देखलीह जे एक युवक बच्चा-स्थानान्तरण, हथियार आ औषधि सभकेँ

एके चित्रमे जोड़ि रहल अछि। ओ काल्हिक सुधार-पत्र ओकरा देखौलीह। “हमरा सभक आरोप खारिज भेल, तखन फेर हमर फोटो एहि पर्चीमे किएक?” युवक कहलक जे ओकरा सभ घटना जुड़ल लगैत अछि। सरयू उत्तर देलीह, “जुड़ल लगब आ जुड़बाक प्रमाण दुनू अलग। हमर दरीक दाम पूछू, हमर चेहरा जाँचक सामान नहि।” युवक चित्र हटबए पर सहमत भेल, मुदा खबरक अपना स्रोतक जाँच करबाक वचन नहि देलक। सरयू बिक्रीक पूरा पैसा गनि घरक उधारीक थैलीमे रखलीह।

लता बाल-सुरक्षा कक्षमे अलग समयपर पहुँचलि। गुंजाक अवैध श्रम-स्थानान्तरणक पुष्ट मध्यस्थतासँ मिथुनक खोजक मार्ग मिलि सकैत अछि की, ई हुनकर पहिल प्रश्न छल। अधिकारी कहला जे ओहि गुंजाक पर्चीमे जे बुकिड कार्यालयक नाम अछि, ओकरा ढुलाई-जाँचमे फेर देखल जा सकैत अछि, मुदा एखन मिथुनक नाम, रूप वा हाटवला दिनसँ प्रत्यक्ष मेल नहि भेटल। लता चाहैत छलीह जे साझा कार्यालयक कर्मचारीक सूची सुरक्षित राखल जाय, ताकि बादमे समय-पंजी नष्ट नहि हो। अधिकारी लिखित संरक्षण-निवेदन स्वीकार कएलनि। लता घर घुए लेल उठलीह, मुदा गुंजाक माय चमेलीकेँ कहि पठौलीह जे बच्चीक पढ़ाइ आ सुरक्षित वापसीक काज अलग सँ चलैत रहय।

हरिनारायण साँझक भट्टीमे अजितक बनाओल झुनझुनाक ढीला छल्ला कसि रहल छलाह। नन्दलालक पुरान हलक फाल एखनहुँ कोनामे पड़ल छल, किएक तँ ग्राहक अफवाहसँ घबरा कऽ आदेश रोकने छल। अजित पूछलक, “आजु जे लिखल गेल, ताहिसँ ओ फाल उठाबय आएत?” हरिनारायण उत्तर देलनि, “हो सकैत अछि, नहि सेहो। मुदा ई कागद हमरा अपन औजारक काज कहबाक आधार देलक। जकरा भागमे गलत शंका आयल, ओकरा फेर ग्राहकरूपेँ विश्वास देबए समय लागैत अछि।” ओ फालपर हलुक तेल लगौने रखलनि, जेना ग्राहकक जगह खाली रहितो काजक अपमान नहि हो।

यूसुफ घरमे तानीक पातर धागा चढ़ाबैत अपन बेटाक फोन लेलनि। बेटा कहैत छल जे साझा बुकिड खिड़कीक छाप फोनक फोटोमे सेहो देखाइत अछि; ओ तीनू चित्र एके फोल्डरमे राखि पुलिसकेँ पठाएब चाहैत छल। यूसुफ कहला, “पहिने प्रत्येक फोटो पर मालक स्वामीक अनुमति लिअ। हम अपन गाँठक छाप देब। आनक दवाइ आ पुलिसक वस्तु हमर फोनक फोल्डरक अधिकारमे नहि अछि।” बेटा मानि गेल। ओकर माय

चूल्हापर रोटी फुलौने छलीह; ओ कहलीह जे दिनभरि खाता खोललासँ सूतक गिनती कम नहि होइत। यूसुफ हँसलनि, फेर रातिक बचल सूत नापि नव आदेशक लेल अलग रखलनि।

रमाक मेजपर आखिरी कागद पहुँचल जखन आकाशमे साँझक चिड़ै सभ छज्जाक दिशा बदल रहल छल। एक सूचना मध्यस्थ कार्यालयक मूल मुहर, पालाक कर्मचारी आ भाड़ा-जमाक पन्ना सुरक्षित रखबाक छल; दोसर मान्य व्यापारिक खेपक अनावश्यक रोक हटेबाक। तीसरीमे अस्पतालक असमान लेबलवला पेटीक तकनीकी परीक्षण आ लौटाओल मालक देयक समय लिखबाक माँग छल। नैरा पन्नासभ पढ़ि केवल एक वाक्य जोड़लीह—‘साझा बुकिङ-व्यवस्था सम्बन्धक प्रमाण अछि, साझा अपराधक निष्कर्ष नहि।’ अगिला जाँच-दिन तय भेल, दोष-निर्णय नहि। बाहर गाड़ीवला अपन ठेला उलटि धूल झारि रहल छल, आ अस्पतालक भीतर पाँच रोगीक लेल मान्य दवाइक नब व्यवस्था चलि रहल छल।

घरक बाटपर नैराकेँ कबीर भेटलाह। हुनका सुभद्रासँ अगिला भेटक तिथि निश्चित करबाक छल, आ ओ एक छोट कापीक भीतर अपन पूछबाक प्रश्न राखने छलाह। ओ नैरासँ पुछलनि जे आइ अस्पतालक बक्साक झमेलामे साँच भेटल की। नैरा कहलीह, “किछु सम्बन्धक साँच भेटल, किछु स्वामित्वक साँच पहिने सँ छल; दुनूकेँ एक नहि बनाओलहुँ।” कबीर कने देरि चुप रहला। सुभद्राक घरसँ भेटल अनुमतिक पन्ना हुनकर कापीमे अलग तहमे छल। ओ उत्तर देलनि, “हमरो किछु प्रश्नक उत्तर भेटत, मुदा जकर जीवनक कथा अछि ओकर अधिकार बीचमे नहि कटए।” दूनू अपन-अपन बाट बढ़लाह। रातिमे कसनिक आवाज थमि गेल, मुदा करघाक काठ धीमे-धीमे बजैत रहल।

अध्याय ९४ • पालकक अधिकार

कबीर पुरान घरक आँगनमे पसरल पीयर माटिक ढेरीक कात बैसि पतली बाँसक पट्टी सँ दीप राखबाक चौकोर चौकीक माप लऽ रहल छलाह। बरामदामे हुनका पोसनिहार माय पातर कपड़ासँ माटिक दीया पोछि रहल छलीह। एक दीयाक मुँह चिरल छल; ओ ओकरा अलग करैत कहलीह, “तेल भरिते फूटत, एकरा फूल राखबाक काजमे लगायब।” कबीर मुस्कुरा देलनि। एहिठाम टूटा वस्तु फेंकबाक पहिने ओकर दोसर उपयोग सोचल जाइत छल। माय पुछलनि, “आइ फेर सुभद्रा लग जेबह?” कबीर उत्तर देलनि, “ओ स्वयं समय देने छथि। घुरि कऽ अहाँक संग चौकी पूरा करब।” माय हुनकर आँखि देखलनि, प्रश्न नहि दोहरौलनि।

चौकीक माप कबीरक छात्रजीवनक कापीमे लिखल गेल। ओहि कापीमे स्कूलक फीसक दू पुरान रसीद आ बरखा मे भीजल पन्नाक कात मायकेँ लिखल एक बालसुलभ धन्यवाद रहए। कबीर रसीद उठबैत कहलनि, “ई कागत आबो राखने छी?” माय हँसलीह। “हम राखने नहि रही तँ तोरा पहिल पुरस्कारक दिन कौन तारीख छल, से के बतौत?” ओकरा बाद कने ठहरि कहलीह, “तारीख सभ याद रहबाक कारण कागद मात्र नहि। ओहि दिन तोरा ज्वर छल, तैओ पदक लेने घर एलहें।” कबीर रसीद वापस रखलनि। हुनकर जन्मक अपूर्ण अभिलेख आ एहन दिनक भरल स्मृति दुनू अलग वस्तु छल; एकर अभावसँ दोसरक अस्तित्व घटैत नहि छल।

सुभद्राक घरमे ओहि दिन कुर्सी सभ ओही ठाम छल जतय पहिल भेटमे राखल गेल छल। मुदा पीतरक सन्दूक आब बन्द कोठरीमे नहि, बैठकक कोनामे छल। सुभद्रा पहिले दरबज्जा भीतरसँ लगौलनि, फेर कबीरकेँ बैसबैत अपन लिखल चारि शर्तक प्रति मेजपर रखलीह। “आइ हम किछु कहब,” ओ कहलनि, “मुदा तोरा जे सुनब, ओकरा बाद हमर निर्णायक आलोचना करबाक पूरा अधिकार अछि। हमर जीवनक अगिला सभ बात तुरन्त जानबाक अधिकार एहि एक दिनसँ नहि भेटत।” कबीर हुनका आश्वस्त करबाक लेल हड़बड़ी नहि कएलनि। “हम पहिने सुनब,” ओ कहला, “फेर जँ बात नबुझत, प्रश्न

पूछब।” बाहर रिक्सा-पहीयाक घंटी बजल आ दूर हटि गेल। भीतरक शान्तिमे सुभद्राक साँसक गति साफ सुनाइत छल।

सुभद्रा सन्दूकसँ ओ सूती थैली निकाललनि, जकर गाँठक चर्चा पहिनहिसँ भेल छल। ओ थैलीमे राखल पत्रक मूल नहि, ओकर एक सुरक्षित प्रति कबीरक आगाँ उलटि रखलीह, आ कहलीह जे कागद देखबाक अनुमति देबासँ पहिने एक बात अपन मुखसँ कहबाक अछि। “तोहर जन्म हमरा देहसँ भेल,” ओ धीरे कहलीह। “हम ई बात अपन अनुभवक गवाहीक रूपमे कहैत छी। एकरा सुनि जँ अहाँ तुरन्त कागदक प्रमाण चाही तँ ओ माँग उचित अछि। मुदा हमर कहनाइकेँ केवल एहि कारण झूठ नहि मानिहें जे हम एतेक बरख चुप रही।” कबीरक हाथ मेजक किनारपर स्थिर रहल। जे नामक अनुमान ओ कतेको राति नकारने छलाह, आइ एक जीवित आवाजमे सुनि रहल छलाह।

कबीर तुरन्त ‘माय’ नहि बजलाह। सुभद्रा सेहो ओहि सम्बोधनक प्रतीक्षा करबाक दबाव नहि देलीह। ओ बतौलीह जे जीवनक एक कठिन समयमे बालककेँ दोसर परिवारक संरक्षणमे देबाक निर्णय भेल छल; ओहि समयक पत्र, अस्पतालक एक अपूर्ण संकेत आ भेजबाक पर्ची हुनका लग अछि, मुदा सम्पूर्ण सरकारी जन्म-पंजीक सत्यापित नकल एखन नहि। “किएक देलहुँ, के-के जानैत छल, आ केकर भूमिका छल—ई प्रश्नक उत्तर हम क्रमसँ कहब,” ओ स्पष्ट कएलनि। “किछु बात हमर अपन अनुभव अछि, किछु हम लोकसँ सुनने छी। दुनूकेँ एक कथा बनाबय नहि चाहैत छी।” कबीर पुछलनि, “जे परिवार हमरा पोसलक, हुनका ओ समय की बुझाओल गेल छल?” सुभद्रा स्वीकार कएलनि जे ओ हुनकर सुनल बातक पूर्ण गवाह नहि छथि।

सुभद्रा आङुरसँ प्रति पर एक पातरसँ दबाओल स्याहीक चिन्ह देखौलनि। “ई पुरान आवरणक भीतरक पत्रक लिखावट अछि; तिथि धब्बा भऽ गेल अछि। भेजबाक पर्चीमे प्राप्तिक एक चिह्न अछि, मुदा केवल एहि चिह्नसँ पत्र सही व्यक्तिकेँ पहुँचलक से सिद्ध नहि होइत।” कबीर ओकरा अपन मोबाइलसँ फोटो नहि खींचलनि। ओ पूछलनि, “हम स्वतंत्र परीक्षण लेल कोन अंश देखबा पायब?” सुभद्रा कहलीह, “आज ई प्रति, जकर नाम आ पता छिपाओल अछि। मूलक जाँच लेल हम अलग दिन उपस्थित रहब। जाहि

व्यक्तिक निजता एहि पत्रमे अछि, हुनकर अनुमति बिना पूरा पता नहि देब।” कबीर कापीमे अनुमत अंशक स्रोत लिखलनि, व्यक्तिगत नाम नहि।

“हम अहाँक जन्मक कथन स्वीकार करैत छी,” कबीर कहलनि, “ई कथन हमर लेल महत्त्वपूर्ण साँच अछि। सरकारी पंजीमे जे लिखब, तकर प्रमाण अलग जुटायब। मुदा एक प्रश्न एखनहि पूछब—हमरा पोसिनिहार परिवारक घर आ सम्पत्तिमे हमर स्थान अहाँक एहि बातसँ छोट होयत?” सुभद्रा माथ हिलौलीह। “नहि। हम तोरा जन्म देने छी, ओ सभ तोरा दिन-राति देने छथि। कानूनक कागत केहन अछि से जाँचू; मुदा ओ लोकक प्रति तोहर देय केओ काटि नहि सकैत।” कबीर कहलनि, “देय मात्र नहि, उत्तराधिकारक दावा सेहो। हमर नाम जँ पुरान कागदमे अछि, ओकरा हम अपन हाथसँ नहि मिटाएब।” एहि वाक्यक बाद दुनू चुप रहल।

सुभद्रा पहिल बेर सन्दूकक ढक्कन पूरा बन्द नहि कएलनि। ओ कबीरकेँ पुछलनि जे अपन पालन करनिहारीक स्मृतिमे कोन चीज पहिने अबैत अछि। कबीर बरखाक एक साँझक बात कहलनि—भीजल कापीक पन्ना अलग-अलग सुखाएल गेल, ओहि पर धानक मुठ्ठी राखि हवा सँ उड़ब रोकल गेल, राति भऽ गेल तैओ माय ऊँघलीह नहि। “एहि घटनाक तिथि हम नहि कहि सकैत छी,” ओ स्वीकार कएलनि, “मुदा ओहि पन्नाक गन्ध हमरा एखनहुँ याद अछि।” सुभद्रा चुपचाप सुनलीह। “हम ओ दिन ओतय नहि रही,” ओ कहलीह। “जे नहि देखलहुँ, ओकर अधिकार हमरा नहि। तोहर मायकेँ अहाँ अपन मनसँ जे कहैत छी, ओहि सम्बोधनपर हमर दाबी नहि।”

घुरबाक समय कबीर सुभद्राक सहमति-पत्रमे एकटा नब पाँति लिखब चाहलनि—‘आइ कहलगेल जन्मसम्बन्धी कथनक निजी उपयोग अनुमत, सार्वजनिक प्रकाशन नहि।’ सुभद्रा वाक्य पढ़ि ‘निजी’क अर्थ पूछलनि। कबीर कहला जे अपन पालन परिवारसँ बात करबाक अधिकार हुनका चाही, मुदा सुभद्राक ठेगाना आ कागदक छवि साझा नहि करताह। किछु विचारक बाद सुभद्रा लिखलीह—‘पालक परिवारकेँ कबीर अपन जन्मसम्बन्धी जानकारी अपन शब्दमे कहि सकैत छथि; हमर पत्र वा निजी विवरणक प्रकाशन लेल फेर सहमति चाही।’ दुनू हस्ताक्षर कएलनि। नैरा एतय उपस्थित नहि छलीह; सुभद्रा चाहैत छलीह जे ई पहिल बातचीत दुनू व्यक्तिक बीच रहय।

ओही दुपहर इरफान खानक मरम्मति-दोकानमे एक यात्रीगाड़ीक आगू पहीया उठाओल गेल छल। ब्रेकक थारीपर नखसँ खुरचला पर कारी धूल चू पड़ैत छल, आ घिसल बुसिंगक भीतरी भागमे असमान चमक छल। चालक पहिलहि कहने छल जे गाड़ी अस्पतालक बाटपर लगैत अछि; ओ एकदिन रुकलासँ दू दिनक किराया हारत। इरफान लोहेक मापनी सँ घिसाव देखौलनि। “हम केवल आवाज नहि सुनलहुँ,” ओ कहला, “ई पहीया खोलि जे देखलहुँ से हमर जाँच-पत्रमे लिखब। धुरीक पुरान मरम्मतिक जिम्मेदारी हम लेलहुँ; ब्रेकक एहि खराबीकेँ सुरक्षित कहि छोड़ब तँ आगाँ बैठल रोगीओ हमर जोखिम बनत।”

चालक अपन मालिककेँ फोन मिलौलक। फोनक दोसर कातसँ कहल गेल जे ‘पुनः परीक्षण’ लिखि गाड़ी छोड़ि दिऔ। इरफान ओकरा अपन पर्ची पढ़ि सुनौलनि—कुन भाग खोलल, किन सतहपर घिसाव देखल, कोन मरम्मति आवश्यक अछि, आ कोन जाँच बिना गाड़ी यात्री लऽ नहि चलबाक चाही। ओ एहि बातक गवाही नहि देलनि जे पुरान खराबी जानि-बुझि कएल गेल छल। मालिक कहलक, “तोहर दोकानसँ आब गाड़ी नहि बनेबाएब।” इरफान उत्तर देलनि, “ई अहाँक निर्णय। मुदा जे देखलहुँ, ओकरा घुस्सामे बदलि नहि सकैत छी।” फोन कटला पर शागिर्द पुछलक, “ग्राहक गेल तँ मजदूरी?” इरफान नब खाता खोललनि, जाहिमे जाँचक देय आ मरम्मतिक देय अलग छल।

पासक टीनक छानिक नीचाँ सलीम नालबन्द पहीयाक नट चुनैत छलाह। हुनकर पुरान पेटीमे घोड़ाक नाल बाँधबाक हथौड़ा, छोट सँइसी आ दू आकारक कील छल; नव पेटीमे टॉक मापबाक उधार लेल उपकरण, ब्रेक-कॉर्ड देखबाक बत्ती आ प्रशिक्षणक कापी। एक परिचित पुछलक, “पुर्खाक काज छोड़ि देबह? घोड़ा आब नहि रहल तँ नालबन्दक नामो गेल?” सलीम लोहेक नाल हाथमे उठा कहला, “नाम नहि जाइत। ओकर भीतरक कारीगरी बदलैत अछि। पहीयाक ताप, धातुक जोड़, भारक असर—सभ पहिने नाल लगबैत सीखलहुँ। मुदा मोटरक ब्रेक पुरान हुनरसँ मात्र नहि जाँचब; नव पढ़ाइ आवश्यक अछि।”

सलीम एक छोट वाहनसेवा-कक्षमे प्रशिक्षकक रूपमे प्रवेशक फार्म भरलनि। प्रशिक्षणक समयमे आमदनी घटबाक छल, तँ ओ पुरान ग्राहकसभकेँ सप्ताहक दू दिन गाड़ीक पहीया देखबाक व्यवस्था बतौलनि, मुदा बिना प्रशिक्षण मोटरक सुरक्षा-पत्र नहि

देबाक शर्त रखलनि। हुनकर घरक बुजुर्ग पहिने नाराज भेलाह। “तोरा लग अपन नाल बनएबाक पूरा हाथ अछि, फेर दोसरक शागिर्द किएक?” सलीम कहला, “ओ हाथ हम राखब। मुदा जकर प्राण यात्रा पर निर्भर, ओकर गाड़ीक काज सीखब बिनु उस्ताद कहाएब उचित नहि।” बुजुर्ग कुछुए देरि बाद पुरान हथौड़ा पेटीमे नीकसँ रखि देलनि। ई मौन सहमति छल, पूर्ण निश्चिन्तता नहि।

इरफान सलीमक फार्म देखि कहलनि जे कार्यशालामे बिना वेतनक अनिश्चित ‘सीखाइ’ बहुत ठाम श्रमिककेँ बाँधि रखैत अछि। “समय, सुरक्षा आ भत्ताक शर्त पढ़ि लिअ,” ओ सलाह देलनि। सलीम फार्ममे अभ्यास-दिन आ देय प्रशिक्षण-शुल्कक पाँति देखौलनि। ओ एक संशोधन लिखौलनि—निर्धारित समय बाद योग्यता-परीक्षा आ उपकरणक उपयोगक प्रमाणपत्र भेटबाक चाही। प्रशिक्षक फोनपर पहिने आनाकानी कएलक, मुदा सलीम कहला जे ई शर्त लिखल नहि गेल तँ ओ पुरान काम छोड़ि आधा रस्तामे नहि लटकेताह। अन्ततः लिखित स्वीकृति एल। सलीम फार्मक प्रति अपन पेटीमे राखि, इरफानसँ एकटा वास्तविक ब्रेक-जाँच देखने रहबाक अनुमति माँगलनि।

एकरा तुरन्त बाद इरफानक कार्यशालाक बाहरी आँगनमे ओहि यात्रीगाड़ीक चालक फेर अएल। ओ बतौलक जे अस्पतालक रोगीकेँ पहुँचएबाक पहिल जिम्मेदारी मालिक आन गाड़ीकेँ देने अछि, मुदा ओकर पुरान गाड़ीपर पर्वक सामान लादबाक दबाव रहि गेल। सलीम कहलनि, “यात्री हटेलासँ धुरीक खराबी नहि हटत। हलुक बोझक नामपर असुरक्षित गाड़ी चलाएब सेहो नीक नहि।” चालक अपन ठेला-परिचितकेँ फोन केलक। सलीम ओकर पुरान हाथगाड़ीक पहीया जाँचि, ठीक भागक लिखित रसीद बनौलनि। पर्वक सामान दोसरे सुरक्षित बाटसँ चलल। इरफान बुझलनि जे खराबी लिखि देब ग्राहक रोकबाक बिपरीत, कखनो काजक जिम्मेदारीकेँ सही ठाम पहुँचेबाक उपाय बनैत अछि।

बाजारक पनसारी गलीमे हरीश अपन दोकानक आगू तीनटा गठरी खोलने छलाह। बाहरी छपाइपर प्रसिद्ध व्यापारिक चिन्ह छल, भीतरक छोट पैकेटपर घटिया स्याहीमे अलग सामग्रीक नाम। एहि गलतीक पहिल चिन्ह ओ रंगरेजक दोकान पर देखि चुकल छलाह, मुदा थोक विक्रेताक मूल पर्ची मिलिते आब बात स्पष्ट भेल—थोक बोराक संख्या आ भितरी पैकिंगक संख्या मेल नहि खाइत छल। हरीश टीनक डिब्बामे अलग राखल

नमूना ग्राहककेँ सूँघि परखबाक नहि देलनि। “अज्ञात सामग्रीकेँ मुँह वा देहपर लगाकऽ जाँच नहि होएत,” ओ कहलनि। “एहि खेपक बिक्री एखन बन्द।”

एक ग्राहक कहलक जे ओ हरीशसँ ओहि नामक साबुन बनएबाक कच्चा सामग्री खरीदने अछि, आ काल्हि घरमे उपयोग करबाक योजना अछि। हरीश बिक्रीक संख्या देखि ओहि ग्राहककेँ रोकलनि। “जाहि पैकेटपर एहि खेपक चिन्ह अछि, ओकरा वापिस दिअ। दाम अथवा नीक मालक विकल्प हम देब। थोक विक्रेता देत की नहि, से हमर पाछाँक दावा अछि।” ग्राहक पुछलक, “नुकसान अहाँ किएक उठाएब?” हरीश उत्तर देलनि, “किएक तँ सामान हमर दोकानसँ गेल अछि। मुदा दोषी पैकिंग के बनौलक, से आरोप लगाबासँ पहिने प्रमाण चाही।” ओ ग्राहकक फोन नम्बर सार्वजनिक सूचीमे नहि लिखलनि; व्यक्ति-व्यक्तिकेँ अलग सूचना देबाक व्यवस्था कएलनि।

हरीशक सहायक कुल फिर्ती मालक पर्ची बनबैत ठमकि गेल। जे ग्राहक बिना बिलक पुरान उधारपर सामान लेने छल, तकरा की प्रमाण भेटत? हरीश उधारबही खोललनि; नामक कात परिमाण आ तिथि देखलनि, मुदा कहला जे एक्के तिथिक सभ पैकेट सन्दिग्ध नहि। ओ ग्राहकेँ दोकानमे मूल खाली पैकेट अनबाक अनुमति देलनि, आ उपलब्ध चिन्ह मिलिते फिर्ती स्वीकार करबाक लिखित सूचना टाँगलनि। सहायक पुछलक, “जँ बहुत लोक नब पैकेट लेने आबि जाए?” हरीश कहला, “नाप, चिन्ह आ बही जाँचू। मुदा डरक कारण सही ग्राहकक दाम नहि रोकू।” सांझ धरि आठ पैकेट वापिस अएल, शेषक सूचना पठाओल गेल।

कबीरक पालक घरमे ओहि बीच दीया सुखि गेल छल। माय आँगनक लिपाइमे गेरूक पातर रेखा खींचि रहल छलीह; एक लड़की पड़ोससँ दू मोहरिया फूलक माला लऽ अएली। माय ओकरा फूलक दाम हाथेँ देलीह। लड़की कहलीह, “पर्वक उपहार बुझि राखि लिअ।” माय मुस्की देलीह। “तोरा कामक दाम देब, उपहार तोरा मनसँ बादमे लेब।” कबीर दरबज्जापर ठाढ़ ई दृश्य देखैत रहलाह। सुभद्राक कथन सुनलाक बाद हुनका एतय किछु अनजान नहि लगल; उलटे परिचित शब्द आ काजसभ अधिक साफ भऽ गेल छल। माय ओहि पहिचानक फेर जाँच नहि कएलनि, केवल पुछलनि जे भोजन पहिने करब की चौकी पूरा करब।

भोजनक बाद कबीर अपन नब बात कहबाक अनुमति माँगलनि। माय बासन धोबाक काज बीचमे रोकि कपड़ा निचोड़ि राखलीह। कबीर कहला जे सुभद्रा आज जन्म देबाक अपन प्रत्यक्ष कथन देने छथि; मूल अभिलेखक जाँच एखन बाँकी अछि, आ निजी कागदक कोनो प्रति बिना अनुमति बाहर नहि जाएत। मायक चेहरापर न दुःखक साफ चिह्न छल, न विस्मयक। ओ दीर्घ साँस लऽ कहलीह, “एहि घरमे तोहर अएबाक दिन हम याद रखैत छी। जन्मक दिनक घटना हम देखल नहि। जे नहि देखलहुँ ओकरा देखल कहब तँ तोर अपन जीवनक हानि होएत।” कबीर कहलनि, “ओहि दिनक बात हम अहाँसँ फेर सुनबाक चाहैत छी—जतबे अहाँ सचमुच जानैत छी।”

माय पुरान अलमारीसँ एक कपड़ामे राखल लाल किनारक रुमाल निकाललनि। “ई तोरा अएबाक दिनक अछि,” ओ कहलीह, “मुदा ई कोन घरमे पहिने बनल, हमरा नहि मालूम। तखन तोरा ज्वर जल्दी चढ़ैत छल। पहिले महीनाक औषधिक दामक पर्ची एखन कापीमे अछि।” कबीर रुमाल देखलनि; ओहि पर नाम नहि छल। माय कहलनि जे पड़ोसिन पुरान समयक एक बात जनैत छलीह, मुदा हुनकर नाम वा अनुमान बिना पूछने पंजीमे जोड़ब उचित नहि। “हम तोरा देहक पहिल दिनक स्वामी नहि,” ओ कहलीह, “मुदा हम जे वर्षसभ तोरा पोसलहुँ, तकर साक्षी हम छी।” कबीर हुनकर हाथ पकड़लनि।

घरक छोट जमीनखण्ड आ अलमारीमे राखल पुर्खाक साधारण बहीक बात कबीर स्वयं उठौलनि। “जँ कखनो नाम सुधारबाक आवेदन करब, तँ एहि घरक पालन आ उत्तराधिकारक दस्तावेजमे जे अधिकार हम रखैत छी, ओकरा चुपचाप छोड़ब नहि,” ओ कहलनि। माय कहलीह, “कागद कानूनी रूपेँ की कहैत अछि, ओकर प्रति पहिने देख। हमर इच्छा अलग, पुरान लेखा अलग, आ वैधानिक उत्तराधिकारक नियम अलग भऽ सकैत अछि। तोरा जे जायज अछि, ताहि लेल हम सँग चलब।” दुनू अलमारी खोलि सम्पत्तिक पुरान प्रति, पालन-संबन्धी कागद आ स्कूलक अभिभावक हस्ताक्षरक दस्तावेज अलग फोल्डरमे रखलनि। कोनो खाली स्थानमे नब नाम नहि भरल गेल।

कबीर एक पत्र तैयार कएलनि—निजी अभिलेख सलाह लेल। पत्रमे लिखल जे जन्म-सम्बन्धी एक मौखिक प्रत्यक्ष गवाही भेटल अछि, ओकर मूल लिखित पुष्टिक जाँच शेष; पालक घरमे निवास, शिक्षा आ दीर्घकालिक पारिवारिक सम्बन्धक स्वतंत्र दस्तावेज

अछि; व्यक्तिगत उत्तराधिकार, नाम-संशोधन आ गोपनीयतापर उचित विधिक परामर्श आवश्यक अछि। माय पत्र पढ़ि केवल एक पाँति सुधरौलीह। ‘पालक माता’क बदला हुनका ‘पालन करनिहारी माता’ प्रिय छल, मुदा ओ नामक विवाद नहि चाहैत छलीह। कबीर कहला, “पत्रमे विधिक श्रेणी राखि सकैत छी; घरमे हम अहाँकेँ माय कहैत रही।” ओहि एक वाक्यसँ दुनूक बीचक दीर्घ थकान कनेक ढीली भेल।

नैरा साँझमे एलि तँ कबीर हुनका पूरा निजी बातचीत नहि सुनौलनि। ओ केवल कहला जे जन्मसम्बन्धी महत्त्वपूर्ण प्रत्यक्ष कथन भेटल अछि, आ अपन पालन परिवारक अधिकार सुरक्षित रखबाक कागद छाँटि रहल छथि। नैरा पूछलीह, “जाँचक लेल अहाँक सहायता चाही?” कबीर कहला, “कागदक प्रकृति बुझबामे सहायता चाही। मुदा सुभद्राक निजी पत्रक स्रोत हम हुनकर सहमति बिना अहाँकेँ नहि देब।” नैरा हुनकर बात स्वीकार कएलनि। हुनका एतेक दिनक अनुसन्धानसँ ई बोध भेल छल जे निकटता जाँचक हरेक दरबज्जा खोलबाक चाभी नहि। ओ अपन थैलीसँ एक साधारण खाली फोल्डर देलीह, जाहिपर कबीर स्वयं ‘पालनक अभिलेख’ लिखलनि।

एतहि इरफानक दोकानसँ खबर आएल जे खराब ब्रेकवला गाड़ी अपन ग्राहक खोएबाक डरमे दोसर मरम्मतकार लग लऽ जाओल गेल अछि। इरफान एहि बातक पुष्टि नहि कएलनि जे दोसर कारीगर की जाँच कएलक; अपन हस्ताक्षरित परीक्षण-पत्रक एक प्रति गाड़ी-मालिककेँ, एक चालककेँ देलनि। ओ चेतावनीमे जाँच-सीमा लिखलनि, वाहन-प्रतिबन्धक स्वनिर्मित सरकारी आदेश नहि। सलीम अपन प्रशिक्षकक संग ओहि जाँचक अभ्यास देखलनि, आ कहला जे मरम्मतक असल मूल्य कखनो-कखनो ग्राहक छोड़ि देबाक कीमतमे सेहो नापल जाइत अछि। इरफान उत्तर देलनि, “मूल्य एतबे नहि—काल्हि फेर ककरो सुरक्षित गाड़ी बनएबाक काज भेटत तँ रोजी टिकत।”

हरीशक दोकानसँ पर्वक लेल मँगाओल हल्दी आ अजवाइन कबीर स्वयं लेब गेलाह। हरीश बिक्रीक बही खोलि कहला जे ई सामान परखल अलग खेपक अछि; नकली छपाइवला पैकेटसभ लौटाओल जा रहल अछि। कबीर थैलीमे सामान रखिते पुछलनि, “वापसीक खर्च कतेक पड़त?” हरीश कापीक नीचला पन्नापर गाड़ीभाड़ा, बदलामे देल सामान आ लौटाओल पैकिंगक खर्च देखौलनि। “नुकसान हमर अछि,” ओ कहलनि,

“मुदा जे थोक विक्रेतापर दावा अछि, ओकरा अलग राखने छी। सभसँ नीक छपाइल नामक अर्थ एखन नीक माल नहि।” कबीर भुगतानक रसीद लेलीह। बनल-बनाओल भरोसाक बदलामे परखल भरोसा भेटबाक ई छोट परिणाम छल।

पर्वक तैयारीमे आँगनक दू कोन मे छोट-छोट ताख लगाओल गेल। माय चाहैत छलीह जे सभ दीया एकसार पाँतिमे होउ, मुदा बच्चासभ अपन बनाओल अलग आकारक दीप बीचमे रखबाक आग्रह कएलक। कबीर कहला, “जकर हाथक बनल, ओकर ठाम सेहो देखाओ।” माय हँसलीह। “तखन हम जे टेढ़ दीया बचौने छलहुँ, ओ बीचमे राखब। टूटल छैक, मुदा फूलक लेल नीक।” पड़ोसक महिलासभ तेल, बाती आ पानि अलग-अलग आनलनि। ककरो घरसँ बेसी सामान एल तँ ओकरा दानक घोषणा नहि बनाओल गेल; जे देल गेल, ओकरा सहज रूपेँ स्वीकारल गेल। आँगनमे हँसी आ कामक आवाज संग-संग बहैत रहल।

कबीरक मनमे प्रश्न एखन कम नहि भेल छल। सुभद्राक गवाहीक अगिला पृष्ठ, पुरान पत्रक लिखावट, जन्मक समय आ कहल नहि गेल नामक भार ओ अनुभव करैत छलाह। मुदा ओहि राति ओ प्रश्नक कापी बन्द कएलनि। माय हुनका दीपक बाती देबैत कहलीह, “ई बार फूलक माला छोट पड़ि गेल। नब बनब?” कबीर मालाक डोरी उठबैत कहला, “हम बनबैत छी। मुदा पहिने बताउ, छोट रहला सँ दरबज्जा खराब देखाइत अछि की?” माय कहलीह, “नहि। दरबज्जा तँ खुलल रहत। जे अएत, ओकरा भीतरक उजास भेटय, एतबे पर्याप्त।” कबीर मौनसँ डोरी गाँठि लेलनि। एहि आँगनमे अपन स्थानक लेल हुनका कोनो नब प्रमाण देखेबाक आवश्यकता नहि छल।

अध्याय ९५ • हत्याक आदेश

शशि माहुरी भोरमे गोदामक ताला खोलबासँ पहिने चाभीक गुच्छामे लागल दू टेढ़ पीतलक छल्ला अलग कएलनि। पहिल चाभी हुनकर मसालाक गोदामक छल; दोसर ओहि कोठरीक, जे तीन महिना पहिने एक परिवहन-मध्यस्थक कार्यालयकेँ भाड़ापर देल गेल छल। दरबज्जाक नीचाँसँ रातुक पानि भीतर सरकि आएल छल। शशि एकटा पुरान बोरा बिछबैत चौकीदारकेँ कहलनि, “जे कागद देखबाएब, ओकर समय लिखि लिअ। हम किरायेदारक वस्तु खोलबाक अधिकार अपन नामपर नहि लेब।” हुनका काल्हि अधिकृत नोटिस भेटल छल। ओहि नोटिसमे गोदामक ठाम मँगल गेल छल, अपराध स्वीकार करबाक आदेश नहि छल।

जाँचाधिकारी पहुँचला तँ शशि पहिने भाड़ा-अनुबन्धक मूल प्रति निकाललनि। पहिल पन्नामे कोठरीक माप, दोसरमे मासिक किराया, तेसरमे सामान राखबाक सामान्य नियम लिखल छल। एक परिशिष्टमे बिना लिखित अनुमतिक दोसरकेँ कोठरी सौंपबाक मनाही छल। अधिकारी पुछलनि, “अहाँकेँ भीतरक खेपक जानकारी नहि छल?” शशि कहला, “पहिल महिनामे काठक सन्दूक आ खाली टोकरि देखलहुँ। पाछाँ किरायेदार अन्दर नया ताला लगौलक। हम आपत्ति लिखलहुँ; उत्तर नहि भेटल। तकर प्रति अछि। जे नहि देखलहुँ, ओकर गवाही हम कोना दी?” ओ रसीदक संग आपत्तिक प्राप्ति-नम्बर रखलनि।

गोदामक पिछला देवालपर चूनक एकटा चौकोर टुकड़ा आन भागसँ उज्जर छल। ओतए पहिने सूचना-पट्टी टाँगल रहए। पट्टीकेँ उतारि ककरो दोसर कक्षमे रखल गेल छल, मुदा देवालमे चारि कील बाँचल छल। निरीक्षक फोटो लेलनि; शशि कहला जे रंगक अन्तरसँ पट्टी कखन उतरल, से हुनका नहि ज्ञात। चौकीदार अपन हाजिरीक बही खोललक। एक राति किरायेदारक सामान्य कर्मचारी नहि, बीच राति मध्यस्थ कार्यालयक पालाप्रभारी शेखर स्वयं चाभी माँगने छल। चौकीदार चाभी नहि देने रहए; भीतर पहुँचबाक दोसर प्रवेश-द्वारक बात ओ एखन मात्र पुछताछमे सुनल छल।

नगरक अभिलेख-कक्षमे नैरा एक टेबुलपर तीन फोल्डर रखलीह। पहिल महेशक मृत्यु आ हमलाक जाँच; दोसर गोदामक भाड़ा तथा मध्यस्थक ढुलाई; तेसर देवव्रतक

कार्यालयसँ निकलल निर्देश-पत्र। रमाक हाथमे मूल प्राप्ति-बहीक प्रमाणित नकल छल। नैरा कहलीह, “हमरा एतए एकटा कथा नहि, तीन दायित्वक इतिहास चाही—कियो की कहलक, कियो की कएलक, आ ओकर परिणामसँ ककरा लाभ भेटल।” रमाने एक पाँति जोड़लीह, “लाभ उठेनिहारक नाम मिलब, आदेश देनिहारक हस्ताक्षर मिलबाक बराबर नहि।” मेजक कोनमे शशिक किराया-पर्ची अलग राखल गेल।

देवव्रतक कार्यालयक पन्ना अस्पतालक सहायता-कोषक पुरान फाइलसँ आयल छल। ओही कोषसँ जमुनाक औषधि आ गाड़ीभाड़ाक खर्च सचमुच चुकल छल; प्राप्तकर्ताक धन्यवाद-पत्र सेहो सुरक्षित छल। मुदा नव पन्ना सहायता-वितरणक नहि, बाहरी सामग्री निरीक्षणक पत्राचारक छल। ओहिमे लिखल रहए जे गोदामक पुरान प्रवेश-पंजी अनधिकृत हाथमे नहि जाए, विवाद बढ़एबासँ पहिने कार्यालयी प्रक्रिया अपनाओल जाए। पन्नाक नीचाँ देवव्रतक कार्यालयी अनुमोदनक चिह्न छल। निरीक्षक स्पष्ट कएलनि जे मुहर आ सहीक स्वतन्त्र परीक्षण बाँकी अछि; मूल फाइलक प्राप्ति-अङ्क आ कार्यालयक बाहरी प्रेषण-बही एक-दोसरासँ मेल खाइत अछि।

ओहि पन्नाक लग शेखरक कार्यालयमे बनल एकटा आन्तरिक टिप्पणी छल —‘महेशक बयान रोकबाक परिणाम सुनिश्चित हो।’ एक कर्मचारी ओकर अर्थ पूछलक। नैरा शब्द बदलबाक विरोध कएलीह। “ई पाँति भय देखेबाक, आवेदन अटकाएबाक, बात करबाक अथवा हिंसा करबाक कोन निर्णयक निर्देश छल, से केवल एहि शब्दसँ तय नहि करब,” ओ कहलीह। “मुदा कियो महेशक बयान रोकबाक लक्ष्य लिखलक, ई तथ्य जाँचक योग्य अछि।” रमाने लिखलनि जे टिप्पणी शेखरक कार्यालयमे भेटल अछि; देवव्रतक हस्ताक्षर ताहिपर नहि, आ तकरा देवव्रतक मूल चिट्ठीक अक्षरशः प्रतिलिपि मानब असंगत होएत।

शेखरक पुरान मुनीमकेँ बोलाओल गेल। ओहि बूढ़ लोकक पाँजुरक दर्दक कारण बहुत देर बैसब कठिन छल; अधिकारी हुनका बीचमे ठाढ़ होएबाक अवसर देलनि। मुनीम कहला जे शेखर ढुलाईक भाड़ा-जमा, रात्रिक गोदाम-बुकिङ आ बाहरी ठेकादारक हिसाब एके कक्षमे देखैत छल। “किछु आदेश ओ अपने दैत छल,” ओ कहलनि, “किछु ऊपरसँ फोनपर अबैत छल।” अधिकारी ‘ऊपर’क अर्थ पुछलनि। मुनीम उत्तर देलनि, “हम नाम

नहि सुनने छी। जँ अनुमान लिखबा चाहब तँ हमर हस्ताक्षर नहि भेटत।” हुनकर आवाज थाकल छल, मुदा ओ अपन पहिल जाँचक गलती फेर नहि दोहराबए चाहैत छलाह।

पुलिसक सीलबन्द साक्ष्य-पेटीसँ एकटा छोट कागद निकालल गेल। ई शेखरक कार्यालयक मूल रोकड़-बहीक कटल पृष्ठ नहि, बल्कि ओकरा संग बाँधल अलग खर्च-पर्ची छल। पर्चीमे दू किश्तक रकम, भुगतानक तिथि आ ‘रातुक दबाव’ नामक आन्तरिक मद दर्ज छल। दूनू तिथि महेशक घरपर पहिल हमला आ बादक घातक घटनाक नजदीक छलीह। बैंकक निकासी-बिवरणमे रकमक मेल भेटैत छल, मुदा प्राप्तकर्ता-खाताक पूरा विवरण एखन अधिकृत पुष्टिक प्रतीक्षामे छल। नैरा लिखलीह—रकम चलल, मद लिखल, तिथि मिलल; रकम हत्या लेल देल गेल, ई अगिला प्रमाणक प्रश्न।

एहि बीच शशिक गोदामक पिछला कक्षमे रखल तारक एक गुच्छा भेटल। निरीक्षक ओकरा महेशक हमलाक हथियार घोषित नहि कएलनि। ककरो औजारक तार होएब असम्भव नहि छल। मुदा तारक नीचाँ मुड़ल रसीदमे शेखरक कार्यालयक प्राप्ति-चिह्न आ ‘पाछाँक द्वार’ लिखल छल। शशि अपन भाड़ा-अनुबन्धक नक्शा देखौलनि; कोठरीक पिछला पट्टी किरायामे शामिल नहि रहए। “जँ ई पाटी खोलल गेल अछि, तकर जिम्मेवारी हम नहि छोड़ब,” ओ कहलनि, “मुदा पहिले माप लिअ। गोदामक मुख्य व्यवसायकें बंद कऽ हमर मजदूरक दिनक रोजी नहि काटू।” निरीक्षक कक्ष सील करैत आगाँक मसाला-गठरी निकालबाक स्वीकृत मार्ग लिखलनि।

महेशक पत्नी जखन जाँचक कक्षमे अएलीह तँ सभसँ पहिने अधिकारीसँ पुछलीह, “हमरा घरक बाहर के ठाढ़ रहत?” हुनका नव पुरजाक कथासँ बेसी बेटीकें विद्यालय पहुँचबैत घड़ीक सुरक्षा चाही छल। अधिकारी उपलब्ध लिखित व्यवस्थाक प्रति देखौलनि। पत्नी पन्ना पढ़ि कहलीह जे पिछिला ‘आश्वासन’क बादो हमला भेल छल; एहि बेर सुरक्षा-कर्मी उपस्थितिक नाम आ आपात सम्पर्कक समय लिखल जाए। नैरा बोलबाक लेल उठलीह, फेर बैसि गेलीह। महेशक पत्नी अपना जीवनक प्रश्न स्वयं कहि सकैत छलीह। हुनका गवाहीक समय अलग राखल गेल, समाचारक नाटकीय आरम्भ बनाओल नहि गेल।

ओ पतिसँ अन्तिम बातचीतक जे हिस्सा कहए चाहैत छलीह, ओहि हिस्सेपर अडिग रहलीह। महेश बारम्बार कहने छलाह जे सामग्रीक पंजी देखल अथवा ककरो नाम सुनल, हत्या करौनिहारक पहिचान नहि बनैत। ओ अपन डरक विषयमे पत्नीकेँ कहने छलाह, मुदा ‘देवव्रत हमरा मरबाओत’ एहन वाक्य ओ हुनकर मुँहसँ नहि सुनने छलीह। “आब सभ लोक हुनकर नामपर अपना निष्कर्ष लिखए चाहैत अछि,” पत्नी कहलीह। “हम ओहि बातक साक्षी नहि बनब जे ओ कहने नहि छलाह। मुदा धमकीक बाद लिखित संरक्षण नहि भेटबाक प्रश्न छोड़बो नहि।” अधिकारी दुनू बात अलग दर्ज कएलनि।

शबनम मलिक नगरक सेवाकक्षमे आयलीह तँ दरबज्जापर हुनकर पारिवारिक नाम देखिकऽ एक नव कर्मचारी उठि ठाढ़ भेल। ओ कहलनि, “मलिक मैडम, अहाँक सिफारिशवला लोककेँ भीतर भेजि देने छी।” शबनम चौंकि गेलीह। “हम कोनो सिफारिश नहि पठौने छी,” ओ कहलीह। कर्मचारीक रजिस्टरमे ‘मलिक कार्यालय’क नामसँ एक व्यक्ति जाँच-पत्रक फोटो लेबाक अनुमति माँगने छल। मूल प्रवेश-परिचयमे अधिकारीक हस्ताक्षर नहि, केवल चमकदार मुद्रित पट्टी छल। शबनम पट्टीक फोटो लेने अधिकारीसँ कहलनि जे हुनकर उपनामकेँ प्रशासकीय अधिकार बनाओल गेल अछि; ओहि प्रवेशक समय आ देखल फाइलक सूची सुरक्षित कएल जाय।

कर्मचारी डरि गेल जे ओकर नौकरी चलि जायत। शबनम ओकरासँ सीधा पुछलीह, “अहाँ ककर आदेशपर फाइल देखौलहुँ?” ओ उत्तर देलक, “नाम-पट्टी देखलहुँ; भीतरक लोक कहलक जे पैघ कोषदाता दिससँ अएल छथि।” शबनम कहलीह, “दाताक नाम, कुलनाम आ प्रशासनक अधिकृत अनुमति तीनटा अलग बात। गलती स्वीकार करू, मुदा जकरा देखलहुँ नहि तकरा पहचानल मत लिखू।” सेवाकक्षक प्रधान कर्मचारी प्रवेश-विवरण सुरक्षित करबाक आदेश देलनि। एखन फाइलमे ककरो कागद हटाएल गेल की नहि, से निश्चित नहि छल। मुदा पहुँच देबाक गलतीक जिम्मेवारी सार्वजनिक रजिस्टरमे दर्ज भेल।

शबनम स्वयंसेवी खर्च-पर्चीक पुरान पन्ना सेहो निकाललीह। ओ पहिलहिसँ कहैत आएल छलीह जे ‘मलिक’ नाम हुनका सरकारी प्रतिनिधि नहि बनबैत। एहि बेर हुनकर शब्दक मूल्य एक सार्वजनिक सन्देश बनल। कियो कहलनि जे सम्भव अछि शबनम पहिने

सँ सहमत छलीह, नहि तँ परिवारक नाम किन उपयोग भेल? ओ शान्त स्वरमे कहलीह, “हमर पारिवारिक नाम कियो चोरा सकैत अछि; हमर सहमति नहि। हमरा बोलि देबाक अवसर दियौ।” ओ सार्वजनिक सूचना लिखौलीह—हुनकर नाम अथवा परिवारक प्रतिष्ठासँ जारी प्रवेश-अनुमति अमान्य; वास्तविक आवेदन अधिकृत कर्मचारीक मुहरसहित देखाओल जाय।

साँझसँ पहिने पुलिस शेखरक कार्यालयक एक पूर्व चालककेँ अलग कक्षमे सुनलक। चालक प्रत्यक्ष देखल आ सुनल बातक क्रम बतबैत समय दू बेर पानी पीलक। ओ कहलनि जे पहिल हमलाक बाद शेखर क्रुद्ध छल, कहने छल—“डर नहि बुझलक तँ आब ई आदमी बाँचि कऽ बयान नहि देबाक चाही।” चालक एहि वाक्यकेँ अपन आँखिसँ देखल घटना नहि, शेखरक मुँहसँ सुनल धमकीक रूपमे चिन्हौलक। अधिकारी पूछलनि जे ओहि समय आनो कियो छल। चालक दू साथीकेँ ठामपर देखबाक कहलक, मुदा हुनकासभमे सँ कियो वाक्य सुनलक की नहि, से हुनका ज्ञात नहि। ओकर बयान दर्ज भेल, पहिचान सार्वजनिक नहि भेल।

चालकक सँग रखल मोबाइलमे एकटा पुरान आवाज-सन्देशक मूल फाइल छल। ओकर समय घटनाक दू दिन पहिने देखाइत छल, आ सन्देशमे ककरो वाक्य सुनाइत छल—‘ओहि आदमीकेँ फेर कार्यालय पहुँचबाक अवसर नहि देब।’ शेखरक आवाज जकाँ लगबाक चालकक दावा छल। निरीक्षक कहलनि जे डिजिटल फाइलक समय, अविच्छिन्नता आ आवाजक स्वतन्त्र मिलान आवश्यक अछि। फोनक सम्पूर्ण प्रतिक सुरक्षित प्रतिलिपि बनल; सन्देश ककरो पत्रकारक फोनमे नहि गेल। नैरा जखन “हत्या करबाक आदेश” शब्द लिखब शुरू कएलीह तँ स्वयमेव रुकलीह। सुनल वाक्यक अर्थ भयावह छल; ओकर लेखक-परिचय आ प्रसंगक तकनीकी पुष्टि शेष छल।

मुदा दोसर साक्ष्य खाली ध्वनि नहि छल। भाड़ा-बहीक एक पन्नापर शेखर स्वयं आधिकारिक कर्मचारीक रूपमे पाछाँक गोदाम सँ दू व्यक्तिक रात्रिक आवागमन मंजूर कएने छल। गेटक चौकीदारक समय-पंजी आ भुगतान-पर्ची एहिसँ मेल खाइत छल। ओहि व्यक्ति सभ महेशक घातक घटनाक निकट देखल गेल, एहन पुलिसक अलग कैमरा-परीक्षणक प्रारम्भिक निरीक्षण छल; चेहराक निर्णायक पहिचान एखन नहि भेल छल।

अधिकारी स्पष्ट कएलनि—संगठित रात्रिक व्यवस्था आ भुगतानक बीच ठोस सम्बन्ध अछि, हत्या-स्थलपर कौन प्रहार केलक, से पूर्ण प्रमाणित होएबाक अछि। तथापि शेखर केवल सामान ढोअनिहार मुनीम छल, ई पुरान कथन आब निर्विवाद नहि रहल।

शेखरकेँ अधिकृत सूचना दऽ बयान लेल बजाओल गेल। ओ वकीलक उपस्थिति माँगलक; समय तय भेल। कार्यालयक एक कर्मचारी चाहैत छल जे ओकर अनुपस्थितिकेँ अपराध स्वीकार कएल कहि समाचारमे छपा देल जाय। रमा प्रतिवाद कएलीह। “बयानक अधिकारक उपयोग अपराध-स्वीकार नहि अछि। आ जँ मूल बही, रकम आ सुरक्षा-मार्गक साक्ष्य अछि, ओकरा ठीक सँ प्रस्तुत करू। चुप्पीपर आरोपक पूरा इमारत नहि बनाउ।” नैरा देखलीह जे एहि वाक्यक कारण जाँच धीमा नहि, बल्कि टिकाउ बनि सकैत अछि। शेखर अपन कर्मचारीक फोन उठा कऽ अपन लिखित पक्ष भेजबाक तिथि देलक; उत्तर एखन नहि आएल छल।

देवव्रतक कार्यालयसँ एहि बीच एक पत्र पहुँचल। ओहिमे कहल गेल जे देवव्रत अस्पतालक सार्वजनिक निर्माण-संबन्धी दस्तावेजक अनधिकृत वितरण रोकबाक पक्षमे छलाह, महेशपर हिंसा करबाक कोनो आदेश नहि देने छथि। पत्रक संग तीन भुगतानक वैध दान-प्राप्ति छल, जाहिमे जमुनाक उपचारसहित रोगी-सहायता दर्ज छल। नैरा पत्र फेंकलीह नहि। ओ पूछलीह जे मूल पत्र जारी भेलाक बाद शेखरकेँ अलग फोन अथवा मौखिक निर्देश देल गेल छल की नहि; कार्यालय कहलक जे सम्पर्क-पंजी जाँचि उत्तर देत। स्वतन्त्र जाँचसँ पहिने इन्कारकेँ सत्य घोषित करब सेहो उचित नहि, आ दानक रसीदकेँ हिंसक आदेशक प्रमाण मानब सेहो गलत।

नगरक देवव्रत स्वयं अगिला बैठकमे नहि आएलाह। हुनकर प्रतिनिधि कहलक, “हमर कार्यालयक काम समाज-सेवा अछि; एहन आरोपसँ रोगीक सहायता ठप्प होएत।” अनिरुद्ध, जे रोगीक उपचारक व्यवस्थामे व्यस्त छलाह, उत्तर देलनि, “जे दवा पहुँचल, ओकर उपयोग हम मानैत छी। मुदा जनहितक सहायता ककरो बयान रोकबाक अधिकार नहि दैत।” ओ डॉक्टरक रूपमे देवव्रतक हत्या-दायित्व निर्धारित नहि कएलनि; केवल लिखित रूपमे बतौलनि जे रोगी-सहायता आ सुरक्षा-निरीक्षण दूटा स्वतन्त्र प्रशासनिक

काम छथि। प्रतिनिधि आग्रह कएलक जे स्वास्थ्यसेवाक जारी सहायता नहि रुकय; ओ बात बैठकमे सुरक्षित राखल गेल।

नैरा कार्यालयक दू निर्देश-पन्ना रखलीह। एक सार्वजनिक दस्तावेजक नियन्त्रित पहुँचक, दोसर शेखरक ‘बयान रोकबाक परिणाम’ लिखल आन्तरिक टिप्पणीक। अधिकारी दू पन्नाक कागज, स्याही, हस्ताक्षर आ प्रेषण-क्रम अलग जाँचबाक सूची बनौलनि। “मानि लिअ,” नैरा कहलीह, “उपरी कार्यालय कागद रोकबाक आदेश देलक। एक मध्यस्थ ओकरा भय देखेबाक अनुमति मानलक। तखन उत्तरदायित्वक प्रश्न दू ठाम उठत। आ जँ उपरी कार्यालय हिंसा लेल स्पष्ट मौखिक सहमति देने होए, तकर प्रमाण खोजब फेर अलग काम।” रमाने तेसर खाना जोड़लीह—हिंसा सँ वास्तविक लाभ ककरा भेटल आ के ओकरा जानैत छल।

गोदामक पिछला पाटीपर शशि मजदूरक सहायतासँ अँगीठीक तापमे भीजल बोरा सुखबा रहल छलाह। जाँचक दल किछु धातुक नमूना लऽ गेल; प्रत्येकक रसीद शशि लेलनि। किरायेदारक अनुबन्ध समाप्त करबाक प्रस्तावपर कानूनक सलाह लेबाक समय निर्धारित भेल। मजदूरी पार्वती कहलीह जे दोसरक अपराधक नामपर हुनकर चारि दिनक मजदूरी नहि अटके। शशि नगद-बही देखौत कहला, “रोकल कक्षक भाड़ा आ तोहर मेहनताना एक मद नहि। जे बोरा तूँ सुखेलह, तकर दाम आइ।” पार्वती रकम गनि अपन घरक लेल नमक किनबाक बात कएलीह, मुदा मालिकक उदारता कहि ओकर समाचार बनाओल नहि गेल।

महेशक पत्नी अपन बेटीकेँ विद्यालयक पाठ पढ़बैत एकटा प्रश्न सुनलीह—“जँ कियो बाबूजीकेँ डरौलक, ओहि लोककेँ पकड़ि लेल गेल?” माय कहलीह, “जाँचमे किछु कागद भेटल अछि। मुदा के दोषी अछि, से नियमसँ सिद्ध होयत। जे केओ तोरा पुछय, ओकरा अपने घरक बात कहबाक बाध्यता नहि अछि।” बच्ची पूछलक, “आ बाबूजी?” माय किताबक भीतर हुनकर पुरान एक पाँतिक नोट रखलीह। “ओ घुरि नहि अएताह। एहि बातमे कागदक प्रतीक्षा नहि अछि।” किछु काल बच्ची चुप रही, फेर गणितक अपूर्ण सवाल पूरा करए लगलीह। मायक लेल ओ छोट सामान्य क्षण आ आजुक सभ कठिन बयान एके जीवनक हिस्सा छल।

दोपहरि समाप्त होएबाक निकट जाँचाधिकारी पहिल अन्तरिम निष्कर्ष पढ़लनि। महेशक हत्या स्थापित आपराधिक घटना; प्रत्यक्ष प्रहारक व्यक्तिक पूर्ण पहिचान आ प्रत्येकक भूमिका विचाराधीन। शेखरक मध्यस्थ कार्यालयसँ दबाव-संबन्धी टिप्पणी, रात्रिक प्रवेश-व्यवस्था आ पैसाक जुड़ल कड़ी प्रमाणसहित जाँचमे; हिंसक निर्णयक संकेत बलवान, मुदा बयान आ डिजिटल स्रोतक विधिवत् पुष्टि आवश्यक। देवव्रतक कार्यालयक अनधिकृत अभिलेख-वितरण रोकबाक निर्देश उपलब्ध; हत्या करबाक स्पष्ट लिखित आदेश एखन नहि। ओहि निर्देशक वास्तविक आशय, बादक सम्पर्क आ मध्यस्थक काजबारे जानकारीक जाँच जारी। नैरा सुनलीह जे एक व्यक्ति पर जाँच बढ़बाक अर्थ दोसरकेँ पहिनहिसँ दोषमुक्त करब नहि।

शबनम मलिकक नामक दुरुपयोगवला प्रवेश-पंजीक संशोधन सेहो ओहि दिन दर्ज भेल। शबनम चाहैत छलीह जे गलत अनुमति पर ककरो निजी पता प्रकाशित नहि हो, मुदा पहिचान जाँचक लापरवाही छुपाओल सेहो नहि जाए। ओ सीमित सार्वजनिक बयान लिखौलीह—‘प्रतिष्ठित उपनामक आधारपर प्रवेश देल गेल छल; सम्बन्धित व्यक्तिक लिखित अधिकृत प्रमाण नहि छल।’ हुनका अपन पारिवारिक पहिचान पर गर्व छल, मुदा ओ स्पष्ट कएलीह जे उपनाम भरोसाक एकमात्र प्रमाण कखनो नहि। फोटो लेबए अएल व्यक्ति वास्तवमे कुन कागद धरि पहुँचल, तकर समय-जाँच अगिला दिन लेल निर्धारित भेल। शबनम स्वयं ओतए उपस्थित रहबाक सहमति देलीह।

साँझमे नैरा महेशक पत्नीकेँ अपन समाचारक प्रारूप पढ़ि सुनएबाक प्रस्ताव रखलीह। पत्नी कहलनि, “हम सम्पादक नहि छी। सार्वजनिक रूपेँ की छपय से अहाँक जिम्मेदारी। मुदा बेटी आ घरक चिन्ह हटल अछि कि नहि, से देखब।” नैरा ओ हिस्साक प्रति देलीह। पत्नी दू स्थान काटलीह—एक विद्यालयक पहिचान, दोसर हुनकर तात्कालिक निवासक दिशा। हत्या-जाँचक वाक्यमे ओ किछु नहि जोड़लीह। “हमर जीवनकेँ अहाँक जाँचक प्रमाण बनबए नहि चाही,” ओ कहलीह। नैरा सँ भेटल ओहि कागदमे पहिल बेर पत्नी अपन काटल पाँति लग हस्ताक्षर कएलीह, सहमति ओही सीमित संशोधनक लेल छल।

राति नैरा समाचारक शीर्षक बदललीह। पहिले लिखने छलीह—‘हत्याक आदेश खुलल’। फेर ओ लिखलीह—‘मध्यस्थक हिंसक निर्णयक कड़ी, निर्देश आ लाभक अलग

जाँच’। सम्पादक पुछलक जे एतेक लम्बा शीर्षक के पढ़त। नैरा छोट रूप चुनलीह —‘हत्याक आदेशक तीन प्रश्न’। समाचारमे मूल बहीसँ मिलल तथ्य, चालकक दर्ज बयान, देवव्रतक कार्यालयक लिखित इन्कार आ अनुत्तरित सम्पर्क-पंजी सभ अलग अनुच्छेदमे राखल गेल। ककरो चेहरा देखल नहि गेल, ओकर चित्र प्रकाशित नहि भेल। ओहि राति पहिल बेर महेशक मृत्युकें मात्र गोदामक अन्हारक कथा बना देबाक बदला, जीवित लोकक उत्तरदायित्वक ठोस सीमामे लिखबाक प्रयास भेल।

अन्तिम काजमे रमा एकटा सीलबन्द पन्ना नैराकें देखौलीह। ई सरिताक सत्ताइस नामक मूल सूची नहि छल। ई ओहि सूचीसँ सम्बन्धित पुरान भुगतानक सारिणीक एक नकल छल, जाहिमे कोन प्रविष्टि ककरा देखाबए योग्य अछि, से लाल स्याहीमे अलग कएल गेल छल। रमाने कहलनि जे आजुक हत्या-जाँचमे भेटल एक मध्यस्थ-प्राप्ति-अड्क एहि सारिणीक एक क्रमसँ मिलैत अछि; क्रम मिलबाक अर्थ व्यक्ति मिलब नहि। “काल्हि सरिता स्वयं मूल पन्ना, वास्तविक प्राप्ति आ जिनकर नाम अछि हुनकर अनुमतिक सीमा रखतीह,” ओ कहलीह। नैरा पन्ना वापस कएलनि। आजुक निर्णय एक मध्यस्थपर गहिर जाँचक बाट खोलने छल; सत्ताइस जनाक जीवनक सम्पूर्ण कथा ओकर भीतर बिना पूछने नहि अँटाओल जा सकैत छल।

अध्याय ९६ • सत्ताइसक मिलान

सरिता पीतरक डिब्बा खोलबाक पहिने ओकर तलहटिमे जमल धूरि पोंछि रहल छलीह। दुआरक बाहर बरखा थमि गेल छल, मुदा आमक पातसँ बूँद एखनो टपकि रहल छल। ओ डिब्बा चौकीपर राखि नैराकेँ पुछलनि, “आजु के-के रहत?” नैरा नाम नहि, भूमिका गनौलीह—रमा मूल कार्यालयी पन्ना देखतीह, दू व्यक्ति गवाहीक सत्यापन करतीह, आ सरिता अपन लिखल पन्नाक अर्थ स्वयं कहतीह। “पत्रकारक रूपमे हम सबटा नहि देखब,” नैरा जोड़लनि। “जे बात हमरा छापबाक अनुमति नहि, तकरा लिखल नोट सेहो अलग राखब।” सरिता ढक्कन खोलीह, मुदा अन्तिम मोड़पर हाथ रोकि कहलनि, “ई शर्त बैठकमे सेहो सुनाओल जाए।”

रसोइमे उबलैत चाउरक भाप खिड़कीसँ लहराकऽ आँगनमे पसारि रहल छल। संकेत दुपहरिक भोजन लेल दू थारी निकालने छल; ओकरा जानकारी छल जे माइक घरमे आइ कागद देखल जायत, मुदा ओ कागदक नाउँ-पाँति पूछल नहि। “भोजन कार्यालय पहुँचायब?” ओ पुछलक। सरिता कहलनि, “पहिने अपन पाठशाला जा। मायक काजक रक्षा करबक अर्थ मायक ठाम सभक काज करब नहि।” संकेत थारी राखि किताब उठौलक। नैरा ओकरा घुरैत देखलीह। एहि घरमे सत्ताइस नामक रक्षक बनबाक नामपर बच्चाक दिनचर्या रोकल जाए, सरिता से नहि चाहैत छलीह।

नगरक अभिलेख-कक्षमे रमा कर्ण तीन मेज जोड़बाक अनुमति नहि देलनि। एक मेजपर सरिताक निजी हस्तलिखित सूची रहत; दोसरपर सरकारी चलैत प्रति, प्राप्ति-बही आ पुरान भुगतान-सारिणी; तेसरपर सहमतिक कागद आ मिलानक परिणाम। अड़ठाम कतहु नामक सार्वजनिक सूचना-फलक नहि छल। भवनक दरबानक लग उपस्थिति-पंजी छल, मुदा भीतर अएनिहार गवाहक कारण नहि लिखल गेल। रमा खिड़कीक पट सम्हारि कहलीह, “एतय किछु प्रकरणक निर्णय होएत, किछुक सम्बन्ध ठहरत। जे ठहरत ओ फेर जाँचकेँ जा सकैत अछि; ओकरा निर्दोष वा दोषी घोषित करब हमर काज नहि।”

नैरा अपन कापीक पहिल पन्नापर पहिने सँ तीन शब्द लिखने छलीह—मूल, गवाही, लेनदेन। सरिता कहलनि, “मूल शब्दसँ सावधान। ई हमर मूल लिखावट अछि, सरकारक

मूल प्रविष्टि नहि। कखनहुँ देखल कागद, कखनहुँ सुनल लोक, कखनहुँ हम अपन अनुमानसँ एके पन्नापर लिखने छी।” ओ चारि ठाम अलग स्याहीक रेखा देखौलीह। “ई एक्के रातिक सुधार नहि। चारि बेर हम अलग कारणसँ घुरि लिखने छलहुँ।” रमा ओ विवरण बिना तारीख गढ़ने दर्ज कएलनि। कागदक मोड़, स्याहीक अन्तर आ सरिताक स्मृति—तीनू प्रमाणक अलग सीमा छल।

पाँच बदलल परिचयक विषय उठिते पठन-कक्षक पुरान अनुभव फेर सामने अएल। नसीम इदरीसी पाँचो व्यक्तिक सुरक्षित सहमति-पत्र बन्द थैलीमे पहुँचा देने छलाह। कियो चालू नाम सार्वजनिक करबाक अनुमति देने छल, मुदा पुरान नाम नहि; कियो केवल सुधारक क्रमांक; कियो मायक नाम पंजीमे देब चाहैत छल, समाचारमे नहि। रमा कहलीह, “ई पाँचो पाँति एकरूपेँ छपैत नहि। सरकारी प्रति जँ एक्के रंगक छाप देत, हमरे ओ गलती फेर करब।” नैरा सहमत भेलीह; हुनकर समाचारमे संख्या रहि सकैत छल, व्यक्तिगत ठिकाना नहि।

रहीना ठकुराई बरामदासँ भीतर आबि चप्पलक कीचड़ दुआरपर झाड़लीह। कापीक नकल करबाक कामसँ हुनकर अँगुरीपर नीली स्याहीक दू छोट दाग छल। पहिने मंगरी गोराइतक बन्द कारखानाक बकाया पंजीमे ओ अपूर्ण मोहर देखबाक गेल छलीह। आइ हुनका बोलाओल गेल छल किएक तँ नगरक पुरान प्रतिलिपि-कक्षमे एक अवधि ओ नकलक काम कएने छलीह। रमा परिचय लिखए लगलीह तँ रहीना स्पष्ट कहलीह, “हमर परिवारक कोनो पुरुषक नामसँ हमरा गवाहीक विश्वास नहि देब। जे पन्ना हम देखलहुँ, तकरा विषयमे हमर अपन हस्ताक्षर होयत; जे नहि देखलहुँ, तकरा विषयमे हम चुप रहब।”

रहीनाक पितियौत भाय कार्यालयक बाहर ठाढ़ छलाह। भोरहि ओ घरमे कहने छलाह जे पुरान गलतीक नाम लएला सँ ठकुराई परिवारक रोजीपर आघात पड़त। रहीना हुनका सँ तकरार नहि कएने छलीह; ओ अपन बेटीकेँ भात परोसि, नकलक पोटी बाँधि आ कानूनी सहायता-कक्षक समय नोट कऽ निकलि गेल छलीह। एखन ओ रमा सँ कहलनि, “हमरा दोसर काजक भाड़ा चुकएबाक अछि। पहिने हमर बयान पूरा सुनू, नहि तँ साँझ

नकलक काम छूटत।” कार्यालयक घड़ी देखिकऽ रमा हुनका पहिल गवाह बना देलनि। निजी जोखिमक सँग रोजीक घण्टा सेहो एहिठामक हिस्सा छल।

रहीना तीन बरख पहिने देखल एक प्रति-कक्ष याद कएलनि। तखन कार्यालयमे कागद सुखेबाक तार टूटि गेल छल, तँ कर्मचारीसभ पुरान गडुर काठक तख्तापर राखने छल। हुनका एक क्रम-सूची नकल करबाक देल गेल रहए। पाँच ठाम नामक बदला ‘परिचय संशोधन हेतु’ लिखल छल; एक पाँतिक कात ‘प्रकाशन नहि’क चिन्ह हुनका स्वयं नहि बनाएल छल। “हम ओहि दिन मूल आवेदन नहि देखलहुँ,” रहीना कहलनि। “मुदा जे प्रति हमने उतारल, ओकर प्राप्ति-अङ्क आ अपन कामक रसीद एखन अछि। बादक छपल प्रतिमे ओ चेतावनीक शब्द नहि भेटल।” ओ कतरन नहि, अपन मजदूरी-रसीद आगाँ बढ़ौलीह।

सहायक तुरन्त पुछलक, “तखन चेतावनी जानबूझि हटाओल गेल?” रहीना ओकरा देखिकऽ कहलीह, “ओ निष्कर्ष हमरा मुँहमे नहि दिअ। हम छपल प्रतिमे शब्द नहि देखलहुँ। कियो हटौलक, अथवा दोसर नमूना सँ छपल, से मशीनक स्रोत-बही कहत।” रमा मजदूरी-रसीदक प्राप्ति-अङ्क कार्यालयक प्रतिलिपि-पंजीसँ मिलौलीह। अंकक क्रम मेल खाएल; कामक तिथि मिलल; मुदा लेखकक आदेशक स्तम्भ खाली छल। रहीना अपना बयानमे एहि खाली जगहकें लिखेबाक आग्रह कएलनि। गवाहीक बल ओहि रिक्त स्थानकें कल्पनासँ भरब नहि, ओकरा चिन्हित करब छल।

सरिताक हाथ अन्तिम मोड़पर पहुँचि गेल। ओ पन्नाकें तखनहुँ सभक दिस नहि घुमौलीह। “एहि पाँतिमे जीवित व्यक्तिक वर्तमान परिचय अछि,” ओ कहलीह। “पहिनुक जीवन छोड़ि ओ जे नाम अपनौने छथि, ओकरा सार्वजनिक करब हुनकर रोजी आ सुरक्षाकें फेर जोखिममे देत।” रमा पहिने सहमति-पत्र खोललीह। ओ व्यक्तिक चुनल प्रतिनिधि, अलग कमरामे, रमा आ सरिताक समक्ष सीमित सत्यापन लेल उपस्थित छलाह। नैरा अपन नोटबुक बन्द कऽ बाहर निकलि गेलीह। कोनो कहानीक अन्तिम पन्ना पढ़बाक लालसा हुनका दोसर व्यक्तिक सुरक्षासँ पैघ नहि लगल।

दुआरबाहिर नैरा एक कप चाय लऽ रहीनाक बगलमे बैसलीह। रहीना अपन घरक बात स्वतः कहलीह। “हमर पितियौत भाय कहैत छथि, परिवारक नाम खराब होएत। मुदा जे

साल हम नकलक मजदूरी लेल पन्द्रह दिन कार्यालय घुरलहुँ, तखन परिवारक नाम हमरे खाता खुलबौलनि?” नैरा उत्तर देबाक बदला पुछलीह, “अहाँक बयान सार्वजनिक करब?” रहीना किछु बेर सोचलीह। “हमर अपन नाम आ देखल प्रति-काज छपि सकैत अछि। हमर बेटी कोन विद्यालयमे पढ़ैत अछि, अथवा घरक पुरुष के छथि, से नहि। ओ हमर गवाहीक प्रमाण नहि।” नैरा ओहि सीमाकें शब्दशः लिखि लेलनि।

भीतर सीमित सत्यापनक बाद सरिता मोड़ समेटलीह। रमा अलग बन्द अभिलेखमे केवल एहि बातक प्रमाण राखलनि जे सत्ताइसम पाँतिक वर्तमान परिचय, स्वयं स्वीकृत सम्बन्ध आ आवश्यक लेनदेनक स्थिति सम्बन्धित व्यक्तिक सहमतिसँ जाँचल गेल। मूल नामक सार्वजनिक प्रति नहि बनल; प्रतिनिधिक हस्ताक्षर सार्वजनिक सारमे नहि गेल। सरिता कहलीह, “हम आब कहि सकैत छी जे सत्ताइस पाँति पूरा गनल गेल। मुदा ई नहि कहब जे सत्ताइस जनक सभ रहस्य खुलि गेल।” रमा उत्तर देलीह, “मिलानक परिणाम आ जीवनक पूरा कथा एक चीज नहि।”

एक प्रविष्टिक आगाँ सरिताक लेखनीमे ‘घुरि आएल’ छल। नैरा पहिने एकरा रोजगारपर घुरल बुझने छलीह। आजु सम्बन्धित स्त्रीक अनुमति सँ रमा ओकर वास्तविक अर्थ सुनलीह—बाढ़क बाद राहत-कार्यालयमे दोसर बेर उपस्थित भेल व्यक्ति। पहिल भेटमे हुनकर नाम लिखल गेल छल, मुदा कोनो राशिक भुगतान नहि भेल। दोसर भेटक तिथि सँ नव रसीद खुलल। अधिकारी कहलक, “तँ पहिल दावा रद्द।” स्त्री प्रतिवाद कएलीह, “हम फेर आएल रही, अपन अधिकार छोड़ए नहि।” रमा रद्दक अनुमान काटि दऽ दुनू तिथि राखलीह। सरिता मुँह नीचाँ कऽ कहलीह, “हमर दू शब्दक अर्थ एतेक महत्त्व राखत, से लिखैत समय बुझल नहि छल।”

बाकी छब्बीस पाँतिक सम्मुख एक-एक प्रमाणक छोट पट्टी रखल गेल। कतहु उपस्थित व्यक्ति स्वयं अपन कामक समय बतौने छल; कतहु पुरान रसीदमे प्राप्ति-अड्क छल; कतहु भुगतान पंजीमे शून्य रकम लिखल छल। शून्यक अर्थ नहि काज, नहि देय समाप्त—केवल ओहि पंजीमे भुगतान नहि देखल गेल। नैरा भीतर घुरलाक बाद पुछलीह, “जाहि पाँतिमे कोनो लेनदेन नहि, तकरा मिलान कोना पूरा कहब?” रमा कहलीह, “ओतय ‘भुगतानक साक्ष्य नहि, दावा अलग’ लिखब। मिलानक अर्थ सभकें पैसा भेटि गेल नहि।”

पुरान सारिणीक लाल स्याहीक पाँति ओहि दिन एक नब समस्या आनलक। शेखरक मध्यस्थ कार्यालयसँ हत्या-जाँचमे भेटल प्राप्ति-अड्क आ एहि पुरान प्रतिलिपिक एक क्रम मेल खाएल छल। सहायक उत्साहसँ कहलक, “तँ एके काज!” सरिता बीचमे रोकलीह। “क्रम मिलल अछि, वस्तु मिलल नहि।” रमा दुनू फाइलक पुरान बही मँगबौलीह। एकमे गट्टर पहुँचएबाक भाड़ा, दोसरमे प्रतिलिपि-पुस्तिका जाँचक शुल्क लिखल छल। रकम आ तिथि अलग छल; अंकक साझा प्रारूप कार्यालयी व्यवस्था सँ सेहो बनि सकैत छल। ओ मिलानकेँ ‘सम्बन्ध-जाँच जारी’क श्रेणीमे राखलनि, हत्या-जाँचक नब दोषारोपणमे नहि।

दुपहरि पाछाँ फाटकसँ लोहेपर हथौड़ीक धीमा ठकठक सुनाइ देलक। सुमित्रा कामी अपन लकड़ीक डब्बामे राखल धातुक तीन जोड़ आ पुरान रसीद लऽ पहुँचल छलीह। एक नमूनामे रस्सी थामबाक दोहर खाँज छल; ओहि डिजाइने देखेबाक बाद स्थानीय ठेकाक नव सामानमे मिलैत आकार छपल छल। सुमित्रा प्रत्यक्ष रोक नहि लगौने छलीह। “पहिने जानू जे कियो हमर रेखा देखिकऽ बनौलक अथवा अपन नापसँ,” ओ कहलीह। “मुदा जखन हमर बनाओल चित्र ठेकेक कागदमे अछि, तखन नाम आ श्रमक हिसाब हमरा बिना किएक?” ओ डब्बाक तलसँ तेल लागल मूल खाका निकाललीह।

एक अधिकारी कहलनि जे सार्वजनिक फाटकक सामानक बनावटपर ककरो निजी अधिकार नहि होइत। सुमित्रा झटसँ उत्तर नहि देलनि। ओ कागदपर दू रेखा खींचलनि—एक साधारण समकोण, दोसर अपन खाँजक नाप आ रस्सी रोकबाक मोड़। “समकोण हमरा घरक सम्पत्ति नहि,” ओ कहलीह। “मुदा एहि नापक परीक्षण, अपन बनाओल खाका, नव जोड़क नमूना आ बाजारमे बेचबाक नामपर हमरा हिस्सा चाही। सुरक्षित पुलक प्रमाणपत्र हम नहि देने छी; जँ कियो हमर नमूना बिना परीक्षण लगौलक तँ ओकर दायित्व अलग।” अधिकारीक आसान ‘सभ सार्वजनिक’ उत्तर एहि भेदपर अटकल गेल।

नैरा सुमित्राकेँ पुछलीह जे अखबारी फोटो खींचि सकैत छथि की। “हाथ आ औजारक फोटो लिअ,” सुमित्रा कहलीह, “मुदा मूल खाँजक पूरा नाप एखन नहि। पहिने लिखित स्वीकार आ प्रशिक्षणक शुल्क तय होअय।” ओ अपन सहायक छोटलालक नाम सेहो जोड़बौलीह, जकरा धातु घिसबाक अलग मजदूरी छल। छोटलाल चुप रहए चाहैत छल,

मुदा सुमित्रा ओकरा कहलीह, “तोहर घण्टा हमरा नाममे जोडि नहि देब। जे काज तू कएलें, ओकर दाम तोरे भेटत।” सहायक अपन कामक समय लिखलक। लेखकत्व आ रोजी एक्के वादमे मिलि कऽ बेमोल नहि भेल।

रमा सुमित्राक पुरान नमूनाक रसीद देखलीह; कार्यालयक पंजीमे ओही तिथिक प्रवेश भेटल, मुदा ठेकाक नव रेखाचित्र पर निर्माता-खाना खाली छल। एतबे समानता प्रमाणित छल। ओ अस्थायी निर्णय लिखलीह—नव जोड़क उपयोग जाँच पूरा होए धरि रोकल जायत; मूल खाका आ कार्यालयी प्रति सुरक्षित रहत; तकनीकी परीक्षण अलग समिति करत; सुमित्राक नाम आ दावाक अभिलेखीकरण तुरन्त होएत। सुमित्रा कहलीह, “एहि बेर कमसँ कम कागदमे हमरा बनेबाक साक्ष्य हराएत नहि।” मुदा ओ हस्ताक्षर करबाक पहिने पढ़बौलीह जे प्रशिक्षण आ नमूना-निर्माणक पारिश्रमिक अलग सुनवाईमे तय होयत।

रहीना ओहि बहसक अन्तिम हिस्सा सुनने छलीह। बाहर निकलैत सुमित्राकँ कहलनि, “अहाँक खाँज आ हमर प्रति-काज दुनू मेजपर तखन आबैत अछि जखन कोनो दोसर ओकरा अपन नामसँ चढ़ाबए लगैत अछि।” सुमित्रा हलुक हँसलीह। “तें हमरा अपन नाम जल्दी लिखबाक चाही, मुदा जे देखल नहि से नहि लिखबाक चाही।” रहीना हुनकासँ एकटा छोट धातुक पत्तर किनबाक पूछलनि; घरे काठक पेटीक कोना टूटि गेल छल। सुमित्रा दाम कहलनि, नमूना नहि बेचलीह, नव साधारण जोड़ बनाय देबाक वचन देलनि। तर्कक बीच रोजमर्राक वस्तुक नीक काजो चलैत रहल।

पुनः अभिलेख-कक्षमे सरिता छब्बीस खुलल पाँतिक मिलान-पत्र देखलीह। चारि ठाम अलग स्याहीक कारण ओ स्वयं कहने छलीह; पाँच परिवर्तित परिचयक प्रत्येक हेतु समुचित सहमति दर्ज छल; चौदह प्रशासनिक विसंगतिक स्वतंत्र मामला अपन-अपन फाइलमे रहल; चारि जीवितक गलत मृत्यु-चिह्न आ चारि वास्तविक मृतकक सक्रिय खाताक पर्ची सेहो अलग रहलीह। एक युवा लिपिक पुछलक, “पाँच, चौदह आ आठ जोड़ला पर सत्ताइस बनैत अछि। हम सारमे ई लिखि दी?” रमा स्पष्ट मना कएलनि। “गिनतीक संयोग प्रमाण नहि। ई अलग-अलग पंजीक समूह छथि; किछु व्यक्ति दू

प्रकरणमे सेहो होए सकैत छथि, आ किछु एहि मूल सूचीमे नहि सेहो। संख्या सँ झूठका वंशावली मत बनाउ।”

नैरा एक पाँतिक नीचाँ लिखल ‘सत्यापित’ शब्दपर अटक गेलीह। ओ पुछलीह, “ककर सत्यापन? व्यक्ति, काम, की भुगतान?” सरिता कहलनि, “हम पहिने जे नाम सुनलहुँ से लिखने छलहुँ। एखन प्रत्येक पाँतिक सँग कागद, गवाही आ रकमक स्थिति रखल गेल अछि। मुदा व्यक्तिक पूरा जीवन सत्यापित भेल, ई हमरा कहबाक अधिकार नहि।” रमा नव शीर्षक बनौलीह—‘प्रविष्टि-सम्बन्धक मिलान पूरा; देय, सुधार आ आरोपक फल अलग’। ओहि शीर्षकमे राहतक सँग असुविधा सेहो छल; बकायाक दावेदारकेँ एखनहुँ अलग कार्यालय घुरए पड़त, मुदा ओकर नाम आधारहीन आरोपमे नहि फँसत।

एहि बीच सरिताक अपन रोकेल पारिश्रमिकक पन्ना फेर सामने अएल। गिरिधारी साहक बाह्य ठेकाकेँ देल दू किश्तक हिसाब पुष्ट छल, मुदा सरिताक काज आ बाह्य संस्था द्वारा किएल काजक पूर्ण समानता एखन मूल सुपुर्दगीसँ नपबाक छल। सरिता कहलीह, “हमर नाम मृत चढ़लासँ जे भुगतान रोकल गेल, ओ वापस भेटबाक प्रश्न अलग अछि। आजु सत्ताइस पाँति मिला कऽ हमरा अपन देय नहि छोड़बाक अछि।” रमा भुगतान-अधिकारीकेँ अलग आदेशक प्रति मँगबाक पत्र जारी कएलनि। गिरिधारीक लाभक प्रमाण ओकरा गलत मृत्यु-चिह्नक लेखक ठहरएबाक प्रमाण नहि बनल।

कार्यालयक नब प्रतिलिपि बनबैत कर्मचारी पुछलक जे छब्बीस नामक खुलल भागक फोटो प्रति किएक नहि जोड़ि देल जाए। रमाने देखौलनि जे सार्वजनिक प्रामाणिकता लेल प्रत्यक्ष निरीक्षणक तिथि, सीलबन्द जाँच-पत्र आ उपलब्ध प्रमाणक किसिम लिखल जा सकैत अछि। नामक पूरा चित्र भेजल जाए तँ एक बेर घुमल कागदकेँ रोकबाक उपाय नहि। सरिता स्वयं खर्चक बात उठौलीह—अलग सुरक्षित प्रतिक कागद, राखबक पेटी, अधिकृत निरीक्षण आ अपीलक सूचना मुफ्तमे नहि बनत। रमा विभागीय मद मँगबाक पत्र तैयार कएलनि; सुरक्षा-व्यवस्थाक खर्च निजी गवाहक माथपर नहि पड़त, से लिखित प्रस्तावमे जोड़ल गेल।

रहीनाक बयानपर आधिकारिक प्राप्ति-मोहर लगल तँ ओ राहतक साँस लेलीह, मुदा मोबाइलपर पितियौत भायक तीन मिस्ट कॉल देखिकऽ उदास भेलीह। नैरा पुछलीह, “घरमे की कहब?” रहीना उत्तर देलीह, “जे हम देखलहुँ से कहलहुँ, आ जे नहि देखलहुँ से नहि। घरक सम्मति हमरा प्रिय अछि, मुदा गवाही परिवारक संपत्ति नहि।” ओ तह कएल प्राप्ति-पत्र अपन थैलीक भीतरक जेबमे रखलीह। साँझ हुनका बेटीक पाठ सुनबाक छल, आ काल्हि नकलक दुकानमे हुनकर समय घटा देल जाएबाक आशंका छल। ओ ओकरा लेल आजुए मजदूरीक लिखित हिसाब माँगबाक निर्णय कएलनि।

सार्वजनिक बयानक मसौदा साँझक उजासमे पढ़ल गेल। नैरा चाहैत छलीह जे लोक बुझथि—सत्ताइस पाँतिक जाँच पूरा भेल, मुदा नामसभक सार्वजनिक सूची नहि निकलत। एक सदस्य कहलक, “तँ जनता किछु जनबे नहि करत?” सरिता उत्तर देलीह, “जनता जानत जे कुन प्रक्रिया, कतेक पाँति, कतेक प्रमाण, केकर जिम्मा आ अगिला सुनवाईक तिथि तय भेल। व्यक्तिगत डर आ आश्रयक ठिकाना सबकेँ बता देलासँ सत्य पैघ नहि होइत।” रमा सार्वजनिक सारमे प्रक्रिया, खर्च, आवश्यक सुधारक क्रमांक आ अपीलक बाट राखलनि; निजी पहचानक दस्तावेज अलग बन्द रहत।

छोट विराममे रहीना बरामदाक फर्शपर बैसि अपन खाताक जोड़ देखलीह। दू घंटा कार्यालयमे गेलाक कारण आजुक नकल-कार्यक एक हिस्सा साँझ धरि करबाक छल। ओ घबराइ नहि, पहिने ग्राहककेँ समयक स्पष्ट सूचना पठौलीह। सुमित्रा पास बैसि अपन कामक काला नाखून देखबैत कहलीह, “हमर चिह्न लोहेपर बनैत अछि, अहाँक स्याहीपर। दुनूकेँ धोएब आसान नहि।” रहीना हँसलीह। ओ अपन बेटीक लेल बनबाक धातुक साधारण पेटी-जोड़क दाम अग्रिम नहि देलीह; सुमित्रा कहलनि जे माल तैयार भेलापर मापि लेल भुगतान होयत। दुनू स्त्री एक-दोसराक श्रमकेँ उपकारक नाम नहि देलीह।

अनिरुद्ध अस्पतालसँ फोन कएलनि। दवाईक असमान लेबलवला खेपक एक हिस्सा अबहियो निरीक्षणमे अटकल छल, आ रोगीक स्थानान्तरणक गाड़ी उपलब्ध होएब कठिन भऽ रहल छल। नैरा बुझलीह जे सत्ताइसक मिलानसँ अस्पतालक भौतिक संकट आपहि नहि सुलझत। रमा फोनपर कोनो नब सहमतिक घोषणा नहि कएलनि; ओ केवल कहलीह जे काल्हिक बहुपक्षीय बैठकमे मरीजक दवाई, गाड़ी आ जलनिकासीक समय-पत्र अलग

राखल जायत। पुरान प्रमाणक निर्णयक बादो जियबाक अगिला दिन लेल नव व्यवस्था चाही छल।

सुमित्रा ओही घड़ी धातुक नमूना डब्बामे समेटि रहल छलीह। एक युवक नव फाटकक काम भोरहि शुरू करबाक बात कहलक। “नाप जाँच बिना नहि,” ओ दृढ़ भेलीह। “तकर अर्थ काम हमेशा रोकब नहि। अस्थायी पाट सुरक्षित अछि की नहि, पहिले प्रमाण देखू; जँ नहि, यात्री लेल दोसर बाट लिखू।” युवक शिकायत केलक जे एतेक जाँचसँ लोक परेशान। सुमित्रा अपन डब्बाक ढक्कन बन्द करैत कहलीह, “जाहि दिन पाट टूटत, तखन परेशान लोकक नाम तौ याद रखिहें? सुरक्षित कामक दाम समयमे देबाक व्यवस्था करू।” युवक उतर देबाक बदला निरीक्षककें बोलए गेल।

सरिता घर घुरबाक पहिने रमा सँ निजी पन्ना वापस लेलनि। सील लागल निरीक्षण-विवरण कार्यालयमे रहल, मूल हस्तलिखित सूची पुनः पीतरक डिब्बामे जाएत। रमाने गिनती कएलीह—सत्ताइसक सत्ताइस पाँतिक आवश्यक मिलान समाप्त, पाँच परिचयक प्रकाशन-शर्त अलग, विवादित भुगतानक सुनवाई बाँकी, अभिलेख-सुधारक आदेश जारी होएबाक बाट खुलल। नैरा एक बेर अंतिम कागद देखए चाहलीह, फेर स्वयं हाथ पाछाँ कऽ लेलीह। माय पुछलीह, “तोरा एखन भरोसा भेल?” नैरा कहलीह, “भरोसा पन्ना देखलासँ नहि, जाँचक सीमा मानलासँ बढ़ल।”

घर पहुँचि सरिता चाउरक बासन फेर आँचपर रखलीह। संकेत पाठशालासँ घुरि पट्टीपर एक कठिन शब्द लिखि रहल छल। कबीर काठक ताख लेल लेनदारक ताजा पर्ची देखेबाक आएल छलाह; नैरा ओकरा कहलीह जे आइ घरमे कागदक सब कथा कहबाक इच्छा नहि। ओ मुस्कराकऽ पर्ची मोड़ि रखलनि, आ संकेतसँ ओ शब्दक अर्थ पूछलनि। सरिता डिब्बा ऊपरी ताखपर राखि देलीह—एहि बेर पीतरक ढक्कनपर नब सूत बान्हि नहि, एकटा साधारण कपड़ाक पट्टी रखलीह, जकर गाँठ खोलबाक अधिकार हुनकर अपन छल।

राति समाचारक अन्तिम पंक्ति लिखैत नैरा हत्या-जाँचक कार्यालयक लम्बित पत्रसँ सत्ताइसक निजी सार अलग रखलीह। शेखरक व्यवहार आ देवव्रतक निर्देशपर निर्णय अबहियो प्रमाण माँगैत छल; सरिताक गलत मृत्यु-चिह्न सुधारबाक आदेश पूर्ण अमलमे

नहि आएल छल; मिथुनक बाट अलग खोजल जा रहल छल। मुदा आइ एकटा काम
सचमुच पूरा भेल—सत्ताइस पाँतिक सम्बन्ध, गवाही आ उपलब्ध लेनदेनक स्थिति मिलि
गेल, बिना कोनो जीवित व्यक्तिक छुपल नामकें बाजारमे टाँगने। नैरा कापी बन्द
कएलनि। आगाँक दिनमे लोक फेर निष्ठा, वचन आ साथ देबाक कीमत पुछत; आइ रातिक
निश्चय एतबे छल जे ककरो विश्वास पर अनुमति बिना अधिकार नहि जमाओल जाए।

अध्याय ९७ • शल्यक निष्ठा

प्राचीन मद्रदेशसँ कुरुक्षेत्र दिस चलल रथक पहियापर चिपकल धूरि शल्य अपने हाथसँ झाड़ि रहल छलाह। रातिक ओसक कारण चमड़ा फूलि गेल छल, आ सारथि कहलक जे अगिला पड़ाव धरि पहुँचेबाक पहिने धुरीमे तेल देब आवश्यक अछि। शल्य ओकरा काज करए देलनि; ओ पहिने सेनाक पाछाँ चलैत अन्नवला गाड़ीक गिनती पुछलनि। युद्धमे पाण्डव पक्षक सहायता करबाक लेल निकलल ई दल केवल राजपुरुषक रथ नहि छल। संगमे घोड़ाक सेवक, धातु मरम्मत करनिहार, भोजन पकाबनिहार आ पैदल सिपाही छलाह। ओहि सभक थाकल देहपर शल्यक राजनीतिक वचनक पहिल भार पड़ैत छल।

माद्रीक पुत्र नकुल आ सहदेव हुनकर भागिने छलाह। बचपनमे दुनूकें एके घरक आँगनमे नहि पालल गेल छल, मुदा मातृपक्षक सम्बन्धक स्मृति शल्यकें दूर धरि अनने छल। एकटा युवा सैनिक पुछलक, “हमरा सभकें पाण्डवक छावनीक बाट बताओल गेल अछि; तखन एतेक सजल पड़ाव ककर?” दुआरक कात दूध आ घीक पात्र राखल छल। केओ उत्तर नहि देलक। स्वागत करनिहार अधिकारी केवल ई कहलक जे थाकल अतिथिक परिचय पहिले भोजनसँ होइत अछि। शल्य सोझे भीतर नहि गेलाह; पहिने पानि ढोअनिहार स्त्रीसँ पुछलनि जे दलक पछिला गाड़ीधरि पर्याप्त पानि पहुँचत की। स्त्री कहलनि, “आदेश पहिल रथ धरि छल; बाकी लेल हम दोसर घड़ा मँगबौने छी।” शल्य तकरो खर्च लिखए कहलनि।

पड़ावक भीतर एकसँ एक विस्तृत शामियाना, स्वच्छ आसन आ घोड़ाक लेल नमक-मिश्रित चारा छल। मद्रक एक वृद्ध सेवक हँसैत कहलक, “युधिष्ठिर सभ बातक ध्यान रखलनि।” ई ओकर अनुमान छल, पहिचान नहि। शल्यो तत्क्षण ओहि अनुमानक विरोध नहि कएलनि। एक कक्षमे घाव धोएबाक स्वच्छ पट्टी देखिकऽ ओ सन्तुष्ट भेलाह; दोसरमे देरिसँ अएल बाल-सहायककें भोजन नहि भेटल छल। शल्य अपन थारीसँ ओकरा खाएब कहि नहि, रसोइक प्रभारीसँ ओकर निर्धारित हिस्सा मँगौलनि। कृपाक नामपर ककरो वेतन वा भोजनक अधिकार बदलल जाए, ओ नहि चाहैत छलाह।

भोजनक अन्तमे स्वागतक प्रधान अधिकारी आदरपूर्वक भेटए अएल। शल्य कहलनि जे एहन व्यवस्था करनिहार राजा सँ ओ स्वयं कृतज्ञता कहए चाहैत छथि। परम्पराक मान रखैत ओ वचन देलनि—अतिथिसत्कारक उत्तर मे जे युक्तिसंगत सहायता माँगल जाएत, ओकरा ओ उपेक्षित नहि करताह। आसपास बैसल सभक कानमे वचन पड़ल, मुदा नाम ओहि घड़ीधरि उच्चरित नहि भेल छल। एक सैनिक मुस्कुराकऽ नकुलक नाम लेलक; स्वागताधिकारीक मुखपर क्षणिक कठोरता आबि गेल। शल्य ओहि परिवर्तित मुखकें देखलनि, मुदा कहबाक अवसर नहि भेटलनि। बाहरी परदाक पाछाँसँ दुर्योधन स्वयं भीतर प्रवेश कएलनि।

“अतिथिसत्कार हमर छल,” दुर्योधन कहला। हुनकर स्वरमे विजयक उत्साह छल, क्षमायाचनाक भाव नहि। शल्यक हाथमे पकड़ल जलपात्र काँपल नहि; ओ ओकरा धीरे आसनक कात राखि देलनि। “तँ व्यवस्था करनिहारक पहिचान जानबाक अवसर हमरा किएक नहि भेटल?” ओ पुछलनि। दुर्योधन उत्तर देलनि जे अतिथिसत्कार पक्षक नाम पूछिकऽ नहि होइत, आ राजाक वचन भोजनक बाद छोट नहि होइत। शल्य कहला, “भोजनक ऋण आ छलसँ चुनाओल पक्ष एक्के वस्तु नहि। जँ तोहर उद्देश्य युद्धक सहायता छल, हमरा आगाँसँ कहबाक चाही छल।” स्वागताधिकारी आँखि झुका लेलक; भोजक पदार्थ एखनहुँ थारीमे पड़ल छल।

दुर्योधन अपन माँग स्पष्ट कएलनि—शल्य अपन सेना सहित हुनकर पक्षमे आबथि। मद्रक सेनापतिसभ बीच बेचैनी पसरल। एक कहलक जे शल्यक भागिने दोसर पक्षमे छथि; दोसर कहलक जे लौटि गेलासँ राजवचन टूटत। शल्य दुनूकें हाथ उठा चुप करौलनि। ओ दुर्योधनकें कहलनि, “तोरा जे वचन भेटल, ओ हमर मुँहसँ निकलल अछि। ओकर भार हम जानैत छी। मुदा ई नहि मानब जे एहि भारसँ हमर विचार, हमर पुरान सम्बन्ध आ हमर देखल अन्याय सभ मेटि गेल।” दुर्योधनक अनुचर एकरा अनावश्यक शर्त बुझलक; शल्य एकरा वचनक अर्थ बुझबैत रहलाह।

शल्यक पुरान मन्त्री समान एक वृद्ध परामर्शदाता सभाक अन्तिम कात ठाढ़ छलाह। हुनका समक्ष कोषाध्यक्ष ओहि स्वागतक खर्चक बही रखलक। सोना, भोजन, दान आ घोड़ाक चारा एके हिसाबमे जोड़ल छल। शल्य पुछलनि, “एहि बहीमे अतिथि-सैनिकक

नामपर केकरा वचन देल गेल अछि?” कोषाध्यक्ष देखौलक जे भोजनक प्राप्ति-चिह्न बहुतेक सेवक स्वयं नहि बनौने छथि; प्रमुखक मोहरसँ समूहक हिस्सा उठाओल गेल छल। “तखन ई स्वागत सभक स्वेच्छासँ देल सैन्य-सहमति कोना भऽ सकैत अछि?” शल्य कहला। दुर्योधन राजकीय आमन्त्रणक परम्परा कहलनि। शल्य खर्चक बही अपन संग रखबाक अनुमति माँगलनि।

दुर्योधन राजसभाक पुरान अपमानक चर्चा टारए चाहैत छलाह। शल्य टारए नहि देलनि। द्यूतक खेल आ द्रौपदीक सभामे अपमानक समाचार मद्रदेश धरि पहुँचल छल; ओ सभ घटनाक प्रत्येक विवरणक प्रत्यक्ष साक्षी नहि छलाह। “जे हम स्वयं नहि देखलहुँ, तकरा देखल कहि नहि सकैत छी,” ओ कहला, “मुदा सभामे स्त्रीक मानक रक्षा करबाक प्रश्नपर मौनक लाभ तोहर राज्यक कथन नहि बनि सकैत।” दुर्योधन तर्क देलनि जे राजधर्ममे परस्पर दावाक निर्णय युद्धसँ सेहो होइत अछि। शल्य जवाब देलनि, “युद्धक निर्णय तोहर हो सकैत अछि; निर्दोषक अपमानकेँ उचित कहबाक वचन हम नहि देलहुँ।”

शल्यक निजी परिचारक हुनका एक कात बजौलनि। दलक घोड़ासभ यात्रा टुटलासँ एक दिन अधिक विश्राम माँगैत छल; अपन अन्न आ औषधिक हिसाब कतय जमा होएत, से सेनापति नहि जनैत छलाह। शल्य तखन नब कठिनाइ बुझलनि। राजाक एकटा अचानक पक्ष-परिवर्तन शस्त्रधारीक संग रसोइया आ घोड़ा-सेवकक रोजी बदलि दैत अछि। ओ अपन कोषाध्यक्षकेँ कहलनि जे मद्रक लोकसभक देय पूर्ववत् रहत; स्वागत-शिविरक बचल सामग्री निजी पुरस्कार बनि नहि बाँटल जाएत; जे घर घुरबाक नियमानुकूल कारण रखत, ओकर बात सुनल जाएत। सेना एखन निर्णयक साधन छल, केवल आनन्दसँ ललचाओल टोली नहि।

ओही साँझ नकुल आ सहदेवक लेल शल्य दू अलग सन्देश तैयार करबौलनि। दुनूमे अपने निर्णयक कारण छल; कोनो पत्रमे ओ नहि लिखौलनि जे भागिने सभ हुनकर सहमति देलनि। एक दूत पूछलक, “हम ई बात कहि दिअ जे महाराज बाध्य छलाह?” शल्य कहलनि, “बाध्यता कहब तँ अपना चुनावक हिस्सा लुका देब। छल देखलहुँ, वचन निभेबाक निर्णय हम लेलहुँ। एहि अन्तरक दुःख हमरे उठेबाक अछि।” दूतक प्रस्थानसँ

पहिने शल्य आदेश देलनि जे पत्र सुरक्षित रूपेँ पहुँचए, युद्धक समाचारक प्रचार-पर्ची नहि बनए।

शिविरक दोसर कात मद्रक रसोइया बचल अन्न तौलि रहल छलाह। दुर्योधनक एक प्रतिनिधि कहलनि जे आब ई सभ कौरवक भण्डारक हिस्सा अछि। रसोइया प्रतिवाद केलक जे मद्रसँ अनल सूखल अन्न आ स्वागतमे भेटल भोजन अलग-अलग ढेरी अछि। शल्य स्वयं ओतय जा कऽ गिनती करबौलनि। “राजनीतिक पक्ष बदललासँ मूल मालिक बदलि नहि जाइत,” ओ कहला। प्रतिनिधि चुप्पे प्रतिलिपि लेलक, मुदा किछु सैनिक ई देखिकऽ बुझलनि जे कृतज्ञता आ अधिकारक बीच जे विवाद राजसभामे छल, ओ चूल्हिक कातो मौजूद अछि।

राति मद्रक शिविरमे शल्य घोड़ा बाँधल ठाम धरि गोलाह। तेलक गन्ध, भिजल घास आ दूरक प्रहरीक खाँसी हवा मे रहए। एक जवान सैनिक हुनकासँ पुछलक, “राजन, हम आब जे पक्षमे छी, तकर सभ बात सही मानब पड़त?” शल्य कहलनि, “नहि। सैनिकक अनुशासन आ विवेकक हत्या दू अलग काज अछि। युद्धमे नियम तोड़बाक आदेश आयत तँ ओहि आदेशक जिम्मेदारी ओकरा देनिहारसँ प्रश्न करब।” ओ एतबे कहि सकैत छलाह; भविष्यक प्रत्येक घड़ीक उत्तर हुनका लग नहि छल। भोरमे ओ दुर्योधनक शिविर दिस रथ मोड़बाक निर्णय पक्का कएलनि, मुदा अपन असहमत स्वरकेँ साथ राखबाक निश्चय सेहो कएलनि।

आधुनिक नगरक अस्पतालमे अगिला भोर अनिरुद्ध स्ट्रेचरक आगाँक दू चक्का उठाकऽ देखैत छलाह। गलियारेक बाहर वर्षाक पानि सूखल नहि छल; निकासीक जालीमे प्लास्टिक आ गाछक पात अटकल छल। स्ट्रेचरक चक्का एक फाटल फर्शमे फसि जाइत छल, तँ रातिक रोगी स्थानान्तरण दोसर दुआरसँ करबाक पड़ल छल। सत्ताइस पाँतिक मिलानक कागद काल्हि पूरा भेल, मुदा अस्पतालक ई फर्श काल्हि जेना छल, आइ सेहो तहिना छल। अनिरुद्ध एक परिचारिकाकेँ कहलनि, “रोगीक बाट पहिने निश्चित करू; गोदामक चाबी भेटबासँ फर्श समतल नहि भऽ जायत।”

अस्पतालक फाटकक बाहर तारा आ हीरा सहनी भीजल मापक डण्डा अलग-अलग कपड़ामे लपेटि रहल छलाह। पुरान पगडण्डीक गाछ लग पानिक चिह्न आधा मेटि गेल

छल। हीरा कहलक जे पिछिला सरकारी नापमे ‘शून्य’ मानल ठाम आ गामक परम्परागत चिह्न एक स्तरपर नहि अछि; दुनूकें बिना जाँच एके आँकड़ा बनाओल जाए तँ सुरक्षित बाट गलत देखाइत। ताराकें समयक दबाव छल। “जाँचक प्रतीक्षा करिते रोगी अटक रहल छथि,” ओ कहलीह। हीरा उत्तर देलक, “तें एखन उपयोगयोग्य बाटक नाप अलग करू, स्थायी बहाव काटबाक आदेश अलग। जहिया डण्डा खुँटामे टिकत, हम पहिने जमीनक चिन्ह सभकें देखाएब।”

दोपहरिक बैठक लेल पाँच वस्तु मेजपर रखल गेल—गोदामक मोहरवला बन्द चाबी-पेटी, रोगी-गाड़ीक समय-पर्ची, स्थानीय जलमापकक दू प्रति, सामुदायिक रसोइक खर्च-बही आ अभिलेखक सार्वजनिक प्रति-नियम। नैरा ओहि मेजकें देखिकऽ पहिल सन्धिक अपूर्ण पन्ना याद कएलीह। तखन निजी मेड़मे निर्बाध प्रवेशक माँगपर सहमति टूटल छल। आब अधिकारी नया कागदपर लिखने छल जे ‘आपदा-प्रबन्ध लेल सर्वसम्मति सुविधा’। शबनम खातून बिना हस्ताक्षर पुछलीह, “सर्वसम्मति कतय भेल? हमरा समितिक आजुक मत एखन भेलो नहि।” सचिवक कलम रुकि गेल।

देवव्रत सभामे उपस्थित छलाह। हुनका अपन गोदामक व्यवस्थापर प्रश्नक सामना करबाक छल; महेशक मृत्यु-संबन्धी जाँचमे हुनकर पुरान निर्देश अलग फाइलमे दर्ज छल। एखन ओ कहलनि, “औषधि आ सुरक्षित सामानक जाँच जतेक पूरा अछि, ओतेक हिस्सा तुरन्त निकलबाक बाट खोजी।” अनिरुद्ध पुछलनि जे निकलबाक अनुमति के देत, खेपक लेबलक उत्तरदायित्व के लेत, आ गाड़ी धरि पहुँचबाक फाटक खुलत की नहि। देवव्रत जवाबमे तीन अलग कार्यालयक नाम लेलनि। तारा एतेक सुनि कहलीह, “तीन नाम अछि तँ तीन समय आ तीन हस्ताक्षर लिखाउ। रोगी तीन कार्यालय घुरि नहि सकैत।”

शबनम दोसर पारक सदस्यमण्डलक आपत्ति खोललीह। ओहि गामक रमेश कुशवाहाक खेतक कातसँ गाड़ी घुमेबाक छोट बाट नक्शामे दुरुस्त रंगसँ चिह्नित नहि छल। रमेशक पत्नी स्वयं बैठकमे अएलीह। हुनकर हथेलीमे निराइ करबाक पुरान दाग छल; ओ कागदपर अँगुरी राखि कहलीह, “हमर खेतक मेड़कें आपात बाट कहि आज काटि देब, काल्हि नुकसानक दाम ककरा माँगब? मरीजकें रोकबाक हमर मन नहि अछि। मुदा पुरान

पगडण्डीक खाली हिस्सा अहाँसभ पहिने जाँचलहुँ की?” हीरा ओकरा विकल्पक दू नाप देखौलक। एक पथ पैदल रोगीक वाहक लेल सम्भव छल, भारी गाड़ीक लेल नहि।

आधुनिक सभाक गरमीमे एक लिपिक जल्दीसँ प्रस्ताव रखलक जे सभ घरक लोक ‘निःशुल्क सेवा’ देथि। रुहानी, जे पासक मोहल्लासँ पानि आ सादा भोजन पहुँचएबाक अस्थायी काम देखैत छलीह, ओकरा टोकलीह। “आजु हमर घरसँ दू बासन भात जाएत, ओ हमर अपना निर्णय अछि। काल्हि पचास जनाक भोजनकेँ स्त्रीसभक मुफ्त श्रम कहि बजटमे शून्य नहि लिखू।” ओ चाउर, जलावन, पात्र धोब, पहुँचेनिहारक यात्रा आ भोजनमे आवश्यक परहेजक अलग हिसाब सामने रखलीह। एक कर्मचारी कहलक जे नामपर जाति लिखलासँ वितरण आसान होएत। रुहानी उत्तर देलीह, “खाएबाक जरूरत गनू, जाति नहि। रोगीक औषधि-अनुकूल भोजनक सूची गोपनीय रखू।”

नैरा पहिल बेर ओहि दिन कैमरा बाहर नहि निकाललीह। शबनमक सदस्यसभक निजी आपत्ति-पन्ना, सरिताक सत्ताइसम सुरक्षित परिचय आ रमा कर्णक सीमित जाँच-पत्र एखनहुँ अलग अलमारीमे छल। सामुदायिक प्रति चाहनिहारसँ नैरा कहलनि, “सार्वजनिक रसीद आ कुल खर्चक अधिकार सभकेँ अछि, मुदा कोनो जीवित व्यक्तिक छुपल नामक फोटो फेर घुमेबाक अधिकार एहि बातसँ नहि निकलैत।” रमा एकटा प्रक्रिया सुझौलीह—मूल सरकारी प्रति सुरक्षित, नाम-छाँटल सामुदायिक प्रति अलग, आ प्रत्येक अपीलक क्रमाङ्क खोलल। समिति एतय नीतिपर चर्चा करैत छल, सत्ताइस पाँतिक निजी विषय फेर नहि खोलैत छल।

बैठकक देहरीपर रमा कर्ण दफा-दफा लिखल एक पुरान निर्णयपत्र लऽ अएलीह। पहिल असफल सन्धिमे ‘अनुमति’ आ ‘पहिने खबर देब’केँ एक अर्थ मानबाक गलती छल। आब कर्मचारी फेर केवल खबर भेजलाक प्रमाण देखाउत निजी मेड़मे प्रवेश लिखए चाहैत छल। रमा एकर आपत्ति लिखलीह। रमेशक पत्नी कहलीह, “हम एक घण्टा पहिने खबर सुनलहुँ तँ ओ सहमति नहि भेल।” शबनम संकटक विकल्प स्पष्ट करबाक लेल तीन पाँति माँगलीह—नियमित काम, तात्कालिक जीवनरक्षा, आ क्षतिक बादक जवाबदेही। ओ चाहैत छलीह जे एहि बेर लोक अपन आपत्ति बुझि कऽ हस्ताक्षर करथि।

अस्पतालक एक युवा परिचारिका मेजपर छोट धातुक प्लेट रखलीह। ई स्ट्रेचरक ढलानपर अस्थायी पकड़क पुरान पुर्जा छल, जकरा बदलबाक प्रस्ताव छपल सूचीमे छल। सुमित्रा कामीक नब खाँजवला नमूनाक तकनीकी जाँच एखन बाकी छल; परिचारिका पुछलीह जे ताहि धरि हाथसँ बनाओल कोनो अनपरीक्षित नमूना उपयोग करब की। अनिरुद्ध नहि कहलनि। सुमित्रा स्वयं उत्तर देलीह, “हमर डिजाइनपर अधिकारक दावासँ ओकर चिकित्सालयमे सुरक्षित होएब सिद्ध नहि होइत। जँ पुरान स्वीकृत प्लेट ठीक अछि, ओकरा जाँचि उपयोग करू; नव नमूना प्रयोगशालामे जाएत।” हुनकर सहायक छोटलाल पुरान प्लेटक ढीला पेचकस कसबाक मजदूरीक रसीद बनौलक।

भोरक भीजल चक्का एखनहुँ खराब रहबाक समाचार भीतर अएल। इरफान खान अपन छोट मरम्मत-दोकानसँ अएलाह; ओ चक्का बदलबाक लागत लिखलनि आ कहलनि जे अस्पतालक कर्मचारीकेँ पहिने पहियाक धुरीक पुरान दोष देखब आवश्यक। कोनो अधिकारी ‘दानमे ठीक कऽ दिअ’ कहलक। इरफान उत्तर देलनि, “रोगीक सुरक्षा लेल पहिने जाँच करब, मुदा मजदूरीक रसीद रहत। खराब धुरीपर नब चक्का लगा देब सेवा नहि।” तखन धरि अस्पतालक दोसर परीक्षण कएल स्ट्रेचर उपयोग होएबाक व्यवस्था भेल। अनिरुद्धक मुखपर कनेक राहत आयल, यद्यपि नहरक पानी कम नहि भेल छल।

बैठकसँ बाहेर पानि फेर तेज पड़ए लागल। हीरा आ तारा सार्वजनिक पगडण्डीक सुरक्षित भाग धरि छोट परीक्षण-दल लऽ गेलाह। रमेशक पत्नी सेहो गेलीह, जकरा अपन मेड़ आ रोगीक बाट दुनू देखबाक छल। हीरा दू खूटाक बीच पुरान जलचिह्न मिलौलक; पानिक एक पतली धार खाली पाटीक नीचाँ बहैत छल। “भारी गाड़ी नहि,” ओ कहलनि, “मुदा चारि वाहकक संग एक रोगीकेँ एहि भागसँ पार कएल जा सकैत अछि, जँ पहिने कीचड़ हटय आ दुनू कात सुरक्षा-सहायक रहथि।” तारा काजक अवधि, वाहकक भुगतान आ रोकबाक संकेत लिखलनि। ओ अनुमति केवल एक निरीक्षित स्थानान्तरण धरि रखलीह।

दोपहरिक कने बाद जगदीश झाक पुतोहुकेँ जाँच लेल स्थानान्तरित करबाक आवश्यकता पड़ल। परिवारक अनुमति लैत परिचारिका समझौलक जे रोगीकेँ घुमाउ

बाटसँ जायत; अन्य गामक निजी मेड़ नहि काटल जायत। जगदीश चाहैत छलाह जे गाड़ी सोझे घर धरि पहुँचय। पुतोहु स्वयं कहलनि, “हमरा दवाइ समयपर चाही। जँ जाँचल बाट पैदल स्ट्रेचरसँ सुरक्षित अछि, ओहिसँ लऽ चलू। हमर नामक प्रचार नहि, हमर घरमे खबर देब।” परिवारक एक सदस्य पाछाँ रहल, आन सदस्य साथ गेल। पगडण्डीक फाटल भागपर वाहकसभ थमलाह, हीरा फेर चौड़ाइ देखलक, आ किछु क्षणमे स्ट्रेचर पार पहुँचल। ई एक रोगीक सफल स्थानान्तरण छल; आबाधित स्थायी सड़कक प्रमाण नहि।

तारा स्थानान्तरणक पर्चीमे चारि वाहकक नामसँ पहिने समय लिखौलीह। दू वाहक घाटक मजदूर छलाह, दू अस्पतालक प्रशिक्षित सहायक। घाटपर छुट्टीसँ बोलाओल मजदूरकेँ एक अधिकारी कहलक जे आपदामे पैसा बादमे सोचल जाएत। तारा स्पष्ट कहलनि, “कामक पहिने दर लिखल जायत, आपातकालक दाम घटाओल नहि।” शबनम अपन समितिक तरफसँ दुबारा पुछलीह जे वाहकसभकेँ कम जलस्तरक संकेत बुझाओल गेल की नहि। हीरा स्वयं पटरीक नीचाँ लटकैत लाल कपड़ा देखौलक—ओहि ठाम पानि चढ़तहि लौटबाक चिन्ह छल। मार्गक एक बेर उपयोगक ई तैयारी नियमित परिवहनक अनुमति नहि छल।

ओही समय नगरक गोदामक बाहर औषधिक अलग खेप लेल दोसर गाड़ी अटक गेल। देवव्रतक कार्यालयसँ निरीक्षण-पत्र पहुँचल, मुदा मुहरबन्द दुआर खोलबाक अधिकृत कर्मचारी उपस्थित नहि छल। एक युवा सेवक चाबी-पेटी तोड़बाक प्रस्ताव देलक। अनिरुद्ध ओकरा रोकलनि। “जकर लेबल जाँचमे अछि ओकरा रोगी लग बिना अनुमति नहि पहुँचाएब; जकर स्वीकृति अछि ओकर उपलब्धता रोकलासँ सेहो खतरा अछि।” देवव्रत फोनपर कहलनि जे स्वयं उपस्थित भऽ सीमित निरीक्षणक समय निश्चित करताह। तारा तारीखक सँग ई वाक्य लिखलीह; आश्वासनकेँ खुलल गोदामक दर्जा नहि देलीह।

सायंकालक छोट बैठकमे शबनम पहिल पृष्ठक ‘सर्वसम्मत’ शब्द काटि ‘विवादित प्रस्ताव’ लिखबौलीह। देवव्रत स्वीकार कएलनि जे गोदाम, रोगी, माप, भोजन आ सामुदायिक प्रतिक पाँच विषय अलग जिम्मेदारी माँगैत अछि। रुहानी भोजनक आजुक वास्तविक खर्चक रसीद रखलीह, मुदा काल्हिक रसोइक सामूहिक व्यवस्था लेल अलग मजदूरी-दर माँगलीह। रमा प्रति-नियमक परीक्षणक तिथि लिखलीह। हीरा पगडण्डीक एक

खण्डक अस्थायी सुरक्षित नापपर हस्ताक्षर कएलक, पूरा जलनिकासीक प्रमाणपत्रपर नहि। शबनम कहलनि, “आइ किछु काज भेल। एकरा पूरा सन्धि कहब तँ काल्हुक आपत्ति फेर दबि जाएत।”

नैरा अपन समाचारक पहिल शीर्षक काटलीह। लिखने छलीह—‘पाँच शर्तपर रास्ता खुलल’। फेर ओ लिखलीह—‘एक रोगीक बाट खुलल, पाँच शर्त एखन परीक्षणमे’। सरिता घरसँ अएने छोट भोजन-पात्र नैराकेँ देलीह, मुदा एहिमे कार्यालयक कोनो गुप्त कागद नहि छल। “आजु तू खाइ ले,” ओ कहलीह, “काल्हि जकर सुनवाइ अछि तकरा काल्हि देखिहें।” नैरा दुआरक बाहर ठाढ़ पानि सुनलीह। अस्पतालक एक दीवालसँ रिसैत धार एखनहुँ थामल नहि छल, गोदामक ताला एखनहुँ बन्द छल। दिनक छोट सफलताक सँग असफल रहि गेल काजक आवाजो बराबर सुनाइत छल।

अध्याय ९८ • विभीषणक बाट

प्राचीन लंकाक राजगृहमे विभीषण अपन घरक देहरीपर राखल पानिक घैलक ढकना फेर कसि रहल छलाह। रातिक पहरेदार घैल खोलि पानि पीने छल, मुदा ढकना बिना लगौने छोड़ि गेल छल। छोट बालक नंगे पएर आँगनमे अएल आ पुछलक, “बाबा, आजु हम छतपर सँ समुद्र देखए जा सकैत छी? काल्हि अहाँ कहने रही जे नावसभ दूर धरि देखाइत अछि।” विभीषण ओकरा काखमे नहि उठौलनि; ओहिसँ पहिने घैलक छाँहमे खड़ा कऽ देलनि। “आइ पहराक भीड़ अछि। साँझ जँ सुरक्षित भेल तँ चलब।” बालक फेर पुछलक, “सुरक्षित भेल से के कहत?” एकर उत्तर विभीषण लग तत्काल नहि छल।

घरक भीतर हुनकर पत्नी अन्नक दू माप अलग कऽ रहल छलीह। एक माप घरक लेल, दोसर ओहि परिचारकसभ लेल जिनकर परिवार युद्धक तैयारीमे काम करैत छल। राजकोषसँ देल गेल चाउर तीन दिनसँ घटि रहल छल। पत्नी कहलनि, “जे घर छोड़ि जाएत तकरा राजकोषक हिस्सा नहि भेटत, ई पहरेदार कहैत छल।” विभीषण पुछलनि जे पहरेदार स्वयं आदेश देखलनि की नहि। “ओ सिर्फ सुनलनि,” पत्नी उत्तर देलीह। दुनू बुझैत छलाह जे सुनेल धमकी वास्तविक भय उत्पन्न कऽ सकैत अछि, मुदा ओकर स्रोत ताहिसँ प्रमाणित नहि होइत।

राजसभामे जाएबासँ पहिने विभीषण एक पुरान परिचारककेँ बजौलनि। परिचारक कहलक जे सीताकेँ अशोकवाटिकामे बन्द राखबाक निर्णयसँ सैनिकक घरमे सेहो रोष अछि; मुदा ओ ककरो नाम कहलनि नहि चाहैत छल। विभीषण हुनकासँ नाम माँगब उचित नहि बुझलनि। सीता बलपूर्वक अनल गेलीह—एहि बातपर हुनकर असहमति कोनो गुप्त नामपर आश्रित नहि छल। ओ राजसभामे अपन नामसँ कहबाक निश्चय कएलनि जे एक स्त्रीकेँ ओकर इच्छाक विरुद्ध राखल जाएब राज्यक रक्षा नहि, राज्यक भीतरक अन्याय अछि।

रावणक सभामे घण्टाक ध्वनि थमिते सेनाक तैयारीक बखान शुरू भेल। एक अधिकारी समुद्रक पारक सैनिक-गिनती एहन निश्चित स्वरमे कहलक मानू ओ स्वयं प्रत्येक पंक्ति देखिकऽ आयल हो। विभीषण ओकरा प्रश्न कएलनि, “गिनती कोन दूत लओने अछि?

प्रत्यक्ष गणना अछि कि अनुमान?” अधिकारी चुप भऽ गेल। रावण कहलनि जे शत्रुक सामर्थ्यक चर्चा सभाक साहस घटबैत अछि। विभीषण उत्तर देलनि, “बिनु जाँचक आश्वासन साहस नहि बनबैत। हम युद्धसँ पहिने अन्यायक कारण हटेबाक पक्षमे छी।”

ओ सीताकेँ आदरसहित वापस पठेबाक आग्रह कएलनि। रावण एकरा भ्राताक भय घोषित कएलनि। सभाक कतिपय सदस्य हँसला; किछु लोक अपन दृष्टि झुका लेलनि। विभीषण अपन स्वर ऊँच नहि कएलनि। “हमर भाइ होएब अहाँक निर्णयकेँ सदा उचित नहि बना सकैत अछि,” ओ कहलनि। “राजसिंहासनक अपमान नहि, एही सिंहासनक कारण सभक जीवन जोखिममे पड़ल अछि।” रावण प्रतिवादमे राजकीय अधिकारक बात कएलनि, मुदा सीताक स्वीकृतिक प्रश्नक उत्तर नहि देलनि।

सभाक एक योद्धा विभीषणकेँ शत्रुक पक्षमे खबर पहुँचेनिहार कहलक। एहि आरोपक समर्थनमे ओ कोनो दूत, पत्र वा प्रत्यक्ष भेट प्रस्तुत नहि कऽ सकल। विभीषण प्रश्नक उत्तर देलनि—“हम एहि सभामे, अहाँ सभक सामने असहमति कहि रहल छी। जे गोपनीय छल, ओकर आरोप हमरा विरुद्ध एतए बनाओल जा रहल अछि।” रावण आक्रोशमे राजसभासँ हटबाक आदेश देलनि। विभीषण निर्णयक परिणाम बुझैत छलाह: ओ शस्त्रसँ नहि, वचनसँ अलग भेल छलाह, मुदा राजमहलक पहरा एहि दू भेदकेँ स्वीकार नहि करए सकैत छल।

घर घुरलापर बालक पुछलक जे पिता साँझक समुद्र-दर्शनक बात बिसरि गेलाह की। विभीषण जूता खोलैत कहला, “हम घरसँ दूर जाएब।” बालक घैलक दिस तकलक। “तँ घैल के भरत?” विभीषण पत्नी दिस देखलनि। पत्नी अपन काज नहि रोकलीह। “घैल हम भरब,” ओ कहलीह, “मुदा घरमे ककरा रहबाक अछि, ककरा नहि, से पहिने हमसभ बात कऽ तय करब।” एहि वाक्यमे रोष छल, संगहि अपन अधिकारक आग्रह। विभीषण स्वीकार कएलनि जे हुनकर राजकीय असहमतिक दण्ड परिवारपर स्वतः थोपल नहि जा सकैत अछि।

ओ एकटा कपड़ाक गठरी खोलि घरक लिखित देय आ सेवकसभक रहल वेतनक पन्ना अलग कएलनि। पत्नी कहलनि, “ई कागद अहाँ संग लऽ गेलहुँ तँ एतए जे लोक अपन मेहनताना माँगत, ओकर प्रमाण के देखाओत?” विभीषण मूल बही घरहि छोड़लनि।

साथमे केवल अपन यात्राक आवश्यकता आ परिवारक सुरक्षा-सम्बन्धी दूत-पत्र लेलनि। ओ पत्नीकेँ ओहिसँ बेसी वचन नहि देलनि जे हुनकर अधिकारमे छल; विरोध करबाक निर्णय हुनकर छल, परिवारक सुरक्षाक पूरा नियन्त्रण हुनकर नहि।

राजमहलक पाछाँक छोट दरवज्जापर एक पहरेदार हुनकर बाट रोकलक। बालपनसँ ओ विभीषणकेँ जनैत छल, मुदा एखन ओहि युवकक कर्तव्य बदलि गेल छल। “हमरा आदेश अछि जे अहाँक संग कियो राजभण्डारक चिह्नित सामान नहि जाए,” ओ कहलक। विभीषण अपन खाली हथेली देखौलनि। संगक एक वृद्ध दूत आग्रह केलक जे राजवंशक छाप लऽ चलला पर दोसर तटपर प्रतिष्ठा भेटत। विभीषण छाप दरवज्जापर छोड़लनि। “प्रतिष्ठा जे कागद लूटि कऽ बनत, ओ भरोसा नहि देत,” ओ कहला। पहरेदार ओहि बेर दुआर खोललक, मुदा विदाक समय आँखि नहि उठौलक।

समुद्रक किनारपर पहुँचि ते हुनकर संगक अल्पसंख्यक साथीसभ आगाँ बढ़ए चाहल। दूजना कहलनि जे परक शिविरमे गेलापर हुनका सभकेँ अवश्य शत्रु बुझल जाएत। विभीषण कहला, “ओहि शिविरसँ स्वीकारोक्ति पहिने नहि भेटल अछि। हम शरण माँगब; जे निर्णय होएत, ओकर उत्तर सुनब।” अपन पक्ष छोड़बाक कारण ओ खुला कएलनि, मुदा लंकाक सामान्य घरसभक गुप्त बाट वा बन्दी सेवकक नाम सौदा करबाक वस्तु नहि बनौलनि। सहचरसभकेँ सेहो कहलनि जे अपनी रक्षा लेल निर्दोष लोकक जानकारी नहि बेचथि।

समुद्रक दोसर कात रामक शिविरमे हुनकर आगमनपर सैनिकसभ शस्त्र सम्हारलनि। सुग्रीव आ किछु अन्य सेनानायक असमंजसमे पड़ल। रावणक भाइ अचानक अपन सहचरसभसहित आबि जाए—एकरा बिना जाँच भरोसाक आधार बनाओल नहि जा सकैत छल। पहरेदार हुनका दूर रुकबाक कहलक। विभीषण ओतहि रुकलाह आ अपना आवबाक कारण बतौलनि। ओ कहलनि जे भ्राताक अधर्मक विरोध कएने छथि, आब आश्रय चाहैत छथि; से सुनल रहबाक बात मात्र छल, हुनकर आन्तरिक नीयतक प्रमाण नहि।

राम अपन सहचरसभक आपत्ति ध्यानसँ सुनलनि। एक कहलक जे एहि आगन्तुककेँ भितर आनलासँ शिविरक योजना खुलि सकैत अछि। दोसर कहलनि जे ओकरा घुराएब

संकटमे पड़ल व्यक्ति क प्राणक जोखिम बढ़ा सकैत अछि। राम आगन्तुककें शरण देबाक पक्षमे निर्णय कएलनि। ओ स्पष्ट कएलनि जे प्राणरक्षाक आश्रय निष्ठाक परीक्षा पूरा होएब धरि रोकल नहि जाएत; मुदा सेनाक अन्तरंग योजना, रात्रिक पहरा आ ककरो गुप्त जिम्मेवारी तक पहुँच एके बात नहि अछि। शरण आ सैनिक अधिकार दू पृथक विषय रहल।

विभीषण निहुरि कहलनि जे हुनका संग आएल लोकक भोजन आ विश्राम लेल जे नियम सभपर लागू अछि, से ओहो मानताह। राम पुछलनि, “सीता कतय छथि—जे अहाँ स्वयं देखलहुँ, ताहि सीमा धरि कहू।” विभीषण राजगृहमे सुनेल बात आ अपन प्रत्यक्ष जानकारी अलग-अलग रखलनि। एक पहरेदार जल्दीमे लंकाक सभ गुप्त द्वारक नक्शा माँगलक; राम ओकरा रोकलनि। विभीषणक शरण-सुरक्षा लंकाक सामान्य परिवारक संकट बढ़ेबाक दामपर नहि भेटय, ई सीमा ओतहि तय भेल।

राति शिविरमे पहिल भोजनक समय विभीषण अपन बालकक प्रश्न याद कएलनि— घैल के भरत। दूर लंकाक आगिक लौ आ शस्त्रक तैयारी समुद्रक अन्हारमे काँपैत छल। हुनकर नव आश्रय घरक श्रम, पत्नी आ बच्चाक भय समाप्त नहि कएने छल। संगक एक युवक पुछलक, “राजन, अपन लोक छोड़ि देलहुँ, आब ककर लोक छी?” विभीषण कहलनि, “हम जे गलत देखल, ओकर समर्थन नहि कएलहुँ। मुदा एहि निर्णयसँ पुरान लोकक प्रति हमर ऋण मेटाइत नहि अछि।” ओ भोजनक पहिल ग्रास लेलनि। एहि क्षणमे किछु जीतल नहि छल; जीवनक एक कठिन राह चुनल गेल छल।

आधुनिक विदेहपुर, २०३९। अस्पतालक पाछाँक फाटकपर ठाढ़ तुलसी तजपुरिया अपन मालवाहक गाड़ीक अगिला चक्का घुमा कऽ नापि रहल छलाह। जखन चालकसभक हड़तालक सूचना पहुँचल, ओहि दिनक दू औषधि-खेप आ एक रोगीकें दोसर उपचार-केन्द्र पहुँचएबाक तय समय बेकार होएबाक आशंका छल। गाड़ीक छतपर लपेटल तारपोलिन रातुक बरखाके भीजि गेल छल। तुलसी पहिने टायरमे हवा देखलनि; एतेक दूर जेबाक लेल गाड़ी ठीक रहब जरूरी छल, केवल चालकक सहमति पर्याप्त नहि।

हड़तालक निर्णय वाहन-मालिकक एकतरफा आदेश नहि छल। चालकसभ पछिला तीन मासक जोखिम-भत्ता, रातिक फेराक भुगतान आ खराब पुलियापर दुर्घटनाक बाद

मरम्मतिक बोझ चालकपर डारबाक विरोधमे काम रोकने छलाह। एक नव चालक, जमीर, हाथमे कागद लऽ ठाढ़ छल। “रोगीक नामपर सभ गाड़ी फेर चला देब तँ मालिक काल्हि कहत जे हड़ताल कहिएक?” तुलसी ओकर बात बीचमे नहि काटलनि। “हमरा सभक माँग वैध राखबाक अछि,” ओ कहलनि, “आ अस्पतालक जरूरी रास्ता सेहो। दुनूकें लिखि कऽ अलग करब।”

अनिरुद्ध अस्पतालसँ निकलि बतौलनि जे जगदीश झाक पुतोहुक पहिल स्थानान्तरण पूरा भेल छल, मुदा ओकर बादक जाँच लेल दू आन रोगीकें समयपर लऽ जाएब जरूरी भऽ सकैत अछि। ओ कोनो नाम सार्वजनिक रूपेँ नहि कहलनि। एक रोगीकें विशेष निगरानीक आवश्यकता छल, दोसर लेल सामान्य परिवहन उपलब्ध होएबाक सम्भावना छल। तुलसी स्पष्ट पुछलनि, “चिकित्सक जिनका अनिवार्य कहताह, हुनक सूची अलग हो। हमरा सभ रोगी-गाड़ीक छद्मनामपर गोदामक माल नहि ढोएब।” अनिरुद्ध सहमति देलनि जे आपात निर्देश चिकित्सकीय पर्चीपर लिखल जाएत, प्रचार लेल नहि।

हीरा सहनी आ तारा पानि-निकासीक दू नक्शा लऽ फाटकपर पहुँचलाह। हीरा गेल रातिक माप-डण्डामे लागल माटि देखौलनि। “एहि पुलियाक नीचाँ गाड़ी जाएत, मुदा एखनहु जलक बहाव नापल नहि गेल। भीजल पाटपर भार बढ़ाओल खतरा अछि।” तारा कहलनि जे निजी मेड़क घुमाउ बाटे जेबाक पुरान प्रस्ताव रमेशक परिवारक सहमति बिना लागू नहि भऽ सकैत अछि। पिछिला बैठकमे केवल सूचना देबाक पर्ची लिखल गेल छल; सूचना अनुमति नहि छल। तुलसी नक्शाक किनारपर लाल निशान लगौलनि, मुदा ओकरा सरकारी स्वीकृति मानल नहि गेल।

चालकसभक बैठक पानि उतरैत चबूतरापर शुरू भेल। दहिना कात अस्पतालक स्त्री-परिचारिका, बीचमे जमीर आ तुलसी, बाँमा कात रमेशक पत्नी अपन मेड़पर पानिक नब चिन्ह देखबैत ठाढ़ छलीह। परिवहन ठेकेदारक प्रतिनिधि कहलनि, “आजु रोगी लेल अपवाद बनल तँ कल्हि सभ मालक लेल बनत।” तुलसी उत्तर देलनि, “आब एहि वाक्यकें लिखि दिअ जे अपवादक सीमा अहाँ नहि बढ़ाएब।” प्रतिनिधि चुप भेला, कारण लिखित बन्धन एकतर्फी सुविधा नहि दैत छल।

रमेशक पत्नी अपन खेतमे बीहनक पोला राखने छलीह। ओ कहलीह, “हम रातिमे घामक बाट नहि देखैत छी। कोनो गाड़ी एतय चढ़ल तँ बीहनक मेड़ बहि जाएत। हमर सहमति बिना रोगीक नामपर जमीन खोलल गेल तँ क्षति हम देब।” अनिरुद्ध हुनका पुछलनि जे सुरक्षित घुमाउ बाटक मापमे उपस्थित रहबाक अनुमति देतीह की। ओ मानलीह—“माप हो, प्रवेश नहि; प्रवेशक प्रश्न फेर हमरा सँ पुछल जाए।” तारा लिखित कएलनि जे माप देखेबाक अनुमति, भूमि उपयोगक सहमति नहि।

एतहि एक चालकनी पारो अपन ड्यूटीक पुरान पन्ना खोलि रखलीह। हुनका दू बेर रातिमे घायल लोक लऽ जेबाक काज भेटल छल, मुदा अतिरिक्त भुगतान मालवाहकक खातामे लिखल गेल। “हम आपात फेरासँ नहि डरैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा हमर हस्ताक्षरकेँ स्वैच्छिक सेवा कहि देल जाए, तखन घरक राशनक हिसाब बिगड़ैत अछि।” जमीर हुनकर पर्चीक तिथि पढ़लक; ठेकेदारक प्रतिनिधि ओहि दिनक मूल उपस्थिति-पंजी आनबाक वचन देलक। पारो कहलनि जे जँ गाड़ी उपयुक्त भेल आ भुगतान लिखित रहल तँ ओ परीक्षण-फेरामे सम्मिलित होतीह, मुदा पहिने पंजीक नकल चाही।

गाड़ीक जाँचमे इरफान खान बतौलनि जे तुलसीक पिछला ब्रेकमे हल्का दोष अछि। “एखन कम गतिसँ अस्पताल धरि आबि सकैत अछि, मुदा दूरक यात्रा पहिले पुर्जा बदलू,” ओ कहलनि। तुलसी आ जमीर एक दोसराकेँ देखलनि। हड़तालक बीच जोखिमपूर्ण गाड़ी दौड़ाएब त्यागक कथा बनि सकैत छल, मुदा रोगीक सुरक्षा नहि। इरफान उपलब्ध स्वस्थ गाड़ीक सूची देखबैत एक आन चालकक छोट वाहनक सुझाव देलनि। ओकरा स्ट्रेचरक उपयुक्तता प्रशिक्षित कर्मचारी देखताह, मरम्मतिक अनुमानकेँ चिकित्सा-अनुमति नहि मानल जाएत।

सामुदायिक रसोइक प्रभारी रुहानी दू पातर रोटी आ गरम दालक पात्र लऽ आयलीह। हड़तालक सभामे लोक बिहानसँ बैसल छल, आ परिचारिकासभक ड्यूटी बदलबाक समय भऽ गेल छल। ओ भोजन देबासँ पहिने कहलनि, “एहि रसोइक खर्च स्वैच्छिक दानसँ चलैत अछि, मुदा रान्हनिहार स्त्रीसभक मजदूरी अलग लिखल जाएत।” एक प्रतिनिधि हाँसि कहलनि जे आपदामे एतेक हिसाब उचित नहि। रुहानी ओकर थारी रखैत उत्तर

देलीह, “आतुर लोकक भूख हमर हिसाब नहि मेटबैत।” कियो भोजन छोड़ल नहि; रसीदक किताब सेहो मेजपर रहल।

शबनम बैठकमे पहिल असफल सन्धिक कागदक नकल लऽ अएलीह। ओ पढ़ि सुनौलीह जे पाँच प्रश्न—रोगी-यातायात, निकासी, गोदामक पहुँच, भोजनक श्रम आ सार्वजनिक अभिलेख—एखनहूँ अलग-अलग परीक्षणमे अछि। देवव्रतक कार्यालयसँ अएल सहायक एहि हड़ताल-अपवादकेँ ‘दोसर समझौता’क पूर्वघोषणा बनए चाहलक। शबनम कहलनि, “एक दिनक रोगी-सेवाक रास्ता खुललासँ गोदामक सील नहि खुलैत, पानिक नालो नहि सुधरैत। सहमत वस्तुकेँ ओतहि लिखू जतेक सही अछि।” रमा कर्ण सार्वजनिक प्रतिमे एही सीमाक शब्द जोड़लीह।

तुलसी तीन शर्त लिखबौलनि। पहिल, केवल चिकित्सकक प्रमाणित आपात स्थानान्तरण आ चिन्हित जीवनरक्षक सामग्री, रोकेल अथवा लेबल-जाँचवाली खेप नहि। दोसर, प्रत्येक चालकक स्वतंत्र सहमति, सुरक्षा-जाँच, सामान्य भाड़ा आ जोखिम-भत्ताक लिखित भुगतान; एहि फेराक कारण हड़तालक मूल माँग वापस नहि मानल जाए। तेसर, उपलब्ध सार्वजनिक बाट नहि रहलासँ कोनो निजी जमीन उपयोग करबाक आवश्यकता पड़ल तँ सम्बन्धित व्यक्तिक स्पष्ट अनुमति पहिने ली जाए। जमीर कहलनि, “आ समय?” तुलसी जोड़लनि—“काल्हि भोर छहसँ दुपहर बारह धरि परीक्षण; तकर बाद फेर बैठक।”

ठेकेदार कहलक जे जोखिम-भत्ताक दर एखन तय नहि भेल अछि। जमीर अपन पुरान वेतन-पर्ची निकाललक। “काल्हि भोरक फेराक लेल पुरान लिखित दर लागू हो, विवादित महीनाक बकाया अलग मुकदमे रहय,” ओ प्रस्ताव रखलक। ठेकेदार हिसाब देखिकऽ मानलक जे निर्धारित अपवादमे भुगतानक लिखित वचन देब आवश्यक अछि। तुलसी नामक क्रमसँ पहिने प्रत्येक चालकसँ अलग पुछलनि—“अहाँ राजी छी?” दू चालक मना कएलनि; हुनकरा सभकेँ सूचीसँ हटा देल गेल। तीन चालक शर्तपर सहमत भेला। संख्या घटल, मुदा सहमतिक अर्थ स्पष्ट भेल।

अस्पतालक भीतर परिचारिका एक वृद्ध रोगीक बेटीकेँ प्रक्रिया बुझा रहल छलीह। बेटी कहलनि, “एतेक बैठक चलत तँ बाबूजीक साँसक समय के रोकत?” अनिरुद्ध हुनका

बतौलनि जे चिकित्सक रोगीक दशा अनुसार स्थानान्तरणक समय तय करताह; जँ एतहि उपचार अधिक सुरक्षित अछि, तँ गाड़ी उपलब्ध रहब मात्रसँ रोगी नहि पठाओल जाएत। बेटी अस्पतालक एक कोठरीमे पैसि पिता हाथ पकड़लीह। बाहरक हड़ताल हुनकर चिन्तासँ छोट नहि छल, मुदा हुनका अपन पिता लेल सही जानकारी एखन भेटि रहल छल।

गोदामक कात देवव्रतक कार्यालयक प्रतिनिधि औषधिक दू सूची लऽ आयल। पहिलमे निरीक्षण पूरा भेल स्वीकृत सामग्री छल; दोसर पर असमान लेबलक जाँच अबहियो जारी छल। ओ दुनूकेँ एके आपदा-पर्चीमे मिलाएब चाहलक। अनिरुद्ध पहिल सूचीपर सीमित उपलब्धता लिखलनि आ दोसराकेँ पुनः सीलबन्द राखबाक आदेशक नकल माँगलनि। नैरा ई भेद देखिकऽ किछु फोटो लेलनि, मुदा रोगीक नाम आ चालकक निजी फोन नम्बर कैमरामे नहि आनलीह। शबनम कहलनि जे औषधिक सूचीसँ महेशक हत्या-जाँचक दोषारोपण नहि जोड़ब।

दुपहर ढललापर तारा, हीरा आ रमेशक पत्नी अस्पतालसँ उतरैत सार्वजनिक मोड़ धरि पैदल गेलाह। एक ठाम कचरा हटेलासँ पानि अल्पकाल लेल बहए लागल, मुदा मुख्य नालीक फाटल देवाल अबहियो जल रोकने छल। हीरा मापक डण्डा खड़ा कएलनि; पहिने आ पछिक दू चिन्ह दर्ज भेल। तारा कहलीह, “आजुक सफाई सँ गाड़ी-पथक एक कोना सुरक्षित भेल; पूरा निकासीक काम नहि।” रमेशक पत्नी मेड़पर ठाढ़ अपन बीहन देखलीह। एकटा छोट जलधार ओकरा दिस मुड़ि रहल छल, तें ओ तात्कालिक बाँसक पाट ठीक करबाक लेल मजदूरक दाम स्वयं तय कएलनि, जकर आधा भुगतान जन-निकासी मदसँ स्वीकार होएबाक लिखित आश्वासन भेटल।

दोपहरिक छोट परीक्षणमे अस्पतालक पहरेदार गाड़ीक फाटकपर ‘सहमति’ लिखल कागद टाँगए चाहलक। रमा ओकरा रोकलीह। ओहिमे कोनो चालकक नाम नहि छल, नहि अस्पतालक जिम्मेवारक हस्ताक्षर। “ई सूचना थिक, समझौता नहि,” ओ कहलीह। पारो अपन प्राप्ति-पर्चीक नकल लऽ आयलीह; ओकर बकाया पिछिला महिनाक सूचीमे अलग चढ़ल छल, आ नव परीक्षण-फेराक भाड़ा अलग मदमे लिखल गेल। ओ तखन ड्यूटी लेल

अपन नाम देलीह। एकटा कर्मचारी खुशीसँ कहलक, “आब समस्या समाप्त।” पारो उत्तर देलीह, “आजुक गाड़ीक समय भेटल अछि। तीन महिनाक मजदूरी एखन नहि।”

सायंकाल हड़तालक चबूतरापर तुलसी फेर अएला। तीन सहमत चालकमे सँ एकक गाड़ी चिकित्सकीय मापमे स्ट्रेचर लेल अनुपयुक्त निकलल। ओहि चालककेँ बिना दण्ड फेराक सूचीसँ हटा देल गेल। आन दू गाड़ी लेल चालक, परिचारिका आ दायित्ववान अधिकारीक नाम अलग-अलग दर्ज भेल। जमीर कहलनि, “दू गाड़ी काफी नहि।” तुलसी उत्तर देलनि, “पर्याप्त नहि होएब सत्य अछि। मुदा खराब गाड़ीकेँ तेसर मानि लिखला सँ संख्या बढ़त, सुरक्षा नहि।” सभामे ई बातपर कियो ताली नहि बजौलक; मात्र सूची फेर लिखल गेल।

नैरा रिपोर्ट लिखबाक समय शल्यक पुरान कथा, विभीषणक शरण आ वर्तमान चालकक हड़तालकेँ एके घटना बनएबासँ बचलीह। प्राचीन निर्णयसभक कियो प्रत्यक्ष साक्षी एहि नगरमे नहि छल। वर्तमान लेल हुनका लग लिखित दर, गाड़ी-जाँचक पर्ची, मापक चिन्ह आ सहमतिक हस्ताक्षर छल। हुनकर पहिल शीर्षक बनल—“हड़ताल टूटल, रोगीक बाट खुलल”। ओ ‘हड़ताल टूटल’ काटि देलीह। नव शीर्षक छल—“हड़ताल कायम, रोगी लेल सीमित बाट”।

रातिमे तुलसी घर पहुँचलाह तँ हुनकर छोट बेटी धुलल बरतन उलटि सुखा रहल छलीह। ओ पुछलक, “बाबा, अहाँ काल्हि अस्पताल जएब कि चालकसभ संग बैसब?” तुलसी कहलनि, “भोरमे गाड़ी देखब, फेर दुनूक बैठक अछि।” बेटी पुछलक जे तखन ओकर विद्यालयक टुटल छाता कियो सिआएत। तुलसी छाता हाथमे लेलनि। तारक एकटा छोर उघड़ि गेल छल; ओ पतल धागा आनब कहि छतपर बैसलाह। घरक काज कोनो सार्वजनिक सन्धिक प्रतीक्षा नहि करैत छल।

अगिला भोरक सूची फाटकपर टाँगल गेल—दू परीक्षणयोग्य गाड़ी, निर्धारित चालक, रोगी-सेवाक समय-सीमा, भुगतानक लिखित दायित्व आ निजी भूमिमे प्रवेश निषिद्ध। चालकसभक हड़तालक मूल माँगक अगिला सुनवाइ अलग तिथिपर तय भेल। अस्पतालक चक्का बदलबाक पूरा खर्च स्वीकृत नहि छल; मुख्य जलनिकासी अबहियो बन्द छल; गोदामक जाँच-सील सेहो हटाओल नहि गेल। मुदा पहिल बेर परिचारिका जखन

जरूरी गाड़ीक समय पुछलीह, हुनका अनुमान नहि, हस्ताक्षर कएल वास्तविक उपलब्धता भेटल। तुलसी गाड़ीक बोनट बन्द कएलनि आ अगिला काम लेल अपन हाथ धोए गेलाह।

अध्याय ९९ • कुम्भकर्णक जागब

लंकाक पश्चिमी प्राचीरक भीतर जे विशाल कक्ष कुम्भकर्णक निद्राक लेल राखल गेल छल, ओकर दुआरपर भोरसँ पहिने तेलक घड़ा आनल जा रहल छल। एक वृद्ध परिचारिका अपन अँगुरीपर पड़ल फोका देखैत नव आएल सैनिकसँ कहलक जे मशालक धुआँ भीतर बहुत बढ़ि गेल अछि। वृद्धा स्वयं मशाल बुझा देलीह। “जगएबाक लेल साँस सेहो बचल रहबाक चाही,” ओ कहलीह। दुआर खुलबाक प्रतीक्षा करैत लोकक चेहरापर युद्धक थकान छल, उत्सवक उतावली नहि।

कक्षमे निद्रा टूटबाक पहिल संकेत गर्जन नहि, खाँसी छल। कुम्भकर्ण करवट बदललनि तँ बिछाओनक एक कात राखल धातुक पात्र खसि गेल। जलक आवाज सुनि ओ आँखि खोललनि आ बहुत देर धरि परिचारकसभकेँ चिन्हबाक प्रयत्न करैत रहलाह। “दिन कोन अछि?” हुनका लग ठाढ़ वृद्ध परिचारक कहलनि जे नगरक बाहरी चौकीक स्थिति बिगड़ि रहल अछि आ महाराज तत्काल उपस्थिति चाहैत छथि। कुम्भकर्ण फेर पुछलनि, “हम कतेक दिन सुतल रही से नहि, एहि बीच की भेल?” ओ उठि बैसलाह। “आ जे घरक लोक छथि? हुनका सभक समाचार के देत?”

जखन हुनका पानि देल गेल तँ ओ देखलनि जे घैल आधा खाली अछि, आ भीतर काज करनिहार दू युवक थरथरा रहल छथि। कुम्भकर्ण ओहि सैनिककेँ उठबाक लेल कहला नहि; भोजन-पात्र दिस इशारा कएलनि। वृद्धा कहलीह जे तीन दिनसँ जागरणक तैयारीमे लगल लोककेँ रातुक विश्राम नहि भेटल। कुम्भकर्ण भातक पातर थारी अपनासँ हटाइ देलनि। “पहिने ओ सभ खएत जे हमरा जगओलक,” कहलनि। पहरेंदार आश्चर्यसँ तकलक। निद्रामे पड़ल एक देहकेँ युद्धक औजार बनएबाक हेतु जे लोक अपन नींद गमौने छल, हुनकर थकान दरबारक गिनतीमे नहि छल।

रावणक दूत कहलक जे विभीषण राजघराना छोड़ि रामक शिविरमे जा मिललाह। कुम्भकर्णक चेहरा किछु काल स्थिर रहल। “ओ कोन बातपर गेल?” दूत कहलनि, “भ्रातृद्रोह।” कुम्भकर्ण उत्तर स्वीकार नहि कएलनि। ओ सीताक बन्दी होएब, रावणक सभामे विवाद आ समुद्रक दोसर तटपर सेनाक जमघटक अलग-अलग समाचार पुछलनि।

दूत कतिपय बात राजसभामे स्वयं सुनने छल, कतिपय पहरेदारक मुँहसँ। कुम्भकर्ण ओकर बताओल बातक बीच जे ठाम अनुमान छल से चिन्हलनि; मुदा विभीषणक प्रस्थान सुनिते हुनका अपना पुरान मतभेद याद पड़ल। भाइ अपन असहमति राजसभामे कहबाक साहस कएलन्हि, से हुनका असम्भव नहि लगल।

राजगृह धरि जे गलियारा जा रहल छल, ओकरा दू ठाम नुतन काठसँ सहारा देल गेल छल। एक ठाम मलबाक छोट ढेरी लग पाँच बालक पत्थरक गोल टुकड़ा बटोरि रहल छल। सैनिक हुनका सभकेँ हटए कहलक, मुदा एक बालिका उत्तर देलक जे ओकर माय पहिल पहरमे एतहि काज करैत छथि आ ओ हुनकर पथरायल चप्पल तकैत अछि। कुम्भकर्ण बालिकाकेँ एक ओर कऽ ओकर नाम पुछलनि। ओ कहलक, “नामसँ चप्पल भेटत?” चप्पल नहि भेटल। ओ पहरेदारकेँ मलबा हटेबाक सुरक्षित काज देलनि; बालिकाकेँ भरोसाक पक्का वचन नहि देलनि।

मन्दोदरी हुनका राजसभाक बाहर भेटलीह। राजकीय आभूषणक बदला हुनकर हाथमे सूतसँ बान्हल छोट सूची छल—कोन घरमे घायल छथि, कतय अन्नक आपूर्ति अटकल अछि, कोन परिचारिका अपने बच्चाकेँ छोड़ि घुमैत अछि। “महाराज अहाँक सामर्थ्य चाहैत छथि,” ओ कहलीह, “मुदा युद्धमे घरक लोकक देह सेहो रहैत अछि।” कुम्भकर्ण सूची पढ़बाक लेल ठहरलनि। मन्दोदरी कहलनि जे सूची अपूर्ण अछि; जकर घर पहुँचब बन्द भऽ गेल अछि, ओकर सूचना नहि पहुँचल। कुम्भकर्णक उत्तर छल, “अहाँ जे कहलहुँ से हमर निद्रामे नहि गुम भेल।” मुदा हुनकर आगाँक चुनाव सूची पढ़लाक बादो सरल नहि भेल।

रावण सिंहासनक पाछाँ धरि चलि गेल छलाह, मानू भाइकेँ बैसिकऽ नहि, ठाढ़ होइए सुनब चाहैत होथि। “नगर संकटमे अछि,” ओ कहलनि, “आ तू भोजन आ विश्रामक प्रश्न कऽ रहल छह?” कुम्भकर्ण कहलनि, “संकटमे लोकक भोजन बन्द करबासँ शत्रु कम नहि होइत।” रावणक दृष्टि कठोर भेल। ओ विभीषणक नाम एहन ढंगसँ लेलनि मानू एक असहमति पूरा राजवंशपर आक्रमण थिक। कुम्भकर्ण उत्तर देलनि, “भाइक बात गलत हो तँ विरोध करू; मुदा ओ कोन बात कहलनि, से पहिने सुनू।” रावण चुप रहलाह। बाहर युद्धक शंख बाजल, मुदा ओ आवाज हुनका सभक बीचक मौनकेँ नहि भरि सकल।

रावण कहलनि जे सीता लंकाक मानक प्रश्न बनि गेलीह; घुरए देलासँ कायरताक घोषणा होएत। कुम्भकर्णक मनमे एक पुरान राजकीय भोजक दृश्य उठल—ओहि दिन एक सेवक भोजनक पात्र तोड़ने छल आ भयमे अपन दोष छिपबए चाहने छल। कुम्भकर्ण ओकरा सच कहबाक लेल दण्डसँ बचौने छलाह। एखन ओ रावणकेँ कहलनि, “जे कार्य अन्यायसँ शुरू भेल ओकरा मान कहि राखि छोड़ब कठिन अछि। कठिन होएब उचित होएबाक प्रमाण नहि।” रावण भाइकेँ याद दिऔलनि जे संकट एखन द्वारपर अछि, उपदेश बादमे सेहो देल जा सकैत अछि।

कुम्भकर्ण एक क्षण लेल भाइसँ नजर फेरलनि। ओ पूछलनि, “जँ हम युद्ध नहि करी तँ अपन नगरक कमजोर लोकक रक्षा के करत?” रावण उत्तरमे सैनिकसभक शपथक बात कहलनि। “आ जँ अहाँक आदेश स्वयं युद्धकेँ एतय अनलक?” कुम्भकर्ण फेर पुछलनि। एहि प्रश्नपर रावण क्रुद्ध भेला। ओ कुम्भकर्णकेँ निष्कासनक धमकी नहि देलनि; कहलनि जे युद्धक पहिल पाँतिमे हुनका रहबाक अछि। क्षणभर हुनका विभीषणक समुद्र पार करबाक बाट मन पड़ल। मुदा ओ अपन निर्णय स्वयं करबाक कष्टसँ बचबाक लेल विभीषणक बाट उधार नहि लेबाक निश्चय कएलनि।

ओ स्पष्ट कहलनि, “सीताकेँ बिनु सहमतिक राखब अनुचित छल आ अछि। एहि कारणसँ शुरू भेल युद्धकेँ हम धर्मक युद्ध नहि कहब। मुदा नगरक रक्षकसभक संग हम चलब। घायल, शस्त्र छोड़ने लोक आ घरमे छिपल परिवारपर प्रहारक आदेश हम नहि देब। जकरा बचा सकब तकरा बचाएब।” रावण कहला जे रणभूमिमे एहन भेद याद रखबाक अवकाश नहि होइत। “तखन निर्णयक भार आरो भारी अछि,” कुम्भकर्ण उत्तर देलनि। ओ बुझैत छलाह जे अपन प्रतिबन्ध कहि देबासँ युद्धक वास्तविक हिंसा थामल नहि जाएत; सेनाक बीच हुनकर उपस्थितियो ओहि अभियानकेँ बल देत जकर कारणकेँ ओ गलत मानने छथि।

सभासँ निकलैत ओ एक युवा सेनानायककेँ भेटलाह जे हुनका लेल आक्रमणक बाट चुनने छल। नक्शापर एक छोट गामक चिन्ह केँ मेटि सैनिक-दल पार करबाक तीर बनाओल गेल छल। कुम्भकर्ण पुछलनि, “एहि चिन्हक भीतर लोक रहैत अछि की खाली घर?” सेनानायक कहलक जे गामक आधा लोक पलायन कऽ गेल अछि। आधा लोकक

प्रश्नपर ओकरा जानकारी नहि छल। कुम्भकर्ण मेटल चिन्ह फेर खींचलनि। “पहिने दूत पठाउ। लोकक अनुपस्थितिक अनुमानपर गामकें शून्य नहि मानू।” कुम्भकर्ण कहलनि, “तकर मूल्य हम सुनि रहल छी। मुदा जे नहि जानैत छी से जानल मानि काज नहि करब।”

सैनिक शिविरमे एक घायलक घुटनाक पट्टी ढील भेल छल। कुम्भकर्ण परिचारककें हाथ रोकबाक कहलनि। “जखन तक वैद्य नहि आबथि, कपड़ा केवल ढाँकू,” ओ कहलनि। पहिलुका भोजसँ बचल अन्न ओतय पहुँचल छल, मुदा भोजन पहुँचेनिहार स्त्री पुछलीह जे मृत सैनिकक परिवारक हिस्सा ककरा देल जाए। कमाण्डर कहलक, “युद्धक बाद गनब।” स्त्री उत्तर देलीह, “काल्हि घरमे खाएब आजुक प्रश्न अछि।” कुम्भकर्ण एक भरोसायोग्य अधिकारीकें वास्तविक परिवार-गणना करबाक कहलनि; सैनिकक मृत्युक पूरा हिसाब लेल भोरक प्रतीक्षा उचित नहि छल।

राति ढलैत लंकाक फाटकपर युद्ध-रथक चक्का जाँचल जा रहल छल। कुम्भकर्ण अपन हथियार लेलनि। परिचारिका, जे भोरमे मशाल बुझौने छलीह, पानि लऽ अएलीह। ओ कहलनि, “अहाँ जागि गेलहुँ; हमसभ आब सुति सकब?” कुम्भकर्ण उत्तर देलनि जे पहराक अगिला टोली बदलल जा रहल अछि। वृद्धा तखन पुछलीह, “आ अहाँ?” ओ थोड़ेक देर धरि उत्तर नहि देलनि। “हम गलत कारणसँ उठल एहि युद्धमे जाइत छी,” कहलनि, “आब हमरा अपन करबाक काजक दायित्वसँ मुँह नहि फेरबाक अछि।” हुनकर चलि जाएब निर्णय छल, निर्दोषताक प्रमाण नहि।

विदेहपुर, २०३९। अस्पतालक पाछाँक गल्लीमे भोरक पानि एक पटरीक नीचाँ जमा भेल छल। कमलेश दबगर छप्परक कोनापर अटकल पानी झाड़ू सँ नीचे खसा रहल छलाह, आ हुनकर छोट दोकानक भीतर टुटल घैलक कान जोड़बाक लोहाक पात, राँपी आ सूत अलग-अलग टाँगल छल। ओतहि मकान-मालिकक आदमी लाल पेंसिलसँ लिखल नव किरायाक पर्ची धकेलि गेल। एहिमे तेसर माससँ बढ़ल रकम देबाक अथवा सात दिनमे किवाड़ खाली करबाक शर्त छल। कमलेश ओकरा पर अपन सही नहि कएलनि।

पिछिला बरखाक माटिस्थल-विवादमे कमलेश किराया आ ग्राहकक बकाया अलग खाता बनौने छलाह। एखन हुनकर घरमे दू बच्चाक विद्यालयक फीस आ वृद्ध मायक औषधि एकहि सन्दूकमे राखल मुद्रा पर निर्भर छल। शबनम लग सामुदायिक मंचक बैठक तय छल, मुदा अपन ग्राहकक नाम-ठाम सार्वजनिक कएलासँ हुनकर भरोसा टूटत। कमलेश दू पन्ना अलग कएलनि—एकमे माप, किराया, मरम्मत-कक्ष आ भुक्तानी; दोसरमे ग्राहकक निजी वस्तुक विवरण। सार्वजनिक बैठक लेल पहिल पन्ना चुनलनि।

अस्पतालमे देवी गोंड प्रशिक्षणक पंजी देखबाक लेल निर्धारित समयसँ आधा घड़ी पहिने पहुँचल छलीह। तैनातीसूचीमे हुनकर पहिल दिनक सामग्री-गणना आ सलमाक देखरेखमे कएल काज दर्ज छल, मुदा एहि सप्ताहक तीन पहरक सम्मुख ‘अनुपस्थित’ लिखल छल। देवी ओहि दिनसभक बस-भाड़ाक पर्ची, प्रशिक्षण केन्द्रक उपस्थितिक प्रति आ अस्पतालक सामग्री-प्राप्ति नम्बर लऽ अएलीह। कार्यालयक एक सहायक कहलक जे परिवारमे माय अस्वस्थ छथि, तँ देवीक पढ़ाई छोड़ि घर रहब उचित। देवी पुछलीह, “मायक उपचारक निर्णय कोन चिकित्सक कएलनि, आ हमर प्रशिक्षण बन्द करबाक आदेश कोन पंजीमे अछि?” सहायक पहिल प्रश्नक उत्तर देबाक योग्य नहि छल, दोसर प्रश्नक कागद ओकरा लग नहि छल।

देवी घरसँ निकलैत मायक संग राति भरक बात फेर सोचलीह। मायक दहिना पएरमे पुरान दुखाइ बढ़ल छल; आब चुल्हि धरि पैदल चलब कठिन भेल। देवीक छोट भाइ कहने छल जे ‘स्त्रीक पढ़ाई’क बदला घरक काज जरूरी अछि। माय अपन हाथक चूड़ी खोलि देवीकेँ देबए चाहने छलीह, मानू पढ़ाई लेल ओकरे बेचब पड़त। देवी चूड़ी घुरा देने छलीह। “अहाँक दवा आ हमर प्रशिक्षणक खर्च दू अलग प्रश्न अछि,” ओ कहने छलीह। माय धीरे सँ कहलनि, “तँ दुपहरक दवा कियो समयपर देत?” ई व्यावहारिक प्रश्न रहल; एकरा केवल उत्साहक वाक्यसँ हल नहि कएल जा सकैत छल।

अस्पतालक भीतरी बरामदामे उर्मिला नव रोगी-स्थानान्तरणक सूची जाँचि रहलीह। हड़तालक सीमित अपवादमे दू जाँचल गाड़ी अछि, मुदा मुख्य पानि-निकासी बन्द अछि। एक रोगीक खात पहिल मोड़पर नहि घुमि सकल। उर्मिला बाहरी पट्टी लेल देवीसँ गिनती करौलीह; प्रशिक्षक हुनका बिना देखरेखक रोगी उठेबाक छूट देलन्हि नहि। देवी कपड़ाक

अठारह पट्टीक स्थानपर सत्रह गनि कऽ कमी दर्ज कएलनि। एक कर्मचारी फुसफुसा कऽ कहलक, “एकटा कम अछि तँ कागदमे अठारह लिखू; आपात स्थिति अछि।” देवी उत्तर देलीह, “जँ कमी छिपाएब तँ अगिला रोगीक समय फेर खोज पड़त।” सलमा कागदक कात अपन निरीक्षण-सही कएलनि।

एहि बीच माटिस्थलक सामुदायिक चबूतरापर कमलेश अपन किरायाक पन्ना राखलनि। मकान-मालिकक प्रतिनिधि कहलनि जे अस्पतालक बाट खुलबाक कारण बजारक जमीनक मूल्य बढ़ल अछि, तँ किराया बढ़ेबाक अधिकार अछि। कमलेश अपन दोकानक माप पढ़लनि—छोट छप्पर, बरखामे भीजल कोना, आ एहन नाली जेकर सफाइक खर्च ओ स्वयं देने छलाह। “मूल किराया जे छल, हम देब,” ओ कहलनि, “मुदा जखन दोकानक आधा भाग पानिमे डूबल अछि तँ बिना लिखित नाप तीन गुना रकम किएक?” बगलमे शकुन्तला पंडित कहलनि, “सभक रसीद देखाउ। हमर बासनक मरम्मत आ हिनकर किराया एकटा खाता नहि।”

मंचपर बैसल रमा कर्ण कहलीह जे निजी भवनक किरायाक विवादक निर्णय सार्वजनिक चबूतरापर बहुमतसँ नहि होएत। मुदा किराया बढ़लाक नामपर सामुदायिक बाट आ जलनिकासीक उपयोगक शुल्क आरोपित भऽ रहल अछि की नहि, से सार्वजनिक प्रश्न अछि। कमलेश अपन पन्नासँ तेसर पाँति पढ़लनि—‘बाट सुधार अंशदान’। एहिमे मालिकक ओरसँ कोनो मरम्मतक माप वा स्वीकृत खर्च नहि छल। नगरक नाप-बहीमे ओहि छोट नालीक मरम्मत प्रस्तावित छल, सम्पन्न लिखल नहि। तारा एहि दू कागदक तिथि मिलौलीह। कमलेशक दावा पक्का भेल जे प्रस्तावित कामकेँ पूरा कहि किराया-पर्चीमे शुल्क जोड़ल गेल अछि; तथापि किरायाक स्वामित्व-विवाद एखन बाँकी छल।

मालिकक प्रतिनिधि कमलेशकेँ डरौलक जे मंचपर शिकायत कएने लोकक दुकानपर अगिला बेर ग्राहक नहि आएत। कमलेश खड़े भऽ अपन मरम्मतक आधा जोड़ल घैल हाथमे लेलनि। “एहि कानकेँ जोड़बामे हम जतबा सूत आ समय देलहुँ से हमर काज अछि,” ओ कहलनि। “अहाँ चाही तँ हम अपन कानूनी दावा लिखि दिअ; मुदा जे ग्राहक अपन घरक टूटल बासन हमरा भरोसासँ दैत छथि, हुनकर निजी बही अहाँ सभकेँ नहि देब।” एक युवक ग्राहकसभक नाम माँगलक; शबनम कहलनि जे सार्वजनिक किराया-

दावाक प्रमाण लेल ग्राहकक निजी वस्तुक सूची आवश्यक नहि। ओ बैठकक कार्यवृत्तमे एहि अस्वीकारक कारण जोड़लीह।

अस्पतालक छुट्टीक समय देवीक भाइ बाइक लऽ पहुँचल। ओ बरामदामे कहलनि जे मायक दवा समयपर नहि देल गेल तँ दोष देवीपर आएत। सलमासँ पुछलीह जे प्रशिक्षणक निर्धारित पहर बीचमे छोड़लासँ अगिला सप्ताहक प्रमाणपत्रपर की असर पड़त। सलमा कहलीह जे नियमित उपस्थिति आवश्यक अछि; घरेलू देखभाल लेल उपलब्ध अवकाशक नियम अलग अछि। देवी अपन भाइकेँ ओ नियम देखबैत कहलीह, “आइ दुपहर मायकेँ दवा देबाक जिम्मेवारी अहाँ लिअ। हम काल्हि भोर अपन पहर बदलि सकैत छी, मुदा पढ़ाई छोड़ब नहि।” भाइ पहिने नकारलक। तखन देवीक माय फोनपर स्वयं कहलनि, “दवा देबाक तरीका अहाँ सेहो सीखू।”

देवी आ भाइक बीच कटुता तुरन्त समाप्त नहि भेल। माय कहलनि जे अपन उपचारक पर्ची ओ स्वयं सम्हारतीह आ परिवारक समय बाँटबामे हुनकरो मत रहत। देवी छोट कापीमे तीन घरक सम्भावित सहयोगक समय लिखलीह—दुपहरमे भाइ, साँझमे देवी, आ दू दिन लेल पड़ोसिनक सहमतिक उपरान्त भुगतान। भाई पुछलक जे पड़ोसिनकेँ पैसा कतयसँ भेटत। देवी प्रशिक्षणक भत्ताक वास्तविक भुगतान एखन बाँकी अछि से स्वीकार कएलनि; ओहि दिन घरक उपलब्ध रकमसँ दू पहरक सहायता लेल माय सहमति देलीह। कियो शून्य दामक स्त्री-सेवाकेँ समाधानक आधार नहि बनौलक।

चबूतराक बैठकमे कमलेशक किरायाक प्रश्न अस्पतालक विषयसँ जुड़ल, जखन नगरक कर्मचारी प्रस्ताव राखलक जे मरम्मत-दोकानक पट्टी खाली कऽ अस्थायी रोगी-वाहनक गल्ली चौड़ा कएल जाए। हीरा मेच मापक डण्डा लऽ अएलीह। “एखन गाड़ी घुमेबाक मुख्य कठिनाई ई दोकान नहि,” ओ कहलीह, “बरखाक पानि आ मोड़पर जमा अचल पत्थर अछि। जँ सरकारी नाप एतए अछि तँ पहिने मूल नक्शा देखाउ।” कमलेश सहायक बाटक दिन-समय सीमित उपयोगपर चर्चा लेल तैयार भेला, मुदा स्थायी बेदखली अस्वीकार कएलनि। रोगी-सेवाक आवश्यकता झूठ नहि छल; ओहि आवश्यकता सँ सब निजी अधिकार स्वतः समाप्त नहि होइत।

ओ कहलनि जे आजुक दू परीक्षणयोग्य गाड़ीमे सँ एकटा निर्धारित रोगीकेँ लेबाक समय दस मिनट देरीसँ पहुँचल, किएक तँ बाहरी जलजमावक कातसँ घुमए पड़ल। “दस मिनट लिखू” ओ कहलीह, “पानि पूरी तरह सूखि गेल कहबाक आधार नहि अछि।” कमलेश अपन किवाड़क सामनेक अल्पकालिक लकड़ीक पट्टी उधाड़ि देबाक प्रस्ताव रखलनि, जइमे पहिने रोगी-यातायात लेल वास्तविक रास्ता नापल जाए, दिनक समय लिखल जाए, आ पट्टी फेर बंद करबाक दायित्व नगर लिअ। एहि सीमित सहयोगक बदला दुकानक स्थायी अधिकार छोड़बाक शर्त नहि।

एहि सुझावपर शबनम बैठक रोकि कहलीह, “ई दू कागद अछि। एक अस्पतालक आपात बाटक अस्थायी अनुमति, दोसर निजी किरायाक विवाद। दुनूक सही अलग होएत।” कमलेश पहिलपर स्थलक नाप आ समय निश्चित होएबक बाद सैद्धान्तिक सहमति देलनि; दोसरपर नव शुल्कक हिसाब माँगैत लिखित आपत्ति जमा कएलनि। मकान-रमा सार्वजनिक मंचक प्राप्ति-पंजीमे कागद पहुँचल तिथि अंकित कएलनि; एहि प्राप्तिसँ मालिकक सहमति मानल नहि गेल।

दुपहर बाद देवीक प्रशिक्षणमे एक घायल चालकक उपचारक निरीक्षण छल। देवी सलमाक निर्देशनमे पट्टी खोलबाक सामग्री सजौलीह, फेर रोगीक अनुमति पुछलनि। चालक कहलनि, “अहाँ पहिल बेर करैत छी?” देवी कहलीह, “हम प्रशिक्षणमे छी; सलमा दीदी एतहि छथि। अहाँ नहि चाहब तँ दोसर प्रशिक्षित कर्मचारी करथि।” चालक अनुमति देलनि। पट्टी बान्हबाक क्रममे देवीक हाथ एक बेर काँपल, मुदा सलमा क्रम रोकि फेर बुझौलीह। मरीजक घाव समयपर देखल गेल; देवीक प्रशिक्षणक पन्नापर गलती आ सुधार दुनू दर्ज भेल।

बरामदामे अस्पतालक प्रशासनिक अधिकारी देवीकेँ कहलनि जे परिवार विरोध करैत अछि तँ प्रशिक्षण छोड़ि दोसर नाम पठा देथि। देवी अपन पंजी आ देखरेख-सही समक्ष राखलीह। “हमर घरक मतभेद प्रशिक्षणक अयोग्यता नहि,” ओ कहलीह। “जँ उपस्थितिक नियम तोड़ब तँ नियमानुसार लिखू; नहि तँ हमर नाम काटबाक आधार लिखित देल जाए।” अधिकारी ओहि दिन निर्णय नहि देलनि, मुदा बिना कारण अनुपस्थित लिखल तीन पहरक पुनर्जाँच स्वीकृत कएलनि आ अगिला सप्ताहक

प्रशिक्षण-कार्यक्रम देवीक हाथमे देलनि। देवी कार्यक्रम अपने कापीमे उतारलीह, किएक तँ मौखिक आश्वासनपर पहिलहि हुनकर पहर गुम भऽ चुकल छल।

साँझक दोसर सत्रमे हीरा आ तारा मरम्मति-दोकानक कोना नापलनि। पता चलल जे किवाड़क बाहरी पट्टी हटौलासँ एक चक्काक जगह बनत, मुदा मुख्य नालीक खँडित दीबाल ओहिसँ नहि सुधरत। नगरे कर्मचारी अपन माप-बहीमे ई अन्तर स्वीकार कएलक। कमलेश अस्थायी पट्टी हटेबाक मजदूरीक खर्चक अनुमान देलनि; एकटा प्रतिनिधि कहलक जे सामुदायिक सेवा मानि मुफ्त काज कऽ दिअ। कमलेश कहलनि, “जे लकड़ी हमरा हाथसँ कटत, तकर दाम लिखल जाए। हम चाहब तँ अपना हिस्सासँ दान अलग देब।” माप आ लागतक दू छोट प्रति बनल; अस्थायी अनुमति परसुक भोर लेल राखल गेल, जखन चिकित्सकीय यातायातक वास्तविक आवश्यकता फेर देखल जाएत।

मायक कोठरीमे रातिमे देवी पहुँचल छलीह तँ भाइ समयपर दवा दऽ चुकल छल, मुदा पानि आधा फैलि गेल छल। माय हँसि कहलीह, “दोसर बेर कटोरी नीचे राखिहें।” भाइकेँ अपन गलतीपर खिसिआहत भेल। देवी सहजहि कपड़ा उठबए लगलीह, मुदा माय रोकलीह, “एहि बेर ओहि सँ साफ होएत।” भाई कपड़ा लऽ पानि पोछि देलक। ई छोट घरेलू परिवर्तन कोनो परिषदक प्रस्ताव नहि छल। देवी अपन प्रशिक्षणक पन्ना मायक सिरहाने रखलीह; माय ओकर गलतीक लाल चिन्ह देखिकऽ पुछलीह, “लाल स्याही सँ नाम काटल गेल अछि?” देवी उत्तर देलीह, “नहि, ई सीखबाक ठाम बतबैत अछि।”

रातुक सभामे शबनम पाँच पुरान सन्धि-प्रश्नक नकल फेर मेजपर पसारलीह। अस्पतालक रोगी-वाहनक अस्थायी सहमतिसँ जलनिकासी ठीक नहि भेल; भोजनक मजदूरी, गोदामक सील आ सार्वजनिक प्रतिक आपत्ति सेहो एखन स्पष्ट निर्णय चाहैत छल। कमलेशक किरायाक विवादक सुनवाड़क लेल मकान-मालिककेँ मूल अनुबन्ध आ नव शुल्कक खर्च-पत्र सहित बजाओल गेल। देवव्रतक कार्यालयक सहायक एक वाक्य जोड़ए चाहलक—‘सभ पक्ष सहयोगी’। शबनम ओकरा काटि ‘एक अस्थायी बाटपर सीमित प्रस्ताव, अन्य आपत्ति कायम’ लिखलीह। देवी अस्पतालसँ फोन कऽ बतौलीह जे प्रशिक्षण-समयसूची भेटि गेल अछि, मुदा गलत अनुपस्थिति दुरुस्त होएब बाँकी अछि।

कमलेश घर घुरलाह तँ मरम्मतिक घैलक जोड़ सूखि गेल छल। ओ आहिस्ता सँ ओहिमे पानि भरि देखलनि; एक बूँद बाहर टपकल। घैल पूरा ठीक नहि भेल, मुदा कतेक ठाम फेर सूत चाही से स्पष्ट छल। हुनकर माय पुछलीह, “दोकान रहत?” कमलेश उत्तर देलनि, “आजु नहि गेल। किरायाक बात बाकी अछि, मुदा आपत्ति कागदपर चढ़ल।” मायक हाथमे दवाइक पुड़िया छल। ओ पुछलीह जे काल्हि एही घैलकें ग्राहकें देताह की फेर जाँचताह। कमलेश घैल खाली कऽ ओकरा उलटि रखलनि। “फेर जाँचब,” ओ कहलनि। दूर अस्पतालक फाटकपर रोगी-गाड़ीक समय-सूची लगल छल, आ मुख्य नालीमे पानि ओही तरह अटकल रहल।

अध्याय १०० • दूसर समझौता

नगर कार्यालयक बरामदामे भोरक पानि सँ भीजल पाँच कागद उर्मिला उलटा कऽ सुखा रहल छलीह। छपराक फाटल कोनासँ राति भरि बूँद टपकल छल; पहिल पन्नापर रोगी-वाहनक समय धुँधला पड़ि गेल, मुदा तारा बिनौट कल्हिक मूल पंजीसँ फेर उतारि देलीह। टेबुलक नीचाँ रखल बाँसक टोकरीमे दहीक खाली कुल्हड़ आ चिक्कट पात पड़ल छल। कार्यालयक चपरासी कहलक जे बैठक एखन आधा घण्टा पछाड़ि जाएत, किएक तँ देवव्रतक गाड़ी शहरक दोसर फाटकपर अटकि गेल अछि। शबनम कुर्सी छोड़ि दरवज्जा धरि गेलीह। “जेकरा लेल बैठक अछि, ओकर दिन पहिले सँ शुरू भऽ चुकल अछि,” ओ कहलीह। “समय बदलल तँ उपस्थित लोककें बताउ; कागदपर पुरान समय नहि रहए दिअ।”

बाहर तुलसी ताजपुरिया अपन चालकसभक नामवला पन्ना हाथमे लऽ ठाढ़ छलाह। रातिक सीमित परीक्षणमे दू गाड़ी निर्धारित समयमे पहुँचल छल, मुदा एक गाड़ीकें फाटकक आगाँ दह मिनट ठहरब पड़ल; निकासीक कात कादो एखनहुँ नरम छल। चालक जमीर अपन जूताक तलवा देखबैत कहलक, “हम गाड़ी खिंचि निकाललहुँ, मुदा एहि मिट्टीक जिम्मा हमर बीमापर नहि देल जाए।” अस्पतालक परिचारिका ओकर बात सुनि कहलीह जे दह मिनटमे ककरो उपचारक क्रम बदलि जाइत अछि। दुनू एक दोसरासँ सहमत छलाह जे देरि वास्तविक छल; प्रश्न छल जे ओकरा मिटेबाक खर्च आ अधिकार के लएत।

शबनम कार्यालयक भीतर पहिल समझौताक नकल खोललीह। पाँच शर्तक कात पहिल बैठकक असहमतिक हस्ताक्षर छल, जकरा सरकारी प्रेसनोट एक बेर ‘सर्वसम्मति’ कहि चुकल छल। रमा कर्ण साफ कागद मेजपर रखलीह—पुरान आपत्तिक पन्ना फाड़ि नव समझौता लिखबाक प्रस्ताव नहि। ओ बोलीह, “नव पन्ना पहिलक उत्तर होएत, ओकर विकल्प नहि। जहाँ सहमति नहि अछि, ओतय ‘बाँकी’ लिखब।” देवव्रतक सहायक पुछलक जे तखन बैठकक परिणाम देखबामे कमजोर लागत। रमा कहलीह, “कमजोर

कागद नहि, अधूरा काज अछि। अक्षर ओकरा ढाँकि नहि सकैत।” नैरा अपन कापीमे पहिल पाँति लिखलीह—‘दूसर बैठक, पहिल आपत्ति सुरक्षित’।

देवव्रत पहुँचलाह तँ हुनकर संग गोदामक निरीक्षक आ दू व्यापारी प्रतिनिधि छलाह। ओ देरीक कारण बतौलनि, मुदा तुरन्त कहलनि जे सार्वजनिक बयानमे अस्पताल लेल देल गेल सहायता सेहो दर्ज रहबाक चाही। अनिरुद्ध, जे राति रोगी-निकासक निगरानी कएने छलाह, उत्तर देलनि, “सहायताक रसीद अलग अछि। एहि कागदमे रोगी कते घड़ीमे सुरक्षित निकलत, ओकर उत्तर चाही।” देवव्रत किछु कहबाक पहिने शबनम हुनका बैठबाक संकेत देलीह। हुनकर सामने खाली कुर्सीपर नाम नहि, ‘गोदामक जिम्मेवार प्रतिनिधि’ लिखल छल। अन्य मंचक भूमिका सँ एहि जिम्मेदारीकेँ अलग कएल गेल छल।

पहिल शर्त पढ़िते तुलसीक चालक-दल आपत्ति उठौलक। प्रस्तावमे लिखल छल—‘आवश्यकता पड़लापर वाहन उपलब्ध रहत’। जमीर पुछलक, “आवश्यकता के तय करत? वाहन कतेटा? चालकक विश्राम?” तुलसी कल्हिक दू स्वीकृत गाड़ीक जाँच-पर्वी रखलनि। “दू गाड़ी दुपहर धरि परीक्षणमे चलल। एखन गाड़ी उपलब्ध रहबाक अधिकृत घोषणा केवल चिन्हित समयक लेल हो,” ओ कहलनि। उर्मिला मरीजक हालत बतबैत याद देलनि जे केवल चिकित्सक स्थानान्तरणक आवश्यकता लिखि सकैत छथि, परिवहन समिति रोगीक नाम सार्वजनिक नहि करत। एक कर्मचारी ‘हर समय’ लिखबाक पक्षमे छल; अनिरुद्ध पुछलनि, “हर समयक चालक आ सुरक्षापत्र अहाँ लग अछि?” कर्मचारीक उत्तर नहि छल।

रोगी-वाहनक पंक्ति अन्ततः बदलल गेल। चिकित्सकक प्रमाणित माँगपर, उपलब्ध जाँचल गाड़ी आ सहमत चालकक नामसहित, निश्चित समयक भीतर फेराक प्रस्ताव; विलम्ब भेल तँ कारण आ वास्तविक समय लिखल जाए। चालकक सामान्य भाड़ा, रातिक जोखिम-भत्ता आ विश्रामक हिसाब अलग पंजीमे; हड़तालक पुरान बकाया नहि मेटत। एकटा व्यापारी कहलनि जे एहन शर्तमे गाड़ी कम पड़त। तुलसी बिना स्वर ऊँच कएने उत्तर देलनि, “जतेक अछि से लिखू; बाकी लेल सुरक्षित विकल्प खोजू। कागदमे चारि लिखला सँ दू गाड़ी चारि नहि बनत।” उर्मिला पहिल बेर राहतसँ बैसलीह, मुदा जानैत छलीह जे पंजीक समय देहक पीड़ा नहि घटबैत।

दोसर शर्त लेल तारा भीजल नक्शा पसारलीह। हीरा मेच रातिमे नापल स्थानक लाल निशान मिलौलीह। पानि अस्थायी कचरा हटेलासँ चलल छल, मुदा मुख्य नालीक फाटल दीवालक कात फेर रुकल। नगर अभियन्ता प्रस्ताव रखलक जे रमेशक मेड़ काटि सीधा बहाव देल जाए; ओहि रास्तासँ मरम्मत सस्ती पड़त। रमेशक पत्नी, जे अपन बीहनक पोटरी संग अएलीह, नक्शाक ऊपर हाथ राखि कहलीह, “सस्ती अहाँक लेखामे; हमर खेतक कटान के गनत?” अभियन्ता कहलनि जे सार्वजनिक संकटमे निजी असहमति बादमे सुनल जा सकैत अछि। शबनम ओकर वाक्यक लिखित आधार पुछलीह। ओ कियो आदेश देखेबाक स्थिति मे नहि छल।

रमेशक पत्नी मेड़क दू तिथि बतौलीह—कखन घास कटल, कखन पानि दिशा बदललक। हुनका नामपर जमीनक संपूर्ण स्वामित्वक पत्र एतय नहि छल, मुदा प्रभावित खेती आ अनुमति देबाक अधिकारक प्रश्नक कारण ओ सभामे छलीह। तारा कहलीह जे सार्वजनिक बाटक चौड़ाइ आ निजी खेतक सीमा एके नक्शामे देखाइत अछि, पर सहमतिसँ पहिने अस्थायी सर्वेक्षण सेहो प्रवेशक अनुमति नहि। हीरा लकड़ीक डण्डासँ सार्वजनिक नालीक भीतरी गहराइ देखौलीह; ओतए छोट पत्थरक जाम हटाओल जा सकैत छल, जकर लेल निजी मेड़ छुएबाक आवश्यकता नहि। अभियन्ता पूर्ण योजना देबाक अतिरिक्त समय माँगलक। बैठक ओकरा काजक एकटा सीमित भाग देलनि, पूरा स्वीकृति नहि।

ओहि समय पारो पत्थरकट्टा एकटा भारी थैली उठबैत भीतर एलीह। हुनकर बामा कलाइपर पुरान सफेद दाग छल; थैलीमे दू तरहक पत्थरक नमूना आ अलग-अलग छेनी पड़ल छल। नगर ठेकेदार चाहैत छल जे पारो फाटल नालीपर मोट पत्थरक पट्टा चढ़ा देथि आ ‘पूर्ण संरचनात्मक सुरक्षा’क प्रमाणपत्र पर हस्ताक्षर करथि। पारो मेजपर नमूना रखलीह। “हम किनारक ढीला टुकड़ा काटि, पाट सम्हारि, सुरक्षित ढलान बना सकैत छी। जे माटि भीतरसँ धोआइत अछि, तकर भार-गणना हम नहि करैत छी।” ठेकेदार भनभनौलक, “तखन एखन नहि करबासँ काम ठप्प।” पारो कहलीह, “गलत ढंगसँ करबासँ फेर ढहब निश्चित होएत।”

पारो अपन पुरान नमूना-कामक रसीद निकाललीह। ओहि रसीदमे एक दिनक मजदूरी दर्ज छल, पूरा पुलक दायित्व नहि। नव ठेकामे छोट कारीगरक नामपर पूरा नालीक भार-स्वीकृति थोपबाक प्रयास हुनका मना छल। ललित विश्वकर्मा, जे पहिलुका पट्टा-जाँचक कारण ठेका गमौने छलाह, नमूना देखिकऽ कहलनि जे पत्थर काटब, सहारा देब आ संरचनात्मक भार-जाँच अलग क्रममे होअय। पारो तत्काल निर्णय लेलीह—ओ सुरक्षित छोट मरम्मतिक माप-आधारित काम स्वीकार करतीह, बशर्ते अभियन्ता जमिनक परीक्षणक लिखित जिम्मा लिअ आ मजदूरी अग्रिम निर्धारित हो। ठेकेदारक पैघ ठेका हुनकर हाथसँ निकलि सकैत छल; मुदा हुनकर छेनी एखन हुनकर अपन शर्तपर चलत।

तीसर शर्त, गोदामक पहुँच, सभामे सबसँ बेसी खटपटि अनलक। निरीक्षक दू सूची देखौलक—पहिलमे परीक्षण पूरा भेल उपचार-सामग्री, दोसरमे असमान लेबलक कारण रोकल औषधि आ अन्य जाँचाधीन खेप। देवव्रत कहलनि जे पहिल सूचीक सामान लऽ जाएबासँ कमसँ कम अस्पतालक कमी घटत। ई आवश्यकता अनिरुद्ध सेहो स्वीकार कएलनि। मुदा निरीक्षकक प्रारूपमे दू सूची एकहि ‘आपदा-मुक्ति’क आदेशमे रखल छल। रमा लाल पेंसिल उठौलीह। “एक सूची पर निरीक्षण-समाप्तिक चिह्न अछि; दोसरपर परीक्षण जारी। एक मुहर दुनूकें समान नहि बनाबय।” देवव्रत कहलनि जे प्रक्रिया जटिल भेलासँ लाभुक प्रतीक्षा करत। अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “गलत दवा पहुँचला पर प्रतीक्षाक दुःख बेसी होएत।”

गोदामक मजदूर प्रतिनिधि पुछलक जे सीमित फाटक खोलल गेल तँ सीलबन्द सामानक रखवारीक मेहनताना के देत। पहिल प्रस्तावमे ओ प्रश्न छलहि नहि। निरीक्षक कहलक जे पहरेदार सरकारी अछि। मजदूर उत्तर देलक, “हम सरकारी पहरेदार नहि; हम भीतरक थान गनब, ताला फेर लगब, आ ओहि समयक मजदूरी चाही।” शबनम नकलपर नव पाँति जोड़लीह—जाँच-अधिकारीक उपस्थिति, प्रवेशक घड़ी, उतारल वस्तुक क्रमाङ्क, फेर सीलक गिनती आ मजदूरक हस्ताक्षरसहित भुगतान। देवव्रतक सहायक एकरा खर्च बढ़ेबाक तरकीब कहलक। गोदामक वृद्ध पहरेदार कहलक, “रातुक ताला खुलल की नहि, काल्हि अहाँ हमरा पुछब; तखन आजुक घड़ी लिखब जरूरी अछि।”

चौठ शर्तपर रुहानी अपन पोथी नहि, दू ढक्कनवला डिब्बा मेजपर रखलीह। पहिलमे आजुक भातक बचल हिस्सा छल, दोसरमे काँचाक दालक नाप। “जतेक रान्हल गेल ततेक पातर लिखल अछि, मुदा जतेक स्त्रीसभ चुल्हिपर रहलीह, ओहि समयक हिस्सा खाली अछि,” ओ कहलीह। नगरक दान-मण्डलीक प्रतिनिधि भोजनक दानक फोटो सार्वजनिक करबाक प्रस्ताव देलक। रुहानी ओकरा पुछलीह जे कोन परिवार अपन बच्चाक भूखक फोटो देबाक अनुमति देने अछि। प्रतिनिधि बात घुमाबए चाहलक। “दान दानक सूचीमे लिखू,” रुहानी कहलीह, “रसोइक मजदूरीकेँ कियो आशीर्वादक पंक्तिमे नहि छिपाउ।”

रुहानीक संग आएल एक युवा रान्हनिहार कहलीह जे रातुक पालीमे हुनकर बच्चाकेँ पड़ोसिन देखैत छथि, आ घर घुरबामे दू बेर भाड़ा लागत। ओ काम छोड़बाक धमकी नहि देलीह; अपन देयक पूर्ण हिसाब चाहैत छलीह। देवव्रत प्रस्ताव रखलनि जे एक दाताक मदसँ भोजनक तीन दिनक अनाजक खर्च देल जाए। रुहानी एतबामे सहमत भेलीह, मुदा जोड़लीह जे रान्हनिहारसभक प्रति-पहरक दर आ सफाईक मजदूरी अलग कोषसँ सुनिश्चित हो। तीन दिनक बाद स्वतः सेवा जारी रहबाक अपेक्षा नहि; नव बैठकमे नव सहमति। कागदमे पहिल बेर दान, खरीद आ भुगतान तीन अलग स्तम्भ बनल।

दरवज्जापर सोना कठौतिया प्रतीक्षा करैत छलीह। हुनकर बकाया भाड़ाक दू पर्ची एखनहुँ रेलपारक पुरान ठेलावालाक सहीक प्रतीक्षामे छल। एक दानी-मण्डलीक कार्यकर्ता हुनका आजुक सभामे ‘निःस्वार्थ मददगार’क रूपमे बोलबाक आग्रह कएलक। सोना उत्तर देलीह, “हम जे दू बाँसक ढाँचा पहुँचौलहुँ, ओहि दिनक ठेला आ मजदूरी पहिने चुकाउ। जे सामान हम अपन इच्छा सँ देब, तकरा दान लिखू।” हुनकर झोरामे धूरि लागल पुरान रसीद छल। ओ एकटा नव परिवहनक प्रस्ताव सेहो लऽ अएलीह—अस्पतालक अस्थायी सुरक्षित पटरी लेल बाँस-पाट पहुँचेबाक, मुदा एहि बेर कामक भाड़ा आ ढुलाईक जोखिम पहिनहिसँ लिखल जाए।

कियो हुनका पुछलक जे एहन आपत्कालमे लाभ सोचब उचित अछि की। सोना झोरा रखि देलीह। “हमर ठेलावाला तीन दिनसँ भाड़ा माँगैत अछि। ओकर छौड़ा विद्यालयमे जायत कि नहि, ई सेहो आपत्काल अछि,” ओ उत्तर देलीह। रमा पर्ची देखिकऽ कहलनि

जे पुरान बकायाक वास्तविक रकमक मिलान लेल दोसर पक्षकें सूचना देब जरूरी अछि; सोना एखन चाहलीह तँ बकायाक प्राप्ति-अनुरोध दर्ज भऽ सकैत अछि। सोना हस्ताक्षर कएलनि। ओ नव बाँस-पाटक ढुलाईक लेल अलग भाड़ा निर्धारित कएलीह, आ दान-मण्डलीक पोस्टरपर अपन फोटो बिना अनुमतिक नहि छापबाक शर्तो। “जकरा श्रेय चाही, ओ अपना देल वस्तुक श्रेय लिअ,” ओ कहलीह।

एहि बीच बेढ़ीक नामपर बनल एक पुरान ढुलाई-पर्ची देखाओल गेल। सोना कहलनि जे एहि नामसँ हुनका एकटा कामक पता बताओल गेल रहनि; ओ नदीक मोड़ देखिकऽ नहि, पर्चीपर लिखल पड़ाव आ गाड़ीवालाक मौखिक बताहिसँ सामान पहुँचेने छलीह। नगरक सहायक पुछलक जे बेढ़ी एहि नालीसँ मिलैत नदी थिक की। सोना स्पष्ट कहलीह, “हमरा ई नहि ज्ञात। कागदमे जे नाम अछि, से एक ठामक अभिलेखीय नाम; अपन आँखिसँ बहावक संगम देखल नहि।” तारा नदी-पंजीक नामकें ढुलाई-पर्चीक ठिकानासँ अलग लिखलीह। ठेकेदारक सुविधा लेल अज्ञात संगमक नक्शा बनाओल नहि गेल। मुदा सोना लेल एतेक स्पष्ट भऽ गेल जे बकायाक दावामे पर्चीक नाम बदलि कऽ दोसर गाँवक हिसाब नहि जोड़ल जा सकत।

पाँचम शर्तक पन्ना खुलिते सभाक थाकल स्वर फेर तेज भऽ गेल। प्रशासन चाहैत छल जे सार्वजनिक प्रति मे ‘सभ पक्ष सहमत’ लिखल जाए। शबनम पाँच शीर्षकक नीचाँ भेल सीमित निर्णय पढ़लनि; सभामे बैठल लोकक मौनकें सहमति नहि मानल जा सकैत छल। नैरा समाचारक लेल निर्णयक सार लिखब चाहैत छलीह, मुदा रोगी, मजदूर आ गोदामक निजी विवरण छापबाक अनुमति हुनका नहि छल। रमा प्रस्ताव रखलीह—एक सार्वजनिक प्रति, एक हस्ताक्षर आ आपत्ति-सहित अधिकृत प्रति, तथा सहमति-आधारित निजी परिशिष्ट। पहिलुका असफल बैठकक पन्ना कतहु हटाओल नहि जाए।

देवव्रतक सहायक कहलनि, “जँ पुरान आपत्तिक कागद संलग्न रहत तँ व्यापारिक विश्वास घटत।” शबनम पुछलीह, “गलती छिपा विश्वास कते दिन टिकत?” देवव्रत स्वयं ई बेर सहायककें चुप कएलनि। ओ कहलनि जे जे जिम्मेदारी हुनकर कार्यालय स्वीकार करैत अछि ओकर समय आ हस्ताक्षर सहित लिखल जाए; अस्पताल-सहायताक पुरान राशि एहिमे सन्धिक उपलब्धि नहि बने। नैरा देवव्रतक कथन लिखि लेलीह, मुदा महेशक

हत्या-जाँचमे हुनकर पुरान निर्देशकेँ एहि नव हस्ताक्षरसँ निर्दोष सिद्ध कएल नहि मानलीह।
दुनू कार्यालयी कागदक प्रसंग अलग छल। देवव्रत एहि सीमापर प्रतिवाद नहि कएलनि;
हुनकर मौन सेहो स्वीकारोक्ति कहल नहि गेल।

दोपहरि धरि लिखित प्रारूप बनल, मुदा बारीक अक्षरमे एकटा नव वाक्य निकलल
—‘आपात सुधारक मार्गमे आवश्यक निजी सम्पत्ति उपयोगक अनुमति निहित मानल
जाए’। रमेशक पत्नी पन्ना उघाड़ि ओ वाक्य देखलीह। “हम एतए बैसलीह, एहि कारण
हमरा खेतक अनुमति अपने आप भऽ गेल?” ओ पुछलीह। अभियन्ता कहलनि जे
सामान्य प्रारूपमे एहन भाषा रहैत अछि। तारा ओकरा काटि लिखलीह—निरीक्षण,
आपात आवाजाही आ स्थायी निर्माण तीन अलग अनुमति माँगत; निजी सम्पत्तिक प्रत्येक
प्रस्तावपर प्रभावित व्यक्तिसँ पूर्व लिखित निर्णय आवश्यक। रमेशक पत्नी कातमे अपन
नामसँ ‘मेड़क उपयोग एखन अस्वीकृत’ लिखबौलीह। दस्तावेजक मूल आशय ई काटल
वाक्यसँ बेसी स्पष्ट भेल।

पारो पत्थरकट्टा तखन नव सुरक्षित मरम्मतिक छोट अनुबन्ध पढ़लीह। नगरक निरीक्षक
हुनका केवल टूटल कात चिन्हित करबाक आ सुरक्षित स्थानपर अस्थायी पाट लगबए
योग्य पत्थर तैयार करबाक काज देबाक प्रस्ताव रखलक; ओहिपर भारक प्रमाणपत्र
अभियन्ता देत। पारो अपन कलाइक दागक दिस देखलीह आ पुछलीह जे कामक समय
जखन पानि फेर बढ़त तखन रोकबाक अधिकार ककरा रहत। निरीक्षक कहलनि, “हम
आदेश देब।” पारो बोलीह, “हम छेनी चलबैत छी; पानिक चढ़ान पहिने हमर पएर अनुभव
करत। रोकबाक संकेत हम दऽ सकी, तकर लिखित अधिकार चाही।” अन्ततः सुरक्षा-
आपत्ति दर्ज भेलापर काम रोकबाक धारा जोड़ल गेल।

पहिल भुगतानक प्रस्तावपर पारो सभामे सही कएलीह, मुदा आधा अग्रिम भेटलापछि
मात्र औजार बाहर निकालबाक समय तय कएलीह। एतबा सुनि ठेकेदार अपन पैघ
अनुबन्ध आन कारीगरकेँ देबाक धमकी देलक। पारो कहलीह, “पैघ ठेकासँ हमर बच्चीक
कापी नहि भरत, जँ गिरल पट्टाक दोष हमरा माथे पड़त।” ओ अपना घरे लौटबासँ पहिने
ललितसँ नब माप देखबाक एक दिन तय कएलीह। ललित कहलनि जे अपन काठक

सीमा सँ बेसी वचन नहि देताह। दुनूक छोट साझेदारीक आधार अनुभवक आदर छल, कोनो अदेखल संरचनाक जिम्मेदारी नहि।

रमा पाँचू शर्तक अन्तिम पाठ फेर पढ़लीह। पहिलमे सीमित गाड़ी, समय आ जोखिम-भत्ता; दोसरमे सार्वजनिक नालीक चिन्हित सुरक्षित काम, निजी मेड़क अलग असहमति; तेसरमे निरीक्षित गोदाम-सामग्रीक सीलबद्ध प्रवेश आ अलग मजदूरी; चौठमे रसोइक अनाजक दान आ श्रमिकक भुगतान; पाँचममे सार्वजनिक प्रति, आपत्ति-पंजी आ निजी परिशिष्टक सुरक्षा। शबनम प्रत्येक शीर्षकक सामने जिम्मेवार कार्यालय, जाँचक तिथि आ असफल भेलासँ सूचना देबाक बाट लिखबौलीह। ‘सर्वसम्मति’ नहि लिखल गेल; ‘निर्धारित सीमामे दोसर कार्य-समझौता’ लिखल गेल।

एखन सभक सही आवश्यक छल। व्यापारी प्रतिनिधि गोदामक सम्पूर्ण ताला खोलबाक शर्त नहि मानलनि, मुदा निरीक्षित सामग्री लेल सीमित समय स्वीकार कएलनि। चालकसभ अपन हड़तालक बकायापर अलग आपत्ति संलग्न कएलनि। रमेशक पत्नी नक्शा देखल आ सार्वजनिक नालीक भीतरक कामक सूचना स्वीकार कएलीह, मुदा खेतक उपयोगपर असहमति फेर लिखलीह। सोना नव ढुलाईक दरपर सही कएलीह, पुरान बकाया-दावाक पन्ना नहि हटौलीह। पारो अपन छोट सुरक्षित मरम्मतिक पंजीपर हस्ताक्षर कएलीह, पूर्ण संरचनाक प्रमाणपत्रपर नहि। दस्तावेजपर सही बढ़ल, मुदा प्रत्येक सहीक सीमा सेहो स्पष्ट होइत गेल।

कागद सीलबन्द होइत काल कार्यालयक बाहर छोट विवाद उठल। दान-मण्डलीक आदमी कहलक जे सन्धिक उद्घाटनपर फूलमाला पहिराओल जाए। रुहानी दू खाली भगौना उठबैत कहलीह, “फूलक पैसा जे देत, तकरा पूछू; हमर रसोइमे आइ रातुक तेल बाकी नहि।” सोना पुछलीह जे कल्हिक ढुलाईक अग्रिम कोन खातें सँ निकसत। सरकारी सहायक नव सहीक फोटो खिंचबए चाहलक, मुदा शबनम पहिने सार्वजनिक प्रतिमे निजी नाम ढाँकबाक आदेश देलीह। उत्सवक तैयारीक बदला लोक अपन-अपन अगिला काज लेल पर्ची सम्हारि रहल छल। ई दृश्य निराशाक नहि; एतय श्रेयबाजीक जगह देयक नाम सुनाइत छल।

साँझ पहिने पानि-निकासीक सार्वजनिक खण्डपर पहिल छोट काम शुरू भेल। हीरा मापक डण्डा गाड़लीह, तारा पुरान चिन्हसँ नवीन माप अलग दर्ज कएलीह, आ पारो मात्र ढीला किनार हटेबाक उचित ठामपर पत्थर चिन्हित कएलीह। कोनो भारी पट्टा एखन नहि रखल गेल। एक युवक कहलनि जे कल्हि भोरसँ नाली खुलि जाएत। पारो ओकरा देखिकऽ कहलीह, “आजु काज शुरू भेल, जल निकलबाक पूरा बाट नहि बनल।” नालीक भीतरी कीचड़सँ एकटा छोट बुलबुला उठल; ओकर फूटबाक आवाज भीड़मे कियो नहि सुनलक। मुदा हीरा देखलीह जे जलस्तरक डण्डा एखन समे रहे गेल।

अस्पतालक फाटकपर तुलसीक दू गाड़ी नियत स्थानमे ठाढ़ भेल। उर्मिला एक परिचारिकासँ घड़ी मिलौलीह। अगिला दिनक स्थानान्तरण लेल प्रत्येक रोगीक जाँच अलग होएत; जकरा एतहि उपचार जरूरी ओकरा गाड़ीक उपलब्धताक नामपर नहि हिलाओल जाएत। एक रोगीक माय पुछलीह जे भीतरी पानि बन्द होएत की। उर्मिला उत्तर देलीह, “बाहरक नालीपर काज शुरू अछि। अस्पतालक भीतर जे टपकैत अछि ओकर जाँच बाकी अछि। हम अहाँकेँ जखन समय निश्चित होएत, तखन कहब।” स्त्री एतबे सुनि पलंगक कात बैसि गेलीह। खाली आश्वासनसँ बेसी कामक सच्चा सीमा हुनका बुझाइत छल।

नैरा सार्वजनिक प्रतिक नकल लऽ घर जेबाक तैयारी करैत छलीह, तखने उर्मिला पुरान कलम सम्हारैत पुछलीह, “अगिला बरखक उराहिमे तू पानिमे उतरबह कि फेर कागदक पानि नापबह?” नैरा हँसि देलीह। “हम उतरब तँ तू हमरा बचए लेब कि पहिने समय लिखबह?” उर्मिला कहलीह, “पहिने देखब तोरा सचमुच निकलबाक जरूरत अछि कि बिना बात पानीमे उतरल छह। फेर हाथ देब।” दुनू हँसलीह। कतहु सँ उराहिक ढोल नहि बाजि रहल छल; ई अगिला वर्षक साझा सफाई-पर्वक केवल बात छल, जाहिमे शायद दू घड़ी अपन लेल निकालि सकबाक कल्पना शामिल छल।

उर्मिला कहलीह जे ओहि समय धरि अस्पतालक धुलाईक अलग व्यवस्था होएत तँ ओ एक दिन सचमुच छुट्टी लेतीह। नैरा कहलीह जे अपन समाचारक अगिला श्रृंखला सँ एकटा छुट्टीक दिन छाँटतीह। “तोरा लग दिन बचत?” उर्मिला पुछलीह। “कतेक दिन बचत से कियो नहि जनैत,” नैरा उत्तर देलीह, “मुदा जे दिन आजु अछि, ओकर आधा हमेशा आनक

नामे किएक लिखी?” उर्मिला मुस्कुरा कऽ उठलीह। ओ अपन मेजपर छूटल थर्मस उठा लेलनि; भीतरक चाय ठंढा भऽ चुकल छल, तइयो दुनू एक-एक घूँट पीलीह।

राति नगर कार्यालय बन्द होइत पाँच कागदक दू प्रति अलग पेटीमे राखल गेल। सार्वजनिक प्रति अगिला भोर टाँगल जाएत; आपत्तिसहित मूल दस्तावेज रमा अपन अधिकारक पंजीमे राखलीह। शबनम मापक अगिला तिथि फेर जाँची। देवव्रतक कार्यालयक दायित्व पर हस्ताक्षर छल, मुदा हुनकर पुरान निर्देश आ महेशक मृत्यु-जाँचक फाइल अपना स्थानपर रहल। गोदामक भीतर रोकल खेप सेहो सीलबन्द छल। सोना अपन ठेलाक दामक प्राप्ति-कागद झोरामे रखलीह, पारो छेनीक मुँह कपड़ामे बाँधलीह। बाहर अस्पतालक फाटक लग दू गाड़ी अपन स्थानपर ठाढ़ छल; नालीक पानि अबहियो धीरे-धीरे थिरकैत छल। दोसर समझौता ओहि पानिक ऊपर बनल पुल नहि छल—ओ एतेक ठोस वचन छल जकरा काल्हि नापल, परखल आ टूटलापर चुनौती देल जा सकत।

अध्याय १०१ • रोगीक समय

भोरक पाँच बजि बयालीस मिनटपर अस्पतालक धुलाईघरमे रखल पीतलक कटोरीमे छतसँ तेसर बूँद खसल। उर्मिला पहिल दू बूँद नहि गनने छलीह; ओ कपड़ाक गट्टर खोलैत छलीह। तेसर बूँद सीधा नव धोल चादरक किनारपर पड़ल, तखन ओ गट्टर उठाकऽ सूखल चौकीपर रखलीह। खिड़कीक बाहर आँगनक पानि राति भरि निकसल नहि छल। फाटक दिशाक नालीमे कादो अटकि गेल छल, आ भीतर धुलाईघरक पुरान जोड़सँ अलग पानि टपकैत छल। ओ पहिल पन्नापर दू अलग शीर्षक लिखलीह—‘बाहरक बहाव’ आ ‘भीतरक चुआन’। दुनूक एकहि दोष मानि लेबासँ सफाई जल्दी भऽ सकैत छल, सुधार नहि।

कल्हिक पाँच-शर्तवला समझौताक सार्वजनिक प्रति अस्पतालक फाटकपर टाँगल छल। पहिल शर्तक नीचाँ ‘दू जाँचल वाहन’ लिखल छल; दवाइ, रोगी, परिवार आ कपड़ाक कुल भारक कोनो उल्लेख ओहि वाक्यमे नहि छल। उर्मिला अपन घड़ीक काँटा मिलौलीह। देवालपर टाँगल घड़ी पाँच मिनट पाछाँ छल, नर्सिंग-कक्षक घड़ी दू मिनट आगाँ। ओ अनिरुद्धकेँ बजा कहलनि, “जँ तीन घड़ीमे तीन समय होएत तँ रोगीक देरि ककरा नामे लिखब?” अनिरुद्ध मोबाइलक समयसँ दू पंजी मिलबौला, मुदा देवालक घड़ीक गलती सेहो दर्ज करौलनि। गलती मेटा देलासँ कल्हिक गवाहिक समय अपने-आप ठीक नहि भऽ जाइत।

पहिल बिछौनापर वृद्धा सरस्वती देवी अपन पुतोहुक हाथ पकने छलीह। रातिसँ हुनकर साँस उखड़ि रहल छल, आ चिकित्सक हुनकर हालत स्थिर नहि मानैत छलाह। दोसर कक्षमे नन्हि रेहाना चोट लागल पयर उठाबए नहि सकैत छलीह; ओकर माय अनवरीक काँधपर घाम उतरने छल। तेसर रोगीकेँ जाँचक बाद दोसर केन्द्र पठेबाक चिकित्सकीय निर्णय भऽ चुकल छल, मुदा ओकर चलैत दवाइ आ कनेक उपकरण संग लऽ जाएबाक छल। अनिरुद्ध तीनू बिछौनाक बीच ठाढ़ भऽ कहलनि, “जकरा एतहि तात्कालिक देखभाल चाही, ओकरा केवल गाड़ी ठाढ़ अछि एहि कारण नहि पठाएब। आ जकरा भेजब, ओकर स्वागत करयवला केन्द्रसँ पहिने बात होअय।”

उर्मिला कपड़ाक दू रङ्गक डोरी निकाललीह। पहिल डोरी धोल कपड़ाक गट्टरमे, दोसर उपयोग भऽ चुकल कपड़ाक थैलीमे। धुलाईघरक भीजल पाटपर चलिते एक प्रशिक्षु दू थैली एके ठेलापर रखि देलक। उर्मिला ओकर हाथ रोकलीह। “ई कपड़ा कम पड़लाक लेखा नहि, रोगीक सुरक्षा अछि।” प्रशिक्षु डरि गेल; ओकरा रातिसँ लगातार काज करबाक छल। उर्मिला डाँटि छोड़बाक बदला एकटा खाली ठेला मँगौलीह आ प्रशिक्षुकेँ पानी पीबाक दू मिनट देलीह। तकर बाद ओ गनलीह—सात धोल चादर, पाँच साफ खोल, आ चारि उपयोग कएल सामग्रीक थैली। जे दू चादर भीजि गेल छल, तकरा उपलब्ध साफ सामग्रीमे नहि गनल गेल।

फाटकपर तुलसी ताजपुरियाक दू गाड़ी पहुँचल। जमीर टायरक कादो देखिकऽ कहलक जे पहिल गाड़ी नालीक मोड़पर गड़ि जाएत। मदन राउत अपन छोट वाहन लऽ ओहि घड़ी पहुँचलाह, जकरा विद्यालयक बच्चासभ लऽ जाएबाक वचन देल रहनि। चौकीदार हुनका देखिकऽ मानि लेलक जे आब तेसर रोगी-वाहन भेटि गेल। मदन गाड़ीक ढक्कन बन्द कऽ कहलनि, “हम एखन विद्यालयक बच्चा छोड़ने नहि छी। जँ हमरा रोगी लगेबाक अछि तँ बच्चाक सुरक्षित दोसरा साधनक जिम्मेदारी पहिने लिखू।” हुनकर गाड़ीमे पाछाँक बेज्ज मोड़ि रखल छल; ओकरा खोललासँ ओ अपने-आप चिकित्सकीय वाहन नहि बनि जाइत।

मदन विद्यालयक प्रधानाध्यापिकाकेँ सभाक टेबुलपर फोन करौलनि। पाछाँक गाममे सात छोट बच्चा निर्धारित मोड़पर प्रतीक्षा करैत छल; दू अभिभावक खेत चलि गेल छलाह। प्रधानाध्यापिका कहलीह जे ओ एक शिक्षिकाकेँ मोड़पर पठा सकतीह, मुदा सब बच्चाकेँ एकहि रिश्तापर नहि बसा सकतीह। एक आदमी कहलक, “आपत्काल अछि, बच्चा एक दिन अपने चलि जाएत।” मदनक स्वर कड़ा भऽ गेल। “आधा कोसक सड़कपर तेज मालवाहक चलैत अछि। हम जकरा लऽ जेबाक वचन देने छी, ओकरा बीच बाटमे छोड़बो अपराध होएत।” समिति किछु देर तक विद्यालयक दरवज्जा आ अस्पतालक फाटकक दुनू नक्शा देखैत रहल।

अन्ततः प्रधानाध्यापिका विद्यालयक दू शिक्षककेँ अलग-अलग मोड़पर पठेबाक आ बच्चाक परिवारसभकेँ समाचार देबाक निर्णय लेलीह। मदन पहिल फेरा विद्यालय धरि पूरा करताह; ओहि बीच रोगीक चिकित्सकीय जाँच चालू रहत। विद्यालय समितिक खाता सँ

मदनक पहिल भाड़ा भुगतान होएत, अस्पतालक दोसर फेराक खर्च दोसर पंजीमे लिखल जाएत। कोनो शिक्षककेँ ‘दान’क नामपर बिना सूचना अतिरिक्त पाली नहि देल गेल। मदन अपन कापीमे विद्यालय पहुँचेबाक नियत समय लिखि गाड़ी स्टार्ट कएलनि। हुनका जाएब देखिकऽ उर्मिला किछु अधीर भेलीह, मुदा अस्पतालक घड़ी विद्यालयक बच्चासभक समयकेँ निगलि नहि सकैत छल।

हरिचरण पासवान आगाँ बढ़लाह। हुनकर ठेकाक गाड़ीमे भोरमे खालि औषधि-पेटी ढोएल गेल छल; सीट आ फर्श फेर साफ करब जरूरी छल। एक कर्मचारी कहलक जे रोगी लऽ चलब अछि तँ “गाड़ी खाली अछि” एतबे पर्याप्त। हरिचरण गाड़ीक भीतरक टूटी कुण्डी देखौलक। “जँ बेज्ज हल्लत तँ रोगीक जिम्मा हमर माथे चढ़त। पहिने जाँच।” तुलसीक चालक जमीर आ अस्पतालक कर्मचारी मिलि सुरक्षित बइठबाक ठाम देखलनि। हरिचरण प्रस्ताव देलनि जे हुनकर गाड़ी फिलहाल केवल जाँचल उपकरण, जरूरी सामग्री आ रोगीक परिवारक स्वीकृत सामान ढोएत; जखन धरि चिकित्सक आ परिवहन निरीक्षक उपयुक्त नहि मानथि, गम्भीर रोगी नहि।

हरिचरणक बहीमे चालकक भोरक हाजिरी, पेट्रोल, सफाई आ रोकल घड़ी अलग-अलग स्तम्भमे छल। ठेकेदारक प्रतिनिधि रोगीसेवाक नामपर आधा भाड़ा देबाक प्रस्ताव रखलक। हरिचरण उत्तर देलनि, “हम अपना हिस्साक लाभ घटा सकैत छी; चालकक राति काटि नहि सकैत छी।” एकटा युवा चालक, जे तीन घण्टासँ बिना विश्राम ठाढ़ छल, अपन नामक कात गलतीसँ ‘खाली’ लिखल देखलक। हरिचरण ओकरा पेंसिल देलनि। युवक अपन पालीक वास्तविक समय भरलक। एहि संशोधनसँ ओकर थाकल देह तत्क्षण तरोताजा नहि भेल, मुदा अगिला चालक बजाएबाक कारण पंजीमे दर्ज भऽ गेल।

सात बजिते सलमा शेख अस्थायी सेवा-डेस्क खोललीह। अनवरी अपन बेटी रेहानाक पंजीक कागद बढ़ौलीह; पहचानक एक अंक पुरान प्रतिमे अलग छल। खिड़कीक कर्मचारी कहलक जे मिलान बिना स्थानान्तरण-पर्ची नहि निकलत। अनवरी बच्चीक पयर सहारैत पुछलीह, “हम बेटीकेँ कागद सुधरबए घर लऽ जाऊ?” सलमा पहिने नर्सकेँ बजौलीह। चिकित्सकीय जाँच आ पीड़ानिवारणक आवश्यकता देखलाक बाद ओ स्पष्ट कहलीह, “पहचानक सुधारक काज अलग, उपचारक क्रम अलग।” ओ अस्थायी उपचार-संकेतक

व्यक्तिगत पर्ची बनबौलीह; ओहिमे पूरा नाम सार्वजनिक फाटकक सूचिपर नहि टाँगल गेल।

कर्मचारी सलमाकेँ सावधान कएलक जे बादमे बिल बनबाक घड़ी एहन अस्थायी पर्चीपर प्रश्न उठत। सलमा अपन डेस्कक मासिक नियुक्तिक शर्त जानैत छलीह; गलतीक आरोप लागल तँ हुनकर रोजी संकटमे पड़ि सकैत छल। तइयो ओ लिखित आपत्ति देलीह —‘तत्काल चिकित्सकीय आवश्यकता पहचान-संशोधनक प्रतीक्षा नहि करय’। बिल विभागक अधिकारी हस्ताक्षर करबाक बदला मौखिक स्वीकृति चाहलक। सलमा कहलनि, “जे बात हम लिखि रहल छी, ओकर उत्तर सेहो लिखल रहय।” ओ अनवरीसँ अनुमति लऽ केवल आवश्यक दस्तावेज निजी लिफाफामे रखलीह; जनसभा लेल रोगीक परिचयक फोटो नहि।

सात बजि सत्ताइस मिनटपर अनिरुद्ध दोसर केन्द्रसँ फोनपर बात समाप्त कएलनि। एक रोगीक लेल ओतय निर्धारित बिछौना, पहुँचबाक द्वार आ दवा जारी रखबाक व्यवस्था पुष्ट भेल छल। उर्मिला सामानक सूची पढ़लीह। सहायक कहलक जे एकटा बोतल अस्पतालमे उपलब्ध नहि, गाड़ी निकसलाक बाद बजारसँ मँगाओल जाए। अनिरुद्ध मना कएलनि। रोगीकेँ चलैत उपचारक अपूर्ण जिम्मा दऽ सड़कपर भेजब उचित नहि। औषधि-भण्डारसँ उपयुक्त उपलब्ध सामग्रीक पुष्टि, उपयोगक निर्देश आ गन्तव्य केन्द्रक सहमति बिना यात्रा शुरु नहि होएत। एहि प्रतिवादमे आठ मिनट गेल; ओ समय ‘अनावश्यक विलम्ब’ नहि, सुरक्षाक कारण लिखल गेल।

बरामदामे पानि आब एक ठाम दू अँगुलसँ बेसी छल। हीरा मेच पाछाँक दरवज्जापर छोट डण्डासँ नापि बतौलीह जे बाहरक पानि ओहि स्तरधरि टिकि रहल अछि जतय नालीक निकास अटकल। भीतर धुलाईघरक टपकबाक थान भिन्न छल—छतक जोड़ आ भीजल दीबाल। तारा नक्शापर दू रंगमे सीमा बनौलीह। एक कर्मचारी चाहैत छल जे दुनूकेँ ‘बारिसक सामान्य असर’ लिखि देल जाए। हीरा ओकरा देबालक पुरान सूखल दाग आ आजुक ताजा रेखा अलग देखौलीह। “बारिस एकटा घटना थिक,” ओ कहलीह, “कुनो जोड़ टूटल अछि कि नहि, से दोसर परीक्षण माँगत।”

उर्मिलाक हाथमे धुलाईघरक पुरान हिसाब छल। पिछिला सप्ताहमे दू बेर साफ कपड़ा देरिसँ पहुँचल छल; एक दिन जल-निकासी रुकने छल, दोसर दिन धुलाईक नलसँ पानि नहि आयल छल। ओ पुरान घटनाक भिन्नता नीकसँ लिखलीह। अस्पतालक सहायक एकटा संयुक्त शिकायत तैयार करबाक प्रस्ताव रखलक, जाहिमे सभ किछु ‘बाढ़’ कहि देल जाए। उर्मिला शान्त स्वरमे पूछलीह, “धुलाईक नलकेँ नगरक मेड़ कोना जोड़ि देब?” ओ चिकित्सकीय सामग्रीक गिनती आ भवन-मरम्मतक जिम्मेवारी अलग विभागमे पठौलनि। दूनू विभागक बीच सूचना दियौनाइ जरूरी छल, जिम्मा एक दोसरापर फेकि देब नहि।

आठ बजि छप्पन मिनटपर पहिल रोगी उठाबए प्रशिक्षित कर्मचारी पहुँचलाह। परिवारक एक सदस्य संग जेबाक अनुमति छल, मुदा ओहि स्त्रीक वृद्ध माय आ छोट बच्चा अस्पतालक फाटकपर ठाढ़ छल। स्त्री पुछलीह, “हम मायकेँ एतय छोड़ि कते दूर चलि जाएब?” सलमा आ शबनम बइठबाक सुरक्षित ठाम, घर सूचना पहुँचेबाक व्यक्ति आ दोसर केन्द्रक सम्पर्क अलग लिखबौलीह। भीड़मे कियो कहलनि जे एतेक प्रश्नसँ गाड़ी छूतत। उर्मिला घड़ी देखिकऽ उत्तर देलीह, “जे नहि बुझल जे रोगीक संग के जायत, ओकरा आधा बाटमे उतारब?” ओ सहमति-पत्र जाँचलीह, रोगीक निजी असहमति सेहो सुनबाक जगह राखलीह।

आठ बजि उनसठ मिनटपर गाड़ी फाटकक भीतर घुसल, मुदा चक्काक आगाँक कादोमे छिड़कल गिट्टी फिसलि गेल। जमीर इंजन बन्द कएलक। अस्पतालक एक अधिकारी खिसिआइत गाड़ी बलपूर्वक खिंचबए कहलनि। तुलसी कहलक जे सुरक्षित पट्टा बिछाए बिना रोगी नहि चढ़त। पारो पत्थरकट्टा कल्हि सीमित मरम्मतक चिह्न राखि गेल छलीह; ओहि पत्थरक कोनो भारी संरचनात्मक सहारा एखन नहि बनल छल। मदन विद्यालयक फेरा पूरा कऽ घुरैत देखलनि जे फाटकपर भीड़ बढ़ल अछि। ओ अपन गाड़ी किनार लगाकऽ यात्रीक बाट साफ करबामे सहायता कएलनि, मुदा अस्पतालक गाड़ीकेँ खिंचबाक जिम्मा बिना जाँच नहि लेलनि।

नौ बजि बारह मिनटपर अस्थायी सुरक्षित पट्टापर गाड़ीक चक्का पार भेल। उर्मिला पंजीमे लिखलीह—नियत प्रवेश आठ बजि पचास, वास्तविक प्रवेश नौ बजि बारह;

एककैस मिनट नहि, बाइस मिनट। नर्स कहलीह जे गाड़ी बारम्बार हल्लल, तकर रिकॉर्ड सेहो चाही। जमीर अपन चालक-पंजीमे अस्थायी पट्टा बिछेबाक समय आ सहायकक नाम लिखलक। एक पत्रकार पुछलक जे ई देरीसँ ककर मृत्यु भऽ सकैत छल। उर्मिला उत्तर नहि देलीह; अनिरुद्ध कहने छलाह जे रोगीक परिणाम सम्बन्धी दावा चिकित्सकीय परीक्षण बिना नहि कएल जाए। नैरा ई मौनक अर्थ बुझैत छलीह—बिना प्रमाणक तेज आरोपसँ वास्तविक लापरवाहीक साक्ष्य सेहो कमजोर पड़ि सकैत अछि।

सरस्वती देवीक कक्षमे ओहि बीच हुनकर साँस आरो कठिन भऽ गेल छल। अनिरुद्ध आ ड्यूटीक चिकित्साकर्मी हुनकर उपचारमे लागल छलाह। सरस्वतीक पुतोहु एक बेर बाहर आयल आ उर्मिलासँ पुछलक, “गाड़ी निकसल तखन इनका किएक नहि लऽ जाइ छी?” उर्मिला चिकित्सककँ बजौलीह। अनिरुद्ध समझौलनि जे सरस्वतीक हालत एहन नहि जे एहि बातसँ यात्रा सुरक्षित ठहराओल जाए; ओहि घड़ी हुनका एतहि उपचार देल जा रहल अछि। पुतोहु नाराज भेलीह, “काल्हि कहल गेल छल ने जे गाड़ी भेटला सँ सभ ठीक होएत!” अनिरुद्ध नहि कहलनि जे सभ ठीक होएत। ओ पुरान मौखिक आश्वासनक स्रोत लिखबाक आग्रह कएलनि।

नौ बजि अठारह मिनटपर पहिल स्थानान्तरणक वास्तविक प्रस्थान दर्ज भेल। मदनक वाहनमे साफ सामग्री आ एक स्वीकृत परिवार-सदस्यक छोट सामान गेल; हरिचरणक गाड़ी औषधि-भण्डारसँ जाँचल पेटी लऽ अलग मार्गसँ निकलल। रोगीक वाहनमे आवश्यक चिकित्सकीय कर्मचारी संग छलाह। तीन गाड़ीक नम्बर, सामानक मुहर आ अलग भाड़ा-पर्ची बनल। शबनम कहलनि, “एके फेराक तीन रसीद अछि, तीन अलग जिम्मेदारी सेहो।” ककरो कृपाक फोटो नहि खिंचल गेल। मुदा गाड़ीक पाछाँ धूल उठल तँ फाटकपर प्रतीक्षा करैत लोक किछु देर लेल चुप भऽ गेल।

नौ बजि छत्तीस मिनटपर रेहानाक चोटक जाँच सम्पन्न भेल। चिकित्सक कहलनि जे ओकर उपचार एतहि सम्भव अछि; दोसर केन्द्र पठेबाक जरूरत नहि। अनवरीक मुखपर राहत अएलनि, मुदा ओ पुछलीह जे पहचानक गलती सुधरल कि नहि। सलमा कहलीह जे उपचार चालू अछि, पंजी-सुधारक आवेदनमे पुरान अंक आ नब सही प्रतिक स्रोत दुनू सुरक्षित राखल गेल अछि। अनवरी स्वयं अपन सही देखलीह। एक कर्मचारी चाहैत छल

जे गलतीक बात कागदसँ काटि देल जाए। अनवरी रोकलीह, “कटब नहि। लिखू जे पहिल अंक गलत छल, आ कखन सुधारल।” बेटी ओहि बीच बिछौनापर बैठि खिड़कीक बाहर एक फुच्ची चिड़ै देखैत छलीह।

दह बजि सात मिनटपर सरस्वतीक कक्षसँ पुतोहुकें फेर बजाओल गेल। चिकित्सकीय देखभाल चलैत रहितो सरस्वतीक स्थिति बिगड़ि गेल। दह बजि चौदह मिनटपर चिकित्सक हुनकर मृत्यु प्रमाणित कएलनि। उर्मिला देवाल लग ठाढ़ छलीह; कपड़ाक गनतीवला पन्ना हाथमे छल, मुदा ओहि क्षण ओकर संख्या हुनका कोनो सहारा नहि देलक। पुतोहु धीरे सँ पुछलक, “हम जखन हाथ छोड़ने छलहुँ, ओ तखन जीवित छलीह?” एक परिचारिका कहलनि जे ठीक ओहि समयक किछु सेकण्ड ओ बताबि नहि सकैत छथि। अनिरुद्ध उपचार-पंजी आ देखल गेल अन्तिम अवस्थाक आधारपर जतेक पुष्ट छल ततेक कहने रहि गेलाह।

पुतोहु, जिनकर नाम शैलजा छल, कक्षसँ बाहर आबि चप्पल खोजए लगलीह। चप्पल ओकर पररमे छल। सलमा ओकरा कुर्सी देलीह, मुदा शैलजा नहि बैसलीह। “जे कहैत छल जे गाड़ी भेटि जाएत तँ माय बचि जेतीह, ओकर नाम लिखू।” ओ कहलीह। अनिरुद्ध ओ वचन सुनल रहथि कि नहि, से पुष्टि नहि कएलनि; शैलजाक कथन शिकायत-पंजीमे ठीक हुनकर शब्दमे दर्ज कएल गेल। उपचारक समय, चिकित्सकीय निर्णय आ वाहनक देरीक क्रम सुरक्षित राखल गेल। शैलजाक दुःखकें ‘भ्रम’ कहि काटल नहि गेल, मुदा देरीकें मृत्युकें एकमात्र कारण सेहो घोषित नहि कएल गेल।

शैलजा पुछलीह जे सरस्वतीक देह लऽ जाएबाक लेल फेर भाड़ा देब पड़त कि नहि। एक कर्मचारी ‘आपत्कालीन सुविधा’ कहि उठल, मुदा ओकरा नियम बुझल नहि छल। उर्मिला विधिसम्मत प्रक्रिया पूछबाक लेल कार्यालय गेलीह। तकरा बीच शैलजा अपन छोट देवरकें फोन कएलीह। फोनक ओहि पारसँ पहिल प्रश्न आयल—“माय की कहलीह?” शैलजा किछु देर कोनो उत्तर नहि देलीह। तखन कहलीह, “अन्तमे हुनकर हाथ गरम छल।” एहि एक पाँतिक बाद ओ चुप भऽ गेलीह। बरामदाक भीजल फर्शपर एक झाड़ूवाली स्त्री चुपचाप पानी हटा रहल छलीह; ओकरा मार्ग साफ करबाक छल, शोकक तमाशा देखबाक नहि।

दुपहरिक पहिल घण्टामे रोगीक गाड़ी दोसर केन्द्र पहुँचबाक पुष्टि आयल। स्वागत-कक्षक हस्ताक्षर आ प्राप्त सामग्रीक गनतीमे एकटा विसंगति छल—पठाओल गेल कपड़ाक खोल तीन, प्राप्तमे दू। उर्मिला फोनपर गिनती फेर पढ़लीह; तेसर खोल रोगीक बिछौनाक नीचाँ अलग बान्हल भेटल। ओ ओकर सही स्थान दर्ज कएलनि, मुदा पहिल त्रुटि पंजीसँ मेटौलीह नहि। गाड़ीक पहुँचबाक वास्तविक समयमे सेहो चारि मिनटक अन्तर छल—फाटकपर रोकबाक समय आ रोगीकेँ कक्षमे सुपुर्द करबाक समय अलग। ओ लिखलीह, “पहुँचल” आ ‘सुपुर्द’ एक समय नहि।”

हरिचरणक चालक दिनक हिसाब लऽ आयल। ओकरा आपत्कालीन फेरा लेल जे जोखिम-भत्ता देबाक कहल गेल छल, भुगतान-पर्चीमे ओ स्तम्भ खाली छल। हरिचरण रसीद स्वीकार करबाक बदला लाल पेंसिलसँ चिन्ह लगा देलनि। “कागदपर आजु तीन रोगी नहि ढोएल गेल; हम उपकरण आ परिवारक सामान ढोएलहुँ,” ओ कहलनि। एक कर्मचारी पुछलक जे गाड़ीबला एतेक बारीक खाता किएक रखैत छथि। हरिचरण कहने छलाह, “काल्हि जे सच छल, ओकरा आइ सुविधाक लेल बदलि देब, तखन परसू ककरो मजदूरी नहि बचत।” ओ चालककेँ भोजन आ विश्रामक समय देलनि; दोसर फेराक वचन एखन नहि।

मदन राउत विद्यालयक पहुँच-पंजी लऽ समितिक लग घुरलाह। सातू बच्चा अपन-अपन नियत स्थानसँ शिक्षकक देखरेखमे पहुँचि गेल छल, एक बालिकाक माय सूचना देरिसँ भेटलाक शिकायत कएने छलीह। मदन ओहि शिकायतकेँ पंजीक कात रखलनि। अस्पतालक एक सहायक हुनका दोसर दिन भोरहिसँ गाड़ी आरक्षित राखबाक कहलनि। मदन उत्तर देलनि, “साझा समितिक बिना कोनो समय नहि देब। बच्चा आ रोगी दुनू समयमे पहुँचना चाहैत छथि, मुदा एक गाड़ीकेँ दू ठाम एक्कै बेर नहि पठाओल जा सकैत अछि।” समिति दोसर दिनक विद्यालय-फेराक विकल्प खोजबाक जिम्मा स्वयं लेलनि।

सलमा अपना सेवा-डेस्कक खिड़की बन्द करैत छलीह तँ कक्षाध्यक्ष हुनकर लिखित आपत्ति पढ़बाक लेल बजौलनि। ओ कहलनि जे अस्पतालक नाम खराब होएत। सलमा उत्तर देलीह, “जे इलाज करबाक लेल आएल, ओकरा पहिने नामक अंक मिलाबए कहल गेल। ई बात सच अछि। जे काज चिकित्सक कएलनि, तकर श्रेय हुनकहि देल जाए; जे

रोकब गलत छल, ओकरा बदलल जाए।” अधिकारी हुनका तत्काल कोनो प्रशस्ति नहि देलनि; मुदा अगिला पालिकेँ मौखिक नहि, लिखित निर्देश देबाक सहमति देलनि जे आपात उपचार पंजी-संशोधनक प्रतीक्षामे रोकल नहि जाए। सलमा ओकर प्रति लेल अपन सही सुरक्षित राखलीह।

साँझक पहिने उर्मिला दू पन्ना अलग कएलीह। पहिलमे रोगी-स्थानान्तरणक तय आ वास्तविक मिनट, औषधि, उपकरण, कपड़ा, परिवारक सहमति आ पहुँचबाक पुष्टि छल। दोसरमे अस्पतालक पानि—बाहरक अवरुद्ध निकासी, भीतरक चुआन, भीजल कपड़ाक हानि आ सफाईक अलग श्रम। सरस्वतीक मृत्युक चिकित्सकीय अभिलेख ओहि दुनू सार्वजनिक प्रतिमे नहि रखल गेल; परिवारक अधिकृत पहुँच आ सम्भावित परीक्षण लेल सुरक्षित रहल। शैलजाक शिकायतक प्राप्ति-पर्ची हुनका हाथेँ देल गेल। ओ पर्ची झोरामे राखि कहलीह, “मायकेँ एहि अंकमे नहि समेटू। मुदा जतेक घड़ी सच अछि, ततेक घड़ी बचाउ।”

अस्पतालक पाछाँक नालीपर हीरा आ तारा फेर नाप करैत छलीह। अस्थायी पाट पानि के कने घुमौने छल, मुदा पुरान दीवालक भीतरी परत हाथ लगिते झरि रहल छल। तारा कल्हिक समझौतामे लिखल ‘छोट सुरक्षित मरम्मत’क कात आजुक माप जोड़लीह। अभियन्ताक स्वीकृति आ मजदूरक वास्तविक गवाही मिलान बिना ओ पूर्ण सुधारक सही नहि देलीह। दूरसँ उर्मिला अस्पतालक ऊपरी खिड़कीमे बुझैत उज्जर पर्दा देखलीह। भोरक खाली कटोरीमे आब पानि आधासँ बेसी भरि गेल छल। ओ कटोरी उठाकऽ बाहर उझलनि, तखने नव बूँद ओकर तलमे बाजल। काल्हिक काजक आरम्भ ओहि आवाजक संग होइत छल; आइक दिनक जीवन आ क्षति दुनू लिखल जा चुकल छल।

अध्याय १०२ • मरम्मतिक तह

गोमती बेलदार अपन फावड़ाक धारसँ नालीक कातक पातर सीमेण्ट खुरचलीह तँ भीतक नीचाँ पीयर माटिक एक धारी खुलि गेल। भोरक पानि ओहि दरारमे घुसि चुकल छल; ऊपरसँ देखला पर ई नव मरम्मतिक समतल पाट बुझाइत, मुदा अड़ुरी लगबिते छर्रा झरए लगल। गोमती फावड़ा धरतीपर राखि टोकरी उठौनिहार दू मजदूरकेँ रोकलीह। “एतय पयर राखब नहि। जे पाट हमरा सभसँ बनबाओल गेल, तकर नीचाँ ईट हमरा सभ लगबाबए नहि कहल गेल छल।” तारा मल्लिक पोखरिक कातसँ आबि ओहि रेखाकेँ रस्सीसँ घेरलीह। ओहि घड़ी अस्पतालक पुरान पाँखक खिड़कीमे उर्मिलाक धोल कपड़ा टाँगल देखाइत छल; काल्हिक सरस्वती देवीक मृत्यु सभकेँ एखनहुँ मनमे चुभि रहल छल।

अदिति कार्यालयक मोट नक्शा आ पिछिला निरीक्षणक कापी लऽ पहुँचलि। हुनका पाछाँ नगरक मरम्मति-अधिकारी आ ठेकेदारक हिसाब देखनिहार युवक छल। अधिकारीक पहिल प्रश्न छल, “सुरंग सन छेद भरि देल जाए तँ गाड़ी आजु चलि सकत?” गोमती पाटपर राखल लाल ईट उठा देखौलीह। एक दिस पुरान चूनाक सख्त तह छल, दोसर दिस नब सीमेण्टक पातर परत। “गाड़ी चलब जरूरी अछि,” ओ कहलीह, “मुदा ई छेद नहि, बन्द कएल पुरान बहावक मुँह थिक। हम जे देखलहुँ तकरा छेद कहि देब तँ कल्हि फेर पानी एतहि जमा होएत।” अदिति ईट अपन कागदपर नहि रखलीह; पहिने स्थल, समय आ ईट उठाओल व्यक्तिक नाम लिखलीह।

काल्हि अस्पतालक रोगी-स्थानान्तरणमे गाड़ीक चक्का फाटकक कादोमे फसि गेल छल। अस्थायी पाट बना कऽ रोगी पठाओल गेल, मुदा नौ बजि बारह मिनटक प्रवेश-समयकेँ कियो मिटौने नहि छल। उर्मिला आइ ओहि पंजीक प्रति लेने पहुँचलि। ओ कहलीह, “सरस्वती देवीक मृत्युक चिकित्सकीय कारण एहि माटिसँ सिद्ध नहि होइत। मुदा जे गाड़ी बाइस मिनट फाटकपर ठाढ़ रहल, तकर कारणक जाँच छोड़बो नहि चाही।” मरम्मति-अधिकारी विरोध कएलक जे अस्पतालक भीतरक पाइपसँ सेहो पानि चुबैत

अछि। तारा उत्तर देलीह, “बिल्कुल। भीतरक चुआनक जाँच अलग होएत। बाहाक बन्द मुँहक प्रमाणकँ ओहि पाइपक पाछाँ नहि नुकाउ।”

गोमती अपन पुरान मजदूरी-पंजी खोलीह। पहिल पन्नामे नोनथराक पुरान ढूहसँ माटि ढोएबाक आठ खेप लिखल छल; दोसर पन्नामे गोदामक पाछाँक भराइ लेल तेसर दिनक भुगतान। मजदूरसभकँ जे नाप कहल गेल छल, ओ गोदामक फाटक धरि छल; बाहा-मुँहथरि बन्द करबाक कोनो आदेश हुनका नहि देखाओल गेल छल। ठेकेदारक युवक कहल, “काम कएलहुँ तँ जिम्मेवारी सेहो लेबाक पड़त।” गोमती ओकर हाथसँ पंजी वापस लऽ कहलीह, “अपन ढोएल माटिक जिम्मेवारी हम लैत छी। कहाँ उतारबाक कहल गेल, कतेक घण्टा खटलहुँ, से लिखने छी। मुदा जे नक्शा आ आदेश देखबाओल नहि गेल, तकर जिम्मेवारी हमरा नामपर कोना चढ़त?”

अमृता चौहान नोनथराक पुरान घरक एकटा पीतल रंगक छोट मुहर लऽ अएलीह। मुहर हुनकर बाबाक नहि, गामक पुरान सामूहिक माटि-विक्रयक छल; ओ एकरा स्वामित्वक प्रमाण कहि नहि प्रस्तुत कएलीह। अमृताक दावा छल जे नोनथराक उद्योग बन्द भेलाक बाद परिवारसभकँ जे भूमि-सुधारक वचन देल गेल, तकर अपूर्ण नकल पर ठेकाक नया नक्शा चढ़ा देल गेल। “गोमतीक घण्टा हमर जमीन नहि,” ओ दृढ़ स्वरमे कहलीह, “आ हमर गामक पुरान माटि गोमतीक रोजीक दोष नहि। हम राजस्व-पत्रक कड़ी माँगैत छी।” अदिति हुनकर अलग आवेदन संख्या दर्ज करौलीह।

ठेकेदारक युवक दुनू स्त्री दिस देखि हँसल, “बेलदार आ नोनिया सभ एक्के माटिक काज करैत अछि। सामूहिक कागद बना दिअ।” अमृता ओकर उत्तर देबाक लेल आगाँ बढ़लीह, मुदा गोमती हाथ उठा संकेत कएलीह। “हम दुनू मिलि कऽ गवाही देब, किएक तँ काम एके इलाकामे भेल। मुदा एकर मतलब नहि जे नोनथराक जमीन हमरा मजदूरीक बदला भेटल, कि हमर अधूरा दाम अमृताक पुरान दावासँ चुकत।” तारा दू स्तम्भवला नकल बनौलीह—भूमि-दावा, मजदूरी-दावा। अमृता अपन माँगक संग पुरान चिन्ह लगौलीह; गोमती पहिल बेर पूरा घण्टा सहित हस्ताक्षर कएलीह।

दुपहरिक पहिने बाहा-मुँह खोलाइक वार्षिक दिन लेल जमा लोकसभ कातक पीपरतरि जुटए लगल। नेना सभ ढोलक आ रङ्गीन कागदक ध्वजा आनने छल, मुदा ताराक

कहलापर ध्वजा सुरक्षित ऊँच ठाम गाड़ल गेल। सुरक्षित मार्गक बाहर कियो माटि नहि काटत, से पहिने कहल गेल। हीरा अपन माप-काँटी तानलनि; रमणी बिन्द पोखरिक माछ पकड़बाक बाट आ फूलमती तियर जाल राखबाक ठाम चिह्नौलीह। सभक काज एके दिन भेल, मुदा घाटक माछ, खेतक पानि आ अस्पतालक फाटक तीन अलग उपयोग छल। समारोहक नामपर बिना स्वीकृति मुँहथरि खोलि देबाक प्रस्ताव नहि स्वीकारल गेल।

तारा तीन ठाम बाँसक छड़ी गारलीह। पहिल छड़ी लग जमा पानिक गहिराइ हथेलीक आधा; दोसर लग एक वित्ता; तेसर ठाम पुरान ईटक कटानक भीतर पानि लगभग स्थिर। ओ मिनट गनि कऽ तीनू ठामक निशान तुलना कएलीह। पानिक सतह बरखा बन्द भेलो पर एक रेखामे नहि उतरि रहल छल। निकासक मुँह पर फेंकल ढेरी आ सीमेण्टक पाट एक जगह भेटल, मुदा कतेक पानि धरि ककर हिस्सा जिम्मेवार छल, से एखन अनुमान छल। हीरा कापीमे लिखलनि—‘प्रवाहक दिशा देखल, पूर्ण कारण नापब बाकी।’

एक बूढ़ पुराना बाहा-मुँह खोलाइक दिनक बात सुनए लगलाह। पहिले लोकसभ घास काटि गाद निकालैत, फेर सरपत बान्हि बाढ़िक समय पानि रोकबाक छोट जुगति बनबैत छल। एहि बेर ओ कहलनि जे रातिहि मजदूर बुला सब पाँख काटि देल जाए। गोमती आग्रह नहि मानलीह। “हमरा पुरखा माटि चिन्हैत छलाह, एहि लेल ई ठीक थिक, मुदा आब एहि ठाम अस्पतालक गाड़ी चलैत अछि, भीतर लोहेक पाइप अछि, आ दीवालक नीचाँ अनजान भराइ। अन्हारमे कुदार चलाएब तँ मजदूरकेँ गहिरे खाधिमे पठायब।” बूढ़ हुनकर बात सुनि अपन पोताकेँ ढोलक बगलमे राखबाक कहलनि।

गामक एक किशोरी, जे ध्वजाक कागद काटि रहल छलीह, गोमतीसँ पुछलक, “जे ईट अहाँ हटौलहुँ से पुरान अछि कि नब?” गोमती ओकरा दू परतक अन्तर अङ्गुरीसँ छुअबिते कहलीह, “पुरान आ नब हमर आँखि कहि सकैत अछि, मुदा ठीक वर्ष लेब प्रयोगशालाक वा भरोसेमन्द अभिलेखक काज।” किशोरी फेर पुछलक, “तखन सभकेँ ईटक रंगसँ दोष किएक बुझि जाइत छैक?” अमृता मुस्की देलीह। “दोषक नाम जल्दी भेटैत अछि, बेटा; दाम आ जिम्मेवारीक कागद देरिसँ।” नेना सभ ढोल बाजब शुरू कएलक, मुदा कामक सीमाकेँ चूना सँ खींचल रेखा पार नहि कएलक।

फूलचन लोध अपन पएरक माटि साफ कऽ पहुँचलाह। पुनर्वासक लेल हुनका जे जमीनक प्रस्ताव भेटल छल, ओहि भूखण्डक ऊपर सतह सुखल छल, मुदा आधा हाथ माटि खोदिते नीचाँ चिपचिपा, पानि रोकनिहार तह भेटल। फूलचन अपन खेतीक अनुभवसँ कहैत छलाह जे एकेर सहारे बरसातक बाद धानक रोपनी सम्भव भऽ सकैत अछि, मुदा जाड़मे सिंचाइक बाट नहि। अधिकारी कागद देखबैत कहलनि, “अठारह धूर बराबर अठारह धूर।” फूलचन मुस्काइ नहि सकलाह। “अठारह धूर पर घर टिकत, कि बीहन उगत, ई अलग गनती अछि।”

फूलचन भोरे प्रस्तावित जमीनसँ दू छोट माटिक नमूना लेने छलाह। ओ तारा लग रखैत कहलकनि, “एहि दोसर थैलीमे बिखरि रहल रेत अछि। जँ हम अपन पानि भरल खेत छोड़ि ओतय जाएब, तँ पानि, खाद आ बजार धरि ढुलाईक खर्च कतेक?” एक युवक ‘सरकारी जमीन निशुल्क भेटि रहल’ कहि टारए चाहलक। फूलचन ओकरा अपन पिछिला रोपनीक हिसाब देखौलनि—बीहन, मजदूरी, गोबर, उराहि आ घरक भोजन। ओ स्पष्ट कहलनि जे असुरक्षित मूल ठाम छोड़बाक आवश्यकता मानैत छथि, मुदा दोसर ठाम खेतीक टिकाउ विकल्पक जाँच बिनु स्वीकृति नहि देताह।

अदिति गोमतीकँ एक कात लऽ गेलीह। हुनकर पहिल निरीक्षण-पत्रमे ‘छोट मरम्मत पर्याप्त’ लिखल छल; कातमे बादक तिथिपर ‘पुनर्जाँच’ जोड़ल गेल छल। गोमती कहलीह, “अहाँ कागदक भूल सच मानब तखन हमर बयान जाँचाइत। नहि तँ ठेकेदारक पाँति सगरो चलत—मजदूरसभ जाली बिगाड़लक।” अदिति पहिल पत्रक मूल नकल मांगबैत कहलीह, “हमर पहिल निष्कर्ष जतेक देखलहुँ ताहिपर छल, मुदा ‘पर्याप्त’ शब्द एखन टिकैत नहि। हम एकरा वापस लेब; घटना-दिनक निरीक्षणक सीमाकँ नहि मेटायब।” गोमतीक आँखि अदितिक कागदपर रहि गेल, जेनाक वाक्यक वास्तविक भार तौलि रहल हो।

मरम्मत-विभागक प्रतिनिधि आपत्ति कएलक जे एहन लिखला पर भुगतान रुकि जाएत आ तत्काल फाटक खोलब कठिन होएत। अदिति उत्तर देलीह, “असुरक्षित पाटकँ पूर्ण मरम्मत घोषित कऽ गाड़ी चढ़ाएब आसान नहि। किन्तु अस्थायी सुरक्षित बाट आ मरम्मतिक मूल आदेशक जाँच एक साथ चलि सकैत अछि।” ओ लिखित संशोधनमे

पुरान निरीक्षणक तिथि, आइक स्थलनाप, गोमतीक मूल बयान आ जाँचबाक बाकी प्रश्न अलग रखलीह। ‘छोट मरम्मत पर्याप्त’ शब्दक समक्ष स्पष्ट लिखलीह—‘दावा वापस; संरचनात्मक आ जलनिकासी परीक्षण आवश्यक।’ कियो चाहैत छल जे पहिल प्रतिक पन्ना फाड़ि देल जाए; अदिति इंकार कएलीह।

एहि बीच ठेकेदारक हिसाब-पुस्तिकासँ एक बिल भेटल। ओहिमे ‘सस्ता भराव, तात्कालिक पक्का पाट’ लिखल छल, मात्रा अंकसहित। तारा बिलक रकम, गोमतीक माटि-ढुलाईक खेप आ स्थलपर देखल परतक मोटाड़ एक कागदपर अलग-अलग लिखलीह। बिलमे पाट पूरा बनेबाक दिन लिखल छल, मुदा स्थल-स्वीकृतिक सही दुई दिन बादक। वित्तीय भुगतानक फाइलमे भने तेसर तारीख छल। कर्मचारी तुरन्त निष्कर्ष निकालब चाहलक जे भुगतानसँ पहिने काम भऽ गेल। अदिति रुकौलीह—‘स्वीकृत’, ‘मापल’ आ ‘भुगतान’क लेखा तीन प्रक्रिया थिक; एकर तिथिक अन्तर अपने अपराध प्रमाण नहि।

पुरान पत्रक दोसर फाइल खुलल तँ विभागीय देरीक तह सामने आयल। तारा द्वारा बाहा-मुँहथरिफ फेर माप माँगबाक प्राप्ति छल; निरीक्षणक कागद ठेकाक दफ्तर घूमि नगरक मुख्य शाखामे पहुँचल छल, मुदा बीचमे मूल नक्शाक मागल परिशिष्ट नहि जुड़ल। एक शाखा लिखने छल जे काम ‘स्थानीय स्तरपर पूरा’; दोसर लिखने छल जे ‘संरचनात्मक स्वीकृति अपेक्षित’। दूनू कागदक बीच दू महीनाक अन्तर छल। अदिति एहि खाली समयकेँ कोनो व्यक्तिक जानि-बुझि कएल विलम्ब नहि कहलीह; ओ प्रत्येक फाइलक प्राप्ति-दिन आ उत्तरदायी पदक नाम मांगलीह।

निरीक्षणक समय एक महिला मजदूर अपन हथेलीक पुरान छाला देखौलीह। हुनका पाट ढालबाक मजदूरीक आधा रकम एखन भेटल नहि छल; ठेकेदार हिसाबमे ओकरा ‘सहायक श्रम’ कहि कम दर चढ़ा देने छल। गोमती हुनका कहलनि जे अपन घण्टा आ काजक पूरा विवरण स्वयं लिखाउ, दोसर मजदूरक नाममे नहि। महिला अपन नन्हि बेटाक विद्यालयक फीसक पर्ची निकाललीह। अदिति काजक जाँच आ मजदूरीक देय लेल दू अलग प्राप्ति-पत्र बनबौलीह, ताकि गलत मरम्मतिक विवादक बहाने सही मजदूरी रोकल नहि जाए।

गोमतीक पंजीमे एक अनोखा शब्द छल। ‘बरुणा’ लिखल स्थल-चिह्नक बगलमे नव नकलमे ‘बरुणे’ छपल छल। एक निरीक्षक एहिसँ मानि लेलक जे दू ठामक रसीद एके परियोजनाक थिक। गोमती पन्ना फेरा कऽ देखौलीह जे पहिल पंजीक पूरा स्थल-पता अलग ठेकाक छल, दोसरमे केवल पुरान भू-नक्शाक किनारपर जलनामक उल्लेख। “ई ध्वनिभेद अछि कि दू अलग अभिलेख, हमरा पक्का नहि,” ओ कहलीह। नैरा लेखा बनबैत लिखलीह—बरुणा/बरुणे नामक स्रोत सत्यापन शेष; ध्वनिक मिलानसँ स्थल, नदी अथवा मजदूरीक समानता मान्य नहि।

दू मजदूर पुरान ईंटक ढेरी लग असहमत भऽ गेलाह। एक कहल जे आदेश गामक अध्यक्षक मौखिक छल; दोसर याद कएलक जे पाट ढालबाक दिन नगरक पर्यवेक्षक उपस्थित छल। गोमती हुनका दुनूकेँ अपन-अपन समय आ देखल व्यक्ति अलग लिखबाक आग्रह कएलीह। “जे नहि देखलहुँ से सेहो लिखू,” ओ कहलीह, “नहि तँ हमरा सभक ‘गवाही’ बादमे एक्के वाक्यमे बदलि जाएत।” पहिल मजदूर सहमत भेल, मुदा दोसर कनेक डरायल—अगिला ठेकामे नाम काटल गेल तँ? अमृता ओकरा भरोसा देबाक झूठ नहि कहलीह; बदला ओ मजदूरी-प्राप्तिक अलग रसीद रखबाक सहारा देलीह।

बाहा-मुँह खोलाइक दिनक भोजनक व्यवस्था देखनिहार महिलासभ सामूहिक दानक नामपर फेर निःशुल्क पकएबाक दबाव नहि स्वीकारलीह। एक महिला कहलनि, “मजदूर पानि रोकए, हम चूल्हा सम्हारी, मुदा सभकेँ श्रमक घण्टा लिखल जाए।” उर्मिला अस्पतालक भोजन-पत्रसँ अलग कऽ आयोजनक लेल आटा, तरकारी आ ईंधनक हिसाब बनौलीह। नेना सभक ढोल आ छोट चित्र बनएबाक काज तखन फेर शुरू भेल। वर्षक एहि आयोजनमे उत्सव छल—कादोक गन्ध, ताजा पातर साग, भीजल करछुल आ पीपरक छाह—मुदा एहि बेर आयोजनक सफलताक प्रमाण ‘पूरा नाली खोलल’ लिखल झूठ नहि बनल।

अस्पतालसँ एक कर्मचारी जल्दीमे दौड़ल आयल। कहलक जे बाहरी जलजमाव घटलासँ भीतरक दीवाल सुखाए लगल, तँ पूर्ण मरम्मत घुषित कएल जा सकैत अछि। तारा अपन काल्हिक माप देखौलीह—बाहरक तलमे कने कमी आयल, मुदा भीतरक पाइपक परीक्षण नहि भेल। उर्मिला कहलनि, “सरस्वतीक बाद परिवारसभ समय आ

जिम्मेदारी पूछत; ई सुनबाक अधिकार हुनका छनि। हम जे नहि जानैत छी, ओकरा ठीक भऽ गेल कहि नहि सकैत छी।” कर्मचारी निरुत्तर भेल; तैयो ओ सुरक्षा-चिह्नक एक किनार खोलबाक अनुमति पुछलक। अदिति कहलीह जे अस्थायी रोगी-बाटक अलग स्वीकृति उपलब्ध अछि, संरचनात्मक पट्टा एखन बन्द रहत।

तारा गादक नमूना सील करबैत घड़ी धरतीपर पहिलक चूना-रेखा फेर देखलीह। रेखाक भीतरी दिस झाड़ूक डाँटासँ पानि अटकाइत छल, बाहरी दिस एक पातर धार अपना बाट खोजि रहल छल। अस्थायी साफ-सफाइक बादो भीतरक जमा पानि नहि उतरने छल। हीरा ई अन्तर काल्हिक पानिक स्तरसँ मिलौलनि। “निकासी खुलि गेल” कहबाक बदला हुनका लिखबाक पड़ल—“ऊपरी बहाव कने चलल; नीचाँक रुकावट एखन अवशेष।” एहि वाक्यक कारण आगाँक मापक लेल अगिला बरखाक प्रतीक्षा नहि, सुरक्षित परीक्षणक नव तारीख तय कएल गेल।

शैलजा अस्पतालक फाटक लग खड़ी छलीह। ओ मापक दलक सदस्य नहि छलीह, आ कियो हुनका मृत्युक कारण बतएबाक लेल नहि बोलौने छल। उर्मिला हुनका एक लिफाफामे सरस्वतीक उपचार-अभिलेखक अधिकृत प्रति माँगबाक विधि देलीह। शैलजा पुछलीह, “कागदमे जे भोरहिक गाड़ीक बाइस मिनट अछि, से हमर मायक अन्तिम घड़ीक कारण नहि लिखल जाएत ने?” उर्मिला धीरे कहलीह, “जतेक जाँच होएत, ततेक सत्य कहब। जँ अहाँ चाहब तँ अपन प्रश्नक शब्द स्वयं रखू।” शैलजा अपन पुतोहु होएबाक परिचयक संग अपना शिकायतक हस्ताक्षर खुद कएलीह; ओहि पन्नामे ओकर शोकक पूरा अर्थ नहि छल।

दुपहरिक बाद अधिकारीसभक फेर बैसार भेल। पाँच लिखित सन्धि-शर्तमे बाहा आ अस्पतालक बाटक जिम्मेदारी कतेक दूर तय भेल, से अलग पढ़ल गेल। अस्थायी गाड़ीक चलनक स्वीकृति रहत, मुदा पाटक नीचाँक भौतिक दोषक जाँच बिनु स्थायी प्रमाणपत्र नहि। गोदामक सन्दिग्ध मालक सील जलनिकासीक मापक बहाने नहि खोलल जाएत। भोजनक मजदूरीक भुगतान अलग खातामे राखल जाएत। सार्वजनिक निरीक्षण-पत्रमे शैलजाक निजी चिकित्सकीय प्रश्न अथवा गोमतीक घरक पता नहि लिखल जाएत। नैरा

सभाक कार्यवृत्त लिखैत कहलनि जे सुधारक भाषा जतेक संकुचित होएत, ततेक भिन्न दायित्व बुझब कठिन होएत।

फूलचन अपना पुनर्वासक नकलपर लाल रेखा खिंचलनि। अहाँ सब पहिने एकरा ‘उपयुक्त’ लिखने छी, ओ अधिकारीकेँ देखौलनि। तारा हुनकर नमूनासभक परीक्षण लेल स्थान बतौलीह; जलस्रोत, माटिक गहिराइ आ बजारक बाट देखलाक बादे उपयुक्तताक निर्णय होएत। फूलचन कहलनि जे ओ घर बदलबाक विरुद्ध नहि, मुदा कृषि छोड़बाक लेल बाध्य नहि होएताह। अमृता जोड़लीह जे नोनथराक पुरान भूमि-दावाक सुनवाई सेहो पुनर्वासक कागदक छोट परिशिष्ट नहि बनय। गोमतीक अलग मजदूरी-दावासँ तीनू प्रश्नक भेद स्पष्ट भेल—जमीनक इतिहास, वर्तमान खेतीक उपयोग, आ ढोआइल माटिक दाम।

अदिति नव स्थलादेशपर सही कएलीह। एखन केवल बाहरी खुलल भागक नियंत्रित सफाई, गादक अलग नमूना आ सुरक्षित पैदल निरीक्षण स्वीकृत भेल; भारी फावड़ा आ मशीन बन्द मुँहथरि भीतर नहि जाएत। मूल मरम्मत-बिल, स्वीकृति-नक्शा, मजदूरक मूल बयान आ भुगतानक प्राप्ति जाँच-अधिकारीकेँ देबाक सीमा निर्धारित भेल। गोमती पुछलीह, “हमरा फेर जबरन पाट ढालबाक कहल जाए तँ?” अदिति लिखित आदेशक एक प्रति हुनका देलीह। “एहि आदेशसँ बाहर काज करबा लेल अहाँ ‘ना’ कहि सकैत छी।” गोमती कागद मोड़ि कुर्तीक भीतर नहि, अपन औजार-पेटीक सुखल भागमे रखलीह।

साँझ उतरए लगल तखन वार्षिक बाहा-मुँह खोलाइक सामूहिक टोली अपना काजक हिसाब पढ़लक। घास हटाओल गेल, तीन माप-ठाम चिह्नित भेल, कादोक नमूना अलग रखल गेल, रोगी-गाड़ीक सुरक्षित अस्थायी मार्ग बचल; बन्द मुँहथरि पूर्ण नहि खुलल। एक लड़का निराश भऽ पुछलक, “तखन एतय आजु कोनो जीत नहि भेल?” रमणी उत्तर देलीह, “माछक जाल सूखल अछि, मुदा हम सभ जँ हठात् नाली काटि दितहुँ तँ अस्पतालक दीवालो गिरि सकैत छल। जीतक नाप ढोलक आवाज नहि।” ओ बालक ढोलक पट्टी समेटि लए गेल, मुदा चूना सँ खींचल सीमा देखिकऽ ओकरा पार करब छोड़ि देलक।

गोमती आ अमृता बाहाक किनारसँ एक संग घुरैत छलीह। बीच बाट अमृता नोनथराक मुहर अपन थैलीमे राखैत कहलीह, “पुरान माटि फँसि गेल अछि; हमर गामक नाम लोकक

मनसँ पहिने कागदसँ मेटाइत अछि।” गोमती कहलीह, “हमर हाथक काज कागदमे छल, मुदा जे हाथें आदेश देलक तकर नाम नहि छल। आब कमसँ कम ओहि रिक्त स्थानपर प्रश्न लिखल गेल।” अमृता अपना मुकदमा लेल अगिला सुनवाईक दिन गनलीह; गोमती भोरहिक दोसर निर्माणस्थलक मजदूरीक घण्टा। एक संग चलितो दुनूक बाट एक नहि भेल।

अदिति कार्यालयमे घुरि पहिल प्रतिवेदनक ऊपर नव संशोधन-पत्र राखलीह, नीचाँ दबौलीह नहि। अस्पतालक रोगीक बाट पर एक अस्थायी सुरक्षित उपाय चालू रहल; छोट मरम्मतिक ‘पर्याप्त’ होएबाक पुरान दावा वापस भेल; सस्ता भराव, अवरुद्ध निकास आ विभागीय विलम्बक अलग-अलग कड़ी आब परीक्षणयोग्य प्रश्न बनल। ई कड़ी सभ मिलि कऽ दुर्घटनाक जोखिम कोना बढ़ौलक, तकर जाँच बाँकी छल, आ सरस्वती देवीक मृत्युक कारण एतबासँ नहि सिद्ध होइत छल। खिड़की लग माटिसँ भरल बाँसक तीन निशान देखाइत छल। अदिति दीपकक उजासमे अगिला पन्नापर लिखलीह—‘जाँचक पक्ष स्पष्ट हो, तकर विरोधी प्रमाणक जगह सेहो खुलल रहय।’

अध्याय १०३ • सकारात्मक युक्ति

रानी हलालखोर झाड़ूक डाँटासँ काँचक एक नोक किनार कएलीह तँ ओ नालीक सूखल पाटपर खनखनाइत अटक गेल। भोरक उजासमे अस्पतालक पिछिला फाटक लग तीन दिन पुरान चूना-रेखा एखनो देखाइत छल। रेखाक ओहि पार, जतय पानिक गहिराइ ककरो ठीक नहि मालूम, नगरक सफाइ-ठेकेदार दू मजदूरकेँ उतरबाक आदेश देने छल। रानी झाड़ू सीधा धरि कहलीह, “पहिने बाटक काँच उठाएब, ओ अलग काज अछि। भीतर उतरि गाद निकालब दोसर। हमर टोलीक नाम दूनूमे एके लिखि देने छी, मुदा देह एके नहि।” ओ अपन टोलीक किशोर प्रशिक्षुकेँ दू डेग पाछाँ हटबौलीह। ओकर पयरमे घिसल चप्पल छल, आ पाटपर पुरान औषधिक शीशी फूटल पड़ल छल।

ठेकेदारक प्रतिनिधि पीयर कागद लऽ अएलक। ओहिपर मोट अक्षरमे लिखल छल —‘बाहा-मुँह खोलाइक शेष सफाइ’। काल्हि सामूहिक आयोजनमे बाहरी घास हटाओल गेल छल, मुदा बन्द मुँहथरिक भीतर भारी औजार चलएबाक अनुमति नहि भेटल छल। प्रतिनिधि कागद हिलबैत कहलक, “जनता काल्हि उत्सव कएलक; आब आजु काज पूरा चाही। नहि तँ ठेकाक पूरा पैसा रुकत।” रानी पुछलीह, “ठेकाक रकम रुकत तँ की हम सभक पिछिला पाँच दिनक मजूरी सेहो रुकत? पहिने ई प्रश्नक उत्तर दिअ।” युवकक कागदपर मजदूरक नाम छल, भुगतानक स्तम्भ खाली।

ममता हरि नगर सफाइक स्थायी टोलीक रजिस्टर लऽ पहुँचलि। ओ ठेकेदारक अधीन नहि छलीह, आ हुनका अपने विभागसँ अलग आदेश भेटल छल—नालीक भीतरक निरीक्षणमे सहायता। पहिनहुँ ओ खाली सुरक्षा-सामग्रीक खानापर लाल घेरा बना देने छलीह। आइ नगरक कर्मचारीक सामने पन्ना खोलि देखौलीह: दस्ताना माँगल, प्राप्ति नहि; पयरक सुरक्षित जूता माँगल, प्राप्ति नहि; बन्द नालीक वातावरण जाँचबाक व्यवस्था अनुपस्थित। कर्मचारी कने लजाइत कहलक, “एक जोड़ी मोट दस्ताना गोदाममे अछि।” ममता ओकरा पुछलीह, “ककर नाप? ककरा देल जाएत? आ काँच रोकनिहार दस्तानासँ भीतरक अनदेखल वायुक जोखिम कोना घटत?”

रानी आ ममता एक संग ठाढ़ छलीह, मुदा हुनकर देय एक नहि छल। रानीक नाम ठेकाक श्रमिक-सूचीमे छल; ममताक वेतन नगरसँ अबैत छल। रानीक काज रोकल गेल तँ ठेकेदार अनुपस्थितिक निशान चढ़ा सकैत छल। ममता आदेशपर आपत्ति कएलीह तँ कार्यालय हुनकर अनुशासनक प्रश्न उठा सकैत छल। नैरा दूनूक बयान लिखबाक प्रस्ताव देलीह। रानी रोकलीह, “पहिने हमर साथी लोकक मुँहसँ सुनू। हम टोलीक दिससँ बोलैत छी, मुदा ककरो डरकें अपन हस्ताक्षर नहि बना सकैत छी।” ममता सहमति देलीह। भीतरक अन्हारमे पानि स्थिर छल, बाहरक रौद आब बढ़ि रहल छल।

बहुत पहिनुका मिथिलाक एक अध्ययन-आँगनमे एक शिष्य भीजल माटिक दीपपात्रकें धूपमे रखबाक प्रयास कएने छल। पात्रक कातसँ पानि चूड़ रहल छल; ओ अंगूठासँ चापि कऽ किनार सम्हारलक, तँ दोसर दिस दरार फाटि गेल। ओहि समय उदयनक पुरान मीमांसक अतिथि ओसारपर अएलाह। शिष्य पात्रक असफल रूप देखि हँसि पड़ल, मुदा अतिथि ओकर हाथक माटि देखिकऽ पुछलनि, “अहाँ लोकनि आजु फेर संसारकें एहि पात्रसँ सिद्ध करए चाहब?” उदयन सामने राखल ताड़पत्र समेटि कहलनि, “पात्र प्रमाण नहि, कखनो-कखनो केवल प्रश्न उठबेबाक आरम्भ थिक। आइ प्रश्न ओहि आरम्भक सीमाक सेहो अछि।”

शास्त्रार्थक पहिल चारि अवस्थामे उदयन विरोधी तर्कसभक उत्तर खोजने छलाह। आब ओ अपन सकारात्मक अनुमानक क्रम खोलए चाहैत छलाह। शिष्यसभ छाँहमे आसन बिछौलक। उदयन कहलनि जे अनेक कार्यसँ कर्ताक अनुमान व्यवहारमे परिचित अछि; जगतमे कारण आ संयोजनक व्यवस्था देखिकऽ चेतन अधिष्ठाताक पक्ष उठैत अछि। ओ धरती आ अन्य कार्यक उदाहरण दैत छलाह, मुदा ईहो जोड़लनि जे एतय साध्य कियो आँखिसँ देखल कुम्हार नहि। प्रतिज्ञा स्थापित करबाक लेल हेतु, व्याप्ति आ विपक्षी सम्भावना सभकें जाँचबाक होएत। एक शिष्य अपन भीजल पात्र ओसारक कात राखि ध्यानसँ सुनए लगल।

मीमांसक अतिथि तुरन्त विरोध कएलनि। “घट आ वस्त्र मनुष्य बनबैत अछि, से हम देखैत छी। मुदा पृथ्वीकें कोनो कुम्हार बनबैत देखल अछि? सीमित कार्यसँ समग्र जगतक तुलना करिते अहाँ जे सम्बन्ध प्रमाणित मानैत छी, ओकर क्षेत्र बदलि जाइत अछि। आ जँ

कर्ता किँ मानब, तँ हुनका शरीर, इच्छा, प्रयत्न आ साधनक आवश्यकता कोना नहि होएत? बिना शरीरक कर्ता केवल कठिनाइ टारबाक शब्द तँ नहि?” ओ माथ झुकाए उत्तरक प्रतीक्षा कएलनि। हुनकर स्वरमे उपहास नहि छल; ओ अपन परम्पराक कारण-सिद्धान्त आ कर्मक फलसम्बन्धकेँ पर्याप्त मानबाक गम्भीर दावा रखैत छलाह।

उदयन एक क्षण लेल चुप रहलाह। शिष्यसभमे सँ कियो प्रतिपक्षीकेँ ‘जगत अपने बनल’ कहि टारए चाहलक। उदयन ओकरा रोकलनि। “हुनकर मतकेँ कमजोर बना कऽ उत्तर देब शास्त्रार्थ नहि,” ओ कहलनि। “ओ कारण अस्वीकार नहि करैत छथि; प्रश्न ई अछि जे अदृष्ट, पदार्थक स्वभाव आ कर्मक क्रम स्वीकार केलाक बाद अतिरिक्त सर्वज्ञ नियन्ताक अनिवार्यता कोन प्रमाणसँ सिद्ध होएत। एहि प्रश्नक भार हमर पक्षपर अछि।” अतिथि सिर हिलौलनि। एक विद्यार्थी पहिल बेर बुझलक जे पराजित करबाक लेल नहि, ठीकसँ सुनबाक लेल सेहो विद्या चाही।

उदयन पदार्थसभक संयोगक प्रसंग उठौलनि। केवल जड़ घटकक अस्तित्व आ हुनकर परिणामदायी आयोजन एक नहि; व्यवस्था आ प्रयोजनक लेल चेतन कारणक अनुमान सम्भव अछि, से हुनकर पक्ष छल। ओ भाषा-व्यवहारक आरम्भ आ प्रमाणपर भरोसाक प्रश्न सेहो अलग उठौलनि। “जँ ज्ञान, परम्परा आ समन्वयक सिलसिला अछि,” ओ कहलनि, “तकर अन्तिम आधार की बुझल जाए? प्रत्येक नियमक पीछे फेर एक नियम कहैत अनन्त क्रम बनब, कि एहन ज्ञाता स्वीकारब जाहिसँ ई क्रम बोधगम्य हो?” ओ एकटा उत्तरकेँ सभ हेतुकेँ ढाँपि देनिहार छलनि नहि मानलनि; प्रत्येक कारणक अपनी आपत्ति छल।

अतिथि प्रत्युत्तर देलनि, “भाषा लोकव्यवहारमे सिखल जाइत अछि। एक पीढ़ी दोसरासँ, दोसर तेसरासँ। एतय प्रथम बोलनिहारक आवश्यकता स्थापित करबाक पहिले अहाँकेँ सिद्ध करए पड़त जे एहन व्यवहार अनादि नहि भऽ सकैत। आ प्रमाणक विश्वास ककरो सर्वज्ञतासँ नहि, वक्ताक विश्वसनीयता, प्रयोग आ विफलताक परीक्षणसँ सेहो बनैत अछि। जँ अहाँ जड़ पदार्थक संयोजन लेल चेतना माँगैत छी, तँ चेतनाक क्रियाशीलता ककर सहारे चलैत अछि?” ओ अपन ताड़पत्रपर तीन रेखा खिंचलनि—

अनुभव, अनुमान, अतिरिक्त प्रतिज्ञा। पहिल दू सँ तेसर रेखापर छलाँग कतय भेल, से देखेबाक आग्रह छलनि।

मीमांसक अतिथि अगिला प्रश्नमे अपन मतक सकारात्मक कारण सेहो रखलनि। “कर्मक फल मनुष्यक तात्कालिक चाहनासँ चलैत नहि; नियम, अदृष्ट आ दीर्घ परम्पराक सम्बन्धसँ ओकर व्याख्या करैत छी। जँ नियमकेँ नियामकक इच्छा बना देब, तँ इच्छा स्वयं नियमक अधीन होएत कि नहि? जँ अधीन अछि तँ फेर अतिरिक्त नियामकक आवश्यकता कहाँ, आ जँ अधीन नहि तँ स्थिर ज्ञानक आधार की?” उदयन उत्तर देलनि जे सर्वज्ञ कारणक पक्ष केवल दैवक इच्छाक नाम राखि नहि बचत; अन्वय आ व्यतिरेकक परीक्षा ओतहु माँगल जाएत। ओ अतिथिक हेतु पुछलनि, फेर अपन अनुमानक व्याप्तिमे ‘मनुष्य-जेकाँ देहधारी’ विशेषण जोड़बाक बाध्यता अस्वीकार कएलनि। बहसकेँ आजु निर्णीत नहि कहि ओ एक नब प्रश्न लिखबौलनि—कर्तृत्व लेल देह अनिवार्य मानबाक प्रमाण की?

आँगनक बाहर माटिक पात्र बेचए अएली एक स्त्री अपन टोकरी निचाँ राखि पानि माँगलनि। ओ शास्त्रार्थ नहि सुनए अएली छलीह। शिष्य हुनका पानी देलक, तँ ओ भीजल पात्र देखिकऽ मुस्केलीह, “ई छाँहमे राखू। सीधा घाम देब तँ कात फेर फाटत।” ओ अपन घरक भट्ठी लेल सुखल काठक हिसाब बता विदा भेलीह। शिष्य चकित भेल जे ओकर असफल पात्रक दोषक उत्तर अज्ञात शास्त्रार्थसँ नहि, कारीगरक अभ्याससँ भेटल। उदयन कहलनि, “एहि विशेष पात्रक सुखेबाक विधि हुनकर अनुभव अछि। ताहिसँ विश्वक परम कारणक निर्णय नहि निकसैत; मुदा अनुभवक ठाम छोड़ि हम कोनो अनुमान ठीकसँ नहि चला सकब।”

एहि पर एक कनिष्ठ विद्यार्थी उलट प्रश्न कएलक। “गुरु, जँ हम सभ घटसँ घट बनौनिहारक अनुमान करैत छी, तँ मोदक देखिकऽ ओकरा खाएवाला लोकक अनुमान किएक नहि करैत छी? हमरे भुखायल होएब तँ मोदक स्वयं नहि कहैत!” सभ हँसि पड़ल, अतिथि सेहो। उदयन हँसी रोकलनि नहि। “एहि लेल जे मोदकक अस्तित्व आ ओकर खाइत होएबाक अवस्था अलग कथन अछि। पक्ष बदललासँ हेतु बदलैत अछि। तोहर भूखक प्रमाण तोहर पेट अछि, मोदक नहि।” बालकक मुखपर खुशी छल; ओकर प्रश्नकेँ

उपद्रव नहि मानल गेल। ओ अपना माटिक पात्रकेँ छाँहमे सरकौलक, जेनाक आजुक शास्त्रार्थक पहिल प्रयोग ओतहि सफल भऽ गेल हो।

मध्याह्नक बाद अतिथि फेर पुछलनि, “जकरा अहाँ सर्वज्ञ मानैत छी, हुनकर ज्ञानक सीमा कखनो प्रत्यक्ष जाँचि सकब? यदि नहि, तँ सर्वज्ञताक अनुमानक कसौटी केहन?” उदयन एकरा कठिन प्रश्न कहि स्वीकार कएलनि। ओ शास्त्र, भाषा आ जगतक कार्यव्यवस्थासँ अलग-अलग अनुमाने प्रवेश करबाक पक्ष रखलनि, मुदा सर्वज्ञताक दावा कतेक अतिरिक्त प्रमाण माँगैत अछि, से दबौलनि नहि। अतिथि कहलनि जे वेदक अधिकारक मीतसक विवेचनमे अनादित्व आ अपौरुषेयताक पक्ष अपन तर्क रखैत अछि; केवल ‘वक्ता चाही’ कहलासँ ओ मत समाप्त नहि होइत। उदयन हुनकर वाक्य पूरा लिखबाक संकेत देलनि।

साँझक पहिल छाँह धरि ओ सभ एक प्रश्नपर सहमत भऽ सकलाह: अनुमानक सकारात्मक पक्ष बनाओलाक बाद ओकर विपक्षक शक्तिशाली सम्भावनाकेँ मिटाए बिना विजय घोषित करब उचित नहि। मतक निर्णय एखन भिन्न छल। अतिथि अपन ताड़पत्र वापस नहि माँगलनि; ओ उदयन लग एक प्रति रखबाक अनुमति देलनि, ताकि अगिला बैसारमे हुनकर वास्तविक कथन पढ़ल जाए। उदयन शिष्यकेँ कहलनि जे पक्षक हेतु आ प्रतिपक्षक आपत्ति अलग लेखनीसँ चिन्हित करय। ओ शिष्य अपन सुखैत पात्र उठौलक; कातमे एक पातर दरार एखनहुँ छल, मुदा ओहि दरारसँ पानि चुबब बन्द भऽ गेल छल।

विदेहपुरक अस्पतालक पिछिला फाटकपर घाम तिखर भऽ चुकल छल। रानी अपन टोलीक छओ व्यक्तिसँ अलग-अलग बात कएलीह। दू मजदूर कहलनि जे ठेकेदारक अगिला महीनाक काम छूटि जाएबाक डर अछि; एक वृद्ध महिला कहलीह जे नीचाँ उतरए पड़ल तँ हुनकर साँस फूलैत अछि; प्रशिक्षु साफ कहल जे ओ भीतरक पानि छूएबो नहि चाहैत। रानी सभक नाम निजी कापीमे रखलीह, सार्वजनिक पर्चीपर केवल निर्णय लिखलीह—अज्ञात गहिराइ आ बिना परीक्षणवला बन्द नालीमे प्रवेश स्वीकार नहि। ऊपरक सुरक्षित भागक काँच आ कचरा उठेबाक काम अलग कऽ सकैत छथि, मुदा ओकरा सँग भीतरक जोखिमक स्वीकृति जोड़ल नहि जाए।

ठेकेदारक प्रतिनिधि फेर कागद देखौलक—ठेका पूरा नहि तँ भुगतान नहि। रानी ओकरा पुरान रसीदक दू प्रति देखौलीह। पहिलमे बाहरी सफाइक चारि दिनक सही छल, दोसरमे ठेकेदार ‘सुरक्षा सामान देल गेल’ लिखने छल, मुदा प्राप्तिक खानापर कोनो मजदूरक हस्ताक्षर नहि छल। रानी पुछलीह, “जकरा देल नहि, तकर नामपर सामग्री निकसल कोना? ई प्रश्न अलग राखू। एखन नालीमे नहि उतरब। आ रोकल दिनक मजूरीक झगड़ा छुट्टे चलत।” ओ डरेलीह, मुदा अपन डरकें आदेशक मान्यता नहि बनौलीह।

ममता नगरक अधिकारी लग गेलीह। ओ अपना पहिल लाल घेरावला पन्ना आ आइक निरीक्षणक प्रति एक संग रखलीह। “एहि कागदमे जे कोनो स्थानपर ‘सुरक्षा-व्यवस्था उपलब्ध’ लिखत, से हमर प्राप्ति-खानासँ मिलाउ,” ओ कहलीह। अधिकारीक सहयोगी एक गोदामसँ पुरान दस्तानाक फोटो भेजलक। ममता फोन नदेखिते कहलनि, “चित्र सामानक ठाम नहि लैत। जँ वस्तु उपलब्ध अछि, तँ नाम, माप, प्रशिक्षण आ वास्तविक सुपर्दगी दर्ज हो। बन्द नालीक भीतर जेबाक निर्णय ताहिसँ सेहो स्वतः नहि बनत; ओहि लेल स्थल आ जोखिमक पृथक् परीक्षण चाही।” नगर अधिकारी पहिल बेर ‘सामग्री पहुँचि गेल’ लिखबाक स्थानपर ‘आपूर्ति-जाँच शेष’ लिखौलक।

अदिति अस्पतालक फाटकसँ मापक कापी लऽ अएलीह। काल्हि ओ छोट मरम्मतिक पर्याप्तताक अपन दावा वापस लेने छलीह; आइ नालीक भीतर निरीक्षण तुरन्त करब आवश्यक छैक, एहन लिखित निर्देश कियो नहि देल छल। प्रतिनिधि कहल, “ई सभ रोकि देब तँ अस्पतालक रोगीकें कादोमे सँ निकालब?” अदिति अस्थायी सुरक्षित पैदल मार्ग, सीमित वाहन-बाट आ भौतिक निकासक मूल जाँचक तीन अलग जिम्मेदारी फेर पढ़लीह। “रोगीकें बाट भेटब जरूरी अछि,” ओ कहलीह, “मुदा ओकरा लेल जे व्यक्ति गहिर नालीमे उतरि अपन प्राण जोखिममे रखत, ओ उपचारक उपाय नहि।” उर्मिला फाटकक भीतर सँ रोगी-वाहनक समय पूछलीह; तखनहि एकटा गाड़ी निर्धारित सुरक्षित पट्टीसँ बाहर गेल।

एक नगर कर्मचारी कहलक, “रानी लोकनि काज ठप करि देलक, काल्हि जे उत्सव भेल ओकर अर्थ की?” रमणी बिन्द, जे पोखरिक जाल समेटि ओतय पहुँचल छलीह, उत्तर

देलीह, “काल्हि सुरक्षित घास हटल। जे बन्द भाग बचल, ओ अदितिक आदेशसँ बचल। आब काजक नाम बदलि दोष रानीपर किएक?” रमणीक आजु माछबजारमे नाप लेबाक काज छल; ओ सभामे बेसी समय नहि रहलि, मुदा नगरपालिका आ ठेका-दूनू प्रति लेल अर्जीक रसीदपर साक्षी बनलीह। हुनका कोनो प्रतिनिधि रानीक बदला निर्णय लेबाक अधिकार नहि देने छल, से ओ स्पष्ट कहलीह।

दुपहरि धरि टोली दू भागमे काम बाँटलनि। ऊपरक सूखल मार्गक कचरा चिमटा आ मजबूत डलियासँ हटाओल गेल; खतरनाक किनार रस्सीसँ घेरि राखल गेल। जखन एक मजदूर बिना सुरक्षित जूता काँचक ढेरी उठेबाक लेल आगाँ बढ़ल, रानी ओकरा रोकलीह। “सुरक्षित चीज उठाएब, से हमर कहनाइ छल; खाली हाथें शीशी छुअब, से नहि।” ममता नगरक भण्डारपाल लग जूता आ काँच-रोधी साधनक वास्तविक उपलब्धता जाँचबाक अलग समय निश्चित करौलीह। आडनक देहाती दुकानदार अपन पुरान बाँसक चिमटा देबाक प्रस्ताव रखलक; रानी परीक्षण बिना उपकरणकें स्वीकृत सुरक्षा-सामग्री घोषित नहि कएलीह।

एक घण्टाक भीतर अस्पतालक पहिरन-धोआइ करएवाली सहायिका फाटक लग अएलीह। ओ कहलनि जे खुलल पट्टीपर काँचक एक टुकड़ा रहि गेल तँ रोगीक चक्का कटि सकैत अछि। रानी हुनकर बात मानलीह, मुदा ठेकेदारक प्रतिनिधिक प्रस्तावित उपाय—नंगे हाथें शीघ्र हटाएब—रोकलीह। ममता नगरक भण्डारघरमे उपलब्ध लम्बा हत्थावला उठावनिहार औजारक जाँचक लिखित आग्रह देलीह। ततधरि गाड़ीक बाटक घेराबन्दी बदलल गेल, अस्पताल भीतरक कर्मचारीकें सचेत कएल गेल, आ रोगीक आवाजाही दोसर सुरक्षित पट्टीसँ चलल। परिचारिकाकें सेहो अपन कमसल जूताक शिकायत लिखेबाक उपाय भेटल; सफाइक खतरा केवल सफाइकर्मिक निजी समस्या नहि, मुदा पहिल उत्तरदायित्व हुनका ऊपर थोपब उचित नहि छल।

ममताक घरसँ हुनकर बेटी भोजन लऽ आएल। कन्याक परीक्षा छल, मुदा आजु ओ विद्यालयक बाद पहिने पुस्तकालय जाएब चाहैत छलीह; ममता कहलीह, “पहिने अपन पढ़ाइ देख, हमर झोरा हम खुद सम्हारब।” बेटी मजाक कएलक, “अहाँक रजिस्टरमे हर सामानक नाम अछि, हमर टिफिनक नाम किएक नहि?” ममता मुस्केलीह। “टिफिनक

देय हम घरमे चुकब, नगरक पन्नामे नहि।” रानी अपन थारीसँ नीबूक अचारक टुकड़ा बढौलीह। थोड़ेक बेर लेल ओहि पानि, ठेका आ चिकित्सालयक बीच तीन स्त्रीक साधारण भोजनक गन्ध पसरि गेल।

दोपहरक बैसारमे प्रतिनिधि पहिल प्रस्ताव देलक—रानीक टोली ‘काज स्थगित’ कहि घुरि जाउ, मजदूरीक प्रश्न बादमे देखल जाएत। रानी कहलीह, “बादक कोनो दिन नहि लिखब तँ काल्हि हमर अनुपस्थितिक पर्ची बनि जाएत।” ओ लिखित माँग दएलीह: जोखिमपूर्ण प्रवेश रोकनाइ, सुरक्षित बाहरी सफाइक कामक पूरा घण्टा, आजुक रोकल काजक मजदूरीक अलग विवाद, ठेकेदारक उपकरण-खर्चक बिल आ निष्पक्ष स्थलपरीक्षण। ठेकेदार सभ बिन्दु स्वीकार नहि कएलक। मुदा नगर अधिकारी आदेशपर लिखलक जे जोखिम-अप्रमाणित बन्द नालीमे आजु कोनो प्रवेश कराओल नहि जाएत, आ देय-मजदूरी सम्बन्धी प्राप्ति दर्ज कएल जाएत। ई पूर्ण जीत नहि छल, मुदा भीतर पठेबाक मौखिक दबावक बाट बन्द भेल।

ममता ओहि आदेशक प्रति अपन नगर-पंजीमे जोड़लीह, संगहि पहिल दिनसँ खाली रहल सुरक्षा-सामग्रीक खाना लाल रेखासँ फेर देखौलीह। एक कर्मचारी फुसफुसा कऽ कहल जे नाम लिखने रहला पर माथा पर चढ़ि जाएत। ममता उत्तर देलीह, “नाम कटि गेल तँ काल्हि कियो कहत सामान देल गेल छल। हम एतबे लिखैत छी जे हमर उपस्थितिमे की देल गेल आ की नहि। जे अधिकारीक आदेश छल, ओकर मूल प्रति मगब।” ओ अपन हस्ताक्षरक अगिल पाँतिमे ‘प्राप्ति शेष’ जोड़लीह। निजी गवाही सार्वजनिक दोषारोपण नहि बनल, मुदा कार्यालयक सुविधाजनक मौन सेहो नहि रहल।

नैरा सांझे कार्यवृत्तक दू प्रति बनौलीह। पहिल प्रतिमे स्थान, जोखिमक सीमा, सुरक्षित रूपेँ पूर्ण काम आ शेष परीक्षणक विवरण छल। दोसर सीमित प्रतिमे मजदूरक नाम, बाकीक घण्टा आ ठेकेदारक विवादित प्राप्ति-दावा। रानी पुछलीह, “हमर कापीक नाम सभकेँ पढ़बए नहि पड़त ने?” नैरा कहलनि, “जकरा देयक जाँचक वैध आवश्यकता, तकरा आवश्यक पाँति भेटत; भीड़केँ निजी परिचय नहि।” रानी एहि उत्तरसँ पूरा निश्चिन्त नहि भेलीह, मुदा ओ मूल कापी अपन लग रखबाक निश्चय कएलीह। हुनकर हस्ताक्षर बिना ओकर प्रतिलिपिक सार्वजनिक वितरण नहि होएत, से लिखल गेल।

अस्पतालक भीतर उर्मिला साफ कोठरीमे सरस्वती देवीक पुरान बिछाओन मोड़ि रखैत छलीह। शैलजाक अधिकृत उपचार-कागदक आवेदन एखन प्रक्रियामे छल; बाहरक जलनिकासी दोषसँ मृत्यु सिद्ध करबाक कोनो नया चिकित्सकीय तथ्य नहि भेटल। उर्मिला ममताकेँ छोट पानि-पात्र देलीह। “ऊपरी बाट खुल्लासँ रोगी गाड़ी चलि रहल अछि,” ओ कहलीह, “मुदा भीतरक चुआन आ नालीक बन्द मुँह अखनहुँ अलग रोग छथि।” ममता पानि पीबैत कहलीह, “ठीक करबाक आशा आ ठीक भऽ गेलाक प्रमाण अलग राखू। हम ओतहि काम करब जतय जीविकाक संग जानो बचय।”

अन्हार पड़बाक पहिने रानी रस्सीक गाँठ फेर परखलीह। भीतरक दू बिनु देखल मोड़ि एखनहुँ कारी पानि नीचाँ छिपल छल; काँच हटाओल सूखल पट्टीपर आब नर्सक पयर सुरक्षित पड़ि सकैत छल। ठेकेदारक एक कर्मचारी दूरसँ पुछलक, “काल्हि अएब?” रानी उत्तर देलीह, “जतय सुरक्षित काम स्वीकृत होएत, ओतय अएब। जकर लेल जाँच चाही, तकरा जाँच बिना नहि।” ओ आधा घण्टा घर देरिसँ पहुँचतीह; कनी पैघ बेटीकेँ सागक बाड़ीमे पानि देबाक कहने छलीह। बाटमे हुनका ओहि बाड़ीक याद आयल, आ फेर अपन कापीक—काल्हि मजदूरीक देयक सुनवाईमे पूरा टोली फेर अपन-अपन बात कहत।

अदिति कार्यालयमे दिनक अन्तिम कागद पढ़लीह। सफाइक बाहरी कामक प्राप्ति छल, बन्द निकासक परीक्षण एखन तय होयबाक छल, नगरक उपकरणक आपूर्ति अपूर्ण छल, आ ठेकेदारक मजदूरी-दावा विवादित। ओ पुरान नक्शापर अनावश्यक नव हरी रेखा नहि खिंचलीह। नदीक पानि अपन गति नहि बदलने छल; अस्पतालक गाड़ी अस्थायी बाटसँ चलि रहल छल। मुदा आजुक एक निर्णय वास्तविक छल—ककरो बिना जाँच कारी पानिमे नहि उतराओल जाएत। अगिला जाँचमे एहि निर्णयक मूल्य ककर श्रम आ ककर खर्चसँ चुकत, से प्रश्न खुलल रहल।

अध्याय १०४ • शक्तिक प्रश्न

नूरजहाँ ईटफरोशक गदहाक अगिला खुरमे ओहि बिहान गील माटिक एकटा भारी गोला चिपकि गेल छल। ओ झुकि काठक पातर टुकड़ासँ ओकरा हटौलीह, खुरक भीतरक दरार देखलीह आ गाड़ीकेँ अस्पतालक पिछिला फाटकसँ कने दूर रोकि देलीह। राति भरि पानि पड़ने छल। फाटकपर नया सफेद पट्टी खींचल गेल छल, मुदा जे ईट काल्हि पानि रोकबाक लेल अनाओल गेल छल, ओकर आधा गाड़ीपर एखनहुँ छल। ठेकेदारक मुंशी दूरसँ चिचियाएल, “ईट उतारू, मजदूरसभ प्रतीक्षा करैत छथि।” नूरजहाँ उत्तर देलीह, “पहिने खुर देखब, फेर बाट। हमरा पर्चीमे सुखायल पट्टापर ढुलाई लिखल अछि, डूबल माटिपर नहि।”

गाड़ीक पिछिला पट्टीपर सुगनी सदाय अपन हाजिरीक कापी राखि देलीह। हुनका संग मुहल्लाक तीन स्त्री आ दू युवक छलाह। पिछिला सर्वेक्षणमे सुगनी अपन टोलीक नाम दर्ज करबौने छलीह, मुदा काजक नक्शा बनेला पर मुहल्लाक सँकरा बहाव-बाट फेर सफेद छोड़ि देल गेल छल। ओ नूरजहाँक गाड़ीसँ ईट उठाबय नहि, अपन मुहल्लाक बाटक बात करय अएलीह। सुगनी पानिक कात सूखल छड़ गाड़ि कहलीह, “नगरक नाली एतयसँ जाइत अछि, मुदा हमर घरक पानि एतय पहुँचबा पहिने दू आँगनमे ठाढ़ रहैत अछि। कामक नेतृत्व जे करेगा, ओकरा ई सभ देखबाक पड़त।”

सुगनीक मुहल्लामे सबेरक चूल्हि एखन नहि जरल छल। एक साथी कहलीह जे पानि आँगनमे ठाढ़ रहला सँ ओ अपन बच्चाक किताब बाँसक मचानपर चढ़ौने छथि; दोसरक घरमे बूढ़ सासु चलि नहि सकैत छलीह। सुगनी हुनका दुनूकेँ एके कथा कहबाक आग्रह नहि कएलीह। ओ कापीक पन्ना दू भागमे बाँटि देलीह—घरक समस्या आ नगरक प्रस्तावित काम। “काज भेटब जरूरी अछि, मुदा अपन घरक हानि लुका कऽ नहि,” ओ कहलीह। एक युवक पुछलक जे काम रुकत तँ रोजी कतय? सुगनी कहलीह, “जोखिमक सर्वेक्षण सेहो काम अछि। पहिने ओकर दाम तय कराबी।”

मुंशी नाप-पर्ची देखौलक। ओहिमे बाहरी नालीपर भरावक दूरी, छः गाड़ी ईट, आ सफाइ-टोलीक एकमुष्ट मजदूरी लिखल छल। सुगनी पहिल बात ई पूछलीह जे मुहल्लाक

स्त्रीसभक नाम अलग किएक नहि अछि। मुंशी कहल, “टोलीक नामसँ पैसा भेटत; भीतर अपनामे बाँटि लेब।” सुगनी उत्तर देलीह, “हम स्वयं बाँटब, मुदा नगरपालिका ककरा कतेक देलक सेओ लिखत। जँ कोनो हमर साथी एक दिन खतरा देखिकऽ काम रोकत, तँ ओकर हिस्सा ककर जेबमे जायत?” मुंशी चुप भऽ पन्ना पलटलक।

नूरजहाँ हुनका आगाँ तेसर हिसाब रखलीह—ईटक दाम व्यापारीक, ढुलाईक मेहनताना अपन, आ गदहाक खुरक उपचार, पानि, चारा आ विश्रामक खर्च फेर अलग। मुंशी पुछलक, “पशु तँ अहाँक अछि, तकर खर्च हम किएक देब?” नूरजहाँ कहलीह, “तँ हम ओकरा बिना उचित बाटक नहि पठाएब। गाड़ी भाड़ा तय करैत काल पशुक श्रमक खर्च जोड़ल गेल छल; आब एकटा दुर्घटना टारबाक लेल जे अतिरिक्त समय लगल, ओकरा गुप्त घाटा बना देबाक अधिकार ककरो नहि।” हुनकर स्वरमे क्रोध छल, मुदा ओ तात्कालिक दान नहि, बहीक मूल शर्त माँगि रहल छलीह।

अदिति पहुँचलीह तँ नूरजहाँक गाड़ी आ सुगनीक टोली दुनू नालीक दुन्नू कात ठाढ़ छल। पिछिला दिन रानी हलालखोर आ ममता हरि असुरक्षित बन्द निकासमे उतरबाक आदेश रोकने छलीह; अदितिक कार्यालय साफ-साफ लिखने छल जे सामग्रीक वास्तविक प्राप्ति आ भौतिक जोखिम-जाँच बाँकी अछि। आब मुंशी नव पर्ची देखबैत कहलक, “भीतर नहि उतरब, केवल ऊपरसँ ईंट भऽ जायत।” सुगनी पहिल बेर मुस्की कएलनि। “भऽ जायत मतलब पानि कतय जाएत? ईंट गिरत, कि बहत, कि गामक बाट बन्द करत?” अदिति अपन मापक कापी खोललीह। कागदमे रंग भरलाक बदला ओ खुर आ छड़क लगक माटि देखए गेलीह।

बहुत पहिनुका मिथिलामे, एक ताड़पत्रक पन्नापर काल्हिक अग्निपरीक्षाक प्रश्न लिखल छल। गङ्गेश उपाध्याय अपन अध्ययनक आसन लग ओहि पन्नाकेँ धरि रहल छलाह। कक्षामे छोट माटिक चूल्हि छल, जाहिमे शिष्यसभ भोरक अल्पाहार लेल आगि फूँकने छल। एक विद्यार्थी लकड़ी हेरैत पुछलक, “अग्नि अछि, मुदा ई भीजल लकड़ी किएक नहि जरैत?” दोसर उत्तर देलक, “एकर दाहशक्ति कम भऽ गेल।” गङ्गेश तुरन्त कोनो निर्णय नहि सुनौलनि। ओ चूल्हिसँ कने दूर रखल सूखल तिनका उठा कऽ देखौलनि आ पुछलनि, “जे नहि भेल, तकर कारण जानबाक लेल हम की-की देखलहुँ?”

ओहि दिन शास्त्रार्थ लेल आएल मीमांसक विद्वानक लग दाहशक्तिक प्रश्न केवल उपमा नहि छल। ओ कहला, “कखनो अग्नि आ जलाएबाक वस्तु लग रहितो दाह नहि होइत अछि। किछु परम्परामे विशेष मणि वा मन्त्रक प्रतिबन्धक प्रभावक उदाहरण देल जाइत अछि। जँ समान देखाएवला कारणसँ भिन्न परिणाम भेटैत अछि, तँ वस्तुमे अन्तर्निहित सामर्थ्यक चर्चा किएक टारब? दाहक शक्तिक अभाव वा अवरोधक कारण-व्यवस्थाक भाग मानल जा सकैत अछि।” गङ्गेश अतिथिक वाक्य शिष्यसँ दोहरा कऽ लिखौलनि, ताकि प्रतिपक्षक मत सहज बनौने रूपमे नहि बदलि जाए।

एक युवक कहलक, “अग्निकेँ दोष देब कि मणिकेँ?” अतिथि उत्तर देलनि, “हम दोष नहि, उत्पत्तिक शर्त पूछैत छी। कतहु दाह होइत अछि, कतहु नहि। जे अन्तर अछि, ओकर व्याख्या चाही।” गङ्गेश ओहि ‘दोष’ शब्दकेँ अलग कएलनि। “कारणक विचारमे नैतिक दोष घुसबय लगब तँ जाँच बेकाबू होयत,” ओ कहलनि। “पहिने निश्चित करबाक अछि जे अग्नि, संयोग, द्रव्यक स्थिति आ सम्भावित प्रतिबन्धकमे सँ कोन बात वास्तवमे ज्ञात अछि। जे देखल नहि, ओकरा कल्पना करब मना नहि; मुदा कल्पनाक आवश्यकता सिद्ध करब पड़त।”

गङ्गेश न्यायपक्षक लाघवक तर्क खोललनि। “जँ ज्ञात कारणक उपस्थिति आ बाधाक अभावसँ कार्यक भिन्नता बुझाओल जा सकैत अछि, तँ प्रत्येक सफल कार्यक पाछाँ एकटा अतिरिक्त अदृश्य शक्ति मानब आवश्यक किएक?” अतिथि प्रत्युत्तर देलनि, “कारणक क्षमता कहब केवल अदृश्य वस्तु बढ़ाएब नहि, नियमित सम्बन्धक स्वरूप बतएब सेहो अछि। अहाँ जे ‘प्रतिबन्धकक अभाव’ कहैत छी, ओकर अभाव ककरा-ककरा लेल जाँचल जाएत? अज्ञात बाधाकेँ हर बेर पाछाँ जोड़िते रहब तखनहुँ व्याख्या अपूर्ण रहि सकैत अछि।” दुनूक मतक बीच ताड़पत्रक एकटा पातर रेखा जकाँ भेद छल; एकरे मेटि एकमत लिखब शास्त्रार्थ नहि होइत।

शिष्य भीजल लकड़ीकेँ चूल्हिक कातमे राखि देलक। लकड़ीक ऊपर चिपकल हरियर छाल जखन सूखए लागल, ओ कहलक, “आब जरत, तखन हम कोन सिद्धान्त चुनब?” गङ्गेश उत्तर देलनि, “पहिने देखू जे ई वास्तवमे कतेक सूखल, आगिसँ दूरी कतेक, आ परिणाम की भेल। एकटा उदाहरणसँ सभ पदार्थक अन्तिम नियम सिद्ध नहि होइत।”

अतिथि सेहो मानलनि जे उदाहरणक परिवर्तनकेँ अवधारणाक समर्थन वा खण्डन मानबासँ पहिने घटनाक वर्णन स्पष्ट होयबाक चाही। ओ अपन ताड़पत्रमे भीजल लकड़ी आ विशेष प्रतिबन्धकक उदाहरण अलग लिखलनि।

अतिथि एकटा आर प्रश्न उठौलनि। “जँ प्रतिबन्धक नहि देखाइत अछि, तकर अभाव कोना जानल जाए? दृष्टिक सीमा आ वस्तुक अभाव अलग छथि।” गङ्गेश विद्यार्थीसँ कहलनि जे अन्हार कोठरीमे मणि नहि देखाइत अछि, एहि वाक्यकेँ ‘मणि नहि अछि’क बराबर नहि मानय। विद्यार्थी पुछलक, “तँ प्रतिबन्धकाभावक आधार की?” गङ्गेश परिस्थितिक उपयुक्त जाँच, उपलब्ध प्रत्यक्ष आ अवरोधक सम्बन्धपर अलग विचार करबाक बात रखलनि। पहिल उत्तरमे निश्चय कम छल, मुदा प्रश्न बेसी स्पष्ट छल। एक वृद्ध शिष्य कहलक, “तर्कक सावधानी राखिते निर्णय करब सम्भव अछि?” “हाँ,” गङ्गेश कहलनि, “किंतु निर्णयक दायरा जतेक अछि, ओतेकहि घोषित करू।”

भोजनक बाद शास्त्रार्थ ईश्वरानुमानक दिशामे बढ़ल। गङ्गेश एक शिष्यसँ ‘जगत्क कार्यत्व’ सम्बन्धी न्यायपक्षक अनुमानक रूपरेखा रखबौलनि। विद्यार्थी घैलाक निर्माण, कुम्हारक प्रयत्न आ घटक अस्तित्वक उदाहरण देलक; ताहिसँ जड़ कार्यक बुद्धिमान कर्ताक सम्भावनाक विचार आगाँ अनलक। गङ्गेश ओहि रूपरेखाकेँ छलौंग नहि देबाक चेतावनीसँ पढ़ौलनि। “घटकेँ कुम्हारसँ जोड़बाक परिचित सम्बन्धक आधार की? आ पृथिवी वा समग्र जगत्क विषयमे ओहि सम्बन्धक विस्तारक सीमा की?” ओ स्वयं प्रश्न रखलनि। ई अनुमानक अपन दार्शनिक परम्परा छल; ककरो बादक ग्रन्थक शब्द ओहि कक्षामे कहल नहि गेल।

मीमांसक अतिथि पुछलनि, “जँ प्रत्येक निर्मित वस्तुक लेल दृश्य कर्ता चाही, तँ जगत्क कर्ताकेँ शरीर, उपकरण आ सामग्रीसँ रहित कोना मानब? आ कर्ता अनेक किएक नहि?” गङ्गेश उत्तर देबाक पहिने विवादक स्थल चिन्हित कएलनि—कार्यत्वक हेतु, उदाहरणक व्याप्यता, तथा कर्ताक ज्ञान-इच्छा-प्रयत्नक अनुमान। “न्यायपक्ष अशरीर नित्य ज्ञाताक सम्भावनाकेँ विचारमे रखैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा प्रतिपक्षक प्रश्नकेँ केवल ‘ईश्वर छथि’ कहिकऽ समाप्त नहि कएल जा सकैत अछि। तर्क जतेक भार उठएत, निष्कर्ष

ओतबे आओत।” अतिथि सहमत नहि भेलाह, मुदा शिष्यक पन्नामे अपन आपत्ति सही रूपमे भेटिकऽ ओ प्रसन्न भेलाह।

एक विद्यार्थिनी, जे अपन माय लेल अल्पाहारक अन्न छानिकऽ देरिसँ कक्षामे पहुँचल छलीह, पुछलीह, “जँ कारण बुझलासँ कार्य रोकबाक उपाय भेटैत अछि, तँ ईश्वरानुमान बुझलासँ हमरा आइक भीजल अन्न सूखत?” कक्षामे कने हँसी उठल। गङ्गेश हँसलाह नहि। ओ कहला, “अहाँक अन्नक कारण-जाँच ओकर अपन साधनसँ होएत। जगत्क कर्ताक तर्क ओहि चूल्हिक दाहक तात्कालिक विधि नहि अछि। मुदा दुनू प्रश्न पूछबाक अनुशासन सिखा सकैत अछि—कथन ककर, प्रमाण की, आ सीमा कतय?” विद्यार्थिनी अन्नक टोकरी उठौलीह, आ गङ्गेश शिष्यकेँ ओहि प्रश्नकेँ अपमान नहि, पाठक भाग लिखबाक आदेश देलनि।

अस्पतालक फाटकपर अदिति अपन पहिल माप फेर लेलनि। ईटक पट्टी बनलाक बाद पानिक दाब कत्तयसँ बढ़त, से एखन कोनो गणना पूर्ण नहि छल। रानीक असुरक्षित बन्द नालीवला आदेश वापस होएबाक विषय नगरक पन्नामे लिखल छल; मुंशी ओहि रोककेँ बाहरी भरावक अनुमति मानि रहल छल। अदिति कापीमे दू तीर खिंचलीह—एक अस्पतालक बाहरी निकासक सम्भावित धार, दोसर सुगनीक मुहल्लाक आँगनमेसँ उतरैत पानि। “ई दुनू तीरक बीच घर अछि,” सुगनी कहलीह। “हमर मुहल्ला नक्शाक खाली कोना भऽ गेल?”

सुगनी अपन टोलीक सदस्यसभकेँ बाँटि निर्देश देलीह। एक स्त्री पुरान बाहामुँहक ऊँचाइपर बाँस ठाढ़ करतीह, दोसर पिछिला वर्षक गादक निशानक फोटो लेल तिथि लिखतीह, तेसर घरसभमे पानि कतेक देर ठाढ़ रहैत अछि तकर स्वतन्त्र बयान जुटौतीह। दुनू युवक रस्सी धरताह, मुदा कियो बन्द नालीमे नहि उतरत। नगरक अभियन्ताक सहायक तत्काल आपत्ति कएलक, “ई सर्वेक्षण सरकारी काज अछि; अहाँ लोकनि आपसँ नाप लिखब तँ बादमे झगड़ा होयत।” सुगनी उत्तर देलीह, “हमर नापकेँ सरकारी अन्तिम प्रमाण नहि कहू। मुदा जे घरमे पानि अटकल, ओकर साक्ष्य अहाँक कागदसँ बिना पूछने नष्ट सेहो नहि करू।”

जाँचक बीच एक समस्या तुरन्त उठल। सुगनीक टोलीक एक युवक नगरक अस्थायी खूँटाकेँ पुरान जमिनक मेड़क निशान बुझि खाली करय लागल। तारा बिनौट हुनकर हाथ रोकलीह। “एहि खूँटासँ जोखिमक दूरी नापल गेल अछि; स्वामित्वक रेखा एकरा नहि मानल जाए।” युवक अपन भूल मानलक, मुदा पुछलक जे कागदपर स्पष्ट लिखल किएक नहि अछि। अदिति तखन खूँटापर रंगक संग क्रमाङ्क जोड़बौलीह आ फोटोमे दिनक समय लिखबौलीह। जाँचक भाषा सुधरलासँ छोट विवाद टरि गेल, आ युवककेँ सहायक मापकक अलग मजदूरी-पाँति भेटल।

दुपहर धरि अस्पतालक अस्थायी बाटपर दू रोगी-गाड़ी निकलि गेल। उर्मिला निर्धारित समय लिखैत छलीह। एक रोगीक परिजन पुछलक जे ईंट अनल गेल अछि तँ काल्हिसँ पानि उतरि जायत ने। उर्मिला आश्वासन देबाक प्रलोभन रोकलीह। “सुरक्षित गाड़ी-बाट एखन चलैत अछि,” ओ उत्तर देलीह, “बाहरी निकासक पूरा कामक तिथि नहि भेटल। अस्पतालक भीतरक चुआनक मरम्मत तेसर सूचीमे अछि।” परिजन कहलनि, “हमरा औषधिक शीशी सूखल ठाम राखबाक अछि, योजनाक नाम नहि।” उर्मिला तुरन्त भण्डारक उँच रैक देखबौलीह। बिना बड़का निर्णयक प्रतीक्षा कएने छोट सुरक्षित ठाम तय भेल।

नूरजहाँ अपन गाड़ीकेँ कातक कठोर जमीनपर पहुँचौलनि। ओतय उतरबाक लेल नगरक दू मजदूर तयार छलाह, मुदा मुंशी फेर एकमुश्त रसीद देबाक जिद कएलक। “ईंट आ गाड़ी देल गेल” लिखल कागदमे नूरजहाँक पशुक चोटक जोखिम, दुबारा चक्करक लागत वा खाली प्रतीक्षा लिखल नहि छल। नूरजहाँ तकरा पर सही नहि केलनि। ओ गाड़ीमे बचल ईंट गनलीह—छोट, अधकच्चा टुकड़ा आ सही आकारक टुकड़ा मिश्रित छल। “जे भारक पाँतिमे छः गाड़ी लिखल अछि, ओहि छहूँ गाड़ीमे ईंट समान नहि,” ओ कहलीह। “नाप-तौल पहिने, भुगतान बादमे नहि।”

मुंशीक हँसीमे उपेक्षा छल। “एतेक हिसाब करब तँ पुल कोना बनत?” नूरजहाँ प्रत्युत्तर देलीह, “एहि ईंटसँ एखन पुल बनबाक आदेश नहि अछि। ईंटक भरोसा पर आदमी चलत तँ गिनतीक प्रश्न छोट नहि रहत।” सुगनी लग ठाढ़ छलीह। ओ नूरजहाँकेँ अपन टोलीक नेतृत्वमे आनेबाक प्रस्ताव नहि रखलीह, किएक तँ ढुलाई आ निकास-दलक श्रम अलग

छल। बदला ओ दुनूक रसीदपर अलग निरीक्षण-समय आ सुपुर्दगीक स्थान लिखबेनाइ प्रस्तावित कएलनि। ई छोट व्यवस्था सँ दुनूक भविष्यक दावा एक-दोसरासँ दबत नहि।

नूरजहाँक किशोरी बेटी दोपहरक भोजन लऽ पहुँचलि। ओ खुरक पट्टीक गाँठ देखिकऽ कहलीह, “एहि गाँठपर फेर भारी जुआ पड़त तँ खुलि जाएत।” नूरजहाँ ओकर हाथसँ रोटी लैत उत्तर देलीह, “तँ एखन खाली गाड़ी लऽ घुब।” बेटी हिसाबक पन्ना पलटि पुछलक, “सुरक्षित बाट लेल अतिरिक्त चक्करक पाँतिमे हमर देल पानी आ पशुकेँ आराम देबाक समय लिखल अछि?” नूरजहाँ कहलीह, “समय लिखल अछि; मुदा एहि काजक दामक निर्णय हम सभ करब। तू पढ़ाइक समय छोड़ि रोज गाड़ी लग नहि ठाढ़ रह।” बेटी अपन विद्यालयक कापी खोसनीमे राखि भोजनक खाली डब्बा लऽ गेलि।

नगरक कार्यालयमे देवव्रतक प्रतिनिधि पहुँचल। ओकरा हाथमे दोसर समझौताक पाँच शर्तक प्रति छल। ओ कहलक जे अस्पतालक गाड़ी चलि रहल अछि, तँ निकासक काम शीघ्र पूरा भेल देखाएब आवश्यक। अदिति स्पष्ट कएलीह, “गाड़ी चलब सुरक्षित अस्थायी उपाय अछि। निकास सुधारबाक कामक प्रमाण नहि। आन ठामक सफलता एतयक अपूर्णता नहि मेटायत।” प्रतिनिधि कहलक जे नगरक मानहानि होएत। सुगनी ओकरा जवाब नहि देलीह; ओ अपन मुहल्लाक पहिल आँगनक फोटो उधारलीह, जाहिमे पानि भीतर धरि चढ़ल छल। “एहि घरक नाम सार्वजनिक नहि करू,” ओ जोड़लीह, “मुदा घरकेँ नक्शासँ मेटल सेहो नहि जाए।”

रानी हलालखोर आ ममता हरि पहुँचलि तँ सुगनी हुनका अपन नाप-परची देखौलनि। रानी पहिलुका बन्द नालीमे नहि उतरबाक निर्णय दोहरौलनि। “हमर दल बाहरी टूटल शीशी आ सूखल कचरा सुरक्षित वस्त्रसँ हटाओत,” ओ कहलीह, “बाकी भीतरक सर्वेक्षण प्रशिक्षित उपकरणक बिना नहि।” ममता एखनहुँ प्राप्ति-पत्रमे खाली दस्तानाक खाना देखबौलीह। सुगनी अपन सदस्यसभकेँ पुछलीह जे कियो बाहरी काम करय चाहैत अछि कि नहि। तीन स्त्रीसभ अपन-अपन समय बतौलीह; एक युवकेँ ओहि दिन बीमार बापक दवा अनबाक छल, तँ ओकर नाम अगिला दिनक टोलीमे राखल गेल। निर्णयक बाद सुगनीक नेतृत्व आदेश देबाक बदला सुनबाक काम बनि गेल।

अदिति मुहल्लाक बाहा-किनारक नाप जाँचए चललीह। तारा बिनौट तखन धरि पुरान चिन्हक दोसर प्रति लेने पहुँचल छलीह। तारा चूना-रेखा आ सुगनीक बाँसक बीच फरक देखौलनि। “पुरान बरखा-सँ पहिने एतय पानि पछिला मेड़सँ मुड़ैत छल,” ओ कहलीह, “मुदा एकर आधारपर एखन पुरान पूरा बाट खोलबाक आदेश नहि बनत। गोदामक नीचाँ संरचना कतेक बचल, से देखल नहि।” अदिति लिखलीह—तीन अलग जाँच: पुरान निकासक सम्भावित रेखा, वर्तमान बहाव, आ अस्थायी पैदल मार्गक भार। अगिला अध्यायमे उठएवला पुलक माँगक लेल ई तेसर पाँति आवश्यक छल।

सुगनीक एक साथी घरसँ घुरि कहलीह जे घरक बुजुर्ग स्त्री अपना दरवज्जापर नगरक सर्वेक्षण-चिह्न नहि चाहैत छथि; पहिने ओहि चिह्नक आधारपर घर हटेबाक अफवाह फैलल छल। सुगनी तत्काल कापीमे लिखलीह—घरक भीतर नाप लेल अनुमति शेष। अदिति पूछलीह, “तखन बाहरी रेखासँ काम चलत?” सुगनी उत्तर देलीह, “पहिने बुझाएब जे ई जोखिम-जाँच अछि, भूमि-अधिग्रहण नहि। ओ नहि मानतीह तँ घरक भीतरी नाप नहि लेब। बाहरी पानिक ऊँचाइ आ हुनकर मौखिक सूचना अलग चिन्हित होएत।” नगरक एक युवाक जल्दी कम भऽ गेल।

साँझसँ पहिने नूरजहाँक गदहाक खुरमे औषधि लगौल गेल। नूरजहाँ पशु-चिकित्सकक रसीदक प्रति मुंशीकेँ देलीह। मुंशी कहलक, “ई तऽ अहाँक निजी खर्च भेल।” नूरजहाँ हँसलीह, मुदा आँखिमे थकान छल। “हो, ओकर देह हमर जिम्मामे अछि। मुदा जँ नगरक गलत बाटपर ढुलाई लेल बारम्बार दबाव देल गेल आ हम सुरक्षित बाट लेल अतिरिक्त चक्कर लगेलहुँ, तकर भाड़ा निजी दान नहि।” ओ दू दावा अलग लिखौलीह—पुरान स्वीकृत ढुलाईक बकाया आ बदलल सुरक्षित बाटक अतिरिक्त लागत। पशुक उपचारक बिल स्वयं भुगतान कएलीह, मुदा किराया पुनर्निर्धारणक प्रस्तावमे ओकर कारण स्पष्ट करौलीह।

एक मजदूर पुछलक जे जँ पशुक उपचारक मूल्य नगरपालिका नहि देत तँ नूरजहाँक की लाभ? नूरजहाँ ओकरा बाटक दू चित्र देखौलीह। एकमे छोट दूरी छल मुदा गहिर कादो; दोसरमे चक्कर बेसी छल मुदा खुर नहि धँसैत छल। “आइ हमर बचाव भेल,” ओ कहलीह, “काल्हि ओकरा फेर चोट नहि लगय, ताहि लेल ठीक ठामसँ गाड़ी पठाएब।

दरक लिखित शर्त बनत तँ हमरा खाली दयाक प्रतीक्षा नहि करब पड़त।” मुंशी पहिल बेर चित्रकै गम्भीरतासँ देखलक। ओ पूर्ण भुगतानक वचन नहि देलक, मुदा पुरान बकाया-रसीदपर आंशिक रकमक स्वीकृति-मोहर लगौलक आ अतिरिक्त चक्करक जाँच लेल तिथि लिखलक।

सुगनीकें नगर कार्यालयमे नया मुहरवला पन्ना देल गेल। सभक हस्ताक्षरक पाँति छल, मुदा टोलीक तीन स्त्रीमे एकटा लिखब नहि जनैत छलीह। कर्मचारी कहल, “अँगूठा लगा दिअ।” सुगनी कागद हुनका पढ़ि सुनौलीह, फेर पूछलीह जे लिखल समय आ काज सही अछि कि नहि। साथी बतौलनि जे ओ केवल बाहरी सफाइक आधा दिन देने छथि, पूरा दिनक नाली-उतराइ नहि। तखन मूल पन्ना बदलल गेल। स्त्री अपन निशान लगौलीह, आ सुगनी ओकर प्रति हुनक हाथमे देलीह। बाहर निकलिते ओ कहलीह, “हम अँगूठा देलहुँ, हमर आवाज ओहि संग रहबाक चाही।”

प्राचीन मिथिलाक ओहि कक्षामे साँझक समएँ गङ्गेश शिष्यसभसँ ताड़पत्रक दू भिन्न पन्ना माँगलनि। एकपर ईश्वरानुमानक हेतु आ आपत्ति, दोसरपर दाहशक्ति आ प्रतिबन्धकाभावक वाद लिखल छल। विद्यार्थिनी अपन भीजल अन्न सुखा कऽ लौटल छलीह। ओ पुछलीह, “हमर चूल्हिमे आगि ठीक छल, मुदा हवा रोकने रहलीहुँ; आब बुझलहुँ जे लकड़ी बदललासँ मात्र उत्तर नहि भेटत।” गङ्गेश कहला, “अहाँ जे करबैत अनुभव पेलहुँ, तकर मर्यादा ओहि घटनाधरि अछि। ईश्वरसम्बन्धी मतक सत्यता ओहि छोट सफलतासँ सिद्ध नहि भेल।” अतिथिक मुखपर सम्मतिक हल्लुक चिन्ह छल; दार्शनिक मतभेद जसक तस रहल।

मीमांसक कहलनि, “हम शक्तिक पद टारब नहि; ओ नियमित सामर्थ्यक महत्त्वपूर्ण व्याख्या दैत अछि।” गङ्गेश उत्तर देलनि, “आ हम बाधाक अभाव तथा पर्याप्त कारण-समूहक परख बिना अतिरिक्त सत्ता मानबाक जल्दी नहि करब।” कियो विजयी घोषित नहि भेल। शिष्य ओहि दू विधानक नीचाँ एकटा खाली पाँति छोड़लक, जतय भावी आपत्ति आ दृष्टान्त राखल जा सकत। विद्या एतय ताड़पत्र भरि देबाक काज नहि, जाँचक रिक्त स्थानक रक्षासँ सेहो बनैत छल।

अस्पतालमे ओहि साँझ अदिति पहिलुका अभियान्त्रिक निष्कर्षक संशोधनक संग तीन नवी पाँति जोड़लीह। सुगनी सदायक टोलीक सुरक्षित बाहरी सर्वेक्षणक हाजिरी पक्का कएल गेल, मुदा बन्द निकासक भीतरक काम एखन निषिद्ध रहल। मुहल्लाक जोखिम-नक्शा पर सुगनीक नाम समन्वयकक रूपमे चढ़ल; भूमि-अधिकारक निर्णय ई नापसँ नहि होएत, से स्पष्ट लिखल गेल। नूरजहाँक पहिल ढुलाईक बकाया मे आंशिक राशि स्वीकृत भेल, शेष भाड़ा आ अतिरिक्त चक्करक सुनवाईक तिथि भेटल। हुनकर गाड़ी अनावश्यक रात्रि-ढुलाईसँ मुक्त भेल।

उर्मिला रोगी-गाड़ीक अन्तिम समय लिखि कऽ बाहर अएलीह। ओ सुगनीसँ पुछलीह, “भोरसँ पानि कतबा उतरलक?” सुगनी कहलीह, “जतबा हवा आ ढलानसँ उतरल, ओतबा। हमर सर्वेक्षणसँ नाली अपने नहि खुलल।” दुनू कने हँसलीह। नूरजहाँ गदहाक ग्रीवापर हाथ फेरि कहलीह, “आ जे ईंट नहि उतरल, ओकर वजन सेहो बहीमे रहत।” तारा सँकरा पटरीक कात बाँसक नव निशान गाड़लीह—एतयसँ आगाँ बिना भारपरीक्षणक नहि चलब। ई निशान कोनो पुल नहि छल; मुदा काल्हि जे सुरक्षित पुल बनबाक दावा उठत, ओकर पहिल आवश्यकता आज स्पष्ट भऽ गेल छल।

अध्याय १०५ • बिनौटक पुल

तारा बिनौट भोरक उजासमे बाँसक गाँठपर नखसँ खरोच देलीह। छालक नीचाँक रङ्ग एक ठाम पीयर छल, दोसर ठाम कारी। ओ पीयर बाँस अलग राखलीह आ कारी बाँसपर खड़ियासँ छोट घेरा बना देलीह। काल्हि नगरक खूँटासँ आगाँ नहि चलबाक जे निशान गाड़ने छलीह, ओ एखनहुँ ठाढ़ छल। ओकर दहिना कात सँकर सार्वजनिक निकासपर दू पयर राखबाक जगह छल, मुदा बाम कातक माटि रातिक पानिसँ फेर धँसि गेल छल। फाटक लग भीड़ पहुँचए धरि तारा ओहि माटिमे अपन पयर नहि देलीह। ककरो काज शुरू करबाक अनुमति भेटल छल, पूरा बाट खोलबाक नहि।

ललित विश्वकर्मा दू काठक पटरी कपड़ामे बान्हि अनलनि। पहिल पटरीक किनार चोख छल, दोसरक रेशा भीतरे सँ मुड़ल। “एहि दोसराकेँ रंग देलासँ दोष मेटाएत नहि,” ओ कहला। ठेकेदारक सहायक शीघ्रता देखबैत पुछलक, “एके छोट पुल अछि, एतेक छँटनी किएक?” ललित पटरीक फाटल मुहाना ओकरा सामने धरलनि। “जे लोक पार होएत, ओकर पएर छोट नहि भऽ जायत। हमर पहिल ठेका गलत भारक कागदपर सही नहि केलासँ गेल छल। एहि बेर कागद आ काठ दुनूकेँ एक्के बात कहबाक चाही।”

श्याम मल्लिक आ तारा पहिनहिसँ एक दोसराक बिनौट पहचानैत छलाह। श्याम पुरान नमूनाक झोरा खोललनि, जाहिमे माछ घेरबाक चिलौनक जाल, तरकारी राखबाक बाँसक टोकरीक चपटा पाट आ सँकर बाटपर पयर देबाक चचरीक तीन अलग छोट आकार छल। नगरक युवक हँसि कहल, “तीनू तऽ बाँसे थिक।” तारा छोट जालक पातर गाँठ अँगुरीमे घुमौलीह। “एहि जालसँ माछक चाल रोका सकैत छी। आदमीक भार थामबाक नामपर एकरा जोड़ब तँ माछ आ आदमीक देहक फरक मेटि जाएत की?” श्याम नमूनासभक उपयोग अलग कागदपर लिखबौने बिना एको बाँस कटब स्वीकार नहि केलनि।

हीरा सहनी पानिमे नाप-डण्डा उतारि कऽ कहलनि जे रातिभरिमे पानि दू निशान बीच चढ़ल छल, मुदा धारक चाल एकरासँ सिद्ध नहि होइत। फाटकक पिछला बिन्दुपर जलसतह थोड़े शान्त छल; ताहि ठाम जमीनक भीतर कतबा कटान अछि, से एखन खुलल नहि। अदिति अभियन्ता पुरान प्रतिवेदनक कातमे नवीन परीक्षण-पन्ना जोड़लीह। “पहिने

आधार,” ओ कहलीह, “फेर जोड़, फेर सीमित भार-परीक्षा। परीक्षण सफल भेलो पर वर्षाक नव धार आयलासँ अनुमति बदलि सकैत अछि।” भोरमे प्रशासनक छिटपुट कर्मचारी ई वाक्य सुनि निराश भेला, मुदा हीरा राहतक श्वास लेलीह।

अस्पतालक पछिला दरवज्जासँ उर्मिला पहुँचल छलीह। हुनका हाथमे औषधिक खाली पेटी छल, जकर भीतर काँचक शीशीक टूटल अंश राखबाक अलग छोट थैली छल। ओ पुछलीह, “रोगीकेँ एहि बाटसँ ढोएबाक बात फेर कोना उठल? तुलसीक गाड़ी लेल सुरक्षित रस्ता तय भेल ने?” एक सहायक उत्तर देलक जे पुल बनि गेलापर स्ट्रेचर लऽ जाएब छोट पड़त। उर्मिला खाली पेटी धरतीपर रखलीह। “छोट बाट आ सुरक्षित बाट समान नहि। रोगी चलि नहि सकैत छथि तँ हुनकर वजन मात्र नहि, हुनकर देह स्थिर रखबाक जरूरत सेहो अछि। रोगी-स्थानान्तरणक गाड़ी पहिनेक समयसँ चलत; चचरी ओहि व्यवस्थाक विकल्प नहि।”

तारा एखन निर्णय देबाक बदला पासक चारि घरक लोककेँ बजौलीह। पहिल घरक स्त्री अपन दू छोट बच्चा लेल विद्यालय जाएबाक पुरान पगडण्डी देखेबाक चाहैत छलीह। दोसर घरक बूढ़ पुरुष कहला जे हुनका लाठी बिना चलब कठिन। तेसर घरक परिवारक आँगनमे पानी अटकैत छल, मुदा ओ निजी मेड़ काटबाक अनुमति नहि देने छल। चौठ घर खाली छल; ओकरा खाली देखिकऽ भूमि सार्वजनिक घोषित नहि कएल जा सकैत छल। तारा सभक आवश्यकता अलग लिखलीह आ कहलनि, “जकरा ई चचरी उपयोगी नहि, ओकर लेल सुरक्षित दोसरो बाट लिखब। एकटा पुल बनलासँ सभ समस्या बन्द नहि होइत।”

नाव—औजार परखक सामुदायिक आयोजन लेल लोग पीपरतरि जुटए लगल। परम्परागत दिनक ढोलक एखन जोर सँ नहि बाजल; पहिने बाँस, डोरी, कील, काठ आ चर्मक नमूनाक मेज लागल। पार्वती ताँती कपड़ाक रंगीन चेतावनी-पट्टी अनलीह, पवित्रा पटवा ओकर गाँठक अलग दाम लिखौलीह। श्याम सभकेँ बतौलनि जे रङ्गीन पट्टी फिसलन चिन्हेबाक लेल अछि, सहारा देबाक डोरी नहि। आयोजनक रजिस्टरमे उपस्थित लोकक नाम हुनकर इच्छासँ चढ़ल; कामक टोली बिना पूछने जातिक आधारपर नहि

बाँटल गेल। किछु लोक केवल देखबाक लेल आएल छलाह, हुनकरा सँ श्रम वा हस्ताक्षर नहि माँगल गेल।

उषा राम मेजपर छोट चर्म-पट्टी पसारलीह। ओ जूताक साँच बदलबाक पिछिला काममे पानि लगला पर घिसएवला किनारक नब जोड़ बनौने छलीह। आइ ओहि अनुभवसँ बाँसक पाटपर पयर धरबाक जगह पकड़ बढेबाक नमूना लेलीह, मुदा एकर क्षमताक दावा नहि केलनि। ठेकेदारक सहायक कहलक, “एहि चर्मकेँ अपन सरकारी नाप मानि लैत छी; अहाँ सामग्रीक दाम लऽ लिअ।” उषा नमूना उठाए लेलीह। “सामग्री बेचल जाएत तँ एकटा दाम,” ओ कहलीह, “हमर बनाओल जोड़क नक्शा फेर-फेर उपयोग करताह तँ अलग अनुमति। आ ई पट्टी नमूना अछि, प्रमाणित पुलक भार थामबाक साधन नहि।”

सहायक नाराज भऽ कहलक जे सरकारी काममे व्यक्तिगत अधिकारक एतेक हिसाब रखला पर राति भऽ जायत। ललित उत्तर देलनि, “हमर गलत सही नहि करबासँ ठेका हाथसँ गेल छल, मुदा जे काठ बनब, तकरा खराब कहबाक अधिकार एखनहुँ हमर अछि। उषाक डिजाइनक बात सेहो सुनू।” उषा एक पुरान जूता आ नव नमूना पानि लगाओल छोट काठपर रगड़ि देखौलीह। पुरान किनार फिसलल, नव कने अटकल। “एहिसँ बस एहि सतहपर एहि क्षणक व्यवहार देखाएत,” ओ जोड़लीह, “बरखाक दू राति, कीचड़ आ सब पयर लेल अलग परीक्षण चाही।”

दुपहरि सँ पहिले हीरा अपन नावक लगगा लऽ आएलनि। किछु लोक चाहैत छल जे पुल बनबय धरि नावक सहायतासँ सामान झटपट ढोएल जाए। हीरा कहलीह जे पानिक गहिराइ आ नावमे चढ़बाक किनारक दूरी दुन्नू बदलि रहल अछि। ओ एक छोटी नावक बैठबाक पाट अलग देखौलीह, जाहिपर निर्धारित संख्यासँ अधिक लोक चढ़बाक माँग पहिनहिसँ रोकने छलीह। “हमर नावक क्षमता नावक कागदसँ,” ओ कहलीह, “ललितक पाटक क्षमता ओकर परीक्षणसँ। एकक नामपर दोसरक भरोसा नहि बेचब।” तारा हुनकरा धन्यवाद दऽ फेर जाँचक खूँटा देखए बढलीह।

आधार-पट्टी राखबाक समय एकटा पुरान ईटक भीतरी थर हाथ लगिते खसि पड़ल। पारो पत्थरकट्टा छेनी रोकि देलीह। नगरक युवक कहलक जे कने गारा देलासँ जमि जायत, मुदा पारो उत्तर देलीह, “हम ईटक ढीलापन देखलहुँ; नीचे धरि ओकर सहारा अछि

कि नहि से हमर आँख नहि देखल। ऊपर रङ्ग चढ़ेबासँ ई प्रश्न नहि मेटाएत।” अदिति तखन चिन्हित सीमासँ बाहर नव आधार बनएबाक सम्भावना देखलीह। तकरा लेल निजी घरक सीढ़ी छुएबाक भय छल, तँ घरक स्त्रीसँ दोसर बेर अनुमति माँगल गेल। ओ केवल नाप लेल सार्वजनिक कातधरि आवागमन स्वीकार कएलीह, अपन सीढ़ीमे खूँटा गाड़ब नहि।

कमजोर आधार छोड़ि पुलक प्रस्तावित स्थान आधा हाथ सरकल। एहि सरकावसँ ललितक कटल एक पटरी अनुपयोगी भऽ गेल। सहायक अपन कागद झटकि कहलक, “एहि नष्ट काठक दाम ककरा लागत?” ललितक गाल लाल भऽ गेल। “पहिने जे माप स्वीकृत केलहुँ, ओहिमे आधारक जाँच अधूरा छल। हमरा कटल काठक श्रमक हिसाब चाही, मुदा बिना जाँच लऽ लेल निर्णयक पूरा बोझ हमर गर्दनपर नहि रखू।” अदिति अपन पुरान नाप-पन्ना देखलीह आ नव कटौतीक कारण लिखित दर्ज कएलीह। काठमे नुकसानी भेल छल; ओकरा छिपा सस्ता बनल घोषणा करब आसान छल, मुदा कियो ओहि बाट नहि गेल।

तारा आ श्याम नब बाँसक तिरछा बिनौट मिलौलनि। श्याम गाँठक फरक दर्शबैत कहलनि जे छोरक अन्तिम पट्टी कसबाक पहिने बीचक डोरीक तनाब समान करब आवश्यक अछि। पार्वती सूतक पट्टी पयरक चिन्ह लेल दऽ देलीह, मुदा तारा स्पष्ट कएलीह जे ओ संरचनात्मक बन्धन नहि। ललित काठक किनारपर हथौड़ी ठोकबाक बदला पहिने सूखल कील-सुराख जाँचलनि। उषा चर्म-पट्टीक नमूना केवल एक अलग निकालल जा सकएवला पाटपर लगबौलीह। “जँ ई पाट खराब भेल,” ओ कहलीह, “हमरा पूरा बाँस काटबाक मजबूरी नहि देब।” एहि बचतमे माटि, काठ आ श्रम तीनू छल।

एक युवक पुलक डिजाइनक फोटो मोबाइलमे लऽ कऽ बाजारक समूहमे भेजए लागल। श्याम ओकर हाथ पकड़ि नहि रोकलनि; ओ कैमरा सामने रखि कहलनि जे सुरक्षा-जाँचक सामान्य दृश्य सार्वजनिक होअय तँ आपत्ति नहि, मुदा तारा आ श्यामक पूरा गाँठ-नक्शा प्रतिकृति बनएबाक अनुमति बिना नहि भेजल जाए। युवक पुछलक, “एहन बिनौट पुरान पीढ़ीसँ चलैत अछि, तखन अहाँक अकेल अधिकार कोना?” तारा कहलीह, “पूर्वजक कारीगरी हमर निजी सम्पत्ति कहि नहि रहल छी। एहि स्थल लेल

बनाओल विशिष्ट नाप, रेखा, संशोधन आ जिम्मेदारीक नाम नहि मेटाउ।” युवक अपन भेजल मसौदामे कारीगरक नाम आ अनुमति-सीमा जोड़लक।

सुगनी सदाय नब चचरीक दुन्नू छोरपर ठाढ़ भऽ लोकसभक पयरक बाट देखलीह। हुनकर मुहल्लाक दू महिला एक दिनक माप-सर्वेक्षणमे मजदूरी पबैत छलीह; पुलक बनबैत दल हुनकरा अपन कर्मचारी बताइ देने छल। सुगनी तुरन्त सुधार करौलीह। “हमर टोली जलस्तर आ घरक अनुभव दर्ज केलक। चचरीक बनावट ताराक दलक अछि; ई दू कामक रसीद अलग रहत,” ओ कहलीह। नगरपालिका सहायक एतेक नाम पढ़ि थाकि गेल, मुदा कर्मचारीक सूचीमे अनाधिकृत रूपेँ आधा दिन जोड़बाक गलती ओहि ठाम सुधारल गेल। कियो मुफ्त नालीमे नहि उतरल, कियो कागदक नामे कुशलता नहि गमौल।

साँझ लग एक बेर परीक्षणक पहिल क्रम शुरू भेल। पुलक दुन्नू कात अस्थायी सुरक्षा-रेखा तानल गेल, दर्शक पीछे रहलाह। अभियन्ता अदिति भारक थैलीक वजनक प्रमाण-पर्ची देखलीह; ललित पटरीक झुकाव नापलनि, तारा गाँठक चलन देखलीह, हीरा जलस्तरक नब निशान लेलनि। पहिल थैली उतरला पर एक कात छोट चरमराहट भेल। भीड़मे कियो कहलक, “बाँसक आवाज तऽ आविते अछि।” ललित आवाजक दिशा देखलनि, आ परीक्षण रोकि देलनि। जकरा लोग सफल प्रदर्शन बुझि रहल छल, ओकर पहिल परिणाम रोकबाक निर्णय छल।

पटरी खोलल गेल तँ चर्म-पट्टी नहि, काठक पाछाँक एक कसनी हल्का घूमि गेल छल। हरिनारायण शर्मा लेल बनल लोहाक कसनीक पुरान नमूना ओतहि राखल छल, मुदा ई कसनी दोसर काज लेल पुरान स्टॉकसँ अनल गेल छल। हरिनारायण बुलाओल गेलाह। ओ पुछलनि जे घटकक मूल बिल आ ठोस आकार कोन अछि, तखन गलत माप चुनल गेलाक सम्भावना देखौलनि। “लोहेक मजबूती कहलासँ पूरा बाँसक सहारा सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलनि। अदिति नब कसनीक स्वतंत्र परीक्षणक आदेश देलीह; पहिल धातुकें बदलि आ फेर जाँचल बिना चलबाक अनुमति नहि देल गेल।

एहि रोकक कारण अस्पतालक दवाइक पेटीकेँ पुरान सुरक्षित चक्करवला बाटसँ पठाओल गेल। उर्मिला स्वयं गाड़ीक समय लिखलीह। एक कर्मचारी कहलक जे पुलक उद्घाटन लेल अधिकारी आएल छथि, तँ खाली पेटीओ ओहिपर राखि फोटो लेबाक चाही।

उर्मिला उत्तर देलीह, “जे पुल परीक्षणमे रोकल गेल अछि, ओकरा फोटोमे चलैत देखाओल तँ काल्हि रोगीक परिवार ओहि पर भरोसा करत। खालिए पेटी प्रदर्शनक वस्तु नहि।” कर्मचारी पाछू हटल। गाड़ी देरिसँ नहि, निर्धारित समयपर निकलल; उत्सवक निराशाक बीच ओहि साधारण नियमिततासँ उर्मिला राहत पेलनि।

उषाक ग्राहक ओहि बीच अपन दोकानक पुरान जूताक मॉडल लऽ पहुँचल। ओ कहलक जे चर्म-पट्टीक नमूना हुनका देल जाए तँ रातिमे अएहिसँ अनेक जोड़ी बना लेत। उषा नमूनाक अलग पंजी देखौलीह—पदार्थक आपूर्ति, डिजाइनक प्रयोग, जूताक बिक्री, चचरीक पाटपर परीक्षण चारि अलग समझौता। “हम चाही तँ नव ग्राहकक संग काम करब,” ओ कहलीह, “मुदा हमर नापकेँ बिना नाम दऽ दोसर दोकानमे छपबैत नहि देखब। पहिने छोट परीक्षणक दाम आ नमूनाक वापसी लिखू।” ग्राहक पहिल बेर जूताक साँच लौटा देलक आ अगिला दिने बिनु फोटो प्रयोगक अनुमति-पत्र लेल भेंटबाक कहलक।

पीपर तरि आयोजक ढोलक बजएबाक आग्रह कएलक, मुदा बाजाक मरम्मतिक पुरान दाम एखन बाँकी छल। उषा कहलनि जे चाम बदलबाक मजदूरी मिले तखन बाजा आवाज देत, दानमे बजब आवश्यक नहि। रघु रसोइया गरम चिउड़ा, अल्हुआ आ नमक-संग भुजल चना अनने छलाह। कियो पूछलक जे एहिक भाड़ा आयोजनक सार्वजनिक खातामे लिखल अछि की। रघु अपन छोट रसीद देखौलनि। गीत गाबय आयल युवती हुनकर अल्हुआ चाखि कहलीह, “हम गीत गाएब, मुदा पहिने खएबाक समय हमरा सेहो चाही।” भीड़ हँसल; किछु देरि तक काजकेँ छोड़ि लोक भोजनक स्वाद आ अपन घरक हँसीमे रमल।

दोसर परीक्षणसँ पहिने अदिति अधिकारीक आगाँ तीनटा कागद रखलीह। पहिलमे सामग्री आ मजदूरी, दोसरमे परखल भार आ निरीक्षणक परिस्थिति, तेसरमे उपयोगक सीमा। अधिकारी पुछलनि जे उद्घाटनक पट्टपर “सार्वजनिक पुल” लिखि सकैत छथि की। तारा उत्तर देलीह, “एखन ‘सीमित अस्थायी चचरी’ लिखू। सार्वजनिक बाटक स्वामित्व अलग प्रश्न अछि, एक दिनक परीक्षणसँ स्थायी पुल नहि होइत।” अधिकारी छेड़ करैत कहलनि जे एहन छोट नामपर फीता काटल जाइत अछि? उषा हँसि कहलीह, “फीता काटब लेल फीता खरीदू; सुरक्षित बाटक नाम मत काटू।”

नब कसनी लगलाक बाद दोसर परीक्षणमे भारक थैली क्रमशः राखल गेल। जतेक तक स्वीकृत क्रम छल ओहि सीमा भीतर झुकाव आ गाँठक चलन मापल गेल; स्थिर परीक्षणक नव्वे किलोग्राम भारकेँ चलबाक अनुमति नहि मानल गेल। अदिति संचालनक पर्चीमे कुल साठि किलोग्रामक सीमा लिखलीह—एक समयमे केवल एक व्यक्ति, जे अपन देह आ संगक वस्तुक कुल भार एहि सीमाभितर रखत; हाथमे भारी सामान नहि; दौड़ब, भीड़ जुटायब, स्ट्रेचर चलायब अथवा वाहन चढ़ायब निषिद्ध। भारसीमा निरीक्षणक मूल अभिलेखमे अङ्कसहित रहल; सार्वजनिक पट्टपर सेहो साठि किलोग्रामक सीमा, उपयोग-शर्त आ परीक्षण-तिथि देल गेल।

ललित पुछलनि, “जँ केओ ओहि सीमासँ अधिक भारक होथि तँ?” अदिति उत्तर देलीह, “तिनका नहि रोकबाक नामे पुलकेँ बेसी मजबूत घोषित नहि करब। वैकल्पिक सुरक्षित बाटक जिम्मेदारी लिखब।” उर्मिला अस्पतालक रोगी-गाड़ीक पुरान मार्ग देखौलीह, हीरा आवश्यकता पड़ला पर परीक्षणक अधीन नाव उपलब्ध करबाक सहमति देलीह। एक बूढ़ स्त्रीक लेल हाथ धऽ चचरी पार करब आसान देखाइत छल, मुदा हुनका लाठीसहित पर्यटक नियन्त्रण कठिन छल। हुनका लेल पक्का पगडण्डी चुनल गेल। पुलक उद्घाटनक भीड़मे सभसँ महत्त्वपूर्ण ओहियो व्यक्ति छलाह जे ओहि पर नहि चढ़लाह।

तारा उपयोग-शर्तक पन्ना फाटक लग चिपकाएब चाहैत छलीह, मुदा वर्षाक पानि लगला पर कागद गलि सकैत छल। पवित्रा पटवा दू रंगक संकेत-पट्टी गँथलीह; पार्वती ताँती ओकरा पर लिखल छोट निशान दूरसँ देखाए ताहि लेल किनार बुनलीह। श्याम ओ चिन्हक छविक उपयोगक सीमा तय करौलनि। तारा कहलीह जे लाल पट्टी जोखिमक निशान थिक, धरि लेबाक डोरी नहि; हर दिन पानी चढ़लापर पटरी देखबाक व्यक्ति नामसहित नियुक्त हो। दर्शकक एक किशोर कहल, “हम पढि लेलहुँ जे बरखामे बन्द, मुदा रातिमे चिन्ह के देखत?” तखन रातिक पहरा अलग मुद्दा बनि गेल।

रमणी बिन्द पहुँचलीह आ पुछलीह जे एहि चचरीसँ मखानिया डबराक जलकरक बाट छोट होएत की। हीरा उत्तर देलीह जे चचरी केवल सार्वजनिक निकासक छोट कटानपर अछि, डबराक पट्टाक पहुँच ओहिसँ सिद्ध नहि। रमणी अपन पंजीक ढकना बन्द कएलनि। “हमर दावाक उत्तर फेर एकटा पुलक फीता नहि देत,” ओ कहलीह। तारा हुनका अलग

नकल देबाक वचन देलीह, जाहिमे चचरीक नाप आ निजी जलपट्टाक सीमा अलग चिन्हित रहत। रमणीक निराशा खत्म नहि भेल, मुदा हुनकर पट्टाविवादक कागद उद्धाटनक भीड़मे हराएल नहि।

नगरक सहायक फेर कहलक जे सीमित अनुमति लिखलासँ राहतक काज धीमा होएत। सुगनी ओकरा मुहल्लाक सभसँ नीचाँ घरक एक छवि देखौलीह। “एतय काल्हि पानि चढ़ल तँ ई चचरी पहिने बन्द होएत। हम सभ तखन फेर घरमेसँ निकलबाक बाट खोजब,” ओ कहलीह। अदिति सहमति देलीह जे जलस्तरक एक चिन्ह पार कएलापर उपयोग स्वतः स्थगित मानल जाए, फेर स्थलगत परीक्षण बिना नहि खुलत। चचरीक रखरखावक नाम नगरक पंजीमे रहत, ताराक टोलीपर अनिश्चित कालक मुफ्त पहरा नहि डालल जाए। सुगनी अपन सर्वेक्षणक अगिला देयक समय पूछलीह; सहायक एहि बेर हिसाबक उत्तर देलक।

नाव-औजार परखक छोट समारोहमे चचरीपर पहिल बेर एकटा खाली औषधि-थैली नहि, परीक्षण लेल निर्धारित हलुक वस्तु आ ओकर बाद प्रशिक्षित स्थानीय कर्मिक सावधान पयर पड़ल। दोसर पार पहुँचिकऽ ओ झंडा नहि हिलौलक; घुरि कऽ पटरीक डगमगाहट पूछलक। तारा कहलीह, “भरोसा बोलबाक पहिने चलल काठ देखू।” निरीक्षक ओहि क्रमक समय, मौसम, भार आ देखल परिवर्तन लिखलनि। भीड़ ताली देलक, मुदा ललित अपन हथौड़ी पेटीमे राखए धरि कने चुप रहलाह। कोनो धुँधला पुरान स्मृति नहि, पिछला ठेका गमएबाक ताजा घाव छलिए। आइ हुनकर अस्वीकृतिक मूल्य पहिल बेर काजक सुरक्षा बनि सामने छल।

उषा दिनक अन्तमे अधिकारीसँ प्राप्ति-पर्ची लेलीह। ओहिमे चर्मक नमूनाक दाम, अलग डिजाइन-परीक्षण शुल्क आ अगिला प्रयोगपूर्व लिखित अनुमतिक शर्त दर्ज छल। ग्राहकक पुरान जूताक रूपक दावा असिद्ध रहबाक कारण एकरा अन्तिम बौद्धिक अधिकारक निर्णय नहि बनाओल गेल; मुदा बिना अनुमतिक नकल रोकबाक सीमित व्यवहारिक व्यवस्था मानल गेल। उषा अपन बेटी लेल नव मापवला जूता घर लऽ गेलीह। बेटी पुछलीह, “ई पुलपर चलबाक लेल?” उषा कहलीह, “नहि, विद्यालयक पक्की बाटपर। पुलकें बड़का देखेबाक लेल बच्चाक पयर जोखिममे नहि राखब।”

साँझक घाम भीजल बाँसपर पड़ल तँ ओकर ऊपरक रेखा उज्जर देखाए लागल। उर्मिला अस्पतालक बरामदामे ठाढ़ छलीह। नैरा आजुक सार्वजनिक पर्चीक नकल लऽ पहुँचलि आ पहिल प्रश्न पुछलनि, “की लिखी—पुल बनि गेल?” तारा अपन कापी खोली कहलीह, “लिखू—सँकर अस्थायी बाटक सीमित संरचना परीक्षणक शर्तपर चालू भेल। पूर्ण निकासी नहि, स्थायी पुल नहि, रोगी-गाड़ीक बाट नहि।” नैरा वाक्य लिखि लेलीह। एक बालक चुपकेँ पुछलक, “तखन एकरा पुल कहब की?” श्याम हाँसि उत्तर देलनि, “अपन गाममे पुल कहू, मुदा ओकर सीमा नहि बिसरू।”

भोजनक डिब्बा समेटैत ललित देखलनि जे एक मजदूरक नाप-पर्चीमे आधा दिनक दाम छुटल अछि। ओ कापी फेर खोललनि, नाम पूछलनि, आ सही पाँति भरौने बिना घर नहि गेलाह। तारा लाल संकेतक गाँठ जाँचलीह, श्याम बाँसक बचल टुकड़ा अपन थैलीमे रखलनि, अदिति निरीक्षणक अगिला तिथि चिह्नित कएलीह। नूरजहाँक गाड़ी चक्कर लगबैत पक्का बाटसँ ईट लऽ गेल; हुनकर पुरान बकाया चुकता नहि भेल छल। अस्पतालमे उर्मिला दू रोगी-गाड़ीक समय मिलौलीह। एहि दिनक उपलब्धि छोट छल—किछु सुरक्षित पयर, लिखल भारसीमा, भुगतानक जाँच आ जोखिम देखिते बन्द करबाक अधिकार। राति पानि फेर चढ़त की नहि, से कियो नहि जनैत छल; मुदा एखन कियो असुरक्षित बाटकेँ सुरक्षित कहिकऽ आनक भरोसा खरीदए नहि सकत छल।

अध्याय १०६ • उपचारक स्वीकार

विदेहपुर, २०३९क वर्षाक भोर। अस्पतालमे लोहेक पेटीक ढक्कन खोलिते भीतर सँ शीशाक हलुक खनखनाहट भेल। पेटीक ऊपर चिकटल उज्जर कागदक एक कोन भीजल छल, मुदा ओकर लाल चिह्न स्पष्ट देखाइत छल। अनिरुद्ध पेटीकेँ बरामदाक सूखल मेजपर राखबौलनि। दू कर्मचारी ओकर भीतरक वस्तु गनए लेल हाथ बढ़ौलनि तँ ओ रोकलनि। “पहिने ई देखू जे पेटी एतय कखन पहुँचल, ककर देखरेखमे रहल, आ एहि चिह्नक अर्थ की अछि।” अस्पतालक फाटकपर दू रोगी-गाड़ी नियत समयक प्रतीक्षामे ठाढ़ छल। काल्हि चचरीपर हलुक पयर पड़ल छल, मुदा रोगी-गाड़ीक पुरान सुरक्षित मार्ग ओहिसँ छोट नहि भेल छल।

उर्मिला धुलल कपड़ाक गठरी छोड़ि आयलीह। हुनकर हाथमे रातुक सेवा-पंजी छल, जाहिमे एक रोगीक औषधिक माँग आ भण्डारक उत्तर दू भिन्न पाँतिमे लिखल छल। कर्मचारी राति कहने छल—“माल तऽ आबि गेल।” भोरमे ओही कर्मचारी कहलक—“सामान सीलबन्द अछि।” उर्मिला पुछलीह, “रोगीक सामने दू अलग बात किएक कहल गेल? उपलब्ध वस्तु आ उपयोगयोग्य वस्तुकेँ एके शब्दमे ककर सुविधा होइत अछि?” अनिरुद्ध उत्तर देबाक बदला भण्डारक दुइटा मूल पंजी मँगौलनि। ओहि दिन पहिल बेर हुनकर निर्देशमे ‘मँगाउ’ शब्दक सँग ‘मूल’ जोड़ल गेल छल।

पहिल पंजीमे गोदामसँ चलल खेपक गणना छल। दोसरमे अस्पतालक भण्डारमे भौतिक रूपेँ प्राप्त सामानक सूची। एकटा तेसर सार-पन्ना पर अनिरुद्धक अपन हस्ताक्षर छल—‘आपात आवश्यकता लेल सामग्री उपलब्ध’। ओकर तिथि ओहि रातिक छल जखन गलियारा भीजल रहल, पुरान पाँखसँ रोगी हटेबाक योजना बनि रहल छल, आ गोदामक दू सूची तैयार भेल छल। अनिरुद्ध पन्ना घुमेलनि। भण्डार सहायक कहल, “साहेब, अहाँ चिकित्सा-आवश्यकता लेल सही देने रही; हम उपलब्धक संख्या ताहि आधारपर भरने रही।” अनिरुद्ध सिर उठौलनि। “अहाँक भरल संख्या हमर सहीकेँ ठीक नहि बनबैत। हम की देखिकऽ सही कएलहुँ, से पहिने लिखब।”

ओहि समय सलमा शेख एगो छोटी काँचक बोतल लेने आयलीह, जकर लेबल ठीक छल आ जकर निर्गमन-पर्वीमे दवाइक नाम आ समय पूरा दर्ज छल। “ई आधिकारिक भण्डारसँ निकलल, मरीज लग गेल आ उपयोगक पन्ना अछि,” ओ कहलीह। दोसर पेटी दिस देखबैत जोड़लीह, “ओहि पेटीमे कथित कुल संख्या अछि, मुदा किछु वस्तुक लेबलक समानता एखन निरीक्षणमे अछि। एकरा एके कोठरीमे रखिते गिनती देखि विश्वास बनि जाएत।” भण्डार सहायकँ अपमान भेल। “हम तऽ चाबी सम्हारैत छी,” ओ कहलक। सलमा उत्तर देलीह, “आ हम रोगीक देह। दुनूक काज अलग अछि, ताहि लेल दुनू पन्ना चाही।”

अनिरुद्धक स्मृतिमे ओ रातिक दृश्य फेर अएल। स्ट्रेचरक टूटल धुरी, घड़ीक अलग-अलग समय, चिकित्सकीय निगरानी लेल उपलब्ध कोठरीक अभाव आ फाटक लग ठाढ़ थाकल चालक। भण्डारक कर्मचारी फोनपर कहने छल जे गोदामसँ ‘निर्गत’ सामग्री आयल मानल जा सकैत अछि। अनिरुद्ध तत्काल स्वीकृत वस्तु प्राप्त करबाक आग्रह कएने छलाह, मुदा सार-पन्नाक एकटा शब्द पढ़ि नहि रोकने छलाह। ‘निर्गत’सँ ‘उपलब्ध’ होएबाक बीचक जाँच हुनका द्वारा अधिकृत कर्मचारीसँ पुष्ट नहि कराओल गेल। ओहि अन्तरकँ आजु दोसर कियो नहि, हुनकर अपन हस्ताक्षर ढाँकि देने छल।

नैरा अस्पताल पहुँचलि तँ अनिरुद्ध हुनका पत्रकारक रूपमे नहि, सार्वजनिक अभिलेखक संशोधन देखएवाली पर्यवेक्षकक रूपमे बाहरी मेज धरि बजौलनि। नैरा पन्नापर झुकि पुछलनि, “अहाँ कुल संख्या स्वीकार केलहुँ, कि हर वस्तुक उपयोगक स्वीकृति?” अनिरुद्ध कहला, “हम चिकित्सा-आवश्यकताक आपात सारपर सही केलहुँ। मुदा हमर सहीसँ ई प्रभाव बनल जे गिनतीक सभ सामान अस्पतालमे उपलब्ध अछि। जे वस्तु गोदाममे निरीक्षणाधीन छल, ओकरा संग मिलल संख्या पर हम प्रश्न नहि उठेलहुँ।” नैरा कहलनि, “एहि कथनमे समय चाही। पहिने की जनैत छलहुँ, बादमे की जानलहुँ, दुनू लिखू।”

आँगनमे शैलजा अपन मृत सासु सरस्वती देवीक कपड़ाक पोटरि लेबाक आयल छलीह। बहीमे पोटरिक चिह्न भेटल, मुदा हुनकर पाछाँ चलैत कर्मचारी पुछलक, “आब तऽ चिकित्सालय गलती मानि लेलक ने?” शैलजा ठाढ़ भेलीह। “कोन गलती?” अनिरुद्ध

बाहर आयलाह। ओ हुनका भण्डारक सार-पन्नाक बात स्पष्ट कहला; मृत्युक चिकित्सकीय कारणक सम्बन्धमे जाँच एखन अलग छल, से सेहो कहला। शैलजा पोटरी खोलि भीतरक एकटा चादर देखलीह। “हमरा मायक आखिरी घड़ीक प्रश्न बाकी अछि,” ओ कहलीह, “मुदा अहाँ जे गलती मानैत छी, ओकर कागद हमरा सेहो देखबाक अधिकार अछि। ई हमर शोकक बदला नहि।”

अनिरुद्ध शैलजाकेँ सार्वजनिक त्रुटि-संशोधनक प्रमाणित प्रति देबाक वचन देलनि, रोगीक निजी अभिलेख नहि। शैलजा कहलनि जे शिकायतक मूल शब्द, “गाड़ी भेटला सँ बचि जेतीह” के के कहने छल, से सेहो जाँचल जाए। ओहि कथनक लेखक वा वक्ता एखन निश्चित नहि छल। सलमा हुनका अलग प्राप्ति-पर्ची देलीह। शैलजा ई बेर कियो ओकरा कुर्सी देबासँ पहिने स्वयं बैसलीह। आँगनमे कचनारक पातपर पानि जमा छल। कागदक सच ओकरा सासुक आवाज नहि लौटा सकैत छल, मुदा प्रश्न पूछबाक तिथिक निर्णय शैलजा अपन हाथमे लेलीह।

औषधिक भण्डारसँ अलग छोट उपचार-कक्षमे जमुना देवी अपन दवाइक डिब्बा खोलने छलीह। ओ अनिरुद्धकेँ देखिते पुछलीह, “जे सही दवा हमरा मिलैत अछि, से आब बन्द करत?” अनिरुद्ध हुनका कहलनि जे मान्य, जाँचल उपलब्ध दवाइ नियमित उपचारमे चलत; जाँचाधीन पेटी अलग सीलबन्द रहत। जमुना अपना समयक पन्ना देखौलनि। “हम समयपर दवा पाबी, मुदा अहाँ सभ बाहर ककरा दोष दै छी तकरा पर हमर अधिकार नहि?” अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “अहाँक उपचारपर अधिकार प्रथम अछि। आ व्यवस्था गलत होइत अछि तँ प्रश्न करबाक अधिकार सेहो।” जमुना अपन डिब्बा बन्द करैत कहलीह, “तखन कोनो सहीक कारण हमर खुराक मत हटाएब।”

दोपहरसँ पहिने रमा कर्ण आ शबनम मलिक अस्पतालक अभिलेख-कक्षमे पहुँचलि। पहिलुका दू समझौताक पन्ना हुनका हाथमे छल। पाँचू शर्तक कार्यान्वयन एखन आगामी संयुक्त हस्ताक्षरपर निर्भर छल। रमा पुछलीह, “अनिरुद्धक स्वीकारोक्ति गोदाम खोलबाक अनुमति बनत की?” शबनम स्वयं उत्तर देलीह, “नहि। आरोप स्वीकारलासँ जाँचाधीन माल सुरक्षित घोषित नहि होइत। निरीक्षकक आदेश, सूची आ प्रवेशक अधिकार अलग चाही।” अनिरुद्ध ई उत्तर सुनि हलुक राहत पेलनि; किएक तँ अपन दोष

स्वीकारि रोगीक औषधि-व्यवस्था तुरन्त सुधरब हुनकर उद्देश्य छल, गोदामक ताला तोड़ब नहि।

रमा तीन पन्ना बनबौलीह। एकमे अस्पतालक सार-पन्नाक अनुचित शब्द, दोसरमे भौतिक वस्तुक सत्यापित आगमन, तेसरमे जाँचाधीन खेपक अलग सील। कर्मचारी प्रस्ताव रखलक जे पहिल गलत पन्ना काटि नव संख्या लिखि देल जाए। रमा पेंसिल नीचे रखलीह। “गलती मिटौलासँ ओकर घड़ी सेहो मिटत। मूलक प्रति संलग्न रहत, संशोधन पर नव तिथि आ कारण लिखल जाएत।” अनिरुद्धक सहीक नीचाँ रिक्त स्थान छल। एखन ओहि स्थानमे ‘अनुचित सामान्यीकरण’ लिखबाक प्रस्ताव बनल। शबनम शब्द बदलि लिखौलीह—“भण्डारमे वास्तविक प्राप्ति नहि देखल बिना आपात सारमे सम्पूर्ण उपलब्धता स्वीकारल’।

अनिरुद्ध एहि वाक्यकेँ दू बेर पढ़लनि। पहिल बेर हुनका लागल जे एकरा सँ दोष बहुत भारी सुनाइत अछि। दोसर बेर हुनका ओ राति याद आयल, जखन ‘पूर्ण उपलब्धता’ शब्दक कारण भण्डार कर्मचारीक फोनपर तुरन्त आश्वासन देल गेल छल। “ई उचित अछि,” ओ कहलनि, “मुदा ई सेहो जोड़ू जे हम असमान लेबल जाँचबाक अधिकार अपने हाथमे नहि लेने रही। हम वैद्यकीय आवश्यकता तय करबाक अधिकारी रही, औषधिक प्रमाणिकताक अन्तिम परीक्षक नहि।” रमा लिखलीह—कर्तव्य-सीमा स्पष्ट; निर्णयमे कमी स्वीकारल; अलग आपराधिक स्रोत-जाँच जारी। गलत सार स्वीकृति हत्या, तस्करी वा जाली लेबल बनएबाक स्वतः स्वीकारोक्ति नहि छल।

उर्मिला एहि बीच धुलाईक गट्टर लेबाक समय अस्पतालक द्वार-पंजी फेर देखलीह। सात बजि पैतालीसक पुरान ‘प्राप्त’ आ नौ बजे बादक वास्तविक प्रवेशक विरोधी प्रविष्टि हुनका आबो याद छल। ओ अनिरुद्धसँ पुछलीह, “एहि गलतीक संग हमर पुरान कपड़ाक पन्ना जोड़ि कऽ मजदूरी काटब फेर शुरू नहि होएत?” अनिरुद्ध कहलनि, “नहि। आजुक स्वीकारोक्ति औषधिक आपात सारक विषय अछि। कपड़ाक पंजीक जांच अलग। ओहि मजदूरीक निर्णयक कारण सेहो अलग लिखित भेटत।” उर्मिला एकटा लम्बा श्वास छोड़लीह। हुनका भीतरी आशंका छल जे एक अधिकारीक गलती सुधारबाक नामपर कमज़ोर श्रमिकक देय फेर अटकत।

परिचारिका देवी गोंड प्रशिक्षणक कापी लऽ पहुँचलि। ओहि कापीमे औषधिक बाहरी चिह्न चिन्हेबाक प्रश्न लिखल छल। देवी अनिरुद्धसँ पुछलीह, “जँ भण्डारमे वस्तु गनल गेल, मुदा ओकर सुरक्षित उपयोगक अनुमति एखन बाकी अछि, तखन हम अपन प्रशिक्षण-तालिकामे की लिखी?” अनिरुद्ध उत्तर देलनि, “संख्या मात्र लिखू तँ पाठ अधूरा। ‘परीक्षणाधीन—उपयोग नहि’ अलग लिखू। मुदा रोगीकेँ दवा बदलबाक निर्णय अपने हाथमे मत लिअ।” देवी दोसर प्रश्न रखलीह—“जँ वरिष्ठ व्यक्ति कहथि जे समय नहि अछि?” सलमा कहलीह, “समयक दबावक सूचना अभिलेखमे दर्ज करू, आ जिम्मेवार चिकित्सककेँ बजाउ। प्रशिक्षणक विद्यार्थीकेँ चुप रहबाक शर्तपर सुरक्षित नहि मानल जाए।”

देवी घर घुसबाक समयक चिन्ता सेहो बतौलीह। हुनकर माय बीमार छलीह आ परिवारमे देखभालक बँटवारा एखन नव बनि रहल छल। अनिरुद्ध तिनका अकारण रातिक पालिमे रोकि, अस्पतालक क्षतिक प्रायश्चित करबाक प्रस्ताव नहि रखलनि। “अहाँक आजुक प्रशिक्षण एतबामे पूरा,” ओ कहलनि, “अगिला प्रातःकालक पाली लेल अनुमति आ निगरानी लिखल जाएत।” देवी अपन कापी समेटलीह। ओ प्रशिक्षणमे नव प्रश्न जोडि लेने छलीह—चुप्पी ककर रक्षा करैत अछि? अस्पतालक गलियारेसँ बाहर निकलिते हुनका मायक लेल बाजारसँ गरम सत्तू लएबाक याद पड़ल।

भण्डार कर्मचारी अपन हस्तलिखित गनती लऽ पुनः पहुँचल। ओकर आवाज पहिलसँ कने धीम छल। “सर, जँ हमरा ऊपर आरोप लगत तँ हम कहब जे आदेश डॉक्टरक छल।” अनिरुद्ध कहला, “जे आदेश हम देलहुँ से हम लिखि रहल छी। मुदा जे संख्या अहाँ बिना गनने चढ़ेलहुँ, ओकर प्रश्न अहाँक सेहो अछि। अहाँ जतेक देखलहुँ ततेक कहू। एक दोसराक गलती अपने माथ लेने नहि, छिपा कऽ सेहो नहि।” कर्मचारी कहलक जे सामानक आवक-पर्ची तयार करबाक समय परदेसी ढुलाई-प्रबन्धकक फोन आयल छल। ओ फोनक नम्बर निजी मोबाइलमे नहि, कार्यालयक पुरान कल-बहीमे देखबाक बात कहलक।

शबनम फोनक उल्लेख सुनि तुरन्त कागद मँगौलीह, मुदा कर्मचारीकेँ सार्वजनिक भीड़सँ अलग कक्षमे बयान देबाक विकल्प देलीह। फोन आयल, से ओकर मौखिक कथन

छल; नम्बरक पंजी एखन भेटल नहि छल। कर्मचारीक कहब मुताबिक फोनमे शीघ्र संख्या चढ़ेबाक आग्रह छल, मुदा अनुरोध करनिहारक अधिकार वा पहिचान तय नहि छल। नैरा अपन समाचारक कापीमे ‘अज्ञात आदेश’ नहि लिखलीह। ओ लिखलीह—‘कर्मचारीक दावा; कार्यालयक कल-पंजीसँ मिलान शेष’। शबनम सँभालि कहलनि जे न्यायसंगत जाँच लेल कर्मचारीकेँ दोषी घोषित करबा सँ पहिने ओकर कामक सीमा आ वास्तविक दबावक साक्ष्य चाही।

अस्पतालक बगलमे चलैत सँकर अस्थायी चचरी लग बच्चासभक भीड़ बढ़ि गेल। तारा बिनौट लाल संकेतक गाँठ जाँचि रहल छलीह। एक किशोर पीठपर भारी बोरा लेने चचरी दिस मुड़ल तँ तारा ओकरा पक्की घुमाउ बाट देखौलनि। “काल्हि पुल चालू भेल ने?” युवक पुछलक। तारा कहलीह, “सीमित पैदल बाट चालू भेल। बोराक भार, वर्षाक बढैत पानि आ रोगी ढोएब ओकर शर्तमे नहि अछि।” युवक खिन्न भेल, मुदा नूरजहाँक खाली घुरैत गाड़ी देखिते ओहि पक्का बाटमे बोरा रखबाक व्यवस्था कएलक। कियो चचरीक उपलब्धिक पर्चीसँ अस्पतालक भारी सामान ओतय पठेबाक अनुमति नहि बना सकलक।

अनवरी असहज छलीह। रेहानाक पयरक चोट ठीक होएबाक गति धीमी छल, आ हुनका डर छल जे रोकल खेपक समाचारसँ अस्पतालक सभ दवाइ अविश्वसनीय घोषित भऽ जाएत। सलमा मान्य दवाइक निर्गमन-पर्ची, उपचारक निर्देश आ उपलब्ध चिकित्साकर्मिक समय अलग देखौलीह। “एहि बच्ची लेल जे स्वीकृत अछि, ओहि वस्तुक स्रोत पर्चीमे दर्ज अछि,” ओ कहलीह। अनवरी पुछलीह, “हम एहि कागदक प्रति रखि सकैत छी?” सलमा रोगी-परिवारक अधिकारक सीमा बुझौलनि आ उचित प्रति देलीह। अनवरीक प्रथम निर्णय छल जे बच्चीकेँ केवल भयक कारण घर नहि लऽ जाएत; ओ उपचारक नियमित जाँच जारी रखतीह।

दुपहर बाद देवव्रतक कार्यालयक प्रतिनिधि कहलनि जे अनिरुद्धक स्वीकारोक्तिसँ पूरा आपूर्ति-प्रकरणक समाधान भऽ सकैत अछि। “जखन अस्पताल अपन गलती मानि रहल अछि तँ गोदामक नाम अनावश्यक बदनाम किएक?” ओ पुछलक। रमा ओकरा सामने दू सूची खोललीह—एक अस्पतालक समयपूर्व उपलब्धता-सार, दोसर जाँचाधीन असमान

लेबलक खेप। “पहिल दस्तावेजक गलती अस्पतालक कर्तव्यक प्रश्न अछि,” ओ कहलीह, “दोसर खेपक स्रोत, लेबल, ढुलाई आ गोदामक क्रमक प्रश्न छी। एकर उत्तर पहिलसँ नहि भेटत।” देवव्रतक प्रतिनिधि असहमत भेल, मुदा तर्कक उत्तरमे कोनो पूर्ण प्रमाण नहि देलक।

अनिरुद्ध सेहो स्पष्ट कएलनि जे देवव्रतक पूर्वक रोगी-सहायताक सही रसीद जँ अछि तँ ओ सेवा मानल जाएत; गोदामक असमान लेबल, महेशक हत्या-जाँच आ आपूर्ति-मध्यस्थक अपराधक दायित्व अलग जांचमे रहत। प्रतिनिधि पुछलक, “तखन अहाँक स्वीकारोक्ति सँ हम सभकेँ की लाभ?” अनिरुद्ध कहलनि, “रोगीक झूठ उपलब्धता-संख्या सुधरत, वास्तविक उपलब्ध औषधि समयपर मँगाओल जाएत, आ अगिला अधिकारी बिना परखने सही नहि करत। ई लाभ अहाँक नामक प्रचारक लेल नहि, अस्पतालक लोकक लेल अछि।” प्रतिनिधि बाहरी दरबज्जासँ चुपचाप घुरि गेल।

नगरक अधिकारी चाहैत छल जे अनिरुद्ध तुरन्त कागदपर पूर्ण जिम्मेदारी लिखि दथि। शबनम ओहि प्रारूपमे ‘समस्त आपूर्तिक अनियमितता’ शब्द देखलनि। ओ अनिरुद्धकेँ पुछलीह, “अहाँ समस्त खेप खुद देखलहुँ?” “नहि।” “समस्त भुगतानक मंजूरी देलहुँ?” “नहि।” “तखन समस्त जिम्मेदारी किएक?” अधिकारी कहलक जे आपात घोषणा सधैं सामान्य भाषा चाहैत अछि। शबनम उत्तर देलीह, “सार्वजनिक सूचना सामान्य भऽ सकैत अछि, जिम्मेदारीक आरोप नहि।” ओहि असंगत वाक्यकेँ काटि निर्दिष्ट घटना, समय, हस्ताक्षर आ जाँचक सीमा लिखल गेल।

अनिरुद्ध अन्ततः हस्तलिखित बयान पढ़लनि। “रात्रिक आपात सारमे अस्पतालमे वास्तविक प्राप्ति आ निरीक्षण-स्वीकृतिक पृथक् पुष्टि बिना गोदामसँ निर्गत सामग्रीकेँ उपलब्ध मानबाक पन्नापर हम हस्ताक्षर कएलहुँ। एहि कारण उपचार-योजनामे वस्तुक उपलब्धताक अतिरिंजित गणना उपयोग होएबाक सम्भावना बनल। एहि पन्नाक प्रमाणिकताक परख नहि करब हमर जिम्मेदारीक कमी छल। मूल पन्ना सुरक्षित राखि संशोधन दैत छी।” ओ रोकलनि। पछिला वाक्य जोड़लनि—“कुन रोगीकेँ कुन औषधि वास्तवमे नहि भेटल, आ ताहिसँ कतेक चिकित्सकीय परिणाम भेल, तकर स्वतन्त्र जाँच

चाही।” ई वाक्य लिखबाक क्रममे हुनकर कलम थोड़ेक काँपल, मुदा लिखावट बुझाईत छल।

रमा बयानपर प्राप्ति-समय चढ़ौलीह। शबनम अनुमोदनक बदला ‘बयान प्राप्त; तथ्य-परीक्षण शेष’ लिखलीह। नैरा सार्वजनिक प्रतिक लेल केवल त्रुटि, संशोधन आ अग्रिम सुरक्षाविधिक वाक्य माँगलीह। अनिरुद्ध अनुमति देलनि, मुदा निजी रोगी-नाम आ कर्मचारीक अप्रमाणित फोनक विवरण प्रकाशित नहि करबाक सीमा रखलनि। कर्मचारीक नाम जांचक बन्द परिशिष्टमे रहल। उर्मिला पुछलीह जे कियो बयान बदलि कऽ “डॉक्टर सभ अपराध स्वीकारलनि” शीर्षक छापत तँ? नैरा अपन कापीमे शीर्षक लिखलीह —‘अस्पतालक उपलब्धता-पंजीमे डॉक्टरक निर्दिष्ट त्रुटि-स्वीकार; खेप-जाँच जारी’।

भण्डार सहायकक संग अनिरुद्ध फेर सूची मिलौलनि। एक खेप स्वीकृत छल, मुदा संख्या वास्तविक तौलसँ कम भेटल; ओकर कमी तुरंत लिखल गेल। दोसर वस्तुक परीक्षण-स्वीकृति सही छल, मुदा फाटकक चाबी उपलब्ध नहि भेला सँ ओ एखन अस्पतालक हाथमे नहि आयल छल। तेसरपर असमान लेबलक जाँच जारी रहल। “एहि तीनूकेँ एके ‘नहि उपलब्ध’ कहिते सेहो गलती होएत,” सलमा कहलीह। “एकरा अलग कारणसँ नहि भेटल।” तकर बाद अस्पतालक बोर्डपर लिखल ‘कुल औषधि’क संख्या हटि तीन शीर्षक बनल—भौतिक रूपेँ उपलब्ध आ स्वीकृत, स्वीकृत मुदा पहुँच शेष, तथा निरीक्षणाधीन।

एक कर्मी पुछलक जे एतेक श्रेणीसँ रोजक काम कठिन नहि भऽ जाएत? उर्मिला उत्तर देलीह, “कठिन कामकेँ आसान कहि देलासँ रोगीक घड़ी छोट भऽ जाइत अछि की?” अनिरुद्ध स्वास्थ्य-दलक दू सदस्यकेँ घड़ी-घड़ी भण्डार गनबाक अवास्तविक आदेश नहि देलनि। ओ तय कएलनि—प्रत्येक पालि बदलबाक समय जिम्मेवार कर्मचारी आ उपचार-दलक नामित व्यक्ति उपलब्ध वस्तुक सीमित संयुक्त मिलान करत; असंगत पर्ची अलग सुरक्षित रखल जाएत। कर्मचारी एखनहुँ चिंतित छल, मुदा कामक जिम्मेदारीक लिखित समय भेटलासँ निरन्तर अनिश्चित आरोपक भय कने घटल।

साँझक पहिल रोगी-गाड़ी निकलबाक समय तुलसी ताजपुरिया चालकक विश्राम-पर्ची देखलनि। जमीर अपन गाड़ीमे उपचारक स्वीकृत पेटी चढ़ेबासँ पहिने ओकर वजन आ

सील देखलक। उर्मिला चिकित्सकीय सूचीमे दवा, उपकरण आ साथ जाएवाली कर्मचारीक नाम मिलौलीह। अनिरुद्ध रोगीक दशा देखिकऽ स्थानान्तरणक निर्णय लिखलनि; अनवरी बेटी रेहानाक उपचार एतहि जारी रखबाक निर्णयपर सहमत छलीह, तँ ओकरा गाड़ीमे नहि चढ़ाओल गेल। बाहरी गलियाराक भीजल फर्शक कारण घुमाउ बाट लेल कने बेसी समय लागल। वास्तविक समय लिखल गेल; उपलब्ध गाड़ीक कारण रोगीकेँ हड़बड़ाहटमे नहि हटाओल गेल।

तारा अस्थायी चचरीक कात दिनक अन्तिम सुरक्षा-संकेत फेर बाँधि घुरलीह। अनिरुद्ध हुनका रोकि पुछलनि जे रोगीक दवा लऽ चलनिहार हलुक आदमी ओहि पुलसँ जा सकैत छथि की। तारा उत्तर देलीह, “नियमित आवश्यक व्यक्ति जँ निर्धारित सीमा भीतर छथि, मौसम आ आधार ठीक अछि, तखन पैदल उपयोग अलग बात। मुदा अस्पतालक आपूर्ति-योजना एहि चचरीपर आधारित नहि होएत। वर्षामे संकेत बदलि सकैत अछि।” अनिरुद्ध सहमति देलनि। ओ एखन बुझि रहल छलाह जे सीमित अनुमति गलत ढंगसँ पैघ आश्वासनमे बदलि सकैत अछि—चाहे संख्या भण्डारक हो कि बाटक।

नैरा साँझक फाटक लग उर्मिलासँ भेटलीह। “आजुक समाचारमे डॉक्टरक गलती लिखब,” ओ कहलीह, “मुदा हुनकर रातिभरिक उपचार आ रोगीक गाड़ी चलब सेहो लिखब।” उर्मिला उत्तर देलीह, “एहिसँ गलती कम नहि होएत, उपचार झूठ नहि बनत।” नैरा पुछलीह जे अहाँक कपड़ाक पुरान समय-पंजीक बकाया कखन सुनल जाएत। उर्मिला अपन कापीक पछिला पन्ना देखौलीह—सुनवाईक तिथि छल, भुगतानक आदेश नहि। “हम कियो दोसरक स्वीकारोक्तिक उत्सवमे अपन मजदूरी नहि छोड़ब,” ओ कहलीह। नैरा हँसि कहलीह, “तोहर ई पाँति छापब?” “पहिने पुछब, फिर छापब,” उर्मिला उत्तर देलीह।

घर घुरबाक पहिने अनिरुद्ध शैलजाक लेल तैयार प्रमाणित प्रतिपर मुहर लगाओल देखलनि। कागद अबहियो बुझबामे कठिन छल; ओ सलमाकेँ कहलनि जे शैलजाकेँ भेटबाक समय साधारण भाषामे प्रत्येक मद समझाओल जाए। मृत्यु-सम्बन्धी अलग चिकित्सकीय जाँचक तिथि सेहो स्पष्ट लिखल गेल। सरस्वती देवीक चादरक प्राप्ति-पत्र, अनिरुद्धक बयान आ अस्पतालक दवाइक सूची तीनटा भिन्न कागद छल—कुनो एक

दोसरा पर अधिकार नहि जमबैत छल। सलमा छोट नील कपड़ाक थैलीमे पहिल कागद रखलीह, दोसरकें कार्यालयक बन्द पेटीमे, आ तेसरकें पालि बदलबाक मेजपर।

राति नगरक बैठक लेल पाँच शर्तक नव प्रति बनैत छल। शबनम देखलीह जे अस्पतालक सुधार-पन्ना पर सही भऽ गेलो पर गोदामक निरीक्षित सामानक वास्तविक सुपुर्दगी एखन बाँकी अछि। रसोइक मजदूरीक पहिल किशत निकलबाक तिथि राखल गेल छल, मुदा भगौनामे नियमित भोजन एखन शुरू नहि भेल। जलनिकासीक बाहरी सफाई जारी छल, भीतरक अवरोध सुरक्षित जाँच बिना नहि खोलल गेल। शबनम सभ मदक कात ‘भेल’ आ ‘बाकी’क अलग चिन्ह लगौलीह। अनिरुद्धक स्वीकारोक्ति एहि पाँच निर्णायक बाधा हटेबाक एकटा आवश्यक सुधार छल, समझौताक पाँच हस्ताक्षर नहि।

अन्तिम रोगी-गाड़ीक आवाज दूर भेलापर अस्पतालक बरामदामे कने शान्ति अएल। अनिरुद्ध मेजपर पड़ल पुरान सार-पन्ना उलटि देखलनि; ओकरा फाड़ल नहि। ओकर बगलमे नव संशोधनक प्रमाणित प्रति रखल छल। बाहरी बरखाक पानि गलियारा लग ससरि रहल छल, आ भीतरक पुरान जोड़सँ बूँद एखनहुँ टपकैत छल। ड्यूटीक परिचारिका सूखल कपड़ा बिछौलनि आ फाटकक चाबी सँभाललीह। अनिरुद्ध हुनकासँ पुछलनि, “अगिला पालीक स्वीकृत दवाइ गनल गेल?” ओ कहलीह, “गनल गेल, मुदा एक पेटी पहुँचबाक बाकी अछि।” अनिरुद्ध ओहि अपूर्ण उत्तरकें अधूरहि लिखलनि। बिहानक उपचार ओही सचसँ शुरू होएत।

अध्याय १०७ • पाँच हस्ताक्षर

गोदामक पुरान फाटकक तल्ला भोरक भीजाइल हवा सँ फूलि गेल छल। देवव्रत अपन चाबी घुमौलनि तँ पहिल बेर ओ घुमल नहि। पहरेदार भुइयाँपर राखल तेलक छोट डिब्बा उठौलक, मुदा रमा ओकर हाथ रोकलीह। “ताला खोलबाक समय लिखल गेल अछि; कियो पहिले छुइने अछि की, सेहो देखू।” पहरेदार अपन पुरान बही खोललक। रातुक प्रहरी बदलल छल, मुदा मुहरक कागद पर स्याही अखन तक सलामत छल। देवव्रत चाबी बाहर निकालि लेलनि। पहिल हस्ताक्षर करबाक पहिने ताला नहि, ताला देखनिहारसभक उपस्थिति पूरा करबाक छल। अस्पतालमे एक पेटीक प्रतीक्षाक अर्थ रोगीक घड़ी छल, मुदा एहि घड़ीक दबाव जाँचाधीन सामानकें चुपचाप निकालबाक अनुमति नहि बनि सकैत छल।

रमा सार्वजनिक गलियारामे पाँच पन्ना रखलीह। शबनम प्रत्येक पन्नाक ऊपर एक-एक काजक नाम लिखने छलीह—रोगीक सुरक्षित यात्रा, स्थानीय जलमाप आ सार्वजनिक निकासी, निरीक्षणसँ छुटल गोदाम-सामग्रीक सुपुर्दगी, समान प्रवेशवला राहत-रसोइ आ अभिलेखक सार्वजनिक प्रति। पन्नाक कातमे जिम्मेवार प्रतिनिधिक नाम छल। एहिबेर सहीकें उत्सवक चिन्ह नहि, काम शुरू करबाक जाँच-पत्र कहल गेल। शबनम घड़ी देखलीह। “पहिल सहीक बाद अगिला घटना कोन समय भेल, ओ लिखब। जँ कोनो शर्त पूरा नहि भेल तँ पाँच सहीक तस्वीर छापि ओकरा पूरा नहि कहल जाए।” नैरा बरामदाक खम्भासँ टेक लगा कापी खोललीह; फोटो लेल हुनका अनुमति छल, निजी रोगीक सूची लेल नहि।

देवव्रत पुछलनि, “आइ जखन हम स्वयं गोदाम खोलि रहल छी, तखन पुरान आरोपक परिशिष्ट फेर किएक?” रमा हुनका सीलवला लिफाफा देखौलीह। “अहाँक आजुक सहयोग आजुक काम छी। महेशक हत्याक आदेश, रोकल खेपक स्रोत आ अस्पतालक गलत उपलब्धता-सारक पुरान जाँच एकरा सँ मेटत नहि।” देवव्रत कने देर लिफाफाक ऊपर नजरि टिकौने रहलाह। हुनका शीघ्र सामान बाहर निकलबाक चाह छल, मुदा जाँचाधीन पाँचक कागद मिटेबाक अधिकार नहि छल। ओ पन्नापर लिखल सीमा पढ़ि

सही कएलनि—निरीक्षणमे स्वीकृत मालक नियंत्रित सुपुर्दगी। ई पहिल हस्ताक्षर छल, सम्पूर्ण गोदाम निर्दोष हेबाक घोषणा नहि।

अधिकारप्राप्त निरीक्षक दोसर ताला लगक धागा देखौलक। ओकरा पाछाँ दू विभागक माल छल। स्वीकृत पट्टी, साफ चादर, पानि-जाँचक उपकरण आ चिकित्सा लेल परीक्षण-समाप्त सामग्री एक कात; असमान लेबलक औषधि आ संदेहास्पद ढुलाई-गाँठ दोसर कात, अलग मुहरमे। गोदाम मजदूर गोपाल तौल तराजू राखैत पुछलक, “हमर नाम भाड़ाक सूचीक तरे दबि नहि जाएत ने?” देवव्रत उत्तर देबाक पूर्व रमा मजदूरीक पन्ना सोझाँ राखलीह। गोपाल अपन दू साथी सहित खोलब, गनब, फाटक बन्द करब आ फेर मुहर लगेबाक समय पर सही देत; भुगतानक दर पहिने लिखल अछि। पहरेदार सेहो रातुक अतिरिक्त पालिक पावती देखलक। एकटा ताला खुलल, मुदा दोसरपर लाल मुहर यथावत् रहल।

साफ चादरक पहिल गठरी बाहर अएल तँ उर्मिला ओकरा हाथसँ धरि फाटकपरहि खोलबाक आग्रह कएलीह। किनारमे आर्द्रताक गन्ध छल, मुदा भीतरी कपड़ा सूखल छल। “धुलाईक लेल ठीक, उपचारक शैल्यापर एखन नहि,” ओ कहलीह। भण्डार सहायक चाहलक जे सभ थान एक्के ‘प्राप्त’ कॉलममे चढ़ि जाए। उर्मिला तीन अलग पाँति बनौलीह—आबि चुकल, परीक्षणक बाद उपयोगयोग्य, आ सफाई लेल पठाओल। अनिरुद्ध दूरसँ देखैत कहलनि, “काल्हि जे भूल स्वीकार कएलहुँ, ओ आज फेर नहि दोहराएब।” एक पेटी सामग्री अस्पताल धरि पहुँचएबाक निर्णय भेल; ओकर स्वीकृत उपयोग अलग जाँचपर निर्भर रहल। देवव्रतक हस्ताक्षर गोदामक फाटक खोललक, डॉक्टरक निरीक्षणक कलम ओकरा उपयोगक घड़ी तय करत।

गोदामसँ बाहर निकलैत खाली ठेलाक बाटमे एक पुरान बाड़ घुसल छल। सोना कठौतियाक गाड़ी लगले छलीह; ओ बाड़ हटेबाक लेल अपना मजदूरकेँ मुफ्त नहि उतरौलीह। “सरकारी रास्ता खोलबाक मजदूरी कोन मदमे?” हुनकर प्रश्न आयल। शबनम नगरपालिका कर्मिक नाम आ समय दर्ज करौलीह। सोना अपन नव ढुलाईक अग्रीम भुगतानक प्राप्ति-पर्ची देखौलीह; पुरान बकायाक दावा अलग अटकल छल। ओ स्वीकृत सामग्री निर्धारित घुमाउ बाटसँ अस्पताल पठौलनि। गोदाम पर फाटक खुलब

ठोस घटना छल, मुदा प्रत्येक बाधा अपने आप नहि हटल। पहिल गाड़ी निकललापर पहरेदार ठीक घड़ी लिखलक; ओहि पन्नापर देवव्रतक अतिरिक्त प्रशंसाक एको वाक्य नहि छल।

अस्पतालक बाहरी बरामदामे तुलसी ताजपुरिया दू चालकक संग पालि बदलि रहल छलीह। एक गाड़ीमे प्रशिक्षित परिचारिका, निर्धारित सामग्री आ स्वीकृत एक परिवारजन जाएत; दोसर गाड़ी हलुक सामान लेल छल। मदन राउत विद्यालयक बच्चासभक आजुक यात्रा पहिले पूरा कऽ अपने छलाह। हरिचरण पासवान पुछलनि जे एगो चालक रातुसँ जागल अछि, ओकरा फेर ‘आपात’ कहिकऽ पठाओल जाएत की। तुलसी विश्रामक कॉलम देखौलीह। “गाड़ी उपलब्ध रहब आ चालक योग्य रहब दू बात अछि।” शबनम पाँच पन्नामे दोसर हस्ताक्षरक समय लिखलीह—तुलसीक अनुमोदन रोगी-यात्राक सुरक्षित पालि-योजनापर छल, चालकसभक पुरान मजदूरी-दावा वापस लेबापर नहि। रोगीक प्रथम प्रस्थान सही समयपर भेल; अस्पतालमे एखन उपचार चलि रहल रोगीकेँ केवल गाड़ी देखिकऽ नहि हटाओल गेल।

जमुनाक बेटा अस्पतालक सीढ़ीपर ठाढ़ एक गाड़ीक पछिला दरवाजा देखैत रहल। ओ पूछलक, “आब सभकेँ बाहर लऽ जेताह?” सलमा शेख ओकर माथ पर हाथ राखि प्रश्नक उत्तर देलीह, “जकर उपचार एतहि सुरक्षित अछि, से एतहि रहत। जकरा चिकित्सक दूसर ठामक सुविधा आवश्यक मानताह, तकर यात्रा समयसँ होएत।” जमुना उपचारक कागद अपन झोरामे रखलीह। ओ अकारण हाँ नहि देलीह। शैलजा सरस्वती देवीक मृत्यु सम्बन्धी सुनवाईक तिथि पुछबाक लेल आयल छलीह। अनिरुद्ध हुनका उपचारक नव सूची देखाबय नहि लगलाह; हुनकर पुरान शिकायतक अलग प्रमाणित प्रति देबाक निर्देश देलनि। रसोइ खुलब, गाड़ी चलब—एहि सफलतामे शैलजाक दुखकेँ गायब करबाक कोनो अधिकार नहि छल।

नदीक कात हीरा सहनीक माप-डण्डा भीजल माटिमे गाड़ल छल। अदिति पुरान प्रतिवेदनक लाल सीमा आ आजुक धारा-रेखा दू अलग स्याहीमे चिन्हित कएलीह। तारा बिनौट पुरान खण्डहर नालीक पहिल सँकरा मोड़ धरि गेलीह, मुदा भीतर नहि उतरलीह। सुगनी सदाय अपन टोलीसँ चिह्नित सुरक्षित बाहरी भागक कचरा हटेबाक काम शुरू

करौलीह। पारो पत्थरकट्टा झुका कऽ किनारक फाटल पाट देखलीह; हुनकर औजार बिना भार-जाँचक भीतर नहि गेल। एक कर्मचारी कहल, “हस्ताक्षर भऽ गेल, नाली खोलू।” अदिति उत्तर देलीह, “अहाँ जे खण्ड देखैत छी, ओहिमे सुरक्षित अवरोध हटाओल जा सकैत अछि; मुख्य संरचनाक भीतर उतरब एखन निषिद्ध।” तेसर हस्ताक्षर स्थानीय मापक स्वीकृतिक छल, समस्त नाली ठीक भऽ गेलाक नहि।

रमेशक पत्नी मेड़क कात बीहनक पोटरी राखने ठाढ़ छलीह। हुनका डर छल जे प्रशासन जनहितक नामपर रातिमे निजी मेड़ काटि देत। अदिति निरीक्षण-पन्नाक बाहरी सीमा हुनका देखौलीह। “एहि रेखाक भीतर काम करब; एहि कात अहाँक असहमति दर्ज अछि।” स्त्री माटिपर अपन पयरसँ एकटा छोट निशान बनौलीह। “जँ पानि हमरा खेतमे घुसत तँ फेर के सुनत?” हीरा उत्तर देलीह जे जलमापक समयक संग तुलना भऽ सकैत अछि; तकरा परत असहमतिक लिखित बाट सेहो अछि। खेतक अधिकारक फैसला एतय नहि भेल, मुदा सार्वजनिक निकासक काठ-पात उठलाक बाद पानिक छोट धार आँखिसँ देखाइ देलक। तारा एहि प्रवाहकँ मापल सफलता कहलीह, सुरक्षित स्थायी समाधान नहि।

आश्रयक पुरान विद्यालय-कक्षमे रुहानी धरतीपर कागदक टुकड़ा पसारि बासन गनैत छलीह। छतक दू ठाम टपकैत पानि लेल बालटी राखल गेल छल। खिड़की खुलि सकैत छल, मुदा दरवज्जाक कुंडी जाम छल। स्थानीय कारीगर कुंडीक टेढ़ पत्ती सीधा कएलक; कक्ष खोलबाक पूर्व ओकर मजदूरी लिखल गेल। शिक्षक पूछलनि जे आश्रयमे आबनिहार परिवारक जाति, धर्म आ घरक नाम फरक सूचीमे रखब की। रुहानी कहलनि, “ककरो चिकित्सकीय जरूरत आ अपाहिज व्यक्तिक सुविधा लेल गोपनीय विवरण चाही तँ सहमतिसँ राखू। भोजनक कतारमे परिचय जाँचि आसन नहि बाँटब।” चारि परिवार अपन-अपन ओछाओन लऽ अएल; एक बुजुर्ग स्त्री दरवज्जा कात खुलल बाट चाहलीह। रुहानी ओहि ठामक सामान हटबौलीह।

आश्रयक पहिल कोठरी खुलिते एक दानी-मण्डलीक युवक कैमरा लऽ भीतर घुसबाक प्रयास केलक। ओकरा दरवज्जापर शबनम रोकलीह। “भीतरक बच्चा आ रोगी फोटो देबाक वस्तु नहि,” ओ कहलीह। युवक कहलक जे बिना फोटो दाता भरोसा नहि करताह।

रुहानी कक्षमे राखल अनाजक रसीद, बिछौनाक गिनती आ कामक पावती देखौलीह। “भरोसा एहि पर होअय,” ओ उत्तर देलीह। एक बच्चा कोनामे छोट धागाक पुतली रखि रहल छल; ओ ओकर नाम बता सकैत छल, मुदा ओकर चेहरा प्रकाशित होबाक अनुमति कियो नहि देने छल। आश्रयक दरवज्जा सभक लेल खुलल, भीतरक जीवन सार्वजनिक तमाशाक लेल नहि।

रसोइक पुरान चूल्हिपर पहिल हाँडी चढ़ए सँ पहिने विवाद भेल। दान-मण्डली तीन दिनक चाउर-दाल देबाक पावती देने छल, मुदा तेल, इन्धन, बासन धोनिहार आ रातिक पालिक पारिश्रमिकक मद अपूर्ण छल। एक युवक कहल, “दूसर बेर आपदा अएल अछि, आजु एक दिन सभ अपन सेवा मुफ्त दथि।” रुहानी चूल्हिक लगसँ उठि ठाढ़ भेलीह। “हम अपन घरक खीर चाही तँ बिना दाम बाँटि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा पचीस जनाक भात, भीजल बासन आ रातिक पहराकेँ हमर एकल इच्छा किएक कहैत छी?” रुखसाना अपन पिछला खुला खाताक पन्ना देखौलीह। रघु रसोइया दालक खरीद आ मसालाक दाम अलग रखलनि। चन्द्रिका पुरान बकाया बिना मेटौने पुआ देबाक नव आदेश रोकलीह।

सङ्गठित पँक्तिमे पहिल बेर कामक समय लिखल गेल। कंचन आ दू नव रान्हनिहार बतौलीह जे हुनका बच्चा घरमे के देखत; ओकरा लेल निर्धारित छोट विश्राम जरूरी अछि। सफाई करनिहार ममता हरि आ रानी हलालखोर कहलनि जे बासन-धोआइक सुरक्षित पानी, कपड़ा आ चप्पल चाही; नालीक गन्दा पानी रसोइक काममे नहि आएत। देवव्रतक कार्यालयक प्रतिनिधि फेर दानक पर्ची देखौलक। रुहानी तकर कात कर्मचारीक पावती रखलीह। शबनम स्पष्ट कएलीह—दानक चाउरक मूल्य, खरीदीक तेलक मूल्य, श्रमिकक घण्टा आ पारिश्रमिक, सभ अलग मद। रसोइक कामक चौठ हस्ताक्षर रुहानी देलीह, मुदा पहिल पालिक मजदूरीक अग्रिम राशि वास्तवमे निकललाक बादे।

एक कर्मी नोट गनलनि आ प्रत्येक रान्हनिहारक हाथमे पावती संग निर्धारित अग्रिम देलक। गनतीमे एक स्त्रीक नाम गलत लिखल छल। ओ स्वयं कहलनि, “हमर नाम सही करू। पावतीमे गलत नाम रहत तँ काल्हि मेहनताना ककरा भेटत?” लिखनिहार अपन गलती सुधारलक; ओकर सहीक सँग कर्मीक अँगूठा-निशान लेल गेल, पढ़ि सुनाइ कऽ।

रुहानी कागदक प्रति छोट नील झोरामे रखबौलीह। एहि क्रममे भात देरिक्कें चढ़ल; भीड़मे खिसियाहट उठल। रघु काठक चमचा उठबैत कहला, “भूखक घड़ी बुझैत छी, मुदा रान्हनिहारक दाम काटि खिचड़ी तेज नहि पाकत।” एहि बेर कियो हमर-तोहर सेवा कहि पाँति बीच नहि काटलक।

उर्मिला उपचार-सूचीक पहिल थारी लेल दरवज्जापर पहुँचलि। ओ पुछलीह जे रोगीक उपवास, नोनक सीमा आ औषधिक समयक हिसाब कोना राखल जाएत। सलमा भोजन आ चिकित्सकीय परामर्शक अलग पर्ची देलीह। एहन रोगी सभकेँ जे सामान्य खिचड़ी नहि खा सकैत छथि, हुनका लेल चिकित्सकीय निर्देशनुसार अलग व्यवस्था बनल। रुखसाना कहलनि जे घरमे पका कऽ अनल नर्म भातक दामो सार्वजनिक खरीदक सूचीमे रहत, जँ ओकरा स्वीकार कएल जाए। अस्पतालक बरामदासँ फेर एकटा बाल्टी पानि हटाओल गेल; भीतरक चुआन बन्द नहि छल। राहतक रसोइ चलबाक अर्थ भवनक कमजोरी मेटि जेब नहि, मुदा लोकक पेट खाली रहबाक अनिवार्यता कम भेल।

ईशान घाटदिसँ दू छोट नावक काज देखैत अएला। हीराक दल नदीक जलस्तर देखिकऽ भारी गाड़ी नहि, हलुक बासन आ सूखल लकड़ी आनबाक सीमित मार्ग स्वीकृत कएने छल। ईशान नाव ठेलबाक समय कातमे पयर धँसल देखिकऽ तखनहि रुकलाह। हीरा कहलीह, “आजुक सही काल्हिक धारा पर नहि चलत।” सामान दोसर सुरक्षित किनारसँ उतराओल गेल। ईशान अपन श्रमक नाम नहि छिपौलनि; नाविकक भाड़ा आ सामान उठेनिहारक मजदूरी अलग लिखाओलनि। किछु लोक हुनका शास्त्रार्थक विद्वान कहि लेल डोल उठए सँ मना करैत छल, मुदा ओ कहला, “एहि घड़ी मे हाथसँ काज करब अलग बात अछि; जकरा रोज एहि नावपर निर्भर रहबाक अछि, ओकर दर पर हमर परोपकार हक नहि जमाओत।”

दुपहर धरि गरम खिचड़ीक सुगन्ध विद्यालयक बरामदासँ बाहर अएल। रुहानी आसनक दू पाँति नहि, एके लम्बा परसबाक पट्टा बनौलीह; जे पयर मोड़ि नहि बैसि सकैत छलाह हुनका लेल थोर उँच बेंच राखल गेल। भोजन लेनिहारक सूचीमे जाति आ धर्मक खण्ड नहि छल, केवल थारीक गिनती आ विशेष सहायताक स्वीकृत आवश्यकता। पंक्तिक पहिलमे एक चालक, ओकर बाद अघेड़ स्त्री, कारीगरक बच्ची आ नगरक कर्मी बैसलाह।

एक वृद्ध पुछलनि, “हम अपन पात्रमे खा सकैत छी?” रुहानी कहलीह, “निश्चित। एक्के थारीमे खेबाक आदेश नहि; बराबर हक सँ भोजन भेटबाक शर्त अछि।” वृद्ध अपन पीतल पात्र निकाललनि, किछु दूरीपर बैसि खए लगलाह, आ ककरो आपत्ति नहि भेल।

चन्द्रिका गुड़क अल्प पुआ अनने छलीह, मुदा ओकर पहिल खेपक दाम रसीदपर साफ लिखल छल। रुखसानाक खिचड़ीमे अदरक कने बेसी छल; रघुक बनाओल दोसर हाँडीमे भुजल जीराक गन्ध। एक बच्ची दूनू स्वाद मिलाए लगलीह तँ ओकर माय हँसलीह। “एहि खिचड़ीमे सभ गामकँ एके नोन खुवेबाक जिद्द नहि,” रघु कहला। नूरजहाँ अपन कामसँ घुरि गदहाकँ पानि पियौने बाद खए बैसलीह। सोना कठौतिया अपना भाड़ाक हिसाब पूरा करबाक बाद थारी लेलीह; रुहानी हुनका कोनो अतिरिक्त महिमाक स्थान नहि देलीह। दुनू एक्के पाँतिमे बैसलीह। दालक स्वादपर छोट झगड़ा भेल, आ कोनो पुरान आरोपक फाइल ओहि घड़ी बीचमे नहि खुलल।

रमा सार्वजनिक पन्ना टाँगबए एलीह तँ देखलीह जे भीजल दीवारक गारा झरि रहल अछि। नैरा सुझाव देलीह—काठक पट्टपर प्रति लगाउ, आ कार्यालयक भीतर अलग प्रति रखू। सार्वजनिक सारमे पाँच शर्तक क्रम, अनुमोदनकर्ता, वास्तविक खुलल सेवा आ बाँकी काम लिखल गेल। गोदामक निरीक्षणधीन सामानक संख्या सार्वजनिक सारमे उचित स्तरपर रहल, निजी मरीज-नाम आ सत्ताइसक सुरक्षित परिचय ताहिमे नहि चढ़ल। सरिता अपना प्रति लेल पढ़ि सुनब चाहलीह। ओ पुछलीह, “असहमति-सहित पुरान पन्नाक संदर्भ कतय अछि?” रमा तल्लामे मूल संख्या जोड़लीह, जाहिसँ लोक समझि सकय जे नव सहमति पुरान आपत्तिक मेटाव नहि।

पाँचम सही रमा एही सार्वजनिक प्रति आ सुरक्षित परिशिष्टक वितरणपर कएलीह। शबनम नकल देबाक जिम्मेदार व्यक्ति आ सुनवाईक ठाम लिखलीह। नैरा अनुमति भेटल अंशक समाचार बनौलीह; हुनकर कापीमे लिखा गेल जे राहतक दरवज्जा खुलल, पाँच शर्त लागू भेल, मुदा पुरान दोषक जाँच जारी अछि। कियो पुछलक जे देवव्रतक फोटो ऊपर राखल जाएत की। नैरा उत्तर देलीह, “ताला खोलबाक समाचारमे ताला खोलब देखाइत रहत; एक आदमीक मुस्कानसँ रोगीक गाड़ी, मापक डण्डा, रसोइक मजूरी आ अभिलेखक

अधिकार नहि मेटत।” देवव्रत ओहि वाक्य सुनलनि, मुदा फेर अपने नामक फलकक प्रस्ताव नहि कएलनि।

बाहरी निकासमे पानी कने सरकल तँ नगरक कर्मी सफलताक घोषणा करबाक तैयारी करैत छल। हीरा सहनी डण्डाक नवी रेखा देखौलीह। “एहि घड़ी एतबा घटल; ऊपरक धारसँ आबैत पानि, बान्हक भार आ छरकीक भीतरक कटानक नाप एखन पूरा नहि।” अदिति सरसोंक रंगक पन्नापर ‘सीमित सुधार’ लिखलीह। शबनम एकरा सार्वजनिक सारमे जोड़लीह। आश्रयक छतमे दू ठाम चुआन छल, अस्पतालक भीतरक जोड़सँ बूँद एखनहुँ खसैत छल, आ चचरीक साठि किलोग्रामवला सीमा जसक तस रहल। पाँच हस्ताक्षर कियो जलक प्रत्येक सम्भावनाक गारंटी नहि छल; मुदा जे सेवा खोलबाक छल से आब कागदक बाहर देखाइ रहल छल।

साँझक भोजन वितरणसँ पहिने रुहानी पहिल पालिक हिसाब खुद मिलौलीह। चाउरक नाप ठीक छल, मुदा बासन धोनिहारक दू घण्टा कम लिखल गेल छल। ओ कर्मचारीक सामनहि पन्ना बदलौलीह; कर्मचारीक आँखि भीजल छल कि धुँआ लगल, से ओ नहि पुछलीह। “जतेक कएलहुँ ततेक लिखू,” रुहानी कहलनि। एतहि रुखसाना अपन दोसर पालिक जिम्मा देलीह आ कंचन घर जा बच्चाकेँ देखबाक समय पेलनि। ओ हाँड़ीक कात सुतल नहि छलीह, मजदूरी पबैत घुरि रहल छलीह। कामक भाड़ा दिनक अन्तिम जोड़मे आएल तँ दानक नामे ओकर स्थान खाली नहि रहल।

उर्मिला थारी लऽ नैराक बगलमे बैसलीह। दुनूक हाथमे अलग काजक कालिख छल— एकटाक स्याही, दोसरक धोल कपड़ाक नील। नैरा पुछलीह, “तोहर चाय काल्हि फेर ठंढा भऽ जेतह?” उर्मिला कहलीह, “आइ खिचड़ी गरम अछि, एतबा नहि गंवाएब।” ओ पहिल चम्मच मुँहमे रखिते आँखि छोट कएलीह। “रुखसानाक अदरक बेसी,” ओ फुसफुसौलीह। नैरा हँसलीह, “रघुक जीरासँ मिला लिअ।” रुहानी दूरसँ सुनि कहलीह, “अगिला खेपक मसाला के तय करत, ओकरो मजदूरीक सँग लिखब।” हँसी उठल। दुःखक दिनसभक बीच ई स्वादक सानो मतभेद ककरो अपमान नहि करैत छल।

राति ढलिते आश्रयक बरामदामे कोनो पहिलुका तमाशा नहि बचल। कक्ष खुलल छल, दरवज्जा पर रातिक परिचर्याक नाम लिखल छल; अस्पताल धरि स्वीकृत गाड़ी पहुँचल;

गोदामक फाटक फेर नियमानुसार मुहरबन्द भेल, मुदा स्वीकृत सामग्री जरूरतवला ठाम पहुँचि चुकल छल। सार्वजनिक नालीक सुरक्षित खण्डमे पानि चलैत छल, आ रसोइक बचल खिचड़ीक नाप अगिला पालिक लेल रखल गेल। रमा पाँच सहीक कागद बन्द करबाक पहिने पुछलीह, “कतेक भोजन परसल?” रुहानी संख्या कहलीह आ जोड़लीह, “बाँकी कतेक, सेहो लिखू। काल्हि फेर रान्हब।” बाहरे भीजल माटिपर पाँच जनी अलग-अलग बाटे अपन घर दिस गेलाह। ओ सभ एके प्रतिज्ञाक मालिक नहि छलाह; मुदा एहि दिन पाँचू अपन हिस्साक काज कएने छलाह।

अध्याय १०८ • जलस्तरक बाहर

भोरक पहिल उजासमे हीरा सहनीक माप-डण्डाक लाल रेखा पानिक भीतर लुकायल छल। काल्हि साँझ धरि जे रेखा धारसँ ऊपर देखाइत रहए, ओहि ठाम आब भूअर पानि चिकन माटिक सँग घूमि रहल छल। हीरा डण्डा उखाड़लनि नहि। दोसर बाँस एक हाथ दूर गाड़ि, दुनू पर एके समय लिखलनि। पिछला दिनक थारी धोअनिहार रसोइक स्त्रीसभक आवाज आश्रय दिससँ आबि रहल छल; घाटपर छपराक नीचाँ पाँच आदमी नावमे बोरा चढ़ेबाक प्रतीक्षामे ठाढ़ छलाह। हीरा हुनका देखिकऽ कहलनि, “एखन एक्को बोरा नहि। पहिले पानिक नाप लिखब, तखन नावक बात होएत।”

मधु पुरान घाट-बही लऽ अएलीह। काल्हि रातिक अन्तिम आवागमन चारि नावक पर्चीमे चढ़ल छल; भोरक पहिल बेरमे छओ नाव तैयार करबाक प्रस्ताव राखल गेल छल। हीरा पर्चीपर छओक आगाँ छोट प्रश्नचिह्न देलनि। “पानि ऊपर गेल, मुदा धारा कहाँ तेज भेल, से एखन नहि देखलहुँ। संख्या कागदक इज्जत लेल नहि बढ़त।” मधु रस्सी टानि नावक तल्ला देखलीह। एक नावक काठक जोड़मे बूँद चमकैत छल। हुनका एहि नावक काल्हिक मरम्मति-मजदूरी याद छल। ओ कहलीह, “मरम्मति भेल, परीक्षण नहि। एखन ई नाव घाटे रहत।” मालिक कहलक, “काल्हि तँ चलैत छल!” मधु उत्तर देलीह, “काल्हिक पानि आइ नहि अछि।”

अदिति घाटक ऊपरक चबूतरा पर आयलीह तँ हुनका हाथमे पाँच हस्ताक्षरवला समझौताक नकल छल। नगरक प्रतिनिधि देखाबए चाहैत छल जे पाँचू सेवा चलि रहल अछि—आश्रय खुलल, रसोइ जलैत अछि, गाड़ी चलैत अछि, गोदामसँ स्वीकृत सामान निकलल, जलमाप होइत अछि। हीरा कागदपर आँखि नहि टिकौने पुछलनि, “कतेक बेरक नापपर अहाँ ई कहैत छी जे बाट सुरक्षित?” अदिति उत्तर देलीह, “काल्हि साँझक नाप आ आजुक प्रारम्भिक माप।” तारा बिनौट कहलीह, “दू समय लिखब नीक अछि, मुदा दू घड़ीक बीचक पानि कतेक उठल, ओहो देखबाक अछि। एक बेरक सुरक्षित बाट पूरा दिनक अनुमति नहि।” अदिति एहि बेर विरोध नहि कएलनि।

सूरज उगलापर तिलवाहक दहिन कात बनल सँकरी भँवरीक परिधि बदलए लागल। पुरान माछ-जालक बाँस आधा उधार छल, आब नोक मात्र देखाइत छल। हीरा लंबा लग्गी उतारि तीन ठाम पेंदी छुलनि—पहिल ठाम कठोर बालू, दोसर ठाम चलैत गाद, तेसरमे लग्गी अपेक्षासँ बेसी धँसल। ओ निशानसभक कात नाप-समय लिखबौलनि। गोपाल माझी दूरसँ चप्पूक बेंत कन्हापर राखने उतरलाह। हुनकर पाँजर भीजाइल छल, आँखि रातिक यात्रासँ लाल। ओ पहिने धारा देखलनि, तखन सभाक चेहरा। “अहाँ सभ पुरान नक्शाक सिधा रेखापर नाव पठेबाक सोचि रहल छी?” ओ पुछलनि।

गोपालक प्रश्न सुनि नगरक युवा स्वयंसेवक अपन टेबलेट घुमौलक। एक नीली रेखा सीधा अस्पतालक पाछाँक चढ़ान धरि गेल छल। “ई सरकारी नक्शाक उद्धार-मार्ग अछि,” ओ कहलक। गोपाल धरतीपर भीजल बाँससँ दू मोड़ बनौलनि। “बरखा-पहिने कागदक ई बाटपर बैलगाड़ी घूमि सकैत अछि। पानि उठिते पहिल मोड़मे भीतर दिस घुमल धारा नावक पछिला भाग खींचि लैत अछि। हम काल्हि राति खाली नावसँ घूमलहुँ, भरल नावसँ नहि। दूनू परीक्षण एक समान नहि।” युवक पुछलक, “तँ एहि बाटक नाम की?” गोपाल कहलनि, “पहिने बुझू जे नाम ककर नक्शाक अछि।”

नगरक पंजीमे पुरान परिवहन-पर्चीसँ उतारल “तिरसूला” शब्द नीली रेखाक सिरापर चढ़ल छल। गोपाल पर्ची उठौलनि। “हमर बाबाक समयक एक अलग बाट-पंजीमे तिरसूला लिखल अछि। ओ एक नामक सन्दर्भ छल, एहि घाटक सीधा पानीक नाप नहि। अहाँ लोक तिरसूला लिखिकऽ ई समुझि लेलहुँ जे नाव तिलवाहक एहि मोड़सँ सीधा छुटत। एहि मिलानक कोन मूल नाप अछि?” युवकक लग उत्तर नहि छल। नैरा पन्नाक पाछाँ लिखलीह—पुरान नाम-स्रोत, वर्तमान मार्ग आ प्रमाणित भौगोलिक सम्बन्ध तीन अलग वस्तु। गोपाल कहलनि, “हम नाम मेटेबाक नहि कहैत छी। गलत नामक आधारपर जँ जीवित मनुख पानिमे भेजब, तखन नामक गलती देहक गलती बनि जाएत।”

एक अधिकारी नक्शा तुरन्त सुधारि “गोपाल मार्ग” लिखबाक प्रस्ताव रखलनि। गोपाल हँसला नहि। “हमर नाम लिखलासँ नदीक मुँह ठोस नहि होएत। स्थानीय लोक जे कछेरक मोड़केँ ‘पुरान कटान’ कहैत अछि, ओकरा एतए ओहि नामसँ राखू, आ नापसँ जँ चलब योग्य हो तँ समय लिखू। तिरसूला के जे कागदमे सुनलहुँ, ओकर मूल अलग

सुरक्षित राखू।” रमा तीन खण्डवला संशोधन-पन्ना बनौलीह—पुरान पर्चीक शब्द, गोपालक प्रत्यक्ष मार्ग-गवाही, वर्तमान अनिश्चित नाप। युवक अपन पहिल नक्शा रद्द करबासँ खिन्न छल, मुदा स्वयं घाटक उधड़ैत कात देखिकऽ मोबाइलसँ सार्वजनिक रेखा हटौलक। गोपाल पहिल बेर ओकरा धन्यवाद देलनि।

हीरा सभ नाविककेँ गोल बैसौलीह। छओ मे सँ एक नाव परीक्षण-बिनु मरम्मत पाछाँ रोकल गेल, दोसरक तल्ला असमान भीजल छल, तेसर भारी बोझ लेल पर्याप्त मुक्त किनारा नहि पबैत छल। ओ तीन नावकेँ केवल दिनक सीमित यात्राक अनुमति देलीह; एक अतिरिक्त नाव खाली सुरक्षा-सहायता लेल तैयार रहत, मुदा ओकरा यात्री भरबाक अनुमति नहि। श्याम मल्लिकक कसनीवला नव नावपर परीक्षणक काज एखन पूरा नहि भेल छल। हीरा कहलनि, “नाव घटलासँ लाइन बढ़त। ई असुविधा हमरा देखाइत अछि। मुदा डूबबाक संख्या घटेबाक एकटा बाट ईहो अछि।” लाइनमे ठाढ़ लोकसमे कुढ़न उठल; किछु गोटे आवेदनपर पाँच हस्ताक्षर देखबैत तुरन्त चढ़बाक अधिकार माँगलनि।

रुखसानाक रसोइमे भोरसँ चाउर धोएल जा रहल छल। ओ घाटपर आवाज सुनि आंगन धरि अएलीह, मुदा भगौना नहि छोड़लीह; रघुकेँ समयक गिनती देलनि। “नाव घटत तँ इन्धनक अगिला खेप देरीसँ पहुँचत,” ओ कहलीह। “आजुक चाउर अछि, काल्हिक हिसाब फेर बनाबऽ पड़त।” सोना कठौतिया गाड़ी लऽ पहुँचलीह। ओ प्रस्ताव रखलीह जे सुखल चाउरक तेसर हिस्सा भारी नावपर नहि, सुरक्षित ऊपरी बाटक ठेलापर पठाओल जाए। प्रशासनिक कर्मी कहलक जे ऊपरी बाट निजी मेड़क कात पड़ैत अछि। सोना तुरन्त उत्तर देलीह, “बाट देखेला सँ अनुमति नहि भऽ जाइत। मेड़क मालिकक बात सुनू, आ ढुलाईक मजदूरी पहिने लिखू।”

घाटपर सँ खाली हाथ घुरैत एकटा नौजवान शिकायत केलक जे तीन नाव रहलापर काल्हि क मजदूरी आधा भऽ जाएत। मधु ओकरा अपन पंजी देखौलीह—दिनक सुरक्षित फेरा घटत, मुदा नाव बाँधब, रस्सी जाँचब, संकेत देब आ आपात सहायतालेल तैयार रहबो श्रम थिक। ओ तय कएलीह जे रोकेल नावक नाविककेँ दिनभरि निःशुल्क पहरापर नहि राखल जाए। अतिरिक्त नावक मालिक चाहलक जे सभक सामान्य भाड़ा बढ़ाओल जाए;

हीरा एकरा अस्वीकार करैत पुछलीह जे निर्धन यात्रिक पैसा सँ मरम्मतिक दोष किएक भरल जाए। नया मजदूरी आ भाड़ाक हिसाब अलग लेखामे खुलल।

मेड़क कात किरण राउतकेँ माटि बचएबाक चिन्ता छल। पिछला फसलक बीहन-ऋण अबहियो चुकल नहि छल। अधिकारी पुछलक जे एक दिनक लेल ठेला जाए देबामे की आपत्ति। किरण कहलीह, “ठेला एकटा जायत, काल्हि दसटा अएत, आ हमर बीहनक कियारी टूटत। लिखि दिथौ जे सिर्फ हलुक अनाज, दू चक्कर, माटि खराब भेल तँ सुधारक जिम्मेवारी के लेत।” अदिति पुरान गलत धारणाक स्मृतिसँ चुपचाप सुनलीह। ओ अस्थायी अनुमति पर खेतक सीमांकन आ नुकसानक तत्काल जाँच लिखलीह। किरण पहिल दू ठेला चलए देलीह। सोना हुनका धन्यवाद दैत कहलीह, “राहतक नामपर खेतकेँ फेर गरीब बनौनाइ नहि चाही।”

अस्पतालक बरामदामे उर्मिलाक लग सुबहक दू स्थानान्तरण-पर्ची छल। एक रोगी स्थिर छल, ओकर इलाज एतहि चलि सकैत छल; दोसरकेँ विशेष उपकरण चाही छल। तुलसी ताजपुरिया पुछलीह जे नदीक तीन नावमे एकटाकेँ अस्पताल लेल राखल जाए। हीरा फोनपर कहलनि, “रोगीकेँ नावमे चढ़ेबासँ पहिने चिकित्सक आ नाविक दुनू कहताह जे ई स्थानान्तरण सम्भव अछि। नावक शरीर आ रोगीक शरीरक सीमा अलग-अलग लिखू।” सलमा रोगीक परिजनसँ सहमति पढ़ि सुनौलीह। अनिरुद्ध उपकरणक सूची देखलनि; ताहिसँ अस्पतालक छोट गाड़ीक बाट अधिक सुरक्षित बुझायल। नावपर चढ़बाक प्रस्ताव रद्द भेल, मुदा अस्पतालक यात्रा रुकल नहि।

लाइनक अन्तमे ठाढ़ शैलजा अपन सासु सरस्वती देवीक पुरान चादरक पोटरी कन्हापर राखने छलीह। हुनका अस्पतालसँ प्रमाणित प्रतिक एक पन्ना भेटबाक छल, मुदा घाट पार कऽ जेबाक पुरान योजना आइ निषिद्ध नावसँ जुड़ि गेल। ओ पोटरी नीचाँ रखिकऽ पुछलीह, “हमर कागद काल्हि धरि रखल रहत की?” रमा हुनका नकल प्राप्त करबाक सुरक्षित स्थल आ समय लिखि देलीह। शैलजा कहलीह, “हमरा कोनो बेसी प्राथमिकता नहि चाही, मुदा हमर माँक मामला जलस्तरक बहाना बनि हराए नहि।” हुनकर सवाल घाटक आपत्ति-बहीमे अलग दर्ज भेल।

दुपहरक पहिने छरकीक कात पहरा देनिहार किशोरी दारोगी बौकाइत आयल। ओ कहलीह जे बान्हक दहिना पादमे पानि झलकैत अछि। नगरपालिका प्रतिनिधि एकर अर्थ लैत चाहल जे बान्ह टूटबाक खतरा सिद्ध भेल। तारा हुनका रोकलीह, “झरनाइ, भीतरसँ रिसाव, ऊपरसँ छलकनाइ—तीनू अलग। पहिने देखू कोन ठाम सँ अबैत अछि।” गोपाल खेतक पाछाँक संकर गाम-बाटपर गेलाह; हीरा नाव घाटपर बाँधि छरकीक कात माप-पत्र पहुँचलनि। अदिति पहिल छोट निरीक्षण-दलक समय लिखलीह आ भीड़कें बान्हपर चढ़बाक मनाही कएलीह।

छरकीक ऊपर चरैत दू बकरी निचला माटि खुरसँ खोंछि रहल छल। देवकी पाल अपन बकरीकें हाँकि अलग लऽ गेलीह। “बकरी हटि जाएत,” ओ कहलीह, “मुदा हम अपन घरक दिसक निकासी देखबाक अधिकार नहि छोड़ब।” रेतक बोराक पाछाँ सँ एकटा महीन धार निकलैत देखायल। तारा माटि हाथमे लऽ ओकर नमी बुझलीह; अदिति अधिकारीक संग पानि जमा होबाक ठाम नापलीह। कियो एखन एकरा बान्ह भंग कहबाक स्थिति मे नहि छल। गोपाल चेतौलनि जे ऊपरक कातक अस्थायी रुकावट पानि रोकत तँ नीचला टोला पर चढ़ाव बदलि सकैत अछि। “एक घर सुरक्षित कहलासँ दोसर घरक दरवज्जा डूबबाक अनुमति नहि,” ओ कहला।

शिव धाँड़ी आ सुगनी सदायक टोली रेतक बोरा उठेबाक लेल बजाओल गेल। एक कर्मि कहलक जे संकटमे नाम लिखबाक समय नहि। शिव पुरान मजदूरी-पंजीक विवाद याद करौलनि। “जकर भार हम उठाएब, ओकर हिसाबो एखने होएत। नाप आ आदेश ठीक नहि तँ हम अन्हर धँसैत माटिपर नहि उतरब।” सुगनी सुरक्षाक चप्पल, रस्सी आ सूखल ठामक माँग कएलीह। अधिकारी पहिने खिन्न भेल, फेर छरकीक कात स्वयं पयर फिसलैत देखिकऽ ठमकि गेल। सामानक तौल, मजदूरक नाम, जोखिम-भत्ता आ काम रोकबाक संकेत कागदपर उतरल। सीमित सुरक्षित खण्डमे बोरा राखल गेल; भीतरक कटान पर बिना परीक्षण भार नहि बढ़ाओल गेल।

गामक दोसर कात रहल स्त्रीसभक चिंता एहि सभक उलटा छल। बान्हक सुरक्षित उच्च भागमे बोरा बढ़ैत रहत तँ हुनकर आँगनक पानि कतए निकलत? रमा दू महिला प्रतिनिधिक बात अलग लिखलीह। एक कहलीह, “हमर घरमे बच्चा अछि, सड़क उँच कऽ

पानि भीतर पठाओल नहि जाए।” दोसर कहलीह, “एहि पानि लेल हमरा चौरक माछक रास्ता बन्द मत करू।” अदिति स्पष्ट कएलीह जे आजुक निरीक्षण स्थायी बान्ह-बढ़ोतरीक अनुमति नहि। तारा एकटा सुरक्षित बाहरी जलनिकासी-बिन्दु चिन्हित कएलीह, मुदा ओकरा खोलबाक पहिने नीचला घरसभक नाप आ सहमति अनिवार्य रखलीह। एतेक धरि निर्णय सीमित छल, मुदा दूनू कातक आवाज पन्नामे अएल।

नैरा रमा सँ पुछलीह जे सार्वजनिक सूचना कोना लिखल जाए। नगरक युवक चाहैत छल जे “बान्ह सुरक्षित” लिखल जाए, ताकि भीड़ नहि बढ़य। हीरा कड़ा स्वरमे कहलीह, “सुरक्षित कहबाक अर्थ कतेक घड़ीक लेल? कोन कात? कोन भार?” नैरा वाक्य बदललीह—छरकीक निर्दिष्ट बाहरी खण्डमे तत्काल चिन्ह आ सुरक्षा-काम भेल; ऊपरक धार, भीतरक माटि आ दोसर कातक पानिक गति जाँचाधीन अछि। सार्वजनिक सूचना में तीन नावक दिनक सीमित सेवा, एक खाली सहायता-नाव, रात्रिक नियमित पारगमन बन्द आ वैकल्पिक धरती-बाटक अनुमति-सीमा सेहो जोड़ल गेल। “एहि पन्नाक एकटा शब्दो लोकक देहपर पड़त,” रमा कहलीह।

एक वृद्ध मल्लाह आग्रह करैत छलाह जे हुनकर नाव पुरान अनुभवे चलि सकैत अछि। गोपाल हुनका किनारपर लऽ गेलाह। “अहाँ हमर गुरुक मित्र छी,” ओ कहलनि, “मुदा एहि धारमे ऊपरी रेत सरकि रहल अछि। अनुभवसँ पानि पढ़ल जाएत; अनुभवकें पानिक बदला नहि बैठाओल जाए।” वृद्ध अपन नावक घिसल चप्पू देखलनि। “तँ हम की करब?” गोपाल हुनका किनारक संकेत-दलमे रखबाक प्रस्ताव देलनि, अलग पारिश्रमिकसहित। ओ चुप भेला, फेर कहला जे हुनका बिना नावक काम लोक नहि बुझत। गोपाल उत्तर देलनि, “अहाँ जखन आरो कें रोकब, लोककें ओहिना बचाएब।” साँझ धरि वृद्धक देखल एक भँवरीक सूचना उपयोगी सिद्ध भेल।

रसोइमे दिनक पहिल आधा भोजन समयपर पहुँचल, मुदा इन्धनक ठेला दोसर चक्करमे अटकल। रुखसाना आगि धीमी कएलीह। बच्चासभ रोटी पाबय लेल प्रतीक्षामे छल; कोनो स्वयंसेवक बिना हिसाबक फोटो खींचि दाताकें पठाबय चाहलक। कंचन ओकरा बाहर रोकलीह। रुहानी सार्वजनिक वस्तु-प्राप्ति आ वितरित भोजनक संख्या देलीह, परिवारक चेहरा नहि। नूरजहाँ अपन पशु-गाड़ीक विश्रामक बाद छोट सूखल

लकड़ीक खेप सुरक्षित धरती-बाटे पहुँचबौलीह। ओ साफ कहलीह, “भाड़ाक बकाया अलग देय अछि, आजुक काजक अलग।” रघु नवल हाँडी चढ़ौलनि। भोजन देरीसँ पहुँचल, मुदा ओहि देरीक कारण समय-पंजीमे खुला लिखल गेल।

गोड़मे पुरान चोटवाली रेहानाकेँ अपन माय अनवरी संग आश्रयक खिड़की लग बैसबाक ठाम भेटल। पानि उठबाक समाचार सुनिकऽ बच्ची पूछलक जे ओकर इलाज लेल आएवाली दवा घाटपार रहि गेल की। सलमा कागदक तीन पाँति देखौलीह—दवा उपलब्ध, स्वीकृत मुदा बाटमे, आ जाँचाधीन। “तोहर आजुक दवा पहिल पाँतिमे अछि,” ओ समझौलीह। अनवरी एखनहुँ भयभीत छलीह; ओ पुछलीह जे रातिक पालिमे कियो रहत की। उर्मिला नाम लिखल ड्यूटी-पत्र देखौलीह, मुदा रातिक पानि लेल झूठ आश्वासन नहि देलीह। “जे बदलत, अहाँकेँ कहल जाएत,” ओ कहलीह। बच्ची खिड़कीसँ देखलीह जे बाहर आकाशमे धूसर बादर फेर जमा भऽ रहल छल।

अस्पतालसँ घुरैत अदिति चचरी लग ठमकि गेलीह। तारा पहिनहिसँ ओतए पट्ट बाँधि चुकल छलीह—हलुक पैदल उपयोग सेहो अस्थायी रूपसँ रोकल। एक युवक पुछलक जे काल्हि तऽ लिखित भारसीमा मिलल छल। तारा चचरीक पहिल बाँसक नीचाँ गीला आधार देखौलीह। “भारसीमा ई आधारपर जाँचल गेल छल जे माटि ठोस रहत। पानि माटिक शर्त बदलि देलक; कागदक अंक पानिमे नहि टिकल।” श्याम मल्लिक लकड़ीक छोट कील निकालि सुरक्षित रखलनि। ओ लोग पाट उखाड़ि नदीमे नहि फेकलनि; चचरीक दूनू मुँह पर स्पष्ट चिन्ह, प्रहरी आ वैकल्पिक बाटक सूचना राखल गेल।

नगरक आपदा-दल तत्काल नया नक्शा चाहैत छल। गोपाल कहलनि जे नक्शाक रंग बदलनाइ पर्याप्त नहि। ओ स्थानीय नाविक, चप्पू पकड़निहार स्त्री आ कछेरक किसानकेँ संग लऽ सुरक्षित चढ़ानसभक प्रत्यक्ष परीक्षण करबाक आग्रह कएलनि। मधु अपन नावक पटरीपर तिनक चिह्न दिखौलीह; सोना ठेलाक चक्का कतेक माटिमे धँसल तक नाप देलीह; किरणक खेतपर अस्थायी बाटक दू चक्करक बाद कियारीक हाल देखल गेल। रमा प्रत्येक अनुभूत गवाहीक कात ओकर स्रोत लिखलीह। एक रेखा पर “दिनमे सीमित पैदल”, दोसरपर “केवल सामग्री”, तेसरपर “एखन निषिद्ध” लिखल गेल। कोनो रेखाकेँ अनन्तकालक रास्ता घोषित नहि कएल गेल।

नक्शाक प्रकाशनक बेला एगो समस्या फेर उठल। गोपाल जाहि पुरान पर्चीमे तिरसूला पढ़ने छलाह, ओहि नामक नीचाँ दोसर कागदपर अलग वर्तनीक नाम छल। कर्मचारी एकर समाधान लेल दुनूकें तिलवाहक पर्याय मानि लेबाक आग्रह केलक। नैरा कहलीह, “कोनो स्रोतक नामकें आजुक जलमापक रेखापर चिपकाएब भ्रान्ति अछि।” गोपाल अपन प्रत्यक्ष गवाहीक वाक्य स्वयं पढ़ि सुनौलनि—“ई एखन देखल मोड़ आ नावक व्यवहारक विवरण अछि; तिरसूला नामक पुरान पत्रक भौगोलिक संगति अलग सत्यापनक विषय।’ युवक पहिल नक्शाक त्रुटि सुधारि मूल प्रति सुरक्षित रखलक। गोपाल हुनका सिखौलनि जे गलती सुधारल नक्शो ककरो भविष्यक गवाही बनि सकैत अछि, तें पुरान गलती मिटा कऽ इतिहास नहि बनाउ।

साँझक तेसर मापमे पानि उठबाक गति कने घटल देखायल, मुदा हीरा प्रसन्नताक घोषणा नहि कएलीह। पानि ऊपर अएलाक बाद भँवरीक रूप बदलल छल; एक नावक लंगरक रस्सीमे भीजल घास अटकल छल। मधु अपन हाथसँ रस्सी साफ कएलीह। “आइ तीन नाव,” ओ कहलीह, “काल्हि शायद दू, शायद चारि; कोनो संख्या पहिने नहि।” गोपाल पुछलनि जे राति भरि किनारमे चेतावनी देनिहारक मजदूरीक व्यवस्था भेल की। शबनम स्वीकृत पालिक लिखित आदेश देखौलीह। एक प्रहरी अपन छोट बेटाक बुखारक कारण पूरा राति रहबाक असमर्थता कहलक। ओकरा बदला दोसर प्रशिक्षित व्यक्ति नियुक्त भेल, पहिल प्रहरीक आधा दिनक काम काटल नहि गेल।

रातिक तैयारीमे पाँच हस्ताक्षरक समझौताक व्यवहारिक परीक्षा फेर होइत छल। गोदामक स्वीकृत सामग्रीक नाप दोसर पट्टापर राखल गेल; निरीक्षणाधीन गाँठ पर पुरान सील अक्षुण्ण छल। आश्रयक दरवज्जा खुलल, मुदा कक्षमे जलक चुआन देखिकऽ रुहानी ओहि कोनामे बिछौना हटौलीह। रुखसाना रातिक रसोइक नाम आ मेहनताना लिखलीह। तुलसी चालकक विश्रामक समय बदलबैत रोगीक आपात गाड़ीक वैकल्पिक पालि नियुक्त कएलीह। अदिति आपदा-पत्रमे प्रत्येक काजक संग ‘एहि शर्त धरि’ लिखबैत गेलीह। देवव्रत एहि सावधानीकें अनावश्यक भय कहलनि, मुदा उर्मिला उत्तर देलीह, “भय कागदपर लिखला सँ नहि, सीमा छिपौला सँ बढ़त।”

नैरा अंतिम सार्वजनिक पन्ना लिखैत काल बुझलीह जे पूर्ण राहतक कथा बनबए लेल अभिलाषा शब्दसभकेँ कतबा आसानीसँ चुनि लैत अछि—‘सभ सुरक्षित’, ‘सभ खुलल’, ‘सभ तैयार’। ओ सभ वाक्य काटि देलीह। ओकर बदला वास्तविक सेवा आ बदलल सीमा लिखलीह: तीन नाव दिनमे सीमित, रोगी लेल भूमि-गाड़ी, चचरी अस्थायी बन्द, छरकीक दू कातक अलग निरीक्षण, राहत-रसोइ चलैत, गोदामक परीक्षणाधीन माल अलग। कापीक कातमे उर्मिला अपन हाथसँ लिखलीह—अस्पतालक भीतरी चुआन पूर्ववत्; बाहरी जलमापसँ ओकर दोष सिद्ध वा समाप्त नहि। नैरा ओकर हाथक स्याही देखिकऽ कहलीह, “आब एहि पन्नामे रात्रिक पहरा देनिहारक नामो रहत।”

घाटपर अन्हरिया गहिराइत छल तँ गोपाल एक बेर फेर खाली नावक माथपर बैसि मोड़क आवाज सुनलनि। दुरुह धारा अहाँक मनक हिसाब मानि नहि चलैत अछि; हुनका ई बात बापक पुरान नावसँ सीखल रहनि। ओ उठि हीराक कात अएला। हीरा पुछलीह, “अहाँक नापसँ कोन बाट बचल?” गोपाल कहला, “एकटा छोट धरती-चढ़ान, दिनमे केवल हलुक सहायता लेल; ओकरो पहिले भोरक फेर नाप। बाकीक लेल दूना कात लोककेँ खबैर देब जरूरी।” हीरा पहराक आगू वचन देलीह। गोपाल अपन नामक स्थानपर सही कएलनि, मुदा कोष्ठकमे एकटा पाँति जोड़बौलनि—‘स्थानीय मार्गगाही; बदलैत जलस्तरपर पुनः परीक्षण’।

रातिक पहिल पहरामे आश्रयक चूल्हिसँ धुँआ उठि रहल छल, अस्पतालक गलियारा में जमुनाक दवा समयपर पहुँचल, आ नदीक कात एक प्रहरी दूब घासमे गाड़ल चेतावनी-बाँस सीधा करैत छल। तीन नाव बाँधल रहैतहुँ तिनकर रस्सी अलग-अलग दिशामे तनैत छल। हीरा लाल रेखा पार भेल पानिक सामने पुरान संख्या काटि नव समय लिखलीह। नैरा दूरसँ लटकल लालटेनक परछाई देखलीह। कोनो पुल ढहल नहि छल, कोनो नगर बचि गेल अछि—एहन घोषणाक समयो नहि छल। पाँच हस्ताक्षरक पछिला रातिमे पानि एकरा सभकेँ नव अर्थ पढ़ौने छल: मिलल समझौता तखनहि टिकत, जखन कल्हिक सुरक्षित कहल बाटकेँ आइ असुरक्षित कहबाक साहस बचल रहत।

अध्याय १०९ • रातिक सन्धि

रातिक पहिल पहरामे रुखसाना चूल्हिक धुआँ हटेबाक लेल बाँसक खिड़की आधा खोललीह तँ बाहरसँ भीजल माटिक गन्ह भीतर घुसि अएल। लोहेक हाँडीक तल्ला चूल्हिपर अटक रहल छल। ओ एक हाथसँ ओकर कान पकड़ि कने घुमौलीह, दोसर हाथसँ मजदूरी-पंजीक भीजल कोना सीधा कएलीह। भोजनक मात्रा आश्रयमे उपस्थित लोकक गिनतीसँ तय होएत। रघु नवल चाउरक बोराक मुँह खोलैत कहलनि, “राति बढ़त तँ आरो लोक अएत।” रुखसाना उत्तर देलीह, “अएत तँ खायतो; मुदा पहिने जे काज शुरू भेल अछि, ओकर समय के नहि काटत।”

दरवज्जाक पाछाँ कंचन एकटा खाली थारी उलटा कऽ कपड़ासँ पोछि रहल छलीह। काल्हि पाँच हस्ताक्षरक बाद रसोइ चालू भेल छल, मुदा पहिल भरल रातिमे कठिनाइ भोजनक मात्रा मात्र नहि छल। दुइ स्वयंसहायता-दल अपना-अपना पंजीमे कंचनक नाम चढ़ाबए चाहैत छल, ताकि दुनू अपन हिस्साक श्रम पूरा देखबए। कंचन थारी राखि कहलीह, “हम देह एकटा लऽ कऽ आयल छी। दू पन्नामे हमर आठ-आठ घण्टा लिखब तँ अहाँकेँ सोहाएत, हमरा सोलह घण्टा नहि भेटत।” रुखसाना एक पंजीपर हुनकर सही रखौलीह आ दोसरमे सहयोगक समयक सन्दर्भ, दोहर भुगतान नहि।

रसोइक सार्वजनिक कोठरीमे चन्द्रिका कागदक पाँच कॉलम बनबैत छलीह—सामग्री, बनल भोजन, बाँटल भोजन, बचेबाक मात्रा आ काम कएनिहारक घण्टा। पहिने सभक ध्यान पहिल तीन पाँतिपर जाइत छल। ओ खाली चौथ आ पाँचम पाँति देखाबैत कहलीह, “आइ जँ चूल्हि बाँचि गेल तँ काल्हि के जलाओत? जे लोक देरि धरि भाँड़ माँजत, ओकर नाम कतेय लिखल जाएत?” एक युवक फोटो खींचबाक लेल मोबाइल उठा लेलक। रुखसाना ओकरा बरामदामे रोकलीह। “खाना आ खाता देखाबू, थकानसँ भीजल ककरो चेहरा नहि। अनुमति बिना ककरो ने तस्वीर, ने नाम।” युवक मोबाइल नीचाँ कऽ पंजीक स्वच्छ प्रति माँगलक।

कड़ाहीक कात रघु ओहि दिनक चाउर अलग तौललनि जकर बिल गोदामसँ स्वीकृत राहत-सामग्रीक रूपमे आयल छल। दोसर तरफ किरण राउत अपन खेतक चिउड़ा आ कने साग लेने पहुँचलीह। ओ कहलीह, “ई हमर देल चीज नहि, ई आँगनक बटाइवालासभक हिस्सासँ बचल अछि। दाम जँ अभी नहि भेटय तँ तौल लिखि दियौ; काल्हि सभक राय लऽ कऽ हिसाब करब।” रुखसाना तौल तराजूक काँटा स्थिर होएबाक प्रतीक्षा कएलीह। फसलकें अनाम दान कहल गेल तँ बीहनक हिसाब के राखत? चिउड़ा अलग पावतीपर चढ़ल।

आश्रयमे रुहानी बिछौनाक कोठरीक दुआरपर हाथक लालटेन राखने छलीह। बरामदामे पानि नहि छल, मुदा पछिला कोनक देवालपर हलुक नमी चढ़ल देखाइत छल। एक स्वयंसेवक तीन परिवारकें ओही कोनमे सुलाए देबाक आग्रह केलक, किएक तँ सूखल कोठरीमे अब ककरो ठाम नहि छल। रुहानी बिछौना उठबैत कहलीह, “जतए देवालक भीतर पानि जाए, ओतए बच्चाक सिर नहि राखब।” ओ परिवारसभसँ पुछलीह जे के संग रहब चाहैत अछि, के अलग पर्दा चाहैत अछि। खिड़की लगक छोट ओसारामे दू बिछौना सरकल; तेसर परिवारक लेल विद्यालयक खाली बरामदा नापबाक प्रस्ताव उठल, तुरन्त सुरक्षित घोषित नहि भेल।

अनवरी अपन बेटी रेहानाक पयर नीचाँ मोड़ल कपड़ा रखि बैसल छलीह। बच्चीकें दवाइक घड़ी याद छल, मुदा रातिक पहारामे नवल नर्स रहत की नहि, से नहि बुझैत छलीह। सलमा शेख दवाइक नामक बदला पहिने पुछलीह, “तोहर दर्द एखन की हाल अछि?” रेहाना पयर हलुक घुमौलक आ मुँह बनौलक। सलमा ओकर मेडिकल पन्ना पढ़ि समय मिलौलीह। ओ नर्सक लग काजक सुपुर्दगी लिखबौलीह—पुरान पालीमे देल दवा, अगिला निरीक्षण आ परिवारकें देल जानकारी। “एक घड़ी छोड़ि दोसर घड़ीमे रोगी नहि हराए,” ओ कहलीह। अनवरीक हाथ कने ढील भेल।

फाटकपर तुलसी ताजपुरियाक दू गाड़ीक चाभी अलग कीलपर टाँगल छल। जमीरक पालि समाप्त भऽ रहल छल; ओकर आँखि रातिसँ लाल छल। आपदा-दलक कर्मचारी चाहैत छल जे गाड़ी तुरन्त घाट धरि जाउ, किएक तँ एक वृद्धकें नावपर चढ़एबाक अफवाह फैलल छल। तुलसी फोनपर हीरा सहनीसँ बात कएलीह। हीरा स्पष्ट कहलीह, “रातिमे

नियमित नाव बन्द। वृद्धक ठाम, हालत आ सुरक्षित भूमि-बाट पहिने पुष्ट करू।” तुलसी जमीरकें दोसर यात्रा लेल उठौलनि नहि। विश्राम-पंजीमे ओकर छुटबाक समय लिखि नव प्रशिक्षित चालकक उपस्थितिक सत्यापन कएलीह। जाँचक बिना चलब सहायता नहि।

नगरक संचार-कक्षमे शबनम मलिक तीन फोन एक संग बजैत देखलीह। पहिल आवाज कहैत छल जे छरकी टूटि गेल; दोसर आवाजमे केओ बतबैत छल जे बान्हक पाछाँक पानि ऊपर अछि; तेसरमे कोनो घटना नहि, केवल कियो घंटी बजाय कऽ काटि देलक। शबनम तीन अलग चिह्न लगौलीह—अपुष्ट सूचना, स्थल-जाँच अपेक्षित, आ सम्पर्क असफल। एक अधिकारी कहलक, “एके सूचना बना कऽ आपात घोषणा पठा दिअ।” ओ पूछलीह, “जँ कियो घर छोड़त, ओ कतए जायत? आ जँ सूचना गलत भेल तँ लौटबाक बाट के बताओत?” निर्णय भेल जे स्थान-निर्दिष्ट सावधानी भेजल जाए, बान्ह-भंगक घोषणा नहि।

गोपाल माझी घाटपर बाँधल नावक रस्सी सुनि रहल छलाह। तेज पानिमे रस्सीक खटखटाहट अलग सुनाइत छल। मधु केवट ओहि कात चप्पू उलटा राखि बैठल छलीह; हुनका आजक घाटभाड़ा घटल छल, मुदा रात्रिक पहराक मजदूरी लेल लिखित आदेश भेटल छल। ओ पुछलीह, “पहराक अर्थ की? लोककें घुराएब, कि अपवादमे पार कराएब?” हीरा दुनूकें सुनबैत कहलीह, “एहि पहरामे पहिल काज चेतावनी। विशेष बचावक निर्णय चिकित्सक, नाविक आ स्थलदलक साझा जाँचक बाद; एकाकी उत्साहसँ नहि।” मधु तखन अपन नावक गीला पाट पर लाल कपड़ाक निशान बाँधलीह, ताकि अन्हारमे ओकर उपयोग बन्द बुझाए।

गोपालक लग एक किशोर भीजल दौड़ि अएल। ओकर घर छरकीक दोसर कात छल; माय कहने छलीह जे साँझसँ पानि दू अँगुरि चढ़ल। ओ अपन अँगुरि देखबैत कहलक, “एतबे पानि लेल हम सभ बोरियाबिछौना उठा ली?” गोपाल ओकर पयर लगक कादो देखलनि। “तोहर देखल पानि महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कखन आ कोन निशानसँ नापलहुँ?” किशोर ठमकि गेल। मधु ओकर हाथमे छोट खड़िया देलीह। “घुरि कऽ दीवालपर समयसहित निशान लगा। नहि जँ सकह तँ ककरो संग लऽ जा। हम सुनल बातकें देखल कहि नहि लिखब।” ओकरा संग सुरक्षित धरती-बाट चिन्हनिहार दू व्यक्ति गेलाह।

अदिति अभियन्ता छरकीक नक्शा खोलि बैसलीह। काल्हि जलमापक पन्नामे तिलवाहक तीन समयक अंक छल; आजुक रातिक दू नव पाँति जोड़बाक छल। नगरक युवक कहलक जे पानि चढ़ब धीमा भेल अछि, तँ निकासीक पुरान मुँह खोलि देल जाए। अदिति ओकरा तारा बिनौटक लिखल टिप्पणी देखौलीह—ऊपरक सतह देखिकऽ भीतरक माटिक कटानक निर्णय नहि। ओ अपन पुरान ‘छोट मरम्मत’ निष्कर्ष वापस लेबाक पत्र याद कएलीह। गलती मानलासँ अगिला निर्णय स्वतः ठीक नहि होएत। ओ रातिक निरीक्षणमे सीमित बाहरी नापक आदेश देलीह, भीतर उतरबाक नहि।

तारा, शिव धाँड़ी आ सुगनी सदाय सुरक्षा-रस्सी देखैत बाहर निकललाह। शबनमक पर्चीमे लिखल छल जे पाछाँक नीचला टोला सँ शिकायत अएल अछि। शिव पूछलनि, “जतए पटरी फिसलैत अछि, ओतए चप्पल आ उजासक इंतजाम?” कर्मचारी चमकैत टॉर्च देखौलक; सुगनी कहलीह, “टॉर्च ककर हाथमे रहत, आ ओकर बाद काज के रोकत?” दल दूनू कातक चिन्ह धरि पहुँचि लौटबाक समय तय केलक। रातिमे माटिक मुँह नहि छुलल जाएत। बोरा ठेलबाक लेल बजाओल मजदूरसभकेँ प्रतीक्षाक समय सेहो पंजीमे चढ़ाओल गेल।

छरकीक दहिना कात जलक हलुक धारा बोराक बाहरी पाट छूइत छल, मुदा ओकर स्रोत अन्हारमे स्पष्ट नहि छल। तारा दू निशानक दूरी नापलीह, शिव सँ कहला जे पटरीपर भार नहि बढ़ाउ। पाछाँ ठाढ़ अधिकारी चाहैत छल जे फोटोमे ‘मरम्मत सम्पन्न’ लिखल जाए। सुगनी कहलीह, “आइ जे नहि छुलहुँ, ओकरा पूर्ण कहब तँ भोरक दल गलत भरोसा लऽ अएत।” ओ अपन नामसँ निरीक्षणक सीमा लिखबौलीह। गोपालक किशोर टोली लौटि कहलनि जे नीचला कातक देवालपर जलस्तरक निशान आधा अँगुरि ऊपर अछि। अदिति दुनू निरीक्षणकेँ एके समयक नाप मानि जोड़लीह नहि।

एहि बीच अस्पतालक पुरान धुलाईघरक छतसँ पानि फेर टपकल। उर्मिला साफ चादरक गठरी दूर हटौलीह आ दू अलग कोठरीक चाभी गनलीह। अनिरुद्ध हुनका सँ पुछलनि जे गोदामसँ छुटल सामग्रीक नव पेटी एखन कहाँ अछि। उर्मिला रसीद देखौलीह—स्वीकृत कपड़ा धुलाई-परीक्षणमे, औषधिक परीक्षण-समाप्त छोट हिस्सा उपचारक अलमारीमे, असमान लेबलवला गाँठ सीलबन्द। “गोदाम खुलबाक वाक्य आ रोगीक

काजक वस्तु एक नहि,” ओ कहलीह। अनिरुद्ध अपन पिछिला गलत उपलब्धता-सारक सुधार-पन्ना फेर देखलनि। आइ ओ मौखिक भरोसापर उपलब्धताक अंक नहि बढ़ौलनि।

देवव्रत गोदामक फाटक लग आएलाह तँ बगलमे कादो जमा छल। पहरेदार रातिक सूचीपर ओहि मालक गिनती देखाबए चाहलक जे काल्हि नियंत्रित ढंगसँ बाहर गेल छल। देवव्रतक सहायक आग्रह केलक जे निजी भण्डारक दोसर कोठरी खोलि किछु पानि-रोधक चादर निकालल जाए। रमा कर्ण ओहि कोठरीक सील देखिकऽ कहलीह, “एहि ताला संग पुरान निजी लेखाक प्रश्न जुड़ल अछि। आपातकाल लिखलासँ जाँचक पहरा उठत नहि।” देवव्रत उत्तर देलनि, “तँ बचावमे हमार सामग्री बेकार पड़ल रहत?” रमा सुझाव देलीह जे आपदाक लेल पहिले सँ स्वीकृत खुला भण्डारक जाँचल चादर मँगाओल जाए; सीलबन्द कोठरीक निर्णय अधिकारप्राप्त निरीक्षकक उपस्थिति मे हो।

देवव्रत एहि बातपर सहमत तँ भेला, मुदा हुनकर स्वरमे खिन्नता छल। ओ चाहैत छलाह जे आजुक सहायता तुरन्त देखल जाए। शबनम हुनका पाँच शर्तक प्रति देखौलीह। “अहाँक आजुक योगदानक सही समय लिखल अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एखन धरि जे निजी बही देखाओल नहि गेल अछि, ओकर विषय बदलल नहि। काल्हि निरीक्षकक सामने ओकरा अलग खोलबाक समय निश्चित करू।” देवव्रत पहरेदारसँ रातिक फाटक-बन्दक समय सही करौलनि। पुरान सीलपर नव धागा नहि चढ़ाओल गेल, न ओकरा हटाओल गेल। फाटकक भीतरक अन्हरिया जस्ते छल, मुदा बाहरी चबूतरापर वितरित चादरक गिनती मिलि गेल।

आश्रयक एक कोठरीमे बीमार बुजुर्गक नाती फोनपर घरवला लोककेँ बतबैत छल जे ‘सभ सुरक्षित’ अछि। रुहानी ओकरा अलग लऽ जा कहलीह, “एहन बात कहबासँ तोहर परिवार कने शान्त होएत, मुदा दोसर घरक लोक बुझत जे बाट खुलि गेल। अपना दादाक हालत आ अपना ठामक खबर देह।” युवक पुछलक जे सार्वजनिक सूचना मे की लिखल जाए। रुहानी बेंचक कात टाँगल पन्ना पढ़ौलीह—आश्रय खुलल, भीजल कोठरी बन्द, भोजन नियत पालिमे, रातिक नदी-पार बन्द, आपात चिकित्सकीय सम्पर्क चालू। ओ युवक अपन परिवारकेँ फेर फोन कएलक; एहि बेर ओकर आवाजमे कम विजयोत्सव, बेसी भरोसा छल।

रुखसाना रातिक दोसर देग उतारैत काल देखलीह जे वितरण-लाइनमे आखिरी तीन व्यक्ति चुपचाप पाछाँ हटि गेल छथि। हुनका डर छल जे नाम-पंजीमे नाम लिखेलासँ पुरान कर्जक आदमी हुनका खोजि लेत। रुखसाना भोजनक टोकनक अंक लिखौलीह, नाम नहि। रमा स्पष्ट कएलीह जे पात्रता-जाँचक गोपनीय अभिलेख अलग रखल जाए; रसोइक सार्वजनिक हिसाबमे केवल भोजनक संख्या, सामग्री आ श्रम रहत। एक परिचारिका फुसफुसा कऽ कहलीह, “पन्नामे नाम नहि रहत तँ हिसाब कोना मिलत?” कंचन थारी गनैत उत्तर देलीह, “भोजनक हिसाब भूखक नाम सँ नहि, वितरित थारीसँ मिलत।”

तखन छोट विवाद उठल—पाछिल पालिक रसोइमे बरतन धोअनिहार दू स्त्रीक घण्टा कम चढ़ल छल। अधिकारी कहलक जे राति बीचक आधा घण्टा विशेष भत्ता पाबए लेल लगातार कामक प्रमाण चाही। चन्द्रिका गीला बरतनक ढेरी देखबैत कहलीह, “खाना बाँटला सँ रसोइ बन्द नहि होइत। बरतन, पानी, राख, चूल्हि सब काज अछि।” रुखसाना घड़ीक समय, कंचनक गवाही आ पानि ढोअनिहारक पर्ची जोड़लीह। दूनू स्त्री अपन-अपन समय पढ़ि सुनौलीह; एक घण्टा नहि, चालीस मिनटक छूटल श्रम सुधारल गेल। भुगतानक आदेश अलग पन्नामे निकलल, छायाचित्रक पुरस्कारक रूपमे नहि।

रघु एक बेर पूछलनि जे एतेक हिसाब-किताबमे चूल्हि बुझेब तँ नहि पड़त। रुखसाना ओकरा लकड़ी उलटैत कहलीह, “काज आ हिसाब दुनू चलत। जँ रातिमे रोटी देब आ भोरमे रान्हनिहारकँ कर्जदार बना देब तँ ककरा बचौलहुँ?” रघु हँसि कहलनि, “तँ भोरमे हाँडीक संग बहियो माँजए पड़त।” कंचनक हँसी पहिने उठल, फेर लाइनमे ठाढ़ बच्चासभक। हँसी थकान नहि मेटौलक, मुदा अगिला देग लेल सब अपन जगह फेर पकड़ि लेलनि।

घाटक पहराक दोसर समयमे एक फोन अएल जे गामक कातक गर्भवती स्त्रीकँ अस्पताल पहुँचबाक आवश्यकता अछि। शबनम पहिने पता आ सम्पर्क पुष्ट कएलीह; अस्पतालक चिकित्सकसँ अवस्था पुछल गेल। नावक नियमित सेवा बन्द छल, मुदा जमीनक ऊँच बाटपर चिकित्सकीय गाड़ी पहुँचि सकबाक संभावना छल। तुलसीक प्रशिक्षित चालक छोट गाड़ी जाँचि तैयार केलक, आ गोपाल संग चलएवला स्थानीय मार्ग-दलकँ मोड़क बारेमे सचेत कएलनि। स्त्रीक परिवारक सहमति अलग दर्ज भेल। यात्रा शुरू

होएबाक समय सार्वजनिक सूचना मे नहि देल गेल; परिवारक इच्छानुसार चिकित्सकीय सम्पर्क मात्र खुला रहल।

गाड़ी भेजलाक किछु देरि बाद रमा फोनक प्रतीक्षामे बैसलीह। कोनो खबर नहि आएल तँ नगरक युवक अधीर भऽ कहलक, “हम सोशल माध्यमपर लिखि दिअ जे बचाव सफल।” रमा ओकरा रोकलीह। “गाड़ी निकलल, ई पुष्ट। पहुँचल, ई एखन अपुष्ट। सुरक्षित उपचार भेटल, ई तेसर तथ्या।” जखन चालकक फोन आएल तँ ओकरा आवाजमे श्वासक थकान छल; ऊँच बाटमे ओ गाड़ी रोकि परिवारकें चिकित्सकीय टोलीसँ भेटौने छल। अन्तिम चिकित्सकीय परिणाम एखन अस्पतालक लिखित सूचनापर निर्भर छल। रमा सार्वजनिक पन्नामे केवल पहुँचबाक पुष्टि दर्ज कएलीह, रोगिणीक नाम नहि।

एहि खबरसँ आश्रयमे लोककें कने आशा भेटल। रुहानी एकटा खाली कोठरीमे सुरक्षित सूखल गद्दा बिछबौलीह जे अस्पतालसँ घुरनिहार परिजन लेल राखल गेल। ओकरा संग कंचनक छोट भाय दुआरपर कागदक नाव बनबैत छल। ओ पुछलक, “हमर नाव ई पानिमे चलेत?” रुहानी ओ कागदक नाव सूखल थारीमे रखि कहलीह, “एतय चलत। बाहरक नदी पर असली नाविकक बात मानब।” बच्चा थारीमे कने पानि दऽ देखलक; नाव दू पल तैरि फेर भीजि चिपकि गेल। ओ फेर नव कागद माँगलक। कंचन ओकरा छोट पटरीक सूखल कागद देलीह, राहतक पर्ची नहि।

अदिति रातिक तेसर मापमे छरकीक बाहरी कातक पानी घटी रहल देखलीह, मुदा बान्हक पाछाँक खेतक जमा पानि यथावत् छल। एक अधिकारी ई खबर सुनिते कहल जे संकट टरि रहल अछि। तारा जवाब देलीह, “एक बिन्दुक घटल नाप पूरा बान्हक परिणाम नहि।” किछु किसान चाहैत छल जे भोरक पहिने कादो हटा कऽ निकासी खोलल जाए। किरण राउत, जिनकर बीहनक कियारीक कात पानि अटकल छल, खुद कहलीह, “हमर खेत बचे, मुदा दोसर गामक घर डूबे, एहि दर पर नहि।” निर्णय भेल जे भोरक उजासमे दूनू कातक खेत आ घरक माप एक संग होएत; रातिमे खोलल नहि जाएत।

नैरा संचार-कक्षक कोनामे बैसि पाँच हस्ताक्षरक सूचीक आगाँ घटना-समय मिलबैत छलीह। एक पन्नामे अस्पतालक दवा-प्राप्ति, दोसरमे गाड़ी-पहुँचक पुष्टि, तेसरमे रसोइक भोजन आ मजदूरी, चारिमे जलमापक अपूर्ण परीक्षण, पाँचममे गोदामक सीमित सुपुर्दगी।

ओ कागदमे एकटा पाँति जोड़लीह—‘जे काज सहमत भऽ शुरू भेल अछि, तकर सीमा आ अधूरापन अलग देखाओल जाए।’ नगरपालिका प्रतिनिधि वाक्य छोट करबाक आग्रह केलक। नैरा कहलीह, “छोट कए दियौ, मुदा अधूरा भाग मत काटू।” ओ एक छोट सार्वजनिक सार तैयार कएलीह, विस्तृत मूल प्रति रमा लग सुरक्षित राखलीह।

एखन मध्यराति बितल छल। शबनमक फोनपर समाचार अएल जे आश्रयक एक कोठरीमे ठाढ़ पानि देखल गेल अछि। रुहानी तुरन्त गेलीह; ओ देखलीह जे पानि बाहरक बान्हसँ नहि, छतक एक फाटल जोड़सँ टपकल छल। स्वयंसेवक एकरा ‘बाढ़ि आश्रयमे घुसि गेल’ कहबाक छल। रुहानी ओकरा भीजल टाटि देखौलीह। “छतसँ उतरैत पानि अछि, एहन हम देखलहुँ। बाढ़िक पानि भीतर पहुँचल अछि, ई नहि देखलहुँ।” बिछौना हटाओल गेल, कारीगरक अगिला निरीक्षण लिखल गेल, भीजल कपड़ा अलग सुखेबाक ठाम राखल गेल। लोक पहिने सूखल कोठरीमे पहुँचल, प्रतिवेदन बादमे लिखल गेल।

ओहि कोठरीमे रहल एक वृद्धा अपना घरक चाभी बटुएक भीतर टटोलि रहल छलीह। हुनका नाती कहलक जे घर बन्द अछि, चाभी एतय सँ राखि देबाक कोनो आवश्यकता नहि। वृद्धा कहलीह, “हमर दुआरक ताला हमर हाथे बन्द भेल। घुरब तँ हमर हाथे खोलब।” रुहानी हुनकर बटुएक लेल सूखल थैली देलीह; चाभी अपने रखबाक आग्रह नहि कएलीह। वृद्धा टटोलि देखलीह जे थैली नीक सँ बान्हल अछि, तखन नातीक काँधपर सिर टेका देलीह। घर घुरबाक दिन अनिश्चित छल, मुदा चाभीपर हुनकर अधिकार एखन छल।

भोरसँ कने पहिले रसोइक अन्तिम हाँडीमे खिचड़ी बचल छल। रुखसाना पंजीमे गिनती मिलौलीह; योजना सँ तीन थारी कम बाँटल गेल छल, किएक तँ तीन लोक अपन परिवारक लग गेल छलाह। शेष खिचड़ीकेँ काल्हिक ‘खर्च’ कहल गेल नहि। निर्धारित सुरक्षित समयक भीतर ड्यूटी-पहराक पाँच लोकक भोजन लेल ओकर प्रयोगक पर्ची बनल। चन्द्रिका अपन मजदूरी-सुधारक रसीद देखलीह—नाम, घण्टा आ भुगतानक तिथि स्पष्ट। ओ कहलीह, “काल्हि राति अहाँ चूल्हि बाँचौलहुँ, आइ हमर घण्टा बाँचल।” रुखसाना हँसलीह, “दूनु बाँचल रहए, तखन अगिला देग चढ़त।”

तुलसीक गाड़ी खाली लौटि अएल, मुदा चालक जमीरक विश्राम एखन पूरा नहि भेल छल, तँ ओकरा जगाओल नहि गेल। नव चालक देखौलक जे पहिल यात्राक बाद टायरमे माटि अटकल अछि। साफ कऽ, बत्ती देखिकऽ, ओ अगिला पालिक अनुमति लेलक। अस्पतालसँ सलमाक लिखित खबर अएल—रातिमे पहुँचल स्त्री सुरक्षित चिकित्सकीय देखरेखमे अछि; चिकित्सकीय परिणामक विस्तृत खबर परिवारक सहमतिक अनुसार दियएत। तुलसी एहि सीमित वाक्यक आधारे वाहन-दलक काज पूरा दर्ज कएलीह। शबनम सार्वजनिक सूचनामे रोगिणीक नाम, घर वा उपचारक अटकल नहि जोड़लीह।

गोपाल आ हीरा भोरक पहिल नाप लेल फेर घाटपर पहुँचला। अन्हारमे रस्सी कतेक कसि गेल छल, से हाथसँ देखलनि। पानि काल्हिक लाल निशान धरि नहि चढ़ल छल, मुदा नवल गाद एक ठाम जमा छल। हीरा एहि नापपर रातिक बन्द आदेश स्वयं समाप्त नहि कएलीह। “सूर्यक उजासमे दू ठाम पेंदी फेर देखब,” ओ कहलीह। गोपाल अपने हाथक पर्यीमे लिखलनि जे संकेत-दलक पहरा समयपर बदलल, नाव राति नहि चलल, आ दूनू कातक लोककें सूचना पहुँचलाक पावती भेटल। भोरक नव निर्णय अगिला जाँचपर निर्भर छल।

रमा पाँच हस्ताक्षरवला फोल्डर बन्द करैत काल देखलीह जे हर पन्नापर रातिक एकटा वास्तविक काम चढ़ल अछि, आ हर कामक कात कम सँ कम एकटा अपूर्ण प्रश्न अछि। देवव्रतक गोदामक निजी हिसाब एखन अधिकारप्राप्त निरीक्षणक प्रतीक्षामे, अस्पतालक भीतरक चुआन अपूरा, बाहाक पुरान मुँह बन्द, आ छरकीक नीचला टोला एखन चिन्तित। मुदा रसोइक स्त्रीसभक घण्टा दर्ज छल, गाड़ी सही बाटे गेल छल, रातिक नाव बन्द रहल छल, आश्रयक भीजल कोठरी खाली भेल छल। शबनम पुछलीह, “आइ के जीतल?” रमा उत्तर देलीह, “जे लोक अपना हिस्साक जिम्मा टारल नहि, ओ सभ एक राति टिकौलनि।”

पहिल धूपक पातर रेखा आश्रयक सीढ़ीपर पड़ल तँ कंचनक छोट भाय अपन कागदक नाव सुखेबाक लेल ओतए राखि देलक। रुहानी ओकरा मना नहि कएलीह; केवल कहलीह जे सीढ़ीक बाट खुला राखू। रुखसाना अपन कलमक ढक्कन बन्द कएलीह आ पाछाँक मजदूरी-पन्ना सूखल झोरामे रखलीह। नैरा रात्रिक सार्वजनिक सूचनाक एक प्रति दीवालपर टाँगलीह; पहिल पाँति छल—‘सहमत सेवा चलल, सुरक्षा-सीमा यथावत्।’

कोनो एकटा हस्ताक्षरसँ पानि रुकल नहि छल। मुदा एहि राति पाँच हस्ताक्षर पाँच अलग काजमे बदलल, आ अगिला निर्णय लेल ओहि काजक साँचो हिसाब बचि रहल।

अध्याय ११० • गोदाम खुलल

भोरक उजासमे गोदामक दोसर कक्ष खोलबाक लेल देवव्रत अपन चाभीक गुच्छामे सँ पीतलसँ कारी भेल छोट चाभी अलग कएलनि। पहिल कक्ष काल्हिए सीमित निरीक्षणमे खुलि चुकल छल; ओतयसँ जे सामग्री अस्पताल पहुँचल, ओकर प्राप्ति-पर्ची उर्मिलाक लग सुरक्षित छल। आइ प्रश्न दोसर कक्षक छल, जतय निजी खरीद, दानक आश्वासन आ व्यवसायिक आपूर्तिक सामान एक्के छतक नीचाँ राखल गेल छल। फाटकक माटिमे रातिक गाड़ीक पाङुरक निशान एखनहुँ भीजल छल। पहरेदार सरजू कहलनि, “भीतर चढ़ल पानि तऽ नहि, मुदा पाछुक दीवालसँ सीलन बढ़ल अछि।” देवव्रत पहिने दीवाल छुअलनि, फेर चाभी लगौलनि।

रमा कर्ण हुनका रोकलनि। “चाभी घुमेबासँ पहिने आजुक उपस्थितिक समय लिखि दिअ। निजी कक्ष अछि, तँ अहाँक स्वीकृति आ अधिकारप्राप्त निरीक्षकक उपस्थिति दुनू स्पष्ट रहबाक चाही।” देवव्रत कने तीखा स्वरमे पुछलनि, “हम अपनहि भण्डार खोलि रहल छी, कि अदालतमे अपन घरक दरवज्जा साबित करैत छी?” रमा जवाब देलीह, “घर खोलब अहाँक निर्णय। मुदा एक बेर कागद जाँचमे चलि गेल तँ के की देखलक, की नहि देखलक, ओहि बातपर काल्हि विवाद उठत। आजुक सहयोगक मूल्य तखनहि रहत जखन ओकर सीमा साँच लिखल रहत।” देवव्रत घड़ी देखलनि आ अपन नामसँ समय चढ़बौलनि।

भीतर माटिक तेल आ भीजल टाटसँ मिलल गन्ध छल। बाँसक मचानपर चादरक गठुर, जलरोधी कपड़ाक रोल, खाली कनस्तर, छोट रस्सी आ दू बन्द लकड़ीक पेटी राखल छल। देवव्रतक सहायक रमेश्वर कहलक, “एहि सभकेँ एक्के पर्चीमे राहत कहि दैत छी। ट्रक नहि पहुँचत तँ लोक कहत जे भण्डार खुललो कऽ खाली रहल।” उर्मिला ओहि समय अस्पतालसँ एलीह। ओ एकटा रोल खोलि किनारक भीजल धब्बा देखौलीह। “जतय रोगी लेटत, ओतए ई बिना साफ केने नहि देब। आश्रयक फर्शक लेल जँ जाँचमे ठीक अछि तँ अलग लिखू।” रमा तीन खण्ड बनबौलीह—तुरन्त उपयोगयोग्य, सफाई वा परीक्षणक बाद उपयोगयोग्य, आ जाँचाधीन।

देवव्रत पहिल बेर बारीकीसँ देखलनि जे अपनहि सामानक अलग-अलग भागक की दशा भेल अछि। ओ अपना सहायककेँ कहलनि, “दान लिखलासँ वस्तु साफ नहि भऽ जाइत अछि।” रमेश्वर उत्तर देलक, “मुदा माल बाहरे गेल तँ हानि हमर खाता पर चढ़त।” देवव्रत ओकर बात बीचमे नहि काटलनि। “हिसाब करब। मुदा पहिने जे योग्य अछि ओकर उपयोग निर्धारित करू। जखन एकटा चीजक मूल्य पर चर्चा अछि, दोसर कात एक परिवार छतक नीचे सूखल ठाम खोजि रहल अछि।” हुनकर एहि वाक्यपर उर्मिला तत्काल सहमति नहि देलीह। ओ कहलनि, “परिवार लेल सुरक्षित चीज चाही; जल्दी दान करबाक दृश्य नहि।” देवव्रत सिर नुका लेलनि।

गिनतीक बेला पहरेदार सरजू पाछाँ ठाढ़ रहलाह। पहिल पर्ची पर अठार जलरोधी रोल लिखल छल, मुदा मचानपर सत्रह भेटल। रमेश्वर कहलक जे अठारम काल्हि आश्रय गेल। रुहानीक रातिक प्राप्ति-पंजी मैगाओल गेल तँ ओतय अठारम रोलक बदला दू छोट तिरपाल दर्ज छल। ओहि घड़ी एक युवक मजाकमे कहलक, “एक रोल भागि गेल!” सरजू ओकरा ताकलनि। “जकर माल उठल तकर नाम लिखल होएत। हमर पहराक बीच जे उठल ओकर निशान हम बतायब।” ओ पहिल कक्षक निकासी-पर्ची निकाललनि। ओतय दू छोट तिरपाल स्पष्ट छल, मुदा अठारम रोल नहि। कमी ‘अनिर्णीत’ लिखल गेल; चोरीक आरोप नहि।

रमेश्वरक चेहरा उतरि गेल। “एहि तरहेँ प्रत्येक रोलपर अदालत बैसब तँ दिन भरि लगत,” ओ कहलक। रमा उत्तर देलीह, “चोरी नहि लिखल गेल; बिनु प्रमाण वितरण सेहो नहि। दुनू बात मे अन्तर अछि।” शबनम मलिक ओकरा बुझौलीह जे गोदाम खोलबाक तुरन्त उद्देश्य सामग्रीक उपयोग आ प्राप्तिक पारदर्शिता अछि, अपराधीक नाम खोजि कऽ तखने राहत देब नहि। सोना कठौतिया गाड़ी लऽ पहुँचलि तँ हुनका फरक लागल— काल्हिक ढुलाईक दाम रसीदमे छल, मुदा भुगतान एखन नहि। “आइ नव चादर ढोएबासँ पहिने काल्हिक भाड़ा के देत?” ओ पुछलीह। देवव्रत अपन सहायककेँ सार्वजनिक रसीदक आधारपर पहिल देयक भुगतान व्यवस्था करबाक निर्देश देलनि।

शबनम कहलनि, “एहि कक्षक सामग्री निजी अछि, मुदा समझौतामे जाँच-सहमति देल गेल अछि। जे वस्तु अहाँ राहत लेल देब चाहैत छी ओकर दानपत्र अलग हो; जे उचित

दामपर उपलब्ध कराएब चाहैत छी ओकर क्रयपत्र अलग। जाँचाधीन वस्तु एक्को प्रकारसँ चुपचाप एहि सूचीमे नहि आबि सकैत।” देवव्रत क्षणभरि चुप रहलाह। अपन धनसँ खरिदल वस्तु पर अपन अधिकार हुनका स्पर्श होइत छल, मुदा बितल रातिक आश्रयक भीजल छत सेहो याद छल। ओ अठार नहि, उपलब्ध सत्रह रोलक व्यक्तिगत परीक्षण करबाक अनुमति देलनि। “जे ठीक अछि, ओकरा हम दान करब; जे खराब अछि, ओकर दाम नहि लगाउ,” ओ स्पष्ट कहलनि।

तीन रोलक भीतरी परतमे फफूँदक पहिल धब्बा भेटल। बाकी चौदहमे सँ दू रोलक गाँठ कटल छल आ बारह ठीक अवस्था मे देखायल। उर्मिला कहलीह, “हुनका अस्पतालक उपचार-कक्ष लेल नहि। रुहानीक आश्रयक सूखल फर्श आ बाहरी परदाक आवश्यकता अलग देखल जाए।” तारा बिनौटकेँ बुलाओल गेल। ओ रोलक किनार पकड़ि रोशनीमे देखलीह, तखन कहलनि, “कपड़ा ठीक होइतो जँ छतक फाटल जोड़पर टाँगब तँ पानि भरि कऽ लोकपर खसत। परदा लेल बाँसक आधार नीक होय, छतक मरम्मत लेल ई उपाय नहि।” देवव्रत पुछलनि, “तँ दानक एकर उपयोग कोन?” तारा उत्तर देलीह, “जतय उपयोग सुरक्षित अछि, ओतहि दानक अर्थ अछि।”

निरीक्षणक बीच रमा निजी लेखाबहीक बात उठौलीह। देवव्रत अपन छातीक लग टँगल थैला पकड़लनि। “ई पन्नासभमे हमर कारोबारक ग्राहक, उधार, परिवारक दवा, आ लोकक निजी सहायता सभ अछि। एकरा सार्वजनिक कऽ देल जाए तँ लोकक जीवन खुलि जाएत।” नैरा ओतय रिपोर्ट लिखबाक लेल छलीह, मुदा ओ तखन कलम बन्द कएलीह। “हमरा लोकक नाम नहि चाही। मुदा जे सामग्री अस्पतालक पर्चीसँ जुड़ैत अछि, ओकर रसीदक शृंखला सत्यापित होएबाक चाही,” ओ कहलीह। देवव्रत पुछलनि, “अहाँ समाचारमे फेर हमर नामसँ हत्या जोड़ब?” नैरा उत्तर देलीह, “हम लाभ, भुगतान आ आरोपक सीमा लिखब। दोषक नाम प्रमाण बिनु नहि।”

निजी बहीक भीतर रङ्गीन सूतसँ बान्हल तीन पातर जिल्द छल। पहिल जिल्दमे बियाजपर देल निजी उधार, दोसरमे परिवहन आ थानक खरिद, तेसरमे सामाजिक सहायतालेल वस्तुक उठान छल। रमेश्वर दू जिल्द देखबए तयार छल, मुदा पहिल जिल्द नीकसँ कपड़ामे बाँधि राखय चाहैत छल। रमा स्पष्ट कएलीह जे अधिकारप्राप्त जाँच

अधिकारीक लिखित सीमाक भीतर मात्र सम्बद्ध पन्नाक प्रति बनत; असम्बद्ध निजी उधारक सम्पूर्ण सूची सार्वजनिक अभिलेख नहि बनत। देवव्रत निर्णय लेलनि, “मूल बही हमर सामने गनू क्रम लिखू, सम्बद्ध पन्ना अलग चिन्हू। सीलवला प्रति निरीक्षण अधिकारी राखत। जकरा अधिकार नहि ओकरा ई नामसभ नहि देखाउ।”

कर्मचारी सील राखबाक खाली लिफाफा लेने आयल। पहिल बेर रमा देखलीह जे लिफाफाक मुख नीचाँसँ गीला अछि। शबनम नवा सूखल लिफाफा मँगौलीह। देवव्रत आ निरीक्षक दुनू उपस्थिति-पन्नापर दिन, समय, पन्नाक आरम्भ-अन्त आ प्रतिक संख्या लिखलनि। मूल बही बिना संशोधन देवव्रतक पहारामे बन्द अलमारीमे रहत; निरीक्षण लेल चिन्हल पन्नासभक प्रति पन्ना-पन्ना मिला कऽ सीलबन्द सुरक्षित अभिरक्षामे राखल गेल। एकटा प्रति देवव्रतक प्राप्तिसहित ओकरा देल गेल, मुदा सार्वजनिक पाटीपर केवल ‘प्रति सुरक्षित; सामग्री परीक्षण शेष’ लिखल गेल। गोदामक फाटक लग भीड़ थोड़ेक उदास भेल—एहि कार्यक कोनो तमाशा नहि बनल छल।

दू पन्नाक मध्य एकटा असमानता देखायल। अस्पतालक पुरान आपूर्ति-सारमे जाहि पेटीक संख्या पूरा देखाओल गेल छल, निजी ढुलाई-पन्नामे ओकर प्राप्तिक आगाँ एक अपूर्ण अक्षर आ पाछाँक दिनांक छल। अनिरुद्धक पहिनुक स्वीकारोक्ति याद आयल— ओ वास्तविक प्राप्ति जाँचने बिना सारमे ‘उपलब्ध’ चढ़ौने छलाह। शबनम कहलीह, “एतय दू कागदमे समयक अन्तर सिद्ध अछि। एहि सँ कियो जानि-बुझि रोगीक वञ्चित केलक, से एखन सिद्ध नहि।” रमेश्वर पुछलक, “अधूरा अक्षर हमर लिखल मानि लेत?” निरीक्षक उत्तर देलक, “मूल लिखनिहारक पहिचान स्वतन्त्र जाँचक विषय अछि। जँ अहाँक गवाही चाही तँ अलग बयान देब।”

आश्चर्य ई छल जे एहि असमानताक बगलमे साफ हिसाबो भेटल। बितल महीनेक एक आपात रातिमे देवव्रत अपन धनसँ दवाई खरीदने छलाह आ ओकर प्राप्ति अस्पतालक मूल हस्ताक्षरसँ मिलि गेल। उर्मिला पन्ना देखिकऽ कहलीह, “ई सामग्री ओहि दिन वास्तवमे आएल छल। रोगीसभक उपचारमे उपयोग भेल।” देवव्रतक आँखि कने चमकल। “कम सँ कम ई तऽ मानल गेल,” ओ कहल। उर्मिला आगाँ जोड़लीह, “जतय सहायता सिद्ध अछि, हम ओकरा सहायता लिखब। मुदा एकटा सही रसीद दोसर पन्नाक

त्रुटि मेटबैत नहि अछि।” देवव्रत मुस्कुरेबाक प्रयास कएलनि, मुदा हँसी पूरा नहि भेल। हुनकर काजक इतिहास एखन एक रंगमे नहि समाइत छल।

भण्डारक पाछाँक दीवाल लग तारा आ अदिति पुरान नाली-मुँह धरि गेलीह। गोदाम खोलबाक समाचार सुनिकऽ किछु लोक मानि लेने छल जे आब जलनिकासी सेहो खोलल जाएत। मुदा मुँहपर खसि पड़ल पुरान ईंट, ऊपरक कंक्रीटक असमान थप्पी, आ भीतर घुसल गाद अलग समस्या छल। शिव धाँड़ी बाँसक छड़ी बाहरसँ गादमे गाड़ि देखौलक जे ऊपरक दू इंच मुलायम तहक नीचाँ ठोस अवरोध अछि। “एखन मजदूर उतरि जाएत तँ पाछाँसँ दीवाल ढहि सकैत अछि,” ओ कहलक। अदिति माप-पन्नापर ‘भीतर प्रवेश निषिद्ध’ फेर चढ़ौलीह। देवव्रत कहलनि, “हमर फाटक खोलब एहि मुँहक ताला नहि खोलैत।”

नगरक एक प्रतिनिधि आग्रह केलक जे दू फावड़ासँ ईंट हटाउ, फोटो खींचि दियौ, लोककेँ काम होइत देखाएत। तारा ओकर हाथमे रहल फावड़ा धरतीपर राखि देलीह। “तस्वीरमे छेद देखाएत, भीतरक माथापर भार नहि। जँ अहाँ खनन कराएब तँ पहिने सहाराक नाप, जमीनी आधार आ पानिक दूसरी निकासक हिसाब लिखू।” सुगनी सदाय एहि बातपर जोड़लीह, “हमर टोलीक नाम सूचीमे अछि, मुदा असुरक्षित मुँहमे हम उतरब नहि। पहिने बाहरी गादक सुरक्षित नमूना आ मजदूरी तय हो।” देवव्रतक सहयोगी झुंझलाएल, “ई सभ रोकि देत तँ पानि कहिया घटत?” सुगनी कहलीह, “मजदूरकेँ दबौने पानि जल्दी नहि उतरैत।”

ओही समय गोपाल माझी बान्हक कातसँ नाप लेने अएलाह। हुनकर पयरमे गादक मोट परत छल। ओ कहला जे नदीक बाहरी जल थोड़ घटल अछि, मुदा गोदामक पिछला पोखराएल पानि ओहि अनुपातमे नहि घटल। कियो एहि दोसर स्थिर पानिक मूल स्रोत तय नहि कएने छल। अदिति दू बिन्दुक नव माप जोड़लीह। शबनम पुछलीह जे एहि फर्कसँ गोदामक फर्श सुरक्षित मानल जाए? तारा फाटकक भीतरी ईंटक जोड़ देखौलीह। “फर्शक कात ढाल अछि, मुदा नीचाँ की रिक्तता अछि से हम नहि जनैत छी। भारी पेटी बाहर निकालबाक बाट तँ अगिले बारी बदलू।” सोना कठौतिया अपन गाड़ीक चक्का सुरक्षित ऊँच जमीनपर राखलनि।

गोदामक सामने रुखसाना राहत-रसोइ लेल चाउरक माप पूछबाक लेल एलीह। “काल्हि जे पर्ची आयल छल ओतय दस बोरा लिखल अछि। आइ रसोइमे सात बोरा पहुँचलक। तीन बोरा बाटमे अछि, की रोकल गेल?” देवव्रत अपन निजी बहीसँ उत्तर नहि देलनि; सार्वजनिक सुपुर्दगी-पंजी मँगौलनि। ओतय साफ भेल जे सात बोराक डिलिवरी भऽ गेल, दू बोरा काल्हि निरीक्षण-स्वीकृति लेल राखल, आ एक बोरा भीजि गेलाक कारण अलग कएल गेल। रुखसाना कहलनि, “तँ हमरा दस उपलब्ध नहि, सात उपलब्ध लिखू। रान्हनिहारक संख्या ओही हिसाबसँ तय करब।” ओ चाउरक कमी छिपेबाक बदला अगिला भोजनक मात्रा आ वैकल्पिक दालक प्रस्ताव स्वयं बनौलीह।

चन्द्रिका हुनका कात बैसि कागदक किनारमे छोट हिसाब लिखि रहल छलीह। रसोइमे राति जतेक लकड़ी खर्च भेल, ओकर बिल कारोबारीक नामपर छल; मुदा चूल्हि सरकाबए, भीजल बरतन सुखाबए आ जमीन साफ करबाक श्रमक अलग घंटा नहि चढ़ल छल। देवव्रतक सहायक कहलक, “गोदामक दानसँ रसोइ चलैत अछि; एहि अतिरिक्त मदसँ बजट बिगड़त।” चन्द्रिका ओकरा सीधा देखलीह। “दान चाउरक होइत अछि, हमर समयक नहि। हमर पाँच घंटा जँ कागदमे दू घंटा भऽ जायत तँ अगिला राति ककरा बोलाएब?” शबनम हस्ताक्षरित समझौताक चौथ शर्त देखौलीह। संशोधित पालि-पंजी तुरन्त बनल।

एकटा वृद्ध आश्रयवासी देवव्रतक लग आएलाह। ओ कहला, “अहाँ घरक बचल चादर दऽ रहल छी, नीक बात। मुदा हमर नतिनी राति ठंढसँ कँपल। ओकरा लेल एकटा सूखल चटाइ भेटत?” देवव्रत उत्तर देबासँ पहिने रुहानीक दिशि देखलनि। रुहानी बतौलीह जे आश्रयक भीतरक दू कोठरीमे छतक चुआन अछि, तें नवा फर्श-पट्टी केवल सूखल कक्षमे राखल जाएत। वृद्धक नतिनी स्वयं कहलक, “हम ओहि कोठरीमे नहि जाएब जतय छत टपकैत अछि। हमर किताब फेर भीजत।” देवव्रत ओहि बच्चीक किताबक किनारपर फाटल जिल्द देखलनि। ओ कहला, “तकर ठाम रुहानी तय करतीह, हम सामान देब।” हुनकर आवाज एखन पहिने सँ नरम छल।

दोपहरधरि निरीक्षक सम्बद्ध पन्नासभक नमूना, वस्तुक गणना आ सील-अवस्था लिखि चुकल छल। रमा देवव्रतकें समझौता-पत्रक पुरान वाक्य पढ़ौलीह—भण्डारक सुरक्षित

पहुँच उपलब्ध कराएब। “एहि वाक्यक अर्थ सम्पूर्ण गोदामकेँ निर्दोष प्रमाणित करब नहि छल,” ओ कहलीह। देवव्रत स्वीकार कएलनि, “हम काल्हि ई बात बुझि नहि पाओलहुँ। हमरा लगैत छल जे फाटक खोलिते आरोपक ताला सेहो खुलि जाएत।” रमा उत्तर देलीह, “सहयोगक मान अलग रहत; लेखा पर प्रश्न अलग। न्यायमे दूनूक ठाम अछि।” ओ एहि उत्तरपर किछु देर मौन रहलाह।

शेखरक मध्यस्थ कार्यालयक पुरान पर्चीसँ जुड़ल मालपर सेहो प्रश्न उठल। रमेश्वर आग्रह केलक जे एक्के ढुलाई-मध्यस्थक नाम सब ठाम भेटैत अछि, तें सन्दिग्ध गाँठक दोष अन्ततः देवव्रतपर नहि आबबाक चाही। नैरा कहलीह, “नहि, एहिसँ निर्दोषिता सेहो स्वतः सिद्ध नहि होइत। एक्के कार्यालयसँ वैध कपड़ा, औषधि आ निरीक्षणाधीन पेटी गेल अछि; प्रत्येक खेपक अलग मालक, चढ़ान, प्राप्ति आ सहमति देखबाक चाही।” शबनम स्पष्ट कएलीह जे महेशक हत्याक अलग जाँचक बयान-सूची एतय नहि खोलल जाएत। गोदामक निजी लेखामे जे सम्बन्ध भेटत, ओ केवल सक्षम जाँचकेँ उचित प्रक्रिया सँ उपलब्ध कराओल जाएत।

साँझसँ पहिने एक कर्मचारी निजी बहीक पन्ना मोबाइलमे खींचबाक चेष्टा केलक। देवव्रत हाथ बढ़ा ओकर फोन छीनलनि नहि; ओ निरीक्षककेँ बजौलनि। “हम प्रति देबाक स्वीकृति देलहुँ, ग्राहकक सब नामक फोटो घुमेबाक नहि।” निरीक्षक कर्मचारीकेँ फोनक उपयोग रोकबाक निर्देश देलक आ घटना अभिलेखमे लिखलक। नैरा अपन कापीमे एहि छोट दृश्यकेँ नोट कएलीह, मुदा निजी नाम नहि। हुनका बुझायल जे गोपनीयताक संरक्षण केवल ओहि व्यक्तिक ढाल नहि जेकरा पर प्रश्न अछि; ओहि ग्राहक, कामगार आ परिवारक सेहो अधिकार अछि जिनका जाँचक अर्थो नहि बुझाओल गेल। देवव्रत हुनकर मौन देखिकऽ पुछलनि, “ई बात लिखब?” नैरा कहलीह, “घटना, निजी नाम बिना।”

आश्चर्यसँ एक छोट समाधान तहिए भेटल। पिछिला रातिसँ अनिर्णीत अठारम रोलक खोजमे पहेरेदार सरजू पुरान तोल-पर्चीक पाछाँ छोट कागद भेटौलनि। ओतय रोलक एक भाग काटि दू छोट तिरपाल बनाओल गेल होएबाक कार्यशाला-पर्ची छल। मुदा पर्चीपर प्राप्तिक हस्ताक्षर अस्पष्ट छल। सरजू कहला, “तँ गायब नहि, रूप बदलल होएत।” उर्मिला उत्तर देलीह, “होएत, मुदा सत्यापन बिना मिलान पूरा नहि।” दुपहरक बाद

कारीगर कंचनक ममेरी भाय साक्षी दैत कहलक जे ओहि दिन ओ दू छोट तिरपाल सिलने छल; काटल भागक माप मिलल। कमी चोरीक सूचीसँ हटि ‘रूपान्तरित वस्तु—प्राप्ति-पुष्टि शेष’ बनल। सरजू राहतक साँस लेलनि।

एहि छोट परिवर्तनक असर देवव्रतपर अपेक्षासँ पैघ भेल। ओ अपन सहायकें कहलनि, “जँ हमरा बहीमे एकटा वस्तुक रूप बदलल आ लिखल नहि गेल, तँ एतेक बरखक हिसाबकें हम स्वयं कतेक भरोसामे राखि रहल छलहुँ?” रमेश्वर बाजए चाहलक, मुदा देवव्रत ओकरा दण्ड देबाक बात नहि कएलनि। ओ भण्डारक सभ कर्मचारी संग अलग बैठक निर्धारित कएलनि—पुरान प्रविष्टि मेटल नहि जाए, संशोधनक पाछाँ तिथि आ कारण जोड़ल जाए। कर्मचारीसभ एहि निर्णयक लिखित प्रति माँगलनि, ताकि काल्हि कोनो पदाधिकारी मौखिक आरोप नहि लगाबय। देवव्रत हुनका सभक माँग स्वीकार कएलनि।

दोपहर बीतैत तारा एकटा काठक अस्थायी पट्ट फाटकक कात लगौलीह। पट्टपर लिखल गेल—‘स्वीकृत सामग्रीक प्रवेश-निर्गमन एहि बाट; पुरान जलनिकासी-मुँहक कात प्रवेश बन्द’। युवकसभ पुछलक जे रातिमे बोर्ड पढ़ल जाएत की। शिव धाँड़ी लाल कपड़ाक फिता बाँधलनि आ सीमित बत्तीक व्यवस्था माँगलनि। सोना कठौतियाक गाड़ी फेर स्वीकृत बारह रोल लऽ आश्रय दिस चलल, मुदा आज ओकर चालक हाजिरी-पन्नामे अपन नाम आ पहिल भुगतानक प्राप्ति देखिकऽ चलल। देवव्रत गोदामक देहरीपर ठाढ़ एहि दृश्यकें देखैत रहलाह। ‘दान’ शब्द एखन हुनका लेल खाली उद्घोषणा नहि, पहुँच आ सुरक्षा सँ जुड़ल काज बनि रहल छल।

उर्मिला अस्पताल घुरबाक बेला दानक रसीदमे चिकित्सकीय अनुमति बिना एक्को उपचार-सामग्री दर्ज करब अस्वीकार कएलीह। देवव्रत कहला, “ठीक, जे आश्रयमे गेल, ओकरा अस्पतालक दान नहि कहल जाएत।” ओ पुछलनि जे काल्हि स्वीकृत चादरक धुलाई-परीक्षण पूरा भेल की। उर्मिला कहलनि, “कुछ थान धुलाई-योग्य; रोगीक शैय्यापर रखबाक अनुमति परीक्षणक बाद। एहि निर्णयक लिखित प्रति अहाँकें देब।” ओ अपन चाभीक गुच्छा झोरामे राखि लेलनि। एहि संवादमे दूनू पक्ष एक दोसराक कामक सीमा चिह्नि रहल छल; कोनो पक्ष चुप्पीक बदलामे एहसान नहि माँगलक।

साँझक सार्वजनिक सूचना तैयार करैत नैरा तीन पाँति लिखलीह—भण्डारक निजी कक्ष स्वेच्छासँ खुलल; उपयोगयोग्य वस्तुक सीमित वितरण शुरू; सम्बद्ध निजी लेखाक प्रति अधिकारप्राप्त निरीक्षण लेल सीलबन्द सुरक्षित। एकटा युवक ओहि पन्नाक ऊपर अपन मोबाइलमे ‘सभ गोदाम मुक्त’ शीर्षक लिखि देने छल। नैरा ओकरा सही शब्द देखौलीह। “सभ मुक्त नहि। सन्दिग्ध औषधि-खेप अलग सीलमे अछि, पुरान नाली-मुँह बन्द अछि, आ बहीक जाँच बाँकी।” युवक निराश भेल, मुदा बादमे ओहि सीमित समाचारकेँ साझा केलक। आश्रयमे रुखसाना एहि समाचारक संख्या मिलौलीह—रोल चलल, राशनक दावा नहि बदलल।

अदिति साँझक जलमाप करैत तारा लग पहुँचलि। पुरान मुँहक कात पानीक ऊँचाइमे मामूली अन्तर देखायल, मुदा भीतर ठोस गाद ओहिना छल। तारा कहलीह, “आइ गोदामक भाड़क बाट खुलल, मुदा पानिक बाट नहि। काल्हि नावक भारक बात फेर उठत, किएक तँ लोक आब राहतक सामानक लेल पार जेबाक माँग करत।” अदिति देखलीह जे घाटपर एक नावक कात लोक अपन थैला जमा करए लगल अछि, मानू सामान आ मनुष्यक वजन अलग नियमसँ चलत। ओ तुरंत हीरा सहनीकेँ समाचार पठौलीह—नावक पुरान क्षमता-परीक्षण बदलल जलस्तरमे फेर आवश्यक अछि।

राति चढ़िते देवव्रत निजी बहीक मूल जिल्द फेर कपड़ामे बाँधलनि। ओकर एक कोना फाटि रहल छल, तें रमेश्वर ओकरा सूखल डिब्बामे राखलक, मुदा कोनो पन्ना निकालल नहि गेल। देवव्रत आजुक सुपुर्दगीक रसीद आ सीलबन्द प्रतिक प्राप्ति साथ राखलनि। बाहर सरजू पहराक समय बदलि रहल छल। ओ पुछलक, “सर, काल्हि फेर खोलब?” देवव्रत कहलनि, “जकरा उपयोग चाही ओकरा लेल निरीक्षणक समय लिखि खोलब। जे जाँचाधीन अछि ओहि कोठरीक सील बिनु अनुमति नहि टूटत।” सरजू अपन पंजीमे ई वाक्य उतारि लेलक।

घाट दिससँ नावक लकड़ीपर रस्सी रगड़बाक मन्द ध्वनि अबैत छल। दिनभरि गोदामक भीतर रहल देवव्रत ओ ध्वनि सुनि चौकलाह। हुनका याद आयल जे सामानक रसीद कागदपर पूरा भऽ सकैत अछि, मुदा ओकरा मनुष्य धरि पहुँचेबाक बाट अपन अलग सीमा रखैत अछि। ओ फाटक बन्द कएलनि, एहि बेर बिना उद्घोषणाक। आश्रयमे बारह रोलसँ

बनल सूखल परदा लटका देल गेल छल; निरीक्षणाधीन औषधि अपन सीलमे छल; पुरान जलनिकासी-मुँह गादसँ अटकल छल। घाटपर हीरा सहनी रातिक पहरा बदलैत नावक खाली पेट देखैत छलीह, आ भोरक क्षमता-जाँच लेल अपन बाँसक नाप अलग राखि रहल छलीह।

अध्याय १११ • नावक क्षमता

भोरक माटिमे गाड़ल खूँटाक चारू कात रस्सीक महीन रेशा फैलल छल। हीरा सहनी खूँटाक फाँस खोलि फेर कसलीह, तखन नावक भीतरी पाटपर रातिक ओससँ बनेल चिकन धब्बा अँगुरीसँ छुलनि। गोदामक दोसर कक्ष खुललाक समाचार सुनिकऽ घाटपर लोक सामान्य दिनसँ पहिने जुटि गेल छलाह। ककरो काँधपर सूखल चादर, ककरो हाथमे अनाजक बोरा, आ एक परिवारक लग अस्पतालक पर्ची छल। एक युवक ठाढ़े घोषणा कऽ रहल छल, “काल्हि गोदाम खुलि गेल, आइ नाव भरि कऽ चलत। पाँच सहीक मतलब एतबे तऽ भेल!” हीरा खूँटा छोड़ि ओकरा देखलीह। “पाँच सहीमे नदीक वजन घटेबाक शर्त कतए लिखल अछि?”

घाटक माथपर मधु भाड़ा-पंजी पसारि ठाढ़ छलीह। पहिल नावमे चढ़बाक लेल सात लोक अपन नाम लिखवा चुकल छलाह, मुदा ओकरा कात राखल चारि भीजल गठरीक मालिक अलग ठाढ़ छलाह। मधु पुछलीह, “एहि गठरीक संग के जाएत?” तीन जन एक्के बेर हाथ उठा देलक। “गठरीक कियो मालिक नहि लिखत तँ नावक भार कम नहि होएत,” ओ बजलीह। हीरा रेखा खींचि यात्रीक नाम, सामानक अनुमानित भार आ नाविकक स्थान तीन अलग खण्डमे रखबौलीह। एक अघेड़ आदमी कुढ़ि कऽ कहलक, “बच्चाकेँ एक आदमी मानैत छी?” हीरा उत्तर देलीह, “बच्चा पानीमे डूबि गेल तँ आधा श्वास लैत अछि की?”

तिलवाहक धार काल्हिक समान नहि छल। किनारक रेत पयर धरिते भीतरसरकैत छल; पानिक ऊपर चकमक उजास छल, मुदा नीचाँ लग्गी दू बेर एक्के ठाम नहि अटकल। गोपाल माझी तीन बिन्दुपर चिह्न लगौने अएला। पहिलमे गाद ढील छल, दोसरमे पाट स्थिर, तेसरमे पुरान कटानसँ नाव घुमेबाक जगह घटल। ओ हीराकेँ कहला, “जँ फाटकसँ अएल गाड़ी वाला बोरा सब एतय एके बेर उतारत, तँ भीड़ नाव पर नहि, घाट उतरबाक पटरी पर पहिने संकट बनत।” हीरा मधुकेँ उतरबाक सीमा अलग बाँधबाक कहलनि। घाटपर खड़ा रहबो सुरक्षित गिनतीक हिस्सा बनल।

नगरक कर्मचारी टीनक एक पट्ट लऽ अएल। ओकरा ऊपर मोट अक्षरमे लिखल छल —‘राहत-नाव, सभ लेल तुरन्त सेवा’। हीरा पट्ट पढ़ि पूछलीह, “सभ लेल कोन समय? तुरन्त कहबाक आधार?” कर्मचारीक लग कार्यालयक हस्ताक्षर छल, पर नावक आजुक परीक्षण नहि। शबनम मलिक ओकरा बुझौलीह जे सार्वजनिक सूचना सहमति बतबैत अछि, सुरक्षित भार प्रमाणित नहि करैत। कर्मचारी खिन्न भेला। “लोककें रोकि देब तँ भीड़ हमरे कार्यालयपर चढ़त।” हीरा कहलीह, “भीड़ आबि सकैत अछि। पानी नाम पूछिकऽ नहि चढ़त।” रमा पट्ट उलटा रखबौलीह, जाधरि वास्तविक सेवा-सीमा लिखल नहि जाए।

पाटीपर परीक्षणक तैयारीमे श्याम मल्लिक पुरान लकड़ीक जोड़क बीच पातर छेनी धरा रहल छलाह। ओ पहिने नाव खाली करबौलनि; पानी निकाललाक बादो एक कोनामे ओसारल भीजपन रहि गेल। श्याम लकड़ीक जरा पर कने चोट दऽ ध्वनि सुनलनि। ललित विश्वकर्मा लोहेक पट्टीक जंग चाकूसँ साफ कएने छलाह, मुदा ओ नव रङ्ग पोतबाक प्रस्ताव रोकलनि। “दरार ढाँकबाक पहिने देखब,” ओ कहला। हीरा नाविकसभकें बुझौलीह जे परीक्षण लेल नियन्त्रित स्थान आ प्रशिक्षित निरीक्षण आवश्यक अछि; यात्रीकें नमूना-बोझ बना कऽ नावक क्षमता नहि परखल जाएत।

आगाँक तौलक लेल बाँसलट्टा, अंकित बोझाक बोरा आ लिखल पंजी जुटल। नाव किनारक नियन्त्रित शान्त भागमे सुरक्षित बान्हल गेल; निरीक्षक तारा बिनौट प्रत्येक चरणक बाद काठक जोड़, किनारसँ पानीक दूरी आ नावक संतुलन देखलीह। गोपाल आजुक धारा, पवन आ पेंदाक स्थिति अलग दर्ज कएलनि। पहिले बिनु बोझा, फेर क्रमसँ निश्चित परीक्षण-भार रखल गेल। एक युवक पूछलक, “एतबा बोरा उठि गेल तँ दस आदमी तऽ निश्चिन्त!” तारा बोरा उतरबैत कहलीह, “बोरा ठाढ़ नहि होइत, डरि कऽ एक कात दौड़ैत नहि। परीक्षणक परिणामक उपयोग कतेक होएत, से निरीक्षक लिखताह, अहाँक उत्साह नहि।”

पहिल निरीक्षणमे जे नावक पाट परसाल धरि मजबूत बुझाइत छल, ओकर पछिला जोड़ बोझ उतरौलाक बाद थोड़ देरि रिसैत रहल। श्याम ओहि ठाम औजार धरतीपर रखि देलनि। “ई नाव फेरासँ बाहर,” ओ कहलनि। ओकर मालिक तिलमिला गेल। “एतय ठाढ़

रहिते हमर दिनक कमाइ कतए जायत?” मधु ओकर दैनिक नाउकियाक पहरा आ निरीक्षण-सहायताक दरक पुरान निर्णय देखौलीह। हीरा कहलनि, “मरम्मतिक अलग मोल अछि, रोकल नावक मालिकक अलग हानि अछि। मुदा ओकर घाटा यात्रिक माथ पर राखि ओकरा नदीमे पठाएब हमरा अधिकारमे नहि।” मालिक चुपचाप भीजल जोड़ैकें ताकए लगल।

एहि बीच केशरी बीन अपन पुरान नावक आधा सूखल चप्पू कन्हापर लेने अएला। हुनकर नाव घाटसँ दूर बेढ़सँ बान्हल छल; अगिला किनारमे लम्बा फाट छल, जाहि ठाम पुरान कपड़ाक पट्टी आ तारक अस्थायी गाँठ देखाइत छल। केशरी ओकर उपयोग एखन रोकने छलाह। हुनका हाथमे दू कागद छल—एक खरीदारक प्रस्ताव, दोसर ललितक अपूर्ण मरम्मति-अनुमान। ओ पट्ट पर राखि कहला, “बेचि देब तँ आजुक कर्ज उतरि सकैत अछि। नहि बेचब तँ एहि काठपर हम आ दोसर परिवारक रोजी दूनू टिकत, मुदा मरम्मतिक पैसा कोन बाटे अएत?”

खरीदारक प्रतिनिधि नील कपड़ाक थैला लऽ प्रतीक्षामे छल। ओ कहलक, “अहाँक नाव एखन चलबाक लायक नहि। हम एक्के दाम दैत छी, काठ निकालि काममे लगा देब। कागद आइ लिखू, नगद आइ भेटत।” केशरी पुछलनि, “तखन जे पुरान घाटपर मरम्मतिक उधार अछि, ओ दामसँ कटत की अलग रहत?” प्रतिनिधि स्पष्ट उत्तर नहि देलक। ओ दोसर पतरी बढ़ौलक, जाहिमे नावक संग चप्पू, बाँस, रस्सी आ घाटक छोट आवागमन-अधिकार सेहो एके वस्तुक रूपमे लिखल छल। केशरी ओहि पन्ना अलग कएने कहला, “नावक काठ हमर अछि, मुदा घाटक बाट हमर बेचबाक सम्पत्ति नहि।”

ललित हुनका संग पुरान काठक बेंचपर बैसला। “हम पहिने अहाँकें एक कुल अनुमान देने रही,” ओ कहला, “मुदा ओहिमे इनारक जंगला संग अनल लोहेक साझा गाड़ी-भाड़ा मिला गेल छल। आइ फेर अलग करब।” ओ तीन खण्ड बनौलनि—काठ, धातुक कसनी, अनुभवी हाथक मजदूरी। केशरी कहला, “हम अपन श्रम लिखेबासँ बचैत रही। लोक कहत, नावो तोहर, मजदूरी सेहो तोहरे?” ललित उत्तर देलनि, “काठक मालिकानासँ काठ जोड़ेबाक समय मुफ्त नहि भऽ जाइत अछि। मुदा जे काम अहाँ नहि करब, ओकर श्रेय अहाँक नामपर नहि चढ़त।”

घाटक लाइन लम्बा भेल। एक स्त्री दवाइक पर्ची देखौलीह; ओकर दवा चिकित्सालयसँ पठाओल गेल छल, मुदा घरक दुसर पार पहुँचेबाक व्यवस्था अपूर्ण छल। ओ कहलीह, “हमर बेटा रातिभरि जागल अछि। हमरा एखने लऽ चलू।” सलमा शेख पर्ची देखिकऽ चिकित्सालय फोन कएलीह। दवा साधारण उपयोगक छल; रोगीक पहिचान आ सुरक्षित घर-पहुँचेबाक विकल्पक पुष्टि बाँकी छल। हीरा कहलीह, “एहि नावमे ओहि फेराक स्थान एखन पूरा अछि।” स्त्रीक आँखि भरि अएल, मुदा ओ किछु कहबाक बदला पर्ची कसि धरलीह। सलमा तकरा ऊपरी धरती-बाटक गाड़ीक समय पता कए देलीह।

एक युवक ई दृश्य मोबाइलमे देखबए चाहलक। “बीमारक माँकेँ नाव नहि भेटल—लोक देखत तँ अधिकारी सुनत,” ओ कहलक। स्त्री कैमरा दिस पीठ घुमा देलीह। नैरा ओकर हाथसँ फोन नहि छीनलीह; शान्त स्वरमे कहलीह, “अहाँ चाही तँ घाटपर सेवाक संख्या आ प्रतीक्षाक समय देखाउ। हुनकर चेहरा बिना अनुमति नहि। शिकायतक तथ्य सेहो पूरा लिखू—नावमे सुरक्षित स्थान नहि छल, वैकल्पिक गाड़ी खोजल जा रहल अछि।” युवक मन मारि फोन नीचाँ कएलक। ओहि स्त्रीकेँ कतहु कथा बनि जाइत देखल पसिन्न नहि छल; ओकरा केवल दवा घर पहुँचेबाक छल।

आब हीरा सभकेँ दूरी बना गोल ठाढ़ होबाक कहलनि। ओ लिखलनि—आजुक जलस्थिति, जाँचल नाव, सीमित फेरा, नाविकसहित स्वीकृत अधिकतम यात्री-संख्या, सामानक अलग भार आ बीच बाट यात्रा रोकबाक संकेत। एक नावपर सामान्य आकारक चारि वयस्क समाउत एहन पुरान अनुमानकेँ ओ अस्वीकार कएलीह; वजन, आयु, सामान, जलस्थिति आ नावक वास्तविक परीक्षण-संस्तुति संगहि संख्या तय होएत। अधिकारी पुछलनि, “तँ आम लोककेँ कोन अंक बताउ?” हीरा कातमे लिखल आजुक निर्दिष्ट अंक देखौलीह। पहिल नावमे नाविक समेत पाँच व्यक्ति, दोसरमे चारि, तेसरमे तीन; संगक सामानक भार अलग जाँचि सीमित रखबाक निर्णय छल। “ई एहि नाव आ एहि घड़ीक सीमा अछि; बाँकी सभ नावक एक्के नियम नहि।”

मधु यात्रीसभकेँ एक-एक कऽ बजौलीह। छोट बच्चा अपनी मायसँ चिपकल छल; माय चाहैत छलीह जे ओकरा गोदीमे राखि लेबाक कारण ओकर नाम अलग नहि चढ़य। हीरा मायसँ बच्चा लेल सुरक्षित बैसबाक ठाम पूछलीह। “गोदीमे रखने पानि पर नाम मेटि नहि

सकैत छी,” ओ कहलीह। बालक घाटपर राखल बेलन-जकाँ गोल रस्सी देखिकऽ पुछलक, “ई साँप अछि?” मधु हँसलीह। “ई रस्सी अछि; साँप होइत तँ एतेक ठाम बान्हल रहबाक बात नहि मानैत।” बच्चाक मुँहपर कने हँसी अएल। ओकरा अगले सुरक्षित फेरामे मायसहित स्थान भेटल; प्रतीक्षा अन्त नहि, क्रम बदलल छल।

केशरी अपन नावपर हाथ फेरि घाटक पाछाँक छोट कार्यशाला दिस बढ़लाह। ओतय श्याम, ललित आ उषा राम छोट-छोट काजक अलग नमूना रखैत छलाह। केशरी बेचबाक प्रस्तावक पन्ना सबकें देखौलनि, मुदा दाम सुनि तुरन्त मत नहि माँगलनि। “हमर एक शर्त अछि,” ओ कहला, “ई नाव सामूहिक मरम्मतिसँ चलत तँ रोजीक हिस्सा कोना बाँटल जाएत, पहिने लिखू। नहि तँ मरम्मतिक नामपर हम अपन नावो गमाएब आ दूसरक मुफ्त मजदूरीक कर्जदारो बनब।” हुनकर आवाजमे डर छल, लज्जा नहि।

श्याम काठक भीतरी भाग देखबाक सीमा निर्धारित कएलनि। एक हिस्सा फेर उपयोग योग्य, दोसर पुरापुरी बदलए पड़त; लोहेक पुरान कीलमे किछु जंग स्पष्ट छल। उषा कहलीह जे चमड़ाक लचील बन्धनक नमूना ओ देतिह, मुदा सुरक्षित नावक मूल काठक दरारक बदला चमड़ा नहि चलत। ललित धातुक कसनीक सही दाम लिखलनि। केशरी पुछलनि, “जँ सब पैसा एखन नहि भेटत?” मधु सामुदायिक आपात मरम्मति कोषक छोट रकमक हिसाब निकाललीह। कोषक सहायता आ निजी ऋणक सीमा अलग छल; कियो नावक मालिकाना बदलबाक बिना निर्णय नहि करि सकैत छल।

एहि लेल साँझ धरि नहि, दुपहरहि छोट खुलल बैठक भेल। मरम्मतमे हाथ देनिहार प्रत्येक कारीगर अपन मजदूरीक दर कहलनि; नावक भावी आयसँ कतेक हिस्सा मरम्मत-ऋण चुकत, ओकर स्पष्ट लेखा बनल। केशरी कहलनि, “हम कहैत छी जे नाव न बेचब, मुदा हम छह मासक कमाइ बिनु हिसाब जँ देब तँ ई स्वामित्व कागदे पर बचत।” रमा पंजीमे अग्रिम भुगतान, शेष देय आ ऋण चुकलाक बादक अधिकार अलग पाँतिमे लिखलीह। खरीदारक प्रतिनिधि फेर आएल, कहलक, “नगद छोड़ि कागदक जंगलमे पड़ि गेलहुँ।” केशरी पहिल बेर बिना घबराए उत्तर देलनि, “नगद हमरा चाही, मुदा नावो चाही।”

मरम्मतिक सामूहिक निर्णय लिखित भेल, मुदा नाव तुरन्त नदीमे उतारबाक अनुमति नहि भेटल। परीक्षण, काठक सूखबाक समय, बाँधनक जाँच आ बदलल जलस्तरमे पुनः

स्वीकृति बाँकी रहल। केशरी बिक्री-पत्र पर सही नहि कएलनि; बदला मरम्मत-आदेश पर अपन नामसहित कारीगरसभक मजदूरी लिखलनि। ओ चप्पूक चिकन हत्था पकड़ि ठाढ़ रहलाह, मानू एहि लकड़ीक लम्बाइमे हुनकर पुरान रोजीक समय अटकल अछि। खरीदार थैला उठाकऽ चलि गेल। ओकरा जायबामे न विजयक नगाड़ा बजल, न सभक सहमति; घाटपर किछु लोककेँ एखनहुँ लगैत छल जे बेचि देब सरल छल।

केशरीक थैलामे एकटा पुरान दुलाई-पर्ची छल, जाहिपर ‘बलुआहा’ लिखल छल। नगरक युवक एकरा देखिकऽ कहलक, “तँ ई नाव तिलवाहसँ बलुआहा होकर अबैत छल, ओहि मार्गकेँ नक्शामे जोड़ि दैत छी।” केशरी तुरन्त रोकलनि। “ई नाम हमर पुरान काठक खरिद-भाड़ाक पर्ची पर अछि। एहि शब्दसँ एतय नदीक मिलन सिद्ध नहि होइत। काठ कतए सँ अएल, ओहो पूरा पुछबाक अछि।” रमा पर्चीक तारीख, लिखित नाम आ विक्रेताक पहचानकेँ जाँचाधीन सन्दर्भक रूपमे उतारलीह। बलुआहाक नाम कथा मे अएल, मुदा नदीकेँ कागदक अनुमानसँ नवा बाट नहि देल गेल।

गर्मी बढ़िते घाटपर ठाढ़ लोकक स्वर फेर उठल। स्वीकृत फेरा कम छल, थारीक राशन पहुँचएबाक हड़बड़ी बेसी। रुखसाना एक बालटी पानि आ दूटा खाली थारी लऽ एलीह। “भोजनक समय पीछे सरकल तँ हम आगि कतेक बेर धरिकेँ राखू?” ओ पुछलीह। सोना कठौतिया उत्तर देलीह जे ऊपरी बाटक पहिल हलुक खेप अनुमत सीमामे पहुँचि चुकल; दोसर लेल किरण राउतक खेतक मेड़पर फेर नाप अनिवार्य अछि। रुखसाना कहलीह, “ठीक, खाना देरीसँ बनत, मुदा देरीक हिसाब सबकेँ सुनाउ।” घाटपर एकटा सार्वजनिक सूचना टाँगल गेल—जे सामग्री धरती-बाटसँ जाएत से नावक फेराक गिनती नहि खाएत।

दुपहरक पहिल स्वीकृत नाव छुटल तँ घाटपर असामान्य सन्नाटा भेल। नाविक प्रशिक्षणक अनुसार सभकेँ अपन ठाम बैसौलनि; बीच धारा उठिकऽ फोटो खींचबाक अनुरोध अस्वीकार भेल। गोपाल कातसँ संकेत देलनि, हीरा नजरसँ पाटक एक कातक दूरी देखैत रहलीह। पार पहुँचि नाव फेर खाली लौटि अएल। एक युवक जयकारा देबाक भेल, मुदा हीरा पहिने नावक तल्ला आ रस्सीक घिसन जाँचबौलनि। जाँचक बाद ओ कहलनि, “एक सुरक्षित फेरा भेल। एहि बातसँ अगिला फेरा स्वतः सुरक्षित नहि भऽ गेल।” संकेत-दलक वृद्ध मल्लाह चप्पूकेँ अंगुरीसँ छुड़ कऽ सहमति देलनि।

दोसर फेरासँ पहिने हवा अचानक तिरछी उठल। दूरक पानीक ऊपर पातर सफेद रेखा बनल। हीरा नवा माप तकलकनि आ स्वीकृत संख्या यथावत् रखबाक बदला फेराक समय रोकलीह। अघेड़ व्यक्ति जे भोरमे झगड़ा कएने छलाह, हुनक आवाज फेर सुनायल —“एतबा जाँचमे तँ साँझ होएत। नाव एतए पड़ल अछि, लोक एतए ठाढ़ अछि!” हीरा हुनक लग चलि गेलीह। “अहाँक देरी हम कम बुझैत नहि छी,” ओ कहलीह, “मुदा जखन पवन बदले, हमर लिखल अंको फेर विचार माँगैत अछि।” ओ पेंदीक गतिमे बदलाव देखौलीह। आदमी पहिने आँखि घुमौलनि, फेर कातमे खड़ा अपन बालककेँ देखिकऽ चुप भेला।

किछु लोक घाट छोड़ि ऊपरी धरती-बाट दिस बढ़ला; ओतय सेहो प्रत्येक घरक मेड़क सहमति आ गाड़ीक सुरक्षित अवस्था आवश्यक छल। तुलसी ताजपुरिया फोनपर स्पष्ट कएलीह जे अस्पतालक आरक्षित गाड़ीकेँ सामान्य सामानक ठेला नहि बनाओल जाए। मदन राउत विद्यालयक बच्चासभक लौटबाक समय देरीसँ बदललनि आ अभिभावककेँ अलग सूचना पठौलनि। ई फेर-बदल किसी एक नेताक जीत नहि, अनेक छोट व्यावहारिक असुविधाक स्वीकार छल। नैरा अखबार लेल लिखबाक पन्नामे कोनो ‘चमत्कारी पारगमन’ शीर्षक नहि राखलीह। ओ समय, रोक आ वैकल्पिक सेवा तीनू लिखलीह।

हीराक लग श्यामक पुरान साथी अएला, जे लकड़ीक टूटल पाट देखिकऽ डरैत छलाह। तखन हीरा एक पुरान मरम्मतिक बात कहलनि। कतेको बरख पहिने बरखा उतरलाक बाद हुनका लगैत छल जे नाव एकदम नीक भऽ गेल। श्याम रातिभरि काठ सुकौने, जोड़ कसने छलाह; भोरमे हीरा खाली नाव लऽ पहिल परीक्षणमे गेलीह। बीचमे एक पातर आवाज उठल, जकरा हीरा पहिने चप्पूक छप-छप बुझने छलीह। ओ तुरन्त घुरलीह, आ देखलनि जे काठक किनार भीतरसँ फाटि रहल छल। “लोक कहैत रहल जे सफल मरम्मत छल,” हीरा कहलनि, “हम कहैत छी जे सफल बात छल समयपर घुरि अएनाइ।”

केशरी कथा सुनि कहला, “तखन हमर नावक मरम्मत भेलो पर जँ फेर वापस करए पड़ल?” हीरा उत्तर देलीह, “तँ वापस करब। मरम्मत सफल तखने जखन ओकर खराबी देखिकऽ रोकबाक अधिकारो बचल रहय।” केशरी हँसला, “एहि तरह हमर नावकेँ घुरबाक काज बेसी भेटत।” श्याम हँसि कहला, “कम सँ कम मरम्मतिक पैसा लेबासँ पहिने दोष

सुनबाक कान बचत।” किछु घड़ी लेल कतारक कठोर चेहरा नरम भेल। कहानीक अन्तमे कोनो नया सुराग नहि निकलल; लोक केवल बुझलक जे नाविकक नकार नहि, अनुभवक दोसर नामो होइत अछि।

साँझ ढलैत दवाइ-पर्चीवाली स्त्री घुरि एलीह। हुनकर बेटा सुरक्षित धरती-बाटसँ दवा प्राप्त कऽ चुकल छल; ओ एहि बातक पावती सलमाकेँ दैत छलीह। “हम भोरमे बहुत राग कएलहुँ,” ओ कहलीह। हीरा उत्तर देलीह, “राग केनाइ अपराध नहि। हमरा कारण स्पष्ट कहबाक जिम्मा अछि।” स्त्री पूछलीह जे काल्हि नाव चलत की। “काल्हिक पानि काल्हि नापब,” हीरा कहलीह। स्त्री एतबा उत्तरसँ सन्तुष्ट नहि छलीह, मुदा ई बुझि गेलीह जे अपुष्ट आश्वासनसँ कम सँ कम हुनकर बेटाक औषधि देरीक कारण बुझल नहि रहि जाएत।

रमा दिनक पंजी मिलौलीह। स्वीकृत फेराक संख्या, रोकल फेरा, मरम्मत लेल हटाओल नाव, आ सहायता-नावक अलग स्थिति लिखल गेल। एक सरकारी प्रतिनिधि पुछलनि जे नाव कम चलल तँ बजटक बचत देखाओल जाए? मधु रोकलीह। “पहरा, परीक्षण, रस्सी, जाँच, नाविकक सुरक्षित प्रतीक्षा—एहि सभक लागत अछि। जे नाव नहि चलल, तकर समय शून्य नहि।” अधिकारी पन्ना घुमा कऽ देखलनि। रमा ओकरा दिनक भाड़ा आ मरम्मतिक सार्वजनिक भुगतानक अलग अनुच्छेद पढ़ौलीह। ‘बचत’ लिखबाक पूर्व वास्तविक खर्चक हिसाब दऽ देब आवश्यक ठहरल।

केशरी अपन मरम्मत-आदेशक प्रति लऽ घरक बाट पकड़बाक पहिने नावक लग घुरलाह। पुरान फाटल काठपर हाथ फेरि, ओ एक कागदक टुकड़ा फाँसक भीतर अटकौलनि—ना ताबीज, ना आशीर्वाद; ओतय कलक निरीक्षणक दिन आ सामूहिक कारीगर-दलक समय लिखल छल। ललित पुछलनि, “एहि कागदकेँ पानि लगत तँ मेटि जाएत।” केशरी कागद निकालि झोरामे रखलनि। “साँच कहैत छी। नावपर वचन टाँगबासँ नीक अछि जे ओ एहि बहीमे रहय, जतय पूछल जा सकय।” ओ बेचबाक पन्ना फाड़लनि नहि; ओकरा ‘स्वीकृत नहि’ लिखि भविष्यक हिसाब लेल अलग रखलनि।

केशरी घाट छोड़बाक पहिने ओहि युवा कारीगरसँ भेंट कएलनि जे पुरान नावक पाट खोलबाक काज सीखए चाहैत छल। युवक पूछलक, “हम सीखब तँ पहिल दिनसँ मजदूरी

भेटत की पहिले महीना भरि सेवा?” केशरी अपन पुरान भूल स्मरण कएलनि—ओ कतेको बेर प्रशिक्षक हाथ मुफ्त मानि लेने छलाह। “जे देखत, ओकर सीखबाक समय अलग; जे काठ ढोएत, पाट पकड़त आ औजार साफ करत, ओकर कामक दाम अलग,” ओ कहलनि। युवक अपन नामक सही वर्तनी कहि लिखबौलक। केशरी ओतहि निश्चय कएलनि जे मरम्मतिक खर्चमे प्रशिक्षकक समयो सार्वजनिक रूपेँ चढ़त; एहि कोषक ऋण आगाँ चुकब कठिन होएत, मुदा अदृश्य श्रमक कर्ज ओकरासँ बेसी भारी पड़त।

गोदामदिसँ देवव्रतक कर्मचारी राहतक बचल गठरीक गिनती लऽ आयल। एक आदमी फेर कहलक जे रातिक अन्हारमे खाली सहायता-नावसँ दू फेरा करि लेल जाए। हीरा साफ मना कएलीह। “खाली नाव खाली सहायता लेल राखल गेल अछि। एतय चारि गठरी अटकलीह तँ भोजनक वैकल्पिक बाट देखू: सुरक्षा-नाव भरि कऽ संकट उठाएब तैयारा नहि।” तारा समर्थन देलीह जे अस्पतालक भीतरी चुआन आ बाहरी निकासी एखन अपूर्ण अछि; घाटक सफल फेरा ओहि सभक हल नहि। देवव्रतक कर्मचारी गिनती वापस लऽ गेल। ओ असन्तुष्ट छल, मुदा सामान घाटपर सुरक्षित सूखल ठाम राखल गेल, बिना गुम करबाक।

अस्ताचलक रोशनी पानि पर फैलल तँ हीरा माप-डण्डा फेर देखलीह। भोरक तीन बिन्दुमे सँ एकमे गादक उभार नव छल। ओ नवा चिह्न पुरानक कात लिखौलीह, एकरा ओहि पर मेटलीह नहि। गोपाल कहला, “काल्हि फेर मार्ग बदलब।” हीरा उत्तर देलीह, “तँ काल्हि फेर नापब। लोक हमरे कहत जे रोज नवा नियम बनबैत छी।” गोपाल चप्पू उठबैत कहलनि, “नियम तखन बदलत जखन नदी बदलत; मनुखक जिनगीकेँ कागदक सुविधा अनुसार स्थिर नहि राखि सकैत छी।” मधु दूरसँ अगिला दिनक क्रमक सूची उलटि सुरक्षित कपड़ामे रखलीह।

घाटक चबूतरा पर अन्तिम बेर लोक जुटला। केशरी अपन नाव नहि बेचबाक निर्णय खुलेआम सुनौलनि, मुदा मरम्मत-ऋणक शर्त आ कामक मजदूरी सेहो बतौलनि। किछु लोक सन्तोषसँ ताली देलक, किछु चुप रहल—ओ सभ जानैत छल जे नाव तैयार होएब एखन शेष अछि। हीरा कागदमे लिखलीह जे केशरीक नाव चलनयोग्य सूचीमे एखन नहि जोड़ल जाए। सामूहिक निर्णयक अर्थ सामूहिक जोखिम छिपा देब नहि। केशरी स्वयं

ओकर कात सही कएलनि। “हम अपन नाव बचेब,” ओ कहला, “मुदा एखन ई ककरो पार नहि कराओत।” ई वाक्य सुनिकऽ ललित हुनकर हाथसँ खाली औजारक पेटी उठेबाक प्रस्ताव रखलनि; केशरी दुनू मिलि उठौलनि।

रातिक पहरादार नावसभक रस्सी एक बेर फेर छुलनि। घाटपर खाली सहायता-नाव अपन निर्धारित ठाम बान्हल छल, तीन परीक्षित नावक दिनक अनुमति समाप्त भऽ चुकल छल, आ मरम्मतिक प्रतीक्षामे रहल नावसभ अलग पंक्तिमे छल। नैरा सार्वजनिक सूचनाक अन्तिम वाक्य लिखलीह—‘यात्राक माँग बेसी छल; सुरक्षित सीमा नहि बढ़ाओल गेल; विकल्प खोजल गेल; मरम्मत सामूहिक शर्तपर स्वीकृत, उपयोग एखन रोकेल।’ दूर कतहु रसोइक हाँडीक ढकना बजल। हीरा भीतरसँ जानैत छलीह जे भोरक कतार फेर भारी होएत। मुदा आइ पानिक ऊपर जे भार नहि राखल गेल, ओकर कारण नदीक छातीपर नहि, लोकक सामने साफ शब्दमे रहि गेल।

अध्याय ११२ • ईशानक हाथ

नावक तल्लामे अटकल भीजल माटि सूखिते गाढ़ भूरा पपड़ी बनि गेल छल। श्याम मल्लिक पातर बाँससँ ओकर किनार कुरेदलनि, मुदा केशरी बीनक पुरान नाव उठेबाक हिम्मत नहि कएलनि। काल्हि बिक्री रोकबाक निर्णय भेल छल; आइ मरम्मतिक पहिल काज लेल नावकेँ सुरक्षित सुखायल ठाम धरि लए जायब आवश्यक छल। तिलवाहक ओहि किनारपर पानि रातिभरि उतरैत फेर चढ़ल छल, आ पुरान खूँटाक चारू कात नब नरम गाद छल। ईशान पुस्तकक थैला कन्हापर टाँगने घाट पहुँचलाह, देखलनि जे चारि आदमी नावक पाट पकड़ि ठाढ़ छथि, मुदा ककरो हाथ एखन जोर नहि लगा रहल अछि। “हमरो किछु काज कहूँ,” ओ कहलनि। श्याम थैलादिसँ देखलनि। “पहिने ई थैला सुखायल ठाम राखूँ। फेर सुनू—नावकेँ कतय नहि ठेलबाक अछि।”

तारा बिनौट लाल सूतसँ सुरक्षित धरतीक सीमा देखबौलीह। “नाव खाली अछि, तैयो काठक बीचक फाट एखन पूरा जाँचल नहि गेल,” ओ कहलीह। “किनारमे एक छोट पाट हिलैत अछि। सभ हाथ एक्के संग जोर देत तँ दरार दोसर दिस फाटि सकैत अछि।” ललित विश्वकर्मा दूटा सुखायल गोल काठ रखलनि; एकरा उपयोग कखनो आ कोना करब, से श्याम तय करबाक छल। केशरीक चेहरापर अपन नावकेँ एतेक लोकक बीच निहोरा करैत देखबाक असहजता छल। ओ कहलनि, “हमर नाव अछि। जँ हम हाथ नहि देब तँ के देत?” हीरा सहनी उत्तर देलीह, “मालिकक हाथ आवश्यक अछि, मुदा मालिकी सँ सुरक्षा-जाँचक अधिकार नहि भेटैत।” ईशान थैला उतारि सुनैत रहलाह।

मधु घाटपर दिनक नाम-पंजी लऽ बैसल छलीह। ओ पहिने कार्यशालाक मजदूरीक पन्ना खोललीह, जाहिमे काठ उठेनिहार, निरीक्षक, चप्पू आ रस्सी सँभारेनिहारक अलग खानासभ छल। “जतबा लोक यथार्थमे काज करताह, हुनकर नाम आ समय लिखब,” ओ कहलीह। ईशान हाथ बढ़ा कहलनि, “हम मदद निःशुल्क करब।” मधु पन्ना बन्द नहि कएलीह। “निःशुल्क करबाक अधिकार अहाँक अछि। मुदा अहाँक हाथ लगलासँ दोसर चारि आदमीक मजदूरी कटि नहि सकैत। आ जँ चोट लागत तँ सहायता-काजमे अहाँक नाम रहबाक चाही।” ईशान अपन नाम लिखौलनि; कातमे ‘स्वेच्छिक, मजदूरी-दावा नहि’

लिखबौलनि। श्यामक सहायिका झुमकी पुछलक, “हम जे रस्सी सुखौने छी, से काम अछि की केवल घरक काज?” मधु ओकर समयो लिखलीह।

प्राथमिक निरीक्षणक बाद नावकेँ धरती दिस सरकेबाक अनुमति भेटल। गोपाल माझी एहन ठाम चिन्हलनि जतय गादक भीतर अचानक पयर नहि धँसत। ईशानक दायित्व ठेलबाक छल, दिशा देबाक नहि। श्याम संकेत देलनि, “एक, दू—एखन नहि। रस्सी ढील अछि।” ईशान पहिल उत्साहमे काँध झुका देने छलाह; संकेत सुनि सीधा भेला। दोसर बेर सभ हाथ लगल। नाव कनेक सरकल, फेर अटक गेल। ईशानक हथेली पाटक खरखरी सतहसँ घिसि गेल। ओ हँसबाक यत्न कएलनि, “हम तऽ सोचने रही किताबसँ बाहरक काज जल्द होएत।” केशरी उत्तर देलनि, “किताबक पन्ना पाछाँ करब आसान अछि, नावक काठ जे ठाम अटकत, ओतहि रुकत।”

झुमकीक नजर ईशानक हाथपर छल। “गुरुजी, खून निकलल अछि,” ओ कहलक। अँगुरीक पोरपर सचमुच लाल रेखा छल। ईशान ओकरा गमछासँ छिपाए चाहलनि, मुदा देवी गोंड, जे अस्पतालक प्रशिक्षणसँ लौटि घाटपर ठहरल छलीह, साफ पानि आ प्राथमिक उपचारक छोट डिब्बी अनबौलीह। “जखम छोट अछि, मुदा हाथ फेर गादमे नहि लगाउ,” ओ कहलीह। ईशान पुछलनि, “हम अहाँक काज रोकि देलहुँ?” देवी कहलीह, “हमर प्रशिक्षणक अभ्यास एकटा काम अछि, अहाँक चोट दोसर। दूनूकेँ तमाशा नहि बनाउ।” ओ आवश्यक सफाई करि पट्टी बाँधलीह आ आगाँ चोटक स्थिति देखबाक सलाह देलीह। ईशान एहि बेर फेर ठेलबाक आग्रह नहि कएलनि।

ओ दूर हटला तँ नावक काज बन्द नहि भेल। श्याम आ ललित जोड़क फेर निरीक्षण कएलनि; केशरी काठक एक टुकड़ा बदलबाक सूचीमे अपन मत देलनि। मधु झुमकीसँ पुछलीह जे ओही पहर ओकरा अध्ययनक समय छल की नहि। “दुपहरिया मे हम अक्षर लिखए जाइ छी,” झुमकी उत्तर देलक। “तँ काजक शेष समय दोसर हाथ लेत,” मधु कहलीह। ईशान ओहि घड़ी बुझलनि जे अपन तनिक चोटकेँ कथा बनबैत रहला सँ बालिकाक पढ़ाइ आ नाविकक काम दुनू परदा पाछाँ चलि जाएत। ओ पाटसँ दूर सुकायल ओसारमे बैसि गेलाह, जतए हुनकर पुस्तकक थैला रखल छल।

पुस्तकक थैलामे हरिमोहनक काल्हिक छोट चिट्ठी छल। पुरान प्रकाशित ग्रन्थक संशोधित संस्करणक लेल प्रस्तावित श्रेय-पत्रपर तीन खानामे अभी तक कोनो अन्तिम सहमति नहि छल—ईशानक मूल दार्शनिक विवेचन, मैथिलीक संशोधन आ सरिताक प्रतिलिपि तथा उदाहरणक श्रम। ईशान काल्हि जवाब नहि देने छलाह। घाटपर खड़ा एक युवक, जे पाठशालामे कखनो-कखनो हुनकर व्याख्यान सुनैत छल, नजदीक आबि पुछलक, “गुरुजी, नाव ठेलि रहल छलहुँ! फोटो भेजब तँ लोक देखत जे विद्वान सेहो श्रम करैत छथि।” ईशान उत्तर देलनि, “विद्वान नाव ठेलैत छथि, ई देखए योग्य बात भऽ सकैत अछि; मुदा एहि नावकेँ बनबेनिहारक नाम बिना फोटो अधूरा रहत। आ एहि फोटोसँ पुस्तकक पन्नापर हमर गलती नहि मेटत।” युवक फोन जेबमे रखि लेलक।

तहि बीच मैथिली ओसारमे पहुँचलि। हाथमे हरिमोहनक पत्रक दोसर प्रति छल; झोरामे बच्चासभक लेखन-अभ्यासक कापी। ओ ईशानक पट्टी देखलीह, मुदा ओकर कारण अनुमान नहि कएलीह। “की भेल?” ओ पुछलीह। ईशान घटना कहि सुनौलनि। मैथिली पट्टीक देखभालक बात पूछलाक बाद पत्र खोललीह। “पाठशालाक समिति आइ साँझ बैठत,” ओ कहलीह। “अहाँक हाथक फोटो अगिला किछु दिन घुमत, मुदा छपल पोथीक जकर पन्ना बदलबाक अछि, ओकर हस्ताक्षर हम कखन देखब?” ईशान हतप्रभ नहि भेला; प्रश्न सुनब हुनका पहिनेसँ शेष छल। “आइ हम ओहि काजसँ भागब नहि,” ओ कहलनि।

मैथिली पत्रक एक पाँति देखौलीह। लिखल छल जे संशोधन-समितिक अस्थायी सूचना-पत्रमे ईशानक श्रमदानक कारण हुनकर ‘सामाजिक प्रतिबद्धता’क प्रशंसा कएल जा सकैत अछि। “एहि शब्दक उपयोग कियो किएक करैत अछि?” ओ पुछलीह। ईशान पन्ना पढ़लनि। “शायद विद्यालयक प्रचार लेल,” ओ कहलनि। “तखन विद्यालयकेँ कहू जे एहि प्रचारक स्वीकृति अहाँ नहि दैत छी,” मैथिली उत्तर देलीह। “नाव ठेलबाक फोटो अनुशासन-पत्रक प्रमाण नहि, आ जनताक सेवा कएलहुँ तँ सरिताकेँ देय पैसा छोड़ि देबाक आग्रह सेहो नहि।” ईशान चिट्ठीक हाशियापर स्पष्ट आपत्ति लिखि नाम दऽ देलनि।

सरिता दुपहर लग पहुँचलि। हुनकर कन्हापर भिजल कपड़ा नहि, सिलाइ-कामक बनल दू थान छल, जकर सुपुर्दगी घाटपारक ग्राहककेँ देबाक छल। आजुक सुरक्षित नावक

फेरामे ओ सामान पठा सकैत छलीह, मुदा ओ स्वयं नहि जाए चाहैत छलीह। मधु भाड़ा गिनलीह आ रसीद लिखलीह; सरिता कहलनि, “ई हमर व्यापारक भाड़ा अछि, पाठशालाक किताबक काजसँ एकरा मिलाउ नहि।” ओ चिट्ठी देखलनि आ तुरन्त पूछलीह, “हमर नामपर जे तीन दिनक पुरान नकल-श्रमक देय लिखल अछि, ओकर रकम तय भेल?” मैथिली उत्तर देलीह, “एखन पन्नाक संख्या आ समयक आधार जाँच बाँकी अछि।” सरिता कहलीह, “तँ एहि देरीक कारण सेहो लिखू। हमरा आश्वासनसँ धागा नहि किनाएत।”

ईशान अपन बही खोललनि। ओहिमे छपल पुस्तकक मूल पन्ना, मैथिलीक टिप्पणी तथा सरिताक कामक अलग क्रमाङ्क पहिने सँ छल। “हम एकर समस्त पैसा एखने अनुमानसँ नहि देब,” ओ कहलनि, “मुदा जतेक कामक पुष्टि पहिने भऽ गेल, ओकर अग्रिम स्वीकृति देबाक लेल हम समिति लग लिखि सकैत छी। जँ हमर निजी दायित्व निकलत तँ ओहो अलग लिखब।” सरिता ई प्रस्ताव सुनि चुप रहल। फेर ओ पुछलीह, “अग्रिमक रसीद पर ‘उपहार’ लिखताह?” ईशान उत्तर देलनि, “नहि, प्रतिलिपि-श्रमक आंशिक भुगतान।” “आ ई बात सेहो जे भुगतान लेने सँ हमर गवाही समाप्त नहि होएत,” सरिता जोड़लीह। ईशान अपन हाथसँ ओहि पाँति लिखलनि।

गोपालक संकेत सुनि सभक नजरि फेर पानि दिस गेल। दिनक पहिल स्वीकृत नाव घाटक दोसर पटरीपर अबैत छल, मुदा तेज पवनक कारण ओकर पहुँचबाक कोण बदलल छल। हीरा सामान्य घोषणा बन्द करा कऽ नाविककेँ पहिने सुरक्षित रुकबाक निर्देश देलीह। नावपर यात्री निर्धारित संख्यासँ बेसी नहि छलाह; समस्या संख्या नहि, किनारक नब गाद छल। ईशान उठि आगाँ बढ़लाह। हीरा दूरसँ हाथ उठा रोकलीह। “अहाँक पट्टी बान्हल अछि। एहि ठामक निर्णय नाविकक अछि। बाँस धरिकेँ कियो दोसर नहि पहुँचत।” ईशान पुनः बैसि गेलाह। सहायता करबाक इच्छा एहि बेर आज्ञा मानबाक रूपमे रहि गेल।

एक पतर सँकरे धरती-बाटसँ नावक यात्री उतरि सकैत छलाह। मधु भीड़केँ दू भागमे बाँटलीह। शान्ति बोटे नावसँ उतरैत एक वृद्धाकेँ सहारा देलीह; हुनका अपना घरक जरूरी गठरी पहिले उतरबेबाक छल। एगो युवक बुजुर्गक हाथ छोड़ि गठरी पकड़े दौड़ल। शान्ति ओकरा रोकि कहलीह, “पहिने मनुख, फेर गठरी। मुदा जे गठरी ओकर अछि, ओकरा बिना

पुछने सार्वजनिक गोदाममे नहि राखब।” सामानक स्वामित्व आ जीवनक सुरक्षा दूनू अलग मानल गेल। घाटक काठक पटरीमे जे नवा ढील देखल गेल छल, तारा ओकरा तुरन्त अस्थायी उपयोगसँ हटबौलीह।

ईशानक लग बैसल छात्र उदय पुछलक, “गुरुजी, अहाँक आजुक काजक श्रेय सभ नाविकेँ दैत अछि, ई उचित अछि? अहाँ सेहो जोर लगा देलहुँ।” ईशान किछु देर धरि नदी दिस देखलनि। “हम एक घड़ी ठेलने छी, तकर लेखा हमरे नाममे रहत। काठक फाट देखब, नावक भार जाँचब, घाटक चिह्न जानब—ई हुनकर अध्ययन आ कौशल अछि। सबटा हमर नाममे लिखब अन्याय होएत।” उदय फेर पुछलक, “आ जे पन्ना अहाँ लिखने छी?” “ओही प्रश्नक उत्तरमे कठिनाइ अछि,” ईशान कहलनि। “अपन लिखल बात छोड़बाक कारण नहि, मुदा दोसरक संशोधनक इतिहास लुप्त करबाक अधिकारो नहि।” उदय अपन अभ्यास-कापीमे प्रश्न लिखि लेलक; ओ उत्तरकेँ सूक्ति मानि फेर नहि दोहरौलक।

साँझक बैसारक तैयारी लेल हरिमोहन स्वयं घाटपर अएला। ओ समितिक दू पन्ना अनने छलाह। पहिलमे पुरान पुस्तकक पुनर्मुद्रण-प्रक्रिया, दोसरमे योगदानक प्रमाणक स्थिति। मैथिली पहिने दोसर पन्ना पढ़लीह। ओतय हुनकर संशोधनक तीन अंशक प्रमाण जाँचल गेल लिखल छल, मुदा एक पन्नाक तारीख अस्थिर छल। ओ मानलीह, “तिथि जे स्थापित नहि, ओकरा स्थापित नहि लिखू। बाकी तीन स्थानक चर्चा तुरन्त सार्वजनिक भऽ सकैत अछि।” हरिमोहन सरिताकेँ पुछलनि, “अहाँक नकलक सूचीमे जे दू दिनक समय पर प्रश्न अछि, तकर अभिलेख कतय?” सरिता कहलनि, “हम घरसँ कापी अनब; अन्दाजे पर नाम नहि चढ़ाएब।”

ईशान ओतहि समिति लग अपन लिखित आपत्ति सौंपलनि। “हमर नाव-श्रमक फोटो विज्ञापनमे नहि,” ओ कहलनि। “आ पुरान पोथीक लेखकत्वक विवादक समाधानक पाँतिमे एहि दिनक उल्लेख नहि होएत।” हरिमोहन पुछलनि, “तखन एहि घटनाक स्थान कतय?” ईशान उत्तर देलनि, “घाटक मजदूरी आ सहायता-पंजीमे, जतय सभक हाथक वास्तविक हिसाब अछि।” मधु, जे कातमे भाड़ा-सूची लिखि रहल छलीह, नजरि उठौलीह।

“आ कोनो दिन पाठशाला श्रम-अध्ययनक उदाहरण बनाबय चाहत,” ओ कहलीह, “तँ नाविकसभसँ पहिने अनुमति लेत। श्रमक स्वामी केवल फोटो देखनिहार नहि।”

मैथिलीकेँ एहि लिखित अस्वीकृतिसँ किछु राहत भेटल, मुदा संतोष नहि। “अहाँ फोटो रोकि देलहुँ, ई ठीक,” ओ कहलीह। “मुदा हमर संशोधनक जे सार्वजनिक पत्र छह दिनसँ टाँगल अछि, ताहिपर किछु छात्र ‘मैथिलीक प्रश्न’ लिखैत छथि, ‘मैथिलीक पन्ना’ नहि। अन्तर बुझैत छी?” ईशान उत्तर देलनि, “बुझैत छी। प्रश्न उठाओल व्यक्ति आ तर्कक अंश फेर लिखनिहार व्यक्ति दू अलग भूमिका भऽ सकैत अछि।” मैथिली अपन बहीसँ उन तीन संशोधित अनुच्छेदक स्थान देखौलीह। “तखन समिति लिखय जे कोन वाक्य हमर हाथसँ आएल। प्रशंसाक बदला प्रमाणक पाँति चाही।” हरिमोहन ओ अनुरोध कार्यसूचीमे जोड़लनि।

घाटक भीड़ घटलाक बाद केशरी आ ललित मरम्मतिक लकड़ी लेबाक हिसाब मिलबैत छलाह। एक व्यापारी कहलनि जे ईशान आज मदद करि गेलाह, तँ मरम्मत-कोषक प्रचारमे हुनकर नाम ठेकादारक ऊपर लिखि देबाक चाही। केशरी तुरन्त आपत्ति कएलनि। “हमर नाव बेचबाक चेष्टा कियो रोकने नहि, हम स्वेच्छासँ निर्णय कएलहुँ; मरम्मतिक डिजाइन श्याम आ ललितक, आ भुगतानक बही मधुक अछि। ईशान हाथ देलनि, मुदा पहिल जोड़ खोलबाक काम ओ नहि जनैत छलाह।” व्यापारी कहलक, “नामसँ दान भेटत।” केशरी उत्तर देलनि, “दान भेटबाक लेल कारीगरक नाम मेटब तँ नव कर्ज शुरू होएत।”

उषा राम अपन चर्म-बन्धनक दू नमूना लऽ एलीह। नमूनाक बाहरी रूप आकर्षक छल, मुदा तारा पहिने चेतावनी देलीह जे नावक मुख्य संरचनाक सुरक्षा एहि वस्तुसँ प्रमाणित नहि होइत। उषा स्वयं कहलीह, “हम ई नमूना जूटक थैलामे राखि दैत छी। काठक जाँच पूरा भेलाक बादे उपयोगक निर्णय होएत। एखन कियो ओकर फोटो देखिकऽ ‘उषाक बन्धनसँ नाव बचल’ नहि लिखत।” ईशान मुस्कुराए चाहलनि, मुदा उषाक चेहरापर हँसी नहि छल। “हमर डिजाइनक श्रेय हमरे चाही,” ओ कहलीह, “आ जे काज ई डिजाइन नहि करि सकैत, तकर झूठ दावा सेहो नहि।”

दुपहरक भोजन रुखसानाक रसोइसँ अएल। मटरक थोड़ स्वाद, सागक गन्ध आ भातक भापसँ घाटक शुष्क काठक गन्ध किछु देरि लेल बदलल। सरिता अपन सँगे अनल छोट डिब्बासँ मैथिलीकें आधा रोटी देलीह। मैथिली कहलीह, “हम अहाँ लेल घरसँ किछु अनए चाहने रही।” सरिता हँसलीह, “हम खाएब भूखसँ, एहसानक हिसाबसँ नहि। मुदा आज घरक रसोइमे जे समय बचल, ओहिसँ दू थान सिलाइ पूरा भेल।” ईशान एहि वाक्यक बीच किछु उपदेश नहि जोड़लनि। ओ भोजनक पाँतिमे स्वयं थारी उठा बैसि गेलाह; पहिने खाना बाँटनिहारक मेहनताना लिखल गेल अछि की नहि, तकर पुष्टि मधुसँ पुछलनि।

रुखसाना सुनलीह तँ कहलीह, “आजक मजदूरी-पंजी चलि रहल अछि; अपूर्ण अछि तँ ओतय लिखल अछि। अहाँक पूछलासँ भुगतान भऽ गेल एहन नहि।” ईशानक चेहरापर लाजक हलुक रंग चढ़ल। रुखसाना फेर सहज स्वरमे कहलनि, “थारी धुनाइमे यदि हाथ देब चाहैत छी, तँ दाम लेनिहारक काम नहि छीनू। किछु देरि पानि आ बासनक व्यवस्था रखू।” एहि बेर ईशान पहिने पूछलनि जे केकर काम अछि आ केकर अनुमति। तखन साफ ठामपर खाली बासन सजाए लगलाह। सरिता दूरसँ देखलीह; हुनका ई दृश्य प्रिय लागल, मुदा ओ जानैत छलीह जे एहि सानो उपयोगी काजसँ हुनकर तीन दिनक अनादरक हिसाब स्वतः पूरा नहि होइत।

बैसार आरम्भ होएबाक पहिने नैरा समाचार लेल घाटक तथ्य मिलबैत अएलीह। काल्हिक स्वीकृत यात्री-संख्या आ आजुक वास्तविक फेरा एके नहि छल। हीरा लिखित रूपमे देखौलीह जे दिनक बीच पवन बदललाक कारण फेर रोकल गेल छल; गोपाल नब गादक चिन्ह देखौलनि। “किछु लोक कहैत अछि विद्वान नाव धकेलि देलखिन तँ सेवा बढ़ि गेल,” नैरा बजलीह। हीरा हँसलीह। “नावकें सुखायल ठाम लऽ जायब आ नदी पार कराएब दू अलग काज अछि। ईशानक सहायता पहिलक अछि। दोसरक अनुमति हम जलस्थिति देखिकऽ देब।” नैरा एहि भेदकें अपन समाचारक पहिल पाँति बनौलीह।

रमा सेहो अएलीह। हुनकर लग पाँच हस्ताक्षरक लागू कएल गेल समझौताक नव पंजी छल। जलनिकासीक मुख्य मुँह एखन गादसँ बन्द, अस्पतालक भीतरी चुआन पर काम अपूर्ण, आ गोदामक शंकास्पद सामग्री सीलबन्द—तीनू बात स्पष्ट लिखल छल। एक

अधिकारी कहलक, “आइ किछु राहत अछि, तें पूर्ण सफलताक सूचना लिखि सकैत छी?” रमा उत्तर देलीह, “राहत वास्तविक अछि, पूरा समाधान नहि। सफल भेल सामग्री-वितरण लिखू; असफल निकासी सेहो लिखू। एहि दूनू तथ्यक बीच पुल बनाबऽ लेल झूठक जरूरत नहि।” ईशान सुनैत रहलाह। अपन बहीक खाली खानासभ ओकरा याद पड़ल, मुदा ओ सार्वजनिक पंजीकें निजी दार्शनिक पाठक उदाहरण नहि बनौलनि।

साँझक सभा पाठशालाक ओसारमे नहि, घाट लगक छाँहमे राखल गेल, कारण नावक कारीगरसभकें रातिक पहरासँ पहिने घर जाएबाक छल। हरिमोहन सभकें बैठबाक समय बतौलनि; फेर पन्ना केवल तीन लोकक नामसँ नहि, उपस्थित काजक अनुसार पढ़लनि। श्रम-पंजी पहिने मधु पढ़लीह। ईशानक नामक आगाँ स्वेच्छिक सहायता, झुमकीक नामक आगाँ रस्सी-सफाई आ सुखेनाइ, केशरी-श्याम-ललितक नामक आगाँ अलग निरीक्षण तथा मरम्मत लिखल छल। ईशान अपन नाम सुनिकऽ माथ झुका लेलनि, न तालि माँगलनि, न नाम हटेबाक नाटक कएलनि।

एहिक बाद हरिमोहन पुस्तकक संशोधन-पत्र खोललनि। मैथिली अपन तीन स्थापनाक पुष्टि कएलनि, सरिता केवल ओतबे पन्ना देखौलनि जतेक सार्वजनिक निरीक्षण लेल स्वीकृत छल। ईशान अपन मूल अध्यायक खण्डक लिखित प्रमाण देलनि आ ओहि अंशमे जकर संशोधनक प्रारम्भ मैथिलीक हस्तलिखित आपत्तिसँ भेल छल, ओकर नामक कात लिखित स्वीकृति देलनि। सरिता पुछलीह, “हमर अनुभवसँ अएल उदाहरणक स्रोत?” हरिमोहन एक पंक्तिमे ‘सरिताक प्रत्यक्ष अनुभवक दावाक परीक्षणाधीन स्रोत’ लिखलनि। सरिता मानलीह जे ई एखन सत्यापित सिद्धि नहि, मुदा लुप्त सेहो नहि।

समितिक एक सदस्य सुझाव देलनि जे श्रमदानक प्रशंसात्मक उल्लेखसँ ईशानक पुरान दोषक चर्चा नरम भऽ जाएत। मैथिली तुरन्त कहलनि, “एहि दू विषयक बीच पाँति खींचू। हम आजुनक सहायता नहि नकारैत छी। मुदा जाहि पन्नापर हमर योगदान अछि, ओकर इतिहास नावक किनारमे नहि लिखल गेल छल।” सरिता सेहो जोड़लीह, “आ हमर बकाया भुगतान पाँतिमे ‘सदाशयता’ शब्द राखब तँ हम सही नहि करब।” ईशान एहि विरोधपर रूठला नहि। “हमर वास्तविक ज्ञानक रक्षा हो,” ओ कहलनि, “मुदा जे श्रेय हम

उचित रूपेँ नहि देलहुँ, तकर सुधार खाली प्रशंसा-पत्रसँ नहि होएत।” सदस्य अपन प्रस्ताव वापस लेलनि।

बैसारक कागदमे तीन नव निर्णय स्पष्ट लिखल गेल। पहिल, तत्काल सार्वजनिक संशोधन-पत्रमे मैथिलीक प्रमाणित योगदानक अंश पृष्ठसँ जोड़ल जाएत; विवादित शेष अंश परीक्षणाधीन रहत। दोसर, सरिताक निश्चित भऽ चुकल प्रतिलिपि-कार्यक आंशिक भुगतानक स्रोत आ तिथि लिखल जाएत, बिना हुनकर बाँकी दावासँ हाथ उठेबाक शर्तक। तेसर, ईशानक स्वेच्छिक नाव-सहायता घाट-पंजीमे रहत, संशोधित पुस्तकक लेखकत्व-प्रमाणमे नहि। ईशान, मैथिली आ सरिता तीनू अलग-अलग पन्नापर सही कएलनि; एके पन्नापर सभक नाम राखि एके प्रकारक दावा बनाओल नहि गेल।

एहि सभक बीच झुमकी अपन कापी लऽ दौड़ैत एलीह। “हमर पाठक समय गुजरि गेल?” ओ पुछलक। मैथिली ओकरा घड़ी देखौलीह। आखिरी अभ्यास-घण्टा एखन बाँकी छल। झुमकी रस्सीक रेशा पकड़ने हाथ झाड़ि पूछलक, “आइ जे नावक नाम लिखल गेल अछि, ओ पढ़बाक अभ्यास लेल देब?” मधु ओकर नाम लिखल पंक्तिक प्रति देलीह, मुदा दोसर मजदूरक निजी जानकारीवला भाग ढाँकि। मैथिली कहलीह, “अक्षर सीखबाक लेल अपन नामसँ आरम्भ करू, मुदा कियो दोसरक हिसाब सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि भेटैत।” झुमकी अपन अक्षर चिन्हि हँसलीह। नाव ठेलबाक दिन ओहि बालिकाक लेल एकटा नव लिखावट छोड़ि गेल।

दूर घाटपर श्याम अन्तिम बेर केशरीक नावक तल्ला देखैत छलाह। मरम्मतिक काठ अगिला भोरमे अबबाक सूचना आयल छल, मुदा कोनो स्वीकृत उपयोग-तिथि नहि छल। हीरा अतिरिक्त सहायता-नावकेँ असुरक्षित सामान-ढुलाईमे लगा देबाक फेर आग्रह अस्वीकार करि चुकलीह। ईशान ओतय पहुँचि पुछलनि, “काल्हि कोनो काज हमरा लायक रहत?” श्याम मुस्कुराए बिना कहलनि, “रहत, मुदा काल्हिक काज काल्हि बताओल जाएत। हाथक पट्टी पहिने ठीक होअय।” ईशान कहला, “आ जे हम नहि जानैत छी?” “ओ नहि जानब सेहो एहि काजक जरूरी शुरुआत अछि,” श्याम उत्तर देलनि।

घर घुरैत मैथिली आ ईशानक बीच किछु देरि मौन रहल। बाटक एक कात गादपर बच्चासभक छोट पदचिह्न, दोसर कात बाँसक छाँह छल। ईशान पुछलनि, “आइ हम मदद

करबाक चाहना राखलहुँ, मुदा बारम्बार लोक हमरा रोकैत रहल। पहिने एहि रोकसँ हमरा अपमान बुझाइत।” मैथिली कहलीह, “रोकबाक अर्थ हर बेर अपमान नहि। जखन हम पन्नापर प्रश्न उठौने रही, अहाँ ओहू बेर रोक बुझने छलहुँ। अन्तर ई जे ओतय हमर तर्क छल, एतय नाविकक अनुभव।” ईशान कहला, “दूनु ठाम हमरा सुनबाक अभ्यास देरिसँ आबि रहल अछि।” मैथिली एहि स्वीकारोक्तिपर हँसलीह नहि; ओ केवल संग चलैत रहलीह।

सरिता घर पहुँचि पहिने सिलाइ-थानक ग्राहककें सुपुर्दगीक समाचार पठौलीह। नव पावतीमे व्यापारक भाड़ा अलग छल, आ समिति द्वारा लिखल आंशिक भुगतानक प्रस्ताव अलग। हुनका ई दुनू कागद एके बक्सामे नहि रखबाक इच्छा भेल। ओ सिलाइक बही खूँटीक निचाँ रखलीह, प्रतिलिपिक पन्ना नीला कपड़ामे बान्हि अपन लग। बेटी नैरा पुछलीह, “आइ किछु निष्पत्ति भेल?” सरिता कहलनि, “एकटा रकमक बाट खुलल, आ ककरो नाम मेटाओल नहि गेल। बाँकी काम बाकी अछि।” नैरा खाना परसबाक लेल थारी बढौलीह; एहि बेर ओ मायक उत्तरकें समाचारक शीर्षक नहि बनौलीह।

ईशान रातिमे पट्टी खोलि घाव देखलनि, फेर चिकित्सकीय सलाह अनुसार सफाई आ देखभाल कएलनि। पुस्तकक बही सामने छल, मुदा ओहि दिन पहिल बेर हुनका लिखल शब्दसँ अधिक असुविधा खाली स्थानसँ भेल। ओ मूल विवेचनक लेखकक रूपमे अपन नामक आगाँ स्थिर रहलाह; मैथिलीक प्रमाणित संशोधनक स्थानपर हुनकर नाम जोड़बाक कार्य शुरू भऽ चुकल छल; सरिताक श्रम आ स्रोतक हिसाब खुलल छल। घाटपर हाथ लगेलाक कारण ई पन्ना नहि बदलेल छल, पन्ना तखन बदलल जखन तीनू लोक अपन-अलग दावाक जाँचक अधिकार राखि सकल। पाछाँक कोठरीमे रस्सी सुखेबाक फटकार सुनाइत छल; काल्हि जलस्तर फेर नापल जाएत, आ नावक चलबाक अनुमति फेर अलगसँ निर्धारित होएत।

अध्याय ११३ • अश्वत्थामाक राति

टूटल रथक धुरीसँ एक पातर काँटा बहराइ रहल छल। अश्वत्थामा ओकरा अँगुरीसँ खींचि अलग कएलनि, फेर अकारण हथेलीमे पकड़ने रहलाह। युद्धभूमिपर साँझ उतरि चुकल छल। घोड़ासभक खुरसँ चूर भेल माटि मे ओसक पहिल नमी आबि रहल छल, मुदा दूर धरि जलबाक गन्ध एखनहुँ बुझाएब बन्द नहि भेल छल। कृप घायल सैनिकक लेल पानि खोजैत छलाह; कृतवर्मा जीवित बचल घोड़ाक पट्टी जाँचि रहल छलाह। तीनू एके ठाम पहुँचल छलाह, मुदा प्रत्येकक मनमे अलग प्रश्न छल—जीबि बाँचल लोकक रक्षा के करत, आ जे मरि गेल ओकर नामपर आब की कएल जाएत?

दुर्योधन सरोवरक लग चोटसँ निश्चल पड़ल छलाह। हुनकर जाँघपर बाँधल पट्टी भीजल छल; बात करैत समय साँसक बीच लम्बा अवकाश पड़ैत छल। अश्वत्थामा नजदीक पहुँचलाह तँ दुर्योधन आँखि खोललनि। ओ समस्त युद्धक वृत्तान्त नहि पुछलनि, केवल कहलनि, “गुरुपुत्र, अहाँ आबो एतय छी?” एहि छोट प्रश्नमे पराजयक लाज, मित्रक भरोसा आ बाँचबाक असमर्थ आशा एकसाथ छल। अश्वत्थामा अपन पिताक स्मरण करैत हाथक काँटा भाँजि देलनि। “हम सुनब नहि, उत्तर देब,” कहलनि। दुर्योधन हुनकर चेहरापर जे क्रोध देखलनि, ओहि क्रोधसँ हुनका आश्वासन भेटल, मुदा कृपक मनमे भय जागल।

कृप घुटना टेकिऽ दुर्योधनक पट्टी देखलनि। “घावक देखभालमे देरि भऽ रहल अछि,” ओ कहलनि। “जे दू परिचर संग छलाह, हुनका सभकेँ वापस पठाउ। राजा हो वा साधारण सैनिक, घायल देह आदेश नहि, उपचार माँगैत अछि।” दुर्योधन क्षीण स्वरमे कहलनि जे आब हुनकर लेल उपचारसँ अधिक महत्त्व सेनाक बचल मानक अछि। कृप उत्तर देलनि, “मान रखबाक अनेक अर्थ अछि। बचल सिपाहीकेँ घर पहुँचाएब सेहो ओहि अर्थमे अबैत अछि।” अश्वत्थामा बीचमे बजलाह, “द्रोणक शिर काटल गेल, आ हम जीवित लोकक विश्राम गनैत रही?” कृप हुनक दिस देखलनि, मुदा तत्काल प्रतिवाद नहि कएलनि।

द्रोणक मृत्यु अश्वत्थामाक मनमे कखनो एक क्षण बनि नहि सकल छल। ओहि समाचारमे हुनकर अपन नाम झूठक साधन जकाँ प्रयोग भेल छल; पिताक शस्त्र छोड़बाक

बादक अन्त हुनका अपन प्रत्येक स्मृतिपर प्रश्न जकाँ लगैत छल। बचपनमे द्रोण हुनका धनुषक डोरी चढ़ेबाक पहिने अँगुरीक कोमलता देखैत छलाह। ओहि हाथक स्मरण आब युद्धभूमिपर पिताक प्राण न बचा सकबाक वेदना संग मिलि गेल छल। अश्वत्थामा क्रोधमे कहलनि, “धृष्टद्युम्न राति चैनसँ सुतत, आ हम गुरुक पुत्र भऽ प्रतीक्षा करब?” प्रश्नक उत्तर ओ अपना भीतर पहिनहि निर्धारित कऽ चुकल छलाह।

कृतवर्मा आगाँ आबि कहलनि, “धृष्टद्युम्नक विरुद्ध अहाँक शत्रुता बुझैत छी। मुदा ओकर शिविरमे केवल ओ नहि अछि। रथ चालक, रसोइ करनिहार, पहरेदार, घोड़ा सँभालनिहार —सभ थाकल छथि।” अश्वत्थामा ओहि बातकेँ प्रतिशोधक विरोध बुझलनि। “युद्धमे ओ सभ कोन पक्षक अन्न खाइत छथि?” ओ पुछलनि। कृतवर्मा किछु क्षण चुप रहलाह। “अन्न खाएब आ अपराधमे सहमति देब एक बात नहि,” ओ धीरे कहलनि। हुनकर अपन सैनिकजीवन हुनका ई वाक्य कहबाक अधिकार दैत छल; मुदा तकरा निभेबाक साहस एखन हुनका सेहो नहि भेटल छल।

एक वृद्ध सैनिक मृत घोड़ाक कातसँ रस्सी निकालि अनलक। रस्सी ओहि राति घायल जनकेँ चादरसहित उठाएब लेल चाही। अश्वत्थामा ओकरा अपना योजना लेल उपयोगी बुझि माँगबाक छलाह, फेर देखलनि सैनिक अपन चोट खाएल साथीकेँ सँभालि रहल अछि। वृद्ध कहलक, “एहि रस्सीसँ हम आठ लोक उठौलहुँ। नव बनबैत समय एहि गाँठक ध्यान रखब।” अश्वत्थामा क्षण भरि ओकर अँगुरीक काँपब देखलनि। अपन प्रतिशोधक लेल ओहि श्रमकेँ हथियाएब हुनका सहज नहि लागल, तैओ ओ मन बदलल नहि। ओ केवल रथ दिस घुरि गेलाह। सैनिककेँ अपन काजमे लगल रहबाक अवकाश भेटल, युद्धकेँ समाप्त करबाक अधिकार नहि।

तीनू एक विशाल वटवृक्षक निचाँ पड़ाव कएलनि। पातसभमे लुकायल कागसभक छोट-छोट आवाज छल। कृप कहलक जे घोड़ा थाकि गेल अछि; भोरधरि रुकि कऽ सुरक्षित मार्ग चुनब उचित रहत। अश्वत्थामा आँखि बन्द करिते पिताक अन्तिम समय देखैत छलाह। निद्रा हुनका नहि भेटल। एकाएक अन्हारसँ एक उल्लू उड़ि कागसभक बसबाक डारपर टूटि पड़ल। डार झमझमाएल; पहिने ऊँचैत पक्षीक पुकार, फेर अस्तव्यस्त पाँखिक शब्द सुनाइत रहल। एक पक्षी उडबाक पहिने धरतीपर खसि गेल। अश्वत्थामा

उठि बैसलाह। रातिक ओहि दृश्यकेँ ओ संकेत बुझलनि, जखन कि ओ एक शिकारी पक्षीक स्वाभाविक हिंसा छल।

“दिनमे काग ओकरा देखिते हल्ला करत,” अश्वत्थामा कहलनि, “रातिमे ओहि कागक झुण्डक कोनो व्यवस्था नहि।” कृप वृक्ष दिस तकैत रहलाह। “पक्षी अपन भूख आ भयमे ई करैत अछि। मनुष्य ओहि दृश्यसँ अपन आचरणक अनुमति नहि लऽ सकैत,” ओ कहलनि। अश्वत्थामा प्रत्युत्तर देलनि, “शत्रु जे विश्वासघातसँ जीतल, ओकरा संग दिनक नियम कियैक निभाबी?” कृपक उत्तर स्पष्ट छल: “जे कर्मक विरोधमे अहाँ ठाढ़ छी, ओही कर्म अपन हाथसँ कएलाक बाद अहाँक आरोप कोना बचत?” कृतवर्मा दूनेरक बात सुनैत रहलाह। हुनका बुझाईत छल जे विवाद केवल विजयक उपायपर नहि, स्वयं विजयक अर्थपर अछि।

कृप एकटा वैकल्पिक बाट रखलनि। धृष्टद्युम्नकेँ भोरमे चुनौती देल जा सकैत छल; युधिष्ठिरसँ पिताक मृत्यु विषयक प्रश्न कएल जा सकैत छल; बचल सेनाक साक्षी एकत्र कऽ घोषित कएल जा सकैत छल जे धोखा के केलनि। अश्वत्थामा कहलनि, “भोर धरि ओ सभ अपन युद्धक विजय लिखि चुकल रहत।” कृप उत्तर देलनि, “तब अहाँ रातिमे जे लिखब, ओकर नाम न्याय नहि रहत।” कृतवर्मा आगाँ कहबाक लेल मुँह खोललनि, मुदा अश्वत्थामाक चोटिल आत्मसम्मानसँ डरि रहलाह। बादमे हुनका एहि मौनक भार बुझए पड़त, ई ओहि क्षण हुनका अनुमान नहि छल।

अश्वत्थामा अपन हथियारक डोरी कसैत कहलनि जे ओ शिविर धरि जेबे करताह। कृप हुनका रोकबाक प्रयासमे आगाँ बढ़लनि। “सुतल, असहाय, शस्त्र छोड़ने व्यक्तिक वध युद्ध नहि,” कहलनि। “द्रोणक अन्यायपूर्ण मृत्यु एहन कर्मक अनुमति नहि दैत।” अश्वत्थामा कृपक हाथ हटौलक नहि; ओ हुनकर पकड़सँ धीरे अपना बाँहि छुड़ा लेलनि। “अहाँ हमर पिता लेल शोक मानैत छी, मुदा हमर शोकक सीमा अहाँ ठहरा नहि सकैत छी,” कहलनि। कृप उत्तर देलनि, “शोक अहाँक अछि। जिनकर प्राण लेबाक योजना अछि, हुनकर प्राण अहाँक नहि।” अश्वत्थामा एहि अन्तिम वाक्यसँ नजर फेरि लेलनि।

जखन ओ रथपर चढ़लाह, कृतवर्मा सेहो लग अएला। “हम अहाँकेँ अकेला छोड़ब तँ भोरमे अहाँक शव खोजए पड़ि सकैत अछि,” ओ कहलनि। कृप कठोर स्वरमे पुछलनि,

“अहाँ ओकर संग चलब सुरक्षा लेल, कि ओकर काज सिद्ध करबाक लेल?” कृतवर्माक चेहरापर उत्तरक अभाव छल। ओ केवल कहला जे दुआर धरि संग जेता। अश्वत्थामा एहि सीमाकेँ स्वीकारलनि, मुदा हुनका बूझल छल जे दुआरक बाहर ठाढ़ दू अनुभवी योद्धा हुनकर भीतरक आक्रमणकेँ सम्भव बनाओत। एक मनक हिंसा आब तीन जनक सामूहिक यात्रामे बदलि रहल छल।

पाण्डवपक्षक शिविर युद्धक दिनभरि बाद थाकल निश्चिन्ततामे पड़ल छल। विजयक ध्वनि बहुत पहिने थमि गेल छल; एखन पट्टी धोएबाक घैल, शस्त्र सँभालबाक बाँसक खूँटा आ रसोइक बुझल आँच देखाइत छल। बाहरी फाटकपर एक जवान पहरेदार एक घायल साथीकेँ पानि देबाक लेल झुकल छल। दोसर पहरेदार चोटक कारण बैसि रहल छल, ओकरा बदलबाक लोक एखन नहि पहुँचल छल। एहि चूकक अर्थ दुष्टताक सहमति नहि, दिनभरि युद्धक थकान छल। अश्वत्थामा एहिमे शत्रुक दुर्बलता देखलनि; शिविरमे सुतल लोक एकरा बचल जीवनक आवश्यकता मानैत छल।

शिविरक भीतर एक परिचारिका भीजल पट्टी अलग कऽ सूखल कपड़ा गनैत छलीह। हुनका दिनमे कहल गेल छल जे बचल कापड़ पहिने गंभीर घाववाला लोककेँ देल जाए। ओ अपन सहायकसँ कहलीह, “भोरमे जँ घोड़ा दहाड़त तँ बुझिहें जे पानि माँगैत अछि, युद्ध फेर नहि शुरू भेल।” सहायक थाकल आवाजमे हँसल। दुनूक अनुमान छल जे राति एक टा विश्रामक समय अछि। परिचारिका अपन पट्टीक थैली सिरहाने राखलीह; ओ जिम्मेवारी ककरो नामपर छोड़ि नहि सुतए चाहैत छलीह। एहि सामान्य काजक बीच फाटकक पाछाँक छायामे किछु हलचल भेल।

अश्वत्थामा प्रवेशक बाटपर क्षणभरि ठमकलाह। फाटकक अन्हारमे हुनका कोनो विराट् पहरेदारक आभास भेल—कठोर, अचल, मानो बाट बन्द कएने। ओ अपन मनमे शिवक नाम लेलनि, मुदा ई स्मरण हुनकर क्रोधक विराम बनल नहि। ओ जे करबाक निश्चय कएने छलाह, ओकरे धर्मक बल देबाक बाट खोजैत छलाह। ओ आगाँ बढ़लाह। छावनीक दुआर पाछाँ कृप आ कृतवर्मा ठाढ़ भेलाह। ओहि स्थानपर ठाढ़ रहबो एक निर्णय छल; दुनू अपन उपस्थितिक परिणामसँ अपरिचित नहि छलाह।

धृष्टद्युम्नक तम्बू ओहि छावनीमे छल जतय युद्धक थाकल अधिकारी राति किछु घण्टा विश्राम लेल पड़ल छलाह। अश्वत्थामा तम्बूक परदा हटौलनि। भीतरक दीपक तेल समाप्त होएबाक कात छल। धृष्टद्युम्न जागलाह तँ हुनकर हाथ सहज रूपसँ शस्त्र दिस गेल, मुदा तलवार शय्यासँ दूर रखल छल। ओ उठबाक प्रयास करैत पुछलनि, “के?” अश्वत्थामा नाम देलनि, आ ओहि नाममे पुत्रक विलापसँ अधिक अभियोग छल। धृष्टद्युम्न पुरान युद्धक प्रसंग स्मरण करैत अपन पक्ष कहए चाहलनि; अश्वत्थामा हुनका पूरा वाक्य देबाक अवसर नहि देलनि।

“जँ युद्ध अछि तँ शस्त्र दे,” धृष्टद्युम्न कहलनि। हुनकर स्वरमे भय छल, मुदा ओ भय संग एक आखिरी आग्रह सेहो छल जे समक्ष प्रतिद्वन्द्वी हुनका युद्धक स्थिति देत। अश्वत्थामा अपन पिताक शस्त्र त्यागब याद करैत रहलाह। ओ द्रोणक असहाय क्षण आ एहि तम्बूक असहाय क्षणक बीच अनिवार्य अन्तर देखबाक क्षमता मानो स्वयं बन्द कऽ देलनि। हिंसा भेल। ओकर विवरणसँ वीरता नहि बनैत; एतबे स्पष्ट रहल जे धृष्टद्युम्न प्रतिकार लेल आवश्यक शस्त्र आ समयसँ वंचित छलाह। अश्वत्थामा तम्बू छोड़लनि तँ परदा पवनमे ओहिना डोलैत रहल, जेना भीतर कोनो निर्णय भेल नहि हो।

परे कोठामे जागि रहल एक वृद्ध सहायक चीख सुनि उठल। ओ अपना हाथमे ढाल नहि, पानिक पात्र लेने बाहर अएल। छावनीमे ककरो नाम पुछिते अश्वत्थामा आगाँ बढ़लाह। वृद्ध एक युवाकें जगबैत कहलनि जे घायल लोकक थैली उठाएब। युवक कहलनि, “दुआर कात हमर भाइ अछि।” वृद्ध उत्तर देलक, “पहिने जे चलि नहि सकैत अछि, ओकरा भीतरसँ हटाउ।” एतय लोक युद्ध जितबाक गणना नहि करैत छल; के चलि सकैत अछि, के नहि, बस ओहि हिसाबे देह उठा रहल छल। ओहि मानवीय व्यस्तताक बीच तलवारक आवाज नजदीक आबि गेल।

एक तम्बूसँ उत्तमौजा आ युधामन्युक संग लड़ल सैनिक उठि बाहर निकललाह। ककरो हथियार हाथमे आबि चुकल छल, ककरो अभी तक नहि। किछु लोक प्रतिरोध करबाक प्रयत्न कएलनि, मुदा रात्रिक असमान तैयारीमे ओ प्रतिरोध टिकि नहि सकल। शिखण्डीक दल दिशसँ हल्ला उठल, फेर दौड़ैत पयरक आवाज। अश्वत्थामा एखन धृष्टद्युम्नक मृत्यु कें अपन पिताक ऋण चुकल मानि नहि रहल छलाह। प्रत्येक नव देह

हुनका प्रतिशोधक अगिला कारण बुझाइत छल; ई कारण समाप्त नहि होइत छल, केवल बढैत छल। ओकरा रोकबाक लेल जे नैतिक सीमा चाही छल, ओ पहिल हिंसाक संग तोड़ल जा चुकल छल।

द्रौपदीक पाँच पुत्र ओहि राति शिविरमे छलाह। ओ सभक जीवनक अपन नाम, शिक्षा, सम्बन्ध आ भविष्यक कल्पना छल, यद्यपि युद्धक अभिलेख हुनका सभकेँ प्रायः पिताक नामसँ चिन्हैत अछि। शिविरक भीतरक हल्ला हुनका सभकेँ जगौलक। युवकसभमे केओ शस्त्र खोजलक, केओ दोसराकेँ उठबैत रहल, आ केओ बाहरक बाट परखलक। आक्रमणकारीकेँ एहि सभक व्यक्तित्व बुझबाक समय नहि छल—समय देबाक इच्छा सेहो नहि। रात्रिक हिंसामे ओ सभ मारल गेलाह। ई वध पाण्डव पाँच भाइसभक मृत्यु नहि छल; मुदा पाँच जीवित जीवनक अन्त छल, जाहि क्षतिक परिमाण कोनो वंशक गलतीसँ घटैत नहि।

अश्वत्थामा एक क्षण लेल थमकलाह। ओहि नवयुवकसभक बीच एक चेहराक उमेर हुनका अपन बचपनक मित्रसभक याद दिलौलक। एक मृत सैनिकक लग मुड़ल हाथमे पतली डोरी छल; सम्भवतः शस्त्रक बन्धन, सम्भवतः घरसँ आनल कोनो साधारण वस्तु। ओकर अर्थ अश्वत्थामा नहि जानैत छलाह। फेरो ओ देखलनि जे बंद अँगुरीमे डोरी बचल अछि, जीवन नहि। ई दृश्य हुनका रोकि सकैत छल, मुदा ओ अपन भीतर ओकर अर्थ बदलि देलनि—“ओ शत्रुपक्षक पुत्र छल।” परिचयक ई सामान्यीकरणे हुनका हर व्यक्तिक मृत्यु लेल अलग उत्तरदायित्वसँ बचेबाक भ्रम देलक।

शिविरक परिचारिका जब घायलकेँ बाहर लऽ चलबाक प्रयास कएलनि तँ बाहरी मार्गपर भगदड़ छल। ओ अपना सहायककेँ स्पष्ट कहलनि, “जे जीवित अछि, ओकरा छोड़ि सामान नहि उठाएब।” ओ एक छोट मुँहवला घैल हाथसँ गिरि पड़ल देखलीह; पानि माटिमे समा गेल। भीतर बेहोश सैनिककेँ उठेबाक लेल दू हाथ कम पड़ि रहल छल। परिचारिका मदद मँगलीह, मुदा बाहरक आवाजमे हुनकर पुकार डूबि गेल। ओहि असमर्थताकेँ हुनकर अपराध नहि कहल जा सकैत। हुनकर निर्णय एखनहुँ जीवनक ओर छल, जखन कि आक्रमणक मार्गपर ओही जीवनक विरुद्ध निर्णय कएल जा रहल छल।

दुआरक कात कृप आ कृतवर्मा दूरसँ उठैत हल्ला सुनलनि। कृतवर्मा कहलनि, “अभ्यन्तरक युद्ध बाहर आबि रहल अछि।” कृप उत्तर देलनि, “भीतर युद्ध शुरू कहाँ भेल? हम सभ सुतल शिविरपर चढ़ाइ कएलहुँ।” कृतवर्मा नहि कहि सकलाह जे हुनका किछु सुनाइत नहि। भगैत लोक फाटक धरि पहुँचलाह। रातिक अन्हारमे के सैनिक, के निर्बल सहायक—सभकेँ अलग चिन्हब कठिन छल; आ एहि कठिनाइमे दुआर थामि ठाढ़ लोकक काज आरो भयंकर भऽ गेल। कृप एक घायलकेँ हटि जाएबाक संकेत देलनि, मुदा ओहि एक संकेतसँ हुनकर पहराक सहभागिता समाप्त नहि भेल।

कृतवर्मा अपन रथक लग एक नवसैनिककेँ देखलनि, जे चोट खाएल मित्रकेँ कन्हापर लऽ गेल छल। ओ युवक पुछलक, “हमर मित्र बाहर जाइ सकैत अछि?” कृतवर्मा क्षणभरि पथ छोड़लनि; ओकर बाद फेर मार्ग रोकि ठाढ़ भऽ गेलाह। हुनकर मन एहि एक दयासँ अपन पूरा कर्मक कठोरता नरम करए चाहैत छल। कृप एकरा देखलनि। “एक जनकेँ छोड़ि देबासँ बाकी सभक प्रति उत्तरदायित्व घटैत नहि,” ओ कहलनि। कृतवर्मा कठोर भऽ पुछलनि, “तखन हम एतय कियैक ठाढ़ छी?” कृप उत्तर नहि देलनि। प्रश्न दुनूकेँ घायल करि चुकल छल।

धीरे-धीरे शिविरक भीतर उठल आवाज बदलए लागल। पहिने चीख, दौड़, धातुक आघात; फेर किछु ठाम केवल आगि बचल छल, जे असावधानीसँ पसरल। अश्वत्थामा कोनो राजकीय विजयध्वज नहि उठौलनि। हुनका अपन पिताक नाम याद छल, मुदा ओ नामक अर्थ आब हिंसाक धुआँमे धुँधला रहल छल। जकरा मारबाक लेल आएल छलाह, ओकरा मारलनि, तैओ भीतरक शून्यता भरल नहि। ओ अपनासँ कहलनि जे द्रोणक अपमानक बदला लेल गेल। मुदा एहि कथनमे धृष्टद्युम्नक शस्त्रहीन देह, पाँच युवकक छूटल भविष्य आ अनाम सेवकक मृत्यु लेल अलग स्थान नहि छल।

भोरसँ पहिने अश्वत्थामा बाहर अएलाह। हुनकर वस्त्रपर रातिक चिह्न छल। कृप पुछलनि, “धृष्टद्युम्न?” अश्वत्थामा छोट उत्तर देलनि। कृतवर्मा फेर पुछलनि, “पाण्डव?” अश्वत्थामा कहलनि जे शिविरमे पाण्डव भाइसभ नहि भेटलाह। ई उत्तर हुनकर प्रतिशोधक वास्तविक असफलता नहि, हुनकर अपराधक लक्ष्य बदलि जेबाक प्रमाण छल। ओहि राति जिनकर प्राण गेल छल, हुनका सभकेँ कोनो कल्पित विजयसँ वापस

नहि आनल जा सकैत छल। कृप आ कृतवर्मा नजरे मिलबासँ बचलाह। तीनू जीवित छलाह; हुनकर एकसंग बाँचि रहब आब स्वतः निर्दोषताक चिह्न नहि छल।

एक युवा सारथि घोड़ाकेँ पानि देबाक लेल लग अएल। ओ अपन स्वामीसभक मुँह देखिकेऽ बुझि गेल जे कोनो सरल प्रश्नक उत्तर नहि भेटत। ओ कहलक, “बाटमे किछु घायल छथि। हमरा सभक गाड़ीसँ एक फेरामे दू लोक उठि सकैत छथि। जँ अनुमति हो।” कृप तुरन्त कहलनि, “उठाउ।” अश्वत्थामा ओकरा रोकलनि नहि। सारथि अपन साथी संग लौटल, मुदा ओ जे दू लोककेँ बचाएब चाहैत छल, सभकेँ नहि बचा सकल। काजक एहि सीमामे कोनो दार्शनिक आश्वासन नहि छल। तथापि एक घायलकेँ गाड़ीपर चढ़ेबाक समय सारथि दोसराक नाम पुछलक, ताकि आगाँ खोजब सम्भव रहय।

तीनू दुर्योधन लग पहुँचलाह। चोटसँ थाकल राजा भोरक पीयर रोशनी देखबाक स्थिति मे नहि छलाह। अश्वत्थामा हुनका रातिक आक्रमणक समाचार देलनि; विजयक भाषा सुनबैत समय धृष्टद्युम्नक नाम स्पष्ट कहलनि। दुर्योधन क्षीण हर्ष प्रकट कएलनि। ओ विजित पक्षक महत्वपूर्ण सेनानायक मारल गेल सुनि अपन पराजयमे एक शेष प्रतिकार देखैत छलाह। मुदा जखन पाण्डव भाइसभक जीवित रहबाक बात सामने आयल, हुनकर आँखिक कोन कने खिचि गेल। ओ पुछलनि, “तखन के मरल?” अश्वत्थामा नामसभ गनैत गेलाह। एहि प्रश्नमे हुनकर अपेक्षित विजयक संकुचन आ वास्तवमे भेल हत्याक भयावह विस्तार दुनू छिपल छल।

कृप दुर्योधनक कात बैसि घावक पट्टी पुनः देखलनि। हुनकर बोलबाक स्वरमे आब कोनो शास्त्रीय विवादक ताकत नहि बचल छल। “एहि रातिक समाचारकेँ वीरकथा मानि नलेखी,” ओ कहलनि। “जे सुतल छलाह, जे शस्त्रसँ वंचित छलाह, हुनका सभक मृत्युकेँ दिनक युद्धक गणनामे नहि जोड़ल जा सकैत।” अश्वत्थामा कहलनि, “पिता लेल हम जे करबाक छल, कएलहुँ।” कृप उत्तर देलनि, “पिताक प्रति कर्तव्य कहबाक अधिकार अहाँकेँ अछि। मुदा मारल गेल लोकक पक्षसँ सहमति देबाक अधिकार अहाँकेँ नहि।” दुर्योधन चुप रहलाह; हुनकर साँसक बीचक अवकाश आरो बढ़ि रहल छल।

सरोवरक किनार एक स्त्री अपन बालक संग आएल छलीह। ओ कोनो राजवंशक परिचारिका नहि, रणभूमिसँ बिछुड़ल पति खोजैत सामान्य यात्री छलीह। पहरेंदार हुनका

रोकलक, कारण भीतर घायल राजाक विश्राम छल। स्त्री स्पष्ट कहलीह, “हमरा राजा नहि चाही। हमरा जे लोक काल्हि घायल उठौने गेल, ओकर समाचार चाही।” कृप हुनकर प्रश्न सुनलनि, आ दू घायल सैनिकक नामक सूची लेल सारथिकें पठौलनि। स्त्री प्रतीक्षा करैत अपन बच्चाकेँ माटिमे बैसबैत कहलीह, “नाम ठीकसँ पुछिहें।” ओहि स्वरमे राज्यक जय-पराजयक किछु नहि छल; जीवनक अन्तिम सूचना धरि पहुँचबाक अधिकार छल।

अश्वत्थामा सरोवरसँ कने दूर चलि गेलाह। ओ अपन तलवारक धारपर जमी माटि देखैत छलाह। राति भरि हथियार थामने अँगुरी आब थरथरा रहल छल। एक क्षण लेल हुनका याद आयल जे कृप कतेक बेर भोरक प्रतीक्षा करबाक कहने छलाह। ओ चाहिते एहि स्मृतिसँ बचि नहि सकैत छलाह। मुदा पश्चात्तापक पहिल स्पर्श सेहो मारल लोकक जीवन वापस नहि कऽ सकैत छल। दूर उगैत रोशनीमे ओहि डारक आकृति देखाइत छल जतय उल्लू कागपर टूटल छल। पक्षीक प्राकृतिक शिकारकेँ अपन मनुष्यक निर्णयक आदेश बनाओल भूलक उत्तरदायित्व ककरो दोसरापर नहि पड़त।

कृतवर्मा कृप लग आबि कहलनि जे घुड़सवार दलकेँ कहाँ घुमाएब, ई तय करब आवश्यक अछि। कृप पुछलनि, “जतय घुरब, ओतय रातिक वृत्तान्त कोना कहब?” कृतवर्मा कहलनि, “जे भेल से छिपाएब कठिन अछि।” कृप उत्तर देलनि, “छिपाएब कठिन होएब आ सत्य कहबाक निर्णय करब दू अलग बात अछि।” ओ सभ युद्धक अन्तिम बचल मार्ग देखैत छलाह, मुदा पहिल बेर हुनका सभक आगाँ पराजयसँ बेसी भयावह अपन कर्मक इतिहास छल। अश्वत्थामा लग आबि हुनका सबकेँ चलबाक संकेत देलनि। कृप कहला, “घायलकेँ चढ़ाएब धरि ठहरू।” एहि बेर अश्वत्थामा नहि रोकलनि।

भोरक पहिल उजासमे शिविर दिससँ धुआँ उठैत रहल। जे लोक ओतय बचल छलाह, ओ सभ घायलकेँ चिन्हब, नाम गनब, परिवारकेँ समाचार पठाएब आ मृतकक देहक सम्मान रखबाक काजमे लागि गेलाह। ओ सभक श्रम युद्धक विजेताक आदेशसँ नहि, अपन सम्बन्ध आ दायित्वसँ चलैत छल। अश्वत्थामाक प्रतिशोध सम्पन्न भऽ चुकल छल, मुदा ओकर नैतिक मूल्य निर्दिष्ट करबाक अधिकार केवल प्रतिशोध लेनिहार लग नहि छल। एक रातिक हिंसा ओहि समयक निर्णय छल; ओकर दुख आगाँ बहुत लोकक

जीवनमे अलग-अलग ढंगसँ पहुँचबाक छल। आ जे श्वास एखन बचल छल, तकरा
बचएबाक काज दिन निकलिते फेर आरम्भ भेल।

अध्याय ११४ • दवाइ आ बचल श्वास

रातुक अन्तिम पहरामे अस्पतालक पुरान पाँखक दुआरक नीचाँ रखल भीजल बोरा उर्मिला उठौलीह तँ ओकरा भीतरसँ कादोक पातर धार बहि अएल। बोरा पानी रोकबाक लेल राखल गेल छल, मुदा आब ओ अपने पानि सोखि भारी भऽ चुकल छल। उर्मिला ओकरा घीचि सूखल कोनामे रखलीह। गलियाराक माटिमे बनल चिह्न देखिते बुझायल जे पानि पिछिला पहरसँ दू अँगुर आगाँ बढ़ल अछि। बाहरी नालीक बाँध आ भीतरक छतक चुआनक अलग कागद छल; जमीनपर दुनूक पानि मिलि चुकल छल। ओ झाड़ू उठेबाक बदला नर्सिंग-कक्षक घण्टी बजौलीह।

सलमा शेख बाहर अएलीह तँ उर्मिला कहलीह, “रोगीक खाट घुमेबाक गलियारामे पानि अछि। सफाइ कऽ देब, मुदा पहिने रोगीकेँ कतय लए जायत, से तय हो।” सलमाक नजर दुआरक सामनेक लोहेक पहियावला खाटपर पड़ल। ओकर एक पहिया काल्हिए अटकने छल। ओ चाबी लेने कर्मचारीकेँ बजौलीह। “ई खाट नहि चलत। दोसर स्ट्रेचर आणू; ओकर पहिया देखू। जे सुरक्षित नहि, ओकरा ‘जल्दी’ कहलासँ सुरक्षित नहि भऽ जाएत।” नर्सिंग-कक्षक घड़ीमे चारि बजि सैंतीस मिनट छल, मुदा बाहरक फाटकक घड़ी एखनहुँ पाँच मिनट पाछाँ चलैत छल। सलमा अपन पालि-पंजीक समय सही मिलौलीह।

ओही बीच जमुना देवी अपन खाटपर आधा उठि बैसब चाहलीह। साँस लैत हुनका छातीमे कठिनाइ भऽ रहल छल। ओ बोलबाक प्रयास कएलीह, मुदा पूरा वाक्य निकलल नहि। पड़ोसक खाटपर बैसल अनवरी पहिने पानीक गिलास बढ़ौलीह, फेर जमुनाक चेहरा देखिते गिलास रोकि लेलनि। “सलमा दीदी!” हुनकर आवाज बरामदाक बाहर धरि पहुँचल। सलमा दौड़ि अएलीह, जमुनाक दशा देखलीह आ तुरन्त प्रशिक्षित सहयोगीकेँ बजौलनि। अनवरी अपन बेटी रेहानाक कापी खाटपर राखि जमुनाक सिरहाना लग जगह खाली कएलीह। रोगीकेँ बलजोरी उठेबाक बदला ओ सलमाक कहबाक प्रतीक्षा कएलीह।

अनिरुद्ध थोड़े पहिने आपूर्ति-पंजीक संशोधित प्रति जाँचि रहल छलाह। खबर पबिते ओ कक्षमे पहुँचलाह। जमुनाक श्वासक गति देखिकऽ चिकित्सकीय निरीक्षण शुरू करबौलनि आ सलमाकेँ स्वीकृत आपात उपकरणक उपलब्धता मिलाबए कहलनि। “जाँचाधीन पेटी

हाथ नहि लगत,” सलमा पहिनहि स्पष्ट कएलनि। भण्डारक सहायक एहि बेर स्वीकृत पेटी स्वयं लऽ अएल, ओकर नम्बर आ वास्तविक सुपुर्दगीक समय देखौलक। अनिरुद्ध आवश्यक उपचारक आदेश लिखलनि; ओना दवा दियाबाक जिम्मेदारी सलमाक प्रशिक्षित टोलीक छल। जमुना ओकरा सभक चेहरा देखैत छलीह, मानो बुझबाक प्रयत्न करैत जे कियो हुनकर साँसकें गिनतीसँ अधिक मानैत अछि की नहि।

पुरान पाँखक छोट उपचार-कक्षमे रोगीकें राखल जा सकैत छल, मुदा ओकर दीवालक भीतरी परत भिजि कऽ झरि रहल छल। अदिति आ तारा काल्हि जे लाल चिन्ह लगाएने छलीह, ओ एखनहुँ स्पष्ट छल। अनिरुद्ध पुछलनि, “आगाँक सुरक्षित कक्षमे जगह?” सलमा उत्तर देलीह, “एक खाट खाली अछि; बाट घुमि कऽ लम्बा होएत। पाछुक छोट दरवज्जासँ निकासी तेज होएत, मुदा ओकर देहरीक लोहा ढीला अछि।” अनिरुद्ध क्षणभरि ठमकलाह। कम समयवला बाट देखिकऽ ओ पहिने एही दिशामे जाइत छलाह; आइ ओ सुरक्षित घुमाउ गलियाराकें चुनलनि। जमुनाक आपात स्थिति एहि निर्णयकें सरल नहि बनबैत छल।

उर्मिला सुरक्षित गलियाराक चादर हटौलीह। ओहि चादर सभपर अस्पतालक सम्पत्ति-पंजीक छोट रंगीन सूत बान्हल छल; ओ अपन कपड़ाक हिसाब बिगाड़बाक चिन्तामे ओकरा नहि रोकलीह। “ई सभ रोगीक बाटमे छल, तँ हम हटौने छी,” ओ अपन सहायककें कहलीह। “बादमे संख्या मिलत। एखन कोन कपड़ा कोन रोगी लग गेल, बस से लिखू।” सहायता लेल आएल रसोइक एक युवक खाट पकड़बाक प्रस्ताव रखलक। सलमा हुनका धन्यवाद दैत रोकलीह। “अहाँ भिजल थारी आ फिसलन हटाउ। रोगी उठेबाक प्रशिक्षण जेकरा अछि, ओ उठाओत।” युवक क्षणभरि लजायल, फेर अपन भागक काजमे लागि गेल।

फाटकपर तुलसी ताजपुरियाकें फोन पहुँचल। निर्धारित दू वाहनमे एक चालकक विश्राम समय पूरा नहि भेल छल; दोसर गाड़ी रोगी लऽ बाहरी मार्गपर छल। तुलसी कहलनि, “गाड़ी अभी पहुँचत, मुदा ई रोगीकें अस्पतालक सुरक्षित कक्षमे पहिने सँभारू। सडकक आशा मे गलियारामे खाट नहि रोकू।” चालकक ड्यूटी बदलाबए ओ हरिचरण पासवानसँ संपर्क कएलनि। हरिचरण आधा नींदमे आदेश नहि स्वीकारलनि; ओ उपलब्ध

चालक, विश्राम आ सड़कक स्थितिक लिखित सूचना पठौलनि। अनिरुद्धकें वाहनक प्रतीक्षा लम्बा बुझायल, मुदा ई स्पष्ट भऽ गेल जे खाली गाड़ी आ चलए योग्य गाड़ी दू अलग वस्तु छथि।

जमुनाक खाट बाहर निकालबाक तैयारीमे सलमा स्थानान्तरणक क्रम कहलीह। प्रशिक्षित कर्मचारी दू कात ठाढ़ भेल। देवी गोंड प्रशिक्षण-पंजी लऽ दूरीपर रहलि, मुदा सलमा हुनका अगला साफ कक्षमे आवश्यक वस्तु तैयार करबाक अनुमति देलीह। “अहाँ हमरा आँखिसँ उपचार देखैत रहू,” सलमा कहलीह, “मुदा निर्देश बिना कोनो औषधि नहि।” देवी एक-एक सामान गनैत छलीह। घरपर माय लेल राखल सत्तूक छोट थैली हुनकर झोरामे छल; ओकरा ओ खिड़कीक सूखल चौकीपर रखि देलीह। पहिल बेर हुनका बुझायल जे प्रशिक्षणक अर्थ हर समय हाथ बढ़ाएब नहि, कखनो प्रशिक्षित हाथक बाट खाली रखब सेहो अछि।

गुमटीनुमा देहरीक लग जखन पहियावला खाट मुड़ल तँ पाछुक पहिया भीजल जोड़पर क्षणभरि फँसि गेल। कर्मचारी ओकरा जोर दऽ निकालबाक प्रयास कएलक। अनिरुद्ध खाटकें स्थिर रखबाक लेल आगाँ बढ़लाह। ओहि क्षण किनारक ढीला लोहेक पल्ला हिलि कऽ हुनकर बाँहसँ टकरायल; उधरल धारसँ चमड़ी चीड़ि गेल आ सन्तुलन बिगड़िते ओ एक घुटना धरतीपर टेकलनि। खाट नहि उलटल, मुदा अनिरुद्ध उज्जर कुरताक बाँहि लाल भऽ गेल। “खाट रोकू,” सलमा कहलनि। हुनकर आवाज ओतेक दृढ़ छल जे सब हाथ एक क्षणमे थमि गेल।

अनिरुद्ध उठबाक प्रयास करैत कहलनि, “जमुनाकें पहिने लऽ चलू।” सलमा घावपर दबाव देबाक लेल साफ कपड़ा बढ़ौलीह, मुदा स्वयं रोगी लग सँ हटलीह नहि। ओ दोसर प्रशिक्षित परिचारिकाकें अनिरुद्ध लग पठौलीह। “दुनू रोगी छथि,” ओ कहलीह, “मुदा दुन्नूक जरूरत अलग। अहाँ अपन हाथक घाव सँभारू, डॉक्टर बाबू। एखन जमुनाक श्वास हम देखैत छी।” अनिरुद्ध प्रत्युत्तर देब चाहलनि, पर चोटक पीड़ा ओहि वाक्यक भीतर आबि गेल। ओ देवालक सहारे बैसलाह। देवी दौड़ि पटी आनलीह, मुदा कर्मचारीक कहने अनुसार पहिले स्वच्छ सामग्री खोलि तैयार कएलीह।

घावक आकार आ हाथक गति जाँचबाक लेल दोसर पालिक चिकित्सककेँ बजाओल गेल। ओ अस्पतालक नब कक्षमे दोसर रोगी देखैत छलाह। पहुँचि ओ अनिरुद्धकेँ स्पष्ट कएलनि जे स्वयं उठि स्ट्रेचर सँभारब उचित नहि; चोटक जाँच, सफाई आ आवश्यक उपचार पूरा कराएब जरूरी अछि। अनिरुद्धक पहिल आग्रह छल, “हम निर्देशन दऽ सकैत छी।” दोसर चिकित्सक उत्तर देलनि, “जखन अपने घायल छी, तखन निर्णयक भार बाँटब हमरा सभक व्यवस्थित काज अछि। अहाँ जे देखलहुँ से बताउ; मुदा अपन घावक परीक्षणमे हमर निर्णय स्वीकार करू।” अनिरुद्ध अपन चोटसँ बेसी एहि नव भूमिकाक असुविधा अनुभव कएलनि।

सलमा जमुनाक श्वास, चेतना आ उपचारपर प्रतिक्रिया देखैत सुरक्षित कक्षमे पहुँचलीह। प्रशिक्षित टोली स्वीकृत चिकित्सकीय आदेशक अनुसार सहायता दैत रहल। पुरान पाँखक देहरीपर पानि एखनहुँ छल; गोमती बेलदारकेँ खबर पठाओल गेल जे ढीला लोहेक पल्ला तत्काल घेरल जाए, मुदा कोनो मजदूरकेँ असुरक्षित नालीक भीतर नहि उतारल जाए। तारा पहुँचि नब लाल रस्सी बाँधि देलीह। “ई पल्ला पहिने किएक नहि देखल गेल?” एक अधिकारी पुछलक। तारा उत्तर देलीह, “सुरक्षित बाटक नक्शामे ई किनार चिह्नित छल, मुदा आइ वास्तविक हिलनाइ देखायल। निरीक्षणक प्रश्न अछि; आपत्ति लिखू, अनुमानसँ दोषी चुनू नहि।”

कक्षमे जमुना आँखि खोललीह। सलमा हुनकर नाम कहलनि, आश्रस्त करबाक लेल नहि जे संकट बीति गेल, बल्कि देखबाक लेल जे ओ बुझि रहल छथि। जमुना थोड़ेक सिर हिलौलीह। अनवरी बाहरे प्रतीक्षामे ठाढ़ छलीह। “हम जमुनाक घरक नहि छी,” ओ कहलीह, “मुदा ओ हमर सोझाँ श्वासक लेल तड़पैत छलीह। हुनकर अपना लोककेँ खबर दियौ।” सलमा नियुक्त कर्मचारीक माध्यमसँ जमुनाक घरक दर्ज सम्पर्कपर संदेश पठबौलीह। सार्वजनिक रजिस्टरमे ई सूचना नहि टाँगल गेल। अनवरी फेर अपन बेटी रेहाना लग घुरलीह; रेहाना पुछलक, “ओ बुढ़िया फेर बोलतीह?” माय कहलीह, “अभी नहि बुझैत छी। हम प्रार्थना करब, आ डॉक्टर सभ अपन काज करताह।”

दवाइ-भण्डारक सहायक स्वीकृत औषधिक पन्ना लऽ सलमा लग आयल। जाँचाधीन खेपक एक पेटी गोदाममे पहिनहि सीलबन्द छल। “इमरजेन्सी अछि,” सहायक कहलक,

“लोक पुछत जे पेटी बन्द रहिते रोगीकँ किएक रोकल गेल?” सलमा ओकरा रोगीक चार्ट देखेलाक अनुमति नहि देलीह; केवल भण्डारक उपलब्धता-सूची देखलीह। “दवाइक सुरक्षित स्रोत नहि बदलत। जे चाही आ जे सही उपलब्ध अछि, ओकरा अलग लिखू। कमी अछि तँ निर्धारित व्यवस्था सँ मँगाउ।” सहायक पहिल बेर प्रश्न कएलक, “जँ अपन समयसँ नहि पहुँचत?” सलमा कहलीह, “ओ समय सेहो सही लिखब। खोटा उपलब्धता लिखलासँ उपचार नहि पहुँचैत।”

अनिरुद्धक बाँहपर प्राथमिक उपचार चलैत छल। पट्टी बाँधनिहार कर्मचारी हुनका किछु प्रश्न पुछलक, जे चिकित्सक भेला पर ओ सामान्यतः दोसरासँ पुछैत छलाह—चोट लगलाक समय, किनारक वस्तु, पहिले के सहायता देलक। अनिरुद्ध पूरा उत्तर देलनि। हुनकर नजरे सामने सरिता देवीक मृत्यु-जाँचक कागद आ आपूर्ति-सारक अपन पुरान स्वीकारोक्ति घूमि गेल। एक घावक कारण अनिरुद्धकँ हुनकर गलतीक दण्ड भेटि गेल, एहन सोचबाक हुनका इच्छा भेल, मुदा ओ जल्दी बुझि गेलाह जे शारीरिक पीड़ा न्यायिक निर्णयक बदला नहि अछि। ओ कर्मचारीसँ कहलनि, “समय लिखू: पल्लाक जाँच अलग चलत।”

देवी गोंड नर्सिंग-कक्षक पाछाँक कम मेजपर आपात सामग्रीक उपयोगक पंजी तैयार करैत छलीह। हुनकर प्रशिक्षण निरीक्षिका देखलीह जे एक पाँतिमे देवी ‘दवाइ पहुँचायल’ लिखने छथि, जखन ओ केवल बन्द पेटी कक्षमे आनने छलीह। “पहुँचायल आ देल, दुनू अलग अछि,” निरीक्षिका कहलीह। देवी शब्द सुधारि ‘सुपुर्द कएल’ लिखलीह। “कियो पुछत जे रोगीकँ की देल गेल?” ओ पुछलीह। “सलमा आ चिकित्सकक आदेश-पन्ना देखल जाएत। जे अपने नहि देखलहुँ, ओकर जिम्मेदारी अपने नहि लिखू।” देवी ई बात सँभरि लेलीह। पुरान आपूर्ति-विवादक शिक्षा हुनकर प्रशिक्षणक व्यवहारमे एहि दिन पहिल बेर उतरि रहल छल।

आँगनमे गोमती आ तारा लोहेक पल्लाक चारु कात अस्थायी घेरा बना रहल छलीह। पानि खसैत रहला कारण एतय माटि नरम छल। नगरक छोट अधिकारी कहलक, “ई पल्ला खोलि फेकि दिअ, काम समाप्त।” गोमती पुछलीह, “पल्ला हटत तँ ऊपरक अधखुलल जोड़ ककर सहारे रहत? बिना संरचनात्मक अनुमति हम छुड़ब नहि।” तारा

नाप लेलीह, पल्लाक ढीलापन फोटोमे दर्ज कएलनि, मुदा ककरो निजी चेहरा चित्रमे नहि रखलनि। अदिति पहुँचलि तँ हुनका अस्पतालक पुरान पाँखक भार-परीक्षणक अपूर्ण आदेश याद पड़ल। ओ स्थायी मरम्मतिक समयसारिणी माँगबाक लिखित आपत्ति देलीह; रातुक चोटक तुरन्त कारण आ महीनासँ चलैत निकासी-दोषक व्यापक प्रश्न अलग रखल गेल।

जमुनाक घरसँ हुनकर पुतोहु पहुँचलि। ओ सीधा पूछलीह, “हमरा कहू, बचतीह की?” सलमा हुनका झूठ आश्वासन नहि देलीह। “एखन श्वासमे पहिले सँ सहारा भेटल अछि, मुदा चिकित्सकक निगरानी जारी अछि,” ओ कहलीह। पुतोहु पुछलीह जे ओ भीतर बैसि सकैत छथि की। सलमा सीमित समय लेल अनुमति देलीह, हाथ स्वच्छ करबाक व्यवस्था बतौलीह, आ उपचारक बाट खुला राखबाक शर्त रखलीह। पुतोहु जमुनाक हथेली लग अपन अँगुरी रखलीह। वृद्धाक आँखिमे जे थोड़ेक परिचय छल, से पुतोहुक लेल आँसूक कारण बनल, चिकित्सकीय प्रमाण नहि।

जखन दोसर चिकित्सक जमुनाक अगिला उपचार-निर्णय लिखलनि तँ अनिरुद्ध बाहरक खाटपर बैसल छलाह। सलमा हुनका केवल आवश्यक पूर्व उपचारक जानकारी पुछलीह —जमुनाक नियमित औषधिक सूची, पिछिला रातिक प्रतिक्रिया, ककरा सूचना देल गेल। अनिरुद्ध उत्तर देलनि, मुदा फेर आदेश देबाक प्रयास नहि कएलनि। “आइ अहाँ हमर मुँहसँ सब सुनि के लिखैत छी,” ओ सलमासँ कहलनि। सलमा मुस्कुराइत उत्तर देलीह, “काल्हि अहाँ स्वयं लिखि सकब। आइ जे जिम्मेदारी हमर अछि, ओकरा मुँहसँ हाथ धरि जाए देब।” हुनकर मुस्कान छोट छल, मुदा ओहि क्षणमे अधिकारी आ परिचारिकाक बीचक दूरी कने घटल।

उर्मिला दू कक्षमे उपयोग भेल चादर आ पट्टीक संख्या अलग गनलीह। केओ कहलक जे आपदामे एतेक छोट हिसाबक कोन अर्थ। ओ उत्तर देलीह, “एक रोगीक चादर दोसर नामपर चढ़त तँ काल्हि कटौती हमरा हिस्सामे आएत। आ जे उपयोग भेल ओकर स्रोत जानब रोगीक सेहो हक अछि।” ओ अपन पहिलुका कपड़ा-बकाया आन्दोलनकँ एही आपात कालमे सार्वजनिक प्रदर्शन नहि बनौलीह; मुदा पालि समाप्त भेला पर छुटल समय ओ लिखित जोड़लीह। आपदा-सहायताक नामपर नब बकाया बनबाक बाट बन्द

कएल गेल। ओहि बीच रसोइक चन्द्रिका नर्ससभ लेल गरम पानि आनलीह। सलमा कहलनि, “जे ताहि लेल समय लगल, ओकर मजदूरी लिखल अछि ने?” चन्द्रिका हँसलीह —“आजु तँ नर्स सभ सेहो पूछैत छथि!”

फाटक लग पहुँचल गाड़ी खाली रोकल गेल। तुलसी स्वयं देखलीह जे एखन जमुनाकें बाहर पठेबाक निर्णय चिकित्सा-दल नहि देने अछि। चालक जमीरक बदला विश्राम पूरा कएने दोसर चालक छल; ओ उपचारक आदेश बिना गाड़ी भरि लए जायब अस्वीकार कएलक। एक नगर-पदाधिकारी कहलक, “वाहनक उपयोग देखेबाक रिपोर्ट भेजबाक अछि।” तुलसी उत्तर देलीह, “खाली सुरक्षित राखल गाड़ी सेहो सेवा अछि, जँ रोगीकें एहि घड़ी यात्रा उचित नहि। असल यात्रा भेल तँ ओकर समय लिखब।” स्थानीय सहायता-समिति वाहनक प्रतीक्षा-समयक भुगतानक अलग पन्ना स्वीकृत कएलक। चालकक घण्टा खोइ नहि गेल, रोगीकें दिखावटी ढुलाई नहि भेल।

दोपहरक बाद जमुना अपन पुतोहुक हाथ कने दृढ़तासँ पकड़लीह। ओ पूरा वाक्य नहि बाजि सकलीह, मुदा पानि चाहबाक संकेत कएलीह। परिचारिका चिकित्सकीय शर्त अनुसार हुनकर मुखक देखभाल कएलनि; परिवारक आग्रह मात्रसँ किछु नहि देल गेल। पुतोहु एखन बुझि गेल छलीह जे प्रेमक तात्कालिक इच्छा आ उपचारक सुरक्षित क्रम सदैव एक नहि होइत। अनवरी रेहानाक कापीमे एकटा छोट फूल बनाओल देखलीह। रेहाना कहलनि, “बुढ़िया ठीक भेलापर फूल देखाएब।” अनवरी कहलीह, “बनाउ, मुदा हुनका आराम चाही तँ बादमे।” बच्चीक प्रतीक्षा सेहो एहि दिन एकटा छोट, वास्तविक काज छल।

बाहरक भीजल गलियारामे अदिति अस्थायी रोकक बोर्ड लगाओल देखलीह। ओ नगर कार्यालयमे फेर कहलनि जे केवल पहिया अटकबाक घटना देखिकऽ समस्त असुरक्षा रोगी ढोएनिहार मजदूरक गलती नहि मानल जाए। ढीला पल्ला, गलियाराक पानि, भवनक भीतरी चुआन आ बाहरी अवरुद्ध नालीक जाँच अलग चाही। गोमती अपन लिखित मजदूर-बयान देलीह, जाहिमे स्पष्ट छल जे रातिमे ओ दल ओहि देहरीक मरम्मत करब नियुक्त नहि छल। “हमर नाम ताहि काजपर मत चढ़ाउ जे हम देखलो नहि,” ओ कहलीह। अदिति बयान स्वीकार करैत कारणक असिद्ध स्थान खाली रखलीह।

शैलजा अस्पतालक सार्वजनिक काउण्टरपर आयल छलीह, सरस्वती देवीक केसक अगिला सुनवाईक तिथि पूछबाक लेल। अनिरुद्धक चोटक खबर सुनि हुनकर चेहरा बदलल नहि। “अहाँ ठीक होइ, ई चाहैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा हमर सासुक प्रश्नकें एहि घावमे गुम नहि करब।” अनिरुद्ध एक हाथसँ कुर्सीक हत्था पकड़लनि। “नहि,” ओ कहला, “हमर चोटक जाँच आ अहाँक शिकायत दू अलग फाइल अछि।” शैलजा फेर पुछलीह जे अगिला चिकित्सकीय समीक्षा कखन अछि। कर्मचारीक पास निश्चित तिथि छल, ओ प्रमाणित प्रति देलक। दुखक स्थानपर कागद नहि छल; कागद ओकर प्रश्नकें डुबबाक सँ बचबैत छल।

साँझ धरिक निगरानीक बाद जमुनाक श्वासक संकट तत्काल अवस्थामे कने कम भेल, मुदा ओ नियमित निरीक्षणसँ मुक्त नहि भेलीह। सलमा हुनकर बदलल अवस्था चिकित्सकसँ मिलाकऽ लिखलीह। पुतोहु प्रश्न कएलीह जे घर चलि जाउ की राति रहू। सलमा कहलनि, “अहाँक घरक दोसर जिम्मेदारी सेहो अछि; किन्तु आजु राति इलाजक खबर लेबाक व्यवस्था स्पष्ट रहय। इहाँ बैसबाक जगह सीमित अछि, बारी-बारी रहि सकैत छी।” पुतोहु अपन देवरकें संदेश पठौलीह—ओ भोरमे आओत, एखन बेटीकें घरमे देखत। हुनकर निर्णय अस्पतालक पुरुष अधिकारक प्रतीक्षामे नहि ठमकल।

अनिरुद्ध अपन घायल हाथक पट्टी देखैत छला जखन देवी प्रशिक्षणक पन्ना लऽ अनुमति माँगलीह। “हम अहाँक घावक विवरण लिखि सकैत छी?” ओ पुछलीह। अनिरुद्ध कहला, “अहाँ जतेक देखलहुँ से लिखू। हम मरीजक रूपमे जे बतब चाही, ओ अलग अछि। सार्वजनिक पत्रमे हमर फोटो बिना अनुमति नहि।” देवीक चेहरा पर हलुक हँसी आएल। “डॉक्टर बाबू, अहाँ ओही बात कहलहुँ जे हमरा प्रशिक्षणमे बुझाओल गेल—रोगीक देह ओकर अपन।” सलमा सुनि कहलीह, “आ प्रशिक्षण समाप्त भेलाक बाद प्रशिक्षकक समय ओकर अपन।” देवी अपन मायक लेल राखल सत्तू उठा घर जा सकबाक अनुमति लेलीह।

रात्रिक पालि लेल उपस्थित नब चिकित्सक सलमासँ जमुनाक स्थिति सुनलनि। अनिरुद्ध लग बैसलाह तँ ओ हुनका संक्षिप्त घटना-विवरण आ पुरान उपलब्धता-सारक सुधार देखौलनि। “एक समय हम उपलब्धता नहि जाँचने मानि लेने रही,” अनिरुद्ध

कहलनि। “आइ हम स्वयं देखलहुँ जे लिखल सुरक्षित बाटक लोहेक पल्ला हिलैत छल।
दुनू गलती एक समान नहि, मुदा दुनू मे नदेखल बातक भार रोगीपर पड़ि सकैत अछि।”
नव चिकित्सक कहलनि, “एहि अनुभवकेँ रिपोर्टमे रहए दिअ; मुदा अपन चोटक कारण
सभटा अपने माथ नहि लिअ। सुरक्षित प्रणाली एक व्यक्तिक सावधानीसँ नहि बनैत।”

रुखसाना रसोइसँ रातुक भोजनक सूची पठौलीह। अस्पतालक कर्मचारिक लेल रखल
थोड़ेक खिचड़ीक माप, आश्रयक बाँकी भोजन आ मजदूरीक पाली अलग दर्ज छल।
सलमा खिड़की लग बैसि पहिल चम्मच उठबैत समय अचानक हँसि पड़लीह। उर्मिला
कारण पुछलीह। “सुबह डॉक्टर बाबू सभकेँ कहैत छलाह जे ओ हमरा बिना कक्ष नहि
चलत; आब हम हुनका कहि रहल छी जे ओ हमर अनुमति बिना खाटसँ नहि उठताह।”
उर्मिला कहलनि, “एहि दिनक लेखा लिखू—चिकित्सक केँ चुपचाप आराम कराबए मे दू
परिचारिका सफल।” हँसी सुनि अगिला कक्षसँ पुतोहु सेहो कने मुस्कुरेलीह। जमुना श्वास
लैत छलीह; एतबे एखन रातिक पर्याप्त कारण छल।

आकाशमे मेघ आओर घन भेल तँ तारा देहरीक घेरा देखए फेर अएलीह। पल्ला
अस्थायी रूपेँ सुरक्षित कएल गेल छल, मुदा ओ ओकरा चालू मार्ग नहि घोषित कएलीह।
नर्सिंग-कक्षक बाहरी सुरक्षित घुमाउ बाटक नब संकेत टाँगल गेल। अनिरुद्ध अपन ड्यूटीक
हस्ताक्षरक ठाम लिखलनि—‘घायल; प्रत्यक्ष उपचारक जिम्मेदारी हस्तान्तरित’। सलमा
जमुनाक पंजीमे अगिला निरीक्षणक समय राखलीह। दुन्नू कागदपर दू अलग कलमक
निशान छल। राति ओहि अस्पतालमे पानि टपकैत रहल, नालीक मूल अवरोध कायम
रहल, मुदा एक जीवनक देखभाल एक घायल चिकित्सकक हाथसँ निकलि प्रशिक्षित सभ
हाथमे बाँटल जा चुकल छल।

अध्याय ११५ • तस्वीरक अनुमति

अस्पतालक पुरान पाँखक बाहरी देहरीपर लाल रस्सीक गाँठ रातिभरि भीजल रहला सँ कसि गेल छल। भोरमे संकेत ओकरा छुएब नहि चाहलक; ओ अपना फोनक उजासमे रस्सी सँ कनेक दूर ठाढ़ भऽ घेरल बाटक लिखावट पढ़बाक प्रयास करैत छल। चेतावनीक कागदक आधा कोना पानिमे निहुरि गेल छल। नव सुरक्षित घुमाउ बाटक तीर देखाइत छल, मुदा किछु दूरी आगाँ ओकरा चौराहा बुझि भुलबाक सम्भावना छल। संकेत मुँहसँ पढ़लक—“पुरान देहरी बन्द, दक्षिणक बरामदा खुलल।” ओहि समय दू वृद्धा कपड़ाक पोटरी लेने अएलीह आ ठीक ओही बन्द देहरीपर ठमकि गेलीह। हुनका सभकेँ कागदक आधा अक्षर पढ़ाइत नहि छल।

संकेत हाथ उठा रोकलक। “एहिसँ नहि, दाहिन कात घूमू” ओ कहलक। पहिल स्त्री पूछलीह, “घुमाउ बाटमे सेहो पानि अछि ने?” संकेत स्वयं ओहि बाटक सुरक्षित होएबाक दावा नहि केलक। ओ अस्पतालक अस्थायी मार्ग-पहरादारकेँ बजौलक। पहरादार लाल-पीयर चिह्नवला लकड़ीक तख्ती लऽ अएल आ स्त्रीसभकेँ ओहि ऊँच बरामदासँ लऽ गेल जतए काल्हि सलमा रोगी स्थानान्तरणक व्यवस्था करौने छलीह। वृद्धासभ भीतर चलि गेलीह, मुदा संकेतक मनमे ई प्रश्न बचल रहल जे जे पढ़ि नहि सकैत, हुनका लेल लिखल चेतावनी कतेक उपयोगी। ओ अपन कापीमे तख्तीक तीरक नब स्थान बनौलक; ओकर फोनमे ओहि क्षण केवल देहरीक बाहरी दृश्य छल।

सरिता नास्ताक डिब्बा देने हुनका अस्पताल पठौने छलीह। “फोनमे दिनभरि लोकक मुहँ नहि देखैत रहिह,” ओ कहने छलीह, “आ अपन खेनाइ समयपर करिह।” संकेत हँसि देल छल, मुदा काल्हि साँझ घरमे ओकरा एक निजी सन्देश अएल छल, जे बारम्बार स्क्रीनपर झाँपैत छल। ककरो स्नेहसँ लिखल दू पाँति, आगाँक पढ़ाइक विषयमे छोट चिंता, आ ओकर उत्तरमे संकेतक अनगढ़ अभिव्यक्ति। ओहि संवादकेँ ओ स्वयं लेल सँभालि रखने छल। एहन कागद—फोनक भीतर रहलो पर—किसी सार्वजनिक सभा, चिकित्सालय वा नगरक कर्मचारीक सम्पत्ति नहि होइत, ई बात ओकरा अपन घरमे पहिलुका अनेक तस्वीर-विवादसँ बुझाए लगल छल।

उर्मिला बाहरी बरामदामे भीजल चादरक सँख्या मिलबैत छलीह। रातिक निकासीमे दू चादर रोगीक सुरक्षित कक्षमे गेल छल, एकटा पानि पोंछबामे लागल; ओ एहि सभकेँ ‘लापता सामग्री’ नहि लिखबाक आग्रही छलीह। संकेत अपन कापीक तीर हुनका देखौलक। उर्मिला कहलनि, “संकेत, तीर ठीक अछि; मुदा बगलमे लिखिह जे एखन मार्ग जाँचल गेल अछि, सदा लेल स्वीकृत नहि। पानि बढ़त तखन ओहो बदलि सकैत अछि।” संकेत “भोरक जाँच” लिखलक। ओकरा बुझायल जे कखनो एक छोट शब्द लोककेँ अतिशय भरोसासँ रोकि सकैत अछि।

भीतर जमुना देवीक श्वासक देखभाल लेल सलमा शेख अपन दोसर पालि शुरू कएने छलीह। जमुना राति भरि चिकित्सकीय निगरानीमे रहलीह; हुनकर पुतोहु खिड़कीक निचाँ खाट लग थोड़ेक बैसबाक अनुमति पबैत छलीह। अनिरुद्ध अपन घायल बाँहपर नव पट्टी लेने कागद देखबाक लेल अएल छलाह, मुदा प्रत्यक्ष उपचारक आदेश दोसर चिकित्सकक जिम्मामे छल। सलमा हुनका कहलनि, “जखन हाथ एतेक दुखैत अछि तँ कापी हमरा दियौ, अहाँ मौखिक बात बताउ।” ओ मुस्कुरौलाह, “आइ हमहुँ ककरो सुपुर्द कएल सामग्री छी।” उर्मिला एहि पर हँसलीह नहि; ओ देखलीह जे ड्यूटी बदलबाक समय सेहो स्पष्ट चाही।

बाहर दुपहर धरि बचावक एक छोट टोली पुरान पाँखक पाछाँवला कोठरीसँ किछु आवश्यक सामग्री निकालबाक योजना बनौने छल। कोठरी अपने खतरा-चिह्नक भीतर नहि, ओकर पाछुक दीवालसँ जुड़ल पड़ैत छल। तारा बिनौत कहलीह जे दीवालक जोड़क जाँच बिनु वस्तु निकासीपर आदेश नहि होएत। अधिकारीक जल्दी छल—बरसात फेर शुरू होएबासँ पहिने खाट आ स्वीकृत आपूर्ति निकालि लेल जाए। गोमती बेलदार माटिक नमी देखिकऽ कहलीह, “दूरसँ सुखायल जे देखाइत अछि, ओकर नीचाँ गाद अछि। आदमीक पयर नहि पेंचबाक चेतावनी चाही।” एखन कियो भीतर नहि गेल; पहिने ऊँच ठामसँ वास्तविक दृश्य देखबाक तय भेल।

संकेत अपन फोनक कैमरा ऊपर राखि दूरसँ पुरान बरामदाक दीवाल, सुरक्षित रस्सी आ पानि खसबाक नब धार एके फ्रेममे देखौलक। तारा स्वयं ठाढ़ भऽ पुछलीह, “अहाँ एखन की दर्ज करैत छी?” “जे हमरा आँखिसँ देखाइत अछि, आ जे समय फोन बतबैत

अछि,” संकेत उत्तर देलक। “ककरो घर, ककरो चेहरा नहि।” तारा ओकरा निर्देश नहि देलीह जे फोटो निश्चित रूपेँ पुरान भग्नताक कारण बता देत; ओ केवल कहलीह जे बदलैत धारक दिशा देखबाक लेल छोट वीडियो उपयोगी भऽ सकैत अछि, जँ मूल क्रम सुरक्षित राखल जाए। संकेत फोनकेँ स्थिर राखि वीडियो शुरू केलक।

ओही क्षण दोसर कातसँ एक कर्मचारी बाँसक पातर सीढ़ी लेने पास आबए लागल। ओकरा लागल जे बंद बरामदाक भीतरे सँ रास्ता छोट अछि। गोमती दूरसँ पुकारलीह, “ओहि पटिया लग नहि जाउ!” आवाज सुनि कर्मचारी थमकल, मुदा ओकर पाछाँ चलैत सहायक सीढ़ीक अगिला छोर आगाँ धकेललक। बाँसक टुप्पी भीजल पल्लासँ अटकतहि पल्ला चरमराएल; एक मुट्ठी पलस्तर झरि पड़ल। तारा हाथ उठा सभकेँ पाछाँ हटबए कहलनि। कोनो लोक भीतर फँसल नहि, मुदा सहायकक पैर गादमे धँसल आ ओ असन्तुलित भेल। गोपाल माझी नजदीकक ऊँच पटरीसँ रस्सी बढौलनि, तारा स्थिर ठाम चिन्हौलनि, आ सहायक ओहि रस्सीक सहारे बाहर अएल।

बचावक छोट घटनाक समय संकेतक फोन चलैत रहल। ओकर फ्रेममे सहायकक चेहरा नहि, अधिकतर पल्लाक बाहरी जोड़, गाद, बाँसक छोर आ तारा उठा देने चेतावनीक हाथ देखाइत छल। आवाजमे गोमतीक रोक, सीढ़ी खसबाक चरचराहट आ सहायकक “हम बाहर छी” सुनाइत छल। संकेत तखन कैमरा बन्द कऽ देलक, जेना सहायता लेल ककरो बोलबाक बेरमे स्क्रीन पकड़ने रहब आवश्यक नहि। ओ स्वयं सुरक्षित सीमासँ पानीक गिलास लऽ अएल, मुदा बचाव करनिहारक बीच घुसबाक अधिकार अपन नहि मानलक।

सहायकक बाहरी घटना पर खरोंच छल। तारा ओकरा सुरक्षित बेंचपर बैसाबि पहिने पयरक भार सहएबाक स्थिति देखबाक लेल चिकित्सकीय सहायतालोकनि केँ बजौलीह। ओ कहलक, “हमर पहिल इच्छा छल सीढ़ी उठि बान्हि दी। आब देखैत छी जे सीढ़ी अपन भारो नहि झेलि पबैत छल।” गोमती उत्तर देलीह, “तोरा काज करबाक आतुरता पर दोष नहि। जे बाट बन्द कहल गेल, ओतय काज पठाबएबाक प्रस्ताव के देलक—ओहिपर जाँच होएत।” अधिकारी स्वयं पुछलक जे ओकर मौखिक निर्देश ककरा सुनाएल गेल छल।

कोनो एक व्यक्ति पूरा क्रम सुनेल नहि छल; कियो आधा वाक्य, कियो हावभाव, आ कियो सीढ़ी हाथमे देनिहारकेँ मात्र देखने छल।

निरीक्षक पहुँचल तँ अधिकारी कहलक, “फोनमे सब रिकॉर्ड भऽ गेल। भेजि दिअ, दुर्घटनाक पूरा प्रमाण भेटि जाएत।” संकेत जवाब देलक, “हमरा लग जे तीस-पैंतीस सेकेंड अछि, से दऽ सकैत छी। ओकर पहिने कोठरीमे की भेल आ पल्ला के लगौलक, से हम नहि जनैत छी।” गोमती ओकरा दिस देखलीह। “रोकबाक आवाज सुनाइत अछि, मुदा ई आवाजसँ पुरान मरम्मतिक जिम्मेदारी सिद्ध नहि होएत,” ओ कहलीह। अधिकारी कहलक जे जाँचमे पूरा फोन चाही; संकेतक अँगुरी अनायास स्क्रीन ढाँपि लेलक। ओकर माथपर पसीना झलक आएल, कारण साधारण वस्तु बचाबए लेल एक गोठ सार्वजनिक अधिकारीसँ असहमति करब सजिलो नहि छल।

तारा बीचमे कहलीह, “जाँचक विषय निर्दिष्ट करू। पल्लाक खतरा आ आजुक निकासी-जाँचमे फोनक सीमित दृश्य लगत। व्यक्ति निजी फोनमे कतेक तस्वीर राखैत अछि, ओ एहि घटनाक हिस्सा नहि।” अधिकारी पुछलक, “जँ एही फोनमे पुरान दीवालक फोटो अछि तँ?” संकेत उत्तर देलक, “पुरान लाल-चिह्नवला फोटो हम पहिने सीमित निरीक्षण लेल देखौने रही। ओ अलग दिनक अलग दृश्य अछि। अहाँ तकरा मँगब चाहैत छी तँ अलग लिखित कारण बताउ।” एहि उत्तरमे ओकर पुरनका जिद नहि, पहिने सीखल सावधानी छल। तारा कहलीह जे आजुक दृश्यक मूल प्रति सँभालल रहय, आ प्रामाणिक मिलानक लेल समय, स्थान तथा ककर उपस्थिति छल सेहो लिखल जाए।

नैरा समाचार सुनि अस्पताल पहुँचलि। ओ संकेतकेँ पहिले पानि पिअबौलनि; ओकर हाथ अभीयो काँपैत छल। “अहाँ डरि गेलहुँ?” ओ पुछलीह। संकेत सिर हिलौलक, “हँ। हमरा ई भय नहि जे वीडियो खराब अछि। भय ई जे फोन खोलब तँ हमर सभ किछु एहन लोक पढ़त, जिनकर ओहिसँ कोनो काज नहि।” नैरा कहलनि, “जाँचक लेल आवश्यक चीज देब आ निजी जीवनक अधिकार छोड़ि देब दू भिन्न निर्णय अछि। मुदा जे दृश्य अहाँ देब, ओकरा बदलबाक अधिकारो नहि रहत। मूल सुरक्षित रखिह।” संकेत पूछलक जे ओकरा लिखित पन्ना अपन नामसँ देबाक चाही की सरिताक माध्यमसँ। नैरा कहलीह, “तू निर्णय कहिह; मायक सलाह आ सहमति सेहो जरूरी अछि।”

संकेत स्वयं घटनाक समय लिखैत काल दू बेर ठमकल। फोनक घड़ीमे जे समय देखाइत छल, तकरा ठीक रमा कार्यालयक घड़ीसँ मिलेलनि तँ कनेक अन्तर निकलल। “किछु क्षणक अन्तर सेहो लिखू” रमा कहलीह, “कागदपर सब घड़ी एके समय देखाए तखन पाठक एके घटना बुझत।” संकेत अपन पूर्वक पन्नापर काटि नलिखि अलग पाँति जोड़लक—‘फोनक समय, कार्यालयक समयसँ मिलान शेष’। ओकरा मोन पड़ल जे पहिले गोदामक लाल चिन्हक फोटो देखाएबामे दूरीक अनुमान जोड़ि देबाक लोभ छल। आइ ओ सीखि रहल छल जे समयक ठीक सीमा नहि लिखबाओ तस्वीरक सहज चमकमे छिपि जाइत अछि।

सरिता पहुँचलीह तँ हुनका पहिल चिन्ता संकेतक हाथ-पएर छल। “घायल तँ नहि भेलह?” ओ पुछलीह। संकेत कहलक, “नहि। वीडियो बनेबा लेल हम घेराक बाहर छलहुँ।” सरिता ओकर कपाल छुइ कऽ देखलीह, जखनहि बुझलनि जे ई बुखार नहि, भयक पसीना अछि। ओ कर्मचारीकँ कहलीह, “हमरा बच्चाक फोनक सब बात पढ़बाक कोनो अधिकार अहाँकँ नहि अछि। घटना लेल जे जरूरी अछि से निर्धारित करि दियौ; ओकर बाद हम सभ स्वतन्त्र प्रति देखाएब।” संकेत राहतक श्वास लेलक, मुदा माय जे “बच्चा” कहलनि ताहिपर कने मुस्कुरा पड़ल। “हम छोट नहि छी,” ओ मन्द स्वरमे कहल। सरिता उत्तर देलीह, “तँ अपन भोजनक डिब्बा कहाँ राखलह?”

कक्षमे एक टेबुलपर तीन कागद राखल गेल—आजुक संरचनात्मक निरीक्षणक प्रारम्भिक टिप्पणी, घटनाक प्रत्यक्षदर्शीक बयान आ संकेतक दृश्य उपयोग करबाक अनुमति। रमाक आग्रह छल जे अनुमति-पत्रमे दायरा साफ लिखल जाय। संकेत अपन हाथे जोड़लक—आजुक पल्ला, बाहरी पानि, रोकबाक आवाज आ सहायकक सुरक्षित बाहर आबबाक क्रम। निजी फोटो, चिट्ठी, सन्देश, सम्पर्क-सूची अथवा दोसर दिनक चित्र शामिल नहि। फोन अनलॉक करबाक पासवर्ड सौंपब जरूरी नहि। मूल भिडियो संकेतक संरक्षित फोनमे रहत; जाँच-अधिकारी ओकर सामने निर्दिष्ट प्रति तैयार करताह। सार्वजनिक प्रदर्शन वा प्रसार लेल अलग अनुमति माँगब पड़त।

एक तकनीकी सहायक पुछलक जे कटल वीडियो देखलासँ तथ्य अपूर्ण नहि रहत? संकेत कहलक, “जँ आरम्भ आ अन्तक कात अन्हार परत तँ पूरा ओही छोट दृश्य देखाउ,

मुदा हमर पुरान गैलरी नहि।” नैरा एक उपाय सुझौलीह—मूल समयक्रम सुरक्षित राखि केवल ई निर्दिष्ट वीडियो अलग फाइलमे नकल कएल जाए; नकलक अवधि, आरम्भ-अन्तक समय आ प्राप्तकर्ताक नाम दर्ज हो। कियो सार्वजनिक शिक्षण लेल चेहरा ढाँपल प्रति चाहत तँ ओ दोसर उपयोगक अलग निर्णय होएत। गोमती स्वयं कहलीह, “हमर आवाज एतय सुनाइत अछि। हम एहि जाँच लेल अपन आवाज उपयोगक अनुमति दैत छी। मुदा एकरा एहन बनाबय नहि जे हमरा चेतावनीक बादो कियो जानि-बूझि अपराध कएल।”

निरीक्षक सीमित प्रति देखलनि। वीडियोमे लाल रस्सी, सफेद पल्ला, बाँसक टुप्पी, झड़ैत पलस्तर आ सहायकक बाहरी छाया छल। आधा क्षण लेल एक नर्स दूरक दुआर पर देखाइत छलीह; ओकरा एहि घटनामे कोनो भूमिका नहि छल। ओ नर्सक नाम बिना ओकर काजक वर्णन रमा लिखलीह, आ सार्वजनिक प्रतिमे जरूरत पड़ल तँ ओ आकृति अस्पष्ट करबाक शर्त जोड़लीह। पर मूल प्रति बदलबाक बात कियो नहि उठौलक। तारा वीडियो रोकि दू अलग क्षण देखौलीह—बाँस पल्लासँ लगबाक पहिल स्थिति, आ तकर बाद पलस्तर खसब। “दूनूक बीच समय अछि,” ओ कहलीह, “मुदा पल्लाक मूल कमजोरी कतयसँ शुरू भेल, से एहि छोट दृश्यसँ नहि जानल जा सकैत।”

सहायक स्वयं बाहर आएकऽ कहलनि जे ओ अपन पैरक गादमे धँसबाक दृश्य देखबाक अनुमति देत, मुदा ओकर घरक नाम, मायक परिचय आ चित्कारक आवाज सार्वजनिक समाचारमे नहि जाए। “हमरा काम चाही,” ओ कहलक, “लोग हमरा डरपोक कहि बेरोजगार बनाओत तँ?” गोमती उत्तर देलीह, “तोहर कामक सुरक्षा बचत। गलती केकर आदेशमे छल से देखबाक अछि, मजदूरक भयक तमाशा बनएबाक नहि।” संकेत एहि बात सुनि अपन फोन पाछाँ रखलक। ओ चाहैत तँ एहि दृश्यसँ इंटरनेटपर खूब लोकक ध्यान पाबि सकैत छल; मुदा ओकरा सामने दू जीवित व्यक्तिक रोजी आ प्रतिष्ठा छल।

दोपहरक बाद नगरक एक बाहरी संवादकर्मी सूचना-डेस्कपर आयल। “बचावक वीडियो वायरल भऽ गेल तँ छिटे मरम्मत होएत,” ओ कहलक। नैरा उत्तर देलीह, “भवनक दोषक प्रमाण देखाबय चाही; वायरल होएब जाँचक विकल्प नहि।” संवादकर्मी

संकेतसँ सीधा पूछलक, “अहाँ प्रेमक सन्देश सेहो एहि फोनमे राखैत छी, एतेक डर किएक?” ई प्रश्न सुनि संकेतक चेहरा एकाएक तमतमा उठल। कियो ओकर निजी जीवनक अनुमान लगाकऽ सार्वजनिक भीड़मे हँसी बनाबए चाहैत छल। सरिता साफ कहलीह, “एहि प्रश्नक उत्तर एतय ककरो नहि भेटत।” रमा उपस्थितिक पन्नामे लिखलीह जे संबंधित घटना-बाहरक निजी सवाल उठाओल गेल आ ओकर उत्तर देब अस्वीकार कएल गेल।

संकेतक मनमे अपन सहपाठीक सन्देश कौंधि गेल। ओहि सन्देशमे कोनो राजकीय रहस्य नहि, केवल एकटा अपूर्ण कविता-पाँति आ परीक्षा समाप्त भेला बाद एक संग किताब देखबाक इच्छा छल। कियो ओकरा ‘प्रमाण’क नामपर पढ़ि लैत तँ लिखनिहारक विश्वास टूटि जाइत। संकेत एखन सोचलक जे हुनका सभक बीच जे प्रेम अछि, से शायद बहुत नाजुक शब्द नहि, बल्कि एक-दोसराक चुप्पीपर भरोसा अछि। ओ फोन खोलि निजी सन्देश मेटेबाक चेष्टा नहि केलक। मेटब सेहो भयक कारण अपन जीवनक एक हिस्सा अस्वीकार करब होइत। ओकरा आवश्यकता छल जाँचक सीमाक स्पष्ट रेखा, चुप्पें भागि जाएबाक नहि।

साँझक माप लेल तारा, अदिति आ गोमती बन्द पाँखक पाछाँ फेर गेलीह। फोनक दृश्य उपयोग कऽ ओ सभ चेतावनी-रस्सीक ओहि स्थानकेँ पहिचान कएलीह जकरा पाछाँ सीढ़ी आगाँ बढ़ल छल। मुदा पल्लाक भीतरक जोड़ देखबाक लेल पुरान भवनक मरम्मत-बही, मिस्त्रीक बयान आ संरचनात्मक निरीक्षण आवश्यक छल। अदिति अपने पिछिला “छोट मरम्मत” मत वापस लेने छलीह; ओ फाइलमे नव टिप्पणी जोड़लीह जे चेतावनी रहे बावजूद काजक सीमा स्पष्ट नहि कएल गेल छल। “हम जे देखलहुँ से लिखब,” ओ कहलीह, “आ जे नहि देखलहुँ, ओकरा अनुमानक रूपमे छोड़ब।” गोमती जोडलीह जे मजदूरसभक सुरक्षा-आदेश बिना पुनः स्थलमे प्रवेश नहि होएत।

उर्मिला अस्पतालक भीतरक एकटा छोट परदा फेर टाँगलीह। जमुनाक कक्षक दुआर बाहरसँ देखाइत छल, आ मोबाइल उठौने कियो सहजहि रोगीक चेहरा पकड़ि सकैत छल। “मरीजक नाम बिनु फोटो बनाओल जाइत तँ सेहो ओ हुनकर जीवन अछि,” उर्मिला कहलीह। सलमा सहमत भेलीह; ओ सार्वजनिक सूचना लेल जमुनाक स्वास्थ्यक ब्यौरा

नहि, मात्र सेवा-कक्षक स्थिति देबाक निर्णय कएलीह। जमुनाक पुतोहु ई निर्णय सुनि कहलनि, “लोक हमरो कहैत अछि जे उपचार भऽ रहल अछि तँ तस्वीर देखाउ। मुदा मायजीक आँखि खोलबाक क्षण हम सभक घरक अछि।” संकेतकेँ अपन निर्णयक दोसर अर्थ बूझल—ओ जे गोपनीयता माँगलक, से मात्र अपन प्रेम-सन्देशक लेल नहि, दोसरक दुःखक लेल सेहो आवश्यक छल।

इधर रुखसाना राहत-रसोइसँ साँझक भोजन भेजबाक हिसाब करैत छलीह। अस्पतालक बचाव-दलक लेल अतिरिक्त भोजनक माँग अएल छल; एक अधिकारी एहि कामकेँ स्वयंसेवी सहयोग कहि आँगनक स्त्रीसभक नाम बिनु श्रम-पंजी छोड़ए चाहैत छल। रुखसाना ओकरा रोकलीह। “काज आपातकालक अछि, श्रम गायब नहि भऽ जाइत,” ओ कहलीह। संकेत अपन फोनसँ तैयार थारीक फोटो खींचबाक प्रस्ताव रखलक, पर रुखसाना उत्तर देलीह, “फोटो सँ पहिले संख्या, बनबेनिहारक नाम आ भुगतानक पर्ची लिख।” संकेत भोजनक तौल देखलक आ फोटो नलैब नीक बुझलक; सभ सत्य दृश्य बनि के नहि रहैत अछि।

एक वृद्ध नाविक जकर घरक कात पानि उठने छल, अस्पतालक फाटक लग आयल। ओकरा खबर भेटल छल जे गोदामक पाछाँ बाढ़ि सँ पल्ला टूटि गेल आ किछु लोक दबि गेल। संकेत अपन वीडियो देखौलक नहि। ओ शबनमक जारी स्थान-निर्दिष्ट सूचना पढ़िकऽ सुनौलक—कोनो लोक दबि गेलाक पुष्टि नहि, एक सहायक सुरक्षित बाहर निकालल गेल, पुरान पाँखक बाहरी बाट बन्द, अगिला निरीक्षण जारी। वृद्ध पुछलक, “फोनमे तँ सब देखाइत अछि, मुदा लोकक बोलब एतेक अलग किएक?” संकेत कहलक, “एक तस्वीर एक समयक एक कोना पकड़ैत अछि। ओकरा पाछाँ जे नहि देखल गेल, ओहि ठाम अफवाह जल्दी बसि जाइत अछि।” वृद्ध अपन घेरक खबरो अलग देने चलि गेल।

घर घुरबाक बेर सरिता संकेतकेँ फोन खोली देखबए नहि कहलीह। ओ पूछलीह, “जे अनुमति देलह, ओकर प्रति लऽ अएलह?” संकेत मोड़ल कागद निकाललक। सरिता पाँति-पाँति पढ़लीह—व्यवहारिक निरीक्षण लेल सीमित वीडियो; निजी सामग्री निषिद्ध; सार्वजनिक उपयोग लेल नब सहमति; मूल प्रतिक जिम्मेवारी स्पष्ट। “आ तोहर मन?” ओ

पुछलीह। संकेत कहलक, “डरि रहल अछि। मुदा आब हमरा बुझाइट अछि जे डरक कारण सब बन्द करब जरूरी नहि। हम बतब सकैत छी जे कतेक देब।” सरिता थारी राखैत कहलीह, “तँ एखन एतबा देह—भूखक खबर। भात ठंढा भऽ रहल अछि।”

नैरा ओही साँझ अपन कार्य-पन्नामे तीन अलग खण्ड बनौलीह—फोनक प्रत्यक्ष दृश्य, प्रत्यक्षदर्शीक स्वतंत्र बयान, आ भवनक भविष्यक संरचनात्मक परीक्षण। संकेतक नाम सार्वजनिक शीर्षकमे रखबाक बदला ओ लिखलीह जे दृश्य स्वीकृत सीमामे उपलब्ध कराओल गेल अछि। तखने संकेतक अनुमति बिना ओकरा ‘साहसी कैमरा-नायक’ बनाबएब अनुचित होइत। नैराकेँ स्मरण अएल जे पहिने जानकीक दलपर चेहराक समानतासँ गलत आरोप बनल छल। एखन एक सच्चा बचाव-वीडियो सेहो जँ सन्दर्भ छांटी प्रसारित होइत तँ गलत दोषी जन्मि सकैत। ओ पहिल मसौदा फाड़लीह नहि, ओकरा संशोधन-चिह्न लगाकऽ रखलीह।

रात्रि निरीक्षणमे तारा देहरीक कात पहुँचलि तँ पानिक पातर धार पहिल नापसँ कनेक आगाँ अएल छल। पुरान दीवालक भीतरी दशा एखन बिना उपकरण देखब कठिन छल। ओ अगिला दिनक लेल कामक अस्थायी रोक दोहरौलीह। अदिति सार्वजनिक पन्नामे “पुरान पाँखक संरचनात्मक स्थिति पुनर्परीक्षणाधीन” लिखबौलीह; “भवन ढहि चुकल” वा “पूर्ण सुरक्षित” ककरो नहि लिखब देलीह। गोमती रातिक पहरा देनिहारकेँ चेता देलीह जे रस्सीक गाँठ ढीला भेलापर स्वयं भीतर जा कसबाक नहि, ऊपरक ठोस खूँटीसँ नब अवरोध लगाओल जाए। एखन बचावक सफलता सुरक्षित दूरी बनाइ रखब छल।

संकेत भीतर अपन छोट कोठरीमे पैघ कापी खोलि बैसल। ओहि पन्नापर फोनक वीडियो दान देबाक अपन अनुमति-पत्रक नकल नहि, केवल दिनक छोट घटना लिखलक —“आजु एक लोक बाहर अएल। ओकरा बाहर निकाललक रस्सी थामनिहार टोली। हम वीडियो देलहुँ। वीडियो हमर पूरा दिन नहि, आ हमर पूरा जीवन तँ नहि।” ओकर बाद ओ निजी सन्देशक उत्तर लिखलक; लिखल शब्द छोट छल, स्नेहसँ भरल, आ ककरो तेसर व्यक्तिक लेल नहि। खिड़कीक बाहर मेघक गर्जना सुनाइत छल। ओ फोनक आवाज मन्द कऽ देलक, मुदा तकरा बन्द नहि केलक—जरूरत पड़ल तँ अस्पतालक वैध खबर अएबाक बाट खुलल छल।

भोरक निरीक्षणक सूची अदिति कार्यालयमे छोड़ि गेल छलीह। गोदामक सुरक्षित सामग्रीक पहरा चालू छल, रोगी-गाड़ी अपन निर्दिष्ट पालिमे, राहत-रसोइमे श्रमिकक भुगतानक पर्ची अलग; मुदा अस्पतालक पुरान पाँखक ढाँचा एखन निर्णायक जाँचसँ बाहर छल। संकेतक छोट वीडियो एकटा उपयोगी समयबद्ध साक्ष्य बनल, न कि समस्त दुर्घटनाक उत्तर। एक लोक बचि गेल, एक फोनक निजी संसार सेहो बचल, आ तारा द्वारा लगाओल लाल घेराक भीतर जे पुरान कमजोरी बाकी छल, तकर निर्णय अगिला निरीक्षणक वास्तविक भार उठाए बिना होएबाक नहि छल।

अध्याय ११६ • पुरान पाँख

भोरक पहिल पहरामे गोमती बेलदार अस्पतालक पुरान पाँखक बाहरी देहरीपर राखल लाल रस्सीक गाँठ देखलीह। रातिमे ओकरा ऊपरसँ बरखाक महीन बूँद खसल छल; खूँटी मजबूत छल, मुदा ओकरा नीचाँक माटि फुलि गेल छल। गोमती खूँटीकेँ खींचि कसबाक बदला ओकर चारू कात खड़ियासँ छोट घेरा बनौलीह आ पहरेदारकेँ कहलनि, “एहि ठाम पयर नहि राखब। कोनो खूँटी जँ हिलैत अछि तँ ओकरासँ बाँधल चेतावनी सेहो हिलत। पहिने ठोस धरती परखब।” पहरेदार रातिक पंजी खोलि देखौलक। गेटक घड़ी आ अस्पतालक नर्सिंग-कक्षक घड़ीमे फेर अन्तर छल। गोमती अपन घड़ीक समय लिखलीह, मुदा तकरा आधिकारिक समय घोषित नहि कएलनि।

उर्मिला भीतरक सुरक्षित कक्षमे चादर गनि रहल छलीह। पहिने जतेक चादर पुरान पाँखसँ निकसल छल, ओकरा दू अलग ढेरमे बाँटल गेल छल—रोगीक उपयोगमे लगल आ सफाई लेल पठाओल। जमुना देवी एखन उपचाराधीन छलीह, सलमा शेख हुनकर श्वासक निगरानी कऽ रहल छलीह। अनिरुद्धक बाँहपर पट्टी छल; चिकित्सकीय दल हुनका शारीरिक उठाउ-पठाउक काजसँ रोकेने छल। उर्मिला पंजीपर एक खालि पाँति छोड़लीह: पुरान पाँखक ओहि छोट कोठरीमे दू रोगीक पुरान सामान एखनहुँ पड़ल छल। सामान लेबाक अनुमति आ कोठरीमे भीतर जाएबाक सुरक्षा, दुनू एक नहि छल।

तारा बिनौट बाहरी चबूतरा लग अदितिक प्रतीक्षा करैत छलीह। हाथमे काल्हिक नाप-पन्ना आ आजुक पातर काठक पट्टी छल। ओ पट्टीकेँ सीधमे ठाढ़ रखि पुरान देवालक छायाक संग तुलना कएलीह; सीधा माप नहि मानलनि, केवल स्थान-चिह्न बनौलनि। रातिमे जे पातर दरार नजर पड़ैत छल, ओहि दरारक कातसँ पलस्तरक नव कण झरल छल। अदिति पहुँचलि तँ तारा कहलीह, “ई कण रातिक बादक अछि, से देखैत छी। मुदा दरार कतेक भीतर गेल अछि, से बाहरसँ नहि कहि सकैत छी।” अदिति कागदपर “पुनर्परीक्षणाधीन” शब्दकेँ काटलीह नहि; ओकर नीचाँ नब तिथि लिखलीह।

दू कर्मचारी चाहैत छलाह जे पुरान पाँखक पाछुक बाट खोलेल जाए, कारण सुरक्षित घुमाउ गलियारा लम्बा पड़ैत छल। एक कर्मचारी कहलक, “काल्हि एक सहायक बचि

गेल, ई तँ अच्छा बात भेल। आजु तऽ कोनो दुर्घटना नहि।” तारा उत्तर देलीह, “काल्हिक बचाव आजुक प्रमाण नहि। जखन देहलीक पल्ला हिलैत अछि आ माटि बहैत अछि तँ ओहि ठाम एक लोकक बचल रहबासँ ढाँचा मजबूत नहि भऽ जाइत।” अदिति आँगनक जमीनपर पहिने सँ दर्ज निषिद्ध सीमाकेँ दोहरौलीह। “सामग्री उठेबाक लेल सेहो आदेश नहि,” ओ कहलीह। कर्मचारी अपन असन्तोष लिखित रूपमे देबाक बात कहलनि; अदिति ओकरा रोकेलीह नहि।

आँगनक बाहरी भागमे सुगनी सदाय अपन टोली संग छोट नाप-खूँटा रखैत छलीह। ओ सभ नालीक भीतर उतरबाक काज नहि लैत छल। बाहाक मुँहक कात गोदामक विस्तारक दीवाल, दूनू कातक माटि आ अर्धखुलल निकासक जलधारा देखैत गेल। सुगनी सहायककेँ कहलीह, “ओहि भीजल माटिक थुपरीकेँ नदीक गाद कहि लिखिह नहि। ई दीवालक निचलासँ खसल माटि भऽ सकैत अछि, कि बाहरसँ बहि अएल गाद—नमूना अलग लेब जरूरी अछि।” टोली परखल पाँति धरि गेल, ओहिसँ आगाँ नहि। निकासक नाप लेल एतेक दूरीपर ठाढ़ रहब हुनका कठिन छल, मुदा जोखिमक लिखित सीमा ओ अपना हस्ताक्षरसँ स्वीकार कएने छलीह।

नैरा कार्यालयमे रातिक घटना-पत्र पढ़ि रहल छलीह। संकेतक भिडियोकेँ ओ फेर नहि चलौलीह। ओकर सीमित स्वीकृत प्रति सुरक्षित छल, आ तहसँ सम्बन्धित अलग बयान मिलान भऽ रहल छल। अदितिक नब समाचार सुनि ओ अस्पताल एबाक निर्णय लेलीह, मुदा पहिने रमा लग एक पन्ना छोड़लीह—फोनक समय, गेटक समय आ चिकित्सालयक समयकेँ एक मानि क्रम नबनाओल जाए। रमा पुछलीह, “आजु जँ असल दरार बढ़ल अछि तँ काल्हिक चित्र पर्याप्त होएत?” नैरा उत्तर देलीह, “नहि। काल्हिक चित्र काल्हिक साक्ष्य अछि। आजुक स्थिति लेल आजुक नाप चाही।” दूनूक बीच एतबे बात भेल; कियो संकेतक निजी फोन फेर खोलबाक बात नहि उठौलक।

अस्पतालक सुरक्षित कक्षमे सलमा कर्मचारीसभक पालि बदलि रहल छलीह। जमुनाक पुतोहु हुनका भोरक रिपोर्ट पुछलीह। सलमा कहलनि जे रातिक तुलनामे श्वासमे कुछ स्थिरता अछि, मुदा निगरानी आ उपचार एखन आवश्यक अछि। पुतोहु पुरान पाँखक दुआर देखैत पुछलीह, “हमर सासु ओहि ठाम छलथि; घरसँ आनल कपड़ा तँ एखन ओतय

अछि। ओकरा के निकालत?” उर्मिला उत्तर देलीह, “नाम लिखि दिअ; जखन सुरक्षा दल लिखित अनुमति देत, प्रशिक्षित लोक निकालत। ककरो प्रिय चीजक मूल्य बुझैत छी, मुदा ओकरा उठाएबामे दोसर देह जोखिममे नहि देब।” पुतोहु पुछलीह जे जँ बाट सदा लेल बन्द भऽ गेल तँ? उर्मिला उत्तर देबाक बदला पंजीमे वस्तुक ठीक विवरण लिखबौलीह।

आठ बजबाक कात बाहरी चबूतराक कोनासँ एकटा खरखर आवाज अएल। ओ आवाज पहिने भीजल पात खसबाक जकाँ छल। गोमती रस्सीक बाहर ठाढ़ छलि; देखलीह जे पलस्तरक दू पातर पत्ती देवालसँ अलग भऽ कादोमे पड़ल। तारा ओकर आवाज सुनि चौंकलीह नहि, मुदा अपन नाप-पन्नामे चिह्न लगौलीह। किछु क्षण बाद लोहेक पल्ला ऊपरक जोडमे कने झुकल देखायल। अदिति तुरन्त भीतरक कर्मचारीकेँ कहलीह, “जे किछु भीतर अछि, ओतहि रहए दियौ; सभ आदमी सीमासँ बाहर।” छोट आदेश पहिने देल गेल, ओकर बाद कारणक व्याख्या।

पुरान पाँखक निकटवर्ती सुरक्षित गलियारामे दू कर्मचारी एक वृद्ध रोगीकेँ नियमित जाँच लेल लऽ जा रहल छलाह। गोमतीक चेतावनी सुनि ओ सभ खाट रोकलनि। सलमा दूरसँ निर्देश देलीह जे पहिने रोगीक अवस्था देखल जाय; अचानक घुमाएब सेहो जोखिम होएत। प्रशिक्षित कर्मी सुरक्षित घुमाउ बाटक स्थिति जाँचलक, फेर धीरे खाट मोड़लक। वृद्ध पुछलनि, “एहि ठाम हम काल्हियो तँ गेल रही, आइ किएक नहि?” कर्मचारी पहिने कहब चाहलक जे पुरान भवन टूटि रहल अछि, मुदा सलमा रोकलीह। “आजु एहि हिस्साक प्रयोग बन्द कएल जा रहल अछि,” ओ स्पष्ट कहलीह, “अहाँक जाँच दोसर बाटसँ होएत।” भय जगाएब आ सच बात कहब एके काज नहि।

तारा पल्लाक ओर नहि बढ़लीह। ओ माटिपर राखल दूरक माप-चिह्नसँ परिवर्तन देखलीह। एक लम्बा दरार नब नहि बनल छल, मुदा काल्हि जे चिन्हमे दूरी छल, ओकरा कातक प्लास्टर खसि गेल छल। अदितिक सहयोगी इंजीनियर दूरबीन आ मापक उपकरण सँ बाहरी रेखा देखलनि। ओ कहलक जे एहि संकेतसँ सम्पूर्ण ढाँचा कखन खसत, से नहि कहल जा सकैत; मुदा भारवहनक सुरक्षा प्रमाणित नहि अछि। अदिति हुनकर वाक्य हूबहू लिखलीह। कोनो एक आवाजकेँ विपत्ति भविष्यवाणी बनबहुनकर

उद्देश्य नहि छल। उद्देश्य छल—जखन सुरक्षित होएबाक प्रमाण नहि, तखन चलैत बाट बन्द करब।

रमा बाहरक कार्यालयसँ फोनपर पुछलीह, “अहाँ घटनाक समय लिखलहुँ?” अदिति अपन नोट देखलीह। पहिल कण खसबाक समय पहरेदारक पंजीमे छल; दोसर आवाजक समय ताराक नोटमे; पल्लाक झुकाव देखबाक समय तीन गवाहक अनुमानमे कनेक भिन्नता छल। ओ कहलीह, “सटीक एक मिनट बनाबय लेल हम तीनूकेँ मनपसन्द समयपर नहि आनब। क्रम लिखल अछि। आधिकारिक घड़ीक जाँच चलत।” रमा सहमत भेलीह। घटनाक समय तय करब बेकार सूक्ष्मता नहि; बादमे ककरा कखन चेतावनी भेटल, तकर उत्तर एहि अन्तर पर निर्भर करत।

नैरा अस्पताल पहुँचलि तँ चबूतराक बाहरे भीड़ जमा छल। एक जन कहलनि जे भीतरक सभ रोगी दबि गेलाह; दोसर जन कहलनि कोनो दीवाल नहि हिलल, ई केवल काम बन्द करबाक बहाना अछि। नैरा भीड़क बीच नव विवरण गढ़लीह नहि। ओ आधिकारिक सूचना-पन्ना देखौलीह—“पुरान पाँखक निर्दिष्ट भागमे संरचनात्मक परिवर्तनक संकेत; आवागमन बन्द; प्रभावित रोगी आ कर्मिक सत्यापित सूची बनि रहल अछि।” एक पिता अपन बेटीक नाम पुछलनि। नैरा सूचीपन्नाक जिम्मेदार नर्सिंग-कक्षक पता देलीह। ककरो नाम देखल बिना “सभ सुरक्षित” कहबाक अधिकार हुनका नहि छल।

अदिति अगिला आदेशपर हस्ताक्षर कएलीह। पाछुक देहरी, लोहेक पल्ला, पुरान औषधि-कोठरीक लगक छोट मार्ग आ ओहि भागसँ जुड़ल भीजल बरामदा तत्काल बन्द। खाली करबाक सीमा चिन्हित कएल गेल; पर दू सुरक्षित कक्षक उपयोग निदेशक—नर्सिंग टीमक स्वीकृत जाँच धरि जारी रहबाक व्यवस्था बनल। एक अधिकारी कहलनि, “पूरा अस्पताल बन्द कऽ दिअ; ककरो आरोप नहि भेटत।” अदिति उत्तर देलीह, “सुरक्षा लेल जतय जरूरी अछि, ओतय रोकत। जे सुरक्षित परखल अछि, ओकर उपचार बन्द कएलासँ रोगीकेँ अलग हानि होएत। हम आसान वाक्य नहि, यथार्थ सीमा लिखब।”

गोमती कामगारसभक कात गेलीह। दू बेलदारकेँ अधिकारी खिस्सा साफ करबाक नामपर पुरान पाँखक भीतर जाय कहने छल। “आदेशक कागद देखाउ,” गोमती पुछलीह।

अधिकारीक लग मौखिक सूचना मात्र छल। गोमती मजदूरसभक नाम, ओहि समय धरि कएल काज आ बकाया मजदूरी लिखबौलीह। “काम रोकबाक मजदूरी किएक काटत?” एक जवान पुछलक। गोमती कहलीह, “खतरा देखिकऽ काज रोकल गेल अछि। जे घण्टा हम सभ उपलब्ध छलहुँ, से गुम नहि होएत। काज फेर शुरू करबाक लेल नव सुरक्षित योजना चाही।” ओ अपन टोलीकेँ भीतर घुसेबाक बदला बाहरी माप-खूँटाक रखरखावक काज बाँटि देलीह।

बाहा-मुँहथरि जलनिकासीपर सुगनीक नोट पहुँचल। पुरान निकाससँ पानि धीमे-धीमे जा रहल छल, मुदा गोदामक विस्तारक कात एक संकीर्ण अवरोध बाँचल छल। बाहरी खुलल भागमे पानीक ऊँचाइ काल्हिसँ कने कम छल; अस्पतालक देवाल लग भीजल माटि ओतेक कम नहि भेल छल। तारा सुगनीकेँ पुछलीह, “पानिक कमी देखिकऽ भवनक भार हलका भेल, ई मानि ली?” सुगनी कहलीह, “एक मापसँ नहि। बाहरक जल आ भीतरक चुआनक बाट अलग अछि। मुँहथरि खोलब जरूरी अछि, मुदा केकर घरपर पानि मोड़त, से मापने बिना कियो कटान नहि करत।”

आंशिक निकास खुलल दिनक उत्साह एखन बहुतेक लोककेँ याद छल। कियो कहलक जे पाँच हस्ताक्षर भेल अछि तँ नालीक बचेबाक काज तऽ पूरा घोषित भऽ गेल। अदिति स्पष्ट कएलीह जे गोदामक उपयोगयोग्य सामग्री छूटब, बाहाक मुँह पूर्ण खुलब, आ पुरान पाँख संरचनात्मक रूपेँ सुरक्षित होएब तीन अलग परिणाम छथि। अर्धखुलल निकाससँ पानि बहनाइ देखल गेल अछि, मुदा जे अवरोध सन्धिसँ पहिने छल, ओकर एक हिस्सा अबहुँ कायम अछि। एकरा कागदमे लिखलासँ हस्ताक्षरक महत्त्व घटैत नहि; हस्ताक्षरक सीमा साफ होइत अछि।

एक ठेकेदारक प्रतिनिधि कहलनि जे पुरान दीवालक कमजोर भाग तोड़ि तत्काल नब ईंट लगा देल जाए। ललित विश्वकर्मा ओकरा पुछलनि, “तोड़बाक समय ऊपरक छत ककर सहारे टिकत? बगलमे राखल भार कता जाएत? भीतर भिजल आधारक नाप के देत?” प्रतिनिधि बजट-पत्र देखौलक। ललित कहलक, “बजट भार-परीक्षण नहि।” पारो पत्थरकट्टा सुरक्षित स्थानसँ सामग्रीक स्वरूप देखलीह, आ कहलनि जे पाथरक आधारपर जमा पानीक बाट बुझल बिना कटान शुरू नहि करतथि। ओ ठेकेदारक छोट अग्रिम

स्वीकार नहि कएलीह। हुनकर दलकें काज चाही, मुदा अनजान ढाँचा तोड़ि जीविकाक मूल्य जान देब नहि चाही।

अस्पतालक सुरक्षित कक्षमे उर्मिला तेसर बेर उपयोगक कपड़ा गनैत छलीह। अधिकारी कहलक जे सामानक सूचीबद्धता बादमे हो सकैत अछि। उर्मिला कहलीह, “बादमे ककर कम्बल ककरा देल गेल से याद नहि रहत। एखन नाम लिखल गेल तँ गलत भुगतान आ गलत दावासँ बचब।” ओ रुखसानासँ कहलनि जे स्थानान्तरित रोगीसभक लेल भोजनक संख्या नब बनाओल जाय। रुखसाना तुरन्त भोजन रोकलीह नहि; पहिने पूछलीह कोन वार्डमे कतेक लोक अछि, कोन रोगीकें भोजन चिकित्सकीय निर्देशसँ मिलत, आ कतेक परिचारक राति धरि रहत। एके थारी सभकें देनाइ समान सेवा नहि छल।

सरिता सूचना सुनि आश्रय दिशसँ अएलीह। ओ संकेतकें संग आनल नहि, कारण आजुक निरीक्षण लेल ओकर फोन फेर जरूरी नहि छल। नैरा लग पहुँचि कहलीह, “काल्हि जे एक लोक बाहर निकलल, ओ ठीक अछि?” नैरा कहलनि जे ओ कर्मचारी अपने घर पहुँचि चुकल अछि; ओहि बातक पुष्टि भेटल अछि। “आ आजुक?” सरिता पुछलीह। नैरा सूची देखौलीह, किछु नामक कात मिलान बाकि छल। सरिता ओकरा फौरन सार्वजनिक करबाक आग्रह नहि कएलीह। “ककरो घरमे गलत समाचार नहि पहुँचय,” ओ कहलीह। ओहि वाक्यक भीतर मिथुनक अपूर्ण खोजक पुरान थकान सेहो छल, मुदा ओ आजुक भवन-जाँचमे अपन व्यक्तिगतरूपें सब नामक अर्थ घुसौलीह नहि।

दोपहर भऽ रहल छल जखन भीतरी पुरान कोठरीक कातसँ फेर एक असमान आवाज उठल—जकाँ कियो धीरे धरतीपर भारी बासन घीचि रहल हो। सभ बाहरी निषिद्ध सीमा पर छल। एक छोट ईटक टुकड़ी दुआर लग खसल, फेर दीवालक ऊपरी कोनाक पातर हिस्सा अलग भेल। आवाज सुनि छौँक उठल एक परिचारक दौड़ि भीतर घुसबाक प्रयास केलक; ओकरा मोन पड़ल जे निज झोरा भीतर छूटि गेल अछि। गोमती ओकरा रस्सीक बाहर रोकलीह। “झोरामे कोन सामान अछि?” पुछलीह। “घरक पैसा,” ओ हकलाइत कहलक। गोमती हुनकर हाथ कसि पकड़लनि, “पैसाक हानि हमर लेखामे दर्ज होएत; तोहर प्राणक बदला हम कागद नहि दऽ सकैत छी।”

अदिति नव आवाज सुनिते दुआरपर अस्थायी आवागमनक पूरा रोक घोषित कएलीह। आब कोनो प्रशिक्षित कर्मचारी सेहो पुरान पाँखमे सामान लएबाक लेल प्रवेश नहि करत। संरचनात्मक दल बाहरी सुरक्षित बिन्दुसँ जाँच करत; रोगीसभक निकासी वैकल्पिक परखल बाटसँ। आदेश सुनि सलमा तुरन्त सुरक्षित कक्षक शैय्या-सूची मिलौलीह। दू रोगीक स्थान बदलल जाएबाक छल; हुनकर औषधिक समय आगाँ-पाछाँ होएब बिना लम्बा बाटक व्यवस्था चाही। कियो पुछलक जे काल्हि जकरा ‘दूसर सुरक्षित बाट’ कहल गेल, ओकरा आइओ कतेक सुरक्षित मानल जाए? अदिति कहलीह, “हुनका सभक प्रश्न ठीक अछि। प्रत्येक बाटक उपयोगक पहिले ओकर आजुक स्थिति फेर परखू।”

अनिरुद्ध पट्टी बाँधल बाँहसँ आगाँ बढ़बाक चेष्टा कएलनि, मुदा सलमा हुनका नब कक्षक दुआरक कात रोकलीह। “अहाँक अनुभव चाही,” ओ कहलीह, “मुदा घायल हाथ सँ खाट उठाएब नहि।” अनिरुद्ध समय-सूची पढ़ि सूचना देलनि जे जमुनाक उपचारक बीचक एक परीक्षण एखन बाँकी अछि। ओ दोसर चिकित्सकसँ समन्वय कएलनि। जमुना अपन पुतोहुक हाथ थामने छलीह। पुरान पाँखक आवाज हुनका सुनाइत छल की नहि, ई कियो नहि जानैत छल; मुदा पुतोहु स्पष्ट सुनलीह। ओ सलमासँ पुछलीह जे सुरक्षित कक्षक दुआर बन्द कएल जा सकैत अछि की। सलमा बन्द कएलीह, मुदा उपचारक प्रवेशक व्यवस्था खुला रखलीह।

नैरा बाहरक सामुदायिक सूचना-मंच लग पहुँचलि। देवव्रत ओतय उपलब्ध सामग्रीक रसीद देखबैत छलाह। गोदामक दोसर कक्ष खुललाक बाद जे वस्तु अस्पताल पहुँचल छल, ओ सभक उपयोगक अबधि आ नम्बर अलग लिखल छल। नैरा कहलीह, “अहाँक खेपक एकर उपयोग ठीक होइत अछि; मुदा एहि कारण पुरान पाँखक मरम्मतिक हिसाब सही भऽ गेल, से लिखल नहि जाय।” देवव्रत कनेक चुप रहलाह, फेर कहलनि, “गोदाम खोलबाक निर्णय हम ले सकलहुँ। पुरान दीवाल कखन ठीक भेल, तकर प्रमाण हमर बही नहि देत।” ई स्वीकारोक्ति हुनकर पहिलुक कार्यालयी निर्देश वा अन्य जाँचक उत्तर नहि छल, मुदा आजुक सार्वजनिक सूचना झूठ बनबासँ रोकलक।

सुगनी बाहाक मुँहथरि लग फेर गइलीह। खुलेल भागसँ पानि बहैत छल, मुदा ऊपरक घेरक भितरी कात कादो जमि रहल छल। पुरान गोदाम-बिस्तारक छोट ईटक टुकड़ासभ

उधरे पड़ल छल, जेकर स्रोत एके दिनक नहि बुझाईत छल। ओ अपन सहायकसँ नमूना लिअबौलीह, प्रत्येक स्थानक अलग नम्बर लिखबौलीह, आ एक स्थानपर ‘उत्खनन निषिद्ध’ चिन्ह लगेलनि। एक पड़ोसी किसान कहलक, “हमर खेतक पानि निकालब जरूरी अछि, तँ एखनहीं काटि दियौ।” सुगनी उत्तर देलीह, “अहाँक खेतक अधिकार सेहो दर्ज करब। मुदा जँ एतयसँ काटि पानि दोसर घरक भीतर पठा देब, तँ ओकर अधिकार कता जाएत?” किसान असहमत रहल, मुदा अपन खेतक नब माप देबाक सहमति देलक।

अदितिक कार्यमेजपर गोमती तीन अलग कागद रखलीह—काल्हिक पल्ला, आइक दशर, आ आजुक रोकल कार्यघण्टा। ओ कहलीह, “मजदूरक गवाही चाहब तँ अपन निर्देश सेहो साथ राखू।” अदिति आदेश-सूचीमे देखलीह जे पहिने अस्थायी रस्सी लगाबाक लिखित निर्णय भेल छल, मुदा ओकर बादक देखभालक नामे ककरा कखन प्रवेश अनुमति छल, ताहिमे अस्पष्टता अछि। ओहि अस्पष्टताकेँ ओ पन्नामे स्वीकार कएलीह। “एतय चूकक समय लिखब,” ओ कहलीह, “अभी दोषीक नाम नहि।” गोमती उत्तर देलीह, “दोषी चुनबाक जल्दी नहि, रोकल जोखिमपर नब गलती करबाक जल्दी रोकू।”

रमा गवाहसभक घड़ी अलग-अलग नोट करैत फेर फोन कएलीह। अदिति घटना-क्रम सुनौलीह: भोरक नव माटि, आठ बजे कण झरब, फेर पल्लाक झुकाव, दोपहरक असमान आवाज आ ऊपरी कोनाक टुकड़ी खसब। ओ कने रुकि पूछलीह, “कागदमे ‘विफल’ लिखब उचित अछि?” तारा, जे पासे ठाढ़ छलीह, कहलीह, “प्रयोगक दृष्टिसँ पुरान भाग विफल भेल—ओकर सुरक्षित उपयोगक भरोसा समाप्त अछि। मुदा पूरा भवन कखन ढहले, से हम नहि कहि सकैत।” अदिति शीर्षक लिखलीह—‘निर्दिष्ट संरचनात्मक भागक उपयोग-असुरक्षा; पूर्ण आवागमन-निषेध’। समयक साथ सभ गवाहक स्रोत जोड़ल गेल।

ओहि बीच बाहाक किनारक एक घरसँ फूलो अपन दू बच्चा संग सूचना-ठामपर पहुँचलि। ओकरा सभक घरमे पानि एखन प्रवेश नहि कएने छल, मुदा अनाज राखबाक माटिक कोठी भीजल छल। ओ नैरासँ कहलनि, “हमरा बस अस्पतालक समाचार नहि चाही। बाहाक मुँह कहिया आ ककर भूमि काटि खोलत, से घरक स्त्रीसभकेँ सेहो बताउ। दिनमे पुरुष सभ खेत गेल रहैत अछि; रातिमे पानि आबत तँ बच्चा हम सभ उठाएब।” नैरा ओकर बात अलग पन्नामे दर्ज कएलीह। सुगनीक टोली अएला पर फूलो अपन घरक

दीवालपर जलचिह्न देखौलीह, मुदा नमूना ककरो हाथमे देबाक पहिने अपन संकोच सेहो कहलीह—माटि घरक आधारसँ नउखाड़ल जाय। सुगनी बाहरक पृष्ठसँ माप लेलनि। घरक लोकक अनुमति बिना भितरी कोठरीमे प्रवेश नहि भेल। एहि छोट काजसँ गोदामक मुँह तुरन्त नहि खुलल, मुदा अगिला मापक पन्नामे आब केवल सरकारी दीवाल नहि, घरक भीजल अनाज आ रहबाक अधिकार सेहो उपस्थित छल।

साँझक आगाँ उर्मिला थाकि कऽ कोठरीक खिड़कीपर पलभरि टेकलीह। ओ रोज जतेक लोकक चादर गनैत छलीह, आइ ओहि संख्या सँ अधिक हुनका हाथक थकान बढ़ल छल। नैरा हुनका पानि देलीह। “राति लेल घरे जाएब?” नैरा पुछलीह। उर्मिला कहलीह, “पालि बदलब, तब। हमर रहनाइ मात्रे व्यवस्था नहि अछि।” नैरा हँसए चाहलीह मुदा हँसी अल्प रहि गेल। “अगिला वर्षक उराहिमे छुट्टीक हिसाब याद अछि?” पुछलीह। उर्मिला कहलीह, “छुट्टीक दिन हम पोखरिक घाटपर बैसि पानिमे अपन पैर देखब; अहाँ ओकर नाप लेबाक प्रयास नहि करब।” दूनू कनेक हँसलीह, जखनकि फाटक बाहर नया पहराक आवाज उठि रहल छल।

रातिक पालि शुरू भेला सँ पहिने गोदाम आ अस्पतालक बीचक सुरक्षित भूमि-बाट फेर परखल गेल। तुलसी ताजपुरिया चालकसभक विश्राम, गाड़ीक ईंधन आ परखल मोड़ अलग लिखबौलीह। हीरा सहनी खबर पठौलीह जे आजुक बढ़ल धारमे नावक नियमित क्षमता नहि बदलत, यद्यपि सहायता चाहनिहारक संख्या बढ़ल अछि। पारो पत्थरकट्टा अपन दलकँ सन्देश देलीह जे कियो निजी भुगतानक लोभमे पुरान देहरीक भाग तोड़ए नहि जाय। एहि तीन निर्णयमे ककरो चमत्कारी समाधान नहि छल। सभ अपन सीमामे जे सुरक्षित करि सकैत छल, से कएल।

अस्पतालक सूचना-पट्टपर साँझमे नब पन्ना टाँगल गेल। ओहिमे बन्द भागक नाम, प्रभावित सेवाक वैकल्पिक ठाम, आपात रोगी-बाट, मजदूरसभक पुनः प्रवेशपर रोक, आ सम्पर्कक जिम्मेदार व्यक्तिक नाम छल। “समस्त अस्पताल बन्द” अथवा “सब सुरक्षित” सन दू आसान वाक्य ओहिमे नहि छल। एक वृद्धा पढ़ि नहि सकैत छलीह; चम्पा हुनका एक-एक पाँति पढ़ि सुनौलीह। वृद्धा पुछलीह, “हमर बेटा जे ओहि पाँखमे झोरामे रोटी छोड़ने अछि, ओ कब पाओत?” चम्पा कहलीह, “एखन भीतर जाएब निषिद्ध अछि।

ओकर सामानक नाम लिखल जाएत।” वृद्धा अपन बेटाक नाम स्वयं कहलनि, कतओ ‘अज्ञात सामग्री’ लिखए नहि देलीह।

भोरसँ साँझ धरि जे कागद बनल, अदिति ओकर एक प्रति नैराकें देखौलीह। नैरा पुछलीह, “खाली कराओल भागक बाहर जे गलियारा सुरक्षित कहल गेल अछि, तकर सीमा फेर देखल गेल?” अदिति कहलीह, “आजुक उपलब्ध नापपर देखल गेल। पाछुक नव जलचिह्नक पुनर्मापन भोरमे चाही। एखन ई मार्ग शर्तसहित उपयोगमे अछि।” नैरा पुछलीह, “मुदा रातिमे रोगी बढ़ला पर?” अदिति उत्तर देलीह, “तुलसीक भूमि-बाट आ सलमाक उपचार-कक्षक योजना अछि। जखन नव सूचना भेटत, फेर निर्णय बदलब। वर्तमान निर्णयकें शाश्वत आदेश नहि मानब।” नैरा ई वाक्य अपन कापीमे लिखलीह।

फाटकपर पहराक नव दल अएल। गोमती पुरान रस्सीक परे नब ठोस अवरोध देखौलीह; लिखित निषेध पढौलीह; आ पहरेदारसभसँ कहलनि जे भीतरसँ आवाज अएलापर एकाकी दौड़ि प्रवेश नहि करबाक। सूचना आ सहायता लेल निर्धारित सुरक्षित ठाम छल। सँभलैत घुप्प अन्हारमे पुरान पाँखक दीवाल ककरो महल जकाँ नहि, एक थाकल देह जकाँ देखाइत छल, मुदा ई तुलना कोनो संरचनात्मक माप नहि छल। अदितिक कागदपर समय, स्थान आ देखल परिवर्तन छल; गोमतीक पंजीमे रोकल श्रम; सलमाक कक्षमे रोगी; नैराक कापीमे बचल प्रश्न। आजु ओ बाट बन्द भेल जे काल्हि धरि अर्ध-उपयोगमे छल। अगिला निर्णयक लेल जे सुरक्षित मानल गेल, ओकरा सेहो नब दिनक पानि आ भारक सोझाँ फेर जाँचबाक छल।

अध्याय ११७ • नैराक चुनाव

रातिक पहिल पहरामे नैरा अस्पतालक सूचना-मेजपर राखल तीनटा कागदकेँ एक-दोसराक कात सरकौलीह। पहिल पन्नापर लाल स्याहीसँ पुरान पाँखक बाट काटल छल; दोसरमे तुलसी ताजपुरियाक गाड़ी घुमेबाक स्थान, तेसरमे अदितिक साँझक माप छल। भीजल जूतासँ दरबज्जाक आगू माटिक पातर रेखा बनि रहल छल। एक कर्मचारी जल्दीमे कोठरीक कोंचपर राखल लालटेन उठा लेबाक कहलक। नैरा हाथसँ रोकलीह। “ई उजास एतहि चाही। जे बाट चुनब, ओकर नाम अन्हारमे नहि लिखल जा सकैत।” ओ अपन कापीक कोरा पन्नापर तीन शीर्षक बनौलीह—बन्द, शर्तसहित खुलल, आ पुनः परीक्षण बाकी।

गोमती बेलदार पहराक बदलल सूची लऽ पहुँचलि। पुरान पाँखक बाहरी अवरोधपर दू पहरेदार छलाह, मुदा दू घंटाक बाद एक जनक ड्यूटी समाप्त होएबाक छल। “जखन लोक भीतरक झोरा माँगत, तँ पहरेदार थाकि कऽ कने दया देखाओत,” गोमती कहलीह। “ओ दया ओकरा खुद भीतर पठा देत।” नैरा पुछलीह, “बन्द बाटक आदेश सभकेँ बुझाओल गेल?” गोमती कहलनि जे कागद टाँगल अछि, मुदा रातिक रसोइ लेल पानी आननिहार सभ ओकरा पढ़ि नहि सकैत। दुनू ठानलनि—घाटक भाषा, अस्पतालक भाषा आ मजदूरसभक बोलीमे एके निषेध मुँहजोरी कहबाक जिम्मेदारी अलग व्यक्ति लेत। आदेशक अक्षर आ आदेशक पहुँच एक नहि छल।

सलमा सुरक्षित कक्षक भीतरसँ तीन रोगीक नाम पठौलीह। जमुना देवीकेँ नियमित निगरानी चाही छल; एक युवकक पयरमे पट्टी बदलबाक समय भऽ रहल छल; तेसर रोगिणीक श्वासक माप फेर घटि-बढ़ि रहल छल। “सभकेँ एके बेर गाड़ीमे नहि बैसाओल जा सकैत,” सलमा दरबज्जापर आबि कहलीह। “जेकर उपचार एतहि चलि सकैत अछि, ओकरा हल्लामे हटा देब सेहो जोखिम। मुदा जेकरा दोसर कक्षक उपकरण चाही, ओकरा बहुत देरि रोकब ठीक नहि।” उर्मिला कपड़ाक थैली आ रोगी-सूची लऽ संग छलीह। ओ पुछलीह, “बाट परखल गेल अछि, मुदा खाट मोड़बाक ठाम सेहो?” एहि प्रश्नक उत्तर कोनो कागदपर नहि छल।

नैरा अदितिकेँ फोन कएलीह। अदिति बाहरी माप-खूँटा लग तारा बिनौट आ ललित विश्वकर्माक संग छलीह। “एखन जे देखलहुँ, ओ बताउ; काल्हिक भरोसा नहि,” नैरा कहलीह। अदिति उत्तर देलीह, “पुरान उत्तरी पाँख पूर्ण निषिद्ध। पाछुक चचरी सेहो निषिद्ध। पूर्व दिसक बाहरी गलियारा साँझ धरि शर्तसहित परखल; मुदा वर्षाक बाद फेर जलचिह्न देखबाक अछि। दक्षिणक भूमि-बाट गाड़ी लेल उपयोगी अछि, रोगीक खाट ओतए धरि पहुँचेबाक जोड़ अलग।” नैरा तीनू वाक्य जस्ताक तस्ता लिखलीह। ‘सुरक्षित’ शब्दकेँ ओ बिना समय आ सीमा जोड़ने कापीमे नहि देलीह।

बाहरी आँगनमे तारा बाँसक एक छोट माप-छड़ी आ सफेद खड़िया रखने छलीह। ललित देवालसँ कने दूर ईटक समतल भागपर पानीक नया चिह्न देखौलक। तारा कहलीह, “साँझक नापमे एतए कोनो नव दरार नहि छल। एखन सतह भीजल अछि, मुदा केवल भीजल देखिकऽ ढहबाक समय नहि कहल जा सकैत।” गोमती पुछलीह, “तखन कोन बातपर भरोसा?” तारा तीन आधार गनौलीह—जमीनक बाहरी धँसाव, ऊपरक अवयवसँ दूरी आ खाटक वास्तविक घुमाव। ललित जोड़लक जे भारी सामानक पहिल परीक्षणक बदला खाली खाटकेँ नियन्त्रित ढंगसँ घुमाइ कऽ स्थान देखल जाए। ककरो प्राणकेँ परीक्षणक वजन नहि बनाओल जाए।

आँगनक दोसर कातसँ सुगनी सदाय अएलीह। हुनकर पयरपर गाद छल, हाथमे बाहाक जलस्तरक छोट फलक। “पानि पश्चिमक मुँहपर काल्हिसँ अलग ढंगसँ चढ़ि रहल अछि,” ओ कहलीह। “जे तेसर बाट खेतक किनारसँ निकालब, ओकर नीचाँक माटि हम परखल नहि अछि।” एक युवक तर्क केलक जे खेतक बाट छोट अछि। सुगनी उत्तर देलीह, “छोट दूरी आ सुरक्षित जमीन एके वस्तु नहि।” ओ फूलोक घरक भीजल अनाजक कोठीक बात सेहो कहलनि। बाहाक निकासी जल्दबाजीमे मोड़ल गेल तँ ओ घरपर पानि जा सकैत छल। अस्पतालक बचावक निर्णय पड़ोसीक घरक अधिकार मेटि कऽ नहि लेल जा सकैत छल।

तुलसी ताजपुरिया गाड़ी ठाढ़ करबाक स्थानपर सफेद कपड़ाक फाँकी बान्हि चिह्न लगा रहल छलीह। चालक हरिचरण पासवान एक चक्कर लगाकऽ कहलक जे दक्षिणक मोड़मे पहिल गाड़ी निकाललाक बाद दोसरकेँ उल्टा करबाक पर्याप्त ठाम अछि, मुदा भीड़ जमा

भेल तँ रास्ता अटकत। तुलसीक आदेश भेल—गाड़ीक दुआर लग केवल चालक, रोगी-सहायक आ निर्धारित परिजन रहत; जिज्ञासु लोक सूचना-ठामपर। “गाड़ी पहुँचि गेलै तँ उपचार पूरा भऽ गेलै, एना नहि लिखू,” ओ नैरासँ कहलीह। “रोगीकेँ कक्षसँ उठेबाक समयक अलग हिसाब राखू।” नैरा घड़ीक कात अपन पेंसिल टिकौलीह; प्रत्येक चरणमे समय एखन निर्णायक छल।

हीरा सहनीक खबर नदीक कातसँ पहुँचल। नियमित नाव-सेवा घटल रहत, सहायता-नाव खाली राखल गेल अछि, मुदा अन्हार आ बढ़ल धारमे एखन अस्पतालक खाट लऽ नावपर चढ़ाएबाक परखल योजना नहि। श्याम मल्लिक कहलनि जे केशरीक मरम्मतिक नाव सुकखा धरतीपर अछि; ओकरा आपात सेवाक नामपर उतरब निषिद्ध। एक परिचारक असंतोषसँ कहलक, “सभ बाट कियो-ने-कियो रोकि रहल अछि।” उर्मिला उत्तर देलीह, “नहि, सभ अपन जानीत सीमा कहि रहल छथि। हम लोककेँ जे सत्य अछि, ओहि भीतर बाट बनाबए पड़त।” हीराक कठिन निर्णायक अर्थ सहायता नकारब नहि, असम्भव भारक आश्वासन नहि देब छल।

सूचना-मेज लग कबीर आयलाह। हुनकर हाथमे नैराक ओहि दिनक कापीक खाली आवरण छल, जे ओ घरसँ अनने छलाह। “काल्हि अहाँ कागद भीजने लौटलहुँ,” ओ कहलनि, “एहि बेर भीतरक पन्ना नहि भीजय।” नैरा हलुक हँसलीह। “अहाँ कापी लेल एतए अएलहुँ कि हमरा लेल?” कबीर कने संकोचसँ कहला, “दुनू लेल।” ओ अपन थैलीसँ सूखल रुमाल निकालि पन्नाक कात रखलनि। नैरा हुनका विस्तृत दायित्व नहि देलीह, मात्र कहलनि जे सार्वजनिक सूचना-बोर्ड लग रहि परिवारसभकेँ जाँचल समाचार पढ़ि सुनाबथि। “ककरो गुम भेल नाम अनुमानसँ नहि लिखायब,” ओ जोड़लीह। कबीर सिर हिलौलनि। एहि छोट भेटमे ककरो अन्तिम विदाईक भाषा नहि छल।

राति कुछ बढ़लापर अदिति बाहरी गलियारा पुनः परखबाक लेल लौटीह। पुरान पाँखक निषेधरेखा छुइने बिना तारा आ ललित पूर्व दिससँ घुमलाह। ओ सभ जमीनक दू ठाम पानि हटाकऽ सतह देखलनि, ऊपरक झूलैत छज्जासँ दूरी नापलनि, आ गलियाराक मोड़पर खाली खाटकेँ धीरे घुमौलनि। पहिल प्रयत्नमे खाटक एक चक्का चौखटक कात अटकैत छल। ललित ओतए किछु काटबाक प्रस्ताव अस्वीकार केलक; खाट घुमेबाक

दिशा बदलि कऽ दोसर प्रयत्न कएलक। छोट सुधार भेल, मुदा दुआरक चौखट हटा देबाक जोखिम नहि लेल गेल। अदिति समय लिखलीह—रात्रि आठ बजि सैंतालीस मिनट; ‘बाहरी पट्टी शर्तसहित उपयोग योग्य, सतत पुनःनिरीक्षण।’

नैरा चारि छोट रेखा खींचलीह। पहिल—पुरान उत्तरी पाँख बन्द। दोसर—खेतक पश्चिमी किनार अपरखल। तेसर—चचरी आ नावपर रोगी-खाट नहि। चारिम—पूर्वक बाहरी पट्टीसँ दक्षिणक गाड़ी-ठाम धरि, जतेक भाग अदिति—तारा एखन परखने छथि, ओतबे उपयोग। रमा कागद पढ़ि पुछलीह, “एतय ‘आजुक जानकारी’ लिखब?” नैरा लिखलीह, “रात्रि आठ सैंतालीस मिनट धरि उपलब्ध निरीक्षण।” रमा पुनः पुछलीह, “नव चिह्न भेटत तँ आदेश के बदलत?” नैरा अदितिक नाम लिखलीह, आ तत्काल रोगी रोकबाक अधिकार सलमा आ पहरेदारकेँ सेहो जोड़लीह। कियो एक जनक वीरता लेल व्यवस्था खाली नहि छोड़ल गेल।

एखन रोगीक परिवारमे प्रतिवाद शुरू भेल। जमुनाक पुतोहु पुछलीह जे लम्बा बाट गेलासँ उपचारक समय किएक नहि बिगड़त। दोसर रोगिणीक बेटा छोट बन्द गलियाराक दरबज्जा देखाबैत कहलक, “ई तऽ दसो पयरक दूरी अछि।” उर्मिला शांत स्वरमे उत्तर देलीह, “दरबज्जा दसो पयरक अछि, मुदा ओकर ऊपरक भाग असुरक्षित। हमरा समय बचेबाक अछि, प्राणक शर्त पर नहि।” सलमा उपचारक ओहि चरणसभक समय बतौलीह जे कक्षसँ निकलिते नहि रुकबाक चाही। बेटा फेरो चिन्तित रहल, मुदा लिखित सहमतिक पन्नामे छोट बाटक आग्रहक स्थानपर अपन मायक साथ चलबाक अधिकार दर्ज करौलक।

पहिल खाट बिना रोगीक बाहरी पट्टी धरि पहुँचाओल गेल। तारा अपन हाथसँ ठेला नहि, कारण ओ कामक नेतृत्व जखन ललित आ प्रशिक्षित परिचारकक हाथमे छल तँ हुनकर काज चिह्न देखब छल। गोमती भीड़ हटौलीह, उर्मिला खाटक पातर कपड़ा कसि बांधलीह ताकि चक्कामे नहि फँसय। खाली खाट ठीकसँ घुमल। तारा कहलीह, “खाली खाट सफल भेलासँ हर रोगीक भार-परीक्षण पूरा नहि मानू। अगिला निकासीमे गति धीरे राखू, दोसर भार एकेसंग नहि।” एक सहायकक अधीरता थोड़ेक घटल; ओ अपन हाथक पसीना चादरसँ पोंछबाक बदला बाहर रखल कपड़ासँ पोछलक।

पहिल निकास युवकक भेल, जेकर पयरक घाव नियंत्रित छल आ उपचारक समय पुनः गनल जा सकैत छल। सलमाक निर्देशपर ओकर पट्टी आ औषधिक छोटी थैली खाटक संग बाँधल गेल। उर्मिला कागदपर नाम जाँचलनि, मुदा ‘निकालल’ चिन्ह तत्काल नहि लगौलीह; ओहि पंक्तिक लेल गाड़ी-ठामपर प्राप्ति चाही छल। नैरा स्वयं प्रवेशदुआरपर ठाढ़ रहि परिवारक प्रश्नक उत्तर देलीह। खाट मोड़पर क्षणभरि रुकेल, फेर दक्षिणक खुलल भागमे पहुँचल। तुलसीक चालक समय बोललक, आ उर्मिला पन्नाक कोनमे लिखलीह। सभ किछु ठीक भेल, तैओ कियो एकर आधारपर अगिला दू यात्रा स्वतः सुरक्षित घोषित नहि केलक।

दूसर रोगिणीक उपचारकें लऽ सलमा आ अनिरुद्धमे छोट असहमति उठल। अनिरुद्ध घायल हाथसँ चार्ट पकड़ने छलाह, हुनकर कहब छल जे कक्ष बदलल जाए तँ किछु उपकरणक साथ बैकअप चाही। सलमा कहलनि जे जे यंत्र एतहि चालू अछि, ओकरा अलग करबासँ पहिने नब कक्षमे उपलब्धता देखल जाय। हुनकर बात निर्णायक भेल, कारण एहि पालिक उपचारक वास्तविक जिम्मेदारी हुनकर छलनि। देवी गोंड उपकरणक संख्या गनलीह, मुदा स्वयं चिकित्सकीय आदेश देबाक दावा नहि कएलीह। जखन नब कक्ष तैयार भेल तखन रोगिणीक परिवारकें विकल्प बताओल गेल; ओकरा अन्हारमे किछु फर्ज कऽ दऽ चलि जएबाक आदेश नहि भेल।

एहि बीच आँगनमे पानिक पातर धार नब दिशासँ आबी लागल। सुगनी घुटना धरि पानीमे नहि उतरलीह; बाहरी उजासमे माप-खूँटाक पछिला चिह्नसँ तुलना कएलीह। ओ अदितिकें कहलनि जे मुँहथरि लग दबाव बदलबाक संकेत अछि, मुदा एहि क्षण पूर्वी पट्टीक नीचाँक जमीनमे धँसाव नहि देखल गेल। “दू बेर देखलौं,” ओ जोड़लीह, “आ फेर देखब। एकर अर्थ ई नहि जे पानीक काम समाप्त।” अदिति कागदपर अगिला निरीक्षणक समय लिखलीह। गोमती प्रश्न कएलीह जे अगिला निरीक्षण धरि रोगी-निकासी चलत कि ठहरत। अदिति कहलनि—नब जलचिह्न अथवा अवयवक आवाज भेटिते तुरन्त रोक; अन्यथा शर्तसहित प्रक्रिया चालू।

नैरा एक क्षण लेल लाल चिह्नक पन्ना देखैत रहलीह। दिन भरि ओ बहुतक कागदपर ‘प्रमाण अपूर्ण’ लिखने छलीह; एखन ओकर सामने अपूर्णताक बीच काज करबाक प्रश्न

छल। अनिश्रितता मानलासँ निर्णय स्वतः टलैत नहि। ओ सोचलीह—जँ खेतक अपरखल बाट चुनलीह तँ छोट दूरीक आकर्षणमे प्रमाण छोड़ब; जँ चचरी खोलबैत छलीह तँ तारा आ हीराक निषेध तोड़ब; जँ सभ रोगीकेँ अकारण रोकि रखब तँ उपचारक अपन जोखिम बढ़त। पूर्वी बाहरी पट्टी आजुक मापक सीमा भीतर एकटा व्यवहार्य उत्तर छल। एहि उत्तरक अर्थ भविष्यक हर क्षण सुरक्षित होएबाक गारंटी नहि, केवल एखनक तुलनामे जिम्मेदार चुनाव छल।

रमा कहलीह, “अहाँ गलियारामे स्वयं किएक रहब चाहैत छी? सूचना-मेजपर सँ सेहो लेखा रखल जा सकैत अछि।” नैरा पुछलीह, “कागदमे रोगी कक्ष छोड़लक कहिया आ गाड़ीक सुपुर्द भेल कहिया, तकर बीच जे समय अछि, ओ ककर देखल?” उर्मिला कहलीह जे हुनका खाटक संग रहबाक अछि, मुदा प्रत्येक मोड़पर पन्ना लिखब सम्भव नहि। गोमती एक सिपाहीकेँ रास्ताक पहिल बिन्दुपर रखबाक प्रस्ताव रखलीह। नैरा उत्तर देलीह जे ओ दोसर बिन्दुपर सूची मिलाउतीह; जँ परिस्थितिमे बदलाव होएत तँ तुरन्त बाहर लौटि अदितिकेँ खबर करतीह। एहि कामक लेल हुनका भीतरक निषिद्ध भागमे जाएबाक आवश्यकता नहि छल। रमा हुनकर योजना स्वीकार कएलीह, मुदा दोसर व्यक्ति संग रखबाक शर्त जोडलीह।

कबीर जानकारी-पट्ट लग बैसल एक वृद्धक घरक पता लिखि रहल छलाह। नैरा हुनका पन्ना देखौलीह—कुन बाट बन्द, कुन एखन खुलल, ककरा सूचना देबाक अछि। कबीर पुछलनि, “अहाँक रातिक खाना?” नैरा अपन थैलीसँ रुखसानाक देल एक छोट रोटी निकाललीह, जे एखन धरि हाथे नहि लगल छल। “एतए समय गनैत रही तऽ पेटक घड़ी अलग बजैत अछि,” ओ कहलीह। कबीर रोटी आधा करबाक आग्रह नहि कएलनि; ओ केवल गुनगुना पानि आनलनि। दूनू एक क्षण चुप रहलाह। ई चुप्पी कोनो अनिष्टक पूर्वसूचना नहि, थाकल लोकक सामान्य निकटता छल। नैरा कहलनि, “सूचना बदलत तँ पुरान पन्ना हटाउ, मुदा ओकर प्रति फाड़ब नहि।” कबीर ओहि काजमे लागि गेलाह।

गाड़ी-ठामपर पहिल युवकक परिवार पहुँचल तँ हरिचरण प्राप्तिक सही समय दर्ज करौलक। जतेक देरि खाट लगल, तकर दोष एक कर्मचारीपर नहि मढ़ल गेल। उर्मिला पन्नाक एक कोनमे रेखा खींचि कहलीह, “एहि समयकेँ अगिला खाटपर नकल नहि

करब। हर रोगीक गति अलग।” सलमा पुनः जाँचलनि जे युवा रोगीकेँ जे दवा देल गेल छल, तकर नाम आ मात्राक पन्ना संग अछि। अनिरुद्ध एखन बैसल लिखि रहल छलाह। ओ उर्मिलासँ कहलनि, “अहाँ कतेक कालसँ बिना बैसल काम करैत छी?” उर्मिला कहलीह, “काम गनू तऽ अधिक; विश्राम गनू तऽ कम।” सलमा तुरन्त अगिला पालिक एक प्रशिक्षित सहायक पठेबाक आश्वासन देलीह।

गोमती अपन टोलीमे एक नव मजदूरकेँ राखलीह जे बारंबार निषिद्ध देहरीक दिस देखैत छल। ओकर नाम इंदर छल, आ ओकर औजारक झोरा पुरान कोठरीमे छूटल छल। “काल्हि भोरमे रोजीक काज अछि,” ओ कहलक, “औजार नहि भेटत तँ ठेकेदार मजदूरी काटत।” गोमती ओकर नामसँ लिखित प्राप्ति-पर्ची बनबौलीह। “तोर औजारक हानि दर्ज होएत,” ओ कहलीह, “मुदा हम ककरो चुपकेसँ भीतर पठाएब नहि।” इंदर पहिल बेर अपन औजारक सूची स्पष्ट कहलक—छेनी, हथौड़ी, नाप-डोरी, दू कसनी। तारा एकरा सुनि कहलनि जे ई वस्तुसभ कल्हिक सुरक्षित निरीक्षणक बादे निकालल जा सकत; भोरक पहिने कोनो वचन नहि। इंदर असन्तोष दबौलक, मुदा निषिद्ध रेखासँ हटि गेल।

रातिक बीचल समयमे एक वृद्ध रोगीकेँ चक्कर अएल। भीड़मे कियो कहलनि जे पुरान छोट गलियारा खोलल जाए, नहि तँ समय बर्बाद होएत। नैरा तत्क्षण उत्तर नहि देलीह; सलमाक निर्देश सुनलीह। सलमा कहलनि जे रोगीकेँ पहिने ओतहि सुरक्षित ठाममे जाँचल जाय, माथा थिर कएल जाय, आ स्थिति अनुसार स्थानान्तरणक निर्णय हो। रोगीक बेटी आक्रोशमे पुछलीह, “हमरा बापक जानक जिम्मा के लेत?” नैरा कहलीह, “हुनकर जानक मूल्य पर कोनो शॉर्टकट नहि चुनब। आ इलाजक निर्णय हम नहि, चिकित्सकीय दल लेत।” ई सुनि बेटी रोबए लागलीह; रुखसानाक टोलीक एक स्त्री हुनका पानि देलीह, बिना हुनकर डरकेँ मूर्खता कहने।

तारा फेर पूर्वक पट्टी देखबाक अएलीह। कोनपर रखल टॉर्चक उजासमे ओ पूर्वी देवालक ऊपर पातर नमी देखलीह। छूएब वा ठोकब उचित नहि बुझलनि; ललितकेँ संकेत कएलीह जे बाहरी मापसँ दूरी दर्ज करथि। “एकरा दरार कहब एखन जल्दबाजी,” ललित कहलक, “मुदा एकरा अनदेखो नहि करब।” अदिति निरीक्षणपन्नामे नव टिप्पणी लिखलीह—‘ऊपरी नमीक चिह्न; नियमित पुनःजाँच; कोनो नव भार नहि।’ ओ खाटक

क्रम एक समयमे एकेक राखबाक आदेश दोहरौलीह। नैरा ई संशोधन अपन मार्ग-पत्रमे जोड़लीह। जे जानकारी बदलल, निर्णय ओकर संग बदलैत रहल; एहि काममे एकर बाद एकटा छोट विराम अनिवार्य बनैत गेल।

दूसर खाट चलबाक पहिने उर्मिला अपन बाँया हाथक नाड़ी कने दबौलीह। लगातार भीजल चादर निचोड़ब, खाट स्थिर करब आ हिसाब लिखबासँ अँगुरी सुन्न पड़ि रहल छलनि। देवी गोंड पुछलीह जे ओ विश्राम चाहैत छथि कि नहि। उर्मिला कहलीह, “एक पालि बदलबा दे, तँ दोसर महिला समय पर भोजन करि सकत।” देवी अपना जिम्माक सामग्री गनती पूरी कऽ हुनका कपड़ाक थैली सम्भारब प्रस्ताव देलीह। सलमा ई व्यवस्था स्वीकार कएलीह; उपचार-संकेतक जिम्मा प्रशिक्षित सहायककें देल गेल। उर्मिला रोगी लगे रहलीह, मुदा सभ सामान अपन हाथे ढोएबाक जिद नहि कएलीह। हुनकर थकान नायकत्वक प्रमाण नहि, श्रमक वास्तविक सीमा छल।

एखन नैरा अपन चुनाव लिखित रूपसँ पाँच पक्षक पालि-मेजपर रखलीह। ओतए सरल शब्दमे लिखल छल—पुरान उत्तरी पाँख बन्द; नाव आ चचरी रोगी-निकासी लेल अनुपयुक्त; खेतक अपरखल किनार अस्वीकृत; पूर्वी बाहरी पट्टी केवल अदितिक समय-विशिष्ट माप आ सलमाक रोगी-सूचीक आधारपर, एक खाट प्रति चरण, आवश्यक पहरा आ तुरन्त रोकबाक अधिकारसहित उपयोगमे रहत। देवव्रत एक पंक्ति जोड़बाक कहला —“गोदाम सामग्री समयपर उपलब्ध”। नैरा उत्तर देलीह, “ई अलग उपलब्धिक रसीद अछि; रास्ताक सुरक्षा ओकरासँ सिद्ध नहि होएत।” देवव्रत फेर बही वापस रखलनि। हस्ताक्षरसभ एहि बेर एक निर्णयक सीमाकें स्वीकार करबाक लेल छल, दोषकें साझा अन्हारमे छिपेबाक लेल नहि।

दूसर खाटक बेला नैरा गलियाराक देखल भागमे एक पहरेदारक कात ठाढ़ रहलीह। उर्मिला रोगिणीक चादरक कोन समेटि खाटक पहिया रोकबैत छलीह। रोगिणी धीमे स्वरमे पुछलीह, “हमर बेटी कता?” नैरा दरबज्जाक बाहर बेटीकें देखौलीह, जे निर्धारित दूरीपर ठाढ़ छलीह। उर्मिला कहलनि, “पहिने मोड़ पार करब, फेर ओ अहाँ संग चलतीह।” खाट धीरे बढ़ल। बाहरी पट्टीपर नव कंपन नहि सुनाइत छल; अदितिक ताजा आदेश तखन धरि बदलल नहि छल। नैरा अपन पन्नामे प्रवेशक समय लिखलीह, फेर आगूक पहरेदारकें

संकेत देलीह। बेटी खाटक पाछाँ चलि गेलीह; हुनकर हाथ खाली छल, मुदा आँखि निरन्तर मायक दिस छल।

पहिल मोड़ पार करिते कियो पछिला आँगनसँ पुकारलक जे रसोइक पानि ढोबएवला छोट गाड़ी ओहि बाटपर प्रवेश करए चाहैत अछि। गोमती ओकरा बाहर रोकलीह। “एक खाट चलैत अछि; दोसर भार बादमे,” ओ कहलनि। रसोइक सहायक क्षुब्ध छल, कारण प्रतीक्षा करिते भोजन ठंढा भऽ रहल छल। रुखसाना स्वयं पहुँचलि आ भोजनक बर्तन दोसर सुरक्षित ठाम रखबबैत कहलीह, “रोगीक खाटक संग रसोइक गाड़ी नहि भिड़त। भोजन गरम करबाक दोसर चूल्हि अछि।” पानि ढोबएवला मजदूरक इंतजारक समय सेहो लिखल गेल। असुविधाक हिसाब जीवित रहला सँ नियम निष्ठुर नहि, उत्तरदायी बनैत छल।

खाटक पछिला पहिया दक्षिणक समतल आँगनमे उतरला पर उर्मिला ठमकि रोगिणीक चादर ठीक कएलीह। नैरा प्रवेश आ निर्गमनक समय मिलौलीह। रमा दूरसँ कागदक संकेत देखौलीह जे गाड़ी-ठामपर दल तैयार अछि। ओहि छोट सफलतापर कियो ताली नहि बजौलक; सभ लोक अपन-अपन काजक अगिला भागमे लगि गेल। सलमाक संदेश अएल जे एक रोगीक उपचार सुरक्षित कक्षमे चलि रहल अछि, ओकरा एखन हटेबाक नहि। नैरा मार्गक उपयोग-सूचीमे ओकर नाम काटलीह नहि, बस ‘स्थानान्तरण स्थगित—चिकित्सकीय निर्णय’ लिखलीह। बीमारी आ भवनक असुरक्षा दुनू एकेसंग उपस्थित छल, मुदा प्रत्येकक उत्तर एक नहि।

तारा अदितिकेँ फेर कहलनि जे रातिक अन्तिम पालि बदलबाक समय नव निरीक्षण अनिवार्य अछि। गोमतीक दल आब नब पहरेदारकेँ प्रशिक्षित करैत छल। नैरा अपन मार्ग-पत्रक एक प्रति अदितिकेँ, दोसर सलमाकेँ, आ तेसर रमा लग राखबाक तय कएलीह। जँ ककरो फोन बन्द भऽ जाय तँ दुसराक कागदसँ निर्णयक समय बुझल जा सकय। ओ उर्मिलासँ पुछलीह, “अगिला खाटक पहिने अहाँ पानि पीबै?” उर्मिला घुट भरि पीबैत कहलीह, “पहिने तोहर घड़ी ठीक कर। एतए हर लोक समय पूछैत अछि, मुदा समय ककरो हाथमे नहि टिकैत।” नैरा हँसलीह आ कापी बंद करबाक बदला घड़ीक सुई फेर देखलीह।

आँगनमे उठल हलुक पवन भीजल देवालसँ लगि कऽ ठंढा भऽ जाइत छल। दूर बाहाक पानीक आवाज एके सुरमे नहि छल; कहियो गादपर अटकैत, कहियो खुलल भागसँ तेज होइत। नैरा एतए ठाढ़ रहबाक चुनाव एक बेर नहि, प्रत्येक नव मापक संग दोहरौने छलीह। ओ बचल सुरक्षित मार्गकेँ परखल सीमामे उपयोग करबाक निर्णय लेने छलीह, ककरो लेल जान देबाक प्रण नहि। पुरान पाँखक लाल रेखा एखनहुँ निषेध छल; पूर्वी बाहरी पट्टीपर पहरा आ रोकबाक अधिकार कायम छल। उर्मिला अगिला रोगीक नाम पुछलीह, नैरा सूची खोललीह, आ दुनू बुझि रहल छलीह जे एहि रातिमे जिम्मेदारीक अर्थ ओहि जानकारीपर काम करब अछि जे एखन देखल जा सकैत अछि—ओहि अगिला मापक दावा नहि, जे एखन हुनका लग छल नहि।

अध्याय ११८ • उर्मिलाक थाकल हाथ

उर्मिला भीजल चादरक किनार अपन बाँया हाथसँ सीधा करैत छलीह, मुदा अँगुरी पहिने जकाँ मुड़ि नहि रहल छलनि। खाटपर पड़ल रोगिणीक पयर दिससँ कपड़ा फेर चक्कामे फँसबाक खतरा छल। ओ चादर नीचे सरका कऽ घुटनासँ दबौलीह, दहिना हाथसँ गाँठ खोललीह आ सहायककें कहलनि, “एखन ठेलू नहि। एक बेर ओहि कातक पहिया देखू।” पूर्वी बाहरी पट्टीपर टाँगल ढिबरीक उजास हवा लागिते काँपैत छल। पुरान उत्तरी पाँखक लाल रस्सी अन्हारमे साफ देखाइत छल, मुदा नव बाटक ऊपरी देवालपर किछु पहिने देखल पातर नमी आब अधिक गाढ़ बुझाइत छल। घड़ीक सुई आगाँ बढ़ैत छल; ओकरा पाछाँ खाटक एक-एक चक्का सावधानीसँ बढ़ैत छल।

नैरा पहिल मोड़पर ठाढ़ रहि आगूक पहरदारसँ संकेत लेलनि। ओहि घड़ी अगिला रोगीक नामक आगे ‘निकासी शुरू’ लिखबाक जगह खाली छलीह। “नाम तखन भरब जखन खाट कोठरी छोड़त,” उर्मिला कहलीह। “बाहर पहुँचब अलग घड़ीक बात।” नैरा कापी निहराइ कऽ पुछलीह, “अहाँक हाथक की भेल?” “थकान भेल,” उर्मिला उत्तर देलीह, “आ थकानकें दुर्घटनाक बाद बहादुरी नहि लिखब। ई काम बांटब जरूरी अछि।” देवी गोंड लग पहुँचि चादर पकड़बाक प्रस्ताव रखलीह। सलमा प्रशिक्षित परिचारककें अतिरिक्त पालिमे पठेबाक सन्देश देलनि। एहि छोट बदलावसँ उर्मिलाक काँध हलुक भेल, मुदा रजिस्टर हुनके लग रहि गेल; ओकर पन्नासभमे कोन कपड़ा कतय पहुँचलक, तकर जोड़ कियो दोसर एखन पूरा नहि बुझैत छल।

आश्रयक कक्षमे रुखसाना गरम पानि राखि रहल छलीह। हुनका लग एक स्त्री अएलीह, जे कहैत छलीह जे हुनकर वृद्ध सासुकें साफ ओढ़ना नहि भेटल। रुखसाना तुरन्त अपन गमछा देबाक स्थिति मे छलीह, मुदा पूछलीह, “रोगिणी कोन खाटक अछि? कपड़ा-अभिलेखमे जे स्वीकृत अछि, से पहिने खोजब।” ओ कोनो वस्तु केवल सही लिखबाक लेल रोकए नहि चाहैत छलीह; ओ जानैत छलीह जे दोसर कोठरीक अन्तिम साफ चादर अकारण उठा लेल गेल तँ ओतए श्वासक रोगीक देह भीजल रहि जाएत। हुनकर सहायिका कंचन पहरक सूची देखौलीह। एक पंक्तिमे ‘दू साफ चादर बाहर गेल’

छल, मुदा सुपुर्दगीक घड़ी लिखल नहि छल। एहि असावधानीक दाम कागद नहि, प्रतीक्षा करैत देह चुकबैत छल।

उर्मिला ओहि पन्नाक बाबत सुनलनि तँ खाट सँभारेनिहारकेँ काज सौँपि दक्षिणक छोट मेज धरि एलीह। “दू चादर बाहर गेल, ई सही,” ओ कहलीह। “एक जमुनाक कक्षमे अछि, दोसर पहिल निकासीवला युवकक संग। जे अहीं माँगैत छी, ओ तीसरी। स्टोरमे राखल गट्टरपर पुरान स्वीकृति संख्या लिखल अछि; आजुक नहि।” कंचन पुछलीह, “तँ खोलब नहि?” उर्मिला ठमकलीह। “रोगीकेँ रोकि राखबाक निर्णय कागद नहि लेत। सलमा जँ आवश्यक कहतीह तँ सुरक्षित कपड़ा अनब। मुदा जे पुरान गाँठ अछि, ओकर अवस्थाक जाँच कऽ लिखू।” हुनका एकटा चाभी खोजबामे समय लागल, कारण सूची राखनिहार सहायक रात्रिक पहरेपर जा चुकल छल। ओहि तीन-चारि मिनटकेँ उर्मिला बादमे अलग लिखबाक निश्चय कएलीह; ओकरा ककरो निजी दोषक कथा बनएबाक इच्छा नहि छल।

सलमा स्वयं आँगनमे अएलीह। हुनकर चेहरा पर जागल रात्रिक थकावट छल, मुदा आवाज थिर। “जमुनाक उपचार चालू अछि,” ओ कहलीह। “जाहि रोगिणीकेँ अगिला खाटपर अनबाक विचार अछि, हुनकर शरीर भीजल कपड़ासँ ठंडा भऽ रहल अछि। साफ सुखायल ओढ़ना चाही; मुदा अव्यवस्थित स्टोरक भीतरे कियो नघुसय।” रमा एक अतिरिक्त कर्मचारी लग सूची देखबाबए गेलीह। उर्मिला कंचनकेँ स्टोरक बाहरी सुरक्षित मेजपर रोकलीह। पाछाँ उभा जवानक मुँहसँ निकलल, “एक चादर लेल एतेक देरि!” उर्मिला ओकरा डाँटलीह नहि। “अहाँ जे भीतर प्रतीक्षा करैत छथि, हुनकर ठंड हमरा बुझाइत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जँ सामानक नाम बदलि देब तँ अगिला रोगीक किछु नहि बचत।”

तारा आ अदिति ऊपरी देवालक नमी फेर देखबाक लेल पहुँचलि। टॉर्चक उजासमे भीजल पलस्तरक रंग नब छल—गाढ़ भूर, तकर किनार सफेद, आ एक बिन्दुपर पानिक चमक। ललित दूरसँ नाप-डोरी खींचि चिह्नक लम्बाइ दर्ज कएलनि। तारा आँखि उठाइ कहलीह, “ई चिह्न पहिनुक फोटोसँ बढ़ल अछि की उजास बदललासँ पैघ बुझाइत अछि, एखन निश्चय नहि। मुदा एकर नीचाँ नव भार नहि लगाउ।” अदिति तत्कालीन आदेशक कात ‘ऊपरी पट्टीक पुनः परीक्षण’ जोड़लीह। नैरा नव सूचना पाबिते अगिला खाट

रोकबाक संकेत देलीह। ओ अपना चुनावक पुरान पन्ना फाइलीह नहि; ओकर कात लिखलीह जे बाटक अनुमति फेर सीमित भेल अछि।

एहि बीच भीतरी उपचार-कक्षसँ पुतोहुक आवाज अएल। हुनकर माय-सम वृद्ध रोगिणीक श्वास नियमित छल, मुदा ओ खाटपर बहुत बेर चित पड़ल रहला सँ बेचैन छलीह। “हमरा बेटी बाहर देखाइत अछि,” वृद्धा धीमे बजलीह, “ओकरा भीतर आबए दियौ।” उर्मिला कक्षमे जा चिकित्सकीय सहायकसँ पूछलीह जे कतेक देरि परिवार पास रहि सकैत अछि। अनुमति भेटल तखन बेटी हाथ धऽ कनेक बैसलीह। “बाहर सब डरबैत किएक अछि?” माय पुछलीह। बेटी उत्तर देलीह, “डर अछि तँ सभ सच-सच बाट देखैत अछि।” उर्मिला अपन दहिना हाथसँ रोगिणीक चादर ठीक करैत कहलनि, “एहि बेर जँ निकासी ठहरत तँ उपचार एतहि चलत, अहाँकेँ अकेला छोड़ब नहि।” हुनकर अपन हाथक कंपन ओहि घड़ी रोगिणी नहि देखलीह।

नैरा आँगनमे कबीरक लिखित संदेश पबिते एक क्षण लेल बाहर देखलीह। कबीर सुरक्षित सूचना-मेजपर परिवारक नामक क्रम मिला रहल छलाह। ओ पूछने छलाह जे पुरान चिह्न बदलल तँ संकेतक फोनक दृश्य सार्वजनिक कएल जाए की नहि। नैरा संक्षिप्त उत्तर पठौलीह—“पुरान दृश्य पुरान समयक साक्ष्य अछि; आजुक मापक जगह नहि लेत। मूल प्रति सुरक्षित।” ओ एहि राति निजता, श्रम आ भवनक जोखिमक दू-दू कापी लऽ चलैत थाकि गेल छलीह, मुदा हरेक कापीक अलग आवश्यकता छल। कबीर दोसर संदेशमे केवल लिखलनि, “पानि पीबिह।” नैराक मोन भेल उत्तरमे किछु हास्य लिखथि; तखन पहरेदारक सीटी सुनाइ पड़ल आ ओ कलम फेर हाथमे लेलीह।

सीटी संकटक नहि, पहर बदलबाक छल। नव पहरेदार पुरान रस्सीक कात गामक दू आदमीकेँ रोकि रहल छल। ओ सभ अपन घरक काठक पेटी बचाबए लेल बन्द पाँख दिस जाए चाहैत छलाह। गोमती बेलदार हुनका समझौलीह जे भीतर रहल निजी वस्तुक लिखित सूची बनत, मुदा असुरक्षित भाग खोलल नहि जाएत। “हमर पेटीमे हमर माय-बापक फोटो अछि,” एक युवक कहलक। गोमतीक स्वर नरम भेल। “तकर दाम हम मापि नहि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा जँ अहाँ एखन भीतर गेलहुँ आ नहि घुरलहुँ तँ फोटो

बचेलाक अर्थ बदलि जाएत।” युवक अपन पेटीक रंग आ कोठरीक स्थान लिखौलक।
पहरादार पहिल बेर अपन कामकेँ सिर्फ रोकटोक नहि, प्रतीक्षाक गवाही मानलक।

खाटक लेल स्वीकृत साफ ओढ़ना अन्ततः दोसर कक्षक अलमारीसँ भेटल। देवी ओकर धुलाईक चिन्ह आ सूखल अवस्था जाँचलीह, सलमा आवश्यकताक पुष्टि कएलीह। उर्मिला पन्नामे अनबाक घड़ी लिखलीह, मुदा कोठरीमे पाछाँ जे समय बितल, ओकरा रजिस्टरक पुरान ‘समयपर उपलब्ध’ पाँतिमे नहि मिलौलीह। “चारि मिनट गुम भेल,” एक सहायक कहलक। “गुम नहि,” उर्मिला उत्तर देलीह, “जे भोगल गेल अछि से दर्ज होएत।” रुखसानाक सहायिका ओढ़ना भीतर पठौलीह। छोट कार्य पूरा भेलापर ई प्रश्न उठल जे रात्रिक पंजी भरबाक पालि ककर छल, आ किएक एक सुपुर्दगीक रसीद समयसँ नहि अएल। उत्तर अगिला भोरक जाँचक लेल राखल गेल; एखन जीवित रोगी सामने छल।

सलमा अगिला निकासक अनुमति देबाक पहिने अदितिक पन्ना देखलीह। “आब ऊपरी नमी बढ़ल,” ओ कहलीह, “तँ पुरान पूर्वी पट्टीक उपयोग कतेक?” अदिति उत्तर देलीह, “एहि समय नया रोगी बाहर निकालबाक प्रक्रिया रोकू। जे सुरक्षित देखल मोड़ धरि पहिने पहुँचि गेल अछि, ओकरा बीचमे छोड़ब सेहो उचित नहि। ओकरा स्थिर ठामपर पहुँचाबि नवा भार रोकब।” नैरा पन्नामे ‘नव प्रवेश बन्द’ लिखलीह। तारा कोनपर अटकल खाट रोकबाक बदला सावधानीसँ अगिला सुरक्षित समतल धरि लेबाक अनुमति देलीह। ककरो एहन नहि लगल जे एहि निर्देशसँ पूरा जोखिम समाप्त भऽ गेल; इएह तत्कालीन कम जोखिमवला रास्ता छल।

उर्मिलाक दलमे ओहि घड़ी चारि लोक छलाह—ओ स्वयं, देवी, प्रशिक्षित परिचारक आ खाट सँभारेनिहार सहायक। नैरा पहरादारक संग देखल मोड़पर सूची मिला रहल छलीह। वृद्ध रोगिणी खाटपर छलीह; हुनकर बेटी सुरक्षित आँगनक दोसर दिस पहुँचि चुकल छलीह। उर्मिला बेटीकेँ आखिरी बेर इशारा कएलीह जे खाट धीरे चलि रहल अछि। भिजल देवालक गन्धमे अचानक एकटा लोहेक घिसटबाक अजीब स्वर घुलि गेल। ई स्वर ककरो गिरल बरतन जकाँ शुरू भेल, फेर लम्बा तान बनि गेल। तारा माथ उठौलीह; अदिति हाथसँ रोकबाक संकेत देलीह। पहिल स्वरक कारण बुझबाक अवसर सभकेँ नहि भेटल।

ऊपरी सेवा-गलियाराक बाहरी कोनसँ पलस्तरक पट्टी अलग भेल। पहिने धूरक पातर बादरि, तकर बाद काठ आ ईटक मिलल तेज आवाज। पुरान निषिद्ध उत्तरी पाँख नहि, पूर्वी पट्टीसँ जुड़ल दोसर भागक एक हिस्सा नीचाँ धँसल। खाट केँ सँभारैत सहायक घुटनापर बैसि गेल, देवी रोगिणीक सिरक सुरक्षा लेल अपन हाथ बढ़ौलीह। उर्मिला खाटक पाछुक पहिया पकड़ि ओहि ठाम रोकलीह जतए धरती हिलैत बुझाइत छल। नैरा अपन कापी छोड़ि खाटपर दौड़लीह नहि; ओ पहिने कातक पहरेदारकेँ ‘नव प्रवेश बन्द’क आदेश जोर सँ दोहरौलीह। धूर आ भीजल चुनाक गन्ध हवा भरि उठल।

देवी आवाज देलीह, “मायजी, हम एतहि छी।” रोगिणीक उत्तर स्पष्ट नहि, मुदा हाथक हलचल देखाइत छल। प्रशिक्षित परिचारक खाटक अगिला छोर स्थिर करैत छल, तखन बीचल मार्गक एक छोट बीम झुकि कऽ चक्काक पाछाँ गिरल। उर्मिलाक पयरक आगे ईटक रेखा पड़ि गेल; उर्मिला पाछाँ हटलीह तँ खाट झुकबाक खतरा छल। “पयर एहि चिह्नक बाहर नहि,” ओ सहायता करनिहारकेँ कहलनि। नैराक नजरि मोड़ आ खाटक बीच नव धूलक परदापर छल। ओ तारा दिस पुकारलीह, “कौन ठाम एखन स्थिर अछि?” तारा उत्तर देबाक पहिने फेर बाहरक देवाल देखलीह; ओ बिना जाँच ककरो ‘सुरक्षित’ कहि नहि सकैत छलीह।

एकटा दोसर धमाका पहिलसँ छोट छल, मुदा ओहिसँ आँगनक बीच रखल सूचना-तख्ती गिरि पड़ल। गोमती बाहरी लोकसभकेँ पाछाँ हटौलीह। रुखसाना भोजनक गरम भगौना उठा बचाबए दौड़बाक बदला चूल्हि बन्द कऽ देलीह, ताकि भागैत लोक पर गरम पानि नहि खसय। कंचन आ चन्द्रिका आश्रयक बच्चासभकेँ भीतरी सुरक्षित कक्षमे लऽ गेलीह; ओ सभ बच्चाकेँ घटना देखबाक उत्सुकतापर डाँटलीह नहि, बस नापल बाटसँ घुमा देलीह। हरिचरण चालककेँ कहलनि जे गाड़ी प्रवेशदुआरपर रोकि मार्ग नहि अँटाउ; संभव आपात-निकासी लेल खुलल जगह छोड़ल जाय। पाँच हस्ताक्षरक सन्धि पहिल बेर एक संग असहाय नहि, व्यवस्थित हाथक रूपमे काम करैत छल।

अदिति ऊपरी भागक विफलताक समय लिखब चाहलीह, मुदा हुनकर घड़ीमे धूर पड़ि गेल छल। तारा अपनी घड़ी देखौलीह; रमाक कार्यालयक पंजी आ संकेतक पहिलुक फोनक समयक अन्तर हुनका सभकेँ स्मरण छल। “हम एखन अनुमान लिखब,” अदिति

कहलीह, “ठीक समय तीन स्रोतसँ मिलत। टूटल कतेक आ किएक, से एखन निश्चय नहि।” रमा घटनाक देखल सीमाकेँ अलग लिखलीह—पहिल आवाज, पहिल सामग्रीक खसना, दोसर आवाज, प्रवेश रोकबाक आदेश। ओ घटनाकेँ ‘पहिले सँ निश्चित दुर्घटना’ नहि कहलीह; पिछिला निरीक्षणमे ऊपरी नमीक उल्लेख छल, मुदा कोन अवयव कहिया विफल होएत तकर माप तत्काल उपलब्ध नहि छल।

उर्मिला खाटक पाछाँ अटकल छलीह। हुनका लग रहल कपड़ा-पंजीक दू पन्ना ईटक धूरसँ भरि गेल छल। ओ ओकरा बचाबए लेल झुकलीह नहि; पहिने रोगिणीक श्वास सुनबाक लेल देवीकेँ पुछलीह। देवी कहलीह, “श्वास अछि, मुदा हम चिकित्सकीय निर्णय नहि देब। सलमाकेँ खबर दिअ।” उर्मिला अपन बाँया हाथ देखलीह—अँगुरी एखन पत्थर पकड़ने जकाँ अकड़ि गेल छल। “तूँ सिर सम्हार,” ओ कहलीह, “हम चक्का पकड़ने छी।” सहायक कहलक, “हम ढील दऽ बाहर छलाँग लगा सकैत छी।” उर्मिला ओकरा रोकलीह नहि, मुदा कहलीह, “जँ हम सभ अलग-अलग हिलब तँ खाट पलटि सकैत अछि। पहिने बाहरक टोलीक बात सुनू।”

नैरा चिह्नक दोसर कातसँ आवाज दैत रहलि। “उर्मिला, हमरा सुनाइत अछि?” भीतरसँ उत्तर अएल, “सुनैत छी, मुदा साफ नहि।” नैरा अपन थैलीक टॉर्च जलौलीह; धूरमे उजास छोट पीयर गोला बनि गेल। ओकरा देखिकऽ उर्मिला पुछलीह, “घड़ी कतेक?” “पहिने तूँ सभ किछु स्थिर रहू,” नैरा उत्तर देलीह। उर्मिला फेर पुछलीह, “हमर रजिस्टरमे आगमन लिखल नहि गेल अछि। ओकरा ‘हुँचि गेल’ नहि लिखिह।” एहि आग्रहक बीचो ओ दर्दक बात किछु नहि कहलीह। नैरा बुझि गेलीह जे रजिस्टर उर्मिलाक लेल निर्जीव वस्तु नहि, कोनो रोगीक वास्तविक पहुँचक प्रतिज्ञा छल। ओ कापीमे स्पष्ट लिखलीह—‘निकासी मार्गमे; प्राप्ति अप्राप्त’।

अदिति बाहरी दीवालसँ दूरी रखि तारा आ ललितसँ सुरक्षित सम्भावित प्रवेशक माप माँगलीह। ललितक पहिल विचार छल जे एक काठक टेक लगा देल जाय। तारा कहलनि, “जतय ऊपरक भारक बाट नहि बुझाइत, ओतय नीचे काठ धकेलबसँ दोसर ढहना होएत।” गोमती अपन मजदूरकेँ रस्सी आनबाक कहलनि, मुदा ककरो कच्चा देवालपर चढ़बाक अनुमति नहि देलीह। “देखल स्थिर धरती धरि रस्सी पहुँचा सकैत छी,” ओ

कहलीह, “बीम उठेबाक काज अभियन्ताक माप बिना नहि।” इंदर अपन छेनीक झोरा लेल पहिने चिन्तित छल; एखन ओ बिना पूछने औजार आगाँ नहि कएलक। ओकरा बुझाएल जे ओजारक उपयोगक ठीक समय होइत अछि, आ ओहि समयकें कियो मात्र भयक बलसँ नहि चुनि सकैत।

सलमा सुरक्षित उपचार-कक्षसँ आवाज सुनि बाहरी मेज धरि पहुँचलि। जमुनाक निगरानी दोसर प्रशिक्षित नर्सकें सुपुर्द करि ओ घिरल रोगिणीक अवस्था बुझबाक प्रयास कएलीह। देवी टुटैत-बनैत आवाजमे श्वासक गति आ देहक स्थिति बतबैत छलीह। सलमा एकटा मात्र प्रश्न बारम्बार स्पष्ट करए चाहलीह—“मायजीक मुँह खुलल अछि? गर्दन स्थिर अछि?” उत्तर भेटलाक बाद ओ भीतरक दलकें बिना स्थिरता खोने जे काज सम्भव छल तक निर्देश देलीह। अनिरुद्ध घायल हाथसँ आगाँ दौड़बाक प्रयास कएलनि, मुदा सलमा हुनका बाहरक चिकित्सकीय सामग्री आ अतिरिक्त दलक सुपुर्दगी सँभारेबाक कहलनि। ओ एहि बेरो हमर सेवा कहि घिरल ठाममे प्रवेशक अधिकार नहि माँगलनि।

रोगिणीक बेटी रस्सीक बाहरी कोनपर आबि कानब लागलीह। “माय ठीक छथि?” ओ पुछलीह। नैरा उनकासँ आँखि नहि चोरौलीह। “उहाँक दलसँ आवाज भेटल अछि,” ओ कहलीह, “देवी हुनकर श्वासक बात कहलनि। हम एखन बाहर पहुँचबाक वचन नहि देब।” बेटी पुछलीह, “तँ कतेक दूरि छथि?” गोपाल माझी बगलमे ठाढ़ छलाह; ओ जमीनक नक्शा देखिकऽ कहलनि, “देवालक एहि कातसँ दू छोट कक्षक दूरी। मुदा बीचमे जे भार खसल अछि, ओ पार करबाक समय अलग अछि।” बेटी पत्थरपर बैसि गेलीह। दूरीक छोट संख्या ओकरा आश्वासन नहि दऽ सकल; समयक असमर्थता ओकरा अधिक भारी बुझाएल।

रमा पाँच पक्षक सन्धि-पंजी खोलि पहराक जिम्मेदारी बाँटलीह। तुलसीक दल बाहर एम्बुलेन्सक पहुँच खोलत; रुखसानाक टोली प्रतीक्षारत परिवार आ कामगारसभकें पानि आ भोजन देत; देवव्रत परीक्षणयोग्य रोशनी आ सामग्रीक सुपुर्दगी लिखित कराओत; अदिति-तारा सुरक्षित मार्गक निर्णय लेतीह; सलमा घिरल रोगिणीक उपचार लेल चिकित्सा-दलक सम्पर्क सम्भारतीह। कियो प्रस्ताव देलक जे ई पाँच हस्ताक्षर ‘सब बचावक गारंटी’ छल। रमा एकदम रोकलीह। “हस्ताक्षर जिम्मेदारी बाँटैत अछि,” ओ

कहलीह, “जे भारक वास्तविक सीमा हम नहि जनैत छी, ओकरा कागदसँ हलुक नहि कऽ सकैत छी।”

रुखसाना थोड़ेक रोटी आ गुड़ कपड़ामे बाँधि बाहरी दलकें देलीह। उर्मिलाक लेल ओ एक छोट कपमे गुनगुना पानि रखौलीह, मुदा भीतर पहुँचत की नहि से अनिश्चित छल। “ओ जेतेक दिन दोसरक चादर धोलक,” कंचन मन्द स्वरमे बजलीह, “ताहिसँ ओ अपना थकानक बात कमे करैत अछि।” रुखसाना उत्तर देलीह, “एखन ओकर कथा पूरा कहबाक समय नहि। ओ जँ बाहर आबि गेल तँ ओकर विश्रामक पालि हम सभ लिखब।” ओहि बीच कंचन रसोइक मजदूरी-पंजी बन्द नहि कएलीह; संकटमे कएल अतिरिक्त रातिक कामक समय सेहो सभक नाम आगाँ लिखल गेल। दानक भाप आ श्रमक देय एके भगौनामे विलीन नहि भेल।

सुगनी सदाय बाहा-मुँहथरि क कात पहरादार पठौलीह। पुरान निकासी आंशिक खुलल छल, मुदा गोदामक विस्तार लगक रोकल भागमे पानि जमा होइत देखाइत छल। एहि पानिक दबाव भवनक कोन अवयवपर कतेक पड़ल—ई बात ओ अनुमानसँ निश्चय नहि कएलीह। “माप-खूँटा बदलि गेल अछि,” ओ अदितिकें कहलनि। “हम बाहरसँ ऊँचाइ देखलहुँ; भीतरक धरती नहि देखलहुँ।” गोमती एहि भेदक आधारपर पानि निकालबाक लेल मजदूरकें भङ्गुर देवाल लग पठाएब अस्वीकार कएलीह। ककरो झटपट निकासी चाही छल, मुदा ओहि प्रस्तावक लागत ककर देहपर पड़त, से प्रश्न समयपर उठल।

दू सहायक सुरक्षित बाहरी छज्जाक नीचाँ धरि पहुँचि एकटा पातर रस्सी स्थिर बिन्दु धरि पहुँचबए सकल। तारा आगाँक भार जाँचि कहलनि जे एहन रस्सी सँ केवल संदेश वा हलुक आवश्यक वस्तु पठाओल जा सकैत अछि; मनुखक वजन उठेबाक अनुमति नहि। नैरा ओहिसँ भीतर एक छोट टॉर्च आ साफ कपड़ाक गाँठ पहुँचबेबाक सुझाव देलीह। उर्मिला भीतरसँ उत्तर देलीह, “पहिने पानि, जँ सुरक्षित पहुँचि सकय।” रुखसानाक कप तेहन हालतमे भिजि जा सकैत छल, तँ बन्द बोतल चुनल गेल। खाली हाथक दूरी पहिल बेर एक वस्तुक दूरी बनल, मुदा धिरल लोकक बाहिर निकलबाक बाट एखनहुँ नहि बनल छल।

उर्मिलाक हाथक जकड़न कने बढ़ि गेल छल। देवी कहलीह, “कंचन पानिक बोतल पठौने अछि। अहाँ कनेक पीबू।” उर्मिला ओहि बीच रोगिणीक माथक स्थिति देखबाक चाहलीह। देवी हुनकर लग काने-कान कहलीह, “अहाँक हाथ काँपैत अछि, हम सम्हारि रहल छी।” उर्मिला अपन कामक अधिकार छिनाइ बुझलीह नहि। “सम्हार,” ओ कहलीह, “हमरा जे चाही से सुनि ले।” तकर बाद ओ बोतलक दू घुट पीलीह। भीजल चुनाव गन्धमे पानिक साधारण स्वाद अनपेक्षित रूपेँ घरक स्मृति जकाँ लगल—धोल कपड़ा धूपमे सुखबैत समयक गर्म हवा, आ बालकक चादरपर लगल साबुनक हलुक गन्ध। ओ स्मृतिमे अटक नहि रहलि; खाटक पहिया एखनहुँ हुनकर दहिना हाथक नीचाँ छल।

नैरा बाहरसँ कापीक भीजल पृष्ठ उलटलीह। पहिल रोगीक प्राप्ति-घड़ी मिलल, दोसरक मिलल, मुदा घिरल खाटक नामक आगे खाली स्थान छल। ओ बुझलीह जे कपड़ा-पंजीमे पहिले भेल तीन-चारि मिनटक देरी एहि रातिक समयक्रमक एक तथ्य अछि। मुदा ओहि देरीकेँ ढहबाक कारण कहब वा उर्मिलाक काजकेँ दुर्घटनाक दोष मानब दुस्साहस होएत। अदिति जिनकर नव मापपर खाटक क्रम रोकने छलीह, हुनकर आदेश बादमे अएल; ढहब तकर बाद भेल। नैरा तीन अलग पाँति लिखलीह—‘कपड़ा प्राप्तिमे देरी’, ‘मार्ग-परीक्षणक नव आदेश’, ‘ऊपरी भागक विफलता’। केकरो कारण बनएबासँ पहिने ई क्रम सही रहबाक चाही।

भीतर उर्मिला पुकारलीह, “नैरा, तोहर आवाज एखन साफ अबैत अछि। बेटीकेँ कहिह ओकर माय हमर संग अछि।” नैरा कहलनि, “हम कहलियनि जे आवाज भेटल अछि। ओकरा आश्वासनक पूरा नाम नहि देलियनि।” उर्मिला किछु देरि चुप रहलि, फेर उत्तर देलीह, “ठीक कएलह।” गोमतीक पहरेदार दूरक ओरसँ कहलनि जे बचाव-दलक नब मार्गक जाँच शुरू भेल अछि। धूलक परदा कनेक पातर भेल, मुदा ऊपरक भार एखन अस्थिर छल। नैरा अपन स्थान छोड़ि भीतरी निषिद्ध रेखा पार नहि कएलीह; तारा लग रहि निर्देशक सन्देश पहुँचबैत रहलीह। ओकर चुनाव एखनहुँ प्रमाणित सीमा भीतर सहायताक छल, मरबाक प्रणक नहि।

रातिक अन्तिम पहर लगलाक समय कियो रमा लग आबि कहलक, “बहुत लोक सुरक्षित निकसि गेल, तँ सब ठीक भऽ जाएत।” रमा बाहर पहुँचि चुकल रोगीसभक

वास्तविक संख्या पुछलीह; गणना पूरा भेल तँ ओहि सफलताकें स्वीकार कएलीह। फेर अलग पन्नापर लिखलीह—‘एक रोगिणी आ निकासी-दलक सदस्यसभ भीतर घिरल; बचावक प्रयास जारी; वर्तमान जीवन-स्थितिक स्वतन्त्र पुष्टि आवश्यक।’ ई वाक्य लिखैत ओकर हाथ धीमा भेल, मुदा ओ ‘सभ सुरक्षित’ अथवा ‘सभ गेल’ दुनूमे सँ किछु नहि लिखलीह। रुखसानाक भगौनामे उष्णता घटि रहल छल; बाहर प्रतीक्षा करैत बेटी ओहि गरम कपकें हाथमे धऽ बैसल छलीह, बिना पीने।

तारा बाहरी माटिपर दू छोट चिह्न बनौलीह, जतयसँ अगिला सुरक्षित निरीक्षण सम्भव होएत। ललित कागदपर दरारक रेखा खींचलनि; गोपाल नजदीकी नावक स्थान बतौलनि, मुदा साफ कहलनि जे नाव घिरल कोठरी धरि पहुँचबाक यन्त्र नहि। हीरा सहनीक संदेश अएल—बदलल धारमे नावक भारसीमा घटल अछि; ओ आवश्यकता पड़ला पर निर्धारित ठाम धरि सामग्री पठा सकैत छथि, असम्भव बचावक वचन नहि। सलमा भीतरक आवाज जतेक सुनाइत छल, ताहिसँ रोगिणीक उपचारक अगिला निर्देश देलीह। सभ दल पहुँचबाक कोशिशमे छल, मुदा नजदीक होएब आ पहुँचि सकब एखन दू अलग बात बनल रहि गेल।

उर्मिला फेर एक बेर कपड़ा-पंजीक मुड़ल कोन देखलीह। ओ पन्ना बाहर पठेबाक लेल नहि माँगलीह; ओकर हाथ एखन खाटक पहिया स्थिर रखने छल। “जे रसीद हम भरि नहि सकलहुँ, ओकरा खाली रहए दियौ,” ओ भीतरक सहायककें कहलीह। “रोगी बाहर पहुँचिजे जे देखत, ओ लिखत।” सहायकक आँखि धूसँ लाल छल; ओ पुछलक, “जँ पन्ना भीजि गेल तँ?” उर्मिला उत्तर देलीह, “तँ जे काज भेल ओकर गवाही लोक देत। पन्ना जीवित लोकक बदलामे नहि।” ओ पहिल बेर अपन काँपत हाथकें कने ढील देलीह, कारण देवी आ सहायक मिलि खाटक भारक एक हिस्सा सँभारि लेने छल। बाहर नैराक आवाज फेर अएल। बीचक टूटल भाग एखनहुँ ओहि दू आवाजक बीच ठाढ़ छल।

अध्याय ११९ • देरिक दूरी

नैरा रजिस्टरक खाली पाँतिक नीचाँ एकटा पातर रेखा खींचलीह। रेखाक ऊपर घिरल रोगिणीक नाम छल, किन्तु बाहरक प्राप्ति-समय नहि। धूरक बीचसँ उर्मिलाक आवाज अएला पर ओ अपन कलम उठबैत छलीह, आवाज थमिटे फेर रोकि दैत छलीह। पन्ना भीजल छल, तथापि रेखा मेटल नहि। सुरक्षित आँगनमे प्रतीक्षा करैत वृद्ध रोगिणीक बेटी एकटक ओहि कागदकेँ देखैत छलीह। बेटी पुछलीह, “कने आगाँ जाइ सकैत छी?” नैरा कहलनि, “जे सीमा अदिति आ तारा जाँचने छथि, हम ओकरे भीतर रहब। अहाँक प्रश्न भीतर पहुँचाएब, मुदा अहाँकेँ असुरक्षित ठाम नहि पठाएब।”

गलियाराक दू कातक बीच दू कोठरीक दूरी छल। टूटल ईटक ढेरमे ओ दूरी कहियो एक हाथ जकाँ बुझाइत, कहियो नदीक पार जकाँ। तारा एकटा काठक पाटीपर दरारक नव रेखा खींचलीह। ललितक नापमे बाहरी टेकक माटि दबि रहल छल; ओ कहलनि, “जँ हम एखन बीम उठाएब तँ ऊपरक भार कता जाएत, ओकर अनुमान नहि।” गोमती पाछाँ ठाढ़ मजदूरसभकेँ कहलनि, “ककरो साहसक परीक्षा नहि चलि रहल अछि। जे लोक भीतर अछि, ओकर बचाव लेल बाहरक लोककेँ बचल रहब आवश्यक अछि।”

आँगनक दोसर छोरपर दू रोगी सुरक्षित कक्ष धरि पहुँचाओल जा चुकल छल। तेसर खाटक संग चलैत परिचारिकाक चप्पल फाटि गेल छल; ओ थमलाक बदला अपना संगक सहायकसँ सूखल चप्पल माँगलीह। सलमा हुनका देखिकऽ कहलनि, “पहिने रोगीक सुपुर्दगी पूरा करू, फेर अहाँ अपन पयर देखियौ।” परिचारिका उत्तर देलीह, “हम पयर नहि बिसरलहुँ; पयरक कारण खाट बीच बाटमे छोड़बो नहि चाहैत छी।” ओहि वाक्यमे वीरताक घोषणा नहि छल—दिन भरिक काजमे साधारण रूपसँ प्रयुक्त एकटा कठिन हिसाब छल।

रमाक सामने तीन घड़ी छल। तारा अपन हाथघड़ीक समय दैत छलीह; अदितिक निरीक्षण-पन्नामे घटना अनुमानित समयसहित दर्ज छल; सूचना-मेजक घड़ी कुछु मिनटक अन्तर देखबैत छल। रमा एहि तीनूकेँ एक नहि बना देलीह। “घटना आरम्भ, प्रवेश बन्द, पहिल सम्पर्क, आ बाहरक पहिल निकासी—चारि अलग समय लिखू,” ओ कहलनि।

“पाछाँ ई पाँति केकरो दोष अथवा निर्दोषताक प्रमाण होएत, से हम एखन नहि जनैत छी। मुदा असत्य समय लिखल तँ सत्य खोजबाक बाट बंद करत।”

भीतर देवी वृद्धाक माथक नीचाँ मुड़ल कपड़ा स्थिर रखने छलीह। माथापर धूर, ओठपर सूखल पानिक चिह्न आ श्वासक बीच छोट-छोट अन्तर छल। देवी सलमाकेँ जे देखैत छलीह तेहने बतबैत छलीह; हुनकर आवाजमे अपन अनुमान घुसबाक स्थान नहि छल। प्रशिक्षित परिचारक पूछलक, “आब खाटकेँ कने खींची?” उर्मिला उत्तर देलीह, “अहाँ जँ हिलाओत तँ अगिला पहिया ढहलक किनार धरि घुसत। बाहरी दलक नव माप आबय दियौ।” सहायकक दहिना घुटना छिलि गेल छल; उर्मिला ओकरा छोट पट्टी बाँधबाक लेल देवीसँ सामग्री माँगलीह।

बाहरसँ पातर रस्सीपर एकटा कागदक मोड़ पठाओल गेल। ओहिमे सलमाक प्रश्न छल—रोगिणीक श्वास, देहक स्थिति आ आवाजक उत्तर। देवी उत्तर लिखए चाहलीह, मुदा कलम पकड़िते टॉर्चक उजास हिलल। परिचारक लिखलक, उर्मिला पढ़ि सुनलीह, देवी फेर सुधारलीह। तीन व्यक्तिक ई छोट मिलानक बाद कागद वापस गेल। सलमा उत्तर पाबि उपचारक अगिला सम्भव निर्देश देलीह। बिनु देखल रोगिणीक अवस्था पूरा बुझि गेल छी, एहन दावा ओ नहि कएलीह।

नैरा समयक पन्नामे उर्मिलाक पहिल प्रश्न दर्ज कएलीह—“आगमन नहि लिखिह।” ओकरा बाद ओ भीतरक सभ आवाजक अलग स्रोतक चिन्ह रखलीह। उर्मिला आवाज दैत छलीह तँ उर्मिलाक नाम; देवी बोलैत छलीह तँ देवीक नाम; कोनो अस्पष्ट शब्दक आगाँ ‘अस्पष्ट’ लिखलीह। दूरसँ सुनल खाँसीकेँ रोगिणीक खाँसी कहबाक आकर्षण छल, मुदा नैरा ओ नाम नहि लिखलीह। बेटी ओहि सावधानीपर अधैर्य भेलि। “एतेक कागदमे माय कहाँ छथि?” नैरा धीरे उत्तर देलीह, “अहाँक माय भीतर छथि। कागद केवल हमरा गलत बात कहबासँ रोकि रहल अछि।”

हीरा सहनी जखन पहुँचलि तँ हुनकर पयरमे घाटसँ अएल भीजल माटि छल। गोपाल माझी अस्पतालक पिछिला पथ देखौलनि; ओहि बाटसँ बाहरी देवाल बहुत लग बुझाइत छल। हीरा एक बेर माटि छुइलीह, फेर टूटल कोन देखलीह। “घाटक नाव देवाल पर नहि चढ़त,” ओ कहलीह। “नदीक धार कम करब वा ईटक भार उठाएब हमरा बसमे नहि। हम

सुरक्षित घाट धरि सामान पहुँचा सकैत छी, आ जे लोक बाहर निकसत ओकरा निर्धारित भारमे पार करा सकैत छी। भीतरक लोककेँ एखन निकालि देब, ई वचन नहि।”

दू लोक एके बेरि विरोध कएलक। एक कहलक, “नाव तँ बस पछिला पोखरि काल अछि।” दोसरक विचार छल जे नावक लम्बा बाँस खिड़कीमे धकेलि काठक टेक बनाओल जाय। हीरा पुछलीह, “ओ बाँसक माथपर जे छत अछि, ओकर वजन अहाँ देखलहुँ?” कियो उत्तर नहि देलक। ललितक संग ओ बाँस केवल सुरक्षित ठामपर रोशनी टाँगबाक लेल देलीह। नावक वस्तुकेँ जादू बनबएसे लोकक समय आ जान दुनू बरबाद होइत। हीरा घाटपर अपन बेटीकेँ नावक रस्सी पकड़ेबाक काज करबैत छथि; एतए सेहो ओ अपन काजक सीमा जनैत छलीह।

रुखसानाक रसोइमे ओहि राति भोजन बाँटबाक पाँति बदलि गेल छल। सामान्य समयक हिस्सा आ घायल मजदूरक लेल राखल भाग अलग भऽ गेल। चन्द्रिका अतिरिक्त गरम पानि उबालि रहल छलीह; कंचन सूखल कपड़ाक संख्या गिनैत छलीह। एक आदमी दौड़ैत आबि कहलक, “सब चीज मुफ्त दिअ, एहन समयमे हिसाब लिखब पाप अछि।” रुखसाना बिना चूल्हिसँ हटने उत्तर देलीह, “भोजन ककरोसँ रोकब नहि। मुदा जे राति भरि रान्हि रहल अछि, ओकर मजदूरी गुम करब धर्म नहि। आजुक अतिरिक्त घड़ी लिखल जाएत।” ओहि आदमीकेँ पानी देल गेल, आ ओ चुपचाप ढक्कन उठबामे सहयोग करए लागल।

बाहरक आश्रयमे पहिने पहुँचि चुकल दू रोगीक परिजन अपन-अपन कपड़ा पहिचानबाक प्रयास करैत छलाह। उर्मिलाक कपड़ा-पंजी नहि रहला कारण ड्यूटीपर रहल नर्स खाली ढेरीपर नाम नलगा कऽ धुलाईक चिन्ह, कक्ष आ सुपुर्दगीक समय सँ सूची बनौलीह। “जे वस्तु अपुष्ट अछि, ओकरा अनुमानसँ ककरो नाम नहि देब,” ओ कहलीह। वृद्ध रोगिणीक बेटी अपन मायक नीला किनारवला ओढ़ना चिन्हलीह, मुदा ओ ओढ़ना दोसर रोगिणीकेँ पहिनाओल नहि गेल छल; धुलाई-कक्षसँ आएल अलग ओढ़ना छल। एहन छोट भेद एहि राति बहुत पैघ बुझाईत छल।

सलमा बाहरी चिकित्सकीय मेजक जिम्मेदारी अपन सहकर्मी संग बाँटलीह। जमुना देवीक देखभाल भीतर सुरक्षित कक्षमे चलैत रहल, तकर निरीक्षणक समय नर्स स्वयं

लिखैत छलीह। अनिरुद्ध घायल हाथपर बान्हल पट्टी देखिकऽ बेचैन छलाह; ओ औषधि-बक्सक सूची तैयार कएलनि, मुदा ढहल गलियारा दिस आगाँ जायबाक आग्रह पर सलमा हुनका रोकलीह। “अहाँक काम एखन सही सामान सही हाथमे देब,” ओ कहलीह। “चोट लागलासँ कर्तव्य समाप्त नहि होइत, मुदा कर्तव्यक आकार बदलैत अछि।” अनिरुद्ध सिर नमौने सूचीक दोसर पन्ना खोललनि।

गोमतीक दल बाहरक देवाल लग एक स्थिर स्थान चिन्हित कएलक। ओहिठामसँ बचावदल बिना निषिद्ध भाग पार कएने एक छोट जाँच-यन्त्र भीतर पठा सकैत छल। तारा कहलीह जे पहिने छज्जाक भार देखब; ऊपरसँ गिरैत ढेला ओहि सीमाक अर्थ बदलि सकैत अछि। ललित माप-डोरी सम्हारलक, मुदा कियो ओकरा अकेले आगाँ नहि पठौलक। प्रशिक्षण पाबि चुकल दलक सदस्यसभ आवश्यक सहारा-माप तैयार करैत छलाह। भीतर पहुँचब जरूरी छल, तथापि गलतीसँ बनाओल दोसर धिराव पहिल धिरावकेँ कम नहि करत।

ओहि बीच पुरान कार्यालयक एक लिपिक समाचार सुनि कागद लऽ पहुँचलाह। हुनकर प्रश्न छल जे कतेक मृतकक नाम लिखल जाय। रमा चौँकि कहलनि, “मृत्यु-सूचना लेल प्रमाण चाही; एखन ई बचाव-पंजी अछि।” लिपिक झेंपि उत्तर देलनि, “हमर आशय छल आहत लोकक नाम।” रमा पन्नामे शीर्षक स्पष्ट करौलीह—‘सुरक्षित बाहर’, ‘घायल आ उपचाराधीन’, ‘भीतर सम्पर्कमे’, ‘स्थिति अपुष्ट’। शब्दक एहन सुधार केवल कार्यालयी शिष्टाचार नहि छल; एक बेर गलत मृत्यु लिखल गेल तँ सरिताक पुरान जीवनमे की भेल छल, ओ सभकेँ स्मरण छल।

आश्रयक एक कोठरीमे तीन बालक खिड़कीक दरारसँ बाहरी उजास देखैत छल। कंचन पर्दा खींचबाक बदला हुनकासँ पुछलीह जे पानि चाही की नहि। एक बालक पुछलक, “जे अस्पताल टूटल, ओकरा फेर जोड़ि सकैत छी?” कंचन उत्तर देलीह, “भवनक मरम्मत जाँचि कऽ होएत। एखन लोकसभकेँ सुरक्षित राखब पहिल काज अछि।” बालक अपन हाथमे बनाओल कागदक नाव मेजपर रखलक। ककरो ओकरा पानिमे छोड़बाक नहि सूझल। कागदक नावमे ओ अपन नाम लिखि रखने छल, जे किछु देर बादो स्पष्ट पढ़ल जा सकैत छल।

भीतर खाटक सहायक अपन पीठक पीड़ा दबा नहि सकल। ओ देवीकेँ कहलनि, “जे पकड़ने छी, हाथ सुन्न भऽ रहल अछि।” उर्मिला हुनका डाँटलीह नहि। चारू जन मिलि भारक जिम्मेदारी फेर बाँटलक; उर्मिला अपन सुन्न अँगुरी थोड़ा खोललीह, देवी रोगिणीक माथ सम्भारलीह, प्रशिक्षित परिचारक स्थिर आधारक जाँच कएलक। ओ सभ ककरो चमत्कारिक बल नहि छल। समय-कटौतीक सबसँ साधारण उपाय छल जे एक जनाक थाकल देह पर समस्त भार नहि पड़य। खाट जतेक छल तेतेक ठामपर स्थिर रहल।

बेटी एकटा प्रश्न तेसर बेर पुछलीह—“दू कोठरीक दूरी पार करबाक लेल आरो कतेक?” एहि बेर नैरा तुरन्त उत्तर नहि देलीह। तारा आ अदितिक चिन्हमे नव बदलाव आबि रहल छल; पुरान मापक आधारपर किछु कहब गलत होएत। ओ बेटीकेँ लग बैसाबि कहलनि, “दू कोठरीक लम्बाइ माप सकैत छी। मुदा ढहल बीम हटाबए, नीचाँक माटि परखए आ रोगिणीक खाट सुरक्षित लए चलबाक समय एखन नापल नहि गेल।” बेटी आँखि पोछि कहलीह, “तँ हमरा झूठि घड़ी नहि बताउ।” नैरा स्वीकार कएलीह, “नहि बतायब।”

हीरा बाहरक सुरक्षित पगडंडीपर हरिचरण आ तुलसीक चालकदलसँ भेटलीह। एक एम्बुलेन्सक लेल आँगन खाली राखल छल, दोसर गाड़ी घाट दिस आवश्यक सामानक लेल तैयार छल। हीरा चालककेँ कहलनि जे नदी पार करबाक प्रश्न उठत तँ उतराइ पर यात्री-संख्या नवसँ गिनल जाएत; एहि संकटमे नावक भारसीमा बदलबाक अनुमति नहि। हरिचरण कहलनि, “जतेक लोक सुरक्षित बाहर पहुँचि रहल अछि, हुनकासभकेँ गाड़ीसँ अलग-अलग ठाम लए जेबाक जिम्मेदारी हम सभ लैत छी।” ओ संकटकेँ संख्या बढ़ेबाक प्रतियोगिता नहि बनौलनि।

प्रवेशक कात बचावदल एक बीमक स्थितिक चित्र तारा लग आनलक। चित्रमे देखाइत छल जे छोट खाली फाँकक ऊपर एक दोसर ढहलक टुकड़ा अटकल अछि। ओहि फाँकसँ रोगिणी निकलत की नहि, ई प्रश्न उठिते तारा साफ कहलीह, “फाँक आँखिक नापसँ खाटक बाट नहि बनैत।” अदिति बैसल ठामसँ नव स्केच बनौलीह; ललित ऊर्ध्व भारक दिशा चिन्हित कएलक। दू प्रशिक्षित सदस्य सुरक्षित सीमा धरि जाँच करबाक अनुमति

पेलक, मुदा मलबा उठेबाक आदेश एखन नहि भेटल। प्रतीक्षाक प्रत्येक क्षण भारी छल, तथापि गलत आदेश आरो भारी पड़ि सकैत छल।

गोपाल माझी बाहाक आवाज सुनि तारा लग एला। “पानि फेर चढ़ि रहल अछि,” ओ कहलनि, “मगर ई आवाज भीतरक भीत कतेक भीजाएलक से कहि नहि सकैत छी।” सुगनी सदाय माप-खूँटाक नव ऊँचाइ लिखिकऽ आबि गेलीह। गोदामक विस्तार लग रोकल निकासी एखनहुँ आंशिक खुलल छल; जाम माटि आ जमा पानि अलग भौतिक बाधा बनल छल। गोमती साफ कहलीह जे पानी निकालबाक नामपर कियो मजदूरकें भङ्गुर कोनपर पठाएब अस्वीकार्य अछि। एहि बेर पाँच हस्ताक्षरक सन्धि कागद पर नहि, प्रवेशक रेखाक एहि कात उपस्थित छल।

रमा निकासी-पंजीक पहिल भाग पढ़ि सुनौलीह। अस्पतालक पुरान पाँखसँ हटाओल रोगीसभमे जे सुरक्षित बाहरी कक्षमे पहुँचल छथि, हुनकर प्राप्ति अलग-अलग सही उपस्थित छल। दू व्यक्ति उपचारक लेल अन्य सुरक्षित कक्षमे पठाओल गेल छलाह, तकर गाड़ी-समय मिलाओल जा रहल छल। “बहुत लोक निकसल अछि,” रमा कहलनि, “एहि सफलताकें छोट नहि मानू।” तकर बाद ओ दोसर पन्ना खोललीह। “मुदा एहि पन्नापर उर्मिलाक दल आ रोगिणीक आगमन एखन खाली अछि। पहिल पन्नाक सफलता दोसर पन्नाकें भरि नहि सकैत।”

उर्मिला भीतरसँ पछिला पन्नाक बात सुनलीह तँ हलुक हँसी अएलनि। “रमा पहिनेसँ पन्ना सीधा रखैत अछि,” ओ देवीकें कहलीह। देवी पुछलीह, “अहाँ फेर अपन पंजीक चिन्ता करैत छी?” उर्मिला कहलीह, “पंजी खाली अछि तँ खाली रहय; जँ बाहर निकसब तँ खाटक समय सही करायब।” देवी उत्तर देलीह, “आब अहाँक हाथो देखाओल जाएत।” उर्मिला एहि लेल बहस नहि कएलीह। थकावट हुनकर आवाजक बीच एखन स्पष्ट सुनाइत छल, मुदा प्रश्न पूछलापर ओ उत्तर दैत छलीह।

एक जवान बचावकर्मी तारा लग आबि कहलक जे ओ फाँकमे घुसि कऽ खाट धरि पहुँचबाक प्रयत्न कऽ सकैत अछि। तारा ओकरा न रोष देखौलीह, न प्रशंसा। “अहाँक देहक चौड़ाइ मापि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा ऊपरक भारक बाट एखन नहि। स्वीकृत सहारा बिना भीतर गेलहुँ तँ हमरा लोकनि अहाँकें बाहर निकालबाक दोसर काम

पायत।” जवान अपन हेलमेट उतारलक, धूर झाड़लक, फेर उपकरणक सूची जाँचए लागल। ओकर काज छोट नहि भेल छल; बस ओकरा दोसर रूप भेटल छल।

आँगनक बाहरी पेड़क नीचाँ कबीर पहुँचलाह। हुनका लग परिवारसभक अद्यतन सूची छल, मुदा नैराकें फोन करबाक पहिने ओ पहरदारसँ सुरक्षित बात-ठाम पुछलनि। नैरा टॉर्चक संकेत देखिकऽ बाहरी रेखा धरि एलीह। कबीर कहलनि, “आश्रयक लोकसभक नाम मिला देलहुँ। अहाँ किएक एहि लग?” नैरा अपन माप-पत्र देखौलीह। “एतयसँ आवाज पहुँचिटे अछि, आ जँ कियो भीतरक सीमा बदलत तँ ओकर समाचार तुरन्त बाहर देब,” ओ कहलीह। कबीर हुनका घर जाएब नहि कहलनि; बस पुछलनि, “अहाँक स्थान जाँचल अछि ने?” तारा बाहरसँ स्वीकृत चिन्ह देखौलीह।

कबीरक फोनपर एक समाचार घुरि रहल छल—‘अस्पतालक सभ घिरल लोक बचा लेल गेल’। ओ खबर पढ़ि नैराकें नहि सुनौलनि; पहिने रमा लग गेलाह। रमा हुनका पुष्टि-पन्ना देखौलीह। कबीर ओहि समाचारक उत्तरमे लिखलनि जे बहुतेक रोगी सुरक्षित कक्षमे पहुँचि गेल छथि, मुदा एक रोगिणी आ निकासी-दल एखन भीतर सम्पर्कमे अछि, आ कोनो अन्तिम परिणामक पुष्टि नहि। ओ अपन वाक्यमे भावनात्मक राहत भरबाक लोभ रोकलनि। गलत आशाक मूल्य बेटीक आँखिमे पहिनहिँसँ देखल जा सकैत छल।

नैरा भीतर आवाज देलीह, “उर्मिला, बाहरक खबर दू बात अछि—रोगीसभक सुरक्षित निकासी चलि रहल अछि; तोहर दलक लेल नव मार्गक जाँच होइत अछि।” उर्मिला पूछलीह, “नव मार्ग सुरक्षित मानल गेल?” “अखन नहि,” नैरा उत्तर देलीह। “तारा जाँचि रहल छथि।” उर्मिला कहलनि, “तँ जो हम सभक नामक आगे निकास लिखि देब, तखन जे लोक बाहर छथि हुनकर काज आसान बुझाएत।” नैरा कहलीह, “नहि लिखब। तौँ जे कहने छलह, ओ रेखा हम रखनहुँ छी।” आवाजक पार एक छोट मौन रहल; तकर बाद उर्मिलाक उत्तर अएल, “ठीक अछि।”

भोर एखन दूर छल आ रातिक अन्तिम पहरक अन्हार धरतीपर पसिरल छल। बाहरी बरामदापर लटकल बत्तीमे कीड़ा घूमैत छल, आ खाली चाय-कपक तलीमे धूर जमि गेल छल। रुखसाना भीजल ओढ़ना बदलि राहत-रसोइक अगिला पालि सँभारलीह। कंचन ओहि कपक पानि फेर गरम करए चाहलीह जे उर्मिलाकें पठाओल जा सकैत छल।

रुखसाना कहलीह, “पहिने पूछू भीतर सुरक्षित पहुँचत की नहि।” कोनो चीज करबाक तीव्र इच्छासँ ओकरा करबाक अधिकार नहि उपजैत अछि—ई बात एखन रसोइयोमे बुझल जा रहल छल।

आखिरकार ललित आ तारा एकटा नवल अनुमानित पहुँच-बिन्दु चिन्हित कएलनि। ओहिठाम धरतीक बाहरी भाग परखल छल, मुदा ऊपरक धँसल अवयव लेल अतिरिक्त सहारा आवश्यक छल। अदिति प्रशिक्षित बचावदलक अगिला निरीक्षणक अनुमति देलीह; मनुख आ खाट निकालबाक अनुमति नहि। एहि सीमित निर्णयसँ किछु दूरी घटल, मुदा समय अपन गति घटौने नहि छल। हीरा ओहि ठाम माटिमे घुटना टेकने नहि छलीह; ओ बाहर निर्धारित घाटपर अपन नावक रस्सी फेर जाँचि रहल छलीह। हुनका ई बुझब स्वाभाविक छल जे निकटता कखनो-कखनो केवल आँखिक भ्रम होइत अछि।

घिरल रोगिणीक बेटी नैरा लग अपन मायक पुरान लवंगक डिबिया देबाक चाहलीह। “ओकरा सूँघि लेलासँ मन हलुक होइत छनि,” बेटी कहलीह। सलमा डिबिया देखिकऽ कहलीह जे रोगिणीक श्वासक स्थिति जनबाक बिना सुगन्ध वा पदार्थ भीतर पठाओल उचित नहि। बेटी डिबिया अपन अँचरा भीतर रखलीह। “तँ हम ओकरा लेल नाम कहि सकैत छी?” ओ पुछलीह। सलमा हँ कहलनि। नैरा आवाजक बाटसँ भीतर कहलनि जे बेटी प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। देवी वृद्धाक कान लग निहुरि एक बेर बेटी क नाम सुनौलीह। वृद्धा ओहि घड़ी उत्तर नहि देलीह; देवी उत्तर नआएल बात सेहो स्पष्ट बतौलीह।

रमा बाहरक गिनती फेर मिलौलीह। एक रोगी जकर आगमन-पत्रमे केवल पहिल नाम छल, ओकर पूरा नाम परिवारसँ पुष्टि कऽ अलग चिह्नित भेल। दोसरक दवाईक थैली गलत खाट लग पहुँचि गेल छल, जकरा सलमा समयपर बदलौलीह। एहन दू छोट सुधारक कारण पहिल पन्नाक गणना भरोसायोग्य बनल। “आपदा एकसाथ बहुतेक चीज तोड़ैत अछि,” रमा कहलनि, “मुदा बचल लोकक नाम तँ हम एक-एक कऽ सही राखि सकैत छी।” हुनकर आवाजमे थकावट छल, मुदा अकारण विजय-घोषणा नहि।

नैरा देखल स्थिर सीमा भीतर अपन स्थान कने बदललीह, कारण पहिले चिन्हित ठामक ऊपरसँ चुना फेर झरि पड़ल छल। ओ अदितिक नव संकेतक बादे एहि फेरबदल कएलीह। ओहि ठामसँ भीतरक आवाज कने साफ अएल। “उर्मिला?” ओ पुछलीह।

“सुनैत छी,” उत्तर अएल, मुदा शब्द दू बारि टूटल। नैरा रमा केँ कहलनि जे सम्पर्कक गुणवत्ता बदलि रहल अछि, जीवित वा मृतक स्थिति नहि। ओ अपन फोनमे समय लिखलीह आ कबीरकेँ भेजलीह—‘अखन आवाज अएल अछि; कोनो अन्तिम निष्कर्ष नहि।’ कबीर उत्तरमे बस ‘पढ़लहुँ’ लिखलनि।

भीतर देवी रोगिणीक देह पर ओढ़ना फेर सम्हारलीह। उर्मिला पहिल बेरि अपन थाकल हाथ खाटक चक्कासँ पूरा हटए चाहलीह, मुदा पुछलीह जे भारक अगिला हिस्सा के पकड़त। प्रशिक्षित परिचारक आ सहायक दुनू मिलि स्थिर आधार लेलनि; देवी श्वासक निगरानी करैत रहलीह। उर्मिला अपन अँगुरी खोलि कऽ देखलीह—धूरसँ भीजल नखक नीचाँ काठक छोट कण फँसल छल। ओ अँगुरीकेँ अँचरासँ पोछलीह। “जँ बाहरी दल पहुँचल,” ओ धीमे कहलीह, “हम सभ क्रमसँ निकलयब; रोगिणीकेँ उठेबाक उपाय पहिने पुछब।” एहि वाक्यमे बचबाक इच्छा छल, निश्चित भविष्यक दावा नहि।

बाहरसँ तारा नव मापक सूचना देलीह। अगिला सहारा लगाबाक तैयारी शुरू भऽ सकैत छल, मुदा माथक अटकल ढेला हटल बिना खाट घुमेबाक जोखिम स्वीकार्य नहि छल। अदिति आदेश-पत्रमे ई सीमा लिखलीह। गोमती अपन दलक हाजिरी देखलीह; कियो असुरक्षित रेखा पार नहि कएने छल। हीरा घाटसँ संकेत पठौलीह जे नाव सुरक्षित ठामपर तैयार अछि, मुदा अस्पतालक भीतरक पहुँचक काम प्रशिक्षित स्थलीय दलक अछि। रमा एहि तीन खबरकेँ तीन पाँतिमे अलग लिखलीह। एक पाँति दोसराक कमी पूरा नहि करैत छल।

जखन रातिक अन्तिम पहरमे पहरदारक पालि बदलल तँ आश्रयक बरामदामे सुरक्षित पहुँचल लोकसभ अपन-अपन नामक पुकार सुनि उत्तर देलनि। किछुकेँ घर जाएबाक अनुमति एखन नहि भेटल छल, तथापि हुनकर जीवित पहुँच पुष्टि भेल छल। रोगिणीक बेटी उठि ठाढ़ भेलि, फेर उएह पत्थरपर बैसि गेलि। भीतर उर्मिला, देवी आ अन्य सदस्यसभक आवाज आवागमन करैत रहल, मुदा बचावक वास्तविक बाट एखनहुँ बनि नहि सकल छल। नैरा पन्नाक खाली प्राप्ति-स्थानक ऊपर हथेली रखलीह, ताकि भीजल कागद फेर नहि मुड़य। दूरी एखन सेहो दू कोठरी छल; जे समय ओहि दूरीकेँ पार करबाक लेल चाही छल, ओ ककरो वचनसँ नहि भेटैत छल।

अध्याय १२० • भोरक पहिने

भीजल रजिस्टरक खाली पाँतिक नीचाँ नैरा अपन अँगूठा रखलीह। पृष्ठक किनार रातिभर पानिसँ फुलि गेल छल, ताहिपर ‘बाहर प्राप्त’ लिखबाक जगह बारम्बार खुलि जाइत छल। भीतरसँ उर्मिलाक आवाज पछिला बेर साफ सुनाइते ओ घड़ीक समय लिखने छलीह; तकर बाद एकटा सन्देशक प्रतीक्षामे कलमक निब कागदपर टेकल रहि गेल छल। आँगनक बत्तीमे पतङ्गा भटकि रहल छल। पहर बदललापर आएल नव कर्मचारी पुछलक, “अहाँ एखनहुँ एहि ठाम?” नैरा ओकरा लाल रेखा आ तारा द्वारा बनाओल दोसर चिन्ह देखौलीह। “हमरा एतए रहबाक अनुमति एहि माप धरि अछि। चिन्ह बदलत तँ हमहूँ हटब।”

तारा बाहरी देवालक नाप-पट्टीपर नव खिंचल रेखाकेँ पहिलुक चित्रसँ मिलबैत छलीह। ललित अपन कापीमे अटकल बीमक कोन बनेने छलाह; ताहि रेखामे एक पातर अन्तर आएल छल, मुदा ई अन्तर ऊपरक ढेलाक हिलनासँ भेल की भीजल धरतीक बैठनासँ, से एखन कहब कठिन छल। अदिति प्रशिक्षित बचाव-दलक प्रमुखसँ कहलीह, “सहारा टिकेबाक काम शुरू करबाक अनुमति अछि; भीतर गेल खाट निकालबाक अनुमति एखन नहि।” प्रमुख उत्तर देलनि, “हमरा रस्ता देखाइत अछि, सुरक्षित छत नहि।” एहि दू बातक बीच रातिक बँचल समय घिसटि रहल छल।

भीतर खाटक पाछू बैसल उर्मिला अपन अँगुरी एक-एक कऽ खोलबाक चेष्टा कएलीह। देवी गोंड रोगिणीक माथ सम्हारैत छलीह; प्रशिक्षित परिचारक खाटक कातक ढील जोड़ कसि देने छल, आ दोसर सहायक टुटल देवालसँ खसल धूरकेँ कपड़ासँ हटबैत छल। वृद्धा कखनो आँखि खोलैत छलीह, कखनो केवल श्वासक धीमा उतार-चढ़ाव देखाइत छल। “मायजीक नाम फेर कहू,” देवी सहायकसँ कहलीह, “बाहर जे बेटी प्रतीक्षा करैत छथि, हुनकर बोलाओल नामे।” उर्मिला धीमे बजलीह, “पहिने जे चिकित्सकीय बात पुछल गेल छल, ओकर उत्तर पहुँचाउ। बेटीकेँ आश्वासनक बदला आवाज देब।”

नैराकेँ भीतरक प्रत्येक शब्द साफ नहि भेटैत छल। ओ सुरक्षित बिन्दुसँ आवाज पहुँचबए लेल टीनक खाली नलकीक उपयोगक प्रस्ताव सुनलीह, मुदा तारा कहलनि जे

पहिनुक हलुक रस्सी-सन्देश पर्याप्त अछि, नव कठोर वस्तु अटकल मलबामे फँसि सकैत अछि। नैरा ओहि नियमकें मानलीह। “उर्मिला, बाहर एक बोतल आ कपड़ा पहुँचल अछि। जे चाही से क्रमसँ कहिह,” ओ पुकारलीह। उत्तरमे पहिने देवीक आवाज अएल, तकर बाद उर्मिला कहलनि, “रोगिणीक पयरक नीचाँक आधार फेर जाँचू। हमर हाथक उपचार बाहर भेलापर। एखन श्वास देखू।” नैरा ई निर्देश सलमा धरि शब्दशः पहुँचौलीह; अपनासँ कोनो चिकित्सकीय अर्थ नहि जोड़लीह।

सलमा बाहरी चिकित्सकीय मेजपर जमुनाक उपचार-पत्र सुपुर्द करि घिरल रोगिणीक लेल उपकरणक सूची फेर पढ़लीह। ओहि घड़ी अनिरुद्ध चोट लागल हाथपर साफ पट्टी बान्हने आगाँ ठाढ़ छलाह। “हम कक्ष धरि गेलहुँ तँ परिचर्याक किछु बोज कम होएत,” ओ कहलनि। सलमा हुनका अनावश्यक बहादुरीक दोष नहि देलीह, मुदा जवाब स्पष्ट छल — “दवाइ चुनब आ सुरक्षित सुपुर्दगी करब अहाँक एखनक उपयोगी काम अछि। जे रास्ता प्रशिक्षित बचावकर्मी लेल स्वीकृत नहि, ओतए चिकित्सकक पद जोखिमकें कम नहि करैत।” अनिरुद्ध आवश्यक औषधिक प्रमाणित नाम आ मात्रा लिखि कऽ सूची दू बेर जाँचलनि।

आँगनक नीम लग वृद्ध रोगिणीक बेटी ओही लवंगक डिबियाकें अँचरामे दबौने छलीह। पीड़ित परिवारसभक सूची मिलाबए सरिता ओतए एलीह। बेटी एक क्षण हुनकर मुँह तकलीह, जेना हुनका लग नव समाचार होयत। सरिता हुनका लग बैसि कहलीह, “अहाँक माय भीतर छथि, ई काल्हि सँ ज्ञात अछि। एखन ताजा पुष्ट बात इएह जे ओतय दलसँ आवाज भेटल छल। अगिला अवस्था जाँचल जा रहल अछि।” बेटी डिबिया बाहर कऽ टेबुलपर रखलीह। “कागदमे जे नहि अछि, से हमरा मुँहपर कहि दियौ,” ओ कहलीह। सरिता उत्तर देलीह, “अपुष्ट बातकें निश्चित कहि कऽ हम अहाँसँ दोसर किछु छीनि नहि सकैत छी।”

कबीर बाहरी सूचना-मेजपर सुरक्षित पहुँचल रोगीसभक नाम मिलबैत छलाह। रातिक पहिल भागमे एक गलत खबर चलल छल जे घिरल सभ लोक बाहर आबि गेल छथि; ओहि खबरक खण्डन करबाक बाद हुनका फोनपर फेर-फेर प्रश्न आबि रहल छल। ओ पहराक प्रभारीसँ पूछलनि जे नैराकें बात पहुँचेबाक स्वीकृत माध्यम के। “अहाँ एहि रेखा

धरि आबि सकैत छी; आगाँ नैराक टोलीक संकेतक अपेक्षा करू,” प्रभारी कहलक। कबीर कागद पकड़ि ओही ठाम ठाढ़ रहलाह। पति होएबाक कारण हुनका नियमसँ अतिरिक्त प्रवेशक अधिकार भेटब, ई विचार हुनकर मोनमे अएल, मुदा ओ स्वीकृति माँगलनि नहि।

तुलसी ताजपुरियाक चालकदल बाहरी पट्टीक कात दू गाड़ी सजग रखने छल। पहिलमे सुरक्षित बाहर पहुँचि चुकल दू रोगीकेँ दोसर उपचार-कक्ष धरि लए जेबाक तैयारी छल; दोसर गाड़ी प्रशिक्षित बचावदल लेल सामग्री रखबाक ठाम बनल छल। हरिचरण एक चालकेँ भोजन करबाक लेल पालि बदलि देलनि। कोनो व्यक्ति कहलक, “एहन घड़ी विश्राम?” हरिचरण उत्तर देलनि, “थाकल चालकक चूक नव संकट होएत। जे भीतर अछि ओकरा लेल गाड़ी तैयार राखब काज अछि, खाली सीट भरब नहि।” एहि छोट निर्णयसँ एक गाड़ी समयपर उपलब्ध रहल आ चालकक हाथ स्थिर रहल।

भीतर देवी रोगिणीक श्वासक गिनती फिर सँ करैत छलीह। उर्मिला अपन बहीक पातर पन्ना मोड़ि सहायककेँ देबाक चेष्टा कएलनि, फेर हाथ रोकलीह। “अखन पन्ना बाहर पठाएब जरूरी नहि,” ओ कहलीह। “जे दवाई देल गेल, जे नहि पहुँचल, ओहि बातक गवाही अहाँ सभक लग अछि।” परिचारक पुछलक, “अहाँ जे नाम लिखने छी से जँ नष्ट भेल?” उर्मिला थोड़ेक हँसलीह। “हम लोक कागद बचबैत-बचबैत थाकलहुँ, मुदा रोगिणीकेँ नहि छोड़ब।” देवी कठोर स्वरमे कहलीह, “एखन रोगिणीक भार हम सभ बाँटलहुँ अछि; अहाँ अपना हाथक पीड़ा सेहो कहू।” उर्मिला पहिल बेर स्पष्ट कहलनि जे काँधसँ अँगुरी धरि दर्द पसारि रहल अछि।

बाहर तारा देखलीह जे पहिल सहारा धरि पठाओल माप-छड़ लौटि अएल। छड़क मुँहपर चिक्कन भीजल माटि छल; ओकरा देखिकऽ कियो घोषणा करए चाहलक जे भीतरक बाट स्थिर अछि। तारा रोकलीह। “माटि भेटल, एतबे तथ्य,” ओ कहलीह। “ऊपरक अटकल भार एखनहुँ अपन जगहपर अछि की नहि, दोसर माप चाही।” अदिति आदेशमे नव जाँच जोड़लीह। ललितक दल अतिरिक्त सहारा बान्हबाक तैयारी करैत छल, जेकर बाँस आ धातुक प्रत्येक जोड़पर अलग लोक सही करैत छल। इएह देरी छलीह जेकरा बाहर प्रतीक्षा करैत परिवार सबसे बेसी घृणा करैत छल, मुदा जेकर अभावमे दोसर दुर्घटनाक डर वास्तविक छल।

गोमती बेलदार बाहरी पट्टीपर अपन दलक उपस्थिति गिनलीह। ओहि पाँतिमे एक जवानक नामक आगाँ भाड़ाक हिसाब अपूर्ण छल। ओ निर्णय कएलीह जे संकट टरलापर पूरा लिखत, मुदा एखन ओ युवककें बिना सुरक्षाक ठामपर नहि पठाओत। युवक कहलनि, “मायजी भीतर होइतथि तँ हम ठाढ़ नहि रहि सकैतहुँ।” गोमती उत्तर देलीह, “एहि मेजपर बैसल बेटी सेहो माय कें चाहैत छथि। हम सभक इच्छा एक अछि; रास्ताक भार इच्छासँ नहि घटत।” ओ युवक आँगनक सुरक्षित छोरपर रोशनीक तार सम्भारबाक काम लेलनि। बचावमे ककरो योगदान करबाक लेल निषिद्ध रेखा पार करब जरूरी नहि छल।

रुखसानाक रसोइमे पहरक अन्तिम खिचड़ीक भाप कम भऽ गेल छल। कंचन थाकल हाथसँ कटोरी गिनैत छलीह; चन्द्रिका अतिरिक्त साफ कपड़ा सुखेबाक लेल लटकल रस्सीक जगह खोजैत छलीह। एक स्वयंसेवक कहलक, “एहि घड़ी पैसा लिखब उचित अछि?” रुखसाना जवाब देलीह, “जे लोक अखन धरि जागल अछि, ओकर भूख आ मजदूरी दुनू समयपर अबैत अछि। सहायता आ मेहनताना विरोधी वस्तु नहि।” ओ खुद कपड़ा-गाँठ खोललीह, मुदा घिरल लोकक नामपर बनाओल सामग्रीक गिनती बिना सुपुर्दगी चिन्ह लगौने पूरा नहि मानलीह। ई सावधानी ओकर मनक भयकें कने आकार देत छल।

गोपाल माझी तिलवाहक कात लगाओल मापखूँटा देखिकऽ लौटला। रातिक पानि एक समान नहि चढ़ल छल; बान्हक मोड़ लग जमल छल, छरकी लग ओकर वेग अलग छल। हीरा सहनी निर्धारित सुरक्षित घाटपर नावक रस्सी जाँचि रहल छलीह। “जँ भीतरक बाट बनत तँ घिरल लोककें नावसँ सीधा निकालि लेब?” एक आदमी पुछलक। हीरा माथ हिलौलीह। “अस्पतालक मलबा नदी नहि बनल अछि। नाव घाटपर उपयोगी अछि, भवनक छतपर नहि।” गोपाल कहलक, “गलत बाट बताउ तँ बचाव-दल दू ठाम फँसत।” दूनू अपन सीमित उपयोगक बात साफ कऽ जिम्मेदारी सँभारलनि।

अदिति नव निरीक्षणक आधारपर नैराकें खबर पहुँचेबलीह जे बाहरी निगरानीक पुरान स्थानसँ आधा हाथ पाछाँ हटब आवश्यक अछि। नैरा रजिस्टर बन्द कएलनि, पहरदारकें सूचना देलीह, आ तारा बनौने नव सुरक्षित चिह्न धरि सरकलीह। एहि फेरबदलमे ओ घिरल लोकसँ दूर नहि, बल्कि ऊपरसँ झरैत चुनासँ हटि रहल छलीह। कापीक एक कोन पुरान

मेजपर छूटि गेल; कबीर देखलनि तँ पुछलनि, “ई बाहर लऽ आउ?” नैरा हाथ उठाइ कहलीह, “एखन कियो आगाँ नहि। नया जगहमे नया समय लिखब।” हुनकर स्वर थाकल छल, मुदा निर्णय साफ छल।

कबीर एहि बीच नैराकेँ एकटा साधारण बात कहबाक चाहैत छलाह—घरमे सुभद्राक लेल राखल सुबहक औषधि मेजपर अछि, आ ओ घर पहुँचताह तखन ओकर समय देखताह। मुदा सुरक्षित संकेतक बीच एहन घरेलू वाक्य पठेबाक अवसर नहि भेटल। कबीर अपन नोटबुकमे केवल लिखलनि, ‘नैराकेँ अन्तिम प्रत्यक्ष देखल: नव चिह्न लग; सम्पर्क उपलब्ध।’ ओहि पाँतिक नीचाँ कोनो भविष्यक अनुमान नहि छल। पति आ अभिलेख राखनिहारक दू दायित्व हुनकर भीतर अलग-अलग नहि रहि रहल छल, तथापि ओ कागदपर ओहि अन्तरकेँ जतनसँ रखलनि।

भीतर अचानक एक छोट धातुक आवाज सुनाइ पड़ल। प्रशिक्षित परिचारक कहलक जे ऊपरक किएक अटकल टुकड़ा कने सरकल अछि; ओ स्वयं ओकरा देखए सकैत नहि छल। उर्मिला ओकरा टॉर्च ऊपर करए सँ रोकलीह, कारण रोगिणीक सिरपर रोशनीक झटका पड़ि रहल छल। देवी बगलमे निहुरि पूछलीह, “मायजी, सुनैत छी?” वृद्धाक पलक हिलल की केवल उजास काँपल, से निश्चित नहि छल। उर्मिला आवाज ऊँच कऽ बाहर कहलीह, “आब ऊपरसँ फेर किछु खसल। जाँचब, भीतर मनुख नहि पठाउ।” नैरा ई वाक्य जतेक स्पष्ट सुनलीह, ततेक अदिति धरि पहुँचैबैत लिखलनि।

बचाव-दल प्रमुखक चेहरा टॉर्चक उजासमे पलटि गेल। ओ तारा सँ कहलक, “अहाँक नव मापक आधारपर सहारा धरि पहुँचल जा सकैत अछि, मुदा अटकल टुकड़ा खसला पर रेखा कोना बदलत?” तारा उत्तर देलीह जे बिना ऊर्ध्व भार स्थिर कएने नब प्रवेशक अनुमति देब वैज्ञानिक अथवा मानवीय दुनू दृष्टिसँ अनुचित अछि। अदिति आखिरी पंक्तिमे ‘प्रवेश स्थगित’ लिखलीह। एक कर्मचारी चिढ़ि कहलक, “कागद लिखैत-लिखैत भोर भऽ जाएत।” अदिति थमकलीह; हुनकर स्वर न तेज भेल, न धीमा। “कागद आगाँक कारण-परीक्षण लेल अछि; आदेश एखनक जीवित लोक लेल। दुनूकेँ छोड़ि नहि सकैत छी।”

एतबेमे पहिल तेज आवाज अएल—जेना पानि सँ भीजल काठक भीतरे कियो लम्बा फाँक फाटल हो। तारा टॉर्च ऊपर उठौलीह; नव सुरक्षित चिह्नसँ परे ऊपरी बाहरी छज्जाक

एक कोन झर-झर कऽ टूटल। पहरेदार लोककें पाछाँ हटबाक सीटी देलक। नैरा रजिस्टर छातीसँ लगा चिह्नक भीतर पाछाँ हटए लगलीह, मुदा धूरक घन बादरि बीच ककरो स्थान स्पष्ट नहि देखाइत छल। “पाछाँ! सभ पाछाँ!” हुनकर आवाज एक बेर उभरल। कबीर निर्धारित बाहरी रेखाक कातसँ ओहि आवाज सुनलनि; ओ आगाँ दौड़बाक चेष्टा कएलनि तँ पहरेदार हुनकर बाँह पकड़ि रोकलक।

दोसर आवाज पहिलासँ छोट छल, मुदा ओकर पाछाँ लटकल बत्ती एक बेर बुझि गेल। बिजलीक तार खिंचि गेल की बाहरी स्विच काटल गेल, ई बात तत्क्षण स्पष्ट नहि छल। धूर हटैत-हटैत टॉर्चक उजास टुटल ईटपर पड़ल। नैराक नब चिह्नवला जगह छज्जाक मलबासँ ओझरायल छल; रजिस्टरक भीजल एकटा पन्ना बाहरी पानिमे बहि कऽ बचावदल लग पहुँचल। रमा पन्ना उठौलीह, मुदा एकर मिलनासँ नैराक अवस्थाक कोनो निर्णय नहि लेलनि। कबीर दूरसँ पुकारलनि, “नैरा!” उत्तर नहि अएल। फेर पुकारलनि; एहि बेर तारा हुनका कहलनि, “आब सबकें सुरक्षित रेखामे ठाढ़ रहए दिअ।”

भीतरक मार्गपर सेहो धूर आ आवाजक आवागमन थमि गेल छल। देवीक छोट संकेत, उर्मिलाक पुकार आ सहायकक टकराबैत वस्तुक आवाज—जकरा बाहरक दल अलग-अलग चिन्हैत छल—ओहि क्षणसँ सुनाइ पड़ब बन्द भेल। सलमा सम्पर्कक पहिल पुरान माध्यमँ आवाज देलीह, फेर दोसर स्वीकृत संकेत भेजलीह। कोनो उत्तर नहि अएल। “संकेत नहि भेटल,” ओ कहलीह। “ई जीवित स्थितिक परीक्षण नहि अछि।” एक युवक बुझलक जे भीतरक लोक सभ खसि गेल; दोसर कहलक, “नहि, आवाज बन्द भेल तँ बचि गेल होयत।” सलमा दुनू कथन रोकलीह। “दूनू अनुमान छथि। हम जे सुनलहुँ, तेतेक लिखब।”

बचावदल पहिने बाहरक लोकसभक उपस्थिति फेर गिनलक। पहरेदारक तीन सदस्य अपन निर्धारित ठामपर भेटलाह; एक सदस्य घायल छलाह, हुनका तत्काल उपचारक लेल सलमा लग पठाओल गेल। नैरा नहि भेटलीह। ओकर फोनपर कबीरक फोन गेल, घण्टी सुनाइ पड़ल की मात्र परदेपर चलैत चिह्न रहल, से प्रमाणित नहि भेल; कबीर समय लिखलनि। तारा नव मलबाक सीमा देखिकऽ पूर्वक सुरक्षित चिह्नकें तत्काल रद्द कएलनि। ओ स्वीकार कएलीह जे रातिक पहिल माप उचित जानकारीपर आधारित छल, मुदा नव

ढहलक बाद ओ मापक उपयोग समाप्त भऽ गेल। दोषक निर्णय करबाक घड़ी नहि छल, नव जोखिम रोकबाक घड़ी छल।

“नैरा कहाँ छथि?” रोगिणीक बेटी कबीरसँ पुछलीह। प्रश्नक बोझ एहनो छल जे बेटी अपन मायक बारेमे नहि पुछि सकलीह। कबीर सत्यक जितबा अंश छनि ओतबा कहलक—“ओ चिह्न लग छलीह, फेर मलबा खसल। एखन आवाज वा प्रत्यक्ष पहुँच नहि भेटल अछि।” बेटी पुछलीह, “उर्मिला?” “भीतरक सम्पर्को टूटल अछि।” कबीरक गला कने अटकल। सरिता ओकर हाथमे पानि देलीह। कबीर पानि पीलनि, मुदा पुछल गेल प्रश्नमे जीवित होएबाक आश्वासन नहि जोड़लनि। ओकरा लेल ई संयम सामान्य पेशागत नियम नहि छल; ई नैराक सामने देल गेल अपन वचनक अवशेष छल।

एक स्वयंसेवकक फोनपर अचानक सन्देश आबि गेल—‘उर्मिला बचि गेलीह, नैरा घर लौटि रहल छथि’। संदेशक नीचाँ कोनो प्रत्यक्षदर्शीक नाम नहि छल, बस ‘अन्दरक लोक कहैत अछि’ लिखल छल। युवक ई खबर कबीरकेँ देखौलक। एक पल लेल कबीरक हाथ फोन दिस उठल। ओ पुछलनि, “ककर देखल? के बाहर लएलक? कोन सुरक्षित कक्षमे पहुँचलीह?” ककरो उत्तर नहि छल। कबीर फोन वापस करैत कहलनि, “ई खबर नहि भेजू। जँ सत्य होएत तँ कियो आगमनक समय देत; एखन एहि शब्दसँ परिवारसभकेँ ठकब नहि।” युवक संदेश हटौलक; मुदा कतेक फोन धरि ओ पहुँचि चुकल छल, ओकर संख्या कियो नहि जनैत छल।

रमा पुरान सरिताक झूठ मृत्यु-पंजीक विषय किएक बार-बार याद आबि रहल छल, से ककरो सुनौलीह नहि। ओ अपन लेखामे चारि पृथक् स्तम्भ बनौलीह—‘प्रत्यक्ष बाहर पहुँचल’, ‘आवाजसँ सम्पर्क रहल’, ‘सम्पर्क बन्द’, ‘स्वतन्त्र पुष्टि बाँकी’। नैरा आ उर्मिलाक नाम तेसर स्तम्भमे लिखिते रमा अपन हाथ रोकलीह। “दू अलग ठामक सम्पर्क टूटल अछि,” ओ स्वर सँ कहलीह, “दू मृत्यु नहि लिखल गेल अछि।” एक लिपिक पुछलक जे काल्हि अधिकारीकेँ की कहल जाएत। रमा उत्तर देलीह, “आजुक पन्ना जँ काल्हि पढ़ताह तँ एतए जे नहि जनैत छी से स्पष्ट बुझि सकथि। निश्चयक बनावट नहि करब।”

सरिताक सामने नैराक नाम देखैत पुरान आ वर्तमान दुख एकसाथ उठल। सरिताकें एक बेर कागदपर गलत मृत लिखि देल गेल छल, आ ओकरा कारण हुनकर काज, पारिश्रमिक आ परिचय पर अन्याय भेल छल। एखन ई रातिमे ओ कियो जीवित अछि एहन झूठो नहि कहल चाहैत छलीह; मृत्यु प्रमाणित नहि भेल एतबे मात्र सही बात छल। ओ रमा लग कहलीह, “आवाज टूटल, एतबे लिखू। जँ अगिला जाँचमे दुखद सत्य भेटत, तखन ओकरा ओहि रूपमे स्वीकार करब। एखन जे नाम हम देखलहुँ, ओ व्यक्ति अछि, अनुमानक संख्या नहि।” रमा चुप्पीमे सहमति देलीह।

गोमतीक मजदूरसभ तारा लग सहायता लेल ठाढ़ छलाह। दू जन कहलक जे नव मलबा हटाबए लेल ओ सभ तैयार छथि, भाड़ा-बकाया बादमे देखल जाएत। गोमती एहिना बिना विचार धन्यवाद नहि देलीह। “तैयार रहब तक अर्थ जोखिमक सीमा बुझब सेहो अछि,” ओ कहलीह। तारा नवल माथक भार देखलथि, अदिति प्रशिक्षित दलकें बाहरी स्थिर ठामसँ नव सहारा जाँचबाक अनुमति देलीह। एक मजदूरक पयरमे खरोंच छल; ओकर उपचार कराओल गेल। असुरक्षित छज्जाक नीचाँ ककरो नहि पठाओल गेल। पथ खुलबाक प्रतीक्षा अबहियो असह्य छल, मुदा घबराहटकें अनुमति-पत्र नहि बनाओल गेल।

घायल पहरदारक बाँहपर पट्टी बान्हैत सलमा पुछलीह जे ओ कोन आवाज सुनलनि। पहरदार कहलक, “नैराक पाछाँ हटबाक बात सुनलहुँ; फेर धूर। ओ कहाँ रहलीह, देखल नहि।” सलमा उत्तर लिखलनि—‘आखिरी सुनेल चेतावनी’, ‘आखिरी देखल स्थान’सँ पृथक्। ओ रोगिणीक भीतरक स्वास्थ्य-स्थिति नब सिरिसँ परखबाक उपाय खोजैत छलीह, मुदा निदानक लेल कोई प्रत्यक्ष माप पहुँचि नहि रहल छल। अनिरुद्ध उपयुक्त औषधि आ प्राथमिक उपचार तैयार रखने छलाह। रोगिणीक बेटी दूरसँ पहरदारक पट्टी देखलीह आ बुझलीह जे बाहर निकसल घायल व्यक्ति लेल काज शुरू भऽ सकैत अछि; भीतरक मायक लेल प्रश्न एखन आवाज बिना छल।

कंचन आश्रयक खिड़की लग रुखसाना कें कहलीह जे नैराक लेल राखल पानि ठंढा भऽ गेल। रुखसाना ओकरा फेर गरम करबाक आदेश नहि देलीह। “ढाँपि राखू,” ओ कहलीह, “जतय जरूरी पड़त, ओतय देब।” ओ कंचनक थाकल देह देखिकऽ दोसर पालि

लगौलीह। चन्द्रिका रसोइक बकाया समय लिखि रहल छलीह; एहन घड़ीमे अपन मेहनताना लिखैत मन काँपैत छल, मुदा रुखसाना स्वयं ओहि पन्नापर सही कएलीह। “ककरो अनुपस्थितिक समाचार एखन नहि, आ जे उपस्थित छथि हुनकर काम अदृश्य नहि,” ओ कहलीह। ओहि बीच आश्रयक बालकसभकेँ भोरक लेल भोजनक चिन्ता छल; जीवनक साधारण आवश्यकता रात्रिक अनिश्चिततामे रुकल नहि।

कबीर बाहरी सूचना-मेजपर लौटि एकटा छोट सूचना अपन हाथसँ लिखलनि। ओहि सूचनामे सुरक्षित बाहर पहुँचि चुकल रोगीसभक पुष्ट संख्या रमा सँ मिलाएब आवश्यक छल, तँ संख्या खाली रहल। लिखल गेल जे पूर्वी सेवा-गलियाराक नव भौतिक विफलताक बाद नैरा आ उर्मिलासँ स्थापित सम्पर्क टूटल अछि; प्रशिक्षणप्राप्त बचावदल नव प्रवेश-मार्गक परीक्षण करैत अछि; मृत्यु अथवा सुरक्षित निकासक कोनो अन्तिम पुष्टि नहि अछि। ओ कागद रमा, सलमा आ अदितिक सामने पढ़लनि। तीनू अपन-अपन विषयक शब्द देखलनि; कबीर अनावश्यक वाक्य काटि देलनि। प्रमाणित कागदक भाषा दुखकेँ घटौने नहि, झूठक बाट बन्द करैत छल।

एहि सूचनाक प्रतिलिपि सुरक्षित प्रतीक्षा-ठामपर लगाओल गेल। एक वृद्ध पूछलनि, “ई लेखलासँ लोक बचि जाएत?” कबीर कहलनि, “नहि। मुदा गलत कहबासँ जे निर्णय गलत होएत, ओकरा रोकल जा सकैत अछि।” वृद्ध अपन घरक चाभी मुट्ठीमे दाबि कहलनि, “तँ हमरा ककरो देखबाक खबर भेटिते कहि दियौ।” कबीर हुनका कोन मेजपर पुष्टि राखल जाएत, से देखौलनि। ई छोट व्यवस्था सँ मलबा नहि हटत, मुदा सूचनाक लेल लोकसभकेँ निषिद्ध रेखा धरि दौड़ब जरूरी नहि रहल।

बाहाक कात पानि नव ढंगसँ टकरा रहल छल। गोपाल माप-खूँटाक बदलाव लिखि पहेरेदारकेँ सूचित कएलनि; ओ साफ जोड़लनि जे जलस्तरक नव संख्या भवनक भीतरक मृत्यु वा जीवनक प्रमाण नहि अछि। हीरा सहनी अपन नाव सुरक्षित घाटमे रोपल रस्सी फेर कसलीह। एक स्थानीय आदमी हुनका कहलक, “भोर होयत तँ सब ठीक भऽ जाएत।” हीरा उत्तर देलीह, “उजास माप करबाक सुविधा देत, दरारकेँ अपने नहि जोड़त।” अपन नावक क्षमता-सीमाक पट्टी पोंछि ओ पहराक अगिला टीमकेँ सुपुर्द

कएलीह। हुनकर हाथमे रातिभरक ठंड गाड़ि गेल छल, मुदा नावक रस्सी एखन ठोस वस्तु छल, जकर जिम्मेदारी ओ निभा सकैत छलीह।

तारा आ अदिति नव बाहरी रेखा खींचि पहराक दायित्व फेर बाँटलीह। मलबाक एक कोनसँ छोट खाली जगह देखाइत छल, मुदा ओकरा भीतर कियो मनुख सुरक्षित अछि, एहन निष्कर्ष निकलब उचित नहि छल। प्रशिक्षित दल रोशनी आ जाँच-यन्त्रक पहुँच बनबैत रहल। ललित अपन निर्माणक स्केचपर नव दरार जोड़लनि। गोमती मजदूरसभक नामक आगे लिखलीह—‘सुरक्षित ठामपर प्रतीक्षा, नब प्रवेश नहि’। एहि शब्दसभसँ काम पूरा नहि भेल; मुदा पछिला राति जे निषेध लोकक प्राण बचौने छल, तकर अर्थ एखनहुँ बदलल नहि छल।

रात्रिक अन्हार हलुक पड़बाक पहिल संकेत पूबक नभमे नहि, बल्कि ओहि बत्ती पर देखाइत छल जे फेर जला देल गेल छल। धूरक बीच ओकर पीयर उजास स्थिर बुझाइत छल। कबीर फोनक पर्दा देखलनि। नैराक पछिला सन्देश—‘अखन आवाज अएल अछि; कोनो अन्तिम निष्कर्ष नहि’—ओही ठाम छल। ओ उत्तर लिखबाक लेल अँगुरी बढ़ौलनि, फेर फोन बन्द नहि कएलनि। ओहि सन्देशक वाक्य एखनहुँ सही छल, मुदा ओकर घड़ी बीति गेल छल। कबीर रजिस्टर खोलि नव पाँति लिखलनि—‘सम्पर्क टूटल; अगिला प्रत्यक्ष पुष्टि अपेक्षित।’ ओहि रेखाक अगिला स्थान खाली छोड़ि देलनि। भोर एखन पूरा नहि भेल छल, आ कोनो कागदकेँ ओ खाली स्थान मनसँ भरबाक अधिकार नहि छल।

अध्याय १२१ • नामक पुष्टि

बाहरी मेजपर राखल पीतलाक घंटीक तलीमे रातिक पानि जमल छल। भोरक पहिल उजासमे रमा ओकरा उठा कऽ कपड़ासँ पोंछलीह, मुदा घंटी बजौलीह नहि। अस्पतालक टूटल सेवा-गलियाराक कात बचावदल फेर पहुँचि रहल छल; लोकक भीड़कें बजा कऽ नव समाचार देबाक एखन कोनो कारण नहि छल। तारा नव सहाराक तीन जोड़ अपने हाथसँ छू कऽ देखलीह। ललित दोसर कातक भार-रेखा पढ़लनि। प्रशिक्षित दलक प्रमुख कहलनि, “जतेक ठाम स्वीकृत अछि, ओतबे हटाएब। भीतर जे भेटत, ओकर अवस्थाक बात बाहरक अधिकारी कहताह।” अदिति आदेशक नीचे अगिला जाँचक समय लिखलीह। पिछिला रातिक बन्द कएल रास्ता एखनहुँ बन्द छल। केवल बाहरसँ खोलल एक सँकर पहुँच-बिन्दु पर काम शुरू भेल।

कबीर मेजक कात ठाढ़ छलाह। हुनकर हाथमे नैराक पिछला सन्देशक फोन छल, मुदा ओ एकर पर्दा फेर-फेर नहि खोलैत छलाह। रातिमे लिखल अपन पाँति—‘सम्पर्क टूटल; अगिला प्रत्यक्ष पुष्टि अपेक्षित’—रमा लग सुरक्षित छल। सरिता हुनका गरम पानि देलीह। कबीर पुछलनि, “पहिले ककर खबर भेटत?” सरिता उत्तर देलीह, “जे भेटत तकर। क्रम हम सभ तय नहि कऽ सकैत छी।” ई उत्तर कठोर नहि छल। सरिता स्वयं नामक सूची पकड़ने छलीह; आ हुनका बुझाइत छल जे नाम लिखबाक अधीरतासँ मनुख न भेटैत अछि, ने देहक सत्य बदलैत अछि।

पहिल बाहर निकालल व्यक्ति बचावदलक एक सहायक छल, जे मलबाक दोसर कात अटकल रहि गेल छल। ओकर घुटनाक चोट छल, आ ओ होशमे अपन नाम कहि सकैत छल। सलमा उपचार-ठामपर ओकरा स्वीकार कएलीह। “अहाँ भितर किनका देखलहुँ?” कियो तत्काल पुछलक। सलमा हाथ उठौलीह। “पहिने घाव, श्वास आ तापमान। बयान देबाक लेल ई स्वयं तैयार होथि, तखन प्रश्न करब।” सहायक पानि पीलक, आँखि बन्द कएलक, फेर धीरे कहलक जे ओकरा पहिल आवाजक बाद किछु नहि देखाइत छल। बचल व्यक्तिक गवाही उपयोगी छल, मुदा ओ दोसर व्यक्तिक मृत्युक प्रमाण नहि छल।

रमा ओकर नाम ‘जीवित बाहर प्राप्त’मे लिखलीह, निकट खण्डक सम्भावित मृतक-सूचीमे नहि।

तकर बाद बाहरी छज्जाक ओझरायल हिस्सा खुलल। बचावकर्मीसभ नैराक ठामपर एकटा देह देखलनि। मलबा हटेबाक पहिले ऊपरक भार सम्हारल गेल; जखन प्रशिक्षित दल देह बाहर आनलक तँ कोनो दर्शककेँ ओहि ठाम आबबाक अनुमति नहि देल गेल। तारा अपन माप-डोरी तह करैत दूर हटलीह। ओ जानैत छलीह जे ई देह ककर अछि, एहन अनुमान हुनकर आँखि देत, मुदा नामक पुष्टि हुनकर तकनीकी अधिकारसँ बाहर अछि। अधिकृत चिकित्सक पहिने जीवनचिह्नक परीक्षण कएलनि। कने देर बाद ओ सलमाकेँ अलग बजा कऽ चिकित्सकीय निष्कर्ष लिखेलनि। रमा प्राप्ति-समय आ परीक्षण-समय दू अलग पाँतिमे दर्ज कएलीह।

कबीरकेँ तुरन्त बोलाबयबाक बदला अधिकारी पुछलनि जे ओ पहिचान लेल तैयार छथि की नहि। कबीर प्रश्न सुनि एक क्षण चुप रहलाह। “तैयार होएबाक अर्थ की?” ओ पुछलनि। “जे हम देखब, तकर बाद हुनका देखल बात नदेखल नहि कऽ सकब।” सरिता हुनकर बाँह पकड़बाक प्रयत्न नहि कएलीह। “अहाँ चाही तँ हम संग जाएब,” ओ कहलीह, “मुदा ओहि देहक नाम अहाँक बदला हम नहि कहब।” कबीर सिर हिलौलनि। ओ सुरक्षित पहिचान-कक्षमे गेलाह, जतए परदा आ एक चिकित्साकर्मी छलाह; बाहरक लोकसभा नहि।

नैराक चेहरा पर धूर छल। कबीर कपड़ाक रंगसँ पहिचानक दावा नहि कएलनि— रातिक आपदामे चादर, ओढ़ना, पट्टी सभ बदलि सकैत छल। हुनका नैराक चेहराक परिचित बनावट आ हाथक एक पुरान छोट निशान देखाइत छल। ओ अपनासँ पुछलनि जे डरक कारण कोनो दोसर चेहराकेँ नैरा मानि रहल छथि की नहि। चिकित्सक पहचानक द्वितीय अभिलेख, बचाव-स्थलक सङ्केत आ सम्बन्धक जानकारी अलग मिलबैत रहलाह। कबीर अंतमे धीमे कहलनि, “ई नैरा छथि। हम हुनकर पति कबीर छी।” ओ वाक्य कहिते हुनकर स्वर फाटि गेल, मुदा अपन कहल नाम वापस नहि लेलनि। अधिकारी केवल मौखिक पहिचान लिखि प्रक्रिया समाप्त नहि कएलनि; स्वतन्त्र पुष्टिक शेष जाँच सेहो निर्धारित कएलनि।

बाहर सरिता कबीरकेँ देखिते पुछलीह नहि जे केहन भेल। कबीर हुनका सामने कुर्सीपर बैसि गेलाह। एकटा छोट वाक्य निकलल—“नैरा नहि बचलीह।” सरिता माथ झुका कऽ बहुत देर बैसल रहलीह। ई दुःख हुनका भीतर कहिया सँ प्रतीक्षा करैत छल, से कियो नहि कहि सकैत छल। किछु काल बाद ओ पुछलीह, “चिकित्सक देखलनि?” कबीर हँ कहलनि। “दोसर मिलान?” कबीर ताहू बारेमे जानकारी देलनि। सरिता अपन लिखित पृष्ठपर नैराक नामक आगाँ रातिक पुरान ‘सम्पर्क बन्द’ काटलीह नहि; तकर नीचाँ नब तिथि आ आधार लिखलीह। एक रेखा पहिल घड़ीक सच छल, दोसर रेखा एहि भोरक।

सरिताकेँ नैराक एक पुरान बात एखन साफ मोन पड़ल। नगरक बैठकमे एक अधिकारी कखनो कहने छल जे रजिस्टरक गलती सुधारल जाइत अछि, तकरा लेल स्त्रीसभकेँ एतेक प्रश्न नहि उठेबाक चाही। नैरा ओतहि बैसि पूछने छलीह, “गलतीक खर्च के देत? जकर नाम काटल गेल, ओकर काम आ ओकर राति के वापस करत?” सरिता तखन एतेक जनसभक सोझाँ अपन बात कहबामे सकुचाइत छलीह। नैरा हुनका बोलबाक लेल बाध्य नहि कएने छलीह; खाली मेजपर एकटा कुर्सी सरका देने छलीह। आइ ओ कुर्सीक छोट आवाज सरिताक मनमे फेर उठल। हुनका बुझाइत छल जे नैराक नहि रहबासँ ओ प्रश्न निष्प्राण नहि भऽ गेल।

भितरक सेवा-गलियाराक दोसर कात काम कठिन छल। खाटक धातुक जोड़ मलबासँ अटकल छल आ ओहि लग पानि चुआइत छल। सुगनी सदाय भीजल धरतीक बाहरी नाप देलीह, मुदा बचावदल भीतर जा सकैत अछि की नहि तकर निर्णय हुनकर नाप मात्रसँ नहि भेल। गोमती अपन मजदूरसभकेँ रोशनी, रस्सी आ सामग्री सुरक्षित पहुँचाएबाक काममे लगौलीह। कियो कहलक, “उर्मिला एतेक बेर धरि आवाज दैत छलीह।” गोमती उत्तर देलीह, “काल्हिक आवाज काल्हिक जीवित उपस्थितिक गवाही अछि। आइक जीवित अवस्था हम अनुमानसँ नहि कहब।” हुनकर गला भारी छल; हुनकर आदेश फेरो स्पष्ट छल।

खाटक कातसँ पहिने देवी गोंडकेँ निकालल गेल। हुनकर देहपर धूर आ माथपर छोट घाव छल, मुदा ओ प्रश्न बुझि उत्तर देबामे समर्थ छलीह। सलमा नाम पूछलनि आ उपचार आरम्भ कएलीह। देवी पहिल बात रोगिणीक बारेमे पुछलीह; सलमा कहलीह जे ओकरा

लेल बचावदलक अगिला दल काम करैत अछि। देवी फेर उर्मिलाक नाम लेलनि। “हम पछिला बेर हुनकर हाथ अपने हाथमे लेने छलहुँ,” ओ बजलीह। “तकर बाद खाटक पाछाँ धूर उठल।” सलमा एहि वाक्यकेँ अन्तिम स्पर्शक गवाही मानलीह, मृत्युक घड़ीक घोषणा नहि। देवीकेँ आराम देल गेल; हुनका सँ तुरन्त बारम्बार एके दृश्य कहल नहि गेल।

उर्मिलाकेँ दोसर सुरक्षित पहुँच बनलाक बाद बाहर निकालल गेल। हुनकर देहक संग रजिस्टरक भीजल किछु पन्ना सेहो अटकल छल; बचावकर्मी पहिने देह सम्हारलनि, कागद अलग थैलीमे रखलनि। एक कर्मचारी कागद देखिकऽ कहल, “एहि नामसँ तँ पहिचान भऽ जाएत।” रमा तत्काल रोकलीह, “रजिस्टर अस्पतालक अछि, उर्मिलाक देहक पहिचान नहि। पहिले चिकित्सा, फेर स्वतन्त्र मिलान।” चिकित्सकक परीक्षण पूरा भेल। उर्मिलाक मृत्यु प्रमाणित भेल। पहिचानक लेल परिवारक सदस्य, अस्पतालक उपस्थितिक अभिलेख आ हुनकर हालक काजसँ परिचित सहकर्मी अलग-अलग बजाओल गेलाह। कियो एकटा चादर, एकटा चूड़ी वा कागदकेँ अकेला निर्णायक प्रमाण नहि बनौलक।

उर्मिलाक घरसँ आएल हुनकर बहिनक हाथमे पुरान कपड़ा-रसीदक मोड़ल गठुर छल। ओ पहिचान-कक्षमे जे बात देखलीह, तकर पुष्टि करिते रोए लगलीह; किछु समय बाद अपन मुँह पोंछि अधिकारी सँ पुछलीह, “अहाँ लिखलहुँ ने जे ई उर्मिला रजक छथि? केवल ‘अस्पतालक धोबिन’ नहि?” अधिकारी नाम पूरा दोहरौलनि। बहिन कहलनि, “ओ जे पाटपर कपड़ा धोएत छलीह, ओकरो हिसाब अछि। एतय कएल काज ओकरा मारलाक बाद बेनाम नहि होएत।” रमा कहलीह जे पारिश्रमिक आ सेवार्थ दावाक अलग फाइल बनत। बहिन तत्काल रकम नहि माँगलीह; ओ माँगलीह जे मूल बही, गठुरक रसीद आ हाजिरी-पन्ना कियो नहटबय।

रमा उर्मिलाक मृत्यु-सूचनाक प्रारूप देखलीह। ओतए ‘अस्पताल कर्मचारी’ लिखल छल, यद्यपि हुनकर काजक एक भाग स्वतन्त्र धुलाई आ ढुलाई-श्रम सेहो छल। सरिता पुछलीह, “ई वर्गीकरण कर्मचारीक पद कहैत अछि की सभ मेहनतानाक हिसाब?” लिपिक कहलक, “फार्ममे एके कोठरी अछि।” सरिता उत्तर देलीह, “तँ कोठरीक सीमा दर्ज करू; मनुखक काम घटाउ नहि।” उर्मिलाक बहिन दू प्रकारक प्रमाण जमा करबाक

निर्णय लेलीह—अस्पतालक रातिक पालि आ घाटक मजदूरीक देय। दुनू कागदक मुद्दा आजे समाप्त नहि होएत। परिवारक दावा अगिला दिन, अगिला मास, आवश्यक भेल तँ वर्ष धरि जीवित रहत।

आँगनमे ओहि समय रोगिणीक बेटी अपन लवंगक डिबिया खोलि फेर बन्द करैत छलीह। भीतर जकरा ओ ‘माय’ कहैत छलीह, हुनका अलग निकासी-ठामपर लाओल गेल छल। सलमा पहिने परीक्षण कएलीह, तकर बाद चिकित्सकक निष्कर्ष परिवारकें सुनाओल गेल—वृद्धा जीवित नहि बचलीह। बेटी अपन मायक परिचित नाम कहलीह, मुदा परचा पर केवल पहिल अक्षर लिखल छल। रमा परिवारक विवरण, उपचार-पत्र, अस्थायी खाट-सङ्केत आ उपलब्ध स्वतन्त्र गवाही मिलौलनि। नाम लिखबाक भीतर उर्मिला आ नैराक पहिचान मिसल नहि जाए, ताहि लेल तीनू देहक कागद अलग रखल गेल। बेटी पुछलीह, “हम एखन हुनका देख सकैत छी?” उत्तरमे कोनो धर्मोपदेश नहि छल; अधिकारी पहिचानक सुरक्षित व्यवस्था बतौलनि।

दोसरा उपचार-कक्षमे रातिमे बाहर निकालल एक वृद्ध पुरुषक मृत्यु-सूचना सेहो पहुँचल। हुनकर परिवार दूरक गामसँ अबैत छल; चादरपर लिखल प्रारम्भिक सङ्केत आ उपचार-पत्रक नामक वर्णमाला नहि मिलैत छल। रमा प्रारूपमे नाम रोकी देलीह। “मृत्युकें अस्थायी संख्या देब आवश्यक पड़ि सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा अनिश्चित व्यक्तिक नामक आगे निश्चित मुहर नहि।” बचावदलक एक सदस्य पुछलक जे कुल गिनती कहबाक लेल कतेक नाम चाही। रमा उत्तर देलीह, “गिनती आ पहिचानक दू अलग काम अछि। संख्या चिकित्सा-पुष्ट प्रकरणसँ बनेत; व्यक्ति-विशेषक नाम पूरा मिलानपाछाँ।” एहि भेदक कारण कागद कने देरि भेल, मुदा दोसर परिवारक शोक गलत दुआरि नहि पहुँचल।

सरिता अपन थैलीसँ पुरान एक पीयर पन्ना निकाललीह। ओही पन्नापर कखनो हुनका जीवित रहितो ‘मृत’ चिन्ह देल गेल छल। ओकर कारण रोकल पारिश्रमिक, कटि गेल सेवा आ नवसँ साबित करए पड़ल अपन परिचयक पीड़ा एखन हुनका भीतर छल। रमा नव दू सूचना—नैरा आ उर्मिलाक—देलनि। सरिता पहिल पन्ना आ एहि दुनूकें एक-एक विवरणसँ मिलौलीह। पहिलमे नाम छल मुदा जीवित देहक विरुद्ध कोनो साँच

चिकित्सकीय जाँच नहि; नब सूचनामे बरामदगीक अलग समय, चिकित्सकक परीक्षण, पहिचानक आधार आ सम्बन्धित परिवारक स्वतंत्र गवाही छल। सरिता कहलनि, “पहिल कागद झूठ छल, आइक कागद सत्य अछि। मुदा सत्य होइतहुँ ई पीड़ा कम करबाक कागद नहि।”

कबीर सरिताक हाथक पुरान झूठ पन्ना देखलनि। “अहाँक नाम गलत काटल गेल छल,” ओ बजलाह, “आब नैराक नाम सचमे...” वाक्य पूरा नहि भेलनि। सरिता कहलनि, “ओकर नाम काटल नहि गेल अछि, कबीर। ओकर जीबाक दिन एतए खतम भेल अछि। हम जतेक दिन ओकरा संग रहलहुँ, ओ दिन सभ मेटायल नहि अछि।” कबीर नैराक रजिस्टरक प्रति पुछलनि। रमा हुनका मूल पृष्ठ नहि देलीह; सत्यापित प्रति उपलब्ध करबाक प्रक्रिया कहलनि। कबीर सहमति देलनि। हुनका नैराक हस्तलिखित आखिरी आदेशक फोटो नहि चाही छल; हुनका चाही छल जे ओकर कामक क्रम गलत कथा बनि नहि जाए।

रुखसाना रसोइमे भातक मात्रा घटएबाक पक्षमे नहि छलीह। प्रतीक्षा करैत लोक बेसी छलाह, आ बचावकर्मीसभक अगिला पालि एखन आबि रहल छल। कंचन पुछलीह, “जिनकर घरमे मृत्यु भेल, हुनका खएबाक कहब कोना?” रुखसाना करछुल रोकलीह। “कहब नहि जे खाएलासँ दुख घटत। बस राखि देब जे चाहथि ओ लेलथि। जे नहि चाहथि, हुनका बारम्बार बाध्य नहि करब।” चन्द्रिका उर्मिलाक बहिन लेल पानि आ कपड़ा अलग रखलीह; मजदूरीक पन्ना सेहो पूरा कएलीह। ओही मेजपर दानमे आएल चाउर आ कामक बदला देय पैसा दू अलग बहीमे लिखल गेल।

कंचन उर्मिलाक बहिन लग कटोरी लऽ एलीह। बहिन कटोरी नहि लेलीह, मुदा पुछलीह, “हुनकर धोबिघट्टा लग आइ के गेल?” कंचनकेँ पता नहि छल। उमा ओतहि सँ कहलनि, “कियो कपड़ा नहि उठौने छल; हम सभ पहिने घरक लोकसँ पुछब।” बहिन एक बेर कटोरी दिस देखलीह, फेर कहलनि, “आधा दे दियौ। हम एखन खा नहि सकब, मुदा संग आएल बच्चा भूखल अछि।” कंचन दोसर कटोरी अनलीह आ बच्चा लेल एकटा नीक सुखायल पात बिछौलीह। ई कोनो शोक-भोज नहि छल, न बड़का सांत्वना। एतबे बात

छल जे उर्मिलाक घरक लोकक भूख, अधिकार आ उदासीनता अपन-अपन अलग ठाम रखैत छल।

अदिति अस्पतालक भीजल देवाल लग लौटि नव मापनक पृष्ठ खोललीह। बाहर एक आदमी कहलक, “आब बुझायल ने जे नाली रोकलाक कारणे सभ भेल?” अदिति उत्तर देलीह, “अवरुद्ध बाहा, असुरक्षित भार, अधूरा मरम्मत आ अलग-अलग समयपर टूटल हिस्सा—सभक जाँच होएत। जखन कारण मिलत तखन लिखब। आज मृत्यु पुष्ट अछि; कारणक पूरा जाल एखन जाँचाधीन।” तारा पासे ठाढ़ छलीह। ओ पुरान पाँखपर लगाओल निषेध-रेखाक फोटो लैत कहलीह, “नव दरारक घड़ी आ पुरान चिन्हक घड़ी एक नहि। ओकरा गलत मिलाएब तँ दोसर बेर ओहि गलतीक भार मनुखपर पड़त।”

अस्पतालक धुलाई-घेर लग पानि एखनहुँ एक ठाम ठाढ़ छल। घाटसँ आनेल कपड़ाक भीजल गट्टर जमिनपर नहि राखल गेल; उर्मिलाक काम पहिनेसँ जाननिहार दू महिला ओकरा उठाइ सुरक्षित चबूतरापर रखलीह। हुनकामे एक कहलीह, “किछु कपड़ा एखन रुग्णक अछि, ओकरा साफ करब चाही।” दोसर उत्तर देलीह, “काम रोकिनाइ आ बिना हिसाब सभ अपने माथ लेब, दुनू अलग बात।” ओ सभ सलमासँ संक्रमण-सुरक्षाक निर्देश लेलनि, आ रमा सँ लिखित समय-सुपुर्दगी। उर्मिलाक मृत्यु हुनकर काजक अवहेलना बनि नहि जाए, एहि कारण ओ काज करबाक संग दामक प्रश्न सेहो उठौलीह।

सुगनी सदाय नालीक बाहरी मुँह लग माटिक नमूना लेलनि। गोपाल माझी बान्हक कातक जलस्तरक पंजी तैयार करैत छलाह। दुनूक कामक देखनिहार एक अधिकारी कहलक, “एखन मृत्यु-सूचनाक दिन अछि, ई माप काल्हि लऽ सकैत छी।” सुगनी जवाब देलीह, “आजुक पानि काल्हि नहि रहत। आजुक माप नहि रहल तँ काल्हिक निर्णय अधूरा होएत।” ओ नमूनाक पात्रपर समय, ठाम आ अपन नाम चिपकौलीह। मुदा ओकरा “मृत्युक कारण” नहि लिखलीह। गोपाल बान्हक मोड़पर पानि घुरबाक दिशा अलग लिखलनि; अस्पतालक भीतरक देवालक अवस्था हुनकर मापनक दायरामे नहि छल।

दोपहरक प्रकाशमे पहिचान-कक्षक बाहर लोकसभक भीड़ बढ़ल। एक समाचारवाला कागदपर नैरा आ उर्मिलाक नाम लिखि कऽ फोटो माँगलक। कबीर ओकरा सीधा उत्तर देलनि, “दुनूक मृत्यु पुष्ट अछि; परिवारक सहमति बिना देह वा निजी सन्देशक चित्र

सार्वजनिक नहि होएत।” पत्रकार पुछलक, “अहाँ तखन की प्रकाशित करब चाहैत छी?” कबीर कहलक, “जे पुष्टि भेल अछि, ओकर विश्वसनीय सूचना। अनावश्यक आखिरी शब्द नहि।” उर्मिलाक बहिन पाससँ जोड़लीह, “ओकरा केवल मृत कर्मचारी लिखि कऽ कपड़ा-पंजीक मजदूरी मेटा नहि देब। ओ अपन नाप, समय आ दाम स्वयं लिखैत छलीह।” ई कहि ओ कैमरा दिस नहि देखलीह; अपन रसीदक गट्टर कसि धऽ लेलीह।

नैराक सुरक्षित मेजपर राखल भीजल रजिस्टरक एक पन्ना सलमा आ रमाक समक्ष खोलल गेल। ओकरा सूखेबाक लेल तेज धूपमे राखब उचित नहि मानल गेल; साधारण हवादार छाँहमे पन्ना अलग फैलाओल गेल। नैराक अन्तिम ज्ञात हस्ताक्षरक नीचे कोनो “निकासी सफल” चिह्न नहि छल। एक नया लिपिक पुछलक जे खाली स्थानमे ‘मृत’ लिखि देल जाए की नहि। रमा कहलनि, “एहि पन्नाक काज निकासक घड़ी लिखब छल। मृत्यु-सूचनाक अपन अलग रजिस्टर अछि। पछिलुक रिक्त स्थानमे नब परिणाम भरब, प्रमाणक समयक्रम तोड़ब होएत।” लिपिक हाथ रोकलक। कागदपर नैराक आखिरी खाली कोठरी खाली रहल।

देवी गोंडकेँ अस्पतालक सुरक्षित कक्षमे आराम दैत समय हुनकर प्रशिक्षणक पर्यवेक्षक आएलाह। कियो कहलनि, “उर्मिला जकाँ बहादुर बनलहुँ, बचि गेलहुँ।” देवी आँखि खोलि कहलीह, “उर्मिला बहादुरी दिखेबाक लेल भीतर नहि रहलीह। खाट आ रोगिणीक काज हुनका लग छल। हमरा बचलाक कारणो अनेक अछि—सहायकक हाथ, सहारा लगाबनिहार दल, जे रास्ता खुलल। एकटा उपमा बनाओलासँ उर्मिलाक काज छोट पड़ि जाएत।” पर्यवेक्षक एहि वाक्यकेँ सुनलनि। देवी अपन उपचार-पत्रक प्रति माँगलीह; प्रशिक्षणक अभिलेखमे दुर्घटनाक वास्तविक परिस्थिति सुरक्षित हो, से चाहैत छलीह।

एक परिचारक रातिक घटनाकेँ फेर कहबाक क्रममे स्मृतिक किछु अंश भूलि रहल छल। ओ कहलक जे पहिल टूटल आवाजक बाद उर्मिला पुकारलीह; फेर रुकि कहल, “शायद पहिनेसँ।” रमा हुनका पहिल कथन पोंछि देबाक प्रस्ताव नहि देलीह। “जे एखन निश्चित बुझैत छी, से लिखू; जे नहि, ओकरा शंका राखू” ओ कहलीह। एहि सँ घटनाक क्रम त्वरित बनल नहि, मुदा पछिला जाँच लेल एक सही सीमा बचल। अपराध, उपेक्षा

अथवा लापरवाहीक दोष तय करबाक लेल एहन गवाही अपन ठामपर आवश्यक होएत। मृत्यु-सूचनाक पुष्टिक संग आरोप-पत्रक भाषा मिसल नहि गेल।

कबीर घर जा नैराक कोठरी खोलबाक सम्बन्धमे सोचि रहल छलाह। सुभद्राक औषधि मेजपर छूटल छल, ओ बात हुनका रातिसँ स्मरण छलनि। ओ सरितासँ पुछलनि, “हम एखन घर जाउ की एतहि रहू?” सरिता कहलीह, “घर जाइ कऽ औषधि देल जरूरी अछि। मुदा एतय अहाँक सही चाही तँ रमा खबर कर देतीह।” कबीर अपन फोनक अति साधारण स्मरण-पत्र खोललनि—घरक नुन, एक पुरान पुस्तकक मरम्मत, आ नैराक लिखल सूची। ओ फोन जेबमे राखि देलनि। मृत्युक पुष्टिक बादो भात, औषधि आ घरक चाभी अपन आवश्यकतासँ मुक्त नहि भेल छल।

उर्मिलाक बहिन घाटपर साँझक धोएल कपड़ा के उठाओत, तकर व्यवस्था करबाक लेल उमा आ दोसर महिला सँ बातचीत कएलीह। एहि बातचीतमे कियो उर्मिलाक स्थान तुरन्त लेने सहानुभूति देखेबाक चेष्टा नहि कएलक। “हम सभ जे करब, तकर दाम लिखल जाए,” उमा कहलीह। बहिन कहलनि, “आ पुरान बकाया अलग। आजुक सहायता पुरान हिसाब चुकता नहि करैत।” ओ उर्मिलाक कपड़ा-पंजीक प्रमाणित प्रति लेल आवेदन लिखौलीह। एक कर्मचारी असुविधासँ पुछलक, “एहि दिनो?” बहिन ओकरे देखि उत्तर देलीह, “अहाँक लेल ई एक दिन अछि। हमर घरमे ई हिसाब आगे बहुत दिन चलत।”

अस्पतालक बाहर साँझक पहिल बादरि जुटैत छल। रमा अपना समक्ष तीनटा बन्द लिफाफा रखलीह—नैरा, उर्मिला आ वृद्ध रोगिणीक सत्यापित कागद—आ एकटा अलग अपूर्ण पंजी, जकर वृद्ध पुरुषक नामक वर्ण अभी मिलानमे छल। ओ कागदसभकेँ एकहि गट्टरमे नहि बान्हलीह। शशिभूषणकेँ अगिला दिनक पहचान-प्रक्रियामे आवश्यक स्वतन्त्र गवाहीक सूचना पठाओल गेल। केओ पुछलक, “कतेक मृतक?” रमा उपलब्ध चिकित्सकीय पुष्ट संख्या बतौलीह, फेर स्पष्ट कएलीह जे प्रत्येक देहक व्यक्तिगत पहिचानक प्रमाणक सीमा अलग अछि। नामक मिलान अगिला काज छल, शोकक गिनती ओकर विकल्प नहि।

सरिता नैराक नामवला सूचनाक सत्यापित प्रति कबीरकेँ देलीह। ओ ओकरा पढ़ि कागद मोड़लनि नहि। बहुत देर बाद कहलनि, “काल्हि धरि जे आशा छल, आइ ओकरा

नाम देल गेल।” सरिता उत्तर देलीह, “नाम देल गेल, मुदा नैरा केवल एहि कागदक नाम नहि छलीह।” दुनू बीच मौन रहल। दूर रुखसानाक रसोइमे पानि उबलबाक आवाज आबि रहल छल, आ असुरक्षित पाँखपर लगाओल लाल रेखा बरखा-आलोकमे देखाइत छल। भोरसँ साँझ धरि जे बदलल, ओ वचनसँ वापस नहि हएत। तथापि कागदक अगिला पृष्ठपर उर्मिलाक मजदूरी, अस्पतालक पानि, आ बचल रोगीक उपचारक काम खाली छोड़ल नहि जा सकैत छल।

अध्याय १२२ • अन्तिम देह

शवगृहक बरामदामे सफेद कपड़ाक थान परसू दिनसँ आधा खुलल पड़ल छल। शशिभूषण महापात्र ओकर किनार सोझ करैत नाप-डोरीकें फेर लपेटलनि। बिहानक भीजल हवा धागामे समा गेल छल; कपड़ा जँ एखन काटि देल जाए तँ पछिला मापक भरोसा नहि रहत। बरामदाक दोसर कात चारिटा लिफाफा रखल छल—तीन बन्द, एकपर लाल पेंसिलसँ ‘पहिचान अपूर्ण’ लिखल। रमा हुनका देखिते कहलीह, “आइ सामग्रीक आदेश पहिने नहि, नामक जाँच पहिने।” शशिभूषण नाप-डोरी थानपर रखि देलनि। “हमर हाथसँ ककरो नाम गलत नहि जाए, एतबे लेल आयल छी,” ओ कहलनि।

पहिल लिफाफा नैराक छल, दोसर उर्मिलाक। तेसर ओहि वृद्ध रोगिणीक, जकर बेटी रातिभर अस्पतालक आँगनमे लवंगक डिबिया पकड़ने बैसल छलीह। चिकित्सकीय परीक्षण, परिवारक पहिचान आ शवगृहक प्राप्ति-क्रम तीनू कागदमे अलग-अलग दर्ज छल। चारिम पंजी वृद्ध पुरुषक छल, जकरा राति उपचार-कक्षसँ बाहर अनल गेल छल; हुनकर खाटक चादरपर लिखल छोट सङ्केत आ उपचार-पत्रक अक्षर नहि मिलैत छल। कर्मचारी कहलक, “नाम अनुमानसँ भरि दी तँ गाड़ी छुटि जायत।” रमा कहलनि, “गाड़ी छुटब एकटा असुविधा अछि; गलत देह भेजब दोसर परिवारक गलती।”

शशिभूषणकें महेश मंडलक मृत्यु याद अएल। ओहि राति हुनकर पत्नी मँगाओल बाँस आ कपड़ाक दाम अलग-अलग पुछने छलीह। ओ अपन खाता खोलि बतौने छलाह जे सामग्रीक रसीद, शवगृहक कागद आ पुलिसक जाँच तीन भिन्न वस्तु छथि। एखन नया बरामदामे एक कर्मचारी हुनकर पुरान खाता देखिकऽ कहलक, “अहाँ तँ ई काज रोज करैत छी। चारू देहक एक्के सूची बना दिअ, बादमे नाम सुधारि लेब।” शशिभूषण उत्तर देलनि, “मूल्य लिखबाक अभ्यास हमरो अछि। मृतकक पहिचान तय करबाक अधिकार हमर खाता नहि दैत अछि। जे नाम एखन अनिश्चित अछि, ओकरा अनिश्चिते लिखू।”

दोपहरसँ पहिने दूरक गामसँ दू पुरुष, एक महिला आ एक किशोर पहुँचलाह। हुनकासभक हाथमे एक पुरान उपचार-पर्ची छल, जाहिपर वृद्ध परिवारजनक नाम ‘बुधन दास’ लिखल छल। कागदपर ‘बुधन पासवान’ जकाँ एक अस्पष्ट लिखावट देखाइत छल।

युवक दूरसँ टाँगल कपड़ाक कोना देखिकऽ बजि उठल, “ई हमर बाबाक धोतीक रंग अछि।” ओ देह देखब चाहैत छल। कर्मचारी तत्क्षण चाभी उठौलक। रमा ओकर हाथ रोकि पुछलीह, “एहि कपड़ाक रंगसँ पहिचान करैत छी, आ कि अहाँक परिवारक कोनो पुरान चिह्न अछि?” युवक हताश भेल, मुदा ओकर माय ओकर बाँह धऽ कहलीह, “कपड़ा ककरो भऽ सकैत अछि।”

किशोर अपन नाना लेल अनल छोटी थैली खोललक। ओकर भीतर चश्माक खाली डिबिया, पटुआक रस्सीक गाँठ आ आधा लिखल चिट्ठी छल। “बाबा निकलला तँ चश्मा पहिरने छला,” ओ कहलक, “एखन डिबिया घरमे भेटल।” रमा ओहि वस्तुसभकेँ जब्त साक्ष्य नहि मानलीह; परिवारक अपन सामग्रीक रूपमे राखए देलीह। शशिभूषण लड़काक काँपैत उँगरी दिस देखलनि। ओकरा लेल नाम मिललासँ पहिने एहि परिवारक पूरा रातिक खोज, भाड़ाक खर्च आ चिट्ठीक अपूर्ण वाक्य छल। तखनहुँ परिवारक पीड़ा पहचानक प्रमाण बनि नहि सकैत छल।

उपचार-कक्षसँ आएल नर्सक नाम-पंजी निकालल गेल। ओ रातिमे आपात निकासक समय दू रोगीकेँ अलग-अलग खाटपर रखैत छलीह। प्रवेश-सङ्केत चारि-सात-दू दोसरपर चारि-दू-सात छल। धूर आ भीजल स्याहीमे दुनू अंकक बीचक रेखा फाटि गेल छल। नर्स कहलीह, “हम जे खाट बाहर पठौने छलहुँ, ओकर पाँखपर नील धागा बाँधल छल।” कर्मचारी पुछलक, “तँ ई देह ओही खाटक?” नर्स तुरन्त नहि बजलीह। “नील धागा देखलहुँ। देह उठबैत समय हम दोसर रोगीक श्वास सम्हारि रहल छलहुँ। ओ व्यक्ति के छलाह, नहि देखलहुँ।”

कबीर आ सरिता बरामदामे पहुँचलाह तँ भीड़ एकदम ससरि गेल। कियो हुनकासँ नैराक मृत्युक विषय पुछबाक साहस नहि कएलक; ओहि मौनमे हुनकर शोक सार्वजनिक वस्तु बनबाक खतरा छल। कबीर रमा लग जा नैराक लिफाफाक सत्यापित प्रतिक बारेमे पुछलनि। “एकटा घर लेल, एकटा जाँच लेल,” ओ कहलनि, “निजी फोटो बाहर नहि जायत।” रमा उत्तर देलीह जे परिवारक लिखित विकल्पकेँ फाइलमे जोड़ल जा रहल अछि। कबीर अन्य देहसभक कागद दिस देखलनि। “जेकर नाम एखन नहि अछि, ओकर परिवारकेँ हमरा जकाँ निश्चित समाचार मत दिअ,” ओ कहलनि।

सरिता दास-परिवारक माय लग बैसलीह। महिला अपन नाम बतबैत कहलीह, “हम सबिता। आठ कोस दूरसँ आयल छी। जँ देह हमर ससुरक नहि भेल, तखन हम की कहि घर घुसब?” सरिता उत्तर देलीह, “जे एखन देखल, से कहू। जे नहि देखल, ओहि पर निर्णय मत दिअ।” सबिता आँगनमे राखल पानि लेल हाथ बढ़ौलीह आ फेर रोकि लेलीह। “हमर घरमे सभ कहैत अछि जे अस्पताल एकटा नाम बना देत, आ हम ओही पर विश्वास कऽ लेब। मुदा गलत नाम घुरेलहुँ तँ दोसर घरक शोक चोरा आनब।” सरिता बहुत बेर हुनका देखैत रहलीह।

शशिभूषण कार्यालयक खाली कुर्सीपर बैसलाह आ अपन मजदूरी-बहीक बगलमे एकटा नव छोट पृष्ठ रखलनि। माथपर लिखलनि—‘पहिचान ठहरल रहिते सामग्री सुरक्षित’। ओहिमे स्वेच्छिक अग्रिम, कपड़ाक नाप, बाँसक संख्या आ वापस लेल जा सकनिहार मालक अलग स्तम्भ बनौलनि। एक दुकानदार कहलक, “एहन घड़ीमे व्यापारक चिन्ता?” शशिभूषण ओकरा देखिकऽ उत्तर देलनि, “व्यापारमे साफ लिखब एहन घड़ीमे आरो आवश्यक अछि। जे अनिश्चित देह लेल कियो पैसा नहि देबाक चाहैत अछि, ओकरा हम बाध्य नहि करब। मुदा हमरो संग काम करनिहार बुनकर आ ढुलाईवालाक मजदूरी कियो मेटा नहि सकैत अछि।”

तहिना वृद्ध रोगिणीक बेटी अपन सत्यापित लिफाफा माँगए एलीह। रातिसँ हुनकर हाथमे रहल लवंगक डिबिया एखन खाली छल। ओ माता लेल जे कपड़ा चुनने छलीह, ओकर रंगमे सफेदी नहि, पुरान हलुक पीयरपन छल। एक व्यक्ति कहलक जे अन्तिम यात्रामे सभकेँ एके वस्त्र देल जाइत अछि। बेटी धीरे बजलीह, “माय जीबैत पीयर पसिन करैत छलीह। हम तय करब कि हुनका कोन कपड़ा देब।” शशिभूषण ओकर माप लेलनि, मुदा अतिरिक्त वस्तु जोड़बाक प्रस्ताव नहि देलनि। ओ बुझैत छलाह जे मृतकक वस्त्रक निर्णय पहिलुका जीवनक स्नेहसँ निकलैत अछि।

रमाक मेजपर एक मुद्रित सूची आबि गेल जकर शीर्षपर ‘अन्तिम पुष्टि’ लिखल छल। विभागक एक युवक हड़बड़ीमे चारू स्थान भरि देने छल। चारिम स्थानपर ओकरा अस्पष्ट सङ्केतसँ ‘बुधन दास’ पढ़ाइत छल। रमा पुछलीह, “एहि नामक आधार?” युवक कहलक, “बाहर प्रतीक्षा करैत परिवारक पर्ची, आ मिलैत लिखावट।” “परिवार आएल

अछि, ई प्रत्यक्ष तथ्य,” रमा कहलीह, “ओहि देहसँ ओकर सम्बन्ध एखन आरोपित पहिचान अछि। दू प्रमाणकेँ एके पाँतिमे राखि अहाँ तेसर तथ्य नहि बना सकैत छी।” युवक अपमानित भऽ कागद मोड़बाक लगल। रमा रोकलीह, “मूल प्रति नष्ट नहि करब। एकरा गलतीक इतिहाससहित सुरक्षित रखू।”

युवकक वरिष्ठ अधिकारी बजला जे अन्तिम यात्राक गाड़ीक समय निश्चित अछि, आ नगरमे मृतक-संख्याक सार्वजनिक सूचना देब आवश्यक। “अनिश्चित” लिखलासँ लोक घबराएत,” ओ कहलनि। शशिभूषण ठाढ़ भऽ गेलाह। “गलत नाम लिखलासँ लोक शान्त नहि रहताह,” ओ बजलाह, “कागद तखन एक परिवारकेँ मृतक दैत अछि आ दोसरासँ ओकरा छीनि लैत अछि।” अधिकारी हुनका दिस देखलनि—“अहाँ कोन विभागसँ?” “कोनो विभागसँ नहि,” ओ कहलनि, “हम सामान जुटबैत छी। मुदा हमरा रसीदपर जकर देहक नाम लिखाओल जाए, ओकरा लेल परिवार सँ गवाही माँगबाक अधिकार तँ अछि।”

रमाक निर्णय भेल जे पहिने चारू कागद अलग पाँतिमे छानल जाए। नैरा, उर्मिला आ वृद्ध रोगिणीक सत्यापित कागदमे उपचारक क्रम, बाहर निकास, चिकित्सकीय निष्कर्ष आ परिजनक पहिचानक स्रोत स्पष्ट रहत। चारिम पाँतिमे अस्थायी क्रमाङ्क, देहक सुरक्षित स्थान आ आवश्यक देखभाल लिखल जाएत, नाम नहि। सूची पर लिखल जाएत —‘पहिचान अपूर्ण; परिवारक दावा जाँचाधीन’। ओ सार्वजनिक सूचना लेल मृतकक पुष्टि-प्रक्रिया आ पहचान-प्रक्रिया भिन्न छापबाक निर्देश देलीह। एतबेमे अस्पतालक बाहर एक आवाज उठल, “हमर आदमीकेँ अज्ञात कहि कऽ कतेक दिन राखब?”

आवाज देनिहार वृद्ध महिला नील किनारीवला साड़ी पहिरने छलीह। हुनका संग एक युवती छल। महिला कहलीह जे हुनकर पति आपदाक दिन अस्पतालमे भर्ती भेल छलाह; घरसँ निकसलाक बाद एखन धरि नहि घुरलाह। युवतीक हाथमे औषधिक दू पर्ची आ पुरान विद्यालयक फोटो छल। पहिल परिवारक युवक हुनका सुनिते कहलक, “अहाँक लोक अलग होएत; ई हमरा बाबाक नामवला पर्ची अछि।” वृद्धा ठमकि गेलीह। “हम नाम छीनेक लेल नहि आयल छी,” ओ कहलीह, “हम तँ देखए आयल छी जे हमर पति कहाँ छथि।” दू शोकाकुल परिवारक बीच विवादक दू पाँति बनबाक पहिने रमा अलग बैसबाक जगह तय कएलीह।

दोसरी परिवारक युवती अपन नानाक नाम ‘बुधन साह’ बतौलीह, मुदा उपचार-पर्चीपर ‘बुधन साह’ लिखल छल। सबिताक पर्चीपर ‘बुधन दास’ छल। अस्पष्ट अक्षर दुनू परिवार लेल अपन-अपन सम्भावना बनि गेल छल। रमा कहलीह, “नामक मिलान आवश्यक अछि, पर्याप्त नहि। समय, प्रवेश-द्वार, उपचारक क्रम, देहसँ जुड़ल सामग्री आ स्वतन्त्र पहचान सभ अलग देखब।” युवती पुछलीह, “जँ हमर लिखल पुरान पर्चीक अक्षर सेहो गलत अछि?” “तखन तकरा कारणँ अहाँक गवाही रद्द नहि होएत,” रमा उत्तर देलीह, “मुदा ओकरा तथ्य मानबाक पहिले स्रोत चाही।”

सलमा सुरक्षित कक्षसँ आएलीह। रातिक बिछुड़ल रोगीसभक कागद अखनहो उपचार-क्रमसँ मिलान भऽ रहल छल। ओ नर्सकें पुछलीह जे पहिल रोगीक कलाई-बन्धक नम्बर कतए दर्ज कएल गेल। नर्स अपन हस्ताक्षरवला शिफ्ट-पन्ना निकाललीह, जाहिपर कलाई-बन्ध आ श्वास-सहायताक उपकरणक अलग संख्या छल। सलमा एक परिवारकें भीतर नहि पठौलीह। “देह पहिचानक कोठरी कोनो प्रदर्शनी नहि,” ओ कहलीह, “पहिले सुरक्षित प्रक्रियाक अनुमति, फेर परिवारक तैयार होएबाक समय। देखबासँ मना करब वा देखबाक समय चुनब सेहो परिवारक अधिकार अछि।”

उर्मिलाक बहिन ओहि ठामसँ घाट दिशि जाय चाहैत छलीह। हुनकर हाथमे उर्मिलाक घाटक चाभीक गुच्छा छल, मुदा अस्पतालक बकाया मजदूरीक कागद अलग थैलीमे छल। ओ शशिभूषणकें चिन्हलीह, जे महेशक रातिमे सेहो शोकाकुल परिवार लग उचित रसीद देने छला। “हमर बहिनक अंतिम वस्त्रक दाम लिखि दिअ,” ओ कहलीह, “मुदा घाटपर हुनकर हिसाब एखन नहि बन्द करब।” शशिभूषण उत्तर देलनि, “हमर बहीमे कपड़ाक दाम लिखत। हुनकर मजदूरीक बही अपन ठाम रहत।” ओ अपन बहिनक आवाज मोन करैत फेर बैसि गेलीह।

देवी गोंड सुरक्षित कक्षमे छलीह। माथक घावक पट्टी नब बदलल गेल छल आ चिकित्सक कम बोलबाक सलाह देने छला। रमा हुनका साक्ष्यक लेल तुरन्त बुलाएब उचित नहि मानलीह। देवी स्वयं छोट सन्देश पठौलीह—भीतर जखन वृद्ध पुरुषकें उठाओल गेल छल तखन ओ स्वयं उर्मिलाक सहायतामे छलीह; देहक पहिचान देखबाक दावा नहि करैत छथि। ताहि सन्देशमे हुनकर याद छल जे एक रोगीक खाटक नीचे

कपड़ाक थैली बान्हल छल, मुदा केकर खाट, ई निश्चित नहि। रमा टिप्पणीमे ‘स्मृति अपूर्ण’ लिखवौलीह, साक्ष्यक अभाव नहि नुकौलीह।

आँगनक कोनमे सबिता अपन पुतकेँ चुप रहबाक आदेश देने छलीह। युवकक हाथमे मोबाइल छल, जाहिमे पिता-जकाँ बुझाइत एक छाया-चित्र कियो भेजने छल। कियो लिखने छल—‘पहिचान भऽ गेल’। सरिता ओकरा पुछलीह, “ककरा सँ भेटल?” युवक आँखि नीचाँ कऽ कहलक, “समाचारक समूहसँ। फोटो अस्पष्ट अछि।” “तखन ककरो एखन मत पठाउ,” सरिता कहलीह। “हम नहि चाहैत छी हमर घरक लोक झूठे रोअय,” युवक कहलक, “मुदा नहि पठेलहुँ तँ सभ कहत जे हम खबर नुकबैत छी।” सरिता फोन ओकर हाथमे घुराउलीह; निर्णय हुनकर परिवारक रहत, मुदा बिना स्रोतक नाम फैलौनाइ दूसर परिवारक अपमानो बनि सकैत छल।

शशिभूषणक एक सहाय बस्तामे बाँस आनलक। ओ पुछलक, “कोन देह लेल कतबा राखी?” शशिभूषण पहिने तीन सत्यापित परिवारक अनुमति आ वास्तविक जरूरत मिलौलनि। चारिम लेल वस्तु काटबाक बदला अलग रखबाक आदेश देलनि। सहाय कहलक, “बिना काटने कपड़ा वापस घुरा देल जायत तँ हमर दिनक भाड़ा?” शशिभूषण अपन निजी हिसाबसँ ओकर आधा दिनक तय पारिश्रमिक देबाक निर्णय लेलनि। “जे जोखिम हम रोकि रहल छी ओकर दाम गरीब सहायसँ नहि वसूलब,” ओ कहलनि। सहाय पहिल बेर माथ उठौलक—“एहि दामक पर्ची रहत?” शशिभूषण मुस्की देलनि, “रहत, ताहिसँ तँ हम एहि काजमे छी।”

दू परिवारकेँ पहिचान-कक्षमे अलग समय देल गेल। सबिता पहिने गेलीह, हुनकर संग इलाजक एक कर्मचारी आ स्त्री सहायक छलीह। ओ देहक मुख देखिते आँखि बन्द कएलीह। कर्मचारी पुछलक, “चिन्हलीह?” ओ किछु काल बाद उत्तर देलीह, “नहि कहि सकैत छी। डरमे हमरा सभ चेहरा एक जकाँ बुझाइत अछि।” ओ पति आ बेटाकेँ बाहर कहलनि जे कपड़ाक रंग ओहि पर्चीक नामक बराबर प्रमाण नहि अछि। ई अस्वीकार हुनकर लेल आसान नहि छल—घर जा सभ प्रश्नक उत्तर फेर देब पड़तनि। मुदा ओ अपन अनिश्चितताकेँ झूठ निश्चिततासँ नहि बदललीह।

दोसरी वृद्धा भीतर गेलीह तँ चुपचाप देहक हात दिस देखलीह। ओ कहलीह जे हुनकर पतिक अँगूठामे पुरान जख्म छल, मुदा यहाँ पट्टीक कारण स्पष्ट नहि देखाइत। हुनका अनुरोधपर चिकित्सकीय कर्मचारी सुरक्षित सीमा भीतर निरीक्षणक वर्णन लिखलक; वृद्धा स्वयं पट्टी हटाबए नहि गेलीह। युवतीक लाओल फोटोमे देहक रूप समयक कारण बदलल छल। वृद्धा बाहर आबि कहलीह, “हमर मोन कहैत अछि ओ हुनके छथि, मुदा मोनकें प्रमाणक कागदपर सहस्ताक्षर नहि बनाउ।” रमाक नजर ओहि स्त्रीक थरथराइत हाथपर टिकि गेल।

अदिति आ तारा अस्पतालक बाहरक टुटल पाँखक नब फोटो लिनाइ रोकि देने छलीह, कारण ओहि ठाम अजस्र लोक मृतकक छायाचित्रक तलाशमे घुसब चाहैत छल। तारा कड़े स्वरमे कहलीह, “ई कोनो देखबाक मेना नहि अछि। ऊपरक सहारा एखन जांचल नहि गेल।” एक पत्रकार तर्क देलक जे जनता सत्य देखय चाहैत अछि। अदिति उत्तर देलीह, “भवनक दरार देखाउ, मापक कागद देखाउ। बिना अनुमतिक मृतकक देह देखेबासँ भवनक दोष सिद्ध नहि होएत।” ओ भौतिक निरीक्षणक उपलब्ध प्रमाणक सूची बनेबाक निर्देश देलीह, निजी देहक तस्वीरक नहि।

कबीर नैराक नामवला कागद लऽ अस्पतालक चबूतरा पर बैसल छलाह। सुभद्राक औषधि घर पहुँचाओल गेल अछि, तकर खबर ओ सरितासँ जानलनि। सरिता कहलीह जे घरमे नैराक मेजक कागद एखन कियो नहि हिलाओत। कबीर उत्तर देलनि, “ओकर आवाजक जगह कागद सजा देबासँ नहि भरत।” ओ सँभलि पुछलनि, “ओहि वृद्ध पुरुषक परिवारक की भेल?” सरिता कहलीह, “दू घर प्रतीक्षा करैत अछि। नाम एखन रुकल अछि।” कबीर आकाश दिस नहि, सामने बहैत नालीक ठाढ़ पानि दिस देखलनि। “रुकल नाम सही अछि,” ओ कहलनि, “जतए भुलबाक जोखिम अछि।”

रमा लग नब जानकारी आएल। पुरान आपात-प्रवेश-पंजीक एक कार्बन प्रति अस्पतालक दोसर सुरक्षित कक्षमे बचल छल। ओकर क्रमाङ्क ‘४७२’ संग एक नामक पहिल तीन अक्षर मिलेबाक सम्भावना छल; ‘४२७’ दोसर समयक प्रवेश छल। मुदा प्रतिक आखिरी पृष्ठ भीजल छल, आ हस्ताक्षर पढब कठिन। रमा मूल आ कार्बन प्रति दू अलग थैलीमे रखबौलीह। कोनो अधिकारी उत्साहमे कहलक, “आब तँ पूरा भऽ गेल।”

रमा उत्तर देलीह, “क्रम अलग भेल। एहि क्षण हम गलत मिलानक कारण भेटल कहि सकैत छी; सही व्यक्ति के छथि, तकर जाँच आओर चाही।”

बचावदलसँ एक परिचारक अपन पहिल बयान सुधारबाक इच्छा सँ आएल। रातिमे ओ कहने छल जे एक खाट पहिने बाहरी दरबज्जा धरि पहुँचि गेल छल; एखन हुनका याद पड़ैत छल जे ओ खाटक चक्का छूटि गेल छल, तँ दोसर खाट पाछाँ रहल। ओ डरैत छल जे बयान बदललासँ लोक झूठा कहत। रमा कहलीह, “पहिल कथन काटब नहि; संशोधनक समय जोड़ब। डरक कारण चुप रहला सँ स्मृतिक कमी दूर नहि होएत।” ओ परिचारकक बीचमे उठल खाँसी थामबाक लेल पानी देलीह। हुनकर श्रमक प्रमाणक मूल्य ताहि पानिसँ कम नहि भेल।

बाहर अस्पतालक सँकरे बरामदामे लवंगक डिबियावाली बेटी अपन माताक देह लेल चुन्नल पीयर कपड़ा लऽ आयलीह। ओ शशिभूषणसँ पुछलीह जे कपड़ाक एक छोट टुकड़ा बचत की नहि। “बचत,” ओ कहला, “अहाँ चाहे तँ घर राखि सकैत छी।” बेटी कहलीह, “माय हमर छोट बेटीकेँ एहि रंगक धज्जीसँ गुड़ियाक कपड़ा सीब सिखबैत छलीह। पूरा थान ओकरा कोन दिन बुझाएब?” शशिभूषण कपड़ाक काटल बचल किनार साफ लपेटि देलनि। ओहि क्षण मृतककेँ एकटा सङ्ख्या बनबासँ रोकनिहार वस्तु कोनो मुहर नहि, एक छोट रंगीन टुकड़ा छल।

उर्मिलाक बहिन घाटसँ फेर आयलीह। उमा आ दू महिला मिलि आजुक धुलाई-काज रोकबाक बदला जिम्मेदारी बाँटने छलीह; तत्काल रोगीक कपड़ा अलग, सामान्य ग्राहकक कपड़ा अलग। बहिन कहलीह, “हमर बहिनक नाम केवल मृतकक सूचीमे नहि रहत। हुनकर काजक बहीमे जे बकाया अछि, ओ बकाया रहत।” रमाक सामने हुनकर द्वारा देल बहीक सत्यापित नकल रखल गेल, मूल बहिन लग सुरक्षित रहत। शशिभूषण अपन कपड़ा-रसीदमे उर्मिलाक नाम लिखिते ठमकि गेलाह। हुनका बरस सभसँ मृतकक परिजन भेटैत रहलाह; मुदा ई परिवार हुनका बतबैत छल जे एक व्यक्तिक अन्तिम वस्त्र आ अपूर्ण रोजी दूटा अलग खाता छथि।

दुपहरिया ढलैत-ढलैत विभागक अधिकारी संशोधित सूची हाथमे लऽ अएलाह। ओहि सूचीमे तीन सत्यापित परिवारक सहमति अनुसार नाम छल; चारिम पाँतिमे केवल

अस्थायी क्रमाङ्क आ 'पुष्टि प्रतीक्षित'। अधिकारी कहलक जे सार्वजनिक सूचना एहन रूपमे जाएत। युवक जे पहिने अनुमानसँ चौठम नाम भरने छल, ओ रमा लग कागद रखैत कहलक, “गलत सूची कतए जाएत?” “नष्ट नहि होएत,” रमा कहलीह, “सुधारक इतिहासमे रहत, सार्वजनिक नामसूची नहि बनत।” युवक पहिल बेर स्वीकार कएलक जे जल्दीमे लिखल एक अक्षर सँ कतेक दूर धरि गलती पहुँचि सकैत अछि।

शशिभूषण ओहि सुधार-पत्रक नकल अपन व्यापारिक बहीमे नहि चिपकौलनि। ओ मात्र आदेशक क्रमाङ्क आ परिवारक अनुमति दर्ज कएलनि। हुनका बुझाईत छल जे अनुष्ठानमे भिन्न घरक भिन्न रीतिक सम्मान होएब चाही; मुदा कोनो रीतिमे गलत देह सँतानकेँ सौँपब धर्म नहि कहाएत। एक वृद्ध पुरोहित हुनकासँ पुछलनि, “अन्हार होएबासँ पहिने काज नहि भेल तँ?” ओ कहलनि, “अनिश्चित नामपर समयक दबाव जोड़ब हमरा अधिकारमे नहि। जे निश्चित अछि, ओकर काज परिवारक पसिनसँ चलत; जे अनिश्चित, ओकरा लेल समय चाही।” वृद्ध बिना विवाद कएने पाछाँ हटि गेलाह।

सायंकालक हवा नालीक कातसँ तेज भेल। दूरक गामसँ आएल दुनू परिवारकेँ प्रतीक्षाक लेल आश्रयमे अलग ओढ़ना आ भोजन देल गेल; रुखसानाक रसोइमे ओकर दाम आ ढुलाईक समय अलग दर्ज भेल। सबिता कहलनि, “हम घर फोन करब जे निश्चित नहि अछि। ओतए कियो भोरसँ शोकक तैयारी शुरू कएने होएत।” दोसरी वृद्धा अपन युवतीकेँ कहलीह, “घरक दुआर बन्द नहि करिह; जखन घुरब तखन बतायब।” दुनू कथनमे आशा छल, मुदा आशा झूठ प्रमाणपर सहमत नहि करबैत छल।

देवी गोंडकेँ संझा पर्यवेक्षक भेटए एलीह। ओ छोट स्वरमे पुछलीह जे उर्मिलाक नाम मृत्यु-सूचनामे ठीक लिखल गेल की नहि। पर्यवेक्षक हुनका प्रमाणित प्रति नहि देखौलीह; पहिने परिवारक अनुमतिक बात कहलीह। देवी स्वीकार कएलीह। “हम हुनकर अन्तिम आवाज सुनलहुँ,” ओ कहलीह, “मुदा जतेक सुनलहुँ, ओतेक लिखब। शेष हुनकर बहिन कहथि, जे हुनका घरमे जनैत छथि।” हुनका ई बुझल छल जे एक व्यक्ति एक रातिक दृश्य मात्र नहि होइत अछि। प्रशिक्षणक अगिला पाठ सँभवतः कक्षामे नहि, एहि सीमाकेँ स्वीकार करबामे छल।

कबीर अस्पतालसँ उठबाक पहिने रमा लग अएलाह। ओ पुछलनि जे वृद्ध पुरुषक अस्थायी सङ्केत सुरक्षित ठामपर रहत की नहि। रमा हँ कहलीह, आ दू परिवारक लिखित गवाही, उपचारक अलग पंजी, उपलब्ध वस्तु तथा चिकित्सकीय परीक्षणक अगिला समयक सूचना देखौलीह। “नाम नहि भेटल तँ ओकर देह निष्प्रयोजन नहि भऽ जाइत अछि,” ओ कहलीह। कबीर किछु कहए चाहलनि, फेर नैराक नामक प्रति मोन पड़लनि। “हर मृतकक अपन लोक अछि,” ओ कहलनि, “कखनो लोक लग पहुँचबामे देर होइत अछि। ओहि देरीकेँ दोसराक नामसँ नहि भरब।”

शशिभूषण सन्ध्याक बाद अपन बचेबाक कपड़ा मोड़लनि। तीन परिवारक उपयोगक वस्तुकेँ अलग-अलग बाँधल गेल, ककरो पर मृतकक चेहराक फोटो नहि टाँगल गेल। चारिम गाँठ खुलले रहल; ओकर भीतर केवल नाप लेल अनकट कपड़ा आ सूत छल। सहायक पुछलक, “ई अन्तिम देहक लेल अछि?” शशिभूषण मुँह उठौलनि। “अन्तिम ककर लेल?” ओ कहला, “जे एखन नाम पाबए बाँकी अछि, ओकर जीवन सेहो ककरो लग पहिल छल। हम खाली कपड़ा तैयार रखब। देह ककर अछि, ई परिवार आ स्वतंत्र जाँच कहत।”

रमा अपन मेजपर रातिक नब पंजी खोललीह। तीन नामक आगाँ सत्यापनक कागद छल, चौठमक आगाँ प्रश्नचिह्न नहि—स्पष्ट शब्दमे ‘पहिचान प्रक्रियामे’। ओ नब फाइल बन्द करैत पहिले गलतीवला मुद्रित प्रति फेर देखलीह; नाम गलतीसँ भरल छल, मुदा तारीख आ हस्ताक्षरक कारण ओ भविष्यक जाँचमे महत्त्व राखैत छल। ओ एकरा सुधार-पत्रक संग अलग लिफाफामे रखलीह। बाहर उर्मिलाक बहिन अपन बही लऽ घर दिस बढ़लीह, सबिता परिजनकेँ फोन करैत छलीह, आ शशिभूषणक अनकट कपड़ा हवा नहि उड़ाबय से दाबि राखल गेल छल। जेकर पहिचान सिद्ध नहि भेल छल, ओकरा लेल गलत अन्तिम वाक्य लिखबाक बाट बन्द भऽ गेल छल।

अध्याय १२३ • गान्धारीक प्रश्न

कुरुक्षेत्रक युद्ध समाप्त भेलाक बादक ओहि भोरमे गान्धारी अपन आँचरक कोरमे पड़ल दू टुटल सीवन उँगरीसँ टोहैत छलीह। राजगृह छोड़ि मृतकसभक बीच जाएबाक तैयारीमे सेविका हुनकर पुरान पट्टीक गाँठ फेर कसए चाहने छलीह, मुदा गान्धारी हाथ रोकि देलनि। “एतेक कसू जे बाटमे ढील नहि हो,” ओ कहलीह, “दुखकैँ अन्हार करबाक लेल नहि।” कोठरीक बाहर घोड़ाक धीम खुर सुनाइत छल। राति भर जे समाचार पहुँचल छल, ओकरा कोनो विजय-घोषणा बदलि नहि सकैत छल।

दुर्योधनक पत्नी द्वारक कात बैसल छलीह। हुनकर गोदमे एकटा गोटेदार पटुका छल, जकर धागा किछु ठाम ढीला पड़ि गेल छल। ओ पटुकाकैँ तह करैत फेर खोलैत छलीह, मानू एक बेर ठीकसँ मोड़ि लेलीह तँ परसू धरि अटकल कोनो घरेलू काज पूरा भऽ जाएत। गान्धारी हुनकर उँगरीक कम्पन सुनि पूछलनि, “ई ककर अछि?” “ओकर,” स्त्री छोटे स्वरमे कहलीह। नाम उच्चारणक साहस नहि भेलनि। गान्धारी पटुकाक किनार छुबि कहलीह, “आजुक यात्रामे ई अपने लग राखू। कियो ई कहबाक अधिकार नहि रखैत अछि जे राजघरानाक शोकक वस्तु सभक प्रदर्शन हो।”

सञ्जय रथक लग ठाढ़ छलाह। ओ रातिक अन्तिम सूचना फेर सुनाबए चाहैत छला, मुदा पहिने गान्धारी कहलनि, “जतबा अपन आँखिसँ देखल अछि से कहू। जे सैनिक कहलनि से हुनकर बात कहि सुनाउ। अनुमानकैँ मृतकक नाम मत बनाउ।” सञ्जय अपन भाषा बदललनि। दुर्योधनक अन्तिम युद्ध, टूटल जाँघ आ युद्धस्थलक कातक निर्जनता ओ अलग-अलग बतौलनि। ओकर बाद रातिक शिविरपर आक्रमणक खबर छल। ओहि खबरक बीच धृष्टद्युम्न आ द्रौपदीक पुत्रसभक मृत्यु उपस्थित छल; मुदा घबरायल सन्देशवाहकक सभ शब्द प्रत्यक्षदर्शी नहि छल।

धृतराष्ट्रक हाथ रथक दंडपर कैपि रहल छल। ओ पुत्रसभक नाम क्रमसँ पुछैत छलाह। एक-दू नामक बाद रुकि जाइत छलाह, मानू अगिला नाम मुँहसँ निकलिते ओकर अन्तिम अस्तित्व समाप्त भऽ जाएत। गान्धारी हुनकर हाथ पकड़लनि। “हमरासँ एक-एक नामक उत्तर एखन नहि माँगू।” ओ कहलीह, “जकर मृत्यु जानैत छी, तकर शोक करब; जकर

बात अधूरी अछि, तकरा लेल पूरा पूछब।” धृतराष्ट्र किछु नहि बजलाह। राजाज्ञाक अभ्यास पाछाँ छूटल छल; एखन पिता अपन प्रश्नक उत्तर परोसल जाएबाक बात देखि रहल छला।

रथ नगरक बाहरी बाट पर बढ़ल। एक पसरल आँगनमे कुम्हारक चाक उलटल पड़ल छल; बगलमे अधबनल घड़ा सूखि रहल छल। युद्धक लेल माटिक पात्र बनौनिहार परिवारक स्त्री दरबज्जा दिस देखि रहल छलीह। रथक चक्रक आवाज पर ओ सिर उठौलीह, मुदा नमस्कार नहि कएलीह। गान्धारी पुछलनि, “ओ किएक चुप अछि?” सञ्जय कहला, “हुनकर पुत्र सैनिकसभक लेल पानि ढोअब गेल छल, लौटि नहि आएल।” गान्धारी रथ रोकबाक संकेत देलनि। स्त्रीक लग जा ओ अपन परिचय नहि सुनौलनि; मात्र पुछलनि, “ओकर नाम?” स्त्री नाम कहलीह, तखन एकटा दोसर बात — “ओ पहिने घड़ा बनबैत छल।”

गान्धारी ओहि स्त्रीक बातक उत्तरमे कोनो राजकीय आश्वासन नहि देलीह। “घरमे के छथि?” पूछलनि। “दू बच्चा, ओकर बाबू आ हम,” उत्तर आएल। घड़ा बेचबाक बजार बन्द छल, माटि आनयवला बैलगाड़ी युद्धमे लगि गेल छल। गान्धारी सञ्जयकेँ कहलनि जे राजगृहमे बचल अनाज आ तेलक वास्तविक सूची तैयार कराउ, जे परिवारसभ अपन जरूरत कहि सकथि; मुदा स्त्रीक नाम ओहि सूचीमे ओकर अनुमतिसेँ जाए। स्त्री पहिल बेर सिर उठौलीह। “नाम लिखि गेलासेँ बेटा नहि घुरत,” कहलीह। गान्धारी धीरे उत्तर देलनि, “नहि। मुदा ओकर काज सेहो लोप नहि हो।”

बाटक धूरमे गाड़ीक पहिया अटकैत छल। राजपरिवारक रथक पाछाँ घोड़ा मात्र नहि, घावपर कपड़ा बाँधने सैनिक, बिना रथक विधवा, आ जख्मीकेँ पानि देनिहार किशोर चलैत छला। एक युवकक हाथमे विजयक पताका छल। ओहि पताकाकेँ लहराएबाक आदेश देल गेल छल, पर हवा नहि उठल। गान्धारी ओकर चलबाक आवाज सुनि कहलनि, “एकरा समेटू।” युवक हिचकिचायल। “महारानी, ई पाण्डवसभक जयक चिह्न अछि।” “जयक बात सभा मे कहल जाए,” गान्धारी कहलीह, “एतय जकर घरक आगि बुझि गेल, ओकर माथपर पताका नहि डोलाउ।” युवक पताका मोड़ि लेलक, मुदा ओकर चेहरापर आश्चर्य छल।

पहिल शववाहक दल लौटैत देखल गेल। ओ सभ नामक छोट सूची लए चलैत छल, जकर अनेक अक्षर घाम-पानि सँ मेटायल छल। एक अधिकारी कहलक जे मृतकसभकेँ पक्षक नाम पर अलग करब सहज होएत—कौरव सैनिक इम्हर, पाण्डव सैनिक ओम्हर। गान्धारी पुछलनि, “जकर देहपर पक्षक चिह्न नहि बचल, ओकर?” अधिकारी उत्तर नहि देलक। “मायक आँखि पक्षक मोहर नहि पढ़ैत अछि,” ओ कहलीह। “पहिचानक जतन अलग कएल जाउ; अनिश्चितकेँ सुनिश्चित लिखब देहक दोसर अपमान अछि।” ओ अधिकारीकेँ आदेश नहि, अपन सामने लिखित सहमतिक एकटा प्रस्ताव देलनि, जाहिमे दूनू दलक परिवारक गवाही लेल जगह छल।

युद्धभूमि नजदीक अबैत धरतीक गन्ध बदलि गेल। घोड़ाक पसीना, भीजल चामर, धूर, रक्त आ जड़ायल अनाजक मिश्रित गन्ध हवामे छल। दूरसँ कौआ चिचियाइत छल। गान्धारी अपन पट्टीक भीतर किछु नहि देखैत छलीह, मुदा ओ बुझि सकैत छलीह जे लोकसभक चाल बदलि गेल अछि। सभ पाँतिमे पएर रखबाक पहिने धरती टोहैत छला। एक सेविका हुनका चेतौलीह जे अगिला ठाम गहिर खोंढ़ अछि। गान्धारी पुछलनि, “ई के खुनल?” सेविका कहलीह, “शिविरक जलनिकासी लेल रहल होएत।” “होएतकेँ तथ्य मत कहू,” गान्धारी उत्तर देलनि; पएर रोकि सुरक्षित किनारसँ आगाँ बढ़लीह।

दुःशला हुनकासँ आगाँ चलैत छलीह। ओ अपन पतिक मृत्यु पर पहिले सँ शोकमे छलीह; एखन भाइसभक देहक समाचार सुनि हुनकर चेहरा थाकल छल। गान्धारी एक बेर हुनका बाँह धए पूछलनि, “तोरा कतए जेबाक इच्छा अछि?” दुःशला कहलीह, “भाइ सभ लग जएबाक अछि, मुदा पहिने ओहि सैनिकक पत्नी लग जाए चाहैत छी जे हमर रथक घोड़ा जोड़ैत छल।” गान्धारी हुनकर चुनाव रोकलनि नहि। दुःशला दासीकेँ संग लऽ भीड़मे ससरि गेलीह। अपना शोकक बाट ओ स्वयं चुनैत छलीह; बहिनक दुख भाइसभक नाममे गुम नहि भेल।

धृतराष्ट्रकेँ पाण्डवसभक आगमनक खबर देल गेल। युधिष्ठिर नम्र स्वरमे प्रणाम कएलनि। हुनकर शरीर थाकल छल, मुदा साथ अएल एक जन विजयक औपचारिक शब्द कहए चाहलक। गान्धारी ओकरा रोकलनि। “तूँ जे कहबाक अछि, पहिने ई बताउ जे अहाँसभक सभ घायल सुरक्षित छथि?” युधिष्ठिर रुकलाह। ओ कहलनि जे अनेक घावक

उपचार चलि रहल अछि आ रातिक शिविर-हत्यामे स्त्रीसभक दुःख बढ़ि गेल अछि। गान्धारीक स्वरमे कठोरता आएल—“तखन ई समयमे ‘विजय’क पहिल शब्द के चुनलक? जीतल भूमि पर जे बच्चा अपन पिता खोजैत अछि, ओकरा ई शब्द कोन दुआर खोलैत अछि?”

युधिष्ठिरक उत्तर तुरन्त नहि आएल। ओ कहए चाहैत छलाह जे युद्ध टारबाक प्रयास भेल, अधिकार लेल लड़नाइ आवश्यक छल, अन्याय सहैत रहब सेहो दोष छल। गान्धारी हुनका बात पूरा करए देलनि। “हम सुनि रहल छी,” ओ कहलीह, “अहाँक दावाक अपन कारण अछि। मुदा कारणक भाषा जँ शोकमे आएल लोकक मुँह बन्द करय लगय, तखन राजा अपनहि कथा सँ अन्हार होइत अछि।” ओ युधिष्ठिरसँ माँगलनि जे सभ पक्षक घायल आ मृतक परिवार लेल अलग सुनवाई हो, आ जहाँ नाम अनिश्चित अछि ओतय सम्मानपूर्वक प्रतीक्षा कएल जाए।

भीम आगाँ अएलाह। हुनकर पएरक चाल गान्धारी पहचानैत छलीह—रक्तिम रणक मध्य सेहो ओहिमे भारी स्थिरता छल। गान्धारी कहलीह, “तौँ हमर पुत्रक जाँघ पर गदा चलौने छौँ।” भीमक उत्तरमे धूतक सभा आ द्रौपदीक अपमानक स्मृति छल। ओ कहला जे दुर्योधनक अन्याय आ युद्धक कपटविरोधी कठोरता हुनका ओहि क्षण धरि लऽ गेल। गान्धारी पुछलनि, “अपराधक उत्तर देबामे अपन नियम छोड़ब तखन जीतल धर्मक आकार की बचत?” भीम चुप भेला। ओहि मौनमे न क्षमा छल, न अपन कर्मक पूर्ण बचाव।

गान्धारी एखनो अपन पुत्रक सब अन्याय बिसरि नहि गेल छलीह। हुनका स्मरण छल जे धूतसभाक अपमानक बाद एतबा लोक मौन छल, तकर बीच राजगृहक स्त्रीसभकेँ रोकिबाक साहस कतेक कम छल। ओ भीमकेँ कहलीह, “हम दुर्योधनक माय छी। ओ अन्याय कएलक, तकर गवाहीक विरोध नहि करब। मुदा ओकर अन्यायसँ ओकर देहपर कएल गेल सभ प्रहार पवित्र नहि भऽ जाइत अछि।” ई वाक्य कहैत हुनकर साँस टुटल। कखनो अपन पुत्रक दोष स्वीकार करबाक भार, कखनो ओकरा गुमाय देबाक दुख—दुनू भार अलग नहि उठैत छल।

दुर्योधनक पत्नी सभसँ पाछाँ ठाढ़ छलीह। ओहि स्त्रीकेँ लोक राजपुत्रक विधवा कहि बजा रहल छल। गान्धारी पुछलनि, “अहाँक अपन नाम कोना लिखल जाए?” स्त्री एक

क्षणक लेल चौंकि गेलीह। ओ अपन नाम कहलीह, आ जोडि देलीह जे घरक छोट बच्चासभक भोजनक जिम्मा हुनका उठए पड़त। गान्धारी युधिष्ठिरसँ कहलनि, “ई घरक स्त्री अहाँक विजय-व्यवस्थाक दया नहि, अपन देय माँगतीह। ओकर कागद राजकीय हस्ताक्षरक प्रतीक्षामे किएक अटकल रहत?” युधिष्ठिर कहलनि जे भोजन आ आश्रयक नियमित प्रबन्ध तत्काल शुरू होएत; स्त्री स्वयं सहायता स्वीकार करबाक शर्त चुनलीह।

कुन्ती गान्धारी लग एलीह। हुनकर प्रणाममे उत्सवक प्रसन्नता नहि छल। गान्धारी हुनकर हात छुबि किछु काल चुप रहलीह। “तोहर पुत्र बचलाह,” ओ कहलीह, “मोर नहि।” कुन्ती उत्तर देलीह, “हमरो किछु एहन बात अछि जे ई वाक्यकेँ सोझ नहि रहए देत।” गान्धारी ओकर काँपल स्वर सुनलनि, मुदा ओहि क्षण प्रश्न नहि बढ़ौलनि। दुनू माता एकसमान कहानी नहि जीने छलीह। एकर शोकमे राज्यक भूमिका छल, दोसरक जीवनमे मौन रहस्यक भार; एहि दुनूकेँ एक संग मिलाय देब आसान रहितो सत्य नहि छल।

द्रौपदी आओर पाछाँसँ अएलीह। ओकर पाँज पुत्रक रात्रिक हत्या हुनकर चालमे उतरि गेल छल। कियो हुनका विजयिनी कहि संबोधित करबाक साहस नहि कएलक, मुदा युद्धक अन्तिम परिणामक भाषा ओहि शब्दकेँ हुनकापर राखि देने छल। गान्धारी सुनलनि जे ओ एक घायल सेवकक हालचाल पुछि रहलीह। “मोर बेटा सभ नहि बचल,” द्रौपदी धीरे कहलीह, “मुदा ओ सेवकक बेटी ककरा पुछत?” गान्धारी हुनका लग बैसबाक जगह बनबौलनि। दुनूक बीच सान्त्वनाक आसान वचन नहि छल, केवल एतबा मान्यता जे शोक दूनूक अछि आ ओकर कारण एक्के नहि।

ओतय एक वृद्ध स्त्री टुटल ढालक भीतर बान्हल पुड़किया खोजि रहल छलीह। ओकर पुत्र युद्धमे पाक-शाला सँ अन्न बाँटैत छल; ढाल ओकर नहि छल, मुदा ओकरा कहलगेले छल जे पुड़किया ओहि कात गिरल। सैनिकसभ ओकरा सभ हथियारसँ दूर रहबाक आदेश देलनि। द्रौपदी ओकर लग गेलीह, पूछलनि जे पोटीमे की छल। “नमक आ सत्तू,” वृद्धा कहलीह, “बच्चाक लेल बाँधने छल।” द्रौपदी पहरदारकेँ हमर नामपर नहि, स्वयं वृद्धाक उपस्थितिमे सुरक्षित खोज करबाक कहलीह। गान्धारी सुनि लेलनि जे विजयक बाहर जे जीवन अछि, तकर छोटे सामानो गवाही बनैत अछि।

सञ्जय गान्धारीकेँ मृतकसभक एक टुकड़ीक खबर देलनि। परिचित सेनानायकक नाम छल, मुदा दू परिचारकक नाम आधा लिखल छल। धृतराष्ट्र कहला जे पहिने पुत्रसभक अन्तिम क्रियाक निर्णय हो। गान्धारी हुनका अस्वीकार नहि कएलनि; केवल प्रश्न बढ़ौलनि—“राजकुमारक नाम पूरा लिखल अछि, पानि देनिहारक अधूरा। अन्तिम क्रियामे ओहि अधूरापनक अधिकार के राखल?” धृतराष्ट्र थाकल स्वरमे कहलनि, “हमरा समय दियौ।” गान्धारी हुनकर हात फेर पकड़लनि। “समय लगाउ,” ओ कहलीह, “मुदा पाछाँ रहल परिवारसभसँ पहिने बोलबाक अधिकार नहि छीनू।”

कृष्णक आगमनसँ पहिने मैदानमे एक छोट उद्वेग उठल। कियो हुनका विजयी पक्षक मार्गदर्शक कहलक; दोसर लोकनि हुनका युद्ध टारबाक आखिरी प्रयासक स्मृति सँ जोड़ैत छल। गान्धारी हुनकर चाल सुनि मुँह ओहि दिशा घुमौलनि। “तूँ राजसभामे गेल छलँ, सन्धिक बात कएने छलँ,” ओ कहलीह। कृष्ण स्वीकार कएलनि। “तखन ई विध्वंस टरल किएक नहि?” ओ पुछलनि। कृष्ण उत्तर देलनि जे अनेक लोक अपन-अपन चुनाव कएने छलाह आ सन्धिक बात अस्वीकार भेल छल। गान्धारीक स्वर तेज भेल—“जे किछु सम्भव नहि छल, से तौँ देखलह; मुदा जे किछु लोकक घमण्डसँ असम्भव बनाओल गेल, ओकर भार कतए जाएत?”

कृष्ण एहि प्रश्नकेँ केवल नियतिक नामपर टारलनि नहि। ओ राजसभाक असफल संवाद, द्यूतक अन्याय, युद्ध टारबाक प्रस्ताव आ अन्तिम रणक चुनावक स्मरण करौलनि। गान्धारी उत्तर देलीह, “ई सभ जानैत छी। मुदा जानकारीसँ मायक हाथक खालीपन नहि भरैत अछि। जँ नीति बुझनिहार लोक सभ परिणाम देखैत रहल, तखन जीतक समारोहमे तकर मौनक लेखा के रखत?” कृष्ण हुनका निहोरा नहि कएलनि जे ओ तुरन्त शान्त भऽ जाथि। ओहि दुःखक स्वीकृति शब्दसँ नहि, सुनबाक धैर्यसँ व्यक्त भेल।

गान्धारीक हृदयमे शापक कठोर भाषा उठल। हुनका अपन वंशक विनाशक दृश्य कल्पनामे नहि, देह धरि पहुँचल समाचारमे भेटि चुकल छल। ओ कृष्णकेँ भविष्यक क्षतिक भय सुनौलनि—जे बल आ आत्मविश्वाससँ अपना लोककेँ अजेय मानैत अछि, तकर भीतर सेहो विनाशक बीज रहि सकैत अछि। हुनकर शब्द शापक रूप लऽ उठल, आ ओहि क्षण उपस्थित लोकसभक श्वास रुकि गेल। कृष्ण तकर प्रतिवादमे विजयक तर्क

नहि देलनि। गान्धारी स्वयं अपन काँपैत हात जोड़लनि; शापक बादो सामने रहल घायलसभकेँ जल चाही, ई बात नहि बदलल।

सूर्य ऊपर चढ़ैत-चढ़ैत धूल अधिक चुभए लागल। सेविका गान्धारीकेँ एक ठाम बैसौलीह। कियो हुनका पट्टी खोलि मृतकक देह देखबाक विनती कएलक; कोनो तपस्वी दृष्टिक चमत्कारक बातो उठल। गान्धारी मना करैत कहलीह, “हम एखन जे जानैत छी, तकरा देखबाक दोसर उपाय चाही—लोकक अलग-अलग बात, पहिचान, आ बचल वस्तु। आँखि खोललासँ नैतिक निर्णय सहज नहि होइत।” ओ अपन उँगरीपर अटकल पट्टीक गाँठ फेर ठीक कएलनि। पट्टी हुनकर चुनाव छल; मुदा आन लोकक बयानक बदला ओ अपना निर्णयकेँ अन्तिम सत्य नहि मानैत छलीह।

एक नववधू हुनका लग आएल, माथक सिंदूर धूरसँ ढँकल छल। ओ कहलीह जे ओकर पति युद्धक अगिला दलमे गेल छल, शवक कोनो भरोसेमन्द समाचार नहि। एक सैनिक कहने छल जे ओ मुड़ गेल; दोसरक कहब छल जे बन्दी बनल होएत। नववधू ई दुविधा लऽ ककरा लग जाए? गान्धारी सञ्जयकेँ पुछलनि जे दूनू सूचनाक स्रोत के छल। पहिल सँ स्वयं देखल नहि छल; दोसरक बात अनुमान छल। गान्धारी नववधूकेँ कहलनि, “एखन तोहर पति अनिश्चित अछि। ककरो सुविधा लेल तोरा विधवा घोषित नहि कएल जाएत।” स्त्रीक आँखिमे पहिल बेर राहतक हलुक चमक आएल, मुदा भय रहले।

रथ लग सैनिकसभ पुनः विजयक घण्टा बजेबाक तैयारी करैत छल। अधिकारीक विचार छल जे जनता केँ अन्तिम युद्ध समाप्त भेल बुझाएब आवश्यक। गान्धारी कहलनि, “घण्टा बजाउ, जँ ओकर अर्थ हो युद्ध थमल। मुदा ओकर पहिल ध्वनि श्मशानक भीतर नहि, सभागृहमे उठाउ। ईहाँ जकरा नाम खोजबाक अछि, ओ आवाजमे अपन उत्तर नहि भेटत।” युधिष्ठिर दूतकेँ नव निर्देश देलनि—आज मृतक-सूचना आ सुरक्षित खोजक समय सार्वजनिक होए, उत्सवक तिथि नहि। ई आदेश छोट छल, मुदा ओहि दिनक सार्वजनिक भाषामे पहिल परिवर्तन भेल।

द्रौपदी गान्धारीकेँ पुछलीह जे ओ मृतकसभक परिवारक लेल राजगृहसँ कपड़ा पटेबाक सोचैत छथि की। गान्धारी कहलीह, “अहाँक संग साझा काज करब, मुदा कोन परिवार अपन रीति सँ की चाहैत अछि से ओकरा पुछि।” द्रौपदीक पाँच पुत्रक अन्तिम क्रियाक

तैयारी अलग छल, आ दुर्योधनक परिवारक रीति अलग; तकर भीतर ककरो निर्भर बनाय देबाक इच्छा नहि छल। दुनू स्त्री मृतकक संख्या पर नहि, बचल लोकक श्रमपर बातचीत करए लगलीह—जल आननिहार, लकड़ी चिननिहार, बच्चाक देखभाल करनिहार, आ जे आगिक लग बेहोश भऽ सकैत अछि ओकरा सम्भारनिहार।

दुःशला अपन पहिलुक यात्रासँ घुरलीह। ओ घोड़ा जोड़ेबाक ओहि सैनिकक पत्नीकेँ भेटने छलीह; स्त्री चाहैत छलीह जे पति लगल ऋणक बही राजकीय मददक नामपर नहि मिटाओल जाए, कारण तखन ओकर वास्तविक मजदूरी सेहो अदृश्य भऽ जाएत। दुःशला कहलीह, “हम ओकर बात सुनि आयल छी। ओकरा भीख नहि चाही, जे कमौलक तकर हिसाब चाही।” गान्धारी हुनकर माथ छुबि कहलीह, “तौँ ओकर मुँहसँ सुनलह, से महत्वपूर्ण अछि।” एखन दुःशला अपन पतिक मृत्यु पर रोएबाक अधिकारो नहि छोड़ने छलीह; दोसरक हक लेल चलबाक ताकत ओहि शोकक विरुद्ध नहि छल।

एक सैनिक झुड़ाएल धातुक कड़ा लए अएल। ओकर विश्वास छल जे ई दुर्योधनक छल। धृतराष्ट्र तुरन्त ओहि वस्तुकेँ पुत्रक अन्तिम चिन्ह मानए चाहलनि। गान्धारी धातुक गोलाइ आ खरोंच उँगरीसँ टोहलनि। “हमरा ओकर भार चिन्हाइत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहिमे नाम नहि लिखल। पहिचान करबाक आन चिन्ह मिलल अछि?” सैनिक कहलक जे नहि। गान्धारी कड़ाकेँ सम्मानसँ अलग राखबाक कहलनि। ई छोट रोक धृतराष्ट्रकेँ दुख देलक, मुदा थोड़े काल बाद ओ स्वयं कहलनि, “सही बात। हम चाहब जे ई ओकर हो; चाहनाइ आ जाननाइ एक नहि।”

सञ्जय मृतकसभक जानकारीक लेल दू अलग पँक्ति बनौलनि—एक पँक्तिमे प्रत्यक्ष चिन्ह आ परिवारक पहिचान, दोसरमे सुनेल समाचार, अपूर्ण परिचय आ खोजक जरूरत। गान्धारी ओहि पन्नाक शब्द सुनलीह। “हमर पुत्रक नाम सभ ओहि पन्नामे अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जे नाम नहि मिलल ओकरा ‘अन्य’ कहि टारू नहि।” सञ्जय पुछलनि, “तखन की लिखी?” गान्धारी उत्तर देलनि, “जतेक जानैत छी ततेक; बाँकी लेल प्रश्न छोड़ू।” एहि छोट अभिलेखक उपयोग मात्र राजपरिवारक शोक नहि, खोजैत परिवारसभक अगिला यात्रा बनत।

अपराहक हवा थमलाक बाद गान्धारी फेर दुर्योधनक पत्नी लग बैसलीह। स्त्री पटुकाकँ एखनहुँ गोदमे धए छलीह। ओ पुछलीह, “हमरा ओकर दोष सभ सुनब जरूरी अछि की? लोक हमरासँ अपेक्षा करैत अछि जे हम सार्वजनिक रूपेँ तय करी—ओ नीक छल की खराब।” गान्धारी कहलीह, “तोर स्मृतिमे ओकर हँसी, घरक पानि, बच्चाक ज्वरमे जागल राति सभ अछि। न्यायमे ओकर कएल अपराधक लेखा चाही। दुनू लेखा अलग रहि सकैत अछि।” स्त्री बहुत देर बाद कहलनि, “तखन हम आज ओकर विरुद्ध वा पक्षमे भाषण नहि देब। बस ओकर नाम अपने स्वरमे लेब।”

युधिष्ठिर फेर गान्धारी लग अएलाह। ओ मृतकक परिवारसभ लेल अस्थायी अन्न-आश्रय, शेष चिकित्सकीय सहायता आ व्यक्तिगत पहिचानक व्यवस्था शुरू करबाक बात बतौलनि। गान्धारी पूछलनि जे रसोइक अनाज कोन कोठारसँ आएत आ ओकर रखरखाव के करत। युधिष्ठिर एक सेवकक नाम कहलनि। गान्धारी कहलनि, “ओकर पाछाँ जे स्त्री चूल्हि जरौतीह, तिनकर श्रम सेहो गनू।” ओहि समयमे राज्यक नीति कागदसँ आगाँ चूल्हि धरि पहुँचल कि नहि, ई प्रश्न हुनका अधिक आवश्यक लागल। युधिष्ठिर फेर नब सूची लिखए देलनि।

धृतराष्ट्र सन्ध्याक पहिने एक बेर कहलनि जे सभ राजपुत्रक अन्तिम क्रिया एके ठाम भव्य रूपेँ हो। गान्धारी हुनका प्रस्तावक दुख बुझलीह। “जतेक लोक अपन रीति संग संग चाहैत अछि, ततेक जुटथि,” ओ कहलीह, “मुदा हम पराजित पुत्रक माय भेलहुँ तइले सभ परिवारक विधान तय नहि करब।” धृतराष्ट्र हँ कहला। ओहि निर्णयसँ राजपरिवारक विशेषाधिकार पूरा समाप्त नहि भेल, मुदा एक ठाम दवाब रुकल। युद्धभूमिक बीच बनल छोट निवासमे सभ परिवारकँ अपन बात कहबाक पालि देल गेल।

गान्धारीक कंठमे शोक फेर उमड़ल। ओ पुत्रसभक बाल्यकालक स्मृति सुनए लगलीह—एहि हाथमे पहिल बेर टुटल खिलौना रखनिहार बच्चा, भोजनमे नमक बेसी भेलापर रुठि जाएवला, आ एक दिन युद्ध-विद्याक अभ्याससँ थाकि माय लग सुति जाएवला। ओ बुझैत छलीह जे शिशुक स्मृति परिपक्व पुरुषक अपराधकँ नहि मेटैत अछि। मुदा एहन स्मृतिक निषेध करबाक अधिकार विजयी पक्षकँ सेहो नहि अछि। ओ अपन एहि स्मृतिमे

पति आ पुत्रक दोषक वार्ता सँ लुकल नहि, केवल ओहिक संग जीवनक आन रंगो राखि देलनि।

कृष्ण विदा होबासँ पहिने गान्धारी लग ठमकलाह। गान्धारी ओहिसँ क्षमाक आग्रह नहि कएलनि आ स्वयं क्षमा देनेक घोषणा सेहो नहि। “ई प्रश्न याद राखब,” ओ कहलीह, “जखन कोनो सभा जीतक आखिरी गाथा लिखत, तखन सभसँ पाछाँ बैसल माय आ सेविका ककरा पुछल जाएत?” कृष्ण उत्तरमे कहलनि जे कथा पूरा करबाक लेल ओहि आवाजक स्थान आवश्यक अछि। गान्धारी सुनलीह; भविष्यक वचनक सत्यता एखन हुनका जाँचबाक साधन नहि छल। ओ केवल एतबा कहलनि, “शब्द लिखबासँ पहिने लोककेँ सुनबाक समय दियौ।”

सन्ध्याक लाली मैदानपर पड़बाक पहिने गान्धारी अपन सेविकाकेँ कहलनि जे पटुकाक किनारमे टुटल दू सीवन फेर सिअय। सेविका सुईमे धागा पिरोबैत पूछलीह, “आइ एतबा देखल-सुनलाक बाद महारानी घर घुरतीह?” गान्धारी उत्तर देलनि, “घर घुरब। मुदा पहिने ओहि स्त्री लग चलब जकर पुत्र घड़ा बनबैत छल। ओकर बच्चासभक भोजनक खबर लेब।” रथक दिशा बदलल। दूर युद्धभूमिमे अन्तिम अग्निक तैयारी चलैत छल; राजपथपर विजयक पताका एखन तह कएल रखल छल। गान्धारीक प्रश्नक उत्तर समाप्त नहि भेल, मुदा ओहि प्रश्नक कारण ओहि दिन कम-सँ-कम एकटा घोषणा रुकल आ किछु लोकक नाम पूछल गेल।

अध्याय १२४ • मन्दोदरीक भीतर

लङ्काक राजगृहक भीतर, पाछाँक अन्नकोठरीमे राखल काँसक मापक पात्र आइ फेर उलटि पड़ल छल। ओकर मुँहपर पुरनका चिरा छल, जकरा मन्दोदरी कतेको दिन पहिने अँगुरीसँ टोहने छलीह। एकाएक धक्का लागलासँ पात्र नहि खसल छल; अन्न बाँटएवाली वृद्धा अपन काँपैत हाथसँ ओकरा धरबाक प्रयास कएने छलीह आ खाली हाथ रहि गेल छलीह। राजगृहक बाहरी पट्टीपर काल्हि रातिसँ अग्नि आ धुआँ उठैत छल। भीतर ओहि छोट धातुक आवाजपर मन्दोदरी ठमकि गेलीह। ओ पात्र उठौलीह, चिरामे अटकल दू दाना निकालि वृद्धाक हथेलीपर राखलीह। वृद्धा कहलीह, “महारानी, आब ई पात्र बदलि देबाक चाही।” मन्दोदरी उत्तर नहि देलीह। एखन राजगृहमे कोन वस्तु ककरा बदलबाक अधिकार अछि, ईहो निश्चय नहि छल।

बाहरसँ आएल दूत अपन माथक पट्टी खोलि रहल छल। ओ रावणक मृत्यु समाचार आनने छल, मुदा युद्धभूमिपर देह देखबाक गवाही ओकर अपन नहि छल। ओ एक सैनिकक मुँहसँ सुनने छल, सैनिक घायल सेनापतिक सँ। मन्दोदरी ओकर वाक्य पूरा सुनलीह। ओ दूतकेँ दोष नहि देलीह जे समाचार देरीसँ आनलक। केवल पुछलनि, “जे देखल अछि से कियो आबि सकत?” दूत कहलक जे विभीषणक संग किछु सैनिक मृत राजाक देहक समीप उपस्थित छथि, आ अन्तिम संस्कारक विषयमे विचार चलि रहल अछि। समाचारक भारीपन हुनका एतेक घेरि लेलक जे किछु समय ओ दीवाल पकड़ि ठाढ़ रहलीह। दूत बाहर जेबाक लेल उठल तँ ओ कहलीह, “पानि पीबि जाउ। अहाँक माथक पट्टी सेहो भीजल अछि।”

सामनेक छोट आँगनमे एक बालक राजपरिवारक चिह्नवला पताका समेटि रहल छल। पताका ढहा पड़ल बाँसक टुप्पीमे फँसल छल। दू पहरेंदार ओकरा कहैत छल जे ई कपड़ा सुरक्षित कक्षमे रखल जाउ, कारण विजयी सेना एकरा देखिकऽ क्रुद्ध भऽ सकैत अछि। बालक कहलक, “हमर माय कहने छलीह जे ई कपड़ाक टुकड़ा सँ ओ रातिमे तकिया भरतीह।” एक पहरेंदार हँसए चाहलक, मुदा स्वर बाहर नहि अएल। मन्दोदरी बालककेँ अपन लग बजौलीह। ओ पहिने पुछलनि जे माय कतए छथि। ओ कहलक, “खोजि रहल

छी।” पताका तखन राजक प्रतीक रहबासँ अधिक एक बालकक हाथमे अटकल कपड़ा बनि गेल छल। मन्दोदरी कपड़ा ओहि ठाम राखबाक कहलनि जतए ओकर माय अबितहि देखथि।

अन्तःपुरक वृद्धा, जे युद्धक दिनसभमे अन्नक सूची रखैत छलीह, मन्दोदरीकेँ भीतर लऽ जेबाक निहोरा कएलनि। “अहाँ भोजन नहि कएने छी।” मन्दोदरी पुछलनि जे रसोइमे एखन कतेक जन काज करैत छथि। वृद्धा तीन नाम गनौलीह; दू पहरेदारनीक समाचार नहि, आ एक युवती राति भरि घायल भाइ लग छलीह। “तँ ओ अनुपस्थित लिखल जाएत?” मन्दोदरी पुछलनि। वृद्धा घबराइत कहलीह, “हम तँ राजभोजनक व्यवस्था देखैत छी।” मन्दोदरी पुरान बही मँगौलीह। जइ पन्नामे राजपरिवारक थालक मात्रा पूर्वहि निर्धारित छल, ओहिमे लाल रेखा खिंचि कऽ लिखबौलनि जे आजुक बाँटमे पहिने उपस्थित श्रमिक आ घायल घरसभक गिनती हो। “कोठरीक अन्न केओ अकेले नहि लऽ जाए,” ओ जोड़लनि, “आ जकर परिवारक समाचार नहि, ओकर थारी शून्य नहि मानू।”

राजगृहक भीतरी गलियारामे दू स्त्री दबा स्वरमे बात करैत छलीह। एक रावणक मृत्युक समाचार सुनि काज छोड़बाक सोचैत छलीह; दोसरकेँ डर छल जे नव शासक पुरनका घरक सभ सेविकाकेँ अपराधी मानि निकालि देत। मन्दोदरी हुनकासभक बात सुनिकऽ भीतर पहुँचल छलीह, तँ ओ दुनूकेँ पुनः प्रश्न करबाक लेल नहियो बजौलीह। ओ दरबज्जापर बैसलीह, ताकि हुनका देखलासँ लोक दूर भागय नहि। पहिल स्त्री स्वयं अएलीह। “हम राजगृहक चाभी राखैत रही। की हमरा हाथमे छल से अहाँ जनैत छी?” मन्दोदरी कहलीह, “अहाँ जे कोठरी खोललहुँ, तकर हिसाब अहाँ कहि सकैत छी; जे निर्णय राजसभामे भेल, ओकर दोष हम अहाँपर नहि राखब।”

ओहि स्त्रीक नाम मालिनी छल। ओ रावणक निजी कक्षमे कखनहुँ नहि गेल छलीह, मुदा कक्षक बाहर पानि भरबाक जिम्मेदारी ओकर छल। ओ कहलीह जे रणक अन्तिम दिनमे किछु पात्र राजगृहसँ हटाओल गेल, जकरा शस्त्रागारक सामान कहल गेल छल। “हम बस पानि लऽ गेल रही। हम बाँचल छी, बाकी हमर साथी नहियो भेटल।” मन्दोदरी ओकर पूरा कथन सुनलीह। “अहाँ चाहैत छी तँ खोजमे अहाँक नामक उपयोग हो; नहि चाहैत छी तँ पहिने हम बिना नामक सूचना देब,” ओ कहलीह। मालिनी किछु काल

सोचलीह। “नाम लिखू,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा ओहि पात्रसभमे की छल, हम देखल नहि।” मन्दोदरी ई सीमा ठीक ओहिना दर्ज करौलीह।

बाहरक बरामदामे त्रिजटा पहुँचलीह। हुनकर वस्त्रपर राख लगल छल; ओ अशोकवाटिका दिससँ आएल छलीह। मन्दोदरी तुरन्त सीताक समाचार पुछलनि। त्रिजटा कहलीह जे हुनकर सुरक्षा सम्बन्धी समाचार उपलब्ध अछि, मुदा विजयी पक्षक दूतसभक आगमन आ अगिला निर्णयक पूरा क्रम ओ स्वयं नहि देखलनि। “ओ अपन बाटपर की चाहैत छथि?” मन्दोदरी पुछलनि। त्रिजटा किछु देर सोचलीह। “ओ कहने छलीह—हमरा सम्बन्धमे कहल जेबाक हर बात हमरा सुनबाक अवसर भेटय। दोसरक इच्छासँ हम एतय आयल रही; आब दोसरक उत्सवमे फेर हमरा वस्तु जकाँ नहि राखल जाए।” मन्दोदरीक मुखपर एक पुरान वार्ताक वेदना झलकल। ओ रावणसँ सीताकेँ घुराएबाक आग्रह कएने छलीह; आग्रह असफल रहल छल।

मन्दोदरी त्रिजटाक सामने पहिल बेर ई बात कहलीह जे ओ राजसभामे एक दिन उपस्थित भऽ सकैत छलीह, मुदा तखन भीतरक दुआरपरसँ घुरि गेल छलीह। रावणक क्रोध आ सभा-पुरुषसभक उपहासक डर हुनका रोकने छल। “हम ओकरा अकेले कहलहुँ जे सीताकेँ घुराउ,” ओ कहलीह, “मुदा जे लोक हमर बात सुनि सकैत छल, तकरा सम्मुख हम चुप रहलहुँ।” त्रिजटा हुनकर चुप्पीकेँ दोषमुक्त नहि कएलनि। ओ केवल पुछलनि, “जँ अहाँ ओ दिन जाइतहुँ तँ निर्णय बदलितै?” मन्दोदरी कहलीह, “नहि जनैत छी। मुदा नहि जानबासँ हमर मौनक इतिहास नहि मेटाइत अछि।” एकर बाद किछु देर दुनू चुप बैसल रहलीह।

अन्तःपुरक एक युवती, जकर पति रथ बनबैत छल, भीजल बस्त्रामे अएलीह। ओ रावणक अन्तिम देह देखबाक लेल बाहरी चौकी धरि गेल छलीह, मुदा पहरदार ओकरा राजपरिवारक पुरुषसभक बाट कहि रोकि देलक। “मोर पतिक देह अलग जगह अछि। ओकरा तकबाक अनुमति ककरा दियौ?” ओ पुछलीह। मन्दोदरी बुझलीह जे अन्तिम दर्शनक बाटपर सेहो पदक पहरा लगि गेल अछि। ओ कहलनि, “हम अहाँक पतिक पहचान नहि करि सकैत छी। मुदा जँ हमर नामसँ दुआर खुलैत अछि तँ अहाँक नाम ओतय

पहिने कहब।” युवती पुछलीह, “अहाँ स्वयं रावण लग जाएब?” मन्दोदरी बहुत धीरे हँ कहलीह।

राजगृहसँ बाहर निकलबाक तैयारीमे एक सेविका मन्दोदरीक माथपर भारी मुकुटक पट्टी धराबए लागलीह। मन्दोदरी ओकर हाथ रोकलीह। “एखन एकर आवश्यकता नहि,” कहलीह। सेविका पुछलीह जे ओ कोन वस्त्र पहिरतीह। मन्दोदरी काठक सन्दूकसँ हलुक किनारवाली साड़ी साड़ी निकाललीह। ई वस्त्र हुनका विवाहक पहिल दिनक नहि छल; ओ एक साधारण दिनमे धान सुकबैत पहिरने छलीह। ओहिमे कोनो राजचिह्न नहि छल। किनारक एक छोट फाट ओ स्वयं सिअने छलीह। सेविका सिलाइ देखिकऽ पुछलीह, “ई पुरान नहि भऽ गेल?” मन्दोदरी कहलीह, “हँ, मुदा ई हमर देहकें जानैत अछि।”

राजगृहक फाटक खोलितहि आगिक गन्ध तेज लागल। जाहि बाटे पहिने राजरथ निकलैत छल, ओतय छहरदेवारीक दू पत्थर धसि गेल छल। पहरदार कहलक जे रथ घुमाउ बाटसँ जाएत। मन्दोदरी पैदल चलबाक निर्णय कएलनि, मुदा तुरन्त मालिनीक विचार आयल—घायल लोकसभक बीच राजपरिवारक स्त्रीक अचानक उपस्थिति भीड़ बढ़ा सकैत अछि। ओ दू सेविका आ एक अनुभवी मार्गदर्शक संग लेलनि, बाँकी पहरदारकें घिरल बाटमे लोकक सुरक्षित आवागमन देखबाक आदेश नहि, अनुरोध कएलनि। मार्गदर्शक पहिले जे दुआर खोलल जायत तकर स्थिरता परखलक। टूटल पत्थरक कात एक बिल्ली डरि कऽ निकलल, आ लोकसभकें दू डेग पाछाँ हटए पड़ल।

बाजारक पहिल मोड़पर तेल बेचएवाली एक वृद्धा अपन तराजू बचाबए लगल छलीह। दोकानक आधा छाजन जड़ि गेल छल। ओ मन्दोदरीकें देखितहि नमन नहि कएलनि। कहलीह, “राजगृहक बड़का लोक सभ घुरि आएलाह?” मन्दोदरी कहलीह, “बहुत लोक नहि घुरलाह।” वृद्धा पुछलीह जे ओकर दू पुत्रक समाचार अछि की नहि। न नाम राजदूतक सूचीमे छल, न घायल-दलमे। “हम ओकरा सभकें सेनामे पठौने नहि रही,” वृद्धा कहलीह, “मुदा नगरक आदेश कहलक जे सब पुरुष तैयार रहथि।” मन्दोदरी किछु उत्तर नहि बना सकलीह। ओ दूतसँ कहबौलनि जे वृद्धाक दू नाम अलग खोज-सूचीमे जुड़य, मुदा खोजक परिणामक वचन नहि देलीह।

किछु दूरपर एक युवा सैनिकक देह चादरसँ ढँकल छल। ओकर दहिना हाथपर लाल धागा छल, जकरा देखिकऽ तीन स्त्री अलग-अलग चिन्हबाक प्रयत्न करैत छलीह। एकक भाई, दोसरक पति, तेसरक पुत्र ओहि रंगक धागा बान्हैत छल। मन्दोदरी अपन संगक पहरेदारकेँ कहलनि जे ककरो तुरन्त हटाबू नहि। पहरेदार डरैत कहलक जे देह खराब होएत, सूर्य चढ़ि रहल अछि। “सम्मानक आवश्यकता समयपर अछि,” ओ कहलीह, “तैं पहिचानक सटीक प्रयास जल्दी हो। मुदा लाल धागाकेँ अकेले नाम मत बनाउ।” एक स्त्री नहिं, चुपचाप घुटना टेकने रहलि; ओ अपन पुत्रक कानक पाछुक पुरान घाव देखबाक आग्रह कएलीह। वैद्यक सहायकाकेँ बजाओल गेल।

ओहि दृश्यसँ मन्दोदरीक मनमे मेघनादक बाल्यकालक एकटा दिन लौटि आएल। बालक रणक अभ्यास नहि, एकटा लकड़ीक छोट नाव लऽ वर्षाक पानीमे दौड़ैत छल। नाव उलटि गेलापर ओ स्वयं अपन गलतीसँ बेसी नहरक धाराकेँ दोष देबए चाहने छल। मन्दोदरी ओकरा छोट हथेलीमे नाव घुरा कऽ कहलनि जे नावक तली भीजल किएक अछि, देखू। मेघनाद हँसने छल, फेर नावक चिरा अपन नखसँ टोहने छल। एखन ओ बेटा नहि छल। मन्दोदरीकेँ ओकर युद्ध-पराक्रमक घोषणा सुनाओल गेल छल, मुदा ओहि घोषणासँ बालकक हँसीक ई छोट ध्वनि फेर घर नहि अएत।

ओ सहसा रुकि गेलीह। सङ्गी सेविका पुछलीह जे चलब बन्द करब की। मन्दोदरी कहलीह, “एतहि किछु काल।” हुनकर आँखिसँ पानि झरए लगल। एक पहरेदार अपना आँचरक किनारमे आँखि पोछि रहल छल; ओकर छोट भाई युद्धमे गेल छल। मन्दोदरी अपन शोक रोकबाक प्रयास नहि कएलनि। पहरेदार नमन करबए बढ़ल तँ ओ हाथसँ रोकलीह। “एखन हम अहाँकेँ शान्त नहि करा सकब,” ओ कहलीह। पहरेदार कहलनि, “हमर भाई काल्हि धरि आओत कहल गेल छल।” ओहि वाक्यक बाद दुनू स्त्री आ एक जवान पुरुष अपना-अपना अनुपस्थित प्रियजनक संग अलग-अलग ठाढ़ रहलाह।

रणभूमि लग एक पहरेदार विभीषणक नाम सुनि द्वार खोलबाक आदेशक प्रतीक्षामे छल। विभीषण स्वयं आगाँ अएलाह। हुनकर चेहरापर विजयक उल्लास नहि छल। ओ मन्दोदरीकेँ निहुरि प्रणाम कएलनि। मन्दोदरी हुनका देखैत पहिल वाक्य नहि कहि सकलीह। अन्ततः पुछलनि, “रावणक देह सुरक्षित अछि?” विभीषण कहला जे देह

पहचानल गेल अछि आ नियमानुसार अन्तिम क्रियाक व्यवस्था करब आवश्यक अछि। मन्दोदरी पुछलनि जे कियो स्त्री, जकर पतिक देह अनिश्चित अछि, ओकरा भीतर आबए देबाक उपाय अछि की। विभीषण उत्तर देलनि जे सुरक्षा कारणसँ सबकेँ एके बेर नहि, मुदा परिचित परिवारसभक अलग अवसर देल जा सकैत अछि। मन्दोदरी कहलनि, “एहि व्यवस्थामे राजघर पहिल किएक?”

विभीषण क्षणभरि मौन रहला। “राजदेहक पहिचान पहिने निश्चित भेल,” ओ कहला, “तँ ओकर व्यवस्था शुरू भेल।” मन्दोदरी ई उत्तरक एक हिस्सा मानलीह। फेर कहलीह, “जकर नाम कियो नहि जनैत, ओकरा समयक पाछाँ राखि देल जाएत तँ ओ फेर अदृश्य भऽ जाएत।” विभीषण अपन संगक एक वृद्ध अधिकारीकेँ आदेश देलनि जे अज्ञात सैनिक, परिचारक आ नगर-रक्षकसभक परिवारक पहचान लेल अलग स्थान खुलया। अधिकारीक माथपर चिंता छल—लोक कम, दिन छोट, वैद्य थाकल। मन्दोदरी पुछलनि जे भीतरक राजगृहसँ विश्राम पाओल परिचारिकासभकेँ हुनकर सहमति आ विश्रामक समय सहित पठेबाक सम्भावना अछि की। कार्यक भार बाँटबाक पहिल बात तखन व्यावहारिक भेल।

रावणक देह एक विशाल शैय्यापर राखल छल। युद्धक प्रहारसभ देहपर स्पष्ट छल; जे चेहरा कभी सभामे बिना प्रतिवादक आदेश सुनबैत छल, ओ एखन शान्त छल। मन्दोदरी ओकरा लग झुकलीह। थकानसँ हुनकर घुटना काँपल, मुदा ओ सहारा स्वीकार कएलनि। ओ रावणक एक हाथक उँगरी पहचानलीह—ओही उँगरी जे बचपनमे पुत्रक लिखल पहिल अक्षर देखिकऽ हँसने छल, आ राजसभामे सीताक विषयपर हुनकर प्रश्न सुनि कठोर भऽ गेल छल। देहक निकटता ई दूनू स्मृति एके बेर उठा देलक। मन्दोदरी ओकर कपाल छुबि कहलनि, “अहाँ हमर बात सुनलहुँ छल, मुदा बदललहुँ नहि।” मृत देह उत्तर नहि देलक।

एक मन्त्री कहलक जे महारानी राजा लेल विजयी वीरक उपयुक्त शोकगाथा सुनावथि; लङ्काक लोकक मनोबल लेल ई आवश्यक अछि। मन्दोदरी मंत्रीक स्वर पहचानलीह—ओ सभामे कतेको बेर रावणक कथनक बाद सहमतिक ध्वनि उठौने छल। “अहाँ हमरा पाठ लिखि देब?” ओ पुछलीह। मन्त्री सकुचा गेल। “प्रशंसा लिखल जा सकैत अछि,” ओ

कहलक। मन्दोदरी उत्तर देलीह, “ओ अपन सामर्थ्य, अध्ययन आ साहससँ अनेकक जीवन प्रभावित कएलनि। ओकरा मेटब नहि। मुदा सीताकेँ बिनु इच्छाक रखबाक निर्णय सेहो हुनकर छल। जे स्त्री अपन पतिक त्रुटि कहि नहि सकय, ओकर शोककेँ सेहो कियो दोसर लिखि रहल अछि।”

मन्त्री कहलक जे मृत्युशैय्यापर कठोर आरोप उचित नहि। मन्दोदरी तुरन्त प्रतिवाद नहि कएलनि। ओ किछु समय रावणक बगलमे बैसलीह। फेर कहलीह, “हम आरोपक सभा एतय नहि खोलि रहल छी। मुदा ओकर मृत्युक बहाने जे निर्णय लइकाकेँ एतय अनलक, ओकरा मेटब सेहो अनुचित।” विभीषण सुनि रहल छलाह। ओहिमे हुनकर निज निर्णयक बोझ छल—भाइक विरोध कऽ शरण लेनाइ, अपन नगरक सामनासँ बाहर होएब, फेर युद्धक बाद अपन घर आबि ठाढ़ होएब। मन्दोदरी हुनकासँ कहलीह, “अहाँ सही कहने रही, तँ अहाँक सभ काज निर्दोष नहि भऽ जाइत। लोक अहाँसँ सेहो प्रश्न करत।” विभीषण हँ कहलनि।

राजदेहक निकट एक वृद्ध परिचारिका आँचरमे छोट बटुआ धए बैसल छलीह। मन्दोदरी हुनका चिन्हलीह—ओ रावणक बाल्यकालक स्मृति कहएवाली स्त्री छलीह, जे अनेक बरखसँ परिधानक देखभाल करैत छलीह। वृद्धा बटुआ खोललीह तँ भीतर सूखल फूलक डाँठ छल। “ई कखनोक एक यज्ञक पाछाँ बचल,” ओ कहलीह, “महाराज राखबाक कहलनि।” मन्दोदरी बूझलीह जे एक वस्तुक कहानी आ दोसर वस्तुक कीमत अलग अछि। ओ वृद्धाकेँ वस्तु अपने राखबाक कहलीह। “जँ अहाँ चाहैत छी तँ अन्तिम क्रियामे दी,” ओ कहलीह, “मुदा अहाँक अपन स्मृतिपर राजक अधिकार नहि।” वृद्धाक हाथ बटुआक मुँहपर ठहरि गेल।

रावणक अन्तिम क्रियाक तैयारीमे लकड़ी, घृत आ जलक आवश्यकता गनल जा रहल छल। एक सेवक कहलक जे राजकीय चिताक लेल उत्तम काठ जुटाबए बाजारक बचल भण्डार खाली करब पड़त। मन्दोदरी रोकलीह। “बाजारक लोक अपन घरक छत फेर बनाओत, घायलकेँ ओढ़न देत; सभ काठ एतय किएक?” पुरोहित कहला जे संस्कारक मर्यादा कम नहि होएबाक चाही। विभीषण सुझौलनि जे आवश्यक सामग्री सीमित राखि अन्य मृतकसभ लेल उपलब्धता देखल जाए। मन्दोदरी अपना माथपर लिखल महारानीक

कर्तव्य आ नगरक जड़ायल घरसभक बीच निर्णय कएलनि—रावणक देहक सम्मान कएल जाए, मुदा नगरक आखिरी काठ राजवंशक अग्निमे नहि जरय।

बाहर ओहि रथकारक पत्नी प्रतीक्षा करैत छलीह। पहरदार खबर देलक जे हुनकर पतिक नाम घायल-सूचीमे नहि, मृतक-सूचीमे सेहो निश्चित नहि। स्त्री रुदन करबाक बदला आगाँ बढ़ि कहलनि, “हमर घरक देबालक पाछाँ ओकर आधा बनल रथ अछि। ओकर हाथक चिन्ह सँ ओहि रथक लकड़ी हम चिन्हब। मुदा हम ओकर देह बिनु देखल कैसे मानू?” मन्दोदरी कहलीह जे मृतकक जाँच अपन समय लेत, मुदा नाम धरि खोज जारी रहत। स्त्री पुछलीह जे ताहि धरि घरपर देय अन्न के देत। विभीषण पहरदारकेँ कहला जे गायब व्यक्ति परिवारक राशन मृत्यु-पुष्टिक प्रतीक्षामे नहि रोकल जाए। पहरदार लिखल चिन्ह लऽ गेल।

समयक अन्तिम पहरमे त्रिजटा फेर उपस्थित भेलीह। ओ सीताक विषयमे किछु नया लोकक गप सुनने छलीह—केओ कहैत छल जे हुनका नगरक बाहर ले जाएल जाएत, केओ कहैत छल जे विजयी पक्ष हुनकर दर्शन करबए चाहत। त्रिजटा कहलीह, “ई सब बात हमरा सुनए भेटल; हम कोनो एक व्यवस्था देखल नहि।” मन्दोदरीक मन भेल जे सीतासँ भेटि क्षमा माँगी, मुदा ओ अपन इच्छाकेँ सीताक दिनक मध्य अचानक रखबाक अधिकार नहि मानलीह। “जँ हुनका भेटबाक अवकाश आ इच्छा हो,” ओ कहलीह, “हम कहब जे हम विरोध कएने रही, मुदा हुनका मुक्त नहि करा सकलहुँ। ई बात हमरा कहबाक अछि; ओकरा सुनबाक बन्धन हुनकापर नहि।”

एक कन्या तखने रावणक देह देखबए आयल; ओ राजपरिवारक बच्ची नहि, भोजन पकबैत स्त्रीक बेटी छलीह। ओकर मायक मृत्यु युद्धमे नहि, किछु दिन पहिने बीमारीसँ भेल छल। कन्या कहलीह जे ओ राजगृहमे पाथरक कोठामे माय द्वारा राखल चिमटा लेबाक अनुमति चाहैत अछि। पहरदार कहलक, “अखन?” मन्दोदरी पुछलीह जे कोठरी सुरक्षित अछि की। उत्तर भेटल—भीतर धुआँ कम अछि, मुदा छतक एक कोना ढील। ओ बच्चीकेँ भीतर पठौलनि नहि। सामान चिन्हबाक लेल सुरक्षित समयमे अनुभवी जनकेँ भेजबाक व्यवस्था कएलनि। बच्चीकेँ तुरन्त चिमटा नहि भेटल, मुदा हुनकर चीज राजकोषक माल बनि गेल एहन घोषणा सेहो नहि भेल।

मन्दोदरी भीतर घुरबासँ पहिने बुझलीह जे नगरमे नव शासनक परामर्शदातासभ किछु पुरान कर्मचारीक नाम ‘रावणक लोक’ कहि एक संग रखैत छथि। ओ विभीषणसँ पुछलनि जे मालिनी, रसोइक वृद्धा, आ घैल भरनिहार बालकसभक मायसभकेँ के एहि नाममे गनत। विभीषण कहला जे जकरा अपराधक प्रमाण अछि ओकरा जाँच होएत, मुदा सेवा कएने मात्रसँ दोष नहि मानल जाए। मन्दोदरी आग्रह कएलनि जे ई कथन फाटकपर पहरा दएवला लोक धरि पहुँचय। राजसभाक शब्द आ फाटकक प्रथा कतेक दूर छल, से हुनका पुरान दिन याद छल। एहि बेर ओ केवल निजी आश्वासन नहि, खुले निर्देशन सुनब चाहैत छलीह।

विभीषण अपन लेखककेँ बजबौलनि। मन्दोदरी कहलीह जे ओ स्वयं कियो नव राजाज्ञा जारी करबाक दावा नहि करैत छथि। नव नेतृत्वक निर्देशमे तीन बात स्पष्ट हो—गृहस्थी आ सेवाक नामपर ककरो बिना जाँच बान्हल नहि जाए; अनिश्चित मृतकक परिवारक भोजन रोकेल नहि जाए; आ जकर सामान राजगृहमे रहि गेल अछि, ओकरा सुरक्षित वापसीक अवसर हो। लेखक क्रमशः पाँति लिखैत रहल। विभीषण प्रत्येक बातक सीमा बुझौलनि—खोजमे समय लागत, उजड़ल भवनक भीतर तुरन्त प्रवेश असम्भव, आ अनाजक वास्तविक मात्रा गनबाक चाही। मन्दोदरी सहमति देलीह जे झूठ आश्वासन नहि, उपलब्ध सम्भावना जनाओल जाए।

राजगृह लौटैत मन्दोदरी ओहि तेल बेचएवाली वृद्धाकेँ फेर देखलीह। वृद्धा अपन तराजूक एक पलड़ा सुलझा लेने छलीह। मन्दोदरी पुछलनि जे दू पुत्रक नाम खोजमे जुड़ल अछि की नहि। मार्गदर्शक जखन प्रारम्भिक पन्ना देखौलक, नाम अलग दर्ज छल; प्रत्यक्ष समाचार एखन नहि। वृद्धा पुछलीह, “तूँ अपन राजाकेँ देखलहुँ?” मन्दोदरी हँ कहलीह। वृद्धा अपन दोसर प्रश्न बदलि देलीह—“तकर देह पहचानि लेलक सभ? हमर लोककेँ कियो चिन्हएत?” मन्दोदरी लग एहि बातक तुरन्त उत्तर नहि छल। ओ वृद्धाक तराजूक तख्तापर हाथ रखि कहलीह, “आजु कियो नहि कहि सकैत। मुदा हम एतय ओकर नाम बिसरबाक आदेश नहि देब।”

अन्नकोठरीमे घुरलापर वृद्धा पहिने सँ चिरायल काँसक पात्रक माप सँ फेर चाउर बाँटि रहल छलीह। मन्दोदरी पुछलनि, “नव पात्र उपलब्ध अछि?” वृद्धा कहलीह जे दू पात्र

सुरक्षित छल, मुदा एक रसोइमे घुरि नहि अएल; दोसर आगि सँ गरम भऽ बेकार भेल। मन्दोदरी पुरान पात्रक मुँहपर कपड़ाक टुकड़ा बान्हबाक प्रयास देखलीह। “ई माप चिरा सँ झरि रहल अछि,” ओ कहलीह। “नव माप नब बनब। काल्हिसँ जे देल जाए तकर वजन फेर जाँचू।” वृद्धा पुछलीह जे आजुक कम-बेसी भागक की होएत। मन्दोदरी कहलीह, “जतेक संभव, ओहि लोकसँ पुछू जे भोजन पओलक। कमी रहि गेल तँ अपनहि माप ठीक करबाक जिम्मा हम सभ लिअ।”

सायंकाल रसोइक आगि स्थिर भेलाक बाद मन्दोदरी प्रथम बेर अकेली रहलीह। देवालक कात रावणक रखल पुरान वीणाक एक तार ढील भऽ लटकि रहल छल। ओ ओकरा छुबलीह नहि। हुनका स्मरण पड़ल जे रावण एक बेर बहुत राति धरि राग साधैत रहलाह, आ ओ बीचमे जागि पानि देने छलीह। ओ राति रावण हुनका एक अल्प सुनल धुन फेर बजाओल छलाह। ओहि धुनक सुन्दरता सच छल; एखन ओकरा सुन्दर कहबासँ सीताक बन्धन निर्दोष नहि भऽ जाइत। मन्दोदरी पलंगक कात बैसि पुत्रक लकड़ीक नावक स्मृति मेघनादक अनुपस्थित हाथसँ जोड़लीह। आँखिमे फेर पानि भरि अएल।

बाहरसँ मालिनी पुकारलीह जे पहरेदारसभ नव लिखित निर्देश पढ़ि सुनाओलनि अछि, मुदा एक स्त्रीक नाम ओहि पन्नामे छूटि गेल अछि। मन्दोदरी ओकरा भीतर बजौलीह। मालिनी कहलीह जे पानि भरनिहार वृद्धा अपना घर जेबाक अनुमति चाहैत छथि; किछु लोक हुनका राजक पुरान रहस्य जाननिहार कहि रोकि रहल अछि। मन्दोदरी पुछलनि, “ओ स्वयं जे कहए चाहैत छथि, से सुनल गेल?” मालिनी मना मे सिर हिलौलीह। मन्दोदरी उठि ठाढ़ भेलि। “चलू,” कहलीह, “एहि बेर हम भीतरक दुआरपरसँ घुरब नहि।” ओ अपन सादे वस्त्रक ढीला किनार सम्हारलीह आ खुलल गलियाराक दिस चलि गेलीह, जतए एक बूढ़ स्त्री अपन घरक बाट पुछि रहल छलीह।

अध्याय १२५ • कुन्तीक स्वीकृति

गङ्गाक घाटपर कुन्ती पितरक अर्घ्य लेल भरल काँसक लोटा उठबए गेलीह तँ ओकर मुँहक कात सँ पानि छलकि हुनकर पएरपर पड़ल। छोट पाथरक सीढ़ी पर किछु गीलापन पहिनेसँ छल। ओ लोटा सम्हारि लेलनि, मुदा जखन ओकरा फेर भरबाक लेल झुकलीह, तखन हाथ बढ़ल नहि। नदी अपन धारा मे एकहि चालि सँ बहि रहल छल। कातमे पुरोहित कुशक तिनका सुलझा रहल छलाह, आ दूर मृतकसभक परिजन अलग-अलग घाटपर जल दैत छला। कुन्तीकें बुझाइत छल जे एहि भीड़मे एक नाम एहन अछि जकर उच्चारण हुनकर मुँहसँ भेल बिना ओकर उचित शोक सम्भव नहि।

युधिष्ठिर भाइसभक संग घाटक दोसर सीढ़ीपर बैसल छलाह। हुनका सामने युद्धमे मारल गेल निकट सम्बन्धीसभक नाम एक-एक कऽ कहल जा रहल छल। प्रत्येक नामपर ओ जल धरैत छलाह; किछु नाम सुनि हुनकर उँगरी थरथरा उठैत छल। कर्णक नाम जखन एक वृद्ध सैनिकक मुँहसँ निकलल, ओ क्षणभरि थमकलाह, कारण ओहि वीरकें ओ सभ युद्धक प्रतिपक्षमे रखैत आएल छलाह। सैनिक कहलक जे अंगराजक रथक सारथि सँ सेहो किछु बात पुछब शेष अछि। कुन्ती एहि वाक्यक अन्तिम भाग स्पष्ट सुनलीह। प्रश्न शेष छल, मुदा कर्णक जन्मक प्रश्नक उत्तर केवल हुनका लग छल।

पुरोहित युधिष्ठिरकें कहलनि जे प्रत्येक वीरक कुल आ परिवारक अनुरूप अर्घ्यक विधि राखल जाएत। ओ अपन ज्ञानक सीमा सेहो जनैत छला; युद्धमे बहुत शवसँ कुलक चिह्न छिनि गेल छल। युधिष्ठिर सहमति देलनि। कुन्ती एक पाँति आगाँ बढ़लीह। हुनकर कंठसँ आवाज पहिने नहि निकलल। ओ पुरोहितकें नहि, युधिष्ठिरकें सम्बोधित कएलनि—“ओहि नामक जल एखन रोकू।” अर्जुन माथ उठौलनि। हुनकर आँखिमे पहिने आश्चर्य छल, फेर एहन चिन्ता जे मानू युद्ध एखनहुँ पूरा नहि भेल अछि।

“किएक, माता?” युधिष्ठिर पुछलनि। “कर्ण हमर भाइ नहि छल,” भीम कहलनि, “मुदा युद्ध समाप्त भेल अछि; ओकर देहक सम्मान रोकबाक कोनो कारण नहि।” कुन्ती भीमक दिस देखलीह। “हम ओकर सम्मान नहि रोकि रहल छी,” ओ धीरे कहलीह, “हम ओहि जलकें ओकर साँच कुल धरि पहुँचए दए चाहैत छी।” घाटपर बैसल किछु लोक घुरि देखने

छल। कुन्ती भीड़ लग आबि रहल सुनि कहलीह, “एहि बातक पहिल उत्तर हमर पुत्रसभकेँ एकान्तमे सुनबाक अधिकार अछि। ओहिसँ बाद जे आवश्यक, से सभ जानत।”

घाटक पाछाँ एक छोट नीम छल। ओकर नीचाँ दरीक किनार धूसँ भरल छल। विदुर किछु दूरी पर ठाढ़ छलाह; कुन्ती हुनका संकेत देलनि जे अनावश्यक भीड़ रोकल जाए। ओ राजपुरुषकेँ द्वारपर पहरा देबाक आदेश नहि देलनि; केवल कहलीह जे शोक करएवाला परिवारक बीच नब विवादक दर्शक नहि जुटय। युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल आ सहदेव नीमक छाहरिमे आएलाह। द्रौपदी किछु दूर ठमकलीह। कुन्ती हुनकासँ कहलनि, “अहाँ सेहो रहू। ई बातक परिणाम अहाँक जीवनमे सेहो पड़ल अछि।”

कुन्ती दरीपर बैसलीह नहि। ओ ठाढ़-ठाढ़ अपन अँगुरीसँ लोटाक गील कात टोहैत रहलीह। “कर्ण,” ओ कहलीह, “जकरा अहाँसभ अंगदेशक राजा, दुर्योधनक मित्र आ अर्जुनक प्रतिद्वन्द्वी बुझैत रहलहुँ, ओ हमर पहिल पुत्र छल।” नीमक पातमे हल्लुक हवा लगल। दूर घाटपर एक बच्चा कन्नैत छल; ओकर माँ ओकरा चुप करएवाक प्रयत्नमे थाकि गेल छलीह। एहि सामान्य आवाजक बीच कुन्तीक कहल शब्द ककरो मुँहसँ दुहराएल नहि गेल।

युधिष्ठिर हाथमे धएल कुशक तिनका छोड़ि देलनि। “अहाँक पहिल पुत्र?” ओ पुछलनि। कुन्ती हँ कहलीह। “हमर विवाहसँ पहिने ओकर जन्म भेल छल। हम ओहि समय एतेक डरल छलीह जे ओकर जन्मक सुरक्षा आ अपन सामाजिक अपमानक डरकेँ अलग नहि कऽ सकलहुँ। हम ओकरा एक पेटारामे राखि नदीक धारामे छोड़ि देलहुँ।” एतबा कहितहि हुनकर स्वर घोर कठोर भऽ गेल, मानू ओ अपने मुँहसँ कहल वाक्यक पूरा भार सुनबए चाहैत छथि। “एहि काजक निर्णय हम कएने छलहुँ। ओकरा अपन कथा कहबाक अवसर हम नहि देलहुँ।”

नकुलक मुँहसँ निकलल, “तखन ओ बचल कोना?” कुन्ती कहलनि जे अधिरथ आ राधा ओहि बालककेँ पाएल छलाह, आ अपने सन्तान जकाँ पालने छलाह। “ई जननीक स्थान हमर शरीरमे छल,” ओ कहलीह, “मुदा ओकरा चलब सिखबौनिहार, ज्वरमे जागि रहल, भूखमे खेबाक देनिहार लोक राधा आ अधिरथ छलाह। आज हम ओकरा पुत्र कहि

रहल छी तें हुनका सभक मातृत्व-पितृत्व घटैत नहि अछि।” सहदेव नीमक तना छुबि ठाढ़ छला। हुनकर माथ झुकल छल, मुदा कान पूर्ण सावधान।

अर्जुन अचानक एक डेग पाछाँ हटला। “युद्धसँ पहिने अहाँ ई बात जनैत छलीह?” ओ पुछलनि। कुन्ती नजर नहि हटौलीह। “हँ।” “जखन ओ हमरा धनुषक सामने ठाढ़ छल, तखनो?” “हँ।” अर्जुनक उँगरी चढ़ल डोरी जकाँ तन गेल। ओहि डोरीमे एखन कोनो धनुष नहि छल; ओकर भार स्मृतिमे छल। “अहाँ हमरा लग किएक नहि अएलहुँ?” हुनकर वाक्य आरोपक रूपमे नहि, असह्य विस्मयक रूपमे निकलल। कुन्तीक लगे तकर सरल उत्तर नहि छल।

“हम युद्धक पहिने कर्ण लग गेल छलीह,” ओ कहलीह। भीम सिर उठौलनि। “हम हुनकासँ कहने छलहुँ जे ओ पाण्डवसभक संग आथि। हुनका अपन जन्मक बात हम स्वयं कहने छलहुँ। मुदा ओ अधिरथ, राधा आ दुर्योधनक संग अपन सम्बन्ध छोड़बाक लेल तैयार नहि भेलाह। हुनकर उत्तर छल जे बहुत देर भऽ गेल अछि।” कुन्ती क्षणभरि ठहरलीह। “तखन हम अपन पुत्रसभक रक्षा चाहैत हुनकासँ आग्रह कएलहुँ जे अर्जुन छोड़ि आन भाइसभपर प्राणघातक प्रहार नहि करथि। ओ एहि सीमाक वचन देलनि।”

भीमक चेहरा बदलि गेल। “एहि वचनक बात अहाँ हमरा सभसँ लुका कऽ रखलहुँ?” “हँ,” कुन्ती कहलीह। भीम धरतीक सूखल माटि मुट्ठीमे दाबि लेलनि। “तँ हम रणमे जकर प्रहारकें शत्रुक चुनाव बुझैत रहलहुँ, ओहिमे एक अव्यक्त वचन सेहो छल? हम अपन पराक्रमक बात कहैत रहलहुँ, आ ओ अपन किछु चुनाव हमरा बिनु जनौने कए रहल छल!” कुन्ती कहलीह, “ओकर पराक्रम अहाँसँ कम नहि छल। मुदा ओकर वचन लेल अहाँ ओकर ऋणी भऽ जाइत छी, एहनो हम नहि कहब। वचन माँगनिहार हम छलीह; पूरा करबाक भार ओ उठौलक।”

युधिष्ठिर बहुत देर बाद कहलनि, “अहाँ हमरा पाँच जनकें बचाबए चाहैत छलीह, मुदा छठमकें कोन गणनामे राखलहुँ?” कुन्ती ओहि प्रश्नसँ हटलीह नहि। “जखन हम ओकरा भेटलहुँ, तखन हमर भीतरक माता कर्णकें फेर अपन लेबाक इच्छा करैत छल, आ अपन अन्य पुत्रकें बचाबए चाहनिहार माता ओकरासँ त्याग माँगैत छल। ई दू इच्छा एके समयमे

छल। हम पहिल इच्छा देरीसँ कहलहुँ; दोसर जल्दी कहलहुँ। एहि असमानताक दोष हमर अछि।” युधिष्ठिर अपन साँस सम्हारि पुछलनि, “अहाँ एखन हमरसँ की चाहैत छी?”

“पहिने सत्य सुनब,” कुन्ती उत्तर देलनि। “हमरा क्षमा दियौ, ई वचन एखन अहाँसभसँ नहि माँगब। कर्णक अन्तिम जल ओकर जीवनक सभ सम्बन्ध जानि दियौ; हमर स्वीकार मात्रसँ ओकरा अपन मित्र, पालनहार आ पत्नी-बच्चासँ काटि नहि दियौ।” ओ फेर कहलीह, “हमरा डर छल जे समाज एक कन्याक गर्भकेँ अपराधक नाम देत। मुदा ओहि डरमे हम एक बालककेँ पानिक हवाले कएलहुँ। तकरा देवक इच्छा कहि अपन हाथ मुक्त करबाक अधिकार हमरा नहि अछि।”

द्रौपदी एखन धरि चुप छलीह। ओ नीमक छाहरिसँ बाहर बैसल एक स्त्रीकेँ देखैत छलीह, जे अपन मृत पतिक वस्त्रक गाँठ खोलि रहल छलीह। “कर्ण,” द्रौपदी कहलीह, “राजसभामे हमर अपमानक समय सेहो उपस्थित छल। ओकर वचन सभ हमरा बिसरल नहि अछि। आज ओकर जन्मक सत्य बदलल अछि; ओ दिनक चोट नहि बदलल।” कुन्ती बिना प्रतिवाद सुनलीह। द्रौपदी फेर कहलीह, “मुदा ओकर जननीकेँ अपना पुत्रक सत्य कहबाक अधिकार अछि। हमर शोकक नामपर ओ सत्य रोकि देल जाए, तकर पक्षमे हम नहि छी।” दुनूक बीच क्षमा देबाक कोनो सहज पुल नहि बनल, तथापि बातक बाट बन्द नहि भेल।

अर्जुन नीमक पाछाँ धरि चलि गेलाह। घाटसँ आरतीक नहि, लकड़ी चिरबाक आवाज आबि रहल छल। एक भाला बनौनिहार बूढ़ पुरुष मृतकसभक अन्तिम क्रिया लेल सूखल काठ जोड़ा रहल छल। अर्जुन ओकर हाथक गतिकेँ देखि कर्णक रथक चक्र याद कएलनि —कादोमे अटकल चक्र, धनुषक डोरी, निर्णायक प्रहार। ओ सभ युद्धक अन्तिम क्षणमे अपना निर्णयक औचित्य परखैत रहलाह। आब ओहि घटनामे भ्रातृत्वक अनजाने तथ्य जुड़ल छल; ओहि तथ्यसँ युद्धक बाकी घटनासभ मेटाएल नहि।

कुन्ती हुनका लग जाएबाक चाहना दबा लेलनि। अर्जुन स्वयं घुरि अएलाह। “ओ हमरा चिन्हैत छल?” पुछलनि। “हँ। हम हुनकासँ कहलहुँ, तखन ओ जनैत छल,” कुन्ती उत्तर देलनि। अर्जुनक स्वर फेर उठल, “आ हम नहि जनैत छलहुँ।” उत्तर नहि छल। “जँ हम जनैतहुँ,” ओ कहलनि, “हम की करितहुँ, से एखन कहब आसान अछि। रणभूमिमे ओ

हमर प्रतिद्वन्द्वी छल; हमरा आगू युद्धक निर्णयसभ छल। मुदा अहाँ हमरा सत्यसँ वञ्चित कएलहुँ। हमर चुनावमे जे ज्ञान होएबाक छल, से नहि छल।” कुन्ती पहिल बेर आँखि झुकौलीह।

सहदेव कहला, “हमरा लग ई बातक एकटा दोसर हिस्सा अछि। ओ जखन छोट छल, ओ नहि जानैत छल जे ओकर जन्मक कारण कोन ठाम अछि। ओकर अपन अस्मिताक उत्तर राधा आ अधिरथक स्नेहमे छल। हम ओकरा अपन घरक जेठ भाइ कहि उठा सकैत छी, मुदा ओ अपन घर पहिनेसँ बनौने छल।” नकुल सहदेवक बात आगाँ बढौलनि, “हम दुनू अपन जन्मक प्रश्न लऽ कतेक बेर विचलित भेलहुँ। एखन जेठक एक पूरा जीवन हमरा जन्म-सूची सँ बाहर जिएल भेटैत अछि।” कुन्ती सुनैत रहलीह; पहिल बेर हुनका बुझाईत छल जे बेटासभक प्रतिक्रिया एक स्वरमे नहि आएत।

विदुर लग आबि धीरे कहला जे घाटपर अर्घ्यक क्रम ठमकलासँ परिवारसभकेँ प्रतीक्षा भऽ रहल अछि। हुनका सत्यक पूरा समाचार एखन नहि भेटल छल। युधिष्ठिर कहलनि, “कोनो मृतकक विधि रोकल नहि जाउ। हम किछु कालमे धुरैत छी।” विदुर गेलापर कुन्ती पुछलनि, “की हम बाहर सभकेँ कहि दी?” युधिष्ठिर कहलनि, “ई बात अहाँक मुँहसँ निकलल अछि; ओकर परिणाम सभ हमरा भोगबाक अछि। मुदा आज कर्णक देहक समीप अपन अपन नाम लऽ बैसल लोकसभक सम्मुख अहाँ कहि सकैत छी। ओकर पालनहार परिवारक अधिकार पहिने मानल जाए।”

कुन्ती अपन भयक एक पुरान दृश्य याद कएलनि। कुमारीक दिनमे ओहि पिटारीक ढक्कन दाबैत समय भीतरसँ बालकक छोट आवाज उठल छल। ओ निश्चयपूर्वक नहि कहि सकैत छलीह जे बालकक मुखपर कोन रंगक उजास छल; स्मृति अनेक वर्षमे वस्तुसभ बदलि दैत अछि। मुदा ढक्कनक किनारमे अटकल एक सूत ओ एखनहुँ याद करैत छलीह। ओ सूत खींचने छलीह, ताकि ढक्कन ठीकसँ बन्द भऽ जाए। बालकक सुरक्षा लेल जतन करबाक विचार आ बालककेँ छोड़ि देबाक निर्णय एकहि हाथसँ भेल छल। एहने असहज बात ओ एखन बेटासभकेँ कहलीह।

“हम हुनका छोड़ि देलहुँ,” कुन्ती कहलीह, “मुदा छोड़बाक समय ओ नहि कहि सकैत छल जे ओकर इच्छा की अछि। बादमे जखन भेटलहुँ, ओ अपन इच्छा स्पष्ट कहलनि—ओ

दुर्योधनक संग रहत। हमरा पहिल निर्णयमे ओकर कोनो आवाज नहि छल; बादक निर्णयमे ओकर आवाज छल। एही कारण हम आज ओकर अन्तिम सम्बन्धसभ अपन इच्छा अनुसार फेर नहि लिखब।” एहि वाक्य पर भीम गहिर साँस लेलनि। हुनका कर्णक संग कएने कटु विवादसभ याद अएल, मुदा ओहि विवादमे कर्णक अपन विवेक छल; मात्र माताक त्यागक शिकार बनाउ कऽ ओकर व्यक्तित्व बुझब अपूर्ण होएत।

किछु समय बाद सभ घाटपर घुरलाह। भीड़मे कर्णक रथक एक पुरान सेवक ठाढ़ छल। ओकर कलाईपर पट्टी बान्हल छल, आ ओ नहि जनैत छल जे राजपरिवार अचानक अंगराजक विषयमे किएक पुछि रहल अछि। युधिष्ठिर ओकरा पहिने बैसबाक लेल कहलनि। सेवक अपन आँखि उठाओल नहि। “कर्णक घरसँ के आएल छथि?” पुछल गेल। सेवक कहलक जे किछु सम्बन्धी घाटपर छथि, मुदा किछु दूर रहबाक चाहैत छथि; युद्धक बाद विजयी पक्षक लोकसभक बीच एब हुनका सहज नहि। युधिष्ठिर ओकरा जएबाक आ ककरो बलजोरी नहि आनबाक निर्देश देलनि।

कर्णक घरक एक वृद्ध सम्बन्धिनी घाटक बायाँ कात ठाढ़ छलीह। ओ राधाक घरमे कर्णक बाल्यकालसँ परिचित छलीह। कुन्ती हुनका लग गेलीह। स्त्री पहिने निहुरि प्रणाम करए चाहलीह, मुदा कुन्ती हाथ रोकलनि। “हम एकटा बात कहबाक लेल आएल छी,” ओ कहलनि, “जकरा अहाँ नहि सुनबाक चाहब तँ हम अहाँक बात नहि रोकब।” वृद्धा आँखि सोझ कएलीह। “कर्णक नामपर हम बहुत बात सुनलहुँ। एखन कोन बात?” कुन्ती अपन गर्भसँ ओकर जन्मक सत्य कहलीह। वृद्धाक मुँह कछुए बेर धरि बन्द रहल; तकर बाद ओ कहलीह, “राधाक दूधसँ जे जीव बचल, ओकर नाम एखन अहाँक शब्दसँ बदलब?”

“नहि,” कुन्ती उत्तर देलनि। “हम तकरा राधासँ छीनबाक लेल नहि आएल छी। जकरा हम नदीमे छोड़ने छलहुँ, ओकरा राधा उठौने छलीह। हम अपन अपराध कहैत छी; हुनकर पालनक अधिकार नहि छिनैत छी।” वृद्धा किछु बेर हुनका देखैत रहलीह। फेर कहलीह, “एहि सत्यक समाचार राधाकेँ कतेक कठोर लागत, अहाँ जानैत छी?” कुन्ती कहलनि, “नहि। हम ओकर दुःखक परिमाण नहि जानैत छी। हमर साँच कहलासँ ओकरा सांत्वना

भेटत, एहन वचन सेहो नहि देब।” वृद्धा घुरि गेलीह, अपन घरक लोकसभसँ बात करबाक लेल। कुन्ती हुनका रोकलनि नहि।

घाटक मध्यभागमे युधिष्ठिर सभक सम्मुख कहलनि जे कर्ण हुनकर सभसँ जेठ भ्राता छला। ओ एहि घोषणासँ पहिने कुन्तीकेँ आगाँ आबबाक स्थान देने छलाह; कुन्ती स्वयं कहलनि जे जन्मक सत्य हुनका मुँहसँ सुनल जाए। घोषणाक बाद लोकक बीच अनेक स्वर उठल। कियो प्रश्न कएलक जे युद्धक पहिने ई बात किएक नहि कहल गेल; कियो कर्णक राजधर्म, दुर्योधनसँ मित्रता आ प्रतिपक्षमे हुनकर कर्मक चर्चा शुरू कएलक। युधिष्ठिर आवाज ऊँच नहि कएलनि। ओ केवल एतबा स्पष्ट कएलनि जे कर्णक निर्णयसभक इतिहास अपन स्थानपर अछि, मुदा ओकर जन्मक सत्य दबा राखल गेल छल।

अर्जुन भीड़सँ अलग कर्णक नाम पर राखल जलपात्रक लग ठाढ़ भेला। पुरोहित पुछलनि जे अर्घ्य कोन सम्बन्धसँ देल जाए। अर्जुन उत्तर देलनि, “भ्राताक नामसँ।” एहि छोट वाक्यक बाद हुनकर गला रुँधि गेल। युधिष्ठिर सेहो जल उठौलनि। भीम, नकुल आ सहदेव किएकी अलग-अलग चालि सँ आगाँ बढ़लाह—कोनो त्वरित सामूहिक मेलक मुद्रा नहि छल। कुन्ती पाछाँ ठाढ़ रहलीह। आज पहिल बेर ओ अपन प्रथम पुत्र लेल सार्वजनिक रूपेँ जल दए सकैत छलीह; ओतबे सत्य छल जे ओहि पुत्रकेँ जीवित अवस्थामे मायक नाम देबाक बाट बहुत पहिने बन्द भऽ गेल छल।

जल अर्पणक बीच एक युवक प्रश्न कएलक जे कर्णक पालनहार पिताक घरक रीति कोना निभाओल जाए। पुरोहित उत्तर देबाक पहिने वृद्ध सम्बन्धिनीक दिस देखलनि। ओ कहलनि जे परिवार अपन रीतिसँ जल देत आ राजपरिवार अपन सम्बन्धसँ। ककरो दोसरक पात्र छीनबाक आवश्यकता नहि। कुन्ती एहि निर्णयपर सहमति देलनि। वृद्ध स्त्री हुनकासँ आँखि नहि मिलौलीह, मुदा परिवारक एक युवककेँ आगाँ बढ़बाक संकेत देलीह। ओ लोटामे पानि भरि धीरे-धीरे कर्णक नाम लेलनि। सभक बीच कोनो समान भावना नहि छल; तथापि एके नामक लेल अलग-अलग हाथ पानि धरि सकल।

द्रौपदी घाटसँ हटबाक पूर्व कुन्ती लग आएलीह। “आइ अहाँक सत्य कहला सँ कालक सभ प्रश्न समाप्त नहि भेल,” ओ कहलीह। कुन्ती स्वीकार कएलनि। द्रौपदीक आँखिमे

अपन पाँच मृत पुत्रसभक छवि छल। “हमर बेटासभकें अपन जेठ ककाक नाम कहबाक अवसर नहि भेटल,” ओ कहलीह, “मुदा हुनका सभक शोकक बीच एकटा नव सम्बन्ध अनचिन्हार रहल, से बुझि रहल छी। हमरा एहि बातसँ की अनुभव होएबाक चाही, से आज नहि कहि सकब।” कुन्ती हुनका कोनो शिक्षा नहि देलीह। ओ केवल हुनकर बगलमे ठाढ़ रहलीह, जखन द्रौपदी अपन पुत्रसभक लेल जल धरलीह।

युधिष्ठिर घाटक सीढ़ीपर बैसि गेला। “जँ ई बात पहिने जनैतहुँ,” ओ कहला, “राज्यक अधिकार, भाइसभक सम्बन्ध, युद्धक सभ निर्णय आन रूप लेबित। किछु बदलब अवश्य छल, मुदा कोन काज कोना बदलित, से हम निश्चित नहि कहि सकैत छी।” कुन्ती उत्तर देलनि, “हमरो मौनक उचित दण्ड कोन अछि, से अहाँक शोकक क्षणमे तय करबाक आग्रह नहि करब।” युधिष्ठिरक भीतर क्रोध उठल। “अहाँ हमरासँ विश्वास माँगैत रहलहुँ,” ओ कहला, “आ अपन पहिल पुत्रक सच हमरापर विश्वास कऽ नहि राखलहुँ।” कुन्ती ई चोट सुनीह; ओहि पर अपन डरक वृत्तान्त फेर नहि दोहरौलनि।

भीम पानि भरनिहार युवककें देखलनि, जे एके लोटा अलग-अलग परिवारक लेल भरि रहल छल। युवकक हाथ थाकल छल। भीम ओकरा भारी पात्र उठबामे सहयोग कएलनि। लौटैत ओ कुन्ती लग ठमकलाह। “अहाँ हमर माय छी,” ओ कहला, “ई बात आज नहि बदलल। मुदा अहाँ जे गुप्त रखलहुँ, तकर परिणाम हमरा सभक जीवनमे बदलैत रहल। हम आज तुरन्त अहाँक क्षमा कएलहुँ कहि नहि सकब।” कुन्ती हुनका बाँह छुबए चाहलीह, मुदा भीम अपन हाथ लोटाक भीजल गन्ध सँ भिजल देखौलक, आ किछु कहबाक बदला पाछाँ घुरि गेल। एहि अस्वीकारमे सेहो सम्बन्ध पूर्ण टुटल नहि छल।

नकुल आ सहदेव ओहि वृद्ध सम्बन्धिनीक परिवारक लोकसभक संग बैसि कर्णक दानक एक घटना सुनलनि—युद्धसँ बहुत पहिने कर्ण एक गरीब रथकारकें अपन उपयोगक धातु देलनि छल, मुदा बदला मे ओकर उपकरण ठीक करबाक श्रमक मूल्यो पुछने छल। एहि कथाक पूरा सत्यक गवाह कतेक छल, ई हुनका सभ नहि मालूम भेल; ओ एक परिवारक स्मृति रूपमे सुनलनि। सहदेव कहला, “हम ओकरा केवल शत्रुक चालि सँ पहचानैत छलहुँ।” नकुल उत्तर देलनि, “आइ दोसरो लोकक स्मृति सुनि रहल छी। जे नहि जनैत छी, तकरा एहि कारण कल्पना सँ भरब उचित नहि।”

सूर्य पश्चिम दिस ढलैत छल। कुन्ती घाटसँ उठलीह तँ सीढ़ीपर पहिल बेर भेटल ओही पानिक चमक देखलनि। एखन एतबा लोक जल चढ़ा चुकल छल जे पाथर अधिक गील भेल छल। एक सेविका हुनका सहारा देबाक लेल बढलीह। कुन्ती सहारा लेलनि; एहि दिन अपन पएर स्थिर राखबाक शक्ति सेहो पूर्ण नहि छल। “महारानी, घर चलू?” सेविका पुछलीह। कुन्ती उत्तर देलीह, “चलू। मुदा पहिने राधाक घर दिस जाएवला दूतसँ पूछू— हमरा कोनो वचन पठेबाक अधिकार अछि की? जँ ओ सभ एखन किछु नहि सुनए चाहथि तँ हम प्रतीक्षा करब।”

युधिष्ठिर माताक प्रश्न सुनलनि। ओ अपन दूतकेँ एहि आशयसँ कहलनि जे कर्णक घरक लोकसभ जँ चाहथि तँ अपन रीति सँ एकान्तमे शोक करथि; कोनो राजकीय आगन्तुक हुनकासभपर प्रवेशक दबाव नहि बनाओत। कर्णक जन्मसत्य सार्वजनिक भेल छल, मुदा तकरा सुनि प्रत्येक परिवार कखन आ कोना उत्तर देत, से राज्यक आदेशसँ तय नहि होएत। कुन्ती दूतक प्रस्थान देखैत रहलीह। हुनकर भीतर एकटा पुरान आग्रह उठल—राधासँ मिलिकऽ सब बात कहि देबाक। ओ ओहि आग्रहकेँ पहिल बेर स्वयं रोकलीह।

सन्ध्याक अन्तिम उजासमे गङ्गाक पानि गहिर रंगक भऽ गेल। कुन्ती अपन लोटा अबेर धरि हाथमे रखलीह; ओकर भीतर बचे पानिक छोट मात्रा एक बेर हिलल। ओ सोचलीह जे बचपनमे छोड़ल पुत्रक भूख, थाकल बेरा, उत्सव, भय, आ पहिल सफलतासभक अधिकांश कथा हुनका कहियो नहि भेटत। जननीक अधिकार कहि ओ सभ समय अपन नामपर लिखि नहि सकैत छलीह। घाटपर आज हुनका जे भेटल, से क्षमाक वचन नहि, सत्य कहबाक पछिला अवसर छल। ओ खाली लोटा नीमक कात रखि देलीह, ताकि एक सेवक फेर पानि भरि सकय; अपन वचनक ओहि रिक्त स्थानमे आन लोकक आवाज सुनबाक आवश्यकता हुनका एखन बुझा पड़ल छल।

अध्याय १२६ • भातक मात्रा

सरिता चाउरक मापवला पीतलाक कटोरी उठौलीह। दूनू पएरक बीच चूल्हाक आगि एखन ठीकसँ नहि पकड़ने छल; भीजल लकड़ीक धुआँ ओसार दिस सरकि रहल छल। ओ कटोरी भरि भाँड़मे खसौलीह, फेर दोसर बेर भरलनि, तेसर बेर आधा। पहिल दू मात्रा अपना आ घरमे अएबाक आशा रखनिहार लोकक लेल छल; तेसर मात्रा नित्य नैरा लेल। चाउर पानिमे पड़लाक बादे हुनका मोन पड़ल जे बेटी आब एतय आ खएबाक प्रतीक्षामे नहि बैसत। ओ हाथ बढ़ाकऽ दाना निकालए चाहलीह। पानिमे उँगरी लगिते चाउर छितरि गेल। सरिता हाथ फेर बाहर निकालि लेलनि। भाँड़मे जतेक छल, ओतबे रहल।

ढकनीक कातमे एकटा छोट फाट छल। बहुत दिन पहिने नैरा बजारसँ नब ढकनी अनए कहने छलीह; सरिता पुरानकँ उलटा घुमा कऽ काम चला लैत छलीह। आइ ढकनी सझा करैत हुनकर अँगुरी ओही फाटमे अटकल गेल। “खून निकैलत,” नैराक पुरान स्वर जेना ओसारसँ उठल, मुदा ओ आवाज छल नहि। सरिता कपड़ाक एक टुकड़ा लऽ किनार पकड़लीह। चूल्हाक आगि सँवारलनि। पानि उबलिते ढकनी हलुक थरथराए लगल। हुनका लग रहबाक काज छल—आँच घटाएब, चाउर देखब, तावा उतारब। कोनो काज कठिन नहि छल; मुदा सभक क्रममे एकटा अतिरिक्त थारीक स्मृति आबि जायत छल।

कोठरीक भीतर सिलाइक मशीनपर अपूर्ण कुरती पसारल छल। ग्राहकक नामक एक छोट पर्ची कपड़ासँ सुइया द्वारा अटकेल। चारि दिन पहिने धरि सरिता एहि कामक सुपुर्दगी-तिथि याद रखैत छलीह; अस्पतालक दुर्घटनापछि दिनक गिनती ढील भऽ गेल छल। ओ पहिने पर्ची हटौलनि, ताकि गर्म चूल्हाक भापसँ स्याही नधुँधलाए। नैरा घर अएलापर मशीनक चक्का बिना पूछने घुमा देइत छलीह; माय कहैत छलीह, “एहि धागाक गिनती नहि बिगाड़ू।” बेटी तखन हँसि कहैत, “अहाँक घरमे धागाक लेखा भेटैत अछि, भातक नहि।” सरिता ओहि उत्तरपर झुँझलायल छलीह। आइ मशीनक चक्का स्थिर छल; ओकरा हाथसँ घुमा कऽ देखबाक इच्छा सेहो नहि भेलनि।

दरबज्जा लगक माटिमे ककरो साइकिलक पहियाक चिन्ह बनल छल। पड़ोसिन चन्द्रिका कटोरामे पातक चटनी लऽ एलीह। “काल्हि सँ अहाँ घरसँ बाहरो नहि

निकललहुँ,” ओ कहलीह। सरिता कटोरी लेलनि, मुदा चटनीक गन्ध नहि सूँघलीह। चन्द्रिका चूल्हा पर चढ़ल भाँड़ देखलीह। “एतेक भात? आइ कतेक लोक आबि रहल छथि?” प्रश्नमे अनायास दैनिक हिसाब छल, कोनो निर्दयता नहि। सरिता उत्तर देबासँ पहिने एक बेर भाँड़ दिस देखलीह। “हम जेतेक नित्य पकबैत छी, ओतबे,” ओ कहलीह। चन्द्रिका अगिला प्रश्न घोंटि गेलीह। ओ आगिमे आर लकड़ी डालबाक बदला भीजल टुकड़ासभकेँ चूल्हासँ कात कएलीह, जाहिसँ धुआँ कम भेल।

“कम कऽ देलहुँ तँ चाउर बचत,” सरिता स्वयं कहलीह, जेना चन्द्रिकाक चुप्पीकेँ उत्तर देबाक छल। “घरमे चाउर कम नहि अछि। परुका मासक देयक अलग अछि; कोठीमे जे अछि ओकर हिसाब अलग। मुदा माप उठबैत हाथ तेसर बेर रुकल नहि।” चन्द्रिका कहलीह, “रुकबाक कहने के अछि? हम तँ खाली पूछलहुँ जे कतेक लोक खायत।” सरिता एकटा खाली पातक थारी उलटा कऽ दहिना कात रखलीह। “हमरो नहि पता,” ओ कहलीह। ई बात सुनि चन्द्रिका अपन चटनीक कटोरी चूल्हासँ किछु दूर खिसका कऽ राखलीह। ओतहि रहि चाउरक फेन देखैत छलीह, आ अपन ओसारमे अपूर्ण राहि रहल सब्जीक बात कएलीह।

बाहर कने दूर लोकसभक पयरक चालि सुनाइत छल। अस्पतालक बाट ओही गल्लीसँ नहि जाइत छल, मुदा घायल लोकक परिवारसभ एही ठामसँ राहत-आश्रय दिस मुड़ैत छलाह। एक बच्चा अपन पिताक हाथ पकड़ि पूछलक, “एहि घरमे पानि भेटत?” चन्द्रिका बाहर जा घैलसँ पानि देलीह। बच्चाक पिता कहलनि जे ओ रसोइ-केन्द्रक बाट पूछैत छथि। चन्द्रिका बाट बता देलीह, आ बुझौलीह जे अस्पतालक पुरान पाँख एखनहुँ बन्द अछि। सरिता भीतर सँ सुनैत रहलीह। बासनमे उबलैत चाउरक पानि भोरक रौदमे उज्जर देखाइत छल, आ बाहरक आपदा घरक साधारण आवाजसभकेँ पूर्ण रूपेँ रोकि नहि सकने छल।

भात उतरौलाक बाद सरिता तीन थारी निकाललनि। पहिलमे कम भात, दोसरमे एक साधारण ढेरी, तेसरमे ओही जतेक नैरा अक्सर माँगैत छलीह। नैरा खूब भूखल रहिते तेसर कौर चटनीसँ खाइत, मुदा साँझक देरपर अएलाक बाद ओ चाउरक आधा भाग ठंढा छोड़ि दैत छलीह। सरिता तखन कन्नी पकड़ि कहैत छलीह, “सोधि कऽ परसू? मेहनतसँ चाउर

पकैत अछि।” नैरा कहैत, “सोधलहुँ तँ अहाँ देबबे अधिक। थारीमे जतबे चाही, ओ हम अपन हाथे लेब।” एही बातपर माय-बेटी दू दिन धरि खिन्न रहल छलीह। आइ सरिता तेसर थारीक कात उँगरी रखि बैसलीह। ओ थारी उठा कऽ ककरो आगू नहि बढ़ौलीह।

चन्द्रिका लौटि अएलीह। ओ तीनू थारी देखलीह, मुदा एकटा हटेबाक साहस नहि कएलीह। “अहाँ अपन लेल कने खा लिअ,” एतबा कहि ओ चटनीक ढकनी खोललीह। सरिता पहिल थारी सामने खिसकौलीह। पहिल कौर मुँहमे लेबामे कठिनाइ भेलनि। चाउर ठीक पकल छल; न बेसी गील, न अधपकल। ओ अपन जिह्वा पर ओकर ताप बुझैत रहलीह। एतहि ओ अचानक चन्द्रिकासँ पुछलनि, “नैरा बचपनमे भातक माड़ पीबए नहि चाहैत छलीह, अहाँकें याद अछि?” चन्द्रिका कहलीह, “माड़? ओ तँ हमरा घरसँ गुड़क कने चूरा माँगि लैत छलीह।” दुनू स्त्री एके बच्चीक अलग भोजन-स्मृति लऽ बैसल छलीह।

सरिताकें मोन पड़ल जे एक बरखा नैरा छोट छलीह तँ रसोइक माटि भीतर धरि चुआ गेल छल। चूल्हा ऊँच कऽ राखल गेल, मुदा आगि टिकए नहि चाहैत छल। ओहि दिन पकबाक समय बढ़ि गेलाक कारण नैरा भातक ऊपरक पाँति खा गेल छलीह; नीचाँ लागल हलुक जरल परत बचल रहि गेल। सरिता रागमे कहने छलीह जे भाँड़ खरोँचि खएबाक काज नहि। नैरा उत्तर देने छलीह, “माय, ई सभसँ स्वादिष्ट अछि।” सरिता बादमे जरल भात अलग कऽ ओकरा देने छलीह। याद अबैत सरिताक मुँहपर मुस्की अएल, मुदा ओ मुस्की टिकबाक प्रयास करितहि आँखि भरि गेलनि। चन्द्रिका हुनका रोए देलीह; अपन हाथसँ आँसू पोछबाक आग्रह नहि कएलीह।

सिलाइक मशीनक नीचे एकटा छोटी धातुक डिब्बी छल। नैरा कखनो-कखनो ओहि डिब्बीमे चाउरक बदलामे अखबारक कटिंग छिपा दैत छलीह, कारण सरिता काम करैत समय बिना पूछने कागद नफेकथि। सरिता डिब्बी खोलबाक सोचलीह, फेर बन्दे छोड़ि देलीह। नैरा जे निजी कागद कोठरीमे छोड़ने छलीह, ओकरा केवल मृत्यु भेलाक कारण खोलबाक अधिकार स्वतः नहि भेटैत। हुनकर बेटी समाचारक लोकक निजी विवरण छापबाक पूर्व अनुमति माँगैत छलीह। घरक भीतर एही प्रश्नक उत्तर कोना बनत, से सरिता एखन तय नहि कऽ सकैत छलीह। भातक थारी हुनकर समक्ष छल; डिब्बी अपन चुप्पीमे।

दुपहरक कात कबीर दरबज्जापर अएला। हुनकर कपड़ापर अस्पतालक भीजल गन्ध नहि, सड़कक धूर छल। ओ नैराक घरसँ एक छोट थैला लऽ आएल छलाह—ओहि थैलामे सुभद्राक औषधिक खाली पन्ना, साफ कएल एक गिलास आ दवाइक नवीन पर्ची छल। सरिता हुनका बैसबाक लेल कहलीह। कबीर पुछलनि, “अहाँ खएलहुँ?” सरिता कहलनि, “किछु।” चन्द्रिका चुपचाप बाहर गेलीह, अपन घरक चूल्हा देखबाक लेल। कबीर खाली कुर्सीपर बैसलाह। पछिला दिनसभमे ओ एही घरमे अनगिनत बेर नैराक आवाजक पहिने अपन आवाज पहुँचौने छलाह; आज चौखट पार करबाक पहिने बहुत बेर निःश्वास छोड़बाक पड़लनि।

“भात अछि,” सरिता कहलीह। कबीर आँखि उठौलनि। “हमर भूख नहि अछि।” सरिता कने रूकल। “हम अहाँकेँ खाएबाक लेल दबाव नहि देब,” ओ कहलीह। “मुदा जे पकल अछि, ओकरा राखबाक उपाय देखब पड़त।” कबीर भाँड़क मुँहमे रखल साफ कपड़ा देखलनि। “एखन बासी नहि भेल,” ओ कहलनि। “जँ रातिधरि रहत तँ थंढा कऽ अलग राखू; गर्मीमे ढाँपि छोड़ि देब ठीक नहि।” नैरा जीवित रहैत एहेन छोटी सावधानी कबीरसँ बेसी सरिता करैत छलीह। आइ कबीर एकर बात कहि तुरन्त संकोच करए लगलाह। सरिता उत्तर देलीह, “ठीक कहैत छी। हम भूलि रहल छलीह।” एहि छोट उपयोगी सूचनामे दुनू किछु देरि धरि टिकि सकलाह।

कबीरक नजरि तेसर थारीपर पड़ल। ओ एक क्षण ओकरा देखि फेर नजरि हटा लेलनि। सरिता स्वयं कहलीह, “ओकर जतेक भात हम नित्य परसैत छलहुँ, ओतबे आज परसि देलहुँ।” कबीरक गला खसखसाए लगल। “ओ अपन थारीमे भातक पहाड़ नहि चाहैत छलीह,” ओ कहलनि। सरिता आँखि उठा कऽ देखलीह। “हाँ,” ओ कहलीह, “मायकेक घरमे तँ एहिपर झगड़ो कएलक।” कबीर पहिल बेर हलुक हँसला। “हमरा घरमे सेहो। दाल बेसी हो तँ भात बचि जाइत छल; फेर कहैत—‘तूँ बराबरीसँ बाँटि नहि जनैत छह।’” सरिता सुनलीह। नित्यक एके नारीक दू घरमे भोजनक दू स्मृति छल। दुनू स्मृति एक दोसरकेँ झूठ नहि बनबैत छल।

“नैरा काल्हि एतय आ पुछत, हम एहन किछु सोचि रहल छी,” सरिता कहलीह। “जखन ने ओ किछु कहत, ने दरबज्जा ठेलेत, तखन हमरा लगे ई भात की करबाक

अछि?” कबीर थारी दिस देखि कने बेर मौन रहलाह। “हमरा सेहो लागैत अछि जे ओ फोन करत,” ओ कहलनि। “रातिक समय एखनहुँ फोनक उजासपर नजरि उठि जाइत अछि। ओ फोन आब ककरो समाचार देत, से जानबाक बादो।” सरिता हुनका आश्वस्त करबाक लेल ‘समय सभ ठीक कऽ देत’ नहि कहलीह। समयक पहिल काज एखन बस अगिला पल आनब छल, जाहिमे नैराक आवाज नहि रहत।

सरिता भातक ढेरीक एक कात चम्मच लगौलीह, फेर चम्मच वापस रखलीह। “कबीर, अहाँ एहि घरमे जतेक चाहब ततेक खा सकैत छी। मुदा नैराक हिस्सा खा लेलहुँ, एहि कारण हम कहल नहि चाहब जे ओ खाली जगह भरि गेल।” कबीरक चेहरापर पीड़ा आ एकटा किसिमक राहत एकहि समय अएल। “खाली जगह भरबाक वचन हमरो नहि अछि,” ओ कहला। “सुभद्राकें दवाइ समयपर देबाक अछि। कनेक बाद हमरा ओतय घुसब पड़त।” सरिता पुछलीह जे सुभद्रा किछु खा लेलथिन की नहि। “बिसरि गेलीह,” कबीर उत्तर देलनि, “दवाइ लेल पानि माँगलीह, फेर खाली बासन हाथमे लेने बैसल रहलीह।” ओहि घरमे सेहो काजक छोट विफलता जमा होइत छल।

सरिता उठि एक साफ डिब्बा निकाललनि। “तखन अहाँ लेल आ हुनका लेल किछु भात राखि दैत छी। जे खाएबाक चाहथि, ओ खाथि; जे नहि, ओ एखन नहि।” कबीर डिब्बा आगू बढ़ौलनि, मुदा सरिता तेसर थारीमे हाथ नहि देलीह। ओ भाँड़सँ अलग भात लेलनि। कबीर ई देखलनि, तखन पूछलनि नहि किएक। डिब्बाक भीतर दाल अलग छोटी कटोरीमे रखल गेल, ताकि बाटमे सभटा एकसंग नछितराए। ढकनी बन्द करैत सरिता कहलनि, “दवाइक पर्ची संग भोजनक समय सेहो लिखि दिअ।” कबीर पुछलनि, “अहाँ लिखि देब?” सरिता अपन चसमा खोजए लगलीह, जे सिरक ऊपर चढ़ल छल। कबीर कहला, “ओतहि अछि।” दुनू हलुक हँसला।

चसमा आँखिपर रखितहि सरिता पुरान कागदक पाछाँ दवाइक घड़ी लिखलीह। कागदक पहिल भागमे सिलाइक ग्राहकक नाप छल। कबीर ओकरा घुमाए लगलाह, मुदा सरिता कहलनि, “पाछाँ लिखल अछि; आगाँवला कामो बाकी अछि।” ओ एहि वाक्यक अर्थपर विचार नहि कएलीह। हाथक अक्षर किछु काँपैत छल। कबीर ध्यानसँ दवाइक नाम आ समय पढ़लनि, फेर पूछलनि जे पर्ची पर चिकित्सकक नब निर्देशमे किछु फेर-बदल

अछि की नहि। दुनू मिलि जाँचलनि। एतेक छोट काज करैत सरिताकेँ मोन पड़ल जे बेटी दवाइक सूचीमे अपना मायक अक्षरक बनावट सँ कखनो-कखनो उलझि जाइत छलीह। ओ बात कहि नहि सकलीह।

कबीर गेलापर घर फेर शान्त भऽ गेल। चन्द्रिका आओर नहि एलीह; हुनका अपन काम छल। सरिता बाहरी ओसारमे बैसि माटिक घैलक ठंढा पानि पीलीह। सामने गलीमे दू बालिका रस्सी घुमा कऽ खेलैत छलीह। एक बालिका दोसराकेँ झूठ-मूठ कहलक जे रस्सी ओकर हाथसँ छूटि गेल तँ खेल फेर आरम्भ। सरिता एहन आवाज नैराक बाल्यकालमे अनगिनत बेर सुनने छलीह। ओ बालिकासभकेँ भीतर बजा भात नहि परसलीह। भूखल छथि की नहि, पूछने बिना हुनका अपन शोकक थारीक भागी बनाबयब उचित नहि लागलनि। खेलक रस्सी घूमैत रहल; सरिताक आँखि ओहि चालिक पाछाँ-पाछाँ गेल।

साँझसँ पहिने सरिताक ग्राहकक घरसँ एक युवक सुपुर्दगीक जानकारी लेल आएल। ओ खाली कुरतीक काज पुछबाक चाहैत छल, मुदा दरबज्जापर पहुँचि नैराक मृत्युक समाचार याद कएलक। “हम बादमे आ जाइत छी,” कहि मुड़ए लगल। सरिता ओकरा रोकलनि। “काम एखन पूरा नहि भेल। जँ अहाँकेँ तिथि बदलबाक अछि तँ कहल जाइत अछि,” ओ कहलीह। युवक झट कहल, “नहि, अहाँ आराम करू।” सरिता सोचलीह—आराम करबाक निर्णय लेलनि तँ ओ स्वयं करतीह, ग्राहकक अपराधबोधसँ हुनकर काजक तिथि लिखल नहि जाएत। “परसू धरि नहि होएत,” ओ स्पष्ट कहलीह। “तकर बाद हम खबर करब। जे अग्रिम देल गेल अछि से बहीमे दर्ज अछि।” युवक सिर हिला चलि गेल। सरिता दरबज्जा बन्द करैत मशीन दिस नहि देखलीह।

मधु घाटसँ अबैत रुकलीह। हुनका लग जलनिकासी-समितिक दू सूचना छल—बाहा आ मुँहथरिक् कुछ भाग फेर चलनिहार, मुदा गोदामक विस्तार लग अवरोध कायम; अस्पतालक भीतरी चुआनक जाँच एखन अधूरा। “हम एहि सूचना लेल हस्ताक्षर नहि माँगि रहल छी,” मधु कहलीह। “केवल अहाँकेँ देबासँ पहिने पूछब चाहैत छी, आइ अहाँ एहि कागदक काज करए चाहब?” सरिता कागदक बन्द लिफाफा लेलनि। “आइ नहि,” ओ कहलीह। “काल्हि सेहो नहि भए सकैत अछि। मुदा सही तिथि आ देयक अलग पन्ना

सुरक्षित राखू।” मधु सहमति देलीह। ओ नैराक पुरान रजिस्टरक सन्दर्भमे कोनो नब अनुमान नहि कहलीह, न कागदकेँ रोएब बन्द करबाक उपाय बनौलीह।

मधु जएबाक पूर्व बरामदामे ठाढ़ भाँड़क दिस देखलीह। “किछु सहायता चाही?” ओ पुछलीह। “सिलाइ नहि, रसोइमे?” सरिता कने देरि बाद कहलीह, “एहि भातकेँ सुरक्षित रखबाक लेल दूटा साफ पात्र चाही। हमर बासनक एक ढकनी नीकसँ लागत नहि।” मधु घरसँ पात्र पठेबाक वचन देलीह, मुदा सरिता कहलीह, “आइ भात एतबे अछि, एकटा छोट डब्बा काफी होएत। जँ घरमे अतिरिक्त हो तँ दियौ; नव किनबाक आवश्यकता नहि।” मधु सहमति देलीह। एहि अनुरोधमे सरिताकेँ अपन शरीर थाकल बुझेलनि। ओ कने बेर पाटपर बैसि रहल छलीह। काज माँगब हुनका लेल सधैं सहज नहि छल; एहि बेर ओ काजक आकार स्वयं कहलनि।

थोरबे देरिमे मधुक छोटी बहिन एक साफ डिब्बा लऽ एलीह। ओ आँगनमे पएर पोछि रखि देलीह। “दीदी कहने छथि जे परसू धरि चाही तँ राखि लिअ,” ओ कहलीह। सरिता धन्यवाद देलीह। बालिका भीतर थारी दिस देखलीह, फेर पुछलीह, “नैरा दीदी सँ हम जे पाठशालाक लेख लिखबए कहने रही, आब ककरा देखाएब?” प्रश्न सरिताक साँस रोकि देलक। ओ तुरन्त नैराक स्थानपर ककरो नाम नहि देलीह। “तोहर लेख तोहर लग राख,” ओ कहलनि। “मैथिली दीदीसँ पढ़ाएबाक कहि सकैत छैं, जँ ओ राजी होथि। नैरा जे वचन देने छल, ओकरा फेर ककरो मुँहसँ पूरा भेल नहि कहब।” बालिका सिर हिलौलक। ओ लेखक पन्ना अपन झोरामे फेर रखि घर गेल।

साँझक रंग बदलैत छल। सरिता घरक ओहि कोनमे गेलीह जतय नैरा बहुते बेर बैसि मायक कामक आलोचना करैत छलीह। एक बेर नैरा कहलने छलीह जे ग्राहकक कपड़ामे सरिता फालतू कसीदाक सूत जोड़ि दैत छथि, जाहिसँ मेहनताना नहि बढ़ैत मुदा समय बढ़ैत अछि। सरिता रुष्ट भेल छलीह, “सुन्दर बनब खराब काज अछि?” नैरा उत्तर देने छलीह, “सुन्दर बनबाक अतिरिक्त समयक दाम माँगू।” दुनू बहसक बाद चूल्हापर बैसल छलीह आ भात खएने छलीह। बेटी एहि घरमे केवल अनुराग छोड़ि नहि गेल छलीह; सवाल, जिद्द, असुविधाजनक सलाह आ अपूर्ण मनमुटाव सेहो छोड़ि गेल छलीह। सरिता एखन हुनकर एक-एक बातक मूर्ति बनाबयब नहि चाहैत छलीह।

भातमे अब ठंढक उतरि रहल छल। सरिता कने पानी छिड़कि बचे भाग ठंढा भेला पर साफ पात्रमे राखलीह। थारीमे परसल नैराक हिस्सा एखन धरि ओहिना छल। ओ ध्यान देलीह जे ओकर ऊपर छोट कीड़ा घुमि रहल अछि। कीड़ाकेँ हाथसँ हटा देलीह, आ बहुत बेर थारी सामने बैसि रहल छलीह। जतेक बेर बैसलीह, ओहि बीच कोनो निर्णय लेलनि नहि। अन्तमे ओ थारीक भात उठा कऽ उपयोगी रहल भाग अलग कएलीह; जे दूषित भेल छल ओकरा खाएबाक बस्तु नहि मानलीह। ई करैत हुनका भीतर दुखक तेज लहरि उठल। थारीमे चाउर बचाएब आ बेटीकेँ छोड़ि देब—दुनूक बीच ओ कोनो समानता नहि बनौलीह। तखनहुँ हाथ काँपैत रहलनि।

चन्द्रिका फेर अएलीह तँ सरिता कहलीह, “कनेक भात राखने छी। एखन रातिक लेल मोन नहि अछि। अहाँक घरमे जे खायत ओकरा चाही तँ ले जाउ।” चन्द्रिका पुछलीह, “अहाँ लेल की रहत?” सरिता रखल पात्र देखौलीह। “हमर लेलो अछि। कबीर लेलो देलहुँ। बचे भाग केना राखब, से हम देखलहुँ।” चन्द्रिका भातकेँ कोनो मृत्युभोजक प्रसाद मानि नहियँ लेलनि; ओ कहलीह जे घरमे हुनकर वृद्धा सासु आज भोजन नहि बनौने छथि, हुनका किछु देब उचित रहत। सरिता स्वीकृति देलीह। बासन बदलैत दुनूक हाथ एक बेर छुलक। चन्द्रिका एतबे कहलीह, “डिब्बा काल्हि घुरा देब।” सरिता उत्तर देलीह, “जखन सुविधा।”

राति लागलाक बाद कबीरक छोट सन्देश आयल—सुभद्रा दवाइ लेने छथि, किछु भात खएने छथि, आ हुनकर उपचारक निगरानी जारी अछि। सरिता फोनक पर्दा पढ़ि एक बेर आँखि बन्द कएलीह। नैरा एहेन सन्देश लिखैत छलीह तँ ओकर अन्तमे ‘माय, अहाँ खएलहुँ?’ जोड़ि दैत छलीह; कबीर एखन नहि जोड़ने छलाह। सरिता चाहलीह जे उत्तरमे ओ पुछथि, “अहाँ की खएलहुँ?” मुदा पहिले अपन थारीक प्रश्न छल। ओ लिखलीह, “हम खएलहुँ। दवाइक समय फेर देखैत रहू। अहाँ सेहो किछु खा लिअ।” सन्देश पठा देने बाद ओ फोन उलटा कऽ रखलीह। दोसर उत्तरक प्रतीक्षामे पर्दा देखैत नहि रहलीह।

सिलाइक मशीनक पट्टीपर नैराक छोड़े एकटा लाल सूत अटकल छल। ई सूत बेटी कहिया छोड़ने छल, सरिता नहि जानैत छलीह। ओकरा नैराक अन्तिम निशान कहबाक कोनो आधार नहि छल। ओ सूत खींचि अलग कऽ माप-पुस्तिकामे राखलीह नहि; बस

मशीनक चक्का सँ हलुक छुडाइ कात रखि देलीह, ताकि काल्हि सुइया अटकि नहि जाए। फेर चूल्हाक राखि सम्हारलीह। भगवतीक फोटोक सामने जलाओल दिया झिरझिराए लगल। सरिता ओकरा तेल देब कि नहि, सोचलीह; तेल छल, मुदा हाथ थाकल छल। ओ दिया सुरक्षित बुझि ताहि ठाम छोड़ि अपन कोठरीमे गेलीह।

खटियापर बैसल सरिता आजक मात्राक हिसाब मनमे करैत छलीह। भाँड़मे उतेक चाउर डेलनि जतेक नैरा अएलापर डालैत छलीह। एक डिब्बा कबीर लऽ गेलाह, एक चन्द्रिका, छोट पात्रमे राति लेल बचल अछि। राशि मिलि गेल, मुदा घरक भीतर भोजन करएवला लोकक संख्या बदलि गेल छल। ओ कतहु लिखल नहि जे काल्हि सँ मात्रा घटा देब। एहि बातक निर्णय एखन अनावश्यक रूपेँ कठिन छल। राति लम्बा छल, मुदा लम्बाइ केवल दुःखक नहि—सुभद्राक दवाइ, अपूर्ण कुरती, ग्राहकक अग्रिम, चूल्हाक भीजल लकड़ी आ काल्हिक भूख सेहो ओकर भीतर छल।

भोरक कल्पना करैत सरिता देखलीह जे तेसर कटोरी फेर उठत। उठत की नहि, से ओ निश्चित नहि कहि सकलीह। अपन हाथपर ककरो तर्कक नियन्त्रण नहि चाहैत छलीह। बेटीक स्मृतिमे दोष, प्रेम, झुँझलाहट, हँसी आ असहमतिसभ अलग-अलग रहि सकैत छल; आज ओ ककरो छाँटि एकटा निश्चित अर्थ बनाबए नहि चाहलीह। राति भीतरसँ एक बेर चूल्हाक ढकनीक खटखट सुनलनि—खिड़कीसँ हवा घुसल छल। सरिता उठि ढकनी स्थिर कएलीह, उबलल भातक भाँड़ धो कऽ उलटा रखलीह आ सुतबाक लेल लौटीह। खाली भाँड़ काल्हि फेर भरल जा सकैत छल। काल्हिक मापक निर्णय ओ काल्हियेँ करतीह।

अध्याय १२७ • बचलक दोष

अनिरुद्धक पट्टीक बाहरी किनारमे सूखल खूनक पातर भूर रेखा छल। ओ बायाँ हाथसँ कुर्ताक बटन लगाबय चाहैत छलाह, मुदा दहिना बाँह कने घुमितहि घावक आसपास खिंचाव उठैत छल। कोठरीक खिड़की खुलल छल; बाहरसँ अस्पतालक अस्थायी कक्षमे लगाओल बर्तन धुएबाक आवाज आबि रहल छल। अनिरुद्ध बटन छोड़ि कुर्सीपर बैसि गेलाह। मेजपर रखल दोसर चिकित्सकक जाँच-पर्चीमे अगिला पट्टी देखेबाक समय लिखल छल। घड़ीसँ मिलौलनि तँ आधा घंटाक बाद निकलनाइ चाही छल। हुनका एतबा समयमे दवाईक सूची पढ़बाक आदत छल, मुदा आइ ओ अपन पर्ची देखिते नजरि हटा लैत छलाह।

दरबज्जापर दू बेर हलुक ठकठक भेल। कबीर एकटा कपड़ाक थैला आ छोट स्टीलक गिलास लऽ ठाढ़ छलाह। “सलमा कहने छलीह जे अहाँक फेर जाँच अछि,” ओ कहलनि। अनिरुद्ध पुछलनि, “अहाँ एतय किएक? घरमे सुभद्राक दवाईक समय नहि?” कबीर थैला नीचाँ रखलनि। “देने अएलहुँ। सरिता काल्हि भात देलनि, सुभद्रा किछु खएलीह। आब एहि ठामक गाड़ी कखन निकलत, से बुझबाक छल।” अनिरुद्ध हलुक सिर हिलौलनि। कबीर सामनेक कुर्सीपर बैसला नहि; पहिने पुछलनि जे पट्टी देखेबाक कागद आ आवश्यक सामानक थैला कतय अछि। ओ सभ किछु लऽ जएबाक प्रस्ताव नहि देलनि, केवल अनिरुद्ध जे स्वयं नउठा सकैत छलाह, तकरा रखबाक स्थान पुछलनि।

“आइ हमरा संग एतेक काज करब अहाँक आवश्यक नहि,” अनिरुद्ध कहला। कबीर उत्तर देलनि, “आवश्यकता के निर्धारित करत? अहाँक चिकित्सक कहलनि जे घाव देखेबाक अछि। गाड़ी कतय अछि, से हम पता कऽ सकैत छी।” अनिरुद्धक नजरि कबीरक मुँहपर ठहरल। नैराक मृत्युक बाद हुनका दुनू एकान्तमे पहिल बेर भेटल छलाह। ओ सोचैत छलाह जे कबीर पहिल प्रश्न एही बारेमे करताह—अस्पतालक पुरान पाँख किएक बन्द नहि भेल, नव गलियाराक किनार कोना ढहल, आ डॉक्टर ओहि राति कहाँ छलाह। मुदा कबीर खिड़कीक बाहर देखैत पुछलनि, “सीढ़ी उतरैत अहाँकें दर्द बढ़ैत अछि

की?” अनिरुद्ध स्वीकार कएलनि जे उतरबाक समय बाँह सन्तुलन देबए चाहैत अछि, तखन पीड़ा होइत अछि।

आँगनमे पहुँचि कबीर अस्पतालक अस्थायी वाहन-मेजपर नाम नहि लिखबौलनि, पहिने चालकक उपलब्धता पुछलनि। तुलसी ताजपुरियाक पालि-पंजीमे लिखल छल—सामान्य जाँचक यात्राक लेल एक छोट गाड़ी उपलब्ध होएत, मुदा आपात रोगीकेँ प्राथमिकता देल जाएत। कबीर एहि शर्तपर सहमत भेलाह। चालक हरिचरण कहलक, “डॉक्टर छथि तँ कियो अपन गाड़ी तुरन्त दऽ देत।” कबीर कहलनि, “हुनकर चोटक जाँच अछि, कोनो विशेषाधिकारक यात्रा नहि। जे गाड़ी निर्धारित अछि, ओहिमे जगह भेटत तँ जएब।” अनिरुद्ध ओहि बातपर चुप रहलाह; ओ जानैत छलाह जे अपन पेशाक नामपर रास्ता बदलनाइ कतेक सरल होइत छल।

गाड़ी आबएधरि ओ सभ बरामदाक बाहरी चबूतरापर बैसलाह। भितरका लाल घेराक पाछाँ ढहल सेवा-गलियाराक भाग देखाइत छल। मलबापर तिरपाल बाँधल गेल छल, मुदा तिरपालक नीचे सँ भीजल चूनाक रंग झाँकि रहल छल। अनिरुद्ध कहलनि, “हम ओहि दिन जमुनाक खाट लग आगाँ नहि बढितहुँ तँ हाथ नहि कटित। कदाचित डॉक्टरक हाथ कटला सँ देखभालक काज रुकल।” कबीर धीरे पुछलनि, “जमुनाक श्वासक उपचार रुकल छल?” “नहि, सलमा सम्भारलनि। दोसर चिकित्सक सेहो अएलाह।” “तँ जतेक सच अछि, ओतबे कहल जाए,” कबीर कहला। “आबाक समय अहाँ घायल भेलहुँ। एकरा नैरा आ उर्मिलाक मृत्युक उत्तर बुझि लिखब हमरा उचित नहि लगैत अछि।”

अनिरुद्धक मुँह कड़ा भऽ गेल। “हमर कारण मात्र एक घाव नहि। आपूर्तिक पहिल रिपोर्टमे उपलब्धता गलत लिखल गेल। पुरान पाँखक भीतरक चुआन सेहो हम देखैत रहलहुँ। हम जँ बेसी जोर दैतहुँ—” ओ बात अपूर्ण छोड़लनि। कबीर जमीनपर अपन जूताक किनारसँ अटकल गाद हटौलनि। “हमरो अनेक ‘जँ’ अछि,” कहलनि। “नैरा जखन राति मेजपर कापी लेने ठाढ़ छलीह, हम घर घुरबाक आग्रह कऽ सकैत छलहुँ। हुनका कहि सकैत छलहुँ जे दोसर आदमी काज करय। मुदा ओ अपन चुनाव स्वयं कएने छलीह। हम जे नहि कएलहुँ तकरा रोज उलटि देखैत छी। ई सोचब आ दुर्घटनाक समस्त कारण जानि लेब एक बात नहि।”

“अहाँ हमरा दोषसँ बचा रहल छी?” अनिरुद्ध पुछलनि। कबीर तुरन्त उत्तर नहि देलनि। गाड़ी-मेजपर चालकक आगमनक सूचना देल जा रहल छल। “नहि,” अन्ततः कहला, “जतेक अहाँक गलती सिद्ध अछि, ओहि विषयक कागदमे हम कटौती नहि करब। सरस्वती देवीक मृत्यु विषयक शैलजाक प्रश्न एखनहुँ अछि। ढहल भवनक जाँच सेहो बाकी अछि। मुदा हम एतय दोषक हिसाबमे अहाँक घाव जोड़ि नैराकें लौटा नहि सकब। आइ पट्टी देखेबाक अछि; हम ओहि काजमे संग आएल छी।” अनिरुद्ध अपन बाँहमे लगाओल पट्टीक गांठ देखलनि। एहि उत्तरमे क्षमा नहि छल, आ ओही कारण ओ सुनबाक योग्य बुझायल।

चिकित्सा-कक्ष दिस जएबाक छोट गाड़ीमे चालकक अतिरिक्त एक रोगी आ हुनकर बेटा बैसल छल। कबीर पाछाँक सीटपर अनिरुद्धक बगलमे बैसलाह। गाड़ी नब सड़कसँ मुड़ल तँ बाहर फूलोक घरक भीजल अनाजक कोठी देखाइत छल। एक कात पानि घटल छल, मुदा मुँहथरिब बन्द भाग लग फेर गाद जमा होएबाक निशान छल। अनिरुद्ध खिड़कीक काँचसँ बाहर देखैत रहलाह। “एतय पानि कम अछि,” ओ कहलनि। कबीर याद देलनि, “सुगनीक पंजीमे ई आंशिक निकास अछि। गोदामक विस्तारक लग मूल रुकावट एखनहुँ हटल नहि।” गाड़ीक भीतर बैसल वृद्ध रोगी कहलक, “पानि कम देखिते लोक कहत जे समस्या समाप्त।” केओ तकरा सुधारलक नहि; खिड़कीसँ देखल सीमित पानीक अर्थ सभ बुझैत छल।

नब उपचार-कक्षमे आजु अनिरुद्ध पर्ची देनिहार चिकित्सक नहि, पर्ची लऽ प्रतीक्षा करनिहार रोगी छलाह। नर्स नाम पुकारलीह। कबीर कुर्सीसँ उठलाह, मुदा अनिरुद्ध स्वयं भीतर गेलाह। कबीर दरबज्जाक बाहर रहलाह; चिकित्सकीय परीक्षणमे प्रवेशक अनुमति हुनका स्वतः नहि छल। नर्स पाछाँसँ आवाज देलीह, “साथी चाही तँ रोगी स्वयं कहताह।” अनिरुद्ध भीतरसँ कहला, “अहिना ठीक अछि। जँ बाहरसँ पानी मँगाएब तँ कहल जाए।” कबीर बैसि गेलाह। प्रतीक्षाक ओहि आधा घण्टामे हुनका नैराक पुरान छोट कापी निकालबाक मन भेल। ओ कापी साथ नहि अनने छलाह; ओकरा आज घरमे बन्द रहबाक निर्णय कएने छलाह।

एक बालक अपन दादाक परीक्षण पर्ची उलटा पकड़ने बैसल छल। पर्ची हाथसँ खसि गेल। कबीर ओकरा उठा देलनि। बालक पुछलक, “अहाँ केकरो लेल प्रतीक्षा करैत छी?” कबीर कहला, “एक घायल परिचितक।” बालकक दादा मुस्की कएलनि। “हमरो पयरमे चोट अछि। बालक हमर डंडा संभारेत अछि, मुदा घरमे चलब हमरे सीखब पड़त।” कबीरक मोनमे ई वाक्य देरि धरि रहल। दादाक पयर अपने बलपर चलबाक चाहैत छल; अनिरुद्धक हाथ फेर चिकित्सकीय काम करबाक चाहत। सहयोगक अर्थ एकर बदला अपन जीवित बाँचब नहि छल। बालक अपन दादाक छड़ी जमीनपर सीधा राखि फेर पर्ची पढ़बाक प्रयास करए लगल।

अनिरुद्ध बाहर अएलाह तँ पट्टी बदलल छल। दोसर चिकित्सक घावक अवस्था देखिकऽ अगिला समीक्षा लिखने छलाह आ बाँहपर भार दएबामे सावधानीक निर्देश देने छलाह। कबीर पर्ची पढ़बाक अनुमति पुछलनि। अनिरुद्ध स्वयं एक कात पकड़ि पढ़ौलनि—औषधिक निर्धारित समय, पट्टी सूखल रखबाक बात, असामान्य लक्षण भेल तँ तत्काल जानकारी देबाक निर्देश, आ पुनः जाँचक तिथि। “ई सभ हम अपन रोगीसँ कहैत छलहुँ,” अनिरुद्ध कहला। कबीर पुछलनि, “एखन अपने पालि करब?” अनिरुद्ध कने संकोचसँ हँ कहलनि। ओहि संकोचमे अपन देहपर दोसरक कौशलक भरोसा करबाक कठिनाई छल।

दवा-वितरणक खिड़कीपर उपलब्धताक दू सूची टाँगल छल—स्वीकृत भण्डारसँ वास्तविक सुपुर्द औषधि आ अनुपलब्ध वस्तुक माँग। कबीर अनिरुद्धक पर्ची अनुसार उपलब्ध सामग्री लेल कतारमे ठाढ़ भेला, मुदा ओकरा चिकित्सकक आदेश बदलबाक लेल अधिकारीसँ आग्रह नहि कएलनि। एक कर्मचारी डिब्बापर अस्थायी चिह्न देखौलक। अनिरुद्ध स्वयं पुछलनि, “ई खेप सत्यापित अछि?” कर्मचारी पञ्जीक क्रमाङ्क मिलौलनि, अनि सटीक स्रोत देखौलक। शंकास्पद सीलबन्द पेटी अलग बन्द रहबाक बात लिखल छल। अनिरुद्धक चेहरापर थोड़ेक थकान अएल—एकहि प्रश्न एतेक दुर्घटनाक बादो फेर पूछब आवश्यक छल। कबीर उत्तरक कागद सावधानीसँ मोड़ि थैलामे राखलनि।

फेर सड़कपर निकलिते कबीर पुछलनि, “दुपहरिया भोजनक कोन व्यवस्था?” अनिरुद्ध कहला जे घरमे किछु दलिया राखल अछि। “के बनाओत?” “हम बनबैत रहलहुँ।” “एहि

बाँहसँ भारी भाँड़ उठेब?” अनिरुद्ध हँसबाक प्रयत्न कएलनि। “डॉक्टरकेँ रोगीक घरक प्रश्न पूछबाक आदत अछि, उलटा सुनल कठिन।” कबीर अपन थैलामे रखल चन्द्रिकाक भेजल छोट डिब्बा देखैलनि—साधारण खिचड़ी, जकर मात्रा हुनका अनुमति बिना अनिरुद्धक नामपर लिखल नहि छल। “चन्द्रिका पुछने छलीह जे अहाँ लेब की नहि। हम कहलियनि, पुछि कऽ बतायब।” अनिरुद्ध पुछलनि जे भोजनक मूल्य के देत। कबीर कहला, “रसोइक पंजीमे जे दर अछि, ओही हिसाबे। सहायता कहि ककरो श्रम मुफ्त नहि मानब।”

अनिरुद्धक घरक छोट बरामदामे बहुते पुरान किताबक पन्नापर धूलि जमल छल। एक मेजपर सरस्वती देवीक पुरान उपचार-सम्बन्धी संशोधित प्रतिवेदनक नकल, दोसरमे भवन-जाँचक कागद राखल छल। अनिरुद्ध ओकरा सभ कात सरकाबए लगलाह। कबीर रोकलनि नहि। ओ केवल पुछलनि, “ई कागद सुरक्षित रहत ने?” “रहत। मूल प्रति अस्पतालमे अछि, एहि मे हमर टिप्पणीक नकल।” “तँ एकटा सुख्खा आवरणमे राखू” कबीर कहला। “पानि लागल तँ नव बहस उत्पन्न हएत जे कोन पाँति कहिया लिखल गेल।” अनिरुद्ध एक हाथसँ मोटा कागदक आवरण खोलबाक प्रयास कएलनि। कबीर ओकरा पकड़ि देलनि; भीतर रखबाक क्रम अनिरुद्ध स्वयं तय कएलनि।

खिचड़ी खाएत अनिरुद्ध पुछलनि, “अहाँक घरमे आज लोक के छथि?” कबीर कहला, “सुभद्रा छथि। औषधिक बाद सुतलीह। सरिता अपन सिलाइक काजक तिथि परसू धरि स्थगित कएलीह। हुनकर घरमे चाउरक भाँड़ काल्हि अधिक भरल छल।” अन्तिम वाक्य कहिते कबीरक आवाज हलुक थरथरायल। ओ सरिताक तेसर थारीक दृश्य अनिरुद्धकेँ पूरा कहलनि नहि; ई सरिताक घरक निजी क्षण छल। मुदा अनिरुद्ध बुझि गेलाह जे भोजनक प्रश्न कतेक घरमे शोकसँ जुड़ल अछि। ओ अपन कटोरीक आधा भाग छोड़ि देलनि, तखन कने बेर बाद फेर उठाकऽ खए लगलाह। भूख आ अपराधबोध एके गति सँ नहि चलैत छल।

“काल्हि नैराक किताबक आलमारी खोललहुँ,” कबीर कहलनि। “एक कापी देखलहुँ; ओकर आखिरी पन्नाक भीतर पानिक चिह्न छल। हम सोचलहुँ, जँ एहि राति ओकरा घरमे रोकने रहितहुँ...” अनिरुद्ध कहला, “हम नैराकेँ अधिकृत निरीक्षणक सूचना देलहुँ। हुनकर

काम आ हमरो निर्णयक बीच सम्बन्ध छल। मुदा दोषक क्रम एक व्यक्ति सँ पूरा नहि होएत।” कबीर एक क्षण हुनका देखलनि। “अहाँ हमरा सँ सहमति चाहैत छी की?” “नहि। शायद हम अपन आवाज सुनए चाहैत छी।” कबीर कटोरी नीचाँ रखलनि। “हम सुनि सकैत छी। मुदा जे तथ्य जाँचमे देब जरूरी अछि, से हम दुनू अपन आपसी दुःखक भरोसापर बन्द नहि करब।”

दुपहर बाद शैलजा दरबज्जापर अएलीह। हुनका सरस्वती देवीक मृत्युसम्बन्धी जाँचक अगिला सुनवाईक लिखित सूचना चाही छल; अस्पतालक काउण्टरपर अनिरुद्ध एहि नकलक रख-रखाव करैत छलाह। कबीर बाहर उठि जएबाक प्रस्ताव कएलनि, मुदा शैलजा कहलीह, “बात सार्वजनिक अभिलेखक अछि; हमरा एकान्त चाही तँ हम कहब।” अनिरुद्ध सुकखा आवरण खोललनि। शैलजा पन्नाक तारीख मिलौलीह। “अहाँक चोट सुनलहुँ,” ओ कहलीह, “जल्दी ठीक होउ। मुदा अहाँक पीड़ा सँ हमर सासुक मृत्यु विषयक प्रश्नक उत्तर नहि मिलत।” अनिरुद्धक चेहरापर क्षण भरि असहजता अएल। “हम एतबा दावा कएने नहि छी,” ओ कहला। “मुदा जँ हमर व्यवहार एहन लगल तँ सुधारब।”

शैलजा लिखित सूचना लेलनि। एक कोना पर पुरान प्रविष्टिमे औषधिक उपलब्धता सँ सम्बन्धित गलती सुधारबाक समय साफ दर्ज छल। “गलती मानलहुँ, ई काज भेल,” शैलजा कहलीह। “आब जाँच जे बात सिद्ध करत, ओहि दिन परिवारकें पूरा जानकारी भेटय। हमरा अपन सासुक रोग-इतिहास ककरो आत्मदण्डक कथा बनि नहि चाही।” कबीर ओ बात शान्ति सँ सुनलनि। शैलजा हुनका नैराक मृत्युपर शोक कहलनि, मुदा तकरा अगिला बातक प्रस्तावना नहि बनौलीह। ओ उठि दरबज्जा धरि गेलीह आ घुरि पुछलनि जे प्रमाणित प्रतिक नकलक शुल्क कतय जमा होएत। अनिरुद्ध निर्धारित मेजक पता देलनि; हुनकर प्रश्नक संग अधिकार सेहो चलि रहल छल।

ओहि समय देवी गोंड आँगनसँ गुजरि रहल छलीह। माथक छोट घाव पर पट्टी छल, हाथमे प्रशिक्षणक कापी। अनिरुद्ध पुछलनि जे हुनकर जाँच पूरा भेल की नहि। देवी कहलीह, “घाव देखाओलहुँ। परसू फेर जाएब। लोक हमरा दिनभरि पुछैत अछि, उर्मिला किएक नहि बचलीह आ हम कोना बचि गेलहुँ। हम ओहि घड़ीक सभ बात देखियो नहि

सकलहुँ।” कबीर हुनका बैसबाक आग्रह कएलनि, मुदा देवी कहलीह जे माय दुपहरक भोजनक प्रतीक्षामे छथि। कापीक एक पन्नापर ओ कामक सही घड़ी लिखने छलीह, मृत्यु-दृश्यक कल्पना नहि। “हम जे देखलहुँ, ओ कहब,” देवी कहलीह, “जे नहि देखलहुँ तकर उत्तर हमरा मुँहसँ किएक माँगल जाए?” अनिरुद्ध एतबा मात्र कहला, “अहाँक उत्तर पर्याप्त अछि।” देवी अपन बाट चलि गेलीह।

शैलजा जएबाक बाद अनिरुद्ध बहुत देर चुप रहलाह। “हमरा देखैत अछि जे हमर चोट ओकरा सभक नजरिमे कोनो मूल्य नहि रखैत,” ओ कहलनि। कबीर धीरे उत्तर देलनि, “हुनकर सासुक प्रश्नक उत्तरमे नहि। मुदा अहाँक इलाजमे रखैत अछि। एक व्यक्ति एके समय घावक रोगी सेहो भऽ सकैत अछि आ पुरान निर्णयक उत्तरदायी सेहो।” अनिरुद्ध पुछलनि, “अहाँ ई दूनू कोना अलग रखि पबैत छी?” कबीर हँसलाह नहि। “हम अलग रखि पबैत छी, एहन नहि। आब प्रयास करैत छी। नैराक मृत्यु भेल दिन हम सभ शब्दक अर्थ अलग करैत रहि गेलहुँ—सम्पर्क टूटल, बरामद भेल, पहिचान भेल। ओहि बेर रमा सिखौने छलीह जे जल्दी निर्णय सँ साँच छोट भऽ जाइत अछि।”

दुपहरक पाछाँ सलमा आ एक नब प्रशिक्षु चिकित्साकर्मी अनिरुद्धक घावक अवस्था देखबाक लेल नहि, उनकर स्वास्थ्य-सम्बन्धी नियत फोन-समीक्षा लेल सम्पर्क कएलनि। फोनमे सलमा पुछलीह जे निर्धारित औषधि भेटल, असामान्य पीड़ा अथवा रक्तस्राव तँ नहि, आ पुनः देखेबाक तिथि स्पष्ट अछि की। अनिरुद्ध उत्तर देलनि। ओ बीचमे जमुनाक रोग-रिपोर्ट पुछबाक छलाह, फेर थमकि कहलनि, “जाहि सूचना पर हमर अधिकार अछि, ओ लिखित हस्तान्तरणक माध्यमे पाछाँ लेब। एखन अहाँक पालि चलि रहल अछि।” सलमा कहलीह, “ठीक अछि। ओहि पालिमे नब चिकित्सक छथि। अहाँ अपन घावक देखभाल करू।” फोन राखलाक बाद अनिरुद्धक मुँहपर असन्तोष नहि, अपन भूमिका अस्थायी रूपसँ बदललाक थकान छल।

साँझ दिस कबीरक फोन पर सुभद्राक औषधिक समयक सन्देश चमकल। ओ उठि गेला। अनिरुद्ध कहलनि, “हमरा लेल अहाँ अपन मायक काज छोड़ब नहि।” “नहि छोड़ब,” कबीर उत्तर देलनि, “एही कारण हम एखन जा रहल छी।” ओ पर्चीमे लिखल अगिला जाँचक तारीख अलग छोट पन्नापर नकल कएलनि। “काल्हि दुपहर भोजन

पहुँचैबाक लोकक संग बात करब। परसू अस्पतालक सुरक्षित गाड़ीक समय मिलत तँ अहाँकेँ संग लऽ जाएब। गाड़ी नहि भेटत तँ दोसर व्यवस्था पूछब; अहाँ चोटक निर्देश बिना बदलि स्वयं पैदल नहि निकलू।” अनिरुद्ध पुछलनि, “ई कतेक दिन चलत?” कबीर कागद देखैत कहला, “जतेक दिन जाँचक आवश्यकता आ अहाँक सहमति रहत। चिरस्थायी उपकारक वचन नहि अछि।”

कबीरक जाने सँ पहिने अनिरुद्ध एक कागद उठौलनि। ओ अपन घायल भेला दिनक घटनाक नकल छल। “जँ अहाँ हमरा आ नैरा लेल सत्य चाहैत छी तँ एतय एक गलती सुधारू,” ओ कहलनि। कबीर चकित भेला। अनिरुद्ध पाँति देखौलनि—‘सुरक्षित बाटपर रोगी निकालैत चोट’। “ओ बाट ओहि घड़ी जाँचल गेल छल, मुदा ढीला पल्ला सुरक्षित नहि छल। एहि कारण ‘सुरक्षित’ शब्दक बदला ‘तखन स्वीकृत अस्थायी बाट’ चाही।” कबीर कागद देखलनि। “अहाँक रिपोर्ट, अहाँ सुधारू। मुदा बदलल पाँति पर तिथि आ हस्ताक्षर रहय।” अनिरुद्ध सुधारक अलग टिप्पणीक पृष्ठ बनौलनि, मूल पन्ना नहि खुरचलनि। दू घण्टाक बात दू अलग स्याहीमे बचल रहल।

बरामदासँ उतरैत कबीर देखलनि जे सामनेक घरक बूढ़ी स्त्री पानीक घैल उठए चाहैत छलीह। ओ पुछलनि, “हम घैल दरबज्जा धरि राखि दिअ?” स्त्री हँ कहलीह। कबीर घैल उठा लेलनि, मुदा दरबज्जाक भीतर नहि गोलाह—आगू बासन रखबाक ठाम हुनका नहि मालूम छल। बूढ़ी अपन जगह देखौलीह। छोट सहयोगक एहि क्रममे ककरो दुःखक चर्चा नहि भेल। घैल रखि ओ घर दिश चलि गोलाह। बाटमे एक स्थानपर मलबाक गाड़ीक पहिया सँ उड़ल धूर हुनकर चप्पलपर पड़ल। ओ धूर झारलनि, आ एकाएक मोन पड़ल जे नैरा एहन धूर पर चलैत कापी झोरा भीतर उँच रखैत छलीह। स्मृति ठिठकाकऽ फेर संग चलल।

घर पहुँचि कबीर सुभद्राक खाट लग बैसलाह। औषधि निश्चित समय पर छल; सुभद्रा स्वयं पानि पीलनि, फेर बेटाक मुँह देखैत पुछलनि, “अहाँ कतय गेल रही?” कबीर कहलनि, “अनिरुद्धक पट्टी देखेबाक गेल रही।” सुभद्रा पुछलनि, “हुनका चोट बेसी अछि?” “चिकित्सक जाँच कएलनि। फेर देखेबाक अछि।” किछु बेर बाद सुभद्रा कहलीह, “लोक बाँचि गोलाक बाद जे मुँह बनबैत अछि, ओकरा हम बुझे नहि पबैत छी। बाँचब

चाहल गलत भेल की?” कबीर मायक हाथक नील पड़ल नस देखैत रहलाह। “नहि,” ओ कहलनि। “मुदा जे नहि बचल, ओकर स्मृति बाँचल लोकक सामने लगातार अबैत अछि।” सुभद्रा उत्तर देलीह, “तखन बाँचल हाथसँ जे काज आज सम्भव अछि, ओ कर। बाकी प्रश्न काल्हि फेर पूछिह।”

कबीर खिड़की लग नैराक लिखल किरानाक पुरान सूची देखलनि। नमक, सरिसों तेल, किताबक गोंद—तीन चीजपर चिह्न छल। ओ आज किछु नहि किनने छलाह। “काल्हि बजार जाएब?” सुभद्रा पुछलीह। “जाएब,” कबीर कहला। “मुदा पहिने अहाँक औषधिक नब पर्ची देखब।” सुभद्रा मुस्कुरा देलीह। “तोहर पिता जेना नुन बिसरि जाइत छलाह, तोहरो से आदत छौ।” कबीरक आँखि भीजल, मुदा ओ मुस्की रोकलनि नहि। मृत्युक बाद घरक एहन सामान्य ठिठोली हुनका अपराध जकाँ लगैत छल, तखन ओ किछु देर ओकरा सेहो जीबाक अनुमति देलनि।

रातिमे अनिरुद्ध एकल घरमे मेजपर बैसलाह। अनधिकृत रूपसँ काममे घुसबाक आग्रहक बदला ओ अपन इलाजक पर्ची खोललनि। चादरक नीचाँ हाथ ठेठ सीधा रखबाक चेष्टा कएलनि; ओहि क्रममे दर्द भेल तँ सन्तुलन बदल लेलनि। कबीरक लिखल जाँच-तिथि मेजक कात छल। अनिरुद्ध ओहि पन्नाक बगलमे तीनटा अलग कागद रखलनि—व्यक्तिगत उपचार, अस्पतालक आपूर्ति-सुधार, भवन-सुरक्षाक खुलल प्रश्न। कोनो कागद दोसरकाँ निरस्त नहि करैत छल। ओ एक टिप्पणी लिखलनि जे जाँच-दल चाहत तँ चोट लगलाक घड़ीक अपन प्रत्यक्ष बयान देताह, मुदा चोटक उपस्थिति ककरो मृत्यु कारणक पूर्ण उत्तर नहि अछि।

थोड़े देरमे सलमाक ओरसँ संदेश आयल—नव सुरक्षित कक्षमे जखनसँ रोगीसभ स्थानान्तरित भेल छथि, उपचार-पंजीक अलग पृष्ठ बनि गेल अछि; जमुना देवीक निगरानी जारी अछि। अनिरुद्ध संदेश पढ़ि उत्तरमे केवल आवश्यक स्वीकृति देलनि। ओ प्रत्यक्ष चिकित्सकीय आदेश एहि माध्यमसँ नहि देलनि। हाथक पट्टीक कात हलुक खुजली उठल; ओ खोलि देखबाक इच्छा रोकलनि, कारण उपचारक समय निर्धारित छल। पहिले कखनो अपन रोगीसँ ओ एहन प्रश्न पुछने छलाह—दवाई खएलाक बाद कोना लागल? आज हुनका स्वयं समयक अन्तरमे रहबाक अभ्यास करए पड़त।

ओही राति अस्थायी महिला-परामर्श कक्षक बाहर एक अनजान स्त्री कागद मोड़ि बैसल छलीह। हुनकर नाम चम्पा छल, मुदा स्वागत-मेजपर ओ अपन नाम जोर सँ पुकारल जाए, से नहि चाहैत छलीह। एक कर्मचारी पुछलक जे मामला पुलिसक अछि की उपचारक। चम्पा कहलीह, “हम पहिने महिला चिकित्साकर्मीसँ अलग बात करब। बाकी निर्णय फेर करब।” कर्मचारी सलमाक पालिमे राखल निजी परामर्शक समय बतौलक, आ लोकसभक सामने विवरण नहि माँगलक। कबीर एहि दृश्यसँ दूर अपन घरक बाटपर छलाह; हुनका चम्पाक विषयमे किछु जानकारी नहि छल। चम्पाक प्रतीक्षाक अपन गति छल, आ ओकरा ककरो शोकक कथाक तुरन्त उत्तर बनबाक आवश्यकता नहि छल।

अगिला भोर कबीर दवाइक खिड़कीक आगाँ नहि, घरक बासनक कात ठाढ़ छलाह। सुभद्राक लेल दलिया चढ़ल छल, आ चन्द्रिकाकेँ भोजनक निर्धारित देयक भेजबाक छोट लिफाफा तैयार कएल गेल। अनिरुद्धक घरमे भेजबाक लेल ओ छोट पर्ची लिखलनि —“आइ दुपहर भेजल भोजन स्वीकार करब की नहि, पहिने फोनपर कहू; परसूक गाड़ी लेल तुलसीसँ समय मिलत।” एहि पर्चीमे शोकक कोनो भारी वाक्य नहि छल। कबीर एक बेर नैराक नाम मनमे लेलनि। ओ अपन जीवित रहबाक कारणक फैसला नहि कऽ सकलाह, मुदा आजक पहिल कामक समय, अनुमति आ जिम्मेवारी लिखि सकलाह। ओ चूल्हाक आँच घटौने बिना आँगनसँ बाहर नहि निकललाह।

अध्याय १२८ • चम्पाक उपचार

परामर्श-कक्षक टेबुलपर राखल काँचक गिलासक किनार पर पानिक एकटा छोट बूँद अटकल छल। चम्पा अँगुरीसँ ओकरा हटएबाक चेष्टा कएलनि, मुदा ओहि अँगुरीकेँ मोड़िते कलाईमे पीड़ा उठल। गिलास ओहिना रहल। बाहर नाम पुकारबाक क्रम चलि रहल छल —स्वागत-मेजक युवती परदाक ओहि कात आबि धीरे कहलनि, “अहाँक बारी आयल अछि। हम नाम नहि पुकारलहुँ।” चम्पा हुनका देखलीह। पिछिला राति ओ जे बात कहने छलीह, से ककरो याद रहल, ई छोट तथ्य हुनका भीतर प्रवेश करबाक साहस देलक।

कक्षक भीतरक कुर्सीक एकटा पएर समतल जमीनपर पूरा नहि पड़ैत छल। सलमा शेख ओहि कुर्सीकेँ बदलाबए कहलीह आ चम्पाकेँ दोसर कुर्सी चुनबाक अवसर देलनि। मुदा चम्पाकेँ बैसए देलाक बाद ओ कागदसँ नजर उठा कऽ पुछलीह, “पहिने कहल जाउ, एखन सभसँ बेसी की कष्ट अछि?” सलमा प्रश्नकेँ जल्दीसँ एके रोगक नाम नहि देलीह। ओ पुछलीह जे चम्पा एतय एकल बात करब चाहैत छथि की संग ककरो बजा सकैत छथि। चम्पा कहलनि, “एखन एकले।”

परदाक पाछाँसँ जुत्ताक आवाज आयल। सलमा बाहरक सहायककेँ कहलीह जे अगिला रोगी लेल दोसर प्रतीक्षाक ठाम देखथि, आ एखन भीतर कोनो लोक बिना सूचना नहि आबथि। कोन विवरण उपचार-पंजीमे जरूरी होएत, आ जकरा चम्पा नहि कहब चाहथि से कहबाक दबाव नहि रहत। चम्पा पुछलनि, “हम जे कहब, ओ आश्रयक सूचीमे जाएत?” सलमा सिर हिलौलीह। “आश्रय भोजन आ रहबाक व्यवस्था देखत; अहाँक उपचारक निजी कागद ओकर सार्वजनिक सूची नहि। जे जानकारी देब आवश्यक होएत, पहिने अहाँसँ बात करब।”

चम्पाक नीला अँचरा कुर्सीक बाँहपर सरकि गेल छल। ओ कलाई पर चढ़ल पुरान काँचक चूड़ी एक-एक कऽ खोलए लगलीह। दू चूड़ी अटकल। सलमा पुछलीह जे ओ मदद चाहैत छथि की नहि। चम्पा अपन हाथ आगाँ कएलनि, फेर तुरन्त पाछाँ खींचि लेलनि। “नहि, हम स्वयं खोलब,” ओ कहलीह। थोड़े प्रयासक बाद चूड़ी उतरि गेल। कलाईक ऊपर नील पड़ल चमड़ी देखाइत छल। चम्पा नजर ओतयसँ धुमा लेलनि। पिछिला साँझ,

कोठरीक पुरान सामानक रसीद लेबए गेल समय, दुआरक लग विवाद भेल छल। ओ एतबा कहलीह। ककर आवाज छल, कतेक लोक छल, किनका हाथ पड़ल—एहि तीन प्रश्नक उत्तर दैत हुनकर ओठ सूखि गेल।

“पानि पिअब?” सलमा पुछलीह। चम्पा हँ कहलीह। सलमा प्रतीक्षा कएलनि। पीड़ितक उपचारक नामपर कियो हुनकर बयानक पूरा कथा सुनबाक अधिकार प्राप्त नहि कएलक, ई चम्पाकेँ धीरे-धीरे बुझाए लगल। ओ कहलनि, “हमरा पकड़ि रोकल गेल। एक धक्का लागल। हम जमीनपर पूरा नहि खसलहुँ, मुदा दीवालसँ टकराएलहुँ। एतबा एखन कहि सकैत छी।” सलमा कारण, लक्षण आ अनुमान अलग-अलग लिखलीह। ओ नहि पुछलीह जे चम्पा ओहि ठाम किएक गेल छलीह, किएक एकल गेल छलीह, अथवा पहिने ककरो खबर किएक नहि देलनि। कलाईक चोट देखबाक अनुमति पुनः लेलनि।

जाँचक क्रममे सलमा चम्पासँ पीड़ाक जगह, अँगुरी चलएबाक कठिनाइ, झुनझुनी आ शरीरक दोसर कष्टक विषयमे पुछलीह। ओ कहलीह जे पूरा जाँचक आधारपर उपचार आ आवश्यकतानुसार अतिरिक्त परीक्षण तय होएत; केवल नील दाग देखिकऽ भीतरक सभ चोटक अनुमान नहि कएल जा सकैत। चम्पा दहिना हाथक अँगुरी मोड़लनि। पसरबाक समय दर्द बढ़ल। सलमा आवश्यक जाँचक पर्ची बनौलीह, आराम आ देखभालक निर्देश लिखलीह, आ कहलीह जे जाँ पीड़ा बढ़ए, हाथ सुन्न होए अथवा नव लक्षण देखाए तँ निर्धारित तिथिक प्रतीक्षा बिना चिकित्साकर्मीकेँ खबर दिअ। चम्पा पर्ची पढ़बाक लेल समय माँगलनि। सलमा कलम रखि देलीह।

“एहि पन्नामे ‘हिंसा’ लिखल अछि?” चम्पा पुछलनि। सलमा कहलीह, “अहाँ जे घटना बतौलहुँ, ओकर चिकित्सकीय रूपेँ प्रासंगिक अंश दर्ज अछि। आरोपितक नाम एखन नहि लिखल, कारण अहाँ नाम नहि देने छी। हमरा जे देखा गेल, से अलग लिखल अछि।” चम्पा पुछलनि जे जाँ ओ नाम नहि कहतीह तँ उपचार भेटत की नहि। सलमा उत्तर देलीह, “उपचार ओहि शर्तपर रोकल नहि जाएत।” ओ पढ़लनि—दहिना कलाई, पीड़ा, सूजन, स्वयं कहल घटनाक संक्षिप्त विवरण। मनक भयक लेल ओहि कागदमे कोनो एक वाक्य पूरा जगह नहि दैत छल।

चम्पा कहलनि जे हुनका राति दुआरक चरमराहत सुनिते उठि बैसबाक पड़ैत अछि। मायक खाँसी सुनि दौड़ैत छथि; परदा हिलैत अछि तँ बुझैत छथि कियो फेर भीतर आबि जाएत। सलमा हुनका एहन भयक अनुभवक बारेमे विस्तार देबाक अनुमति माँगलीह आ मानसिक स्वास्थ्यक परामर्शक विकल्प बतौलीह। “सभ बात पहिल दिन कहब जरूरी नहि,” ओ जोड़लीह, “मुदा नींद आ भय सेहो इलाजक विषय छथि।” चम्पा पुछलनि, “ओहि कक्षमे फेर ओहिना सब कहल जाएत?” सलमा कहलीह जे दोसर परामर्शकर्मी जतेक जानकारी चाहताह तकर सीमा स्पष्ट कएल जा सकैत अछि, आ चम्पा स्वयं निर्णय लेतीह जे कखन आ किनका समक्ष विस्तार द्यौ।

बाहरक बरामदामे परातमे राखल दवाईक डिबिया लऽ दू कर्मचारी गुजरल। नव कक्षपर पानि-निकासीक अस्थायी नाली छल, किन्तु पुरान अस्पताल-पाँख लगक ढहल हिस्सा रस्सीसँ बन्द रहल। एक कर्मचारीक चप्पल भीजल जमीनपर फिसलल; ओ सम्हरि गेल आ तत्क्षण फर्श पोंछबाक लोककें खबर देलक। सलमा बाहर झाँकि देखलीह। “ओहि पट्टीसँ रोगी नहि जाएत,” ओ कहलीह। चम्पा पुछलनि जे एखन जे दवाई देल जाएत से अस्पतालमे उपलब्ध अछि की कागदपर मात्र स्वीकृत। सलमा पर्ची संग वास्तविक आपूर्तिक मिलान कएलनि। एक औषधि उपलब्ध छल, दोसर लेल चिकित्सकीय परामर्शमे विकल्प तय करबाक पड़ैत। ककरो नामपर झूठ उपलब्धता नहि लिखल गेल।

चम्पाक मन फेर पिछिला नगरसभामे पहुँचि गेल। ओतय हुनकर फोनक सन्देशक कटल पाँति आवाजसँ पढ़ि सुनाओल गेल छल। एक आदमीक हँसी ओ एखनहुँ पहिचानैत छलीह, मुदा ओहि सभामे के मूल प्रति चोरी कएलक, से नहि जानैत छलीह। “हम जे कहब से फेर कियो पढ़ि देत तँ?” ओ पुछलीह। सलमा छोट अलमारीक ताला देखौलीह, पंजीक सीमित पहुँचक व्यवस्था बतौलीह, आ ईहो कहलीह जे कागदक सुरक्षा लेल जिम्मेदारी बनैत अछि, मुदा कोनो व्यवस्थाकें जादूक अभेद्य दीवाल कहि नहि सकैत छी। ओ उत्तर फेर पुछलीह—“नकल के लेत?” सलमा प्रक्रिया देखौलीह, सार्वजनिक सभा नहि।

रुहानी बाहरक प्रतीक्षाक कात बैसल छलीह। हुनकर घड़ी बन्द भऽ गेल छल, तँ ओ खिड़कीसँ धूपक रेखा देखैत समय बुझबाक चेष्टा करैत छलीह। चम्पाक मायकें ओ कहने

छलीह जे चम्पा जाँच लेल गेल छथि; ककरो सम्मुख घावक विवरण नहि खोलने छलीह। रुखसानाक रसोइसँ एकटा छोट डब्बामे भोजन आयल छल, मुदा चम्पाक नामवाली थारी नहि सजाओल गेल छल। रुहानी भोजनक भुगतानक पर्ची अपन झोरामे रखलीह। चम्पाक इलाजक तारीखक खबर हुनका चाही छल, कारण आश्रयक गाड़ी संग समय मिलाबय पड़त। तथापि ओ डॉक्टरक दरबज्जापर जा कऽ रिपोर्ट नहि माँगलीह। कतेक बेर सहयोगक अर्थ प्रतीक्षा सेहो होइत अछि, ओ ई बात अपन अभ्याससँ सीखने छलीह।

भीतर चम्पा सलमासँ पुछलनि, “हम काल्हि कामपर जाएब तँ?” ओ धुलाई आ कपड़ा तह करबाक काज करैत छलीह; मायक औषधिक रकम आ किरायाक पुरान बकाया अलग छल। सलमा घावक अवस्थाक अनुसार कतबा हाथक उपयोग सुरक्षित मानल जाएत, ओ तय करबाक लेल पुनः जाँचक समय दैत कहलीह जे अस्थायी रूपेँ भारी गीला कपड़ा उठेबाक काजसँ दूर रहब नीक होएत। “काम नहि कएलहुँ तँ दाम कटत,” चम्पा कहलीह। सलमा एहन बातक उपाय अस्पतालक दवाईसँ नहि देबाक छल। ओ कामक सीमाक लिखित चिकित्सकीय सलाह देबाक प्रस्ताव रखलीह, जाहिमे घटनाक अनावश्यक निजी विवरण नहि रहत। चम्पा ओहि पन्ना लेल सहमति देलीह।

कामक पर्ची बनैत समय चम्पा अचानक हँसि देलीह। सलमा चकित भेलीह। “कागदक एहि शहरमे हाथो अपना लेल अलग प्रमाण माँगैत अछि,” चम्पा कहलीह। “काल्हि मालिक कहत जे कपड़ा के उठाओत; आइ हमरा हाथ कहैत अछि जे नहि उठाओ।” सलमा मुस्कुरा देलीह, मुदा पर्चीक शब्द बदलि नहि देलीह। ओतय स्पष्ट काज-सीमा आ पुनः देखेबाक तिथि लिखल गेल। चम्पा चाहलीह तँ एही नकल काम देनिहार लग जाएत; पूरा उपचार-पंजी नहि। सलमा पुछलीह जे चम्पा अपन माय लेल किछु अलग औषधिक सूचना चाहैत छथि की नहि। चम्पा कहलीह, “मायक औषधि पहिने जेकाँ चलत; आइ ओकर कागद हमरा सन्दूकमे सुरक्षित अछि।”

परामर्शक अन्तिमे सलमा कहलनि जे यदि चम्पा हिंसाक सम्बन्धमे औपचारिक बयान देबाक निर्णय लेतीह तँ सहायता उपलब्ध कराओल जा सकैत अछि; ककरो दोष निश्चित कएल बिना उचित प्रक्रिया, सुरक्षा आ उपलब्ध विकल्प समझाएल जा सकैत अछि। चम्पा तुरन्त पुछलनि, “आइ एतहि कोनो लोक आबि हमरा प्रश्न पुछत?” सलमा

कहलीह, “हम अहाँसँ बिना बतौने एहन बैठक निर्धारित नहि कएने छी। जे कोनो आवश्यक प्रक्रिया वा अपवाद लागू होएत, ओकर जानकारी स्पष्ट देब।” चम्पा अपन पल्लू ठीक कएलनि। “आज हम जाँच पूरा करब। बयान लेल दोसर दिन चाही। ओहि दिनो जँ मन बदलल तँ?” सलमा कहलीह, “अहाँक प्रश्न सुने बिना हम तकर उत्तर बन्द नहि करब।”

चम्पा पर्ची सम्हारि उठलीह तँ कलाईक वेदना फेर उठल। एहि बेर ओ बैसि गेलीह आ थोड़े देरि रुकबाक निर्णय स्वयं कएलनि। बाहर रुहानीक झोरामे राखल भोजन ठंडा भऽ रहल छल; भीतर एखन बैसल रहब आवश्यक छल। चम्पा कहलनि, “हुनका आबि कहि दिअ जे हम जाँचक बाद निकलि रहल छी। चोटक बात नहि।” सलमा कर्मचारीक माध्यमसँ केवल एहि अनुरोधक खबर देलनि। रुहानीकँ चम्पाक नाम नहि पुकारि भीतर बजाओल गेल। कतेक बेर एकटा सूचना पाठ बनेबाक क्रममे ओकर भीतरक अधिकार बदलि जाइत अछि; आइ सूचना ओतबे बाहर गेल जतेक चम्पा चाहने छलीह।

भवनक बाहरक पीपल गाछक नीचाँ रुहानी एकटा चादर बिछा कऽ बैसलीह। चम्पा बाहर अएलीह तँ रुहानी पहिने पुछलनि, “भोजन खाएब?” चम्पा माथ हिलौलीह। भोजन खोलल गेल। चाउरक बीच दू टुकड़ा लौकी छल। चम्पा चम्मच पकड़ि नहि सकलीह तँ बाँया हाथसँ कौर बनौलीह। रुहानी हुनकर हाथ दिस देखबाक बदला पानिक बोतल खोलि दऽ देलीह। किछु बेर दुनू चुप रहल। तखन रुहानी कहलीह, “गाड़ी काल्हि फेर चाही तँ कहिह। आश्रयक खर्चमे कतेक लिखब, से पहिने तय करब।” चम्पा उत्तर देलीह, “गाड़ी चाही सकैत अछि। मुदा हमरा नामसँ पूरा चिकित्सा खर्चक सूची सभापर नहि लगायब।”

रुहानीक कपारपर हलुक सिलवट पड़ल। “पहिनेक बेर हम रजिस्टरमे ‘महिला-उपचार’ लिखने छलहुँ, ओहिसँ कियो नाम बुझि सकल?” चम्पा कहलीह, “नाम नहि लिखलो तँ ओहि दिन जे एकल स्त्री गेल छलीह, लोक जोड़ि सकैत अछि।” रुहानी एतबा सुनि अपन झोरासँ रजिस्टर निकाललीह, मुदा चम्पाकँ ओतहि ओकरा भरए नहि कहलीह। “हमर हिसाबमे भोजनक थारी, गाड़ीक भाड़ा आ दवाईक मद अछि। पहिचान अलग कसरी सुरक्षित रखब, से सभक संग पूछब,” ओ कहलीह। चम्पा उत्तर देलीह, “सभक संग पूछबासँ पहिने जेकर नाम अछि, ओकरा संग पूछू।” रुहानी रजिस्टर बन्द कऽ देलीह।

घर घुरबाक बाटमे नगरभवनक दीवालपर दू नव पोस्टर लागल छल। एक पर अस्पतालक बचावकर्मीसभक तस्वीर, दोसर पर आश्रयक राहत-सामग्रीक गिनती। तस्वीरमे नैराक मुँह नहि छल; ओहि मृत्युक बाद नैराक नाम कतेक कागदमे चढ़ल, चम्पा नहि जानैत छलीह। रुहानी पोस्टर दिस देखैत पुछलीह जे अगिला सभामे उपचार-भाड़ाक हिसाबक उदाहरण चाही। चम्पा कहलीह, “रकम देखाबए लेल हमरा घाव देखएबाक की जरूरत?” रुहानी जवाब नहि देलीह। ओ पोस्टरपर छापल कुल गिनती पढ़लीह आ कहलीह, “जँ गिनतीक भीतर व्यक्तिक पूरा जीवन रखब, तँ हिसाबो गलत होएत।” चम्पा ओहि वाक्यपर सहमति अथवा प्रशंसा व्यक्त नहि कएलनि; केवल अपन चाल धीमा कएलनि।

आश्रयक मुख्य दुआरपर रुखसाना चूल्हिक धुआँ बाहर निकलबाक लेल बाँसक पंखा घुमा रहल छलीह। चम्पाकेँ देखिते ओ पुछलीह, “भोजनमे नोन ठीक छल?” पाछाँसँ एक नव सहयोगी पुछलक जे चम्पा कतय चोट खएने छथि। रुहानी तुरन्त बात काटबाक लेल मुँह खोललीह, मुदा चम्पा स्वयं उत्तर देलीह, “हम इलाज लेल गेल रही। बाकी बात एखन नहि कहब।” सहयोगी लज्जित भेल, फेर पुछलक जे भोजन पहुँचेबाक घड़ी ठीक रहल की नहि। चम्पा एहि प्रश्नक उत्तर सहजता सँ देलीह। एके आँगनमे दू प्रश्नक अनुमति अलग भऽ सकैत छल।

चम्पाक माय ओसारमे धूप पकड़ि बैसलीह। पुरान चस्माक एक डंडी सूतसँ बान्हल छल। “एतेक देरि?” ओ पुछलीह। चम्पा हुनकर कात बैसि कलाईक पट्टीक ऊपर अँचरा रखलीह, मुदा छुपेबाक जोर नहि कएलनि। “जाँचमे समय लगल,” ओ कहलीह। माय पुछलनि, “पीड़ा घटल?” चम्पा कहलीह, “एखन नहि। दवाई आ फेर देखेबाक तिथि भेटल अछि।” माय आगाँ हाथ बढ़ौलीह; चम्पा अपन बाँया हाथ हुनकर हाथमे रखलीह। “ककरो संग झगड़ा भेल?” माय धीरे पुछलीह। चम्पा बहुत देरि तक दुनूक हाथ देखैत रहलीह। “जे बात हम कहि सकब, कहब। एखन अहाँ अपन खाँसीक दवाई लिअ,” ओ उत्तर देलीह।

माय कनेक खिसिआ गेलीह। “हम अहाँक माय छी कि नहि? हमरा सभ बातक खबर चाही।” चम्पा ओहि स्वरमे पुरान अपनापन सुनलीह। “अहाँ हमर माय छी। मुदा हम चोट खएलाक बादो अहाँक बेटी छी, कोनो खुलल कागद नहि,” ओ कहलीह। माय चश्मा

उतारि कपड़ासँ पोंछए लगलीह। किछु बेर बाद कहलीह, “हम अज्ञान रहब तँ डराइब।” चम्पा उत्तर देलीह, “हम सेहो डराइत छी। मुदा कहबाक घड़ी हम चुनब। अहाँ हमरा आज राति अपन कात बैसए दिअ।” माय माथ हिलौलीह। दुनूक बीच भय आ निकटता एक संग बैसल रहल।

दुपहरि बाद आश्रयक कोठरीमे रहबाक व्यवस्था लेल छोट बैठक राखल गेल। रुहानी नगरक आपूर्ति-पंजीमे जतेक थारी, चादर आ औषधि आयल तकर लेखा उपलब्ध रहत। मुदा ककरो चोट, सम्बन्ध, यात्रा अथवा पुलिसक समक्ष सम्भावित बयान सार्वजनिक मद नहि बनत। एक सदस्य कहलक, “जँ कियो झूठ सहायताक लाभ लैत हो?” रुहानी उत्तर देलीह, “वस्तु आ रुपयाक प्राप्ति जाँचू, दावाक नियम पढ़ू। जकरा चिकित्सा चाही ओकर रहस्यक हाट नहि लगाउ।” चम्पा पाछूक चौकीपर बैसल छलीह। हुनकर नाम उठल नहि, मुदा ओ पुछलनि, “नियम लिखितमे कखन भेटत?” बैठकक सचिव कलम उठा लेलनि।

कार्यवृत्त बनैत समय चम्पा फेर अपन पुरान अनुभव याद कएलनि। कखनो सचिवक कलमक एकटा काटल शब्दसँ रुहानीक वाक्य उलटा अर्थमे फैलल छल। एहि बेर ओ लिखल पाँति स्वयं पढ़बाक माँग कएलनि। पन्नामे प्रारम्भमे छल—‘रोगीसभक गोपनीय सूचीक सामान्य प्रदर्शन टारल जाए’। चम्पा पुछलनि, “टारल जाए—माने काल्हि फेर लगा सकैत छी?” रुहानी सचिव दिस देखलीह। सचिव शब्द बदलि लिखलक—‘व्यक्तिगत सहमति वा विधिसम्मत आधार बिना उपचार-विवरण सार्वजनिक नहि कएल जाए’। चम्पा पुछलनि जे आश्रयक सदस्यसभकेँ कागदक सीमा बुझाओल जाएत की नहि। एखन चम्पाक नाम सार्वजनिक वाक्यमे नहि चढ़ल।

एहि बीच गेटक बाहर एक आदमी भारी आवाजमे रुहानीकेँ बजबैत छल। ओकर हाथमे चम्पाक पुरान किराया-विवादक नोटिसक छायाप्रति छल। “एहि स्त्रीकेँ कोन कक्ष देल अछि?” ओ पुछलक। गेटक पहरेदार ओकरा भीतर प्रवेश नहि देलक। रुहानी बाहर पहुँचलि तँ आदमी कहलक जे मकानक सामानक गिनती करबाक अछि आ चम्पा सँ तुरन्त बात चाही। रुहानी कहलीह, “नोटिस जमा करबाक व्यवस्था अछि। एतय रहनिहारक निजी कक्षक जानकारी अहाँकेँ एहि आधारपर नहि देल जा सकैत।” आदमी

कहलक जे ओ मालिकक प्रतिनिधि अछि। रुहानी लिखित अधिकार आ सम्पर्कक उचित पद्धति माँगलीह। ओ के छल, तकर पुष्टि एखन नहि भेल।

चम्पाकेँ एहि आगन्तुकक खबर देल गेल, मुदा ओकरा सीधा सम्मुख ठाढ़ होएबाक आदेश नहि देल गेल। ओ खिड़कीसँ बाहरक आदमीकेँ देखलीह। पिछला साँझ जे घटना भेल छल, ओकर संग एहि व्यक्तिक सम्बन्ध हुनका निश्चित नहि मालूम छल। ओ पहचानक अनुमान करबाक बदला एक कागदपर लिखलीह—समय, हाथमे कागद, कोन बात कहल, के उपस्थित छल। रुहानी पुछलनि जे ई विवरण सामुदायिक पंजीमे राखू? चम्पा उत्तर देलीह, “आश्रयक दुआरपर जे भेल, से लिखू। हमर चोटक अनुमान ताहि पन्नामे नहि।” आदमीक देल प्रति अलग लिफाफामे रखल गेल; मूलक सत्यता जाँचबाक छल।

आँगनमे कपड़ा सुखबैत एक स्त्री चम्पाकेँ पुछलीह जे ई ओही लोक अछि की नहि जे हुनका धक्का देने छल। चम्पाक छातीमे धकधकी तेज भेल। “हम एखन नाम नहि कहि सकैत छी,” ओ कहलीह। स्त्री आग्रह कएलनि, “नाम कहब तँ सभ मिलि कऽ बचाएब।” चम्पा हुनका देखलीह। बचावक ई उत्साह अपन ठाम साँच छल, मुदा अनुमानसँ आरोप लगबैत लोकसमूह जुटल तँ चम्पाक जाँच आ सुरक्षा दुनू बिगड़ि सकैत छल। “जखन हम गवाही देब, जे देखलहुँ से कहब,” ओ कहलीह। “अहाँ मदद करए चाहैत छी तँ बिना खबर हमर फोटो अथवा ठाम ककरो नहि पठाउ।” स्त्री अपन हाथक फोन जेबमे राखि देलीह।

साँझ होइत-होइत चम्पाक हाथक पीड़ा फेर जागल। ओ चिकित्सकीय पर्चीक अनुसार अपन देखभाल कएलनि आ लिखल चेतावनी पढ़ि लेलीह। मायक भोजन बनएबाक समय रुखसाना चूल्हिक काजमे सहयोग देलीह। चम्पा पहिले जेकाँ गीला बासन उठेबाक प्रयत्न करैत छलीह; रुखसाना कहलीह, “अहाँ आज नोन देखू भारी देग हम उतारब।” चम्पा कहलीह, “ई काजक मजदूरी कतय दर्ज होएत?” रुखसाना हँसि कहलीह, “हमर खाता मे। अहाँक एहसानमे नहि।” चम्पा चावल गनए लागलीह। सहानुभूतिक बहाना बना कऽ ककरो श्रम मुफ्त लेबाक पुरान आदत रुखसानाकेँ स्वीकार नहि छल।

भोजनक पाछाँ चम्पा अपन लोहेक सन्दूक खोललीह। ओकर भीतर किरायाक रसीद, मायक चिकित्सा-पत्र, मजदूरीक बकाया, नगरसभाक पुरान आवेदन आ निजी सन्देशक

शिकायतक प्राप्ति अलग-अलग कपड़ामे बान्हल छल। आइक उपचार-पर्ची ओ मायक कागदमे नहि रखलीह। पहिने खाली लिफाफा निकालि ओकरा ऊपर छोट अक्षरमे लिखलीह—‘हमर उपचार’। दोसर कागदपर ओ अपन लेल तीन प्रश्न लिखलीह: बयान देबाक समय कोन अधिकार आ विकल्प अछि; जे व्यक्ति सँ भय अछि ओकरा नजिक आएबासँ रोकबाक सुरक्षित उपाय कोन; जँ कामक दिन छुटत तँ कमाइ आ दवाईक खर्च केना सम्हरब। एहि प्रश्नसभक उत्तर एके दफ्तरमे नहि भेटत।

रुहानी रातिक पहरा बाँटि रहल छलीह। चम्पा हुनका बजा कऽ कहलीह जे अगिला जाँचक दिन गाड़ी चाही, मुदा मायक समक्ष घावक विवरण बिना सहमति नहि खोलल जाए। “हम अहाँकेँ एक बात कहि सकैत छी,” ओ जोड़लीह, “हमरा घटनाक सम्भावित गवाही देबाक अछि, मुदा ककरा विरुद्ध आ कखन, से एखन तय नहि।” रुहानी उत्तर देलीह, “अहाँ चाही तँ प्रक्रिया बुझबाक लेल सहायता-कक्षसँ समय माँगि सकैत छी। हम अहाँक बदला बयान नहि लिखब।” चम्पा कहलीह, “समय माँगू। हमर नाम तखनहि दिअ जखन कार्यालयक न्यूनतम जानकारीक जरूरत स्पष्ट हो।” रुहानी ओहि सीमाक लिखित नकल अपना लेल बनौलीह, चम्पाक उपचार-पर्ची नहि माँगलीह।

बाहर पानि फेर चढ़ि रहल छल। पुरान अस्पताल-पाँखक घेराबन्दी अखनहुँ कायम छल, आ गोदामक विस्तार लगक बाहामुँहक अवरोध पूरा नहि हटाओल गेल छल। रसोइक पाछाँ नालीक पानि दीवालक ओर धकेलि रहल छल; रुखसाना पहरेदारकेँ बाल्टी आ सुरक्षित आवागमनक खबर देलीह। ई संकट चम्पाक निजी घावसँ अलग छल, मुदा दवाई लेल दोसर बेर एतय आबि सकब की नहि, तकर उत्तर एहि बाटक अवस्थापर निर्भर छल। रुहानी नव वर्षाक कारण काल्हिक गाड़ीक समय फेर जाँचबाक निश्चय कएलनि। आशा छल जे गाड़ी भेटत; लिखल प्रमाण केवल एतबा छल जे आजक बाट पाछाँ धरि चलल।

माय सूतबाक पहिने चम्पाकेँ बजौलीह। “तोहर ओ हाट घुमबाक बात याद अछि,” ओ कहलीह। “जलेबी खाएब कहने रहल।” चम्पा हँसए चाहलीह, मुदा होंठ मात्र हिलल। कतेक दिन पहिने फोनक ओही निजी बात सार्वजनिक कएल गेल छल, तखनसँ साधारण इच्छा सेहो हुनका जोखिम सन बुझाइत छल। माय कहलीह, “हम ठीक होएब तँ तोरा संग जाएब।” चम्पा उत्तर देलीह, “अहाँक खाँसी कम हो तखन। आ हम जखन चाहब, तखन।”

माय कहलीह, “हमरा सेहो पूछिह।” एहि बेर दुनू हलुक हँसलीह। चम्पा जानैत छलीह जे चोटक दुख एहि हँसीसँ नहि हटत; तथापि हँसी हुनकर अपन छल।

रातिक अन्तिम पहर ओ अपन फोन खोललीह। परिचित व्यक्तिक पुरान सन्देश एखनहुँ ओतहि छल—दिन ठीक अछि की नहि। चम्पा बहुत बेर ओहि प्रश्नक उत्तर नहि देलनि। फेर लिखलीह, “आज उपचार भेल। हम सुरक्षित ठाम पर छी, मुदा किछु बात एखन नहि कहि सकब। कखनो भेटबाक मन होएत तँ हम स्वयं समय कहब।” ओ सन्देश पठा देलीह। एहि बेर फोनक पर्दा तुरन्त बन्द नहि कएलनि। अपन मर्जी सँ लिखल एहि छोट वाक्यक अर्थ ओ स्वयं बुझैत छलीह। कियो ओकरा पढ़ि सभामे सुनाओत की नहि, तकर सम्पूर्ण भरोसा एखन सम्भव नहि छल; तइयो सम्पर्क करबाक अधिकार छोड़ब हुनका स्वीकार नहि छल।

बिछौनापर पड़लाक बाद चम्पा कलाईक पीड़ा देखैत घड़ीक सूई गनलीह। परामर्शक अगिला तिथि कागदमे छल; बयानक सम्भावित समय ओ अभी खाली छोड़ने छलीह। दुआर लग रखल सन्दूकपर दू अलग लिफाफा छल—‘हमर उपचार’ आ ‘जे हम देखलहुँ’। दोसरमे कोनो आरोपितक नाम एखन लिखल नहि छल। मुदा आइ चिकित्साकर्मी ककरो कथा छीनने बिना हुनकर हाथ जाँचने छलीह; रुहानी अनुमति बिना निजी पर्ची नहि माँगने छलीह; माय अन्तमे सँग बैसबाक निवेदन मानने छलीह। भोर होएत तँ फेर कई निर्णय करबाक छल। एहि राति ओ एकटा निर्णय अपने हाथमे रखने छलीह—पहिने उपचार, फेर अपन समयपर गवाही।

अध्याय १२९ • रुहानीक सूची

रुखसानाक हाथसँ चाउरक मापक कटोरी खसि पड़ल तँ किछु दाना भीजल ओसारपर छिटकि गेल। ओ झुकि कऽ दाना समेटबाक बदला पहिने चूल्हाक आगि कम कएलीह। आश्रयक मुख्य फाटक लग एक युवक बाँसक पट्टीमे सफेद कागद ठोकबाक प्रयत्न करैत छल। पहिल खूँटी दीवालक गील भागमे नहि पैसल; दोसर मारिते कागदक माथ फाटि गेल। ऊपर मोट अक्षरमे लिखल छल—‘आश्रयक लाभार्थीसभक नामावली’। रुखसाना बाहर आबि ओकर हथौड़ी पकड़ि रोकलीह। “ई सूची के लिखौलक?” युवक उत्तर देलक, “नगर राहत-कक्षसँ आदेश अछि। जे खाएत, ओकर नाम लोक देखत।” रुखसाना फाटकक भीतर बैसल रुहानीकेँ आवाज देलीह। फाटल कागद एखन एके खूँटीपर लटक रहल छल, मुदा आधा दर्जन लोक पहिनहि ओकरा पढ़ए लागल छल।

रुहानी पुरान चाभीक गुच्छा लऽ बाहर अएलीह। ओ युवकसँ कागद उतारि देबाक आग्रह कएलनि। ओ कहलक जे राहतक हिसाबमे गड़बड़ीक शिकायत भेल अछि; नाम नहि टाँगल गेल तँ अगिला खेपक अनाज अटकत। रुहानी कागद अपन हाथमे लेलीह। सूचीमे चम्पाक नामक संग कक्षक संख्या छल, एक वृद्धाक सम्बन्धमे ‘बीमार’ लिखल छल आ दू बच्चाक मायक नाम बिना अनुमति चढ़ाओल गेल छल। कागदक तिथिसँ बुझाईत छल जे ई पुरान उपस्थिति-पंजीक नकल अछि, वर्तमान गणनाक प्रमाण नहि। ओ पूछलीह, “एहि प्रति पर ककर सही अछि?” युवक अपना जेबमे मोड़ल पर्ची देखौलक। पर्चीमे ‘सत्यापन लेल विवरण उपलब्ध कराउ’ लिखल छल; सार्वजनिक प्रदर्शनक आदेश नहि छल।

फाटक लग भीड़ बढ़ए लागल। चम्पा अपन मायक पानिक गिलास लऽ ओसारपर पहुँचलि तँ कागदक निचुल पाँति देखिते ठमकि गेलीह। पिछिला दिन चिकित्सा-कक्षमे ओ अपन नाम बिना सहमति बजाओल नहि जाए, से कहने छलीह। एतय कक्षक संग नाम लिखल देखिकऽ हुनका पहिलुक निजी सन्देश सार्वजनिक भेलाक घड़ी याद आबि गेल। ओ भीड़सँ कागद छीनबाक बदला रुहानीसँ पुछलीह, “ई कखनसँ एतय लागल?” रुहानी घड़ी देखिकऽ कहलीह, “हम देखलहुँ तखन उतरबौलहुँ। पहिने कतेक लोक पढ़लक, से

नहि कहि सकब।” चम्पा कहलनि, “जतेक देखल गेल अछि, ततेक पहिने सँ जानि लेब उचित अछि। कागदकेँ चुपचाप गायब करबासँ बात समाप्त नहि होएत।”

जुबैदा पुरान विद्यालय-कक्षक मेजपर भीजल कागद सुखएबाक लेल दूटा खाली ईट रखलीह। रुखसाना अनाजक खाता, तेलक पावती आ रसोइमे काम करनिहार सभक भुगतान-पर्ची अनलीह। रुहानी फाटकपर लागल कागदकेँ उलटा राखि ओकर प्रतिक तिथि आ प्राप्तिक स्रोत लिखलीह। “आइ नामक सूची बनत,” ओ कहलीह, “मुदा पहिने तय करब जे कोन सूची ककरा लेल अछि। एहि खाता सँ ककरो पेट भरल देखब सम्भव अछि; एहि खाता सँ ओकर रात्रिक कक्ष देखब जरूरी नहि।” जुबैदा पुछलीह, “राहत कार्यालय वाकयँ सभ नाम मँगत तँ?” रुहानी कहलीह, “कार्यालयक अधिकृत जाँच आ गल्लीमे टाँगल कागद एक बात नहि। वास्तविक माँग बुझि कऽ उत्तर देब।”

नगरक सहायक लेखापाल विनोद साव दिन चढ़लापर आयल। हाथमे हाजिरीक नीला रजिस्टर छल, जकरा बीच एक नन्हा गुलाबी टोकन दबाओल छल। ओ फाटकपर कागद नहि भेटल देखिकऽ कहलक, “एहि आश्रय लेल जे बोरा बाँटल गेल अछि, ओकर गिनती नगरसभामे पूछल जा रहल अछि। दू ठाम एके आदमीक नाम रहबाक आरोप अछि। हम कतबा लोक रहैत अछि से जानब नहि तँ हस्ताक्षर केना करब?” रुहानी ओकरा भीतर बजौलीह, मुदा निजी कक्षदिस नहि। रुखसाना बतौलीह जे आइकेँ चाउरक प्राप्ति, काल्हिक खिचड़ीक बचत आ मजदूरीक भुगतान अलग पन्नामे अछि। विनोद ध्यानसँ देखलक। ओकर प्रश्न वास्तविक छल; ओकर हाथमे बनल उपाय जरूरी नहि जे सही हो।

विनोद खाली पन्नापर तीन खाना बनौलक—नाम, कक्ष, लाभ। “एहिमे सभ भरि दिअ,” ओ कहलक। चम्पा, जे दूरसँ सुनि रहल छलीह, आगाँ आबि पूछलीह, “जँ ई कागद मेजपर राखल रहत तँ कियो फोटो लऽ सकत की?” विनोद कनेक असहज भेल। “हम फाइलमे रखब।” चम्पा फेर पुछलीह, “जे दिन अहाँ नहि रहब, दोसर कर्मचारी एकरा केना खोलत?” विनोद कहलक, “ई तँ कार्यालयक नियमपर निर्भर।” रुहानी एहि उत्तरकेँ लिखि लेलीह। “तँ नियमक प्रति देल जाए,” ओ बजलीह। “हिसाबक जाँच मे सहयोग करब; मुदा कक्ष आ परिवारक निजी स्थितिक खुलल पंजी बनायबासँ पहिने अधिकार आ सुरक्षा दुनू देखब।”

रुखसाना आगाँ एकटा गिनती-पन्ना पसारलीह। आश्रयमे राति बास करनिहार संख्या, दुपहरिक भोजन लेनिहार संख्या आ रास्तामे रहि गेल परिवार लेल बाँटल बन्द भोजन अलग-अलग लिखल छल। “काल्हि भोजन तीस थारी गेल,” ओ कहलीह, “मुदा राति बास करनिहार तीस नहि छल। जँ तीस नाम एतय रात्रिक सूचीमे लिखब तँ हम स्वयं झूठ लिखब।” विनोद चस्मा उतारलक। रुखसाना दोसर पन्ना खोललीह—ककरा मजदूरी देल गेल, ककरा बाँकी अछि, कतेक तेल खर्च भेल। “जाँच करबाक अछि तँ चाउर, थारी आ पावती गनू। व्यक्ति पूछबाक जरूरत पड़त तँ ओकरा खबर देब आ जाँचक सीमा बुझाएब।”

सभा करबाक खबर आँगनमे पहुँचि गेल। किछु लोक मानि रहल छल जे नाम प्रकाशित करबासँ दोहरी सहायता रुकत; दोसर सभ डराइत छल जे ठेकाना सार्वजनिक भेल तँ घरक पुरान विवाद पाछाँ आबि जाएत। रुहानी सभकेँ एक संग हाथ उठा कऽ फैसला करबासँ रोकलीह। “ककर नाम छपए, ई दोसरक बहुमतसँ तय नहि होएत,” ओ कहलीह। “पहिने सभकेँ अलग बुझाओल जाएत जे प्रकाशन कोन कागदमे, कतेक दिन लेल आ कोन बात धरि सीमित रहत। ‘नहि’ कहबासँ भोजन, औषधि वा छत नहि घटत।” एक वृद्ध पुरुष पुछलनि, “जँ हम पढ़ि नहि सकैत छी?” जुबैदा कहलनि, “हम पढ़ि सुनाएब, मुदा अहाँक उत्तर हमरा मुँहमे नहि रखब।”

सहमतिक पर्ची बनएबाक काज चम्पाकेँ देबाक प्रस्ताव आएल। चम्पा तुरन्त मना नहि कएलीह, मुदा पूछलीह, “हम पर्ची लिखब, कि ओकरा भरबाक जिम्मा सेहो लेब?” रुहानी कहलीह, “लिखबाक भाषापर अहाँक नजर चाही; व्यक्तिगत उत्तर हम वा कोनो दोसर चुनल सहयोगी एकान्तमे लऽ सकैत छी।” चम्पा कागदपर लिखल पहिल वाक्य पढ़लीह—‘हम अपन नाम प्रकाशित करबाक अनुमति दैत छी।’ ओ कलम रोकलीह। “ई एकमात्र उत्तर भेल। अनुमति नहि देब, नाम बदलि देब, वा बादमे वापस लेब—एहि सभक ठाम कतय?” कागद फेर बनल। चम्पा अपन कलाईक पट्टी सम्हारैत एतेकमे विराम लेलीह; लिखबाक सहयोग हुनकर उपचारक बदला नहि छल।

प्रथम पर्ची मंजरीकेँ देल गेल। ओ आश्रय छोड़ि दोसर कमरामे रहबाक निर्णय कएने छलीह, मुदा सिलाइकक पुरान मजदूरीक पावती एखन बाकी छल। “हमर नाम ककरा

देखेबाक अछि?” ओ पुछलीह। रुहानी कहलीह, “जँ अहाँ चाही तँ सार्वजनिक वार्षिक लेखामे ‘स्वेच्छासँ नाम प्रकाशित करनिहार सहायता-प्राप्त सदस्य’ रूपमे। नहि चाही तँ कुल संख्या रहत। सरकारी जाँच लेल अधिकृत पंजी अलग अछि।” मंजरी कहलीह, “हम अपन सिलाइकक कामक परिचय देब। आश्रयक पुरान कक्ष, नव भाड़ाक ठाम आ अस्थायी सहायता—एहि तीनूकेँ एक्के परिचयमे नहि लिखब।” हुनका लेल खाली परिचय-वाक्य छोड़ल गेल, जकर अन्तिम शब्द ओ स्वयं लिखतीह।

दोसर पर्ची चम्पाक मायक लग पहुँचल। वृद्धा चश्मा लगाकऽ पन्ना उलटैत कहलीह, “हमर नाम छपैत तँ हमर बेटीक नाम सेहो लोक बुझि जाएत। ई केना रोकब?” रुहानी कहलीह, “सम्भव अछि जे दू जानकारी मिला कऽ कियो अनुमान लगा ले। एकर पूरा भरोसा हम नहि दऽ सकैत छी।” वृद्धा बहुत देरि धूपमे बैसलीह। “तँ हमर नामो नहि,” ओ कहलीह। “मुदा हमर नाम रहबे नहि तँ दवाई देल गेल से कहब केना?” रुखसाना बतौलीह जे चिकित्सा-सहायताक कुल खर्च आ अधिकृत प्राप्ति सत्यापित राखल जाएत; व्यक्तिगत नाम भेंटघाटक दीवालपर लिखब जरूरी नहि। वृद्धा राहतक गिनतीमे अपन हिस्सा रखबाक निर्णय कएलीह, सार्वजनिक नाम बिना।

आँगनक दोसर कात बैसल शबनम अपन छोट बच्चाक टुटल चप्पल बन्हैत छलीह। दान-पत्रक लेल एक फोटोग्राफर आएबाक बात सुनि ओ तुरन्त पुछलीह, “फोटोमे ओकरे चेहरा किएक चाही?” विनोद कहलक जे नगरसभाक रिपोर्टमे कखनो प्रमाण लेल तस्वीर माँगल जाइत अछि। शबनम कहलीह, “खाट, चादर, पानीक घड़ा देखाउ। बच्चाक चेहरा बिना पूछने नहि।” रुहानी बालककेँ कोनो हस्ताक्षर-पर्चीक विषय बनबए लेल आनब नहि चाहलीह। बालकक सुविधा आ संरक्षकक सहमति दुनूक सीमा लिखल गेल; प्रचारक फोटो लेल कोनो स्वीकृति एखन नहि देल गेल। बच्चा चप्पल पहिरि बाहर दौड़ि गेल; ओकरा एहि बहसक पूरा अर्थ बुझबाक आवश्यकता नहि छल।

मेजपर परसल चा ठंढा भऽ रहल छल। जुबैदा देखलीह जे विनोद प्रत्येक पर्ची लेल अपन नीला रजिस्टर खोलि रहल अछि। “अहाँ हमर एकटा प्रश्नक उत्तर दिअ,” ओ कहलीह, “एहिमे ‘नहि’ कहनिहारक नाम लिखब की?” विनोद सोचलक। “अधिकारी पुछि सकैत छथि कतेक लोक अस्वीकार केलक।” जुबैदा कहलीह, “संख्या लिखू।

सार्वजनिक नाम नहि देबाक निर्णय फेर एक सूचीमे नामक सङ्केत बनि जाए, तँ सहमति कागदक खेल भेल।” विनोद आपत्ति कएलक जे निरीक्षणक प्रमाण चाही। अन्तमे तय भेल जे उत्तरक पर्ची सीलबन्द निजी फाइलमे रहत, केवल अधिकृत निरीक्षणमे नियमसहित देखल जा सकत; सार्वजनिक आँकड़ामे ‘अनुमति’, ‘अनुमति नहि’, ‘उत्तर शेष’क संख्या मात्र रहत।

दुपहरिया तारा बिनौट आश्रयक पाछूआ नाली देखबाक लेल अएलीह। भीजल दीवालक नीचाँ पानि धीमे-धीमे चढ़ि रहल छल; गोदामक विस्तार लगक मुँहथरि एखनहुँ पूरा खोलल नहि गेल छल। ओ रुखसानाकेँ कहलीह जे काल्हिक जाँचधरि रसोइक भारी देग ओहि दीवालसँ दूर रखू। विनोद तुरन्त पुछलक, “एहि कक्षमे के सभ रहैत अछि? खतरा-सूची बनत।” तारा उत्तर देलीह, “खतराक नापमे दीवाल, जलचिह्न, बाट आ भार लिखू। जे लोककेँ हटएबाक सूचना चाही, ओकरा सीधा पहुँचाबय लेल सुरक्षित सम्पर्क चाही। चेतावनी-पट्टपर ककरो निजी इतिहास नहि।” रुहानीक समक्ष नामक सूची आ सुरक्षा-सूचना अलग रूपमे फेर उपस्थित भेल।

रुहानी जुबैदा आ रुखसानाकेँ संग लऽ कऽ प्रत्येक कक्षमे सूचना देबाक क्रम तय कएलीह। बंद दरबज्जापर बालकक नाम बजा-बजा कऽ लोक नहि जुटाओल गेल। आगि आ पानिक आपात स्थितिमे ककरा कोन रास्तासँ बाहर निकालब, तकर अधिकृत परिचर्या-पन्ना साझा चाभीक बक्ससँ अलग, सीमित पहुँचवला खाममे रखल गेल। फाटकक सार्वजनिक पट्टीपर केवल सुरक्षित निकास, रसोइक समय, सहायता-कक्षक सम्पर्क आ आगि लागलापर बजएबाक घंटीक स्थान लिखल गेल। रुहानी स्वयं ओ पट्टी पढ़लीह। पहिल बेर हुनका बुझायल जे सभसँ उपयोगी सार्वजनिक सूचीमे ककरो व्यक्तिगत नाम होएब जरूरी नहि।

ओहि बीच पाछूक दरबज्जासँ एक महिला अएलीह, जकर झोरामे दू पुरान पावती छल। ओ कहलीह जे हुनकर पति कखनो एतय भोजन लएने छलाह, मुदा राति बास नहि कएने छलाह। नगरक अस्थायी रजिस्टरमे ओहि भोजनक कारण हुनकर नाम बास-प्राप्त लोकक कात चढ़ि गेल अछि। “लोक कहैत अछि जे हम दू आश्रयक अनाज लैत छी,” ओ कहलीह। विनोदक चेहरा कड़ा भेल, मुदा ओ तुरन्त आरोप नहि दोहरौलक। महिला दुनू

तिथि देखौलीह। एक पावतीपर भोजनक ठाम छल, दोसरपर मजदूरीक भुगतान। एके नाम अलग काम लेल लिखल गेल छल। रुहानी कहलीह, “एहि दू कागदक मिलान कार्यालयक जाँचमे जाएत। एहिसँ सभ शिकायत झूठ साबित नहि भऽ जाइत, मुदा एतय एकटा नाम दोहरा देखलाक अर्थ स्पष्ट भेल।”

विनोद ओहि कागदसभक जाँच-पर्ची लिखबाक लेल कहलक, मुदा महिला अपन पतिक निजी यात्रा-ठाम छोड़बाक लेल तैयार नहि छलीह। “ओ बहुत दिनसँ काम खोजैत छथि,” ओ बतौलीह। “हिसाब जाँचबाक अछि तँ तिथि आ पावती जाँचू। ओ कखन कतय सूतलाह, से हमरा घरक भीतरक बात अछि।” विनोद लिखलक—‘भोजन-वितरण आ मजदूरी भुगतानक दोसर प्रविष्टि; स्थिति सत्यापनाधीन’। ओकर कलमक निब भीजल कागदमे अटकल गेल। रुखसाना लोटासँ दू बूँद पानि दऽ निब साफ करौलीह। ओ हँसि कहलीह, “खाताक स्याही जाम भेल तँ ककरो नाम जोड़ि दी, एहन नियम नहि बनाउ।” विनोद अनचाहे मुस्की दऽ देलक।

चम्पाकेँ सहमतिक नकल देखाओल गेल। ओ अपन नाम सार्वजनिक आश्रयवासी-सूचीमे देबाक अनुमति नहि देलीह, मुदा पुछलीह जे उपचारक गोपनीयतापर आयोजित खुला बैठकमे कखनो वक्ता बनबाक निर्णय लऽ सकतीह की नहि। रुहानी कहलीह, “ओ दोसर अनुमति होएत, ओहि दिनक विषय आ ओहि दिनक श्रोता लेल।” चम्पा अपन पर्चीपर लिखलीह—‘आश्रयमे रहबाक ठाम प्रकाशित नहि’। ‘भविष्यमे सार्वजनिक रूपेँ बोलब’क कात खाली छोड़ि देलीह। माय एहि खाली जगहकेँ देखिकऽ कहलीह, “एकरा भरि देब तखन जखन मन होअय।” चम्पा पहिल बेर महसूस कएलीह जे खाली खाना सेहो कखनो निर्णयक सम्मान होइत अछि।

रुखसाना अपन नाम रसोइक भुगतानक सार्वजनिक खातामे देबाक अनुमति दऽ देलीह। ओ कहलीह, “हम रसोइ चलबैत छी, हमर मजदूरी आ कामक घड़ी ककरो जाँचसँ बाहर नहि हो। मुदा हम कोन राति कोन खाटपर सूतलहुँ, से अहाँक मजदूरी-खाताक काम नहि।” जुबैदा फाटकक साझा चाभीक उत्तरदायित्वक सूचीमे अपन नाम चाहलीह, कारण आपातकालीन घड़ीमे ओकरा चिन्हल आवश्यक छल। ओ एहि सूचीपर सही करैत एकटा शर्त जोड़लीह—फाटकक कुंजीक नामसँ निजी कोठरी खोलबाक अनुमति नहि मिलत।

रुहानी बुझलीह जे एके व्यक्ति अपन काजक एक परिचय सार्वजनिक राखि, जीवनक दोसर हिस्सा गोपनीय राखि सकैत छथि; एहि भेदकें हाथसँ लागू करब कागद लिखबासँ कठिन छल।

मंजरी अपन प्रस्तावित परिचय-वाक्य ले कऽ अएलीह—‘मंजरी, सिलाइक आ मरम्मत-काज; भुगतान लेल सम्पर्क आश्रयक कार्यालय द्वारा’। हुनकर नव घरक पता अनुपस्थित छल। ओ कहलीह, “नाम छपलासँ शायद ग्राहक भेटत। मुदा हमर सिलाइकक दाम घोषित करबाक अधिकार हमर रहत।” चम्पा वाक्य पढ़लीह आ पुछलीह, “ग्राहक जँ आश्रयक लोकक रूपमे अहाँकें दया देखाकऽ कम दाम देत तँ?” मंजरी हलुक कटाक्षसँ कहलीह, “तखन हम पूरा दाम कहब। एहि लेल नाम छपबैत छी, दयाक प्रमाण लेल नहि।” ओ सार्वजनिक व्यावसायिक परिचयक सीमा लिखि सही कएलीह। ओहि पन्नाकें आश्रयवासी नामावलीक स्थानपर टाँगबाक अनुमति नहि देल गेल।

नाम प्रकाशित करबाक पर्चीमे ‘अनुमति वापस लेबाक उपाय’क लेल खाली जगह देखिकऽ जुबैदा पूछलीह, “जे कागद एक बेर टाँगल गेल, ओकर फोटो लोकक फोनसँ केना हटाएब?” रुहानी स्पष्ट कहलीह, “सम्पूर्ण मिटेबाक वचन नहि देब। मुदा आश्रयक अपन पट्टी, आगाँक प्रति आ कार्यालयकें पठाएल नव संस्करणसँ नाम हटेबाक अनुरोध तत्क्षण लिखब। पहिने सँ बैटल प्रतिक सीमा व्यक्ति जानि कऽ निर्णय ले।” मंजरी अपन व्यावसायिक परिचयक नकल लेल आग्रह कएलीह। चम्पा कहलीह, “जखन कियो मत बदलत, ओकरा फेर सभक सामने कारण कहबाक बाध्यता नहि रहए।” रुहानी एहि वाक्यकें पर्चीक तरे लिखबौलीह; जुबैदा ओकरा पढ़ि कऽ देखलीह।

तीन पहर बीतिते विनोदक कार्यालयसँ एक दोसर संदेशवाहक आएल। ओ कहलक, “काल्हि बिहान धरि पूरा व्यक्तिगत सूची नहि गेल तँ ऊपरक विभाग अगिला आपूर्ति रोकि सकैत अछि।” रुहानी ओकरा एकटक देखलीह। रुहानीक हाथमे चौबीस घण्टाक भोजनक खर्चक पर्ची छल; भण्डारमे कतेक चाउर बाँचल, ई ओ जानैत छलीह। ओ तुरन्त कोनो वीरतापूर्ण घोषणा नहि कएलीह। पूछलीह, “ककर लिखित आदेश पर? कुन शर्तक अनुसार? जँ आपूर्तिक फैसला रोकिनाइ सम्भव अछि तँ वैकल्पिक आपूर्तिक प्रक्रिया

कहियासँ खुलत?” संदेशवाहक केवल मौखिक खबर अनने छल। रुहानी लिखित कारण आ सुनवाइक समयक आवेदन देलीह; जबाबक प्राप्ति लेल जुबैदाकेँ संग पठौलीह।

रुखसाना एहि बीच बचल चाउर फेर गनलीह। रातिक भोजन, भोरक रोगी-गाड़ी लेल बन्द पोटली आ मजदूरसभक थारीक हिसाब जोड़ल गेल। “जे अछि, ओकरा दू दिनक लिखि कऽ तीन दिनक वचन नहि देब,” ओ कहलीह। शबनम पूछलीह जे बच्चा लेल दूधक व्यवस्था बिगड़त की नहि। रुखसाना कहलीह, “एखनक प्राप्ति अनुसार आज राति दूध अछि। काल्हिक खेपक खबर लिखित नहि आयल।” एहि छोट सच्चाइमे ककरो दिलासा कम भेटल, मुदा ककरो गलत भरोसापर निर्भर होएबाक आवश्यकता नहि पड़ल। रुहानी स्थानीय चिकित्सकीय सहायता-कक्षसँ आवश्यक आपूर्तिक वैकल्पिक सम्पर्कक जानकारी मँगौलीह, स्वीकृति भेटल अछि एहन प्रविष्टि नहि कएलीह।

साँझ लग नगर कार्यालयमे दू अलग पन्ना जमा भेल। पहिलमे दैनिक भोजन, रात्रिक बासक समष्टि संख्या, प्राप्त सामग्री, बचत आ मजदूरीक वास्तविक पावती छल। दोसरमे सुरक्षित जाँच लेल व्यक्तिगत अभिलेख देखबाक प्रस्ताव—ककर अधिकृत कर्मिकेँ, कोन कारणसँ, कोन सीमाधरि, आ जाँच भेलापर जानकारीक उपयोगक लेखा केना रहत। फाटकपर बिना आदेश टाँगल गेल पुरान सूचीक प्रति सेहो सबूत रूपमे राखल गेल, ओकर कक्ष-सङ्केत खुला नकलमे नहि दोहराओल गेल। विनोद अपन प्राप्ति-सही कएलक। ओ लिखि देलक जे आपूर्तिक अगिला निर्णय अधिकारीक हाथमे अछि; ई प्राप्ति आपूर्तिक गारंटी नहि। रुहानीक हाथ हलुक काँपल, मुदा ओ कागद पढ़िकऽ प्रतिलिपि रखलीह।

फेर आश्रयमे स्वेच्छासँ नाम देनिहार लोकक पर्ची जाँचल गेल। मंजरी अपन कामक परिचय स्वीकार कएलीह; जुबैदा सार्वजनिक चाभी-जिम्मेदारीक सूची पर नाम स्वीकार कएलीह; रुखसाना मजदूरीक पारदर्शी खातामे अपन नाम चाहलीह। एहि तीन अनुमति अलग उद्देश्य लेल छल, तँ ओकरा मिला कऽ ‘रहनिहारसभक नामावली’ नहि बनल। जकर उत्तर एखन नहि आयल, ओकरा ‘हाँ’ गनि लेबाक भूल नहि कएल गेल। चम्पाक पर्ची निजी खाममे रहल। बालकसभक चेहरा वा परिवारक कक्ष-संख्या कोनो प्रचार-पट्टपर नहि गेल। रहल ओ सार्वजनिक पन्ना जकरा नगरक जिम्मेदार कर्मचारी निरीक्षणक आवश्यकता अनुसार माँगि सकैत छल; ओकरा गलीक भीड़समक्ष नहि खोलल गेल।

राति फाटकपर टाँगबाक लेल जुबैदा एक नव पट्टी बनौलीह। भीजल खूँटीक बदला ओ काठक चौखटमे दू मजबूत काँटी जड़लीह। पट्टीपर रसोइक घड़ी, आपातकालीन निकास, दानक वास्तविक खर्च देखबाक स्थान आ शिकायत देबाक समय लिखल छल। एक कोनामे लिखल छल—‘अपन नाम प्रकाशित करबाक निर्णय प्रत्येक व्यक्ति अलग करैत छथि।’ रुखसाना पट्टी पढ़ि कहलीह, “एहि लाइनकेँ बहुत छोट नहि लिखू। जे अपन नाम देखबए चाहत, ओकरो तकर ठाम चाही।” जुबैदा अक्षर कनेक पैघ कएलीह। फाटकपर काल्हिक फाटल कागदक पुरान कील बचल छल; ओ ओकरा निकालि लकड़ीक डब्बामे रखि देलीह, ताकि ककरो पयरमे नहि चुभए।

भोजनक बाद ओही युवक फेर आएल जे बिहान हथौड़ी लऽ ठाढ़ छल। ओकर चेहरापर दिनभरि कएल काजक असमंजस छल। “हम तँ आदेश बुझि कऽ टाँगने रही,” ओ कहलक। चम्पा ओतय उपस्थित छलीह। ओ युवकसँ कहलनि, “अहाँ कतेक लोककेँ ओ कागद देखबैत देखलहुँ?” युवक सोचि कहलक, “दू आदमी पढ़लक; एक फोन उठौने छल, मुदा फोटो लेने छल की नहि, हमरा पता नहि।” चम्पा आग्रह कएलीह जे ई गवाही ठीक ओतबे लिखल जाए। युवक अपन नाम आ समय लिखि देलक। पहिलुका दिन आश्रयपर आएल किराया-दावेदार आ चम्पाक पहिलुक हिंसाक बीच कोनो नव सम्बन्ध एतयसँ सिद्ध नहि भेल।

चम्पा राति अपन मायकेँ कहलीह, “आइ हम कागद बनबए मदद कएलहुँ, मुदा अपन नाम नहि देलहुँ।” माय उत्तर देलीह, “हमहुँ नहि देलहुँ। मुदा रुखसाना अपन नाम देलीह ने?” चम्पा हँसलीह, “ओ अपन कामक नाम देलीह। हम अपन कोठरीक नहि।” माय थोड़ी देरि सोचि कहलीह, “आइ बोध भेल—एके घरमे रहनिहार लोकक उत्तर अलग रहि सकैत अछि।” बाहर छप्परपर पानिक पातर आवाज छल। चम्पाक कलाई दुखि रहल छल, तँ माय हुनकर बदला पानीक छोट लोटा उठौलीह। चम्पा मना नहि कएलीह। माय ककरो कथा पुछबाक बदला कहलीह, “काल्हि पट्टी देखेबाक तिथि अछि, घड़ी नहि बिसरिह।”

रुहानी सबसँ अन्तमे रसोइक पास राखल दाना फेर कटोरीमे भरलीह। रुखसाना सभ थारी गनि चुकल छलीह; कोन परिवारक भोरक भोजन बाँचल अछि, से बंद खामक

आवश्यकता बिना पंजीमे लिखल जा सकैत छल। भण्डारक चाभी साझा नियमक अनुसार जुबैदाकेँ सौंपल गेल। रुहानी अगिला दिनक कार्यालय-जवाबक लेल खाली पाँति छोड़लीह। आश्रयक अन्दर कियो बिना अनुमति अपन नाम छपबाक भय छोड़ि सूति सकत, ई ओ दावा नहि करैत छलीह; बिहानक कागद कतेक लोक पढ़लक, ओकर पूरा हिसाब नहियेँ छल। मुदा आइ राति फाटकपर टाँगल सूचीमे दानक रकम, भोजनक समय आ सुरक्षित निकासक ठाम छल—रहनिहारक निजी कक्षक नाम नहि। रुहानी बत्ती बुझएबाक पहिने अपन नामक कात एक छोट वाक्य लिखलीह—‘सूची फेर देखबाक जिम्मेवारी’।

अध्याय १३० • द्रौपदीक बचल दिन

भोरक पहिल उजासमे राजगृहक रसोइसँ चाउर धोएबाक आवाज आबि रहल छल। काँसक परातमे मुट्ठी भरि चाउर घुरैत तँ ओहि पानि पर उज्जर धूर उठैत, फेर रसोइन मालिनी ओकरा धीरेसँ उझलि दैत छलीह। द्रौपदी ओतय पहुँचलीह तँ मालिनी हाथ रोकि ठाढ़ भेलीह। “महारानी, भोजनक थारी एतहि पठा देब,” ओ कहलीह। द्रौपदी आगि लगल चूल्हा दिस देखलीह। “पहिने ई कहू, आइ कतेक लोकक लेल भात चढ़त?” मालिनी उत्तर देबाक पहिने अपन आगाँ राखल पाँच छोट कटोरी दिस देखलीह। युद्धक पहिने ई कटोरीसभ बालकसभक खेबाक समय अलग राखल जाइत छल; आब ओ सभ धोएल रहितो दिन भरि ओतहि पड़ल रहैत छल।

मालिनी सँभलि कऽ कहलीह, “हम सभ गनती फेर कऽ रहल छी। शिविरसँ घुरल घायलसभ, सेवकसभक बाल-बच्चा आ अतिथिसभक पाँति बढ़ल अछि।” द्रौपदी पुछलनि, “ई पाँचटा कटोरी किएक अलग?” मालिनीक ठोर कँपल। “कोनो दिन कियो हाथ बढ़ा कऽ कहि देत जे एखन ओकरा लेल भात राखू—हमरा एहन लगैत रहैत अछि।” द्रौपदी एक कटोरी उठौलीह। ओकर कातपर नखक छोट खरोंच छल। ओ खरोंच केकर छल, से हुनका सटीक स्मरण नहि पड़ल; मुदा कटोरीकेँ ओ अपन हाथमे ओही ढङ्गसँ धए रहलीह जाहि ढङ्गसँ कोनो बच्चा किछु माँगबाक पहिने ओकरा आगाँ सरकबैत छल।

“आइ एतेक कटोरीक आवश्यकता नहि,” द्रौपदी कहलनि। मालिनी नजर नीचाँ कऽ लेलीह, मानू ई बात सुनिते किछु मिटि जएत। द्रौपदी आगे जोड़लनि, “ई सभ धो कऽ सुक्खा कपड़ामे राखू। जकरा भात देबाक अछि, ओकर थारीक संख्या अलग गनू। हम स्वयं अपन पुत्रसभक नाम बिसरि गेलहुँ, एहन बात कियो नहि कहत। मुदा पाँचटा खाली थारी रोज चढ़ाओल जाए आ बाहिर भूखल लोक प्रतीक्षा करय, तकर आदेश सेहो हम नहि देब।” मालिनी कटोरीसभ समेटए लगलीह। द्रौपदी ओकर हाथ देखलीह—राति भरिका काजसँ अँगुरीक नखमे चाउरक बारीक कण अटकल छल।

द्रौपदीकेँ भोरक भोजनक गन्धसँ अपन पेटमे हलुक पीड़ा बुझेलनि। रातिक अन्तिम पहर धरि ओ जागल छलीह। आँखि लगिते शिविरक दीपक देखाइत छल, जकरा नीचाँ

पुत्रसभक चेहरा अलग-अलग छाहरिमे खसैत छल। प्रतिविन्ध्यक माथपर कखनो पड़ल चाउरक एक दाना, सुतसोमक एक प्रश्न पर भाइसभक हँसी, शतानीकक चलबाक हड़बड़ी—स्मृति एकहि क्रममे नहि लौटैत छल। श्रुतकर्मा आ श्रुतसेनक स्वर कखनो आपसमे मिलि जाइत; ओ फेर मनमे दुनूकेँ अलग बजा लेबए चाहैत छलीह। एखन कोनो आवाजकेँ दोसरक स्थान देब हुनका असह्य छल। ओ पाँचो नाम चुपचाप कहलनि आ कटोरीक पाछाँ चलल मालिनीकेँ देखैत रहलीह।

रसोइक द्वारपर सुभद्रा भेटलीह। हुनकर कपालपर रातिक थकान छल आ हाथमे उत्तरा लेल गरम पानिक पात्र। द्रौपदी पुछलनि, “उत्तरा किछु खएलीह?” सुभद्रा कहलीह, “अन्न देखिते ओ मुँह फेरैत अछि। अभिमन्युक स्मरण आबिते ओकरा साँस सम्हारब कठिन पड़ैत अछि।” द्रौपदी पानि धएल पात्रक भार अपन हाथमे लेलनि। “हम स्वयं जा कऽ भेटब,” कहलीह, “मुदा पहिने ओ जे चाहैत अछि से पूछब। ओ गर्भवती अछि, तँ ओकर देहक चिन्ता आवश्यक अछि; मुदा ओकरा ई नहि कहब जे पेटक शिशु लेल ओकर अपन दुख चुप भऽ जाए।” सुभद्रा किछु क्षण द्रौपदीक मुँह देखलीह। “अहाँ सेहो किछु खाउ,” ओ धीरे कहलीह।

द्रौपदी उत्तर नहि देलीह। चूल्हाक आगाँ बइसि दालि घोटैत एक वृद्धा रसोइनकेँ ओ पुछलनि, “आज पातल दालि ककरा लेल?” वृद्धा कहलीह, “जकर दाँतमे चोट अछि, आ जे घायल अन्न चबाबि नहि सकैत छथि, हुनका सभक लेल।” “आ जकर ज्वर अछि?” वृद्धा अलग घैल दिस देखौलीह। भोजन पहिनेहुँ एतेक प्रकारक छल, मुदा राजगृहक भोजमे कतेक थारी झिलमिलाइत छल, तकरा पर द्रौपदीक ध्यान अधिक रहैत छल। आइ ओ देखैत छलीह जे कोनो थारीक सामने बैसल व्यक्ति कतेक कौर निगारि सकैत अछि, से जनबाक बिना भोजनक सम्पन्नताक बात अर्थहीन अछि।

मालिनी आगिक कात एक छोट कटोरीमे पातल भात देलीह। “महारानी, ई अहाँक लेल।” द्रौपदी ओकरा हाथमे लऽ अँगुरीसँ कने छूलनि; भात गरम छल। ओ खाइत न छलीह, बस बासनक माथ पर उठैत भाप देखैत रहलीह। सुभद्रा हुनका लग बैसलीह। “जँ एखन नहि खाएल जाए तँ बादमे रखबा दियौ,” ओ कहलीह। द्रौपदी दू कौर मुँहमे देलनि। गरम भातकेँ निगरबामे गला दुखल। “हमरा भूख नहि अछि, मुदा एहि दूनू कौरक

आवश्यकता छल,” ओ कहलीह। सुभद्रा कोनो बधाइ नहि देलीह। ओ खाली पात्रमे कने पानि राखि द्रौपदीक कात सरका देलीह।

बाहर आँगनमे युद्धसँ लौटल रथसभक पहियाक मरम्मत होइत छल। काठ पर हथौड़ी पड़बाक ठक-ठक एखन पूर्वक उत्सवक नगाड़ासँ अधिक सुनाइत छल। राजगृहमे युधिष्ठिरक राज्यारोहणक तयारीक बात उठि रहल छल; किछु सभासद मानैत छल जे दीर्घ युद्धक बाद सेना आ नगरकेँ एकत्र करबाक लेल विजय-भोज आवश्यक अछि। द्रौपदी ओहि प्रस्तावक कागद हुनका लग पठाओल जाए, से सुनि भोजनक कटोरी रखि देलीह। “कोनो सामूहिक भोजनक विरोध नहि करब,” ओ मालिनीकेँ कहलीह, “मुदा जकरा आज घाव अछि, ओ सभासदक उत्सवक दिन धरि प्रतीक्षा नहि करत। पहिले खेबाक दिन आ खेबाक लोक गनल जाए।”

युधिष्ठिर सभागृहक दुआर पर भेटलाह। हुनकर चेहरापर निद्राक अभाव, उत्तरदायित्व आ अपनहि निर्णयसभक भार छल। “भोजनक बात पर अहाँ एखन सभामे अएबाक कष्ट नहि करू,” ओ कहल। द्रौपदी पुछलनि, “अहाँक सभामे रसोइक लोक छथि?” युधिष्ठिर चकित भेला। “अधिकारी छथि, भण्डारक लेखा देखनिहार छथि।” “मालिनी छथि? जकरा हाथसँ भोजन बँटैत अछि, ओ केहन ढङ्गसँ समझतीह जे के रोगी, के बच्चा, के दुरूह बाटसँ आएल अछि?” युधिष्ठिर चुप भेला। द्रौपदी कहलीह, “हम सभामे दुःखक प्रदर्शन करबाक लेल नहि, भोजनक निर्णय करबाक लेल जाए चाहैत छी।”

सभागृहक एक छोर पर अनाजक अलग-अलग ढेरीक लेखा राखल छल। युद्धक समय राजभण्डारसँ बहुत अन्न सेना दिस गेल छल, किछु कोठार उजड़ि गेल छल, आ बजारक गाड़ीसँ आयात एखन सहज नहि छल। भण्डारी प्रबोध कहलक जे शेष भण्डारसँ राजपरिवारक नियमित व्यवस्था चलि सकैत अछि; शिविरक सभ परिवारक आवश्यकता अनिश्चित अछि। द्रौपदी पुछलनि, “नियमित व्यवस्था कहबामे के सभ गनल गेल अछि?” प्रबोध राजसेवक, अंगरक्षक आ अतिथिक नाम कहलक। “रसोइमे काम करनिहार स्त्रीक परिवार?” द्रौपदी पूछलीह। प्रबोध पाँति उलटलक। “अलग गनती नहि भेल अछि।” द्रौपदी कहलनि, “एखन भोजनक परिमाण घटाउ वा बढ़ाउ, तकर पहिने ई छूटल गनती पूरा कराउ।”

भीम सभामे अएलाह तँ हुनकर संग दू घायल सैनिक छला। एकर हाथ पट्टीसँ बान्हल छल, दोसरक जबड़ामे चोट छल। भीम कहला, “हम सभ युद्धमे भूख सहलहुँ। आज नगरमे लोककें भोजन नहि भेटत तँ कोन राज्य बचाओल?” भण्डारी डरि गेल। भीमक स्वर भारी छल। द्रौपदी बीचमे कहलनि, “भाइ, अहाँ जे दू सैनिक अनने छी हुनकर जरूरत एकहि नहि। एकर हाथक सहायतासँ खुआबय पड़त, दोसरक लेल नरम भोजन चाही। कोठार खोलबाक आदेश जरूरी अछि, मुदा भोजनक रूप आ पहुँचक बात सेहो सोचबाक अछि।” भीमक चेहरा नर्म भेल। “हम ओ लोककें रसोइ धरि पहुँचाएब,” ओ कहला।

एक वृद्ध सभासद कहलनि, “राजकुलक शोक चलि रहल अछि। महारानीकें एहि क्षुद्र व्यवस्थासँ दूर रखबाक चाही।” द्रौपदी ओकर मुँह देखलीह। “क्षुद्र व्यवस्था?” ओ पुछलनि। “हमर पुत्रसभकें जे कौर देबैत छल, तकर मात्रा हमर जीवनक किछु दिनक सबसँ पैघ निर्णय छल। आइ जखन आन घरक बालक भूखल अछि, तखन ओकर भोजनक गणना क्षुद्र कोना भऽ गेल?” सभासद प्रतिवाद करबाक लेल उठल, मुदा युधिष्ठिर हाथक संकेतसँ हुनका बैसा देलनि। द्रौपदी फेर कहलीह, “हम सभक अगिला राजाज्ञामे कोन दिन भोज होएत, से लिखबाक पहिने आजक घायलक भोजन निश्चित करू।”

विदुर, जे गणनाक अपन अनुभव लऽ ओतय छलाह, कहला जे युद्धक बाद घुरैत परिवारसभक संख्या प्रत्येक दिन बदलत। द्रौपदी मानि लेलनि। “तँ गनतीकें अचल सत्य नहि बनाउ,” ओ कहलीह। “भोजन देनिहार लोक प्रतिदिन देखत जे के अएल, के गेल, के एखन बाहरी शिविरमे अछि। ककरा नामक पाछाँ एक थारी पहुँचत, ककरा दू; जकर हाथ भोजन बनबैत अछि ओकरो घरे भोजन पहुँचत की नहि—ई सभ पूछबाक व्यवस्था चाही।” विदुर प्रस्तावक किनारमे नवल पाँति लिखलनि। प्रबोध अनाजक बँटवाराक बात पर एखनहुँ चिन्तित छल। तय भेल जे कोठारक वस्तु पहिने प्रत्यक्ष गनल जाए, तकर बाद देबाक वचन लिखल जाए।

द्रौपदी अपन राजमुद्राक मुहर लगाबए चाहलीह तँ हाथ रुकि गेल। पुत्रसभक मृत्युक बाद पहिल बेर ओ राजकाजक पत्रपर हस्ताक्षर करए जा रहल छलीह। हुनका लगल जे कागदपर नाम देबासँ शोकक दिन घटि जाएत की? तुरन्त ओ बुझलीह जे मुहर न लगेलासँ

बासनमे भात अपने नहि पहुँचत। ओ धीमे सँ मुहर लगौलीह। “ई आदेश पर काल्हि फेर विचार हो,” ओ कहलीह, “जँ हिसाब गलत निकलय तँ ओकरा बदलल जाए। हमर नामक कारण कियो गलती छिपाबय नहि।” युधिष्ठिर अपन सामने राखल पत्रकेँ दोसर अधिकारीक जाँच लेल बढ़ा देलनि।

सभा समाप्त भेलापर द्रौपदी घायलसभक आँगन दिस गेलीह। एक स्त्री अपन पतिक पानि पियाबैत छलीह; ओकरा ढक्कन उठबामे कठिनाइ होइत छल, कारण ओकर दाहिना हाथ चोटिल छल। द्रौपदी पानि देबाक पात्र धरि देलीह। स्त्री हुनका चिन्हि ठाढ़ होए लागलीह। “बैसल रहू,” द्रौपदी कहलीह। स्त्री संकोचसँ पुछलक, “महारानी, हम सेनाक स्त्री नहि; हमर पति घोड़ासभक घास ढोबैत छलाह। हमरा सभक नाम सैनिक परिवारमे नहि अबैत अछि।” द्रौपदी पुछलनि, “ओ जखमी कोना भेलाह?” स्त्री उत्तर देलक जे आगि लागल गाड़ी हटबैत। “तखन हुनकर भोजनक जरूरत सैन्य पदवी पर निर्भर किएक होएत?” द्रौपदी पुछलनि।

आँगनक दोसर कोनामे एक बालिका कच्चा आमक गुठली पकड़ने बैसल छलीह। ओकर माय कहलीह जे बच्ची रातिक भयमे मुँहसँ किछु नहि लैत अछि; गुठली चूसैत रहैत अछि। द्रौपदी बच्ची लग बैसलीह, गुठली छीनलीह नहि। “तोरा कोन कौर नीक लगैत अछि?” ओ पुछलनि। बच्ची धीरे कहलकै, “घी लगल रोटी।” माय झट कहलकै, “ई समय घी कतए?” द्रौपदी मायकेँ रोकलीह नहि। ओ मालिनी लग संदेश पठौलीह जे बच्ची लेल रोटी बनाबए, मुदा भण्डारमे उपलब्ध घीक वास्तविक माप देखिकऽ। “एखन कतबा अछि से जनने बिना कहब जे भरि देब, तँ भरोसा टुटत,” ओ मायसँ कहलीह।

ओहि बच्चीक हाथमे गुठली देखिते द्रौपदीकेँ स्मरण पड़ल जे हुनकर एक पुत्र पकैत आमसँ अधिक कच्चा आमक खट्टास चाहैत छल। ओ स्मृतिकेँ पकड़ि राखए चाहलीह, मुदा बच्ची अपन भोजन लेल हुनकर मुँह तकैत छलीह। द्रौपदी ओकर माथ पर हाथ नहि फेरलीह; पहिने पुछलनि, “हम एतय बैसि सकती छी?” बच्ची हँ कहलक। दुनू किछु देर मौन बैसलीह। द्रौपदीक आँखिसँ पानि खसल तँ ओ ओकरा छिपौलीह नहि। बच्ची अपन गुठलीक एक कोर फेर चुसलक। ओकर माय चुपचाप अपना कनियाँ-सा आँचर सँ ओहि ठामक धूर पोंछि देलक।

दुपहरिया कुन्ती द्रौपदीकेँ खोजैत रसोइक पाछूक बरामदामे अएलीह। कर्णक जन्मसत्य कहि देलाक बाद हुनका अपन पुत्रसभसँ बात करब सहज नहि रहल छल। द्रौपदी हुनका देखिते उठलीह नहि; कुन्ती सेहो ओहि बातकेँ अपमान नहि मानलीह। “अहाँ भोजन लेल किछु खाएने छी?” कुन्ती पुछलनि। द्रौपदी कहलीह, “दू कौर। आब फेर खेब।” कुन्ती अपन आँचरक गाँठसँ सूखल बेर निकालि आगाँ राखलीह। “घाटसँ घुरैत एक स्त्री देलक। हम राखने रही।” द्रौपदी बेर उठौलीह; ओहिमे एक कने चीर छल, बाकि भाग ठीक छल।

“कर्णक नाम सुनि हमर भीतरक पीड़ा बदलि नहि गेल,” द्रौपदी कहलीह। कुन्ती उत्तर देलीह, “हम अहाँसँ बदलबाक आग्रह करए नहि अएल छी।” “आ हमर पुत्रसभ नहि छथि। हम हुनका सभक माय छी। अहाँक स्वीकारोक्तिसँ अहाँक हानि हमरा बुझाइत अछि, मुदा एतबा बुझलासँ हमर अपन हानि घटैत नहि।” कुन्ती सिर झुका लेलनि। “हम ई मानैत छी,” ओ कहलीह। एतबा कहि ओ चुप भेलीह। बरामदामे एक कौआ खाली पात्रक पास उतरि फेर उड़ि गेल। दुनू स्त्रीक बीच स्मृति आ असहमतिक एहन स्थान बनल जाहिमे क्षमाक वचन माँगल नहि गेल।

कुन्ती बेरक एक टुकड़ा तोड़ि कहलीह, “राधाक घरक समाचार लेबाक अछि। ओ बालककेँ पाललनि, हम जन्मक सत्य देरिसँ कहलहुँ। कोन वस्तु हुनका पठेब उचित होएत, से हुनकासँ पूछल बिना नहि जनब।” द्रौपदी कहलीह, “नाम जानि गेलाक कारण ओहि घरक रोजक भोजन रोकल नहि जाए। जँ कियो कर्णक दानक कथा सुनि ओकर परिवारसँ फेर दान माँगय, तखन ओ अनुचित होएत।” कुन्ती पहिल बेर द्रौपदी दिस सीधा देखलीह। “अहाँक बात पहुँचाएब,” ओ कहलीह। द्रौपदी उत्तरमे बस सिर हिलौलीह। ओ अपन कौर स्वयं पूरा कएलीह।

साँझक कात गान्धारीक शिविरसँ एक सेविका सूचना लऽ अएलीह। घायल आ मृतकक परिवारमे भोजन बाँटबाक व्यवस्था सम्बन्धी प्रश्न छल; किछु कौरव सैनिकक परिवार पाण्डव राजगृहसँ अन्न लएबाक मे शर्म अनुभव करैत छल। द्रौपदी गान्धारीक शिविर जाएबाक निर्णय लेलनि। युधिष्ठिर कहला जे ओ स्वयं सेहो संग जेताह। द्रौपदी उत्तर देलीह, “अहाँ जाउ, मुदा पहिने हम स्त्रीसभसँ हुनकर बात सुनि लेब। जे अहाँक

राजकाजक प्रश्न अछि से बादमे साथे पूछब।” युधिष्ठिर मानि लेलनि। द्रौपदीक रथ विजय-पताकाविहीन चलल; ओ स्वयं ई बात कहि निश्चित कएने छलीह।

गान्धारीक शिविरमे जमीनपर बिछल दरीक कात किछु स्त्री सूखल लकड़ी छोट-छोट करि रहल छलीह। एकर माय युद्धमे पुत्र गुमौने छलीह; दोसरक पति एखन धरि घुरल नहि छल। गान्धारी हुनकर आवाज सुनि द्रौपदीक आगमन पहचानलीह। “अहाँ एतय?” ओ पुछलनि। द्रौपदी कहलीह, “अन्नक प्रश्न पर अहाँक घरक लोकसँ पूछए अएल छी।” गान्धारीक हाथ उठल, मुदा ओ द्रौपदीकें स्पर्श करबाक पहिने ठहरलीह। द्रौपदी नजदीक गेलीह आ हाथ हुनकर हथेली पर राखलीह। दुनू बहुत देरि धरि मौन रहलीह।

“हमर पुत्रसभ गेल,” गान्धारी अन्ततः कहलीह। द्रौपदी उत्तर देलीह, “हमर पाँचो सेहो।” गान्धारी साँस खींचलीह। दुनूक शोक एकहि नापमे रखबाक कोनो उपाय नहि छल; पुत्रसभक जीवन, हुनकर अन्याय, हुनकर घरक स्नेह—सभ अलग छल। गान्धारी कहलीह, “आइ एक विधवा कहलीह जे राजभण्डारक अन्न खाएब तँ मृत पतिक प्रति अविश्वास होएत। ओ शत्रुपक्षसँ भोजन नहि चाहैत अछि।” द्रौपदी पुछलनि, “ओ स्त्री एतय छथि?” गान्धारी दरीक कोन दिस देखबैत हाथ उठौलीह। “ओ स्वयं बात कहतीह,” ओ कहलीह।

स्त्रीक नाम चार्वी छल। ओ भोजनक आगाँ राखल पातरकें छूने नहि छलीह। “हमर पति पाण्डवक विरोधमे लड़ल,” ओ कहलीह, “तखन हम ओहि लोकक अन्न कोना खाइ?” द्रौपदी प्रश्नकें हँसीमे नहि उड़ौलीह। “अहाँक पति कोन काम करैत छलाह?” “रथक धुरा बाँधैत छलाह। युद्धमे ओकरो हथियार उठाबए पड़ल।” “अहाँ कोन काम करैत छी?” चार्वी कहलीह, “सूत कातैत छी।” द्रौपदी कहलीह, “अहाँक सूतसँ बनल वस्त्र पाण्डव सैनिक सेहो पहिने होएत, कौरव सेहो। अहाँक श्रम अपना घरक छल। आज जँ अहाँ भोजन स्वीकार करब, तकर अर्थ कोनो पक्षक जय मानि लेब नहि। मुदा स्वीकार करब की नहि, तकर निर्णय अहाँक अछि।”

चार्वी कने देरि बाद पुछलनि, “जँ हम नहि लेब तँ बच्चाक भाग सेहो रुकत?” द्रौपदी तुरन्त कहलीह, “नहि। बच्चाक भूख अहाँक असहमतिसँ दण्डित नहि होएत। ओकर लेल अन्न एतय रहत; अहाँ स्वयं देब, चाहे अपन पड़ोसिनसँ पहुँचाबए देब।” गान्धारी धीमे

स्वरमे जोड़लनि, “एहि पातरक दुआरे अपमानक शर्त नहि लगत।” चार्वी बच्चीक हाथमे पातर देलीह। ओ स्वयं एखन नहि खएलीह। द्रौपदी ओहि अस्वीकारकेँ अपन अपमान नहि मानलीह; भोजन दऽ देलासँ सम्बन्धक घाव तुरन्त भरि जाएत, एहनो ओ नहि सोचलीह।

शिविरसँ घुरैत द्रौपदीक रथ एक टूटल कुआँक कात सँ निकलल। श्रमिकसभ ओकर खपरैल हटबैत छल, कारण मृतकक अन्तिम संस्कारक भीड़मे पानि लेल लोक ठमकि रहल छल। द्रौपदी रथ रोकबाक संकेत देलीह। जलवाहक युवक कहलक जे दू घैल पानि भरबामे समय बेसी लगैत अछि; कुआँक रस्सी घसि गेल अछि। द्रौपदी स्वयं रस्सी टानि देखलीह नहि—ओ बुझलीह जे घावक बीच एहन प्रदर्शन बेकार होएत। ओ पूछलीह जे नवल रस्सी कतए मिलत, आ के ओकर मूल्य निश्चित करब। युवक एक बनियारक नाम कहलक। द्रौपदी ओकरो संग मूल्य पर बात करबाक आदेश देलीह; प्रातः धरि कुआँ पूर्ण तैयार भऽ जाएत, एहन असत्य वचन नहि देलीह।

रातिक पहिने उत्तरा लग गेलीह तँ कोठरीमे सुगन्धित धूपक बदला हलुक उबलल दूधक गन्ध छल। उत्तरा खिड़कीक बाहर देखैत छलीह। द्रौपदी पुछलनि, “आइ शरीर केहन अछि?” उत्तरा कहलीह, “मन बदलैत अछि। कखनो दालिक गन्ध सहल नहि जाइत, कखनो भात चाहैत अछि। लोक कहैत अछि जे हमर भीतर भविष्य अछि। हम सोचैत छी जे अभिमन्यु बिना ई भविष्य हमरा सँ कोना बात करत।” द्रौपदी हुनकर लग बैसलीह। “तोहर शिशु अहाँक अतीतक स्थान नहि लेत,” ओ कहलीह, “ओ अपन जीवन लऽ एत। आ तोहर आजुक दुख सेहो तोहर अपन अछि।” उत्तरा अपन पात्र आगाँ सरकौलीह —“थोड़ा दूध बचल अछि, अहाँ लेब?”

“अहाँक देहकेँ एखन अधिक चाही,” द्रौपदी कहलीह। उत्तरा हलुक हँसीसँ पुछलनि, “हमरासँ पूछल बिना निर्णय लए लेब?” द्रौपदीक चेहरापर बहुत दिनक बाद एक क्षण लेल हँसी फूटल। “नहि,” ओ कहलीह, “तू चाहै छँ तँ बाँटि लेब।” उत्तरा आधा दूध दोसर पात्रमे ढारि देलीह। दुनू अलग-अलग घूँट लेलनि। खिड़कीक बाहर दू सेविका धोएल कपड़ा पसारि रहल छलीह। हवा कम छल; कपड़ा सुखयमे देर लागत। उत्तरा कहलीह,

“आज अभिमन्युकेँ ई बात कहैत रही जे हवा किएक नहि उठल।” द्रौपदी सुनैत रहलीह। हुनकर अपन पुत्रसभक नामो ओहि मौनमे उपस्थित छल।

राति भेला पर कृष्ण द्रौपदीक कोठरीक बाहर ठाढ़ भेटलाह। ओ प्रवेश करबासँ पहिने सेविकासँ पूछने छलाह जे द्रौपदी एकान्त चाहैत छथि कि नहि। द्रौपदी भीतर बोलौलीह। कृष्ण कोनो उपदेश लेल नहि अएल छलाह; हुनकर हाथमे युद्धसँ लौटल एक सैनिकक पत्र छल, जाहिमे ओकर घरक ठेकाना सही नहि भेटने छल। “एहि परिवारकेँ के खोजत?” कृष्ण पुछलनि। द्रौपदी पत्र पढ़लीह। “विदुरक लोक खोजथि,” ओ कहलीह, “मुदा स्त्रीक नाम बिना पूछने नगरक मध्य घोषित नहि करथि। पहिने ओहि ग्रामक लोकक माध्यमसँ खबर पहुँचथि।” कृष्ण सिर हिलौलनि। प्रश्न छोट छल, मुदा ओकर उत्तरमे परिवारक अस्मिता जुड़ल छल।

कृष्ण पुछलनि, “आ अहाँ?” द्रौपदी खिड़की दिस देखलीह। “हम पाँच पुत्रक नामक बीच अपन भोजनक स्वाद खोजैत छी। जे कौर मुँहमे जाइत अछि, ओकरा लगैत अछि मानू हम हुनकासभक बिना कोनो उत्सव मनबैत छी।” कृष्ण किछु क्षण चुप रहलाह। “भूख उत्सव नहि होइत अछि,” ओ धीरे कहलनि। द्रौपदी हुनका दिस घुरलीह। “हम ई बात बुद्धिसँ बुझैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा शरीर बुद्धिक समयपर नहि चलैत अछि।” कृष्ण एहि वाक्यकेँ शास्त्रक प्रश्न नहि बनौलनि। ओ पुछलनि, “मालिनीकेँ काल्हिक काजक समय कहि देब?” द्रौपदी उत्तर देलीह, “हम स्वयं कहब।”

कृष्ण गेलाक बाद द्रौपदी अलमारी खोललीह। ओतय पाँचो पुत्रक किछु छोट वस्तु छल—अधघिसल काठक पासा, धनुषक डोरीक टुटल अंश, एक पातपर अधलिखल अक्षर, रङ्ग उतरैत कपड़ाक किनार आ ताँबाक एक छोट छल्ला। कोन वस्तु केकर, एहि बातक स्मृति किछु ठाम स्पष्ट छल, किछु ठाम ओ भरमाइत छलीह। ओ वस्तुसभकेँ नामक आग्रहसँ अलग करबाक बदला एक कपड़ामे सम्हारलीह। “जे निश्चित नहि अछि, ओकरा निश्चित कहि हम हुनका सभकेँ बड़का नहि बनएब,” ओ अपनासँ कहलीह। ओकरा बाद एक वस्त्र निकालि काल्हिक पहिरबाक लेल कात राखलीह।

मालिनी कोठरीक द्वारपर आएलि तँ द्रौपदी पुछलनि, “रसोइमे कतेक देर धरि काम चलैत रहल?” मालिनी कहलीह जे किछु सेविकासभ घायलक रातिक पातल भोजन बना

रहल छथि, आ काल्हि भोरक चाउर धोएबाक काज एखन शेष अछि। “सभकेँ राति भरि जगाएब नहि,” द्रौपदी कहलीह। “जकर पहर पूरा भेल ओकर विश्राम निश्चित करू। अधिक लोक चाही तँ बताउ।” मालिनी किछु कहए चाहलीह, फेर हिम्मत कऽ पुछलनि, “ई पाँच कटोरी हम कहाँ राखी?” द्रौपदी थमकलीह। “जहाँ ओ सभ पहिने सुरक्षित रहैत छल,” ओ कहलीह। “एखन हुनकासभक नित्य थारीक क्रम बदलब, मुदा वस्तु सभकेँ फेकब नहि।” मालिनी नमलि बाहर गेलीह।

अगिला भोरक अनाजक निर्णय लेल द्रौपदी एक छोट पर्ची लिखौलीह। पहिल बात छल—घायल आ बालकक भोजनक रूप अलग; दोसर—रसोइक श्रमिकसभक विश्राम आ भोजन; तेसर—पराजित परिवारक अन्न पर कोनो अपमानक शर्त नहि; चारिम—प्रतिदिनक गनतीमे बाहरी शिविर आ घुरैत परिवार लेल स्थान। पर्चीक अन्तमे ओ लिखलीह, “रसोइक लोकसँ पूछल जाए; जे कागद पर अछि ओकरा चूल्हाक लग जाँचल जाए।” ओ कोनो विराट प्रतिज्ञा नहि कएलीह। पर्ची तह करैत हुनकर हाथ स्थिर छल, मुदा आँखि थाकल।

सुतबाक पहिने द्रौपदी फेर चूल्हाक ठाम गेलीह। रातिक बचल अंगार पर एक छोट बासनमे भात गरम कएल जा रहल छल—एक घायल बालक देरिसँ जागल छल, तकर लेल। मालिनी पुछलनि, “अहाँक लेल फेर किछु देब?” द्रौपदी कहलीह, “हाँ, एक छोट कटोरी। जतेक हम खा सकब ओतबे। बेसी भए गेल तँ ककरो थारीसँ काटब नहि; बचल भातक दोसर उपयोग सोचब।” मालिनी भात राखलीह। द्रौपदी आगिक कात बैसि कौर तोड़लीह। पुत्रसभक अभाव ओहि कौरमे सेहो छल। मुदा भोजन ओ स्वयं मँगौने छलीह, आ काल्हिक भोजनक निर्णय लेल फेर उठबाक समय सेहो ओ स्वयं निश्चित कएने छलीह।

अध्याय १३१ • सीताक अग्नि

लङ्काक अशोक-वाटिकामे सीता माटिक एक छोट कटोरामे पानि भरि रहल छलीह। कटोराक एक कात चिरा पड़ल छल; पानि ढारैत हुनकर अँगुरी भीजि जाइत छल। ओ कटोरा फेकल नहि चाहैत छलीह, कारण एहि सँ ओ घामक दिनमे अशोकक नव कोम्हर पात भीजबैत छलीह। युद्धक अन्तिम राति बीति चुकल छल। दूर सँ उठैत धुआँ कम भेल, मुदा नगरक टूटल छतसभसँ राख एखन धरि झरैत छल। वाटिकाक दुआर पर पहरा देनिहार स्त्री सभ आज पहिल बेर अपन-अपन घरक समाचार पूछए लागल छलीह। सीता ओहि आवाजसभकेँ सुनैत कटोरा अशोकक जरि कात राखि देलीह।

त्रिजटा भीतर अएलीह तँ हुनकर साड़ी पर राखक छोट दाग छल। ओ रातिसँ बाहर गेल छलीह, एक सहेलीकेँ खोजबाक लेल, जकर बेटा युद्धमे उठाओल गेल छल। “सहेली भेटलीह?” सीता पुछलनि। त्रिजटा कहलीह, “घर भेटल, लोक नहि। पड़ोसिन कहलीह जे सभकेँ नगरक दक्षिणी चौक पर लऽ गेल छथि। की भेल, एखन बुझल नहि।” सीता हुनकर हाथमे पानिक पात्र देलीह। त्रिजटा अपन हाथ पहिने धोएलीह, फेर पानि पीलनि। एहि सामान्य क्रमक बीच ओ दुनू स्त्री बुझैत छलीह जे विजयी पक्षक समाचार आ गुम भेल परिवारक समाचार एके घड़ी नहि अबैत अछि।

हुनका सभक बात पूरा होएबासँ पहिने हनुमान वाटिकाक दुआर पर अएलाह। पहरेदार स्त्री एक कात हटलि, मुदा सीता स्वयं बाहर जा कऽ हुनका भीतर बजौलनि। हनुमानक गाम्भीर्य पहिलुक मिलनसँ अलग छल। “रावण युद्धमे मारल गेलाह,” ओ कहलनि, “राम आ लक्ष्मण सुरक्षित छथि। अहाँक लङ्का छोड़बाक बाट खुलल अछि।” सीताक अँगुरी कटोराक चिरा पर ठमकि गेल। ओ कने देरि धरि कोनो शब्द नहि कहि सकलीह। तखन पुछलनि, “राम घायल तँ नहि छथि?” “घायल सभक उपचार होइत अछि। राम स्वयं चलि-फिरि रहल छथि।” हनुमान एकर बाद राजसमाचारक उत्साह नहि जोड़लनि।

वाटिकाक परिचारिकासभमे सँ एक युवती अपन माथ ढाँकि कानए लगलीह। ओकर भाय रावणक सेना संग छल आ ओ रातिसँ ओकर खोज नहि पाबि सकल छलीह। हनुमानक विजय-सूचना सुनि ओकरा अपन भायक नाम याद आएल। सीता ओकरा लग

गेलीह। “तोहर नाम कहूँ, ओ पुछलनि। “माधवी।” “माधवी, अहाँक भायक खोज कोना चलि रहल अछि?” युवती कहलीह जे सैनिकक जे सूची आयल ताहिमे ओकर भायक नाम दू ढङ्गसँ लिखल अछि। हनुमान शान्त स्वरमे कहलनि, “हम स्वयं देखबाक व्यवस्था कराएब; ओहि दू नामकें एक व्यक्ति मानि लेब एखन ठीक नहि।” सीता माधवीक काँपैत हाथ अपन दू हथेलीक बीच राखलीह।

हनुमान सीतासँ पुछलनि जे विभीषणक लोक वस्त्र आ अलङ्कार आनए चाहैत छथि, आ कोन समय हुनका रामक समीप पहुँचब उपयुक्त होएत। सीता अपन आँचरक किनार देखलीह। वनमे पहिरल अनेक वस्त्र बदलि गेल छल, मुदा एहि सादा वस्त्रमे ओ बहुत दिन बितौने छलीह। “स्नान करब,” ओ कहलीह, “कारण धूरि आ धुआँ हमर देहपर लागल अछि। मुदा कोन अलङ्कार पहिरब, से हमरा सँ पूछल जाए। हमर आगमनकें विजयक प्रदर्शन बनाओल नहि जाए।” हनुमान सहमति देलनि। त्रिजटा मुस्की देलीह—बहुत दिन बाद सीताक एहि बातमे घरक सामान्य अक्खड़पन सुनल गेल छल।

स्नानक लेल पानि आनएवाली वृद्धा कहलीह जे नगरक कूपक रस्सी युद्धमे टुटि गेल अछि, तें पानि बहुत दूरसँ आनए पड़ल। सीता अपन लेल राखल दू घैलमे सँ एक घैल वापस देबाक कहलनि। “जे पानि एतय हमरा धोएत, ओकर आधा पानि भीतर घायल स्त्रीसभक घाव धोएबाक लेल चाही,” ओ कहलीह। वृद्धा डरैत उत्तर देलीह, “राजगृहक आदेश बिना हम ओतय पठा नहि सकब।” त्रिजटा विभीषणक परिचारक लग गेलीह आ व्यवस्था करए लेल कहलीह। वृद्धाक नाम धन्वती छल; सीता पहिल बेर हुनकर नाम जानलनि। धन्वती कहलीह, “हम बहुत दिनसँ एतय पानि आनैत छी, नाम कम लोक पूछैत अछि।”

स्नानक बाद सीता एक हलुक वस्त्र चुनलीह। राजगृहक ओरसँ आओल पीयर रेशमक वस्त्रकें हाथमे धऽ ओ बगलमे राखि देलीह। त्रिजटा पुछलनि, “अहाँ एना किएक राखलहुँ?” सीता उत्तर देलीह, “ई सुन्दर अछि। जकरा हाथसँ बनल होएत, ओकर श्रमक सम्मान अछि। मुदा एहि समय हम ओकरा पहिरि अपन मनक स्थिति बदलब चाहैत नहि छी।” ओ बालकें कंघीसँ सम्हारलीह। कंघीक एक दाँत टुटल छल। त्रिजटा ओकरा लेल

नवल कंधी आनबाक प्रस्ताव देलीह। सीता हँसि कऽ कहलीह, “पहिने ई काज पूरा करू; टुटल दाँत बीचो बाल सुलझि रहल अछि।”

वाटिकासँ बाहर निकलैत सीता देखलीह जे लङ्काक पथ पर सैनिकसभक पाँती लगल अछि। किछु वानर घायल छलाह, किछु राक्षस-सेनाक लोकक हाथमे पट्टी बान्हल छल। हुनकर बीच सँ पालकी लऽ जेबाक व्यवस्था कएल गेल छल। दुआरपर विभीषणक अधिकारी ऊँच आवाजमे लोककें हटबाक कहैत छल। एक वृद्ध स्त्री भीड़मे अपन पोताकें खोजैत छलीह। सीता पालकी रोकबा देलीह। “एतय उपस्थित लोक जेना हमरा देखबाक लेल आयल अछि, तेनाहि किछु अपन लोककें खोजबाक लेलो आएल अछि,” ओ कहलीह। अधिकारीक चेहरा तमतमा उठल, मुदा विभीषणक संकेत पर भीड़कें मारि हँकाएब रोकल गेल।

विभीषण आगाँ बढ़लाह। “अहाँक सुरक्षा आवश्यक अछि,” ओ कहला। सीता उत्तर देलीह, “हम एकर विरोध नहि करैत छी। मुदा सुरक्षा लेल ककरो चोट पहुँचे, तखन सुरक्षित व्यक्ति लेल ई बाट कोन अर्थ रखत?” विभीषण कहलनि जे रथक लेल जगह बनाओल जा सकैत अछि, आ लोककें हटाए बिना सेहो ओ आगे बढ़ि सकैत छथि। सीता पुछलनि, “रावणक घरक घायल परिचारकसभक उपचारक व्यवस्था के देखत?” विभीषण एक नाम कहलनि, आ सीता ओ नाम त्रिजटासँ दुहरबौलीह। ओहि स्त्रीक घरक लेल उत्तरदायित्वक बात कहि ओ पुनः पालकीमे बैसलीह।

सभास्थल रणक्षेत्रक कात बनल छल। भूमि पर दू ठाम घास बिछाओल गेल छल, कारण राख आ धूलिमे ठाढ़ होएब कठिन छल। धूपक किरण तलवारक पातसँ नहि, घायल लोकक पानिक पात्रसँ चमकि रहल छल। सीता उतरलीह तँ कतेको नजर एक संग हुनका दिस उठल। किछु आँखिमे सम्मान छल, किछुमे जिज्ञासा, किछु दृष्टि ओहि वस्तुकें ताकैत जेकरा लोक अपन कल्पनामे बहुत दिन सँ सँजोने छल। सीता एहि सभ दृष्टिक बीच रामकें देखलीह। ओ आगाँ छलीह, मुदा बीचमे एतेक लोक छल जे दुनूक सामान्य स्वर पहुँचब कठिन होइत।

रामक मुखपर लम्बा युद्धक थकान छल। सीताक कुशलता पुछबाक पहिने हुनकर वचन सभासँ सम्बोधित भेल। ओ कहलनि जे युद्धक लक्ष्य अन्याय हटाएब आ कुलपर लागल

कलङ्क दूर करब छल; शत्रुक घरमे बिताओल समयक बाद लोकक सन्देह उठत, तकर उत्तर सेहो सार्वजनिक जीवनमे चाही। हुनकर शब्द शान्त छल, मुदा शान्त स्वर सेहो कखनहु कठोर भऽ जाइत अछि। सीता सुनैत रहलीह। राम अपन वचनकेँ राज्यक मर्यादा आ लोकविचारसँ जोड़ैत गेलाह। सभामे किछु पुरुष सहमतिमे सिर हिलौलनि; दोसर लोकनि दृष्टि नीचाँ कऽ लेलनि।

सीता एक पयर आगाँ रखलीह। “अहाँ जे कलङ्कक बात करैत छी,” ओ कहलीह, “ओ केकर कर्मसँ लगल? हमरा बलपूर्वक एतय आनल गेल। जे हमरा रोकने छल, ओकर कर्मक उत्तर हमर देहसँ किएक माँगल जाए?” सभाक बाहरी कात धीमा कोलाहल उठल। राम कहला जे हुनका व्यक्तिगत शोकक संग जनता सामने उत्तर देबाक बन्धन सेहो अछि। सीता उत्तर देलीह, “जनताक प्रश्न सुनबाक अधिकार अछि। मुदा प्रश्न सुनब आ प्रश्नक उत्तर लेल स्त्रीकेँ प्रस्तुत वस्तु बना देब—ई दू भिन्न बात अछि।” हुनकर स्वर न तेज छल, न कम्पित।

लक्ष्मण थोड़े दूर ठाढ़ छलाह। सीताक वचन सुनि हुनकर मुखपर क्रोध आ लाज दुनू झलकैत छल। ओ राम दिस देखलनि, फेर सीता दिस। “भाभी,” हुनकर मुँहसँ एतबे निकलल। सीता पुछलनि, “लक्ष्मण, अहाँ हमरा चिन्हैत छी?” ओ तत्काल कहला, “हाँ।” “तखन हमरा चिन्हबाक अहाँक स्मृति आ एहि सभाक अनुमानमे कोन अन्तर अछि?” लक्ष्मण उत्तर देलनि, “हम अहाँक जीवनक सभ दिनक साक्षी नहि छी, मुदा अहाँक इच्छाक विरुद्ध हरण भेल से जनैत छी।” सीता कहलीह, “अहाँ जे जनैत छी, ओहि बातकेँ छोड़ि अहाँक अनदेखल समयक अनुमान किएक प्रधान भऽ गेल?”

सभाक कात एक वृद्ध वानर-चिकित्सक घायल सैनिकक पट्टी बदलि रहल छल। ओ अपन साथीकेँ फुसफुसा कऽ कहलक, “हम ओ स्त्रीकेँ आज पहिल बेर देखैत छी। तखन हमर नजर ओकरा विषयमे फैसला कोना देत?” साथी उत्तर देलक, “राजाक घरक बात राजाक होएत।” वृद्ध कहलनि, “युद्धमे राजाक आदेश मानलहुँ, मुदा जखमक पानिमे जाति आ पक्ष नहि बुझाइत अछि। एतय देखल बात जे अछि, से ई जे ओ अपन वचन कहि रहल छथि।” ई संवाद सीता धरि नहि पहुँचल, मुदा कतेको दर्शकक बीच पहिल बेर प्रश्नक रूप बदलि रहल छल।

विभीषणक संग आएल एक अधिकारी कहलक जे लङ्काक अन्तःपुरक स्त्रीसभसँ पूछल जा सकैत अछि; ओ सभ सीताक दिनचर्या देखैत छल। त्रिजटा आगाँ बढ़लीह। “हम जे देखलहुँ, से कहि सकैत छी,” ओ कहलीह, “हम ओहि सभ दिनमे हुनका असहमति, उपवास, रावणक धमकी आ संगिनीसँ बात करैत देखलहुँ। मुदा अपन देखलाक बाहरक प्रत्येक क्षणक सौगन्ध के लेत?” अधिकारी उत्तर देलक, “तखन गवाही अपूर्ण अछि।” त्रिजटा कहलीह, “गवाही अपूर्ण होएबक अर्थ आरोप सत्य होएब नहि। आ स्त्रीक शरीरक प्रत्येक क्षणक पहरा कियो नहि रखैत।”

सीता त्रिजटा दिस घुसलीह। “अहाँक ऋण हम कोन वस्तुसँ चुकाएब?” ओ पुछलनि। त्रिजटा कहलीह, “ऋणक चिन्ता बादमे। धन्वतीक पानि पहुँचत की नहि, ई देखू।” क्षणभर लेल सभाक भीड़ सीताक दृष्टिसँ उतरि गेल। हुनका अशोक-वाटिकाक ओ वृद्धा याद अएलीह जे दूरसँ घैल आनैत छलीह। ओ समझलीह जे जीवित रहबाक अनेक छोट प्रश्न एखन राजा आ सेनापतिक विजय-वचनसँ बाहर अछि। फेर रामक दिस घुरि ओ कहलीह, “हम अपन सत्य कहि चुकल छी; आब एतय लोक कोन दृश्य देखय चाहैत छथि, ई स्पष्ट हो।”

सभामे कियो अग्निक नाम उच्चारलक। ककर आवाज छल, सीता सुनि नहि सकलीह। आगि रणभूमिमे एतबा दिन विनाशक साधन रहल छल। आब ओहि आगिक सामने स्त्रीक निर्दोषताकेँ मापबाक कल्पना उठल। लक्ष्मणक हाथ मुट्ठी बनि गेल। राम मौन छलाह। सीता बहुत देर आगिक नामक गूँज सुनैत रहलीह। ओ मनमे अशोकक ओहि कटोराक चिरा देखलीह—चिरा देहमे पड़ल हो वा पात्रमे, लोक अक्सर ओहिकेँ पात्रक दोष कहैत अछि। मुदा ई विचारक संग हुनका क्रोधो आएल; कोनो सुन्दर उपमासँ एहि अन्यायकेँ ओ क्षमा नहि करए चाहैत छलीह।

“लक्ष्मण,” सीता कहलनि, “जँ एहि सभाक सामने अग्नि उठाएब जरूरी मानल जा रहल अछि, तँ अग्निक कात हमरा अपन निर्णय कहबाक स्थान देल जाए। कियो हमरा पकड़ि ओतय नहि लऽ जाए।” लक्ष्मण काँपि उठलाह। “हम ई काज कोना करब?” ओ पुछलनि। सीता उत्तर देलीह, “हम अहाँसँ अपन प्राणक मूल्य घटेबाक नहि कहैत छी। हम एतय जे अनुचित प्रश्न उठल अछि, ओकरा अपन शब्दसँ चिन्हित करैत छी। अहाँक अपन

असहमति सेहो सुनल जाए।” लक्ष्मण रामक दिस देखलनि। रामक सहमति थाकल मौनमे अटकल छल।

सीता सभाक दिस मुड़लीह। “आइ जे देखबाक लेल अहाँ सभ ठाढ़ छी, ओहमेसँ बहुत लोक हमरा नहि जनैत छथि। अग्नि हमरा जलाओ वा बचाओ—तकरा बादो अहाँक मनक प्रश्न ककरो दोसरा स्त्री पर फेर उठि सकैत अछि। ओहि बेर ओकरा सभाक बीच कोन न्याय भेटत?” किछु लोक उत्तर नहि देलनि। हनुमान अपन हाथ जोड़ि सिर झुका लेलनि। ओ चाहैत छलाह जे युद्धक बाद सीता विश्राम पबथि, मुदा हुनकर सम्मुख नव संकट ठाढ़ छल। सीताक प्रश्न आगि जलबाक पहिने सभा पर पड़ि चुकल छल।

काष्ठ आनल गेल। ओहिमे दू लकड़ी गीला छल; एक सेवक ओकरा अलग कऽ सुखल शाखा राखलक। ओकर अँगुरी पर पट्टी बान्हल छल। सीता देखलीह जे अग्नि तैयारी करनिहार सेहो घायल अछि। ओ सेवकसँ पुछलनि, “अहाँक हाथक घाव के देखलक?” युवक चकित भऽ उत्तर देलक, “अभी नहि। काज पूरा भेलाक बाद जाएब।” सीता लक्ष्मणकें कहलनि, “एकर पट्टी बदलेबाक लेल ककरो कहू।” सभामे किछु लोककें ई छोट प्रश्न अनुपयुक्त बुझायल। सीता अपन बात नहि बदललीह। जकर हाथसँ अग्नि बनैत अछि, ओकर हाथ सेहो देह अछि।

आगि सुलगल। पहिने लकड़ीक भीतरसँ नील धुआँ उठल, फेर लपट फैलल। त्रिजटा कने पीछे गेलीह, कारण धुआँ हुनकर आँखिमे लागल। सीता राम दिस एक बेर देखलीह। “अहाँ जँ हमरा अपन जीवनमे पुनः स्थान देब चाहैत छी,” ओ कहलीह, “तँ एतय हमर कथन सुनब सेहो आवश्यक अछि। हमर इच्छा एखन अहाँक उत्तरक प्रतीक्षा करैत नहि ठाढ़ रहत।” ओ अग्नि सम्मुख हाथ जोड़लीह। हुनकर वचनमे अपना अन्तःकरणक सत्यक आह्वान छल; हुनका लेल आगि ककरो आदेशक दण्ड स्वीकार करबाक नाम नहि बनल।

एहि कथाक एक प्राचीन वाचनमे सीता अग्निमे प्रवेश करैत छथि आ अग्निदेव हुनका अक्षत लौटा दैत छथि, हुनकर निर्दोषताक उद्घोषणा करैत। ओहि वाचनक लोक एकर रूप चमत्कारक पुनर्मिलनमे देखैत छथि। दोसर प्रचलित वाचनमे हरणसँ पहिनहि अग्नि संरक्षणमे रहलीह वास्तविक सीता, आ रावणक संग गेल छाया-रूप; अग्नि क्षणमे दुनूक

फेर अन्तर प्रकट होइत अछि। कथाक ई दू बाट एके क्रमक समान विवरण नहि अछि। पहिलमे आरोपक बीच देहकैँ अग्निसँ घेरल जाएत, दोसरमे हरणक सम्बन्धमे पहिनहि भिन्न व्यवस्था अछि। कोन वाचन सुनल जाइत अछि, ताहिसँ घटनाक अर्थ सेहो बदलैत अछि।

एहि सभामे जे लोग आगिक सामना देख रहल छल, ओकरा लग अपन-अपन दृश्य छल। ककरो लेल ऊष्मा आ तेजमे सीताक लौटि आएब देवताक उत्तर छल; ककरो लेल सीताक वचन पहिनहि पर्याप्त छल आ आगि अनावश्यक। त्रिजटा अपन वस्त्रसँ आँखि पोंछलीह। हनुमान अडिग ठाढ़ छलाह। एक घायल सैनिक पीठ फेरि बैसि गेल, कारण ओकरा अग्निक गन्धसँ युद्धमे जड़ायल झोपड़ी याद आबि गेल। ओ कहलक, “हम आगि नहि देखब।” ओकर साथी ओकरा कात बैसि गेल; ओ दूनू आगिक अर्थपर बहस नहि कएलनि।

जखन सीता सभाक दृष्टिमे फेर ठाढ़ देखाइ देलीह, हुनकर कपालपर घाम छल। देवताक उद्धोष सुननिहार लोक जय बोलब चाहैत छल, मुदा सीता हाथ उठा कऽ तत्काल शोर रोकबाक सङ्केत देलीह। “जे उत्तर एतय देल गेल,” ओ कहलीह, “ओ हमर जीवनक समस्त दिनक बदला नहि बनत। जे लोक हमरा बलपूर्वक लऽ गेल, तकर अन्याय ओहि दिन भेल छल। हमर निर्दोषताकैँ आब जीतक पुरस्कारक संग नहि बाँटल जाए।” रामक मुखपर कठोरता ढील होएब शुरू भेल, मुदा ओ एखनहुँ स्वयं कहबाक उपयुक्त शब्द खोजि रहल छलाह।

राम अन्ततः आगौं बढ़लाह। ओ अपन पूर्वक शब्दक कारण लोकमतक आशङ्का बतौलनि। सीता हुनकर बात बीचमे नहि रोकलीह। राम कहलनि जे राजपरिवारक चालि पर जनता प्रश्न करैत अछि। सीता उत्तर देलीह, “जनता प्रश्न पूछ्य—एहि सँ ककरो डरबाक आवश्यकता नहि। मुदा जे काज हमरा इच्छा बिना कएल गेल, तकर उत्तर हमर चरित्रसँ माँगल जाए, तखन प्रश्नक दिशा बदलि जाइत अछि। हमरा विषयमे अहाँक वचनक असर ओहि स्त्रीसभ परो पड़त जे अपन घरमे कोनो सभा बजा नहि सकैत छथि।” राम ओ वाक्य सुनलनि। दुनूक बीच दूरी घटल, मुदा घाव ताहि क्षण भरि नहि गेल।

हनुमानक ध्यान तखन विभीषणक सँगे आएल वृद्धा पर गेल। ओ अहाँसभक भीड़मे धन्वतीकेँ चिन्हलनि—ओ अशोक-वाटिकाक लेल पानि अनने छलीह। वृद्धाक घैल आधा छल। हनुमान पुछलनि, “अहाँ एतय किएक अएलीह?” धन्वती कहलीह, “वाटिकाक घायल सभक लेल नव घैलक अनुमति भेटल। मुदा कूपक नवल रस्सी चाही। राजगृहक लोक कहैत छथि जे काज युद्धक बादक हिसाबमे लिखाएब।” हनुमान विभीषणसँ कहि तत्काल रस्सीक मूल्य आ मजदूरीक व्यवस्था करबौलनि। धन्वती सीताकेँ दूर सँ नमस्कार कएलीह, ओकरा बाद घुरबाक बाट पकड़लीह।

त्रिजटा सीताक लग पहुँचलि तँ ओ एक पल लेल सिर नीचाँ कऽ ठाढ़ रहलीह। “अहाँ थाकल छी,” त्रिजटा कहलीह। सीता उत्तर देलीह, “हाँ। हमरा पानि चाही। आ अहाँ स्वयं किछु खएने छी?” त्रिजटा माथ हिलौलीह। “भोरसँ नहि।” सीता सभाक कात राखल एक साधारण पातर मँगौलीह। राजगृहक भोजन आ वानर-सेनाक भोजन अलग-अलग राखल छल; एक परिचारक पुछलक जे कोन पातर अनब। “जे भोजन अहाँ स्वयं खाइत छी, से अनू” सीता उत्तर देलीह। त्रिजटा हँसि पड़लीह। “हमरा लेल अलङ्कार सँ पहिने भात,” ओ कहलीह। सीता सेहो एक क्षण मुस्केलीह।

माधवी ओहि समय भीड़मे भेटलीह। ओकर भायक सम्बन्धमे एखन पूरा समाचार नहि छल, मुदा दू अलग लिखल नामक बात जाँच शुरू भेल छल। ओ सीतासँ कहलीह, “हमरा लेल ने कोनो अग्नि अछि ने राजा सँ पूछबाक साहस। हम बस ओकर नाम सही सुनय चाहैत छी।” सीता ओकरा उत्तर देलीह, “तोहर बात सुनबाक लेल अग्नि आवश्यकता नहि। विभीषणक लोकसँ हम कहब जे नामक खोजमे तोरा स्थान भेटय, मुदा ओ लोक जे नहि जनैत अछि तकरा अनुमानसँ सत्य नहि कहथि।” माधवीक आँखिमे पानि छल। ओ धन्यवादक वाक्य पूरा नहि कऽ सकलीह, आ सीता ओकरा एहि लेल बाध्य नहि कएलीह।

सभामे औपचारिक बिदाइक तैयारी होएब लागल। एक अनुचर सीताक पालकीक आगाँ विजय-पताका लगबऽ चाहलक। सीता कहलीह जे ओ झण्डा सेनाक विजयक प्रतीक होएत, हुनकर चलबाक बाटक नहि। ओ साधारण छाजन चाहैत छथि, जाहिसँ धूप कम लागय। विभीषण पुछलनि, “लङ्कासँ प्रस्थानक पहिने अहाँ आओर किछु चाहैत छी?” सीता कहलीह, “अशोक-वाटिकाक स्त्रीसभक नाम आ ओकरा सभक घरक

खोजक व्यवस्था। कियो हमर संग चलय चाहैत होए तँ ओकरा अपन इच्छासँ पूछल जाए, पहरेदारक आदेशसँ नहि। जकर घर एतय अछि, ओकरा हमर संग चलबाक बन्धन नहि।” विभीषण ई बात लिखबौलनि।

राम सीताक लग एकान्तमे बात करब चाहलनि। युद्धभूमिक कात एक छोट छाजनक नीचाँ दुनू ठाढ़ भेलाह; लक्ष्मण आ हनुमान दूरी राखि लेलनि। राम कहला, “दीर्घ समयक बाद अहाँक आवाज सुनि रहल छी। हम एहि भेंटकेँ अलग रूपमे सोचने रही।” सीता उत्तर देलीह, “हमहुँ। अशोकक पात भीजबैत जे बात मनमे राखलहुँ, ओ एतय सभाक सामने नहि कहि सकलहुँ।” राम पुछलनि, “की बात?” सीता कने देरि चुप रहलीह। “हम अहाँसँ पूछए चाहैत रही जे वनक ओ नदीक पानि एखनहुँ ओतबे ठण्डा लगैत अछि की नहि। मुदा सभामे हमरा पहिने अपन जीवनक अधिकारक बात करय पड़ल।” रामक आँखि झुकि गेल।

“आब?” राम पुछलनि। सीता कहलीह, “आब हमरा विश्राम चाही। फेर बात होएत। ओहि बातमे लोकमतक स्थान रहय तँ सुनब, मुदा हमर अपन स्मृति आ इच्छा सेहो रहत।” राम अपन हाथ आगाँ बढौलनि; सीता एक क्षण देखलीह, तखन अपन हाथ हुनकर हथेलीक ऊपर रखलीह। ई स्पर्श भेटक छल, न्यायालयक फैसला नहि। राम ओहि अन्तरकेँ बुझबाक प्रयत्न कएलनि। बाहरसँ भोजनक पात्र रखबाक खनखनाहट सुनाइ देल; बहुत दिन बाद दुनूक बीचक मौनमे ओ साधारण आवाज जगह पबि रहल छल।

साँझ धरि लङ्काक बाट पर धुआँ कम भेल। सीता प्रस्थानसँ पहिने अशोक-वाटिका फेर देखए गेलीह। धन्वतीक आनल नवल रस्सीसँ पानि खींचल जा रहल छल। माधवी अपन भायक खोजक दोसर पर्ची पर नाम लिखेबाक प्रयास करैत छलीह, आ त्रिजटा हुनकर लिखल अक्षर मिलबैत छलीह। सीता चिरल कटोरा उठौलीह। ओकर भीतर थोड़ पानि बचल छल। ओ अशोकक जरिमे ढारि देलीह, कटोरा धन्वतीक हाथमे राखलीह। “जँ ई एखन काज दैत अछि तँ राखू,” ओ कहलीह। “नहि तँ बदलि दीअ।” धन्वती अपन अँगुरीसँ चिरा टोहलीह आ कहलीह, “एखन ई फूलक जरि धरि पानि पहुँचा देत।” सीता कने देरि ओहि छोट काजकेँ देखैत रहलीह; आगिक सभा पाछाँ छूटि रहल छल, मुदा

हुनकर देह आ वचन पर निर्णय करबाक अधिकार आब ओ स्वयं सँ अलग नहि रखबाक
निश्चय कएने छलीह।

अध्याय १३२ • नम्बरक बाद

२०३९क वर्षाक पश्चात् अस्पतालक अस्थायी कार्यालयमे मेजक एक पयर नीचाँ ईंटक टुकड़ा अँटाओल गेल छल। भीजल फर्श सुकि गेलाक बाद पयर डगमगाए लागल छल, आ जखन रमा लाल जिल्दवला मृत्यु-पंजी खोललीह तँ मेज एक बेर काँपि उठल। ओ ईंटकेँ पयरसँ कनेक भीतर ठेललीह। बरामदामे लोक प्रतीक्षा करैत छलाह—कियो प्रमाणपत्र लेल, कियो छूटल कपड़ा लेल, कियो केवल ई जानबाक लेल जे आब कतऽ जाएब। बिहानक बैठकमे सत्यापित मृत्युक कुल संख्या स्थिर करबाक छल। रमा अपन सामने रखल अन्तिम चिकित्सकीय मिलान, पहिचानक फाइल आ पहिनुक त्रुटिपूर्ण प्रतिक अलग-अलग ढेरी बनौलीह।

नगर कार्यालयक लिपिक एकटा साफ कागद निकालि कहलक, “आज एक्के संख्या पर सबहक सही भऽ जाए तँ ऊपर रिपोर्ट भेजि देब। पिछिला सूचीमे जे फेर-बदल भेल, तकर बाद कियो पूछत नहि।” रमा कलम बन्द कएलीह। “पूछब बन्द नहि होएत। हम सभ केवल एतबे कहब जे निर्दिष्ट अवधिक प्रमाणित मृत्यु-प्रकरणक गणना पूरा भऽ गेल। कोनो व्यक्तिक पहिचानपर जँ पृथक परीक्षण चलैत अछि, ओकर स्थिति ओहि गणनासँ न बदलत। जे देहक नाम अद्याप जाँचमे अछि, ओकरा अनुमानसँ ककरो घर नहि पठाएब।” लिपिकक कागद पर पहिने सँ छपल ‘सभ विवाद समाप्त’ शब्द ओ काटि देलक।

बाहर सरिता रसोइघरक ओसारमे बैसि एकटा टिफिनक ढक्कन खोलि रहल छलीह। डिबियामे काल्हि राति बनाओल भातक आधा भाग छल। नैरा जीबैत रहलीह तँ कोन भाग खएतीह, एहि हिसाबसँ थारी सजाएबाक पुरान आदति फेर हाथमे आबि गेल छल। सरिता चम्मच बीचमे रोकि देलीह। कबीर लग आबि बैसलाह तँ ओ हुनका किछु खएबाक आग्रह नहि कएलीह। खाली एतबे पुछलीह, “अहाँ ओहि पन्नाकेँ देखए चाहब, जाहिमे हुनकर काजक बाकी लिखल जाएत?” कबीर कहला, “देखब। मुदा हुनकर जीवनक सब बात ओहि पन्नामे समाएत, एहन दावा हम नहि करब।”

बैठकक भीतर अदिति अस्पतालक क्षतिग्रस्त पाँखक नब मापचित्र राखलीह। तारा लाल निषेध-रेखा देखौलनि, जकरा पार एखनहु विशेषज्ञ अनुमतिसेँ बाहर प्रवेश रोकेल गेल छल। एक सदस्य आग्रह केलक जे मृत्यु-संख्या स्थिर भेलाक संग दुर्घटनाक कारणो लिखि देल जाए। अदिति उत्तर देलीह, “घटनाक समय, देहक प्राप्ति, चिकित्सकीय निष्कर्ष आ संरचनाक जाँच अलग कागद अछि। पुरान बाहाक अवरोध, भारक दोष, मरम्मतिक अभिलेख आ आपूर्तिक सामग्रीक परीक्षण बाकी अछि। मृत्यु प्रमाणित भेलासँ प्रत्येक कारण आ दोषी स्वतः प्रमाणित नहि भऽ जाइत अछि।” तारा नब नापमे एक अस्पष्ट स्थानक आगाँ प्रश्न लिखलीह, ओकरा निष्कर्ष नहि बनौलीह।

रमा अन्तिम प्रकरणक फाइलमे एक पहचान-संशोधनक इतिहास देखौलीह। पछिला दिन गलतीसेँ जोड़ल एक नाम सार्वजनिक पत्रसेँ हटाओल गेल छल; मूल गलत प्रति सुधारक प्रमाणक रूपमे सुरक्षित छल। “हम जे कुल संख्या तय करैत छी,” ओ कहलीह, “ओकर आधार चिकित्सकीय सत्यापन अछि, भीड़मे कहल नाम नहि। नामक अन्तिम मिलानक जिम्मेदारी निर्धारित अधिकारीपर रहत। कोनो परिवारक दावा बाँकी रहला मात्रसेँ ओकरा झूठा नहि कहल जाएत।” सभाक अगाँ रखल सारपृष्ठपर तीन तरहक स्थिति अलग छपल छल—मृत्यु पुष्ट, व्यक्ति-पहचानक जाँच, आ सम्बन्धित अभिलेखक सुधार।

दुआरपर उर्मिला रजकक बहिन पहुँचलि। हुनकर काँखमे दू बही छल, एक अस्पतालक पालिक हिसाबक नकल, दोसर घाटपर धुलल कपड़ाक पुरान रसीद। ओ भीतर पैसबाक पहिने पयर पोंछलीह; गील कागदकेँ दोबारा भिजेबाक डर छल। “हम मृत्युक प्रमाण फेर लेब आएल नहि छी,” ओ कहलीह, “ओ मिलि गेल अछि। मुदा बहिनक हाथसेँ जे कपड़ा रोगीक घर पहुँचल, जे राति अस्पतालमे बितल, आ जे ढुलाईक दाम रोकल गेल, ओ कतय लिखाएत?” लिपिक पहिल बेर हुनका मृतकक सूची देखौलक। बहिन ओकरा बन्द करि देलीह। “एहिमे नाम ठीक अछि। हमर प्रश्न दोसर अछि।”

गोमतीक संग आएल उमा कहलीह जे उर्मिलाक मृत्यु बाद किछु जरूरी धुलाई अस्थायी रूपसेँ दोसर महिला सभ सम्हारलनि; जे काम कएल गेल ओकर श्रम-दाम सेहो बाकी अछि। एक अधिकारी पुछलक, “घरक लोक पुरान बकाया लेत, की नव कामक?” गोमती

कहलीह, “दूनु अलग व्यक्ति आ अलग पालि छथि। जे कपड़ा उर्मिला धोने छलीह, तकर दाम हुनकर उत्तराधिकारीक दावामे जायत। जे काज उमासभ कएलनि, ओकर मजदूरी हुनका सभक नामे लिखू।” उर्मिलाक बहिन अपन बहिनक रसीद खोलि एक भीजल कोना सम्हारलीह। चिह्न झरि जाइत छल, मुदा तिथि आ गट्टरक संख्या पढ़ल जा सकैत छल।

सरिता भीतर अएलीह तँ कियो हुनका अध्यक्षक कुर्सी दिस संकेत केलक। ओ बैठबाक बदला ओहि कुर्सीकेँ कने पाछाँ सरका देलीह। “एखनहि हमर बात सुनल जाए,” ओ कहलीह, “कियो मानि नहि लेथि जे नैराक माय भेलासँ एहि समितिक सभ निर्णय हमर होएत।” हुनकर स्वरमे थकान छल। “हमरा अधिकार अछि अपन बेटी लेल पूछबाक, आ जिम्मेदारी अछि ओकर नाम गलत नहि लिखए देबाक। मुदा उर्मिलाक बहिनक प्रश्न हमरा माध्यमसँ मात्र सुनल जाए, ई किएक?” ओ बहिनकेँ आगाँक खाली कुर्सी देलीह। बहिन बैसलीह नहि; अपन बही मेजपर राखि ठाढ़ रहलीह।

रमा नब मोट रजिस्टर मँगबौलीह। पहिल पृष्ठक माथपर लिपिक लिखए लगल —‘मृतक परिवार सहायता’। सरिता रोकलीह, “एहि नामसँ सभ बाकी एके अनुदान बुझल जाएत।” कबीर सुझाव देलनि, “देय, उत्तरदायित्व आ अधूरा काजक पंजी लिखू। राहतक फाइल ओकर भीतर केवल एक स्रोत हो।” रमा शीर्षक बदलौलीह। ओ निर्देश देलीह जे प्रत्येक प्रविष्टिमे काम वा वस्तुक विवरण, दावेदारक अलग पहिचान, उपलब्ध प्रमाण, विवादित अंश, उत्तर देबाक कार्यालय आ अगिला सुनवाईक तिथि रहत। जकर प्रमाण एखन नहि अछि तकरा ‘अस्वीकृत’ नहि, ‘अतिरिक्त प्रमाण प्रतीक्षित’ लिखल जायत।

लिपिक पन्ना पर खींचल सात रेखाकेँ देखि माथ खुजलकलक। “एतेक खाता बनत तँ रुपया कहाँसँ आएत?” कबीर कहला, “खाता बनब रुपया भेटबाक प्रमाण नहि अछि। मुदा खाता नहि बनत तँ जे देय अछि, से कार्यालयक आँखिसँ अन्तर्धान भऽ जायत।” रमा कहलीह जे प्रत्येक दावापर एके बेर भुगतानक आदेश नहि दिअल जा सकत; समितिक अधिकार प्रारम्भिक सत्यापन, अनुशंसा आ समयबद्ध अनुसरण धरि सीमित अछि। एहि

सीमाकेँ लेखामे साफ लिखल गेल। ककरो झूठ आश्वासन नहि भेटय, मुदा ककरो हक कागदक अभावक नामपर बिना सुनवाई बन्दो नहि होअय।

नैरा अपन पछिला दिनसभमे कतेको फाटक, हाजिरी आ गलत परिचयक पन्ना नब रूपसँ मिला रहल छलीह। कबीर घरसँ हुनकर मेजक एकटा फाइल-आवरण अनने छलाह। भीतर अपूर्ण सूची, दू खाली लिफाफा आ एक निजी चिट्ठीक कोन देखाइत छल। रमा हाथ बढ़ौलीह तँ कबीर कहलनि, “काजक सम्बन्धित पन्नाक नकल जाँच लेल दऽ सकैत छी। चिट्ठी नहि। ओ हमरा आ नैराक बीचक बात अछि।” रमा हाथ वापस लऽ लेलीह। ओ फाइलमे लिखलीह—‘सार्वजनिक कार्यसँ सम्बन्धित अंश परिवारक सहमतिसँ प्राप्त होएत; निजी पत्र सुरक्षित’। नैराक मृत्यु हुनकर लिखल प्रत्येक अक्षर सार्वजनिक नहि बना देने छल।

ओहि घड़ी एक किशोरी अपना हाथमे लोहेक छोट चाभी लऽ आएलि। ओ अस्पतालक वृद्ध रोगिणीक नतिनी छलीह। मायजीक लेल चुनल पीयर कपड़ाक बचल टुकड़ा ओ अपन पुस्तकमे राखने छलीह। “ई चाभी हुनकर सन्दूकक अछि,” ओ कहलक, “माय कहैत छथि खोलब नहि। मुदा भितर पड़ल सिलाईक कामक कपड़ा देबाक वचन मायजी पड़ोसिनकेँ देने छलीह।” सरिता पुछलीह, “तोहर माय की चाहैत छथि?” रमा बुझलीह जे अपूर्ण कामक हर बात सरकारी वसूली नहि; किछु बात परिवारक आपसी विश्वासक अछि।

कबीर किशोरीकेँ दू विकल्प बुझौलनि—ओ चाहे तँ परिवारक निजी सूचीमे वचन सुरक्षित राखय, चाहे तँ अपन इच्छा सँ पड़ोसिनक नामक संग काजक स्मृति लिखबाबय; समितिक रजिस्टरमे बिना सहमति सन्दूकक सामग्री नहि जायत। किशोरी कहलक, “हम घर जा कऽ मायसँ फेर पूछब।” ओ चाभी अँगुरीमे कसि चलि गेलीह। ओकरा लेल बैठकक परिणाम कोनो रकम नहि छल; एतबे छल जे कियो सन्दूकक ताला सार्वजनिक शोकक नामपर तोड़बाक आदेश नहि देने छल।

दुपहरियासँ कनेक पहिने नीरज पंडा भीतर प्रवेश कएलनि। हुनकर हाथमे पीतलाक एक छोट थारी, बाँसक खाँचीमे राखल कुश, आ मोड़ल रसीद-बही छल। बरामदामे शोक-सम्बन्धी अनुष्ठानक इच्छुक दू परिवार हुनकासँ समय पूछने छल। नगर राहतक एक

स्वयंसेवक हुनका रसीद देबाक लेल कहने छल जे सरकारी सहायता खातासँ समस्त अन्त्येष्टि-व्यय एक संग देखाओल जाए। नीरज थारी मेजक कोना पर राखि कहलनि, “पहिने ई स्पष्ट करू जे जकरा अनुष्ठान चाही, हुनकर अपन निर्णय अछि। जे नहि चाही, हुनका अनुदानमे कोनो कटौती नहि होएत।”

स्वयंसेवक प्रतिवाद केलक, “सामूहिक राहत लेल चन्दा उठल अछि। मृतकक घरमे कर्मकाण्ड होएत तँ ओहू पर दाम लगत। एक्के खाता राखब आसान नहि?” नीरज अपन रसीद खोललनि। पहिल पन्नामे काजक तिथि आ परिवारक अनुरोध छल; दोसरमे सामग्रीक वास्तविक दाम, तेसरमे अपन सेवाक पारिश्रमिक। “हम जे समय देब, ओकर दाम परिवारसँ सहमति बिना न लिखब,” ओ कहला। “मुदा सार्वजनिक अनाज वा सरकारी सहायता सँ अपन सेवाक रकम चुपचाप निकालब सेहो नहि मानब। जे परिवार नहि चाहैत अछि, ओकरा एहि मदमे शून्य देय।”

एक आदमी खिजाएल स्वरमे बजल, “पंडा लोक ई घड़ी सेहो हिसाब पूछत!” नीरज ओकरा दिस देखलनि। “हमर कामक दाम पूछब अपमान नहि। मुदा हमर धर्मक नामपर ककरो राहत काटल जाए, ई हमहुँ नहि चाहैत छी। अहाँ जँ अनुष्ठान बिना विदाइ चाहैत छी तँ हम अहाँक नाम अपन बहीमे नहि लिखब। जँ हम बिना दामक सेवा स्वेच्छासँ करब, तकर लेखा सेहो अलग रहत।” शशिभूषण, जे वस्त्रक रसीद लऽ कातमे ठाढ़ छला, कहला, “कपड़ाक दाम, वाहनक भाड़ा आ पंडाक मेहनताना तीनू अलग मद। आ सरकारी सहायता चारिम।”

उर्मिलाक बहिन पुछलीह, “हमर बहिनक खातिर हमरा जे काज करबाक अछि से हम स्वयं तय करब। मुदा घाटपर जे मजदूरी हुनकर बाकी अछि, ताहिमे सँ पूजा लेल अग्रिम काटल गेल तँ?” नीरज तुरन्त कहला, “नहि काटल जाए। हमरा देय जँ बनत तँ हमरा परिवारसँ स्वतंत्र रसीद भेटत। हुनकर कमाओल मजदूरी पर हमर कोनो अधिकार नहि।” बहिन हुनकर रसीदक खाली पाँति देखलीह। “तँ एहि ठाम हमर नाम एखन नहि लिखू,” ओ कहलीह। नीरज बही बन्द कएलनि।

रमा दू रंगक स्याही मँगौलीह। कारी स्याहीसँ सामाजिक सहायता, आपात आवास, चिकित्सा आ स्वीकृत मुआवजाक सम्बन्धित मद लिखल गेल; नील स्याहीसँ परिवार

द्वारा स्वेच्छासँ मँगाओल वस्तु वा धार्मिक सेवाक निजी लेनदेन, जकरा सरकारी स्वीकृतिक रूप नहि देल जा सकैत छल। एक निरीक्षक पुछलक जे अलग रंग बादमे बदलि सकैत अछि। रमा उत्तर देलीह, “रंग संकेत मात्र अछि; असल सीमा दू अलग क्रमाङ्क, दू अलग हस्ताक्षर आ स्पष्ट स्रोतमे अछि।” नीरज आग्रह कएलनि जे धार्मिक सेवा-अस्वीकार करनिहार परिवारक नामक सूची नहि बने। ओकरा लेल ‘कोनो शुल्क नहि’ लिखब पर्याप्त छल।

चौकीपर बैसल एक विधवा स्त्री अपन बगलवालीसँ कहलीह, “हमरा पति चुपचाप माटिमे सुतए चाहैत छला। हुनकर बात हमरा मोन अछि। मुदा गामक लोक कहत जे हम खर्च बचेलहुँ।” बगलवाली धीरे कहलीह, “लोकक बात लेल अहाँक धान बेचाएब जरूरी अछि की?” नीरज ओहिसँ किछु दूर बैसि रहलाह। ओहि स्त्री लग जा श्रद्धाक उपदेश देबाक चेष्टा नहि कएलनि। कनेक बाद स्त्री स्वयं पुछलीह जे छोट स्मरण-दीप जरेबाक लेल कोनो सार्वजनिक ठाम भेटत? नीरज कहलनि, “दीप अहाँ अपने जरा सकैत छी। सार्वजनिक स्थल लेल समितिसँ अनुमति पुछू; हमरा सेवा लेब आवश्यक नहि।”

बाहरी बरामदामे पानिक एक पातर रेखा चलैत रहल, जेना भवनक भीतर दबायल पुरान नदी कागदक बीच बाट खोजैत हो। सरिता क्षणभर लेल ओहि आवाजमे नैराक हँसी सुनलीह—ओहि दिनक, जखन नैरा कहने छलीह जे गलत अंकक पाछाँ ककरो एक दिनक भोजन छूटि जाइत अछि। तखन मनमे उठल स्वरकँ ओ अपन स्मृति मानलीह, कोनो साक्ष्य नहि। सुकल देवालक दरार तारा फेर नापैत छलीह; ओतय ककरो अलौकिक कथन लिखबाक ठाम नहि छल।

अनिरुद्ध उपचारक पर्ची लऽ दरबज्जा लग अएलाह। चोट लागल हाथकँ पट्टीसँ सम्हारल छल, तँ कागद उलटबाक लेल दोसर हाथ लगबैत छलाह। ओ रमा सँ पुछलनि जे अस्पतालक भीतर सुरक्षित निकासीक गलत पुरान निर्देशसँ सम्बन्धित हुनकर टिप्पणी जाँचदलक फाइलमे गेल की नहि। रमा प्राप्तिक निशान देखौलीह, निष्कर्ष नहि। “हम अपन गलतीक व्याख्या फेर देब,” अनिरुद्ध कहलनि, “मुदा घायल लोकक उपचारक खर्च एहि जाँचक अन्तिम प्रतिवेदन धरि रोकल नहि जाए।” सलमा सहमति देलीह; ओ

जोड़लीह जे उपचारक आवश्यकता चिकित्सकीय जाँचसँ तय होएत, दोषक अन्तिम निर्णयसँ नहि।

देवी गोंड अपन अगिला जाँचक बाद छोट समय लेल पहुँचलि। माथक पट्टी एखन सम्पूर्ण उतरल नहि छल। हुनकर हाथमे प्रशिक्षणक नब तिथिवला पर्ची छल। ओ सुनलीह जे भीतर बितल रातिक बयान लेल एक सदस्य हुनका फेर बोलाबय चाहैत अछि। देवी कहलीह, “हम अपन देखल समय आ सुन्नल आवाज दर्ज कराओलहुँ। जे नहि देखलहुँ ओकर नाम नहि जोड़ब। आब हमरा उपचार आ फेर प्रशिक्षणक समय चाही।” सदस्य सहमति देलक, मुदा प्रशिक्षणक खर्चक कोठरीमे ‘स्वयंसेवक’ लिखि छुट्टी करए चाहलक। देवी पुछलीह, “जँ उपकरणक अभ्यास संगठन मँगने अछि तँ भाड़ा के देत?” ई प्रश्न नव देय-पंजीमे अलग प्रवेश बनि गेल।

रुहानी सहायता-कक्षसँ आएल लेखा लऽ पहुँचलि। रुखसानाक भोजनक बोरा, रसोइक मजदूरी आ चिकित्सकीय वाहनक प्राप्ति-रसीद खुला सार्वजनिक जाँच लेल तैयार छल। मुदा आश्रयमे रहनिहार व्यक्तिसभक निजी नामक लिफाफा ओ नहि खोललीह। “जतबा रुपया आ वस्तु आयल-गेल, ओकर सत्यापन हो,” ओ कहलीह, “मुदा जकरा आश्रय चाही ओकर कोठरीक पता प्रकाशित केनाइ सहायता देबाक शर्त नहि।” लिपिक पुछलक, “दावेदारक नाम नहि तँ भुगतान?” रुहानी उत्तर देलीह जे अधिकृत निजी परीक्षणक बाट अलग अछि; सार्वजनिक सूचनामे समस्त विवरण छपबाक नहि।

एतबेमे कार्यालयक बाहरसँ जोर आवाज आएल। दू मजदूर सामानक ओसारक बकाया भाड़ा माँगए आएल छलाह। तेसर आदमी हुनका सभपर आरोप लगबैत छल जे मृतकक नामपर दोबारा बिल बनाओल जा रहल अछि। गोमती हुनका सभकेँ भीतर बजा कऽ अलग-अलग रसीद रखबौलीह। पहिल बिल पुरान अस्पताल-मरम्मतक समयक छल, दोसर आपदाक रातिक सुरक्षित ढुलाईक। ललित देखबौलनि जे किछु सामग्रीक मात्रा स्थल-परीक्षण बिना स्वीकार करब सम्भव नहि। मजदूर कहलनि, “जाँच करू, मुदा हमर आजुक भोजनकेँ शङ्काक सजा नहि दिअ।” समिति तत्काल प्रमाणित ढुलाईक निर्विवाद अंशक अंतरिम भुगतान अनुशंसित करबाक फैसला कएलक; विवादित अंश खुलल रहल।

कागदक ढेरीमे नैराक अपूर्ण कामक बहीक एक पृष्ठ भेटल, जाहिमे सुरक्षित कएल नाम, बदलल परिचयक कारण आ दावेदारसँ पूछबाक शेष प्रश्न अलग चिन्हित छल। कबीर ओहि पन्ना पर अपन हस्ताक्षर नहि कएलनि; नैरा लिखने छलीह, तँ एकरा हुनकर लिखावट आ स्रोतक सत्यापन लेल राखल गेल। सरिता पन्ना देखैत कहलीह, “हम ओहि प्रश्नसभक उत्तर सभ नहि जानैत छी। बेटी रहलाक कारण हुनकर हर जाँचक उत्तर हमर लग होएत, ई आवश्यक नहि।” रमा नब पंजीमे ‘काज सम्हारबाक इच्छुक व्यक्ति’ आ ‘मूल काजक लेखक’ दू अलग स्थान बनौलीह।

एक शिक्षक, जे आपदाक बाद बालकसभक अस्थायी पाठशाला सम्हारैत छला, कहला जे नैरा एक बेर छूटल बच्चासभक नाम-सुधारक लेल विद्यालयक पुरान हाजिरी माँगने छलीह। “ओ काज पूरा करबाक अनुमति हमरा भेटत?” ओ पुछलनि। सरिता कहलीह, “बच्चासभक नाम बिना परिवारक सहमति आ विद्यालयक नियमक अनुरूप देखू। नैराक नाम लगा कऽ जँ कोनो बच्चाक निजी बात प्रकाशित होएत तँ हम विरोध करब।” शिक्षक संशोधित अनुरोध लिखलनि। मृतकक अपूर्ण काज उत्तराधिकारमे केवल भावनाक साथ नहि, अनुमति आ सीमाक संग जायत—ई बात शिक्षकक आँखिमे पहिल बेर स्पष्ट देखाइल।

दुपहरिया बितैत रमा प्रत्येक बकाया पर एक-एक उत्तराधिकारी कार्यालय खोजबए लगलीह। मजदूरीक दावा श्रम-अभिलेख विभागमे, उपचारक खर्च सम्बन्धित चिकित्सा-अधिकारी लग, अस्थायी निवासक सहायता राहत कार्यालयमे, आ निर्माणक उत्तरदायित्व अभियान्त्रिक जाँचमे जायत। नगर प्रतिनिधि कहलक, “एक्के समिति सभटा काज सँभारि लेत तँ लोककें सुविधा होएत।” अदिति उत्तर देलीह, “सुविधाक नामपर कोनो समिति तकनीकी जाँचक निर्णय लिखि नहि सकैत। हम सभ दावाक रास्ता खोलि सकैत छी, जाँचक अधिकार छीनि नहि।” तत्पश्चात् प्रतिनिधि प्रत्येक कार्यालयसँ लिखित प्राप्ति लेबाक प्रस्ताव देलक।

उर्मिलाक बहिन फेर उठलीह। “हमर बहिनक बहीक नकल अहाँ सभ लऽ रहल छी। मूल हमर लग रहत, ई पहिने निश्चित करू।” रमा सहमति देलीह। बहिन दोसर प्रश्न पुछलीह—“जँ तीन मास बाद कियो कहल जे कागद हराएल, तँ हम फेर पहिल दिनसँ

लड़ब?” लिपिक एहि बेर स्वयं जवाब देलक, “प्राप्ति क्रमाङ्क आ सत्यापित प्रतिक एक प्रति अहाँकेँ देल जाएत। जँ फाइल अगिला कार्यालय जाएत तँ ओकर गमन-पंजी सेहो देखाओल जा सकत।” बहिन कहलीह, “एखन हम ई वचन कागद पर चाहैत छी।” ओ वचन लिखाओल गेल। बहिन पहिल बेर अपन कुर्सीपर बैसलीह।

कबीर अपन घरक चाभी जेबमे राखैत पुछलनि, “नैराक बकाया पारिश्रमिक आ हुनकर कएल जाँचक खर्च अलग लिखल गेल?” रमा दूनू प्रविष्टि देखौलीह। एक सदस्य कहलनि जे परिवारक राहत अनुदानसँ बकाया समायोजित भऽ सकैत अछि। कबीर सिर हिलौलनि। “अनुदान विपत्तिक कारण भेटत, पारिश्रमिक कएल काजक बदला। एक नामक कारण दू अधिकार एक-दोसराकेँ खा नहि सकैत।” हुनका अपन पुरान झूठ मृत्यु-सूचनाक कारण रोकल मजदूरी याद अएल। ओ कहलीह, “ई भेद हमरा बहुत पहिने कोनो कार्यालय बुझा देने रहितय, तँ अनेक वर्ष बाँचि गेल रहितय।”

नव पंजीक पहिल पृष्ठ पूरा भेल तँ सभ लोक हस्ताक्षर लेल आगाँ नहि अएलाह। नीरज कहला जे अपन अनुष्ठान-रसीदक खातामे ओ स्वयं सही करताह, मुदा राहत-अनुदानक निर्गत रकमपर हुनकर सही मान्य नहि हो। उलटे ओ चाहैत छला जे राहतक हिसाबक लोक हुनकर निजी पारिश्रमिककेँ सार्वजनिक अनुदानक खर्च नहि लिखथि। रमा एहि स्पष्ट अस्वीकृतिक दर्ज कएलीह। नीरज एक अलग प्रति अपन बहीक भीतर रखलनि, जाहिमे दिन आ निर्णय लिखल छल। एहि प्रतिक उपयोग कहिया पड़त, से हुनका ज्ञात नहि छल; मुदा स्रोत आ जिम्मेदारीक रेखा आब कागदपर छल।

शशिभूषण एक पातर कपड़ाक थैलीसँ अधबनल किनार निकाललनि। वृद्ध रोगिणीक “एहि लेल कोनो सरकारी बिल नहि,” ओ कहला, “मात्र घरक पता परिवारक सहमतिसँ चाही।” सरिता थैली देखलीह। नैरा कखनो पीयर रंग पसिन करैत छलीह की नहि—एहन स्मृति खोजबाक प्रयास हुनका अकारण लगल। प्रत्येक मृतकक प्रिय रंग अलग छल, आ ओ सभ अबहुँ ककरो कपाटमे, बखरीमे, सन्दूकमे बनल रहत। ई वस्तु राज्यक कुल गणनामे नहि समबैत छल।

साँझक पहिने एक सरकारी सन्देश आयल। ऊपरक कार्यालय मृत्यु-गणनाक स्थिर सार-पत्र तत्काल चाहैत छल, मुदा बकाया दावाक पंजीकेँ केवल ‘स्थानीय स्वैच्छिक

प्रस्ताव' कहि रहल छल। पत्रमे लिखल छल जे जँ समितिक विधिवत् नेतृत्व आ अधिकृत हस्ताक्षर निश्चित नहि, तँ देय-पंजीक प्राप्ति विभागीय मान्यता नहि पाबि सकत। नगर प्रतिनिधि कहलक, “तँ हमरा अध्यक्ष बना दियौ। हम अपन हस्ताक्षर देब।” सरिता ओकरा देखलीह। “सरकारी मुहर जरूरी अछि, मुदा ओकर बदलामे शेष सभ लोकक आवाज चुप किएक हो?” ओ पुछलीह।

पत्र पढ़ैत-पढ़ैत बाहरक लोक फेर जमए लागल। मजदूर अपन दिनक पावती लऽ ठाढ़ छला, उर्मिलाक बहिन बहुकालसँ सुरक्षित राखल बही सम्हारैत छलीह, रुहानी बिना निजी नाम खोलने भोजनक हिसाब देबाक लेल तैयार छलीह। कबीर कहलनि, “जँ काल्हि नेतृत्वक कारण ई रजिस्टर स्वीकार नहि भेल तँ आजुक सभ सहमति केवल एहि कक्षमे रहि जायत।” अदिति कहलीह, “नेतृत्व बनत, मुदा जाँचक स्वतन्त्र अधिकार आ परिवारक सहमति लिखल रहत।” रमा सरकारी पत्रक खाली पाछू पृष्ठपर अगिला बैठकक सूचना लिखब शुरू कएलीह।

सरिता हाथ बढ़ा कऽ कलम मँगौलीह। “आजुक सत्यापित मृत्यु-गणना पठाउ,” ओ कहलीह, “एक अक्षर नहि बदलू। तकर संग लिखू जे शेष देयक पंजी खुलल अछि, ओकर स्वीकार आ भुगतानक अधिकार निश्चित करबाक बैठक काल्हि होएत। नेतृत्वक नाम आइ शोकक बीच कोनो एक परिवार वा कार्यालयक आदेशसँ तय नहि होएत।” अन्तमे सूचना पर उपस्थित प्रतिनिधिसभक नाम लिखल गेल, असहमतिक टिप्पणी सेहो जोड़ल गेल।

रमा मृत्युक कुल सत्यापित संख्या पर अनुमोदनक मुहर लगा देलीह। दोसर पंजीक माथपर कोनो अन्तिम मुहर नहि लगलीह; ओकर पहिल प्राप्ति-क्रमाङ्क जारी कऽ जिम्मेवार कार्यालयक उत्तर प्रतीक्षित लिखलीह। उर्मिलाक बहिन अपन नकल लऽ बाहर गेलीह। नीरज थारीमे राखल कुश आ रसीद अलग-अलग सम्हारि विदा भेलाह। कबीर नैराक निजी चिट्ठीवला लिफाफा फेर जेबमे राखलनि। सरिता खाली डिबिया उठौलीह—भात एखनहुँ बाँचल छल—आ दुआरपर रुकि पुछलीह, “काल्हि समितिक कुर्सी पर के बैसत? केवल एतबे नहि। जकर नाम नहि लिखल गेल, ओ प्रश्न के पूछत?” एतबा सुनि

रमा अगिला दिनक सूचनामे एकटा नव पाँति जोड़लीह—‘नेतृत्व, प्रतिनिधित्व आ भुगतान-अधिकारक सार्वजनिक निर्धारण’।

अध्याय १३३ • शासन के लेत

२०४०क आरम्भक ओहि बिहान अस्थायी कार्यालयक बरामदामे रमा तीनटा कुर्सी उल्टा कऽ राखने छलीह। पिछिला साँझ जे कुर्सी अध्यक्ष लेल खाली छोड़ल गेल छल, ओकर पररमे एकटा कील उधारि आएल छल। कुर्सी सीधा करिते कपड़ा फाटि सकैत छल। बढ़ईकेँ बजाएब उचित होएत, मुदा बैठकक पहिने लोक आबि जएताह; तँ रमा ओकरा कात लगा कऽ बाकीक कुर्सी गोल घेरामे लगबौलीह। मेजपर लाल जिल्दवला सत्यापित मृत्यु-पंजी बन्द छल। ओकर बगलमे देय आ अपूर्ण काजक नव पंजी खुलल रहबाक चाही, मुदा रातिक सील लागल कपड़ा एखनहुँ तकर ऊपर छल।

उर्मिलाक बहिन सबसँ पहिने पहुँचलीह। हुनकर बही जूटक थैलामे छल आ अंगुरीपर धुलाईक साबुनसँ पड़ल उज्जर रेखा एखनहुँ देखाइत छल। ओ खाली कागद देखि पुछलीह, “जँ अध्यक्ष चुनल जाइताह तँ हमर बहिनक मजदूरी ओहि दिनसँ गनल जाएत, जखन ओ सही करताह, कि जे दिनसँ उर्मिला काज कएने छलीह?” रमा कहलीह, “दावाक अवधि नहि बदलत। अधिकृत हस्ताक्षरक प्रश्न अलग अछि।” बहिन मेजक कात ठाढ़ भऽ गेलीह। “अहाँ सभ ई अलग-अलग बात लिखैत छी। हमरा सभकेँ एक्के पेट सँ समहारबाक होइत अछि।”

पछिला वर्षाक बाद अस्पतालक भीतसँ झड़ल चून ओसारमे जमा छल। हवा उठिते धूरि कुर्सीक नीचाँ घुमैत आ बहिनक थैलापर बैसि जाइत। रमा एकटा पुरान चादर बिछा देलीह, जे पर कागद रखल जा सकय। बरामदाक बाहर पानीक टोटी टपकैत छल। नल बन्द करबाक लेल पहुँचले मजदूर कहलनि, “एकरा मिस्त्री चाही। घुमा देलासँ बेर-बेर फूटत।” रमा हुनकर नाम आ मरम्मतक निवेदन लिखि लेलीह; ई खर्च मृतकक परिवारक देय-पंजीमे नहि जायत।

सरिता आबि कऽ सीधे लाल पंजीक लग नहि गेलीह। ओ बरामदाक कात ठाढ़ रही, जतय नैरा पहिले चप्पल उतारि हाथक कागद सोझ करैत छलीह। आइ ओ ठाम खाली छल। कबीर हुनका लेल पानि आनलनि। सरिता गिलास लेने बिना कहलीह, “काल्हि जे

प्रश्न पूछलहूँ, ओकर उत्तर मतदानसँ भेटत। मुदा कियो ई नहि कहय जे हम अपन बेटीक नामसँ पाँचटा मत माँगलहूँ।” कबीर कहला, “अहाँक मत एकटा अछि। नैराक काजक प्रमाण अपन जगह पर अछि। ओकरे दुबारा चुनावमे ठाढ़ करब अन्याय होएत।”

बैठक शुरू भेल तँ नगर प्रतिनिधि आधिकारिक पत्रक प्रति मेजपर ठेलि देलक। “ऊपरक विभाग एक अधिकृत हस्ताक्षर चाहैत अछि। अध्यक्षक नाम नहि भेजल गेल तँ सूची स्थानीय अभिलेख रहि जायत। राहतक अगिला किस्तो अटक सकैत अछि।” अदिति पुछलीह, “ई अटकबाक आदेश अछि कि अहाँक आशंका?” प्रतिनिधि पहिने पत्र दिस देखलक, फेर कहलक, “पत्रमे स्पष्ट देय-पंजीक मान्यताक शर्त अछि। किस्तक बात हम फोनपर सुनलहूँ।” रमा फोनक बातकें सत्यापित आदेशक रूपमे लिखबाक बदला ‘मौखिक सूचना, पुष्टि प्रतीक्षित’ लिखलीह।

दुआरपर तारा दू टुटल पटरीक बीच लकड़ीक छोट फट्टा रखि रहल छलीह। चक्कावला कुर्सी लऽ आएल एक वृद्ध आदमी बरामदामे चढ़ि नहि पाबि रहल छलाह। बैठकक पहिल घोषणा हुनका भीतर अनबा लेल रोकल गेल। प्रतिनिधि अधीर भेल, “पहिने अध्यक्ष चुनू, तखन व्यवस्था।” तारा माथ उठौलीह। “जे भीतर आबि नहि सकत, ओकरा बिना अध्यक्ष चुनब व्यवस्था नहि, काट-छाँट अछि।” लोक फट्टा धऽ राखलक, वृद्ध अपन गतिक अनुसार भीतर अएलाह। नव फट्टाकें स्थायी सुविधा कहल नहि गेल; तारा सुरक्षित प्रवेशक लिखित जाँच माँगलीह।

घेरामे बैसले एक युवक सूचना-पत्र मँगलक। ओ अपन बूढ़ मायकें पढ़ि सुनाबय चाहैत छल, मुदा पत्रमे ‘अधिकृत’ आ ‘प्रस्तावित’ शब्द एना जोड़ल छल जे पढ़ितो अर्थ अस्पष्ट रहय। सरिता पत्र फेर लिखबौलीह—के चुनल जाएत, के रुपया नहि बाँटि सकत, आ असहमति कतय दर्ज होएत। युवक मायकें पढ़ि सुनौलक। वृद्धा पुछलीह, “हम जँ बीचमे उठि जाएब तँ हमर बात काटल जाएत?” रमा कहलनि, “नहि, अहाँक कहनाइ लेखामे रहत।” वृद्धा तेकरा अपन नकलमे देखबाक आग्रह कएलीह।

रुहानी अपन थैलीसँ दूनू तरहक कागद निकाललीह—भोजन, चाउर, औषधि आ श्रमक खुला हिसाब; आ निजी पहिचानसँ सम्बन्धित बन्द लिफाफाक प्राप्ति-सूची। “आश्रयक लोकसभ मतदानमे भाग लेताह की नहि?” ओ पुछलीह। नगर प्रतिनिधि उत्तर देलक,

“नाम चाही।” रुहानी कहलीह, “प्रतिनिधित्व लेल पात्रता जाँचू, मुदा निवासीक निजी ठेकान सार्वजनिक सूचीमे नहि छापू। एकर उपाय काल्हि रहल, आइ किएक नहि रहत?” रमा प्रस्तावित नियममे सुरक्षित सत्यापनक अलग खण्ड बनौलीह। सभे ओहि खण्डक शब्द नहि बुझल, तेँ रुहानी उदाहरणसँ बुझौलीह—भोजनक बोरा गनल जा सकैत अछि, मुदा ओ खेनिहार व्यक्ति ककर भय सँ एतय आएल, से सबहक देखबाक वस्तु नहि।

गोमती आ उमा धुलाईघर सँ सीधा पहुँचलि। उमा कहलनि जे बिहानक दू गट्टर अपूर्ण छोड़ि अएलीह; हुनका काजपर घुरबाक समय चाही। अध्यक्षक चुनावमे तीन घण्टा बैसबाक अर्थ हुनकर दिनक मजदूरी घटब छल। एक स्वयंसेवक कहलक, “समाजक लेल एतेक त्याग कएले बिना काम चलत?” उमा हँसलीह नहि। “त्यागक रसीद कियो काटत? हमर नाम समिति मे होएत, मुदा कोठरीक भाड़ा के भरत?” एहि प्रश्नपर सरिता अपन पर्स नहि खोललीह। ओ कहलीह, “व्यक्तिगत दानसँ प्रतिनिधित्व खरीदल नहि जाए। बैठकक समय, यातायात, बाल-बच्चाक देखभाल आ श्रम-हानिक व्यवस्था पहिने लिखू। स्रोत नहि हो तँ झूठ भुगतानक वचन नहि दिअ।”

नगर प्रतिनिधि कहलनि जे ई सब नियम बनलापर चुनाव सप्ताह भरि टारल जाए। उर्मिलाक बहिन रजिस्टरक खाली पन्ना खोलि देलीह। “हमरा सभक दावाक सुनवाई सप्ताह भरि टारल जाएत?” विवाद थमबाक नाम नहि लैत छल। अदिति एक मध्यवर्ती रास्ता रखलीह—आज सीमित अवधिक कार्यसमिति चुनल जाए, जे प्राप्ति आ पत्र-व्यवहार देखय; स्थायी प्रतिनिधित्वक चुनाव खुला सूचना, पहुँच आ खर्चक व्यवस्था बाद हो। “जे आज अनुपस्थित छथि हुनका सभकेँ स्थायी निर्णयसँ वञ्चित नहि करब,” ओ स्पष्ट कएलीह।

कबीर हुनकर प्रस्तावक एक पाँति बदललनि। “अस्थायी कहल गेल कुर्सी बहुत बेर पक्की भऽ जाइत अछि। समाप्तिक दिन आ काजक सीमा लिखू।” रमा लिखलीह—तीस दिन वा अधिकृत विस्तृत सभा, दुनूमेसँ जे पहिने हो; ताधरि नव सदस्यक नाम जोड़बाक प्रक्रिया खुला। नगर प्रतिनिधि आग्रह केलक जे अध्यक्षक पद सीधे ओकरा भेटय; पत्राचार ओहि सँ त्वरित होएत। गोमती पुछलीह, “हुनकर मुहर उपयोगी अछि।

मुदा हमर कपड़ाक पालि आ ढुलाईक रसीद पर विवाद होए तँ ओ स्वयं जाँच करबाह, निर्णय करबाह आ अपीलो सुनबाह?” प्रतिनिधि उत्तर खोजैत रहि गेल।

रमा एक रेखा खींचि दायित्व बाँटलीह। निर्वाचित संयोजक बैठक आ देय-पंजीक अनुवर्ती काज देखत; कार्यालयक अधिकृत कर्मचारी निर्धारित रूपमे पत्र प्राप्त कऽ अग्रेषित करत; तकनीकी कारणक जाँच स्वतन्त्र दलक हाथमे रहत; भुगतान स्वीकृति सम्बन्धित वैध कार्यालयें देत। एहि पदसभमे कियो ककर स्थान नहि लेत।

एक नाविक जकर रोजीक बाट अस्पतालक पाछाँसँ गुजरैत छल, पूछलक जे अस्पतालक बाहा बन्द भेलाक जाँच एहि नव समितिक आदेशसँ फेर शुरू होएत की नहि। अदिति जवाब देलीह, “जाँच चलि रहल अछि; सभ नाप परखल नहि गेल। एतय हम जाँचकर्ताक नाम आ आगामी उत्तरक तारीख माँगि सकैत छी, दोषक नब फैसला नहि सुना सकैत छी।” नाविककें ई उत्तर अपूर्ण लगल। ओ अपन दू दिनक बन्द कमाइक हिसाब देखौलनि। रमा ओकरा जाँचक प्रमाण नहि, अलग जीविकाक दावाक रूपमे प्राप्ति देलीह। नाविक कागद सम्हारि लेलनि। “तखन अध्यक्षक हस्ताक्षर कोन कागदपर?” प्रतिनिधि पुछलक। रमा उत्तर देलीह, “समितिक प्रस्तावपर। सरकारी निर्गमक आदेशपर नहि।” रमा अपन नाम प्रस्तावक सचिवक जगह राखबाक आग्रहो नहि कएलीह; कहलीह, “लेखा लिखनिहारक गलती जाँचबाक लोक अलग चाही।”

बैठकक बीच अनिरुद्ध अएलाह। पट्टी बान्हल हाथक कारण दरवज्जाक कुण्डी उठबैत हुनका देरि लागल। ओ कातक कुर्सीपर बैसि रहलाह, मतदानक दावा नहि कएलनि। प्रतिनिधि हुनका देखिते कहलनि, “चिकित्सक रहबाक कारण अहाँ समितिक नेतृत्व लेल उपयुक्त छी।” अनिरुद्ध शान्त स्वरमे कहला, “हमर उपचार बाँकी अछि। सुरक्षित निकासीक पुरान गलत निर्देश सम्बन्धी हमर टिप्पणी जाँचमे गेल अछि। ओकर समीक्षा सँ अलग बैसि अपन पदक प्रमाण देब उचित नहि।” देवी गोंड, जे उपचार-पत्र लऽ बगलमे ठाढ़ छलीह, कहलनि, “हुनकर घाव देखलहुँ। हमहुँ अपन प्रशिक्षण पूरा नहि कएने छी। बाँचि गेलहुँ से कारण हम मृतकक परिवारक प्रतिनिधि नहि बनि जाइत छी।”

सरिता एतबा सुनि आगाँ अएलीह। “हमरा अध्यक्ष बनेबाक प्रस्ताव नहि राखू। नैरा मरि गेलीह, मुदा ओ एहि समितिक विरासत नहि छलीह। बेटी रहलीह। अपन काम, अपन

गलती सुधारबाक इच्छा आ अपन गुप्त बात हुनकर छल। हुनकर मायक अधिकार हुनकर जगह पर बैसबाक आदेश नहि अछि।” ओ उर्मिलाक बहिन दिस मुड़लीह। “अहाँ सेहो चाहू तँ मना कऽ सकैत छी। शोकमे कहल ‘हाँ’ केँ स्थायी सहमति नहि गनू।” बहिन उत्तर देलीह, “हम नेतृत्व नहि, अपन बहीक सुनवाई चाहैत छी। मुदा जँ कियो हमरा बहीक बात चुप करौत, हम बीचमे टोकब।”

निर्वाचनक पहिने रुहानी उपस्थिति-पंजीकेँ फेर खोलबौलीह। भीतर रहनिहार सभक निजी नाम खुला सूचीमे लिखल नहि गेल। जे लोक अपन प्रतिनिधि अपनासँ चुनने छलाह, तिनकर स्वीकृतिक बन्द प्रति एक स्वतन्त्र गणनाकरू लग राखल गेल; ओ प्रति सार्वजनिक पट्टीपर नहि लगत। कार्यसमितिक अस्थायी चुनावमे उपस्थित अलग-अलग कार्यदल आ दावेदारक अनुमोदन लेखापर साफ लिखल गेल। अनुपस्थित लोकक नामे मत नहि गनल गेल। एक वृद्ध कहलनि, “मत देबाक अधिकार सँ बेसी जरूरी अछि, बादमे हम गलत निर्णय बदलवा सकी।” रमा अपील आ पुनर्विचारक ठाम खाली नहि छोड़लीह।

एक मृतकक ससुरालक व्यक्ति कहलनि जे आन परिवार सभ हुनका विरुद्ध झूठ निर्णय करि देत। हुनका अपन घरक भीतरे उत्तराधिकारक विवाद छल। कबीर स्पष्ट कएलनि जे समितिक अस्थायी मतगणना उत्तराधिकारक मुकदमा नहि निपटाओत। सरिता हुनकासँ पुछलीह, “अहाँ जे कागद देब चाहैत छी, ओकर प्रति दोसर पक्षकेँ नियमक अनुसार देखाएब स्वीकार करब?” व्यक्ति चुप भऽ गेल। रमा दावा स्वीकार कएलीह, मुदा सम्बन्ध आ हिस्साक निर्णय ‘प्रमाण आ सक्षम कार्यालयक परीक्षण प्रतीक्षित’ लिखलीह।

गोमतीक नाम उमा प्रस्तावित कएलीह। गोमती पहिने मना कएलीह। “हमरा घरमे बीमार लोक छथि। दिनभरि बैठकी कएबाक लेल हमर हाथ खाली नहि।” उमा कहलीह, “अहाँ अकेले नहि करब। पालि बँटत। हमर काजो अहाँक सुनवाईक काज जकाँ जरूरी अछि।” कबीर प्रस्ताव रखलनि जे गोमती सीमित अवधिक संयोजक बनथि; हुनकर अनुपस्थितिमे पहिने सँ घोषित वैकल्पिक सदस्य बैठक चलाबथि, मुदा स्वयमेव ककरो निजी अभिलेख खोलबाक अधिकार नहि भेटय। तारा जोड़ेब चाहलीह—प्रत्येक निर्णयक प्रतिलिपि सार्वजनिक हो, निजी विवरण हटाकऽ।

नगर प्रतिनिधि फेर अपना नाम आगाँ रखलक। ओकर पक्षमे दू सदस्य कहलनि जे विभागीय पहुँच बिना रजिस्टर निष्प्रभावी रहत। गोमतीक पक्षमे श्रमिक, आश्रय आ किछु परिवारक प्रतिनिधि बोललाह। सरिता एतय ककरो उग्र समर्थक नहि बनलीह। ओ प्रतिनिधिसँ पूछलीह, “अहाँ निर्वाचित भेलाक बाद अपन विरुद्ध शिकायत दर्ज होए देब?” ओ कहलक, “नियममे रहत तँ देब।” सरिता कहलीह, “तँ नियम अध्यक्ष चुनबाक पहिने हस्ताक्षर करू।” गोमती सेहो ओहि कागदपर हस्ताक्षर कएलीह।

मतगणनामे गोमतीक प्रस्ताव बहुमतसँ स्वीकृत भेल, मुदा नगर प्रतिनिधि अपन असहमति लिखबौलक—विभागीय मान्यताक जोखिम अछि। ओकर असहमति काटल नहि गेल। एक उपलब्ध सरकारी लिपिक पत्र अग्रेषित करबाक जिम्मेदारी लेलक, लिखित अधिकारक सीमा संग। रमा सचिवीय अभिलेख सँभारबाक शर्तपर सहमत भेलि, एहि उल्लेखसँ जे प्रत्येक संशोधनक तारीख आ प्रस्तावक नाम राखल जाएत। तीस दिनक बाद गोमतीक पद स्वतः फेर परीक्षणमे जायत।

चुनावक प्रमाण-पत्रपर चारि अलग बात लिखल गेल—कतेक लोक उपस्थित छल, कतेक मत देल गेल, कोन लोक बाहर रहि गेल, आ अगिला खुला सभाक सूचना कोना पहुँचाओल जाएत। गोमती एहि कागद पर सही करबाक पहिने उमा सँ पूछलीह, “तोहर पालि बदलबाक व्यवस्था भेल?” उमा उत्तर देलीह, “एखन केवल प्रस्ताव अछि। हम काल्हि फेर देखब।” गोमती ‘भेल’ लिखल शब्द काटि ‘व्यवस्था करबाक दायित्व’ लिखबौलीह। ओ सही कएलीह, मुदा अपन जीतक घोषणा करबाक आग्रह नहि कएलनि। मेजपर राखल उधारल कीलवला कुर्सी कियो आगाँ नहि अनलक। गोमती गोल घेराक साधारण कुर्सीपर बैसलि।

नव संयोजक पहिल काज चूनक ढेरी हटेबाक नहि, उर्मिलाक बकाया प्रविष्टि पढ़बाक चुनलीह। बहिनक बहीसँ पालिक तिथि, अस्पतालक प्रति आ घाटपर धुलाईक रसीद फेर मिलल। उमाक नव मजदूरी अलग पाँतिमे रहल। लिपिक कहलनि जे पुरान ढुलाईक एक रसीद अस्पष्ट अछि। गोमती आदेश नहि देलीह जे पूरा रकम तत्काल निकासल जाए। ओ प्राप्त प्रमाणित अंशक अग्रेषण आज्ञा करबाक, शेषक मिलान लेल निर्धारित दिन रखबाक

प्रस्ताव देलीह। उर्मिलाक बहिन पुछलीह, “अग्रेषणक प्रतिकेँ हम घर लऽ जा सकब?” रमा प्रतिक कागद तैयार करए लगलीह।

नीरज पंडा बहार दिस ठाढ़ छला। भीतर सँ पावतीक चर्चा सुनि हुनका बजाओल गेल। एक सदस्यक पुरान प्रस्ताव फेर उठल—अनुष्ठानक रसीद राहतक सामूहिक रकममे जोड़ि देल जाए। नीरज अपन बहीक पिछला दिनक लिखित असहमति खोललनि। “जे परिवार सेवा लेलक, ओकर सहमति आ पारिश्रमिकक हिसाब अलग अछि; जे परिवार सेवा नहि लेलक, ओकर सहायता घटत नहि। हमर रसीदक उपयोग हमर सेवाक जाँचमे करू, राहतक निर्गत प्रमाणमे नहि।” गोमती एहि पाँतिक प्रति अलग लिफाफामे राखबौलीह; नीरज स्वयं राहतक भुगतान-अनुमोदक नहि बनलाह।

रुहानीक खुला भोजन-हिसाबक प्रति सेहो दावाक सूची संग जुड़ल, मुदा निजी आश्रय-पत्र बन्दे रहल। नगर प्रतिनिधि एहि पर आंशिक असहमति दर्ज केलक। ओ कहलक जे ऊपरक कार्यालय पूरा नाम माँगि सकैत अछि। गोमती उत्तर देलीह, “जँ माँग आएत तँ लिखित कारण आ अधिकृत पहुँच पूछब। ककरो जीवनक डरकेँ खर्चक हिसाबमे नहि बेचल जाएत।” एहि निर्णयसँ रसोइक काम न रुकल; रुखसानाकेँ सामग्रीक अगिला माँग पठेबाक समय मिलल। उमा सेहो अपन पालिमे घुरबाक लेल उठलीह।

दुपहरक बाद सरिता बाहरी ओसारमे अपन डिबिया खोललीह। नैराक भाग अलग निकालबाक पुरान आदति फेर उँगुरीमे फँसि गेल, मुदा एहि बेर ओ भात गोमतीक संग बाँटलीह। गोमती कहलीह, “हमरा अध्यक्ष कहिते लोक हमरा कोनो आन व्यक्ति बुझए लगत।” सरिता उत्तर देलीह, “लोक हमर मुँहपर नैराक माय कहैत अछि, आ हम अपने कोनो बेर अपन नाम बिसरि जाइत छी। अहाँ अपन कामक समय नहि बिसरू।” दूनू बिना आन वचनक कनेक देरि भोजन कएलनि।

कार्यालयसँ मुहर लागल अन्तिम उत्तर नहि आयल। मुदा सन्ध्या धरि सत्यापित मृत्युक पुरान सारपत्र जसक तस रहि गेल; नव देय-पंजीक पहिल दावासभक अलग-अलग प्राप्ति-क्रमाङ्क, अग्रेषणक तिथि आ अपेक्षित उत्तरक नाम लिखल गेल। गोमती प्रस्ताव-पंजीमे एक पाँति अपन हाथसँ जोड़लीह—निर्वाचित संयोजकक निर्णयसँ कोनो देय स्वतः चुकता नहि मानल जाए; प्रत्येक दावेदारकेँ उत्तर देखबाक आ चुनौती देबाक अधिकार

रहत। रमा नकल बाँटैत पुछलीह, “पहिल सार्वजनिक समीक्षा कहिया?” गोमती कहलीह, “जाहि दिन भुगतानक जवाब आए, आ जँ नहि आए तँ निर्धारित दिन बिना जवाबक कारण पूछब।”

एतबामे नगर प्रतिनिधि चुपचाप खाली कार्यालयमे घुरि अएल। ओ अपन नामक आगाँ लिखल असहमति पढ़लक आ कहलक, “हम हारि गेलहुँ, मुदा काजक डर एखनहु अछि। नेतृत्व लऽ कऽ जे लोक थाकि जाइत छथि, हुनका सभक जगह फेर के लेत?” गोमती रजिस्टर ओकरा दिस घुमौलीह। “अहाँक डर सेहो लिखू। मुदा हमर सँग बैसि एक बेर उर्मिलाक बकाया जवाबक दिन गनू।” प्रतिनिधि किछु क्षण कलम धएने रहल। फेर ओ अपन अगिला बैठकक तिथि लिखलक, मुदा गोमतीक नामक नीचाँ नहि—असहमत सदस्यक अलग खानेमे। कुर्सी पर बैसल लोक बदलि गेल छल; कार्यालयक उत्तरदायित्व एखन बदलबाक परीक्षा देबए जा रहल छल।

अध्याय १३४ • युधिष्ठिरक अरुचि

कुरुक्षेत्रक युद्ध समाप्त भेलाक बादक हस्तिनापुरमे, राजसभाक पछिला कक्षमे एकटा मुकुट कपड़ासँ झाँपल राखल छल। ओहि कपड़ाक एक कोना भीजल छल; राति भरि छतक फाँकसँ पानी टपकल छल आ पहरेदार मुकुट हटेबाक साहस नहि कएने छल। बिहान युधिष्ठिर अएलाह तँ पहिल नजर मुकुटपर नहि, ओकर नीचाँ जमा पानिक छोट गोल दागपर पड़लनि। ओ दाग अंगुरीसँ पोंछि सकैत छला, मुदा ओ हाथ पाछाँ घुमा लेलनि। राजक कक्षमे पानि कोना रोकल जाए, ई पूछबाक लोक कियो नहि छल।

दुआरक बाहर तीन गो व्यक्ति ठाढ़ छलाह। एक राजलिपिक, जकर कलमक नोक घिसि गेल छल; दोसर धानक कोठी नापबला वृद्ध; तेसर स्त्री, जिनकर काँखमे धागाक दू गट्टर आ हाथमे फाटल पट्टा छल। पहरेदार हुनका सभकेँ कहलनि जे राज्याभिषेकक निर्णयक पहिने कोनो आवेदन नहि सुनल जाएत। स्त्री ओहि कपड़ाक गट्टर नीचाँ राखि देलीह। “हम अभिषेक नहि देखब,” ओ कहलीह, “काल्हि सँ भुखाएल लोककेँ कपड़ा देबाक आदेश के लिखत, से बुझब।” भीतर ई बात स्पष्ट सुनाइ पड़ल।

युधिष्ठिर कहला, “हुनका सभकेँ भीतर अनू।” पहरेदार एक क्षण मुकुट दिस देखलक, मानू सुनवाईक अनुमति ओतहि सँ निकलत। वृद्ध कोठी नापबला ढीला ढाल तराजू लऽ भीतर घुसलाह। स्त्री दुआरपर पएर पोंछि कऽ अएलीह, यद्यपि फर्शपर पहिनहि सँ रणभूमिक धूरिक महीन तह छल। युधिष्ठिर हुनका बैसबाक संकेत कएलनि; ओ नहि बैसलीह। अपन दावाक पर्ची ओ धागाक बीचसँ निकाललीह।

“सैनिकसभक लेल कपड़ा बनौल गेल,” स्त्री कहलीह। “जे जीवित घुरल, से कपड़ा पहिरि लेलनि। जे नहि घुरल, हुनकर देनदार ककरा सँ माँगू? बननिहारक मजदूरी मृत्युक संग नहि मरैत अछि।” लिपिक पर्ची देखलक। आदेश पर युद्धक पहिनुक एकटा अधिकारीक मुहर छल, मुदा भुगतानक खाना खाली। “अधिकारी बाँचल छथि कि नहि, जाँच चाही,” ओ कहलक। स्त्री उत्तर देलीह, “जाँचू। मुदा बिनु जाँचक हमर देय शून्य लिखबाक अधिकार ककरा अछि?”

युधिष्ठिरक ओठपर त्यागक बात छल। ओ किछु काल पहिने भाइसभकेँ कहि चुकल छला जे एहन रक्तक मूल्यपर भेटल राज्य हुनका स्वीकार नहि। मुकुटक चमक हुनका लेल हिंसाक धूपमे गरम भेल लोहाक समान छल। एखन सामने ठाढ़ स्त्री ओहि शब्दक अर्थ बदलि रहल छलीह। राज्य नहि लेबाक हुनकर अधिकार एकटा व्यक्तिक निर्णय छल; स्त्रीक घरमे कत्तेक दिन चूल्हि नहि जरत, ओकर परिणाम कतेको दोसर लोक सहत।

भीम कक्षमे पहुँचला तँ हुनका हाथमे बासी रोटीक आधा टुकड़ा छल। ओ युद्धक बाद सँ भोजनक थारी पूरा नहि छोड़ैत छला; कतहु न कतहु अन्नक कमी दिखैत छल। युधिष्ठिरक चुप्पी देखि कहला, “भाइ, राजपाट नहि चाही तँ नहि चाहू, मुदा कोठीक ताला खोलबाक लोक चाही। सैनिकक विधवा, श्रमिकक बालक आ घायल घोड़ा सभ कोनो प्रतिज्ञाक प्रतीक्षामे नहि ठाढ़ रहि सकैत।” कहैत-कहैत ओ रोटी पूरा खएने बिना मेजपर राखि देलनि। स्त्री टुकड़ाक दिस नहि तकलीह।

अर्जुन पाछाँसँ अएलाह। हुनकर वस्त्रपर ओहने माटिक गन्ध छल, जकरा धोएलासँ युद्धक दिन सभ नहि मिटैत। “रथ आ अस्त्रक लेखा तैयार अछि,” ओ कहला, “मुदा रसदक काम करनिहार अनेक जनक नाम पहिल सूचीमे नहि छल। आजुक राजकोषक हिसाब ककरा आधारपर बनत?” वृद्ध तराजू धरनिहार कहलनि, “जाहि भण्डारमे तीन दिनक धान अछि, ओकरा तीस दिनक धान कहब आसान अछि। तखन कागदपर राज्य बचि जायत आ नगरमे लोक मरि जाएत।”

युधिष्ठिर बासनमे रखल जल उठौलनि। हाथ काँपल नहि; ई स्थिरता हुनका अपन भीतरक कठोरता जकाँ लगल। “हम युद्धक कारण हजारो घर उजरब देखलहुँ। आब अपन नामसँ ओकरा सभपर शासन करब? हमर प्रतिज्ञा वन जाएबाक छल। ओहि ठाम बिनु अधिकारक रहब, बिनु आदेशक। जे दूषण भेल, ओकर भार माथपर रहत।” विदुर, जे एखन धरि कक्षक कात बैसल छला, पुछलनि, “जँ अहाँ चलि जाएब, देयक आदेश पर के सही करत?”

युधिष्ठिर कहला, “आन योग्य लोक।” विदुर पुनः पुछलनि, “ओ योग्य लोक नियुक्त के करत? नियुक्तिमे अपील कतय होएत? ओ जँ अपन सेनाक लोककेँ पहिने भुगतान देत आ पराजित पक्षक विधवाकेँ टारत, तँ वनक मौन एहि भेदक उत्तर देत?” कक्षमे

पहरेदारक खड़ाऊँक घिसघिस सुनाइ पड़ल। विदुरक स्वरमे आरोप नहि, मुदा प्रश्न बिनु सहानुभूतिको कठिन छल। “त्यागक इच्छा सम्माननीय भऽ सकैत अछि,” ओ कहला, “त्यागक अधिकार आ आनक देय रोकबाक अधिकार एक नहि।”

एतहि द्रौपदी पहुँचलि। ओ आइ राजक रानीक वेशमे नहि छलीह। हुनकर केश बाँधल छल, मुदा केशक एक पतली लट बेर-बेर कपारपर खसैत छल। अपन पुत्रसभक निधनक बाद लोक हुनकर सामने धीरे बोलैत, मानू आवाज तेज भेलासँ शोक आओर सत्य भऽ जायत। ओ कक्षमे प्रवेश करिते सभकेँ हाथक इशारासँ ओहिना बोलैत रहबाक अनुरोध कएलीह। “हमर दुखक कारण ककरो मजदूरीक बात बीचमे नहि रोकू,” ओ कहलीह।

धागा लऽ आएल स्त्री द्रौपदीकेँ प्रणाम करब चाहलीह, मुदा द्रौपदी हुनकर गट्टर उठेबामे सहायता कएलीह। ओकर कपड़ामे छोट नील धारी छल, जे युद्धक पहिने उत्सवक सजावट लेल चुनल गेल रहितय तँ सुन्दर लगितय। एखन ओ वस्त्र घाव बान्हबाक पट्टी बनल छल। “ई कपड़ा बनबैत अहाँकेँ के नाप देलक?” द्रौपदी पुछलीह। स्त्री उत्तर देलीह, “घायल सभक देखभाल करनिहार। पहिले सिपाहीक नाप देलनि, तखन शेष कपड़ामे जे बच्चा समाइ सकल, ओकर कपड़ा बनल।”

द्रौपदी युधिष्ठिर दिस तकलीह। “अहाँ राजसिंहासनक भार छोड़बाक सोचैत छी। हम अपन बेटासभक रिक्त शय्या छोड़ि कतय जाएब? हमहुँ चाही तँ एहि कक्षसँ बाहरे रहि सकैत छी। मुदा स्त्री जे कपड़ा बनबैत रहलीह, ओ हमरा सँ आ अहाँ सँ धनक अनुमति नहि, देयक बाट पूछैत छथि। हुनकर प्रश्न सुनबाक काज दुःखक समाप्ति धरि टारल नहि जा सकैत।” युधिष्ठिर जवाब देबाक स्थानमे बाहरक आँगन दिस तकलनि।

आँगनमे शोकाकुल लोकक पाँति बढि रहल छल। केओ मृत सैनिकक शस्त्र घुरेबाक आग्रह लऽ आएल छल, केओ पतिक नाम आ देह नहिँ भेटलाक कारण अन्त्येष्टिक असमर्थता। कोनो पर्ची पर नहि लिखल छल जे ककरा दुःख अधिक अछि। एक विधवा, जकर घर युद्धमे पराजित पक्षक सप्लाई करैत छल, दुआरपर रोकल गेलीह। पहरेदार कहलक, “ई सभ विजेताक राजसभा अछि।” द्रौपदी ओहि वाक्य सुनि दरवज्जा दिस चललीह।

विधवा भीतर आबि अपन परिचय आप कहलीह; पराजितक पक्षक परिचय हटेबाक आग्रह नहि कएलनि। हुनकर खेतक बैल सेनाक सामान ढोएबाक लेल पकड़ल गेल छल। आब बैल नहि, कागदपर करक देय बाकी। “हम शस्त्र नहि उठौने रही,” ओ कहलीह, “मुदा कर वसूलीक आदमी युद्धक पहिनुक हिसाब माँगैत अछि। कहैत अछि, बैल देनाइ स्वेच्छा छल।” लिपिकक नजर नीचाँ गेल। कागदपर बैल उठाओल गेलाक निशान छल, मुदा स्वेच्छाक सहमति नहि।

भीम अधीर होए लगलाह। “जँ अन्याय भेल अछि तँ कर हटाउ। एतबा लेल एतेक लेखा किएक?” विधवा सिर हिलौलीह। “कर हटत तँ नीक। मुदा बैलक दामक दावो रहत। आ जँ कियो कहत जे हम झूठ बजैत छी, तँ हमर गामक दू गवाह सुनल जाए।” विदुर उत्तर देलनि, “आरोप आ भुगतान दुनू अलग रखब पड़त। बैलक दामक परीक्षण कागद आ गवाहसँ होएत। जाँच धरि देयक कारणसँ ओकर घर बन्द नहि कएल जाए।”

युधिष्ठिर उठि ठाढ़ भेला। सिंहासनक ठाम जायब एहि कक्षसँ दू मोड़ दूर छल। ओ ओतय नहि गेलाह। आँगनक खम्भा धएने कनेक देरि ठाढ़ रहलाह। बाहर एक बालक रेखा खींचि गोटीसँ खेलि रहल छल। ओकर माय नाम लिखेबाक लेल पाँतिमे ठाढ़ छलीह। बालक हर बेर गोटी ओहि रेखासँ बाहर फेंकि दैत आ फेर नया रेखा खींचैत। युधिष्ठिरकें लगल मानू राजक सीमा एहि बालकक चाकसँ खींचल गेल अछि; हवा चलिते धूरि ओकरा मेटि देत। ओ अपन एहि बोधकें कोनो दैवी आदेश नहि मानलनि।

विदुर दोसर पंजी मँगौलनि—युद्धमे दिन-रात भोजन बनौनिहारक हिसाब। कोठी नापबला वृद्ध कहला जे रसोइक काज सेनाक संग घूमैत रहल; बहुत परिवारक नाम रसोइक बर्तन पर राखल निशानसँ पहिचानल जा सकैत अछि, मुदा बर्तन अपने भुगतानक प्रमाण नहि। स्त्रीक लिखावट, गवाह आ बचल धानक माप सेहो चाही। “सभ ठाम दखल देब,” भीम कहला। विदुर हुनका कातमे बैसौलकनि। “सभ ठाम पहुँचब आवश्यक अछि, मुदा सभ ठाम पहुँचि अपन पसिनक उत्तर लिखि देब न्याय नहि।”

एक युवक कहलक जे ओकर पिता विजयक राति घायलसभकें पानी पिआओलनि; दोसर कहलक ओकर भाई पराजितक शिबिरमे वैह काज कएने छल। दुनूक लेल पानी समान छल, मुदा देय-बहालीक सूची अलग-अलग बनल छल। अर्जुन पहिल सूची अपन

हार्थे उलटौलनि। “नाम ककरो वीरता प्रमाणित करबाक आधारपर नहि, कएल काजक आधारपर जाँचू,” ओ कहला। युवक तुरन्त पुछलक, “जे काज देखनिहार मरि गेल, ओकर बात के सुनत?” किछु क्षण उत्तर नहि भेटल।

द्रौपदी ओहि युवककेँ पानी देलीह। “जे देखलहुँ से कहू। जे दोसरासँ सुनलहुँ ओकर स्रोत कहू। जे अन्दाज अछि ओकरा अन्दाज कहू। सभ बात सत्यापन माँगत, मुदा अनसुन्न नहि होएत।” अपन मुँहसँ निकलल एहि पाँतिक द्रौपदी स्वयं परीक्षण करए लगलीह। ओ जानैत छलीह, राजमहलक स्त्रीक सुनवाई आसानीसँ सभकेँ नहि भेटैत। ओ विदुरकेँ कहलीह, “पंजीक काज एतय समाप्त नहि हो। जकरा भीतर आबय नहि देल गेल, ओकर आवेदन कोना पहुँचल से सेहो गनू।”

दोपहरि धरि कक्षक हवा गरम भऽ गेल। रखल पानि कम पड़ल। भीम अपन आधा रोटी उठबैत देखलनि जे ओ सूखि कड़क भऽ गेल अछि। ओ बाहर गेलाह आ रसोइया लगसँ सभ पाँतिमे ठाढ़ लोक लेल पानि आ किछु खयबाक व्यवस्था करबौलनि। रसोइया पुछलक, “एहि काजक हिसाब कतय लिखी?” भीम पहिने हँसबाक चाहलनि, फेर गम्भीर भेला। “ओहि ठाम लिखू जतय बिनु नामक श्रमक लेखा रहय। भोजन देलहुँ से अन्न अपने-आप भरि नहि आएत।”

एक वृद्ध शिल्पकार अपन पुट्टीपर छोट लकड़ीक सन्दूक लऽ आएल। युद्धसँ पहिने ओ पुलक मरम्मत कएने छल। पुल टुटल नहि, मुदा ओहि परसँ गुजरल रथसभक कारण पटरा फेर बदलल गेल। ओ अपन मेहनताना माँगय नहि, पहिले जाँच चाहैत छल जे जकर नामसँ भुगतान चुकता देखाओल गेल, ओ रुपया ओकरा भेटल नहि। लिपिक सन्दूक खोलि देखलक; भीतर दू पुरान पावती, माटिसँ लागल नाप-डोरी आ एकटा सिक्का छल। सिक्का कोनो अपराधक प्रमाण नहि, केवल मजदूरीक समयक बचत छल।

युधिष्ठिरकेँ एतबा अभिलेख देखैत-देखैत ओहि रातिक स्मृति घेरए लगल, जखन रणभूमिपर घायल आ मृतकक बीच भेद करब कठिन छल। ओ अपन आँखि मूनि लेलनि। हुनका कानमे जकाँ तीरक पंख खड़कबाक आवाज अएल; कक्षमे कोनो धनुष नहि छल। आँखि खोलिते ओ देखलनि जे केवल फाटल झरोखासँ हवा कपड़ाक सिरा हिला रहल

अछि। अपन भयकें ओ युद्धक प्रमाण नहि बनौलनि, न ओकरा राजक निर्णायक संकेत मानलनि।

“हमरा वन जाएबाक इच्छा एखनहुँ अछि,” युधिष्ठिर स्पष्ट कहला। “एहि इच्छाकें अहाँ सभक काजक बदला रखब, तखन ई अन्याय होएत। मुदा राजक नाम लैत हमर मन फेर रणभूमि दिस भागैत अछि।” अर्जुन एहि स्वीकारोक्तिकें कमजोरी नहि कहला। “हमहुँ अनेक वचनक भारसँ छूटब चाहैत छी,” ओ कहला, “मुदा एतय ठाढ़ लोकक वचन हम देलियनि नहि। तकरो उत्तर बाकी अछि।” दुनू भाइ बीच कोनो विजयी तर्क नहि भेल।

द्रौपदी अपन मृत पुत्रसभक नाम मनमे कहलीह। ओ नाम लिखि कऽ राजक खातामे दानक वस्तु बनए नहि चाहैत छलीह। तथापि हुनका मालूम छल जे मृतकक परिवार लेल सार्वजनिक सहायता आ निजी स्मृति अलग-अलग अछि। ओ युधिष्ठिरकें कहलीह, “हम अपना लेल शोक करबाक समय माँगब। मुदा जे स्त्रीक दाम दू माससँ रोकल अछि, ओकरा हमर शोकक अवधि नहि कहब। जँ अहाँ शासन करब, सीमा बुझि करब; जँ नहि करब, तकर वास्तविक व्यवस्था करि जाएब।”

नकुल घोड़ाशालाक हिसाब लऽ अएलाह। युद्धक बाद किछु घोड़ा बाँचि रहल छल, मुदा हुनका देखभाल करनिहार बालकसभक नाम कोनो अधिकारीक सूचीमे नहि। सहदेव दू भिन्न तिथिवला कागद मिलबैत कहला जे एक्के रसद दू बेर दर्ज देखाइत अछि। “गलती भऽ सकैत अछि, जानि-बुझि लाभ लेल गेल सेहो भऽ सकैत अछि। मूल बही देखल बिना निर्णय नहि,” ओ कहलनि। युधिष्ठिर एहि संयमकें सुनलनि। अपराधक नाम जल्दी रखब आसान छल; ठीक लोक धरि देय पहुँचेब कठिन।

धृतराष्ट्र आ गांधारीक घरक दिशासँ दूत आबि कहलक जे राजगृहमे घुरि आएल किछु शरणार्थी अपन पुरान कोठरी नहि पाबि रहल छथि। दूतक स्वरमे आग्रह छल, अधिकारक आदेश नहि। विदुर हुनका कागद देलनि जे अस्थायी निवासक सूची घरक मालिकीक विवादसँ अलग बनय। “जे रहैत अछि ओकरा सड़कपर नहि फेंकू,” ओ कहला, “मुदा कोठरीक पुरान दावो बिना सुनने काटू नहि।” एहि उत्तरसँ कियो तुरन्त प्रसन्न नहि भेल। दू परिवारकें एक्के समय अलग-अलग सुरक्षा चाही छल।

सूर्य झुकल तँ लिपिक अपन घिसल कलम उठा कऽ देखलक। नोक भाँजि गेल छल। धागावाली स्त्री अपन गट्टरसँ सूतक एक छोट टुकड़ा निकालि कलमक बाँसपर बान्हि देलीह, जाहिसँ पकड़ कनेक सहज भेल। “एहि सँ लेखन नहि सुधरत,” ओ कहलीह, “मुदा हाथ फिसलत कम।” युधिष्ठिर पहिल बेर कनेक मुस्कुरौलनि। एतेक दिनक भयानक निर्णयक बीच ई छोट वस्तु हुनका याद दिऔलक जे शासनक काज सभ बेर मुकुटक ऊँचाइपर नहि होइत।

युधिष्ठिर लिपिककेँ कहलनि जे पहिल दावाक पर्ची वापस नहि कएल जाए। ओकर नकल स्त्रीकेँ देल जाए, मूल दस्तावेज परीक्षणक लेल रहय, आ भुगतानक दिन अनिश्चित रहला पर स्पष्ट लिखल जाए जे उत्तर कखन माँगल जाएत। दोसर पंजीमे युद्धक पक्ष नहि, प्रत्येक दावाक प्रकार, उपलब्ध प्रमाण, शेष जाँच आ जिम्मेवार लोकक नाम राखल जाए। ओ आदेश देलनि जे राहतक अन्न तत्काल वितरण लेल खुलय, मुदा मजदूरी ओहि अन्नक दानमे गुम नहि कएल जाए।

भीम पुछलनि, “तँ अहाँ राजा बनब?” युधिष्ठिर सिधा उत्तर नहि देलनि। “आइ हम लोकसभक काजक जिम्मेदारीसँ पाछाँ नहि हटब,” ओ कहला, “एतबा कहि सकैत छी। काल्हि हमर मन फेर विरक्त हो, मुदा आइ जारी कएल पावती अगिला दिनो मान्य रहय। एहि लेल व्यवस्था व्यक्ति सँ पैघ होएबाक चाही।” विदुर हुनकर वाक्यक अन्तिम अंश लिखबौलकनि, मुदा “सभ देय चुकता” लिखबाक प्रस्ताव नहि मानलनि। अदायगीक कोनो तिथि एखन निश्चित नहि छल।

पराजित पक्षक विधवा नकल हाथमे लेलनि। “एहि कागदसँ बैल घुरि नहि आएत,” ओ कहलीह। “नहि,” युधिष्ठिर उत्तर देलनि, “मुदा एखन अहाँक बात खारिज सेहो नहि भऽ सकत। जँ एतय हम रोकब तँ दोसर ठाम फेर सुनवाईक बाट रहय।” विधवा पहिल बेर मुकुट झाँपल कपड़ा दिस तकलीह। “मुकुटक चमकसँ हमरा किछु नहि,” ओ कहलीह, “कागदपर गलत देय काटबाकेँ हम फेर आएब।” ओ घुरि गेलीह। युधिष्ठिर हुनका धन्यवाद नहि देलनि, कारण ई हुनकर दान नहि छल।

साँझमे द्रौपदी ओहि कक्षसँ बाहर निकलि अपन पुत्रसभक खाली शय्या लग गेलीह। कियो हुनका राजक नवा नियम सुनाबए नहि गेल। ओ दुआर बन्द कएलीह आ एकान्त

माँगलीह। भीम पहरेदारकेँ कहला जे ओहि घड़ी ककरो भीतर नहि जाए दे। बाहर रसोइक धुआँ उठल; लोक खा रहल छल, मुदा कतेको घरमे पहिनुक स्नेहक थारी खाली रहल। राजक आदेश ओहि रिक्तताकेँ भरि नहि सकैत छल।

राति युधिष्ठिर फेर मुकुट राखल कक्षमे अएलाह। भीजल दाग सुखा गेल छल, मुदा छतक फाँक जसक तस छल। ओ पहरेदारकेँ कहलनि जे बिहान मिस्त्रीक काजक मूल्य पहिने तय कएल जाए; राजमहलक छत बिनु मजदूरीक नहि सुधरल जाएत। तखन ओ विदुरसँ भीष्म लग जाएबाक बाट आ समय पुछलनि। “हुनकर ज्ञान सुनब चाहैत छी,” ओ कहला, “मुदा ज्ञान पूछबासँ पहिने हम अपन आदेशसभ हुनका देखाएब। जँ ओ कहथि जे हमर दायित्व पूरा भेल, हम पूछब—ककर देय सचमुच चुकल?”

विदुर दीपकक लौ छोट कऽ देलनि। “हुनकर शय्यापर प्रश्न लऽ जाउ,” ओ कहला, “उत्तरक संग प्रश्न करनिहार लोकक आवाजो।” युधिष्ठिर राजमुकुट नहि पहिरलनि। ओ ओहि पंजीक पहिल पृष्ठ मोड़ि अपन संग रखबाक बदला लिपिकक मेजपर छोड़ि देलनि, जतय काल्हि दावेदार फेर देख सकताह। बाहर राजभवनक दुआर बन्द होएबाक पहिने पर्ची देबए आएल अन्तिम लोकक नाम लिखल गेल। जंगल दिस जाएबाक बाट खुलले छल; युधिष्ठिर एहि राति ओहि बाट नहि गेलाह।

अध्याय १३५ • भीष्मक शय्या

युद्ध समाप्त भेलाक बादक कुरुक्षेत्रमे भोरक हवा शरक पाँखिसँ टकरा कऽ सुई-सुई करैत छल। भीष्मक शय्याक चारूकात रातिमे जमल ओस चकमका रहल छल; किछु बूँद तीरक लोहमाथपर ठाढ़ छल, मानू धरती अपन पानि लौहकेँ उधार दऽ रहल हो। दू परिचारक घासपर माटिक कटोरा राखि रहल छल। पहिल कटोरा खाली छल, दोसरामे पानि छल, मुदा भीष्म धरि पहुँचबाक बाट तीरक कतारसँ कठिन बनल छल। दूर ठाढ़ एक बालक अपन पितासँ पुछलक, “एतेक तीरक बीच हुनका प्यास के बुझबैत छनि?”

हस्तिनापुरसँ युधिष्ठिर सवेरे निकललाह। मुकुट नहि, विगत दिनक सुनवाईमे राखल पंजीक दू नकल हुनका संग छल। विदुर मूल पंजी लिपिक लग छोड़बौने छलाह, जाहिसँ दावेदार पुनः देख सकथि। रथमे द्रौपदी, अर्जुन आ नकुल सेहो छलाह। भीम पाछाँ अनाज पहुँचेनिहार गाड़ीक व्यवस्था देखैत अएला। कृष्णक रथ रस्ता लग रुकल छल; ओ कोनो अग्रासन नहि माँगि रहल छला।

भीष्म हुनका सभक आहत सुनि आँखि खोललनि। शरीरकेँ आधार देनिहार तीरक छायाँ बिहानक प्रकाशमे छोट भऽ रहल छल। ओ युधिष्ठिरकेँ पहिचानलनि, फेर हुनकर खाली माथ दिस देखलनि। “राजकार्य सँ आयल छी, कि एकरा छोड़बाक उपाय पूछए?” भीष्मक स्वर अत्यन्त मन्द छल, मुदा शब्द स्पष्ट। युधिष्ठिर घुटना टेकलनि। “काल्हि हम वन नहि गेलहुँ। किछु देयक नकल करौलहुँ, किछु राहतक अन्न खोललहुँ। तखन रातिमे बुझलहुँ जे एतेक करब सँ शासनक भार घटैत नहि; बढ़ैत अछि।”

भीष्म कहला, “भार सँ भागबाक कल्पना के नहि करैत? हमहुँ अनेक बेर मनमे अपन प्रतिज्ञाक भार उतरैत देखलहुँ। मुदा सोचि लेल वचन सँ वास्तविक लोकक जीवन नहि बदलैत। अहाँ अपन कएल काम कहू; हम सुनब। जँ हमरा किछु ज्ञान अछि, ओ एतबा दुखक बाद जाँच सँ बचबाक कवच नहि।”

युधिष्ठिर कपड़ा मे लपेटल कागद खोललनि। पहिल स्त्रीक कपड़ा बनएबाक बकाया, दोसर पराजित पक्षक विधवाक बैल, तेसर युद्धकालीन रसोइक श्रम। भीष्म नाम सुनलनि आ पूछलनि जे दावेदार सभ जीवित छथि कि नहि, साक्षी उपलब्ध अछि कि नहि, लिखल

हिसाब ककर अधीन अछि। युधिष्ठिर उत्तर देलनि जे सभ प्रश्नक उत्तर एकसमान नहि। “तखन समान न्याय एकसमान निर्णयसँ नहि निकलत,” भीष्म कहला। “जकरा प्रमाण भेटि रहल अछि, ओकर प्रमाण लेल जाए। जकरा नहि भेटैत, ओकर बात केवल एहि कारणसँ फेंकल नहि जाए। शासकक संयम सुनवाईक समयमे सेहो परखल जाइत अछि।”

द्रौपदी एखन धरि किछु नहि बजलीह। ओ शय्याक पछिला कात उगैत एक छोट घासक डंठल देखैत छलीह, जे तीरक छायाँमे सेहो हरियर छल। भीष्म हुनका दिस देखलनि। “पाञ्चाली, अहाँक मनमे प्रश्न अछि, से देखैत छी।” द्रौपदी सिर उठौलीह। “प्रश्न काल्हि नहि जन्मल। राजसभामे जखन हमरा वस्तु जकाँ खींचल गेल, विद्वान आ वरिष्ठ लोक उपस्थित छलाह। नियमक अर्थपर चिन्तन चलल, मुदा हमर अपमानक घड़ी नहि रुकल। आइ अहाँ राज्यक धर्म सिखाएब—पहिने ई कहू जे ज्ञान ओहि दिन की करि रहल छल?”

युधिष्ठिर अपन नकलक पृष्ठ मोड़ि देलनि। भीष्म आँखि नहि मूनलनि। “ओहि सभामे हम रहलहुँ,” ओ धीरे कहला, “अहाँक अपमान रोकबाक लेल हमरा जे स्पष्टता आ साहस चाही छल, हम नहि देखौने। धर्मक जटिलता बुझबाक चेष्टाकें हम अपन अकर्मण्यतासँ अलग कऽ नहि देखाबि सकैत छी। जे कहब, ओ अपने कएल क्षतिक हिसाब काटि नहि देत।”

“तँ एखन अहाँक उत्तर सुनबाक आवश्यकता किएक?” द्रौपदी पुछलीह। हुनकर स्वरमे क्रोध छल, मुदा कोनो प्रदर्शन नहि। “जँ बूढ़ ज्ञानधारी अपन पहिनुक मौनक मूल्य नहि चुकबैत, तखन ओ फेर नवल लोककें बोलबाक शिष्टाचार सिखा देत, अधिकार नहि।” भीष्म थोड़े माथ हिलौलनि; तीरक हलचलसँ पीड़ा उठल आ परिचारक पाछाँ हटि गेल। ओ कहला, “हमरा सुनब अनिवार्य नहि। अहाँ हमरा टोकि सकैत छी, एहि ठामसँ जा सकैत छी। जे किछु उपयोगी कहब, ओकर परीक्षा ओहि लोकक काजसँ करू जिनका अहाँ दिन-रात सुनैत छी।”

भीष्म हुनका दिस एक बेर तकलनि। युद्धक समयक परिचित सन्देश आ हथियारक तर्क एखन कटोराक स्वच्छतामे बदलि गेल छल। द्रौपदी भीष्मसँ पुछलीह, “जँ राजसभा फेर ककरो अपमानक जगह बनत, पण्डित कहताह जे नियम कठिन अछि, तँ पीड़ित के

करथि?” भीष्म उत्तर देलनि, “ओहिठाम आदेशक पहिल काम हानि रोकब होएबाक चाही। बादमे तर्कक विस्तार हो; पहिने व्यक्तिक सुरक्षा। हम ई निर्णय समयपर नहि कएलहुँ, आ एहि अभावकें अपन शिक्षासँ ढाँपब नहि।”

शय्यासँ दूर दू स्त्री बैसल छलीह। एकक पति युद्धमे मारल गेल छल, दोसरी अपन बेटाक देह नहि पबिते शिविर सँ शिविर घूमि रहल छलीह। विदुर हुनका सभकें आयबाक आग्रह कएने छलाह; सभाक सम्मान बढ़ेबाक लेल नहि, अपन बात राखबाक बात होएबाक लेल। पहिली स्त्री अएलीह आ द्रौपदीसँ अनुमति माँगलीह जे भीष्मसँ प्रश्न करथि। द्रौपदी पाछाँ हटि जगह देलीह। स्त्री कहलीह, “हमर पति कुन पक्षमे लड़लाह, अहाँ पूछब? कि पहिने बुझब जे हुनकर बूढ़ मायकें भोजन कखन भेटत?”

भीष्म कहलनि, “भोजनक आवश्यकता पहिने सुनल जाए। युद्धक पक्ष बादमे ओहि दावाक प्रमाण लेल प्रसंग बनि सकैत अछि, दयाक पात्रता लेल नहि।” स्त्री तुरन्त कहलीह, “हम दया नहि माँगैत छी। जे धान पति रखबय गेल रहथि, ओकर मजदूरी माँगैत छी। पंजीमे ओ सैनिक लिखल छथि, मुदा ओ सैनिक नहि, बोझा ढोबैत छलाह।” भीम आगे बढ़लाह। “काल्हि भरि एहन सूची भेटल,” ओ कहला, “सेनासँ जुड़ल रहितो सभक काज एक नहि छल।” स्त्री अपन पर्ची भीमक हाथमे देब अस्वीकार कएलनि। “हम अपन कागद लिपिककें देब, पावती लऽ घर जाएब,” ओ कहलीह।

युधिष्ठिर अपन संग आएल लेखककें संकेत कएलनि। लेखक जमीनपर कम्बल बिछौलक; ओतहि पर्चीक नकल बनल आ मूल स्त्रीक हाथमे रहल। विधवाक नाम, दावाक प्रकार, उपलब्ध साक्षी आ उत्तर देबाक निर्धारित समय अलग-अलग लिखल गेल। विदुर कागद जाँचलनि। “भोजनक तत्काल सहायता देबाक पर्ची दोसरा रंगमे लिखू,” ओ कहला, “जाहिसँ मजदूरीक हिसाब ओहि सहायता सँ समाप्त मानल नहि जाए।” स्त्री पावती पढ़ब नहि जनैत छलीह। लेखक उच्च स्वरमे पढ़ि सुनौलक; ओ दू पाँति फेर पढ़ेबाक आग्रह कएलनि, तखन अँगूठा लगौलीह।

एहि बीच दोसर स्त्री अपन बेटाक छोट करघा-छुरी निकाललीह। “ई ओकर सामान,” ओ कहलीह। “इहो युद्धक बादक गिनतीमे कतहु नहि। जकर घरे ओ कपड़ा बुनैत छल, ओ कहैत अछि जे लड़ाइमे गेल, तँ नाम सैनिकक सूचीमे दखल। हम देह नहि देखलहुँ। के

कहि सकैत अछि जे ओ मरि गेल?” भीष्मक माथपर चिन्ता स्पष्ट छल। “जतय मृत्यु सत्यापित नहि, ओतय अनुमानकें सत्य मत लिखू,” ओ कहला। “मुदा परिवारक निरन्तर आवश्यकता ओहि जाँचक समाप्ति धरि प्रतीक्षा करए, एहन आदेशो मत दिअ।”

युधिष्ठिरकें काल्हिक विधवाक बैल याद पड़ल। ओ कहला, “मृत्यु, जीविका आ क्षतिक देय अलग राखब। मुदा एक्के परिवारकें तीन दरबज्जापर घुमेबाक पड़त तँ कतेक वृद्ध ओतय पहुँचताह?” विदुर उत्तर देलनि, “दरबज्जा एक हो, निर्णयक खाना अलग। लोक अपन दुःखक भिन्न-भिन्न नाम याद कऽ फिरबाक लेल राजक कर्मचारी नहि।” भीष्म आँखि बन्द कएलनि, मानू एहि छोट व्यवस्थामे कतेको पोथीक श्लोकक अधिक परीक्षण छल। फेर कहला, “राजसभा कतेक दूर अछि, ई राजाकें नहि, आवेदन लऽ चलनिहारक पएसँ नापू।”

अर्जुन शय्याक समीप बैसलाह। हुनका सामने भीष्मक शरीरमे धँसल तीरसभमे किछु अपन परिचित शस्त्रक आकृति देखाइत छल। एक समय हुनकर हाथ युद्धक आदेश मानैत छल, एखन ओ हाथ एकटा बर्तन धरल परिचारककें पानि दऽ रहल छल। “पितामह,” अर्जुन पुछलनि, “जे लोक युग धरि एक राजघरानाक रक्षक रहलाह, ओ रक्षाक अर्थ जँ बादमे बदलथि, पहिनुक वचनक की मान रहत?” भीष्म गहिर साँस लेलनि। “वचन निभेनिहार अपना भीतर निष्कलङ्क रहबाक कल्पना करैत अछि। मुदा वचन सँ जे पीड़ा दोसराकें भेल, ओकरा सुनबो वचनक सत्यक भाग अछि।”

“अहाँक प्रतिज्ञा व्यक्तिगत छल,” द्रौपदी कहलीह, “ओहि प्रतिज्ञाक छायाँ राजघरानाक स्त्रीसभपर पड़ल। कोनो निर्णयमे ओ सभ सहभागी छलीह?” भीष्म तत्काल उत्तर नहि देलनि। दूरसँ घोड़ा हिनहिनाएल। “हम अनेक काल अपन त्यागकें परिवारक हितक जकाँ बुझलहुँ,” ओ कहला, “मुदा त्याग कहनिहारक महानता जँ आन लोकक चुनाव सीमित करय, तँ ओकर हिसाब सेहो बाकी रहैत अछि। सभ स्त्रीक स्वर हम नहि सुनलहुँ। आब एहि कमीकें नियति कहि कऽ छुट्टी नहि पाबि सकैत छी।”

नकुल चोट खाएल घोड़ाक बात उठौलनि। युद्ध समाप्त भेलापर बहुत पशु पालक आ घोड़ाशालाक बालक बिना आदेशक पशु सम्हारि रहल छल। “ककरो नियुक्ति-पत्र नहि,” ओ कहला, “मुदा घोड़ा तखने बचत जखन ई लोक दू राति जागताह।” भीष्म कहलनि,

“जीवित प्राणीकें जोगेनिहार श्रमक भुगतान राज्यक उपकार नहि। जे श्रम कएल, ओ देखल जाए। मुदा देखबाक नामपर कोनो अधिकारी जँ झूठ पावती बनाबय, तकरो जाँच चाही।” नकुलकें उत्तर पूरा प्रिय नहि लगल; ओ सोझ पुछलनि, “जाँच चलिते ओ सभ खाएत की?” भीष्म अलग अस्थायी भोजन आ बादक मजदूरीक लेखा रखबाक बात स्वीकार कएलनि।

ओहि ठाम एक वृद्ध लिपिक आयल, जे पहिने कौरवसभक आदेश लिखैत छल। पहरेदार ओकरा रोकि रहल छल। “जे कौरवक कर्मचारी छल, ओ आब हमरा सूचीमे हाथ दऽ सकत?” युधिष्ठिर पुछलनि। भीष्म कहला, “ओकर लिखावट आ स्मृति आवश्यक भऽ सकैत अछि। मुदा ओकर पहिनुक पद स्वयं विश्वसनीयताक प्रमाण नहि। ओहि पंजीक दोसर नकलसँ मिलाउ; जकर नाम काटल गेल, ओकरा सेहो सुनू।” वृद्ध पाछाँ हटि कहलक, “हम किछु आदेशपर हस्ताक्षर कएने छलहुँ, जकर फल देखबाक साहस नहि भेल। आब लिखब तँ अपन पहिनुक सही सेहो देखाएब।”

द्रौपदी ओकरा प्रश्न कएलनि, “कोन आदेशपर?” वृद्ध चुप भऽ गेल। भीष्म ओकरा बचाबए नहि अएलाह। “जे नहि बजब चाहैत छथि, हुनका जबरदस्ती दोषी नहि कहूँ, ओ कहला, “मुदा जकर कागद सार्वजनिक निर्णयक आधार बनल, ओकर प्रतिलिपि माँगब राजक काम अछि। निजी भय आ सार्वजनिक अधिकारक अन्तर समझब कठिन अछि।” वृद्ध अपन कमरक पट्टासँ पुरान मुहरक कपड़ा निकाललक। ओ कहलक जे अभिलेख-भण्डारमे एकटा आलमारी अछि जकर चाबी ओकरा लग नहि।

युधिष्ठिर निश्चय कएलनि जे ओहि आलमारीकें बलपूर्वक तोड़ि तत्काल फैसला नहि सुनाओल जाए। विदुर आ दू भिन्न पक्षक साक्षीक उपस्थितिमे खोलल जाए, भीतर जे भेटय ओकर सूची बनय, आ दू नकल सुरक्षित राखल जाए। वृद्ध पुछलक, “तकर जिम्मेदारी के लेत?” युधिष्ठिर कहलनि, “जकर नाम लिखल जाए, ओ उत्तर देत। हमर नाम सेहो लिखू, जँ आदेश हम दैत छी।” पहरेदार पहिल बेर अपना सामर्थ्यसँ बाहरक काज बुझलक; ओ किछु कहबाक बदला अभिलेख-भण्डारक बाट देखेबाक प्रस्ताव देलक।

भीष्मक साँस भारी होए लगल। एक परिचारक कपड़ा सँ हुनकर कपारक पसीना पोंछलक। भीष्म पानिक आग्रह कएलनि। कटोरा होठ धरि नहि पहुँचि सकल, तँ अर्जुन स्वच्छ पानि पहुँचेबाक व्यवस्था कएलनि। भीष्मक आँखिमे पानीक चमक छल, मुदा ओ ककरो चमत्कारक कथा सुनाबए नहि लगलाह। पानी पिबैत ओ अधखुलल आँखिसँ दू स्त्रीकेँ देखैत रहलाह। एक पावती सम्हारि रहल छलीह, दोसरी अपन बेटाक छुरी; दुनूक हाथमे अलग तरहक अपूर्णता छल।

कृष्ण निकट आबि पुछलनि, “पितामह, विश्राम चाही?” भीष्म हलुक मुस्कान सँ कहला, “हाँ। मुदा पहिने एहि सभकेँ जएबाक अनुमति दियौ, जकरा प्रश्नकेँ हम अपन जीवन भरि दरबज्जापर रोकि सकलहुँ।” कृष्ण किछु उत्तर नहि देलनि। ओ हटि ओहि युवक लेल बाट बनौलनि जे अपन घायल भाइकेँ लकड़ीक खटियापर लऽ आएल छल। युवकक आग्रह औषधिक छल, राजधर्मक उपदेशक नहि। विदुर हुनका उपचारशिविरक ठाम बतौलनि आ नाम लिखबाक समय दवाक तत्काल आवश्यकता चिह्नित करौलनि।

युधिष्ठिर पुछलनि, “जखन एतेक प्रश्न रहल, तखन शय्यापर पड़ल अहाँसँ उत्तर लेब उचित अछि?” भीष्म कहला, “हमरा जे बुझल अछि, ओकरा परखल जा सकैत अछि; जे नहि बुझल, ओकरा अपन नामक आड़मे मत छिपाउ। ज्ञान कोनो व्यक्तिक देहक संग समेटल थाती नहि, जे ओकरे हाथसँ खुलत। जँ हमर पहिनुक मौनक आलोचना नहि लिखब, तँ हमर एखनक उपदेश अनुचित अधिकार पाबि जायत।” ओ रुकलाह। “राजधर्म कहबाक पहिने राजकीय अभिलेखमे लोकक काटल स्वर वापस लाउ।”

द्रौपदी फेर समीप अएलीह। “अहाँक मौनकेँ दोष मानबासँ सभाक दोष समाप्त नहि,” ओ कहलीह। “हमरा अपमानमे अनेक लोक भागी छल, अनेक लोक देखैत रहल। मुदा अहाँ जे स्वीकार कएलहुँ, ओकरा अहाँक महानताक नवा अलङ्कार नहि बनाओल जाए। शोक आ न्यायक बीच सम्मानक कथा बहुत सहज घुसि पड़ैत अछि।” भीष्मक ओठ हिलल। “तेहन सम्मान हमरा नहि चाही,” ओ कहला। “अहाँक कथन लिखल जाए, हमर उत्तर ओकर ठीक बाद। पाठक स्वयं निर्णय करथु जे कोन वाक्य कतेक देरिसँ अएल।”

लेखक आश्चर्यसँ द्रौपदी दिस तकलक। स्त्रीक वचन शासकीय पञ्जीमे पुरुषक उत्तरसँ पहिने राखब ओकर अभ्यासमे नहि छल। द्रौपदी स्वयं कहलीह, “हमर बातकेँ केवल

आहत स्त्रीक कथन कहि अलग कक्षमे नहि भेजू। ई राजसभाक कार्यपद्धतिक प्रश्न अछि।” युधिष्ठिर लेखककेँ कहलनि जे लिखल जाए, आ लेखक पहिल पाँति जोर सँ पढ़ि सुनौलक। द्रौपदी दू शब्द बदलौलीह; ओहि सुधारक निशान काटि नष्ट नहि कएल गेल, बगलमे लेखबद्ध भेल। भीष्म एहि छोट क्रियाक साक्षी रहलाह।

सूर्य माथपर चढ़ल तँ छाया शय्याक नीचे खसि गेल। युधिष्ठिर विदुरसँ पुछलनि जे अभिलेखक सुनवाईक दिन कखन निश्चित होएत। विदुर कहलनि जे शिविरक लोक विदा भऽ रहल छथि; बहुत साक्षी आगाँ चलि जाएताह। तँ काल्हि सँ अस्थायी सुनवाई-स्थल खोलल जाए, जकर सूचनाक नकल भोजनशाला, उपचारशिविर आ नगरदुआर पर टाँगल जाए। भीम वचन देलनि जे दूरक लोककेँ पानी आ बैसबाक ठाम भेटत; ओ ई काजक राशनक हिसाब अलग रखताह।

अर्जुन तखन एक प्रश्न पूछलनि, “जँ प्रमाण भिन्न भेल, तखन जकरा विश्वास करब नहि बनत, ओकर दुःखक की?” भीष्म कहलनि, “दुःखक सत्य आ दावाक परीक्षाक पद्धति अलग अछि। कियो रोइ रहल छथि से हुनकर प्रत्येक आरोप सिद्ध नहि करैत; कागद नहि अछि तँ दुःख झूठ सेहो नहि होइत। शासकक काज एहि दुनूक बीच जल्दबाजीसँ पुल बनाय दऽ गिरा देब नहि। जतेक सिद्ध अछि से लिखू, जतेक खोजबाक अछि से निर्धारित करू, आ जिनकर बात सुनल गेल नहि, हुनका फेर आबबाक द्वार खोलू।”

एहि बीच पहिल स्त्रीक सासु खटिया सहारे शय्या लग अएलीह। बेटा युद्धमे छल वा रसद ढोइत छल, एहि विवादसँ हुनका अर्थ नहि। ओ द्रौपदीकेँ कहलीह, “बहिन, गाम घुरबाक पहिने कोठीसँ तीन दिनक अन्न चाही। पोता रोइत अछि।” द्रौपदी तत्काल अन्नक पर्ची लिखेबाक निर्देश देलीह, मुदा सासुसँ पुछलनि जे ओ कतय बैसि पर्ची स्वीकार करब चाहैत छथि। वृद्धा धूपसँ बचबाक लेल खजूरक छाँह दिस देखौलीह। ओहि ठाम छोट मेज रखल गेल। सहायता आ मजदूरीक निर्णय बिना मिलौने दुनू कागद अलग-अलग उठल।

भीष्म एतबा देखैत रहला, फेर थाकि आँखि मूनि लेलनि। युधिष्ठिर उठि प्रणाम करब चाहलनि। भीष्म हँसबाक क्षीण प्रयास कएलनि। “प्रणामक भार कम करू,” ओ कहला,

“एहि दिनक असल फल तखन देखब, जखन अहाँ थाकल रहब आ कोनो अनजान स्त्री फेर पर्ची लऽ आएतीह। ओकर बात सुनबाक प्रबन्ध रहल, तँ हमर शब्दसँ किछु काम निकलल बुझब। नहि तँ हम एक दिन आरो बहुत ज्ञान कहलहुँ, एतबे रहि जायत।”

द्रौपदी प्रस्थानसँ पहिने तीरक शय्या लग रखल दू कटोरा सोझ कएलीह। खाली कटोरा ओ हटेबाक चाहलीह, मुदा परिचारक कहलक जे एहिमे अतिथि सभक हाथ धोएबाक पानि राखल जाएत। ओ ओकरा ओतहि छोड़ि देलीह। कतेको वस्तु जे बेकार बुझाईत, ककरो काजक आश्रय बनि सकैत छल; मुदा ई विचार सँ तीरक घाव भरि नहि गेल। ओ भीष्मकेँ आखिरी बेर देखलीह—पहिनुक मौन स्वीकार कएने वृद्ध, जे एखनहुँ किछु प्रश्नक स्पष्ट उत्तर नहि दऽ सकैत छला।

फेर रथ हस्तिनापुर दिस घुलल। युधिष्ठिर लेखककेँ कहलनि जे भीष्मक उपदेशक संग द्रौपदीक आपत्ति, श्रमिक स्त्रीक अस्वीकृति, अज्ञात बेटाक असत्यापित स्थिति आ वृद्ध लिपिकक अनिश्चित स्मृति सेहो नकलमे अलग-अलग चिह्नित हो। “हमरा नीक देखाबयवला केवल उत्तर नहि चाही,” ओ कहला। “जकरा कारण हम किछु गलत कएलहुँ वा देखैत रहलहुँ, ओहि जगह खाली नहि छोड़ू।” लेखकक हाथ कापल; ई आदेश पालन करब कठिन छल, किएक तँ राजा अपन विरुद्धक बातो लिखबा रहल छला।

नगरदुआरपर पहुँचि युधिष्ठिर पुरान पंजीक नकल विदुरकेँ देलनि आ कहलनि जे पहिल सार्वजनिक सुनवाईमे सभसँ पहिने अधिकारीसभ अपन-अपन कएल कामक संग अपन टारल काम सेहो कहथु। द्रौपदी रथसँ उतरैत जोड़लीह, “ककर बयान पहिने सुनल जाए, से तय करैत कालमे केवल पद मत देखू।” लिपिक एहि बातक ठीक अर्थ लिखबाक लेल पुछलक। युधिष्ठिर उत्तर देलनि, “जिनकर निर्णयसँ लोकक हानि भेल, हुनकर बयान टारल नहि जाए। आ जिनकर हानि भेल, हुनका बोलबाक ठाम बिना ई बयान पूरा नहि मानल जाए।” राति धरिक सुनवाईक सूची बदलब शुरू भेल; पहिल स्थानक अगिला खाली खाना आब ककरो मौनसँ भरल नहि जा सकैत छल।

अध्याय १३६ • पहिल बयान

२०४०क पहिल जाड़मे सामुदायिक कार्यालयक टीनक छतपर ओसक बूँद जमा भऽ रहल छल। सरिता मेजपर राखल पीतरक डिब्बाक ढक्कन खोलबाक बदला ओकरा नीचाँ एकटा सूखल कपड़ा बिछौलीह। सामने तीन पन्ना छल—बयानक खाली प्रारूप, पहिने सार्वजनिक भेल सारक प्रति, आ ओ पर्ची जाहिपर हुनकर अपन सहमतिक चिन्ह छल। बिहानक इजोत पर्चीक कोनपर पड़ैत छल, आ सरिता एखनहुँ ओहि छोट चिन्हसँ नजरि नहि हटा पबैत छलीह।

रमा कर्ण कहलीह, “अहाँ चाही तँ लिखित प्रश्न पहिने देखू। आइ कोनो अधिकारीक सामने अपन कथा तुरन्त पूरा करबाक बाध्यता नहि अछि।” सरिता कहलनि, “प्रश्न हम पढ़ब। मुदा पहिल वाक्य अपन हाथेँ लिखब। कियो बादमे ई नहि कहय जे हमर नामक भरोसे किछु जोड़ल गेल।” हुनकर बोली न काँपल, मुदा कागद पकड़ने हाथक पोर ठंढा छल। रमा गिलासमे पानि देलीह।

कमराक भीतर दू कात कुर्सी राखल गेल। एक कात बयान लिखनिहार, दोसर कात जे लोक अपन नाम बिना सार्वजनिक कएने कथनक शर्त देखबाक चाहैत छल। रुहानी कहलीह जे आश्रयक निजी परिचयक पंजी एतय नहि खुलत; आ जकर चर्चा सरिताक बयानमे अनिवार्य हो, ओकर सार्वजनिक प्रतिमे पहचान हटाओल जाए। गोमती प्रश्न कएलीह, “तखन मूल के देखत?” रमा उत्तर देलीह, “अधिकृत परीक्षणमे जतेक आवश्यक, ओतबे। जनता लेल निर्णयक कारण, प्रक्रिया आ अपीलक बाट खुलल रहत।”

सरिता पहिल पन्ना पर तिथि लिखलीह। “हम अपना आँखिसँ देखल बात आ ककरो कहने सुनल बात अलग रखब,” ओ कहलीह। “जतय अनुमान अछि, ओहि ठाम अनुमान लिखू। एतय हमर काजक जाँच अछि; हमर चरित्रक फैसला नहि।” बाहरसँ उमाक चप्पलक आवाज आयल। ओ कपड़ाक पालि बीच आधा घण्टा निकालि पहुँचलि छलीह, कारण उर्मिलाक शेष मजदूरीक पत्र संग लए अएबाक छल। ओकरा नब बैठक फेर पूरा दिन खा जाए, से स्वीकार नहि छल।

रमा पहिल प्रश्न पुछलीह—सत्ताइस नामक मूल कागद कखन आ कोन अवस्थामे सरिताक लग रहल? सरिता डिब्बाक ढक्कनपर हाथ रखलीह। “मूल पन्ना बहुत दिन हमर निगरानीमे छल। जखन हम अपने मृत घोषित कएल गेल रही, ओहि पन्नाक भरोसा हमरा लेल जीवित रहबाक प्रमाण नहि बनल। हम कार्यालयक गलत चिह्नक विरोध स्वयं कएने रही। पन्नाक प्रत्येक नामक हाल एके सन नहि छल। कियो जीवित, ककरो मृत्यु वास्तवमे पुष्ट, ककरो देयक हिसाब उलझल। कियो सभक निजी कथा बजारमे नहि खोलबाक बात हम कहलहुँ।”

ओ एक बेर पाछाँ तकलीह, जेना नैरा कुर्सीक ओहि खाली कात बैसल होथि। मुदा ओतय केवल चिरायल बोरी रखल छल। सरिता अपन स्मृतिकेँ साक्षीक स्थान नहि देलीह। “ओ दिन नैरा हमर लग छल,” ओ जोड़लीह, “ओ जाँचक क्रम बुझबैत छलीह, मुदा मूल पन्ना माए-बेटीक स्नेहसँ पत्रकारक अधिकारमे नहि गेल। साक्षीक सीमा रहय, आ ओ मानल गेल। आब ओकरा एहि कथनक उत्तर देबाक लेल हम लौटा नहि सकैत छी।”

रमा पुछलीह, “आहाँक सही जाँच की छल?” सरिता उत्तर देलीह, “सत्ताइस पाँति एकेक कऽ मिलल। कुन बात सरकारी प्रति सँ, कुन जीवित व्यक्तिक कथन सँ, कुन भुगतानक अलग रसीद सँ पुष्ट भेल—सभ चिन्हल गेल। पाँच परिचयक प्रकाशन-शर्त बन्द राखल गेल। अपीलक बाट रखल गेल। ई काज भेल। मुदा जाँच पूरा भेलासँ भुगतान पूरा भेल, गलत मृत्यु-चिह्न हटि गेल अथवा परिवारक भय समाप्त भेल, एहन नहि छल। हमरा एतबा पहिनहुँ बुझल रहए।”

नगर प्रतिनिधि कहलक, “तँ गलती कतय भेल? प्रस्ताव तखन सभक सहमतिसँ सार्वजनिक भेल छल।” सरिता ओकर दिस तकलीह। “ओहि वाक्यपर हमर गलती अछि। हम प्रक्रिया-सार सार्वजनिक करबाक सहमति देलहुँ। ओहिमे ‘मिलान सम्पन्न’ पढ़ल गेल, मुदा जे देय बाकी छल आ जे सुधारक आदेश जारी नहि भेल छल, ओकरा पाठकक आँखिसँ बचेबाक खतरा हम पर्याप्त स्पष्ट नहि कएलहुँ। हमरा एक पाँति जोड़बाक आग्रह करबाक चाही छल—‘जाँचक परिणाम अधिकारक पुनर्स्थापना नहि।’ हम नहि कएलहुँ।”

गोमती कहलनि, “तखन की अहाँ सभकेँ गलत सूचना देलहुँ?” सरिता सिर हिलौलीह। “नहि। मूल गिनती गढ़ल नहि गेल। दावेदारक नाम बिना अनुमतिक नहि खोलल गेल। हमर गलती दू साँच बातक बीच रहि गेल खाली जगह अछि, जाहिमे पढ़निहार अपन मनक पूरा सफलता भरि सकैत छल। हम एहि जोखिमपर सहमति दैत समय ठहरि नहि सोचलहुँ। ई बात लिखू; मुदा एहिमे सँ दोसर लोकक दोष बनाबी तँ ओहो गलत होएत।” रमा पन्नापर रोकि शब्द हुनका पढ़ि सुनौलीह।

दुआरक बाहर एक युवक कहलक, “हम तखन ओहि सार्वजनिक पन्नासँ बुझने रही जे सब हिसाब चुकता भेल।” हुनका भितरे बोलाओल नहि गेल; गोमती पूछलीह जे ओ अपन कथन दर्ज कराबय चाहैत छथि की केवल प्रश्न कहि रहल छथि। युवक कहलनि, “एखन प्रश्न। हमरा मायसँ ओहि दिन कहल गेल छल जे दफ्तर जाइ कऽ फायदा नहि।” रमा लिखलीह—लोकक बुझाइ सम्बन्धी कथन, स्रोत जाँच शेष। सरिता पुछलीह, “ओहि दिन कियो दफ्तरसँ मना कएलक, की मोहल्लामे कहने छल?” युवक कहलक, “मोहल्लाक आदमी।” ओकर प्रश्न अपन महत्व गमौलक नहि; मुदा दोषक जगह बेकारमे बदलि नहि गेल।

रमा दोसर पन्ना खोललीह। सरिताक नामपर पहिने गलत मृत्यु-सूचना चढ़ल रहए, जाहिसँ हुनकर पारिश्रमिक आ काजमे बाधा पड़ल। “अहाँ एखन जीवनक प्रमाणक फेर बयान देब चाहैत छी?” ओ पुछलीह। सरिता कड़ा स्वरमे कहलीह, “नहि। हमर जीवित रहबाक जाँच बहुत बेर भेल। आइ हम अपन काम आ अपन गलत निर्णयक बात कहैत छी। हमर पुरान अन्यायक कागद एहि बयानक सँग सन्दर्भमे रहत, मुदा ओकरा आजुक स्वीकृतिक बदला नहि बनाउ। जे प्रशासनिक सुधार बाकी अछि, ओकर समय अलग लिखू।”

कबीर चुपचाप भीतर अएलाह। हुनकर हाथमे नैराक अपूर्ण कामवला एक नोटक प्रमाणित नकल छल, मूल नहि। ओ मेजपर रखैत कहला, “ई अहाँक बयानक सहायक होएत की नहि, रमा तय करथु। नैराक निजी पत्र हम नहि देब।” सरिता कहलनि, “तोहर मौन हमरा बचबैत नहि, कबीर। आ तोहर अपन शोक अछि। अहाँ चाहू तँ एहि कोठरीसँ

बाहर बैसि सकैत छी।” कबीर ओहि बेर बाहर नहि गेलाह। ओ कुर्सी थोड़ा पाछाँ सरका लेलनि, जेना दूरी सेहो सहमतिसेँ तय होइत हो।

एतबामे बदरी नोनफर फाटक लग पहुँचलाह। हुनका बगलमे हुनकर पत्नी आ नव बसावटक मालती कोचे छलीह। बदरीक मोड़ल पुनर्वास-पत्रक किनार झरि रहल छल। ओकर माथपर ठामक नामक संग ‘स्थायी व्यवस्था’ लिखल छल, मुदा नल, शौचालय, बच्चाक बाट आ रोजीक आवागमनक पाँति खाली छल। पत्नी थैलीसँ पुरान घैलक टूटल ढक्कन निकाललीह। “हम एहि बासनक भरोसे पुरान ठाम छोड़लहुँ,” ओ कहलीह, “नव ठाम मालतीक घैल उधार लेलहुँ। एखन कागद कहैत अछि जे हम बसि गेल छी।”

गोमती हुनका सभकेँ अपन बात रखबाक समय देलीह। बदरी पुछलनि, “हम एहि कमरामे ककर सुनवाई लेल आएल छी? सरिताक बयान, कि अपन पर्चीक आपत्ति?” सरिता उत्तर देलीह, “दूनु अलग। मुदा हमर बयानमे जँ लोकक नामक आगाँ ‘समस्या समाप्त’ लिखि देबाक भूलक चर्चा अछि, तँ अहाँ अपन कागदक गलती अपने कहू। हम अहाँक बदला नहि कहब।” बदरी पत्नी दिस देखलनि; पत्नी पहिने बात राखबाक निर्णय कएलीह।

“जाहि दिन रातिक पानि घरे घुसल, हम बच्चाकेँ कात करैत तिरपाल हटेल्हुँ,” ओ कहलीह। “एहि सँ ई सिद्ध नहि भेल जे नव ठामक जमीन आ घर दुनू हम मानि लेलहुँ। राति बचबाक ठाम अलग, जियबाक ठाम अलग। हमर बेटाक विद्यालयक बाट कतेक दूर, पानि कोना भेटत, खाली मैदानक जमीन खेत गनल जाएत की नहि—ई प्रश्न ककरो कागदमे नहि।” मालती जोड़लीह जे पहिने सँ रहनिहार परिवारक नलपर अतिरिक्त भार पड़ल, मुदा पानि बँटबाक झगड़ा बदलि सार्वजनिक व्यवस्थाक माँग बनबाक चाही।

बदरी पत्रक पाछू एक पुरान पता देखौलनि। ओहिमे बुढ़नद नाम दर्ज छल। “ई हमर परिवारक पुरान खेतक कागदमे लिखल स्थाननाम अछि,” ओ कहला, “एतए नव निवास देबाक लेल लिखल ठेगानासँ एकरा मिला देल गेल अछि। पुरान खेतक दावापर हम कोनो माफी नहि देने छी।” रमा नामकेँ ज्योत्कात्यो नोट कएलीह। अदिति, जे किछु देरि पाछाँ स्थल-मापक फाइल लेने पहुँचल छलीह, कहलीह, “केवल एहि नामसँ नदीक बहाव

अथवा जमीनक सीमा निर्धारित नहि करब। मूल नक्शा, राजस्व नकल आ स्थल-परीक्षण चाही।”

नगर प्रतिनिधि कहलक, “एखन राहत लेल उपलब्ध भूखंड अस्वीकार करब तँ अगिला सूचीसँ नाम कटि सकैत अछि।” बदरी पत्नी दिस फेर तकलनि। पत्नी कहलीह, “भय देखाबि सही लेब तखन स्वीकृति नहि होएत। हमरा काल्हिसँ नव तिरपालो चाही, मुदा ‘स्थायी’ शब्द काटब।” गोमती प्रतिनिधिसँ लिखित नियम मँगौलीह। ओकरा लग नाम काटबाक कोनो स्पष्ट आदेश नहि छल। रमा बयानक बगलमे लिखलीह—भय व्यक्त कएल गेल; लिखित आधार प्रस्तुत नहि।

कमराक भीतर उमा घड़ी देखलीह। “हमर पालि पूरा भए रहल अछि,” ओ कहलीह। “उर्मिलाक बकाया पर्ची कतय दी?” गोमती ओकरा सही कएल प्राप्ति देलीह। उमा पुछलीह, “प्राप्ति, कि भुगतान?” गोमती कहलीह, “प्राप्ति। प्रमाणित अंशक अग्रेषण भेल, शेषक जाँचक तिथि लिखल अछि।” उमा पर्ची पढ़लीह, फेर जेबमे रखलीह। “तखन एहि शब्दकेँ आरो पैघ लिखू,” ओ कहलीह, “जाहिसँ जिनका पढ़बाक कम अवसर अछि, ओ सेहो बुझथि।” ओ अपन धुलाईघर घुरि गेलीह।

सरिताक बयान फेर शुरू भेल। “पहिल दिन हम सभक सामने अपन मृत्यु-चिह्नक आपत्ति उठौने रही। एहि सँ एक बात सिखलहुँ—जे व्यक्ति सामने ठाढ़ अछि, तकर आवाज केँ प्रशासनिक त्रुटिसँ नीचाँ नहि राखि सकैत छी। बादमे जखन कागदक जाँचमे लागलहुँ, हम पन्नाक क्रम आ जाँचक सीमा ठीक राखलहुँ। मुदा सार्वजनिक सार पढ़निहारक अनुभव हमरा हाथमे नहि छल। ओहि अनुभवक सम्भावित गलती हम देखबाक प्रयास पूरा नहि कएलहुँ। आजुक गलती एतबा अछि, नहि तँ पूरा जीवन असत्य कहब।”

रमा पुछलीह, “एहि स्वीकारोक्तिक परिणाम अहाँ की चाहैत छी?” सरिता चुप भऽ गेलीह। बाहर किछु बालक छतसँ टपकैत ओसक बूँद छूएबाक प्रतियोगिता करैत छल। सरिताकेँ नैरा बालपनमे एही तरह ओस पकड़बाक जिद करैत याद अएलीह। ओ मुस्की देबाक प्रयास नहि कएलीह। “हम अपना ऊपर दण्ड लिखय नहि आएल छी,” ओ

कहलीह, “मुदा पुरान सार्वजनिक सारक संग सुधार-पत्र जाउ। जे शेष अधिकार अछि ओकरा पूरा कहू। आ ई संशोधन हमर नामसँ हो; नैराक नामसँ नहि।”

एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे जाँच-पंजीक सभ सत्ताइस नाम सहित नब संशोधन प्रकाशित कऽ देल जाय, जाहिसँ लोक संशय नहि करथि। रुहानी तुरन्त प्रतिवाद कएलीह, “दू गलत निर्णय एक दोसराकेँ काटि नहि दैत। सार्वजनिक सारक अस्पष्टता सुधारबाक लेल निजी नामक पर्दा किएक खोलब?” बदरीक पत्नी सेहो कहलीह, “हम अपन बात कहि रहल छी, से सभक परिवारक ठेगाना टाँगबाक अनुमति नहि।” प्रस्ताव वापस लेल गेल। रमा सुधार-पत्रक सीमित प्रारूप बनौलनि, जकर भाषा सरिता फेर पढ़तीह।

अदिति अपन नक्शाक थैली खोललीह, मुदा ओ सरिताक बयानक बीच अस्पतालक जलनिकासीक अन्तिम कारण पर किछु नहि कहलीह। “हमर पुरान हस्ताक्षरवला मापक प्रतिवेदन अछि,” ओ कहलीह। “एखन ओकर सीमाक पुनर्परीक्षा जरूरी अछि। अहाँ सभक आजुक शब्दक आधारपर हम एखन नाला अथवा भवनक दोष तय नहि करब। काल्हि मापक मूल पन्ना लऽ आएब; जे गलत प्रमाणित होएत, तकरा औपचारिक रूपसँ वापस लेब।” सरिता हुनका देखलीह। “गलतीक बात कहबासँ गलती सुधरैत नहि,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा बिना कहल सुधारक दरबज्जो बन्द रहत।”

दुपहरिक भोजन लेल रुखसाना भात आ तरकारी पठौलीह। ओ स्वयं नहि अएलीह; हुनकर काज भोजन पहुँचेबाक छल, सभामे प्रदर्शन करबाक नहि। गोमती खर्च-बहीमे रसोइक सामग्री आ रुखसानाक श्रम अलग लिखल देखबैत कहलीह जे आजुक उपस्थित लोक लेल देल भोजनक हिसाब राहत बाँटल जकाँ नहि लिखल जाए। बदरीक छोट बेटा खिड़की लग भातक गन्ध सूँघि रहल छल। पत्नी ओकरा खएबाक लेल बहर ले गेलीह; कागदक विवाद ओकर भूख रोकबाक अधिकार नहि रखैत छल।

सरिता भोजनक पहिने अपन बयानक प्रत्येक अनुच्छेद सुनलीह। एक ठाम रमाने लिखने छलीह—‘सार प्रकाशित करबाक गलत सहमति’। सरिता ओकरा बदलौलीह—‘अधूरा अर्थ स्पष्ट नहि केने प्रकाशित सारक सीमित सहमति’। “एहि सँ हम गलती छोट नहि करैत छी,” ओ कहलीह। “हम जकर अनुमति नहि देने रही, ओकर अनुमति

अपने माथ किएक लेब? आ जकर लेल हम जिम्मेवार छी, ओकरा धुँधल बनाकेँ किएक छोड़ब?” रमा संशोधनक छाप राखलीह; पुरान शब्द पृष्ठक इतिहाससँ काटल नहि गेल।

कबीर धीरे कहला, “नैराकेँ एहि सूक्ष्म अन्तरपर विश्वास छल। मुदा ओ कखनो सभटा ठीक करि नहि पबैत छलीह।” सरिता हुनका दिस तकलीह। “हमहुँ नहि। ओकरा नहि बचा सकलहुँ, ताहि बातक उत्तर एहि फाइलमे नहि भेटत। दुर्घटनाक कारणक जाँच अपन बाट चलत, हमर सहमतिक भूल अपन बाट। दुनूकेँ जोड़ि एकटा दोषक कथा बनाओल जाए तँ फेर कियो सुनत नहि।” कबीर अपन थारीक आधा भाग खा लेलनि। ओ जानैत छलाह जे सरिता हुनकासँ नित्यक भोजनक आग्रह कऽ सकैत छथि, मुदा शोकक हिसाब हुनका देबाक आदेश नहि।

बदरी आ हुनकर पत्नी फेर भीतर अएलाह। पत्नी अपना हाथसँ पर्चीक नीचे तीन शर्त लिखलीह—अस्थायी आश्रयक प्राप्ति, पानिक सुरक्षित आ पहुँच-योग्य व्यवस्था लेल समयबद्ध उत्तर, आ जमीनक दावा नव निवासक स्वीकृतिसँ स्वतः समाप्त नहि। मालती कहलीह जे पहिने सँ बसल घरसभक जल-अधिकार सेहो दोसर पन्नामे दर्ज हो; नब परिवारक आगमनक बोझ हुनका सभपर निजी रूपसँ नहि डालल जाय। गोमती एके सुनवाईमे दुनू अनुरोध स्वीकार कएलीह, मुदा निर्णयक दू अलग प्राप्ति देलीह।

प्रतिनिधि कहलक, “अहाँ सभ जे ‘अपूर्ण’ शब्द लिखैत छी, ताहिसँ ऊपरक कार्यालय पर्ची घुरा देत।” बदरी उत्तर देलनि, “घुरत तँ घुरबाक कारण लिखू। हम अपन बच्चाक पानि खातिर फेर आएब। मुदा आज जे अज्ञानता अछि ओकरा घर भेटि गेल कहि कऽ नहि लिखब।” गोमती अस्थायी बसावटसँ उजेड़बाक कोनो नब आदेश नदेबाक अनुरोध विभागकेँ पठेबाक सहमति देलीह। ओकरा कानूनी सुनिश्चितता कहि नहि सुनाओल गेल; लिखित प्रत्युत्तर एखन प्रतीक्षित छल।

रमा नब बयानक तेसर पृष्ठ खोललीह। पहिलमे सरिताक जाँचक काज; दोसरमे सार्वजनिक सहमतिक सीमा आ अपन चूक; तेसरमे सुधारक माँग आ उत्तरदेबाक अधिकारीक नाम। “एहि पन्नापर नैराक काजक विरासत लिखब?” ओ पुछलीह। सरिता कहलीह, “नैराक अधूरा काजक बही अलग अछि। जे प्रश्न ओकर लिखावटमे अछि ओकर

स्रोत ओहि ठाम रहत। हम ओकरा बेटी कहि अपन बयानक अधिकारी नहि बनब। जे काज हम कएने छी, ओ हमरा नामे; जे गलती हम कएने छी, सेहो हमरा नामे।”

गोमती सुधार-पत्रक प्रारूप जोर सँ पढ़लीह। सार्वजनिक सारमे सत्ताइस पाँतिक मिलान सम्पन्न भेलाक उल्लेख सही; प्रत्येक देयक भुगतान, अभिलेखीय सुधार, परिचयक प्रकाशन-सहमति आ निजी अधिकारक पुनर्स्थापना स्वतन्त्र प्रक्रियामे शेष। एहि कथनक फेर सार्वजनिक प्रकाशनसँ पहिने सम्बन्धित दावेदारक निजी विवरण हटाओल जाएत आ आपत्ति देबाक समय घोषित होएत। सरिता एक पाँति जोड़ौलीह—“पहिनुक सार देखनिहार लोककेँ एहि संशोधनक समान पहुँच देबाक प्रयासक जिम्मा कार्यालयक।”

साँझक धूप छतक भीजल किनारसँ सरकि गेल। सरिता अंततः मूल बयानपर सही कएलीह। रमा हुनका एक प्रति देलीह, एक प्रति बन्द अभिलेखमे गेल, आ सार्वजनिक संशोधनक प्रारूप पर ‘अभी प्रकाशन नहि’ लिखल गेल। सरिता अपन पर्ची मोड़ि रखबाक बदला फोल्डरमे सपाट रखलीह। हाथक स्याही सुखि रहल छल। ओ अचानक पुछलीह, “जँ हम काल्हि फेर किछु याद करब, तँ?” रमा उत्तर देलीह, “तखन पहिल बयान बदलब नहि; दोसर तिथिक पूरक बयान जोड़ब। अहाँक स्मृति आ अभिलेख दुनूक इतिहास रहत।”

घर घुरबाक घड़ी बदरीक पत्नी मालतीसँ उधार लेल घैलक बात कएलीह। मालती हँसलीह, “जखन पानि सहज भेटत तखन घैल घुराबिह। मुदा हम सभ मिलि नल लगक पाट पहिने बनएबाक माँग करब।” बदरी अपन पर्चीपर लिखल बुढ़नद नाम फेर देखलनि, मुदा आज ओहि नामक आधारपर नदी, खेत आ घरक एक्के नाप घोषित नहि कएलनि। बच्चा थैलीक भीतर सँ रोटीक कोना निकालि खाए लगल। ओकर नजरि ककरो महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षरपर नहि छल।

सरिता कार्यालयक दुआरपर पहुँचलि तँ अदिति पाछाँसँ बजौलीह। “काल्हि पुरान मापक प्रतिवेदनक मूल प्रति निरीक्षणमे राखब। अहाँ आइ जे शब्दक इतिहास सुरक्षित कएलहुँ, ओकरा देखि हम अपन हस्ताक्षरवला नाप फेर जाँचब चाहैत छी।” सरिता फेर भीतर नहि घुरलीह। “अहाँ अपन पन्ना स्वयं खोलू,” ओ कहलीह, “मुदा हम जे किछु

कहलहुँ ताहिसँ अहाँक नाप सही वा गलत सिद्ध नहि होएत।” अदिति सिर हिलौलीह।
सरिता अपना घरक बाट पकड़लीह, हाथमे पहिल बयानक प्रति, आ सामने रहि गेल ओ
कागद जे काल्हि अपना लेखकसँ जवाब माँगत।

अध्याय १३७ • पुरान प्रतिवेदन

अदिति पुरान मापक पट्टीक धूल फूँकि हटेबाक बदला कपड़ाक कोना भिजा कऽ पोंछलीह। पीतल पर उकेरल पहिल रेखा लगभग मेटा गेल छल। ओ पट्टी कार्यालयक खिड़की लग धरलीह, जतय भोरक रौद सीधा पड़ैत छल। टेबुलपर तीन कागद छल— हुनकर हस्ताक्षरवला पुरान प्रतिवेदन, तारा बिनौटक स्थल-पुस्तिका आ नगरक प्राप्ति-पंजी। तीनू कागदमे एकहि भूमिक तीन तरहक किनार छल। आजुक बैठकमे अदितिकेँ अपन हस्ताक्षरक बारेमे बाजबाक छल; माटिक बारेमे जे नहि बुझल गेल अछि, ओकरा बुझल कहबाक नहि।

रमा दुआर बन्द करैत पुछलीह, “ई मूल प्रति अछि?” अदिति सिर हिलौलीह। पन्नाक तल्लामे मुहरक नील रङ्ग फैलल छल आ कागदक कोनामे पानिक पुरान दाग पड़ल छल। “काल्हि सरिता अपन बयानक पहिल रूप नहि मेटौलीह,” अदिति कहलीह, “तैं हमहुँ एहि प्रतिवेदनपर नब आँकड़ा चिपका कऽ पुरान निर्णय गायब नहि करब।” रमा पुरान फाइलक संख्या लिखलीह। मूल आ नकलक भेद स्पष्ट करबाक लेल ओ सभ उपस्थित लोकक सामने मोहरबन्द खोलबाक सुझाव देलीह।

बाहर बरामदामे ममता हरि अपन नगर-पंजी लऽ बैसलि छलीह। हुनकर जूताक तलुआमे सुखायल कादो लागल छल; मुदा ओ नालीमे उतरि नहि अएलीह। “दस्ताना कहाँ अछि, से पूछब तँ कहत सभ लग अछि,” ओ कहलीह, “हमर नामक कात प्राप्ति शून्य अछि। कहू, एहि कागदमे सुरक्षा उपलब्ध लिखल अछि की नहि?” अदिति प्रतिवेदनक पछिला पृष्ठ पलटलीह। एक वाक्यमे स्थल “साधारण बाहरी निरीक्षण लेल उपयुक्त” कहल गेल छल, मुदा तकर निचाँ उपकरणक वास्तविक प्राप्तिक कोनो पन्ना संलग्न नहि छल।

“हम देखल बाटकेँ उपलब्ध सुरक्षित कामक बराबर मानि लेने रही,” अदिति कहलीह। “ई हमर मापक भाषा अपन सीमासँ बाहर निकलि गेल छल।” ममता कहलनि, “एहि भाषाक कारण हमर विभाग काज पर भेजबाक आदेश दैत छल। हम रोकलहुँ तँ कहलक अभियन्ताक प्रतिवेदन अछि।” रमा बयानमे लिखलीह जे ममता आदेशक विरोध दर्ज

कएने छलीह, सुरक्षा-सामग्रीक प्राप्ति नहि भेल छल, आ भीतरक प्रवेश अलग जोखिमपरीक्षाक बिना अस्वीकार्य छल। ममता पन्ना पढ़ि कऽ कहलीह, “हमर गवाही एहने रहए। एकरा कोनो आनक साहसक कथा नहि बनाउ।”

तारा पहुँचलीह तँ पहिने खिड़की खोलि देलीह। ओ छरकीक दूनू कातसँ आनल स्थलचित्र पसारलीह। एक रेखा बान्हक ऊपरक पट्टी दर्शबैत छल; दोसर नीचला बसावट तक पहुँचल जमा पानिक निशान। अदितिक पुरान प्रतिवेदनमे दूनू स्थानक बीचक ढाल एकटा जोड़ल माप मानि लेल गेल छल। तारा कहलीह, “जे बिन्दु सँ ई ढाल निकालल गेल, ओकर मूल स्थिर खूँटाक मिलान हमर पिछिला परीक्षणमे नहि भेटल। नहि भेटलाक अर्थ ई नहि जे ओ कखनो छल नहि; अर्थ एतबे जे एहि आँकड़ाक भरोसे निकासीक आदेश नहि चलत।”

गोमती बैठकक लेल अएलीह तँ दरबज्जा लग ठाढ़ रहि गेलीह। “केवल कागद वापस लएबासँ पुरान आदेश के घुराओत?” ओ पुछलीह। अदितिकँ एहि प्रश्नक उत्तर तैयार नहि छल। ओ किछु क्षण नीरव रहलीह, फेर पुरान प्रतिवेदनक संलग्न वितरण-सूची निकाललीह। अस्पताल प्रबन्धन, नगर मरम्मत शाखा, गोदाम निरीक्षण आ जलनिकासी कार्यालय—जतय-जतय प्रतिलिपि पठाओल गेल छल, ओहि सभक नामक कात प्राप्ति खोजबाक निर्णय भेल। “जे कार्यालय हमर निष्कर्ष अपन आदेशमे जोड़ने अछि, ओकरा संशोधन पहुँचेबाक प्रमाण चाही,” अदिति कहलीह।

सरिता कने विलम्बसँ अएलीह। अपन काल्हिक बयान ओ घरमे छोड़ि अएलीह; आज सुनबाक लेल अएलीह। हुनकर हाथमे नैराक कोनो कापी नहि छल। गोमती हुनका देखैत आसन बढ़ौलीह, मुदा सरिता खिड़की लग खाली चौकीपर बैसलीह। “हमर बेटी जकरा बचाबय चाहैत छल, ओकर कथा कागदमे कतए अछि से पूछब,” ओ धीरे कहलीह। अदिति उत्तर देलीह, “आज हम अपन मापक स्रोतक हिसाब देब। ओकरा आधार बना कऽ नैराक मृत्युक कारण घोषित नहि करब। ओ दोसर जाँचक विषय अछि।” सरिता एहि सीमाकँ सुनि रहलि।

प्रतिवेदनक मध्य पृष्ठपर एकटा साधारण रेखाचित्र छल। पुरनाधारक पुरान मुँह गोदामक पिछिला घेरासँ लगैत बुझाइत छल, मुदा नक्शाक पुरान तारीख आ नब चिन्हक

अन्तर ओहि चित्रमे लुप्त छल। रतन अपन बाबूक बचल हाथनक्शाक प्रति लेने पहुँचलाह। “ई कागद हमर परिवारक स्मृति अछि,” ओ कहलनि, “अधिकारक अन्तिम प्रमाण नहि।” तारा हुनकर बात मानलीह। “पुरान मुँह कतए रहल होएत, से एतयसँ पूछल जा सकैत अछि; गोदामक भूअधिकार एहि प्रति मात्रसँ तय नहि होएत।”

रतनक संग सूरज सेहो छलाह। हुनकर खेतक ऋणक सुनवाइ एखन अलग पंजीमे चलि रहल छल। सूरज कहला, “जँ नदीक पुरान बाट फेर चिन्हित होएत तँ हमर क्षतिक हिसाब बदलत की?” गोमती उत्तर देलीह, “सम्भव अछि दावाक प्रमाण बढ़य। मुदा जमीनक स्वामित्व, खेतक वास्तविक हानि आ ऋणक देय तीनटा अलग प्रश्न अछि।” सूरज ओकरा देखलनि। “हम तीनू प्रश्न लिखाकऽ रखब,” ओ कहला, “किएक तँ पहिने एकटा उत्तर दऽ बाकी दूटा केयो नहि सुनने छल।”

बाहर पानि आनएवाली दू स्त्री घैल राखि बात सुनि रहल छलीह। एक जन कहलीह, “कागदमे नदीक मुँह खुलत तँ हमरा बाटपर कादो कतेक बढ़त?” तारा हुनका भीतर बजौलीह। “अहाँक बाट कतयसँ जाइत अछि, देखाबू।” स्त्रीसभ जमीनपर अँगुरीसँ घुमाव बनौलीह। तारा नक्शामे ओ घुमावकें चिन्हित कएलनि, मुदा कहलनि जे स्थल जाँचक बिना ई नब नालीक रेखा नहि होएत।

पारो पत्थरकट्टा अपन औजारक छोटी पेटी लऽ अएलीह। हुनकर संग दू कामगार छल, जकरा सभकेँ कल्हिक ठेकेक खबर सुनायल गेल छल। नगरक सहायक देखिते कहलक, “एखन प्रतिवेदन गलत भऽ गेल तँ ढीला पाट काटि नव पाथर लगा दियौक। आज्ञे काज शुरू भऽ सकैत अछि।” पारो पेटी खोलि एकटा खाँचवाली छेनी निकाललीह। “ई पत्थर काटैत अछि,” ओ कहलीह, “भीजल आधारक भार नहि नापैत। अनदेखल पाट काटब तँ ऊपरक बाट खसि सकैत अछि।”

सहायक कहलक जे संकटमे काम कएनिहारकेँ अतिरिक्त जोखिमभत्ता देल जाएत। पारो ओकरा रकमक पर्ची घुरबैत कहलीह, “हमर घरमे पैसाक जरूरत अछि। एकर मतलब ई नहि जे अहाँक अज्ञात जोखिम हम अपने सिर पर लऽ ली।” हुनकर सहकर्मी धीरे पुछलक, “तखन एखन काज नहि भेटत?” पारो कहलीह, “बाहरक परखल पट्टी पर सुरक्षित मरम्मतक प्रस्ताव देब। भीतरक सहारा जाँचला बादे छूब। जोखिमभत्ताक

नामपर अनजान काम छोड़ब, मुदा ओहि कारणेँ सुरक्षित काजक मजदूरी नहि छोड़ब।” ओ अपन दलक नामसहित लिखित आवेदन देलीह।

अदिति आवेदनक संग अपन पुरान वाक्य मिलौलीह। प्रतिवेदनमे ‘साधारण सुधार तत्काल सम्भव’ लिखल छल। नब स्थलपरीक्षण देखौने छल जे ई वाक्य सुरक्षित बाहरी भाग धरि सीमित रहबाक चाही, पूरा पाट धरि नहि। ओ लाल स्याहीसँ मूलपर नब रेखा नहि खींचलीह; अलग कागदपर लिखलीह जे पुरान निष्कर्ष पुनः उपयोग लेल अनुपयुक्त घोषित कएल जाए, मूल प्रति संदर्भ आ उत्तरदायित्वक अभिलेखमे सुरक्षित रहत। गोमती जोड़लीह, “ई निर्णय लिखू जे एकर आधारपर नव ठेका मंजूर नहि होएत।”

नगर प्रतिनिधिक चेहरा सख्त भऽ गेल। “प्रतिवेदन वापस लेने आधिकारिक विलम्बक जिम्मा अहाँ लेब?” ओ पुछलनि। अदिति कहलीह, “अपन गलत प्रमाणनक जिम्मा लेब। मुदा समस्त विलम्बक कारण अहाँ बिना अलग जाँच हमर माथपर नहि राखि सकैत छी। सामग्री कखन माँगल गेल, कखन खरीदल गेल, ककर आदेश रोकल गेल—ओहि सभक अपन कागद अछि।” प्रतिनिधि बजला, “आब विभाग हमरे गवाहीक माँग करत।” गोमती मुस्केलीह नहि। “ताहि लेल तँ सभक नाम अलग घरमे लिखब।”

ममता उठि कऽ सभामे बजलीह, “हमर सुरक्षा-सामग्रीक खाली प्राप्ति आज सँ नहि अछि। जखन नगरक आदेशपर आपत्ति कएने रही, तखन हमरा कहल गेल जे अभियन्ताक कागद देखू। आब अभियन्ता अपन बात बदलि रहल छथि। मुदा हमर असहमति पहिने सँ लिखल छल, ओकरा नव तारीखक मत बनाउ नहि।” रमा पुरान आदेशक प्रति माँगलीह। ओहि क्षण ममताक गवाही पुनः लिखब नहि पड़ल; पहिल पन्नासँ ओकर तिथि आ शब्द सुरक्षित रहए। अदिति कहलीह, “अहाँक ओहि आपत्तिकेँ नब प्रतिवेदनमे संलग्न करब। हम अपन गलत निष्कर्षक पाछाँ अहाँक सही असहमति नहि मेटाएब।”

रानी हलालखोर सेहो बरामदामे पहुँचलि छलीह। ओ ठेकाक सफाई टोलीक घण्टा-पंजी लेने छलीह, नगरक ममताक पंजी नहि। “हमर साथीसभकेँ कहल गेल, भीतर नहि उतरलहुँ तँ काज कएल नहि मानल जाएत,” ओ कहलीह। “हम सभ ऊपरक सुरक्षित भाग साफ कएने रही। ओकर मजदूरीक दावा एखनहुँ शेष अछि।” गोमती पंजी प्राप्त कएलीह आ ममताक गवाहीसँ अलग राखलीह। ओहि दिनक आदेशक परिणाममे दू श्रम-

व्यवस्थाक अन्तर साफ सुनाइत छल—एकटा नगरक कर्मचारीक सुरक्षा, दोसर ठेका मजदूरक रोकरी गेल कमाइ।

दुपहरिमे टोली पुरनाधार गेल। गोदामक पछिला दीवालक कात माटि भीजल छल, मुदा पानिक उठब-घटबक समय एखन पूर्ण नहि छल। तारा सुरक्षित पाटपर खूँटा देखौलीह; अदिति अपन पुरान नक्शा देखैत छलीह। किछु दूर गोदामक मुंशी कहलनि जे भुइँक ओ पट्टी संस्थानक पट्टा पर अछि, तँ नदीक बाट खोजबाक अधिकार नहि। रतन उत्तर देलनि, “पुरान धारा कतए छल से नापब आ पट्टाक हक तय करब अलग काज अछि। नापक बाट बन्द करबासँ स्वामित्व प्रमाणित नहि होएत।”

पुरान मुँहक कात तारा ढीला माटि हाथें नहि छुलीह। ओ पतली छड़ीसँ दूरसँ चिन्ह देखैत छलीह। नदीक नाम पुरनाधार छल, मुदा आजुक भीजल चिह्न वर्तमान प्रवाह, पुरान बहाव अथवा गोदामक निकासीक कोन मिश्रणसँ बनल, से ओ स्पष्ट नहि कहि सकलीह। अदिति एहि बेर एकटा सफेद खाली घर छोड़लीह, जाहिपर ‘स्रोत-परीक्षण शेष’ लिखल गेल। रतन ओ खाली घर देखि उदास भेला। तारा कहलीह, “एखन एतबे सही अछि। गलत भरल घर भरल नहि कहल जाए।”

छरकीक नीचला कात जखन टोली पहुँचल तँ फूलो पहिनेसँ ठाढ़ छलीह। ओ पहिने बान्हक ऊँच कातक रक्षाक कुरा सुनने छलीह; अपना घरक पछिला आडनमे ठाढ़ रहल पानि ककर गणनामे अछि, से बुझबाक चाहैत छलीह। सूरज नीचला खेतक मेड़ देखौलनि। गोदामक मुंशी एहि स्थलपर नहि आयल छल। अदिति दू अलग समयक जलचिह्न लिखलीह, तारा गाँवक स्त्रीसभसँ चिह्न लगाओल घड़ीक स्मृति पूछलीह। स्मृतिक वाक्य मापयन्त्रक स्थान नहि लेलक, मुदा निरीक्षणक समय चुनबाक कारण बनल।

“जँ बान्ह नीचाँसँ काटि दी, पानि निकलत,” एक युवक कहलक। फूलो ओकरा रोकलीह। “ककर घरपर?” ओ पुछलीह। युवक उत्तर नहि देलक। तारा सम्हारि कहलीह जे बान्ह काटब, छरकी भरब वा नब निकासी देब—तीनू अलग जोखिमक निर्णय अछि। पहिने दूनू कातक वास्तविक ढाल, जलस्तर आ लोकक बाट जाँचब आवश्यक। अदिति लिखलीह जे पुरान प्रतिवेदनमे ऊँच कातक लाभक अनुमानकें नीचला कातक सुरक्षा मानि लेने छल। एहि सम्बन्धमे पुरान निष्कर्ष निरस्त कएल जाएत।

छरकीक पाटपर पारो औजार बिना अएलीह। ओ पत्थरक फाँक दूरसँ देखलीह आ अदितिसँ कहलीह, “हम अपन दलकेँ काल्हि खाली नहि राखि सकब। सुरक्षित बाहरी पाटक जाँच आ अलग मजदूरी मंजूर होए तँ ओतहि काम करब।” अदिति नगर प्रतिनिधिक दिस देखलीह। प्रतिनिधि कहलक, “पहिने नव ठेकाक हिसाब होएत।” पारो उत्तर देलीह, “हिसाब करबाक पहिने जकर जीविका कटत ओकर नाम लिखू।” रमा पंजीमे दलक आवेदनक प्राप्ति आ प्रस्तावित सुनवाईक तारीख जोड़लीह; पक्का भुगतानक आश्वासन नहि देलीह।

रस्ता घुरैत ममता अपन बेटी लेल कागदक एकटा छोट पोथी किनलीह। बेटी काल्हि पुस्तकालय जाएबाक बात कएने छलीह। रानी पुछलीह, “आज अहाँक काम सम्पन्न मानब?” ममता कहलीह, “हमर गवाहीक घर आब खाली नहि; मुदा उपकरणक घर एखन खाली अछि। ओहि दुनूकेँ एक रंगमे नहि लिखब।” रानी अपन ठेकाक हिसाब देखलीह। “हमर घण्टा सेहो एखन पैसामे नहि बदलल,” ओ कहलीह। दुनू अलग-अलग कार्यालयक बाट पकड़लीह; अपन-अपन पन्नाक बोझ अलग रहितो एक-दोसराकेँ देखबाक समय बचल छल।

सरिता फेर कार्यालय अएलीह। ओ पुरान प्रतिवेदनक सार्वजनिक संशोधन देखबाक चाहैत छलीह, निजी जाँचक पूरा फाइल नहि। अदिति हुनका प्रतिवेदनक निकासीक निष्कर्षवला भाग पढ़ि सुनौलीह। सरिता पुछलीह, “एहि कागदसँ नैराक मृत्युक कारण सिद्ध होइत अछि?” अदिति कहलीह, “नहि। एहि सँ ई देखाइत अछि जे हमर पहिनुक नापपर आधारित सुरक्षा-निष्कर्ष भरोसायोग्य नहि छल। अस्पतालक संरचना, बन्द निकासी, आपूर्ति आ मृत्यु-सम्बन्धी निर्णय अपन प्रमाण माँगैत अछि।” सरिता दीर्घ श्वास लेलीह। “कम सँ कम आब ई प्रश्न एतय बन्द नहि भेल,” ओ कहलीह।

अदिति अपन नामक नीचे हस्ताक्षर करबाक पहिने तारा सँ फेर पुछलीह, “हम जे गलत कहने रही, ओकर सही माप आज पूरा भेटि गेल?” तारा स्पष्ट उत्तर देलीह, “नहि। स्थिर बिन्दुक कमी, पुरान नक्शाक भिन्न समय आ दूनू कातक असमान जलचिह्नक कारण नब परीक्षण अनिवार्य अछि। जे निरीक्षण भऽ गेल, तकर सीमित विवरण हमरा लग अछि;

निर्णायक माप एखन नहि।” अदिति मुँह पर हाथ फेरलीह। “तखन संशोधनमे नब सत्यक अभिनय नहि होएत,” ओ कहलीह।

नव पत्रमे तीन स्पष्ट भाग बनल। पहिलमे हस्ताक्षरवला पुरान निष्कर्षक औपचारिक वापसी आ कारणक सीमा; दोसरमे प्रशासनिक पुनर्मापन, उपकरण-जाँच, बाहरी निरीक्षण आ स्वतन्त्र अभिलेख-संग्रहक आदेशक आग्रह; तेसरमे तत्काल सावधानी—बन्द नालीमे असुरक्षित प्रवेश नहि, अप्रमाणित पाटपर तोड़फोड़ नहि, छरकीक एक कात बचएबाक नामपर दोसर कातक निकासीक मनमाना परिवर्तन नहि। जे निर्णय कार्यसमिति लेल सम्भव छल से ओहि दिन लागू भेल; अधिकारक बाहरक काज संबंधित विभागकें लिखित पठाओल गेल।

नगर प्रतिनिधि पत्रक अन्तिम पृष्ठ पढ़ि कहलक, “पुनर्मापनक खर्च ककर मदसँ जाएत?” गोमती कहलीह, “राहतक अनुदान, ममताक वेतन, रानीक ठेकाक बकाया आ अभियान्त्रिक जाँचक खर्च एक्के कोष नहि अछि। पहिने बजटक सक्षम अधिकारी लिखित निर्णय देखि।” पारो अपन सुरक्षित मरम्मतिक माँग पुनः जोड़ौलीह। “ताहि धरि हमर दलक पहिनुक काजक पावती दबि नहि जाय,” ओ कहलीह। रमा पावती पर प्राप्तिक समय चढ़ौलीह। प्रश्न बचल छल, मुदा ककरा पुछबाक अछि से आब अस्पष्ट नहि छल।

दुपहरिक अंतिम पहरमे अदिति मूल प्रतिवेदनपर अपन पुरान हस्ताक्षरक कात नव सही नहि कएलनि। अलग वापसी-पत्रपर दिनांक लिखलीह, मूल प्रतिवेदनक संख्या दोहरौलीह आ ओकर प्रयोग-स्थिति बदलबाक अनुरोध दएलीह। गोमती समक्षे पत्रक दू नकल सील भेल; एक दफ्तरी प्रेषणमे, दोसर समितिक खुला अभिलेखमे गेल। तेसर सीलबन्द प्रति जाँच-दल लेल राखल गेल। ककरो मूल पन्ना फाड़बाक अनुमति नहि देल गेल। अदिति ओहिपर राखल धूल देखलीह; एहि बेर ओ कपड़ासँ नहि पोंछलीह।

साँझे सूचना पटपर नव कागद लगाओल गेल। पहिल आदमी पढ़ि पुछलक, “एहि सँ अस्पतालक सभ दोष सिद्ध भऽ गेल?” दोसर कहलक, “नहि, एखन तँ ककरो दोष नहि।” गोमती दुनूकें रोकलीह। “पुरान माप गलत सिद्ध भेल, से एकटा तथ्य अछि। दोषक प्रकार आ ककर जिम्मा अछि, ओकरा लेल अलग जाँच चलत। एतय दूनू चरम

उत्तर गलत अछि।” लोक फेर पढ़ए लगल। कागदमे पहिल बेर स्पष्ट छल जे ककरो सुरक्षा दाबी गलत भए सकैत अछि, मुदा ओहि सँ सभ प्रश्नक स्वतः उत्तर नहि निकलैत।

अदिति घर घुर्बाक लेल फाइल समेटलीह तँ ममताक खाली प्राप्ति-खाना आँखि पड़ल। ओ तखन पुनर्मापनक सूचीमे एकटा नव माँग जोड़लीह—स्थलपर जे श्रमिक रहताह, हुनकर सुरक्षित कामक अनुमति, उपकरणक वास्तविक सुपुर्दगी आ कार्यसमयक पंजी निरीक्षणसँ पहिने जाँचल जाए। “कागद सही करबाक काज मनुखकें फेर खतरेमे पठा कऽ नहि होएत,” ओ रमासँ कहलीह। रमा आदेशक मसौदामे ई शर्त जोड़ि देलीह। पुनर्मापन शुरू होएबाक पहिने आब एकटा श्रमिक-प्राप्ति सेहो चाही छल।

बाहर एकटा साइकिलवला दूत कार्यालयक पत्र लेने निकलल। ओकरा हर विभागक उत्तर आनबाक काम देल गेल छल; उत्तरक समय लिखल गेल, परिणामक वादा नहि। सरिता खिड़कीक बाहर सँ ओकरा जाइत देखलीह। नैराक अभाव ओहि सभ कागदसँ कम नहि भेल छल। मुदा जखन सरिता विदा होए लगलीह तँ अदिति हुनका रोकि कहलनि, “हम अपन गलतीक अंशकें अब जाँचक मूल दस्तावेज बनबाक दऽ रहल छी, ओकरा दोषक अन्तिम फैसला नहि।” सरिता केवल एतबे उत्तर देलीह, “तखन अगिला प्रश्नक नाम अलग राखू।”

गोमती आखिरी पन्ना खोललीह। ओतय चारि खाली खाना छल—दुर्घटनाक भौतिक क्रम, कर्तव्यक उपेक्षा, अवैध लाभक सम्भावित अभिलेख आ जानबूझि कएल हिंसाक आरोप। रमा पुछलीह, “एहि चारू पाँतिकें एक्के फाइलमे रखब?” गोमती कहलीह, “एक्के टेबुलपर रहि सकैत अछि; एक्के आरोप नहि बनि सकैत।” अदिति पुरान प्रतिवेदनक प्रति तिनका बीच रखलीह। ओहि पन्नासँ जे सिद्ध छल, तकर सीमा लिखल गेल। बाहर अन्हार बढ़ल, आ कक्षमे पहिल बेर दोषक नाम तय करबाक पहिने प्रमाणक अलग-अलग जगह बनाओल गेल।

अध्याय १३८ • दोषक अलग खाना

भोरमे गोमती बेलदार कार्यालयक पुरान मेजपर चारिटा खाली फाइल खोललीह। काल्हि साँझ अदितिक वापस लेल प्रतिवेदन ओहि मेजपर रखल गेल छल, आ रमा ओकरा नब कागदसँ झाँपि देबाक प्रस्ताव रोकने छलीह। आइ भीजल बरामदामे कतहु जूता सुखा रहल छल, कतहु आदमी। गोमती फाइलक पन्ना पर नाम नहि लिखलीह। पहिलपर ‘घटनाक भौतिक क्रम’, दोसरपर ‘कर्तव्यक सम्भावित उपेक्षा’, तेसरपर ‘अवैध लाभक आरोप’, चारिमपर ‘जानि-बुझि कएल हिंसाक आरोप’ लिखलनि। चारू फाइलक बीच कनेक फाँक छोड़ल छल। बाहरसँ देखला पर ई साधारण मेज छल; भीतर ककरो जीवनक एकमात्र कथाकेँ चारि अलग किसिमक प्रश्नमे बाँटबाक कठिन काज शुरू भेल।

रमा एकटा मोहर लऽ अएलीह। “किछु लोक कहैत छथि जे हत्या लिखि दियौक तँ जाँच तेज चलत,” ओ कहलीह। “आन लोक चाहैत अछि जे दुर्घटना लिखला पर सभ मुक्त भऽ जाए।” गोमती खिड़कीक किवाड़ बन्द कएलनि, ताकि हवासँ पन्ना नहि उड़य। “दूनू लोक जाँचसँ पहिने फैसला चाहैत अछि,” ओ उत्तर देलीह। “जकर मृत्यु प्रमाणित अछि, ओकरा लेल नब बहस नहि। मुदा ककर कर्तव्य टूटल, कोन वस्तु कखन बदलल, आ कियो जानि-बुझि क्षति पहुँचौलक कि नहि—एहि सभक उत्तर एक्के मोहरसँ नहि भेटत।” ओ रमा सँ प्राप्ति-पत्रक नकल मँगौलीह।

कबीर दरबज्जापर कनेक देरि ठाढ़ रहलाह। हुनकर हाथमे नैराक एक छोट कापीक बाहरी आवरण छल; भीतरक निजी लिखावट ओ घरमे छोड़ि अएने छलाह। “हमरा हत्या शब्द सुनिते क्रोध होइत अछि,” ओ कहलनि, “आ दुर्घटना सुनिते सेहो। कोनो शब्द नैराकेँ घुरा नहि देत। मुदा जँ गलत शब्द पहिनेसँ राखि देब तँ सही जाँच कहाँ जाएत?” गोमती हुनका मेजक कात बैसबाक आग्रह कएलीह। कबीर बैसला नहि। “हम आज तथ्यक सीमा सुनबाक लेल आएल छी,” ओ कहला, “परिवारक दुःखकेँ तर्कक कमी बुझि कऽ ककरो नाम निर्दोष अथवा दोषी नहि घोषित करू।”

अदिति अपन पुरान मापक प्रतिवेदनक मूल प्रति नहि, ओकर वापसी-पत्रक सत्यापित नकल लऽ अएलीह। ओ पहिल फाइलमे रखबाक आग्रह कएलीह। “हम सुरक्षित

जलनिकासीक जे निष्कर्ष देने रही, ओ वापस अछि। मापक पुरान बिन्दु मिलल नहि; छरकीक दू कातक जलचिह्नक समय सेहो भिन्न अछि। एतेकसँ एकटा पुरान तकनीकी दावा अविश्वसनीय भेल। एकर अर्थ ई नहि जे पानि अपन इच्छा सँ अस्पतालक दीवाल तोड़लक, अथवा अमुक व्यक्ति ओहि दीवालकेँ जानि-बुझि कमजोर कएलक।” रमा प्रश्न कएलीह, “तखन ई पत्र दोसर फाइलमे नहि जाएत?” अदिति कहलीह, “सन्दर्भक नकल जा सकैत अछि। मुदा तथ्यक पहिल ठाम नाप आ ओकर सीमा थिक।”

तारा भीतर आबि बरखा, जलचिह्न आ निकासीक तीन भिन्न समयक नकल देखौलीह। मल्लिक पोखरिक कात, पुरनाधारक पुरान मुँह आ अस्पतालक फाटकक पानि एक्के दृश्यचित्रमे लाल रेखासँ जोड़ि देने छल एक अखबारी पर्ची। तारा ओहि पर्चीकेँ मेजपर रखि कहलीह, “रेखा खींचबाक अधिकार चित्रकारकेँ अछि। हमर नापमे एकरे समान रेखा एखन सिद्ध नहि। जलस्तर, बन्द नाली, भीतरक चुआन आ दीवालक कमजोरी परस्पर असर कऽ सकैत अछि; प्रत्येकक माप अलग चाही।” ओ पर्चीक कोनपर ‘सार्वजनिक अनुमान’ लिखबौलीह, ताकि कियो ओकरा निरीक्षणक कागद नहि मानय।

तखने नगरक मरम्मत-विभागसँ एक पत्र पहुँचल। पत्रक भाषा कठोर छल—किछु ‘स्थानीय मरम्मत-श्रमिक’ अनधिकृत ढङ्गसँ भराव बदलने, ताहि कारण सुरक्षा बाधित भेल। नामक ठाम गोमती बेलदारक मजदूरी-पंजीक संख्या देल छल। गोमती कागद पढ़ि मेजक कात ठाढ़ भऽ गेलीह। “एहि संख्या सँ हमर टोलीक मजदूरीक दावा चिन्हाइत अछि,” ओ कहलीह। “एहि सँ आदेश देनिहार, सामग्री चुननिहार अथवा स्थल-स्वीकृति के कएलनि, से नहि चिन्हाइत।” विभागीय दूत कहलक, “हमरा केवल पत्र दऽ जाएबाक कहल गेल अछि।” गोमती उत्तर देलीह, “तखन पत्र देबाक प्राप्ति लिअ। उत्तर सेहो विभागे देत; अहाँक मुँहसँ नहि।”

बरामदामे प्रतीक्षा करैत एक बेलदार मजदूर खबर सुनि भीतर अएल। ओकर दहिना हथेलीक पुरान छाला घाव जकाँ फाटि गेल छल। “ओहि दिन हम माटिक टोकरी ढोने रही,” ओ कहलक। “कहू जे नहि ढोने रही, तँ झूठ होएत। मुदा माटि कतय राखब, ओ माप हमरा कियो नहि देखौने। जहिया पाट परत सँ झरए लगल, गोमती काज रोकबौने छलीह। आब कागदमे हमरा सभकेँ पूरा नाली बन्द केनिहार लिखल अछि।” हुनकर स्वर

काँपि रहल छल, मुदा ओ अपन हस्ताक्षरक पन्ना स्वयं माँगलक। गोमती ओकरा अपनक संग गवाही मिलाबय नहि कहलीह; अलग बयान लिखौलीह।

नगरक एक कर्मचारी पुछलक, “दोषी श्रमिक नहि तँ अधिकारी? सभक नाम फाइलमे अछि।” रमा ओकर हाथसँ कलम वापस लेलीह। “फाइलमे नाम रहब आ अपराध सिद्ध होएब अलग अछि,” ओ कहलीह। “मजदूर जे कएलक, जे आदेश पओलक, जे रोकलक, ओ कहत। अधिकारी जे स्वीकृति देलक, ओकर अभिलेख भेटत। एहि दू स्तरक बीच जे खाली समय अछि, ताहिमे कियो अनुमानसँ दोष भरि नहि सकैत।” मजदूर चुपचाप बाहर गेल। अपन कथन लेल ओकरा कोनो क्षमादान नहि, मुदा अनदेखल आदेशक भार सेहो नहि देल गेल छल।

दुपहरि धरि गोमतीक पुरान घण्टा-पंजी, ठेकाक भराव-बिल आ स्थल-स्वीकृतिक प्रतिलिपि तीन भिन्न बण्डलमे खुलल। रमा पहिल बेर देखलीह जे सामग्री लेल देल रकम आ मजदूरक हाथमे पहुँचल रकमक बीच कतेक अलग हस्ताक्षर अछि। एक अधिकारी तुरन्त कहलनि, “दाम कम देखाइत अछि, मतलब चोरी।” गोमती ओकरा रोकलीह। “कम दामक सामग्री खरीदब घटिया निर्णय भऽ सकैत अछि; बिलमे फरक वास्तविक भऽ सकैत अछि; गलत हिसाब सेहो सम्भव अछि। अवैध लाभ कहबाक लेल भुगतानक बाट, मालक प्रकार, लाभ लेनिहार आ जानकार निर्णयक प्रमाण जुटाउ।” ओ तेसर फाइलमे किछु कागद स्वीकार कएलीह, मुदा शीर्षक ‘आरोप’ सँ ‘सिद्ध’ नहि बदलिल।

दू बहीक बीच एक फाटल प्राप्ति-पर्ची छल। ओकरा पाछाँ एक नदीनाम ‘बरुणा’ लिखल, जबकि छपल नकलमे ‘बरुणे’। एक सहायक चहकल, “एहि सँ साफ अछि जे एक्के भराव दोसर ठाम दिखा भुगतान उठाओल गेल।” गोमती कहलीह, “ठहरू। मूल पंजीमे पूरा ठामक पता अछि, नकलमे केवल जलनाम। ध्वनि मिललासँ ठाम नहि मिलैत। बरुणा आ बरुणे एक नामक भिन्न उच्चारणो भऽ सकैत अछि, अलग अभिलेखो। ई बात अध्याय भरि नहि, पहिले सेहो रजिस्टरमे अनिर्णीत रखल गेल छल।” ओ पुरान प्रविष्टि खोलि तिथि देखौलीह। नैराक कएल ‘स्रोत सत्यापन शेष’ टिप्पणी ओहि ठाम सुरक्षित छल।

कबीर कनेक आगाँ झुकलाह। नैराक अक्षर देखिते हुनका लगल जे कक्षमे ओकर आवाज एक क्षण लेल घुमि गेल; वास्तवमे बाहर कियो खाली लोटा ठोकि रहल छल। ओ आँखि ऊपर उठौलनि। “ओ एहि अन्तरकैँ मेटौने नहि छल,” ओ कहला। “एखन ओकर नाम लगाकऽ ई दू ठाम एक कहब, तँ ओकर सावधानीकैँ सेहो मेटाएब।” गोमती नकलक नीचे लिखौलीह—मूल स्थल-पहचानक पुष्टि बिना पंजीसभक योग नहि; संदेह रहला पर अलग पत्राचार। ओहि निर्णयसँ सम्भावित दोहर भुगतानक आरोप स्थगित भेल, मुदा सत्यापनक बाट बन्द नहि भेल।

तखन सरिता अएलीह। हुनका नैराक निजी पत्र पढ़ेबाक मन नहि छल। ओ मृत्यु-पुष्टिक सम्बन्धमे नव विवाद नहि सुनए चाहैत छलीह; ओहि पुष्टि लेल अस्पतालक अलग अभिलेख छल। “हम जानए चाहैत छी जे प्रश्नक बाट बदललाक बाद परिवारकैँ कोन दफ्तरमे जाएब,” ओ कहलीह। “जँ संरचनात्मक लापरवाही भेटत, तकरा कारण नैराक मृत्यु स्वतः सिद्ध मानल जाएत कि अलग चिकित्सकीय आ कालक्रमक जाँच होएत?” अदिति कहलीह, “अलग जाँच चाही। हमरा गलतीक आकार छोट करबाक इच्छा नहि, मुदा जे नहि मापल गेल, तकरा हम सिद्ध नहि कहब।” सरिता टेबुलक पहिल फाइलपर हाथ नहि रखलीह।

कक्षमे नियुक्त विधिक परामर्शदाता सेहो आबि गेलाह। ओ स्पष्ट कएलनि जे कार्यसमिति फैसला देनिहार अदालत नहि; ओकर काज अभिलेख सुरक्षित करब, बयान आ वस्तुसाक्ष्यक स्रोत चिन्हित करब, सक्षम जाँच-प्राधिकारीकैँ स्वतन्त्र फाइल भेजब आ लोकक देयक आवेदनक रास्ता खुला रखब अछि। “हत्या शब्द सनसनी लेल नहि राखि सकैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा जँ जानि-बुझि कएल हिंसाक विशेष आरोप सामने आएँ तँ ओकरा दुर्घटनाक फाइलमे दबाबो नहि। आरोपक विवरण, स्रोत आ स्वीकार्य सीमा सहित अलग प्रेषण चाही।” कबीर पुछलनि, “आ जँ ओहि फाइलमे एखन केवल आरोप अछि?” उत्तर अएल, “तखन आरोपे लिखल जाएत।”

एक युवक ओतय अपन लिखल पर्ची देलक। ओ कहैत छल जे अस्पतालक माल आपूर्तिक किछु मार्ग शंकास्पद छल, तँ निकासीक बाधा जानि-बुझि कएल गेल होएत। रमा ओकरा पुछलीह, “अहाँ कोन माल देखलहुँ? कखन? ककरा हाथमे? निकासीक

ठामपर स्वयं गेल रही?” युवक स्वीकार कएलक जे ई सम्बन्ध ओकर अनुमान छल; सामानक चर्चा ओ दूसरासँ सुनने छल। गोमती पर्ची फाड़लीह नहि। “देखल, सुनल आ अनुमान—तीनू अलग लिखब,” ओ कहलीह। युवक अपन वाक्य सुधारलक; जकर नामसँ सुनने छल से बताओल बिना ओकर स्रोत विश्वसनीय कहल नहि जा सकैत छल।

रुहानी आश्रयसँ एक लिखित आग्रह पठौने छलीह। पत्रमे माँग छल जे दुर्घटनाक सार्वजनिक पंजीमे घरसँ बेघर भेल लोकक संख्या आ राहत-खर्च देखायल जाए, मुदा आश्रयमे रहनिहारक निजी पहचान आरोपक फाइलमे स्वतः नहि पहुँचय। गोमती आदेशक मसौदामे ई सीमा जोड़लीह। चम्पाक गोपनीय चिकित्सकीय कागद सेहो सामान्य बैठकक प्रति नहि बनत; आवश्यक भेलासँ स्वीकृति आ विधिसम्मत प्रक्रिया अनुसार मात्र सम्बन्धित अभिलेख देखल जा सकत। एतय ककरो दुःख जाँचक सार्वजनिक सामान नहि बनल।

बाहर एक वृद्धा उर्मिलाक परिवारक बकाया सम्बन्धी आवेदन लेने ठाढ़ छलीह। ओ कहलीह, “अहाँ सभ दोषक चारि खाना बनबैत छी, मुदा उर्मिलाक धोबीघरक हिसाब कुन खानामे जाएत?” सरिता उठि हुनका बैसौलीह। रमा अलग देय-पंजी देखौलीह, जाहिमे मजदूरी, कपड़ाक जमा-वापसी आ जिम्मेवारीक प्रश्न शेष छल। “ई चारि आरोपक कोनो एकमे दाबल नहि जाएत,” रमा कहलीह। वृद्धा पर्चीक प्राप्ति लेल आग्रह कएलीह। हुनका न्यायिक वादक लम्बा परिभाषा नहि चाही छल; कुन दिन जवाब भेटत, से लिखल कागद चाही छल।

एक अधिकारीक मनमे ई बात बसी नहि। “समिति एतेक फाइल खोलत तँ अन्त नहि होएत,” ओ कहलक। गोमती उत्तर देलीह, “फाइल कम करबाक लेल बकाया गुम करब तँ अन्त कागदक होएत, विवादक नहि। चारि कारणक प्रश्न आ मजदूरीक दावा अलग राखला सँ उत्तर देबाक लोक आ तिथि स्पष्ट होएत।” वृद्धा प्राप्तिपत्र मोड़ि आँचरमे रखलीह। बाहर निकलैत ओ पाछाँ घुरि कहलीह, “मौत केना भेल से खोजू। मुदा जे काज ओ जीविते कएने छल, ओकर दाम ओकर मरबाक कारण भेटला धरि नहि रोकू।”

साँझक लगपास नगर विभागक दोसर पत्र आएल। एहि बेर कहल गेल छल जे स्थानीय मरम्मतिक बकाया रकम रोकल जाए, कारण श्रमिकक गलती सम्भव अछि। गोमती पत्र

पढलनि आ तुरन्त उत्तरक मसौदा लिखौलीह। “वास्तविक कएल श्रमक स्वीकृत भुगतान जाँचक विषयक कारणेँ अनिश्चितकाल बन्द नहि करब। जे रकम विवादित अछि ओकर आधार स्पष्ट करू, शेष देय अलग राखू। मजदूरक बयान लिअ, आदेश-पुस्तिका, गुणवत्ता निरीक्षण आ सामग्रीक आपूर्तिक कागद प्रस्तुत करू। सामूहिक दण्ड नहि।” ओ एहि उत्तरपर मात्र संयोजकक सही नहि कएलीह; श्रमिक प्रतिनिधिक आपत्ति सेहो संलग्न कएलीह।

नगरक सहायक एखनहुँ कहैत छल, “गोमती अपने बेलदार छथि। अपन लोकक पक्ष लेतीह।” गोमती हँसलीह नहि। “हम अपन काजक रसीदक गवाह सेहो छी, ताहि लेल अपन व्यक्तिगत दावाक निर्णायक हम नहि बनब,” ओ कहलीह। “एहि देयक हिस्सामे रमा प्राप्ति देखतीह, स्वतन्त्र सदस्य परीक्षण करताह। मुदा हमर पेशाक कारणेँ सम्पूर्ण बेलदार टोलीक आवाज हटाएबो नहि।” कबीर पहिल बेर सहायक दिस तकलाह। “व्यक्तिगत हित बतायब बेईमानी नहि,” ओ कहला, “ओकरा नुकाएब समस्या अछि।” सहायक लिखित आपत्ति देबाक वचन दऽ चुप भऽ गेल।

गोमती अपन पुरान पंजीक एक पन्ना खोललीह। ओतय आठ खेप माटिक मजदूरीक लेखा छल। एक समय ओहि आठ खेपक बदला ओकरा घरमे तेल आ चाउर अएल छल; बाकी बकाया तखनहुँ छल। ओ पन्नापर अँगुरी राखि कहलीह, “हम माटि ढोने रही। एहि स्वीकारसँ हम पाछाँ नहि हटब। जँ काजक बीच हमर गलती भेटत तँ ओकर जाँच हो। मुदा गोदामक नक्शा बनौनिहार, निकासी बन्द करबाक आदेश देनिहार, निम्न स्तरक माल चुननिहार, निरीक्षण छोड़निहार—एहि सभक प्रश्न मेटाकऽ मात्र टोकरीक निशान राखब तँ ई फेर एकटा झूठ होएत।” रमा ओकर कथनकेँ बिना अलंकारक लिखलीह।

अदिति आश्वस्त करबाक प्रयत्न नहि कएलीह। “हमर हस्ताक्षरवला गलत माप सेहो एहि श्रृङ्खलामे अछि,” ओ कहलीह। “हम एहन नहि कहब जे आब गलती मानि लेनेसँ हमर पुरान निर्णायक परिणाम समाप्त। मुदा हमर त्रुटि कत्तेक हानि पहुँचौलक, से बुझबाक लेल जे वास्तविक प्रमाण चाही, ओकर माँग हमरा स्वयं करबाक अछि।” तारा तत्काल नब जलमापनक कार्यक्रम नहि घोषित कएलीह; मौसम, सुरक्षित प्रवेश, स्वतंत्र उपकरण

आ दूनू कातक लोकक उपस्थिति लेल अलग स्वीकृति शेष छल। फाइल भरबाक उतावलीमे नब काजक जोखिम नहि बढ़ाओल गेल।

बाहर सड़कपर दू व्यक्ति झगड़ि रहल छल। एक कहैत छल, “जाँचमे हत्या नहि निकलत तँ न्याय नहि।” दोसर कहैत छल, “हत्याक प्रमाण नहि भेटल तँ सभ निर्दोष।” सरिता ओहि विवादक बीच नहि पड़लीह। ओ बरामदाक एकटा खम्भा लग ठाढ़ रहलि आ अपन झोरा सँ पानीक छोटी बोतल निकाललीह। नैरा जीविते जखन कागद पढ़ैत थाकि जाइत छलीह, तखन पीबाक पानि बीचमे राखए कहैत छलीह। ई स्मृति सरिताकेँ सुनाइत छल, मुदा ओहि क्षण कियो नव प्रमाण नहि बनि रहल छल। ओ बोतल पुनः झोरामे रखि भीतर घुर्लीह।

“हम एकटा आवेदन आओर देब,” सरिता कहलीह। “नैराक मृत्यु जे अभिलेखमे स्वतंत्र रूपसँ पुष्टि भेल अछि से कायम रहय। ओकर कामक बचल निजी कागद परिवारक अनुमति बिना सार्वजनिक नहो। आ जाँचक चारि बाटमे सँ कोनो एकपर निर्णय एला सँ राहत, व्यक्तिगत सम्पत्ति आ सेवा-सम्बन्धी देयक दावा स्वतः बन्द नहि मानल जाए।” रमा आवेदन पढ़ि सुनौलीह। सरिता ठीक कएलीह—‘निजी कागदक स्वामित्व’क ठाम ‘निजी कागद धरि पहुँचक अधिकार’ लिखल जाए, कारण सम्पत्तिक अन्तिम व्यवस्था अलग प्रश्न छल। हुनकर एहि छोट सुधारपर गोमती हस्ताक्षरक पहिने ठमकि गेलीह।

चारू फाइलक संग अलग-अलग प्रेषण-पत्र बनल। दुर्घटनाक घटनाक्रम लेल तकनीकी पुनर्निरीक्षण; सम्भावित कर्तव्य-उपेक्षा लेल विभागीय आदेश आ सुरक्षा-गवाही; अवैध लाभक शंका लेल बिल, आपूर्ति आ भुगतानक स्वतन्त्र परीक्षण; जानि-बुझि हिंसाक आरोप लेल स्रोत-स्पष्ट बयान विधिसम्मत सक्षम जाँचक हाथ। कोनो पत्रमे दोष सिद्ध लिखल नहि छल। समिति अपन अधिकारक सीमासँ बाहर फैसला देबाक दावा नहि कएलक। मुदा प्रत्येक पत्रमे प्राप्ति देनिहार कार्यालय, उत्तर माँगबाक दिन आ लापता कागदक विवरण लिखल छल। खाली खानासभ आब अदृश्य खालीपन नहि रहल।

साँझे गोमती बेलदार बाहर अएलीह तँ दूर कादोमे रोपल बाँसक चिन्ह अन्हारमे हिलि रहल छल। हुनका आँखि पड़ल जे चिह्नक पाछाँ पुरान दीवालक छाया चारि टुकड़ामे बँटल जकाँ अछि। पानिमे चारि दीवाल नहि छल; एक्के दीवालक छवि पवनसँ टूटि रहल छल।

ओ एतबे देखलीह, आ घरक बाट पकड़बाक पहिने रमा लग घुरि कहलीह, “जाहि मजदूरक भुगतान रोकबाक पत्र अएल अछि, ओकरा सूचना आजे पठाउ। काल्हि फेर भीतर बजेबाक समय दियौक।” रमा सूचना-पुस्तिकामे समय लिखलीह। फाइल बनबैत-बनबैत जे व्यक्ति परसँ काज छिनत, ओकरा बाहरे छोड़ि देब सही निर्णय नहि छल।

रातिक पहिल दीप जरिते कबीर कक्षक दरबज्जा आधा बन्द कएलनि। मेजपर चारू फाइल अलग छल, मुदा हुनका पता छल जे ओकर बीचसँ गुजरनिहार कतेको लोक एक्के व्यक्ति होएत—कियो गवाह, कियो घायल, कियो बकायादार, कियो आरोपित। बाहरसँ सरिताक डेगक ध्वनि धीरे-धीरे दूर गेल। अदिति अपन वापसी-पत्रक प्रति फाइलक मूल स्थानँ छोड़लीह। रमा अगले दिनक सुनवाईक क्रम लिखैत छलीह। गोमतीक सामने तखन एकटा छोट कागद अएल: ‘पहिने कारण सिद्ध करू, कि पहिने जकर देय स्पष्ट अछि तकर भुगतान?’ ओ ओकरा प्रश्न मानि रखलीह, आदेश नहि। एखन चारि आरोपक अलग बाट खुलि गेल छल; काल्हि तर्कक प्रश्न ई रहत जे अलग-अलग बाट सँ आयल साक्ष्य कखन आ कोना एक-दोसराकेँ छू सकैत अछि।

अध्याय १३९ • तर्कक पुनरागमन

भोरक उजासमे उदयनक अध्ययनगृहक दहिना देवालसँ चूनक महीन धूरि झरि रहल छल। राति भरि बरखा भेलासँ ओसारक काठ भीजल रहए। एक विद्यार्थी देवाल लग राखल ताड़पत्रक पेटी हटबए लगल तँ भीतरसँ सूखल बेलपत्र आ धागासँ बान्हल दू पात खसि पड़ल। ओ घबराकऽ गुरुक दिस तकलक। उदयन पेटी उठाबए नहि दौड़लाह; पहिने पन्ना सभक क्रम मिलौलनि। एक पन्नापर हुनकर अपन अनुमानक आरम्भ छल, दोसरापर मीमांसक अतिथिक आपत्ति। दूनू पन्ना भिजल धरतीपर एक-दोसरासँ चिपकबाक कगारपर छल।

काल्हिक सभामे जे अतिथि हुनकर पक्षक तीक्ष्ण विरोध कएने छलाह, हुनका भोरमे उठबामे विलम्ब भेल छल। हुनकर संग आएल शिष्य दुआरपर ठाढ़ काँपि रहल छल। “आचार्य, राति हुनकर संगक पुरान सहपाठीक देहान्त भऽ गेल,” ओ कहलक। “अतिथि सभाकेँ विदा करबाक कहैत छथि। काल्हि अहाँ जे तर्क रखलहुँ, ओ आब हुनका सुनबाक मन नहि।” विद्यार्थी सभक आँखि एक संग उदयनपर टिकि गेल। कियो कहब चाहैत छल जे विरोधक सभसँ तेज आवाज आब चुप भऽ गेल; मुदा गुरुक चेहरा देखि ओ बात ओठपर नहि अएल।

उदयन पन्ना कपड़ापर पसारि कहलनि, “सभाक दिन फेर तय होएत। पहिने हुनकर इच्छा बुझि आउ।” शिष्य पुछलक, “तर्कक उत्तर तखन धरि स्थगित?” उदयन कहला, “उत्तर लिखल रहि सकैत अछि; जकरा प्रश्न कहबाक अछि, ओकरा सुनबाक सामर्थ्य आजु नहि होए तँ हम पन्नासँ ओकर आवाज जबरदस्ती नहि निकालब।” ओ छात्रकेँ पानिक लोटा आ सूखल वस्त्र दऽ पठौलनि। कक्षक बीच राखल निमगाछक लकड़ीक आसन खाली रहल; काल्हि ओतहि अतिथि बैसल छलाह।

दुपहरिसँ पहिने विपक्षी आचार्य स्वयं अएलाह। हुनकर वस्त्रक किनारपर नदीक कादो सुखि कऽ हलुक उज्जर रेखा छोड़ने छल। ओ एक हाथमे मित्रक छोट लेखन-पात्र लऽ अएने छलाह—पीतरक डिबिया, जाहिमे कारी स्याहीक दाग रहए। “ई हमरा लग रहय,” ओ उदयनसँ कहला। “हुनकर परिवार चाहैत अछि जे लिखल पोथी सँ पहिने ई वस्तु घर

पहुँचय। हम जानैत छी, अहाँ सभाक क्रम लेल प्रतीक्षामे छी।” उदयन डिबिया लेलनि नहि। “ई वस्तु अहाँक हाथे जायत,” ओ कहला। “सभाक लेल कोनो मृत व्यक्तिक सामान बन्धक नहि राखल जाएत।”

एक युवा नैयायिक, जकरा पिछला राति विपक्षीक प्रश्नसँ अपमान बुझाएल छल, धीरे सँ पुछलक, “मृत्यु तऽ संसारक अनित्यताक साक्षी अछि। एतबा स्पष्ट भेला पर हुनकर मत किएक नहि छूटैत?” अतिथि सुनि लेलनि। “हमर मित्रक मृत्यु एखन अहाँक प्रमाण अछि?” ओ पुछलनि। “जाहि राति हम ओकर साँस गनैत रही, ओहि रातिक असमर्थताकँ अहाँ अपन पक्षक जीत बनायब?” विद्यार्थीक मुँह रडहीन भऽ गेल। उदयन ओकरा बहस करबाक अनुमति नहि देलनि।

“मनुखक मृत्युक प्रत्यक्ष ज्ञान,” उदयन कहला, “विशिष्ट शरीरक जीवन समाप्त भेल, एतबा धरि पहुँचा सकैत अछि। ओहिसँ आत्मा, ईश्वर, कर्मफल अथवा समस्त जगतक कारणक विषयमे कोन निष्कर्ष आवश्यक रूपसँ निकलैत अछि, से अतिरिक्त विचार माँगैत अछि। आ एखन ई विचार करबाक अधिकार पहिने शोक करैत लोकक इच्छासँ बँधल अछि।” अतिथि स्पष्ट कहलनि, “हम अहाँक निष्कर्षसँ सहमत नहि; मुदा आजु पहिल बेर हमरा लगल जे अहाँ हमर प्रश्नक कदर करैत छी।”

अतिथि अपन बात फेर उठौलनि। “काल्हि हम कहलहुँ जे कर्मक परवर्ती फल लेल अपूर्वक परिकल्पना पर्याप्त होएबाक सम्भावना अछि। अहाँ पुछलहुँ जे फल-विभाजनक नियम आ अनेक परस्पर-बाधक कर्मक सम्बन्ध कोना निश्चित होएत। हम ओकर उत्तर देबाक लेल आएल छलहुँ। आब हमर मित्र नहि छथि। मुदा हुनकर मृत्युसँ हमरा अपूर्वक पक्ष साँच वा झूठ नहि भऽ जाइत।” उदयन ताड़पत्र उठौने बिना सिर हिलौलनि। “आ हमर ईश्वरपक्षक प्रमाण सेहो हुनकर मृत्युसँ मजबूत नहि भेल,” ओ उत्तर देलनि।

ओसारक पिछिला भागमे पातर धूप पसारि रहल छल। पोथी बाँधबाक काज करनिहार वृद्धा धागाक गाँठ खोलि रहल छलीह। शिष्यसभ हुनका नामसँ नहि, काजसँ पुकारैत छल —“पन्ना सीबाक माए।” आइ ओ सामने अएलीह। “जे पात अहाँ सभ बचबैत छी, ओ भिजला पर एक-दोसरासँ चिपकैत अछि,” ओ कहलीह। “जँ झटकलहुँ तँ दुनू फाटत। पहिने सुखाउ, फेर अलग करू।” उदयन हुनका वस्त्रक अतिरिक्त पट देलनि। वृद्धा पात

सभ अलग राखलीह, मुदा ओ कोनो तर्कक प्रमाण देबाक दावा नहि कएलीह। हुनकर काजक अपना नियम छल।

अतिथिक मृत मित्रक घरसँ एक युवक साँझमे पोथीक बचेखुचे पन्ना लेबाक अएल। ओ शास्त्रार्थ सुनबाक नहि, घरक आवश्यक वस्तु गनबाक लेल आएल छल। “जे पन्ना हुनकर हस्ताक्षरवला अछि, ओ घरमे रहत,” ओ कहलक। “जे विद्यार्थीसभ नकल कएने छथि, ओ अहाँ सभ राखू, मुदा नकलक दाम चुकाएल गेल की नहि, हमर माए पुछने छथि।” शिष्यसभ एहन प्रश्नक लेल तैयार नहि छल। उदयन अपन कोषक देखभाल करनिहारकें बजौलनि आ मूल आ नकलक अलग हिसाब देखबाक कहलनि। युवक पन्ना अपन झोरामे राखलक। ओकरा विश्वासक विवादसँ बेसी आइ राति घरक चूल्हि आ कल्हिक यात्राक चिंता छल।

दूरक नगरमे, २०४०क एकटा बिहान रहीना ठकुराई अपन नकलक दुकानक ताला खोलि रहल छलीह। रातिक ओससँ लोहेक छेद जाम भऽ गेल छल; ओ चाभी घुमबैत-घुमबैत दू बेर रोकलीह। भीतर गेलाक बाद देखलीह जे नियमित ग्राहकक दू गठरी बिना सूचना घुरा लेल गेल अछि। टेबुलपर हुनकर पितियौत भायक कागद रखल छल—घरक साझा ग्राहकक लेल एहि महीनासँ अलग व्यवस्था रहत। कागदपर आरोप नहि, केवल हिसाबक ठण्डा भाषा छल। रहीना तुरन्त भायकें फोन नहि कएलीह। पहिने पिछला सप्ताहक अपूर्ण मजदूरीक जोड़ मिलौलीह।

हुनकर बेटी किताबक बस्ता लऽ दुआर लग ठाढ़ छलीह। “माइ, आइ हम विद्यालयसँ घुरि एतय आबि सकैत छी?” ओ पुछलक। रहीना फाटल खाता समेटलीह। “आबि सकैत छह। मुदा पढ़ाइ लेल जे समय चाही, ओ ककरो विवादक बदला नहि देब।” बच्ची चाभीक गुच्छा देखिकऽ पुछलक, “काका चाभी दोसर रखताह?” रहीना उत्तर देलीह, “दुकानक ताला हमर काजक हिसाबसँ खुलत। घरक सम्बन्धक ताला आओर कठिन अछि।” ओ बच्चीकें विद्यालय पठौलनि; अपन डर ओकर माथपर नहि रखलीह।

रमा कर्णक पठाओल प्राप्ति-पत्र टेबुलपर छल। ‘सत्ताइसक मिलान’क समय रहीना जे बयान देलनि, ताहिमे नकलक क्रमांक आ ‘प्रकाशन नहि’ चिह्नक स्मृति दर्ज छल। एखन जाँच-दल छपल प्रतिक स्रोत आ अनुमति-पत्रक क्रम फेर माँगने छल। पत्रमे लिखल रहए

जे पुरान रजिस्टरक मूल प्रति भेटल नहि, मुदा नकल-शुल्कक प्राप्ति प्रमाणित अछि। ई छोट सत्य रहीनाक रोजीपर बड़ा चोट बनल छल। ओ मूल नहि देखल बातकें मूल कहबाक अस्वीकार कएने छलीह; तइयो परिवारक लोक हुनका अपराध लगौलनि जे ओ चुप किएक नहि रहलि।

भाय आएलाह तँ अपन कुर्सी नहि खींचलनि। ओ ठाढ़े कहलनि, “हम अहाँक गवाही रोकने नहि रही। मुदा ग्राहक कहैत अछि जे हमर परिवारक दुकानसँ सरकारी कागद बाहर जाइत अछि। जाहि घरक संग तीन पीढ़ीक काम अछि, ओ हाथ हटौने अछि।” रहीना हुनका पिछला गवाहीक प्रति देखौलीह। “एतय देखू,” ओ कहलीह, “कोन निजी कागद बाहर गेल? हम अपन मजदूरीक रसीद देलहुँ, जे हमरा नामपर अछि। हम नहि कहलहुँ जे छपल शब्द कियो जानि-बुझि हटौलक।” भाय पन्ना देखलनि, मुदा आँखि झुका लेलनि।

“घरक मान राखबाक काजो रहैत अछि,” भाय कहला। रहीना अपन पेटीक फाटल कोनापर सुमित्रा कामीक बनाओल साधारण धातुक जोड़ देखौलीह। “एहि पेटीक मान तऽ हम धागा, गोंद आ दामसँ बनबैत छी,” ओ कहलीह। “घरक मानक नामपर जँ हम रजिस्टरक एकटा पाँति गलत कहि दैतहुँ, तँ काल्हि ग्राहककें हमर कोन नकलपर भरोस रहित?” भाय चुप रहलाह। बाहर छपाइ मशीनक दूरक घरघराहट छल; एहि छोट दुकानमे केवल हाथसँ नकल होइत छल।

बहुत पुरान ओसारमे साँझक पहिने अतिथि फेर उदयनक सामने बैसलाह। एहि बेर ओ अपन मृत मित्रक लेखन-पात्र नीचाँ राखलनि आ कहलनि, “हम असहमतिक एकटा बात पूरा करब। जँ दृष्ट जगतमे कारणक अनेक शृङ्खला भेटैत अछि, तँ हर शृङ्खलाक पाछाँ एक मात्र चेतन नियन्ताकें अनिवार्य मानबाक अनुमानक व्याप्ति कतय सिद्ध अछि? कुम्हारक घट देखिकऽ हम बनौनिहार बूझि सकैत छी; मुदा आकाश, नदी, देह आ इच्छाकें घटक समकक्ष रखब सेहो प्रमाण माँगैत अछि।” कक्षमे सन्नाटा छल, कारण ई आसान प्रश्न नहि छल।

उदयन कहला, “दृष्टान्त पूरा पक्ष नहि होइत। परिणामक व्यवस्था, साधनक उपयुक्तता, कार्यक सङ्गति आ ज्ञात कारणक सीमा अलग-अलग परखबाक अछि। हम घटकें उठाकऽ विश्वपर ठप्पा नहि लगाबए चाहैत छी।” अतिथि उत्तर देलनि, “तखन जे

व्यवस्था अहाँ कहैत छी, ओकरा अव्यवस्थाक अनुभवसँ सेहो जाँचू। अकाल, दुर्घटना, निर्दोष बालकक मृत्यु—ई सभकेँ कर्मक अज्ञात हिसाब कहि टारि देलासँ आपत्ति समाप्त नहि होइत।” उदयन छात्रसभकेँ देखलनि; कियो तुरन्त प्रतिवाद करबाक उत्सुक नहि छल।

“हम ई आपत्ति मेटाओल मानि नहि सकैत छी,” उदयन धीरे कहलनि। “नैतिक अनुत्तरित प्रश्न आ जगतक कारणसम्बन्धी अनुमान एके प्रकारक प्रस्ताव नहि। ककरो दुःखकेँ हमर ज्ञानक रिक्त स्थान भरबाक यन्त्र बनेब हमरा स्वीकार नहि।” अतिथि अपन मित्रक डिबियापर हाथ रखलनि। “आ हमरा ई स्वीकार नहि जे शोकक कारणेँ हम सत्यक प्रश्न सदाक लेल छोड़ि दी,” ओ उत्तर देलनि। ई बेर दुनू वाक्य एक-दोसराकेँ काटैत नहि छल। एक वाक्य विराम माँगैत छल, दोसर पुनरागमन।

विद्यार्थी कहलक, “तखन आजुक शास्त्रार्थक निष्कर्ष खाली रहत?” अतिथि ओकरा पुछलनि, “रिक्त स्थानक अर्थ असफलता कखनसँ भऽ गेल?” उदयन कहला, “जे बातक उत्तर नहि भेटल, ओकर नाम लिखू। जे बातक उत्तर भेटल, ओकर सीमा लिखू। विरोधीक असहमति मिटा देब रचनाक विजय नहि।” लेखनिक विद्यार्थी पहिल बेर उत्तरक पन्नाक संग असहमतिक पन्नाक लेल एक्के आकारक स्थान छोड़लक। ओकर स्याही सुखबाक पहिने वृद्धा धागा लऽ अएलीह; पन्ना फेर नहि चिपकए ताहि लेल ओ बीचमे पातर सूखल पात रखि देलीह।

आधुनिक नगरमे रहीनाक दुकानक दुआरपर रमा अएलीह। हुनका संग कोनो माइक अथवा फोटोग्राफर नहि छल। ओ कहलनि, “अहाँक पहिल बयान सुरक्षित अछि। आब एकटा सीमित पूरक बयान चाही—अहाँक नकलक कामक क्रम आ छपल प्रतिक बीच जे अन्तर अछि, तकरा स्पष्ट रखबाक लेल। परिवारक नाम, बच्चीक विद्यालय वा घरक पता नहि चाही।” रहीना हुनका भीतर बैसौलीह। “हम पूरक बयान देब,” ओ कहलीह, “मुदा पहिने बताउ, जकरा कारण हमर काम घटल अछि, ओ नुकसानक हिसाब ककरा लग राखब?”

रमा अपन थैलीसँ दू अलग आवेदन निकाललीह। एकटा जाँचक लेल साक्ष्य-नकलक प्राप्ति; दोसर सेवा आ देयक दावाक नोंद, जतय रहीना अपन छूटल भुगतान आ अनुबन्ध

समाप्त करबाक सूचना दे सकैत छलीह। “समिति ग्राहककें अहाँक दुकानपर घुरा नहि सकैत अछि,” रमा साफ कहलीह। “मुदा जँ सरकारी नकलक मजदूरी बकाया अछि, ओकरा गवाहीक विवादसँ अलग हिसाबमे चिन्हित कएल जा सकैत अछि। निजी ग्राहकक नुकसानक बात अहाँ दस्तावेजसहित शिकायतमे राखि सकैत छी। फैसला पहिने नहि लिखब।” रहीना दून् कागद अलग रखलीह।

भाय एखनो भीतर ठाढ़ छलाह। “ई सभ फाइल खोलि तों घरक बात लोकक बीच करैत छह,” ओ कहला। रहीना पहिल बेर हुनकर दिस पूरा घुमि कऽ तकलीह। “घरक बात हम एहिठाम नहि लिखब,” ओ उत्तर देलीह। “मुदा जहिना अहाँ ग्राहकक गठरी बिना हमरा कहने हटा देलहुँ, ओकर प्रभाव हमर मजदूरीपर पड़ल। अहाँ चाही तँ कहू कतेक काज अलग कएलहुँ, कोन दिनसँ। ओकरा पारिवारिक असहमति कहि रकम गुम नहि करब।” भाय छपल पर्चीक खाली पिछिला भागपर दू ग्राहकर नाम लिखबाक लेल कलम उठौलनि, फेर रोकि कहलनि, “हम ग्राहकक अनुमति बिना नाम नहि देब।” रहीना कहलीह, “तखन काजक संख्या आ तिथि दियौ। अनुमति भेटला पर नाम।”

रमा साक्ष्यक पन्ना खोललीह। रहीना तीन बेर नकलक पुरान क्रम दोहरौलीह, आ तेसर बेर स्वीकार कएलीह जे हुनका एक सन्देश केवल सुनल याद अछि, देखल नहि। “एहि वाक्यपर ‘सुनेल’ लिखू,” ओ कहलीह। “पहिल बयानमे ई बात स्पष्ट रहए कि नहि, आब फेर लिखू।” रमा ओहि शब्दक नीचाँ फेर पुछलीह, “कोनसँ सुनलहुँ?” रहीना उत्तर देलीह, “कक्षमे दू कर्मचारी बात करैत छलाह; नाम चिन्हल नहि। एखन हुनका सभक पहचान हम नहि गढ़ब।” पूरक बयान कमजोर नहि, निश्चयमे अधिक सीमित भेल।

ओहि क्षण गल्लीमे एक ठेला टेढ़ भऽ गेल। धागाक गट्टर लऽ जाइत स्त्रीक बोरा झरि पड़ल; किछु कागद भीजल नाली दिस लुढ़कि गेल। रहीना उठि बाहर दौड़लीह आ एक हाथसँ पन्ना उठौलीह। भाय सेहो बिनु कहने ठेलाकें सहारा देलनि। स्त्री कहलनि, “एहि कागदमे ग्राहकक माप अछि, एकरा पढ़ि गलत सिलब तँ मजदूरी हमरा कटत।” रहीना पन्ना एक-एक कऽ गनलीह। अन्तिम पन्ना नालीक पानि लग चिपकल छल; ओ धीरजसँ अलग कएलीह। एहि छोट काज लेल स्त्री धन्यवाद देलीह, मुदा पन्नाक संख्या कम-बेसी नहि कएलीह।

दुकानमे घुरि रहीना भायसँ पुछलीह, “अहाँक संग ई रोजीक सम्बन्ध रहत कि नहि?” भाय कहलनि, “हम किछु काज घुरा सकैत छी। मुदा सभ ग्राहक नहि। आ जे गवाही भेल, ओकरा घरमे सभ सहमत नहि।” रहीना उत्तर देलीह, “हम सहमतिक कागद नहि माँगैत छी। काजक जतेक हिस्सा घुरि सकैत अछि, तकर लिखित हिसाब माँगैत छी। बाकी घरमे हम बात सुनब, मुदा बयान वापस नहि लेब।” भाय पहिल बेर मेज लग बैसला। ओ दू गट्टरक गणना फेर करब स्वीकार कएलनि; परिवारक विवाद समाप्त नहि भेल।

पुरान कालमे विद्यार्थी सभाक अन्तमे उदयनसँ पुछलक, “आचार्य, हम विरोधीक मित्रक देहान्तक उल्लेख सभाक पन्नामे करब?” उदयन उत्तर देलनि, “सभाक स्थगनक कारणमे ओ परिवारक अनुमति अनुसार एतबे लिखू जे निजी शोकक कारण विराम भेल। मृत्युकें तर्कक फल नहि बनाउ। जकर नाम परिवार सुरक्षित रखए चाहैत अछि, ओकर आदर रहय।” अतिथि ई निर्णय सुनि सिर नमौलनि। ओ अपन डिबिया उठौलनि आ बिदा लेलनि। दुआर धरि पहुँचि ओ फेर घुरलाह। “हम असहमति फेर लऽ आएब,” ओ कहलनि। उदयनक उत्तर छल, “प्रश्न पूरा लऽ आउ।”

साँझक बाद रहीना बच्चीकें घर जाएबाक पहिने दुकानक पछिला तख्ती देखौलीह। ओतय तीन पंक्ति नव लिखल गेल छल—जाहि कामक प्रति बनल, ओ कतेक; जकर दाम भेटल, ओ कतेक; आ जकरा लेल देय बचल, ओकर उत्तर माँगबाक दिन। बच्ची पुछलक, “ई सभ लिखला सँ काका फेर हँसताह?” रहीना कनेक देर चुप रहलीह। “सम्भव अछि, सम्भव नहि,” ओ कहलीह। “मुदा जकरा दाम देबाक अछि, ओकरा एक दिन बताबए पड़त। हँसी अलग बात अछि।” बच्ची एक पाँति गनि सही कएलीह।

राति जखन रमा समिति-कक्षमे घुरलीह, गोमती बेलदार चारि कारणक फाइल खुलल राखने छलीह। रहीनाक पूरक बयान आ नकल-रसीद ओहि फाइलमे स्वतः नहि गेल। रमा पहिने अधिकारक दावाक अलग पंजीमे प्राप्ति लिखलीह, फेर जाँचक लेल आवश्यक सीमित प्रति सीलबन्द कएलीह। “एहि पन्नासँ हटाओल शब्दक अपराध सिद्ध नहि भेल,” ओ गोमतीसँ कहलीह। “मुदा जे शब्द छपल नहि, तकरा कियो नकलमे देखल छल, ई जाँचक योग्य तथ्य अछि। आ नकलक मजदूरीक उत्तर माँगबाक अलग तिथि तय भेल।”

गोमती तिथि लिखलीह; पन्नाक बीच जे ठाम पहिने खाली छल, आब ओतय उत्तर देबाक जिम्मेदार कार्यालयक नाम चढ़ल।

कक्षमे मोमबत्तीक लौ हिलल आ चारि फाइलक छाया देवालपर एक क्षण लेल एक्के धब्बा बनि गेल। रमा दीपकक काँच सीधा कएलीह तँ छाया फेर अलग भेल। हुनका प्राचीन शास्त्रार्थक कोनो समाचार नहि छल, नहिए ताड़पत्रक प्रमाण। हुनका सामने केवल रहीनाक हस्ताक्षर, मजदूरीक रसीद आ कार्यालयक उत्तरक नियत दिन छल। गोमती कहलनि, “आब कारणक बहसकँ काजक खातासँ जोड़ब। जेकरा आदेश देबाक अधिकार छल, ओ की कएलक, आ जे चुप रहल, ओकर मौनसँ केकर भुगतान रोकल गेल?” रमा अगिला सुनवाईक पहिल पाँतिमे ‘कर्म आ कारण’ लिखि, खाली जगह छोड़ि देलीह—जकरा भरबाक लेल जीवित लोककँ स्वयं आबि बाजए पड़त।

अध्याय १४० • कर्म आ कारण

भोरक पानिमे समिति-कक्षक बरामदाक छतसँ एक-एक बूँद टपकि रहल छल। गोमती बेलदार खिड़कीक नीचाँ चारि कारण-फाइल राखलनि आ पाँचम पंजी—जाहिमे मजदूरी आ देय लिखल छल—अपना दिस घीचि लेलनि। राति रमाक लिखल अन्तिम प्रश्न एखनहुँ खुलल छल: आदेश देबाक अधिकार ककरा छल, काज के कएलक, आ भुगतान के रोकलक? मेजक कोनमे आठ खेप माटिक पुरान हिसाबक प्रति छल। गोमती ओकरा उलटबैत नहि छलीह; ओ चाहैत छलीह जे अपन हकक कागद देखैत समय हुनकर संयोजकक कुर्सी निर्णयपर भारी नहि पड़य।

रमा एकटा विभागीय पत्र खोललीह। ऊपर मोट अक्षरमे लिखल छल—स्थानीय मरम्मत-श्रमिकक सम्भावित लापरवाही। नीचाँ एक श्रमिकक उपस्थिति-नम्बर घेरा मारि चिन्हित कएल गेल छल, जखन कि पन्नाक संग लगाओल सामग्री-स्वीकृति, नक्सा आ निरीक्षणक प्रतिमे बहुतो हस्ताक्षर छल। “एकर मतलब एखन धरि केवल प्रश्न अछि,” रमा कहलीह। गोमती निचला पाँति पढ़लनि। ओतय सुझाव छल जे जाँच पूरा होए धरि समस्त मजदूरी रोकल। “एहि वाक्यसँ जाँचक पहिने दण्ड शुरू भऽ जाएत,” गोमती कहलीह। “जे काजक घड़ी आ नाप प्रमाणित अछि, ओकर देय जाँचक बहाने नहि हराएत।”

बरामदामे पहिनुक सुनवाईक ओ बेलदार मजदूर बैसल छल जकर हथेलीक छाला फाटि गेल रहए। कागदमे ओकर नामक बदला मात्र नम्बर छल, मुदा बाहर बच्चा ओकरा ‘बाबू’ कहि पुकारि रहल छल। ओकर पत्नी चाउरक खाली झोरा लेने आएल छलीह; ओ न्यायालयक शब्द नहि जनैत छलीह। “जँ अगिला सप्ताहो दाम नहि भेटत तँ हम जे करजा लेलहुँ, ओकर ब्याज बढ़त,” ओ कहलीह। मजदूर अपन घाव देखौलक। “माटि हम ढोने रही,” ओ कहलनि, “नक्सा हम नहि बनौने रही। मुदा टोकरी कतेक भरल छल, से हम कहि सकैत छी।” गोमती ओकरा भीतर बैसबाक जगह देलनि, अपन निर्णय सुनाबय लेल नहि, ओकर बात सुनबाक लेल।

अधिकारीक सहायक सूची पढ़लनि—काज करनिहार, काज स्वीकृत करनिहार, वस्तु उपलब्ध करौनिहार, सुरक्षा जाँचनिहार। पहिल घरमे ओ केवल मजदूरक नम्बर लिखए चाहैत छल। रमा रोकलीह। “सूचीमे भूमिका लिखू अपराधी नहि। एके लोक दू भूमिका निभौने हो तँ प्रमाण देखिकऽ जोड़ू।” गोमती कहलीह, “हमरो श्रमक रसीद अछि; एहि दावाक निर्णायक सदस्य हम नहि रहब।” सहायकक माथपर बल पड़ल। “तखन अहाँ समूचा मरम्मत-प्रकरणसँ हटब?” “नहि,” गोमती कहलीह, “जेठाम हमर निजी रकमक फैसला अछि, ओतय अलग सदस्य। मुदा बेलदारक बयान सुनबाक अधिकार हमर पेशाक कारणेँ छीनल नहि जाएत।”

ठीक ओही समय राघव सिंह पहुँचलाह। हुनकर चप्पलक तल्लामे कारखानाक महीन धूरि लागल छल, आ हाथमे गत्ताक खोखला डब्बाक बदला मोट लिफाफा छल। भतीजा कने पाछाँ ठाढ़ छल; ओकर हाथमे पुरान सामग्री-बहीक प्रमाणित नकल। राघव सहायकसँ कहलनि, “हमर फर्म पट्टा आ कब्जा पहुँचौने छल। जे बात हम जानैत छी, ओ कहब। मुदा एही कारणेँ जे मरम्मत भेल, ओकर गुणक प्रमाण हम नहि देब।” सहायक पहिने सँ भरल खानामे ‘आपूर्तिकर्ता उत्तरदायी’ लिखि रहल छल। राघव कागद हाथमे लेने बिना पुछलनि, “कोन वस्तुक, कोन आदेशक, कोन जाँचक उत्तरदायित्व?”

भतीजाकेँ अलग कुर्सी देल गेल। ओ अपन पहिल बयानक सही देखलक, फेर नब पन्नाक खाली घरपर नजर रोकलक। “हम सामग्री उतरबैत देखलहुँ,” ओ कहलक। “ई खाली घर पहिने सेहो खाली छल। ओकर बाद जे प्रति बनल, ताहिमे किछु लिखल भेटल, मुदा ओ हमरा लिखल नहि बुझाइत अछि।” रमा पुछलीह, “अहाँ निश्चित कहि सकैत छी जे के भरलक?” युवक माथ हिलौलक। “नहि। हम केवल हमर लिखावट आ आँखिसँ देखल समयपर बोलब।” राघव ओहि क्षण ओकर दिस नहि तकलाह। अपन नातेदारक मौनपर भरोसा करब हुनका आसान पड़ितनि; मुदा एतय युवकक बोलबाक स्वाधीनता ओहि भरोसासँ बेसी जरूरी छल।

राघवक जेबमे फोन काँपल। पुरान ठेका-सहयोगीक सन्देश छल—अगिला आपूर्ति-अनुबन्ध आब पुनर्जीवित नहि होएत; बचल अग्रिम समायोजन लेल दोसर कार्यालयसँ सम्पर्क करू। पहिने जे आदेश केवल स्थगित छल, आब ओ सहमति समाप्त करबाक

सूचना बनि गेल छल। राघव स्क्रीन भतीजाकेँ देखौलनि नहि। बाहर जाएबासँ पहिने ओ रमाकेँ ओकर प्रति दए कहलनि, “एहिमे धमकीक पुरान फोनक उल्लेख अलग रखू। ई पत्र अपने-आप प्रमाण नहि जे ककर गवाहीक बदला ठेका टूटल। मुदा ओकर तिथि आ पहिनुक सन्देश दूनु लिखू।” रमा प्राप्ति देलीह; कागदपर राघवक हथेली थोड़ देर स्थिर रहल।

दुपहरिक पहिने राघव कारखानाक छोट आँगनमे घुरलाह। तीन मजदूर सुखल काठपर बोरा ढाँपि रहल छल। मुनीम पुछलक, “आब अगिला खेप नहि भेटत तँ हिनका सभकेँ कतय लगायब?” राघव ओकरा कहि नहि सकलाह जे सब ठीक भऽ जाएत। ओ पहिल बेर अलग कागदपर बचल मजदूरीक हिसाब बनौलनि; अगेती भुगतानक जे अंश कारखानामे छल, ओकर वितरण-क्रम बदललनि। “ई हम भतीजाकेँ चुप करएबाक कीमत नहि बना सकैत छी,” ओ कहला, “आ एहि लोकक कमाइल रकमसँ अपन नुकसानो नहि भरि सकैत छी।” मुनीम अपन लाल बही खोललक, जाहिमे किछु भुगतान परिपक्व भऽ चुकल छल।

ओहिठाम घरसँ राघवक बहिन अएलीह। भतीजा हुनके बेटा छल। बहिनक हाथमे दवाइक पुरान पुर्जा आ छोट धोतरीमे बन्हल रोटी छल। “तौँ ई हुनका अपन मर्जीपर छोड़ि देलह, नीक,” ओ कहलीह, “मुदा जे व्यापार बन्द भऽ रहल अछि तकर भार केवल हमर बेटाक माथपर नहि दिह।” राघव पुछलनि, “तोहर बेटा की कहैत अछि?” “ओ कहैत अछि —काका झूठ नहि सिखौलनि। आब कियो घरमे ई नहि कहय जे ओ घर डुबौलक।” राघव उत्तरक पहिने कारखानाक अन्हार कोठरी दिस तकलाह। “ई बात हम सभ मजदूरक सामने कहब,” ओ कहलनि। बहिन रोटी रखि चलि गेलीह; अपन बेटाक लेल सहानुभूतिक सार्वजनिक प्रदर्शन हुनका नहि चाही छल।

समिति-कक्षमे एही बीच शशि माहुरी अपन पीतलक दू चाभी लऽ पहुँचलाह। छल्लाक एक पल्ला टेढ़ छल; ओ पहिले पुरान जाँचक समयँ ओकरा अलग चिह्नित कएने छलाह। संगमे भाड़ा-अनुबन्ध, किराया चुकबाक रसीद, बिना अनुमतिक दोसर ताला लगाओल जाएबाक लिखित आपत्ति आ चौकीदारक हाजिरी-बहीक नकल छल। “हम एहि गोदामक मालिक छी,” ओ प्रारम्भमे कहलनि, “मुदा किरायेदारक हर करतूतक प्रत्यक्षदर्शी नहि।

जाहि बातक खबर भेटल, ताहिपर कतेक देरमे आपत्ति कएलहुँ, से देखू। जाहि बातक खबर नहि छल, ओकर खोज करू। मालिकाना लिखलासँ भीतरक वस्तुक अपराध अपने-आप हमर नहि होइत अछि।”

एक सहायक जल्दीमे पुछलक, “मुदा अवैध गोदाम अहाँक जमीनपर चलैत छल, तखन अहाँक नाम दोषक पहिल खानामे नहि रहत?” शशि एक मिनट चुप रहलाह। “जँ हमर चूक अछि तँ ओकर जाँच हो,” ओ कहलनि, “मुदा गोदामक माल, कोठरीक भाड़ा, गैर-अनुमोदित उपकारायेदारी आ अपराधक आशय—चारूकँ एक शब्दमे नहि बान्हू।” गोमती पुछलीह, “अहाँ लिखित आपत्ति करैत समय ककरा प्रति पठौने छलहुँ?” शशि रसीदक कोना खोललनि। प्राप्ति-मोहर साफ छल, मुदा उत्तरक जगह खाली। “जवाब नहि आएल,” ओ कहला। रमा ओकरा जाँचक प्रश्न बनौलीह, दोषमुक्तिक मुहर नहि।

चौकीदार सेहो आएल छल। ओकर आँखि रातिक पहराक अभ्यस्त रहए; दिनक उज्जर खिड़कीक भीतर ओ बेर-बेर पलक झपकबैत छल। “एक राति शेखर चाभी माँगने छल,” ओ कहलनि, “हम नहि देने रही। दोसर फाटकसँ के गेल से हम नहि देखलहुँ।” कियो पूछलक, “तखन भीतर रातिमे माल गेल?” चौकीदार धीरे कहलनि, “हम नहि कहि सकैत छी। जे नहि देखलहुँ तकरा गवाही बनौलासँ हमर नोकरी नहि बचत।” शशि ओहि बातपर सहमति मे माथ नहि हिलौलनि। ओकरा अपन बात कहबाक अवसर भेटल छल; ओ चौकीदारक शब्दक मालिक नहि बनब चाहैत छलाह।

एहि बीच पार्वती मजदूरनी दरबज्जासँ देखलीह। ओ पहिले शशिक गोदाममे भीजल बोरा सुखौने छलीह आ हुनका ओहि काजक दाम भेटि चुकल छल। मुदा पिछिला कोठरी खोलब वा भीतरक खेप गनब हुनकर काज नहि छल। “सभ कहैत अछि जे हम ओहि गोदाममे काम करैत रही,” ओ कहलीह। “साँच अछि। मुदा जे बात हम नहि जनैत छी तकर जवाब चाही तँ हमर मालिकक नहि, हमरा मुँहसँ पुछू।” रमा हुनका सीमित बयान लेल अगिला तिथि चुनबाक अधिकार देलीह; पार्वती कहलनि जे हाट-दिन नहि, किएक तँ ओहि दिन दोसर कामसँ मजदूरी भेटैत अछि। शशि हुनकर समयपर निर्णय नहि देलनि।

दुपहरिक मद्धिम घाम बरामदामे पड़ल तँ गोमती पुनः बेलदार मजदूरक नम्बरवला पन्नापर घुललीह। विभागीय सहायकक नब मसौदामे लिखल छल—सभी सम्बन्धित

व्यक्ति सामूहिक रूपसँ जिम्मेदार। गोमती कागदकेँ ओकरा दिस घुरौलनि। “सामूहिक संरचना जिम्मेदारी बाँटबाक आवश्यकता बुझबैत अछि, ओ व्यक्ति-विशेषक काज लोप करबाक लाइसेंस नहि,” ओ कहलीह। “मुदा व्यक्ति-विशेषकेँ पकड़ि लेलासँ सम्पूर्ण व्यवस्था स्वतः निर्दोष नहि होइत अछि।” सहायक पुछलक, “तखन एकटा वाक्य केना लिखू?” “नाम, आदेश, वास्तविक काज, देखल जोखिम, रोकबाक सामर्थ्य आ उस समय उपलब्ध जानकारी—प्रत्येक लेल अलग प्रश्न लिखू।”

बेलदार मजदूर कहलक जे भरावक दिन भरल टोकरी डगमगाइत छल। ओ पर्यवेक्षककेँ माटि भीजल होएबाक बात कहने छल, मुदा ओकरा नाम याद नहि, चेहरा याद छल। सहायक तुरन्त ‘चेतावनी देल गेल’ लिखए लागल। मजदूर रोकलक। “हम ई बात मुँहसँ कहने रही; ककरा कतेक सुनायल, नहि जनैत छी। लिखित सूचना नहि।” गोमती ओकरा धन्यवाद देलनि, किएक तँ एहि अन्तरमे ओकर अपन गवाहीक विश्वसनीयता बसैत छल। ओ आदमी अपन फाटल हथेलीमे मलहम लगा कऽ बैसल रहल। ओहि हथेलीमे माटिक खसखसाहट एखनहुँ रहए, मुदा ककर आदेशपर माटि रखल गेल से ओहि छालासँ पढ़ल नहि जा सकैत छल।

रमा अगिला पन्नामे पुरान अदितिक त्रुटिपूर्ण माप-प्रतिवेदनक नकल जोड़लीह। अदिति पहिनहिसँ ओकर गलत निष्कर्ष वापस लेने छलीह, मुदा ओहि निष्कर्षक आधारपर जे कामक अनुमति जारी भेल, तकर पूर्ण अभिलेख एखन उपलब्ध नहि छल। तारा सुरक्षा-रेखाक जाँच लेल उपस्थित छलीह; ओ कहलीह, “हम नब माप लेल क्षेत्र खुलल नहि मानैत छी। समय, उपकरण आ दूनू कातक लोकक सहमति शेष अछि।” सहायक पुछलक, “तखन दोषक निर्णय कतेक दिन रोकब?” तारा उत्तर देलीह, “जतय प्रमाण नहि, ओतय जाँच चलत। मुदा जकर इलाज, सुरक्षाक घेराबन्दी आ निश्चित मजदूरी चाही, ओकरा ई प्रतीक्षा किएक?”

कमराक पाछाँ रूखसाना रसोइक सूची लऽ अएलीह। ओ आश्रयक लोकक नाम नहि, भोजनक मद आ दिनक सामग्री देखौलीह। रुहानीक अनुरोधानुसार खर्चक सार्वजनिक हिसाब बनि सकैत छल, मुदा निवासीसभक निजी पहिचान नहि। “एहि सभ फाइलक बीच हमर रसोइमे तीन बेर किराना रोकल गेल,” ओ कहलीह। “दुकानदार कहैत अछि जे

दुर्घटनाक पैसा रोकी देल गेल। जँ भोजनक बिल प्रमाणित अछि तँ खाता साफ करू; जे संदिग्ध अछि, ओकर जाँच अलग।” गोमती रसोइक हिसाब देय-पंजीमे पठौलीह, आरोपक फाइलमे नहि। ओहि दिनक खाना आगि नहि पकड़ने छल; प्रश्न कागदपर नहि, चुल्हिपर राखल भातमे उतरि आएल छल।

साँझ दिस राघव फेर आएलाह। कारखानाक मजदूरसभसँ ओ कहि चुकल छलाह जे भतीजाक बयान व्यवसाय डूबबाक एकमात्र कारण नहि लिखल जायत; बजार, स्थगित ठेका आ अपन पुरान आर्थिक निर्भरता सभक अलग लेखा बनत। ओ रमाकेँ कम्पनीक औपचारिक पत्र देलनि—भतीजाक बयानपर कोनो निजी प्रतिबन्ध नहि; ओकर उपस्थितिक वेतन नहि कटत; जाँच-अधिकारी मूल सामग्री-पर्वीक परीक्षण लेल बोलाबथि तँ कम्पनी प्रतिलिपि उपलब्ध कराओत। “हम अपन साख बचाबबाक कोशिश करब,” राघव कहला, “मुदा ओकर खातिर सचक पन्ना बंद नहि करब।” हुनकर आवाजमे विजय नहि, हानि गनैत आदमीक थकान छल।

रमा पुछलीह, “व्यापारिक सम्बन्ध समाप्त होएबाक पत्र सार्वजनिक करब?” राघव माथ हिलौलनि। “जाँच लेल जतेक आवश्यक, ओतेक देलहुँ। मजदूरसभक नाम आ व्यक्तिगत पगार सार्वजनिक कऽ हम बदला नहि लेब।” भतीजा, जे बाहर कनेक देरि ठाढ़ छल, भीतर अएल। “हमर कथनमे ई लिखल रहय जे काका हमरा रोकेनाइ छोड़ने छथि; मुदा काका सही कहैत छथि, सामान कतय लगल से हुनका आँखिसँ नहि देखल।” गोमती कहलीह, “अहाँक बयान अहाँक रहत। ककरो साहसक महिमा बनेबाक लेल ओकरा बदलल नहि जाएत।” युवक कागद फेर पढ़ि अपन सीमित कथनपर हस्ताक्षर कएलक।

शशि ओहि समय गोदामक पुरान नक्शाक एक प्रति देखबैत छलाह। भवनक सीमाक रेखा आ किरायापर देल कक्ष साफ चिन्हित छल; पिछला प्रवेश-पथपर दू माप अलग स्थाहीमे छल। “ई पिछला रेखा कब बदली, हम निश्चय नहि कहब,” ओ कहला। रमा नक्शाक मूल तिथि आ संशोधनक स्रोत माँगलीह। एक अधिकारी आपत्ति कएलक, “आब एतबे लेल मालिकपर सन्देह करब?” शशि स्वयं उत्तर देलनि, “सन्देहक प्रश्न पुछल जाए; प्रश्न पूछब आ दोष सिद्ध करब अलग अछि। जँ पाछाँक बाट हमर अनुमतिसँ बदलल हो तँ

ओकर प्रमाणो देखू। नहि हो तँ पूछू के कएलक।” हुनका राहतक आशा छल, मुदा ओ अप्रमाणित निर्दोषताक कागद नहि चाहैत छलाह।

गोदामक किरायेदारक बकाया भाड़ा सेहो सूचीमे छल। शशि चाहैत छलाह जे बरखा सँ खराब भेल कोठरीक मरम्मतिक खर्च अलग दर्ज हो, मुदा ताहि दावाक कारणेँ जप्त वस्तु पर हुनकर स्वामित्व नहि मानल जाए। कबीर स्पष्ट कएलनि जे अनुबन्धक भाड़ा, सम्भावित क्षति-पूर्ति आ जाँच-अधीन खेपक अधिकार तीन विधिक प्रश्न छथि। शशि पुछलनि, “हम कोठरी फेर किरायापर देब?” कबीर कहला, “सील आ सक्षम आदेशक सीमा देखलाक बादे। एखन अपन निकटवर्ती मसालाक बोरा सुरक्षित रखू, मुदा जाँच-अधीन कक्षक ताला नहि छेड़ू।” शशि चाभीक दू छल्ला फेर अलग रखलनि।

बेलदार मजदूरक पत्नी एखनहुँ प्रतीक्षा करैत छलीह। ओकर बच्चा बरामदाक पोखरामे कागदक नाव चलाबय चाहैत छल; माय रोकि देलीह, किएक तँ कागदक एकटा पन्ना पिताक प्राप्ति-पर्ची छल। रमा स्वतन्त्र भुगतान-सत्यापकक हस्ताक्षरवला छोट आदेश लऽ अएलीह। प्रमाणित खेपक विवादरहित मजदूरीक अंश जारी करबाक संस्तुति लिखल छल; शेष बकायाक समयबद्ध परीक्षण, मजदूरक बयान आ सामग्री-निरीक्षणक नकल माँगल गेल। “आइ सब पैसा हाथमे नहि पड़त,” रमा साफ कहलीह। पत्नी पुछलीह, “तखन ई पर्ची लेबासँ की होएत?” रमा कहलीह, “कार्यालयकेँ फलाँ दिन धरि लिखित उत्तर देबाक बाध्यता रहत। हम ओहि दिन फेर पूछब।”

बाहर निकलैत मजदूर गोमती लग रुकल। “अहाँ अपन लोककेँ बचा लेलहुँ,” ओ कहलक, मुदा वाक्यमे कृतज्ञतासँ बेसी संशय छल। गोमती उत्तर देलीह, “आइ अहाँक भुगतानक एक भागपर रोक हटेबाक अनुशंसा भेल। हमर अपन आठ खेपक दावा अलग सदस्य देखताह। जँ अहाँक काजमे गलती भेटत तँ ओकरा दबाओल नहि जाएत। मुदा एतबे सँ जे आदेश ऊपरसँ देल गेल ओकर जाँच भेटत नहि।” मजदूर अपन पत्नीकेँ आगाँ बढ़ौलनि। बच्चाक हाथमे नाव बनेबाक लेल आब खाली अखबारक टुकड़ा छल, प्राप्ति-पर्ची माय आँचरमे नीकसँ बाँन्हि लेने छलीह।

बैठकक अन्तमे अधिकारी सभ एकटा संयुक्त निष्कर्ष चाहैत छलाह। गोमती एकटा नव पृष्ठ देलीह, जतय प्रत्येक व्यक्ति लग तीनटा अलग स्तम्भ छल—के काज देखल,

कोन निर्णय लेबाक अधिकार छल, आ कोन मदक देय अथवा संभावित दायित्व शेष अछि। शशिक पाँतिमे अनुबन्ध आ लिखित आपत्ति; राघवक पाँतिमे आपूर्ति, भतीजाक स्वतन्त्र गवाही आ समाप्त व्यापारिक सम्बन्ध; बेलदार मजदूरक पाँतिमे वास्तविक माटि-ढुलाई आ अपूर्ण भुगतान लिखल गेल। रमा ‘संभावित दायित्व’क शब्द हटबए नहि देलीह, मुदा ओकरा ‘सिद्ध अपराध’सँ अलग रखलीह। ई पन्ना चारू जाँच-फाइलक स्थान नहि लेलक; ओकरा सभक बीच सन्दर्भक साफ बाट बनौलक।

सरिता दुआरपर अएलीह। हुनका आजुक विवादक खबर भेटल छल, मुदा ओ नैराक निजी कापी लऽ नहि अएने छलीह। “ई सभ कारणक अलग पन्नामे नैराक नाम फेर उदाहरण नहि बनय,” ओ कहलीह। “ओ मरि गेल; एहि बातक प्रमाण अलग पूरा अछि। ओकर अधूरा काज, निजी वस्तु आ ककरा देय भेटत से अलग हिसाब अछि।” रमा हुनका देखौलीह जे मृत्यु-पुष्टिक अभिलेख नहि बदलल; भुगतानक पंजीमे देयक प्रश्न खुलल अछि। सरिता कनेक देरि कुर्सीपर बैसलीह। गोमती हुनका नायकत्वक शब्द नहि कहलीह। सभटा कागदक बीच ओहि स्त्रीक चुप्पी लेल स्थान देलनि।

कबीर अन्तिम बैठकमे कानूनी सहायता आ राहतक दू फाइल अलग रखलनि। “अगिला सुनवाईमे एकटा कठिन प्रश्न आएत,” ओ कहला। “जकरा पर आरोप अछि, ओ जँ पीड़ित परिवारक सहायता कएलक, ताहिसँ आरोपक जाँच बन्द होएत की? आ सहायता स्वीकार केलासँ परिवारक मुकदमा छोड़बाक सहमति मानल जाएत की?” गोमती शशिक रसीदक परचा बन्द कएलनि। राघव अपन पत्रक नकल उठा रहल छलाह। कोनो एक व्यक्तिक भलाइ ओकर प्रत्येक निर्णयकें वैध नहि बनबैत, जेना ककरो एक गलत निर्णय ओकर साँच गवाही मेटा नहि सकैत छल। मुदा एहि विचारक असल परीक्षा अगिला सहायता-वितरणमे होएबाक छल।

राति कक्षक बाहर पानि घटल छल, मुदा पुरान अस्पतालक बन्द पाँख आ गोदामक विस्तार लगक अवरोध सुरक्षित दूरीसँ देखाइत रहल। दूर एक बालक पोखरामे अखबारक नाव छोड़ने छल; पानिक छोट भँवरमे नाव एक क्षण थमकल, फेर अपन किनार दिस बहि गेल। गोमती खिड़कीसँ देखलीह, मुदा ओकर गति सँ दुर्घटनाक कारण नहि बूझलीह। ओ मेजपर बचल पत्रसभमे सँ एकटा उठौलनि—राघवक भतीजाक स्वतन्त्र बयान लेल

सुरक्षा, शशिक कक्षक दस्तावेजक विधिसम्मत जाँच, आ मजदूरक विवादरहित भुगतानपर समयबद्ध उत्तर, तीनू आजे प्रेषित होयत। रमा ओकरा अलग लिफाफामे राखलीह।

दरबज्जा बन्द करबाक समय रमा कहलीह, “आब कतहु लिखित उत्तर आएत, कतहु सहायता पहुँचलाक रसीद आएत, आ कतहु मुकदमाक सूचना। हमरा सभकेँ ओहि तीनूक बीच अन्तर रखबाक पड़त।” गोमती खिड़कीक कुंडी जाँचलीह। “अन्तर रखब,” ओ कहलीह, “मुदा जकर अधिकार छै, ओकरा कार्यालयक बीच घुमबैत नहि छोड़ब।” ओ चिराग बुझौलीह। आँगनमे राघवक कारखानासँ घुरैत मजदूरक हलुक डेग सुनाइत छल; ओहि आदमीक कमाइ, भतीजाक बयान आ शशिक बन्द कोठरी आब एके आरोपक नाम नहि छल। ताहि राति कोनो अदालत फैसला नहि सुनौलक, मुदा अलग-अलग कर्तव्यक लेल उत्तर देबाक दिन निश्चित भऽ गेल।

अध्याय १४१ • मदद आ मुकदमा

सबेरे समिति-कक्षक सीढ़ीपर लोहेक एक छोट सन्दूक राखल छल। ओकर ढक्कनपर पुरान रंगसँ ‘चिकित्सा-सहायता’ लिखल रहए; भीतर रसीदक बण्डल, दवाइ पहुँचेबाक पर्ची आ दूटा खाली कपड़ाक थैली छल। रातिमे वर्षा भेल छल, तँ सन्दूकक नीचाँक पत्थर एखनहुँ भीजल छल। रमा पहिने ओकरा भीतर नहि लएलीह। देवव्रतक कर्मचारीसँ ओ पूछलीह, “ई वस्तु ककर अनुमति सँ एतय छोड़ल गेल? प्राप्ति देनिहारक नाम अछि?” कर्मचारी जे कागद बढ़ौलक, ओहिमे केवल ‘सार्वजनिक हित’ लिखल छल। गोमती बेलदार बरामदामे पहुँचि कऽ कहलीह, “हितक नाम लिखब आसान अछि; सन्दूक खोलबाक जिम्मेदारी सेहो ककरो नामँ होएबाक चाही।”

देवव्रत स्वयं कनेक पाछाँ अएला। हुनकर संग रमेश्वर छल, जकर हाथमे ढक्कनक दू चाभी अलग-अलग डोरीमे बन्हल छल। देवव्रत कहला, “हम सहायता दैत रहल छी, ओकर पूरा विवरण दएबाक लेल आयलहुँ। कतेक रोगीकेँ दवाइ, कतेक घरकेँ चादर आ कतेक बेघर लोककेँ सामग्री भेटल, से पता चलय।” गोमती हुनका भीतर बैसबौलीह, मुदा सन्दूकपर ककरो मुहर लगए नहि देलीह। “जाँचक वस्तु आ सार्वजनिक सहायता दू भिन्न स्रोतसँ अबैत होइ तँ पहिने पहिचान लिखब,” ओ कहलीह। देवव्रत अपन चश्मा खोलि मेजपर रखलनि। हुनका सभसँ बेसी खटकैत छल जे आइ हुनकर सहायता सुनबाक पहिने अनुमति पूछल जा रहल अछि।

कबीर पहिनेसँ ओतय बैसल छलाह। काल्हिक बैठकमे ओ जे प्रश्न छोड़ने छला, ओकर लिखित उत्तर एखन तक नहि आएल छल। “अहाँक देल वस्तु सही लोक धरि पहुँचल, ई महत्वपूर्ण अछि,” ओ देवव्रतसँ कहला। “मुदा महेशक सम्बन्धमे जाँच चलि रहल अछि। जँ सहायता देनिहार कहत जे हमरा पर कोनो अभियोजन नहि चलय, तँ पीड़ित परिवारक अपन बाट कतय बचत?” देवव्रत तुरन्त प्रतिवाद नहि कएलनि। रमेश्वर बगलसँ एकटा मसौदा निकालि देलक; ऊपर शीर्षक छल—‘समाजसेवाक मान्यताक आधारपर संरक्षण’। रमा कागद हाथमे लएते पुछलीह, “संरक्षण कसँ? अभिलेख उपलब्ध करबासँ, कि आपराधिक जाँचसँ?” मसौदामे एहि दुनूक बीच कोनो भेद नहि छल।

बरामदामे महेशक पत्नी अपन बेटी संग अएलीह। बेटी विद्यालयक नील झोरा कन्धापर राखने छलीह; माय ओकर फीता बेर-बेर सम्हारैत छलीह। पत्नी देवव्रतकेँ देखि ठमकि गेलीह। ई भेटक सूचना हुनका पहिने नहि देल गेल छल। “हमरा सभक घरे जे उपचार-सहायता पहुँचल, तकर प्राप्ति हमरा याद अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहि बालिकाक रातिक डरक कोनो रसीद नहि। जे जाँच महेशक मृत्यु पर चलैत अछि, ओहि काजमे हमर सहमति पूछब आवश्यक नहि?” रमा तुरन्त कहलनि जे संयुक्त उपस्थितिक निर्णय हुनकर अनुमति बिना नहि भेल; पत्नी चाहथि तँ अलग कक्षमे बयान दे सकैत छथि। पत्नी बगलवाली खाली कोठरी चुनलीह।

रमा सन्दूकक ऊपर राखल सूची खोलीह। जमुनाक उपचारक वैध सहायता-पर्ची, आश्रयक लेल देल कपड़ा, आपात प्रकाशक सामग्री आ दू वाहनक भाड़ाक कागद अलग-अलग तारिखमे छल। किछु प्राप्ति अस्पतालक अधिकृत हस्ताक्षरसँ पुष्ट छल; किछु केवल गोदामक निर्गत-बहीमे। “जे अस्पताल पहुँचल, ओ पर अस्पतालक प्रमाण चाही; जे रस्तामे देल गेल, ओकरा रोगीक इलाज नहि कहि सकैत छी,” ओ कहलीह। देवव्रत स्वयं एक पर्चीपर उँगुर राखि कहला, “ई प्रकाशक खेपमे हम संख्याक सुधार करौने रही। पुरान पन्ना फाड़ब नहि।” रमा लिखलीह जे संसोधनक आदेश उपलब्ध अछि, वस्तुक वास्तविक उपयोगक स्वतन्त्र मिलान शेष।

तखने शबनम मलिक नगरक सेवाकक्षसँ अएलीह। हुनकर लग प्रवेश-पंजीक प्रमाणित प्रति आ चमकदार नाम-पट्टीक छायाप्रति छल। “देवव्रतक रसीद जाँचय में हमरा विरोध नहि,” ओ कहलीह, “मुदा जकर हाथमे ‘मलिक कार्यालय’ लिखल पट्टी छल, ओकरा पहिने कियो अधिकृत मानि फाइल देखौने। उपनामक भरोसा फाटकक चाभी नहि बनि सकैत।” कार्यालयक पुरान कर्मचारी नजर नीचाँ कऽ ठाढ़ छल। शबनम ओकरा चिन्हि कहलीह, “अहाँक चूक अभिलेखमे अछि। एखन बताउ, कतेक पन्ना सामने खोलल गेल? जतेक देखलहुँ, ओतबे कहूँ।” कर्मचारी तीनटा फाइलक आवरणक वर्णन कएलक, भीतरक कागद पढ़ल की नहि ताहि पर अनिश्चित रहल।

रमेश्वर जल्दीमे कहल, “मलिक नाम तँ बहुतो लोकक होइत अछि; दानक काजक बीच एहि पुरान बातकेँ किएक आनल जा रहल अछि?” शबनम उत्तर देलीह, “किएक तँ दानक

प्रतिष्ठा आ कार्यालयमे प्रवेशक अधिकार फेर एक्के डोरसँ बाँधल जा रहल अछि। जे व्यक्ति हमर उपनामक छाँहमे भीतर गेल, ओकर अनुमति वास्तविक नहि छल। के पठौलक, से एखन अप्रमाणित अछि।” देवव्रत रमेश्वर दिस देखलनि। “अहाँक कार्यालयसँ ओ पट्टी छपल छल?” रमेश्वर इन्कार कएलक। शबनम हुनकर इन्कार दर्ज करौलीह; ओकरा सत्य मानि खोज बन्द करबाक पक्षमे नहि छलीह।

सेवाकक्षक प्रधान कर्मचारी एक नव पन्ना निकाललक। प्रवेश-पंजीक गलत प्रविष्टिपर संशोधन-नोट लागि गेल छल, मुदा एक कर्मचारी कहलक जे ‘सुधार भेल’ लिखलासँ प्रतिष्ठाक क्षति चुकि जाएत। शबनम ओ बात नहि मानलीह। “पहिने जिनकर कागद देखाओल गेल, हुनका सूचना देबाक सीमा तय करू। निजी पता बाहर नहि जाए; मुदा फाइलधरि अनधिकृत पहुँच भेल की नहि, ओकर निरीक्षणक माँग ठोस रहय।” देवव्रत अपन सहयोगीक दिशासँ नजर हटौने कहला, “हमर दानक सूची एतय जाँचि सकैत छी। कोनो उपनाम अथवा दानक रसीद ककरो अधिकारी नहि बनबैत।” शबनम ओहि वाक्यक प्रमाणित नकल माँगलीह, प्रशंसाक पर्ची नहि।

दुपहरि लग महेन्द्र महासेठ आ बिनोद जायसवाल दू अलग थैलीमे खाता लऽ पहुँचलाह। महेन्द्रक पुरान पीपाक थोक रजिस्टर मोट छल; बिनोदक छोट दोकानक बहीक किनार घिसिआयल। कार्यालयक सूचना-पत्रमे फेर ‘सूझी-कलवार संयुक्त आपूर्तिकर्ता’ लिखल छल। महेन्द्र कागद मेजपर राखि कहला, “मूल व्यवसायवृत्तमे दुनूक नाम एक संग लिखल हो, ताहिसँ हमर परिवारक खाता बिनोदक दोकानमे नहि समा जाएत। हमरा पर जे पुरान आरोप लगल छल, ओहि सुधार-पत्रमे अलग फर्मक बात पहिनहिसँ लिखल अछि।” बिनोद कहला, “हमरा स्वत्वक सीमा छोट अछि, मुदा छोट होएबाक अर्थ ई नहि जे कियो हमरा हाजिरी वा मुहर दोसरक नामपर लिखि दे।”

रमा पुरान ढुलाई-खिड़कीक बुकिङ-क्रम फेर निकलौलीह। महेन्द्रक आरोपित खेपक नम्बर पहिनुक निरीक्षणमे नहि भेटल छल; बिनोदक सही खरीद दोसर सप्ताहक छल। मध्यस्थ खिड़कीक मुहरक क्रम एके बहीमे चलैत छल, एतबसँ दू व्यवसायक साझेदारी सिद्ध नहि होइत छल। नगरक एक सहायक पुछलक, “तखन सूझी आ कलवार अलग जाति लिखब?” महेन्द्र कहला, “हमरा सभक जाति नाम कार्यालय अपन सुविधासँ नहि

बदलत। एहि ठाम प्रश्न स्वामित्व, माल आ भुगतानक अछि।” बिनोद जोड़लनि,
“व्यवसायवृत्तक ऐतिहासिक शीर्षक रहलासँ आइक दू परिवारक लेन-देन एकटा नहि भऽ
जाएत।”

सुनवाईक लेल सार्वजनिक कागदक संशोधित मसौदा आएल। ओहिमे महेन्द्रक नामसँ
जोड़ल गलत खेप हटाओल गेल, बिनोदक खरीदक प्रमाण सीमित तिथिसहित राखल गेल
आ दूनूकेँ अलग प्राप्ति-क्रमाङ्क देल गेल। महेन्द्र पुछलनि, “काल्हि जे व्यापारी हमरा
माल रोकने छल, ओकरा ई सुधार पहुँचेबाक जिम्मेवारी के लेत?” गोमती उत्तर देलीह,
“गलत आरोप प्रकाशित करनिहार कार्यालय सुधारक नकल जारी करत। निजी ग्राहकक
व्यापारिक निर्णयकेँ हम जबरदस्ती नहि बदलि सकैत छी।” बिनोद अपन पत्नीकेँ फोन
कऽ कहलनि जे आजु नव ढुलाई-दरक हिसाब करए लगथि; पुरान मध्यस्थक भरोसापर
दोकान फेर नहि टिकत।

एहि बीच देवव्रतक कर्मचारी सहायता-सन्दूकक पाछू सँ एक लिफाफा निकाललक।
ओहिमे किछु परिवारक दस्तखतवला प्राप्ति छल; दू ठाम तैयार छपल पंक्ति रहए
—‘आगाँ कोनो दावा नहि’। रमा ओकरा देखि कागद रोकलीह। “ई सहायताक प्राप्ति
अछि कि दावाक त्यागपत्र?” कर्मचारी कहलक जे पुरान पद्धतिमे दूनू एक्के फॉर्मपर रहैत
छल। कबीर पुछलनि, “जखन वस्तु भेटल, तखन किएक लिखाओल गेल जे भविष्यमे
ककरो विरुद्ध दावा नहि?” देवव्रत पन्ना पढ़ि कहला जे ओ एहि छपल शर्तक अर्थे पहिने
प्रश्न नहि कएने छला। एकटा स्त्रीक हस्ताक्षरक कात अँगूठाक निशान छल, किन्तु ओ
ककर उपस्थिति मे लागल, तकर पंजी खाली।

महेशक पत्नी अलग कक्षसँ संदेश पठौलीह—ओ प्राप्तिक प्रमाण देखबाक लेल तैयार
छथि, मुदा अपन पतिर मृत्यु-संबन्धी बयान ककरो सहायता-समारोहमे नहि देतीह। गोमती
हुनकर इच्छा मानलीह। कबीर आवेदनक पाछाँ लिखलनि जे जिनका परिवारक वास्तविक
सहमति अस्पष्ट अछि, हुनकर नाम सार्वजनिक नहि कएल जाए; सक्षम प्राधिकारी अलग
जाँचमे निर्धारित करथि जे प्राप्ति-पत्रक शर्त लागू हो सकैत अछि की नहि। “हम एतय
न्यायालयक निर्णय नहि लिखब,” ओ देवव्रतसँ कहला, “मुदा ई दावी कऽ नहि सकब जे
कपड़ाक गठरी लऽ लेलासँ मनुष्य न्याय माँगबाक अधिकार छोड़ि देलक।”

देवव्रत किछु देरि धरि लिफाफा देखैत रहलाह। ओ हुनकर गोदामसँ निकसल वस्तु छल, कागदक अंतिम वाक्य नहि। ओ रमेश्वरसँ पुछलनि, “ई छपल फॉर्म अपन कार्यलयसँ गेल?” रमेश्वर कहलक जे छपाई ठेकाक माध्यमसँ भेल छल आ पुरान नमूना फेर छपि गेल होएत। देवव्रत कहला, “होएत लिखब पर्याप्त नहि। मूल नमूना, छपाई आदेश आ जकरा हाथसँ ई भराओल गेल, सभक हिसाब दिअ।” कर्मचारी दुपहरिसँ पहिने ई काज सम्भव नहि कहलक। देवव्रत ओकरा तुरन्त असम्भव आदेश नहि देलनि; तिथि आ जिम्मेदार नाम लिखबाक कहलनि।

बाहर भरल रसोइक धुआँ हवा सँ बरामदामे अबैत छल। रुखसाना थारी लेने पहुँचलि, मुदा सुनवाईमे भोजन बाँटबाक पहिने ओ अपन सामग्रीक बकाया लेल रसीद देलीह। “दाताक नामपर सभ भात नहि बनैत अछि,” ओ कहलीह। “एहि बोरा पर राहतक खाता अछि, दोसर पर उधारी। जकर पैसा नहि देल गेल, ओकरा दान लिखि देलासँ दोकानदारक घरमे चूल्हि नहि जड़त।” देवव्रत थारी हाथमे लऽ रुखसानासँ कहलनि जे हुनकर संस्था चाहत तँ उधारी चुकाएबामे मदद कऽ सकैत अछि। रुखसाना उत्तर देलीह, “भुगतान ककर मदसँ होएत से पहिले स्पष्ट हो। रसोइ चलब जरूरी अछि; मुदा हमर मजदूरी ककरो प्रतिष्ठाक विज्ञापन नहि।”

सरिता ओहि समय बरामदाक छाँहमे अएलीह। ओ हाथमे नैराक कोनो निजी कागद नहि लेने छलीह। हुनका सूचना भेटल छल जे दानक रसीदक साथ दावाक त्याग लिखल जा रहल अछि। “नैराक मृत्यु प्रमाणित अछि,” ओ धीमा स्वरमे कहलीह, “एहि तथ्यकेँ आब नव सुनवाईक विषय नहि बनाउ। हमर परिवारकेँ जे बकाया, कागद आ जाँचक बाट अछि, ओहि पर कियो चादर बाँटि कऽ दरबज्जा बन्द नहि कऽ सकैत।” देवव्रत उत्तर देबाक लेल मुँह खोललनि, फेर चुप भेला। सरिताक आँखि सन्दूकपर नहि, बाहर भीजल सड़कपर छल। ओ दान स्वीकार करनिहारक अपमान नहि करैत छलीह; केवल अपन अधिकार बेचेबाक अनकहल शर्त अस्वीकार करैत छलीह।

गोमती उर्मिलाक बहिनक आवेदन सेहो खोललीह। अस्पतालक धुलाई-बही, देनिहार मजदूरी आ व्यक्तिगत अनुष्ठानक खर्च अलग पन्नामे सुरक्षित छल। “एहि खातामे देवव्रतक दानक रसीद जोड़लासँ उर्मिलाक मजदूरी नहियँ घटत, नहियँ चुकत,” ओ

कहलीह। रमा देयक लिपिकेँ कहलनि जे जतेक विवादरहित बकाया निश्चित अछि, तकर प्राधिकृत भुगतानक अगिला दिन लिखित बताओल जाए। लिपिक बाजल, “जँ मुकदमा चलत तँ भुगतान रोकबाक निर्देश आबि सकैत अछि।” गोमती प्रत्युत्तर देलीह, “एखन एहन लिखित निर्देश नहि अछि। काल्हि ककरो सम्भावित आदेशक भय सँ आइक काज रोकबाक अधिकार अहाँकेँ के देलक?”

रमेश्वर साँझ दिस देवव्रतकेँ अलग कोनमे लऽ गेल। “साहेब, जँ ई त्यागपत्रवला कागद जाँचमे जायत तँ जे परिवार सहायता लेलनि, हुनकर भरोसा टुटत। किछु लोक दान लेब छोड़े देत।” देवव्रत उत्तर देलनि, “ओ सभक विश्वास हमर संरक्षणपत्रपर नहि टिकल होएबाक चाही।” रमेश्वर फेर पुछलक, “तँ महेशक मुकदमामे अहाँक सहायता कतेक उपयोगी रहत?” देवव्रत कहला, “जे उपचार भेल, ओ उपचारक प्रमाण अछि। जे धमकीक आरोप अछि, ओकर साक्ष्य पुलिस आ अदालत देखत। एही बातकेँ हम मानब; मुदा झूठा अपराध सेहो नहि स्वीकारब।” ओ अपन प्रतिरक्षाक अधिकार राखलनि, विशेषाधिकारक माँग छोड़लनि।

कबीर देवव्रतक कथन सुनि ओकरा लिखबाबए लगला तँ एक सहायक तुरन्त ‘अभियुक्तक स्वीकारोक्ति’ शीर्षक खोलि देलक। कबीर हाथ रोकलनि। “अहाँ एतय सुनलहुँ जे ओ मुकदमाक प्रक्रिया रोकबाक माँग नहि करताह,” ओ कहला। “हुनकर आपराधिक दोष स्वीकार कएल गेल, से कतहु नहि सुनलहुँ।” देवव्रत एहि अन्तरक लेल कबीर दिस देखलनि। दुनूक बीच पुरान कटुता कम नहि भेल, मुदा सुनल कथनक सीमा निर्धारित भेल। रमा अलग कागदपर देवव्रतक सहायता-विवरण, अधिकार छोड़बाक इन्कार आ जाँचमे सहयोगक सहमति तीन भिन्न वाक्यमे लिखलीह।

हुनकर हस्ताक्षर होएबाक पहिने पुलिसक अधिकृत दूत पहुँचल। महेशक मृत्यु-सम्बन्धी पहिनुक धमकी, रात्रिक आवागमन-पंजी आ डिजिटल संदेशक जाँचक स्थिति सम्बन्धी नव माँग छल; निर्णायक फोरेसिक निष्कर्षक सूचना नहि छल। गोमती दूतकेँ जाँच-अधीन सीलबन्द पत्र अलग देलीह। सहायता-सन्दूकक सूची ओकर हाथमे नहि देलीह, जतेक सूचना विधिसम्मत माँगल गेल, ततेकक सत्यापित नकलक प्रक्रिया निर्धारित भेल।

“कोनो धनराशिक प्राप्तिसँ अनुसंधान समाप्त नहि,” दूत कहलक। ओहि वाक्यकँ सूचना-पत्रक वैधानिक सीमा बुझि लिखल गेल, अपराधक अन्तिम फैसला बुझि नहि।

महेशक पत्नी दोसर कोठरीसँ बाहर अएलीह। बेटी अपन झोरासँ पेंसिल निकालि कागदपर दूटा घर बना रहल छलीह—एकमे दरबज्जा, दोसरमे खिड़की। माय रमा सँ कहलीह, “हम उपचारक भुगतानक वास्तविक मदद मानैत छी। मुदा जे कागद पर ‘आगाँ दावा नहि’ छपल अछि, ताहि पर हमर सहमति नहि। ई बात हमर तरफसँ स्पष्ट लिखू।” रमा पुछलीह जे की ओ पुरान अँगूठा-निशानकँ अपन कहैत छथि। स्त्री उत्तर देलीह, “आज नहि पहचानब। पहिने मूल पन्ना, समय आ उपस्थित लोक देखब।” बेटी कागद मोड़ि मायकँ देलीह। छोट घरक दुनू दरबज्जा एखनहुँ खुलल छल।

चम्पाक चिकित्सकीय गोपनीयताक एक सीलबन्द फाइल ओहि कक्षमे नहि खोलल गेल; रुहानीक आश्रय-पंजीमे रहनिहारक निजी पहचान सेहो सार्वजनिक कागदसँ बाहर रहल। रमा एहि सीमाकँ फेर अंकित कएलीह, किएक तँ सहायता-सूची छपबाक प्रस्तावमे ‘समस्त लाभार्थी’ शीर्षक जोड़ल जा रहल छल। देवव्रत कहलनि जे संस्था खर्चक सार्वजनिक योग देत, प्रत्येक रोगीक नाम नहि। गोमती कहलीह, “योग खुला रहय; जकरा गोपनीय उपचार चाही, ओकर गरिमा सेहो।” एहि बीच अनिरुद्धक घायल हाथक उपचारक पर्ची अस्पतालक अधिकृत कक्षमे अलग सुरक्षित रहल; ओ दानक नैतिक गुणक प्रमाण नहि बनल।

दुपहरि ढललाक बाद सहायता-सन्दूक खोलल गेल। दू चाभीक उपस्थिति, सूची पढ़निहारक नाम आ प्रत्येक वस्तुक बाहरी पहचान लिखल गेल। पुरान वस्तु निकासी-पर्चीक एक पन्नामे दवाइक खेपक क्रमाङ्क अस्पष्ट छल; ओहि पन्नाक कात देवव्रत हस्ताक्षर करैत कहला, “एहि क्रमसँ ककरा औषधि भेटल, हमरा एखन निश्चित नहि।” फार्मासिस्टक अनुपस्थितिमे कियो ‘वैध औषधि’क अन्तिम मुहर नहि लगेलक। रमा पन्ना अलग सील करौलीह, ताकि अगिला दिन चिकित्साक सही अभिलेख आ आपूर्तिक स्रोत मिलाओल जा सकय। मददक स्वीकारोक्ति एखन दवाइक गुण अथवा आपूर्तिक निर्दोषिताक प्रमाण नहि बनल।

अँधार होइत गोमती तीनटा पत्रपर हस्ताक्षर कएलनि। पहिल—सत्यापित सहायता वस्तुक प्राप्ति आ उपयोगक मिलान जारी रहत। दोसर—त्यागपत्रवला छपल शर्तक पृथक समीक्षा होएत, सहायता लेनिहारक अधिकार स्वतः समाप्त मानल नहि जाएत। तेसर—महेशक मृत्यु आ सम्बन्धित धमकीक जाँच सक्षम प्राधिकारीक हाथमे चलैत रहत; समितिक कोनो दान-प्रमाण ओहि प्रक्रियाक रोक नहि बनत। कक्षमे उपस्थित देवव्रत अपन हस्ताक्षरसँ केवल अपन कथन आ उपलब्ध कराओल अभिलेखक जिम्मेदारी स्वीकार कएलनि। रमेश्वरक हाथमे रहल ‘संरक्षण’ मसौदा फाइलक पाछाँ अस्वीकृत प्रस्तावक रूपमे सुरक्षित रहल, गुम नहि भेल।

बिनोद घुरबाक समय महेन्द्रसँ कहला, “हमर दोकानमे काल्हि फेर माल उतरत, मुदा एखनसँ हर पेटीक मालिक आ किराया अलग लिखब।” महेन्द्र कहला, “हमर पुरान नामक चोट सेहो लिखल रहत। सुधार भेटल, ग्राहक अपने घुरताह से निश्चित नहि।” दूनू एके रस्तापर कनेक दूर चललाह, फेर अलग गली धए लेलनि। ई बिछोह कोनो वैरक नहि छल; दू परिवारक बही पहिल बेर सरकारी पन्नामे सचमुच अलग भेल छल। पछाँ चाय-दोकानपर गलत पर्चीक नीचे कियो सुधारक प्रति टाँगि देने छल; पहिनुक स्याही ओहि कागदसँ अदृश्य नहि भेल।

रमा दरबज्जा बन्द करबाक पहिने देवव्रतसँ पूछलीह, “अहाँक संस्थासँ दवाइक जे बण्डल निकसल, ओकर मूल खरीद, भण्डारण आ अस्पतालमे प्राप्तिक कागद काल्हि उपलब्ध होएत?” देवव्रत कहला, “जतेक बही हमर अधिकारमे अछि, ओकर मूल जाँच लेल उपलब्ध कराएब। जे खेप दोसर वितरकसँ आयल, ओकर प्रमाण हम बना नहि सकैत।” रमाक कलम पुरान खाली खानापर ठहरि गेल। ओ उत्तरक सीमा जसक तस लिखलीह। बाहर भीजल पत्थरपर सन्दूकक पुरान निशान छूटल छल; सन्दूक भीतर सुरक्षित रखल जा चुकल छल, मुदा ओकर सामग्रीक कथा एखन मूल स्रोत धरि पहुँचबाक छल।

अध्याय १४२ • दवाइक स्रोत

अस्पतालक अस्थायी औषधि-कक्षमे भोरक पहिल उजास सँ पहिने तीनटा पेटी खोलल गेल छल। पहिल पेटीपर अस्पतालक स्वीकृत भण्डारक नीली पट्टी, दोसरपर दानदाताक लाल स्याही आ तेसरपर कोनो स्पष्ट बाहरी नाम नहि छल। सलमा तेसर पेटीकेँ छुअबासँ पहिने ओकर तौल आ सीलबन्द अवस्थाक तस्वीर लएलीह। कक्षक बाहर प्रतीक्षामे बैसल एक रोगीक परिचारिका पुछलीह, “दवा भीतर अछि तँ एतेक देरि किएक?” सलमा उत्तर देलीह, “अहाँक रोगीक उपचार एखन उपलब्ध सत्यापित दवासँ चलि रहल अछि। एहि पेटीक स्रोत नहि बुझि एकरा खोलब उपचार नहि, दोसर संकट होएत।”

कक्षमे अनिरुद्ध अएलाह तँ बामा हाथक पट्टी एखनहुँ नब लगैत छल। कागदक मोट फाइल दोसर हाथमे छल, मुदा ओ औषधि बाँटबाक मेजक पाछाँ नहि बैसलाह। सलमा हुनका लेल कोनाक कुर्सी राखि देलीह। “चिकित्साक वर्तमान आदेश हमर जिम्मामे अछि,” ओ कहलीह, “अहाँ सँ ओहि पुरान समयक घटनाक क्रम जानबाक अछि।” अनिरुद्ध सहमति देलनि। ओ अपन देहक पीड़ाकेँ जाँचक प्रमाण नहि बनबय चाहैत छलाह, आ अपन पहिनुक प्रशासनिक भूलकेँ घायल भेला कारणसँ मेटेबाक सेहो नहि।

रमा पिछिला दिनक सहायता-सन्दूकसँ भेटल अस्पष्ट निर्गत-पर्ची, भण्डारण-बहीक प्रमाणित प्रति आ अस्पतालक प्राप्ति-पंजी तीन अलग आवरणमे अनने छलीह। देवव्रतक कर्मचारी रमेश्वर फेर उपस्थित छल, मुदा एहि बेर ओकरा सन्दूकक चाभी नहि देल गेल। रमा कहलनि, “दानदाता कागद देताह, चिकित्साकर्मि उपचारक उपयोग बतौताह, आपूर्तिक जाँच अधिकृत दल करत। एकहि सहीसँ ई तीनू बात प्रमाणित नहि होएत।” रमेश्वर पुछलक जे एहि तरहँ फाइल बाँटलासँ देरी नहि होएत? रमा कागद सीधा करैत कहलीह, “गलत मिलानसँ जे देरी होइत अछि, ओकरा गिनबाक बही एखन तक कियो नहि खोललक।”

प्राप्ति-पंजीमे एक तिथिक आगू आठ बण्डलक संख्या छल, मूल खरीद-पर्चीमे नौ। भण्डारक लिपिक तुरन्त एक बण्डल चोरी भेल मानबाक आग्रह कएलक। सलमा ओकरा

रोकलीह। “नौ किनल गेल, आठ एहि दरबज्जा पर पहुँचल—एतबा सँ एकर अन्तिम ठाम नहि सिद्ध होइत अछि। बीचक केन्द्र, परिवहन आ फिर्तीक रसीद देखू।” अनिरुद्ध ओहि दिनक अपन टिप्पणी देखौलनि। एक बण्डल तत्काल स्थानान्तरित रोगीक संग सुरक्षित वाहनपर गेल छल, मुदा तकर प्राप्ति अलग पंजीमे दर्ज छल कि नहि, हुनका याद नहि। हुनकर स्मृति जाँचक संकेत बनल, प्रमाणपत्र नहि।

गोमती बेलदार औषधि-कक्षक बाहर पानि टपकैत नल लग ठाढ़ छलीह। ओ भितरका चर्चा सुनि कहलीह, “जँ दस आदमीक गलत नाम एक कागदमे चढ़ि गेल, तँ ओकर सुधारमे दस घरक दिन जाइत अछि। दवाइक मालपर ई काज बेसी सावधानीसँ करू।” हुनका हाथमे मीना साहक पुरान मरम्मतक बिलक प्रति छल। मीना आइ अपने अएबाक वचन देने छलीह; गोमती बिल खोलि नहि देखौलीह। “जकर हस्ताक्षर अछि, ओकर सामने पूछब,” ओ कहलीह। एहि छोट निर्णयक कारण पुरान अफवाहक फेर एक नब रूप बन्नासँ बचाव भेल।

मीना साह अएलीह तँ अपना साथ एक धातुक पात्रक नब ढक्कन लएने छलीह। ओ कहलीह, “ई नमूना अछि; अस्पतालक पुरान सामान नहि।” ढक्कनक गोल किनार पर हुनकर कार्यशालाक छोट निशान छल। मेजपर रखल पहिनुक बिलमे दू मरम्मत कएल पात्र, एक अपूर्ण कार्य-विवरण आ ढुलाईक पैसा लिखल छल। भण्डार-पंजीमे उएह तिथिक लग ‘चिकित्साक पात्र’ लिखल छल। रमेश्वर तुरन्त कहलक, “देखलहुँ, दवाइक वितरण एहि कसेराक पात्रसँ भेल।” मीना ओकरा दिस ताकलीह। “कागदमे पात्र लिखल अछि; भीतर कोन वस्तु राखल गेल, से हमर बिल नहि कहैत अछि।”

सलमा मीना सँ पुछलीह जे पात्रक बनावट औषधि राखबाक लेल उपयुक्त छल की। मीना साफ उत्तर देलीह, “हम धातुक जोड़ आ रिसावक मरम्मत करैत छी। चिकित्सकीय स्वीकृति देब हमर पेशा नहि। जखन पात्र बुझायल गेल, ओहि समय अस्पतालक गोदामक सामान्य उपयोग कहि देल गेल छल।” ओ बहीमे ओकर मरम्मतक मजदूरीक आधा हिस्सा एखनहुँ अनादत्त रहल बातो देखौलीह। गोमती ओकरा बकाया-पंजीमे अलग दर्ज कएलीह। “साक्ष्य देबासँ पहिले अहाँक मजदूरी चुकत, एहन शर्त हम नहि देब; मुदा अहाँक देयकेँ जाँचक अन्तिम निर्णय धरि रोकबो नहि,” ओ कहलीह।

मीना अपन पुरान बिलक पाछाँ छोट पेंसिल-निशान देखौलीह। ओहि दिन वाहक पहिल पात्र बुझैत सही कएने छल; दोसर बुझाओलाक बाद कोठरी बदलल गेल छल। तेसर पाँति पर ‘काम समाप्त’ लिखनिहार अधिकारीक हस्ताक्षर छल, मुदा कोठरीक नाम नहि। रमाक दिमागमे पुरान नकलक एक रिक्त खाना चमकि उठल। ओ फाइलक पन्ना पलटलीह। अस्पतालक जल-निकासी विभागक पुस्तकमे ओहि तिथिक ‘सीप-चूनक पुरान तह’ हटेबाक कायदिश सेहो छल। एक सहायक फटाफट कहलक जे धातुक पात्र, चून आ दवा तीनू एके षड्यन्त्रक हिस्सा अछि। अदिति ओहि समय भीतर अएलीह आ स्पष्ट कहलीह, “एक तिथि पर तीन काज भेला सँ तीनूक साझा उद्देश्य सिद्ध नहि होइत अछि।”

अदिति पछिला मापक प्रतिवेदनक संशोधित प्रति अनने छलीह। पहिनुक गलत निष्कर्ष वापस लेबाक टिप्पणी ओकर पहिल पन्नापर छल। ओ बतौलीह जे सीप आ चूनक पुरान निर्माण-पद्धतिक स्थानीय इतिहास महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कुन तहमे कोन मिश्रण अछि आ पानि कतेक रोकलक, ओकर निष्कर्ष आधुनिक नमूना-परीक्षणसँ मात्र भेटत। ललित एक पुरान ढलाईक वस्तु पहचानलनि, मुदा हाथमे घिसि ओकर आयु घोषित करबाक इन्कार कएलनि। गोमतीक लोकसभ पूर्वमे जुटौने बिल आ माल उतारबाक समयक प्रति जाँच-दलकें देलक। कियो एखन पुरान निर्माण-सामग्रीकें दुर्घटनाक एकमात्र कारण घोषित नहि कएलक।

ललित मीना सँ कहलनि, “तोहर पात्र अस्पतालक भण्डारमे गेल; हमर चूनक बोरा दोसर ठाम। मुदा परिवहनक एकहि ठेकाक नाम पर्चीपर आबि गेल अछि।” मीना उत्तर देलीह, “तँ ठेकाक दू ढुलाई जाँचू। एकहि गाड़ी भेला सँ सामानक मालिक एक नहि बनैत।” अनिरुद्ध एहि वार्तालापक बीच अपन पुरान निर्देश याद कएला। ओहि समय रोगीसभक निकासीक बाटक सम्बन्धमे एक गलत प्रशासनिक अनुमान ओ स्वीकार कएने छलाह। ओ फेर कहलनि, “ई निर्णय भवन-सुरक्षाक जाँचमे रहत। आइक औषधि-पत्रमे ओकरा जोड़ि हमर अपराध अथवा निर्दोषिता तय नहि करू।” सलमा सहमति देलीह।

दुपहरिक पहिने विभा अग्रहरी औषधि-वितरणक लम्बा खाता लऽ अएलीह। ओकरा पाछाँ एक चालक छल जे राति गाड़ी चलौने रहए। खाता खोलि विभा पहिने खरीद-दाम

देखौलीह, फेर ढुलाई, आवश्यक शीत-संग्रहक खर्च आ अपन कमाइक हिस्सा। अस्पतालक एक सहायक तुरन्त कहल, “एहन विपत्तिमे मुनाफा राखब अपराध होएत।” विभा शान्त रहि उत्तर देलीह, “मुनाफाक सीमा तय होअय, हम बहस करब। मुदा चालकक मजदूरी, सही भण्डारण आ दवाइक वास्तविक लागत शून्य लिखब तँ काल्हि कोनो गाड़ी नहि चलत। अपराधक जाँच मुनाफाक हिसाबसँ अलग करब आवश्यक अछि।”

विभा एक पेटी पहिनहिसँ असमान लेबलक कारण रोकि देने छलीह। ओकर सील अखण्ड छल। “एहि मालकें हम रोगी लग नहि पठेलहुँ,” ओ कहलीह, “कारण भीतरक बण्डलक पहचान बाहरी पर्चीसँ नहि मिलैत छल। मुदा एतेक रोकबाक बाद बाजारमे हमर नामसँ ई बात चलल जे हम दवा जमा कऽ दाम बढ़बैत छी।” रमा हुनका सन्देहक प्राथमिक कारण आ रोकक तिथि दर्ज करबाक आग्रह कएलीह। विभा अपन चालककें नामसहित बयान देबाक अनुमति देलीह; ओ चालक अपन दिनभरि चलल समयक बकाया सेहो लिखौलक। बिनु ई छोट हिसाबक, सत्यापनक खर्च ओकर घरमे चुपचाप सरकि जाइत।

गोमती प्रस्ताव रखलीह जे सुरक्षित प्रमाणित आवश्यक खेपकें जाँचक कारण बिना जरूरत रोकल नहि जाए। सलमा चिकित्सा-अनुमोदन आ भण्डारण-परीक्षणक शर्त स्पष्ट कएलीह। विभा प्रस्ताव देलीह जे आपात सूचीपर ओ अपन लाभक हिस्सा घटौती, किन्तु ई दर निश्चित अवधि आ जाँचल परिमाण धरि मात्र रहत; ओतबे दवा समान शर्तपर सभ योग्य परिवार धरि पहुँचत। देवव्रतक संस्थाक कर्मचारी कहलक जे संस्था घाटा चुकता देत। विभा पुछलीह, “दानक पैसा सँ देल भुगतानक हिसाब सार्वजनिक होएत की? जँ दानदाता चिकित्साक नाम सभ छापय चाहथि, तँ हम ओहि रूपमे राशि नहि लेब।”

नियम लिखैत गोमतीक कलम एक बेर अटकल। “जे परिवारक लग डॉक्टरक पर्ची अछि, मुदा ओ आश्रयमे नाम गुप्त राखि बसैत अछि, ओकर दवा कोना पहुँचत?” रुहानी आश्रयसँ पठाओल छोट सन्देशमे लिखने छलीह जे आवश्यक औषधि आश्रयक चिकित्सकीय समन्वयक मार्फत सीलबन्द प्राप्ति पर पहुँचाओल जा सकैत अछि; सार्वजनिक बहीमे केवल स्वीकृत परिमाण आ खर्च रहय। सलमा एहि व्यवस्था लेल

चिकित्सकीय जाँचक जिम्मेदार व्यक्ति तय करबाक कहलनि। रमा नामक निजी सूची अपन खुला लेखापंजीसँ बाहर रखबाक अनुमति दर्ज कएलीह। विभा अपन दर-पत्रमे ग्राहकक सार्वजनिक पहचान लेल कोनो अतिरिक्त शर्त नहि जोड़लीह।

तखने रहीम मंसूरी देहरीपर अएलाह। हुनकर काँधपर पुरान धुनल रुइक झोरा छल, मुदा एखन ओ माल बुझाबए नहि अएने छलाह। चारि बोरा गद्दाक जकर खेप पर चोरीक सन्देहमे रोक लगल छल, तकर अपीलक उत्तर हुनका प्राप्त भेल छल। सरकारी कर्मचारी एक कागद पढ़लक—विशिष्ट खेपपर अस्पतालक चोरायल सामान होएबाक आरोपक समर्थनमे प्रमाण नहि भेटल; रोक हटाओल जा रहल अछि। रहीम कागद सुनि साँस छोड़लनि। “तखन हमर चारि बोरा हमरा घुरत?” ओ पुछलनि। “निरीक्षणक सील काटि समुचित प्राप्ति पर,” उत्तर भेटल।

रहीमक खुशी तत्क्षण पूरा नहि भेल। अपीलक लेल तीन बेर गाड़ी भाड़ा, नकलक फीस आ दोसर धुनियासँ किरायापर काज करएबाक खर्च भेल छल। आदेशमे ओकर समस्त क्षतिक भुगतानक कोनो व्यवस्था नहि छल। एक सहायक कहलक, “आरोप गलत निकलल; आब तँ बात समाप्त।” रहीम अपन झोरासँ बाल-बाल भरल पुरान छोट तकियाक खोल निकाललनि। “एहि खोलक ग्राहक चारि मास पहिने मरि गेलाह। हुनकर बेटी कहने छलीह गद्दा लौटाउ, हम मायकेँ घुरैत ओहि पर बैसब। कागदपर बेदाग भेलहुँ, मुदा चारि मासक दिन के लौटौत?”

गोमती रहीमक बयानमे आर्थिक क्षति आ व्यक्तिगत दुख अलग दर्ज कएलीह। खेप मुक्त करबाक आदेश तत्काल लागू होएत, अपीलक खर्चक उपलब्ध रसीदसहित प्रतिपूर्तिक निवेदन आगाँ पठाओल जाएत। ओ खुलिकऽ कहलीह, “पूरा पैसा भेटत, एहन वचन नहि दऽ सकैत छी। मुदा जतेक स्पष्ट प्रमाण अछि ततेक आंशिक भुगतानक प्रक्रिया रोकब उचित नहि।” रहीमक स्वीकृति चुप्पीसँ नहि, एक प्रश्नसँ आयल। “जँ फेर एही गाड़ीमे देवा आ गद्दा संग लादल जायत, तँ काल्हि फेर एकटा शंका बनि जाएत?” मीना उत्तर देलीह, “तखन प्रत्येक खेपक अपन मुहर आ गमन-पंजी रहए।”

अनिरुद्ध रहीमक बात सुनि अस्थायी कक्षक खिड़की लग पहुँचलाह। बाहर एक छोट लड़का अपन बापकेँ पानि देबैत छल। ओहिसँ हुनका जमुना देवीक उपचारक ओहि दिनक

समय याद अएलनि जहिया औषधि समयपर उपलब्ध छल, मुदा भवनक बाट असुरक्षित भऽ गेल छल। “किछु रोगीकेँ एही आपूर्तिसँ लाभ भेटल,” ओ कहला, “एहि बातक प्रमाण चिकित्सा-पंजीमे अछि। मुदा जिनकर मृत्यु भेल, हुनकर कारणक प्रश्न एहिसँ समाप्त नहि। आ जिनकर औषधि भेटल नहि, हुनकर अभाव सेहो समुचित जाँच माँगैत अछि।” ओ नैरा आ उर्मिलाक मृत्यु बदलबाक, वा देवी गोंडक बचि गेलाक कारण बनौने नव कथा कहबाक चेष्टा नहि कएलनि।

सलमा एक सीलबन्द रोगी-अभिलेखक सूची अनिरुद्धक सामने राखलीह, बिना निजी पन्ना खोलने। “अहाँ एहि तिथिमे सेवा दैत रही?” ओ पुछलीह। अनिरुद्ध अपन हस्ताक्षरक नमूना देखलनि, फेर कहलनि, “एहि पन्नापर हमर सही अछि। औषधिक सम्पूर्ण वितरणक संख्या हम स्मृतिसँ नहि कहब। वास्तविक पर्ची अधिकृत फार्मासिस्ट आ परिचारिकाक मिलानसँ देखल जाए।” सलमा एक प्रमाणित सीमित सार तैयार करबाक जिम्मेदारी स्वीकार कएलीह—कतेक स्वीकृत मात्रा प्रयुक्त भेल, समयक विचलन छल की नहि, आ कोन सूचना केवल रोगीक निजी फाइलमे रहत। सार्वजनिक बैठकमे ककरो उपचारक विवरण पढ़ल नहि जाएत।

रमा औषधि-वितरणक दुनू क्रमसूची मेजपर पसारलीह। एकर बीच क्रमाङ्कक दू खाली घर छल। विभाक रोकल पेटीक नम्बर ओहि रिक्त घरसँ नहि मिलैत छल; दानक पर्चीमे जे एक बण्डल अतिरिक्त छल, ओकरा अस्पतालक प्राप्ति-बहीमे प्रविष्टि एखन नहि भेटल। “खाली खाना अपराधीक नाम नहि अछि,” रमा कहलीह। “मुदा जे लोक कहैत छल जे सभटा मिलि गेल, ओकर कथन एखन सही नहि।” रमेश्वर अपन संस्थाक कागदमे एक पुरान ढुलाई-एजेन्सीक नाम देखौलक। जाँचकर्ता ओकरा लिखलनि, प्रमाणित आपूर्ति-मार्गक अगिला कड़ी बुझबाक लेल; तुरन्त गिरफ्तारीक आधार बनौने बिना।

मीना एही बीच अपन मजदूरीक पुरान पन्ना सँ दूटा हिसाब बतौलीह। पहिल कामक देय पर गोदामक सही आ अस्पतालक प्राप्ति छल; दोसर कामक अन्तिम निरीक्षणक खाना एखन रिक्त छल। गोमती कागद जाँचि कहलीह जे पहिल देयक विवादरहित हिस्सा जारी करबाक आदेश दिनांकसहित निकलत, दोसरक रकम स्वतन्त्र मिलान धरि अलग रहत। मीना पुछलीह, “हम जे साक्षी बनी, ताहि लेल पहिल पैसाक बदला चुप्पी तँ नहि

चाही?” “नहि,” गोमती उत्तर देलीह, “अहाँ जे देखलहुँ ओ कहूँ: मजदूरी हुनकरहक अछि, पुरस्कारक रूपमे नहि।” मीना पहिल बेर बिलक पीयर पन्ना मोड़ि अपन थैलीमे निश्चिन्तसँ राखलीह।

दुपहरि बाद जलनिरीक्षणक दल सीप-चूनक नमूना अलग सीलमे लऽ गेल। ललित ओकर सामने पुरान निर्माणक हुनकर परिवारमे चलैत शब्द बतौलनि, मुदा परीक्षण-फॉर्ममे एहि लोक-नामकेँ प्रयोगशालाक निश्चित पदार्थक नाम नहि लिखबौलक। अदिति जखन पानि सोखबाक अनुमान लिखबाक छल, गोमती पुछलीह जे नमूना कोन तहसँ उठल। उत्तरमे दू अलग ठामक रेखाचित्र देखाओल गेल। “तखन दूटा स्थानक दूटा परिणाम होएत,” गोमती कहलीह, “अस्पतालक सम्पूर्ण देबालक एकटा गुण नहि।” पुरान निकासी अवरुद्ध रहलाक मूल प्रश्न एतबसँ हल नहि भेल।

बाहर आकाशमे बादर छँटि रहल छल। रहीम अपन बोरा लेबए गोदाम दिस गेलाह तँ विभाक चालक हुनका गाड़ीमे कनेक ठाम देबाक प्रस्ताव देलक। रहीम पहिने ओकर ढुलाई-पर्ची देखलनि। ओहि पर्चीमे औषधि-बण्डल नहि, खाली पेटी आ कक्षमे फिर्ता जाएवला सुरक्षित उपकरण लिखल छल। “हम अपन माल एतय राखब, आ दूनूक नाम अलग लिखब,” रहीम कहला। चालक मानि गेल। दूनू गाड़ीमे एक-दोसराक सामानक रस्सी बाँधल, मुदा एक-दोसराक चालानपर सही नहि कएलनि। एहन छोट भेद बहुत देरि बाद पहिल बेर आसान लगल।

साँझक बैठकमे देवव्रत अएलाह। रमा हुनका जाँचक सार देखौलीह: जतेक सहायता पहुँचबाक प्रमाण भेटल छल, ततेक स्वीकारल गेल; एक अस्पष्ट दवा-खेपक मार्ग एखन शेष; जकर औषधिसँ उपचारक पुष्टि अछि, तकर लाभ अलग; अनधिकृत भण्डारण वा भिन्न लेबलक कारणक प्रश्न अलग। देवव्रत कहलनि, “हम जकरा दान देलहुँ, ओकरा बचाओल गेल सुनि राहत होइत अछि।” कबीर उत्तर देलनि, “बचल मनुष्यक अधिकार अछि जे ओ अपन उपचारक श्रेय जकरा चाहथि ओकरा दिअथि। मुदा ई श्रेयक हिसाब अभियोजनक प्रश्न बन्द नहि करैत।” देवव्रत एकर प्रतिवाद नहि कएलनि, दोषक स्वीकारोक्ति सेहो नहि कएलनि।

एक कर्मचारी प्रस्ताव रखलक जे सभ जाँच समाप्त होएधरि अस्पतालक दवाइक अतिरिक्त वितरण रोकि देल जाए। सलमा कुर्सीसँ उठि ठाढ़ भेलीह। “स्वीकृत औषधि रोकलासँ जे रोगीक उपचार बाधित होएत, ओकर उत्तरदायित्व के लेत?” कर्मचारी अपन प्रस्तावमे ‘जाँचक सुविधा’ लिखने छल। सलमा ओकरा काटि स्पष्ट शर्त लिखबौलीह— जाहि बण्डलक गुणवत्ता, पहचान आ संरक्षण पुष्ट नहि, केवल ओ सुरक्षित सीलमे; जे प्रमाणित उपलब्ध अछि, ओ अधिकृत चिकित्सा-निर्देशानुसार बिना व्यवधान पहुँचै। विभा अपन लाभ-सीमित मूल्यक नब पर्ची पर सही कएलीह। चालकक मजदूरीक देय सेहो ओही पन्नासँ अलग स्वीकृत भेल।

रुहानीक आश्रयसँ एक युवती संदेश पठौलीह। ओ औषधि लेल कतहु अपन नाम टाँगबऽ नहि चाहैत छलीह, मुदा लगातार दवा रुकलासँ डरैत छलीह। गोमती ओकर नाम पूछबाक बदला सन्देश अस्पतालक गोपनीय चिकित्सकीय सम्पर्कक हाथमे पहुँचबाक व्यवस्था कएलीह। आश्रयक दवा लेल दू अधिकृत हस्ताक्षरक नियम प्रस्तावित भेल, मुदा रुहानीक एकल चाभी एखन ओकरासँ अलग पुरान प्रश्न छल। रुहानी फोनपर कहलीह, “आपूर्तिक जवाबदेही हमर एक हाथमे रहि गेल तँ काल्हि फेर ककरो सेवा हमर कृपापर ठाढ़ होएत। एहि पर आश्रयमे सभक संग बैसि निर्णय लेबाक चाही।”

अनिरुद्ध घुरबाक पहिने सलमा सँ अपन जाँच-तिथि पुछलनि। ओ आजु एक बेर बेसी बोलि गेलाक कारण हाथमे हलुक खिंचाव अनुभव करैत छलाह। सलमा हुनका निर्धारित उपचारक समय फेर देखौलीह; नवा कर्तव्य देबाक प्रस्ताव नहि। ओ बाहर निकलि कऽ मीना केँ भेटलाह, जे मजदूरीक आदेशक प्रति लेबए ठाढ़ छलीह। “अहाँक पुरान बिल हमरा गलत निर्देशसँ अलग प्रश्न देखौलक,” अनिरुद्ध कहला। मीना उत्तर देलीह, “हमर बिल धातुक पात्रक अता-पता बतौत; अहाँक काजक दोष वा गुणक फैसला नहि। मुदा कोनो दिन हमरा सही बिना कियो पात्र घुमौलक, तकर लेखा हम माँगब।”

गोमती साँझक अन्तिम कागदपर चारि अलग हस्ताक्षर लएलीह। सुरक्षित औषधिक तुरन्त पहुँचक अनुमति; सन्देशास्पद खेपक स्वतंत्र स्रोत-जाँच; मीना आ रहीमक देय आ अपीलक खर्चक पृथक कार्रवाई; सीप-चूनक नमूनाक परीक्षण आ स्थान-सूत्रक संरक्षण। एक लिपिक सभ आदेशकेँ ‘दवा मामला समाप्त’ शीर्षक देबाक चेष्टा कएलक। गोमती

पन्ना घुमा कऽ शीर्षक बदललीह—‘उपचार जारी, स्रोत-जाँच जारी’। ओहि बेर समितिक लोकसभ पहिल बेर देखलक जे दूटा ‘जारी’ एक-दोसराक विरोधी नहि।

सड़कपर अँधार उतरैत छल। विभाक गाड़ी सत्यापित औषधि लऽ सुरक्षित बाटे निकलल, रहीमक चारि बोरा ओकर अपन गोदाम दिस घुरल, मीनाक हाथमे मजदूरी-आदेशक प्रति छल। ककरो सभ क्षति नहि भरायल छल। अस्पतालक सीलबन्द तेसर पेटी एखनहुँ भीतर राखल छल, ताहिपर लिखल अस्पष्ट नाम एखन कोनो अपराधीक नाम नहि बनल छल। रमा दरबज्जाक चाभी देबाक लेल आगाँ बढ़लीह तँ रुहानीक फोन फेर बजल—आश्रयमे चाभी एकटा छल, आवश्यकता अनेक। रमा आजुक सुरक्षित दवा-प्राप्तिक प्रति ओकरा पठबैत कहलीह, “आब चाभीक बात अहाँ सभ मिलि कऽ तय करू।”

अध्याय १४३ • आश्रयक नियम

आश्रयक फाटकपर टाँगल पीतल रडक ताला भोरमे दू बेर घुमल, मुदा तेसर बेर चाभी आधा बाटे अटकि गेल। रुहानीक हाथमे एखनहुँ ओ पुरान गुच्छा छल, जाहिमे मुख्य दरबज्जा, भण्डार, दवाइक पेटी आ पछिला कक्षक चाभी एके डोरीमे बन्हल रहए। रुखसाना चूल्हाक लगसँ बजलीह, “एखन एकटा रोगीक दवा आनय गेल छी, आ चाभी अहाँक हाथमे अटकल अछि। ई व्यवस्था ककरा बचबैत अछि?” रुहानी ताला झटक नहि खोललीह। धीरेसँ घुमौलीह; ताला खुलि गेल।

राति अस्पतालसँ सत्यापित औषधिक पहुँचक आदेश अएने छल। सलमा लिखने छलीह जे इलाजक निजी पर्ची चिकित्सकीय सम्पर्कक लग रहत, सार्वजनिक राहतक खातामे दवाइक परिमाण आ खर्च मात्र। मुदा आश्रयमे दवा पहुँचलाक बाद पेटी खोलबाक अधिकार एखन रुहानीक नामपर छल। रुखसाना आ जुबैदाकेँ पहिने अलग चाभी भेटल छल। तथापि कखन खोलल जाए, ककरा फोन कएल जाए, आ कोन निर्णय पछिला दिनक सभामे पूछल जाए—ई सभ हुनकर मुँह दिस तकैत रहि गेल छल।

रुखसाना ओसारमे पसरल भिजल बोराकेँ उठाकऽ कहलीह, “चाभी बाँटलहुँ, मुदा नियमक सही कागदमे अहाँ एखनो एकल जिम्मेवार छी। काल्हि अस्पतालक कर्मचारी हमरा नामपर प्राप्ति लिखए तैयार नहि छल। हम अनाज बाँटि सकैत छी, फेर दवा किएक नहि बुझि सकैत?” रुहानी कहलनि, “दवा बुझब चिकित्साक काज; पेटी स्वीकारि सही सम्पर्क धरि पहुँचैब आश्रयक काज। एहि दुनूकेँ अलग लिखबाक चाही।” जुबैदा मेजपर चारि खाली पन्ना रखलीह। पहिल पन्नापर शीर्षक लिखल गेल—दरबज्जा, भण्डार, उपचार आ शिकायत।

एक युवती, जे पिछिला दिन नाम सार्वजनिक नहि होएबाक शर्तपर औषधिक सन्देश पठाैने छलीह, ओसारक अन्हार कात बैसल छलीह। ओकरा समक्ष कोनो परिचय-पंजी नहि खोलल गेल। ओ पूछलक, “जँ तीन लोकक समिति बनत, तँ तीनू हमर कागद पढ़त?” जुबैदा उत्तर देलीह, “नहि। समिति दवाइ पहुँचबाक गिनती देखत; रोगक पर्ची अधिकृत चिकित्साकर्मी। निजी कागदक चाभी एहि चारि पन्नामे नहि बाँटल जाएत।”

युवती फेर पुछलक, “आ जँ समिति मे हमर चिन्हल कियो बैसल?” रुहानी कहलनि, “अहाँ कारण नहि बताओत, तइयो अहाँ ओकरा छोड़ि आन सम्पर्क चुनि सकब।”

आश्रयक पहिल सामूहिक सभा रसोइक समयक बाद राखल गेल, जाहिसँ रुखसानाक भात अधपकल नहि रहय। चम्पा अएलीह, मुदा ओ अपन चिकित्सकीय कागद घरमे सुरक्षित छोड़ि अएने छलीह। ओ पुछलीह, “जे आश्रयक बाहर रहैत अछि, मुदा आश्रयमे काम करैत अछि, ओकरा बोलबाक अधिकार रहत की?” जुबैदा कहलीह, “रसोइ, पहरा, सफाई आ भण्डारक काम बिना ई घर नहि चलत।” चम्पा फेर पुछलीह, “आ जे एतय रहैत अछि, ओकरा मत देबाक लेल अपन निजी इतिहास सुनाबय पड़त?” मेजक ऊपर माछी भनभनाइत रहल।

रुहानी प्रस्ताव रखलीह जे आश्रयक रहनिहार वयस्कसभ अपन प्रतिनिधि चुनथि; नियमित श्रमिकसभ अपन कामक निर्णयपर अलग प्रतिनिधि रखथि; औषधि सम्बन्धी निजी विवरण कोनो खुला सभामे नहि पढ़ल जाए। आपातकालमे प्राणरक्षा लेल दरबज्जा खोलबाक अनुमति रहत, मुदा ओकरा आधार बना कऽ नियमित कोठरी-जाँचक अधिकार नहि भेटत। रुखसाना कहलनि, “आ जँ अहाँक निर्णय गलत ठहरल?” रुहानी अपन गुच्छा मेजपर राखि उत्तर देलीह, “तँ हमहुँ उत्तर देब। पहिने सँ एकटा लोक सही रहत, ई मानि कऽ नियम नहि लिखब।”

ओहि समय फाटकपर लाठिक ठकठकाहट भेल। रानी हलालखोर अपन टोलीक घण्टा-पंजी लेने पहुँचलि छलीह। हुनकर पयरक कात पुरान घिसल चप्पलक पट्टा फेर सिलायल छल। ओ आँगनमे बैसबाक अनुमति माँगलीह; रुहानी भीतर बजौलीह। रानी कहलीह, “आश्रयक पिछिला नाली साफ करबाक लेल हमरा सभकेँ फेर कहल जा रहल अछि। जकर ऊपरक भाग सुरक्षित अछि, ओतय हम सभ काम कऽ सकैत छी। मुदा बन्द मुँहमे बिना जाँच, बिना श्वासक सुरक्षा, बिना सुरक्षित जूता उतरबाक आदेश नहि मानब। एहि दिनक मजदूरी ‘काम छोड़ल’ लिखि रोकल गेल अछि।”

रुखसाना पुछलीह, “ई आश्रयक नाली अछि की अस्पतालक?” रानी पंजीक दू पन्ना देखौलीह। पुरान आदेश अस्पतालक पिछिला निकासक छल; नव पर्चीमे आश्रयक दीवालक कात पानि जमा होएबाक शिकायत जोड़ल गेल छल। ठेकेदार दुनू ठाम एके

टोली लिखने छल। “हम सभ ऊपरक काँच आ सूखल कचरा हटौने रही,” रानी कहलीह, “ओहि काजक समय आ देखनिहारक सही अछि। जे भीतर उतरबाक काज नहि भेल, ओकर पैसा माँगैत नहि छी। मुदा सुरक्षित काजक मजूरी आ खतरा देखि रुकल दिनक हिसाब एके ‘अनुपस्थित’ मे नहि चलत।”

आश्रयक एक निवासी तत्क्षण कहलक, “नाली नहि खुलत तँ हमर कोठरीमे पानि आएत। अहाँ सभ रुकि गेलहुँ तँ हमरा सभ कोना रहब?” रानी अपन चप्पल उतारि तलुवाक फाटल भाग देखौलीह। “अहाँक पानि रोकबाक जरूरत हमर जरूरतो अछि। मुदा हम भीतर उतरि मरि जाउ तँ काल्हि एहि देहक नामक आगू के घण्टा भरत?” निवासी नजरि झुका लेलक। रुहानी बीचमे दखल नहि देलीह। रानी स्वयं जोड़लीह, “सुरक्षित बात मापू, बाहरी कचरा हटाउ, भीतरक काम प्रशिक्षित दल आ उपकरणसँ कराउ। हम सभ कामसँ भागि नहि रहल छी।”

जुबैदा आश्रयक व्यय-पंजीमे नालीक कामक लेल अलग खाना बनौलीह। ओ रानीक पुरान ठेकाक रोकल मजूरी आश्रयक खर्चमे जोड़बाक प्रस्ताव नहि रखलीह; ई ठेकेदारक देय रहत। मुदा आश्रयक अपन सुरक्षित बाहरी सफाई लेल मजदूरी देबाक प्रस्ताव ओ रखलीह, निश्चित समय आ स्वीकृत सामग्रीक संग। रानी कहलनि, “एतय काम लेब तँ हमर पुरान दावाक त्याग नहि मानल जायत?” रुहानी उत्तर देलीह, “नहि। नब कामक रसीद पुरान रोकल भुगतानक विरुद्ध कागद नहि होएत।” रानी टोलीसँ विचारबाक समय माँगलीह।

तखने माधव रोनियारक ठेला फाटक लग रुकल। ओकरा पर खराब पैकिङ्गक कारण घुराओल तीन पेटीक बाहरी लकड़ीक फट्टा छल, औषधि नहि। माधव ओहि फट्टा सभकेँ देखबैत कहला, “हम खराब माल अस्पताल धरि पहुँचेबाक लाभ नहि कमाएब, से निर्णय लेलहुँ। वितरक माल फिर्ता लेलक, मुदा हमर पहिले सँ तय कमाइमे कटौती करैत अछि। आब आश्रयक लेल रखल लकड़ीक अलमारीक सामग्रीक बिलमे सेहो ओही खेपक नाम जोड़ि देल गेल अछि। ई गलत मिलान नहि सुधारल तँ अहाँ सभपर अनावश्यक देय चढ़त।”

रुखसाना नव भण्डारक मापक कागद निकाललीह। अलमारीक लेल सूखल लकड़ी आ कब्जा स्वीकृत छल; माधवक घुराओल अस्पतालक पेटीसँ ओकर कोनो सम्बन्ध नहि। कर्मचारीक पठाओल मसौदामे “पुरान पेटी समायोजन” लिखल छल। माधव कहलनि, “हम एहिमे अपन मुनाफाक ओ हिस्सा छोड़ब जाहि पर खराब माल वापस कएलाक बाद विवाद अछि; मुदा जे ढुलाई वास्तवमे भेल, ओकर रसीद जाँचल जाए। अपन नुकसानक बदला आश्रयक खाता भरि देब, एहन हम नहि चाहैत छी।” चम्पा कागद देखैत कहलीह, “ई बेर आबरू बचेनाइ नहि, खाता ठीक करेनाइ जरूरी अछि।”

एक वृद्ध निवासी पुछलनि, “माधवसँ अलमारी नहि किनब तँ फेर सामग्री कखन भेटत?” माधव ओ प्रश्न सुनि उत्तर देलनि, “मान्य अलमारीक बिल अलग अछि। खराब खेपक लौटान अलग। हमर अस्वीकार कएल सामान फेर दोसर नामसँ एहि घरमे आए, ताहि लेल आजु हम स्वयं रोक लगाएब।” रुहानी वितरकक प्रतिनिधिकें सार्वजनिक फोन नहि लगौलीह; पहिले माधवक लिखित दावा, मूल रसीद आ अलमारीक नमूना मिलाओल गेल। दू निवासी नमूना देखलनि। तय भेल जे खराब वस्तु फिर्ता गेलाक लिखित पावती भेटलापर मात्र स्वीकृत नब सामग्रीक भुगतान होएत।

भातक दोसर खेप चढ़ैत-चढ़ैत सभा गरम भऽ गेल। एक पुरुष सदस्य कहलनि, “चाभी सभक हाथमे गेल तँ काल्हि चोरीक जिम्मेदार के?” रुखसाना तिखगर स्वरमे कहलीह, “जखन चाभी एकटा हाथमे छल, तखनहुँ एक बेर तेलक बोरा गलत ठाम गेल छल। तकर जिम्मेदारी रसीदसँ ठहरल, चाभी सँ नहि।” ओ चूल्हाक आगि घटाबए उठलीह, फेर घुरि कऽ कहलीह, “मुदा हमहुँ नहि चाहैत छी जे सभ लोक रातिमे भण्डार खोलय। प्रतिनिधि, समय, प्रवेशक कारण आ पाछाँ हिसाब—चारू चाही।”

रुहानीक सामने चाभीक गुच्छा चमकि रहल छल। हुनका याद पड़ल जे पहिनुक विपत्तिक राति ओहि चाभीसँ फाटक खुजल छल आ जीवित लोक भीतर अएने छलाह। एक क्षण चाभी छोड़ब असह्य बुझायल। तैयो ओ जानैत छलीह जे संकटमे दरबज्जा खोलने लोक सदाक लेल दूसराक देह आ रातिक मालिक नहि बनि जाइत अछि। ओ पूछलीह, “जँ हम एतय नहि रहब तँ आइक भात, दवा आ सुरक्षित निकास चलत की?” चम्पा उत्तर देलीह, “चलबाक चाही। नहि चलत तँ हम सभकेँ नियम बदलबाक चाही।”

सभाक एक युवती खिड़की लग ठाढ़ छल। ओ कहलीह, “मुदा हम सभ जे किराया नहि देबैत छी, से अहाँक घरक स्थायी सदस्य होएबाक प्रमाण नहि। प्रतिनिधि काल्हि हमरा निकलबाक निर्णय दऽ देत तँ?” रुहानी उत्तर देलीह, “निवासक सुरक्षा एक दिनक बहुमतसँ समाप्त नहि होएत। जँ सुरक्षित निवासक अवधि बदलएबाक प्रश्न उठत, तँ व्यक्ति केँ सुनवाई, समय आ विकल्प चाही। सार्वजनिक सभामे निजी कारण नहि पूछल जाएत।” जुबैदा पन्नापर जोड़लीह—“कोनो सदस्य अपना नाम वा सम्बन्ध सार्वजनिक कएने बिना निर्णयपर आपत्ति दर्ज कऽ सकत।”

रानीक टोलीसँ फोन अएल। तीन सदस्य बाहरी नालीक सुरक्षित सफाई लेल राजी छला, एक सदस्य अपन बीमार बाबूजीक दवाइ आनबाक कारण नहि जा सकताह। रानी ओकर नाम पंजीमे ‘अनुपस्थित’ नहि, ‘सहमति नहि देल’ लिखबौलीह। ओ कहलनि, “जकरा काज नहि लेना अछि, ओकरा दण्ड देब हमरा अधिकारमे नहि। जकर पहिने काज भेल, ओकर मजदूरी फेरो देय रहत।” रुहानी एहिसँ अपन प्रतिनिधि-नियममे एक वाक्य जोड़लीह—कामक असहमति आश्रयक भोजन अथवा निवासक अयोग्यता नहि बनत।

दुपहरिमे रमा समिति-कक्षकसँ पहुँचलीह। हुनका संग अस्पतालक सत्यापित औषधिक एक सीलबन्द पावती छल, नामक निजी सूची नहि। रमा कहलीह, “एहि खेपक इलाज योग्य व्यक्ति धरि पहुँचेब चिकित्सकीय सम्पर्कक काम; आश्रय प्राप्तिक मात्रा आ तिथि लिखत। हम अहाँ सभक चाभी लेबए नहि आयल छी। मुदा सार्वजनिक देय आ गोपनीय अभिलेखक सीमा एकहि पन्नापर मिलि जाए तँ बादमे अधिकारक झगड़ा होएत।” रुहानी पुछलीह, “सरकारी समितिकेँ आश्रयक सम्पूर्ण आन्तरिक नियम स्वीकार करबाक अधिकार अछि?” रमा कहलीह, “नहि। जकरा सरकारी सहायता भेटत तकर खर्च-जाँचक नियम अछि, मुदा रहनिहारक निजी जीवनक स्वामित्व नहि।”

रमा पुरान सहायता-बहीक नकल देखौलीह। ओहि दिनक राहतक अनाजक कुल तौल प्रमाणित छल, मुदा चूल्हापर वास्तविक भोजन बनाबए खर्च भेल मजदूरीक तीन प्रविष्टि एखन अपूर्ण छल। रुखसाना कहलीह, “जे लोक राति पहरा देलक, जे बासन माँजल, ओ दाता नहि, मजदूर छल। हमर खाता ठीक करबाक नामपर हुनकर घण्टा नहि मेटाउ।” रुहानी सहमत भेलीह। सभामे पहिल बेर भोजनक खर्च-खाना खोलल गेल आ तीनू अपूर्ण

प्रविष्टिक आगे वास्तविक श्रमिकसँ पुष्टि करबाक तिथि लिखल गेल। एकटा पन्ना भरल; तीन घर खाली रहि गेल।

चम्पा कहलीह, “एहि घरसभकेँ अनुमानसँ भरि देलहुँ तँ पछि हमरा सभक जाँचक कोन मुँह रहत?” रुहानी कहलीह, “खाली रहए दियौ, मुदा देयक ठाम लिखू।” कोनो मृतकक नाम ओतय उपमान बनि नहि अएल। सरिताक शोकक बारेमे रुहानी जानैत छलीह, मुदा अपन आश्रयक लिखित निर्णयक वैधताक प्रमाण सरिताक निजी पीड़ा सँ नहि माँगलीह। अस्पतालक मृत्यु-पंजी आ आश्रयक श्रम-खाता अपन-अपन स्थानपर रहल।

माधवक फोन फेर बजल। वितरक पहिल दावा मानि लेबाक बदला दू शर्त पठौने छल —खराब खेप वापस लेबाक पूर्ण पावती आ भविष्यक कारोबारमे नहि बजबाक लिखित वचन। माधव कागद पढ़ि शान्त भेला। “हम खराब माल नहि बेचब; मुदा गलती कहबासँ रोक लगाउ, ई स्वीकार नहि,” ओ कहला। रुहानी हुनका अपन समक्ष हस्ताक्षर करबाक कहलीह, तँ ओ मना कएलनि। “दोकान हमर अछि, निर्णय हमर। अहाँ साक्षी बनी, मालिक नहि।” रुहानी हलुक मुस्की देलीह। दुनूक बीच दूरी पहिल बेर मदतक बाधा नहि बनल।

साँझक पहिने रानी अपन टोलीक दू सदस्य संग सुरक्षित बाहरी सफाईक काज शुरू कएलीह। पहिने टूटल काँच लम्बा डाँटावला औजारसँ हटाओल गेल; भीतरक बन्द निकासपर ‘प्रवेश निषिद्ध, जाँच शेष’ लिखल पट्टी राखल गेल। आश्रयक एक बालक पुछलक जे पानि तँ एखनहुँ ठाढ़ अछि। रानी कहलनि, “एखन बाहरक घावपर पट्टी बाँधल गेल अछि; भीतरक कारण जाँचल नहि। पट्टीकेँ इलाज कहब तँ पहिल बरखामे फेर दुखत।” बच्चा अपन पैतृक झाड़ू छुअए चाहलक; रानी ओकरा सुरक्षित कात हटबैत कहलीह, “पहिने पानि लेल बाल्टी आन।”

रुखसाना सफाई समाप्त भेलाक बाद घण्टा गनि भुगतानक कागद तैयार कएलीह। रानी कहलनि, “ई आश्रयक आजुक सुरक्षित कामक पैसा अछि। ठेकेदारसँ रोकल पुरान दिनक मजदूरी अलग।” रमा ओहि दू दावाकेँ अलग पंजीमे लिखि प्राप्तिक प्रति रानीकेँ देलीह। नगरक पहिले रोकी गेल दिनक मजदूरीक विषयमे तत्काल पूर्ण आदेश नहि भेटल, मुदा रानीक देखाओल वास्तविक सुरक्षित काजक घण्टा आ जोखिमक लिखित आपत्तिक

प्रति जाँच-अधिकारी धरि पठेबाक तिथि निश्चित भेल। रानी कागद मोड़ि अपन अंगोछाक भीतर राखलीह, जतय झाड़ूक सुई रहैत छल।

मतदानसँ पहिने रुहानी फेर व्यवस्था पढ़लीह। दरबज्जाक मुख्य चाभीक एक प्रति निर्वाचित रहनिहार प्रतिनिधिक लग, दोसर निर्धारित रातिक जिम्मेवारक लग; भण्डार खोलबा लेल दू जिम्मेवारक उपस्थिति आ निकासी-पावती; औषधिक सीलबन्द प्राप्तिक सूचना चिकित्सकीय सम्पर्ककेँ, निजी पर्ची ओहीक सुरक्षित अधिकारमे; संकटमे पहिने बचाव, फेर कारण आ समयक लिखित सूचना। प्रतिनिधिक अवधि सीमित रहत, शिकायत सुनबाक अलग दिन राखल जाएत, आ निजी सम्बन्ध बतएबाक बाध्यता नहि।

एक वृद्धा पूछलीह, “जँ चाभी राखनिहार आपस मे झगड़ि पड़त तँ हम बाहर फँसि जाएब?” जुबैदा जवाब देलीह, “सुरक्षित आपात प्रवेशक व्यवस्था अलग रहत। मुख्य फाटकक कुंडी बाहरसँ नहि, भीतरसँ खुलेबाक जाँच आजु कएल जाएत। अग्नि वा चिकित्सकीय आपातकालमे चाभी खोजबाक प्रतीक्षा नहि।” चम्पा पुछलीह, “आ जँ प्रतिनिधि अपने शिकायतक विषय भेल?” रुहानी कहलनि, “तखन ओ निर्णयमे नहि बैसत। शिकायत दोसर निर्वाचित सदस्य आ बाहरी स्वतंत्र सहायिका सुनत, आवश्यक भेल तँ लिखित प्रति शिकायतकर्ताकेँ भेटत।”

बहुमतसँ नियम स्वीकृत भेल। जुबैदा निर्वाचित प्रतिनिधि भेलीह; रुखसाना निर्धारित रातिक जिम्मेदारी स्वीकार कएलीह। दू सदस्य शर्तसहित असहमत रहलाह। एकरा मत-पंजीसँ हटाओल नहि गेल। एक सदस्य रातिक पहराक पारिश्रमिकक स्पष्ट दर माँगलक; दोसर अपन कक्षक गोपनीयताक लिखित आश्वासन। जुबैदा कहलीह, “जाहि शर्तक काम एखन पूरा नहि, ओकरा ‘पूरा’ नहि लिखब।” रुहानी दूनूकेँ संशोधन-पन्ना देलीह। सभा समाप्त करबाक समय कियो ताली नहि बजौलक; रुखसाना भात देखि अएलीह; देगमे पानि बेसी छल। ओ आँच घटा देलीह।

रुहानी मुख्य चाभी जुबैदाक हथेलीपर रखलीह। गुच्छासँ धातुक छोट आवाज निकलल, जे हुनका अपन नाम सन बुझाइत छल। ओ प्रतिनिधिसँ कागदपर ‘प्राप्त’ लिखबौलीह आ अपन नामक पाछाँ ‘पूर्व एकल प्रभारी’ नहि, ‘सदस्य’ लिखलीह। रुखसाना पुछलीह, “अहाँकेँ हलुक लगैत अछि?” रुहानी किछु सोचि कहलीह, “कनेक डर लगैत अछि। जे

अधिकार छोड़ैत छी, ओकर संग भूलक नियंत्रणो छोड़ैत छी। मुदा भूल सबकेँ देखबाक बाट खुलत, ई बेसी जरूरी अछि।”

नब चाभीक पहिल उपयोग भण्डारक सूची जाँचबाक लेल नहि भेल। राति रुखसाना रसोइ बन्द कऽ निकललीह तँ पछिला कक्षक एक लड़की अपन भोरक पढ़ाइ लेल अन्हारमे बोरा पर कागद पसारने छल। ओ पूछलक, “काल्हि एहिठाम बच्चासभकेँ पढ़य देब? हमरा सभक पोथी भीजि जाइत अछि।” नब प्रतिनिधि अपन अधिकारक सीमा पढ़ि कहलनि, “रातिक आगि आ सुरक्षा जाँचि कऽ ई कोठरीक उपयोगपर सभा मे बात होएत। ककरो पढ़ाइ रोकबाक आदेश एखन नहि अछि।” रुहानी ओ उत्तर सुनलीह; निर्णय हुनकर बिना सेहो चलि सकैत छल।

भोरक तैयारीमे जुबैदा ओ खाली कोठरीक फर्श झाड़ि छोट-छोट ईंटक टुकड़ा किनार राखलीह। बाहर सुरक्षित सफाइक बादो नालीक मुँह बन्द रहए, मुदा बरामदाक पानि ओहि राति कक्षमे नहि पैसल। रानीक पुरान मजदूरीक पूरा हिसाब बाकी छल, माधवक वापस कएल मालक विवादित लाभो; नब नियम हुनकर क्षति मेटा नहि सकल। मुदा आश्रयक भण्डार खोलबाक हस्ताक्षर आब दू लोकक छल, आ पढ़बाक कोठरी लेल प्रश्न पूछनिहार बच्ची पहिल बेर नियमक पन्नापर अपन माँग दर्ज करा सकलीह। रुहानी ओकर प्रश्नक आगू खाली तिथि लिखलीह—काल्हि उत्तर देबाक दिन।

अध्याय १४४ • कामक जिज्ञासा

फागुनक भोरमे आश्रयक पछिला कोठरीक दरबज्जा खोलिते जुबैदाक पएरमे खड़ियाक आधा टुकड़ा गड़ि गेल। राति बच्चीसबहक कापीक नीचाँ ईटक टुकड़ा रखल गेल छल, जाहिसँ छतसँ झरैत महीन चून पन्नापर नहि पड़य। फर्शक एक कात बरखाक पुरान गीलापनक कारी रेखा बचल छल। जुबैदा झाड़ू रोकि ओहि रेखापर खड़िया सँ छोट घेरा बनौलीह। रुखसाना पुछलीह, “एहि ठाम बच्चा बैसत?” जुबैदा कहलनि, “एहि ठाम नहि। मुदा ई कारण देखेला बिना नब कोठरीक उद्घाटनक तस्वीर खींचब सेहो नहि।” पिछिला साँझक प्रश्न पूछनिहार बच्ची दरबज्जापर ठाढ़ छल; ओकर हाथमे भीजल कापीक दू पन्ना छल।

२०४०क एहि भोरमे पाठशाला लेल चुनल गेल ठाम आश्रयक ओसार आ लगक खाली बरामदा छल। भीतरक ओ कोठरी मरम्मत-जाँच पूरा होए धरि बन्द रहत। रुहानी स्वयं तख्ती टाँगबाक निर्णय नहि लेलनि; अपन नव सदस्यताक हैसियतसँ जुबैदाक बोलाओल सभामे बैसलीह। रुखसाना रसोइक पहिल देग उतारि आबि सकैत छलीह, कारण भोजन बनाबएवाली दू स्त्रीक अलग मेहनताना लिखल गेल छल। बच्ची कापी बढ़ा कऽ कहलक, “हमर पहिल प्रश्न काल्हि लिहल गेल रहए। आइ उत्तर दी।” जुबैदा तिथि देखौलीह। वचनक समय एखन नहि बीतल छल।

पद्मा लेल अबेर भोर नहि छल; ओ पहिनहि पहुँचल छलीह। हुनकर झोरामे पोथीसँ बेसी खाली कागद, अलग भाषामे लिखल तीनटा छोट निर्देश आ छोट घण्टी छल। संकेत एकटा हलुक रेकॉर्ड करबाक यन्त्र, कापी आ कपड़ाक तह अनने छल; यन्त्रकेँ मेजपर रखने ओहि पर अपन नामक चिह्न राखलक। “एहि ठाम आवाज बाँधि लेब?” एक स्वयंसेवक पूछलक। संकेत उत्तर देलक, “जे पढ़त, ओकर शब्द सीखबाक लेल पुनः सुनल जा सकैत अछि, मुदा जकर आवाज अछि ओकर अनुमति बिना सार्वजनिक नहि। बच्चाक मुँह आ नाम तँ किन्हु नहि।” पद्मा सहमत भेलीह; ओहि दिनक पहिल पाठ ध्वनि नहि, अनुमति छल।

सभामे एक बुजुर्ग कहला, “पाठशाला आश्रयक भीतर अछि तँ आश्रयमे नाम लिखौने लोक पहिने पढ़त।” दरबज्जाक बाहर उभ ठाढ़ एक किशोर लग हाथक ठेला छल। ओ बाजल, “हम आश्रयमे नहि रहैत छी। गाड़ीपर माल पहुँचाबैत छी। साँझमे पढ़बा आउ तँ हमरा फेर बाहर राखल जाएत?” पद्मा ओकर मुँह दिस देखलीह, फेर भीतर बैसल स्त्रीसभ दिस। “एहि ठाम पढ़ाइक अधिकार निवासक पावतीसँ नहि खुलत,” ओ कहलीह, “मुदा आश्रयक निजता बचत। दरबज्जा, समय आ कक्ष अलग होएत। भीतर रहनिहारक निजी पंजी प्रवेशक शर्त नहि बनत।” रुहानीक नजरि क्षण भरि पुरान चाभीवला गुच्छापर गेल।

संकेत फर्शपर तीन भिन्न आकारक चिह्न रखलक—गोला, चौकोर आ लम्बा पट्टी। “केवल अक्षर पढ़ब जाननिहारक लेल नियम लिखलहुँ तँ नियम अधूरा,” ओ कहलक। एक बच्चा गोला उठबैत पुछलक, “अन्हर आदमी एहिमे की देखत?” संकेत ओकरा डाँटलक नहि। पट्टीक उभार छुअबौलक, गोलाक किनार गनबौलक, आ बजलक, “किछु लोक छू कऽ बुझैत अछि, किछु सुनि कऽ, किछु पढ़ि कऽ। ई नमूना सभ पर्याप्त नहि; जाहि व्यक्तिक जे सहायता आवश्यक, ओ स्वयं बतौत।” पद्मा ओकर बात केँ सूचना-पत्रक आगू राखलीह, मानू बच्चा प्रश्नक कारण पाठ्यक्रममे एकटा दरबज्जा खुलि गेल हो।

ओहि बीच सरिता धीरेसँ अएलीह। हुनकर हाथमे नैराक पुरान कापी नहि, अपन घरसँ आनल खाली रेखावला पन्ना छल। ओ कोनाक बिछाओनपर बैसलीह। पहिने दरबज्जापर बैसल बच्ची पूछलक, “नैराक लिखल बात पढ़ाएब?” सरिताक श्वास एक पल अटक गेल। ओ कहलीह, “हुनकर निजी लिखल वस्तु बिना हुनकर सहमतिक अनुमान कऽ सार्वजनिक नहि करब। मुदा जे प्रश्न ओ हमसभकेँ पूछब सिखौने छलीह, प्रश्न पूछबाक साहस पढ़ा सकैत छी।” कबीर किछु देरि बाद आएलाह; ओ पन्ना नहि मँगलनि। दूनूक बीच शोक एखन जीवित छल, कोनो विद्यालयक शुभारम्भ ओकरा काटि नहि सकैत छल।

समितिक कर्मचारी प्रस्ताव अनलक जे पढ़ाइ शुरू करबाक पहिने सभ विद्यार्थीक पूरा परिचय, पारिवारिक इतिहास आ राहत-पावती एकठाम जमा कएल जाए। जुबैदा ओकरा अपन हाथसँ लिखल चारि नियमक प्रति पढ़बौलीह। “राहत लैत छैक कि नहि, ई पढ़बाक

प्रश्न नहि। बच्चाक सुरक्षित सम्पर्क शिक्षक लग सीमित रहत। जकरा नाम सार्वजनिक नहि चाही, तकर उपस्थिति कोडसँ गनल जाए।” कर्मचारी कहलक, “तखन हिसाब कोना देखाएब?” पद्मा उत्तर देलीह, “कतेक लोक पढ़ल, कतेक घण्टा कक्षा चलल, केतेक सामग्री किनल गेल—ई खुलेल। किन्तु ककर सन्तान ककरा सँ डेराइत अछि, ई खाता नहि।”

तखने इरफान खानक पुरान कार्यशालाक छोट गाड़ी आँगन लग ठहरल। गाड़ीमे लोहेक दू मोड़ल चौकी, एक पहीयावला पट्टी आ मरम्मतिक औजारक सन्दूक छल। इरफान गाड़ी बन्द कऽ पहिने ब्रेकक जाँच-पर्ची निकाललनि। “ई पुरान यात्रीगाड़ी नहि,” ओ स्पष्ट कएलनि, “ओकर घिसल बुसिंग आ खराब ब्रेकक बात लिखलापर मालिक दोसर कारीगरक लग गेलाह। हमर काजसँ ओ ग्राहक चलि गेल। ई सामान हम अपन दोसर सुरक्षित गाड़ीमे अनने छी।” किशोर चौकी उतारबाक लेल आगाँ बढ़ल तँ इरफान ओकरा पहिने पहीया स्थिर करब सिखौलनि।

समितिक एक व्यक्ति हँसैत कहलक, “बड़ ईमानदार भेलहुँ, पाठशालाक लेल मुफ्ते दऽ दिअ।” इरफानक हथेलीमे ग्रीसक पुरान रेखा छल। “हमर नुकसान ईमानदारीक शुल्क नहि बनबाक चाही,” ओ उत्तर देलनि, “मुदा श्रमक दाम छोड़ि देब तऽ काल्हि ई बच्चासभ पढ़त जे कारीगरक कामक मोल शून्य होइत अछि। चौकीक किराया नहि लैत छी; गाड़ी आ उतारबाक समयक दर ओहि तिथि अनुसार लिखू जाहि दिन काम भेल।” पद्मा हुनक पर्चीपर सामानक दान, गाड़ीक श्रम आ ग्राहक गमाएल घटनाकेँ तीन अलग घरमे राखलीह। ग्राहकक हानि विद्यालयसँ वसूल नहि भेल।

हरीश पनसारी पाछाँ सँ पहुँचला। हुनकर ठेलापर कागदक थैली, खड़िया, धोबय योग्य कपड़ा आ किछु मसालाक डिब्बा छल। ओ एक पुरान पैकेट मेजपर रखलनि, जाहिपर छपल नाम भीतरक सामानसँ मेल नहि खाइत छल। “ई बेचबाक नहि,” ओ कहला। “थोक दुकानदार कहैत अछि जे खाली छपल आवरणक गलती अछि। मुदा तौल, पर्ची आ भीतरक वस्तु अलग भेटल। हम खेप वापस पठा रहल छी। भाड़ा हमरा देबए पड़त।” जुबैदा पुछलीह, “एहि ठाम सामग्री दी तँ ओहि खेपसँ अलग प्रमाण अछि?” हरीश स्वच्छ पर्ची आ नव मालक खोलल डिब्बा देखौलनि।

हरीशक घरपर वापसीक भाड़ा देबाक मतलब छल जे एहि मासक बचत घटत। हुनका देखैत एक अभिभावक पुछलक, “नकली पैकिंगक झगड़ामे अहाँक दोकानक नाम खराब भेल; हमरा सभ बच्चाकेँ अहाँक माल देब उचित अछि?” हरीश डिब्बा वापस ठेलापर राखबाक लेल बढ़लाह। किशोर हुनका रोकलक, “नाम खराब भेल तँ असली खड़िया सेहो खराब भऽ जाइत अछि?” ओहि प्रश्नपर सभ शांत रहल। हरीश कहला, “जकर खेपक मिलान नहि भेल, ओकरा नहि बेचब। जे सत्यापित अछि, तकर रसीद देब। अहाँ सभ नहि किनब तऽ अधिकार अहाँक।” जुबैदा नव खड़ियाक एक डिब्बा तौलि सार्वजनिक मूल्यपर किनलीह; खराब खेप फिर्तीक खर्च हरीशक नामे अलग रहल।

पद्मा पाठशालाक प्रवेशक पहिल पन्ना भरबैत छलीह जखन आँगनक कातसँ एक युवती कातर आवाजमे कहलनि, “हम अपना नामसँ लिखब, मुदा घरक पुरुष पढ़बाक बात जानत तँ रोकताह।” जुबैदा ओकरा पूरा पंजी देखेबाक आग्रह नहि कएलीह। ओ पूछलीह, “अहाँ अपन सुरक्षित सम्पर्क कोना चाहैत छी?” युवती एक स्त्रीक नाम फुसफुसौलीह। संकेत अपन यन्त्र बन्द कऽ थैलीमे रखलक; एहि उत्तरक ध्वनि कोनो कागदक अधिकारसँ ऊपर नहि छल। पद्मा प्रवेशक क्रमाङ्क लिखलीह, सम्पर्कक पर्ची बंद लिफाफामे सुरक्षित रखलीह। “शिक्षा नब खतरा बनि नहि जाए,” ओ बुदबुदेलीह; युवती कहलीह, “खतरा पहिले सँ अछि; पढ़ब बन्द करब तकर इलाज नहि।”

दुपहरिया धरि पढ़बाक ठामपर लोकपाठ-खुला खाता-गीतक फागुन आयोजनक तैयारी शुरू भेल। एक कोनाक महिलासभ दू पुरान लोकधुनक अभ्यास करैत छलीह। आयोजनक सचिव प्रस्ताव रखलक जे गीत गाबएवाली सभकेँ आशीर्वादक नामपर केवल भोजन देल जाए। रुखसाना अपन चूल्हाक पाससँ बजलीह, “भोजनक लागत गनब, गाबएवालीक समय नहि?” गीतक अगुआ स्त्री बजलीह, “हम सभ अपन मनसँ गाएब तऽ ओ अलग बात; सार्वजनिक आयोजनमे समय बन्हल अछि, ओकर मेहनताना चाही।” खुला खातामे पाछाँ तिथि, समय, गायकक सहमति आ दर लिखल गेल; बच्चासभक बिना सहमति गीतक रेकॉर्ड नहि होएत।

कक्ष सजएबाक लेल पुरान रंगीन कपड़ा मँगाओल गेल छल। एक बालकक पएरमे चुभल बाँसक टुकड़ा देखि चम्पा ओकरा तुरन्त बैठबौलीह। ओ कपड़ा बाँधबाक डोरी

काटि छोट छोर बनौलीह। “आजुक उत्सवमे सुरक्षित औजार के देखत?” ओ पुछलीह। रानी हलालखोर सुरक्षित बाहरी सफाइक टोली सँ गुजरैत छलीह; ओ फर्शक भिजल कातपर कारी निशान देखौलीह। “भीतरक बन्द नाली एखनो जाँचक अधीन अछि। बच्चाकेँ एतय नहि बैसाउ।” जुबैदा नब बैठबाक रेखा चिन्हित कएलनि, आ रानीक टोलीक एहि अतिरिक्त सुरक्षित काजक निर्धारित मजदूरी अलग लिखलीह। पुरान ठेकेदारक रोकल मजदूरी ताहिसँ चुकता नहि मानल गेल।

पहिल पाठक समय पद्मा उपस्थिति पुकारबाक बदला चउकीपर राखल तीन वस्तु देखौलीह—खाली कटोरी, रसीद आ तटबन्धक पुरान नापवला डोरी। “ई सभमे समान की अछि?” एक बालक कहलक, “तीनू खाली।” दोसर कहलक, “डोरीमे गाँठ अछि।” पद्मा हँसलीह। “कटोरी खाली होयब देखल जा सकैत अछि; रसीदमे लिखा बात प्रमाण देखबाक माँग करैत अछि; डोरीक गाँठसँ नदीक आजुक गहिराइ नहि जानल जा सकैत।” किशोरी पुछलक, “तखन नदीक माप जानबाक लेल के जाएत?” संकेत कहलक, “जे जाएत, ओकर सुरक्षा आ श्रमक मूल्य पहिने सोचब।”

पाठ सुनैत कबीरक आँखि एक क्षणसँ बेसी कटोरीपर अटकि रहल। नैरा रहथि तँ शायद कागदक तिथि देखितथि, ई विचार हुनका भीतर उठल; ओ एकरा नैराक मुँहसँ कहल वाक्य नहि बना देलनि। सरिता बच्चासभक बीच घूमि सादा पन्ना बाँटलीह। एक बालिका हुनका पुछलक, “मरि गेल लोक फेर पढ़ाबए अइछ?” सरिता पन्ना देब रोकलीह। “नहि,” ओ धीरे कहलनि, “जे मरि गेल, ओ नहि घुरैत छथि। हुनकर काजसँ हम किछु सीखि सकैत छी, मुदा सीखब ओकर वापस आबब नहि।” बालिका पन्नापर अपन नामक पहिल अक्षर बनौलक।

पाठशालाक दहिना कात एक युवा गीतक पंक्ति पढ़ैत अटकि गेल। संकेत ओकरा अक्षर-फलक दिस धकेलबाक बदला पूछलक, “सुनि कऽ सीखब चाहैत छी, वा एक-एक अक्षर छू कऽ?” युवक पुछलक, “हम राति पहरा दैत छी; आँखि थाकि जाइत अछि। दिनमे पढ़बा समय कोना भेटत?” जुबैदा समय-पंजी खोललीह। आश्रयक पहराक दर एखन संशोधनमे रहबाक बात छल। “दू छोट समय रखू—भोर आ साँझ,” ओ कहलीह, “जे

कमाइ छोड़ि नहि सकैत, ओकरा प्रवेशक दण्ड नहि।” पद्मा लिखलीह जे उपस्थितिक प्रतिशत कम भेला पर नाम नहि काटल जाएत।

ओहि दिनक खुला खातामे पहिले चारि खर्च पढ़ल गेल—सुरक्षित गाड़ीक ढुलाई, सत्यापित खड़िया, सफाई-मजदूरी आ गीतक पारिश्रमिक। एक श्रोता पुछलक, “दान आएल अछि तँ एतेक रसीद किएक?” इरफान कहला, “दान सँ चौकी आ गेल; मुदा गाड़ी चलएबाक घण्टा दान नहि।” रुखसाना जोड़लीह, “रान्हनिहारक हाथो नहि।” गीतक अगुआ स्त्री अपन नामक नीचे सही करैत कहलीह, “गानक पारिश्रमिक लेल छी; एहि आधारपर हमरा निजी जीवनक कथा सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि भेटत।” रुहानी ओहि वाक्यक कागद मोड़बाक अनुमति माँगलीह, पढ़ेबाक नहि।

दरबज्जा लग एक सरकारी सहायक प्रवेश-पत्र देखलक। ओ कहलक, “घरक ठाम नहि लिखल तँ बादमे राशनक पाँति जाँचब कठिन होएत।” पद्मा तुरन्त कहलनि, “विद्यालयक उपस्थिति आ राशनक पात्रता अलग बात।” सहायकक हाथमे पछिला माहक राहत-सूची छल, जाहिमे दू उपनामक वर्तनी अलग-अलग पड़ल छल। ओ मानलक जे काल्हि फेर वितरणक पंजी देखबाक अछि। रुखसाना पूछलीह, “जँ आजु पढ़ि गेल बच्चा काल्हि राशनसँ वञ्चित हो, तँ पढ़ाई ओकर पात्रता सिद्ध करए नहि जायत।” सहायक बोलए लागल, मुदा जुबैदा कहलनि, “त्रुटिक आपत्ति अलग लिखू। एतय विद्यार्थीकेँ कलंकित कऽ कागद नहि सुधरत।”

हरीशक छोट बेटा कक्षा नहि, दोकानक बाँकी माल गनबाक लेल आयल छल। पिता ओकरा एक पन्ना देखौलनि—कतेक थैली वापस जाएत, कतेक पर भाड़ा लगत। बेटा कहलक, “जँ नुकसान होइत अछि तँ गलत आवरणे बेचि दिअ?” हरीश ओकरा थैलीक छपल अक्षर आ भीतरक पदार्थक अन्तर देखौलनि। “पढ़ब ईहो अछि जे नाम आ वस्तुकेँ मिलाउ,” ओ कहलनि। बेटा पुछलक, “तखन उधारक बहीमे जकर नाम गलत अछि, ओकर पैसा के देत?” हरीश पन्ना फेरि अपन पुरान उधारक ग्राहकक वास्तविक नाम जाँचबाक तिथि लिखलनि। ई पाठशालाक गृहकार्य नहि छल; दोकानक आजुक देय छल।

साँझक पाठमे अक्षर पढ़बासँ पहिने बच्चासभ अपन-अपन कामक वस्तु चित्रित कएलक। ककरो घरक सूत, ककरो माछ धरणीक जाल, ककरो पानि ढोएबाक घैल। एक

बालक बड़का गोल रोटी बनौलक, तकरा चारू कात छह पएर। पद्मा हँसि कऽ पुछलीह, “ई कोन जन्तु?” बालक कहलक, “रोटी दौड़ैत अछि; माय जतेक बनेबैत छथि ताहिसँ जल्दी खतम भऽ जाइत अछि।” पूरा बरामदा हँसि उठल। रुखसाना हँसैत कहलीह, “रोटीकेँ पएर देलहुँ तँ ओकरा पकड़बाक अभ्यास पाठ्यक्रममे राखू।” एहन हँसीमे ककरो शोकक स्मृति उड़ा नहि देल गेल; थोड़े काल लेल कक्षक हवा हलुक भेल।

दोपहरक अपूर्ण घण्टा-पंजीपर विवाद फेर उठल। एक अधिकारी गीत, सफाई आ पढ़ाइक कामक रकम एके सार्वजनिक उत्सवक खर्चमे जोड़ी देबाक चाहैत छल। जुबैदा कहलनि, “गीतक रसीद गीतक; शिक्षकक समयक रसीद शिक्षकक; आश्रयक नियमित रसोइक मेहनताना अलग। जे काज अधूरा, ओकरा उत्सवक रंगसँ ढाँपब नहि।” पद्मा अपन मध्यस्थताक आजुक समय लिखलीह; संकेत उपकरणक उपयोगक सीमा लिखलक। कर्मचारी पुछलक, “अहाँ दुनू स्वयंसेवक नहि?” पद्मा कहलीह, “आजुक किछु घण्टा स्वेच्छा सँ देलहुँ, मुदा नियमित कक्षा चलत तँ समयक उचित पारिश्रमिकक व्यवस्था चाही।” समितिक खातामे नब देयक पन्ना खुलल।

एक वृद्धा जे पढ़बाक लेल नहि, पोताक संग अएने छलीह, ओ पुछलीह, “हम अक्षर चिह्नैत नहि छी। सभाक कागद हम कोना बुझब?” संकेत शान्तिसँ ओकरा पास बैसल। ओ मूल निर्णयक सार सुनौलक, आ पद्मा पुछलीह जे कोन शब्दक अर्थ फेर सुनबाक चाहैत छथि। वृद्धा ‘स्वीकृति’ शब्दपर ठमकलीह। “हमर पोता पढ़ि कऽ कहत, हम मानि लेलहुँ—एना नहि,” ओ कहलीह। जुबैदा नियम बदललीह: जे लिखित प्रति नहि पढ़ि सकैत, ओकरा दोसर विश्वसनीय व्यक्तिक उपस्थितिमे मौखिक व्याख्या, प्रश्नक समय आ सहमतिक पृथक चिन्ह भेटत। पोता पहिल बेर दादीक हाथपर अपन हाथ राखि सुनल, हुनकर बदला उत्तर नहि देलक।

सभामे रुखसानाक कहब छल जे पाठशालाक बरामदा राति आश्रयक आपात मार्ग नहि रोकय। एक दल कक्षा समाप्त भेला पर चौकी भीतर धकेलि राखय चाहलक। इरफान चौकीक पएर मापि देखौलनि जे एतेक भीतर रखलासँ आगि लगलापर निकास सँकरी जाएत। “चौकी हम बनौने छी, मुदा सुरक्षित निकासक माप हमर इच्छासँ नहि बदलत,” ओ कहला। चम्पा बच्चासभकेँ अलग सुरक्षित बाटसँ बाहर निकलबाक अभ्यास

करौलीह। आँगनक दरबज्जा खुलल रहल; जुबैदा पहराक पंजीमे ई अतिरिक्त जिम्मेदारी समय सहित लिखलीह।

सभ निर्णयसभक बाद पद्मा प्रवेश-पत्र पढ़लीह। आश्रयक भीतर आ बाहरक लोकक लेल समान पढ़ाइ; निजी निवासक सूचना सार्वजनिक नहि; अलग समयमे कक्षा; उपकरण आ आवाजक उपयोग सहमतिसेँ; बालकक चित्र वा कथा प्रचार लेल नहि; भाषा आ शारीरिक आवश्यकताक अनुसार मदद; भोजन आ मजदूरीक हिसाब शिक्षाक नामपर नहि मेटाएब। एक अभिभावक पूछलक, “एहि सभ नियमसेँ पाठशाला चलत कि कागदे भरल रहत?” पद्मा बगलमे बैसल बच्चाकेँ कागद उठबय कहलनि। बच्चा अपन नाम पढ़ि सुनौलक, फेर पूछलक, “हम काल्हि सेहो अएब?” पद्मा उत्तर देलीह, “हाँ, एहि लेल नियम लिखल अछि।”

रुखसाना आगाँक सप्ताहक पाठक समय तय करैत छलीह जखन एक बचल सहायता-बहीक दू प्रविष्टि पर हुनकर नजरि पड़ल। आश्रयमे रहनिहार दू परिवारक राशन-पर्चीमे पहिचानक वर्तनी अलग छल; एक परिवारक नब आवास-ठाम एखन मुख्य सूचीमे चढ़ल नहि छल। जुबैदा कहलीह, “ई बात काल्हिक वितरणमे फेर अटकत। विद्यालयक पंजी देखाकऽ राशन नहि काटल जाए।” रुखसाना कागदक प्रति अलग निकाललीह आ सम्बन्धित परिवारसभसेँ निजी रूपेँ मिलबाक समय लिखलीह। ओ स्कूलक आँगनमे नाम जोरजोरसेँ पढ़बाक मना कएलीह।

साँझक अन्तिम गीत थमलाक बाद एकटासेँ अधिक लोक एकहि बेर घर घुरल। बरामदामे कापीक पन्ना फड़फड़ा रहल छल, गोड़सेँ बचल धूलि खिड़कीक कात जमल छल। जुबैदा नव चाभी सेँ भण्डार बन्द करबाक पहिने सार्वजनिक खाताक चारि भुगतान आ दू अपूर्ण प्रविष्टि जाँचलीह। हरीश अपन खराब आवरणवला खेप वापस पठेबाक भाड़ाक पर्ची लऽ गेलाह; इरफान सुरक्षित गाड़ीक खाली चौकी फेर उतारि रखलनि। हुनका सभकेँ कोनो पुरस्कार नहि भेटल, मुदा हुनकर नुकसान छात्रसभक मस्तकपर ऋण बनि नहि चढ़ल।

आश्रयक भोरवाली बच्ची अपन कापी जुबैदाकेँ देखौलक। पहिल पन्नापर काल्हुक प्रश्न छल—‘हम पढ़ि सकैत छी?’ तकर नीचाँ आइ तीनटा बाङ्ग अक्षरमे ओकर अपन

उत्तर। जुबैदा कापी फिर्ता दैत कहलीह, “ई पन्ना अहाँक अछि; विद्यालयक हिसाबमे केवल एकटा नब पाठक संख्या जोड़ब।” बच्ची हँसि कऽ बाहर दौड़ल। रुखसाना परसुक राशन-पाँतिक गलती-सुधारक अर्जीक लिफाफा हाथमे लेने ओसारपर अएलीह। जुबैदा ओकरा भीतरक गुप्त नाम नहि पढ़लीह, केवल तिथि आ प्राप्तिक समय लिखलीह। पाठशाला खुलि गेल छल; ओकर पहिल परीक्षा अगिला पाँतिमे होएबाक छल।

अध्याय १४५ • राशनक पाँति

२०४०क फागुनक भोरमे राशन-वितरणक मेजपर राखल धानक बोरीक मुँहसँ दू मुट्ठी चाउर फर्शपर खसि पड़ल। रुखसाना झुकि कऽ दाना समेटबए लगलीह तँ वितरणक सहायक कहलक, “छोड़ि दिअ, हिसाबमे एतेक नहि लिखाइत।” ओ हाथ नहि रोकलीह। “हिसाबमे नहियो लिखाइत, मुदा पाँतिमे ठाढ़ लोकक घरमे एतबो अन्न कम पड़ैत अछि,” कहि ओ बोरीक फाटल सिलाइ देखौलीह। जुबैदा एकटा पुरान कपड़ा आनलीह; चाउर साफ पात्रमे राखल गेल, फर्शक धूरि लागल दाना वितरणसँ अलग। मेजक पाछू पिछला दिन पाठशालामे उपयोग भेल खड़िया एखन राखल छल। रुखसाना ओकरा उठा कऽ तीन निशान खींचलीह—माल भेटल, लोक पहुँचल, आ जे अधिकार एखन अपूर्ण अछि। तीनू एके संख्या नहि छल।

पिछला साँझ ओ जुबैदाक साम्हने दू परिवारक गलत लिखल नामक प्रति अलग कएने छलीह। आइ पर्ची, पुरान रसीद आ परिवारक सहमतिसँ भेटल सीमित कागद राखि अएलीह। आश्रयक निवासीसभक गोपनीय सूची भण्डारक चाभी लग बन्द रहल; वितरण-डेस्कपर ओहि सूचीक फोटो नहि छल। पाँतिमे कियो अपन घरक ठाम कहए चाहैत छल, कियो केवल वितरण-केन्द्रक संकेत। पद्मा पाठशालाक बरामदासँ दू कुरसी आनलीह; एक वृद्धकें बहुत बेर ठाढ़ रहब कठिन छल। “जे जल्दी आबि सकैत नहि अछि, तकर नम्बर पछुआ नहि होय,” ओ सहायकसँ कहलीह। सहायक घड़ी देखैत रहल, मुदा एक खाली पन्नापर विशेष सहायता माँगबाक ठाम बनौलक।

पाँतिक बीच सावित्री सरदारक हाथमे दू अलग गामक मोहरवला कागद छल। नदीक धार बदललाक बाद परिवार दोसर गामक कात बसल छल; पुरान राहत-पंजीमे हुनकर नाम रहि गेल, नब सूचिमे गामक नाम बदलल, आ बीचक महीनामे दूनू कार्यालय एक-दोसराकें जिम्मेवार ठहरौने छल। कर्मचारी नब पर्ची निकालि कहलक, “देखू, नाम सुधरि गेल, आब आपत्ति समाप्त।” सावित्री धवल कागद दिस देखलीह। “नाममे जे भूल छल से सुधरल। मुदा जे महीनामे हम खाली हाथ घुरलहुँ, तकर अन्न कागदमे कतए अछि?”

हुनकर स्वर न बड़ ऊँच छल, न विनतीक। ओ पर्चीक नीचाँ पहिनुक अस्वीकृतिक तिथि लिखवाबए चाहैत छलीह।

अधिकारीक मेजपर दूनू रजिस्टर खोलल गेल। पहिलमे सावित्रीक सुधार आजुसँ प्रभावी देखाओल गेल छल; दोसरमे पहिनुक वितरण-दिनक सामने खाली स्थान छल। कार्यालयक नियम पढ़निहार कर्मचारी कहलक जे पिछला सभ दिनक भरपाईक तत्काल आदेश हुनका लग नहि। सावित्री एक बेर खाली स्थान छूलीह, फेर कहलीह, “तँ एतय ‘भुगतान भऽ गेल’ नहि लिखब।” रुखसाना हुनका केवल आजुक अनाज लेबाक सलाह नहि देलीह। ओ अलग आवेदनक प्रति पढ़ि सुनौलीह—पहिचान-संशोधन स्वीकृत, बीतल अवधिक क्षतिपूर्ति विचाराधीन। सावित्री कहलीह, “आजुक थैला हम लऽ जाएब, मुदा ओकरा पुरान हिसाबक उत्तर नहि मानब।” कर्मचारी पन्नाक बगलमे अलग क्रमाङ्क देलक।

इमलीक गाछक नीचाँ दुलारी राजवार पातर थैला गोड़सँ सटौने ठाढ़ छलीह। हुनकर बहीक दू पन्नापर धानक पुरान ऋण आ राहत-शिविरक भोजन अलग दर्ज छल। काल्हि राति बेटा कहने छल जे हस्ताक्षर कऽ दियौ, एखन अन्न जरूरी अछि; ओ झिड़कने नहि छलीह। मुदा आजु प्रस्तुत प्रपत्रमे फेर ओहि वाक्यक बचल अंश छल—राशन भेटबाक संग ऋणसम्बन्धी समस्त दावा समायोजित मानल जाए। दुलारी कागद घुमा कऽ वितरककेँ देखौलीह। “हमर ऋणक विवाद एक दोकानक अछि, ई चाउर सार्वजनिक सहायता अछि। एकर बीचमे कोन पुल अहाँ बनौने छी?” सहायक कहलक जे छपल प्रपत्र ऊपरसँ आएल अछि।

रुखसाना सभक साम्हने प्रपत्र फाड़लीह नहि। ओ दुलारीक प्रति पर ओहि वाक्यकेँ घेरा देलीह आ मूल प्रति सुरक्षित राखबाक आग्रह कएलीह। गोमतीकेँ खबर पठाओल गेल; ओ समिति-सदस्यक रूपमे अएलीह, मुदा वितरण-कार्यक सम्पूर्ण अधिकार अपने हाथमे नहि लेलीह। ओ सरकारी अधिकारीसँ पुछलीह जे ऋण-त्यागक आदेश कोन कार्यालय जारी कएने अछि। अधिकारी दू गो प्रश्न अलग सुनबाक आदी नहि छल। ओ कहलक, “प्रपत्र सुधारला धरि वितरण रोकि दिऔ?” दुलारी उत्तर देलीह, “गलत शर्त हटे,

वितरण नहि रुकय।” गोमती छोट कागदपर अस्थायी स्पष्ट आदेश लिखबौलीह—

वितरणक हस्ताक्षर केवल अनाज प्राप्तिक प्रमाण, निजी ऋण अथवा दावाक त्याग नहि।

सहायक नया पर्चीक ऊपर कार्यालयक मोहर लगबए चाहलक, मुदा कागदमे बितल दिनक तारीख छपल छल। पद्मा याद देलनि जे गलत तिथि सेहो भविष्यक दावा बिगाड़ि सकैत अछि। तें ओहिपर आजुक सही तिथि आ संशोधनक कारण अलग लिखल गेल; मूल खराब प्रपत्र नष्ट नहि कएल गेल। दुलारी थैला उठबैत कहलीह, “हम नहि चाहैत छी जे हमर बही सभासँ लुकायल रहए; हम ई चाहैत छी जे बिना हमर अनुमति ओकर हिसाब राशनक पाँतिमे नहि चुकाओल जाए।” हुनकर ऋण बचल रहि गेल, विवादो बचल; मुदा आजुक अन्न ओकर बन्धक नहि बनल।

पाँतिक पछिला भागमे अनवरी अपन बेटी रेहानाकेँ सहारा दऽ बैसौने छलीह। रेहानाक पयरक दर्द पुरान जखमसँ जुड़ल छल, आ चिकित्सा-पत्रक एक अंक पहचान-पंजीसँ अलग पड़ल छल। सलमा शेख जाँचक अस्थायी संकेत-पत्र लऽ पहुँचल छलीह। सहायक शिशुक नाम जोरजोरसँ पढ़ए लागल तँ सलमा ओकरा रोकलीह। “उपचार चलैत अछि, ई सत्य चिकित्सकीय पंजीमे अछि। एक अंकक संशोधन बाकी अछि, से सेहो सत्य। बच्चीक दवाइक अगिला घड़ी तक एतय नाम पुकारब जरूरी नहि।” ओ आवश्यक कागद निजी लिफाफामे राखलीह आ केवल वितरण लेल जरूरी परिवार-सङ्केत लिखौलीह।

अधिकारी आपत्ति केलक जे ओहि सङ्केतपर भविष्यमे जाँच कठिन भऽ सकैत अछि। सलमा उत्तर देलीह, “तँ जाँचक सुरक्षित ठाम आ समय लिखू। उपचार रोकेबाक दण्ड पहिचानक गलतीसँ नहि निकलत।” अनवरी पुछलीह, “बेटीकेँ हर बेर एतय आनब पड़त?” सलमा कहलीह जे पहिचान-संशोधनक अलग भेट-समय निश्चित कराओत, उपचारक निरन्तरता अखण्ड रहत। एखन केवल आवश्यक भोजन-सहायताक वितरण होय, चिकित्सा-कक्षमे पूरा कागद सुरक्षित रहय। अधिकारी एक बेर फोन कएलक, फेर अस्थायी स्वीकृतिक अवधि आ बादक समीक्षा-तिथि लिखलक। समयबद्ध अनुमति भेटल, स्थायी अभिलेख-सुधार एखन नहि।

एहि बीच धूप चढ़ि गेल। फागुनक हलुक हवा मे दानाक धूरि आ भीजल बोरीक गन्ध उड़ैत छल। एक बालक अपन मायसँ पुछलक, “हम पाठशालामे लिखलहुँ तँ ई लोक हमर

नाम फेर किएक लिखैत अछि?” माय उत्तर देबाक पहिने पर्ची पढ़ैत रहलीह। पद्मा घुटना मोड़ि बैसलीह। “पढ़बाक पंजी अहाँ पढ़ैत छी से बतबैत अछि; ई पर्ची घरक अन्नक हिसाब पूछैत अछि। एकर गलती दोसरकें मेटा नहि सकैत।” बालक सोचि कहलक, “तँ दुइ ठाम गलत अक्षर लिखल तँ दुइ बेर सुधारब?” कतहु हँसी भेल। पद्मा सेहो हँसलीह, मुदा ओहि दिनक सभसँ कठिन बात बालक सरल बना देने छल।

जुबैदा भण्डारक बाहरी मेजपर साझा रसोइक खर्चक प्रति राखलीह। पूस-माघमे भेल मेहनताना-दिवसक पन्नामे रान्हनिहार, धान साफ करनिहार, बर्तन धोअनिहार आ माल उठेनिहारक दर अलग लिखल छल। एहि बेर राशन-वितरणमे मदद करनिहार स्त्रीसभकें ‘स्वैच्छिक सेवा’ लिखि देबाक प्रस्ताव अएल। रुखसाना कहलीह, “जिनका स्वेच्छासँ मदद करबाक मन अछि, हुनकर नाम अलग। मुदा जे कियो निर्धारित घण्टा काज पर राखल गेल, तकर पारिश्रमिक मेटाएब नहि।” एक वृद्ध रसोइया अपन पाछिला दिवसक अपूर्ण भुगतानक तिथि देखौलीह। आजुक अतिरिक्त भोजनक खर्च ओहि बकायाक बदला गनबाक अनुमति नहि भेटल।

दुपहरि होएत-होएत पाँतिक आकार छोट नहि भेल, केवल चेहरा बदलैत रहल। सावित्रीक नाम सुधारक समाचार सुनि आन गामसँ लोक आएल छलाह। रुखसाना कतारमे आगाँ-पाछाँ चलैत प्रत्येक आपत्ति लिखि नहि सकैत छलीह। ओ गोमतीसँ कहलनि, “आश्रयक चाभी आब जुबैदाक संग साझा अछि; राशनक पाँतिक नाम हमरा एकल प्रतिनिधि बनाकऽ लिखि देब तँ फेर ओही पुरान भूल होयत।” गोमती पुछलीह, “तखन हितग्राही अपन प्रतिनिधि कियैक नहि चुनथि?” अधिकारी कहलक जे कार्यालयक सम्पर्क-व्यक्ति पहिनेसँ तय अछि। सावित्री कहलीह, “सम्पर्क-व्यक्ति दफ्तरक हो सकैत अछि, मुदा हमर बात के कहत, से हम तय करब।”

ओहि बातपर पाँतिक अन्तक लोक सेहो आगाँ अएलाह। एक स्त्रीक शिकायत छल जे सभासँ पहिले बोलनिहार मात्र चुनल जेताह तँ दूरसँ अएनिहार लोकक आवाज फेर हेराएत। दुलारी कहलीह जे आजुक अन्न पहिने बाँटल जाए, तकर बाद चुनावक छोट सभा होय। रुखसाना सहमत भेलीह। ओ आग्रह कएलीह जे अपूर्ण पहिचानवला लोककें मतसँ अलग नहि कएल जाए, जँ हुनकर हितग्राही होएबाक स्थिति समितिक सुरक्षित

अस्थायी सूचीमे दर्ज अछि। व्यक्तिगत नाम माइकपर पढ़ल नहि जाए। तय भेल—
उपस्थित हितग्राही अपन परिवारक एक मत देताह; अनुपस्थित परिवारक नामपर कोनो
कर्मचारी मत नहि देत, आ पछिला दिन धरि आपत्ति लिखि देबाक अवसर रहत।

सावित्रीकें कियो कहलक, “अहाँ खुदे प्रतिनिधि बनू।” ओ एकदम उत्तर नहि देलीह।
“हमर गाम सुधारल अछि, मुदा पिछला अनाज भेटल नहि। हम जँ प्रतिनिधि भेलहुँ तँ
कोनो कहत जे आब अपना मामला छोड़ू।” दुलारी कहलीह, “अहाँक बकाया अधिकार
एहन पदसँ समाप्त नहि होइत। मुदा जँ पदक कारण अहाँ अपन दावाक सुनवाईमे मत
नहि देब चाही, से नियममे लिखू।” गोमती एही अन्तरपर ठहरलीह—प्रतिनिधि
सार्वजनिक हिसाब देखत, मुदा अपन दावाक निर्णय स्वयं नहि करत; न सभ परिवारक
निजी अभिलेख बिना सहमति देखत। सत्ता-छोड़बाक नियम बिना पदकें सेवा कहब
आसान छल, पालन कठिन।

अहर्निश पाँति देखैत अएल एक वृद्ध पुरुष कहला जे प्रतिनिधि चुनला सँ अधिकार
तुरन्त नहि भेटत; सरकारी मोहर त दफ्तरमे अछि। सावित्री कहलीह, “हम मोहर छीनब
नहि चाहैत छी। हम चाहैत छी जे खाली प्रविष्टिक हिसाब लोककें देखाएल जाए।” दुलारी
जोड़लीह, “प्रपत्रक भाषा सेहो हितग्राही पढ़थि, केवल अफसर नहि।” सलमा अपना
चिकित्सकीय काजक कारण मतदानक सभामे बेसी देर नहि रहि सकलीह; अनवरीकें
जरूरी कागदक सीमा बुझा कऽ ओ अस्पताल घुरलीह। बच्चीक अगिला उपचारक समय
निश्चित छल। हुनका लेल प्रतिनिधिक चुनाव ओहि समयकें टारबाक आदेश नहि छल।

दुपहरिक रौद कने नरम भेला पर वितरणक मुख्य देरी घटल। एक विकलांग वृद्धकें घर
तक थैला पहुँचएबाक अलग अनुरोध उठल। दू युवक स्वतः थैला उठा लएबाक लेल तैयार
भेल, मुदा वृद्ध कहला जे सामग्रीक मात्रा हुनकर साम्हने गनल जाए आ प्राप्तिक सही ओ
स्वयं करताह। जुबैदा कहलनि, “सहायता करब अधिकार लेब नहि अछि।” तराजूक काँटा
एक बेर हिलल, तँ माप फेर कएल गेल। वृद्धक सहीक बादे थैला खाना भेल। हुनकर बेटा
चौक धरि पहुँचएबाक जिम्मेदारी लेने छल; युवके सभक नाम वितरणक स्वामित्वमे नहि,
दुलाईक अनुमति-पन्नामे चढ़ल।

साँझक छोट सभामे गोमतीक बगलमे कार्यालयक सम्पर्क-सहायक बैसल, मुदा निर्णयक मेजक आगू खाली कुरसी हितग्राही लेल राखल गेल। रुखसाना मतक प्रस्ताव पढ़लीह—वितरण, अपवाद-पंजी आ बकाया पर निगरानी; निजी आश्रय-पता आ चिकित्सा-अभिलेखक प्रकाशन नहि; हित-संघर्षमे सम्बन्धित प्रतिनिधिक अलग होएब; नियमित हिसाबक सार्वजनिक सार। कियो एकटामे नाम लिखि देबाक बदला उम्मेदवारसभसँ प्रश्न पुछलनि। सावित्रीक साम्हने पूछल गेल जे जँ स्वयं हुनकर भरपाईक पत्र आवत तँ ओ की करतीह। ओ कहलनि, “हमर दावा दुलारीक उपस्थिति आ दोसर सत्यापनमे देखल जाए; हम अपन कागद सँ स्वयं बरी नहि होएब।”

दुलारीसँ पुछल गेल जे कर्जक बही ओ सभाकेँ देखबए देतीह की नहि। ओ बिना झिझक कहलीह, “हमर लिखित सहमतिक जतेक भाग सार्वजनिक करब आवश्यक, ततेक। घरक ऋणक पूरा बही राशनसँ की मतलब?” कियो हँसल नहि। रुखसाना देखलीह जे पहिने प्रपत्र पढ़बासँ मना करनिहार दुलारी आब दूसराक पढ़बाक अधिकारक पहरेदार बनि रहल छलीह। एक युवक जे पुरान राहत-कर्मिकेँ प्रतिनिधि बनएबाक पक्षमे छल, कहलक जे अनुभवी कर्मचारी बिना खाताक काम ठप्प होएत। गोमती स्पष्ट कएलीह—कर्मचारी आपूर्ति चलाओत, लाभुक प्रतिनिधि निगरानी करत; दुनू एके पद नहि।

मतक गणना खुले ओसारमे भेल, मुदा ककरो निजी कागद मंचपर नहि पसारल गेल। सावित्री सरदार मुख्य प्रतिनिधि चुनलीह, दुलारी राजवार सह-प्रतिनिधि। एक वृद्धा माँग रखलीह जे ओ सभ अलग ग्रामक नारीक समस्ये नहि, एकल पुरुष, दिव्यांग व्यक्ति आ अस्थायी ठामपर रहनिहारक शिकायत सेहो सुनथि। सावित्री अपन पहिल निर्णयमे कहलनि, “हम सभक नाम नहि जनैत छी, आ एहिमे शर्म नहि। जे सुनबाक अधिकार चाहैत अछि, तकरा लग हम जाएब।” ओ कार्यालयक सहायकसँ मतगणनाक प्रति माँगलीह। नब पदक पहिल वस्तु फूलक माला नहि, अभिलेखक नकल छल।

चुनावक बाद सावित्री अपन पाँतिक लम्बित क्षतिपूर्तिक पन्ना दुलारीक हाथमे देलीह। दुलारी एहिपर तुरन्त निर्णय नहि देलीह; ओ नब निर्वाचित समितिक अन्य सत्यापकक नाम लिखलीह। दूनु बुझैत छलीह जे आजुक प्रतिनिधित्वसँ पछिला महीनाक खाली भण्डार भरि नहि गेल। मुदा पुरान पन्नापर ‘पूर्ण’ लिखि मामला बन्द करबाक प्रस्ताव

सेहो टरि गेल। एक अधिकारी कहलक जे पिछला वितरणक पुनर्मिलान लेल मूल आगमन-पत्र आ मालक प्राप्ति-रजिस्टर चाही। सावित्री उत्तर देलीह, “मँगाउ। उपलब्ध नहि तँ ‘उपलब्ध नहि’ लिखू। जे बाँचल अछि, ओकरा झूठे पूरा नहि कहू।”

दुलारीक प्रपत्रसँ ऋण-समायोजनक वाक्य अधिकृत रद्द-मोहरसहित हटाओल गेल; पहिनुक गलत प्रति शिकायतक संग सुरक्षित राखल गेल। ओ घरक अन्नक थैला तोललीह, फेर बही बाँधि लेलनि। हुनकर पुरान ऋणक कानूनी स्थिति एखन विवादमे रहैत छल, मुदा राशन रोकबाक धमकी अलग भऽ गेल। दुलारीक बेटा बादमे कहलक, “माय, अहाँक लड़ाइमे आटा भेटल कि कागद?” ओ थैला खोलि ओकरा मुठ्ठीभर दाना देखौलीह। “दूनु भेटल, मुदा पूरा नहि। जँ कागद नहि सुधारितहुँ तँ अगिला बेर फेर खालि थैला रहित।” बेटा चुपचाप थैला घर दिस उठौलक।

सलमाक अस्थायी उपचार-सङ्केत वितरण-डेस्कमे सार्वजनिक पहिचानक सूचीमे नहि चढ़ाओल गेल। अस्पतालसँ खबर आएल जे रेहानाक अगिला उपचार तय समयपर भेल; पुरान अंक-संशोधन लेल अलग साक्षात्कारक तिथि देल गेल अछि। अनवरीक हस्ताक्षर ओहि निजी पत्रपर छल, सार्वजनिक सूचीमे केवल आवश्यक वितरण-संकेत। रुखसाना एहिमे जीतक नारा नहि देखलीह। नियमक एक अस्थायी ढील वास्तवमे एक बालिकाक पीड़ा नहि बढ़ए देलक; मुदा मूल अभिलेखक सुधार नहि भेलासँ अगिला प्रसङ्गमे फेर बाधा उठि सकैत छल। सावित्री ओहि कमीकें खुला अपवाद-पंजीमे बिना नामक उल्लेख दर्ज करबौलीह।

भण्डार बन्द करबाक समय गुरमीत कौर आ जुबैदा मजदूरीक पन्ना मिलौलीह। फाटल बोरीक दानाक हिसाब, स्वेच्छासँ सफाई कएनिहारक नाम, भुगतानपर राखल सहायिका आ दानक रसोइक मात्रा चारि अलग प्रविष्टि भेल। रुखसाना स्वयं आजु पाँतिमे बिताओल घण्टा लिखबाक पहिने ठमकलीह। जुबैदा कहलीह, “अहाँ अपन काज लिखू। आश्रयक नियम सभपर एके लागू होयत।” रुखसाना लिखलीह—बाँटल सामग्रीक देखरेख आ आपत्ति-पत्रक सहायताक समय। भुगतान तय नहि छल; तँ ओकरा स्वयंसिद्ध देय बताओल नहि गेल। मुदा रजिस्टर ओकर दिनकें अदृश्य नहि कएलक।

साँझ घुरैत किछु घुमन्तु परिवार पाँतिक खाली लकड़ीक घेरे लग रुकल। हुनका सभक पास पहिल ग्रामक अनाज-रसीद नहि छल, कारण कामक संग ओ सभ ठाम बदलैत छलाह। एक पुरुषक हाथमे कमाइ लेल दोसर नगर जाएबाक पुरान पास छल; अवधि समाप्त भऽ गेल छल, मुदा पहचानक दोसर प्रमाण ओकरा लग छल। सावित्री कहलनि जे ओ सभकेँ तात्कालिक भोजनक जँ व्यवस्था उपलब्ध अछि तँ अलग जाँचि देल जाए, मुदा नियमित राशनक पात्रता वा यात्राक अधिकारक निर्णय बिना नियम पढ़ने नहि होएत। पुरुष पूछलक, “जँ हम बाट चलबाक कागद सुधरबए जाउ तँ एहि पाँतिक अनाज के उठाओत?” रुखसाना प्रश्न लिखलीह। ओ आजुक सही सुधरल पन्ना बन्द कएने छलीह; एहि नव प्रश्नक उत्तर बिना सुनवाई लिखबाक अधिकार हुनका लग नहि छल।

भोरमे जे दाना फर्शपर खसल छल, ओकर साफ बचल हिस्सा सही तौलमे सम्मिलित भऽ गेल। कोनो चमत्कारसँ खाली महीनासभक अन्न वापस नहि आयल। सावित्रीक नब पर्ची पर गामक नाम सही छल; दुलारीक वितरणक हस्ताक्षर ऋणमुक्तिक कागद नहि रहल; रेहानाक उपचार बिनु बाधा चलल, मुदा पहचानक अंक एखन जाँचमे छल। रुखसाना आश्रयक चाभी जुबैदाकेँ सौँपि पाँतिक नब प्रतिनिधिसभकेँ अपवाद-पंजीक प्रति देलीह। उधर घुमन्तु पुरुष अपन पुरान पास मोड़ि जेबमे रखलक आ फकीराकेँ भेटबाक बाट पुछलक। नव अनुशासनक पहिल दिन लोकक पेट भरबाक संग ओहि बाटक प्रश्न सेहो छोड़ि गेल छल, जकरा सँ घर आ रोजी दूनू जुड़ल छल।

अध्याय १४६ • फकीराक पास

रेलचौकक टिकट-खिड़कीमे लोहेक जाली लग एकटा पीयर पर्ची काँपि रहल छल। फकीरा ओकरा हथेलीसँ सम्हारि कऽ काउण्टरपर राखलनि। कागदक एक कोन बारम्बार मोड़लासँ घिसि गेल छल; ओहि मोड़मे पुरान मुहरक नीला आधा गोल एखनहुँ बचल छल। खिड़कीक भीतरसँ आवाज आयल, “आब तँ नवीन पहचान चाही।” फकीरा उत्तर देलनि, “पहचान हमर बदलल नहि अछि। कार्यालयक कागद हमरा मृत लिखने अछि; आइ ओ गलती सुधारबाक आदेश लऽ अएल छी।” हुनकर पाछाँ काल्हक राशन-पाँतिसँ धुरल घुमन्तु परिवार अपन बाँसक डलिया जमीनपर राखि प्रतीक्षा कऽ रहल छल।

भोरक गाड़ी धरबाक समय कम छल। फकीराक झोलामे छोट तौल-पतरा, गाँठ खोलबाक छुरी, दाम लिखबाक बही आ सुधरल गवाहीक प्रति अलग-अलग तहमे रखल छल। गवाहीक कागद हुनका अस्पतालक पाछाँ सुनल दू लोहेक चोटक स्मृति लेल भेटल छल; ओकरा यात्राक पहचान बनि जाइत देखिकऽ ओहि दिनसँ हुनका खिन्नता छल। “हम एहि पटरीपर बोझा पहुँचबैत छी,” ओ कहलनि, “तँ पास चाही। गवाही देने रही, तँ यात्रा रोकल जाए, ई कोन हिसाब?” खिड़कीक कर्मचारीक हाथ किछु क्षण कीबोर्डपर ठमकल। स्क्रीनपर लाल अक्षरक पुरान स्थिति देखाइत छल।

“जीवितक प्रमाण लिअ,” कर्मचारी कहलक। फकीरा मुस्की देलनि, मुदा ओकरामे हास्यक ओतबे हिस्सा छल जे लाजक। “काल्हि हम एतय आएल रही। अहाँक सामने ठाढ़ रहब प्रमाण नहि भेल; अधुल्लीक छापो देलहुँ। फेर जीवनक कोन अलग पर्ची बनाओल जाए?” कर्मचारी कहलक जे ओकरा पुरान खाताक स्थिति अपने बदलबाक अधिकार नहि। फकीरा नील फाइलक दोसर पन्ना खोललनि। ओहिमे रमा कर्णक कार्यालयसँ जारी अभिलेख-संशोधनक प्राप्ति, मूल त्रुटिक सन्दर्भ आ अधिकृत सत्यापनक निर्देश छल। कर्मचारी पन्ना पढ़लक, मुदा ओहि निर्देशमे यात्रापत्र तत्काल जारी करबाक वाक्य नहि छल।

पाछाँ ठाढ़ पुरुष अपन डलिया परसँ दोसरक हाथ हटबैत कहलक, “हमरो एही जकाँ घुराएल गेल। गाम बदलैत छी तँ नाम पुरान ठाममे रहि जाइत अछि। काजक ठाम पहुँचि

नहि सकब तँ घरमे अनाज कहाँसँ आएत?” ओकर पत्नी हाथमे नन्हा कपड़ाक थैला सम्हारैत छलीह। ओ फकीरासँ पुछलीह, “राशन-पाँतिक प्रतिनिधि हमरा अहाँ लग पठौने छथि। अहाँ सही कागदक बाट बुझैत छी?” फकीरा कहला, “हम ओहि बाटक किछु मोड़ जानैत छी। मुदा हमर पास खुलल नहि, तँ अहाँक पास तुरन्त खुलत—एहन वचन नहि देब।”

प्लेटफॉर्मक बाहर नन्दू नट बाँसक खम्भामे लपेटल कपड़ा कन्धापर उठौने ठाढ़ छलाह। मैना झिलमिलक पुस्तकमे कापीक पन्ना लगा रहल छलीह। नन्दूकें आगामी हाटमे दू छोट प्रस्तुति भेटबाक सम्भावना छल, मुदा आयोजकक कागदमे साँझसँ आधा राति धरि पूरा दलक उपस्थिति लिखल छल। झिलमिलक अगिला भोर पाठशालामे कक्षा छल। नन्दू फकीराक खिड़की दिस कान देलनि आ कहला, “पास नहि खुलत तँ मंचक समान कौन गाड़ीसँ लए जाएब? काल्हि दलक आधा दाम धरि रुकल अछि।” हुनकर प्रश्न फकीराक निजी असुविधासँ अलगे नहि छल।

गाड़ी सीटी देने बिना धीमे चलि गेल। फकीरा ठाढ़ रहलाह। ओ एहि छूटल यात्राकें अपमानक संकेतक रूपमे नहि, अपन बहीक देयमे लिखलनि—आजुक पहिल खेपक मेहनताना नहि भेटल। खिड़कीबला कहलक, “अहाँ चाही तँ प्रतीक्षा-कक्षमे बैसू।” फकीरा कहलनि, “बैसब उचित अछि, मुदा एहि दरमियान जे कमाइ गेल, ओकरा शून्य नहि लिखू। हमरा भोजनक दान नहि, काम करबाक अनुमतिक रास्ता चाही।” कर्मचारी पहिल बेर हुनकर बहीक खाली घर देखलक; ओकरा लग उत्तर नहि छल।

सावित्री सरदार आ दुलारी राजवार राशन-पाँतिक अपवाद-पंजीक प्रति लऽ कार्यालय पहुँचल छलीह। नब प्रतिनिधि होएबाक पहिल दिनमे ओ सभ घुमन्तु परिवारक अधिकारक नियम पूछबाक समय निश्चित कएने छलीह। सावित्री कहलनि, “राशनक नाम सुधरब आ यात्राक पास खुलब दू विभागक काम अछि; मुदा दू विभागक बीच आदमी हराएल रहय, ई नहि मानब।” दुलारी जोड़लीह, “जे लोक भोरमे काज पर निकलैत अछि, तकरा दुपहरिमे उपस्थित रहबाक आदेश कियैक? कार्यालयक समय ओकर पेटक समयसँ फराक अछि।” ओ दुनू सहायता देबाक बदला निर्धारित भेट-समय माँगलीह।

नगर-प्रवेश कार्यालयमे रमा कर्ण पहिनेसँ बैठक लेल फाइल राखने छलीह। ओ फकीराक शपथपत्र मँगबैत पुछलीह, “मूल मृत्यु-चिह्न हटाओल गेल अछि की केवल सुधारक आदेश निकलल अछि?” कर्मचारी कहलक, “मूल प्रेषक-खातामे पुरान स्थिति अछि; संशोधन-सूचना पहुँचि गेल अछि।” रमा दोसर स्क्रीन देखौलीह। “तखन यात्रा-सेवा एही आदेशक आधारपर अन्तिम सत्यापन करू। मूल गलत प्रविष्टि इतिहाससँ गायब नहि होएत; ओकर बगलमे तिथि आ सुधारक कारण जुड़त। कियो पुनः एकर नकल उठा कऽ जीवित लोककेँ मृत नहि कहि सकय, तकर जाँच बाकी अछि।”

फकीरा अपन छड़ी कात राखि कहलनि, “हमर गवाही सुधरल अछि। ओहिमे लिखल अछि जे हम दू चोट सुनने रही, ककरो फाटक तोड़ैत देखल नहि। पास खोलबाक बदला हमरा ओहि वाक्य बदलि दएबाक शर्त नहि देल जाए।” रमा स्पष्ट कएलीह, “नहि। एहिमे कोनो लेनदेन नहि। सुरक्षा-जाँचक प्रमाण अपन ठाम अछि; यात्रा-सेवाक गलती सुधार अलग। अहाँक सुनल आवाजक स्रोत एखन अनिश्चित अछि।” खिड़कीबला कर्मचारी संशोधित बयानक प्रति हुनकर यात्रा-फाइलमे जोड़बाक सोचलक; रमा रोकलीह। “प्रासंगिकता नहि तँ निजी बयान किद्यैक रखबह? केवल जे सत्यापन लेल आवश्यक, ततेक।”

तखन एक सहायक कहलक जे ‘मृत’ स्थिति हटेबाक बाद पुरान यात्रापत्रक अनुपयोगी दिनसभ लेल कोनो राशि स्वतः नहि भेटत। फकीरा सिर हिलौलनि। “हम बुझैत छी। मुदा जकर बहीमे दाम काटल गेल, ओकर दावाक पर्ची लेल अलग खिड़की देखाउ। हम हर दिनक कमाइ सिद्ध नहि कऽ सकब; जतए लिखित समझौता अछि तकर प्रति अछि।” सावित्री तुरन्त कहलीह जे राशनक भरपाई एही दावामे नहि जोड़ल जाए। एकटे लोकक अनेक क्षतिक अर्थ एकटा रकम नहि। रमा आवेदन-खाता खोलबैत दावाक स्थिति ‘प्राप्त, सत्यापन शेष’ लिखौलीह।

बाहरक ओसारमे झिलमिल अपन अभ्यास-पुस्तिकापर अक्षर लिखैत-लिखैत थकलीह। ओकर जूताक फीता बाँसक गाँठमे अटकल गेल छल। मैना फीता खोलैत पुछलीह, “हाटमे गाबए चलब कि कक्षामे रहब?” झिलमिल कहलक, “दुपहरि धरि कक्षा, साँझ दू गीत जँ थाकल नहि रहब। हमर पढ़बाक पुस्तकक पन्ना पर कोनो आयोजक सही

नहि करत।” नन्दू एहि उत्तरकेँ बच्चाक मनमानी कहि खारिज नहि कएलनि। ओ आयोजकक कागद खोललनि। अठारह कलाकारक नामक नीचाँ बच्चासभक पूरा राति रहबाक शर्त छल, जबकि पारिश्रमिकमे घटल अंकक औचित्य ‘लोकहित कार्यक्रम’ लिखल छल।

नन्दू आयोजककेँ फोन लगौलनि। “मंचक समय कम करब, मुदा दामक आधार साफ लिखू,” ओ कहलनि। दोसर दिससँ आवाज आयल, “बच्चासभ नहि रहल तँ कार्यक्रमक रौनक घटि जायत।” नन्दू उत्तर देलनि, “रौनक घटत तँ मंचक योजना बदलिए। बच्चाक पढ़ाइ घटाएब नहि। हमर कला पेशा अछि; लोकहितक नामपर आधा दाम देबाक सहमति पहिने नहि भेल।” आयोजक कहलक जे एहन शर्तपर दोसर दल खोजि लेत। नन्दू छत पर पड़ल धूप देखैत रहला। मैना पुछलीह, “तखन हम सभ की करब?”

नन्दू कहलनि, “पहिने छोट कार्यक्रमक लागत निकालब।” ओ डोरी, ढोलकक चमड़ा, रेल-भाड़ा आ कलाकारक समयक अलग-अलग अंक लिखलनि। झिलमिल अपन गणितक पुस्तक बन्द कऽ पुछलक, “हमरा नहि गेलापर अहाँक दाम घटत?” “सम्भव अछि,” पिता कहला, “मुदा तोहर विद्यालयक समय सस्ता नहि।” ओ निर्णयक कठिनाई लुकौलनि नहि। कलाकारक परिवारमे बालकक आकाङ्क्षा मानि लेबासँ घरे-घरे व्ययक प्रश्न उठैत छल; ताहि लेल बच्चाक आवाजकेँ अदृश्य कऽ देब समाधान नहि।

ओहिठाम फरीद चिक एक कापी आ बाजारक हिसाबक बटुआ लऽ पहुँचलक। ओकर परिवारक छँटनाइ आ बिक्रीक काज भोरमे तेज होइत छल; साँझक कक्षा चुनेलाक कारण पिता हुनका पूराकालिक हिसाबदार नहि राखि सकैत छलाह। फरीद एहि दूनू काजक लिखित समयबँटवारा बनौने छल, मुदा विद्यालयक नव प्रवेश-पत्रमे ‘अनियमित विद्यार्थी’ लिखि फीसक अतिरिक्त माँग जोड़ल गेल छल। “हम दिनक एक भाग दोकान देब,” ओ मैना सँ कहलक, “मुदा विद्यालयक अलग कक्षा चुनने छी तँ ओकर दण्ड कियैक?”

नन्दू हुनकर कापी देखलनि। “अहाँ ताल सीखब चाहैत छलहुँ ने?” फरीद हँसल। “तालो, हिसाबो। केवल कारोबारक नामपर पढ़ाइ छोड़ब नहि; केवल पढ़ाइक नामपर घरक देय नहि बिसरब। पिता संग एतय अएल छी, मुदा निर्णय हमर हस्ताक्षरसँ होएत।” ओहि समय हुनकर पिता बाजारसँ आयलाह। माथपर पसिनाक रेखा छल। “बेटा दोकान

छोड़त तँ हमरा दोसर लोक राखए पड़त,” ओ कहलनि। फरीद उत्तर देलक, “जतेक घण्टा हम देब से लिखू; बाकी लेल कामक दाम तय करू। घरक जरूरत हमर कक्षाकें मिटाबय तें नहि।”

पिता बही खेललनि। ग्राहकक उधारी, मालक लागत आ पाछाँक महीनाक एक अपूर्ण देय छपल छल। फरीद ओहि देयपर उँगरी राखि पुछलक, “ई परिवारक खर्च अछि कि हमर निजी नामपर ऋण?” पिता कहला, “हम सभक साझा हिसाब अछि; बँटवारा एखन नहि।” फरीद कहलनि, “तखन जतेक हम कमाएब ततेक घरमे देबाक लिखित हिस्सा बनाउ। पढ़ाई जारी राखब आ काजक अंशो देब। मुदा हमरा पर पूरे पुरान ऋणक सही नहि कराउ।” पिता पहिने विरोध कएलनि, फेर पाछाँसँ आबि रहल बसक धूरिक बीच चुप भऽ कापी पलटलनि।

रमा बैठकसँ निकलि कार्यालयक परिसरमे अएलीह तँ दुनू परिवार हुनका आवेदन देखौलक। ओ स्पष्ट कएलीह जे विद्यालयक प्रवेशक निर्णय विद्यालय करयत, नगरक यात्रा-दफ्तर नहि; मुदा सरकारी अनुदानवला वर्गमे अतिरिक्त फीसक कारण लिखित देबाक नियम अछि। फरीद कक्षा-प्रभारीसँ फेर सम्पर्क करबाक समय नोट कएलक। नन्दू आयोजन-समितिक संशोधित प्रस्तावक प्रतीक्षा करब स्वीकार कएलनि, मुदा पहिल प्रस्तावपर सहमतिक मुहर नहि लगौलनि। अपूर्ण करार काजक आदेश नहि छल।

उधर फकीराक सत्यापन लेल पुरान खाताक अंक मिलाओल जा रहल छल। एक ठाम परिचयक आगाँ ‘साई फकीर’, दोसर ठाम ‘दीवान मदार’ छल। कर्मचारी पुछलक, “दूनूमेसँ असली कोन?” फकीरा अपन पुरान शब्द फेर कहलनि, “दूनू पंजीक लिखल परिचय छी। हमर स्वनाम फकीरा अछि। जेखनि बोझा लऽ चलैत छी, लोक हमरा कामसँ चिन्हैत अछि। धर्म-पेशा-वंशक शब्दकें गलती सुधारबाक एकमात्र चाबी मत बनाउ।” रमा नामक वैकल्पिक प्रविष्टिसभकें एक आदमीक सत्यापित परिचयक अधीन सन्दर्भ रूपमे राखबाक निर्देश देलीह; बिना हुनकर सहमति कोनो नव सार्वजनिक सूची नहि बनल।

एहि बीच राशन-पाँतिसँ आयल घुमन्तु पुरुषकें एक अधिकारी कहलक, “यात्रा लेल स्थायी घरक पता दिअ।” ओकर पत्नी बीचमे बजलीह, “हम सभ जेठमे उत्तरी हाट आ भादवमे दोसरा नगर जाइत छी। स्थायी पता बनाय दियब तँ काल्हि गलत लिखल

ठहरत।” दुलारी अलग सँ पुछलीह जे आवेदनमे सम्पर्कक स्थायी पद्धति स्वीकार्य अछि की नहि—जकरा कार्यालयसँ बात पहुँचे, मुदा ओ ठाम संपत्तिक स्वामित्वक दावा नहि होअय। कर्मचारी नियमक पन्ना देखलक; एक चलित व्यवसायीक वैकल्पिक सम्पर्क-पता आ समय-सीमित यात्रा-प्रमाणक व्यवस्था ओतय छल, मुदा पहिने उपयोग नहि कएल गेल छल।

सावित्री ओहि नियमक प्रति लिखवौलीह। पुरुष अपन मेटल पासक बदला विधिसम्मत नवीकरणक निवेदन देलक। अधिकारी एकटा गवाहीकेँ पर्याप्त नहि मानलक; ओ पूर्वक मजदूरी-रसीद आ नव सम्पर्क-व्यवस्था माँगलक। परिवारक लग रसीदक आधा हिस्सा छल, बाकी ठेकेदार लग। तत्काल पास जारी नहि भेल, मुदा आवेदन अस्वीकार करबाक बदला कागद-पूरणक निश्चित समय देल गेल। सावित्री पुछलीह, “जँ एही बीच भोजनक जरूरत हो तँ?” रुहानीक आश्रय आ सार्वजनिक राशन-नियमक भेद बताओल गेल; अस्थायी आहारक व्यवस्था निवासक निजी नाम सार्वजनिक केने बिना दर्ज करब तय भेल।

कार्यालयक पछिला कोठरीमे छपाइ मशीन अचानक खरखराए लागल। फकीरा उठलाह, मुदा कर्मचारी कहलक, “अभी नहि।” एक घण्टा पाछाँ गलत अंकक कोड हटेबाक लिखित पुष्टि आयल। पुरान खातेपर संशोधनक तिथि जुड़ल, आ यात्रा-पास पर रोक हटेबाक आदेश अलग सँ सुरक्षित भेल। कर्मचारी नब कार्ड मशीनमे रखलक। फकीरा ओकरा हाथमे लेबासँ पहिने पढ़ि सुनएबाक कहलनि—नाम, अवधि, अनुमत मार्ग, लागत आ पहचान-सूचक। ओ प्रत्येक पाँति सुनलनि; जँ गलती रहितए तँ नव चमकैत कार्ड सेहो पुरान बाधाक रूप लेत।

“एहि कार्डपर अहाँक कानूनी यात्रा-सेवा फेर चालू अछि,” कर्मचारी कहलक। फकीरा पुछलनि, “भाड़ा कतेक?” “जे नियमानुसार सभ पर अछि।” “आ अस्पतालक पुरान गवाही?” “ओ यात्रा-खाताक शर्त नहि।” फकीरा कार्डक कोना अँगुरीसँ जाँचलनि, ओकर बाद अपन बहीमे लिखलनि—‘पास प्राप्त’। पाछाँक खाली घरमे लिखलनि—‘छूटल कमाइक दावा, निर्णय शेष’। ओ कागदसभ घोंटि एक नहि कएलनि।

फकीरा अपन पहिल नब यात्रा तुरन्त गन्तव्यहीन नहि चुनलनि। नन्दू लग ठाढ़ छलाह, हुनकर सामान हाट धरि पहुँचेबाक आवश्यकता छल। “कतेक बोझा?” फकीरा पुछलनि। नन्दू खम्भा, कपड़ा आ छोट वाद्यक वजन बतौलनि। फकीरा दर कहलनि, सुरक्षित चढ़ाइ आ उतराइमे दोसर मजदूरक आवश्यकता बतौलनि। नन्दू कहलनि, “अहाँ जतेक दर कहलहुँ, आयोजक ओतेक देबाक नहि कहने अछि।” फकीरा उत्तर देलनि, “तखन मंचक स्थानपर फेर विचार करू। हमर काजकेँ आशीर्वाद कहि मुफ्त मत करू।” दूनु दाम आ कामक सीमा लिखि सहमत भेलाह।

झिलमिल पिता लग अएलीह। “आइ हम गाड़ीमे नहि जाएब,” ओ कहलीह, “पद्माक कक्षामे अभ्यास अछि।” नन्दू माथ हिलौलनि। मैना ओकर पुस्तकक भीतरी फाटल पन्ना धागासँ बाँधलीह। फकीरा पुछलनि, “तँ साँझ गीत नहि?” झिलमिल कहलक, “गीतक समय फेर भेटत। पढ़बाक समय आइ अछि।” नन्दू बेटीक निर्णयकेँ बहीमे अलग दर्ज कएलनि—प्रस्तुतिमे बच्ची अनुपस्थित, पारिश्रमिकक गणना तदनुसार; बच्चीक पूरा राति उपस्थिति लेल कोनो सहमति नहि।

हाटमे पहुँचलापर आयोजक हुनका सभकेँ किनारक छोट मंच देखौलक। पहिल प्रस्तावमे राति धरि अनिवार्य उपस्थिति छल; आब नन्दूक दबावपर दू घण्टाक प्रस्तुति आ वयस्क कलाकारक अलग पारिश्रमिकक कागद तैयार भेल। राशि पहिल प्रस्तावसँ कम छल, मुदा समय आ देय दुनू स्पष्ट। नन्दू तुरन्त सही नहि कएलनि; दलक आन कलाकारक सहमति लेल पाँच क्षण मँगलनि। मैना कहलनि, “तोड़ि देल मंचक मुआवजा तऽ एहीमे नहि अछि।” आयोजक कहलक जे ओ अलग पुरान दावा अछि। नन्दू ओहि फरककेँ स्वीकार करैत दावा छोड़बाक वाक्य हटबौलनि।

फरीद साँझ अपन पिता संग विद्यालय पहुँचल। हरिमोहन पाठकक भेजल संशोधित समय-पत्र पद्माक हाथमे छल। विद्यालयक लिपिक मानलक जे अतिरिक्त फीस सामान्य दिनक अनुपस्थिति मानि जोड़ल गेल छल; सन्ध्याकालीन स्वीकृत वर्गक विद्यार्थीपर एकरा यथावत् लागू करब त्रुटि छल। ओ पुरान देय मेटलक नहि, ओकर कारण आ सुधारक तिथि संग नव प्रविष्टि बनौलक। फरीद निर्धारित कक्षाक शुल्क चुकएबाक रसीद

लेलनि; परिवारक हिसाबमे अपन अंश जमा करबाक तिथि पिता संग तय कएलनि। हुनकर शिक्षा आब कोनो दानक नामपर नहि छल।

पिता घुरैत कहला, “दोकानक मुनीम जे रोजक समय बचत, तकरा लेल लोक चाही।” फरीद उत्तर देलक, “हम पहिल तीन भोर रहब। बादक चारि भोरक काज जकरा देबह, ओकर दाम पहिने तय करू।” पिता छोटसँ हँसलाह। “अहाँ सभक नव हिसाबमे बापकें भी हस्ताक्षर करए पड़ैत अछि।” “हमर हस्ताक्षर एखनहि सीखल अछि,” फरीद कहलक, “बिना पढ़ने कहियो नहि देब।” दूनुक बीच असहमति समाप्त नहि भेल, मुदा काजक सीमासँ पढ़ाइक ठाम निकलि आयल।

फकीरा साँझ रेलचौकक चायदोकान घुरलाह। पहिने छूटल गाड़ी आ आजुक नब खेपक दू अलग रसीद हुनकर जेबमे छल। दुकानदारक बेटा पुछलक, “आब ओहि रातिक आवाजक रहस्य खुलि गेल?” फकीरा गिलास रखि देलनि। “नहि। हम जे सुनने रही, से सुनने रही। जे नहि देखलहुँ, से आइओ नहि देखलहुँ। पास खुलल अछि, आवाजक कारण नहि।” लड़का पुछलक, “तखन एतेक कागदक फायदा की?” फकीरा झोरासँ नब यात्रा-पास बाहर निकाललनि। “भोरक गाड़ीमे कमाइ करब। ई फायदा छोट नहि।”

रमा कर्ण कार्यालयमे दैनिक निर्णायक रजिस्टर बन्द करैत तीन प्रविष्टि देखलीह— फकीराक यात्रा-अधिकार बहाल, छूटल आमदनीक क्षतिपूर्तिक दावा शेष, घुमन्तु परिवारक नवीकरण लेल कागद पूरा करबाक समय निर्धारित। नन्दूक छोट मंचक अनुबन्ध आ फरीदक सन्ध्याकालीन प्रवेशक रसीद अलग विभागक पन्नामे छल। ओहि कागदसभक संख्या बढ़ल छल, मुदा प्रत्येक पन्नाक भीतर एकटा अलग समय बचल— ककरो भोरक गाड़ी, ककरो साँझक गीत, ककरो पढ़बाक घड़ी।

पाठशालाक ओसारमे पढ़ा अगिला दिनक कक्षाक लेल चटाइ साटि रहल छलीह। संकेत एकटा छोट चलन्त पट्टी बनौने छल, जाहिपर अक्षरक संग हाथक संकेत आ आवाजक अलग सहारा रहय। झिलमिल ओकरा देखैत पूछलक, “एहि पट्टीसँ हम सभ अपन-अपन तरहेँ उत्तर दऽ सकब?” संकेत कहलक, “जे उत्तर अहाँ देब चाही, तकर बाट अहाँसँ पुछि बनायब।” फरीदक नव प्रवेशक पन्ना ओसारमे पहुँचि गेल छल; फकीराक

यात्रा-पास ओहि पन्नामे नहि राखल गेल। बाहिरसँ गाड़ीक हलुक सीटी आयल। कोठरीमे बच्चासभ अगिला दिनक कक्षाक समय लिखैत रहल।

अध्याय १४७ • संकेतक कक्षा

भोरक पहिल उजासमे संकेत बाँसक पतली पट्टीपर सूत कसि रहल छल। ओकर सामने तीनटा कपड़ाक टुकड़ा छल—लाल, पियर आ मटमैला उज्जर। प्रत्येकक पाछाँ मोट अक्षर, उभरल धागा आ छोट लकड़ीक चिन्ह साटल। ओ एकरा कक्षाक दरवज्जापर टाँगबाक सोचने छल, जइ सँ बोलि नहि सकनिहार बच्चा सेहो अपन आवश्यकता जनाबि सकय। पद्मा ओसार झाड़ैत पुछलीह, “एहि लालक अर्थ सभ जानत?” संकेत गाँठ खींचब बन्द कएलक। “हम सोचने रही—मदतिक जरूरत।” पद्मा कहलीह, “अहाँ सोचलहुँ। बच्चासभसँ पुछलहुँ?” पट्टी ओकर हाथमे अधखुलल रहि गेल।

फागुनक हवा रातिक चूल्हिसँ उड़ल राख कक्षाक देहरी धरि लऽ अएने छल। झिलमिल सबसँ पहिने पहुँचलि; नन्दूक छोट मंचक समझौतामे ओकर रातिक उपस्थिति हटि गेल रहैक, तँ आजु ओ निश्चिन्त भऽ कापी खोलि सकैत छलीह। ओ लाल कपड़ा देखिकऽ कहलीह, “ई तऽ खेलक निशान जकाँ अछि। मदति माँगब तखन लगब जखन हमरा कियो सुनत नहि?” संकेत कहलक, “हो सकैत अछि।” फरीद चिक पछिला पाँतिमे बैसि कहलक, “मदति माँगबाक चिन्ह बच्चा तय करत, नहि तँ फेर बड़का लोकक आदेश बनि जाएत।”

रेलचौकक एक बालक अपन कापी बगलमे दबौने अएल। ओकर परिवार चलित काजक कारण ठाम बदलैत रहल छल, आ प्रवेश-पत्रमे स्थायी पता लिखबाक घर खाली छल। साथमे ओकर छोट बहिन छल, जकर नाम मीरा मंडल पहिनुक अस्थायी कक्षाक बहीमे सही लिखने छलीह। नव कार्यालयक लिपिक पुरान पर्ची देखिकऽ कहलक, “ई उपस्थितिक प्रमाण अछि, प्रवेशक नहि। पता केकर लिखब?” बालक बहिनक हाथ कसि लेलक। ओ बुझैत छल जे गलत पता दऽ देलासँ कापी एखन भेटि सकैत अछि, मुदा अगिला जाँचमे फेर नाम कटि जाएत।

मीरा मंडल कक्षामे भीतर एलीह तँ संकेत अपन बनाओल पट्टी हुनका देखौलक। मीरा धागाक उभरल गाँठ छुबि कहलीह, “ई नीक काज अछि, मुदा जे बच्चा रंग नहि देखय, जे धागा नहि छुबि सकय, आ जकरा पढ़ब सीखबाक एखन आरम्भ अछि—सभकेँ एके अर्थ

कोना भेटत?” ओ ओहि बालकक बहिनसँ पुछलीह, “अहाँ जखन किछु बुझि नहि पबैत छी तँ की करैत छी?” बच्ची दू बेर टेबुलपर धीमे थपकी देलक। “आइ एही थपकीकेँ सेहो उत्तर मानू” पद्मा कहलीह। संकेतक चेहरापर अपन युक्तिक प्रति प्रेम आ ओकर अपूर्णताक लाज दुनू एकै बेर उतरि अएल।

पाठ आरम्भ भेल तँ पद्मा बोर्डपर ‘घर’ लिखलीह। झिलमिल अक्षर पढ़लक, बालक शब्द बोललक, एक बच्ची अपन हथेलीसँ छप्परक आकार बनौलक। रचना धिमाल, जे प्रवासी परिवारक मातृभाषाक साप्ताहिक कक्षा चलबैत छलीह, सुनि कहलीह, “सभक घरक शब्द एके नहि होइत अछि। हम अपन घरक बोलीमे कहब, अहाँ सभ अपन शब्द कहू।” ओ दू भिन्न शब्द लिखलीह आ बच्चासँ अर्थ पुछलीह, बिना ई बतौने जे कोन रूप ‘असली’ अछि। पट्टीपर उभरल छप्परक छोट निशान जखन झिलमिलक उँगरी लग पहुँचल, ओ हँसि देलक—“घरकेँ छुबि सकैत छी!”

पद्मा हाजिरीक पन्नापर ओहि बालकक बहिनक नामक आगाँ अस्थायी प्रवेश लिखबैत छलीह। लिपिक आपत्ति कएलक, “स्थायी पता बिना सहायता-राशिक गणना बिगड़त।” मीरा कहलीह, “गणना कठिन अछि, से बच्चाक प्रवेश रोकबाक कारण नहि। जे प्रमाण उपलब्ध अछि से लिखू—अभिभावकक चलित सम्पर्क, पुरान पढ़ाइक प्रति, आ नव सत्यापनक तिथि। पता नहि अछि से बातो दर्ज करू। कल्पित ठाम मत लिखू।” बच्ची अपन नामक अक्षर चिह्नलक तँ लिपिक पन्ना पलटलक; ओकरा शिक्षा-कार्यालयक नियम देखबाक पड़त, मुदा आजुक पाठसँ ओकरा बाहर नहि कएल गेल।

संकेत छोट कैमरा निकालि मेजपर राखलक। पिछला वर्ष ओ किछु पाठक छोट दृश्य बनौने छल, जाहिसँ दूर रहनिहार बच्चा पछिला पाठ देखि सकैत छल। एही कक्षा लेल एक संस्थाक लोक पहुँचने छल—‘सुगम पाठशाला’क प्रदर्शन रिकॉर्ड करबाक प्रस्ताव लऽ। हुनकर प्रतिनिधि कहलक, “एकटा वीडियोसँ दानक बाट खुजल जाएत; बच्चासभक हाथक संकेत देखाओल जाए।” संकेतक अंगुरी रिकॉर्डक बटनपर गेल, मुदा पद्माक नजर पड़िते ठमकि गेल। “पहिने सहमति,” ओ छोट स्वरमे कहलक, “आ सहमति नहि देलासँ पढ़ाइमे कोनो घाटा नहि।”

प्रतिनिधि कहलक, “समूहक कार्यक्रम अछि, एकेक अभिभावकसँ पूछब मुश्किल।” पद्मा तुरन्त कपड़ाक पट्टी कक्षाक बीच रखलीह। “समूह पाठ पढ़ैत अछि, चेहरा समूहक सम्पत्ति नहि होइत। बच्चासभमे किछु आश्रय सँ अबैत अछि। हुनकर ठाम, परिवार आ चिकित्सा-कारण निजी अछि।” जुबैदा, जे आश्रयक नियमक प्रति देबाक अएलीह, एहि बातपर जोड़लीह जे सामूहिक हिसाब सार्वजनिक रहि सकैत अछि, मुदा रहनिहारक परिचय नहि। प्रतिनिधि आश्चर्यसँ पुछलक, “तखन सहयोगक प्रमाण की देब?” संकेत उत्तर देलक, “पाठ्य-सामग्री, खर्चक रसीद आ बिना चेहराक प्रदर्शन; जे व्यक्ति चाही, ओकर अलग स्पष्ट अनुमति।”

झिलमिल पुछलक, “जँ हम अपन हाथ देखेबाक चाही आ चेहरा नहि?” संकेत कहलक, “ओहो अलग निर्णय।” फरीद कहलक, “जँ आइ हँ कहब आ काल्हि नहि चाहब?” पद्मा हुनका देखलीह। “तखन रोकबाक बात सेहो स्पष्ट होयत। किन्तु जे सामग्री पहिने कतहु पहुँचि गेल, ओकरा पूर्णतः वापस आनब कठिन भऽ सकैत अछि; एहि सीमाक बात पहिने कहबाक चाही।” कक्षामे किछु क्षण चुप्पी रहल। संस्थाक प्रतिनिधि अपन तैयार अनुमति-पत्र खोललक; ओहिमे केवल एकटा मोट वाक्य छल—‘प्रचार लेल सर्वाधिकार’। पद्मा कागद वापस करैत कहलीह, “ई सहमति नहि, खाली अधिकार छोड़बाक माँग अछि।”

एहि बीच मदन राउत गाड़ीक आवाज सुनबैत ओसारमे अएलाह। हुनकर वाहन एक दिस विद्यालयक बच्चा, दोसरे समय रोगी ढोबाक लेल माँगल जाइत छल। विद्यालयक नव प्रस्तावमे बिहानक फेरा लिखल छल, अस्पतालक पत्रमे ओही घड़ी रोगी-ढुलाईक सम्भावित बोलाहट। मदन दुनू कागद पद्माक साम्हने पसारलनि। “एकटा गाड़ीमे दू अलग घड़ी नहि अँटत,” ओ कहलनि। “कागदपर ‘जरूरत पड़ला पर’ लिखि देलासँ सड़क दू भागमे नहि बँटैत। जँ रोगी उठेबाक पड़ी तँ बच्चासभकेँ कियो आन सुरक्षित साधन सँ पहुँचाओत, से पहिने निर्धारित होअय।”

एक कर्मचारी कहलक जे विद्यालयक फेरा किछु दिन रोकि मदनकेँ अस्पतालक लेल राखि लेल जाए। झिलमिल अपन कापी बन्द कऽ पुछलक, “तखन हमर पढ़ाई फेर रुकत?” मदन अपन मुँह झुकौने कहला, “तोहर प्रश्न ठीक अछि। रोगीक देरी सेहो जान

पर बनि सकैत अछि।” ओ तुरन्त सुरक्षित विकल्पक सूची माँगलनि—ककर गाड़ीमे बच्चा लेल ठीक आसन अछि, के चालक विश्राम पओने अछि, कोन मार्गमे कादो अछि। रोगी लेल आवश्यक सुविधा बिना साधारण विद्यालय-वाहनकें एम्बुलेन्स नहि घोषित करब, ई बात सेहो स्पष्ट लिखल गेल।

पद्मा आ गोमतीक प्रतिनिधि संग एक छोट बैठक ओहिठाम भेल। निर्णय निकलल जे मदनक भोरक विद्यालय-फेरा निर्धारित रहत; चिकित्सकीय आपात बोलाहट लेल अलग स्वीकृत साधनक पहिल सम्पर्क-पत्र बनत। जँ वास्तवमे एके समय दुइ माँग उठय तँ जिम्मेदार अधिकारी लिखित रूपमे सुरक्षित विकल्प देत, केवल चालककें दोषी नहि बनाओत। मदन वाहनक लग चलि गेलाह, मुदा पहिने अपन देयक पन्ना देखौलनि। बीतल पुनर्निर्देशनक एक फेराक दाम एखन बाकी छल। गोमतीक प्रतिनिधि कहलक, “भविष्यक सूची सुधरल, पुरान दाम अपने-आप नहि मिलत।” भुगतान-खातामे दावा अलग सँ स्वीकार भेल।

दुपहरियामे रचना धिमाल पाँच बच्चाक संग अपन मातृभाषाक पाठ आरम्भ कएलीह। नियमित पंजीमे उपस्थित बच्चा कम देखाइत छल, कारण किछु परिवार प्रवासपर चलि गेल छल। अनुदान देनिहार अधिकारी कहलक जे पाँच जन लेल एक भाषा-कक्षाक शिक्षक-मजदूरी उचित नहि। रचना कागद धऽ उत्तर देलीह, “जँ दस जन नहि भेल तँ पाँचक भाषा मेटा देब? आ फेर स्कूल कियैक अछि?” ओ बचल साप्ताहिक समय, घरक सम्पर्क आ दोसर शिक्षकसँ साझा कक्षक योजना देखौलीह; मुदा अपन परिश्रमकें ‘स्नेह-सेवा’ कहि शून्य दाम मानबाक सहमति नहि देलीह।

रचनाक कक्षामे एक बच्चा अपन दादीक बोलीक शब्द लिखलक; दोसर कहलक जे घरमे ओकरा दोसर नामसँ बजाओल जाइत अछि। दुनू शब्द बोर्डपर रहि गेल। संकेत पट्टीक चित्रमे एक शब्द जोड़ए चाहलक, फेर रुकि पुछलक, “एहि वस्तु लेल घर-घरक नाम राखब तऽ पट्टी भारी नहि भऽ जाएत?” रचना हँसलीह। “पट्टीमे सभ शब्द नहि अँटत, मुदा सभक शब्द सुनबाक अधिकार अँटि सकैत अछि।” बच्चासभ अपन-अपन उच्चारण एक-दोसराकें सुनौलनि। एतय परीक्षा तात्कालिक अनुवादक प्रतियोगिता नहि, बुझबाक आ बुझएबाक अभ्यास बनल।

विद्यालयक कोषाध्यक्ष एक नव शर्तक प्रस्ताव रखलनि—मातृभाषाक कक्षा तखनहि चलत जँ निजी दान आयत। पद्मा विरोधमे कापी खोललीह। “दान भेटल तँ पुस्तक अधिक किनब। मूल शिक्षणक दायित्व दानपर छोड़ि देब ठीक नहि।” रचना लागतक खाता पढ़लीह—कक्षाक उपयोग, शिक्षण-घण्टा, यात्रा, बच्चासभक बदलैत संख्या। मीरा कहलीह जे पहिने सँ चलि रहल अध्ययनक प्रमाण अछि; एकरा शून्य मानि नव आरम्भक भ्रम नहि बनाउ। कोषाध्यक्ष पूरा रकमक तत्काल वचन नहि देलनि, मुदा आंशिक स्वीकृत शिक्षण-घण्टा लिखि शेष प्रस्ताव समितिक बैठकीमे रखबाक तारीख तय कएलनि।

देवी गोंड पाठशालाक पछिला फाटकसँ प्रवेश कएलीह। माथक पुरान चोटक जाँचक कागद हुनकर थैलामे भीतर छल; बाहर केवल नर्सिंग प्रशिक्षणक समय-सारणी। घरसँ दुपहरक भोजन देबाक बाद कक्षा देखए अएलीह, कारण संकेत स्वास्थ्यसम्बन्धी संकेत-कार्डपर हुनकर सलाह माँगने छल। एक स्त्री हुनका देखिते पुछलीह, “अस्पतालक ओहि दिन सभसँ पहिने कोन रोगी गिरल?” देवीक चेहरापर कठोरता उतरि आयल। “आइ हम अस्पतालक गवाही देबए नहि अएल छी,” ओ कहलीह, “किछु चिह्न पढ़ाबए अएल छी। हमरा अपन उपचार आ प्रशिक्षण दुनू जारी रखबाक अछि।”

स्त्री चुप भेलीह, मुदा कक्षामे चुप्पी भारी बनि गेल। पद्मा चटाइपर देवी लग बैसलीह। संकेतक कार्डमे ‘पानि’, ‘दर्द’, ‘आराम’ आ ‘सहायता’क चिन्ह छल। देवी पुछलीह, “ई कार्ड डॉक्टरक परीक्षा बिना रोग तय करब कहैत अछि की केवल रोगी अपन तकलीफ बता सकय, ताहि लेल?” संकेत कहलक, “दोसर।” देवी उत्तर देलीह, “तखन चित्रसँ निदानक दावा हटाउ। कोनो बच्चा छातीपर हाथ राखय तँ ओकरा तुरन्त एक नामक बीमारी मत कहू। पूछू, सुनू, जाँच कराउ।” ओ अपन प्रशिक्षण-पुस्तिकामे ‘लक्षण कहल गेल’ आ ‘चिकित्सकीय निर्णय’क दू अलग घर देखौलीह।

घरक समाचार लऽ एक बालक दौड़ैत अएल। देवीक मायकेँ साँझक दवाइ आ घरक देखभाल चाही छल; भाई कहने छल जे प्रशिक्षण छोड़ि देवी पूरा समय घर रहथि। देवी पत्र पढ़ि ठाढ़ भेलीह। “हम नहि कहैत छी जे मायकेँ छोड़ि देब,” ओ पद्मासँ कहलीह, “मुदा घरमे हमहीं एकमात्र हाथ छी, ई सच नहि।” जुबैदा हुनका कहलीह जे ओ चाहे तँ आश्रयक साझा देखभालक अनुभव देखबए देतीह, मुदा पारिवारिक निर्णय हुनकर रहत।

देवी घरक लोककें फोन कएलनि; प्रशिक्षणक दू नियत दिनक देखभालक समय भाई आ मौसी बाँटि लेबाक बातपर तीख संवाद भेल।

फोनपर भाई पहिने कहलक, “तोहर पढ़ाइ हमर काजसँ पैघ भेल?” देवी उत्तर देलीह, “नहि, आ तोहर काज हमर पढ़ाइसँ पैघ नहि। माय दुनूक छथि। जे दिन हम प्रशिक्षणमे रहब, ओहि दिन अहाँ समय निकालू। बाकी दिन हम देखब।” मौसी अपन सम्भव समय बतौलीह, मुदा चिकित्सकीय काजक नामपर बिना प्रशिक्षणक कोनो जोखिमपूर्ण काम लेबाक नहि चाहलीह। समय-सारणीमे दोसर व्यवस्था तय भेल—अनुमति आ क्षमता अनुसार देखभाल; चिकित्सकीय जरूरत पड़ला पर अधिकृत सेवा। देवी फोन रखिते एकटा छोट साँस छोड़लीह। तय व्यवस्था पूर्ण समाधान नहि छल, मुदा प्रशिक्षण छोड़बाक आदेश रहि नहि गेल।

संकेत ओकरा धन्यवाद देत कागद आगाँ बढ़ौलक। “एहि स्वास्थ्य-कार्डक निरीक्षणक दाम कोना लिखू?” देवी पुछलीह, “आजु जे सलाह देलहुँ से आधा घण्टाक काज छल। विद्यालय जँ एहि सामग्रीक प्रयोग करयत तँ श्रेय आ पारिश्रमिक दुनू तय करू; अस्पतालक गवाहीक लेल कोनो दाम नहि जोड़ू।” पद्मा नोट कएलीह। एतय सेहो एक व्यक्तिक अनुभव अनेक खाता बनि रहल छल—जखमक उपचार, पेशागत प्रशिक्षण, घरक साझा देखभाल आ शिक्षण-सलाह। एकटा खाताक सहानुभूति दोसरा खाताक शून्य दाम नहि बनि सकैत छल।

दोपहरि ढलि रहल छल, मुदा कक्षाक मूल्यांकन एखन शेष छल। पुरान प्रश्नपत्रमे लिखल छल—‘चित्र देखि वस्तुक नाम लिखू।’ जे बच्चा लिखि नहि सकैत छल, ओकरा शून्य अंक; जे शब्द बुझैत छल मुदा अपन बोलीमे उत्तर देत, ओकरा गलत चिह्न। संकेत छोट-छोट कार्ड राखलक। पहिल परीक्षणमे झिलमिल शब्द लिखलक; ओहि बालक वस्तु देखौलक; एक बच्ची लकीर खींचलक; फरीद अपन शब्दक संग दोसर भाषाक नाम जोड़लक। पद्मा उत्तरकें एके शब्दक नकलसँ नहि, अर्थक बुझाइ आ अपन विचार पहुँचबाक क्षमतासँ जाँचबाक नब मानदण्ड लिखलीह।

लिपिक कहलक जे जिला-कार्यालयक वार्षिक परीक्षा एही रूपमे नहि मानत। पद्मा उत्तर देलीह, “ओहि परीक्षाक अपेक्षा अलग स्पष्ट करब। मुदा विद्यालयक दैनिक

अभ्यासमे बच्चाक ज्ञान छिपेबाक की आवश्यकता? लिखबाक कौशल जे सीखए बाकी अछि से अलग सिखाउ; अर्थ बुझल अछि तँ ओकर प्रमाण अलग दर्ज करू।” ओ तीन पन्नाक मूल्यांकन बनौलीह—समझ, सम्प्रेषणक माध्यम, आ अभ्यासक अगिला जरूरत। बच्चासभकेँ पुछल गेल जे हुनका कोन माध्यम सहज लगैत अछि। कियो हाथ चुनलक, कियो बोली, कियो अक्षर; कोनो बालककेँ एक विधिमे सदा लेल बन्द नहि कएल गेल।

एहिमे एक अनपेक्षित घटना भेल। संकेतक बनाओल चलन्त पट्टीक पियर खिड़की अचानक अटक गेल, आ बच्चासभ एक सुरमे कहए लागल, “सर, अहाँक उपकरणो उत्तर नहि दऽ रहल!” संकेत पट्टी हिला रहल छल, तखने झिलमिल ओकरा थपकी देलक—ठीक ओही दू धीमा थपकी जे ओहि बालकक बहिन भोरमे देलने छलीह। पूरा कमरा हँसि उठल। संकेत पहिले लजा गेल, फेर स्वयं हँसल। ओ कहलनि, “अच्छा, पहिल नियम—जँ यन्त्र अटकि जाए तँ ओकरा सेहो मदति चाही।” बच्चासभक हँसीमे किछु क्षण लेल दुर्घटनाक थाकल नगरक उदासी हलुक भऽ गेल।

साँझक आगाँ मीरा मंडल विद्यालयक कार्यालयमे पहुँचलि। ओहि बालकक बहिनक अस्थायी प्रवेशक प्रति पर ‘पता सत्यापन शेष’ लिखल छल; संगहि एक स्पष्ट आदेश—ई प्रक्रिया चलैत रहलासँ विद्यार्थीकेँ कक्षासँ बाहर नहि कएल जाए। पद्मा पुछलीह, “अहाँक पुरान चलन्त कक्षाक सहायक शिक्षकक मजदूरीक की भेल?” मीरा अपन पुरान बही खोललीह। दू अवधिक उपस्थिति प्रमाणित छल, मुदा भुगतानक कार्यालय ओकरा स्वैच्छिक काज कहि टारने छल। “स्वेच्छासँ बच्चा पढ़ाओलहुँ, ई सच अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जखन निर्धारित समय आ जिम्मेदारीक लिखित स्वीकृति देल गेल, तखन ओ अवधि अलग देखबाक चाही।”

खाता देखनिहार कर्मचारी कहलक जे छोट अनुदानमे एहि देय लेल ठाम नहि। मीरा उत्तर देलीह, “आइ बच्चाक प्रवेश देबाक खुशीमे पुरान सहायकक मेहनत नहि मेटाउ।” विद्यालयक पहिनुक स्वीकृति-पत्र, उपस्थिति आ ओहि समयक निर्धारित कामक मिलान भेल। सब अवधि एक समान प्रमाणित नहि छल; जकर लिखित आधार स्पष्ट छल, ओकर देयक अनुशंसा कएल गेल। बाँकी अवधि लेल व्यक्तिगत गवाही आ पाछाँक प्रतिवेदन

मँगाओल गेल। मीराक चेहरा उतना उज्जर नहि भेल जतना बच्चासभक नाम जुड़लापर भेल छल, मुदा फाइल अब ‘निःशुल्क सेवा—समाप्त’ नहि रहल।

रचना धिमाल अपन पाँच विद्यार्थीकेँ विदा करैत बहीमे लिखलीह—आजुक उपस्थिति पाँच, संवादक माध्यम तीन, आगामी सप्ताहक प्रवासी परिवारसँ सम्पर्क दू। कोषाध्यक्षक पत्रमे आंशिक शिक्षण-घण्टाक स्वीकृति अएल, मुदा बाकी मजदूरी लेल बैठकीक तिथि रहि गेल। रचना पत्र मोड़ि अपन पुस्तकमे राखलीह। ओ बच्चासभसँ कहलीह, “अगिला बेर अपन घरक एक शब्द अनब; जकर घर बदलैत अछि, ओ अपन रास्ताक शब्दो अनत।” बच्चासभ अलग-अलग दिशामे चलि गेल। एके भाषाक कक्षा कहबाक बावजूद हुनकर बोलाइमे कतोक स्वर छल, आ कियो एकटा स्वर दोसरा पर शासन नहि करैत छल।

देवी गोंड प्रशिक्षण-केन्द्र घुरबाक पहिने घरक समय-सारणी फेर फोनपर पुष्ट कएलीह। माथक चोटक अनुसरण-जाँच लेल हुनकर तिथि अलग रहत, आ अस्पतालक घटना सम्बन्धी पहिनुक सीमित बयान अपने ठाउँ। संकेत हुनका नब कार्डक एक प्रति देखौलक। देवी तीन ठाम चिन्ह लगौलीह—दर्द बतएबाक चिन्हक लग प्रश्नचिह्न, सहायता माँगबाक लग विकल्प, आ चिकित्सकीय निर्णयक लग प्रशिक्षित व्यक्तिसँ सम्पर्कक सूचना। “आब ई बच्चाक हाथमे दऽ सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा डॉक्टरक स्थानपर नहि।” हुनकर छोट हँसी संकेतक उत्साहसँ भेटल, बिना ककरो अतीतक घाव मेटौने।

पद्मा दिनक अन्तमे पुस्तकसभ समेटैत संकेतक बिना चेहराक बनाओल नमूना देखलीह। संस्थाक प्रतिनिधि फेर पत्र पठौने छल—अर्थ, खर्च आ उपकरणक सार्वजनिक विवरण स्वीकार्य; विद्यार्थी वा आश्रयक रहनिहारक वीडियो लेल स्वतंत्र सहमति आवश्यक। पद्मा पत्रपर तुरन्त हस्ताक्षर नहि कएलीह; विद्यालयक समितिक नियम आ बच्चा-अभिभावकक समझाइब बाकी छल। संकेत पहिल बेर अपन कएल सामग्रीकेँ ‘अपन’ कहि बेचनिहार उत्साहसँ अलगे रखलक। “पट्टी हमर हाथसँ बनल,” ओ कहलक, “मुदा एहि पर अभ्यास करनिहारक आवाज हुनकर अछि।”

पाठशालाक नव निर्णय-पंजीमे चारि अलग परिवर्तन जुड़ल—पता बिना बच्चाक अस्थायी प्रवेश, मदनक वाहनक सुरक्षित समय-विभाजन, रचनाक मातृभाषा-पाठक

आंशिक मान्यता आ देवीक प्रशिक्षणक संग घरक देखभालक साझा समय। संगहि चारि शेष प्रश्न लिखल गेल—सहायक शिक्षकक बकाया, मदनक पुरान फेराक दाम, रचनाक बाँकी शिक्षण-मजदूरी आ संकेतक सामग्री बनएबाक वास्तविक श्रमक मूल्य। किताब बन्द करैत पढ़ा देखलीह जे केवल ‘प्रवेश निःशुल्क’ लिखब आसान छल; व्यवस्था चलबएवला लोकक काजक दाम लिखब कठिन।

ओसारमे आखिरी बेर झिलमिल घुरि अएलीह। “काल्हि परीक्षा अछि?” ओ पुछलक। पढ़ा कहलीह, “काल्हि अहाँ की बुझलहुँ, से अपन ढङ्गसँ देखायब। मुदा फीसक कागद सेहो बैठकमे रखब।” झिलमिल अपन कापीक बीच संकेतक पट्टीक नन्हा कागदी चित्र राखि लेलक। “ई हमरा देल गेल अछि?” “हाँ, चित्र अहाँक,” संकेत उत्तर देलक, “मुदा अहाँक कापीक फोटो हम बिना पुछने नहि लेब।” बाहर साँझक धूसर उजास उतरि रहल छल। पढ़ा फीस-पंजीक खाली घरपर कलम राखलीह; काल्हिक निर्णयमे पाठक मूल्य आ काजक मूल्य दूनूकै ठाम देबाक छल।

अध्याय १४८ • पद्माक फीस

भोरक घाम पाठशालाक ओसार धरि पहुँचबासँ पहिने पद्मा टेबुलपर तीनटा बही पसारि देलीह। पहिल बहीमे बच्चासभक नामांकन, दोसरमे शिक्षकक घण्टा, तेसरमे फीसक खाली खाना। रुखसानाक रसोइसँ उठैत जीराक सुगन्ध खिड़की धरि अबैत छल। काल्हि झिलमिल पुछने छलीह जे पढ़बाक दाम के देत। पद्मा आइ ओहि प्रश्नकें केवल बच्चाक मुँहपर छोड़ि नहि सकैत छलीह। ओ खाली खानामे पहिने लिखलीह—विद्यार्थीसँ प्रवेशक नामपर किछु नहि। फेर कलम ठमकि गेल; कक्षाक भाषा बुझएब, पर्ची पढ़ि सुनाएब आ दुनू पक्षक सहमति लिखब, से ककर काम मानल जाएत?

विद्यालयक लेखा देखनिहार लिपिक पुरान स्वीकृति-पत्र घुमबैत कहलनि, “एतय शिक्षणक एकटा मानदेय अछि। अनुवाद, भाषा मिलान, घर-घरक भेंट, ई सभ सेवा नहि तऽ की?” पद्मा पिछला सप्ताहक तीन रसीद देखौलीह—मातृभाषा-कक्षाक अभिभावक बैठकमे बिताओल समय, आश्रयक गोपनीयता बुझाएबाक लेल अलग घण्टा, आ बच्चाक मूल्यांकन-पद्धति पर कार्यालयक प्रश्नक लिखित उत्तर। “ई सभ पढ़ेबाक घण्टाक भीतर नहि छल,” ओ कहलीह। “एकरा मुफ्त मानल जाए तँ लागत गायब नहि होएत; केवल करनिहारक नाम मेटा देल जाएत।”

लिपिक किछु आहत भेलाह। “अहाँ स्वयं कतेक बेर निःशुल्क सहयोग कएने छी।” पद्मा कहलनि, “कएने छी, आ आगाँ सेहो करब। मुदा जाहि दिन हम अपन इच्छासँ समय देलहुँ, ओकरा संस्था आदेश देल कामक संग जोड़ि नहि सकैत। स्वेच्छा हमर निर्णय छल; दोसराक बजट बचएबाक स्थायी उपाय नहि।” ओ दूटा अलग कागद आगाँ सरकौलीह। एक पर लिखल छल—स्वैच्छिक, अवधि आ स्पष्ट सहमति। दोसर पर—निर्धारित भाषिक मध्यस्थता, समय, जिम्मेदारी, पारिश्रमिक आ गोपनीयताक शर्त। लिपिक दुनू कागद किछु बेर धरि उलटैत रहलाह।

ओहि बीच दुआरपर कैचीक हलुक खनखनाहट भेल। सरस्वती ठाकुर अपन काजक झोरा कन्हापर लटकौने एलीह; बेटी हाथमे टूटल रेडियोक सुरक्षित खोलल खोल आ तारक चित्र लेने छल। “प्रशिक्षण-केन्द्रक अर्जीक आखिरी दिन अगिला सोम,” सरस्वती

कहलीह। “फीस एखन पूरा नहि जुटल, मुदा नाम जरूर देब।” बेटी किछु कहलनि नहि। ओ संकेतक बनाओल पट्टीपर एक टेढ़ रेखा देखैत छल, जेना तारकें आवाज बनबाक बाट पूछैत हो। पद्मा हुनका अपन गणनाक कागद लग बैसएबाक संकेत देलीह।

सरस्वती अपन दिनक कमाइ बतौलीह। भोरमे अस्पताल लग रोगीक परिजनक बाल सम्हारब, दुपहरि किछु ग्राहक, साँझमे घरे जा कऽ वृद्ध स्त्रीसभक सेवा। जँ बेटीकें प्रशिक्षणपर छोड़ए जाएब तँ भोरक दू ग्राहक छुटताह। “एकर दाम किओ देत?” ओ पुछलीह, फेर स्वयं कहलीह, “हम देब। मुदा अपन जेठानीसँ काम बाँटबाक बात कएने छी; ओ चाहतीह तँ हुनकर घण्टा आ कमाइ सेहो लिखब।” बेटी पहिल बेर स्पष्ट बजलीह, “हम अहाँक कैची नहि लेब। हमरा तारक सुरक्षा सीखबाक अछि।” सरस्वती हँसि कहलीह, “तोहर बाट कैचीक छायासँ छोट नहि होएत।”

प्रशिक्षण-फॉर्ममे ‘पारिवारिक पेशा’क घर छल। कर्मचारी बेटीकें नौआ लिखबाक सलाह देने छलाह, कारण आवेदन जल्दी जाँचि जाएत। सरस्वती कागद अपन दिस खींचि कहलीह, “घरक काज हमर अछि, सीखबाक विषय ओकर। दुनू एक नहि।” पद्मा पाठ्यक्रमक उपलब्ध सूची पढ़ि सुनौलीह। यन्त्रक मरम्मत आरम्भ करबाक पहिने विद्युत्-सुरक्षा आ उपकरण निःशक्त करबाक अभ्यास अनिवार्य छल। प्रवेशक गारंटी किओ नहि देलक; आवेदन जमा भेल, शुल्कक एक हिस्सा रसीदसहित देल गेल, बाकी लेल निश्चित तिथि लिखल गेल। सरस्वती अगिला तीन दिनक काजक घण्टा फेर सँ बाँटि देलीह।

“अहाँ ई फार्म बुझौलहुँ, तकर फीस हम दै छी,” सरस्वती अपना झोराक गाँठ खोलैत कहलीह। पद्मा हाथ रोकि देलीह। “ई सार्वजनिक प्रवेश-सहायता अछि, अहाँसँ नहि लेब। विद्यालय जँ हमरा निर्धारित समयपर परिवारसभकें लिखित नियम समझएबाक जिम्मेदारी देत, ताहि लेल संस्थासँ मेहनताना माँगब।” सरस्वतीक हाथ गाँठपर ठमकि गेल। “तँ अहाँक काजक दाम केतय जायत?” “आजुक बहीमे अलग लिखल जाएत,” पद्मा उत्तर देलीह। सरस्वतीक आँखिमे आभारसँ बेसी सन्देह छल; बिना रसीदक उपकार ओ बहुत देखने छलीह। पद्मा समय आ कार्यक छोट पर्ची हुनका थमा देलीह।

दुपहरियामे नन्दू नट मंचक बाँस लऽ गेलाह; हुनकर दलक हिसाब अलग छल। हुनक पाछाँ हरि नटुवा अपन बेटा अंशुक संग पहुँचलाह। हरिक हाथमे कार्यक्रम-आयोजकक पत्र

छल। पत्रमे नीक पारिश्रमिकक प्रस्ताव, मुदा शर्त—मंचपर ‘गँवार’ बोलीक नकल, अपन जाति आ पेशाक उपहास, आ दर्शककेँ हँसएबाक लेल एक बालककेँ झूठ-झूठ अपमानित करबाक दृश्य। हरि पत्र टेबुलपर राखि देलनि। “हँसी कमाइ छी, अपमान उधार नहि बेचब,” ओ कहलनि। अंशु अपन कापी खोलि शान्त बैसि गेल।

समितिक एक सदस्य कहलक, “मंचपर तऽ अभिनय होइत अछि। अहाँ वास्तविक अपमान कियैक बुझैत छी?” हरि उत्तर देलनि, “अभिनयमे पात्रक हँसी होइत अछि, मुदा एहि पत्रमे हमरा अपन लोकक नाम लऽ सभकेँ नीचाँ देखएबाक कहल गेल अछि। बच्चा जँ एहि दृश्यमे हँसत तँ काल्हि ओकर सहपाठी ओकरे लेल ओ शब्द दोहराओत।” ओ अपन प्रस्ताव रखलनि—गीत, कथा, ढोलक आ श्रमिक जीवनक रंगमंच; बाल कलाकारक समय सीमित, पढ़ाइक घण्टा अक्षुण्ण, आ दाम पहिने लिखित। आयोजक तुरन्त स्वीकार नहि कएलनि।

अंशु धीरे सँ कहलक, “बाबू, ओ दाम बेसी अछि। हमर नब कापी, पुस्तक, विद्यालयक यात्राक खर्च...” हरि हुनकर बात काटलनि नहि। “तोहर कापीक लेल हम अपमानक दाम लेब, तखन पुस्तकमे जे पढ़ब से कोना मोन रहत?” ओ पुछलनि। अंशु थाकल स्वरमे उत्तर देलक, “हम तऽ चाहैत छी अहाँक कला चलय।” पद्मा प्रस्ताव कएलीह जे विद्यालयक लोकपाठमे हरिक दल प्रदर्शन करय, मुदा ‘मुफ्त सांस्कृतिक सेवा’क नामपर नहि। कार्यक्रमक कोषमे जतेक वास्तविक धन उपलब्ध अछि, ओतेक दाम आ समय स्पष्ट कएल जाए।

आयोजकक प्रतिनिधि फेर फोन केलनि। “अपमानक शर्त हटाउ तँ दर्शक कम आएत,” ओ कहलनि। हरि फोनक आवाज सुनि उत्तर देलनि, “दर्शक कतेक आएताह, से अहाँक अनुमान। हमर अपमान कतेक होएत, से हमरा पता अछि।” कार्यक्रम छोट कएल गेल, दाम सेहो पहिल प्रस्तावसँ कम भेल; मुदा मंचक भाषामे अपमानक आदेश हटाओल गेल। हरि लिखित संशोधित अनुबन्धपर हस्ताक्षर कएलनि। ओहि दिनक अग्रिमसँ अंशुक दू पुस्तक आ अगिला सप्ताहक यात्राक किराया लेल अलग लिफाफा बनल। पूरा शिक्षाखर्च एखन नहि जुटल छल।

ओसारक दोसर कात नसीमा शेरशाहबादी पोथीक फाटल जिल्द पर सूत खींचि रहल छलीह। हुनकर बेटी विद्यालयक अन्तरिम प्रवेशपत्र लऽ बैसल छलीह। पुरान विद्यालयसँ स्थानान्तरण प्रमाणपत्रक सत्यापित प्रति पहुँचल छल, मुदा नब पंजीमे नामक एक अक्षर फेर बदलल गेल छल। कतारमे ठाढ़ एक युवक बेटीकेँ घरक बोलीमे किछु कहैत सुनलक आ ओहि ध्वनिक नकल कऽ हँसए लागल। बेटी अपन ओठ भींचि लेलनि। नसीमा सूई सुरक्षित कपड़ामे खोंसि ठाढ़ भेलीह। “मजाक भेल तँ लिखल जाए,” ओ कहलीह, “तकर बाद बुझल जाए जे गलती ककर।”

विद्यालयक कर्मचारी युवककेँ चुप करौलनि, मुदा कहलक जे “एहि बोलीमे पाठ पढ़ेब मुश्किल होएत।” पद्मा कापी मँगौलीह। बेटी मैथिलीक परिचित दू शब्द आ घरक बोलीक दू शब्द लिखि देखौलीह; अर्थक मिलान पर दुनू पक्ष एक-दोसराक बात बुझि सकल। पद्मा कहलीह, “अर्थ बुझबाक कठिनाइ रहल तँ हम पद्धति बदलब। बच्चाक आवाज बदलि कऽ ओकरा पढ़बाक अनुमति नहि देब।” ओ औपचारिक शिकायत दर्ज करौलीह। युवकक नाम बिना ओकर पक्ष सुनने दोषी घोषित नहि भेल, मुदा घटनाक लिखित अभिलेख आ कक्षामे भाषा-परिहास रोकबाक स्पष्ट सूचना जारी भेल।

नसीमा पहिने सँ अपन प्रौढ़-अध्ययन कक्षाक फॉर्म लऽ राखने छलीह। बेटी पुछलक, “अहाँ सेहो हमर विद्यालयमे पढ़ब?” नसीमा मुस्करौलीह। “तोहर घण्टा अलग, हमर साँझक। हमरा कागदक जिल्द सिएब अबैत अछि, मुदा किछु नियम अपने पढ़ि बुझबाक अछि।” कर्मचारी कहलनि जे प्रौढ़-कक्षामे स्थायी पताक पुरान विकल्प नहि चलत। पद्मा वर्तमान सम्पर्क-पता आ पूर्वक प्रमाणक मिलानक प्रक्रिया समझौलीह। नसीमाक आवेदन स्वीकार कएल गेल, आ बेटीकेँ कक्षामे निरन्तर बैसबाक लिखित अनुमति भेटल। अन्तिम अभिलेख-सुधारक तिथि अलग पंजीमे रहि गेल।

नाम लिखबाक समय नसीमा फेर अपना उच्चारणक अनुरूप अक्षर कहलीह। लिपिक एक बेर गलत दोहरौलनि, फेर नसीमासँ पूछलनि आ सही उतारलनि। बेटी पन्ना देखैत कहलक, “एहि बेर नाम हमरा जकाँ सुनाइत अछि।” नसीमा मुँह पर हाथ धरि हँसलीह। “नाम सुनि लेब पहिल पाठ अछि,” ओ कहलीह, “आ बच्चाकेँ उपहास नहि करब

दोसर।” पोथीक मरम्मतिक बिल ओ अपन हस्ताक्षरक संग देलीह। ओकर पारिश्रमिक भाषा-शिकायतक बदलामे राहत नहि छल; पोथी सिएबाक अलग काजक दाम छल।

दुपहरक बैठकमे पद्माक बही फेर खुलल। अध्यक्ष पूछलनि, “मध्यस्थताक फीस जँ तय करब तँ गरीब परिवार प्रवेशक पहिने कतार छोड़ि भागत।” पद्मा जिरहक तैयारीसँ एलीह। “परिवारसँ फीस नहि; जे संस्था नियत भाषा-सहायता, स्वीकृति-पत्रक व्याख्या वा प्रशिक्षणक सामग्री बुझएबाक काम लेत, ओकर बजटसँ।” ओ विद्यालय, आश्रय आ निजी ठेका—तीनू स्रोतक अलग जिम्मेदारी देखौलीह। निजी ठेकेदारकेँ कानूनी शर्त पढ़बएबाक सेवा चाही तँ ओकर खर्च गरीब श्रमिकक मजदूरीसँ काटल नहि जाएत।

एक सदस्य पुछलनि, “तखन मानदेय कतेक? झूठ समय जोड़लासँ कोन रोकत?” पद्मा अपन घड़िक सूई देखलीह। “घण्टा लिखब, विषय लिखब, कार्य पूरा भेलाक पुष्टि दू पक्षसँ लेब; मुदा गोपनीयता चाहनिहार व्यक्तिक नाम सार्वजनिक बोर्डपर नहि चढ़त। जँ सेवा केवल स्वेच्छासँ देल गेल अछि तँ दाम नहि माँगब। जँ संस्था आदेश देलक, पाठ तैयार करौलक, निश्चित दिन राखलक, तखन श्रम पंजीमे अवश्य जाएत।” लेखा-कर्मचारी औपचारिक नमूना मँगलनि; अनुमान मात्रपर भुगतान स्वीकृत नहि भेल।

संकेत अपन चलन्त पट्टी लऽ बैठकमे अएल। “एहि चित्रसभमे हमर श्रम अछि,” ओ कहलक, “मुदा बच्चासभक उच्चारण हमर सम्पत्ति नहि।” ओकरा एक स्थानीय समूह प्रस्ताव देने छल जे पट्टीक संग विद्यार्थीक आवाजक रिकार्डिंग जोड़ि बेचब। ओ मना कएने छल। पद्मा कहलनि, “पट्टीक बनावट, सुरक्षित उपयोगक प्रशिक्षण आ मरम्मतिक दाम तय होएत। विद्यार्थी वा आश्रयक रहनिहारक आवाज अलग सहमति बिना नहि।” संकेत हँसि कऽ पुछलक, “आ जँ कियो चित्रक बदला थपकी दए उत्तर देत?” “तखन पहिने ओकर थपकी बुझब,” पद्मा कहलीह, “रसीद बादमे।”

कक्षामे एक नन्ही बच्ची अपन उत्तर चित्रसँ देलक, मुदा लेखा-कर्मचारी ओकरा लिखित अक्षरक अभ्यासक सूचीमे शून्य देखैत छलाह। पद्मा दूटा रजिस्टर लग राखलीह—अर्थ बुझबाक मूल्यांकन आ अक्षर लिखबाक अभ्यास। “ई बच्ची वस्तु पहचानि रहल अछि,” ओ कहलीह, “लिखबाक शिक्षा बाकी अछि। दुनू परिणामकेँ एक बनाकेँ नहि राखू।” लिपिक एहि भेदकेँ स्वीकार करैत दैनिक प्रगतिक पन्ना बदललनि। शिक्षकक अतिरिक्त

आकलन-घण्टा सेहो गनल गेल, मुदा अधिकारीक हस्ताक्षर बिना भुगतानक अन्तिम स्वीकृति नहि मानल गेल।

आश्रयक जुबैदा दुआर लग अएलीह। एक परिवारकेँ उपचारक निर्देश अपन बोलीमे बुझबाक आवश्यकता छल। पद्मा हुनकर सहमति सुनि अलग छोट कोठरीमे गेलीह; कियो कैमरा नहि खोललक। चिकित्सकक लिखित निर्देश ओ जतेक बुझि सकलीह, ओतेक सरल भाषा मे सुनौलीह, आ अस्पष्ट दवाइक मात्रा फेर चिकित्सकसँ पुष्ट करबौलीह। “हम भाषाक पुल छी, चिकित्सक नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। परिवार वापस जाइत काल पुछलक, “हमरा एखन पैसा देबाक अछि?” जुबैदा उत्तर देलीह, “नहि। एतय सेवा लेबाक लेल निजी परिचय सार्वजनिक नहि करबाक अछि।”

पद्मा ओहि घटनाक समय संस्थाक गोपनीय पन्नामे मात्र लिखलीह—निर्देश स्पष्ट करब आ चिकित्सकीय पुष्टि लेल सहयोग। ओ परिवारक नाम सार्वजनिक व्यय-सूचीमे नहि लिखलीह। लेखा-कर्मचारी पुछलनि, “नाम नहि तँ भुगतानक प्रमाण?” पद्मा स्वीकृत सेवा-सङ्केत, तिथि, अवधि आ जिम्मेदार व्यक्तिक हस्ताक्षरक व्यवस्था देखौलीह। “जाँच लेल सीमित पहुँच रहत,” ओ कहलीह, “सार्वजनिक बोर्डपर निजी जीवनक प्रदर्शन नहि।” रुहानी एहि नियमक प्रति देखलनि आ कहलीह जे आश्रयक बहीक गोपनीयता केवल शिष्टाचार नहि, सुरक्षा अछि।

ओहि साँझक लेखा-चर्चामे रुखसाना झोरामे राखल रसोइक रसीद लऽ पहुँचलि। “अहाँक भाषिक काज लेल मानदेयक बात ठीक,” ओ कहलीह, “मुदा विद्यालयक कोषमे जे चाउर आयल अछि, ओकरा एक पन्नामे शिक्षाक शुल्क कहि नहि जोड़ू। आश्रयक भोजन, बाल-पाठशालाक किताब आ अनुवादक श्रमक स्रोत तीनू अलग देखाउ।” पद्मा सिर हिलौलीह। खातें टेबुलपर जगह कम छल, तँ कापीक बीच एक पुरान अखबार राखि अलग पाँति लिखल गेल। लिपिक पहिने खिसिया गेलाह जे फेर नब कागद, मुदा अन्ततः स्वीकृत धनक सीमा कहि देलनि। आब मदति करबाक भाषा लेखाक खाली घर लुकेबाक उपाय नहि छल।

भोजनक समय सरस्वतीक बेटी संकेत लग बैसि टूटल रेडियोक खोलक माप बनबैत छलीह। ओकरा प्रशिक्षण-केन्द्रसँ सूचना आयल छल—फॉर्म स्वीकार भेल, प्रवेशक

परीक्षण अगिला सप्ताह; आजुक जमा फीस वापस नहि होएत, परिणाम तखनहि पता चलत। सरस्वती दू ग्राहकक समय जेठानीकेँ देने छलीह। घरक कमाइ घटल नहि कहब असत्य होइत; हिस्सा कम भेल छल, मुदा जेठानीक कमाइ आ लागत लिखल गेल। बेटी पुछलक, “जँ हम परीक्षणमे नहि चुनायलहुँ?” सरस्वती कहलीह, “तखन फेर सीखबाक बाट पूछब। तोहर एक दिनक हार हमर पेशामे कैद नहि करब।”

हरि नटुवाक संशोधित कार्यक्रम संझियाक मैदानमे भेल। ढोलकक ध्वनि आउर बन्हल रहस्यमय रातिक बीच ओ वृद्ध श्रमिकक कथा गाबि रहल छलाह—एक पुरुष जे अपन औजार गनैत गनैत देखैत अछि जे ओकर औजारसभ ओकर मेहनतक हिसाब सँ बेसी जानैत अछि। दर्शक हँसलाह, मुदा ककरो जाति वा बोलीक अपमानपर नहि। एक छोट बच्चा अंशुसँ पुछलक, “तोहर बाबू एतेक कथा कोना याद रखैत छथि?” अंशु कहलक, “हम ओहि कथा लिखि देब, ओ हमर गणितक गलती देखताह।” हरिक मुखपर थकानक संग नव चमक छल।

प्रदर्शन समाप्त भेला पर आयोजकक प्रतिनिधि सभसँ नीक गामक बोली ‘मजेदार’ कहि फेर अगिला बेर पुरान अपमानकारी दृश्य जोड़बाक संकेत देलक। हरि दामक शेष रसीद लऽ कहला, “आजुक काजक देय पहिने पूरा करू; अगिला कार्यक्रमक शर्त फेर पढ़ब।” ओहि क्षण मंचक बत्ती मद्धिम भऽ रहल छल। हरिक ढोलकपर हथेलीक आखिरी थाप ठीक ओहि समय पड़ल, जखन अंशु अपन पुस्तक बन्द कएलक। दुनूकेँ अलग-अलग कमाइ आ पढ़ाइक घड़ी भेटल छल, भले घरक सभ खर्च एखन निपटल नहि छल।

विद्यालयमे साँझक समिति पद्माक प्रस्तावक प्रत्येक घर पर चर्चा कएलक। सेवा-सङ्केत, सत्यापित घण्टा, संस्था-वार बजट, गोपनीयताक सीमा, स्वैच्छिक कार्यक पृथक स्वीकृति—पाँच नियम स्वीकार भेल। मुदा सम्पूर्ण मध्यस्थता-शुल्कक प्रस्ताव एकहि दिन पारित नहि भेल; परीक्षण-अवधि लेल सीमित घण्टाक मानदेय स्वीकृत भेल, शेष लेल अगिला वित्तीय बैठकक तिथि लिखल गेल। पद्मा एहि आंशिक निर्णयपर हस्ताक्षर कएलनि, मुदा पन्नाक खाली स्थानमे ‘बकाया शेष’ लिखब नहि बिसरलीह।

मीरा मंडल सहायक शिक्षकक पुरान मजदूरीक प्रति लऽ अएलीह। “आइ मध्यस्थताक मूल्य लिखल गेल,” ओ कहलीह, “तखन पिछला चलन्त कक्षाक समयो विसरि नहि

जाए।” पद्मा पुरान स्वीकृति आ उपस्थिति आधारपर प्रमाणित घण्टाक देय-खातामे प्रक्रिया जोड़बौलीह; अस्पष्ट अवधिक दावाकेँ अनिर्णीत रखलीह। मदन राउतक अधोषित पुनर्निर्देशनक किराया आ रचना धिमालक बाँकी शिक्षण-घण्टा सेहो दोसर विभागीय पन्नामे रहि गेल। एकटा नव नियम पुरान सब दाम चुकबैत नहि छल, मुदा बुझबाक जिम्मेदारी ककर, से किछु साफ भेल।

राति उतरि गेलापर नसीमा पोथी सिएबाक रसीदक एक प्रति अपना झोरामे राखलीह। बेटी अपन नाम सही लिखल प्रवेश-पर्ची फेर देखलक। “माय, आइ ओ युवक हँसला पर किओ रोकलक, मुदा काल्हि?” नसीमा उत्तर देलीह, “काल्हि किओ फेर हँसि सकैत अछि। ताहि लेल आजुक शिकायतक प्रति राखलहुँ; तोहर पढ़ाई जारी रहत।” बेटी पुछलक जे ओहो कखन अपन आवाजक रिकार्ड बनौत। नसीमा कहलीह, “जे दिन तोरा चाहत, आ जे प्रयोजन तोरा बुझाइट, ताहि दिन। एखन अपन नाम अपने कापीमे लिख।”

कक्षाक बाहर एक पुरान सूचना-पटपर कागदक कोना हिलि रहल छल। ओहि पर बच्चा चोरीक डर सँ जुड़ल एक अस्पष्ट आरोपक पुरान प्रति चिपकल छल, जे पहिनुक सार्वजनिक खण्डनक बादो नहि हटाओल गेल छल; ओकर कात बरखा सँ गलि गेल छल। पद्मा ओकरा देखि तुरन्त ककरो दोषी नहि मानलीह। ओ प्रशासनक पत्रक नकल सँ मिलानक निर्देश देलीह, आ गलत प्रमाणित भेल सूचना हटेबाक विधि पुछलीह। ओहि ठाम पहुँचल जानकी कहलीह, “पहिने सुधार भेल छल, तैओ ई प्रति बचल अछि। केवल कागद हटब नहि; जे हमर नाम कहिकऽ सुनौल गेल, ओकरा सार्वजनिक रूपसँ फेर ठीक करब जरूरी अछि।” पद्मा हुनका ठाढ़ रहबाक ठाम देलीह।

सबक बाद पद्मा मेजपर लौटलीह। पहिल बहीमे नसीमाक बेटी सहित प्रवेश-क्रम स्पष्ट छल; दोसरमे सरस्वतीक बेटी, संकेतक उपकरण आ शिक्षकक घण्टाक अलग सूची; तेसरमे नब स्वीकृत मध्यस्थताक सीमित दाम आ बाकी समयक देय। ओ खिड़की बन्द कएलनि तँ बाहर बालकसभक अभ्यासक आवाज एखन सुनाइत छल। फीसक खाली खाना आब एकदम खाली नहि छल; ताहि भरल अक्षरक भीतर श्रम करनिहारक नाम आ सीखए चाहनिहारक स्वतन्त्र बाट दुनू बाँचि गेल छल। जानकीक हाथमे रहल पुरान आरोपक प्रति, मुदा, मेजक एक कात अभी खुलल छल।

अध्याय १४९ • जानकी खण्डन

विद्यालयक पुरान सूचना-पटक शीशामे दशर नहि छल, मुदा भीतरक कागदक कोना बरखाक नमीसँ पीयर पड़ि गेल छल। जानकी ओ कागदकेँ खींचि निकालबाक बदला असद सैयदक प्रतीक्षा करैत ठाढ़ छलीह। हुनकर झोरामे दरीक दू अधबुनल किनारी, छूटल हाटक भाड़ाक रसीद आ पहिने भेल सार्वजनिक खण्डनक मोड़ल प्रति छल। पटपर चिपकल शब्द एखनहुँ हुनकर दलकेँ बच्चा चोर कहैत छल। कागदपर जे तिथि छल, ओ तिथि लताक बेटा मिथुन हरएबाक दिनसँ अलग छल; ई भेद पहिने सिद्ध भऽ चुकल छल। मुदा भोरमे दू अभिभावक पर्ची पढ़ि फेर अपन बच्चाकेँ जानकी लगसँ हटा लेने छलाह।

असद चाभी लऽ अएलाह। “ई कागद हम आइये उतारि सकैत छी,” ओ कहला। जानकी उत्तर देलीह, “उतारू, मुदा पहिने एकर फोटो आ पटमे लागल अवधि लिखू। फेर बताउ जे जखन पहिल सुधारक कागद विद्यालयक मुहरसँ छपल, तखन गलत पर्ची एतए कोना रहि गेल।” असद काँच खोललनि। भीतरक कागद हटबैत हुनकर हाथ हलुक काँपल। ओ पहिने गलत आरोपवला सूचना विद्यालयक नाममे देखलाक बाद एकर असत्यापित पाँति चिन्हित कएने छलाह; संशोधित बयानो जारी भेल छल। आजुक प्रश्न ई नहि छल जे हुनका गलती बुझाईत अछि कि नहि, प्रश्न छल जे सुधार विद्यालयक सभ जगह धरि पहुँचलबाक उत्तरदायित्व के निभाओत।

प्रधानाध्यापिका कार्यालयसँ निकलि बरामदामे अएलीह। असद पुरान सूचनाक नकल, पहिल सुधार, बाजार समितिक कार्यवाही आ पटसँ उतारल कागद चारि अलग खाममे राखलनि। जानकी कहलीह, “हमरा नाम सभठाम गलतीसँ फैलल, मुदा सुधार एके दुआरपर चुपचाप टँगल। जे लोक पुरान संदेश देखलन्हि, हुनका तक नब बात पहुँचेबाक उपाय चाही।” प्रधानाध्यापिका कहलनि जे विद्यालय सभक फोन नियंत्रित नहि करि सकैत। जानकी सेहो ई दावा नहि कएलीह। ओ मांगलीह—विद्यालयक अपन पट, अपन पत्र, अपन सभा आ अपन आधिकारिक संदेशक प्रत्येक जगह एके स्पष्ट सुधार; निजी मोबाइलक प्रसार लेल अलग सूचना आ अनुरोध।

एहि बीच राजो भोगता काठक पातर पट्टीसभ लऽ अएलीह। हुनकर बेटी विद्यालयक सहायता-सूचीमे नामक प्रतीक्षा करैत छलीह। राजो पटपर खाली स्थान देखैत पुछलीह, “आब हमरा कागद कतय लगत? कार्यालय कहैत अछि पहिने पुरान गामक प्रमाण दियौ; नब किरायाक घर देखबैत छी तँ दू नाम मानि रोकि दैत अछि।” असद हुनकर आवेदनक पुरान क्रमाङ्क याद कएने छलाह; अंतिम अंक समान रहबाक कारण कखनो ई फाइल दोसर परिवारक सहायता-पन्नासँ मिलि गेल छल। राजो साफ कहलनि जे गामक घर हुनकर पैतृक सम्बन्ध देखबैत अछि, किरायाक रसीद वर्तमान रहबाक ठाम; दू ठामक कारणेँ बच्ची दूटा नहि भऽ जाइत।

प्रधानाध्यापिका राजोक प्रमाणसभ सार्वजनिक मेजपर पसारि देबाक प्रस्ताव कएलीह। राजो रोकलीह। “एहि कागदमे हमर पुरान घरक लोकक नाम अछि; बच्चीक सहायता लेल सभक पता ओसारपर किएक पढ़ल जाए?” पद्मा कक्षासँ निकलि अएलीह आ फाइलक उद्देश्य सीमित करबाक व्यवस्था सुझौलीह—प्रवेशक वर्तमान सम्पर्क, पिछला विद्यालयक सम्बन्ध, सहायता-वितरणक पात्रता आ मजदूरीक देय चारि अलग पन्ना। राजो स्वीकार कएलीह जे कर्मचारी नियुक्त ठाममे मूल देखथि; सार्वजनिक सूचीमे बच्चीक नाम आ निर्णयक स्थिति मात्र आए। हुनकर पुरान ग्राम-प्रमाणकेँ झूठ कहबाक कारण समाप्त भेल, मुदा सहायता रकमक अन्तिम स्वीकृति एखन शेष रहल।

जानकी राजोक बात सुनि अपन फाटल झोरा खोललीह। भीतर हाटक एक रसीदपर कोनासँ लिखल छल—‘विवादक कारण स्थान न देल गेल’। तीन सप्ताहक लेल दरी बेचबाक जो ठाम ओहि समय तय छल, ओकर अग्रिम वापस भेटल नहि; बाजार समितिक पिछला निर्णयमे आर्थिक क्षतिक आवेदन स्वीकार भेल छल, रकम निर्धारित नहि भेल। “हमरा सहानुभूति नहि, एहि रसीदक हिसाब चाही,” जानकी कहलीह। विद्यालयक लिपिक पुछलक जे विद्यालय किएक हाटक नुकसान देत। जानकी उत्तर देलीह, “जे संस्था अपन गलत शब्द फैलौलक, ओकर हिस्सा जाँचू। हाटक ठेकेदारक निर्णय अलग जाँचू। सभ दोष एकठाम लिखब हमर मांग नहि।”

सरयू रेलपुलसँ आबि चुकल छलीह। हुनकर घुटना दुखैत छल, तथापि ओ दरीक नमूना संग लेने छलीह। ओ पटपर टाँगल नब खाली कागद देखलीह आ कहलीह, “लोग कहत जे

हम सभकेँ माफी मिलि गेल, आब पर्ची लगबएबाक की जरूरत?” जानकी उत्तर देलीह, “माफी ककरो मनमे रहि सकैत अछि; गलत पर्ची जे दोकान आ विद्यालयमे लागल छल, ओकर सुधरल प्रति ओतए देखेबाक अछि।” सरयू अपन बिक्री-बहीक पन्ना खोललीह। आरोप पसरलाक बाद तीन निर्धारित हाट-दिनमे शून्य बिक्री लिखल छल, मुदा शून्यक कात ओ ग्राहकक नाम नहि बनौने छलीह जकरा ओ नहि देखलने छलीह।

असद एकटा पुरान फोन निकाललनि। एहिमे विद्यालयक नामसँ पठाओल छोट संदेश एखन सुरक्षित छल, जकर अन्तमे बादमे अज्ञात व्यक्ति जोड़ल ‘सन्दिग्ध दल’क पाँति छल। मूल प्रेषणक समय आ परिवर्धित प्रतिक समय मेल नहि खाइत छल। “जे भाग हमरा कार्यकालमे बिन जाँच पठाओल गेल,” असद कहलनि, “ओकर सुधार हम अपन हस्ताक्षरसँ करब। मुदा एहि फोनक फाइल ककरा बदलल, तकर जाँच अभी शेष अछि।” जानकी कहलनि, “सुधारमे ई सेहो लिखू जे बदलनिहार अज्ञात अछि। दोषी खोजबाक नामपर फेर कोनो कर्मचारी वा समुदायकेँ अनुमानसँ अपराधी मत बनाउ।”

ओहि समय साजिद नट कैमरा राखि पहुँचल। ओकर लग विद्यालयक नाटक-अभ्यासक मूल दृश्य छल, वनफाटकक पुरान यात्री-दृश्यक स्रोत-सम्बन्धी विवरण छल, आ बाजारमे पसरल काटल वीडियो सुरक्षित निरीक्षण लेल छल। साजिद फोनक पर्दापर बच्चासभक चेहरा देखेबाक पहिने पूछलक जे उपस्थित लोकमे के अधिकृत निरीक्षक अछि। सभाक भीड़क सामने वीडियो चलएबाक प्रस्ताव ओ अस्वीकार कएलक। “पहिने सेहो लोक रंगीन पर्दाकेँ बच्चा लुकएबाक सामान कहि देने छल,” ओ कहलक। “आब साबित करबाक नामपर ओही बच्चासभक मुँह फेर बजारमे किएक पठाबी?” असद निरीक्षणक सीमा लिखलनि; मूल फाइलक प्रति सुरक्षित रहत, खुला पटपर केवल प्रमाण-सम्बन्धी विवरण।

लता बरामदामे अएलीह तँ बैठकक बेंचपर फाइलक भीड़ देखि हुनकर देह अकड़ि गेल। मिथुनक खोज एखन समाप्त नहि भेल छल। ओ जानकी लग बैसलीह, मुदा अपन आवेदनसँ बच्चाक निजी विवरण बाहर निकालबाक अनुमति नहि देलीह। “हमर बेटा एखनहुँ नहि भेटल,” ओ कहलीह, “एहि बातकेँ जानकीक खण्डनसँ कियो हटाबए नहि सकैत। मुदा हमर बेटाक नामपर दोसर दलकेँ चोर कहल गेल, सेहो हम स्वीकार नहि

करब।” प्रधानाध्यापिका सार्वजनिक सुधारमे मिथुनक नाम लिखबाक प्रस्ताव वापस लेलीह। खोजक कार्यालयक अलग प्राप्ति-पत्रक स्थिति मात्र जिम्मेवार अधिकारी देखताह; विद्यालयक पटपर बच्चाक चेहरा वा घरक विवरण नहि लगत।

किछु दूर बैसल एक माता पुछलीह जे गुंजाक अनधिकृत स्थानान्तरणक बाबत जे चर्चा छल, ओकर की भेल। जानकी हुनका समयक भेद बुझौलीह—गुंजाक सम्बन्धित संरक्षण-अभिलेख आ मध्यस्थक भूमिका अलग जाँचमे अछि; ओहिसँ हुनकर घुमन्तु दलपर लागल बच्चा चोरीक गलत आरोप सत्य नहि भऽ जाइत। “जे बच्चा पीड़ित अछि ओकरा सुरक्षित राखू,” ओ कहलीह, “आ जे दलाल अपराधमे सम्मिलित अछि तकर विरुद्ध प्रमाण जुटाउ। पीड़ित, रास्तामे काज करनिहार आ सम्भावित अपराधी सब एक नाम नहि।” चमेलीक निजी बयानक एको वाक्य खुला सभामे नहि पढ़ल गेल।

बाहर हाटक दू व्यापारी बीच चुपचाप बात चलैत छल—जानकीक दलकें फेर ठाम देलासँ ग्राहक डरि सकैत छथि। जानकी ओ बात सुनि स्वयं उठलीह। “अहाँ सभक डर हमरा सुनाइत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा दामक ठाम देब अथवा नहि देब तकर लिखित नियम देखाउ। जे दिन हमरा जगह रोकल गेल, ओहि दिनक कारणो लिखू।” हाटक व्यवस्थापक पुराने कागद देखैत कहलक जे सुरक्षा-चिन्ताक आधारपर अस्थायी रोक लगाओल गेल छल। जानकी पुछलीह जे ओ चिन्ता ककर सत्यापित आदेशपर आधारित छल। व्यवस्थापक उत्तर नहि देलनि; ओ कागदक स्रोत मँगबैत अगिला बैठकक तिथि देलनि। जानकी तुरन्त धन-राशि निश्चित कहि विजय नहि मनौलीह।

दोपहरि चढ़िते विद्यालयक एक बच्ची राजोक बेटी लग आबि कहलक, “अहाँ दू ठाम रहैत छी, तँ अहाँक नाँव दू बेर लिखल अछि?” राजोक बेटी अपन कापी बन्द कए देलक। पद्मा दुनूकें कोन प्रश्न ककरा पुछबाक अधिकार अछि, से समझौलीह। राजो स्वयं बेटी लग बैसि कहलीह, “हम अपन गाममे मायकें भेटब जाति छी, एतए भाड़ाक घरमे काम करैत छी। तोहर नाम एक्के अछि।” बच्ची फेर कापी खोललक। विद्यालयक सहायक लेखा-कर्मि तखन सहायता-फाइलमे दोहराओल कोडक सुधारक आदेश लिखलक। राजोक बेटीकें आजुक कक्षामे बैसबाक आदेश पहिले सँ छल; आब सहायता जाँचमे वास्तविक परिवारक एकल फाइल पहिचानल गेल।

राजो एतबा पर सन्तुष्ट भऽ घुरबाक तयारी करैत छलीह, मुदा मीरा हुनका विद्यालयक काठक पट्टीक मजदूरी स्मरण करौलीह। दू दिनक सामग्री ढुलाईक पुरान देय अलग बहीमे छल। लेखा-कर्मि कहलक जे सहायता मिलिते ओकरा समायोजित कए देब। राजो सिधा उत्तर देलीह, “बच्चीक किताबक सहायता हमर ढोएल पट्टीक मजदूरी नहि। एकटा देबाक बदला दोसर काटब तँ दुनू खाता झूठ भऽ जायत।” पद्मा सँ मँगाओल हाजिरी-पर्चीमे दू दिनक कार्य पुष्ट भेल। विद्यालय व्यवस्थापन प्रमाणित मजदूरीक भुगतान आदेश तैयार केलक, सहायता-फाइल अपन क्रममे रहल। राजो रसीदपर सही कएलीह, मुदा नगद भेटल दिन अलग लिखल गेल।

महतो छपाइ-दोकानसँ बाँटल पर्चीक सूची लऽ अएलाह। सूची पूर्ण नहि छल; किछु खेप बिना नामक छोट ग्राहकद्वारा उठाओल गेल रहए। ओ कहला, “हम कागद छापलहुँ, मुदा जे लिखौलक ओकर दोष हमर कोना?” जानकी पहिनुक बैठकक प्राप्ति-पत्र देखौलीह। “आरोप कोन बनौलक, से जाँचक विषय अछि। मुदा पहिल सुधारक सूचना देखलाक बाद सेहो जँ अहाँ छापलहुँ, तखन हुनका फेर पसरए देबाक अपन निर्णयक जवाब दिअ।” महतो ई बात लिखितमे दर्ज करौलनि जे बादक खेप बिना सामग्रीक सत्यापन छपल। ओ अपन खर्चपर जतेक दोकानक वितरण पक्का अछि, ओतए संशोधित सूचना पहुँचेबाक सहमति देलनि; शेष वितरण लेल अभिलेख मँगाओल जाएत।

बाजार समितिक सदस्य कहलक जे खण्डनमे ‘जानकी पूर्णतः निर्दोष’ लिखि देल जाए तँ विवाद समाप्त। जानकी तुरन्त रोकलीह। “जे खास आरोप हमर दलपर कएल गेल—ई काटल वीडियो बच्चा चोरी देखबैत अछि—ओ गलत सिद्ध भेल,” ओ कहलीह। “मुदा हमर जीवनक सभ कामक सार्वकालिक प्रमाणपत्र अहाँ के देब? हम स्वयं सेहो गलती करि सकैत छी; जकरा आघात पहुँचेलहुँ ओकर जाँच अलग होएत। एहि पत्रमे जे तथ्य उपलब्ध अछि से लिखू, न कम न बेसी।” असद प्रारूप बदललनि। खण्डनक भाषा छोट भेल, मुदा अधिक निश्चित; जाँचक सीमा सेहो साफ भेल।

सरयू एहि संशोधनपर माथ हिलौलीह। “जे कहब जे हमरा सभक कोनो दोष कहियो नहि होएत, ओ सभसँ पहिने फेर हमरा असम्भव जगहमे ठाढ़ करत,” ओ कहलीह। हुनकर नतिनी विद्यालयक ओसारपर बुनलक पट्टीक गाँठ गनैत बैसल छलीह। दू बालक

हुनकर हथक कला देखए चाहलक; सरयू कहलीह, “हाथ लगाउ, मुदा पुछि कऽ। ई बिक्रीक दरी अछि।” एक बालक अपन कापीमे गाँठक चित्र बनौलक। जानकीक भीतर किछु नरम भेल। जकरा सभकेँ पुरान पर्चीमे नामहीन भयक आकृति बना देल गेल छल, ओ सभ एखन अपन काज आ दामक संग एतए उपस्थित छल।

असदक सुधारल बयान पढ़बाक लेल छोट खुला बैठक राखल गेल, मुदा जानकी स्वयं मंचपर चेहरा देखेबाक कार्यक्रम अस्वीकार कएलीह। प्रधानाध्यापिका पुरान गलत वाक्यक स्रोत आ तिथि, ओकर सार्वजनिक वापसी, काटल दृश्यसँ बच्चा चोरी सिद्ध नहि होएबाक तथ्य आ शेष जाँचक सीमा पढ़लनि। असद अपना हिस्साक कार्यालयी लापरवाहीक वाक्य जोड़लनि—पुरान पर्ची हटबबाक निगरानी समयपर नहि भेल। प्रधानाध्यापिका विद्यालयक कार्यालयक नामसँ सही कएलीह। कोनो बच्चाकेँ उपस्थित राखि निर्दोषता प्रमाणित नहि कराओल गेल। बैठकक साक्षीसभक नाम सार्वजनिक सूचीमे केवल हुनकर सहमतिसँ आएल।

अहाँ छोट मेजपर महतो अपन प्रेसक मुहर रखलनि। तीन उदाहरण-स्थल चुनल गेल—विद्यालयक मुख्य पट, हाटक पर्ची-ठाम आ बस-अड्डाक सूचना-दुआर। हर ठाम पुरान शब्द जतबे आकारमे लगल छल, कमसँ कम ओतबे साफ अक्षरमे सुधार लगबाक व्यवस्था भेल। वितरित प्रतिक सूची पर प्राप्तिक सही माँगाओल गेल; केओ अपन दुकानमे पुरान पर्ची राखबाक स्वतंत्रता सामान्य व्यापारक अधिकार कहि जिद करैत छल, तकरा समितिक सीमित अधिकार आ वैधानिक प्रक्रियाक सूचना देल गेल। असद लिखलनि जे एकर आदेश विद्यालयक अपन साधन धरि सीधा लागू आन निजी स्थान लेल लिखित अनुरोध आ आवश्यक कार्यवाही।

लता अपन कापी हाथमे लऽ बाहरक सीढ़ीपर बैसलीह। जानकी हुनका लग पहुँचलि तँ लता पूछलीह, “काल्हि मिथुनक खोजक लेल कार्यालयक समय मिलत?” जानकी अपना बैठकक समय देखलीह। हाटक क्षतिक दावा लेल हुनका सेहो जाना छल। “हम अहाँक खोजक फाइलक अधिकार नहि लेब,” ओ कहलीह, “मुदा यदि रास्तामे संग चलबाक जरूरत अछि तँ चलब। हमर हाटक आवेदन दोसर खिड़कीपर देब।” लता एकटा ठाढ़ साँस छोड़लीह। ओ जानकीसँ आभारक भव्य शब्द नहि माँगलीह; केवल कहलनि, “दुनू

काज समयपर करब। हमर बेटाक नाम पोस्टरपर फेर नहि जाए।” जानकी सम्मति देलीह।

दोपहरिक अन्तमे राजोकें विद्यालयक सहायता प्रकोष्ठसँ लिखित उत्तर भेटल। पुरान ग्राम-निवास आ वर्तमान किराया-पता समान व्यक्तिक अलग प्रयोजनक दस्तावेज मानल गेल; दू परिवारक मिलल कोड सुधराओल गेल। बेटीकेँ किताब आ शैक्षिक सामग्री लेल स्वीकृत सीमित सहायता देबाक निर्णय भेल, जकर वितरण-तिथि अगिला सप्ताह निश्चित भेल। राजो ई पत्र बैगमे रखैत कहलीह, “अर्थात् किताब एखन घर नहि आएल, मुदा ओकरा लेबाक बाट लिखल गेल।” हुनकर दुलाईक दू दिनक प्रमाणित मजदूरी लेल विद्यालयक अधिकृत भुगतान-निर्देश सेहो अलग निकलल। दुनू रसीदक नम्बर अलग छल।

असद अपन बयानक डिजिटल प्रति विद्यालयक आधिकारिक माध्यमसँ फेर पठौलनि। मूल संदेशक सुधार-सङ्केत जोड़ल गेल, ताकि तिथि बदललाक बाद कियो पहिल गलतीक अस्तित्व नहि नकारि सकय। प्राप्तिक सूचीमे किछु फोनक जवाब अएल —‘देखल’। किछु सम्पर्क बन्द छलाह; किछु लोक लिखलनि जे पुरान वीडियो अबहियो आन समूहमे अछि। असद ओ सभ उत्तरकेँ सुधार सम्पन्नक झूठ गिनतीमे नहि जोड़लनि। जानकी कहलनि, “कतेक ठाम पहुँचल, ओ लिखू। जतए नहि पहुँचल, ओ सेहो। खाली शत-प्रतिशत कहब आसान अछि।” असद पहिल बेर अपन पत्रक अपूर्णता बिना लजाए सार्वजनिक सूचीमे लिखलनि।

हाटक व्यवस्थापक सँ साँझक भेटमे जानकी अपन बही, छूटल ठामक रसीद आ सरयूक बिक्रीक तुलनात्मक पन्ना देलीह। व्यवस्थापक कहलक जे हाटक भीड़ घटबाक कारण केवल गलत आरोप नहि कहल जा सकैत; बरखा आ रास्ताक मरम्मत सेहो भेल छल। जानकी ई आपत्ति स्वीकार कएलीह। “जतय कारण स्पष्ट अछि, तकर भुगतान माँगब; जे किछु आन कारणसँ भेल, ओकरा हम अपन बदनामीक दाम नहि लिखब,” ओ कहलीह। एहि आधारपर हाटक अग्रिम वापसीक एक हिस्सा विवादरहित ठहरल, जकर आदेश पर हस्ताक्षर भेल। बाकी छूटल कमाइक क्षतिपूर्तिक दावा साक्ष्यक इंतजारमे रहल। जानकी प्राप्ति-पत्रक भीतर छोट अंकपर ओँठा फिरौलीह।

राति पहिने सरयू दरीक गाँठ खोलि फेर कसैत छलीह। हुनकर नतिनी पूछलक, “आब कियो हमरा चोर नहि कहत?” सरयू कनिक बेर धरि उत्तर खोजैत रहलि। “कियो कहि सकैत अछि,” ओ आखिरमे कहलीह, “मुदा तखन हमरा लग सही बातक कागद, अपन काजक दाम आ पूछबाक ठाम अछि।” बच्ची गम्भीर भऽ गेलीह। “तखन हम विद्यालय जाएब?” “जाएब,” सरयू कहलीह, “आ केओ नकारत तँ पुछब किएक।” ओ दरीक अंतिम किनारी कसि देलीह; धागा अपन जगह अटकि गेल, जेना अनेक बेर खोलल गाँठक भीतर नव बान्हल दृढ़ता रहि गेल हो।

जानकी विद्यालयक पट देखबाक लेल फेर घुरलीह। पुरान आरोपक खाली कील लग ओकर फोटो नहि, एक सफेद पट्टी छल—‘एहि ठाम लगल पूर्व सूचना तथ्य-जाँचमे गलत प्रमाणित; संशोधित सूचना संलग्न।’ ओकर नीचे सुधारक पूरा पाठ, तिथि, संस्था आ सम्पर्कक स्पष्ट ठाम छल। जानकी ओतए एकटा अतिरिक्त वाक्य लिखबबैत छलीह—‘ई सुधार मिथुनक खोज अथवा गुंजाक संरक्षण-प्रकरणक निर्णय नहि अछि।’ असद वाक्य पढ़ि पुष्टि कएलनि। पाछाँ विद्यालयक कक्षा बन्द होइत छल; राजोक बेटी किताबक अर्जी सँभारि बाहर निकललीह। जानकी ओ बच्चीकेँ देखलीह, मुदा ओकरा नाम पूछि सार्वजनिक सभामे बजाओल नहि।

रेलपुल दिस चलैत जानकीक फोनमे फेर ओही पुरान काटल वीडियो अएल। अपरिचित नम्बर, नव व्यंग्यात्मक शीर्षक। ओ क्षणभरि स्क्रीन देखलीह; क्रोधक संग एक ठंडी थकान देहमे उतरि गेल। ओ तुरन्त समूहमे क्रोधसँ उत्तर नहि देलीह। समय, प्रेषकक देखाइत विवरण आ संदेश सुरक्षित कएलीह; अधिकृत शिकायतक विवरणमे जोड़बाक लेल अलग रखलीह। फेर आजुक संशोधित सार्वजनिक पत्रक लिंक पठौलीह—नहि तर्कक एकटा अन्तहीन लड़ाइ, नहि मूक स्वीकृति। स्क्रीनपर दुनू संदेश एक संग रहल, एक पुरान आरोपक, दोसर प्रमाणक सीमासहित खण्डनक। एके चेहरा कहि लगाओल आरोपक अगिला जाँचमे अब चेहरे मात्र नहि, वास्तविक स्रोत आ स्वतंत्र साक्ष्य माँगल जाएत।

अध्याय १५० • चेहरा आ प्रमाण

जानकीक फोनपर राति आयल काटल वीडियो भोर धरि तीन बेर फरक-फरक नामसँ घुरि चुकल छल। विद्यालयक ओसारमे साजिद नट एकटा पुरान मेजपर दू मोबाइल आ कागदक खाम राखलक। फोनक चमकैत पर्दा दिस झुकल लोककें ओ पहिने रोकलक —“बच्चाक मुँह एतय सभक आगाँ नहि खोलब। जे व्यक्ति स्रोत देखबाक अधिकृत छथि, ओ भीतर बैसथि।” जानकी मेजपर अपन खण्डनक प्रति राखलीह। काल्हि लगल सार्वजनिक सुधारक स्याही एखनहुँ नब देखाइत छल, मुदा ओहि सुधारक बगलमे रात्रिक डर फेर वापस आबि गेल छल।

असद सैयद विद्यालयक चाभी लऽ अएलाह। हुनकर हाथमे नव संदेशक प्राप्ति-तिथि लिखल छल; ओकर प्रेषकक देखाइत नम्बर एखन तक ककरो परिचित नहि भेल छल। असद पुछलनि, “ईहे आदमी फेर भेजलक?” जानकी कहलीह, “फोनपर जे नम्बर अछि, ओकर स्वामीक नाम हम नहि जनैत छी। हुनका अपराधी कहि देब तऽ काल्हक गलती फेर आरम्भ भऽ जाएत।” साजिदक मूल नाटक-अभ्यासक फाइल दोसर यन्त्रमे छल। मुदा ई नब कटौती केवल ओही दृश्यसँ बनल की नहि, से जाँच बिना निश्चित नहि कहल जा सकैत छल।

बरामदामे मोहन कंजर अपन ठेलाक छोट पहिया लऽ पहुँचलाह। कल पुर्जाक दोकानसँ मँगाओल लोहाक काँटी एखन बँधल नहि छल। छः दिनसँ काम आधा पड़ल छल; एक ग्राहक लिखल छल जे बच्चासभक आगाँ ठेला नहि आनल जाए। मोहन पहिया मेजक कात रखलनि, ताकि कोनो कागदक नीचाँ ओकर धूरि नहि दबि जाए। “हमर चेहरा ओहि छविमे अछि कहि सभ बजैत छथि,” ओ कहलनि। “केओ ई नहि पुछैत जे चेहरा देखनिहारकें समय आ ठाम कोना बुझल?”

जानकीक दलक वृद्धा सरयू दोसर बेंचपर बैसल छलीह। मोहनक उपस्थिति देखिकऽ किछु लोक फेर कानाफूसी करए लागल। जानकी ओहि लोककें चुप रहबाक आदेश नहि देलीह। ओ पूछलीह, “अहाँ सभमे के ककरा अपन आँखिसँ बच्चा लए जाइत देखलहुँ?” कियो हाथ नहि उठौलक। एक पुरुष कहलनि, “मुदा गमछा आ ठेलाक पाछाँक भाग तऽ

मिलैत अछि।” मोहन अपन पातर पहियाक लोहेपर हाथ फेरलनि। “हमर ठेलाक कतेक पहिया एहि बजारमे बनैत अछि, एहि आधारपर ककरो नाम लिखब?” हुनकर स्वर कठोर छल, मुदा हाथ काँपि रहल छल।

विद्यालयक भीतर बनल पहिचान-समितिमे मीरा मंडल, असद, लताक सहमति सँ नामित एक संरक्षण-कर्मी आ बजारक दू प्रतिनिधि बैसलाह। लता मिथुनक खोजक बही संग अनलीह, मुदा ओकर निजी पन्ना मेजपर नहि पसारलीह। “हमर बेटा खोजमे अछि,” ओ कहलीह, “हमरा गलत आरोपी नहि, ठोस सुराग चाही।” समितिक पहिल सदस्य एक कागदपर लिखलक—दू वीडियोमे मिलैत गमछा। दोसर सदस्य ओकर आगे पुछलक—मूल चित्रक स्रोत? समय? स्वतन्त्र प्रत्यक्षदर्शी? पहिल उत्तरक बाद तीनू खाना खाली रहल।

साजिद पर्दापर मूल अभ्यासक दृश्य देखबाक अधिकार सीमित कएलक। अभिभावकसभक पहिनुक सहमति जे भाग लेल छल, ओही भागकेँ नामित सदस्य देखलनि। बाहर बैसल लोककेँ साजिद केवल समय-क्रम, फाइलक प्राप्तिक अवस्था आ अनुक्रमक जानकारी सुनौलक। दू क्षणक कटौतीमे छायासँ मुँह मिलैत लगैत छल, मुदा मूल क्रममे ओहि ठाम मंचक सजावट, लकड़ीक नकली ठेला आ पात्र बदलैत अभिनय छल। समितिक कियो सदस्य ई निष्कर्ष नहि देलक जे प्रत्येक घूमैत प्रतिक मूल एही फाइल अछि; नब संदेशक स्वतन्त्र तकनीकी जाँच आवश्यक लिखल गेल।

एक प्रतिनिधि हठ कएलक, “आँखि जे देखैत अछि, तकरा कतेक कागद चाही?” मीरा फट्टापर दू चित्र टाँगलीह—एक विद्यालयक खिड़कीक पातर काठ, दोसर कक्षाक बेंचक। “रड आ चौड़ाइ मिलल,” ओ कहलीह, “मुदा ई दू वस्तु एक्के नहि। उपमानक उदाहरणमे गायसँ गवयक सादृश्य शब्द बुझएबामे सहायता दऽ सकैत अछि; एहि आधारपर कोनो अपरिचित मनुष्यक जीवनवृत्त, नाम आ अपराध निश्चित नहि होइत।” ओ फट्टा पोछि देलीह। “बच्चाक खोज उपमा सँ नहि, जाँचसँ होएत।”

असदकेँ स्मरण अएल जे बरखाक पहिने नैरा सेहो एहि भेदपर बहुत बेर जोर देने छलीह। ओ हुनकर नामक आड़िमे नव तर्क खड़ा नहि कएलनि; नैरा आब जीवित नहि छलीह, आ हुनकर पहिनुक देखल बातक लिखित सीमा सुरक्षित छल। असद समितिक

सामने प्रमाणपत्रक पुरान क्रम खोलेलनि। “सार्वजनिक सुधारमे जकरा गलत कहल गेल, से समूहपर लगाओल आरोप छल,” ओ कहला। “एहि नब वीडियोपर अलग जाँच होएत; मुदा पुरान गलत आरोपकेँ एहिसँ फेर सत्य घोषित करबाक आधार नहि।”

मोहन तीन मरम्मत-पर्ची आ पुर्जाक खरीद-बहीक सत्यापित प्रति निकाललनि। पहिल पर्ची एक ग्राहकक काठक पेटी, दोसर ठेलाक धूरि आ तेसर मंचक सामान-ढुलाई सम्बन्धी छल। दुकानक मालिक अपन देखल बिक्रीक समय लिखने छल, मुदा मोहनक पूरा दिनक गमनक दावा नहि कएने छल। मोहन कहला, “ई प्रमाण हमर देखल काजक अछि; ई पूरा संसारमे हमर निर्दोषताक मुहर नहि। हमर ग्राहकक देय वापस भेटय, आ जे समुदायकेँ बिना आधार बदनाम कएल गेल ओकर सुधार सार्वजनिक होअय।”

अभिलेखक दोसर पन्नापर मोहनक काम छोड़ेनिहार ग्राहकक दू पर्ची छलीह। एक ग्राहक एकर पुष्टि कएलक जे आरोपवला संदेश देखलाक बाद ओ काठक पेटीक आदेश रोकने छल; दोसर ग्राहक कहलनि जे ओकरा पैसाक तंगी पहिनेसँ छल। मोहन दुनूकेँ एके खाँचे राखबाक विरोध कएलनि। “जाहिसँ काम छूटल, ओकर कारण जखन अलग अछि, तखन क्षतिक हिसाबो अलग होअय,” ओ कहलनि। समितिक लिपिक पहिल पर्चीपर जाँच-योग्य दावा, दोसरपर कारण-अनिश्चित लिखलक। मोहनकेँ तत्काल भरपाई नहि भेटल; मुदा दावाक वास्तविक सीमा मानल गेल।

बजारक प्रतिनिधि मुनादी कएबाक प्रस्ताव रखलक, मुदा पहिल प्रारूपमे लिखल छल —‘कंजर जातिक लोक निर्दोष प्रमाणित’। जानकी पन्ना फेर लौटा देलीह। “ककरो जातिक सभ सदस्यकेँ एक दस्तखतसँ अपराधी कहब गलत, आ एक हस्ताक्षरसँ सभ कालक निर्दोष प्रमाणपत्र देबो अर्थहीन। लिखू—एहि विशिष्ट बच्चा-चोरी आरोप लेल वितरित चित्र आ सूचनासँ कोनो आरोप सिद्ध नहि भेल; सामूहिक आरोप वापस लेल गेल।” मोहन सेहो ओही पाँतिक समर्थन कएलनि। हाटक व्यवस्थापक सुधारक वितरणक जगह लिखलनि—जहाँ गलत पर्ची पहुँचल छल, ओतए संशोधन सेहो पहुँचत।

एहि समय रेवा गुलगुलिया ओसारक सीढ़ीपर जतन आ बिरसीकेँ संग लऽ अएलीह। जतनक कापीमे पानिसँ फाटल कोना आब सूखि गेल छल। बिरसी अपन कपड़ाक झोरामे काठक दू छोट टुकड़ा रखले छलीह, जेहिमे ओ अक्षर उकेरबाक सीखि रहल छलीह।

विद्यालयक कर्मचारी हुनकर ठेगानाक खाना खोलिकऽ ठाढ़ भऽ गेल। “घर नम्बर?” ओ पूछलक। रेवा उत्तर देलीह, “एहि महिना डेरा रेलचौक लग, अगिला महीना कतए होएत, नहि जनैत छी। मुदा हमर बच्चाक नाँव तऽ एहिठाम अछि।”

मीरा आवेदनक पुरान रसीद मेजपर रखलीह। अस्थायी चलन्त कक्षा आ औपचारिक विद्यालय-नामांकनक बीच अंतर ओ पहिने स्पष्ट कएने छलीह। आब प्रधानाध्यापिका समक्ष नब निर्णयक लिखित आधार पहुँचल छल—वर्तमान सम्पर्क-स्थान, अभिभावकक कथन, चलन्त कक्षाक उपस्थिति आ विद्यालयद्वारा सुरक्षित कराओल सम्पर्क-विधि नामांकनक लेल दर्ज भऽ सकैत छल; स्थायी मकानक नम्बर अनिवार्य शर्त नहि राखल जाएत। रेवा पुछलीह, “एहि कागदमे हमर डेराक फोटो सभक लेल खुलल रहत?” प्रधानाध्यापिका कहलीह, “नहि। आवश्यक सम्पर्क-तथ्य केवल प्रवेश-अभिलेखमे।”

कर्मचारी एक बेर फेर अटकल। “जँ परिवार गाम बदलि देलक, उपस्थितिक गणना खराब होएत।” रेवा अपन झोराक गाँठ कसलीह। “हम जतए जाएब, समयपर जनएबाक उपाय देब। मुदा जे अनुपस्थिति यात्रा-कारण होएत, तकरा बच्चाक दोष किएक बनायब?” मीरा पठनीय कागदपर दू उपाय लिखलीह—स्थान बदललाक समय स्थानान्तरण-सूचना आ आवश्यकतापर सम्पर्क-पाठ; उपस्थिति आ सीखल पाठक अलग अभिलेख। पद्मा जोड़लीह जे देरीसँ अएल बच्चाकेँ पुरान पाठ दोहराबए शिक्षकक घण्टा लागैत अछि, ओकर पारिश्रमिक विद्यालयक स्वीकृत खातासँ देल जाए, रेवाक श्रमसँ नहि काटल जाए।

जतन पूछलक, “नाम लिखल गेल तँ हम काल्हि एतहि बैसि सकब?” प्रधानाध्यापिका ओकर कापी देखलनि, पृष्ठपर लिखल अक्षरमे गलतियाँ छलीह। “बैसबह,” ओ कहलीह, “पाठ तऽ हम सभ तोरा संग मिलि तय करब।” जतन मुस्कराए नहि; ओ सचमुचक प्रवेश-पर्ची हाथमे पबए धरि प्रतीक्षा कएलक। कर्मचारी दुनू बच्चाक नाम अलग-अलग दर्ज कएलक, बिरसीक नामक उच्चारण फेर रेवासँ पुछलक आ हस्ताक्षरक बदला रेवाक स्वीकृत चिह्न लऽ प्राप्ति-पत्र देलक।

रेवा बिरसीकेँ पानि पियाबैत कहलीह जे बितल मासमे नगरक दू कक्षामे प्रवेश लेल ओ छुट्टी लेने छलीह। किछु कमाइ ओहि दिन नहि भेल, आ आवेदनक फोटो बनबए दुनू बेर

दाम देबए पड़ल। “एहि रसीदसँ ओहि दामो वापस भेटत?” ओ पुछलीह। प्रधानाध्यापिका स्पष्ट कएलनि जे विद्यालयक नामांकन-निर्णय यात्रा-क्षतिक क्षतिपूर्ति नहि अछि। मीरा पुरान आवेदनक नकल स्वीकार कएलनि आ पाछिल खर्चक प्रमाण अलग सुनवाई लेल राखलनि। रेवा राहतक वचन नहि माँगलीह; कमसँ कम एतेक चाहलीह जे बच्चाक नब पर्ची फेर कियो बेकार नहि कहय।

बाहर एक अभिभावक भेदभावपूर्ण स्वरमे बजल, “घुमन्तु बच्चा आबि जाएत, तँ सुरक्षा कोन देखत?” लता अपन कापी बन्द कऽ घुरलीह। “हमर मिथुन नहि भेटल,” ओ कहलीह, “मुदा ओकर खोजक नामपर एहि दू बच्चाकेँ अपराधीक परिवार मत बनाउ।” प्रधानाध्यापिका विद्यालयक सभ विद्यार्थीक लेल समान प्रवेश-पहिचान, सुरक्षित छुट्टीक प्रक्रिया आ अधिकृत संग लए जाएवला व्यक्तिक नामक अलग नियम पढ़लनि। कियो एखन एहि नियमसँ सन्तुष्ट नहि छल, मुदा नियम समुदाय देखिकऽ बदलल नहि गेल।

दुपहरि धरि समिति मोहनक आरोप-वापसीक सार्वजनिक पत्र तैयार कएलक। मोहन आग्रह कएलनि जे ‘सम्भावित संदिग्ध’ शब्दो हटाओल जाए, कारण हुनका सम्बन्धमे कोनो नब विशिष्ट आरोप दस्तावेजमे दर्ज नहि छल। असद स्कूलक पुरान अनधिकृत पाँति आ आजुक सही पाँतिक स्रोत अलग लिखलनि। साजिद वीडियो देखनिहार अधिकृत सदस्यसभक हस्ताक्षर लऽ मूल फाइल फेर सुरक्षित खाममे राखलक। ओ कहलक, “जाँचमे जे देखबाक अधिकार भेटल, तकर अर्थ फाइलकेँ बाजारक मनोरञ्जन बनएबाक अधिकार नहि।”

मुदा ग्राहकक घर सँ मोहनकेँ फोन अएल जे ठेलाक काज एखनहि नहि भेटत। “बच्चासभक माए-बाप डरैत छथि,” फोनपर कहल गेल। मोहन रसीदकेँ मोड़लनि, फेर सीधा कएलनि। “भयकेँ आदेश मानि कऽ हमर दाम रोकल जाएत तँ हम लिखित कारण माँगब,” ओ कहलनि। बजारक प्रतिनिधि हुनका ठेलाक दू पहियाक मरम्मत लेल विद्यालयक ढुलाई-काजक निविदामे सहभागी होबाक सूचना देलक; काम भेटबाक गारण्टी नहि। मोहन बिना दयाक आभार व्यक्त कएने आवेदनक प्रति लेलनि।

ताहि बीच हीरा सहनीक मार्फत केशरी बीनक नावक खबर आयल। नाव एखन मरम्मतक सूखल ठाम पर छल; जोड़क अन्तिम निरीक्षण शेष छल, तँ पानिमे उतारबाक

अनुमति नहि। केशरी पुरान लकड़ी ढुलाईक पर्ची सेहो पठौने छलाह, जाहिपर ‘बलुआहा’ लिखल छल। एक युवक पर्ची देखिते कहलक जे ताहि नामसँ घाट आ दोसर धारक बीच नक्शामे पक्का रेखा खींचि देल जाए। हीरा ओकर पेंसिल रोकलीह—“ई लकड़ीक ढुलाईक लिखल स्रोत-सङ्केत अछि। नदीक संगम वा यात्राक पूरा बाट सिद्ध नहि करैत।”

केशरीक खतमे मरम्मतिक दू विकल्प छल। एक व्यापारी नाव ओही अवस्थामे खरीदबाक प्रस्ताव देने छल; सामूहिक कारीगर-दल फाटल पाट बदलबाक खर्च आ जोखिमक नब सूची पठौने छल। केशरी बिक्री फेर अस्वीकार कएने छलाह, मुदा मरम्मति-ऋण कतेक महीनामे चुकत से स्वयं निर्णय लेबाक लेल हिसाब मँगौने छलाह। हीरा कहलीह, “नावकेँ बचेबाक इच्छा सुरक्षाक प्रमाण नहि। पाट जोड़निहारक पारिश्रमिक आ परीक्षणक दिन अलग लिखू।” समितिक अभिलेखमे ‘बलुआहा’ स्रोत-पर्चीक शब्द मात्र रहल, प्रमाणित नदीमार्गक नाम नहि।

विद्यालयक पछिला अहातामे बिरसी ओहि चिट्ठीक किनारपर नकल कएल ‘बलुआहा’ शब्द देखिकऽ पुछलक जे ई ओकर नव पाठक विषय भऽ सकैत अछि की नहि। मीरा कहलनि, “भऽ सकैत अछि; मुदा ई लिखल नाम कतएसँ आयल से सेहो पूछब। नक्शामे पहिने जगह देखबाक चाही।” जतन कापीमे दू रेखा खींचलक—एक अपन डेराक बदलैत बाट, दोसर विद्यालयक। दूनू रेखाक बीच ओ कोनो मिलन-बिन्दु नहि बनौलक। “हम रास्ता जानैत छी,” ओ कहलक, “मुदा एखन ई कागद खाली अछि।”

पद्मा रेवा लग अएलीह। प्रवेश-पर्चीमे दूनू बच्चाक जन्मसम्बन्धी जानकारीक किछु खाना अपूर्ण छल। ओ स्पष्ट केलनि जे तकर जाँच अलग प्रक्रिया अछि; ओहि कारण आजुक प्रवेश रद्द नहि होएत। रेवा पुछलीह, “कियो काल्हि कहत जे हमर बच्चा दोसरक अछि तँ?” पद्मा उत्तर देलीह, “तखन अनुमान नहि, स्वतंत्र प्रमाण माँगल जाएत। अहाँक सहमति बिना निजी कागद सभमे नहि घूमत।” रेवा कनेक रुकलीह। “हमरो बच्चाक चेहरा रोज घुँरैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा ओ हर दिन हमर बच्चा रहैत अछि।”

जानकी ओहि वाक्य सुनि अपन फोन बन्द कए देलीह। सरयू हुनका पुछलीह जे नब वीडियो पर फेर सार्वजनिक प्रत्युत्तर देबाक अछि की नहि। “अछि,” जानकी कहलीह, “मुदा जे बात जाँचल गेल, ओतबे। हर कटल छवि पर हमर चेहरा देखबाए लगब तँ झूठा

लोक हमरा दिनक मालिक बनि जाएत।” सरयू दरीक एक अधबुनल पट्टी हुनकर हाथमे देलीह। “ई किनार पूरा करबाक अछि,” ओ कहलीह। जानकी ओहि दरीक किराया-रसीद अलग राखलीह; खण्डनक आय आ बिक्रीक हानि एके हिसाब नहि छलीह।

साँझक सभा विद्यालयक दुआर लग भेल। असद सार्वजनिक पत्र पढ़लनि—समूहपर लगाओल बच्चा-चोरी आरोप तथ्यहीन प्रमाण-संयोजनपर आधारित छल; ओकरा वापस लेल गेल। उपलब्ध छविमे व्यक्तिक सादृश्य कोनो व्यक्तिगत अपराधक स्वतन्त्र पुष्टि नहि। हराएल बच्चाक खोज आ अन्य संरक्षण-जाँच अपन स्वतंत्र प्रक्रियामे जारी रहत। मोहनक लिखित आपत्ति, जानकीक पहिनुक खण्डन आ काल्हुक नव वीडियो-प्रेषणक तकनीकी शिकायत तीन अलग नम्बरमे दर्ज भेल। लता चाहलीह जे मिथुनक खोजक अगिला निर्धारित समय लिखल जाए; ओकर नाम भीड़क नारा नहि बनल।

सुधार पढ़लाक बाद बाजारक एक युवक मोहन लग आबि कहलक, “हम वीडियो भेजने छलहुँ, तखन तऽ लोक भेजि रहल छल।” मोहन ओकरे फोन माँगबाक बदला कहलनि, “तूँ कोन बात देखलह, आ कोन बात केवल आगाँ पठेलह, से लिखि सकैत छह?” युवकक नजरि नीचाँ झुकि गेल। ओ कहलनि जे मूल वीडियो ओकरा उपलब्ध नहि छल। असद ओकर स्वेच्छिक बयान अलग लिखलनि; ओ ककरो अभियुक्त घोषित करबाक कागद नहि छल। युवककें गलती मानलासँ पुरान प्रसारक समस्त नुकसान मेटत नहि, मुदा नब अफवाह रोकबाक एक प्रत्यक्ष कारण भेटल।

रेवाक बच्चासभ ओहि सभा पूरा सुनबाक बदला ओसारक भीतर पहिल नियमित कक्षामे बैसल। बिरसीक पाछाँक बेंच नीच छल; पद्मा ओकर लेल अनुकूल ऊँचाइक पट्टी माँगौलीह। जतन अपन प्रवेश-पर्ची किताबक बीच रखलक। मीरा उपस्थितिक बहीमे पहिल दिनक सामने लिखलीह—विद्यालय-नामांकन स्वीकृत; सम्पर्कक बदलैत पता गोपनीय अभिलेखमे। रेवा अपन स्वीकृत यात्राक समय लिखलीह। एहि कागदक कारण हुनकर डेरा पक्का मकान नहि बनल, मुदा बच्चाक पढ़ाइ आब केवल आश्वासन नहि रहल।

मोहनक ठेलाक पहिया साँझ धरि जुड़ि गेल छल। ओ ग्राहकक लेल खाली पेटी उठौलनि आ समितिक लिखल खण्डनक प्रति झोरामे रखलनि। हाटक दुआरपर एक महिला पहिल बेर हुनका अपन घरक बन्द पेटी ठीक करबाक लेल बोलौलीह; पुरान भाड़ा

फेर नहि भेटल, मुदा नब काजक दाम तय भेल। मोहन घरक बाट लग पाछाँ घुरि विद्यालयक पट देखलनि। एहि बेर सार्वजनिक सुधारमे हुनकर जाति नहि, विशिष्ट गलत आरोपक वापसी लिखल छल। ओकरा पाछाँ उगैत विश्वास छोट छल, मुदा कागदसँ आगाँ एकटा व्यवहार बदलल छल।

असद रातिक पहर दस्तावेज बन्द करबाक समय देखलनि जे पहचान समितिक पुरान प्रारूपमे ‘चेहराक मेल’ लेल बड़का खाना छल, स्वतंत्र पुष्टिक लेल केवल एक पातर रेखा। ओ समितिक स्वीकृत संशोधन जोड़लनि—स्रोत, समय, प्रत्यक्ष बयान, दस्तावेजी सम्बन्ध, निजी विवरणक संरक्षण आ अपुष्ट अंश लेल अलग-अलग स्थान। नियम तत्काल लागू भेल, मुदा पहिनुक गलतीक क्षति स्वतः नहि भेटल। जानकी ओकर प्रतिलिपि देखि कहलीह, “कागद जखन कोनो देहकें गलत नामसँ पकड़ैत अछि, तखन ओकरा सुधारबाक जिम्मेदारी सेहो देहवला लोकक होएत।”

दुआर बन्द करैत मीरा पूछलीह, “काल्हि पहिल पाठमे की पढ़ाएब?” पद्मा कहलीह, “बच्चासभकें स्वयं चुनबाक दिअ—जाहि विषयपर प्रश्न उठैत अछि।” जतन अपन कापी सँ माथ उठौलक। “हम जानए चाहैत छी जे कोन लोक पढ़ि सकैत अछि, आ कोन लोककें कोनो जमाना मे रोकल गेल छल।” मीरा एक पल ओकर दिस तकैत रहलीह। बाहरक पातर धूरि बस-अड्डा दिस उड़ि रहल छल। विद्यालयमे प्रवेशक दरबज्जा आइ खुलल छल; भीतर कोन कथा पढ़ाओल जाएत, से अगिला दिनक सचमुचक विवाद रहबाक छल।

अध्याय १५१ • शम्बूकक पाठ

विद्यालयक फट्टापर ओहि दिन मीरा दू पाँति लिखलीह—‘के पढ़ि सकैत अछि?’ आ ‘के फैसला करैत अछि?’ खिड़कीसँ फागुनक उजास भीतर आबि रहल छल। जतन अपन प्रवेश-पर्ची किताबक भीतर नहि, मेजपर सोझाँ रखलक; एक दिन पहिने भेटल अधिकारकें ओ एखन कागदक रडसँ चिन्हैत छल। बिरसी पातक पाछाँ छोट अक्षर बनबैत रहलि। पद्मा फट्टाक बगलमे तीन पोथी राखलीह, मुदा कोनो पोथीक पन्ना तुरन्त नहि खोललीह। ओ पूछलीह, “काल्हि जे प्रश्न उठल छल, आइ ओकर उत्तर के देत?” जतन बजल, “सभ, जकरा पढ़बाक मन अछि।” पिछिला बेंचसँ एकटा वयस्क स्वर उठल, “सभ बात बच्चाक मनपर नहि छोड़ल जाइत छै।”

स्वर विद्यालयक अस्थायी प्रबन्ध-समितिक सदस्य नवलक छल। ओ पढ़ाइ लेल चन्दा देनिहार लोकमे छलाह, आ अपन सहयोगक अधिकारसँ कक्षाक पाठ सेहो चुनए चाहैत छलाह। “किछु कथा विवाद उठबैत अछि,” ओ कहला, “बालककें पहिने सरल आदर्श पढ़ाउ। शम्बूकक नाम एतय लिखब तँ लोक झगड़त।” पद्मा उत्तर नहि देलीह; ओ जतनक तरफ देखलीह। जतन पूछलक, “जाहि कथामे पढ़बाक लेल मारल जाए, ओ कथा नहि पढ़ब तँ के बुझत जे मारल किएक गेल?” नवल अपन गमछा कन्हापर सरकौलनि। रेवाक आँखि मेजपर रहल प्रवेश-पर्चीक दिस गेल। कतहु फेर कियो निर्णय लऽ रहल छल जे ओकर बच्चा कोन प्रश्न नहि पूछि सकैत अछि।

पद्मा पहिल पोथी उठौलीह। “उत्तरकाण्डक किछु प्रचलित पाठमे शम्बूक नामक तपस्वीक प्रसंग अबैत अछि,” ओ कहलीह। “तप करबाक अधिकार आ वर्ण-सीमाक नामपर ओकर प्राण लेल जाएबाक कथा ओतय कहल गेल अछि। मुदा रामायणक सभ क्षेत्रीय कथन, पाठान्तर आ नव व्याख्यामे ई प्रसंग समान रूपसँ उपस्थित नहि; ओकर स्थान, आशय आ स्वीकृतिपर मतभेद अछि। आइ जे अंश देखाएब, ओकर स्रोत-संकेत अलग देब। जे दृश्य हम सभ कल्पना कऽ सुनाएब, ओकरा मूल श्लोकक अनुवाद नहि कहब।” संकेत फट्टाक नीचाँ पातर अक्षरमे लिखलनि—‘मूल कथन’, ‘पाठान्तर’, ‘आजुक कल्पित संवाद’। जतन तीनू शीर्षक गनि रहल छल।

साजिद नट खाली मंचसँ एकटा पुरान कपड़ाक पट्टी आनलक। विद्यालयमे सभक देखबाक लेल नाटक होएत, से सुनिते नवल फेर आपत्ति कएलनि। “राजाक रूप धरि कियो ओहिपर दोष लगाओत, तखन?” साजिद कहलक, “हम ककरो ऐतिहासिक अदालत नहि लगा रहल छी। एतय प्रश्नक अभिनय अछि; कलाकारक नाम आ पात्रक नाम अलग रहत।” ओ मंचक चारू कात एक्के ऊँचाइक आसन रखलक, जेकरा बच्चासभ देखैत रही। गोपाल माझी, जे पानिक बाटक नब नक्शा देबाक लेल आयल छलाह, ओहि आसनक एक पयर हिलैत देखलनि आ ओकर नीचाँ पातर काठक फाँक लगौलनि। “तर्क करबासँ पहिने बैसबाक ठाम नहि डगमगाए,” ओ मुस्की दैत बजलाह।

पद्मा पाठ आरम्भ करैत छलीह तँ जतन पुछलक, “शम्बूक अपने की चाहैत छल?” कक्षामे कोनो स्रोतमे प्रमाणित उत्तर तैयार नहि छल। साजिद मंचपर नब दृश्य आरम्भ करबाक पहिने कहलनि जे आब जे संवाद देखाओल जाएत, से एहि विद्यालयक कल्पना अछि। उजास हलुक कएल गेल। एकटा वनक कल्पित किनार, भाँजि राखल काठक जलपात्र, आ माटिपर आधा बनल अक्षर। ओहि अक्षरक कातमे शम्बूक नामक पात्र घुटना मोड़ि बैसल छल। जकरा ओ सीखए चाहैत छल, तकर नाम कियो एकदम निश्चित नहि कएलक—कखनो अक्षर, कखनो तप, कखनो अपन श्वास पर अपन अधिकार। मंचक बाहर दूरसँ एकटा डमरूक मन्द ध्वनि उठल, मानू समय स्वयं ककरो प्रवेश-पर्ची माँगि रहल हो।

वनक पथसँ एक युवा शिष्य आयल। ओकर देहपर गुरुकुलक साफ वस्त्र छल, मुदा आँखिमे थकान। ओ शम्बूकक लिखल रेखा देखलक। “तोरा ई चिन्ह के सिखौलक?” ओ पुछलक। शम्बूक चुप्पे रहल, फेर अपना बनाओल रेखा पर अँगुरी रखलक। “पहिल रेखा नदी सिखौलक, जे गादमे उतरि फेर बनैत अछि। दोसर रेखा एक बूढ़ लोक देखौलक, जे अपन नाम लिखब नहि जनैत छल।” शिष्य कहलक, “सीखबाक लेल गुरु चाही।” शम्बूक उत्तर देलक, “हँ, मुदा गुरु खोजबाक बाट बन्द कएल जाए तँ आदमी अपन बाटपर अक्षरक छाया बनबैत अछि।” ओकर स्वर नायकक घोषणा नहि छल; दिनभरि पानि अनबाक बाद थाकल लोकक साधारण प्रश्न छल।

शिष्य अपन गामक कथा सुनौलक। ओ कहलक जे एक बालकक असमय मृत्युक दोष दूर कतहु होइत तपपर धरल जा रहल अछि। “जे नियमक रखवाला छथि, ओ सभ कारण ओतय खोजैत छथि।” शम्बूक एकदम घुरलक। “बालकक रोग, भोजन, पानि, उपचार के देखने अछि?” शिष्य कहलक, “सभ कियो अलग-अलग बात करैत अछि; राजा निर्णय करबाक लेल निकलल छथि।” शम्बूक हाथक माटि झाड़लक। “एक जनक तप आ दोसरक मृत्युबीच सम्बन्ध कोन प्रमाणसँ बनत? जँ हमरा पूछबाक अवसर नहि देल गेल तँ हम कोन उत्तर देब?” शिष्यक लग उत्तरो नहि छल; ओकरा लोकक भय देखल छल, प्रमाण नहि।

एक वृद्धा मंचक पाछाँसँ आबि जलपात्र उठा लेलीह। एहि पात्रक सम्बन्ध अभिनयमे शम्बूकक परिवारसँ छल, प्रचलित पाठक प्रमाणसँ नहि। ओ कहलीह, “तूँ अपन तप रोकि दे, तखन प्राण बचत।” शम्बूक हुनका दिस बहुत बेर देखलक। “हमर प्राणक दाम अहाँ पानि ढोइ चुकबैत रहलहुँ,” ओ कहलनि, “हम बाँचि जाएब तँ अहाँक श्रम बेकार नहि। मुदा हमरा रोकबाक कारण जँ जन्म अछि, काल्हि हमर भाइकेँ खेतक मापो पूछए नहि देत।” वृद्धा पात्र नीचाँ राखलीह। “तोहर जीवित रहब हमरा चाही। नियम बदलबाक भार तोरा एके देहपर किएक?” मंचपर ई प्रश्नक उत्तर तत्क्षण नहि भेटल। बाहरक कक्षामे रेवा अपन दूनु बच्चाक कन्हा पर हाथ रखलीह।

कल्पित दृश्य फेर बदलल। दूरसँ एक पहरेदार आएल आ कहलनि जे राजा न्याय बुझबाक लेल प्रश्न करए चाहैत छथि। पहरेदारक हाथमे हथियार छल; शम्बूकक हाथमे अपूर्ण अक्षर। साजिद ओहि असमानता केँ ओझराय नहि देलक। शम्बूक उभि कऽ कहलक, “प्रश्न सुनब। मुदा जे उत्तर हम देब, ओ सुनल जाएत की नहि?” पहरेदारक अभिनय करैत बालक ठमकि गेल। एक क्षण लेल ओ पाठ भूलि गेल, फेर पद्माक तरफ तकलक। पद्मा ओकरा पाठ नहि बतौलीह। बालक अपन शब्दमे कहलक, “हमरा केवल आनबाक हुकुम भेटल।” शम्बूक उत्तर देलक, “तँ तोहरो आवाजक सीमा ओही ठाम अछि जतए हमर अधिकारक सीमा राखल गेल अछि।”

कक्षा पुनः उजासमे आएल। साजिद नाटक एतहि रोकलक। नवल कहला, “मूल आख्यानमे जे घटना अछि, ओकर अन्त ई नहि। अहाँ लोक कथाकेँ बदलि रहल छी।”

पद्मा माथ हिलौलीह। “सही। मंचक ई दृश्य नव कल्पना अछि। मूलक एक प्रचलित उत्तरकाण्डीय पाठमे शम्बूकक वधक वर्णन अछि; ओ कठिन तथ्य हम नहि हटाएब। मुदा ई संवाद कोनो मूल श्लोकक उद्धरण नहि। नाटक एतय रुकल अछि, कारण बच्चासभकें प्रश्नक स्थान देखेबाक अछि।” नवल पूछलनि, “तखन भिन्न पाठक सम्मान कतय?” पद्मा दोसर पोथीक स्रोत-पत्र खोललीह, जतय अलग कथन-परम्परामे शम्बूकक प्रसंगक अनुपस्थिति आ नव व्याख्यासभक भिन्न दृष्टि अलग चिह्नित छल। “मतभेदकें एकरङ्ग करब सम्मान नहि,” ओ कहलीह।

बिरसी अपन पातर अक्षरक पाछाँ प्रश्न लिखलीह—“जँ कियो कथा नहि पढ़ए दे, तँ हम पूछब कतय?” ओ अक्षर किछु टेढ़ छलीह। नवल कहला, “बालिका एतेक कठिन बात नहि बुझत।” बिरसी माथ उठौलीह। “हम नहि बुझब तँ सिखाउ,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा मुँह बन्द करए नहि कहू।” कक्षामे हँसी नहि उठल। मोहन कंजर ओसारक बाहर अपन मरम्मत भेल ठेलाक पयर रोकि ई उत्तर सुनलक। ओकर विरुद्ध जे सामूहिक आरोप छल से वापस भऽ गेल, मुदा ग्राहकसभक भय एखन शेष छल। ओ भीतर आबिकऽ कहलक, “हमरा सेहो पहिने पूछल नहि गेल छल जे हम कतए छलहुँ। कक्षामे पूछबाक नियम सीखत तँ शायद बजारमे सेहो कियो सुनत।”

साजिद एकटा पन्ना उठौलक, जाहिपर बच्चासभ स्वयं प्रश्न लिखि सकैत छल। संकेत ओकर नीचे स्पर्शसँ चिन्हबाक लेल अलग उभार बनौलनि; पढ़ब मात्र आँखिक काम नहि। जतन आधा पन्ना भरलाक बाद रुकलक। “जँ कथामे राजा आदेश दैत अछि,” ओ पूछलक, “राजाक निर्णयपर प्रश्न करब अनादर होएत?” मीरा कहलीह, “कथामे पात्रक कथन सुनब आ ओकर परिणाम जाँचब अध्ययन अछि। कोनो व्यक्ति अथवा परम्पराक विरुद्ध गारि देब पढ़ाई नहि। प्रश्न करब ओहिसँ भिन्न अछि।” नवल अपन चन्दाक रसीद मोड़ैत रहला। हुनका चाहल छल पाठ सहज हो, मुदा सरलताक नामपर ई प्रश्न हटब नहि सकैत छल, से ओ बुझि रहल छलाह।

ताहि बीच बाहरी फाटकपर केशरी बीन आयलाह। हुनकर हाथमे नावक नव पटरीक मूल्यपत्र आ चारि परिवारक उधारी-स्वीकृतिपत्र छल। ओ स्कूलक कार्यक्रम सुनबाक लेल नहि, पाठशालाक पिछला ओसारमे बैसैत जलसमितिक छोट बैठक लेल आयल छलाह।

हीरा सहनी पहिनेसँ ओतय छलीह। केशरी कहलनि, “नाव नहि बेचब। संयुक्त मरम्मतिक पाँति तय अछि, मुदा काठक दाम चुकता नहि भेल। जखन धरि अन्तिम जोड़ जाँचल नहि जाए, नाव यात्री लऽ कऽ नहि चलत।” हीरा कागद देखलीह। “ई निर्णय लिखल रहय,” ओ कहलीह, “ऋण चुकबाक दौड़मे असुरक्षित नाव नदीमे उतारि देब, तखन फेर पूरा घाट कीमत देत।”

केशरीक साझेदार एकजना कहलक जे नाव जल्दी नहि चलल तँ मरम्मतिक ऋण बढ़त। ओ समूहसँ अपन काजक बकाया तुरन्त चाहैत छल। केशरीक मुख कड़ा भेल। “हम देय सँ भागि नहि रहल छी,” ओ कहलनि, “मुदा नाव बेचलासँ चारि घरक रोजी एक दिनमे कटि जाएत।” तारा प्रस्ताव देलीह जे काठ आपूर्तिक रसीद, श्रमिकक बकाया आ साझाक ऋण अलग-अलग पंजीमे राखल जाए। हर पाँतिमे भुगतानक चरण लिखल गेल। जे कारीगर अपन मजदूरीक भाग तुरन्त चाहैत छल ओकर विवादरहित हिस्सा साझा कोषसँ देबाक सीमित स्वीकृति भेल, आ ओ कोषमे योगदानक देय सेहो अलग दर्ज भेल। नाव एखनहुँ पानिमे नहि उतरल; तथापि ककर देय कतय अछि, से पहिल बेर साफ छल।

बैठकमे मालती कोचे अपन पीतक घैल रखलीह। नव बसावटक नलमे आइ भोर पानि आयल छल, मुदा पछिला चारि घरक घैल भरबाक पहिने धार बन्द भऽ गेल। अधिकारीक पंजीमे सभ परिवारक नामक आगाँ ‘जल-सुविधा उपलब्ध’ लिखल छल। मालती घैलक तलमे पातर मटमैला परत देखौलीह। “नल लगाओल आ पानि घर धरि पहुँचब एके नहि,” ओ कहलीह। बदरी नोनफरक पत्नी हुनका संग अएलीह; बदरीक स्थायी पुनर्वासक प्रश्न एखन शेष छल, मुदा ओहि कारण पानि भोगबाक अधिकार टारल नहि जा सकैत। समितिक एक सदस्य कहलक जे नव लोक आएलापर शुल्क बढ़एत। मालती पुछलीह, “नल आधा समय बन्द रहत, तखन दाम पूरा किएक?”

गोपाल माझी अपन पुरान बाटक नक्शा खोललनि। ओहि नक्शाक किनार ‘तिरसूला’ लिखल छल, जखन कि सरकारी उद्धार-पत्रमे ओही आसपासक बाट आन नामसँ चिन्हित छल। एक युवक कहलक, “नाम मिलि गेल तँ पानि-कनेक्शन सेहो नक्शासँ सिद्ध भऽ गेल।” गोपाल हँसला नहि। “ई उद्धारक बाट पहचानबाक नामक विवाद अछि,” ओ कहलनि, “नलमे पानि कतेक समय अबैत अछि, तकर माप एही कागदसँ नहि होएत।”

ओ लिखित प्रस्ताव रखलनि जे तिरसूलाक दूनू प्रचलित नाम उद्धार-पत्रक टिप्पणीक रूपमे रहय, आ वास्तविक जलापूर्ति लेल स्वतंत्र समय-पंजी भरल जाए। पुरान नक्शा नहि फाड़ल गेल; ओकर सीमाक संग उपयोगक निर्देश जोड़ल गेल।

मालती नल देखरेखक शुल्क सँ इनकार नहि कएलीह। “मरम्मत करनिहारकें दाम भेटनाइ चाही,” ओ कहलीह, “मुदा पहिने तय हो जे कुन घरक उपयोग गनल जाएत, नल बन्द रहल दिनक कतेक छूट होएत, आ आमदनीक हिसाब के देखत।” समिति पछिला घरसभक दू प्रतिनिधि जोड़ि एक मासक परीक्षण-पंजी खोललक। निर्धारित रखरखावक छोट शुल्क उपयोग-दिनक अनुसार लगत; जकरा पानि नहि पहुँचल ओकरा पूरा शुल्क नहि धरल जाएत। पाइपक अन्तिम मोड़ जाँचबाक मजदूरी अलग स्वीकृत भेल। मालती घैल भरि नहि सकलीह, कारण निरीक्षण दोसर दिन होएत; मुदा ओ अपना संग लिखित समय लऽ गेलीह, खाली आश्वासन नहि।

सुशीला अपन बीज-परीक्षणक छोट डिब्बा लेने पहुँचलि। हुनका दामक बैठक विद्यालयमे नहि चाही छल, मुदा मालतीक नलसँ खेतक मौसमी पानि-समय जुड़ल छल। “बड़दरी” नामक बीज-प्रयोगक पुरान ठाम हुनकर कागदमे छल। नक्शा देखनिहार कर्मचारी ओकरा पक्की नदीक धारा मानि रेखा खींचबाक तैयारीमे छल। सुशीला रोकलीह। “ई हमर प्रयोग-स्थलक ठामनाम अछि, नदीक स्थायी रेखा नहि। बरखा बदलत तँ काजक सीमा बदलत।” ओ बीजक अपन दू नमूनाक परिणाम देखौलीह—पहिलमे अकुर कम, दोसरमे बढ़ल; मुदा खेतक माटिक अलग अवस्थाक टिप्पणी बिनु ओ परिणाम प्रकाशित नहि करब। सुशीलाक बेटा विनय ओहि डिब्बापर तिथि लिखलक, जकरा ओ स्वयं जाँचने छल।

विद्यालयक भीतर पाठ फेर शुरू भऽ गेल छल। बाहरक पानि आ नावक हिसाबक आवाज भीतर आबि रहल छल। जतन कहल, “हमरा लगैत अछि सभ जगह एकटा किताब अछि। केशरीक किताबमे नावक दाम, मालतीक किताबमे पानि, आ एहि पोथीमे शम्बूक।” पद्मा कहलीह, “सभक लिखल बातक प्रमाण एक जकाँ नहि होइत। साहित्यिक आख्यानक पाठक साक्ष्य अलग, आजुक नल बन्द हेबाक माप अलग। मुदा दूनूमे प्रश्न पूछबाक अधिकार छी।” संकेत अपन लिखित फट्टामे ‘पाठ-प्रमाण’ आ ‘वस्तु-

माप'क लेल अलग चिह्न बनौलनि। ओ ककरो मस्तिष्कमे सबटा बात एके रंगसँ भरबाक आग्रह नहि कएलनि।

नवल फेर भीतर अएला। “हम पाठक विरोधमे धन वापस लऽ सकैत छी,” ओ कहला। विद्यालयक कोषाध्यक्ष उत्तर देलनि जे दानक प्राप्ति रसीदमे पाठ्यक्रमक व्यक्तिगत नियन्त्रणक कोनो शर्त नहि छल। नवल सन्न रहला। पद्मा हुनका अपमानित नहि कएलीह। “अहाँक आपत्ति लिखल जाएत,” ओ कहलीह, “बच्चासभकेँ स्रोतक परिचय आ अभिभावकक संग बात करबाक सुविधा भेटत। मुदा वर्णक कारण ककरो प्रश्न बन्द नहि होएत।” नवल पूछलनि, “जँ कियो धार्मिक भावनाकेँ चोट बुझय?” मीरा कहलीह, “ओकर सुनवाई होएत। पाठ हटेबाक पहिने देखब जे कोन कथन स्रोत अछि, कोन व्याख्या, आ कोन अपमान। ई तिनू अलग चीज अछि।”

जतनक माँ रेवा किछु देर धरि चुप छलीह। ओ भोरसँ कामक ठाम गेलाक बाद विद्यालयमे एतबा बेर बैसल छलीह जे दिनक आधा आमदनी छूटि रहल छल। मीरा हुनका पूछलीह जे नामांकनक कागद पूरा अछि की नहि। “नामांकन अछि,” रेवा कहलीह, “मुदा जँ प्रत्येक प्रश्नक दिन हमरा बुलाओल जाएत तँ कमाइ कोन करब?” पद्मा नियमित अभिभावक-सहमतिक नियम बदलवबैत कहलीह जे पाठक साधारण गतिविधिमे प्रतिदिन उपस्थिति बाध्यकारी नहि; व्यक्तिगत सुरक्षा अथवा संवेदनशील सूचना लेल अलग सहमति माँगल जाए। रेवाक दिनक मूल्य रजिस्टरमे संख्या नहि बनल, मुदा हुनका भोरक काजपर जाएबाक लिखित सुविधा भेटल। ओ पहिल बेर विद्यालयसँ जल्दी निकलए पर अपराध-बोध बिनु पाछाँ घुरलीह।

नवल विद्यालयक दुआरसँ विदा भेलाक बाद कक्षामे एक अनपेक्षित प्रश्न उठल। बिरसी कहलीह, “जे पात्रकेँ मारि देल गेल, ओ अपन बात पूरा नहि कहि सकल। जँ हम कथा फेर लिखी तँ ओकर अन्त फेर ओही राखब?” पद्मा कहलीह, “पहिने जकर स्रोतक पाठ करैत छी, ओकर अन्त जसक तस बुझू। फेर अपन कल्पनाक अलग नाम दिअ। मूल घटना मेटि कऽ नब अन्त मूलक नामपर नहि लिखब।” बिरसी अपन कापीमे दू कोठरी बनौलीह— एकर ऊपर ‘जे कहल गेल’, दोसरक ऊपर ‘हम जे सोचैत छी’। पहिल कोठरीमे ओ कठिन प्रश्न लिखलीह; दोसरमे शम्बूकक हाथमे एकटा खुला पोथी बनौलीह।

साँझ जखन माटिक चाकवला गाड़ी विद्यालयक कातसँ गुजरल तँ ओकर पहिया ओहि ठाम अटकल जतय बरखाक पुरान गड्ढा छल। गाड़ीपर शकुन्तलाक घरक कच्चा घैल छलीह। एक घैल कातसँ घिसि गेल आ माटिक महीन धूरि खुलल खाताक पन्नापर पसरि गेल। शकुन्तला घैल उठबए स्वयं झुकलीह; केशरी ओकरा सँभालए दौड़लाह। ओ कहलीह, “आइ हम माटिक दामक बात करबाक लेल नहि आयल छी, मुदा कल्हि बकाया पूछबाक अछि। हमर नतिनीकेँ चाक दान करबाक कहब तँ पहिने ई बताउ जे ओकर अपन मन कतए लिखल जाएत।” केशरी हुनकर हाथसँ घैल नहि छीनलनि; काठक पटरी देलनि जेकर ऊपर ओ घैल सुरक्षित राखि सकथि।

विद्यालयक भीतर जतन दिनक अन्तिम पन्ना जमा कएलक। ओ लिखने छल —‘शम्बूकक कथाक अलग पाठ अछि; हमरा ओहिमे प्रश्न पूछबाक अधिकार अछि। नाव बेचनिहार नहि बेचलक तँ ऋण बचल; पानि लगल तँ पानि सभ घर नहि पहुँचल। लिखल बातक बाद काजो देखबाक अछि।’ पद्मा ओकर वाक्यक बनावट सुधारए पेन्सिल उठौलीह, मुदा पहिने पूछलीह, “तोरा ई अर्थ बदलए चाही?” जतन माथ हिलौलक। ओ केवल ‘पहुँचल’क अन्तिम अक्षर ठीक करबए देलक। संकेत पन्नाकेँ अन्य विद्यार्थीक लिखल उत्तरसँ संग रखलनि, सबसँ ऊपर नहि। शम्बूकक प्राचीन दृश्य अभिनयमे एतहि समाप्त भेल छल; आधुनिक रजिस्टरक दिन एखन बन्द नहि भेल छल।

मालती नलसँ फेर पानि भरबाक लेल बाहिर निकललीह। केशरी खाली नावक पटरीक रसीद झोरामे रखलनि। गोपाल अपन ‘तिरसूला’क नामभेदवला नक्शा मोड़लनि, सुशीला ‘बड़दरी’क नमूनाक तिथि जाँचलीह। सभ अलग दिशामे चलल, अपन-अपन अपूर्ण काज संग। विद्यालयक फट्टापर पद्मा पहिल पाँति मेटलीह नहि; ओकरा नीचे एकटा नव पाँति जोड़लीह—‘पढ़लाक बाद के अपन निर्णय बदललक?’ जतन एहि बेर उत्तर देबाक लेल हाथ नहि उठौलक। ओकर निगाह शकुन्तलाक घैलपर छल, जाहिमे माटि एखन कोमल छल, आ जकर आकार ककरो एकटा जन्मसँ निश्चित नहि भेल छल।

अध्याय १५२ • माटिक बकाया

भोरक ओस माटिक अधपाक घैलपर मोती जकाँ चमकि रहल छल। शकुन्तला पंडित टूटल किनारवला घैल उलटि कऽ चाकक पाटपर रखलनि आ ओहि भङ्गुर किनारमे नह सँ फँसल किरिच निकाललनि। कल्हि विद्यालयक गाड़ी अटकलापर जे घैल घसि गेल छल, ओकरा फेर बासन बनाओल नहि जा सकैत छल। मुदा अधपाक माटि फेर भिजा कऽ गूँथल जा सकैत छल। नतिनी ओसारमे परीक्षा-पत्र पसारने बैसल छलीह। एक पन्नाक कोनपर लाल स्याहीसँ शिक्षक लिखने छला—‘मापक आधार लिखू।’ शकुन्तला घैलक टूटल भाग आ कागदक ओ पाँति दुनू देखलनि। “तोरा माप लिखए सिखाओल जा रहल छौ,” ओ कहलीह, “आ हमरा अपन काजक दामक माप एखनहुँ सिद्ध करए पड़ैत अछि।”

नतिनीकेँ अपन उत्तर अपूर्ण लगैत छल। ओ पुछलक, “दादी, ई घैल फूटल अछि तँ एकर दाम कोन किताबमे लिखब?” शकुन्तला उत्तर देबासँ पहिने पुरान बही खोललनि। बहीक पाछाँ चारि खेपक बासनक पर्ची अलग डोरासँ बन्हल छल। दू खेप विद्यालय आ सामूहिक रसोइ लेल गेल छल; आन दू खेपक भुगतानपर ग्राहक आ ढुलाई करनिहारक अलग-अलग आपत्ति दर्ज छल। केहन बासन कतए गेल, ई निश्चित देखाबए पड़त; जे फूटल ओकर दोष स्वतः कारीगरपर नहि आवत। “ई घैल हमर नुकसान अछि,” शकुन्तला कहलनि, “मुदा जाहि घैलकेँ हाथे-हाथे स्वीकार कएल गेल, ओकर दाम एहि भङ्गुर किनारसँ काटल नहि जा सकैत।”

तखनँ हुनकर भायपोत अएलाह। ओ बड दिनसँ चाकक उत्तराधिकारक चर्चा उठा रहल छल। परिवारक पुरान चलनमे घरक पैघ चाक, आबा आ माटिक औजारक नाम अगिला पीढ़ीक हाथमे चुपचाप पहुँचैत छल। भायपोत चाहैत छला जे नतिनी विद्यालय छोड़ि नहि, मुदा पढ़ाइकेँ शौक राखि चाकक मालिकाना आ रोजक काज ग्रहण करए। “कागद अभी बना दिअ,” ओ कहला, “नहि तँ काल्हि कियो कहत जे परिवारक चाक पराय लोक चलबैत अछि।” नतिनी अपन परीक्षा-पत्र मोड़बाक लेल हाथ बढ़ौलक; शकुन्तला ओकरा

रोकलनि। “कागद ओकर हाथमे रहए दियौ,” ओ कहलीह, “कियो पराय केहन बनेत अछि, ओ प्रश्न पहिने अहाँ स्वयं बूझौ।”

भायपोतक मनमे परिवारक सम्पत्ति हेराएबाक डर छल, आ शकुन्तला एहि डरक उपहास नहि कएलीह। भट्टीक छत मेघ बरखामे टपकैत छल; वृद्ध हाथ हर बरख आबाक ईंट फेर नहि उठा सकैत छल। कियो कार्यभार नहि लेत तँ पुरान चाक जाम भऽ सकैत छल। मुदा ओ कहलनि, “चाक चलाएब सीखब आ ओकरा विरासतमे पएबाक बीच ओकर स्वीकृति अछि। हमर नतिनीकँ स्वीकृति देबाक उमेर आ इच्छा दुनू चाही। जन्मक दिनसँ ककरो माथपर काजक करार लिखल नहि जाइत।” भायपोत आरोप लगौलनि जे पढ़ल बच्चा घरक माटि छोड़ि देत। नतिनी कने थरथरायल आवाजमे कहलक, “हम माटि छोड़बाक बात नहि कहने छी; हम पुल आ नापक पढ़ाइ करबाक बात कहने छी।”

शकुन्तला बहीक खाली पन्नापर तीन वस्तुक नाम लिखलनि—चाक, आबा, औजार। ओ प्रत्येकक आगाँ वर्तमान उपयोग, मरम्मत आ मालिकाना प्रश्न लेल अलग जगह छोड़लनि। “एखन चाक हम चलाएब, निरु संग आबाक दिन बाँटब, आ जे श्रमिक मदद करत ओकर मजदूरी देब,” ओ कहलनि। “नतिनी चाहे तँ सीखत, नहि चाहे तँ ओकरा कोनो दण्ड नहि। भविष्यक उत्तराधिकार ओकर समझदार सहमति आ घरक सब सदस्यक स्पष्ट बातसँ तय होएत, एकर पढ़ाइ रोकि नहि।” भायपोत एहन लिखित वाक्य पहिले नहि देखने छल। ओ कागद छीनलनि नहि; केवल पुछलनि जे बासनक बकाया बिना ई सब चलत कोना। शकुन्तला पुरान चारि पर्ची उठा लेलनि। “आइ ओही बातक निर्णय लेब।”

फाटक ओहि कात कुम्हरौटिसँ आएल दू नव कारीगर पर्ची बनबए सीखि रहल छल। एकजन बूढ़ कारीगर राखक रंग देखि कहला जे आबामे आगि बेसी भेल छल। निरु हुनका टूटल बासनक ठाम देखौलीह—तलाक भीतर छोट फाट छल, मुदा ऊपरक लाल रंग नीक छल। “रंग सुन्दर भेलासँ घैल पानि नहि रोकत,” ओ कहलीह। बुजुर्गक अनुमान उपयोगी छल; ओकर जाँच आवश्यक छल। शकुन्तला देखलनि जे ग्राहक बारम्बार सुन्दर नमूना माँगैत छल, परखनिहारक मजदूरी नहि देब चाहैत छल। ओहि दिनसँ प्रत्येक खेपमे

नमूनाक लागत अलग लिखबाक बात ठहरल। एहि लागतसँ देय बढ़त की नहि, ग्राहकसँ नव सहमति चाही छल; पुरान रसीद चुपचाप नहि बदलल गेल।

कुम्हरौटिक माटिस्थल धरि जे पगडंडी छल, ओकर प्रवेशपर एखनहुँ सुरक्षा घेराव ठाढ़ छल। बरसातमे खोहक एक कात खसल छल, तँ सम्पूर्ण जोखिम झूठ नहि छल। मुदा घेरावक भीतरक सुरक्षित बाहरी हिस्सा बन्द करबाक लिखित आदेश एखन तक स्पष्ट नहि भेटल छल। तारा मल्लिक आ निरु कुमाल अगिला स्थल-परीक्षाक लेल प्रतीक्षा करैत छलीह। निरुक टोकरीमे लाल, धूसर आ चिक्कन तहक तीन नमूना अलग-अलग कपड़ामे छल। निरु कहलनि, “बासनक आवाज सुनि कऽ ओकर मजबूतीक कहबी बहुत अछि, मुदा पानिमे राखि आ आगिमे पका कऽ देखल बिना ग्राहककेँ पक्का बात नहि कहब।” शकुन्तला नमूनासँ अपन पुरान माटि नहि मिला देलनि।

अधिकारीक मेजपर पुरान आवेदनक प्राप्ति-अंक खोजबामे देरि भेल। कागद मिलला पर ओ कहलनि जे पहिने सभ देय एक रकममे समाप्त करबाक प्रस्ताव छल; कारीगरसभ स्वीकार नहि कएलनि, तँ फाइल अटक गेल। शकुन्तला अपन बही सामने रखलनि। “अटकल ओहि लेल जे अलग-अलग बिलकेँ एक मुँहसँ निपटाएब चाहैत छलहुँ,” ओ कहलनि। “आइ चारि खेपमे जाहि दू खेपक प्राप्ति आ गुणपर कोनो विवाद नहि, ओकर रकम छोड़ू। बाँचल खेपक निरीक्षण राखू। बाट बन्द रहबाक नुकसान फेर आन आवेदनमे सुनू। कोनो रकम लैत हम सम्पूर्ण दावा माफ नहि करब।” अधिकारी पहिले आश्चर्यसँ देखलनि, तखन रसीदक स्वीकार-चिह्न मिलाबए लगला।

एक ग्राहकक प्रतिनिधि कहलनि जे माटिस्थलपर जएबाक रोक हटि गेलाक बादे भुगतान देल जाएत। निरु तुरन्त आपत्ति कएलीह। “अहाँ बासन पहिने प्राप्त कएलहुँ,” ओ कहलीह, “फाटक पाछू बन्द भेल। अहाँक रसोइमे जे बासन चलि रहल अछि तकर दाम खोहक अनुमति पर निर्भर नहि।” प्रतिनिधि कहलनि जे संस्था अपन अनुदानक प्रतिक्रामे अछि। शकुन्तला पूछा, “अनुदान भेटलाक दिन लिखल अछि? नहि। तखन हमर श्रमक दिन किएक अनिश्चित?” कमरेमे बैसल लेखापाल पुरान प्राप्ति-पर्ची आ वर्तमान भुगतान-शीर्षक जाँचलनि। बिना कोनो नव दोष तय कएने ओ विवादरहित दू खेपक आंशिक भुगतान जारी करबाक आदेश तैयार कएलनि।

आदेशमे एकटा वाक्य छल—‘समस्त देयक अन्तिम निबटान’। शकुन्तला कलम पकड़लनि मुदा सही नहि कएलीह। ओहि वाक्यपर अंगुरी रखि कहलीह, “ई हटाउ। हम आजु जे पाइत छी से दू स्वीकृत खेपक पहिल भुगतान। बाकी देय आ अलग क्षतिपूर्तिक सुनवाई जीवित रहत।” लेखापालकेँ नव प्रति निकालए पड़ल। दोसर पन्नामे स्पष्ट लिखल गेल जे भुगतान आंशिक अछि आ शेष मदपर अधिकार सुरक्षित अछि। ओहि सुधारमे समय लगल; प्रतीक्षामे बैसल लोकक आँखि थाकि गेल। मुदा शकुन्तला बिना पढ़ने हस्ताक्षर नहि कएलीह। निरु दस्तावेज पढ़ि सुनौलीह। भायपोत चुपचाप ओहि पन्नाक दोसर प्रति हाथमे लेलक।

दिन चढ़लापर कार्यालयक बाहर दू गाड़ी माटि लेबाक प्रतीक्षामे ठाढ़ छल। चालकसभक भाड़ा खाली घेरावक समयसँ बढ़ि रहल छल। तारा कहलनि, “माटिस्थलक पानी उतरबाक माप आ खोहक किनारक ढलान फेर देखल जाएत। एखन सुरक्षित राह निश्चित कऽ नहि सकैत छी।” एक अधीर युवक पूछलक जे पुरान कारीगरसभ तँ एतएसँ सैकड़ों बेर माटि लएने छथि; नब मापक की आवश्यकता? शकुन्तला उत्तर देलनि, “हम सैकड़ों बेर गेल छी, ताहि लेल जे खोह धँसल से नहि देखल कहि नहि सकैत छी। मुदा जोखिमक जाँच नामपर सम्पूर्ण बाट बन्द राखब सेहो बिना प्रमाणक निर्णय अछि।” तारा स्थल-दर्शनक नब तिथि आ परीक्षणमे शामिल कारीगरसभक नाम दर्ज कएलीह।

माटिक दामक पहिल आदेश भेटलाक खबर पड़ोस धरि पहुँचल तँ लोक अपन-अपन हिसाब लऽ अएलाह। एक युवतीक विवाहमे जे बासन गेल छल ओकर भाड़ा एखनहुँ कटल नहि छल; दोसर घरमे जलसँ चिरल घैलक शिकायत छल। शकुन्तला सभकेँ साँझमे एक संग बुलौलीह, मुदा बहीमे हुनकर पन्ना मिला नहि देलनि। शिकायतवाली घैल स्वयं देखलीह, ओकर दोषक निर्णय अगिला जाँच धरि रोकलनि। ‘कारीगरक पक्ष लेब’ कहि एकर दोष नकारब आसान छल; ‘ग्राहकक पक्ष’ कहि बासनक समस्त दाम रोकब ताहिसँ सेहो आसान। मुदा दुनू सहज बाटक बीच टूटल घैल हाथसँ उठबैत ओ बुझलीह जे ई रोजक न्यायक वजन अछि।

ओहि समय धनी राजभर सिंचाइ नालाक पुरान आवेदन लेने अएलाह। हुनकर खेत किराएपर छल; जे छोट नालासँ पानि पहुँचैत छल, ओकर मुँहपर कतेको बेर माटिक ढेरी

जमा भऽ गेल छल। निजी बाड़ि हटबएबाक मांगमे ओ पहिने उपस्थित भेने छला, मुदा नाला साफ करबाक खर्च के देत से तय नहि भेल छल। धनी कहलनि, “जँ नाला सभक उपयोगक अछि तँ केवल हमर कुदर किएक चलत? आ जँ हम अकेले साफ करब तँ काल्हि कियो कहत जे पानि हमर कब्जामे अछि।” तारा नालाक ढालक पुरान रेखा खोललीह। धनी ओकरा एहि बासनक खोहसँ सीधे जोड़बाक विरोध केलनि; दुनू ठामक पानि आ भूमि अलग छल।

नतिनी अपन उत्तर-पन्नाक पाछू चाकक गोल रेखा खींचलक। बीचमे एकटा छोट बिन्दु राखि कहलक, “जे घुमैत अछि तकर बीच स्थिर रहैत अछि?” शकुन्तला लकड़ीक पाटकेँ अंगुरीसँ घुमौलनि; चाक कने झूमल आ धीमे रुकि गेल। “बीच स्थिर कहब तँ पहिले देख जे पाट टेढ़ तँ नहि,” ओ कहलीह। बच्ची हँसि उठलि। भायपोत पहिने ई दृश्यदेखि आँखि फेरि लैत, मानो पढ़ाड़ चाकक अपमान हो। एखन ओ पूछलनि जे विद्यालयक शिक्षककेँ एकदिन ई पाट देखए बजाओल जा सकैत अछि की। शकुन्तला कहलनि, “हँ, मुदा नतिनीक इच्छा सँ, आ शिक्षकसँ सेहो पुछि कऽ।” पहिल बेर निमन्त्रणक प्रश्नक भीतर अधिकारक भेद सहज लागल।

छोट बैठकमे किसान, किरायेदार आ ओहि नालाक पाछाँ बसनिहार दू परिवारक अलग मत आयल। ऊँच कातक खेतमे पानि नहि पहुँचल तँ फसिल सुखाएत; मुदा बिना निकासी खोलल गेल पानि नीचाँक आँगनमे चढ़ि सकैत छल। धनी अपन पुरान अधिकारक दावा पर कटलनि नहि; ओ मरम्मतिक साझा जिम्मेदारी स्वीकार करबाक प्रस्ताव रखलनि। “हम कुदर चलाएब,” ओ कहलनि, “जकर खेत लाभ लेत ओ दिन वा खर्च देत, मुदा जे घर डूबबाक डरमे अछि ओकर बात पहिने सुनल जाए।” आधिकारिक नाप आ प्रभावित परिवारक सहमतिसँ अस्थायी सफाई तय भेल। स्थायी सिंचाइ-अधिकार आ जमीनक मालिकाना एखन निर्णयाधीन रहल।

धनी शकुन्तलाक बहीमे चाक आ आबाक खाना देखि मुस्कुरेलाह। “हम सभ जमीनक मालिक नहि, काजक जिम्मेदारी सँ भागतहुँ नहि,” ओ कहलनि। शकुन्तला प्रतिप्रश्न कएलीह, “अहाँ नालाक रखरखावक जिम्मेदारी लेलहुँ, मुदा ओकरा अपन बेटाक माथपर जन्मसँ लिखि देब?” धनी कने सोचलनि। “नहि,” ओ कहलनि, “साझा काजक बारी

परिवारमे तय होइत अछि, मुदा जे लोक सहमत नहि ओकर श्रमकेँ दान कहि नहि सकैत छी।” हुनकर एहि छोट उत्तरसँ भायपोत हँसि पड़लाह। विवाद सभ समाप्त नहि भेल छल, मुदा चाककेँ बिना प्रश्नक विरासत मानबाक हुनकर पहिल हड़बड़ी किछु कम भेल।

तारा अपन थैलीसँ ‘करेह’ नाम लिखल पुरान माप-पत्रक प्रति निकाललीह। नदीक पुरान चिन्ह आ वर्तमान भूचिन्ह मिलएबाक लेल ओकरा पाछाँ किछु वर्षक नापक स्रोत चाही छल। कार्यालयक एक युवक कहलनि जे कुम्हारौटिक खोहमे पानि जमैत अछि, तँ ओहि नदीक शाखा अवश्य होएत। तारा हाथ उठौलीह। “एतय जलजमाव देखल गेल अछि, मुदा एहि आधारपर नदीक शाखा घोषित करब उचित नहि। माप-पत्रमे लिखल करेहक चिन्ह अपन काल, मापक विधि आ स्थानक साक्ष्यसँ जाँचल जाएत।” शकुन्तला खुश भेलीह जे हुनकर माटिक बाटक आवेदनकेँ कोनो अनजान नदीक पैघ विवादमे बिना कारण नहि मिलाओल गेल।

रतन सेहो अएलाह। हुनकर झोरामे ‘जीबछ’ नाम लिखल पुरान जलमार्गक यादक संग एक कागद छल। रतन बचपनमे जे घाट देखलने छला, ओकरा वर्तमान नक्शापर सरसरी एकहि ठाम राखबाक प्रस्ताव केलनि, फेर स्वयं ठमकि गेलाह। “जे माथमे याद अछि, से माप नहि,” ओ कहलनि। “दू जुगक बाट बदलि गेल होएत। हमर देखल घाटक कथा लिखू, मुदा जाइ काल्हि जमीनपर नाप लिअ।” तारा हुनकर मौखिक गवाही अलग दर्ज कएलीह; मूल मार्गक पुष्टि एखन शेष रहल। धनी पूछलनि जे एहि जाँचसँ नालाक मरम्मत रुकि जाएत की? अधिकारी उत्तर देलनि जे स्थलपर तत्काल जोखिम-निवारण आ दीर्घकालीन नक्शा-परीक्षणक फाइल अलग चलत।

दुपहरमे शकुन्तला घर लौटलीह तँ नतिनी परीक्षा-पत्रक दू प्रश्न पूरा कऽ लेने छलि। एक प्रश्नमे घनफलक आयतन निकालबाक छल। बच्ची माटिक खाली साँचामे पानि भरि देखब चाहैत छलीह। शकुन्तला कहलनि, “पहिने ई साँचाक तली जाँच, फूटल रहत तँ पानि बहि जाएत। आ किताबमे देल संख्या आ तोहर साँचाक आकार एक नहि।” बच्ची हँसलि। ओ अपन प्रश्नक आकृति कागदपर खींचलक आ नीचाँ लिखलक जे मापक इकाइ बदलबासँ उत्तर बदलैत अछि। शकुन्तला ओकरा शुद्ध गणना नहि सिखा सकलीह, मुदा मापसँ पहिने वस्तु देखबाक अपन अभ्यास साझा कएलीह।

भायपोत आँगनमे फेर अएलाह। एहि बेर हुनकर हाथमे पुरान हस्तलिखित पारिवारिक पन्ना छल। ओ कहला जे परिवारक सब स्त्री-पुरुषक मत बिना उत्तराधिकारक कागद बनब तकरा भविष्यकेँ झंझट होएत। शकुन्तला स्वीकार कएलीह। “हम अकेले सम्पूर्ण परिवारक हक बाँटि नहि सकैत छी,” ओ कहलीह। “मुदा अपन काजक संचालन आ अपन नतिनीपर दबाव नहि देबाक निर्णय एखन लऽ सकैत छी। चाकक वास्तविक मालिकाना पुरान कागदक जाँचसँ तय होएत; ओहि बीच बच्चीक नामपर बाध्य श्रमक कोनो करार नहि।” भायपोत पुरान पन्नाकेँ बहीक संग नहि गूथलनि; ओकर अलग प्रति रखबाक कहला।

शकुन्तला निरुकेँ बजा कऽ आबाक आगामी तीन दिनक काज बँटलीह। कोन खेपमे केतबा बासन, केकर इन्धन, केकर मजदूरी, आ फूटल बासनक नुकसान केनाहि दर्ज होएत, सभ लिखा गेल। निरु कहलनि, “हमार नाम कुमाल अछि, अहाँक कुम्हार; काजक समानता सँ हम दुनू एक परिवार नहि भऽ जाइत छी। साझा आबाक हिसाबमे नाम अलग रहय।” शकुन्तला सहमति देलनि। नतिनी ओहि खाता धरि आएलि तँ निरु ओकरा चाकपर माटिक डल्ला केन्द्रमे राखबाक तरीका देखबौलीह। बच्ची देखलक, मुदा दुनू हाथ बढौलक नहि। “आइ हम अपन परीक्षा समाप्त करब,” ओ कहलक। निरु हँसलीह, “तखन ई शिक्षो बेकार नहि जायत।”

साँझधरि विवादरहित आंशिक रकम कार्यालयक माध्यमसँ शकुन्तलाक नामपर स्वीकृत भेलाक लिखित सूचना पहुँचल। ओ रकम तुरन्त पूरा हाथमे नहि छल; भुगतानक जारी आदेश आ वास्तविक प्राप्ति अलग बात छल। शकुन्तला आदेशक प्रति बहीमे राखि निरुकेँ कहलनि जे पैसा खाता पहुँचलाक बादे इन्धनक पिछला उधारी दैत छथि। निरु कहलनि, “एकर मतलब हमरा एखनहुँ प्रतीक्षा करए पड़त।” शकुन्तला हुनकर आँखिसँ आँखि मिला कऽ कहलीह, “हँ, मुदा तोहर देय गुम नहि करब। एहि आदेशसँ हमर हिसाबक एकटा बाट खुलल अछि, तोहर पूरा हिसाबक अन्त नहि।”

नतिनी पूछलक जे दादीकेँ पुरान बासनक दाम भेटल तँ ओ घरमे की बदलतीह। शकुन्तला पहिने कहलनि जे आबाक फूटल चिमनी बनबौतीह, फेर नतिनीक पाठक लेल गणितक कापी किनतीह। बच्ची पुछलक, “आ अपन हाथक दर्द?” शकुन्तला ओकर हाथ

देखलनि। दिन भरिक माटि हथेलीक रेखामे सूखि गेल छल। “ओकरो देखाएब,” ओ कहलीह। भायपोत एहि बेर एहि उत्तरपर हँसला नहि। हुनका बुझायल जे घरक पुरान चाक बचएबाक भावमे घरक देहक खर्च कहाँ लिखल जाइत अछि, ई प्रश्न सेहो अनुत्तरित छल।

राति खेबाक पहिने परिवारक छोट बैठक भेल। शकुन्तला चाक दानक तैयार कागद फाड़लनि नहि; ओकरा पर लिखल पुरान प्रस्तावक बगलमे ‘स्वीकृति नहि देल गेल’ अंकित करौलनि, जाहिसँ बादमे ओकर गलत उपयोग नहि होअय। नव प्रस्तावमे काजक संचालनक अन्तरिम व्यवस्था, कार्यरत लोकक मजदूरी, परिवारक वैध मालिकाना-दावाक परीक्षण, आ नतिनीक स्वतन्त्र शैक्षिक निर्णयक चारि अलग खंड बनल। बच्चीसँ कोनो कानूनी घोषणा पर हस्ताक्षर नहि लेल गेल। ओकरा केवल पुछल गेल जे ओ एखन की पढ़ए चाहैत अछि। ओ सीधा उत्तर देलक, “हम पानीक माप पढ़ब, मुदा घैल बनएबाक कला सेहो देखब।”

शकुन्तला बच्चीक परीक्षा-पत्र लऽ कऽ चूल्हाक पास बैसलीह। अन्तिम प्रश्नमे अलग-अलग घरक पानि भरबाक समय देल छल। नतिनी गणना सही कएने छलि, मुदा उत्तरक नीचाँ अपने सँ लिखने छलि—‘जकर घर धरि नल नहि, ओकर समय एकहि नियमसँ नहि नापल जा सकैत।’ शकुन्तला ओ पाँति पढ़ि चुप रहलीह। “किताब ई नहि पूछने छल,” बच्ची कहलक। “आइ हमरा एतबा बात बुझायल।” शकुन्तला उत्तर देलनि, “किताबक उत्तर ठीक राख, आ जे देखलह तकर प्रश्न अलग सँ लिख। दूनूक अपन काज अछि।”

आँगनक कात चाक एखन स्थिर छल। ओहि पर केकरो नामक नव पट्टी नहि लागल छल। मुदा ओहि दिन एकटा भेद स्पष्ट भऽ गेल छल—कारीगरीक सम्मान लेल बच्चाक भविष्य गिरवी राखब आवश्यक नहि। शकुन्तला नतिनीक परीक्षा-पत्र खुट्टीपर टाँगलीह, जाहिसँ आगाँक दिनमे देख सकथि। घरमे आनन्दक कोलाहल उठल; भायपोत उत्तरक एकटा गणितक अंक गलत पकड़ि लेलाह, बच्ची हुनका दोसर पद्धतिसँ बुझौलक। निरु आबासँ घुरैत चौखटपर ठमकि ओ हँसी सुनलीह। ओ किछु नहि पूछलीह; अपन श्रमक पर्ची शकुन्तलाक हाथमे दऽ कऽ विदा भेलीह।

देर रातिमे शकुन्तला पर्चीसभक तीन गट्टर बनौलीह—माटिक प्रवेश आ खोहक सुरक्षा, अलग-अलग बासनक शेष देय, आ नतिनीक विद्यालय। ओहि तीनू गट्टरकेँ एके सन्दूकमे राखलनि, मुदा एक नहि कएलीह। देयक लिखित आदेश हुनकर सामने छल, रकमक वास्तविक आगमन एखन शेष। धनीक नालाक अस्थायी सफाइक तिथि निश्चित छल, स्थायी अधिकार नहि। तारा करेहक पुरान चिन्ह मापबाक लेल फाइल जमा कएने छलीह; रतन जीबछक स्मृतिक स्थल देखए सहमति देलने छला। भोरमे जे माटिक घैल टूटल छल ओकर फेर गूँथल डल्ला भीजल कपड़ाक नीचाँ रखल छल। शकुन्तला दीप मिझा देलनि; बच्चीक पढ़ाइबला घरमे चाकक धीमा स्मृति एखनहुँ घुमि रहल छल।

अध्याय १५३ • नदीक माप

हीरा सहनी भोरक पहिल उजासमे तिलवाहक किनारपर बाँसक लग्गी राखि ओकर माथक लाल डोरी खोलैत छलाह। राति भीजल डोरीक गाँठ सरकि गेल छल। ओ एक हाथसँ पुरान निसान पकड़लनि, दोसर हाथसँ नव डोरी नापि बान्हलनि। सामने पानि परसालक चिन्हसँ किछु नीचाँ छल, मुदा पाँक पर नहाएल घासक रेखा किछु आन कहैत छल। गोपाल माझी नावक पेंदीसँ पानी निकालि रहल छलाह। “आइ सरकारी फीताक संग अहाँक बाँस लड़त?” ओ पूछलनि। हीरा मुस्कुरेलाह नहि। “लड़त तँ नाव फेर हारत। आइ देखब, हमर बाँस कतय सही अछि आ कतय हम स्वयं गलत।”

२०४०क दोसर पोखरि-उराहिक कार्यदल तिलवाहक कात एकत्रित होइत छल। उराहिक मूल स्थान पोखरि छल, मुदा पोखरिसँ बाहर जाएवला जलनिकास आ नावक सुरक्षित बाट बिना जाँचने कादो हटेबाक निर्णय नहि लेबाक छल। तारा कापी, स्तर-मापक आ मापफीता लेने पहुँचल छलीह। अदिति अपन पहिने संशोधित प्रतिवेदनक एक प्रति रखलनि; पहिनुक गलती मेटायल नहि छल। एक युवक हाथमे कुदार लेने घेराक भीतर जाएब चाहलक। गोमती ओकरा रोकि कहलीह, “पहिने ककरा कोन ठाम, कतेक घण्टा, कोन दामपर काज देल जाएत से सुनू। पानि नपबाक उत्साहमे मजदूरी नदिमे नहि बहाएब।”

हीराक बाँसपर ‘भरि ठेहुन’, ‘भरि कमर’ आ ‘भरि मर्द’ लेल रंगक पट्टी छल। एतेक वर्ष धरि ओ अपन देहक अनुपात आ घाटक चिन्ह मिलबैत छलाह। तारा हुनकासँ आग्रह कएलीह जे ई शब्दसभ ज्योंक त्यों पंजीमे लिखाओल जाए, मुदा संगहि निश्चित इकाइमे ओकर तुलना हो। दलक छोट सहायक एक लाठी पानिमे उतारलक आ कहलनि, “मुद्दा तँ सरल अछि, ठेहुन मतलब एतेक।” हीरा ओकरा कात ठाढ़ कऽ देखौलनि जे सहायकक ठेहुन हुनकर ठेहुनसँ अलग उँचाइपर पड़ैत अछि। “हमर देह हमर स्मृति अछि,” ओ कहलनि, “सभक देह लेल कानून नहि।”

पहिल परीक्षण सूखल चबूतरापर भेल। तारा मापफीता सीधा पसरौलीह। लग्गीक पुरान हरियर गाँठ आरम्भ-बिन्दुसँ कनेक ऊपर छल; बाँसक पेंदी घिसल छल आ पहिनुक

एक खण्डमे रङ्ग पानिसँ फैलि गेल छल। हीरा रंगनिहार लड़काकेँ दोष नहि देलनि। “ई गाँठ हम अपने सरकौने रही,” ओ स्वीकार कएलनि, “एक बेर टूटल माथ फेर काटल छलहुँ, मुदा सभ पट्टी फेर नहि मिलौने रही।” तारा दू ठाम नब स्थिर निसान देलनि आ पंजीमे पुरान चिह्नक त्रुटि अलग दर्ज कएलनि। पुरान दिनक गहराइ अब बिना संशोधनक प्रमाण नहि रहि सकैत छल।

गोपाल कहलनि जे आजुक दहिन धारपर उठैत सूक्ष्म भँवरी पुरान नक्शामे बनल रेखाक ठीक ऊपर नहि अछि। कार्यालयक नक्शामे ‘ऊपरक पार-बाट’ लिखल बिन्दु ओहि ठाम छल जतय पछिला आपदाक समय उद्धार टोली नाव मोड़बासँ मना कएने छल। किछु लोक ओकरा ‘तिरसूला’ कहैत छल, मुदा गोपाल स्पष्ट कएलनि जे तिरसूला हुनकर पुरान उद्धार-पर्वीमे सुनल अलग ठामक नाम अछि; एक शब्दमे दूनू मार्ग मिला देब घातक भऽ सकैत अछि। ओ ‘तिलवाहक उतरही मोड़’ नामक स्थानीय पहिचान बतौलनि, आ तारा ओ नामकेँ जाँचल ठामक चिह्नसँ जोड़बाक अनुमति देलीह।

तारा नदीक दूनू कात तीन परीक्षण-बिन्दु चिन्हित कएलीह। पहिल ठाम लग्गी ठोस बालूपर अटकल; दोसर ठाम मुलायम गादमे उतरल; तेसर ठाम धारक धक्का एतेक तेज छल जे दलकेँ किनारपरसँ नाप छोड़ि सुरक्षित नावक सहायता लेब पड़ल। एतय एकटा मापसँ पूरा दिनक सुरक्षित मार्ग घोषित नहि कएल जा सकैत छल। हीरा कहला, “जँ दू बेरक बीच पानि बदलल, हम नव माप लएब। जे लोक पहिने हमर बात मानि नावपर बैसल, ओ आब पंजीक सीमा सुनि बैसत।” कार्यालयक कर्मचारी पूछलक, “एते शर्त राखब तँ पास कतय खुलत?” गोपाल कहलनि, “जतय वस्तुतः खोलि सकब।”

तिलवाहक सँकरी धारपर परीक्षण-नाव खाली चलाओल गेल। श्यामक जाँचल काठ आ ललितक कसनीक प्रमाण अलग पन्नामे छल; मरम्मत मात्रसँ जलमार्गक सुरक्षा सिद्ध नहि होइत छल। हीरा पाछाँ बैसि लग्गी धेलनि, गोपाल मार्गक चिन्ह बतबैत रहलाह। जखन नावक अगिला माथ बालूक मोड़ लग पहुँचल तँ हीरा अपन अनुमानक आधारपर कनेक बाम घुमेबाक कहलनि। अदितिक मापक संकेत आ गोपालक देखल धार दुनू ओकर विरोधमे छल। हीरा तत्काल कहलनि, “नहि, दहिन राखू।” नाव शान्त कात पहुँचल। किनारपर घुरि ओ स्वयं गलतीक ठाम पेंसिलसँ घेरलनि।

“तखन अहाँक पुरान अनुभव अस्वीकृत?” लिपिक पूछलक। हीरा हाथक चामपर सूखैत कादो देखलनि। “जकरा सुधारा नहि जा सकए, ओकरा अनुभव कहि कोन लाभ? हमर पुरान अनुमान ओहि दिन लेल छल। आइ जे नपल गेल अछि, तकर अपन शर्त लिखू।” तारा परीक्षणक समय, उपकरण, देखनिहार व्यक्तिक नाम आ पानि बदललापर पुनर्जाँचक आवश्यकता दर्ज कएलीह। ओहि पन्नामे ‘स्थानीय नाविकक ज्ञान—सुधार सहित स्वीकृत’ लिखल गेल। हीरा आग्रह कएलनि जे स्वीकारक माने सभ मौसिमक खुला अनुमति नहि बुझल जाए।

गामक ओहि पार किछु परिवारक लेल नाव बन्द भेला पर औषधि आ धानक छोट खेप लए जाएब कठिन छल। मधु केवट पुछलीह जे जँ एक सँकरी सुरक्षित बाट राखल जाए, तकर पहरा आ बदलैत पानिक माप के करत। गोमती काजक सूचीमे दू अलग मद जोड़लनि—पहराक श्रम आ मापक श्रम। हीरा कहलनि जे ओ अपन नावक नियमित कमाइक बीच सभ घण्टा मुफ्त नहि देताह। किछु लोक आपत्ति कएलक जे सामूहिक आयोजनमे सेवाक दाम लिअब स्वार्थ अछि। मधु उत्तर देलीह, “दानक नावपर लोकक पेट नहि भरैत; जखन सार्वजनिक कामक दाम लिखैत छी तखन पहराक दाम किएक नहि?”

दू पहर धरि चर्चा चललापर सीमित बाटक सशर्त अनुमति बनल। दिनक उजासमे, पुनः माप लेलाक बाद, जाँचल नाव आ प्रशिक्षित नाविकसँ मात्र छोट आवागमन होएत; भारक सीमा नावक अलग परीक्षणसँ तय होएत। तेज धार, अपर्याप्त दृश्यता वा माप बदलबापर नाविककेँ फेर रोकबाक अधिकार रहत। चिकित्साक आपातकाल लेल स्थल-मार्गक वैकल्पिक व्यवस्था अलग सूचीमे देल गेल। ई छोट छूटक खबर सुनि यात्रिसभ खुश भेलाह, मुदा हीरा आग्रह कएलनि जे पट्टपर ‘सभ लेल सदिखन खुलल’ नहि लिखल जाए।

ओहि बीच रतन वनपर पुरान चर्म-जिल्दवला कापी लऽ पहुँचलाह। हुनका बचपनक जीबछक घाट याद छल, जकर तुलना एखन नदीक मोड़सँ करैत रहलाह। पहिने ओ कहने छलाह जे दूटा पीपरक बीचवला बाट पुरान घाटक पश्चिममे पड़ैत छल। आजुक स्थलपर मापल दूरी आ पुरान कापीक किनारक अलग चिन्ह देखा कऽ तारा पूछलीह, “पीपरक जोड़ी एही कालक?” रतन स्मृति टटोललनि। “पहिल गाछ बाढ़िमे ढहि गेल छल,” ओ

कहलनि, “दोसर बादमे रोपल गेल। हम दूनूँ एकहि स्मृतिमे राखि लेलहुँ।” हुनकर आवाजमे लाज नहि, कने शोक छल।

रतन जतेक नाप ठाम-ठाम बता सकैत छलाह, ओतेक बतौलनि; जकरा केवल बचपनक दिशा बुझैत छलाह, ओकरा ‘कहल स्मृति’ लिखौलनि। ‘पहिल गाछक पुरुब’ लिखल अनुमानक बगलमे आजुक परीक्षणक आधारपर नव रेखा बनल। एहि सुधारसँ पुरान नामक सम्मान कम नहि भेल; उलटि गलत बाट पकड़ि खोहमे उतरबाक जोखिम घटल। रतन कापीक कोरामे लिखलनि, “हम देखल घाटक कथा अलग अछि; आइक जमीनक नाप अलग।” तारा हुनकर सहमति लेने ओ वाक्य सार्वजनिक कार्य-पत्रमे राखलनि, मुदा मूल निजी कापी हुनकें घुरा देलीह।

गोपालक पुरान उद्धार-पत्रमे दोसर गलती भेटल। एक बाटक स्थानीय नाम नगरक प्रतिलिपिमे उलटि लिखल छल, जाहिसँ आपदाक समय कियो चुकी दिशामे सन्देश लऽ जा सकैत छल। गोपाल नब चिन्हक संग वास्तविक पहुँच-जगह देखौलनि। सहायक पूछलक जे एहि सुधारसँ २०३९क आपदामे कोन आदेश गलत छल से सिद्ध भऽ गेल? गोपाल मना कएलनि। “आइ गलत नाम सुधारल। ताहि रातिक आदेशक मूल प्रति आ जे लोक सुनलनि हुनकर गवाही अलग चाही।” तारा ओहि सीमा लिखलनि। नव नक्शाक प्रयोग सुरक्षित बाट लेल होएत, अभियोगक अन्तिम प्रमाण लेल नहि।

माप-दल पोखरि दिस घुरल तँ उराहिक कार्यदल पहिने सँ छनौट कएने छल जे गादक कोन ढेरी कतय राखल जाएत। पहिनुक वर्षमे उठाओल कादो दू घरक दुआर ढाँकि देने छल। एहि बेर ओहि घरक स्त्रीसभ निर्णयमे बैसल छलीह। एक स्त्री कहलनि, “हमर चौखट नहि पूछल गेल छल, तकरा सामूहिक सफाई कहि गान नहि गाउ।” गोमती हुनकर घरक सामनेक बाट पहिने खोलबाक काम देलीह, आ ढुलाईक भाड़ा कुदर चलएबाक मजदूरीसँ अलग रखलनि। उपस्थितिक पंजीमे कियो केवल निःशुल्क सेवक नहि लिखल गेल।

उर्मिलाक नामक जगह ओहि पंजीमे रिक्त नहि राखल गेल छल, कारण ओ एहि सालक कार्यदलमे उपस्थित होएबाक स्थिति मे नहि छलीह। २०३९क अस्पताल दुर्घटनामे हुनकर मृत्यु सत्यापित भऽ चुकल छल। किनारपर जखन कपड़ा धोबन्हार लोक पाट धरि

ठाम माँगलनि तँ सरिता ओकरा देखैत बहुत काल चुप रहलीह। नैराक शोक हुनकर भीतर अलग चलैत छल; उर्मिलाक जीवित काजक बारी याद पड़ला पर ओ आवाज सम्हारि कहलीह, “जे भार लऽ पाटपर जाएत ओकर बाट नापू। उर्मिला एहि बातपर पहिने टोकने छलीह।” ओहि वाक्यकेँ कोनो मृत व्यक्तिक सहमति नहि मानल गेल; पाटपर वर्तमानमे काज करनिहार स्त्रीसभ अपन-अपन माप आ माँग रखलनि।

उर्मिलाक परिवारक एक सदस्य घाटक पाछाँ बैसि धुलाईक बही देखबैत छलाह। बहीमे किछु मजदूरी आ कपड़ा पहुँचबाक समयक बीच मेल नहि छल। ओ कहलनि, “नावक बाट खुलब जरूरी अछि, मुदा एहि रास्तासँ ओ जे अंतिम गट्टर पठौने छलीह तकर हिसाब एखन नहि खुलल।” गोमती फाइल हाथमे लेलनि, मुदा उराहिक मजदूरी-पन्नामे ओ रकम नहि मिलौलनि। पारिवारिक देयक अलग रजिस्टरमे प्राप्ति-अंक देल गेल। उर्मिलाक अनुपस्थिति सार्वजनिक घोषणाक विराम बनल; हुनकर अपूर्ण मजदूरीक अधिकार फेर एकटा वास्तविक कागदक रूपमे सभक सामने आयल।

दुपहरिया भोजनमे रुखसानाक रसोइसँ आएल भात आ दालि पातपर परसल गेल। एक लड़का हीराक नव नापल बाँस देखि कहलक, “हमरा एहिसँ अपन उँचाइ नपब!” हीरा ओकरा रोकलनि नहि; मुदा कहला जे लग्गीक पेंदी कादोमे उतारल छल, पहिने साफ करू। शकुन्तलाक नतिनी नापफीताक शून्य बिन्दु देखैत छलीह। “जँ बाँस पातर होइते घिसैत अछि, तखन ओकर सही अंक केनाहि बचत?” ओ पुछलक। तारा ओकरा फीताक कठोर धातुक माथ देखौलीह। “आओर उपकरणक जाँच होइत अछि,” ओ कहलीह। शकुन्तला चुपचाप सुनलीह; नतिनीक सवाल घरक घनफलसँ बाहर आबि गेल छल।

हीरा पुरान ‘कमला’ नाम लिखल यात्रा-पुस्तिका निकाललनि। हुनका यात्राक एक भागमे माटिक भारी बोरा लए जाएबाक स्मृति छल; शकुन्तलाक मायकेक पुरान कागदमे ओहि नामक उल्लेख भेटैत छल। एक युवक तत्क्षण कहलक जे एहि आधारपर तिलवाह आ कमलाक पूरा पुरान संगम बनायल जा सकैत अछि। शकुन्तला कने कडुआइ सँ कहलनि, “हमर माटिक दामक कागद नदीक नक्शा नहि।” हीरा सहमति देलनि। ओ यात्रा-पुस्तिकाक तिथि आ उपयोगक कथा बतौलनि; आजुक मापमे ओकरा केवल स्रोत-जाँचक लेल संदर्भ राखल गेल। नामसँ सम्बन्ध उत्पन्न भेल, भूगोलक निर्णय नहि।

धनी राजभर कंकड़ नामक छोट धारक कातसँ आएलाह। सिंचाइ-नालाक अस्थायी सफाइक तिथि तय छल; ओ चाहैत छलाह जे आकाशसँ खींचल कार्यालयक नक्शामे कंकड़केँ ‘खाली सरकारी जमीन’ देखायल रेखा सुधरल जाए। “बरखा नहि रहला पर ई कम पानि देखबैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा कतेको खेतक निकास एकरे पार जाइत अछि। खाली कहब तँ काल्हि कियो भरि देत।” तारा स्थल-जाँचक अभिलेखमे ‘मौसमी जलप्रवाह—मालिकाना अपुष्ट’ लिखलनि। धनी काजक बाँटल जिम्मेदारीपर कायम रहलाह; ओ एकरे आधारपर जमीन अपन घोषित नहि कएलनि।

राजइनारक कात पहुँचला पर दुपहरिक उजास कम पड़ए लागल छल। जंगला लग पहिने लगाओल अस्थायी रस्सीक एक खूँटा फेर झुकने छल; दू पानि भरनिहार स्त्री ओहि लग ठमकल छलीह। ललित लोहेक कसनीक जाँच कएलनि, मुदा पुरान जंगला अपन बलपर सुरक्षित घोषित नहि कएलनि। पहिने एकटा अस्थायी सुरक्षित पयरबाट बनल; कूपक माथपर पानि भरबाक अनियन्त्रित भीड़ रोकल गेल। मरम्मतिक स्वीकृत लागत, जिम्मेवार संस्था आ स्थायी जंगला जाँचबाक तिथि सार्वजनिक पटपर लिखल गेल। जलस्रोतपर लोकक पहुँच बचल, मुदा परीक्षण बिनु असुरक्षित माथपर चढ़बाक अनुमति नहि देल गेल।

एक अधिकारी एहि सब काजकेँ एकहि ‘सम्पूर्ण जलसुरक्षा सम्पन्न’ शीर्षकमे छापए चाहैत छलाह। अदिति आपत्ति कएलीह। “तिलवाहक सीमित नाव-परीक्षण, राजइनारक अस्थायी पहुँच, कंकड़क स्थल-परीक्षण आ पोखरिक उराहि अलग काज अछि। एकटा स्वीकृत दोसरक पूर्णता नहि।” अधिकारी झुँझला कऽ कहलनि जे जनताकेँ सरल बात चाही। सरिता उत्तर देलीह, “सरल बनाउ, गलत नहि। लोककेँ जानबाक अछि जे कतय जा सकैत अछि, कतय एखन खतरा अछि, आ ककर मेहनतानाक पैसा कखन भेटत।” अन्ततः सूचना चारि छोट खण्डमे छापल गेल।

बाहा-मुँह खोलाइक कार्य-वितरण फेर जाँचला पर पता चलल जे कादो हटएबाक जिम्मेदारी देल दलमे निकासक ढलान देखनिहार प्रशिक्षित व्यक्ति राखले नहि गेल छल। कार्यदल घेराव हटबएबाक उत्साहमे मुँह खोलब चाहैत छल। तारा काज रोकि कहलनि, “ई रोक स्थायी निषेध नहि। पहिने जे घाटक घर, जे पानक खेत आ जे गोदामक नीँव

प्रभावित भऽ सकैत अछि, हुनकर अलग जाँच हो।” गोमती मजदूरसभकेँ बिना भुगतानक घर पठेबाक विरोध कएलीह। सुरक्षित ढेरी ढोएब, पयरबाट साफ करब आ औजार जाँचब जतेक काज वास्तविक छल, ओतबे घण्टाक नव लिखित आदेश निकलल।

नाव-औजार परखक पिछला पंजीमे हीराक देह-मापक आधारपर लिखल एक अनुमानक कात नब संशोधन दर्ज भेल। श्याम नावक दरारक जाँच अलग राखलनि; ललित रस्सीक टूटल तन्तु बदलएबाक काजक रसीद प्रस्तुत कएलनि। एक जवान नाविक आग्रह कएलक जे कागद एतेक पढ़लासँ लोक डरत। हीरा ओकरा नावपर हाथ रखबा दैत कहला, “ई काठ डरै छै की? नहि। जेकर देह नावमे बैठत ओकरा सही बात जानबाक हक अछि।” कागदक नब पन्नामे पुरान गलतीक तिथि, सुधारक आधार आ अगिला निरीक्षणक शर्त एक संग लिखल गेल।

साँझक बैठकमे देयक पंजी खोलल गेल। नाविकक परीक्षण-घण्टा, गाद ढोएबिहारक भाड़ा, सफाईक दलक मजदूरी आ स्त्रीसभक पाट नापबाक समय अलग मदमे दर्ज भेल। एक पदाधिकारी ‘सामूहिक सेवा’ लिखि स्त्रीसभक समय शून्य राखि देने छल। गोमती ओ पाँति कटबौलनि। “सहमति सँ मुफ्त काज कएल हो तकर प्रमाण देखाउ; नहि तँ श्रम लिखू।” उर्मिलाक पुरान बकाया एहि दिनक पर्चीसँ नहि चुकल, मुदा ओकर दावा फेर दबाओल नहि गेल। रजिस्टरमे ककरो नब उपस्थिति मृत व्यक्तिक नामपर चढ़ाओल नहि गेल।

हीरा अंतिम बेर तिलवाहक कात गेलाह। आजुक अनुमति-पट्टपर स्पष्ट लिखल छल जे सीमित आवागमन खुलल अछि, पानि बदललापर पुनर्माप आवश्यक। दू नाविक नव निसानक अभ्यास करैत छलाह; गोपाल गलत मार्गनामक सुधारल प्रति अगिला उद्धार-दलकेँ देबाक समय निश्चित कएलनि। रतन अपन पुरान स्मृतिक कापी झोरामे राखि कहलनि, “जुनि बुझू जे हम किछु हारि गेलहुँ। हमर पुरान गाछ एखन ओहि ठाम नहि, मुदा जकरा बतबैत रही ओकरा गलत बाट नहि देब।” हीरा हुनकर हाथ धेलनि। पिछला कातसँ बच्चासभक हँसी, गादक गन्ध आ रसोइक धुआँ बहि आएल।

राजइनारसँ पानि भरि घुरैत एक स्त्री नव पयरबाट पर रुकि पूछलीह जे काल्हि ई बाट बन्द कएल गेल तँ हुनका सभकेँ के बताओत। तारा सूचना-पट्टपर जिम्मेवार सम्पर्कक

नाम पढ़ि सुनौलीह। स्त्री पुछलीह, “हमर नाम लिखल जाएत की?” “जँ अहाँ एतय उपस्थितिक गवाही देब चाही,” तारा कहलीह, “मुदा घरक निजी बात नहि।” ओ अपन नाम लिखबौलीह आ पहुँचक जाँचक लेल दोसर स्त्रीक नाम बिना सहमति नहि देलनि। रमणी ओहि प्रश्नकेँ सुनि कहलीह जे अगिला बैठकमे घाट आ मत्स्यपट्टाक हस्ताक्षरक नियम अलग बनबाक चाही।

हीरा घर घुरैत बाँसक पुरान रंगपट्टी फाड़ि नहि देलनि। ओ एक कात नव नाप लिखल पट्टी बान्हलनि, आ दोसर कात पुरान गाँठपर छोट सूत लगौलनि—जे हुनका बतबैत रहय जे कहियो ई अनुमान काज देलने छल, मुदा सदा लेल सही नहि छल। नदीपर लाली उतरि रहल छल। आजु एक छोट बाट खुलल, एक पुरान अनुमान सुधरल, आ किछु लोकक श्रमक दाम लिखल गेल। खाली दस्तखतक जगह अगिला दिनक बैठक लेल छोड़ल छल; रमणीक प्रश्न ओकर उत्तर माँगैत छल। हीरा बाँस दीबालक सहारे रखलनि, जाहिसँ भोरमे फेर ओकर निसान देखल जा सकय।

अध्याय १५४ • सहमतिक दस्तावेज

बरकी पोखरिक पक्का घाटपर भोरमे रेणु गोंदी भीजल रस्सीक गाँठ खोलि रहल छलीह। आधा बाँस हटि गेल छल, मुदा बीचक लोहेक किवाड़पर नव ताला लटक रहल छल। ताला लगाबएवला कर्मचारी ओकर ऊपर कागद टाँगि देने छल—‘मत्स्यपट्टाधारीक अनुमति बिना प्रवेश निषिद्ध’। रेणु ओकरा पढ़ि कऽ पुछलीह, “माछक पट्टा देल गेल अछि, कि पोखरिक सीढ़ी आ पानि भरबाक घैला सेहो?” कर्मचारी कहलनि जे सूचना अधिकारीक आदेशपर लगल अछि। रेणु अपन भीजल रस्सी मोड़ि पाथरपर राखलीह। “तखन आदेशक मूल प्रति आ पूरा परिशिष्ट आनू। आधा वाक्यसँ लोकक पयर रोकल नहि जाएत।”

रमणी बिन्द जालक भीजल डोरी काँखमे लटकौने पहुँचलि। काल्हि तिलवाहक सीमित नाव-मार्गक अनुमति भेटल छल; हीराक संशोधित जलमाप एखनहुँ सूखल नहि छल। ओ बात रमणीकेँ मालूम छल। मुदा घाटपर लागल एहि ताला लेल नावक सुरक्षा-पत्र कोनो उत्तर नहि छल। “हमरा माछक जाल लेल ठाम चाही,” रमणी कहलीह, “आ रेणुकेँ गामक स्त्री-बच्चाक पानि भरबाक बाट। एकटा पंजीमे हमर दुनू नाम लिखि कऽ एकटा अधिकारक निबटान नहि करब।” हुनकर जालक तन्तुमे अटकल सफेद पात हवा लागि थरथरा रहल छल।

नगर कार्यालयसँ रमा कर्ण आ गोमती पहुँचलि। संग तारा मल्लिक थलीमे मापक कापी, स्थलचित्र आ काल्हुक निरीक्षण-पर्ची लेने छलीह। किवाड़क भीतर पायरिक तेसर सीढ़ीपर कादो जमल छल, आ एक कातक पाथर ढीला छल। तारा हाथक पतला डंडासँ ओकरा छुड़ कहलीह, “ई भाग आजु खोलेब तँ दुर्घटना होएत। ऊपरक दू सीढ़ी आ बामक पक्का बाटक परीक्षण भऽ सकैत अछि।” कर्मचारी तुरन्त कहलक, “तखन पूरा घाट बन्द राखब ठीक छल!” गोमती उत्तर देलीह, “जे हिस्सा असुरक्षित अछि तकर रोक अलग लिखू, माछक पट्टाक नामपर सुरक्षित बाट बन्द करबाक अधिकार अलग सिद्ध करू।”

सभाकेँ पोखरिक कातक पुरान चबुतरापर बैसाओल गेल। पाथरपर चूनक लकीर खींचि तीन कागद राखल गेल—सार्वजनिक आवागमन, मत्स्य-उत्पादनक अनुबन्ध, आ धुलाई-

स्नानक समय तथा निजताक नियम। पट्टाधारीक प्रतिनिधि पहिलहि वाक्यमे आपत्ति कएलक। “हम शुल्क देलहुँ, तखन किनारपर कियो आबि जाल खराब करत तँ?” रमणी कहलनि, “माछक उत्पादनक क्षेत्र ओहि शुल्कसँ बँधल अछि की सभ लोकक छाया सेहो?” प्रतिनिधि अपन फोनमे रसीद देखौलक। रमा पूरा अनुबन्धक सीमा-परिशिष्ट माँगलनि। ओ फोटोमे रकम छल, पट्टाक सीमारेखा नहि।

रेणु अपन घेराव-विरोधक पुरान प्राप्ति-पर्ची बाहर कएलीह। एहि पर्ची लेल ओ कतेको बेर दोकानक काम छोड़ि कार्यालय गेलीह, मुदा उत्तरमे पट्टाक एके अपूर्ण फोटो पठाओल जाइत रहल। “जँ हमर आवेदन केवल माछक हिस्सा माँगबाक छल, तँ हम पहिने दिनसँ गलत रही,” ओ कहलीह। “हम माँगने छी जे सार्वजनिक पायरिपर स्त्री घैल लऽ उतरि सकय, रोगीकेँ पानि भेटय, कपड़ा धोबन्हारक समय तय हो। एहिमे जालक माछक गिनती किएक?” रमा पुरान आवेदन आ आजुक नव प्रतिक प्राप्ति-अंक एक दोसरा लग लिखलनि, मुदा दूनू मिलाओल नहि।

रमणीक बहीमे तीन खर्चक अंक छल। जाल मरम्मतक सूत, राति पहराक मजदूरी आ माछ छँटाइ करनिहार स्त्रीसभक समय। पट्टाधारीक प्रतिनिधि कहलक जे पहराक खर्च तऽ निजी लाभमे घटत। रमणी स्वीकार कएलनि जे माछ बेचबाक आय पर अलग हिसाब होएत। “मुदा जे सार्वजनिक बाट सुरक्षित रखबाक पहरा अछि, ओकर काज माछक जाल देखबाक पहरासँ भिन्न अछि,” ओ कहलीह। “दूनूक लोक एकहि परिवारक होए, मुदा दामक मद अलग लिखू।” गोमती कातमे बैसल पहरादारसँ ओकर घण्टा पूछलनि; ओ पहिले बेर अपन कामक पूरा समय बजल।

चबुतरापर सुशीला महतो दू पन्नाक बीज-परीक्षणक बही लऽ अएलीह। काल्हि नदीक मापमे बड़दरी नामसँ चिन्हित खेतक सम्बन्धेँ ओ फेर पूछल गेल छलीह। “हमर बीजवला टुकड़ी एतयसँ अलग अछि,” ओ स्पष्ट कएलीह। “मुदा बाहाक पानि कोन दिन रोकल जाएत, तकर सूचना खेत धरि पहुँचे तखने रोपनी बचत। हमरा कम्पनीक बीजक प्रयोगक परिणाम देबाक लेल एतय बुलाओल गेल अछि की पानीक नियम बनबए?” तारा कहलीह जे सुशीलाक मापल प्रयोगक बही खेतक प्रमाण अछि, पोखरिक मालिकानाक नहि।

सुशीला अपन कापी समेटि जल-चेतावनीक सार्वजनिक सूचीमे स्वयं सम्पर्कक समय लिखबौलीह; कम्पनीक गलत सर्वकालिक उपज-दावा ओ फेर स्वीकार नहि कएलीह।

ओहि बीच दोसर मेजपर सुरक्षा लेल बदलेल नामसँ जुड़ल पाँच अभिलेखक फाइल अएल। रुहानी ओकरा खुला सभामे राखबाक विरोध कएलीह। “एहि फाइलमे ककरो निजी पता, ककरो पहिल नाम, ककरो आश्रयक समय अछि,” ओ कहलीह। “सार्वजनिक हिसाब देखबाक अधिकार अछि, मुदा एहि कारण ककरो जीवनक छिपल ठाम उजागर नहि कएल जा सकैत।” लेखापाल कहलक जे घाटसँ जुड़ल राहतक रकमक सत्यापन चाही। रमा कहलनि, “रकम, तिथि, स्वीकृत मद आ वितरणक स्वतन्त्र जाँच खुलल रहत। लाभ पौनिहारक संरक्षित परिचय केवल अधिकृत जाँचक पहुँचमे रहत। ई गोपनता लेनदेनक दोष मेटेबाक उपाय नहि अछि।”

सुरक्षित परिचयवाली एक स्त्री स्वयं बैठकक बाहरी ओसारमे भेटबाक समय देने छलीह। हुनकर चलनक नाम लिखल कागद रुहानीक हाथमे रहल; पुरान नाम वा निवासक ठाम बहीमे प्रकाशित नहि भेल। स्त्री कहलीह, “जाहि नामसँ हम एखन काज करैत छी, ओहि नामसँ हमर मजदूरीक हिसाब जाँचू। पहिल नाम सँ हमरा चिन्हबएवला कियो सार्वजनिक सभामे नहि बाजय। मुदा हमर दू बेर राहत लेलहुँ से झूठ लिखल अछि, तकर हिसाब साफ हो।” रमा पूछलनि—केवल रकमक परिणाम सार्वजनिक हो, कि चलनक नामो? स्त्री कने सोचि कहलीह, “रकमक परिणाम। नामक प्रति अहाँ जाँचक कोठरीमे राखू।”

लेखापालक आपत्ति छल जे एहि सीमासँ भविष्यक अधिकारी सेहो कागद नहि बुझि सकत। स्त्री पहिल बेर ओकर आँखि दिस देखलीह। “जँ हमर बिना अनुमतिक पुरान नाम खोलल गेल तँ अहाँक हिसाब बुझि जायत, मुदा हम फेर घर बदलब। ओहि खर्चक अंक ककर बहीमे जायत?” रुहानी एही प्रश्नपर कोनो भावुक भाषण नहि देलीह। ओ कागदपर दुइटा खाली हस्ताक्षर-घर बनौलीह—एक जाँच-प्रवेशक अनुमति, दोसर सार्वजनिक प्रकाशनक अनुमति। स्त्री पहिल घरमे निश्चित अवधिक सहमति देलीह, दोसरमे ‘नहि’। ओकरे निर्णयक सत्यापित प्रति हुनकें देल गेल।

दोपहरि नजिक हीरा मेचे अपन पूर्वक अनुबन्धक प्रति लऽ पहुँचलाह। हुनकर पहिल नामक अंगूठा-हस्ताक्षर पर विवाद नहि छल; विवाद ई छल जे हस्ताक्षर करैत समय प्रस्तावक भाषा हुनका बुझाओल नहि गेल छल। ठेकेदारक लोक फेर कहलक, “एहि पर अंगूठा अछि; आब पाछाँ हटब?” हीरा कहला, “अंगूठा हमर अछि। बात अहाँ जे कहैत छी, से हमर कानमे ओहि दिन एहि भाषामे पहुँचले नहि छल।” पद्मा एक प्रशिक्षित भाषिक सहायक संग व्यवस्था कएलीह, मुदा हीरा पहिने पूछलनि जे अनुवाद करनिहार ठेकेदारक मजदूर तऽ नहि। स्वतन्त्र अनुवादक परिचय आ भुगतानक मद दोसर पन्नापर लिखल गेल।

नब भाषामे अनुबन्धक अर्थ सुनला पर हीरा बीचमे रोकि देलनि। कागदमे घाटक सामान्य पयरबाटकेँ ‘दीर्घकालीन विशेष उपयोग’ लिखि, सामुदायिक सदस्यक आपत्ति छोड़बाक शर्त जोड़ल छल। “हम चलबाक पथक मरम्मत लेल सहमत रही,” ओ कहलनि, “सदिखनक अधिकार छोड़बाक लेल नहि।” पद्मा शब्द-शब्द भेद पढ़ि सुनौलीह। ठेकेदारक प्रतिनिधि कहलक जे एना फेर अनुबन्ध बनत तँ काज रुकत। हीरा उत्तर देलनि, “गलत अर्थसँ तुरन्त काज शुरू भेला पर बादमे कतेक लोकक बाट रुकत, ओकर समय सेहो गनू।” पूर्वक विवादित सहमति तत्काल अन्तिम स्वीकृति रूपमे प्रयोग नहि करबाक लिखित आदेश निकलल।

ताराक नक्शापर पक्का पाट आ कादोवला अघट अलग रंगमे छल। धोबिघटा दिस उर्मिलाक पुरान कार्यक बाट चिन्हित छल, मुदा उर्मिला स्वयं आब कखनहुं एतय घुरि नहि आबतीह। २०३९क अस्पताल दुर्घटनामे हुनकर मृत्यु प्रमाणित भऽ चुकल छल। हुनकर परिवारक अपूर्ण धुलाईक हिसाब आ मजदूरीक दावा अलग रजिस्टरमे चलि रहल छल। एक अधिकारी प्रस्ताव कएलक जे घाटक नव उद्घाटनमे उर्मिलाक नामसँ मुफ्त सफाई-सेवा घोषणा कएल जाए। गोमती कठोर स्वरमे रोकलनि, “मृत व्यक्तिक नामपर जीवित मजदूरसभक दाम शून्य नहि लिखल जाएत। परिवारसँ स्मृतिक अनुमति अलग पूछू, मजदूरी अलग दिअ।”

घाटक पाछाँक समतल जगहपर कपड़ा धोबन्हार स्त्रीसभ समयक बँटवारा करबए लगलीह। एक स्त्री कहलीह जे माछक जाल पसरल रहला पर कपड़ा घसीटब मुश्किल

अछि। रमणी तुरन्त जाल समेटबाक समय बदलबाक प्रस्ताव देलीह। दोसर स्त्री पुछलीह जे स्नानक घड़ीमे भीड़क लोक फोटो खींचत तँ रोकत के। रेणु अपन झोरासँ पुरान लिखित आपत्ति निकाललीह—अघटपर स्त्रीक फोटो लेल अनुमतिक प्रश्न पहिनहुसँ उठल छल। गोमती अलग नियम लिखबौलनि: धुलाईक श्रम-समय, स्नानक निजता, आ सार्वजनिक घाटपर फोटो-रेकॉर्डिंगक स्पष्ट सहमति। सुरक्षा-जाँचक चित्र लेल सेहो व्यक्तिक निजी देह देखेनिहार फोटो आवश्यक नहि।

एक युवक कहलक, “जे सार्वजनिक जगह अछि, ओतय फोटोपर रोक कोना?” चम्पा, जे अपन चिकित्सकीय गोपनीयताक प्रश्नमे पहिनहुसँ निर्णय लेने छलीह, घाटपर अपन परिचितक संग अएलीह। ओ सभामे अपन उपचारक कोनो पन्ना खोललीह नहि। केवल एतबे कहलीह, “सार्वजनिक सीढ़ी देखब आ ककरो भीजल देहक चित्र प्रकाशित करब अलग बात अछि। हमर नामपर अहाँ किछु नहि लिखब।” रमा हुनकर अनुरोधक कोनो निजी विवरण बिना ‘व्यक्तिगत सहमति आवश्यक’ लिखलनि। चम्पा सभाक अन्त धरि बैसबाक बाध्यता स्वीकार नहि कएलीह; ओ अपन समयपर चलि गेलीह।

दुपहरिक पछिला पहरमे नीलिमा नुराड छोट रङ्गीन कवरवला विवाह-पंजीक संशोधित प्रति अनलीह। मूल पंजीमे मायकेक स्त्रीक नाम जकरा मेटल गेल छल, ओकरा बहाल करबाक आवेदन ओ बहु दिनसँ देने छलीह। आजु संशोधनक आदेश आयल छल; मूलक मिटाओल अक्षर इतिहाससँ गायब नहि भऽ गेल, ओकर बगलमे संशोधनक तिथि आ स्रोत जोड़ल गेल। नीलिमा पन्ना पढ़ि पूछलीह, “मातृनाम छपल अछि, मुदा आब ई प्रति कियो फोटो खींचि सभामे घुमाएत?” रमा कहलीह, “पंजीमे संशोधन आ सार्वजनिक प्रसार लेल अनुमति अलग अछि।” नीलिमा विवाहक वैध प्रति अपन लेल रखलीह; पूरा पारिवारिक इतिहासक प्रदर्शन लेल मना कएलीह।

रमणी ओहि पन्नाक कात अपन मायकेसँ आयल गाँगी-लिखल पत्रक छोट, सहमतिसँ चुनल अंश रखलीह। पत्रमे माय कखन माछक दाम बेटीक हिस्सा मानैत छलीह से स्मृति छल; बागमती-बंगमत्ती लिखल दोसर पुरान जलअधिकार-पत्रमे घाट आ उत्पादनक अलग शब्द छल। कार्यालयक कर्मचारी एहि दू नामकेँ आजुक पोखरिक सीमाक रेखामे मिलाबए चाहलक। रमणी हाथ बढ़ा कऽ पेंसिल रोकलीह। “ई पत्र हमर मायक

अधिकारक भाषा देखबैत अछि,” ओ कहलीह, “नदीक पूरा बाट नहि। जँ कियो एकरा नक्शा मानत, तखन फेर हमर नामे मेटा देत।” तारा स्रोत, तिथि आ भौगोलिक अनिश्चितता लिखि प्रतिक अलग सन्दर्भ बनौलीह।

रेणु पुरान घेरावक रसीदक संग ओहि पत्रक सामान्य बात पढ़लीह। हुनकर दिदियौत लिखने छलाह जे एक समय स्त्रीसभ घाट साफ करैत छलीह, मुदा पट्टाक नाम पुरुषसभक हाथमे चलि गेल। रेणु कहलीह, “एहि स्मृतिसँ हम मालिक नहि बनैत छी; मुदा सार्वजनिक बाट बंद करनिहारक उत्तरदायित्व पूछबाक हक हमरा अछि।” रमणी उत्तर देलीह, “आ हमर जालक दामक अधिकार तोहर पयरक अधिकारकें रोकत नहि।” दूनू एके कागदपर हस्ताक्षर नहि करबाक निर्णय पर कायम रहलि—रेणु सार्वजनिक पहुँचक प्रस्तावपर, रमणी मत्स्य-व्यवस्थाक अलग मसौदापर।

जखन पट्टाधारीक प्रतिनिधि फिरलाह तँ अपन पूरा सीमा-परिशिष्ट अनने छलाह। नक्शामे पोखरिक मध्यक उत्पादन क्षेत्र चिन्हित छल, मुदा सामान्य पक्का घाटक ऊपरी पयरिबाट पर विशेष निषेध स्पष्ट नहि छल। प्रतिनिधि कहलक जे बिना सम्पूर्ण किनार बन्द कए चोरी रोकब कठिन अछि। गोमती प्रस्ताव रखलनि—जालक सुरक्षित भण्डार आ उत्पादन-क्षेत्रक सीमा चिह्नित हो, सार्वजनिक बाटपर निर्धारित निगरानी रहय, आ चोरीक शिकायत ठोस घटनाक आधारपर दर्ज हो। पट्टाधारी अपन मतभेद लिखबौलनि, मुदा नब अस्थायी व्यवस्थामे सहमति देलनि; एहि स्वीकृतिसँ पट्टाक मूल कानूनी विवाद समाप्त घोषित नहि भेल।

ताराक परीक्षणक बाद पक्काक ऊपरी सीढ़ी धरि पहुँच खोलबाक अनुमति देल गेल। ढीला पाथरवला तेसर सीढ़ीपर लाल सूत आ बाँसक रोक रहल। पहिल बेर रेणु हाथमे घैल लऽ पहुँचलि तँ सुरक्षाक कर्मचारी हुनका एक बेर रोकलक। ओ पटपर लिखल शर्तक ओर देखौलीह। कर्मचारी स्वीकार कएलक जे ऊपरी पयरिबाट खुलल अछि। रेणु पानि भरबाक ठाम धरि गेलीह, घैल उठबैत मुड़ी तँ ओहि छँहनिक्कें देखलीह जतए पछिला बरिस लोक टोकल जाइत छल। ओ विजय-भाषण नहि देलीह; घरमे पानि चाही छल, ओ चलि गेलीह।

माछक जाल पसारबाक सुरक्षित ठाम अलग चिन्हल गेल। रमणी अपन बेटीकें जालक गाँठ सिखबैत छलीह। बेटी पुछलक, “माए, घाट सबकें खुलल तँ जाल के बचाओत?”

रमणी कहलीह, “जे जाल फाड़त, तकर दोष अलग देखल जाएत। सभ स्त्रीक पयर रोकि अपन जाल नहि बचाएब।” बेटी दोसर गाँठ लगबैत रुकि गेलीह। “तखन जे हम राति सूत गिनैत छी, तकर दामो लिखल जायत?” रमणी झटसँ उत्तर नहि देलीह। ओ अपन बहीमे बेटीक काजक समय लिखबाक लेल नव पाँति खोललनि, आ पूछलनि जे ओ एहि काजक दाम चाहैत अछि कि एखन सीखबाक समय अलग राखब चाहैत अछि।

साँझक पहिने नब दस्तावेजक तीन प्रति बनल। पहिल सार्वजनिक पहुँच—सुरक्षित पररिबाट, रोकल मरम्मत-क्षेत्र, जवाब देनिहार अधिकारी आ निरीक्षणक अगिला दिन। दोसर मत्स्यपट्टा—अनुबन्धक चिन्हित सीमा, जालक भण्डार, निगरानीक दाम आ लम्बित कानूनी आपत्ति। तेसर धुलाई आ स्नान—श्रमक घण्टा, भीड़क समय, फोटो-स्वीकृति आ निजताक संरक्षण। रमा तीनू पर हस्ताक्षरक घर अलग रखलनि। पट्टाधारीक प्रतिनिधि कहलक जे एहि मे कतेक दस्तावेज बनत, आदमी भ्रमित होएत। रमा उत्तर देलीह, “एक कागदमे तीन अधिकार गुम कए देब तखन लोक कम भ्रमित नहि, बेसी असहाय होएत।”

लेखापाल एक चौथ पन्ना पसारलक—कार्य-दिवसक खर्च। सफाइमे लागल बांस, कादो हटेबाक ठेला, सुरक्षा-जाँचक घण्टा, पाट धोबन्हारक पारिश्रमिक आ गीत गबएवाली स्त्रीसभक नियत दाम। एक अधिकारी ‘वार्षिक सामूहिक श्रद्धा-सेवा’ शीर्षकसँ सभक मेहनताना मेटा देबाक कोशिश कएलक। गोमती पेंसिलसँ शीर्षकपर गोल घेरा देलीह। “श्रद्धा लोक अपन इच्छासँ देखाओत; कामक आदेश संस्था देलक तँ ओकर दाम संस्था देत।” ओ व्यक्तिगत रूपसँ निःशुल्क कएल सेवा लेल अलग सहमति-पाँति बनौलीह, मुदा ककरो नाम अनुमानसँ ओहि मे नहि भरलनि।

सुशीलाक खेत धरि जलसञ्चारक सूचना पठेबाक पंजी अदिति देखलीह। ओहि मे तिलवाहक कल्हुक सीमित नाव-अनुमतिक सूचना सेहो दोसर शाखासँ चिपकल छल। अदिति ओकरा अलग कएलीह। “खेतक जलनिकास, पोखरिक सार्वजनिक घाट आ नावक सुरक्षित धार तीन भिन्न परीक्षण छथि,” ओ कहलीह। सुशीला सूचनाक तय घण्टा देखिकऽ सहमति देलीह; एखन रोपनीक निर्णय निज खेतक माटि देखि स्वयं लेतीह।

कम्पनीसँ बीज-विवादमे हुनकर बचल दावा पर घाटक हस्ताक्षरक कोनो असर नहि होएत।

हीरा मेचेक अनुवादित प्रतिक अन्तमे एक सुधार-पत्र जुड़ल। पहिनुक सहमतिक विवादित घर काटि पूर्ण समझल स्वीकृतिक रूपमे फेर हस्ताक्षर माँगल नहि गेल; नव बैठकक सूचना हुनका बुझएवाली भाषामे पहुँचै से लिखल गेल। हीरा अनुवादककें मेहनताना देबाक प्रस्ताव सुनि पूछलनि, “एहि दामकें हमरा भाड़ासँ काटत?” रमा मना कएलनि। स्वतन्त्र अनुवाद सार्वजनिक जाँचक खर्चमे दर्ज भेल। हीराक पहिनुक अंगूठा-चिह्न अभिलेखमे रहत, मुदा ओकर अर्थकें जाँच बिनु अन्तिम सहमति नहि कहल जाएत। ओ अपन प्रति मोड़ि कऽ कुर्ताक भीतर रखलनि।

नीलिमा नुराड घुरबाक पहिने रमणी लग अएलीह। ओ पहिल बेर बरकी पोखरिक ऊपरी पयरिपर उतरि अपन पयरक कादो झारलीह। “मायक नाम पंजीमे घुरल,” ओ कहलीह, “मुदा मायक स्वर कागदमे पूरा नहि समाइत।” रमणी अपन पत्रक निजी भाग फेर मोड़लीह। “हमर मायकेक पत्रमे नदीक नाम अछि, मुदा ओ हमर मायक हाथक लिखावटो अछि। दुनूकें सुरक्षित रखब, मगर अलग कारणें।” दूनूक बीच किछु काल चुप्पी रहल। दूर स्त्रीसभ सँधियाक जलघैला उठबैत छलीह; बेटीसभ पटपर लिखल नब नियम जोर सँ पढ़ि रहल छलीह।

घाट-आदर आ जलस्वच्छताक वार्षिक आयोजन लेल जे गीत पहिने सालमे बन्द बाटक बाहर गाओल गेल छल, एहि बेर ओ खुलल ऊपरी सीढ़ीक कातसँ उठल। स्त्रीसभ अपन पसिन्नक गीत चुनलीह। गीतक शब्द कोनो सभाक अधिकृत घोषणा नहि छल; कियो धीम स्वरमे गबैत छल, कियो पाट साफ करैत स्वर जोड़ैत छल। रुखसानाक रसोइसँ आएल गरम चाउरक गन्ध पानि लग पसरल। एक नेना गीतक बीच पूछलक जे तेसर सीढ़ीपर लाल सूत किएक अछि। ओकर माय कहलीह, “ओ पाथर एखन ढीला अछि। गेबाक बाट खुलल, कूदबाक नहि।” नेना पाछाँ हटि फेर तालि देलक।

कार्यक अन्तिम पंजी पढ़बैत रमा कहलनि—पक्काक सुरक्षित ऊपरी घाट आजुसँ खुलल; मत्स्यपट्टाक आर्थिक अधिकार ओकर पूरा अनुबन्ध आ लम्बित जाँचक अधीन; धोबिघट्टाक निजी समय आ श्रमक दाम अलग; संरक्षित परिचयक प्रकाशन केवल

व्यक्तिक चुन्नल सीमा धरि। उर्मिलाक परिवारक बकाया हुनकर अलग रजिस्टरमे शेष, मंगला आ आन संरक्षित व्यक्तिक जाँचपन्ना बन्द अभिलेखमे। एक रसीदसँ सम्पूर्ण स्वामित्व नहि बनत। पाठ समाप्त भेलाक बाद कियो जयघोष नहि कएलक; लोक अपन-अपन काम समेटबए लगल।

रमणी जाल समेटि पहिल प्रति अपने झोरामे रखलीह। रेणु घैला भरि घरक बाट धेलनि। रुहानी गोपनीय लिफाफा ताला लगल सन्दूकमे वापस रखलीह, आ रमा नव दस्तावेजक सार्वजनिक प्रति सूखल पटपर टाँगलीह। पोखरिक पानिमे साँझक उजास लम्बा भऽ रहल छल। किछु स्त्री गीतक दोसर अन्तरा शुरू कएलनि—ओहि स्वरमे रहस्यमय गवाहीक हड़बड़ी नहि, दिन भरि कएल श्रमक थकान आ सुरक्षित बाटपर अपन पयर पड़बाक छोट सुख छल। खुलल घाटक पाथरपर पानिक पातर रेखा चमकल; रोकल सीढ़ीपर लाल सूत हवा लागि हलुक हिलैत रहल।

अध्याय १५५ • हिंसाक गवाही

घाटक खुलल ऊपरी सीढ़ीपर काल्हि जे गीत उठल छल, ओकर भीजल स्वर एखनहुँ बरकी पोखरिक कातक घरसभमे बचल छल। भोरमे रमणी बिन्द जाल सुखेबाक रस्सी तानैत देखलीह जे सार्वजनिक पञ्जीमे फेर हुनकर नामक आगाँ एकटा रिक्त घर छोड़ल अछि। पाछू लिखा छल—साझा उपयोग, मत्स्य-उत्पादन नहि। ओ हाथक जल ओहि कागदपर नहि झारलीह। पट्टाक प्रतिनिधि फेर भेंटबाक छल। ठीक ओहि समय आश्रयक दुआरपर एक पुरुष लिफाफा लेने ठाढ़ भेलाह; भीड़सँ अलग, मुदा गामसँ भागल जकाँ नहि। हुनका रुखसाना भीतरक सुरक्षित कोठरी धरि पहुँचेबाक बाट देखौलीह।

रुखसानाक मेजपर दवाइक सादा डिब्बा, पानिक ढक्कन लागल गिलास आ भेटक समय लिखल छोट पर्ची छल। पुरुष बैसबाक पहिने खिड़की दिस देखलनि। “एतय जे लिखब, से घाटक खुला पञ्जीमे नहि जाएत ने?” ओ पुछलनि। रुहानीक उत्तर छल, “अहाँ जे अनुमति देब, ओतबे साझा होएत। आपात सुरक्षा आ कानूनक विशेष दायित्वक सीमा पहिने स्पष्ट कऽ लेब; बिना कहने कोनो वचन नहि देब जे हम निभा नहि सकी।” पुरुष कुर्सीपर नहि, खिड़कीक लग राखल नीच चौकीपर बैसलाह। ओ चौकी हुनकें पसिन छल।

ओ कहबाक प्रयास कएलनि, फेर चुप भऽ गेलाह। रुहानी नाम-पता पूछबाक बदला पुछलीह, “आइ अहाँकें सभसँ पहिने की चाही?” पुरुष अपन बायाँ हाथक काँपैत अँगुरी एक-दोसरामे अटका लेलनि। “दर्दक उपचार। आ काल्हि जे भेल, ओकरा केहन शब्दमे कहब से हमर निर्णय रहय।” छतपर पड़ैत पानिक पहिल थोपक स्वर अएल। रुखसाना दरबज्जापर पर्दा ढील करि देलीह, ताकि भीतर बैठल लोक चाहथि तँ बाहरक निकास देख सकथि। रुहानी उपचारक अलग सहमति-पत्र पसारलीह, बयानक पन्ना एखन बन्द रहल।

पुरुष बुझौलेनि जे हुनकासँ दू पुरुष यौन हिंसा कएने छलाह। ओ एहि तथ्यकें स्वयं अपन चुनल शब्दमे कहलनि; समय, ठाम आ परिचयक ब्योरा एखन नहि कहबाक निर्णय लेने छलाह। रुहानी ओकरा दोहराबए नहि कहलीह। उपस्थित स्वास्थ्यकर्मी पुछलनि जे तत्काल शारीरिक जाँच चाहैत छथि अथवा पहिने दर्द घटेबाक चिकित्सा। ओ पहिने

चिकित्सकीय सहायता चुनलनि। जाँचक प्रत्येक चरण आ कोन नमूना लेल जा सकैत अछि, से बुझाओल गेल; नमूना नहि देबाक विकल्पो स्पष्ट रहल। कोनो नमूना लेल जाए तँ ओकर संरक्षण आ पहुँचक सीमा अलग लिखबाक छल।

बाहर दुआरमे एक कर्मचारी कहलक, “पुरुष छथि तँ एतबा संकोच किएक? बयान लिखि लेल जाए।” रुखसाना ओकरा बात पूरा करए देलीह, तखन दृढ़ स्वरमे कहलीह, “संकोच अहाँक प्रश्नसँ नहि घटत। पुरुष होइत अपराधक शिकार होएब ककरो अधिकार नहि घटबैत। ओ स्वयं कहताह, एखन ककरा भेटब चाहैत छथि।” कर्मचारीक हाथमे उपस्थितिक खुला रजिस्टर छल; रुखसाना ओकरा भीतर लए जाएबासँ रोकलीह। ओहि रजिस्टरमे भोजन, दवा आ सुरक्षित बासक खर्च दर्ज होएत, देहक इतिहास नहि।

स्वास्थ्यकर्मी जाँचक दौरान कोनो निष्कर्षक घोषणा नहि कएलनि। उपचारक कागतपर आवश्यक औषधि, पुनःभेटक दिन आ एक सम्भावित विशेषज्ञ-सन्दर्भ लिखल गेल; हिंसाक आरोपक सत्यता वा दोषीक नाम ओहि पन्नासँ निश्चित नहि भेल। पुरुष कागत पढ़ि नहि सकबाक बात कहलनि। पद्माकेँ याद कऽ रुहानी सामान्य भाषामे एक-एक वाक्य बुझौलीह, मुदा पद्माक विद्यालयक कियो विद्यार्थी वा स्वयंसेवककेँ गुप्त चिकित्सकीय बात सुनबए नहि बजौलीह। पुरुषक अनुमति पाबि केवल एक प्रशिक्षित सहयोगी दवाइक समय बुझबैत रहल।

जाँचक कोठरीसँ बाहर निकलि पुरुष अपन पुरान कुर्ताक आस्तीन छुलनि। सिलाइक कातक बटन आधा टूटल छल। स्वास्थ्यकर्मी पूछलनि जे कपड़ा सुरक्षित राखय चाहैत छथि अथवा बदलबाक व्यवस्था चाही। ओ कहलनि, “एखन ई हमर लग रहय। जँ पछि किछु परीक्षण करबाबय चाहब, तखन पूछब।” कपड़ाक सम्भावित प्रमाण-मूल्य आ ओकर सुरक्षित संरक्षणक विकल्प बुझाओल गेल, मुदा कपड़ा जबरदस्ती नहि लेल गेल। ओ छोट सुई-धागा माँगलनि। रुखसाना कपड़ा सिएबाक सामान देलीह, आ कुर्ता केहन भेल छल से पूछबाक उत्सुकता दबा लेलनि। सिलाइक आधा पूरा भेल, शेष ओ स्वयं करबाक लेल रखलनि।

ओहिठाम चम्पा पहुँचलीह। हुनकर अपन चिकित्सकीय अभिलेख पहिनहुसँ निजी राखल गेल छल। ओ दरबज्जाक बाहर रुखसानासँ पूछलीह जे कोठरीमे जायत की नहि।

भीतरसँ उत्तर अएल, “अहाँ कोन?” चम्पा कहलीह, “एकटा आश्रयवासी, जे अपन बात अपने राखबाक अधिकार जानैत अछि। हम अहाँक प्रसंग नहि जानैत, से जानब जरूरीओ नहि।” पुरुष हुनका भीतर नहि बजौलनि। चम्पा बिना क्षोभेँ दुआरक बगलमे नलसँ गिलास भरि रखि गेलीह। रुहानी एहिमे ककरो साहसक सार्वजनिक नमूना नहि बनौलीह।

दुपहरि नगर-कार्यालयक खुलल सभामे रमणी अपन पुरान जालक रसीद लऽ अएलीह। बरकी पोखरिमे ऊपरी पयारिबाट खुलला परो साझा उत्पादन-पञ्जीमे हुनक नाम एखन “सहयोगी परिवार” लिखल छल, जकर हस्ताक्षर-घर पतिक लेल राखल गेल। रमणी पन्ना घुराइ देखौलीह। “कल्हि हमर जालक दामक हिसाब अलग कएल गेल। आइ हमर श्रमक हक फेर परोक्ष नाममे किएक?” रमा मूल पट्टाक शर्त देखलीह आ लिखलीह— वास्तविक साझी श्रम आ उपयोगक दावेदार रमणी बिन्द; स्वामित्व आ कानूनी पट्टाक सीमा स्वतंत्र परीक्षणक अधीन।

पट्टाधारीक प्रतिनिधि विरोध कएलक। ओकर कहब छल, महिला सभक नाम बढ़बैत गेलासँ अनुबन्धक सदस्य संख्या बदलि जाएत। रमणी कहलीह, “जँ संख्या गलत अछि तँ सही संख्या लिखू। एहि सँ अनुबन्ध अपने-आप नहि बदलत। मुदा जे जाल बनबैत आ पानि उतरैत अछि, ओ अपन अस्तित्व लेल तोहर अनुमति किएक माँगत?” तारा स्थानीय श्रम-पञ्जीक पुरान प्रति मिलौलीह। रमा स्वीकृत सामूहिक उपयोगक नाम-पन्नामे रमणीक नाम जोड़बाक आदेश देलीह, आ विवादित पट्टा-अधिकारक स्तम्भपर निर्णय स्थगित कएलनि। रमणीकेँ नकल आ प्राप्ति-अंक दूनु भेटल।

रेणु गोंढ़ी अपना अपीलक पन्ना खोलि “धौरी” लिखल पुरान पत्र देखौलीह। कर्मचारी तकरा पोखरिक निश्चित भौगोलिक सीमा मानि नब रेखा खींचबाक प्रस्ताव देलक। रेणु अंगुरीसँ पत्रक नीच लिखल तिथि छुलनि। “ई हमर परिवारक गवाहीक ठामनाम अछि,” ओ कहलीह, “घेरावक पुरान स्थिति बुझबाक सन्दर्भ। नक्शाक नाप नहि। हम चाहैत छी जे पुरान रस्सी कतए तनल छल से देखल जाय, एतय लिखल नामसँ पूरा धार नहि बना देल जाय।” पत्रक नकल अपीलसँ जुड़ल; मूल पत्र रेणु अपन झोरामे रखलीह।

नीलिमा नुराड सेहो कार्यालयमे छलीह। विवाह-पञ्जीमे मातृनाम घुरलाक बाद हुनका सुधारक प्रति देबाक छल। ओ देखलीह जे मूल पत्रक कात “नीमा” शब्द पहिने जकाँ

लिखल अछि। कर्मचारी पुछलक, “एहि जलनामक नक्शा सेहो एके फाइलमे राखी?” नीलिमा कहलनि, “हमर मायक नाम घुरल अछि, ई पंजीक सुधार। नीमा हमर पारिवारिक पत्रक शब्द अछि। ओकर जलरेखा वा ऋतुक प्रमाण अलग चाही।” ओ अपन मायकेँ याद कऽ एक क्षण चुप भेलि, मुदा सार्वजनिक काउंटरपर परिवारक गोपनीय बात कहबाक दबाव नहि मानलीह।

ओम्हर आश्रयमे पुरुषक लेल दवाइक समय अएल। ओ स्वयं घड़ी देखलनि आ पानि मँगौलनि। बाहरसँ एक अपरिचित व्यक्ति नाम पूछैत भीतर घुसबाक प्रयत्न कएलक; ओ कहैत छल जे शिकायतक सुनवाई करनिहार अछि। जुबैदा पटपर लिखल नियम देखौलीह—गोपनीय भेट पूर्व-सहमति बिनु नहि। अपरिचित व्यक्ति अपन परिचय-पत्र देखौलनि, मुदा भेटक अधिकार ओकरा एकर कारणेँ नहि भेटल। रुहानी पुरुषकेँ विकल्प बतौलीह। ओ कहलनि, “आइ नहि। एतय बसल लोक हमर निर्णय लिखि राखथि, ओकर कारण अनुमानसँ नहि भरथि।”

दुइ बजे एक गोपनीय सूचना आयल जे उपचारक खर्च राहत-खातासँ देल जा सकैत अछि, मुदा पर्चीपर घटना-विवरण लिखबाक अपेक्षा अछि। रुखसाना फोनपर कहलीह, “खर्चक मद सार्वजनिक लेखामे रहत; परिचय आ हिंसाक ब्योरा बन्द चिकित्सकीय अभिलेखमे।” लेखापाल पुछलक, “जँ प्रश्न उठत तँ कोन प्रमाण देखाएब?” रुहानी कहलीह, “अधिकृत जाँचमे बिलक सत्यापनक नियम बनाउ, मुदा भीड़क सामने देहक ब्योरा नहि। सार्वजनिक धनक हिसाब आ व्यक्तिगत पहिचान दूटा अलग जिम्मेदारी अछि।” तत्काल दवाइ रोकल नहि गेल।

पुरुष एतय कोनो परिवारक व्यक्ति बजए चाहैत छथि वा नहि—एहि प्रश्नपर देर धरि सोचलनि। हुनका एक परिचित मित्रक नाम याद पड़ल; मुदा ओ कहलनि जे मित्रकेँ दुर्घटनाक पूरा विवरण नहि देल जाय। अनुमति-पन्नापर केवल भेटक समय, सुरक्षित स्थान आ स्वास्थ्यक स्थिति बतएबाक सीमा लिखल गेल। पुरुष पहिने मित्रसँ भेंटक इच्छा कहलनि, फेर अपना हाथसँ नीच लिखलनि—“जँ हम घबराइ जाई तँ फेर स्थगित करब।” रुखसानाकेँ हस्ताक्षर लेबाक हड़बड़ी नहि छल। ओ पन्ना पुरुषक सामने छोड़लीह, ताकि निर्णय बदलबाक जगह बचल रहय।

साँझक घड़ी रोजी लालबेगी कार्यालयक हिसाब-खिड़कीपर पहुँचलि। सफाइ-काजक हाजिरी मौजूद छल, मुदा कम्प्युटरमे हुनकर धर्मक खाना अभी पुरान अनुमानसँ भरल छल। ओ अपन घोषणा-पत्र आ प्राप्ति-अंक देखौलीह। कर्मचारी कहलक जे पेशागत सूचीमे लालबेगी लिखल रहत तँ धर्मक घर स्वतः भरि जाएत। रोजी कहलनि, “हमर समुदाय, हमर रोजी आ हमर आस्थाक परिचय तीनटा अलग बात। अहाँ हमर नामक टुकड़ासँ हमर धर्म तय नहि करब। हमरा जे धार्मिक परिचय लिखब उचित बुझाईत अछि से हम स्वयं लिखब, आ जँ खाली छोड़ब तँ ओकरो अधिकार रहत।”

रमा हुनकर घोषणा अलग बन्द व्यक्तिपञ्जीमे रखबाक निर्देश देलीह, आ सफाइ-काजक मजदूरीक भुगतान पेशागत सत्यापनसँ शुरू करबौलीह। पहिने गलत प्रविष्टिक इतिहास मेटल नहि गेल; ओकरा गलत चिह्न देल गेल ताकि सुधारक कारण देखल जा सकय। रोजी पुछलीह, “पुरान अनुचित अनुमान के देखत?” रमा कहलनि, “जाँच लेल अधिकृत लोक; सार्वजनिक पन्नापर एखन अहाँक स्वघोषणाक अतिरिक्त विवरण नहि।” रोजी रसीद मोड़ि कहलनि, “एहि बेर हमर कामक दाम हमर विश्वासक नामसँ बँधल नहि रहत।”

तखन निरंजन किसान अपन खाताक पुरान रोक-आदेश लऽ पहुँचलाह। हुनकर परिवारक नामक अंश ‘किसान’ कम्प्युटरक पेशा-वाला खाने सरकल छल, आ बैंकक नाम-मिलान विफल रहल। ओ एक बेर फेर कहला, “हम खेती करैत छी, मुदा ई शब्द हमर नामक सेहो भाग अछि। तँ हमरा एक रूप छोड़ि दोसर चुनबाक कहब उचित नहि।” बैंकक प्रतिनिधि दू मूल प्रमाण देखलक, संशोधनक निर्देश लिखलक, आ नाम-पेशा अलग कऽ खाता चालू करबाक आदेश दऽ सकल। पुरान रोकक कारणेँ छूटल भुगतानक दावा अलग राखल गेल।

काउन्टरक छोट खिड़कीक बाहर दिन ढलि रहल छल। निरंजन खाता-स्वीकृतिक प्रति देखिटे बीहनक थैली छातीसँ सटौने रहलाह। “खाता खुलल तँ खेतमे काजक दाम पहुँचत,” ओ कहलनि, “मुदा रोकल महीनाक ब्याजक हिसाब?” प्रतिनिधि कहलनि, “ओ दावा एखन जाँचमे अछि।” निरंजन ओकर लिखित प्राप्ति माँगलनि। रोजी पासमे ठाढ़

हँसलीह नहि; हुनका बुझाईत छल जे नाम सही भऽ जाएब आ नुकसानक भरपाई भऽ जाएब दुनू अलग दूरी अछि।

आश्रयमे पुरुषकेँ दवा लेबाक बाद किछु राहत भेटल। ओ अपने हाथसँ पानि पीबैत खिड़की बाहर देखलनि, जतए पटपर चिपकल “निजता” शब्दक कात बरखा लागि गील पड़ि गेल छल। “जँ हम बयान नहि देब, तखन उपचार बन्द भऽ जाएत?” ओ पुछलनि। रुहानी तत्काल उत्तर देलीह, “नहि। उपचारक सहमति, प्रशासनिक सहायता आ कानूनी बयान अलग प्रक्रिया अछि। कोनो विशेष कदमक कानूनी परिणाम कतेक होएत से प्रशिक्षित सहायक समझाओत, मुदा सेवा रोकि दबाव नहि देल जाएत।” पुरुष गर्दन झुकौने बात सुनलनि, फेर पुछलनि, “हमरा एकर प्रति भेटत?”

मित्रक लेल तय कोठरीमे एकटा खाली चौकी रखल गेल। पुरुष ओकरा देखि कहलनि, “हमरा भेंटक पहिले एहि चौकीकेँ दुआरसँ कनेक दूर राखि दिअ।” जुबैदा चौकी सरका देलीह। ओ फेर पुछलनि, “जँ मित्र एतय आबि हमरा चुप देखत, तँ की कहत?” रुहानी कहलनि, “एहि प्रश्नक उत्तर हम नहि चुनि सकैत छी। अहाँ चाही तँ अपन शब्द पहिने लिखि सकैत छी।” पुरुष कागदपर मात्र दू वाक्य लिखलनि—“हम जीवित छी। हम एखन सब बात नहि कहब।” कागद हुनकर जेबमे रहल। ओहि दू वाक्यक बीच जतेक मौन छल, ओकरा भरबाक अधिकार ओ ककरो नहि देलनि।

लिखित सहमतिक नव पन्नामे पुरुष तीनटा विकल्प स्वयं चिन्हित कएलनि— आवश्यक उपचार जारी, पहिचान बन्द, आ औपचारिक विस्तृत बयानक निर्णय स्थगित। ओ अपन अनुभवक मूल तथ्यक छोट नोट सुरक्षित राखबाक अनुमति देलनि; बिनु नामक सार्वजनिक गवाही देबाक अनुमति नहि देलनि। दस्तावेजक एक प्रति हुनकासँ पूछिकऽ बन्द लिफाफामे देल गेल, दोसर सुरक्षित अभिलेखमे राखल गेल। ओ कहला, “लोक एतबे जानय जे उपचार भेटल। हमर कथा अहाँक सफलता-कथा नहि।” रुहानी एहि वाक्यक सार्वजनिक उद्धरण बनएबासँ सेहो परहेज कएलनि।

एक महिला स्वयंसेविका पूछलीह, “हम सभ मौन रहलहुँ तँ जे अपराध कएलक से बचि नहि जाएत?” जुबैदा हुनका बाहर लऽ गेलीह। “मौनक अर्थ दोषीकेँ बरी करब नहि अछि। पीड़ितक सहमति आ सुरक्षित जाँचक बाट बनाबय पड़त। ओ पुरुष अपन अंशक

निर्णय स्वयं लेताह; हम सभ अपन कर्तव्य—उपचार, सुरक्षा, प्रमाणक संरक्षण आ नियमपूर्वक सहायता—नहि छोड़ब।” स्वयंसेविका चुप रहलीह, मुदा सन्देहक प्रश्न कागदपर लिखि सकलीह। ओकर उत्तर समूह-प्रशिक्षणमे देल जाएत; ओहि लेल पुरुषक पहचान नहि खोलल जाएत।

गामक कात पहुँचला पर रमणी देखलीह जे नव साझा उपयोग-पञ्जीमे हुनकर नाम तऽ चढ़ि गेल, मुदा माछक बिक्रीक अगिला रकमक रसीद पुरान सदस्यसभक सूचीसँ बनल अछि। ओ जाल समेटैत अपन बेटीक गणना सुनलीह; बेटी नव बहीमे जालक गाँठ आ समय लिखि रहल छलीह। रमणी रसीदक कात सुधारक चिन्ह दऽ अगिला दिनक लेखापालक भेट लेल नाम लिखबौलीह। एकटा नाम वापस भेटला मात्रसँ जालक दाम नहि पहुँचैत; मुदा आब ओहि बकायाक लिखित दावा करबाक ठाम रहल।

रेणु अपन घर लग पत्रक तह खोलि धौरी नामवला पन्ना देखलीह। बुजुर्गक लिपि भुरभुरी भेल जा रहल छल। ओ एहि पन्नाक फोटो निजी नकल लेल कएलीह, सार्वजनिक जलनक्शापर नहि चढ़ौलीह। हुनकर बेटी पुछलक, “जँ ई नक्शा नहि, तँ रखैत किएक छी?” रेणु कहलीह, “कारण ई बतबैत अछि जे हम सभ केहन बाटसँ आयल रही, आ कियो केहन रोकने छल। जे तथ्य एखन नहि सिद्ध अछि, ओ याद होएब छोड़ि नहि दैत।” बेटी पन्ना वापस राखि देलक।

नीलिमा घर घुरि मायकेक पत्र पढ़बाक प्रयास कएलीह। नव सुधारल विवाह-पञ्जीमे मायक नाम साफ छल। मुदा पत्रक मोड़मे आङुरि राखि हुनका याद पड़ल जे एक समय अधिकारक कागद देखबो हुनका असम्भव बुझाईत छल। ओ अपन लेल एकटा दोसर प्रति माँगबाक निवेदन लिखलीह, जकर सार्वजनिक सूचीमे पारिवारिक विवरणक पूरा पाठ नहि जाए। नीमा नाम ओहि पत्रमे रहत, मुदा ओकर भौगोलिक अर्थ निश्चित करबाक दावा नीलिमा नहि कएलनि।

रातिक रसोइमे रुखसाना पुरुष लेल भोजनक थारी अलग राखलीह, मुदा ओकर कारणेँ भोजन-पञ्जीमे कोनो चिह्न नहि जोड़लनि। सामान्य भोजनक गणना सब लेल छल। पुरुष थारी उठबैत पुछलनि, “काल्हि जे मित्र आबत, ओ एतय राति रहि सकत?” रुखसाना नियम देखौलीह—भीतर रहबाक अनुमति सुरक्षित स्थान आ निवासीसभक सहमतिसँ

तय होएत, आवश्यक भेंट लेल अलग कोठरी उपलब्ध। पुरुष कहला, “तखन भेंट अलग ठाम। हम अपन कोठरी एखन साझा नहि करब।” हुनक बात तुरन्त मानल गेल।

सुरक्षा-पञ्जीमे ओहि राति एकटा असाधारण स्थिति लिखल गेल—एक निवासी निजी भेंट लेल समय बदललनि; विवरण बन्द सहमति-पन्नामे। सार्वजनिक सूचीमे इलाजक खर्चक मद रहल, नाम नहि। रुहानी देखलीह जे साधारण फार्ममे कारण लिखबाक घर खाली रखला पर लेखा-विभाग फेर आपत्ति उठा सकैत अछि। ओ कागदपर लिखलीह, “गोपनीयता-आधारित अपवादक पृथक मार्ग आवश्यक। स्वीकृत खर्च सत्यापन करब, निजी इतिहास नहि माँगब।” एहि वाक्यपर रमा आ जुबैदाक अलग-अलग हस्ताक्षर लेल गेल; नियमक संशोधन अगिला बैठकक विषय बनल।

आँगनमे रातिक हावा चलल। पुरुष खिड़की लग बैसि कपक तलीमे बचल पानि देखैत छलाह। ओ फेर अपन लिफाफा खोलि पहिल दिनक सहमति पढ़लनि। खाली छोड़ल बयानक पन्नाकेँ ओ फाड़लनि नहि; ओहि पर साफ लिखलनि—“एखन नहि।” तकर बाद लिफाफा बन्द करि जुबैदाकेँ सुरक्षित रखबाक लेल देलनि। दूर बरकी पोखरिक खुलल पयरिबाटपर जालक एकटा डोरी हवा लागि हिलैत छल। ओ डोरी ककरो देहक कहानी नहि कहैत छल; बस एतबा देखबैत छल जे खोलल बाटपर सेहो एक-एक व्यक्तिक पयर ओकर अपन होइत अछि।

अध्याय १५६ • नियमक अपवाद

रुखसानाक आँगनमे राँड़गनक बोझा उतारैत एक लड़का काँखमे दबाओल नील कागद भीजा देलक। भोरक सिमसिम बरखा सँ आश्रयक बाहर लागल सूचना-पट्टीक आधा अक्षर बहि गेल छल। रुहानी पट्टी उतारि भीतर अनलीह। काल्हि एक पुरुषक उपचारक खर्च स्वीकार करैत लेखा-विभाग सामान्य प्रपत्रमे हिंसाक कारण लिखबाक आग्रह केने छल। आजु ओहि प्रपत्रक सैकड़ो छपल प्रति कार्यालयसँ पठाओल गेल छल। सभमे एके तीन घर—नाम, स्थायी पता, शिकायतक कारण। चारिम घर कतहु नहि छल।

जुबैदा कागदक ऊपर अँगुरी फेरलीह। “तीनू घर भरबाक बाध्यता रखब तँ जे लोक अपना नाम खुलेआम नहि देब चाहैत अछि, ओकरा लौटि जाय पड़त।” रुखसाना पूछलीह, “आ खाली छोड़ि देब तँ हिसाबवाला भुगतान रोकि देत। काल्हिक दवा उधार चलि गेल, मुदा रोज एहन नहि होएत।” रुहानी कागदक गड्डीकेँ चुल्हिक लग सुखेबाक बदला ऊँच मेजपर राखलीह। “नाम चाही जखन व्यक्तिसँ जुड़ल लाभ चुकता करब। मुदा सार्वजनिक रसीदक लेल ओकर पूरा जीवनक वृत्तान्त किएक चाही? खिड़की हम बनायब; ओकर पाछाँ केहन बाट रहत, पहिने से तय करब।”

आश्रयक पुरान भोजन-वितरण खिड़की रसोइक ठीक सामने छल। ओतए लोकक नाम जोर सँ पुकारल जाइत छल, ताकि थारीक क्रम बिगड़य नहि। रुहानी ओहिठाम शिकायत लेल दोसर फट्टा जोड़बाक प्रस्ताव राखलीह। जुबैदा तुरन्त मना कएलीह। “ककरो शिकायत सुनबैत रसोइमे ठाढ़ लोक अनुमान लगा लेत। भोजनक कतारमे कियो नहि पुछत जे अहाँ एतय किएक आएल छी।” तय भेल जे आँगनक पाछूक खाली बरामदामे नीच खिड़की बनत, जतए बैसल लोकक आँखि आ कागतक ऊँचाई एक हो। आगाँक दरबज्जा खुलल रहत, भीतरक संवादक लेल पर्दाक विकल्प रहत।

दिउसक बैठकमे रमा कर्ण आयलीह तँ हुनक हाथमे नियमावलीक पुरान प्रति छल। “एके फार्म राखलासँ कर्मचारीकेँ सुविधा अछि,” ओ कहलीह, “प्रमाणक क्रम सेहो एकरूप रहैत अछि।” रुहानी हुनका काल्हिक पुरुषक परिचय नहि बतौलीह। ओ केवल बन्द लिफाफाक अस्तित्व आ उपचारक लेखा-मद बतौलीह। “सभक समान फार्म

प्रशासनक सुविधा अछि; सभक समान पहुँच नहि,” ओ कहलीह। रमा खाली कुर्सीपर बैसि कागत गनलीह। “अपवादक अर्थ मनमाना आदेश नहि होएबाक चाही। के निर्णय लेत, कतेक दिनमे, असहमतिक अपील कतए जाएत—ई सभ लिखू।”

रुखसाना माटिक घैलसँ पानि भरि आनलीह। असगरे बासन राखबाक आवाजपर ओ पुरुष, जे काल्हि उपचार लेने छलाह, भीतरक कोठरीसँ निकसलाह। हुनका नव व्यवस्था देखबाक इच्छा छल, मुदा अपन प्रसंगपर सभामे बात करबाक नहि। ओ खिड़कीक चौखट पर ठाढ़ भऽ कहलनि, “एतय सँ हम पर्ची दऽ सकब, मुदा जँ हमर नाम सभक सामने पढ़ल जाएत तँ ई खिड़की हमरा लेल बन्दे रहत।” रुहानी पुछलीह, “अहाँ चाहैत छी जे अपन बात एतय प्रयोगक उदाहरण बनाउ?” ओ माथ हिलौलनि—नहि। हुनकर सीमा बिना दोहरौने लिखल गेल—निजी मामला सार्वजनिक प्रशिक्षणमे उदाहरण नहि बनत।

रमाक कापीमे पहिल नियम उतरलक: शिकायत देब, आवश्यक उपचार पएब आ सार्वजनिक विवरण छपब—तीनटा भिन्न सहमति। दोसर: तत्काल आवश्यक सेवा लेल निजी पृष्ठक पूर्णता बाधा नहि बनत, मुदा वैध खर्चक अलग जाँच रहत। तेसर: शिकायतक प्राप्ति-अंक व्यक्तिक पहचानक स्थानापन्न नहि; एक अंकसँ अनेक लोकक अधिकार नहि जोड़ल जाएत। चौथ: कियो आवेदन वापस लैत अछि तँ ओहि कारणसँ पहिनुक उपचार वा सिद्ध मजदूरी नहि काटल जाएत। रमा लिखला पर कलम रोकलीह। “एहि सभक खर्चक उत्तरदायित्व बिना बजटक घोषित नहि करब।”

एतबेमे अनिता चौपाल पाछूक फाटकसँ अएलीह। हुनकर हाथमे पुरान प्राप्ति-पर्चीक किनार एतेक घिसि गेल छल जे अंकक एक रेखा मुश्किलसँ देखाइत छल। ओ पहिने सभाक बीच नहि बैसलीह। रुहानी हुनका एक छोट कागद देलीह—खुलल सुनवाई अथवा गोपनीय भेटक विकल्प। अनिता गोपनीय भेट चुनलीह, मुदा अपन समस्याक साधारण प्रकार सभकेँ बुझाएबाक अनुमति देलीह। “हम गलत जातिमे जोड़ल गेलहुँ,” ओ कहलीह, “एहि कारण कमाइक आवेदन गलत खिड़की गेल। आब जँ सार्वजनिक सुधारमे हमर परिवारक गोत्र, पीढ़ी आ ओहि गलत श्रेणीक नाम छापि देब, तँ गलतीक नब बाजार लागि जाएत।”

रमा पुरान अभिलेख मँगौलनि। लिखावट अपन ठाम साफ छल; गलती कम्प्यूटरक वर्गीकरणमे छल। एक कर्मचारीक पूर्वनिर्धारित सूची अनिताक नामकें अलग सामाजिक वर्गमे सरका देने छल। अनिता अपना स्वपरिचयक घोषणा, पिछला आवेदन आ कार्यालयक प्राप्ति देखौलीह। रमा कहलीह, “गलत प्रविष्टि मेटब नहि। सुधारक कारण आ तारीख सुरक्षित रहत, ताकि के गलती कएलक से अधिकृत जाँचमे भेटय।” अनिता उत्तर देलीह, “इतिहास राखू, मुदा ओहि इतिहासकें हमर सार्वजनिक परिचय नहि बनाउ।” रुहानी सुधारक नकल दुइ प्रकारक प्रस्तावित कएलीह—अनिता लेल पूरा, खुलल सूची लेल केवल सुधारक स्थिति।

कर्मचारी पूछलक, “तखन सार्वजनिक खाता प्रमाणित केना होएत?” अनिता अपन कमाइ-पर्ची रखलीह। “ई देखू, जे दिन हमर श्रम दर्ज भेल आ जे दिन पैसा रोकल गेल। एहि दुनू तिथिमे हमर जाति नहि बदलल छल। अहाँक यन्त्रमे भरल गलत घरसँ हमर मेहनत बिनु दामक भऽ गेल।” रमा श्रम-विभागक कर्मचारीकें बोलौलनि। एखन जे भुगतानक आधार स्वतंत्र हाजिरीसँ स्पष्ट छल, ओकरा पुरान जाति-कोडक सुधार पूरा होएबाक प्रतीक्षामे नहि रोकबाक लिखित आदेश निकलल। शेष दावाक सत्यापन अलग चलत। अनिताक अंगुरीक काँप कम नहि भेल, मुदा ओ पहिल बेर प्राप्ति-पत्र अपन थैलीमे सीधे रखलीह।

दोपहरिक लग बसन्ती पान बाजारसँ घुरैत भेटलीह। हाथमे पानक पातक गुच्छा छल, जकर हरियर किनार सुकबाक डर सँ ओ भीजल कपड़ामे लपेटने छलीह। हुनका सरकारी नकलमे पान, सवासी, पनर एक्के “पर्याय”मे जोड़ि देल गेल छल; अपन बोलल परिचयक शब्द कतहु नहि बचल छल। “सुविधाक वर्गीकरण रखू” ओ कहलनि, “मुदा हमर बोलल नाम हटाओल गेल तँ हमर बेटीक प्रमाणमे हमर मायकेक नाम फेर गलत बनत।” कर्मचारी कहलक, “सरकारी कोड तऽ एकटा चाही।” बसन्ती उत्तर देलीह, “कोड अहाँक कामक, परिचय हमर। दुनूक एके घर किएक?”

पद्मा विद्यालयसँ अएलीह। ओ कागदकें दू खण्डमे पढ़बाक सुझाव देलीह—नियमक प्रयोजन लेल निर्धारित प्रशासनिक वर्ग आ आवेदकक स्वयं लिखाओल परिचय। दुनू बीच सम्बन्ध दर्शाओल जा सकत, मुदा एकर अर्थ एक व्यक्ति दोसरक नाम अपनौलक नहि।

बसन्ती शर्त रखलीह जे व्यक्तिगत नकलपर हुनकर बोलल रूप स्पष्ट रहय आ खुलल राहतसूचीमे अनावश्यक सामुदायिक विवरण नहि जाए। रमा ओहि प्रारूपपर सहमति देलीह। बसन्ती पानक गुच्छा उठा कहलीह, “बाजारमे हमर समयक दाम घटि रहल अछि। ई सुधारक लेल फेर चारि दिन काउंटर नहि घुराएब।” ओकरा प्राप्ति आ तय दिनक लिखित सूचना देल गेल।

खिड़कीपर एखन अमला सर्बेरिया अएलीह। पुरान लाल धागासँ बान्हल अर्जीक गड्डी हुनकर झोरामे एखनहुँ छल, मुदा हर परिवारक कागद अलग आवरणमे राखल छल। अमला तीन कार्यालयक भिन्न वर्तनी देखौलीह—कहीं अक्षर छूटल, कहीं मात्रा बदलल, कहीं समुदायनाम दोसर समूहमे मिला देल गेल। “हम सामूहिक सुधारक माँग लेने आयल छी,” ओ कहलीह, “मुदा जँ सब परिवारकेँ एके नम्बर देल जाएत तँ फेर बच्चाक छात्रवृत्ति एक आदमीक दावे सँ अटकि जाएत।”

नगरक सूचना-कर्मचारी एक सामूहिक पहचान-अंक प्रस्तावित कएलक। ओ कहलक, “एहिसँ फेर-फेर सत्यापनक श्रम घटत।” अमला ओकरा लाल धागाक गाँठ खोलि देखौलीह। प्रत्येक गाँठक पाछाँ अलग प्राप्ति छल। “अहाँ एक शब्दक वर्तनी सुधारि सकैत छी; तीन लोकक जीवन एक नहि करि सकैत। हमर देवरक मजदूरी, पड़ोसिनीक छात्रवृत्ति आ हमर अपन आवेदनक लाभार्थी अलग छथि। एक नम्बर राखब तँ भुगतानक गलती फेर दोहरायत।” रुहानी कागदपर सामुदायिक वर्तनी-संशोधनक सार्वजनिक आदेश आ प्रत्येक आवेदकक पृथक् गोपनीय प्राप्ति-संख्या निर्धारित कएलीह।

इहाँ पहिल बेर खिड़कीक देवाल लग छोट भीड़ भेल। एक युवक कहलक जे अमलाक सामूहिक आवेदनसँ व्यक्तिगत लाभक संख्या बढ़ाओल जा रहल अछि। अमला आवाज नहि बढ़ौलीह। ओ अपन तीनटा नकलक देय-तिथि देखौलीह; एक छात्रवृत्ति, एक मजदूरी, एक पुरान सहायता। “दावा तीन अछि कारण नुकसान तीन ठाम भेल। एक लोक तीन बेर सरकारी पैसा नहि लेबऽ आबि रहल।” रमा युवककेँ खुलल आदेशक नकल पढ़बैत कहलनि जे हर दावाक लाभार्थी, योग्यता आ भुगतान स्वतन्त्र सत्यापित होएत। अमलाक समुदायनामक सुधार ओहि जाँचक बदला नहि, ओकर रास्ता खोलबाक बात अछि।

जुबैदा नब खिड़कीक देवालपर तीन आकारक पर्ची टाँगलीह। पहिलमे केवल ‘मदद चाही’, दोसरमे ‘अभिलेख सुधरबाक अछि’, तेसरमे ‘गोपनीय बात कहबाक अछि’। कियो जोर सँ पढ़ि नहि सकैत छथि तँ रुखसाना रंगक बदला आकार बुझौलीह; जकर आँखि कम देखैत छथि हुनका लेल स्पर्शसँ चिन्ह पहचानबाक उपाय सेहो राखल गेल। संकेत कक्षासँ आएल एक विद्यार्थी पुछलक जे रंग जे लोक नहि देखैत, ओकरा लेल की? पद्मा उत्तर देबाक बदला हुनक हाथमे तीन खुरदुराहटवला नमूना रखलीह। बच्चा दोसर नमूनापर अँगुरी रोकि हँसल। ककरो निजी शिकायतक उदाहरण बच्चासभक अभ्यासमे नहि आनल गेल।

रसोइक हिसाब लिखनिहार हिसाबरक्षक सेहो आयल। “खिड़की लेल दू कर्मचारीक घण्टा, परदाक कपड़ा, नकलक कागद, निजी सन्दूक—कुन खाता सँ?” ओ पूछलक। रुहानी कहलनि, “आश्रयक सामान्य भोजन आ गोपनीय चिकित्सा मदसँ ई खर्च लुकाउल नहि जायत। समितिक सार्वजनिक प्रशासन-खातामे अलग लागत देखाउ, मुदा लाभार्थीक नाम नहि।” रमा बजटक सीमित स्वीकृति लिखलीह—पहिल मासक परीक्षण, मजदूरीक निश्चित दर, साप्ताहिक समीक्षा। नब काजक लेल जुबैदा आ रुखसानासँ अनिश्चितकाल बिना पारिश्रमिक सेवा लेबाक प्रस्ताव रद्द भेल।

साँझधरि काउंटरक सामने एक वृद्ध दम्पती बैसल रहलाह। एकक हाथमे आधारक नकल छल, मुदा छायाचित्र धुँधल रहबाक कारण कर्मचारी हुनका घुरेबा चाहैत छल। रुहानी तत्काल परिचय स्वीकृत नहि कएलीह; ओ वैकल्पिक प्रमाण-पथ देखौलीह—पूर्वक सत्यापित सहायता-पंजी, स्थानीय गवाहीक अलग रजिस्टर आ अधिकृत जाँचक समय। वृद्धा पुछलीह, “आइ चाउर भेटत?” जुबैदा भोजनक सामान्य अधिकारक हिसाब देखलीह। “भोजन लेल अहाँकेँ एतेक कागद पूरा होएबाक प्रतीक्षा नहि करब। मुदा जे विशेष अनुदानक दावा अछि, ओकर सत्यापन अलग।” वृद्धा थारी उठौलीह। पर्ची आगाँक दिन लेल बचल रहल।

एहि बीच कार्यालयसँ नदी-यात्राक पुरान सूची आयल। रचनाक विद्यालयक किछु छात्रक घर-पता तिलवाहक कथागत पट्टीसँ जोड़ि ‘तिलयुगा’ नाममे सरका देल गेल छल। किनारमे ककरो हाथसँ ‘तिलयुगबा’ लिखल छल। गोपाल माझी नकल पढ़िते कहला,

“ध्वनि लग होइ छै, मुदा एहि तीनूँ एक नदी मानि देल जाए तँ पहुँचबाक घाटो बदलि जायत।” रमा पुरान स्रोतक भिन्न स्थान आ प्रयोजन देखलीह। तिलवाह एहि कथा-जगतक जलमार्ग; तिलयुगा आ तिलयुगबा अन्य स्रोतपञ्जीमे आएल नाम। बिना स्थल-मापनक एक अभिलेखकें दोसरमे विलीन करब निषिद्ध लिखल गेल।

गोपाल पुछलनि, “तखन नावक समयक सूची केना सुधरत?” रचना उत्तर देलीह, “बच्चाक वर्तमान उठान-बिन्दु स्वतंत्र पूछब, स्रोतक नामकें अक्षुण्ण राखब। गलत नाम-समानताक कारण अनुपस्थित घोषित नहि करब।” पुरान यात्रा-खर्चमे जे तीन परिवारक दिन काटल गेल छल, तकर दावा फेर खुलल। गोपाल हुनका सभकें नाव दऽ चुकलाह की नहि, से हुनकर कागद आ विद्यालयक उपस्थिति मिलानसँ परखल जाएत। नदीक नामसँ नाविकक कमाइक नकली हिसाब नहि बनत; मुदा ध्वनिक मिलानसँ सही देयो नहि काटल जाएत।

बरामदामे पानी चुबुकैत देख रुखसाना परदाक निचला किनार मोड़ि ऊपर बान्हलीह। ओहि क्षण काल्हिक पुरुष अपन मित्रसँ भेटि घुरैत छलाह। मित्रक सङ्ग कतेक बात भेल से कियो नहि पुछलक। पुरुष अपन दवाइक नव समय बतबए लेल काउंटरपर आएलाह। रमा हुनक आँखि दिस देखबाक बदला खाली प्रपत्रक वैकल्पिक घर देखौलीह। “अहाँ चाही तँ सम्बन्धित अधिकारीक सत्यापनक लेल बन्द प्राप्ति चुनि सकैत छी।” पुरुष बन्द प्राप्ति चुनलनि। ओकरा कियो कानूनी बयानक तिथि स्वयं भरबाक दबाव नहि देलक। पुरान ‘एखन नहि’ लिखल पन्ना अपरिवर्तित रहल।

रमा दिनक अन्तिम खाता खोललीह। पहिल स्तम्भमे स्वीकृत व्यय छल; दोसरमे जकर दावा आंशिक रूपसँ मानल गेल, ओकर शेष देय; तेसरमे निर्णयक विरुद्ध अपीलक बाट। ओ एहि तीनूँ एक कुल रकममे समेटबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलनि। अनिताक रोकल कमाइक विवादरहित हिस्सा जारी करबाक आदेश, बसन्तीक परिचय-संशोधनक प्रति देबाक दिन आ अमलाक सामूहिक वर्तनीक आदेश सभकें अलग प्राप्ति भेटल। कोनो एक आदेश दोसरा परिवारक अधिकार अपने-आप निश्चित नहि करैत छल।

अनिता फेर खिड़कीपर घुरलीह। ओ सार्वजनिक पटपर अपन पूरा नाम देखबाक डर लेने आयल छलीह। पटपर केवल एतबे छल—गलत वर्गीकरणक आवेदन स्वीकृत;

निजता-आधारित नकल संबंधित व्यक्तिकेँ देल गेल; भुगतान-संबन्धी निर्देश जारी। अनिताक आँखिमे अविश्वास पूर्ण रूपसँ नहि गेल। “जँ पुरान प्रतिलिपि बाहर अछि तँ?” ओ पुछलीह। रुहानी कहलीह, “ओहि प्रतिक प्रचलन रोकेबाक आ स्रोत सुधरबएबाक अलग आदेश देब। जे प्रति पहिने बाहर गेल, ओकरा जादूसँ मेटा नहि सकब।” अनिता पहिल बेर संतोषक बदला स्पष्ट समयसीमा माँगलीह; ओ लिखि देल गेल।

बसन्तीकेँ हाट दिस घुरबाक छल। ओ काउंटरपर राखल नमूना नकल पढ़ि कहलीह, “पान, सवासी, पनरक सरकारी पर्याय एहि खाने; हमर स्वतन्त्र बोलल परिचय एतय। ई दूनू एक-दोसराकेँ खाइ नहि रहल।” कागद मोड़बाक समय हुनकर पानक पातक किनार कनेक खुरचि गेल। रुखसाना पानि छिड़कबाक छोट कटोरी देलीह। बसन्ती हँसलीह, “आजु हमर पात बचल, नामो। मुदा कारोबारक छूटल एक पहरक दाम के गनत?” रमा नकल लेबाक लेल फेर बिना जरूरी चक्कर नहि लगय, से स्थानीय प्राप्ति-केंद्रक माध्यम तय कएलीह; कमाइक क्षतिक दावा प्रमाणक संग स्वीकार कएल गेल।

अमला तीन परिवारक अलग-अलग पर्ची बान्हि रहल छलीह, मुदा एहि बेर लाल धागाक तीन गाँठकेँ ढीला रखलीह। प्रत्येक आवरणपर स्वतंत्र क्रमाङ्क छल; ऊपर साझा शब्द-संशोधनक एक आदेश। नगरक कर्मचारी कहलक जे प्रणालीमे ई सुधारक लेल सॉफ्टवेयर बदलए पड़त। अमला उत्तर देलीह, “बदलू। जँ मशीन एके नाम देखैत अछि तँ ई मशीनक अभाव अछि, लोकक कमी नहि।” रमा तकनीकी परिवर्तनक अन्तिम तिथि लिखलीह आ तबधरि मानवीय सत्यापनक दायित्व एक नामित अधिकारीकेँ देलनि। अमला अधिकारीक हस्ताक्षर देखिकऽ पर्ची झोरामे रखलीह।

घाटक मार्गसँ एलाह रमणी बिन्द। साझा उपयोग-पञ्जीमे नाम जुड़ल छल, मुदा माछक बिक्रीक पिछला रसीद एखन पुरान सदस्यसभक नामपर छल। ओ खिड़कीक तीन नमूना देखि पुछलीह, “हमर शिकायत कोन पर्चीमे?” जुबैदा कहलीह, “अहाँ स्वयं चुनू; हम जँ गलत समझब तँ बदलि सकैत छी।” रमणी ‘अभिलेख सुधरबाक अछि’ चुनलीह, फेर नीच लिखलीह—‘बकाया रकमक अधिकार’। ओकरा कहल गेल जे मत्स्यपट्टाक विवादक निर्णयक प्रतीक्षा कएल बिना सत्यापित श्रमक देयक प्रारम्भिक सुनवाई भऽ सकत। रमणीक दावा बन्द भेल नहि, मुदा नव प्राप्ति-अंक पाबि गेल।

रुहानी जखन बजटक प्रति हस्ताक्षर करैत छलीह, नगरपरिषदक एक अधिकारी कहलक जे एहन अपवाद देलासँ प्रत्येक गाम अपन कागद अलग नियमसँ माँगत। “तखन एकर शासकीय एकरूपता कतय बचत?” ओकर प्रश्न छल। रमा उत्तर देलीह, “प्रमाणक मानक समान रहत। पहुँचबाक बाट बदलि सकैत अछि। जकरा पढ़ए नहि अबैत, ओकरा पढ़ि सुनाएब; जकर निजी परिचय जोखिममे अछि, ओकरा बन्द नकल देब; जकर नामक वर्तनी गलत, ओकरा सुधारक अपील देब। एहि सभसँ प्रमाण कमजोर नहि, अधिक जाँचयोग्य होइत अछि।” अधिकारी समयबद्ध परीक्षण स्वीकार कएलक, स्थायी अनुमोदन एखन नहि देलक।

तथापि समस्या ओतबे सँ समाप्त नहि भेल। कर्मचारीसभक संघक दू प्रतिनिधि आबि कहला जे खिड़की खुलला पर नियुक्ति-पत्रक बिना अतिरिक्त समय देब सम्भव नहि। जुबैदा हुनकर समर्थन कएलीह। “हम सभ आश्रयवासीसँ राति भरि पर्ची भरबए नहि कहब,” ओ कहलीह। पहिल मास लेल निश्चित पारी, विश्राम, प्रशिक्षण आ भुगतानक प्रस्ताव पर पुनःविचार भेल। रुखसाना भोजन-वितरण छोड़ि गोपनीय शिकायत सुनबाक काम स्वयं पर नहि लेलनि; पारीक नियुक्ति अलग भेल। प्रारम्भिक लागत सार्वजनिक बजटमे खुलल, निजी परिचय बन्द रजिस्टरमे।

सूर्य ढलला पर नव खिड़कीक ऊपर सादा फट्टा लगल—‘शिकायत, सुधार, अपील’। कोनो समुदायनाम, पीड़ितक फोटो वा दानदाताक नाम ओहि पटपर नहि छल। जुबैदा पाछूक सन्दूक ताला लगौलीह, मुदा खिड़कीक फट्टा बन्द नहि कएलीह। काल्हि भोरमे कर्मचारीक पारी शुरू होएत। अनिता, बसन्ती आ अमलाक प्राप्तिसभकेँ ओ स्वयं नहि, अधिकृत अधिकारी अपन-अपन बन्द आवरणमे रखताह; आम कक्षमे केवल खर्चक संख्या उपलब्ध रहत। एहन भेद बनबैत एकटा शाम बीतल, मुदा गलती सँ चोट खाएल लोक पहिल बेर अपन बातक बाट चुनि सकल।

एहने समय परिषदक सीमापार निरीक्षण-दल लेल वाहनक खर्चक नब प्रस्ताव आयल। प्रस्तावमे लिखल छल—‘चलैत सत्यापन-शिविर सभ गाममे प्रवेश करि समस्त नामक सूची तैयार करत’। रमा पढ़िकऽ कलम रोकेलीह। “इहाँ शिकायत लेल खोलल खिड़कीक नियम गाममे गेलापर बन्द किएक भऽ जाएत?” ओ प्रस्तावक ‘समस्त’ शब्द काटि

‘स्थानीय सहमति आ पृथक् अधिकारक आधारपर’ लिखलीह। रुहानी यात्रा-दलक लेखा, अनुवादक मजदूरी आ अभिलेख-सुरक्षाक खर्च अलग देखएबाक शर्त जोड़लीह। प्रस्ताव स्वीकृतिक लेल घुराओल गेल; घोड़ा नहि, पहिने अनुमति आ खर्चक कागद चलत।

राति रसोइ बन्द होएबाक बाद रुखसाना खिड़कीक नीच राखल रिक्त पेटी उठौलीह। भीतर एकटा सादा पर्ची छल—नाम नहि, केवल लिखल: “हमरा सुनल जाय, मुदा सभक आगाँ नहि।” ओ पर्चीकेँ मंचक घोषणा नहि बनौलीह। अगिला दिनक गोपनीय भेटक लेल खाली समय-पत्र राखि देलीह। आँगनमे पानिक पातर धार ओहि पटपरसँ बहैत निकलल जतए तीन प्रकारक शिकायतक चिह्न सुखि चुकल छल। एके छत छल, मुदा हर व्यक्ति ओकरा भीतर अलग बाटसँ प्रवेश करबाक अधिकार पाबि रहल छल।

अध्याय १५७ • छूटल घोड़ाक बाट

युद्ध समाप्त भेलाक किछु समय बाद हस्तिनापुरक राजअस्तबलमे एक उज्जर घोड़ाक पीठपर कारीगर सुनहला किनारवला वस्त्र पसारि रहल छल। कपड़ाक एक मोड़मे सुई अटक गेल। कारीगर ओकरा निकालि फेर टाँका देलक, मुदा घोड़ा बेचैन भऽ गर्दन हिललक। अर्जुन ओकर लग ठाढ़ छलाह। सेनापति कहलक जे घोड़ा जतेक दूर निर्बाध चलत, ओतेक दूर राजाक सार्वभौम अधिकारक सूचना पहुँचत। अर्जुन घोड़ाक आँखिमे देखलनि। ओकरा राजाज्ञाक अक्षर नहि बुझाईत छल; पैघ मैदान आ खुलल बाट बुझाईत छल।

हस्तिनापुरक सभामे यात्रा-निर्देशक पन्ना पहिने सँ बनल छल। जतए घोड़ा प्रवेश करत, ओहि प्रदेशक अधिपति समर्पण अथवा युद्धक उत्तर देत। युधिष्ठिरक हस्ताक्षर लेल ओ पन्ना अनल गेल। राजा पहिल पाँतिक शब्द पढ़ि ठहरि गेलाह। “हम विजयक घोषणा चाहैत छी,” पुरोहित कहलनि, “अश्वमेधक प्रयोजन राज्यक प्रतिष्ठा अछि।” युधिष्ठिर उत्तर देलनि, “हमर नामपर जे बाट खोलल जाए, ओहि बाटपर रहनिहार लोकक मुँह बन्द करब सेहो प्रतिष्ठा कहल जाएत?” प्रश्न सुनि सभा मौन भेल, मुदा पन्ना फाड़ल नहि गेल।

अर्जुनकेँ घोड़ाक सङ्ग रक्षाक भार भेटल। हुनका देल गेल ध्वज, अस्त्र आ राजमुद्राक नकल। नकुल भोजन आ घोड़ाक देखभालक हिसाब देखलनि। द्रौपदी पन्नाक एक खाली किनार देखबैत पुछलनि, “सेनामे नहि गनल जाएवला लोक कतए लिखल जाएत? रास्ता साफ करनिहार, घोड़ा लेल चारा अननिहार, ओहिठाम राति बितेनिहार स्त्री-पुरुष?” अधिकारी कहलक जे ओ सभ अनुष्ठानक बाहरक खर्च अछि। द्रौपदी अपन हाथसँ किनारपर एक नया पाँति जोड़लीह—‘जतए बाट लेल श्रम लेब, ओतए ओकर दाम देब।’ अर्जुन ओहि पन्नाक एक प्रति अपने लग रखलनि।

घोड़ा पहिल दू ग्राम निर्विघ्न पार कएलक। तेसर गामक बाहर बलुआ माटिपर पयर धँसि गेल। ओतए नब बोआएल खेतक बीच सँ राजमार्ग कहल पुरान एक पतली पगडण्डी जाइत छल। गामक लोक बोझा उतारि ओकर सामने ठाढ़ भऽ गेल। अग्रसर सैनिक रास्ता

खाली करबाक लेल भाला उठौलक। अर्जुन ओकर हाथ रोकलनि। एक स्त्री अपन गाछक पातसँ बान्हल माटिक लोटा राखैत कहलीह, “जे बाट काल्हि धरि हमर खेतक मेढ़ छल, से आइ राजमार्ग केना भऽ गेल?”

सैनिक उत्तर देलक, “राजाक अश्व एतय आबि गेल अछि। आब अहाँ सभकेँ आज्ञा मानबाक अछि।” स्त्री कहलनि, “घोड़ा हमर भाषा नहि पुछलक। मुदा ओकर पाछाँ जतेक लोक छथि, ओ सभ हमरा उत्तर दऽ सकैत छथि।” ओकर पति युद्धमे मरल छल; राजा कोन पक्षक छलाह से नहि पुछल गेल। ओकरा खेत जोतबाक समय चाही छल। गामक प्रधान आगाँ आबि कहलक जे नव फसलक मेढ़ तोड़लासँ पानि गलत दिशामे बहि जायत। अर्जुनकेँ पहिल बेर महसूस भेल जे घोड़ाक एक पयरक दिशा सेहो ककरो वर्षभरक भोजनपर पड़ि सकैत अछि।

अर्जुन घोड़ाकेँ ओतहि रोकि सेनाकेँ पाछाँ हटएबाक आदेश देलनि। गामक लोक वैकल्पिक पतली बाट देखौलनि, जतए पुरान पुलक दू कड़ी टूटल छल। सैनिकसभ तकर मरम्मतकेँ ‘राजधर्म’ कहि निःशुल्क श्रम माँगलक। स्त्री फेर पूछलनि, “हमर हाथक दिन राजधर्म होएत तँ हमर बच्चाक भात के देत?” अर्जुन द्रौपदीक लिखल किनार याद कएलनि। मरम्मतिक सामग्री राजभण्डारसँ आएत, स्थानीय कारीगर अपन दर बताएत, आ यात्रीसभ पुलक क्षमता जाँचि तखन पार करत—एहि तीन निर्णयपर सहमति भेल।

गामक प्रधान राजमुद्रावला पन्ना खोलि देखलनि। “अहाँ घोड़ाकेँ पार करबैत छी, से हम मानैत छी,” ओ कहलक, “मुदा एकर अर्थ हम अपन न्यायसभाकेँ बन्द करि देलहुँ, एहन नकल हमरा नहि चाही।” सेनापति आपत्ति कएलक जे जँ एहन शब्द लिखल जाएत तँ विजयक अर्थ खोखला भऽ जाएत। अर्जुन उत्तर देलनि, “जे स्वीकृति कहल जाए, ओकर लिखल सीमा होयबाक चाही। केवल भयक मौनकेँ सहमति कहब तँ हमर यज्ञक घोड़ा नहि, हमर सैनिक यात्रा कऽ रहल होएत।” हुनका एहिमे अपन विजयक इच्छा कम नहि भेल, मुदा विजय लिखबाक विधि बदलि गेल।

राति गामक बाहर शिविर लागल। घोड़ाकेँ चारा देनिहार किशोर पूछलक जे घोड़ा गाममे नब राजाक नाम बुझबैत चलल अछि की अपना घर घुरबाक बाट खोजैत। अर्जुन हँसलाह नहि। ओ किशोरकेँ चारा देबाक पारिश्रमिक अपन सूचीमे जोड़लनि। दूर घरसभक दीया

जड़ि गेल छल। द्रौपदीक पाँतिक बगलमे अर्जुन स्वयं लिखलनि—‘मार्ग-देनिहारक स्वीकृति आ राजकीय अधीनताक घोषणा दू अलग कागद।’ लिखैत हुनका बुझाइत छल जे ई सुधार सम्पूर्ण अश्वमेधक हिंसा मिटा नहि सकत; अगिला प्रदेशमे घोड़ा रोकएवाला ककरो आन दावा सेहो होएत।

ओहि राति सैनिकसभ आगि तापैत आपसमे कहैत छल जे अगिला राजाक सभामे एहन समाचार सुनाओल जाएत तँ अर्जुनक वीरतापर प्रश्न उठत। एक नवयुवक सैनिक घोड़ाक रश्मि देखैत पुछलक, “हम सभ जे जीतलहुँ, ओकरा लिखबाक अधिकार गामक लोककें किएक?” अर्जुन ओकरा घोड़ा पकड़बाक कहलनि। किशोर सैनिकक हथेलीपर रश्मिक खुरदुरापन लगल। अर्जुन कहला, “तौँ रश्मि धरने छँ, मुदा घोड़ा तोहर देह नहि बनि गेल। अपन हाथक नियन्त्रण आ दोसरक जीवनपर अधिकार एक बात नहि।” सैनिक उत्तर नहि देलक; ओ भोरमे गामक कारीगरक दाम देनिहार थैलाक गाँठ जाँचबाक स्वेच्छा व्यक्त केलक।

२०४०क फागुनक अन्तिम सप्ताहमे आश्रयक पाछूक बरामदामे एक छोट वाहनक छतपर लोहेक सन्दूक बान्हल जा रहल छल। रमा कर्ण रस्सीक गाँठ खोलि देलीह। चालक पुछलक, “अहाँकें डर अछि जे सन्दूक खसि पड़त?” रमा कहलीह, “डर एहि बातक अछि जे अन्दरक कागदक मालिककें ई नहि बुझाओल गेल जे हम सभ ओकरा कतए लऽ जा रहल छी।” परिषदक मोहरवला यात्रा-आदेश छतपर नहि, हुनकर हाथमे छल। पिछला दिन ‘समस्त नामक सूची’ बनएबाक प्रस्ताव सुधारि वापस पठाओल गेल छल।

आदेशक नव प्रतिमे वाहन आ कर्मचारीक खर्च स्वीकृत छल, मुदा प्रत्येक गाममे प्रवेश लेल अलग स्थानीय अनुमति आवश्यक छल। एक अधिकारी एहि पाँतिकें बेकार विलम्ब कहलक। “आब जँ सभ गाम अपन नियम बनाएत तँ निरीक्षण कोना चलत?” रमा ओकरा रिक्त अनुमति-पत्र देखौलीह। “सरकारी माप सभ लेल एक रहत। मुदा गामक दुआर खोलबाक अधिकार हमर गाड़ीक टायरमे नहि अछि।” ओ स्पष्ट कएलनि जे कार्यालयक पुरान मूल रजिस्टर नहि हिलाओल जाएत; सत्यापित नकल जायत, नव विवरणक प्रति गामे छोड़ल जाएत, आ गोपनीय कागद बन्द आवरणमे राखल जाएत।

रुहानी आश्रयक निवासीसभक सूचीक माँग पर लाल रेखा खींचलीह। “राशनक कुल संख्या देब,” ओ कहलीह, “मुदा कियो एतय इलाज लेल रहैत अछि की हिंसासँ बचबाक लेल, एकर सार्वजनिक सूची नहि।” चालकक सङ्ग नियुक्त अनुवादिका अपन पारिश्रमिकक दर माँगलीह। पहिल बजटमे हुनकर नाम स्वयंसेवकक रूपमे चढ़ल छल। रुहानी तुरन्त नियम बदलि देबाक घमण्ड नहि कएलीह; ओ कर्मचारीक स्वीकृत घण्टा आ दोसर मदसँ भिन्न अनुवाद-मजदूरीक आदेश लेल रमा लग आवेदन राखलीह। शिविरक गाड़ी आधा पहर देरीसँ निकलल, मुदा ओकर पाछाँ ककरो निःशुल्क समयक ऋण नहि छोड़ल गेल।

गाड़ीक अगिला सीटपर बैसल लेखा-सहायक खर्चक सूची फेर मिलौलक। परिषद केवल पेट्रोलक रसीद मागने छल; दलमे गेल लोकक भोजन आ स्थानीय अनुवादकक समयक नाम नहि छल। रमा प्रत्येक मदक लग खर्चक स्रोत लिखबौलीह। चालक कहलक जे पिछला शिविरमे दू दिनक भाड़ा चारि सप्ताह बाद भेटल छल। एहि बेर ओकरा पहिल दिनक स्वीकृत अग्रिम भेटल, मुदा शेष भाड़ा यात्रा-पुष्टिक बादे देल जाएत। रुहानी कहलीह, “आकस्मिक मददक नामपर ककरो नियमित श्रम उधार नहि लेब।” गाड़ी चललापर खाली परदावला सीट चोट खाइत कड़कड़ायल; ओतए निजी आवेदक लेल सुरक्षित ठाम छोड़ल गेल छल।

बाजारक पूबक मोड़पर फरीदा कुरैशी अपन दोकानक दरबज्जापर लगल पुरान बहिष्कार-पर्ची देखैत छलीह। निरीक्षकक अन्तिम नमूना-प्रतिवेदन आबि गेल छल। सफाइक पट्टीक पहिने बताओल त्रुटि बदलल जा चुकल छल; परीक्षणमे जे नमूना लेल गेल छल, ओकर दर्ज परिणामक आधारपर दोकान बन्द करबाक आदेश आवश्यक नहि ठहरल। मुदा एक ग्राहकक पुरान गन्ध-सम्बन्धी शिकायतक खरीद-समय आ भण्डारण एखन स्पष्ट नहि भेल छल। फरीदा स्वयं एहि शेष बातकेँ प्रतिवेदनसँ काटबाक आग्रह नहि कएलीह।

बाजार-संघक अध्यक्ष बहिष्कार-पर्ची हटेबाक बदला छोट नव कागद टाँगबाक चाहैत छलाह—‘दोकान जाँचमे निर्दोष’। फरीदा हुनकर कलम रोकलीह। “जे निष्कर्ष अछि, ओतबे लिखू। हमर सुधारल त्रुटि लिखल रहय, आ जे अलग शिकायत खुलल अछि,

ओकरा अलग लिखू। ‘निर्दोष’ शब्दक आड़मे काल्हि फेर अफवाह उठत तँ हमर बात कमजोर होएत।” एक बूढ़ ग्राहक कहलक, “हम तँ डरि सामान किनब छोड़ि देने रही।” फरीदा ओकरा उलाहना नहि देलीह; ओ तराजू देखौलीह आ कहलीह जे पसिन सँ खरीदब अलग बात अछि, समुदायक नामपर सभ दोकान बन्द कराएब अलग।

दू किशोर बाहरसँ खेलैत आबि फरीदाक निरीक्षण-पत्रक फोटो माँगलक। हुनका सभ विद्यालयक दीवालपर टाँगबाक इच्छा छल—जाहिसँ पुरान आरोप सदा लेल लज्जित भऽ जाय। फरीदा अपन दुकानक दरपर उभयकौं रोकलीह। “जाँचक सार्वजनिक निष्कर्ष पढ़ू, मुदा ककरो ग्राहकक नाम वा शिकायतक अधूरा विवरण नहि टाँगू। जे अपमान हमरा भेल, ओकर बदला दोसरक अपमान नहि।” एक किशोर पुछलक जे बाजार-संघक अध्यक्षक नाम तँ लिखल जाए। फरीदा कहलीह जे आदेशपर जे हस्ताक्षर अछि, से सार्वजनिक उत्तरदायित्वक भाग अछि; मुदा हुनकर परिवारक नाम जोड़बाक कोनो कारण नहि। किशोरसभ पटपर लिखबाक भाषा फेर सँ सोचलक।

रमा बाजार-संघकें निरीक्षणक अधिकृत प्रति पढ़ि सुनौलीह। अध्यक्षक लग प्रारम्भिक बहिष्कारक कोनो दस्तावेजी आधार नहि छल। चर्चाक बाद संघ अपन सामूहिक बहिष्कारक पुरान आदेश सार्वजनिक रूपेँ वापस लेलनि, आ नब सूचना-पटपर वास्तविक जाँचक सीमित निष्कर्ष टाँगएबाक स्वीकृति देलनि। फरीदाकें पुरान ग्राहक सभ तत्काल नहि घुरलाह। दोकानक एक कर्मचारीक पिछला पखवाड़ाक वेतन चढ़ि गेल छल। फरीदा ओहि राति अग्रिम देबाक निर्णय कएलीह, मुदा बाजार-संघसँ छूटल बिक्रीक क्षतिपूर्तिक अलग दावा नहि छोड़लीह।

शिविरक गाड़ी गामक चौक लग पहुँचल तँ रीताक घरक बाहर दू आदमी कागद लऽ ठाढ़ भेटलाह। रीता एक्का अपन ऋण-वसूलीक प्रति फेर सुखा कऽ लाल कपड़ामे रखने छलीह। वसूलीक आदमी कहलक जे अगिला सप्ताह धरि रकम नहि देलीह तँ औजार उठा लेल जाएत। रीता ओकरा प्रश्न कएलीह, “जे हस्ताक्षर हमर कहल गेल अछि, ओकर मूल आजु आनलहुँ?” आदमी एक फोटो देखौलक, मुदा मूल अनुबन्ध नहि। रमा कहलीह जे फोटो प्राप्त सूचनाक रूपमे राखल जाएत, मूल अनुबन्धक बदला नहि।

रीताक भाय डेराइ कहलक, “सभ ऋण रुकि जाए तँ भला।” रीता ओकरा रोकलीह। “हमर अपन सिलाइ-औजार लेल जे छोट उधार लिखल अछि, ओकर दू किस्त हम देने छी; तीसरी तारीख आवि रहल अछि। ओ हमर दायित्व अछि। मुदा घाट मरम्मतिक आवेदनमे गवाही देने छलहुँ, तकर हस्ताक्षर उठा कऽ जे दोसरक कर्ज हमर माथे चढ़ाओल गेल, से नहि चुकाएब।” ओ अपन वास्तविक उधारक रसीद आ झूठ जोड़ल वसूली-पत्र अलग धरलीह। दुनू पर ओकरा अलग पहचान अंक चाही छल।

रमा वसूली-अधिकारीक हाथसँ औजार जब्त करबाक अपूर्ण आदेश लेलनि। दस्तावेजमे उधार लेनिहारक नाम आ रीताक नामक मिलान कएल गेल छल, मुदा जमानतक मूल प्रमाण नहि छल। ओ आपत्तिक प्राप्ति देलीह आ संबंधित गलत नामक आधारपर जब्ती स्थगित करबाक अन्तरिम आदेश जारी करएबाक लिखित सूचना पठाएलीह। ई ऋण माफी नहि छल। रीताक असली औजार-उधारक तेसर किस्त पुरान शर्तनुसार देय छल; ओकर भुगतानक तिथि सुधरल नहि। रीता एहि भेदपर सही कएलीह, कारण ओ अपन साँच कर्जकेँ गलत कर्जक ढाल नहि बनबए चाहैत छलीह।

एहि बीच गामक दू शिक्षक निरीक्षण-दलकेँ विद्यालयमे ठहरबएबाक अनुरोध कएलनि। मुदा विद्यालयक एक दीवालपर पुरान जातिवार नामसूची टाँगल छल। शिक्षक कहला जे सबकेँ फोटो खींचि कार्यालय पठाओल जाए। पद्मा, जे अनुवादक आ शिक्षण-प्रवेशक सलाह लेल संग अएलीह, मना कएलीह। “विद्यालयक साझा कक्ष समस्त नामक सार्वजनिक नकल नहि अछि। जकरा त्रुटि सुधार करएबाक अछि, ओकर सहमति लेल अलग ठाम चाही।” गामक महिला-समिति खाली पुस्तकालय-कक्ष उपलब्ध करौलक। दरबज्जाक चाभी ओ सभक लग रहल; दलकेँ प्रवेशक अवधि लिखि देल गेल।

जखन पहिल परिवार अएल तँ ओकरा अपना उपनामक गलत वर्तनीक नकल भेटल। ओ अपना कागदक फोटो मोबाइलमे लेबाक चाहलक। कर्मचारी कहलक जे वेबसाइटपर चढ़ेलासँ सभकेँ सुविधा होएत। रमा कहलीह, “अपन प्रति अपन लग रखब आ सबकेँ देखएबाक अधिकार देना अलग बात अछि।” परिवार पहिल विकल्प चुनलक। कर्मचारीक झुंझलाहट बुझाईत छल—एकहि गलती लेल फेर कतेक अनुमति? पुस्तकालयक बुजुर्ग

रखवाला उत्तर देलक, “जतेक लोक अलग छथि ओतेक।” खुलल दुआरक बाहर बच्चासभ बैसि चित्र बनबैत छल। भीतरक नाम हुनका सभक चित्रक शीर्षक नहि बनल।

गामक प्रधान यात्रा-पंजीमे एक पाँति देखलनि—‘सर्वेक्षण पूरा’। ओ कलमसँ काटि देलनि। “आजु आधा टोला अएल अछि। जे परिवार हाट गेल अछि ओकरा अनुपस्थित कहू, सहमत नहि।” रमा खाली स्थानपर ‘पहिल बैठक सम्पन्न; शेष भेट स्थानीय समयानुसार’ लिखलीह। प्रधान एक दोसर शर्त रखलनि जे शिविर घुरलापर प्रत्येक संशोधनक उपयोगयोग्य नकल गाममे रहत। परिषदक अधिकारी कहलनि जे मूल कार्यालयमे रहत। “मूल राखू,” प्रधान उत्तर देलनि, “मुदा हमरा सभक हाथमे खाली प्राप्ति-अंक रहला सँ खाता पढ़ल नहि जा सकत।” ई शर्त लिखल गेल।

पुस्तकालयक बाहर एक बुजुर्ग महिला दरी पसारि बैसलीह। ओ शिविरक प्रतीक्षा करैत तीन घण्टा हाट नहि जा सकलीह। कर्मचारी कहलक जे दरीपर बैसबाक व्यवस्था स्वयं गामक लोक कएने छथि, तँ एहि समयक कोनो हिसाब सरकारी फाइलमे नहि। महिला पुछलीह, “हमरा आजुक बिक्री नहि भेल, ताहि लेल अहाँ सभकेँ हम दोष नहि दैत छी। मुदा अगिला बेर कखन अयब, से हम सभ तय नहि कए सकी तँ फेर हमर दिन जाइत रहत।” रमा एकटा नव समय-पर्ची निकाललीह। गामक प्रतिनिधि, विद्यालय आ शिविर-दल अगिला बैठकक घड़ी संयुक्त रूपेँ लिखलनि; ओहि पर उपस्थित महिलासभक एक प्रतिनिधिक हस्ताक्षर सेहो भेल।

साँझक प्रहरमे फरीदा दोकानक कर्मचारीकेँ अग्रिम देबाक बाद घुरैत शिविरक गाड़ी देखलीह। रीताक घरक बाहर औजार एखनहुँ अपन ठाम छल। दुनू स्त्री बाजारक मोड़पर भेटलीह। फरीदा पूछलीह, “अहाँक काम खत्म भेल?” रीता कहलीह, “गलत वसूली रोकबाक कागद चलल, साँच किस्त एखन बाकी। अहाँक?” फरीदा हँसलीह, “कागद उतरि गेल, डर नहि उतरलक। मुदा आइ ग्राहक हमर तराजू पुछलक, हमर नाम नहि।” ओहि छोट बातमे हुनका सभक दिनक किछु श्रम वापस भेटल, सम्पूर्ण हानि नहि।

गाड़ी रातिसँ पहिने आश्रयमे घुरल। रुहानी कुल शिकायत, नकल आ स्वीकृत यात्राखर्च सार्वजनिक बहीमे चढ़ौलीह; ककरो घरक निजी इतिहास नहि। पद्मा अनुवादिकाक कामक घण्टा अलग गनलीह। रमा पंजी खोलि देखलीह जे कतहु ‘सभ गाम

सहमत' नहि लिखल छल। एक गामक चाभी स्थानीय महिलासभ वापस लेने छलीह; दोसर बस्ती आगाँक यात्राक अनुमति एखन देने नहि छल। निरीक्षण-दलक अगिला मार्ग खाली रहल, मुदा ओ खाली स्थान पराजयक प्रमाण नहि छल।

पुरान हस्तिनापुरक ओहि शिबिरमे, जकर समय एहि आधुनिक कागदसँ बिल्कुल भिन्न छल, अर्जुनक घोड़ा अगिला भोर अपना दुआरकें नहि, दूरक पहाड़ी बाटकें देखैत ठाढ़ भेल। गामक मरम्मत पूरा भेल पुलपर किशोर चारा-अर्थक प्राप्ति लऽ अएल। अर्जुन ओकर पर्ची अपने सँ नहि भरलनि; किशोर अपन नाम अपन हाथे लिखलक। गामक प्रधान कहलनि, “घोड़ा आगाँ जा सकैत अछि; हम अहाँक जुलूसक बाट नहि रोकब। मुदा हमर स्वीकृतिक अर्थ एतबे।” अर्जुन ओहि सीमित शब्दकें हस्तिनापुरक लेल कठिन समाचार बुझि कऽ सेहो अक्षुण्ण रखलनि।

आधुनिक आश्रयक मेजपर ओहि राति रमा गामक दू नकल अलग आवरणमे राखलीह —एक प्रवेशक सहमति, दोसर देय आ अधिकारक सुधरल दावा। घोड़ाक पयरक आवाज कतहु नहि छल; बाहर वाहनक चक्का ठंडा भऽ गेल छल। सरिता दूरसँ आएल सूचना पढ़ि पुछलीह, “जे आजु भेटबाक मना कएलक, ओकरा काल्हि ‘अवरोध’ लिखब?” रमा खाली पाँति देखौलीह। “नहि, ‘उत्तरक प्रतीक्षा’ लिखब।” सरिता पन्नापर सही कएलीह। अगिला यात्रामे व्यक्ति के छथि आ हुनका ककरा नामसँ बोलाओल जाए, एहि प्रश्नक उत्तर एखन भेटबाक छल।

अध्याय १५८ • अर्जुनक पहिचान

मणिपुरक राजद्वारपर पीतलसँ मढ़ल एक घण्टा हवा लागिते हलुक बजि उठल। ओकर नीचाँ घोड़ाक टापक निशान एखनो नब छल। पहरए प्राचीरक ऊपरसँ देखलक जे हस्तिनापुरक अश्वमेधक उज्जर घोड़ा नदीक पातर धार पार कऽ राजधानी दिस बढ़ि रहल अछि। पाछाँ अर्जुनक ध्वज छल। खबर राजमहल पहुँचल तँ बभ्रुवाहन अपन धनुषक डोरी कसैत छलाह। हुनकर शिक्षक कहलनि, “आब पिता आबि रहल छथि।” बभ्रुवाहन एकटा गाँठ छोड़ि पूछलनि, “जे अपन घर छोड़ि गेलाह, हुनका हम अतिथि कहब कि हमर राज्यक अधिपति?”

चित्राङ्गदा राजप्रासादक भीतरी चौकमे सैनिकक अभ्यास देखैत छलीह। समाचार सुनि ओ अभ्यास बन्द नहि करौलीह। प्रशिक्षण पूरा भेलापर बेटाकेँ बजबौलीह। “ओ तोहर पिता छथि,” कहलीह, “मुदा तोहर अस्त्र चलएबाक हाथ, एहि राजक लोक आ एतय बिताओल वर्ष हुनकर अनुपस्थितिमे बनल। हुनका आदर दिहें, अपन प्रजाकेँ ककरो उपहार नहि बनय दिहें।” बेटा पूछलनि जे राजदरबारक वंशावलीमे पिता आ माताक नाम कोन क्रममे लिखल जाए। चित्राङ्गदा कहलनि, “पहिने लोकक भरोसा लिख; तकर बाद जकरा जे सम्बन्ध अछि, से सच-सच।”

दुपहरमे अर्जुन प्राचीर लग पहुँचलाह। हुनका स्वागत लेल फल, चन्दन आ पानि अनल गेल। बभ्रुवाहन झुकि प्रणाम कएलनि। अर्जुनक संगक सेनापति एहन स्वागत देखि असन्तुष्ट भेल। “अश्वमेधक घोड़ा देखिकऽ राजाधिराजक सेनाकेँ युद्ध वा अधीनता भेटबाक चाही,” ओ कहलक। अर्जुनक चेहरा कड़ा भेल; अनेक वर्षक युद्ध हुनकर दृष्टिमे सम्मान आ चुनौतीकेँ एके सङ्ग जोड़ि देने छल। ओ बेटासँ पुछलनि, “अहाँ अपन धनुषक साहस कहाँ राखलहुँ? स्वागतमे युद्धक निर्णय लुकबैत छी?”

बभ्रुवाहनक हाथमे चन्दनक थारी काँपल। “हम अपन नगरकेँ युद्धसँ बचएबाक साहस राखलहुँ,” ओ कहला, “मुदा जँ अहाँक आज्ञामे हमर लोकक स्वीकृति मेटाएब जरूरी अछि तँ हम धनुष उठाएब।” सेनापति एकर अर्थ राजकीय अपमान लगौलक। भीतर सभामे जे कारीगर राजद्वारक द्वारपालट्टी बनौने छल, ओकरा आजुक स्वागतक मजदूरी एखन भेटल

नहि छल। चित्राङ्गदा ओकरे बजौलनि। “पहिने ई दरबज्जा जकर श्रमसँ खुलल, ओकरा भुगतान करू। तकर बाद राजवंशक गर्वपर बहस होएत।” अर्जुनक सैनिक अपना खर्चक बही खोलए लगल।

साँझ ढलैत नदीक कात एक स्त्री ठाढ़ भेलीह। हुनकर वस्त्रपर पानीक चमक छल, मुदा ई जल उतरि रहल छल की सूतक फीताक उजास, पहरुआ बुझि नहि सकल। उलूपी अपन परिचय दऽ कहलीह, “हम अर्जुनक जीवनक ओ अंश छी, जकरा एहि राजक बाहर राखि कऽ हुनकर पूरा नाम लिखल नहि जा सकत।” हुनका सङ्ग नागलोकक दू विश्वस्त लोक छलाह। उलूपी मणिपुरक अधिकार माँगए नहि अएलीह; ओ जानए चाहैत छलीह जे बभ्रुवाहनक निर्णयसँ चित्राङ्गदाक आवाज मेटत तँ नहि।

अर्जुन उलूपीकेँ देखि किछु क्षण चुप रहलाह। हुनकर स्मृतिमे इरावानक नाम उठल— उलूपीक पुत्र, जे युद्धक विभीषिकामे अपन जीवन गमा देने छल। उलूपी शोकक प्रसंग नहि बढौलीह। “हमर पुत्रक नाम कहि कऽ हमर निर्णय तोहर नामक अधीन नहि भऽ जाए,” ओ धीरे कहलीह। “एहि बेटाक माता चित्राङ्गदा छथि। हुनकर पालनक राजकीय श्रमकेँ एक दिनक अश्वमेध मेटा नहि सकैत। हमर अपन परिवार, अपन शोक आ अपन वचन अछि। हम एतय दोसर स्त्रीक ठाम लेबए नहि अएली।”

अगिला भोर राजसभामे तीन प्रकारक कागद पसारल गेल—मणिपुरक दैनिक राज-काजक पत्र, अर्जुनक घोड़ाक प्रवेशक घोषणा आ बभ्रुवाहनक स्वागतक अभिलेख। सेनापति चाहैत छल जे तीनूकेँ एके राजमुद्रासँ बन्द कएल जाए। चित्राङ्गदा लाल डोरी खोलि पहिल पन्ना अलग रखलीह। “एहि पर हमर लोकक पानी, फसल आ न्याय लिखल अछि,” ओ कहलीह। “दोसर पर तोहर यज्ञक यात्रा। जे कागद मिलि नहि सकैत, ओकरा डोरीसँ बाँधलासँ अर्थ एक नहि होएत।” बभ्रुवाहन माएक कात ठाढ़ रहलाह, मुदा ओकर स्थानपर निर्णय नहि कहलनि।

अर्जुन एहि बेर बेटाकेँ युद्धाभ्यासक मैदानमे बजौलनि। धनुष-दुनूक बीच दूरी मापल गेल। घोड़ा परतीक कात बान्हल छल, ओकरा रणक बीच नहि अनल गेल। पहिल बाण बभ्रुवाहन अर्जुनक पयरसँ दूर धरतीमे रोपलनि। अर्जुन उत्तरमे एक बाण छोड़लनि जे बेटाक मुकुटक किनार छूलक। प्रेक्षकसभक गला सँ आवाज निकलल। चित्राङ्गदा

सैनिकसभकेँ आगाँ नहि बढएबाक आदेश देलीह। उलूपी मैदानक बाहरी सीमापर रहलिह, आँखि नहि हटौलीह। हुनका बुझाइत छल जे नामक प्रमाण लेल रक्त बहाओल जाए तँ परिवारक मूल्य फेर युद्ध तय करत।

दोसरा वार बभ्रुवाहनक बाण अर्जुनक धनुषक डोरी काटि गेल। सेनापति चिचियायल, “राजाक अपमान!” मुदा अर्जुन हाथ उठा रोकलनि। बभ्रुवाहन अपन बाण नीचे रखलनि, आ पिता लग जायबासँ पहिने कहला, “हम धनुष चालन अहाँसँ वंशमे नहि पेलहुँ। माए, गुरु आ एहि राजक मैदानसँ सिखलहुँ। जे जनक रक्त हमरा भीतर अछि, तकर आदर कऽ सकैत छी; मुदा ओकरा अपन समस्त काजक मालिक नहि बना सकैत।” मैदानमे एहन मौन भेल जे घोड़ाक साँस सुनाइ पड़ल।

अर्जुन टूटल डोरीक दू छोर उठा धरलनि। युद्धक अनेक कथा हुनकर स्मृतिमे छल; कतहु पिता-पुत्रक मुठभेड़ भयङ्कर परिणाम धरि जाइत, कतहु नागलोकक अलौकिक रत्न मृत्युकेँ चुनौती दैत। मुदा एहि भोर हुनका सामने जीवित बेटा ठाढ़ छल, जे अपन राज्यक नागरिकसभक विश्वास लऽ उत्तर माँगैत छल। अर्जुन कहलनि, “हम तोरा साहस जाँचबाक छलमे अपन नामक भार देब चाहने रही। तोहर उत्तरसँ बुझलहुँ जे तौँ हमर अनुपस्थितिक वर्ष नहि हारलें।” ओ प्रणामक बदला बेटाक हाथ पकड़लनि; विजयक घोषणा नहि कएलनि।

उलूपी आगाँ आबि बभ्रुवाहनक कात राखल टूटल बाण उठौलीह। “एहि लकड़ीक दू टुकड़ा ककरा लग रहत?” पुछलीह। बभ्रुवाहन कहलनि, “एक हिस्सा हम राखब; दोसर पिता लेल।” चित्राङ्गदा बीचमे कहलीह, “मुदा राजक पत्र हमरा सभकेँ चाही—ककरो स्मृतिचिह्नक बदला नहि।” तखन एक सार्वजनिक लेख लिखल गेल: घोड़ा मणिपुरसँ पार होएत, मुदा एहि मार्गक स्वीकृति मणिपुरक अपन उत्तराधिकार आ राजकाजक त्याग नहि। उलूपी एहि लेखक साक्षी बनलीह, भूमि वा पुत्रपर दावा कएनिहार नहि।

घोड़ा प्रासादसँ बाहर निकलला पर चित्राङ्गदा अपन बेटाकेँ राजदरबज्जा धरि छोड़ए नहि गेलीह। ओ खेतक नहर मरम्मतक पुरान अरजी सुनबाक लेल भीतरी कक्षमे घुसि गेलीह। बभ्रुवाहन स्वयं राजनक उपस्थितिक पंजीमे दिनांक दर्ज कएलनि। अर्जुनक सहायक पुछलक जे सभामे पिता-पुत्रक मिलनक गीत गाओल जाए की नहि। बभ्रुवाहन

कहला, “गीत गाउ, मुदा गीतमे हमर माएक नाम छोड़ब तँ सभामे नहि गाबब।” दूर गाछक पातसँ ओस टपकल। घोड़ाक खुरक निशानक बराबर नहरक माटिपर कारीगरक पयरचिह्न रहि गेल।

ई प्राचीन यात्राक समयसँ बहुत दूर, २०४०क वसन्तमे, कबीर आश्रयक पुस्तकालयमे पुरान पालन-पंजीक दू नकल खोलि बैसल छलाह। कागदक एक पाँतिमे पालकक नाम छल, दोसर पाँतिमे जन्मसम्बन्धी प्रश्नक कोना खाली। सुभद्रा पहिने ओहि रिक्त स्थानक कारण बुझबाक आग्रह कएने छलीह; हुनकर निजी पत्रक खुलासाक समय सेहो हुनकें चुनबाक छल। कबीर एहि बेर पत्र नहि माँगलनि। ओ अपन पालन करनिहार स्त्रीकें भेटबाक समय लेल पर्ची लिखलनि। नैराक मृत्युक बाद प्रत्येक भेटघाट आगाँ ढकेलब हुनका अधिक कठिन बुझाईत छल।

सरिता पुस्तकालयक बाहर अएलीह। हुनकर हाथमे नैराक कोनो निजी कापी नहि छल; विद्यालयक नब छपल समय-सारिणी छल। कबीरकें देखिकऽ ओ कहलीह, “अहाँ जाइत छी तँ ओहि स्त्रीसँ पूछू जे अहाँ बच्चा रहबाक समय कतेक दिन बीमार पड़ल रही। ओ बात अहाँक जन्मक उत्तर नहि देत, मुदा देखभालक इतिहास अछि।” कबीर धीरे उत्तर देलनि, “हम अपन पालनक अधिकारकें जन्मक अनुमानमे विलीन नहि होबए देब। जकरा हम माए कहलहुँ, हुनकर काजक इतिहास हमर प्रश्न पूछलासँ छोट नहि भऽ जाएत।”

आश्रयक दुआरपर एक कर्मचारी कबीरक पर्ची पढ़िकऽ कहलनि जे कागदमे जन्मदात्रीक नाम मिलि गेलापर पालन-पंजी स्वतः बन्द भऽ जाएत। कबीर ओकरा तत्काल रोकलनि। “एहन स्वचालित नियम लिखल कतए अछि?” कर्मचारी पुरान सॉफ्टवेयरक एकटा खाका देखौलक, कानूनी आदेश नहि। रमा अलग खाता खोलबए कहलीह—देखभालक वास्तविक अवधि, सम्बन्धित व्यक्तिक अपन कथन आ जन्मसम्बन्धी स्रोतक स्थिति अलग। कबीर ई बातपर जोर नहि देलनि जे प्रत्येक उत्तर हुनकर पसिन्नक होएत; ओ चाहैत छलाह जे अनिश्चित उत्तर सेहो झूठ निश्चिततासँ बचल रहय।

एहि बीच दुर्गा गंगाई बजारक दोसर पाँतिमे दू नब ग्राहकक लेल मखान-चिउड़ाक थैली तौलि रहल छलीह। पहिने उधारीपर माल लऽ जाइनिहार पैघ व्यापारीक मुनीम फेर

पहुँचलक। “अहाँ जे नब खरीदार पकड़लहुँ, ओ सभ हमर पुरान ग्राहक छथि,” ओ कहलक। दुर्गा बाटखराकें थमका कऽ पूछलीह, “हमर माल हम बनबैत छी। जकरा बेचब, तकर चुनावक अधिकार केहन कागदसँ अहाँक भेल?” मुनीम पहिनुक उधारीक बही आगाँ रखलक, जाहिमे दुर्गाकें भुगतान बाकी देखाइत छल, मुदा नब मालपर कोनो विशिष्ट अधिकार नहि।

नब खरीदार आश्रयक भोजन पहुँचेबाक टोलीसँ जुड़ल छलीह। ओ खुलि कहलीह जे अगिला पखवाड़ामे निश्चित मात्रा लेतीह, मुदा माल भिजल भेटला पर फिर्ता करबाक लिखित शर्त चाही। दुर्गा पहिल बेर एहि शर्तपर संकोच कएलीह। पिछला वर्ष भिजल थैलीक घाटा हुनकर माथ पड़ल छल। अन्तमे ओ अपन ढकनवला थैली देखौलीह आ प्रयोगक छोट खेप देबाक निश्चय कएलीह। मूल्य, समय, खराब मालक लौटती आ ढुलाईक मजदूरी चारि अलग पाँतिमे लिखल गेल। एहि कागदक सही दुर्गाक अपन हाथक छल।

घर घुरला पर दुर्गा बचल पुरान माल देखलीह। दुइटा थैलीक गन्ध बदलि गेल छल; ओकरा नव ग्राहककें बेचला पर मामूली अतिरिक्त आमदनी भेटि सकैत छल। बेटी पुछलीह, “फेंकि देब तँ घाटा ककर?” दुर्गा थैली खोलि फेर बान्हलीह। “ई खेप हमर जिम्मेवारीमे खराब भेल,” ओ कहलीह, “एकर घाटा हम उठाएब। जँ नब खरीदारकें खोट देब तँ फेर पहिनुक उधारीवाला व्यापारीसँ हमरा की अन्तर?” ओ अपन घाटा-बहीमे रकम लिखलीह, आ सही मालक खेप लेल सवेरे उठबाक निश्चय कएलीह।

एहिठामसँ किछु दूर सूरज गंगोता अपन बेटा हरिहरक सङ्ग ऋण-कार्यालयमे ठाढ़ छलाह। पुरान खेतक मेड़ एखन नदीक कटानमे गायब छल; धेमुड़ा लिखल स्रोतपत्र हुनकर थैलीमे छल, मुदा ताहिसँ वर्तमान भूमि-सीमा सिद्ध नहि होइत छल। अधिकारी मूल ऋणक बचल रकम देखबैत कहलनि, “जमीन नहि रहल तँ बकाया केना वसूलब?” हरिहर उलटा पुछलक, “जमीन नहि रहल तँ पहिनुक फसलक हिसाबपर किस्त केना देब?” सूरज दुनूकें ठमकौलनि। “हम माफीक झूठ आशा नहि, नब तिथिक सहनीय हिसाब चाहैत छी।”

कार्यालयक लेखा-पुस्तिकामे कटल खेतक पुरान मानक अनुसार वार्षिक उपज लिखल छल। वर्तमान जीविका छोट मेहनत-मजदूरी आ बचल पट्टीक तरकारीसँ चलैत छल। लेखापाल पहिने कहलक जे नब समझौता लेल फेर जमीनक पूर्ण नाप चाही; तारा मल्लिकक पुरान कार्यपत्रमे मापनक सीमा स्पष्ट लिखल छल। सूरज ओहि पत्रकें अपना पक्षक अन्तिम भूमि-प्रमाण नहि बनौलनि। ओ कहलनि जे ऋणक अवधि आ किस्तक पुनर्गठन वर्तमान आमदनी देखिकऽ कएल जाए; स्वामित्व आ कटानक क्षतिपूर्तिक पृथक जाँच चलय।

अधिकारी पहिने एकमुश्त भुगतानक प्रस्ताव रखलक। हरिहरक आँखि उतरल; घरमे बीज खरीदबाक धन नहि बचत। सूरज चुप रहलाह, फेर थैलीसँ आगाँक दू महीनाक वास्तविक आमदनीक छोट हिसाब निकाललनि। ओकरा देखिकऽ कार्यालयक महिला लेखापाल अलग प्रस्ताव तैयार कएलीह—पहिनुक बकाया राशि खातामे सुरक्षित, तुरन्त जब्तीक प्रक्रिया स्थगित, छोट नियमित किस्त आ आगामी समीक्षा-पत्रक तिथि। ई अन्तिम ऋणमाफी नहि छल। सूरज पूछलनि, “जँ बाढ़ फेर आएत?” लेखापाल उत्तर देलीह, “तखन फेर प्रमाण आ पुनर्विचारक बाट रहत; पूर्वनिर्धारित गलत संख्या नहि थोपल जाएत।”

कागदपर हस्ताक्षर करबासँ पहिने हरिहर ठामक नाम पढ़लक। पुरान स्रोतमे ‘धेमुड़ा’ छल, नब प्रशासनिक शीर्षकमे दोसर जलनाम। ओ दुनू काटि एक नव नदी घोषित करबाक लेल कलम नहि उठौलक। “जाहि कागदसँ ऋणक इतिहास भेटैत अछि, ओहिमे लिखल नाम रहय; वर्तमान भू-अभिलेखक माप अलग हो,” ओ कहलक। अधिकारी स्रोतपत्रक नकल संलग्न कएलक। सूरज अपन अंगूठाक निशानक कात नब किस्तक तिथि स्वयं पढ़ि सुनबाक आग्रह कएलनि। कार्यालयक पुरुष लिपिक एहि बेर ऊबि नहि गेल; ओ प्रत्येक पाँति फेर पढ़लक।

जखन सूरज आ हरिहर बाहर निकललाह, ओहि दिन नदीक पछुआ धारपर सूखल कादो फाटि रहल छल। हरिहर कहलनि, “बाबू, खेत घुरल नहि। मुदा घरक औजार उठएबाक डर कनेक टरल।” सूरज उत्तर देलनि, “ई टरल डरकें जीतक झण्डा नहि बना। अगिला महीनाक किस्त देबाक अछि।” ओ अपन चप्पलसँ लागल कादो झारलनि आ नब करारक

प्रति कपड़ाक भीतर रखलनि। जे जमीन नहि छल ओकरा फेर बनल कहबाक लेल कियो बाध्य नहि भेल। हुनकर ऋणक समय मात्र पहिल बेर वर्तमान जीवनक चाल पकड़लक।

दुपहरमे कबीर अपन पालन करनिहार स्त्री लग पहुँचलाह। ओ बरामदामे तुलसीमे पानि दऽ रहल छलीह। कबीर कागद खोलि देबाक बदला पहिने हुनकर पीठक दुखाइ पूछलनि। स्त्री कहलीह, “तोरा छोट रहबा समय एतबे बोझ उठबैत रही जे आब पीठ ओहि सालक हिसाब राखने अछि।” दुनू हँसला नहि; पुरान श्रमक एक परिचित भार बीचमे उभरल। कबीर पुछलनि जे बीमारीक रातिमे कियो-कियो जागल रहैत छल। स्त्री दू नाम लेलनि, तेसर नाम याद नहि पड़लनि। कबीर ओ खाली ठाम अपने सँ नहि भरलनि।

स्त्रीक अलमारीमे पुरान ऊनी कम्बल छल, जकर किनारपर कबीरक बालपनक सुई-टाँकाक छोट गाछ बनल छल। “ई कियो कएलक?” कबीर पुछलनि। ओ कहलीह, “तोरा ठण्ड लगै छल तँ हमर पड़ोसिन सिएने छलीह; नाम एखन हुनकर पोतासँ पुछब।” कबीर अपन कापीमे ‘पड़ोसिनक योगदान—पहिचान शेष’ लिखलनि। स्त्री पूछलीह, “जन्मक खोजसँ तोरा हमरा बिसरि जाएबाक डर अछि?” कबीर कम्बलक फाटल टाँका देखैत कहलनि, “नहि। डर ई छल जे हमरा जे पालल गेल, ओकरा कागदमे नामे नहि भेटत।”

साँझ सरिता लग कबीर लौटलाह। नैराक निधनक बाद सरिताक घरमे खाली पड़ल कुर्सी एखनहुँ ओतहि छल। ओहि कुर्सीपर पुरान फोटो सजाबए अथवा कोनो नव प्रतीक राखए लेल दुनूमे सँ कियो जल्दी नहि केलक। कबीर आजुक भेटक विवरण कहला, मुदा पालन करनिहार स्त्रीक निजी बात बिना अनुमति दोसराक नामपर नहि उतारलनि। सरिता केवल पुछलीह, “अहाँकेँ किछु भेटल?” कबीर कहला, “स्मृतिक दू नाम, एकटा अनिश्चित नाम, आ कम्बलक टाँका। ई जन्मक फैसला नहि; मुदा हम केना बचलहुँ, तकरा सुनबाक बाट अछि।”

ओहि राति चलैत अभिलेख-दलक अगिला यात्राक मसौदा पहुँचल। सूचीमे गामक नाम छपल छल, मुदा स्थानीय बोलीमे ओहि नामक रूप अलग लिखल जाइत छल। रमा कर्ण कार्यालयक एक कर्मचारीकेँ पुछलीह, “अहाँ जे ठाम लिखने छी, तकरा गामक लोक अपने कोन नामसँ बजैत छथि?” कर्मचारी कहलक जे सरकारी नक्शामे लिखल नाम पर्याप्त अछि। कबीर, जे ओतय कागदक नकल लऽ पहुँचने छलाह, धीरे कहला, “मानचित्रक नाम

यात्रा लेल उपयोगी होएत; लोकक अपन बोलीक नाम हुनका सुनबाक लेल।” रमा अगिला शिविरक अनुमति-पत्रक संग स्थानीय अनुवादकक उपस्थितिक माँग जोड़लीह।

दुर्गाक नव खरीदारसँ पहिल खेपक प्राप्ति-सूचना सेहो ओही दिन आयल। सही मालक दाम समयपर जमा भेल छल, मुदा ढुलाईक आधा पारिश्रमिक अभी बाकी छल। दुर्गा ओहि शेष रकमकेँ अपन लाभ नहि मानलीह; मजदूरक नामपर अलग सुरक्षित कएलीह। सूरज अपन छोट पहिल किस्तक रसीद घरक टीनक बक्सामे राखलनि, राहत-अनुदानक खातें नहि। कबीर पालन-पंजीक प्रश्नक कापी बन्द करैत रहलाह। तीनू घरक अलग-अलग बहीमे एक समान बात नहि, अलग-अलग निभेबाक दायित्व लिखल छल।

मणिपुरक बहुत पुरान भोरमे अर्जुनक घोड़ा घने गाछक बीच लुप्त भऽ चुकल छल। राजप्रासादक मेजपर चित्राङ्गदा नहरक मरम्मतिक स्वीकृति देखैत छलीह; उलूपी अपन लोकक सङ्ग विदा भऽ रहल छलीह। बभ्रुवाहन टूटल बाणक आधा टुकड़ा हथेलीमे धरने माएक लग अएलाह। “पिता हमरे चिन्हलनि की नहि?” पुछलनि। चित्राङ्गदा कहलीह, “ओ अहाँक अस्त्र देखलनि। परिचयकेँ एक दिनक दर्शन नहि बनाउ। अहाँ काल्हियो एहि लोकक निर्णय सुनब।” बभ्रुवाहन बाणक टुकड़ा राखि नहरक श्रमिकक बकाया-पत्र खोललनि।

२०४०क आश्रयमे रातिक अन्तिम पारी बदलि रहल छल। रुहानी अगिला शिविरक लेल बन्द निजी लिफाफासभ अलग रखलीह; सार्वजनिक यात्राखर्चक पन्ना सबहक पढ़बाक लेल खुलल छल। रमा स्थानीय सम्पर्कक नामक कोना रिक्त छोड़लीह—गामक सहमति भेटला परे भरल जाएत। कबीर अपन पालनक इतिहासक कापी सन्दूकमे रखि चाभी अपन लग रखलनि। एखन ककरो जन्मक उत्तर पूरा नहि छल, कोनो कटानक खेत पूरा वापस नहि आयल छल। मुदा सही प्रश्न पूछबाक अधिकारक सङ्ग-सङ्ग ओकर उत्तरक भाषा चुनबाक जगह खुलि चुकल छल।

अध्याय १५९ • चलैत अभिलेख

२०४०क चैतक पहिल भोरमे सरिता जीर्ण बसक छतपर बन्हल सन्दूकक डोरी स्वयं कसि रहल छलीह। रातुक ओससँ रस्सी चिकन भऽ गेल छल; चालक कहलक जे भीतर रखला पर यात्रीक जगह घटत। सरिता सन्दूकक ढक्कन खोलबाक लेल तैयार नहि छलीह। ओकरा भीतर मूल परिचय-पत्र नहि, खाली कागद, छपल प्राप्ति-पुस्तिका, दरी, कपड़ासँ ढाँपल मुहर आ अनुवादकक पारिश्रमिक लेल अलग बन्हल लिफाफा छल। रमा कर्ण बसक सीढ़ीपर चढ़ैत पूछलीह, “गाममे पहुँचि लोकक बात सुनबासँ पहिने दरी पसारब?” सरिता डोरीकेँ एकटा गाँठ आरो देलीह। “पहिने पूछब जे कतए पसारबाक अनुमति अछि।”

आश्रयक रात्रिपारी सँ घुरैत रुखसाना बस धरि अएलीह। ओ बन्द निजी लिफाफाक पेटी परखि कहलनि जे गोपनीय अभिलेख दलक सब सदस्य नहि खोलि सकत। रुहानी सार्वजनिक यात्रा-खर्चक सूची अलग थैलीमे देने छलीह। पहिल कागदपर वाहनक भाड़ा, दोसरपर अनुवादकक कामक घण्टा, तेसरपर दुपहरियाक पानि आ भोजनक अग्रिम रकम। सरिता देखलीह जे कार्यालयक कर्मचारी अनुवादकेँ ‘स्वैच्छिक सहयोग’ लिखने छल। ओ शब्द काटि ‘पारिश्रमिक देय’ लिखौलीह। “जिनकर बोलीक बिना हमर फाइल चलबे नहि करत, हुनकर श्रम मुफ्त कोना?”

कबीर कागदक नकल पहुँचेबाक लेल बस-अड्डापर छलाह, मुदा ओ एहि यात्रामे संवाददाताक रूपमे नहि जा रहल छलाह। सरिता पुछलीह, “अहाँ रस्ता धरि संग चलब?” कबीर कहलनि, “पहिल गाम धरि। पहिने सँ कहल जाइत अछि जे हमर लग कैमरा अछि; लोक नहि चाहत तँ खोलब नहि।” हुनकर झोरामे पालन करनिहार स्त्रीक ऊनी कम्बलक छोट फाटल टाँकाक स्मृति छल, फोटो नहि। नैराक मृत्युपछाति ओ लोकक निजी कथा सुनबाक समय अपन कलमक अधैर्य पहिल बेर धीरे-धीरे पहचानि रहल छलाह। सरिता हुनका देखलीह, किछु कहलीह नहि। बस चलल तँ दुआरक काँचमे दुनूक अलग चेहरा थरथरा उठल।

पहिल गामक बाटपर एक ठाम सरकारी बोर्डमे लिखल नाम स्थानीय उच्चारणसँ अलग छल। चालक बोर्डक नाम बजलक; आगाँ बैसल बुजुर्ग कहला, “एतय बस ओहि नामसँ नहि रुकैत। गाछक मोड़ कहू तँ सभ बुझत।” रमा बोर्डक फोटो लेबाक बदला अपन नोटमे दूनू नाम आ बतौनिहारक सहमति लिखलीह। उतरला पर गामक लोक पोखरिक पच्छिम कात पहिने सँ जुटल छलाह। कियो दलकें देखिकऽ पाँति बनबय लागल। सरिता हाथ उठौलीह, “ई राहत बाँटबाक पाँति नहि। पहिने सभासँ अनुमति लेब, तखन व्यक्तिक कागद देखब।”

विद्यालयक बरामदामे प्रतिमा राजवंशी बैसल छलीह। पुरान लाल सूतसँ चिन्हित लोहेक डंडा एखनहुँ विद्यालयक पाछाँ छल; ओकर चारूकात बाँसक अस्थायी घेरा लगाओल गेल छल, जाहिसँ बच्चासभ चोटसँ बचय। बरामदाक दोसर छोरपर दू आदमी स्कूलक देवाल सँ लगैत जमीनपर दोकान खोलबाक योजना देखबैत छलाह। हुनकामे सँ एक कहलनि, “जँ शिविर एतहि लागत तँ विद्यालय एहि जमीनक मालिक अछि, ई प्रमाण मानल जाए?” प्रतिमा कागद समेटि उत्तर देलीह, “शिविर लगबाक अनुमति आ जमीनक मालिकाना दू अलग बात अछि। गामक बच्चा एतय पढ़ैत अछि, से तथ्यक संरक्षण चाही; मूल भू-पंजी सँ सीमा मिलान एखन बाकी अछि।”

प्रधानाध्यापक विद्यालयक बरामदा उपयोग लेल एक दिनक सहमति देलनि, मुदा ओ कहला जे पाछाँक खुलल बाट ककरो स्थायी कब्जामे नहि जाए। दुकानक प्रतिनिधि अस्थायी टेबुल रखबाक प्रस्ताव कएलक। प्रतिमा टेबुल हटौलीह नहि; टेबुलक पाँजर बच्चासभक आवागमनक रस्ता सँ हटबौलनि आ प्रत्येक पक्षक पत्र अलग लेलीह। सरिता प्राप्ति देबैत कहलीह, “आइ हमरा सभकें मालिकाना घोषित करबाक अधिकार नहि। मुदा विवाद रहैत अस्थायी पक्का निर्माण नहि हो, ई लिखित आवेदन सम्बन्धित कार्यालय धरि पहुँचेबाक प्रबन्ध करब।” प्रतिनिधि सही करबासँ पहिने तिथि पढ़लक; एहि बेर ओकरा तुरन्त निर्माणक अनुमति भेटल नहि।

शिविरक पहिल मेजपर स्थानीय भाषाक अनुवाद लेल कुमुदी बैसल छलीह। हुनकर कापीमे शब्दक दू-दू रूप छल—‘वापसी’ आ ‘नवा प्रवास’, ‘मूल कागद’ आ ‘सत्यापित नकल’। एक नौजवान लिपिक कहलक, “एहि सबहक एके अर्थ कऽ देलासँ काज जल्दी

होएत।” कुमुदी ओकरा गामक वृद्धाक उदाहरण देलीह। “एक वाक्यमे लिखल जे स्त्री पुरान घर ‘घुरलीह’, आ दोसरमे लिखल जे ओ ‘नब प्रवासी’ छथि। कागदपर ई भेदसँ पुरान मजदूरीक अधिकार टुटि सकैत अछि।” लिपिक अपन छपल प्रारूप बदलबाक अधिकार नहि रहलाक बात कहलक। रमा ओकरा मूल भाषाक कथन संलग्न करबाक जगह देखौलीह।

दुपहरिसँ पहिने रामवती खत्वे अएलीह। हुनकर पहिल यात्रा-पत्र आ विवाहक बादक परिचय-पत्र हुनकँ पहिने सीमातीर्थ कार्यालयसँ मूल रूपमे घुरि गेल छल; आइ ओ दुनू फिर सँ अपन थैलीमे अनने छलीह। प्राप्ति-पत्रमे ‘मूल लौटाओल गेल’ छल, ‘दूनू पञ्जीक एकीकरण सम्पन्न’ नहि। रामवती आगाँक मेज लग ठाढ़ भऽ पुछलीह, “पुरान नामपर जे धान-रोपनीक मजदूरी रहि गेल छल, से एखनहुँ अलग नामक कारण रोकल अछि। ई शिविर आब हमर काज केना करत?” सरिता हुनकर कागद हाथमे लेबाक पहिने अनुमति माँगलीह।

रामवती एक-एक कऽ पत्र देखौलीह। पहिल रसीदपर पूर्व वासस्थानक परिचय छल; दोसरपर विवाहक बादक ठेकाना। कुमुदी क्षेत्रीय बोलीमे पढ़ि सुनौलीह, तखन रामवती अपन शब्दमे कहलनि, “हम अपन पहिल घरसँ चली अएलीहुँ, मुदा ओहि खेतमे कएल रोपनीक दिन हमरा सङ्ग चलि अएल। आब नब ठाम रहैत छी, मुदा पुरान दामक अधिकार गामक सीमापर नहि छुटल।” लिपिक पुछलक, “दूनू नाम जोड़ि एक नम्बर देब?” रामवती उत्तर देलीह, “दूनू जीवनक जोड़ चाही, कोनो एककँ मेटा कऽ नहि।”

फाइलक नकलमे ‘साँती’ लिखल छल। पछिला जाँचमे ई नाम कागदक स्रोतसँ जाँचबाय रहल छल, भौगोलिक नदीक निश्चित पहचान घोषित नहि भेल छल। नब कर्मचारी शब्द देखिते कहलक जे नक्शामे मिलैत-जुलैत नदीक नाम जोड़ल जाए। रामवती मेजपर हथेली राखलीह। “जाहि यात्रापत्रमे ई लिखल अछि, ओहि नामक अक्षर नहि हटाउ। जखन नदीक माप भेटत तखन नदीक निर्णय करू। हम ककर बाट गेलहुँ आ एखन कतेक देय अछि, ई कागदसँ अलग-अलग पढ़ू।” रमा मूल प्रविष्टिक अक्षर सुरक्षित राखबाक निर्देश देलीह, आ भौगोलिक मिलानक कोना रिक्त रहए देलीह।

गामक लेखापाल पुरान रोपनीक खाता देखए आयल। ओकर बहीमे दिनगणना छल, मुदा प्राप्तकर्ता-परिचयक नब अंक नहि। ओ कहलनि, “नम्बर नहि मिलल तँ हमरा पइसा छोड़बाक डर अछि।” रामवती पूछलीह, “जँ हम सदेह ठाढ़ छी, पुरान रसीद, काजक तिथि आ गवाही अछि, तँ अभिलेख-सुधारक बाट के बन्द कएलक?” रमा तत्काल भुगतानक आज्ञा देबाक अभिनय नहि कएलीह। ओ प्रमाणक सूची बनौलीह—मूल बहीक सत्यापित पाँति, श्रम-दिनक मिलान, रामवतीक दूनू परिचयक अलग स्रोत, आ भुगतानक अधिकारीक लिखित निर्णय। एहि बार रामवतीकेँ जाँचक तिथि सहित प्राप्ति भेटल।

रामवती अपन दाबी लिखाएलाक बाद कुमुदी लग बैसि रहल छलीह। थैलीमे घरे सँ अनल चूड़ाक एक छोट पोटरी छल, मुदा भेटघाटमे देरी भेलासँ भात-सागक समय बीति गेल। कुमुदी पुछलीह, “जँ अगिला बेर ई श्रम-बही फेर मँगाओल जाए तँ अहाँ स्वयं आ सकब?” रामवती कहलीह, “एक दिनक रोपनी छोड़ब तँ फेर देय बढ़त। पत्रमे लिखू जे हमर अनुपस्थितिमे कागदक नकल सँ पहिल जाँच हो, आ जखन हमर उत्तर जरूरी हो, तखन पहिने सूचना दिअ।” ओ जे बचल चूड़ा छल तकर आधा कुमुदीकेँ देलीह; कुमुदी काजक दामक बदला ओहि भोजनकेँ नहि गिनलीह।

तखनहि एक कर्मचारी कहलनि जे गामक सभ आवेदन कार्यालयपर कुमुदीक माध्यमसँ जाए तँ सहज रहत। कुमुदी पूछलीह, “हम अनुवाद करब, मुदा हर आवेदनक मालिक हम किएक बनब?” ओ प्रत्येक लोककेँ अपन उत्तर सुनि सही करबाक समय देबाक आग्रह कएलीह। एक वृद्ध पुरुष अपन उच्चारणक संशोधन नहि चाहलनि; कुमुदी ओकरा यथावत् दर्ज करौलीह। एक किशोरी स्कूलक कापीसँ अपन माएक नाम स्वयं लिखलक, आ जे शब्द भरल जाइत छल तकर अर्थ पूछलक। किशोरीक प्रश्नपर ओकर माए उत्तर देलीह; अनुवादक बीचमे चुप रहल।

गामक पाछाँक बाटसँ प्रतिमा विद्यालयक जमीनक मूल पञ्जी मँगए गेलीह। लौटला पर हुनकर हाथमे केवल पुरान नकलक प्राप्ति छल, मूल नहि। दुकानक आदमी फेर पुछलक जे शिविरक मुहर कागदपर लगत तँ रोक स्थायी होएत। प्रतिमा कहलीह, “हमर लक्ष्य अहाँकेँ दोषी कहल नहि। मुदा बिना दस्तावेजक नव कब्जा शुरू भऽ गेल तँ विद्यार्थीसभक रस्ता सच्चा विवाद समाप्त होएबासँ पहिने बन्द भऽ जाएत।” ओ एक

अस्थायी सहमति-पत्र रखलीह—मूल नाप होए धरि गाड़ल डंडा सीमा नहि मानल जाए, नब निर्माण नहि हो, वर्तमान पैदल बाट खुलल रहय। विरोधी पक्ष पूरा सहमत नहि भेल, मुदा नव निर्माण स्थगित करबाक लिखित सूचना लेलक।

विद्यालयक घंटी बजला पर बच्चासभ बरामदासँ बाहर निकलल। राजोक बेटी अपन रंगीन कापी लऽ प्रतिमाक कात अएलीह। “हमरा फेर पाछाँ बाटें घर जाएब अछि,” ओ कहलक। प्रतिमा ओकर हाथसँ कापी नहि लेलनि। “जे बाट अहाँ आइ चलि सकैत छी, ओकरा सुरक्षित रखबाक जिम्मेदारी बड़ लोकक अछि। मुदा अहाँक चललासँ जमीनक अदालतक फैसला नहि होएत।” बच्ची घंटीपर हँसलीह आ खुलल रस्ता धरि दौड़ि गेल। दुकानदारक प्रतिनिधि ओकर पयरसँ उड़ल धूरि देखैत रहल; से क्षण ओकर निर्णयक प्रमाण नहि छल, मुदा ओकर नब निर्माणक उतावली ढीली पड़ि गेल।

दलक गाड़ी दोसर पड़ाव, सीमातीर्थ, पहुँचला पर धूप बड़ तेज छल। शारदा कसौधन अपन गिरवी-दोकानसँ एक छोट बही आ दू फाटल रसीद लऽ अएलीह। पहिने एक ग्राहकसँ दुहराओल ब्याजक रकम ओ वापस देने छलीह; आइ दोसर परिवारक गिरवीपर अनुचित मासिक जोड़क प्रश्न छल। ग्राहक, एक वृद्ध स्त्री, चाँदीक कड़ा छोड़ने छलीह। बहीमे कड़ाक दाम, मूल ऋण आ वस्तु छुड़एबाक शर्त अलग नहि छल। शारदा अपन भायकें आवाज देलीह, “ग्राहकक कड़ा ककरो परिवारक अनाम सम्पत्ति नहि। जे गिरवी देलनि, पहिले हुनकर बात सुनू।”

भाय कहलनि, “पुरान दर बदलल तँ दुकानक कमाइ घटत; ब्याजक हिसाब लिखल अछि।” वृद्धा उत्तर देलीह, “हम जे दाम उठौने रही से घुराएब चाहैत छी। मुदा महीनामे कतेक जोड़ल, ओ कियो नहि पढ़ौलक।” शारदा बहीक दू पृष्ठ सामने रखलीह। एकमे निश्चित मूलधन छल, दोसरमे ओहि मूलपर दू बेर उठाओल ब्याज। ओ अपन गलती मानबाक बात नहि छुपौलीह। कुमुदी ब्याजक शब्द स्त्रीक बोलीमे समझौलीह, तखन वृद्धा अपन पसिन्नक पुनर्गणना चुनलीह। अनुचित जोड़ हटेबाक लिखित सुधार बनल; मूल ऋण आ उचित देय एखन बाकी रहल।

शारदाक भाय बही बन्द करबासँ पहिने पुरान छपल ब्याज-दरक पर्ची मेजपर पटकौलनि। “ई दर तखन सभकें समान लगैत छल,” ओ कहलनि। वृद्धा कागद उठबैत

पुछलीह, “सभकेँ समान छल तँ हमरा पढ़िकऽ किएक नहि सुनाओल गेल?” शारदा देखलीह जे दोसर ग्राहकक गिरवी आजुये बनबाक अछि; ओकरा पहिने ओ दरक सूचनाकेँ साफ अक्षरमे फेर लिखबौलीह। नब पर्चीमे कोनो स्वतः दण्ड नहि जोड़ल गेल, आ पुरान देयसभक पुनर्गणनाक माँग लेल अलग पन्ना राखल गेल। ओकर भाय अपन आक्रोश छुपा नहि सकल, मुदा ओ नब पर्ची देबालपर टाँगबाक अनुमति देलक।

गिरवीक कड़ा घुरएबाक बातपर स्त्री कहलनि, “एके दिन पूरा मूल धन नहि जुटत।” शारदा प्रस्ताव रखलीह जे सुधरल शेष रकमक किस्तक तिथि स्त्री स्वयं देखथि, आ कड़ा छुड़एबाक शर्त अलग कागदमे स्पष्ट लिखल जाए। भाय हँसि कहलनि, “एतेक छोट गिरवी पर दू कागद!” शारदा उत्तर देलीह, “दू कागद कम, एकटा गलत दाम बेसी महँगा।” स्त्री कड़ा एहि बेर सेहो दुकानमे राखलीह, मुदा ओकर अपन नाम आ सुधरल देयक प्रति घर लऽ गेलीह। ओ बिनु कड़ा हाथमे एक छोट अधिकारक गर्मी अनुभव कएलीह।

सीमातीर्थक शिविरपर भीड़ बढ़ला पर एक नव कर्मचारी कापीमे आवेदकसभक फोटो खींचए चाहलक। रुखसानाक लिखित निर्देश याद करबैत सरिता पूछलीह जे ककरो सार्वजनिक सहमति लेल गेल अछि की। कर्मचारी कहलक, “मात्र कामक सुविधा।” रामवती तुरन्त कहलीह, “हमर फोटो लेल हमर बात सेहो सुनब जरूरी अछि। कापीमे ओकर पहुँच के पाओत?” रमा फोन बन्द करबौलनि, आ पहिलेसँ खिंचल दू तस्वीर केँ अलग रखि सहमति निस्सन्देह नहि रहने उपयोग निलम्बित कएलनि। मूल परिचय-पत्रक सीमित सत्यापन आ सार्वजनिक प्रचारक फोटो एक समान अनुमति नहि छल।

आँगनक दक्षिण छोरपर साझा जलघट रहैत छल। कुमुदीक गला सुखल छल, मुदा ओकरा लेल नास्ताक संग अलग रुपैया नियत नहि छल। बसचालक ओतहि अएल; ओकरा दुपहरि धरि ठाढ़ रहबाक अतिरिक्त मजदूरी भेटल नहि छल। सरिता सार्वजनिक हिसाब फेर खोललीह। दरी भाड़ा, चालकक प्रतीक्षा, पानि ढोअनिहार स्त्रीक समय आ अनुवादकक घण्टा समेटला पर अग्रिमक शेष रकम कम पड़ि रहल छल। अधिकारी प्रस्ताव देलक जे दान-पेटीसँ खर्च निकालल जाए। सरिता मना कएलीह; ओ राशि आश्रयवासीक सार्वजनिक राहतक छल, शिविरक प्रशासनिक खर्चक नहि।

“तखन एतबे लोकक काज अधूरा छोड़ब?” चालक पुछलक। सरिता खिड़की लग अएलीह। बाहेर माटिक घैल राखनिहार स्त्री अपन भाँड़ाक मुँह ढाँपि रहल छलीह। सरिता कार्यालयकें फोन कऽ लिखित अतिरिक्त स्वीकृति माँगौलीह, आ प्रतीक्षारत सभकें समयक वास्तविक स्थिति कहलीह। जे काज आज दुरुस्त नकलसँ भऽ सकैत छल से पूरा करब; जे मूल अभिलेख अथवा भुगतान-अधिकारी माँगैत छल, ओकर प्राप्ति आ अगिला दिनांक देब। कुमुदी कहलीह, “अहाँ हमर घण्टा काटि खाता बराबर करबाक छलहुँ तँ हम काल्हि नहि अबितहुँ।” सरिता कहलनि, “घण्टा काटब नहि; खर्चक कमी हम अपन सार्वजनिक निर्णयमे देखाएब।”

शिविरक द्वारक कात एक पुरुष रामवती लग अएल। ओ कहलनि जे हुनकर विवाहक बादक नामक मिलान करबाक लेल पुरान पञ्जीक प्रश्न पूछत। रामवती पहिने स्रोत पुछलीह, तखन कहलीह, “हम जे साझा करबाक सहमति देब, तकर बाहरक बात नहि। हमर निजी चिट्ठी सरिता पहिने घुरा देने छथि; ओहि चिट्ठीकें जाँचक अपरिहार्य कागद नहि मानू।” पुरुष अपन कापी बन्द कएलक। ओकर प्रश्न सम्भवतः ईमानदार छल, मुदा रामवती अपन समय आ प्रमाण दूनूक सीमा चुनलीह। एहिबीच हुनकर पुरान मजदूरीक उत्तर एखन लिखल नहि आयल छल।

सीमातीर्थसँ लौटबाक पहिने रमा तीन पर्ची अलग रखलीह। रामवतीक पर्चीपर लिखल छल—‘मूल कागद धारिणीक लग; दूनू नामक सम्बन्धक सत्यापन शेष; रोपनीक देयक अधिकारीक लिखित उत्तर अपेक्षित।’ प्रतिमाक पर्चीपर—‘विद्यालयक वर्तमान आवागमन सुरक्षित; भूसीमा निराकरण शेष; नव निर्माण सम्बन्धी अस्थायी रोकक प्राप्ति।’ शारदाक पर्चीपर—‘गिरवीक अनुचित ब्याज-संशोधन ग्राहककें बुझा देल; मूल ऋण शेष।’ तीनूकें एक्के तरहक ‘मामला निपटल’ मुहर नहि लगल। गाड़ीमे जगह कम पड़ल तँ सरिता एकटा खाली सन्दूक अगिला पड़ाव छोड़बाक बदला अपन सीट नीचाँ धकेलि लेलीह।

गाम दिस घुरैत बसक खिड़कीसँ धानक खाली खेत देखाइत छल। कबीर नोटमे रामवतीक पुरान घरक नाम नहि लिखलनि। हुनका याद पड़ल जे नैरा जखन जीवित छलीह, एक बेर मूल बहीक चारि खाली खाना बनौने छलीह—स्रोत, समय, अधिकार आ लाभ। हुनकर मृत्यु एहि यात्रासँ बदलि नहि सकैत छल। कबीर एहि बेर मोबाइलमे रखल

जानकीक पुरान वीडियो आ शिविरक कागद जोड़ि एक समाचार बनेबाक जल्दी नहि कएलनि। ओ सरितासँ पूछलनि, “अहाँ अपन पन्ना ककर नामसँ छपबए चाहैत छी?” सरिता उत्तर टारलीह नहि, “पहिने ई बुझू जे पन्ना लिखलक के।”

राति कार्यालयमे फाइल सँभालैत रमा देखलीह जे शिविरक प्रारम्भिक विवरणक शीर्षकमे मात्र ‘निरीक्षण-दलक उपलब्धि’ लिखल अछि। कुमुदीक भाषा-संशोधन, प्रतिमाक जमीन-पञ्जीक माग, शारदाक अपन हिसाब सुधरब आ रामवतीक स्रोत चुनबाक असहमति सभ कर्मचारीक एक साझा हस्ताक्षर नीचाँ समेटल गेल छल। रमा सरिताकेँ पुकारलीह। “एहि प्रतिवेदनमे अहाँक नाम नेतृत्वमे अछि, मुदा ककर काज कतए अछि से गुम भऽ रहल अछि।” सरिता कुर्सी खींचि बैसलीह। हुनकर आँखि थाकल छल, मुदा सामनेक कागद फेर पढ़लीह।

सरिता लाल कलमसँ नामक जगह नहि, काजक सामने छोट अंक लगौलीह। कुमुदीक अनुवादक समय, रुखसानाक गोपनीयता-नियम, रामवतीक मौखिक सुधार, प्रतिमाक प्राप्ति-जाँच, शारदाक स्वयं कएल ब्याज-संशोधन, चालकक अतिरिक्त पारी—सभटा अलग पाँतिमे उतरए लागल। एक कर्मचारी कहलक, “प्रतिवेदन लंबा भऽ जाएत।” सरिता उत्तर देलीह, “अधिकार छोट करबाक लेल कागद छोट नहि करब।” ओ अपन नामक सामने ‘संयोजन’ लिखलीह, ‘सबहक कार्यक लेखिका’ नहि। सरकारी खर्चक देय-पंक्तिमे कुमुदीक पारिश्रमिक आ चालकक समयक शेष रकम दर्ज भेल; स्वीकृति शेष रहबाक स्थिति सेहो खुलल।

बहुत राति सरिता घर लौटलीह तँ नैराक खाली कुर्सी एखनहुँ दुआर लग छल। ओ ओहि कुर्सीपर कागद नहि राखलीह। मेजपर शिविरक रजिस्टर खोलि चैतक तिथि लिखलीह, फेर अगिला पन्ना अधखुला छोड़ि देलीह। कबीर हुनकासँ विदा लैत कहला, “काल्हि एहि लेखनक उदाहरण ककर कहल जाएत?” सरिता कहलनि, “जकर उदाहरण अछि ओकर नाम पूछब। हमरा जे काज कएल अछि से हमर नामे रहत; जकर काज हम केवल सँभाललहुँ, ओकर श्रेय हम नहि लेब।” बरामदामे सन्दूकक डोरी ढीली पड़ि गेल छल। भीतरक खाली प्राप्ति-पुस्तिकामे आइ अनेक लोक अपन-अपन हस्ताक्षर छोड़ि गेल छल, आ कतेको देय एखनहुँ सही उत्तरक प्रतीक्षा करैत छल।

अध्याय १६० • सरिताक योगदान

भोरमे सरिता चारि रडक धागासँ कागदक चारि गट्टर बान्हि रहल छलीह। पहिल गट्टरमे हाथसँ उतारल दार्शनिक पन्ना, दोसरमे उदाहरणक स्रोत, तेसरमे चूल्हि, अतिथि आ नकलक समयक खर्च, आ चारिमे सीमातीर्थक चलैत शिविरक प्राप्ति-पर्ची छल। मेजक एक कोनामे नैराक खाली कलमदान छल। सरिता ओकरा हाथ नहि लगौलीह। कबीर कहने छलाह जे काल्हिक शिविरक प्रतिवेदन छपबासँ पहिने फेर पढ़ब आवश्यक अछि; मुदा आइ हुनका दोसर काजक सेहो तिथि छल—मैथिली आ ईशानक पुरान पुस्तकमे छुटल श्रेयक जाँच। चैतक हावा बरामदामे टाँगल धुलल साड़ीकेँ हलका हिलबैत छल। चारि गट्टरक धागा एक-दोसरामे नहि उलझाय, ताहि लेल ओ सभकेँ दूर-दूर रखलीह।

मैथिली पहुँचलीह तँ हुनकर हाथमे पुरान सभाक क्रम-पत्रक एक प्रति आ पोथीक दू संस्करण छल। ईशान पाछाँ सँ अएलाह; हुनका संग हरिमोहन छलाह, जे लिखावटक तुलना लेल पहिले किछु पन्ना देख चुकल छलाह। सरिता आगन्तुकसभकेँ बैसबाक ठाम देखौलीह, मुदा कागद देबाक पहिने कहलीह, “आइ हमर नाम कोन स्थानपर छपत, एतबे प्रश्न नहि अछि। पहिने ई तय हो जे कोन काज के कएलक, कखन कएलक आ ओकर प्रमाण कतेक अछि।” ईशानक नजरि लाल धागावला पन्नापर गेल। सरिता ओ गट्टर हुनका नहि देलीह; पहिल पृष्ठक पढ़बाक अनुमति देलीह। किताबक सार्वजनिक संशोधन आ निजी कागदक अधिकार अलग रहल।

मेजक कात बैसि मैथिली पुरान सभाक क्रम-पत्र खोललीह। कार्यक्रममे वक्तासभक नाम छल, ‘घरक सहयोग’ लिखल धन्यवाद छल, मुदा नकल बनबयवालीक नाम नहि। “ई हमर तैयार कएल क्रम-पत्र छल,” मैथिली कहलीह, “तखन हमरा लग कापीक लेखनी आ तर्कक रचनाक भेद बुझाबयवाला शब्द नहि छल। मुदा ‘सहयोग’ कहि सभ श्रम ओझराएब हमर अपन निर्णय छल।” सरिता हुनका रोकि कहलीह, “अहाँक स्वीकार हमरा चाही, मुदा हमरा दाम, समय आ देखल बातक सूची ओकरा सँ अलग चाही। जँ अहाँ अपन पछतावामे हमरे सहलेखक लिखि देब तँ ईहो सही नहि होएत।” मैथिली ओ वाक्य अपन नोटमे जस्ताक तस्ते उतारलीह।

हरिमोहन पन्नाक किनारपर दू अलग स्याहीक रेखा देखौलनि। मूल विवेचनक कई पाँति ईशानक लिखावटमे छल; किछु पाँतिक बीच सरिताक उतारल स्पष्ट अक्षर। एक ठाम मैथिलीक प्रश्नक बाद काटल वाक्य नव रूपमे लिखल छल, मुदा तिथि पूरा नहि। ईशान कहलनि, “एतय दार्शनिक उत्तर हमर अछि।” मैथिली उत्तर देलीह, “अहाँक उत्तर अहाँक रहत। मुदा प्रश्नक बाद उत्तर बदलल अछि, तकर गवाही मेटाओल नहि जाएत।” सरिता दूनूकेँ पुछलीह जे संशोधनक मूल तिथि जाँचब कहिया सम्भव होएत। हरिमोहन केवल एतबे कहि सकलाह जे दुनू संस्करणक पृष्ठ-मिलान भऽ सकैत अछि; हर संशोधनक स्रोत एखन सिद्ध नहि।

तेसर गट्टर खोलिते पुरान चाउर, तेल आ दिया-बातीक हिसाबक पन्ना खसि पड़ल। एक कागदपर लगातार तीन दिनक नकल, अतिथिसभक भोजन आ रातुक दीपकक खर्च अंकित छल। ईशान पुछलनि, “ई सभ ओहि पोथीक काममे लागल छल?” सरिता कहलीह, “किछु ओहि पोथीक, किछु घरक सामान्य काज। जे दिन अतिथि लेखकक पन्ना जाँचबाक लेल बैसल छलाह, ओहि दिनक अतिरिक्त भोजनक खर्च चिन्हित अछि; घरक सभ भोजन लेखकक उधारी नहि।” मैथिली पुछलीह जे अनाम पड़ोसिनक सिअन अथवा रसोइमे मदति सेहो एतय जोड़ल जाए। सरिता कहलीह, “जेकर नाम आ सहमति नहि अछि, ओकरा हमरा परोपकारक खातें नहि लिखू। पहिने पुछू।”

दीपकक तेलक रसीदपर हल्दी पड़ल छल। सरिता ओकरा सीधा करैत याद कएलीह जे कखनो पुस्तकक एक पन्ना बचेबाक लेल राति धरि सुखाएल कागद पलटब पड़ैत छल। स्मृतिमे ओहि रातुक गन्ध एखनहुँ छल—भीजल कागद, चूल्हिक खरानी आ स्याही। मुदा कओन पृष्ठ ओ राति उतारल गेल छल, से केवल गन्धसँ सिद्ध नहि होइत। ओ हरिमोहनकेँ कहलीह, “ई हमरा स्मरण अछि; दस्तावेजी तिथि नहि। कृपा कऽ स्मृति आ रसीदक अलग खाना राखू।” हरिमोहन नब पत्रपर तीन शीर्षक लिखलनि—देखल काज, लिखित प्रमाण, शेष मिलान। ई तीन शीर्षकक बीच स्याहीक पातर रेखा छल; सरिता जानी-बुझि ओकरा जोड़बाक कोनो तीर नहि बनौलीह।

दुआरपर उमा राजधोब अएलीह। हुनकर काँधपर सफा कपड़ाक बोझ आ हाथमे तीन ग्राहकक मुहरवला पर्ची छल। फाटकक पीयर सुरक्षा-पट्टी लगला बाद उमा स्थानीय

ग्राहकक एकाधिकार छोड़ि संगिनीसँ सहकारी धुलाई चलएबाक ठानने छलीह। आइ पहिल सामूहिक खेप घुरा देबाक छल, मुदा पहिनुक बड़ा ग्राहक नया शर्त रखलक—सभ कपड़ाक बिल एक पुरान ठेकेदारक नामसँ जाए। उमा कहलीह, “माल हम चारि स्त्री धोएलहुँ, सुखएलहुँ, गनलहुँ; एहन बिल बनत तँ फेर हमर नाम ठेकेदारक पाछाँ दबि जाएत।” सरिता अपन मेजक कागद ढाँपि हुनकर रसीद देखबाक अनुमति माँगलीह।

उमा चारि अलग श्रम-समयक पर्ची देखौलीह। एक स्त्री रोगी रहलाक कारण दू दिन काज नहि कएने छलीह; ओकरा जबरदस्ती बराबर दिनक मजदूरी नहि देखाओल गेल छल, मुदा सहकारीक साझा लाभमे ओकर पुरान पूँजीक हिस्सा छल। ग्राहकक आदमी कहने छल जे सामूहिक खाता नामे भुगतान देत, दोसर नाम स्वीकार नहि करत। उमा निर्णय सुनौलीह, “हम सामूहिक बिल देब, मुदा भुगतानक संलग्न पन्नामे सभ सदस्यक हिस्सा रहत। जे ग्राहक एहि पन्नाकेँ कष्ट बुझैत छथि, ओ हमरा छोड़ि सकैत छथि।” हुनकर आवाज स्थिर छल; ओ जानैत छलीह जे बड़ा ग्राहक छोड़ला पर अगिला महीनाक आटा घटि सकैत अछि।

दुपहरिमे उमा सहकारीक दू सदस्यसँ संग घाट दिस गेलीह। ठेकेदारक पुरान ग्राहकमे सँ एक आजुक खेप लऽ लेलक, मुदा अगिला महीनाक ठेका नवीकृत नहि केलक। एक दोसर ग्राहक अलग रसीद देखिकऽ छोट आदेश देलक। दिनक अन्तमे सहकारीक कुल आमदनी पहिनुक एकाधिकारसँ कम छल, मुदा जे रकम अएल, तकर चारि व्यक्तिक हिस्सा स्पष्ट रहत। सरिता एहि समाचारकेँ अपन पुस्तकक विजयक दृष्टान्त नहि बनौलीह। उमा रातिमे एक पर्ची पठौलीह—“पहिल खेप पूरा, एक ग्राहक गेल, दोसर भेटल; हिसाब खुलल अछि।” सरिता ओ पर्ची शिविरक श्रम-अभिलेखक गट्टरमे रखलीह, दार्शनिक पन्नाक भीतर नहि।

मेजपर फेर बैसल मैथिली पुस्तकक ओ पृष्ठ खोललीह जतय दू बोरा अनाजक बराबर तौलसँ अलग गुणक प्रश्न उठाओल गेल छल। “हम एहि उदाहरणकेँ अपन प्रश्नसँ नव तर्कक रूप देलहुँ,” ओ कहलीह, “मुदा मूल निरीक्षण सरिताक कहबाक छल।” ईशान कहलनि जे ओहि समय हाटमे हुनको दू बोरा देखल स्मरण अछि। सरिता दूनूक बात काटलीह नहि। ओ अपन पुरान कापीमे लिखल हाटक तिथिक कात बोटका दाग

देखौलीह, जेकर अर्थ निश्चित नहि छल। “स्मरणक झगड़ाक निर्णय रंगीन दाग नहि करत,” ओ कहलीह। “मुदा हमर देखल बातकें स्रोतक सम्भावना मानेब शुरू करू; अन्तिम श्रेयक जाँच प्रति-दर-प्रति करू।”

हरिमोहन प्रस्ताव देलनि जे सार्वजनिक योगदान-पत्रमे अभी सत्यापित नकल-श्रम, भोजनक दस्तावेजित हिस्सा आ सरिताक स्वतंत्र स्मृतिवचन अलग उल्लेखित हो। उदाहरणक स्रोतपर मूल प्रति भेटबाक शर्त लिखल जाए। मैथिली पुछलीह जे एतेक सावधानी पाठक पढ़त की नहि। सरिता पुस्तक बन्द करैत उत्तर देलीह, “पाठक शीघ्र वाक्य पढ़त, मुदा जेकर जीवन ओहि वाक्यमे छूटल, तकर लेल धीमा वाक्य उचित अछि।” ईशान पत्रक पहिले मसौदामे ‘सरिताक अमूल्य सेवा’ लिखबाक प्रस्ताव रखलनि। सरिता ओ शब्द काटि देलीह। “अमूल्य लिखिते पारिश्रमिकक मूल्य गुम होइत अछि। जे काज मापि सकैत छी, ओकर दाम मापू।”

सीमातीर्थसँ लौटल चालक हाथमे एक शेष भाड़ाक रसीद लऽ अएल। रमा कर्णक कापीमे प्रतीक्षाक अतिरिक्त समय लिखल छल; कार्यालयक प्रारम्भिक प्रतिवेदनमे ओ समय ‘सामान्य यात्रा’क भीतर समेटल गेल छल। सरिता हुनका पर्ची देबैत कहलीह, “ई हमर योगदान-सूची नहि, अहाँक देय अछि।” चालक पुछलक, “अहाँ अपन काजक पत्र बनबैत छी तँ हमर हिसाब एतय किएक?” सरिता कहलीह, “किएक तँ एक नामक ‘उपलब्धि’मे हमसभक अलग श्रम दबि रहल छल। एकर सुधारमे सभक नाम आएत, मुदा सभक भुगतान अलग कागदमे।” रमा फोनपर ओहि रसीदक प्राप्ति पुष्टि कएलीह; भुगतानक तिथि अधिकारीक उत्तरपर निर्भर रहली।

ओही साँझ मीना थारू परिवारक दू सदस्यक संग पहुँचलि। कृषि कम्पनीक लम्बा पट्टाक प्रस्ताव एक बेर फेर अएल छल; एहि बेर पिता स्वस्थ भऽ कऽ स्वयं बातचीतमे बैसल छलाह। पुरान आवेदनमे परिवारक सम्मति अपूर्ण रहला कारण पट्टा स्थगित छल। मीना कहलीह, “हम कम्पनीक सभ सुविधा ठुकरबैत नहि छी। मुदा जे खेतमे बारी-बारी सँ हमसभ काम करैत छी, ओकर नाला आ फसलक निर्णय बिना परिवारक लिखित शर्तक नहि देब।” पिताक हाथमे औषधिक खर्चक सूची छल; ओहि रकमक चिन्ता एखनहुँ समाप्त नहि भेल छल।

कम्पनीक प्रतिनिधि नव प्रस्ताव देखौलक—परिवार दीर्घ पट्टाक बदला छोट अवधिक खेत-उपयोग करार चुनि सकैत अछि। मुदा पहिल पन्नामे ‘पूर्ण प्रबन्धकीय अधिकार’ एखनहुँ लिखल छल। मीनाक माए पुछलीह, “पानिक नाला बन्द भेला पर घर डुबत तँ क्षतिपूर्ति के देत?” प्रतिनिधि चुप भेल। मीना एक छोट सामूहिक कृषि-समूहक संग वैकल्पिक करारक प्रति मेजपर रखलीह, जाहिमे जमीनक स्वामित्व आ नालाक देखरेख अलग छल। ओ फैसला तत्काल नहि सुनौलीह; परिवारकेँ पढ़िकऽ सुनाओल गेल, पिताकेँ प्रश्न पूछबाक समय भेटल। अन्ततः ओसभ कम्पनीक मूल प्रस्ताव अस्वीकार करैत सीमित खेतीक नव करारक परीक्षणक निर्णय कएलनि।

कम्पनीक अनुमानित लाभ घटल; ओकर प्रतिनिधि किछु उपकरण किरायापर देबाक प्रस्ताव वापस लऽ लेलक। मीना घर घुरैत पिता लग कहलीह, “आब दवाईक पैसा जुटेबाक दोसर बाट खोजब पड़त।” पिता कहला, “कागदमे जे जमीन बचल, ओकरा खेतमे बचएबाक श्रम सेहो चाही।” माए छोट कापीमे नालाक सफाइक दिन लिखलीह। सरिता हुनका सभक करारक मूल प्रति नहि मँगौलीह। ओ केवल परिवारक इच्छापर गवाहीक प्राप्ति लिखलीह—स्थानीय अनुवाद सुनल गेल, कम्पनीक मूल पट्टा स्वीकार नहि भेल, नव विकल्पक जमीन-जाँच बाकी। ई विवरणकेँ मैथिली अपन दार्शनिक उदाहरण नहि बनौलीह।

बेलाक बजारमे दू ठाम बाँसक अस्थायी घेरा लागल छल। बेला तुरहाक पुरान पसार सड़क-विस्तारक लाल रेखाक भीतर पड़ैत छल; पहिनुक नापमे विद्यालयक पाछाँक सँकर बाट आ पीपरक कातक पानिभराव दुनू विकल्प असुरक्षित ठहरल छल। नगरक दल आब बजारक पच्छिम कात उँच चबूतराक किनार देखौलक, जतय पानि कम जमैत छल, मुदा पैदल ग्राहकक भीड़ कम पहुँचैत। बेला अपन पुरान ग्राहकसभक नामसँ चिन्हित थैली देखैत कहलीह, “ठाम उँच अछि, मुदा ग्राहक कता सँ चढ़त?” अधिकारी कहलक, “पहिने आवंटन लिअ; ग्राहक अपन बाट ढूँढ़ि लेत।”

बेला नगरक अस्थायी आवंटनपत्रकेँ तीन शर्तक संग स्वीकार कएलीह—दृश्य मार्ग-चिह्न, शुरुआती सप्ताहक बजार-शुल्कमे समायोजन, आ जाल-मरम्मतिक लेल ढँकल सुरक्षित कोना। ओ पुरान पसार उठबैत अपन छिटकि गेल बाँसक सुई चुनैत छलीह। एक

ग्राहक कहलक जे ओकरा नव ठाम दूर पड़त; अगिला सप्ताह आन दोकानसँ माछ लेत। बेलाक मन दुखल, मुदा ओ ग्राहककेँ बाध्य नहि कएलीह। नव चबूतरापर पहिल दिन तीन पुरान ग्राहक नहि पहुँचलाह; दू नव स्त्री जालक सुतरी किनलीह। रोजीक हिसाबमे घाटा लिखल गेल, मुदा बेदखलीक पत्रपर झूठ ‘बिना विकल्प स्वेच्छासँ हटलीह’ नहि लिखल गेल।

बेला साँझ किछु खाली टोकरीक संग सरिताक घरपर अएलीह। ओ कहलीह, “मोर नाम समाचारमे ओतहि नहि रहय जे सड़कक काजमे बाधा देलहुँ। नब ठाम स्वीकार केलहुँ, मुदा पुरान ग्राहक गमौलहुँ—दूनों लिखू।” सरिता ओकर बात शिविरक सार्वजनिक रजिस्टरमे बिना नामक अनुमति नहि उतारलीह। बेला अपन पेशाक नाम आ आवंटनक सार्वजनिक सूचना लिखबाक अनुमति देलीह, ग्राहकसभक उधारी-बही गोपनीय रखलीह। मैथिली देखलीह जे योगदानक विस्तृत श्रेय बनाओब केवल पुस्तकक पृष्ठ नहि, बदलैत बजारमे सेहो कठिन काम छल। मुदा ओ एहि समानताकेँ दोसराक पीड़ाक नकल बनबएबासँ रोकि रखलीह।

सीमातीर्थक कारीगर-गामसँ मीना सार्कीकेँ चर्मक दू नमूना वापस भेटल। पहिनुक परीक्षणमे पानि लगला पर ढील भऽ जाइत पट्टा लौटा देल गेल छल; आब संयुक्त दल नब सिलाइ आ परखक माप बना रहल छल। मीना फोनपर कुमुदीसँ कहलनि जे नमूना परखबाक घण्टा भारतीय रुपयामे, सीमापारक कारखानाक श्रम ओतयक मुद्रामे, आ परिवर्तित रकमक दिन ओहि दिनक प्रमाणित विनिमय-दरपर लिखल जाय। अनुवादमे ‘साझा अधिकार’केँ ‘डिजाइनक पूर्ण बिक्री’ बना देल गेल छल। मीना फेर सही करबासँ इन्कार कएलीह। कुमुदी मूल पाँति फेर पढ़ि दुनू अर्थ अलग कएलनि।

कारीगर-दलक प्रतिनिधि पहिने कहलनि जे सीमापारक साझेदारीमे एतेक अलग खाता राखब व्यावहारिक नहि। मीना अपन हथेलीक पुरान सुई-घाव देखबैत कहलीह, “दामक एक अंक गलत भेल तँ काजक कतेक दिन गुमत, ई हम जानैत छी।” अन्तमे नमूनाक भुगतान पहिले, नव डिजाइनक उपयोग बादमे अलग सहमतिक आधारपर तय भेल। मीनाक साझेदारी आरम्भ भेल, मुदा पैघ व्यावसायिक अनुबन्ध एखन विचाराधीन रहल। कुमुदी अपन अनुवादक पारिश्रमिकक रसीद लेल आग्रह कएलीह। मीना ओकरा कहलीह,

“अहाँक एक शब्दक श्रम सेहो हमरा चर्मक सीबनक धरि जाएत; बिना दामक अनुवादमे गाँठि फेर ढील भऽ जाएत।”

ईशान पहिनुक ‘घरक सहयोग’वला पृष्ठक नव मुद्रण-मसौदा देखौलनि। नव पाठमे नकलक तीन दिन, स्रोत-स्मरणक आंशिक पुष्टिक स्थिति आ घरेलू व्यवस्थाक दस्तावेजित अंश अलग- अलग लिखल छल। मुदा घरक कामक श्रममूल्यक कात ‘पुनर्गणना शेष’ लिखल छल। सरिता पुछलीह, “ई तीन दिनक काजक रकम कोन खाता दैत?” ईशान अपन पुरान निजी व्यय-बही खोललनि। एक तिथिपर अग्रिम भोजनक रकम दैत देखल गेल, मुदा नकलक मजदूरीक प्राप्ति-पत्र नहि। ओ कहलनि, “जतए देलहुँ तकर प्रमाण लएब; जे नहि देल गेल ओकरा पाछाँ ‘घरक अपन काज’ नहि लिखब।” सरिता एहि उत्तरकें पूरा भुगतानक घोषणा नहि मानलीह।

हरिमोहन एक प्रारम्भिक स्रोत-प्रमाणपत्र बनौलनि। ‘प्रतिलिपि-श्रम: सरिता—पृष्ठवार जाँचक अधीन’; ‘घरेलू व्यवस्था: दस्तावेजित खर्च आ अतिरिक्त समय, भुगतान-मिलान शेष’; ‘उदाहरणक मौखिक स्रोत: सरिताक स्मरण, मूल पन्नासँ पुष्टि शेष’; ‘संशोधनक प्रश्न: मैथिली—मूल प्रति मिलान शेष’; ‘मूल विवेचन: ईशान—दावाक सम्पूर्ण परीक्षा बाकी।’ सरिता पढ़िकऽ कहलीह जे दोसर स्रोतक नाम आ अनुमति तखन जोड़ल जाए जखन सम्बन्धित व्यक्ति उत्तर देथि। नहिए तँ चारि खानाक सुधार कए पाँचम खानामे फेर अनाम लोक छोड़ल जाएत। हरिमोहन अतिरिक्त रिक्त पाँति छोड़लनि, मुदा नाम नहि गढ़लनि।

मैथिली ओहि पत्रक दू प्रति मँगौलीह। एक प्रति सरिताकें, एक समीक्षा-समितिक लेल। ओ अपन हस्ताक्षरक ऊपर अलग वाक्य लिखलीह—सरिताक नकल, घरेलू व्यवस्था आ उदाहरण-स्मृतिज्ञानक योगदान नामसहित स्वीकार करैत छी; ई स्वीकार प्रमाणित सहलेखनक अन्तिम निर्णय नहि। ईशान सेहो अपन नामसँ स्रोत-जाँचक प्रतिबद्धता लिखलनि। सरिता दूनू पत्र पढ़लीह, जखन ‘मौखिक स्रोत’ शब्दमे हुनकर पुरान देखल बातक सीमा स्पष्ट रहल, तखन सही कएलीह। हस्ताक्षर करिते नैराक कुर्सीपर हावा सँ खसल धूलिक पातर परत दिखलनि। ओ उठि ओकरा पोछबाक लेल नहि गेलीह; आइ दोसर काम निर्धारित समयमे पूरा करबाक छल।

पत्रक सार्वजनिक प्रति लगएबाक लेल विद्यालयसँ सन्देश अएल। मैथिली पुछलीह, “एखन प्रकाशित करू?” सरिता उत्तर देलीह, “नाम आ श्रेणीक प्रारम्भिक स्वीकृति प्रकाशित करू; घरक खर्च-बही आ निजी नामक नकल नहि। पाठककेँ जाँच चलि रहल अछि से सेहो बुझाउ।” ईशान विद्यालयक पुरान ‘धन्यवाद’वाला पन्नाक बगलमे नव सूचना राखबाक मानलनि, मुदा पुरान संस्करणक प्रति नष्ट नहि होएत। जकरा पुरान पुस्तक भेटल अछि, ओ संशोधित पन्ना माँगि सकत। हरिमोहन कार्यालयक खर्चमे प्रतिलिपिक दाम लिखलनि; एहि बेर सरितासँ निःशुल्क नकल बनबएबाक आग्रह कियो नहि केलक।

कबीर घर लौटि कऽ मेजपर चारि रंगक गट्टर देखलनि। “एतेक नाम आजु बाँचि गेल?” ओ पुछलनि। सरिता कहलीह, “जतेक सत्यापित होइत अछि, ओतबे लिखल गेल। बाँचब आ लिखायल रहब एक बात नहि।” कबीर नैराक कलमदान लग ठाढ़ रहलाह। सरिता हुनका कागद समेटबाक लेल नहि कहलनि। ओ पुस्तकक नव पन्ना पढ़लनि, फेर अपन पालन करनिहार स्त्रीक टाँकल कम्बलक स्मृति सँ जुड़ल कापी याद कएलनि; ओहि पड़ोसिनक नाम एखन नहि भेटल छल। “रिक्त ठाम खाली रहय,” ओ कहलनि, “मुदा जकर नाम भेटय, ओकरा पूछबाक अवसर सेहो रहय।” सरिता सहमति देलीह।

घरक भीतर चूल्हिक आगि धीरे-धीरे कम भऽ रहल छल। मैथिली विदा होएबाक पहिने सरितासँ पुछलीह जे अगिला दिन अपन सहलेखनक विस्तृत प्रमाण प्रस्तुत करबाक समय ओ अपन नाम स्वतंत्र रूपसँ लिखि सकैत छथि की नहि। सरिता कहलीह, “अहाँ अपन नाम लिखू, ई अहाँक अधिकार अछि। हमर श्रेयकेँ ओकर भूमिका नहि बनाउ। हम जे उतारलहुँ से हमर अक्षर, जे देखलहुँ से हमर देखल, आ जे घरमे कएलहुँ तकर समय अलग अछि।” मैथिली एहि उत्तरकेँ कोनो दार्शनिक सूत्रमे रूपान्तरित नहि कएलीह। ओ अपन कापीक पहिल रिक्त पृष्ठपर केवल अपना नाम लिखलीह, पाछाँ संशोधनक पन्ना रखलीह।

रातिक अन्तमे सरिता चारि गट्टर बन्द कएलीह। लाल धागावला पन्नाक सार्वजनिक नकल विद्यालय जाएत; घरक व्यय-बही अपन घरमे रहत; सीमातीर्थक भुगतान-सूची अधिकारी लग जाएत; उदाहरणक स्रोत-सूची समीक्षा लेल खुलल रहत, मुदा अनुमति

अनुसार। नैराक खाली कुर्सी ओतहि छल, ओकर मृत्युकेँ कागदक कोनो नव शीर्षक बदलि नहि सकैत छल। सरिता दियाक बाती नीचाँ करैत देखलीह जे किताबक नवीन पन्नापर हुनकर नाम लिखल अछि, आ नामक कात काजक भेद सेहो। एतेकसँ सभ देय नहि चुकल छल; मुदा काल्हि मैथिली अपन स्वतन्त्र पन्ना खोलतीह तखन सरिताक श्रम दोसरक वाणीमे अदृश्य भऽ नहि जाएत।

अध्याय १६१ • मैथिलीक अपना नाम

भोरक उजास पुरान छापाखानाक काँचपर तिरछा पड़ि रहल छल। मैथिली एकटा मोट कागदी लिफाफा खोललीह आ ओकर भीतरसँ पातर, पीयर पड़ि गेल प्रूफ-पन्ना निकाललीह। कागदक दहिना किनारपर स्याहीक तीनटा छोट-छोट बिन्दु छल। ईशान एकरा छपाइक दाग बुझैत छलाह; मैथिली जानैत छलीह जे तीनू बिन्दु ओ ओहि राति लगौने छलीह, जखन एक तर्कक तीनटा सम्भावित उत्तरकें अलग राखब जरूरी भेल छल। आज ओ एकर अर्थ कहबाक आयल छलीह, केवल ओकरा देखएबाक नहि।

छापाखानाक बूढ़ कर्मचारी लकड़ीक काउण्टर नीचाँ सँ तारबान्हल बही निकाललक। “एहि किताबक पहिल संस्करणक सभ कागद बचल होएत, से नहि कहि सकैत छी,” ओ कहलनि। मैथिली उत्तर देलीह, “जे भेटल अछि, ओकर क्रम पहिले देखू। जे नहि भेटत ओकरा अनुमानसँ भरब नहि।” ईशान दुआर लग ठाढ़ छलाह। काल्हि सरिताक श्रमक प्रारम्भिक स्वीकृति पर हस्ताक्षर करैत जतेक सहज लगल छल, आइ अपन पत्नीकें सहलेखिका मानबाक प्रमाण सामने बैसि देखब ओतेक सरल नहि छल।

हरिमोहन पहिने तीन पृष्ठ मेजपर पसारलनि। एक कागदपर ईशानक हस्ताक्षर, दोसरपर मैथिलीक संक्षिप्त नाम, तेसर छापाखानाक पुरान प्राप्ति-मुहर छल। मुहरक तिथि दुनू लिखित पृष्ठक बीचमे पड़ैत छल। मैथिली कहलनि, “हमर नाम अएबाक अर्थ मात्र ई नहि जे हम छपाइ देखलहुँ। देखू जाहि अनुच्छेदमे शब्दक प्रमाण पर प्रश्न छल, पहिल मसौदामे ओकर उत्तर नहि अछि। दोसर पन्नामे हम प्रश्नक आधार बदलेलहुँ, आ अन्तिम छपल पाठमे ओहि आधारक प्रतिवाद अपन रूपमे अछि।”

ईशान लाल स्याहीवाला हाशिया देखलनि। “ई उत्तरक वाक्य हमर लिखल अछि,” ओ कहलनि। मैथिली सिर हिलौलीह। “अहाँक वाक्य अछि; हमर प्रश्न आ तर्कक क्रम अलग अछि। हम अहाँक वाक्य अपन नाम करए नहि आयल छी। मुदा जे प्रश्न बिना ओ वाक्य एही रूपमे सम्भव नहि छल, ओकरा केवल ‘घरक परामर्श’ कहि हटाओल गेल।” ओ चश्मा उतारि कागदक पुरान मोड़ सीधा करैत फेर बजलीह, “सहलेखनक प्रमाण ओहि श्रमक अछि, जे पाठक तर्क बनबैत अछि।”

हरिमोहन पृष्ठक किनारपर बनल जोड़-चिह्न मिलौलनि। प्रारम्भिक उत्तरमे ज्ञानक विश्वसनीयताक आधार वक्ताक प्रतिष्ठा मानल गेल छल; बादक प्रश्नमे प्रतिष्ठित लोकक त्रुटि आ अनाम साक्षीक सत्य दुनूक सम्भावना राखल गेल छल। ओ पुछलनि, “ई उदाहरण सरिताक हाटवला निरीक्षणसँ त नहि अएल?” मैथिली उत्तर देलीह, “हाटक दू बोरा आ तौलवला उदाहरणक स्रोत सरिताक स्मृतिसँ जाँचल जाएत। एहि तर्कमे हम उदाहरणक स्रोतक दावा नहि करैत छी; प्रश्नक संरचना आ प्रतिवादक क्रम हमर कापीमे भेटत।”

सरिता एखन धरि चुप छलीह। ओ अपन लाल धागावला गट्टर छापाखानामे नहि अनने छलीह। हाथमे मात्र काल्हिक सीमित स्वीकृति-पत्रक प्रति छल। “हमर देखलाकँ मैथिलीक विचारक प्रमाण बनाउ नहि,” ओ कहलीह, “आ मैथिलीक विचारकँ हमर प्रतिलिपि-श्रम कहि छोट नहि करू। पहिने ओहि पन्नाक छपल आ लिखल रूप देखू। जकर जे अधिकार अछि, ओकरा ओहि अधिकारक नाम चाही।” छापाखानाक लड़का एक गिलास पानि रखि गेल; सरिता ओकरा लऽ कऽ पुछलीह जे इहाँ पानी देबाक काम के करैत अछि आ ओकर दाम हिसाबमे जुड़ैत अछि की नहि।

ईशान अपन पुरान चामक थैलीसँ एक छिटपुट कापी निकाललनि। कापीक आरम्भमे हुनकर अपना हस्ताक्षर छल, मुदा बीचक एक पृष्ठपर मैथिलीक लम्बा प्रश्न आ तकर नीचाँ हुनकर उत्तर अलग स्याहीमे लिखल छल। मैथिली ओ पृष्ठसँ पहिने कापीक बन्धन देखलीह। “हमरा डर अछि जे खुलल पन्ना बादमे जोड़ल कहि देल जाएत।” कर्मचारी धागाक पुरान गाँठि, स्याहीक फैलाव आ प्राप्ति-रजिस्टरक क्रम मिलाएबाक सुझाव देलक। ओ अपन मतकँ अन्तिम परीक्षणक स्थान नहि देलक।

दुपहरि धरि प्रथम मिलानमे तीन प्रूफ-पन्नाक क्रम आ दू संशोधित प्रश्नक सम्बन्ध पुष्ट भेल। चारिम पृष्ठक तिथि स्पष्ट नहि छल। हरिमोहन एतबे लिखबाक प्रस्ताव रखलनि जे अमुक दार्शनिक प्रकरणमे मैथिलीक प्रश्न, वैकल्पिक हेतु आ प्रतिवादक संशोधन सहलेखनक प्रमाण देइत अछि; बाकीक पुस्तकपर एही निर्णय स्वतः लागू नहि होएत। मैथिली अपन नामक पाछाँ ‘ईशानक पत्नी’ छपबाक प्रस्ताव रोकलीह। “हमर घरक

सम्बन्ध सत्य अछि, मुदा ई पन्ना हमर बौद्धिक श्रमक अछि। एहि प्रमाणक शीर्षकमे हमर अपना नाम रहत।”

एहि बीच बरामदामे गाड़ीक हॉर्न बजल। हरिचरण पासवान दू पुरान भाड़ा-रसीद आ चालकसभक समय-बही लऽ पहुँचलाह। एक गाड़ी रोगीकें सुरक्षित स्थान धरि लऽ गेल छल; दोसर गाड़ी तखने उपलब्ध राखल गेल जखन दू घण्टा प्रतीक्षा करनी पड़ल छल। प्रारम्भिक हिसाबमे वाहनक भाड़ा आ चालकक रात्रिक मजदूरी एकहि रकम लिखल छल। हरिचरण कहला, “हम गाड़ी देने छलहुँ, चालकसभ अपन राति देने छलाह। दूनूक दाम एके हस्ताक्षरसँ खतम नहि होएत।”

रमा कर्णक पुरान प्राप्ति मेजपर छल। ओकरा देखिकऽ हरिमोहन कहलनि जे कार्यालयक स्वीकृति केवल गाड़ीक भाड़ाक शीर्षकमे अएल छल। हरिचरण अड़ि गेलाह। “जतए भाड़ा भेटत से हमर वाहनक लागतक हिसाब; चालकक मजदूरी अलग। जे पाछाँ हमर ठेका रहल, ओकरा नामेँ हमर संग चलल लोकक काज मत मेटाउ।” सरिता रमा केँ फोन कऽ पुष्टि कएलीह जे चालकक नाम आ विश्राम-समयक सूची स्वतंत्र रूपेँ दर्ज अछि।

ओही दिन एक संक्षिप्त आदेश अएल—गाड़ीक सत्यापित भाड़ाक भुगतान हरिचरणक खातामे जएत, आ चालकक सत्यापित राति-मजदूरी हुनकर अपन-अपन प्राप्तिमे दर्ज भऽ अलग जारी होएत। प्रतीक्षा-अवधिक विवादित हिस्सा फेर जाँचल जाएत। हरिचरण फोन पर पहिल चालककेँ समाचार देलनि। चालक पुछलक, “हमरा रुपैया एहि सप्ताह भेटत?” हरिचरण कहलनि, “आदेश अछि; रकम चढ़लाक खबर अलग देब।” ई अन्तर ओ एहि बेर साफ-साफ कहि सकलाह।

मैथिली खिड़कीसँ ओ सभ देखैत छलीह। बाहेरक सड़कपर एक ठेला लस्सीवला भीड़ चीरैत निकलल। छापाखानाक भीतर हरिमोहन नव कागदक शीर्षक टाइप करबाक लेल जगह बनबैत छलाह। “ज्ञानक श्रेय आ काजक मजदूरी,” ओ कहलनि, “एकहि लेखमे जोड़ि देल जाय?” मैथिली उत्तर देलीह, “दूनू बिषयक तुलना होइत अछि, मुदा हरिचरणक चालकक पर्ची हमर पुस्तकक फुटनोट नहि। ओकर भुगतान ओकरा समयपर चाही।” हरिमोहन अपन कागद अलग कएलनि।

साँझसँ पहिने लक्ष्मी कठबनिया काठक छोट डब्बामे दू प्रकारक ढक्कन आ पुरान रस्सीक टुकड़ा राखि अएलीह। इनार-समितिक एक समयक संयुक्त कर्ज हुनकर दुकानक नामपर चढ़ि गेल छल, केवल एहि कारण जे ओ रस्सी बेचने छलीह। समिति आब एक आदेश देल छल जे लक्ष्मीक व्यापारिक आपूर्तिक रकम आ इनारक निर्माण-विवाद अलग होएत। मुदा देवालपर पुरान सार्वजनिक उधार-सूचीमे एखनहुँ हुनकर नामक सामने पूर्ण संयुक्त राशि छल।

“दुकानक ग्राहक हमरा ऋणदार बुझैत अछि,” लक्ष्मी कहलीह। “रकम रोकेबाक पत्र भेटल, मुदा इज्जत पर पुरान अंक टाँगल अछि।” सरिता हुनका संग समितिक दुआर धरि गेलीह। कर्मचारी कहलक जे पुरान सूची हटबला पर सभ हिसाब अस्वीकृत बुझल जाएत। लक्ष्मी एक नव पर्ची लिखबाक कहलीह—‘संयुक्त देयक आरोप निलम्बित; विक्रेताक वास्तविक आपूर्ति-मूल्य आ अलग बकाया पुनर्मिलानमे।’ पुरान सूचना अभिलेखमे सुरक्षित राखबाक शर्तपर सार्वजनिक पटसँ हटायल गेल।

लक्ष्मी अपन खरीदारक सामने नव पर्ची पढ़लीह, मुदा ई बातो स्पष्ट कएलीह जे दुकानसँ देल ढक्कनक वास्तविक मूल्य हुनका एखन प्राप्त करबाक अछि। ग्राहक कहलक, “तखन अहाँक कर्ज माफ नहि भेल?” लक्ष्मी हँसलीह नहि। “हम ककरो देनिहार छी तँ प्रमाण देखाउ; कियो हमर देनिहार अछि तँ ओकरो हिसाब देखाउ। जकर कर्ज हमर नहि, ओकरा ‘छूट’ कहि हमरा पर उपकार नहि करू।” ओ डब्बामे ढक्कन राखि दोकान दिस घुरि गेलीह।

एहि समय लखन सतार अपन दू साथीकेँ संग लऽ बैठकमे पहुँचलाह। घाटक अस्थायी चढ़ान पर राति काटि लकड़ीक पटरा उठाएल छल; ठेकेदारक बिलमे मजदूरी वसूल कएल गेल, मुदा श्रमिक-पंजीमे तीनूकेँ ‘स्वैच्छिक सामुदायिक सेवा’ लिखल छल। मालिकक मुनीम कहलक जे भीड़मे कियो हुनकर सभक हाजिरी लगबैत छल, से विश्वसनीय नहि। लखन काठपर रहल गीला निशानवला फोटो नहि, पहिने ठेकाक भुगतान-पर्ची आ ओ रातिक सुरक्षा-पारीक कापी रखलनि।

लखनक साथी जोगा कहलनि, “हम राति दोसर पहरमे रहलहुँ; लखन पहिल पहरमे। मालिकक बहीमे हम तीनू एकहि दिन दिन-दहाड़े उपस्थित लिखल छी।” तेसर साथी

अपन फाटल गमछा टेबुलपर नहि पसारलक; ओ तिथि, घाटपर आएल नाव आ ओहि दिनक खाद्य-वितरणक समय बतौलक। रमा तीनू गवाही अलग-अलग दर्ज कएलीह। मालिकक मुनीम आपत्ति कएलक जे मजदूरसभ एक-दोसराक बात सिखाओल छथि। सरिता कहलीह, “संभावना लिखू; मुदा गवाही नकारबाक लेल स्वतंत्र कारण चाही।”

घाटक पहरेदारक पुरान नोटमे रातिक मरम्मतिक तिथि आ तीन प्रकारक औजारक प्राप्ति भेटल। औजारक संख्या मात्रसँ तीनू व्यक्तिक पूरा समय सिद्ध नहि होइत छल, मुदा ‘ओ दिन कोनो मजदूर काज नहि कएलक’ ई कथन टूटि गेल। मालिकक मूल भुगतान-बिल मँगाओल गेल। विवादरहित पहरक मजदूरी अलग जारी करबाक अनुशंसा भऽ गेल; बचल घण्टा आ अतिरिक्त जोखिम-भत्ता सुनवाई लेल सुरक्षित रहल। लखनक आँखि पटरा पर लागल छालक दिश देखैत रहल, मुदा ओ अपन नाम वाचिक रूपेँ पंजीमे सुनि लेलनि।

आँगनमे किछु लोक कहैत छल जे एहि सभ छोट हिसाबक संग दार्शनिक पोथीक की सम्बन्ध। मैथिली अपन पन्ना समेटि ओतय अएलीह। ओ समाजक घटनाकेँ अपन सिद्धान्तक अलंकार बनबए नहि चाहैत छलीह, मुदा ओ पुछलीह, “एक व्यक्ति काज कएल, दोसर ओकर काजक नाम छपौलक—एहि दू बातक प्रमाण अलग जाँचब जरूरी अछि की नहि?” लखन उत्तर देलनि, “हमरा बस मजदूरी चाही, दीदी। हमर नामक व्याख्या पर किताब नहि।” मैथिली तुरन्त कहलीह, “ठीक कहलहुँ। एहि पन्नामे अहाँक अनुमति बिना हम अहाँक नाम नहि लिखब।”

अपराहक लम्बा छाया घरक बरामदामे पड़ल तखन विनीता केशरवानी दू बही लऽ पहुँचलि। पहिल बही हुनकर अपन उधारीक, दोसर परिवारक साझा किराना कारोबारक छल। घरक एक सदस्य एक संयुक्त देय-पत्र बनौने छल, जाहिमे विनीता अपन हस्ताक्षर बिना कएल खरीदक जिम्मेदारी उठबैत देखल गेलीह। ओ पहिल बहीक तीन प्रविष्टि स्वयं सत्यापित कएलीह; साझा खाताक दू खरीदपर अनुमति-सूचना अलग चाहलीह।

विनीताक परिवारक पुरुष कहलक, “घरक कारोबारमे एतेक विभाजन करब तँ अपन लोकपर भरोसा नहि रहत।” विनीता लकड़ीक माप-डब्बा टेबुलपर राखि उत्तर देलीह, “भरोसा बिना नामक बिलसँ नहि बढ़ैत। हम अपन उधारी देब। जे साझा आ सहमतिक

बिना चढ़ल, ओहि पर पहिने निर्णय हो।” दोकानदारक नव सहायक पहिल बहीक एक बकाया-किस्तक प्राप्ति लिखि देलक। एक निर्धारित रकम ओहि दिन विनीता अपने चुकौलीह; साझा ऋणक विवादित हिस्सा रोकल गेल।

विनीता अपन भुगतानक रसीद दोसर बहीसँ अलग राखलीह। सरिता हुनकासँ पूछलीह जे सार्वजनिक सूचीक लेल कोन भाग स्वीकृत अछि। “दूकानक साझा व्यापारक निर्णय सार्वजनिक हो सकैत अछि,” विनीता कहलीह, “मुदा हमर घरक अलग उधारीक संख्या बाजारक पटपर नहि।” परिवारक पुरुष पहिले विरोध केलक, पछाति नब खाता खोलबाक सहमति देलक। धनक गिनतीमात्र नहि बदलल; घरमे एहि बातक अधिकार सेहो बदलल जे ककरा ककर खरीदपर हस्ताक्षर देबाक अछि।

मैथिली फेर छापाखानामे घुसलीह। पुरान कागदक गन्धमे ऊपरी साँझ उतरि रहल छल। हरिमोहन अलग-अलग स्याहीक नमूना आ प्राप्ति-तिथिक छोट सारणि रखलनि। जे पन्ना मैथिलीक स्वतंत्र प्रश्नक छल, ओकर कापीक किनारपर छापाखानाक अगिला निर्देशसँ पहिनुक तिथि भेटल। हस्ताक्षर-नमूना मैथिलीक निर्विवाद पत्रसँ मेल खाइत छल; ईशानक लिखल उत्तर बादक संशोधनमे अएल छल। केवल एक अज्ञात वाक्यांशक लेखक एखन निश्चित नहि छल, से पन्नाक कात अलग चिह्नित रहि गेल।

ईशान कागद अपन लग खसकौने कहलनि, “हस्ताक्षर हमर पुस्तकमे छपबाक समय देखब हमर काम छल। हम ओकरा ‘मैथिलीक मदद’ लिखि हलका बना देलहुँ। मुदा किछु मूल विवेचन हमर सेहो अछि; ई निर्णय ओहि सभकेँ मेटा देत?” मैथिली उत्तर देलीह, “किएक मेटाएत? हम अहाँक लिखल तर्कपर अपना नाम नहि चाहैत छी। हम जे नव हेतु, आपत्ति आ प्रतिवाद गढ़लहुँ, ओकरा ‘पत्नी’ शब्दमे विलीन नहि करब।” एहि बेर ईशान उत्तर देबासँ पहिने पूरा पन्ना पढ़लनि।

हरिमोहन एक संक्षिप्त प्रमाणपत्र तैयार कएलनि। ओहिमे लिखल गेल जे निर्दिष्ट प्रकरणक दुइटा मूल आपत्ति, एक वैकल्पिक तर्कक्रम आ एक संशोधित प्रतिवाद मैथिलीक लिखित योगदानक रूपमे पुष्ट अछि; ईशानक स्वतन्त्र विवेचन अपन श्रेयमे सुरक्षित अछि; सरिताक प्रतिलिपि, मौखिक उदाहरण-स्रोत आ घरेलू श्रमक मूल्यांकन

अपन पृथक अभिलेखमे जारी अछि। सहलेखनक सीमा केवल जाँचल प्रकरण धरि तत्काल लागू होएत। बाकी अनिश्चित पंक्ति अनिश्चित रहत।

प्रमाणपत्रक सार्वजनिक प्रति लेल मैथिली साफ शब्द चुनलीह—‘सहलेखिका: मैथिली’, आ ओकर नीचाँ प्रकरणसभक सूची। ईशानक नामक आगाँ ‘सहलेखक’ रहल; ओहि सूचीसँ बाहर हुनकर स्वतंत्र काजक उल्लेख सेहो। छापाखानाक कर्मचारी पूछलक जे अगिला मुद्रणमे शीर्ष-पृष्ठ पूर्ण रूपसँ बदलल जाए की। मैथिली कहलनि, “पहिने दू व्यक्ति आ प्रकाशकक हस्ताक्षर सहित सुधार-पत्र सभ पुरान प्रतिक पाठकधरि पहुँचै। नव संस्करणक भूमिकाक अंतिम शब्द अलग पढ़ल जाएत।” ईशान एहि निर्णयपर सहमति देलनि।

मुद्रणक खर्चपर छापाखानाक मालिक आपत्ति कएलनि। पुरान टाइप फेर सजाएब, संशोधन-पत्र छापब आ दूरक पुस्तकालयसभमे पठाएब—एहि सभक दाम ककर खाता जाएत? ईशान पहिने कहलनि जे ओ अपन मेहनतानासँ किछु हिस्सा देताह। मैथिली कहलीह, “गलत श्रेय लेखकक निजी क्षमा-माँगी मात्र नहि। प्रकाशक पुरान प्रतिक दाम लएने छथि; पाठकधरि सही जानकारी पहुँचएबाक दायित्व ओकरो अछि।” अन्तमे प्रकाशक सुधार-पत्रक छपाइ आ निःशुल्क वितरणक व्यय स्वीकार केलक; लेखकसभ अपन-अपन नव लेखनक पारिश्रमिकक प्रश्न अलग राखलनि। सरिता जोड़लीह जे एहि नव खर्चक लेल हुनकर बकाया नकल-मजदूरीमे कटौती स्वीकार नहि होएत।

पत्रपर हस्ताक्षरक क्रमक बात उठल। कर्मचारी सहज आदतसँ पहिने ईशानक सामने कागद घुरौलक। ईशान ओ कागद मैथिलीक दिस खसकौने कहलनि, “एहि दावाक प्रमाण अहाँ प्रस्तुत कएलहुँ; पहिल हस्ताक्षर अहाँ करु।” मैथिली कलम उठा कऽ पूरा नाम लिखलीह। ओ अपन पतिक नामक संग कियो आन उपाधि नहि जोड़लीह। ईशान दोसर हस्ताक्षर कएलनि, तखन हरिमोहन स्रोत-मिलानक दायित्व लेल सही कएलनि। सरिताक हस्ताक्षर जकर कागदपर अपेक्षित नहि छल, ओतय नहि मँगाओल गेल।

विद्यालयक कक्षामे नव सूचना पढ़बाक लेल किछु विद्यार्थी आ श्रमिक संगी जमा छलाह। पद्मा प्रश्न रखलीह जे पुरान पाठक छुटल योगदानक जानकारी कोना भेटत। पुस्तकालय पुरान प्रतिक बगलमे संशोधन-पत्र रखबाक स्वीकार कएलक, आ पाठककँ

बिना मूल्य ई पत्र उपलब्ध होएत। मैथिली अपन उद्धारक लेल मज्ज नहि मैंगलीह; ओ बस एतबे कहलीह, “जे पन्ना पढ़ल जाए, ओकर प्रश्नक स्रोत सेहो पढ़ल जाय।” एक बच्ची पुछलक, “तखन जे प्रश्न पूछैत अछि, ओ लिखैत सेहो अछि?” मैथिली कहलीह, “कखनहुँ। मुदा प्रमाण देखबाक चाही।”

बाहेर रमा सँ फोन अएल। हरिचरणक भाड़ाक आदेश कार्यालय पहुँचल छल, चालकसभक मजदूरीक भुगतान-प्रक्रिया चालू भेल छल; रकम वास्तविक खातामे जमा भेलाक पुष्टि एखन शेष। लखनक जाँचमे ठेकेदारसँ मूल बिल प्राप्त भेल छल, मुदा जोखिम-भत्ताक हिसाब बाँकी। लक्ष्मीक संयुक्त कर्जक सार्वजनिक प्रविष्टि सुधरि गेल, हुनकर वस्तुक बिक्री-मूल्य एखन देय। विनीता अपन पहिल किस्तक रसीद स्वयं लेलनि। सरिता चारू समाचार अलग-अलग पन्नामे लिखलीह, एक साझा ‘समाधान’ शीर्षकक नीचाँ नहि।

साँझ अपन घरमे मैथिली किताबक पुरान आवरण सामने राखलीह। पृष्ठपर ईशानक नाम उज्जर अक्षरमे छल; मैथिलीक नाम नहि। ओ आवरण फाड़लीह नहि। भीतर नव सुधार-पत्र रखलीह, जाहिसँ पाठक पुरान भूल आ नव प्रमाणक दूरी स्वयं देखि सकथि। ईशान दरबज्जापर अएलाह, पूछलनि, “एतबा बदलला पर हमरा दूनूक बीच की बदलत?” मैथिली कहलनि, “कागदमे जे बदलबाक छल से बदलल। घरक सम्बन्धक उत्तर हमर नामक बदला अहाँक हस्ताक्षर नहि देत।”

रातिक हवा ओहि कापीक पन्ना उलटि देलक, जाहिपर मैथिली पहिल बेर अपन स्वतंत्र प्रश्न लिखने छलीह। ओ पुस्तक दबौलनि आ मेजपर अलग कागद रखलीह—अगिला अध्यायक लेल प्रमाताक विश्वसनीयताक प्रश्न। बाहर सरिताक आँगनमे नैराक खाली कुर्सी अन्हारमे ओतहि छल; कोनो श्रेय-पत्र मृत्युक ओ रिक्तता नहि भरैत। मुदा ऐ राति मैथिलीक नाम सार्वजनिक कागदपर ओहि प्रश्नक कात पहुँचल छल, जे प्रश्न ओ अपन कलमसँ उठौने छलीह।

अध्याय १६२ • प्रमाताक दावा

ताड़पत्रक ऊपर राति भरि पड़ल धूलि उदयनक एक शिष्य मोरपाँखसँ झाड़ि रहल छल। दहिना कोनमे स्याहीक थोप पड़ि गेल रहैक; ओकरा पोंछबाक प्रयत्नमे पातक एक अक्षर फिक्का भऽ गेल। ओ घबराकऽ पन्ना पलटए लागल, मुदा दुआर लग बैसल वृद्ध लेखिका रोकलीह, “जे मेटल अछि, ओकरा साफ अक्षर कहि नहि पढ़ू।” उदयन भोरमे पहुँचलाह तँ शिष्यक हाथ काँपि रहल छल। सभाक लेल तैयार चतुर्थ स्तबकक प्रति ओकरे जिम्मामे छल। सभसँ पहिने उदयन पुछलनि, “कागद खराब भेल, की अहाँ पढ़बासँ डराइत छी?”

शिष्य कहलनि, “अहाँक पोथीपर हमरा भरोसा अछि। जे स्थान धुँधला अछि, ओकर अर्थ अहाँक पहिनुक व्याख्यासँ भरि देब।” उदयन पात उठौलनि। “हमर नाम ई अक्षरक प्रमाण नहि,” ओ कहला। “सुनल व्याख्या सँ सम्भावना बूझि सकैत छी; एखन लिखल चिह्नक पाठ अलग देखब पड़त।” वृद्ध लेखिका अपन पोटीसँ तेसर प्रतिक नकल निकाललीह। ओहो पुरनकी छल, मुदा ओकर किनार अक्षुण्ण छल। ओ कहलीह जे नकलक तिथिमे दू दिनक अन्तर अछि; एतबे कारणेँ पहिल प्रतिक गलती अपने-आप सुधरि नहि जाएत।

ओहि दिन मिथिलाक पुरान ओसारमे शास्त्रार्थ सुनबाक लेल विद्वानसभक संग पोखरिक माटि काटनिहार, पोथी सीबनिहार आ दूरसँ आएल यात्रिक सेहो जुटल छलाह। द्वारपर बैसल पहरेदार किछु युवा लोककेँ भीतर जाएसँ रोकलक। कारण पूछला पर ओ कहलक जे विद्यार्थीसभक नाम पोथीक सूचीमे नहि। उदयन कहलनि, “सुनबाक जगहक संख्या गनू। प्रवेशक अनुमति आ तर्कक सत्यता एक बात नहि।” ओ अस्थायी चटाइ बिछेबाक कहला। मुदा चटाइ बिछेनिहारक मजदूरी लेखनीमे चढ़ेबाक आदेश सेहो देलनि; शास्त्रक सभामे श्रम मुफ्त मानबाक कोनो नियम नहि छल।

एक अतिथि पण्डित उठलाह। हुनकर वस्त्रक कोरमे दीर्घ यात्राक धूसर माटि लागल छल। ओ सभासँ कहला, “ज्ञाता विश्वसनीय होइत छथि तँ हुनकर कथन किएक नहि?” किछु शिष्य सहज भावसँ उदयनक दिस तकलनि, जेना उत्तर प्रतिष्ठाक आसनपर पहिनेसँ

राखल हो। उदयन प्रश्न फिर्ता कएलनि, “ज्ञाताक सत्य ज्ञानक परीक्षण की अहाँ ओहि आसनक ऊँचाइसँ करब? जे आँखिसँ नहि देखल, तकरा देखल कहला पर पण्डितक शिरोपाधि ओकरा सत्य बना देत?” अतिथि कहलनि, “तखन आचार्यक शिक्षा पर छात्रक भरोसा कोना टिकत?”

सभा लग एक जलकुम्भ छल। शिष्य कहलनि जे ओकर भीतर शीतल पानि अछि; ओ चाकपर बनाओल नव घट थिक। दूरक यात्री कुम्भ उठा कऽ कहलक जे तलीमे बालु भरल अछि। दू व्यक्तिक आवाज अलग, एकर जाँच कठिन नहि। वृद्ध लेखिका अँगुरीसँ बाहरी सतह छुड़ कऽ बोलीह, “हम बाहरक माटिक ताप कहि सकैत छी; भीतर की अछि, ओहि लेल ढक्कन खोलू।” ढक्कन खुलल तँ आधा पानि आ तलीमे बालु दूनू भेटल। शिष्यक बात पूर्ण नहि छल, यात्रीक बातो अपूर्ण।

अतिथि हँसलाह नहि। ओ पूछलनि, “जखन सभक अनुभव सीमित अछि, तखन के प्रमाता?” उदयन उत्तर देलनि, “जे ज्ञान सही निकलल, ओकर साधन देखब; जतए भूल भेल, ओहि सीमाकेँ चिन्हब। केवल गलती कएलासँ मनुष्य सदाक लेल अविश्वसनीय नहि, आ केवल एक बेर सही रहलासँ ओ सदा अचूक नहि।” सभा लग बैसल एक युवा कहलक, “तखन आचार्य स्वयं प्रमाणक बाहर नहि?” उदयन ओकरा अपन आसनक लग बजौलनि। “विशेषतः हम नहि,” ओ कहला। “जे हमर कथनक विरोध करब, ओकर प्रश्न पूरा सुनू।”

दुपहरिक भीड़ घटला पर प्रतिक मेटल अक्षरक विवाद फेर उठल। दू विद्यार्थी मिलि एक अर्थ प्रस्तावित कएलक, तेसर ओहि अर्थपर प्रश्न उठौलक। उदयन निर्णायक घोषणा देबाक बदला मूल स्रोत, वैकल्पिक पाठ आ अनुमानक सीमा तीन अलग पन्नामे लिखबौलनि। वृद्ध लेखिका कहलनि जे पुरान नकलक धारमे बाढ़िक दाग अछि; अक्षर पहिने मेटल वा पाछाँ, तकरा लेल ओ प्रत्यक्ष साक्षी नहि। उदयन हुनकर बयान ठीक ओहि सीमामे दर्ज कएलनि। सभामे बड़का नामसभक बीच हुनकर अस्वीकार कएल सर्वज्ञता सबसँ कम आवाजमे कहल गेल, मुदा ओकरा कियो काटि नहि सकल।

एक युवा शिष्य सन्ध्यासँ पहिने पूछलक, “जँ प्रश्नक उत्तर तुरन्त नहि भेटत, पोथीक मान घटत?” अतिथि पण्डित अपन यात्राक थैली बाँधैत कहला, “मान नहि, शायद ओकर

प्रयोजन बदलत। हम एतय पराजित होए नहि, जाँचबाक लेल अएलहुँ।” उदयन मेटल पन्नाक कात खाली छोड़ि देलनि। अगिला नकलमे ओ स्थान खाली रहत आ वैकल्पिक पाठ ओहि पर संकेत देत। चतुर्थ स्तबकक चर्चा ओतहि विराम पेलक, मुदा सभाक निर्णय भऽ गेल—शब्दक अस्पष्टता परिष्कारक आग्रह अछि, प्रतिष्ठाक जोर-जबरदस्ती नहि।

बहुत पछिला समयक २०४०क चैतमे चलैत अभिलेख-शिविरक गाड़ी एक गाछतरुक हाट लग रुकल। टायरसँ उठल धूलि सरोज खरकौटक फाटल जालपर बइसि गेल। ओ एक क्षण जाल हिलौलीह, फेर तीन प्रकारक धागा अलग पसारलीह। रमा कर्णक संग अएने सहायक नव पंजीमे केवल पूँजी देनिहारक नाम लिखए लागल छल। सरोज कापी हुनकासँ खसकौलीह। “धागा किनलासँ जाल तैयार नहि होइत,” ओ कहलीह। “गाँठ सीबएवाली हाथ आ रातिमे जाल बचबएवला देह सेहो लागत दैत अछि।”

दलमे धन देनिहारक प्रतिनिधि छल, जे कहलक, “हम बेसी रकम लगौने छी, से पूरा जाल हमर। बादमे मजदूरी देब।” सरोज पुरान जालसँ एक गाँठ काटि मेजपर राखलीह। “जे श्रमिकक हिस्सा बादमे देब, ओकरा कतेक दिन पाछाँ जाएब?” ओ पुछलीह। दू स्त्री अपन-अपन सीबनक दिन कहलनि। एक युवक, जे जलमे जाल छोड़बाक जोखिम उठबैत छल, ओहि जोखिमक अलग हिसाब माँगलक। समितिक लेखनिक पहिने घबरायल; एके वस्तुपर चारि खाता बनाओब ओकर आदतमे नहि छल।

सोनमती तुरी ओहि आँगनक दोसर कात बाँसक चौखटा टिकौने छलीह। बाहरी बाजारसँ बीस वस्तुक आदेश आएल छल, मुदा सौदागर कहैत छल जे नापमे गलती भेल तँ सभटा नुकसान कारीगर उठौथि। सोनमती एक चौखटा जमीनपर राखि कहलीह, “एहि नमूनाक नाप हम देलहुँ। कपड़ाक रंग बाजारवला चुनत, ढुलाई ओकर आदमी करत, तखन सभटा दोष हमर कोना?” व्यापारी उत्तर देलक जे एके नामक बिल सँ सौदा सुगम होइत। सोनमती कहलीह, “सुगमता ककर? हमरा लागए त अपन दोषक बाट बन्द कऽ रहल छी।”

सरोज आ सोनमतीक बीच पहिने परिचय कम छल। मुदा जखन पूँजीवालाक प्रतिनिधि जालक जोखिम अपना खाता बाहर राखए चाहलक आ व्यापारी ढुलाईक जोखिम सोनमतीपर थोपलक, दुनू एकहि मेजक दू कोन पकड़ि ठाढ़ भेलीह। सरोजक समूह तय

केलक जे सूतक मूल रकम, गाँठ सीबबाक सत्यापित समय आ जाल खींचबाक कार्यदिवस अलग-अलग हिस्साक आधार होएत। कम पूँजीवाला सदस्यक अधिकार न्यूनतम सुरक्षित रखल गेल। सोनमती नव सौदामे नमूनाक मानक अपना जिम्मा लेलनि; वाहकक देरी आ खरीदारक रङ्ग-बदलावक नुकसान लिखित रूपसँ अलग भेल।

सहायक पूछलक, “अहाँ दुनू एहि कागदपर तुरन्त सही करब?” सरोज उत्तर देलीह, “जाल साझा भेल, मुदा पैघ पूँजीक रकम एखन जमा नहि भेल अछि। पहिने ओकर प्राप्ति देखब।” सोनमती सेहो मूल आदेशक दू प्रतिक माँग कएलीह। पहिल अग्रिम बिना बीस चौखटा बनेबाक आदेश नहि मानलीह। हाटमे उपस्थित लोक दुनू स्त्रीक अड़बाक बातपर फुसफुसायल। ओहि दिन हुनका सभकेँ व्यापारक विजय नहि भेटल, मुदा बिनु पढ़ने सही करबाक बाध्यता हटल।

माटिक बासन लऽ निरु कुमाल पहुँचलि तँ दुपहरि भऽ चुकल छल। पिछला साझा आबाक खर्च-पन्नामे इन्धन आ मजदूरी अलग लिखल छल, मुदा एक सावकार नब आदेशक नामपर सभ कारीगरकेँ आपसक उधारीक जिम्मेदार बनबए चाहैत छल। निरु ओकर कागद बिना फाड़ने मेजपर राखि देलीह। “हम तीन परिवार संग मिलि छोट खेप बनाओब,” ओ कहलीह, “मुदा पहिनेसँ ककरो घरक ब्याज हमर बच्चाक नामपर नहि चढ़त।” सावकार कहलक जे एहि शर्तपर माल सस्तो नहि भेटत।

निरु तीन बासन उलटि कऽ देखौलीह। एकक तली पाका छल; दोसरपर सूक्ष्म दरार; तेसरक गर्दन टेढ़। ओ कहलीह, “ई तीनू एक नामक बासन अछि, मुदा तीनू एक दामक नहि। संग काज करब तँ गुणवत्ता अलग जाँचब, तँ खरिदार भरोसा करत।” साझा आबाक दोसर कारीगर अपन घटक लागत स्वीकार केलक; सावकारक अनिवार्य संयुक्त ऋण बिना ओ सभ सीमित खेपक साझेदारी पर हस्ताक्षर कएलक। निरु जानैत छलीह जे छोट खेपमे फायदा घटत, मुदा घातक उधारीमे अपन सम्पूर्ण घर दाँवपर नहि लगत।

साँझक लेल राखल पहिल नमूनामे निरुक संग काम करनिहार एक किशोरी अपन नाम लिखबाक कहलीह। साझेदारीक प्रारूपमे केवल तीन घरक मुखियाक नाम छल; काजक घण्टा गननिहारक नाम नहि। निरु लेखनिकसँ पुछलीह जे आँगुरि जरि गेलाक पट्टी आ बासन पकेबाक निगरानी ककर हिसाबमे जाएत। ओ किशोरीक सहमति लऽ ओकरा

प्रशिक्षु श्रमिकक अलग पङ्क्तिमे दर्ज करौलीह। ओहि पङ्क्तिसँ तात्कालिक मजदूरीक दाम तय भेल, मुदा भविष्यमे साझेदारीक हिस्सा भेटत की नहि, तकरा लेल फेर बैठक राखल गेल।

हाटक मुहाने कमलेश खटिक एकटा पेटी लऽ अएलाह। हुनका देखिते दू व्यापारी कानमे ‘ओहि लाल पट्टी’क बात फुसफुसाए लगल। पहिनुक बजार-विवादमे रंगक समानताक आधारपर पूरा समुदायपर आरोप कएल गेल छल। कमलेश आज पट्टीक संग खरीदक मूल बिल, सामान देनिहारक नाम आ विद्यालयक उपयोग-आदेश अनने छलाह। “हम लाल वस्तु बेचलहुँ, ई साँच,” ओ कहला, “मुदा जे गलत खेप पकड़ायल ओकर अपराध हमर जातिक नाममे कोना चढ़ल?” लेखनिक हुनकर बयान बीचमे रोकए चाहलक, मुदा रमा कहलीह, “पहिने सभ पर्ची देखू।”

एक नव गवाह कहलक जे ओ एक पट्टी देखल छल, मुदा विक्रेताकेँ नहि। कमलेश गवाहपर गरजलाह नहि। “अहाँ जे देखलहुँ से कहू। हमर बिक्री देखलहुँ?” गवाह ‘नहि’ कहलक। रमा गवाहीक कात ई सीमा जोड़लीह। विद्यालयक प्राप्ति-रजिस्टरमे कमलेशक दू पट्टीक उपयोग मंचक पर्दा बाँधबामे दर्ज छल; एतबासँ दोसर व्यापारक समस्त अपराध सिद्ध वा असिद्ध नहि होइत, मुदा कमलेशक विरुद्ध एहि वस्तुसँ उठल आरोपक आधार टुटि गेल। सार्वजनिक पटपर सामूहिक दोषक वाक्य हटाओल गेल।

कमलेश पुरान बदनामीक कारण रुकल दू ग्राहकक नाम कहबाक बदला अपन खाली पेटी बजौलक। “ई आवाज सुनू,” ओ कहलनि, “दाम बुझबाक लेल ग्राहक सभ पहिले अबैत छल। आब आवाज सुनि लोक हटि जाइत अछि।” ओ आर्थिक क्षतिक अलग दावा दाखिल कएलनि। तत्काल कोनो व्यापारीक दोषक निर्णय नहि भेल। मुदा समितिक लिखित उत्तरमे कमलेशक व्यक्तिगत खरीद-बिक्रीक खाता स्वीकार भेल, आ समुदायपर सामूहिक आरोप टिकबैत रखबाक अनुमति नहि देल गेल।

मंगरी गोराइत दिन ढललापर पुरान कारखानाक बन्द फाटकसँ लौटलीह। हुनका हाथमे सात श्रमिकक सूची आ कारखानाक छँटनी-वेतनक नकल छल। ताला खोलएवला आदमी फेर नहि भेटल। शिविरक एक अधिकारी कहलनि जे पुरान मालिकक नामक भरोसापर बकाया सही मानि लेल जाय। मंगरी उत्तर देलीह, “मालिक पहिने छलाह, एखन कारखाना

बन्द अछि। हुनकर नामें हमरा देय नहि भेटल। सूचीमे जे लिखल अछि, ओकर हाजिरी आ वसूल कएल ठेकाक रकम जाँचू।”

हुनकर दलक एक श्रमिक कहलक जे यात्रा-किराया नहि रहला पर अगिला सुनवाईमे नहि आएत। मंगरी अपन गमछाक गाँठ खोलि किछु सिक्का टेबुलपर रखलीह, मुदा रमा तुरन्त रोकलीह। “अहाँक निजी सिक्का सभक सरकारी सुनवाईक खर्च नहि बनय,” ओ कहलीह। शिविर दल आवेदनक प्रतिलिपि मुफ्त दए सकत; यात्रा-खर्चक स्वीकृति लेल पृथक निवेदन पठाओल गेल। सातमेसँ चारि श्रमिकक हाजिरी आ वेतन-कटौतीक अवधि प्रारम्भिक रूपसँ मिलल, शेष तीनक दस्तावेज मँगाओल गेल। अगिला सुनवाईक तारीख प्राप्ति-पर्चीपर लिखल गेल।

मंगरी पर्ची देखैत कहलीह, “हमरा फेर तिथि भेटल, रुपैया नहि। ई फर्क लिखू।” रमा ओहि वाक्यक सामनासँ ‘सम्पन्न’ शब्द काटि देलीह। दलक अधिकारी पुछलक जे कतेक बेर फाइल खोलल जाएत। मंगरी उत्तर देलीह, “जतेक बेर देयक बिना फाइल बन्द करबाक कोशिश होएत।” हुनकर स्वर ऊँच नहि छल। बच्चा एकटा लोहाक पुरान बोल्ट जमीनपर घुमबैत छल; बन्द कारखानाक फाटक ओकरा लेल खेलक वस्तु रहि गेल छल, मुदा मंगरीक घरमे ओ फाटक एखन अनुपस्थित मजदूरीक एक कड़ा चिन्ह छल।

साँझमे सोना कठौतिया अपन ढुलाईक बही संग पहुँचलि। बेड़ी लिखल एक पुरान पड़ावक रसीद पर भुगतान रोकल गेल छल, किएक तँ अधिकारी ओकरा वर्तमान जलमार्गक नक्शासँ मिलाओल चाहैत छल। सोना कहलीह, “हम ओ ठाम धरि गाड़ी गेलहुँ जकर नाम पर्चीमे अछि। नदीक धारा कतेक फाँट गेल अछि, से हम कहि नहि सकैत छी।” रमा पड़ावक नाम जसक तस राखलीह आ यात्रा-फेरा, सामानक प्राप्ति आ भाड़ाक देय अलग मिलौलनि। बेड़ी नामसँ कोनो अज्ञात नदी-संगम प्रमाणित नहि भेल; सोना लेल विवादरहित भाड़ाक जाँच आगाँ बढ़ल।

ठीक तखन नाहिद मोगल फोनपर अपन मातृपरिवारसँ बात करैत आँगनमे प्रवेश कएलीह। हुनका भेजल नब गिरवी-प्रस्तावमे लिवरी नामसँ पहिचानल पुरान खेतक उल्लेख छल, मुदा हिस्साधारी सभक लिखित सहमति नहि। एक भाय फोनमे कहलक, “पण्डितजी कहने छथि ई जमीन परिवारक अछि, तँ सभक अनुमति मानल जायत।”

नाहिद शान्त स्वरमे कहलीह, “परिवारक छी तें परिवारक हर व्यक्ति उत्तर देत। हमर हिस्सा पर हमर सहमति अहाँक मुँहसँ नहि लिखायल जाएत।” ओ नब कागद वापस पठेबाक कहलनि।

नाहिदक माय पुरान लिवरीक नदीक कात धान रोपबाक स्मृति सुनौलीह। नाहिद ओकरा अपन थैलीक भीतर बचा कऽ रखलीह, नक्शाक अधिकारीक सामने निश्चित भूसीमा बनाकऽ नहि। शारदा कसौधनसँ प्राप्त पुरान ऋण-बहीक नकल मिलाओल जाएत, मुदा कोन हिस्सा गिरवी होइत अछि से वैधानिक जाँचक बिना निर्धारित नहि भेल। नाहिद ओहि दिन एकटा निर्णय कएलीह—घरक वास्तविक ऋणक गणना लेल बैठकीमे जाएब, मुदा गिरवीक प्रस्तावपर हड़बड़मे सही नहि करब। हुनकर भाय फोन काटि देलक।

सरिता फोनपर एहि सभक समाचार सुनलीह। ओ कार्यालयमे नैराक पुरान कलमदानक बगल एक प्रतिक पन्ना राखने छलीह। रमा कहलनि जे पाँच व्यवसाय-समूहक अलग आवेदन पहुँचल अछि। “कतेकटा पूरा भेल?” सरिता पुछलीह। रमाक उत्तर आयल, “ककरो अनुबन्ध बदलल, ककरो आरोप हटेलहुँ, ककरो सुनवाईक तारीख भेटल; भुगतान सभक नहि पहुँचल।” सरिता सार्वजनिक प्रतिवेदनमे ‘समाधान’ लिखबाक बदला प्रत्येक निर्णयक स्थिति अलग राखबाक कहलनि। नैराक अभाव ओहि पन्नाक एकटा चिह्न नहि छल; कबीर ओकरा देखैत चुपचाप खिड़की बन्द कएलनि।

राति हरिमोहनक छापाखानामे ईशान नब संस्करणक भूमिकाक पहिल मसौदा लऽ अएलाह। मैथिली ओतय अपन प्रमाणित सहलेखनक सुधार-पत्रक दू प्रति तह करैत छलीह। ईशान कहला, “आचार्यक प्रतिष्ठासँ विद्वानक कथन स्वीकार कएल जाइत अछि। एहि पोथीक भूमिकामे हम लिखि सकैत छी जे हमर निर्णय अन्तिम अछि?” मैथिली नव पन्ना हाथमे लेलनि। “अहाँक सत्यापित काम अवश्य लिखू” ओ कहलीह, “मुदा पाठकक प्रश्न रोकबाक नाम प्रतिष्ठा नहि। हमर हस्ताक्षरक प्रमाण मानब, हमर तर्कक समीक्षा नहि—ईहो गलत होएत।”

ईशान मसौदामे ‘हमर ग्रन्थ’क पाछाँ छोट खाली जगह छोड़लनि। मैथिली ओकरा सँ अपन श्रेयक वाक्य लिखबए नहि चाहलीह; ओ तर्कक जाँच योग्य स्रोत देखेबाक आग्रह कएलीह। हरिमोहन छापाखानाक कोनमे ढेर भेल पुरान प्रतिक लागत गनैत छलाह।

सुधार-पत्र बाँटबाक खर्चक पहिल बिल तैयार रहैक। ईशान अपन लेखकीय मानदेयक हिस्सा देबाक प्रस्ताव फेर रखलनि; प्रकाशक अपन स्वीकार कएल वितरण-खर्च देबाक प्रतिबद्धता दोहरौलक। दूनूक दाम आ जिम्मेदारी अलग लिखल गेल।

अन्तमे मैथिली भूमिकाक आरम्भमे एक पन्ना अलग खसकौलीह। ओकर ऊपर ‘प्रमाता’ लिखल रहैक। ओ कहलीह, “ई शब्दक अर्थ ओ लोक सेहो बुझए चाही जे सही बात कहबाक लेल ककरो दरबारक नाम नहि लैत। मुदा हुनकर देय तर्कक उदाहरणमे विलीन नहि करब।” ईशान पन्ना पढ़लनि, पहिल वाक्यमे रहल ‘अचूक’ शब्द काटि देलनि। बरामदाक बाहर हाटक अंतिम पसार समेटल जा रहल छल; सरोज अपन जालक नब गाँठ परखैत छलीह। कागदपर आ जालमे अलग-अलग गाँठ रहल, मुदा दुनू ठाम खोलबाक लेल सही हाथक पहचान जरूरी छल।

अध्याय १६३ • पुरान पुस्तक नव भूमिका

हरिमोहन छापाखानाक खिड़कीमे रातिभरि सुखायल प्रूफ टाँगने छलाह। भोरक पातर घाम कागदक एक कात पकड़लक, दोसर कात एखन स्याहीसँ गीले छल। ईशान कुर्सी खसकौलनि तँ मेजपर रहल पुरान संस्करणक आवरण सरकि कऽ नव भूमिकाक ऊपर आबि गेल। आवरणपर हुनकर नाम छल, भीतर तर्कक ओ पन्ना छल जतए मैथिलीक नाम छूटल रहि गेल छल। ईशान दुनू कागदकेँ अलग कएलनि। “आब पहिल पाँतिमे की लिखब?” ओ हरिमोहनसँ नहि, मैथिलीसँ पुछलनि। मैथिली खिड़कीपर टाँगल पन्ना उतारि मेजपर पसारि देलीह।

“जतबा अपने लिखलहुँ, ओहि पर अपने नाम,” मैथिली कहलीह। “जतए हमर प्रश्न आ प्रतिवाद अछि, ओतए दुनूक नाम। आ जतए सरिताक नकल अछि, ओतए हुनकर श्रमकेँ लिखबाक लेल अलग जगह।” ईशान पुरान भूमिकाक वाक्य पढ़लनि—‘ग्रन्थक सम्पूर्ण विचार हमर स्वतन्त्र साधनाक फल।’ ओ पेंसिलसँ ‘सम्पूर्ण’ काटि देलनि। कागद नब छल, मुदा एहि एक शब्दक काटाइमे हुनकर पुरान आत्मविश्वासक ध्वनि छल। “तखन हमर वास्तविक काज पाठक कोना बुझत?” ओ पुछलनि। मैथिली उत्तर देलीह, “जतए अपनेक विचार अछि, ओकर प्रमाण लिखू। हमरा नाम छपलासँ अहाँक पन्ना उजड़ि नहि जाएत।”

ईशान लेखनक बही खोललनि। पहिल खण्डक हेतुक्रम हुनकर अपन हस्तलिपिमे छल, दोसर खण्डक किछु मूल प्रश्न मैथिलीक पन्नासँ अएल छल, आ तेसर खण्डमे सरिताक सुनल ग्रामीण उदाहरणक शब्द रहैक। एक प्रश्नक मूल लेखक निश्चित नहि भेटल। ईशान ओहि ठाम अनुमानसँ ककरो नाम नहि लिखलनि। “एहि अंशक प्रमाण फेर मिलाओल जाएत,” ओ स्वयं कहलनि। हरिमोहनक चेहरापर चिन्ता आयल। पुरान पुस्तकक हजार नहि, मुदा जतेक प्रति निकलि चुकल छल, ओ सभ बाजार आ पुस्तकालयमे बिखरल। नव भूमिका छपब आसान छल; पुरान भूलकेँ पाठक धरि वापस पहुँचेब महँग।

छापाखानाक छोट आँगनमे दू नव प्रशिक्षु पन्ना सुखबैत छलाह। हुनकासभमे सँ एक लड़की पुछलक जे सुधार-पत्र कतेक लोक पढ़त, जखन पुस्तक खरीदल लोक अगिला बेर

एतय फेर नहि आओत। हरिमोहन पुराने ग्राहकक पता-पंजी देखौलनि। बहुते पतापर केवल गामक नाम छल; किछुमे डाकघर तक लिखल नहि। मैथिली कहलनि, “जे पाठक धरि पहिल पुस्तक गेल, ओकरा खोजबाक श्रम सेहो प्रकाशनक हिस्सा थिक।” लड़की पत्रक संग छोट सूचना रखबाक सुझाव देलक, जाहिमे पाठक अपन प्रति आनने बिना संशोधन मँगबा सकथि। ईशान ओकर सुझाव नव भूमिकासँ अलग वितरण-योजनामे लिखलनि।

छापाखानाक मालिक बजलाह, “सुधार-पत्र हमर खर्चपर छपल, एकर बादो पूरा किताब फेर सँ छापब?” मैथिली पिछिला दिनक लिखित सहमतिपत्र हुनका देखौलीह। ओहिमे साफ छल—पुरान प्रतिक संग बिना मूल्य संशोधन-पत्र पहुँचेब, आ अगिला मुद्रणमे स्वीकृत प्रकरणक सहलेखन स्पष्ट छापब। ईशान अपन पारिश्रमिकक हिस्सा सुधारक लागतमे देबाक प्रस्ताव दोहरौलनि, मुदा पूरा भार सरिताक भुगतानपर नहि सारबाक शर्त जोड़लनि। सरिता छापाखानामे छलीह नहि; हुनकर योगदानक लेखा हुनकर अनुपस्थितिमे घटाओल नहि जा सकैत छल। हरिमोहन दुनू मदक अलग प्राप्ति-पत्र लिखलनि।

मैथिली पुरान भूमिका जोर सँ पढ़ए लगलीह। भाषा भव्य छल—पराजित विरोधी, अचूक निष्कर्ष, अखण्ड परम्परा। ओ रुकि कऽ ईशानकेँ तकलीह। “ई कोन बहसक वर्णन थिक, जतए विरोधी स्वयं उत्तर देबाक अवसर पएल?” ईशान बहीक पन्ना पलटलनि। किछु शास्त्रार्थक उद्धरणक स्रोत भेटल, किछुक पाठभेदक संकेत मात्र। उदयनक ज्ञान-विवाद पर हुनका लिखल स्वतंत्र विवेचनक अपना महत्त्व छल, मुदा ओकरा ‘अन्तिम सिद्धि’ कहबाक आधार नहि। ओ नव भूमिकामे लिखलनि जे प्राचीन पोथीक वाक्य, नव व्याख्या आ अप्रमाणित पाठभेद अलग चिन्हित रहत।

ओहि घड़ी सरिता अएलीह। हुनका हाथमे छोट कपड़ाक थैली आ रसीदक दू प्रतिलिपि छल। नैराक मृत्यु पाछाँ घरक शान्ति आर पहिनुक जकाँ नहि रहल, मुदा ओ दिनक काम लेल निकलल छलीह। “हमरा धन्यवाद-पत्रक पहिले बकाया नकलक दिन देखाउ,” ओ कहलीह। हरिमोहन हुनकर कामक अलग सूची पसारलनि; किछु दिनक पारिश्रमिक पुष्टि भेल छल, दू दिनक आदेशक हस्ताक्षर शेष। सरिता जाँचल पाँति पर सही कएलीह, अनिर्णीत पाँति खाली छोड़लीह। “जे बात हमर स्मृतिसँ सुनल, ओकरा उद्धरण बनाउ तँ

हमर कहल शब्दक पुष्टि हम करब। हमर बातकेँ मैथिलीक तर्क नहि कहू, आ मैथिलीक तर्ककेँ हमर नकल नहि।”

सरिता अपन थैलीक भीतरसँ नैराक एक पुरान कागद निकाललीह। ओ ककरो देखौलनि नहि; मात्र मोड़ल किनार सीधा कएलीह। “हमरा घरमे जे अनुपस्थिति अछि, तकरा किताबक भूमिका ठीक नहि कऽ सकत,” ओ धीरे सँ कहलीह। “मुदा जे कागदपर बाँचल काज अछि, ओकर दाम आ ओकर नाम मिटब जरूरी नहि।” मैथिली सरिताक सामने कोनो बड़का वाक्य नहि कहलनि। किछु समय दुनू चुप रहलीह। बाहरक सड़कपर दूधक साइकिल गेल। हरिमोहन सरिताक दू अपूर्ण दिनक रजिस्टर अलग राखि कागदक तिथि फेर जाँचए लगलाह।

दुपहरि धरि छापाखानाक दुआरपर माछबजारसँ विनोद केवर्त पहुँचलाह। हुनकर अंगोछामे भीजल तौल-पर्ची रहैक। ओ पुरान संशोधन-पत्र लेबाक लेल नहि, पुस्तकालयमे रखबाक नव नियम-पुस्तिकाक भाषा बुझबाक लेल अएल छलाह। बजारक थोक ठेकेदारक विशेष छूट छोट विक्रेतासभक हिस्सा खा रहल छल। समिति निर्णय लेने छल जे टोकरीक वास्तविक तौल, बर्फक खर्च आ विक्री-स्थानक शुल्क अलग होएत। मुदा ठेकेदार नव कागदमे ‘सभ विक्रेताक सहमति’ लिखि छोट लोकक हस्ताक्षर बिना अपन छूट बचबए चाहैत छल।

विनोद पर्ची टेबुलपर रखलनि। “हमर बेटी छॉहमे माछ बेचय चाहैत अछि। ठेकेदारक गाड़ी छॉहमे, ओकर टोकरी घाममे। शुल्क समान, सुविधा अलग। कहल गेल छूट ठेकेदारकेँ भेटत किएक तँ ओ बेसी माछ अनैत अछि।” ईशानक सामने मेजपर ‘सहमति’ शब्द छल; हुनका एक क्षण पहिने अपन पुस्तकक पुरान ‘सम्पूर्ण’ याद पड़ल। मैथिली विनोदसँ पुछलीह, “अहाँ सभक प्रतिनिधि के?” विनोद दू छोट विक्रेताक नाम देलनि, मुदा कहला, “हमर हस्ताक्षरसँ ओकर सभक हिस्सा तय नहि होएत।” हरिमोहन बाजारक अधिकारीक लेल अलग आवेदक-पन्ना तैयार कएलनि।

बजारक अधबीच एक व्यापारी विरोध कएलक जे ठेकेदारक छूट घटलासँ थोक खेपक लागत बढ़त, फलस्वरूप सभक माछ महँग होएत। विनोद ओकरा मौन नहि करौलनि। ओ तौल-पर्चीपर पहिल दिनक दर आ आजुक दर देखौलनि, आ कहलनि जे असली लागतक

जाँच भेलापर न्यूनतम सुविधाक खर्च केकर हिस्सा, से साफ हो सकत। अधिकारी सभक समक्ष तीन दिनक परीक्षणक शर्त राखलनि। छोट विक्रेताक छाँहक ठाम चिन्हित होएत, थोकवालाक नव परिवहन-खर्चक प्रमाण अलग मँगाओल जाएत। एतबे तय भेल; बजारक पाछूक उधारी एखन नहि सुलझल।

रमा फोनपर बजारक आदेश पढ़ि सुनौलीह। ठेकेदारक विशेष छूट घटत, आ ओहि घटल हिस्सासँ छोट विक्रेताक न्यूनतम स्थान-सुविधा लेल अलग मद बनत। ई तत्काल लागू होएबाक अस्थायी निर्णय छल; पिछिला वसूलीक रकमक समायोजन अगिला सुनवाईमे। विनोद आदेशक प्रति अपन अंगोछामे राखि लेलनि। हुनकर बेटीकेँ छाँह भेटत, एकर भरोसा एखन आदेश मात्रसँ नहि भेल छल। मुदा टोकरी उठएवला दू स्त्रीक नाम पहिल बेर छूटक कागदमे स्पष्ट लिखल गेल। विनोद कहला, “थोकवला लेल नियम लिखल रहत तँ छोट लोक लेल ओकरा पढ़ल जाए।”

विनोद गेलाह तँ सोना कठौतिया अपन गाड़ीक घण्टी बजबैत पहुँचलि। हाटसँ आयल मोटरक चाकमे धूलि भरल छल। सोना बेड़ी पड़ावक पुरान भाड़ा-पर्चीक नया मिलान संग अनने छलीह। सामग्री पहुँचलाक प्राप्ति सत्यापित छल, मुदा पहिनुक दानदाताक नामवला पट्टपर सामानक श्रेय एकटा व्यापारीक कहल गेल छल। “गाड़ी हमर, चालकक राति अलग, डीजलक दाम अलग,” सोना कहलीह, “मुदा उद्घाटनपर फूल ओ लोक लेल जकर फोटो छपल। फोटो लऽ लिअ, हम नहि रोकब; हमर भाड़ा फोटोमे समेटि नहि दिअ।”

हरिमोहन एकटा रसीद ठेलि सोना दिस देलनि। ओ भाड़ाक विवादरहित हिस्साक भुगतान-आदेश छल, रकम जमा भेलाक सूचना नहि। सोना शब्द पढ़ि हलकासँ टोकलीह, “आदेशक कागद देलहुँ; रुपैया भेटल लिखब तँ गलत होएत।” सरिता भुगतान-पंजीमे ‘जारी आदेश; प्राप्ति प्रतीक्षामे’ अंकित कएलीह। दानक सार्वजनिक श्रेयक बोर्ड अलग संशोधित होएत; जकर वाहनक दाम देय अछि, ओकरा दानकारी बना कऽ नहि देखाओल जाएत। ईशान अपन नव भूमिकाक कात एक टिप्पणी जोड़लनि—दूसरक साधनसँ कएल काजक श्रेय देबाक लेल ओकर नाम मेटेनाइ जरूरी नहि।

दू घड़ी बाद फूलचन लोध अएलाह। पएरक नीचाँ चिपचिप माटि सुखि कऽ पपड़ी भऽ गेल छल। पुनर्वासक कागदमे हुनका गामसँ बहुत दूर एक खाली भूखण्ड प्रस्तावित छल।

कार्यालयक कर्मचारी लिखने छल—बराबर क्षेत्रफल, एहि लेल बराबर विकल्प। फूलचन छापाखानाक पछिला आँगनमे माटिक छोट ढेला फोड़ि देखौलनि। “ई हमर खेतक माटि नहि,” ओ कहलनि। “मुदा जे ठाम दऽ रहल छथि, ओतए पानि पहुँचएबाक बाट नहि, हाट धरि माल लऽ जाएब दू घण्टाक दूरी। खाली जमीन देखेला पर खेती कोना चलत?”

फूलचनक लड़का दूरक जमीनक पक्षमे छल; ओकरा ओतए छोट घर भेटबाक आशा छल। पिता खेतीयोग्य माटि, सिंचाइ आ रोजीक बाटक हिसाब माँगैत छलाह। दूनू एके घरक लोक, मुदा चाह अलग। सरिता हुनकासँ घरक सुरक्षा आ आजीविकाक जरूरत पृथक लिखबौलीह। अधिकारी फोनपर फेर ‘बराबर धूर’ दोहरौलक। फूलचन कहलनि, “जँ घर लेल ई ठाम, तँ खेती लेल ककरा खेतमे मजदूरी करब से लिखि दिअ। घरक प्रमाणपत्र भूखक इलाज नहि।” अन्तमे दूरक भूखण्ड तत्काल स्वीकार करबाक दबाव स्थगित भेल; नजदीक खेतीयोग्य विकल्पक स्थल-जाँच निर्धारित भेल।

फूलचनक लड़का ओहि आदेशसँ प्रसन्न नहि भेल। ओ पुछलक, “तखन घर भेटब देरि होएत?” पिता उत्तर देलनि, “हो सकैत अछि। तों जँ अलग रहबाक विकल्प चाहै छँ, से सुनब। मुदा हमरा खेतक नामपर पत्थरक छायाँ नहि चाही।” सरिता दूनूक मत अलग दर्ज कएलीह। कार्यालय ओकरा गामक सर्वसम्मति कहि नहि सकैत छल। एहि निर्णयक कीमत समय छल—फूलचनकेँ फेर एक मौसम अस्थायी आश्रयमे रहए पड़ि सकैत छल। ओ एहि सम्भावनाक कागद बटोरि रखलनि, जेना देरीक सचाइ सेहो अधिकारक एक हिस्सा हो।

बाहर धूप पातर भेल तखन लक्ष्मी झाँगड़ अपन तेल-लागल कागदक थैली लेने अएलीह। हुनका पुरान श्रम-अनुबन्धक दू अतिरिक्त पन्नाक प्रमाणित प्रति भेटल छल। मूल अनुबन्ध एक दूरक कार्यालयमे एखन बन्द छल। एक पन्नापर दादाक कामक मौसम, दोसरपर रहबाक व्यवस्था आ उधारीक काटल रकम। कर्मचारी पहिने सबटा ‘परिवारक ऋण’ कहलनि। लक्ष्मी शान्त स्वरमे कहलीह, “रहनाइ मजदूरीक बदला छल की उधार, एकरा खुला पढ़ू। हमर दादाक सही पुरान अछि; हम ओकर नामपर झूठ भुगतानक रसीद नहि देब।”

लक्ष्मी जखन थैलीसँ पन्ना निकाललीह, हुनकर भाय सेहो दुआर लग ठाढ़ छलाह। ओ कहला, “अतेक पुरान काजक पैसा के देत? एतबे कागद लऽ लऽ घरक लोग थाकि गेल।” लक्ष्मी एक क्षण भायक दिस देखलीह। “हमर दादा जँ ऋण देने छलाह, तकर प्रमाण खोलू। जँ मजदूरी दाबल गेल, तकरो खोलू। थाकब प्रमाण नहि।” भाय हुनकर थैलीक डोरी सम्हारि देलनि। ओ दिन हुनका भाइसँ सहमति नहि भेटल, मुदा कागद ढोबाक भारमे ओ एकला नहि रहलीह।

मैथिली हुनका कागदक ओ पाँति पढ़ि सुनौलीह जतए ‘देय’ आ ‘कटौती’ शब्दक बीच स्याही पसारल छल। लक्ष्मी कहलनि, “एतय अनुमान नहि, मूल प्रति चाही।” हुनका दूनू नकल प्राप्त भेल, दावा दाखिल करबाक स्वीकृति सेहो; मुदा मजदूरीक रकमक पुष्टि एखन बाकी। ओ थैली बन्द करैत कहलनि, “हमर दादा वापस नहि आओताह। हुनकर कामक देय पर हमर अधिकारक जाँच हो, ई एतबाक माँग अछि। पूरा हिसाब भेल लिखि हमरा विदा मत करू।” सरिता प्राप्ति-रसीदपर ‘अनुबन्ध-प्रति उपलब्ध; दावा परीक्षणाधीन’ लिखलनि।

तुलसी दोनवार साँझक कात अएलाह। हुनकर टाटमे बान्हल कागदक दू गट्टर छल। एकमे कटल खेतक पुरान नाप आ ऋण; दोसरमे दोसर गामक परिवारिक उपयोगाधिकार। पुरान कार्यालय एक पत्ताक आधारपर दोसर गामक दावा काटबाक प्रयत्न कएने छल। नव शिविरक पत्रसँ ओ आदेश स्थगित भेल, मुदा दोसर गामक अधिकार पंजीमे पूर्ण चढ़ल नहि। तुलसी मेजपर दू गट्टर अलग रखि कहला, “ई खेत पुरान बहावक कात छल, ई बाट दोसर गामक अछि। हमर नाम दूनू ठाम रहबासँ जमीन एक नहि भऽ जाइत।”

तुलसीक संग बदरी नोनफर आएलाह। हुनकर मोड़ल पुनर्वास-पत्रक पाछू बुढ़नद नामक पुरान खेतक उल्लेख छल। नव निवासक प्रस्तावमे पानिक नल आ बच्चाक बाटक घरधरि पहुँच एखन जाँचमे। बदरी कहला, “आइ हमरा एक रातिक ठाम चाही, आ पुरान खेतक दावा अलग रहत। ई पर्ची हम धरती छोड़बाक सहमति कहि नहि देलहुँ।” तुलसी कहला, “हमर दोसर गामक कागदसँ बदरीक खेत सिद्ध नहि होइत। मुदा कागद अलग राखबाक अधिकार दुनूकेँ चाही।” सरिता दुनू आवेदनक पंजी-संख्या फराक कएलीह।

एक सहायक ‘बुढ़नद’क नामकेँ वर्तमान नक्शामे अनुमानसँ जोड़ए लगल छल। अदिति फोनपर स्पष्ट कएलीह जे मूल राजस्व नकल आ स्थल-मापन बिना खेतक सीमा निर्धारित नहि होएत। ओहि मेजपर सरोज खरकौटक नया जाल-लागतखाताक प्रति सेहो छल, जाहिमे ‘बलथी’ छोट अलग टोलीक नामक रूपमे आएल छल। रमा संदेश पठौलीह— बलथीकेँ पक्के नदी-संगम लिखि नक्शामे नहि उतारब। सरोजक जाल-समूहक लागत आ तुलसी-बदरीक जमीनक दावा तीन अलग विषय छथि। सरिता सहायककेँ पन्ना फेर लिखबौलीह, बिना ओकरा अपमानित केने।

साँझक छापाखानामे कागदक ढेर घटि गेल छल। हरिमोहन नव भूमिकाक अंतिम प्रूफ लऽ अएलाह। ईशान अपन लिखल अंशक विस्तृत सूची बनौने छलाह—कोन अध्यायक मूल तर्क हुनकर, कोन निर्दिष्ट प्रकरण मैथिलीक प्रमाणित सहलेखन, कतए प्राचीन स्रोतक पाठान्तर अनिर्णीत। पहिल मसौदाक ‘हमर पुस्तक’क जगह ‘एहि पुस्तकक लेखन आ सहयोग’ लिखल छल। मुदा मैथिली कहलीह, “सहयोग शब्दसँ हमर सहलेखन फेर छोट नहि होबाक चाही।” हरिमोहन शीर्षक-पृष्ठक संशोधनक प्रति खोलि देलनि। ओतए स्पष्ट नाम छल।

हरिमोहन भूमिका पढ़ैत अचानक एकटा शब्दपर रुकलनि—‘निष्कलुष’। ईशान कहलनि जे हुनकर अपन मूल व्याख्यापर कोनो आपत्ति नहि छल। मैथिली पुछलीह, “कोनो पुस्तक निष्कलुष होइते कोना अछि, जखन हम एखने ओकर भूलक प्रति भेजि रहल छी?” ईशान किछु देरि सोचलनि। शब्दक बदला लिखलनि—‘संशोधनक लेल खुला’। एहि छोट बदलावसँ पुरान तर्कक अर्थ नहि बदलल, मुदा पाठककेँ प्रतिवाद करबाक स्थान भेटल। नव भूमिकामे ओ पहिल बेर विरोधीक सम्मान प्रशंसाक अवसर जकाँ नहि, जाँचक आवश्यक शर्तक रूपमे लिखि सकलाह।

ईशान नव भूमिकामे एक वाक्य स्वयं जोड़लनि—“जे प्रकरणमे मैथिलीक मूल प्रश्न, वैकल्पिक हेतु आ प्रतिवादक संशोधन प्रमाणित अछि, ओतए ओ सहलेखिका छथि; ओहि सीमासँ बाहरक लेखनक श्रेय स्वतंत्र रूपसँ जाँचल जायत।” ओ वाक्य पढ़लनि आ बुझलनि जे ई स्वीकारोक्ति हुनका अपमानित करबाक लेल नहि; गलत श्रेयसँ मुक्त करबाक लेल सेहो अछि। मुदा मैथिलीक चेहरापर विजयक उल्लास नहि छल। सरिताक

भुगतान-पत्रक दू दिन एखन बकाया, पुरान प्रतिक वितरकसभमे सँ तीनक उत्तर नहि, आ संशोधनक खर्चक एक किस्त प्रकाशकसँ अएबाक बाकी छल।

हरिमोहन पुछलनि, “पुरान प्रति वापसी लेल कहब, कि ओकर बगलमे संशोधन-पत्र रहत?” मैथिली कहलीह, “पुरान प्रति नष्ट कएलासँ इतिहासक गलती नहि मेटाएत। जकर लग पुस्तक अछि, ओकरा सुधार-पत्र पहुँचू। अगिला मुद्रणमे सही श्रेय रहत। जकर लिखल तर्क एखन अनिश्चित, ओतए खाली ठाम छोड़ू।” ईशान सहमत भेलाह। ओ नव भूमिकाक पहिल प्रति पुस्तकालयक लेल अलग कएलनि, दोसर छापाखानामे राखलनि आ तेसर सरिताकेँ जाँचबाक लेल देलनि। सरिता अपन नाम पढ़ि कहलीह, “नकलक दिनक संख्या पर हमरा किछु आपत्ति अछि; काल्हि हिसाब देखब। बाकी शब्द एखन ठीक अछि।”

दरवाजाक बाहर विनोद केवर्त अपन बेटी संग गुजरैत छलाह। बेटी हाथमे नब विक्रेता-पर्ची लऽ कहलनि, “बाबू, छाँहक ठाम एखन देखबाक अछि, मुदा हमर नाम तऽ लिखल अछि।” विनोद उत्तर देलनि, “लिखल नामक काज तखन पूरा, जखन ओहि ठाम टोकरी राखि सकब।” भीतर मैथिली ई बात सुनलीह। ओ अपन छपल नामकेँ अँगुरीसँ छूलीह, मुदा खिड़की दिस तकैत रहलीह। छापाखानाक दीया जरल। ईशानक नव भूमिका अपन जगह पाबि गेल छल; कागदक बाहर जकरा जे देय छल, ओकरा पहुँचएबाक बाट एखन खुलल रहैक।

अगिला भोर हरिमोहन पुस्तकालयक बण्डल बाँधए लगलाह तँ उर्मिलाक परिवारक पुरान कपड़ा-मजदूरीक दावा-वला अलग पर्ची छापाखानाक प्राप्ति-बहीमे चिपकल भेटल। सरिता ओकरा भूमिका-संशोधनक रसीदसँ अलग निकालि एक खाली लिफाफामे रखलीह। “ई किताबक खर्च नहि,” ओ हरिमोहनसँ कहलीह। “ओ जे काज कएने छलीह, तकर हिसाब अपन खातामे चलत।” हुनकर आवाजमे नैराक शोकक हलुक कम्पन छल। हरिमोहन लिफाफापर परिवारक नाम आ सम्बन्धित प्राप्ति-अंक लिखलनि। किताबक पहिल नव बण्डल निकलल; दोसर काज लेल अलग दुआर खुजल।

अध्याय १६४ • उर्मिलाक देय

भोरुक उजास छापाखानाक टीनपर पड़ि रहल छल, जखन सरिता उर्मिलाक बकाया-वला लिफाफा उठौलीह। हरिमोहन काल्हि ओकरा पुस्तकक संशोधन-पत्रसँ अलग रखने छलाह। लिफाफाक मुँह गोंदसँ नहि, पुरान सूतसँ बान्हल छल। भीतर उर्मिला रजकक बहिनक देल आवेदनक नकल, घाटपर धुलल कपड़ाक प्राप्ति-पर्ची आ अस्पतालक रात्रिक पालिक छायाप्रति छल। सरिता पहिने पन्ना गिनलीह, फेर सूत फेर बाँधि देलीह। कागदकेँ एके फाइलमे राखनाइ सुविधाजनक छल, मुदा ओहिमे लिखल श्रम एकहि कार्यालयक नहि छल।

हरिमोहनक छापाखानामे आजु नव भूमिकाक प्रूफ जायबाक छल। ओ पूछलनि, “एहि लिफाफाकेँ संग लऽ जाइत छी?” सरिता कहलीह, “हँ, मुदा किताबक रसीदक संग नहि। उर्मिला जे कपड़ा धोने छलीह, ओहि पर हमरा साहित्यिक धन्यवाद देबाक अधिकार नहि।” ईशान कोठरीक दुआरसँ सुनि रहल छलाह। ओ प्रस्ताव कएलनि जे कार्यालय धरि पहुँचबाक गाड़ीक खर्च ओ देताह। सरिता कहलनि, “भाड़ा जँ देब, तँ भाड़ाक रसीद राखब। ओकरा उर्मिलाक देयमे घटेब नहि।” ईशान चुपचाप अपन रुपैयाक थैली सम्हारि लेलनि।

शहरक पुरान धुलाईघाटमे उर्मिलाक बहिन पहिनेसँ बैसलि छलीह। पाटपर धूप पड़ि गेल छल, मुदा उर्मिलाक निर्धारित ठाम खाली छल। उमा रजक पाछाँक कोनमे कपड़ा निचोड़ैत छलीह। बहिनक आगाँ गट्टरक तीन रंगक डोरी छल—रोगीक कपड़ा, सामान्य ग्राहकक कपड़ा आ अस्पतालक आपात पालिक कपड़ा अलग चिन्हय लेल। उर्मिला प्रत्येक गट्टर बाँधबाक समय डोरीक संग नाम आ दिन लिखैत छलीह। बहिन एक डोरी उठौलीह। “ई देखू,” ओ सरितासँ कहलीह, “काजक चिन्ह कोनो मृत्यु-सूचना नहि पड़ि सकैत।”

सरिता एक पर्ची देखबैत पुछलीह, “कतेक रकमक प्रमाण निश्चित अछि?” बहिन कहलीह, “हम रकम बोलि देब तँ अधिकारी ओकरा अन्तिम बुझि लेत। एतय रातिक पालिक हस्ताक्षर अछि; घाटक दू प्राप्ति-पर्ची पर ग्राहकक सही अछि; एक ढुलाईक गाड़ी-नम्बर मेटाएल अछि। जे स्पष्ट अछि, पहिले ओकर पैसा दिअ। जकरा लेल फेर जाँच चाही,

तकर प्रश्न बन्द नहि करू।” उमाक हाथसँ पानि पाटपर टपकल। ओ कहलीह, “हम जे दिन ओकर पाछाँ कपड़ा सम्हारलहुँ, तकर दाम हमरा चाही। उर्मिलाक नामपर नहि।”

बैठक नगरक पुरान अन्न-गोदामक खाली भागमे होमयवला छल। गोमती बेलदार दरबज्जापर उपस्थितिक कागद रखबौने छलीह; रमा कर्णक सामने निर्णय-पत्रक पाँच खाली खाना छल। बहिन दुआरपर अपना नाम लिखेलीह, मुदा परिचयक आगोँ ‘मृतकक प्रतिनिधि’ लिखल देखिकऽ कलम रोकलीह। “हम हुनकर बहिन छी,” ओ कहलीह, “आ एहि दावामे परिवारक सहमत प्रतिनिधि। उर्मिला हमरा भीतर विलीन नहि भेलीह।” लिपिक लिखल शब्द काटि उचित सम्बन्ध अंकित केलक। सरिता लगक कुर्सी खसका देलीह; ओहि ठाम बहिन स्वयं बैसलीह।

पहिल अधिकारी मृत्युक प्रमाणपत्र मेजपर रखलक। “कागद ठीक अछि,” ओ कहलक, “आ सहायता-राशि परिवारकेँ देल जा चुकल अछि। आब फेर कोन मद शेष?” बहिन प्रमाणपत्र हाथमे नहि लेलीह। “उर्मिला मरि गेलीह, ई बात हम पहिनेसँ जनैत छी,” ओ कहलीह। “अहाँ फेर ओहि तथ्यकेँ मजदूरीक उत्तर किएक बनबैत छी?” रमा सहायता-पंजी बन्द कऽ देय-पंजी खोललीह। मृत्युक पुष्टि, परिवारक राहत, अस्पतालक पालि, धुलाईक ठेका आ ढुलाईक भाड़ा पाँच स्वतंत्र शीर्षकमे पढ़ल गेल।

गोमती अपन अँगुरीसँ रात्रिक पालिक अन्तिम प्रविष्टि देखौलीह। अस्पतालक पुरान खाता कहैत छल जे एक पालिक समय पूरा नहि भेल। धुलाईघरक कर्मचारी कहैत छल जे कपड़ा समयपर उठाओल गेल आ लौटाओल गेल। रमा पुछलीह, “समयक गवाही के देत?” उमा बतौलीह जे संकटवला राति उर्मिला आपात कपड़ाक गट्टर लऽ भीतर गेलीह। ओ हुनकर मृत्यु देखबाक दावा नहि करैत छलीह, मुदा गट्टर पहुँचबाक पहिल दृश्य याद छलनि। सुनवाईमे याद, हाजिरी आ प्राप्ति-पर्ची तीन अलग स्तम्भमे लिखल गेल।

ठेकेदारक मुंशी कहलनि, “रोगी बचबामे सभ स्वयंसेवक बनि गेल छलाह; ओहि रातिक विशेष दाम किएक?” उर्मिलाक बहिन अपन बहीक पातर पन्ना खोललीह। “बचाबय गेल लोकक साहसक दाम नहि तय करैत छी,” ओ कहलीह। “मुदा जे कामक लेल पहिनेसँ समय आ दर निश्चित छल, ओकरा दुर्घटनाक नामपर निःशुल्क कोना बना देब?” गोमती

मुंशीसँ लिखित आदेश माँगलनि जे उर्मिलाक स्वीकृत पालि रद्द कएल गेल छल। ओ खाली हाथ ठाढ़ रहल। अनुमानसँ सहमति बनि नहि सकल।

भुगतानक आदेश पर सही होएबाक पहिने बहिन परिवारक दोसर सदस्यक अनुमतिक पत्र निकाललीह। अधिकारी प्रारूपमे लिखने छल जे रकम ‘मृतकक सम्पूर्ण हिसाबक अन्तिम निस्तारण’ मानल जायत। बहिन ओहि शब्दपर कलम रोकलीह। “हम परिवारक सब दिससँ कागद देबाक अधिकार लेने छी,” ओ कहलीह, “बिनु हिसाब देखनहि सभ देय छोड़बाक अधिकार नहि।” रमा अन्तिम निस्तारणक पाँति हटबौलीह। जतबा रकम जाँचल गेल, ततेकक प्राप्ति; बाकी लेल अपन पुरान क्रमाङ्क। बहिन परिवारक सहमतिक प्रति फाइलमे रखौलीह, मूल अपन थैलीमे।

दू गट्टरक प्राप्ति-मिलान तुरन्त सम्पन्न भेल। लिपिक बैंकक पुरान विवरणसँ जाँचि कहलक जे एहि रकमक कोनो पूर्व भुगतान दर्ज नहि अछि। रमा विवादरहित मजदूरी परिवारक स्वीकृत खातामे पठएबाक आदेश जारी कएलीह; बहीमे स्पष्ट लिखौलीह —‘भुगतान-आदेश, प्राप्ति नहि’। बहिन पुछलीह, “पैसा पहुँचत तँ हम कतए देखब?” उत्तर भेटल—बैंकक जमा-पुष्टि आ परिवारक रसीदक नकल दुनू फाइलमे लगत। बहिन सही कएलीह, मुदा अपूर्ण राति-पारिश्रमिकक पाँति खाली नहि छोड़लीह; ताहिमे सुनवाईक अगिला दिन लिखौलीह।

घाटक पुरान ग्राहकक एक किशोर सेहो सुनवाईमे आएल छल। ओकर माय अस्पतालमे अटकल राति उर्मिलाकेँ कपड़ाक गट्टर देने छलीह; एखन परिवारकेँ ओहिमे सँ दू चादरक खोज छल। बहिन कपड़ाक अलग पंजी खोलि प्राप्तिक चिन्ह देखौलीह। “जकर वस्तु उर्मिलाक जिम्मेमे छल, ओहि घरक अधिकार एखनहुँ अछि,” ओ कहलीह। उमा अपन नव धुलाईक ढेरमे देखबाक प्रस्ताव देलीह, मुदा चादर भेटबाक झूठ आश्वासन नहि देलीह। ग्राहकक वस्तु-फितीक दावा मजदूरी आ मृत्यु-राहतसँ पृथक दर्ज भेल। किशोर पर्चीक नकल लऽ घर घुलल।

एहि बीच बाहरी बरामदामे किरण राउत अपन दू खाता पसारि बैसल छलाह। एकमे बटाइक धान, दोसरमे बीहन आ ढुलाईक उधारी। पुरान गोदामक बही ‘साझा पारिवारिक कर्ज’क नामपर बटाइदारसभक माथपर ओहि खेतक खर्च सेहो चढ़ौने छल, जकर निर्णय

खेतमालिक लेने छल। किरण एक पन्नाक कात धानक दाना रखलनि, दोसर पर उधारक रसीद। “ई दाना हमर हिस्सा थिक,” ओ कहलनि, “आ ई कागदमे जे ब्याज जोड़ल अछि, तकर निर्णय के लेने छल?”

मालिकक प्रतिनिधि कहलक जे एकठाम खाता राखलासँ वसूली सहज छल। किरण उत्तर देलनि, “सहज वसूलीसँ सही कर्ज नहि बनैत।” पुरान तौल-पर्ची, बीहनक प्राप्ति आ साझेदारीक हस्ताक्षर मिलान भेल। जतेक साझा ब्याजक आधार नहि भेटल, ओ हिस्सा कम कएल गेल; असली बीहन-ऋण शेष रहल। मालिकक प्रतिनिधि असहमत भेल, मुदा संशोधित रकमक प्रति लऽ गेल। किरण चादरमे बचल धान समेटलनि। घरमे ओ आइ ऋणमुक्त नहि लौटताह, मुदा गलत साझा रकमक बोझ घटल छल।

फूलमती तियर दरबज्जासँ भीतर अएलीह तँ हुनका काँखमे नब जालक आधा बुनल टुकड़ा छल। पुरान साझेदारीक एक साथी चाहैत छल जे बचल ग्राहक वापस आनबाक लेल समूह पुरनकें नामसँ चलय। फूलमती जालक गाँठ खोलि देखौलीह। “पुरान नाममे हमर हस्ताक्षर छल, अधिकार नहि,” ओ कहलीह। “जँ फेर ओहिमे जाएब तँ नब बुनल जालक दामो पुरान देयमे कटत।” हुनकर संग आएल दू युवा महिला अपन-अपन पूँजी आ कामक घण्टा लिखल पर्ची राखलनि।

बजारक एक व्यापारी नव समूहकें अग्रिम देबाक तैयार छल, मुदा शर्त रखलक— समस्त उपज ओकरा एके दामपर देल जाए। फूलमती अग्रिमक थैली वापस सरकौलीह। जालसमूहक निर्णय भेल जे पहिल तीन खेपक वास्तविक लागत लिखल जायत, सदस्यसभक पारिश्रमिक पहिले अलग कएल जायत, फेर बिक्रीक जोखिम बाँटल जायत। पुरान समूहक अपूर्ण विवाद अलग रखल गेल। फूलमती बाहर निकसलीह तँ जालक भीजल सूत हथेलीक रेखामे अटकल छल; ओहिमे ककरो इतिहास मेटल नहि छल, मुदा नब गाँठ हुनकर अपन हाथक छल।

केदार बौरी ओहि समय बस-अड्डासँ चलि पहुँचलाह। दू प्रवासी मजदूर हुनका संग छला; तेसर परिवारक सदस्य दूरसँ आवाजमे बात करबाक स्थिति मे छल। राहतक बरामदा बनबैत जे दिनसभ मजदूरी रोकल गेल छल, तकर सामूहिक दावा पहिने जमा भऽ चुकल छल। ठेकेदार आइ पहिल किस्तक भुगतानक सूचना अनने छल। केदार

सूचनापत्रकें सीधे रकम भेटबाक प्रमाण नहि मानलनि। ओ सभकें लऽ बैंकक सामुदायिक खिड़की धरि गेलाह, जतय प्रत्येक मजदूरक अलग जमा-पुष्टि देखल गेल।

एक मजदूरक रकम पहुँचि गेल छल, दोसरक नाममे खाताक अंक गलती सँ अटकल छल। केदार ठेकेदारसँ कहला, “एकक भुगतानसँ तेसरक दावा समाप्त नहि होएत।” रमा दावाक संग पहिल किस्तक प्राप्ति अलग जोरलनि, शेष मजदूरीक देय आ समय-अन्तराल पर दावा जारी रखलनि। प्रवासी परिवारक सदस्यक अनुपस्थिति ओकर हिस्सा घटेबाक कारण नहि बनल। केदार जखन बाहर आएलाह तँ संगक मजदूर पुछलक, “आब काम पर फेर जएब?” केदार उत्तर देलनि, “काज चुनब तोहर अधिकार, बकाया देबाक जिम्मेदारी ओकर।”

केदारक संगक मजदूर फुलवा अपन फोनपर घरसँ आएल सन्देश सुनौलीह। मकानमालिक एक मासक भाड़ा प्रतीक्षामे रहबाक लिखित तैयारी नहि रखने छल। पहिल किस्त भेटला पर फुलवा भाड़ाक किछु हिस्सा पठौलनि; पूरा परिवारक खर्च एखन नहि चलत। ओ पुछलीह, “कम्पनीक बहीमे हम सेवा कएने छी, मुदा घरक बहीमे कर्जा किएक बढ़ैत अछि?” केदार हुनकर फोनपर बैंक-जमा संदेशक समय लिखबौलक। समितिक फाइलमे फुलवाक निजी घरक पता नहि गेल; केवल भुगतान पुष्टि भेल। बकाया असुली लेल ओ पुनः अदालतक बाट चुनबाक विचारमे रहलीह।

गोदामक एक कोनमे शिव धाँड़ी अपन नामक दू अलग लिखावट देखबैत छलाह। पुरान मजदूरी-पर्चीमे ‘शिव’ छल; बैंकक नकलमे अर्धमेटल अक्षरसँ ‘सिव’ पढ़ल गेल छल। कार्यालय पहिने हुनका अलग व्यक्ति मानि भुगतान रोकि देने छल। शिव अपन समय-पर्ची, कार्यस्थलक गवाही आ पहचानक उपयोगयोग्य प्रति एकठाम रखलनि। गोमती ओकरा उर्मिलाक बहिनक फाइलसँ नहि मिलौलीह; ई दोष शब्दक छल, मृत्यु वा उत्तराधिकारक नहि।

दू स्वतंत्र हस्ताक्षरक मिलान पाछाँ शिवक नाम-सुधार स्वीकृत भेल। बकाया श्रमक विवादरहित रकम हुनकर अपन बैंक-खातामे जमा भेलाक पुष्टि साँझ धरि पहुँचि गेल। शिव प्राप्तिक सही कएलनि, मुदा पुरान देरीक कारण होइत आर्थिक क्षतिक दावा अलग रखलनि। “हमर नाम सुधरला सँ हमर घरे बितल अभावक महीना फेर नहि घुरत,” ओ

कहलनि। गोमती कहलीह, “ताहि लेल संशोधन-पत्रमे देरीक तारीख सेहो रहत।” शिव पहिल बेर कागद मोड़बाक बदला ओकरा सीधा फाइलमे रखलनि।

नूरजहाँ ईटफरोश अपन गदहाक अगिला खुर पानि सँ धोएबैत बाहर प्रतीक्षा करैत छलीह। अस्पतालक पिछिला फाटक धरि ईट पहुँचेलाक पुरान रसीद हुनका लग छल। ठेकेदारक बही ईटढुलाईक भाड़ा सँ पशुसेवाक खर्च काटि एक शेष राशि देखबैत छल। नूरजहाँ खुरक छोट दरार दिस संकेत कएलीह। “गाड़ीमे ईट जतेक उठल, तकर दाम अलग,” ओ कहलीह। “पशु घायल भेल तँ उपचारक देय केकरा शर्तमे छल, से सेहो देखू। दूनूकेँ एक्के कटौती नहि बनाउ।”

ठेकेदार उत्तर देलक जे पशु नूरजहाँक अछि, तँ उपचार हुनकेँ करब चाही। नूरजहाँ कहलनि, “मालिक हम छी, एकर अर्थ ई नहि जे डूबल बाटपर पठेबाक निर्णय कियो नहि लेने छल।” पुरान ढुलाई-आदेशमे सुरक्षित मार्गक उल्लेख भेटल, मुदा मार्ग बदलबाक लिखित आदेश अनुपलब्ध छल। ईट पहुँचबाक प्रमाणसँ ढुलाईक विवादरहित देय स्वीकृत भेल; पशु-उपचारक क्षतिपूर्तिक प्रश्न स्थल-जाँचपर राखल गेल। नूरजहाँ पैसा नहि भेटलाक पाँतिमे कियो ‘चुकता’ लिखए नहि देलीह।

दुपहरि सरिता फेर उर्मिलाक बहिन लग अएलीह। बहिनक चेहरापर ओहिना थकान छल, जकरा सहायता-राशिक संख्यासँ मापल नहि जा सकैत। ओ पुछलीह, “अहाँ नैराक कागद सम्हारैत छी ने?” सरिता माथ हिलौलीह। “हम ओहि मेजक दरार नहि खोलि पबैत छी जकर चाभी नैरा अपन जगह छोड़ि गेल,” ओ कहलीह। बहिन अपन बहिनक भीजल रसीद दिस तकलीह। “हमरा तऽ ओकर काजक बही खोलाय पड़ैत अछि,” ओ उत्तर देलीह, “नहि खोलब तँ दोसर लोक कहत किछु देय छलहि नहि।”

दूनू स्त्री बीच किछु देर मौन रहल। सरिताक दुख उर्मिलाक बहिनक दुखक प्रतिरूप नहि छल। नैरा अपन आखिरी दिनसभमे अभिलेख आ नागरिक जिम्मेदारीक काज करैत छलीह; उर्मिला रोगीक कपड़ा, घाटक पाट आ रात्रिक पालि सम्हारैत छलीह। मृत्यु दूनूकेँ एक वर्षमे छीनि लेने छल, मुदा हुनकर जीवन आ मजदूरीक अलग-अलग आकार छल। बहिन उर्मिलाक डोरीक एक छोट टुकड़ा सरिताकेँ देखौलीह, फेर अपन थैलीमे राखि लेलीह। ई वस्तु सरकारी फाइल लेल नहि छल।

नन्दिनी भंडारी नर्सरीक जलखाता लऽ पहुँचलि। पुरान पन्नामे ‘पुरैनि’ लिखल छल आ पानिक ढुलाईक दामपर ग्राहकसँ विवाद छल। कार्यालयक सहायक ओहि नामकें नक्शाक एक नदीसँ जोड़ि मूल्य निश्चित करबाक पक्षमे छल। नन्दिनी रोकलीह। “एहि खाता सँ पानि आनबाक दिन आ गाड़ी देखू,” ओ कहलीह, “नदीक पूरा प्रवाह नहि।” वास्तविक गाड़ी-भाड़ाक पर्ची मिलल; ग्राहकक भागक स्वीकृत खर्च अलग भेल, शेष दामपर पुनः बातचीत निर्धारित भेल। नाम पुरैनि जसक तस रहल।

तुलसी दोनवार दोसर गामक पातापत्र लऽ अएलाह। पुरान पन्नामे ‘बलान’ लिखल छल, दोसर स्रोतक नकलमे ‘भुतहीबलान’। कियो फेर दूनूकें एकहि नदीक स्थायी नाम कहि जमीनक सीमा बदलए चाहैत छल। तुलसी पन्ना अलग कएला। “जकरा घरक बाट लिखल अछि, ओहि पन्नासँ नदीक शिरा कोना निकालब?” रमा स्पष्ट निर्देश देलीह— नामक स्रोत, समय आ प्रयोजन अलग दर्ज हो; जमीन आ जलमार्गक सत्यापन उचित मापसँ हो। तुलसीक दोसर गामक दावा कायम रहल।

बाहरी आँगनमे उमासभक धुलल कपड़ा सुखि रहल छल। उर्मिलाक मृत्यु बाद हुनका सभपर अधिक काज पड़ल छल, मुदा प्रशासन पुरान बहीमे नव काजक भाड़ा जोड़ि देबाक सुविधा खोजैत छल। उमा कहलीह, “हम उर्मिलाकें बदलने नहि छी; हम अपन पालिमे काम कएने छी।” रमा नव पालिक अलग रजिस्टर देखौलीह। जहि दिन उमा आ आन स्त्री सभ काज कएने छलीह, ओहि दिनक मजदूरी हुनकर अपन नामपर देय मानल गेल। उर्मिलाक परिवारक देय ओकरा कारण कम नहि भेल।

रमा एक नव प्रश्न उठौलीह—अस्पतालक मूल धुलाई-बहीक किछु पन्नापर पानीक दाग छल, आ ठेकेदारक साफ नकलमे ओहि पन्नाक अन्तिम अंक बदलल देखाइत छल। अदिति निरीक्षणक समय मूल बही देखबाक अनुरोध कएने छलीह, मुदा भवनक सुरक्षा कारण ओहि कोठरीमे प्रवेश सीमित छल। रमा सीलबन्द सुरक्षित प्रतिक मिलानक निर्देश देलीह। “भवनक दरारक जाँच आ मजदूरीक हिसाब अलग अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एकेक प्रमाणक सुरक्षित रखनाइ दुनूक जरूरी काज।” कियो दाग देखिकऽ ककरो अपराध निश्चित नहि कहल; नकलक अन्तर लिखित रहि गेल।

दुपहरि ढलैत अस्पतालक लेखा-अधिकारी एक मुहरबन्द प्रतिवेदन अनलनि। रातिक पालिक एक हिस्सा ‘आपदाक समयक स्वैच्छिक सहायता’ कहि हटेबाक प्रस्ताव छल। मुदा ओहि काजक पहिनुक दर, प्राप्ति-हस्ताक्षर आ उर्मिलाक कपड़ा-पंजीक नकलमे विरोध देखाइत छल। गोमती प्रतिवेदनक विरोधी अंश पढ़ि सुनौलीह। बहिन पुछलीह, “काज आपदा सँ पहिने ठेकामे छल, तँ ओकरा स्वैच्छिक कहबाक तिथि कोन?” अधिकारी लिखित स्पष्टीकरण देबाक लेल समय माँगलक। रमा निश्चित तिथि देलीह, मुदा विवादरहित भुगतान रोकबाक अनुमति नहि देलीह।

बैंकसँ साँझक पहिल सूचना अएल जे उर्मिलाक नामे स्वीकृत दूनू गठुरक मजदूरी परिवारक दावाक निश्चित खातामे जमा भेल अछि। बहिन फोन हाथमे लऽ अंक दुबारा पढ़लीह। ओ न राहतक कुल रकम छल, न सम्पूर्ण बकाया। रमा बैंकक पुष्टि-पत्रक नकल हुनका देलीह आ स्पष्ट लिखलीह—‘आंशिक मजदूरी प्राप्त; रातिक पालि, दुलाई आ अन्य विवादित मद शेष’। बहिन रसीदपर सही कएलीह; मुँहसँ कोनो विजयक नारा नहि निकलल। बाहर धोबिघड़ाक पानि धीरे बहैत रहल।

किरण अपन संशोधित ऋण-पत्र लऽ विदा भेलाह; फूलमती नव जालक नमूना ग्राहककें देखएब गेलीह; केदार दुर्ल रहल प्रवासी परिवारक सदस्यकें भुगतानक स्थिति बुझौलक; शिव अपन जमा-पुष्टि पत्नीकें पठौलनि; नूरजहाँ गदहाक चाल देखि फेर गाड़ी हाँकलीह। एके दिनक अलग निर्णयसभ एके समितिक मेजसँ निकलल छल, मुदा सभक घरमे हुनकर अलग मूल्य छल। सरिता सोचलीह, जँ एहि सभ परिणामकें एके ‘समाधान’ लिखि देल जायत तँ फेर पाँतिक भीतरक लोक हराएत।

साँझक सभा समाप्त होएबाक समय पद्मा विद्यालयसँ पहुँचलीह। हुनका हाथमे एक छपल सन्देश छल, जाहिमे उर्मिलाक देयसम्बन्धी वाक्यक आधा हिस्सा मात्र फैलल छल —‘मृत्यु उपरान्त खाताक समापन’। भेजनिहारक नाम स्पष्ट नहि छल। एक लिपिक घबरा कऽ कहलक, “एहि सँ आजुक भुगतानक अर्थ बदलि जायत।” पद्मा पन्ना मेजपर राखि कहलीह, “पहिने मूल पत्रक पूरा वाक्य चाही। कटल अंशक भाषा ककरो अधिकार नहि काटि सकैत।” रमा प्राप्ति-पुस्तिकामे छपल शब्द जसक तस नकल कएलीह, मुदा अर्थक निर्णय स्थगित रखलीह।

उर्मिलाक बहिन उठबाक पहिने अपन थैली खोललीह। मृत्युक प्रमाणपत्र, बैंकक आंशिक जमा-पुष्टि, शेष मजदूरीक दावा आ उर्मिलाक अपन हाथक डोरी चारि अलग ठाम राखलीह। सरिता पुछलीह, “अहाँ काल्हि फेर अएब?” बहिन कहलीह, “जँ मूल पत्र माँगत, अएब। मुदा आजु घर जा कपड़ा सुखायब। हुनकर बही हम सम्हारब, कपड़ा हम अपन हाथसँ धोएब।” सरिता कोनो उत्तर नहि देलीह। बरामदाक अँधारमे बहिनक पएरक छाप पानि पर परि अगिला क्षण मेटा गेल; बैंकक पन्नापर जमा भेल रकम, आ ओकर पाछाँ लिखल शेष देय, दुनू बचल रहल।

अध्याय १६५ • वाक्यक तात्पर्य

पद्मा भोरमे विद्यालयक बरामदापर दू पन्ना पसारि बैसलीह। पहिल पन्ना ओहि छपल सन्देशक छल, जे काल्हि उर्मिलाक बहिनक हाथसँ बारम्बार फिसलैत रहल छल—“मृत्यु उपरान्त खाताक समापन”। दोसर पन्ना नगरक लेखा-शाखासँ आइ भोर प्राप्त प्रमाणित पत्र छल। ओकर कातमे मुहर, पन्नाक क्रमाङ्क आ पठेनिहार अधिकारीक सही छल। पद्मा दुनू पन्नाक ऊपर पत्थर रखलीह, कारण बरामदामे पवन एतेक छल जे कटल शब्द अपने-आप उड़ि जा सकैत छल। वास्तविक पत्र एतेक सहज नहि उड़ि सकैत छल।

जुबैदा आश्रयसँ आबि पुछलीह, “आब एकरा पटपर लगा देब?” पद्मा माथ हिलौलीह। “पहिने पूरा पत्र पढ़ब, ओकर पछिला पृष्ठो। ई सोचि नहि जे कागद पर मुहर अछि तँ ओकर प्रत्येक बात न्यायसंगत अछि। मुहरसँ एतबे पता चलत जे कार्यालय एकरा जारी कएने अछि।” ओ पत्रक पहिल पाँति, संलग्नक सूची, शाखाक अंक आ अगिला पैराक अक्षर मिलौलीह। एक नकलमे आधा वाक्य गायब छल। दोसरमे मार्जिनक भीतर लिखल एक छोट शब्द—‘केवल’—पूरा प्रसंग बदलि दैत छल।

रमा कर्ण नगरपालिका पहुँचैत हुनकर लेल मूल प्रेषण-बही खोलबौलीह। कार्यालयक मुंशी पहिने कहलक, “उर्मिलाक परिवारकेँ रकम भेटि गेल; आब ई झमेला किएक?” पद्मा ओकर आगाँ कागद घुमौलीह। पूरा वाक्य छल—“मृत्यु उपरान्त खाताक समापन केवल तत्काल राहत-अनुदान शीर्षमे कएल जायत; सेवा, धुलाई, ढुलाई आ अन्य प्रमाणित श्रम-देयक परीक्षण एहि समापनसँ प्रभावित नहि होएत।” कटल पन्नामे ‘केवल’ सँ आगाँक सभटा हटल छल। मुंशी अपन कुरसीपर ठमकल। ओ स्वयं कलम लऽ पत्रक जारी-अंक फेर जाँचलक।

“एहि पूरा वाक्यक प्रकाशन होएत,” पद्मा कहलीह, “मुदा एहि लिफाफामे परिवारक खाताक अंक आ बहिनक निजी सम्पर्क-पता अछि। ओ नहि छपत।” लेखा-अधिकारी पुछलक, “लोक प्रमाण कोना मानत?” रमा कहलनि, “पत्रक क्रमाङ्क, तारीख, जारी-शाखा आ प्रमाणित सार्वजनिक अंश पर्याप्त आधार अछि। जे जाँच करए चाहय, ओ निर्धारित आवेदनसँ कार्यालयक प्रति देखत। परिवारक घरक बाट बतबनाइ प्रमाण नहि।”

पद्मा सार्वजनिक संस्करणक कातमे लिखलीह जे ई श्रम-देयक भुगतान-प्रमाण नहि, मात्र पत्रक आशयक सुधार अछि।

उर्मिलाक बहिन आइ पहिनेसँ धोबिघट्टामे अपन कपड़ा सुखा रहल छलीह। सरिता प्रमाणित प्रति लऽ पहुँचलि तँ ओ पहिने कपड़ा निचोड़लीह, फेर नब कागद लेलनि। “एहि वाक्यसँ हमर बकाया खातामे पैसा आबि जायत?” ओ पुछलीह। सरिता कहलीह, “नहि। काल्हि जे आंशिक मजदूरी जमा भेल, ओकर बैंक-पुष्टि अलग अछि। ई पत्र केवल कार्यालयकें समस्त देय चुकता कहबाक गलत बाट रोकत।” बहिन एक बेर पूरा पाँति पढ़लीह आ ओहि पन्नाक अपन प्रति लेलीह। “तखन छपू,” ओ कहलीह, “मुदा उर्मिलाक निजी डोरीक फोटो नहि।”

पुरान छपल पन्नाक पाछू ‘परिवारक सहमति’ लिखि कियो एक गोल मुहर सेहो बना देने छल। रमा प्रेषण-बहीमे ओ मुहरक अंक खोजलीह; मिलल नहि। ओ कटल सन्देश बनएनिहारकें तुरन्त अपराधी घोषित नहि केलनि, मुदा छपल पन्नाक कागद, वितरक आ प्राप्ति-समयक जाँच अलग दर्ज करौलीह। पद्मा पूछलीह, “गलत अर्थ फैललाक क्षति के गनत?” रमा कहलीह, “पहिने जतय-जतय ई सन्देश गेल, ओतय सुधार पहुँचाउ। क्षतिक दावा अपने प्रमाण माँगत।” दू स्वयंसेवक सुधारक प्रति लऽ बजार चलि गेल।

सरिता थैलीसँ मोबाइल निकाललीह। कटल सन्देश भेजनिहारक फोन-अंक आ ओकरा अगिला-अगिला समूहमे भेजनिहारक नामसभ एके नहि छल। पद्मा पहिने अपराधीक नाम अनुमान लगाए चाहनिहार एक युवककें रोकलीह। “ककरा लेल टुकड़ा काटल गेल से अलग जाँच अछि। एखन हम पूरा पत्र प्रमाणित करैत छी।” ओ विद्यालयक सूचना-पटपर सुधारक एक प्रति लगौलीह, बजारक सार्वजनिक पढ़ाइ लेल दोसर प्रति देलीह, आ मूल पत्र सुरक्षित फाइलमे रखौलीह। कियो पुरान कटल पन्ना नहि जरा सकल; ओकर संग पूरा सुधार चिपका देल गेल।

दोपहरक नब सभा मेजक चारू कात नहि, बरामदाक लम्बा छाँहमे भेल। नसीम इदरीसी पाँचटा रंगदार अस्तरवला थैली लऽ अएलाह। “जे दिन राहतक सिलाइक बिल देलहुँ, तहिये कहने रही,” ओ बजलाह, “कपड़ाक नापक प्रमाण देब; ग्राहकक नाम बिना हुनकर अनुमति नहि।” एक जाँचकर्मी कहलक जे नव शिकायतक संग पुरान थैलीक

ग्राहकसभक सम्पूर्ण सूची चाही। नसीम मेजपर कपड़ाक नमूना, सिलाइ-आदेश आ प्राप्ति-दिन अलग रखलनि। व्यक्तिक नामवला मापबही नहि खोललनि।

“नाम बिना दस्तावेज अधूरा,” जाँचकर्मी कहलक। नसीम उत्तर देलनि, “जँ छटा सिलाइक दाम अटकल अछि तँ छटा सिलाइक आदेश जाँचू। जकर निजी माप लेने छी, ओकरा सभक पहिचान छापि देब सिलाइक दामक शर्त कोना भेल?” पद्मा नामक जगह गोपनीय प्राप्ति-अंक रखबाक प्रस्ताव कएलीह। रमा अपन लेखा-कक्षमे मिलानक सीलबन्द प्रति रखौलीह, सार्वजनिक अभिलेखमे सामग्री, थैलीक संख्या, नाप आ पारिश्रमिकक रकम रहल। नसीमकेँ सत्यापित आदेशक प्रति भेटल; ग्राहकक पहिचान बचल रहल।

आश्रयक एक महिला नसीमक हाथमे फाटल थैली देलीह। “हमर बेटीक किताबक कात फाटि गेल,” ओ कहलीह। नसीम टाँका लगाबैत कहलनि, “ई मरम्मतिक दाम बादमे देखब। मुदा अहाँक बेटीक विद्यालयक नाम हमरा देबाक आवश्यकता नहि।” महिला मुस्कुरौलीह; ओ पहिल बेर देखलीह जे निजता केवल सीलबन्द आलमारीमे नहि, सूईक नोकपर सेहो बचि सकैत अछि। सिलाइ-मशीनक टकटकाहट सभाक शोरसँ निरन्तर अलग सुनाइत रहल।

कमला ठाकुरक दोकानपर एही समय पुरान गिरवी-कड़ाक विवादक तेसर सुनवाई छल। वृद्धा अपन मायकेसँ भेटल कड़ाक प्राप्ति-पर्ची आ ओकर भीतरक टेढ़ फूलक चिन्हक विवरण फेर प्रस्तुत कएलीह। युवक व्यापारक पुरान ऋण-बही लऽ अएल छल। “घरक आभूषण सभ घरक पुरुषक जिम्मामे रहैत छल,” ओ कहलक। कमला उत्तर देलीह, “व्यवहारक पुरान रीत मालिकानाक प्रमाण नहि। वस्तु जेकर नामे बनल, जमा भेल, आ देल गेल, तकर लिखित साक्ष्य अलग देखि।”

वृद्धाक मातृपक्षक पत्र, मूल जमा-पर्ची आ कड़ाक कारीगरीक बही एक ठाम मिलल। सुनवाई अधिकारी स्पष्ट कएलक जे एहि प्रमाणपर स्त्रीक स्वामित्वक दावा स्वीकार होइत अछि आ गिरवी-मुक्तिक प्रक्रिया हुनकर नामसँ चलत; परिवारक ऋणक शेष दायित्वक विवाद अलग सुनल जाएत। युवक असहमतिक आवेदन जमा केलक। कमला निर्णय-पत्रपर सही करबाक पहिने कड़ाकेँ फेर लाल कपड़ामे लपेटलीह। वृद्धा कहलीह,

“हम अपन घरक लोकसँ लड़ए नहि आयल रही; अपन वस्तु बिना नामक नहि देखए चाहैत रही।”

कमला कड़ा छोड़एबाक पर्चीमे एकटा नब विवाद देखलीह। परिवार चाहैत छल जे वस्तु वृद्धाकें देबाक स्थानपर ‘पारिवारिक अभिरक्षा’ लिखल जाए। कमला कड़ा अपन हाथमे रखि कहलीह, “निर्णयक पाँतिमे जे स्त्रीक नाम लिखल अछि, अभिरक्षाक पाँतिमे ओहि नामकें मेटा नहि सकब।” वृद्धाक अँगुरिमे पुरान कड़ाक भार एखन नहि आएल छल, कारण गिरवी-मुक्तिक शुल्कक विवाद बाँकी छल। मुदा वस्तु कोन व्यक्तिक अधिकारमे जायत, तकर दिशा लिखित भेल। युवक असहमतिक अपन प्रति लऽ गेल; कियो हुनकर आवेदनक अधिकार छीन्न नहि।

दोकानक बाहर नाहिद मोगल प्रतीक्षा करैत छलीह। हुनकर मायपक्षक खेतक गिरवी प्रस्तावमे पहिने ‘सभ हिस्साधारीक सहमति’ लिखि हुनकर नाम स्वतः जोड़ल गेल छल। आब नब पन्नामे हिस्साधारीसभक अलग हस्ताक्षरक स्थान बनल छल। नाहिद कागद ध्यानसँ पढ़लीह। पुरान ऋण सचमुच छल; ब्याजो बढ़ि रहल छल। ओ अपन हिस्साकें केवल पारिवारिक प्रतिष्ठा लेल जोखिममे देबाक पक्षमे नहि छलीह, मुदा ऋणक असली हिसाबसँ मुँह मोड़बाक पक्षमे सेहो नहि।

मातृपक्षक भाय कहला, “आजुक बेर सही नहि करब तँ खेतक नीलामीक भय अछि।” नाहिद कहलीह, “भय हमर सहमति नहि लिखत।” ओ ऋणक सत्यापित रकम, गिरवीक अवधि, असफल भुगतानक दशामे हुनकर हिस्सापर पड़बाक अधिकतम जोखिम आ वापसीक प्रक्रिया लिखित माँगलीह। शारदाक पुरान बहीसँ पुष्टि भेल रकम आ नव प्रस्तावक बढ़ाओल ब्याज अलग राखल गेल। नाहिद सीमित हिस्साक सशर्त गिरवी स्वीकार करबाक निर्णय कएलीह; दोसर हिस्सापर अनुमति नहि देलीह। ओ अपन जोखिम स्वयं चुनलीह, ककरो मुँहसँ नहि।

“अहाँक पुरान पत्रमे लिवरीक कातक खेत लिखल अछि,” मुंशी कहलक, “तकर नक्शा लगाओल जाए?” नाहिद पत्र अपन थैलीमे राखलीह। “लिवरी हमर मायपक्षक पुरान विवरणमे अछि। आइ जे हिस्सा गिरवी होएत, ओकर वर्तमान नाप आ मालिकाना उचित अभिलेखसँ देखल जाए। पुरान नदीक नामसँ हम खेतक नव सीमा नहि बनायब।”

भाय नाराज छलाह, मुदा ओहि दिन पहिल बेर ऋणक प्रत्येक पन्नापर नाहिदक अपना निर्णयक जगह छल।

बरामदाक दोसर छोरपर सुगनी सदाय निकासी टोलीक पुरान बाँसक मापडोरी लेने अएलीह। अस्पतालक दुर्घटना बाद जखन पानि अटकल छल, हुनकर टोली अपना मुहल्लाक लोकक लेल सुरक्षित बाट खोलबामे लागल छल। आब पुनर्वासक प्रस्तावमे ओहि मुहल्लाक नामे एक पाँति छल—‘स्थानान्तरित करब’। प्रस्ताव लिखनिहारक नक्शामे ओहि परिवारसभक रोजीक बाट, जलनिकास आ बच्चाक विद्यालयक दूरी नहि छल। सुगनी मेजपर डोरी पसारि कहलीह, “बाट खोलबाक बेर हम नेता रही; घर हटेबाक बेर हमर मुँह किएक बन्द?”

अधिकारी बुझौलक जे अस्थायी ठाम तैयार अछि। सुगनी कहलीह, “तात्कालिक सुरक्षा चाही तँ लोक अपन सहमतिसँ जायत। मुदा एक रातिक छप्परक कागदपर स्थायी घर छोड़बाक सही नहि होएत।” मुहल्लाक स्त्रीसभ, वृद्ध आ घुमन्तु परिवारक अलग उपस्थितिक पर्ची पढ़ल गेल। प्रतिनिधिसभक मतदानसँ प्रस्तावक ‘स्थायी स्वीकृति’ वला पाँति हटाओल गेल। सुगनीक टोली निकासीक आपात योजना स्वीकार कएलक, मुदा स्थायी पुनर्वास लेल मुहल्लाक खुलल बैठक, उपयुक्त ठामक निरीक्षण आ व्यक्तिगत सहमति अनिवार्य बनल।

सुगनी मुहल्लाक तीन परिवारसँ तात्कालिक आवासक अलग सहमति लेलनि। एक परिवार वृद्धाक चलबामे कठिनाई देखिकऽ नजदीकक ठाम चुनलक; दोसर परिवार भोरुक दैनिक मजदूरीक कारण दूर नजएबाक कहलनि। अधिकारी पहिने सभकेँ एक बड़का शिविरमे पठएबाक सूची बनाने छल। सुगनी सूची दू भागमे बँटबौलीह—आपदामे तुरन्त सुरक्षित ठाम आ स्थायी घरक निर्णय। “एकहि हस्ताक्षर सँ दुनू अधिकार नहि देब,” ओ कहलीह। नव सूचीमे परिवारक निजता लेल सार्वजनिक पटपर नामक बदला प्राप्ति-अंक रखल गेल।

एहि निर्णयक मूल्य सेहो छल। अस्थायी पानिक गाड़ी अगिला दू दिन धरि कम पड़ल, कारण स्थायी स्थलपर खर्च करबाक पहिल आदेश स्थगित भेल छल। सुगनी स्वयं पाइप-जोड़क श्रम समय निर्धारित कएलीह, मुदा मजदूरीक दर बिना लिखल ककरो हाथमे

औजार नहि देलीह। “हमरा मुहल्लाकेँ दूसराक दया पर जिबैत देखाउ नहि,” ओ कहलीह, “हम राहत लेब, काज करब, आ कहब जे रहब कतए।” गोमती हुनकर टोलीक निर्णयक प्रति मुहल्लामे पठएबाक जिम्मा लेलीह।

गीता कोरी एक मुड़ल कपड़ाक थान लेने अएलीह। सीमापारक कम्पनी पहिनुक खेपक पूरा दाम एखन धरि नहि देने छल। उर्मिला जखन जीवित छलीह, तखन एक धूसर चादरक नमूना देखि गीता कहने छलीह जे रंगक समानता कंपनीक स्रोत सिद्ध नहि करैत। ओ बात गीता आइयो याद रखने छलीह। एहि बेर हुनका लग थानक नाप, किनारक चिन्ह, लदानक प्राप्ति आ सीमापारक साथीक भेजल आदेशसभ छल। “हमर दाम हमर थानसँ माँगब,” ओ कहलीह, “अस्पतालक सन्देहसँ नहि।”

कम्पनीक प्रतिनिधि फोनपर कहलनि जे प्रेषणक किछु संख्या मिलल, मुदा शेष नाप विवादित अछि। गीता प्रस्तावित आधा रकमक रसीद पढ़लीह। ताहिमे ‘सम्पूर्ण देय समाप्त’ लिखल छल। ओ ओहि शब्दपर सही नहि कएलीह। कम्पनी विवादरहित खेपक आंशिक भुगतान बैंकमार्फत पठेबाक आ शेष थानक नाप स्वतन्त्र मिलान लेल रखबाक लिखित स्वीकृति देलक। दिन ढलैत गीता अपन खातामे आंशिक रकम पहुँचबाक सन्देश देखलीह। बचल दावाक नब तिथि सेहो भेटल। पूर्ण जीत नहि छल, मुदा देयक एक हिस्सा वास्तविक भेल।

सीमापारक करघाक साथी फोनपर किछु देरि बाद जुड़लीह। ओ कहलीह जे कम्पनीक नाप-बहीमे दोसर थानक किनार काटल देखाइत अछि; परिवहनमे कटान भेल कि पैकिंगमे, से तय नहि। गीता हुनका नमूनाक फोटो पठौलनि, मुदा अस्पतालमे प्रयोग भेल चादरक फोटो नहि। “ई हमर करघाक काजक तुलना अछि, रोगीक नामक खोज नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। साथी अगिला बैठकीमे स्वतन्त्र नाप-पत्र देबाक आश्वासन देलीह। आंशिक भुगतानक प्राप्ति गीता स्वीकार कएलीह, पूर्ण निस्तारणक मुहर अस्वीकारे रखलीह।

गीता कपड़ाक थान मोड़ैत पुछलीह, “एतय जितबा कागद अछि, ओतबा हम बुनि सकैत छी?” नसीम हँसि पड़लाह। “कागदक सीवन खुल्लासँ मालक दाम मिलै तऽ हमर दुकान खाली नहि रहैत।” रमा हुनका दुनूकेँ अलग पंजीक प्रति देलीह। गीता कहलनि,

“आब बाजारमे साझेदारीक प्रस्ताव अछि। जँ फेर कम्पनी हमरा नामे माल लऽ जाए, तकर हिसाब पहिनेसँ निर्धारित करब।” ओहि शब्दमे अगिला बाजार-दिनक चहल-पहल छल, मुदा एहि बेर ओकर शर्त हुनकर अपन कलममे लिखल छल।

दुर्गा गंगाई बजारक टोकरामे मखान-चिउड़ा तौलैत छलीह। हुनकर पुरान बहीक एक पन्नामे ‘गहुमा’ नाम छल, जकरा बड़का व्यापारीक मुनीम नब खरीदारक अधिकारक प्रमाण कहि घुमाबए चाहैत छल। दुर्गा पन्ना मेजपर रखलीह। “ई पुरान माल मँगबनिहारक स्मृतिनाम अछि,” ओ कहलीह, “एहि पन्नामे न आजुक खरीदारक एकाधिकार अछि, न नदीक नक्शा।” नब ग्राहक अलग तौलसँ दाम देलक; दुर्गा ओकरा रसीद देलीह। पुरान उधारीक दावा अपन बहीमे रहल, नव बिक्री अपन ठाम।

सूरज गंगोता अपन बेटा हरिहर संग ऋण-पुनर्गठनक किस्तक तिथि बुझए अएलाह। ‘धेमुड़ा’ लिखल पुरान खेत-पत्र हुनकर थैलीमे छल; कटल खेत वापस भेटबाक कोनो नव समाचार नहि छल। ऋणक नव किस्त लागू छल, मुदा खेतीक कमाइ एखन अस्थिर। हरिहर पुछलक, “जे खेत आब नहि अछि, ओकर पुरान नाम पत्रमे राखबासँ की लाभ?” सूरज कहलनि, “ओ नामे हमरा संग भेल क्षति दर्ज अछि। मुदा ई पत्र जतेक कहैत अछि ततेक मानब; नव जमीनक सीमा एकरा सँ नहि निकालब।” ओ ब्याजक गणना फेर पढ़ि सुनबौलक।

दुर्गाक नव खरीदार अपन टोकरीक दू थैलीक दाम चुकबैत कहलनि जे गहुमा नामक पुरान व्यापारीक ठाम ओ कहियो गेल छल। दुर्गा हुनका साक्षी बनएबाक आग्रह नहि कएलीह। ओ समयक बात छल; नाम आ व्यापारक इतिहास पुरान बहीमे रहए देब। एक पातर कागदपर नव खरीदारक माल, वजन आ भुगतान लिखि दुर्गा मुस्कुरौलीह। ताहि कात सूरज अपन किस्त-पत्रकेँ सुकखल माटिसँ बचबैत थैली बाँधि रहल छलाह। दुर्गाक कमाइ आ सूरजक ऋण एकहि बजारक धूपमे छल, मुदा एक-दोसराक खाता नहि।

पद्मा सार्वजनिक पत्रक अन्तिम प्रारूप लऽ सभा लग घुसलीह। एक सदस्य सुझौलक जे पूरा निजी फाइल सार्वजनिक करि देल जाए, जाहिसँ काटनिहारक बात कखनो नहि चल्य। पद्मा कहलनि, “पूर्णताक अर्थ सभ निजी वस्तु बाहर राखब नहि। सार्वजनिक वाक्य पूरा हो, व्यक्तिगत जीवन नहि।” ओ मूल पत्रक ओहि एक वाक्यकेँ संलग्नक

उल्लेखक संग प्रकाशित कएलीह, मुदा बैंकक अंक, परिवारक पता आ उर्मिलाक निजी वस्तुक विवरण रोकी देलीह। सुधारक प्रति सार्वजनिक नोटिसमे लागल आ पुरान अपूर्ण प्रति लग स्पष्ट खण्डन जोड़ल गेल।

उर्मिलाक बहिन फेर अएलीह तँ हुनकर हाथमे सूखल कपड़ाक गट्टर छल। ओ सूचना-पटपर पूरा वाक्य पढ़लीह। लेखा-कक्षसँ शेष रातिक पालिक जाँचक तारीख निश्चित भेल छल, मुदा ढुलाईक अस्पष्ट गाड़ी-अंक एखन प्रतीक्षामे रहल। बहिन रमा सँ कहलीह, “आजु हमरा ई विश्वास भेटल जे एकटा सरकारी वाक्य हमरा बहिनक काम नहि मेटा सकत। बाकी पैसा भेटत कि नहि, तकरा लेल फेर अएब।” रमा हुनका शेष दावाक नकल देलीह। सरिता हुनकर लग चुपचाप ठाढ़ छलीह; नैराक शोक हुनकर भीतर कतहु शान्त नहि भेल छल।

आँगनमे एक किशोरी सूतमे गाँठ दैत बैसलि छलीह। ओ गीता लऽ आएल कपड़ाक किनार देखैत पुछलक, “एहि बुनाइमे दू धागा एकसंग चलैत अछि तँ दाम केकरा नामे होइत?” गीता कहलीह, “जे बुनल, ओकर मजदूरी; जे सूत किनलक, ओकर लागत; जे बेचलक, ओकर हिस्सा। लिखबा मे सावधानी नहि राखब तँ धागा झगड़त।” पद्मा सुनि रहल छलीह। अगिला दिन बाजारमे यूसुफ आ पार्वतीक साझेदारीक बैठक निर्धारित छल, जतय ई प्रश्न कागद आ करघा दुनू पर उठबाक छल।

साँझ पड़ला पर नसीम अपन मापबही बन्द कएलनि, कमला कड़ाक जमा-पत्र लौटा कऽ ताला लगौलीह, सुगनी निकासीक डोरी समेटलीह, गीता बैंकक सन्देश कागदपर उतारलीह, नाहिद गिरवीक सीमित प्रस्ताव अपन घर लऽ गेलीह। कोनो एक पन्ना एहि सभक जीवनक अन्तिम निर्णय नहि छल। विद्यालयक पटपर कटल वाक्यक ठीक नीचाँ पूरा वाक्य टाँगल छल। पवन पुरान कागदक कोना हिलौलक, नव पन्ना स्थिर रहल; ओकरा थामि रखने छल दू छोट पिन, आ ओकर अर्थकेँ थामि रखने छल ओ सभ लोक, जे पढ़ल पाँतिक बादो अपन देय पूछब नहि छोड़ने छलाह।

अध्याय १६६ • बुनकरक बाजार

भादवक भोरमे सुकठीक खटालक काँच पाटीपर ओस नहि, माछक टोकरीसँ झरैत पानि जमल छल। विनोद केवर्त काठक पाटा उठाकऽ ओकर नीचाँ ईट रखलनि, जाहिसँ बाटपर फिसलन नहि रहय। ओहि सँकर बाटे यूसुफ अंसारी कपड़ाक दू थान लऽ पहुँचलाह। एक थानक किनार लाल छल, दोसरक पीयर; दुनूक बीच एक पातर धूसर नमूना दबाओल छल। गीता कोरी हुनका पाछाँ आबि कहलीह, “आइ थान बेचबाक पहिने कागद खोलब। नहि तँ पुरान बजारक जकाँ फेर एकहि गट्टरमे सभक मजदूरी हराएत।”

यूसुफक करघा राति धरि चलल छल। हाथक पोरमे सूतक बारिक रेशा लगल छल, मुदा हुनका सभसँ बेसी चुभि रहल छल पुरान आरोपक बही। अस्पतालक नामपर गलत स्वीकृतिक पट्टी लगल कपड़ाक गाँठ हुनकर अपन माल नहि छल, से पहिनहिसँ अलग जाँचमे दर्ज छल। दुकानदारसभ एखनो कखनहुँ कहि दैत, “जेकर नाम ओहि गाँठपर छपल, ओकरे जिम्मा।” आइ बाजार समितिक लिखित सुधार-पत्र हुनकर थैलीमे छल। यूसुफ ओकरा बेचनिहारक पटपर लगए चाहैत छलाह, प्रमाणक पहरा करए नहि।

यूसुफकेँ याद पड़ल, जखन ओ पहिल बेर गलत गाँठ अलग रखने छलाह, तखन लाभक लालचमे ओकरा घरक लोक सेहो दोष देने छल। बिनु बिकने तीन दिन सूत रोकल रहल, आ बेटाक प्रशिक्षण-शुल्कक तारीख निकलि गेल छल। बादमे वैध थान मुक्त भेलोपर एहि देरीक भरपाई नहि भेल। आजुक सुधार-पत्रमे लिखल छल—वैध वस्तुक स्वामित्व सिद्ध; बाँकी अज्ञात खेपक स्रोतक जाँच जारी। ओहि वाक्यकेँ ओ सजावटक प्रमाणपत्र नहि, रोजीरोटी फेर चलएबाक आधार बुझैत छलाह।

पार्वती ताँती अपन सूतक छोट तानी लऽ कऽ भोरहिसँ बैसलीह। ओहि तानीमे ओ नहि, हुनकर घरक दोसर दू स्त्री बान्हनिहार छींटक काज सेहो कएने छलीह। यूसुफ कहला, “हम सूत किनब, अहाँ बुनब, बजारमे हमर दुकानक नामसँ बिकत; लाभ आधा-आधा।” पार्वती आधा शब्दपर ठहरलीह। “लाभ बाँटब पहिने घाटा के गनत? करघा ककर, रङ्ग ककर, कपड़ा बिगड़त तँ नुकसान केकर माथ? आ हमर घरक दूनू स्त्रीक घण्टा अहाँक आधामे कोना समायत?”

पाछाँसँ पवित्रा पटवा अपन गँथल गहना, डोरी आ चेतावनी-पट्टीक नमूना लऽ पहुँचलीह। “पार्वतीक संग हमर नाम एके पन्नामे नहि जायत,” ओ कहलीह। “हम पटवा छी, ओ ताँती छथि। गँथाइ लेल जे धागा घुर्बैत छी, ओकर दाम बुनाइमे नहि समायत।” यूसुफ पहिने मुस्कुरेला, मुदा पार्वती हुनकर आगाँ पवित्राक अलग पुरान रसीद रखि देलीह। ओही रसीदपर पहिनुक नाव—औजार परीक्षणक मजदूरी बैंकमे प्राप्त भेलाक अंक छल। हँसीक ठाम कागदक खड़खड़ाहट उठल।

गीता थान पसारि छहोटा खाँचा खींचलीह—सूत, रङ्ग, बुनाइ, गँथाइ, ढुलाई आ बिक्री। “आब सातम खाँचा रखू—रोकल पैसा,” ओ कहलीह। सीमापार कम्पनी हुनकर पिछला खेपक विवादरहित हिस्सा बैंकमे देने छल, मुदा बाँकी थानक नाप विवादित छल। हुनका ई पुरान चोट ओहि नव साझेदारीमे लुकाएब नहि छल। यूसुफ पुछलनि, “रोकल पैसा आजुक थानक दाममे जोड़ब?” “नहि,” गीता कहलीह, “नव ग्राहककें पुरान कम्पनीक अपराधक मूल्य किएक देब?”

बजार समितिक युवक तौल-खाताक फटकल पन्ना लेलक। “सबकें अलग-अलग नाम देब तँ एतेक कागद के भरत?” पार्वती एक छोट सूत ओकर कलमक नोकपर राखि देलीह। “एहि धागाकें कोनो दोसर धागा बुझि काटि देब तँ कपड़ा खसि पड़त। कागदमे हमरा सभकें एक कहब तखन भुगतान खसत। कागद भरबाक मजदूरी सेहो लिखू, मुदा हमर नाम नहि काटू।” युवक पुनः बैसल, आ पवित्राक लेल दोसर प्राप्ति-पत्र निकाललक।

आयताकार नादक लग सकीना रंगरेज अपन नीला रंगक घोल राखने छलीह। ग्राहक रंग हलुक भेलाक शिकायत लेने छल। सकीना पहिनहिसँ ओहि पुरान खेपक बदलल रंगक हिसाब बनौने छलीह, मुदा मुनीम ई हिसाब देखिकऽ पुरान ग्राहकक समस्त ऋण समाप्त कहबाक आग्रह करैत छल। सकीना ओहि दिनक नमूना आ हिसाब सामने पसारलीह। “जे थानमे हमरा रंगाइमे गलती भेल, ओहि काजक दाम घटत। मुदा जे ग्राहक दोसर खेप किनलक आ पैसा नहि देलक, ओकर उधारी एतय नहि मेटत।”

ग्राहक हाथमे नील छलकैत पुछलक, “एहि बेर रङ्ग कतेक दिन टिकत?” सकीना रंगसँ भीजल सूतक दू कात धोरि देखौलीह। “धोइ-बुनि कऽ नमूना जाँचू। रङ्ग टिकबाक गारंटी

लिखब, मुदा अपन नादक गन्धक शपथ नहि खाएब।” यूसुफक बेटा मोबाइलसँ नमूनाक संख्या दर्ज करबाक कहलक। सकीना हुनका अनुमति देलीह, मुदा ग्राहकक नाम आ घरक फोटो नहि। नया थानक रङ्गक रसीद सकीनाक नामे बनल; पुरान ऋण अलग विवादक पन्नामे रहल।

सकीनाक रंगघरमे नव नमूनाक लेल पानिक घैल घटि गेल छल। दुकानदार पुछलक जे एहि मेलेमे ढेर रङ्ग बनल तँ बचेखुचे घोल खटालक नालीमे छोड़ल जा सकैत अछि की। सकीना नाली दिस देखलीह, जतय माछक टोकरीक पानि पहिनेसँ जमा छल। “रङ्ग बचे तँ दोसर खेपमे उपयोगक जाँच करब; पानिमे छोड़बाक निर्णय हम एकल नहि करब,” ओ कहलीह। बजार समितिक कर्मचारी अलग पात्र आ उठावक मजदूरीक खर्च लिखलक।

यूसुफक बेटा अपन छोट औजार-पेटी पाटपर रखलक। भीतर टूटल चार्जर, छोट तार-जाँचक सुई आ दू मरम्मतिक रसीद छल। ओ बापक दुकानक फोटो-बही बनएबमे पहिने सहायता कएने छल, मुदा करघापर जीवन बितएबाक वचन नहि देने छल। “अब्बा, आजु हमरा अपन उपकरण-मरम्मतिक पहिल ग्राहकसँ मजूरी भेटत,” ओ कहलक। यूसुफ पहिने बेटाक हाथ देखलनि, जहिमे सूतक बदला तारक पातर दाग छल। “आ करघा?” हुनकर पुरान प्रश्न अनायास निकलल।

बेटा उत्तर देलक, “करघा अहाँक ज्ञान अछि; सीखब तँ हमर चुनावसँ सीखब। मुदा उपकरणक काज छोड़ि नहि।” यूसुफ निश्चय सुनि कने चुप रहलाह। ओहि घड़ी हुनकर मनमे पिता सँ सीखल करघाक पहिल ठकठक आवाज उठल; सँगहि गलत गाँठक आरोपमे बेटाकेँ सरकारी कार्यालयक चक्कर लगबैत देखलनि। “आब तोहर कामपर हमर मुहर जरूरी नहि,” ओ कहला। “मुदा जे मरम्मत करिहें, ग्राहकसँ पूरा हिसाब लिखिहें। हुनकर गोपनीय कागद अपने मोबाइलमे नहि राखिहें।” बेटा पहिल बेर बिन झुँझलाए हँसल।

खटालक माछवला छोरपर विनोद केवर्त आ फूलमती तियरक बीच बिछाओल पाटपर ग्राहकक भीड़ लागल। F४क माछ-मखान श्रम-मेलामे एहि बेर नव समिति छोट विक्रेताक लेल छाँहवला दू स्थान चिन्हने छल। पिछिला साल थोक-गाड़ी छाँह कब्जा कएने रहैत, आ छोट टोकरा घाममे गलैत। विनोद समिति सँ लिखित बाट-नक्शा माँगलनि। “माछक

खरीदीक दाम अलग, नावसँ उतारबाक भाड़ा अलग, गट्टर ढोएनिहारक मजदूरी अलग,” ओ कहला। “अनुदान मिले तँ ओ पाँति सेहो अलग रहत।”

खटालक पाछाँ पानि जमल छल। एक कर्मचारी लाठी गाड़ि ओकर गहिराइ अनुमान सँ ‘आधा हाथ’ लिखए लागल। हीरा सहनी, जे जलमापक परख दिनमे अपन पुरान देहमाप सुधरने छलाह, ओकरा रोकलनि। लकड़ीक मानकीकृत छड़ीसँ दू ठामक नाप लेल गेल; पानि एक कात बेसी छल, कारण टोकरीक निकास बंद छल। गादक जाँच बिना ओहि पानिकेँ पोखरिक गहराइ अथवा नदीक जलस्तर नहि कहल गेल। सफाइक तत्काल खर्च बाजारक रखरखाव-खातामे दर्ज भेल; श्रमिकक पारिश्रमिक सेहो तय भेल।

फूलमती माछक जीराक टोकरा सरकौलीह। “नव जालसमूह बनौलहुँ, मुदा जालमे लागल पूँजीक हिसाब कहियो ककरो नामे गायब भऽ जाइत अछि,” ओ कहलीह। विनोद बतौलनि जे बाजार समितिक नब पन्नामे जालक मालिक, पकड़निहार, नाववला, उतराइ आ बेचिनिहार अलग स्तम्भ अछि। समिति ओहि दिनक कारोबारपर परीक्षण करबाक स्वीकृति देलक। पहिल छोट बिक्रीमे सभकेँ अलग प्राप्ति भेटल। मुदा पुरान ठेकाक वसूली आ बकाया अभी सुनवाईमे रहल; एक दिनक नव पाटसँ पछिला घाटा भरायल नहि।

मखान चुननिहार स्त्रीसभ तालाबक कातसँ आनि गूड़ी छानैत छलीह। काँच गाछीक नीचाँ सुखाबए लेल पुरान चटाइ बिछाओल छल। एक व्यापारी फोड़ाइक दाम खरीदमे मिला देबाक प्रस्ताव कएलक। चन्द्रिका रसोइए सँ आनि एक तश्तरीमे काँच मखान आ फूटल मखान अलग रखलीह। “पानि सँ निकालबाक हाथ, भुजबाक आगि आ फोड़बाक औजार अलग काज थिक,” ओ कहलीह। मेलेमे स्त्रीसभक घण्टा लिखल गेल, आ जकरा काज पर सहमति नहि, ओकरा पूजा वा गीतमे बाध्य नहि कएल गेल।

मखानक चटाइ लग एक बच्चा आनि राखल गीतक ढोल ठोकए लागल। चन्द्रिका ओकरा रोकलीह नहि; पूछलीह, “एहि बाजाक मालिक के?” बच्चा कहलक जे परबक आयोजकक ढोल अछि। आयोजक चाहैत छल जे गीत गबैत स्त्रीसभकेँ भोजन देल जाए, मेहनताना नहि। स्त्रीसभ प्रतिवाद कएलीह। गीतक अभ्यास आ प्रस्तुति लेल स्वैच्छिक

सहभागिता तथा पारिश्रमिकक पर्ची तैयार भेल। बच्चा फेर ढोल ठोकलक, मुदा ओहि घड़ी ढोलक आवाज एकटा सहमत काजक आवाज छल।

बाजारक दोसर किनार बिन्देश्वरी साहु घानीक पुरान काठसँ बनल पहिल तख्ती लऽ अएलाह। खरीदार घानीक संपूर्ण ढाँचा लेल दाम निश्चित कएने छल, मुदा घरक बुजुर्ग स्त्री चाहैत छलीह जे पूर्वजक माप-पात्र, बही आ पहिल तख्ती घरमे रहय। एतेक दिन निर्णय टारल गेल छल। आइ बिन्देश्वरी कहला, “घानी बिक्री होएत; स्मृति नहि बिकत।” खरीददार वस्तुक अलग सूची देखलक—विक्रेय पहिया, काठ, धुरी; आ परिवार लग बचबाक तख्ती, पुरान बाट, बही।

खरीदार कहलक, “जँ पहिल तख्ती नहि भेटत तँ दाम घटत।” बिन्देश्वरी काठक दरार देखबैत उत्तर देलनि, “तख्ती तेल निकालबाक मशीनक आवश्यक भाग नहि। ओकर इतिहासक दाम हम लग रखब।” मूल्यांकनक बाद घटल दामपर बिक्रीक सहमति भेल। घानी बेचिकऽ जे रकम भेटल, ओकर एक हिस्सा प्रमाणित पुरान मजदूरी आ ऋण चुकएबाक पाँतिमे गेल, शेषसँ छोट तेल-दोकानक साझेदारीक पूँजी बनल। बुजुर्ग स्त्री घरक माप-पात्र उठबैत कहलीह, “दोकान नब होएत, नाप धोखा नहि देत।”

उषा राम रंगीन चमड़ाक एक छोट पट्टी लऽ पहुँचलि। एहि पर नव डिजाइनक हलुक त्रिकोण बनल छल, जे ओ अपन हाथसँ काटने छलीह। पहिने एक ग्राहक एही साँचकें अपन नामसँ अनेक जोड़ी जूता बनएबाक चाहने छल। उषा नमूना-बहीमे अपन पहिल रेखा, काटबाक तिथि आ ग्राहककें देखाओल प्रतिक संख्या लिखि रखने छलीह। आइ ग्राहक नव अनुबन्ध लऽ आएल छल—दाम देत, मुदा डिजाइनपर पूरा अधिकार लेत।

“जूताक एक जोड़ी किनब आ नमूनाक जीवन किनब एके बात नहि,” उषा कहलीह। ग्राहक पुछलक, “तँ अहाँक शर्त की?” “पहिल खेपमे डिजाइनक श्रेय हमर नामे, उत्पादनक संख्या लिखित, अगिला खेप लेल अलग सहमति। हमर घरक चर्मकाजक कारण हम सदा एके पेशामे रहब, एहन शर्त नहि।” ओ अपन चित्र बनएबाक अलग प्रशिक्षण आ वस्तुक नमूना तैयार करबाक काम लेल सेहो समय माँगलीह। ग्राहक आधा अधिकारक प्रस्ताव वापस लेलक; सीमित खेपक लिखित आदेशपर हस्ताक्षर भेल।

पवित्रा उषाक पट्टी देखि कहलीह, “हम जे डोरी गँथब, ओकर रूप देखि कियो डोरीक डिजाइन सेहो अपन कहत।” उषा मुस्कुरौलीह। पार्वती तीनू कारीगरकेँ लग बजौलीह। ओ सभ एकसंग सामान बनएबाक सम्भावना देखलीह—बुनल थानक किनार, गँथल डोरी आ चमड़ाक मजबूत पकड़; मुदा तीनू सामग्रीक उपयोग, मूल्य आ श्रेयक अलग रसीद ठहरल। नया वस्तु बनब एखन परीक्षण छल, बेचल नहि गेल छल। संयुक्त काजक अर्थ एक-दोसराक हस्ताक्षर मेटा देब नहि भेल।

उषाक घरमे पहिने नव डिजाइन बनेबापर काका कहने छलाह जे चर्मकारक बेटीकेँ जूताक चमड़ा छोड़ि चित्र-रेखा बनएबाक अधिकार के देलक। उषा ओहि दिन उत्तर नहि देने छलीह। आजुक सीमित अनुबन्धक एक प्रति ओ घर लऽ जाएत। ओ चर्मकाज छोड़बाक सार्वजनिक घोषणा नहि करैत छलीह; अपन काजक सीमा स्वयं तय करैत छलीह। ओकरा लेल डिजाइनक प्रशिक्षणक पहिल फीस नव नमूनाक अग्रिमसँ चुकएबाक रास्ता खुलल छल।

किरण राउत ओहि समय अपन बटाइक पुरान पन्ना लऽ बजार समिति लग पहुँचलाह। हुनकर कागदक एक कोनामे ‘अधवारा’ लिखल छल। मुनीम चाहैत छल जे एहि नामकेँ बजारक जलनिकासक प्रमाण मानि किछु कातक किराया बदलि देल जाए। किरण पन्ना मुँहपर राखि नहि, मेजपर राखि कहला, “ई हमर पुरान बटाइ आ देयक ठामनाम अछि। एहि पर आधा अन्नक हिसाब लिखल अछि, आजुक खटालक पानि मापल नहि।” समिति नामक मूल वर्तनी सुरक्षित राखि जलमापक अलग नकलमे दर्ज केलक।

देवकी पाल अपन पशुसभकेँ मेलेसँ दूर सूखल कात बाँधने छलीह। मौसमी पशुबाटक पुरान कागदमे ‘खैरी’ नाम छल। नव कपड़ाक दुकानक तम्बू लगबैत युवक एहि पुरान बाटक एक हिस्सा घेरबाक चाहलक। देवकी कहलीह, “हम कागदसँ एहि ठामक नदी नहि बनबैत छी, मुदा पशु निकलबाक सुरक्षित बाट आइ देखू।” माप-कमी वास्तविक माटिक ढलान, खटालक बगलक सँकरी चाल आ मेलेमे पशु-सुरक्षाक दूरी देखलक। तम्बू कने हटायल गेल; स्थायी जमीन-अधिकारक प्रश्न एहि अस्थायी निर्णयसँ समाप्त नहि भेल।

यूसुफक पहिल थानक बोली लगल। थोक व्यापारी एक्के दाममे बुनल कपड़ा, रंगाइ आ गँथल किनार किनबाक प्रस्ताव देलक, मुदा पार्वती अलग घटकक मूल्य देखौलीह।

यूसुफ एक सादा थान बिक्रीक लेल अलग राखलनि; सजाओल थानक दाम सकीना आ पवित्राक रसीद मिलेला पर मात्र निश्चित भेल। “एक वस्तुक दाम एक रहत,” व्यापारी कहलनि। पार्वती उत्तर देलीह, “ग्राहक एक रकम देत, मुदा भीतर श्रमक अनेक हाथ अछि। हम ओकरा लुकाएब नहि।”

दुपहरि ठाम बदलैत मखानक डलिया घाममे लगल आ एकटा रङ्गीन कपड़ा निचाँ सरकि गेल। पार्वती कपड़ा उठा कऽ देखलीह—किनारपर पवित्राक गाँठ ठीक छल, मुदा सकीनाक रङ्ग किछु ठाम भीजल छल। सकीना तुरन्त दोष स्वीकार नहि कएलीह; नमूनाकेँ सुखा कऽ जाँच करबाक कहलनि। यूसुफ बेचनिहारसँ एक दिनक समय लेलनि। “पहिल कपड़ा जल्दी बेचलहुँ तखन दोषक दाम सब मजदूरसँ काटताह,” ओ कहला। व्यापारी समय देलक, मुदा अग्रिम घटा देलक। असुविधाक ई मूल्य ओ सभ अपन साझेदारीमे दर्ज कएलनि।

बजारक दफ्तरमे पुरान आरोपक पन्ना खोलल गेल। यूसुफक सहीवला पहिल गाँठ वैध स्वामित्व आ बिक्रीक कागदसँ मिलल छल; गलत अस्पताल-स्वीकृतिक पट्टीवला दोसर खेपक स्रोत एखन स्वतन्त्र जाँचमे छल। समिति लिखित रूपसँ यूसुफक वैध थानपर लागल सामूहिक दोषारोपण हटौलक। मुदा गलत पट्टी के लगौलक, ओहि प्रश्नपर ककरो नाम बिना प्रमाणक नहि चढ़ल। यूसुफ सुधार-पत्र हाथमे लऽ कहला, “हमर व्यापार फेर शुरू भेल, मुदा जाँचक मुँह हम अपन सुविधासँ बन्द नहि कराएब।”

रमा कर्ण, जे मेलेमे श्रमिक-सहमति आ खाताक निरीक्षण लेल अएलीह, नव साझेदारीक मसौदा पढ़लीह। यूसुफक दुकान बिक्री-स्थान देत, पार्वती बुनाइ, सकीना रङ्ग, पवित्रा गँथाइ; हर एकक अग्रिम आ शेष मजदूरी अलग समयपर देल जाएत। क्षतिक कारण सिद्ध होए बिना सबपर बराबर कटौती नहि होएत। सामग्रीक स्वामी आ डिजाइनक उपयोग पर लिखित अनुमति चाही। गीता पुछलीह, “जे कम्पनी धन रोकि लेत, ओकर देरीक भार कोन घर?” मसौदामे देरीक स्वतन्त्र दावा जोड़ल गेल।

मेसक सार्वजनिक रजिस्टरमे विनोदक छोट विक्रेता-स्थान, फूलमतीक जालसमूहक हिस्सा, चन्द्रिकाक रसोइक घण्टा, सकीनाक रंगाइक दर, उषाक सीमित डिजाइन-अनुमति आ बिन्देश्वरीक साझा तेल-दोकानक स्वीकृत हिस्सा अलग-अलग चढ़ल। दानक रकमकेँ

माछ किनबाक व्यापारिक दाम नहि कहल गेल। श्रमिकक नाम बिना अनुमति सार्वजनिक प्रदर्शनमे नहि लगाओल गेल, मुदा प्रत्येककेँ अपन रसीदक प्रति भेटल। जे पढ़ि नहि सकैत छल, ओकरा खाताक पाँति चुनल भाषामे सुनाओल गेल।

हिसाब पढ़ैत रमा एकटा जरूरी खाली जगह देखलीह—नब साझेदारीक प्राप्ति पर ककर बैंकमे पहिल रकम पहुँचत, से लिखल नहि छल। यूसुफ पहिले अपन खाताक अंक देलनि, मुदा पार्वती रोकलीह। “हमर मजदूरी यूसुफक खातामे जमा भेलाक बाद ओ हमरा पठौताह, तखन फेर हम हुनकर कृपापर रहब।” अलग प्राप्ति-अंक, अलग खाते जमा, आ नगद लेनिहारक साक्षी निश्चित भेल। मेलेमे पहिल थानक बिक्रीक पाछाँ चारि अलग भुगतान-सन्देश पहुँचल, मुदा बाँकी खेपक भविष्यक कमाइ एखन अनुमान छल।

गीता सीमापारक साथीकेँ छोट सन्देश पठौलीह—एतय नव साझेदारीक पहिल मसौदा मंजूर भेल, मुदा हुनकर पुरान कम्पनीक शेष दाम ओहि साझेदारीक पूँजी नहि बनल। कम्पनीसँ स्वतंत्र नाप-परीक्षणक तिथि भेटलाक प्रतीक्षा छल। ओ करघाक पातर धागाकेँ अँगुरीपर घुमाबैत कहलीह, “हम एखन दोसराक रोकल रकमपर अपन अगिला कपड़ा नहि बुनब।” पार्वती हुनका नब मालमे हिस्सेदार होएबाक आग्रह कएलीह; गीता उत्तर देलीह जे पहिने पुरान दावाक स्थिति लिखित भेटए दिअ, फेर नव हिस्साक निर्णय करब।

साँझ मेलेमे माछक गन्ध आ तेलक नब शीशीक गन्ध मिलि गेल। यूसुफक बेटा उपकरण-मरम्मतक कमाइक छोट लिफाफा लऽ कऽ घर पहुँचल। ओ ग्राहकक खराब रेडियोक तार बदलने छल आ मजदूरीक प्राप्ति-पर्ची पर अपन नाम लिखौने छल। ओ लिफाफा अब्बाक आगाँ राखलक। यूसुफ ओकरा वापस हुनकर हाथमे दैत कहला, “ई तोहर कमाइ अछि। घर लेल जे देब, अपन इच्छा सँ देब।” बेटा माएक लेल पहिल बेर अपन कमाइसँ मिठाईक छोट पुड़िया किनि अनने छल।

पार्वती नव साझेदारीक कागद मोड़ि अपन कपड़ामे रखलीह, पवित्रा अपन अलग रसीदक अंक फेर मिलौलीह, सकीना रंगक नमूना सुखए लेल घर लऽ गेलीह। बिन्देश्वरीक बुजुर्ग स्त्री पुरान बाटसँ नब दोकानक शीशी नापि मुस्कुरौलीह। बाजारक बचेखुचे पानिमे नब तम्बूक दीप हिलैत छल; ओहि प्रतिबिम्बकेँ कियो नदीक नक्शा नहि बुझलक। यूसुफ

बेटाक मिठाईक एक टुकड़ा चाखि कहला, “करघाक ठकठक अलग, तोहर तारक टुनटुन अलग। घरमे दुनू आवाज रहए दिअ।”

अध्याय १६७ • बिना सम्राटक नाप

भादवक अन्तिम सप्ताहमे विदेहपुरक पंचायत-घरक बरामदापर दूटा नक्शा अलग-अलग काठक पट्टापर तानल छल। पहिल नक्शापर हरियर रंग बहुत छल—पछियारी चौर, मखानिया डबरा, बालूघाटक कातक धरती सभ एकहि हरियर पट्टीमे। दोसर नक्शा ताराक हाथसँ बनल छल। एहिमे जलक रंग मौसमक संग बदलैत छल, आ कतहु हरियरक भीतर पशुक पगडंडी लेल पातर उज्जर बाट छोड़ल गेल छल। सभासँ पहिने ललित विश्वकर्मा दुनू पट्टाक बीचक नापडोरी खिंचि देखलनि। पहिल पट्टामे काठक एक टुकड़ा झुकल छल; सीधा कए बिना ओकरा पर उकेरल दूरी गलत पड़ैत।

“सरकारी नक्शा सीधा अछि,” नाप-कर्मचारी कहलक, “अहाँ लोकनिक काठ टेढ़ होइत अछि।” ललित डोरी तानि उत्तर देलनि, “काठक टेढ़पन देखाएल जा सकैत अछि। कागदक टेढ़पनक सजा लोकक खेतकें किएक?” कर्मचारी कहलक जे जिलासँ आएल मानचित्रपर अनुमोदन भऽ गेल अछि; एहि सभाक काज केवल ग्रामसभाक मुहर लगैनाइ। तारा पहिल नक्शाक एक कोना उठौलीह। ओतय लिखल छल—‘रिक्त सार्वजनिक भूमि’। ओहि लिखावटपर देवकी पाल अपन ऊनक गट्टर राखि देलीह। “एतय हमर बकरीक खुर चलैत अछि,” ओ कहलीह, “रिक्त लिखलासँ बाट खाली नहि भऽ जाइत।”

रमा कर्ण बरामदाक सीढ़ीपर आबि ठाढ़ भेलीह। हाथमे तीन रंगक चाक, एक मापक छड़ी आ गामक असहमतिक पन्ना छल। “आइ मालिकाना बाँटबाक आखिरी अदालत नहि बैसल अछि,” ओ कहलीह। “मौसमी उपयोगक माप तय होएत—कखन पानि, कखन खेती, कखन पशुक बाट, कखन सार्वजनिक मरम्मत। मुदा जे व्यक्ति असहमत अछि, ओकर नाम आ कारण नक्शाक बगलमे रहत। मुहरक अर्थ ई नहि जे जमीनक क्षति अपने-आप मेटा गेल।” कर्मचारी कहलनि जे असहमतिक खानासँ मंजूरी टारि सकैत अछि। रमा उत्तर देलीह, “असहमति लुकाएब मंजूरीक जल्दी भऽ सकैत अछि, मंजूरीक प्रमाण नहि।”

मखानिया डबराक किनार एकटा अस्थायी माप-चौकी बनल छल। कमरधर पानिमे उतरएवाली स्त्रीसभ अपन टोकरा सुखा रहल छलीह। फूलमती तियर एक मुट्ठी बीहन

मेजपर रखलीह, मुदा ओकरा माछक जीरा नहि कहलनि। नन्दिनी भंडारी नर्सरीक नलिकासँ भरल दू मापक पात्र देखौलीह। पहिल पात्र डबराक भीतरी पानिक छल, दोसर बाहरक नालासँ आएल पानिक। “एकहि दिनक माप स्थायी पट्टा नहि बनत,” ओ कहलीह। “बरखा घटलापर फेर जाँच होएत। आ हमर मापक औजार उधार लेल जाए, तँ ओकरा फेर घुरएबाक समय लिखू।”

डबराक ठेकेदार चाहैत छल जे चुननिहार स्त्रीसभक मेहनताना बीहनक खरीद-दाममे मिला देल जाए। एक बुजुर्ग स्त्री अपन भीजल हथेली मेजपर पसारि देलीह। “पानि सँ चुनल बीहन एक काज,” ओ गनौलीह, “छाँहमे सुखाएब दोसर, घरे फोड़ब तेसर। पहिने कर्जा देने लोक सूखल मखान उठबैत अछि; हमर घण्टा कतय जाएत?” नन्दिनी अपन बही खोलि तीनू काजक अलग पाँति खिंचलीह। ठेकेदार कहल जे एतेक हिसाबसँ सौदा महँग होएत। स्त्री उत्तर देलीह, “सस्ता बनएबाक जे तरीका हमर नाम मेटा देत, ओ बजारक हिसाब नहि, हमर देहक चोरी अछि।”

नाप-कर्मचारी डबराक निचला कात नीला रंग भरए चाहलक। हीरा सहनी मापक छड़ी एके ठाम दू बेर गाड़लनि; भीतरक गादक कारण नाप बदलि गेल। तारा नक्शापर ‘वर्तमान जल’ आ ‘बरखा समयक सम्भावित विस्तार’ लेल दू अलग सीमारेखा बनौलीह। ऋणक बही डबराक अधिकारपत्र नहि छल, मुदा बीहन पर आश्रित परिवारक देयक प्रमाण ओकर भीतर रहैत छल। बीहन-पानि साझेदारीक वार्षिक बैठकीमे तय भेल जे अगिला मौसमक पहिने डबराक पुनर्माप होएत, चुनाइ आ फोड़ाइक श्रमिकसभ अपन हस्ताक्षर वा अँगूठाछापसँ भुगतानक प्रति प्राप्त करताह। पहिल स्वीकृत मजदूरीक दूरसीद ओही ठाम बाँटल गेल।

डबराक पश्चिमी किनारमे सत्तो देवी अपन पुरान ऋण-पर्ची लऽ ठाढ़ छलीह। हुनकर पर्चीमे ‘बीहनक कर्जा’ लिखल छल, मुदा सहकारी दुकानदार फोड़ाइक मजदूरी ओहि कर्जामे काटि लेने छल। सत्तो कहलीह, “बीहन हम किनने रही, ओकर दाम देब। मुदा जे राति भरि आगि लग फोड़लहुँ, ओकर मजदूरी कर्जाक ब्याज किएक?” रमा दुनू रकमक अलग सत्यापनक आदेश देलीह। दुकानदार असहमति दर्ज करौलक; ओहि दिन ओकर

हिसाबक अन्तिम फैसला नहि भेल। मुदा अगिला खेपमे मजदूरी काटबाक एकतरफा अधिकार तत्काल रोकल गेल।

पछियारी चौर दिस जाइत बाटमे पानि एखनो गोरुखुरक गहिराइ धरि छल। सुशीला महतो अपन धानक छोट बेड़ देखौलीह, जकर कातमे पछिला वर्षक जलरेखा बाँसपर काटल छल। देवकी पाल बकरीसभ लऽ पटरीपर रुकीह। चौरक एक हिस्सा बरखामे माछ आ पशुचरणक, पानि उतरला पर खेतीक उपयोगमे अबैत छल। जिला-नक्शामे ओकरा स्थायी कृषि-खण्ड लिखि देल गेल छल। सुशीला कहलनि, “धान लेल दिन चाही, मुदा बकरीक बाट बन्द करब तँ अगिला बरखा गामक कोन घरक पाछाँ जाइत?” देवकी हुनकर बात सुनि ऊनक गट्टर खोलि एकटा पातर डोरी निकाललीह।

डोरीसँ देवकी चौरक बीचक पुरान पशुबाट चिह्नित कएलीह। किन्तु बजारक नव ऊन-दोकान लेल हुनका जे भूमि देल गेल छल, ओकर कोना एहि बाटपर पड़ैत छल। “हम अपन दोकानक चबूतरा दू हाथ छोट करब,” ओ कहलीह। “बाजारमे सामान कम पसारब, मुदा पशु निकलबाक बाट नहि छोड़ब।” हुनकर बेटा विरोध कएलक, “एहिसँ कारोबार घटत।” देवकी ओकरा समीप बजौलनि। “घटत, से सच अछि। मुदा दोकानक लाभ लेल जे बाट कटल जाएत, ओहिमे हमर पशुओ पहिने फँसत। अपन नुकसान कागदपर लिखि देब, लुकेब नहि।”

सुशीलाक खेतक एक कोनामे मौसमी निकास लेल नाली बनत। नालीक पानी सीधे फूलो चौरसियाक पानक खेत दिस जाएबाक आशंका छल। फूलो भीजल पानक लत्ती लऽ अएलीह। ओकर पातक किनारपर करिया दाग छल, जकर कारण देखबा लेल ओ रोग-जाँच करौने छलीह; सभ दाग निकासक पानिसँ भेल, एहन दावा ओ नहि कएलीह। मुदा पिछला असुरक्षित निकासक समय जे दू क्यारिक बेड़ बहल, ओकर फोटो, खर्च आ फेर रोपल पौधाक प्राप्ति-पत्र ओ मेजपर रखलीह। “रोगक नुकसान अलग,” ओ कहलीह, “नालीक पानी सँ बहल माटिक नुकसान अलग।”

कर्मचारी फूलोकेँ कहलनि जे साझा निकास सबकेँ लाभ देत, ताहि लेल ओ अपन दावा छोड़थि। फूलो पानक लत्ती पट्टापर रखि कहलीह, “सभकेँ लाभ होएत तखन एक घरक क्षति सब नहि खाउ।” ताराक संशोधित रेखामे नाली चौरक ऊँच कातसँ घुमाओल गेल;

निकासक मुखपर माटि थिर करबाक अस्थायी जाली राखबाक निर्देश भेल। पुरान नुकसानक जाँचमे प्रमाणित दू क्यारी लेल आंशिक भरपाई स्वीकृत भेल। फूलो स्वीकार कएलीह जे रकम खेतक पूरा क्षति नहि अछि, मुदा ओ पहिल भुगतानक प्राप्तिपर हस्ताक्षर कएलीह। शेष आ नव जोखिमक खानामे अपीलक तारीख लिखल गेल।

नन्दिनी अपन नर्सरीक दू छोट टब लऽ चौर पहुँचलीह। एक टबमे जलप्रेमी पौधा छल, दोसरमे ओहन बीहन जे घण्टाभरि पानिमे डूबलासँ सड़ि जाइत। नाप-कर्मचारी सब पौधाक जमीनपर एके जलस्तर लागू करए चाहैत छल। नन्दिनी मापक छड़ी साझा करबाक सहमति देलीह, मुदा कहलनि, “हमर खेतक मूल्य एहि छड़ीक लम्बाइसँ नहि निकलब। ओ अलग सर्वेक्षण, अलग सुनवाईक विषय अछि।” कर्मचारी चौरक नक्शामे अलग ‘नर्सरीक जीवित नमूना’ चिह्नित केलक। जमीन बेचबाक निर्णय माँगल गेल तँ नन्दिनी अपन हस्ताक्षर रोकि देलीह; जलमाप साझा करबाक पन्नापर मात्र सही कएलीह।

चौरक निचला मेड़ लग एक मछुआर किशोरी छोट जाल सुखा रहल छलि। सरकारी रेखामे बरखाक अस्थायी माछपकड़ाइ लेल ठाम नहि छल। ओकर माय पूछलीह, “धानक खेत रहए तँ हम जाल कखन लगायब?” सुशीला कहलीह, “जे मास धान रोपल रहत, ओहि मासमे नहि; जे बेर चौरमे पानि ठहरत, सुरक्षित सहमति सँ।” नब नक्शामे खेती, पशुचरण आ मौसमी जालक अलग तिथि लिखल गेल। किशोरीकेँ एहिसँ समस्त जलकर नहि भेटल, मुदा ओकर परिवारक उपयोग अब अदृश्य नहि रहल।

दुपहरिया बालूघाटपर सूरज गंगोता अपन पुरान खेतक सीमाक पतला बाँस लऽ ठाढ़ छलाह। बाँसक आधा हिस्सा नदीक काटल कातमे धँसल छल। ऋणदाता प्रतिनिधि नक्शापर बालूक नब सपाट हिस्सा देखाकऽ कहलक जे सूरजक क्षति भरि गेल; ओतय फेर खेती होएत। सूरज माटिक एक मुट्ठी उठौलनि। बालू अँगुरीक बीच सँ खसि गेल। “ई हमर खेतक परत नहि,” ओ कहलनि। “जतए रोपनी छल, ओ जमीन कटि गेल। नव बालू देखिकऽ पुरान ऋण मेटि नहि सकैत; मुदा नव बालूकेँ हमर खेत कहलासँ खेत फेर आबि नहि जाइत।”

अदिति नाप-कर्मिक सँ सर्वेक्षणक तिथि पूछलीह। पुरान अभिलेख वर्षा-पहिने बनल छल, नव नाप पानी उतरबाक बाद। दुनूक सन्दर्भ अलग राखि अङ्कन भेल। सूरजक पुनर्गठित ऋण-किस्तक कागद समितिक लग पहिने सँ छल; तकर पहिल अदायगीक दिन नजदीक छल। ओहि ऋणकँ भूमि-अधिकारक अन्तिम निर्णायक बराबर नहि मानल गेल। सूरज कहलनि जे जँ नब सर्वेक्षणमे कटानक प्रमाण अछि तँ बैंककँ सेहो ओकर प्रति भेटबाक चाही; नहि तँ कागदमे ओ आइयो पहिनुका खेतसँ आय कमा रहल किसान ठहरताह।

बालूघाटक निचला बाटे मजदूरसभ नब माटिक बोरा ढोएबाक आदेश पाबि रहल छलाह। ललित विश्वकर्मा एक बोरा उठाएल काठक तख्तापर राखि भार जाँचलनि। ठेकेदारक पुरान बिलमे कम काठक कामक बदला तीन गुना मालक दाम लिखल छल। ललित अध्यायसभ पहिने ओहि बिलपर सही करब अस्वीकार कएने छलाह, ताहि दिनसँ हुनकर वैध मरम्मतक दाम अटकल छल। आइ निरीक्षक पुरान बिल रद्द करबाक प्रति लऽ आएल, मुदा भुगतान आदेशमे ‘जाँच शेष’ लिखल छल। ललित हँसलाह नहि। “गलत रकम काटि देलहुँ,” ओ कहला, “सही रकम कहिया देब?”

गोमती बेलदार ओहि प्रश्नकँ मजदूरसभक घण्टासँ जोड़लीह। “बोरा ढोएबाक मजदूरी आ काठक जोड़ाइक दाम एक नहि। गलती ठेकेदारक बिलमे छल; कामक सही दामक कर्जा ललितपर किएक?” रमा निरीक्षकसँ लिखित समय माँगलीह। निरीक्षक पहिने पन्द्रह दिन कहलक, फेर वित्तीय अनुशंसाक पन्ना देखि सात दिनक भीतर सत्यापित रकम निर्गत करबाक लिखित आदेश देलक। ललित एकरा भुगतानक प्राप्ति नहि कहलनि। ओ रसीदक बदला आदेशक प्रति लेलनि, आ छोट काठक जोड़ाई पूरा करबाक लेल अपन औजार उठौलनि। देरीक मूल्य हुनकर घरकँ पहिने सँ चुकए पड़ि रहल छल।

बालूघाटक ऊपरक पुरान नोनथरापर अमृता चौहान एक मुहरबन्द पीतल-पट्टिका लऽ आओलीह। हुनकर परिवारक स्मृतिमे ओतय नोन बनएबाक चूल्हि छल; चूल्हिक चिन्ह एखन माटिक भीतर नहि भेटल छल। ठेकेदार चाहैत छल जे पुरान उद्योगक स्मृतिपट लगला पर भूमि-दावा समाप्त मानल जाए। अमृता पट्टिका खोलि ओकरा माटिपर नहि गाड़लीह। “जँ स्मृति-पट चाही, ओ बनत,” ओ कहलीह, “मुदा बाप-दादाक अधूरा जमीन-

कागत एहि पीतलमे विलीन नहि होएत।” हुनकर पुरान मुहरक चित्र अभिलेखमे पड़ल, स्वामित्वक निर्णायक प्रमाणक रूपमे नहि।

गोमती अमृताक बगलमे ठाढ़ भेलीह। कियो पुरान नोनिया-बेलदारक संयुक्त व्यवसायवृत्त पढ़ि दुनूक दावा एकहि फारममे चढ़बए चाहैत छल। गोमती रोकलीह। “हम आधुनिक निर्माणमे जे काज केलहुँ, तकर मजदूरी आ आदेशक नाम हमरा चाही,” ओ कहलीह। “अमृताकेँ नोनथराक परिवारक भूमि-दावा चाही। एक माटि दू अधिकारक जगह होइत अछि, ताहिसँ अधिकार एक नहि भऽ जाइत।” समिति दू अलग पन्ना बनौलक। अमृताक स्वामित्वक फैसला स्थगित रहल; गोमतीक कामक विवादरहित घण्टाक परीक्षणक तारीख तय भेल। स्मृतिपट लगएबाक अनुमति मात्र मौसमी उपयोग-क्षेत्रसँ बाहरक सुरक्षित ठाम लेल भेटल।

सुगनी सदाय बालूघाट लग चुपचाप बैसल छलीह। हुनकर थैलीमे कोसी-कोसिकाक बाढ़िक एक पुरान पारिवारिक लेखा छल, जाहिमे पानीक रङ्ग, भागल पशु आ छूटल अनाजक हिसाब लिखल छल। ओ कागद सूरजकेँ देखौलीह। “हमर दादी एहि नामसँ ओहि दिनक बाढ़ि याद करैत छलीह,” ओ कहलीह। “एतय बालूघाटक नब सर्वेक्षणक नाम बनएब लेल नहि।” सूरज अपन ऋण-पत्रक कात पुरान यादक अलग पाँति खोललनि। परिवारक अनुभव ओहि मापमे दबायल नहि, आ आधुनिक भौगोलिक सीमा तकर आधारपर घोषित नहि भेल।

किरण राउत आ सुशीला महतो दूटा बही लऽ अएला। किरणक बटाइ-कागतक एक कोनामे ‘बूढ़ी गंडक’ लिखल छल; सुशीलाक खेतीक पारिवारिक कागदमे सेहो ओहि नामक उल्लेख छल, मुदा दूनू लेखाक तिथि आ उद्देश्य एक नहि। नक्शा बनौनिहार युवक एके शब्द देखि दुनू पन्नाकेँ जोडि एक नब नदी-रेखा खींचबाक चाहलक। सुशीला ओकर हाथसँ पेंसिल नहि छीनेलीह; खाली नब नक्शाक बगलमे पुरान दू पन्ना राखि कहलीह, “पहिने बताउ जे हमर खेतक माप एतय कहाँ अछि।” युवकक लग उत्तर नहि छल। तारा नामसभक मूल वर्तनी सुरक्षित राखि भौगोलिक मिलानक प्रस्ताव हटौलीह।

प्रस्तावित भरपाइक सूची पढ़ैत रमा देखलीह जे किछु घरक नामक बगलमे केवल ‘लाभार्थी’ लिखल छल, राशि नहि। फूलो पुछलीह जे आधा भुगतानक रसीदपर सही

कएलासँ शेष माँगब बन्द तँ नहि होएत। लेखा-कर्मि पन्नापर अलग लिखलक—‘आंशिक प्राप्ति, शेष दावापर अधिकार सुरक्षित’। एहने स्पष्टता सूरजक कटान-प्रकरणमे संभव नहि छल, कारण नुकसानक प्रमाण जुटि रहल छल। रमा सभकेँ एकहि उत्तर नहि देलीह; ओ प्रत्येक कागदमे जतेक सिद्ध छल, ततेक मात्र लिखबौलीह।

बीहन-पानि साझेदारीक दोसर बैठकी बरामदापर फेर जमल। महिला श्रमिक, नाविक, पशुपालक, खेतिहर, नर्सरी चलौनिहार आ नाप-कर्मि सभ अपन-अपन समयक रंग नक्शापर देखलनि। एक नक्शा बरखाक, दोसर पानि उतरबाक, तेसर जोखिम आ अस्थायी रोकक बनल। मखानिया डबरा उत्पादनक पानि छल; पछियारी चौर बदलैत मौसमक साझा धरती; बालूघाट कटान आ ऋणक स्थल। ई तीनू एकहि ‘खाली जमीन’क नामसँ नहि रहि सकैत छल। एक महिला कहलीह, “सालमे चारि बेर जमीनक देह बदलैत अछि, मुदा हमर नाँव कखनहुँ नहि बदलबाक चाही।”

तखतापर अन्तिम रेखा खिंचला पर सरकारी कर्मचारी पूछलक, “एकरा सभक सहमति कहब की? नन्दिनी जमीनक दामपर नहि मानलीह, अमृताक दावा शेष अछि, सूरज अपन खेत वापस माँगैत छथि।” रमा कहलीह, “जाहिपर सहमति भेल, तकरा सहमति कहू। जकर निर्णय नहि भेल, तकरा कागदमे अधूरा लिखू। सम्राटक नाम लागला सँ हर रेखा सत्य नहि भऽ जाइत। लोकसभक असहमति नक्शाकेँ कमजोर नहि, ओकर उपयोगकेँ अधिक ईमानदार बनबैत अछि।” कर्मचारी मुँह बिचकौलक, मुदा अलग असहमति-पन्नाक अंक मूल नक्शापर चढ़ा देलक।

देवकीक बेटा अपन ऊन-दोकानक घटल चबूतराक नाप फेर लेलनि। ओ स्वीकार कएलक जे पगडंडी बचला पर दुकानक सामने तीन टोकरी कम अँटत। “हमर घाटा लिखल जाए,” ओ कहल। देवकी उत्तर देलीह, “लिखल जाए; आ जे पशुपालक पार होइत छथि, हुनकर बाट सेहो।” फूलो आधा भरपाइक रसीद सँभाललीह। नन्दिनी मापक छड़ी वापस लेलनि। ललित आदेशपत्र मोड़ि जेबमे रखलनि। एहि सभक हाथमे अलग कागद छल, आ कोनो कागद दोसरक अधिकार मेटा नहि रहल छल।

तारा बैठकक बाद बालूघाटक कात गेलीह। सूरज ओतय माटिमे पुरान बाँसक छोट टुकड़ा गाड़ि रहल छलाह, जे कटानक पहिनुक स्मृति-चिन्ह छल, नव सीमा-खूँटा नहि।

“आजु की भेटल?” तारा पुछलीह। सूरज कहला, “हमर खेत नहि। मुदा बैंककेँ देबाक कागदमे आब हमर खेतक गायब होएब पढ़ल जा सकत।” तारा हुनका नवीन नाप-प्रतिवेदनक क्रमाङ्क देलीह। ओ कहला, “अंक हमरा बुझाएब पड़त। हमर बेटा मोबाइलपर एतेक बारीक अक्षर नहि पढ़ि सकैत।”

साँझ पंचायत-घरमे तीनू मौसमी नक्शा मंजूर भेल। मूल पन्नापर सदस्यसभक सहमति, अलग असहमति आ पुनर्मापक तिथि लिखल गेल। मुदा कार्यालयक कर्मचारी सबटा कागद एक बड़का डिजिटल चित्रमे बदलि कऽ केवल मुख्य दफ्तरक खाते पठौलक। देवकीक हाथमे मोबाइल नहि छल; अमृताकेँ पुरान पट्टिकाक फोटो नहि, अपन दावाक उपयोगयोग्य प्रति चाही छल। ललित भुगतान-आदेशक अंक पढ़ि सकैत छलाह, मुदा कार्यालयक बन्द स्क्रीन सँ ओ किछुओ उठा नहि सकलाह।

रमा दरबाजा बन्द होमयसँ पहिने कर्मचारीकेँ रोकलीह। “अहाँक दफ्तरमे नक्शा आबि गेल,” ओ कहलीह, “मुदा जे लोक नापमे अपन जमीन, पशुक बाट आ मजदूरी राखलनि, हुनका लग की घुरल?” कर्मचारी उत्तर देलक—“ऑनलाइन प्रति देखल जा सकैत अछि।” देवकी अपन ऊनक गठरी उठबैत कहलीह, “हमर बकरी ऑनलाइन बाटे नहि चलत।” ओहि हँसीक बीच रमा अगिला दिन गाममे पढ़ल जा सकए एहन कागजी प्रति, सुनि सकए एहन पाठ आ संशोधनक अधिकार देबाक लिखित प्रस्ताव रखलीह। तीनू नक्शा मंजूर छल, मुदा ओकर घर घुरब एखन बाकी छल।

अध्याय १६८ • फेर लौटत प्रति

अगहनक भोरमे विदेहपुरक पंचायत-घरक बरामदापर रमा कर्ण एकटा नब काठक बाकस खोललीह। भीतर लम्बा कागद मोड़ल छल, किनारपर नील स्याहीक तीन रेखा। पिछला भादवमे जे मौसमी मानचित्र सभक समक्ष मंजूर भेल छल, ओकर ई पहिल उपयोगयोग्य प्रति छल। बाकसक तलमे सूतसँ बान्हल छोट-छोट पुर्जा छल—ककरा कोन पत्र भेटत, कतेक पन्ना, आ कोन जानकारी ओकरा देखनेक अधिकार अछि। बरामदाक खम्भा लग ठाढ़ सूरज गंगोता मानचित्र देखबाक बदला बाकसक खाली तल देखैत छलाह।

“हमर खेत तँ नदी लऽ गेल,” ओ कहलनि, “कागद घुरा कऽ की भेटत?” तारा बाकससँ एक प्रति निकालि हुनकर हाथमे देलीह। ओहिमे कटान-पहिनुक मापक रेखा आ नव मापक रेखा अलग छल; बीचक रिक्त स्थानपर ‘दावा अनिर्णीत’ लिखल छल। “धरती नहि घुरल,” तारा कहलीह, “मुदा अहाँक क्षतिक जगह नक्शासँ मेटाओल नहि जा सकत।” सूरज कागदकेँ पूरा खोललनि, तखने पाछाँ ठाढ़ एक कर्मचारी कहलनि जे सभ मूल प्रतिलिपि कार्यालयमे रहबाक चाही।

रमा ओकर बात सुनि बाकसक ढक्कन मेजपर उलटा रखलीह। “मूल कार्यालयमे रहत, एहि लेल विवाद नहि,” ओ कहलीह। “मुदा एहि कागदपर जे लोक अपन खेत, घर, श्रम आ आपत्ति दऽ गेल, हुनका खाली दूरक कम्प्यूटरक रास्ता देब अधूरा अधिकार अछि।” कर्मचारी आशंका देखौलक—प्रति बाहर गेलापर काटल-छाँटल जा सकैत अछि। रुहानी उत्तर देलीह जे प्रतिक क्रमाङ्क, तिथि, सार्वजनिक सत्यापन-चिह्न आ संशोधनक इतिहास रहत; निजी नामक खुलल प्रसार नहि होएत।

चन्द्रिका रसोइघर दिससँ गरम पानि भरल गिलास रखने अएलीह। ओ कागदक कोना पकड़बाक बदला ओहि पर पड़ल भापसँ बचबए गिलास काठक पट्टापर रखलीह। “एतए स्याही भीजि गेल तँ सत्यापित प्रति फेर कार्यालयक झंझट बनत,” ओ हँसैत कहलीह। गोमती बेलदार छाजनक फाटल कोना दिस देखलीह। रातिक पानीक बून्द टपकबाक

निशान छल। ओ अपन कपड़ा झारि मेजक ऊपर तानलीह; नक्शाक बचाव सेहो काज छल, कोनो नब सरकारी मद नहि।

पहिल प्रति सुधा राय माँगलीह। राजइनारक कात प्रस्तावित दानक जमीन ओहिमे हरियर छल। कर्मचारी फुसफुसौलक, “दानक घोषणा आइ मंचसँ होएत, स्कूलमे नाम पट्टिका लगत।” सुधा हरियर पट्टीपर अँगुरी राखलीह। ओहि पट्टीसँ दू किरायेदार परिवारक आवागमनक सँकर बाट सेहो जाइत छल। “हम पहिने सँ खम्भा गाड़ब रोकने छी,” ओ कहलीह, “अहाँ सभ हमर घोषणा एखन छापि देब तँ किरायेदारक बात फेर दानक विरोध बुझल जाएत।”

एक किरायेदार स्त्री भीड़सँ आगाँ अएलीह। हाथमे पड़ोसीक घरसँ उधार लेल टीनक डिब्बा छल, जाहिमे स्कूलक बच्चाक चकती आ सुई-धागा रखल छल। ओ प्रश्न कएलीह, “छज्जा हमर बच्चाक लेल बनत, मुदा जँ बाटे बन्द भेल तँ ओ पढ़ए कोन दिससँ जाएत?” सुधा कुर्सी खाली कऽ देलीह। दानक मसौदामे पहिल बेर ‘प्रस्तावित दाता’ आ ‘वर्तमान उपयोगकर्ता’ दू अलग शीर्षक बनल। किरायेदारसभक सुनवाई लेल तिथि निश्चित भेलाक पहिने कोनो दान-घोषणा नहि होएत।

दानक प्रस्तावक लग दोसर किरायेदार परिवारक वृद्ध पुरुष पुरान खपरैलसँ निकालल बाटक छोट खूँटा देने अएला। हुनकर कान कम सुनैत छल; नतिनी बात दोहरा कऽ सुनबैत छलीह। “एहि बाटपर हमर पुरखा चलल,” ओ कहला। सुधा उत्तर देलीह जे पुरखाक चलल बाटसँ कानूनी सीमा स्वतः सिद्ध नहि होइत, मुदा वर्तमान उपयोग मिटाओल सेहो नहि जा सकैत। नतिनी मुस्कुरौलीह—आइ दादा बिना चिचिएन अपना बात पूरा कहि सकलाह। सुनवाईक तिथि लिखल गेल, आ पहिल बेर हुनकर घरधरि एक प्रति पहुँचेबाक जिम्मेदारी ककरा देल गेल से सेहो तय भेल।

सुधाक भाय कातर भऽ पुछलक जे एहि तरहेँ नामक इज्जति घटत। सुधा ओकरा अपन पुरान जमीन-पत्र देखौलीह। “जमीन हमर नामपर अछि, मुदा एहि सँकर रास्तापर रोजक पएर केवल हमर नहि,” ओ उत्तर देलीह। ओ दान वापस नहि लेलीह; ओकर शर्त बदैल गेल। कागदमे लिखल गेल—पहिले वैकल्पिक सुरक्षित बाटक परीक्षण,

किरायेदारक अलग सहमति, तकर बाद दानक सीमांकन। स्कूलक शिक्षक तैयार धन्यवाद-पत्र अपन थैलीमे फेर राखि लेलनि।

दोपहरिसँ पहिने रमेश कुशवाहा टोकरीमे तीन छोट लौकी रखि पहुँचलाह। पिछला मौसमी सर्वेक्षणमे हुनकर सब्जीक खेतसँ सार्वजनिक जलनिकासक प्रयोग चलबाक बात उठल छल। पंचायतक नब प्रति मे नालाक नीला निशान साफ छल, मुदा खेतीक क्षतिक मद सफेद। रमेश लौकीकेँ नक्शाक नीला रेखाक कात रखलनि। “ई पातर चमड़ी देखू,” ओ कहलनि, “एक रातिक ठाढ़ पानि एहि आकारक फसलकेँ बेचबाक बदला काटि फेकए बाध्य करैत अछि। नालाक फायदाक रंग नीला, हमर घाटाक रंग की?”

तारा खेतक पहिनुक माप, रोपनीक रसीद आ प्रस्तावित निकासक घण्टा अलग पन्नामे जोड़ीह। रमेशक पत्नी, जे पहिनुक बैठकीमे ‘दावा’ आ ‘चुकाओल रकम’ अलग लिखबौने छलीह, आब स्वयं हिसाब पढ़लीह। “जतेक फसल जाँचमे नष्ट भेटत, तकर दाम; खेत फेर तैयार करबाक मजदूरी दोसर,” ओ कहलीह। अधिकारी प्रयोगक अवधि छोट रखबाक प्रस्ताव देलक। रमेश पुछलनि, “जँ मुआवजाक रकम आ देबाक अधिकारी लिखित नहि होए, प्रयोगमे हमर सहमति कागदक बोझ होएत।”

दू घण्टाक बहसक बाद पहिल वर्षक निकास केवल सीमित समय लेल स्वीकृत भेल; हानि नापबाक स्थल-जाँच, क्षतिपूर्तिक गणनाक ढाँचा आ भुगतानक समय लिखित भेल। ओहि खातामे रकम एखन जमा नहि छल। रमेश सहमतिपर अँगूठा देबाक बदला पहिने पढ़लनि, तखन सही कएलनि। पत्नी अपन प्रति अलग रखलीह। फूलो चौरसिया बाजूक मेजपर छाजनक भीजल बाँस आ पुरान परिवार-पत्र लेने ठाढ़ छलीह। “रमेशक खेत बचलासँ हमर पानक बाड़ी डूबि गेल तँ?” ओ पुछलीह।

फूलोक पत्रक कात ‘खिरोड़’ लिखल छल। अधिकारी ओकरा आजुक निकासक नब धारा-संकेत सँ एक करए चाहलक। तारा रोकलीह। “ई परिवार-पत्रमे भेटल जलनाम अछि,” ओ कहलीह, “एहिसँ आजुक नालाक सीधा संगम प्रमाणित नहि होइत। फूलोक बाड़ीपर पानिक प्रभाव अलग मापनसँ बुझल जाएत।” फूलो नक्शाक प्रतिमे अपन खेतक छाजन, ढाल आ पुरान पगडण्डी तीनू चिह्न देखलीह। ओ निकासक व्ययमे अपन हिस्साक विवाद लिखबौलीह, बिना अनुमानक पूरा खर्च स्वीकार नहि कएलनि।

अमृता चौहान ओहि बगलमे पीतल-पट्टिका झोरासँ निकाललीह। नोनथराक पुरान भूमिपंजीमे एक ठाम ‘अमृता’ व्यक्तिक नाम छल; एक दोसर जलनाम-सूचीमे सेहो ओहि अक्षरक नदीपद आयल छल। कर्मचारी दू प्रविष्टिक नाम समान देखिकऽ नक्शामे एक लाल बिन्दु बनाबए लागल। अमृता ओकर कलम रोकलीह। “माइक नाम आ नदीक नामक अक्षर एक हो सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा हमर परिवारक भूमि-अधिकार एहि समानतासँ बनत अथवा मिटत नहि।” हुनकर भूमि-दावा अनिर्णीत राखल गेल।

गोमती अमृताक बगलमे बैसि अपना निर्माण-ढुलाईक घण्टाक रसीद देखौलीह। केओ नोनिया-बेलदारक पुरान व्यवसायनाम पढ़ि ई दुनूक कागद एक खाते चढ़ाओल चाहैत छल। अमृता आ गोमती एक संग मना कएलीह। रमा अलग पहिचान-चिह्न दऽ प्रति बनबौलीह। अमृता घरक नकल अपन थैलीमे रखलीह; सार्वजनिक पन्नामे केवल दावाक स्थिति आ सम्बन्धित स्रोतक उल्लेख रहत। पीतल-पट्टिका वापस कपड़ामे बान्हल गेल; ओ स्मृतिक वस्तु छल, मालिकानाक अन्तिम साक्ष्य नहि।

दोसरा बरामदापर बदरी नोनफर अपन परिवारसँ अएला। हुनकर पत्नी पीबाक पानिक खाली घैल लऽ ठाढ़ छलीह। अस्थायी बसावटमे पछिला तीन दिन नल मे पहिल कतारक बाद धार कमजोर भऽ जाइत छल। सरकारी प्रति मे ‘पुनर्वास उपलब्ध’ लिखल छल। बदरी कागद उठबैत कहलनि, “उपलब्ध घर नहि, एक कोना अछि। बच्चा स्कूल जाइत बाटमे गहिर गड़हा अछि; शौचालय धरि रातिक रोशनी नहि। हम स्थायी स्वीकृति कतऽ देने छी?”

दफ्तरक युवक कहलनि जे अस्थायी ठाम अस्वीकार करबासँ राहत रुकि सकैत अछि। बदरीक पत्नी घैल धरि देलीह। “अस्थायी छाजनमे रहब आ स्थायी घरक अधूरा शर्त मानि लेब दू अलग निर्णय अछि,” ओ कहलीह। रुहानी नब प्रतिमे परिवारक निवासक वर्तमान स्थिति, पानिक कमी, बच्चाक बाट आ स्थायी प्रस्तावपर असहमति अलग दर्ज करबौलीह। बदरी मूल कागद नहि देलनि; रसीदक सत्यापित उतार मात्र देलनि।

बदरीक पत्नी फेर पंचायतक कात अएलीह तखन रुहानी हुनकर घैल उठए हाथ बढौलीह। स्त्री मना कएलीह—“ई हम उठा सकैत छी। हमरा नल धरि ढङ्गक बाट बनाउ, जतेक चक्कर लगैत अछि से लिखू।” रुहानी घैल रखि समय पूछलीह। भोरक दू

चक्कर आ साँझक एक चक्करक हिसाब लिखल गेल; एहि श्रमकेँ दया माँगबाक चिह्न नहि, व्यवस्था अपूर्ण रहबाक ठोस परिणाम कहल गेल। बदरी रसीदक कोनामे फेर सँ अस्थायी रहबाक तारीख देखलनि। घैलक भार घटल नहि, मुदा ककरा लग प्रश्न उठत से बदलि गेल।

परिणाम तुरन्त कठिन भेल। अधिकारी स्थायी बसावटक अनुदानक त्वरित किस्त रोकि देलक; अस्थायी मरम्मतिक सामान लेल देरी भेल। बदरी ओहि साँझ अपन पुरान चप्पलक फटल तल्ला सीबैत छलाह, जखन हुनकर बेटा पूछलक, “हमरा सभ फेर कतए जाएब पड़त?” बदरी उत्तर देलनि, “एखन एतहि रहब, मुदा जे जगह छूटत ओकर अर्थ पढ़ि कऽ सही करब।” पत्नी पानि आनए निकललीह। सुरक्षित नल धरि अतिरिक्त चक्करक समय सेहो परिवारक खर्च छल।

बरामदाक पाछाँ रतन भुइयाँ गेरुआ रङ्गक पुरान थैली खोललनि। भीतर माटि ढोअबाक मजदूरीक रसीद, ईंटक गिनती आ ठेकेदारक कर्जापत्र छल। एक कर्जापत्रपर एहन हस्ताक्षरक नकल छल जे रतन अपन नहि मानैत छलाह। अधिकारी कहलक, “पहिने पूरा कर्ज चुकाउ, तखन मजदूरीक प्रश्न उठाउ।” रतन एकटा पुरान गलती स्वीकार कएलनि—ओ एक बेर कामक दिन गणनामे एक दिन अधिक लिखि देने छलाह, जे पहिने सुधरल छल। “ओहि त्रुटिक दाम हम मानलहुँ,” ओ कहलनि, “मुदा जे ऋण कखनो लेलहुँ नहि, तकरा अपन नामपर किएक रखी?”

रमा स्वतंत्र प्राप्ति-बहीक नकल माँगलीह। ठेकेदार अपन पन्ना देल, मुदा रुपैया रतनकेँ प्राप्त भेल, तकर बैंक अथवा गवाहक प्रमाण नहि भेटल। झूठ कर्जक विवादित हिस्सा तत्काल वसूलीसँ हटाओल गेल। रतन एकटा पुरान असल औजार-उधारीक रसीद सेहो स्वीकार कएलनि; ओकर छोट रकम देय रहल। कर्मचारी सिर हिलौलक—एतेक दिनसँ दू ऋण एक संग छल। रतन अपन कर्जाक कटौती देखिकऽ मुस्कुरा नहि सकलाह; हुनकर रोकल मजदूरी एखन बैंकमे पहुँचल नहि छल।

“झूठ हटाओल गेल, असल उधारी रहल, मजदूरी एखन रोकल,” रतन धीरे-धीरे तीन पाँति पढ़लनि। संकेत, जे सामुदायिक प्रतिक पढ़बाक मदद करैत छल, प्रत्येक पाँतिक कात अलग चिह्न बनबौलक—जाहिसँ कम पढ़एवाला व्यक्ति सेहो बुझि सकय जे दावाक

स्थिति कोन अछि। रतन ओहि चिह्नपर अँगुरी फेरलनि। “कागदमे हम पहिल बेर केवल कर्जदार नहि, मजदूर सेहो देखाइत छी,” ओ कहलनि। संकेत उत्तर देलक, “आ एहि प्रति पर अहाँक नियन्त्रण अछि; बिना पूछने ककरो फोटो नहि खींचल जाएत।”

बीना कलार छोट शीशी आ नपबाक गिलासक थैली लऽ अएलीह। पैतृक हिस्साक दावामे परिवार आधा सहमति देने छल। भाय बाजारक पुरान तराजूक मूल्य बीनाक पूँजीमे जोड़ब स्वीकार केने छलाह, मुदा घरक कोठरीक हिस्सापर एखन विवाद छल। बीना नब प्रति सँ ई फरक बुझि सकैत छलीह—स्वीकृत पूँजी, विवादित सम्पत्ति आ अपन कमाइक हिसाब। “हम दोकान बढ़ाएब चाहैत रही,” ओ कहलीह, “मुदा आधा हिस्सामे दोसर गल्लीक भाड़ा नहि सम्हरत।”

बीना छोट बाजार-कोना चुनलीह। ओहिठाम पाँच तरहक आवश्यक सामान रखबाक जगह छल; पिता पुरान तराजू दऽ देलनि, मुदा ओकरा पारिवारिक दान कहि दुकानक मालिकाना अपने लग नहि रखलनि। बीना अँगुरीसँ नब काठक पट्टापर अपन नाम लिखलीह। पहिल दिनक लाभ बहुत कम छल; गिलास धरबाक जगह बचए लेल ओ दू शीशी हटौलीह। पैतृक हिस्साक विवाद जारी रहल, मुदा अपन स्वतंत्र दोकानक खाता ओहि विवादक समाप्तिक प्रतीक्षा नहि कएलक।

दुपहरिया उष्ण भेला पर पंचायत-घरक भीतर नक्शाक प्रति लेबाक लाइन लम्ब भेल। एकटा दल खुला खातेपर सभक नाम, जाति आ स्थायी पता लिखि पोस्टर छपए चाहैत छल। रुहानीक चेहरा कठोर भऽ गेल। “सार्वजनिक निर्णयक कारण सार्वजनिक होएत,” ओ कहलीह, “मुदा हिंसापीड़ित व्यक्ति, आश्रयक रहनिहार वा बच्चाक निजी पता एहि पोस्टरपर नहि।” रमा दुई प्रकारक प्रति बनबौलीह—सार्वजनिक उपयोग-मानचित्र आ सम्बन्धित व्यक्तिक विस्तृत निज प्रति। प्रत्येक व्यक्तिक आपत्ति अथवा नकल लेल अलग रास्ता रहल।

एक बुजुर्ग स्त्री पुछलीह, “हम सही नहि कऽ सकैत छी, अंगुरी काँपैत अछि। हमर प्रति हमर नतिनी लऽ सकैत अछि?” कर्मचारी पहिने मना करए लागल। स्त्री अपन नतिनी दिस देखलीह, तखन स्पष्ट कहलीह, “हम ओकरा अनुमति दैत छी। पढ़ि सुनाउ, ओ कागद सम्हारत।” रमा मौखिक अनुमतिक साक्षीक नाम लिखबौलीह, बुजुर्ग स्त्रीकेँ सुनबौलीह,

आ पुनः पुष्टि लेल ठहरलीह। नतिनी कागद नहि छीनलक; ओ दादीक कहला पर ओकरा मोड़ि थैलीमे रखलक।

सार्वजनिक प्रतिक प्रस्तावित खर्च सुनिते रघु प्रश्न उठौलनि—छपाइ, अनुवाद, कागद, दफ्तरक समय, आ यात्रा ककर हिसाबसँ? पहिने एकटा दानी सभ खर्च अपन नामसँ देबाक प्रस्ताव देने छल, शर्त ई जे प्रति खोलबाक अनुमति ओ स्वयं देत। सरिता, जे बरामदाक पिछला चौकीपर चुप बैसल छलीह, एकदम सीधी भेलीह। “दानक कागदक चाभी दाताक हाथमे रहत,” ओ कहलीह, “तखन ई फेर नव बन्द गोदाम बनत।” सभा प्रस्ताव बदललक—छपाइक सार्वजनिक रसीद, श्रमक पारिश्रमिक आ प्रति देबाक संस्था अलग-अलग दर्ज होएत।

फागुनमे शुरू भेल लोकपाठ—खुला खाता—गीतक आयोजनक बचेबाक सामान एखन पाठशालाक कोठरीमे छल। पद्मा ओतयसँ छोट पट्टा आ दू काठक स्टैण्ड मँगौलीह। किशोर विद्यार्थीसभ नक्शा छूए बिना ओकरा सहारा देलनि। एक बालिका पुछलक, “जँ पुरान प्रति गलत रहत, तँ हम फेर सुधारि सकब?” पद्मा कागदक तलमे संशोधनक खाली जगह देखौलीह। “अहाँ पुरान गलत प्रति नुकाउ नहि,” ओ कहलीह, “नव प्रमाण जोड़ू, आ कोन दिन की बदलल से बुझाउ।” बच्ची लाल रंगक छोट पत्ती ओकरा कात लगौलक।

खुला खाताक पाठमे चन्द्रिका रसोइक वास्तविक पारिश्रमिक, गोमती मरम्मतिक श्रम, तारा मापक तिथि आ गीता कोरी बुनाइमे प्राप्त आ बकाया राशि पढ़लीह। गीता अपन निजी व्यापारक पूरा खाता सभक समक्ष नहि खोललीह; सार्वजनिक साझेदारीक स्वीकृत राशि मात्र कहलनि। रुहानी एहि निर्णयक समर्थन कएलीह। सभक हाथमे पन्ना घुरब आ सभक निजी जीवन खोलि देब एके नहि छल। सभ गामक प्रति बनएबाक नब नियममे ई भेद स्पष्ट भेल।

खुला खाताक स्टैण्ड लग भेला पर रमा बालिकासभसँ पुछलीह जे सभसँ उपयोगी प्रति केहन होए। एक गामक किशोरी कहलीह, “जतए गलत लेखा अछि, ओतए केवल लाल चिह्न नहि; गलती सुधारबाक कार्यालयो लिखू।” दोसर कहलक जे हस्ताक्षर नहि करए सकनिहार लोकक वाणी सेहो मान्य हो। पद्मा एहि दूनू बातक लेल प्रतिक पछिलका पृष्ठमे खाली जगह बनबौलीह। छात्रसभ अपन सुन्दर अक्षर देखबए लेल नहि, बुझबए लेल

वाक्य फेर लिखलनि। सार्वजनिक पाठमे एहि बेर कियो श्रेष्ठ पाठकक पुरस्कार नहि रखलक।

एक युवक प्रस्ताव देलक जे सभ कागद मोबाइलमे पठा देल जाए; कागदक खर्च बचत। रमेशक पत्नी अपन हाथ देखौलीह, जाहिमे खेतक माटि चिपकल छल। “हमरा घरमे फोन अछि,” ओ कहलीह, “मुदा बरखामे चार्ज नहि होए, तखन अपन खेतक मुआवजाक नाप कोना पढ़ब?” संकेत कागदक सरल प्रति आ आवाजमे पढ़ल विवरणक विकल्प जोड़बाक निर्णयमे मदद कएलक। दुर्बल दृष्टिवला लोक लेल मोट अक्षरक प्रति, यात्रा करएवाला परिवार लेल बदलब ठिकानाक सम्पर्क सेहो स्वीकृत भेल।

साँझ धरि पहिल खेपक प्रति बाँटल गेल। सुधा किरायेदारक सुनवाईक सूचना लऽ गेलीह; दानक तखनी एखन खाली रहल। रमेश अपन खेतक प्रतिक संग क्षतिपूर्तिक मद पढ़लनि; राशि देबाक तिथि लिखल छल, मुदा भुगतान नहि भेल। बदरी अस्थायी बसावटक समस्या आ स्थायी प्रस्तावपर असहमतिक दू पन्ना अलग मोड़लनि। रतनक झूठ कर्ज घटलाक कागद घर पहुँचल; असल उधारी बचल। बीना अपन दुकानक पट्टा लऽ चलीह—दोकान छोट छल, चाभी हुनकर हाथमे छल।

पाछाँक खिड़कीमे सरिता नक्शाक एक कोना दबौने ठाढ़ छलीह। कागदक रिक्त जगह हुनका नैराक पुरान लिखल खाली घर याद दिऔलक। ओ ओहि पन्नापर बेटीकेँ उपस्थित घोषित नहि कएलीह, न ओकर मृत्युक अर्थ बदललीह। कबीर लग अएला। “प्रति घर घुरल तँ जे नहि घुरल, ओकर की?” ओ पुछलनि। सरिता धीरे उत्तर देलीह, “जकरा हम घुरा नहि सकैत छी, ओकर नामकेँ सही राखब, आ जकर देय घुरि सकैत अछि, ओकरा रोकब नहि।” कबीर नक्शाक कोना छोड़ि देलनि।

जखन सभ लोक चलि गेल, एक वृद्ध किरायेदार अपन प्रति लऽ फेर घुरलीह। हुनकर हाथ काँपि रहल छल, आ ओ लगातार कागद छूए चाहैत छलीह। “दू पन्ना हमरा भेटल,” ओ कहलीह, “मुदा जे घरक किवाड़ भीतरसँ बन्द अछि, ओकर चाभी के देत?” रमा हुनका बैसए लेल चौकी देलीह, स्वयं ओहि ठाम ठाढ़ रहलिह। वृद्ध स्त्री कागद पढ़बए नहि कहलीह; पहिने पानि माँगलनि। रमा अपन गिलास भरि देलीह। एतए नव प्रति बाँटबाक सफलता एक वृद्ध देहक आवश्यकतासँ फेर जाँचल जा रहल छल।

पंचायत-घरक बत्ती निभेबासँ पहिने रमा अगिला बैठकीक पहिल पन्ना लिखलीह—
प्रति पाओनिहारक वास्तविक उपयोग, असमर्थ व्यक्तिक अपनी सहमति, बुजुर्गक
देखभाल आ नव खाता पर ककर नियन्त्रण अछि। ओहि लेखाक नीचाँ सुधाक दानक
अपूर्ण घोषणा-पत्र रखल छल। दूर खेतक बाटे बदरीक पत्नी पानिक भरल घैल सम्हारि
रहल छलीह। कागद आब गाममे घुरि गेल छल; ओकरा चलबएवाला हाथसभक थाकल
देह, देय आ अधिकार एखन गामे रहि गेल छल।

अध्याय १६९ • धृतराष्ट्रक हाथ

बहुत पुरान हस्तिनापुरक राजगृहमे भोरक पहिल आहटसँग धृतराष्ट्रक अँगुरी पीतलक लोटाक गरा पर फिसलि गेल। लोटा पलटलक; पानि माटिक फर्शपर फैलि कऽ हुनकर पएर धरि पहुँचल। ओ पहिने जकाँ सेवककें तेज आवाजमे बजाए चाहलनि, मुदा कण्ठसँ आधा शब्द निकलि रुकि गेल। राजसिंहासन छोड़लाक बादो हुनकर हाथमे आदेश देबाक पुरान गति बचल छल; लोटा उठएबाक शक्ति ओहि गतिसँ कम रहि गेल छल। ओ झुकलनि तँ कमरमे खिंचाव भेल, आ हाथ खाली हावामे ठमकि रहल।

द्वारक कात ठाढ़ परिचारक माधव दौड़ि आएल। “हम उठा दैत छी,” कहिकऽ ओ धृतराष्ट्रक कोहनी पकड़ए बढ़ल। वृद्ध राजा झटकि कऽ हाथ हटौलनि। “हमरा देहसँ पहिने हमरा पुछू,” हुनकर स्वर कठोर छल। माधव थमकि गेल। फर्शपर पानि घसिआ कऽ बहैत रहल। किछु देरक मौनक बाद धृतराष्ट्र स्वयं कहलनि, “लोटा उठाउ; हमरा बैसबाक चौकी कतए अछि से कहू। कोहनी तबे पकड़ू जखन हम कहब।” माधव लोटा सीधा कएलक आ चौकीक स्थान बतौलक। राजा अपन पएर टोहैत ओहि धरि पहुँचलाह।

संजय पाछाँसँ अएलाह। धृतराष्ट्र पुछलनि, “एहि चौकीकें कोन दिन बदलल गेल? हमरा कहल किएक नहि गेल?” संजय उत्तर देलनि, “काल्हि रसोइक छाजन चूअए लागल छल; काठ सुकए लेल हटाओल गेल। कर्मचारीसभकें लगल जे अहाँकें छोट बातसँ परेशान नहि कएल जाए।” राजा व्यंग्यसँ हँसलाह। “पहिने देशक निर्णय हमरा कहल बिना होएत तँ हम रोष करैत छलहुँ। आब हमरा बैसबाक चौकी बदलल, आ ओहो हम नहि जनैत छी।”

गान्धारी ओहि बेर भीतर अएलीह। हुनकर पएरक आहट धृतराष्ट्र जनैत छलाह, मुदा ओ आहटकें अधिकार नहि मानैत छलीह। ओ माधवकें फर्श पोछबाक कहलनि, आ राजाकें पुछलनि, “भोजन पहिने चाहैत छी कि पानि फेर पीब?” धृतराष्ट्र उत्तर नहि देलनि। गान्धारी हुनका सामने बैसि रहलिह। “अहाँक चुप्पीकें हम उपवासक आज्ञा नहि मानब,” ओ कहलीह। राजा धीर स्वरमे पानि माँगलनि। ओहि छोट आग्रहमे हुनका अपन

निर्बलता स्वीकार करबाक जे अपमान लगैत छल, ताहिसँ कतहु बेसी कठिन छल दोसरक प्रश्न सुनब।

राजप्रासादक बाहरी आँगनमे युधिष्ठिर अएलाह। पुरान राजा लेल विशेष अनाजक माप आ घी पठाओल जाइत छल; मुदा रसोइमे काज करनिहार दू विधवा स्त्री अपना हिस्साक अनाज देरिसँ पबैत छलीह। संजय एक दिन पहिने ई बात सुनने छलाह। युधिष्ठिर कहलनि, “पितामह, अहाँक भोजनमे कोनो कमी नहि होएत। हम व्यवस्था देखब।” धृतराष्ट्र अपन हाथ पसारि ओकरा रोकलनि। “अहाँ हमरा भोजनक रक्षा करैत छी; उचित अछि। मुदा ई कहू, जे अनाज हमर नामपर निकैल अछि, ओकर माप के करैत अछि?”

युधिष्ठिरक स्वरमे संकोच छल। “आब दरबारक अधिकारी।” धृतराष्ट्र कहला, “तखन हुनकें जवाब देबाक अछि। हमर भुखक नामपर जे किछु बेसी उठत, तकरा हमरा उपकार मत कहू।” गान्धारी जोड़लीह, “आ जे स्त्री सभ दिन रसोइ करैत छथि, हुनकर अनाजक अधिकार एहि वृद्ध देहक दानसँ नहि, अपन श्रमसँ अछि।” धृतराष्ट्र ओकर पएरक आहत सुनि पुछलनि, “तोहर मजदूरी समयपर भेटैत अछि?” माधव कहलक, “तीन दिन पछुआएल अछि।” राजाकें तुरन्त आदेश देबाक मन भेल, मुदा ओ युधिष्ठिर दिश मुड़ि कहलनि, “जाँचि उत्तर दियौ। हमर बाते प्रमाण नहि।”

दोपहरि विदुर अएलाह। धृतराष्ट्र हुनकर हाथ पकड़ि कऽ पुरान सभाक याद कएलनि, जाहिमे चेतौनी सुनितो ओ पुत्रमोहक रास्ता छोड़ि नहि सकल छलाह। “हम बहुत बेर अहाँक बातक आदरक अभिनय कएलहुँ,” राजा कहलनि, “मुदा निर्णय अपन डरक अनुसार दैत रहलहुँ। आब जखन हमर निर्णयक अधिकार नहि रहल, तँ अपराधक भार कोना राखी?” विदुर सहज क्षमादान नहि देलनि। “भार राखबाक पहिल अर्थ ओकरा दोसरक पीठपर नहि चढ़ाएब,” ओ कहलनि। “अहाँक देखभाल करब ककरो अपमानक अनुमति नहि, आ अहाँक देखभाल लेब अहाँक पुरान निर्णयकें निर्दोष नहि बनबैत अछि।”

“की हम सदखन दोषे सुनैत रहब?” विदुर उत्तर देलनि, “नहि। अहाँ गीत सुनि सकैत छी, अपन पुत्रसभकें स्मरण करि सकैत छी, गान्धारीसँ अपन अलग दुःख कहि सकैत छी। मुदा जखन कोनो अन्याय सामने आए, केवल वृद्ध भेला कारण ओकरा अनसुना नहि कएल जाएत।” धृतराष्ट्र क्षणभर लेल विदुरक हथेली अपन दुनू हाथमे दाबि देलनि।

विगतक कठोर आज्ञाक जकड़ ओहि पकड़मे छल; विदुर धीरे अपन हाथ निकाललनि। वृद्ध राजा पकड़ ढीला कऽ देलनि।

अन्हार होमएसँ पहिने रसोइघरक वृद्ध परिचारिका धृतराष्ट्रक चौकीक लग अएलीह। हुनकर बेटा युद्धमे गेल छल, घुरल नहि। ओ कोनो क्षमायाचनाक दृश्य देखए नहि अएलीह; आजुक अन्नक मापमे अपन हिस्सा कम भेटल, से कहए अएलीह। धृतराष्ट्र पहिने अनायास “हम ठीक कराएब” बजि उठलाह, फेर रुकलाह। “हम आब कोनो राजकीय बही बदलि नहि सकैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा अहाँक बात सुनि सकैत छी। अहाँ अपन नामसँ अधिकारी लग कहू; संजय अहाँकें बाट देखौताह।” स्त्री हुनकर पएर नहि छूअलीह। ओ अपन छोट गठरी सम्हारि बाहरी दुआर दिस चलीह; राजाक नहि, अपन दावाक संग।

साँझक पहिने माधव पानीक नब पात्र धरि आनलक। धृतराष्ट्र ओकरा पुछलनि, “अहाँ हमरा हाथ धरि पात्र दऽ सकैत छी? हम स्वयं पीब।” माधव पात्र निकट रखलक, राजाक अँगुरीक सँपर्क धरि लए गेल, फेर हटि गेल। पानि पीबामे किछु बूँद वस्त्रपर खसल, मुदा कियो हड़बड़ाएल नहि। धृतराष्ट्र अपन वस्त्रक भीजल कोना छूअलनि। “हम कखनो लोककें एहन थोड़क अधिकारो नहि देने होएब,” ओ कहलनि। माधव उत्तर नहि देलक; ओ राजाक आत्मस्वीकार सुनबाक लेल रखल पाथर नहि छल। हुनका घरमे बच्चाक लेल अनाज आनबाक छल।

धृतराष्ट्र संजयसँ कहलनि जे माधवक तीन दिनक मजदूरीक वास्तविक हिसाब युधिष्ठिर लग पहुँचाओल जाए। “हम ओकर देय चुकएबाक आज्ञा नहि दैत छी,” ओ स्पष्ट कएलनि, “जे राजकाजक अधिकारी अछि, ओहि ठाम प्रमाण पठबैत छी।” संजय एक टुकड़ी पातपर कथन लिखलनि, आ माधवकें सुनबौलनि। माधव पुछलक, “हम अपन हिसाब स्वयं कहि सकब?” धृतराष्ट्र कहला, “अवश्य। हमर नाम तोहर मुँह बन्द नहि करत।” युधिष्ठिरक लेल ई छोट संदेश राजदरबारक विजयक घोषणा नहि, एक नियमित देयक जाँच बनि गेल।

गान्धारी पाछाँ अँगनामे आगिक आँच कात बैसल छलीह। धृतराष्ट्र हुनकर दिश हाथ बढौलनि, मुदा छुअबासँ पहिने कहलनि, “अहाँ हमरा हाथ धरब?” गान्धारी थोड़े देर मौन

रहलिह। “एखन धरब,” ओ कहलीह, “मुदा जतए हम स्वयं जाएब चाहब, ओतए हमरा अपन बाट चुनए देब।” धृतराष्ट्र हुनकर हथेली छूअलनि। एहि राति अपन अधिकार गमएबाक सत्य ओ स्वीकार कएलनि; सहायताक आवश्यकता स्वीकार कएलनि; मुदा जे हाथ हुनका पानि धरि पहुँचौलनि, ओकरा अपन पुरान सिंहासनक नब बाँह नहि मानलनि। गान्धारीक यात्राक प्रश्न एखन पूरा कहल नहि गेल छल।

सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक पहिने रमा कर्ण पंचायत-घरक साँकल खोललीह। पिछला साँझ बाँटल नक्शाक तीन प्रति मे सँ एक भीजल किनारासहित वापस अएल छल। वृद्ध किरायेदार स्त्री, जे काल्हि पानि माँगि गेल छलीह, अपन नतिनीक संग बरामदामे बैसल छलीह। हुनकर हाथ काँपि रहल छल, मुदा कागद थामबाक निश्चय कठोर छल। “कागद घर गेल,” ओ कहलीह, “मुदा घरक दरबज्जा खोलबाक लेल लोक हमरा हाथ पकड़ि कऽ खींचैत अछि। किएक?”

नतिनी धीरे कहलीह जे राति युवकसभ बन्द किवाड़क फोटो खींचि सार्वजनिक सूचीमे डालबाक प्रस्ताव देलनि। बूढ़ि स्त्री नहि चाहैत छलीह जे घरक भीतरक रास्ता आ ओकर निजी दुख सभ मोबाइलमे घुमय। रमा प्रश्न कएलीह, “अहाँ अपन प्रति ककरा पढ़बए चाहैत छी?” वृद्धा अपन नतिनीकेँ देखलीह। “ई पढ़त। मुदा जे बात हमरा बूझ नहि पड़त, ओहि पर ओ हमर नामसँ निर्णय नहि लेत।” नतिनी हँ कहलीह। रुहानी अलग पन्नामे मौखिक अनुमतिक तिथि आ सीमित उद्देश्य लिखलीह; फोटो सार्वजनिक करबाक अनुमति नहि छल।

पद्मा बूढ़ि स्त्रीक घर धरि चलबाक प्रस्ताव देलीह। ओ तुरन्त नहि उठलीह। “पहिने हमरा कहू, अहाँक संग अएल लोक ककर आदेश मानत,” ओ पुछलीह। कर्मचारी उत्तर देलक, “अभिलेख-विभागक।” स्त्री कहलीह, “तखन हम नहि जाएब। हमर घरमे हम अतिथि बजाएब, सरकारी तलाशी नहि।” रमा विभागक पहचान-पत्र देखौलीह आ स्पष्ट कएलीह जे भ्रमण केवल हुनकर निमन्त्रणपर, दू स्थानीय साक्षीक उपस्थितिमे आ बिना निजी सन्दूक खोलने होएत। बूढ़ि स्त्री उठलीह, नतिनी हुनकर लाठी देलक, मुदा ककरो हाथसँ लाठी छीनबाक आवश्यकता नहि पड़ल।

घरक किवाड़क निचला पाट भीजि कऽ फूलि गेल छल। सुधा राय दानक प्रस्तावित बाटक सन्दर्भमे पहिने घरक सामने ठाढ़ भेलीह, मुदा भीतर जयबाक अनुमति नहि माँगलीह। वृद्धा अपन नतिनीकेँ किवाड़क फाँक देखेबाक कहलनि। पएर फसबाक खतरा छल; दिवारक छाजनसँ पानी झरत छल। रुहानी एहि बातकेँ “वृद्धाश्रमक आवश्यकता” नहि लिखलीह। घर हुनकर अपन छल, आ समस्या छल सुरक्षित मरम्मत, उपयोगक बाट आ रात्रिमे पानि पहुँचबाक। रमा पंचायतक मरम्मत-मद आ मालिकाना विवादक अलग अभिलेख खोललीह।

सुधा कहलीह, “हम अपने दानक चन्दा सँ किवाड़ सुधरा सकैत छी।” वृद्धा पुछलीह, “बदला मे हमर दरबज्जाक बगल अहाँक नामक पट्टी लागत?” सुधा चुप भेलीह। “नहि,” ओ कहलनि, “जँ अहाँ स्वीकार करी तँ श्रम आ सामानक हिसाब लिखल जाएत, नामक अधिकार नहि।” वृद्धा फेर पुछलीह जे काठ बदलला पर पुरान चौखटक कोना राखल जाएत। काठमिस्त्रीकेँ बजाओल गेल; ओ बतौलक जे पूरा चौखट नहि, निचला भाग बदलल जा सकैत अछि। वृद्धा एहि सीमित मरम्मतिक सहमति देलीह, घर छोड़बाक नहि।

मध्याह्न पंचायतक बरामदामे एक छपाइ कम्पनीक प्रतिनिधि नीक रङ्गक नमूना-पुस्तिका लऽ पहुँचल। ओकर प्रस्ताव आकर्षक छल—वृद्धसभक लेल मोट अक्षरक प्रति, आँखिक कठिनाइवला पाठक लेल आवाजमे नकल, आ गामक सभ अभिलेखक डिजिटल सुरक्षित कोठरी। पहिल वर्ष खर्च शून्य। रतन भुइयाँ नमूना छूअलनि; मोट अक्षर हुनका उपयोगी लगल। प्रतिनिधि कागदक तलक छोट शर्त पढ़बाक पहिने हस्ताक्षर माँगलक। पद्मा रोकलीह। “निःशुल्कक बाद चाभी ककर हाथमे रहत?”

शर्तमे लिखल छल जे मूल नकल, सम्पर्क-सूची आ संशोधनक सम्पूर्ण इतिहास कम्पनीक एकमात्र सर्वरपर रहत, आ अगिला पाँच वर्ष प्रति निकालबाक शुल्क ओ तय करत। रुहानीक चेहरा कठोर भेल। “ई पिछला बन्द गोदामक नया रूप अछि,” ओ कहलीह। प्रतिनिधि उत्तर देलक जे सुरक्षाक लेल केन्द्रीय नियन्त्रण आवश्यक अछि। संकेत ओकर कागदक तेसर पृष्ठ देखौलक—कोनो स्थानीय निकास-प्रति, स्वतन्त्र जाँच वा सेवा छोड़बाक प्रक्रिया नहि। “सुरक्षा चाही,” संकेत कहलक, “मुदा कागदक मालिक बनि जाएब सुरक्षा नहि।”

રમેશક પત્ની પુછલીહ જે કાલ્હિ સુનલ મુઆવજાક તિથિ જાँ કમ્પની અપન શુલ્ક લગાકઽ પઢબ દેત તૈં ઓકર ખેતક ક્ષતિક રાશિ કતેક બચત। ગીતા કોરી કહલીહ જે વસ્ત્રક કારોબારમે સેહો ખરીદદાર પહિને મુફત નમૂના લૈત અછિ, ફેર ડિજાઇન અપન નામસૈં બેચબ યાહૈત અછિ। “મોટ અક્ષરક પ્રતિ બનાઓલ જાઝ,” ઓ કહલીહ, “મુદા ઓકર મૂલ્ય આજુક મજદૂરીસૈં ચુકાઓલ જાઝ, કાલ્હિક નિર્ભરતા બેચિકઽ નહિ।” કમ્પની પ્રતિનિધિ અપન પ્રસ્તાવ ફેર દેખબાક કહલ, મુદા તત્કાલ હસ્તાક્ષર નહિ ભેટલ।

બજટ-પન્નાપર રુહાની વિદ્યાલયક દૂ કિશોરીક નામ દેખલીહ, જિનકા આવાજમે પ્રતિ પઢબાક કાજ “સ્વેચ્છા-સેવા” કહિ દર્જ કરબાક પ્રસ્તાવ છલ। ઓ શબ્દ કાટિ દેલીહ। “જે બચ્ચી સમય નિકાલિ કઽ શ્રમ કરતીહ, હુનકા નિઃશુલ્ક કૌશલ કહબ હુનકર પઢાઇક અવસર ઘટાએબ,” ઓ કહલીહ। પદ્મા શૈક્ષિક પ્રશિક્ષણ આ વાસ્તવિક રિકૉર્ડ-વાચનક બીચ ફરક લિખલીહ; સુરક્ષિત સ્વીકૃતિ, વયસ્ક પ્રશિક્ષિત વાચકક પારિશ્રમિક આ કિશોરીક પઢાઇ પ્રાથમિક રહલ। સંકેત અપન પહિનુક સુઝાવમે ઈં યર્ચ નહિ જોડને છલ। ઓ સબક સામને ગલતી માનલક આ દર બઢેબાક સંશોધિત ગણના દેલક। એખન કુલ યર્ચ બઢલ છલ, મુદા નવ હિસાબ સાફ દેખાઇત છલ જે મુફત સુવિધા કકર અદૃશ્ય શ્રમપર ટિકલ રહિતય।

પંચાયત નિર્ણય કાળક જે અલગ-અલગ છપાઇકર્તાક મૂલ્ય માંગલ જાએ, મૂલ અભિલેખક સંરક્ષણ સાર્વજનિક નિરીક્ષણમે રહે, આ આવાજમે વાચનક પ્રતિ સ્થાનીય વિદ્યાલય આ પુસ્તકાલયમે ઉપલબ્ધ હોએ। નિજી વિવરણ કેવલ સમ્બન્ધિત વ્યક્તિ વા ઓકર સ્પષ્ટ અધિકૃત સહાયકકૈં ભેટલ। પ્રત્યેક વર્ષ ખુલા બૈઠકમે લાગત, ગલતી-સુધાર આ પ્રતિ-પહુચક સમીક્ષા હોએત; એહિ સાલક પહિલ જાँચક દિન સેહો નિર્ધારિત ભેલ। કાગદક શુલ્ક સબકૈં શૂન્ય નહિ ભઽ સકલ, તૈં નિર્ધન પરિવારક સહયોગક મદ અલગ લિખલ ગેલ।

એહિ નિર્ણયક બીચ રતન ભુઝ્યાँ અપન ઝૂઠ કર્જ ઘટાઓલ પ્રતિ નિકાલિ કહલનિ, “અહાँ સભ નિયમ લિખબૈત છી, મુદા હમર અસલ મજદૂરી યાતામે એખન નહિ પહુચલ।” રમા માનલીહ જે સબક લેલ પ્રતિ બનબ સફલતા અછિ, ભુગતાન નહિ। એકટા અલગ સાર્વજનિક પન્નાપર ‘પ્રતિ ભેટલ’, ‘નિર્ણય ભેલ’, ‘રકમ બૈંકમે પહુચલ’ ત્રીન ભિન્ન સ્થિતિ

बनल। ललित विश्वकर्माक मरम्मति-दाम आ रमेशक क्षतिपूर्तिक तिथि सेहो एहि तेसर पाँतिक परीक्षा बनल। सान आदमीक देय नव छपाइक चमकमे ओझरायल नहि।

ओहि साँझ वृद्धाक घरमे काठमिस्त्री निचला पाट खोलि रहल छल। नतिनी चौखटक भीतरक पुरान कील कपड़ापर रखैत छलीह। वृद्धा एक बेर कारीगरक हथौड़ीक आवाज सुनि पुछलीह, “जे हिस्सा बदलि रहल छी, ओकर दाम के चुकाओत?” कारीगर रसीद पढ़ि सुनौलक—काठक मूल्य, ओकर मजदूरी आ पंचायतक सहायताक हिस्सा अलग। सुधाक प्रस्तावित चन्दाक नाम एखन ‘प्राप्त’ मे नहि, ‘अपेक्षित’ मे लिखल छल। वृद्धा अपना पुरान चौखटक छोट काठ राखि लेलीह; ओकरा कानूनी पट्टा नहि कहल गेल, घरक स्मृति मानल गेल।

सरिता विदा होमयसँ पहिने वृद्धाक अनुमति लऽ आँगन धरि अएलीह। बूढ़ि स्त्री पूछलीह, “अहाँक जे बेटी घुरि नहि सकलीह, तकरा लेल लोक अहाँकेँ की कहैत अछि?” सरिता क्षणभर चुप रहलीह। “बहुत किछु,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा ओकर मृत्युकेँ बदलि कऽ नहि।” वृद्धा अपन भीजल हाथक कँपैत अँगुरी देखौलीह। “हमर हाथ काँपैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एहि सँ ई नहि भेल जे हम अपन घर छोड़बाक निर्णय नहि कऽ सकैत छी।” सरिता हुनकर बात सुनलीह; अपन शोकक तुलनामे ओकर अधिकारकेँ छोट नहि बनौलीह।

साँझ रमा पंचायत-घरमे अगिला वार्षिक जाँचक पहिल नोट लिखलीह—सुधरल प्रति ककरा भेटल, नव छपाइक लाभ ककरा होएत, नियंत्रणक चाभी कतए रहत, आ बुजुर्गक निर्णय स्वयं हुनकर अछि की दोसरक सुविधा मात्र। खिड़कीक कात गान्धारीक कथा कहनिहार पुरान पाँति पद्मा पढ़ि रहल छलीह, मुदा रमा ओकरा आजुक घटनेक प्रमाण नहि बनौलीह। ई केवल प्रश्न छल: साथ देबाक हाथ कहिया सहारा बनैत अछि, कहिया रोक? दूर वृद्धाक घरमे नब किवाड़ सहज खुलल, मुदा ओ अपन चाभी नतिनीक हथेलीमे राखबाक पहिने पुछलीह, “आइ राति तूँ एतए रहब चाहैत छें?”

अध्याय १७० • गान्धारीक प्रस्थान

प्राचीन हस्तिनापुरमे भोरक पहिल उजास धरतीपर खसल नहि छल, जखन गान्धारी अपन छोट कपड़ाक गठरीक गाँठ फेर खोललीह। ओहिमे किछु सूखल औषधि, दू साधारण वस्त्र आ एकटा पुरान धागा छल। राजभवनक भण्डारमे हुनका लेल बहुत किछु छल, मुदा ओ एक दिनसँ दोसर दिनधरि लेब योग्य वस्तुक संख्या स्वयं घटबैत गेल छलीह। आँगनक कूपसँ पानि खींचबाक आवाज सुनि ओ गाँठ रोकलीह। ई यात्रा हुनकर मनमे बहुत दिनसँ बनि रहल छल; आइ ओहि मनक बात घरक लोककेँ स्पष्ट कहबाक छल।

धृतराष्ट्रक कोठरीमे माधव लोटा धरि पहुँचेबाक पहिने पुछैत छल, “हाथक कात राखू कि अहाँ स्वयं उठाएब?” काल्हिक छोट निर्णयसँ ओहि सेवकक वाणी बदलल छल। गान्धारी द्वारपर ठाढ़ भेलीह। धृतराष्ट्र ओहि आहटकेँ पहचानि कहलनि, “आइ एतेक भोरे किएक उठलहुँ? संजय कहलनि जे नदीक पाछाँक वनमार्गमे धूलि बेसी अछि।” गान्धारी उत्तर देलीह, “धूलि हमरा रोकबाक कारण होएत तँ राजगृहक भीतर जमल धूलिक की करब?” वृद्ध राजा बुझि गेलाह जे ओ बाटक विचार छोड़ने नहि छथि।

गान्धारी अपन गठरी हुनका छुएबाक लेल बढ़ौलीह। धृतराष्ट्र अँगुरीसँ बान्हल कपड़ाक गाँठ टोहलनि। “ई कोन उत्सवक तैयारी अछि?” ओ पुछलनि, यद्यपि उत्तर जनैत छलाह। “उत्सव नहि,” गान्धारी कहलीह, “अपन अगिला दिनक चुनाव। हम वनक शान्ति खोजबाक बहाना नहि बनबैत छी। अहाँक पुत्रसभ मरि गेलाह, हमर पुत्रसभ सेहो। एहि प्रासादक प्रत्येक दुआरपर लोक हमरा सान्त्वना देबाक अभ्यास करैत अछि। हम एखन अपन शोकक संग दोसर ठाम रहए चाहैत छी।”

धृतराष्ट्रक हाथ गाँठपर ठमकि गेल। “तखन हमरा छोड़ि देब?” प्रश्नमे शिकायत छल, मुदा ओकर पाछाँ वास्तविक भय सेहो। काल्हि ओ सहायता माँगबाक अपमानसँ बाहर निकलल छलाह; आइ गान्धारीक अलग इच्छासँ हुनका अपना देहक भार एक बेर फेर अनुभव भेल। गान्धारी नजदीक बैसलीह। “हम अहाँकेँ त्यागबाक निर्णय नहि कएलहुँ,” ओ कहलीह, “हम राजमहलक जीवन छोड़बाक निर्णय कएलहुँ। अहाँ संग चलब चाही तँ

ओ अहाँक अलग चुनाव होएत। नहि चलब चाही तँ हमरा दोष देबाक आवश्यकता नहि। हम अहाँक आँखि नहि, अहाँक पत्नी छी।”

गान्धारीक पट्टी बहुत पुरान छल। दासीक देल नब पट्टामे सुगन्धित तेलक गन्ध छल, मुदा गान्धारी अपन पुरान पट्टीक किनारी छूअलीह। “लोक हमरा आँखि बान्हल नारी कहैत अछि,” ओ धीमे स्वरमे बजलीह, “मुदा आँखि बान्हब हमर एक दिनक निर्णय छल; ओहि दिनक निर्णयसँ आब जीवनक सभ निर्णय कियो अपने नाम नहि लिखि सकैत।” धृतराष्ट्र चुप रहलाह। ओ पत्नीकेँ राजाक आदेशसँ रोकि नहि सकैत छलाह; अधिकार नहि रहलनि, आ अधिकार रहितो ई उचित नहि होइत।

दोपहरिसँ पहिने युधिष्ठिर समाचार सुनि अएलाह। हुनकर संग संजय आ दू राजपरिचारक छल। “माताश्री, अहाँक लेल अलग उद्यान, शान्त निवास आ औषधक व्यवस्था एतहि कराएब,” युधिष्ठिर आग्रह कएलनि। “वनमे बाट कष्टकर अछि; वृद्धावस्थामे अपन परिजनक बीच रहब अधिक सुरक्षित।” गान्धारी हुनकर बात पूरा सुनलीह। “हमरा सुरक्षा चाही,” ओ कहलीह, “मुदा सुरक्षा तखन अहाँक उपकार नहि रहि जाए, जखन हमरा अपन ठाम चुनबाक अनुमति मात्र कागदपर हो। हम कतेक दिन धरि ई उद्यान देखब, तकर निर्णय अहाँ पहिने कऽ देने छी। हमरा पुछल कतए गेल?”

युधिष्ठिर झुकलाह। “हमर भय अहाँक इच्छा रोकए चाहैत अछि, ई स्वीकार करैत छी।” फेरो ओ कहलनि, “रास्तामे कियो संग नहि रहत तँ बीमारीमे की करब?” गान्धारी बतौलीह जे संजय मार्गक पड़ाव बुझैत छथि, आ वनक एक आश्रममे जल, अन्न आ चिकित्साक सीमित साधन अछि। “आश्रमकेँ हमर पहुँचबाक खबर भेजू,” ओ कहलीह, “मुदा पहिने ओकरा सँ सहमति लिअ। हम राजमाताक नामपर कोनो गरीब आश्रमक अन्नक हिस्सा नहि छीनब। हमरा संग जे लोक जायत, ओकर श्रम आ आवश्यकता सेहो गनल जाएत।”

संजयक माथापर चिन्ता देखायल। “हम मार्ग चिनैत छी, मुदा पहिल वर्षाक बाद पूबक घाट फिसलन भऽ जाइत अछि,” ओ कहलनि। गान्धारी पुछलीह, “तखन दोसर बाट?” संजय बताएलनि जे पछिमक पगडण्डी लम्बा अछि, मुदा ओतए छोट गाम आ राति रुकबाक छाजन अछि। परिचारक तत्पर भऽ कहलक, “राजकीय रथ सँ सभटा कठिनाइ

टरि जाएत।” गान्धारीक उत्तर दृढ़ छल: “सवारी रहत तँ बीमार देह लेल, प्रदर्शन लेल नहि। राजचिह्नसँ भरल रथ नहि। जतेक दूर चलब, अपन चालसँ चलब।”

ओहि समय विदुर अएलाह। दरबारक वर्षसभमे गान्धारी हुनका अनेक बेर मौनमे सुनने छलीह। आइ हुनकासँ प्रश्न कएलीह, “वनक बाट चुनब की राजपरिवारक दोषसँ पलायन होएत?” विदुर कहलनि, “काजक परिणाम केवल स्थान बदललासँ नहि भेटैत अछि। मुदा पछतावाक नामपर कोनो व्यक्तिक शेष जीवनकेँ दरबारक प्रदर्शनी बनबेनाइ सेहो अन्याय अछि। वनमे जाएबक निर्णय अहाँक अछि; ओतए पहुँचि दोसरो लोकक जीवनमे केहन व्यवहार करब, तकर उत्तर प्रतिदिन देबए पड़त।” गान्धारी स्वीकार कएलीह जे यात्रा मुक्ति-पत्र नहि।

गान्धारी प्रासादक भीतरी कोठरीमे अएलीह, जतए पुत्रसभक बचपनक काठक खिलौना राखल छल। ओ एकटा पहिया उठौलीह, जकर खूँटी टूटल छल। हुनका स्मरण पड़ल जे एक दिन ककरो चोट लगला पर ओ राजवैद्य बजौने छलीह, मुदा ओहि दिन घोड़ा सम्हारनिहार बालकक चोट ककरो ध्यानमे नहि अएल छल। स्मृति हुनका निर्दोष नहि बनबैत छल। ओ पहिया ओतहि राखि देलीह; वनमे ओकरा लऽ जयब शोककेँ छोट कऽ रखबाक छल। संजय पुछलनि, “ई वस्तु छोड़ि देब?” गान्धारी कहलीह, “ई एतए रहए। जकरा संग ई घरक स्मृति अछि, ओकरा देखबाक अधिकार रहए। हम अपन बाटमे एकरा ढोएब नहि।”

रसोइक वृद्ध परिचारिका ओहि दिन अनाजक नब माप लऽ बैसल छलीह। हुनकर तीन दिनक पछुआएल मजदूरीक गिनती राजगृहसँ अधिकारी धरि पहुँचल छल, मुदा रकम एखन प्राप्त नहि भेल। गान्धारी जखन विदा लेल भोजन बनबए सँ मना कएलीह, स्त्री हाथ जोड़ए लगलीह। गान्धारी रोकलीह। “अहाँक काज रोकबाक हमरा अधिकार नहि। अपन देयक लेल अधिकारीक सामना करू। हमरा यात्रा पर जे सुखा अन्न भेटत, तकर पूरा हिसाब अलग लिखाउ। हमर प्रस्थानक नामपर ककरो मजदूरी नहि कटत।” परिचारिका पुछलीह, “तखन हमरा आशिष?” गान्धारी उत्तर देलीह, “अहाँक घर अनाज पहुँचय, ई चाहब। मुदा एखन अहाँकेँ आशिषसँ बेसी भुगतान चाही।”

धृतराष्ट्र साँझ हुनका फेर बजौलनि। ओ अपन दण्ड उठएबाक प्रयास कएलनि। “हम संग चलब,” ओ कहलनि, “मुदा एतेक दूर पएर नहि चलत। एहन बात कहबामे लाज नहि।” गान्धारी हुनकर हाथ अपन हथेलीपर रखलीह। “रथक आवश्यकता जखन पड़त, तेहन सवारी राखब। मुदा हमर निर्णयकेँ अहाँक अनुमति मत कहू, आ अहाँक यात्रा हमर आज्ञा नहि। दूनू अपन-अपन कारणसँ चली।” धृतराष्ट्र एकटा असहज हँसी हँसलाह। “सभ जीवन एक-दोसराक नामपर राजकाज कएलहुँ; आब संग रहबाक लेल नाम अलग करबाक पड़त।”

गान्धारी हुनकर सम्मुख बालुकामे पएरक गिनती नापलीह। दू पएर सीधा, तेसर पएरपर धृतराष्ट्रकेँ लाठीक आवश्यकता होइत छल। ओ रथक छोट आसन परखलीह; लकड़ीक किनारी तेज छल, तें माधव गद्दी लगौलनि। गान्धारी कहलीह, “माधव, अहाँ हमरो संग चलब चाहैत छी?” माधव आश्चर्यसँ पुछलक, “आज्ञा अछि?” “प्रश्न अछि,” गान्धारी कहलीह। माधव अपन परिवारक बात कएलक—बुढ़ि माय, बालक, आ देय मजदूरी। ओ प्रस्थानक पहिल पड़ाव धरि सहायता देब स्वीकार कएलक, स्थायी सेवक बनब नहि। गान्धारी एहि सीमाकेँ मानलीह।

वनयात्राक पहिल भोरमे नगरद्वारक समीप भीड़ जुटल। किछु लोक जयकार करबाक चाहैत छल, किछु स्त्री हाथमे दीप लऽ ठाढ़ छलीह। गान्धारी ठमकलीह। ओ दरबानकेँ कहलनि जे बाटक बीच बनाओल विजय-तोरण हटाओल जाए। “हम जीतिकऽ नहि जाइत छी,” ओ कहलीह, “आ पराजयक अभिनय करए सेहो नहि। नगरक जे लोक जल लऽ जाइत अछि, ओकर बाट खाली रहए।” दीप धारण कएने एक विधवा स्त्री नजदीक अएलीह। “हमर पुत्र सेहो नहि घुरल,” ओ बजलीह। गान्धारी हुनका नाम पुछलीह, आ उत्तर सुनलीह। दूनू स्त्रीक शोकक मात्रा एक नहि छल, मुदा ककरो शोक दोसरक सामने छोट घोषित नहि कएल गेल।

नगरद्वार पाछाँ छूटला पर गान्धारी पहिल बेर ठाढ़ भऽ श्वास सम्हारलीह। पएरक नीचाँ पत्थर बदलि माटि अएल छल। संजय मार्गक पोखरिक दूरी कहलनि; धृतराष्ट्र पूछलनि, “अहाँक मन फेरब चाहैत अछि?” गान्धारी उत्तर देलीह, “डर लगैत अछि, तें नहि जे मन फेरब। एखन एहि पहिल पड़ाव धरि चलब।” ओ अपन पुरान धागा गठरीक भीतर ठीक

कएलीह। हुनकर प्रस्थान पूर्ण होइत राजगृहसँ दूरी मात्र नहि छल; बाटपर अपन आवश्यकताक नाम लेब, सहायता स्वीकार करब, आ यात्रा रोकबाक स्वतन्त्रताक अधिकार सेहो छल।

सन २०४०क विदेहपुरमे ओही दिनसँ अगिला भोर वृद्ध किरायेदार स्त्री अपन घरक नब सुधरल किवाड़ दू बेर खोलि बन्द कएलीह। काठक निचला पाट आब जमीनमे नहि अटकैत छल। नतिनी चूल्हापर दूध चढ़ौने छलीह, जखन बूढ़ि स्त्री भीतरक सन्दूकसँ एकटा नीकसँ तह कएल पुरान ओढ़नी निकाललीह। “हम तीन दिन लेल अपन मायकेक गाम जाएब चाहैत छी,” ओ कहलीह। नतिनी सुनि ठमकि गेलीह। काल्हि राति जे घरक चाभीक प्रश्न छल, आइ ओकरा लग वृद्धाक यात्रा परो निर्णय देबाक अपेक्षा अचानक आबि ठाढ़ भेल।

“एखन? किवाड़क मरम्मत काल्हिये भेल, दवाइक समय निश्चित अछि, आ बाटमे बस बदलबाक पड़त,” नतिनी कहलीह। वृद्धा धीरे ओढ़नी मोड़लीह। “एही सभ कारणसँ हमरा पुछल जाए, रोकल नहि जाए। जे गाम छोड़ने बहुत वर्ष भेल, ओतए हमर भौजीक नातिनी आब रहैत अछि। ओ पत्र भेजने अछि जे पुरान पोखरिक बाँध फेर बनत; हमर माय ताहिमे माटि ढोअने छलीह। हम देखए चाहैत छी, बाँध एखन कतेक बदलल।” नतिनी पत्र पढ़लीह, मुदा गाँवक नामक संग फोन-सङ्केत अपूर्ण छल।

रमा कर्ण पंचायत-घरमे पहुँचलाक बाद वृद्धाक बात सुनलीह। ओ पहिने कहलीह, “अहाँक अपन यात्रा अछि। हम केवल जे सहायता अहाँ माँगब, ओहि पर बात करब।” नतिनी चाहैत छलीह जे रमा 'बुजुर्गक सुरक्षा'क नामपर यात्रा रोकथि। पद्मा समझौता नहि, वास्तविक विकल्पक सूची राखलीह—बसक पएर चढ़बाक कठिनाइ, घाटक हाल, औषधि, आपात सम्पर्क, रहबाक सहमति आ घरक चाभी ककर लग रहत। वृद्धा पहिल बेर स्वीकार कएलीह जे एकटा लम्बा बाट एक दिनमे पार नहि करि सकब; मुदा तीन दिनक योजना बदलबाक बदला पहिल पड़ावमे राति रुकबाक निर्णय कएलीह।

गामसँ फोनपर सम्पर्क भेल। पत्र पठौनिहार युवती कहलीह जे घरमे एक कोठरी खाली अछि, मुदा ओकर बूढ़ि माएक औषधि आ अपन बालकक पढ़ाइक बीच बहुत लोकक देखभाल सम्भव नहि। वृद्धा तुरन्त उत्तर देलीह, “हम अहाँक घरमे अधिकार लऽ नहि

पहुँचब। हम भोजनक अपन खर्च देब, आ आराम लेल अलग जगह जँ नहि भेटत तँ गामक अतिथिशालामे रहब।” युवती हँसलीह। “खर्च सँ पैघ बात रहएबाक व्यवस्था अछि; अहाँक लेल छोट खाट रखब, मुदा सीढ़ी चढ़ब नहि।” स्वागत आ सीमाक ई साफ बातचीत सुनि नतिनीक आशंका किछु घटल।

पंचायतक अभिलेख-सहायक एकटा छपाइ कम्पनीक प्रस्तावित डिजिटल यात्रा-पास निकौलनि। पहिल वर्ष निशुल्क सुविधा, चिकित्साक विवरण आ परिवारक नम्बर भरणाक आग्रह छल। वृद्धा कहलीह, “बसक टिकट लेल हमर बीमारीक पूरा कथा कम्पनीकें किएक देब?” रुहानी देखलीह जे काल्हि अस्वीकार कएल डेटा-एकाधिकार नव नामसँ फेर आएल अछि। ओ यात्रा लेल आवश्यक परिचय-पत्र, एकटा सीमित आपात सम्पर्क आ औषधिक सूची अलग कएलीह। निजी स्वास्थ्य-विवरणक पूरा प्रतिलिपि कम्पनीक कोनो सर्वरपर नहि राखल गेल। स्थानीय चालकक सम्पर्क कागदपर लिखल गेल, जहिना बूढ़ि स्त्री चाहैत छलीह।

सरिता घरक देहरीपर पहुँचलाक बाद नतिनीसँ पुछलीह, “अहाँ तीन दिन घरमे रहि सकब?” नतिनी उत्तर देलीह जे ओकर सिलाइकक दू काम अपूर्ण अछि। “हम संग चलब तँ ओ काम छूटत; नहि चलब तँ लोक कहत जे नतिनी दादीकें छोड़ि देलक।” सरिता कहलीह, “दूनूक इच्छाकें अलग सुनू। कोनो एक व्यक्तिक देखभाल दोसरक बेरोजगारीक स्थायी मूल्य नहि होएबाक चाही।” तखन वृद्धा स्वयं कहलीह जे पहिल बस-ठाम धरि नतिनी संग जाउ, पाछाँसे परिचित महिला चालकक सहायता भेटि सकैत अछि। चालकक मजदूरी स्पष्ट देबाक निर्णय भेल, ‘सेवा’क नामपर मुफ्त श्रम नहि।

दोपहरि सुधा राय घरक सामने अएलीह। मरम्मतिक चन्दाक पैसा बैंकमे पहुँचबाक रसीद ओ देखौलीह। वृद्धा अपन हिस्साक रसीद सेहो माँगलीह, जाहिमे काठ, कारीगरक मजदूरी आ दानक रकम अलग छल। सुधा पूछलीह, “हम अहाँक यात्राक खर्च सेहो उठा दी?” वृद्धा मुस्कुरेलीह। “मरम्मत आ यात्रा अलग बात अछि। मरम्मतिक सहायता हम स्वीकार कएलहुँ; यात्रा हम अपन संचय सँ करब। जरूरत पड़त तँ स्वयं कहब।” सुधा ई अस्वीकृति सुनि असन्तुष्ट नहि भेलीह। पहिनुक दानपत्रमे जे घरक नाम लिखबाक अस्पष्टता छल, ओकरा सुधारि खाली मरम्मतिक मद रखलीह।

ठीक ओही बेर ललित विश्वकर्मा कार्यालयसँ घुरैत कहलनि जे हुनकर सही मरम्मत-बिलक आदेश फेरो भुगतान नहि बनल। रमा हुनका पुकारलीह आ सार्वजनिक पन्नामे ‘स्वीकृति’ आ ‘बैंकमे रकम पहुँचल’क फरक देखौलीह। ललित वृद्धाक नब किवाड़ देखिकऽ कहलनि, “काम बनल देखाएत अछि, मुदा काठ काटनिहारक घरमे राशन बिना पैसा नहि पहुँचल।” बूढ़ि स्त्री अपन कारीगरक रसीद देखौलीह; ओहि काजक पूरा मजदूरी चुकाओल गेल छल। दू अलग मरम्मतिक हिसाब मिलायल नहि गेल। रहल सरकारी बकायाक तिथि फेर जाँचमे पठाओल गेल।

साँझ सरिता आ मैथिली सार्वजनिक पुस्तिका लेल बुजुर्गसभक यात्रा-सहमतिक नमूना देखैत छलीह। मैथिली कहलनि, “जे व्यक्ति निर्णय देबैत अछि, ओकर इच्छा स्पष्ट लिखबाक अछि। मुदा ओ जँ निर्णय बदलबैत छथि, तखन ओकरा पहिनुक सहमतिक कैदी नहि बनाओल जा सकैत।” सरिता एहि बातपर सहमत भेलीह, आ नमूनामे वापसी तथा बीच-बाटमे रुकबाक विकल्प जोड़लीह। ई दार्शनिक कथनकेँ छापल नियमक नाम नहि देल गेल; दूनू अपन-अपन कामक सीमामे प्रश्न राखलीह—कोन मदत सेवारूप अछि, कोन नियन्त्रण बनि जाएत।

अगिला भोर बस-ठामपर वृद्धाक ओढ़नीक किनार हावामे उड़ैत छल। नतिनी हुनकर हाथ धरि ठाढ़ छलीह, मुदा बसक पहिल पायदान चढ़बाक पहिने पुछलीह, “हाथ देब?” वृद्धा “दिअ” कहलीह, आ दोसर हाथसँ अपन गठरी सम्हारलीह। परिचित महिला चालक आगाँक पड़ाव धरि टिकटक दाम स्पष्ट कहलीह। बसमे कोनो राजकीय जयकार नहि छल, केवल दुधक बाल्टी, बाजारक सब्जी आ यात्रीक थाकल चेहरा। वृद्धा खिड़कीक कात बैसि अपन घरक चाभी पोटरीमे टोहलीह; घर छोड़ल छल, घरपर अधिकार नहि।

बस पहिल छोट बजार पर रुकल तँ वृद्धा चालककेँ कहलीह जे हुनका पानि चाही। चालक बोटल देबासँ पहिने दाम बतौलीह; वृद्धा अपन सिक्का गनि कऽ चुकौलीह। कातक दुकानदार पूछलक, “एकसरि जा रहल छी?” वृद्धा अपन अगिला पड़ावक नाम कहलीह, मुदा घरक पूरा पता नहि बतौलीह। चालक बुझि गेलीह जे सहायता करबाक अर्थ हर अजनबीक प्रश्नक उत्तर देब नहि अछि। बस फेर चलल तँ वृद्धा अपन औषधिक थैलीक

गाँठ टोहलीह, समय देखलीह आ नियत मात्रा लेलीह। पहिल बेर हुनका बुझायल जे यात्रा सम्भव अछि, मुदा शरीरक सीमा मनक इच्छासँ अदृश्य नहि होएत।

नतिनीकेँ बसक पाछाँ धूलि देखाइत रहल। ओ घर घुरि अपन सिलाइकक अपूर्ण कपड़ा उठौलीह, फेर वृद्धाक कहल अनुसार फोनक तेसर घण्टीक प्रतीक्षा करबाक निर्णय कएलीह। ओकरा आज मुक्त भऽ कार्य करबाक समय छल, मुदा चिन्ता सेहो ओकर अपन छल। नदीक बाटे बस पहिल पड़ाव धरि बढ़ल। वृद्धा अपराजित नायिकाक जकाँ नहि, थाकल यात्रिणीक जकाँ आँखि मूँदलीह। ओ अगिला पड़ावमे चाहे तँ रुकि सकैत छलीह, चाहे तँ घुरि सकैत छलीह; एही सम्भावनाक भीतर हुनकर प्रस्थानक गरिमा छल।

राजगृहसँ बाहिर गान्धारीक यात्रा आ २०४०क ई बसयात्रा एकहि घटनेक दू प्रमाण नहि छल। एकटा कथामे राजसत्ताक अवशेष, दोसरमे घरक किवाड़, मजदूरी, चाभी आ रास्ताक किराया छल। मुदा जखन गान्धारीक पुरान कथा मैथिली पढ़लीह, हुनका ई प्रश्न स्पष्ट भेल: ककरो संग रहबाक प्रेमकेँ ओकर बाट चुनबाक अधिकारसँ अलग कोना राखल जाए? मैथिली पन्ना मोड़ि देलीह। अगिला प्रश्न कुन्तीक अपन वचनमे उठत; गान्धारीक विदाइक क्षणकेँ ओहि सम्भावित कथाक उत्तर बनाओल उचित नहि छल।

अध्याय १७१ • कुन्तीक शेष वचन

हस्तिनापुरक राजप्रासादमे कुन्ती पीतलका थारीक किनारपर उँगुरी फिरौलनि। भोरक भोजन बहुत पहिने उठि चुकल छल, मुदा थारीक बीचमे चाउरक एकटा सूखल दाना चिपकल रहि गेल छल। सेविका ओकरा धोबाक लेल हाथ बढ़ौलक तँ कुन्ती थारी रोकि लेलीह। “ई हम स्वयं साफ करब,” ओ कहलीह। थारी धोएब राजमाताक काज नहि मानल जाइत छल; मुदा एहि भोर कुन्तीकेँ ओहि छोट कामक आवश्यकता छल, जाहिमे ककरो अनुमति नहि माँगए पड़ए। गान्धारी प्रासाद छोड़ि पहिल पड़ाव धरि पहुँचि चुकलीह। ओहि प्रस्थानक बाद राजगृहक बरामदा अचानक बहुत पैघ लगैत छल।

युधिष्ठिरक पदचाप सुनि ओ थारी माटिक नलिकाक कात रखि देलीह। राजा संग दू अधिकारी अएल छलाह। एक अधिकारी वनमार्गक विश्रामगृहक सूची खोलने छल; दोसर राजपरिवारक वृद्ध सदस्यसभक देखभालक व्यवस्था पढ़बाक लेल तैयार छल। युधिष्ठिर कहलनि, “माँ, वनक बाटपर जे सुविधा चाही, हम भेजि देब। अहाँ एतए रहू। गान्धारी आ पितामहक विदाइक बाद राजगृहमे अहाँक उपस्थिति हमरा लेल सहारा अछि।” कुन्ती पुत्रक स्वर सुनलीह। ओहि स्वरमे आदेश कम, हराएबाक भय बेसी छल।

“हम वन जएबाक निर्णय कऽ चुकल छी,” कुन्ती उत्तर देलीह। युधिष्ठिर पहिने बुझलनि जे माय शोकमे क्षणिक बात कहि रहल छथि। ओ कार्यालयक पन्ना बन्द करौने कहला, “अहाँ थाकल छी। किछु दिनमे फेर विचार करब।” कुन्ती पहिल बेर मुख घुमा कऽ कहलनि, “हमर थाकल देहकेँ अहाँ देखैत छी, ई नीक अछि। मुदा हमर निश्चयकेँ थकानक रोग मत बनाउ। हमर मनक विषयमे अहाँ अपन राजाज्ञा नहि लिखि सकैत छी।” अधिकारीसभ धीरे पाछाँ हटि गेल। सिंहासन पर बैसल पुत्र एखन मायकेँ साधारण उत्तर देब सीखि रहल छल।

भीम आ अर्जुन समाचार सुनि अएलाह। भीम सोझे पुछलनि, “जकरा लेल एतेक युद्ध सहलहुँ, ओ घर अहाँ छोड़ि किएक जाइब? वनमे अहाँक रक्षा के करत?” कुन्ती उत्तर देलीह, “रक्षाक नामपर हमर रहबाक ठाम तय करबाक अधिकार अहाँ सभकेँ नहि दैत छी। हमरा भोजन, औषधि आ सहायताक आवश्यकता पड़त; ओकर व्यवस्था पुछू। हमर

इच्छा नहि सुनब तँ ओ सहायता नहि, बन्धन होएत।” भीमक आँखि नम भेल, मुदा ओ क्रोधक वाक्य पूरा नहि कएलनि। अर्जुन ओहि दारक कात ठाढ़ रहलाह, जतए सँ पहिने कतेको बेर युद्धक आदेश सुनल गेल छल।

अर्जुन धीरे पूछलनि, “माय, अहाँक कोनो बात एखन हमरा सभसँ कहब शेष अछि?” एहि प्रश्नमे कर्णक नाम बिना उच्चारले उपस्थित छल। कुन्ती थारीक सूखल दाना उठा कऽ हथेलीपर राखलीह। “शेष वचन बहुत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा कोनो वचन बितल समयकेँ फेर सँ बनाओल नहि सकत। कर्ण हमर पुत्र छलाह। ई बात लुकाएब हमर निर्णय छल। हुनकर अपन जीवन, अपन मित्रता आ अपन चयन छल। जखन सत्य कहबाक उचित समय छल तखन हम नहि कहलहुँ। बादमे सत्य कहलासँ हानि मेटल नहि।”

युधिष्ठिर ओहि स्वीकारोक्तिक बाद चुप रहलाह। ओ पूर्वे ई सत्य जानि चुकल छलाह, मुदा सार्वजनिक वंशावलीमे नाम लिखबाक निर्णयक प्रश्न एखन असह्य छल। कुन्ती हुनका देखैत कहलीह, “अहाँ हमरा क्षमा करब की नहि, ई हमर हाथमे नहि। कर्णक मृत्युक बाद अपन मातृत्व सिद्ध करबाक लेल हुनकर स्वतन्त्र जीवनकेँ राजवंशक उपशाखा बनाबए चाहब तँ फेर अन्याय होएत। जे लोक हुनका अपना रूपमे जानैत छल, ओकर साक्ष्य सुनल जाए। हमर वचन ओहि सभक उपर अन्तिम आदेश नहि।”

अर्जुनक मनमे युद्धभूमिक धूलि उठल। कर्णक प्रति शत्रुताक याद, पछिला स्नेहक असम्भवता आ मायप्रति अपन लगाव—तीनू एक-दोसरासँ भिड़ैत रहल। ओ कहलनि, “हमरा बुझए मे समय लागत। अहाँ चलि गेलहुँ तँ प्रश्न ककरासँ पुछब?” कुन्ती उत्तर देलीह, “प्रश्न लिखि पठाउ। हम जतेक सच जानैत छी, कहब। मुदा जँ अहाँ हमरा देखब नहि चाहब, तकर अधिकार सेहो अहाँक अछि। हमर अपराधक कारण अहाँ अपन जीवनक प्रत्येक निर्णय हमर पछतावाक अनुसार नहि करब।” अर्जुन पहिल बेर देखलनि जे माय उत्तर दैत छथि, क्षमा नहि माँगि लैत छथि।

नकुल आ सहदेव दुआरक कात बैसल रहला। दुनूक मनमे माद्रीक स्मृति छल, जकर जीवनक परे कुन्ती हुनका सभकेँ पालने छलीह। सहदेव पूछलनि, “हमरा सभक पालन अहाँ कएलहुँ। एखन जँ अहाँ जाइब तँ हम अपन ऋण कोना चुकाएब?” कुन्ती हुनकर काँधपर हाथ रखलीह। “पालन ऋणक एहन बही नहि, जकर अन्तिम किस्त देबाक लेल

पुत्रक इच्छा गिरवी राखल जाए,” ओ कहलीह। “अहाँ सभ हमरा प्रेम करैत छी, ई पर्याप्त अछि। देखभालक आवश्यकता कहब तँ सहयोग करू; मुदा हमर बुढ़ापा अहाँ सभक जीवनक मालिक नहि।”

दिन चढ़लापर द्रौपदी सादा वस्त्रक गठरी लऽ अएलीह। ओ पूछलीह जे कुन्तीकेँ कोन कपड़ा चाही। कुन्ती दू हलुक साड़ी चुनलीह, बाकी वापिस रखि देलीह। द्रौपदी कहलीह, “लोक अहाँक प्रस्थानकेँ राजघरानाक त्यागक कथा बनाओत। मुदा यात्राक बाटपर जे स्त्री भोजन बनाओतीह, जे जल ढोतीह, हुनका सभक श्रम फेर ओझरा जाएत।” कुन्ती तुरन्त प्रहरीकेँ बुला कऽ कहलनि जे हुनकर यात्राक मजदूरी, आहार आ पड़ावक खर्च अलग गनल जाए। राजमाताक त्यागक नामपर ककरो बेगार नहि होए।

कुन्ती गान्धारीकेँ भेटबाक लेल पहिल पड़ावक बाट पुछलीह। संजयक पठाओल समाचारमे लिखल छल जे धृतराष्ट्रक पएर दुखैत अछि, तँ दल एक दिन ठहरल अछि। युधिष्ठिर तुरन्त राजकीय रथ पठाएबाक प्रस्ताव कएलनि। कुन्ती कहलनि, “रथ भेजू तँ देहक सुविधा लेल, जयकार लेल नहि। आ गान्धारीक सहमति बिना हमर पहुँचबाक समाचारकेँ हुनकर यात्राक आदेश मत बनाउ।” संजयक उत्तर अएल: गान्धारी चाहैत छथि जे कुन्ती पहिने अपन पुत्रसभसँ निर्णय स्पष्ट कऽ लिअथि, तखन भेटाथि। ओ प्रतीक्षा करबाक लेल स्वतन्त्र छलीह, बाध्य नहि।

साँझक सभा कोनो राजकीय अनुष्ठान नहि छल। पाँचू पुत्र, द्रौपदी आ किछु निकटजन एकसाथ बैसलाह। कुन्ती कहलनि, “हम जखन किशोरी छलहुँ तखन भयमे एकटा जीवनसँ मुँह मोड़ि लेलहुँ। फेर अपन शेष सन्तानसभक रक्षामे कतेको कठोर निर्णय कएलहुँ। सभ निर्णय सही छल, एहन दावा नहि। आब अहाँ सभ वयस्क छी। सिंहासन, घर, सम्बन्ध आ स्मृतिक बारेमे अहाँ सभ अपन-अपन निर्णय करू। हमर वनगमनक कारण अहाँ सभक अपराध नहि, आ हमर शेष जीवन अहाँ सभक दण्ड नहि।”

भीम पुछलनि, “हमरा सभकेँ अहाँक जएबाक अनुमति देबाक पड़त?” कुन्ती दृढ़ भेलीह। “आशीष देब चाहू तँ दिअ, रोकब चाहू तँ अपन भय कहू। अनुमति देब अथवा नहि देबक प्रश्न एहि निर्णयमे नहि अछि।” युधिष्ठिर धीरे मस्तक नमा देलनि। हुनका बुझायल जे जे राजधर्म ओ प्रजाक लेल कहैत छलाह, अपन मायपर ओकर परीक्षा बेसी कठिन

अछि। कुन्ती उठलीह। ओ पुत्रसभकेँ आलिंगन कएलीह, मुदा ककरो सँ अपन प्रस्थानक समर्थन लिखित नहि माँगलीह।

अगिला भोर कुन्ती नगरक बाहर पहुँचलाक बाद एकटा छोट पुलक कात रुकलीह। ओतए जल भरनिहार युवती पूछलक जे यात्रिणीकेँ आरो पानि चाही की नहि। कुन्ती मूल्य देब चाहलीह, मुदा युवती कहलक जे घाट सभक साझा अछि। कुन्ती ओकरा धन्यवाद देलीह, आ ओहि पुलक मरम्मतिमे ककर श्रम लगल, से पूछलीह। युवती हँसि कऽ कहलनि, “हमर बाबूजीक हाथ।” राजघरानाक गाथासँ बाहिरो कतेको हाथ बाट बनबैत छल। कुन्ती पहिल बेर अपन प्रस्थानक अर्थकेँ एहि छोट पुलपर टोहलीह।

पहिल पड़ावमे गान्धारी कुन्तीकेँ देखिकऽ उठबाक प्रयास कएलीह। कुन्ती आगाँ बढ़ि कहलनि, “बैसरल रहू। हम अहाँक यात्रा चलब एतेक लेल नहि आएल छी जे अहाँ हमरा संग चलबाक बाध्य भऽ जाउ।” गान्धारी पुछलीह, “तखन एतए किएक?” कुन्ती उत्तर देलीह, “हम अपन शेष दिनक बाट चुनलहुँ। अहाँ चाहब तँ अगिला पड़ाव धरि संग चली; नहि तँ हम अलग ठाम रुकब।” गान्धारी हुनकर हाथ स्पर्श कएलीह। किछु देर बाद कहलीह, “अगिला पड़ाव संग, तकर बाद देह आ मन जे कहत।” धृतराष्ट्र दूनूक स्वर सुनि अपन आसनक दिशा बदललनि; निर्णय अब सभक साझा आदेश नहि छल।

एहि प्रकार प्राचीन वनयात्राक निर्णय अपन फल धरि पहुँचल। कुन्ती पुत्रसभक माफी अथवा बन्धन लऽ नहि निकललीह; पुत्रसभकेँ अपन असहमतिसहित जीबाक अधिकार देलीह। गान्धारी संग सहयात्राक पहिल पड़ाव स्वीकार भेला परो दुनूक अलग इच्छा सुरक्षित रहल। कर्णक स्मृति रहल, मुदा ओकरा कोनो नव राजकीय घोषणा मृत व्यक्तिक जीवनपर अन्तिम मुहर बनाबए नहि सकल।

सन २०४०क विदेहपुरमे एहि प्राचीन कथासँ अलग भोर एकटा बस पहिल पड़ावक बजारमे रुकल। वृद्ध किरायेदार स्त्री खिड़कीसँ नीचे उतरबाक पहिने महिला चालककेँ कहलथिन, “हमर पएरक बल एखन नीक नहि लगैत अछि। अगिला बस पकड़बाक बदला आइ एतहि रुकब।” चालक पहिल टिकटपर लिखल अगिला गामक नाम देखिकऽ पूछलीह, “यात्रा बदलि रहल छी?” वृद्धा मुस्कुरेलीह। “हम बदलि रहल छी, हमर घरक

अधिकार नहि।” ओहि बातक बाद चालक अघोषित अतिरिक्त भाड़ा नहि माँगलीह; पहिल पड़ावधरि सेवाक रसीद देलीह।

बजारक धर्मशालामे कोठरीक रजिस्टर छल, जाहिमे ‘परिवारक उत्तरदायी पुरुष’ नामक एकटा अनिवार्य पाँति छपल छल। वृद्धा पाँति देखिकऽ कहलीह, “हम स्वयं वयस्क छी। हमर रहबाक जिम्मेदारीक पहिल नाम हमरे होएत।” लेखपाल कहलनि जे फारम पुरान अछि। महिला चालक अपन फोनसँ स्थानीय पंचायतक सेवा-नियम देखौलीह; जरूरी आपात सम्पर्क अलग लिखल जा सकैत छल। वृद्धा नतिनीक नम्बर केवल आपात सम्पर्कमे दर्ज करौलीह, स्वामित्व वा अनुमति देनिहारक रूपमे नहि।

नतिनीकें फोन पहुँचल तँ ओ सिलाइक-मशीनक पैडल रोकलीह। “दादी, अहाँ ठीक छी?” वृद्धा कहलथिन, “हँ, मुदा थकानक कारण एतहि रुकलहुँ। जे पहिल योजना छल, ओ आब बदलल। अहाँ सिलाइक पूरा करू।” नतिनी राहतक संग कहलीह, “लोक कहत जे हम अहाँकें अकेले भेजि देलहुँ।” वृद्धा उत्तर देलीह, “लोकक वाक्यकें अपना दिनक मालिक मत बनाउ। हमर निर्णय हम देब, अहाँ अपन काजक निर्णय दिअ। मदद चाहब तँ स्पष्ट कहब।” फोन राखलाक बाद नतिनी मशीन फेर चलौलीह; कपड़ाक पाड़ सीधा कएलाक संग ओकर श्वास सेहो स्थिर भेल।

ओही समय सरिताक कार्यालयमे अभिलेख-प्रतिक अगिला वार्षिक समीक्षा लेल पहिल सूचना अएल। एक निजी कम्पनी प्रस्ताव रखने छल जे परिवारक एक सदस्य सभ वयस्क सदस्यक कागदक डिजिटल सहमति एकहि बेर दऽ सकत, आ तकर बदला प्रतिलिपि सस्ता पड़त। रमा कर्ण प्रस्तावक नीचाँ लिखल छोट अक्षर पढ़लीह: ‘एकीकृत पारिवारिक अधिकार’। ओ लाल पेन्सिलसँ रेखा खींचि कहलीह, “एहि पाँतिसँ देखभाल करनिहारकें मालिक बना देल जाइत अछि।”

कबीर ओतए एकटा पुरान पालन-सम्बन्धी प्रमाणपत्रक प्रति लेबए अएल छल। नैराक मृत्यु पछाति ओकर घरक मौन बदलल नहि छल। सरिता ओकरा बैसब कहलीह, मुदा कबीर ठाढ़ रहि पुछलक, “जकरा हमरा पालबाक काज छलनि, हुनकर नाम कागदमे छूटल अछि। जन्मसम्बन्धी प्रश्न अलग अछि। एहन स्थितिमे हमर वर्तमान परिचयक

निर्णय के देत?” रमा कहलीह, “अहाँ वयस्क छी। प्रमाणित पालनक इतिहास जोड़बाक मांग अहाँ स्वयं कऽ सकैत छी। जन्मक अनिर्णीत प्रश्नक उत्तर कागद बना नहि सकैत।”

कबीरक हाथमे राखल नकलक एक कोना मोड़ाएल छल। ओ कहलक, “जँ हमरा पालने व्यक्ति मृत छथि, तँ हुनकर काजक श्रेय लिखब से हुनकर नामपर मालिकाना दावा नहि भऽ जाए?” सरिता कहलीह, “नहि। जे काज भेल ओकर प्रमाण, जकर अधिकार एखन अछि ओकर निर्णय, आ जे हानि भऽ चुकल ओकर शोक—ई सभटा अलग राखू।” कबीर कागद सोझ कएलक। ओ जन्म-पंजीक खाली पाँतिमे अनुमान नहि भरौलक। पालनकर्ताक प्रमाणित भूमिका जोड़बाक आवेदन भरलक आ स्वहस्ताक्षर कएलक।

समीक्षा-सभामे कम्पनीक प्रतिनिधि कहलक, “परिवारक सुविधा लेल एकटा सहमति सर्वोत्तम उपाय अछि। अलग-अलग हस्ताक्षरसँ खर्च बढ़त।” पद्मा पूछलीह, “जँ कोनो माय अपन वयस्क बेटीकेँ किछु कहब नहि चाहथि, वा बेटी अपन व्यवसायी कागद मायसँ अलग रखए चाहथि, तखन?” प्रतिनिधि ‘विश्वास’क बात करए लगल। रुहानी वृद्धाक यात्रा-फारमक अनाम उदाहरण रखलीह—आपात सम्पर्क मानल गेल, अनुमति-दाता नहि। ओ स्पष्ट कएलीह जे परिवारक निकटता सामूहिक डिजिटल स्वामित्वक वैध प्रमाण नहि अछि।

विद्यालयक प्राङ्गणमे एही विषयपर खुला सुनवाई भेल। नतिनी सिलाइकक काम समाप्त कऽ पहुँचल छलीह। ओकरा पुछल गेल जे दादीक अनुपस्थितिमे घरक अभिलेखपर ओ हस्ताक्षर करतीह की नहि। ओ कहलीह, “हम चाभी राखने छी, कारण घर देखबाक अछि। चाभीसँ घर बिकबाक अधिकार नहि भेटैत। दादी घुरि आबथि तँ ओ अपन प्रति स्वयं देखतीह। मरम्मतक खर्चक रसीद हम देखब, मुदा हुनकर सम्पत्तिक निर्णय नहि।” उपस्थित लोकक बीच किछु असहमति उठल, तथापि एही सीमाक लिखित स्वीकृति दर्ज भेल।

अगिला क्रममे ललित विश्वकर्मा फेर अपन बकायाक प्रश्न उठौलनि। हुनकर सरकारी मरम्मत-बिल सही कहल गेल छल, मुदा बैंकमे रकम नहि पहुँचल। कम्पनी प्रतिनिधि प्रतिलिपिक डिजिटल प्रगतिपट देखबए लगल। ललित ओकरा रोकि कहलनि, “हमर नामक कात ‘स्वीकृत’ चमकि रहल अछि; घरमे तकर दामक अन्न नहि अछि।” रमा

सार्वजनिक पन्नामे भुगतान-आदेशक तिथि आ बैंक-प्राप्ति अलग स्तम्भमे राखलीह। समीक्षा-समितिक तेसर सदस्यक रूपमे ललितक चुनल श्रमिक-प्रतिनिधि जोड़ल गेल। सुधाक चन्दा वा वृद्धाक निजी रसीद एहि बकायाक प्रमाण नहि बनल।

रुहानी सस्ती छपाइक प्रस्तावक वास्तविक गणना सामने रखलीह। एकटाक बदला व्यक्तिगत सहमतिक दसटा फारम बनला पर कागदक खर्च बढ़ैत छल, मुदा साझा अनुमति-फारममे गलती सुधारबाक अधिकार असमर्थ व्यक्ति धरि पहुँचैत नहि। एकटा अलग निधि, स्थानीय पुस्तकालयक गोपनीय प्रति-कक्ष आ हाथसँ लिखल सुधारक विकल्प प्रस्तावित भेल। समिति कम्पनीक ‘परिवार-प्रमुख हस्ताक्षर’वाला शर्त अस्वीकार कएलक; सस्ती सेवा लेल व्यक्तिगत नियन्त्रण नबेचेबाक निर्णय भेल। कम्पनी अपन प्रस्ताव संशोधित करबाक समय माँगलक, मुदा ताधरि कोनो डेटा हस्तान्तरण नहि भेल।

दूरक बजारमे वृद्धा धर्मशालाक खिड़कीसँ एकटा नीम देखैत छलीह। राति हुनका घुटनाक पीड़ा बढ़ल। ओ महिला चालककेँ सहायता माँगबाक सङ्ग दवाइक समय बतौलीह; चालक स्थानीय प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मी बजौलीह आ अपन यात्राक अतिरिक्त सेवा-शुल्क स्पष्ट लिखलीह। वृद्धा जाँच लेल आवश्यक जानकारी देलीह, पुरान रोगक पूरा कागद नहि। बिहान ओ नतिनीकेँ कहलीह, “आइ आगौं नहि बढ़ब, एतहि आराम करब। मायकेक पोखरि काल्हियो रहत, मुदा हमर पएर आइ जकरा कहैत अछि, ओकरा सुनब।”

नतिनी फोनपर कहलीह, “दादी, हम चाही तँ अहाँक लग आबि सकैत छी।” वृद्धा किछु काल सोचलीह। “आइ नहि। जरूरत पड़त तँ कहब। मुदा एकटा बात सुनू—घरक पुरान सन्दूकमे किरायाक जे पावती अछि, ओकरा ककरो हाथमे मत दिअ। मरम्मतिक रसीद अलग अछि।” नतिनी पुछलीह, “अहाँ हमरा भरोसा नहि करैत छी?” वृद्धा उत्तर देलीह, “भरोसा अछि, तँ कागद ककर अछि से स्पष्ट करैत छी। जे अपन अछि, ओकर जिम्मेदारी अहाँ लिअ; हमर कागद हम स्वयं देखब।” दुनू फोन रखलनि, बिना चोट पहुँचाबए।

साँझ सरिता घर घुसलीह तँ कबीरक आवेदनक प्रति मेजपर छल। ओकरा लग नैराक पुरान स्कार्फक तह राखल छल; सरिता ओकरा हाथ नहि लगौलीह। कबीर स्वयं स्कार्फ सम्हारैत कहलक, “कागदमे पालनक नाम जोड़बाक मांग करब, मुदा जन्मक खाली जगह भरबाक दबाव नहि लेब। जे दिन प्रश्नक उत्तर भेटत, तखन देखब। आ जँ नहि भेटल,

तखनहूँ हमर जीवन अधूरा प्रमाणपत्र नहि होएत।” सरिता अपन उत्तर थोपलीह नहि। बस पुछलीह, “अहाँक आवेदनक प्रति अहाँक लग अछि?” कबीर जेब टोहलक आ देखौलक।

ओहि राति मैथिली पुरान वनयात्राक पन्ना पढ़ैत छलीह। कुन्तीक गोपित मातृत्व, पुत्रसभक दुख आ स्वायत्तताक बीच ओ किछु वाक्य रेखांकित कएलीह। मुदा दार्शनिक प्रश्नक तरहें ओ ऐतिहासिक वृत्तान्तकें आधुनिक न्यायालयक प्रमाण नहि बनौलीह। ईशानक पुस्तकक नव भूमिकामे संशोधित श्रेयक पन्ना हुनकर कात राखल छल; ताहि पर एखन एकटा नब प्रश्न लिखलीह—जकरा हम प्रेम करैत छी, ओकरा अपन निर्णय लेल हम कतेक जगह छोड़ैत छी? दोसर पन्नापर लिखलीह—सत्य स्वीकारलासँ ककरो क्षमा करबाक स्वतः कर्तव्य नहि जन्मैत।

अगिला दिन पंचायत वार्षिक सार्वजनिक जाँचक तिथि आ प्रक्रिया सार्वजनिक कएलक। प्रत्येक वयस्क व्यक्तिक अभिलेखक अलग सहमति, असहमतिक पंजी, मुद्रित वा मौखिक प्रतिक विकल्प आ वास्तविक भुगतानक स्थिति जाँचल जाएत। ललितक बकाया बैंक-पुष्टिक प्रतीक्षामे रहल; वृद्धाक घरपर अधिकार सेहो कायम रहल; कबीरक पालन-नाम जोड़बाक आवेदन निर्णयक लेल खुलल। कोनो सुधारकें सार्वभौम विजय नहि लिखल गेल। जे निर्णय भेल ओकर प्रति सम्बन्धित व्यक्ति धरि पहुँचाओल गेल, जे नहि भेल ओकर कारण अलग देखायल।

वनक ओहि पहिल पड़ावमे कुन्ती रातिक समय गान्धारीसँ कहलीह, “हम जे नहि कहि सकलहूँ, तकर बोझ हमरा संग रहत।” गान्धारी उत्तर देलीह, “बोझ रहब आ ओ बोझ दोसरपर रखि देब एक नहि।” कुन्ती दूरक आगिक क्षीण प्रकाश देखलीह। हुनकर पुत्रसभ राजगृहमे अपन-अपन मन लऽ रहि गेल छलाह। ओहि दूरीमे ओ पहिल बेर मातृत्वकें अधिकारक सिंहासनसँ अलग देखलीह। अगिला भोरक बाट तय नहि छल, मुदा आजक पड़ावक सहमति पूरा छल; ईहि सीमा भीतर हुनकर शेष वचन अर्थ पबैत छल।

अध्याय १७२ • ईशानक कमरा

सन २०४०क विदेहपुरमे पुस्तकालयक पछिला कोठरीक ताला घुमबैत ईशानक हाथ एक बेर अटकि गेल। चाभीक दाँत घिसि गेल छल; बरसातक आर्द्रतासँ किवाड़ फुला उठल छल। ओ काँधसँ हलुक धक्का देलनि तँ भीतरक मेजपर राखल पुरान कागदक ढेरी हिलि गेल। मेजक बगलमे छोट पीतलका पट्टीपर हुनकर नाम लिखल छल, मुदा पट्टीक दू पेंचमे सँ एकटा निकलि चुकल छल। ई कोठरी हुनकर अध्ययनक जगह छल, स्वामित्वक जमीन नहि। आइ पुस्तकालय-समितिक चिट्ठीमे लिखल छल जे सात दिनमे कमरा खाली होएत; एतए बच्चासभक सार्वजनिक पाठ-कक्ष बनत।

ईशान पट्टी उखाड़ि जेबमे रखबाक बदला ओकरा आँठासँ छुलनि। पुस्तकालयक पहिल संचालक हुनका ई जगह शोधक सुविधा कहि देने छलाह। कोनो निश्चित समयक पट्टा नहि बनल छल। हुनकर पुस्तकसभ एतए रहला कारण कतेको बालककेँ साँझक समय बाहर बरामदामे बैसि पढ़य पड़ैत छल। ईशान पहिने ओहि असुविधाकेँ कोनो पैघ समस्या नहि मानने छलाह। आब पाठ-कक्षक नाप लैत कारीगरक चाकसँ खींचल सफेद रेखा हुनका अपन नजरिक चूक बुझौलक।

सामने किताबक पानामे ईशान आ मैथिलीक संयुक्त प्रकरणक संशोधित श्रेय-पत्र राखल छल। किछु मास पहिने हुनकर एकल नामसँ प्रकाशित पाठमे मैथिलीक मूल तर्क आ सरिताक प्रतिलिपि-श्रमक स्थान छूटल रहल। जाँचमे जे प्रमाण भेटल, तकर आधारपर नव भूमिका छपल; ईशान अपन दायित्व स्वीकार कएने छलाह। मुदा सुधरल पन्ना सार्वजनिक भेला पछाति हुनकर व्याख्यानक निमन्त्रण घटल, विद्यार्थी घटल, आ किछु पुरान मित्र भेटब बन्द कऽ देलनि। एहि घटबाक भीतर न्यायोचित प्रश्न सेहो छल, आ किछु लोकक अपमान करबाक आनन्द सेहो। दुनूकेँ एक नाम देब सरल छल, सही नहि।

पुस्तकालयक कर्मचारी रोहित पुरान रजिस्टर लऽ आएल। “अहाँक पाँचटा आलमारी अछि,” ओ कहलक, “समितिक हिसाबमे एहि कोठरीक चाभी अहाँक पास स्थायी रहबाक बात कतहु नहि लिखल।” ईशान पुछलनि, “किताब राखबाक लेल सार्वजनिक जगह भेटत?” रोहित उत्तर देलक, “जे किताब सभक पढ़बाक अछि, ओकर सूची बनाउ।

जे अहाँक निजी पन्ना अछि, ओ उठा लिअ। किछु पन्नामे दोसर लोकक निजी नाम अछि; ओ हमरा सभक जिम्मामे नहि रहबाक चाही।” ईशान पहिल बेर बुझलनि जे कोठरी खाली करबाक प्रश्न केवल हुनकर मानक नहि, कागदक सुरक्षाक सेहो अछि।

दोपहरि समितिक बैठकमे युवा शिक्षिका रुखसाना कहलीह, “हमरा सभकें बच्चासभक लेल उज्जर कोठरी चाही। एहिमे किछु पुस्तक खुला रैकपर रखब, मुदा सार्वजनिक अध्ययनक समय निर्धारित रहत।” एक सदस्य व्यङ्ग्य कएलनि, “जे विद्वान दोसरक नाम मेटौने छलाह, हुनकर पट्टी सेहो मेटा दिऔन।” रुखसाना तुरन्त रोकलीह। “गलत श्रेयक सुधार जरूरी अछि; ओहि अपराधक कारण ककरो अपमान सार्वजनिक खेल नहि बनय। निर्णय ई जे जगह कोना बाँटल जाएत, नहि जे केकर चेहरा कतेक नीचाँ देखाओल जाएत।”

ईशानक मुहँ लाल भऽ गेल। ओ अपन पुरान शोधक सूची खोलि देखौलनि जे कतबा कठिन पोथीक प्रति एतहि सुरक्षित छलीह। “एतए सँ हमरा हटौलासँ पुस्तकालयक विद्वत्ता घटत,” ओ कहलनि। रुखसाना धीरे पुछलीह, “तँ अहाँ बच्चासभकें एहि पुस्तकसभक उपयोग कतेक बेर करौने छी?” प्रश्नमे कोनो ठट्टा नहि छल। ईशान गिनबाक प्रयास कएलनि, मुदा स्मृतिमे अपन एकल पढ़ाइ, बन्द दरबज्जा आ अनुत्तरित आग्रह बेसी भेटल। ओ सूची समेटि लेलनि।

बैठकक बाद पुरान सहपाठी आनन्द भेटल। “एहि निर्णयपर अदालत जाउ,” ओ आग्रह कएलनि। “अहाँक प्रतिष्ठा समाप्त करबाक षड्यन्त्र अछि।” ईशान कहलनि, “जँ हमर निजी पोथी रोकल जाइत, जँ पुस्तकालय हमर मूल पन्ना जप्त करैत, तँ विरोध उचित रहैत। मुदा कमरा सार्वजनिक अछि। बच्चासभ ओकरा चाहैत अछि। हमर नामक पट्टी हटब आ हमर लेखनक सत्य अलग चीज अछि।” आनन्द असन्तुष्ट रहलाह। “अहाँ हार मानि रहल छी।” ईशान उत्तर देलनि, “कमरा लऽ लड़बासँ हम अपन किताबक दोषक उत्तर नहि देब।”

साँझ मैथिली पुस्तकालयक देहरी धरि अएलीह। हुनका नव भूमिकाक दू प्रतिलिपि जमा करबाक छल। ओ पहिने सँ कोठरी खाली करबाक समाचार सुनने छलीह। भीतर पहुँचि देखलीह जे ईशान मेजक दराजसँ हुनकर पुरान अक्षरवला पन्ना निकालि अलग

लिफाफामे राखि रहल छथि। मैथिली पुछलीह, “ई कागदपर हमर लिखल मूल पाठ अछि; मूल हमरा भेटत?” ईशान लिफाफा हुनका दऽ देलनि। “प्रतिलिपि हम राखि सकब?” ओ पुछलनि। मैथिली कागद गनि कहलीह, “जे संयुक्त प्रकरणक आवश्यक प्रति अछि, ओकर उपयोगक शर्त लिखि दियौ। हमर अलग नोटबुकक पन्ना अहाँ रखब नहि।”

ईशानक मन भेल जे पुरान दिनक बात छेड़थि—जखन ई कमरा मैथिलीक पएरक ध्वनिसँ भरि उठैत छल, आ दुनू एकहि पन्नापर झुकि विवाद करैत छलाह। मुदा मैथिली अपन कागद लऽ ठाढ़ छलीह, ओ स्मृतिक कर्जदार नहि। ओ कहलीह, “श्रेयक सुधार भेल अछि, तकर अर्थ ई नहि जे हमरा पहिनुक घर-व्यवस्था फेर मानि लेबाक चाही। एखन हमर अध्ययनक ठाम अलग अछि।” ईशान केवल एतबे कहलनि, “हम अहाँक निर्णय बुझबाक प्रयास करब। अहाँकै एतहि ठहरबाक आग्रह नहि करब।”

मैथिली निकलि गेलाक बाद ओहि कोठरीमे हावाक आवाज बेसी सुनाइ देलक। ईशान आलमारीक पहिल खण्डसँ न्यायशास्त्रक पाण्डुलिपि निकाललनि। किनारमे हुनकर अपन लिखल टिप्पणी छल—प्रमाता, प्रमाण आ प्रामाण्य। वर्षसभ धरि ओ एहि शब्दसभक व्याख्यान कएने छलाह, मुदा एकटा नकलक पन्नापर केकर हस्तलिखित विचार अछि से पुछबाक धैर्य नहि रखलनि। हुनका अपन ज्ञानसँ विरक्ति नहि भेल; अपने अधिकारक असावधानीसँ लाज भेल। ओ नोटबुकक पहिल पृष्ठमे लिखलनि, “ज्ञाताक प्रसिद्धि ज्ञानक प्रमाण नहि।”

दू दिन बाद रोहित गाड़ी लऽ पहुँचल। कागदक पेटी उठबैत ओ एकटा फाटल रसीद देखलक। “ई सरिताक कामक पुरान हिसाब जकाँ लगैत अछि।” ईशान रसीद देखलनि। ओहि पर नकलक पन्ना संख्या छल, भुगतानक प्राप्ति नहि। “ई सरिताक बकायाक फाइलमे प्रतिलिपिसहित पठाएब,” ओ कहलनि, “मुदा रसीदकें चुकता प्रमाण नहि लिखब।” रोहित पुछलक, “अहाँ खुद गलतीक बात सार्वजनिक फेर करब?” ईशान उत्तर देलनि, “जतए हिसाब खुलल अछि ओतए चुप्पी फेर दोसर नाम मेटब होएत।”

अगिला भोर सरिता कार्यालयमे पेटी पहुँचल तखन ओ तुरन्त रसीद स्वीकार नहि कएलीह। “पहिने मूलक फोटो, पन्ना-संख्या आ कोन हाथसँ ई हिसाब लिखल अछि, से दर्ज करू,” ओ कहलीह। कबीर पासक मेजपर अपन पालन-नामक आवेदनक स्थिति

पूछए अएल छल। ओ कागदक ढेरी देखि कहलक, “जे दस्तावेज छूटि जाइत अछि, ओकर कारण आदमीकेँ फेर अपन कथा आरम्भ करय पड़ैत अछि।” सरिता उत्तर देलीह, “आ जे दस्तावेज भेटि गेल, से सभ प्रश्नक अन्त नहि।” ओ ईशानक रसीद अलग लिफाफामे सील करौलीह।

ईशान सरितासँ पुछलनि, “अहाँक एखन कोन रकमक माँग बाकी अछि?” सरिता मुस्कुरेलीह नहि। “हमर वास्तविक नकल-श्रमक हिसाब, जे पन्नामे मापल गेल छल, आ घरक देखभालक समय, जकर गणना पर अपन विवाद अछि। हुनका दूनू एक ठाम जोड़ि स्नेहक दान नहि बनाउ।” ईशान कहलनि, “हम भुगतानक जतेक वास्तविक देय अछि, ओकर स्पष्ट निर्णय चाहैत छी।” सरिता उत्तर देलीह, “चाहब आ देब अलग क्रिया अछि। भुगतान बैकमे पहुँचत, तखने तकर हिसाब बन्द होएत।” ओहि वाक्यक बाद ईशान चुप भऽ गेलाह।

दोपहरि पुस्तकालयक आँगनमे कारीगर पट्टी खोललनि। एकटा पेंच बहुते कसल छल; दोसर जंग खा कऽ भुरभुरा गेल। ईशान ओहि पट्टीकेँ स्मृतिचिह्नक रूपमे घर नहि लऽ गेलाह। ओ पुस्तकालयकेँ कहि देलनि जे धातुक पुनः उपयोग करय; मुदा व्यक्तिगत नाम हटौला बाद सेहो संयुक्त पुस्तिका आ संशोधित श्रेय-सूची सार्वजनिक रैकपर रहय। समिति एहि अनुरोधकेँ पुस्तक-पंजीमे लिखि लेलक। एक सदस्य फेर पुछलक, “अहाँ अपन अपमान विसरि गेलहुँ?” ईशान उत्तर देलनि, “नहि। मुदा हमरा सभकेँ जे गलत भेल तकर सुधार चाही, अपमानक उत्सव नहि।”

पेटी भरबाक समय एकटा बालिका दरबज्जापर ठाढ़ भेटलीह। ओ पुछलीह, “ई नव कोठरीमे हम सभकेँ बैसब देत?” ईशान कहलनि, “हँ, खुला समयमे।” बालिका फेर पूछलीह, “ई मोटका पोथीमे चित्र अछि?” ईशान न्यायशास्त्रक खण्ड देखलनि। “चित्र कम अछि, प्रश्न बेसी।” बालिका कहलीह, “तँ प्रश्न पढ़ब।” ईशान अपन पन्ना समेटैत कहलनि, “प्रश्न पढ़ब सबसँ कठिन काज अछि। पाठकक्षमे ओकर जगह रहबाक चाही।” बालिका दौड़ि गेलीह, आ ईशान अपन स्थिर आसनक अभावमे एकटा नव आसनक सम्भावना देखलनि।

ओहि राति ईशान घरमे अध्ययन लेल जगह खोजलनि। बरामदाक एक कात धान सुखेबाक बोरिया छल; कोठरीक भीतर मैथिलीक पुरान सामान रखल छल, जकरा बिना अनुमति हटब उचित नहि। ओ छतक नीचाँ छोट टेबुल राखि दीपक जरौलनि। पवनसँ पन्ना उड़य लागल। ईशान पहिल बेर पुस्तकालयक खाली होइत कमरासँ बेसी अपन पढ़बाक विधिपर ध्यान देलनि। कोनो शिष्य समक्ष नहि छल, नामक पट्टी नहि छल; केवल विचारक एकटा अपूर्ण वाक्य छल, जकरा ठीक करबाक पड़त।

पहिल प्रश्न हुनका बिनु किताब खोलने भेटल: जँ कोनो ज्ञाता अपन पूर्व निष्कर्ष गलत पाओत, तँ ओ प्रमाण सुधरत कि अपन मान रक्षार्थ नव व्याख्या गढ़त? ओ कागदपर तीनटा उदाहरण लिखलनि। पहिल—मैथिलीक नाम छूटब; दोसर—सरिताक श्रमक रसीद; तेसर—पुस्तकालयक कोठरी। तीनूमे अलग-अलग न्याय छल। ओ अपना असुविधाकँ सभक साझा हानि नहि कहलनि। फेर पुस्तक खोलि प्राचीन तर्क-पद्धतिक टिप्पणी लिखब शुरू कएलनि। ई नकल अपन नाम बढ़ेबाक लेल नहि, प्रश्न बूझबाक अभ्यास छल।

दुसर दिन गामक युवक मुन्ना आएल। ओ पहिने ईशानक व्याख्यान सुनैत छल, मुदा श्रेय-विवादक बाद दूर भऽ गेल छल। एखन ओकरा उच्च अध्ययनक प्रवेश-परीक्षामे अनुमानक एकटा उदाहरण बुझबाक छल। “अहाँसँ पढ़ब तँ लोक की कहत?” ओ पुछलक। ईशान उत्तर देलनि, “लोक जे कहत, तकर निर्णय अहाँ देब। हमर उत्तर गलत बुझल जाए तँ रोकि पुछू। अहाँक प्रश्नक बदलामे हमरा निर्दोष मानबाक आवश्यकता नहि।” मुन्ना थोड़े सोचि टेबुलक सामने बैसि गेल।

ईशान धुआँ देखिकऽ आगिक अनुमानक प्रचलित उदाहरण लिखलनि। मुन्ना पुछलक, “जँ धुआँ देखाइत चीज कुहासा निकसल तँ?” ईशान मुस्कुरेलाह। “ताहि लेल जे देखलहुँ ओकर पहचानक परीक्षण चाही।” मुन्ना प्रतिप्रश्न कएलक, “आ जँ पाँच लोक अहाँकँ विद्वान कहथि, ताहिसँ अहाँक पाँति ठीक सिद्ध होएत?” ईशानक हाथ ठमकि गेल। “नहि,” ओ कहलनि, “आ ई प्रश्न हमरा पहिने पुछबाक छल।” मुन्नाक कॉपीमे ओ अपन नामक बगलमे ‘उत्तर संशोधनाधीन’ लिखि देलनि।

एहि छोट पाठक चर्चा एक घण्टा चलल। अन्तमे मुन्ना फीसक बात पुछलक। ईशान पूर्वक जकाँ प्रतिष्ठाक नामपर बिना हिसाब विशेष दान नहि माँगलनि। “एखन पहिल दू अभ्यास सार्वजनिक पाठकक्षमे निशुल्क होएत, तकर समय पुस्तकालयसँ स्वीकृत कराएब,” ओ कहलनि। “घरमे जे निजी पढ़ाइ होएत, तकर श्रम-दाम पहिने निश्चित करब।” मुन्ना उत्तर देलक, “तखन हमरा विकल्प बुझाएत।” ईशान बुझलनि जे ज्ञानक लेन-देनमे सेहो पारदर्शिता चाही; एहि बातक प्रमाण हुनकर पश्चात्ताप नहि, व्यवस्था होएत।

साँझ समिति फेर बैठक बजौलक। एक निजी प्रकाशक नव पाठ-कक्षकेँ अपन नाम देबाक बदला रैक आ मेज देबाक प्रस्ताव रखने छल। शर्त छल जे पाँच वर्ष धरि ओही प्रकाशकक छपल सहायक-पुस्तिका अनिवार्य खरीदल जाए। रोहित प्रस्तावक चकमक आवरण देखैत छल। ईशान एतए आमन्त्रित सदस्य नहि रहला, मुदा पुस्तक-सूचीक विषयमे सार्वजनिक सुनवाईमे बैसलाह। ओ कहलनि, “मेज लेल धन्यवाद देब अलग अछि, बच्चासभकेँ एकहि किताब खरीदबाक बाध्यता देब अलग। हमर नामक पट्टी हटल, फेर नव नामक बेड़ी किएक?”

प्रकाशकक प्रतिनिधि कहलक, “अहाँ तऽ खुद एकल पुस्तकसँ जीविका चलबैत छलहुँ; एखन बाजारक विरोध किएक?” ईशान स्वीकार कएलनि जे हुनकर पुरान पुस्तकक वितरणमे सेहो पारदर्शिताक कमी छल। मुदा जे कमी हुनकर छल तकर आधारपर बच्चासभक अगिला चुनाव बन्द नहि होएत। रुखसाना खुला खरीद-पंजी आ भिन्न प्रकाशकक सूचीक प्रस्ताव रखलीह। समिति सहायता स्वीकार करबाक प्रश्न स्थगित करैत शर्तसभ पुनर्लेखनक निर्णय लेलक। नव पाठ-कक्ष खुलबाक तिथि यथावत् रहल; अनिवार्य बिक्रीक अनुमति नहि भेटल।

ओहि बीच मैथिली अपन अलग अध्ययन-कक्षमे नब भूमिका पूरा करैत छलीह। ईशानक पत्र पहुँचल: नव पाठकक्षमे संयुक्त प्रकरणक व्याख्यान लेल हुनकर संग बैसबक निमन्त्रण। मैथिली पत्र पढ़ि रखि देलीह। सार्वजनिक पाठ लेल ओ एक दिन सहमत भऽ सकैत छलीह, मुदा ओहि सहमतिसेँ निजी जीवनक साझा निवास स्वतः नहि बनत। ओ उत्तर लिखलीह, “पाठक-सभा लेल प्रश्न आ स्रोत पहिने पठाउ। हमर समय आ स्वर

स्वतन्त्र रहत। दोसर कोनो सम्बन्धक निर्णय एहि पत्रमे नहि।” हुनका अपना दूरीक लेल व्याख्या देबाक बाध्यता नहि छल।

ईशान उत्तर पाबि कागद धीरे मोड़लनि। ओ मैथिलीकें फोन करबाक इच्छा रोकलनि। जँ ओ सहलेखन स्वीकृति लिखि चुकल छथि, तकर बदलामे मैथिलीक स्नेह वसूल करब नव अन्याय होएत। ओ अपन नोटबुकमे लिखलनि—‘दोष स्वीकारब पुरस्कार अर्जित करबाक उपाय नहि।’ मुदा एहि पाँतिक संग अपन दुखक नाम सेहो लिखलनि। दुख नहि लुकाउला परो ओकरा दोसरक स्वतन्त्रताक विरुद्ध हथियार बनायब आवश्यक नहि।

अगिला सप्ताह पुस्तकालयक खोली साफ करैत महिला सफाईकर्मी रानी कहलीह जे धूलि उठलासँ हुनकर नाक जड़ाइत अछि। रोहित तुरन्त पानि छिड़कि कऽ झाड़ू लगएबाक प्रस्ताव कएलक; रानी कहलीह, “ई काजक साधन आ मजदूरी पहिने लिखू। स्कूलक बच्चा आबि गेलापर हम सभकेँ दुआरक आड़मे लुकाएब नहि।” समिति दस्ताना, मुखावरण आ अतिरिक्त सफाईक समयक पारिश्रमिक स्वीकृत कएलक। ईशान पुरान टेबुल हटबैत देखलनि जे कमरा खाली होएबाक वास्तविक श्रम ककरा हाथमे अछि। हुनकर पुस्तकक युगमे एहि हाथक चर्चा कतेक कम रहल, से स्मृतिमे चुभलनि।

उद्घाटनक भोर पाठ-कक्षक दुआरमे एकहि पुस्तकक प्रतिमा नहि, अलग-अलग उँचाइक रैक छल। बालिका जे पहिने प्रश्न पूछने छलीह, पहिल कागदपर अपन नाम लिखलीह। रोहित ओकरा पुछलक, “कोन पोथी चाही?” ओ ईशानक पुरान न्यायशास्त्रक सरल व्याख्या चुनलीह। पहिल पन्नामे मैथिली आ ईशानक संशोधित संयुक्त श्रेय स्पष्ट छल, आ प्रतिलिपि-कार्यक सूचीमे सरिताक नाम रहल। पुस्तिका सँ अलग सूचना-पत्रमे सरिताक भुगतानक दावा एखन समीक्षा मे अछि, से सेहो लिखल छल। बालिका लेल ई सभ नाम पहिने अनजान छल; मुदा हुनका नामक सच्चाई एक दिन उपयोगी पड़त।

ईशान दरबज्जाक बाहर बैसलाह। कोठरी हुनकर नहि रहल, मुदा भीतरसँ प्रश्नक आवाज सुनाइत छल। मुन्ना विद्यार्थीसँ धुआँ आ कुहासाक अन्तर पुछैत छल। किछु उत्तर गलत छल; किछु बेर विद्यार्थी हँसैत छल। ईशानकेँ भीतर प्रवेशक अनुमति छल, विशेष आसन नहि। रोहित पुछलक, “अहाँ पहिल पाठ पढ़ाएब?” ईशान कहलनि, “आइ सुनब।

जे नहि बुझब तकर नोट बनायब।” दिनक पहिल कार्य ओ अपन उत्तर नहि, बालिकाक प्रश्न सुनब चुनलनि।

साँझ घर घुरि ईशान टेबुलक नव जगहपर बैसलाह। छतक दरारसँ हावा अबैत छल, तें ओ कागदपर साफ पत्थर राखलनि। पहिल पाठक त्रुटि आ मुन्नाक आपत्तिक सुधार कएने बिना ओ अगिला प्रकरण नहि लिखलनि। खोइजयल कमराक बदलामे हुनका कोनो राजकीय पुरस्कार नहि भेटल; नामक घेरामे छल निर्णायक चमक सेहो नहि रहल। मुदा ओ एकटा पाँति फेर सँ पढ़ि सकैत छलाह, आ गलत पाँति काटि सकैत छलाह। विद्वत्ताक ई छोट श्रम हुनका बहुत दिन बाद अपन लगलनि।

मैथिलीक उत्तर-पत्र मेजक कात सुरक्षित छल। अगिला सप्ताहक सार्वजनिक पाठपर सहमति सम्भव छल, विवाहक पुरान रूपपर नहि। ईशान पत्रकेँ प्रमाणपत्रक तरहँ चौखटपर टाँगलनि नहि; ओकरा किताबक भीतर एतबे लेल राखलनि जे उत्तर लिखबाक समय भूले नहि। ओ कागदपर नब शीर्षक लिखलनि—‘प्रमाणक सुधरैत बाट’। बाहर पाठकसँ घुरैत बालकसभक आवाज अबैत छल। ओ आवाज हुनकर खोइजयल प्रतिष्ठाक क्षतिपूर्ति नहि छल; ओ एहि नगरक अपन भविष्य छल। अगिला निर्णय मैथिली अपन ठामसँ देतीह, आ ईशान ओकर प्रतीक्षा करैत अपन काम रोकि नहि सकैत छलाह।

अध्याय १७३ • मैथिलीक दूरी

सन २०४०क विदेहपुरमे भोरुक पहिल उजास खिड़कीक जालीसँ भीतर पड़ल तँ मैथिली अपन मेजपर राखल दूटा चाभी अलग कएलीह। एकटा हुनकर अपन किरायाक छोट अध्ययन-कक्षक छल; दोसर ईशानक पुरान घरक, जतए हुनकर किछु कपड़ा आ माँक देल पीतलका लोटा एखनहुँ राखल छल। रातिमे लिखल सार्वजनिक व्याख्यानक पन्ना सुखा गेल छल, मुदा निजी सम्बन्धक विषयमे हुनकर उत्तर एखन कोनो कागदपर नहि छल। ओ चाभीकेँ निहारैत बुझलीह जे जे दरबज्जा अपन हाथसँ खोलल जाइत अछि, ओकरा बन्द करबाक निर्णय सेहो अपना हाथमे रहबाक चाही।

मेजक नीचाँ पुस्तकक पेटी खोलिते पहिल पानापर ईशानक पुरान टिप्पणी भेटल। वर्षों पहिने दुनू मिलि न्यायशास्त्रक एक तर्क सुधारने छलाह। ईशान लाल स्याहीमे अनुमानक दोष काटने छलाह, मैथिली कारी स्याहीमे प्रश्न लिखने छलीह—जँ प्रमाण देखनिहारक नामे लुप्त भऽ जाए तँ निष्कर्षक वैधता केकरा लाभ देत? ओहि समय ईशान हँसिकऽ कहलनि छलाह, “प्रश्न नीक अछि।” मुदा अगिला संस्करणमे प्रश्न रहि गेल, नाम नहि। आब संशोधित पुस्तकमे नाम घुरि आएल छल। खाली कोठरीक भीतर मैथिलीकेँ बुझायल जे मुद्रित नाम लौटब आ बितल दिन लौटब एक नहि।

दरबज्जापर रुखसाना पहुँचल। हाथमे नव पाठकक्षक कार्यक्रम छल। “काल्हिक सार्वजनिक पाठ लेल अहाँक नाम पहिले छापि देल गेल अछि,” ओ कहलीह, “संगमे ईशानक नाम अछि; समिति मानि लेने अछि जे दुनू एके मंचसँ बोलब।” मैथिली कार्यक्रम पढ़लीह। निचला पाँतिमे छपल छल—‘विख्यात दम्पतीक पुनर्मिलनपर विशेष व्याख्यान’। मैथिली ओकरा अँगुरीसँ रोकि देलीह। “पुस्तकक सहलेखनपर चर्चा करब,” ओ कहलीह, “विवाहक पुनर्मिलनक विज्ञापन नहि। ई पाँति हटत, तखने हम पाठकक्षमे जाएब।”

रुखसाना लजायलीह। “समितिक एक सदस्य समारोह रोचक बनएबाक लेल जोड़ने छथि। हम स्वयं जाँच नहि सकलहुँ।” मैथिली हुनकर गलतीकेँ व्यक्तिगत शत्रुता नहि बनौलीह। “एहि शहरमे स्त्रीक विद्वत्ताक खबर बहुत छोट आ ओकर वैवाहिक अवस्थाक खबर बहुत पैघ बनि जाइत अछि,” ओ कहलीह। “कार्यक्रम फेर छापू। हमर प्रश्नक सूची

पहिने पुस्तकालयमे राखू जाहिसँ विद्यार्थी तैयारी कऽ सकथि।” रुखसानाक फोनपर ओहि ठाम सुधारक सन्देश गेल। पहिल छपल पन्ना फाड़बाक बदला सुधारक प्रति ओकर संग जोड़ल गेल, ताकि भ्रम केना पैदा भेल से सेहो दस्तावेजमे रहय।

दोपहरि ईशान अपन घरक बरामदामे छोट टेबुलपर बैसलाह। पुस्तकालयक कोठरी खाली कऽ देबाक बाद हुनकर पढ़ाइ रुकल नहि छल। मैथिलीक पत्र आयल तँ ओ धीरे पढ़लनि। ओहिमे सार्वजनिक पाठक शर्त, दू अलग वक्ताक समय आ मंचसँ निजी प्रश्न नहि पूछबाक आग्रह छल। ईशान उत्तर लिखलनि—“हम सहमत छी।” कागद राखि ओ पुरान घरक भीतर गेलाह। अलमारीमे मैथिलीक कपड़ा रहल, जे हुनका बिना सहमति छुअबाक चाही नहि। विवाहक समय मिलल लकड़ीक सन्दूकपर कपड़ाक धूलि बैसि गेल छल। हुनका पहिल बेर बुझायल जे कोनो वस्तु नहियो हटाएब कखनहुँ दोसरकँ अपन बात चुनबासँ रोकि सकैत अछि।

साँझ मैथिली हुनकर घर पहुँचलिह तँ आँगनमे पुरान नीमक पात झरि रहल छल। ईशान दरबज्जा खोललनि, मुदा भीतर आबय लेल आग्रहक संग कोनो स्मृति नहि परोसिलनि। मैथिली कहलीह, “अपन कपड़ा, पत्र आ माय देल लोटा लऽ जाएब। जे पुस्तक हम दुनू खरीदने छलहुँ, तकर सूची अलग बनाब।” ईशान पुछलनि, “बाकीक घरक किछु वस्तु?” “आइ नहि,” मैथिली कहलनि, “आइ हमरा जे अपन अछि, से अपने हाथेँ समेटबाक अछि। बाकी पर पछाति बात होएत।”

पुरान कमराक खिड़की जाम छल। मैथिली हाथसँ खींचलीह तँ काठ किरक आवाज कएलक। एहि आवाजक संग एक वर्षाक साँझ स्मरण भेल, जखन बिजली गेलापर ईशान दीपक लग नेने एकटा कठिन पाठ पढ़ि सुनौने छलाह। ओहि साँझ दुनू हँसैत-हँसैत अधराति धरि प्रतिवाद कएने छलाह। स्मृति मे मधुरता छल; ओकरा स्वीकार करब कठिन नहि। कठिन ई छल जे ओहि मधुरताकँ वर्तमानक अनुबन्ध नहि मानल जाय। ओ चुपचाप कपड़ा तह करैत रहलिह।

ईशान सन्दूक उठएबाक प्रस्ताव रखलनि। “भारी अछि; हम हाथ लगा दी?” मैथिली थोड़े देर रुकलीह। “सन्दूक उठएबामे सहायता चाही,” ओ कहलीह, “मुदा भीतरक चिट्ठी अहाँ नहि पढ़ब।” ईशान एतबे कहलनि, “ठीक अछि।” दुनू सन्दूकक अलग-अलग पकड़

पकड़लनि। चौखटक पास सन्दूक अटकल, तें मैथिली पहिने वस्तुकेँ कात मोड़लीह, ईशान पाछाँ हटि गेलाह। छोट काज छल, मुदा एके दिशामे बल लगएबाक बदला एक-दोसरक संकेत बुझबाक ई नव अभ्यास छल।

बरामदामे सरिता भेटए अएलीह। हुनकर हाथमे नकल-श्रमक बकाया सम्बन्धी प्रमाणित सूची छल। “ईशानक पुरान रसीदमे पृष्ठसंख्या मिलल,” ओ कहलीह, “मुदा भुगतानक बैंक-प्रमाण नहि। हमर अलग माँग कायम अछि।” मैथिली कहलीह, “हमर सहलेखनक नाम आब पुस्तकपर अछि। ओहि कारण अहाँक श्रमक देय मेटल नहि मानब।” ईशान स्पष्ट कहलनि जे निर्दिष्ट प्रमाणित पन्नासभक वास्तविक भुगतानक हिसाब स्वतंत्र परीक्षण धरि खुलल रहत। सरिता हुनकर वचनक बदला लिखित प्राप्ति चाहलीह। कागदपर हस्ताक्षर भेला बाद ओ उठलीह।

सन्दूक बाहर लऽ जाइत सरिता मैथिलीसँ धीरे पुछलीह, “अहाँ अपन कक्षमे रहब तय कएने छी?” मैथिली हँ कहलीह। “हम ईशानसँ बात बन्द नहि करैत छी। मुदा बातचीतक अर्थ फेर ओही घरक समय-सारिणी नहि। हमर काज आ निद्राक घड़ी एखन हम स्वयं बनबैत छी।” सरिता उत्तर देलीह, “हम अपन श्रमक हिसाब माँगैत छी; अहाँ अपन समयक। दूनू एक नहि, मुदा दुनूकेँ दान कहिकऽ टारल जाए तँ असल क्षति छिपि जाइत अछि।” मैथिली हुनकर आँखि देखलीह आ सहमतिमे माथ हिलौलीह।

अगिला भोर मैथिली अलग अध्ययन-कक्षमे सन्दूक खोललीह। लोटा साफ कएलनि, माय लिखल पुरान पत्र अपन टेबुलक नीचाँ रखलीह, आ दरबज्जाक कात चाभी टाँगबाक कील गाड़लीह। घरक मालकिन श्यामली किरायाक अगिला महिनाक बात करए अएलीह। “दू जनेक नामपर अनुबन्ध बनेबाक सुविधा अछि,” ओ कहलीह। मैथिली उत्तर देलीह, “अखन एहि कोठरीक किरायेदार हम छी। अतिथि आवत तँ हमर अनुमति रहत; हुनकर नाम स्वतः अनुबन्धमे नहि जुड़त।” श्यामली संशोधित पावती बनौलीह। कोठरीक भार मैथिलीक कमाइपर रहत, तकर चिन्ता सेहो हुनकेँ करबाक छल।

पाठकक्षक दिन मुन्ना पहिने सँ बैसल छल। रुखसाना दरबज्जापर नव कार्यक्रम टाँगने छलीह। एहि बेर शीर्षक छल—‘प्रमाण, श्रेय आ पाठकक प्रश्न’। मैथिली प्रवेश कएलीह तँ किछु लोक हाथ जोड़लनि, किछु कानाफूसी कएलक। एक वृद्ध शिक्षक कहलनि,

“परिवारक बात सार्वजनिक बनि गेल, तें लोक प्रश्न पूछत।” मैथिली उत्तर देलीह,
“पुस्तक सार्वजनिक अछि, ताहि लेल तर्कपर प्रश्न पूछू। निजी सम्बन्धक निर्णय हमरा
सभक अधिकारक भीतर अछि।” हुनकर स्वर स्थिर छल, भीड़पर विजयक इच्छासँ नहि।

ईशान छोट टेबुलक दोसर कात बैसलाह। पहिल वक्तव्य मैथिलीकेँ देबाक निर्धारित
समय छल। ओ पुरान संस्करणक एक पाँति पढ़लीह, जाहिमे ज्ञाताक विश्वसनीयता
प्रमाणक परखसँ जोड़ल छल। “एहि वाक्यक मूल आपत्ति हमरा पन्नामे लिखल छल,”
ओ कहलीह, “तकर प्रति, तिथि आ संशोधनक क्रम छपल सुधार-पत्रमे अछि। हम एहि
प्रकरणक सहलेखिका छी। मुदा पाठक हमरा कथनकेँ केवल एहि पदवीक कारण सत्य
नहि मानथि; ओ उदाहरण जाँचथि।” ओ कागद मेजपर रखि प्रश्न लेल ठहरलीह।

मुन्ना पुछलक, “जँ कोनो व्यक्ति पहिले गलती कएने छल, तँ ओकर अगिला सही
उत्तर स्वीकार होएत?” मैथिली कहलीह, “होएत, जँ उत्तरक आधार ठीक अछि। मुदा सही
उत्तर पुरान गलतीक क्षति अपन आप नहि चुकबैत।” ईशान जोड़लनि, “गलतीक श्रेय
हमरा अछि; सुधारमे मैथिलीक योगदानकेँ फेर हम अपन नामक छायामे नहि राखब।”
एक बालिका, जे नव पाठकक्षमे पहिल प्रश्न पुछने छलीह, कहलीह, “तँ किताबक अगिला
पन्ना गलत निकलत तँ फेर सुधारब?” मैथिली मुस्कुरेलीह। “हँ, बशर्ते अहाँ पन्ना देखिकऽ
कहब।”

मध्यावकाशमे सभाक आयोजक राजन दूटा फूलक माला लऽ अएल। “साहित्यिक
दम्पतीक मेल-मिलापपर फोटो चाही,” ओ कहलनि। रुखसाना तुरन्त कार्यक्रम देखौलनि।
राजन कहलक, “लोकक मन जोड़बाक लेल छोट नाटक आवश्यक होइत अछि।” मैथिली
माला लेबाक बदला मंचक बगलसँ उतरि गेलीह। “लोकक मन जोड़बाक लेल हमर
जीवनक निर्णय अभिनय नहि बनत,” ओ कहलीह। ईशान राजनक हाथसँ माला नहि
लेलनि। फोटोकार कैमरा नीचाँ कऽ देलक, मुदा राजनक मुखपर खिसियाहट छल।

मध्यावकाशक एहि अनपेक्षित विवादसँ किछु दर्शक उठि गेल। आयोजनक चन्दासँ
फूलक खर्च भऽ चुकल छल; राजन कहलक, “एतेक तैयारी व्यर्थ गेल।” रुखसाना उत्तर
देलीह, “खर्चक हिसाब सभाक सार्वजनिक बहीमे रहत, मुदा ओ खर्चक बदला कोनो
स्त्रीकेँ अनचाहल अभिनय नहि करबाओल जाएत।” फूल पुस्तकालयक खिड़कीपर

राखल गेल; फोटो केवल सार्वजनिक पाठक लेल सहमत वक्तासभक भाषणक लेल लेल गेल। ईशानक मुहँपर पीड़ा छल, मुदा ओ पीड़ाकेँ मैथिलीक उत्तरक विरुद्ध आरोप नहि बनौलनि।

दुसर सत्रमे एक महिला शिक्षक पुछलीह, “सहलेखनक श्रेय तऽ भेटि गेल; आब अलग रहबाक कोन औचित्य?” मैथिली प्रश्नसँ भागलीह नहि। “श्रेयनाम एकटा विशिष्ट लिखल पाठक न्याय अछि,” ओ कहलीह, “विवाहक घरमे भोजन, समय, चुप्पी, असहमति आ अपन कामक जगहक लम्बा इतिहास अछि। जँ पहिल न्याय भेल तकर अर्थ दोसरक हिसाब बिना चर्चा बन्द नहि। हम अलग रहैत छिए, ई दण्ड नहि; हमरा सोचबाक आ जीबाक ठाम चाही।” प्रश्नकर्ता किछु नहि कहलीह, मुदा हुनकर नोटबुकमे एक पाँति लिखलीह।

ईशानक वक्तव्यक समय आएल तँ ओ अपन अध्ययनक कठिनाई वर्णन कएलनि। “कमरा छोड़लासँ हम पढ़ाई छोड़लहुँ नहि,” ओ कहलनि, “मुदा कोठरी खोजयबाक दुखक बदला मैथिलीकेँ फेर घर आनबाक अधिकार हमरा नहि भेटल।” ओ एहि सँ आगाँ निजी इतिहास नहि खोललनि। दार्शनिक उदाहरणपर घुरैत ओ बताएलनि जे एक वाक्यक तात्पर्य ओकर प्रसंग देखलासँ स्पष्ट होइत अछि, एक शब्द खींचि लेने सँ नहि। मैथिली ध्यानसँ सुनलीह। हुनका एक आपत्तिक उत्तर अपूर्ण बुझायल, ओ सार्वजनिक रूपसँ प्रतिप्रश्न कएलीह। ईशान संशोधन स्वीकार कएलनि। दुर्निवार निजी दूरीक बीच तर्कमे असहमति जीवित रहल।

सभा समाप्त भेलाक बाद पुरान छात्रा लीला मैथिलीकेँ कागद देलीह। ओ कहलीह, “हम अपन शोधमे अहाँक सवाल उद्धृत करय चाहैत छी, मुदा पुस्तकक पहिल संस्करणमे एकल नाम अछि। केहन उल्लेख करब?” मैथिली सुधार-पत्रक पृष्ठ आ मूल प्रकाशित संस्करणक साल दुनू देलीह। “गलत संस्करणक तथ्य लुकाउ नहि,” ओ कहलीह, “सुधार भेल अछि से सेहो लिखू। हमर योगदान जतेक प्रमाणित अछि ततेकेँ उद्धृत करू; जे प्रकरण हमर नहि, ओकर श्रेय नहि चाही।” लीला ई स्पष्टता पाबि निश्चिन्त भेलीह।

बाहर सांझ उतरि रहल छल। ईशान पुछलनि, “अहाँकेँ घर धरि छोड़ि आबी?” मैथिली कहलनि, “हम पैदले जाएब। बाट सुरक्षित अछि। जँ राति होइत तँ वाहनक व्यवस्था

पूछितहूँ।” ईशान कहला, “अहाँक लोटा ठीकसँ पहुँचि गेल?” मैथिली हँ कहलीह। “ओ माय देल छल। आ अलमारीमे हमरा जे पुरान नोट बचल अछि तकर सूची लिखि पठाउ।” ईशान सिर हिलौलनि। ई छोट वाक्यसभमे एक समयक साझा जीवनक राख छल, मुदा कोनो वाक्य दोसरकेँ वापस खींचबाक हुकुम नहि छल।

गलीमे मैथिलीकेँ लीलाक छोट बहिन भेटलीह। बालिका पुछलक, “अहाँ अपना घरमे अकेले किताब पढ़ैत छी तँ डर नहि लगैत?” मैथिली कहलीह, “कखनो लगैत अछि। तखन पढ़ोसिक दरबज्जा अछि, पुस्तकालय अछि, मित्र अछि। अलग रहब एकला पढ़बाक संकल्प नहि।” बालिका अपन स्कूलक चित्र देखौलक—एकहि आँगनमे तीन घरक अलग दरबज्जा, बीचमे साझा बगैचा। मैथिली पूछलीह, “बीचक बाट केकर?” बालिका उत्तर देलक, “सभक; मुदा घरक भीतर जाएब तँ पहिने पूछब।” मैथिली चित्रक कात हरी रेखा प्रशंसामे छलीह।

अपन अध्ययन-कक्ष पहुँचि मैथिली भाड़ाक पावती खोलीह। महिनाक पैसा हुनकर अनुवाद-श्रम आ अध्यापनसँ अएत; अगिला पखवाराक आय अनिश्चित छल। ओ तीन दिनक सार्वजनिक पाठ लेल फीस नहि लेने छलीह, कारण पुस्तकालयक खुला पाठ सबहक लेल छल; मुदा नव प्रूफ-जाँचक निजी काम लेल पारिश्रमिक लिखि लेलीह। पहिनुक जीवनमे हुनकर कमाइक हिसाब प्रायः संयुक्त खर्चक नामपर बिना पूछने जुड़ि जाइत छल। एखन ओ किराया, कागद, यात्रा आ मायकेक सहायता चारि पाँतिमे लिखलीह। स्वतन्त्रता केवल विचार नहि, रोजक हिसाब सेहो भेल।

ओहि राति ईशानक फोन अएल नहि। मैथिली फोनक प्रतीक्षा करबाक आदत पहचानि एक क्षण हँसलीह। ओ जानैत छलीह जे संबंधक पुरान दुःख एतेक जल्दी नहि घटत। मुदा फोन नहि अएबकेँ अपमानक प्रमाण बनबायब सेहो उचित नहि। ओ स्वयं एक छोट सन्देश पठौलीह—“आजुक पाठमे दोसर तर्कक प्रतिवादक स्रोत फेर देखू: पुस्तकक पृष्ठ १४९ मे त्रुटि लगैत अछि। निजी पन्ना पर अलग समयमे बात करब।” उत्तर थोड़े काल बाद अएल—“स्रोत जाँचब; धन्यवाद।” एतबे।

दुसर दिन रुहानी सार्वजनिक अभिलेख-पंजीक उदाहरण लेल मैथिलीसँ भेटए अएलीह। मुदा एहि बेर विषय पुस्तकक श्रेय नहि, बैठकमे फोटो आ सहमतिक गलत

व्याख्या छल। “जँ मंचपर संग बैसल दू व्यक्ति छथि, तँ सहमत फोटो छपि जाएत?” ओ पुछलीह। मैथिली कहलीह, “संग बैसब काजक सहमति अछि; फोटो, निजी परिचय आ पारिवारिक प्रचारक अलग अनुमति चाही।” रुहानी सार्वजनिक जाँचक सूचीमे एहि अन्तरक प्रस्ताव जोड़लीह। अनुपालन एखन स्वीकृत होएबाक बाकी छल; मैथिली ओकरा कानूनक अन्तिम निर्णय नहि कहलीह।

रुखसानाक अगिला चिट्ठी पहुँचल। पुस्तकालयक समिति दोसर दिनक समाचारपत्रमे छपल ‘दम्पतीक पुनर्मिलन’ शीर्षकक खण्डन माँगबाक निर्णय लेने छल। मुदा समाचारपत्र सुधार छापएबाक पहिले साक्षात्कार चाहैत छल। मैथिली लिखित उत्तर देलीह—साहित्यिक सहलेखनक संशोधित श्रेय सत्यापित; निजी वैवाहिक निवासपर कोनो संयुक्त घोषणा नहि; सार्वजनिक पाठ समाप्त। ईशान अपन अलग सहमति देलनि। समाचारपत्र छोट सुधार छापलक, पहिल खबरक पहुँच कतेक छल तकर हिसाब नहि भेटल। सत्यक वापसी प्रत्येक पाठकधरि पहुँचि गेल—एहन दावा ककरो नहि छल।

ओहि साँझ श्यामली घरक अहातिमे नल ठीक करए प्लम्बर बजौने छलीह। मिस्त्री कहलनि जे दू कोठरीक जल-रेखा एके पाइपमे अछि, तँ मरम्मतक समय दुनू किरायेदारकें अस्थायी असुविधा सहबाक पड़त। मैथिली पड़ोसिक बूढ़ि शिक्षिका शशिकलासँ पानि भरबाक समय पूछलीह। दुनू अलग घरमे रहितो साझा व्यवस्था तय कएलीह। शशिकला कहलीह, “अलग चाभी अछि, मुदा एके नलसँ पानि अएत।” मैथिली मुस्कुरेलीह। सम्बन्धक अर्थ सदा एक छत नहि, आ दूरीक अर्थ सदा निर्दयता नहि—ई बात पाइपक मरम्मतमे किताबसँ बेसी ठोस छल।

रातिक अन्तिम पहर मैथिली अपन नव पाण्डुलिपिक शीर्षक लिखलीह—‘साक्षी आ स्वतन्त्र स्वर’। एक पृष्ठमे ईशानक तर्कक आपत्ति उद्धृत कएलनि, संदर्भ स्पष्ट देलीह, आ अपन उत्तर अलग लिखलीह। ओ दोसर व्यक्तिक कामक उचित श्रेय देबैत अपन आवाज नहि गमौलीह। पीतलका लोटामे नब पानि भरि ओ खिड़कीक कात रखलीह। दूर पाठकक्षक दीपक बुझि चुकल छल, मुदा घरक भीतर प्रकाश बाँचल छल।

भोरमे चम्पा दुआरपर अएलीह। ओ अस्थायी आश्रयक कामसँ घुरैत अपन माइक दवाइ-पर्चा हाथमे लेने छलीह। “अहाँक लग बजारक ओहि दवाइक दोकानक नम्बर

अछि?” ओ पुछलीह। “मायकेँ औषधि चाही, मुदा हमरा आजु अपन कमाइक काजो छोड़बाक नहि अछि।” मैथिली हुनका बैसएबैत पानि देलीह। पर्चापर लिखल दवाइक नामक अनुमान नहि लगौलीह; चिकित्सकक लिखल मूल पर्चा लऽ प्रमाणित दोकानसँ पूछबाक सलाह देलीह। चम्पा कहलीह, “माइक देखभाल करैत हम अपन जीवन कतेक दिन रोकब?” मैथिली उत्तर देबाक बदला पहिने हुनकर पूरा बात सुनए लगलीह। एतएसँ दोसर स्त्रीक अलग कथा आरम्भ भऽ रहल छल—मैथिलीक दूरी ओहि कथाकेँ अपन अन्त नहि बनौलक।

अध्याय १७४ • माइक औषधि

सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक रौद एखन आश्रयक ओसारधरि नहि पहुँचल छल। चम्पा माइक औषधिक पर्चा पलटि-पलटि देखैत छलीह। पुरान स्याहीक एक अक्षर पानिक छिटसँ फइल गेल छल; दोकानदार पिछिला दिन फोनपर नामक अनुमान लगायबासँ मना कएने छल। चम्पा पर्चाकेँ प्लास्टिक आवरणमे रखलीह। मायक सिरहाने पानिक गिलास छल, मुदा खाट लग रखल छोट डब्बामे दवाइक मात्र दू खुराक बचल छल। बाहर रसोइमे रुखसाना लकड़ी सुलगा रहल छलीह।

मैथिली हुनका टेबुलक कात बैसएलीह। “हम अहाँक माय लेल दवाइक नाम नहि बढि देब, जँ अक्षर अस्पष्ट अछि,” ओ कहलीह, “चिकित्सकक पंजीमे मूल उपचार भेटत। अहाँक आजुक कामक समय कतेक अछि?” चम्पा अपन सिलाइक छोट बही खोललीह। विद्यालयक बच्चासभक छओटा थैला मरम्मति कऽ देबाक छल, आ अस्थायी आश्रयक कोठरीमे हुनकर काज करबाक समय फेर बदलि गेल छल। “दवाइमे देरी हो तँ माय दुख पएतीह,” ओ कहलीह, “काम छोड़ब तँ अगिला सप्ताहक किराया अनिश्चित।” मैथिली उत्तरक बदला दुनू समय अलग कागदपर लिखए लगलीह।

माय खाटसँ उठि बैसलीह। घुटनाक पीड़ा राति बढि गेल छल। ओ चम्पाक लिखल सूची देखिकऽ पुछलनि, “एहि मेजपर हमर दवाईक संग तोहर दाम लिखल अछि? हम तोहर कमाइ खाइत छी की?” चम्पा तुरन्त सिर हिलौलीह। “अहाँ हमर माय छी। मुदा कमाइक हिसाब राखब अपमान नहि। जँ आजु हम कमाइक तीन घण्टा नहि करब तँ दोसर दिन औषधि कीसँ खरीदब?” माय चुप भेलीह। बहुत दिनसँ बीमारीक व्ययक विषयमे बोलिते हुनका अपन देह बोझ सन बुझाइत छल। चम्पा हुनकर काँधपर ओढ़नी नीक कएलीह, मुदा प्रश्नकेँ चुप्पीक भीतर नहि गमौलीह।

रुखसाना नाश्ताक थारी नेने अएलीह। आश्रयक भोजनक हिसाबमे माइक निर्धारित हिस्सा छल, निजी औषधिक खर्च अलग। चम्पा पुछलीह, “आइ दवाइ आनबाक लेल जँ हम रसोइक पाली छोड़ब तँ हमर ठाम के रहत?” रुखसाना कहलीह, “जुबैदा दोपहरिक पाली लऽ सकतीह, मुदा हुनकर समयक मजदूरी लिखब। अहाँ साँझक सिलाइ कएल

कामक दाम घटाकऽ दान नहि करब।” ओहि क्षण एकटा साधारण व्यवस्थाक अर्थ खुलल—मायकेँ औषधि देबाक लेल चम्पाकेँ दोसर स्त्रीक अवैतनिक परिश्रम नहि माँगबाक पड़त।

चम्पा चिकित्सालयक पुरान प्राप्ति-पत्र निकालीह। रुहानी अस्पतालक सहायता-कक्षसँ फोनपर समय मिलौलीह, मुदा दवाइक नाम वा माइक बीमारीक विवरण अपन फोनमे कॉपी नहि कएलीह। सहायता-कर्मी कहलनि जे पूर्व चिकित्सकक हस्ताक्षरवला मूल पंजीक जाँच बिना बदलल मात्रा परामर्श नहि देल जा सकत। चम्पा सहमत भेलीह। ओ माइक संग अस्पताल जेबाक गाड़ी तय करैत चालकक भाड़ा पहिले पूछलीह। चालक रामदीन बूझौलक जे प्रतीक्षाक समय अलग लागल तँ अलग रसीद देत। आर्थिक भय गेल नहि।

अस्पतालक फाटकपर भीड़ छल। माय बैसबाक ठाम खोजैत घुटना पकड़लीह। चम्पा कतारक लम्बाइ देखिकऽ असहाय भेलीह, फेर व्यवस्था-कक्षमे जाकऽ चलबामे कठिनाईक बात कहलीह। कर्मचारी पहिने नाम-पता जोर सँ पूछए लागल। चम्पा कहलीह, “नाम आवश्यक पंजीमे देब, मुदा सभक आगाँ बीमारीक विवरण नहि। माय स्वयं बतएतीह।” माय भीतर पहुँचि चिकित्सकसँ अपन पीड़ा, दवाइ खयबाक समय आ पिछिला सप्ताहक थकान अपने कहलीह। चम्पा हुनका बीचमे रोकलीह नहि। चिकित्सक जाँच कऽ अद्यतन पर्चा बनौलनि, पुरान अस्पष्ट अक्षरक अनुमानपर दवाई नहि बदललनि।

पर्चाक संग जाँचक अगिला तिथि मिलल। चिकित्सक बुझौलनि जे कोन औषधि कखन देबाक अछि, आ कोन लक्षणपर फेर परामर्श लेब उचित होएत। चम्पा समय कागदपर लिखलीह; माय स्वयं सुनि पुछलनि, “जँ हमरा राति कम पीड़ा रहत तँ पुरान गोली आपे बन्द कऽ देब?” चिकित्सक स्पष्ट कएलनि जे दवाइक योजना बदलबाक पहिले हुनकासँ परामर्श आवश्यक अछि। चम्पा कागदकेँ उपचारक निर्देश मानलीह, अपन ज्ञानक विजय नहि। बिलमे परामर्श, दवाई आ यात्रा तीन रकम अलग पड़ल छल। दवाइ खरीदल गेल, मुदा महीनाक शेष हिसाब एखन कठिन छल।

औषधालयक सामने चम्पाकेँ एगो परिचित युवक भेटल—अमरेश। ओ आश्रयक पुरान जलनिकास-मरम्मतिक समयसँ चम्पाकेँ चिन्हैत छल, आ किछु महिनासँ दुनूक निजी

बातचीत चलैत छल। चम्पाक निजी सन्देश पहिने अनधिकृत रूपसँ पढ़ि सुनाओल गेलाक बाद अमरेश सार्वजनिक रूपेँ हुनकर नाम लऽ अपन निकटता सिद्ध करबाक प्रयत्न नहि कएने छल। आइ ओ साइकिल रोकि पूछलक, “मायक जाँच भऽ गेल? अहाँ कहब तँ दवाइक थैली गाड़ीतक पहुँचा दी।” चम्पा माय दिस देखलीह। “थैली हम स्वयं लऽ जाएब,” ओ कहलीह, “मुदा साँझ आधा घण्टा संग टहलबाक समय चाही।” युवकक मुखपर धीमा हँसी फइल गेल।

माय अमरेशकेँ पहिनेसँ देखैत छलीह, मुदा आजु पहिल बेर प्रश्न कएलनि, “अहाँ हमर बेटीकेँ कामक बाद घुमए लऽ जाएब?” अमरेश उत्तर देलक, “जँ ओ चाहतीह। अहाँक दवाईक समय ओकर निर्णयकेँ रोकबाक बहाना नहि बनत।” माय एक क्षण ओकरा देखैत रहलीह। “हम बेटीक समाचार चाहैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा हमर चिन्ता ओकरे जिनगीक डोरी नहि।” चम्पा एहि वाक्यपर मायक हाथ पकड़लीह। माइक भय एखन छल; ई वाक्य ताहि भयक पहिल दरार छल।

आश्रय घरलाक बाद चम्पा सिलाइक थैला खोलीह। विद्यालयक ठेकेदार आठ घण्टाक काज तुरन्त माँगने छल। पर्चामे लिखा छल जे भुगतान सप्ताहक अन्तमे होएत, दागवला कपड़ाक कटौती ठेकेदार अपन अनुसार करत। चम्पा प्रत्येक थैलाक सिलाइ-माप आ मरम्मतक दाम लिखि संशोधित प्रस्ताव पठौलीह। “अहाँ माइक सेवा करैत छी, ताहि लेल घरमे बैसिकऽ कम दामपर काज मिलत,” ठेकेदार फोनपर कहलक। चम्पा उत्तर देलीह, “घरमे करबासँ सुई, धागा आ समय सस्तो नहि भऽ जाइत।” तीन थैलाक अग्रिम भुगतानपर सहमति भेल; बाकी काजक समय खुलल रहल।

दोपहरि जखन चम्पा सिलाइ मशीनमे धागा भैर रहल छलीह, माय दवाइ लेबाक घड़ी देखलीह। चम्पा उठबाक लेल पएर हटा रहल छलीह, मुदा माय कहलीह, “पानि हम भरि लैत छी; पर्चा तू देखौ।” ओ खाटक कात राखल सुराहीसँ छोट गिलासमे पानि भरलीह। चम्पा दवाइक नाम, मात्रा आ समयक मिलान कएलीह, फेर माय अपन हाथसँ दवाई लेलीह। ई दृश्य सभाक भाषण नहि छल। तथापि देहक देखभालमे माय फेर एक छोट निर्णय अपने कएने छलीह, आ चम्पाक कामक पाँति बिना टूटने आगाँ बढ़ल।

साँझ रुहानी आश्रयक मजदूरी-बही लऽ अएलीह। पुरान पालीक दू घण्टा चम्पाक नामसँ अकारण काटल गेल छल, कारण ओ माइक उपचारक कागद बनबए बाहर गेल छलीह। चम्पा कहलनि, “ओ समय हमर निजी उपचार-कार्य छल; ओकर मजदूरी नहि चाही। मुदा जे चार घण्टा सिलाइ आ सामानक सूची बनौने छलहुँ, से काटब किएक?” रुहानी कार्य-पंजी आ उपस्थित श्रमिकक गवाही मिलौलीह। चारि घण्टाक देय फेर दर्ज भेल। आश्रयक अनुदानदाताक मसौदामे ‘स्वेच्छासेवी सेविका’ लिखल छल; चम्पा ओ शब्द हटएबाक माँग कएलीह, कारण निर्धारित काम लेल दाम तय छल।

रुखसाना कहलनि, “सभ काजक मजदूरी दर्ज होएत तँ अनुदानक रकम जल्दी समाप्त होएत।” चम्पा एहि चिन्ताकेँ मिथ्या नहि कहलनि। “तखन हम सभ काम घटायब, बजटक सत्य देखाएब,” ओ कहलीह, “किन्तु कमी छिपएबाक लेल मजदूरीकेँ प्रेमक नाम नहि देब।” रुहानी लिखित बजटमे वास्तविक पारिश्रमिक आ स्वेच्छासँ देल समयक अलग कोठरी बनौलीह। कोन दिन कोन श्रमिक अपन समय निःशुल्क देब चाहैत अछि, तकर सहमति प्रत्येक बेर नवसँ लेबाक तय भेल। पुरान अनुदानक जाँच एखन खुलल रहल।

अमरेश साँझक निर्धारित समयपर अएल, मुदा चम्पा एखन दू थैलाक पट्टी सी रहल छलीह। ओ गेटपर ठाढ़ रहि सन्देश पठाएलक—“काम पूरा हो तँ बताउ।” चम्पा पाँच मिनट बाद बाहर निकललीह। “हमरा देरि भेल,” ओ कहलीह। “अहाँ चाहैत होएब जे हम तुरन्त चलू, मुदा अंतिम सुई छोड़ि देलासँ कल्हि दाम कटि सकैत अछि।” अमरेश गम्भीर भऽ उत्तर देलक, “हमर प्रतीक्षाक समयक हिसाब हमर अछि। अहाँक मजदूरी हमर भेटबाक कीमत नहि।” चम्पा हँसि देलीह। ओहि सहज वाक्यमे हुनका कोनो पैघ प्रणय-प्रतिज्ञासँ बेसी भरोसा भेटल।

दुनू बजारक भीड़सँ बचैत पुरान पोखरिक कात गेल। पानीमे साँझक आकाशक पातर धारी छल; किनारक घासपर दू बच्चा कागदक नाव छोड़ि रहल छल। चम्पा एक ठाम रुकि कहलीह, “हम एखनहुँ डराइत छी जे संग चलबाक ई साधारण क्षण केओ देखिकऽ फेर कथाक बजार लगाओत।” अमरेश कहलक, “हम अहाँक फोटो नहि खींचब, न कोनो परिचितकेँ सन्देश पठाएब। मुदा डरक कारण हम सभ हर बाट छोड़ि देब, सेहो अहाँ नहि

चाहैत होएब।” चम्पा थोड़े देर पोखरि देखलीह। “आइ हम एहि बाटपर चलब चुनलहुँ,” ओ कहलीह।

पोखरिक उत्तरक कात एक ठेलापर उब्जल चना आ नींबूक सुगन्धि पसरल छल। अमरेश दू कागदक दोना माँगलक, चम्पा अपन हिस्साक दाम देलीह। “अहाँ हमरा सब दिन अलग हिसाब किएक दैत छी?” अमरेश पुछलक। चम्पा उत्तर देलीह, “जँ तोरा आजु खुआएबाक इच्छा हो तँ कह। जँ हमरा होएत तँ हम कहब। खाली एहि लेल नहि जे प्रेम अछि ताहि लेल प्रत्येक खर्च दोसरक अधिकार बनि जाए।” अमरेश अपन दोना उठौलक। दुनू चनासँ नींबूक बीया अलग करैत किछु बेर बिना कोनो गम्भीर विषयक हँसलाह।

अमरेश अपन घरक बारेमे कहलक जे ओकर पिता चाहैत छथि बेटा बाहर शहरक कारखानामे नौकरी पकड़य। एहिठाम मरम्मतिक प्रशिक्षणक काज कम भेटैत अछि। “अहाँ कहब तँ हम एतय रहि जाएब?” ओ पुछलक। चम्पा माथ हिलौलीह। “हम तोहर भविष्यक निर्णय नहि देब,” ओ कहलीह, “न अपन मायकेँ छोड़ि कतहु चलबाक वचन एखन देब। यदि दू अलग नगर भेल तँ फेर बात करब। एखन हमर कामक नव समय बनि रहल अछि।” अमरेशक मुख थोड़े उदास भेल। ओकरा बुझायल जे सहमतिक प्रेममे दोसरक भविष्य अपन जेबमे राखि नहि सकैत छी। मुदा ओ ई उत्तर स्वीकार कएलक।

घुरबाक बाटमे एक महिला, जे चम्पाक निजी सन्देश सार्वजनिक भेल समय सभामे उपस्थित छलीह, हुनका रोकि कहलीह, “आब तऽ साफ बुझाइत अछि—अहाँ ओहि युवकसँ मिलैत छी।” चम्पा एक क्षण अपन पएरक चाल रोकलीह। “हम एहि समय अपन मित्रक संग टहलि रहल छी,” ओ उत्तर देलीह, “एहि सँ अहाँकेँ हमर पुरान सन्देशक प्रति छपेबाक अनुमति नहि भेटैत।” महिला कहलीह, “लोक तऽ बात करत।” चम्पा उत्तर देलीह, “लोकक बात हम रोकि नहि सकैत छी; मुदा अपन उत्तरक सीमा हम बता सकैत छी।” ओ आगाँ बढ़ि गेलीह। अमरेश हुनकर बदला झगड़ा करए नहि घुरलक।

आश्रयक दुआर लग माय अपन पएरक कात छोट थाल रखि प्रतीक्षा करैत छलीह। चम्पा पहुँचलीह तँ माय पुछलनि, “भोजने कएलह?” चम्पा दोना देखौलीह। “चना खएलहुँ, घरक भात एखनो खाएब।” माय हँसलीह। “दवा समयपर लेलहुँ,” ओ कहलीह, “रुखसाना घड़ी देखौने छलीह; पानी हम स्वयं भरने छलहुँ।” चम्पा दवाइक डब्बा

देखलीह। मात्रा पर्चाक हिसाबसँ सही छल। माय कहलीह, “हमरा कखनो सहायता चाही तऽ कहब, मुदा प्रत्येक घड़ी तोरा आवाज नहि देब।” दुनूक बीच ई छोट सहमति कतेक दिन टिकत, से देखबाक छल; आजु लेल पर्याप्त छल।

दुसर भोर चम्पा अपन कमाइक नब दिनचर्या बनौलीह। सोम आ बुध विद्यालयक मरम्मति, मंगल आ शनि आश्रयक भाड़ापर सिलाइ-सेवा; बृहस्पति माइक जाँच वा विश्राम लेल खुलल। रविक दिन माय चाहतीह तँ बजार, नहि तँ घरक आराम। ओ प्रति दिनक घण्टा, वास्तविक दाम आ धागाक खर्चक खाता बनौलीह। रुखसाना कहलीह, “एहि व्यवस्थामे कखनहुँ हमरा आश्रयक अतिरिक्त काम लेल समय चाही तँ?” चम्पा उत्तर देलीह, “पहिने पूछब; खाली स्थान देखाएब। हमर समयक संपूर्ण मालिक न माय, न आश्रय, न प्रेमी।”

रुहानी वार्षिक सार्वजनिक जाँचक प्रारूप लऽ अएलीह। अनुदानक लेखामे ‘बुजुर्ग रोगिणीक उपचार’ कहि एक समग्र रकम लिखल छल, मुदा औषधालय, गाड़ी आ कर्मीक श्रमक अलग प्रमाण नहि। चम्पा कहलीह, “रकमक सार्वजनिक जाँच हो, व्यक्तिक चिकित्सकीय नाम नहि। हमर माइक खर्चक जे हिस्सा सरकारी सहायता सँ देल गेल, तकर सुरक्षित प्राप्ति अधिकारी देखथु, खुलल दीवाल नहि।” रुहानी एहिसँ सहमत भेलीह। मुदा छपाइ ठेकेदारक नया प्रस्तावमे प्रत्येक लाभार्थीक निजी नम्बर एक निजी कम्पनीक सर्वरपर रखबाक शर्त छल; ओकर जाँचक निर्णय बाँकी रहल।

मैथिली ओहि साँझ चम्पाक नब बही देखए अएलीह। ओ पुछलीह, “आइ अहाँक कामक हिसाब तऽ स्पष्ट अछि, मुदा अपन इच्छा लेल कोन पाँति राखल अछि?” चम्पा लजाएल नहि। “रविक साँझ अमरेशसँ टहलब, जँ दुनू चाहब,” ओ कहलीह। “ई कोनो देय नहि, मुदा घण्टा खाली राखल अछि।” मैथिली कहलीह, “अपन इच्छाकें कागदमे जगह देनाइ कठिन अछि। हम सेहो अलग घरक किराया लिखैत समय बुझलहुँ जे स्वतन्त्रता बिना हिसाबक नहि चलैत।” दुनू किछु काल माय बनौने पातर चाय पीलीह।

माय अपन हाथक पुरान कपड़ासँ चम्पा लेल सुई राखबाक थैली बनौलीह। घटनाक कारण ओ बहुत देरि बैसि नहि सकैत छलीह, तँ थैलीक आधा सिलाइ चम्पा पूरा कएलीह। माय कहलीह, “तोहर प्रेम हमरा बुझैत देरि भेल। हमर डर छल जे तू चलि जेबह तँ हम

एकसर रहि जाएब।” चम्पा उत्तर देलीह, “हम कतहु चलि जाएब वा एहि गाममे रहब, एखन से निश्चित नहि। मुदा अपन दिनक निर्णय करबासँ अहाँक देखभाल छोड़ब नहि होइत।” माय कहलीह, “आ हमहुँ तौहीपर सभ दिन निर्भर रहबाक नियम नहि बनायब।” थैलीक एक कात हुनकर सुई टेढ़ी पड़ल छल; चम्पा ओकरा सीधा करबाक जिद नहि कएलीह।

एहि सप्ताहक अन्तमे चम्पाकेँ विद्यालयसँ तीन मरम्मत-कामक अग्रिम रकम भेटल। ओ पहिने धागाक खर्च काटलीह, फेर दवाइक बिलक देय चुकौलीह। शेष रकमसँ माय लेल औषधि राखबाक छोट बन्द डब्बा लेलनि, जाहिमे पर्चा आ रसीद अलग रहि सकय। अमरेश एक दिन देरि सँ अएल, कारण ओ उपकरण-मरम्मतिक प्रशिक्षण लेल आवेदन भरि रहल छल। चम्पा ओकरा आवेदन देखबाक आग्रह नहि कएलीह; केवल पुछलीह, “आवेदनक खर्च देबामे दिक्कत तऽ नहि?” अमरेश कहलक, “हम व्यवस्था कऽ लेने छी।” ओ अपन कामक समाचार सुनौलक, चम्पा अपन कमाइक।

रविक साँझ मायक घुटना कनेक कम दुखि रहल छल। ओ घरक ओसारपर बैसि पड़ोसिक बालिकासँ बगैचाक फूलक नाम पुछैत छलीह। चम्पा बाहर जाएबाक पहिले पर्चापर निर्धारित अगिला औषधिक समय मायकेँ देखौलीह। माय कहलीह, “हम देखैत रहब। आवश्यकता भेल तँ रुखसानाकेँ बजाएब, नहि तँ अपन पानिक गिलास खुद भरब।” चम्पा माइक हथेली अपने हाथमे लऽ एक क्षण बैसलीह। दवाई घरमे छल, खर्चक खाता खुलल छल। माय हुनका ‘जा’ कहबाक अधिकार अपन हाथमे रखने छलीह।

अमरेश बाहर साइकिलक संग ठाढ़ छल। ओ दुनू पैदल पोखरिक बाट पकड़लनि। एहि बेर फोटो नहि, सन्देश नहि, केवल साँझक बतास छल। एक कात छोट दोकानमे गरम जलेबी बनि रहल छल; चम्पा कहलनि, “आइ हम खुआएब, तीन थैलाक दाम भेटल अछि।” अमरेश कहलक, “तखन अगिला बेर हमर पारी।” दुनू जलेबीक कागदक पुड़िया लऽ किनारक चबूतरापर बैसलाह। चम्पा पहिल कौर खाइते हँसि पड़लीह—चीनीक चासनी अँगुरीपर टपकि गेल छल। ओ अँगुरी रुमालसँ पोंछलीह, आ अपन दिनक एहि साधारण मिठासकेँ ककरो प्रमाण बनएबाक जरूरत नहि बुझलीह।

अध्याय १७५ • कबीरक चिट्ठी

सन २०४०क विदेहपुरमे भोरक धूप आबि रहल छल, मुदा कबीरक कोठरीक भीतर एखनहुँ रातिक गन्ध छल। ओ टेबुलक दराज खोलबाक लेल चाभी घुमौलनि तँ ताला आधा अटक गेल। हाथ रोकि देलनि; नैरा जखन जीवित छलीह तँ एहि दराजक अटकल ताला खोलबाक लेल चाभीकेँ कनेक पाछाँ घुमबैत छलीह। कबीर ओ उपाय दोहरौलनि। दराज खुलल। भीतर नीला सूत, पुरान टिकट, दूटा खाली लिफाफा आ किनारसँ मोड़ाएल सादा कागद छल। कोनो वस्तु नैराकेँ वापस आनबाक सामर्थ्य नहि रखैत छल, मुदा हुनका एखन एहि वस्तुसभकेँ हटएबाको मन नहि छल।

बाहरसँ सुभद्राक आवाज अएल, “चाह चढ़ा देल अछि, दूध कम अछि।” कबीर उत्तर देलनि, “हम आनब।” हुनका ओ वाक्य कहैत आवाज अपरिचित लागल। नैराक मृत्युपछाति घरक दूध, तेल, दवाइ, खाली बाल्टी—ई सभ वस्तु अपन समयपर माँग करैत रहैत छल। कखनहुँ ओहि माँगसँ क्रुद्ध होइए, कखनहुँ ओकरे आधारपर उठि जाइए। कबीर दराजसँ एक सादा पन्ना चुनलनि। ऊपर लिखलनि—‘नैरा लेल’। पत्र पठेबाक कोनो पता नहि छल। ओ शीर्षक नहि मेटौलनि।

पहिल वाक्य लिखलनि, ‘तोरा कहबाक बहुत बात अछि।’ तुरन्त कलम रोकि देलनि। नैरा मरि गेल छलीह; “अछि” आ “छल”क बीचक ई छोट अन्तर हुनका कागदपर बड़ भारी बुझाएल। ओ लिखलनि, ‘काल्हि बाटमे एकटा बच्ची भेटल। ओकर किताबक कोना भीजल छल। हम पूछलहुँ, सुखाएबामे सहायता चाही की? ओ अपन किताब अपने रखि लेलक।’ कबीर मुस्की देबाक प्रयास कएलनि। नैरा एहन बात सुनितथि तँ बच्चीक अधिकारपर कोनो छोट ठिठोली करितथि; किन्तु हुनकर नामपर कोनो नब संवाद गढ़ि देनाइ कबीरकेँ अनुचित लगल। ओ कथा अधलिखल छोड़ि चाय लेल उठि गेलाह।

रसोइमे सुभद्रा दू गिलास राखने छलीह। “तेसर गिलास नहि निकाललहुँ,” ओ बिना पुछने कहलीह। ई पहिल दिन नहि छल जखन तेसर गिलासक स्थान खाली छल। कबीर चाय उठबैत कहला, “तेसर गिलास हटा देलहुँ, मुदा कखनो-कखनो लगैत अछि जे ओहि ठाम हाथ फेर जाएत।” सुभद्रा कहलीह, “हमरा सेहो।” दुनू ओहि कथनक बाद एक-

दोसराकें सान्त्वना देबाक बहाना नहि बनौलनि। ओ चुल्हिक आगि घटौलीह। कबीर चाय लऽ कोठरीमे घुरलाह आ पत्रक कात छोट दाग पड़ि गेल। पहिने ओ पन्ना बदलितथि; आइ दाग सुखए देलनि।

दुपहरक पहिने रमा कर्णक कार्यालयसँ संदेश अएल। पालन-इतिहासक संशोधित प्रविष्टि तैयार छल, मुदा डिजिटल प्रारूपमे दूटा रिक्त स्थान एके ‘परिवारक मूल परिचय’ नामसँ जोड़ि देल गेल छल। एक लिपिक कहने छल जे यदि जन्म-पंजीक अपुष्ट विवरण अनुमानसँ भरि देल जाए तँ प्रमाणपत्र तुरन्त निकलि सकत। कबीर ओ पंक्ति पढ़िटे कापी बन्द कएलनि। हुनकर बचपनक देखभालक जे श्रम पहिले पंजीमे छूटि गेल छल, ओकरा जोड़बाक आवेदन ओ स्वयं देने छलाह। जन्मसम्बन्धी प्रश्नक उत्तर नहि भेटल छल; सहूलियतक नामपर उत्तर गढ़बाक निर्णय ओ नहि लेलनि।

कार्यालयमे रुहानी एकटा मुद्रित प्रारूप टेबुलपर रखलीह। “एहि मशीनमे रिक्त घर देखिते चेतावनी अबैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा चेतावनी सत्य नहि होइत।” कबीर पन्नाक एक पाँति देखौलनि। जन्मदात्रीक स्थानपर पालनकर्ताक नाम खिसकि गेल छल। “जकरा हमरा राखि, खुआ, ज्वरक राति जागि पालल, हुनकर श्रमकें हम किएक मेटाएब?” ओ पुछलनि। “मुदा ओ नाम जन्मक प्रमाण नहि। एके घरमे लिखब तँ दुनू गलत भऽ जाएत।” रुहानी अलग हस्तलिखित सुधार-पत्र तैयार कएलीह। मशीनक सुविधा एखन स्थगित राखल गेल।

कोनाक टेबुलपर बैसल नव नियुक्त कर्मचारी कहलनि, “नैराक स्मृति-कोषमे अहाँक परिवारक विवरण जोड़ि देल जाए तँ अतिरिक्त सुविधा भेटत। पालन-पंजी सेहो ओतहिँसँ जुड़ि सकैत अछि।” कबीर हुनका दिस देखलनि। “नैराक नामपर बनल सहायता-खाताक नियम की अछि?” कर्मचारी एक पृष्ठ खोजलक; ओकरा स्पष्ट उत्तर नहि भेटल। “तखन पहिने नियम देखू,” कबीर कहला। “हमर जन्मक रिक्त पाँति नैराक प्रेमक माप नहि। ओ जीवित रहितथि तँ हुनका अधिकार छल अपना बात कहबाक; आब हुनकर नामपर हम अपन खाली जगह भरबाक अनुमति नहि देब।”

कर्मचारी खिसिआए नहि, बल्कि कुछ लजायल देखाइल। ओ कहलनि जे निजी कम्पनी नव सॉफ्टवेयर निःशुल्क दऽ रहल अछि, बदला ‘अज्ञात पारिवारिक सम्बन्ध’क

जानकारी सङ्ग्रह करबाक अधिकार माँगैत अछि। रुहानी अनुबन्ध देखलीह। सार्वजनिक भेला पर कतेको परिवारक जन्म, पालन, विवाह आ मृत्यु सम्बन्धी निजी विवरण जोड़ल जा सकैत छल। “नव लाभार्थीक सूची बनेत,” कर्मचारी तर्क देलक। कबीर पुछलनि, “आ जकर नाम गलतीसँ जुड़त, ओकरा अपन बात हटेबाक अधिकार होएत?” ओ प्रश्नक लिखित उत्तर अनुबन्धमे नहि छल।

रमा कर्ण पहुँचलाह तँ कबीर अपन आवेदनक प्रति हुनका सोझाँ रखलनि। रमा कहलीह, “सॉफ्टवेयर बिना सेहो अस्थायी सत्यापित प्रति देबाक व्यवस्था अछि। एहि प्रति मे पालनकर्ताक योगदान आ जन्मसम्बन्धी अनिर्णीत प्रश्न अलग रहत; बादमे प्रमाण भेटला पर वैधानिक प्रक्रिया होएत।” कबीर पढ़ि देखलनि जे ‘पालन-इतिहास दर्ज’ लिखल अछि, ‘जन्म-निर्णय सम्पन्न’ नहि। ओ प्रति स्वीकार कएलनि, मुदा कम्पनीक जानकारी देबाक सहमति-पत्रपर हस्ताक्षर नहि कएलनि। रमा असहमत व्यक्तिक विकल्प सार्वजनिक जाँचक कार्यसूचीमे जोड़लीह।

कार्यालयसँ बाहर निकलैत कबीरक झोरामे दू पन्ना छल—एकटा अधिकारसम्बन्धी संशोधित प्रमाण, दोसर नैराकें अधलिखल पत्र। कागदक वजन एकसमान नहि छल। ओ एक पान-दोकान लग रुकि चूरा खरीदलनि। दोकानदार पूछलक, “काम भऽ गेल?” कबीर कहला, “जतेक साबित भेल, ओतेक भऽ गेल। बाकी अपन ठाम अछि।” दोकानदारकें एहि उत्तरक गूढ़ता बुझबाक आवश्यकता नहि छल; ओ सही बाकी लौटा देलक। कबीर ओहि सही हिसाबपर पहिल बेर ध्यान देलनि। दिनक न्याय चारि सिक्कामे भेटैत अछि, मुदा जीवनक प्रश्न सिक्कासँ नहि चुकैत।

सरिताक घरक ओसारपर नैराक खाली कुर्सी पड़ल छल। सरिता ओकरा हटौने नहि छलीह। आइ ओ सरिसों तेलक शीशीक ढक्कन सम्हारि रहल छलीह; ढक्कनक भीतरी किनार टुटि गेल छल। कबीर पुछलनि, “नया शीशी आनि दिअ?” सरिता कहलीह, “तेल बाँचल अछि। ढक्कन बदलब।” ओ जखन कबीरक हाथमे नब प्रमाण देखलीह तँ पुछलनि, “पालनक नाम ठीक लिखल गेल?” कबीर उत्तर देलनि, “हाँ, मुदा जन्मक नाम एखन रिक्त अछि।” सरिता कहलीह, “रिक्त कें झूठसँ भरलासँ रिक्ति नहि घटैत।”

कबीर लिफाफा निकालि फेर राखि देलनि। सरिता एहि क्रियापर ध्यान देलीह, मुदा पुछलीह नहि जे भीतर की अछि। ओ अपन बेटीकेँ लिखल पत्र देखबाक अधिकार अपना मातृत्वसँ स्वतः नहि मानैत छलीह। “आइ चाय पीब?” ओ पुछलीह। कबीर कहलनि, “हम बनायब।” सरिता टोकलीह नहि। कबीर रसोइमे काँचक गिलास धोइत मनमे गनलनि जे नैरा जखन घर आबितथि तँ पाँतीक बीचमे बोलि उठितथि—पहिने चाय पीबू, फेर विवाद करू। एहि बेर ओ विचार नैराक जीवित आवाज नहि छल; मात्र कबीरक स्मृति छल। ओ एहि भेदसँ डरि नहि गेलाह।

चाय लेल लौटला पर सरिता अभिलेखक वार्षिक जाँचक सूची देखौलीह। सूचीमे ‘मृतक परिवारक अधूरा श्रेय’, ‘पालन-सुधार’, ‘गोपनीय सूचना’, ‘वास्तविक भुगतान’क अलग घर छल। एक अधिकारी प्रस्ताव देने छल जे मृतकक परिवारक निजी पत्र जमा कएला पर जाँच शीघ्र पूरी होएत। “नैराक सार्वजनिक काजक पन्ना हम उपलब्ध करौने छी,” सरिता कहलीह, “मुदा ओकर निजी जीवनक सभ लिखावट देब, एहन नियम नहि।” कबीर अपन जेबपर हाथ राखलनि। “हम हुनका लिखि रहल छी,” ओ धीमे कहला। “पठाएब नहि। जमा सेहो नहि करब।”

सरिता एक क्षण कबीरक दिस तकलीह। “तोरा लिखबाक इच्छा भेल, ई ठीक,” ओ कहलीह। “हमरा पढ़ाएब जरूरी नहि। हमरा लिखबाक इच्छा भेल तँ हमहुँ लिखब, मुदा एक-दोसराक पत्रसँ बेटीक पूरा जीवन नापि नहि सकब।” कबीरकेँ राहत आ दुःख एक संग भेटल। राहत एहि लेल जे पत्रक पहरा नहि देबाक छल; दुःख एहि लेल जे कियो पत्र पढ़ि नैराकेँ वापस नहि आनि सकैत। ओ गिलासक कात चाय गिरल देखिकऽ कपड़ा उठौलनि। सरिता कहलीह, “छोड़ू, हम पोंछि देब।” कबीर कपड़ा हुनकर हाथमे देलनि।

साँझ कबीर अपन कोठरीमे घुरला। खिड़कीक काँचपर पड़ल धूर आँठासँ पोंछि ओ बाहर देखलनि। गलीमे दू बच्चा चक्का घुमबैत दौड़ि रहल छल। एकटा बच्चा ठोकर खा उठल, दोसर ओकर चक्का रोकलक, मुदा गिरल बच्चा स्वयं उठबाक आग्रह कएलक। कबीर दराजसँ पत्र निकाललनि। ओ लिखलनि, ‘तोहर मृत्यु पछाति हम जन्मक प्रश्नक उत्तरमे बहुत दिन अपन जीवनक अर्थ खोजैत रहलहुँ। आब बुझैत छी जे हमर जन्मक सच, हमरा पालने हाथक इतिहास, आ तोरा सँ हमर सम्बन्ध तीन अलग कथा अछि।’

ओ पाँति पढ़ि ठाढ़ भेला। संबंध शब्दक लेखनमे डर छल। नैरा संग बिताओल दिनक किछु बात एखनहुँ हुनका स्मृतिमे अस्पष्ट छल—एकटा झगड़ाक सही तिथि, एक बरखा-दिनक लौटबाक घड़ी, चुप रहबाक वास्तविक कारण। ओहि अस्पष्टताकेँ सुंदर वाक्य बनाकऽ सुधारि देनाइ हुनका स्वीकार नहि भेल। ‘हम तोरा सभ बेर बूझलहुँ,’ लिखबाक बदला लिखलनि, ‘बहुत बेर नहि बूझलहुँ। आ एखन जे याद पड़ैत अछि, से हमर स्मृति अछि, तोहर उत्तर नहि।’

बाहरसँ कपड़ा बेचएवला महिलाक आवाज अएल। किछु देरक लेल ओ लिखब छोड़ि खिड़की पर गेलाह। महिला कहलीह जे नव बुनकर समूहक बनल गमछा अछि; दाममे धागा, रंग आ बुनाइ-मजदूरी अलग गणना कएल गेल। कबीर एकटा साधारण गमछा लेलनि। हिसाब पूछला पर ओ बतौलीह जे नव साझेदारीमे लाभक हिस्सा बदलल अछि, मुदा पुरान खेपक बकाया एखन बाकी। कबीर पूरा दाम चुकौलनि। महिला सार्वजनिक फोटो लेबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएलीह। ओ सामान बेचए अएलीह, कोनो अभियानक प्रमाण बनए नहि।

गमछा टाँगिते हुनका नैराक एक दिन याद पड़ल। बहुत गर्मी छल; नैरा धूलिसँ भरल बाटसँ लौटि कहने छलीह जे श्रमिकक काज देखबाक लेल पहिने हुनका बैठबाक पानि देबाक चाही, तकर बाद कैमरा खोलबाक। कबीर पत्रमे लिखलनि, ‘एहि बेर हम एक गमछा किनलहुँ। बेचएवालीक नाम पूछलहुँ, मुदा ओकर निजी फोटो नहि लेलहुँ।’ ओ तुरन्त जोड़लनि, ‘ई काज तोहर कहल बातक स्मृति सँ सीखि रहल छी, मुदा एहि सँ हमर सभ गलती माफ नहि भऽ जाइत।’ बाहर अन्हार गाढ़ भऽ गेल छल।

ओहि राति सुभद्रा दरबज्जापर अएलीह। हाथमे बालपनक ऊनी कम्बलक छोट गट्टर छल, जकर एक कोनापर पड़ोसिन टाँका सिएने छलीह। “ओ पड़ोसिनक पोतासँ खबर भेटल,” ओ कहलीह, “हुनकर पूरा नाम लिखि सकैत छऽ, मुदा पहिने हुनकर परिवारसँ सही उच्चारण पूछिह।” कबीर गट्टर खोललनि। कम्बलक फाटल सीबन पुरान छल, पर कपड़ा एखन उपयोग योग्य। सुभद्रा पुछलीह, “तोहर नव कागदमे हमर नाम अएल?” कबीर प्रमाण देखौलनि। ओ बहुत देरि अक्षर पढ़लीह, फेर कहलीह, “हम तोरा पलने रही, कागद हमरा बनौलक नहि। मुदा आब कियो पूछत तँ झूठ नहि बोलए पड़त।”

कबीर हुनकासँ जन्मसम्बन्धी कोनो नया प्रश्न नहि पुछलनि। सुभद्रा अपन बचपनमे सुनल एक गामक नाम कहए लगलीह, फेर स्वयं रुकि गेलीह। “ई हमरा अपन कानसँ सुनल नहि, ककरो मुँहसँ आयल छल। एखन ई प्रमाण नहि,” ओ कहलीह। कबीर स्वीकृतिमे माथ हिलौलनि। “हमरा पहिने अहाँक अपना कथाक शुद्ध रूप चाही,” ओ उत्तर देलनि, “जन्मक नाम लेल अहाँपर स्मृति बनएबाक दबाव नहि देब।” सुभद्रा कम्बल तह कएलीह। कोठरीक एक कोनामे खाली कुर्सी छल; ओ ओहि पर नहि बैसलीह, खिड़की लग अपन पसिन्नक चौकी चुनलीह।

अगिला दिन सामुदायिक अभिलेख-केन्द्रमे एक नव सूचना टाँगल गेल—पुरान पंजी सुधारल परिवारसभकेँ निःशुल्क डिजिटल सदस्यता, मुदा सशुल्क प्रमाणपत्रक अतिरिक्त विकल्प। कबीर अटल होइ कार्यालय पहुँचलाह। एक समूह निःशुल्क सेवाक समर्थन करैत छल; हुनका उचित लगल जे गरीब परिवारकेँ कागद लेल फेर ऋण नहि लेबाक पड़य। मुदा अनुबन्धक पाछाँक पृष्ठमे निजी सम्बन्धक जानकारी दोसर कम्पनीकेँ देबाक अनुमति छपल छल। रमा कर्ण अलग सार्वजनिक बैठक रखलीह। कबीर अपन मामला उदाहरण बनबए अनुमति देलनि, मुदा निज परिचयक रिक्त पौतिक विवरण सार्वजनिक नहि करबाक शर्त राखलनि।

बैठकमे एक युवा कर्मचारी पुछलक, “जँ सभ व्यक्ति अपन कागदपर नियन्त्रण राखत तँ संयुक्त सूची कोना बनत?” रुहानी उत्तर देलीह, “जे तथ्य सार्वजनिक रखबाक वैध कारण अछि, ओ देल जाएत। बाकीक लेल व्यक्ति-विशेषक स्पष्ट सहमति चाही।” कबीर सभामे कहला, “नाम जोड़ब आ जीवनक कथा बेचब एक वस्तु नहि। हमरा पालनक श्रमक मान्यता चाही, ओहि लेल नैराक निजी स्मृति अथवा हमर अपुष्ट जन्मक जानकारी ककरो कम्पनीक माल नहि।” सभामे किछु लोक हुनकर समर्थन कएलनि; किछुकेँ डर छल जे अतिरिक्त प्रक्रिया सँ प्रमाण देरि भऽ जाएत।

रमा ओहि डरकेँ सहज मानलीह। ओ निर्णय देलीह जे विवादरहित सार्वजनिक प्रति पुरान व्यवस्थासँ जारी रहत, नव निजी अनुबन्ध अस्थायी रूपसँ रोकल जाएत, आ प्रत्येक आवेदनक समय, खर्च आ असहमतिसभक संख्या आगामी वार्षिक जाँचमे प्रकाशित होएत। निजी नाम, चिकित्सकीय सूचना आ पारिवारिक सम्बन्धक अप्रासंगिक विवरण

नहि छपत। कबीरक पालन-इतिहासक सुधार लागू रहल; जन्मसम्बन्धी प्रश्न 'अप्रमाणित' दर्ज रहल। नव कम्पनीक प्रस्ताव अस्वीकार भेल, मुदा सॉफ्टवेयरक उपयोगी सुविधाक विकल्पपर कार्यदल फेर विचार करत। एके दिनमे सभ तकरार समाप्त नहि भेल।

आश्रयक बरामदामे चम्पा सिलाइक थैला लऽ निकलि रहल छलीह। माय लेल दवाइक छोट बन्द डब्बा हाथमे छल, आ अमरेश साइकिल ठीक करबाक अभ्यासमे व्यस्त छल। चम्पा कबीरकेँ देखिकऽ पुछलीह, “आब जाँचक बाद किछु राहत भेटल?” कबीर कहला, “हमर नामक कागद ठीक भेल, मुदा मनक खाली जगह ओ कागद नहि भरत।” चम्पा कहलीह, “हमहुँ माइक औषधि आ अपन साँझक समय अलग करब सिखैत छी। दुनू गम होएत तँ एक दोसराक दवाई नहि।” कबीर हुनकर छोट डब्बा देखलनि; ओ एहि समानताकेँ शोकक समाधान नहि मानलनि।

साँझ सरिता विद्यालयक पुरान मेज पर रसीदक गट्टर राखने छलीह। कबीर हुनका कार्यालयक नव निर्णयक संक्षिप्त विवरण देलनि। सरिता सुनलीह, “निजी कम्पनीक अनुबन्ध रोकल गेल, मुदा प्रमाणपत्रक पंक्ति चालू अछि।” ओ एकटा लाल पेन्सिलसँ वार्षिक जाँचक तिथिक कात चिह्न कएलीह। “नैराक नामपर लाभार्थीक सूची एखन के सत्यापित करत?” ओ पुछलीह। कबीर कहला, “जे काजक प्रमाण अछि तकर अधिकारी, आ जे निजी विवरण अछि तकर सम्बन्धित जीवित व्यक्तिक सहमति। हम नैराक बदला कोनो नव सहमति हस्ताक्षर नहि करब।” सरिता पेन्सिल रखि देलीह।

ओहि घड़ी बरामदाक कात धुलल कपड़ा हावासँ उड़े लगल। सरिता उठि ओकरा सम्हारए गेलीह, कबीर दोसरा कोना दबौलनि। एक पुरान नीला रुमाल देखैत सरिताक हाथ थमकि गेल। नैरा ओहि रंगक रुमाल रखने छलीह; ई रुमाल हुनक छल की नहि, स्पष्ट नहि। सरिता बिना अनुमान कएने रुमाल तह कएलीह। कबीर पुछलनि, “आइ अहाँ भोजन कते बजे करब?” सरिता उत्तर देलीह, “भूख लगत तखन। काल्हि भोर उठबाक अछि, विद्यालयक कोठरी खोलब।” ओहि साधारण वाक्यमे अगिला दिनक भार छल, मुदा एकटा दिनक जीबाक साधन सेहो।

राति कबीर पत्रक आखिरी पन्ना खोललनि। ओ नैराकेँ लिखलनि, ‘आइ हम तोहर मायक संग कपड़ा सम्हारलहुँ। हम नहि जानैत छी ई दिन तोरा कोना लगितह। मुदा तोहर

नामसँ हम कोनो बात निश्चित नहि करब। हमरा पालने हाथक इतिहास आब कागदमे जगह पेलक। हमर जन्मक प्रश्न एखन खुलल अछि। ई उत्तर भेटलासँ तोहर मृत्यु नहि बदलेत; नहि भेटलासँ हमरा तोरा प्रेम कएल दिन मेटत।’ ओ ‘प्रेम’ शब्दक कात कलम रोकलनि, फेर ओकरा मेटौलनि नहि।

पत्रक नीचाँ ओ तिथि लिखलनि, हस्ताक्षर कएलनि, मुदा कोनो डाकपता नहि लिखलनि। निजी पत्र सरकारी कार्यालयमे देबाक अथवा नैराक स्मृति-समारोहमे पढ़बाक घोषणा सेहो नहि कएलनि। नव लिफाफामे कागद राखलनि, आ ऊपर लिखलक—‘नैरा लेल, अनपठाओल’। लिफाफाकेँ सुभद्राक कम्बलक गट्टरसँ अलग, अपन छोट सन्दूकक भीतर रखि देलक। दू वस्तु अपन-अपन कथा कहैत छल; एकटा पालनक श्रम, दोसर प्रेमक अवसानक बाद बाँचल वचन।

सन्दूक बन्द कऽ बरामदामे गेलाह। सरिता एखनहुँ जागल छलीह; मेजपर काल्हिक विद्यालयक चाभी आ आधा भरल पानिक गिलास छल। कबीर पुछलनि, “भोरमे अहाँकेँ जगा दिअ?” सरिता कहलीह, “नहि, हम स्वयं उठब। जँ देरी भेल तँ कहब।” कबीर किछु काल हुनकर संग बैसलाह। नैरा ओतए नहि छलीह, आ एहि अनुपस्थितिक लेल कियो नया अभिलेख अथवा जन्मक उत्तर बना नहि सकैत छल। भीतर पत्र सुरक्षित छल; बाहर अगिला दिनक काजक छोट तैयारी। सरिता चाभी जेबमे रखलीह, कबीर बत्ती मन्द कएलनि, आ दुनू अपन-अपन कोठरी दिस चलि गेलाह।

अध्याय १७६ • सरिताक भोर

सन २०४०क विदेहपुरमे भोर होएबासँ पहिने सरिता चूल्हीक पाछाँ राखल पीतलकोसँ पानि निकालि कड़ाहीमे देलीह। हुनकर दहिना घुटना बेसी मोड़लासँ दुखैत छल, तँ ओ बामा हाथसँ चूल्हीक कात पकड़ि उठलीह। चायक लेल दू गिलास निकाललनि, तेसर गिलासक कात अँगुरी पहुँचि रुकि गेल। नैरा जखन जीवित छलीह तँ भोरमे चाय आधा पीबि विद्यालयक बाट पकड़ैत छलीह, आ बाँकी गिलास अक्सर खिड़कीपर रहि जाइत छल। आब तेसर गिलास नहि चाही। सरिता ओकरा बर्तनक भीतर सँ निकालि फेर धोड़ कऽ उलटि रखि देलीह; एतबे काजमे दूध ऊपर चढ़ि गेल।

ओ चूल्हि बन्द कएलनि। दूधक पातर जामल तह कपड़ासँ घिसैत रहलीह। आँखि सँ नोर नहि निकलल; कलाई दुखए लागल। नैराक अनुपस्थिति हुनकर घुटनाक जकड़न, हातक गति आ जाँचल-बुझल बर्तनक क्रममे लौटैत छल। ओ अपन आपसँ कहलनि, “आइ मेज पोछि विद्यालय जएबाक अछि।” एहन वाक्य हुनका कखनो आदेश लगैत छल, कखनो दोसर व्यक्तिक आवाज। आब ओ बुझैत छलीह जे अपने कहला पर सेहो दिनक काज हलुक नहि होइत, मुदा काज करबाक गति अपन हाथमे रहि सकैत अछि।

खिड़की लग कुर्सी खाली छल। सरिता कुर्सीपर नैराक पुरान नीला शाल रखि देबाक विचार कएलनि, फेर ओकरा आलमारीमे जसक तस रखब उचित बुझलीह। कुर्सी नैराक देहक स्थान नहि छल; ई घरक एक वस्तु छल, जकरा चाही तँ कियो बैसि सकैत छल। ओ दरबज्जा खोललनि। गलीमे दुग्धविक्रेता साइकिल टिका कऽ माप-पात्र धोइत छल। एक नन्ही लड़की विद्यालयक बस्ता घिसिआबैत जा रहल छलीह। दिन शुरू भऽ गेल छल, सरिताक अनुमति लेल ठाढ़ नहि। एहि बातसँ हुनका कष्ट सेहो भेल आ कनेक आराम सेहो।

सरिता अपन देहक एहि छोट प्रतिरोधसभकेँ पहिने बीमारीक नाम देबैत छलीह। डॉक्टर कहने छल जे घुटनाक व्यायाम जरूरी अछि। ओ दरबज्जाक चौखट पकड़ि पयर उठौलीह, तीन बेर मोड़लनि, चौथ बेर रुकलीह। नैरा हुनका पयर उठबैत देखि कखनो हँसैत छलीह, “माय, व्यायामक गिनती हम नहि, अहाँ करब।” ओहि आवाजक स्मृति आब सहारा आ

चोट दुनू छल। सरिता चुपचाप तीन बेर फेर अभ्यास कएलनि। हुनका किछु काज करबाक प्रेरणा नैराक स्मृतिसँ भेटैत छल, मुदा देहक थकानक सीमा अपन थीक—ई सीमा ओ बेटी जीवित रहितो मानए चाहैत छलीह।

कबीर पिछिला राति पूछने छलाह जे भोरमे जगा दी? सरिता मना कएने छलीह। ओ सचमुच स्वयं उठलीह। चाभीक गुच्छा, लाल पेन्सिल आ विद्यालयक रसीद-बही एक कपड़ाक झोरामे रखलनि। झोराक भीतरी खाँजमे नैराक लिखल एक पुरान सूची भेटल—खड़िया, पीबाक पानि, दीवारक पंखा। नीचाँ हस्ताक्षर छल, मुदा तारीख धुँधला। सरिता सूचीकेँ पढ़लीह, तकर प्रमाणक सीमा सेहो बूझलीह। खड़िया कतेक खरीदल गेल, तकर बिल दोसर ठाम होएत। बेटी अपन हाथसँ लिखने छल, से मात्र एहि कागदसँ साबित होइत अछि।

विद्यालयक फाटक लग दरबान रामसखी झाड़ू लगबैत छलीह। ओ सरिताक घुटनाक दुखाइ देखिकऽ चाभी लेबाक प्रस्ताव देलीह। “फाटक खोलि दिअ,” सरिता कहलीह, “मुदा भीतरी दरबज्जा हम खोलब। ओ कोठरीक बहीक जिम्मेदारी आइ हमर अछि।” रामसखी हँसि पड़लीह, “हम चाभी छीने नहि अएलीहुँ। झाड़ूक डण्डामे जँ अपन अधिकार नापब तँ सभक अंगना हमरे भऽ जाएत।” दुनू किछु देरि साथ हँसलीह। सरिता हँसैत समय अचानक महसूस कएलनि जे हँसि सकब बेटीकेँ बिसरि जाएब नहि अछि।

पुरान अध्ययन-कक्षक नाम बदलि आब ‘साझा पाठकक्ष’ कएल गेल छल। ईशान पहिने एहि कोठरीमे अध्ययन करैत छलाह; आब बालक-बालिकाक लेल नीच आसन आ खुलल पुस्तक-तख्ता बनल छल। खिड़कीक एक काँटी टूटल छल, तँ रातिक हवा सँ दू पन्ना फड़फड़ा रहल छल। सरिता पन्ना सम्हारलनि। एक पन्नापर मैथिलीक दार्शनिक व्याख्यानक कार्यक्रमक जानकारी छल, दोसरपर बच्चासभक चित्रक प्रतियोगिता। ओ दुनू कागद अलग जगह लगौलीह। विद्या आ आयोजनक समान दीवाल भऽ सकैत अछि, मुदा दूनूक अर्थ अलग होएबाक चाही।

आठ बजे धरि पाँच बालिका आ चारि बालक पहुँचल। सभसँ छोट बच्चा मयंक जूता उतारि भीतर आबि गेल आ दहलीजपर भीजल पदचिह्न छोड़ि देलक। सरिता ओकरा डाँटलनि नहि। “पहिने ई पानि पोंछि दिअ,” ओ कहलीह, “कियो फिसलि जायत।” मयंक

अपन झोरासँ रुमाल निकालए लगल। सरिता कपड़ा देलीह, दुनू मिलि फर्श पोंछलनि। बच्चाक हाथक गोल-गोल गति देखिकऽ हुनका नैरा याद पड़लीह, जे छोट बच्चासभकेँ सफाइक काज करबैत समय स्वयं ओहि काजमे बैसि जाइत छलीह। स्मृतिक एहि घड़ीमे सरिताक गला भरि गेल; मुदा कपड़ा निचोड़बाक छल, ओ निचोड़लनि।

पाठकक्षमे पहिल पाठ मापनक छल। बच्चासभ पुरान जलमार्गक तीन नक्शा देखलनि। रमा कर्णक दल जकर उपयोगयोग्य प्रति गामसभकेँ लौटा देने छल, तकर सार्वजनिक भागक छोट नकल विद्यालयकेँ भेटल छल। सरिता बच्चासभसँ पुछलनि जे बरसातमे चौरक पानि कतय रुकैत अछि आ जाड़मे चरवाहीक बाट कतयसँ खुलैत अछि। बच्चासभ परस्पर बहस कएलक; एक लड़का कहलनि जे सरकारी नक्शामे पोखरिक कातक पगडण्डी नहि अछि। सरिता ओकर वाक्य फलकपर लिखलनि, मुदा कहलीह, “तोहर देखल बात महत्त्वपूर्ण अछि; अगिला बेर स्थलपर सभ मिलि जाँचब, आ नक्शाकेँ पहिने सँ झूठ सेहो नहि कहब।”

मयंक पुछलक, “जे दीदी पहिने एतए पढ़बैत छलीह, हुनकर नाम नैरा छल ने?” सरिता किछु क्षण चुप रहलीह। “हँ, हुनकर नाम नैरा छल,” ओ कहलीह। बच्चा पुछलक, “ओ आब कखन आएतीह?” प्रश्नमे अज्ञान छल, निर्दयता नहि। “ओ आब नहि आएतीह,” सरिता उत्तर देलीह, “हुनकर मृत्यु भऽ गेल अछि।” मयंक अपन हाथक खड़िया घुमौलक। “तखन ई नक्शा के पूरा करत?” ओ पुछलक। सरिता कहलीह, “ताँ, हम आ जे लोक ओहि बाटकेँ जानैत अछि। हुनकर काज सँ जे उपयोगी अछि से राखब, मुदा हुनकर बदला कियो नैरा नहि बनत।”

घण्टी बजिते बच्चासभ बाहर गेल। सरिता एकसर कोठरीमे बैसलीह। दीवालपर एक कोनमे गोंदक निशान छल जतय नैरा पुरान पाठ-सूची चिपकौने छलीह। ओ हाथ बढ़ा गोंद नोचए लगलीह, फेर रोकि देलीह। वस्तुकेँ स्मारक बनएबाक आवश्यकता नहि छल, मुदा सभ निशान एक दिनमे मेटायब सेहो हुनकर काम नहि। ओ अगिला कक्षाक लेल नया कागद तख्तापर रखलनि आ खिड़की आधा बन्द कएलनि, जाहिसँ हवा अबैत रहय, पन्ना नहि उड़य।

खेलक छुट्टीमे दू लड़की पुरान पुस्तक बाँटि रहल छलीह। एकक घरक नाम विद्यालयक सहायता-सूचीमे छल, दोसरक नहि। दोसर लड़की पुछलक, “हमर किताब टूटल अछि, हमरो भेटत?” सरिता कहलीह, “जँ ई सार्वजनिक पुस्तकालयक प्रति अछि तँ दुनूकें पढ़बाक अधिकार अछि। जँ छात्रवृत्तिक पुस्तक अछि तँ नियमक जाँच करबाक पड़त। हम नियम नबुझि हँ नहि कहब।” पहिल लड़की अपन पुस्तक कनेक आगाँ सरकौलक। दुनू एकहि पन्ना पढ़ए लगलीह। सरिता देखलीह जे बच्चाक तत्काल सहयोग आ सरकारी दीर्घ प्रक्रिया हमेशा एक चालसँ नहि चलैत अछि।

दुपहरिया पद्मा दुई फाइल आ एकटा छोटी लाल मुहर लऽ अएलीह। विद्यालयक मरम्मतिक अनुदानक वार्षिक जाँच आसन्न छल। एक बहीमे नैराक नाम ‘मुख्य सम्पर्क’क रूपमे एखनहुँ लिखल छल। पद्मा कहलीह, “मृत व्यक्तिक नामक पंक्ति बन्द करब आवश्यक अछि, मुदा पहिनुक काजक श्रेय नहि मेटायब। नव जिम्मेदारक नाम सरिता रखब?” सरिता तुरन्त हँ नहि कहलीह। “कामक कोन हिस्सा हमर जिम्मा अछि? फाटक, पुस्तकक हिसाब आ उपस्थितिक जाँच हम करब। निर्माणक माप आ बिलक प्रमाण अभियन्ता देखथु,” ओ कहलीह। पद्मा फाइलमे अलग-अलग जिम्मेदारी लिखलीह।

अनुदानक सूचीमे एक नव नाम छल—‘नैरा स्मृति सहायता केन्द्र’। सरिताकेँ नाम सुनि नीक सेहो लगल, संकोच सेहो भेल। पद्मा बतौलीह जे निजी छपाइ कम्पनी निःशुल्क प्रमाणपत्र, छात्रवृत्ति-पर्ची आ परिवारक फोटोसंग डिजिटल स्मृति-पृष्ठ बनएबाक प्रस्ताव देने अछि। “छात्रवृत्ति लेल जानकारी चाही,” पद्मा कहलीह, “मुदा मृत व्यक्तिक निजी पत्र आ हुनकर परिवारक फोटो किएक?” सरिता सूची पढ़लनि। अनुबन्धक छोट अक्षरमे लिखल छल जे ‘शिक्षण-प्रचार’ लेल जमा सामग्रीक पुनरुपयोग कएल जा सकैत अछि। ओ पन्ना तह नहि कएलनि; खुलले मेजपर रखि देलीह।

“नैराक नाममे पुरस्कार देबाक बात हम रोकब नहि,” सरिता कहलीह, “मुदा ओकर लिखल निजी चिट्ठी, घरक फोटो आ कबीरक जन्मक अनिर्णीत कागद एक सङ्ग कम्पनीक गोदाममे नहि जाएत। जकर बच्चाकेँ छात्रवृत्ति भेटत ओकर नाम सार्वजनिक करबाक अनुमति ओ बच्चाक घरसँ लीअ। जकर फोटो नहि चाही ओकरा नामसूचीक

बाहर नहि करू।” पद्मा एहि निर्णयक लिखित प्रस्ताव बनौलीह। किछु अभिभावक आपत्ति कएलनि जे एतबा शर्तसँ सहायता देरीसँ भेटत। सरिता हुनकर चिन्ता सुनलीह, आ कहलीह जे विवादरहित छात्रवृत्ति पुरान व्यवस्थासँ चलत; निजी संग्रहक निर्णय अलग होएत।

ओतहि भोजनक समय भऽ गेल। सरिता टिफिन खोललनि तँ तरकारीक दू छोट डब्बा निकलल। काल्हि राति एक डब्बा नैराक पसिन्नक आलू-भुजिया बनएबाक मन भेल छल; बनौने नहि छलीह। दोसरमे लौकी छल। सरिता सोचलीह जे कखनहुँ भोजनक स्वाद मृत्युक बाद बहुत बेर बदलैत अछि—एहि लेल नहि जे जीभ बदलि जाइत अछि, बल्कि जे व्यक्ति स्वादपर टिप्पणी करैत छल से नहि रहैत अछि। ओ एक कौर खा खिड़कीक बाहर तकलीह। बच्चासभ मेघक आकारक नाम रखि रहल छल। ओ अपन भोजन पूरा कएलनि, मुदा भुजियाक डब्बा खालीए रहल।

कबीर दुपहरिया कने देरिसँ विद्यालय पहुँचलाह। हुनकर हाथमे पालन-अभिलेखक संशोधित सार्वजनिक प्रति छल, जाहिमे जन्मसम्बन्धी अप्रमाणित पाँति स्पष्ट अलग लिखल छल। सरिता कहलीह, “ई कागद अहाँक, हमरा देखेबाक कोनो बाध्यता नहि।” कबीर उत्तर देलनि, “हम केवल बतए अएलहुँ जे बिना निजी पत्र देनहुँ कामक उचित हिस्सा भऽ गेल।” सरिता प्रति पढ़लनि। सुभद्राक पालन-श्रमक मान्यता छल, जन्मक निष्कर्ष नहि। “सुभद्राकेँ प्रति भेटल?” ओ पुछलीह। “हाँ। ओ अपन नामक सही उच्चारण स्वयं देखलनि,” कबीर कहला।

कबीरक झोरामे अबो लिफाफा छल, मुदा आइ ओ निकाललनि नहि। सरिता सेहो ओकर विषय नहि उठौलीह। दुनू पुस्तकराखल तख्तासँ कुछ पुरान पाठ्यपुस्तक नीचाँ उतारलनि। एक पुस्तकक भीतर नैराक लिखल चिट्ठीक आधा पन्ना निकलल—ओ ककरो नाम नहि, केवल साप्ताहिक कक्षाक बँटवारा छल। सरिता ओकरा प्रमाणक रूपमे अलग रखलीह। कबीर पुछलनि, “ई कागद ककरा देब?” सरिता कहलीह, “जतय पढ़ाइ चलैत अछि ओतय। याद राखबाक लेल सभ कागद पेटीमे बन्द कए देब तँ बच्चासभ कोना पढ़त?”

साँझक अगिला कार्यक्रमक सूचना बनबाक छल। पोखरिक वार्षिक सफाइमे एहि बेर चौरक जलमार्ग, घाटक सुरक्षित सीढ़ी आ मखानक बीहन-स्थान अलग चिह्नित करबाक प्रस्ताव छल। रामसखी कहलीह जे सफाइमे भाग लेनिहार महिलासभक नाम केवल ‘स्वयंसेवक’ लिखल जाइत अछि, जबकि दुलाई लेल पुरुषसभक पारिश्रमिक अलग चुकाओल जाइत अछि। सरिता सूची फेर बनौलीह—स्वेच्छाक श्रम, दिहाड़ीपर काज, उपकरण-भाड़ा आ दान; चारि अलग घर। ओ जोड़लीह, “सामूहिक पर्वक अर्थ ककरो निःशुल्क श्रमक नामपर अदृश्य कए देब नहि।” रामसखी अपन नामक आगाँ उचित श्रम-घण्टा लिखलीह।

एहि जाँचमे एक असुविधाजनक बात सामने अएल। छपाइ कम्पनीक प्रतिनिधि कहलनि जे ‘नैरा स्मृति सहायता केन्द्र’ लेल परिवारक अभिलेखक डिजिटलीकरण मात्र प्रारम्भिक वर्ष निःशुल्क रहत; बादक वर्ष प्रमाणित प्रति निकालबाक शुल्क लाग सकैत अछि। ओ एहनो कहलनि जे सहायता-पात्रताक वर्गीकरण कम्पनीक गुप्त गणनाक आधारपर होएत। रमा कर्णकेँ सूचना देल गेल। ओ लिखित उत्तर माँगलीह—ककरा लाभ मिलत, गलत नाम कोना सुधरत, असहमत व्यक्ति सार्वजनिक सेवासँ वञ्चित होएत की नहि। प्रतिनिधि कहलक जे इ प्रश्नक उत्तर मुख्य कार्यालय देत। एहि लेल तत्काल अनुबन्ध पर हस्ताक्षर नहि भेल।

छात्रवृत्तिक प्रतीक्षामे ठाढ़ एक विधवा महिलाक नाम सूचीमे नहि छल। हुनकर बेटा एहि विद्यालयमे पढ़ैत छल, मुदा परिवार हालमे बाढ़िक कारण दोसर मुहल्लासँ अएल छल। प्रारम्भिक सूची पुरान निवास-पत्रपर आधारित छल। सरिता कहलनि, “एहि परिवारक अधिकारक जाँच आवश्यक अछि, मुदा नैराक नामक सहारा लऽ झूठ आश्वासन नहि देब।” पद्मा बच्चैँक उपस्थितिपंजी, वास्तविक निवास आ सहायता-शर्तक पृथक सत्यापन निर्धारित कएलीह। महिलाकेँ लिखित प्राप्ति भेटल। एहि घटना सँ स्पष्ट भेल जे सुधारल व्यवस्था सेहो जे लोक हालमे उजड़ि अएल छथि हुनका बाहर राखि सकैत अछि।

विद्यालयसँ बाहर झाड़ूक भुगतानक प्रश्न लऽ रामसखी फेर अएलीह। हुनकर तीन दिनक अतिरिक्त सफाइ विद्यालयक दैनिक उपस्थितिपंजीमे छल, मुदा ठेकेदारक बिलमे दू दिन लिखल छल। सरिता पुरान बही देखलीह; तेसर दिनक दहलीजपर चुनक घेरा आ

मरम्मतिक काजक अलग नोट छल। ओ ठेकेदारकेँ फोन कऽ तुरन्त दोषी घोषित नहि कएलनि। रामसखीकेँ विवादरहित दू दिनक भुगतान रोकि नहि राखबाक लिखित अनुरोध आ तेसर दिनक स्वतन्त्र मिलानक तारीख देलीह। “दुःखसँ हमरा काजक हिसाब कम नहि बुझाए,” रामसखी कहलीह। सरिता हुनकर बात सुनि बहीमे तारीख लिखलीह।

दिन ढलल तँ सरिता घर घुरलीह। कबीर कहने छलाह जे घरमे चावल राखि देब। ओ रसोइमे गेलीह तँ बर्तन धोअल छल, मुदा नमकक डिब्बा ओहि ठाम नहि छल जतय नैरा राखैत छलीह। सरिता किछु बेर खोजि खिसिआ गेलीह। खिसिआहट कबीरपर नहि छल, वस्तुक बदलल स्थानपर सेहो पूरा नहि। बेटी रहित घर प्रत्येक दिन अपना नया ढङ्गे व्यवस्थित होइत छल; सरिता प्रतिदिन ओकरा फेर पहिचानैत छलीह। ओ डिब्बा भेटलापर चूल्हि लग रखलीह आ मनमे नैरासँ किछु कहलनि नहि।

दुआरपर सावित्री अएलीह—चम्पाक माय। हाथमे औषधिक डब्बा आ चिकित्सकक पर्चा छल। घुटनाक सूजन घटल छल, मुदा पूरा चलबाक लेल एखन सहारा चाही। सावित्री कहलीह, “चम्पा दवाइक समय लिखि देने अछि। आब सभ कहैत अछि जे हमर खातिर घरमे रहब नीक। हम रविक दिन मेला देखए चाहैत छी। सभ हँसि देलक।” सरिता हुनका भीतर बैसौलीह। “आब अहाँ की चाहैत छी, से ककरो सुनबाक फुर्सत भेटल?” ओ पुछलीह। सावित्री कनेक सोचलीह। “हम मेला जएबाक बाट आ बैठबाक जगह देखब, फेर निर्णय करब। कियो हमरा बिना पुछने टिकट नहि काटय।”

सरिता सावित्रीक औषधिक पर्चा हाथमे लेबाक बदला हुनकर सोझाँ मेजपर रखि देलीह। “ई अहाँक कागद अछि,” ओ कहलीह। सावित्री स्वयं अगिला जाँचक तारीख पढ़लीह। दुनू महिलाक बीच नैराक विषय किछु देरि नहि अएल। सावित्री चूल्हिपर चढ़ल भातक गन्ध पहचानि कहलीह, “दालमे जीराक छौँक नहि देलियै?” सरिता हँसलीह, “आइ बिसरि गेलहुँ।” सावित्री कहलीह, “बिसरबापर भात रुकि नहि जाइत। चाही तँ एखन देब।” सरिता तेल गरम कएलनि। जीराक आवाजमे हुनका बरखो पहिनुक एक भोर याद पड़ल, मुदा ओ स्मृति कहबाक बाध्यता नहि बुझलीह।

भोजनक बाद सावित्री विदा भेलीह। चम्पा हुनका लेने आएल छलीह; ओ मायकेँ पुछलीह, “रविक मेला लेल हम आधा दिन खाली राखी?” सावित्री कहलीह, “पहिने हमरा

पूछि ले, मेला जाएबाक तय करैत छी की नहि। जँ जाएब तँ तों संग रहिह, मुदा हमर पाँवक हिसाब हमहुँ देखब।” चम्पा एक क्षण रुकलीह, फेर कहलीह, “ठीक अछि। काल्हि बाट देखब, तखन तय करब।” सरिता दुनूकें विदा कएलनि। हुनका बुझायल जे सहायता स्वीकार कएलाक बादो व्यक्तिक ‘नहि’ कहबाक अधिकार शेष रहैत अछि।

सावित्री कुर्सीसँ उठबाक पहिले अपन पयरक सूजन दाबि देखलीह। “मेला जाएबामे हम जँ आधा बाट चलि थाकि जाएब तँ?” ओ पुछलीह। सरिता उत्तर देलीह, “तखन घुरि सकैत छी। छोट दूरीक योजना बनाउ; घुरबाक बाट सेहो खुलल राखू।” सावित्री हँसलीह, “सभ हमर खातिर निर्णय करैत अछि, मुदा जँ हम बीच बाट मन बदलि दी तँ हुनकर योजना बिगड़ि जाइत अछि। ताहि डर सँ कखनो घरसँ निकलए नहि दैत।” सरिता हुनकर बातकें सलाहक पन्नापर नहि लिखलीह। ओ सुनलीह; चम्पा आएलापर मायक अपन मुँहसँ कहबाक अवसर दएलीह।

राति विद्यालयक बही फेर खोलि सरिता एक कोनमे नैराक नाम देखलीह। पुरान उपस्थिति-पृष्ठमे ओ नाम जसक तस छल; नव कार्यसूचीमे सरिताक नाम जिम्मेदारक रूपमे जोड़ल गेल। ओ पुरान पन्ना काटलीह नहि। मृत्युक तिथि दर्ज छल, मुदा हुनकर जीवनक काज एकहि तिथिमे समाप्त भऽ जाए, एहन घोषणा नहि। पद्माक नव कार्यसूचीमे मरम्मतक भुगतान, श्रमिकक श्रेय, छात्रवृत्तिक पात्रता आ अभिलेखक गोपनीयता चारि अलग मद बनल। सरिता एक मदक कात लिखलीह—‘जकर सहायता, ओकर बात सुनल जाए।’

कबीर दरबज्जासँ पुछलनि, “काल्हि भोरक लेल किछु राखि दिअ?” सरिता कहलनि, “चाभी ओहि ठाम अछि, मुदा हमरा जगायब नहि। उठि नहि सकलहुँ तँ हम स्वयं कहब।” कबीर मुस्की देलनि। ओ अपने सँ नैराक विषय निकालि सान्त्वना देबाक प्रयत्न नहि कएलनि। सरिता कातमे राखल खाली तेसर गिलास देखलीह। ओकरा हटेबाक विचार नहि कएलनि, नहि ओकरा दैनिक पूजा बना देलीह। गिलास एक वस्तु छल, ओकर अनुपस्थित बेटी एक जीवित इतिहास—दुनू एक नहि।

अगिला भोर पहिने खिड़कीक पल्ला खड़कबाक आवाज भेल। सरिताक देह फेर उठबाक समय पहिचानलक; घुटना दुखैत छल, आँखि भारी छल। ओ धीरे सँ बैसलीह,

पानिक गिलास पीबि दरबज्जा खोललनि। आसमान हलुक उज्जर होइत छल। आइ सेहो
नैरा नहि छलीह। ई ज्ञान नव नहि, मुदा प्रत्येक भोरमे देह ओकरा फेर बूझैत छल। सरिता
पहिने अपन औषधि खएलीह, फेर चूल्हिपर पानि चढ़ौलीह। विद्यालयक चाभी टेबुलपर
छल। ओ चाभी उठौलीह—न विजयक नारा, न दुःखक समाप्ति; मात्र दिनक पहिल काज,
अपन गति सँ।

अध्याय १७७ • वृद्धक सहमति

सन २०४०क विदेहपुरमे रविक भोर चम्पा माइक लाठीक निचला रबरक टुकड़ा दबा कऽ देखैत छलीह। पिछिला दिन बरखाक पानिसँ आँगन चिक्कन भेल छल, आ लाठीक एक किनारी घसि गेल छल। सावित्री खाटपर बैसि ओहि जाँचकें ताकैत छलीह। “तों लाठी नीक करैत छँ कि हमरा मेलामे नहि जाएबाक कारण खोजैत छँ?” ओ पुछलनि। चम्पा लाठीक टेढ़ गरा सीधा कएलीह। “माय, हम अहाँकें रोकए नहि चाहैत छी। डॉक्टर कहलनि जे थाकलापर विश्राम जरूरी अछि। एहि भीड़मे ककरो ठेलासँ चोट लागल तँ?” सावित्री हाथ बढ़ा लाठी वापस लेलनि। “ठेला देनिहारक व्यवहारक दायित्व हमरा देहपर किएक लिखैत छँ? पहिने बाट देख, तकर बाद हमरा पुछ।”

घरक ओसारमे तीन विकल्पक कागद राखल छल। पहिल बाट मुख्य सड़कसँ मेलाक उत्तरी फाटक धरि, जतय बस उतरि दस मिनटक भीड़ पार करबाक छल; दोसर बाट पोखरिक पाछाँसँ, जतय पथ संकीर्ण मुदा बेंच छल; तेसर विकल्प घरमे रहि चित्र आ सामान मँगाएब। चम्पा छोट अक्षरमे भाड़ा, दूरी आ घुरबाक समय लिखने छलीह। सावित्री सूची पढ़ि पहिल बात ई पुछलनि, “एहि तेसर विकल्पमे हमर लेल के चुनत जे हम की देखब?” चम्पा मुस्की देलीह, मुदा उत्तर तुरन्त नहि भेटल। घरमे रहब सेहो विकल्प छल, मुदा ताहिमे माइक इच्छा दोसरक अनुमानमे बदलि सकैत छल।

चम्पाक आजुक सिलाइक काज सात थैला जाँचि देबाक छल। काल्हि भेल व्यवस्थामे घायल कलाईसँ भारी बोरा उठेबाक बदला कपड़ाक नाप आ टाँकाक जाँचक अलग पारिश्रमिक निश्चित कएल गेल छल। ओ ओहि काजक दू घण्टा पहिने पूरा कऽ लेबाक निश्चय कएलीह। रुखसाना स्वयं कएल रसोइक कामक समय बदलबाक सहमति देलीह, मुदा कहलीह, “हमर रसोइक मजदूरी चम्पाक खर्चमे चुपचाप नहि जोड़ब। जे अतिरिक्त पालि होएत ओकर अलग पर्ची बनत।” सावित्री दूनूक बात सुनलनि। “हमर जएबाक कारणसँ ककरो काम अदृश्य नहि होअय,” ओ कहलीह, “मुदा एहि डरमे हमरा कोठरीमे बन्द सेहो नहि करू।”

दरबज्जा लग अनुप अएलाह। हुनकर हाथमे घरक मरम्मतिक छोट औजार छल, किएक तँ चम्पा पिछिला दिन चौखटक एक उखड़ल कील देखौने छलीह। ओ माइक नमस्कार कएलनि आ पुछलनि, “मेला देखए चलब तँ अहाँ हमरा संग जायब चाहब?” सावित्री हँसलीह। “अहाँ चम्पाक मित्र छी, हमरा नियुक्त रखवार नहि। जँ बाटमे कोनो सहायता चाहब तँ हम स्वयं कहब।” अनुप कहला, “ठीक अछि, हम केवल चौखटक कील कसि देब। आ जँ परत तँ भाड़ाक रसीदक हिसाब बनायब।” चम्पा हुनकर सहज उत्तर सुनि आश्चस्त भेलीह; मायकें मनबए लेल कोनो नव पुरुषक आदेश जरूरी नहि छल।

सावित्री अपन औषधिक समय पर्चापर देखलनि। चिकित्सकक लिखल योजना बदलल गेल नहि छल। ओ औषधि लेबाक बाद चम्पासँ पुछलनि, “जँ हमरा पयर दुखए लागत तँ हम घुरि आएब कहि सकैत छी ने?” चम्पा कहलीह, “हँ। आ जँ हम थाकि जाएब तँ हमहुँ कहि सकैत छी।” ई सुनि सावित्रीक मुखपर एक छोट हँसी अएल। “तों देखभाल करैत-करैत अपन देहक बात बिसरि जाइत छँ। दू लोकक यात्रा दू लोकक सामर्थ्यसँ होएत।” ओ अपन पुरान पातर चादर चुनलनि। नव चमकीला कपड़ा चम्पा खरीदि दैत, मुदा सावित्री कहलीह जे मेला देखबाक इच्छा वस्त्रक प्रदर्शन नहि अछि।

मेलाक मार्गपर पहुँचबाक पहिने बस-अड्डामे एक कर्मचारी सावित्रीक हाथसँ पर्चा लेबाक प्रयत्न कएलक। “वृद्धजन सुविधा,” ओ कहलक, “रोगक विवरण भरलासँ निःशुल्क गाड़ी भेटत।” सावित्री पर्चाकें पाछाँ खींचलनि। “गाड़ी लेल घुटनाक पीड़ा लिखब जरूरी होएत, तँ अहाँ आवश्यक प्रश्न पूछू। हमर पुरान सभ बीमारी पढ़बाक अधिकार अहाँकें के देलक?” कर्मचारी चम्पाकें ताकलक। चम्पा मायकें उत्तर देबाक अवसर देलीह। सुविधा-नियमक कागद अनल गेल; ताहिमे आयु आ चलबामे कठिनाइक सामान्य घोषणा मात्र अपेक्षित छल। सावित्री अपन नाम कहलीह, उमेरक प्रमाण देखौलीह, निजी चिकित्सकीय विवरण घरक झोरामे राखि देलनि।

मेलाक उत्तरी फाटकपर ढोल बजैत छल। काँचक चूड़ी, माटिक बरतन आ लकड़िक खिलौनाक दोकानसँ हवा भरल छल। सावित्री भीड़ देखि कने रुकलीह। चम्पा अनुमान लगौलीह जे आब माय घुरब चाहतीह। मुदा सावित्री पुछलनि, “पोखरिक पाछाँ बेंच कतए?” हुनकर योजना बदलल छल, इच्छा नहि। ओ सभ भीड़वला मुख्य मार्ग छोड़ि

पाछाँक कम भीड़ बाट चुनलनि। ओहि बाटपर कीचड़ छल, तँ अनुप पहिने जा देखलनि जे लाठी टिकैत अछि कि नहि। सावित्री अपन पयर राखि स्वयं परीक्षण कएलनि। “ई बाट लम्बा अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एक बेरमे कतेक पयर रखब से हम तय करब।”

पोखरिक कात माछ—मखान श्रम-मेलाक अलग छोट मंडप लगल छल। विनोद केवर्त छोट विक्रेतासभक स्थान चिन्हित करैत छलाह। फूलमती तियर अपन जाल-समूहक हिसाबक बही खोलने छलीह। दोकानसभक नीचाँ तख्तापर लिखल छल—दान, बिक्री आ दिहाड़ी तीन अलग मद। सावित्री एक बूढ़ी मखान-फोड़निहार महिलासँ पुछलनि, “आइ अहाँ मेला देखए अएल छी कि काज करए?” महिला उत्तर देलीह, “दुनू। मुदा जँ हम काज करब तँ मजदूरी भेटत। मनोरञ्जनक नामपर फोड़ाइ करबैत अछि तँ हमर हाथ दुखैत अछि।” सावित्री अपन दहिना घुटना दबौलीह। एहि उत्तरमे हुनका अपन जवानीक हाटसभक याद छल; ओ स्मृति सान्त्वनासँ बेसी ठोस श्रमक थकान नेने अएल।

मखानक मंडपसँ कने दूर अस्पतालक सहायता-टेबल लगल छल। बड़ अक्षरमे लिखल छल—‘वृद्ध-देखभाल पंजीकरण’। एक स्वयंसेवक सावित्रीकेँ रोकि कहलक, “एक बेर निबन्धन भऽ गेल तँ परिवारक सदस्य उपचार, यात्रा आ आवासक सभ निर्णय आसानीसँ लऽ सकत।” सावित्री पुछलनि, “आ हमरा निर्णय?” युवक कहलक, “अहाँक भलाई लेल परिवार निर्णय लैत अछि।” चम्पा कागद मँगौलीह। ताहिमे ‘प्रमुख देखभालकर्ता’ नामक खाँजक पाछाँ बहुते व्यापक अनुमति लिखल छल—अभिलेख देखब, स्थान परिवर्तन, सहायता-धन प्राप्त करब। सावित्री कागद मोड़ि नहि फाड़लनि। ओ मेजपर सीधा राखि देलीह। “एहि अनुमति सँ हमर सन्तानक सुविधा बढ़त,” ओ कहलीह, “मुदा हमर आवाज कतए लिखल अछि?”

स्वयंसेवकक चेहरा उतरि गेल। ओकरा लगल जे वृद्धा सुविधा नहि बुझैत छथि। ओ चम्पासँ पुछलक, “अहाँ हस्ताक्षर कऽ दियौ, हम काम सरल कऽ देब।” चम्पा उत्तर देलीह, “माय अपने निर्णय करथि। हमरा केवल आपातकालमे सम्पर्क करबाक अनुमति चाही। अलग-अलग बात लेल अलग सहमति बनाउ।” रमा कर्ण सेहो ओहि मंडप लग समुदाय-अभिलेखक सालाना जाँचक सूचना दऽ रहल छलीह। ओ कागद देखिकऽ पुछलीह, “कतेक लोक ई समग्र अनुमति देलाक बाद अपन प्रति पबैत अछि? अनुमति वापस

लेबाक उपाय कोन पन्नापर अछि?” युवकक लग तत्काल उत्तर नहि छल। रमा कागदक प्रतिलिपि लेल लिखित निवेदन कएलीह, मुदा कर्मचारीक असहमतिकेँ अपराध नहि मानलनि।

सावित्री अपन नामक आगाँ लिखबौलनि—‘केवल आजुक यात्रा-सहायता; चिकित्सा निर्णय नहि; आवास परिवर्तन नहि; निजी विवरणक प्रचार नहि’। स्वयंसेवक कहलक जे फारममे एहन खाँज नहि अछि। “तखन फारम अधूरा अछि,” सावित्री उत्तर देलीह। “हम सुविधा छोड़ि सकैत छी, मुदा जकरा सहायता सचमुच चाही ओकरा एहि खाली जगहक कारण चुप रहबाक पड़त।” रमा अलग प्राप्ति-पत्र देलीह, जाहिमे सावित्रीक आपत्ति दर्ज भेल। चम्पा बुझि गेलीह जे माइक ना कहलासँ सुविधा तुरन्त भेटबाक बाट कठिन भेल, मुदा ओहि ना मे एकटा साफ अधिकार बचल।

मंडपक पाछाँ एक छोट वृद्धा किरायेदार स्त्री बैसलीह। ओहि स्त्रीक घरक मरम्मत आ किरायेदारक सुनवाईक प्रश्न गामक अभिलेख-बैठकमे पहिनेसँ उठल छल। आइ हुनकर हाथमे मकान-मालिकक लिखल सूचना छल—‘समुचित देखभाल लेल स्थानान्तरण स्वीकार’। ओ सावित्रीकेँ कहलीह, “मोर घरक छाजन टपकैत अछि। लोक कहैत अछि जे नया आश्रय जाउ; ओतए खाना आ दवाई भेटत। मुदा ओहि गेलापर मोर पुरान कोठरीक अधिकार रहत कि नहि, ई कियो नहि कहैत।” सावित्री हुनका बगलमे बैसलीह। “अहाँ की चाहैत छी?” ओ पुछलनि। स्त्री उत्तर देलीह, “पहिने छाजन सुधरय। तीन राति लेल अलग ठाम रहि सकैत छी, मुदा स्थायी घर छोड़बाक हँ नहि देलहुँ।”

चम्पा ओहि स्त्रीक कागद देखए चाहलीह, मुदा स्त्री पहिने पुछलनि, “अहाँ एतए रहनिहार छी?” “नहि, हम चम्पा,” चम्पा उत्तर देलीह, “माइक संग मेला आएल छी।” स्त्री कागद फेर मोड़लनि। रमा लग आएलापर ओ स्वयं ओकरा देलीह। रमा कहलीह जे अस्थायी सुरक्षाक नामपर स्थायी अधिकार-त्याग लिखब ठीक नहि; पहिले मरम्मत, वैकल्पिक निवासक अवधि आ घुरबाक लिखित विकल्प स्पष्ट होय। मालिकक आवेदनक जाँच सेहो जरूरी अछि। वृद्धा अपन पर्ची वापस लेलनि। ओ सभ सहानुभूतिकेँ अधिकारक प्रमाण नहि मानैत छलीह, आ प्रमाणक अधिकार छोड़ैत सेहो नहि छलीह।

दुपहरि मेला भीड़सँ भरि गेल। सावित्री दू दोकान देखलनि, कुम्हारसँ एक छोट दीया किनलनि आ पुरान लोकगीत गबैत महिलासभक समूह लग ठाढ़ रहलीह। गीतक एक पद हुनका अपन युवावस्थाक विवाह-पछाति पहिल मेलाक स्मृति देलक। ओ चम्पाकेँ कहलनि जे ओहि दिन हुनकर माय कहने छलीह, “बेटी, हाटमे किछु अपना पसिन्नसँ किनिह।” चम्पा पुछलीह, “आ अहाँ की किनने छलहुँ?” सावित्री धीमे हँसलीह, “किछु नहि। सभ पैघ लोकक पसिन्न देखैत घर घुरि गेल छलहुँ। आइ दीया अपना लेल किनलहुँ।” ओहि छोट खरीदक दाम पाँच रुपैया छल, मुदा कथनक भार पहिनुक बहुत वर्षपर छल।

बेंचपर बैसलापर सावित्रीक घुटना काँपए लागल। चम्पा पानी देलीह। अनुप आ रुखसाना एक दूरीपर दोकानक हिसाब देखैत छलाह। सावित्री तीन साँस चुप रहि कहलीह, “आब घुरब। गीत पूरा नहि सुनब।” चम्पा पूछए लगलीह जे किएक एतबा जल्दी, फेर रुकलीह। “ठीक अछि, माय। ओहि पाछाँक बाटसँ घुरब?” सावित्री कहलनि, “जँ ओतए कीचड़ बढ़ल अछि तँ मुख्य बाटक कातक बस-ठाम देखब। जे कम कठिन होय, से चुनब।” चम्पा दूनू बाटक समाचार बुझलीह। मायक निर्णय बदलल छल, मुदा बाँचल विकल्पकेँ अपन चालसँ तौलल गेल छल।

घुरबाक लेल गाड़ी कम छल। एक चालक कहलनि जे वृद्धाकेँ हाथ धरि चढ़ा देब, मुदा प्रतीक्षाक भाड़ा दुगुना होएत। चम्पा मना कएलीह। सावित्री कहलीह, “जँ नीक गाड़ी नहि भेटत तँ हम एतए किछु देर बैसि सकैत छी। थकानक डर देखाकऽ मनमाना दाम किएक?” अनुप अपन कामक समयक सीमा बतौलनि—दू बजे हुनका औजार-कार्यशालामे पहुँचेबाक छल। सावित्री कहलीह, “अहाँ अपन काम पर जाउ। हमर घुरबाक जिम्मेदारी केवल अहाँपर नहि।” चम्पा आ चालकक बीच निर्धारित भाड़ापर सहमति भेल; चालक प्रतीक्षाक रकम अलग रसीदमे लिखलनि।

साँझ सरिता हाल-चाल बुझए अएलीह। हुनकर अपन घुटना दुखैत छल; विद्यालयक चाभी झोरामे छल। ओ सावित्रीसँ मेला कतेक नीक रहल से पुछलनि। सावित्री दीया देखौलीह, गीतक पहिल दू पाँति गुनगुनौलीह, फेर कहलनि, “पूरा मेला नहि देखलहुँ। जतेक चाहलहुँ, ओतेक देखलहुँ। बीचमे घुरब हमर हार नहि।” सरिता मुस्की देलीह। नैराक मृत्यु पछिला भोरसभमे हुनका सिखौने छल जे किछु काज पूरा नहि भेला परो दिन

जिएल जा सकैत अछि। मुदा ओ अपन दुःख सावित्रीक अनुभवपर ओढ़ौलनि नहि। सावित्री हुनका लेल चाह बनबए कहलीह; सरिता कहलीह जे चम्पा पहिने अपन काम पूरा करथि, ओ स्वयं चूल्हिपर पानि राखि देतीह।

राति वार्षिक अभिलेख-परीक्षणक तैयारी लेल पद्मा आ रमा विद्यालयक कोठरीमे भेटलीह। मेलाक सहायता-मंडपक समग्र अनुमति-पत्रक प्रतिलिपि, वृद्ध किरायेदार स्त्रीक अस्थायी स्थानान्तरणक आवेदन आ सावित्रीक सीमित सहमति तीन अलग फाइलमे रखल गेल। पद्मा कहलीह, “एहि कागदसभक सार सार्वजनिक करब, मुदा व्यक्तिक नाम, बीमारी आ घरक ठेकाना छापब नहि।” रमा जोड़लीह, “जे सुविधा छैक ओकर पात्रताक नियम सार्वजनिक होय; जे निजी निर्णय छैक ओकर कागद सम्बन्धित व्यक्तिक नियन्त्रणमे रहय। सरकारी फाइल बन्ने रहितो जँ व्यक्ति अपन स्वीकृति देखिये नहि सकल तँ अभिलेख अधूरा अछि।”

बैठकमे एक युवक कहलक जे वृद्धसभ कखनो अपन भलाई बुझैत नहि छथि, तँ परिवारकें व्यापक अनुमति देब व्यवहारिक अछि। सावित्री स्वयं विद्यालय एएबाक स्थिति नहि रहलीह, मुदा ओ चम्पाक हाथसँ अपन लिखित प्रश्न पठौने छलीह। पद्मा ओ प्रश्न पढ़लीह—‘हम जँ आइ हँ कहलहुँ, काल्हि नहि कहब तँ कागदमे कोना बदलब? आ जँ हम असमर्थ भऽ जाउ तँ पहिने कहने बात के सुनत?’ युवकक लग तुरन्त उत्तर नहि छल। उपस्थित परिचारिका कहलनि जे आपातकालक व्यवस्था आवश्यक अछि, मुदा प्रत्येक आपात स्थितिक नामपर आजीवन अधिकार नहि लिखल जा सकैत। सभा एहि अन्तरक स्पष्ट नियम बनएबाक लेल अलग समूह चुनलक।

ओहि समूहमे चम्पाक नाम प्रस्तावित भेल। ओ तत्काल हँ नहि कहलीह। “आइ माइक देखभालमे हम अपन काजक दू घण्टा बदललहुँ। प्रत्येक बैठकमे गेलासँ रोजीक घाटा होएत,” ओ कहलीह, “ई काम लेल समय आ यात्राक खर्च घोषित करब, आ वृद्ध सदस्यसभकें सीधा बोलबाक अवसर देब।” किछु लोक हुनका स्वार्थी कहलनि। रामसखी उठि कहलीह, “जकर हाथसँ काज चलत ओकर श्रमक हिसाब नहि होएत तँ समिति फेर अवैतनिक स्त्रीश्रमपर ठाढ़ होएत।” पद्मा बैठकीक पारिश्रमिक आ यात्रा-मद सार्वजनिक प्रस्तावमे जोड़लीह। चम्पा तखन सीमित अवधिक सदस्यता स्वीकार कएलीह।

पुरान किरायेदार सूत्री बैठकमे अपने नहि अएलीह; हुनकर लिखल शर्त पद्माक लग पहुँचने छल। छाजनक मरम्मत लेल घरसँ अस्थायी निकलना स्वीकार होएत, जँ ठाम, समय, चाभी आ वापस अएबाक अधिकार लिखित देल जाए। मकान-मालिकक सहमति एखन प्राप्त नहि छल, तँ रमा निर्णयक जगह 'विचाराधीन' लिखलीह। कोनो अधिकारी वृद्धाक शर्तकेँ पूर्ण पुनर्वासक सहमति नहि मानलनि। ई अपूर्ण उत्तर असुविधाजनक छल; मुदा प्रमाणक असल अवस्था एही छल।

ओहि राति प्राचीन वनाश्रममे धृतराष्ट्रक सहारा लेल राखल बाँसक डण्डा कोठरीक बाहरी देवालसँ खसि गेल। संजय झुकि उठबए बढ़लाह। धृतराष्ट्र आवाज सुनि कहलनि, “पहिने कहू, हमर डण्डा कतए अछि।” संजय स्थान बतौलनि; धृतराष्ट्र स्वयं हाथ बढ़ौलनि, मुदा डण्डा धरि नहि पहुँचलनि। “आब अहाँ हमरा हाथमे दियौ,” ओ कहलनि। गान्धारी कने दूर ठाढ़ छलीह। ओ एहि आग्रहमे न राजकीय आज्ञा सुनलीह, न पराजय; केवल मदद स्वीकार करैत एक वृद्धक स्पष्ट इच्छा।

कुन्ती नदीक किनारसँ घुरि आश्रमक पानिक घड़ा भरैत छलीह। धृतराष्ट्र हुनका सुनि पुछलनि, “हमरा लेल जतेक सुविधा एतए अछि, शेष आश्रमवासीकेँ भेटैत अछि?” कुन्ती कहलीह, “समानता वचनसँ नहि, मापक बहीसँ देखल जाएत। संजय कहने छथि जे काल्हि अनाजक हिसाब फेर गनब।” राजा मौन रहलाह। पुरान दरबारक गणनाक अधिकार हुनका नहि छल; मुदा एहि प्रश्नक परिणाम सुनबाक आग्रह करब हुनकर हातमे छल। गान्धारी कहलीह, “अहाँ निर्णय नहि करब, मुदा निर्णयक उत्तर पुछि सकैत छी।” धृतराष्ट्र डण्डा धरि देह सीधा कएलनि।

वनाश्रमक बाहर विदुरक पदचाप सुनायल। ओ अपन पुरान वस्त्रक धूलि झाड़ैत भीतर नहि अएलाह; द्वारपर ठमकि रहलाह। संजय कहलनि जे भीतर बैसब। विदुर उत्तर देलनि, “हम बहुत बेर राजकाजक भीतर बैसि परामर्श देलहुँ। आब भीतर रहि ककर अधिकार बचत, एहि प्रश्नक उत्तर हमरा अपन बाटपर खोजबाक अछि।” धृतराष्ट्र हुनकर स्वर पहिचानलनि। ओ कोनो आदेश नहि देलनि जे विदुर रुकि जाथि। केवल पुछलनि, “अहाँ जाइत छी तँ हमरा पहिले कहब?” विदुर कहलनि, “हँ, कारण चुपचाप विदा होएबो

कखनहुँ दोसरक निर्णयक अधिकार छीनि लैत अछि।” आश्रममे एहि उत्तरक बाद रात्रिक सामान्य काज चलैत रहल।

अगिला भोर विदेहपुरमे सावित्री दीया खिड़की लग रखलनि। चम्पा पुछलीह जे एखन पयरक पीड़ा कतेक अछि। “काल्हिसँ कने बढ़ल,” सावित्री कहलनि, “आइ विश्राम करब; अगिला सप्ताहक कार्यक्रम आइ नहि तय करब।” चम्पा दवाईक समय लिखि अपन छँटनी-काज पर बैसलीह। मायक मेला जएबाक निर्णय ठीक छल कि गलत, से घरक अन्तिम फैसला नहि बनल। ओहि निर्णयक परिणाम—थकान, गीतक स्मृति, किनल दीया आ सार्वजनिक आपत्ति—सभ अपन-अपन ठाम रहल। सावित्री एक बेर खिड़की खोललनि आ कहलनि, “हम जँ पुनः जएबाक चाहब तँ पहिने हमरा पुछिह।” चम्पा सुइमे धागा पिरोबैत उत्तर देलीह, “अहाँ कहब तँ सुनब। नहि कहब तँ अनुमान नहि लगायब।”

अध्याय १७८ • विदुरक मार्ग

प्राचीन वनाश्रममे भोर होइतहि विदुर अपन पुरान चमड़ाक पादुका उतारि ओसारक ईटपर रखलनि। रातिक ओस पड़लासँ ओकर डोरी फूलि गेल छल। संजय पानिक घड़ा लऽ बाहर अएलाह। विदुर हुनकासँ पूछलनि, “ई आश्रमक उत्तर दिस जे सँकरी पगडण्डी अछि, ओ कतए पहुँचैत अछि?” संजय कहलनि, “पहिने सालक वन, फेर नदीक पुरान घाट। ओतए जे लोक बसैत छथि, हुनका सभकेँ राजदरबारक बाटक आवश्यकता नहि पड़ैत छन्हि।” विदुर झुकि पादुकाक डोरी फेर कसलनि।

धृतराष्ट्र द्वारक भीतरसँ आवाज देलनि, “विदुर, हमर संग बैसबाक बात कहलहुँ, आ एखन बाट पूछैत छी?” विदुर भीतर गेलाह। राजा जमीनपर राखल कुशासन छू कऽ ओकर किनार पहिचानैत छलाह। गान्धारी जौक पेज हिलबैत छलीह; कुन्ती बिहानक धान साफ करैत छलीह। विदुर कहलनि, “आब हम अहाँक दरबारक मन्त्री नहि छी। एतए रहि हम ओहि पदक आदत फेर जन्म देब, जकरा छोड़ि अहाँ आएल छी।” धृतराष्ट्रक मुँह तनिक कठोर भेल। “दरबार एतए कतए अछि? ई तँ वन अछि।”

“दरबार भवनक नाम नहि,” विदुर कहलनि, “जखन एक जन सभक उत्तर देबाक अभ्यस्त भऽ जाए आ दोसर सभ ओकर आज्ञाक प्रतीक्षा करए, तखन बिना सिंहासनक सेहो दरबार बनि सकैत अछि।” गान्धारी पेजक करछुल रोकलीह। “तखन अहाँक जाएबो एक आज्ञा होएत? हमर संग रहि काज करबाक निर्णय अपने कएलहुँ, आब बिना हमसभसँ पूछने निकलि जाएब?” विदुर चुप भेलाह। हुनका बुझायल जे पद छोड़ब सरल घोषणा छल, मुदा अपन प्रिय लोकसभकेँ निर्णयक परिणाम सहबए देब कठिन छल।

संजय बाहर बैसल एक वनवासी स्त्रीक बात सुनबैत अएलाह। स्त्रीक हाथमे खोखल बाँस छल, जकरासँ ओ जल भरैत छलीह। आश्रमक लोक काल्हि एक छोट नाला पर पत्थर राखि बाट बनौने छलाह; ओहि पत्थरसँ वनक झोपड़ीधरि जाएबला पानिक धार मुड़ि गेल छल। स्त्री कहलीह, “अहाँ सभ राजपरिवारक छथि, मुदा हमर घरक पानि ओहि नालामे छल। अहाँक सुविधा लेल मोर घैल खाली रहि जाए, ई न्याय थिक?” विदुर पहिने उत्तर देबाक लेल उठलाह, फेर बैसि गेलाह।

संजय कहलनि, “पत्थर हटायब तँ धृतराष्ट्रक लेल बाट फिसलनभरी होएत।” स्त्री बाँसक खोखल पात्र जमीनपर राखलीह। “दुनू बाट बनि सकैत अछि कि नहि, से पहिने नापू। हमरा अपन घरक पानि चाही। अहाँक वृद्धकें सुरक्षित पयर चाही। एकक पीड़ा दोसरक मौनक कारण किएक बनए?” गान्धारी बाहर अएलीह। ओ पत्थरक स्थान छू नहि सकैत छलीह, मुदा धनिसँ पानिक धारक बदलल दिशा बुझैत छलीह। हुनका अपन यात्राक पहिल दिनक अनिश्चित भूमि याद अएलनि।

विदुरक मनमे पुरान राजसभा फेर खुलल—ओतए सेहो बहुत बेर लोक कहने छल जे राज्यक सुरक्षाक कारण किछु जनकें चुप रहबाक चाही। ओ प्रत्येक अन्यायक विरोध नहि रोकि सकलाह। जे विरोध कएलनि, ओकर पर्याप्त परिणाम सेहो नहि भेल। आब ओ वनवासी स्त्रीकें उपदेश नहि देलनि। संजयसँ कहलनि जे नाला पर राखल दू पत्थर अलग करि देखल जाए। धृतराष्ट्र अपन डण्डाक सहारासँ बाहर अएलाह। “हमर बाट छोट करू,” ओ कहलनि, “मुदा ओकर घरक पानि नहि रोक्कू।”

दू घण्टाक श्रममे पत्थर हटल, एक फटकल डारसँ पकड़बाक टेक बनल, आ धार झोपड़ीक दिस फेर बहए लागल। वनवासी स्त्री स्वयं पहिल घैल भरलीह। विदुर पुरान मन्त्रीमुद्राक निशानवला अपन अंगूठी खोलि ओकरा दएबाक चाहलनि। ओ हाथ पाछाँ कएलीह। “हम पानिक बदला राजाक उपहार नहि मँगलहुँ। जँ काजमे भाग लेबए चाहैत छी, तँ ओहि डारक नीचाँ माटि भरी दियौ।” विदुर अंगूठी वापस राखि माटि उठौलनि। भिजल माटि नहसँ चिपकल। हुनका अपन हाथक नया काम असहज लगल।

ओहि स्त्रीक छोट बेटा ओसारक कात बैसि डारसँ एक चिड़ै बनबैत छल। विदुर ओकरा पुछलनि जे नालाक पानि फेर अएलासँ घरमे की बदलत। बालक कहलक, “माय एखन दूरसँ पानि आनए नहि जाएतीह। हम काल्हिसँ फेर पानि पर नाव बनाएब।” ओ अपन लकड़िक चिड़ै विदुरकें देखौलक। हुनका एक बेर मन भेल जे राजकाजक बड़ न्याय-अन्यायक कथा बालककें सुनाबथि; फेर बुझलनि जे आइ ओकर खेलक अधिकारक सामने ओहि कथाक उपयोग नहि।

दुपहरि धृतराष्ट्र कहलनि, “हम अहाँकें रहबाक आदेश नहि देब। मुदा एतबा कहू—अहाँ जँ चलि जाएब तँ हमर पुरान निर्णयक बात ककरा सँ पूछब?” विदुर उत्तर देलनि, “अहाँक

निर्णयक स्मृति हमरा लग अकेले नहि अछि। गान्धारी छथि, कुन्ती छथि, संजय छथि, आ ओ लोक छथि जिनकर जीवन ओकरासँ बदलल। हमर एकल व्याख्या फेर सँ राजकाजकेँ एक आदमीक मुँहमे बन्द करि देत।” राजा धीमे कहलनि, “आ जँ ककरो उत्तर हमरा पसिन नहि पड़ए?” “तखनहुँ ओकर सुनब आवश्यक अछि।”

गान्धारी विदुरकेँ भोजन परोसैत पुछलनि, “अहाँ सचमुच कोन ठाम जाएब?” ओ कहलनि, “उत्तरक घाट धरि चलब, फेर जे पथ मिलत ओकरा देखब। हम अपन विचार लिखि छोड़ब, मुदा ओकरा अन्तिम विधान नहि मानबाक आग्रह सेहो करब।” गान्धारी हँसलीह नहि। “विचार छोड़ि जाएब आ ओहिपर अपन नामक अधिकार छोड़ब दू अलग बात अछि। अहाँक वचनक उपयोग जँ फेर अत्याचार लेल भेल तँ?” विदुर पातपर राखल भातक एक कण देखैत रहलाह। “तेँ एकरा चुनौती देबाक बाट खुलल रहबाक चाही।”

एहि वनदृश्यक अनेक शताब्दी बाद, सन २०४०क विदेहपुरमे विद्यालयक सभाकक्षमे पीतलाक पुरान ताला मेजपर राखल छल। सरिता भोरक विद्यालय खोलि ओ ताला लऽ अएलीह। वार्षिक अभिलेख-जाँचक समिति आब स्थायी अधिकार माँगैत छल—कम्पनीक प्रस्ताव रोकेबाक अधिकार, निजी कागदक प्रति उठाएबाक अधिकार आ शिकायतक अन्तिम निर्णय देबाक अधिकार। जकरा लेल ई समिति बनल छल, ओहि लोकसभमे सँ किछु सदस्यक नाम एखन प्रस्ताव-सूचीमे सेहो नहि छल।

रमा कर्ण पन्नाक ऊपर लाल स्याहीसँ तीन शब्द लिखलीह—‘सुनवाई’, ‘सिफारिस’, ‘निर्णय’। “ई तीनू एक नहि अछि,” ओ कहलीह। पद्मा एक फाइल खोललीह जाहिमे सावित्रीक मेलाक सीमित सहमति, वृद्ध किरायेदारक अस्थायी घर-बदलावक शर्त आ चम्पाक समितिक बैठकक मजदूरीक प्रश्न छल। पिछिला सप्ताह ई तीनू फाइल अलग राखल गेल छल। आइ अध्यक्षक दफ्तर ओकरा एकहि ‘वृद्ध-कल्याण’ शीर्षक नीचाँ जोड़ि देबाक प्रस्ताव पठौने छल।

कमराक पाछाँ बैसल प्रिन्टिङ्ग कम्पनीक प्रतिनिधि मुस्की दैत कहलक, “जतबा खाँज, ओतबा खर्च। एकटा स्थायी समिति सबकेँ एकहि नम्बर पर निर्णय देत तँ गामक लाभ होएत।” रमा पुछलीह, “लाभ ककर? जकर घर छनि, तिनकर अनुमति बिना हुनकर नामक कागद उठाएब, आ तकर शुल्क सेहो अगिला वर्ष ओ देखिन?” प्रतिनिधि कहलक,

“तकरा सुरक्षा कहैत छी।” सरिता धीरे सँ उत्तर देलीह, “सुरक्षाक नाम पर चाभी बदलि जायत तँ पुरान ताला हमरा काजक नहि।”

सावित्री आइ सभामे स्वयं अएलीह। घटनाक पीड़ा बढ़ल छल, तँ चम्पा हुनका लेल चौकी मँगौने छलीह। अध्यक्षक स्थान खाली छल; एक युवक चम्पाकेँ ओतए बैसबए चाहलक, मुदा चम्पा कहलीह, “माय बात कहतीह। हम अपन कमाइक दू घण्टाक हिसाब अलग देब।” सावित्री सभकेँ सुनौलनि जे मेलामे ओ केवल यात्रा-सहायता लेल सहमति देलनि। “हम घरक चाभी नहि देलहुँ, उपचार बदलबाक आदेश नहि देलहुँ, आ ककरो हमर बदला हँ कहबाक अधिकार नहि देलहुँ।”

सभाक एक सदस्य कहलनि, “एहि उमेरमे कतेक सूक्ष्म बात याद रहत? सभसँ नीक परिवार पर भरोसा करू।” सावित्री हुनकर दिस देखलीह। “अहाँ हमर बात ठीक सँ सुनलहुँ? हम अपना उमेरसँ भय नहि मानैत छी, मुदा अहाँक जल्दीसँ डर लगैत अछि। जँ हमरा कखनो नहि बुझाएत तँ बुझएबाक उपाय चाही। एहि प्रश्नक उत्तर हमरा आवाज हटाएब नहि थिक।” एहि बेर सरिता किछु लिखलीह नहि; पहिले किछु क्षण सावित्रीक चेहरा देखलीह।

वृद्ध किरायेदार स्त्रीक घरक छाजन फेर टपकए लागल छल। ओ सभामे नहि पहुँचि सकलीह, मुदा अपन पड़ोसिनकेँ लिखल तीन शर्त पठौने छलीह—अस्थायी ठामक पता, घरक चाभीपर हुनकर नियन्त्रण, आ मरम्मत भेलापर वापसीक सुनिश्चित दिन। मकान-मालिकक प्रतिनिधि कहलक, “जे दिन निश्चित करब, ओही दिन बरखा भऽ गेल तँ?” पद्मा उत्तर देलीह, “तखन दिन बदलबाक लिखित सूचना देब; घरपर अधिकार नहि बदलत।” प्रस्तावित स्थायी समितिक पहिल मसौदामे एहि वापसीक अधिकारक खाँज छलै नहि।

फूलमती तियर नदीक मंडपसँ भीजल ओढ़नीमे अएलीह। हुनकर जाल-समूहक हिस्सा बुनाइ, जालक पूँजी आ माछक बिक्रीमे अलग छूटल छल। ओ कहलीह, “हमरा नाम सलाहकारमे अछि, मुदा जँ माछक भाव घटत तँ घाटा हमर, निर्णय ककरो आनक। समिति जँ हमर नामसँ प्रस्ताव पारित करत तँ हम अपन असहमति लिखबाक जगह चाही।” विनोद केवर्त हुनकर बातक समर्थन कएलनि। छोट विक्रेतासभक स्थानक नक्शा

सार्वजनिक छल, मुदा ओहि नक्शाक असली प्रति घाटक लोककें एखनहुँ नियमित नहि भेटैत छल।

एक युवक समिति स्थायी भेला पर हुनका सभकें मासिक मानदेय देबाक आश्वासन देलक। रमा बजलीह, “मानदेय आवश्यक अछि, मुदा काज आ निर्णयक अधिकार अलग स्पष्ट करू।” चम्पा अपन जाँच-पर्या उठौलीह। “हमरा बैठकक दू घण्टा लेल पारिश्रमिक भेटत तँ हम अवश्य अएब। मुदा पारिश्रमिक लेल हमर मायक अनुमति बदलि नहि जाएत। आ फूलमतीक मजदूरीक मामला पर हम निर्णय देब तखन हुनकर बात सुनब, नहि तँ कागद भरि किछु नहि बदलत।”

ईशान सभाक दरबज्जा लग ठाढ़ छलाह। विद्यालयक पुरान अध्ययन-कक्ष एखन बच्चासभक साझा पाठकक्ष बनल छल; हुनका एकटा कोठरी छोड़बाक अर्थ पुरनका आदत छोड़बो छल। सरिता हुनका भीतर बैसबए कहलनि। ओ कहला, “हम एतए प्रस्ताव पढ़बाक लेल आएल छी, अध्यक्ष बनबाक लेल नहि।” मैथिली पहिनेसँ एक कोनमे बैसलीह। ओ सुनैत छलीह जे ‘विशेषज्ञक अन्तिम व्याख्या’ नामक एक नव धारा समितिक मसौदामे जोड़ल गेल अछि।

मैथिली ओहि धाराक कागद पढ़लनि। “विशेषज्ञकें प्रश्नक उत्तर देबाक अधिकार अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जकर जीवनक विषय अछि ओकर प्रतिवाद रोकबाक अधिकार नहि। हम अपन शास्त्रार्थमे ईशानक तर्कक संशोधन कएलहुँ, ईशान हमर। सहलेखनक प्रमाण सँ हमसभक अधिकार अलग स्पष्ट भेल। एतए समिति किएक अपन व्याख्याकें अन्तिम कहय?” प्रतिनिधि उत्तर देलक जे बहस अनन्त रहत। मैथिली कहलीह, “अनन्त नहि, निर्धारित समयमे खुलल। बन्द दरबज्जासँ तेज निर्णय होइत अछि, नीक आवश्यक नहि।”

अन्तिम निर्णायक प्रश्न पद्मा उठौलीह—“जँ समिति अपन सालभरक कार्य-पत्र स्वयं जाँचत, तँ ओकर गलती कियो पकड़त?” सभागृहमे कोनो तुरन्त उत्तर नहि अएल। ओहि समय संकेत-भाषा बुझनिहार एक युवती उठलीह। हुनकर संग आएल श्रवणबाधित वृद्ध सदस्यक प्रश्न ओ सभकें बुझौलीह—‘जँ बैठकक सूचना केवल माइकपर होएत तँ हम अपन असहमति कोना देब?’ पद्मा शर्माइ गेलीह; पिछिला वर्षक दुइ बैठकक लिखित

कार्यवृत्त एखन धरि ओहि सदस्यकेँ सुलभ रूपमे नहि देल गेल छल। निर्णय भेल जे लिखित सूचना, पढ़िकऽ सुनाओल प्रति आ संकेत-भाषाक सहायता तीनू पर खर्चक अलग मद राखल जाए।

रमा पुरान ताला मेजसँ उठा दरबज्जाक चाभी लग राखि देलीह। “जकरा अभिलेखक प्रति देबाक छल, तकरा देलहुँ। मुदा जँ नव चाभी समिति अपने लग राखि लेत, तँ पुरान एकाधिकार नाम बदलि लौटत।” तय भेल जे सुनवाई, प्रति-वितरण आ अपील तीन अलग सदस्यदल देखत, आ सदस्यसभक समयबद्ध फेरबदल होएत।

मतदानक पहिने सरिता कहलीह, “आजुक निर्णय सभटा सन्तोष नहि देत। वृद्ध किरायेदारक घर एखन टपकैत अछि। चम्पाक पिछिला बैठकक भुगतान एखन बकाया अछि। फूलमतीक जाल-समूहकेँ बाजारक प्रति नहि भेटल। एहि अधूरापनकेँ सफलता-प्रतिवेदनक नीचाँ नहि लुकाउ।” किछु सदस्य कहलक जे एहन खुलापनसँ प्रशासनक बदनामी होएत। सरिता उत्तर देलीह, “जतए भिजल छाजन अछि, ओतए छादन बदलनासँ पहिने पानि देखब पड़ैत अछि।”

सभाक कोनमे नन्दिनी भंडारी अपन नर्सरीक पानिक छोट मापक राखने छलीह। हुनकर प्रश्न भूमि-विवादसँ अलग छल—समितिक द्वारा बनल जलमापक उपयोगक नियम कतेक दिन धरि लागू रहत, आ जखन चौरमे पानि बदलत तखन फेर कियो मापत? ओ कहलीह, “हम उपकरण देलहुँ, निर्णय नहि। अहाँ सभ हमर नामसँ नर्सरीक जमीन बेचबाक अनुमति नहि लिखू।” ओकरा सुनि रमा मसौदाक एक पाँति बदललीह—साझा आँकड़ा देब अधिकार-त्याग नहि अछि। छोट संशोधनक स्याही फैलि गेल, मुदा बात स्पष्ट भेल।

दुपहरि समितिक मसौदा संशोधित भेल। अध्यक्षक स्थायी पदक बदला छओ महिनाक बदलैत संयोजन; वृद्धजन, श्रमिक आ किरायेदारक प्रत्यक्ष प्रतिनिधित्व; निजी दस्तावेजक उपयोग पर विशिष्ट सहमति; आ अपीलक अन्तिम निर्णय स्वतंत्र पंचायत-सुनवाईमे राखल गेल। कम्पनीकेँ मात्र छपाइ आ प्राविधिक रखरखावक सीमित काम भेटत, मूल सामग्रीक स्वामित्व नहि। प्रस्ताव सर्वसम्मत् नहि छल; दू सदस्यसभ असहमति लिखौलनि जे निर्णयमे देरी बढ़त। ओ असहमति सेहो सार्वजनिक कार्यवृत्तमे रहल।

साँझ सावित्री चम्पासँ कहलनि, “हम सभामे खूब बोललहुँ; आब हमरा घरक भीतर किछु देरि चुप रहबाक अछि।” चम्पा हुनकर पयर नीचाँ तकिया राखि अपन छँटनीक काज उठा लेलीह। अनुप दरबज्जा लगसँ पुछलक जे औषधि आनबाक जरूरत अछि कि नहि। सावित्री अपन पर्चा देखि उत्तर देलीह, “आइक लेल अछि। काल्हिक लेल पुछबै।” घरमे पहिल बेर चुप्पी आदेशक नहि, विश्रामक छल।

एहि आधुनिक घटनासँ सर्वथा अलग, प्राचीन वनाश्रमक साँझमे विदुरक पादुका उत्तरक बाट पर चढ़ि गेल छल। संजय हुनका एक छोट जलपात्र देलनि। विदुर पुछलनि जे आश्रमक पानि कतेक रहि जाएत। संजय कहलनि, “ई अहाँक हिस्साक पानि, मुदा बाटमे जे झोपड़ी अछि, ओतए घैल कम अछि।” विदुर पात्रक ढक्कन कसि कहलनि, “हम जेने जायब, बाटक लोकसभसँ पूछब। एहि पात्रक दानसँ ककरो मौन खरीदब नहि।”

धृतराष्ट्र दुआर धरि अएलाह। ओ विदुरक बाँह धरि रोकलनि नहि। “आब जँ हमर मन फेर भारी होएत?” ओ पुछलनि। विदुर कहलनि, “तखन गान्धारीक प्रश्न सुनू कुन्तीक बात सुनू, संजयक हिसाब सुनू, आ सभसँ कठिन—जकरा उत्तर देबाक अवसर पहिने नहि देलहुँ, ओकरा सुनू। हम जँ फेर अएब तँ अपन वचन सुधारबाक अधिकार सहित अएब।” धृतराष्ट्रक हथेली हवा मे किछु क्षण टिकल रहल। विदुर स्वयं ओ हाथ छूलनि आ फेर छोड़ि देलनि।

गान्धारी हुनका विदा करैत कहलीह, “अहाँ अपन विचार छोड़ि जाइत छी; मुदा ओकर गलती सुधरबाक बाट सेहो छोड़ि जाउ।” विदुरक ओसारपर राखल अंगूठी एखनहुँ हुनकर झोरामे छल। ओ ओहि अंगूठीकेँ नाला लगक माटिमे गाड़लनि नहि, नदीमे फेंकलनि नहि; केवल झोराक भीतरी कोठरीमे राखि देलनि। राजसभा केँ भस्म कऽ देब आसान प्रतीक छल, ओकर अपूर्ण हिसाबक जिम्मेदारी बचाएब कठिन। ओ उत्तर दिस चलि गेलाह; आश्रममे हुनकर खाली आसन पर कियो तुरन्त नहि बैसल।

सन २०४०क विदेहपुरमे दोसर दिन स्कूलक देवालपर समितिक संशोधित मसौदा टाँगल गेल। लिखल छल जे सभ व्यक्ति अपन अभिलेखक प्रति स्वयं लेत, ककरो निजी सहमति दोसर नहि देत, आ समिति निर्णयक अन्तिम स्वामी नहि अछि। फूलमती अपन नाम लग लाल स्याहीसँ एक त्रुटि देखलीह—जालक हिस्साक बदला नावक हिस्सा छपि

गेल छल। ओ से सुधराबए लेल पद्माकेँ नहि, सूचनापट लग राखल सार्वजनिक सुधार-पुस्तिकामे अपन हाथसँ लिखलीह। नव नियमक पहिल परीक्षा ओहि छोट शब्दमे भेल।

सुधार देखिकऽ कम्पनीक प्रतिनिधि कहलक, “एहन खुलल पन्ना सब लिखत तँ विवाद बढ़त।” रमा उत्तर देलीह, “गलत पन्ना बन्द रहितो विवाद रहैत अछि, बस ओकर आवाज नहि सुनाइत।” ओ फूलमतीक सुधारक निचाँ समय आ प्राप्ति-संख्या लिखलीह। चम्पाक भुगतानक आदेश सेहो लगल छल, मुदा बैंकमे रकम पहुँचलाक पुष्टि शेष छल; ओहि स्थान पर ‘आदेश जारी’ लिखल गेल, ‘भुगतान सम्पन्न’ नहि। वृद्ध किरायेदारक छाजनक अगिला निरीक्षणक दिन लिखल छल, घर-त्यागक निर्णय कतहु नहि।

राति ईशान अपन छोट अध्ययन-कक्षमे लौटलाह। मैथिली सार्वजनिक सूचनापटपर हस्ताक्षर कऽ अपन अलग घर गेलीह। ईशान कागदक कोनमे लिखलनि—‘त्याग कएल पदक छाया विचारपर रहि सकैत अछि।’ फेर ओ वाक्य काटि लिखलनि—‘विचार ककरो स्थायी मिलिकियत नहि।’ बाहर बच्चासभ विद्यालयक मैदानमे खेलैत छल। हुनका बुझायल जे अपन नामक महत्त्व घटब जरूरी नहि, मुदा नामसँ दोसरक मुँह बन्द करब समाप्त होएबाक चाही।

आगाँक भोरमे सरिता चाभी लऽ विद्यालय पहुँचलीह तखन ओ देखलीह जे पुरान पीतलाक ताला मेजपर एखनहुँ पड़ल अछि। ओ ताला फेंकलीह नहि; ओकरा विद्यालयक इतिहासक सामानक संग राखि देलीह। सूचनापटपर नव प्रश्न लिखल छल—‘असहमति सुनल गेलाक बाद व्यक्तिक निजी क्षमा देबाक अधिकार केकर?’ सरिता उत्तर नहि भरलीह। ओ खिड़की खोललनि। पाछाँक पोखरिसँ एक पक्षी उड़ल, आ पानि पर छोट गोल छल्ला बनि मिटैत रहल।

अध्याय १७९ • निजी क्षमा

प्राचीन वनाश्रममे बिहानक पहिल काज अनाजक माप छल। संजय बाँसक मापक झाड़ि जौक डेगची लग रखलनि। ओकर तल्लामे एकटा पुरान दरारि छल; भरलापर किछु दाना कातसँ झरैत छल। गान्धारी हाथ बढ़ा कऽ मापकक किनार छूलीह। “काल्हि एक परिचारिका अपन हिस्सा कम पड़बाक बात कहने छलीह,” ओ कहलीह। “आइ ओ एतए छथि कि नहि?” संजय कहलनि जे स्त्री नदीपर कपड़ा धोबए गेल छथि। धृतराष्ट्र अपन आसनपर बैसल सुनि रहल छलाह। विदुर उत्तर दिस प्रस्थान कऽ चुकल छलाह; खाली आसनक ठाममे आब रोजमर्राक काजक आवाज भरल छल।

संजय नव मापक अनबाक अनुमति माँगलनि। धृतराष्ट्रक मुँहसँ लगभग निकलि गेल जे राजभण्डारसँ मँगाउ, मुदा ओ रुकि गेलाह। “एतए भण्डार ककर नियन्त्रणमे अछि?” ओ पुछलनि। संजय कहला, “जिनकर श्रमसँ अन्न अबैत अछि, हुनका सभक चुनल दू लोक आ आश्रमक भण्डारिन हिसाब देखैत छथि।” धृतराष्ट्र कहला, “तखन ओही लोककेँ पुछू। हमर पहिनुक आज्ञासँ दरारि नहि भरत।” अपन स्वरक ई परिवर्तन सुनि हुनका सन्तोष नहि, एक प्रकारक अनभ्यास भेल।

नदीसँ लौटलीह परिचारिका—नाम छल सुवासा। हुनकर बेटा युद्धमे मरल छल; राज्यक मृतक-सूचीमे ओकर नाम गलत लिखल गेल छल। ओ भीजल कपड़ा निचोड़ि मापकक कात रखलीह। संजय कहला जे आइ पुरान हिसाब जाँचल जाएत। सुवासा उत्तर देलीह, “हम आनल अन्नक माप पूछए आयल छी। ओकर संग हमर बेटाक स्मृति सेहो अछि, मुदा ई दुनू एक विषय नहि। हमरा एतबा अधिकार दिअ जे जे घटल अछि ओकरा घटल लिखि सकी।” धृतराष्ट्र हुनकर आवाज सुनि सिर झुका लेलनि।

किछु कालक बाद धृतराष्ट्र कहला, “हमर राज्यकालमे अहाँकेँ अन्याय भेटल। हमरा क्षमा कऽ सकब?” सुवासा पानि सँ भीजल हथेली अपन वस्त्रमे पोछलीह। “एखन नहि,” ओ कहलीह, “आ सम्भव अछि कहियो नहि। हमर उत्तर सुनि अहाँ हमर अन्न घटाउ नहि सकैत छी, ई भरोसा चाही।” धृतराष्ट्र हाथमे धरल काठक डण्डा नीचे राखलनि। पहिने

हुनका लग क्षमा माँगब पछतावाक अन्तिम सोपान लगैत छल; आइ बुझलनि जे दोसर व्यक्तिक ‘नहि’ सेहो जीवित सम्बन्धक एक साँच उत्तर होइत अछि।

गान्धारी सुवासाकेँ अपन आसन लग बैसबए आग्रह कएलनि। सुवासा बैसलीह नहि; हुनका कपड़ा पसारबाक छल। गान्धारी हुनका रोकलीह नहि। कुन्ती भण्डारिनसँ पुछलनि जे पछिला सात दिनक माप कोन लेखामे अछि। भण्डारिन काजक बही आनलीह। पाँच दिनक मात्रा मिलल, दू दिनक नामक लग खाली चिह्न छल। दाना खसेबाक दरारि आ लिखबाक चूक—दुनूक परिणाम एकहि परिवारक भोजनपर पड़ल छल। कुन्ती कहलीह, “जतबा सत्यापित होए, ओकर भरपाई आज हो। बाकी पन्ना सभक सामने जाँचल जाए।”

दोपहरिक धूपमे एक बालक दरारिवला मापकक भीतर आँख राखि देखैत छल। ओ पुछलक, “एकर दोष ककर?” संजय ओकरा मापक उलटि देखौलनि। “काठक दरारि कियो समयपर नहि सुधारलक; बही लिखनिहार सेहो दू दिन छोड़ि देलक। एकटा दोष मानि दोसराकेँ मेटा देब तँ फेर दाना झरत।” बालक मापकक पास अपन छोट कंकड़ रखि देलक, ताकि लोक ओकर दरारि देखथि। धृतराष्ट्र ई सब सुनैत रहलाह; हुनकर हाथ पहिल बेर ककरो उत्तर बदलए नहि बढ़ल।

साँझ गान्धारी कहलीह, “हम अहाँक सेवा छोड़ि नहि रहल छी, मुदा जे निर्णय पर हमरा क्रोध अछि से कल्हु रहत।” धृतराष्ट्र पुछलनि, “एहि क्रोधसँ हमारा संग चलब कठिन नहि होएत?” गान्धारी उत्तर देलीह, “होएत। मुदा कठिनाइकेँ क्षमा कहि ढाँपब हम नहि चाहैत छी।” संजय पुरान मापक अलग रखि नव मापक सभकेँ देखौलक। दू दिनक कम अन्नक भरपाई सुवासाक परिवार धरि पहुँचल, बाकी अभिलेखक जाँच अगिला भोर लेल निर्धारित भेल। एहि सीमित सुधारक बादो युद्धक शोक ओहिना रहल।

सन २०४०क विदेहपुरमे विद्यालयक दरबज्जापर ओहि भोर सरिता एक भीजल सूचनापत्र सीधा करैत छलीह। रातिक पानिसँ स्याहीक एक शब्द पसरि गेल छल—‘क्षमा’। काल्हिक सभाक प्रश्न कियो लाल रेखासँ घेरि देने छल। पाछाँक पोखरिपर पात झरैत छल; बच्चासभ पाठकक्षक झाड़ू अपने हाथमे लेने छल। सरिता कागद उतारलनि, ओकरा फेंकलनि नहि। ओ नव कागदपर साफ लिखलनि—‘व्यक्तिगत क्षमा

देब अथवा नहि देब व्यक्तिक अधिकार अछि। अपील, बकाया आ जाँच अलग जारी रहत।’

रमा कर्णक कार्यालयमे एही दिन प्रिन्टिङ्ग कम्पनीक क्षमायाचना पहुँचल। ओकर प्रतिनिधि लिखने छल जे पहिने सभ वयस्कक डिजिटल सहमति एक व्यक्ति द्वारा देबाक प्रस्ताव अनुचित छल। संगहि नव अनुबन्धक अन्तमे एक वाक्य जोड़ल छल—‘एक बेर क्षमा स्वीकार भेला पर पूर्व विवाद समाप्त मानल जाएत।’ पद्मा ओ वाक्यपर काज रोकलीह। “क्षमायाचना हमरा सुनाएल जा सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जे वृद्धाकें घरक चाभी चाही, जिनकर मजदूरी रुकल अछि, हुनकर दावा कम्पनीक पत्रसँ समाप्त नहि होएत।”

सभाक लेल विद्यालयक ओसारपर तीन अलग मेज राखल गेल—एक पर व्यक्तिगत बयान, दोसर पर दस्तावेजक जाँच, तेसर पर वास्तविक भुगतान। सरिता कहलीह, “एतए कियो क्षमा देबाक परीक्षा नहि दैत। चाही तँ नाम बिना अपन प्रतिक्रिया दियौ।” चम्पा अपन माय सावित्रीक हाथ पकड़ि भीतर अएलीह, मुदा हुनका लेल उत्तर लिखलीह नहि। सावित्री कहलीह, “हमर सीमित मेलायात्राक अनुमति जँ गलत ढङ्गे छापल गेल, तँ पत्रमे सुधार चाही। जे युवक हमर बात बीचमे काटने छल, ओकर माफी सुनि सकैत छी; मुदा निर्णयक अधिकार ओकरा नहि देब।”

चम्पाक पिछिला समितिक दू घण्टाक मेहनतानाक आदेश फाइलमे छल। बैंकक पंक्ति एखन खाली छल। प्रिन्टिङ्ग कम्पनीक प्रतिनिधि सभाक सामने हाथ जोड़ि कहलक, “हम सभक मन दुखेने छी। एक बेर सभ हमरा माफ कऽ दिअ, तखन नव वर्षसँ नीक काज करब।” चम्पा कहलीह, “हम अहाँक स्वर सुनलहुँ। हमर मजदूरी अहाँ नहि रोकने छी, तँ अहाँक माफी हमर भुगतानक प्रमाण नहि। मुदा अहाँ जे निजी फोटो उठाएबाक शर्त लिखने रही, ओकरा दस्तावेजसँ हटाउ।” ओकर स्वरमे न कठोर विजय छल, न समझौताक उत्साह।

ओहि समय गौरी कपरिया दुआरपर अपन पुरान तिरपालक बाँधल गठरी रखलीह। संग रेवा गुलगुलिया, जानकी आ दू घुमन्तु समूहक प्रतिनिधि अएल छला। महीना पहिने फाटक लग लाल निशान देखिकऽ गौरी खतरनाक पटरीसँ लोक हटौने छलीह। तखन

सुरक्षित वैकल्पिक ठामक निरीक्षणक प्राप्ति भेटल छल; स्थायी अधिकार नहि। निरीक्षणक सूचीमे आब लिखल छल—‘समूह स्वेच्छासँ स्थान छोड़लक’। गौरी कागद उठा कऽ कहलीह, “हम संकटवला पटरी छोड़लहुँ। ई नहि लिखलहुँ जे फेर ओतए कहियो दावा नहि करब।”

नगरक एक कर्मचारी अपन पहिनुक कठोर व्यवहार लेल माफी माँगलक। “ओहि राति हम सभ डरमे जल्दी आदेश देलहुँ,” ओ कहलक। रेवा उत्तर देलीह, “डर उचित रहि सकैत छल। मुदा हम सभकेँ पूरा पथारसँ हटेबाक धमकी देब उचित नहि। हमर बच्चाक परीक्षा छूटल, ओकरा माफ कएलहुँ कहि फेर परीक्षा देबाक दिन नहि भेटत।” कर्मचारी नजरि झुका लेलक। गौरी कहलनि, “हम ओकरा माफ करब कि नहि, से व्यक्तिगत बात अछि। आज आपत्तिक गलत पंक्ति सुधरब आवश्यक अछि।”

जानकी लग एक वृद्धा सरयूक कागद छल। सरयू दूर धरि चलि नहि सकैत छलीह। प्रस्तावित शिविरमे हुनकर नाम ‘आश्रय-निवासी’ लिखल छल, जखनकि ओ केवल दुइ रात्रि लेल सुरक्षित ठाम माँगने छलीह। जानकी कहलीह, “ककरो राति कटेबाक लेल छप्पर चाही तँ स्थायी निवासीक नाम किएक जोड़ल जाए? ई नाम बदलबाक काम अछि।” रुहानी, जे आश्रयक व्यवस्था देखैत छलीह, सहमति देलीह। “हमर भवनक खाट खाली अछि, मुदा ओहि खाटक बदला ककरो यात्राक स्वामित्व नहि लएब।”

गौरी सभकेँ छोट गठबन्धनक मसौदा पढ़ि सुनौलीह। उद्देश्य तीन छल—सुरक्षित अस्थायी पड़ावक संयुक्त माँग, जबरन बेदखलीक विरुद्ध समयपर लिखित सूचना, आ बच्चासभक पढ़ाई आ बीमार लोकक उपचारक बाट। एहि मसौदामे समूहक सब परिवारक यात्रा एकहि राहसँ करबाक निर्देश नहि छल। रेवा चाहैत छलीह जे हुनकर बेटी परीक्षा धरि ओही नगरमे रुकय; जानकी सरयूक स्वास्थ्यक कारण उत्तर दिसक हाट छोड़ब चाहैत छलीह। गौरी स्वयं दोसर बजारक अस्थायी काज देखबाक इच्छुक छलीह।

“गठबन्धन बनत तँ नेता कियो चाही,” एक युवक कहलक। “गौरी सभक नामपर सही कऽ देखिन।” गौरी कलम मेजपर राखि देलीह। “हम संयुक्त आपत्ति पर हस्ताक्षर करब, मुदा ककर परिवार कतए रहत, से हम नहि चुनब। हमरा अपन बाट चुनबाक अधिकार चाही तँ रेवा आ जानकीक बाट किएक छीनब?” पद्मा प्रस्तावकेँ तीन विभागमे बाँटि

लिखलीह। साझा बाटक निर्णय साझा; निजी यात्रा व्यक्तिगत; चिकित्सकीय जानकारी केवल सम्बद्ध व्यक्तिक अनुमति सँ। युवक पुछलक, “एहिसँ काज धीमा नहि होएत?” गौरी उत्तर देलीह, “होएत, मुदा गलत गति पर सभसँ पहिले गरीबक सामान टूटैत अछि।”

दुपहरि कार्यालयक पुरान निरीक्षक अएलाह। हुनका याद छल जे लाल निशानक एक भाग तकनीकी दलक सीमा सँ बाहर बढ़ि गेल छल। ओ स्वीकार कएलनि जे हुनकर कार्यालय जाँच बिना व्यापक खाली करबाक सूचना टाँगने छल। गौरी कहलनि, “अहाँ माफी मँगू, से अहाँक अधिकार। हम सुनब, से हमर। मुदा पहिने ओ नोटिसक परिशिष्ट देखाउ।” निरीक्षक मूल नापक प्रति राखलनि। खाली कराओल पटरीक एक हिस्सा वास्तविक संकट-क्षेत्र छल; दोसर हिस्सा बिना आवश्यक नापक जोड़ल गेल छल। एहि भेदक दस्तावेज परिशिष्टमे स्वीकार कएल गेल।

साझा नाप-बहीक पाछाँ नया सीमा-चित्र बनल। संकट-भागमे राति रहबाक मनाही स्वास्थ्य-सुरक्षाक कारण जारी रहल। ओहिसँ हटाएल परिवारसभकेँ तीन दिनक भीतर सुरक्षित अस्थायी ठाम चुनबाक सूची भेटत, ई लिखल गेल। मुदा प्रस्तावित गोदाम-पथारक जमीन पर तेसर पक्षक दावा छल, तँ ओकरा तुरन्त वैध बसेरा घोषित नहि कएल गेल। गौरी निर्णय पढ़ि कहलीह, “ई पूर्ण समाधान नहि, मुदा ‘सभ हटि गेल’ वला झूठ पंक्ति एखन सुधरल अछि।” रेवा अपन बेटी लेल विद्यालयक समय-अनुसार यात्रा-सहायता मँगलीह।

सभा चलि रहल छल तखन सरिता अपन बेटी नैराक पुरान नाम देखलीह। नैराक ठेका रोकल जएबाक समय हुनकर निजी सहायता लेल जे कागद बनल छल, ओहि पन्नाक प्रतिलिपि कियो सामुदायिक हितक प्रमाण कहि लगौने छल। नैरा आब जीवित नहि छलीह। सरिता पत्र हटौलीह नहि; ओकर शीर्षकक नीचाँ ‘निजी सहायता, सरकारी प्रमाणन नहि’ लिखवौलनि। कियो कहलक, “हुनकर स्मृतिमे विवाद छोड़ि दिअ।” सरिता उत्तर देलीह, “स्मृति सँ सत्य घटेबाक अनुमति नहि भेटैत। मृत व्यक्तिक सम्मान लेल हुनकर सही काजकेँ सही नाम देब आवश्यक अछि।”

अनिरुद्ध सभामे नहि छलाह; हुनका सँ सम्बन्धित पुरान तकनीकी जाँचक पत्र अलग फाइलमे छल। एक सदस्य सुझाव देलक जे सरिताक व्यक्तिगत शोकक कारण ओहि

फाइल पर बहस बादमे करब। सरिता कहलीह, “हम नैराकें वापस नहि पाबि सकैत छी। ककरो व्यक्तिगत माफी सुनबाक समय हमर मन तैयार अछि कि नहि, ई हम तय करब। मुदा जाँचमे जे अधिकारीक सही, निरीक्षणक समय आ टूटल संरचनाक कागद अछि, ओकरा विलम्ब करब हमर शोकक सम्मान नहि।” रमा सुनवाईक तिथि यथावत रखलीह; निष्कर्ष आगाँक प्रमाणपर निर्भर रहल।

सरिताक चुप्पी देखिकऽ कबीर सामने नहि आएल। ओ विद्यालयक पाछाँ बच्चासभक टूटा पाटी ठीक करैत छल। एक बच्ची पुछलक, “बाबूजी, जँ कियो गलती मानि लेत तँ सब ठीक भऽ जाएत?” कबीर पट्टीक ढील कील ठोकैत कहलनि, “किछु बात ठीक करबाक मौका भेटैत अछि, किछु हानि फेर घुरि नहि सकैत। आ किछु लोक माफी देताह, किछु नहि। जे पाटी टूटल अछि से ठीक करब हमर काज अछि; जकर चोट लागल, ओकर उत्तर हम नहि लिखि सकैत छी।” बच्ची अपन खड़िया उठा फेर अक्षर बनबए लगलीह।

साँझ मैथिली विद्यार्थीसभक संग सूचनापट देखए अएलीह। ईशान सेहो छलाह, मुदा दुनू अलग-अलग बाटसँ आएल छलाह। एक विद्यार्थी पुछलक जे क्षमा नैतिक कर्तव्य अछि कि नहि। मैथिली कहलीह, “कहियो क्षमा व्यक्तिगत मुक्तिक बाट बनैत अछि। कहियो नहि करब अपन सत्यक रक्षा। जखन शास्त्रार्थमे ‘चाहिए’ कहैत छी तँ प्रमाण आ परिस्थिति देखबाक चाही। जकरा चोट लागल छैक, ओकरा पाठ्यपुस्तकक निष्कर्ष सुनाकऽ बाध्य नहि करब।” ईशान जोड़लनि, “गलती मानब आ ओकर दाम चुकाएब माफी भेटबाक शर्त पर निर्भर नहि।”

प्रिन्टिङ्ग कम्पनीक प्रतिनिधि फेर आयल। ओ चाहैत छल जे साझा गठबन्धनक सूची कम्पनीक सर्वरमे चढ़ि जाए, जाहिसँ सरकारी सहायताक वितरण जल्दी होए। गौरी अपन बही बन्द कएलनि। “हम यात्रा करैत लोकक नाम सार्वजनिक संग्रहमे नहि देब,” ओ कहलीह। “आवश्यक सम्पर्कक सहमति अलग उपलब्ध कराएब। सभ परिवारक ठाम, बच्चाक स्कूल, रोगक विवरण एकत्र करब एहिप्रकारक सहायताक शर्त नहि बनि सकैत।” रुहानी समर्थन कएलीह; आश्रयक खाली खाटक संख्या साझा होएत, रहनिहारक निजी जीवनक सूची नहि।

नव गठबन्धनक कागदपर गौरी, रेवा, जानकी आ आन प्रतिनिधिसभ अपन-अपन नाम लिखलनि। गठबन्धन केवल नोटिसक सुधार, संकट-वेला यात्रा-सहायता आ समयबद्ध सुनवाई लेल बनल। गौरी अलग पंक्तिमे लिखलनि जे ओ अगिला सप्ताह दक्षिणी हाटमे तिरपाल-मरम्मतिक काम देखबाक जाएतीह; गठबन्धन हुनकर अनुपस्थितिमे सेहो चुन्नल सदस्यसभसँ चलत। रेवा बेटीकेँ परीक्षा धरि नगरमे राखतीह। जानकी सरयूक आरामक अनुसार बाट बदलतीह। एतेक छोट अन्तर सुरक्षित करब गठबन्धनक पहिल कठिन सफलता छल।

कार्यवृत्त पढ़ैत पढ़ा एक विशेष पंक्ति जोड़लीह—कर्मचारीक व्यक्तिगत क्षमायाचना स्वीकारल अथवा अस्वीकारल गेल हो, ताहिसँ गलत बेदखली-सूचना, वास्तविक क्षति, तिरपालक सामान आ बच्चाक पढ़ाइक बाधाक प्रशासनिक जाँच बन्द नहि होएत। रमा कर्ण आदेशक प्राप्ति-संख्या लिखलीह। तिरपाल-मरम्मतिक खर्चक तीन रसीद सत्यापित भेल; ओकर भुगतानक आदेश जारी भेल, मुदा बैंकमे रकम एखन पहुँचल नहि छल। गौरीक दुआरपर दोसर आरोप लगएबाक कोनो प्रमाण नहि भेटल; एहि सीमित बातक उल्लेख सेहो स्पष्ट राखल गेल।

सूर्य ढलैत गौरी अपन तिरपालक गठरी उठौलीह। चम्पा हुनका आश्रयक खाटक प्रस्ताव फेर सुनौलीह, एहि बेर लिखित नियम सहित। गौरी कहलीह, “राति पड़ला पर जँ जरूरत होएत तँ हम पूछब। मुदा हम सभ आश्रयक बाहर रहैत छी तँ सहायता योग्य नहि, एहन नहि मानू।” चम्पा उत्तर देलीह, “खाट लेल आज हँ अथवा नहि कहबाक बाध्यता नहि। संकट भेला पर फेर सहमति लेल जाएत।” रुहानी ओहि वचनकेँ अपन बहीमे लिखलीह; भवनक सेवा आ व्यक्ति अपन जीवनक निर्णय एक वस्तु नहि।

प्राचीन वनाश्रमक दोसर भोरमे सुवासा फेर अन्नक घर अएलीह। संजय पिछिला दू दिनक गायब मापमे सँ एकक साक्ष्य जुटा लेने छलाह; दोसरक कागद नहि भेटल। धृतराष्ट्र हुनकासँ क्षमाक उत्तर फेर नहि पुछलनि। सुवासा कहलीह, “आइ हम अपन बहीक प्रति लेब।” गान्धारी हुनका नव मापक छूएबाक आग्रह नहि कएलनि; केवल कहलनि, “जँ कतहु फेर गलती देखब, कहब।” सुवासा उत्तर देलीह, “कहब। अहाँ सभ सुनब कि नहि, तकरा फेर देखब।” ओ पानिक घैल लऽ अपन बाट बढ़लीह।

सन २०४०क विदेहपुरमे अगिला भोर सरिता विद्यालयक सूचनापटपर तीन नव कागद टाँगलीह—दुरुस्त कएल बेदखली-सूचना, गठबन्धनक सीमित सार्वजनिक उद्देश्य, आ अपीलक अगिला दिन। कागदक कात व्यक्तिगत क्षमा स्वीकार करनिहारक नामक कोनो सूची नहि छल। पाछाँक पोखरिक पानि एखनहुँ टलमला रहल छल। गौरी दूरक बजार धरि चलि गेलीह; रेवा परीक्षा-कक्षक बाहर बेटीकेँ छोड़ए अएलीह; जानकी सरयूक लेल हवादार ठाम खोजैत छलीह। रुहानी आश्रयक बाहर ठाढ़ हुनका सभक अलग बाट देखलीह। हुनका बुझायल जे अगिला प्रश्न खाली खाट भरबाक नहि, खाटक बाहर अपन जीवन चुननिहारक अधिकारक अछि।

अध्याय १८० • आश्रयक बाहर

सन २०४०क विदेहपुरमे आश्रयक बाहर बिहानसँ पहिने एकटा चटाई उधारल गेल। बाँसक अर्धचन्द्राकार पसली हवा लागिते काँपि उठैत छल, आ ओहि पसलीकें सीधा राखबाक लेल हीरावती कुररियार अपन घुटना ओकर ऊपर दबौने छलीह। बरखा रातिभरि छाजनक कोना चूआने छल। भीतर बारहटा खाट छल, मुदा हीरावतीक औजार, ग्राहकक फाटल थैला आ दू अधसील चटाई बाहरक ओसारमे पसरल छल। रुहानी दरबज्जा खोलि देखलीह तँ पुछलीह, “राति एतहि कटौने छी?” हीरावती उत्तर देलीह, “काज एतहि छल; हम पाछाँक हाटमे सुतल रही। कामक ठामकें घर लिखि नहि देब।”

रुहानीक हाथमे आश्रयक नव पंजी छल। पहिनुक पन्नापर ‘आवास-लाभार्थी’क संख्या बढ़ल देखाएलासँ अगिला अनुदान भेटबाक सम्भावना छल। मुदा पन्नामे चटाई मरम्मत करनिहार, राति लेल खाट माँगनिहार, आ आश्रममे स्थायी निवास चाहनिहार—तीनूकें एक्के नाममे जोड़ि देल गेल छल। हीरावती अपन नापल चटाई देखबैत कहलीह, “ई काजक पावती अछि, रहबाक निवेदन नहि। जे दिन हम दू रात्रि लेल खाट माँगब, ओहि दिन अपन नाम कहब।” रुहानी पुरान पन्नापर लाल रेखा खींचलीह, मुदा फाड़लीह नहि। गलत गिनतीक इतिहासो जाँचक वस्तु छल।

ओसारक पाछाँ रुखसाना चूल्हि जरा रहल छलीह। भीजल लकड़ीसँ उठैत धुआँमे चाउरक भाप मिसिरा गेल छल। रुहानी हुनकासँ पुछलीह जे आश्रयक बाहर भोजन पाबयवाला लोकक हिसाब कोना राखल जाए। रुखसाना कहलीह, “भोजनक थारी गनू; थारी उठौनिहारक समस्त जीवन नहि। जे दिन हम ककरो भात दैत छी, ओकर घरक इतिहास नहि माँगैत छी।” चम्पा माइक औषधिक थैली लऽ पहुँचलि तँ देखलीह, नया फाराममे ‘स्वेच्छासँ आश्रय स्वीकार’क घरक निचाँ सूक्ष्म अक्षरमे ‘स्थायी पुनर्वासक माँग नहि करब’ छपल अछि। ओ फाराम दुआरक चौकीपर रखि देलीह।

हीरावती चटाईक एकटा गाँठ कसैत कहलीह, “हमर घूमैत काज लेल दुपहरि धरि सुरक्षित ठाम चाही। ग्राहक एतहि पहुँचैत छथि। मुदा एहि छोट ठामक बदलामे भविष्यक घरक अधिकार त्यागब—ई सौदा नहि।” रुखसाना पुछलीह, “तखन लिखल की जाए?”

“अस्थायी कार्यस्थल,” हीरावती उत्तर देलीह, “दिन आ समयसहित। सामान राखबाक जिम्मेदारी जकर, ओकर नामो। बरखा फेर एतए आएत; तखन कियो कहत जे हम बेदखल भेलहुँ, जखनकि हम ग्राहकक घर चटाई देबए गेल रहब।” रुहानी नव पंक्तिक कात अपन सही कएलनि, सम्पूर्ण समाधानक ठप्पा नहि लगौलनि।

दुपहरिसँ पहिने जानकी वृद्धा सरयूकेँ हाथ धरि लऽ अएलीह। सरयूक पएरक सूजन घटल छल, मुदा दीर्घ बाट चलब सम्भव नहि छल। आश्रयक कर्मचारी फेर हुनक नाम स्थायी निवासीक कोठरीमे लिखने छल, कारण पिछिला बेर ओ दू राति ओतए ठहरल छलीह। सरयू कुर्सीपर बैसैत कहलीह, “हमर बेटीक घरक ओसार टूटल अछि, से ठीक होएत तखन ओतहि रहब। एतए खाट नीक अछि, मुदा खाट हमरा नामक बदला नहि।” जानकी चाहैत छलीह जे उपचार आ जल उपलब्ध रहय; ओ सरयूक उत्तरकेँ अपन सुविधाक कारण बदललीह नहि।

रुहानी सरयूसँ चारि प्रश्न अलग-अलग पुछलीह—आइ राति कतए रहए चाहैत छथि, उपचार लेल ककरा सम्पर्क करब उचित, कोन जानकारी सार्वजनिक नहि हो, आ निर्णय फेर कखन पुछल जाए। सरयू एक-एक उत्तर देलीह। बीचमे थाकि जल पीब माँगलीह; कागदक जल्दीसँ हुनका दबाओल नहि गेल। ओ कहलीह, “आइ राति एतए; परसू बेटी लग जएबाक मन अछि।” कर्मचारीक चेहरापर असन्तोष छल। ओकरा हर दिन नव सही चाही, मुदा एक बेरक स्थायी प्रविष्टि आसान छल। रुहानी कहलनि, “कठिन कामक मूल्य बजटमे लिखब, व्यक्तिक इच्छा कागदक सुविधा लेल नहि बदलब।”

ओहि बीच नगर-उत्सव समितिक दू सदस्य बाजाक ध्वनि जाँचैत पहुँचला। अगिला मास यादवसभक उत्सव सार्वजनिक मैदानमे होएबाक छल। आयोजक कहैत छल जे आश्रयक कोठरी खाली रहला पर बाहरी कलाकारसभकेँ सभदिन ओतहि राखल जाए। पहिल प्रस्ताव सुनिते सहायता-शिविरक युवक ताल ठोकलक—“निःशुल्क खाट देब, बदला कलाकार लोकहितमे मंच संभालथु।” रुहानी पुछलीह, “आश्रयक खाट संकटग्रस्त लोक लेल निर्धारित अछि, तखन उत्सवक आवास ककर अनुमति सँ बनत? कलाकारक श्रमक दाम के देत?” सदस्य दूटा जवाब नहि दऽ सकला।

ठीक तखन चन्द्रा बादी अपन घुँघरूवला डब्बा आ पुरान भुगतान-पर्ची लऽ अएलीह। पोस्टरक नमूना देखिते हुनकर मुख कठोर भऽ गेल। ओकर ऊपर लिखल छल—‘बादी जातिक परम्परागत नृत्य, समस्त स्त्री कलाकार उपस्थित’। चन्द्रा कागद मोड़लीह नहि; सभकेँ देखए देलीह। “हम गायन आ ताल-प्रशिक्षण करैत छी। नाचब कि नहि, गीत कोन गाएब, कतेक बेर गाएब—ई हम तय करब। हमर जाति कोनो सामूहिक अनुबन्ध नहि।” युवक हँसि कऽ कहलक, “दर्शक लोक तँ एहने अपेक्षा रखैत अछि।” चन्द्रा उत्तर देलीह, “दर्शकिक अपेक्षा हमर शरीरक मालिक नहि।”

रुखसाना चन्द्राक लेल पीढ़ी सरकौलीह। चन्द्रा पुरान लोकपाठक आधा बकाया-पर्ची खोललीह; पहिल किस्त भेटि चुकल छल, शेषक प्राप्ति एखन खाली छल। “पुरान दाम चुकौने बिना नव पूरा रातिक अनुबन्ध नहि,” ओ कहलीह। समितिक सदस्य तुरन्त गीतक बदलामे ‘आश्रयक सेवा’ लिखबाक प्रस्ताव देलक। हीरावती नाप-फीता समेटैत पुछलीह, “हम चटाई बनाबी तँ वस्तुक दाम; ओ गीत गाबथि तँ सेवा? ई हिसाब के पढ़ौने अछि?” आश्रयक दुआरपर पहिल बेर हँसी उठल, मुदा चन्द्रा हँसलीह नहि। हुनका दोसर बेर अपन नाम बचएबाक पड़ि रहल छल।

रुहानी दूटा कागद तैयार करौलीह। पहिलमे उत्सव समितिसँ पुरान कार्यक्रमक देय जाँचि निर्धारित भुगतान-तिथि लिखबाक माँग छल। दोसरमे चन्द्राक प्रस्तावित प्रस्तुति—दू गीत, एक ताल-प्रशिक्षण, बीचमे विश्राम, रिकॉर्डिंगक अलग अनुमति, आ यात्रा-मजदूरीक दर—स्वयं चन्द्रा कहि-कहि लिखबौलीह। “जँ भुगतानक रकम आ समयपर सहमति नहि बनत तँ हम मंचपर नहि जाएब,” चन्द्रा अन्तमे जोड़लीह। रुहानी ओकरा मेटौलीह नहि। नव कार्यक्रम लेल कोनो अनुबन्ध एहि दिन सम्पन्न नहि भेल; चन्द्रा अपन पर्ची पेटीमे राखि लेलनि।

धीरे-धीरे घनघोर बरखा फेर शुरू भेल। चटाईक कोनसँ जल टपकैत देखिकऽ हीरावती पट्टी फेर सीबए लगलीह। कातमे ठाढ़ एक युवती पुछलक, “अहाँकेँ स्थायी घर नहि चाही?” हीरावती धागाक गाँठ पूरा कएलीह। “चाही,” ओ कहलीह, “मुदा एहन घर जाहिमे अपन काम राखि सकी, आ जखन दोसर हाट जाउ तँ लौटबाक अधिकार रहय। एतएक दू घण्टाक ओसार देखाकऽ जँ कियो कहय जे स्थायी घरक माँग पूरा भेल, तँ ओ

झूठ।” रुहानी कामक ठामक अस्थायी स्वीकृति लिखि देलीह; जमीनक दीर्घकालीन पट्टा आ आवासक दावा ‘जाँचाधीन’ रहि गेल।

एहि बातपर एक नगरकर्मि प्रतिवाद कएलक। ओकर कहना छल जे आश्रयक बाहरक हर गतिविधिक खर्च संस्थाक नामपर बढ़त; अनुदानदाता भवनमे भरल खाटक प्रमाण चाहैत छथि। रुहानी अपन चाभीक गुच्छा ओकर सामने राखलीह। “एहि गुच्छासँ हम कोठरी खोलि सकैत छी,” ओ कहलीह, “ककरो भविष्य बन्द नहि करि सकैत छी। खाटक संख्या सँ सेवा गनल जाए; बाहर देल भोजन, औषधि आ अस्थायी कार्यस्थलक काज अलग गनल जाए। अनुदान घटत तँ वास्तविक कमी सार्वजनिक लिखब।” कर्मचारी पुछलक, “तखन आश्रयक महत्त्व की?” “जे बाहर रहैत अछि ताहू लेल दुआर खुलल रहब,” रुहानी उत्तर देलीह।

प्राचीन वनाश्रमक साँझमे संजयक हाथसँ पातर काठक कटोरी खसि पड़ल। ओकर भीतरक तिल दलानपर बिखरि गेल। धृतराष्ट्र आवाज सुनि पुछलनि जे भोजन ककर भागक छल। संजय कहलनि, “आश्रमक पास रहनिहार वृद्ध वनवासी अरुणाक लेल छल। ओ आज भीतर नहि अएलीह।” गान्धारी दुआर धरि गेलीह। काठक बाड़क कात अरुणा अपने बनाओल छोट चूल्हिक पास बैसलि छलीह। ओ आश्रमक सामूहिक रसोइमे दिनमे काज करैत छलीह, मुदा राति अपन माटिक घर छोड़ि ओतए रहब नहि चाहैत छलीह।

गान्धारी पुछलीह, “घरक छाजन झड़ि रहल अछि; भीतर सुरक्षित कोठरी अछि। अहाँ किएक नहि अबैत छी?” अरुणा अपन चूल्हिक राख हिलौलीह। “एहि घरमे हमर पतिक लकड़ीक आसन छल; घर झड़ैत अछि, तँ मरम्मति चाही। राति आश्रममे बिताबी, जँ तूफान उठय। मुदा घर छोड़ि देबाक प्रतिज्ञा नहि करब।” गान्धारी अपन राजप्रासादक विशाल कोठरी याद कएलीह। ओ अरुणाकेँ वनक सादगीक पाठ पढ़ए नहि बैसलीह। “छाजनक बाँस अनबाक मदद चाही?” केवल एतबा पुछलीह।

अरुणा कहलनि, “बाँस चाही, मुदा जहियासँ आश्रम मचान बनौलक, ओहि दिनसँ हमर पानिक पुरान बाट बन्द अछि।” संजय, जे कटोरी उठा कऽ पहुँचने छलाह, पहिल बेर पानिक छोट खाँड़ देखलनि। ओ कहला, “मचान सार्वजनिक काजक अछि।” अरुणा हाथसँ कोरि देखौलीह जे वर्षाक पानि आब हुनकर घरक नीचाँ जमैत अछि। धृतराष्ट्रक

लग बात पहुँचलीह तँ ओ आदेश देबाक आदतसँ कहब चाहलनि—मचान हटाउ। फेर रुकि गेलाह। वनवासिनीक घर आ आश्रमक अन्न-भण्डार दुनूक सुरक्षा देखबाक छल; केवल बूढ़ राजाक आदेशसँ समाधान नहि बनत।

दोसर भोर कुन्ती, संजय, अरुणा आ आश्रमक दू श्रमिक मिलि पानिक ढलान जाँचलनि। गान्धारी हाथसँ माटिक ठण्डक बुझैत छलीह। मचानक एकटा बाँस सरकौला पर जल पुरान खाँड़क दिस घुरल, मुदा भण्डारक ओसार छोट करबाक पड़ल। संजय लेखामे आधा दिनक श्रम आ नव खूँटाक लागत अलग लिखलनि। अरुणा अपन घरमे रहबाक निर्णय पर कायम रहलीह। तूफानक राति आश्रमक कोठरी खुलल रहत, ई निश्चित भेल। वनाश्रम हुनकर जीवनक एक सम्भावित सहायता बनल, एकमात्र मान्य आवास नहि।

धृतराष्ट्र अरुणाकेँ सामने बजबौलनि नहि। ओ स्वयं हुनकर दुआर धरि संजयक संग गेलाह। “हम जे एक समय सभक हित कहि निर्णय लैत रही, ओकर छाया एतयो देखैत छी,” ओ कहलनि। अरुणा उत्तर देलीह, “हमरा अहाँक छायासँ बेसी पानि हटबाक बात चाही छल। आब बात बनल अछि। बाँसक हिसाब सही राखू, फेर हम देखब जे कतय गलती अछि।” धृतराष्ट्रक हाथ माटिक बाड़पर टिकि गेल। हुनका बुझायल जे त्यागक मार्ग सेहो दोसरक घरक दुआरपर आबि रुकि सकैत अछि। एहि प्राचीन दृश्यक निर्णय ओतहि पूरा भेल।

सन २०४०क विदेहपुरमे तकर दोसर दिन आश्रयक बाहरक सूचनापटपर नवा चार खाना बनल छल—रात्रि-निवास, आपात-सहायता, अस्थायी कार्यस्थल, आ अपील। रुहानी अपने लिखल नामसभ पढ़ि देखलीह। सरयू केवल दू रातिक खाटक अनुमतिसहित दर्ज छलीह; हीरावतीक चटाई मरम्मतक ठाम एक सप्ताहक दिन-समयसहित; गौरीक गठबन्धनक उद्देश्यमात्र सार्वजनिक; चन्द्राक प्रस्तावित कार्यक्रमक शर्त अलग गोपनीय फाइलमे। ककरो निजी उपचार-विवरण दुआरपर नहि छल। मुदा चारू खानाक माथपर छपाइ कम्पनीक चिन्ह छापल छल, जे कियो अनुमति नहि देने छल।

छपाइ ठेकेदार कहलक जे ई छोट चिन्ह बदला कम्पनी मुफ्त सूचना-पट्टी देत, आ उत्सवक राति भवनपर अपन प्रचारक पर्दा लगाओत। रुखसाना पुछलीह, “तखन लोग

आश्रयक दुआर खोलबाक पहिले कम्पनीक नाम पढ़त?” रुहानी पट्टी उतारि लेलनि। कम्पनीकेँ साधारण कामक दाम देबाक प्रस्ताव बनल, प्रचार-अधिकार नहि। बजटमे एहि खर्चक बदला नव रंगक सजावट काटब पड़ल। चम्पा कहलीह, “पर्दाक चकाचौंध घटत, मुदा दरबज्जाक अर्थ सुरक्षित रहत।” सजावटक घाटा पंजीमे लिखल गेल, ककरो अदृश्य श्रमसँ पूरा नहि कएल गेल।

हीरावतीक पहिल चटाई तैयार भेल तँ एक ग्राहक ओकर किनार छूकि कहलक, “जँ ई ठाम साप्ताहिक अछि तँ अगिला बेर अहाँकेँ कोना खोजब?” हीरावती अपना हाथसँ लिखल छोट पर्ची देलीह—काजक दिन, ग्राहकक जमा-सामानक पावती, आ स्थगित भेल दिनक वैकल्पिक भेटघाटक ठाम। ओ कहलीह, “हमर बाट बदलत, मुदा जकर चटाई लेब से घुराएब। हमर कामक भरोसा स्थिर, ठाम सदा एक नहि।” ग्राहक माप मुताबिक दामक पहिल हिस्सा देलक। रुहानी पर्चीक नकल लएबाक चाहलीह तँ हीरावती स्पष्ट कएलीह जे ग्राहकक नाम सार्वजनिक नहि हो।

एहि छोट अग्रिमसँ हीरावती नव बाँस किनलीह। पाछाँक सुरक्षित ओसारक एक सप्ताहक अनुमति लिखित भेटल; ओकर बदलामे दिनभरि निःशुल्क चौकीदारीक पुरान शर्त हटाओल गेल। मुदा स्थायी घरक प्रश्न नगरक जमीन-जाँचमे अटकल रहल। हीरावती एहि अटकलपर विजयक हल्ला नहि कएलीह। ओ अपन झोरा समेटि पुछलीह, “जाँचक अगिला दिन कखन?” पद्मा तारीख आ अपीलक प्राप्ति-संख्या लिखि देलीह। हीरावती कागद सीबएवाला मोट सूतक संग रखलीह, जाहिसँ बारिशमे गलि नहि जाए।

चन्द्राक गीतक प्रश्न फेर उठल। समितिक एक महिला कहलनि, “अहाँ गाबब तँ नारी-सम्मानक सन्देश जाएत; एतेक शर्त किएक?” चन्द्रा अपन घुँघरू निकालि मेजपर राखलीह। “नारी-सम्मानक नामपर स्त्रीक पारिश्रमिक घटेबाक बात नहि करब,” ओ कहलीह। “जँ हम एक गीत गाबी, ओ गीत हमर चुनल होएत; बीचमे कोनो प्रस्तुतकर्ता जाति देखाकऽ नाचबाक आग्रह नहि करत।” महिला पहिने खिसिआलीह, फेर नव पोस्टरमे ‘चन्द्रा बादी—गायन आ ताल-प्रशिक्षण’ नाम पढ़ि सहमत भेलीह। पुरान बकायाक समयबद्ध भुगतान-पत्रपर आयोजकक सही भेटल, रकमक पुष्टि शेष रहल।

रुहानी स्वयं चन्द्राकैँ प्रस्तावित मंचक ठाम देखए लऽ गेलीह। मैदानमे पोखरिक दिस ढलान छल; पाछाँक पथ सँ कलाकार आ दर्शक दुनू प्रवेश करबाक चाहैत छल। चन्द्रा कहलनि, “मंचपर चढ़बाक लेल लोकक बीच धक्का सहए पड़त तँ गीतक राग पहिनहि टूटत।” ओ एकटा पृथक आवागमन-पथ, जलक घैल, आ विरामक कोठरी चाहलीह। उत्सवक स्वयंसेवक पुछलक जे एहिसँ खर्च बढ़त। रुहानी कहलनि, “खर्च बढ़बाक बात सत्य अछि। तँ उत्सवक बजट बनाउ; आश्रयक आपात खाट उधार लऽ कऽ खर्च छिपाउ नहि।” आयोजकक दल प्रस्ताव फेर देखबाक लेल लऽ गेल।

गौरी दक्षिणी हाटसँ दू दिनक काम पूरा कऽ घुरलीह, मुदा आश्रयमे ठहरलीह नहि। हुनका गठबन्धनक परिशिष्ट पढ़बाक छल। रेवा बेटीकैँ परीक्षाक बाद अपन परिवार लग लऽ जाएबाक दिन चुनने छलीह; जानकी सरयूक विश्राम पूरा होएबाक प्रतीक्षा करैत छलीह। गौरी पुछलीह, “हम नहुँ तखन गठबन्धनक बैठक भेल?” पद्मा अपन कार्यवृत्त देखौलीह। प्रतिनिधिसभ लिखित आपत्ति दायर कएने छलाह, मुदा निजी यात्रा-निर्णयपर कोनो मतदान नहि भेल छल। गौरी हँसलीह, “तखन संघ अपन पएरपर ठाढ़ भेल। सबकैँ हमर लाठीसँ चलएबाक जरूरत नहि।”

आश्रयक भीतर संझुका भातक बेला रुखसाना बजटक खाता खोललीह। नव पट्टीक छपाइक खर्च, सरयूक दू रातिक भोजन, हीरावतीक ओसारक सफाई, चन्द्राक सम्भावित प्रस्तुति-स्थलक जाँच—ई सभ अलग मद छल। एक सदस्य कहलक जे बाहरी लोकपर खर्च सँ संस्थाक निवासीसभ नाराज होएताह। भीतर रहनिहार वृद्ध रामऔतार अपन कटोरी राखि कहला, “हमर अन्न नहि घटल, मुदा बाहरक लोककैँ बरखा सँ बचबाक लेल दुआर चाही। एकर हिसाब हमरो सामने रहय।” रुखसाना पंजी घुमौलीह। जखन वास्तविक कमी देखल, किछु चमकीला पर्दा खरीदबाक प्रस्ताव निरस्त भेल।

ओहि राति सरयू अपन बेटी लग जाएबाक तैयारी करैत छलीह। जानकी औषधिक झोरा समेटलीह, मुदा सरयूक नामपर ठेकेदारक स्थायी घर-छोड़पत्रपर सही नहि कएलीह। सरयू कहलीह, “भोरमे गेलाक बाद जँ ककरो फेर सहायताक जरूरत पड़त, ओ दुआर हमरा लेल बन्द नहि होएत?” रुहानी हुनका कागदक एक प्रति देलीह—रात्रि-सहायताक शर्त, पुनः आवेदनक तरीका, आ आपात नम्बर। “दुआर फेर पुछला पर खुलत,” ओ

कहलीह। “एखनक निर्णय भविष्यक ‘नहि’ अथवा ‘हँ’ रोकैत नहि अछि।” सरयू अपन बक्सामे घरक चाभी आ आश्रयक प्राप्ति दुनू रखलीह।

विद्यालयक बरामदामे सरिता नव सार्वजनिक पन्ना देखलीह। ओ पुछलीह जे उत्सवक लेल आश्रयक पूरा आँगन देबाक प्रस्ताव कोन आधारपर आबि रहल अछि। रमा देखौलीह जे अगिला पर्वक आयोजनमे किछु धनदाता संकट-सहायताक नाम जोड़ि अपन प्रचारक अधिकार चाहैत छथि। सरिता कहलीह, “उत्सव हो, गीत हो, लोक हँसय—एहिमे आपत्ति नहि। मुदा आब जे अलग खाता बनेलहुँ, ओकरा फेर एक रंगक पर्दासँ ढाँपब नहि।” रुहानी उत्सव समितिक बैठक लेल चार सवाल लिखलीह—ठेका के पाओत, श्रमक दाम के देत, स्मृतिपर स्वामित्व केकर, आ गलती सुधरला पर लाभ के उठाओत।

भोर होइत चन्द्रा अपन डब्बाक ढक्कन बन्द कएलीह। आयोजकसँ अंतिम अनुबन्ध एखन नहि भेल छल, मुदा गलत परिचयवला पोस्टर छपाइघरमे रोकल गेल छल। हीरावती ग्राहकक दोसर चटाईक नाप लैत छलीह; अस्थायी ओसारक अनुमति हुनका हाथमे छल, स्थायी घरक अधिकारक आवेदन खुलल छल। गौरीक गठबन्धन अपन बैठक चलबैत छल, रेवा परीक्षा-पत्र राखैत छलीह, जानकी सरयूकेँ बेटी लग पहुँचएबाक गाड़ी देखैत छलीह। आश्रयक भीतर रामऔतार भातक लेल पातर पात धोबैत छलाह। कोनो एक छप्पर सभक जीवनक अन्तिम नाम नहि बनल।

रुहानी दुआरक पुरान चाभी लगामे राखि नव पट्टी टाँगलीह—‘सहायता लेल भीतर अबैत लोक, बाहर रहैत लोक, आ फेर घुरैत लोक: प्रत्येकक निर्णय अलग सुनल जाएत।’ पट्टीक निचाँ कियो नामक सूची नहि छल। रुहानी किछु बेर ठाढ़ भऽ पोखरिक पानीमे उत्सवक बाँसक नव प्रतिबिम्ब देखलीह। बाँस एखन गाड़ल नहि गेल छल; केवल माप चलि रहल छल। आश्रमवासिकक ई अन्तिम भोरमे हुनका बुझायल जे आश्रय बना सकब एकटा उत्तरदायित्व अछि, आ ककरो आश्रयक बाहर अपन घर, हाट अथवा बाट चुनए देब—ओहि उत्तरदायित्वक कठिन दोसर आधा।

अध्याय १८१ • यादवक उत्सव

सन २०४०क विदेहपुरमे उत्सवक मैदानपर पहिल हथौड़ी लगिते बाँसक खूँटाक लग राखल पीतलक छोट चक्र लुढ़कि गेल। चक्रपर तीनटा अक्षर उकेरल छल—दान देनिहार कम्पनीक नाम। उत्सव समिति चाहैत छल जे मैदानक प्रत्येक दरबज्जापर एहन चक्र लागय, आ लोक एकरा नगरक नव सम्पन्नताक चिन्ह मानय। सुमित्रा कामी अपन औजारक डब्बा खोलि चक्र उठौलीह, फेर कात राखल अपन दोहर खाँजवला धातुक जोड़ देखलीह। दूनूक चमक लगभग एक्के छल; एकटा प्रदर्शन लेल बनल छल, दोसर भारी बाँसकें सुरक्षित थामबाक लेल। नाप-जाँचक पर्चीपर मुदा पहिल वस्तुक दाम भरल छल, दोसरक निर्माता खाली।

रुहानी आश्रयसँ सीधे मैदान पहुँचल छलीह। काल्हि धरि आश्रयक दरबज्जापर विज्ञापनक चिन्ह हटएबाक विवाद छल; आइ ओही कम्पनीक प्रतिनिधि उत्सवक मुख्य ठेकाक संग चाय पीबैत छल। तारा मल्लिक नक्शा पसारि बतौलीह जे आगन्तुकक भीड़ लेल पोखरिक कातक बाट चौड़ा करबाक प्रस्ताव अछि। मैदान खाली नहि छल—ओतय रुखसानाक तरकारीक अस्थायी दोकान, बच्चासभक खेलबाक ठाम आ हीरावतीक ग्राहकसँ भेटबाक साप्ताहिक ओसार छल। कियो मंच देखबैत मानू ई सभ जमीनपर पहिनहि सँ नहि रहल हो।

समितिक अध्यक्ष विजयक भाषणक अभ्यास करैत छल। ओ कहलक, “जल-अभिलेख सुधरल, आश्रय बचल, नव पुस्तकालय खुलल। एतेक कठिन बरखक बाद एक दिन बिना आपत्ति खुशी मनाओल जाए।” रुहानी ओकर बात काटलीह नहि। ओ केवल पुछलीह, “खुशीक खर्चक बही कतए अछि?” अध्यक्ष मुस्काएल—“उत्सव शुरू हेबाक पहिने हिसाबक चर्चा सँ रंग फीका होएत।” ओहि घड़ी मंचक पाछाँ चारि मजदूर पानी भरल गड्ढामे पयर धँसा कऽ बाँस उठबैत छलाह। हुनका सभकेँ एखन धरि मजदूरीक लिखित दर बताओल नहि गेल छल।

सुमित्रा अपन पुरान रसीद निकाललीह। पिछिला फाटकक अस्थायी पाट लेल ओ दोहर खाँजवला जोड़ बनाएने छलीह। रमा कर्णक जाँचमे नमूनाक पुरान प्रवेश-तिथि आ कार्यालयी चित्रक समानता भेटल छल, मुदा मूल डिजाइनक पूरा उपयोग-अधिकार तय नहि भेल छल। आब उत्सवक मंचमे ओहि नापसँ मिलैत जोड़ देखल गेल। ठेकेदार कहलक, “ई सामान्य तकनीक अछि; सार्वजनिक उत्सवमे नाम लिखबाक जरूरत नहि।” सुमित्रा पाटपर हाथ राखि उत्तर देलीह, “सामान्य समकोण हमर नहि; हमर नाप, दोहर खाँज आ वजन-परीक्षणक क्रम परखू। जे प्रमाणित होएत तकर हिस्सा माँगब, जे नहि होएत ओहि पर स्वामित्व नहि जताएब।”

प्राचीन द्वारकाक समुद्रक कात यादवसभक उत्सवक पहिल साँझमे शंख बजिते राजपथपर रंगीन ध्वजा लहरायल। युद्धक बाद बचल सामर्थ्यक प्रदर्शन लेल गाड़ीपर धातुक पात्र, अनाजक बोरा आ विजयक उपहार सजाओल गेल छल। कृष्ण महलसँ बाहर निकलि देखलनि जे उत्सवक पहिल पाँतिमे राजवंशक युवकसभक घोड़ा ठाढ़ अछि, मुदा जहाजसँ जल उठेनिहार नाविकसभक पहुँच लेल बनल सँकुचित बाट भीड़सँ बन्द अछि। ओहि बाटसँ एक किशोरि माटिक जलघट माथपर धेने आबि रहल छलीह। प्रहरी ओकरा ध्वजाक नीचे रुकबाक संकेत देलक।

बलरामक लग उत्सवक प्रबन्धक कहलनि, “विजयक उत्सवमे क्रम चाही; राजकुल पहिने, सेवक पाछाँ।” बलराम हुनका पुछलनि, “जे हाथ जहाजक रस्सी थामैत अछि, ओ राजकुलक रथक पाछाँ सदिखन किएक?” प्रबन्धक उत्तर नहि देलक। कृष्ण देखि रहल छलाह जे शंखक ऊँच ध्वनिमे किशोरीक जलघटसँ पानि छलकि रहल अछि। एक सैनिक पानिक छींटा देखिकऽ ओकरा डाँटलक। ओ कहलीह, “हम उत्सवमे देखाबए नहि, घरमे प्यासल माइक लेल जल लऽ जा रहल छी।”

कृष्ण सैनिककेँ हटबाक कहलनि; मुदा केवल दया देखाकऽ किशोरीकेँ छोड़ि देबाक निर्णयपर नहि रुकलाह। ओ जलक बाट किएक बन्द भेल से जानबाक लेल घाट लग गेलाह। व्यापारिक नावक मालिकसभ अन्नक उपहारक नामपर घाटक दुपहरिया समय अपने लेल राखि लेने छलाह। माछ पकड़निहार नाविक आ जल भरेनिहार स्त्रीसभ साँझ

धरि प्रतीक्षा करबाक बाध्य छलाह। नगरक उत्सव सभकेँ आमन्त्रण देबाक घोषणा करैत छल, मुदा घाटपर समय आ बाटक अधिकारक पाँति केवल किछु नामक छल।

बलराम कहलनि, “तखन रथ रोकि दियौ; उत्सव बिना रथक सेहो होएत।” कृष्ण उत्तर देलनि, “रथ रोकला सँ बाट खुलत, मुदा काल्हि फेर कियो ओकरा बन्द करत। बाटक अधिकार लिखबाक निर्णय चाही।” घाटक वृद्ध नाविक कहलक जे कागदपर राजकुलक सही रहितो प्रहरी बदलला पर ओकर भरोसा नहि। कृष्ण ओकर आपत्ति सुनलनि। ओहि साँझक सभा राजवंशक प्रशंसा करबाक बदला नाविक, जलवाहिका आ प्रहरी तीनूकेँ अलग सुनए बैसलीह। महलक युवकसभकेँ प्रतीक्षा करबाक पड़ल, जकरा ओ अपमान बुझैत छलाह।

प्राचीन द्वारकाक ओही सभामे एक राजपुत्र प्रश्न कएलक—“हमर पूर्वजक विजय नहि होइत तँ ई नगर सुरक्षित कोना रहितै? उत्सवक मुख्य स्थान हमर अधिकार अछि।” वृद्ध नाविक कहलक, “सुरक्षाक मूल्य हमरो घर देलक। मुदा हम अहाँक रथक ठाम नहि माँगैत छी; बस घाटपर अपन दिनक समय माँगैत छी।” बलराम निर्णय देलनि जे नाविकसभक जल-आवागमन उत्सवक सजावटसँ नहि रुकत; गलती करनिहार प्रहरीक वेतन काटबाक बदला बाटक नव पहरा-क्रम बनाओल जाएत। किशोरी अपन भरल घट लऽ घर जाए सकलीह।

कृष्ण मंचपर फेर अएलाह तँ दूर समुद्रसँ शंखक दोसर स्वर सुनाइ देलक। ओ कहलनि, “उत्सव मनाउ, मुदा जे महिमा अहाँ सभ अपने लेल गनैत छी, ओहीमे दोसरक भागक हिसाब देखबाक साहस रखू।” भाषण पूरा भेला पर राजकुलक किछु युवक नाखुश रहला। घाट खुलि गेल, मुदा उनकर भीतरक रोष नहि मिटल। कृष्ण एहि सफलताकेँ नगरक सर्वकालिक एकताक घोषणा नहि बनौलनि। समुद्रक पानी एखनहुँ जहाजक रस्सी थामने छल; रस्सी काटि देबाक सामर्थ्य मनुष्यक भीतर सेहो रहैत अछि। प्राचीन दृश्यक निर्णय एहि खुलल घाटपर समाप्त भेल।

सन २०४०क विदेहपुरमे साँझक बैठकमे तारा मैदानक नक्शापर चूना सँ दू रेखा खींचलीह। पहिल रेखा मुख्य मंच धरि गेल, दोसर पोखरि आ आश्रयक सार्वजनिक प्रवेशपथसँ। उत्सव समितिक सचिव कहलक जे खास अतिथिक वाहनक लेल दोसर बाट

बन्द करबाक पड़त। रुहानी पुरान आश्रय-पंजी देखौलीह—संकटमे पहुँचनिहार लोक लेल एहि बाटसँ एम्बुलेन्स आबैत छल। “अतिथिक गाड़ी पाँच मिनटक बाद आबि सकैत अछि,” ओ कहलीह, “आपात गाड़ीक पथक विकल्प नहि।” सचिव पहिने विरोध केलक, फेर नक्शामे आगि-बुझाब दलक प्रवेशो देखलाक बाद विशेष अतिथिक गाड़ी लेल दोसर ठाम मानि लेलक।

दुपहरिक भोजन पर रुखसाना दालक देग उतारि कहलीह जे उत्सवक तीस स्वयंसेवकक भोजनक पर्ची आयोजक हुनका थमा देने छथि। पर्चीपर लिखल छल —‘समुदाय-सहयोग: निःशुल्क’। रुखसाना हँसलीह नहि। “रसोइक आगि दानसँ पजरि सकैत अछि, मुदा तरकारी खेतसँ मुफ्त नहि अबैत,” ओ कहलीह। अध्यक्ष कहलक, “अहाँक आश्रयकेँ हम सभ मंचपर सम्मान देब।” रुखसाना देगक ढक्कन उठबैत उत्तर देलीह, “सम्मानक मञ्चपर भूख नहि मेटत। जतेक थारी चाही, ततेक सामग्री, ईंधन आ मजदूरीक दाम लिखू।”

चन्द्रा बादी प्रशिक्षणक समय देखए पहुँचल छलीह। गलत पोस्टर रोकल गेल छल, मुदा नब पोस्टरक छोट अक्षरमे लिखल छल जे हुनकर गीत आयोजकक सम्पूर्ण डिजिटल सम्पत्ति होएत। चन्द्रा पहिल पाँति पढ़ि पुछलीह, “मंचपर एक बेर गाएल गीतक रेकॉर्डिङ्गक सीमा कोन?” कम्पनीक युवक उत्तर देलक, “जतेक बेर लोक सुनत, ओतेक प्रचार।” चन्द्रा कहलीह, “प्रचारक लाभ के लैत अछि? हमर स्वरक नकल बेचब, तकर अलग अनुमति चाही।” ओ प्रदर्शनक निर्धारित शुल्क आ रेकॉर्डिङ्गक सम्भावित उपयोगकेँ दू अनुबन्धमे अलग करए कहलीह।

हुनकर बाजाक खोल पाछाँ सुमित्रा अपन धातुक जोड़ राखने छलीह। ओ चन्द्राकेँ कहलनि, “अहाँक सुर आ हमर खाँज दोसर लोकनि देखैत छथि; फेर कहैत छथि जे ई तँ सभक सामान्य वस्तु अछि।” चन्द्रा उत्तर देलीह, “सभक सुनबाक अधिकार आ सभकेँ बेचबाक अधिकार एक नहि।” ओ एहि वाक्यकेँ पोस्टरपर लिखए नहि कहलीह। दुनू कलाकार अपन-अपन कागदक निचाँ तारिख रखलीह, जाहिसँ भविष्यक विवादमे स्मृतिक बदला वास्तविक क्रम देखाओल जा सकय।

सुमित्राक नमूनाक तकनीकी जाँच लेल नजीर सिकिलगरकें बजाओल गेल। नजीर दू जोड़ तौलि कहलनि जे सामान्य नाप समान अछि, मुदा भीतरी दोहर खाँजक कोण, रस्सी लुढ़कए सँ रोकबाक टिका आ भारपरीक्षणक क्रम सुमित्राक पुरान रेखासँ मिलैत अछि। ठेकेदार तखनो कहलनि जे ओ स्वयं एहि आकारपर प्रयोग कएने छल। रमा तकर नब नमूना-पंजी देखलीह; तारीख सुमित्राक कार्यालयी दाखिलासँ पाछाँक छल, मुदा एहि एक तथ्यसँ चोरीक सम्पूर्ण इरादा सिद्ध नहि होइत छल। सुमित्रा कहलनि, “इच्छाक मुकदमा बादमे करब। एखन उपयोगक सीमा आ सुरक्षित मंचक प्रश्न छैक।”

मंचक कात एक युवक खूँटा कसए चाहलक। सुमित्रा ओकर हाथ रोकलीह नहि; पहिने काठक तख्ता पर परीक्षण करबौलीह। दोहर खाँजवला जोड़ भरक नीचे नहि सरकल, मुदा निकासक दोसर पुर्जा एक झटकेमे घुमि गेल। नजीर कहला जे भारी भीड़वला मंचपर एहन आधा-परीक्षित सामान नहि लगाओल जा सकैत अछि। आयोजक झुँझलाएल —“उत्सवक दिन नजदीक अछि।” तारा उत्तर देलीह, “दिन नजदीक भेला सँ लोहाक भार-वहन बदलैत नहि।” मंचक ओहि हिस्साक काम रोकल गेल; दोसर सुरक्षित पाटपर सांगीतिक अभ्यास जारी रहल।

शहरक एक प्रतिष्ठित व्यापारी रमा केँ अलग लऽ गेल। ओ प्रस्ताव देलक जे सुमित्राकेँ ‘मानद सम्मान’ देल जाए आ कागदमे डिजाइन-स्वामित्वक विवाद समाप्त लिखि देल जाए। बदलामे ठेकेदार मुफ्त धातुक सजावट दैत। रमा ओकर बातचीत मेजपर सभक समक्ष रखलीह। सुमित्रा स्पष्ट कएलीह, “सम्मान स्वीकार करब की नहि, ई हमर निर्णय। मुदा उत्पादकक नाप, जोखिम आ साझा कमाइक हिस्सा दोसरा नाममे लिखबाक मोल सम्मानक थाल नहि।” व्यापारी नाराज भऽ बाहर निकलि गेल। मुफ्त सजावट घटलासँ बजटक नब खाली घर सभकेँ देखाय पड़ल।

गामक युवकसभ हँसैत कहलक जे उत्सव पर एतेक पर्ची-पुर्जी देखिकऽ लोक थाकि जायत। ओहिमे एक, जे राति मंच गाड़बाक काज करैत छल, अचानक कहलनि, “हमरा तीन रातिक मजदूरी पहिने भेटत कि फेर बहीमे रहि जाएत?” ओतए ठाढ़ सभ चुप भऽ गेला। अध्यक्ष ओकर नाम पुछलक। युवक कहलक, “नाम मंचक सूचीमे अछि; उपस्थितिक रेखा पर सभ दिन सही छैक। पाछाँक ठेकेदार अलग अछि, तें भुगतान हमर

हाथमे नहि।” रुहानी ओहि तीन रातिक उपस्थितिक प्रति माँगलीह आ उत्सवक खर्चमे सजावटक पहिने सुरक्षित मजदूरीक मद जोड़ल गेल।

सुमित्रा साझा काजक प्रस्तावक नव मसौदा पढ़लीह। ठेकेदार पहिल बेर हुनकर नाम ‘सहयोगी कारीगर’ लिखने छल, मुदा बिक्रीक लाभक कोठरी खाली छोड़ने छल। सुमित्रा कागदपर दू अलग रेखा जोड़लीह—डिजाइनक श्रेय आ प्रत्येक प्रमाणित उपयोगक हिस्सा। उत्पादनमे लागल धातु, नजीरक तकनीकी परीक्षण, छोटलालक घिसाइक मजदूरी आ जोखिमक बीमा अलग मद बनल। सुमित्रा कहलीह, “हमर रेखा अकेले सब काज नहि करैत; तें जे-जे हाथ काज कएल, तकर नाम अलग लिखू। साझेदारीक अर्थ हमर नाम फोटोमे देखाबब मात्र नहि।”

बहस लम्बा चलल। ठेकेदार कहलक जे ओ पुरान चित्रक नकल करबाक आरोप स्वीकार नहि करत, मुदा आगाँक निश्चित नापवला जोड़ लेल साझा उत्पादन-अनुबन्ध सम्भव अछि। सुमित्रा दूटा शर्त जोड़लीह—पुरान विवादकें एही अनुबन्धसँ समाप्त नहि मानल जाए; आगाँक प्रत्येक खेपमे हुनकर डिजाइनक लिखित हिस्सा, पूर्व-स्वीकृत दर आ सुरक्षित परीक्षणक परिणाम रहय। रमा पुरान दावाक फाइल अलग राखलीह। नव अनुबन्धमे सुमित्राक हिस्सा अंकसहित दर्ज भेल, छोटलालक घिसाइक मजदूरी आ नजीरक परीक्षण-शुल्क उत्पादन-लागतमे लिखल गेल। रकम भविष्यमे खेप स्वीकृत भेलाक बाद देय होएत; एखन अग्रिम परीक्षण-भत्ता मात्र प्राप्त भेल।

अग्रिमक रसीद सुमित्रा अपन पेटीक पुरान रसीदक लग राखलीह। मंचक ओहि हिस्सापर ठेकेदारक नापसँ लगाओल जोड़ हटाएल गेल, प्रमाणित नव खेप अएला धरि हलुक कार्यक्रमक लेल मात्र सुरक्षित पाट खुलल। अध्यक्षक भाँज खिल्ली उड़बैत कहलक, “जितबाक उत्सवमे आधा मंच खाली!” सुमित्रा शान्त स्वरमे उत्तर देलीह, “आधा मंच खाली देखब आसान अछि। भरल मंच खसला पर ककर देहक नीचाँ काठ टूटत, से सोचब कठिन।” युवक मुँह फेरि गेल, मुदा मंचपर दौड़निहार बच्चासभकें ओ स्वयं हटए लगल।

साँझक उद्घाटनमे आतिशक बदला माटिक दीप जलाओल गेल। सबहक सामने घोषणा भेल जे कलाकारक मजदूरी, भोजनक लागत, मंचक सुरक्षा-परीक्षण आ सहायता-पथक

व्यवस्था अलग मदमे सार्वजनिक राखल जाएत। अध्यक्ष अपन मनपसन्द चमकीला नारा नहिये कहल; ओ कागदसँ लिखित शर्त पढ़लक। दर्शकसभमे कियो ताली बजौलक, कियो ऊबि गेल। मुदा चन्द्राक पहिल गीतक समय बैसल स्त्रीसभ आगाँ सरकि सकलीह; उठब-बैसबक बाट पर अतिथिक गाड़ी नहि छल।

चन्द्राक गीत समाप्त भेला पर एक आयोजक मोबाइल उठा कऽ मंचक पाछाँसँ सम्पूर्ण अभ्यासक रेकॉर्डिंग बेचबाक प्रस्ताव देलक। चन्द्रा ओकर फोन नीचाँ करबाबए कहलीह। मंचपर जीवित प्रस्तुति लेल हुनकर अनुमति छल, व्यावसायिक प्रसारण लेल नहि। अध्यक्ष पहिने कहलक जे एहि छोट गपपर उत्सवक आनन्द नहि तोड़ू; फेर याद पड़ल जे आयोजनक बहीमे रेकॉर्डिंगक शर्त अलग राखल गेल अछि। फोनक प्रतिलिपि सार्वजनिक प्लेटफार्मपर नहि चढ़ल; युवकसँ स्थानीय सुरक्षित प्रति हटेबाक पुष्टि मँगाओल गेल। डिजिटल विक्रेताक पुरान फाइलक जाँच एखन शेष छल।

रुहानी मैदान छोड़ैत काल्हिक ओहि आश्रय-पट्टीक खाली जगह देखलीह जतए कम्पनीक चिह्न हटाओल गेल छल। ओकरा बदला आयोजक लोकक सामूहिक रंगोली बनाएने छल, जाहिपर बर्खाक पहिल छींटासँ रङ्ग बहए लागल। रुखसाना हँसि कहलनि, “रङ्ग बहत, काजक पावती नहि बहबाक चाही।” तारा स्वीकार कएलनि जे पुरान मरम्मतिक नक्शा आ उत्सवक नब प्रवेश-पथ अलग नकलमे राखब जरूरी अछि। अगिला वार्षिक सार्वजनिक जाँच लेल अलग संकेत लिखल गेल—कोना निःशुल्क दानक नामपर नब व्यापारिक अधिकार उभरल, आ ककरा वास्तविक भुगतान भेटल।

अन्तिम पहरमे मैदानक पाछाँ दू युवक पीतलक प्याला लऽ ठहाका मारि रहल छलाह। तेसर युवक ओतए ठाढ़ छल, जकर हाथ काँपैत छल आ जकरा संग बैसल मित्र ओकरा पानि देबाक कोशिश करैत छल। समितिक एक सदस्य कठोर स्वरमे कहलनि जे उत्सवक बदनामी नहि होए; सभकेँ बाहर निकालू। चम्पा, जे सावित्रीक दवाइ लऽ घुरैत मैदानक बाटे अएलीह, दूरसँ देखलीह। ओ तत्काल कोनो निदान नहि देलीह, मुदा पुछलीह जे ककरा उपचारक आवश्यकता अछि आ ककरा केवल भीड़सँ सुरक्षित निकालबाक। शराबक विक्रेता आ निर्भर देहक प्रश्न एक नहि छल।

उत्सवक पहिल राति पूरा भेला पर सुमित्रा अपन रसीदकेँ दीपकक उजासमे एक बेर फेर पढ़लीह। हुनकर नाम, नाप, लिखित हिस्सा आ परीक्षणक शर्त ठीक छल; पुरान दावाक फाइल अलग जीवित छल। चन्द्रा गीतक दामक पहिल प्राप्ति-पर्ची रखलीह; पूर्ण रकम एखन नियत दिनपर भेटबाक छल। रुहानी देखलीह जे आश्रयक दुआर खुलल अछि, जे आगन्तुक सहायता चाहत ओकरा लेल। मैदानमे जीतक उत्सव चलैत रहल, मुदा उत्सवक चमक भीतरक विषमताकेँ छिपा नहि सकल। जे गलती रोकल गेल छल, ओहि सफलताक संग जे गलती एखन बाँकी छल, ओकर तारीख सेहो लिखल गेल।

अध्याय १८२ • मादक दिन

सन २०४०क विदेहपुरमे उत्सवक मैदानक पाछाँ पीतलक प्याला उलटि गेल आ ओकर किनारसँ पानि माटिमे पसरए लागल। चम्पा घुटना मोड़ि युवकक लग बैसलीह। ओकर दहिना हाथ काँपि रहल छल, ओ आँखि खोलबैत फेर बन्द करैत छल। मित्र ओकरा उठबए लेल बाह पकड़ने छल। चम्पा कहलीह, “जोरसँ नहि खींचू। हम चिकित्सक नहि छी; पहिने सहायता बजाउ। एखन जँ ओ उत्तर नहि दऽ सकैत अछि तँ ओकरा भीड़सँ बचाउ।” बगलमे नाचक ढोल बजिते रहल, मानू धरतीक भीतर एक संग दू अलग समय चलि रहल हो।

उत्सव समितिक सचिव चमकीला फाटकक परदा बढ़बए कहलक। ओकर चिन्ता छल जे आगन्तुकसभ एहि दृश्यकेँ अपन फोनमे कैद कऽ नगरक बदनामी करत। चम्पा परदाक ओहि कात नहि गेलीह। ओ रुहानीकेँ फोन कएलीह—आश्रयक आपात सम्पर्कसँ प्रशिक्षित स्वास्थ्यकर्मि आ वाहन बजाउ। एक स्वयंसेवक युवकक जेब टटोलए बढ़ल, तखन चम्पा रोकलीह, “पैसाक चोरीक नहि, देहक आपात स्थिति अछि। ओकर निजी वस्तु बिना कारण नहि छुओ।” मित्रक हाथमे कागदक दू टुक्रा छल, जाहिमे एकटा दोकानक उधारी लिखल छल। चम्पा ओ कागद सभा लग नहि पसारलीह।

थोड़ेक देरमे युवक धीमे आवाजमे अपन नाम दीपक कहलक। ओकर मित्र राकेश बतौलक जे ई पहिल बेरक बात नहि, किछु दिनसँ दीपक बिना सेवनक देहक असुविधासँ डेराइत अछि। उत्सवमे बेचैन भेला पर ओ फेर किछु लेलक; की लेल, कतेक, से राकेश निश्चयपूर्वक नहि कहि सकल। चम्पा ओकर अनुमानकेँ चिकित्सकीय तथ्य नहि बनौलीह। आपात सेवाक कर्मचारी आबि देहक स्थिति जाँचलक आ दीपककेँ चिकित्सालय लऽ जेबाक निर्णयमे ओकरा बुझाएल जानकारीसहित सहभागी बनेलक। दीपकक स्वर थाकल छल, मुदा ओ अस्वीकार करबाक बदला कहलक, “चलू। बस बाबूकेँ एखन सभक सामने नहि बजाउ।”

नगरक एक पदाधिकारी चम्पासँ युवकक नाम आ ओकरा की बेचने छल तकर नाम लिखबाक आग्रह केलक। चम्पा कहलीह, “अपराधक जाँच लेल स्वतन्त्र स्रोत जुटाउ।

रोगीक स्वास्थ्य-अभिलेख आ उपचार लेबाक बात सार्वजनिक अभियोगक पर्ची नहि अछि।” पदाधिकारी पुछलक, “तँ अपराधी बचि जायत?” रुहानी ओतहि पहुँचि उत्तर देलीह, “जकरा बेचबाक प्रमाण भेटत, ओकर जाँच रोकी के? मुदा रोगीकेँ मंचपर ठाढ़ कऽ अपराध स्वीकार कराएब न तऽ उपचार अछि, न भरोसाक साक्ष्य।” पदाधिकारीक मुठ्ठीमे पहिनेसँ छपाओल ‘नशामुक्त उत्सव’क फलक छल; ओ एक बेर फलक देखलक, फेर दीपककेँ लऽ जाइत वाहन।

प्राचीन द्वारकामे यादवक विजय-उत्सवक दोसर दिन समुद्रक घाटपर मदिराक पात्र बहए लागल छल। पिछला साँझ खुलल सार्वजनिक बाट फेर सँकुचित भेल छल, एहि बेर राजकीय रथसँ नहि, उत्सवी युवासभक बैसल समूहसँ। एक नाविक अपन नावक रस्सी बान्हए चाहलक तँ कियो ठठाइत ओकर हाथसँ गाँठ खोलि देलक। साम्ब दूर ठाढ़ ओहि अपमानकेँ हँसी मानि रहल छल; ओकर लगक एक युवक दोसरकेँ बारम्बार प्याला बढ़ा रहल छल। कृष्ण समुद्रसँ घुरैत ई देखलनि, मुदा पहिने प्यालाक सङ्ख्या नहि गनलनि—नाविकक डोरी कोन हाथ खोललक, से पुछलनि।

बलराम एक उत्सवी युवकक काँपत पयर देखलनि। ओ कहलक जे सभकेँ पीबाक बाध्यता छैक; नहि पीएत तँ योद्धाक अपमान होएत। बलराम ओकरा कात बैसबए कहलनि। दूरसँ एक वृद्धा जल लऽ अबैत छलीह, मुदा युवकसभ हुनकर पात्र ‘हारल लोकक पेय’ कहि फेकबाक धमकी देलक। बलराम पात्र उठौने वृद्धासँ पानि मँगलनि आ स्वयं पीबि लेलनि। तखन एक सैनिक कहलक, “राजवंशक सामर्थ्यक उत्सवमे एहन संकोच?” बलराम उत्तर देलनि, “सामर्थ्य जँ मना करबाक शक्ति नहि छोड़य तँ ई विजयक चिन्ह कोना?” युवकसभक हँसी छोट भऽ गेल; घाटक बाट मुदा एखन पूरा नहि खुलल छल।

कृष्ण नाविककेँ सुनलनि। ओकर छोट भाई युद्धमे मरल छल आ घाटपर काम कऽ परिवार पलैत छल। युवकसभक एकटा समूह ओकरा कहैत छल जे विजयक गीत गाउ, तखने डोरी छोड़ब। नाविक कहलक, “गीत हमर शोकक दाम नहि।” कृष्ण शपथ दिलेबाक बदला यादवसभक सामने नियम राखलनि—घाटक बाट बाधित करनिहारक पद कतेको ऊँच हो, ओकरा हटबाक पड़त; ककरो पीबाक लेल विवश नहि कएल जाएत;

घायल वा अचेत व्यक्तिक देखभाल भोजक अपमान नहि मानल जाएत। मुदा ओ मुँहसँ ई नहि कहलनि जे आजुक नियमसँ कुमति समाप्त भऽ गेल। साम्बक आँखि फेरि गेल आ एक युवक माटिक पात्रक टुकड़ा पानीमे फेकि देलक।

साँझमे कृष्ण बलरामसँ कहने छलाह, “शक्ति बुझल लोक जखन अपने अपमानक डर बनि जाए, तखन ओ अपन थालक तलीमे खसैत दरार नहि देखैत।” बलराम उत्तर देने छलाह, “एक दिन हमरा सभक हाथे ई दरार भरबो कठिन पड़ि सकैत अछि।” ओहि दिन नाविकक रस्सी फेर बाँधल गेल, वृद्धाक पात्र सम्मानसँ राखल गेल, आ काँपत युवककेँ अलग विश्रामक स्थान भेटल। किछु युवक एतेक निर्णयकेँ राजवंशक दुर्बलता कहलनि। प्राचीन द्वारकाक ई दृश्य अपने भीतरक अपूर्ण मेलसहित समाप्त भेल; ओकर जल आधुनिक विदेहपुरक कोनो पुलिस-रिपोर्टक साक्ष्य नहि छल।

सन २०४०क विदेहपुरमे चिकित्सालयक ओसारपर दीपकक जूता उतारल गेल। राकेश पुछलक जे ओकर घरमे खबर कोना जाएत। स्वास्थ्यकर्मी कहलनि जे दीपक एखन बातचीत बुझि रहल अछि; आवश्यक उपचार आ आपात सम्पर्कबारे ओकरा स्वयं पुछल जाएत। दीपक मौन रहल, फेर माइक छोट फोन नम्बर देलक आ कहलक जे समाचार संक्षेपमे कहल जाए। चम्पा बाहरक बेंचपर रहलि; रोगीक चिकित्सकीय सवालक उत्तर देबाक स्थान पर नहि बैसलीह। ओ केवल कहलीह, “हम उत्सवसँ आनलहुँ, बाकी निर्णय चिकित्साकर्मी आ दीपकक।”

राकेशक माथपर किछु दिनसँ गुप्त भय छल। ओ कहलक जे दीपक पहिने रंग-बत्ती लगएबाक काम करैत छल, फेर हाथ काँपला पर ठेकेदार काम घटा देलक। घरमे कियो ओकरा ‘अपराधी’ कहैत अछि, कियो ‘आलसी’। चम्पा ओकरा पुछलीह, “ओ काज छोड़लक कि काज हुनका छोड़ि देलक?” राकेश उत्तर नहि देलक। बेंचक आगाँ हाथ धोबए गेल अस्पतालक सफाईकर्मी अपन वेतनक पर्ची कोटमे रखैत छल। देहक डरक बीच रोजीक अलग डर ठाढ़ छल; दुनूकेँ एक नाममे राखि ककरो जीवन बुझल नहि जा सकैत छल।

उत्सवक मैदानपर एतहि एक दोकानदारक नाम फैलि गेल। कियो कहलक ओ निषिद्ध पदार्थ बेचैत अछि; कियो कहलक दीपक केवल नींदक दवाई लेलक; ककरो लग दूनूमे सँ

किछु प्रमाण नहि छल। पद्मा कागदपर आगन्तुकसभक कथनक समय अलग लिखलीह। “चश्मदीद देखल काजक साक्षी होएत,” ओ कहलीह, “कानसँ सुनल नामकें एही पन्नामे दोषसिद्धि नहि बनाउ।” नगरक जाँच दलकें उत्सवक सामानक खरीद-बिक्रीक खुलल रसीद, बिक्री-स्थानक वैध अनुमति आ उपलब्ध सार्वजनिक दृश्य अलग देल गेल। दीपकक उपचार-पत्रक कोनो प्रति नहि जोड़ल गेल।

रुहानी आश्रयक छोट कोठरीमे रातिक समयक सहायता-बही खोललीह। एक पत्रकार फोनपर पुछलक, “नशाग्रस्त युवकक फोटो देब तँ लोग सतर्क होएत।” रुहानी उत्तर देलीह, “अहाँ बिक्रीक रास्ता जाँचू; उपचार लैत लोकक चेहरा प्रचारक वस्तु नहि।” पत्रकार विरोध कएलक—“तखन खबर अधूरा।” रुहानी कहलनि, “अधूरा प्रमाणक खबरकें चेहरासँ पूरा करब अपराधी व्यापारक पता नहि दैत।” ओ फोन राखि चम्पाक लग बैसलीह। दुनूकें बुझाईत छल जे गोपनीयता बचाएब आसान घोषणा अछि, कठिन काज एहि घोषणा पर टिकि रहब अछि।

दुपहरिया सुमन टिकुलहार उत्सवक फाटकपर अपन रंगीन गोल चिन्ह देखि रुकलीह। गोलाईक भीतर तीन छोट तिरछी रेखा आ कातपर लाल बिन्दु छल—नव बजारक लेल हुनकर तैयार कएल नमूना। पहिने एक व्यापारी ओकरा अनुमति बिना पोस्टरपर छपौने छल; तखन सुमन नमूना-बही देखाकऽ सार्वजनिक आपत्ति कएने छलीह। आब वही आकार उत्सवक दान-फलकपर छल, जाहिपर नीचाँ कम्पनीक मुद्रण-नाम लिखल छल। फलक टाँगनिहार युवक कहलक, “किछु गोल चिन्ह सभक होइत अछि।” सुमन डब्बासँ मूल नमूना निकालि उत्तर देलीह, “गोलाई सभक; ई रेखाक क्रम, किनारक बिन्दु आ तारीख हमर काजक।”

सुमन रेखा साहुक लग नहि, सीधे छपाइघर पहुँचलि जतए पुरान विवादक नमूना रखल छल। छपाखानाक मालिक पहिने कहलक जे उत्सव समितिक डिजाइन-फाइल ओहि व्यापारीसँ आएल अछि, तें दाम ओ चुकौने अछि। सुमन पुछलीह, “काठक पहिल फलक किनने लोक डिजिटल नकलक अनुमति कखन भेटलक?” मालिक खाता खोललक। ओतय लागत आ प्रतिक संख्या छल, मुदा डिजाइनक अधिकारक कोठरी खाली छल। सुमन सार्वजनिक आपत्तिक एक पन्ना तैयार करबौलीह—मूल नमूना, पुरान अनुमति, नव

फलकक चित्र आ अलग-अलग तारीख। हुनकर आपत्ति नकलक प्रमाणक जाँचपर छल, सभ गोल टिकुलीक स्वामित्वपर नहि।

उत्सव समिति सुमनकेँ मंचपर शाल ओढ़ेबाक प्रस्ताव देलक। ओ शाल नहि माँगलीह। “जहाँ हमर काम लागल अछि ओतए हमर नाम ठीक लिखू आ जतेक नकल बनाओल से गिनू” ओ कहलीह। अध्यक्षक संग बैसल ठेकेदार कहलक जे छपल फलक आब हटाएब घाटाक काज होएत। सुमन उत्तर देलीह, “छपाइकेँ जाबत धरि नष्ट करब जरूरी नहि, ताबत धरि सार्वजनिक आपत्ति साथे लगाउ। मुदा बिना हमर नव अनुमति आन स्मारक वा वस्तु बेचबाक अधिकार ककरो नहि।” तारा ई अन्तर सुनि कागदमे तीन घर बनौलीह—पहिने छपल संख्या, आगाँक उपयोग, आ विवादित नकलक क्षतिपूर्ति।

सुमन नव शर्त राखलीह जे उत्सवक केवल चालीस सूचनाफलकपर सीमित अवधि धरि डिजाइनक उपयोग स्वीकार करब, तकर बदला स्पष्ट पारिश्रमिक, मूल कलाकारक नाम आ पुनर्मुद्रणसँ पहिने नव लिखित सहमति जरूरी होएत। छपाइघर नव फलकक सूची तैयार केलक; पहिने छपल पैँतीसमे सँ दू खसि गेल छल, बाकीक मिलान भेल। एही मिलानक बाद सुमन आगाँक चालीस फलक लेल करारपर सही कएलीह, जाहिमे किछु नव छपल फलक आ किछु पुरान सुधरल प्रति छल। पुरान अनुमति-बिना विज्ञापनक बकाया क्षतिपूर्ति अलग रहि गेल। ओ पहिल स्वीकृत उपयोगक अग्रिम प्राप्त कएलीह; बाकी रकम वितरणक गिनती पाछाँ देय छल।

रुहानी पुछलीह जे सुमन एतेक संघर्षक बादो डिजाइनक उपयोग अनुमति किएक देलीह। सुमन अपन पेटिक साँचा पलटि कहलीह, “लोक देखत तखन हमर काजक आयो बढि सकैत अछि। हम नकल रोकए चाहैत छी, देखब नहि।” चम्पा ओतए पहुँचलीह तँ सुमन हुनका अपन आपत्तिक कागद देखौलीह। चम्पा प्रसन्न भऽ कहलीह जे लिखल शर्त रोगीक गोपनीयताक समान नहि, मुदा दुनूमे एकटा बात साझा अछि—जकर चीज अथवा देहसँ सम्बन्ध अछि, ओकर सहमतिक सीमा दोसर लोक आपसँ तय नहि कऽ सकैत। सुमन हँसलीह, “सीमा लिखल गेल तँ लिखएवाला सेहो पढ़य।”

एहि बीच दीपक चिकित्सालयमे निगरानी आ परामर्श पबैत छल। चिकित्सक ओकरा उपचारक सम्भावना, जोखिम आ नियमित सहायता पाबबाक विकल्प बुझौलनि। दीपक

स्वयं पूछलक जे कामपर फेर आबि सकत की नहि। चिकित्सक तुरन्त भरोसा नहि देलनि; कहलनि जे देहक स्थिति आ उपचारक प्रगति देखिकऽ निर्णय होएत, आ सुरक्षित कामक व्यवस्था अलग विचारणीय अछि। चम्पा अस्पतालक बाहरी पट्टीपर राकेशक संग प्रतीक्षा कएलीह। ओ दीपकक निदान जानबाक आग्रह नहि कएलीह। राकेश पहिल बेर किछु शान्त भऽ कहलक, “ओ हमरा मित्र अछि; हमर दोस्तक परिचय ओकर बीमारीक नामसँ पैघ अछि।”

दीपक अपन अनुमति दऽ माइक फोन केलक। माय पहिने क्रोधमे पुछलीह, “ककर संग गेल रही?” दीपक गला सम्हारि कहलक, “हम एखन चिकित्सालयमे छी। हमरा मदद चाही, अदालत नहि।” ओहि पार मायक साँसक आवाज सुनाइ देलक; ओ तुरन्त क्षमा नहि माँगलीह, न युवककेँ दोषमुक्त घोषित कएलीह। बस पुछलीह, “एखन तोरा लग के अछि?” दीपक कहलक, “राकेश, आ इलाज करनिहार लोक।” माय कहलनि जे भोरमे आबतीह। फोन राखलाक बाद दीपकक आँखिसँ पानि निकलल। ओकरा इलाजसँ पहिने एकटा वचन नहि, समय लागएवला सम्बन्ध भेटल छल।

उत्सव समितिक एक प्रतिनिधि अस्पताल पहुँचल आ कहलक जे दीपकसँ सार्वजनिक ‘नशा छोड़बाक शपथ’ लिआएब, जाहिसँ आयोजनक आलोचना कम होएत। चम्पा दरबज्जापर ओकरा पुछलीह, “उपचारक बीच शपथक मंच किएक? ओ एखन रोगी अछि, अहाँक प्रचारक साधन नहि।” प्रतिनिधि कहलक जे कम्पनी मुफ्त परामर्श-शिविर लगाओत। चम्पा उत्तर देलीह, “सहायताक स्वागत, मुदा रोगीक नाम, फोटो वा भविष्यक व्यवहारक गारन्टीक बदलामे नहि।” कम्पनीक प्रस्ताव पाछाँ एक अनुबन्ध छल जाहिमे उपचारार्थक विवरण प्रचारक विश्लेषणमे उपयोग करबाक अनुमति मागल गेल छल; ओ शर्त काटल गेल, आ स्वास्थ्यकर्मी स्वतन्त्र सेवा-सूचना देबाक निर्णयपर पहुँचल।

पुलिसक निरीक्षक रुहानीसँ भेटए अएलाह। हुनका लग बेनाम शिकायतसभ छल जे उत्सवक भोजन-ठामक पाछाँ निषिद्ध सामानक बिक्री भेल। ओ पूछलनि जे दीपकसँ प्राप्त जानकारी सँ ओ एक विक्रेताकेँ पकड़ि सकैत छथि की नहि। रुहानी कहलनि जे ई निर्णय जाँच आ कानूनक प्रक्रिया अन्तर्गत होएत, चम्पाक निजी उपचार-सहायताक पर्ची सँ नहि। निरीक्षक सार्वजनिक खरीद-बिक्रीक रसीद आ स्वतन्त्र प्रत्यक्षदर्शीक बयान जाँचबाक

स्वीकार कएलनि। हुनका नामक सूची चाही छल; रुहानी सार्वजनिक पंजीक सीमा बुझौलीह। एही बैठकमे तय भेल जे स्वास्थ्य-सहायता आ अवैध कारोबारक अन्वेषणक अभिलेख अलग रहत, गोपनीयता सम्बन्धी कानूनी अपवादक निर्णय उपयुक्त अधिकारी करथि।

साँझमे उत्सवक नब फलक लगाओल गेल। सुमनक नाम नीचे साफ अक्षरमे छल, आ उपयोग-अवधिक छोट विवरण समिति-कार्यालयक सार्वजनिक पन्नामे। एक व्यापारी खिसियाइत कहलक, “कलाकारसभ आब सभ वस्तुपर कर लेत।” सुमन उत्तर नहि देलीह; ओ अपन रसीद देखलीह। तखने एक बच्ची फलक लग चित्र देखिकऽ पुछलक, “ई लाल बिन्दु किएक?” सुमन माटिमे अँगुरीसँ गोल खींचि देखौलीह जे चिन्हक छोट रेखा घूमैत नजरकँ बीचमे घुराबैत अछि। बच्ची फेर गोल बनौलक, मुदा रेखाक क्रम अलग रखलक। सुमन ओकरा रोकलीह नहि—सीखबाक रेखा आ बेचबाक नकल एक नहि।

अगिला वार्षिक सार्वजनिक जाँचक सूचीमे पद्मा उत्सव-व्ययक अतिरिक्त दू नव घर जोड़लीह—सहायताक नामपर निजी स्वास्थ्य-सूचनाक माँग, आ कलाकारक डिजाइनक नामपर व्यापारिक उपयोगक अधिकार। ताराक दल घोषणा कएलक जे कलाकृति-सम्बन्धी अनुमति-पत्रक प्रति कलाकार स्वयं राखत; कम्पनीक सर्वाधिकारवला मसौदा सार्वजनिक नियम नहि बनत। एहि व्यवस्था सँ नव मुद्रणक कामक दाम बढ़ल, अध्यक्षक मन उखड़ल। मुदा छपाइघरक मालिक पहिल बेर स्पष्ट रूपसँ बुझलक जे खरीदल कागद आ उपयोग करबाक अधिकारक मूल्य अलग अछि। चालीस सूचनाफलकक सीमा कारण दोसर प्रचार-ठेकाक सम्भावित लाभ घटल; ओहि घाटाकँ सुमनक दोष नहि लिखल गेल।

दीपक अस्पतालसँ तुरन्त घर नहि घुरल। चिकित्सकीय सलाहक अनुसार अतिरिक्त देखभाल लेल ओ सहमत भेल। राकेश ओकर काजक ठेकेदारसँ केवल एतबे बात करए गेल जे अनुपस्थिति बीमारीक कारण अछि आ अगिला सुरक्षित कार्य-निर्णय चिकित्सकीय सलाह तथा युवकक सहमतिसँ होएत। ठेकेदार वेतन रोकेबाक धमकी देलक। राकेश पुरान तीन रातिक उपस्थितिक रसीद देखौलक; जतेक काज भऽ चुकल अछि, ओकर दाम इलाजक नतीजापर निर्भर नहि होएत। विवादरहित मजदूरी देबाक

तारीख लिखल गेल; कोनो सदस्य ओकरा ‘नशेवाला काज’ कहि शेष देय मिटा नहि सकल।

चम्पा राति अपन घर घुरलीह तँ सावित्री चौकठिपर बैसल छलीह। मायक औषधि नियत समयपर लेल गेल छल। सावित्री पुछलीह, “आइ फेर अस्पताल किएक?” चम्पा घटना नाम बिना कहलनि। सावित्री चाय रखि कहलीह, “देहक बिपत्ति देखिकऽ लोक पहिने दोष पूछैत अछि, दुख बादमे। तोहर हाथ जे मदद कएल, ओकरो विश्राम चाही।” चम्पा घायल कलाई सम्हारि दीपकक नाम नहिये कहलनि। माय-बेटी बहुत बेर मौन बैसलीह। सभ गुप्त बात लुकौनाइ नहि होइत अछि; किछु गोपनीयता जीवित मनुष्यक अगिला दिनक जगह बनबैत अछि।

उत्सवक तेसर भोरमे विज्ञापनक पुरान चक्रक लग स्मारक बनबएवला कम्पनीक कर्मचारी नब कागद लऽ पहुँचल। ओ कहलक जे मृत लोकक नाम अंकित करैत नगरक स्थायी स्मृति-स्तम्भ बनत; प्रायोजक सभ खर्च उठाओत। रुहानी कागद पढ़लीह। छोट अक्षरमे लिखल छल जे स्मारकक फोटो, नामक सूची आ आसपासक व्यापारिक पट्टिकाक अनन्य उपयोग कम्पनीक रहत। सुमनक डिजाइनकेँ सेहो स्मारकक किनारीमे लगएबाक चित्र बनल छल, मुदा नव अनुमति माँगल नहि गेल छल। रुहानी ओहि पन्ना पर लाल रेखा टानलीह; तारा अगिला बैठकक कार्यसूचीमे स्मारकक ठेकाक प्रश्न अलग लिखलीह।

चम्पा अस्पतालक बाहरी फाटकसँ घुरैत दीपक लेल सार्वजनिक शुभकामनाक भीड़ नहि बनौलीह। ओ एक बेर देखलीह जे भोरक पातर धूपमे सफाइकर्मी भीजल बरामदा पोछि रहल अछि, आ देवालक ओहि कात चिकित्सकीय परामर्शक सामान्य समय लिखल अछि। कोनो नाम नहि। सुमन अपन रसीद लऽ घरक बाट पकड़लीह; डिजाइनक सीमित उपयोग स्वीकृत छल, पुरान नकलक दावा जीवित। उत्सवक मैदानमे रंगीन फलक एखन चमकि रहल छल, मुदा नशापर निर्भर देहक उपचार आ अवैध कारोबारक जाँच अलग-अलग बाट पकड़ि चुकल छल। एहि अलग बाटक बीच एकटा खाली ठाम बचल—जतए ककरो इलाजक नामपर ओकर सम्पूर्ण जीवन कब्जा नहि कएल जाए।

अध्याय १८३ • स्मारकक ठेका

सन २०४१क विदेहपुरमे फागुनक भोर छल। घाटक सीढ़ीपर जमल काइ घसैत रामसखी अपन हँसुआक पाछाँ काठक पातर फट्टा लगौलीह, जाहिसँ पुरान ईंट नहि उखड़य। जलस्वच्छता पर्वक पहिल दिन छल; पोखरिक कात स्त्री-पुरुष, माछमार, बुनकर, कुम्हार, नाविक आ विद्यालयक विद्यार्थी अपन-अपन निर्धारित काज लेल आबि रहल छलाह। पानिमे भसिआएल पीयर रङ्गक कागद उठबैत चम्पा देखलीह जे कागदक पाछाँ मोट अक्षरमे लिखल अछि—‘अमर स्मृति, स्थायी प्रायोजन।’ ओ कागद उलटौलीह। नीचाँ मृतकसभक नामक बदला विज्ञापनक खाली चौकोर खाँचा छल।

सरोकारक पहिल बैठकक लेल सरिता विद्यालयसँ दू कुर्सी अनने छलीह। एक कुर्सीक पयर डगमगा रहल छल, तँ ओ ओकर नीचाँ छोट ईंट रखलीह। रुहानी लाल फाइलमे कम्पनीक प्रस्ताव लऽ अएलीह, तारा बजटक मोट पंजी, आ पद्मा असहमतिक खाली कागद। पिछला उत्सवक अन्तिम दिन कम्पनी कहने छल जे मृतकसभक नाम स्मारकमे गढ़ि देत आ सभ खर्च स्वयं उठाओत। सरिता एखन धरि नामक सूची नहि देने छलीह। घाटक सीढ़ीपर बैसिकऽ ओ फाइल खोललीह। कोन नाम कहियो ककरो निजी चिट्ठीसँ बाहर निकलत, एहि प्रश्नक उत्तर कोनो ठेकेदार नहि दऽ सकैत छल।

कम्पनीक प्रतिनिधि गेरुआ पट्टीवला नील कुर्तामे छल। ओकर नाम शैलज। ओ पत्थरक चमचम करैत छोट नमूना राखि कहलक, “पैघ खर्चा अछि। प्रायोजककेँ स्मारकक चित्र, नामक सूची आ कातक दोकानसभक दस बरखक प्रचार-अधिकार देल जाए तँ नगरपर बोझ नहि पड़त।” रुहानी याद दिलौलीह जे पिछला कागदमे अवधि सेहो नहिये लिखल छल। शैलज मुस्की देलक, “आब तऽ दस लिखि देलहुँ।” तारा पुछलीह, “दस बरखक बाद? नाम मेटायब कि लोक स्मृतिक प्रति खरीदत?” उत्तरमे प्रतिनिधि छोट सूची बढ़ौलक, जाहिमे प्रत्येक प्रति निकालबाक मूल्य छल, मृतकक परिवारक सहमतिक कोनो खाना नहि।

सरिताक हाथ पुस्तकालयक चाभीक गोला पर पड़ल। नैराक नाम ककरो सार्वजनिक शिलापर हो, एहि विचारसँ हुनकर देहमे बर्फ सन ठण्डा रेखा खसि गेल। ओ कहलीह,

“हमर बेटी नैरा मरि गेलीह। ओ विद्यालय लेल जे काज कएने छलीह से कागदमे सुरक्षित अछि। मुदा हुनकर फोटो, निजी पत्र आ नामक व्यावसायिक उपयोगक अधिकार हमरा अपन शोकक बलपर कम्पनीकेँ देबाक नहि अछि।” शैलज प्रतिवाद केलक, “अहाँ सभ स्मारक नहि चाहैत छी?” सरिता उत्तर देलीह, “स्मरण चाहैत छी। मनुष्यक मृत्युकेँ वस्तुके स्थायी व्यापार नहि बनएब चाहैत छी। एहिमे अन्तर लिखू।”

रुहानीक स्वर पहिने तेज भऽ गेल। “जे परिवार अपन नाम जोड़बए चाहत, ओकरा ठाम कोना भेटत? खाली विरोध करब तँ पत्थरक कामो नहि होएत।” ओ आश्रयमे रहनिहार परिवारसभक उदाहरण देलीह, जकरा घाटपर अस्थायी दीप राखबाक सुरक्षित ठाम तक नहि भेटैत छल। सरिता जवाब देलीह, “ठाम बनाउ। मुदा मृतकक सब नाम कम्पनीक सूची नहि बनत।” दू पुरान सहयोगीक बीच एहन तिव्रता पहिने सार्वजनिक सभामे बहुत कम देखल गेल छल। चम्पा बीचमे बोलए चाहलीह, फेर चुप भऽ गेलीह। मानू घाटक तटपर पानी नहि, किछु दिनसँ दबि रहल असहमति एकाएक ऊपर उठि अएल छल।

रामसखी फट्टा रखि ओतय आबि बैसलीह। हुनकर हथेलीपर काइक हरा दाग छल। “पहिने एखन जे काज होइत अछि ओकर दाम को देत?” ओ पुछलीह। शैलज कहलनि जे कम्पनी स्वच्छता-सप्ताहक लेल स्वयंसेवक जुटाओत। रामसखी फेर पुछलीह, “स्वयंसेवकक नामे जे रोज मजूरी करैत अछि ओकर भोजन?” तारा पंजी उलटि देखौलीह —काइ हटएबाक मजदूरी, पानिमे उतरनिहारक सुरक्षा, निकसल गादक सुरक्षित निस्तारण आ घाटक भाँगल सीढ़ीक मरम्मतक रकम अलग मंजूर छल। कम्पनीक प्रस्ताव एहि बजटकेँ स्मारकक चमकीला पाथरक खर्चमे मिला देने छल।

फरजाना चूड़ीहार भोरसँ घाटपर अपना छोट कोचामे तीन डिब्बा सजा रहल छलीह। पहिलमे हाथसँ गढ़ल लाहक कड़ा, दोसरमे पातर शीशाक जोड़ी, तेसरमे मशीनसँ बनल एकसमान चूड़ी। पछिला लोकपाठ मेलामे ओ गलत ‘सभ हस्तनिर्मित’ कहि एक दाम लगएबाक प्रस्ताव अस्वीकार कएने छलीह। एखन कम्पनीक कर्मचारी कहलक जे स्मारकक उद्घाटनमे सभ दोकान एकटा ‘पवित्र स्मृति-कड़ा’ बेचत, एक निश्चित महँग दामपर; ओकर हिस्सा कम्पनीकेँ भेटत। फरजाना बुढ़िया ग्राहिकाकेँ लाहक जोड़ी

छुआबैत उत्तर देलीह, “ई लाह हमर हाथक, ई शीशा दोसर कारखानाक, ई मशीनमाल थोकक। जे चाहत से अपन बजटसँ चुनत। मृतकक नाम जोड़ि दामक भेद नहि मेटाउ।”

ग्राहिका शीशाक नील चूड़ी उठौलीह; तोड़ि देबाक डर हुनका छल, मुदा ओहि रङ्गक चाह सेहो छल। फरजाना टूटबाक जोखिम बतौलीह आ सही साइज देखौलीह। दोसर ग्राहक लाहक कड़ा लेल दाम पुछलक। फरजाना लागतक पन्ना देखौलीह—लाह, रङ्ग, ताप देबाक ईंधन, हाथक समय, आ दाम। मशीनक मालक दाम अलग पन्नामे छल। कम्पनीक कर्मचारी खिसियाइल, “एतबा हिसाबसँ उत्सवक चमक मरि जाएत।” फरजाना कहलनि, “चमक केकर माथपर? श्रमिकक हाथपर कि खरीददारक आँखिपर?” ओ शीशाक जोड़ी बेचलीह; लाहक कड़ा लेल ग्राहक पछिला सप्ताहक ऑर्डर देलक। ग्राहकक चुनाव वास्तविक आय बनल, नाटकक अलंकार नहि।

कमला जैनक परिवार घाटक सामूहिक भोजन लेल अनाज दैत छल। पिछला आयोजनमे ओ स्पष्ट कएने छलीह जे दोकानक दाम, छूट आ धार्मिक व्यवहार अलग बात अछि। एहि बेर शैलजक सहयोगी हुनकर आगाँ स्वागत-पट्टक नमूना राखलक, जाहिपर पारिवारिक व्यापारक नामक संग एक धार्मिक घोषणाक पाँति जोड़ल छल। कमला ओकरा काटि कहलीह, “हमर दुकान अपन हिसाब देत। हम कोन उपवास रखब, केकर अनुष्ठानमे जएब—से हमरा घर आ अन्तरात्माक निर्णय अछि।” जेठ दूरसँ कहलनि, “दानक सम्मान घटि जायत।” कमला उत्तर देलीह, “सम्पत्ति आ आस्था एकहि तख्ती पर बान्हि देलासँ ककरो सम्मान नहि बढ़ैत।”

कमलाक भतीजी रिद्धि भोजनक पात्र गनैत छलीह। ओ धीमे कहलीह जे एहि बेर ओ अपन निजी मान्यताक कारण एक पारिवारिक अनुष्ठानमे नहि जएतीह। जेठक आँखि टेढ़ भऽ गेल। कमला रिद्धिक कन्धापर हाथ रखलीह, मुदा मंचपर परिवारक मतभेद खोलि प्रायोजककेँ तमाशा देबाक अनुमति नहि देलीह। “घरमे सुनब; ओकर निर्णयक जवाब हम दुकानक छुट्टी-सूचीमे नहि लिखब,” ओ कहलीह। तकर बाद ओ भोजनक बिलपर केवल अनाजक वजन, दाम, दानक वास्तविक छूट आ ढुलाईक मजदूरी लिखवौलीह। रिद्धि अपन निजी असहमतिक कारण पारिवारिक दोकानसँ बेदखल नहि भेलीह; मुदा जेठक असहमति तत्काल समाप्तो नहि भेल।

मध्याह्ने घाट-आदरक सामूहिक सफाईक बीच दू दल बनि गेल। एक दल कहैत छल जे स्मारकक ठेका रुकत तँ नीक पाथर कतहुँसँ नहि भेटत। दोसर दल कहैत छल जे नामक व्यापार रोकबाक लेल कोनो सामूहिक प्रतीक बनबे नहि चाही। तारा बीचक ई दूहरा फन्द देखि कहलीह, “स्मृति रखबाक ठाम, पाथर खरीदबाक ठेका, घाटक मरम्मत आ नामक सूची—चारि अलग निर्णय चाही।” रुहानी पुछलीह, “आ खर्च?” तारा घाटक पुरान मरम्मत-बजट खोललीह। सार्वजनिक चन्दा, नगरक स्वीकृत मद आ व्यक्तिगत योगदानक जतेक प्रमाण छल, ओहि पर अलग जोड़ बनल; खाली घोषणा रकम नहि बनि सकैत छल।

एतहि किछु लोक उर्मिलाक नाम बिना परिवारक अनुमति प्रस्तावित सूचीमे लिखि देने छल। उर्मिला रजक आब जीवित नहि छलीह, आ हुनकर बहिन अस्पतालक रात्रिक पालि, घाट-धुलाई आ कपड़ा दुलाईक अलग मजदूरी लेल एखनहुँ दावा करैत छलीह। बहिन सूची देखि कहलीह, “पहिने हुनकर कामक दामक हिसाब पूरा करू। मुदा ई सेहो नहि मानू जे दाम भेटि गेल तँ हुनकर जीवनक नाम बेचबाक अनुमति स्वतः भेटि गेल।” कम्पनीक प्रतिनिधि कहलनि जे स्मारकसँ बकाया दावाक सहायता भऽ सकैत अछि। पद्मा पुछलीह, “शर्तक पन्नामे कोन रकम, कोन तारीख?” कागद फेर मौन छल।

कबीर भीड़सँ कनेक दूर ठाढ़ छलाह। हुनकर थैलीमे नैराकें लिखल ओ अनपठाओल चिट्ठी एखनहुँ घरक पेटीमे बन्द छल। ओ सरिताकें देखिकऽ बुझलनि जे एहन दिनमे सान्त्वनाक शब्दसभो व्यापारक पर्ची बनि सकैत अछि। ओ माइक लग गेल नहि; पाछाँ उठल नारा सेहो नहि दोहरौलनि। बस तारा लग पहुँचि कहलनि, “नामक सूचीमे जीवित परिवारक असहमतिक लेल स्पष्ट घर राखू। कियो आज ‘नहि’ कहत आ बरख बाद बदलत, तकरो अधिकार रहय।” तारा सूचीक पहिल कॉलममे ‘इच्छा पूछल गेल वा नहि’ जोड़लीह।

प्राचीन द्वारकाक समुद्री घाटपर, ओहिसँ सर्वथा अलग कालक एक साँझ, यादवसभक विजय-उत्सवक बचल रङ्ग पानिमे बहि रहल छल। एक वृद्ध नाविकक भाई युद्धमे मारल गेल छल। राजवंशक युवक नावक अग्रभागपर ओकर नाम खुरचि अपन विजय-गीतक सङ्ग राखए चाहैत छल। नाविक रोकलक। “भाय हमर नाव खेने छल,” ओ कहलक,

“ओकर मरलाक बाद एतए हमरा रोज मजूरी चाही, जयकारक किराया नहि।” साम्ब ओकरा हँसीमे उड़बए चाहलक। बलराम आगाँ बढ़ि कहने छलाह जे नाविकक नावपर ककरो स्मृतिक आदेश नहि लगत, जाबत मालिक स्वयं नहि चाहत।

कृष्ण नाविकसँ पुछलनि, “तोहर भायक नाम कोना सुरक्षित रहत?” नाविक कहलक, “जतए हम कहब, जतए ओकर स्त्री चाहत।” आभूषण पहिरने एक युवा यादव कहलक जे राजवंशक स्मारकसँ साधारण नाविकक नाम महान भऽ जाएत। कृष्ण उत्तर देलनि, “नामक महानता ठेकेदारक आभूषणसँ नहि, ओकर जीयल काज आ सम्बन्धसँ आबैत अछि।” ओ युवाकेँ घाटक रस्सी उठाएब कहने छलाह, जाहिसँ नाव लगि सकय। नाविकक पत्नी एतबे निर्णय लेलनि जे ओहि दिन कोनो सार्वजनिक नामपट नहि लगत। द्वारकाक विवाद पूर्ण शान्त नहि भेल; किछु यादव लोक अपन प्रभुत्व घटल मानि रहल छल।

सन २०४१क विदेहपुरमे फेर पानिमे उतरल रामसखीक पयरक चोटसँ एक पुरान पीतलक पट्टी निकलल। ओकरा पर अक्षर अपूर्ण छल, आ तारा तुरन्त केकरो नाम घोषित नहि कएलीह। पद्मा पट्टीक भेटबाक ठाम, समय आ साक्षी दर्ज कएलीह; धातुक जाँच लेल सुरक्षित डब्बामे रखलीह। शैलज फेर प्रस्ताव रखलक जे कम्पनी नव स्मारकक संग पुरान वस्तुक संग्रहालय बनाओत। रुहानी कहलीह, “प्राचीन वस्तुक स्रोत, राज्यक नियम आ स्थानीय दावाक जाँच बिना मालिकाना कोना देब?” पट्टी एक वस्तु छल, स्मृति बनएबाक तुरूप नहि। एहि छोट घटनासँ शैलजक जल्दीक एक कारण सभक सामने स्पष्ट भेल।

घाटक कात सुमन टिकुलहारक रंगीन गोल चिन्ह कम्पनीक नव रेखाचित्रमे फेर देखाइत छल। पिछला उत्सवमे चालीस सूचनाफलक लेल सीमित अनुमति मिलल छल, स्मारकक स्थायी सजावटक लेल नहि। सुमन अपन प्राप्ति-पर्ची निकालि कहलीह, “चालीस फलकक लिखित सीमा एखन जकाँ अछि। ई पत्थरक पच्चीस बरखक चित्र दोसर उपयोग अछि।” शैलज कहलनि जे डिजाइन बदलि देल जाएत। सुमन मुस्की देलीह, “बदलू, मुदा फेर ककरो काजकेँ मात्र थोड़ बदलि अपन नहि कहू।” हुनकर पुरान अनधिकृत नकलक क्षतिपूर्तिक दावेपर एहि सभासँ कोनो अन्तिम फैसला नहि भेल।

दुपहरिया ढलए लागल तँ पानिक दू बाल्टी भारी भऽ गेल। सफाइमे लागल जानकी गुलगुलिया आ हीरावती कुररियारक टोली लेल पानीक सुरक्षित ठाम नहि छल। मंचक पाछाँ ठेकेदारक लोक भोजक पात्र रखि देने छल, मुदा काम करनिहारसभ कते बेर प्याससँ घुमैत छलाह। चम्पा टेबुल हटबौलीह। रुहानी स्वयं बाल्टी भरलीह, आ कमला जैनक भतीजी स्वच्छ गिलास राखलीह। एहि छोट व्यवस्थाक खर्च मेला-बजटमे चढ़ल। सरिता देखलीह जे जाहि लोकक नाम स्मारकमे नहि रहत, हुनकर आजुक प्यास तैओ वास्तविक अछि। ओ रामसखीक लग गेलीह आ काजक पंजीमे तेसर सफाइ-दिनक बचल भुगतानक समय पुछलीह।

रुहानी सरिताकेँ बगलमे बजौलीह। “अहाँ हमर बात सुने बिना कम्पनीक प्रस्तावक विरोध करैत छी,” ओ कहलीह। सरिता उत्तर देलीह, “अहाँ पहिले कहू, ठेकासँ आश्रयक काजकेँ के लाभ?” रुहानी बुझौलीह जे किछु परिवार सुरक्षित याद-राखबाक ठाम चाहैत अछि; हर बरख निजी चन्दा माँगब हुनका अपमान लगैत छनि। सरिता मानि लेलनि जे केवल नामक व्यापार रोकबाक नारा सँ ओ परिवारसभक आवश्यकता पूरी नहि होएत। रुहानी सेहो मानि लेलनि जे सहायता चाहैत परिवार स्वामित्व-हस्तान्तरणक चिरस्थायी अनुमति नहि देत। सहमतिमे पहिल बेर असहमत लोकक वास्तविक जरूरत बचल।

सभामे चम्पा प्रस्ताव पढ़लीह—घाटपर एक साधारण सार्वजनिक विश्राम-आ स्मृति-स्थल बनत, जाहिमे नाम जोड़बाक वा नहि जोड़बाक परिवारक स्वतन्त्र चुनाव होएत। कियो नाम सार्वजनिक नहि चाहत तँ ओकर स्मरण लेल दीप रखबाक सुरक्षित ठाम रहत। नामक सूची कोनो कम्पनीक निजी सम्पत्ति नहि बनत। सार्वजनिक प्रति लेल वास्तविक छपाइखर्चसँ बेसी शुल्क नहि होएत, आ निजी पत्र-फोटो बिना स्पष्ट अलग अनुमति नहि छपाएत। प्रस्तावमे अनिवार्य रूपेँ लिखल गेल जे मृत व्यक्तिक श्रम-देय, भूमि-दावा वा क्षतिपूर्तिक हिसाब स्मारकक अनुदानसँ बन्द नहि मानल जाएत।

शैलज पुछलक, “तँ हम खर्च उठाएब आ नामपर अधिकार नहि भेटत?” तारा उत्तर देलीह, “अहाँ प्रतिस्पर्धात्मक निविदामे पाथर, सुरक्षित नींव आ मरम्मतक दाम देबाक प्रस्ताव दऽ सकैत छी। मुदा नाम आ लोकक निजी स्मृतिपर ठेका नहि भेटत।” एक दोसर स्थानीय कारीगर कहलक जे ओ चमकीला पाथरक बदला पुरान ईंटक मेलसँ नींव बना

सकैत अछि, जाहिमे जल निकास सहज होएत। बैठकमे तय भेल जे दू विकल्पक तकनीकी जाँच होएत, मूल्य आ वार्षिक मरम्मत अलग देखल जाएत। एहि निर्णयसँ शैलजक संभावित व्यापारिक लाभ घटि गेल; ओकर कम्पनी स्वतः दोषी साबित नहि भेल।

शैलजक संग आएल ठेकेदारक साथी विरोधमे उठि गेल। ओ कहलक, “रुहानीजी, काल्हि धरि अहाँ सहयोग चाहैत छलीह, आइ कम्पनीकेँ दोष दैत छी।” रुहानी कहलीह, “हम सहयोग चाहैत छी। आश्रयक दुआरक नामपर हम मृतकक नाम बेचबाक अनुमति नहि देलहुँ।” एक पुरान स्वयंसेवक हुनकापर आरोप लगौलक जे सरिताक दबावमे ओ बदलि गेलीह। रुहानी एक क्षण चुप रहीह, फेर पुछलीह, “हमर निर्णयक जाँच करू। मुदा हमरा ककरो छाया कहि निर्णयक अधिकार मेटाउ नहि।” मतभेद सार्वजनिक भेल, आ एहिबेर रुहानी एकाकी मध्यस्थ रहबाक थकान बुझलीह।

साँझक खुलल सभामे फरजाना अपन डिब्बा आगाँ रखलीह। “लाहक जोड़ीक दाम एतबा, शीशाक एतबा, मशीनक एतबा,” ओ स्पष्ट कहलनि। “जे ग्राहक मशीनक सस्ता माल चाहत ओकरा सस्ते भेटत। जे हाथक काज पसिन्न करत ओ श्रमक दाम देत। स्मृतिक नाम लऽ खरीदबाक दबाव नहि।” कमला जैन भोजनक वास्तविक बिल आ दानक छूटक अलग सूची पढ़लीह। रिद्धि पारिवारिक मान्यतामे अपन असहमति रखितो हिसाब पढ़बाक जिम्मेदारी निभौलीह। ई दुनू छोट व्यापारक निर्णय स्मारकक मुख्य विवादमे एकटा नाप बनल—दान, खरिद, विश्वास आ व्यक्ति स्वतन्त्रता एकहि पर्चीक कॉलम नहि।

सरिता अन्तमे नैराक नामक प्रश्नपर बोललीह। “हम एखन सार्वजनिक नामपटपर सहमति नहि दैत छी,” ओ कहलनि। “कबीर जे चिट्ठी लिखने छथि, ओकरो स्थान हमरा अधिकारक भीतर नहि। नैराक जीवनक विद्यालय-कार्यक प्रमाण जे सार्वजनिक अछि, से अपन स्रोतक संग रहत।” एक महिला पुछलीह, “हम अपन पतिक नाम चाहैत छी; तखन?” सरिता उत्तर देलीह, “अहाँक चुनावकेँ हम रोकबाक अधिकार नहि रखैत छी। हमर ‘नहि’ अहाँक ‘हँ’केँ मेटाए नहि।” एहि उत्तरक बाद सभा किछु बेर शान्त रहल। समान शोकसँ समान निर्णय अनिवार्य नहि निकलैत अछि।

मंचक बगलमे पद्मा पूरा प्रस्तावक तीन अलग पन्ना लटकौलीह—जलस्वच्छताक सत्यापित व्यय, स्मृति-स्थलक सम्भावित निर्माण आ मृतकक नामसम्बन्धी सहमतिक नियम। रामसखी आ आन मजदूरक भुगतानक पहिल सूचीमे देय तारीख देल गेल। घाटक निकास-रास्ता रोकबाक कोनो अनुबन्ध मान्य नहि रहत, ई सेहो लिखल गेल। नगरक अधिकारी निर्माण लेल अस्थायी रोक आ नव खुलल निविदाक प्रक्रिया स्वीकार कएलनि। किछु लोक हताश भेल—स्मारक जल्दी नहि बनत। मुदा ओहि दिन सार्वजनिक बाट बन्द नहि भेल, आ काम करनिहारक आजुक हिसाब नामपट बनबाक प्रतीक्षामे नहि रहल।

रुहानी राति आश्रयक ओसारमे घुरलीह। टेबुलपर कम्पनीक पत्रक नकल छल। एक पन्ना पर पुरान स्वयंसेवकसभक हस्ताक्षर छल जे हुनका पद छोड़बाक माँग करैत छल; दोसर पन्ना पर युवा सदस्यसभ लिखने छल जे निर्णय एक व्यक्तिक हस्ताक्षरसँ नहि चलबाक चाही। रुहानी पहिने क्रोधमे पत्र मोड़ए चाहलीह, फेर खोलि रखलीह। शैलजक ठेका सीमित भेल छल, मुदा संस्था भीतर सत्ता केकर हाथमे रहत से प्रश्न अखनहि खुलि रहल छल। ओ सरिताकेँ छोट सन्देश भेजलीह—“स्मारकक निर्णय थामल नहि; एकाधिकारक शर्त हटौल अछि। अगिला बैठकमे नेतृत्वक नियम सेहो राखब।”

सरिता विद्यालयक दुआर बन्द कऽ घर पहुँचलि तँ अन्हारमे नैराक खाली गिलास देखलीह। आज ओ गिलास हटौलीह नहि, नामपटपर नहियो चढ़ौलीह। चूल्हिपर पानि गरम करैत हुनका रामसखीक हरा दागवला हथेली, फरजानाक तीन डिब्बा आ उर्मिलाक बहिनक ठाढ़ रहनाइ याद पड़ल। स्मृति जखन देहधारी लोकक काजसँ कटि व्यापारक चित्र बनि जाए, तखन चमक बहुत होइत अछि, उजास कम। ओ आगि छोट कएलीह। घाटपर नामक ठेका एखन बन्द छल; मरम्मत आ सफाईक काज जारी। रुहानीक अगिला प्रश्न—संस्थाक चुनाव—एहि बदलल परिस्थितिसँ उठत, शून्यसँ नहि।

अध्याय १८४ • रुहानीक चुनाव

सन २०४१क विदेहपुरमे घाट-आदर पर्वक चारि दिन बाद आश्रयक ओसारमे रखल पीतरङ्गक मतपेटीक एक कोन उखड़ि गेल छल। रुहानी ओकरा उठाकऽ देखलीह। भीतर पुरान बाँसक बुरादा आ एक अधजड़ल कील छल। ओ कील ठोकबए लेल हथौड़ी नहि मँगौलनि; पहिने पेटी उलटि कऽ टेबुलपर रखलीह, जाहिसँ देखल जा सकय जे भीतर कोनो दोसर खाना नहि अछि। ओसारक बाहर लोक जमा भऽ रहल छल। केओ हुनका पदसँ हटएबाक नारा देबाक तयारीमे, केओ हुनकर समर्थनमे। रुहानीक हथेलीमे पेटीक खुरदुरापन चुभि रहल छल, मुदा ओ अपन हाथ नहि हटौलीह।

पिछला बैठकमे मृतकक नामपर स्मारकक एकाधिकारवला ठेका रोकल गेल छल। घाटक मरम्मत जारी छल, मुदा शैलजक कम्पनीक प्रस्तावक समर्थकसभ मानि रहल छल जे रुहानी आश्रयक लाभक बाट बन्द कऽ देलीह। दोसर दिस युवा स्वयंसेवकसभ लिखित आपत्ति देने छल जे सहायता-बही, सार्वजनिक सूचनापट आ वार्षिक व्ययक नकल एक्के व्यक्तिक चाभीक भरोसे रहैत अछि। रुहानी दुनू पत्र पढ़ने छलीह। पहिल पत्रमे हुनका पद छोड़बाक माँग छल; दोसरमे हुनकर अकेलापनक हिसाब छल, जाहि हिसाबकेँ ओ बहुत दिनसँ काजक नामपर टारैत अएलीह।

भोरमे शैलजक सहायक आश्रयक फाटकपर आबि कहलनि, “अहाँ सभक बीच मतभेद अछि, एहनमे वित्तीय अनुबन्ध ककर हस्ताक्षरसँ होएत?” रुहानी हुनका भीतर नहि बजौलीह। “आइ चुनावक सभा अछि,” ओ कहलीह, “सम्पत्ति लेल प्रस्ताव रजिस्टरमे जमा करू। मतदानक बीच ठेकाक बातचीत नहि होएत।” सहायक कागद रखि गेल, मुदा फाटकपर ठाढ़ दू पुरान स्वयंसेवक हुनका रोकि लेलनि। एक कहलक जे धन लौटा देबाक निर्णय रुहानी एकले लेलीह। रुहानी उत्तर देलीह, “हम शर्तपर आपत्ति उठौने छी। निर्णयक लिखित प्रक्रिया सभक सामने अछि। जँ हमरा भूल भेल, जाँच एहि सभामे होएत।”

सभाक व्यवस्था करैत चम्पा तीन टेबुल माँजि रहल छलीह। एक टेबुल मतदाता-पंजीक, दोसर मतपत्रक, तेसर आपत्तिक। आश्रयमे पहिनेसँ रहैत हीरावती कुररियार

पुछलीह, “हम राति एतए नहि सुतैत छी; दिनमे मरम्मति-काज लेल अबैत छी। हमर मत चलत?” जानकी गुलगुलिया कहलनि, “हमर घर चलैत अछि, मुदा बच्चासभक पढाइक सवालपर हम सभासँ बाहर किएक?” पुरान स्वयंसेवक बतौलक जे केवल आश्रयक स्थायी सदस्य मतदान करत। एक क्षणमे सहायता लेल बाहर आवयवला बहुत लोक फाटकक दोसर कात पहुँचा देल गेल।

तारा मतदाताक पुरान नियम पढ़लीह। ओकर पाँचम पन्ना पर ‘निवासी अथवा नियमित सार्वजनिक सहयोगी’ लिखल छल, मुदा नियमित शब्दक अवधि निर्धारित नहि छल। पद्मा पिछला छह मासक उपस्थिति-बही अनलीह। रुहानी कहलीह, “आइ जँ हम मनसँ मतदाता जोड़ब वा हटाएब, तखन चुनाव हमरा विरुद्ध हो अथवा पक्षमे, दुनू अविश्वसनीय रहत।” अस्थायी निर्णय भेल जे छह मासक नियमित श्रम अथवा आश्रयक सेवाक लाभक लिखित पंजीवला वयस्क लोक मतदान करथि। जकर नाम छूटल अछि ओकर आपत्ति ओतहि सुनल जाए; अस्थायी निवासीकेँ मतदानक अधिकार नहि देबाक पुरान अनुमान सुधारल जाए।

सभाक पिछिला पाँतिसँ सत्ताइस वर्षक झरना उठलीह। ओ दुइ वर्षसँ बाढ़क रातिमे आश्रयक द्वार खोलबाक पालि करैत छलीह। हुनकर पिता कखनहुँ स्थायी निवासी नहि छलाह; उपचारक समय मात्र एतए ठहरल छलाह। झरना कहलीह, “हम पद लेल उभि रहल छी, मुदा हमरा नामक आगाँ ‘रुहानीक लड़की’ नहि लिखब। आश्रयक काम हम सीखने छी, सहमतिक अर्थ सेहो बुझैत छी। जे काज नहि बुझब, ओकरा नबुझबाक बात सार्वजनिक कहब।” हुनकर आवाजमे मंचक अभ्यासक चपलता नहि, रातिक थकान छल।

दोसर प्रत्याशी पुरान स्वयंसेवक महेन्द्र छल। जलनिकासक संकटमे ओ गाड़ी उपलब्ध करौने छल; एहि उपकारक स्मृति बहुत परिवारक लग छल। ओ प्रस्ताव रखलक जे दातासँ बातचीत तेज करबाक लेल अध्यक्षकेँ आपातकालीन हस्ताक्षरक अधिकार चाही। झरना पुछलीह, “आपातकालीन उपचार लेल अलग अधिकार राखू। मुदा मृतकक नाम, निजी फोटो आ आश्रयक जमीनपर स्थायी समझौता एक व्यक्तिक आपातकालीन हस्ताक्षरसँ किएक होएत?” महेन्द्र कहलक, “चन्दा नहि भेटत तँ दरबज्जा बन्द होएत।”

किछु लोक हुनकर बातपर जोरदार सहमति देलक। रुहानीक मनमे अपना पहिनुक डरक स्वर गूँजि उठल।

एही बीच रुचि धारिकार अपन बेटी छबीलीक सङ्ग पहुँचलि। हुनकर बाँसक डलियामे पातर मोड़ल चटाइ, लाल-पिअर पट्टीक दोहरा घूमाव आ चेतावनी-खम्भा लेल बनल हलुक बाँधनी छल। पुरान शिल्प-प्रदर्शनीमे रुचि अपन परिवारक एहि बुनौटपर अधिकारक प्रश्न उठौने छलीह। नगरपालिका ओकर फोटो देखि ‘स्थानीय चेतावनी-नमूना’ नामसँ छाप बनौने छल; रुचिक आपत्तिपर नकल रोकल गेल छल। आब आश्रयक नव बुनाइ-कार्यदल चाहैत छल जे सुरक्षित निकासी-बाटपर ओही आकृतिवला पट्टी बनाओल जाए। रुचि मूल नमूना टेबुलपर राखि कहलीह, “देखबाक अनुमति आ बनाकऽ बेचबाक अधिकार एक नहि अछि।”

महेन्द्रक समर्थक एक कर्मचारी कहलक, “सभ राहतक काममे एतेक अधिकारक लेखा राखब तँ पहिनुक ठाम बाढ़ आबि जाएत।” रुचि टेबुलपर चटाइ पसारलीह। ओकर बीचक गाँठ उँगरीसँ खोलि देखौलीह—एहि ठाम दू रङ्गक सूत भीतर उलटि एक-दोसराकेँ थामैत छल। “एहि गाँठमे हमर बेटीक संशोधन अछि,” ओ कहलीह, “आ बाहरी बाँधनीक नाप हम कएलहुँ। जँ आश्रय अपन माप बदलि बनबाओत तँ कामक दाम देत। मुदा पहिनुक नमूनाकेँ आश्रयक ‘दान’ कहि अपन नामपर छपाएत नहि।” छबीली अपन कापीमे अलग आकृति देखौलक, जाहि पर ओ अपन नाम लिखने छल।

झरना रुचिक बात पूरा सुनलीह। ओ सहकारी उत्पादनक एक पन्नाक मसौदा बनबौलनि—मूल बुनौटक स्रोत रुचिक परिवार, छबीलीक संशोधित गाँठक श्रेय अलग, बाँस आ सूतक खर्च अलग, बुननिहारक प्रति-घण्टा पारिश्रमिक अलग। आदेशक संख्या, सुरक्षित उपयोगक परीक्षण आ पुनः छपाइक अनुमति आगाँसँ लिखित होएत। रुचि नकल करबाक सार्वकालिक अधिकार देबाक बदला पहिल तीस सुरक्षा-पट्टीक सीमित आदेश स्वीकार कएलीह। महेन्द्र पुछलक जे लाभांश कोना बाँटल जायत। झरना उत्तर देलीह, “उत्पादनक खर्च कटबाक बाद जे लाभ होएत, तकर अनुपात सभ सदस्य बैठि तय करता; एखन अनुमानक रकम बाँटि ककरो ऋणी नहि बनायब।”

छबीली मायक कानमे पुछलक, “माए, ओसभ हमरा साँच्चै बुननिहार मानत?” रुचि उत्तर देलीह, “तोहर नमूना तोहर काजसँ परिचित होएत। हम गवाही देब, मुदा तोहर जगह तोहर हाथे भरत।” ओ नव पट्टीक गाँठ बाँधि देखौलीह। छबीलीक अँगुरी फिसलल, दोहरा घुमाव कनेक टेढ़ भेल। जानकी कहलीह, “फाटकक संकेतमे एहि टेढ़ापनसँ कोनो भ्रम नहि होएत?” तारा परीक्षणक लेल दिन आ रात्रिक दृश्य-दूरीक दू अलग माप निर्धारित कएलीह। अपन कला बचबए लेल उपयोगक सुरक्षा पर प्रश्न बन्द करब रुचि स्वयं नहि चाहैत छलीह।

शान्ति बारी विवाह-सामग्रीक पेटी लऽ ओतहि पहुँचलि। मौरक छाल, रङ्गीन तोरण आ फूलक धागा भीजल नहि रहय तँ ओ पेटीपर पातर चटाइ रखैत छलीह। लगक गामक विवाह लेल मंगल-मण्डप सजएबाक प्रस्ताव आएल छल। परिवारक प्रतिनिधि कहलनि, “ई सार्वजनिक आश्रयक सहयोगी विवाह अछि; एखन पूरा सामग्री दऽ दिअ, दान अएला पर रुपैया देब।” शान्तिक चेहरापर पुरान उधारीक थकान उतरि अएल। पहिने दू परिवार ‘धन्यवाद’ लिखि दाम रोकने रहि गेल छल, से बही हुनकर झोरामे सुरक्षित छल।

“आनन्दक अवसरपर ककरो कठिनाइ बुझैत छी,” शान्ति कहलीह, “मुदा छाल खरीदैत व्यापारी हमर भाव नहि छोड़ैत अछि। फूलक धागा बान्हैत समय चाही। एखन लागतक आधा अग्रिम, शेष सामग्री हस्तान्तरणपर। जँ परिवारक पैसा कम अछि तँ अलग चन्दा जुटाउ; हमर मजदूरीकँ चन्दा मत कहू।” प्रतिनिधि कहलनि जे रुहानी एहन समयमे छूट करबैत छलीह। रुहानी धीरसँ कहलीह, “हम सहायता-कोषसँ लिखित, समान नियमपर मददक बात कऽ सकैत छी। शान्तिक श्रम माफ करबाक अधिकार हमरा नहि।”

शान्ति साझा उपयोगक तैयार तोरण कम किरायापर देबाक विकल्प देखौलीह, जाहिमे टूटफूटक जिम्मेदारी अलग छल। परिवार अपन कातसँ विचार कएलक। बेटी कहलीह जे ओ भारी सजावट नहि चाहैत छथि; पातर तोरण पर्याप्त अछि। ओ अपन बचतसँ अग्रिमक पहिल हिस्सा देलीह, बाँकी सहायताक आवेदनक लेल खुलल नियम पढ़लीह। शान्ति रसीद देलीह; आदेश छोट भेल, मुदा श्रमिकक मूल्य सुरक्षित रहल। रुहानीकँ बुझायल जे संस्था दानमे जीबैत अछि, मुदा ओकर दुआरपर होइत लेनदेनमे ‘दान’ सभटा समान वस्तु नहि बनबैत अछि।

मध्यान्हक घाममे ओसारक झूलैत घण्टी खसि कऽ बजि उठल। चम्पा कुर्सी पर रखल पानीक घड़ा सम्हारलीह। मतदान शुरू होएबाक पहिने एक बहिरा वृद्ध सदस्य अपन बेटीकेँ इशारा कएने छलाह; पर्चीक छोट अक्षर हुनका बुझाईत नहि छल। पद्मा नाम आ प्रस्तावक सार पैघ अक्षरमे लिखलीह, आ तटस्थ दुभाषियाक माध्यमसँ मतदानक नियम बुझाओल गेल। बेटी अपना पिताक स्थानपर चिह्न लगबए चाहलीह। वृद्ध सदस्य सिर हिलाकऽ रोकलनि, फेर स्वयं चिह्न चिन्हित कएलनि। सभाक प्रतीक्षा दू घड़ी बढ़ल, मुदा एहि देरीकेँ चुनावक दोष नहि मानल गेल।

रुहानी मंचक आगौं अएलीह। “अहाँ सभ हमरा पर भरोसा कएलहुँ तें बहुत दिन हमर नाम पर दरबज्जा खुलल,” ओ कहलीह। “एक बेर एहि भरोसाक सहारे हम स्वयं मानि लेलकहुँ जे हर संकटमे हमर हस्ताक्षर चाही। ई व्यवस्था आब बदलत।” महेन्द्र तुरन्त पुछलक, “तखन पहिनुक गलत अनुबन्धक जिम्मेदारी को लेत?” रुहानी उत्तर देलीह, “जे प्रस्तावपर हम सही कएलहुँ, ओकर जाँचमे हम उपलब्ध रहब। नव अध्यक्ष चुनल गेलासँ हमर पुरान दस्तखतक हिसाब नहि मेटत।” सरिता पाछाँसँ सुनैत छलीह; ओ एक बेरो ताली बजौलीह नहि।

पुरान स्वयंसेवकसभक एक दल चाहैत छल जे रुहानीक नाम मतपत्रपर अनिवार्य रहय। रुहानी स्पष्ट कहलनि जे ओ एहि बेर अध्यक्ष पद लेल प्रत्याशी नहि छथि; संक्रमणक दू सप्ताहमे अभिलेख सुपुर्द करबाक जिम्मेदारी निभौतीह। एक युवक पुछलक, “दुई सप्ताहमे सभ फाइल पढ़ल जाएत?” तारा बतौलीह जे व्यक्तिगत चिकित्सकीय पर्ची आ निजी पत्र समितिक सदस्यसभक खुलल मेजपर नहि जाएत। धनक लेखा, सार्वजनिक अनुबन्ध, मरम्मत-मद आ असहमतिक पंजी जाँच लेल उपलब्ध रहत। ओ ‘सभ अभिलेख साझा’ कहबाक आसान नाराकेँ तीन अलग स्तरमे बाँटि देलीह।

मतदानक एकदम पहिने महेन्द्रक सहयोगी कहलनि जे कम्पनीक दानक वचनपत्र हुनका पक्षक जीतक शर्त पर अछि। शैलज स्वयं ओतए नहि छल, मुदा हस्ताक्षरवला कागद सचमुच मेजपर छल। तारा ओ कागद पढ़लीह; एक पाँतिमे ‘कार्यकारी नेतृत्वक निरन्तरता’ लिखल छल। कोनो विशिष्ट प्रत्याशीक नाम नहि छल। महेन्द्र स्वीकार कएलक जे ओ एहि वाक्यकेँ अपन पक्षक समर्थन मानने छल। झरना कहलीह, “दाता

अपन सहमति देखि, मुदा मतदाता बनि नहि जा सकथि।” कागद मतपेटीसँ दूर सार्वजनिक प्रस्तावक पेटीमे रखल गेल। एहि असमंजसमे कियो शैलजकेँ अपराधी घोषित नहि कएलक, मुदा दानक आशय जाँचबाक शर्त लिखल गेल।

प्राचीन द्वारकाक समुद्र-घाटपर, एहि आधुनिक निर्वाचनसँ सर्वथा अलग कालमे, यादवसभक उत्सवक बाद बाँटल पहराक विषयमे सभा जुटल छल। साम्ब कहैत छल जे विजयक बाद राजवंशक नव युवकसभकेँ घाटपर पहिल अधिकार भेटबाक चाही। एक नाविक पुत्र कहलक जे पहराक समय बदलबासँ राति माछ लऽ घुरनिहारक नाव अन्हारमे अटकि जायत। बलराम जवानसभक साहसक प्रशंसा कएलनि, मुदा ओकरा आज्ञाक स्वतः आधार नहि मानलनि। एक युवक रस्सी खींचि नाव रोकए चाहलक। कृष्ण ओकर हाथ पकड़ि कहलनि, “बल जखन ओहि रस्सीपर पड़त जेकरा तुम नहि बनौने छी, तखन ओकर खिंचाव पहिने नापू।”

वृद्ध नाविक बहुते दिनसँ घाटक पहरा-क्रम रखैत छल। ओ अपन लिखल नामसभ देखौलक—कोन परिवारक नाव कुन ज्वारमे घुरैत अछि, केकर रोगी लेल राति बाट चाही। साम्ब कहलक जे पुरान क्रम राजवंशक इच्छा सँ बदलि सकैत अछि। कृष्ण उत्तर देलनि, “राजवंशक इच्छा बदलत, मुदा जलक समय आ नाविकक परिश्रम आदेशसँ नहि बदलत।” सभा तय कएलक जे नव पहराक प्रस्ताव सार्वजनिक सुनवाई बिना लागू नहि होएत। साम्ब असन्तुष्ट रहल। नाविकक नाव ओहि राति घुरल; यादवसभक भीतरक घमण्ड अपन अगिला रूप खोजि रहल छल।

सन २०४१क विदेहपुरमे फेर मतपेटीक ढक्कन सील कएल गेल। तीन पर्यवेक्षक छलाह—आश्रयक वयस्क निवासी, नियमित कार्यकर्ता आ पड़ोसक सार्वजनिक पुस्तकालयक प्रतिनिधि। मतगणनाक समय महेन्द्र अपन समर्थकसभक चुप्पी देखैत छल। झरना पानीक गिलास छूति-छूति हाथ रोकि रहल छलीह। पर्चीपर लिखल दू नामक गिनती दू बेर भेल। दू मतपत्रमे चिह्न अस्पष्ट छल; ओकरा खारिज करबाक आधार सार्वजनिक पढ़ल गेल आ सम्बन्धित आपत्तिक प्रति सुरक्षित राखल गेल। अन्तिम परिणाममे झरना अल्प किन्तु स्पष्ट अन्तरसँ चुनल गेलीह। संख्या सार्वजनिक पटपर लिखल गेल; हारल उम्मीदवारक मतो ओहि समान स्याहीसँ लिखल गेल।

महेन्द्र पहिने आक्रोशमे उठि गेल। फाटक धरि पहुँचि ओ फेर घुरल। “हमर समर्थक दू पर्चीपर आपत्ति करैत छथि,” ओ कहलक। पद्मा ओकरा आपत्तिक क्रमाङ्क देलीह। “मतदानक निर्णय आजु लागू होएत; अस्पष्ट पर्चीक समीक्षा सात दिनक भीतर खुलल नियमानुसार होएत। ओकरा जँ बदलाबै योग्य प्रमाण भेटत तँ परिणामक पुनर्गणना करब।” महेन्द्र अपन आपत्ति पर हस्ताक्षर केलक। रुहानी हुनका धन्यवाद नहि देलीह; केवल कुर्सी देलीह। जे मतभेद राति रहि सकैत छल, ओकरा तहस-नहस करि दएबाक बदला सुनवाईक ठाम भेटल।

झरना निर्वाचित अध्यक्षक कुर्सीपर बैसबाक बदला पहिने चाभीक गुच्छा मँगौलीह। रुहानी तीन चाभी रखलीह—सार्वजनिक पंजी, सामग्री-भण्डार आ निजी स्वास्थ्य-कोठरीक। झरना तेसर चाभी घुरा देलीह। “ई चिकित्सकीय सहायताक गोपनीय रखरखाव अधिकारी लग रहत। सभ चाभी अध्यक्ष लग रहनाइ अपने समस्या छल,” ओ कहलीह। रुहानीक देह हलुक भेल, मुदा एकटा खालीपन सेहो आएल। अनेक वर्षक राति आ दुर्घटनामे ई चाभी हुनकर देहक हिस्सा जकाँ बनि गेल छल। ओ पहिल दू चाभी हस्तान्तरणक रसीदपर हस्ताक्षर कएलीह।

साझा उत्पादनक समिति लेल रुचि आ शान्ति अपन-अपन प्रस्ताव नव अध्यक्ष समक्ष रखलीह। रुचिक तीस सुरक्षा-पट्टीक पहिल खेप लेल कच्चा मालक अग्रिम, प्रतिटुकड़ी मेहनताना आ डिजाइनक सीमित प्रयोगक लिखित स्वीकृति भेल। छबीलीक अलग गाँठक परीक्षण पूरा भेलाक बादे उपयोग होएत। शान्तिक पातर विवाह-तोरणक अग्रिम रकम परिवारक हाथसँ वास्तवमे प्राप्त भेल; शेष देयक दिन रसीदपर लिखल गेल। एहि दुनू व्यवसायमे संस्था नेता बदलला पर पुरान वचनकें नहि मेटाओत, ई नव कोषाध्यक्ष घोषित कएलीह।

तारा सामाजिक खाताक जाँच लेल तीन मासक चक्र प्रस्तावित कएलीह। झरना एखन अध्यक्ष बनिते पुछलीह जे जाँचक अध्यक्ष ओ स्वयं बनतीह की? उत्तरमे चम्पा कहलीह, “जे काजक हिसाब देत, ओही अकेले ओकर जाँच कोना करत?” तय भेल जे सार्वजनिक लेखा-परीक्षकक अलग चुनाव होएत; निजी जानकारीक गोपनीयता, आपत्तिक निस्तारण आ श्रमिकक वास्तविक भुगतान तीन अलग रजिस्टरमे देखल जाएत। दानक प्रस्ताव

आयत, मुदा दानक शर्त संस्थाक निर्णयपर गुप्त नियन्त्रण नहि पाओत। एहिसँ शैलजक अगिला पत्र महत्त्वपूर्ण, किन्तु निर्णायक नहि रहल।

सरिता रुहानी लग आगाँ बढ़लीह। काल्हि स्मारकक प्रश्नपर दुनूक स्वर कठोर भऽ गेल छल। आइ सरिता कहलनि, “अहाँ जे ठाम बनौने छी, ओकरा केवल अहाँक नाम कहि मेटाएब उचित नहि।” रुहानी उत्तर देलीह, “आ एकरा केवल हमर नाम कहि बचाएब सेहो उचित नहि छल।” दुनू हँसलीह नहि। कनेक काल बाद सरिता पुछलीह जे ओ एखन की करतीह। रुहानी कहलीह, “दू सप्ताह फाइल पढ़ाएब, फेर आश्रयक बाहरी टोलीक संग रहब। जे लोक अन्दर नहि रहैत अछि, हुनकर जीवनक बाट जानब।” सरिताक हाथ एक क्षण रुहानीक बाँहपर टिकल।

साँझमे विद्यालयक ओसारसँ बच्चासभक पढ़बाक आवाज आबि रहल छल। छबीली नव गाँठक पट्टी बनबैत छलीह; हुनकर माथपर पसीना छल, मुदा ओ बुनौटक बीच एकटा गलती स्वयं खोलि सुधारलीह। शान्ति बारी टेबुलपर प्राप्त अग्रिमक रुपैया गनैत छलीह। महेन्द्र अपन आपत्तिक रसीद लऽ चलि गेल। झरना सार्वजनिक सूचनापटपर पहिल निर्णय लिखलीह—‘नेतृत्व बदलल अछि; देय, अपील आ सहमतिक सीमा नहि मेटल।’ रुहानी पेटीक उखड़ल कोन देखैत रहलीह। बिहान ओहि पेटीकेँ सुधारब जरूरी छल; एहि बेर ओकरा एकल हाथ नहि, निर्वाचित समितिक हाथ सुधारत।

राति शैलजक कम्पनीसँ एक नव लिफाफा पहुँचल। ऊपर ‘दानक संशोधित शर्त’ लिखल छल। झरना ओकरा तत्काल स्वीकार नहि कएलीह; प्रातः सार्वजनिक प्रस्तावक पंजीमे चढ़ेबाक निर्देश देलीह। रुहानी अपन कोठरीक दुआर खुलल छोड़ि कापीक अन्तिम पन्ना समेटलीह। ओकरा भीतर एकटा वाक्य रहि गेल छल—जे संस्था जीवित रहत, ओकरा अपन संस्थापकक निर्णयक समीक्षा करबाक साहस चाही। बाहर पानिमे डुबल घाटक पहिल सीढ़ी पर काइ फेर जमए लागल छल। काज खत्म नहि भेल; काजक अधिकार बदलल छल।

अध्याय १८५ • दानक शर्त

सन २०४१क विदेहपुरमे बिहानक पहिल घण्टी बजल तँ झरना आश्रयक ओसारमे दूटा लिफाफा अलग-अलग रखलीह। एक पर शैलजक कम्पनीक छाप छल; दोसरपर देवव्रतक सहायता-संस्थाक पुरान नीला चिह्न। पिछला राति निर्वाचित अध्यक्षक रूपमे हुनकर पहिल काज चाभी लेब छल, मुदा आइ हुनका कागदक एकटा शब्दसँ डर लागि रहल छल —‘निःशर्त’। ओ लिफाफा खोलबाक पहिने बाहर बैसल दू वृद्धाक लेल पानी रखौलीह। महेन्द्र पहिनेसँ ठाढ़ छल। ओकर प्रश्न छल, “घाटक सीढ़ी टूटल अछि, दान एखन रोकि राखब तँ लोक केना उतरता?” झरना कहलीह, “सीढ़ी बनबाक चाही। मुदा ककर नामपर, ककर शर्तपर—ई आजु खुलल सभामे पढ़ल जाएत।”

शैलजक संशोधित पत्रमे स्मारकक नामक स्थायी एकाधिकार हटाओल गेल छल, मुदा ‘संस्थागत प्रचारक प्रमुख भागीदार’ बनबाक अधिकार बाँकी छल। देवव्रतक पत्र अलग छल। ओ आश्रय, प्राथमिक उपचार आ सार्वजनिक रसोइ लेल पुरान सहायता-निधि फेर चलएबाक प्रस्ताव देने छलाह। एहिमे ‘आवश्यक प्रमाण उपलब्ध करब’ लिखल छल, संगहि ‘अनावश्यक विवादसँ संस्थाक रक्षा’ करबाक एक पाँति सेहो। पद्मा लाल स्याहीसँ ओहि पाँतिक नीचाँ रेखा देलीह। झरना पहिने दुनू पत्र अलग पंजीमे चढ़ौलीह। ओ नहि चाहैत छलीह जे एक दाताक शर्त हटेबाक उत्साहमे दोसर दाताक अपूर्ण जाँच भुलायल जाए।

देवव्रतक सहायता-सन्दूकक पुरान कागद लऽ रमा पहुँचलि। एक बेर दवाइक खेपक निर्गत-पर्ची आ अस्पतालक प्राप्ति-पंजी एक-दोसरासँ मेल नहि खाएल छल। बादमे जतेक सहायता रोगी धरि पहुँचल से प्रमाणित कएल गेल, मुदा एक अस्पष्ट खेपक स्रोतक प्रश्न एखन शेष छल। महेशक मृत्यु आ सम्बन्धित धमकीक जाँच सेहो अलग सक्षम कार्यालयमे चलैत छल। रमाक आवाज निचाँ छल, “हम देवव्रतकेँ दोषी घोषित करबाक अधिकार नहि रखैत छी। हुनका दानक कारण निर्दोष घोषित करबाक अधिकार सेहो नहि।” झरना एहि पूरा वाक्यकेँ कार्यसूचीमे लिखबौलीह।

दस बजिते देवव्रत स्वयं आएलाह। हुनकर सङ्ग रमेश्वर नहि छल, ओ अकेले छोट कपड़ाक थैलीमे बहीक नकल लऽ पहुँचलाह। “जकरा सहायता चाही, ओकरा विवादक अन्तिम निर्णय धरि भूखल नहि राखल जाए,” ओ कहलनि। महेन्द्र सहमतिक आवाज उठौलक। किन्तु गोमती हुनका पुछलनि, “अहाँक सहायता-निधिक नूतन रकमक हिसाब अलग खोलबामे आपत्ति अछि?” देवव्रत कहला, “नहि। मुदा हर पन्नापर हमरा नाम छापब जरूरी नहि।” झरना कहलनि, “नाम छपय वा नहि, तकर चुनाव दानदाता करथि; रोगीक निजी परिचय छपय वा नहि, तकर अधिकार दानदाता लग नहि।”

ओसारक बाहर सूरज चौधरी ताड़क दू पातर पात, एक खाली बोतल आ पुरान रसक लोटा लऽ आएलाह। हुनकर पिता नन्दू चौधरी पहिने सँ अपन घरक पेशा छोड़बाक बातपर नाराज छलाह। नगरक उत्सवमे पेय बाँटबाक प्रस्ताव देवव्रतक निधिसँ जुड़ल छल, आ आयोजक चाहैत छल जे सूरज गाछ पर चढ़ि ताजा रस उतारथि आ बोतलपर सहायता-संस्थाक छाप लगा दिअथि। सूरज अपन हथेलीक घिसल चमड़ी देखबैत कहलनि, “गाछक चढ़ाईक दाम, रसक दाम आ बोतल भरबाक दाम तीनू एक नहि। दानक नामपर हमर देहक जोखिम मुफ्त नहि।”

नन्दू कहला, “हमर पिता चढ़ैत छलाह, हम चढ़ैत छी; एहि काजमे एहन पर्ची कखनसँ चाही?” सूरज उत्तर देलनि, “ताहि कारण सँ तँ पर्ची चाही जे जखन पाँजर टूटैत अछि तखन ‘परिवारक पेशा’ कहि कियो जिम्मेदारी नहि लैत।” झरना सूरजक लोटा उलटि देखलीह; भितर सूखल रसक पातर परत छल। सूरज बतौलनि जे ओ जाँचल, सुरक्षित, गैर-मादक पेयक नव व्यवसाय शुरू करए चाहैत छथि। रसकें स्वच्छ रखबाक उपकरण आ पदार्थक परीक्षणक खर्च लगत; बाजार पाबि गेलासँ गाछपर चढ़निहारक मेहनताना अपने आप नहि भेटत।

देवव्रत कहला जे हुनकर संस्था पहिल परीक्षणक खर्च देबामे रुचि रखैत अछि। नन्दू एतबे सुनि उत्साहित भेलाह। मुदा सूरज सहायताक पन्ना पढ़ैत रुकि गेलाह—‘उत्पादक द्वारा संस्थाक अनुशंसित चिह्नक अनिवार्य उपयोग’। ओ सिर हिलौलनि। “पहिल दस खेप पर सहमत भऽ सकैत छी, मुदा जीवन भरि अपन पेयपर दोसरक नाम नहि बेचब,” ओ कहलनि। तारा मसौदामे लिखलीह जे उपकरणक सीमित अनुदानसँ डिजाइन, गाछ, रस

अथवा भविष्यक बिक्रीपर स्वामित्व नहि बदलत। सुरक्षित चढ़ाईक प्रशिक्षण आ गाछक मालिकक सहमति अलग चाही। नन्दू एहि शर्तपर असहमत रहलाह, मुदा सूरज अपन हिस्साक प्रस्तावपर हस्ताक्षर कएलनि।

सभा चलि रहल छल तँ बस अड्डासँ अमीना भठियारा दूटा ढक्कनवला भगौना लऽ पहुँचलि। भात ठण्ढा नहि होए तें ओ पुरान कम्बलमे लपेटने छलीह। तीन यात्री पहिने नगद दऽ भोजन लएने छलाह, आ पुलिसक गश्ती दलक दू सदस्य काल्हि उधारीपर खएने छलाह। अमीना दूरसीद टेबुलपर रखलीह। “यात्रीकेँ जे दाम, वर्दीधारीकेँ सेहो ओतबे दाम। जँ सरकारी खर्चसँ भोजन लेब तँ विभागक नाम, आदेश आ भुगतानक तिथि चाही,” ओ कहलीह। एक अधिकारी झुँझला कऽ कहलनि जे वर्दीक अपमान भऽ रहल अछि। अमीना निस्तब्ध ठाढ़ रहलीह, फेर खाली भगौना देखौलीह—“अपमान एहि खाली बर्तनमे अछि की हमर रसीदमे?”

झरना अधिकारप्राप्त अधिकारीकेँ बजा कऽ पुछलीह जे गश्ती दलक भोजनक स्वीकृत बजट अछि वा नहि। दस्तावेजमे दू सदस्यक ड्यूटी-भोजनक मद छल, मुदा अमीनाक दोकानक नाम नहि। अधिकारी कहलनि जे नगद चुकाएब सम्भव अछि, अगिला दिनसँ लिखित आदेश होएत। अमीना बिना लिखित स्वीकृतिक खुलल उधारी आगे नहि देबाक निर्णय कएलीह। ओ दुनू पुरान बिलक रकम हाथमे पएबाक बादे प्राप्तिक रसीद देलीह। तारा ओ भुगतानकेँ देवव्रतक दानमे नहि जोड़लीह; ई खाएल भोजनक वास्तविक दाम छल, परोपकार नहि।

एहि बीच अरुण बरनवाल दोकानक हिसाबवला मोट बही लऽ सभामे पहुँचलाह। पहिने सार्वजनिक मञ्चपर हुनका दानक माला पहिरएबाक आग्रह कएल गेल छल, मुदा ओ किछु देय कर चुकएबाक बात कऽ माला लौटा देने छलाह। आब देरीक ब्याज बढ़ल छल आ दुकानक ग्राहकी ओहि कारणसँ घटने छल जे ‘दानदाता’ सभाक प्रचारमे हुनकर नाम नहि देखाइत छल। अरुण नारा नहि लगौलनि। ओ बैंकक जमा-पत्रक प्रमाणित प्रति टेबुलपर रखलनि। “मूल कर आ गणना कएल देरीक ब्याज एखन चुकौलहुँ,” ओ कहलनि, “अपील योग्य एक अतिरिक्त मद बाकी अछि। ओकरा चुकल कहल जाए, एहन हम नहि कहब।”

महेन्द्र पुछलक, “अहाँ प्रचार छोड़ि कर चुकौलहुँ, तँ अब फेर दान देब की?” अरुण कहलनि, “दान देबाक पहिने हमर दुकानक मजदूरक दू दिनक रोकल वेतन जाएत। नामपटपर हमर फोटो नहि चाही। जँ बादमे किछु बचत होएत तँ लिखित निधिमे देब।” हुनकर छोट भाइ विरोध करैत छल जे शहरमे प्रतिष्ठा घटलासँ उधारीक सौदा सेहो कठिन भऽ रहल अछि। अरुण एहि क्षतिकेँ हलुक नहि मानलनि। ओ स्वीकार कएलनि जे छविक ह्रासक दाम परिवार भोगि रहल अछि। मुदा कर चुकएब आ दानक मंच सजाएब एकहि जिम्मेदारी नहि।

दुपहरिक सभामे झरना देवव्रतक प्रस्तावक सात शर्त एक-एक कऽ पढ़लीह। दानक रकम स्वतंत्र बैंक-खातामे रहत; खर्च सार्वजनिक होएत; रोगीक नाम, चिकित्सा-पत्र आ आश्रय-निवासीक निजी जानकारी दाताकेँ नहि भेटत; सेवा-प्राप्तिक बदला मुकदमा वा अपील छोड़बाक शर्त नहि चलत; आपूर्तिक ठेका खुलल परीक्षणसँ होएत; दाताक पुरान कारोबारक जाँच अलग चलत; गलती पाबि गेलासँ भुगतानक बचल हिस्सा रोकबाक आ कोष फिर्ता करबाक प्रक्रिया पहिनेसँ लिखल रहत। पद्मा ई बिन्दुसभ छोट अक्षरमे नहि, सभकेँ पढ़ाए लायक पैघ पन्नापर चिपकौलीह।

एक महिला उठि पुछलीह, “देवव्रतजीक रुपैया नहि लेल जाए तँ हमर बीमार बच्चाक औषधि के देत?” ओहि प्रश्नमे सभाक शोर थमि गेल। चम्पा उत्तर देबाक पहिने बच्चाक स्थिति पुछलीह, मुदा सार्वजनिक माइकपर रोगक नाम नहि कहलनि। “आजुक आवश्यक उपचारक वैध व्यवस्था चलैत रहत,” ओ कहलीह। “दू दाताक विवादसँ रोगीक पर्ची नहि रुकत। मुदा कल्हि केकर धन आएत, तकरा कारण ककरो शिकायत वापस लेबाक आदेश नहि होएत।” देवव्रत स्वयं कहलनि जे तत्काल वैध औषधि-व्यवस्थाक लेल दानक अपमान आवश्यक नहि, ओकर लेखा आवश्यक अछि।

प्राचीन द्वारकाक एक अलग साँझमे, यादव-उत्सवक पछिला दिन, घाटक पातर लकड़ीक पुल मरम्मत लेल अन्नक चन्दा जुटैत छल। एक प्रभावशाली कुलपति अनाजक पैघ मटका दऽ कहलनि जे पुलक पहिल पार हुनकर परिवारक नावकेँ भेटत। वृद्ध नाविक निचाँ झुकि पुलक भसियाएल बाँस देखौलक। “जे लाकड़ि हम जोड़ब, ओकरा पार करबाक बाट दानक मटकीसँ नापल जाएत की?” ओ पुछलक। साम्ब कहलक जे

राजवंशक सहायता नहि होएत तँ पुले नहि बनत। बलराम मटकाक ढक्कन उठा कऽ देखलनि—अन्न छल, पर ओकर भीतर ककरो नाम लिखल नहि छल।

कृष्ण ओहि प्राचीन सभामे ककरो उदारता अस्वीकार नहि कएलनि। मुदा नावक क्रम बदलबाक प्रस्ताव अलग सार्वजनिक सुनवाई लेल राखल गेल। कुलपति क्रुद्ध भऽ मटका उठाबए चाहलनि; हुनकर भतिजा रोकलक, किएक तँ पुल टूटलासँ राजपरिवारक नाव सेहो नहि चलि सकैत छल। अन्तमे अन्न पुल-मरम्मत करनिहारसभक भोजनमे उपयोग करबाक अनुमति भेटल, बिना घाटपर वंशाधारित पहिल अधिकारक शर्तक। साम्ब मुख फेरि लेलक। पुलक एक टुकड़ा ओहि दिन जुड़ल, मुदा कुलक भीतरक अपमान-बोध टिकल रहल। पुरान दृश्य अपन अलग इतिहासमे एतहि समाप्त भेल; ओ आधुनिक दान-खाताक प्रमाण नहि छल।

सन २०४१क विदेहपुरमे फेर दुपहरि ढलैत छल। झरना पुछलीह जे ककरो देवव्रतक दानसँ व्यक्तिगत हितक टकराव अछि की। महेन्द्र कहलक जे ओकर एक परिचित कम्पनीक ढुलाई-ठेकेमे काम करैत अछि, मुदा ओ स्वयं शेयरधारक नहि। तारा एतबा लिखलीह, फेर पूछलीह जे परिचितक अनुबन्धक प्रति उपलब्ध होएत? महेन्द्र पाछाँ हटि कहलक, “हम नहि जनैत।” तारा ‘ज्ञात नहि’ लिखलीह, निर्दोषिताक मुहर नहि। रुहानी पाछाँ कुर्सीपर बैसल छलीह, अध्यक्षक रूपमे नहि, पहिने हस्ताक्षर कएने उत्तरदायी व्यक्ति जकाँ।

रमा पुरान दवाई-वितरणक नकल पढ़लीह। एक खेपक बक्सापर अलग आपूर्तिकर्ताक चिह्न छल, मुदा अस्पतालक प्राप्ति-पंजीमे दाताक संस्थाक नाम छल। “ई अन्तरसँ कियो अपराधी सिद्ध नहि होइत,” ओ कहलीह, “मुदा दानक प्रशस्ति-पत्रसँ एकरो समाधान नहि होइत।” देवव्रत मूल खरीद-बही जाँच लेल फेर उपलब्ध करएबाक लिखित समय देलनि। ओ माँगलनि जे सही सामान पहुँचबएबाक प्रमाण सेहो अभिलेखमे रहय। झरना मानि गेलीह। सही काजकें दबाएब नहि, गलत मिलानकें ढाकब नहि—एहि दुनू बिन्दुपर सभा सहमत भेल।

कम्पनीक प्रतिनिधि पुछलक जे दाताकें वर्षमे एक बेर लाभार्थीसभसँ भेटबाक अनुमति मिलत की। सरिता कहलीह, “जे मनुष्य भेटब चाहथि, ओ अपन इच्छासँ भेटथि। नामक

सूची दऽ ककरो घरक दुआर खोलब नहि।” देवव्रत सिर हिलौलनि, मुदा हुनकर कर्मचारीक तैयार कएल पुरान मसौदामे ‘लाभान्वित परिवारक अनुभव-सङ्कलन’ नामसँ एक अलग खान छल। पद्मा ओकरा काटलनि नहि; ‘अस्वीकृत—स्वतन्त्र व्यक्तिगत सहमति आवश्यक’ लिखि सुरक्षित राखलनि। एही कागदकेँ काल्हि कियो फेर निकालि पुरान सहमति कहि नहि सकय, से हुनकर चिन्ता छल।

सूरज फेर भीतर आएलाह। हुनकर पिता बाहर ताड़क छाँहमे बैसल छलाह। “हम कल्हि सँ गाछपर नहि चढ़ब,” सूरज कहलनि। सभ चकित भेल। ओ तुरन्त स्पष्ट कएलनि, “हम अनियमित चढ़ाई रोकैत छी; सुरक्षित रस्सी, दूनू व्यक्ति आ गाछ-मालिकक लिखित अनुमति पएबाक बादे चढ़ब। एखन स्वच्छ पेयक पहिल नमूना जमीनपर प्राप्त रससँ बनत।” नन्दू भीतर अएलाह। “तँ हमर पुरान कौशल बेकार?” ओ पुछलनि। सूरज हुनकर हाथ पकड़ि कहलनि, “कौशल बेकार नहि, मजदूरी बिनु ओकर शोषण होइत अछि।” पिता नमूना बनबए सीखेबाक बदला अलग पारिश्रमिक स्वीकार कएलनि।

अमीनाक अगिला भोजन-आदेशमे दू गश्ती कर्मचारीक भोजनक भुगतान कार्यालयसँ नगद भेल, रसीदपर हस्ताक्षर सेहो। किन्तु कागदमे ‘सहायता-भोजन’ लिखबाक प्रयास देखिकऽ ओ शब्द बदलवौलीह—‘क्रय कएल भोजन’। ओ हँसैत कहलीह, “भूख सभक एक सन, दामक जिम्मेदारी सभक अपन।” झरना देखलीह जे अमीनाक छोट जीत लेल दानदाताक कोनो नाम आवश्यक नहि छल। लगहि अरुण अपन मजदूरक रोकल वेतनक पहिल हस्तान्तरण करैत छलाह; बैंकक सन्देशक पुष्टि भेला बादे कर्मचारी प्राप्तिक सही केलक। दोसर मजदूर बाहर गेल छल; ओकर हिस्सा देय-बहीमे शेष रहल।

साँझक खुलल मतदानमे प्रस्ताव दू भागमे विभक्त कएल गेल। पहिल—देवव्रतक निधिसँ तत्काल आवश्यक सेवा लेल सीमित, निर्दिष्ट रकम सशर्त स्वीकार; दोसर—शेष दीर्घकालीन दानक निर्णय खरीद, भण्डारण आ हित-संघर्षक अभिलेख मिलान धरि स्थगित। महेन्द्र तुरन्त सभ रकम लेबाक पक्षमे मतदान केलक। झरना पहिने स्वयं मतदान करए चाहलीह, फेर नियम देखलीह जे अध्यक्ष बराबरी पड़लासँ मात्र निर्णायक मत देत। ओ मतगणनाक जिम्मा निर्वाचित सदस्य आ बाहरी पर्यवेक्षककेँ देलीह।

बहुमतसँ दू-चरणक प्रस्ताव स्वीकृत भेल। विरोधी मत सार्वजनिक बहीमे जसक तस चढ़ल।

देवव्रत निर्णय सुनि किछु बेर चुप रहलाह। “हमर पैसा एखन आधा दरबज्जा भीतर, आधा बाहर,” ओ कहलनि। झरना उत्तर देलीह, “अहाँक धनक किछु उपयोगक अनुमति भेटल; दरबज्जापर मनुष्यक अधिकारक पहरा पूर्ववत अछि।” देवव्रत मुस्करएलाह नहि। ओ संशोधित शर्तपर हस्ताक्षर कएलनि, मूल जाँचक तारिख लिखलनि आ शेष रकम तुरन्त हस्तान्तरण नहि करबाक निर्णय स्वीकार कएलनि। हुनकर दृष्टिमे ई अविश्वास छल; झरनाक दृष्टिमे ई निर्णयक पहिल स्वतन्त्र परीक्षा। दुनू अन्तर मिटाओल आवश्यक नहि छल।

रुहानी बाहर निकलि झरनाकँ कहलनि, “अध्यक्ष बनलाक पहिल दिन अहाँ दानक अधिकाँश हिस्सा टारि देलहुँ; कियो कहत जे संस्था नोकसानमे गेल।” झरना उत्तर देलीह, “हो सकैत अछि। एखन जे स्वीकारल अछि, ओकरा खर्च करबाक शक्ति एहन नहि होएत जे दाता चाहला पर ककरो आवाज बन्द कऽ देत।” रुहानी थोड़े बेर बाद पुछलीह जे आश्रयक रातिक दीपक लेल तेलक खर्च कहाँसँ आएत। झरना बजट देखौलीह—साधारण संचालन-कोषमे छोट राशि छल, बाकी स्थानीय स्वैच्छिक योगदानक खुलल प्रस्ताव। नेतृत्वक स्वतन्त्रता बिना रोजमर्राक हिसाबक केवल भाषण रहैत अछि, से पहिल बेर झरना खूब तीव्रतासँ बुझलीह।

तारा मतदानक मसौदा, अस्वीकृत लाभार्थी-सूची आ देवव्रतक पुरान बही एकत्र करैत छलीह। ओ अपन कापीमे लिखलीह जे सहायता-निधिक एक पहिल समीक्षा-पत्र स्वयं हुनकर पक्षक दफ्तरमे बनल छल। ओहि पत्रमे ककरो ‘सहमति’क हस्ताक्षरक छायाप्रति जोड़ल देखायल, मुदा मूल पन्ना मिलल नहि। तारा एखन धरि मानैत छलीह जे ई केवल कार्यालयक भूल होएत। पद्मा पुछलीह, “छायाप्रति ककर हाथसँ आयल?” तारा निश्चित उत्तर नहि देलनि। झरना कहलनि, “आइ दाताक शर्त जाँचलहुँ। काल्हि अपन कागदक शर्त सेहो जाँचब।” ताराक चेहरा कनेक उतरल।

राति आश्रयक बाहरी दुआरपर सूरजक खाली बोटल चाननमे चमकि रहल छल। अमीना बचल भातक डिब्बा लऽ घर घुरि रहल छलीह; अरुण अपन बहीमे करक जमा-पत्र

समेटि रहल छलाह। एतय कियो निरपेक्ष विजेता नहि छल। सीमित दानसँ औषधि आ चूल्हिक आगिक किछु उपाय भेटल, मुदा पुरान दवाइ-खेपक प्रश्न, मजदूरीक बचल देय, स्मारकक निर्माण आ शैलजक अलग पत्र एखन खुले रहैत छल। झरना चाभी ताला मे घुमौलनि। तारा जे छायाप्रति भीतर रखि गेल छलीह, ओकर कागदक किनार पवनसँ हिलैत छल। मददक शर्त पढ़ब आसान नहि; अपन पक्षक कागद पुनः पढ़ब ओहूँ कठिन होएत।

अध्याय १८६ • ताराक भूल

सन २०४१क विदेहपुरमे भोरे तारा मल्लिक अपन दफ्तरक पुरान अलमारीक ताला खोललीह तँ भीतरसँ सड़ल कागदक गन्ध बाहर आयल। लोहाक रैकपर राखल हल्दी रङ्गक फाइलक बीच ओहि छायाप्रतिक कोना एखनहु मोड़ल छल जकरा काल्हि झरना देखबाक आग्रह कएने छलीह। ओकर ऊपर लाल अक्षरमे ‘सहमति प्राप्त’ लिखल छल। तारा नाखूनसँ अक्षरक किनार छुलनि। ई हस्ताक्षर हुनकर नहि छल; मुदा टिप्पणी हुनकर कार्यालयक छल, आ टिप्पणीकेँ भरोसाक निशान मानि कऽ अगिला तीन निर्णय लेल गेल छल। ओ फाइल फेर बन्द नहि कएलीह।

पद्मा आबि गेलीह तँ तारा पहिने अपन हस्तलिखित जाँच-बही हुनका देलीह। “हम कागद तैयार नहि कएलहुँ, मुदा जखन ई हमरा मेजपर आयल, हम मूल प्रति देखल नहि,” ओ कहलीह। “कार्यालयक पक्षक नामपर जँ हम प्रमाणित कहि देलहुँ, तखन गलती केवल नकल उतारनिहारक नहि रहल।” पद्मा पहिल पन्नाक तिथि मिलौलीह। छायाप्रतिमे एक पुरान निवासी-सभाक सहमतिक नाम लिखल छल, मुदा ओहि तिथिक उपस्थितिपंजीमे सभाक कारण मात्र बाहा-मुँहक सुरक्षित सफाई छल; दान वा निजी कागद सौपबाक चर्चा नहि छल।

अदिति अभियन्ता परखल नाप-चित्रक रोल लऽ पहुँचलीह। हुनकर ठाम पुरान तकनीकी अनुमतिक एक नकल छल, जाहिमे ‘जाँच लेल स्थलक प्रवेश’ लिखल रहए। तारा ओकरा छायाप्रतिक नीचाँ धरलीह। कतिपय शब्द एक्के क्रममे छल, पर छायाप्रतिक पहिल पाँतिमे ‘स्थायी उपयोग’ जोड़ल गेल छल। अदिति कहलीह, “ई फरक छोट नहि। पानि जाँचबाक अनुमति जमीन देबाक सहमति नहि होइत।” दूनू एतेक धरि निश्चित भेलीह जे कागदक अर्थ बदलल गेल छल; ककर हाथसँ आ कोन उद्देश्यसँ—से एखन प्रमाणित नहि छल।

झरनाक नव समितिमे दुपहरि धरि बैठकक सूचना पठाओल गेल। तारा चाहैत छलीह जे ओतयसँ पहिने गलतीक पाँति रजिस्टरमे लिखि देथि। ओ अपन नामक आगाँ लिखलीह —‘मूल प्रमाणक जाँच बिना पक्षक सहमति प्रमाणित मानबाक भूल’। लिखबाक समय

हाथ थरथरा रहल छल। हुनकर पिता श्याम मल्लिकक पुरान गाँठवला नमूना मन पड़लनि। ओ सिखौने छलाह जे बिनौटक एक गलत गाँठ निकालय लेल सभ बाँस तोड़ब जरूरी नहि, मुदा गाँठ लुकौलासँ पयर फँसि सकैत अछि। तारा एहि स्मृतिकेँ अपन निर्दोषिताक प्रमाण नहि बनौलीह।

बाहा-मुँह खोलाइक वार्षिक दिन फेर आयल छल। पीपरक नीचाँ लाल ध्वजा सुखि रहल छल; घाटक कात सुरक्षित भागमे केवल घास हटेबाक अनुमति छल। रमणी बिन्द माछक छोट जाल उठाकऽ देखौलीह जे मुँहथरिक भीतरक गाद एखन नहि हटल। फूलमती तियर चेतौलीह जे नाप बिना भारी औजार उतरला सँ हुनकर जालक बाट आ खेतक पानी बदलि जाएत। हीरा सहनी छोट खूँटा गाड़ि कहलनि, “आइक काम चिन्हब आ सुरक्षित कात साफ करब थिक; उत्सवक नामपर पूरा निकास खुलल कहि नहि लिखब।”

पद्मा सभाक पहिल पन्ना पढ़लीह, फेर कागद तारा लग बढ़ौलीह। तारा दुआरपर ठाढ़ रहि कहलनि, “ई कागद हमरा पक्षक दफ्तरसँ निकसल छल। ‘सहमति प्राप्त’ जकरा हम सार्वजनिक आधार बनौलहुँ, ओकर मूल हस्ताक्षर-पन्ना हमरा लग नहि अछि। उपस्थितिक सही बही दोसर बात कहैत अछि। तँ एहि टिप्पणीक आधारपर भेल निर्णयसभक वैधता फेर जाँचल जाए।” महेन्द्र तुरन्त पुछलक, “तँ अहाँ स्वयं झूठ लिखलहुँ?” तारा उत्तर देलीह, “जे हम जानैत छी से कहब। झूठ टिप्पणी हमरा कार्यालयसँ निर्गत भेल, हम बिना परीक्षण ओकर उपयोग कएलहुँ। ककर हस्ताक्षर बनौल, से जाँचब बाकी अछि।”

महेन्द्रक काकी पाछाँसँ उठलीह। हुनकर घरक कात एक अस्थायी पाट राखल गेल छल आ ओहि पाटक भरोसे हुनका पानि लगसँ घूमि जाए पड़ैत छल। “हम सभामे उपस्थित छलीह,” ओ कहलीह, “मुदा भूमि देबाक सहमति नहि देलहुँ। आइ कोनो कागद हमरा उपस्थितिकेँ अनुमति कहि बदलि दैत अछि तँ काल्हि हम अपन घर कोना बचाएब?” तारा हुनकर बात बीचमे नहि काटलीह। झरना तत्काल लिखित आदेश देलीह जे विवादित पत्रक आधारपर कोनो नब स्थायी अधिग्रहण अथवा निजी अभिलेख हस्तान्तरण नहि होएत; पूर्वक सुरक्षित अस्थायी आवागमनक व्यवस्था चलैत रहत।

श्याम मल्लिक अपन पुरान बाँसक चचरीक तीन अलग टुकड़ा झोरासँ निकाललनि। पहिल जाल माछ घेरबाक छल, दोसर टोकरीक पाट, तेसर पयर राखबाक सुरक्षित चौड़ाइक नमूना। ओ कहला, “हमर नामसँ ओ कागदमे लिखल अछि जे सभ पाट पहिनहिसँ हम बनौने छी। मुदा एहि तेसर पाटक गाँठ तारा बिनौट बाँधने छलीह। हम जे नब नाप देलहुँ, ओकरा पुरान सौदाक रुपैया भला कोना बनाओल गेल?” श्यामक स्वरमे अपन बेटीक प्रति क्रोध नहि, बेचैनी छल; गलत श्रेय भेटबो हुनकर लेल एकटा अविश्वास छल।

तारा बिनौट काठक पट्टी उठाकऽ श्यामक हाथसँ मिलौलीह। “तीन गाँठ हुनकर, पैघ खाँच हमर,” ओ कहलीह। “पहिनुक नगर-ठेकामे परिवारक नामपर भुगतान उठल छल, मुदा हमर अलग मजदूरीक पाँति नहि बनल। आब नव नमूनामे दुनूक नाम राखू आ पुरान सौदाक रकम कतेक मिलल से खोलू।” श्याम एक क्षण चुप रहलाह। ओ स्वीकार कएलनि जे पुरान ग्राहकक अग्रिम एक बेर पारिवारिक खर्चमे खर्च भऽ गेल छल; तारा बिनौटक अलग हिस्सा कतेक छल से लिखित हिसाबमे स्पष्ट नहि। ओ पुरान बही स्वयं खोलबाक सहमति देलनि।

बहीक पन्ना देखिते एक नव कठिनाई उठल। एके आदेशक दूरसीद छल—एक बाँस खरीदबाक, दोसर बिनौट बनेबाक। श्यामक बेटा कहलक जे दूनु भुगतान एके बेर परिवारकँ भेटल, तँ मजदूरीक नव दावा दोहराव अछि। तारा बिनौट ओकर सामने छेद पड़ल नमूना राखि कहलीह, “बाँस खरीदब आ गाँठ बाँधब अलग काज छल। हम दोबारा पैसा नहि माँगैत छी; जतबा देल गेल, ओकर बँटवारा देखब चाहैत छी।” झरना तत्काल रकम निर्धारित नहि कएलीह। मूल बैंक-प्राप्ति आ सामूहिक बही मिलान धरि पुरान देयक विवाद खुलल रखल गेल। नव सुरक्षा-नमूनामे साझा श्रेय ओही दिन दर्ज भेल।

रेखा साहु लहेरीक डब्बामे लाहक तीन चूड़ी रखल छल। लाल लाहक हाथसँ मोड़ल छोरपर हलुक असमानता छल, जकरा मशीनवला व्यवसायी त्रुटि कहि रहल छल; ग्राहक कहैत छल जे ओहीमे हाथक चिन्ह अछि। रेखा अपन पहिनुक प्रस्ताव फेर खोललीह—मशीनक सहयोग लेल निश्चित समय, बिजली आ सुरक्षा-खर्च देब, मुदा नदीक घुमाववला मौलिक नापक स्वामित्व अपन लग रहत। मशीन-मालिक नसीम कहलनि जे बिना चित्रक

डिजिटल प्रति हुनका उत्पादनक जाँच कठिन होएत। रेखा उत्तर देलीह, “परख लेल प्रति राखू, अनन्त नकल लेल नहि।”

दुनू पक्षक बीच कागदपर रेखा खिचल गेल। परीक्षणक चालीस चूड़ी लेल नमूना उपयोग होएत; एकर बाद नब उत्पादनक अनुमति फेर लेब पड़त। कारीगरक नाम सामानसँ अलग नहि हटत, मुदा ग्राहकक निजी नाप सार्वजनिक विज्ञापनमे नहि जाएत। मशीन खराब भेलासँ नष्ट मालक जोखिम साझा अनुपातमे रहत, एकल रेखाक माथपर नहि। नसीम कागद पढ़ि पुछलनि, “आ जँ बजारमे नुकसान भेल?” रेखा कहलनि, “तखन हम दुनू जानब जे साझेदारी सचमुच अछि।” पहिल परीक्षण-शुल्क अग्रिम हुनकर हाथमे आयल। पुरान नकलक मामला एही हस्ताक्षरसँ बन्द नहि भेल।

सभाक पछिला बेंचपर सकीब अबदल अपन पुरान दू थैला रखलनि। एक थैलामे बाहा-सफाइक सार्वजनिक चन्दाक रसीद छल, दोसरमे निजी ढुलाईक भाड़ा आ घरक किरानाक हिसाब। “हमरा पर पहिले आरोप लागल जे चन्दा आ जीविका एक्के पैसा अछि,” ओ कहला। “हम दू बही देखौने छलीहुँ; मुदा पिछला बेर सार्वजनिक रस्सी हमरा दुकानसँ खरीदल गेल, एकर प्राप्ति ठीक ढङ्गे सार्वजनिक नहि भेल।” तारा अपन पक्षक गलती सुनि थकल छलीह, मुदा सकीबक कथाकेँ अपूर्ण निर्णय कहि टारलीह नहि।

सकीबक दुकानसँ किनल रस्सीक असल पर्ची भेटल, मुदा एक रसीदमे निजी ढुलाईक भाड़ा जोड़ल छल। ओ स्वीकार कएलनि जे बोरी उठेबाक मजदूरीक अलग पर्ची काटल नहि गेल, किएक तँ दुनू भुगतान एक्के दिन भेल। “भाड़ा हमर जीविका थिक, चन्दा नहि,” ओ कहलनि। पद्मा एक चेकक प्राप्ति आ नगद रसीद मिलौलीह। सार्वजनिक रस्सीक खरीदक रकम प्रमाणित भेल; ढुलाईक एक भागक भुगतान एखन बैंकसँ पुष्ट करबाक बाकी छल। सकीब अपन नब निजी बही पर लाल धागा बाँधलनि, सार्वजनिक रसीदक थैलापर नीला।

सकीब स्वयं कहला जे अगिला चन्दा हुनकर निजी दोकानमे जमा नहि होएत। समितिक स्वतन्त्र कोषाध्यक्षक लग पैसा जाएत; जँ हुनकर गाड़ी लागल तँ खुलल दरक आधारपर भाड़ा देल जाएत। एक युवक पुछलक, “एतेक शर्तक बाद लोक अहाँपर भरोसा करत?” सकीब उत्तर देलनि, “भरोसा हमरा मुँहसँ नहि, दूनू हिसाब देखला पर बनत।” ओ

पिछला संदिग्ध ढुलाई-मदक अस्थायी रोक स्वीकार कएलनि। एहिसँ हुनकर एहि सप्ताहक घरखर्चमे तंगी बढ़ल, मुदा सार्वजनिक चन्दाक शेष रकम पर संशय घटल।

तारा पुनः माइक लग अएलीह। एहि बेर ओ अपन भूलक लिखित क्रम पढ़लीह—पुरान उपस्थितिपंजी, तकनीकी निरीक्षणक वास्तविक अनुमति, कटल-छँटल छायाप्रति, आ ओकरा आधार बनाकऽ कार्यालयसँ भेजल झूठ ‘सहमति प्राप्त’ टिप्पणी। “आइ हम ई टिप्पणी वापस लैत छी,” ओ कहलीह। “जे निर्णय सिर्फ एहि कागदपर ठाढ़ अछि, ओकर पुनः सुनवाई आवश्यक अछि। मुदा ई कागदसँ पहिले जे सुरक्षित काम भेल, ओकर वास्तविक नाप अलग जाँचब।” झरना सार्वजनिक रजिस्टरमे ‘रद्द आधार, सुरक्षित वास्तविक काजक स्वतंत्र जाँच’ लिखबौलीह।

महेन्द्र पुनः उठलक। “आइ तारा माफी माँगि गेलीह, काल्हि अधिकारीसभ फेर गलती करथिन। एना जनता कतेक बेर सुनत?” ओ पुछलक। चम्पा सामने बैसल वृद्धा लग पानि राखि कहलीह, “तकर उत्तर सिर झुकाएब नहि, जाँचक नियमित बाट होएत।” झरना तीन स्पष्ट तिथि रखलीह—सात दिनमे प्रभावित परिवारक आपत्ति, पन्द्रह दिनमे मूल पंजीक खोज आ सुरक्षित प्रति-वितरण, तीस दिनमे स्वतन्त्र सुनवाई। मुदा मूल कागद नहि भेटला पर झूठ हस्ताक्षरक रचयिताक नाम अनुमानसँ लिखल नहि जाएत।

बाहा-मुँहक कात बहैत पानि ओहि बीच पातर घासमे अटकल छल। अदिति सुरक्षित ढलानपर दूटा नाप-बिन्दु चिन्हित कएलीह, मुदा बन्द मुँहथरिक् भीतर भारी औजारक अनुमति नहि देलीह। गोमती बेलदार कहलीह जे पहिनुक काजक सूचीमे माटि ढोएबाक अलग मजदूरी अछि, निकास बन्द करबाक आदेश नहि। फूलमती तियर अपन जाल घाँसपर सुखेलनि। ओ देखलीह जे पानीक कात किछु नेना फेर माछ देखबाक लेल झुकि रहल अछि। ओ हुनका सुरक्षित ठाम पठौलीह; गलत कागद सुधारब तेकर अर्थ बच्चाक सुरक्षा टारब नहि होइत।

दुपहरिक पाछाँ तारा मल्लिक पिता श्यामक कात बैसलीह। श्यामक अँगुरीक गाँठमे पुरान बाँसक छोट काँटा फँसल छल। तारा चिमटीसँ ओकरा निकालि देलीह। “अहाँ हमरो गलत मानब?” ओ पुछलीह। श्याम उत्तर देलनि, “गलत कामक हिसाब करब, मुदा तोहर नामकँ एक गलतीसँ छोट नहि करब। हमर पुरान सौदाक हिसाब सेहो खोलबाक अछि।”

हुनकर स्वरमे आसान क्षमा नहि छल। पिता-पुत्रीक बीच मौन एकर प्रमाण छल जे दूनूँ अपन-अपन बात फेर सुनबाक पड़त। तारा हुनकर हाथक पातर घावपर साफ पट्टी बाँधलीह।

तारा बिनौटक घरपर ओहि साँझ बही खुलल। श्यामक परिवार पुरान ग्राहकक आदेशक तिथि फेर लिखलक। तारा बिनौटक अलग श्रम-दिन ओहि पन्नामे पहिल बेर चढ़ल। “आइ रकमक फैसला नहि होएत,” ओ कहलीह, “मुदा हमर काज नामबिहीन नहि रहत।” श्याम स्वीकार कएलनि जे बिनौटक नमूना पहिने ककरो एकल आविष्कार नहि छल—दूनू परिवारक पुरान अभ्यास आ नब गाँठक प्रयोग एकसंग चलल छल। एहि सहमतिक कारण नव सुरक्षा-पट्टीक परीक्षण फेर शुरू होएत, पुरान कर्जक बही बन्द नहि होएत।

रेखा साहुक मशीन-परीक्षणमे पहिल चारि चूड़ी समान घुमावमे निकलल, पाँचमक छोर चिरि गेल। नसीम बटन बन्द कए चूड़ी उठौलनि। ओ कहलनि, “नुकसान देखबाक लेल मशीनक वीडियो चाही।” रेखा सहमति देलीह, मुदा शर्त राखलीह जे वीडियो केवल संयुक्त परीक्षणक बहीमे रहत; सार्वजनिक प्रचार लेल अलग अनुमति चाही। नसीम पहिल बेर लेखा-पुस्तिकामे ‘रेखा साहु लहेरी—डिजाइन’ अपन हाथसँ लिखलनि। एहिसँ दोसर दिनक छोट आदेश संभव भेल; एक रातिमे बजारक सभ अन्याय ठीक नहि भेल।

सकीबक घरमे हुनकर छोट बेटी नीला धागावला थैला उठा पुछलक जे एहि रुपैयाँ अगिला दिन किताब किनल जाएत की। सकीब कहलनि, “ई सार्वजनिक चन्दा थिक, हमर नहि।” बच्ची दोसर थैला देखौलक। ओहिमे निजी भाड़ाक कम रकम बचल छल। सकीब अपन घरक खर्च कम करबाक कठिन बात पत्नीकँ कहलनि; दुनू तय कएलनि जे निजी ढुलाईक सही बिल जारी होएत, मुदा चन्दामे हाथ नहि जाएत। सार्वजनिक भरोसाक नब नियमक पहिल मूल्य हुनकर घर चुकौने छल।

सुरक्षित बाहा-काजमे पहिने नाम काटल गेल मजदूरनी झिंगरीक बात कियो पूछल नहि छल। ओ अपन पुरान रसीद लऽ आयलीह। कटल छायाप्रतिक ‘सभक सहमति’क आधारपर हुनकर परिवारकँ आपत्तिक समय देल गेल नहि छल; ओहि बीच दू दिनक मजदूरीक भुगतान रोकल गेल। झरना तत्काल बकाया चुकल घोषित नहि कएलीह, मुदा झिंगरीक आवेदन फेर पंजीमे चढ़बौलीह आ विवादरहित एक दिनक उपस्थितिक सत्यापन

लेल मजदूरी अधिकारीकें लिखित आदेश देलीह। झिंगरी कागदक एक प्रति अँचरामे रखलीह। “हमर हस्ताक्षर नै छल,” ओ कहलीह, “आब कमसँ कम हमर आपत्ति लिखल अछि।”

पद्मा साँझ तक कार्यालयक दुआरपर ‘सुधारित सूचना’ टाँगि देलीह। ओकरा संग गलत छायाप्रतिक निजी हस्ताक्षर नहि टाँगल गेल; केवल झूठ टिप्पणी, वास्तविक पंजीक भिन्न अर्थ आ आपत्ति देबाक तारीख सार्वजनिक छल। एक महिला सन्देहसँ पुछलीह, “फेर ईहो कागद बदलि जाएत?” तारा उत्तर देलीह, “एहि सूचनाक दिनाङ्कित नकल तीन ठाम राखल गेल अछि—कार्यालय, पंचायत आ हितग्राही समितिमे। संशोधन होएत तँ पुरान संस्करण काटि नहि फेकल जाएत; फेरसँ जोड़ल जाएत।” महिला एक प्रति माँगलीह आ पढ़निहार बेटीकें घर लऽ गेलीह।

झरना आपत्तिक पेटी खोलि देखलीह तँ पहिल पत्र रुखसानाक छल। ओ लिखने छलीह जे दानक रकम अलग रहितो सामूहिक रसोइक अनाज, ईंधन आ दिन-दिनक मेहनताना एके श्रेणीमे लिखल जाइत अछि। “गलत सहमति सुधारलहुँ, मुदा भोजन बनौनिहारक घाटा कहिया देखब?” पत्रक अन्तमे छल। झरना चुपचाप ओहि कागदकें अगिला सभाक सूचीमे पहिल स्थान देलीह। तारा अपन सुधार-पत्रक बचल कार्बन-नकल समेटलीह। कोनो एक सही सूचना सभ गलत हिसाबक उपचार नहि छल; आजुक सुधारसँ आब दोसर प्रश्न सुनबाक जगह खुलल छल।

राति बाहाक कात उत्सवक ध्वजाक कपड़ा पानिसँ भीजल नील भऽ गेल छल। तारा मल्लिक घरक दुआरपर पहुँचि देखलीह जे पिता श्याम बत्ती बचएबाक लेल पुरान लालटेन छोट कऽ देने छथि। मेजपर हुनकर बिनौटक नमूना आ सार्वजनिक सुधारक प्रति अलग-अलग रखल छल। तारा अपन बही खोलि लिखलीह—‘अपराधी अज्ञात’ नहि, ‘हस्ताक्षरक रचयिता जाँचाधीन’; ‘सहमति सिद्ध’ नहि, ‘सहमति सिद्ध नहि’। टूटा वाक्य छोट छल, मुदा ताहिसँ एक परिवारक जमीनपर रोकल आदेश बदलि गेल छल। ओ लालटेनक बाती कने ऊपर कएलीह, आ अगिला भोरक रसोइक बही लेल एक खाली पन्ना छोड़ि देलीह।

अध्याय १८७ • रसोइक घाटा

सन २०४१क विदेहपुरमे भोरक चारि बजे रुखसाना माटिक चूल्हिक राखि कुरेदलीह तँ काल्हिक अधजरल लकड़ीक भीतर लाल फुलकी बाँचल छल। ओ फुलकीक ऊपर पातर फूस राखलीह, मुदा आगि पकड़बाक पहिने हुनकर नजर दुआरपर टाँगल थारीक सूचीपर गेल। ऊपर मोट अक्षरमे चालिस लिखल छल; नीचाँ स्वीकृत अनाजक मात्रा केवल सत्ताइस थारी लेल छल। काल्हि राति एक स्वयंसेवक लाल स्याहीसँ तेरह नव नाम जोड़ि गेल छल, मानू नाम लिखब आ भोजन तैयार करब एक्के काज हो। रुखसाना लकड़ी छोड़ि सूची उतारि लेलीह।

भण्डारक कोनमे रखल दालक बोरीक मुँह नीकसँ बन्द नहि छल। चूहाक काटल छोट छेदसँ तीन मुट्ठी दाना धरतीपर बिखरल छल। रुखसाना बरसातक दिनमे अनाज उठएबाक अपन मायक ढङ्ग याद कएलनि—पहिने साफ अंश अलग, खराब अंश अलग, फेर नुकसान लिखू। ओ दाना बटोरलीह; चूल्हिक कात कापी राखि लिखलीह जे उपलब्ध दाल पुरान सूचीसँ सेहो कम अछि। एतबे कालमे जुबैदा अएलीह आ कहलीह, “आगि पजारी दिअ, बाकी हम देखब।” रुखसाना जवाब देलीह, “आजु आगिसँ पहिने हिसाब पजारब।”

जुबैदा हुनकर हथेली देखलीह। नोन आ गरम पानीसँ फाटल चामक दू रेखा छल, एक ठाम सूजन। “दवाइ लगबैत छी?” ओ पुछलीह। रुखसाना मुस्की देलीह, “दवाइ लेल पहिने ई हाथ खाली होएबाक चाही।” ओ पाछाँक तीन दिनक समय बतौलीह—अनाज मँगाएब, खरिदक दर जाँचेब, तरकारी धएब, रान्हब, परोसब, बरतन धोएब आ फेर बही लिखब। किछु घण्टा लोक ‘सेवा’ कहि गनि रहल छल, किछु ‘प्रबन्धन’; भुगतानक पन्नामे हुनकर नाम एक बेरो पूरा नहि छल।

सूरज उगल तखने झरना आ पद्मा आश्रयक ओसारमे पहुँचलि। पिछला सभामे रुखसानाक पत्र पहिल नम्बरपर रखने झरना थारीक सूची आ अनाजक बही एकसंग माँगलीह। “आजु चालिस थारी चाही,” एक कार्यकर्ता कहलक, “नहि तँ बिछानापर पड़ल लोक की खएत?” रुखसाना कहलनि, “तेरहक भूख असत्य नहि, मुदा सत्ताइसक खर्चसँ चालिसक भोजन बनत—ई कथन असत्य अछि। अहाँ सभ निर्णय करू जे अनाज

कतएसँ आओत आ रान्हत के।” कार्यकर्ता कने झेंपल; ओ रातिमे नाम लिखि अपन जिम्मेदारी पूरा मानि लेने छल।

पद्मा पर्चीमे चारि खाना बनौलीह—दानमे भेटल अनाज, बजारसँ खरीदल अनाज, ईधन, आ श्रम। रुखसाना पाँचम खाना जोड़लीह—खराब भेल वस्तुक घाटा। झरना कहलीह, “जँ घाटाक नाम लिखि देब तँ सब्जी खराब करबाक दोष ककरा?” रुखसाना दूटा बेगन देखौलीह; एक पर पाछाँसँ चोट छल, दोसर परिवहनमे दबि गेल छल। “जे जानि-बुझि खराब कएलक ओकर उत्तर अलग। मुदा साधारण नाशकँ शून्य लिखब तँ विक्रेता अथवा रसोइवाली अपन घरसँ भरत। तकरो सीमा रहबाक चाही।”

हाटमे रघु साहुक कनसारक आगि एखन तेज नहि भेल छल। पहिने घाम निकललापर मजूर आ छात्रसभ एतय भुजल चना लैत छलाह। राहतक अनेक शिविर अपन अनाज स्वयं भुजाएब शुरू कएलक, तँ कनसारमे ग्राहक घटि गेल छल। झरना रघुसँ पुछलीह, “आइ दू टोकरी चना भुजि सकब?” रघु पुरान हिसाबक बही खोलि कहला, “सकब। मुदा दानकर्ता चना देताह तँ हुनकर अनाज दान; हमर लकड़ी, समय आ भुजाइ अलग काम। दाम कम कऽ सकैत छी, मुदा काजकँ शून्य नहि लिखि सकैत छी।”

रघुक छोट बेटा कनसारक कोनमे खाली टोकरी उलटि रखि रहल छल। ओ कहलनि, “बाबू, एतेक कम ग्राहक रहला पर दोसर चूल्हि बन्द करब?” रघु एक क्षण ओकरा देखलनि। “हो सकैत अछि,” ओ कहला, “नहि तँ लकड़ीक कर्जा बढ़त। रसोइक एक आदेश हमरा पुरान ग्राहक घुरा नहि देत।” झरना एहि घाटाकँ आश्रयक सब बकायाक भीतर जोड़बाक प्रस्ताव नहि रखलीह। ओ दू दिनक निश्चित भुजाइ आदेश लिखलीह, ओकर दाम आ भुगतानक दिन सहित। पुरान ग्राहक घटलाक सत्य ओहि कागदपर मिटि नहि गेल।

चन्द्रिका राय हलुआइ अपन दोकानमे तिलक लड्डू सजा रहल छलीह। एक बालक सत्तर पुआक पुरान पावती घुमाकऽ पढ़ि रहल छल; कागदक कोणपर तेलक धब्बा छल। रुखसाना कहलीह, “आइ परोसबाक मदद चाही, मुदा पुआक संख्या अनुमानसँ नहि लिखब।” चन्द्रिका रसीदक पाछाँ झुकि कहलीह, “पिछला बेर हमर सत्तर पुआक भुगतान तिथि तय भेल, मुदा बैंक-प्राप्ति एखन नहि भेटल। जँ फेर सत्तर कहल गेल आ वास्तवमे

बीस उठल तँ बचल मालक दाम के देत?” ओ तैयार भोजन, अग्रिम आ बाँचल मालक तीन शर्त अलग लिखबौलीह।

गुरमीत कौर साइकिलपर बासनक छोट झोरा लऽ अएलीह। हुनकर घरसँ किछु महिला अपन इच्छासँ दाल धोएबाक प्रस्ताव देने छलीह; दोसर दिन ओ सभ विद्यालयमे काम करएवाली छलीह। आयोजक कहैत छल—‘गुरुद्वाराक सेवा, निःशुल्क श्रम’। गुरमीत शान्त स्वरमे सुधार कएलीह, “धार्मिक सेवा जँ कियो स्वेच्छासँ करत, तकर अवधि आ उद्देश्य ओ स्वयं तय करत। हमर नाम लिखि सभ दिन हमर समयक दान नहि लेब। एहि बेर हम लेखा-मिलानक काम तय भुगतानपर करब; स्वेच्छा करबाक अवसर दोसर दिन सेहो रहत।” हुनकर धर्मकेँ मुफ्त कामक अनन्त अनुबन्ध मानबाक कोशिश ओतहि रुकल।

दिनमे माछ—मखान श्रम-मेलाक मैदानक एक कोनमे राहत-रसोइ लेल खरिदक केन्द्र खुलल। फूलमती तियर भोरमे पकड़ल माछक प्रमाणित वजन देखौलीह; मखान चुननिहार स्त्रीसभक हाथमे फोड़ाइक पुरान गोंदक चिन्ह छल। एक आपूर्तिकर्ता कहलनि, “राहत लेल अछि, थोक दाम देऊ; श्रमिकसभ अपन हिस्साक हिसाब बादमे देखत।” फूलमती तुरन्त टोकरा वापस खींचलीह। “हमर माछक मूल्य सँ नावक इंधन, जालक सीबन आ जाल उठौनिहारक मेहनताना निकलैत अछि,” ओ कहलीह। मखान चुननिहार धनिया अपन कातर नख देखौलीह। दूनू समूह अलग मजदूरी आ खरिद-दर लिखबौलक।

खरिदक दुआरपर एक वृद्ध पुछलनि, “राहत-भोजनक लेल एतेक हिसाब करब तँ गरीब कखन खएत?” रुखसाना कापी बन्द नहि कएलीह। “गरीब आइ खएत, से हमर पहिल जिम्मेदारी अछि,” ओ उत्तर देलीह। “मुदा जकर खेत, जाल आ हाथसँ खाना अएल, ओकर बाल-बच्चा काल्हि कोना खएत—ई प्रश्न सेहो अछि।” झरना तत्काल स्वीकृत रकमक सीमा देखौलीह; सस्ता वैकल्पिक तरकारी भेटैत छल, मुदा आधा सड़ल खेप लेला पर रोगीक खतरा छल। अन्तमे छोट, सुरक्षित खरिद होएबाक निर्णय भेल। थारीक संख्या फेरसँ वास्तविक सामग्रीक अनुसार लिखल गेल।

रुखसानाक राइन-कुजड़ा परिवारसँ छोट भाए सलमान भीजल सागक तीन गट्टर लऽ पहुँचल। ओ गट्टर खोलिते पातक भीतर पीयर भाग देखौलक। “बजारमे साँझ धरि

राखलासँ ई बेचबाक योग्य नहि रहत,” ओ कहलक, “जे ठीक अछि से लिअ, बाकी हमर घाटा।” रुखसाना ओकरा रोकलीह, “जे खराब खेप अहाँ पहिनहिसँ चिन्हि सकैत छलहुँ, ओहिमे खरीदारक दाम नहि जोड़ब। मुदा बिहानक ताजा साग ढोएबाक खर्च छोड़ि नहि देब।” भाई-बहिनक बीच थोड़ेक कठोर स्वर उठल। परिवारक स्नेह व्यापारक दू अलग हिसाबकेँ एक नहि बनौलक।

दुपहरमे चन्द्रिका अपन भट्ठीक आँच घटाकऽ सामूहिक सभामे अएलीह। विद्यालयक दुआरपर साझा रसोइ-मेहनताना दिवसक पहिल तख्ती टाँगल छल। एक पाँतिमे लिखल —‘राहत निःशुल्क भेटत’; दोसरमे—‘राहत बनौनिहारक श्रम निःशुल्क मानल नहि जाएत’। किछु लोक ई विरोध बुझि नहि सकल। चन्द्रिका एक थारी उठा कहलीह, “भोजन पाबएवला सँ हम दाम नहि माँगैत छी। भुगतान कोष, दान आ सार्वजनिक बजटसँ होएत। जे दिन पैसा नहि अछि, ओ दिनक अभाव सभकेँ पहिले बुझाओल जाए, मात्र रसोइक स्त्रीसँ नहि लुकाओल जाए।”

झरना प्रस्ताव रखलीह जे प्रत्येक भोजन-चक्र लेल खरिदक स्वीकृति आगाँसँ होएत, वास्तविक थारीक गिनती पाछाँ सत्यापित होएत, आ रसोइमे लगल घण्टाक दर सभ कामगारक उपस्थितिमे तय होएत। रुखसाना तखने आपत्ति कएलीह। “घण्टा गनबाक संग विश्रामक समय सेहो लिखू। जे स्त्री भोरक आगिसँ रातिक बासन धरि एके देहसँ काम करत, ओकर हाथ खतम भेलापर पुनः आन स्त्रीक नाम लिखल जाएत, ई नियम नहि चलत।” जुबैदा ओहि वाक्यक बाद स्वयं रुखसानाक हाथक पट्टी देखौलीह।

एक सदस्य प्रस्ताव कएलक जे ‘समुदाय-सेवक’ नामक नव श्रेणी बनाओल जाए, जाहिमे श्रमिककेँ पैसा नहि, भोजन आ सम्मान भेटत। गुरमीत पुछलीह, “कियो सचमुच अपन इच्छासँ दू घण्टा दैत अछि, से एक बात। जेकरा छओ दिनक ड्यूटी दैत छी, ओकरा सेवक कहि दरसँ वञ्चित करब दोसर बात। पहिलक लिखित सहमति होएत, दोसरक रोजगार-हिसाब।” सदस्यक चेहरापर असन्तोष छल, मुदा ओ सामूहिक निर्णयमे अपन आपत्ति दर्ज करौलक। तखन बहस केवल रुखसानाक शिकायत नहि रहल।

रुखसाना किछु काल चुप रहलीह। ओहि मौनमे हुनका अपन माय याद अएलीह, जे हाटसँ खराब बेगन चुनि घर लौटैत छलीह आ छिलका काटिते बच्चासभक रात्रिक भोजन

बनबैत छलीह। माय कहैत छलीह जे गरीबक रसोइमे कुछो बेकार नहि जाए। मुदा ओ कहियो नहि कहने छलीह जे रसोइ करनिहार स्त्रीक दिनक कोनो अन्त नहि। रुखसाना ओहि अदृश्य सीमाकेँ आइ पहिल बेर सार्वजनिक वाक्यमे कहलीह—“हम तीन दिनक भीतर एक पूरा दिन विश्राम लेब। ओहि दिनक भोजनक जिम्मेदारी एकटाक स्थानपर टोली लेत।”

झरना बजटक कागद फेर पढ़लीह। मजदूरी, आगि, खरिद, ढुलाई आ सुरक्षित भण्डारणक सभ खर्च जोड़ला पर पहिने घोषित अनुदानक भाग घटि रहल छल। महेन्द्र पुछलक, “तँ लोक कहत जे नव अध्यक्ष अएलाक बाद कम थारी भेटैत अछि।” झरना गिलास नीचाँ रखि कहलीह, “कहता तँ उत्तर देब। पहिने संख्या फुला कऽ रखब आ पाछाँ श्रमिकक पगार रोकब—ई काज नहि करब।” ओ निधिक अन्य प्रचार-मदमे सँ खर्च घटेबाक प्रस्ताव सार्वजनिक रखलीह; छपल बैनरक नव खेप टारल गेल।

नव नियमक पहिल परीक्षण सहज नहि छल। सत्ताइस थारीक स्वीकृत सामग्रीमे अतिरिक्त सात थारी लेल चाउर उपलब्ध भेल, मुदा तरकारी आ ईंधनक व्यवस्था तुरन्त नहि छल। चम्पा पुछलीह जे चिकित्सकीय आवश्यकतावला लोकक भोजनमे देरी होएत की। रुखसाना प्राथमिकता पंजी देखौलीह—जे रोगी लेल निर्धारित भोजन छल से पहिने, बचल सामान्य राहत थारीक समय बदलब। झरना सात अतिरिक्त थारीक लेल छोट सार्वजनिक आपात खर्च स्वीकृत कएलीह; बाँकी नव नामक हेतु दोसर केन्द्रसँ उपलब्ध भोजनक पुष्टि कएल गेल। केकरो नाम केवल चिह्न मारि हटाओल नहि गेल।

साँझक समय रघुक पहिल खेपक भुजल चना पहुँचल। चनाक टोकरी खोलिते गरम धुँआ ओसारमे उठल। पद्मा भुजाइक पावती अलग कएलीह, अनाज दान देनिहारक नाम अलग लिखलीह। रघु बही देखिकऽ कहलनि, “आजुक दाम ठीके अछि, मुदा काल्हिसँ ग्राहक फेर ओतबे रहत जे काल्हि छल।” रुखसाना उत्तर देलीह, “हम सभ अहाँक कनसारक घटल बजार तुरन्त नहि बनाओल सकैत छी। मुदा जे काज हम मँगाएब, ओकर दाम नहि गुमाएब।” दुनू हाथ मिलौने बिना अपन-अपन कामपर घुरि गेलाह; एहि स्पष्टतामे एकटा सच्चा भरोसा छल।

चन्द्रिकाक दोकानमे पुरान सत्तर पुआक पावतीक एक भागक रकम खातामे पहुँचलाक सूचना अएल। ओ बैंकक छोट पर्ची रुखसानाकेँ देखौलीह, “एक हिस्सा भेटल। बचल हिस्सा लेल जे तारीख लिखल अछि से तारीख याद रखब।” ओ हँसलीह, मुदा ओहि हँसीमे शिकायतक धार नहि मेटल। नव भोजनक आदेश लेल सीमित अग्रिम स्वीकार कएलीह। लाभक छोट दर सुस्पष्ट रहला पर दानक अनुदानमे बाँचल रुपैया घटैत छल। गुरमीत एहि घटताकेँ गलत खर्च नहि, अदृश्य भुगतानक सार्वजनिक होएब कहलीह।

रातिक आखिरी बैठकमे गुरमीत अपन खातापर हस्ताक्षर कएलीह। स्वयंसेवकक आजुक दू घण्टा ओ बिना वेतनक सेवा कहि लिखलीह—सहमतिसहित। रुखसानाक रसोइ-प्रबन्धनक छओ घण्टा नियमित भुगतानक सूचीमे गेल। जुबैदाक बासन-सफाइक वास्तविक समय अलग छल। पाछाँ एक नव सदस्य कहलक जे एतेक छोट-छोट मदसँ बही कठिन भऽ गेल। गुरमीत शान्त स्वरमे कहलीह, “पहिने ई कठिनाइ लोकक देहपर छिपल छल। आब कागदपर देखाइत अछि, से सुधारक शुरुआत थिक।”

झरना सभाक अन्तिम प्रस्ताव पढ़लीह—एक महीनाक परीक्षण-दर, साप्ताहिक सार्वजनिक समीक्षा, आपात भोजन लेल अग्रिम कोष, व्यक्तिगत स्वास्थ्य-अभिलेखक गोपनीयता आ मासिक विश्राम-पंजी। परीक्षण-दर स्थायी मजदूरीक अन्तिम मानक नहि बनत; श्रमिकसभक असहमति आ स्थानीय बजार-दरक आधारपर पुनर्विचार होएत। महेन्द्र अपन विरोधक एक पाँति लिखौलक; ओकरा रोकल गेल नहि। मुदा सभाक सामूहिक निर्णयसँ रुखसानाक अगले दिनक खाना बनएबाक एकल जिम्मेदारी समाप्त भेल। अगिला पूर्ण विश्रामक दिन निर्धारित भेल।

एहिसँ अलग, प्राचीन द्वारकाक उत्सव समाप्त भेलाक बाद एक प्रातःकाल कृष्ण समुद्रक कात रहल बाँसक मंच देखैत छलाह। आधा बाँस खसल छल, किछु रस्सी राजवंशक गोदाममे बाँचल छल। एक वृद्ध रान्हनिहारि कहलीह जे उत्सवमे अन्न देनिहारक नाम गाओल गेल, मुदा चूल्हि सँभालनिहार दासीसभक नाम नहि। साम्बक सहयोगी कहलक जे राजकुलक दानसँ भोजन बनल, तखन अलग हिसाब किएक। वृद्धा चूल्हिक खुरपी उठाकऽ जवाब देलीह, “दानक अन्न अपने नहि रान्हल।” कृष्ण ओकरा बीचमे नहि रोकलनि।

बलराम गोदामक पहरुएसँ बाँचल अन्नक नाप मँगौलनि। एक भाग पात्रमे खराब भऽ गेल छल, दोसर वास्तविक भण्डारमे छल। राजकुलक युवक कहलक जे उत्सवक कीर्ति लेल ई सारा अन्न एकसंग दान लिखल जाए। कृष्ण कहलनि, “जे अन्न खाओल गेल तेकर हिसाब, जे खराब भेल तेकर, आ जे हाथ रान्हलक ओकर—तीनू अलग सत्य अछि।” ओ वृद्धा आ ओकर सहकर्मीसभक बकाया अन्न आ विश्रामक दिन देबाक निर्देश देलनि। गोदामक द्वार खुलल, मुदा राजकुलक भीतर उबलैत अवहेलना समाप्त नहि भेल।

सन २०४१क विदेहपुरमे फेर रसोइक साम्हने तेसर दिन बिहानक नया सूची टाँगल गेल। रुखसानाक नामक आगाँ ‘विश्राम’ छल; दोसर पाँतिमे जुबैदा आ प्रशिक्षित दू कामगारक निर्धारित समय, काज आ भुगतानक दर लिखल छल। चम्पा भोजनक मात्रा पढ़ि शान्त भेलीह; जे रोगीकेँ कम नोन चाही, ओकर अलग निर्देश लिखल छल, मुदा निजी बीमारीक नाम खुलल पटपर नहि छल। रुखसाना पहिने जाँचबाक लेल दुआर धरि आयलीह, फेर अपन झोरा उठा घुरि गेलीह।

ओ घरमे पहुँचलीह तँ छोट भाई सलमान हाटसँ लौटि रहल छल। ओ तरकारीक डब्बा रखि पुछलक, “आइ आश्रय नहि?” रुखसाना कहलीह, “आइ हमर काज दोसर सभ करत।” सलमान सहज विश्वास नहि कएलक। “तखन दिनभर की करब?” ओ पुछलक। ओ कहलीह, “पहिने अपन हात धोब, फेर जे मन होएत।” हुनकर कलाईक सूजन एखन छल; परन्तु एहि उत्तरमे ककरो नोकरी, अनुदान वा अनुमतिक प्रतीक्षा नहि छल।

रुखसाना आँगनमे बैसि आधा घण्टा धरि कोनो खाता नहि खोललीह। पड़ोसक एक बच्ची काँचक गोली लऽ आयलीह; ओ बच्चीकेँ फुटल कोनवला गोली हटएबाक कहलीह, फेर नव गोलिक खेल देखैत रहलीह। कतेक दिन बाद हुनकर कानमे बासनक खनखनाहट नहि, बच्चाक हँसी भरल छल। दुपहरमे ओ अपन लेल पातर रोटी सेकलीह—मापल थारी नहि, दानक घोषणा नहि, ककरो नामक पर्ची नहि। रोटी पर घी नहि छल, मुदा एकर समयपर केवल हुनकर अधिकार छल।

साँझक हवा आबि गेल तँ गुरमीतक छोट सन्देश आयल—‘भोजन बाँटल गेल; सभ कामगारक समय दर्ज; अगिला समीक्षा सोम दिन।’ रुखसाना कागद पढ़ि तह कएलीह, अपन कापी नहि खोललीह। दूरसँ आश्रयक चूल्हिक धुआँ उठि रहल छल; आगि अपन

ठाम जरि रहल छल, हुनकर घरक दुआरपर बिना हुनका दौड़ौने। ओ अपन मायक पुरान कपड़ाक झोरासँ एकटा नीला किनारीवला रुमाल निकालि सिरपर रखलीह, आ साँझक हवा देखैत रहलीह। ओहि दिन ककरो उद्धारक कथा नहि लिखल गेल; एक स्त्री अपन समय वापस पाबि सकलीह।

अध्याय १८८ • औजारक बाजार

भोरक पहिल हथौड़ी पड़िते हरिनारायण शर्माक निहाइ पर रखल पातर लोहामे दूटा स्पष्ट खाँज बनल। भट्टीक आगि एखन पूरा लाल नहि भेल छल। अजित एक हाथसँ नापनी पकड़ने छल, दोसर हाथसँ पुरान आदेशक पर्ची सम्हारि रहल छल। सामने तीन अपूर्ण वस्तु छल—नावक रस्सी टिकेबाक छल्ला, बान्हक जाली खोलबाक हुक आ खेतक हलक फाल। चारिम वस्तु एक सीलबन्द छोट पेटीमे छल, जकरा ग्राहक लऽ नहि गेल छल। बाहरसँ कियो कहलक, “आइ औजारक बाजार खोलब कि पहिने पुलिसकेँ खबर देब?” हथौड़ीक आवाज रुकल।

हरिनारायण आगिसँ लोहा अलग करैत उत्तर देलनि, “बाजारमे जे बेचब तकर नाप, उपयोग आ ग्राहकक आदेश अछि। जकर स्रोत स्पष्ट नहि, से बिक्रीमे नहि जाएत।” अजित पेटी लग गेल, मुदा पिता ओकरा खोलबाक नहि कहलनि। पेटीक ऊपर चारि मास पुरान एक अनाम पावती चिपकल छल; ककरो हाथक लिखावटमे केवल ‘धातुक पाट’ लिखल रहए। एहि समान अस्पष्ट शब्दक कारण एक बेर अस्पतालक सामान, असम्बद्ध लोहेक फोटो आ हुनकर कार्यशालाकेँ एके अपराधक कथा बनाओल गेल छल। जाँचक कागदमे एखन धरि एहन किछु नहि छल जे ओ पेटी हुनकर बनाओल वस्तु सिद्ध करैत।

नगरक घाटसँ बाजार धरि नाव—औजार परख पर्वक पताका टँगाइत छल। घाटपर नाविकसभ चप्पूक मूठ जाँचि रहल छलाह, कुम्हार टूटल घटक कान जोड़बाक राँपी देखबैत छलाह, आ कृषकसभ हलक फालक आकार मिलबैत छलाह। एहि बेर पहिल दफे एक अलग गल्ली वैध मरम्मत-अड्ग आ धातुक औजार लेल चिन्हित भेल छल। रमा कर्णक सार्वजनिक सूचनामे लिखल छल जे मेला तकनीकी प्रदर्शन आ खरीद-बिक्रीक मंच अछि, अपराध-जाँच अथवा सम्पूर्ण सुरक्षा-प्रमाणनक विकल्प नहि। किछु व्यापारी ई अन्तिम पाँति हटएब चाहैत छलाह—एकटा ‘सरकारी परख’क मोहर बिक्री बढ़ा दैत।

अजित ग्राहकक पुरान सूची निकालि पिता लग रखलक। नन्दलालक हलक फालक आदेश, जकरा भयावह फोटो देखिकऽ परिवार रद्द कएने छल, एखनहुँ खाली पन्ना छल। “हमरा तीन मासक भट्टी किराया भरबाक अछि,” ओ कहलक, “आ नाम साफ भेला परो

ओ लोक घुरल नहि। जँ बाजारमे पुरान आरोपक चर्चा भेल तँ फेर?” हरिनारायण हथौड़ी बगलमे रखलनि। “साँच लोहा जकाँ नहि जे आगिमे राखिते एक बेरमे सम भऽ जाए,” ओ कहला। “आज सामानक वास्तविक उपयोग देखाएब। मुदा जे ग्राहक डेराएल, ओकर घटल कारोबारक घाटा हम अभिलेखसँ मेटि नहि सकब।”

कमलेश दबगर अपन छोट दोकानक तख्ता पर दू घैल, जूताक पट्टी जोड़क सूत आ बाँसक एक साँच रखैत छलाह। बरखा बीतलाक बादो दक्खिन कोनक दीवाल नम छल। मकान-मालिकक प्रतिनिधि पातर नील फाइल लऽ पहुँचल। पछिला विवादमे प्रस्तावित नाली-मरम्मतक शुल्क पूरा कामक दाम कहि किरायामे जोड़ल गेल छल; सार्वजनिक नाप-पंजीसँ ई अन्तर पहिने सामने आएल रहए। आज प्रतिनिधि नव अनुबन्ध रखलक— किराया मध्यम दरसँ बढ़त, मुदा अग्रिम जमा दुगुना। कमलेश पन्ना पढ़ि देरी धरि चुप रहलाह। पुरान देनदारी चुका सकबाक कठिनाइ हुनकर चेहरापर छल, मुदा झूठ शुल्क स्वीकार करबाक इच्छा नहि।

“दुकानक पछिला बाढ़मे खराब भेल सामानक घाटा मालिकक माथपर नहि लिखब,” कमलेश कहला, “ओ हमर कारोबारी घाटा अछि। मुदा जकर नालीक काम एखन अधूरा, तकर शुल्क पूरा कऽ नहि देब। एहि अनुबन्धमे ई वाक्य हटाउ।” प्रतिनिधि चिढ़ि कहलक, “बाजार बढ़ल, आब सभ दोकानदार सभाक नेता भेल!” कमलेश जोड़ल घैलमे एक कटोरी पानि ढारि देखौलनि। जोड़सँ पातर बूँद चू पड़ल। “ई देखू। पूरा मरम्मत लिखि ग्राहकँ नहि देलहुँ। अहाँक अधूरा नालीक प्रमाणपत्र सेहो ओहिना नहि देब।” ओ घैल फेर खाली कऽ एक कात रखि देलनि।

सलीम नालबन्द अपन पुरान नाल बनएबाक पेटी आ नव वाहन-प्रशिक्षणक डिब्बा एक साइकिलपर बाँधने अएला। पुरान पेटीमे घोड़ाक नालक दू आकार, सँइसी आ हथौड़ा छल; नव डिब्बामे ब्रेक-परीक्षणक कापी, मापनी आ प्रशिक्षकक हस्ताक्षरवला अभ्यास-पत्र। हुनकर पिता साइकिल रोकि पुछलनि, “तों नव यन्त्रक दोकान खोलि रहल छह?” सलीम कहलनि, “एखन प्रशिक्षु छी। पुरान हाथगाड़ीक पहीया आ साधारण जोड़ देखब; मोटरक ब्रेकक अन्तिम प्रमाणपत्र प्रशिक्षित निरीक्षक देत।” पिता नालक जोड़ी पर हाथ

फेरलनि। “तखन ई सभ वस्तु?” “स्मृति, आ जे ग्राहककें एखनहुँ चाही, हुनकर काज,” सलीम उत्तर देलनि।

बाजारक प्रवेशद्वारपर युवासभक एक समूह कारीगरसभक फोटो खींचि रहल छल। कियो हरिनारायणक लम्बा हुकक तस्वीर काटि एक परिचित पुरान आरोपसँ जोड़ि पोस्ट करब चाहलक। झरना ओकरा रोकलीह। “वस्तुक फोटो लेबाह तँ ओकर वास्तविक नाम आ मालिकक अनुमति लिखू। पुरान संदिग्ध मालक मामला अलग जाँचमे अछि।” युवक उत्तर देलक, “हम सुरक्षा चाहैत छी।” झरना कहलीह, “सुरक्षा लेल वास्तविक सूचना चाही। ककरो निर्दोष घोषित करब पुलिसक काम नहि, आ सामान्य हुककें हथियार कहि रोजी रोकब हमरो अधिकार नहि।” भीड़मे सँ एक महिला पूछलीह जे एहन वस्तुक गलत उपयोग रोकबाक उपाय की। झरना खुलल प्रदर्शन, सुरक्षित भण्डारण आ खरीदक लिखित पावतीक बात कहलनि।

पुलिसक एक अधिकारी दू सहयोगीक सङ्ग अएलाह। हरिनारायण आगि कम कऽ हुनका निहाइ लग प्रवेश देलनि। अधिकारीक हाथमे पुरान सीलबन्द धातु-पेटीक अलग जब्ती-सूची छल—एहि सूचीमे हथियार-संबन्धी पाट भेटबाक प्रारम्भिक उल्लेख छल, मुदा ओकर तकनीकी स्रोतक अन्तिम निर्णय नहि। “हम एहि अनाम पेटीक बिक्री नहि करब,” हरिनारायण कहलनि। अधिकारी कहला, “अहाँक अपन पेटी जाँच लेल अलग सुरक्षित राखू: पुरान पुलिस-जप्त पेटी सँ एकर मिलान प्रमाण बिना नहि होएत।” अजित पुछलक, “तखन हमर बाबूकें अपराधी किएक कहल गेल?” अधिकारी उत्तर देलनि, “पुरान सार्वजनिक समाचारक शब्द हम नहि लिखने रही। उपलब्ध निरीक्षणमे अहाँक सामान्य ऑर्डरक औजारपर आरोपक आधार नहि भेटल; लिखित स्थिति देब।”

हरिनारायण लेल ई छोट वाक्य चारि मासक अपमानक पूरा मरहम नहि छल। पुलिसक रसीदमे निर्दोष घोषित करबाक सार्वकालिक मोहर नहि, एतबा छल जे निरीक्षित सामानक उपयोग वैध ऑर्डरसँ मेल खाइत अछि। ओ रसीदक नकल ग्राहकक साम्हने रखलनि, मुदा सीलबन्द पेटीक अनिर्णीत पर्ची अलग बन्द रखलनि। “जकर उपयोग साफ अछि, ओकरा अपन बजार चाही,” ओ अजितकें कहलनि। “जकर पता नहि, ओकरा निहाइक चोटसँ

साँच बना नहि सकैत छी।” अजित पहिल बेर पुलिसक पर्ची लऽ ग्राहकक टेबुल लग निर्भय ठाढ़ भेल, मुदा ओकर हाथमे रद्द भेल पुरान ऑर्डरसभक पन्ना सेहो छल।

घाटक कात पहिल नाविक एक छल्ला खरीदबाक लेल आयल। ओ रस्सीक मोटाइ देखौलक, हरिनारायण छल्लाक भीतरी व्यास नापलनि। ललित विश्वकर्मा लकड़ीक आधार जाँचबाक लेल बजाओल गेलाह; अदिति जलस्तर आ भारक सीमा लिखित देबाक बात कहलीह। “एहि छल्लाक जोड़क परीक्षण हम करब,” हरिनारायण कहलनि, “मुदा सम्पूर्ण घाटक बाट सुरक्षित अछि—से अलग जाँच बिना नहि कहब।” नाविक झुँझलायल, “मेला परख पर्व अछि कि प्रश्न-पर्व?” ललित उत्तर देलनि, “जँ पहिल नाव भारी बोझसँ झुकत तँ अगिलाक नाविकक जीवन प्रश्न बनि जाएत। आज सभ वस्तुक अपन सीमा स्पष्ट करब आवश्यक अछि।”

सलीमकँ ओहि बीच एक छोट सामानवाहक गाड़ीक मालिक बजौलक। पहीया घुमैत समय धातुक हलुक रगड़ाहत होइत छल। मालिक कहलनि, “मोटरक प्रमाणपत्र एखन चाही। एहिसँ भाड़ाक आदेश भेटत।” सलीम पहीया उठा सुरक्षित आधारपर रखलनि आ देखलनि जे साधारण जोड़ ढील अछि, मुदा ब्रेकक भीतरक भागक जाँच विशेष उपकरणसँ चाही। ओ आदेश-पत्रमे दू पाँति लिखलनि—हाथगाड़ीक धुरीक सीमित मरम्मत करब, मोटरक सुरक्षा-परीक्षण अपन प्रशिक्षक लग पठाएब। मालिक पुछलक, “दुनूकँ एक दाममे लिखि देबह?” “एक दाम लिखब तँ एक जोखिम दोसरक पाछाँ लुकि जाएत,” सलीम कहला।

सलीमक पिता दूर ठाढ़ रहि सुनैत छलाह। हुनका बुझाइत छल जे बेटा पुर्खाक काजक मूल्य घटा रहल अछि। मुदा सलीम जखन पुरान नालक खाँज देखाकऽ बालकसभकँ लोहा ठंडा करबाक कथा सुनौलनि, पिता मुस्करौला। “एहि नालक माप तोहर परबाबा हाथसँ लैत छलाह,” ओ कहलनि। सलीम उत्तर देलनि, “हमरा ओ माप याद अछि। मुदा ब्रेकमे गलत कसावटपर गाड़ी फिसलत; एहि लेल नव शिक्षा लैत छी।” ओ अपन प्रशिक्षकसँ भत्ताक अगिला किस्तक लिखित प्राप्ति माँगलक। आंशिक प्रशिक्षणसँ ओकर आमदनी घटल छल; बजारमे नव ग्राहक भेटब ताहि कमीकँ तत्काल नहि मिटा सकैत छल।

दुपहर धरि कमलेशक दोकानक प्रश्न सभाक मेजपर आबि गेल। मकान-मालिकक प्रतिनिधि एहि बेर ‘नाली-मरम्मति पूरा’ वाक्य काटि देलक, मुदा दू मासक सुरक्षा-जमा माँग रहल छल। कमलेश छोट गणना-पत्र रखलनि—एक मासक अतिरिक्त जमा ओ किस्तमे दऽ सकैत छथि; दोसर मासक जमा देलासँ वृद्ध मायक औषधिक रुपैया रुकत। झरना कहलीह जे नगरपालिका निजी किरायाक रकम घोषित नहि करत, मुदा विवादित सार्वजनिक-बाट शुल्क नव अनुबन्धमे घुसाएल नहि जाएब चाही। प्रतिनिधि बनल ग्राहक-मार्गक आवागमनक तर्क रखलक। कमलेश सहमत भेला जे दोकानक सामनेक तख्ता निर्धारित घड़ीमे हटत, स्थायी दखल नहि छोड़ल जाएत।

समझौता तुरन्त नहि भेल। मालिकक प्रतिनिधि कहलक, “जँ अग्रिम नहि दैत छी तँ नवीकरण एक मासक लेल मात्र।” कमलेश एक मासक अनिश्चितताक जोखिम देखलनि। बच्चाक विद्यालयक फीस, हाटमे ग्राहकक घटल संख्या, पुरान बरखाक खराब सूत—एक-एक व्यय लिखल छल। अन्तमे दू मासक नया अनुबन्ध बनल, जमा पहिल मासमे एक किस्त, दोसर किस्त नियत तिथिपर; नालीक सार्वजनिक मरम्मति-शुल्क हटाओल गेल, आ मालिकक भवन-रखरखावक वैध दायित्व अलग पाँतमे रहत। कमलेश हस्ताक्षर करिते कहलनि, “एहि सँ पुरान खराब भेल मालक मूल्य नहि भेटल। मुदा कम-सँ-कम काल्हि किवाड़ उघारि सकब।” प्रतिनिधि अपन असहमतिक नोट रखलक जे अगिला नवीकरणक दर फेर चर्चा होएत।

हरिनारायण लग एक व्यापारी पक्का दामक बदला बिना ग्राहकक नामवला बीस हुक एकसंग खरीदबाक प्रस्ताव लऽ आएल। ओ कहलक, “अहाँक सामान पर आरोप टूटि गेल; आब निःसंकोच बेचू। ककरा उपयोग होएत तकर जिम्मा हमर।” हरिनारायण पूछलनि, “हुकक आकार, धातुक गुण, अन्तिम क्रेता आ वापसीक शर्त कोन कागदमे अछि?” व्यापारी कहलक जे गोपनीय सौदा थोक व्यापारीक अधिकार थिक। हरिनारायण अनिर्दिष्ट खेप अस्वीकार कएलनि। अजित पाछाँसँ धीरे कहलक, “बाबू, एतेक पैसासँ पिछला घाटा भरि जाइत।” पिता आँखि उठौलनि। “घाटा भरबाक लेल फिर ओहि अन्हारमे माल नहि पठाएब जकरा कारण हमर नामपर प्रश्न उठल छल।”

एहि अस्वीकृतिक खबर बजारमे पसरल। एक युवक ठिठोली कएलक, “अब लोहार सेहो वकील बनि गेल!” रेखा साहु अपन चूड़ीक सीमित उत्पादनवला रसीद देखाबैत कहलीह, “काजक सीमा लिखबाक अर्थ काज छोड़ब नहि। हमरा चालीस चूड़ीक नाप देल गेल अछि तँ ओहिपर हमर मेहनताना बनत; कियो हमर नामसँ सैकड़ो नकल छापत तँ प्रश्न उठत।” फरजाना चूड़ीहार सेहो सहमति देलीह। हुनकर लाह, शीशा आ मशीनक चूड़ीक दाम अलग राखल छल; एकटा नामक भीतर अलग वस्तु लुकाएल रहबाक दुख ओ देख चुकल छलीह। ग्राहकसभ सुनैत छलाह, मुदा सभकेँ नियम पसिन्न नहि छल।

बजारक कोनमे रमा कर्ण 'अनुमत व्यापार' शब्दवला बोर्डक पाँति देखलीह। एक दल ई बोर्डक अधिकार अपन संस्थाकेँ देबाक प्रस्ताव देने छल—जे सदस्य वार्षिक शुल्क देत, ओतबे कारीगर एतय बिक्री करि सकताह। शबनम पुछलीह जे निबन्धन आ सुरक्षा-परीक्षणक आवश्यक व्यय कतबा अछि, आ शुल्कसँ के लाभान्वित होएत। देखल गेल जे प्रस्तावक आधा रकम प्रदर्शनीक निजी प्रचार लेल राखल अछि। झरना कहलनि, “नियमक नामपर दोसर एकाधिकार नहि बनत। वैध सामग्रीक जाँच सबपर समान, मुदा प्रचारक सदस्यता स्वैच्छिक।” आपत्ति लिखल गेल, निजी कम्पनीक बोर्ड स्थगित भेल।

तखन एक वृद्ध कृषक लाठी टेकैत हरिनारायणक टेबुल लग पहुँचलाह। ओ नन्दलाल छलाह, जकर परिवार पहिने हलक फालक आदेश रोकने छल। अजित हुनकरा देखि अचानक पानि आनबाक बहाना करि हटि गेल। नन्दलाल पुरान फोटोवला फोन निकालि कहला, “ई देखिकऽ हम डरि गेल रही। हमरा खेतमे पुलिस नहि चाही।” हरिनारायण अपन वास्तविक हलक फाल, ओकर चिन्ह आ पर्ची देखौलनि। “डर अहाँक छल, ओकरा हम नकारि नहि सकैत छी,” ओ कहलनि। “मुदा जे फोटो कटि देखाओल गेल, ओकर पूरा उपयोग अलग छल। जँ अहाँ चाही तँ पहिने एकटा फाल बनएब; बाकी आदेश देबाक बाध्यता नहि।”

नन्दलालक नजर अजितक खाली ठामपर गेल। “हमर देरीसँ अहाँक घाटा भेल,” ओ कहला। “सारा घाटा हम नहि चुकाएब सकब। मुदा एक फालक सही दाम देब।” ओ अग्रिमक छोट रकम निकाललनि। हरिनारायण भाव घटौलनि नहि, बेसी सेहो नहि रखलनि। अग्रिमक रसीदमे वास्तविक नाप आ वितरणक दिन लिखल गेल। नन्दलाल घुरि

गेलापर अजित पूछलक, “आब की सभ ग्राहक घुरत?” हरिनारायण कहला, “एकटा अएल। कतेक लोक नहि आएत, एखन नहि जनैत छी।” अजित एही उत्तरक बाद पहिल दफे रद्द आदेशक पन्नापर काल्हिक नव तिथि लिखल।

दुपहरक समाप्ति लग पुलिसक अधिकारी फेर अएला। अनाम पेटीक निरीक्षणक रसीद आ सामान्य औजारक परीक्षण-रिपोर्ट अलग लिफाफामे छल। अधिकारी कहला जे पुरान जब्त धातु-पेटीक स्रोतक जाँच एखनहुँ जारी अछि; एही मेला सँ ओकर सम्बन्ध सिद्ध नहि भेल अछि। हरिनारायण अपन अनाम पेटी खोलबाक बदला आधिकारिक प्राप्ति पर हस्ताक्षर कएलनि आ अधिकारीकेँ सुरक्षित प्रक्रियामे सौंपि देलनि। “एहि पर हमर बनावट लिखल नहि,” ओ कहला, “तें अनुमानसँ एकरा हमर वस्तु कहबो नहि, आनक कहबो नहि।” अधिकारी रसीदक एक प्रति अजितकेँ देलनि।

मेला कमिटी एहिबीच सभ व्यापारीक बिक्रीक संख्या एकसंग छापबाक प्रस्ताव रखलक। सलीम कहला जे हुनकर जाँचक काज प्रशिक्षणक सीमा भीतर अछि, सम्पूर्ण वाहन-प्रमाणन नहि। कमलेश पुछलनि जे किरायाक अस्थायी समझौता बाजारक उपलब्धि गनल जाएत की निजी अनुबन्धक खुलासा कएल जाएत। झरना निर्णय सुनौलीह—समिति केवल वर्गवार समेकित संख्या देत, व्यक्तिगत ग्राहकक ठेगाना नहि; परीक्षण-प्रमाणपत्र जकरा लेल अधिकृत संस्थाक स्वीकृति चाही तकरा मेला अपने नहि देत। अजित एकटा नव पर्ची टाँगल—‘कारीगरक नाम, काजक माप, जाँचक सीमा, देय’।

घाटक कात साँझक नाव-औजार परख पर्वक सामूहिक प्रदर्शन शुरू भेल। हीरा मेच रस्सीक गाँठ खोलि फेर बान्हबाक क्रम देखबैत छलीह; फूलमती तियर जालक फाटल भाग सीबैत छलीह; ललित काठक पट्टाक नाप देखबैत छलाह; सलीम खाली हाथगाड़ीक पहीया कसि अपन जाँचक सीमा बतौलनि। मंचसँ एक आयोजक घोषणा करए चाहलक जे सभ प्रदर्शित औजार ‘पूर्ण सुरक्षित’ प्रमाणित अछि। अदिति माइक लऽ कहलीह, “आज जे जाँचल गेल तकर सीमा लिखल अछि। जलस्तर, भारी भार आ वास्तविक उपयोगक नाप बिना कोनो व्यापक प्रमाण नहि।” ताली कम बजल, मुदा घाटपर नाविकसभ एहि सूचनाक प्रति माँगए लागल।

ओहि बीच कमलेश अपन नव किराया-अनुबन्ध दोकानक भीतरक सन्दूकमे रखि घैलक जोड़ फेर परखलनि। आज पानि बाहर नहि टपकल। ओ ग्राहककें घैल वापस देलनि, मुदा ओकर पुरान टूटनक निशान देखाएब नहि बिसरलाह। सलीमक हाथमे प्रशिक्षकक छोट सन्देश पहुँचलक—आगामी परीक्षणमे नाम दर्ज भऽ गेल अछि; भत्ताक पिछिला हिस्सा अगिला भुगतान-तिथिपर देबाक लिखित आश्वासन अछि, बैंकमे रकम एखन नहि। हरिनारायण साँझक बिक्री गनलनि। तीन वस्तु बिकलीह, एक फालक अग्रिम भेटल, दू आदेश एखन अपूर्ण छल। ऋण चुकल नहि, मुदा भट्टी बन्दो नहि भेल।

सूर्य डूबैत अजित निहाइक कात अन्हारमे चमकैत एक छोट कील उठा लेलक। “ई कील गलत हाथमे जायत तँ चोट पहुँचत,” ओ कहलक, “तखन कील बनब बन्द करब?” हरिनारायण बेटाक हथेली सँ कील लेने बिना उत्तर देलनि, “जे वस्तु कोन काजमे बनैत अछि, जेकरा देल जाइत अछि, आ जे हाथ ओकर गलत उपयोग करैत अछि—तीनू प्रश्न अलग राखब। जँ किछु संदिग्ध देखब तँ दबाएब नहि। मुदा सभ लोहाकें एके अपराध कहब तँ हलक फालो बन्द भऽ जेत।” अजित कीलकें अपन निश्चित खाँजमे रखि देलक। बाहर घाटक बाटपर साधारण लोक अपन खरीदे औजार लऽ घुरि रहल छल।

प्राचीन द्वारकाक समुद्रक कात, एहि आधुनिक कालधारासँ पृथक, बलराम एक दिन राजकुलक उत्सवक बाँचल धातुक पात्र देखैत छलाह। एक पात्रपर कुलचिह्न छल, मुदा ओकरा उठौनिहार मजदूरक नाम कतहु नहि। दूर कृष्णक संग किछु युवक हँसैत विवाद करैत छलाह। बलराम पात्र राखि देलनि; हुनका अनुभव भेल जे राजकुलक भीतर जकरा ओ अपन परिवार कहैत छथि, ओहीमे सामान्य श्रमिकक अधिकार मानबाक शिक्षा सदा अपूर्ण रहैत अछि। ओ तत्काल कोनो राजकीय आज्ञा नहि देलनि। ओ पहिने मजदूरक अपूर्ण भोजन-भाँड़क हिसाब सुनबाक लेल ओतहि बैसि गेलाह। एहि सुनबामे हुनका अपन पक्षसँ उठैत एक दूराइ पहिल बेर स्पष्ट भेल।

अध्याय १८९ • बलरामक दूराइ

प्राचीन द्वारकाक समुद्रक किनार भोरमे एकटा धातुक थारी उलटल पड़ल छल। ओकर भीतरी भागमे काल्हिक भोजक तेलक पातर परत जमल छल, बाहर राजकुलक चिह्न चमकि रहल छल। बलराम थारी उठौलनि तँ दूटा चीन्ह भेटल—एक स्वर्णकारक, दोसर पहरुएक कोइला सँ बनाओल अंक। थारीक मालिकक नाम स्पष्ट छल, मुदा ओकरा धोएनिहार, ढोएनिहार आ राति भरि पहरा देनिहार लोकक नाम कतहु नहि छल। ओ थारी फेर राखि गोदामक दुआरपर बैसि गेलाह। समुद्रक हावा नूनक संग बासी मदिराक गन्ध आनैत छल।

घाटक वृद्ध मजदूर कैलाश अपन घुटना दाबैत अएलाह। हुनकर बेटा राजकुलक उत्सवमे बाँसक मंच खोलने छल, मुदा हिसाबक पन्नापर ओकर तीन दिनक बदला दू दिन लिखल छल। बलराम पुछलनि, “अहाँ काल्हि किएक नहि कहलहुँ?” कैलाश उत्तर देलनि, “हम कहलहुँ। मुदा प्रत्येक बेर लोक अहाँक नाम लऽ कहलक जे आयोजन समाप्त भऽ गेल, आब प्रश्न उठाएब राजकुलक अपमान थिक।” बलराम एक क्षण थारीक प्रतिबिम्ब देखैत रहलाह। अपन नामक छाया ओहि विवादमे पहुँचल छल जतय ओ स्वयं उपस्थित नहि छलाह।

दू युवक घोघल हँसी हँसैत घाटपर उतरला। एक कहलक, “आब प्रत्येक रस्सीक गाँठक लेल सभा बैसत? विजयक समयमे कियो एतेक बही नहि पढ़ैत।” दोसर एक पात्रक कात लात मारलक; पात्र घुमैत कैलाशक लग पहुँचि ठहरि गेल। बलराम हुनका रोकलनि। “विजय तौ सभक लेल जतेक पैघ अछि, ओहि सभक लेल काज छोट किएक भऽ गेल?” पहिल युवक बलरामक मुख परखलक, “हमरा सभकेँ बचपनसँ अहाँ शस्त्र आ बल सिखौलहुँ। आब हम बल प्रयोग करैत छी तँ अहाँ हमरा डरबैत छी।”

एहि प्रश्नसँ बलरामक भीतर पुरान प्रशिक्षणक अनेक दृश्य खुलि गेल। बालकसभक हाथमे गदा छल, पएरमे बालू; जकर वार जोरगर, ओकर जयकार बेसी। ओ समय ओ सभकेँ कहने छलाह जे शस्त्रक पहिल धर्म संयम थिक। मुदा जीतल बालककेँ दोसर बालक उठेबाक काज स्वयं सिखौने छलाह की? ओ नहि स्मरण कऽ सकलाह। ओ

युवकक हाथ पकड़बाक बदला ओकर फेकल पात्र उठौलनि आ मजदूरक टेबुलपर राखि कहलनि, “हमरा सँ जे अधूरा सिखायल गेल, ओकर भाग हमर अछि। मुदा एखन जे तौँ करैत छह, ओकर निर्णय तोहरो थिक।”

कृष्ण ओहि समय घाटक ऊपरक पातर सीढ़ी उतरि रहल छलाह। बलराम हुनका सामने गोदामक खाता रखलनि। कृष्ण गनलनि—बाँचल अनाजक परिमाण आ खर्चक पर्ची मेल नहि खाइत छल। किछु थारी गायब छल, मुदा एहि विसंगतिसँ चोरी करनिहारक नाम सिद्ध नहि होइत छल। कृष्ण कहलनि, “जाँच हमरा अपन लोकसँ शुरू करबाक पड़त।” बलराम उत्तर देलनि, “अपन लोक कहि ककरो बचौलहुँ तँ दोष हमर सेहो होएत। मुदा सभ युवाकेँ एकटा दोषी समूह कहि छोड़ि देबो असत्य होएत।” दुनू एहि बेर बिना वाद-विवादक बहीक अलग-अलग पन्ना पर चिन्ह लगौलनि।

ओहि दुपहर एक युवती जलपात्रक बाटपर ठाढ़ भेलीह। हुनकर मायक घर घाटक पाछाँ छल, जतय रातिक उत्सवक अपशिष्ट ढेर भऽ गेल छल। “हमरा घरक पानिमे राजवंशक हँसी उतरि गेल,” ओ कहलीह। एक पहरुआ कहलक जे राजकुल सफाइक दल पठाओत। युवती पुछलीह, “कखन? हमर माय आइ पानि कोना भरतीह?” बलराम अपन सेवकसँ जल आनबाक आदेश देबाक बदला युवतीकेँ पुछलनि जे तत्काल कोन रास्ता खुलि सकैत अछि। ओ एक छोट पुरान पगडण्डी देखौलीह। पहरा हटाओल गेल; बाँकी सफाइ लेल अलग श्रमिक बोलाओल गेलाह।

साँझक सभा फेर गर्म भऽ उठल। साम्बक संग बैसल युवकसभ कहलनि जे राजकुलक विरुद्ध भोरक शिकायत सार्वजनिक कऽ यादवक गौरव घटाओल जाइत अछि। वृद्ध नाविक उत्तर देलक, “हमरा यादव कहल जाए वा नाविक, हमरा नाव चलएबाक बाट चाही।” एक युवक कड़ा स्वरमे कहलनि जे बाहरी लोक राजवंशक एकता तोड़ि रहल अछि। बलराम पहिल बेर सभक बीच अपन उत्तरदायित्व स्पष्ट कहलनि, “घाटक समस्या बाहरी लोक नहि बनौलक। हमरा सभ अपन उत्सवक दुआर अपन सेवकसभक मुँहपर बन्द कएलहुँ। हम जे देखलहुँ, समयपर सभामे नहि राखलहुँ; हमर मौन सेहो एही दरारमे अछि।”

हुनकर वाक्यपर क्षणिक सन्नाटा रहल। तखन दोसर युवक प्रश्न कएलक, “जँ अहाँ अपने दोषी छी तँ हमरा सभक नेतृत्वक अधिकार ककरा?” बलरामक हाथ अनायास गदाक मुठियापर गेल, मुदा ओ मुठिया छोड़ि देलनि। “नेतृत्वक अधिकार हमरा पिताक नामसँ नहि भेटल, आ क्षमा सेहो कुलक नामसँ नहि भेटत,” ओ कहलनि। “जे नुकसान भेल, ओकरा ठिक करबाक साधन जाँचू। जे प्रश्न हमरा नहि बूझाईत अछि, ओकरा जबरन बन्द नहि करब।” ओ सभामे अपन आसन छोड़ि निचला सीढ़ीपर बैसि गेलाह। किछु युवक हुनकरा दुर्बल कहलनि, किछु मौन रहलाह।

कृष्णक लग लौटि बलराम कहलनि जे ओ किछु दिन राजकुलक दैनिक उत्सव आ निर्णयसँ दूर रहि समुद्रक कात स्वतंत्र साधना करता। कृष्ण पुछलनि, “ई दूराइ प्रजाक प्रश्नसँ सेहो?” बलराम माथ हिलौलनि। “नहि। हम ओहि सभ प्रश्नसँ भागैत नहि छी। मुदा हमर उपस्थिति सभ विवादक अन्तिम उत्तर मानल जाइत अछि; हमरा सभकेँ दोसरक आवाज सुनबाक जगह दए पड़त। हम हमर हिस्साक प्रमाणित देयक जाँचक लिखित जिम्मेदारी छोड़ि नहि जा रहल छी।” कृष्ण ओहि दायित्वक प्रति लेलनि; ओ बलरामकेँ रोकलनि नहि।

सन् २०४१क विदेहपुरमे, एहि प्राचीन समुद्री कथासँ सर्वथा अलग कालधारामे, भोला यादव भोरक दूधक दू डिब्बा लऽ सार्वजनिक रसोइक दुआरपर पहुँचलाह। भिजल बोरा नीचाँसँ एक छोट रसीद निकलि अएल। रुखसाना अपन विश्रामक दिनक बाद काजपर घुरने छलीह; ओ पहिले घैलक ढक्कन खोलि दूधक गन्ध देखलीह, तखन मापक दण्ड लगौलीह। भोला कहलनि, “आजुक दूधक दाम स्पष्ट राखू। पहिनुक चारि दिनक जे बकाया रहल, ओकरा पहिने अलग गनू।” झरना खाताक पेटी खोललीह।

भोला पर्ची पसरौलनि। दू दिनक मूल्य पहिने मिलि चुकल छल, बाँकी दू दिनक मात्रा पुरान वितरण-पंजीमे जाँचल जा रहल छल। आज ओ पंजीमे माप, ग्रहणकर्ताक सही आ बैंकक रसीद एक पाँतिमे भेटि गेल। झरना समिति स्वीकृत रकम भुगतान लेल पठौलीह। भोला कहलनि, “भुगतान आदेश आ बैंकक पैसा एक नहि।” ओ दूध बेचि घुरि गेलाह, मुदा दुपहरमे बैंकसँ आएको सूचना अपना मोबाइलपर खोलि देखलनि। बाँकी रकम

सचमुच खातामे पहुँचल छल। ओ बेटीकेँ फोन कऽ कहलनि, “आब चारि दिनक दूधक दाम मिलि गेल। राहतक नामक सूचीमे जे भेद अछि, ओ अलग बात छैक।”

भोला ओहि बेर रसोइ-परिषदक सामने केवल अपन दाम लेल नहि आयलाह। हुनकर लग गामक दू परिवारक पर्ची छल। एक परिवारकेँ नियमित दूध-सहायता भेटैत छल, दोसरक बच्चाकेँ ओही चिकित्सकीय आवश्यकताक बावजूद सूचीसँ बाहर कएल गेल छल। भोला कहला, “हम जकरा दूध बेचैत छी, ओकर हिसाब चुकल। आब हम अपने जे देखलहुँ तकर गवाही देब। मुदा अहाँ सभ नामक आधारपर अनुमानसँ दोसर परिवारकेँ दोषी नहि ठहराउ।” झरना दुनू परिवारक व्यक्तिगत स्वास्थ्यपत्र सार्वजनिक नहि कएलीह; पात्रताक मानदण्ड आ अपीलक समय सार्वजनिक कएलीह।

महेन्द्र आपत्ति कएलक, “भोलाक अपन व्यापार अछि; ओ जतेक परिवार सूचीमे बढ़त ततेक दूध बेचत।” भोला सीधा उत्तर देलनि, “हमरा लाभ भऽ सकैत अछि। एही लेल दर-निर्णयमे हमर मत नहि गनू; मुदा जकर बच्चाक नाम छूटल, ओकर तथ्य कहबाक अधिकार किएक छीनब?” परिषद निर्णय कएलक जे दूध-विक्रेता सभ सूचना देताह, मुदा पात्रता-निर्णय स्वतंत्र समिति करत। एक परिवारक अपील तत्काल सुनवाईमे गेल; दोसरक स्वीकृति बिना कारण रद्द नहि भेल। भोला पहिल बेर अपन हिसाबक बही बन्द कऽ दू अलग कागद अलग खाममे राखलनि।

औजारक बजारमे नजीर सिकिलगर पुरान छेनीक मुँहपर रेतनी चलबैत छलाह। काल्हिक नाव-औजार परख पर्वक बाँकी तिरपाल हवा सँ फड़फड़ा रहल छल। नजीरक दोकानपर कोइलासँ लिखल पुरान आरोप आधा घसल गेल छल, मुदा ओकर कारीगरीसँ बेसी लोक पहिने ओही लिखावट देखैत छल। हरिनारायण शर्मा एक टूटल कुंडी लऽ अएला। “मरम्मति कऽ सकब?” ओ पुछलनि। नजीर उत्तर देलनि, “लोहेक जोड़ देखब; पूरा नावक भारक गवाही नहि देब।” दुनूक बीच माप आ दाम तय भेल।

पिछला पुलिस पूछताछमे नजीरक नाम एक अज्ञात धातु-खेपक रसीदसँ जोड़बाक प्रयास भेल छल। एखन प्राप्त जाँच-पत्रमे स्पष्ट छल जे निरीक्षित कृषि-औजार, रस्सीक कुंडी आ छेनीक मरम्मति वैध सामान्य काजसँ मेल खाइत अछि। अज्ञात खेपक असल स्रोतक जाँच अलग जारी छल; नजीरकेँ समस्त सम्भावित घटनाक प्रमाणित निर्दोष

घोषित करबाक भाषा सेहो नहि छल। ओ कागदक अर्थ स्वयं बुझि ग्राहकक सामने एक सीमित प्रति टाँगलनि—‘एहि निरीक्षित काजमे अवैध वस्तुक प्रमाण नहि।’

एक युवक पुछलक, “जँ रिपोर्ट नीक अछि तँ दुकानदारसभ अहाँक लग फेर किएक नहि आबैत?” नजीर हाथक रेतनी रोकलनि। “जे ग्राहक चारि महिना पहिने हटि गेल, ओकरा कागद पढ़बए हमरा घर-घर नहि पहुँचि सकैत अछि। गलत आरोपक क्षति बहुते बार सही बातसँ पहिने पसरैत अछि।” हरिनारायण सहमति देलनि; ओ अपन भट्टीक घटल ग्राहक याद कएलनि। मुदा नजीर एहि दुखक आधारपर अज्ञात धातु-पेटी अपने खोलि परीक्षण करबाक प्रस्ताव ठुकरौलनि। “जे नहि जनैत छी, ओकरा जनैत छी कहब तँ फेर ओही गलती,” ओ कहलनि।

दोपहरक घाममे एक नाविकक बेटी कुंडी लेल अएलीह। ओकर पिताक नावक पाछाँ रस्सी ढीला पड़ैत छल। नजीर कुंडी फेर कसि देलनि, सुरक्षित उपयोगक सीमा पर्चीपर लिखलनि, आ नावक सम्पूर्ण जाँच प्रशिक्षित दलसँ करएबाक कहलनि। बेटी दाम देबाक लेल सिक्का गनलीह। नजीर तय दामसँ बेसी नहि लेलनि; ओ चाहैत छलाह जे पहिल नव ग्राहकक भरोसा कृपासँ नहि, कामक सही नापसँ बनय। ओहि साँझ हुनकर बहीमे दू मरम्मतिक रकम आएल, मुदा पिछला घाटाक पन्ना एखन लाल स्याहीमे खुल्ला छल।

साँझ ढललापर करुण दमाई एक फाटल बाजाक चमड़ा लऽ सांस्कृतिक मंचक पाछाँ पहुँचलाह। परसुक प्रस्तुति लेल आयोजक हड़बड़ीमे छल; मंचक ऊपर लिखा छल—‘समुदायक कला, सामूहिक सेवा’। करुण चमड़ा फैलाकऽ कहलनि, “एहि बाजाक मरम्मत आइ करब, काल्हि ओकरा बजाएब। दुनू काजक समय अलग अछि।” व्यवस्थापक पुरान रसीद देखौलक जाहिमे कपड़ा, धागा, कसनी आ प्रस्तुति एके मदमे जोड़ल छल। करुण पर्ची उलटि दूटा स्तम्भ खींचलनि।

व्यवस्थापक नाराज भेल। “एतेक छोट कार्यक्रममे दू बिल बनएब तँ हिसाबक फीस बेसी लागत।” करुण बाजाक कोरपर उँगली रखि पुछलनि, “जँ हम आइ बिना मरम्मतिक बाजा बजाएब तँ फाटल चमड़ा दोसर दिन के बदलत? जँ मरम्मतिक कऽ काल्हि मंचपर नहि आबि सकब तँ प्रस्तुति लेल के जिम्मेदार?” रमेश घासी पास बैसल छलाह। ओ

कहलनि जे संगतकारक दू घण्टा प्रस्तुति आ बाजा-बान्हनिहारक तीन घण्टा मेहनत अलग अछि। झरना परिषदक पूर्वनिर्धारित श्रम-दर आनबाक निर्देश देलीह।

करुणकें मरम्मतिक सामग्री आ आजुक श्रमक निश्चित रकम ओतहि डिजिटल पावतीसहित भेटल। कार्यक्रमक प्रस्तुतिक मानदेय अगिला दिनक सहभागिताक बाद देय रहत—ई शर्त स्पष्ट लिखल गेल। करुण चाहैत छलाह जे आयोजक समस्त मानदेय अग्रिम दथि; समितिक कोष एकर स्वीकृति नहि देलक। विवादक समाधान भेल जे निर्धारित न्यूनतम अग्रिम आजु देल जाए, शेष मंचक उपस्थिति-पत्र जँ सही अछि तँ अगिला बैंक-दिन। करुण एक छोट जोखिम स्वीकार कएलनि, मुदा भुगतानक अधिकार निजी मुँहजबानी भरोसापर नहि छोड़लनि।

रात्रिक पूर्व मंचक अभ्यास शुरू भेल। एक बालिका ढोलक तान सुनि नाचए लागलीह; ओकर माए तुरन्त रोकबाक बदला करुणसँ पुछलीह जे मंचक भीड़मे ओकर सुरक्षित ठाम कतय अछि। करुण बाजा रखि फर्शक ढील तख्ता देखौलनि। बालिकाक पए ओतहि खसि सकैत छल। मिस्त्रीकें बजाओल गेल; मरम्मतिक खर्च कलाकारक मानदेयसँ काटल जाए, एहन प्रस्ताव अस्वीकार भेल। करुणक बाजाक कोर नब चमड़ा सँ कसि गेल, मुदा मंचक जोखिमक काज दोसर श्रमिकक जिम्मामे सही भुगतानसहित गेल।

रुहानी नव अध्यक्ष झरनाक लग भेटबाक अएलीह। ओ कहलनि जे निजी दाता एहि बेर कलाकारक प्रस्तुति रिकॉर्ड कऽ डिजिटल प्रचार करए चाहैत अछि। झरना करुणसँ अनुमति पुछलीह। “आइ अभ्यासक ध्वनि निजी प्रशिक्षण लेल राखू” करुण कहलनि, “काल्हिक सार्वजनिक प्रसारक अलग अधिकार चाही। हमर बाजा ककरो कम्पनीक स्थायी ध्वनि-चिह्न नहि।” रुहानी ओहि उत्तरक सम्मान कएलीह। नेतृत्व छोड़लाक बाद पहिल बेर ओ समिति-दस्तावेजपर अंतिम सही नहि कएलीह, मात्र एक गवाहक रूपमे अपन उपस्थिति लिखौलीह।

रात्रिमे भोला खाली डिब्बा धोइ घर घुरलाह। हुनकर बेटी कागदपर दू कोठरी बनौने छलीह—‘दूधक दाम’ आ ‘सहायताक सूची’। भोला हँसलनि, मुदा बेटी गम्भीर छलीह। “बाबू, जे बच्चा सूचीमे नहि अछि, ओकरा काल्हि दूध भेटत?” भोला उत्तर देलनि, “आज हम ओकर नामक जाँचक बाट खुलबौलहुँ। काल्हि निर्णय आएत की नहि, नहि जनैत छी।

जँ बच्चा भूखल अछि तँ अपन घरसँ दूध देब, मुदा ओकरा सरकारी सूचीमे चोरीसँ जोड़ि नहि देब।” बेटी लेल ई दोसर पाठ छल—दयाक काम आ अधिकारक माग एक संग चलि सकैत अछि।

नजीर अपन दोकान बन्द करिते सुनलनि जे कियो फेर पुरान आरोपक चर्चा करैत अछि। ओ पीछे नहि दौड़लनि। किवाड़पर लगल निरीक्षण-पत्रक उपर नव मरम्मतिक रसीद टाँगलनि, जाहिमे ग्राहकक नाम ओकर सहमतिसँ मात्र छपल छल। हरिनारायण बाटसँ जाइत कहला, “काल्हि एक फालक नव आदेश अएल अछि।” नजीर कहलनि, “हमरो दू कुंडी। दू वस्तुसँ चारि मास नहि भरत, मुदा भोरक हाथ खाली नहि रहत।” दुनू अलग दिशामे घुरि गेलाह; हुनकर साधारण बजारक श्रम एकटा दोषक पहिल प्रतिवाद बनल।

करुण बाजाक नव कसनी परखबाक लेल अन्तिम बेर हलुक थाप देलनि। एक स्वर बाँचल शामक भीतर दूर धरि गेल। रुखसाना अपन रसोइक किवाड़ बन्द करैत ओ ध्वनि सुनलीह, मुदा ककरो बोलाबए नहि दौड़लीह; हुनकर आजुक निर्धारित श्रम-अवधि पूरा भऽ चुकल छल। दूर रंगीन ध्वजक नीचाँ मंचपर प्रकाश जलि उठल। झरना पहिल बेर हिसाबक आखिरी पृष्ठमे ‘कलाकारक सहमति’ आ ‘मंच-मरम्मत’ अलग सही देखलीह। छोट उत्सव एखन बाकी छल; कम-सँ-कम एहि राति ओहि उत्सवक एकटा हिस्सा अदृश्य हाथपर नहि टिकल छल।

प्राचीन द्वारकाक ओहि रातिक अलग कालधारामे, बलराम समुद्रक कात अपन गदा बालूपर राखि बैसलाह। दूर राजकुलक भीतर हँसी, विवाद आ फाटल पात्रक स्वर मिलि रहल छल। कृष्णक दूत अएल आ कहलनि जे किछु युवक फेर आपसमे दोषारोपण करैत अछि; कोनो पक्ष दोसरक बात सुनए तैयार नहि। बलराम तुरन्त सभा लऽ दौड़लाह नहि। ओ दूतसँ कहलनि जे चोट लागल लोकक सहायता पहिने कराउ, गवाही अलग रखाउ, आ जे निर्णय हुनकर नामपर रोकल अछि ओकरा खुलल सभामे राखू। दूत चलि गेल।

बलराम बुझि रहल छलाह जे दूर जाएबासँ हुनकर पुरान काजक परिणाम मिटत नहि। कोनो पुत्र, शिष्य वा मित्रकेँ केवल अपन स्नेहसँ बान्हि सुरक्षित राखल नहि जा सकैत अछि। ओ गदाक मुठिया फेर छूलनि, मुदा ओकरा उठौलनि नहि। अगिला भोर ओ

राजकुलक दुआर छोड़ि एकान्त साधनाक बाट पकड़ताह—एहि निर्णयक सूचना कृष्णकें भेजि देने छलाह। समुद्रमे उतरैत अन्हार हुनकर दोषक उत्तर नहि देलक; बलराम ओहि मौनमे अपन हिस्साक सत्यसँ मुँह नहि फेरलनि।

अध्याय १९० • कृष्णक अन्त

प्राचीन द्वारकाक समुद्रतटपर भोरक पहिल उजासमे एकटा फाटल पाल बालूमे अटकल छल। कृष्ण ओकर डोरि खोलबाक लेल झुकलाह तँ हथेलीपर सूखल रक्तक दाग देखलनि। रातिक कलहमे घायल युवककेँ लऽ गेल नावक रस्सी ई छल। किनारक ऊँच ठामपर समुद्रक फेन उठैत छल, मुदा गामक भीतरक आवाज समुद्रसँ पैघ छल—कियो अपन भाई खोजैत छल, कियो गुमल भाँड़, कियो ओ आदमी जकरा अन्तिम बेर क्रोधमे देखल गेल छल। बलराम अपन निर्णयक सूचना पठा राजकुलसँ दूर निकलि गेल छलाह। कृष्ण हुनकर खाली आसनक दिस नहि, घायलसभक सूचीवला भीजल कागदक दिस तकलनि।

राति भरि लोक ई कहि विवाद कएने छल जे उत्सवक हँसी किनका अपमान कएलक आ किनकर हाथमे पहिल शस्त्र उठल। समृद्ध कुलक दू युवक अपन-अपन पक्षक कथा फेर-फेर कहैत छल। एकजना कहलक, “हमरा पर आक्रमण भेल; हम केवल उत्तर देलहुँ।” दोसरक हाथ पर पट्टी छल; ओ कहलक, “जे मरल, ओ पहिले दोषी छल।” कृष्ण दुनूक बात सुनलनि आ घायल नाविकनीकेँ बजाओलनि, जकर जलघैल झगड़ामे फूटल छल। ओ कहलीह, “हम शुरू देखलहुँ नहि। हम तऽ जखन पहुँचलहुँ, तीन लोक लाठी लऽ दौड़ि रहल छल। हमरा बेटा ओतय छल, मुदा ओकर हाथमे की छल से हम नहि देखलहुँ।” कृष्ण हुनकर अपूर्ण साक्ष्यकेँ अधूरहि लिखवौलनि।

किनारपर बाँसल सरकण्डाक एक झुरमुटमे किछु युवक लकुटी तोड़ैत छल। हँसीक अगिला क्षणमे एक युवकक माथसँ रक्त बहि निकलल। ककरो इरादा पर मृत्यु लिखल नहि छल, मुदा चोट लागलासँ पहिने ककरो रोकेबाक अवकाशो नहि बचल। राजवंशक गौरवक नामपर चलल विवाद क्षणभरमे प्राणघातक भऽ गेल। कृष्ण चोट लागल युवककेँ उठएबाक निर्देश देलनि। एक पहरुआ कहलक, “पहिने दोषीकेँ पकड़ू।” कृष्ण उत्तर देलनि, “जे साँस लऽ रहल अछि ओकर घाव एखन बन्द करू। दोषक प्रश्न बादमे नहि मेटत।” ओ स्वयं बँधल पट्टीक गाँठ ढीला कएलनि, ताकि घायल हाथमे रक्तक बहाव नहि रुकय।

दिन चढ़ैत यादव युवासभक आपसी संघर्ष बढ़ल। पुरान घाव, अपमानित शब्द, धनक अहंकार आ बिनु परीक्षणक आरोप एक दोसराक माथपर चढ़ि रहल छल। सरकण्डाक कठोर डाँठ हाथमे शस्त्र बनि उठल; लोक ओकरा नियतिक लोहमय मुसल कहैत छलाह। मुदा प्रत्येक प्रहार एक वास्तविक हाथसँ भेल, प्रत्येक खसल देहक अपन घर छल। कृष्ण एक समूहकें हटएबाक प्रयास कएलनि, दोसरक मध्य ठाढ़ भेला, घायल लोककें कात करौलनि। ओ जहिना एक ठाम शान्ति करबैत, तहिना पाछाँ दोसर ठाम हुड़दङ्ग भऽ उठैत। राजकुलक पहिने अर्जित अनुशासन अपनहि लोकक उग्रताक सामने छितरा गेल।

घाटक चौकीपर बैसल वृद्धा कुटिलादेवी अपन दू पोताकें गनैत छलीह। एक भेटल, दोसरक पता नहि छल। कृष्ण हुनकरा पहिचानैत छलाह—कहियो ओ उत्सवमे जलक घैल ढोने छलीह। वृद्धा हुनकर पएर लग झुकलीह नहि। “हमरा एक नाम चाही, आरम्भसँ सभक सूची नहि,” ओ कहलीह। कृष्ण उत्तर देलनि, “जे नाम हमरा नहि भेटल, ओकरा भेटल कहब नहि। मुदा जे खोजि रहल छथि, हुनका संग अहाँक आदमी जायत।” वृद्धाक मुँह काँपल। “अहाँ राजा नहि रहितहुँ, तखनो ई काम करितहुँ?” कृष्ण एक क्षण मौन रहलाह। “एहि घड़ी हमर नामसँ बेसी आवश्यक ओकर खोज अछि,” ओ कहलनि।

रातिमे कृष्ण एक घायल बालक लग बैसलाह। ओकर पिताक पता नहि भेटल छल। बालक पुछलक, “हमर बाबू गलत छलाह की?” कृष्ण कहलनि, “हम अहाँक बाबूक सभ काज नहि जनैत छी।” बालक फेर पुछलक, “जँ ओ गलत छलाह तँ हम हुनका याद करि सकैत छी?” कृष्ण बालकक हाथमे ओकर पिताक काठक छोट नाव देलनि, जे दू पहरुआ बीच बालूसँ उठौने छल। “अहाँ जे देखलहुँ, जे प्रेम पेलहुँ, ओकर स्मृति रखू। गलत काजक जाँचसँ ओ स्मृति मेटैत नहि अछि।” बालक नाव छाती लगौने सुतबाक प्रयास कएलक।

दूसर भोर, प्राचीन द्वारकाक एही पृथक कथा-समयमे, बलरामक दूर प्रस्थानक समाचार फेर अएल। कृष्ण अपन सहायकसभकें जीवित स्त्री, बालक आ वृद्धसभक आवास, भोजन आ निकासक जिम्मेदारी बाँटि देलनि। जिनका दान भेटल, हुनकर नाम अलग; जिनकर मजदूरी देय रहल, हुनकर हिसाब अलग। एक दरबारी पुछलक जे राजवंशक छिन्न-भिन्न स्थिति देखिकऽ लोक हुनका कायर नहि कहत? कृष्ण कागद मोड़ैत कहला, “अपन कालकें रोकि नहि सकैत छी, मुदा ओकरा बहाना बनाकऽ देय रोकब हमरा हाथमे

अछि।” ओ दरबारीकेँ खाली मुहर वापस दऽ देलनि; तत्काल आवश्यकता पर्येक प्रमाणित प्रतिक छल।

ओहि दिन कृष्ण समुद्रसँ दूर पातर वनबाटपर निकललाह। घाम पातक बीचसँ धारी बना धरतीपर पड़ैत छल। ओ थाकल छलाह। एक झरनाक लग बैसि पएर धोइत समय हुनका दूर बलरामक रखल गदाक धातु-छवि याद अएल। भाइ अपन दूराइ चुनने छलाह; कृष्ण ओहि चुनावक अन्तरमे हस्तक्षेप नहि कएलनि। राजकुल, सहायक, पोतासभ, युद्ध—स्मृति धूपक टुटल रेखा जकाँ छल। देहक भीतर एकटा अनोखी शान्ति नहि, गहन थकान छल। ओ मनमे सभ जीवित लोकक नाम फेर गनलनि जे एखन सहायता चाहैत छल।

वनक दोसर कात जरा नामक शिकारी झाड़ी हिलबाक चिन्ह देखलक। घासमे धूपसँ चमकैत एक आकृतिकेँ ओ मृगक कान बूझलक। ओ दूर छल, आ पूरा देह देखनहि बिना तीर छोड़ि देलक। तीर कृष्णक पएरमे लगल। कृष्णक देह झटकासँ काँपल; ओ हाथसँ भूमि धरि एक कात बैसि गेलाह। जरा झाड़ी चीरैत दौड़ल आ घायल मनुष्य देखिकऽ ओकर हाथसँ धनुष खसि पड़ल। “हम मृग बुझलहुँ,” ओ काँपैत कहलक। “पूरा देखबाक धैर्य नहि राखलहुँ।”

कृष्णक पएरमे रक्त भरि रहल छल। जरा तीर खींचबाक लेल झुकल, मुदा कृष्ण रोकलनि। “जोरसँ नहि। पहिने पानि आ साफ कपड़ा आनू।” शिकारी झोरा फाड़ि पट्टी बनौलक, झरनासँ पानि आनलक। ओ बारम्बार कहैत रहल, “हम अहाँकेँ मारबाक इरादा नहि कएने रही।” कृष्ण ओकरा देखलनि। “इरादा आ फल एक नहि अछि,” ओ कहलनि। “जे आँखिसँ पूरा नहि देखलहुँ, तकरा नापि छोड़ल तीर फेर घुरि नहि सकैत अछि।” जरा अपन गलतीक बात सुनि सकल, मुदा ओकरा माफ भेला मात्रसँ घावक दुख नहि घटल।

जरा पुछलक जे ओ राजनगर दौड़ि लोककेँ बजाए? कृष्ण कहलनि, “बजाउ। मुदा झूठ नहि कहल जाए—एतय जे भेल से जेना भेल तेना कहब।” शिकारी दौड़बाक लेल उठल, तखन फेर घुमि कहल, “लोक हमरा मारत।” कृष्ण बहुत धीरे उत्तर देलनि, “हमर नाम लऽ अहाँकेँ मारबाक अधिकार ककरो नहि भेटैत अछि। जे चोट भेल, ओकर साक्ष्य चाही,

बदला नहि।” ओहि वाक्यमे ककरो जीवनक पूर्ण क्षमा वा दण्ड-समाप्तिक घोषणा नहि छल; केवल हिंसाकेँ दोहराएबासँ रोकबाक आग्रह छल। जरा वनबाट पकड़ि दौड़ि गेल।

पातक फाँकसँ छोट आकाश देखाइत छल। कृष्ण अपन हाथ धरतीपर पसारि राखलनि। दूर गाछपर पक्षी बाजल। हुनकर मनमे द्यूतक सभा, युद्धक धूलि, सुदामाक मुस्की, राधिकाक दूर गीत, द्वारकाक अनाजबही—सभ एक दोसरासँ भिन्न स्मृतिरूपेँ उभरल। ओ सभकेँ एकटा अर्थमे बाँधबाक प्रयास नहि कएलनि। देहमे पीड़ा रहल; साँस छोट होइत गेल। एही वनक मध्य कृष्णक जीवन समाप्त भेल। समुद्र चलिते रहल, आ घायलसभक सहायता लेल हुनका छोड़ल आदेशसभ जीवित हाथसभमे अपूर्ण काज बनल रहल।

जरा लोक लऽ घुरल तँ घनघोर चुप्पी छल। वनक कात पहुँचल पहिल स्त्री अपन ओढ़नी खोलि देह ढाँपलीह। एक पहरुआ शिकारीक गरदन पकड़बाक लेल दौड़ल, मुदा ओ स्त्री बीचमे ठाढ़ भेलीह। “पहिने जे देखलहुँ, लिखू” ओ कहलीह। “एहि आदमीक तीर लागल, तकर साक्ष्य अछि। मुदा राजकुलक सभ मृतकक भार एकर माथपर राखू नहि।” जरा हाथ जोड़ि ठाढ़ रहल। ओकर स्वीकारोक्ति दर्ज भेल। एही निर्णयसँ कृष्णक मृत्यु पलटल नहि; मुदा तखने उठि रहल प्रतिशोधक नव आक्रमण रोकल गेल।

सन् २०४१क विदेहपुरमे, एहि प्राचीन वनघटनासँ पूर्णतः अलग कालधारामे, दुर्गा दनुवार भोरमे बाँसक गट्टर उतारि वन-पंचायतक फाटक लग रखलीह। फाटकक नव बोर्डपर लिखल छल—‘सुरक्षार्थ मार्ग बन्द’। पुरान नकलमे बरखाक तीन महिनाक आपात बन्दी आ शेष अवधिक सीमित आवागमन छल। बोर्डमे अवधि नहि छल। दुर्गा हाथक डोरी खोलैत पहरुआसँ पुछलीह, “ई फाटक कोन दिन धरि बन्द रहत?” पहरुआ कहलनि, “जंगलक सुरक्षाक लेल सभ लोककेँ रोकल गेल अछि।” दुर्गा कहलनि, “सुरक्षा बुझैत छी। मुदा सभ गामक जीवन एके बात नहि अछि।”

दुर्गाक संग भाँजि मैना छलीह; ओकर साइकिलक पाछाँ टोकरी सीबबाक पातर बाँस बान्हल छल। मैना रात्रिमे नीमक कात नव टोकरीक नाप बनौने छलीह। फाटक बन्द रहलासँ हाट पहुँचबामे पाँच कोस घुमए पड़त, आ नव ऑर्डरक समय निकलि जाएत। वन-पंचायतक सदस्य कहलनि, “तोहर सभक पुरान पगडण्डी मानलहुँ तँ काल्हि कियो कहत

पूरा वन हमर।” दुर्गा साइकिलक छाया धरि रेखा खींचि कहलीह, “हम असीम वनक मालिकाना नहि माँगैत छी। हम एकटा मौसमी बाटक नाप आ वैध बाँसक परिमाण माँगैत छी। दुनू कागद अलग राखू।”

रमा कर्ण आ तारा मल्लिक स्थलपर पहुँचलथि। दुर्गा पुरान अनुमतिक प्रति खोललीह, जाहिमे जड़िसहित बाँस काटबाक निषेध छल, नव कटाइक कोना गनती होयत से लिखल छल। एक वनकर्मी कहलक जे वर्षा बाद माटि दहिन कात खसकैत अछि; पुरान बाटक आधा हिस्सा सुरक्षित नहि। दुर्गा पहिने विरोध कएलीह, मुदा चलि कऽ देखलनि तँ दू पुरान गाछक जड़ उधड़ल छल। ओ अपन भाँजिक दिस मुड़लीह। “एतय भारी गाड़ी नहि जायत,” ओ कहलीह। “मुदा पातर साइकिल लेल ऊपरक सूखल किनार जँ जाँचि खुलत तँ हमर काम बचत।”

पंचायतक खुलल बैठकमे ठेकेदार आपत्ति कएलक जे सब बाँस सामूहिक बिक्री-ठेकासँ जायत। ओकर अनुसार छोट कारीगर अलग रस्ता पेलासँ सरकारी गणना घटत। दुर्गा गट्टर खोलि प्रत्येक खण्डपर पुरान कटाइक चिन्ह देखौलीह। “ई लट्ठी हमर घरक पुरान भण्डारसँ अछि, नव कटाइक नहि,” ओ कहलीह। “जतय नव काटब, ओतय अनुमति आ पुनरोपनक हिसाब देब। मुदा गट्टर ढोएबाक लेल अनिवार्य रूपेँ अहाँक गाड़ी भाड़ापर लेब, ई सुरक्षा नहि, ठेका थिक।” मैना हाट-सौदाक रसीद सामने रखलीह।

वनकर्मी मापन-पट्टी लऽ ऊपरी किनार जाँचलक। एक कोसक कम बाटमे दुइ ठाम माटि नरम छल; ओतय पैदल छोड़ि गाड़ी रोकबाक पड़त। समिति अन्तमे सीमित पैदल आ हलुक साइकिल आवागमनक समय निश्चित कएलक, बरखा-बाढ़क चेतावनीपर अस्थायी बन्दीक अधिकार राखलक, मुदा बोर्डपर बन्दीक कारण आ पुनःसमीक्षाक तिथि लिखबाक अनिवार्यता जोड़लक। वैध बाँसक अधिकतम मात्रा, गाछक पुनरोपन आ वनकर्मीक निरीक्षण अलग प्रविष्टिमे आएल। दुर्गा सहमति देलीह; व्यापक वन-अधिकारक निपटारा भेल एहन घोषणा ओ स्वयं अस्वीकार कएलीह।

मैना नव बाटसँ खाली साइकिल चलाकऽ परखलक। दहिनक नरम माटि लग ओ उतरि पैदल गेलीह। घुरिकऽ ओ दुर्गासँ पुछलीह, “एहि नियमसँ सभ बरख हमर कमाइ बचत?” दुर्गा उत्तर देलीह, “सभ बरखक गारण्टी कागद नहि देत। मुदा आइ जे बाट देखलहुँ, जतेक

समय खुलत, कोन कारणसँ बन्द होएत—ओकर प्रश्न पूछबाक आधार भेटल।” तारा मल्लिक समझौता-पत्रक तीन प्रति देलीह—एक वन-पंचायतकें, एक कारीगरसभकें, एक सार्वजनिक अभिलेखघरकें। मैना अपन प्रति झोरामे नहि, जलरोधी खोलमे रखलीह।

माधुरी दांगी ओही दिन विद्यालयक रसोइघरमे सूप बजबैत धानक चूड़ा छानैत छलीह। हुनकर बेटी अनन्या भुजल मखान नापि सानो कागदक थैलीमे भरैत छलीह। साझेदारीक पहिल बिक्रीमे पुरुष आपूर्तिकर्ताक भाड़ा चुकल छल, मुदा स्त्रीसभक बीहन चुनब, भुजब, छानब आ साग सुखएबाक समय ‘पारिवारिक सहयोग’ नामसँ एक पाँतिमे लिखल छल। माधुरी बही खींचि अनन्यासँ कहलनि, “जे काम देखाइत नहि, ओकर पहिल प्रमाण समय थिक। आज हमर अंगुरी दुखैत अछि; ओहि दुखक माप दाममे सेहो चाही।”

रुखसाना अपन पिछला विश्रामक दिनक बाद रसोइमे छलीह, मुदा आज ओ निर्णयक एकमात्र स्वामी नहि छलीह। नव अध्यक्ष झरनाक समिति महिला उत्पादकसभसँ अलग हिसाब माँगने छल। माधुरी प्रत्येक कामक घण्टा लिखौलीह। अनन्या बीचमे पानि आनबाक लेल उठल समय काटि देलक; वृद्धा कावेरी अपन धीमा हाथक कारण कम दर स्वीकार करए चाहलीह। माधुरी रोकलीह। “एकहि कामक सुरक्षित नापमे जँ समय बेसी लगल, तकरा बेर-बेर दण्ड बनायब उचित नहि। उत्पादनक गुणवत्ता देखू, ओकर बाद सामूहिक श्रम-दरपर बात करू।”

खरीदारक प्रतिनिधि कहलक, “हम थैली खरीदैत छी, परिवारक भीतरक भागक हिसाब किएक राखब?” अनन्या तौल-मशीनक पातर पर्दा उठाकऽ कहलक, “कारण ई उत्पादन परिवारक एक पुरुषक नामपर निबन्धित अछि। जँ राशि ओकरे खाता जाए आ महिला सभ मुँह ताकी तँ लिखित हिस्सा कहाँ?” प्रतिनिधि बेचैन भेल। माधुरी ओकरा दोषी ठहरौलनि नहि; ओ प्रस्ताव रखलीह—बिक्रीक राशि साझा खातामे आएत, लागत चुकत, फेर कामक प्रमाणित योगदानक अनुसार सदस्यसभकें राशि हस्तान्तरित होएत। व्यक्तिगत ऋण अथवा घरक विवाद एहि खातासँ स्वतः नहि कटत।

दुपहर पहिल खेपक असी थैलीक भुगतानक सूचना अएल। ओतबा थैली सभ समान वजनक नहि छल; दूटा कम वजनवला थैली विद्यालय वापस पठौलक। अनन्या प्रतिवाद करबाक बदला नाप फेर कएलीह। रुखसाना कहलनि, “गलत नाप सुधरब आवश्यक

अछि। मुदा ओकर दाम केवल स्त्रीक मजदूरीसँ काटि सभ पूँजीक हिस्सा सुरक्षित राखब उचित नहि।” समितिक लिखित शर्तमे सामग्रीक क्षति, नाप-त्रुटि आ श्रमक गलतीक पृथक जाँच निर्धारित भेल। बिक्रीक विवादरहित रकमसँ कावेरी, माधुरी, अनन्या आ दोसर स्त्रीसभकेँ पहिल प्रत्यक्ष भुगतान भेल; दू थैलीक हिसाब अलग रहल।

माधुरी साँझ घर घुरलीह तँ हुनकर पति देवन पुछलनि, “घरक कमाइमे इतेक अलग हस्ताक्षर किएक?” ओ पतिक संग चूल्हि लग बैसि कहलीह, “जखन खेतक बीहन किनल जाइत अछि तखन ओकर दाम लिखैत छी। मखान भुजएबामे लगल घंटा ककरो दान नहि। जे राशि घरमे आएत, ओकर उपयोग हम सभ मिलि तय करब; मुदा हमर हिस्सा अस्तित्वमे अछि से पहिने जानब।” देवन बही पढ़लनि, अपन ढुलाईक भाड़ाक पाँति देखलनि, आ अनन्याक श्रमक सामने पहिल बेर ओकर नाम। ओ तुरन्त प्रसन्न नहि भेलाह; मुदा बही फाइलनि नहि। अगिला खेपक प्रयोग लेल हस्ताक्षर कएलनि।

विद्यालयक प्राङ्गणमे सरिता भोरक उपस्थिति-पंजी समेटैत छलीह। एही दिन एक स्थानीय आयोजक कृष्णक अन्तक नामपर नाटक आ मृतकसभक साझा चित्र-पट बनएबाक प्रस्ताव लऽ अएल। ओ चाहैत छल जे नैराक फोटो सेहो कृष्णक मृत्यु-स्मारकक कात लगायल जाए, जकर शीर्षक हो ‘दैवी प्रतिशोधमे बुझाएल जीवन’। सरिताक हाथ एक क्षण कागदपर ठमकि गेल। “हमर बेटी नैरा मरि गेलीह,” ओ स्पष्ट कहलीह। “हुनकर मृत्युक अपन घटना, अपन अधूरा जाँच आ अपन जीवित सम्बन्ध अछि। ओकरा कृष्णक अन्तक प्रतिशोध कहब तँ मिथक आ प्रमाण दुनूकेँ झूठ बनायब।”

आयोजक कहलनि जे लोक भावनासँ जुड़त; कानूनी विवरण देखब नहि चाहत। सरिता विद्यालयक पुरान छाजनक निरीक्षण-पत्र खोललनि। “जे बुझए चाहैत छथि, हुनका स्रोत देखाऊ,” ओ कहलीह। “जे कथा सुनए चाहैत छथि, हुनका कथा कहू—मुदा दुनूक बीच पट्टी खींचि राखू। नैराक नाम आ चित्र हमरा एकटाक हँ-मेमो सँ खरीदल नहि जा सकैत; कबीरक अपन सम्बन्धक अधिकार अछि, आ नैराक प्रकाशित सार्वजनिक काजक अपन सन्दर्भ।” आयोजकक प्रस्ताव नाम-सहमति समिति लग पुनर्विचार लेल गेल। नाटकक सार्वजनिक अनुमति अलग परखल जाएत, विद्यालयक जाँचक फाइल अलग।

कबीर विद्यालयक गाछतल अएलाह। हुनकर झोरामे नैराकें लिखल ‘निजी—
अनपठाओल’ पत्र नहि छल; ओ घरक पेटीमे सुरक्षित छल। सरिता हुनका आयोजकक
बात सुनौलीह। कबीर पुछलनि, “अहाँ हमरा मना करबाक अनुमति माँगैत छी?” सरिता
उत्तर देलीह, “हम अहाँक अनुमति नहि, अहाँक मत सुनैत छी। नैराक संग अहाँक जीवन
हमरा शोकसँ अलग छल।” कबीर कहलनि, “हम सेहो फोटो देबाक पक्षमे नहि छी। मुदा
जँ विद्यालयक सार्वजनिक काजक बारेमे विद्यार्थी लिखथि तँ हम हुनका रोकब नहि।”
दुनूक बीच एहि सीमित सहमतिमे न तऽ मृत्यु कम भेल, न निजी पत्र सार्वजनिक भेल।

साँझक सामूहिक बैठकमे झरना अगिला पोखरि-उराहि अभियानक सूचना पढ़लीह।
पिछला बरखक पर्चीमे सफाइक घण्टा किछु लोकक नामे दू बेर चढ़ल छल; किछु
स्त्रीसभक नाम एक बेरो नहि। गोमती बेलदार पिछला कापी लऽ ठाढ़ छलीह। ओ
कहलीह, “आगामी तेसर उराहिमे जे घण्टा काज करब, ओही घण्टाक समान नियम चाही।
जाति, देह, दान अथवा अपन घरक सम्बन्धसँ भुगतानक माप नहि बदलत।” समिति
नियमक मसविदा सार्वजनिक पढ़बाक तिथि निर्धारित कएलक। दुर्गा जंगलक बाटक
अस्थायी बन्दी-नियम देखबैत कहलीह, “कागदमे कारण आ पुनःसमीक्षाक दिन लिखल
रहय, तखने रास्ता सचमुच लोकक हाथमे रहत।”

राति भेलापर सरिता घर पहुँचलीह। नैराक खाली गिलास खिड़कीक कात छल। ओ
गिलास हाथमे लऽ किछु देर बैसलीह, फेर ओहिठाम रखि देलनि। हुनका ककरो जीवनक
अन्तक दैवी अर्थ चाही नहि छल। आज विद्यालयक दुआरपर दुई कारीगरनीक लिखित
हिस्सा, एक सीमित वनमार्गक प्रति आ एक अनिर्णीत छाजन-जाँचक कागद भेटल छल।
ई सभ नैराकें वापस नहि आनत। मुदा जे जीवित छथि हुनकर श्रम आ बाटक प्रश्न काल्हि
फेर उठत—आ उत्तरक खोज एक लोकक नाममे बन्द नहि होएत।

अध्याय १९१ • सबटा टूटल नहि

सन् २०४१क चैतक भोरमे गोमती बेलदार पोखरिक कात गाड़ल बाँसक खूँटा निकालि फेर एक बित्ता पाछाँ रोपलीह। खूँटाक पहिल जगहमे पानि लागल छल; जे श्रमिक ओहि ठाम माटि काटैत, ओकर पैर फसबाक डर छल। गोमतीक बामा हाथमे पिछला वर्षक उराहिक कापी, दहिना हाथमे लाल धागासँ बान्हल नाप-पट्टी छल। पाछाँसँ फूलमती तियर पुछलीह, “आज फेर नाप बदलि गेल?” गोमती कहलीह, “नाप नहि, खतरा देखबाक आँखि बदलल अछि। एक बित्ता माटि कम कटत, मुदा ककरो देहक दाम बचत।”

तेसर वार्षिक पोखरि-उराहिक लेल गामक अलग-अलग टोला सँ लोक पहुँचल छलाह। कियो कुदार आनने छल, कियो टोकरी, कियो केवल अपन नाम लिखेबाक कागद। पिछला वर्षक उपस्थितिपंजीमे एक पुरुषक आठ घण्टा दू बेर चढ़ल छल, आ दू स्त्रीक तीन-तीन घण्टा ककरो हस्ताक्षरक नीचाँ दबि गेल छल। गोमती ओहि पन्नाकेँ कातमे रखलीह, लुकौलीह नहि। नव निर्वाचित अध्यक्ष झरना पुछलीह, “गलत पन्ना हटायब?” गोमती कहलनि, “गलती मेटाएब, इतिहास नहि। जँ ई पन्ना नहि रहत तँ काल्हि फेर कियो कहत —एहन कखनो भेल नहि।”

उपस्थितिक मेजपर रामसखी सफाइक पुरान टोपरी राखि चुपचाप बैसल छलीह। एक ठेकेदारक मुंशी सभसँ एके पन्नापर अँगूठाक छाप माँगैत छल। ओकर ऊपर लिखल छल —काममे सम्मिलित होएवला सभ व्यक्ति भुगतान, दुर्घटना-सुरक्षा आ भविष्यक क्षतिपूर्तिसम्बन्धी शर्त मानि चुकल छथि। रमा कर्ण कागद पढ़ि रोकलीह। “नाम दर्ज करब एकटा सहमति अछि,” ओ कहलीह, “देय छोड़ब दोसर। जे पढ़ि नहि सकैत छथि, हुनका आवाजमे शर्त सुनायब पड़त। आ जे शर्त अस्वीकार करतीह, हुनकर आजुक श्रमक बाट अपने बन्द नहि भऽ जाएत।”

गोमती दू अलग पंजी खोललीह। पहिलमे उपस्थितिक समय, कामक प्रकार, आवश्यक विश्राम आ सुरक्षा-औजार; दोसरमे भुगतानक हिसाब आ शिकायतक अलग नम्बर। मजदूरीक दर काजक प्रमाणित प्रकृतिक अनुसार पहिनहि सभामे निश्चित भेल छल। एके सुरक्षित श्रेणीक काजमे जाति, स्त्री-पुरुष, परिचय वा अध्यक्षक नजदीकीसँ घण्टाक मोल

नहि बदलत। बच्चासभ लेल काज नहि, विद्यालयक खुलल पाठकक्ष आ छायाक ठाम छल। बूढ़ लोक स्वेच्छासँ दिशा देखौता, मुदा हुनकर स्वेच्छा-सेवाकेँ दोसरक अनिवार्य निःशुल्क मजदूरीक बहाना नहि बनाओल जाएत।

सूरज गंगोता घाटपर अपन कटल खेतक माटि सँ भरल छोट डिब्बा लऽ अएलाह। “पानि उठत तँ अही कात फेर कटान होएत,” ओ कहलनि। “पछिला मानचित्रमे हमरा खेतक बचल भाग देखाइत अछि, मुदा जाल पसारबाक रास्ता ओहि बचल पट्टी पर बनि रहल अछि।” फूलमती तियर अपन जालक गीला धागा पसारि देलीह। “हमर जीरा एहि पानिमे छोड़ल जाएत,” ओ कहलीह, “जँ गाद खेतमे ढारल जायत तँ जालक नवा दाम अलग के देत?” दुनूक आवाज तेज होए लागल। गोमती कुदर माटिमे रखि कहलीह, “आइ माटि काटबाक पहिने माटि राखबाक सहमति चाही।”

रमणी बिन्द घाटक दहिना पट्टीक पुरान जलस्तरक चिन्ह देखौलनि। पिछला उराहिमे जतेक गाद निकालल गेल छल, ओकर एक भाग वर्षाक धारमे घुरि आएल। एक युवक कहल, “तखन तीन बेर सफाई कए की लाभ?” हीरा मेच टोपरीक फाटल हत्था सीबैत उत्तर देलीह, “सभ काज पूर्ण होएत नहि। जँ एक सुरक्षित घाट बचल, एक ठाम बीहन सही रहल, एक मजदूरक नाम नहि दबायल गेल—ई सभ सच अछि। मुदा एहि सत्यसँ बाढ़क क्षति नहि मेटत।” झरना एहि वाक्यकेँ निर्णायक आधार बनौलनि, उद्घोषणाक विजयगीत नहि।

ठेकेदारक मुंशी आपत्ति कएलक जे घण्टा बराबर गनल गेल तँ तेज काज करनिहारक घाटा होएत। गोमती ओकर बात धैर्यसँ सुनलीह। “भिन्न काजक दर अलग होय सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एके कामक समय अलग देहक नामपर आधा किएक? कुशलताक विशेष दर जँ चाही तँ पहिने खुला नियम बनाउ, पाछाँ चेहरा देखि नहि।” एक अनुभवी मजदूर अपन औजारक घिसाइ-बदलाइक खर्च उठौलक। गोमती तकरा सेहो मानलीह; औजारभाड़ा मजदूरीसँ अलग रसीदमे लिखल गेल। एहि छोट संशोधनसँ बहसक गरमी कम भेल।

तखन बटोही धामी मधुक खाली माटिक पात्र लऽ पहुँचलाह। हुनकर पुरान मधुसंग्रहक बाट बाँधक पाछाँ बन्द छल। पहिले ओ गाछ धरि जाय लेल साझा आवेदन देने छलाह,

मुदा बरखा बाद गाछक खोखल भाग टूटि गेल छल आ मधुमक्खीक नव छत्ता भीतरक सुरक्षित भागमे बनल छल। “पुरान बाट खोलि दिअ,” एक साथी कहलनि, “हम सभ पहिनहिसँ ओतहि जायत छलहुँ।” बटोही पात्र उलटि देखौलनि—भीतर एक बूँद मधु नहि। “बाट खोललासँ गाछ जिन्दा नहि होएत,” ओ कहला, “नहि पुरान शिकारी-काम अपनहि घुरि आएत। हमरा मधु लेल वैकल्पिक सुरक्षित पहुँचक नाप चाही।”

वन-सहायिका मंजू बटोहीकेँ तटबन्धक ऊपरी पैदल किनार देखौलीह। ओतए पहिने फूल लगौनिहार नन्दिनी भंडारीक नर्सरीक दू कतारक बीच पातर खाली पट्टी छल। मंजू कहलनि, “एहि बाटे केवल मौसमी निरीक्षण आ सीमित मधुसंग्रह सम्भव अछि; गाछ काटब, धुँआ फूँकब वा छत्ता सम्पूर्ण नष्ट करब नहि।” बटोही पुछलनि, “पहुँचक दिन कियो अपन मर्जी सँ बन्द करत?” तारा मल्लिक एक पन्ना खोललीह—कारण, तिथि, वैकल्पिक बाट आ पुनर्समीक्षाक दिन लिखब पड़त। मंजू चेतौलीह जे बरखा वा छत्ताक नवा स्थितिमे काज रोकल जा सकैत अछि। बटोही सीमित शर्त मानलनि।

ओहि सहमतिमे हुनकर पुरान शिकारी-रोजगारक पुनःस्वीकृति नहि छल। बटोहीक पुत्री पुतुल पुछलीह, “तखन हम सभक घरमे कमाइ कखन आएत?” बटोहीक नजर खाली पात्रपर अटकलीह। मंजू प्रस्ताव रखलीह जे सुरक्षित दूरीसँ छत्ताक गनती करबाक प्रशिक्षण होएत, आ पुरान फूलवला जमीनक मालिकसभसँ सीमित परागण-सहयोगक सौदा अलग बनत। ओ काम एखन तय नहि छल; पहिने प्रशिक्षण आ गाछक जाँच आवश्यक छल। बटोही अपन बेटीकेँ कहलनि, “हाथमे जे नहि अछि, ओकरा भेटि गेल लिखब झूठ। मुदा कतए आवेदन देब से आब बुझाइत अछि।”

दुपहरक तेज धूपमे उराहिक पहिल सुरक्षा-सूचना बजल। दू मजदूर घुटनाधरि गादमे उतरबाक प्रयास कएलनि, मुदा पट्टीक माटि भीतरसँ खाली छल। गोमती सीटी बजा काज रोकलीह। ठेकेदार झुँझला गेल, “आधा घण्टा बैठलासँ मजदूरी काहे?” ओ कहलीह, “सुरक्षाक कारण रोकल काजक समय कामगारक दोष नहि। जँ अहाँक कुदार एतए डूबत तँ औजारक दाम माँगब; आदमीक पैर डूबत तँ कहब आलस?” रमा घटना-पंजीमे रोकबाक समय लिखलीह। निरीक्षकक जाँच धरि ओहि भागमे प्रवेश बन्द भेल, बगलका सुरक्षित पट्टीपर काज चलल।

रामसखी अपन दलक तीन स्त्रीकेँ लऽ नाप-खूँटाक पाछाँ माटि ढोए लगलीह। पहिनुक सभामे हुनकर नाम ‘सहायिका’ लिखि घंटा घटाओल गेल छल। आइ रामसखी घड़ी देखैत शुरू आ विश्रामक समय स्वयं लिखौलीह। गोमती हुनकर लिखावट नाप-पंजीक संग मिलौलीह। कातमे ठाढ़ किशोरी पुछलक, “ई सभ एतेक लिखल किएक जा रहल अछि?” रामसखी उत्तर देलीह, “किएक तँ हम जखन घर पहुँचब, हमरा हाथक दुखाइ लोक देखत नहि। घंटाक पाँति कमसँ कम पूछत जे दुखाइक बदलामे की भेटल।”

साँझसँ पहिने पानिक पुरान निकासपर अटकल बाँस हटाओल गेल। ई काज छोट छल, मुदा ऊपरक पट्टीक माटि सुरक्षित रखैत कएल गेल। पोखरिक उत्तरी घाटपर तीन बूढ़ स्त्री पायरि धरि बिना फसने चलि देखलीह। फूलमती तियर जाल लऽ उतरलीह, फेर रुकि कहलीह, “आब एतय जाल राखि सकैत छी, मुदा नवा जालक बकाया कियो देल नहि।” गोमती एहि सफलताक संग ओहि अनिर्णीत दावाकेँ एकहि पंजीमे अलग-अलग चिह्नित कएलीह। झरना उद्घोषककेँ सम्पूर्ण पोखरि ‘दोषमुक्त’ कहबाक निषेध कएलनि।

अगिला दिन बीहन—पानि साझेदारीक बैठकमे तारा तीन नक्शा पसारलीह—बारिसक पानी, रबीक उपयोग आ चौरक मौसमी पहुँच। सूरज गंगोताक कटल खेतक वास्तविक सीमा नव नापमे फेर देखायल छल; पुराने ऋण-पुनर्गठनक कागद बगलमे रहल। सरकारी प्रतिनिधि कहलनि जे साझा नक्शापर हस्ताक्षर भेला बाद क्षतिपूर्तिक अलग माँग नहि रहबाक चाही। सूरज प्रतिवाद कएलनि, “जलनिकासक बाटपर सहमति देलहुँ, खेत गुमेबाक स्वीकृति नहि। कटल माटि घुरि नहि आएल।” तारा प्रतिनिधिक वाक्य निर्णय-पत्रमे घुसए देलनि नहि।

फूलमती अपन जालक नवा लागतक हिसाब खोललीह। धागा, सीबन, नावा, जीरा छोड़बाक समय—सभक अलग रकम छल। समिति एहि खर्चक एक हिस्सा सार्वजनिक घाट-कार्यक कारण भेल अतिरिक्त हानिक रूपमे जाँचए सहमत भेल। मुदा जाल पुरान भेलाक कारण जे मरम्मत पहिनेसँ आवश्यक छल, तकरा स्वतः सरकारी क्षतिपूर्ति नहि घोषित कएल गेल। फूलमतीक चेहरापर तत्काल सन्तोष नहि आएल। “कमसँ कम जाँच ककरा जिम्मामे अछि से लिखू,” ओ कहलीह। झरना नाम, समय आ अपीलक पता लिखौलीह। एहि बेर खाली ‘विचार होएत’ नहि लिखल गेल।

सुरक्षाक कारण बन्द पट्टी खुलबाक दिन दोसर निरीक्षण भेल। गादक नीचाँ एक पुरान लोहेक कड़ी भेटल, जकरा केओ प्राचीन पुलक चिह्न कहए लागल। अदिति कड़ी उठेबाक बदला ओकर जगह चिन्हित कएलीह। “ई ककर वस्तु अछि से एखन नहि बुझल,” ओ कहलीह। “पुरान चिह्न भऽ सकैत अछि, आ हालक औजारक टुकड़ा सेहो। एहि पर कथा अलग लिखू, नाप अलग।” एक लोक हँसैत कहलक जे एहि सावधानीसँ उत्सवमे रोचकता कम होएत। गोमती उत्तर देलीह, “उत्सवक मनोरञ्जन लेल मजदूरक पयरक नीचाँक गादकेँ पुरातत्त्व घोषित नहि करब।”

पोखरि-कातक अस्थायी रसोइमे रुखसाना एक दिनक विश्रामक बाद अपन निश्चित पालिमे छलीह। हुनकर संग प्रशिक्षण पाएल नव सहकर्मी मेनका रहल, जे हिसाबक पन्ना राखैत छलीह। भोजक दान-पत्र आ कामगारक भोजनक संख्या अलग छल। कियो फेर कहल जे उराहि सामूहिक उत्सव अछि, एहि लेल रसोइमे मजदूरीक दावा शोभा नहि दैत। मेनका आज उत्तर देलीह, “दानक भात खाएवला मजदूरक पेट भरत; मुदा भात पकौनिहारक घरक भाड़ा के चुकौत?” रुखसाना मुस्की देलीह। हुनकर विरोध आब एकमात्र आवाज नहि रहल छल।

तेसर दिनक भोरमे भुगतान-पंजी सार्वजनिक पट्टीक भीतर टाँगल गेल, निजी बैंक-विवरण बिना। गोमती नामक बदला एक व्यक्तिगत रसीद-संख्या आ कामक घण्टाक संग जाँचयोग्य कुल रखलीह; श्रमिक अपन प्रति पर नाम देखि मिलान कऽ सकैत छलाह। ठेकेदार चाहैत छल जे पूरा राशि ओकर कम्पनीक साझा खातामे जाए, ओ बादमे मजदूरसभकेँ बाँटत। झरना पुछलीह, “ककरो खातामे समय पर नहि पहुँचल तँ अहाँक लिखल ‘वितरित’ शब्द के परखत?” समिति विवादरहित मजदूरी सीधे कामगारक स्वीकृत माध्यममे भेजबाक निर्णय कएलक।

किछु श्रमिकक बैंक-सुविधा नहि छल। रमा हुनका लेल प्रमाणित नकद-भुगतानक सुरक्षित विकल्प निर्धारित कएलीह—दू स्वतन्त्र साक्षी, व्यक्तिगत प्राप्ति आ पुनःजाँचक अधिकारसहित। एहिसँ ठेकेदारक एकाधिकार नहि रहल, मुदा कार्यालयक काम बढ़ि गेल। झरना अतिरिक्त लेखा-सहायकक उचित पारिश्रमिक स्वीकृत कएलीह, अनपठल कागद निःशुल्क भरबाक अपेक्षा नहि रखलीह। पहिल किस्तक सूचना अएल तँ रामसखीक

घण्टा ठीक रहितो खाता-संख्या एक अंक गलत छल। हुनकर भुगतान रोकि कारण बताओल गेल, शेष सभक भुगतान रोकल नहि गेल।

गोमती रामसखीकेँ अलग कात लऽ गेलीह। “हम जँ सभक भुगतान अटकि रहल कहलहुँ तँ आजुक नियम पहिल दिन टूटत,” ओ कहलीह। रामसखी नवा रसीदक सत्यापन देलीह, आ वित्तीय सहायक सही विवरण पुनः दर्ज कएलक। दोसर पहरमे रामसखीक भुगतानक पुष्टि अएल। ओ रकम देखिकऽ तुरन्त कोनो जयघोष नहि कएलीह। घरक चूल्हिक खर्च, खराब भेल टोपरीक मरम्मत आ बेटी लेल कापीक दाम मनमे जोड़लीह। ओकर बाद गोमतीसँ कहलनि, “एहि बेर हमरा अपन कमाइ माँगए लोकक दुआर नहि घूमए पड़ल।”

साँझक खुलल सभामे एक सदस्य प्रस्ताव रखलक जे तेसर उराहि पूर्ण सफलता घोषित कएल जाए। गोमती सभक आगाँ पाँच पाँतिक विवरण रखलीह। एक—सुरक्षित घाटक पायरि चलबाक योग्य भेल। दू—प्रवेश रोकल खतरनाक पट्टी एखन बन्द अछि। तीन—दर्ज श्रमक विवादरहित भुगतान सभ कामगारक स्वीकृत माध्यममे पहुँचल; बचल दावाक अलग सुनवाई अछि। चारि—सूरजक खेतक वास्तविक मुआवजा अनिर्णीत अछि। पाँच—फूलमतीक जालक अतिरिक्त क्षतिक आकलन एखन जारी अछि। लोक पहिल बेर सफलताक बगलमे अपूर्णताक ठाम देखलनि।

एक बुजुर्ग किसान पुछलनि, “अगिला साल फेर नवा अध्यक्ष आएत तँ ई नियम बचत?” झरना कहलनि, “हमर पदसँ नियमक जीवन नहि बनब चाही।” तारा तीन प्रति तैयार कएलनि—एक समुदाय लग, एक नगर-अभिलेखमे, एक खुलल निरीक्षण-पुस्तिकामे। संकेत दूरसँ आएल रहथि; ओ दृष्टिबाधित सदस्यसभ लेल पढ़ि सुनए योग्य ध्वनि-प्रतिलिपि बनएबाक प्रस्ताव रखलनि, मुदा निजी खाताक संख्या ओकरामे नहि देबाक शर्त राखलनि। गोमती चाहैत छलीह जे नियमक भाषा सेहो गामक लोकसभ अपन शब्दमे पढ़ि बूझथि। ओकर सार्वजनिक पाठ अगिला सप्ताह निर्धारित भेल।

बटोही धामीक घरक आगाँ पुतुल एकटा छोट बाँसक डब्बा रंगि रहलि छल। वन-सहायिकाक संग ऊपरी बाटक पहिल निरीक्षण सफल रहल छल, मुदा मधु नहि भेटल। बटोही दूटा सुरक्षित छत्ता गनने छलाह, तेसरक कात पहुँचल नहि छलाह। पुतुल पुछलक,

“खाली पात्र फेर लऽ जाएब?” ओ कहलनि, “काल्हि प्रशिक्षण अछि। मधु बेचबाक पहिने छत्ता बचेनाइ सीखब। पुरान कमाइ घुरत कहब नहि, मुदा ई नव बाट एखन खुलल अछि।” पुतुल डब्बापर अपन नाम लिखलक, ताकि कोनो खरीदार एहि नव कामकें पुरान शिकारी-पेशाक झूठ नामसँ नहि बेचय।

ओहि राति सरिता विद्यालयक बरामदामे एकटा छोट प्रदर्शनी देखलीह। बच्चासभ पोखरिक पूर्व आ पश्चात्क दू चित्र बनौने छल। पहिलमे गादसँ भरल पायरि, दोसरमे साफ कएल सुरक्षित घाट। एक बच्ची बीचमे अपूर्ण कात छोड़ने छलीह। शिक्षक पूछलनि जे चित्र पूरा किएक नहि। बच्ची उत्तर देलक, “ओतए एखन काम रोकल अछि। हम झूठ साफ नहि बनायब।” सरिताक नजर ओहि अपूर्ण रंगपर ठहरि गेल। हुनका नैराक स्मृति आएल, मुदा ई चित्र ओकर मृत्युक प्रतिपूर्ति नहि छल; जीवित बच्चीक अपन देखल वस्तुक प्रमाण छल।

गोमती घर घुरलीह तँ हत्थाक घिसल छालासँ किछु रक्त निकलि रहल छल। ओ हाथ धोइ कापी खोलीह; एहि बेर ओकरा ‘स्वयंसेवी’ कहि कोनो घण्टा घटाओल नहि गेल छल। रातिक चूल्हिक आगिमे पुरान गलत पन्ना आ नव सही रसीद दूटा छायाँ देइत छल। गोमती पुरान पन्ना फाड़लीह नहि। ओ लिखलीह—‘तेसर उराहि: समान श्रमक समान माप लागू; भुगतान प्रमाणित; सुरक्षा-बन्दी, खेत आ जालक दावा जारी।’ फेर कापी बन्द कऽ बेटीकें पानि पीबाक लेल बजौलीह। घाट पूर्ण नहि भेल छल; मुदा एहि बेर मजदूरी समयपर पहुँचल छल।

अगिला भोरमे अभिलेखधरक दुआरपर एक नव सूचना टाँगल देखाइत छल—डिजिटल प्रतिक ‘अधिकृत केन्द्रीय स्वामी’ चुनबाक निविदा। तारा मल्लिक ओकर भाषा पढ़ि ठाढ़ रहि गेलीह। उराहिक घण्टा आ भुगतानक प्रति समुदाय लग छल; नव ठेकामे सभ प्रतिक भण्डारण, सुधार आ पुनर्वितरण एक कम्पनीक हाथमे जाएबाक प्रस्ताव छल। तारा तत्काल हस्ताक्षर नहि कएलीह। ओ अपन झोरामे गोमतीक तीन प्रतिमे सँ सामुदायिक प्रति सही जगह अछि कि नहि, से जाँचलीह। पोखरिक पानि धूपमे चमकैत छल; आज बचल नियमकें काल्हि कोन नामसँ बन्द करबाक प्रयास होएत, ओकर प्रश्न फेर खुलल छल।

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

अध्याय १९२ • नव मालिकक डर

तारा मल्लिक अभिलेखघरक दुआरपर टाँगल नव निविदाक कागद उतारलीह नहि। ओ ओकर नीचाँ अपन कापी रखि प्रत्येक पाँतिक नकल करए लगलीह। गोंदसँ चिपकल कागदक कोना हिलैत छल। ‘अधिकृत केन्द्रीय स्वामी’ शब्दक चारू कात ओ पेन्सिल सँ घेरा खींचलीह। काल्हि गोमती बेलदारक उराहि-पंजी तीन ठाम रखने छलीह; आइ प्रस्ताव छल जे आगाँ सभ सुधार, निकास आ प्रतिक अधिकार एक कम्पनीक अनुमति सँ होएत। कर्मचारी कहलनि, “फोटो खींचि लिअ।” तारा उत्तर देलीह, “फाटल कागदक दोसर प्रति भेटि सकैत अछि। जे अधिकार एहि पाँतिमे बिकत, ओकर प्रति के देत?”

अभिलेखघर भीतर पुरान लकड़ीक दराजमे कागदक हलुक सीलन छल। संकेत मेजक एक कोनमे बैसि पिछला वर्षक रखरखाव-बिल पढ़ैत छल। तारा ओकर आगाँ निविदाक नकल राखलीह। “छओ महीना पहिने एकहि कम्पनीक पाँच वर्षक शर्तपर प्रश्न उठौने रही,” ओ कहलनि, “आब नाम बदलल अछि, शर्त लगभग ओही।” संकेत पन्नाक कात लिखल ‘सामुदायिक निरीक्षण सुविधा’ देखौलक। “पहिने एक्को पन्ना देखए अनुमति लेबाक पड़त, तकरा बाद निरीक्षणक सुविधा कहत। अइ शब्दक कोना बहुत पैघ अछि।” बाहरक घंटी बजल।

झरना अध्यक्षक कुर्सीपर बैसबाक पहिने खिड़की खोललीह। “कागद पढ़ब दिनक आलोकमे,” ओ कहलीह। नव ठेकाक समर्थक महेन्द्र कहलनि जे अलग-अलग नकल रखबामे समय बरबाद होइत अछि, एक ठाम भण्डारणसँ खोआयल कागद भेटत आ छपाइ सस्ता पड़त। पछिला वर्ष बाढ़मे तीन बही भीजल छल, दवाइ-वितरणक प्रति दू दिन गुम छल। संकेत ई बात स्वयं स्वीकार केलक। “जाँचक सहूलियत अछि,” ओ कहलक, “मुदा एक्के ठाम बन्द करबाक सहूलियत ककरा भेटत, से देखबाक अछि।”

ठेकेदारक प्रतिनिधि उज्जर कपड़ामे चारि मोहरवला पन्ना खोललक। ओ कहलक जे कम्पनी सभ दस्तावेजक ‘प्रमाणित मूल’ राखत, आ बाकी नकल सुविधा मात्र होएत। संशोधनक निवेदन स्वीकार करबाक अधिकार सेहो कम्पनीक सत्यापन-दल लग रहत। रमा कर्ण पुछलीह, “जँ कामगारक घण्टा गलत चढ़ल तँ गोमती जे नाप देखौथिन, ओ

प्रमाण होएत कि कम्पनीक पुरान पाँति?” प्रतिनिधि कहलक, “प्रमाणित मूलक प्रतिष्ठा सर्वाधिक।” गोमती हथेली पसारि देलीह। “हम जतेक घण्टा माटि ढोएलहुँ, ओकरा अहाँक मोहर घटा सकैत अछि? मोहर माटि नहि उठौलक।”

सूरज गंगोता सभामे अपन खेतक नापवला प्रति लऽ आएलाह। ओहि पन्नामे जलनिकासक बाटपर सीमित सहमति छल, मुदा खेतक क्षतिपूर्तिक दावा खुलल छल। महेन्द्र हुनका कहलनि, “अहाँकें जे मुआवजा भेटत, ओकरा सहेजि राखब सेहो जरूरी अछि।” सूरज उत्तर देलनि, “हमरा मुआवजा एखन भेटल कहाँ? जँ सभ पुराने पन्ना एक ठाम रहत आ ओही ठाम सँ नकल काटल जाएत, तखन हमर असहमतिक रेखा फोड़ि के हटाओत?” तारा दुनू प्रति मिलौलीह। एक पन्नामे ‘क्षतिपूर्ति अलग विचाराधीन’, दोसर मसौदामे केवल ‘सहमति प्राप्त’। दूनूकें एक नाममे मिला देब सरल छल, सत्य नहि।

फूलमती तियर अपन रसीद आ धागाक गट्टर लऽ पहुँचलि। “जाल सीबबाक सुईक मुँह बदलि सकैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा जे पुरान गाँठ खोलल नहि गेल, ओकरा नव धागासँ ढाँपब तँ अगिला माछमे फाटत।” हुनका पुरान जालक सामान्य मरम्मत आ सार्वजनिक घाट-काजसँ भेल अतिरिक्त हानिक दावा अलग राखबाक छल। कम्पनीक नमूना-पंजी दुनूकें ‘जाल अनुदान’ कहि एक खाँजमे रखैत छल। ओ पन्ना उलटि देलीह। “एहि खाँजमे हमर दावा नहि समाएत।” जालक गाँठ सभकें कागदक गाँठ बुझौलक।

ठीक तखन सबीना मीरशिकार दुआरपर पहुँचलि। हुनकर झोरासँ दू सुई आ जालक कटल टुकड़ा बाहर झाँकि रहल छल। ओ फूलमतीक मरम्मत लेल दाम बुझबए अएलीह; सभाक विषय हुनका अज्ञात छल। फूलमती हुनका भीतर बैसबाक संकेत कएलीह। सबीना कहलीह, “आज हमरा कामक मोल चाही। सभामे नाम लिखेलासँ पेट नहि भरत।” झरना पुछलीह, “तखन पहिने अपन काजक हिसाब कहू।” सबीना झोरा सँ तीन टुकड़ा निकाललीह—फाटल जाल, ठीक कएल जोड़ आ धागाक बाँचल गाँठ। “एकरे लेल बजारमे कियो कहैत अछि हम बेसी माँगैत छी, कियो कहैत अछि हमर जातिक काज तँ दोसर थिक।”

सबीना भोरमे हाटक मोड़पर अपन परिवारक एक युवक सँ भेटने छलीह। ओ हुनका कहने छल जे पुराने जंगलक भीतरी बाट फेर खुलि रहल अछि, आ पुरुखाक पेशा छोड़ब

लाजक बात। ओहि 'पुरान काज'मे प्रतिबन्धित शिकारक मांग सेहो छल। सबीना ठाढ़े-ठाढ़ उत्तर देने छलीह जे कोनो पुरनका नाम कानूनक उल्लंघनक छूट नहि दैत। युवक कहने छल, “जाल सीबि कतेक दिन जीबह?” उत्तर नहि छल। सभामे ओ ई बात झूठ प्रतिष्ठाक आवरणमे नहि लुकौलीह। “हम नहि गेलहुँ,” ओ कहलीह, “मुदा हमर घरमे अनाजक नाप तइयो घटल अछि। नहि कहबाक दामो होइत अछि।”

महेन्द्र पुछलनि, “अभिलेखक ठेकासँ एहि शिकार-विवादक की सम्बन्ध?” सबीना सुईक टेढ़ मुँह मेजपर रखलीह। “हम हाटमे मरम्मतक काम करए जाएत छी तँ ग्राहक रसीद माँगैत अछि। जकरा हम काम देलहुँ, ओ कहैत अछि पारिवारिक पेशा साबित करू, तखन समूहमे नाम चढ़त। जँ एक ठाम कोनो बाबू हमर जातिक पाँति देखि ठहरा देत जे हमरा कोन कामक अनुमति अछि, तखन ई सुई ककर होएत?” गोमती कहलीह, “कामक माप आ जातिक नामकें घालमेल करब एतय पहिनहुँ भेल छल। तेसर उराहिमे हम ओ दुआर बन्द कएलहुँ।”

संकेत प्रस्तावक पाछुक पन्ना निकाललक। ओतए ‘योग्य व्यवसाय-वर्ग’क सूची छल, जकरा आधारपर कौशल-पंजी कम्पनी अपने अद्यतन करत। सबीना पुछलीह, “हमर ठाम कतए?” सूचीमे हुनकर समुदाय पुरान पहचानसँ चढ़ल छल, मुदा वैध जाल-मरम्मतक कौशल लिखबाक खाँज नहि। संकेत कहलक, “हम अहाँक पुरनका नाम काटि नहि सकैत छी, नहि बिना अहाँक बात नवल पेशा थोपि सकैत छी। मुदा जे काज अहाँ करैत छी, तकर प्रमाण लेल अलग जगह खोलब जरूरी।” तारा सूचीक कात सबीनाक अपन शब्द लिखलीह, आ मसौदाक खाली जगहपर खूँटी चिन्ह लगा देलीह।

सभा दू मतमे बँटल। किछुकें डर छल जे अनेक प्रति सँ झूठ नकल पसारत। रमा कहलीह जे एहन जोखिम साँच अछि; पिछला वर्ष गलत तिथि सँ फैलल बच्चा-चोरीक वीडियो एखनहुँ किछु फोनमे बाँचल अछि। ओहि घटनामे जानकीक दल आ सबीना निराधार सन्देह सहने छलीह, आ नैरा जाँचक समय-पत्र लिखने छलीह। तारा चुप भेलीह। नैरा आब जीवित नहि छलीह; हुनकर लिखल सत्यापनक पद्धति रहि गेल छल। “बदलल नकलक डर ठीक अछि,” तारा कहलीह, “मुदा ओकर उपचार सभ नकल एक स्वामीकें बेचि देब नहि।”

संकेत लकड़ीक पटरीपर तीन रंगक धागा पसारलक। “ई मूल दस्तावेजक अधिकार नहि, एहि प्रति ककर जिम्मामे अछि तकर चिन्ह,” ओ समझौलक। पहिल धागा—मूल जारी करनिहार कार्यालयक सत्यापित पाठ; दोसर—समुदाय लग प्राप्त तिथि-सहित राखल प्रति; तेसर—जे व्यक्ति प्रभावित होइत छथि हुनकर निज प्रति आ असहमतिक निशान। जँ दू प्रतिमे अन्तर होए तँ पुरान पाँति मेटाएब नहि, अन्तरक कारणक अलग पन्ना बनत। महेन्द्र पुछलनि, “आ जँ कोनो प्रति झूठ हो?” संकेत उत्तर देलक, “तँ ओकर परीक्षा होएत; सभकेँ चुप करौने सत्य नहि निकलत।”

झरना खर्च पुछलीह। धागा निःशुल्क छल, कागद आ रखरखाव नहि। तारा साफ हिसाब देलीह—नमीसँ बचएबाक पेटी, ताला, नकल करबाक श्रम, प्रत्येक बदलावक तारीख लिखबाक जिम्मेदारी, पढ़ि सुनएबाक सेवा। संकेत कहलक जे ध्वनि-प्रतिलिपिमे निजी खाता-संख्या, घरक ठेकाना आ रोगीक विवरण अलग रोकल जाए; जकरा अपन निजी पर्ची सुनबाक चाही, ओकरा सुरक्षित व्यक्तिगत माध्यम भेटय। पद्मा जोड़लीह जे संकेत-भाषा आ बड़ अक्षरक प्रति बनबो वास्तविक काज अछि। “सुलभता मुफ्त उत्सव नहि,” ओ कहलीह, “आ ककरो आवाज दर्ज करब ओकर सहमति बिना नहि।”

रसोइक कात छोट विश्राम भेल तँ रुखसाना मेनकाकेँ लऽ भातक थारी परसलीह। संकेत अपन खाता देखैत रहल। मेनका हँसि पुछलीह, “अहाँ जँ भात खाएब नहि तँ एहि भातक बिल खाली पेटपर लिखब?” तारा थारी अपन दिस घिचि लेलीह। गोमती उराहिक छालावला हाथ धोएलीह। सबीना हुनका फाटल दस्तानाक टाँका लगाबए कहलनि। गोमती कहलीह, “दस्ताना टाँकब तऽ दाम पहिने लिखू।” सबीना मुस्कौलीह। ई पहिल प्रस्ताव छल जाहिमे हुनकर नवल काजक मोल पर हँसी भेल, दया नहि।

भोजनक बाद नगरक कर्मचारी कहलनि जे निविदा रोकि देल गेल तँ अभिलेख-स्थानक अगिला वर्षक प्राविधिक सेवा ठप भऽ सकैत अछि। गोमती हुनका कागद पढ़बए देलीह। भुगतानक पंजी वास्तवमे एखन स्थानीय स्तरपर पूरा सुरक्षित नहि छल; एक प्रतिक स्याही घाममे हलुक पड़ए लागल छल। तारा मानलीह जे प्रतिक समान अधिकारक संग सुरक्षित रखरखाव चाही, नहि तँ कागद कागदे घुलत। संकेत प्रस्ताव देलक जे सेवा लेल

बाहरक कारीगर राखल जा सकैत अछि, मुदा निकास रोकबाक अधिकार ओ कारीगरकेँ नहि देल जाए। कर्मचारी तुरन्त आश्वासन नहि देलनि।

सङ्गठनक एक सदस्य उठल। ओ कहलनि, “लोककेँ ककरो एकपर भरोसा करए पड़त। हम सभकेँ सालो भरि सभामे बैसबाक समय नहि।” हुनकर थकानमे उचित बात छल। ओ खेतक काम छोड़ि दू घण्टा आएल छलाह। तारा पुछलीह, “अहाँकेँ सभ कागद पढ़बाक बाध्यता कियो देलक? आवश्यकता पड़ला पर अपन खेतक नापक सही प्रति झट भेटय, आ हमर गलतीपर प्रश्न पूछबाक ठाम रहय—एहि लेल तऽ विभाजन।” सदस्य कहलनि, “जँ फेर कियो ‘हमर प्रति मूल’ कहि झगड़त?” रमा उत्तर देलीह, “मूल जारी करबाक प्रमाण एक बात, नकल पर अधिकार दोसर; दुनू लिखि अलग करू।”

सबीना ओहि बीच फूलमतीक जालक मरम्मतक काज जाँचैत छलीह। जालमे दू पुरान गाँठ काटि नवल धागा जोड़ल गेल छल; तेसर गाँठ पर हाथ रोकलीह। “ई धागा पूरा बदलय पड़त,” ओ कहलीह, “नहि तँ मेहनत बेकार।” फूलमती मूल्य पुछलीह। सबीना पहिने मजदूरी आ सामग्रीक दाम जोड़ि कहलनि, फेर स्वयं एकटा गलती पकड़लीह—लंबा जाल घाटक पानिमे उतारि नापबाक समय छुटि गेल छल। “ओहो घंटा काम थिक,” फूलमती कहलीह। गोमती दूरसँ सुनि माथ हिलौलीह। तेसर उराहिक नियम पोखरिक कातसँ चलि जालक टाँकामे पहुँचल छल, मुदा फूलमतीक पुरान मुआवजाक दावासँ ई नव मजदूरी अलग रहल।

जाल-समूह सबीनाकेँ तीन जालक परीक्षण देबाक प्रस्ताव रखलक। ई स्थायी रोजी नहि छल; पहिल खेपक दाम, धागाक लागत आ जँ काज अस्वीकृत होए तँ सुधारक शर्त लिखबाक छल। सबीना पुछलीह, “हम जँ कनेक जाल ठीक करि नहि सकलहुँ, तकरा बहाना बना अगिला काममे हमर जातिक नाम रोकब?” फूलमती कहलीह, “काजक दोष लिखब, जातिक नहि। काज छोड़बाक अधिकार सेहो अछि।” सबीना कनेक विचार कऽ पहिल जालक जिम्मेदारी स्वीकार कएलीह। सौदा छोट छल, मुदा बाट हुनकर चुनल छल।

दुआरपर ओही परिवारक युवक फेर देखायल। ओ सभाक भीतर नहि अएल; सबीनाकेँ हाथक इशारासँ बजौलक। सबीना बाहर गेलीह, मुदा झोरा भीतर छोड़लीह। युवक कहलक जे जंगलक पारसँ कियो बहुत दाम देबाक तैयार अछि; जालक सौदा छोट आ

अपमानजनक अछि। सबीना ओकरा सीधा देखलीह। “जँ तोहर प्रस्ताव वैध अछि, कागद दे, स्थान दे, ककरा की बेचब से स्पष्ट कर,” ओ कहलीह। युवक चुप रहल। “पुरखा सभ हमर थिकाह, तोहर एकटेक नहि,” सबीना फेर कहलीह, “मुदा हुनकर नामसँ अपराधक हुकुम हम नहि मानब। घरक कमी हमहुँ देखैत छी; तइ लेल सुईक काज करैत छी।” ओ लौटि अएलीह।

भीतर फूलमती अपन रसीदपर सबीनाक काजक वर्णन लिखलीह—‘जालक गाँठ-जाँच, धागा-बदलाव, समय आ सामग्री अलग’। सबीना पुछलीह जे हुनकर समुदाय-कथाक उल्लेख जरूरी अछि की नहि। फूलमती कहलीह, “एहि देयमे नहि। अहाँ चाहब तँ अपना बारेमे आन ठाम लिखू।” तारा एहि उत्तरकेँ नव पेशा-पंजीक नमूना बनाबए चाहलीह; सबीना रोकलीह। “पहिने एक कामक दाम भेटय,” ओ कहलीह, “तकर बाद हमर बात उदाहरण बनाउ।” तारा अपन कापी बन्द कएलीह। प्रमाण बनय चाहनिहार लोकक अभिलाषासँ अलग, जीवित लोकक अपन समय छल।

साँझ होएबासँ पहिने झरना संशोधित प्रस्ताव पढ़लीह। नगरक विधिसम्मत मूल रजिस्टर ओहि कार्यालयमे रहत; समुदायक प्रमाणित प्राप्त प्रति अलग पेटीमे, आ प्रभावित व्यक्तिक निजी प्रति हुनकर नियन्त्रणमे। हर संशोधनक तारीख, कारण, पुरान पाठ आ स्वीकृति अलग चिह्नित रहत; बिना सहमतिक निजी विवरण सार्वजनिक नकलमे नहि जायत। ककरो अधिकार केवल ‘सर्वरपर सेवित’ कहि समाप्त नहि कएल जायत। बाहरक संस्था रखरखाव आ सुरक्षित प्रतिलिपि बनेबाक सेवा देत, प्रति रोकेबाक शुल्क वा एकल स्वामित्व नहि। पहिल तीन मासक परीक्षणक खर्च सार्वजनिक लेखामे रखल जाएत।

महेन्द्र एहि मसौदापर पूरा सहमत नहि छलाह। ओ कहलनि जे अलग पेटी चोरा गेल तँ जिम्मेदार के? रमा मानलीह जे एहि लेल प्राप्ति-सूची, जिम्मेदार व्यक्तिक बारी-बदलाव आ गुम भेल वस्तुक तत्काल सूचना चाही। झरना एहि संशोधनकेँ स्वीकार कएलीह। मुदा नगरक कर्मचारी चेतौलक जे वर्तमान निविदाक तारीख बीतए सँ पहिने रोकबाक अनुरोध विधिवत् दाखिल करब पड़त; केवल सभाक आवाजसँ ठेका स्थगित नहि होएत। निर्णय

भेल जे दोसर भोर लिखित आपत्ति देल जाए, आ पुरान अभिलेखक निरन्तर सेवा लेल अलग अस्थायी आदेश माँगल जाए। ई जीतक घोषणा नहि, कामक नव सूची छल।

संकेत आ तारा दू घण्टामे पहिल परीक्षण शुरू कएलनि। उराहिक बिनु निजी खाताक सार्वजनिक पन्ना चुनल गेल। विद्यालयक पाठकक्षमे गोमती आ रामसखी ओकर प्रति मिलौलीह; घाटक निरीक्षण-पुस्तिकामे फूलमती कामक समय जाँचलीह; नगर-अभिलेखघरमे रमा जारी करबाक मोहर देखलीह। एक ठाम नामक मात्रासँ फरक छल। गोमती कहलनि, “एहि फेरबदलसँ भुगतानक रकम नहि बदलैत अछि, मुदा भोरक काममे रामसखीक सही नाम जरूरी अछि।” तीनू प्रति एक संग सुधारल नहि गेल; अन्तर-पत्र लिखि मिलानक दिन राखल गेल।

पाठकक्षमे एक वृद्धा पुछलीह जे जँ चश्मा बिनु छोट अक्षर पढ़ल नहि जाए तँ प्रति ककर उपयोगक। संकेत हुनका पन्ना पढ़ि सुनौलक। ओ कहलीह, “आवाज ठीक अछि, मुदा काल्हि तूँ नहि रहबह तँ?” एहि प्रश्नपर संकेत पहिने सँ बनल ध्वनि-प्रतिलिपिक प्रस्ताव समझौलक, फेर ओकरा सँ सहमति माँगलक जे सार्वजनिक नियमक पाठ रिकॉर्ड कएल जाए, निजी भुगतान नहि। वृद्धा कहलीह, “पहिने हमरा सुनाउ जे हमर आवाज कतय जायत।” संकेत अपना पहिल उत्साहपर हँसि पड़ल। तारा कहलीह, “आज नियम पढ़ब, आवाज सँ बही भरब नहि।” सभाकेँ बुझएबामे समय लागल, मुदा ककरो मुँह बन्द नहि कएल गेल।

पाछाँक कोठरीमे सरिता बच्चासभक पोखरि-वाला चित्र समेटैत छलीह। तारा हुनकासँ पूछलीह जे सार्वजनिक प्रदर्शनीक चित्रक प्रति विद्यालय राखि सकैत अछि की नहि। सरिता कहलीह, “बच्चीक चित्र विद्यालयक काजमे देखायल जा सकैत अछि, मुदा ओकर पूरा नाम कम्पनीक प्रचारमे नहि जायत। अभिभावकक सहमति जतेक उद्देश्य लेल अछि, ओतबे।” तारा स्वीकृति-पत्रक खाली खाँज देखलीह। नैराक बात ओकरा मन पड़ल—कियो अनुपस्थित भेला बाद हुनकर छवि, पत्र आ आवाज पर नव मालिक स्वतः नहि बनैत। सरिता चित्रक अपूर्ण घाट देखि कहलीह, “ई खाली कात बच्ची जानि कऽ छोड़ने अछि। एकरा भरि नहि दिअ।”

गोधूलिमे सबीना पहिल जालक परीक्षण पूरा कएलीह। तीन गाँठमे सँ दू पास भेल; तेसरमे बुनावट ढील छल। फूलमती दोष देखौलीह, सबीना बिनु झगड़ा फेर सीबलीह। सहमत प्रारम्भिक दामक एक हिस्सा सामग्री लेल, बाकी कामक पुष्टि पर देबाक रसीद बनल। पहिल किस्त हाथमे अएल। ओ तत्क्षण बड्ड प्रसन्न नहि भेलीह; घरक उधारी गनलीह आ अगिला धागाक लागत जोड़लीह। स्थायी रोजगार नहि, अगिला दू परीक्षणक दिन लिखल गेल। सबीना सुईकेँ कपड़ामे लपेटलीह, जेनाकि छोट चोख वस्तुकेँ घरक लम्बा बाटमे बचा रहल होथि।

राति नगर-अभिलेखघरक पहरेदार दरबज्जा बन्द करए लगल तँ संकेत अन्तिम पन्नाक प्राप्ति लिखलक। तारा तीन ठाम रखल नकलक पहिचान, सुधारक बाँकी मुद्दा आ सम्पर्कक समय सूचीबद्ध कएलीह। पुरान मूलक कियो नव स्वामी नहि बनल छल; नगरक निविदा अबहियो रद्द नहि भेल छल। एहि बीच सामुदायिक प्रति देखबाक निर्दिष्ट घण्टा तय भऽ गेल, गोमतीक मजदूरी-पंजीक मिलान शुरू भऽ गेल, आ सबीनाक पहिल मरम्मतिक दाम आ रसीद अलग सुरक्षित रहल। बाहर पानि उतरि रहल छल, मुदा खतरनाक घाट-पट्टीक बन्दी एखन लागू छल। कागदमे ‘खुलल’ लिख देलासँ माटि मजबूत नहि होइत अछि।

अगिला भोर लिखित आपत्ति दऽ घुरबाक बाटमे तारा संकेतसँ कहलीह, “तीन प्रति बनलाक बादो तीनू ठाम जा कऽ देखबाक पड़त। दूरक बस्तीमे जे लोक अपन प्रति धरि नहि पहुँचि सकैत छथि, हुनकर की?” संकेत उत्तर देलक, “तखन हम सभकेँ बाट पकड़बाक पड़त, नहि तँ ई व्यवस्था केवल अभिलेखघरक चारि दीवारमे रहि जायत।” गोमती निरीक्षण-सूचीपर सही कएलीह। सबीना पाछाँसँ आवाज देलीह, “जालक अगिला दिन लिखब तँ हमरा हाटक समय नहि काटू।” तारा समय सुधारलीह। नदी दिस जाएबला बाटपर पातर कुहासा उठि रहल छल; आब कागदकेँ ओकर मालिक लग पहुँचबाक यात्रा शेष छल।

अध्याय १९३ • यात्राक घोषणा

हस्तिनापुरक राजसभामे, महाभारतक प्राचीन कालमे, परीक्षितक मस्तकपर मुकुट राखल गेल तखन युधिष्ठिरक हाथ काँपल नहि, मुदा ओ हाथ पहिनुक जकाँ निश्चिन्त सेहो नहि छल। सुवर्णक घेरा बालकक कपारक अनुपातमे भारी देखाइत छल। जकरा राजगद्दी सौंपल जा रहल छल, तकर आगाँ युद्धक विजेतासभ अपन जीवनक बचल वर्षक हिसाब रखैत छलाह।

युधिष्ठिर भाइसभकेँ कहलनि जे कृष्णक प्रस्थान आ यादवक विनाशक बाद हुनका कालक परिवर्तन स्पष्ट देखाइत अछि। राज्य छोड़ब सरल शब्द छल, राज्यक भार सँ लोककेँ असुरक्षित छोड़ि चलि देब सरल काज नहि। युवराजक संरक्षण, नगरक व्यवस्था आ अनुभवहीन उत्तराधिकारीकेँ सलाह देबाक दायित्व निर्धारित कएल गेल। युयुत्सुक लग प्रशासनक अनुभवी दृष्टि छल; सुभद्राकेँ परिवारक आगामी पीढ़ीक प्रति अपन चिन्ता आ अधिकार दुनू रहल। छोड़ि जाएबो मे बँटवारा नहि, जिम्मेदारीक नवी रचना छल।

भीमक मनमे गदा नहि, राजसभाक सीढ़ीक आवाज छल। अर्जुन अपन धनुषक डोरी छूने रहि गेलाह, मानू हाथ कतेको वर्षक आदतसँ मुक्त होएबाक अनुमति माँगि रहल हो। नकुलक आँखि सैनिकसभक थाकल पाँतिपर छल; सहदेवक स्मृतिमे गणनाक एहन बहुत दिन छल, जकरा उत्तर कियो नहि पबैत। द्रौपदी सभक चेहरा देखलीह। हुनकर जीवनपर राज्यक निर्णय बहुत बेर दूर बैसल लोक कएने छल; आब चलबाक निर्णयमे हुनकर अपन पएरक उपस्थिति छल।

राजमहलक बाहर भीड़मे कियो जयकार कएलक, कियो प्रश्न। खेतक लगान के लेत, अनाथकेँ अन्न के देत, सन्देश कहाँ पहुँचत—त्यागक समारोहमे सभ प्रश्नक उत्तर नहि भेटैत। युधिष्ठिर वापस एक बेर राजकर्मक आदेशक पुष्टि कएलनि। एहि यात्रा मे न विजयक ध्वज छल, न कोनो नवा राज्य प्राप्त करबाक प्रतिज्ञा। जे रास्ता सामने छल, ओ हुनकर निर्णयक परीक्षा लेत; रास्ता स्वयं ककरो निर्दोष नहि बनबैत।

नगरक दुआर छोड़ैत पाँचू भाइ आ द्रौपदी धीरे-धीरे चललाह। एकटा कुकुर सेहो हुनका पाछाँ चलए लागल। प्रारम्भमे ककरो ध्यान नहि गेल; थोड़े दूर गेलापर युधिष्ठिर मुड़ि देखलनि। ओहि जीवक संग चलबक अर्थ एखन तय नहि छल, मुदा ओ ओकरा भगौलनि नहि। धूलिमे पैरक छाप अलग-अलग आकारक छल। सभ एकहि दिशा मे जा रहल छलाह; सभक यात्रा एक समान नहि होएत।

विदेहपुरमे २०४२क पहिल गरम भोरमे तारा मल्लिक एकटा खाली पेटीकेँ उलटि ओकर पेंदी जाँचि रहलि छलीह। पछिला वर्ष अभिलेखक तीन प्रति बचेनिहार दल एहि बेर चौरक पारक बस्तीधरि जा रहल छल। ई एहि चरणक अन्तिम दौरा कहल गेल छल, कारण निधिक स्वीकृत अवधि समाप्त होमएवला छल; लोकक सवाल समाप्त भेल, तकर कारण नहि। पेटीक भीतर कागदसँ पहिने सूखल कपड़ा, पानिसँ बचएबाक तह आ प्राप्तिक रसीद राखल गेल।

संकेत घटनाक कात कागद पसारि पढ़ैत छल। सार्वजनिक दस्तावेजक सूची छोट छल: उराहिक घण्टाक नियम, घाटक सुरक्षित भागक नाप, विवादित खेतक दावाक वर्तमान स्थिति, जाल-नुकसानीक अलग हिसाब। निजी भुगतानक विवरण आ बच्चासभक नाम ओ सूचीमे नहि छल। “एक कम्पनीक हाथमे मूल, सुधार आ वितरण देबाक निविदा एखनहुँ औपचारिक रूपसँ समाप्त नहि भेल अछि। अपन प्रति बुझबैत ई बात नुकायब नहि।”

सरिता दुआरमे ठाढ़ छलीह। हुनकर हाथमे नैराक पुरान नीला झोरा नहि, अपन सीलल कपड़ाक थैला छल; भीतर बिनु नामक कोरा कापी, पानि आ दूटा सूखल रोटी। जे युवा स्त्री कखनहुँ एहि यात्राक प्रश्न लिखैत, ओ आब जीवित नहि छलीह। सरिता आजुओ अपन बेटीकेँ मनमे सूनैत छलीह, मुदा तकर अर्थ ई नहि जे नैराक बोलि स्वयं सँ बनाकऽ सभामे सुना देथि।

गोमती बेलदार घड़ी देखलीह। “सबेरहि निकलल जाए तँ ताप घटत। मुदा बस्तीमे लोक खेत सँ घुरलापर सुनत। हम सभ पहुँचि कऽ हुनका काम छोड़ि बैसय लेल नहि कहि सकैत छी।” तारा चाहैत छलीह जे दुपहर धरि सभ पन्ना बाँटल जाए; नगरक वाहन

साँझमे फेर चाही। सरिता पुछलीह, “ई यात्रा लोकक लेल अछि कि वाहनक समय-सारिणी लेल?” गोमती हँसलीह, मुदा प्रश्नक वजन हँसीसँ घटल नहि।

दलक भाड़ा, चालकक समय आ पन्ना पढ़ि सुनाबएवला श्रमक अलग हिसाब राखल गेल। संकेत आग्रह कएलक जे जँ कोनो बस्ती आज सुनबाक स्थिति मे नहि हो तँ ‘अनुपस्थित’ नहि, ‘समय फेर तय करबाक’ लिखल जाए। झरनाक कार्यालयसँ अनुमति-पत्र भेटल छल, मुदा पत्रमे स्थानीय लोकक अनिवार्य उपस्थिति लिखल नहि छल। ओ कहलीह, “जे भेटब नहि चाहथि, हुनका खोजि-खोजि फोटो नहि लेब।”

चौरक कात सड़कक अन्तमे गाड़ी रुकल। आगाँक कच्ची बाटमे रातिक पानि टिकने छल। चालक कहलक जे थोड़े आगाँ धरि गाड़ी लऽ जाए सकैत छी, मुदा घुरबाक ठाम नहि भेटत। तारा नक्शा खोललीह; ओ नक्शा पिछला वर्षक छल। एक वृद्ध श्रमिक, जे साइकिलक टायर हवा भरि रहल छलाह, कहलनि जे बाट बगलसँ बदलि गेल अछि, कारण पुरान माटि धँसि गेल। ओ पहिने पूछलनि, “अहाँ सभ कहाँक अनुमति लऽ एला?”

तारा पत्र बढ़ौलीह। वृद्धक दृष्टि कागदपर नहि टिकली। “अनुमति नगरक अछि। बाट हमर सभक साझा अछि। जँ पेटीमे फेर माटि नापबाक फर्म अछि तँ पहिने कहू।” संकेत धीरे सँ पढ़ि सुनौलक जे कागदक प्रतिक वितरण अछि, नवल भू-सर्वेक्षण नहि। वृद्ध साइकिलक टायर दबौने कहलनि, “तखन जाउ, मुदा विद्यालयक कोठरीमे आबि कऽ तुरन्त नाम मत लिखब। ओतए आब पढ़ाइ चलैत अछि।”

विद्यालयक आगाँ दू बच्चा माटिसँ चक्का बना रहल छल। सरिता किछु क्षण हुनका देखलीह। एक बच्चा पुछलक जे पेटीमे दवाइ अछि की। ओ उत्तर देलीह, “कागद अछि। दवाइ चाही तँ हम झूठ आशा नहि देब।” बच्चा फेर चक्का घुमाबए लागल। तारा थैला राखि विद्यालयक शिक्षकसँ बात कएलीह; पढ़ाइक समयमे सभा नहि होएत, साँझक सामूहिक चौकी उपलब्ध हो सकैत छल। शिक्षक कहलक, “अहीं ठाम पहिने एक सूची सँ सभकेँ लाभ देबाक वादा भेल छल। एहि बेर वादा कम करू।”

निर्धारित भाड़ा बढ़त, आ नगरमे उत्तर देबाक तारीख निकट छल। संकेत कहलक, “हम सभ एक दिनमे चारि ठाम नकल पहुँचेबाक हिसाब लिखने छलहुँ। मुदा पहिल ठामो सही समय नहि समझलहुँ।” सरिता रोटी खोललीह। “भूख लगल छैक? खाउ। फेर लोकक

संग जा कऽ पूछब जे हुनका की उपयोगक कागद चाही। सभटा हमर सूचीसँ तय नहि होएत।”

ठीक एहि बेर चौरक कातसँ दू स्त्री आ एक युवक खेतक माटि लागल पएर लऽ घुरलाह। ओ सभ विद्यालयमे नहि, पीपरक छाहँमे बैसबाक बात कएलनि। पहिल स्त्री उराहिक मजूरी करैत छलीह, मुदा पछिला वर्ष शहरमे हुनकर कामक दू दिनक हिसाब समयपर नहि जुड़ल छल; तेसर उराहिक नियम हुनका अपन पुरान देय नहि देलक। दोसर स्त्री पानि काटि गेल खेतक पट्टी देखबए चाहैत छलीह। युवकक चिन्ता ई छल जे सार्वजनिक पट्टीपर फेर हुनकर परिवारक पूरा नाम नहि चढ़ि जाए।

गोमती पन्ना खोललीह। “नवा उराहिमे समान घण्टा गनबाक नियम बचल अछि। अहाँक पुरान दू दिनक दावाक निर्णय एतएसँ नहि कऽ सकैत छी।” पहिल स्त्री तुरन्त पुछलीह, “तखन अहाँ सभ कागद लऽ कऽ किएक एला?” गोमती उत्तर देलीह, “कारण जँ दावा दर्ज छैक, तँ अहाँक ओकर प्रति आ अगिला सुनवाईक बाट भेटबाक चाही। भुगतानक वादा एखन करब झूठ होएत।” स्त्री पन्ना लऽ कऽ मोड़लीह नहि; पूरा पढ़बय चाहलीह।

तारा पूछलीह जे सभकेँ एक कापीमे हस्ताक्षर करबाक सुविधा रहत। युवक विरोध कएलक। “हमर घरक नाम अखबारमे पहिने बेर गलत छपल छल। एहि कापीक फोटो के खींचत, तकर गारन्टी के?” तारा अपन फोन थैला भीतर रखलीह। ओ बुझलीह जे तीन प्रतिक उपाय सेहो एक नव डर बनि सकैत अछि, जँ प्रतिक रखनिहारक हाथपर समुदाय प्रश्न नहि कऽ सकए। संकेत सार्वजनिक पन्ना आ गोपनीय निवेदन अलग कएलक।

पहिल स्त्रीक नाम निजी रसीदपर लिखल गेल, मुदा सार्वजनिक गिनतीमे मात्र एक प्रलम्बित दावा रहत। सरिता पुछलीह, “अहाँ अपन प्रति घर लऽ जाएब कि एतहि कोनो विश्वस्त व्यक्तिक जिम्मामे राखब?” स्त्री उत्तर देलीह जे घरमे सूखा सन्दूक नहि अछि; वर्षामे भीजत। ओ ग्रामक साझा पेटी देखबाक चाहलीह, मुदा ताला ककरा लग रहत से प्रश्न उठौलनि। ई छोट प्रश्न योजनाक सभ पन्नासँ पैघ भऽ गेल।

दुपहरक सूर्य चढ़लापर लोक सभ छाहँ बदलि-बदलि बैसल। एक बुजुर्ग कहला जे पुरान बाढ़क समय सहायता-पंजी नगर पहुँचल छल मुदा ओकर प्रति बस्तीमे नहि घुरल। हुनकर

बेटी अपन परिवारक नाम बिनु अनुमति प्रचारक पट्टीपर देखलनि। ओ कागद नष्ट करबाक पक्षमे नहि छलाह। “जे कहियो नहि बचल से फेर खोएत,” ओ कहलनि, “मुदा कागद बचलाक कारण लोकक इज्जति खोए, सेहो नहि चाही।”

अभिलेख-दल अचार-सहित रोटी खाइत छल तखन तारा समय-सारिणीमे फेर नाप कएलीह। तीन ठामक जगह आइ एक ठामक सही हस्तान्तरण भऽ सकत। “उपरका हिसाबमे ई असफलता गनल जाएत,” ओ सरितासँ कहलीह। सरिता उत्तर देलीह, “जँ हम सभ लोकक समयक चोरी नहि कएलहुँ, तँ ई ककर सफलता अथवा असफलता अछि, सेहो स्थानीय लोक कहथि।” तारा पेन्सिल उठा अपन पहिनुक टिक-निशान काटि नवल शब्द लिखलीह—‘सहमतिक प्रतीक्षा’।

नगर सँ एक दूरभाष अएल। कर्मचारी कहलनि जे यात्रा-दलक प्रदर्शन-विवरण साँझ धरि चाही, जकरामे लाभार्थीक संख्या आ सामूहिक चित्र रहए। तारा कहलनि जे संख्या उपलब्ध होएत, चित्र सहमति बिना नहि। हुनकर तर्क छल जे बिना चित्र कामक प्रमाण कोना बनत। संकेत सार्वजनिक प्राप्ति-पंजी, भेजल पन्नाक क्रम, देखल गेल सुधार आ स्थानीय गवाहक स्वीकृतिक विकल्प बतौलक। “चेहरा कागदक पहुँच सिद्ध नहि करैत,” ओ कहल।

साँझसँ पहिने पहिल साझा पेटीक प्रस्ताव पर बात शुरू भेल। विद्यालयक प्रधान कहलक जे विद्यालयमे ताला आ सूखल कोठरी अछि, मुदा पढ़ाइक पुस्तिका सँ मिश्रित अभिलेख सुरक्षित नहि। रसोइक महिला कहलीह जे साझा कोठरी वर्षमे खुलैत अछि। अन्ततः लोकसभ दू अलग पेटी रखबाक बात चुनलनि—सार्वजनिक कागद विद्यालयक सुरक्षित अलमारीमे, विवादित निजी कागद केवल सम्बन्धित व्यक्तिक अनुमति सँ चुनल स्थानीय संरक्षक लग। संरक्षकक चुनाव आज नहि, अगिला बैठकमे होएत।

“साँच कहूँ तँ हम सभ परसों फेर एतए नहि आबि सकब,” तारा स्वीकार कएलीह। “यात्रा लेल स्वीकृत धन सीमित अछि। मुदा अभिलेखक सही प्रति तैयार करबाक काम यहाँ रुकल नहि चाही।” गोमती प्रस्ताव देलीह जे बस्तीक दू इच्छुक व्यक्ति उचित मेहनतानापर प्रति मिलान सिखथि; एक पढि सुनौत, दोसर मूल आ नकलक अन्तर

जाँचत। निःशुल्क सेवाक नामपर स्त्रीसभकेँ फेर अनन्त जिम्मेदारी देबाक आपत्ति सरिता उठौलीह। सभ सहमत भेल जे श्रमक दर लिखल बिना नाम नहि चुनल जाए।

युवक पुछलक, “हमरा सभमे कियो अक्षर कम जानैत अछि तँ ओ नकल किएक राखत?” संकेत कहलक, “नकल राखब एक काम अछि, नकल बुझब दोसर। अक्षर नहि पढ़ि सकब अपात्रता नहि। सुनाबय आ बुझाबयक प्रबन्ध सेहो व्यवस्था अछि।” युवक अपन परिवारक नाम नहि बतौलक, मुदा दूरसीदक तारीखक अन्तर देखौलक। संकेत ओहि अन्तरकेँ नवा साँच ठहरा नहि देलक; अलग जाँचक अनुरोध दर्ज कएलक।

पीपरक नीचाँ छोट विवाद उठल। शहरक पन्नामे एक पुरान जलबाट ‘बन्द’ लिखल छल; बस्तीक स्त्रीसभ कहलनि जे मेघक दू बरखा बाद पानि ओहि बाट फेर कटैत अछि। तारा तुरन्त नक्शा सुधारए चाहलीह। वृद्ध श्रमिक रोकलनि, “आज जे देखल, से लिखू। दू वर्षक बदलैत जल एक पाँतिक स्थायी निर्णय नहि होइत।” तारा लिखलीह—‘स्थानीय कथन, मौसमी जाँच अपेक्षित’। लोकक ज्ञानकेँ तुरन्त सरकारी मोहरमे बदलि देबो ओकर अधिकार लऽ लेब छल।

सरिता एहि सभ बातक बीच अपन बेटीक खाली स्थान देखैत छलीह। नैरा रहितथि तँ सम्भव छल जे तारीखक भेद, नक्शाक दोसर प्रति वा सहमतिक प्रश्न पहिने उठबितथि। मुदा सरिता एहि सम्भावनाक आधारपर नैराक नामसँ कोनो वाक्य नहि लिखलीह। ओ अपन कापीमे पहिल बेर एहि यात्राक लोकक तीन प्रश्न दर्ज कएलीह, नामक बदला पृष्ठक क्रमसहित। खाली पंक्तिक बीच हुनका अपन हथेलीक धड़कन सुनायल।

“अहाँ चुप किएक छी?” पहिल स्त्री पुछलीह। सरिता कहलीह, “हम सुनि रहल छी। हमर बेटी कागद पढ़ैत छलीह। ओ आब नहि अछि। एहि लेल हम सभकेँ सुनब सीखबाक अछि, ओकरा साँच बोलि देबाक अभिनय नहि।” स्त्री ओहि उत्तरक बाद अपन अपूर्ण मजूरी-दावा फेर उठौलीह। शोकक बातसँ ओकर देय मेटाएल नहि। सरिता हुनका प्रश्नक बीच फेर अपना दुखकेँ नहि अनलीह।

साँझक बैठकमे प्राप्ति-पुस्तिकाक पहिल पन्ना जोर सँ पढ़ल गेल। एहिमे कतेक सार्वजनिक प्रति एतए राखल गेल, कुन पन्नाक सुधार लम्बित अछि, कोन सुनवाईक तारीखक पुष्टि बाँकी अछि, तकर स्पष्ट हिसाब छल। निजी रसीदक नाम पढ़ल नहि गेल।

पहिल स्त्री पुछलीह जे जँ कार्यालय पुरान पन्ना फेर बदलि देत तँ ककरा खबर होएत। तारा उत्तर देलीह जे पुरान आ नवल दुनू पाठ राखबाक नियम परीक्षणमे अछि; प्रत्येक बदलावक कारण बिना प्रतिक भरोसा नहि टिकत।

एहि बेर लोकसभ अपन समय चुनलनि। हाटसँ घुरबाक बाद परसोंक साँझ एक घण्टाक बैठक होएत; विद्यालयक पढ़ाइ रुकत नहि। बस्तीक प्रतिनिधि नगरमे एक बेर जाय चाहताह, मुदा हुनकर भाड़ा आ गुम भेल दिनक मजदूरीक हिसाब पहिले चाही। गोमती अपन घरक बहीक पन्नापर नमूना देखौलीह; कोनो भुगतान स्वीकृत भेलाक दावा नहि कएलीह। लोकसभ एहि अपूर्ण उत्तरकें स्वीकार कएलनि, कारण ओकर सीमा खुलल छल।

दलक अगिला पड़ावपर जाएबाक योजना छोट कएल गेल। तारा फोनपर नगरक कर्मचारीकें लिखित सूचना देलीह जे आज केवल एक बस्तीमे संवादी हस्तान्तरण भेल, आन दू ठाम लेल नवल तिथि चाही। कर्मचारी कहलक, “अन्तिम दौरा कहि चुकल छी; फेर कोना जाएब?” तारा पुछलीह, “जँ फेर नहि जा सकब, तँ स्थानीय रूपसँ प्रति माँगबाक अधिकार आ डाकक खर्च लिखित रूपें छोड़ि जाएब। अन्तिम दौरा कार्यालयक भऽ सकैत अछि, लोकक अधिकारक नहि।”

गोधूलिमे विद्यालयक अलमारीक भीतर सार्वजनिक पन्नासभक अलग पेटी राखल गेल। ताला शिक्षकक जिम्मामे छल, मुदा प्राप्ति-पुस्तिका विद्यालय आ सामुदायिक चौकी दुनू ठाम उपलब्ध रहबाक निर्णय भेल। तारा सार्वजनिक सूचीक प्रति संकेतक हाथमे देलीह, ओ ओतहि वृद्ध श्रमिककें पढ़ि सुनौलक। वृद्ध सिर हिलौलनि। “आज अहाँ सभ हमरा माटि नहि, समय पुछलहुँ। ई बात याद राखब।” तारा जानैत छलीह जे याद रखब पर्याप्त नहि; अगिला कार्यमे प्रमाण चाही।

बस्तीसँ घुरैत सरिता रस्ताक कात ठाढ़ भेलीह। चौरक पानि पर साँझक उजास छल; दूर खेतसँ लोक घर घुरैत छलाह। कियो हुनकासँ नैराक नामपर भाषण नहि माँगने छल। ओहि साधारण दिनमे सरिताकें एक बेर तीक्ष्ण पीड़ा उठल—बेटी एहि बाटपर फेर नहि चलत। तकरा संगहि ई स्पष्ट भेल जे ओ स्वयं चलि सकैत छथि, बिना बेटीक स्थान भरबाक दावा कएने।

नगर पहुँचलापर तारा अभिलेखघरक सामने पेटी खाली कएलीह। एखन किछु सार्वजनिक प्रति बाँचल छल, मुदा सूची छोट नहि, संशोधित भेल छल: दू स्थगित दौरा, एक स्थानीय बैठक, एक मजूरी-दावा, एक जलबाटक जाँच, निजी विवरणक रक्षा। संकेत पन्नाक अन्तमे लिखलक—‘प्राप्ति स्थानक समयानुसार’। सरिता एहि शब्दक कात कोनो हस्ताक्षर नहि कएलीह; ओ केवल अगिला बैठकक दिन अपन कापीमे लिखलीह।

अध्याय १९४ • द्रौपदीक बाट

प्राचीन महाप्रस्थानक उत्तराभिमुख बाटपर द्रौपदी अपन वस्त्रक फाटल कोना सँ एकटा काँट निकाललीह। महीन धागा काँटमे अटकि गेल छल। ओ रोकि गेलीह तँ पाछाँ चलैत भीम अपन पएर थामलनि। सामने पाथरक छर्पा, दूर हिमक उज्जर धार, आ बीचमे धूलि भरल ढाल छल। राजमहल छोड़लाक बाद बहुत नदी, निर्जन धरती आ थाकल दिवस पार भऽ गेल छल; एखन ककरो वस्त्रपर राजकुलक चिह्न नहि छल। काँट निकालैत द्रौपदी पुछलीह, “ई धागा काटि दी कि गाँठ लगा ली?”

भीम कहला, “गाँठ लगाउ। एतए दोसर वस्त्र कहाँ?” ओ अपन थैलामे राखल सुईक बात कहए चाहैत छलाह, मुदा थैलामे सुई नहि, बस ओ अन्न बचल छल जे प्रातः ओ अपन हिस्सासँ कम खएने छलाह। द्रौपदी हुनकर रिक्त हाथ देखलीह। “जखन सुई भेटत, तखन फेर सीबब,” ओ कहलीह। गाँठ छोट छल, मुदा ओकरा बनबैत हुनकर नहक नीचाँ रक्तक एक बूँद चमकल। ओ आँचरक भीतर नोक नुकौलीह आ चलए लगलीह।

युधिष्ठिर सभसँ आगाँ छलाह। हुनकर संग चलैत कुकुर बीच-बीचमे रुकि पाछाँ तकैत छल। नकुलक चाल नापल छल, सहदेव ओहि ढालक छायाँ देखैत छलाह जतए साँझ पहिने अन्हार पहुँचैवला छल। अर्जुन अपन हथेलीकेँ एना मोड़ैत छलाह मानू अदृश्य धनुषक डोरी पकड़ने होथि। द्रौपदी अपन थाकल पएरक आवाजसँ सभकेँ अलग चिन्हैत छलीह। सभ एक बाटपर चलैत छलाह, मुदा ककरो देह दोसरक थकान नहि ढोइत छल।

जखन दोपहरक उजास पाथरपर तीक्ष्ण भेल, द्रौपदी पानिक छोट पात्र खोललीह। हुनका हिस्सा बहुत कम बचल छल। भीम अपन पात्र बढ़ौलनि। ओ कहलनि, “हमरा लेल बचाउ, ई नहि कहब। मुदा अहाँक प्यास हमरा सुनाइत अछि।” द्रौपदी हँसबाक चेष्टा कएलीह। “प्यासक स्वर रहैत अछि?” “जँ लोक एक संग बहुत दिन चलल हो,” भीम कहलनि, “तखन रहैत अछि।” ओ अपन पात्रसँ एक घूँट लेलनि, शेष द्रौपदीकेँ देलनि। ओ पूरा नहि पीलिह।

ओहि घूँटक ठंढकसँ द्रौपदीकेँ इन्द्रप्रस्थक जलक स्मृति अएल। राजसभाक चमक, मयसभाक मायावी फर्श, अतिथिक आश्चर्य—सभ स्मृति एक्के बेर नहि, टुकड़ा-टुकड़ी

घुरैत छल। ओतए बहुत हाथ जल भरैत छल, पातर पात्र उठबैत छल, देहक तापसँ ठंढा आ गरमक अन्तर बुझैत छल। राजा-रानीक कथा कहनिहारसभ ओहि हाथक नाम प्रायः छोड़ि दैत छलाह। द्रौपदी ओहिठाम केतेक बेर अपन खुशीमे व्यस्त रहलीह, से सेहो हुनका याद छल। स्मृति सदा निर्दोष बनबैत नहि।

किछु दूरपर बाट दू भागमे फूटल। पहिल चढ़ान छोट मुदा पाथर खसल छल; दोसर दूर घुमैत बर्फक पिघलल पानि पार करैत छल। अर्जुन पहिल देखौलनि। सहदेव कहला, “दुपहरमे ई पाथर सरकैत अछि। आकाशक घाम कम भेलाक प्रतीक्षा करब?” युधिष्ठिर पाछाँ नहि घुरि केवल कहलनि, “जकर पए सुरक्षित रहत, ओकर यात्रा आगाँ बढ़त। छोट बाटक लोभ नहि।” सभ दोसर बाट पकड़लनि। द्रौपदी निर्णय सुनलीह; अपन घुटनाक पीड़ा तकरा बाद कहलनि।

चाल धीमा भेल। भीम पुछलनि, “घुटना दुखाइत अछि?” ओ स्वीकार कएलीह, “हँ। मुदा प्रत्येक बेर हम कहब तँ अहाँ सभ यात्राक कारण हमरा बुझाए लगब। हम कारण नहि, थोड़ेक विराम माँगैत छी।” भीम पाथरक ओहि भागपर बैसि गेलाह जतए हवा कम छल। “ई विराम हमरो चाही,” ओ कहला। द्रौपदी बुझलीह जे दयाक आडमे नहि, अपन जरूरत मानि कोनो लोक साथ देत तँ थकानक अपमान घटि जाइत अछि।

बैसल-बैसल ओ दूर हिमक नीचाँ उड़ैत धूरक रेखा देखलीह। ओ धूर कि बादल—निश्चित नहि भेल। पाज्वालक घरमे अग्निक नाम हुनका जन्मक संग जोड़ल गेल छल। अग्निसँ जन्मल स्त्री जखन बच्ची रहितथि, तखन की ओहूकेँ पानिक लेल पुकार लगैत? जे लोक हुनकर अद्भुत उत्पत्तिक गीत बनौलक, से हुनकर साधारण देहक प्रश्नक उत्तर कखनो नहि देलक। हुनका अपने नहि मालूम छल जे कथा आ जीवनक बीच किनका दोष देब।

“अहाँकेँ पाज्वाल याद पड़ैत अछि?” अर्जुन किछु पाछाँ घुरि पुछलनि। द्रौपदीक मनमे धनुषक टंकार नहि, अपन जननीघरक अंगनाक गरमी उठल। ओ कहलनि, “लोक सभ स्वयंवरक दिन याद रखैत अछि। हमरा ओ दिनक अगिला भोर याद अछि। घर छोड़ैत बरतनक खनखनाहट सुनने रही। केओ कोठरी समेटि रहल छल। हमरा लेल सभ

आयोजनमे जे लोक जागल रहला, हुनकर निद्रा कतेक देरीसँ आयल हेतनि?” अर्जुन उत्तर सोचैत रहलाह, फेर कहला, “हम हुनकर नाम नहि जानैत छी।”

द्रौपदी कहलीह, “हमहूँ सभ नाम नहि जानैत छी। मुदा ओहि भोर हमरा अपन पएर धरि कम देखाइत छल। सभ दिशा सँ दृष्टि छल। पाँच जनाक पत्नी बनबाक निर्णय जखन हमर माथपर पहुँचल, तखन सभक वचन छल; हमर भीतरक मौनक हिसाब कियो नहि रखलक।” ओ ई कहि अर्जुनकेँ दोषी ठहराबए नहि चाहैत छलीह। मुदा ओ चाहैत छलीह जे मौनकेँ सहमति कहि इतिहास शान्त नहि भऽ जाए।

अर्जुनक मुखपर पहिने विरोध, फेर असमर्थताक रेखा आएल। “हमरा लग ओहि घड़ीक उत्तर एखन नहि अछि,” ओ कहलनि। द्रौपदी पुछलीह, “उत्तर तखन छल?” अर्जुन पाथरक कात तकलनि। “कदाचित हम सभ अपन विजयकेँ निर्णय बुझने रही।” ओहि स्वीकारोक्तिमे कोनो महान प्रतिज्ञा नहि छल। द्रौपदी हुनका देखलीह, फेर अपन वस्त्रक गाँठ खींचि कसलीह। पुरान निर्णयक परिणाम एहि ढालपर हुनकर संग चलैत छल।

सहदेव आगाँ चलैत रुकलाह। हवा अचानक तेज भेल छल। ओ पाथरक अँतरीमे एकटा सुरक्षित आड़ देखौलनि। सभ ओतए बैसलाह। कुकुर पहिने गन्ध लैत भीतर आएल, फेर दुआर सन सँकर पथपर सुति गेल। नकुल अपन पानिक पात्र ओकरा लग रखलनि। युधिष्ठिर दूर पहाड़क ओरिएनार देखैत छलाह। द्रौपदी कुकुरक पिठपर साँस उठैत-बसैत देखलीह; ओ जीवक यात्रा अपन छल, राजवंशक सूचीमे ओकर स्थान नहि छल।

आइमे बैसल द्रौपदीकेँ द्यूतसभाक अपमान स्मरण भेल। सभामे प्रश्न छल जे स्वयं अपन स्वतन्त्रता हारल पुरुषकेँ पत्नी दाँवपर रखबाक अधिकार केना भेटल। हुनकर प्रश्नक उत्तर देबाक स्थानपर बहुत लोक नियमक गूढ़ अर्थ खोजैत रहलाह। ओहि दिन वस्त्रक रक्षा मात्र चमत्कारक कथा नहि छल; ओकर पहिले स्त्रीक आवाज दबाबएवला सभाक दीर्घ मौन छल। ओ मौन आजुओ हुनकर भीतर अलग आवाज बनि बैसल छल।

“हम ओतए ठाढ़ छलहुँ,” भीम अचानक कहला। बुझाइत छल ओ द्रौपदीक मुखक भीतर उठल स्मृति पढ़ि लेने छथि। “हमर क्रोध बहुत छल; मुदा पहिने अहाँकेँ ओ सभामे अपमान सहबाक पड़ल। क्रोधक कथा लोक बहुत कहत। अहाँक प्रश्नक उत्तर कतेक

लोक याद रखत?” द्रौपदी उत्तर देलीह, “क्रोधक आवाज तेज होइत अछि। प्रश्नक आवाज दबि गेलो पर समाप्त नहि होइत।” भीम अपन हाथ घुटनापर राखि चुप भऽ गेलाह।

द्रौपदीकेँ वनवासक ओ रातिसभ याद अएल जखन आगि सुलगेबाक लेल भीजल काठ सुखेबाक पड़ैत छल। गाछक नीचाँ अन्न पकबैत ओ अपन राजमहलक भूख आ वनक भूखमे अन्तर बुझने छलीह। वनमे उनकरा आ सभकेँ बहुत बेर सहायता भेटल; कियो फल चिन्हौलनि, कियो घाटक सुरक्षित बाट। ओहि लोकसभक अपन भय, खेत आ परिवार छल। पाण्डवक शोक हुनकर जीवनक पूरा माप नहि बनैत छल।

ओहि वर्षसभमे द्रौपदी प्रत्येक बातपर दृढ़ नहि रहलीह। कोनो दिन ओ क्रोधमे एहन वचन कहि देलीह जे पाछाँ अपूर्ण बुझायल; कोनो दिन ओ न्यायक प्रतीक्षा नहि कऽ सकलीह। भीम हुनकर रोष उठौने छलाह, अर्जुन अपन संकल्प, नकुल-सहदेव अपन सावधानी, युधिष्ठिर अपन धर्मक तर्क। एक्के परिवारमे न्यायक पाँच भिन्न रास्ता देखाइत छल। हुनका युधिष्ठिरक धैर्य अनेक बेर असह्य, भीमक आवेग अनेक बेर प्रिय, अर्जुनक निकटता अनेक बेर विशेष लागल। एहिमे हुनकर जीवन छल; पूरा निर्णय नहि।

बाहर हवा किछु थामल। द्रौपदी उठलीह, मुदा घुटनाक भीतर अटकल पीड़ा बढ़ि गेल। अर्जुन हाथ बढ़ौलनि। ओ हाथ पकड़ि खसैत पएर बचौलीह, फेर छोड़ि देलीह। “हम चलब,” ओ कहलीह, “मुदा हम चललहुँ से अहाँ हमर बदला नहि कहब।” अर्जुन मुस्कुरा नहि सकलाह। किछु काल धरि दुनूक बीच केवल पाथरपर पएरक खरखराहट छल।

आगाँक ढालपर एकटा पाथर खसि नीचाँ चलि गेल। भीम ओकर लुढ़कबाक आवाज सुनि ठाढ़ भऽ गेलाह। द्रौपदीक मनमे युद्धभूमिक ओ आवाज अएल जतए रथक चक्का टूटैत छल, आ मृतकक पहिचान अनेक बेर शस्त्रसँ होइत छल, चेहरासँ नहि। विजयक पश्चात् जे दुआर खुलल, ओकर भीतर पुत्रसभक अनुपस्थिति रहि गेल। पाँच पुत्र, पाँच अलग शैशव, आ एक्के बेर टूटि गेल भविष्य—एहि क्षतिकेँ ककरो धर्मवचन छोट नहि कऽ सकल।

हुनका एक पुत्रक बाल्यकालक प्रश्न याद अएल: “माइ, हमर पिता युद्धपर गेल छथि तँ ओ जे हम सुतल रहब तखन घुरताह?” ओ उत्तर देबामे देर कएने छलीह। एखन ओ शब्दक प्रमाण देबाक कियो नहि बचल छल। द्रौपदीक स्मृतिमे पुत्रसभ प्रत्येक अपन

अलग हँसी, भूख आ खेल रखैत छल। लोक एकत्र “पाँच पुत्र” कहि देत; मातृस्मृतिमे ओ संख्या नहि, पाँच बेर खुलैत आ बन्द होइत दुआर छल।

ओ आकाश दिस देखलीह। कृष्ण नहि छलाह। बहुत बेर जीवनमे हुनकर नाम सहारा बनि अएल छल, बहुत बेर प्रश्नक उत्तर सेहो। मुदा कृष्णक मृत्यु पश्चात् हुनकर स्मृतिसँ ई अनुमान निकालब जे जे भेल सभ पूर्वनिश्चित छल, हुनका उचित नहि लागल। मनुष्य जे दुःख भोगैत अछि, ओकरा नियतिक सुन्दर कथा बनबैत रहला सँ घावक प्रकृति नहि बदलैत। “सखा,” ओ मनमे कहलनि, “आब हमर बात सुनबाक लेल अपन कान हमरा राखए पड़त।”

युधिष्ठिरक पएरक गति अबो समान छल। द्रौपदी हुनका कात पहुँचैबाक प्रयास कएलीह। “राजन्,” ओ कहलनि, “राज्य छोड़ि चललहुँ, मुदा राज्यक निर्णयक छाप हमरा सभक भीतर छूटल अछि। त्याग कएलासँ पुरान प्रश्नक उत्तर बदल जाइत अछि की?” युधिष्ठिर सुनि किछु धीरे चललाह। “नहि,” ओ कहलनि। “त्याग दोषक लेखा मेटएब नहि अछि। यात्रामे हम सभ ओकर भार लऽ चलैत छी।”

“तखन हमरा एक प्रश्न पूछए दिअ,” द्रौपदी कहलीह। “जँ हमर जीवनक अन्तिम कारण कियो एक शब्दमे कहत, ओ शब्द ककर चयन होएत—हमर, अहाँक, कि सुनिहारक?” युधिष्ठिर तत्काल उत्तर नहि देलनि। कुकुर दू पाथरक बीच सँ आगे निकलि गेल। बहुत दिनक राजा शब्द चुनबाक अभ्यास राखैत छलाह; एहि बेर हुनकर मौन पहिनुक दरबारक मौनसँ भिन्न छल, मुदा द्रौपदी ओकरा पूरा उत्तर नहि मानलीह।

“हम धर्मक बात कहब,” युधिष्ठिर अन्ततः कहलनि, “मुदा ई बुझैत छी जे धर्मक नाम लेब आ लोकक जीवन बुझब एक बात नहि।” द्रौपदी सुनलीह। “आ हमर अपन कथा?” ओ पुछलीह। “ओ अहाँक भीतर अछि,” युधिष्ठिर कहला। द्रौपदीक स्वर तीक्ष्ण भेल, “भीतर रहला मात्रसँ ओकर रक्षा नहि होइत। जकर आवाज दूसर लिखत, ओकरा प्रश्न उठेबाक अवसर कहाँ?” युधिष्ठिर एक बेर पाछाँ देखबाक चेष्टा कएलीह, फेर उत्तर बिनु आगाँ बढ़लाह।

बाटक ओहि खण्डमे बर्फक पानी झिरझिरा कऽ पाथरपर जमैत छल। नकुल अपन पएरक बल परखि एक-एक डेग रखैत छलाह। द्रौपदी हुनकर दूरी देखैत छलीह। सुंदरताक

लेल प्रशंसित नकुलक चेहरापर एखन दिनक थकान छल, आ हुनका ओ रूप पहिनुका सभ प्रशंसासँ अधिक सजीव लागल। “थाकल छी?” ओ पुछलीह। नकुल कहलनि, “थाकल छी। मुदा ई बात कहबामे पहिले लाज लगैत छल।” द्रौपदी उत्तर देलीह, “हुनका सभकेँ लाज लगाओल गेल, जे जीवित देह छलीह।”

सहदेव पास अएलाह। “कदाचित आगाँक ढाल चढ़ब कठिन रहत,” ओ कहलनि। द्रौपदी हुनकर पूर्वानुमान सुनि पुछलीह, “तखन आगाँ चलबाक निर्णय की केवल जानकारक होएत?” सहदेव कहलनि, “हम अनुमान देलहुँ, आदेश नहि।” द्रौपदी सिर हिलौलीह। ओ अपन भायसभक मुख देखलीह—हुनका सभसँ एकहि प्रकारक स्नेह नहि छल; एकर अर्थ ई नहि जे शेष चारिक जीवन हुनका अर्थहीन छल। सम्बन्धक असमानता आ अन्याय एक्के माप नहि।

ओहि क्षण हुनका सुभद्राक याद अएल। ओ स्त्री, जकर जीवन संग कखनो ईर्ष्या, कखनो निकटता, कखनो परिवारक अघोषित काज बाँटल गेल। द्रौपदी स्मरण कएलीह जे अनेक महिला अपन-अपन भिन्न प्रियजनक बीच रहितो दोसरक पीड़ा बुझैत छथि। तुलनाक कारण प्रत्येक स्नेहक रूप बदलैत अछि; स्नेहक अस्तित्व मात्र दोष नहि। हुनका ई सेहो मालूम छल जे अपन विशेष चाहना कखनो दूसरकेँ उपेक्षा अनुभव करबौने होएत। ओ स्मृतिसँ ई आपत्ति लुकाबए नहि चाहैत छलीह।

द्रौपदी एकटा पुरान गीत गुनगुनाबए चाहलीह, जे बाल्यकालमे रातिक काज समाप्त कऽ अंगनामे सुनैत छलीह। गीतक पूरा बोलि याद नहि छल; दुई स्वर आ एकटा विराम मात्र बाँचल छल। भीम पाछाँसँ पुछलनि, “की गीत अछि?” “एखन गीत पूरा नहि,” ओ कहलनि। भीम हँसलाह, “अधूरा गीतो चलैत अछि।” द्रौपदीक मुखपर क्षणिक उजास अएल। जीवनक अनेक आनन्द कियो ग्रन्थमे नहि लिखत, तैयो ओ अनुभूत रहल छल।

दोसर पहरमे हवा हिमक धूरि उठाबए लागल। द्रौपदीक पएरक अँगुरी सुन्न भऽ रहल छल। ओ अपन वस्त्रक गाँठ फेर छूलीह। बिहान जे काँट निकालनिहार काम छल, से एखन असफल मरम्मतक चिन्ह बनल छल; धागा फेर खिचि गेल छल। ओ रुकलीह, गाँठकेँ कसलीह, मुदा हाथ काँपैत छल। भीम दू डेग आगाँ गेलाह, फेर घुरि देखलनि।

“आब विराम चाही?” ओ पुछलनि। द्रौपदी कहलीह, “हाँ, मुदा बाट एखन हमरा विराम देत की?”

भीम निकट पहुँचेबाक पहिने ढालक किनारक सूखल पाथर हुनकर पएरक नीचाँ घसकि गेल। द्रौपदी हाथ पसारि सँभलए चाहलीह। एक बेर घुटना मोड़ल, दोसर बेर देह सीधी करबाक प्रयास कएलनि। भीमक हाथ लगभग पहुँचल, मुदा देह पहिने धरती छू लेलक। पाथरक नोक कातमे लागल, श्वास छोट-छोट भऽ गेल। धूरि उठि फेर बैसि गेल। कुकुर अचानक चुप भऽ ठाढ़ रहल।

“पाज्वाली!” भीम घुटना टेकलनि। ओ हुनकर माथ नीचाँ सँभालए चाहैत छलाह। द्रौपदीक आँखि खुलल छल, मुदा शब्द बाहर नहि आबि रहल छल। भीम पानीक शेष घूँट लऽ बढ़लनि, हुनकर ओठ भिजौलनि। ओ प्रश्न पूछए चाहैत छलाह—घुटना, साँस, शूल, किछु—मुदा जे घटि रहल छल तकर गति प्रश्नसँ तेज छल। दूर युधिष्ठिरक चाल धीमा नहि पड़ल छल।

भीम उच्च स्वरमे पुछलनि, “भ्राताश्री, द्रौपदी हमर सभक संग एतेक दुःख सहलीह। एखन ई किएक खसि पड़लीह?” आगाँसँ युधिष्ठिरक उत्तर अएल जे पाँचू पतिक बीच अर्जुनक प्रति हुनकर विशेष पक्षपात रहल; यात्रा-साधनाक एहि कसौटीपर ओकर फल भेटल। ओ अपन डेग रोकलनि नहि। उत्तर महाप्रस्थानक कठोर धर्मव्याख्या जकाँ हवा काटैत भीम धरि पहुँचल।

द्रौपदी कान धरि पहुँचल स्वर आ भीतरक स्मृतिमे अन्तर पहचानए चाहलीह। एक विशेष स्नेह छल—हुनका एकर इन्कार नहि। मुदा एहि शब्दसँ ओ पुत्रसभक मृत्यु, द्यूतसभाक प्रश्न, वनक भुखमरी, सुभद्राक संग कएल कठिन समझौता, आ अपन छोट आनन्दसभक पूरा अर्थ नहि पढ़ि सकलीह। युधिष्ठिरक कथन हुनकर दृष्टि छल; द्रौपदीक अनुभव ओहि दृष्टिसँ छोट नहि भऽ जाइत। एखन उत्तर देबाक लेल हुनकर कण्ठमे बल नहि छल।

भीम हुनकर हाथ अपन हाथमे लेलनि। द्रौपदी अपन फाटल वस्त्रक गाँठपर एक बेर दृष्टि राखलीह। ओ गाँठ हुनका जीवनक प्रमाण नहि, मुदा अपन हाथक काज छल—बिहानक निर्णय, पएर बचाबएबाक चेष्टा, अनगिनत साधारण काम जकरा कियो धर्मक

श्रेणी नहि देलक। भीम देखलनि जे हुनकर अँगुरी धीरे-धीरे ढील भऽ रहल अछि। “हम एतहि रही,” ओ कहलनि; स्वरमे पहिनुका प्रतिज्ञाक गर्जना नहि छल।

द्रौपदी अपन भीतर कोनो अन्तिम न्यायसभा बनौलीह नहि। स्नेह छल, पक्षपातक सम्भावना छल, रोष छल, कोनो घड़ीक अन्याय सेहो छल; साथहि संघर्ष, श्रम, शोक, साहस, हँसी आ अपूर्ण प्रश्न छल। ओ जे बात मुखसँ कखनो पूरा नहि कहि सकलीह, तकरा एखन एक वाक्यमे समेटबाक आवश्यकता नहि छल। हुनकर श्वासक बीचक अन्तर बढ़ल। पाथरपर राखल हाथ निश्चल भेल। द्रौपदीक जीवन ओहिठाम समाप्त भेल; ओकरा दोसर लोकक व्याख्या पूरा कऽ नहि सकल।

भीम किछु देर धरि झुकल रहलाह। अर्जुन पाछाँ अएलाह, नकुल आ सहदेव सेहो ठाढ़ भेलाह। कोनो भाड़ तत्काल सही शब्द नहि पाबि सकलाह। भीम फाटल वस्त्रक गाँठ देखौलनि। “एहि गाँठमे बिहानक काँट अटकल छल,” ओ कहला। अर्जुन ओहि छोट मरम्मतकँ तकलनि। हुनका पहिने द्रौपदीक प्रश्न याद अएल—“उत्तर तखन छल?” ओकर उत्तर एखनहुँ नहि छल। हिमक हवा धीरे-धीरे पाथरक कातक धूरि उड़ा रहल छल।

युधिष्ठिर आगाँ चलैत रहलाह, आ कुकुर हुनकर पाछाँ बढ़ल। भाईसभ अपन-अपन समय लऽ उठलाह। भीम द्रौपदीक हाथ छोड़बाक पहिने एक बेर ओकरा धरतीपर सावधानीसँ रखलनि। समक्ष चढ़ान छल; भाइसभक देह, स्मृति आ दायित्व अलग-अलग भार बनि रहल छल। द्रौपदी नहि उठलीह। हुनकर पतनक एक कारण कहल जा चुकल छल; हुनकर बाटक सभटा कथा ओहि एक कारणमे समाएल नहि छल।

अध्याय १९५ • भाइसभक दूरी

प्राचीन महाप्रस्थानक हिमवर्ती बाटपर सहदेवक पएरक नीचाँ छोट पाथर चरमरायल।
द्रौपदीकेँ पाछाँ छोड़ि आएल पाँचू भाइ एखन एक-दोसरक देहक आवाज सुनैत छलाह।
भीम बारम्बार पाछाँ तकैत छलाह; अर्जुनक हाथ हिलैत छल, मानू खाली हथेलीमे धनुषक
पुरान भार रहि गेल हो। युधिष्ठिर आगाँ बढ़ैत छलाह, आ कुकुर कखनो हुनकर लग, कखनो
भाइसभक बीच चलैत छल। सन्नाटा एना नहि छल जे द्रौपदी बिसरि गेलीह; ओकरा नाम
देबाक साहस एखन ककरो लग नहि छल।

सहदेव पहिल बेर आपसमे चलबाक दूरी गनबाक चेष्टा कएलनि। “जँ अगिला मोड़ धरि
सभ एक्के गति सँ चलब, तँ अन्हारसँ पहिने ओहि चट्टानक आड़ पहुँचब,” ओ कहलनि।
भीम प्रश्न कएलनि, “सभक पएर एक सन अछि की?” सहदेव रुकलाह। हुनका अनेक
युद्धमे गननाक भरोसा काम देने छल; एखन भाइसभक साँसक बीच अन्तर अएल छल।
ओ अपन वचन सुधारलनि, “गति बदलि सकैत अछि। हमर अनुमान लोकक देहपर शासन
नहि करए।”

अर्जुन सहदेवक कात अएलाह। “तोरा पहिने बुझि जाइत छल जे हम सभक निर्णय
कत्ते भारी पड़त,” ओ कहलनि। सहदेव मन्द हँसला। “बहुत बेर बुझलहुँ जे निर्णयक
परिणाम होएत, मुदा ई नहि बुझलहुँ जे ककर भीतर केहन घाव बचत। ज्ञानक दावा
करबाक बाद अज्ञान स्वीकारब कठिन होइत अछि।” ओ द्रौपदी दिस तकए चाहलनि, मुदा
मोड़क पाछाँ ओकर देह आब नहि देखाइत छल।

ढालपर पानि जमि पातर चमक बनौने छल। सहदेव अपन डण्डा पहिने राखि जमल
धरती जाँचलनि। ओ नकुलकेँ सावधान करए चाहैत छलाह, तखने अपन पएर फिसलल।
नकुल हुनकर बाँहि पकड़लनि। दुनू भाइ किछु क्षण एक पाथरक सहारे ठाढ़ रहलाह। “हम
तँ आनकेँ बचबाक बाट बता रहल रही,” सहदेव कहलनि। नकुल उत्तर देलनि, “बाट
देखौनिहारक पएर सेहो पाथरे पर पड़ैत छै।” दुनूकेँ एहि साधारण बातपर हलुक हँसी
अएल, जे तत्काल थामि गेल।

सहदेवक छातीमे साँस अटकि रहल छल। ओ अपन डण्डा नकुलक हाथमे रखलनि। “ई आगाँ काम देत,” कहलनि। नकुल वापस देबाक चेष्टा कएलनि। सहदेव सिर हिलौलनि। “हमर हाथ आब एकरा सीधा नहि राखि सकैत अछि।” भीम आगाँ बढ़ि हुनका उठाबए चाहलनि, मुदा सहदेव कहला, “पहिने हमरा बैसए दिअ। उठब कि नहि, एखन बुझब।” हुनकर एहि छोट माँगमे पहिनुक भविष्यवाणी नहि, वर्तमान देहक अधिकार छल।

जखन ओ बैसलाह, हिमक पतरा पवनसँ हुनकर वस्त्रपर जमए लागल। अर्जुन हुनका सहारा देलनि, मुदा सहदेवक मुखपर पीड़ाक तीक्ष्ण रेखा उतरि आएल। हुनकर दृष्टि नकुलक हथेलीपर टिकि गेल। “हम सभ जुड़वाँ छी, मुदा एक संग साँस नहि छोड़ब,” ओ धीमे कहलनि। नकुलक मुख काँपल। हुनका कोनो विद्या ई वाक्य हलुक करबाक उपाय नहि देलक। सहदेव एक बेर आँखि खोललनि, फेर हुनकर साँसक अन्तर बहुत पैघ भऽ गेल। देह निश्चल भेल।

भीम युधिष्ठिरकें बजौलनि। “सहदेव बुद्धिमान छलाह, अपन भाइसभक हित चाहैत छलाह। ई किएक खसि पड़लाह?” आगाँसँ उत्तर अएल जे सहदेव अपनासँ बेसी बुद्धिमान ककरो नहि मानैत छलाह, तकर गर्वक फल ई पतन अछि। युधिष्ठिरक स्वर कठोर नहि, मुदा निर्णय स्पष्ट छल। नकुल अपन हाथमे धरल डण्डा देखलनि। “हुनकर गिनतीमे हमर पएरक गति शामिल नहि छल,” ओ कहलनि, “आब हुनकर समस्त जीवनकें अहाँ एक कारणमे गनैत छी?” युधिष्ठिर उत्तर नहि देलनि।

भाइसभ फेर चललाह। नकुलक हाथमे दू डण्डा छल—एक अपन, एक सहदेवक। ओ दुनूकें बारी-बारी धरतीपर टेकैत छलाह, जाहिसँ चाल बिगड़ि रहल छल। भीम पुछलनि जे एकटा डण्डा ओ उठाबि लिअथि। नकुल देबाक लेल तैयार नहि भेलाह। बहुत दूर गेलापर ओ स्वयं रुकि कहला, “दूनु धरने रहलासँ दुनूक काज नहि होइत। सहदेवक डण्डा अहाँ राखू।” भीम लेलनि। एक जिम्मेदारी बाँटल गेल, मुदा एक भाइ फेर नहि भेटल।

नकुलकें एक झरनाक पातर धार देखायल। ओ घुटना टेकिकऽ पानीक सतह छूलनि। चेहराक प्रतिबिम्ब टूटि-टूटि रहल छल। राजसभामे लोक हुनकर रूपक प्रशंसा करैत छल; ओ एहि प्रशंसासँ प्रसन्न सेहो होइत छलाह। मुदा एखन पानिमे जे मुख छल, ओकर ओठ

सूखल, आँखि फुलल आ गाल पर धूलिक रेखा छल। ओ अपन प्रतिबिम्बसँ अधिक पाछाँ ठाढ़ भीमक थकान देखलनि।

“हमरा बचपनसँ कहल गेल जे हम सुन्दर छी,” नकुल अर्जुनसँ कहलनि। “बहुत दिन धरि ई बुझैत रहलहुँ जे ई गुण हमरा सुरक्षित रखत। युद्धमे हमर मुख पर धूलि रहल, शोकमे आँखि सूजल, मुदा प्रशंसा छोड़बाक अभ्यास नहि छल।” अर्जुन कहला, “अपन गुण जानब दोष नहि।” नकुल उत्तर देलनि, “गुणक सहारे दोसरकेँ कम देखब दोष भऽ सकैत अछि। जखन ओ सीमा पार भेल, हम सभदिन चिन्हि नहि सकलहुँ।”

झरनाक कात कुकुर पानि पीबाक लेल झुकल। नकुल पात्रकेँ ओकरा दिस सरकौलनि। भीम देखलनि जे पानिक धार कम अछि; ओ पाथर हटाकऽ कुकुर लेल छोट गहर बनौलनि। एक क्षण सभ भाइ एही साधारण काजमे लगलाह। युधिष्ठिरो घुरि देखलनि। राजसभाक गुणगान वा युद्धक जयघोष सँ अलग, चारि हथेली आ एकटा जीवक प्यासक बीच कोनो पद नहि छल।

आगाँ नकुलक पएर लड़खड़ाएल। ओ सहदेवक नाम पुकारलनि, फेर तत्काल बुझलनि जे उत्तर नहि आएत। अर्जुन हुनकर काँध थामलनि। नकुल कहला, “हम एहि नामकेँ पुकारब बन्द नहि कऽ सकैत छी।” भीम हुनका बैसौलनि। ओहि ठंढमे नकुलक हातक ऊष्मा घटि रहल छल। ओ अर्जुनसँ कहला, “हमरा सँ गलती भेल होएत, मुदा हमरा अपन भायकेँ पुकारबाक अधिकार छैक।” अर्जुन सिर हिलौलनि।

नकुलक साँस छोट भेल। हुनकर हाथ धरतीपर रखल डण्डा खोजलक, मुदा डण्डा भीम लग छल। भीम तुरन्त बढ़ौलनि, तब धरि हाथक पकड़ ढील भऽ गेल छल। नकुल ओहि बाटपर प्राण छोड़लनि। युधिष्ठिर हुनकर रूपपर गर्वक व्याख्या कहलनि। अर्जुन फुसफुसा कऽ कहला, “सहदेवक नाम पुकारैत छथि, तकर व्याख्या कोन दोषमे लिखब?” ओ प्रश्न हवा मे रहल। पाथर नकुलक देहक कात जकाँ तकर उत्तर नहि देलक।

एखन तीन भाइ चलैत छलाह। अर्जुन अपन दहिना हाथक अँगुरीसँ बामा हथेलीक निशान छू रहल छलाह। गाण्डीव बहुत पहिने जलदेवताकेँ घुरा देल गेल छल; धनुषक आकार स्मृतिमे बचल छल, वास्तविक भार नहि। ओ मुठ्ठी कसि कहला, “युद्धक समय हम

अपना पर भरोसा करैत छलहुँ। भरोसा बिनु बाण चलत केना?” भीम कहलनि, “भरोसा राखू। मुदा एतए लक्ष्य पाथरक ओ पार नहि, एखनक अगिला डेग अछि।”

अर्जुनकेँ रणभूमिक प्रतिज्ञा याद अएल—जे शत्रुकेँ अल्प समयमे परास्त कऽ देब, जेकर सामने एकटा धनुर्धर पर्याप्त होएत। ओ प्रतिज्ञा सभ युद्धक भयानक समयमे बलो देने छल, कतोक बेर अपन सामर्थ्यक मापसँ पैघ सेहो भऽ गेल छल। कृष्णक अवसान पछाति जे लोकसभक रक्षा करबाक प्रयत्नमे ओ असफल भेलाह, ओकर स्मृति हुनका एखनहुँ सतबैत छल। हुनका पहिने सोचल सहज निश्चय—‘हम बचा लेब’—एखन अपन सीमासहित सुनाइत छल।

“हम तखन बहुत लोककेँ बचा नहि सकलहुँ,” अर्जुन कहला। “हमर कथामे जे लोक बचल, हुनकर नाम रहत। जे नहि बचल, हुनकर विषयमे हमरो आवाज कम पड़ैत अछि।” भीम हुनकासँ एतबा पुछलनि, “किएँ एखन ई बात?” अर्जुन कहला, “कारण हम अपनो नामक कीर्ति उठा चलैत छलहुँ। एहि ऊँचाइपर नामक भार ढालसँ पैघ भऽ रहल अछि।” युधिष्ठिर आगाँक चढ़ान निहारैत छलाह।

हिमक तेज झोंका अएल। अर्जुनक पैर अस्थिर भेल। ओ एक पाथर पकड़ि उभड़ए चाहलनि, मुदा हाथ ओतबा दृढ़ नहि रहल। भीमक पकड़ पहुँचबाक पहिने अर्जुन धरतीपर बैसि पड़लाह। हुनका माथ घुमि रहल छल। ओ प्राण बचएबाक प्रयास करैत भायक हाथ पकड़लनि। “हमरा एक बेर उठाउ,” ओ कहला। भीम उठौलनि, मुदा अर्जुन दू डेग बाद फेर झुकि गेलाह। एहि बेर हुनका स्वयं बुझल जे उर्ध्वगति समाप्त भऽ रहल अछि।

“अहाँ हमरा योद्धा कहैत छलहुँ,” अर्जुन भीमसँ कहलनि, “आइ हमरा भाइ कहू।” भीमक आँखिमे पानि अएल। “भाइ,” ओ कहलनि। अर्जुन अपन गाण्डीवहीन हाथ हुनकर हाथपर राखलनि। तकर बाद आवाज धीरे-धीरे घटल आ श्वास रुकि गेल। युधिष्ठिरक दृष्टिमे अर्जुन अपन पराक्रमक अहंकार आ प्रतिज्ञाक अतिकथनक कारण खसलाह। भीम एहि कथनकेँ सुनलनि, मुदा ओहि क्षण हुनकासँ बहस नहि भेल। हुनका अपन हाथमे छोट पड़ैत गर्मी जानि पड़ल।

दू भाइ आ कुकुर बचल। भीमक देह एखनहुँ बलवान छल, मुदा प्रत्येक चढ़ानपर घुटना काँपैत छल। ओ द्रौपदीक बाट, सहदेवक डण्डा, नकुलक पुकार आ अर्जुनक अन्तिम

सम्बोधनके अपना भीतर लऽ चलैत छलाह। युधिष्ठिरसँ बहुत दूर नहि रहएबाक लेल ओ तेज बढ़ए चाहलनि, मुदा तेज चालमे हुनकर साँस टूटैत छल। ओ पहिल बेर अपन धीमा होएबाक अनुमति स्वयं लेलनि।

“भ्राताश्री, हम भूखल छी,” भीम कहलनि। अपन भूखक बात कहब हुनका कखनो कठिन नहि लागल छल। एहि बेर स्वरमे लाज नहि, आश्चर्य छल। “एतेक किछु छोड़ि अएलहुँ, मुदा देह अन्न माँगए छोड़ैत नहि अछि।” युधिष्ठिर कहलनि, “देहक माँग आ ओकर दासत्वमे अन्तर अछि।” भीम उत्तर देलनि, “हम अनेक बेर अति कएने होएब। मुदा लोकक लेल भोजन जुटाएब सेहो हमर हाथक काम छल। सभ भूखकेँ एक्के दोषमे रखब उचित नहि।”

बकासुरक अत्याचारसँ लोकक मुक्ति, वनमे संगिनीक लेल जुटाएल अन्न, युद्धक रौद्र बल—सभ स्मृति एक संग उठल। भीम जानैत छलाह जे बल बहुत बेर रक्षा करैत अछि, बहुत बेर डर सेहो उत्पन्न करैत अछि। “हम अपन बलपर गर्व कएने छी,” ओ स्वीकार कएलनि। “किछु घड़ी एना छल जे हमरा सुनबाक चाही छल, मुदा हम गरजलहुँ। ई दोष हमर अछि। तैयो द्रौपदीक हाथ छोड़ैत जे पीड़ा भेल, ओकरा गर्व नहि कहब।” युधिष्ठिरक चाल धीमा भेल, मुदा ओ उत्तर देबाक पहिने फेर आगाँ बढ़लाह।

भीमक अगिला डेग पाथरक दरारमे अटकल। ओ पूरा देह सँ जोर लगा बाहर निकालय चाहलनि। मांसपेशी खिचल, छातीमे तीव्र वेदना उठल। ओ पाथरपर घुटना टेकलनि। युधिष्ठिर पाछाँ फिरलाह। भीम हँसबाक चेष्टा कएलीह, “जकरा लोक पर्वत उठा देत कहैत छल, ओ अपन पएर नहि उठा सकैत अछि।” हुनकर हँसी बीचमे टूटि गेल। कुकुर ओतए आबि सूँधि पाछाँ सरकल।

“हमरा बताउ, अहाँ आगाँ किएक जाएब?” भीम पुछलनि। “हम सभक संग छलहुँ। आब अहाँ एकसरि रहि जाएब।” युधिष्ठिर कहलनि, “जे मार्ग स्वीकार कएने छी, ताहि पर चलब। मुदा एकसरि रहबाक अर्थ ई नहि जे तोहर संग व्यर्थ छल।” भीम कहला, “तखन हमहुँ अपन हिस्सा कहि दी। जे लोक हमरा केवल बलवान मानलनि, ओ हमर डर नहि देखलनि। आइ हमरा मृत्यु सँ डर लगैत अछि। ई कहि देने सँ हमर पराक्रम घटत नहि।”

भीमक देह नीचाँ झुकल। युधिष्ठिर किछु पाछाँ बढ़ि हुनकर नजदीक ठाढ़ भेलाह। ओ भीमक हाथ अपन हथेलीमे रखलनि; बहुत दिनक बाद दुनू भाइ बिना युद्धक आदेश आ राज्यक परामर्शक एतेक निकट छलाह। भीमक स्वर क्षीण भेल। “द्रौपदीकेँ जे पानि देलहुँ, ओकर आधा हम स्वयं पीने रही,” ओ कहलनि। “हुनका प्यास अधिक छल। हम एखनहुँ ओ बात सोचैत छी।” युधिष्ठिर हाथ कसि धरलनि। भीमक साँस धीरे-धीरे समाप्त भेल।

युधिष्ठिर हुनकर अतिभोजन आ बलक अहंकारक पारम्परिक कारणक स्मरण कएलनि। मुदा एहि बेर ओ उत्तर दोसर भायकेँ सुनाबएबाक लेल नहि छल; केओ बचल नहि जे पूछैत। ओ शब्द मुखसँ बाहर निकाललापर हुनका लागल जे निर्णय कहब सरल अछि, द्रौपदीक आधा घूँट वा भीमक भयक भार उठाबब कठिन। ओ पाथरक कात बैसि बहुत देर धरि अपन भाइकेँ देखैत रहलाह। हिम देहसभक बीच समान पड़ैत छल, मुदा जीवितकेँ जीबएबाक भार प्रत्येक बेर अलग छल।

कुकुर हुनकर कात आबि बैसल। युधिष्ठिर ओकर माथपर हाथ राखलनि। ओ जीव नहि धर्मक प्रश्न पूछलक, नहि मृतकसभक कारण कहल। ओकरा पानि चाही छल, चलबाक सामर्थ्य एखन बचल छल। युधिष्ठिर अपन पात्रक शेष पानि ओकरा देलनि। पाथरक उगैत ठंढकमे ओ बुझलनि जे संग देब कोनो विजयक प्रमाण नहि, आ संग छोड़ि देबाक विवशता अपनासँ छोट व्यक्तिक मूल्य घटबैत नहि। ओ उठलाह। आगाँक बाटपर कुकुरक पएरक निशान हुनकर पएरक निशानसँ अलग बनैत गेल।

विदेहपुर, २०४२। आश्रयक बाहरी आँगनमे जावेद कलन्दर परदाक ऊपर उलटा पड़ल कपड़ाक चिड़ै सीधा कऽ रहल छलाह। कपड़ाक एकटा पाँख बरखाक भीजल हवासँ लटकने छल। अंशु आब पैघ भऽ रहल छल; ओ चिड़ैक भीतरक पतली बाँसक गाँठ देखिकऽ कहलक, “ई पाँख ठीक नहि कएलहुँ तँ उड़बाक अभिनय बीचमे रुकि जायत।” जावेद कहलनि, “रुकबाक गलती चिड़ैक नहि, हमर मरम्मतक होएत। दर्शककेँ सही बात कहब।”

तीन बरख पहिने ओ जीवित पशुक प्रदर्शन छोड़ने छलाह। रुहानीक आश्रयमे परछाईं आ घण्टीक पहिल कार्यक्रमक किछु किस्त हुनका भेटल छल, किछु बकाया लेल दौड़बाक

पड़ल। एखन नव स्वतंत्र कार्यक्रममे आयोजकक लिखित भुगतानक भरोसा नहि छल। लोक कहलनि, “बच्चासभकेँ देखाउ, नीक लागल तँ देत।” जावेद अपन छोट बही खोलि यात्रा, कपड़ाक सिलाइ आ बाँसक खर्च जोड़लनि। “नीक लगबाक दाम कियो नहि देत तँ काज अगिला सप्ताह कोना चलत?” ओ पुछलनि।

रुहानीक आग्रहपर आँगनक बाहरी कात खाली राखल गेल, जाहिसँ आश्रयमे रहनिहारक आवागमन नहि रुकए। चन्द्रा बादी गीतक अभ्याससँ घुरैत छलीह। ओ पोस्टर देखिकऽ कहलीह, “नाम ठीक अछि, मुदा एहि पर ‘करामाती जानवर’ फेर किएक छपल?” पुरान छापेवाला साँच एखनहुँ कागदमे बचल छल। जावेद ओ पाँति काटि अपन हाथसँ लिखलनि—‘छाया, डोर आ कथा’। चन्द्रा कहलीह, “जँ अहाँ पशु नहि देखाएब, तँ पोस्टर सेहो हुनका पाछाँ नहि धिचत।”

बच्चासभ आएल तँ एकटा बालक पहिल प्रश्न पुछलक, “बन्दर नहि?” जावेद ओकरा डाँटलनि नहि। ओ कागदक बन्दर परदापर चढ़ौलनि। पुतरीक हाथमे अन्नक दाना छल, आ ओकर सामने दू बाट। एक बाटपर तालीक आवाज, दोसरपर भूखल छोट पुतरी। जावेद डोरी खींचलनि; बन्दर नचबाक बदला दाना बाँटलक। किछु बच्चा हँसल, एक बालिका पुछलीह, “ई अपने खाएत की?” जावेद दोसर दाना निकालि कहला, “कथा बदलि सकैत अछि, भूख नहि मिटैत।”

दू पुरुष बिना पूरा खेल देखने चलि गेलाह। एक कहलक, “पहिने असल करतब रहैत छल।” जावेदक हाथ क्षणभरि थरथराएल। ककरो बान्हल प्राणीक चेष्टा दर्शकक लेल अधिक आकर्षक छल, ई बात हुनका मालूम छल। मुदा ओ पुरान पशु फेर अनबाक प्रतिज्ञा नहि कएलनि। ओ अपन डोरीक गाँठ खोलि बच्चासभकेँ देखौलनि जे कागदक पुतरी कोना बनैत अछि। “ई खेल अहाँ घरमे बना सकैत छी,” ओ कहलनि, “मुदा जे कलाकार बनौत, ओकर मेहनतक दाम दिअ।”

खेल समाप्त भेलापर जावेद रुपैया गनलनि। दर्शकसँ एक सय अठारि रुपैया भेटल छल। कपड़ाक मरम्मत आ बाँसपर चालीस, आवागमनपर बत्तीस, आ अंशुक सहायता लेल बीस रुपैया अलग देबाक छल। हुनकर हाथमे छब्बीस रुपैया बचल। अंशु कहलक, “एतेक देरक काजमे एतबे?” जावेद उत्तर देलनि, “हाँ। जे बाँचल से कम अछि; मुदा बीस

तोहर देय अछि, ओकरा घटा कऽ अपन कमाइ पैघ नहि देखाएब।” ओ अलग राखल नोट अंशुकेँ देलनि।

चन्द्रा पुछलीह, “अगिला बेर एहि हिसाबसँ करब?” जावेद कहलनि, “नहि। पहिने लोकसँ समय, ठाम आ न्यूनतम मेहनताना निश्चित करब। आजुक कमाइ साबित करैत अछि जे पशु बिना खेल सम्भव अछि; ई साबित नहि करैत जे एतबासँ घर चलत।” रुहानी बहीमे भेल खर्च देखलीह, मुदा आश्रयक राशनसँ भरपाइ करबाक वादा नहि कएलीह। सहायता आ कलाकारक मेहनताना अलग रहबाक चाही—जावेद एहि अन्तरकेँ साफ बुझैत छलाह।

अंशु अपन बीस रुपैया सम्हारि कहलक, “हम अगिला बेर पढ़ाइक बादे आबि सकब।” जावेद सिर हिलौलनि। “अहाँक पढ़ाइ सँ हमरा कला नहि बचाबक अछि। जँ सहायक चाही तँ ओकरा योग्य दाम दऽ कऽ बुलाएब।” चन्द्रा परदाक फाटल कोनापर एकटा सुरक्षित टाँका देखौलनि। “ई काज हम करि सकैत छी, मुदा पहिने दामक बात,” ओ मुस्की देलीह। जावेद सेहो मुस्कुरौलनि। ओहि दिन पहिल बेर हुनका कम आयक हिसाबमे अपन अगिला निर्णय साफ देखायल।

साँझक धुँधलका मे जावेद परदाकेँ लपेटलनि। कागदक बन्दरक एक हाथ बाहर निकलल छल; ओ भीतर मोड़ि राखलनि, जाहिसँ अगिला बेर फेर खुलि सकए। दूर स्टेशनक दिशासँ गाड़ीक आवाज अएल। फकीरा कखनो ओहि आवाजक संग अपन गीतक ताल मिलबैत छलाह; आज ओतए हुनका भेटबाक कार्यक्रम नहि छल। जावेद अपन खर्चक बही बन्द कएलनि, मुदा फकीराक लेल मनमे एकटा प्रश्न राखलनि—बाटक कागद सुधरलाक बादो लोक अपन समय केना बचबैत अछि? ओ प्रश्न एखन जावेदक अपन रोजी सँ उपजल छल, ककरो आन जीवनक उत्तर नहि।

अध्याय १९६ • फकीराक स्टेशन

विदेहपुर, २०४२। नव स्टेशनक माल-दुआर लग फकीरा अपन छड़ीक नोकसँ फर्शक एकटा उठल पट्टी छूलनि। पहिने ओहि ठाम काठक ढलान छल; आब लोहेक पातर चादर बिछल छल, जकर एक कोना ऊपर उठि गेल छल। फकीरा घुटना नहि टेकलनि। छड़ी आगाँ बढ़ा कऽ दू बेर हिलौलनि, फेर बोझा उठेनिहार युवककेँ बजौलनि, “एहि पर खाली गाड़ी सेहो अटकि सकैत अछि। सामान नेने आबएब तँ पहिने दहिना दिससँ घुमू।” युवक कहलक, “अहाँ एतय पहिल बेर आएल छी, आ बाट बतबैत छी?” फकीरा मुस्करौलनि। “पहिल बेर आएल छी, तँ पट्टी जाँचैत छी। पुरान स्टेशनक स्मृतिसँ ई धरती समतल नहि भऽ जायत।”

हुनकर झोलाक भीतर यात्रा-पासक नव कार्ड कपड़ाक तहमे छल। रमा कर्णक कार्यालयसँ निर्गत संशोधनक प्रति ओ अलग लिफाफामे रखने छलाह। गलत मृत्यु-चिह्न हटबाक बाद पहिल किछु यात्रा भेल छल, मुदा प्रत्येक स्टेशनक माल-दुआरक ठेका अलग नियम देखबैत छल। एहि नव स्टेशनमे स्थानीय पर्चीक संग कामक समयक प्रवेश अलगसँ लिखबाक छल। फकीराक संग आइ दू बोरा अनाज आ एक छोट बक्सा उतारेबाक बात भेल छल; कोनो लिखित कामक अवधि तय नहि छल। जे आदमी दामक बात कएने छल, ओ भीड़मे कतहु देखाइत नहि छल।

“पास देखाउ,” प्रवेशक पहरेदार कहलक। फकीरा कार्ड आगाँ कएलनि। पहरेदारक अँगुरी नामपर ठमकल। “एतय तँ साई फकीर लिखल अछि, आ काम देनिहारक पर्चीपर फकीरा।” फकीरा पुरान विवादक स्वर ऊँच नहि कएलनि। “मुख्य सत्यापित नाम फकीरा अछि। आन नाम पुरान पेशागत पंजीक सन्दर्भ। कार्डक पछिला पन्ना पढ़ू।” पहरेदार पढ़लक, तकर बाद भीतरक खिड़कीसँ पुष्टि मँगलक। फकीरा काठक बेज्चपर बैसि रहलाह। कार्ड सही छल, मुदा भोरक पहिल गाड़ीक उतारब एखन हुनकर हाथसँ फिसलि रहल छल।

चाय-दोकानक बूढ़ कर्मचारी फकीराक आवाज चिन्हि गेलाह। ओ रेलचौकक पुरान दुकानदारक साला छलाह; बीच-बीचमे एहि नव माल-दुआरपर चाय दैत छलाह। “आब तँ

पास खुलि गेल, अहाँ फेर किएक बैसल छी?” ओ पूछलनि। फकीरा कहलनि, “पास पटरी पर करबाक हक देलक। कियो हमरा बोझा उठाबए कहत की नहि, ई दोसर हिसाब अछि।” दुकानदार दू गिलासमे चाय ढारि एक गिलास हुनका देलनि। फकीरा अपन चुन्नीक फाटल किनारीसँ गरम गिलासक बाहरी भाग पकड़लनि। चुन्नी बहुत पुरान छल; मुदा ओकर लाल धागाक एक फूल एखनहुँ साफ बुझाईत छल।

हुनका आइक आधा दिन नन्दू नटक दलक लेल सामान पहुँचएबाक प्रस्ताव भेटने छल। नन्दू पहिनेसँ कहने छलाह जे प्रस्तुति होएत तँ निश्चित दाम देताह; नहि भेल तँ खाली प्रतीक्षा लेल भुगतानक सीमा अलग तय करब। मुदा नव स्टेशनक एक माल-व्यवस्थापक फकीराकेँ भोरसँ साँझ धरि उपलब्ध रहबाक मौखिक आदेश देलक। “कखन बोझा आएत, निश्चित नहि। अहाँ एतय रहू, बुलाएब।” फकीरा पुछलनि, “जँ नहि बुलाएब तँ?” व्यवस्थापक कहलक, “काम भेटबाक सम्भावना तँ रहत।” फकीरा हाथक चाय नीचाँ राखि कहला, “सम्भावना अहाँक हो, हमर दिन किएक गिरवी पड़त?”

व्यवस्थापककेँ ई प्रश्न अनावश्यक लगल। “एतए सभ आदमी प्रतीक्षा करैत अछि।” फकीरा कहलनि, “तँ सभक समय मुफ्त भऽ गेल? हम बारह बजे धरि दू घण्टा निश्चित दरपर ठहरि सकैत छी, आ ओ अवधि मे जतेक काम भेटत ओकर हिसाब लिखब। ओकर बाद आन काज लेल जाएब।” “तँ कोनो दोसर आएत।” “आए। ओकरो लेल दर पहिनेसँ स्पष्ट करू।” आसपास ठाढ़ दू श्रमिकक मुखपर असहमति छल; हुनका लग काम छोड़बाक साहस नहि छल। फकीरा हुनकासभकेँ अपन निर्णय दोहरएबाक लेल नहि कहलनि। प्रत्येकक घरक दबाव अलग छल।

रेलदुआरक घंटी बजल। पहरेदार भीतरसँ हाथ हिलौलक। सत्यापन भऽ गेल छल; प्रवेशक अनुमति पर कोनो रोक नहि छल। फकीरा कार्ड जेबमे रखलनि, मुदा व्यवस्थापकक लग पुनः गेलाह। “जँ चारि बोरा उतारेबाक हो तँ समय, दोसर हाथक सहायता आ दर लिखू। हम एकसरि जखनसँ भारी बोरा उठब नहि सकैत छी, तखनसँ साथी चाही।” व्यवस्थापक बेमनसँ पुरान पर्चीक पीठपर काजक ब्योरा लिखलक। दू बोरा अयबाक समय निश्चित भेल। फकीरा खाली हाथक बहीमे लिखलनि—प्रतीक्षा आधा

घण्टा, भुगतानपर सहमति नहि; बोझा उतारब अलग। ओ विवादकेँ भुगतान मिलि गेल सन नहि मानलनि।

स्टेशनक बाहर जुड़ल बस-अड्डाक घेरा देखिकऽ हुनका हसनक पुरान अपील याद अएल। लोहेक फाटकक एक पल्ला खुलल छल, मुदा पुरान ठामपर एखनहुँ सवारी उतारबाक निशान बनल छल। हसन एक नीच मेजपर जिपक दाँत मिलाबए लेल चिमटी धरने छल। जुबैदा कापड़ काटि थैलीक फाटल पाँख सिलि रहल छलीह। हुनका सभक बक्सा अड्डाक भीतर नहि, बाहरी सुरक्षित पट्टीपर छल। “हमरा सभकेँ एखन हफ्तामे तीन पहर ई कोना भेटैत अछि,” जुबैदा कहलीह, “घेराक पूरा ठाम नहि।” फकीरा मेजपर रखल प्राप्ति-पर्ची नहि छूलनि; केवल पढ़ि सुनएबाक आग्रह कएलनि।

हसन पुरान शुल्क-रसीद आ अपीलक उत्तर निकाललक। उत्तरमे स्थायी पट्टा मानल नहि गेल छल; मुदा सुनवाईक बाद अस्थायी उपयोगक घड़ी देल गेल छल, आ सुरक्षा-रेखासँ भीतर जएबाक मनाही स्पष्ट छल। जुबैदा कहलीह, “ई अपन हकक पूरा न्याय नहि। मुदा पहिने लुका कऽ बैसैत रही, आब एहि तीन पहरमे मनमाना वसूली करएवला कर्मचारीकेँ पर्ची देखाइ सकैत छी।” हसन जोड़लक, “बाकी चारि दिनक रोजी एहि कागदमे नहि अछि।” फकीरा कहलनि, “तँ अहाँक काजो पास सन अछि। ठाम खुलल, मुदा कमाइक गाड़ी अपने नहि चलल।”

एक सवारी जकाँ आदमी बक्सा देखिकऽ पुछलक, “पुरान बक्खो लोक फेर अड्डा पर?” हसन ओकर स्वरक तिरस्कार पहचानलक। ओ हातमे धरल जिप हटौलक नहि। “हम हसन छी। ई मरम्मतिक मेज अछि। जँ थैली खराब अछि तँ देखाउ, नहि तँ बाट खुलल अछि।” आदमी कने असहज भेल, फेर अपन थैलीक टूटी पट्टी देखौलक। जुबैदा दर बतौलीह—पट्टीक बदलाक दाम अलग, सिआइक मजदूरी अलग। आदमी पुछलक, “एतेक छोट काजक हिसाब?” जुबैदा उत्तर देलीह, “छोट काजक समय सेहो छोट होइत अछि, मुफ्त नहि।”

हसन पहिने दू गाँठ ठीक कएलक, फेर जुबैदाकेँ नब पट्टी थमौलक। जुबैदा सुइक आँखिमे धागा पिरोइत फकीरासँ पूछलीह, “अहाँक पासक बाद नुकसानक दावाक की भेल?” फकीरा कहलनि, “प्राप्ति भेटल अछि, सत्यापनक उत्तर शेष। जतेक दिनक

लिखित काम छल, तकर रसीद देलहुँ। जे दिन गाड़ी छूटल, ओकर सभ घंटा सिद्ध नहि कऽ सकलहुँ।” जुबैदा कहलीह, “हमरो पुरान ठामक किराया-रसीद अछि, कमाइक पूरा प्रमाण नहि। एतेक कागद राखैत छी, मुदा जे नहि लिखल गेल, से हानि मिटि नहि जाइत।”

ओहि समय बस-अड्डाक देखरेख करनिहार सहायक अएल। “एखन मार्ग खाली करबाक अछि। सभ मेज भीतर लऽ जाउ,” ओ कहलक। जुबैदा घड़ी देखलीह। हुनकर स्वीकृत घड़ी समाप्त होएबाक पन्द्रह मिनट बाँकी छल। “मार्गक कोन अंश?” ओ पुछलीह। सहायक हाथ घुमौलक। “पूरा।” हसन बक्सा बन्द करए लागल, कारण पाछिला बेर मेज उठाओलासँ सामान टूटि गेल छल। जुबैदा मेजक नीचाँ खींचल पहुँच चिन्ह देखौलीह। “ई सुरक्षित पट्टी कार्यालयक नापनामे अछि। जँ एखन बस आवि रहल अछि तँ हम सामान एक हाथ पाछाँ करब; मुदा समय पूरा भेल लिखि कऽ एखनहि उठि नहि जाएब।”

एक खाली बस धीमे मुड़ि अएल। ओकर दहिना पहिया सचमुच मेजक कातसँ निकट छल। जुबैदा तुरन्त बक्सा उठौलीह। “ई मोड़ पर हम नहि बैसि सकब,” ओ स्वयमेव कहलीह। सहायक अचरजसँ तकलक। ओ विवाद चाहैत छल, मुदा जुबैदा माप चाहैत छलीह। हसन काठक पतरी एक हाथ पाछाँ सरकौलक। बस निकलि गेलापर जुबैदा पर्चीपर सीमाक नव रेखा बनबएबाक आग्रह कएलीह। सहायक कहलक जे नापी अधिकारी अयला बादे ई तय होएत; आजुक बाँकी घड़ीमे बाहरी सिधा पट्टीपर काम करबाक मौखिक अनुमति देलक। जुबैदा समय आ सहायकक नाम अपन बहीमे लिखलीह, मानू मौखिक बातकें लिखित आदेश बनाकऽ नहि, भविष्यमे पूछबाक आधार बनबैत होथि।

माल-दुआरपर गाड़ी आबि चुकल छल। फकीरा घुरलाह तँ पहरदार एक भारी बक्साक कात ठाढ़ छल। व्यवस्थापक कहलक, “एहि सँग दू बोरा सेहो अछि, सभ उठा दिअ।” फकीरा पर्ची देखौलनि—दू बोरा, साझा उठान, निश्चित दर। “बक्सा नव काम अछि। ओकर वजन अलग; हम दर कहब।” व्यवस्थापक तिलमिलायल। “आब कामक बीचमे शर्त?” फकीरा कहलनि, “काम शुरू होयबाक पहिने शर्त। अहाँ लिखल पन्ना स्वयं देखू।”

दोसर श्रमिक, जे भोरहिसँ प्रतीक्षा करैत छल, बोरा लएबाक लेल आगाँ बढ़ल। फकीरा ओकरा पुछलनि, “तोहर दाम तय अछि?” युवक माथ नहि हिलौलक।

दुनू श्रमिक बोरा उठेबासँ पहिने एक छोट नाप-तराजू देखलनि। ओहिमे लिखल वजन वास्तविक बोझासँ कम बुझाइट छल। फकीरा व्यवस्थापकसँ पुनः नापबए कहलनि। युवक अधीर छल; ओकरा दिनक पहिल पैसा चाही छल। फकीरा ओकरा कहला, “हमरा गलत देखाइत हो सकैत अछि। एक बेर तौँ स्वयं तराजू देख।” युवक माप पढ़लक, फेर बोराक चिन्ह मिलौलक। कम अंक छल। व्यवस्थापक दोसर पर्ची खोजलक। ओहि असमञ्जसमे फकीराक समय फेर बीतल। मुदा बोराक वास्तविक वजन लिखल गेल, आ दू श्रमिकक साझा उठानक दर निश्चय भेल।

काम आधा भेलापर नन्दूक सन्देश आयल—मंचक छोट डलिया आ बाँसक पटरा अगिला गाड़ीमे पहुँचबाक अछि। फकीराकेँ दोपहरिक बात याद छल। स्टेशनक व्यवस्थापक कहलक, “एखनहुँ एक घण्टा ठहरू; एक भारी खेप सम्भव अछि।” फकीरा अपन बहीक पृष्ठ सीधा कएलनि। “बारह बजे धरि जतेक काम लेल सहमति कएने छी, ओ पूरा करब। तकर बादक घण्टा नन्दूक अछि। जँ अहाँ चाही तँ अगिला दिनक तय काम लेल खबर दिअ।” व्यवस्थापक पुछलक, “अहाँक मोबाइलक उत्तर हर घड़ी भेटत?” फकीरा कहलनि, “राति हमरा गीत, भोजन आ आरामक समय अछि। खबर छोड़ि दिअ; भोरमे सुनब।”

पहरेदार एहिपर हँसल। “कामवला लोक आरामक समय लिखैत अछि?” फकीरा कहलनि, “अहाँक ड्यूटी समाप्त भेलापर केओ बिना कारण एतय रोके तँ?” पहरेदारक मुख बदलल। “हमर पालीक घंटा लिखल अछि।” “हमर लिखल नहि रहत तँ पाली नहि रहत? एहि स्टेशनपर देहक मालिकान सभकेँ नहि, ककरो-ककरो मात्र भेटल अछि।” ओ कठिन वाक्यक पछाति अपन काममे लगलाह। पर्चीक सही बिना उहाँ नहि गेलाह, मुदा उग्र भाषण देबाक लेल गाड़ी सेहो नहि रोकलनि।

उतारबाक मजदूरीक एक हिस्सा तत्क्षण देल गेल। फकीरा नोट गनि कऽ पर्चीक मद मिलौलनि। व्यवस्थापक बक्सा लेल अलग भुगतान नहि कएलक, कारण ओ काम एखन स्वीकृत नहि भेल छल आ उठाओलो नहि गेल। फकीरा बहीमे लिखलनि—दू बोरा, साझा

श्रम, प्राप्त रकम; प्रतीक्षा समयक देय विवादित। संगक युवक कहलक, “अहाँ लिखैत रहलासँ किछु लोक हमसभकेँ अगिला बेर नहि बजाओत।” फकीरा उत्तर देलनि, “संभव अछि। तें सभक ठाम पर हम निर्णय नहि लेब। मुदा तोहर आधा मजदूरी हमरा नाममे सेहो नहि लिखाएब।” ओ युवककेँ ओकर अपन रसीद लेबाक लेल ठमकबौलनि।

दुपहरि ओ नन्दूक बँधल बाँस आ कपड़ाक गठरी लेबाक लेल प्लेटफॉर्मक बाहरी छाहरिमे पहुँचलाह। नन्दू नट स्वयं अएलाह। हुनकर संग झिलमिल नहि छलीह; ओकर पढ़ाइक समय छल। नन्दू कहला, “जावेद कलन्दरक परछाईवला नव खेल देखलहुँ। ओ पशु नहि आनत, मुदा ओकरो पहिल आय कम अछि। हमरो छोट कार्यक्रमक आयोजक दाम घटाबए चाहैत अछि।” फकीरा कहलनि, “अहाँक पटरा पहुँचाएब हमरा जिम्मा अछि। दाम नब कम होएत तँ पहिले कहब। बच्चाक पढ़ाइ वा पशुक भूखक खर्च काटि कऽ मंचक दाम सस्ता नहि मानू।” नन्दू हुनका देखि कने हँसलाह। “अहाँक बात बोरासँ भारी अछि, मुदा उपयोगी।”

गठरी उठेबा पहिने फकीरा ओकर बाँधल गाँठ छूलनि। एक छोरक रस्सी ढील छल; ओ स्वयं नब गाँठ लगौलनि, आ नन्दू लगसँ कपड़ाक पट्टी लेलनि। “जँ मझधारमे खुलत, तँ कपड़ा फाटत आ दोसर आदमी घायिल भऽ सकैत अछि,” ओ कहला। नन्दू हाथ लगौने सहायता देलनि। दूनूकेँ छोट ठिठोली सूझल—जकर खेलमे बाँस नाचैत अछि, ओकर बाँस स्टेशनमे कतहु नहि नचए। हँसीक बीच सामान सम्हारल गेल, आ फकीरा अपन दुपहरिक तय दामक पहिल रसीद लेलनि।

गाड़ीक प्रतीक्षा मे हुनका कानमे दूरसँ कोनो पुरान लय उठल। ओ चुन्नीक एक कोना कन्धापर चढ़ा लेलनि, छड़ीक मुठिया हलुकसँ बजौलनि, आ नीकसँ याद नहि रहल गीतक दू पाँति धीरे गुनगुनौलनि। नन्दू पुछलनि, “ई कोन राग?” फकीरा कहलनि, “हमर माय साँझक बाट पर गबैत छलीह। रागक नाम नहि कहि सकब। हमरा याद अछि जे अन्तिम पाँतिक बाद ओ चुप भऽ जाइत छलीह, आ हम फेर सुनबाक लेल आग्रह करैत रही।” ओ दोसर बेर गुनगुनौलनि, मुदा शब्दक जागह स्वर रहि गेल। एहिमे कोनो जाँचक संकेत नहि छल, केवल हुनकर अपन घरक साँझ छल।

साँझसँ पहिने ओ बस-अड्डाक पट्टी दिस फेर गेलाह। हसन नब सिलल थैलीक हत्था खींचि जाँचैत छल। ग्राहक दाम देलाक बाद जुबैदा ओकरा सिआइक तीन ठाम देखौलीह। “जँ सात दिनक भीतर ई जोड़ खुलत, तकर मरम्मत फेर बिना नब मजदूरी,” ओ कहलीह, “मुदा थैली फेर अतिभारसँ फटत तँ ओ अलग नुकसान।” ग्राहक पहिले एहन शर्त नहि सुनने छल; ओ कागद लेल सहमत भेल। हसन बोलल, “आइ दू मरम्मतिक दाम भेटल, एक थैलीक नव अर्डर। अड्डाक पुरान रोजी एखनहुँ नहि।” जुबैदा बहीक दू घर देखौलीह — ‘ठामक अनुमति’ आ ‘मरम्मतिक कमाइ’। ओ दुनूकेँ जोड़ि पूर्ण विजय नहि लिखलीह।

कातमे ठाढ़ एक तरुणी पुछलक जे जुबैदा आश्रयक चाभीक काम सेहो करैत छथि, तखन एतय किएक आबैत छथि। जुबैदा सूई सुरक्षित डब्बामे रखैत कहलीह, “आश्रयक निर्धारित पालीमे भण्डार देखैत छी। एहि तीन पहरमे अपन सिलाइक काज अछि। दुनू ठामक समय अलग, दुनू मेहनतक जिम्मेदारी अलग।” तरुणी कहलक, “एक लोककेँ एतेक हिसाब किएक?” जुबैदा कहलीह, “जाहिसँ कियो ई नहि कहि सकय जे आश्रयमे सेवा करैत छी, तँ अपन रोजी छोड़ि दिअ; वा अड्डापर बैसैत छी, तँ आश्रयक चाभी पर भरोसा नहि।” हुनकर आवाजमे थकान छल, पर अपन निर्णय पर पछतावा नहि।

फकीरा हुनका सभकेँ अपन दिनक हिसाब कहि सुनौलनि। भोरक अनिश्चित प्रतीक्षा, तय बोरा, दुपहरिक नन्दूक गठरी, आ रातिक स्वतन्त्र समय। हसन पुछलक, “जँ काल्हि स्टेशनक व्यवस्थापक अहाँक नाम काटि देत?” फकीरा उत्तर देलनि, “तखन लिखित कारण माँगब। दोसर ठाम सेहो काम खोजब। एतेक सुलभ नहि अछि, मुदा हर बुलाहटपर दौड़ए लगब तँ अपन दिनक मालिक फेर ओ होएत। हमर पास मे तारीख अछि, खाली पेटक गारंटी नहि।” जुबैदा एहि वाक्य पर हँसि देलीह। “पासक कागद पातर, पेटक प्रश्न मोटगर।”

ओहि राति रेलचौकक चायदोकानपर फकीरा अपन पुरान बही आ नव प्रवेश-पर्ची एक संग खोललनि। सुधरल यात्रा-पासक वैधता, आजुक कामक भुगतान, नन्दूक दोसर खेपक पक्का दिन आ छूटल कमाइक दावाक शेष जाँच—चारि घर छल। हुनका स्मरण छल जे अदालत वा कार्यालयसँ सबटा समय लौटा नहि सकैत। मुदा नव स्टेशनक व्यवस्थापककेँ हुनकर ‘साँझ धरि उपलब्ध’ रहबाक अधिकार देल नहि गेल। ओ बहीमे साफ लिखलनि

—दुपहरि बाद अन्य काम, साँझ अपन। लिखित समयक एहि छोट रेखाकै ओ कोनो महान जीतक नारा नहि बनौलनि।

दुकानदारक बेटा पूछलक, “ओ अस्पतालक पाछाँ जे दू लोहेक आवाज सुनने रही, ओकर किछु खुलल?” फकीरा चाय घोंटैत कहलनि, “हम जे सुनने रही, तकर सही बयान अछि। जाँच अपन ठाम चलत। हम बिना देखल आदमीक नाम नहि देब। एहि स्टेशनक दिनकै ओही रातिक छाया बनाकऽ किएक जीबू?” लड़का ओकरा दोसर गिलास देबाक प्रस्ताव कएलक। फकीरा हँसलनि, “पहिलक दाम लिखू। दोसर पीबैत छी तँ दोसरक दामो।” लड़का कहलक, “अहाँक गीत सुनलापर चाय सस्ते पड़त।” फकीरा उत्तर देलनि, “गीतक दाम अलग। मुदा आजु मित्रता मे एक पाँति मुफ्त।” दूनू हाँसि पड़लाह।

दुकान बन्द होएबाक समय सरिता दास छोट काठक चाभी-बक्सा लऽ ओतए सँ गुजरलीह। ओ आश्रयक रसोइक पुरान कोठरीक दरबज्जा देखबाक लेल अगिला भोर जाएब सोचि रहल छलीह। फकीरा हुनका नमस्कार कएलनि; नैराक नाम नहि बजौलनि, कारण ओ जानैत छलाह जे केकरो शोककै प्रत्येक भेंटक प्रवेशपत्र नहि बनाओल जाए। सरिता पुछलीह, “अहाँक नव स्टेशन केहन रहल?” “रस्ता सही भेटल, मजदूरी किछु भेटल, समयक एक हिस्सा अपन रखि सकलहुँ,” ओ कहलनि। “आ अहाँ?” सरिता चाभीकै अँगुरीमे घुमौलीह। “जे दरबज्जा बहुदिन नहि खोलल, ओकरा खोलब की नहि—भोरमे देखब।”

फकीरा अपन छड़ी उठा ठाढ़ भेलाह। ओ सरिताकै अपन कागद देखएबाक आग्रह नहि कएलनि; सरितो हुनका अपन चाभीक पूरा कथा नहि सुनौलीह। चायदोकानक बाहर दू बाट अलग होइत छल—एक नव स्टेशन दिस, दोसर पुरान रसोइक ओसार दिस। कुकुरक पयरक निशान वा महाप्रस्थानक कथा एहि माटिपर प्रमाण बनि नहि उतरल; एतए लोक अपना-अपन समयमे निर्णय करैत छल। फकीरा जेबमे कार्ड सुरक्षित रखलनि, चुन्नीक लाल फूल कन्धापर ठीक कएलनि, आ गुनगुनाइत घर दिस चललाह। स्टेशन एखनहुँ ओतहि छल; काल्हि फेर काम माँगए पड़त। मुदा आइक साँझ ओ अपने चुनने छलाह।

अध्याय १९७ • पहिल कोठरी

विदेहपुर, २०४२। सरिता दास चाभीक गुच्छासँ सबसँ पातर चाभी अलग कएलीह। आश्रयक पुरान रसोइक पहिल कोठरीक ताला पर ओकर दाँत पहिने अटकल, फेर दोसर बेर घुमल। लकड़ीक दरबज्जा भीतरसँ किछु फुलि गेल छल; सरिता ओकरा काँधसँ नहि, हथेलीसँ धीरे धकेललीह। दरारसँ उजासक एक रेखा फर्शपर पसरल। ओ ठाढ़ रहलीह। कोठरीमे हवा बन्द छल, मुदा एहिमे नैरा नहि छलीह। ई साधारण सत्य कहबाक लेल ओतय कियो उपस्थित नहि छल।

भीतर खाली टीनक दू डब्बा, कपड़ा सुखेबाक पुरान डोरी आ देबालसँ टेकल एक छोट काठक तख्ता छल। चूल्हि कक्षाक दोसर भागमे हटाओल जा चुकल छल; ई कोठरी बहुत दिनसँ सामान रखबाक लेल मात्र खुलैत छल। सरिता खिड़कीक कुंडी उठौलीह। बाहर आश्रयक आँगनमे बासन माँजबाक आवाज छल। रुखसाना पहिने सँ कहलने छलीह जे काजक घंटा शुरू भेलापर ओ सहायता करए अओतीह, मुदा सरिता चाहने छलीह जे दरबज्जा पहिने स्वयं खोलथि।

एक कोनमे नीला कपड़ाक झोरा टाँगल छल। सरिता तुरन्त ओकरा नैराक झोरा नहि मानलीह। नैरा एहन रंगक झोरा उपयोग करैत छलीह, मुदा आश्रयक कतोक श्रमिकक लग नीला कपड़ा छल। झोराक गाँठ खोलिते भीतर एक खड़ियाक टुकड़ा, पानि नापबाक चिन्हवला पन्ना आ एक फाटल कापी भेटल। कापीक पहिल पृष्ठपर नैराक नाम आ रसोइक समय-जाँचक तिथि छल। सरिता ओकरा अपना छातीसँ नहि सटौलीह; मेज साफ कऽ ओकर ऊपर रखलीह।

रुखसाना घड़ी देखैत अएलीह। “हमरा आइ दुपहरिसँ पहिने भण्डारक हिसाब पूरा करबाक अछि,” ओ कहलीह। “दू घण्टा अहाँक संग रहि सकैत छी।” सरिता उत्तर देलीह, “दू घण्टे पर्याप्त। जँ अधिक लगत तँ हम दोसर दिन आबि जाएब। कोठरीक चीज जल्दीमे फैसला करबाक नहि।” रुखसाना झाड़न रखलीह। भीतरक धूरि उठि कऽ रोशनीमे घूमए लागल। ओ पुछलीह, “पहिने सफाई करब कि सूची?” सरिता कहलीह, “पहिने देखब, फेर लिखब, तकर बाद झाड़ू।”

मेजपर तीनटा कपड़ाक टुकड़ा पसारल गेल। पहिलपर राखल गेल रसोइक सार्वजनिक हिसाबसँ जुड़ल वस्तु: अनाजक पुरान माप, बासन धोनिहारक पालीक सूची आ पानीक वितरणक पन्ना। दोसरपर जकर मालिक स्पष्ट नहि: एक रुमाल, छोर टूटल कलम आ एक टिकट। तेसरपर नैराक नामवला कापी आ मोड़ल निजी लिफाफा। सरिता ककरो असली जीवनकेँ तीन ढेरीमे समेटबाक दावा नहि कएलीह। ई केवल एखनक सामान सम्हारबाक अलग-अलग निर्णयक व्यवस्था छल।

रुखसाना पालीक पन्ना उठौलीह। “एहि पर उर्मिलाक रातिक कामक उल्लेख अछि,” ओ कहलीह। सरिता कने ठमकलीह। उर्मिला सेहो आब जीवित नहि छलीह, आ हुनकर परिवारक बकाया पूरा चुकल नहि छल। पन्नामे कोन घड़ीक बासन धुलल, से लिखल छल; पारिश्रमिक देल गेल, से नहि। सरिता कहलीह, “एकर प्रमाणित प्रति भुगतान-जाँचक फाइलमे जाए। मुदा एही आधारपर ‘उर्मिलाकेँ सभ पैसा भेटल’ नहि लिखू।” रुखसाना पन्नाक किनारपर स्रोतक तिथि अंकित कएलीह।

दरबज्जापर जुबैदा देखाइ देलीह। हुनकर हाथमे भण्डारक चाभी नहि, गरम पानिक दू गिलास छल। ओ गिलास मेजपर राखि पुछलीह, “कोठरीक सामानमे आश्रयक चीज सेहो अछि। सभ घर लऽ जाएब तँ आगाँक रसोइकेँ अड़चन होएत।” सरिता स्पष्ट कहलीह, “आश्रयक वस्तु एतहि रहत। नैराक नाम लिखल वस्तु सेहो स्वतः हमर घरक नहि भऽ जाइत, जँ ओ काजक पंजी अछि। पहिने पूछब जे कागद ककर काजक, ककर अधिकारक।” जुबैदा बिना दोसर प्रश्न उठौने बासनक खाली टोकरी आनि देलीह।

रुखसाना फाटल कापीक बीचसँ एक पन्ना निकाललीह। ओहिमे नैरा आश्रयक भोरक भीड़मे कम पानि पाबएवला कोठरीसभक क्रम लिखने छलीह। पन्नाक नीचे एक स्त्रीक छोट वाक्य उद्धृत छल, मुदा ओकर पूरा नाम नहि। जुबैदा पुछलीह, “ई विवरण सार्वजनिक करबासँ पानि-वितरणक पुरान गलती बुझायल जा सकैत अछि?” सरिता पन्ना देखलीह। “गलतीक हिसाब जरूरी अछि। मुदा जे स्त्री अपन दुखक बात नैराकेँ एकान्तमे कहने छलीह, ओकरा सार्वजनिक सभाक गवाही मानि नहि सकैत छी। पानिक माप जाँचू, निजी वाक्य नहि छापू।”

जुबैदा तखने एकटा दोसर रास्ता सुझौलीह। “आश्रयक नल-खातामे दैनिक मात्रा लिखल अछि। ओकरा सँ वितरणक भेद देखल जा सकैत अछि। स्त्रीक निजी बात देबाक आवश्यकता नहि।” सरिता हँसलीह नहि, मुदा हुनकर मुँहक तनावट किछु ढील भेल। ओ सार्वजनिक पन्नाक संग नल-खाताक प्राप्ति-अंक लिखौलीह। “नैरा जँ जीवित रहितथि तँ की कहितथि, से हम नहि जानैत छी,” ओ कहलीह, “मुदा एतय जे दू कागद अछि, ओकर सत्यापन हम कऽ सकैत छी।”

दुपहरिक पहिने आश्रयक एक नव कर्मचारी पहुँचल। ओकरा निर्देश भेटल छल जे पुरान कोठरीक सूची छँटनीक बाद दानदाताकें भेजल जाए; सूचीसंग नैराक कामक कथा आ एक तस्वीर रहला सँ सहायता भेटबाक सम्भावना बढ़त। कर्मचारीक स्वरमे दबावसँ बेसी उत्साह छल। “लोक जनत जे एतय कतबा मनसँ सेवा भेल,” ओ कहलक। सरिता उत्तर देलीह, “रसोइ चलएबाक खर्च, श्रमिकक मजदूरी आ कोठरीक मरम्मतिक सूची पठाउ। नैराक चेहरा जोड़लासँ दान अधिक भऽ सकैत अछि, मुदा ओहि लेल बेटी अपन निजी तस्वीरक अनुमति देने छलीह, एहन कागद कतए अछि?”

कर्मचारी कहलक, “अहाँ माय छी; अहाँ स्वीकृति दऽ सकैत छी।” सरिता कुर्सीपर बैसि गेलीह। “माय छी, तँ हुनकर जीवनक सभ बातक मालिक नहि छी,” ओ कहलीह। “जकरा सार्वजनिक कामक स्वीकृत चित्र पहिनेसँ छपल अछि, ओकर सन्दर्भ अलग देखू। एहि लिफाफामे की अछि, से हम स्वयं नहि पढ़ने छी। नहि पढ़ितो ओकरा दानक सामग्री बनबए लेल नहि खोलब।” कर्मचारी कने देर ठाढ़ रहल, फेर खर्चक सार्वजनिक विवरण लेल अलग पन्ना माँगलक।

लिफाफाक बाहर नैराक लिखावट छल, मुदा सम्बोधनक अक्षर ओकरें धुँधला लागल। सरिता चश्मा साफ कएलीह। तिथि पढ़ल गेल; ककरा लिखल, से निश्चित नहि। ओकर मुहर तोड़बाक कियो आवश्यकता नहि छल। ओ एकटा सूखल, नब खाममे पुरान लिफाफा जसक तस रखलीह आ बाहिर लिखलीह—‘नैरा सम्बन्धी निजी वस्तु; सामग्री नहि खोलल गेल।’ एहि पंक्तिक अर्थ अधिकारक अन्तिम कानूनी फैसला नहि, केवल आइक सीमित कार्यविवरण छल।

कबीर दुआरपर अएलाह तखन सरिता ओकरा भीतर बजौलीह। ओ खिड़की लग ठाढ़ भेलाह, कोठरीक सामान नहि छूलनि। सरिता तीनटा ढेरी देखौलीह। “एहि कापीक पन्ना काजक अछि, एहि लिफाफामे निजी बात भऽ सकैत अछि,” ओ कहलीह। कबीर पुछलनि, “अहाँ चाहैत छी जे हम लिफाफा रखी?” सरिता उत्तर देलीह, “एखन नहि। पहिने एकर संरक्षणक ठाम निश्चित हो। तोहर संग नैराक सम्बन्ध हमरासँ भिन्न छल; तें तोरा केवल सूचित कऽ रहल छी, अनुमति माँगि नहि रहल छी।” कबीर सहमति देलनि।

कबीरक मनमे अपन अनपठाओल पत्रक खाम अएल, मुदा ओ ओकर उल्लेख नहि कएलनि। ओ पुछलनि, “नैराक फोनक की व्यवस्था भेल?” सरिता कहलीह, “फोन अलग सुरक्षित अछि। आइ हम ओकरा नहि खोलब। जँ कामक किछु सूचना ओकर भीतर अछि तँ तकरा पाबैकें उपयुक्त उपाय पर विचार करब; निजी सन्देश पढ़बाक उत्सुकताकें अधिकार नहि कहब।” कबीर खिड़की बाहर पानि भरैत बच्चासभ देखलनि। “हमर उत्सुकता सेहो अछि,” ओ स्वीकार कएलनि, “मुदा उत्सुकता एकटा सीमा नहि हटा सकैत।”

सीमातीर्थमे ओहि दिन मैत्री श्रेष्ठ एकटा दवाइक बक्साक बाहरक सील जाँचि रहल छलीह। काठक मेजपर पुरान नेपाली जारी-पत्र, ओकर हिन्दी रूपान्तर आ अस्पतालक प्राप्ति-बहीक खाली पन्ना राखल छल। किछु मास पहिने अनुवादमे ‘ढुलाई लेल छोड़ल’कें ‘अस्पतालमे प्राप्त’ बना देल गेल छल। ओहि त्रुटिसँ खेपक वास्तविक स्थान अस्पष्ट भेल, आ कम्प्यूटरमे सामान ‘पहुँचल’ मानल गेल। मैत्रीक आपत्ति दर्ज छल, मुदा संशोधित प्रविष्टिक प्रमाणित प्रति एखन हुनका नहि भेटल छल।

कार्यालयक लिपिक कहलक, “पुरान प्रविष्टि बन्द अछि। नव टिप्पणी जोड़ि देल जाए तँ काज चलत।” मैत्री पुछलीह, “बन्द कोन अर्थमे? अस्पतालक भण्डारपाल बक्सा गनने छलाह, की कियो केवल सूचना पओने छल?” लिपिक कम्प्यूटर दिस देखलक। “सामान निकलने तिथि निश्चित अछि।” “तखन तिथि प्रस्थानक घरमे रहए,” मैत्री कहलीह, “प्राप्तिक घरमे नहि। दुनू अंकक बीच जे दूरी अछि, ओ कागदक खाली जगह नहि, वास्तविक यात्राक समय अछि।”

कुमुदी अनुवादक पहुँचलि। ओ अपन पिछला अनुवादक टंकित प्रति आ संशोधनक टिप्पणीक सूची लऽ अएलीह। “जतय मूलमे जारी कएल गेल, ओतय हम जारी लिखब,” ओ कहलीह। “जतय गाड़ी रवाना भेल, ओहि ठाम रवाना। अस्पतालमे कोन दिन प्राप्त भेल, तकर गवाही अलग।” मैत्री पुछलीह, “जँ प्राप्ति-बही पुरान कारणेँ खाली अछि तँ?” कुमुदी उत्तर देलीह, “तखन खाली रहत। भाषा भरि कऽ बक्सा पहुँचा देब, ई अनुवादक काज नहि।”

कर्मचारी दस्तावेजक माथपर ‘प्रमाणित अनुवाद’ छापलक, मुदा नीचे केवल कार्यालयक नाम छल। मैत्री पन्ना ओकर हाथमे फेर देलीह। “कुमुदीक नाम, कार्य-दिन आ अनुवादक शुल्कक उल्लेख कतए?” कर्मचारी कहलक, “व्यक्ति-विशेषक नाम देलासँ पत्र लम्बा होएत।” कुमुदी किछु नहि कहलीह; हुनकर आँखि पर्चीपर छल। मैत्री उत्तर देलीह, “गलत शब्द लिखल गेल तखन ओकर जिम्मा ककर छल, पूछल गेल। आब शब्द सुधरल तँ श्रम ककर छल, से लिखबासँ पत्र भारी किएक?”

लिपिक अनुवादकक नाम आ अनुमोदित शुल्कक संख्या प्रविष्ट करए तैयार भेल, मुदा कहलक जे भुगतान आगाँक मासक बजटसँ होएत। कुमुदी अपन अनुबन्धक प्रति खोललीह। “काम पूरा करबाक दिनक बाद एतेक दिनक भीतर भुगतानक शर्त लिखल अछि,” ओ कहलीह। “आगाँक मासक अनिश्चित वचन तकर बदला नहि।” मैत्री कार्यालयक लेखापालकेँ बजबौलीह। लेखापाल जाँचि कऽ बतौलक जे मदमे राशि उपलब्ध अछि, केवल सही गलत स्तम्भमे लगल अछि। त्रुटि सुधरला पर कुमुदीकेँ भुगतान-पावती भेटल; रकम वास्तवमे हुनकर खातामे पहुँचल कि नहि, तकर पुष्टि अगिला बहीसँ होएबाक छल।

प्राप्ति-बही लेल अस्पतालसँ अलग फोन आयल। भण्डारपाल कहलनि जे विवादित पुरान खेपक सील-गिनतीक दू रसीद भेटल अछि, मुदा ताप-संरक्षणक एक समय-अन्तर रिक्त अछि। मैत्री तुरन्त पत्रपर ‘सभ औषधि सुरक्षित पहुँचल’ नहि लिखौलीह। ओ संशोधित अनुवादक संग रसीदक सीमा जोड़ौलीह—कागदमे प्रस्थान आ भण्डारमे प्रवेशक तिथि अब अलग अछि; दवाइक गुणवत्ताक पुरान जाँच अपूर्ण अछि। लिपिक

बड़बड़ाएल, “एकटा गलती सुधरैत चारिटा प्रश्न बढ़ि गेल।” मैत्री कहलीह, “प्रश्न पहिनहि सँ छल; कागद ओझरा देने छल।”

दुपहरिक बाद विदेहपुरक आश्रयमे सरिता नब कागदक चारि घर बनौलीह। पहिलमे लिखलीह—‘आश्रयक सार्वजनिक सम्पत्ति’; दोसरमे—‘श्रम आ भुगतानक सत्यापन योग्य पन्ना’; तेसरमे—‘निजी, बन्द राखबाक’; चारिममे—‘मालिक अथवा सन्दर्भ अस्पष्ट’। कबीर पुछलनि, “ई चौठ घरक वस्तु कतेक दिन पड़ी रहत?” सरिता कहलीह, “जतेक दिनमे उचित जाँच हो। जल्दीक सुविधा लेल अनुमानकें मालिकी नहि कहब। मुदा सदा बन्द राखि कऽ काजो रोकेब नहि।”

कबीर एक खाली डिब्बा उठौलनि। ओकर तलमे नैराक लिखावट सन दू अक्षर छल, मुदा रंग धुँधल छल। ओ कहला, “ई ओकर होएत?” सरिता पुछलीह, “तोरा निश्चित अछि?” कबीर डिब्बा घुमा कऽ देखलनि। “नहि।” “तखन एहि सँ कथा शुरू नहि करू,” सरिता कहलीह। कबीर डिब्बा चौठ ढेरीमे रखलनि। एहि छोट निर्णयमे हुनका अपने पर खिसिआहट सेहो अएल—किएक ओ एखनहुँ प्रत्येक वस्तुमे नैराक हाथक चिह्न खोजैत छथि? ओ उत्तर अपन भीतर रखलनि।

साँझ नजदीक अएल तँ आश्रयक युवती कर्मचारी फेर अएलीह। ओ दानदाताक ई-पत्रक छपल प्रारूप अनलीह। एहि बेर मुखपृष्ठपर नैराक फोटो नहि छल; खर्चक पाँच मद, बाकीक देय, कामक घण्टा आ सार्वजनिक सम्पर्कक पता छल। “किछु लोक कहत जे ई पत्र भावहीन अछि,” ओ कहलीह। सरिता पढ़लीह। “जे लोक भातक खर्च देत, ओ भातक संख्या बुझत। जकरा किसीक चेहरा चाही, ओकरा फोटो देबाक अधिकार स्वयं व्यक्तिसँ पूछबाक चाही।” युवती पुछलीह, “नैरा आब स्वयं उत्तर नहि दऽ सकैत छथि; तखन?” सरिता कहलीह, “तखन उत्तरक अभावकें अनुमति नहि लिखू।”

कर्मचारी प्रारूपमे एक स्थान रिक्त छोड़ने छल—‘नैरा स्मृति विशेष सामग्री’। सरिता ओकरा मेटेबाक आदेश नहि देलीह; कहलीह जे आश्रयक सार्वजनिक काजक प्रमाणित विवरण चाही तँ अलग सहमति-समीक्षा हो, निजी सामग्रीक जगह खाली राखल जाए। ओ प्रश्न उठौलीह, “एहि दानसँ रसोइक सफाइक महिला आ रात्रिक पहरेदारक बाँकी भुगतान कोन दिन होएत?” कर्मचारी रकमक खाता देखौलक। पहिल भुगतानक तिथि

निश्चित छल, शेष राशि स्रोतक स्वीकृतिपर निर्भर। सरिता कहलीह, “तखन ई दुनू अवस्था स्पष्ट लिखू। स्मृतिक बदला भविष्यक पक्का वचन मत बेचू।”

सरिता फाटल कापीक पृष्ठ फेर गनलीह। नैराक लिखल रसोइक समयक एक पृष्ठ सार्वजनिक जाँचमे उपयोगी छल, मुदा कापीक पछिला भागमे किछु अपूर्ण वाक्य छल, जकर सम्बोधन न निश्चित छल, न उद्देश्य। सरिता काजक पन्ना फाड़ि अलग नहि कएलीह। ओ पढ़बाक अधिकार सीमित राखैत आवश्यक पृष्ठक क्रमांकक सूची बनौलीह, आ मूल कापी सुरक्षित खाममे रखलीह। कागद नष्ट कएलासँ प्रमाण बाँचत नहि; सभकेँ खोलि देलासँ मनुष्यक निजता बाँचत नहि। दुनूक बीच सावधानीक काज छल।

कबीर कहला, “हम डरैत छी, काल्हि कियो कहत जे हम सभ सत्य नुकौने छी।” सरिता हुनका देखलीह। “कियो कहि सकैत अछि। तें हम की देखलहुँ, की नहि खोललहुँ, की सार्वजनिक कार्यक खाता अछि, सभक दिन लिखब। मुदा अपन बेटीक अधूर वाक्य सँ दोसरा लोकक उत्सुकता मेटेबाक बाध्यता नहि।” कबीर सहसा पुछलनि, “हमर पत्र जँ कखनो कियो पढ़ए चाहत तँ?” सरिता पुछलीह, “तोहर अपन निर्णय की?” ओ उत्तर देलनि, “एखन निजी।” “तखन ओ निजीए रहत,” सरिता कहलीह।

कोठरीक पुरान खिड़कीक चौखटमे एक पेच ढीला छल। सांझक हवामे पल्ला बारम्बार बजैत छल। कबीर पेचकस खोजि कसए लगलाह, मुदा काठक एक भाग गलि चुकल छल। जुबैदा कारीगरक मरम्मतिक बही लऽ अएलीह। सरिता कहलीह, “दरबज्जा पुनः बन्द होएबाक बाद यदि पानि भीतर रिसत तँ ई कागद खराब होएत। मरम्मतिक दाम जाँचू; निजी सामान लेल सुरक्षित अस्थायी जगह चाही।” जुबैदा सार्वजनिक भण्डारसँ भिन्न एक ताला लगाबय योग्य सूखल पेटी उपलब्ध करौलीह। ओकर चाभीक जिम्मा लिखल गेल; भीतरक विवरण सार्वजनिक नहि भेल।

आश्रयक खाता-बहीमे सरिता एक संक्षिप्त प्राप्ति लिखौलीह। ओहिमे नैराक नाम केवल ओहि वस्तुक पहिचान लेल छल जतय नाम पहिनेसँ लिखल भेटल; नैराक निजी भावना अथवा कोनो मृत व्यक्तिक कथित इच्छा कागदमे नहि गढ़ल गेल। जुबैदा प्राप्तिक प्रति लेलनि, कबीर संरक्षणक साक्षी रूपमे सही कएलनि, मुदा सामग्री खोलबाक

अधिकारक साक्षी नहि बनलाह। सरिता सोचलीह—सहीक रेखा छोट, ओकर सीमाकें बुझब भारी। तैं ओ साक्षीक नीचाँ भूमिका स्पष्ट लिखबौलीह।

ताला लगएबाक पहिने सरिता कोठरीमे फेर एक बेर घुर्लीह। काठक तरखा अपन ठाम छल, खाली डब्बासभ गनल गेल छल, नीला झोरा अलग लटकल नहि, सूखल पेटीमे सुरक्षित छल। ओ नैराकें सम्बोधित कोनो भाषण नहि कएलीह। माय होएबाक दुःख ओहि क्षण न छोट भेल, न महान। हुनका बेटी संग एक बेर साधारण भोजन खएबाक असम्भव इच्छा उठल। ओ आँगनसँ अबैत दालक गन्ध सूँघलीह, आ बिना आँखिमे आएल पानि नुकौने खिड़की बन्द कएलीह।

बाहर कबीर एकटा छोट कागदपर अगिला दिनक काज लिखैत छलाह। रसोइक खर्चक प्रति लएबाक, ढीला चौखट देखेबाक आ नैराक फोनक सुरक्षित संरक्षणक विषयमे बात करबाक। सरिता आखिरी पाँति पढ़लीह। “फोन आइ नहि,” ओ कहलीह। “काल्हि सेहो ओकरा केवल खोलबाक लेल नहि खोलब। पहिने तय करब जे प्रश्न कोन अछि, ककरा उत्तर देबाक अधिकार अछि, आ जे उत्तर नहि भेटत ओकरा हम केना स्वीकार करब।” कबीर कागद मोड़लनि। हुनका बुझायल जे अगिला दिनक कठोर प्रश्न स्थगित भेल अछि, समाप्त नहि।

साँझक उजासमे दरबज्जाक ताला छोट चमकल। सरिता चाभी अपन कपड़ाक झोरामे रखलीह, मुदा सामग्रीक प्राप्ति आश्रयक अधिकारित रजिस्टरमे रहए देलीह। ओ घर दिस चललीह तखन पुरान कोठरी पछाति रहि गेल। पहिल बेर ओकरा खोलबासँ नैरा वापस नहि अएलीह; ओकरा बन्द करबासँ नैराक जीवनक शेष अर्थो कैद नहि भेल। आइ एक कापी बचल, किछु श्रमिकक सत्यापनक बाट खुलल, आ निजी लिफाफा सार्वजनिक तमाशासँ बचल। एतबे हो सकल छल; एतबे आजुक निर्णय छल।

अध्याय १९८ • मृतकक फोन

विदेहपुर, २०४२। कबीर मेजपर पुरान सूती रुमाल पसारलनि आ ओकर बीचमे नैराक फोन रखलनि। काँचक एक कोनमे केश सन पातर दरार छल। ओ दरार कखन पड़ल, एकर उत्तर हुनका नहि बुझल छल। फोन बन्द छल, किन्तु ओकर भार अद्भुत रूपसँ चिन्हार लगैत छल; नैरा जीवित रहैत जे वस्तु सहजतासँ उठबैत छलीह, से आब कबीरक दुनू हाथ माँगैत छल। सरिता सामने बैसलीह। चाय ठण्ढा भऽ रहल छल।

पछिला दिनक कोठरीसँ आनल सूचीमे फोनक उल्लेख छल, मुदा ओकर भीतरक सामग्रीक नहि। आश्रयक युवा कर्मचारी शबनम एकटा पत्र लऽ अएलीह। नगरक स्मृति-मण्डली नैराक नामसँ जनसभाक आयोजन करए चाहैत छल। प्रस्तावमे लिखल छल जे हुनकर फोनमे बचल सन्देश, तस्वीर आ निजी बातचीतसँ ‘नव पीढ़ीक आवाज’ सुनाओल जाए। खर्चक मदमे माइक, परदा आ छपल पुस्तिका छल; अनुमति देनिहारक घर रिक्त छल। शबनम पत्र पढ़ि चुप रहलीह।

कबीर पहिने कहए चाहलनि—लोक नैराकेँ बिसरि नहि जाए। फेर हुनका याद अएल जे नैरा कतबो बेर समाचारक बीच लोकक नाम नुकौने छलीह। “आवाज सुनएबाक प्रस्ताव अछि,” ओ कहलनि, “मुदा ओ अपन फोनक आवाज सभकेँ सुनाए चाहैत छलीह की?” सरिता उत्तर नहि देलीह। ओ पत्रक खाली घरपर अँगुरी रखलीह। “जकरा पुछबाक छल, ओ आब उत्तर नहि दऽ सकैत अछि। एहि रिक्ततामे हम सभ अपन मनक उत्तर नहि भैर सकैत छी।”

शबनम कहलीह जे मण्डलीक सचिव फोन करैत रहैत छथि। हुनका लग एकटा पुरान सार्वजनिक चित्र अछि, मुदा ओ कहैत छथि जे निजी सन्देश बिना सभा ‘सच्चा’ नहि लागत। कबीर पुछलनि, “जँ हम मनाही करी तँ ओ कहत जे हम ओकर स्मृति छिपा रहल छी?” सरिता कहलीह, “कहत। मुदा सार्वजनिक कामक रसीद, रसोइक घण्टा, ओ जकरा स्वयं प्रसारित करबाक निर्णय लेने छलीह—ई सभ अलग चीज अछि। निजी संवादक मालिक सभ दर्शक नहि।”

फोनक संग एक पातर लिफाफा छल। कबीर ओकरा खोललनि नहि। एतय हुनकर अपन अनपठाओल पत्रक खाम नहि छल; ओ अलग निजी जगहमे ‘निजी—अनपठाओल’ लिखि राखल छलाह। एहि लिफाफामे फोन खरीदबाक पुरान पावती आ मरम्मतिक अपूर्ण विवरण छल। नैराक जीवनक सबहक अवधि एहि कागदसँ सिद्ध नहि होइत छल। सरिता खरीदक तारीख लिखलनि, मुदा फोनक भीतर कोन सन्देश अछि, तकर अनुमान सूचीमे नहि जोड़लनि।

शबनम पुछलीह, “फोन जँ बन्द रहत तँ ओकरा सुरक्षित केना राखब? ब्याटरी खराब भऽ जाएत; भीतरक काजक कागद सेहो नष्ट भऽ सकैत अछि।” प्रश्न व्यावहारिक छल। कबीर पहिने सँ मरम्मतिक दोकानपर जाएबाक सोचने छलाह। सरिता कहलीह जे यन्त्रक संरक्षण, सामग्रीक अनियन्त्रित नकल आ सार्वजनिक प्रकाशन तीन अलग निर्णय छथि। संरक्षणक उपाय बुझबाक लेल ओ सभ तकनीकी सहायता लेताह, मुदा अनजान दोकानदारकें फोनक सबटा सामग्री देखबाक अधिकार नहि देताह।

दुपहरिमे आश्रयक ओसारपर सभा लगल। तीन गोटे मात्र निर्णय करबाक लेल नहि, फरक-फरक सरोकार सुनबाक लेल। तारा कागदक दू गड्डी आनलीह—नैराक जीवित समयमे सार्वजनिक कार्य लेल जारी कएल रिपोर्टसभक प्रतिलिपि आ कार्यालयक अवशिष्ट भुगतान-पत्र। हुनका संग संकेत छलाह। “एहिमे जतबा सत्यापन अछि, ओहि लेल फोन खोलबाक आवश्यकता नहि,” तारा कहलीह। “मुदा निजी संवाद हमरा लग नहि अछि, आ ओहि अभावकें इतिहासक झूठो कमी नहि कहब।”

नगरक मण्डलीक सचिव सेहो अएलाह। हुनकर काँधपर कैमरा छल, मुदा शबनम दरबज्जापर कहलनि जे कैमरा भीतर बन्द रहत। सचिव कैमरा झोरामे रखि कहला, “हम सभ नैराक साहस देखाए चाहैत छी। एहन युवतीक जीवनक व्यक्तिगत रूप लोक बुझत तखन प्रेरणा भेटत।” कबीर हुनका देखलनि। “ककरा प्रेरणा?” ओ पुछलनि। सचिव हड़बड़ाइत कहला, “सभकें।” “तखन सभसँ पहिने ई कहू जे हुनकर लिखल निजी बात पढ़बाक अनुमति अहाँकें के देने अछि?”

सचिव प्रतिवाद कएलनि जे नैरा समाजक लेल काज कएने छलीह, तँ हुनकर लेखन सार्वजनिक धरोहर अछि। सरिता रसोइक खाता खोललीह। “एहि पन्नापर हुनकर सही

अछि; ई ओ काजक प्रमाण अछि जकर जाँच लेल ओ स्वयं प्रति बाँटने छलीह। मुदा ओ जकरा पत्र लिखने होइथि, ओकरो अपन निजता अछि। मृत्यु सँ सन्देश पाबनिहार लोकक अनुमति नहि मिटैत अछि।” सचिव पहिल बेर अपना तर्कक सीमा सुनलनि, मुदा तुरन्त सहमत नहि भेलाह।

“मुदा हुनकर माय आ साथी तँ अहाँ सभ छी,” ओ कहला। कबीरक भीतर किछु दुखल। ओ नैराक साथी रहबाक सुख आ हुनकर मृत्युक असह्य सत्य अलग करए चाहैत छलाह। “साथी छी,” ओ धीरे कहलनि, “तँ हुनकर बदला हम सभ बोलब—ई अधिकार कहाँसँ भेटल? कखनो ओ हमरा अपन एकटा प्रश्नक उत्तर नहि देलनि। हम ओहि मौनकें सेहो हुनकर अधिकार मानैत रही।” सचिवक कापीमे एहन प्रश्नक लेल पहिने सँ कोनो घर नहि छल।

आश्रयक दरबज्जा लग दू बच्चा पुरान घण्टीक तार ठीक करैत छल। एक बच्चा शबनमसँ पुछलक जे नैरा दीदीक नाम पर फेर खीर बनत की। शबनम हँसलीह। “खीर जे दिन रसोइक बजटमे होएत, ओहि दिन बनत। नामक कारणेँ खाली पेट भरि नहि जाएत।” सरिता पहिल बेर हलुक हँसलीह। सभाक भारी बातक बीच ई बात साफ छल—नैराक नामसँ दान माँगबाक प्रस्ताव आ आज रसोइ चलएबाक देय अलग हिसाब माँगैत छल।

तखन रफीक अएलाह। हुनकर हाथमे नब छपल परिचय-पत्रक दू मसौदा छल। ओ तारा लग भाषिक अभिलेखक बैठक लेल आएल छलाह, नैराक फोनक विषयमे बजाओल नहि गेल छलाह। सरिता हुनका बैसबाक जगह देलीह। रफीक कहला, “एहि मेजपर खाली घरक बात चलि रहल अछि? हमर कागदमे तँ दुनू घर मिला देने छल।” पहिल मसौदामे बोलीक स्थानपर ‘सुरजापुरी’ लिखल छल; समुदाय-परिचयक स्थानपर सेहो ओही शब्द अपनेसँ भरल गेल छल।

रफीक कहलनि जे हुनकर पुरखा अपन समाजक परिचय एक रूपमे राखने छलाह, आ हुनकर बोलीक नाम दोसर रूपमे बोलल जाइत अछि। दूनूकें एक बनबैत डिजिटल फारामक कर्मचारी स्थानीय सुविधाक नाम देने छल। “हम जँ अपन बोलीक नाम कही तँ लोक हमर सभ वंश, पेशा आ विश्वास केना तय कऽ देत?” ओ पुछलनि। “हमरा अपन

परिचय देबाक अवसर चाही; जे बात कहल नहि गेल, ओकर अनुमान अधिकारीक नहि।” संकेत मसौदाक गलती देखलनि।

एक कर्मचारी मोबाइलक स्क्रीनपर सुधार-खाना देखबौलक। ओ कहलक जे प्रणालीमे समुदाय-नामक विकल्प सीमित अछि; अलग पाँति लिखलासँ खोजबाक सुविधा घटत। रफीक अपन पुरान प्राप्ति-पत्र बाहर निकाललनि, जाहिमे एहि आपत्तिक तिथि दर्ज छल। “खोजबाक सुविधा लेल हमर मुँह बन्द करब?” ओ कहलनि। “दू पाँति चाही, आ जे शब्द हम स्वयं देब, से शब्द। बादमे कोनो वर्गीकरण करब तँ ओकर आधार आ जिम्मेदार व्यक्ति अलग लिखू।”

पद्मा बैठकमे पहुँचलीह तँ बोली आ समुदायक परिचय पर दू स्वतन्त्र घर रखबाक प्रस्ताव देखलीह। सरकारी मूल प्रारूप तुरन्त बदलि देबाक अधिकार कक्षमे ककरो नहि छल। ओ तय करबौलीह जे स्थानीय अभिलेखक प्रमाणित सहायक प्रतिमे दूनू घर अलग भरल जाएत, मूल प्रणालीक सीमाक टिप्पणी संग; औपचारिक सुधारक आग्रह नियत कार्यालयमे जमा होएत। रफीक अपन नाम आ अपन दू परिचय स्वयं लिखलनि। प्राप्ति-पावतीपर कर्मचारीक सही भेटल, किन्तु केन्द्रीय प्रणालीक बदलाव एखन शेष रहल।

“हम अपन आवाज देलहुँ,” रफीक कहलनि, “मुदा सभ अभिलेखमे हमर आवाज एखन पहुँचल नहि।” ओहि बातपर कबीर फोन दिस देखलनि। जीवित आदमी अपना परिचयक शब्द दुरुस्त करबा लेल एतय बैसल छलाह; मृतक स्त्रीक नाम पर दोसर लोक उनकर बिना कहने बात कहबाक अधिकार माँगि रहल छल। दुनू स्थिति एक नहि छल, मुदा प्रश्न एक दोसराकेँ कठोर बना रहल छल—ककर वचन ककर कहल मानल जाए?

रफीक अपन झोरासँ दोसर कागद निकाललनि। एतय पुरान नदी-नामक दू रूप छल—एक परिवारक मुखसँ सुनल ‘सउरा’, सरकारी प्रति पर ‘सौरा’। ओ हुनका नैराक नाम सँ सम्बद्ध एक पुरान कार्य-पत्रक क्रमांक देखौलनि। “नैरा हमरा कहलन्हि जे हम जे सुनलहुँ से लिखी; जे जाँचल नहि, तकरा निश्चित नहि कहि दी,” रफीक कहलनि। “एहि कागदमे हमर सुनेल ध्वनि अछि, पाछाँक पन्नामे सरकारी लिखावट। एके वास्तविक नदी सिद्ध करबाक प्रमाण एतयसँ नहि निकलैत।”

सचिव कहला जे स्मृति-सभाक पुस्तिकामे ‘नैराक खोजल नदी’ शीर्षक बहुत सुन्दर लागत। रफीक सीधा उत्तर देलनि, “नैरा खोजल नदी कहला पर जँ लोक नक्शा बनाओत, तखन भ्रम होएत। ओ हमर सुनेल शब्दकेँ सावधानीसँ दर्ज कएने छलीह। एहि सावधानीक श्रेय हुनका दिअ, नदीक खोजक कल्पित श्रेय नहि।” पद्मा दू स्रोतक तारीख आ वर्तनी संग-संग राखबाक अनुमति रफीकसँ पुछलीह। ओ केवल एहि द्विभाषिक नोटक सार्वजनिक अंशक अनुमति देलनि। पारिवारिक यात्रा-पत्रक निजी विवरण हटाएल गेल।

ओही समय मैत्री श्रेष्ठक फोन अएल। ओ अपन परिवारक पुरान ढुलाई-पत्रमे ‘ललबगेया’ नामक पाठ आ अनुवादक कुमुदीक श्रेयक नवीन संशोधनक प्रति पठौने छलीह। शबनम पत्र पढ़ि सुनौलीह। एहिमे अनुवादकक नाम, काजक तिथि आ शुल्क स्वीकृत भेल छल; वास्तविक बैंक-जमा सत्यापनक अलग प्रविष्टि अबहुँ प्रतीक्षामे छल। औषधिक पुरान खेपक ताप-संरक्षणक रिक्त समयक कारण गुणक निर्णय सेहो अपूर्ण छल। मैत्री विशेष आग्रह कएने छलीह जे एहि दू अपूर्ण बातकेँ ‘नैराक दस्तावेजसँ सिद्ध’ नहि लिखल जाए।

रफीक कहलनि, “ललबगेया एहि पत्रमे लिखल नाम अछि; एहि सँ ओकर आधुनिक मार्ग निश्चित नहि होइत। सउरा आ सौरा दूनू ओहि दोसर स्रोतमेसँ अछि। कथा बनबैत चारि शब्दकेँ एक्के जलधारामे मत बहाउ।” तारा मुस्की देलीह। “हम सभक सूचीमे अलग घर अछि, मुदा सभाक प्रस्तावमे सब एकटा चित्र बनि गेल छल।” सचिव किछु लज्जित भऽ अपन कापीक शीर्षक काटलनि। हुनका कागद पर दू छोट भेदक महत्त्व पहिने कखनो एतेक बड़ नहि लागल छल।

बाहरसँ हाँक अएल जे चाय बनि गेल अछि। रफीकक कपमे चीनी नहि छल; ओ अपन संग राखल गुड़क छोट टुकड़ी चबबैत छलाह। कबीर पूछलनि, “अहाँक उच्चारण अपन बोलीमे दर्ज होएत तँ कियो ओकरा बदलि नहि सकत?” रफीक हँसि कहलनि, “बदलबाक प्रयास तँ करबे करत। हम जे लिखलहुँ, ओकर प्रति हमरा लग रहत, एहि लेल फेर बोलि सकब। आवाजक मालिक होएब आवाजक झगड़ा समाप्त होएब नहि।”

सचिव पुनः फोनक प्रसंग उठौलनि। “एहन सार्वजनिक कागद कम अछि। लोक नैराकेँ मनुष्यमात्र नहि, आत्मीय रूपमे देखए चाहत।” कबीरक दृष्टि रुमालपर पड़ल। हुनका

नैराक किछु छोट व्यंग्य याद अएल, कोनो ठाम दहीक दामपर कहने हँसी, बरखाक बाद जुत्ताक कीचड़सँ भरल रहब। ओ स्मृति हुनकर अपन छल। ओकरा सार्वजनिक मंचपर कहबासँ दोष होएत से नहि; मुदा मंचक तालीक भूखमे ओ स्मृति सेहो बदलि सकैत छल।

कबीर कहलनि, “हम कखनो ओकरा हँसैत देखल बात अपन मनसँ कहि सकैत छी। मुदा फोन खोलि ओ जकरा अलग-अलग लिखने छलीह, ओकर पंक्ति बेचि नहि सकैत छी। जँ ककरो सन्देशमे ओ अपन भय लिखने छथि, आ हम जनसभामे पढ़ि दी तँ लोक ओकरा हुनकर जीवनक अंतिम अर्थ कहत। हुनकर जीवन एकटा अन्तिम वाक्य नहि छल।” सरिता कप टेबुलपर रखलीह। “आ हुनकर मृत्यु हमरा सभक अनुमतिक मोहर नहि,” ओ कहलीह।

ओतहि एक युवक प्रस्ताव देलक जे फोनक सामग्री पहिने निजी रूपसँ देखल जाए, ओतयसँ ‘निर्दोष’ वाक्य चुनि छापल जाए। संकेत पुछलनि, “निर्दोष ककर नजरिमे? सन्देशक दोसर व्यक्ति सेहो अपना पत्रकेँ निजी बुझने होएत। आ जँ निजी देखबासँ लोकक जिज्ञासा बढ़त तँ देखनिहार सभक संख्या कियैक बढ़ाएब?” युवक उत्तर देलक जे तकनीकी विशेषज्ञ फिल्टर लगा देत। शबनम कहलीह, “यन्त्र छाँटि सकैत अछि; सहमति गढ़ि नहि सकैत।”

व्यवहारिक समाधान पर सभ स्थिर भेल। फोनक बाहरी स्थिति, उपकरणक पहचान आ रखबाक जिम्मा सूचीबद्ध होएत; ओकरा बन्द सुरक्षित पेटीमे राखल जाएत। बैटरी आ भण्डारण-संरक्षणक विषयमे योग्य व्यक्तिसँ केवल प्रक्रिया-सलाह लेल जाएत, सामग्री खोलबाक अथवा नकल करबाक अनिर्बन्ध अनुमति नहि। सार्वजनिक श्रम-अभिलेख चाही तँ पहिने कार्यालय आ संबंधित श्रमिकक अपन प्रतिसँ मिलान कएल जाएत। जँ भविष्य मे आवश्यक कानूनी अथवा न्यायसंगत कारण उठत, तखन अलग समीक्षा करब; आजुक सभासँ अग्रिम स्वीकृति नहि।

सचिव कहला, “एहि सँ स्मृति-सभा फीका रहि जाएत।” रसोइक काज करैत जुबैदा बाहरसँ सुनि रहल छलीह। ओ भीतर अएलीह आ पूछलीह, “फीका माने की? ओ जे रात्रिक मजदूरीक सूची तैयार कएने छलीह, ओहि सूचीसँ हमर अधूर भुगतानक हिसाब खुलल। एहि बातमे कोनो प्रकाश चाही?” सचिव चुप। जुबैदा कहलीह, “हमर देय एखन

पूर्ण नहि मिलल अछि। कागदक सही हिसाब सार्वजनिक करबाक अछि, मुदा हमर निजी घरक चिट्ठी नहि।”

कबीर फोन उठा कऽ पेटीक भीतर रखलनि। चाभी देबाक प्रश्न उठल तँ सरिता कहलीह जे ककरो एकल अधिकार नहि होएत। यन्त्रक संरक्षणक संयुक्त प्रविष्टि रहत, पेटी खोलबाक कारण आ उपस्थित लोकक सीमा लिखल जाएत। ओ कबीरसँ पुछलीह जे साक्षी रूपमे सही करब स्वीकार छथि की नहि। कबीर सही कएलनि—‘बन्द यन्त्रक संरक्षण स्वीकार’—आ खुदे नीचे लिखलनि—‘भीतरक सन्देशक प्रकाशनक अनुमति नहि’। ओ दिनक पहिल निश्चय करि सकलाह जे अपन प्रेमकेँ सबदक रोक सेहो देल जा सकैत अछि।

रफीक अपना सहायक परिचय-पत्रक एक प्रति लऽ उठलाह। एक पुरान कर्मचारी हुनका रोकि पुछलक, “ई दूनू अलग घरक कागद मानल गेल, मुदा हमरा केन्द्रीय कार्यालयसँ कहबाक होएत जे नियम बदलि गेल?” रफीक कहला, “नियम बदलल नहि; हमर सही कथनक प्राप्ति भेल अछि। अहाँ बस एतबे सच लिखू। बाकी दावा पर हम फेर अएब।” कर्मचारी अपन शीर्षकमे ‘सम्पूर्ण समाधान’ काटि ‘स्थानीय पृथक अभिलेखन’ लिखलक। छोट संशोधन छल, मुदा एहिमे रफीकक बोलबाक वास्तविक अधिकार देखाइत छल।

मैत्रीक पत्रक प्रति कुमुदी धरि पहुँचबाक सूचना संझिया अएल। कुमुदी अपन नाम ठीक देखि प्रसन्न भेलीह, मुदा शुल्कक रकम बैंकमे पहुँचल कि नहि, से ओ स्वयं खातामे परखतीह। रफीक एहि समाचारपर कहलनि, “शब्दक नाम जेना अलग जाँचल, रुपैयाक बाटो ओहिना।” शबनम पत्र राखलनि। दू नदी-नाम, एक अनुवादकक श्रेय आ एक जीवित व्यक्तिक परिचय आज बिना कृत्रिम कथा बनौने अलग-अलग पहिचान पबैत छल।

साँझक समय सचिव बिना कैमरा खोलने विदा भेलाह। ओ कहला जे मण्डलीक प्रस्ताव फेर लिखताह—नैराक पूर्वस्वीकृत सार्वजनिक काम, अपूर्ण श्रमिक-देय आ सुरक्षित अभिलेखक पद्धति पर कार्यक्रम। कबीर कहला, “कार्यक्रमक पहिने मसौदा संबंधित लोककेँ पढ़ाएब। जकरा नाम वा आवाज देब, ओकर निर्णय सुनब।” सचिव एतबे

स्वीकार कएलनि। कार्यक्रम होएत अथवा नहि, निश्चित नहि छल; मुदा निजी फोन खोलि सन्देश प्रसारित करबाक प्रस्ताव ओहि दिन वापस लेल गेल।

आँगनमे सरिता पानीक घैला उठौलनि। कबीर ओकरा लेबए बढलाह, मुदा सरिता स्वयं दू डेग चललीह। “दिअ,” ओ कहलीह, “बाकी रस्ता अहाँ लऽ चलू।” एहि सामान्य बाँटमे कहियो नैरा ओतहि ठाढ़ रहि ठट्टा करैत छलीह। आब ओहि स्थानपर खाली उजास छल। कबीर घैला थम्हलनि। प्रश्न नैरा कि चाहैत छलीह, से अनुमान करबाक नहि; आज जीवित लोक की सावधानी राखि सकैत छथि, से छल।

राति कबीर अपन ‘निजी—अनपठाओल’ पत्रक खाम फेर देखलनि, मुदा खोललनि नहि। ओ अपन छोट कापीमे लिखलनि जे नैराक फोनक भीतरक सन्देश नहि पढ़ल गेल, नहि छाँटल गेल, नहि प्रकाशन लेल सौंपल गेल। लिखित प्रविष्टिक बाद ओ किछु देर कलम पकडने बैसल रहलाह। स्मृतिमे नैराक आवाज अएल—ठीक-ठीक शब्द नहि, सिर्फ बात करबाक पुरान लय। ओ जानैत छलाह जे मनक ई सुनाइ प्रमाणित ध्वनिमुद्रण नहि; एहि एकान्त आवाजकें छापबाक कियो जरूरत नहि।

पेटीक चाभी अलग सुरक्षित रहल, ओकर प्राप्ति आश्रयक बहीमे। बाहरी खिड़की लग कोनो पतंग पंख मारैत छल। कबीर बल्बक रोशनी कम कएलनि, जाहिसँ ओ बाहरक रातिमे रास्ता बुझि सकए। हुनका बुझायल जे ककरो आवाज बचेबाक नामपर ओकर सभ दरबज्जा खोलि देब आवश्यक नहि। नैराक फोन बन्द छल। नैरा मृत छलीह। एहि दुइ सत्यक बीच कबीरक प्रेम आब एकटा ठोस निषेध बनि ठाढ़ छल—ककरो निजी सन्देश ओकर अनुपस्थितिमे सार्वजनिक इतिहास नहि बनत।

अध्याय १९९ • बिना नामक कथा

विदेहपुर, २०४२। अभिलेख-कक्षक मेजपर एकटा लिफाफा राखल छल। ओकर मुँह गोंदसँ बन्द नहि, सूतक पातर धागासँ बान्हल छल। ऊपर नामक जगह खाली आ नीचाँ दू शब्द—‘कथा लेल’। पद्मा धागा खोलबाक पहिने खिड़कीक कुंडी लगौलीह, जेना बाहरक हल्ला भीतरक बात पर अधिकार नहि जमा ले। कक्षमे सरिता, तारा आ संकेत छलाह। चाय उबड़ैत छल, मुदा कियो लिफाफा छूबए नहि बढल।

लिफाफा आननिहार व्यक्ति ओसारमे बैसल छल। ओ नाम गुप्त रखबाक आग्रह कएने छल, चेहरा छिपएबाक नाटक नहि। भीतर आबि ओ कहलक, “हम जे देखलहुँ तकर कथा कहब। मुदा एहि कथाक संग हमर घर, हमर परिवार अथवा हमर आजुक रोजीक पहचान नहि जोड़ू। अहाँ सभ अपन पुस्तकमे एकटा नाम खाली छोड़ि सकैत छी की?” पद्मा उत्तर देलीह, “नाम छोड़ि देब सम्भव अछि। मुदा जे बात जाँचल नहि, ओकरा प्रमाणित कहि छापब सम्भव नहि।”

“ताहि लेल तँ एतय आयल छी,” ओ व्यक्ति कहलक। आवाजमे थकान छल, किन्तु आग्रह स्पष्ट। “एक बेर हमर घरक नाम सहायता-सूचीक पाछू छपि गेल छल। जकरा देखब छलै, ओ सभ ओतय पहुँचि गेल। फेर हम अपन कथा सँ बेसी अपन ठाम बुझबैत रहलहुँ। आब हम चाहैत छी जे पन्ना हमर नहि, बातक बोझ उठाउ।” सरिता हुनका पानि देलीह। कोनो प्रश्न नहि पुछलनि जे ओहि घटना सँ के चोट खएलक।

पद्मा मेजपर तीनटा पन्ना पसारलीह। पहिलपर बोलनिहारक स्वीकृत शब्द; दोसरपर ओहि शब्दसँ जाँचब योग्य कागदक सूची; तेसरपर प्रकाशनक सीमा। “अहाँ चाही तँ पहिल पन्ना पढ़ि फेर काटि सकैत छी,” ओ कहलीह। “दोसर पन्नामे हम सभ घटना नहि, जाँचबाक प्रश्न लिखब। तेसर पन्ना पर अहाँक निर्णय बिना कोनो कथन सार्वजनिक नहि होएत। मुदा भविष्यमे कानूनी जाँच उठत तँ हम पूर्ण गोपनीयताक असम्भव वादा नहि करब।”

व्यक्ति कनी बेर सोचलक। “अहाँ हमरा कहि रहल छी जे डर समाप्त नहि भेल?” तारा कहलीह, “डरकें नियमक मोहरसँ समाप्त कहब तँ नव धोखा होएत। हम केवल एतय के

सुनत, के प्रति रखत, आ की बाहर जाएत, से सीमित कऽ सकैत छी।” ओ व्यक्ति लिफाफाक धागा हाथमे लेने रहल। ओकरा पहिल बेर गुप्त रहबाक आग्रह कोनो अपराधक पूर्वाभास नहि, एकटा विचारित चुनाव लगल।

ओसारक बाहर चाउर धोएबाक पानि नालीमे उतरि रहल छल। सरिता खिड़कीसँ देखलीह जे एक बच्चा भीजल माटिमे काठक चक्का घुमबैत अछि आ ओकर माय तीन बेर हाँक दैत छथि। भीतर बैसल व्यक्ति ओहि आवाजपर अनायास मुस्कराएल। ओ कहलक, “हमरा घरमे सेहो लोक अछि, जिनका लेल हम रोज घुरैत छी। अहाँ सभ हमरा गुमनाम बनौने छी, अदृश्य नहि। हमरा मोल चुकाएब पड़ैत अछि, खाइब पकाएब पड़ैत अछि, गलती सेहो होइत अछि।” सरिता बुझलीह जे एकटा कथा बचेनाइ जीवनकें प्रमाणक नमूना बनेनाइ नहि।

ओ कथन आरम्भ केलक। अस्थायी नकल-कामक समय ओकरा एकटा श्रम-पंजीक पृष्ठ देल गेल छल। ओ पृष्ठमे हाजिरीक तिथि छल, मुदा दू दिनक घण्टाक खाना रिक्त छल। कियो मौखिक कहल छल जे ‘ऊपर सँ’ हिसाब जुड़ि जाएत। ओ व्यक्ति पुछने छल जे रिक्त पाँति ककर आदेशसँ अछि। स्पष्ट उत्तर नहि भेटल। “हम रिक्त पाँति देखलहुँ,” ओ कहलक, “ककरो ओकरा मेटैत नहि देखलहुँ। ई फरक अहाँ लिखू।”

संकेत तुरन्त पेन्सिल रोकलनि। “ओहि पंजीक क्रमांक याद अछि?” ओ व्यक्ति एकटा पुरान प्राप्ति-पर्चीक नम्बर कहलक, मुदा पर्चीक प्रति अपन लग नहि छल। तारा अपन अभिलेख सूची पलटलीह। मिलैत क्रमक एक प्राप्ति दर्ज छल; मूल श्रम-पंजी ओहि फोल्डरमे नहि। “एतय पर्चीक आवन सिद्ध अछि,” तारा कहलीह, “रिक्त घण्टाक बात एखन कथन अछि।” बाहरसँ आवाज अएल, “तखन ई लिखबाक काज की?” पद्मा दरबज्जा खोलि कऽ उत्तर देलीह, “जाँचबाक बाट बनब, पूरा फैसला नहि।”

संकेत अपन बहीमे ओहि पर्चीक क्रमांकक बगल छोट गोल निशान लगौलनि। “ई हमरा पहुँचल कागद अछि, मूल पंजी नहि,” ओ फेर कहलनि। तारा सहमति देलीह जे प्रति मँगाओल जाए तँ जारी करनिहार, प्रति बनेबाक तिथि आ ओकरा प्राप्त करनिहार अलग चिन्हित हो। पुरान बाढ़मे भीजल कागदक बदला कतेको बेर साफ नकल चलल छल;

साफ अक्षर स्वयं सत्यक अन्तिम साक्षी नहि। गुमनाम व्यक्ति एहन बारीकी पहिने उबाऊ बुझैत छल, मुदा आइ ओकर वाक्य बचबाक उपाय ओहीमे देखैत छल।

बाहर प्रश्न करनिहार नगर समितिक एक सहयोगी छल। ओ कहलक जे बिना नामक आरोप छापल गेल तँ संस्था अपन उत्तर कोना देत। सरिता प्रतिवाद नहि, प्रस्ताव रखलनि—सम्बन्धित कार्यालयसँ ओहि क्रमक श्रम-पंजी, सुधारक आदेश आ भुगतान-पत्रक प्रति लिखित रूपमे माँगाओल जाए। ककरो नाम दोषी कहबाक प्रश्न एखन नहि। सहयोगी पूछलक जे कथाक वक्ता सभामे किएक नहि अबैत। सरिता कहलीह, “कारण सार्वजनिक मंचपर उपस्थित होएब सत्य कहबाक एकमात्र रास्ता नहि।”

पूनम चिड़ीमार ओहि समय दरबज्जाक कात बोरा-ढकन लऽ पहुँचलि। मोट जूटमे सुई धँसएब कठिन छल, तँ ओ अँगुरीमे पित्तरक छोट अँगूठी पहिरने छलीह। रुखसानाक रसोइ लेल नव ढकनक किनारी ठीक करबाक आदेश भेटल छल। ओ हिसाब देबाक लेल एलीह, गुप्त कथन सुनबाक लेल नहि। कक्षमे चुप्पी देखि पूछलीह, “सुईक आवाजसँ आपत्ति अछि तँ बाहर बैसि जाउ?” सरिता हँसलीह। “सुईक आवाजसँ एतय कागद फाटत नहि।”

पूनमक पुरान पेशाक स्मृति लिखबाक प्रस्ताव फेर उठल। एक युवक कहलनि जे चिड़ीमार समुदाय पर गीत आ चित्रसहित प्रदर्शन करब सुन्दर लागत। पूनम सूत दाँतसँ नहि, छोट कैंचीसँ काटलीह। “गीत सुन्दर होएत,” ओ कहलीह, “मुदा पहिले ई बताउ जे हमर दादीक कथनक कोन अंश अहाँ जनैत छी। ओ जे चिड़ै पकड़बाक तरीका बतबैत छलीह, तकरा हम स्मृति कहि राखलहुँ। आइ हम जीवित पक्षी नहि, चाउरक बोराक ढकन सिबैत छी। दुनूक बीच हमर अपन निर्णय अछि।”

युवक कहलनि जे फोटो पर ‘परम्परागत चिड़ीमार जाल’ लिखि देल जाए। पूनम ओहि क्षण जूटक ढकन ओकरा हाथमे देलीह। “एकरा ओ नाम देब तँ काल्हि हमर ग्राहक मानत जे हम ओकरा शिकारक वस्तु बेचैत छी। रुखसानाक रसोइक चारि बोराक नाप लिखल अछि, दाम लिखल अछि, पाछूक खेपक भुगतानक रसीद अछि। जाल सन बनावट देखकर पुरान पेशा आजुक पेशा नहि बनि जाएत।” युवक ढकन फेर रखि देलक।

पद्मा दू अलग विवरण तैयार कएलीह। पहिलमे पूनमक अनुमतिसँ पारिवारिक मौखिक स्मृतिक एक सीमित अंश—दादी सँ सुनल बात, प्रत्यक्ष साक्ष्य नहि—राखल गेल।

दोसरमे वर्तमान सिलाइक काम, वस्तुक उपयोग, नाप आ भुगतानक स्रोत। पूनम अपन बच्चीक नाम आ तस्वीर दूनू विवरणसँ हटबौलीह। “ओ स्कूलमे पढ़ैत अछि,” ओ कहलीह, “ओकरा एकटा प्रदर्शनक पात्र बनेबाक निर्णय हम नहि करब।” एहि बेर युवक स्वयं फोटो खींचबाक प्रस्ताव फाड़ि देलक।

ओसारमे चिड़ै चहचहाएल तँ पूनम बाहरी छज्जाक दिस तकलीह। हुनका अपन दादीक आवाज याद अएल, जे बरखासँ पहिने पक्षीक उड़ान देखिकऽ छप्पर समेटबाक कहैत छलीह। ओ स्मृतिमे अपन पारिवारिक ज्ञानक गन्ध छल, मुदा अपन बच्ची लेल हुनकर चाहना दोसर छल—ठीक समयपर मजदूरी, सुईक चोट लागल तँ उपचार आ पढ़बाक खाली साँझ। ओ फेर ढकनक फाटल कोनमे टाँका दैत बैसि गेलीह।

एहि बीच सोमरी हेम्ब्रम दू प्रति अनुबन्ध लऽ पहुँचलि। पाछुक भाषिक बैठकीक बाद सन्थालीमे तैयार कएल गेल मुख्य शर्तसभक मसौदा दलक पढ़ल सदस्य आ प्रशिक्षित सहयोगी देखलने छलाह। एक वाक्यमे मजदूरी कटौतीक कारण एखनहुँ अस्पष्ट छल। सोमरी कागद देखौलीह—मूल वाक्य आ घरक भाषामे बुझाओल अर्थ आमनेसामने। “हम सभ हस्ताक्षरक विरोध नहि करैत छी,” ओ कहलीह, “अर्थ नहि बुझि हस्ताक्षर करबाक विरोध करैत छी।”

ठेकेदारक प्रतिनिधि संग आयल छल। ओ चिन्तित स्वरमे कहलक जे बहुभाषी प्रति छपबैत-छपबैत कामक मौसम बीति जाएत। सोमरी अपन दलक दू साथीकेँ देखलीह। एक युवकक घर ऋण छल आ ओ जल्द काज चाहैत छल। “अहाँक जल्दी हम बुझैत छी,” सोमरी कहलीह, “मुदा जँ कटौतीक अर्थ नब सन्थाली पाठमे नहि अछि, तँ अहाँ ई नहि कहि सकैत छी जे सभ जानि-बुझि मज्जूर केलक। प्रस्तावक समय लिखू, हम सभ उत्तर देब।”

प्रतिनिधि कहलक, “अनुवाद तँ अहाँ लोक अपने करैत छी, ओकर दाम किएक?” सोमरी ठकासँ हँसलीह। “अपने भाषा बजब घरक काज अछि; ठेकेदारक अनुबन्धक दोष खोजब, दू रूपक मिलान करब आ श्रमिकसभकेँ बुझायब नियत समयक श्रम अछि। एकरा प्रेमक दान कहि कऽ ककरो पेट भरल?” कुमुदी सेहो बैसलीह। ओ स्पष्ट कएलीह जे

सन्थालीक शुद्धताक अन्तिम प्रमाण ओ नहि देलीह; हुनकर काज मूल प्रशासनिक भाषा आ मैथिली रूपक अन्तर चिन्हित करब छल।

हिसाबक कापी खुलल। सोमरीक बैठकी, सहयोगीक जाँच-समय आ कुमुदीक अलग भाषिक श्रम तीन मदमे दर्ज भेल। प्रतिनिधि पहिल किस्त देबाक लिखित स्वीकृति देलक आ परीक्षण पूरा भेलापर शेष दामक तिथि लिखलक। कियो पूरा भुगतान भऽ गेल, एहन घोषणा नहि कएलक। सोमरी रसीदपर एकदम नीचाँ जोड़बौलीह—‘अनुवादक पारिश्रमिक, मजदूरी नहि’। हुनकर साथीसभ अपन-अपन प्रति रखलनि; ककरो सहमति दोसरक नामपर नहि चढ़ल।

गुमनाम कथन देनिहार व्यक्ति कक्षमे होइत ई सभ सुनैत रहल। ओ धीरे कहलक, “हमर पंजीमे खाली घर छल। एतय खाली घरमे शब्द घुसबैत छी।” पद्मा उत्तर देलीह, “कखनो खाली घर सही जगहपर छोड़ब सेहो जरूरी अछि।” सोमरी हुनका नहि पुछलनि जे ओ के छथि। ओ अपन रसीद सम्हारि बाहर गेलीह; तखन व्यक्ति अपन कथाक दोसर अंश कहए तैयार भेल।

“जखन हम पहिने प्रश्न उठौने रही, एक कर्मचारी कहने छल जे दू दिनक घण्टा बादमे भरि देल जाएत। हम ओकर नाम जानैत छी, मुदा ओ अपन आँखिसँ पंजी बदललक से नहि देखलहुँ। ओहि दिनक बाद हमकाँ नकलक ओहि मेजपर काज नहि भेटल। ई दुनू बातक बीच सम्बन्ध अछि की नहि, से हमरा नहि बुझल।” सरिता कहलीह, “तखन जतेक देखलहुँ ततेक कथामे रहत। काज नहि भेटबाक कारण अलग जाँचब।”

व्यक्ति चाहैत छल जे ओकर घरक बस्ती आ ओहि दिनक परिधानक विवरण सेहो हटि जाए। संकेत कहलनि जे एतेक हटौलासँ स्रोतक जाँच कठिन भऽ सकैत अछि।

“सार्वजनिक कथामे हटाउ,” व्यक्ति कहलक, “जाँच लेल आवश्यक तिथि आ क्रमांक हम बन्द पर्चीपर देब, मुदा हमरा पहिले बताउ पर्ची के देखत।” तारा प्राप्तिक प्रक्रिया स्पष्ट कएलीह—सीमित जिम्मेदार, प्रत्येक अवलोकनक प्रविष्टि, स्वतंत्र प्रतिक अधिकार नहि। व्यक्ति एक प्रति अपन लग रखबाक शर्तपर सहमत भेल।

साँझ धरि रफीकक बोलीसँ सम्बन्धित पुरान पत्रक प्रति पहुँचल। ‘पनार’ नामक उच्चारित रूपक सँग स्थानीय लिपिबद्ध वर्तनीक भेद छल। एक सहयोगी सभाक कथामे

नदीक प्रवाहक सुन्दर वर्णन जोड़बाक प्रस्ताव कएलक। रफीक स्वयं पहुँचि कहला, “हम जे बजलहुँ, ओकर ध्वनि हमर बोलीक अछि; एहि सँ नदीक समूचा नक्शा नहि बनत। ध्वनि सुनल, लिखल रूप आ भूगोलक दावा अलग-अलग कागद चाही।” पद्मा मूल स्रोतक बगलमे हुनकर उच्चारणक टिप्पणी रखलीह।

मैत्री श्रेष्ठक पुरान परिवहन-पत्रक नकलमे ‘परोला’ लिखल छल। कुमुदी ओहि नामक पाठ आ सम्भावित ध्वनिक भेद चिन्हित कएलीह। पत्रमे औषधि-दुलाईक अन्य तिथि सेहो छल, मुदा स्थाननाम देखिकऽ सभ तिथिक अर्थ एक नहि बनि जाइत। मैत्री दूरभाषपर कहलीह, “पुरान पत्रमे लिखल शब्दकेँ जतेक जाँचि सकैत छी, ततेक लिखू। एहि नामसँ वर्तमान बाट सिद्ध करब हमर काम नहि।” कुमुदी अपन पढ़ल अंशक पारिश्रमिकक मद सेहो अलग चढ़ौलीह।

दूरभाष बन्द कएला पर कुमुदी अपन कापीमे दू रेखा खींचलीह। एक दिस ‘पनार’क उच्चारित ध्वनिक नोट, दोसर दिस ‘परोला’क पुरान पत्रक पाठ। कोनो तीर दू नामकेँ जोड़ैत नहि छल। रफीक हँसि कहला, “जतए तीर नहि चाही, ओतए लोक तीर बना दैत अछि।” मैत्रीक परिवहनक दावा आ रफीकक मौखिक स्मृति दुनू अपन-अपन स्रोतक सीमा लऽ चलल। पद्मा ओहि रिक्त ठामकेँ रिक्ते रहए देलीह; एहि बेर रिक्तता भूल नहि, बचाव छल।

सभाक एक युवक अधैर्यसँ पुछलक, “कथा छापब की खाली हर शब्दक पाछाँ चेतावनी लिखब?” सरिता कहलीह, “कथा लोकक जीवनक बाँचल समयसँ बनैत अछि; चेतावनी ओहि समयकेँ झूठ होएबासँ बचबैत अछि।” तारा ओकरा गुमनाम व्यक्तिक पहिल वाक्य सुनौलीह, जाहिमे ओ अपन नाम बिना सुनल जाएबाक बात कहने छल। युवकक चेहरा बदलल। “तखन एहिमे रोमाञ्च किछु नहि?” ओ पुछलक। पद्मा मुस्की देलीह। “रोमाञ्चक अभाव कोनो मनुष्यक अभाव नहि।”

पद्मा स्वीकृत मसौदा आवाजे पढ़लीह। ओहिमे लिफाफा, रिक्त घण्टाक पाँति आ उत्तर नहि भेटबाक प्रसंग छल; घरक ठाम, परिधान आ पहिचान खोलि सकनिहार छोट संकेत नहि छल। व्यक्ति दू वाक्य बदलौलक। पहिलमे ‘मजदूरी चोरि भेल’क बदला ‘मजदूरीक पूरा हिसाब देखबाक अवसर नहि भेटल’ लिखल गेल। दोसरमे ‘हमरा निकालि देल’क

बदला 'ओहि मेजपर फेर काम नहि भेटल'। ओ कहलक, "हम अपन क्रोध घटा नहि रहल छी; जे नहि जनैत छी से नहि कहि रहल छी।"

प्रकाशनक अनुमति लिखबाक समय तारा स्पष्ट पूछलीह—कथाक कोन अंश, कतेक प्रति, कोन ठाम? व्यक्ति सामुदायिक पाठशालामे सीमित पाठ आ अभिलेख-पुस्तिकामे बेनाम मुद्रण स्वीकार केलक; तस्वीर, ध्वनिमुद्रण आ मूल बोलबाक पहिचान दऽ सकनिहार विवरण अस्वीकार। प्रकाशनक पहिने अन्तिम प्रति फेर पढ़बाक अधिकार राखलक। संकेत स्वीकृति-दिन दर्ज कएलनि। नाम नहि लिखब कथाकें सबहक सम्पत्ति बना देबाक अनुज्ञा नहि छल।

कार्यालय दिस भेजबाक निवेदन अलग बनल—निर्दिष्ट क्रमक श्रम-पंजी, दू दिनक समय-गणना, सुधारक आदेश आ वास्तविक भुगतानक विवरण जाँच लेल उपलब्ध कराओल जाए। एहिमे गुमनाम कथनकें प्रमाणित आरोपक रूपमे नहि चढ़ाओल गेल। नगर सहयोगी पत्र पढ़ि कहलक जे उत्तर देबाक अवधि निश्चित होअय। तारा समय लिखलीह, प्राप्ति लऽ अएबाक जिम्मा स्वयं लेलनि। व्यक्ति चाहलक जे एहि सार्वजनिक निवेदनमे ओकर घरक कोनो इशारा नहि होए। एतय हुनकर बात मानल गेल।

पूनम तैयार ढकन समेटैत कहलीह, "आज हमर दुन्नू पन्ना अलग भेल। मुदा जे रसोइ एखन नव ढकन लेल देय छैक, ओ पैसा समयपर देब?" रुखसानाक लिखित प्राप्ति आ तय भुगतानक तिथि हुनका पढ़ि सुनाओल गेल। पूनम कहलीह, "ई हमर काजक परिणाम अछि। दादीक कथा सुन्दर होएबाक कारण एहि तिथिक दाम नहि बढ़त, घटत सेहो नहि।" ओहि वाक्यपर सभ हँसलाह। ककरो जीवनमे स्मृति आ मजदूरी अलग रहितो एके हाथ सँ चलैत छल।

सोमरी घर घुरबाक पहिने ओहि युवकसँ भेटलीह जकरा शीघ्र काज चाही छल। ओ कहलक जे बिना पूर्ण अनुवाद प्रतीक्षा करबाक सामर्थ्य ओकर लग कम अछि। सोमरी ओहि बाधा मना नहि कएलीह। "आइ जतेक अर्थ साफ भेल, ओहि कागदक प्रति संग राखू। अहाँक हँ कहब अहाँक अधिकार अछि, हमर हँ नहि," ओ कहलीह। युवक पूछलक जे पहिल अनुवादक-किस्तक रकम सचमुच पहुँचत की नहि। सोमरी उत्तर देलीह, "लिखित स्वीकृति पहुँचल अछि। रुपैया पहुँचबाक बाद भुगतान कहब।"

सन्ध्याक अन्तिम उजासमे गुमनाम व्यक्ति अपन स्वीकृत पन्ना फेर पढ़लक। ओहि पन्नामे ओकर नाम नहि छल, मुदा शब्द ओकर अपन स्वरक लगैत छल। “जँ अगिला बेर हम किछु आरो कहब चाही, तँ ई पन्ना हमरा विरुद्ध बन्द दरबज्जा नहि बनत ने?” पद्मा कहलीह, “नव बातक नव जाँच होएत। आजुक सही कहल बात काल्हिक सभ बातक गारन्टी नहि। आ आजुक स्वीकृति काल्हि अहाँक निजी जीवनक मालिक नहि बनत।”

पद्मा मेज साफ करैत एकटा चारि-खानावला पुरान पृष्ठ निकाललीह। एक खानामे प्रत्यक्ष देखल बात, दोसरमे सुनल, तेसरमे ओकरा सँ निकालल अनुमान, चौठामे कथाकारक कल्पनाक स्थान रहबाक छल। ओ एखन किछु भरलीह नहि। अलग-अलग लोकक पन्ना, पुरान नदीक नाम आ गुमनाम कथन एकट्ठा भऽ गेल छल; मुदा सभ एक जातिक सत्य नहि। अगिला दिन एहि भेदक पढ़ाइ होएबाक छल।

व्यक्ति विदा होएबाक समय लिफाफाक खाली धागा फेर माँगलक। सरिता आश्चर्यसँ पूछलीह, “एहि सूतकेँ की करब?” व्यक्ति कहल, “घरक कापी बाँधब। कागदक मुँह बाँधल रहब आ कथा कहब—दुनू एके बेर सम्भव छैक, से आइ जानलहुँ।” ओ सूत हथेलीमे लपेटि बाहर निकलि गेल। पद्मा सार्वजनिक पन्नापर केवल कथनक क्रम आ सहमतिक सीमा लिखलीह। एक नाम सुरक्षित रहल; जाँचक प्रश्न खुलल रहल; कथा, बिना मालिक बदलने, कहबाक बाट पाबि गेल।

अध्याय २०० • शब्दक अन्तिम जाँच

विदेहपुर, २०४२। पद्मा कागदक चारि पातर पट्टी काटि मेजपर रखलीह। पहिलपर लिखलनि—‘प्रत्यक्ष’; दोसरपर—‘श्रुत’; तेसरपर—‘अनुमान’; चौठपर—‘कल्पना’। रातिक ओससँ खिड़कीक काँच धुँधला छल। मेजक कोनमे काल्हिक गुमनाम लिफाफाक सूतसँ खसल एक छोट रेशा लागल रहि गेल छल। पद्मा रेशाकेँ सरका कऽ कागदक कोन उठौलीह।

तारा कक्षमे अएलीह तँ चारू पट्टी देखिकऽ पुछलीह, “आजु कथाक किताब नहि, हिसाबक कक्षा?” पद्मा हँसलीह। “कथाक किताबे लेल। जे लोक अपन आँखिसँ देखल, ओकरा सुनल बातक बगलमे राखि देब तँ दुनूक मोल बिगड़त। जे सुनल, ओकरा झूठ कहि देब सेहो अन्याय। कल्पना हटाओलासँ कथा मरि जाएत, मुदा कल्पनाकेँ प्रमाण बनौने लोक मरि सकैत अछि।” सरिता चाय लऽ अएलीह। ओ पुछलीह जे नैराक पुरान समाचारमे ओकर अपन अनुमान कतय रहत। पद्मा कहलनि, “जतय ओ अपन अनुमान कहने अछि, ओतहि।”

संकेत पहिल पन्ना खोललनि—गुमनाम व्यक्तिक श्रम-पंजीक प्रसंग। काल्हि ओ व्यक्ति रिक्त घण्टाक दू पाँति देखबाक कथन देने छल, मुदा पंजीक मूल प्रति तखन कक्षक लग नहि छल। संकेत कहला, “ई व्यक्ति जे देखल से ओकर प्रत्यक्ष अनुभव; हमर लेल प्राप्त कथन। हम एहि पन्नामे ‘मूल पंजीमे दू पाँति रिक्त छल’ लिखब तँ अपन देखल नहि बातकेँ प्रत्यक्ष बना देब।” तारा बगलमे कार्यालयकेँ पठाओल निवेदनक प्राप्ति-पर्ची राखलीह। “ई पर्ची प्रत्यक्ष अछि—कार्यालय निवेदन स्वीकार केलक। उत्तरमे की सिद्ध होएत, से एखन नहि।”

पाठशालाक युवक जगत ओहि भेदपर खिसियाएल। काल्हि ओ कथा पढ़ि कहने छल जे एतेक सावधानीमे रोमाञ्च नहि बाँचत। आइ ओकर हाथमे नाटकक मसौदा छल। ओ पुछलक, “जँ हम रिक्त पाँतिक अगल-बगल अन्हार आ फुसफुसाहट लिखी, तँ की ई झूठ होएत?” पद्मा ओकर पन्ना पढ़लीह। ओहिमे एक कर्मचारी पंजी लुकबैत देखाओल गेल छल। “अन्हार अहाँ बना सकैत छी, नाटकमे ओकर ठाम अछि,” ओ कहलीह, “मुदा

जकरा किओ देखल नहि, ओकरा मूल घटनाक कर्मचारी कहि देब नहि। कल्पनाक पात्र आ जाँचमे आयल व्यक्ति अलग रहत।”

सरिता जगतकेँ चाय देलीह। “नाटकमे सत्य केवल घटना नहि, डर सेहो होइत अछि,” ओ कहलीह। “मुदा डरक रङ्ग लगाकऽ ककरो वास्तविक घर तक पुलिस पठा देब, ई नाटकक अधिकार नहि।” जगत कागद मोड़ि कऽ कहलक जे ओ दृश्य रखत, किन्तु कर्मचारीक रूप काल्पनिक आ मूल विवादसँ असम्बद्ध होएत; आरम्भमे पात्रसभक कल्पित होएबाक बात स्पष्ट रहत। पद्मा चौठ पट्टी ओकरा देलीह। युवकक प्रश्न समाप्त नहि भेल।

एहि बीच आशा भूमिज एकटा पुरान टीनक डिब्बा लऽ अएलीह। डिब्बाक ढकन ढीला छल, तँ ओ रबरक पट्टीसँ बाँधने छलीह। खननक्षेत्रसँ हटि कऽ अलग-अलग ठाम रहएवला परिवारसभक भाड़ा, औषधि, यात्राभाड़ा आ रुकल कमाइक रसीद ओ पहिनेसँ जुटा रहल छलीह। आइ तीन परिवार अपन-अपन पन्ना जाँचबाक लेल हुनका संग पठौने छल। आशा पहिने पट्टी खोललीह, फेर पूछलीह, “एहि चारि खानामे घर छोड़बाक दुःख कोन खानामे जाएत?”

पद्मा तुरन्त उत्तर नहि देलीह। “जे दुःख अहाँ अपन जीवनमे भोगलहुँ से अहाँक प्रत्यक्ष अनुभव अछि। दोसर परिवारक दुःख हुनकर कथनसँ सुनब। एहि सँ नुकसानक हर रकम अपने-आप सिद्ध नहि होइत।” आशा कहलीह, “तखन दुःख लिखबाक ठाम आ खर्च लिखबाक ठाम अलग चाही।” ओ पहिल परिवारक पर्ची निकाललीह। एक पन्नामे अस्थायी कोठरीक भाड़ा छल, दोसरमे ओहिठाम पहुँचबाक गाड़ीक किराया। काम बन्द भेलाक दिनक दावा अलग सादा कागदपर लिखल छल। ओ बिना मिलाने रकम नहि जोड़बाक पक्षमे छलीह।

पहिल परिवारक वृद्धा कक्षमे प्रवेश कएलीह। हुनकर पोता पर्ची पढ़ि सुनबैत छल। वृद्धा कहलीह, “हमरा घर घुरएब मन अछि, मुदा घुरबाक नामपर जँ फेर धूर आ पत्थरक आवाज भेटत तँ नब घर काहे छोड़ब?” आशा कहलीह जे मूल घरक अवस्थाक स्वतन्त्र जाँच बाकी अछि। कियो ओहि वृद्धाक अस्थायी भाड़ाकेँ घर-वापसीक स्वीकृति नहि मानत। पोता चाहैत छल जे सम्पूर्ण परिवारकेँ एके क्षतिपूर्ति मिले; वृद्धा जवाब देलीह,

“हमर औषधिक खर्च अलग अछि, तोहर पढ़ाई छूटबाक गिनती अलग। एक अंकमे हम सभ मिटि जाएब।”

दोसर परिवार अपना सम्बन्धीक घरमे बिना किराया रहि रहल छल, मुदा घरेलू काज आ खेतक दिहाड़ी छोड़ए पड़ल छल। तेसर परिवारक एक सदस्य कमाइ लेल दूर गेल, तकरा घुरबाक भाड़ा आ आजुक निवास अलग सवाल छल। नगर समितिक सहयोगी कहलक, “एकटा कुल रकम देल जाए तँ सुनवाई आसान होएत।” आशा टीनक डिब्बाक ढकन सीधा रखि कहलीह, “कुल बनाउ, मुदा भीतरक भेद नहि मेटाउ। जेकर लग किरायाक रसीद नहि, ओकर हानि शून्य नहि; आ जकरा किरायाक रसीद अछि, ओकर सभ दावा प्रमाणित सेहो नहि।”

पद्मा कागदक पहिल दू पट्टी आशाक आगू सरकौलीह। परिवारक अपन कहनाइ सुनल साक्ष्यक रूपमे दर्ज भेल, उपलब्ध रसीदक रकम प्रत्यक्ष देखल दस्तावेजक रूपमे। ‘खननक कारण सभ खर्च भेल’ ई वाक्य अनुमानक पट्टी लग गेल, कारण प्रत्येक परिवारक समय, स्थान आ हानि अलग जाँचबाक छल। आशा अपन हाथसँ ‘अस्थायी निवास—प्रमाणित भुगतान’ लिखलीह, आ दोसर शीर्षक देलीह—‘दावा—जाँच बाकी’। पहिल परिवारक भाड़ाक दू रसीदक जोड़ पोता कएलक; आशा फेर गनलीह। दुनू जोड़ मिलल तँ वृद्धा अपन चिन्ह लगौलीह।

एहि बीच एक अर्धे पुरुष पूछलक, “रसीदक रकम मानल गेल तँ घर घुरबाक काज आब शुरू?” आशा कहलीह, “अहाँक पत्र सुनवाईक सूचीमे चढ़ल, एखन जमीन देखबाक तिथि तक निश्चित नहि। घुरब चाही वा नब निवासक दावा करब चाही, ई अहाँक फैसला रहत। हम अहाँक सँग हिसाब लिखि सकैत छी, अहाँक बदला घर चुनि नहि सकैत।” ओ अपन रजिस्टरमे परिवारक पसिन्नक अगल-बगल खाली ठाम छोड़लीह। खाली ठाम एहि बेर लापरवाही नहि, भविष्यक अधिकार छल।

जगत ई दृश्य देखि अपना नाटकमे एक पात्रक वाक्य बदललक। पहिने पात्र कहैत छल, ‘सभ बेघर लोक घर घुरि गेल।’ आब लिखलक—‘कागदमे घुरबाक बाट खुलल अछि, पयर एखन कतय जेत, से लोक अपने कहत।’ आशा पढ़ि कऽ कहलीह, “एतबा नीक, मुदा पयर चलबाक बाट सुरक्षित छैक की नहि, से जाँच अलग राखू।” जगत फेर

एक शब्द काटलक। नाटकक पन्ना पर जितबा कम चमत्कार रहि गेल, ओकरा ओतबे अधिक सजीव मनुष्य देखए लागल।

दुपहरिसँ पहिने तुलसी ताजपुरियाक फोन अएल। परिवहनक मजदूरसभ बकाया पालि-भत्ता आ विश्रामक समय लेल हड़तालपर छलाह। अस्पतालसँ एक रोगीकेँ निर्दिष्ट उपचार लेल दोसर केन्द्र लए जेबाक आवश्यकता उठल छल। अस्पतालक कर्मचारी आग्रह करैत छलाह जे गाड़ी तुरन्त चलाओल जाए। तुलसी कहलीह, “चालकक बिना अनुमति खाली गाड़ी चलत नहि, आ रोगीक नाम प्रचारमे देलासँ इलाज नहि होएत। हम अस्पतालक पुष्टि, चालकदल आ हड़ताल समितिक निर्णय तीनू चाहैत छी।” पद्मा कागद समेटि हुनका लग गेलीह।

फाटकक आगू चालकसभ अपन गाड़ीक चाभी कपड़ाक झोरामे राखि बैसल छलाह। हरिचरण पासवान पंजीमे पछिला पालिक विश्राम-समय देखौने छलाह। एक युवक कहलक, “आजु एक रोगीक नामपर गाड़ी चलेत, काल्हि सभ व्यापारी अपना सामानकेँ रोगी कहत।” तुलसी ओहि डरकेँ छोट नहि कएलीह। ओ कहलीह, “एहि लेल लिखित अपवाद चाही, जकर आरम्भ आ अन्तक घड़ी तय रहत। रोगी लेल सुरक्षित यात्रा आ मालिक लेल नियमित ढुलाई एकटा काज नहि।”

अस्पतालसँ चिकित्सकीय जाँचक लिखित सूचना पहुँचल। कागदमे स्थानान्तरणक आवश्यकता छल, मुदा कक्षमे रोगीक गोपनीय विवरण पढ़ि सुनाओल नहि गेल। सलमा सम्बन्धित परिजनसँ अनुमतिक सीमा बुझा कऽ अएलीह। नियुक्त वाहनक परीक्षणपर एक चक्का फेर देखबाक आवश्यकता निकलल; तुरन्त चलाओलासँ खतरा छल। तुलसी दोसर जाँचल वाहनक उपलब्धता पुछलीह। हरिचरण कहला जे एक चालकक विश्राम पूरा नहि, मुदा दोसर प्रशिक्षित चालक तय समय लेल उपलब्ध भऽ सकैत अछि।

हड़ताल समितिक प्रतिनिधि शर्त रखलक—यात्रा अस्पतालक पत्रपर, निर्धारित समयमे, रोगीक सँग आवश्यक सहायक मात्र, आ लौटबाक घड़ी पंजीमे। ई यात्राक बहाने कोनो माल, कार्यालयी कागद अथवा निजी सवारी नहि जेत। चालककेँ अतिरिक्त जोखिमक दाम लिखित भेटत; बकाया भत्ताक मुद्दा हड़तालसँ नहि हटत। मालिकक

प्रतिनिधि आपत्ति कएलक, “एक यात्रा लेल एतेक लिखापढ़ी?” हरिचरण चाभी हाथमे तौलैत कहला, “जे दिन दुर्घटना होइत अछि, ओहि दिन ई लिखापढ़ी सभकेँ चाही।”

तुलसी प्रस्तावमे एक पाँति आरो जोड़ौलीह—अपवाद केवल एहि रोगीक चिकित्सकीय स्थानान्तरण धरि; आगूक प्रत्येक माँग लेल फेर अलग निर्णय। समिति अनुमोदन देलक, चिकित्सक यात्राक सुरक्षित अवस्थाक पुष्टि कएलनि, आ परिजन अपन सहमतिक प्रति रखलनि। गाड़ी चलल तँ हड़तालक कपड़ा फाटकपर ओहिना टाँगल रहल। तुलसी ओकरा हटेबाक नहि कहलीह। नियमित मजदूरीक विवादक समाधान एतेकसँ नहि भेल छल, मुदा रोगीक नियत यात्रा एक क्षण लेल सम्भव भेल।

गाड़ी अस्पतालक दोसर केन्द्र धरि पहुँचि गेलाक सूचना भेटल, उपचारक परिणाम नहि। तुलसी ओही शब्दमे लिखलीह—‘स्थानान्तरण सम्पन्न, उपचार-स्थिति चिकित्सकीय गोपनीय’। मालिकक प्रतिनिधि ई कथन प्रेसमे ‘हड़ताल समाप्त’ कहि पठबए चाहलक। हरिचरण ओकर फोन रोकलनि। “हम एकटा रोगी लऽ गेलहुँ, अपन दावा बेचि नहि अएलहुँ,” ओ कहला। समिति लिखित अपवादक प्रति लोकक सूचना-ठामपर लगौलक, रोगीक परिचय झाँपि कऽ। एतय सहानुभूति हड़ताल तोड़बाक युक्ति नहि बनल।

पद्मा फेर अपन चारि पट्टीक कक्षमे लौटलीह तँ तारा महानन्दाक पुरान पत्रक प्रति निकालने छलीह। ओ नाम नसीमा आ रफीकक पारिवारिक सन्देशमे आएल छल, आ अमीरक लग कमाइ पठेबाक शुल्कक अलग हिसाब छल। एक नकलनवीस सुझाव देलक जे एहि नदीक नामसँ विदेहपुर धरि धन-पठौनिहारक मार्गक नक्शा बना देल जाए। रफीक पन्ना देखि कहला, “पुरान पत्रमे लिखल नामसँ पारिवारिक स्मृति भेटैत अछि; रुपैया कोन सेवा, ककर हाथ, कतेक शुल्क काटि पहुँचल, से दोसर कागदसँ सिद्ध होएत।”

नसीमा अपन बेटी लेल किताबक जिल्द सिएबाक काजसँ धुरैत छलीह। ओ कहलनि जे पत्रक एक घरेलू सम्बोधनक अनुवाद पहिने गलत पढ़ल गेल छल। “जँ सम्बोधन गलत बुझल, प्राप्तकर्ताक नाम सेहो बदलि सकैत अछि,” ओ कहलीह। अमीर तीन अलग रसीदक प्रति निकाललनि—रकम पठबैत काल, सेवा-शुल्क कटैत काल, आ रकम

पहुँचबाक प्राप्ति। तिथि अलग छल। ओ सम्पूर्ण खाताकेँ एकट्ठा ‘पहुँचल धन’ कहबाक बदला प्रत्येक घरक सहमतिसँ अलग जाँच जारी रखलनि।

पद्मा पूछलीह, “तखन महानन्दा कोन श्रेणी?” रफीक उत्तर देलनि, “मूल पत्रमे लिखल शब्द प्रत्यक्ष देखल जा सकैत अछि। हमरा परिवार ओकरा जे अर्थमे कहैत छल, से हमर सुनल स्मृति। ओहि आधारपर आजुक पैसा कोन बाट गेल, से अनुमान होएत। आ जँ हम नदीकेँ बोलैत पात्र बना दी, तँ ओ साहित्यिक कल्पना।” नसीमा मुस्करीलीह। “नदी कविता लिखए सँ मना नहि करत, मुदा हमर बेटीकेँ भेटएवला पैसाक नामपर कविता नहि लिखू।”

श्याम मल्लिकक झोरासँ एहि बेर दू छोट नमूना निकलल। एकटा माछ घेरबाक बाँस-पाटक गाँठ छल, दोसर पुरान बहीक फाटल पन्नाक सुरक्षित नकल। विनोद केवर्त ताहि पन्नामे ‘चिलोन’ देखौलनि। आन बहीमे ‘चिलौन’ लिखल छल। काल्हिक युवकक उत्साह फेर उठल—“दुनू एक नदीक नाम होएत, ध्वनि बदलल!” विनोद धीरे कहला, “भऽ सकैत अछि, नहि सेहो। पुरान वस्तुक नाम, जलक नाम आ मछघेरक ठाम अपने-आप समान नहि।”

श्याम बाँसक गाँठ हाथमे रखि बुझौलनि जे माछ रोकबाक जाल, तरकारी रखबाक टोकरी आ पयर धराबएवला चचरीक पाट सभ बाँससँ बनैत अछि, मुदा उपयोग आ जोखि अलग अछि। विनोदक पुरान पत्रमे मछघेरक सामग्रीक हिसाब छल; ओहि सँ चिलोन आ चिलौनक भौगोलिक एकता सिद्ध नहि होइत। पद्मा दुनू शब्द मूल वर्तनीसहित अलग नकल कएलीह। तारा कहलीह जे नब माप आ ठामक प्रमाण भेटे बिना एक नदीक पट्टी दोसरमे नहि सटाओल जाएत।

जगत पूछलक, “हम एहि दू शब्द पर गीत लिखि सकैत छी?” विनोद हँसलाह। “गीत लिखू। मुदा गीत गाएल गेलापर अधिकारी ओकरा जलकरक सीमा नहि मानथि, बस।” जगत अपन नाटकमे नदीक दू आवाज लिखबाक सोचलक, मुदा ओहि दृश्यकेँ कल्पनाक पट्टीपर रखबाक प्रतिज्ञा केलक। श्याम नमूनासभ फेर अलग-अलग झोरामे रखलनि; ठोस वस्तु अपन काज लेल छल, रहस्यक सजावट लेल नहि। कक्षमे जमल खिचाव हलुक भेल।

पद्मा आब सामुदायिक पाठ लेल मसौदा उठौलीह। पहिल अनुच्छेदमे गुमनाम व्यक्तिक कथन छल—“हम श्रम-पंजीमे दू दिनक घण्टाक खाना रिक्त देखलहुँ।’ ओकर आगू स्पष्ट लिखल गेल जे ई सम्बन्धित व्यक्तिक बताओल अनुभव अछि, सम्पादकक देखल मूल पंजी नहि। दोसर अनुच्छेदमे कार्यालयसँ प्राप्ति-पर्चीक पुष्टि; तेसरमे जाँच बाकी रहबाक सूचना। जगत पुछलक जे एतेक टिप्पणीमे कथाक लय नहि टूटत? पद्मा कहलीह, “जतय लयक कारण ककरो दोष सिद्ध भऽ जाए, ओतय लय कनी रुकि सकैत अछि।”

सरिता ओहि पन्नाक शब्द धीरे-धीरे पढ़लीह। हुनका नैराक लिखबाक रीति याद अएल—कखन समाचारक छोट पर्चीमे ओ घटना आ प्रश्न अलग रंगसँ चिन्हित करैत छलीह। सरिता ओ स्मृतिमे अपन बेटीक आवाज सुनि सकैत छलीह, मुदा एकरा नैराक नव सन्देश अथवा ओकरा लगसँ भेटल प्रमाण नहि बनौलीह। ओ कहलीह, “हमरा नैराक नाम ई पन्नामे जोड़बाक आवश्यकता नहि। ओकर जे लिखल अछि, ओ ओतहि रहत; जे हम आइ बुझलहुँ, से हमर बात।” कक्ष एक क्षण शान्त भेल।

तारा कार्यालयक प्रत्युत्तरक लिफाफा लऽ अएलीह। उत्तरमे केवल निवेदन प्राप्त होएबाक पुष्टि आ मूल पंजी उपलब्ध कराबए लेल समय माँगल गेल छल। जगत तुरन्त कहलक, “आब तँ मानल गेल जे पंजीमे गड़बड़ी अछि?” पद्मा ओकरा लिफाफा अपने पढ़बौलीह। ओ सिर हिलौलक। “नहि, केवल निवेदन सुनल गेल अछि।” गुमनाम व्यक्तिक नाम ई उत्तरमे कतहु नहि छल। तारा प्रसन्न भेलीह जे जाँचक बाट बढ़ल अछि, मुदा प्रमाणक फैसला एखन दूर अछि।

आशा भूमिज अपन डिब्बा समेटबाक पहिने तारा लग तीन परिवारक अलग अभिलेखक प्रति छोड़लीह, प्रत्येकपर सम्बन्धित व्यक्तिक अनुमतिसहित। एहि बेर कुल खर्चक जोड़पर ‘अन्तिम क्षतिपूर्ति’ नहि लिखल छल। पहिल परिवारक उपलब्ध भाड़ाक प्रमाण मिलान भऽ गेल; दोसरक छूटल कमाइक गणना लेल सहयोग चाही; तेसरक यात्रा-पत्रक एक तिथि पुनः जाँचबाक। आशा कहलीह, “आब हमरा सुनवाईमे तीनू बात अलग कहए देब। मुदा कोन परिवार घुस्त, ओकर निर्णय एखन ककरो लेखनाधिकारमे नहि।”

तुलसीक दूरभाष फेर बजल। चालक सुरक्षित घुरि अएल छल, चालकक अतिरिक्त यात्राभक्ताक प्राप्ति-पत्रपर हस्ताक्षर बाकी छल। हड़ताल समितिक सभा साँझमे फेर

होएत। ओ कहलीह, “गाड़ी धुरल से प्रत्यक्ष सूचना, रोगी ठीक भेल से हमर जानकारी नहि, भत्ता देल गेल से एखन लिखब झूठ।” हरिचरण फोनपर कहला जे अपन पालि पूरा भेलाक बाद हुनका विश्राम चाही, आ समिति एहि एक यात्राक कारण अन्य गाड़ी चलएबाक आदेश नहि मानत। तुलसी समय लिखि पर्ची टाँगि देलीह।

पाठशालामे साँझक छोट बैठक शुरू भेल। पद्मा चारि शब्द फलकपर लिखलीह आ सभकेँ अपन वाक्य सही ठाम राखबाक कहलीह। एक बच्ची कहलक, “हम पोखरि काल माछ देखलहुँ—प्रत्यक्ष।” दोसर कहलक, “दादी कहैत छथि ओतए पहिने पैघ माछ होइत छल—श्रुत।” तेसर कहलक, “एहि बरख भेल तँ माछ बढ़त—अनुमान।” जगत अन्तिममे कहलक, “एकटा माछ चन्द्रमासँ बात करैत छल—कल्पना।” बच्चासभ हँसल। पद्मा कहलनि, “चारू बोलब योग्य अछि; केवल ई नहि कहब जे चारू एकहि तराजूपर तौलल जाए।”

एक वृद्ध श्रोता पूछलनि, “जे देखलहुँ, ओकरा नहि बुझि सकी तँ?” पद्मा उत्तर देलीह, “प्रत्यक्ष देखल बातक अर्थ सेहो गलत बुझल जा सकैत अछि। प्रत्यक्षक पट्टी लागौलासँ प्रश्न बन्द नहि होएत।” वृद्ध अपन बचपनक बाढ़िक बात कहला—ओ पानी चढ़ैत देखने छलाह, मुदा बाँध किएक टूटल से नहि। एक युवक कहलक जे ओहि बाढ़िक बारेमे बादमे अनेक कथा सुनल गेल। पद्मा दुनू वाक्य अलग लिखलीह। कक्षमे पहिल बेर ‘नहि जनैत छी’ कहबाक लेल ककरो लाज नहि लगल।

बैठकक अन्तमे जगत अपन नाटकक बदलल दृश्य पढ़लक। ओहिमे कोई वास्तविक कर्मचारी नहि, मात्र काल्पनिक आदमी छल जे खाली पन्ना सँ डरैत अछि; एक स्त्री ओकरा कहैत अछि जे रिक्त ठाम रहितो सवाल लिखल जा सकैत अछि। श्रोतामे बैसल गुमनाम कथन देनिहार व्यक्ति नहि आएल छल, कारण ओ अपन उपस्थितिक अनुमति नहि देने छल। पद्मा नाटकक पन्ना ओकर मूल कथनक संग नहि जोड़लीह। पन्नाक नीचाँ ‘कल्पित दृश्य’ स्पष्ट रहि गेल।

राति उतरबाक समय सरिता चौकीक कात बैसि चाउर फटकैत छलीह। पद्मा आगू चारू पट्टी फेर देखलीह। प्रत्यक्षक खानामे कागदक प्रति, जाँचल रसीद आ देखल वस्तुक विवरण; श्रुतमे व्यक्तिक कथन, परिवारक स्मृति आ अनुवादित बात; अनुमानमे सम्बन्धक

अस्थायी प्रश्न; कल्पनामे जगतक नाटकक घोषित पात्र। कोनो खाना दोसरपर अधिकार नहि जमौने छल। मुदा पद्मा जानैत छलीह जे लोकक जीवनी चारि डिब्बामे पूरा नहि अटैत। ई विभाजन जीवनक नहि, कथा कहबाक जिम्मेदारीक छल।

संकेत पूछलनि जे एहि चारि पट्टीकेँ पुस्तकक पहिल पृष्ठपर छापि देल जाए की। पद्मा कहलीह, “पाठककेँ चिन्ह भेटत तँ भरोसा बढ़त। मुदा चिन्हक नामपर हम सब स्वयं जाँच छोड़ि देब तँ ऊ भरोसा फेर टूटत।” ओ फैसला कएलीह जे सामुदायिक पुस्तकमे प्रत्येक विवादित दृश्यसँ सम्बन्धित स्रोतक स्वभाव स्पष्ट होएत; जकर निजी अनुमति सीमित अछि, ओकर सीमा अपन ठाम सुरक्षित रहत। अलग-अलग भाषा, पेशा आ परिवारक पन्ना एउहिना एके स्वामित्वमे नहि जाएत।

आशाक डिब्बाक रबर-पट्टी, तुलसीक फाटकपर टाँगल हड़तालक कपड़ा, नसीमाक सिएल जिल्द आ श्यामक बाँसक गाँठ—सभ अपन ठाम रहल। चारि शब्द ओहि वस्तुसभकेँ नया मालिक नहि देने छल। ओ केवल एतेक कएलक जे अगिला बेर कियो कथा पढ़त तँ बुझि सकत जे ककर आँखि, ककर आवाज, ककर आशंका आ ककर कल्पनाक सहारे पन्ना बनल अछि। पद्मा अन्तिम पट्टी मोड़ि कापीमे रखलीह। बाहर अन्हारमे लोक अपन-अपन घर दिस जा रहल छल; किछु घरक बाट एखनहुँ तय नहि छल।

अध्याय २०१ • सीमातीर्थक विदाइ

सीमातीर्थ, २०४२। मधु केवट नावक पुरान पटरा खोलि ओकर नीचाँ अटकल बालू झाड़ि रहल छलीह। पटरा उठिते भीतरसँ एकटा जंग लागल सिक्का आ कागदक भीजल कोन खसल। सिक्का ओ अलग रखलीह; कागद खोलबाक प्रयास नहि कएलनि। कातमे बैसल शान्ति बोटे हँसि कऽ कहलीह, “नदी सिक्का फेर दऽ दैत अछि, कमाइक रसीद कखनो नहि।” मधु उत्तर देलीह, “रसीद कागदमे नहि, जकरा दाम देबाक अछि तकर मोनमे भीजैत अछि।” दुनू हँसलीह, मुदा हँसीक पाछाँ पाछिल बरखक दू बोरा उतारबाक देय ठाढ़ छल।

घाटक ऊपर तारा आ पद्मा अएल छलीह। विदेहपुरक पाठशालामे काल्हि चारि प्रकारक साक्ष्य अलग करबाक निर्णय भेल छल; आइ हुनका सभकेँ एकटा असल हिसाबक सामने ओहि भेदक परीक्षा देबाक छल। तारा फाटल थैलीसँ दू पन्ना निकाललीह—एकमे नावपर चढ़ल सामानक गिनती, दोसरमे उतारघरक मोहर। शान्ति हाथ बढ़ा कऽ पुछलीह, “हमर मूल पर्ची केतय?” तारा अपन हाथ रोकलीह। “अहाँक लग छल। हमर लग ओकर अनुमति सँ बनल प्रति अछि।” शान्ति सन्तुष्ट भऽ कमरमे खोंसल मोड़ल पर्ची बाहर निकाललीह।

मधु नावक नवा भाड़ा-पत्र बनएबाक लेल अपन छोट मेजपर चूना सँ रेखा खींचलीह। यात्रीक भाड़ा, सामानक भार, उतारबाक मजदूरी आ नाव रोकि राखबाक घण्टा—चारि खाना। घाट समितिक लिपिक कहलनि, “एतेक बखरा करब तँ यात्रिक डेरा जाएत।” मधु प्रतिवाद कएलीह, “जतय दाम तय नहि, ओतय डेराइब नीक। बिनु पूछने घण्टा गुमेब आ पाछाँ बिल सुनब, ओहि सँ पैघ डर दोसर कोन?” शान्ति एकटा पाँचम खाना जोड़ए चाहलीह—ककर नाव, ककर काज आ ककरा भुगतान देबाक अछि।

लिपिकक बगलमे बैसल व्यापारीक प्रतिनिधि अपन टोपी उठौलक। ओकर तर्क छल जे देरीक सब दाम सामान मँगौनिहार नहि चुका सकैत अछि; चौकीक जाँचमे लागल समय नाविकक ‘सामान्य जोखिम’ मानल जाय। मधु पुछलीह, “जाँचक गेट धरि हमर नाव जायत की?” प्रतिनिधि कहलनि, “नहि, पानि धरि।” “तखन चौकीक घड़ी हमर चप्पूसँ

किएक गनैत छी?” मधु पन्नापर नदी पार करबाक समाप्तिक बिन्दु देखौलीह। पारक उतरघरमे शान्तिक अतिरिक्त प्रतीक्षा अलग मामला छल; ओकर माप सेहो सत्यापन चाहैत छल।

शान्ति पुरान बही खोललीह। एक ठाम ‘गंडक’, दोसरमे ‘गंडकी’ लिखल छल। ओ एहि नामद्वयसँ नदीक कोनो नव सीमा सिद्ध करए नहि चाहैत छलीह। “ई दुनू शब्द हमर पारक खेपक पुरान पन्नामे भेटैत अछि,” ओ कहलीह, “एहि पन्नासँ एतबा जाँचू जे सामान कखन चलल, कखन पहुँचल आ दाम ककरा मिलल। नदीक नामक अर्थ गामक बुढ़बा, पुरान लेखक आ माप करनिहार सभ अपन-अपन सीमा मे कहताह।” पद्मा मूल वर्तनी जसक तस उतारलीह।

व्यापारीक प्रतिनिधि कहलक, “नाम दूटा अछि तँ खेप सेहो दूटा भेल होएत।” शान्ति ओकर आगू बोरा बाँधबाक अलग चिन्ह देखौलीह। “एक नामक दू वर्तनी सँ दू बोरा पैदा नहि होइत,” ओ कहलीह। पुरान नकलमे दू बोरा उतारबाक प्रविष्टि छल, भाड़ा-वितरणमे एक्के बोरा। शान्ति एहि अन्तरक भुगतान माँगैत छलीह, मुदा दोसर बोरा ककरा हाथसँ उतरल तकर पूरा प्रमाण एखन नहि छल। प्रतिनिधि किछु क्षण कागद तकैत रहल; ओ पहिल बेर ‘सत्यापन बाकी’ लिखबाक लेल तैयार भेल।

मधु नवा पत्रमे स्पष्ट कएलनि जे यात्री निर्धारित समयपर नहि पहुँचला सँ नाव रोकल जाए तँ रोकबाक दाम पहिने घोषित होएत; पानिक तेज धार, नावक सुरक्षा अथवा नाविकक असहमतिक कारण यात्रा रुकत तँ अलग नियम लागू होएत। एक युव नाविक पुछलक, “आ जँ बाढ़ि आबि गेल?” मधु कहलनि, “तखन आदमीक प्राण पहिने; दामक विवाद पाछाँ। मुदा बाढ़िक नाम लऽ रोजक कमाइ निःशुल्क घोषित नहि कएल जाए।” तारा एहि वाक्यकेँ कागदमे उतारए सँ पहिने सभ नाविकसँ ओकर अर्थ पुछलीह।

घाट समितिक वृद्ध सदस्य याद करौलनि जे पिछला वर्ष सहायता-दलक यात्रा समय एक कर्मचारी बिना हस्ताक्षरक ‘निःशुल्क सेवा’ पर्ची टाँगने छल। ओ कहलनि, “आइ सभ शर्त लिखि लेब, काल्हि फेर कियो टाँगि देत।” मधु छोट लकड़ीक खूटा उठौलीह, जाहिमे पुरान पर्चीक रस्सी एखन फँसल छल। “तखन नवा नियम केवल देबालपर नहि रहत,” ओ कहलीह। “नाविकक लग एक प्रति, यात्रीकेँ एक प्रति, समितिक लग एक।

बदलाब लेल सभकेँ सूचित करबाक पद्धति चाही।” लिपिक पहिने मुस्कराएल, फेर तीन प्रति बनएबाक कागद माँगलक।

ताबे सीमातीर्थक जल-समितिक घरसँ एक स्त्री अपन हाथमे पीतलक छोट ताला लऽ अएलीह। हुनका पाछाँ एक परिवारक दू सदस्य छलाह; हुनका सभक घरक निकासीक विवाद पर पिछली यात्रामे मापबाक बात उठल छल। स्त्री ताला मेजपर रखि कहलीह, “ई घरक सन्दूकक चाभीवला ताला अछि। कर्जक पुरान पन्ना एतय अछि, मुदा हम सभ तकर मूल ककरो संग नहि पठाएब।” पद्मा हुनका बैसबाक लेल जगह देलीह। नावभाड़ाक बैठक अकस्मात परिवारक ऋणक गणतीमे बदलल नहि; स्त्री स्पष्ट अलग समय माँगलीह।

ओहि परिवारक कर्जक एक हिस्सा पहिले घर सम्हारबाक खर्चसँ जोड़ि देखाओल गेल छल, मुदा पुरान हिसाबमे मूल रकम, चुकाओल किस्त आ प्रतीक्षाक अतिरिक्त माँग एक्के रेखामे लिखल छल। स्त्री आँगुरिसँ तीन निशान बनबौलीह। “हम घाममे ठाढ़ रहि ई रकम चुकौने छी,” ओ कहलीह, “जे चुकौलहुँ ओकर प्रमाण भेटए; जे बाकी अछि तकरा बाकी लिखू; जेकर आधार नहि, ओकरा हम नाम सुनिकेँ मानब नहि।” परिवारक दोसर सदस्य तुरन्त सम्पूर्ण ऋण समाप्त घोषित करबाक आग्रह कएलक। स्त्री मना कएलीह।

“हमरा आजु झूठ मुक्तिक पर्ची नहि चाही,” स्त्री कहलीह। “काल्हि जे देनिहार अएत से लिखल कागद देखत। जँ हम एखन सभ शून्य कहि दी तँ हुनकर सही अँजोरमे हमरा फेर दोषी बनाओत।” तारा पूछलीह जे कोन-कोन मूल पन्नाक नकल लेल अनुमति अछि। स्त्री दू भुगतान-रसीदक प्रति बनएबाक स्वीकृति देलीह, घरक भीतरक उधारक निजी बात सार्वजनिक करबाक नहि। परिवारक एक किशोर खिड़की लग ठाढ़ भऽ दुपहरक रोटी लेल बजैत छल। स्त्री ओकरा कहलनि, “थोड़ेक बाद। कर्जक नामपर भोजनक घड़ी नहि खा जाउ।”

कुमुदी स्थानीय भाषाक दू शब्द जाँचबाक लेल अएलीह। एक शब्दक अर्थ ऋणक शेष छल, दोसरक अर्थ अगिला खेप लेल अग्रिम। पहिनुक अनुवादमे दुनूकेँ ‘देनदारी’ कहि जोड़ि देल गेल छल। कुमुदी पुछलीह, “एहि कागदमे जे लिखल अछि, ओकरा अहाँ वर्तमान बकाया कहैत छी की भविष्यक अग्रिम?” परिवारक स्त्री कहलीह, “जे राशि

हाथमे आयल नहि, ओकरा चुकाओल ऋणक खाते नहि लिखब।” कुमुदी मूल शब्द, हुनकर कथन आ मानक रूप अलग-अलग पाँतिमे रखलीह।

दुपहरिक तेज घाममे चन्दा मुण्डा नीला झोरा कन्हापर लेने पहुँचलीह। झोराक सीबन उधड़ि रहल छल, मुदा भीतरक कागद सूखल छल। निर्माणकाजक पुरान हाजिरीमे हुनकर नाम आ क्रमांक अलग-अलग रहि गेल छल; ठेकेदारक शेष स्वीकृतिक नामपर घर घुरबाक अनुमति रोकबाक प्रयास सेहो भेल छल। आब ओ तीन अलग प्रमाण लऽ अएलीह—पहिचानक पुष्टि, काम छोड़बाक प्राप्ति आ यात्रा लेल आवश्यक कागद। ओ सभकेँ अपन हाथसँ निकालि मेजपर रखलीह।

चन्दा कार्यालयक कर्मचारीकेँ कहलीह, “ई तीनू पन्ना पूरा भेल अछि की नहि, एक-एक कऽ पढ़ू।” कर्मचारी मुहर देखबैलक, मुदा अन्तिम पन्नाक कात लिखल एक पाँति पर अटकल। ओहिमे बकाया मजदूरीक दावा ‘अलग विचाराधीन’ छल। चन्दा कहलीह, “ठीक अछि। बकाया हमरा देय अछि, मुदा अपन घरक बाट लेल ओकरा चुकल मानब जरूरी नहि।” कर्मचारी सहमति देलक जे यात्राक कागद पूरा अछि। ओ यात्रा-दिनकेँ कोनो निश्चित घड़ीमे बाँधबाक प्रयास नहि कएलक।

चन्दाक संगक एक युवा श्रमिक कहलक, “एतेक दूरसँ अएलहुँ, तखन आइ घुरि किएक नहि जाइत छी?” चन्दा मुस्करौलीह। “घुरबाक कागद तैयार भेला सँ मनक तैयारीक मोहर नहि लगैत।” ओ अपन नीला झोरा खोलि मापफीता निकाललीह। विदेहपुरक एक विद्यालयमे क्षतिग्रस्त सीढ़ीक माप लेबाक निमन्त्रण हुनका भेटल छल, मुदा कामक दर आ अवधि एखन स्पष्ट नहि छल। घुरि घर जाएब कि दू दिन रहि ई कामक बात पक्की करब, निर्णय ओ अपन हाथमे रखलीह।

एक वृद्ध नाविक हुनक बात सुनि कहला, “घर तँ घर छिए; एतबा विचार किएक?” चन्दा नम्रतासँ उत्तर देलीह, “घर रहबाक ठाम अछि, पुरस्कार नहि। बाहर कमाइ कएलहुँ तँ अपन लोककेँ भूलल नहि; आ एतय दू दिन ठहरलहुँ तँ घुरबाक अधिकार कम नहि भेल।” ओ अपन घरमे समाचार पठेबाक लेल कुमुदीसँ छोट सन्देश पढ़बैलीह—कागद पूरा, यात्रा-दिन एखन स्वयं तय करबाक अछि। सन्देश पठबैत काल ओ एक अक्षर सुधारलीह, कारण घरक लोक हुनकर बोली ताहि रूपमे बुझैत छलाह।

मधुकैँ एहिबीच नवा समझौता पर पहिल हस्ताक्षर करबाक आग्रह भेल। ओ नावक पटरा फेर जाँचए उठलीह। तारा पुछलीह, “कागदमे की छूटल?” मधु कहलीह, “पानि छूटल। जकरा पार पहुँचाएब, ओकर सुरक्षित उतारबाक ठाम देखए बिना हम सही केना करी?” ओ नव चढ़ानपर पयर रखलीह, बाँसक पकड़ खींचि देखलीह, आ फाटल पटरा बदलएबाक शर्त जोड़लीह। घाट समितिक सदस्य फुसफुसाएल जे एहि स्त्रीक कारण बैठक लम्बा होइत अछि; मधु सुनि लेलनि आ उत्तर देलीह, “हमर नाव डुबलासँ बैठक आर लम्बा होएत।”

शान्ति अपन बही सँ ‘गंडक/गंडकी’क पुरान प्रति निकाललीह। कुमुदी बताएलीह जे एक अभिलेखमे नदीक नाम, दोसरमे व्यापारिक पड़ावक संकेत भऽ सकैत अछि, मुदा उपलब्ध पन्नासँ अन्तिम भौगोलिक निष्कर्ष नहि निकलैत। शान्ति नामक भेदक आधारपर रोकल भाड़ा भुगतानक तिथि पूछलीह। कार्यालयक लिपिक उत्तर देलक जे दू बोरा उतारबाक प्रविष्टिक मेलानक लेल व्यापारीसँ पुनः पुष्टि माँगल गेल अछि। “तखन प्राप्ति लिखू, भुगतान नहि,” शान्ति कहलीह। ओहि दिन पुरान रकम हाथमे नहि आयल, मुदा दावा मेटाओल नहि गेल।

मधु दोसर पुरान पन्ना खोललीह, जकर कात ‘गोही’ लिखल छल। एक युवक एहि नामकँ आजुक घाटसँ जोड़ि घुमावदार रेखा बना रहल छल। मधु ओकर पेंसिल हटाबए नहि गेलीह; ओ पुछलीह, “एहि शब्दक अगल-बगल नावभाड़ाक कोन मद लिखल अछि?” युवक पढ़लक—यात्रा, सामान आ उतारघरक समय। मधु कहलीह, “तखन पहिने एहि खर्चक अर्थ खोलू। जे धार आजु देखैत छी, ओकरा पुरान स्याहीक एक शब्दसँ जोड़ए लेल माप आ स्रोत चाही।” युवक रेखाक बगलमे प्रश्नचिह्न रखलक।

नवा भाड़ा-पत्रक दोसर पाठमे शान्ति एक महत्वपूर्ण भेद देखौलीह। नियममे ‘नाव रोकल समय’ लिखल छल, मुदा प्रतीक्षा ककर कहने भेल तकर ठाम रिक्त। ओ पुछलीह, “जँ यात्रिक देरि सँ आएत आ जँ चौकी कर्मचारी रोकत, दूनूक जिम्मा के?” तीन लोक तीन उत्तर देलनि। अन्तमे निश्चय भेल जे ठहरबाक आरम्भ आ अन्तक घड़ी, कारण बतबएनिहार पक्ष, आ पहिने सूचित दर पर्चीमे अलग लिखल जायत। जे ठहरावक कारण विवादित होएत, ओकर राशि तुरन्त अन्तिम भुगतान नहि मानल जायत।

व्यापारीक प्रतिनिधि शर्त रखलक जे नाविकसभ समय अपने लिखताह तँ बढ़ा कऽ लिखि सकैत छथि। शान्ति कहलीह, “तें दूनू पक्षक प्रति चाही। एक घड़ी कर्मचारी लिखत, दोसर नाविक। भेद भेल तँ लिखित आपत्ति।” मधु जोड़लीह जे प्रत्येक बेर चौकीक मोहर सम्भव नहि; नाविकक समयक स्वतन्त्र गवाहीकें शून्य मानल जाए, ई सेहो अन्याय। छोट बहसक बाद तीन पक्ष एहि सीमित परीक्षणपर सहमत भेल—आगामी तीन यात्रामे नव पर्ची चलत, फेर सार्वजनिक बैठकमे ओकर कमी देखल जायत।

बीचमे भोजनक समय भेल तँ शान्ति चिउड़ा आ भुजल माछक छोट बासन खोललीह। कुमुदी हँसि कऽ पुछलीह, “आइ फेर मसाला कम?” शान्ति उत्तर देलीह, “आइ अहाँ अपना चायमे गुड़ कम दिअ, तखन हमरा सँ मसाला माँगू।” चन्दा अपन घरसँ अनल सुखायल साग खोललीह। तीनू स्त्री एक-दोसराक भोजन चखलीह, मुदा ककरो घरक कामकें अतिथिक अधिकार नहि बनौलीह। घामक बीच एहि हँसीमे कागदक लड़ाइ कनी देर लेल जीवनक साधारण भूखसँ मिलि गेल।

जल-समितिक घरक स्त्री दोबारा अएलीह। ओ अपन कर्जक दू चुकाओल किस्तक नकल देखौलीह, आ तेसर दावाक आगू लाल स्याहीमे ‘मिलान शेष’ लिखबौलीह। एक देनिहारक प्रतिनिधि चाहैत छल जे परिवार विदाइ सँ पहिने सम्पूर्ण बकाया मानि हस्ताक्षर करय। स्त्री कहलीह, “सम्बन्ध नहि तोड़ि रहल छी। अगिला खेपक काम लेल बात करब, मुदा जुनि कहू जे हम सभ ऋणक सब हिसाब जाँचि लेलहुँ।” ओ मूल बही सन्दूकमे बन्द कएलीह आ साझा प्रति केवल स्वीकृत पन्नाक देलीह।

तारा पुछलीह, “अहाँक विदेहपुरक दल सँ आगाँ कतेक सम्पर्क चाही?” स्त्री कहलीह, “एहि दू रसीदक मिलानक समाचार, आ पानिक निकासक जाँचक निर्धारित तिथि। हमर घरक निर्णय हम अपन सभामे करब। अहाँ सभ आउ, मुदा उद्धार करनिहारक नामे नहि।” पद्मा हुनकर शब्द जसक तस लिखलीह। किशोर फेर रोटीक बात लऽ आयल। एहि बेर स्त्री कागद समेटि उठि गेलीह। ऋणक अन्तिम अंक खुलल रहला पर सेहो घरमे भोजन बनेबाक समय हुनकर अपन छल।

चन्दा नव यात्रापत्र झोरामे राखैत देखलीह जे ओहिपर ‘यात्रा सम्भव’ लिखल अछि, ‘तुरन्त प्रस्थान’ नहि। ओ युवा श्रमिककें कहलीह, “अहाँ आजु जाउ चाहैत छी तँ जाउ।

हमर निर्णयक बाट अहाँपर नहि पड़त।” युवक अपन चप्पल कसलक आ बसक समय पुछलक। चन्दा ओकरा सही पड़ाव बतौलीह; किरायाक रकम पक्का नहि जनैत छलीह, तें अनुमानकें निश्चित दाम नहि कहलनि। युवा श्रमिक विदाइ दऽ चलि गेल। चन्दा पहिल बेर अपन कागदक ढेरी देखिकऽ निश्चिन्त साँस लेलीह।

मधु आ घाट समितिक तीन सदस्य नव भाड़ा-पत्रपर सही कएलनि। शान्तिक बकाया मामला पर ओकर अलग टिप्पणी संलग्न रहल; नवा समझौताक सही पुरान दावा छोड़बाक स्वीकृति नहि छल। आगामी तीन यात्राक परीक्षण लेल पहिल यात्राक यात्रिकसभकेँ दर पढ़बाओल गेल आ इच्छुककेँ प्रति देल गेल। दूनू कातक समय मिलान करबाक व्यक्ति तय भेलाह, मुदा सीमा-चौकीक प्रतीक्षाक सभ खर्च पर अन्तिम सहमति नहि भेल। मधु काठक पटरा कसि कहलीह, “आजु कम सँ कम एतबा भेल जे बेनाम घण्टा नहि रहत।”

पद्मा चारि श्रेणीक पुरान पट्टी फेर निकाललीह। मधुक लिखित दर आ हस्ताक्षर देखल अभिलेख छल; शान्तिक पुरान बकाया पर व्यापारीक उत्तर अपूर्ण; परिवारक कर्जक किस्तक प्रमाण अलग; ‘गोही’ आ ‘गंडक/गंडकी’क नामक भौगोलिक अर्थ जाँचबाक शेष। चन्दा एहि विभाजनकेँ सुनि कहलीह, “हमर घर घुरबाक चाहना कोन खानेमे?” पद्मा कहलीह, “अहाँक अपन कथनमे। ओकरा जँ हम कागदक आदेश बनाबी तँ गलती हमर।” चन्दा माथ डोलौलीह। हुनकर चुनाव ओहि चारि पट्टीसँ पैघ छल।

साँझक नदीपर हावा ओहि तरह पड़ि रहल छल जेना ओ पुरान जमानासँ एक्के राग दोहरबैत हो। शान्ति पहिल परीक्षण-खेपक बोरा चढ़बैत अपन डोरीक गाँठ जाँचलीह। मधु निर्धारित भारसँ बेसी सामान वापस उतरबौलीह। देरी भेल, एक व्यापारी बड़बड़ाएल। कातमे ठाढ़ बच्चा माछक चमक देखैत हँसि पड़ल। शान्ति ओकर मायसँ पुछि कऽ बच्चाकेँ चढ़बाक बाँस पकड़बौलीह। ओहि छोट यात्रामे नियम शब्द नहि, पयर राखबाक सुरक्षित ठाम बनि गेल।

विदेहपुर घुरबाक गाड़ी लग पहुँचलाक पूर्व तारा सीमातीर्थक परिवारक लेल दू ठेगाना लिखि देलीह—दावाक प्रति पठेबाक ठाम, आ निकासक जाँचक उत्तर माँगबाक अलग ठाम। कुमुदी ई ठेगानाक स्थानीय भाषामे अर्थ पढ़ि सुनौलीह; स्त्री अपन प्रति रखलीह।

पद्मा विदाइ लेल हाथ बढ़ौलीह तँ स्त्री कहलीह, “फेर आउ तखन हमर नामे कथा नहि, पहिने चाय पीब। हम कर्जक कापी सभ दिन खोलि नहि राखैत छी।” पद्मा हँसलीह।
“चाय पीब, मुदा चायक दाम पूछब।”

रास्तामे तारा कबीरकेँ छोट सन्देश पठौलीह—सीमातीर्थक कामक किछु पन्ना मिलल, किछु देय बाकी; घुरि अपन परिवारक विषयमे ओ जखन चाहथि तखन अलग बात होएत। ओ कबीरक बदला ककरो जन्म-पत्र नहि माँगलीह, नैराक निजी स्मृतिकेँ सूचना-पत्रक संग नहि जोड़लीह। सरिताक लेल सेहो बस यात्रा सुरक्षित भेलाक खबर छोड़लीह। गाड़ी आगाँ बढ़ल तँ चन्दा खिड़कीसँ घाटकेँ नहि, अपन नील झोराकेँ तकलीह; ओहि झोरामे वापसीक कागद आ आगाँक सम्भावना दुनू छल।

सीमातीर्थक घरमे पीतलक ताला फेर सन्दूकपर लागल। कर्जक अन्तिम दावा बन्द नहि भेल छल, मुदा ओकरा बिना प्रमाण स्वीकार करबाक दबाव एहि दिन रोकल गेल। घाटपर तीन यात्राक परीक्षण आरम्भ भेल छल; शान्तिक पहिल बकाया एखन देय छल; चन्दाक घर-घुरबाक कागद पूरा छल, निर्णय हुनक अपने। नदीक दू कात साँझक आकाशमे एक रूप देखाइत छल, मुदा तकर लोकक समय, सम्बन्ध आ देय अलग-अलग छल। विदाइ सम्बन्धक अन्त नहि बनल; पहिल बेर ओकर अगिला भेटक शर्त स्पष्ट भेल।

अध्याय २०२ • कबीरक वापसी

विदेहपुर, २०४२। कबीर घरक पुरान अलमारीक नीचला खाना सँ लाल किनारवला रुमाल निकाललनि। कपड़ाक मोड़मे अटकल एक पातर सूत टूटबाक छल; ओ खींचलनि नहि। रुमाल मेजपर पसारि देलनि। एहि कपड़ाक संग हुनकर अएबाक दिनक स्मृति सुभद्राकेँ छलनि, मुदा कपड़ा पहिने कोन घरमे बनल, तकर प्रमाण ककरो लग नहि छल। कबीर अलमारीसँ तीन अलग लिफाफा सेहो निकाललनि—पालनक प्रमाण, जन्मसम्बन्धी अपुष्ट कथन, आ अपन निजी पत्र। तीसर खाम भीतर राखि देलनि। आइ पहिल दुनू कागदक भेद बुझबाक छल।

माय रसोइमे भिजाओल चाउर छानि रहल छलीह। कबीरकेँ भोरसँ कागद सम्हारैत देखि ओ पुछलीह, “काल्हि सीमातीर्थसँ खबर एलौ?” कबीर तारा पठौने सन्देश पढ़ि सुनौलनि—नावभाड़ाक परीक्षण आरम्भ भेल, किछु देय एखन बाकी, आ परिवारक चर्चा लेल समय कबीर स्वयं चुनथि। माय छन्नी रखि कहलीह, “हमरा कागदक सभ बात नहि बुझाइट अछि। मुदा जँ तोरा कतहु जाएबाक अछि, पहिने नाश्ता कऽ लिअ। खाली पेट मे साँचो बात झगड़ा बनि जाइत छै।” कबीरक मुखपर हलुक हँसी अएल। ईहे आवाज बाल्यकालक ज्वरमे हुनका पानि पिअबैत छल।

“माय, हम आइ अभिलेख-केन्द्रमे जाएब,” कबीर कहलनि। “सुभद्राक पहिने देल जन्मसम्बन्धी कथन जे रहल, ओकर स्रोतक अगिला जानकारी माँगब। पहिने अहाँक नामवला पन्ना जाँचब। दुनू घर एक नहि होएत।” सुभद्रा बिना किछु कहने अपना आँगुरिसँ चाउरक एक दाना हटौलीह। “हमरा डर छल जे जन्मक कोनो नाम भेटत तँ हमर नाम पाछाँ चलि जाएत,” ओ स्वीकार कएलीह। कबीर उत्तर देलनि, “नामक क्रम हम नहि बदलए देब; मुदा अहाँक श्रम नामक क्रमपर निर्भर नहि। अहाँ अपन इच्छा कहू, हम हमर प्रश्न पूछब। दुनू बात एकहि घरमे रहि सकैत अछि।”

आँगनक कुण्डीक कात एकटा गौरैया चोंचमे सुखायल घास लऽ बैसल छल। माय ओकरा तकि कहलीह, “घोंसला बनबैत अछि तँ हर बेर नब घर नहि बनैत। पुरनका डारिपर नब तिनका रखैत अछि।” कबीर बुझलनि जे माय अपन बात पक्षीक उपमा भीतर

नुकएबए नहि चाहैत छलीह। ओ पूछलनि, “अहाँ हमर संग चलब?” माय कहलीह, “जतेक देरि चाहब ओतेक। मुदा औषधिक घड़ीक पहिने घर घुसब। हमर दिनक समय तोहर अनिर्णीत कागद नहि निगलत।” कबीर पर्चीपर औषधिक समय लिखलनि आ चप्पलक फाटल फीता बाँधलनि।

अभिलेख-केन्द्रक ओसारमे रुहानी एकटा पुरान प्रपत्रकेँ नब प्रतिसँ मिला रहल छलीह। पहिल पन्नामे पालनकर्ताक नाम सही छल, दोसरमे ‘मूल परिवार’क घर खाली। कबीर दुनू मेजपर राखि कहला, “एहि रिक्त पॉतिक विषयमे जे मौखिक गवाही भेटल छल, ओकर स्रोत-सूचना चाही; अनुमानसँ परिचय नहि।” रुहानी कहलीह जे गवाही देनिहार व्यक्तिक कथन अलग सुरक्षित अछि, किन्तु ओकर पुष्टिक लेल मागल मूल दस्तावेज एखन प्राप्त नहि भेल। “एखन अहाँकेँ जाँचक स्थिति देब, जन्मक निष्कर्ष नहि,” ओ स्पष्ट कएलीह। कबीर ई उत्तर स्वीकार कएलनि।

पासक मेजपर एक कर्मचारी नब परिवार-चित्र बनएबाक प्रस्ताव लऽ बैसल छल। ओ कहलक, “दू ठामक नामकेँ एक रेखासँ जोड़ि देब तँ सॉफ्टवेयर सुगम होएत। लोक पढ़बामे नहि अटक जायत।” कबीर कहला, “रेखा खींचब सरल अछि। मुदा ओकर अर्थ की? जन्मक स्रोत अपुष्ट अछि, पालनक वर्षसभ दस्तावेजसँ पुष्ट अछि। एहि दू भिन्न प्रमाणकेँ एक चित्रमे बराबर निश्चित देखाएब गलत होएत।” कर्मचारी मायक चेहरा देखलक। ओ केवल कहलीह, “हम अपन बेटाक माय छी, मुदा जे नहि देखलहुँ से देखल बतए नहि सकैत छी।” कर्मचारी रेखा हटौलक, मूल घर खाली राखलक।

रमा कर्ण नब अभिलेखक स्वीकृत प्रारूप निकाललीह। ओकर एक भागमे वास्तविक पालन-संबन्धक अवधि आ उपलब्ध शैक्षिक कागद, दोसरमे जन्म-विषयक स्रोतक स्थिति, तेसरमे व्यक्ति अपन सूचनाक उपयोगक सीमा चुनबाक स्थान छल। कबीर पुछलनि, “ई अलग भाग कानूनी रूपेँ पूर्ण समाधान अछि?” रमा उत्तर देलीह, “नहि। ई जाँचक सही स्थिति देखेबाक प्रमाणित प्रति अछि। उत्तराधिकार वा जन्म-पहिचानक अन्तिम निर्णायक बदला नहि।” कबीर पहिल बेर निश्चिन्त भऽ पन्नाक शब्द पढ़लनि। कागद अपन सीमा स्वीकार करैत छल।

मुदा प्रतीक्षामे बैसल एक वृद्ध पुरुष असहमत भेला। “आबो रिक्त घर रहत तँ बालककेँ जीवनभरि प्रश्न सहबाक पड़त,” ओ कहलनि। माय हुनका दिस घुमलीह। “हाँ, प्रश्न रहत,” ओ कहलीह, “मुदा गलत नाम भरि देलासँ कोनो आन परिवारक जीवनमे नव झूठ जाएत। हम अपन बेटाकेँ असल प्रश्नक संग जीबए देब, मनगढ़न्त उत्तरक संग नहि।” वृद्ध पुरुषक आँखिमे विरोधक बदला थकान देखायल। हुनकर कागदमे सेहो नाम कटल छल। रुहानी हुनका अलग समय देलीह; कबीरक परिवारक चर्चा वृद्धक मुकदमा बनि नहि गेल।

केन्द्रसँ बाहर निकलिते कबीरकेँ शान्ति बोटेक फोन आयल। ओ घाटपर पहिल तीन-पारगमन परीक्षणक दोसर यात्राक हिसाब मिलाबए लागल छलीह। “दूनू कात हम जे कमाइ करैत छी, ओ अलग-अलग खाता बनल अछि,” शान्ति कहलीह, “मुदा उतारघर एखन एक कातक श्रमकेँ दोसरक भाड़ामे गनैत अछि।” कबीर पुछलनि, “मधु की कहैत छथि?” शान्ति उत्तर देलीह, “नावभाड़ा आ हमर उतार-मजदूरी अलग अछि। मधु हमर पर्चीक गवाही देलीह; अपना नावक दाम हमरा माथ नहि रखलीह।” कबीर सीमातीर्थ जाएबाक पहिने प्रतिक रूपमे कागद माँगबाक बदला ओतहि बात जाँचबाक निर्णय कएलनि।

मायकेँ घर छोड़ि, भोजन देलाक बाद कबीर घाट दिस निकललाह। बाटमे अमीर कुल्हैया भेटलाह। हुनकर झोरामे तीन परिवारक धन-प्रेषणक तुलना-पत्र छल, जकरा लिखबाक बात बहुत दिन पहिने उठल छल। अमीर कहला, “लोक सोचैत अछि, रुपैया भेजब एतेक कि मुहर मारू आ गठरी दऽ दिअ। असल लड़ाइ ई अछि जे प्राप्तकर्ताक नाम, शुल्क आ असफल भेला पर रकम ककरा घुरत।” कबीर हुनकर संग चलए लगलाह। दुनूक घरक बात अलग छल, मुदा एक छोट समानता छल—ककरो खाली खाना दोसरक सुविधासँ भरि देबाक प्रलोभन।

सीमातीर्थक घाटपर लहर जखन उतरैत छल, बाँसक खूंटामे डोरीक घर्षणसँ झनझनाहट उठैत छल। मधु केवट नव कसल पटरा देखबैत छलीह। शान्ति तीन यात्राक छोट-छोट पर्ची बिछौलीह। पहिलमे नावपर चढ़बाक घड़ी, दोसरमे पार उतरबाक घड़ी, तेसरमे उतारघरपर समान धरबाक समय। “देखू,” ओ कहलीह, “ई दू घड़ी बीच हम

बोराकें ढोने छी। दूनू कातक श्रम हमर अछि, मुदा नावक स्वामित्व मधुक। जेकर काम जे, ओहि नामे दाम।” मधु हँसलीह, “सभ दाम हमर नावकें दऽ देत तँ शान्ति हमरा डोरीसँ बाँधि देतीह।”

व्यापारीक प्रतिनिधि एक पन्ना आगाँ रखलक। ओकरा अनुसार पहिल पारगमनमे जे भरल गेल छल, ओहिमे उतारबाक श्रम सेहो ‘समाहित’ छल। शान्ति ओ पाँति पुछलीह, “के लिखलक आ कखन? अहाँ सभ जँ जहाजक पंखासँ हमर बोरा उठौने रहितहुँ तँ हम स्वीकार करितहुँ।” किछु लोक हँसल, प्रतिनिधि नहि। मधु अपन समझौता खोलि देखौलीह—नावक भाड़ा, प्रतीक्षाक कारण आ उतारबाक अलग सेवाक तीन घर। नवा लिखित दरमे उतारबाक मजदूरी शामिल नहि छल। पिछली उतारबाक रकमक दावा एखन विचाराधीन, मुदा नवा दू यात्राक उतारभाड़ा स्वतंत्र लिखल गेल।

शान्ति लिपिकसँ कहलीह जे सीमाक दूनू कातक पारगमनमे हुनकर नाम दु बेर देखाओल जाइत अछि, मानू दू अलग व्यक्तिक काम अछि। “दुनू हमहीं छी,” ओ कहलीह, “मुदा प्रत्येक कातक कामक समय अलग। एतयक कमाइ ओतयक बकायामे नहि काटू।” कर्मचारी क्रमांक मिलौलक। दोसर कातक पर्चीमे उपनामक अक्षर चूक छल। शान्ति अपन मूल दस्तखत देखौलीह, मधु गवाही देलीह, आ कर्मचारी संशोधनक प्राप्ति-पत्र दऽ देलक। एहि दिन नवा कामक दू मद स्वीकृत भेल; पुरान दू बोराक एक मदक भुगतान एखन बाँकी छल।

घाटक किनारमे एक बालक पानिमे उतरि छोट पाथर चुनैत छल। ओकर माय दूरसँ आवाज देलीह, “गहिरे नहि जा!” बालक कहलक, “हम तऽ पाथर लए रहल छी!” शान्ति अपन कापी समेटैत ओकरा कहलीह, “पाथर अहाँक संग दौड़ि नहि जायत। पहिने किनारपर आउ।” बालक घुरि अएल। कबीरकें बुझायल जे नदीक रोजी आ सुरक्षा कागदसँ पैघ कथा अछि।

अमीर घाट लगक छायामे तीन परिवारक बैठक शुरू कएलनि। एक परिवारक प्रतिनिधि चाहैत छल जे सभ रकम एक साझा खाता सँ गुजरय; एतयसँ शुल्क घटत आ भेजनिहारकें कनी सुविधा भेटत। दोसर परिवारक स्त्री कहलीह जे साझा खाताक चाभी एक व्यक्तिक लग रहत तँ हुनकर हिस्साक खबर फेर विलम्बसँ भेटत। अमीर एकटा

खाली थारीक बीच तीन दाना राखि देखौलनि। “रास्ता साझा होएत, प्राप्तकर्ता अलग रहत,” ओ कहला, “साझा बाटक अर्थ साझा मालिक नहि। प्रत्येक प्रेषणक अनुमति, शुल्क आ प्राप्तिक प्रमाण ओकर अपन होएत।”

दलाल, जे पहिने एकल ‘साझा कोड’क प्रस्ताव देने छल, एहि बेर दूरसँ अएल। “अहाँ सभ कागदमे दिन खायब,” ओ कहलक, “हम आधा समयमे रकम पहुँचा देब।” अमीर पुछलनि, “आ नहि पहुँचल तँ?” दलाल अपन पुरान मोहर फेर देखौलक। बिनु दराई, जे अपन घरक प्राक्तिक हिसाब लेल अएलीह, कहलनि, “मोहर प्राक्तिक प्रमाण नहि। हम जे रकम घरक खर्चमे उपयोग करैत छी, तकर खबर हमरा भेटए। हम पति जे नहि भेजलाह, ओहि रकमक नामे सही नहि करब।” अमीर बिनुक आवाजकें मात्र दलील नहि बनौलनि; ओ हुनकर निर्देश अलग लिखलनि।

एक प्रवासी श्रमिककें रोगी मायक लेल तुरन्त रुपैया पठेबाक छल। अमीर हुनका प्रतीक्षा करबाक उपदेश नहि देलनि। ओ अधिकृत दू सेवाक वास्तविक शुल्क, सम्भावित समय आ विफल भेला पर शिकायतक विधि सामने रखलनि। युवक अपन सहमति सँ ताहिमे सँ एक चुनलक; रकम प्राप्त भेलाक पुष्टि एखन नहि आयल छल। दोसर परिवार प्रतीक्षा चुनलक। तेसर दू प्राप्तकर्ताक अनुमति देलक। एक्के बैठकक परिणाम तीन प्रकार भेल, मुदा ककरो निर्णय दलालक मुट्ठीमे एकट्ठा नहि गेल।

अमीर पुरान प्रवास-पत्रक पात खोललनि। कागदक एक ठाम ‘फरियानी’ लिखल छल, जे पहिनेसँ जाँचल छलाह। दलाल कहलक, “तखन पता चलि गेल—एहिसँ सभ रकमक बाट सिद्ध अछि।” अमीर कागद घुमा कऽ हुनका पढ़बौलनि। ओहिमे स्थान-संकेत छल, जारी करनिहारक चिह्न छल, मुदा प्रत्येक खेपक पूरा मार्ग अथवा आजुक ठेगानाक माप नहि। “ई शब्द ओहि पुरान पत्रक अछि,” अमीर कहला, “हम अहाँक छिटगर नकाशा लेल एकर अर्थ नहि बदलब। मुदा ई बतब जे ककर नामपर रकम भेजल गेल छल, तकरा जाँचब सम्भव अछि।” दलाल एकल अधिकारक प्रस्ताव फेर नहि रखलक।

नसीमा शेरशाहवादी सिएल जिल्दवला अपन कागद लऽ अएलीह। यात्रा-पत्रक ऊपर ‘मेची’ छल; पाछाँ परिवारक नाम गलत काटल गेल छल। हुनका चौकीक मोहर चाही, मुदा उपलब्ध प्रति मे स्पष्ट नहि छल। एक कर्मचारी कहलक, “नदीक नाम तँ मिलि गेल,

बाट बुझि लिआ।” नसीमा उत्तर देलीह, “नाम नदीक भऽ सकैत अछि, पत्रक ठामक संकेत सेहो; मुदा ई कागद हमर घरक यात्राक पूरा नक्शा नहि।” ओ अपन परिवारक नामक सही लिखावट, मूल भाषा आ अनुवादकक श्रेयक तीन बात अलग करबौलीह।

कबीर नसीमाकेँ पुछलनि, “नाम गलत कटबाक कारण किछु पैसा अटकल अछि?” नसीमा कहलीह, “एहि पन्नासँ नहि। प्राप्तकर्ताक शंका आ खर्चक दावा अलग कागदमे अछि।” पन्ना कएल चारि साक्ष्य-भेद कबीरकेँ मोन पड़ल। ओ कहला, “तखन आज जे देखलहुँ से सुधारल लिखावट, जे सुनलहुँ से घरक यात्राक बात, आ जे नहि साबित भेल से अटकल भुगतानक कारण।” नसीमा हँसलीह। “ई फाटल जिल्द आइ साँझ धरि सिएबाक सेहो अछि।” ओ कागद सम्हारि उठि गेलीह।

दुपहर ढलैत कबीर पालन करनिहारी मायकेँ खबर देलनि जे साँझ धरि घुरताह। सरिताकेँ सेहो घाटक कामक खबर देलनि, मुदा अपन जन्मसम्बन्धी कागदक विवरण नहि। सरिताक उत्तर अएल—विद्यालयक बरामदा मेजक एक पाया ढीला भेल अछि, घुरलापर समय भेटए तँ देखथि। कबीर छोट उत्तर पठौलनि, “देखब।” ई पहिल बेर नहि छल जे सरिता हुनका साधारण काज कहने छलीह; तथापि एहि बेर ओ काज हुनका अपन जीवनक पुनरागमन जकाँ लागल, बिना ककरो मृत्युक अभाव भरबाक दम्भक।

विदेहपुर पहुँचि कबीर सुभद्राक घरक दुआरपर ठाढ़ भेला। सुभद्रा औषधिक डिब्बा सम्हारि रहल छलीह। कबीर हुनका कहलनि जे अभिलेख-केन्द्रमे हुनकर प्रत्यक्ष कथन अलग सुरक्षित अछि, मुदा मूल जन्म-पंजीक लिखित पुष्टि शेष। सुभद्रा उत्तर देलीह, “तोरा जन्म देने रही—ई हमर अनुभवक गवाही अछि। मुदा तोरा पोसिनिहार घरक इतिहास हम लिखि नहि सकैत छी।” कबीर पुछलनि, “अहाँ चाहब तँ सप्ताहमे एक दिन भेटि अहाँक काजमे संग देब; चिकित्सकक समय जानब, मुदा अहाँक घरक चाभी अपन मानि नहि लेब।” सुभद्रा कहलीह, “समय हमहुँ चुनब। तोहर आओर घरक निर्णयमे हमरा आज्ञा देबाक नहि।” दुनू अगिला भेंटक दिन आपसी सहमतिसँ तय कएलनि।

विदेहपुर घुरला पर कबीर सरिताक विद्यालय पहुँचला। मेजक पाया नीचाँ राखल ईंट पानिसँ गील छल। ओ ईंट हटबैत कहला, “लकड़ीक जोड़ ढीला अछि; अस्थायी ईंट राखलासँ बच्चा ठेस खा सकैत अछि।” सरिता पेंचकस आ एक छोट काठक टुकड़ा

देलीह। कबीर जोड़ देखलनि; फाट बेसी छल, तँ ओ मेजकेँ आजक लेल उपयोगसँ हटेबाक सलाह देलनि। “ठीक करबाक खर्च कतेक?” सरिता पुछलीह। कबीर अनुमान कहलनि, पक्का दाम नहि। दूनू मेज हटौलक आ बच्चासभकेँ कारण बुझौलनि।

काजक बीच सरिता कबीरक हाथक लाल किनारवला रुमाल देखलीह। “ई पुरान अछि,” ओ कहलीह। कबीर उत्तर देलनि, “हम अएबाक दिनक—माय सम्हारने छलीह। जन्मक पहिल घरक निशान एतय नहि अछि, मुदा हमर पालनक बहुत बरखक गन्ध अछि।” सरिता कोनो उत्सुकता नहि देखौलीह। “हम नैराक किछु सामानमे सेहो एहन चिन्ह देखैत छी,” ओ कहलीह, “चिन्ह प्रिय होएत, मुदा ओकरासँ सभ घटना प्रमाणित नहि होइत।” कबीर सहमति देलनि। दुनूक दुःख अलग छल, मुदा दुनू एक दोसराक मौनपर अधिकार नहि जतौने छलाह।

साँझ माय बरामदामे बैसल छलीह। कबीर घर पहुँचलाह तँ ओ खिचड़ीमे घी देबाक चम्मच खोजि रहल छलीह। “चम्मच सामने अछि,” कबीर कहला। माय चम्मच उठा कऽ हँसलीह, “ई देखए लेल एतेक पढ़ाइ कएलह?” कबीर हँसैत हुनकर बासनमे पानि भरलनि। तखन ओ नव प्रमाणित प्रति सामने रखलनि। “एहिमे अहाँक पालन-श्रम सही अछि। जन्मक स्रोतक जाँच खुलल अछि। अहाँकेँ अपन कथन बदलबाक कोनो दबाव नहि,” ओ कहला। माय अपन नाम पढ़ि दोबारा पन्ना मोड़ि सही ठाम रखलीह।

ओ पुछलीह, “आइ सुभद्राक घर गेलह?” कबीर कहला, “हँ। ओ अपन कथनक मूल पुष्टि लेल समय चाहैत छथि। हम हुनकर बात सुनब आ भेटब; मुदा जन्मक उत्तरक नामपर अहाँसँ सम्बन्ध छोट नहि करब।” माय पुछलीह, “हमरा सेहो हुनका सँ भेटए पड़त?” “नहि,” कबीर उत्तर देलनि। “अहाँ चाहब तँ कखनो। अहाँ नहि चाहब तँ ओहो निर्णय सम्मानित रहत।” माय अपन थारी समेटैत कहलीह, “हमरा ओहि स्त्रीसँ बैर नहि। मुदा आइ हमर मन भेटबाक नहि अछि।”

पालन करनिहारी माय खिचड़ीक चम्मच घुमौलीह। “हम कखनो-कखनो सोचैत छी जे तोरा जन्म देने स्त्री हमरा देखितथि तँ की कहितथि,” ओ कहलीह। कबीर पुछलनि, “अहाँ हुनका दोषी बुझैत छी?” माय कहलीह, “हम हुनकर समस्त परिस्थिति नहि जनैत छी; दोषक फैसला किएक करी? मुदा तोरा ज्वरमे राति काटल वर्षक थकान हमर सत्य

अछि।” कबीर पहिने सँ राखल रुमाल फेर मेजपर रखलनि। “हुनकर कथन हुनकर, अहाँक श्रम अहाँक,” ओ कहला। “दुनू घरक प्रति देय अलग तरहक अछि।”

रातिक भोजनक बाद कबीर अपन कापी खोललनि। एक पृष्ठमे लिखलनि—पालनक दस्तावेजक स्थिति स्पष्ट; सुभद्राक जन्मसम्बन्धी प्रत्यक्ष कथनक मूल पुष्टिक प्रतीक्षा; अगिला भेंट दूनूक सहमतिसँ। दोसर पृष्ठमे शान्तिक नवा यात्राक स्वीकार कएल उतारभाड़ा आ पुरान दू बोराक बाँकी दावा; तेसरमे अमीरक तीन परिवारक अलग प्रेषण-विकल्प। ओ सभ पन्नाकेँ एक दास्तानक सूत्र बना कऽ जोड़बाक कोशिश नहि कएलनि। प्रत्येक मनुखक जीवनमे कतेको दरबज्जा छल, ककरो दरबज्जाक चाभी दोसरक हाथमे मात्र ओकर सुविधा लेल नहि देल जा सकैत छल।

कबीर निजी पत्रक खाम दिस देखलनि। ‘निजी—अनपठाओल’ लिखल अक्षर एखनहुँ ओतहि छल। ओ खाम खोललनि नहि। नैराक फोन संयुक्त संरक्षणमे बन्द रहल; सन्देश प्रकाशित करबाक कोनो नब अनुमति नहि देल गेल छल। ओ नैराक मृत्युकेँ अपन जन्मक कथामे आ जन्मक अनिश्चितताकेँ नैराक स्मृतिमे जोड़बाक मनक पुरान आकुलता देखलनि। ओ बुझलनि जे ई दुनू दुःख एके देहमे रहि सकैत अछि, मुदा एक दोसराक उत्तर नहि। ओ खिड़की खोललनि। अन्हारमे दूरसँ पाठशालाक कोनो बच्चाक गीत सुनाइत छल।

अगिला भोर अमीरक सन्देश अएल। पहिल परिवारक प्रेषणक प्राप्ति पुष्टि भऽ गेल, दोसरक रकम एखन रास्तामे छल, तेसरक दू प्राप्तकर्ताक निर्देश पुनः जाँचबाक छल। कोनो साझा दलालक नामपर समस्त रकम नहि गेल। शान्तिक सन्देशमे लिखल छल जे अगिला यात्राक उतारभाड़ाक नवा पर्ची दुनू कात मानल गेल, मुदा पुरान बकायाक सुनवाई एखन बाकी। कबीर दूनू सन्देश अलग फोल्डरमे रखलनि। सीमातीर्थमे काज आगाँ बढ़ल छल, सम्पूर्ण न्यायक घोषणा नहि भेल छल।

माय दरबज्जा खोलि कहलीह, “बजारसँ नुन अनबह? काल्हि बिसरि गेलहुँ।” कबीर थैला उठौलनि। रुमाल जेबमे राखि ओ पुछलनि, “अहाँ नाश्ता खएलहुँ?” “खा लेलहुँ,” माय कहलीह, “एखन नुन आन।” कबीर बजारक बाट पकड़लनि। हुनकर जन्मक प्रश्न खुलल छल, पालनक घर जीवित छल, आ सुभद्रासँ भेटबाक नव समय ओ बिना दबाव

तय कएने छलाह। ई वापसी कोनो बन्द दरबज्जाक अन्तिम चाभी नहि छल; ओ एहि घरसँ, अपन निर्णयक अधिकार लऽ, फेर बाहर निकलबाक साधारण साहस छल।

अध्याय २०३ • साथक जीव

हिमालयक उत्तर दिशाक निर्जन बाटपर युधिष्ठिरक पानिपात्र खाली होमए लगल। ओ पात्र उलटि देखलनि; तल्लामे एक घूँट पानि चमकि रहल छल। कुकुर ओहि चमक दिस ताकलक, फेर मुँह फेरि पाथरक छाँहमे बैसि गेल। भीमक मृत्यु पछाति ई पहिल प्राणी छल जे हुनकर उठबाक प्रतीक्षा करैत छल। युधिष्ठिर पात्र ओकरा आगाँ रखलनि। कुकुर पानि चाटि लेल, मुदा उठल नहि। ओकर अगिला पएरक तल्लामे बर्फक नोक धँसल छल।

युधिष्ठिर घुटना टेकलनि। पएर छूबिते कुकुर काँपि उठल, दाँत देखौलक। ओ हाथ पाछाँ कऽ चुपचाप बैसि रहलाह। थोड़े देर बाद जीव अपने पएर सरकौलक। युधिष्ठिर अपन वस्त्रक किनार फाड़ि ओतए बान्हलनि, बर्फक नोक सावधानीसँ निकाललनि। हुनकर मनमे द्रौपदीक हाथ, सहदेवक टूटल डण्डा, नकुलक आवाज, अर्जुनक खाली हथेली आ भीमक अन्तिम हँसी एक-एक कऽ उठल। ई कुकुर हुनका ओहि सभक बदला नहि भेटल छल। ओ मात्र जीवित छल।

बहुत दूर ऊपर उज्जर आकाशमे रथक उजास देखायल। इन्द्रक आह्वान पहाड़पर गूँजल —युधिष्ठिर अपन देहसहित स्वर्गक यात्रा करथि। राजा थाकल आँखिसँ रथ दिस तकलनि। जे सभ छुटि गेलाह, हुनका सभकेँ छोड़ेबाक पीड़ा एखन खत्म नहि भेल छल। ओ पहिने पुछलनि जे भाइसभ आ द्रौपदीक की भेल। इन्द्र हुनका स्वर्गक आश्वासन देलनि; मुदा रथमे कुकुर लेल ठाम नहि छल। कुकुर एखनहुँ युधिष्ठिरक पएर लग ठाढ़ छल, ओकर पट्टीपर गील बर्फ जमि रहल छल।

युधिष्ठिर कहलनि, “ई जीव हमरा संग एतए धरि आएल अछि। हम एकरा छोड़ि रथपर नहि चढ़ब।” इन्द्र बुझौलनि जे स्वर्गक नियममे एहन पशुक प्रवेश नहि। युधिष्ठिर उत्तर देलनि, “हम राजपाट छोड़ि आएल छी; अपन लोककेँ बचा नहि सकलहुँ। मुदा एखन जे हमरा पर आश्रित भऽ चलैत अछि, तकरा छोड़बाक निर्णय हम अपने नहि करब।” कुकुर हुनकर वचन नहि बुझैत छल। ओ केवल थाकल देहसँ बगलमे खसल पट्टी सूँघि रहल छल।

वर्तमान, विदेहपुर, २०४२। कबीर नुनक थैला लऽ बजारसँ घुरैत छलाह तँ रुहानीक आश्रयक बाहरी फाटकपर एकटा पुरान दरी देखलनि। ओकर एक कोना भीजल छल। दरीपर असगर पड़ल भूरा कुरुर मुँह उठेबाक प्रयत्न कएलक, मुदा फेर माथ रखि देलक। भीतर जावेद कलन्दर अपन छाया-खेलक बाँस समेटि रहल छलाह। रुहानी दरी उठेबाक लेल झुकलीह। कबीर पुछलनि, “एहि जीवकै कतए लऽ जा रहल छी?” रुहानी कहलीह, “कातवला ओसार सुखाएब; एहि दरीमे सीलन धरि गेल अछि।”

आश्रयक पिछिला कोठरीक छप्पर टपकैत छल। मकानक देखरेख करनिहारक पत्र आयल छल जे कोठरी मरम्मत होएत तँ सप्ताह भरि ओतए पशु नहि रहि सकत। किछु लोक सुझाव देने छल जे बूढ़, मन्द चलनिहार पशुकें दूर कतहु छोड़ि देल जाए, कारण ओ न पहरा दऽ सकैत अछि, न दर्शककें आकर्षित। रुहानी सिधा उत्तर देलीह, “पहरा देबाक लेल एकरा अपनने नहि छलहुँ।” मुदा गील छप्पर, औषधि आ सुरक्षित ठामक खर्च हुनकर हाथमे सचमुच छल।

जावेद दरीक दोसर कोना उठा कहलनि, “काल्हि कार्यक्रममे जतेक बचल, ओतबासँ एहि पशुक दवा नहि किनाएत।” ओ अपन बही खोलि देखौलनि जे पहिले पशुक प्रदर्शन छोड़बाक मूल्य हुनका कतेक बेर अपन रोजीमे देबए पड़ल। रुहानी हँसलीह नहि। “अहाँक मेहनताना पशुक नामे काटब नहि,” ओ कहलीह, “मुदा हमरा सहयोग करबाक आओर उपाय होएत।” कबीर थैला नीचाँ रखलनि। “पहिने ई पूछी—ओसार कतेक दिन खाली राखबाक अछि आ डॉक्टर की कहने छथि?”

रुहानी औषधिक पर्ची निकाललीह। पएरक पुरान चोटपर फेर सूजन छल; जाँच लेल अगिला दिनक समय तय छल। उपचारक परिणाम एखन निश्चित नहि। कोठरीक मरम्मत पाँच दिनमे होएबाक बात पत्रमे छल, मुदा काज शुरू होमएक तिथि दोसर पन्नामे अलग लिखल छल। कबीर दुनू तिथि मिलौलनि। “तखन आज राति कहाँ?” रुहानी पुछलीह। जावेद अपन घरक सँकर ओसारक बात कएलनि, फेर अपन वाद्य आ परिवारक आवागमन मोन पड़िते रुकि गेलाह।

कोनापर ठाढ़ दू पड़ोसी कहैत छलाह जे आश्रयक पुरान पशुसभ सँ गलीमे दुर्गन्ध बढ़त। एक स्त्रीक चिन्ता छल जे बच्चा ओसारसँ खेलैत दौड़त तँ कुरुर डरि कऽ काटि

सकैत अछि। रुहानी हुनकर आशंका सुनलीह। “बच्चाकेँ दूर रखब, उपचारक समय तय करब आ सफाई अपन हाथसँ करब,” ओ कहलीह। पड़ोसिन पुछलीह, “आ पाँच दिन पाँच मास भऽ गेल तँ?” ई प्रश्नकेँ रुहानी हलुक नहि बनौलीह। ओ कहलीह, “तखन फेर सभकेँ संग बजाएब; आज अनन्त अधिकार नहि माँगैत छी।”

कबीर विद्यालयक बरामदामे सरितासँ भेटलाह। पिछिला दिन ओ मेजक ढीला पाया देखिकऽ ओकरा उपयोगसँ हटौने छलाह। सरिता मिस्त्रीसँ दाम पूछबाक लेल सूची बना रहल छलीह। कबीर आश्रयक बात सुनौलनि। सरिता कहलीह, “विद्यालयक बरामदा बच्चासभक पढ़ाइक अछि, ओकरा बिना पूछने आश्रय नहि बना सकैत छी।” कबीर सहमति देलनि। “तखन रुहानीक पाछाँक सुखल छायामे पाँच दिनक व्यवस्था,” ओ कहलनि। “काजक समय, सफाई आ दवाईक खर्च के देत—से लिखब जरूरी अछि।”

सरिता पहिने कुरकुर देखबाक लेल गेलीह। ओकर देहसँ पुरान दवाईक गन्ध आबि रहल छल। ओ नैराक एकटा दिन मोन कएलनि जखन बेटी विद्यालयक बाहर घायल चिड़ै देखिकऽ समस्त भीड़ रोकए चाहने छलीह। एखन बेटी जीवित नहि छलीह; स्मृति ओकर नामपर ककरो निर्णय देबाक अनुमति नहि छल। सरिता अपन ओढ़नी समेटि रुहानीसँ कहलीह, “हम साँझ एक घंटा दरी सुखा सकैत छी। ई सहायता विद्यालयक धनसँ नहि होएत। मुदा पढ़ाइक बरामदा बंद करबाक निर्णय नहि लेब।”

ओही दुपहरि बिनु दराई अपन घरक नव सन्देशवला खाम लऽ अमीर कुल्हैयाक कक्षमे पहुँचल छलीह। प्रवासमे कमाइ करनिहार पतिसँ नव सूचना अएल छल: अगिला प्रेषणमे घरक सामूहिक खर्च आ बिनुक व्यक्तिगत बचतक रकम अलग देखाएब। मुदा सम्बन्धित सेवा पहिनुक बहीमे पुरुष अभिभावकक नाम लिखने छल। बिनु कहलीह, “पत्रमे हमर नाम अएल, एहि भरसँ प्राप्ति हमर हाथमे नहि अएल।” अमीर पुछलनि, “रकम पहुँचबाक पुष्टि अछि?” बिनु उत्तर देलीह, “एखन नहि।”

घर घुरि बिनु सासु लग बैसलीह। सासु धानक नब झोर सुखा रहल छलीह। “घरमे दू खाता बनत तँ दू चूल्हि बनत,” ओ चिन्तासँ कहलीह। बिनु धानक मुट्ठी उठौलीह, दू थारीमे बाँटलीह, फेर दुनू थारीक धान एके भंडारमे रखलीह। “खर्चक नाम अलग भेलासँ भोजन अलग नहि होइत,” ओ कहलीह। सासु पुछलीह, “आ पइसा नहि पहुँचल तँ?” बिनु उत्तर

देलीह, “तखन हम पहुँचि गेल लिखि हस्ताक्षर नहि करब।” दूनू एहि एक बातपर सहमत भेलीह।

पुरान पत्रक किनार लिखल ‘सीर’ फेर उठल। बिनुक देवर कहलनि जे एकर नाममे दोसर ठाम जोड़ि देलासँ यात्रा-पत्र सहज भेटत। बिनु पुरान पन्नाक दागदार अक्षर देखौलीह। “ई हमर परिवारक छोट स्थानक अपन संकेत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा एकर धारा कता बहैत अछि, से हमर खाम नहि कहैत अछि। नामकेँ बड़ नकाशामे घुसाएब तँ जे रोकल रकमक तिथि अछि, से फेर गुम भऽ जाएत।” ओ ‘सीर’क मूल प्रति आ रकमक दावा दू अलग घरमे रखलीह।

अमीर नव निर्देशवला पन्नाक एक प्रति बिनुकेँ घरमे दऽ गेलाह। ओ बुझौलनि जे पतिसँ पुष्टि भेजल शब्द आ घरमे प्राप्त रकमक रसीद अलग अछि। बिनु फोनपर पति संग बात कएलीह। ओ कहलाह जे अगिला बेर बिनुक नाम अंकित करबाक प्रयास करतीह, मुदा अतिरिक्त शुल्कसँ बचबाक चिन्ता अछि। बिनु शान्त स्वरमे कहलीह, “जँ शुल्क बेसी अछि तँ दू विकल्पक हिसाब देखाउ। हमर नाम हटाकेँ सस्ता बतएब हमरा नहि चाही।” हुनकर बीच मतभेद टुटल नहि; बातचीत पहिल बेर रकमक विकल्पपर पहुँचल।

साँझ आश्रयक ओसारमे दूटा चटाइ बिछल। पहिलपर घायल कुकुर, दोसरपर दवाइक डिब्बा आ सफाइक सामान रहल। रुहानी पड़ोसिनकेँ भीतर बजौलीह, जाहिसँ ओ देखथि जे पशु खेलबाक बातमे नहि। पड़ोसिन अपन बच्चाकेँ फाटकक बाहर ठाढ़ रखलीह। “राति भरि के रहत?” ओ पुछलीह। जावेद कहला, “पहिल पहर हम; भोरुका सफाइ रुहानी।” कबीर कहला, “नाम लिखब, मुदा जे काम करब ओकर समय ओहि नामक लोकसँ पूछब।”

एक युवक व्यंग्य कएलक, “जखन कुकुर किछु काजक नहि, तखन एतेक हिसाब किएक?” रुहानी ओकरा खसीक छौना आ घायल बैलक बीचक पुरान अन्तर बुझाएब नहि चाहलीह। ओ सिर्फ पुछलीह, “जँ घरक बूढ़ लोक काज नहि करथि, हुनका भोजनक अधिकार घटि जाइत अछि?” युवक कहलक, “मनुष्य आ जनावर एक नहि।” “हँ, एक नहि,” रुहानी उत्तर देलीह, “मुदा भूख आ चोटक उपेक्षा करबाक अधिकार एहि भेदसँ कोना बनि जाइत अछि?” पड़ोसिन चुपचाप चटाइक दूरक कोना सरकौलीह।

बिनु दुपहरिक बहसक बाद ओतए अएलीह। ओ पशुक माथपर हाथ नहि रखलीह; कुकुर अपरिचित गन्धसँ घबराएल छल। रुहानी कहलनि, “धीरे।” बिनु एक पाथर सरकाकऽ चटाइक आगाँ पानि राखलीह। “हमरा साँझक आध घंटा भेटि सकैत अछि,” ओ कहलीह, “मुदा घरमे बालिकाक पाठ सेहो देखबाक अछि।” जावेद पुछलनि, “तखन अहाँक नाम रोज लिखि दी?” बिनु उत्तर देलीह, “नहि। जे दिन आबि सकब से पहिने कहब। नाम लिखलासँ बेसी दिन बनि नहि जाइत।”

एहि बीच मीरा बंजारा अपन बहिनक ठेला संग बजार पहुँचल छलीह। बहिनक पुरान कापीमे ‘सुपैन’क प्रविष्टि छल, जतय अलग ग्राहकक संख्याक संग बाटक नाम लिखल गेल छल। साझेदारीक व्यापारी फेर कहने छल जे सभ ठेला एकठाम जुड़ि जाए तँ भाड़ा घटत। मीरा उत्तर देलीह, “अगिला सप्ताह सोनमती आ निरुक खेप लेल हमर दू दिनक बात पहिनेसँ तय अछि। बहिनक चारि बोराक निर्णय बहिन करतीह।” व्यापारी पुछलक, “एके परिवारक दू उत्तर?” मीरा कहलीह, “एके परिवारमे दू लोक अछि।”

बहिन ‘सुपैन’ लिखल कापीक पन्ना पलटलीह। पुरान ग्राहकक रसीदक संख्या भेटल, मुदा रास्ताक पुरा माप नहि। ओ कहलनि, “एहि नामक भरोसे हम अपन वस्तुक हिसाब खोजब, पहाड़ आ नदीक नक्शा नहि बनायब।” व्यापारी साझेदारीक दर लिखि गेल। बहिन अपन अलग बाटक दू दिनक वास्तविक खर्च जोड़लीह। किछु बचत साझेदारीमे छल, मुदा ओकरा लेल एक दिनक अपन ग्राहक छोड़ए पड़ैत। ओ निर्णय एखन रोकि देलीह, कारण ग्राहकक कहल समयक पुष्टि बाकी छल। मीरा हुनकर कापी अपन झोरामे नहि रखलीह।

ओहि ठेलापर रुईक एक छोट गट्टर छल। रुहानीक आश्रयमे पट्टी लेल साफ रुई चाही, मुदा ओ पशुक बहाने ठेलाक पूरा सामान निःशुल्क माँगबाक पक्षमे नहि छलीह। मीरा रुईक दाम कहलनि; जावेद अपन बही देखलनि। रुहानी दान आ खरीदक अलग अर्थ बुझैत छलाह। अन्तमे बहिन छोट हिस्सा उचित दामपर देलीह आ शेष सामान ग्राहक लेल राखि देलीह। जावेद पैसाक रसीद सम्हारलनि। ई छोट खरीद घायल जीवक मदद छल, परिवारक व्यापारक नामपर चुपकेँ धन हरण नहि।

राति पड़िते ओसारपर साँझक हवा तेज भेल। कुकुर उठि बाहर जएबाक प्रयास कएलक। पट्टीक किनार ढील भऽ गेल छल। जावेद ओकरा खींचि पाछाँ अनए चाहलनि, रुहानी रोकलीह। “डरि गेल अछि,” ओ कहलीह। ओ फाटकक लग धरतीपर बैसि रहलि, कोनो हड़बड़ी नहि। कुकुर कनी दूरी चलि स्वतः घुरि चटाइपर बैसि गेल। बाहर अन्हारमे एक बालक पूछलक, “एहन रोगी कुकुर कतए जायत?” जावेद कहलनि, “ओ स्वयं सेहो नहि जनैत होएत। तँ हम सभ ओकरा ठेलि नहि दैत छी।”

हिमवर्ती प्राचीन बाटपर रथक उजास एखनहुँ ठाढ़ छल। इन्द्र युधिष्ठिरकेँ बुझा रहल छलाह जे अपन सभ पुण्यक फल प्राप्त करबाक अवसर दुर्लभ अछि। युधिष्ठिरक पैर बर्फमे सुन्न भऽ रहल छल। ओ रथक ऊष्मा तकलनि, फेर बगलमे अटकल पट्टीवला जीवकेँ। “हमर पुण्य जँ एतेक छोट अछि जे एक साथी लेल ठाम नहि,” ओ कहला, “तखन ओकर फल हम नहि माँगब।” कुकुर धीरे-धीरे उठि हुनकर अगिला डेगक समानान्तर चलबाक प्रयत्न कएलक।

इन्द्रक तर्क रहल जे मृत भायसभकेँ छोड़ि आएल पुरुष एकटा कुकुर लेल अवसर त्यागैत अछि—ई कोन समता? युधिष्ठिर उत्तर देलनि, “भायसभक प्राण हम घुरा नहि सकलहुँ; एहि जीवक प्राण एखन हमर निर्णयक अगाँ अछि। मृतककेँ न बचा सकबाक दुःख सँ जीवितकेँ त्यागबाक अधिकार नहि भेटैत अछि।” हुनका स्वरमे राजाज्ञाक कड़क नहि छल। ओ पहिने अपन हाथ आगाँ बढ़ौलनि, जेना कुकुर चाहे तँ संग चलए। जीव ओ हाथ सूँघि कऽ युधिष्ठिरक पएर लग ठाढ़ रहल।

तखन पुरान आख्यानक समयमे कुकुरक रूप बदलल; धर्म अपन स्वरूपमे प्रकट भेला। युधिष्ठिरक करुणाक परीक्षा पूर्ण भेल, आ इन्द्रक रथक निमन्त्रण फेर सामने रहल। मुदा ओहि क्षणक भीतर परीक्षाक फलसँ पहिने एकटा साधारण बात बचल रहि गेल—जखन ओ जीव अपना रूपमे छल, युधिष्ठिर ओकर परिचय नहि जानैत छलाह। ओ देवता मानि संग नहि रखने छलाह। स्वर्गक रथ प्रकाशमे आगाँ बढ़ल; हिमवर्ती पाथरपर कुकुरक पएरक पुरान निशान बहुत देर धरि रहि गेल।

२०४२क भोर, विदेहपुर। रुहानी चिकित्सकक जाँच लेल कुकुरकेँ लऽ गेलीह। औषधिक नब विधि भेटल, मुदा चोट पूर्ण स्वस्थ होएबाक भरोसा नहि देल गेल। मरम्मतक कारीगर

छप्परक तिथि निश्चित करबाक लेल आएल। पाँच दिनक अस्थायी ओसारक व्यवस्था लिखित भऽ गेल—आवागमनक बाट खुलल रहत, बच्चासभकेँ दूरी बुझाओल जाएत, सफाई आ उपचारक खर्च अलग दर्ज होएत। बूढ़ जीवक ठाम अस्थायी छल; एकरा रातिराति सड़कपर छोड़बाक प्रस्ताव अब स्थगित छल।

बिनु ओहि दिन अपन घरमे नव प्रेषणक सन्देश देखलीह। सेवा-केन्द्र रकमक निर्देश प्राप्त कएने छल, मुदा वास्तविक प्राप्ति तखन धरि पुष्टि नहि कएने छल। सासु अपन हाथसँ कापीमे ‘प्राप्ति बाकी’ लिखलीह। बिनु हुनका पुछलीह, “एतबा दिनक बाद अहाँ किएक लिखैत छी?” सासु कहलीह, “काल्हि हम कहलियै जे दू चूल्हि नहि हो। मुदा झूठा प्राप्तिपर हस्ताक्षर करबो तँ हमरा भोजन नीक नहि लागत।” दुनू एक संग धानक बोरा भीतर सरकौलीह।

मीरा बंजाराक बहिन सुपैनक ग्राहकसँ समयक पुष्टि प्राप्त कएलीह। ओ एक दिनक अलग ढुलाई रखबाक निर्णय लेलनि, दोसर दिनक भाड़ा साझेदारीक लिखित दर देखलाक बाद तय करतीह। मीरा अपन दू दिनक पुरान उत्तर बदलबाक दबाव नहि देलीह। आश्रयक लेल जे रुई किनल गेल छल, तकर रसीद बहिन अपन सामान्य बिक्रीक पन्नामे रखलीह। ककरो दयाक कथा लिखबाक बदला ओ छोट व्यापारक काज लिखलनि; बहिनक बाट एखनहुँ हुनकर अपन छल।

साँझक बैठकमे पद्मा चारि श्रेणीक कागद पढ़ौलीह—प्रत्यक्ष देखल देखभाल, रुहानीक सुनल चिकित्सकीय निर्देश, मरम्मतक सम्भावित अवधि आ प्राचीन यात्राक कल्पनाशील पुनर्कथा। एक बालिका पुछलक, “कुकुर असलमे देवता छल?” पद्मा कहलीह, “महाप्रस्थानक आख्यानमे धर्म ओहि रूपमे प्रकट होइत छथि; आश्रयक कुकुरक विषयमे एहन कोनो दावा नहि। ओकरा भोजन आ उपचार लेल देवता होएब आवश्यक नहि।” बालिका दरीक पाछाँ सँ कुकुरकेँ देखलक। ओ ताहि क्षण नींदमे छल।

कबीर विद्यालयक ढीला मेजक मरम्मतक दाम लऽ सरिता लग पहुँचलाह। सरिता लागतक कागद अलग रखलीह। आश्रयक उपचारक खर्च विद्यालयक खातामे मिलाओल नहि जाएत, मुदा खुलल पाठशालाक अगिला सभामे पशु आ श्रमक विषयपर बच्चासभक लिखल प्रश्न पढ़ल जा सकत। रुहानी कहलीह, “हम अपन काज देखेब, मुदा कुकुरकेँ

तमाशा नहि बनायब।” जावेद अपन परछाईवला कपड़ा खोली कहला, “हम हुनकर बिना सेहो जीवनक खेल देखाएब।” ई कहैत हुनकर आँखि लग थकान छल, स्वरमे किछु हँसी सेहो।

अन्तिम यात्राक दल नगरक पाठशाला दिस घुरबाक तिथि सोचि रहल छल। बिनुक रकमक पुष्टि, मीराक बहिनक अलग दुलाई आ आश्रयक अस्थायी दरी—तीनू प्रश्न अपन-अपन घरमे खुलल छल। सरिता बच्चासभक लिखल प्रश्नक गठरी बाँधलीह। बाहर कुकुर उठि दू डेग चललक, फेर रुहानीक बगलमे सुति गेल। ककरो ओहि सँ पहरा नहि चाही छल; आज ओकर सुस्थिर साँस मात्र रातिक काजक परिणाम छल। पाठशालाक दरबज्जापर अगिला दिन नव पाठ रखबाक लेल जगह बनि रहल छल।

अध्याय २०४ • पर्वत नहि दरबज्जा

विदेहपुरक खुलल पाठशालाक दरबज्जा भोरमे फेर अटक गेल। किवाड़क निचुलका भाग बरखाक पुरान पानिसँ फुला गेल छल; बाहरक चौखटमे माटिक महीन परत जमल छल। एक बालिका अपन कापीक पाछाँक गत्ता मोड़ि किवाड़क नीचाँ सरकौलक। दरबज्जा खुलल तँ ओकर हाथसँ गत्ता खसि गेल। ओ झुँझलाकऽ कहलक, “साल भरि दुनिया भरिक कागद सुधरैत रहलहुँ, ई दरबज्जा एखन धरि टेढ़े अछि।” सरिता ओहि घड़ी यात्राक गठरी लऽ आँगनमे पहुँचल छलीह। ओ हँसलीह नहि; पहिने बच्चीक हाथमे लागल माटि देखलीह, फेर किवाड़।

“पहिने ई ठीक होएत,” सरिता कहलीह। बच्ची पुछलक, “तखन सभाक पाठ कखन?” सरिता जवाब देलीह, “जखन भीतर जाएबाक बाट अपन हाथसँ खोलि सकब।” संग आएल अभिलेख-दलक लोक अपन-अपन गठरी बरामदामे राखए लगल। पद्माक झोरामे यात्राक बयानक प्रतिलिपि, ताराक बक्सामे दस्तावेजक अनुमति-पन्ना, संकेतक बोरीमे टूटल फलक आ तीनटा सूती डोरी छल। विद्यालयक छतसँ पानिक एक पुरान दाग एखनहुँ लटकि रहल छल। लौटब विजययात्रा नहि, अपूर्ण काजक ठाम घुसल छल।

कबीर बरामदाक मेज देखलनि। ढीला पाया मरम्मत भेल छल, मुदा नव कील लगल ठामक लकड़ी अलग रङक देखाइत छल। विद्यालयमे पढ़निहार एक युवक कहलक, “एखन हमरा सभकेँ पर्ची गनबाक काज देब कि पहिने यात्रा सुनाएब?” तारा ओकर हाथमे तीन खाली आवरण रखलीह। “कथा सुनब, मुदा पहिने ई जानू जे कोन पन्ना पढ़ि सकैत छी आ कोन पन्ना ककर अनुमति बिना खोलबो नहि।” युवक पुछलक, “हमरा सभकेँ भरोसा नहि?” तारा कहलीह, “भरोसा एहि लेल जे सीमा अहाँ स्वयं बुझि कऽ राखि सकी।”

आँगनमे लोकपाठ-खुला खाता-गीतक सालाना आयोजनक लेल बाँसक दू छोट खम्भा गाड़ल जा रहल छल। पुरान कार्यक्रमक फलकपर पहिले लिखल साल मटिआएल छल। एहि बेर सरिता फलकपर अपन अथवा ककरो संस्थाक नाम सभसँ ऊपर लिखबाएब नहि चाहैत छलीह। कमला, जे भोरसँ चटाइ बिछा रहल छलीह, पुछलीह,

“तखन ककर नाम?” एक बालक कहलक, “नैरा दीदीक!” दोसर कहल, “उर्मिला मायक!” तेसर बालिका बीचमे बजली, “जँ ककरो नाम लिखब तँ जे एखन काम करैत छथि हुनकर नाम कतए जाएत?”

सरिता घुटना मोड़ि बच्चासभक बीच बैसलीह। “नैरा मरि गेलीह,” ओ धीरे कहलनि, “हुनकर नाम हमरा लग अपन स्मृति अछि, सभक मंचक मालिकाना नहि। उर्मिलाक बकाया श्रमक हिसाब सेहो एखन पूर्ण नहि। ई ठाम केहन होएत, अहाँ सभ अपन बात कहू।” बच्चासभ एकसंग अनेक उत्तर देलक: किताबघर, प्रश्नघर, गीतघर, जलपाठ, सभाक कोठरी। कोनो नामपर तुरन्त मत नहि भेल। सरिता देखलीह जे ई मतभेद हुनका प्रियजनक स्मृति कम नहि करैत अछि।

पद्मा यात्रा सँ आनल अन्तिम खाताक मोट पन्ना खोललीह। प्रत्येक कथनक आगाँ प्रत्यक्ष, सुनल, अनुमान अथवा कल्पनाक भेद छल; अनुमति-निशान अलग। एक वृद्ध आगाँ बढ़ि कहलनि, “एतेक छानबीनसँ कथा बेरंग भऽ जायत।” पद्मा पुछलीह, “अहाँक अपन कथा हम दोसरक नामसँ छापि दियौ तँ रड बचत?” वृद्ध उत्तर नहि देलनि। पद्मा हुनका बैठबाक ठाम देलीह। “कल्पनाक रंगक रोक नहि अछि,” ओ कहलनि, “मुदा ककरो जीवनपर ठप्पा मारए सँ पहिने स्रोत आ अधिकार चाही।”

यात्राक दलक संग मीरा बंजारा सेहो अएलीह, मुदा हुनकर बहिन पाठशालाक गेटपर ठेलाक रस्सी खींचैत ठाढ़ रहलीह। बहिनक कापीमे ‘सुपैन’ लिखल पुरान ग्राहक-संकेत एखनो छल। ओ अपन तय अलग यात्राक चारि बोरा पहुँचा देलनि; प्राप्ति तीन रसीद भेटल, चौथ ग्राहक घरपर नहि छल। मीरा हुनका कहलीह, “अहाँक अलग बाटक हिसाब कतेक?” बहिन जवाब देलीह, “रातिक रुकबाक खर्च बढ़ल; मुदा ग्राहक हमर समयपर भरोसा कएलक। एक रसीदबाकी अछि, ताहि रकमकेँ कमाइ नहि गनब।”

सोनमती तुरी आ निरु कुमाल साझेदारीक गाड़ी लग ठाढ़ छलीह। सोनमतीक नब बाँसक सामान आ निरुक माटिक बर्तन अलग पाँतिमे पैक छल। साझेदारीक प्रबन्धक आगाँ बढ़ि मीरा सँ कहलक, “आब अहाँक परिवारक सभ खेप एके दरमे जोड़ि दियौ, तखन पूरा घाटा घटत।” मीरा कहलनि, “हम अपन दू खेप लेल दर मानने छी। बहिनक एक दिनक अलग ग्राहक छथि; हुनकर नामे हम सही नहि करब।” प्रबन्धक ठेलाक रस्सी

देखैत रहल। ओकरा एकहि परिवारक भीतर अलग आवाज स्वीकार करब कठिन लगैत छल।

बहिन अपन कापी खोलि साझेदारीक लिखित दर देखलीह। एहि बेर पहिनुका मौखिक आश्वासनक बदला भार, दूरी, प्रतीक्षा आ फुटल बर्तनक दायित्व अलग लिखल छल। मुदा पन्नाक नीचाँ एक पाँति छल—‘साझा निर्णय अंतिम’। बहिन पूछलीह, “ई निर्णय ककर?” निरु पन्ना नजदीक आनलीह। “जँ एक घड़ामे दरारि पड़त, तखन ककरा क्षति?” प्रबन्धक कहलक, “सभ हिस्सेदार बराबर।” निरु उत्तर देलीह, “बराबर शब्दसँ नहि, वस्तुक जाँचसँ तय होएत।”

तारा कागदक खाली कोन देखौलीह, जतए सुधार लिखल जा सकैत छल। मीरा कहलीह, “साझेदारी हमरा लेल उपयोगी अछि, मुदा एकटा ताला बन्ने लगल तँ पुरान एकाधिकार फेर धुरत।” अन्तमे नीचाँ लिखल गेल जे प्रत्येक खेपक मालिक अपन क्षति अलग सत्यापित कराएत, सामूहिक गाड़ी केवल सामूहिक यात्रा लेल सहमत दर लागू करत, आ अगिला खेपसँ पहिने सदस्य बिना दण्ड बाहरे रहि सकत। प्रबन्धक पहिने झुँझलायल, फेर सोनमतीक पहिल खेप छोड़बाक डर सुनि हस्ताक्षर कएलक।

मीरा अपन दू खेप साझेदारीमे पठएबाक निर्णय कायम रखलीह। बहिन अलग ग्राहकक अपूर्ण रसीद मिलबाक प्रतीक्षा करत एक दोसर दिनक लेल मात्र साझेदारीक परीक्षण मानलीह; पूरा कारोबार नहि सौंपी। “एहि दिनक दाम अलग मिलत?” ओ पूछलीह। प्रबन्धक लिखि देलक। निरु फुटल बर्तनक जाँचक नाम जोड़लीह। मीरा बहिनसँ पुछलीह, “बाटक पुरान नाम कापीमे रहत?” बहिन हँसलीह, “बाट हमर अछि, नाम पुरान अछि; गाड़ी बदललासँ दुनू नहि बिकि जाइत।”

भोरक उराहि-काममे भाग लेने गोमती बेलदार सेहो अएलीह। हुनकर हाथक नखमे पानिक जमल माटि छल, आ बहीमे बीते सालक समय-मापक नियमक प्रति। सभा चलौनिहार युवक कहलक, “खुला खातामे सभ रकम एकत्र पढ़ि देब।” गोमती माथ हिलौलीह। “खर्च पढ़ू, मुदा मजदूरक निजी उधारक नाम माइकपर नहि। उराहिक समय आ देयक सार्वजनिक नियम अलग; ककरो निजी घाटा अलग।” युवक पुछलक, “गुप्त

रखब तँ जाँच कोना?” गोमती कहलीह, “प्राप्तकर्ता अपन पर्ची मिलाओत। सभक सामने ओकर संकट बजार नहि बनाओत।”

साँझक कार्यक्रमक पहिल भागमे किशोरसभ पन्नाक जिम्मेदारी बाँटलनि। मूल दस्तावेज बिना अनुमतिक पाठशालामे नहि रहत; जाँचल सार्वजनिक प्रति एक बक्सामे रहत; समुदाय जे विवरण पढ़बाक अधिकार देलक, ओहि पन्नाक पढ़बाक समय निर्धारित होएत। संकेत एकटा बक्साक चाभी देब चाहलनि। एक बालिका पूछलक, “जँ चाभी हमरे लग रहत तँ अहाँ फेर किएक खोलब?” संकेत ठिठकलाह। ओ बक्साक दू चाभी अलग लोकक जिम्मामे रखबाक पहिनुक नियम समझौलनि। बच्ची पुछलक, “आ हम गलती करब तँ?” “जाँच होएत,” संकेत कहलनि, “गलती करेवला बच्चाकें चोर कहि बाहरे नहि कएल जाएत।”

तारा खुलल पाठशालाक यात्राक अन्तिम प्रतिवेदन लिखबाक प्रस्ताव रखलीह। एक सदस्य चाहैत छल जे दलक सभ उपलब्धि लम्बा कागदमे दर्ज हो, जाहिसँ बाहरी अनुदान भेटि सकय। सरिता कहलीह, “जे काम बाकी अछि, ओकरा पूरा देखाएब जरूरी नहि। रातिक सफाई, नामक पाँति, वेतनक बकाया, इलाजक खर्च—एहि सभकें सफलताक रडमे छोपब नहि।” पद्मा चारि पन्ना देखौलीह: सम्पन्न काम, आंशिक सुधार, विवादित दावा आ निजी सामग्री। ई वर्गीकरण ककरो श्रेय घटेबाक लेल नहि, झूठा पूर्णविराम रोकबाक लेल छल।

दूर हिमक आख्यानक समयमे युधिष्ठिर इन्द्रक रथपर आरूढ़ होएबाक क्षण धरि पहुँचि चुकल छलाह। धर्मक रूपमे प्रकट भेल संगक जीव आ इन्द्रक स्वीकृति हुनका आगाँ छल। हिमवर्ती बाटपर पाछाँ रहि गेल पाँचू प्रियजन जीवित भऽ घुरि नहि आएल छलाह। आख्यानक स्वर्गारोहणक दुआर खुलैत छल, मुदा पृथ्वीक शोक ओहि उजासमे पुछाएल नहि छल। युधिष्ठिर एक बेर पाछू तकलनि—जतए खसल शरीरसभक मार्ग छल—आ फेर रथपर चढ़लाह। प्राचीन कथा अपन गति आगाँ बढ़ौलाक बादो मृतकक प्रति प्रेमकें उपलब्धिक प्रमाणपत्रमे नहि बदललक।

विदेहपुरक आँगनमे, २०४२क साँझ, जावेद कलन्दर परछाईवला कपड़ा टाँगि रहल छलाह। हुनकर नब पशु-विहीन प्रस्तुतिक पहिल आमदनी कतेक कम छल, से किछु बच्चा

जानैत छल। एक बालक पुछलक, “आज कुकुर आएत?” जावेद कहला, “आज कुकुरक विश्राम। परछाई चलत।” रुहानी दूर आश्रयमे घायल बूढ़ कुकुरक औषधि आ सफाईक घड़ी देखैत छलीह; ओकरा भीड़क तमाशामे अनबाक निर्णय नहि भेल। जावेद कपड़ापर एकटा खुलैत दरबज्जाक परछाई बनौलनि, आ ओकर पाछाँ हाथमे किताब लऽ छोट आकार आगाँ बढ़ल।

लोकपाठ आरम्भ भेल तँ पद्मा पहिल कथा किछु पन्ना छोड़ि पढ़लीह। एक श्रोता पुछलक, “बीचक घटना किएक गायब?” पद्मा उत्तर देलीह, “ओ पन्ना देनिहार व्यक्ति सार्वजनिक वाचनक अनुमति नहि देलनि।” श्रोता कहलक, “तखन पूर्ण कथा कोना होएत?” पद्मा पन्ना बन्द करैत कहलीह, “हर पूर्ण जीवन सभक सुनबाक वस्तु नहि। जे सुनबाक अधिकार भेटल अछि, ताहिमे सत्यता राखू।” दर्शकमे बैसल एक किशोरी अपन निजी लिखल कविता फेर जेबमे रखि लेलनि; रातिक अन्तमे पढ़बाक वा नहि पढ़बाक फैसला ओ स्वयं करतीह।

खुला खाताक घड़ीमे खर्चक रसीद चौकीपर सजल। गोमतीक उराहि-नियम, शान्ति बोटेक अलग उतार-मजदूरीक प्राप्ति, अमीर कुल्हैयाक तीन प्रेषण-विकल्पक तुलना आ बिनु दरार्क ‘प्राप्ति बाकी’ स्थिति अलग-अलग पन्नामे छल। सभक देय सभसँ पहिने समान रेखामे नहि चढ़ाओल गेल। एक युवक तेज आवाजमे कहलक, “अहाँ सभक संगठन केहन सफल जे एखनहुँ एतेक बाकी?” गोमती ओ पन्नामे अंगुरी रखलीह जतए वास्तविक भुगतानक तिथि छल। “जे भेटल, से देखू। जे नहि भेटल, से काटू नहि।”

एक बाहरी प्रतिनिधि कार्यक्रमक बीचमे छपबाक रंगीन पुस्तिका देखौलक। ओ चाहैत छल जे पहिल पृष्ठपर दलक नाम, दोसरपर समूह-चित्र, तेसरपर गुमनाम व्यक्ति आ नैराक प्रसंगक ‘प्रेरक कथा’ रहय। तारा पूछलीह, “गुमनाम व्यक्ति अपन नाम अथवा प्रसंग सार्वजनिक पुस्तिकामे देबाक सहमति देने छथि?” प्रतिनिधि कहलक, “नाम नहि लिखब; कथा तँ सभ जानैत अछि।” कबीर उत्तर देलनि, “पहिचान केवल नामसँ नहि खुलैत। नैराक फोनक निजी सन्देश सेहो अपन जगह रहत।” सरिता पुस्तिका बन्द कऽ प्रतिनिधिकेँ खुलल कार्यक्रमक सामान्य सूचना देबाक विकल्प बतौलीह।

सोनमती थाकि कऽ बैसलीह। एक किशोर कहल, “अहाँ सभकेँ मंच बनएबाक पैसा नहि भेटत?” सोनमती पुछलीह, “किएक नहि? बेंत आ बाँस दान देलहुँ तँ अलग; आज हम घंटा भरि काम कएलहुँ, से अलग।” युवक खाता खोललक। पहिने ‘स्वयंसेवक’ लिखने छल। सोनमती कहलनि, “हम किछु समय निःशुल्क देबाक सहमति देने छी, मुदा रस्सी आ बाँस पर कारीगरक खर्च पुछने नहि छोड़ू।” बच्चासभक सामने खुला खाताक एकटा पाँति सुधरल। गीतक पहिल ताल ओहने समय बजल जखन सोनमतीक नामक आगाँ भुगतानक तिथि लिखल जा रहल छल।

मीरा बंजारा अपन बहिनक संग चाय पीबए बगलक छायामे गेलीह। बहिनक चौथ ग्राहकक पर्ची फोनपर पहुँचल छल, मुदा वास्तविक दाम तखन धरि नहि आयल। साझेदारीक परीक्षण-खेपक लेल लिखित दर आ क्षतिक नियम सही छल। “हम एक दिन ट्राइ करब,” बहिन कहलीह, “मुदा अपन पुरान ग्राहकक दिन नहि छोड़ब।” मीरा पुछलीह, “जँ दाम समयपर नहि भेटल?” बहिन जवाब देलीह, “तँ परीक्षणक शर्त अछि—पुरान बकाया पहिने निबटत, नब खेपकेँ कर्जमे नहि मिलायत।” दूनूकेँ एहि निर्णयमे एक समान रास्ता नहि भेटल, मुदा एक दोसराक बाट बाँचल।

नव समिति बनबाक घड़ी आएल। पूर्व दलक एक सदस्य चाहैत छल जे संकेत तीन मास धरि सभ चाभी अपने लग राखथि। संकेत हाथ उठौलनि। “जतेक दिन हम सभ सफरमे छलहुँ, किछु काज एतयक बच्चा-बच्ची स्वयं सँभाललनि। आब हम फेर सभ ताला अपना लग किएक रखी?” समिति तय कएलीह जे युवासभक दू सदस्य सार्वजनिक प्रतिक बक्सा आ वाचनक समय देखत, एक वरिष्ठ सदस्य जाँचमे सहयोग करत, आ निजी मूल प्रतिक स्वामीक अधिकार दस्तावेजपर यथावत् रहत। चाभी हस्तान्तरणक रसीद एही साँझ लिखल गेल।

एक बालिकाकेँ समिति लेल प्रस्तावित कएल गेल तँ ओ मना कएलीह। “हम परीक्षा देबए जाएब,” ओ कहलीह, “हर साँझ पहरा नहि देब।” सभामे किछु लोक निराश भेल। सरिता कहलीह, “जिम्मेदारी देब अधिकार अछि, थोपब नहि।” बालिका अपन बदला विद्यालयक दोसर युवतीक नाम सुझौलीह, मुदा ओकर सहमति पूछल गेल। एहि छोट

अन्तरालमे मौन पड़ल लोकसभ बुझल जे नव पीढ़ीकेँ जिम्मेदारी सौंपी देब आ हुनका अपन जीवनक समय चुनबए देब दू अलग क्रिया नहि—एक्के निर्णयक दू भाग अछि।

अन्तिम ज्ञानसभाक तैयारी लेल पद्मा विषयक पर्ची बाँटलीह। पहिल सत्रमे कथाक स्रोत आ अनुपलब्ध पन्ना, दोसरमे श्रमिक देय, तेसरमे मृतकक नाम छपबाक नियम, चौथमे बच्चासभक प्रश्न। एक बुजुर्ग शिक्षिका कहलीह, “ई अन्तिम सभा कहब ठीक नहि; एतबा प्रश्नक अन्त कहाँ?” पद्मा उत्तर देलीह, “अन्तिम यात्रा-दलक जिम्मेदारीक अर्थमे। पाठशालाक अन्त नहि।” शिक्षिका कार्यक्रमक ऊपर लिखल ‘समापन’ काटि ‘जिम्मेदारी हस्तान्तरण’ लिखलीह।

सरिता नैराक छोट कापी अपन थैलीसँ बाहर नहि निकाललीह। ओहि कापीक सार्वजनिक भाग आ निजी पन्ना पहिनेसँ अलग कएल गेल छल। कबीर दूर बैसल चुपचाप चाय पीबैत छलाह। ओ पूछलनि, “जँ कियो फेर नैराक नामपर स्मारकक घोषणा करत?” सरिता कहलीह, “नाम लेल प्रमाण, सहमति आ ककर श्रम छुटल अछि से देखब। नैरा लेल किछु करबाक नामपर दोसरक काम नुका नहि सकैत छी।” कबीर सिर हिलौलनि। हुनकर फोनमे नैराक सन्देश जसक तस सुरक्षित छल, सार्वजनिक कार्यक्रमक आवाजसँ पृथक्।

लोकपाठ समाप्तिक बाद बच्चासभ मंचपर चढ़ि नामक मतदान करए लागल। एकटा नाम सभसँ बेसी आवाज पाबि रहल छल—‘खुलल दरबज्जा’। दोसर समूह कहैत छल—‘खुला पाठशाला’ पहिनेसँ परिचित अछि, ओकरा बदललासँ गामक बुजुर्ग ठाम नहि भेटताह। तेसर समूह ‘प्रश्नक आँगन’ चाहैत छल। बच्चासभ झगड़त-झगड़त एक नियमपर पहुँचल: दरबज्जापर पुरान परिचित नाम रहत, आ भीतर बालकसभ अपन चित्रक नीचे प्रत्येक मास नव वाक्य लिखत। एहि मासक वाक्य भेल—‘भीतर अएबाक लेल उत्तर जनब जरूरी नहि।’

यात्राक पुरान मानचित्र संकेत समेटि रहल छलाह। एक किशोर पुछलक, “पर्वत जतेक दूर छल, ओतए जएबाक लाभ की, जँ फेर एहिठाम आयब?” संकेत नक्शाक मुड़ल भाग सीधा कएलनि। “किछु प्रश्न दूर गेलापर स्पष्ट भेल,” ओ कहलनि, “मुदा अहाँ सभ जे किवाड़ भोरमे खोललहुँ, ओकर सुधार हमरा यात्रा सँ नहि भेटल। एहिठामक काज

एहिठामे होएत।” किशोर दरबज्जाक निचाँक गत्ता उठा कचरा-पात्रमे देलक। कारीगर अगिला दिन किवाड़ घिसि बराबर करबाक समय देने छल, आ लागतक पर्ची फलकपर टाँगल गेल।

रातिक अन्तमे मीरा साझेदारीक पन्ना नव समितिक युवककेँ देखौलीह, केवल सार्वजनिक दरक प्रति देलनि; बहिनक ग्राहकक निजी पता अपना लग रखलीह। युवती पुछलीह, “अहाँ सभक अलग रास्ताक बात हम कथा रूपमे कहि सकैत छी?” बहिन उत्तर देलीह, “हमरा नामसँ आजुक दाम आ निर्णय कहू, मुदा ग्राहकक ठामक नाम नहि। अगिला बेर हम नहि चाहब तँ कथो नहि।” युवती अपन कापीमे सीमाक चिह्न लगौलीह। मीरा ओकरा अपन ठेलाक चक्का ठीक करबाक विधि सेहो देखौलीह; ई पाठ लिखित समझौतासँ अलग, मुदा ओतबए उपयोगी छल।

बरामदामे अन्तिम दीपक बुझबाक पहिने खुला खाताक एक पन्ना एखन खाली छल। स्मरण-सभाक प्रारम्भिक प्रस्तावमे संस्थाक पदाधिकारीसभक नाम तैयार छल, मुदा पुरान सफाइक मजदूर, रातिक ढुलाई करनिहार आ निधन भेल उर्मिलाक अपूर्ण देयक विवरण हेतु पर्याप्त ठाम नहि छोड़ल गेल छल। सरिता ओ पन्ना देखलीह। ओ एही राति मनमाना नाम जोड़ि सूची पूर्ण घोषित नहि कएलीह। ओ लाल पेंसिलसँ ऊपर लिखलीह —‘प्रकाशनसँ पहिने नाम, काम आ प्रमाण मिलान।’ नव समिति अगिला दिन एहि काजक समय तय कएलीह।

चटाइ समेटबाक समय उर्मिलाक परिवारसँ आइल एक वृद्धा ओहि पन्ना लग ठाढ़ भेलीह। “जकर नाम नहि लिखल, ओकरा सभ विसरल नहि गेल अछि,” ओ कहलीह, “मुदा कतेक दिन धरि खाली जगह देखाएब?” सरिता हुनकर आवाज ध्यानसँ सुनलीह। “हम काल्हि अहाँक संग मूल मजदूरीक पर्ची देखब,” ओ उत्तर देलीह, “जतबा पुष्ट अछि ओहि सँ शुरू करब। जे एखन विवादमे अछि, ओकरा चुपकेँ गायब नहि करब।” वृद्धा प्रस्तावित समय अपन कापीमे लिखलीह; शोकक नामपर हुनका फेर पूरा दिन बिनु सूचना प्रतीक्षा नहि कराओल जाएत।

राति उतरि गेलापर पाठशालाक किवाड़ आधा खुलल रहल, ताकि भीतरक रडक गन्ध बाहरे निकलि सकय। बच्चासभक बनाओल दरबज्जाक चित्र चौखटपर सुखा रहल छल;

ओकरा नीचे चाभी हस्तान्तरणक दू हस्ताक्षर छल। यात्राक दलक लोक पहिल बेर समापनक भोजन अलग भोजक रूपमे नहि, सामान्य पाँतिमे खएलनि। सरिता अपन खाली थारी धोइ रखलीह। सामने कारीगरक औजारक सूची, दोसर कात स्मारकक अपूर्ण नाम-पाँति छल। दूरक पर्वतपर चढ़बाक कथा सुनि आब ओ सभ एहि टेढ़ किवाड़क आगाँ ठाढ़ छलाह। दरबज्जा पार करबाक बाट एहि बेर भीतर रहनिहार लोक अपने खोलि रहल छल।

अध्याय २०५ • स्वर्गक सूची

स्मारकक पीतलाक पातर पट्टीमे पहिल कील ठोकबाक समय हथौड़ी चूकि गेल। ठन-ठनक बदला लकड़ीक फलकपर एकटा दबा गेल गड्ढा बनल। पट्टी उठबैत किशोरक हाथ थरथरा रहल छल। सरिता हथौड़ी ओकर हाथसँ नहि छीनलीह; कीलक नीचाँ पुरान टाट मोड़ि रखलीह आ कहलीह, “एखन नाम पढ़ि लिअ। एक बेर ई ठोंकि देल जाएत तँ बादमे सुधरब कठिन होएत।” पट्टीपर संस्थाक पदाधिकारीसभक नाम सुन्दर अक्षरमे उतारल छल। ओकर नीचाँ जे लोक राति ढुलाई करैत छल, फर्श धोइत छल आ भीजल बिछाओन उठबैत छल, हुनका लेल कोनो पाँति नहि छल।

विदेहपुरक खुलल पाठशालामे पछिला साँझ यात्राक दल अपन जिम्मेदारी नव समितिक हाथमे देने छल। आजुक भोर ओहि हस्तान्तरणक पहिल परीक्षा छल। तारा मूल प्रस्तावक दू प्रति निकाललीह। पहिल प्रति स्मारक बनौनिहार संस्थाक छल, दोसर खुलल पाठशालाक। दुनू पर एक्के कार्यक्रमक तिथि छल, मुदा नामक क्रम अलग। संकेत पूछलनि, “कियो सूची बदलने अछि?” नव समितिक युवती कहलीह, “कियो अपन-अपन हिसाबसँ चुनने अछि। हम बदलल नहि, दुनू नकल जसक तस रखलहुँ।” ओकर स्वरमे डर कम, असहमतिक साफ दृढ़ता बेसी छल।

उर्मिलाक बहिन अपन पुरान कपड़ा-पंजी लऽ अएलीह। संग ओ वृद्धा छलीह जे पछिला राति सरितासँ समय लिखबा कऽ गेल छलीह। बहिन पहिने अपन बहिनक नाम देखलीह। “उर्मिला एतय अछि,” ओ कहलीह, “मुदा केवल ‘बलिदानी’ लिखल अछि। रातिक ड्यूटी, धुलाई आ गाड़ीपर सामान चढ़ेबाक काम कतय?” स्मारकक प्रस्ताव बनौनिहार युवक कहलक, “शहादतक आगाँ मजदूरीक चर्चा लोककेँ नीक नहि लागत।” बहिन बहीक कड़ा कागद ओकर आगाँ खोलि देलीह। “तँ पहिने हमरा कहू जे बकाया कतेक रहल, फेर अहाँ निर्णय लिअ जे की सुनबामे नीक लागत।”

बहीमे तीन रंगक अंक छल। एक रंगमे पूरा भेल ड्यूटी, दोसरमे देल गेल आंशिक रकम, तेसरमे विवादित रात्रि-भाड़ा। गोमती बेलदार एक-एक पाँति उँगरीसँ देखलीह। “एहि

अंकक अर्थ हम बुझि सकैत छी,” ओ कहलीह, “किएक तँ उराहिक मजदूरसभ संग समय गनेबाक नियम बनबैत ई सभ झगड़ा देखल अछि। मुदा ई बही मृत्युक कारणक प्रमाण नहि अछि।” पद्मा तुरन्त कागदपर दू अलग शीर्षक लिखलीह—‘जीवन आ श्रमक सत्यापित विवरण’ तथा ‘दावा आ जाँचक वर्तमान स्थिति’। बहिनक चेहरापर कनेक विश्रामक चिह्न आएल। ओहि घड़ी हुनका केवल प्रशंसा नहि, अपन कागद ठीकसँ पढ़निहार लोक चाही छल।

कार्यक्रम समितिक एक सदस्य कहलक, “एतेक पाँति लगाओलासँ पत्थर छोट पड़त। मुख्य लोकक नाम ऊपर रहत, बाँकी सभकेँ एक शब्दमे ‘सहयोगी’ लिखि देब।” सरिता पूछलीह, “मुख्य के? जे कार्यालयमे सही करैत छल, कि जे ओहि राति दू बेर मरीजक खात धकेललक?” सदस्य जवाब देलक, “एहन प्रश्न उठल तँ कोनो सूची पूरा नहि होएत।” सरिता किवाड़ लग राखल पट्टी देखलीह। “पूर्ण सूची बनलाक झूठा दावा नहि चाही। मुदा जानि-बुझि ककरो बाहर रखबाक अधिकार अहाँकेँ कोना भेटल?”

एही विवादमे शशिभूषण महापात्र आएलाह। हुनकर बाँहक नीचाँ एक पुरान नाप-डोरी छल, हाथमे बाँस आ कपड़ाक रसीदसभ। ओ सभामे अध्यक्ष बनए नहि आएल छलाह। स्मारक लग प्रस्तावित कपड़ाक आवरणक लागत पूछल गेल छलनि। पट्टीपर उकेरल नाम देखि ओ ठाढ़ भऽ गेलाह। “एतय ‘बुधन दास’ लिखल किएक?” हुनकर प्रश्न सुनिते एक युवक उत्तर देलक, “अस्पतालक पुरान सूचीक नाम अछि। पहिनहिसँ छपल छल।” शशिभूषण पूछलनि, “पुरान सूचीमे ओकर आगाँ कोन शब्द छल?” कोनो उत्तर नहि भेटल।

शशिभूषणकेँ अस्पतालक ओ दिन याद छल, जखन एक वृद्ध पुरुषक शवक नाम ‘बुधन दास’ अथवा ‘बुधन साह’ मानबाक जल्दबाजी छल। रमा सुरक्षित रखल मूल प्रवेश-क्रम, कार्बन प्रति आ परिवारक अलग कथन मिलाबैत छलीह। ओहि समय शशिभूषण अपन सामानक रसीदपर अनुमानित नाम जोड़बाक अस्वीकार कएने छलाह। “हम एहि देहक अन्तिम पुष्टि नहि कएने छी,” ओ स्पष्ट कहलनि। “आइ स्मारकपर ओहि पुरान छपल त्रुटिक नकल करब तँ नामक पाछाँ दोसर घरक दुःख अनमने ढङ्गसँ बान्हि देब।”

रमाकै बजाओल गेल। ओ कक्षमे प्रवेश करिते पुछलीह, “अहाँ सभकै चिकित्सकीय मृत्युसूचना चाही, शवक व्यक्तिगत पहिचान, वा स्मारकक प्रकाशन-अनुमति?” युवक कहलक, “तीनू तँ एक्के बात अछि।” रमा तीन खाली कागद मेजपर राखलीह। “नहि। पहिल बात शरीरक उपचार आ मृत्युक प्रमाण अछि। दोसर ककर देह, तकर जाँच। तेसर नाम आ निजी विवरण सार्वजनिक करबाक अधिकार। एक पन्नासँ दोसरक खाली घर अपने नहि भरैत।” ओ मूल पंजीक सुरक्षित कार्यालय सँ अद्यतन प्रमाण माँगबाक पत्रक प्रति दऽ सकलीह; तत्कालीन सभ प्रश्नक पूर्ण उत्तर नहि।

नाम बदलि देब, पूरा नाम मेटि देब अथवा एक परिवारक दावा सत्य मानि लेब—तीनू प्रस्ताव उठल। शशिभूषण अपन रसीदक पाछाँ पुरान लिखल वाक्य देखौलनि—“पहिचान ठहरल रहिते सामग्री सुरक्षित”। “जँ ओहि दिन कपड़ा काटि गलत शव विदा कएने रहितहुँ तँ आब कागदपर सुधारेबासँ की घुरि अबितै?” ओ पूछलनि। समितिक युवती निर्णय लिखलीह: अपुष्ट पहिचानवला नाम पीतलापर नहि उकेरल जाएत; विवादक क्रमांक आ जाँचक अधिकारीक नाम सार्वजनिक प्रगति-पंजीमे रहत, परिवारक निजी विवरण नहि।

बाहर एक बच्चा पीतलाक पातर पट्टी अपन आँखिक आगाँ राखि सूर्यक उजास देखबाक प्रयास करैत छल। पट्टी चमकि उठैत ओकरा किछु देखाइत नहि छल। बहिन बच्चासँ कहलीह, “ई नीचाँ रख, आँखि दुखायत।” बच्चा पूछलक, “जेकर नाम एहि पर नहि चढ़ल, ओ मरल नहि?” बहिन बहुत बेर ओकर मुख देखती रहलीह। “नाम नहि चढ़लासँ कियो जीबि नहि उठैत,” ओ कहलीह, “मुदा गलत नाम चढ़लासँ ककरो घरमे गलत समाचार पहुँचि सकैत अछि।” बच्चा पट्टी मेजपर राखि चाय लेबाक गेल। प्रश्न कक्षमे रहि गेल।

प्राचीन स्वर्गारोहणक आख्यानमे, पृथ्वी छोड़लाक बाद युधिष्ठिर देवलोकक उजासमे पहुँचलाह। ओतय हुनका दुर्योधन प्रतिष्ठाक आसनपर देखाएलाह, मुदा अपन भाइसभ आ द्रौपदी नहि देखायलनि। राजसभाक सुवर्ण दीप्ति हुनकर आश्चर्य कम नहि कएलक। ओ पूछलनि जे जिनका संग युद्धक रक्त, प्रतिज्ञा आ वियोगक कथा चलल, ओ सभ कहाँ छथि। देवलोकक सम्मानक क्रम पृथ्वीक सम्बन्धक प्रश्नक उत्तर बनि नहि सकल। ई

प्राचीन आख्यानक अपन धर्मसङ्कट छल; विदेहपुरक सूची लेल ओ कोनो ऐतिहासिक गवाही नहि छल।

युधिष्ठिरक प्रश्नमे ई आग्रह मात्र नहि छल जे हुनकर प्रियजनक नाम सम्मानक पट्टीपर लिखल रहय। ओ हुनकासभक स्थिति देखबाक चाहना छल, भले ओहि बाटमे सुगन्धक बदला दुःखक अनुभव किएक नहि रहय। हुनका जँ कियो कहितनि जे स्वर्गक सूची सिद्ध अछि, एतय बसि जाउ, तँ अनुपस्थित प्रियजनक प्रश्न खत्म नहि होइत। आख्यान आगाँ अपन भयानक परीक्षा दिस चलैत छल। ओहि परीक्षाक अर्थ सरल पुरस्कार-वितरण बनि जायत तँ कथा स्वयं छोट पड़ि जायत।

विदेहपुर, २०४२क दुपहरि। उमा अपन भोरक धुलाई सँ लौटि खुलल पाठशालामे पहुँचल छलीह। हाथमे कपड़ाक गन्ध छल, कन्हापर गीला गमछा। ओ समितिक पट्टी पढ़ि पुछलीह, “मृतक आ काज कएनिहार सभकेँ एक्के नामावलीमे राखब?” तारा कहलीह, “नहि। स्मारकपर मृतकसभक सत्यापित नाम आ परिवारक प्रकाशन-अनुमति रहत; बगलमे श्रमक इतिहासक अलग सार्वजनिक पन्ना।” उमा सिर हिलौलीह। “हम जीबैत छी। हमरा एखन दिनक दाम चाही, मरल लोकक स्थान नहि। मुदा जे हमरा संग काम कएलक ओकर चिन्हो मेटाबए नहि देब।”

सोनमती तुरी बाँसक चौखट नापबाक लेल अएलीह। छोट स्मारकक संग एक खुलल वाचन-फलक ठाढ़ करबाक विचार उठल। ओ स्पष्ट कहलनि जे आजुक बाँस आ हाथक श्रमक दाम अलग देल जाए। एक सदस्य एकरा पुण्यक काम कहि निःशुल्क कराबए चाहलक। सोनमती मुस्की दऽ कहलीह, “पुण्यक हिसाब अहाँ राखू; हमर घरमे साँझक भातक हिसाब अलग अछि।” गोमती पट्टीक नीचाँक समय-मापक नियमक प्रति देखौलीह। युवासभक समिति कारीगरक कामक घण्टा लिखलक, आ भुगतानक दिन निर्धारित कएलक। स्मारक बनएबाक काजमे पुरान विस्मरण दोहराएब रोकबाक ई पहिल छोट परख छल।

एक पुरुष अनाम सफाइकर्मिसभक ओरसँ बोलबाक दावा करैत छल। ओ चाहैत छल जे स्वयं ओकर नाम समूहक प्रतिनिधिक रूपमे सबसँ ऊपर उकेरल जाए। ओहि सफाइक काममे वर्षसभ हाथ देने कमला आगाँ बढ़लीह। “हम सभकेँ पूछलहुँ?” ओ कहलीह।

“हमरा सभमे कियो अपन नाम देत, कियो नहि; कियो अपन पिछिला कामक बात घरमे नबुझए देबाक कारण चुप रहत। अहाँ ककर अनुमति लेने छी?” पुरुष कहलक, “हम सभक हितमे कहैत छी।” कमला कहलीह, “हितमे कहल बातो अनुमति बनि नहि जाइत।”

तारा पुरान ड्यूटी-पत्रक सार्वजनिक अंश निकलौलीह। तीन मजदूरक नाम आ कामक तिथि उपलब्ध छल, मुदा दोसर कागदमे अस्पष्ट हस्ताक्षर छल। जे तीन लोक जीवित छला, हुनकासँ अलग-अलग सहमति पुछबाक निर्णय भेल। बाकी कामक घंटाक सामान्य कुल सार्वजनिक खाता सँ सत्यापित कएल जाएत, मुदा आधा पढ़ाइत अक्षरक स्थानपर मनमाना नाम नहि भरल जाएत। कमला अपूर्ण पन्नाक ऊपर अपन अंगुरी रखि कहलीह, “रिक्त स्थान रहब दुःखक बात अछि; झूठ भरब आरो पैघ।”

सरिता उर्मिलाक बहिनसँ स्मारकमे उर्मिलाक नामक प्रयोग लेल सहमति पुछलीह। “नाम लिखू,” बहिन कहलीह, “मुदा हमरा देखाओल बगैर फोटो, निजी बीमारी अथवा मृत्यु-क्षणक नाटक नहि। कामक विवरणमे धुलाई, रातिक सामान उठेबाक ड्यूटी आ बचल देय अलग लिखू। उर्मिला स्वयं अपन दाम लिखैत छलीह।” सरिता ओहि शर्तकें बैठकक मूल निर्णयमे दर्ज करौलीह। उर्मिलाक मृत्यु प्रमाणित छल, मुदा बकाया रातिक भाड़ाक अन्तिम हिसाब एखन विवादित। स्मारकक फूल ओहि रकमक विकल्प नहि बनल।

नैराक नामपर विवाद अलग छल। एक बाहरी व्यक्ति चाहैत छल जे ओकर निजी फोनसँ प्रेरक वाक्य उतारि पट्टीक ऊपर लिखल जाए। कबीर, जे बैठकक अन्तिम भागमे पहुँचला, उत्तर देलनि, “फोनमे जे निजी सन्देश अछि, ओकरा बाहर नहि देब। नैराक सार्वजनिक कामक लिखित भाग लेल अलग अनुमति आ स्रोत देखू।” सरिता अपन बेटीक स्मृतिक दुःख भीतर सम्हारि कहलीह, “माय होएबाक अर्थ ओकर सभ शब्दक मालिक होएब नहि।” व्यक्ति खिन्न भेल, मुदा नव समितिक किशोरी फैसला लिखि देलीह। ओहि दिन नैराक निजी सन्देशक एकोटा शब्द उकेरल नहि गेल।

शशिभूषण अपन कपड़ाक लागत लऽ बैसलाह तँ नीरज पंडा सेहो अएलाह। हुनकर बहीमे शोकक अनुष्ठान लेल परिवारक स्वेच्छासँ मँगाओल सेवाक अलग रसीद छल।

स्मारक समितिक सदस्य प्रस्ताव रखलक जे मृतक-परिवारक सहायतेक एक हिस्सा सामूहिक अनुष्ठानमे जोड़ि देल जाए। नीरज स्पष्ट कहलनि, “नहि। जे परिवार जे विश्वास रखय ओ अपने चुनत। राहतक रकम, कारीगरक दाम आ धार्मिक सेवाक पारिश्रमिक एक घेला नहि।” शशिभूषण सहमति देलनि। दुनू अपन श्रमक मूल्य छिपेबाक पक्षमे नहि छला, मुदा शोककें ग्राहक पकड़बाक जाल बनबए नहि चाहैत छला।

नीरज अपन पुरान यात्राक छोट पन्ना देखौलनि, जाहिमे गंगाक नाम सँ लिखल मार्ग-स्मृति छल। शशिभूषणक एक सामग्री-रसीदमे सेहो गंगा-यात्राक उल्लेख छल, मुदा ओकर तिथि, वस्तु आ भुगतानक मद दोसर छल। एक युवक उत्साहमे पूछलक, “तखन ई सिद्ध भेल जे पुरान सभ देह गंगाहि गेल?” नीरज माथ हिलौलनि। “नदीक नाम अनुष्ठानक बाट सेहो भऽ सकैत अछि, यात्रा-इच्छा सेहो; प्रत्येक मृतकक वास्तविक देह-परिवहनक प्रमाण नहि। ई पन्ना हमर सेवाक अछि। जे परिवार नहि गेल, ओकरा एहि शब्दमे जबरदस्ती मत मिलाउ।”

पद्मा पन्नाक मूल वर्तनी जसक तस राखलीह। ‘गंगा’ कें नदी-नामक अभिलेखीय प्रत्यावर्तनक रूपमे दर्ज कएल गेल, संगमे शशिभूषणक सामग्री-रसीद आ नीरजक अनुष्ठान-यात्राक स्रोत अलग चिन्हित भेल। स्मारकक मृत्यु-सूची एहि नामसँ न कमल, न बढ़ल; बकाया मजदूरीक रकम सेहो ओहिसँ निबटल नहि। एक युवती पुछलक, “तखन नदीक उल्लेख किएक?” पद्मा कहलीह, “कारण लोक अपन प्रियजनकें कोन बाटसँ विदा देलक, तकर स्मृति महत्त्वक अछि। मुदा बाटक कथा आ सरकारी मृत्यु-पत्र एक वस्तु नहि।”

दुपहरिक भोजनमे खिचड़ी कम पड़ि गेल। बच्चासभ अपना थारी आधा कऽ कारीगर लग रखलक। सोनमती हँसलीह, “पहिने खा लिअ, हम हाथ धोइब तखन खाएब।” किशोरी अड़ि गेलि जे हुनका लेल भात अलग रहब चाही। ई किछु क्षणक हँसी बीच स्मारकक कील, नाम आ मृत्युक कथासँ बाहर जीवनक साधारण भूखक साक्षी बनल। गोमती बचल भात गनि एक बासनमे रखलीह, जाहिसँ काम समाप्त करैत लोकक हिस्सा सुरक्षित रहय। सरिता देखलीह, कखनहु न्यायक अभ्यास थारी ढाकि राखबो होइत अछि।

साँझसँ पहिने सुधारल सूची पढ़ल गेल। पहिल भागमे जकर मृत्यु आ व्यक्तिगत पहिचान सत्यापित छल तथा प्रकाशनक सहमति उपलब्ध छल, हुनकर नाम। दोसर भागमे मृतक आ जीवित श्रमिकसभक सत्यापित कामक अलग वृत्तान्त, प्रत्येक व्यक्तिक चुनल प्रकाशन-सीमासहित। तेसर पन्ना बन्द बक्सामे रहत—अपुष्ट पहिचान, विवादित रकम आ अधिकारीक समक्ष चलैत जाँचक क्रमाङ्क। ओकर सार्वजनिक सार पढ़ल जा सकैत छल, निजी कागद नहि। कियो कहलक, “एहि तीन तहसँ स्मारक जटिल भऽ गेल।” युवती उत्तर देलीह, “एकटा सुन्दर झूठ सस्ता पड़त, मुदा दाम ककर घरसँ वसूलब?”

संस्थाक पदाधिकारीक नाम ऊपर रखबाक मूल प्रस्ताव एखनहुँ एक सदस्य वापस आनबाक चाहैत छल। ओ कहलक जे अनुदान देनिहार लोक फोटोमे बड़ अक्षर देखय चाहत। तारा पूछलीह, “अनुदानक हिसाब अलग फलकपर लगाउ। स्मरणक अधिकारसँ पदक क्रम किएक तय करैत छी?” सदस्य कहलक, “हम ई काजमे सालसभ देलहुँ।” कमला ओकरा उत्तर देलीह, “से कामक पन्नामे जरूर लिखू। मुदा अपना हस्ताक्षरकें दोसरक मृत्युक आगाँ झंडा नहि बनाउ।” बहस तीख भेल, मुदा अन्तमे अनुदानक नाम अलग सूचना-फलकपर जाएबाक सहमति भेल।

उर्मिलाक बहिनक हाथमे एखनहुँ पुरान मजदूरीक प्राप्ति-पर्ची छल। रमा ओकरा दोसर कागद देलीह—जाहिमे स्वीकृत आंशिक भुगतानक तिथि दर्ज छल, शेष विवादित मदक अलग सुनवाईक समय लिखल। बहिन पुछलीह, “ई सुनवाई निश्चित अछि?” रमा पत्रक प्राप्ति-मोहर देखौलीह। “समय निश्चित भेल अछि; रकमक फैसला नहि,” ओ उत्तर देलीह। बहिन पहिल बेर दिनक आखिरी चाय पिबैत कहलीह, “हमरा उर्मिला लेल फूलसँ आपत्ति नहि। आपत्ति एतबे जे फूल देनिहार हमर सवाल बन्द करब चाहैत अछि।”

कबीर स्मारकक बरामदामे ठाढ़ रहि नैराक नाम देखलनि। ओकर ठीक नीचाँ ककरो मनगढ़न्त अन्तिम सन्देश नहि छल। ओ सरितासँ कहला, “नाम देखिकेँ कनेक बेर बुझाइत अछि जे ओ एतहि पढ़ि लेतीह।” सरिता पत्थर दिस देखलीह। “ओ आब नहि अएतीह,” ओ कहलीह। कनेक देर दुनू चुप रहलाह। “तथापि नाम सही लिखल रहय,”

कबीर धीरे बजलाह। सरिता सहमति देलीह। मृत्युक सत्य आ स्मृतिक असह्य अभाव एक संग ठाढ़ छल; ककरो शब्दसँ दुनूमे मेल नहि भेल।

साँझक कथा-पाठमे पद्मा प्राचीन युधिष्ठिरक स्वर्गारोहणक प्रश्न सुनौलीह, मुदा स्वर्गक आसनकेँ आधुनिक कार्यालयक मुहरक समानता नहि देलीह। एक किशोर पुछलक, “जँ देवता अपन मनसँ नाम चुनैत छलाह, तखन युधिष्ठिर किएक पुछलनि?” पद्मा कहलीह, “कथा हुनका पूछैत देखबैत अछि। उत्तर सरल नहि अछि; ताहि लेल प्रश्न बाँचल अछि।” किशोर अपन कापीमे लिखलक—‘सम्मानक सूची आ जीवनक हिसाब अलग’। ओ पन्ना ककरो प्रमाण बनएबाक लेल नहि, आगामी पाठमे पूछबाक लेल राखलक।

अन्ततः पीतलाक पहिल पट्टी जखन ठोकल गेल तँ ओहिमे संस्थाक पदक क्रम नहि, स्मारकक प्रयोजन आ प्रमाण-जाँचक तिथि लिखल छल। सत्यापित नामसभक अलग पट्टी परिवारसभ देखिकेँ स्वीकृत कएने छल; उर्मिलाक श्रमक विवरण संग ओकर बकाया दाबी सार्वजनिक स्थितिपर अंकित रहल। बुधनक विवादित पहिचानक नाम केओ छिपाकऽ निश्चित सूचीमे नहि घुसौलक। मूल गलतीवला छपल कागद सुरक्षित राखल गेल, ताकि सुधारक कारण आ इतिहास बुझल जा सकय। शशिभूषण हथौड़ी किशोरकेँ घुरौलक आ कहला, “आब ठोकू; एखन जे सही अछि, ओतबे लिखल अछि।”

नव समितिक बच्ची खर्चक खाता बन्द करैत सरितासँ पुछलक, “जँ काल्हि नव प्रमाण भेटत तँ?” सरिता ओकरा कागदक पाछाँक खाली ठाम देखौलीह। “तखन सूची फेर पढ़ब, सार्वजनिक सुधारक तिथि लिखब, आ जकरा चोट पहुँचत हुनका खबर देब। ई पट्टी स्वर्गक दरबज्जा नहि, लोकक बनाओल वस्तु अछि।” बच्ची खाता सँभालि भीतर गेलि। दरबज्जाक किवाड़ कारीगरक घिसाइलासँ आब बिना गत्ता अटकल खुलैत छल। मुदा चौखट लग अगिला प्रश्नक लेल एक दोसर खाली कागद टाँगल छल—बचल पीढ़ी, ओकर भय आ संरक्षणक काम, जिनका स्मृतिपट्टी नहि सम्हारि सकैत अछि।

अध्याय २०६ • उत्तरा आ परीक्षित

खुलल पाठशालाक चौखटपर टाँगल नव कागद रातिक ओससँ मुड़ि गेल छल। ओकर माथपर बच्चीक हाथसँ लिखल छल—‘जीवित लोक लेल एखन की?’ पहिल पाँति पढ़ैत एक छोट बालक कागद सीधा करए दौड़ल, मुदा ऊपरक कील ढील देखिते रुहानी ओकरा रोकलीह। “कील हम ठीक करब; अहाँ नीचाँसँ पकड़ू।” बालक अड़ि गेल—“हमहुँ काज करब।” तारा एकटा नीच टेबुल अनबौलीह। बालक ओहिपर ठाढ़ भऽ कागदक निचला कोना सम्हारलक, कील रुहानी स्वयं ठोकलीह। कागद सोझ भेल, मुदा पहिल प्रश्नक उत्तर एखन खाली छल।

काल्हि स्मारकक सूचीमे मृतक श्रमिकसभक नामक सुधार भेल छल। आइ ओहि बरामदामे विद्यालयक बच्चासभ आ आश्रयक परिवारसभकेँ बजाओल गेल छल। सरिता सोचने छलीह जे स्मरणक दाम देबाक बाद जीबैत लोकक चिंता किछु हलुक होएत; मुदा भोरहिमे एक माय अपना बेटाकेँ लऽ अएलीह। बालक पिछिला दुर्घटनाक समय तेज आवाज सुनिते लुकि गेल छल। आब हथौड़ीक साधारण ठकठक सुनिते ओकरा हड़बड़ी होइत छल। माय पुछलीह, “सभासँ हुनका दूर राखब की? पढ़ाई छोड़बायब नहि चाहैत छी।”

बरामदाक बच्चासभमे कियो पढ़ए चाहैत छल, कियो पहिने खेलए। ककरो स्कूलक पिछिला कापी पानि सँ भीजल छल; कियो अपन नाम दोसरक आगाँ पुकारल नहि सुनए चाहैत छल। युवा समितिक एक सदस्य प्रस्ताव रखलक जे सभ बच्चाक दुःखक सूची बनाकऽ स्मारकक कात टाँगि देल जाए, जाहिसँ दान देनिहार लोककेँ संकट बुझाईत। सरिता पहिने बच्चासभक चेहरा देखलीह। एक बालिका अपन मायक आँचरमे मुँह नुकौने छलि। “जकरा लेल सहायता माँगब,” सरिता कहलीह, “ओहि बच्चाक भयकेँ बजारक तख्तीपर रखबाक अनुमति कियो देने अछि?”

रुहानी फर्शपर दूटा चटाइ बिछौलीह। पहिल चटाइपर खेलबाक खिलौना, दोसरपर कागद आ रंगक खड़िया। ओ कहलनि, “कियो अपना सँ बात कहए चाहैत अछि तँ कहू; नहि चाहैत अछि तँ रंगसँ सुरू करू।” एक बालक पहिल चटाइपर बैसि टुटल चाकसँ

पहाड़ बनबैत रहल। दोसर बालिका किवाड़क चित्र बनौलक, मुदा ओकरा बन्द नहि कएलक। एक शिक्षक कहलनि, “दुःख कहबाक अभ्यास जरूरी अछि।” रुहानी मुस्की दऽ पुछलीह, “की प्रत्येक गप्प आजुक आजे कहबा जरूरी अछि?” शिक्षक चुप भऽ गेलाह।

कबीर दरबज्जा लग रखल नलसँ गिलास भरि सभकेँ पानि दैत छल। हुनका नैराक नामवला पट्टीक लगसँ गुजरैत हरेक बेर भीतर किछु टूटैत बुझाईत छल। एक बच्चा पुछलक, “दीदीक फोन एखन बजैत अछि?” कबीर गिलास नीचाँ राखलनि। “नहि। ओकर फोनमे जे निजी बात छल, ओ हम सार्वजनिक नहि करब।” बच्चा फेर पुछलक, “तखन ओकरा कोना याद करब?” कबीर ओकर हाथक पहाड़ देखलनि। “ओ अपन काज करैत छलीह; हमहुँ जे बाँचल काज अछि से करब। मुदा अहाँक अपन चित्र अलग रहत।”

एक कोनमे पुरान लकड़ीक मेजक पयर हिलैत छल। संकेत जखन ओकरा दीवालसँ हटबौलनि तँ नीचाँ एक लोहेक टेढ़ कील भेटल। बच्चासभक बीच एहन मेज राखबाक कियो जोखिम नहि लेने छल, तँ दोषो ककरो नामे नहि लिखल गेल छल। गोमती बेलदार कहलीह, “एहि मेजपर काल्हि अनुदानक कागद राखल छल। आइ बच्चा चढ़त तँ खसि सकैत अछि।” ओ मेज अलग करबौलीह। एक कर्मचारी कहलक, “एतेक छोट बात लेल भुगतानक फाइल खोलब?” गोमती उत्तर देलीह, “लागत छोट भेलासँ चोट छोट नहि होइत।”

२०४२क एहि भोरसँ बहुत पहिने, कुरुक्षेत्र युद्धक बादक हस्तिनापुरमे उत्तरा खिड़की लग बैसल छलीह। अभिमन्यु मरि चुकल छल। हुनकर गर्भपर ब्रह्मास्त्रक संकट आयल छल; महाकाव्यक आख्यानमे कृष्णक संरक्षणसँ गर्भस्थ जीवन बाँचल, आ परीक्षितक जन्मक कथा चमत्कार आ मृत्युभय दुनूक स्मृति सँ भरल रहल। मुदा उत्तरा लेल दिनक पहिल प्रश्न चमत्कारक वर्णन नहि, बालकक साँस छल। ओ शिशुक नाक लग अपन हथेली राखि बहुत बेर सुनैत रहलीह, जेना हवा नहि, समयक छोट ध्वनि पकड़ए चाहैत होथि।

महलक स्त्रीसभ एक-एक कऽ बालक देखए अबैत छलीह। कियो कहैत—‘कुरुवंशक बचल दीप’; कियो कहैत—‘राज्यक भविष्य’। उत्तरा ओ सभ शब्द सुनैत अपन कन्हापर

ओढ़नी खींचि लैत छलीह। एक वृद्ध दाइ बालककेँ गर्म कपड़ामे समेटबाक प्रयास कएलीह। उत्तरा हाथ बढ़ा कऽ कपड़ा अपन ढङ्गसँ मोड़लीह। “एकरा पहिले गरम रखू,” ओ कहलीह, “भविष्यक भार बादमे राखब।” दाइ हँसलीह, मुदा हुनका आँखिक कोनमे युद्धमे हरायल अपन परिजनक दुःख चमकि उठल।

सुभद्रा कोठरीमे अएलीह। अभिमन्युक माय आ परीक्षितक दादी होएबाक दुःख-स्नेह हुनक मुखपर एक्के समय छल। ओ उत्तरा सँ पुछलीह, “अहाँ किछु विश्राम केलहुँ?” उत्तरा उत्तर देलीह, “हम आँखि बन्द करैत छी तँ ओ अग्निक भय फेर देखाइत अछि। आ आँखि खोलैत छी तँ सभक मुँह हमर बालकपर झुकल भेटैत अछि।” सुभद्रा कहलीह, “एक दिन ओकरा तख्तक काज सीखबाक पड़त, मुदा एखन ककरो ओकरा उठाएबाक आवश्यकता नहि।” ओ दरबज्जा लग पहरा देनिहारकेँ कहलीह जे बिना उत्तरा सँ पुछने आओर दर्शनार्थी भीतर नहि आएत।

उत्तरा बालकक कन्हा छुलि पुछलीह, “जँ सभ कहत जे ई बचल वंश अछि, तँ ई अपना लेल कोना जीत?” सुभद्रा लगे बैसि किछु बेर दूधक पात्रमे उठैत बाफ देखती रहलीह। “अभिमन्युकेँ सेहो अनेक लोक वीरक प्रतीक कहलक,” ओ उत्तर देलीह, “मुदा ओ हमर बेटा छल, जकरा भूख लगैत छल, जे धूलिमे दौड़ैत छल। हम ओ बात बिसरि गेल रहितहुँ तँ ओकर मृत्यु सँ पहिले ओकर जीवनहि मेटि देने रहितहुँ।” उत्तरा बालककेँ अपन छाती लग कनेक ढीलसँ रखलीह।

महाभारतक एहि पुरान समयमे राज्यक उत्तराधिकारीक सुरक्षा राजनीतिक प्रश्न सेहो छल। युधिष्ठिरक सभामे बालकक नामपर वंशक निरन्तरता चर्चा होइत; सुरक्षित नगर, प्रहरी आ शिक्षकक व्यवस्था आवश्यक मानल जाइत। मुदा उत्तरा कहलनि जे सुरक्षित प्रासादक भीतर बालककेँ सदा बन्द रखल जाए तँ ओकरा आकाशक रंग कोना बुझाएत? सभामे एहन प्रश्न सुनबा लेल लोक तैयार नहि छल। सुभद्रा एहि इच्छाकेँ राजधर्मक अवज्ञा नहि, जीबैत देहक आवश्यकता मानलीह। बालकक पहिल बाहरक बाट तय करबामे पहरा सेहो छल, उत्तरा सँ सहमति सेहो।

वर्ष बीतल। परीक्षित जखन कनेक पैघ भेलाह तँ हुनका कुरुवंशक नामक भारी कथा सुनाओल जाए लगल। एक दिन ओ माटिक बनल धनुष तोड़ि देलनि, आ भयभीत भऽ

माय लग अएलाह। “हम राजा बनब तँ सभ बात ठीक करबाक पड़त?” ओ पुछलनि। उत्तरा टूटल धनुष दुनू टुकड़ा उठौलीह। “नहि,” ओ कहलीह, “पहिने जे टूटल अछि से बुझू। फेर जतेक अहाँसँ सुधरि सकैत अछि ततेक करू; सभक दुःख अपन हाथमे समेटबाक वचन नहि दिअ।” बालक फेर खेलबाक अनुमति माँगलनि। उत्तरा हुनका खेलए देलीह।

विदेहपुरक खुलल पाठशालामे सरिता एहि प्राचीन दृश्यकेँ पद्माक कथापाठसँ सुनि रहल छलीह। पद्मा स्पष्ट कएलनि जे ओ महाकाव्यक समयक कथा कहि रहल छथि, २०४२क घटनाक प्रत्यक्ष प्रमाण नहि। एक किशोरी पुछलक, “उत्तरा बालक लेल सब किछु चुनि सकैत छलीह?” पद्मा उत्तर देलीह, “शिशुक समयमे संरक्षणक बहुत निर्णय वयस्ककेँ करबाक पड़ैत अछि; मुदा ओही संरक्षणक अर्थ एक दिन ओकरा अपन प्रश्न पुछबाक अधिकार देबो अछि।” किशोरी अपन कापी बन्द कएलक। “तखन हमरो अपन बात पुछल जाए,” ओ कहलक।

ओही क्षण आश्रयक एक बच्चा जोर सँ खाँसए लगल। बाहरी धूलि भीतर आबि रहल छल; खुलल खिड़कीक कात काठ घिसबाक काम शुरू भेल छल। रुखसाना कारीगरकेँ रोकलीह, बच्चाकेँ धूलिसँ दूर लऽ गेलीह आ देखभालक जिम्मेवार व्यक्तिकेँ बजबौलीह। ओ रोगक नाम अनुमानसँ नहि लिखलीह। एक कर्मचारी कहलक, “कागदमे धूलिक कारण लिखि दिअ, तखन सहायता भेटत।” रुखसाना कहलीह, “जे देखल अछि से लिखब; चिकित्सकीय कारण जाँचनिहार चिकित्सक छथि।” कारीगर अपन औजार सम्हारि बाहरक छाँहमे चलि गेलाह।

बच्चाक माय कहलीह, “हमरा हरदम लोक कहैत अछि जे भय छोड़ि दिअ। भय एखन नहि छोड़ि सकैत छी। हम जानए चाहैत छी जे अगिला बेर धूलि उठत तँ रास्ता कतए रहत।” संकेत आ नव समितिक दू युवक मिलि आँगनसँ सुरक्षित निकासक बाट देखलनि। एक परित्यक्त बेंच मार्ग रोकने छल, ओकरा हटाओल गेल। बरसातमे फिसलनवला भागपर अस्थायी खड़्ज्जा देबाक तिथि तय भेल, मुदा पक्का मरम्मतक रकम एखन स्वीकृत नहि छल। माय कहलीह, “जे पूरा नहि भेल से स्पष्ट कहलहुँ, ताहि लेल हम काल्हि फेर पुछि सकब।”

नीरज पंडा ओतय अएलाह तँ हाथमे अनुष्ठानक पुरान बही आ एक नवल रसीद छलनि। पिछिला स्मरण-सभामे ओ धार्मिक सेवाक दक्षिणा आ मृतक-परिवारक सहायताकेँ अलग रखबाक निर्णय लेने छलाह। आब एक प्रभावशाली आयोजक प्रस्ताव लऽ आयल— बचल बालकसभक ‘रक्षाक अनुष्ठान’ कराओल जाए, आ ओकर खर्च विद्यालयक राहत-खातासँ दऽ देल जाए। नीरज अपन बही मेजपर रखि कहलनि, “रक्षा लेल प्रार्थना करब इच्छाक विषय अछि। जे लोक चाहथि ओ करवाउ। मुदा बच्चाक भोजन आ सुरक्षित छत लेल जे रकम देल गेल, ओहि मे सँ दक्षिणा काटब उचित नहि।”

आयोजक चिढ़ि गेल। “अहाँ पंडा भऽ कऽ अनुष्ठानक विरोध करैत छी?” नीरज शांत स्वरमे कहलनि, “हम विरोध नहि, विकल्पक स्पष्टता माँगैत छी। सेवा लेल जे परिवार स्वेच्छासँ बुलाओत, ओकरा समय आ उचित पारिश्रमिक बतायब। जे नहि बुलाओत, ओकर अधिकार कम नहि होएत।” एक वृद्धा, जिनका अनुष्ठान चाही छलनि, कहलीह, “हम अपन घरे कराएब; हमरा श्रद्धाकेँ सेहो कियो हँसीक वस्तु नहि बनाउ।” रुहानी उत्तर देलीह, “अहाँक विश्वास सुरक्षित, आ बच्चासभक साझा सहायता सेहो सुरक्षित।”

नीरज दू रसीद लिखलनि। एक रसीद स्वेच्छासँ अनुरोध करनिहार परिवारक सेवाक, दोसर विद्यालयक राहत-खातासँ कोनो लेनदेन नहि भेल तकर पुष्टि। आयोजक पुछलक, “ई दोसर रसीदक जरूरत किएक?” नीरज कहला, “काल्हि फेर कियो नहि कहय जे हमर सेवा मुफ्ते भऽ गेल अथवा सरकारी सहायता सँ देल गेल। कारीगरक दाम सही रहय, श्रद्धाक स्वतन्त्रता सही रहय।” ओ अपना सेवा लेल मूल्य माँगबामे लजाएल नहि छला; मुदा भूखल बच्चाक भोजनक हिस्सा लेल अपन दाबी नहि जोड़लनि।

दोपहरि तक पाठशालाक कात दू अलग तख्ती लागल। पहिलपर सुरक्षित निकास, साफ पानि, देखभालक समय आ शिकायत सुननिहारक नाम; दोसरपर बच्चासभक अपन लिखल प्रश्न, जकरा चाहलासँ हटाओल जा सकैत छल। एक सदस्य चाहैत छल जे प्रत्येक बच्चाक फोटो संग राखल जाए। रुहानी पूछलीह, “कियो अपन चित्र दऽ सकैत अछि, बिना अपन चेहरा दऽ?” बालिका हाथ उठौलक। “हम अपन रंगवला किवाड़ रखब, फोटो नहि।” तारा तख्तीपर ओकर नामो बिना अनुमतिक नहि लिखलीह।

सरिता रसोइमे गेलीह। चाउरक डिबिया लगभग खाली छल, मुदा बच्चासभक लेल अलग रखल दालि बचल छल। उर्मिलाक बहिन ओतय कपड़ा पसारि रहल छलीह। “काल्हि स्मारक पर उर्मिलाक काम लिखल गेल,” ओ कहलीह, “आइ नब बच्चासभक कपड़ा के धोअत? ककर समय लिखा जाएत?” सरिता चूल्हिक आगि नीचाँ कएलनि। “नव पालिक मजदूरी नव लोकक नामे,” ओ उत्तर देलीह, “उर्मिलाक अधूर दाम हुनकर परिवारक दाबीमे रहत। दुनूक पन्ना एक नहि।” बहिन अनचाहल राहतक बदला निश्चित मजदूरीक दिन पूछलीह।

गोमती समय-रजिस्टर लऽ अएलीह। नव धुलाईक काम अपन इच्छा सँ लेनिहार दू स्त्रीक समय लिखल गेल, संगमे तेसर स्त्री, जे बालकसभकेँ सँभारेबाक समय दऽ रहल छलीह। एक सदस्य कहलक, “बच्चाक ध्यान राखब तँ घरक स्वाभाविक काम अछि; एकर पारिश्रमिक किएक?” स्त्री कहलीह, “घरक काजक बाद इएह समय हम अपन दोकानमे दैतहुँ। अहाँ चाहैत छी हम एतय रहूँ तँ हमरा काम कहि मानू।” गोमती समय गनलीह। रमा दोकानक संभावित आमदनीकेँ मजदूरीक प्रमाण नहि मानलीह, मुदा तय काजक वास्तविक दर लेल अलग सहमति लिखबौलीह।

अपराह एक कुम्हारक बनाओल माटिक छोट घोड़ा टूटि गेल। बच्चासभ ओहि घोड़ाकेँ घेरि ठाढ़ भेल। एक बालक कहलक, “हमरा ईहिपर राजाकेँ बैसबए छल।” दोसर कहलक, “राजा पैदल चलत।” पहिल बालक रोए लगल। जावेद कलन्दर, जे परछाईवला कपड़ा लऽ गुजरी रहल छला, घोड़ाक दू टुकड़ा उठौलनि आ पूछलनि, “तखन घोड़ा काल्हि मरम्मत होएत, की आज एक पएरवला घोड़ा नाचत?” बच्चासभ हँसि पड़ल। ओहि हँसीमे चोट खाएल शहरक कोनो ऋण माफ नहि भेल, मुदा एक क्षण लेल भयक स्थान खेलकेँ भेटल।

कबीर अपन जेबमे नैराक ‘निजी—अनपठाओल’ चिट्ठीक पुरान संकेत देखलनि। ओ चिट्ठी निकाललनि नहि। बच्चासभक टूटल घोड़ाक खेल देखैत हुनका नैरा याद अएलीह, जे अपूर्ण कामक सामने पहिले कियो संग बैसत से पूछैत छलीह। ओ अपने सँ नहि कहला जे नैरा एखनहुँ हुनका संग छथि; हुनका स्पष्ट बुझाइत छल जे ओ मरि गेल। मुदा ओ ओहि

दिनक काजसँ किछु पाछाँ नहि हटला। जावेदकेँ घोड़ाक मरम्मति लेल गोंदक छोट डिबिया दऽ देलनि, तकरा बच्चासभक खेलक खर्चमे दर्ज कएल गेल।

कथापाठक फेर पालि अएल। पद्मा महाभारतक ओ प्रसंगपर घुरलीह जतय परीक्षितक बाँचल जीवन सभक आशाक भार लऽ चलैत अछि। एक किशोर पूछलक, “जँ कियो बचि गेल तँ ओकरा न्याय करबाक दायित्व दोसरसभक दोषसँ बेसी किएक?” पद्मा कहलनि, “कथा उत्तराधिकारीकेँ शक्ति दैत अछि, संगमे कठिन प्रश्नो। बचल मनुख केवल पुरखाक प्रतिशोध लेल जन्म नहि लैत अछि। ओकरा अपन गलती करबाक, सुनबाक, सुधुरबाक सम्भावना सेहो चाही।” किशोर पुछलक, “जँ ओ नहि सुनय?” पद्मा उत्तर देलीह, “तखन ओहि भविष्यक कथा दोसर लोकक आवाज सँ फेर पुछल जाएत।”

पुरान हस्तिनापुरक एक आन दृश्य, युधिष्ठिरक महाप्रस्थानसँ पहिनुक वर्षसभ। बालक परीक्षित दरबारक ओसारमे खेलैत एक प्रहरीक बख्तर छुबए चाहलनि। प्रहरी पाछाँ हटि गेल; युद्धक घावक कारण ओकरा काँपैत हाथ लुकाबए कठिन छल। उत्तरा ओहि हाथपर दृष्टि देलीह, मुदा प्रहरीकेँ सभक सामने अपन कहानी कहबाक आदेश नहि देलीह। परीक्षित पुछलनि, “एतेक लोहेक भीतर सेहो लोक डरैत अछि?” उत्तरा कहलीह, “डर लोहे सँ बाहर नहि रहैत। जखन राजा होएब, लोकक भय सुनबाक काज लोहे पहनबाक सँ कठिन होएत।”

प्रहरीक कछमछ सुनि बालक पुछलनि, “हम ओकरा डरबासँ रोकि सकैत छी?” उत्तरा कहलीह, “एखन ओ जे चाहैत अछि से पुछू।” परीक्षित प्रहरी लग गेलाह। प्रहरी अपन कन्हापर बख्तर सम्हारि कहलनि, “राजकुमार, हमरा एखन विश्राम चाही।” बालक पाछाँ हटि गेलाह। उत्तरा ओहि छोट कदमकेँ राजधर्मक समस्त विजय नहि कहलीह। मुदा एक दिनक लेल ओ बुझलीह जे वंशक नामसँ पहिने दूसराक कहल ‘एखन नहि’ सुनबाक सीख संभव अछि।

विदेहपुरक पाठशालामे साँझ होइत बालकक माय फेर पहुँचल छलीह। बेटा दिन भरिमे दू बेर दुआर दिस दौड़ल छल, मुदा दोसर बेर अपनसँ घुरि खड़ियासँ चित्र बनए लगल। माय रुहानी सँ पुछलीह, “काल्हि आओत?” रुहानी बालक दिस देखलीह। “हमरा लगे ठाम रहत,” ओ कहलीह, “मुदा ओकरा आ अहाँकेँ पुछि लेल जाए। घरक काज, पढ़ाइक

समय, विश्राम—सभकेँ एक्के वचनमे नहि बाँधब।” बालक कहल, “हम काल्हि पहाड़मे नदी बनायब। मुदा हथौड़ी बाहर चलत।” संकेत आश्रस्त कएलनि जे घिसबाक काज नापल समयमे आ खुला स्थानमे होएत।

एहि निर्णयक लिखित प्रति नव समितिक बच्चासभकेँ सेहो पढ़ाओल गेल। सुरक्षित निकासक बाट खोलल गेल छल; भीजल खड़्गजाक पक्का मरम्मत बाकी। देखभालक समय तय भेल छल; ओकर नियमित निधिक आश्वासन एखन अधूर। अनुष्ठान लेल परिवारक स्वेच्छा सुरक्षित छल; साझा सहायता सँ ओकर दक्षिणा नहि कटल। शिशुक निजी कथा बिना सहमतिक फोटो नहि बनल। गोमती कहलीह, “ई लिखल बिनु कियो काल्हि कहत जे सभ पूरा भऽ गेल।” तारा माथ हिलौलीह—“अधूर काजक नामो देखाइत रहय।”

नीरज अपन थारी आ रसीद बन्हैत छलाह। वृद्धा, जे स्वेच्छासँ अनुष्ठान करएबाक चाहने छलीह, हुनकासँ समय तय कएलीह। बगलमे एक दोसर परिवार खुलि कहलनि जे ओ ओहिमे शामिल नहि होएत। दुनू परिवार एक्के नलसँ पानि भरैत रहल; कियो दोसरक सहायता-सूची सँ नाम हटएबाक नहि कहलक। नीरज पंडा बालकसभक रंगवला कागद देखिते अपन पुरान बही सँ कागदक टुकड़ा फाड़ि देबाक प्रयास कएलनि, फेर रुकि गेलाह—बहीक पन्ना भुगतानक प्रमाण छल। ओ नव सादा कागद पर छोट नाव बनौलनि।

रातिक पहिने सरिता बरामदाक निचला तख्ती सम्हारबए अएलीह। बच्चीक बनाओल खुलल किवाड़क चित्र ओहिठाम छल; ओहि चित्रक ऊपर ककरो चन्दा देनिहारक नाम नहि चिपकल छल। सरिता कने टेढ़ कागद सोझ कएलीह। नैराक अनुपस्थितिक पीड़ा ताहि दिनो कम नहि भेलनि। मुदा आँगनमे जे बच्चासभ खेलि सकैत छल, हुनकासभक चेहरापर अपना बेटीकेँ चिपकाएब हुनका उचित नहि बुझायल। ओ किवाड़केँ किवाड़क रूपमे देखलीह—एखन खोलल जा सकैत, काल्हि फेर बिगड़ि सकैत एकटा साधारण वस्तु।

किशोर, जे कथापाठमे प्रतिशोधक प्रश्न पुछने छल, तख्तीक पाछाँ नव पन्ना लगा रहल छल। ओ लिखलक—‘बचल लोक ककर गलतीक बदलामे जीअय?’ पद्मा ओकर प्रश्न नहि काटलीह, केवल ‘अगिला पाठमे सुनब’ लिखि देलीह। पन्नाक कात रंगक दूटा बूँद

पड़ल छल, जेना बालकक अपूर्ण नदी पहाड़सँ बाहर बहि आएल हो। बाहर राति गहिराइत छल, भीतर चूल्हिपर भात उबलैत छल। उत्तर एखन नहि भेटल, मुदा प्रश्नक ठाम निश्चित भऽ गेल छल।

अध्याय २०७ • जनमेजयक प्रश्न

विदेहपुरक खुलल पाठशालाक मेजपर राखल छोट ध्वनि-यन्त्रसँ अचानक एक स्त्रीक हँसी बजि उठल। कियो ओकर बटन छूने नहि छल; मोबाइलक पर्दापर पुरान कार्यक्रमक अपूर्ण सूची खुलल छल आ अंगुलीक हलुक स्पर्शसँ अगिला ध्वनि चलि गेल। रशीद भाट झटसँ यन्त्र बन्द कएलनि। “ई हँसी गीतक हिस्सा नहि,” ओ कहलनि, “हमर बहिनक आवाज अछि। ओहि दिन ओ केवल रियाज सुनए अएलीह। हुनकासँ पुछने बिना एकरा सभाक स्मृतिमे जोड़ब नहि।”

पद्मा मेजक दोसर कात बैसल छलीह। काल्हि बच्चासभक प्रश्न—बचल लोक ककर गलतीक बदलामे जीअय—अखन तख्तीपर छल। आजुक पाठ लेल जनमेजयक कथा चुनल गेल छल। मुदा कथा शुरू होएबाक पहिने रशीदक बहिनक हँसी सामने आबि गेल। सरिता तख्तीपर लिखल प्रश्न पढ़लीह आ मोबाइलक बन्द पर्दा देखलीह। हुनका दुनू एक नहि लगल; एकटा राजाक प्रतिशोधक पुरान कथा छल, दोसर जीवित व्यक्तिक निजी आवाजक अधिकार। दुनूमे सुनब आ नहि सुनबाक बीच कठिन चुनाव अवश्य छल।

रशीद अपन पुरान कापी खोललनि। दादीक सिखाओल चारि पाँति एक रंगक स्याहीमे, पुलिया टूटलाक बाद हुनकर अपन बनाओल तीन पाँति दोसर रंगमे छल। पहिले लोकपाठमे ओ केवल एक पाँति पढ़बाक अनुमति देने छलाह। फागुनक कार्यक्रममे पूरा गायनक रेकर्डिंग रोकल गेल छल, कारण संगतकारसभक अनुमति आ मानदेय तय नहि छल। एहि बेर आयोजक कहलनि, “सार्वजनिक शिक्षा लेल अछि, बेचनाइ नहि। हम सभ पहिनुक बाधा हटि गेल बुझलहुँ।” रशीद उत्तर देलनि, “बाधा हटाओल नहि गेल, प्रश्न मात्र स्थगित भेल छल।”

देव गाइने अपन सारङ्गीक पेटी खोलैत छलाह। एक तार बदललासँ पहिने ओ पुरान तारक टुटल टुकड़ा कपड़ामे लपेटि रखलनि। हुनकर भतीजी रागिनी आज विद्यालयसँ लौटि अभ्यास सुनए अएलीह। बीजक कम्पनी कतेको वर्ष पहिने देवक प्रस्तुति विज्ञापनमे उपयोग करए चाहने छल; देव अपन स्वर, रचित अन्तरा आ वादनक बिना शर्त अधिकार देबाक अस्वीकार कएने छलाह। रागिनी फोन देखबैत कहलक जे कम्पनीक एक प्रचार-

पन्नापर पुरान मेलाक छोट अंश एखनहुँ घूमैत अछि। “अहाँ एकरा बजौलहुँ?” देव पुछलनि। “नहि, हमरा कियो पठौलक,” ओ कहलक।

तारा लिखबाक पन्ना खोललीह, मुदा पद्मा हुनकर हाथ रोकलीह। “पहिने बुझू, ई अंश वास्तवमे ककर रिकॉर्ड कएल?” देव कहलनि, “पुरान मेलामे लोक मोबाइल रखने छल। कोन यन्त्रसँ ई अंश निकलल, हमरा पक्का नहि।” रशीद कहला, “आ जकर फोनसँ आवाज गेल, ओकरा लगो एकरा बेचबाक अधिकार अपने-आप नहि अएल।” संकेत प्रस्ताव देलनि जे कार्यक्रमक सार्वजनिक पाठ आ ध्वनिचित्रक बादक उपयोग लेल अलग अनुमति बनय; पुरान प्रसारक जाँच नबुझल धरि कसूरवारक नाम नहि छापल जाए।

बहुत पुरान हस्तिनापुरक प्रासादमे, परीक्षितक मृत्युक बादक समय। जनमेजयक सामने पिताक मृत्युकें सुनबैत राजपुरोहितक स्वर काँपि रहल छल। तक्षकक दंशक कथा सभागारमे पहिनेसँ पहुँचि गेल छल; शाप, भय, राजाक असावधानी आ मृत्यु—सभक अलग-अलग कथन छल। जनमेजय पूछलनि, “हमर पिता मरि गेलाह, तखन दण्ड ककरा भेटत?” एक सभासद उत्तर देलक, “जे दंश देलक, तकरा।” दोसरक स्वर उठल, “जँ एकटा सर्पकें दण्ड देब तँ समस्त सर्पजाति किएक जड़ाइ?”

राजाक आँखिमे नींद नहि छल। पिताक संग बिताओल छोट-छोट दिनक स्मृति हुनका बारम्बार सतबैत छल; आब ओहि स्मृतिमे पिता केवल अनुपस्थित छला। ओ राजसभाक पाथरपर हाथ रखलनि। “पिताक मृत्यु बिना उत्तरक नहि रहय,” कहला। एक वृद्ध श्रोता उठि निवेदन कएलक, “उत्तर आ सर्वनाश एक शब्द नहि, महाराज। शाप देनिहार, मारनिहार, देखनिहार, बचा नहि सकनिहार—सभक नाम अलग अछि। सभ सर्प एक्के अपराधमे कोना पड़त?” पुरोहित एहि आपत्तिकें सभा रोकबाक युक्ति मानलक; जनमेजय ओकरा चुप करबाक आदेश नहि देलनि।

आधुनिक पाठशालामे एक किशोरी पुछलक, “जँ राजाक पिताकें सर्प मारने छल, तखन सभ सर्पकें मारलासँ की पिता घुरि आएत?” पद्मा ओकर प्रश्न तख्तीपर लिखलीह। पाछाँ बैसल एक युवक बजल, “राजा तखने कमजोर बुझाइट, जँ बदला नहि लेत।” ओकर बगलमे बैसल श्रमिक उत्तर देलक, “हमर घरक क्षतिकें अदालत नहि सुनय तँ

हमरो क्रोध होइत अछि। मुदा दोसर घर जरा देब तँ हमर घर बनत नहि।” पद्मा दुनू आवाज पढ़ि सुनौलीह; ककरो तुरन्त विजेता नहि बनौलीह।

रशीदक कापी पर छलैक जे पछिला फागुनक मेला-समितिक दू देय एखन बाकी अछि—एक गायनक, दोसर संगतकारक। पहिल आयोजनमे नाम घोषणा भेल छल, मुदा हुनकर परिवारक गीतक बादक उपयोग खुलल नहि छल। नव समितिक युवक कहलक, “एहि बेर शिक्षाक नामपर निःशुल्क गाबि दिअ, तखन पुरान हिसाबो लोकक सामने आएत।” रशीद कापी बन्द कएलनि। “हमर पुरान देयकें हमरा सँ आजुक काम मुफ्त लऽ चुकाबए नहि सकैत छी। पुरान हिसाब अलग, आजुक पारिश्रमिक अलग।”

सरिता हुनकर बात सुनैत रुखसाना केँ बजौलीह। रुखसाना सामूहिक भोजनक जिमेवारी लैत छलीह, मुदा गायनक मजदूरीक प्रश्न पहिनहुँ उठौने छलीह। ओ आयोजनक पुरान खाता मँगौलीह। ताहिमे जल-समितिक फागुन कार्यक्रम लेल निश्चित खर्चक पाँति छल, मुदा गायकक मानदेयक आगाँ केवल ‘स्वीकृत’ लिखल छल। बैंकसँ रकम देल गेल कि नहि, कोनो प्राप्ति-पावती नहि भेटल। रुखसाना कहलीह, “स्वीकृतिक अर्थ भुगतान नहि। एखन जे देब, तकर रसीद नयका तिथिसँ लिखू; पुरान देय अपने बहीमे रहत।”

देव तार कसि कऽ दू स्वर निकालनिहार छलाह। रागिनी कहलक, “मामा, हम विद्यालयक नाटकमे अपना सँ बाजा सकैत छी की?” देव हँसला। “सीखल धुनकें अपन हाथसँ बजा, तँ हमर आवाजक कैद नहि बनत। मुदा जे नवा बोल तूँ लिखलें, ओकर नामो तोरे रहत।” रागिनी अपना कापीमे नाटकक गीतक प्रारम्भिक पाँति देखौलक। देव सल्लाह देलनि जे नाटकमे किसानक रोपनीक आवाज एकरंगी विज्ञापनक शोरसँ फरक रहय। ओ भतीजीक गीतकें अपन बनाओल घोषित नहि कएलनि।

हस्तिनापुरमे जनमेजयक सभामे अगिला दिने यज्ञक प्रस्ताव आएल। तक्षकक नाम सुनिते राजाक मुख कड़ाह जकाँ तमतमा उठल। यज्ञक विधि जाननिहार कहलक जे मन्त्रसँ दूर-दूरक सर्प अग्निदिस खिंचल आएत। ओहि वाक्यपर सभा क्षणभरि शान्त भऽ गेल। राजाक समीप बैसल सैनिक, जे युद्धमे आगि देख चुकल छल, अपन जर्जर हथेलीक ओर तकलक। ओकर मनमे एक प्रश्न उठल—जकरा दण्ड देबाक अछि, ओकरा छोड़ि

आगिमे आबएवला शेष जीवसभक दोष कोन? सैनिक प्रश्न मुखसँ नहि कहलक, मुदा राजाक कानमे वृद्ध श्रोताक पहिल आपत्ति एखन छल।

जनमेजय वृद्धकेँ फेर बजौलनि। “जँ हमर पिता लेल न्याय नहि माँगब, तँ प्रजाकेँ की मुँह देखाएब?” वृद्ध कहलनि, “न्याय माँगू, महाराज। मुदा पहिने देखू जे दण्डक परिधि अहाँ केहन खींचैत छी। सीमा नहि रहत तँ निर्दोषक चीखो अपराधीक आवाजमे डूबि जाएत।” राजपुरोहित कहलक जे एहि तर्कसँ कर्म स्थगित होएत। जनमेजय क्रोधमे कहलनि, “अहाँक बात सुनलहुँ, तथापि यज्ञक तैयारी होउ।” सुनब आ मानब एक नहि छल; सभा एहि अन्तरकेँ याद रखलक।

विदेहपुरमे पद्मा एही ठाम पाठ रोकि पानि पीबए लगलीह। युवक, जे प्रतिशोधक समर्थन कएने छल, पुछलक, “तखन राजा पहिनेसँ चेतबैत छलाह, तैयो यज्ञ चुनलनि?” पद्मा कहलनि, “कथा हुनकर चुनावकेँ दुखद बनबैत अछि। सुनि लेबासँ मनुष्य सदैव ठीक निर्णय नहि लैत अछि।” किशोरी फेर पुछलक, “जकरा सुनाओल गेल, ओकरा लिखब ककर काज?” तारा उत्तर देलीह, “जँ सभाक लेखक विरोधक पाँति काटि देत, तँ पछि लोक बुझत जे प्रश्न उठले नहि छल।”

एहि बीच दुआरपर दू कार्यक्रम-प्रबन्धक आबि गेलाह। हुनकर प्रस्ताव छल जे आजुक पाठ आ गायन एक्के नव अभिलेखमे जोड़ि कऽ नगरक स्मृति-पृष्ठपर राखल जाए। ओ कहला, “सभ आवाज संग रखब, ताहिसँ इतिहास बचत।” रशीद कहलनि, “सभ आवाजक मालिक एक्के नहि। दादीक बोल, हमर नव पाँति, देवक वादन, रागिनीक अभ्यास आ बहिनक हँसी—एक फाइलमे रहितो अधिकार पाँच तरहक अछि।” एक प्रबन्धक अपन गणना-पत्रपर लिखलक, “एतेक शर्त रहत तँ काम महँग होएत।” देव उत्तर देलनि, “महँग लागत तँ छोट कार्यक्रम करू। ककरो आवाज निःशुल्क उठा लेनाइ सस्ता कार्यक्रमक प्रमाण नहि।”

तारा आयोजकसँ निश्चित समयक प्रस्ताव माँगौलीह। आध घण्टाक कथापाठक ध्वनि-पाठ पहिनेसँ पद्माक स्वीकृत छल, मुदा सभामे प्रश्न पुछनिहार बच्चासभक आवाज अलग चिह्नित होएबाक छल। पद्मा कहलीह जे बच्चासभक बिना अनुमति सार्वजनिक ध्वनि नहि जाए; हुनकर प्रश्नक लिखित रूप, पहिचान नुकीने, पाठमे राखल जा सकैत अछि। युवक

पुछलक, “हम वयस्क छी, हमर आवाज?” “अहाँ अपन अनुमति देब वा रोकब,” तारा कहलीह। युवक कुछ सोचि केवल लिखित प्रश्नक अनुमति देलक।

देव अपन निर्धारित प्रस्तुति लेल नवा लिखित सहमति माँगलनि—आजुक एक बेरक गायन, विद्यालयमे अध्ययनक लेल सुनब, सार्वजनिक प्रसारक अलग निर्णय, विज्ञापन अथवा बिक्री लेल कोनो अनुमति नहि। रशीद अपन गायन लेल अलग पन्ना माँगलनि; दादीक बोलक स्रोत-उल्लेख, अपन रचित पाँतिक नाम आ संगतकारक सहमति ताहिमे स्पष्ट होए। रशीदक बहिनक हँसीवला अंश पूरा काटल जाए; स्रोत मोबाइलक प्रति, आवश्यक जाँच धरि, निजी संरक्षणमे रहय। कार्यक्रम-प्रबन्धक पहिने आनाकानी कएलक, तखन छोट रेकर्डिंगक प्रस्ताव मानि लेलक।

गान शुरू होएबाक पहिने भुगतानक प्रश्न फेर उठल। नव समितिक एक सदस्य अपन जेबसँ नगद अग्रिम देबाक कहलनि, मुदा रशीद हँसि कऽ कहला, “व्यक्तिगत उपकार नहि; जे संस्था काम लेत, ओहि संस्थाक खातासँ देय।” खाता खोलल गेल। समितिक अधिकृत सदस्यसभ मिलि आजुक प्रस्तुति लेल पहिनेसँ स्वीकृत रकममे सँ रशीद आ देवकेँ अलग-अलग पारिश्रमिक देलनि; दूनूक अलग प्राप्ति-हस्ताक्षर लेल गेल। मंच तैयार करनिहार किशोरक श्रम आ यन्त्र चलौनिहार युवतीक समय सेहो खर्चमे लिखल गेल। पुरान मेलाक बकाया अलग लाल चिह्नमे रहि गेल।

रशीद गाबए लागलाह तँ हुनकर स्वरमे पुलिया टूटबाक दिनक धूलि रहि गेल छल। ओ पुरान चारि पाँतिक बाद अपना रचित तीन पाँति कने धीमे सुरमे गेलाह, मुदा एकटक शोकमे नहि अटकलाह; बाजारक बन्द बाटपर लोक कोना एक-दोसरकेँ भात पहुँचा देलक, तकर स्मृति सेहो छल। देव सारङ्गीक धनुष चलौलनि। रागिनी कात बैसि ताल गनैत छलि, मुदा माइक्रोफोन ओकरा दिस नहि घुमाओल गेल। ध्वनिक भीतर पवनक महीन आवाज आएल; नव समितिक युवती ओकरा काटब नहि, मूल रेकर्डिंगक जकाँ राखब पसिन कएलक।

गायन समाप्त भेलापर कोनो अधिकारी ‘लोक-संस्कृति बचल’ कहि घोषणा नहि कएलक। सरिता रशीदसँ पुछलीह, “एहि प्रस्तुति सँ की बदलल?” रशीद अपन दूनू रसीद देखौलनि। “आजुक मजदूरी भेटल। अपन आवाजक बाट एखन हम चुनब। मुदा जे पुरान

कर्ज रहल, से एही कागदमे गायब नहि भेल।” देव कहला, “हमरा पैसासँ तार किनबाक अछि। रागिनीक पढ़ाइयो चलत। गीतक मूल्य ई दूनू काजमे आबि सकैत अछि; गीतकें केवल स्मारकमे टाँगब आवश्यक नहि।”

बहुत पुरान सर्पयज्ञक अग्नि काल, जनमेजयक आदेशक बाद। वेदीक पास मन्त्रक स्वर तीव्र भेल। अलग-अलग आकारक सर्प अग्निमे झरैत छल; तक्षककें खींचबाक विधि चलि रहल छल। जनमेजय पिताक मृत्यु याद करैत छलाह, मुदा ओहि बीच आगिमे पड़ैत जीवसभक छटपटाहट हुनकासँ छुटैत नहि छल। वृद्ध श्रोताक प्रश्न दहकैत धुआँक बीच फेर उठल—राजा न्याय चाहैत छथि, मुदा यज्ञक परिधि ककर हाथमे अछि?

तखन आस्तीक पहुँचलाह। हुनका माँग्य देबाक वचन देल गेल छल; हुनकर वाणीमे कोनो सेनाक धमकी नहि छल। ओ यज्ञ रोकबाक वर माँगलनि। पुरोहितसभक माथ पर बल पड़ल; तक्षक एखन अग्निमे नहि पड़ल छल, आ प्रतिशोधक अनुष्ठान अपन अन्तिम लक्ष्य धरि नहि पहुँचने छल। जनमेजयक हाथ मुट्ठी बनल, फेर ढील भेल। सभा बुझि रहल छल जे राजा अपन शोक छोड़ि नहि सकैत छथि, मुदा शोकक नामपर चलैत हत्याक आदेश रोकि सकैत छथि। बहुत देरक द्वन्द्वक बाद ओ यज्ञ थामबाक निर्णय देलनि।

आस्तीकक आगमनसँ परीक्षित जीवित नहि भेला। जकरा अग्निमे झोंकि देल गेल, ओहो फेर नहि अएल। जनमेजयक निर्णय ओहि मृत्युसभकें मेटाएब नहि सकल; बाँचल जीवसभ लेल मात्र अगिला क्षणक बाट बदलब सम्भव भेल। पुरोहितसभमेसँ कियो राजाक निर्णयकें अपूर्ण विजय मानलक, कियो अनुशासनक भङ्ग। यज्ञक लग बैसल ओ वृद्ध श्रोता चुप छल; ओकर पहिल प्रश्न राजा सुनने छलाह, तखन मानने नहि, आ अन्तमे दोसर आवाज सुनि हिंसाक क्रम रोकने छलाह।

विदेहपुरक बरामदामे कथा एतय पहुँचला पर छात्रसभमे काने-काने गप्प होमए लागल। एक बालक पुछलक, “जे पहिनेसँ मरि गेल तकरा खातिर की?” पद्मा कहलीह, “कथा ओकरा घुरा नहि सकैत अछि। मुदा मृतकक नामपर जीवितक विनाश रोकबाक निर्णय लिखि सकैत अछि।” दोसर छात्र पुछलक, “आस्तीक नहिए पहुँचैत तँ?” पद्मा उत्तर देलीह, “ई सम्भावना सोचल जा सकैत अछि; मुदा जे ग्रन्थक कथा अछि, ओकर घटनाकें बदलि हम इतिहासक दावा नहि करब।”

कबीर पाछाँक चटाइपर बैसल छलाह। नैराक फोन, ओकर निजी सन्देश आ ‘निजी—अनपठाओल’ चिट्ठीक बात हुनकर मनमे चुपचाप उठल। हुनका लग एखनहुँ अनेक एहन शब्द छल जकरा पढ़ि लोक नैराक मृत्युकें अपन मनमाफिक अर्थ दऽ सकैत छल। ओ जेबमे राखल कागद नहि निकाललनि। सरिता हुनकर कात बैसलीह। दुनू एक-दोसरसँ किछु नहि पुछलनि। नैराक मृत्यु अपरिवर्तनीय छल; ओकरा सहमतिक अनुपस्थितिकें सार्वजनिक प्रचारक सस्ता अनुमति मानल नहि जा सकैत छल।

पद्मा पाठक बाद चारि शब्दक अभ्यास करबौलीह—प्रत्यक्ष, श्रुत, अनुमान, कल्पना। किशोरी कहलक ओ जनमेजयक कथाक सभ पाँति प्रत्यक्ष नहि मानत, कारण ओ पाठशालामे सुनल कथा छल। पद्मा ओकर उत्तर सुधारैत कहलीह, “अहाँक प्रत्यक्ष अनुभव अछि जे अहाँ एहि ठाम कथा सुनलहुँ। प्राचीन घटनाक स्रोत पढ़ल ग्रन्थ अछि; हमर बनाओल संवाद कथात्मक कल्पना सेहो होए सकैत अछि। भेद राखलासँ कथा छोट नहि होइत।” तारा रशीदक गीतक कापी लगैत कहलीह, “एहि ठाम दादीक बोलक पारिवारिक स्मृति आ आजुक रेकर्डिंगक प्रत्यक्ष श्रम एके पाँतिमे विलीन नहि करतहुँ।”

साँझमे नव समितिक सदस्य रेकर्डिंगक पहिल प्रति बजा कऽ कलाकारसभकें सुनौलक। रशीद ठाम-ठाम रोकबौलनि। एक जगह देवक वादनक बीच मोबाइलक पुरान सूचना-धुन चढ़ि गेल छल। “ई आजुक स्वर नहि,” देव कहलनि। संकेत मूल ध्वनिक प्रति सुरक्षित राखि सार्वजनिक प्रति सँ ओहि अंश हटबौलनि, आ सम्पादनक समय लिखलनि। दोसर जगह रशीदक बहिनक हँसी नहि छल; रशीद निश्चिन्त भेलाह, मुदा मूल निजी फाइल ककरा लग रहत, तकरा लेल अलग प्राप्ति माँगलनि। तारा व्यवस्था कएलीह जे निजी मूल बिना परामर्शक प्रसारित नहि होए।

एक युवक पुछलक, “बाहरी लोक जँ छोट अंश बिना पुछने बजा देत तँ की?” देव उत्तर देलनि, “पहिने प्रमाण देखब जे कोन अंश आ कोन प्रसार। फेर रोकबाक माँग करब। आजुक लिखित नियम ओहि लड़ाइक शुरुवात अछि, अन्त नहि।” रागिनी कापी बन्द करैत कहलक, “हमर नाटकक नव गीत आज रिर्कार्ड नहि भेल, ताहिसँ की गीत कम भेल?” देव सिर हिलौलनि। “नहि। काल्हि तूँ चाहबें तँ अपने मित्रसभक संग गेबें, आ चाहबें तँ कापीमे रखबें।” हुनका एहि साधारण स्वतन्त्रतामे कनेक खुशी भेल।

स्मारकक कातक दीवालपर कार्यक्रमक छोट सूचना टाँगल गेल। एहिमे कलाकारसभक नाम, आजुक भुगतानक प्राप्ति आ आगामी पुनःउपयोग लेल अलग अनुमतिक आवश्यकता लिखल छल। रशीदक दादीक पूरा गीत नहि छापल गेल; केवल स्रोतक श्रेय आ रशीदक बनाओल पाँतिक उल्लेख छल। बच्चासभक प्रश्न अनाम रूपमे राखल गेल। लोकपाठक प्रतिमे प्राचीन सभाक वृद्ध आपत्तिक उल्लेख नहि काटल गेल, यद्यपि किछु लोक ओकरा राजाविरोधी कहि हटबाबए चाहैत छल। पद्मा कहलीह, “कथाक श्रोता केवल जयजयकार करए लेल नहि बैसैत अछि।”

साँझक उजास घटल तँ चेतन भट अपन पुरान वंशगानक पोथी लेने बरामदामे पहुँचलाह। ओ पाठ पूरा होएबाक प्रतीक्षा करैत छलाह। रशीदकेँ भुगतानक रसीद मोड़ैत देखि कहला, “हमरा पोथीक एक पुरान नाम जाँचबाक अछि। लोक बारम्बार कहैत अछि जे ओहि घरक वंश एतयसँ चलल, मुदा दू पन्नाक तिथि मेल नहि खाइत।” पद्मा हुनकर पोथी खोलि तत्काल निर्णय नहि देलीह। “काल्हि श्रोतासभक सामने मूल पन्ना आ असहमति दुनू पढ़ब,” ओ कहलीह। चेतन पुछलनि, “जँ गलती हमर पोथीमे भेटल?” “तखन गलती काटब,” तारा कहलीह, “पोथी राखब, लोककेँ नहि काटब।”

रशीदक घर घुरबाक समय देव सारङ्गीक पेटी बाँधि रहल छलाह। दुनू अपन-अपन पारिश्रमिकक पर्ची फेर देखलनि। रशीद पुछलनि, “आइ जे गीत गौलहुँ, लोक ओकरा सँ जनमेजयक कथा की बुझत?” देव कहला, “सम्भव अछि कियो किछुओ नहि बुझत। कियो केवल स्वर पसिन करत। हमरा गीतक अर्थक एक्के मालिक बनबाक आवश्यकता नहि; हमर गाओल स्वरकेँ बिना पूछने बेचबाक अधिकार सेहो ककरो नहि।” दुनू हँसला। पछिला देयक कागद एखनहुँ रशीदक झोरामे छल, मुदा आजुक आमदनी घर जाएत।

पाठशालाक दुआर बन्द करबाक समय ओ किशोरी तख्तीपर काल्हिक प्रश्नक नीचाँ छोट पाँति जोड़ि देलक—“जकर कथा सुनल जाए, ओ बीचमे रोकि प्रश्न पुछि सकैत अछि की?” सरिता पढ़लीह। एक ओर जनमेजयक यज्ञ रुकबाक कथा लिखल छल, दोसर ओर नव समितिक कलाकार-पावतीक कागद सुखा रहल छल। दुनू अलग समय, अलग अधिकार, अलग हिंसा आ अलग उपाय छल। केवल एतबे समान रहि गेल जे सुनब

कखनो-कखनो काज बदलि सकैत अछि। सरिता दरबज्जाक ढील कुंडी ठीक कऽ भीतरक
दीया जरैत छोड़ि देलीह; काल्हि एहि कक्षमे फेर लोक बैसत।

अध्याय २०८ • उग्रश्रवाक श्रोता

चेतन भटक पुरान पोथीक दू पन्ना टेबुलपर पसारल छल। एकटा पन्नाक किनारमे घी-जकाँ पियर दाग, दोसरपर बरखाक पानिसँ पसरल नील स्याही। ओ भोरहि सँ दूनू पन्ना एक-दोसरक बगलमे रखि देखैत छलाह। अखन तारा भीतर सँ पातर काँच आनिक पन्नाक ऊपर धरलीह तँ एक अंकक बाँकी आधा भाग देखाइ पड़ल। चेतन अपन नाकक लग काँच नेलनि। “जकरा हम बरखोसँ एके तिथि पढ़ैत रहलहुँ, ओ दू तरहसँ पढ़ल जा सकैत अछि,” ओ धीरे कहलनि। बाहर खुलल पाठशालाक छप्परपर एक चिड़ै चोंचसँ तिनका खींचि रहल छल। चेतनकँ ओहि छोट खटखटाहटमे अपन छूटल मात्राक ध्वनि सुनाइ पड़लनि।

काल्हि रशीद भाट आ देव गाइनेक गायन समाप्त भेलाक बाद ओ पोथी छोड़ि गेल छलाह। आज ओकर सत्यता देखबाक लेल दू घरक प्रतिनिधि, पद्मा, सरिता आ किछु श्रोता बैसल छलाह। पोथी चेतनक रोजीक साधन छल; विवाह, श्राद्ध आ वंशगानक निमन्त्रणमे लोक हुनकँ बजबैत। एक परिवारक देल पुरान पर्चीपर सरिताक नामसँ मिलैत एक नाम भेटल छल। गप्प उड़ि गेल छल जे एहि पर्चीसँ सरिताक पहिले गलत घोषित मृत्यु-पंजीक गुप्त कथा खुलत। सरिता आज स्पष्ट कहलीह, “हमरा नाम सन दोसर नाम भेटलासँ हमर जीवन ककरो वंशक प्रमाण नहि बनि जाएत।” चेतन सिर झुकौलनि; हुनका मालूम छल जे गप्पक पयर कागदसँ बेसी तेज होइत अछि।

पद्मा पहिने दूनू पन्नाक मूल परत उलटलनि। पहिल पन्ना जन्मक दिनक सूची नहि, एक पुरान अनुष्ठानमे गाओल वंश-पंक्ति छल; दोसर पन्ना कतेको वर्ष बादक निमन्त्रणक नकल। गानक दौरान एक नामक आगाँ दोसरक उपाधि जुड़ि गेल छल। तिथिक कटावसँ ई नहि बुझाइत छल जे दू नाम एक्के व्यक्ति छथि। चेतन कहला, “हम बीचक खाली ठामक अर्थ अपन स्वरमे भरैत रहलहुँ। लोक गीतक लय माँगैत छल, हम पन्नाक खाली जगहकँ वंशक सीढ़ी बना देने छलहुँ।” ओ एहि स्वीकारोक्तिँ दोषी व्यक्तिक नाटकीय प्रायश्चित्त नहि, अपन रोजीक एक कठिन हिसाब मानैत छलाह।

बैसल लोकमेसँ एक अधेड़ पुरुष आपत्ति कएलनि। “जखन हम सभक पुरखा ओही गीतमे गाओल गेलाह, तखन आब किएक काटब? पोथी गलत कहलासँ हमर घरक सम्मान घटत।” चेतन उत्तर देलनि, “गीत नहि काटब। जे दाबी हम गानक ऊपर चढ़ा देलहुँ—जे अमुक परिवारक वंश सीधा एतयसँ चलल—ओ दाबी काटब। अहाँक घरक स्मृति एखनहुँ रहत, मुदा ओकरा इतिहासक मोहर नहि लगा सकब।” पुरुषक संग आएल वृद्धा कहलीह, “हमर दादी गीत सुनबैत छलीह, कोनो सरकारी प्रमाण नहि।” हुनकर वाक्य सुनि सभाक भीतर अनपेक्षित मौन उतरि गेल। सम्मानकेँ झूठक सहारा चाही की नहि, प्रश्न एखन ककरो लेल सहज नहि छल।

बहुत पुरान नैमिषारण्यक वनमे, शौनकक दीर्घ यज्ञक अवसर। उग्रश्रवा सौति वनक बाटसँ आबि धूरि झाड़ि आसन लग बैसलाह। हुनकर पिता लोमहर्षण कथाक वाचक छलाह; हुनका अपन परम्पराक स्मृति छल, मुदा ओ केवल पिताक नामपर सभ बातक अन्तिम अधिकार नहि माँगैत छलाह। जनमेजयक सर्पयज्ञमे वैशम्पायनक मुखसँ सुनल महाभारतक कथाकेँ ओ एहि वनमे पहुँचैबाक इच्छा रखने छलाह। शौनक पूछलनि, “अहाँ की सुनने छी?” उग्रश्रवा उत्तर देलनि, “जे सुनलहुँ तकर बोध, आ जतेक स्मृतिमे रहि गेल; जे नहि जनैत छी तकरा जानबाक अभिनय नहि करब।”

यज्ञशालाक कात पानि भरि अनैत एक स्त्री, दूरक बस्ती सँ आएल एक यात्री आ अग्निक लेल सूखल काठ जुटौनिहार युवक कथा सुनए ठाढ़ भेला। एक परिचारक कहलक, “सभासभक बीच प्रश्न तपस्वीसभ पुछताह; आन लोक बाहर सुनथि।” उग्रश्रवा तखन नहि बजलाह। शौनक प्रश्न कएलनि जे सुनबाक ई विभाजन ककर लाभ लेल अछि। परिचारक उत्तर नहि दऽ सकल। उग्रश्रवा अपन आसनसँ कने हटि कहला, “जकरा कथा सुनाओल जाइत अछि, ओकरा बीचमे नहि बुझल शब्द पुछबाक अवकाश नहि देब तँ ओकरा केवल ध्वनि भेटत, कथा नहि।” ओ उपस्थित लोककेँ रुकबाक आग्रह कएलनि, भागबाक आदेश नहि।

वनक स्त्री पहिल प्रश्न पुछलनि, “राजाक घरक कहानीमे जकरा नाम नहि अछि, ओकरा सुनब किएक चाही?” उग्रश्रवा तुरन्त वंशावली आरम्भ नहि कएलनि। ओ कहला, “नाम सभक नहि बचल, मुदा जकर मेहनतिसँ रणक रथ पहुँचल, जकर हाथसँ घाव धोएल

गेल, हुनकर नहिए रहनाइओ कथाक एक दोष अछि। हम जतेक सुनलहुँ ते कहब, आ अहाँ जतेक असहमति रखब से सुनब।” काठ अननिहार युवक मुस्कुरेलक—कथा आरम्भसँ पहिने कथावाचककेँ सेहो प्रश्नक उत्तर देब पड़ि रहल छल। शौनक अपन आसनक बगलमे एक खाली ठाम छोड़लनि।

विदेहपुरमे चेतनक पोथी परतलाक बीच साजिद नट अपन कैमरा नेने पहुँचल। कैमराबैगक पट्टी फेर सँ सिएबाक छल; ओ अँगुरीसँ टूटल धागा छूड़त कहलक, “आइ हम वीडियो देखए नहि, ओकर दाम आ सीमा लिखबए आयल छी।” तीन बरख पहिने विद्यालयक नाटक-अभ्यासक लाल पर्दाक दृश्यक जोड़-तोड़ कऽ बच्चा चोरयबाक गलत आरोप पसरल छल। मूल रेकॉर्डिंग जाँचलाक बाद आरोपक आधार गलत सिद्ध भेल, मुदा ओकरा सँ उत्पन्न भय सहज नहि मिटायल। आब नगरक एक समूह साजिदक नव वयस्क कलाकारसभक छाया-अभिनयक छोट अंश अपन स्मृति-पृष्ठमे लगबय चाहैत छल। साजिद स्पष्ट कएलक जे पुरान बच्चासभक मूल वीडियो एहि नब प्रस्तावक हिस्सा नहि अछि।

प्रबन्धक फोनपर नमूना चलौलनि। परदापर छायाक तीन आकृति, एक बाँसक चौखट आ एक बूढ़ हत्थीक धीमा ठक-ठक छल। बूढ़ हत्थी साजिदक हाथक बनाओल कठपुतरी छल, कोनो जीवित पशुक प्रदर्शन नहि। कात बैसल जावेद कलन्दर हँसि पड़लाह। “पशु नहि, तखन ओकर छायामे भूख आ नाच दुनू आबि गेल,” ओ कहला। समूहक एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे पूरा अंश ऑनलाइन राखि विज्ञापनसँ आय भेलापर हिसाब देखल जाए। साजिद उत्तर देलक, “पहिने उपयोगक अनुमति, तखन आयक हिस्सा। बादमे हिसाब देखब कहलासँ मूल फाइलक अधिकार एखन अहाँक नहि भऽ जाएत।”

तारा छोट कोठरीक खिड़की खोललीह। भीतर अन्हार छल, कैमरा देखबाक लेल उजास चाही; मुदा बाहरी भीड़ पर्दापर ककरो मुख नहि देखय, से सेहो सावधानी छल। साजिद अपन बनाओल नव अंश देखौलक। कलाकारसभमे दू वयस्क अभिनय करैत छलाह, तेसर व्यक्ति बाँसक चौखट बजबैत छल। ओहि तीनूकेँ आजुक जाँचमे बजाओल गेल छल। पाछाँक पर्दामे विद्यालयक बच्चाक कोनो चेहरा नहि, पुरान विवादित दृश्यक एको टुकड़ा नहि छल। एक अभिनेत्री पुछलीह, “आमदनी होएत तँ केवल कैमरा धारण

करनिहारक?” साजिद कहलक, “नहि; अभिनयक हिस्सा रहल तँ तकर मानदेय आ बादक उपयोग दुनू लिखबाक अछि।”

चेतन एहि आवाजसभ बीच अपन पोथी मोड़बाक प्रयत्न कएलनि, मुदा सरिता रोकलीह। “अहाँक कागदक प्रश्न आजु पूरा करू,” ओ कहलीह, “नहि तँ फेर कोनो सभामे ई कथा अपने-आप पक्का बनि जायत।” तारा पन्नाक फाटल कोनाक चित्र लऽ चेतनकेँ मूल घुरौलीह। पुरान निमन्त्रणक दोसर प्रति जे दाताक परिवार लग छल, ओकर स्रोत-सीमित निरीक्षणक लिखित अनुमति पूर्वहि भेटल छल। ओकर तिथिक एक अक्षर साफ छल; पोथीक गान-प्रविष्टिसँ ओहि निमन्त्रण धरि सीधा वंशक्रम बतएबाक कड़ी अनुपस्थित छल। पद्मा गलत वंशदाबीकेँ हटेबाक प्रस्ताव पढ़लीह। एतय सरिताक पूर्व मृत्यु-पंजीक छानबीनक निष्कर्ष बदलल नहि छल, आ ओकरा संग एहि पर्चीक प्रमाणित सम्बन्धो नहि भेटल।

चेतनक कंठ सूखि गेल। ओ सभामे गाबि आज कमाएब चाहने छलाह, मुदा जँ गलती काटि देतीह तँ जे परिवार सत्य मानि कार्यक्रम करबैत छल, ओ अगिला बेर हुनका किएक बजौत? रशीद भाट हुनकर कात बैसल छलाह। काल्हि हुनका आजुक गायनक दाम भेटल छल, पुरान बकाया अलग रहल। रशीद कहला, “अहाँक कमाइ गाबएमे सेहो अछि, केवल वंशकेँ प्रमाणित कहबामे नहि। गलत पाँति ठीक केनाइ सेहो कौशल अछि।” चेतनक आँखिमे क्षण भरि रोष आएल। “जे पेटपर पड़त, से अहाँ नहि सहब।” रशीद मुँह फेरलनि नहि। “ठीक कहैत छी। मुदा पेटक भयमे दोसरक जनम लिखि देबो हम कोना मानब?”

नैमिषारण्यक कथामे उग्रश्रवा जनमेजयक यज्ञक प्रसंग आरम्भ कएलनि। शौनक बीचमे पुछलनि जे राजा सर्पसभकेँ अग्निमे खिंचबाक आज्ञा देलाक पहिने ककर विरोध सुनने छलाह। उग्रश्रवा जतए धरि स्मृति छल ततए धरि कहलनि: परीक्षितक मृत्युक शोक, प्रतिशोधक संकल्प, यज्ञ, आ अन्ततः आस्तीकक वर-माँगसँ रोकल गेल हिंसा। एक युवक बीचमे पुछलक, “तखन जकरा जरा देल गेल, तकरा कोन कथा?” उग्रश्रवा बहुत देर धरि मौन रहलाह। “यज्ञ रुकल, ई घटना कहि सकैत छी; मरल जीव घुरि अएल, एहन बात नहि,” ओ कहलनि।

ओहि वनमे एक पुरान कुलक श्रोता बजल, “जे कथा हमरो पूर्वज कहने छलाह, तकरा अहाँक कथासँ फरक सुनलहुँ। हम की एतय टोकि सकैत छी?” एक परिचारक फेर अधीर भेल—“वाचन बीचमे तोड़ब तऽ अनुक्रम छुटि जाएत।” उग्रश्रवा अपन गाड़ल कुशक आसन सीधा कएलनि। “तोड़ू,” ओ कहलनि, “बाकी बातक सूत्र हम फेर पकड़ि लेब। हम अपना सुनल पाठक स्रोत कहलहुँ, अहाँ अपन सुनल कथाक स्रोत कहू। दूनूकँ एक जबान नहि बनायब।” शौनक एहि प्रस्तावपर सहमति देलनि। ओहि घड़ी कथावाचकक कुल हुनकर सीमा बतबैत छल, आन कुलक श्रोताक मुँह बन्द नहि करैत छल।

विदेहपुरक खुलल पाठशालाक तख्तीपर पद्मा दू वाक्य लिखलीह। पहिल—‘वंशगानमे अमुक घरक एक नाम गाओल गेल।’ दोसर—‘एहि घरक सम्पूर्ण वंश ओही नामसँ सिद्ध अछि।’ श्रोता सभ पहिल वाक्यक अस्तित्व मानलनि; दोसरक आगाँ कागदमे पर्याप्त कड़ी नहि छल। अर्धेइ पुरुष पूछलनि, “ई लिखिते लोक हमरा सभकँ झूठा कहत।” वृद्धा उत्तर देलीह, “स्मृति आ प्रमाण अलग कहलासँ स्मृति झूठ नहि भेल। हमर दादीक गीतक आवाज तँ रहत।” चेतन दूनू वाक्य पढ़ि, अपन हस्ताक्षरक संग दोसरक ऊपर स्पष्ट रेखा खींचि देलनि। मूल पोथीपर ओ स्याही नहि फेरलनि; सुधारक पृथक् पर्ची सटाओल गेल।

दिन चढ़ल तँ दुर्गा दनुवार पियरी कपड़ामे लपेटल अपन पुरान गीत-कापी लेने पहुँचलि। कापीक बीचक पातपर ‘लखनदेइ’ नाम छल; पहिले नैरा एहि गीतक प्रसंग N36 कहि अलग दर्ज कएने छलीह। दुर्गा कहलीह, “नगरक नव पन्नापर हमर गीतक नामक बगलमे एक सीधा नदी-रेखा खींचल अछि। कोन नापसँ खींचल गेल?” संकेत नक्शा खोलि देखौलनि जे ओ चिह्न एक प्रस्तावित तुलना छल, नापल जलधाराक प्रमाण नहि। दुर्गा हँसलि नहि। “हम गीत गबैत छी, हमर गीतसँ पुल कतए बनत से तय कएल जाए तऽ पुल गलत ठाम पड़ि सकैत अछि।”

पद्मा पुरान पंजीक मूल टिप्पणी देखौलीह—लोकनाम आ काव्यपदक तुलना अलग, स्थल-मापन अलग। दुर्गा अपन कापीक नाम आ गायनक श्रेय सार्वजनिक सूचीक लेल स्वीकार कएलीह, मुदा बिना हुनकर अनुमतिक गीतक पूरा पाठ नहि देबाक कहलनि। तारा नब पन्नामे ‘लखनदेइ—दुर्गा दनुवारक पुरान गीतमे स्मृत नाम; वर्तमान जलरेखा अनिश्चित’ लिखलीह। लक्ष्मणा नामक पुरान काव्यप्रयोगसँ सम्भावित सम्बन्धक प्रश्न

ओहिमे उधारल नहि, अलग परीक्षण लेल सुरक्षित रहल। पुरान गीत जीवित रहल, नक्शाक झूठा निश्चय हटि गेल।

साजिदक वीडियो पर फेर बैठक भेल। अभिनय करनिहार दूनु वयस्क कलाकारसभ प्रस्ताव पढ़लनि। पाछाँ बाँसक चौखट बजौनिहार युवक कहलक, “हमरो हाथक आवाज अंशमे अछि, मुदा हमर नाम पहिने नहि छल।” साजिद ओहि घड़ी अपन त्रुटि मानलक। “तोहर ताल हटायब तऽ हमर छाया फुसफुसाइत रहि जाएत,” ओ कहलक। सब मिलि नब श्रेय-पर्ची बनौलनि। तय भेल जे मूल दृश्य आ सम्पादनक स्वामित्व साजिदक रहत; एहि निर्धारित छोट अंशक सीमित एक बेरक उपयोग लेल तीनू सहभागी अलग अनुमति देताह; विज्ञापन, पुनर्बिक्री आ आन कार्यक्रमक प्रयोग लेल फेर अनुमति जरूरी होएत।

आमदनीक प्रश्न सहज नहि छल। प्रबन्धक चाहैत छल जे खर्च काटलाक बाद जतेक बचत से अनिश्चित प्रतिशतमे बाँटल जाए। कलाकारसभ पुछलनि, “खर्चक नामपर जँ सभटा काटि लेब तँ हमरा की भेटत?” तखन निर्धारित दरक पर्ची बनल। प्रस्तावित पहिल प्रयोगक लेल बारह सय रुपैयाक प्राप्ति होएत तखने कार्यक्रम चलेत। उपकरण भाड़ा आ लिखित नकलक सत्यापित दू सय रुपैया काटल जाएत; शेष एक हजारमे सँ पाँच सय साजिदक चित्रण-सम्पादनक, तीन सय दूनु अभिनेताक डेढ़-डेढ़ सय, आ दू सय चौखट-बजौनिहारक। जँ बारह सय प्राप्त नहि हो, तँ नब सहमति बिना ककरो हिस्सा घटाएब नहि जाएत।

साजिद पर्चीपर हस्ताक्षर कएने छल, मुदा एक शर्त फेर जोड़लक: “पइसा देलासँ लोक हमर पुरान मूल वीडियो उठा नहि सकत।” प्रबन्धक मानि लेलक। पुरान विद्यालय-अभ्यासक सामग्री बन्द संग्रहमे रहत, केवल नामित जाँचक लेल; नव वयस्क अभिनयक अंशक प्रकाशित प्रति कलाकारसभ देखलाक बाद बनत। अभिनेत्री प्रस्ताव देलीह जे पहिल आमदनीक पर्ची सार्वजनिक हो, मुदा हुनकर व्यक्तिगत पता नहि। सभ मानलनि। जावेद, जे बरामदामे बैसि एहि सभकेँ देखैत छलाह, कहला, “रंगमंचकेँ खुलल दुआर चाही; कलाकारक घरक दुआर नहि।” एक क्षणक लेल सभ हँसि पड़ल।

चेतनक सुधारक पर्ची तखने सूखि रहल छल। ओ अपने हाथसँ एकटा नव गीतक शुरूआत करए चाहलनि, जकरा मे दू कुलक मिलल उत्सवक स्मृति रहत, मुदा पक्की

वंशावलीक दाबी नहि। वृद्धा हुनकरा एक पुरान धुनक आलाप सुनौलीह; चेतन झटसँ मिलान कएलनि जे एहि धुनक किछु भाग ओ अपन शिष्यकेँ पहिने सिखौने छलाह। एखन गाबए लगितथि तँ श्रोतासभक बीच नव कागदक चिन्ता फेर ऊपर चढ़ि जाइत। ओ कहला, “आइ गीत राखू। पहिने परिवारकेँ सुधारक प्रति पढ़ि सुनायब।” ई स्थगन हुनकर भय नहि मिटौलक, मुदा अपन स्वरपर अधिकार घुरौलक।

शौनकक वनमे उग्रश्रवा महाभारतक सूत्र पुनः पकड़ि लेलनि। वनक पानि अननिहारी स्त्री पुछलनि जे युद्धक पछिला दिनमे जखन राजपरिवार यात्रा करैत अछि, तखन खेतमे रहि गेल लोकक दिनचर्या कथामे कतए आएत। उग्रश्रवा कहला, “हम जे सुनलहुँ ताहिमे सब दिनक भोजनक हिसाब नहि भेटत। जँ अहाँक बस्तीक बात अछि तँ अहाँ कहू, हम ओहि कथाकेँ अपन पिताक मुखसँ सुनल कहि नहि बेचब।” एक ऋषि एहि सादगीपर हँसलाह—“कथाक मझधारमे कथावाचक अपन अपूर्णता स्वीकार करैत छथि!” उग्रश्रवा सेहो मुस्कुरेलाह। “जँ नदीक एक किनार हम नहि देखी तँ दोसर किनारकेँ मेटा देब की?”

साँझ पड़बाक पहिने विदेहपुरमे चेतन अपन पुरान पोथी मोड़लनि। सुधारक पर्चीपर गलत वंशदाबी हटाओल गेल, कागत दऽ गेल परिवारक निजी सामग्रीक प्रति खोलबाक अनुमति अलग लिखल गेल, आ गान सुनबैत चेतनकेँ जे पारिश्रमिक भेटत से सत्यक प्रमाण किनबाक मूल्य नहि कहल जाएत। ओ वृद्धाक हाथमे सुधारक एक प्रति दैत कहला, “आब जे गाएब, ताहिमे अहाँक दादीक स्मृति छी; अहाँक घरपर हमर फैसला नहि।” वृद्धा पर्ची घर लऽ गेलीह। अधेड़ पुरुष एखन पूर्ण सन्तुष्ट नहि छलाह, मुदा विवाद सार्वजनिक अपमान बने बिना कागदक सीमामे आएल।

साजिदक पहिल प्राप्ति-पर्ची सेहो ओही साँझ आएल। बारह सय रुपैया समूहक खातामे जमा भेलाक पुष्टि भेटल, आ कलाकारसभक तय हिस्साक भुगतानक अलग-अलग प्राप्ति लिखल गेल। चौखट बजौनिहार युवक अपन दू सय रुपैयाक नोट गनि कऽ कहलक, “एहि सँ हमर बहिनक अभ्यासक कापी आ अपन डोरी दुनू किनब।” ओकर हाथक तालकेँ पहिल बेर कागदपर कामक नाम भेटल छल। मुदा पुरान गलत आरोप फैलौनिहारक पूरा पहिचान आजो अज्ञात छल; साजिद ओहि रिक्त स्थानमे अनुमानक नाम नहि भरलक। ओकरा एक दिनक सही कमाइ भेटल, पुरान क्षतिक पूरा भरपाइ नहि।

पाठशालाक बाहर बच्चासभ काठक छोट रथ घुमबैत छल। एक बच्चा रथक अगुआ बनि आदेश दैत छल, दोसर ओकरा बीचमे रोकि पूछलक, “तोहर रथ कतए जाएत, हमरा पूछबो नहि?” किछु देर बहस भेल, फेर दूनू रथक दू ठाम बाँसक पातर रस्सी बाँधि देलक; आब मोड़बाक लेल दूनू हाथ चाही। पद्मा ओ दृश्य देखलीह, मुदा ओकरा प्राचीन कथाक प्रमाण कहि कापीमे नहि लिखलीह। सरिता कहलीह, “एतए बच्चासभ खेल रहल अछि। हुनका सभक प्रश्नक उत्तर हुनकर खेलमे बनत।” ओ बच्चासभक लेल पानि रखि देलीह आ दुआरक किला ठीक कएलीह।

तारा काल्हिक पाठक लेल खाली आसनसभ गनैत छलीह। अगिला कथा रामक राजदरबारमे लव आ कुशक वाचनक रहत—जतए राजाकेँ अपन विषयमे गाओल कथा सुनबाक कठिनाइ होएत। एक युवती कहलनि, “राजा अपन कथा सुनि लेताह, मुदा गबनिहारकेँ बीचमे टोकबाक अधिकार देताह की?” पद्मा प्रश्नकेँ तख्तीपर लिखलीह, उत्तर नहि। उग्रश्रवाक वनमे श्रोता प्रश्न पुछि सकल छल, चेतनक पोथीमे गलत दाबी काटल गेल छल, साजिदक कैमरा ओकर अपने हाथमे रहल। एहि तीनू घटना एके सत्यक प्रमाण नहि छल; तथापि तीनू ठाम ककरो बोलबाक बीच आन आवाज लेल कने ठाम बनल छल। साँझक हावा तख्ती परक धूरि उड़ा रहल छल, आ दरबज्जा एखनहुँ खुलल छल।

अध्याय २०९ • लव कुशक पाठ

फूलमती पमरियाक अँगुरीमे गीतक कापीक कोना अटकि गेल छल। ओ कागदक एक पाँति पढ़लीह, फेर नाखुनसँ ओकरा नीचाँ रेखा खींचि देलनि। बरामदामे राखल हारमोनियमक एक सुर बार-बार फुसफुसा रहल छल; ओकर पातर पट्टी ढील पड़ल रहैक। काल्हि चेतन भट अपन वंशगानक गलत दाबी सुधारि गेल छलाह। आइ खुलल पाठशालामे रामक दरबारमे लव-कुशक वाचन सुनाएबाक छल, आ फूलमतीकेँ आरम्भक लोकगीत गाबए बजाओल गेल छल। निमन्त्रण-पत्र पर हुनकर नाम छल, मुदा गीतक आगाँ लिखल छल—‘पुरान परम्परागत प्रस्तुति’। फूलमती पुछलीह, “गीत पुरान भऽ सकैत अछि; गेबवाली आइ जीवित छथि। ई पाँति ककरा कहैत अछि?”

पद्मा कापी लेलनि। फूलमतीक माएसँ सुनल सीमातीर्थक बाटक गीतक एक अपमानकारी पाँति ओ पहिने हटौने छलीह; ओकर बदला अपन स्वरक शब्द चुनने छलीह। कार्यक्रम करनिहार नव समिति एहि बेर मूल पाठक नामसँ ओही काटल पाँति फेर जोड़ए चाहैत छल। एक युवक कहलक, “हम सभ तँ इतिहासक रूप रखए चाहैत छी।” फूलमती कापी ओकरा दिस घुमौलीह। “इतिहासक नामपर हमरा मुँहसँ हमर अपमान नहि गबाउ। जँ पुरनका पाँति अध्ययन लेल राखबाक हो तँ लिखू जे हम ओकरा किएक अस्वीकार कएलहुँ। मंचपर हम जे गाएब से हमर निर्णय होएत।” युवकक हाथमे रहल सूची कने काँपल; ओकरा सभकेँ एक गीत घटबाक डर छल, कलाकार घटबाक नहि।

बरामदाक खम्भासँ करीम डफालीक ढोलकक पट्टा लटकि रहल छल। करीम अपन ढोलकक चमड़ा जाँचैत कहलनि, “नामक सवाल संग दामक सवाल अछि।” हुनका फागुनक लोकपाठक पहिल मेहनताना भेटि चुकल छल, मुदा रंग-रोगनक बचल खर्चक रसीद एखन विवादमे छल। बरखो पहिने चम्पाक चोरी कएल निजी सन्देशक पाँति चुनावी प्रचारगीत बनएबाक प्रस्ताव ओ अस्वीकार कएने छलाह। आइ दोसर समूह हुनकर ओही पुरान धुनकेँ ‘जन-धुन’ कहि बिना अनुमति लगए चाहैत छल। “शब्द हम नहि देलहुँ, धुनो नहि बेचेने छलहुँ,” करीम कहलनि, “तकरा चुपचाप सार्वजनिक सम्पत्ति कहि देब सहज काज अछि।”

बहुत पुरान अयोध्याक राजसभामे, अश्वमेधक अवसर। दू कुमार अपन वीणाक तार फेर कसैत छलाह। वाल्मीकिक आश्रममे गीत सीखैत लव आ कुश राजपुरुषसभक भीड़ देखिकऽ एक-दोसरक मुख ताकलनि। वनक खुलल पवनक बदला एतय धूपक गन्ध, रत्नक उजास आ पहरेदारक सरसराहट छल। हुनका सभकेँ कथा गाबबाक शिक्षा भेटल छल; राजदरबारमे ककर प्रश्नक उत्तर कतेक देब, तकर अधिकार के देत—ई अलग बात छल। लव हलुक स्वरमे कुशसँ पुछलनि, “जँ सुनिहार स्वयं कथाक राजा होथि तँ गानक कोन ठाम धीमे करब?” कुश वीणाक खूँटी छोड़ि उत्तर देलनि, “गुरुक सिखाओल शब्दमे जे सत्य बुझैत छी, ओकर सुर नहि तोड़ब।”

दूनू कुमार सभाक आगाँ ठाढ़ भेला। गान वनक शान्त बाटसँ चलि जन्म, विवाह, वनगमन आ विरहक कठिन पड़ाव धरि पहुँचल। उपस्थित जन अनेक बेर रामक पराक्रम सुनल छलाह; मुदा अपन राजाक दुःख, गलती आ सार्वजनिक निर्णय एके धुनमे सुनबाक ई अवसर हुनका सभक लेल भिन्न छल। राम आरम्भमे गानक माधुर्य सुनैत रहलाह। जखन कथामे सीताक वनक एकान्त आ लोकापवादक छाया आयल, हुनकर हाथ सिंहासनक बाँहपर स्थिर भऽ गेल। गीत रामक शत्रुकेँ नहि, रामक जीवनकेँ प्रश्नक बीच रखैत छल। सैनिकसभक दृष्टि राजाक मुखपर गेल; कियो तत्काल गान रोकबाक आदेश नहि देलक।

एक सभासद धीरे कहलनि, “महाराजक समक्ष ई कष्टक प्रसंग छोड़ि देल जाए तँ समारोहक शोभा रहत।” राम हुनका दिस ताकलनि, मुदा उत्तर देबासँ पहिने कुमारसभक गायन सुनैत रहलाह। लवक कंठ कनेक काँपल; कुश ओकरा संग स्वर जोड़ि देलनि। गीतक कठिन पाँतिसँ सभाक मर्यादा टूटि नहि रहल छल; ओकर परीक्षा भऽ रहल छल। राजाकेँ अपन जीवनक बारेमे सुनबाक अधिकार छल; मुदा कथामे जे अनुपस्थित छल, सीता, हुनकर वचनक स्थान राजसभामे कतेक छल, ई प्रश्न समारोहक फूल-मालासँ नहि ढँपायल।

विदेहपुर, २०४२। मंचक आगाँ बच्चासभक लेल दरी बिछाओल जा रहल छल। तारा काल्हिक प्रश्न तख्तीपर एखनहुँ रखनिहार छलीह—“राजा अपन कथा सुनि लेताह, मुदा गबनिहारकेँ रोकताह की?” सरिता ओ पाँति पढ़ि फूलमतीक कापी दिस देखलीह। “हम

सभक पाठमे सीताक वनक कथा अछि,” ओ कहलीह, “मुदा जीवित गेबवाली स्त्रीकेँ हम ओहने शब्द गाबए बाध्य किएक करब, जे ओ अस्वीकार कऽ चुकी छथि?” आयोजक युवक उत्तर खोजैत रहल। पद्मा ओकरा तुरन्त दोषी नहि ठहरौलीह। ओ कहलनि, “पहिने निमन्त्रण-पत्रक भाषा, नव स्वीकृत पाठ आ श्रमक प्राप्ति तीनू अलग देखू।”

फूलमती अपन माएक बात कहलीह। “माए गीत सीखौने छलीह, मुदा ओहि पाँतिपर आवाज रोकि दैत छलीह। बच्ची रहिते हम पूछैत छलहुँ—आगाँ किएक नहि? कहैत छलीह, ‘किछु शब्दकेँ चुप राखबो सीख।’ पछिला बेर हम ओकर स्थानपर नव पाँति बनौने रही। मुदा नब पाँति लिखने छी, एहिसँ पुरान पाँति इतिहाससँ मेटायल नहि। ओ पुरान अपमानक साक्षी अछि, हमर गेबाक आदेश नहि।” हुनकर आँखि कने भीजल, मुदा ओ गानक तैयारी छोड़ि नहि उठलीह। पास बैसल किशोरी पुछलक, “तखन हम पुरान पाँति पढ़ि सकैत छी?” फूलमती उत्तर देलीह, “सन्दर्भसहित, हमरा नामक संग, जँ अहाँ बुझबाक लेल पढ़ैत छी; हमरा नकल करए लेल नहि।”

करीम ढोलकक पाछाँसँ एक पुरान रसीद निकाललनि। चुनावी युवकसभक प्रस्ताव अस्वीकार केलाक बाद हुनका एक कार्यक्रमसँ हटेबाक धमकी भेटल छल; ओहि धमकीक लिखित प्रमाण उपलब्ध नहि छल, तँ ओ ककरो नाम जोड़ि नहि रहल छलाह। आब धुनक उपयोग चाहनिहार समूह एक छोट कार्यक्रम लेल भुगतानक वचन देलक, मुदा भविष्यक सभ प्रसारपर अधिकार माँगलक। करीम पुछलनि, “हमरा जँ आइक लेल दाम भेटत, तखन अहाँ अगिला साल हमर ताल बेचि देब?” आयोजक कहलक, “सब मनाही रहल तँ उत्सव कोना होएत?” करीम अपन ढोलक थापलनि—एक बेर धीमा, दू बेर तेज। “उत्सवमे अनुमति माँगब अपराध नहि।”

रामक सभामे गीत अगुआ बढ़ल। कुमारसभक स्वरमे वाल्मीकिक रचल कथा बहि रहल छल; अपन जन्मक प्रश्न हुनका सभक मुखपर अद्याप स्पष्ट नहि आयल छल। राजपुरुषसभक किएक-किएक दृष्टि लड़कासभक मुखपर ठहरए लगल, मुदा समान मुखाकृतिसँ निश्चयक घोषणा नहि भेल। राम गीतक रचनाकार आ कुमारसभक शिक्षाक विषयमे प्रश्न करबाक इच्छा प्रकट कएलनि। लव कहलनि जे आश्रममे गुरु वाल्मीकिसँ

गीत सीखल अछि; कुश कहलनि जे पाठ लेल हुनका सभकेँ राजसभाक प्रतिफलक लालच नहि देल गेल छल। दूनू अपना स्वरकेँ दानक वस्तु मानए तैयार नहि छलाह।

राजाक एक सेवक बहुमूल्य उपहार बढौलक। कुमारसभ विनम्रतासँ उत्तर देलनि जे आश्रमक जीवनमे हुनका सभ लेल एहन धन आवश्यक नहि। एहि अस्वीकृतिक अर्थ गानक कोनो मूल्य नहि, से नहि छल; ओ राजकीय प्रसन्नताक मूल्यपर कथा बदलबाक सम्बन्ध स्वीकार नहि करैत छलाह। राम हुनकर उत्तर सुनलनि। राजसभाक ठाढ़ लोक बुझि रहल छल जे जे बात शासकक कान धरि पहुँचि गेल, ओकरा फेर नहि-सुनल बना देब सहज नहि। मुदा सीता स्वयं एतय उपस्थित नहि छलीह; कुमारसभ हुनकर सम्पूर्ण मनक निर्णायक वाचक होएबाक दाबी नहि कएलनि।

विदेहपुरमे फूलमतीक नव निमन्त्रण लिखल गेल। ‘गायन—फूलमती पमरिया; मातृपरम्परासँ प्राप्त धुन, नव पाठक चयन गायिकाक; मूल अपमानकारी पाँति मंचपर नहि।’ पद्मा सुझाव देलीह जे आयोजक अपन निजी अध्ययनक नकलमे हटाओल पाँतिक उल्लेख केवल कारणसहित रखय, सार्वजनिक प्रदर्शनक ध्वनिमे नहि। फूलमती एक शर्त आरो जोड़लीह—“जँ हमरा गीतसँ बच्चाक अभ्यास कराएब, तखन ओकरा शब्द बदलबाक वा नहि गेबाक अधिकारो बताउ।” आयोजक फेर पूछलक, “एतेक नियम लिखब तँ गेबाक समय कतए बचत?” सरिता उत्तर देलीह, “नियम पहिने तय भेला पर गीतक बीचमे झगड़ा घटत।”

पड़सा गनबाक छोट मेजपर कार्यक्रमक खर्च रखल गेल। फूलमतीक चालीस मिनट गायन, करीमक संगत आ नव तालक अभ्यास अलग-अलग काज छल। समितिक खजाञ्ची एके रकम ‘लोक-सहयोग’ शीर्षकमे राखब चाहैत छल, जाहिसँ बादमे जकरा जतेक भेटय, दऽ देल जाए। फूलमती ओ पन्ना नहि मानलीह। “हम अपन समय बेची रहल छी, चुप्पी नहि,” ओ कहलीह। तारा पहिल आयोजनक पुरान मानदेयक प्राप्ति खोललीह; ओहि दिन तय कएल रकमक कतेक हिस्सा वास्तवमे भुगतान भेल छल, से आजुक हिसाबसँ अलग कएल गेल। नब कार्यक्रममे श्रमक समय आ आजुक निर्धारित पारिश्रमिक साफ लिखल गेल।

करीम अपन धुनक एक अंश बजा कऽ दिखौलनि। ओ पुरान चुनावी पर्चीक गीत नहि छल; एक नवल रचना छल, जाहिमे दौड़ैत बच्चाक पयरक ताल आ भरि बरखा माथपर टपकैत छप्परक थाप मिलैत छल। जावेद कलन्दर, जे छोट कठपुतरी लऽ कात बैसल छलाह, थाप सुनि कहलनि, “एहि सुरमे हमर बाँसक छाया चलि सकैत अछि।” करीम हँसि कऽ कहला, “चलत, मुदा एकरे संग पूरा धुन मुफ्त नहि चलि जायत।” जावेद अपन पहिल पशु-विहीन कार्यक्रमक सीमित कमाइक बात स्मरण कएलनि। दुनू कलाकारक हँसीमे धन्धाक कठिन हिसाबो रहैक।

रकमक निर्णय भेल। फूलमतीक प्रस्तुति लेल आठ सय रुपैया, करीमक वादन आ नव धुनक एक बेरक उपयोग लेल छओ सय, अभ्यासक दुइयो घण्टा लेल अलग-दू सौ रुपैया; रेकॉर्डिंगक सार्वजनिक प्रसार या अगिला आयोजन हेतु फेर अनुमति आवश्यक। खजाज्ची किछु आन खर्च घटेबाक लेल सजावट सरल करए सहमत भेल। पहिल बेर रकमक स्रोत समितिक खातामे निश्चित जमा भेलाक पुष्टि भेल; फूलमती आ करीम अपन-अपन अग्रिम प्राप्ति लिखलनि। शेष तय समयपर देबाक देय-पर्ची बनल, जकर एक प्रति कलाकार लग, दोसर पाठशालाक सार्वजनिक खर्चपंजीमे निजी विवरण हटाकऽ रखल गेल। एखन भुगतान पूरा भऽ गेल, एहन घोषणा कियो नहि कएलक।

फूलमती गीतक सूरत बदललनि तँ एक युवक कहलक, “पहिल बेर सुनेवाला लोक बुझत नहि जे ककरा विरोधमे ई नव शब्द अछि।” फूलमती ओकरा अभ्यासमे ठाढ़ कऽ कहलीह, “तँ नव शब्द अपना बलपर सुनू। विरोध बुझबाक लेल हर बेर अपमान दोहरएबाक जरूरी नहि।” ओ तीन सुर उतारलीह; पहिल माएक धुनक, दोसर नवल पाँतिक, तेसर मौनक। करीम ढोलकपर ओहि मौनक बाद मात्र थाप देलनि। किशोरी श्रोता चकित भेलीह जे मौनक सेहो अभ्यास होइत अछि। सरिता जानि रहल छलीह—नैराक अनुपस्थिति एहि मौनक उदाहरण नहि; ई मंचक अपन रचनात्मक विराम छल। मृत बेटीकें सब घटनाक अर्थ बनाबए ओ फेर नहि चाहैत छलीह।

बहुत पुरान राजसभामे, लव-कुशक गायन थामलापर कने अवकाश देल गेल। दूनु कुमार महलसँ बाहरक बगैचामे गेलाह। कुश एक पातक डंठलसँ माटिपर रथ बनौलनि; लव ओकर आगाँ छोट पाथर रखि कहला, “एतय नदी अछि। रथ कुदाकऽ नहि जाएत।”

कुश एक टहनीक पुल बनए लगलाह। राजसभाक कठिन गीत गोबाक बाद ई खेल हुनका सभक छल। पहरेदार दूर ठाढ़ छल, मुदा एहि कने समयमे ओ कुमारसभकेँ ककरो वंशक निशान वा राजकीय दृश्य बनाकऽ नहि देखैत छल; दूनू भाइ रथक बाटपर हँसैत झगड़ि रहल छलाह।

राम दूरसँ ओहि खेलक दिशा देखलनि। कथाक बालकपात्र आ हुनका आगाँ खेलैत वास्तविक कुमारसभ एक नहि छलाह—पहिल गानक स्मृतिमे, दोसर अपन आकाशक नीचाँ। राजा चाहितथि तँ एहि क्षणक अर्थ स्वयं तय करि सकैत छलाह, मुदा ओ नहि कएलनि। वाल्मीकिसँ संवादक आवश्यकता हुनका अनुभव भेल; सीताक विषयमे जे सार्वजनिक अन्याय आ वैयक्तिक वेदना रहल, ओकरा मात्र संगीतक आनन्दसँ समाधान घोषित करब सम्भव नहि छल। सभा फेर जुटत; गानक प्रश्नो फेर लौटत। एखन कुमारसभक खेलकेँ राजाक निर्णयक तुरन्त सामग्री नहि बनाओल गेल।

दुपहरक बाद पाठशालामे पुरान नदी-पंजीक पन्ना खोलल गेल। सरिताक पहिने देल प्रतिलिपिमे जनककालक काव्यप्रसंगक बीच ‘त्रियुगा’ आ ‘लक्ष्मणा’ लिखल छल। नैरा जीवित रहिते ओहिपर ‘काव्यनाम’ लिखि आधुनिक नक्शाक स्थान खाली रखने छलीह। तारा कागद हाथमे लऽ बहुत देरि धरि ओहि लिखावटकेँ देखलीह। संकेत कहलनि, “एहि त्रियुगाकेँ तिलयुगाक जलमार्गक नाम मानि नव नक्शामे चिपकाएब आसान अछि।” तारा उत्तर देलीह, “आसान अछि, मुदा बिना आधारक। पहिने मूल प्रसंगक पाठ देखू; दोसर नक्शाक मापन दोसर काज अछि।”

दुर्गा दनुवारक ‘लखनदेइ’ गीतक पृथक् प्रति काल्हि सुधारल गेल छल। लक्ष्मणा काव्यनामक संग ओकर सम्भावित भाषिक सम्बन्ध जाँचल जाएबाक छल, निर्णय नहि भेल छल। एक विद्यार्थी प्रस्ताव देलक जे ‘त्रियुगा—तिलयुगा’ आ ‘लक्ष्मणा—लखनदेइ’ लिखि दू बराबरीक निशान बना देब। पद्मा तख्तीपर निशानक बदला प्रश्नचिह्न रखलीह। “पहिल जोड़ीमे आधुनिक एकरूपताक प्रमाण नहि; दोसरमे ध्वनिक सम्भावना अलग जाँचबाक अछि। गीत, पोथी आ आजुक नापसभक अपना-अपना सीमा अछि।” फूलमती बीचमे कहलीह, “लोकनामकेँ बचाउ, मुदा हमर गीतकेँ जल-अभियन्ताक फीता नहि बनाउ।”

करीम अपन धुनक कापीमे एहि दू नामक बगल कोनो नदी-रेखा नहि खींचलनि। ओ कहला, “हमर तालमे नाम अबैत रहत; ओकर धुनसँ घाटक माप नहि भेटत।” विद्यार्थी पूछलक, “तखन गीतसँ जानकारी की?” सरिता उत्तर देलीह, “के ककरा सम्झैत छल, के ककर बाटसँ चलैत छल, के कथाक भीतर छुटि गेल—ई प्रश्न गीत खोलि सकैत अछि। जलधाराक वर्तमान गहिराइ लेल आन साक्ष्य चाही।” विद्यार्थी अपन पहिल बराबरीक निशान मेटौलक, दुनू नाम अलग पाँतिमे लिखलक। ओहि छोट सुधारसँ नदीक समस्या नहि सुलझल, मुदा नक्शामे एक गलत निश्चय जुड़बाक रोक लगल।

साँझक लोकपाठमे आधुनिक कथा आ प्राचीन पाठ एके मंचपर बिनु घाँटने राखल गेल। पद्मा पहिने कहलीह जे अयोध्याक लव-कुशक प्रसंग प्राचीन आख्यानक कला अछि; आजुक गीतक श्रम-अनुज्ञा ओकर कानूनी पुरावा नहि। सभाकेँ ई अन्तर सुनबाक बाद फूलमती गाबए उठलीह। शुरूआतक नव पाँतिक समय हुनकर स्वरमे अटक नहि छल; माएसँ भेटल धुन अपन रहल, चयन अपना हाथमे छल। करीमक ढोलक थाप दैत गेल, मुदा जखन फूलमती विराम लेलीह, ओ स्वरकेँ जोर सँ भरि नहि देलनि। मंचपर दू कलाकार एक-दोसरक समय सुनि रहल छलाह।

गीत समाप्त भेल तँ सभाक पाछाँ सँ आवाज उठल—“एहि गीतक मूल अपमानकारी पाँति किएक नहि गाओल गेल?” फूलमती अपन कुर्सी सँ उठि उत्तर देलीह, “कारण हम ओकरा अपना मुँहसँ अब नहि गबैत छी। ओकर लिखित इतिहास जाँचबाक अछि तँ अध्ययनक पन्ना देखू; हमर आजुक स्वरक ऊपर ओकर शासन नहि।” प्रश्न पुछनिहार अघेड़ पुरुष फेर किछु कहए चाहलनि, मुदा बगलमे बैसल युवती पुछलीह, “जे पाँति ओ अपन माएसँ सुनलनि, ओकरा नहि गेबाक अधिकार किएक नहि?” पुरुष एक क्षण चुप रहलाह। पद्मा दूनू प्रश्नकेँ अलग लिखलीह। लोकपाठ अदालत नहि बनल; अपन कलाकारक निर्णय केनाइ ओकर तत्काल सीमा छल।

खजाज्जी वादनक बाद अग्रिमक भुगतान-पर्ची फेर देखौलक। फूलमती अपना आठ समयमे सँ तय अग्रिम प्राप्त कएलनि; करीम सेहो। शेष रकमक नियत दिन, खाताक जिम्मेदार सदस्य आ विलम्ब भेलासँ लिखित कारण देबाक नियम जोड़ल गेल। करीम पुरान ढोलक-रंगक विवादवला रसीद नब देयमे नहि मिलौलक। फूलमतीक पुरान गीतक

पहिल प्रस्तुति लेल जे देय वास्तवमे चुकल छल, तकर प्रति अलग रहत; नब रचना पहिनुक सेवाक मुफ्त विस्तार नहि। फूलमती पर्ची मोड़ि कहलीह, “आइ हमर आवाजक नाम, दाम आ असहमति तीनू कागदपर अछि।” आओरो कतेक गानक हक एखन लिखबाक अछि, से कियो नकारल नहि।

विद्यालयक दुआरपर किछु बच्चा टहनी सँ छोट धनुष बना रहल छल। एक लड़का कहलक जे ओ लव बनत, दोसर कुश। तेसर बच्ची पुछलक, “हम की बनब?” लड़का तुरन्त कहलक, “सीता बनू” बच्ची सिर हिलौलक। “हम कथा सुनबामे प्रश्न पुछब। राजा किएक सुनबैत छलाह, से पूछब।” बच्चासभ कने बहस कएलक; फेर काज बाँटल। दू कुमारक खेलक प्राचीन दृश्य आ आजुक बच्चासभक खेल एके घटना नहि छल, मुदा आजुक बच्ची अपन भूमिका स्वयं चुनि सकैत छलीह। सरिता दुआरक किला फेर जाँचलीह आ खेलक बीच हस्तक्षेप नहि कएलनि।

बरामदाक एक कात मृणाल पुरान भामती-पाठक पन्ना लऽ पहुँचलीह। हुनका अगिला दिवस अपन व्याख्या रखबाक छल। पद्मा कहलनि, “आजक सभामे गीतक पाठ बदलल, मुदा सभ प्रश्नपर एक राय नहि भेल।” मृणाल उत्तर देलीह, “मतभेद बचलासँ समन्वय झूठ भऽ गेल, से जरूरी नहि। मुदा असहमतिकेँ स्वीकृति नाम दऽ देबो समन्वय नहि।” ओ कागद खोलेलनि, तखन हवा पन्नाक कोना उलटि देलक। ओ हँसि पड़लीह—“ई पन्ना फेर आरम्भसँ पढ़ए पड़त।” फूलमती दूरसँ सुनलीह, मुदा अपन गीतक बाँटवारा मृणालक दर्शनक प्रमाण मानि नहि देलीह।

दिनक अन्तमे वाल्मीकिक आश्रमक लव आ कुशक खेलक स्मृति गीतक भीतर अपन अलग ठामपर रहि गेल, आ विदेहपुरक बच्चासभ अपन टहनी जमा कऽ घर दिस चलि गेल। फूलमती कापीक हटाओल पाँतिक कात एक टिप्पणी लिखलीह—‘अध्ययन लेल मूल पाठ सुरक्षित; सार्वजनिक गायनमे स्वीकृत नव पाठ।’ करीम अपन धुनक पहिल प्रयोगक प्रति संग लेलनि; ओ अगिला बेर एक दोसर गीत स्वतंत्र रूपसँ बजा सकैत छलाह। सरिता बन्द होइत पाठशालाक दुआरक भीतरसँ तख्ती देखलीह: राजाक कान धरि कथा पहुँचि सकैत अछि, मुदा कथाक सब आवाज राजा नहि लिखैत छथि। ओ दीपक नुकौलीह। बाहर बच्चासभक हँसी एखन बाँचल छल।

अध्याय २१० • भामतीक चारिम सूत्र

विदेहपुरक खुलल पाठशालामे भोरक हवा सँ एकटा पन्नाक कोना बेर-बेर उठैत छल। मृणाल ओकरा दबेबाक लेल पाथर नहि, काठक छोट पटरी रखलीह। काल्हि लव-कुशक गीत सुनलाक बाद ओ भामतीक पाठ खोलने छलीह; आइ ओहि पन्नापर चारिम सूत्रक आरम्भ लिखल छल—‘तत्तु समन्वयात्’। स्याहीक एकटा फुहार ‘समन्वय’ शब्दक कात पड़ल छल। ओ रुमालसँ दाग पोंछबाक चेष्टा नहि कएलीह। पहिने पाठ पढ़ब आवश्यक छल, सुन्दर बना देब नहि।

पद्मा अएलीह तँ देखलीह जे मृणाल चारिटा छोट कागद काटि राखने छथि। पहिलपर ‘पाठ’, दोसरपर ‘व्याख्या’, तेसरपर ‘आपत्ति’ आ चारिमपर ‘आजुक प्रश्न’ छल। पद्मा पुछलीह, “चारिम सूत्रकेँ सभ लोकक सहमतिक कानून बना देबाक तैयारी तँ नहि?” मृणाल हँसलीह। “एकर विपरीत। ‘तत्तु समन्वयात्’ ब्रह्मविषयक वाक्यसभक तात्पर्यपर परम्परागत विचारक सूत्र अछि। अहाँक समितिक मतदान ओकर मूल अर्थ नहि। मुदा जे लोक ‘समन्वय’ कहि विरोधक पन्ना फाड़ैत अछि, ओकरा हम प्रश्न करब।”

तारा खर्चपंजी अनलीह। राति कार्यक्रमक एक सदस्य लिखि देने छल—‘कलाकारसभक सर्वसम्मत सहयोग’। ओहि दिन रमेश घासी उपस्थित नहि छलाह। तारा पुछलीह, “जे लोक आयल नहि, ओकरो सहमति एतय कोना लिखल गेल?” आयोजक कहलक जे सभ कलाकार समुदायक उत्सवक पक्षमे छथि, तँ भाषामे किछु दोष नहि। सरिता कापी उलटौलीह। “उत्सवक पक्षमे रहब आ अपन बाजा बिना दाम देब, दुनू अलग निर्णय अछि। रजिस्टरमे जे नहि कहल गेल, से सभक नामसँ नहि लिखू।”

रमेश घासी ओसारक बाहर बाजाक फीतक गाँठ खोलि रहल छलाह। चामक पुरान पट्टीक एक छोर कठोर भऽ गेल छल; थाप देलापर बाजा टेढ़ भऽ जाइत छल। करुण दमाई दोसर कार्यक्रमक मरम्मत पहिनेसँ पूरा कऽ देने छलाह; एहि बाजाक उपयोगक दाम ओहि मरम्मतिक देय नहि छल। रमेश हाथक गाँठ देखबैत कहलनि, “हमर बाजा हमर वस्तु अछि, बजेनाइ हमर श्रम। दू वस्तुकेँ एक शब्द ‘सहयोग’ बनौलासँ दुनू मुफ्त भऽ जाइत अछि।”

बहुत पुरान मिथिलाक एक कल्पित पाठदृश्यमे, जखन वाचस्पति मिश्रक शिष्यसभ पोथीक पन्ना क्रममे लगा रहल छलाह, लोहना बाँसक छन्नी माटिक फर्शपर उलटि रखलक। ओकर जालक बीच एक ठाम गाँठ फुलि गेल छल। पन्नाक किनार फेर असमान बनत। भामती दीपकक तेल बचल कि नहि देखैत छलीह, आ मृणाल ओसारक कात बैसि अक्षर जोड़ि रहल छलीह। ई पुरान कथा साहित्यिक कल्पनाक दृश्य छल; विदेहपुरक आजुक मृणाल ओकर पात्रक पुनर्जन्म नहि छलीह।

शिष्यसभमे एकजना कहलनि जे चारिम सूत्र सभ उपनिषदक वचनकेँ एक निष्कर्षमे मेलबैत अछि। दोसरक आपत्ति छल जे अलग प्रसंगक वाक्यकेँ एके आवाज बना देलासँ मूल भेद मेटि सकैत अछि। वाचस्पति हुनका सभकेँ पहिने पाठक परम्परागत प्रयोजन कहबाक कहलनि। ओ स्पष्ट कएलनि जे प्रश्न ब्रह्मक विषयमे शास्त्रवाक्यक तात्पर्यक अछि, कागद बनौनिहार लोकक झगड़ाक फैसला नहि। मुदा बहसक बीच भामतीक ध्यान ओहि पन्नापर छल, जाहिपर चारिम शिष्यक संशोधन पहिल शिष्यक मूल शब्द ढाँपि देने छल।

भामती पुछलनि, “ई पन्ना के फेर लिखलक?” एक शिष्य कहलक, “सभक मते सुधार भेल। एके पाठ रहब नीक।” लोहना जालक गाँठ छोड़ि उठल। “हम काल्हि जे दू पन्ना बनौने छलहुँ, ओहिमे सँ एक खराब भेल। ओकर दामक विषयमे हमर बात सभ सुनने नहि। तखन ‘सभक मत’ लिखलासँ हमर मौन सेहो सहमति भऽ जायत?” शिष्य उत्तर देलक जे शास्त्रक अर्थ आ वस्तुक दामक चर्चा अलग अछि। भामती मानलीह जे अलग अछि, मुदा पुछलनि—“तखन दुनूक पन्ना एक-दोसरपर किएक राखल अछि?”

मृणाल धीरे सँ कहलनि, “पहिल दिन अन्हारमे रस्सीकेँ साँप बुझबाक दृष्टान्त सुनने रही। वस्तुपर दोसर वस्तुक रूप आरोपित करब आ मूलकेँ नहि देखब—अध्यासक चर्चा ओतएसँ खुलल छल। एतय जँ एक लोकक मौनपर सभक सहमति लिखि देल जाए, तँ एकटा गलत मान्यता बनैत अछि। मुदा हम ई नहि कहैत छी जे एहीसँ सूत्रक पूरा दार्शनिक अर्थ सिद्ध भऽ गेल।” वाचस्पति हुनका आगाँ बजौलनि। “उपमा उपयोगी भऽ सकैत अछि,” ओ कहलनि, “मुदा उपमेयक परिधि नहि भूलू।”

विदेहपुरमे रमेश अपन बाजा बजाकऽ एक छोट ताल सुनौलनि। बच्चासभक पएर अपने हिलए लागल। आयोजक कहलनि, “देखू, एहिमे आनन्द सभकेँ अछि। दामक लिखापढ़ी सँ एतेक सरल काज कठिन भऽ जाएत।” रमेश थाप रोकलनि। “आनन्दक विरोध हम नहि करैत छी। मुदा जँ अहाँक मंचक बाँस, बिजुली आ कुर्सीक भाड़ा लिखल अछि, तँ बाजाक भाड़ा अदृश्य किएक?” ओ कात बैसल किशोरसँ बाजा छीनलनि नहि; उलटे ओकरा फीता कोना ढीला होइत अछि, से देखौलनि।

तारा पुरान व्ययपंजी खोललीह। पहिनुक सार्वजनिक जल-वार्तामे रमेश मंचपर नाम आ बाजाक दाम अलग माँगने छलाह। ओहि दिन शर्त स्वीकृत भेल छल, मुदा बादक किछु निमन्त्रणमे फेर ‘सामूहिक वादन’ मात्र लिखल गेल। तारा कहलीह, “भूल बारम्बार भऽ रहल अछि। आब केवल प्रस्ताव नहि, नवल पर्चीक तीन मद चाही।” ओ लिखलीह— बाजाक उपयोग, अभ्यासक समय, मंचपर वादन। रमेश प्रत्येक मदक आगाँ अपन माप देलनि।

अभ्यासक एक घण्टा आधाक समय लेल एक सय अस्सी रुपैया तय भेल; बाजाक उपयोगक एक दिनक दाम डेढ़ सय; मंचपर अपन संगतक सात सय पचास। रकमक ई प्रस्ताव सभकेँ एक बेर फेर सुनाओल गेल। खजाज्ची कहलक जे कोषमे एतेक स्थान नहि। झरना सजावट लेल राखल कपड़ाक खर्च देखौलीह; दू रंगक अतिरिक्त पर्दा घटबासँ रकम निकसि सकैत छल। एक सदस्यक आपत्ति छल जे मंच कम सुन्दर देखाएत। रमेश कहलनि, “मंच कम चमकत, मुदा बाजाक आवाज ओतबे साफ रहत।”

करुण दमाई किछु दूरसँ ई सुनैत छलाह। हुनकर मरम्मतिक बिल पहिलसँ चुकाओल गेल छल; ओ फेर ओही रकम नहि माँगलनि। मुदा कहलनि, “जँ आइ रमेशक बाजा कियो तोड़ि देत, तँ किराया देलासँ मरम्मतिक स्वतः व्यवस्था नहि भऽ जायत। जिम्मेदारी लिखू।” तारा अलग पाँति जोड़लीह—सामान बुझबाक आ लौटेबाक समय, सामान्य घिसाइ आ वास्तविक क्षतिक भेद। रमेश कहलनि जे पुरान पट्टीक कमजोरीक दाम ओ आयोजकपर नहि थोपताह; नवल क्षति भेल तँ दुनू पक्ष जाँचत।

पुरान मिथिलाक पाठगृहमे भामती चारिम सूत्रक पन्नाक बगल एक स्वच्छ टुकड़ा जोड़लीह। ओतय कोनो नव सूत्र नहि लिखलनि। केवल पाठक भिन्न प्रति आ

शिष्यसभक असहमतिक चिन्ह राखलनि। वाचस्पति पुछलनि, “एहि चिह्नक उद्देश्य?” भामती उत्तर देलीह, “जे काल्हि पढ़त, ओ बुझत जे निर्णय भेल छल, मुदा प्रश्न पूछब बन्द नहि भेल छल। पन्नाक रक्षा करब अर्थक ऊपर ताला लगायब नहि।” लोहना हुनका लेल छोट छन्नीक नव जाल तैयार करए निकलल।

मृणाल वाचस्पतिसँ कहलनि, “हमरा ‘तत्तु समन्वयात्’क सम्पूर्ण विवेचन एखन नहि अबैत अछि। मुदा एक बेर जे उपमा सुनलहुँ, ओकरा सभ वस्तुपर आरोपित करए लागलहुँ तँ फेर ओही भ्रमक डर अछि।” वाचस्पति उत्तर देलनि, “अध्यासक विवेचन आरम्भमे किएक आवश्यक बनैत अछि, एहि प्रश्नक अध्ययन करू। किन्तु ककरो श्रम-पर्चीकें दर्शनक दलील मानि निर्णय नहि करू। ओकर सत्यापन अपन साधनसँ होएत।” मृणाल अपन पाठक कापीमे ‘अध्यास’क कात प्रश्नचिह्न रखलीह; प्रश्न मेटौलनि नहि।

दिनक तेसर पहर विदेहपुरक मृणाल पुरान पन्नाक फोटो आ मूल उतारक अन्तर देखौलनि। ‘कृतसारा’ पदक आगाँ-पाछाँक पाँति दोसर नकलमे सेहो अपूर्ण छल। एक युवक कहलक जे नाम नदीक सूचीमे रखल अछि, ताहि लेल अलग नदी निश्चित मानि लेल जाए। मृणाल पुरान कथाक प्रश्न स्मरण कएलीह—एहिपदक अर्थ जलधारा अछि, गुणसूचक विशेषण अछि, कि काव्यक आन प्रयोग? मूल वाक्य बिना कोनो उत्तर निश्चय नहि।

हीरा जलमापनक कापी लऽ उपस्थित छलाह। ओ स्पष्ट कएलनि, “हम आधुनिक नक्शामे ‘कृतसारा’ नामक नव रेखा खींचि सकैत छी, मुदा ओकरा खींचब कल्पना होएत। नदीक पानि, बहाव आ ठामक पृथक् प्रमाण चाही।” एक श्रोता पुछलक जे पुरान पोथीमे नाम रहब कम महत्त्वक अछि की? हीरा उत्तर देलनि, “महत्त्वक अछि, मुदा अलग प्रकारक। ओ शब्दक इतिहास देत; आजुक जलक गहिराइ नहि।” पद्मा एहि अन्तरकें सार्वजनिक स्रोतपंजीमे स्पष्ट लिखलीह।

पद्मा पुरान नामपंजीक दोसर फाइल खोललीह। एक पन्नामे मृत श्रमिकक नाम चुकल मजदूरीक मदमे छल; दोसरमे ओही नाम स्मारकक प्रस्तावित सूचीमे। एक सदस्य कहलक जे स्मारकमे नाम लिखल गेलाक बाद देयक पन्ना बन्द कऽ देबाक चाही। सरिता बिना स्वर ऊँच केने उत्तर देलीह, “सम्मान आ भुगतान दोसर-दोसर बात अछि। मृत

व्यक्तिक नाम प्रतिमापर चढ़लासँ ओकर परिवारक बकाया नहि चुकैत।” हुनकर आँखि उर्मिलाक अपूर्ण देयपर ठहरल, मुदा ओ नैराक मृत्युकें एहि हिसाबक उदाहरण बना कऽ नहि सुनौलीह।

मृणाल श्रोतासँ पुछलीह, “एकटा नाम देखिकऽ हम मानि लैत छी जे पूरा व्यक्ति बुझि गेलहुँ। की नामक पाछाँक श्रम, असहमति आ निजी जीवन सचमुच ओहि एक पाँतिमे समा जाइत अछि?” संकेत कहलक, “पंजी आवश्यक अछि; पंजी नहि रहल तँ दावाक बाटो बन्द भऽ सकैत अछि।” मृणाल सहमत भेलीह। “तँ पंजीकें फेंकब नहि,” ओ कहलीह, “मात्र ओकरा व्यक्ति स्वयं मानि लेबासँ बचब।” पद्मा ई बात दार्शनिक उपमाक रूपमे अलग चिन्हित कएलीह, अभिलेख-जाँचक विकल्प नहि बनौलीह।

रमेशक खर्चपर्चीपर निर्णय लेल फेर सभा बैसल। खजाज्वी तीनू मद अलग लिखबाक मानलनि, मुदा प्रस्ताव देलनि जे पूरा रकम कार्यक्रमक अन्तमे नगद देल जाए। रमेश अभ्यासक आजुक पारिश्रमिक आजुहि चाहैत छलाह। “जाहि समय हम अभ्यास कएलहुँ, ओकर काम पूरा भेल,” ओ कहलनि। झरना कोषक खातामे उपलब्ध राशि जाँचि एक सय अस्सी रुपैयाक तत्काल भुगतानक निर्देश देलीह। रमेश अपन फोनपर प्राप्ति सूचना पढ़लनि; तारा प्राप्ति-अडूक पर्चीमे भरलीह। एखन शेष नौ सय रुपैया कार्यक्रम पछाति देय छल।

बाजाक उपयोगक दाम आ मंचक मानदेयक लेल दू अलग हस्ताक्षर बनल। कलाकारक श्रेयमे लिखल गेल—‘रमेश घासी, बाजा-संगत’; ‘बाजा उपलब्ध करेनिहार: रमेश घासी’। एक युवक पुछलक, “नाम दू बेर लिखब जरूरी?” रमेश उत्तर देलनि, “दू बेर देखलासँ नहि, दू काज अलग देखलासँ जरूरी। जँ अगिला बेर ककरो आन बाजा बजाएब, तँ मालिक आ कलाकार अलग होएत।” तारा पर्चीमे एही सम्भावनाक लेल दू खाली खाना कायम रखलीह।

दोपहरक बाद सार्वजनिक पाठ शुरू भेल। मृणाल पहिने सूत्रक देवनागरी पाठ पढ़लीह, फेर ओकर संक्षिप्त दार्शनिक सन्दर्भ बतौलनि। हरिमोहन पाठक पुछलनि जे जँ उपनिषदक अनेक वाक्यक समन्वय सम्भव अछि, तँ विरोधी वाक्यक स्थान कतय? मृणाल उत्तर देलीह, “परम्परामे तात्पर्य-निर्णय, प्रसंग आ व्याख्याक प्रक्रिया अछि; बिना

अध्ययनक हम हुनका सभकेँ एक अर्थ घोषित नहि करब। समन्वय तर्कक काम अछि, विरोधक पन्ना जरा देबाक काम नहि।” हरिमोहन अपन आपत्ति वापस नहि लेलनि।

सभाक पाछाँ बैसल एक महिला पुछलीह, “जखन हमरा लग समझक कमी अछि, तखन हम प्रश्न करबाक योग्यता के प्रमाणित करत?” एहि प्रश्नसँ मृणालकेँ अपन पुरान कल्पित पात्रक आरम्भिक अध्ययन स्मरण भेल। ओ उत्तर देलीह, “जिज्ञासाक अधिकार आ कोनो तर्क सही सिद्ध करबाक योग्यता एके नहि। सीखबाक साधन खुलब चाही; तर्ककेँ परीक्षण चाही। अहाँ एखन प्रश्न पुछि रहल छी, एकर अनुमति दोसरक दयापर निर्भर नहि रहबाक चाही।” महिला अगले पाठक समय अपन काजसँ मिलाकऽ तय करबाक आग्रह कएलीह।

ओहि बीच रमेश छोट प्रस्तुति लेल बाजा मिलौलक। तानक पहिल थपकीपर सरिताक लग बैसल दू बच्चा एक-दोसरक आँखि देखिकऽ हँसल। एक बच्चा पुछलक, “ढोल थाकैत अछि?” रमेश कहला, “चाम ढीला पड़ैत अछि, बाजेनिहार थाकैत अछि; दुनूक देखभाल अलग।” बच्चा फेर पुछलक, “जँ हम चुप बैसल रही तँ ओकरा आराम?” रमेश हँसला, “हमरा आराम, बाजाकेँ नहि। मुदा अहाँ चुप किएक बैसब? एखन ताल गनू।” सभसँ पाछाँ बैसल वृद्धा सेहो अडुरीसँ ताल गनए लगलीह।

प्राचीन मिथिलाक कल्पित पाठशालामे भामती एक राति मूल आ संशोधित पन्नाक बीच पातर कपड़ा रखलीह। वाचस्पति देखलनि जे ओ पुरान प्रति त्यागल नहि गेल अछि। “ई दूनू बचबैत की निर्णय अस्थिर नहि होएत?” ओ पुछलनि। भामती कहलनि, “जे निर्णायक पाठ अछि, ओ साफ लिखल अछि; जे प्रश्न बचल, ओ अलग। जे कागद बनौलनि हुनकर समयक दामो अलग। दृढ़ता आ विस्मृति एक वस्तु नहि।” वाचस्पति एहि भेदकेँ अपन शिष्यसभक अगिला पाठमे स्पष्ट करबाक मानलनि।

मृणाल, ओहि प्राचीन कल्पनाक भीतर, अपन कापीक पहिल पन्ना फेर खोललीह। ‘अथातो ब्रह्मजिज्ञासा’क नीचे ओ पहिल बेर अध्ययनक समय माँगने छलीह। आब चतुःसूत्रीक चारिम सूत्र धरि पहुँचलीह, मुदा पहिल प्रश्न निष्प्रयोजन नहि भेल छल। ओ लोहना सँ पुछलनि, “हम बुझलहुँ जे समन्वयकेँ एके स्वर बनबए चाहब कठिन भ्रम अछि।

मुदा हम जे नहि बुझलहुँ, ओकरा लिखबाक लाज नहि?” लोहना कहलनि, “लाज तखन जखन बुझने बिना दोसरक नामपर निर्णय लिखब।”

वाचस्पति अन्तिम बेर शिष्यसभसँ कहलनि जे ब्रह्मसूत्रक व्याख्या पन्नाक दोष वा वस्तुक दामक उपमासँ पूरा नहि होइत अछि। शास्त्रक पूर्वपक्ष, सिद्धान्त आ पाठपरम्पराकेँ ओकर अपन गाम्भीर्य चाही। मृणाल उत्तर देलीह जे व्यवहारक उदाहरण जखन गलत हो, तखन ओकरा सही ठहरएबाक लेल शास्त्रक नाम नहि लेबाक चाही। गुरु ओहि सीमाकेँ स्वीकार कएलनि। एतय प्रश्न समाप्त नहि भेल, मुदा अगिला पाठमे गलत उदाहरण फेर नहि दोहराएल जाएत—ई छोट निर्णय भेल।

विदेहपुरमे सार्वजनिक पाठक अन्तिम मुहूर्तमे हरिमोहन पूछलनि, “आब जँ सभक पन्ना अलग रहल, तँ सामूहिक पुस्तकक एक सम्पादक के होएत?” पद्मा कहलीह, “सम्पादककेँ निर्णय करबाक जिम्मेदारी रहत, मुदा निर्णयक स्रोत, आपत्ति आ संशोधनक हिसाब सेहो। एकल हस्ताक्षरकेँ सभक गवाही नहि मानू।” संकेत एहि पर पुस्तकक तीन प्रति वितरित रखबाक पुरान नियम देखौलक। नव प्रस्तावमे सम्पादकीय दायित्व, वितरण आ आपत्तिक अभिलेख अलग राखबाक बात दर्ज भेल; केन्द्रीय पंजीक शक्ति फेर जुटबाक सम्भावना एखन बाकी छल।

सरिता साँझमे स्मारकक नकल फेर खोललीह। उर्मिलाक नामक कात रातिक धुलाई आ ढुलाईक छुटल मजदूरी लिखल छल। मृणाल हुनका पुछलीह जे आइक पाठसँ किछु सहायता भेटल? सरिता उत्तर देलीह, “सहायता तखन जखन ओहि देयक कागद फेर देखबाक तिथि आ जिम्मेदार व्यक्ति तय होएत। दर्शन हमर दुख नहि मेटलक। मुदा कियो जँ ‘सभक समन्वय’ कहि ई पाँति हटाए, तँ आब हमरा उत्तर देबाक शब्द भेटल।” ओ पन्नाकेँ बन्द नहि कएलीह।

रमेशक पहिल प्रस्तुति शुरू भेल। मंचपर फूलमती पमरिया नव स्वीकृत शब्द गाबैत छलीह, करीम डफाली अपन धुनक सीमित प्रयोगक शर्तपर संगत देबाकेँ तैयार छलाह; रमेशक बाजा ओही संगमे अपन लय जोड़लक। घोषक पहिले फूलमती आ करीमक नाम लेलनि, रमेशक नाम छुटि गेल। रमेश बिना प्रदर्शन रोकने बाजाक एक तान पूरा कएलनि;

विराममे तारा घोषककैँ पर्ची देखौलीह। दोसर अंश शुरू होएबासँ पहिने तीनू कलाकारक श्रेय सुनाओल गेल। गलती सार्वजनिक रूपसँ सुधरल, पहिल भूल मेटल नहि गेल।

प्रस्तुति समाप्त भेलापर बाजाक भाड़ा आ मंच-संगतक शेष नौ सय रुपैयाक भुगतान आदेश अलग-अलग भरल गेल। तारा साफ लिखलीह जे आदेश जारी भेल अछि, बैंकमे रकम आबि गेल—एहन पुष्टि एखन नहि। रमेश अपना फोनपर आजुक अभ्यासक एक सय अस्सीक प्राप्ति दोबारा देखलनि, बाकी पर्ची मोड़ि झोरामे रखलनि। “आइ अपन नाम सुनलहुँ,” ओ कहलनि, “बाकी दामक खबर भेटत तखन पूरा हिसाब बुझब।” करुण दमाई बाजाक पट्टी देखिकऽ कहलनि जे तान एखन ठीक अछि; अगले मौसमक मरम्मति अलग काज रहत।

पद्मा स्रोतपंजीक एक खाली खानामे ‘कृतसारा’ लिखलीह। बगलमे जोड़लीह—‘काव्य-पाठक अपूर्ण पद; पृथक् नदीरूपेँ प्रमाणित नहि’। मृणाल पुछलीह जे जँ कखनो सम्पूर्ण मूल पाँति भेटि जाए, तखन फेर जाँचब की? पद्मा कहलीह, “अवश्य। अजुका अनिश्चितताकैँ सदा लेल पत्थर नहि बनाओल जाएत।” एक विद्यार्थी पन्नाक नीचाँ जलरङ्गसँ नदी खींचबाक चाहलक। मृणाल ओकरा कापीक खाली भाग देखौलनि—“कविता बनाउ, मुदा नक्शा कहि नहि बेचू।” बच्चा नीला रङ्गसँ लहर बनौलनि, ऊपर लिखलक—‘कल्पना’।

पाठशालाक दुआर बन्द होएबाक पहिने मृणाल चारू कागद फेर गनलीह—पाठ, व्याख्या, आपत्ति, आजुक प्रश्न। ‘तत्तु समन्वयात्’क पन्ना एखन पहिनेसँ अधिक स्पष्ट छल, कारण ओकर कात असहमतिपर लिखल दोसर पन्ना बचल छल। सरिता अपन देय-विवादक प्रति लेलनि, रमेश बाजा कन्हापर राखि घरक बाट पकड़लनि। पद्मा अगिला दार्शनिक पाठमे उदयनक तर्क आ ओकर प्रबल विरोध दुनू सुनबाक समय चिन्हित कएलीह। बाहर सँ बाजाक बाँचल थाप आबि रहल छल; कोनो एक आवाज सभक मुँह बन्द नहि कएने छल।

अध्याय २११ • उदयनक शेष तर्क

हमीदा मिरियासीन अपन गीतक बही खोललीह तँ ओकर बीचसँ एकटा पातर कागद फर्शपर खसि पड़ल। कागदपर लाल स्याहीसँ लिखल छल—‘प्रस्तुति स्थगित; पारिश्रमिकक हिसाब शेष’। बहीक पृष्ठकें दबबैत हमीदा ओहि कागदकें फेर भीतर नहि रखलीह। विदेहपुरक खुलल पाठशालामे आइ दार्शनिक पाठ होएबाक छल, मुदा हुनका लेल पहिल प्रश्न ई छल जे काज रोकलासँ पहिनेसँ कएल श्रमक दामो की रुकि जाइत अछि। ओ गीतक तान मुँहमे लेने बिना ओसारक एक कोनमे बैसि गेलीह।

पद्मा पाठ लेल दू पन्ना तैयार कएने छलीह। पहिलपर उदयनक ईश्वर-सिद्धिक तर्कक संक्षिप्त रूप, दोसरपर ओकरा चुनौती देनिहार प्रबल पूर्वपक्ष। काल्हिक भामती-पाठक अन्तमे जे लोक सभक मतकें एके सहमति लिखबाक प्रस्ताव देने छलाह, ओ आजु फेर उपस्थित छलाह। ओ कहला, “ई विषयमे सेहो एक निष्कर्ष लिखि सभा समाप्त करी। शोकग्रस्त लोककें एतेक प्रश्न सुनाएब आवश्यक अछि की?” पद्मा कहलीह, “शोकमे प्रश्न सुनबाक बाध्यता नहि। मुदा जकरा प्रश्न अछि, ओकर बात केवल सुविधा लेल काटल नहि जा सकैत।”

सरिता पछिला पाँतिमे छलकैत पानिक गिलास सीधा कएलीह। नैराक नाम आजुक पाठक उदाहरण बनेबाक बात सुनि ओ पहिले सँ सावधान छलीह। ओ स्पष्ट कहलीह, “हमर बेटी मरि गेलीह। एहि सत्यसँ कियो ईश्वर सिद्ध करथि वा असिद्ध, से हुनकर दर्शनक अपन तर्क होएत; मुदा नैराक मृत्युकें बिना हमर अनुमति सभाक प्रयोगक वस्तु नहि बनाबी।” मृणाल सिर हिलौलीह। ओ पन्नाक माथपर लिखलीह—‘दार्शनिक तर्क’, आ नीचाँ दोसर वाक्य—‘व्यक्तिगत शोक: प्रकाशनक स्वीकृति आवश्यक’। दुनू पाँति अलग रहल।

बहुत पुरनका मिथिलाक एक कल्पित अध्ययनगृहमे उदयन ताड़पत्रक दू गठुर आगाँ रखलनि। मीमांसक अतिथि फेर अएने छलाह, मुदा एहि बेर हुनकर मृत मित्रक लेखन-पात्र हुनकर थैलीमे सुरक्षित छल। पिछला भेंटमे निजी शोकक कारण शास्त्रार्थ स्थगित भेल छल। आब अतिथि स्वयं कहला, “हम बहस फेर सुनब। हमर मित्र जीवित होइथि तँ ओहो

प्रश्नक उत्तर माँगितथि, मुदा हुनकर मृत्युकेँ हमर पक्षक विजय अथवा अहाँक पराजय नहि लिखल जाए।” उदयन अपन शिष्यकेँ ओही वाक्य सभाक आरम्भमे पढ़बाक कहलनि।

आँगनमे राखल एक पुरान घटक मुँहमे दरारि छल। शिष्य ओकरा उदाहरण बनाबए चाहलक—घट अछि, तँ कुम्हार अछि; जगत अछि, तँ जगतक कर्ता अवश्य। उदयन ओकरा रोकलनि। “उदाहरण अनुमानक दिशा देखाबैत अछि, अपन आपे व्याप्ति सिद्ध नहि करैत,” ओ कहलनि। “हम कार्यत्व, पदार्थक संयोग, आयोजन, प्रयोजन आ कारणक सम्बन्धपर अपना पक्षक हेतु राखब। मुदा समस्त जगतकेँ एक घरक घैलासँ समान मानि चुप भऽ गेलहुँ तँ प्रतिपक्षक प्रश्नक उत्तर नहि भेल।” शिष्य दरारिवला घटकेँ ओहिना जमीनपर राखि देलक।

अतिथि एकटा सूखल बीया उठौलनि। “घटक निर्माणमे देखल कुम्हार, औजार आ माटि एकठाम भेटैत अछि। बीयासँ अँकुर निकलैत अछि; ओतय ककरा अहाँ ओही ढङ्गसँ देखैत छी? प्रकृतिक नियम, कर्मक फल आ अनादि परम्पराकेँ अलग कारण मानबाक सम्भावना पहिने कियैक निरस्त करब?” हुनकर आवाज ऊँच नहि छल। ओ आगे कहला, “व्यवस्था देखिकऽ व्यवस्थित करनिहारक कल्पना सम्भव अछि, मुदा अनिवार्यता सिद्ध करबाक लेल ओहि सम्भावनाक विरोधी स्थितिक परीक्षण चाही।” शिष्यसभ पहिल बेर आपत्तिक पूरा वाक्य लिखलनि।

उदयन उत्तर देलनि जे जड़ कारणसभक उपस्थिति आ विशिष्ट कार्यक उपयुक्त क्रम एके बात नहि। अनेक कारणक सङ्गतिक पीछे नियामक चेतन कारणक अनुमान हुनकर पक्षमे महत्त्वपूर्ण अछि। “किन्तु ककरो केवल ‘अदृश्य’ कहि अस्वीकार करबो उचित नहि, आ अदृश्य कहि सभ प्रश्नसँ बचाओल सेहो नहि,” ओ जोड़लनि। अतिथि कहलनि, “हमरा अपन मीमांसक पक्षमे कर्म आ अपूर्वक व्याख्या देबाक भार अछि; अहाँकेँ नियामक किएक आवश्यक, से देखेबाक भार। दूनू भार बराबर गंभीर अछि, मुदा दूनूक उत्तर एके होएत—ई पहिने सँ मानब अनुचित।”

विदेहपुरमे मृणाल एहि प्राचीन बहसक साहित्यिक रूपान्तरण पढ़ि रुकलीह। हरिमोहन पुछलनि, “तखन उदयनक तर्क झूठ कहल जाए?” मृणाल उत्तर देलीह, “हमर पाठमे ओ प्रबल दार्शनिक पक्ष अछि, जकर प्रतिज्ञा आ हेतु जांचल जाएत। पूर्वपक्ष मात्र कमजोर

पुतला नहि। प्राचीन विचारकक स्वर हम कथा मे कल्पित संवादसँ पुनर्गठित कऽ रहल छी; मूल ग्रन्थक शब्दशः प्रमाण एहि संवादकेँ नहि कहब।” पद्मा पाठक स्रोतपंजीमे ‘दार्शनिक परम्परा’ आ ‘उपन्यासक कल्पना’ अलग चिन्हित कएलीह।

हमीदा अपन बहीक दोसर पृष्ठ खोललीह। पुरान विवाहमे गाओल एक गीतक अंश कियो हँसी-मजाकक लेल काटि अनधिकृत रूपसँ बजौने छल। ओहि समय ओ अपमानकारी उपयोग रोकबाक स्पष्ट विरोध कएने छलीह। आब आयोजकक एक प्रतिनिधि कहलक, “एहि बेर तऽ हम गीतक मूल रूप विद्वानसभकेँ सुनायब। जे कटल अंश गलत छल, मूल सुनला सँ सभ ठीक भऽ जायत।” हमीदा पुछलीह, “मूल सुनाएबाक अनुमति के देने अछि? आ हमर पहिने गाओल समयक दाम ककर खातामे गेल?” प्रतिनिधि पहिल प्रश्नक उत्तर दोसर प्रश्नसँ देबए चाहलक।

हमीदा कहलनि, “अहाँ पूरा रेकॉर्ड जाँचू, हमरा आपत्ति नहि; मुदा एकर प्रति जाँच-दल धरि सीमित रहत। सभाक आगे बजाएब दोसर अनुमति अछि। ई हमर मुँहक गीत छल, कोनो बिनु मालिकक वस्तु नहि।” तारा पहिनुक प्रस्तुति-पत्र खोललीह। ओतय गानक समय लिखल छल, भुगतानक अंतिम प्रमाण नहि। आयोजक ‘समुदायक परम्परा’ शीर्षकसँ अपन उपयोग उचित ठहरए चाहैत छल। हमीदा बहीपर हाथ राखि कहलीह, “परम्परा हमर अपनहु अछि। तखन परम्पराक नामपर हमर असहमति कोना अदृश्य भऽ गेल?”

सरिता सभामे एतबा जोड़लीह जे एक गीतक सार्वजनिक उपयोगक विवाद आ नैराक निजी फोनक संदेश एके कानूनी प्रकरण नहि। मुदा दुनू प्रसंगमे एक व्यक्ति या परिवारक इच्छाकेँ बिना पुछने कथाक ‘सार्वजनिक हित’ घोषित करबाक प्रलोभन देखल जा सकैत अछि। कबीर फोनक निजी सन्देश प्रकाशित नहि करबाक अपन निर्णय फेर दोहरौलनि। “कियो एकरा धर्मक पक्ष या विरोधमे गवाही बना कऽ नहि पढ़त,” ओ कहलनि। पद्मा स्पष्ट कएलीह जे नैराक निजी जीवनक अनुपलब्ध अंशक जगह अनिश्चितता लिखल जाएत, कल्पना भरि नहि देल जाएत।

पुरान अध्ययनगृहमे अतिथि अपन मृत मित्रक डिबियाक ढक्कन एक बेर खोलि फेर बन्द कएलनि। “हमर मुख्य आपत्ति एखन बाकी,” ओ उदयनसँ कहलनि। “जँ जगतक

सुचिन्तित व्यवस्था चेतन नियन्ता दिस संकेत करैत अछि, तँ रोग, बाढ़ि, निरपराध बालकक पीड़ा आ कर्मक असमान फल ओही निष्कर्षमे कतय जाएत? सभ दुःखकेँ अज्ञात कर्म कहि देब तर्कक प्रमाण नहि, पीड़ितक मुँह बन्द करबाक बाट भऽ सकैत अछि।” ओ दुनू हाथ जमीनपर रखलनि। हुनकर प्रश्न केवल व्यक्तिगत हानि नहि, कारणक दार्शनिक आपत्ति सेहो छल।

उदयन मौन रहि प्रश्न पूरा सुनलनि। “हम ईश्वर-सिद्धि हेतुसभक रक्षा करब,” ओ कहला, “मुदा एक व्यक्ति किएक मरल, अथवा ओकर परिवारक दुःखक विशेष फल की, से हमरा ज्ञात अछि—एहन दावा नहि करब। कर्मफलपर न्यायपरम्पराक तर्क होएत; ओकर सीमाक प्रश्न सेहो। नैतिक पीड़ाकेँ अनुमानक तुरन्त प्रमाण बनाकऽ हम अपन पक्ष बलवान नहि करब।” एक शिष्य कहलनि जे गुरु विरोधीकेँ बहुत स्थान दैत छथि। उदयन उत्तर देलनि, “स्थान घटौला सँ हेतु नहि बढ़ैत।”

अतिथि प्रश्न उठौलनि जे जँ हर व्यवस्था हेतु कर्ताक कल्पना हो, तँ कर्ताक ज्ञान आ इच्छाक स्वरूप फेर कोन प्रमाणसँ निर्धारित होएत। उदयन कार्यक संरचना, कारणक अनुकूलता आ ज्ञात जड़ साधनक सीमाक आधारपर अपन अनुमानक पद्धति बतौलनि। अतिथि किछु उत्तर स्वीकार कएलनि—विशेषतः जे निराधार अस्वीकृतियो दार्शनिक सिद्धान्त नहि—मुदा कहला जे विश्वक समग्रतापर घटक व्याप्ति बढ़ेबाक कड़ी एखन हुनका संतुष्ट नहि करैत अछि। लेखनिक शिष्य एतय ‘पूर्वपक्ष शेष’ लिखलक; ‘पराजित’ नहि।

वृद्ध पोथी-सीबनिहार स्त्री पन्ना बाँधबाक धागा लऽ भीतर अएलीह। ओ पहिने एहि सभामे भीजल पात अलग करबाक उपाय देने छलीह। एहि बेर ओ पूछलीह, “दू पन्ना अलग रहत तँ एके बन्धमे कोना जुरत?” उदयन दोसर शिष्यकेँ उत्तर देबाक अवसर देलनि। ओ कहलक, “कातमे चिह्न रखब, जे पाठक बुझि सकय।” वृद्धा कहलनि, “चिह्न तखन जखन धागा ओहि छेदसँ जाए। बहसक पन्नाक दामो जे नकल कएलक ओकरा देब।” हुनकर बात ग्रन्थक तर्क सिद्ध नहि करैत छल; मुदा पोथी बचबाक वास्तविक काज बीचमे प्रवेश कएलक।

उदयन खर्चक पन्ना आनबौलनि। अतिथिक लिखल आपत्ति फेर नकल करबाक काज एक शिष्य राति भरि कएने छल, मुदा मूल हिसाबमे केवल गुरुक उत्तरक नकलक मद छल। उदयन दू अलग पाँति जोड़बाक कहलनि। “पूर्वपक्षक पाठ दाबि देलहुँ तँ हमर उत्तरक परीक्षण के करत?” ओ पुछलनि। मजदूरी लेल धातुक छोट सिक्काक रकम तय भेल; कोषक रखवार कहलक जे देबासँ पहिने पातक संख्या गनबाक अछि। विद्यार्थी पहिल बेर अपन श्रमक हिसाबक संग प्रतिपक्षक श्रम सेहो गनबाक आग्रह कएलक।

विदेहपुरक सभामे हमीदा गीतक बही सँ पुरान रसीद देखौलीह। ओतय एक उत्सवमे हुनकर दूहा अभ्यास आ मुख्य गायनक समय अलग लिखल छल; पैसा देबाक सहमति नहि, केवल उपस्थिति प्रमाणित छल। तारा कहलनि, “ई रसीदसँ श्रम भेल से देखब; रकम आ भुगतानक लेल दोसर कागद चाही।” हमीदा मानलीह। ओ कहलीह, “हम एतय झूठ प्राप्ति-पत्र नहि माँगैत छी। जे देय अछि ओकरा देय लिखू; जे भुगतान भेल नहि, से भुगतान मत लिखू।” हुनकर स्वरमे क्रोधक संग पातर थकान छल।

एक आयोजन-सदस्य प्रस्ताव रखलक जे पहिनुक अपमानकारी वीडियोकेँ ‘गलत व्याख्या’ शीर्षकसँ सार्वजनिक कऽ देल जाए, जाहिसँ बात स्पष्ट होए। हमीदा दोसर बेर अस्वीकार कएलीह। “गलत उपयोग रोकबाक लेल फेर ओही अपमान लोककेँ सुनाएब आवश्यक नहि,” ओ कहलीह। “समितिक जाँचमे अखण्ड प्रति देखल जा सकैत अछि। सार्वजनिक पन्नापर लिखू जे कटल अंश बिना सहमतिक प्रसारित भेल आ ओकरा हटेबाक अनुरोध कएल गेल। जतय हटेनिहारक नियन्त्रण नहि, ओतय हटि गेल—एहन दावा नहि करू।” पद्मा ई भेद लिखलीह।

आँगनक बालिका, जे काल्हि रमेश घासीक बाजाक ताल गनि रहल छलीह, हमीदासँ पुछलक, “गीत गौनाइ बन्द भऽ गेल?” हमीदा ओकरा लग बजौलीह। “नहि, गीत बन्द नहि। जे लोक हमर शब्दकेँ हँसी बनबैत अछि ओकरा अनुमति बन्द।” बालिका अपन लिखल दू पाँति पढ़लक, मुदा दोसर पाँति भूलि गेलीह। हमीदा हँसि कहलीह, “भूलल शब्दक जगह चुप रहबो एकटा साँच अछि।” बच्ची फेर सोचिकऽ अपन शब्द खोजलक। एहि छोट खेलमे कलाकारक गरिमा दोसरक उपदेश बनि नहि गेल।

मृणाल दार्शनिक पाठक दोसर चक्र शुरू कएलीह। एहि बेर हरिमोहनकेँ उदयनक पक्ष रखबाक आ पद्माकेँ पूर्वपक्षक प्रश्न पढ़बाक आग्रह कएल गेल। पद्मा साफ कहलीह जे ओ मीमांसक परम्पराक विद्वान प्रतिनिधि नहि, मूल तर्कक साहित्यिक पुनर्पाठ करैत छथि। हरिमोहन पहिने कहला जे जगतक विभिन्न कार्यक आयोजन मननशील कारणक अनुमान समर्थ करैत अछि। पद्मा उत्तर देलीह, “संभावना आ अपरिहार्यता अलग अछि। कार्यक लक्षण विश्वपर लागय तकर सीमा आ विरोधी दृष्टान्त जाँचल जाए।” श्रोता दोसरक वाक्य बीचमे काटब रोकलनि।

एक युवक पुछलक, “जँ दूनू पक्ष आजु असहमत रहत, तखन पाठशालाक पुस्तकमे की छापब?” पद्मा उत्तर देलीह, “पहिने प्रत्येक पक्ष अपन सर्वोत्तम रूपमे। तकर बाद स्पष्ट करू जे कोन आधार मानल गेल, कोन प्रश्न खुलल, आ कोन वाक्य साहित्यिक कल्पना अछि। शोक करैत लोकसँ सहमतिक हस्ताक्षर माँगब नहि।” युवकक अगिला प्रश्न छल जे एतेक पन्ना छापबाक खर्च कियैक? संकेत कहलनि, “गलत छोट पन्ना काल्हि फेर बड़ खर्च करबैत अछि। तथापि खर्चक हिसाब लोकक सामने रहत।”

एहि बीच रसीदक पुरान नकलमे हमीदाक नामक एक अक्षर गलत भेटल। लेखनिकक प्रस्ताव छल जे मूल कागदपर सफेदा पोति नव अक्षर लिखि देल जाए। हमीदा रोकलीह। “मूल गलती देखल जा सकय। ओकरा बगल सुधारक तिथि, स्रोत आ हमर स्वीकृति राखू।” रहीना ठकुराईक नकलक क्रमक अनुभव पद्माकेँ स्मरण छल; ओ कागदक एक अलग संशोधन-पत्र जोड़लीह। मूल नष्ट भेल नहि, आ सुधार गलत नामक स्थायी पुनरावृत्तियो नहि बनल।

कोषक रखवार भुगतान-सूची आनलनि। रमेश घासीक पिछला कार्यक्रमक नौ सय रुपैयाक आदेश देखाएल गेल, मुदा प्राप्ति एखनहुँ जाँचबाक छल। हमीदाक मदमे राशि लिखल नहि छल, केवल ‘गीत—मानदेय बाकी’। एक सदस्य कहलक जे दुनूक मामला जोड़ि एके ‘कलाकार भुगतान’ करब सुगम होएत। हमीदा अस्वीकार कएलीह। “रमेशक दाम रमेशक अछि। हमरा देयक प्रमाण आ निर्धारण अलग। एक मदमे रखलासँ ककरो प्राप्ति दोसरक भुगतान बनि सकैत अछि।” तारा अलग-अलग पाँति कायम रखलीह।

पुरान अध्ययनगृहमे साँझ उतरि रहल छल। उदयन अतिथिसँ पुछलनि जे ओ अपन लिखल आपत्तिक अन्तिम प्रति देखबाक चाहैत छथि की? अतिथि कहलनि, “चाहैत छी, मुदा हमर मित्रक नाम एहि बहसक शीर्षकमे नहि रहत। हुनकर स्मृतिपर हमर अधिकारो असीम नहि।” उदयन नाम हटेबाक मानलनि। प्रश्नसभ यथावत् रहल। विद्यार्थी पुछलक जे गुरुक उत्तर पूरा नहि मानल गेल, तखन पोथीक नाम ‘कुसुमाञ्जलि’क गरिमा घटत की? उदयन कहला, “गरिमा प्रश्नकेँ भूँजि राखल फूलक मालासँ नहि, विचारक अनुशासनसँ बनैत अछि।”

अतिथि कहला, “हम अहाँक एक बात स्वीकार करैत छी—ईश्वरक प्रश्न उठेबामे केवट, कुम्हार वा नकलकारक श्रमकेँ उपमा बना कऽ ओकरा वास्तविक व्यक्ति मानबाक भूल नहि होएबाक चाही। मुदा ई स्वीकार अहाँक निष्कर्षक स्वीकृति नहि।” उदयन उत्तर देलनि, “आ हम स्वीकार करैत छी जे कर्मक दार्शनिक व्याख्या देबामे पीड़ितकेँ मौन राखब हमर अधिकार नहि। मुदा एहिसँ हमरा अपन अनुमान त्यागबाक आज्ञा नहि निकलैत।” दुनू पक्ष अपन-अपन बचल तर्क लिखबौलनि। दोसर दिन फेर बहस होएत—एहन औपचारिक घोषणा नहि भेल; एखन एहिठाम विराम छल।

विदेहपुरमे हमीदा अपन बही बन्द कएलीह। ओ गीत गाएब स्थगित रखबाक बदला सार्वजनिक सभा लेल एक छोट, बिना रेकर्डिंगक अभ्यासक प्रस्ताव रखलीह—जँ कार्यक्रमक उद्देश्य स्पष्ट, शब्दक उपयोग हुनकर स्वीकृत, आ मानदेय पहिने लिखित रूपमे निश्चित होए। पुरान बकाया चुकल नहि रहए, तँ आगामी कार्यक्रमक प्रस्तावकेँ ओहि देयक बदला नहि मानल जाएत। आयोजन-सदस्य पहिने ‘सेवा’ शब्द दोहरौलक, फेर नव शर्त पढ़ि दामक प्रस्ताव देबाक लेल एक दिन माँगलक। हमीदा समय देलीह, स्वर नहि।

सरिता स्मारकक कागद लेलीह। उर्मिलाक अपूर्ण मजदूरीक पाँति एखनहुँ ओतहि छल; नैराक मृत्यु ओकरा कात छापल पुरान सूचीमे एकटा नाम छल, सम्पूर्ण जीवन नहि। ओ ककरो दार्शनिक निष्कर्षपर सही नहि कएलीह। “हम प्रश्न सुनि सकैत छी,” ओ पद्मासँ कहलीह, “मुदा हमरा शोकक कागद सभ सार्वजनिक पाठमे नहि जाएत।” पद्मा ओहि सीमा लिखि देलीह। सरिता फेर जोड़लीह, “जकरा देयक उत्तर देबाक अछि, ओकर तिथि मत भुलब।” तारा बकाया-विवादक अगिला सुनवाईक दिन अलग पन्नामे रखलीह।

सभाक अन्तमे पद्मा दू लेखा-पन्ना दीवालपर लगबौलीह। एकमे ‘उदयनक पक्ष’, ‘मीमांसक पूर्वपक्ष’, ‘अनुत्तरित आपत्ति’ आ ‘साहित्यिक दृश्य’ स्पष्ट लिखल छल; दोसरमे हमीदाक अपमानकारी गीत-प्रयोग रोकबाक लिखित निर्णय, मूल रेकॉर्डिंगक सीमित जाँच, नाम-संशोधन आ पारिश्रमिकक खुल देय। दूनू कागदक कार्य भिन्न छल। कियो प्राचीन शास्त्रार्थसँ आजुक भुगतान सिद्ध नहि करैत छल; कियो भुगतानक रसीदसँ ईश्वरक अस्तित्वक फैसला नहि सुनबैत छल।

बाहर साँझक उजासमे एक युवक नव पाठक लेल काठक तख्ती पोंछि रहल छल। ओ पूछलक, “काल्हि गङ्गेशक कक्षामे एतेक कठिन तर्क ककरा बुझाएब?” मृणाल कहलीह, “जे पुछत, ओकरा। मुदा उदाहरण चुनबाक समय ओहि लोककेँ सेहो सुनब जे वस्तु बनाएत, मापत, गनत।” तख्तीपर पहिनेसँ लिखल एक वाक्यक कोना मेटल छल। युवक ओकरा मनमाने भरबाक बदला ओहिना छोड़ि देलक; स्रोत भेटत तखन सुधार होएत।

हमीदा घर दिस विदा भेलीह तँ बहीक लाल पर्ची फेर बाहर निकालि देखलीह। अपमानकारी उपयोग रोकबाक लिखित निर्णय आब हुनकर हाथमे छल; पारिश्रमिकक प्राप्ति एखन नहि। ओ बिना संगतक एकटा आधा तान गुनगुनौलीह, फेर रिक्सा आ बच्चासभक आवाज सुनि थमि गेलीह। पाठशालाक भीतर पद्मा उदयनक पक्ष आ पूर्वपक्षक पन्ना एके मोटाइकेँ दू अलग धागासँ बाँधि रखलीह। एकरासँ सत्यक अन्तिम फैसला नहि भेल; मुदा ककरो प्रश्नकेँ उत्तरक भेष पहिरा कऽ गुम करबाक एकटा बाट अवश्य बन्द भेल।

अध्याय २१२ • गङ्गेशक कक्षा

पुरान काठक तख्तीपर चूनक धूलि एखनहुँ लगल छल। विदेहपुरक खुलल पाठशालामे भोरहि सँ एक बालिका ओकरा भीजल कपड़ासँ पोछि रहल छलीह। तख्तीक बाम कोनामे काल्हुक प्रश्न बचल छल—“उदाहरण ककर जीवनसँ लेब?” पोछैत-पोछैत ओ रुकलीह। “ई तँ प्रश्न अछि,” ओ मृणालसँ कहलीह, “एकरा किएक मेटी?” मृणाल हुनकर हाथसँ कपड़ा नहि लेलीह। ओ नीचाँक खाली भागपर आजुक तिथि लिखि देलीह। उग्र दार्शनिक विवादक पाछाँ एहन सामान्य कामसँ कक्षा फेर शुरू भेल।

हेमा देव ओसारमे एकटा गोल बाँसक नली रखने छलीह। नलीक भीतर विद्यालयक पुरान इतिहास-प्रदर्शनीक प्रति, दू टुटल किनारक फोटो आ अपन लिखल संशोधन-पत्र छल। बरसौं पहिने विद्यालयक स्थापना आ पोखरि-उराहिक चित्रक नीचाँ दस पुरुषक नाम छपल छल, स्त्रीसभक श्रम एकटा बेनाम पाँतिमे सिमटि गेल छल। ओहि समय हेमा दू पूरा पढ़ाएवला नाम, एक अपूर्ण नाम आ एक अस्फुट चिह्न अलग कएने छलीह। “आइ हम नव इतिहास लिखबाक नहि,” ओ कहलीह, “जे प्रमाण अछि, ओकर आधारपर पुरान पाठक जगह बढ़ाएबाक बात करब।”

पद्मा वार्षिक लोकपाठ—खुला खाता—गीतक तेसर बैसार लेल चटाइ बिछौने छलीह। काल्हि उदयनक शास्त्रार्थक दू प्रतिपक्षक पन्ना अलग बाँधल गेल छल। आजुक विषय गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि छल। एक विद्यार्थी उत्साहमे चारि शब्द लिखि देलक—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द। दोसर ओकर नीचाँ ‘ईश्वर’ लिखि पाँचम पाँति जोड़लक। मृणाल ओकरा हटबौलनि, मुदा लाज नहि लगौलनि। “ईश्वरानुमान अनुमानक भीतर विचारल जाएबला प्रश्न अछि,” ओ बुझौलीह, “तत्त्वचिन्तामणिक चारि प्रमाणखण्डकेँ पाँच नहि बनाबी। आइ काज एतबा नहि जे नाम रटि ली।”

बहुत पहिनुका मिथिलामे, गङ्गेशक अध्ययनगृहक बाहर धानक बोझा उतारैत मालती धानुकक पैर कादोमे धँसि गेल छल। ओकर बाँसक डलियाक एक कोना टूटल छल, आ मापबाक दू पात्रमे सँ एकटा रातिक पानिसँ फुलि गेल छल। शिक्षकक कक्षामे विद्यार्थीसभ एकर बाटक धूलि देखैत छलाह; मालतीक देरीपर कियो हँसलो। ओ हँसीक

उत्तर नहि देलीह। “गुरु लग मापसँ सम्बन्धित प्रश्न अछि,” ओ कहलनि, “मुदा पहिने बताउ, एहि भीजल पात्रक दामक हिसाब कोन मापसँ देब?”

गङ्गेश ओहि समय प्रत्यक्षक लक्षणपर ताड़पत्र लिखबा रहल छलाह। विद्यार्थी पहिने कहलक, “एके आकारक दू पात्र आँखिसँ देखाइत अछि, तँ माप एक होएत।” मालती दुनू पात्र जमीनपर रखलीह। एकटामे जल धरिते पातर रेखासँ रिसए लागल, दोसरक पेंदी सूखल रहल। “आँखिसँ जे देखलहुँ,” ओ पुछलीह, “ओ की पर्याप्त भेल? हमरा पानि भरबाक आवाज सुनाइत अछि, हाथसँ भीजल किनार बुझाइत अछि। मुदा दू माप समान अछि—ई बात कोन परीक्षण कहत?” गङ्गेश विद्यार्थीक लिखल ‘आकार एक, क्षमता एक’ वाक्यपर प्रश्नचिह्न लगबौलनि।

एहि बीच माधव नाविक दू बलिष्ठ रस्सी लऽ भीतर अएलाह। हुनकर नाव घाटपर बाँधल छल, मुदा राति नदीक पानी घटलाक बाद रस्सीक पुरान गाँठ ऊँच ठाम अटक गेल छल। ओ कहलनि, “लोक कहैत अछि जे जलक ऊपरक रंग देखि गहिराइ बुझा लिअ। काल्हि घन मटमैला छल, आइ उज्जर चमकैत अछि। मुदा नावक पेट कतय छूबत, हम बिना डाँड़ आजमा कऽ नहि कहब।” एक शिष्य पुछलक, “तखन नाविकक अनुमान कखनो ज्ञान नहि?” माधव उत्तर देलनि, “अनुमान करैत छी। मुदा जकरा ढोइत छी, ओकर प्राण दाँवपर राखि अपन अनुमानकेँ माप कहि नहि बेचैत छी।”

गङ्गेश मालती आ माधवसँ वस्तु बदलाबए नहि, कक्षा बदलएबाक आग्रह कएलनि। “काल्हि तक हम घट आ पट बारम्बार देखौने छी,” ओ कहला, “आइ एहि डलिया आ रस्सीसँ प्रश्न शुरू करब। मुदा एतय निर्णय एके घटना पर रुकत; शास्त्रक सिद्धान्त जतेक व्यापक अछि ताहि लेल अलग तर्क चाही।” ओ पुछलनि, “प्रत्यक्षमे देखबाक संग सुनब, छूबब, गन्ध आ रसक बोधक शर्तसभ की? आ जे आँखि एहि मापकेँ पूरा नहि जाँचि सकैत, ओहि कमीकेँ अनुमान कखन पूरि सकैत अछि?” विद्यार्थी पहिल बेर मालतीक हाथक रिसैत धार पर ध्यान देलक।

विदेहपुरक आजुक कक्षामे तारा एक पुरान बाँसक पातर डलिया आनलीह। ओकर पेंदीमे टाँका छल। “ई आजुक वस्तु अछि,” ओ स्पष्ट कहलीह, “गङ्गेशक समयक वस्तु मानि नहि लिअ। ओ कथा अलग कालक साहित्यिक दृश्य अछि।” एक बालक पुरान

कादोबाही नालाक फोटो उठा कऽ कहलक, “एहि फोटोमे तऽ जल नहि अछि, तखन बाढ़ि कतय सँ अएल?” अदिति उत्तर देलीह, “फोटो एक समयक सतह देखबैत अछि। निकासक क्षमता, पुरान बन्द बाहा आ बादक बरखा अलग जाँचक विषय छल। तस्वीरसँ पूरा कारणक्रम नहि निकलैत।”

हेमा एहि अवसरपर अपन बही खोललीह। “हमर काजमे सेहो एही भूल भेल छल,” ओ कहलीह। “जतय छापाइक किनार काटल गेल, हम पहिने सोचलहुँ जे सभ नाम जानि-बूझि हटाओल गेल। नसीमा शेरशाहबादी कागदक काटल चौड़ाइ देखौलनि, तखन हम आरोपक ओ हिस्सा बदललहुँ। मुदा मूल नामसूचीमे काजक श्रेय नहि देबाक प्रश्न अलग बचल।” एक बच्चा तुरन्त पुछलक, “तखन गलती मानलासँ अहाँक बात कमजोर भेल?” हेमा हँसलीह। “गलती नहि मानलासँ इतिहास कमजोर होइत।”

पुरान अध्ययनगृहमे गङ्गेश मालतीक पात्रक पास एकटा काँच माटिक रेखा खिंचलनि। पहिल विद्यार्थीसँ कहबौलनि जे ओ प्रत्यक्षमे की जानलक; दोसरसँ जे ओ अनुमान की करैत अछि। पहिल कहलक, “एक पात्रक किनारसँ पानि रिसल।” दोसर कहलक, “भीजलासँ ओकर क्षमता घटि सकैत अछि।” मालती जोड़लीह, “मुदा माप कतेक घटल, से एखन नहि जानल गेल।” ई उत्तर सुनि गुरु मापक दोसर परीक्षणक तिथि तय कएलनि। कक्षा समाप्त भेलापर मालतीकेँ बिना नापल धानक घाटा स्वीकार करबाक दबाव नहि देल जाएत—एतबा व्यावहारिक बात लिखल गेल।

माधव रस्सीक दू गाँठ देखौलनि। “एक गाँठ गाछसँ बाँधल नावपर चलैत अछि, दोसर ढलानपर। रूप मिललासँ बल एक नहि,” ओ कहलनि। गङ्गेश उपमानक प्रश्न खोललनि—अपरिचित वस्तुक ज्ञानमे परिचित वस्तुसँ सादृश्यक उपयोग कखन उचित, आ केवल रूप मिललासँ कखन भ्रम? एक शिष्य दूरक धारक नाम सुनिकऽ ओकरा अपन गामक धारक समान मानबाक चाहलक। माधव ओकरा नदीक किनार, नावक बोझ आ मौसमक अन्तर गनबौलनि। “नामक मेल बाट नहि खोलैत,” ओ कहला। गुरु एहि भेदकेँ उपमानक अभ्यास-पन्नामे जोड़लनि।

दुपहरमे पानिक घैल उठबैत एक विद्यार्थिनी मालतीसँ पूछलीह, “अहाँ आ माधव गुरुक ग्रन्थमे अबैत छी की?” मालती उत्तर देलीह, “हम धान मापैत छी। हमर प्रश्न जँ सही अछि

तँ लिखू; हमर जीवनक मालिक बनि कऽ नहि लिखू।” गङ्गेश शिष्यकेँ रोकलनि जे मालतीक काल्पनिक उत्तरकेँ ग्रन्थक मूल सूत्र बनि कऽ न उतारय। “अहिसँ जे प्रश्न उठल,” ओ कहला, “ओ कक्षाक शिक्षण-दृष्टान्त अछि। सूत्रक मूल पाठ, ओकर व्याख्या आ एहि लोकक अनुभव तीनूकेँ अलग चिन्ह देब।” ताड़पत्रक पन्नामे पहिल बेर ‘प्रश्नकर्ता’ लेल अतिरिक्त जगह छोड़ल गेल।

अध्ययनगृहक द्वारपर धान किननिहार व्यापारीक दूत ठाढ़ छल। ओ कहलक, “माप बदलल गेल तँ दाम पर विवाद होएत। लिखल हिसाब पुरान पात्रसँ बनल अछि।” मालती ओहि कागदकेँ देखि कहलीह, “हमरो हिसाब बदलएबाक इच्छा नहि; हम एतबा चाहैत छी जे जकर पात्रसँ नापल गेल, ओकर हाल देखल जाए।” गङ्गेश दूतकेँ ताड़पत्रपर तत्काल सही करबाक नहि कहलनि। ओ मालतीसँ हुनकर समय पूछलनि आ जाँच लेल दून् पात्र राखबाक अवधि निश्चित कएलनि। शिष्य बुझलक जे प्रश्न पूछबाक अधिकारसँ काजक समयो जुड़ल अछि।

विदेहपुरमे एहि दृश्यकेँ पढ़लापर एक युवती उठलीह। “एहि मालती धानुक आ माधव नाविकक वास्तविक पुरान दस्तावेज कतय?” ओ पुछलीह। मृणाल उत्तर देलीह, “हुनका सभक जीवन आ संवाद एहि उपन्यासक रचना अछि। गङ्गेश आ तत्त्वचिन्तामणिक दार्शनिक परम्परा ऐतिहासिक चर्चा छी; हम कल्पित शिष्य आ श्रमजीवी पात्रसँ शिक्षणक सम्भावना जाँचैत छी। हमर कथा प्राचीन पाण्डुलिपिक अप्राप्त उद्धरण नहि।” पद्मा कार्यक्रमक पुस्तक-पन्नामे ओहि स्पष्ट वाक्य जोड़लीह। आलोचनाक बीच पाठक भरोसा घटल नहि; ककर कथन कतेक भार उठा सकैत अछि, से साफ भेल।

एहि बीच हेमा देवक इतिहास-पन्ना विद्यालयक समिति आगाँ पहुँचल। एक सदस्य कहलक, “नाम पूरा प्रमाणित नहि, तँ पन्ना छापबासँ विवाद उठत। पुरान पाठमे ‘स्त्रीगणक सहयोग’ लिखले अछि।” हेमा मुड़ल कागदक किनार खोललीह। “एहि शब्दक भीतर स्त्रीसभ अदृश्य भेल छथि,” ओ कहलीह। “जकर दू नाम पूरा देखाइत अछि, तकर मूल नकल आ स्रोतसहित छापू। अधूरा नामकेँ अधूर लिखू। आ जकर श्रमक गवाही मात्र अछि, ओकरा नाम गढ़ि नहि, श्रमक रूपमे दर्ज करू।” सदस्य पुछलक,

“तखन इतिहास निश्चित नहि?” हेमा उत्तर देलीह, “इतिहासक ई हिस्सा जतेक निश्चित अछि, ओतेक बताउ।”

कक्षामे सरिता पोखरि-उराहिक पुरान माटिक फोटो देखैत छलीह। नामक फेहरिस्तमे हुनका उर्मिलाक चादर धोनिहार हाथ स्मरण पड़ल, जे इतिहासक ओ पन्नासँ अलग समयक श्रम छल। ओ खुदे सावधान कएलीह—“जतय उर्मिलाक कामक प्रमाण अछि, ओतहि लिखू। जँ पुरनका चित्रमे ककरो चेहरा नहि बुझाइट, तखन उर्मिलाक नाम ओकरामे जबरदस्ती जोड़ब नहि।” हेमा हुनकर बात मानलीह। “नाम जोड़बाक उत्साहमे दोसर व्यक्तिक काल आ अधिकार नहि छीनब,” ओ कहलीह। ओहि दिनक पाठमे अनुपस्थितिक प्रश्नकेँ सेहो पाठ्य-विषय बनाओल गेल।

गङ्गेशक अध्ययनगृहमे शब्दप्रमाणक अवसर अएल। एक शिष्य मालतीक मापकेँ ‘गामक लोक कहैत अछि’ वाक्यसँ ठीक ठहरए चाहलक। मालती पुछलीह, “गामक कोन लोक? ओ स्वयं मापने छल की दोसरसँ सुनने?” माधव कहलनि, “जँ घाटक बूढ़ नाविक काल्हक गहिराइक बात कहथि, तँ हुनकर अनुभवक समय पूछू। आजुक धार ओहि समयसँ फेरि सकैत अछि।” गङ्गेश विश्वसनीय कथन, वक्ताक ज्ञान आ प्रसंगक भेद पढ़बौलनि। हुनक शब्दप्रमाणक विचार लोकसभक प्रत्येक बातकेँ स्वतः सत्य अथवा स्वतः असत्य घोषित करबाक पद्धति नहि बनल।

एक किशोर विदेहपुरमे प्रतिवाद कएलक, “अहाँ सभ मजदूरक अनुभव सुनैत छी, मुदा कखनो ओकर अनुमानो गलत होइत अछि। तखन ककरा मानब?” पद्मा ओकरा हीराक पुरान जलमापक घटना स्मरण करौलीह, जखन स्थानीय अनुभव आ मानकीकृत माप दुनू पुनः जाँचल गेल छल। “लोकज्ञानक सम्मान ओकर जाँच बन्द करब नहि,” ओ कहलीह। “अभियन्ताक कागदकेँ सेहो गलतीसँ छूट नहि अछि। प्रमाणक ओझरा तय करबाक लेल व्यक्ति कतेक बड़ अछि से नहि, परीक्षण कतेक उपयुक्त अछि से पूछब।” किशोर अपन कापीमे ‘आदर’ आ ‘जाँच’ अलग लिखलक।

हेमाक पन्नापर एखन एक नवल कठिनाइ छल। विद्यालयक पुरान रसोइक खर्च-सूचीमे स्त्रीसभक कामक समय नहि लिखल छल; एक लिखित अन्न-खर्च सँ काम करनिहारक संख्या स्वतः सिद्ध नहि होइत। एक शिक्षक प्रस्ताव देलनि जे आकलनसँ संख्या भरि देल

जाए। हेमा रोकी देलीह। “ई आकलन अध्ययनक प्रश्न बनि सकैत अछि, नामपंजीक प्रमाण नहि।” रचना धिमाल बच्चासभक भाषा-पाठमे अनुवादक भूमिका देखबैत कहलीह, “शब्द बदलला सँ व्यक्ति नहि बदलैत। जकर नाम अधूर अछि, ओकरा बच्चासभक सामने अधूर कहएबाक साहस चाही।” समिति ई बात रजिस्टरमे उतारलक।

ओसारक बाहर हरिमोहन दू बच्चाकेँ माटिक ढक्कनसँ खेलैत देखलनि। एक बच्चा ढक्कन उठाए बिना कहलक, “एहिमे पानि अछि।” दोसर उठौलक तँ भीतर मात्र पातर कंकड़ छल। दुनू हँसि पड़ल। हरिमोहन कक्षामे अएलाह आ पुछलनि, “तँ पहिल अनुमान गलत भेल; की ओ अनुमान करबाक अधिकार खो देलक?” पद्मा कहलीह, “नहि। ओ आब पूछत जे ओकर संकेत कियैक चूकल। सुधारक अवसर नहि देब तँ ज्ञानक शिक्षा दण्ड बनि जाएत।” बच्चासभ पुनः ढक्कन राखि एहि बेर ओकरा छूबि आ हिला कऽ देखलक।

वार्षिक लोकपाठक प्राङ्गणमे फूलमती पमरिया आ करीम डफाली अभ्यास करैत छलाह। रमेश घासीक बाजाक पट्टी ढीली पड़ि गेल छल; ओ ओकरा बाँधि कऽ ताल पकड़लनि। आयोजनक घोषक संगीतक बीच ऐतिहासिक ‘सहयोग’ शब्द पढ़ि देबाक सोचने छल। हेमा कहलनि, “जँ आजुक कलाकारक नाम आ दाम छपैत अछि, तँ पुरान स्त्रीसभ लेल केवल सहयोग किएक?” फूलमती मुस्कुरौलीह—“हमर नाम ठीक पढ़ब, आ जे नहि बुझाइट ओकरा लेल बनाओल गीत हमर मुँहसँ मत गबाउ।” अभ्यास फेर शुरू भेल। सभाक गम्भीरता संगीतक हँसीकेँ नहि हरौलनि।

पुरान मिथिलामे मालती धानुक दिनक अन्तमे अपन मापक पात्र फेर गनलीह। गुरु पूछलनि, “पात्रकेँ परखलासँ अहाँक मोलक विवाद सुलझल?” ओ कहलीह, “एखन पूरा नहि। व्यापारी दोसर माप मानए तखन। मुदा आब हमरा कहबाक प्रमाण अछि जे पहिल पात्र रिसैत छल।” गङ्गेश व्यापारीक उपस्थितिमे माप-परख करबाक बात कक्षाक अगिला अभ्यासमे रखलनि; तत्काल मोलक न्याय घोषित नहि कएलनि। माधव सेहो अपन नावक रस्सी कसि घाट घुर्बाक लेल उठलाह। छात्रसभ रस्सीक गाँठक चित्र ताड़पत्रमे बनौलनि, मुदा पानीक गति ओकरा चित्रसँ बाँधल नहि जा सकल।

गङ्गेश अपन लेखनिक शिष्यकेँ चारि प्रमाणक क्रम फेर पढ़बौलनि। छात्रक पन्नामे पहिले ‘घट’ एकमात्र उदाहरण छल। आब प्रत्यक्षक नीचाँ रिसैत पात्र, अनुमानक नीचाँ जलक गहिराइक शर्त, उपमानक नीचाँ नावक गाँठ आ शब्दक नीचाँ नाविकक कथनक समय लिखल छल। गुरु कहलनि, “एहि अनुभवसभसँ शास्त्र बदलि पूर्ण भऽ गेल—एहन नहि। मुदा जँ प्रश्नकर्ताक वास्तविक कठिनाइ नहि सुनब तँ उदाहरण अपरीक्षित रहत।” शिष्य उत्तर देलक, “तखन कक्षामे ओ लोक फेर आएताह?” गङ्गेश कहला, “पहिने हुनका सभक कामक समय पुछू।”

विदेहपुरमे प्रबन्ध समितिक बैसार कठिन भेल। सचिव कहलनि जे विद्यालयक मूल पाठ्यपुस्तक तत्काल बदलबाक वैधानिक अधिकार ओतय नहि अछि। हेमा एखनहि कागद फाड़बाक बदला दोसर प्रस्ताव रखलीह—स्थानीय इतिहासक पूरक पन्ना, स्रोतक टिप्पणी, विद्यालयक खुलल पाठमे ओकर नियमित उपयोग आ मूल पाठ-संशोधन लेल अलग आवेदन। प्रस्तावपर दू सदस्य संशयमे रहलाह। एक पुछलक, “आब जँ कियो नव प्रमाण आनत?” हेमा उत्तर देलीह, “पूरक पन्नाक दोसर संस्करण होएत। इतिहासक दरबज्जा बन्द नहि करब।” मतदानमे बहुमतसँ पूरक पन्ना स्वीकृत भेल; मूल पाठ्यपुस्तकक संशोधन एखन शेष रहल।

समितिक एक सदस्य हेमा सँ एकटा नव कठिन प्रश्न पुछलनि। “जकर घरमे पुरान कागद नहि बचल, ओकर स्मृति कियैक मानब?” हेमा कहलीह, “स्मृतिसँ प्रश्न आरम्भ होएत। दोसर स्वतन्त्र गवाही, वस्तु आ रसीद भेटत तँ अधिक भरोसा बनत। नहि भेटत तँ स्मृतिक नामपर निश्चित तिथि नहि गढ़ब। मुदा केवल कागद नहि बचलासँ लोकक जीवन निरर्थक नहि भेल।” ओ अपन मायक हाथसँ सुनल एक छोट घरेलू गीतक पाँति सुनबए चाहि चुप भेलीह। “हुनकर अनुमति बिना एखन ई गीत नहि,” ओ जोड़लीह। सभाक गम्भीरता ओहि छोट विराममे स्पष्ट भेल।

बच्चासभ ओहि पन्नाक पहिल प्रति बाँटबाक समय अपना-अपना प्रश्न जोड़लक। जतन पूछलक जे पुरान पोखरिक कादो ढोएनिहारक हाथक फोटो किएक नहि अछि। बिरसी कहलीह जे पुरान भोजने-बनौनिहार स्त्रीक नाम शायद परिवारक कापीमे भेटत। हेमा हुनका सभकेँ बिना बड़का लोकक अनुमति घरक निजी बक्सा खोलनाइ मना

कएलीह। “साक्ष्य जुटेबा लेल लोकक घरक परदा फाड़ब नहि,” ओ कहलीह। बच्चासभ अगिला बैसारमे परिवारसँ स्वेच्छिक प्रतिक अनुमति पुछबाक निश्चय कएलक। ओ पढ़ाईक काज छल, खोजी-दलक छद्म छानबीन नहि।

पद्मा नव पाठ्यसामग्रीक दू पन्ना एकठाम रखलीह। पहिलमे गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणिक चारि प्रमाणखण्डक परिचय, स्पष्ट रूपसँ चिन्हित कल्पित मालती—माधव संवाद आ प्रश्न पूछबाक नियम छल। दोसरमे हेमाक स्थानीय इतिहास-पत्रक स्रोत, अपूर्ण नामक सीमा आ पूरक पाठ स्वीकृत होएबाक तिथि। एक युवक दुनू पर एके ‘प्रमाणित’ मोहर लगाएब चाहलक। पद्मा रोकलीह। “दार्शनिक मत, साहित्यिक घटना आ वर्तमान अभिलेखक वस्तुस्थिति अलग अछि। एकटा मोहर तीनूकेँ समान नहि बना सकैत।” युवक अलग शीर्षक लिखलक।

तारा खर्चक पर्ची देखौलीह। हेमाक पुरान नकलक प्रतिलिपि बनएबाक काजमे नसीमाक किनार-मरम्मतिक समय शामिल छल, मुदा ओहि मदक भुगतानक पुरान स्थिति फरक कागदमे दर्ज छल। “आइक पूरक पन्नाक छपाइ, श्रेय आ कागदक खर्च अलग,” तारा कहलीह, “पुरनका रसीदकेँ अदायगीक प्रमाण नहि मानब।” हेमा हुनकर हाथसँ सूची लऽ देखलीह। ओ चाहैत छलीह जे इतिहासक पन्नापर स्त्रीसभक श्रेय आए, मुदा ओहि पन्ना बनबेनिहार आजुक लोकक श्रम सेहो ‘स्वेच्छिक सहयोग’ लिखि गायब नहि होए। छपाइक खर्च सार्वजनिक खातामे स्वीकृत भेल, वास्तविक वितरणक गनती अगिला दिन करबाक रहल।

साँझक लोकपाठमे बालिका जे भोरमे तख्ती पोंछि रहल छलीह, पहिल प्रति पढ़लीह। ओ दूटा स्पष्ट पढ़ल नाम मूल प्रतिक वर्तनीमे पढ़लीह, संगमे ओकर स्रोत-संकेत; अपूर्ण नामक आगाँ ‘अपूर्ण पाठ’ आ बेनाम श्रमक बारेमे पाँति। तखन ओ रुकि पुछलीह, “जकर नाम एखनहुँ नहि भेटल, हुनका की पढ़ाईमे जगह नहि?” हेमा उत्तर देलीह, “हुनकर काजक जगह अछि, मुदा हम ओतय मनसँ नाम नहि लिखब। हुनका नाम भेटबाक सम्भावना बनि रहत।” बालिका एकटा खाली चौकोर नहि, एकटा खुलल पाँति खिंचलीह, जाहिमे अगिला स्रोतक तिथि लिखल जा सकय।

पाठ समाप्त भेलापर मृणाल गङ्गेशक कल्पित कक्षाक अन्तिम वाक्य फेर पढ़लीह। मालती आ माधव अपन-अपन काम दिस घुरि गेल छलाह; विद्वानक शिष्यसभ असुविधाजनक नव उदाहरणक भार उठौने रहि गेल छलाह। एतय कथा ओहि पुरान युगक शाब्दिक इतिहास होएबाक दावा नहि करैत छल। मुदा विदेहपुरक पाठशालामे आजुक वास्तविक बदलाव सामने छल—श्रमजीवी प्रश्न उदाहरणक बाहरी सजावट नहि रहल, पाठ-निर्माणक शर्त बनल। आ हेमा देवक पूरक इतिहास-पन्ना विद्यालयक नियमित खुलल कक्षाक सूचीमे आबि गेल छल, यद्यपि मूल पुस्तक एखन पुरानहि छल।

सरिता जखन विदा होए लगलीह तँ एक मुद्रित दार्शनिक पोथीक प्रस्तावित मुखपृष्ठ देखलीह। माथपर सम्पादकक नाम छल; नीचाँ सहायक लोकसभक स्थान एखन खाली। ओ पन्ना उलटि मृणालसँ पुछलीह, “हम जे रसोइ, धुलाई आ खोज-बहीक प्रतिक जाँचमे काज कएलहुँ, तकर हिसाब कतय लिखब? आ जखन हम गलतीसँ ककरो श्रेय दबौने छलहुँ, ओहो लिखल जाएत की?” मृणाल उत्तर तुरन्त नहि देलीह। हेमाक पूरक पन्ना सूखि रहल छल, आ नव पुस्तकक खाली पाँति एखन भरबाक बाकी छल। बाहर बच्चासभ पुरान तख्तीपर आजुक प्रश्न मेटे बिना अगिला दिनक तिथि जोड़ि रहल छल।

अध्याय २१३ • मैथिलीक अपना वाणी

नव पोथीक मुखपृष्ठक नीचाँ सरिता अपन अँगुरी राखि देलीह। स्याही एखन पूरा सुखायल नहि छल; ओ कागदक धवल किनार छूने छलीह, अक्षर नहि। “एहि पाँतिमे केवल नाम नहि,” ओ कहलीह, “दिअ, जकर काज लिखब, ओकर समयो लिखू। आ जे बेर अहाँ हमर बात सुनलहुँ नहि, ओहो।” मैथिली मिश्रक हाथमे लाल चिन्ह लगाओल प्रूफ छल। रातिक वर्षा थामि गेल छल, मुदा छापाखानाक देहरीपर पानीक दू पातर रेखा एखनहुँ चमकि रहल छल।

मैथिली सरिताकेँ कुर्सी देलीह। “पहिने अहाँ अपन कहल बात पूरा करू,” ओ कहलीह। सरिता बैसलीह नहि। ओ नव प्रूफमे ‘सहयोग देनिहार’क लम्बा शीर्षक देखलीह। “एहि शब्दमे ककरो हस्ताक्षर नहि अछि। रसोइ, पन्ना सुखाएब, धूलि पोंछब, पुरान बहीक भिन्न प्रति चिन्हब—ई सभ काम भेल। हमर किछु कामक मजदूरी भेटल, किछु पर विवाद बाकी। अहाँ ओहि विवादकेँ ‘स्नेहपूर्ण सेवा’ लिखि समाप्त करब?” मैथिली पन्ना बन्द कएलनि।

हरिमोहन पाठक कागदक गठरी सम्हारैत भीतर अएलाह। हुनका लग पुरान संस्करणक तीन प्रति छल—एकमे ईशानक नाम मात्र, दोसरक भीतर सहलेखन-संशोधन पत्र, तेसरमे स्रोतसूची चिपकल। “अगिला मुद्रणमे प्रमाणित सुधार स्थायी होबाक चाही,” ओ कहलनि। मैथिली उत्तर देलीह, “हँ। मुदा पछिला संस्करणमे मैथिलीक नाम नहि रहने जे अन्याय भेल, ओकर उपचार करैत-करैत हम सरिताक नाम फेर एकटा छोट शब्दमे लुका देब, तँ ई नवल मुद्रण पुरानहि गलती दोहराओत।”

ईशान दोसर कोठरीसँ प्रूफ देखए अएलाह। ओ मैथिलीक सहलेखन स्वीकार करबाक पहिनुक सुधारपत्रपर हस्ताक्षर कएने छलाह। कागदमे हुनकर अपन मूल तर्क, मैथिलीक प्रमाणित आपत्ति आ संशोधित उदाहरणक सूची अलग छल। “अहाँक संशोधनक श्रेय तऽ निश्चित भऽ गेल,” ओ कहल। मैथिली हुनका देखलीह। “हमर श्रेय स्वीकार भेला सँ सरिताक काम केकरो नाममे समा नहि जाएत। आ हमर दोष अहाँक स्वीकारक पाछाँ नहि नुकत।” ईशान पहिल बेर सुनलनि जे ओ अपन दोष लिखबाक बात करैत छलीह।

मैथिली पुरान दिनक एक घटना सुनौलीह। जखन मूल पाण्डुलिपिक तिथि मिलाओल जा रहल छल, सरिता एक भीजल बहीक किनारपर लगल पुरान सूत चिन्हने छलीह। मैथिली ओहि चिन्हसँ दू पन्नाक क्रम बुझने छलीह; बादमे सार्वजनिक व्याख्यानमे ओ कहने छलीह जे “हम क्रम मिललौहुँ।” ओहि वाक्यमे सरिताक खोज नहि छल। “हम बुझि गेल रही,” मैथिली कहलीह, “मुदा सुधार तत्काल नहि कएलहुँ। हमर चुप्पी सेहो घटना अछि।” सरिता चुपचाप कपड़ाक पोटली खोललीह।

पोटलीमे सरिता अपन कामक रसीदसभ लऽ अएने छलीह। किछु मदक सामने प्राप्ति-अड़क छल, किछु पर भुगतानक आदेश, किछु पर आपत्ति। मैथिली पहिनुक व्याख्यानक पन्ना मँगौलनि आ एकटा वाक्यक नीचाँ लिखलनि—‘पृष्ठक्रमक महत्त्वपूर्ण भौतिक संकेत सरिताक निरीक्षणसँ भेटल; पहिनुक सार्वजनिक कथनमे ई श्रेय मैथिली द्वारा छूटल।’ फेर हुनका हाथ ठमकि गेल। “ई मात्र छूटल छल की हम स्वयं हटौने रही?” सरिता कहलीह, “अहाँकेँ जे याद अछि, ओहि अनुसार लिखू; बहाना हम नहि दैत छी।”

मैथिली वाक्य फेर लिखलनि—‘हम सरिताक निरीक्षणक श्रेय तत्काल नहि देने रही; ई हमर निर्णयक त्रुटि छल।’ हरिमोहन पुछलनि जे लेखकक निजी स्वीकारक प्रमाण की? मैथिली उत्तर देलीह, “एहि वाक्यक स्रोत हमर अपने स्मृति आ हस्ताक्षर अछि। सरिताक कामक प्रमाण ओहि दिनक बही आ पन्नाक क्रमसँ जाँचल जाएत। दुनूकेँ एक मोहर नहि।” ईशान जोड़लनि, “आ जे मजदूरीक दावा बकाया अछि, ओकर रकमक स्रोत भुगतान-पंजी होएत, एहि भूमिकाक प्रशंसा नहि।”

सरिता आखिर बैसलीह। ओ एक पुरान रसीद नीकसँ खोलि कहलीह, “एहिमे रसोइक समय लिखल अछि, मुदा धुलाईक पूरा घड़ी नहि। उर्मिलाक पहिनुक काम तऽ अलग रहैक। हमरा अपने देयक नाममे उर्मिलाक श्रम जोड़ि नहि देब।” मैथिली माथ हिलौलीह। ओ जानैत छलीह जे उर्मिला मरि चुकलीह; सम्मानक पाँति हुनकर परिवारक अपूर्ण मजदूरी-हिसाब नहि चुका सकैत छल। सरिताक नाम लिखबाक औचित्य उर्मिलाक अनुपस्थित नाम मेटाएब नहि छल।

छापाखानाक कर्मचारी कहलक, “एतबा सुधारसँ भूमिका लम्बा भऽ जाएत; कागदक खर्च बढ़त।” मैथिली ओकर खर्चपत्र देखलीह। नव पन्नाक मुद्रण लेल अलग राशि

निकलत, पुरान प्रतिक पाठकधरि सुधारपत्र पहुँचेबाक खर्च अलग। “हम अपन पाँति छोट करब,” ओ कहलीह, “मुदा जकर श्रमक जाँच करब जरूरी अछि ओकरा छोट नहि करब।” कर्मचारी कने मुस्कुरेलक। “तखन ‘लेखिकाक विनम्र निवेदन’वला आधा पन्ना कम कऽ दी,” ओ कहलनि। सरिता पहिल बेर हँसलीह।

विदेहपुरक खुलल पाठशालामे दोसर समस्या एहि बीच दरबज्जापर ठाढ़ छल। जतन एक कापी लऽ अएल, बिरसी ओकरा पाछाँ छल। नव सूचनापटपर लिखल गेल छल —‘दार्शनिक उच्चपाठ: पूर्व प्रमाणपत्र अनिवार्य’। हरिमोहनक पहिने बनाओल अभ्यास-क्रमक ई संशोधित रूप छल; हुनका लग डर छल जे मूल पाण्डुलिपिक नाजुक प्रतिक बीच अव्यवस्था होएत। मुदा लिखल नियमक कारण शुरुआत सीखए चाहनिहारो अपना दुआर बन्द बुझि रहल छलाह।

फरीद चिक कापी देखबैत कहलक, “साँझक स्वीकृत वर्ग लेल हम फीसक संशोधित रसीद लऽ चुकल छी। मुदा आब उच्चपाठक प्रश्न पुछब लेल फेर प्रमाणपत्र माँगल जा रहल अछि। हमरा सूत्र बुझैत नहि अछि, तँ प्रश्न तऽ बेसी चाही।” हरिमोहन कहलनि, “प्रश्न पुछबाक निषेध नहि; मूल पोथी छूबाक नियम अलग।” मैथिली, जे प्रूफक प्रति लऽ ओतय पहुँचल छलीह, पुछलीह, “तखन ई दुनू नियम एक पाँतिमे किएक लिखल गेल?”

हरिमोहन अपन पुरान सूची मेजपर राखलनि। ओहिमे प्रारम्भिक अक्षर-पाठ, खुलल प्रश्नबैसार, प्रतिलिपि-पाठ आ नाजुक मूल पाण्डुलिपिक अभ्यास अलग-अलग छल। बादक सूचना मे केवल उच्चपाठक पाँति बचल छल। “संक्षेप करबाक क्रममे गलती भेल,” ओ कहला। बिरसी तखतीपर उँगरीसँ ‘पूर्व’ शब्द छूलीह। “हम जे सीखए चाहैत छी,” ओ कहलीह, “ओहि सँ पहिले पूर्व किछु नहि अछि।” कक्षामे हलुक हँसी उठल, मुदा हरिमोहनक चेहरा गम्भीर रहल।

मैथिली प्रस्ताव रखलीह—खुलल आरम्भिक कक्षा आ प्रश्नबैसारमे प्रवेश लेल जाति, घरक काम, औपचारिक प्रमाणपत्र वा वयस्कक सामाजिक परिचय अनिवार्य नहि; नाजुक मूल पोथीक संग काम करबाक लेल सभ विद्यार्थीक समान सुरक्षा-अभ्यास; उन्नत पाठमे प्रवेश लेल पहिने सीखल कौशल देखएबाक समान अवसर। “जँ अभ्यास चाही, तऽ अभ्यास सीखबाक समयो सार्वजनिक राखू,” ओ कहलीह। हरिमोहन जोड़लनि जे मूल

प्रति पर निरीक्षणक सङ्ख्या सीमित होएत, मुदा ओकर प्रतिलिपि सभक लेल उपलब्ध रहत।

एक सदस्य पुछलनि, “तखन बालक आ वयस्क एक कक्षामे बैसत? बच्चाक सुरक्षाक लेखा?” रुहानी, जे ओतहि बच्चासभक समयसूची लऽ अएने छलीह, स्पष्ट कएलीह— बालकक आयु-अनुकूल कक्षा, सुरक्षित देखरेख, निजी विवरणक मर्यादा आ संरक्षकक सहमति अलग लागू रहत। “सुरक्षा नामपर बालककेँ बाहर नहि रखब; प्रवेश नामपर ओकर सुरक्षित रहबाक शर्त नहि हटाएब,” ओ कहलीह। नया नियममे दुनू अधिकार अलग लिखल गेल।

कबीर पिछला बेंचपर बैसल छलाह। हुनकर संग जन्मसम्बन्धी अपुष्ट मूल गवाहीक प्राप्ति-पत्रक एक बन्द लिफाफा छल; ओ ककरो देखएबाक लेल नहि आनने छलाह। पाठशालाक पुरान प्रपत्रमे ‘पिताक नाम’ अनिवार्य घर छल, आ एक नव छात्रक परिवार ओहि घरक कारण आवेदन टारि देने छल। कबीर पुछलनि, “जँ प्रश्न पूछबाक पहिने ककरो घरक अधूर इतिहास भरब जरूरी अछि, तँ कक्षा प्रमाण जाँचत की बच्चाकेँ परिवारक रहस्य खोलबए बाध्य करत?”

हरिमोहन पुछलनि, “नियम बदललापर छात्रक देखभालक जिम्मेदारी ककरा देब?” कबीर उत्तर देलनि, “देखभालक सम्पर्क, अनुमति आ आपातकालक उत्तरदायी व्यक्ति चाही। ओकरा जन्मक पूरा कथा कहबाक शर्त नहि बनाउ।” सुभद्राक प्रत्यक्ष जन्मगवाही आ पालन करनिहार मायक प्रमाणित श्रमक अन्तर हुनका स्मरण छल; दुनूकेँ एक परिवार-पाँतिमे जबरदस्ती भरब हुनका स्वीकार नहि छल। ओ अपन लिफाफा बन्द राखलनि।

सरिता एहि चर्चा सुनि कहलीह, “अध्ययनक पंजीमे जे न्यूनतम सूचना सुरक्षा लेल आवश्यक अछि, से विद्यार्थी वा उचित अभिभावकक सहमतिसँ लीअ। जन्मपंजीक अलग सरकारी प्रक्रिया एतय सुलझाओल नहि जाएत।” पद्मा कागदपर तीन घर बनौलीह —‘पढ़बाक अधिकार’, ‘सुरक्षित सम्पर्क’, ‘निजी अभिलेख’। ओ कहलीह, “पहिल घरक दुआर दोसर घरक असम्बद्ध जानकारी नहि भेटलासँ बन्द नहि हो।” कबीर सहमति देलनि, मुदा अपना जीवनक कोनो अधोषित निष्कर्ष ओहि सूचनामे जोड़लनि नहि।

दुपहर बाद मैथिली पोथीक भूमिका फेर लऽ अएलीह। ईशानक मूल विवेचन आ हुनकर प्रमाणित सहलेखनक विवरण पहिने छल। सरिताक श्रमक पन्ना तकर बाद, अलग शीर्षकसहित। नीचे ‘लेखकीय त्रुटि आ सुधार’मे मैथिलीक अपन स्वीकृति छल। ओ ई क्रम सरिताकेँ पढ़ि सुनौलीह। सरिता पुछलीह, “हमर नामक आगाँ ‘प्रेरणा’ नहि लिखल?” मैथिली कहलीह, “नहि—जाहि काजक प्रमाण अछि, ओहि काजक नाम अछि। अहाँ हमर प्रेरणा बनबाक मजबूरीमे नहि छी।”

ईशान नव भूमिकाक एक वाक्यपर आपत्ति कएलनि। ओतय लिखल छल जे ‘समस्त उदाहरण सामुदायिक श्रमसँ बनल’। “एहि वाक्यसँ मूल दार्शनिक विवेचनक स्वतंत्र लेखकत्व धुंधला भऽ सकैत अछि,” ओ कहला। मैथिली आपत्ति स्वीकार कएलीह। “समस्त नहि। जकर उदाहरण मूल लिखल अछि, तकरा नामसहित राखू; जकरा हम संशोधित कएलहुँ, तकरा अलग; जकर भौतिक पन्ना सम्हारल गेल, तकर श्रम अलग। एकटा व्यापक प्रशंसा सभक भेद दबा दैत अछि।” ओ वाक्य काटि देलनि।

प्रूफक एक पुरान पन्नामे सरिताक नामक बदला ‘गृहकार्यक व्यवस्था’ छपल छल। रमा कायस्थक संशोधन-बहीमे ओहि पाँतिक विरुद्ध पहिनेसँ एक छोट आपत्ति-दाखिला छल, मुदा ओकर लिखित उत्तर अपूर्ण छल। मैथिली कहलीह, “रमाक आपत्ति पुरान संस्करणक इतिहासमे सुरक्षित रहत। हम आज नाम बदललहुँ, तकरा कारण ओहि आपत्तिक तिथि मेटब नहि।” ईशान पूछलनि जे रमा अपन पत्रक सार्वजनिक प्रतिक अनुमति देने छथि की नहि। पद्मा कहलीह, “सार्वजनिक चर्चा लेल स्वीकारल सार देब; निजी टिप्पणीक मूल प्रति हुनकर अनुमति अनुसार रहत।” एहि तरह एकटा सुधार करैत दोसरक पत्रपर नव अधिकार जताएब रोकल गेल।

हरिमोहन पुरान पाण्डुलिपिक नकलक किनार जाँचैत कहलनि, “अहाँ अपन गलती सार्वजनिक करैत छी, ई ठीक। मुदा एकरासँ ई नहि सिद्ध होएत जे सरिता जे-जे कहथि सभ पर बिना जाँच भरोसा होए।” सरिता उत्तर देलीह, “हमरो एहन भरोसा नहि चाही। हमर कामक साक्ष्य देखू: हमर स्मृति जँ कतहु चूकत तँ लिखू। मुदा हम पढ़ल-लिखल कम छी, तँ हमर देखल बातकेँ पहिले सँ मिथ्या मानब, ईहो न्याय नहि।” हरिमोहन हुनका एक पन्नाक क्रम दोबारा जाँचबाक समय देलनि।

साँझक पूर्वार्धमे खुलल बैसार शुरू भेल। बिरसी नव सूचना-पत्र पढ़लीह। ओहि पर स्पष्ट छल—आरम्भिक पाठ आ प्रश्नबैसार सभक लेल खुलल, उन्नत अध्ययन लेल निःशुल्क कौशल-परीक्षणक अभ्यास, मूल पाण्डुलिपिक सुरक्षित उपयोग लेल समान प्रशिक्षण। फरीद अपन दुकानक समय देखैत पुछलक जे अभ्यास साँझमे सेहो होएत की। हरिमोहन सप्ताहमे दू साँझ निश्चित कएलनि। फरीद कहलक, “तखन हम भोरक हिसाब करि, साँझक अक्षर सीखि सकब।” कियो हुनका परिवारक पेशा बदलबाक उपदेश नहि देलक।

सूचनापट बदलि देब पर्याप्त नहि छल। हरिमोहन ओहि दिन पुरान ‘पूर्व प्रमाणपत्र’वला छपल आवेदनसभ गनलनि। एगारह प्रति बचल छल; पाँच विद्यार्थी एहन पन्ना लऽ घर गेल छलाह। तारा प्रस्ताव देलीह जे हुनका सभकेँ नवल पन्ना पहुँचएबाक खर्च समिति देत, मुदा नाम सार्वजनिक सूचीसँ नहि उठाओल जाएत। जुबैदा अपन सम्पर्कक अनुमति पाएल परिवारधरि सूचना पहुँचेबाक जिम्मेदारी लेलीह। “जकर ठेगाना सुरक्षित नहि,” ओ कहलीह, “ओकरा सार्वजनिक उद्घोषणामे चिन्हित नहि करब।” दू परिवार तुरन्त संशोधित पत्र लेलनि; बाँकी लोकधरि सूचना जाएब शेष रहल।

समितिक सचिव नियमक दोसर अंश पढ़लनि—बालकक संरक्षक-सहमति आ आपातकालीन सम्पर्कक गोपनीय प्रति; सार्वजनिक सूचीमे केवल विद्यार्थी स्वयं स्वीकार कएल नाम; निजी जन्मविवाद, कुलनाम अथवा घरक संवेदनशील कथा प्रवेशक शर्त नहि। एक सदस्य कहलक जे एतबा अलग पन्नासँ काज बढ़त। तारा उत्तर देलीह, “काज बचएबाक लेल निजता तोड़ब तँ फेर ओकर सुधारमे आरो बेसी काज लागत।” नियम मतभेदसहित पारित भेल; असहमत सदस्यक लिखित टिप्पणी सेहो पंजीमे रखल गेल।

कबीरक लिफाफा ओहि दिन खोलल नहि गेल। बैसारक बाद ओ सुभद्राकेँ केवल एतबे खबर देलनि जे पाठशालाक आवेदनमे निजी जन्मकथाक जबरन प्रकाशन रोकबाक नियम मानल गेल। सुभद्रा पुछलीह, “एहिसँ तोहर मूल पंजी भेटत?” कबीर कहलनि, “नहि। ओकर जाँच अपन बाट पर चलत।” सुभद्रा उत्तर देलीह, “तखन आजुक सुधार जे अछि, ताहिकेँ सुधार कहू; ओकरा जन्मक उत्तर नहि बनाउ।” कबीर एहि छोट भेदमे अपन लेल कनी अवकाश अनुभव कएलनि।

सरिता पुस्तकक नव प्रति लेल छापाखानाकेँ लौटलीह। रास्तामे नसीमाक सिएल जिल्दवला एक कागदक गाँठ भेटल, जे सूखए लेल राखल छल। ओ बिना अनुमति खोललीह नहि। हुनका नैराक निजी फोन आ कबीरक अनपठाओल पत्र याद पड़ल। कियो कथा छापब चाहैत अछि, कियो अपन कथा कहबाक अनुमति रोकेत अछि; मृतकक आवाजक नामपर बचल लोकक स्वामित्व चुपचाप लेल नहि जा सकैत। सरिता नव भूमिकाक पन्ना देखैत अनुभव कएलीह जे अपन श्रमक मान्यता आ अपन बेटीकेँ नहि घुरि पायब—दुनू एक साथ सत्य अछि।

पद्मा अन्तिम छापाइ सँ पहिने एकटा छोट सार्वजनिक जाँच करौलीह। उपस्थित लोकसभकेँ भूमिकाक वाक्य तीन रूपमे पढ़ि सुनाओल गेल—मैथिलीक स्वीकार, सरिताक लिखित रूपमे जाँचल काज, आ भुगतान-विवादक वर्तमान स्थिति। एक युवक पुछलक जे जँ सरिताक नाम छपि गेल तऽ हुनकर सभ पुरान दावा स्वतः प्रमाणित भऽ गेल की। सरिता स्वयं कहलीह, “नहि। जे मदक रसीद अछि, ओहि मदक प्रमाण; जे बाँकी अछि ओकर निर्णय बाकी। मुदा जखन हमर हाथसँ काम देखल गेल, तखन हमरा ‘अनाम सेवा’ लिखबाक अधिकार ककरो नहि।” युवक एहि भेदकेँ अपन कापीमे उतारलक।

छापाखानाक मशीन चलबाक पहिने मैथिली छपबाक स्वीकृति-पत्रपर हस्ताक्षर कएलनि। ओहि पत्रमे भूमिकाक संशोधित संस्करण, सरिताक जाँचल श्रमक उल्लेख, मैथिलीक अपन स्वीकार, ईशानक सहलेखन-अभिलेख आ असहमति देबाक आगामी विधि अलग दर्ज छल। सरिता एक प्रति अपन लग राखलीह। मुदा जकर मजदूरीक भुगतान नहि भेटल छल, तकर अगिला सुनवाईक तिथि पुस्तकक प्राप्ति-रसीदपर नहि, श्रम-पंजीमे लिखल गेल। सम्मानक अक्षर नगद रुपैयाक रूप नहि धरिकऽ आयल।

मैथिली चाहैत छलीह जे भूमिका ‘हमर आवाज’ शब्दसँ शुरू हो। प्रूफ पढ़ैत ओ देखलीह जे एहि वाक्यक बाद फेर बहुत बेर ‘हम’ लिखल अछि। ओ पहिल पाँति बदलिए देलीह—‘एहि पुस्तकमे जे लिखल अछि, ताहिमे अनेक लोकक भिन्न प्रकारक श्रम, तर्क आ आपत्ति अछि; प्रत्येकक अधिकार अलग जाँचल जाए।’ तखन अन्तिम पाँतिमे अपन नाम लिखलीह। अपन आवाज पाबए लेल हुनका दोसरक आवाज अपने भीतर मिला कऽ लुप्त करबाक आवश्यकता नहि रहल।

बाहर जतन आ बिरसी अभ्यासक समय पूछबाक लेल आएल छल। छापाखानाक कर्मचारी हँसैत कहलक, “अहाँ दुनू किताबक अगिला संस्करण लिखब?” जतन उत्तर देलक, “पहिने हमरा पहिल पन्ना पढ़ए दिअ।” बिरसी जोड़लक, “आ जँ अक्षर गलत पढ़ब तँ फेर पूछब।” मैथिली हँसि पड़लीह। हरिमोहन ओकरा सभकेँ पाठशालाक नव समय बतौलनि। दुनू बच्चा भीजल बाटपर कूदैत चलि गेल; पोथीक मोट-मोट सिद्धान्त ओहि क्षण हुनकर पयरक गति रोकि नहि सकल।

साँझ सरिता अपन घरमे श्रम-पंजीक प्राप्ति-पत्र आ पुस्तकक नव भूमिका अलग-अलग राखलीह। नैराक छोट कापी अपन निजी सन्दूकमे यथावत् रहल। ओ ककरो पढ़बए लेल नहि निकाललीह। भूमिका छपलाक खबर सुनि कबीर देहरीपर अएलाह। सरिता पुछलीह, “पाठशालाक आवेदनक नियम देखलहुँ?” “देखलहुँ,” ओ कहला, “मुदा जे बच्चा भीतर अएत, ओकरा बसबै लेल मेजक टूटल पाया सेहो बदलबाक अछि।” सरिता मुस्कुरौलीह। “ओहि काजक दाम सेहो हिसाबमे लिखब,” ओ कहलीह।

सन्ध्यापूर्व एक वृद्ध पाठक मैथिलीकेँ चेतौने छलाह, “अहाँ अपन त्रुटि स्वयं छापब तँ लोक सभ पुरान लेखनपर शंका करत।” मैथिली हुनका उत्तर देने छलीह, “प्रश्न करब पाठकक अधिकार अछि। जकर विचार सही अछि, ओ संशोधन सहि सकत। आ जकर नाम छूटल, ओ शंका न उठबाक डर सँ सदाक लेल नहि छूटत।” वृद्ध तुरन्त सहमत नहि भेलाह; ओ अपन आपत्ति छापाखानाक पंजीमे लिखि देलनि। मैथिली ओकरा काटलीह नहि। नव पोथीक भीतर असहमतिपर शिक्का लगाबऽक बदला उत्तर देबाक ठाम बनि रहल छल।

रातिमे मैथिली छपल पहिल पन्ना खोललीह। हुनकर अपना नामक संग हुनकर दोषक स्वीकृति छपल छल; सरिताक श्रमक सूची छल, भुगतानक अपूर्ण स्थिति स्पष्ट छल। ओहि पन्नाक हाशियामे अगिला संशोधनक लेल छोट जगह छोड़ल गेल छल। ओ मोमबत्ती निभाएबासँ पहिने खिड़कीक पार पाठशालाक अन्हार आँगन देखलीह। कियो एखन ओहि आँगनमे नहि छल; काल्हि बच्चासभ आएत। आगू नैराक खाली जगह छल, जे कोनो भूमिका भरि नहि सकैत छल। मुदा आजु एकटा बन्द दरबज्जाक अड़चन सचमुच हटायल गेल छल।

अध्याय २१४ • नैराक खाली जगह

सरिता पुरान पीतल थारीक कातसँ चिपकल चाउरक एक दाना नोंचि हटा देलीह। थारी भोजनक लेल नहि, घाटपर काज करए आएल लोकक बीच साफ कपड़ा राखबाक लेल चाही छल। सन्दूकक ऊपर नैराक छोट कापी यथावत् बन्द छल। काल्हिक छपल पुस्तकमे सरिताक श्रमक नाम आबि गेल छल, मुदा घरक एहि कोनमे जे खालिपन छल, ओकर एकोटा अक्षर कम नहि भेल। ओ थारी उठौलीह आ बाहर निकललीह। कार्तिकक हवा घाटक बाटपर पातर धूलि उड़ा रहल छल।

२०४२क घाट-आदर आ जलस्वच्छताक दिन छल। एहि बेर पहिल योजना रहल—गीत, दीप आ सफाईक पहिने ढलानक टूटल सीढ़ी चिन्हब; धोअनिहार लोकक गट्टर ढोएबाक बाट आ स्नान करएबला परिवारक बाट अलग नापब। गोमती बेलदार माटिक किनारमे गाड़ल बाँसक छोट खूँटी गनैत छलीह। तारा हुनकर नाप लिखैत छलीह। एक ओर उर्मिलाक पुरान कपड़ा-धोनाइक ठाम छल। ओतय एखन दोसर स्त्री अपन गठरी राखने छलीह, मुदा उर्मिला नहि छलीह। कियो ओकरा प्रतीक्षामे नहि छल, कारण सभ जानैत छल जे ओ मरि चुकलीह।

रुखसाना पानीक घैल रखैत कहलीह, “उर्मिला रहितथि तँ एहि ढलानपर पहिने हमरा सभकेँ डाँटितथि। कहितथि, झंडा गाड़ए सँ पहिने पयर धरबाक जगह बनाउ।” रेणु कहलनि, “आ डाँटि कऽ फेर अपने पयरसँ बाटक चौड़ाइ नापितथि।” दू स्त्री हँसलीह। सरिता सेहो हँसबाक कोशिश कएलीह, मुदा हँसी अधेमे थमकि गेल। उर्मिलाक स्मृति माटिमे जड़ि गेल कोनो स्थायी प्रतिमा नहि छल; ओ काजक एक ठोस विधि छल, जकरा बिना घाट फेर सँ सँकर होएत।

पद्मा आयोजकक रजिस्टर खोललीह। एक पन्ना ‘आजुक श्रम’ लेल, दोसर ‘पुरान बकाया’ लेल। उर्मिलाक परिवारक रातिक धुलाई, कपड़ा ढुलाई आ यातायातक अपूर्ण देय दोसर पन्नामे छल। एक नव स्वयंसेवक पूछलक, “पर्वक दिन ई हिसाब पढ़ब जरूरी अछि की? लोकक मन भारी भऽ जायत।” गोमती उत्तर देलीह, “हिसाब नहि पढ़ब तँ

मजदूरक मन हलुक भऽ जायत?” स्वयंसेवक असहज भेल, मुदा रजिस्टरक दू पन्ना एकमे मिलाबए नहि देलक।

कबीर घाटपर सबसँ देरीसँ अएलाह। हाथमे बाँसक एक सीधा टुकड़ा आ सूत छल; स्कूलक टूल मेजक पाया नापबासँ बचल सामानसँ ओ घाटक अस्थायी सावधानी-चिह्न बनबैत छलाह। सरिता पुछलीह, “भोरसँ किछु खेलहुँ?” कबीर कहलनि, “रस्तामे चिउरा खा लेलहुँ।” ओ पूछलीह नहि जे नैराक स्मृतिमे हुनकर राति कोना कटल। ओहो सरिताक आँखिसँ एहि प्रश्नक उत्तर खींचबाक चेष्टा नहि कएलनि। दुनू बाँसक टुकड़ा धरि सीढ़ीक किनार चिन्हबए लागलाह।

संकेत कैमरा लऽ पहुँचल। ओकरा पहिल चित्रमे खुलल पानि, दोसरमे श्रमिकक हाथ, तेसरमे घाटक असुरक्षित पाथर लेबाक मन छल। तारा ओकरा रोकलीह। “हाथक चित्र लेबासँ पहिने हाथक मालिकसँ पुछ,” ओ कहलीह। संकेत हँसि कहलक, “ई बात हमरा नैरा जखन-तखन कहैत छलीह।” तारा उत्तर देलीह, “तोरा नैराक बात याद अछि, हमरा एतबा याद अछि जे ओ सभ बेर एके बात नहि कहैत छलीह। कखनो ओ स्वयं फोटो लेबाक जल्दीमे रहैत छलीह, फेर गलती बुझि माफी माँगैत छलीह।” संकेत कैमरा नीचाँ कऽ लेलक।

सरिता दुनूकेँ सुनैत रहलीह। हुनका याद छल जे नैरा कखनो कपड़ाक तह नीकसँ नहि लगा पबैत छलीह। जल्दीमे एक किनार भीतर मोड़ि देतीह, दोसर बाहर निकलि रहैत। ओ बचपनक घटना नहि, पछिला वर्षक काजक एक सामान्य दिनक स्मृति छल। सरिता ओकरा सिखौने छलीह, “जँ सुखल कपड़ा एना मोड़ब, फेर धूलि भीतर जायत।” नैरा हँसि कहने छलीह, “तखन फेर खोलि कऽ मोड़ब।” सरिता एहि छोट हँसीकेँ देवीक उपदेश नहि बनबए चाहैत छलीह। ओ बस एक मनुष्यक अपूर्ण कौशल आ अपन मायक हलुक चिड़चिड़ाहट याद करैत छलीह।

“अहाँ चाहैत छी जे आयोजनक पत्रमे नैराक नाम लिखी?” पद्मा पुछलीह। सरिता कने देर सोचलीह। “नाम रहए,” ओ कहलीह, “मुदा जकर काजक प्रमाण अछि, तकरा ओहि रूपमे। जे बात हम अपन बेटी होएबाक नातेसँ याद करैत छी, ओकरा सभक सार्वजनिक स्मृति घोषित नहि करू।” पद्मा दू पाँति अलग लिखलीह—मृत व्यक्तिक सत्यापित

काजक उल्लेख, आ परिवारक निजी स्मृति। फोटो, निजी फोन आ कापीक विषय तेसर बंद पन्नामे रहत, सार्वजनिक सूचीमे नहि।

घाटक ऊपरी सीढ़ीपर एक किशोरी अपन मायक संग झाड़ू लगबैत छलीह। ओ पूछलक, “खाली ठामक फोटो खींचला सँ कोनो व्यक्ति देखाइत अछि?” संकेत कहलक, “नहि। केवल जे ठाम खाली अछि, ओ देखाइत अछि। फोटो देखनिहार अपन मनसँ अर्थ जोड़ि सकैत अछि।” किशोरी फेर पूछलक, “तखन नाम लिखब जरूरी अछि की?” सरिता उत्तर देलीह, “कखनो जरूरी, कखनो नहि। तोहर माय जे काज करैत छथि, ओकर मेहनताना लेल नाम जरूरी होएत; हुनकर निजी दुखक कथा लेल नहि।” किशोरी फेर झाड़ू चलौलक।

घाटक नीचला पाटपर पानी जमा छल। रेणु घुटना धरि पानि जाए बिना लकड़ीक दण्डसँ गहिराइ नपलीह। ओहि ठामक ढीला पाथर हटाए बिना लोक-पाठ लेल बैसबाक प्रस्ताव आयल छल। गोमती विरोध कएलीह। “भाषण ऊपर होएत,” ओ कहलीह, “जकरा काज करबाक अछि ओकर नीचे आबएबाक बाट सुरक्षित हो।” दू युवक झुँझला गेल—ओहि पाथर हटबएबामे समय लागत। मुदा जखन भारी कपड़ाक गठरी लऽ एक स्त्री फिसलए लगलीह, सभक ध्यान एकाएक ओहि बाटपर गेल। छोट रस्सी खींचि अस्थायी रोक लगाओल गेल; मरम्मतक तिथि अलग लिखल गेल।

दुपहरक लगोलग अनुपमा सेन एक सूती झोरामे तीन कागद लऽ अएलीह। ओ सरिताकेँ चिन्हि कऽ ठाढ़ भेलीह। “नैरासँ पहिने हम एतय पुरान पत्रक बात कएने रही,” ओ कहलीह। “ओ हमार कागद नहिये खोलने छलीह; पहिने अनुमति पुछने छलीह।” सरिता हुनकर झोरा देखलीह, मुदा स्पर्श नहि कएलीह। अनुपमा कहलीह, “आज ओकरा याद कऽ चिट्ठी सार्वजनिक करए नहि अएली छी। एकटा पुरान पुस्तक-मरम्मतक खर्चक दू पाँति साझा करबाक प्रस्ताव लऽ अएली छी।”

अनुपमाक नानीक बंगाली पत्रक मूल प्रति हुनकर घरक सन्दूकमे सुरक्षित छल। ओ आज मूल नहि, परिवारसँ अनुमति मिलल सीमित नकल लऽ अएलीह। नकलमे पुरान आश्रय-विद्यालयक पुस्तक-मरम्मतक मद, तिथि आ खर्चक राशि छल; घरक पता, घरेलू सम्बन्धक निजी उल्लेख आ जीवित वंशजसभक नाम झाँपल छल। सरिता पुछलीह,

“जकर नाम झाँपल अछि, तकरा बिना फेर कोना जाँच होएत?” अनुपमा कहलीह, “जाँच लेल अनुमति-पाओल संरक्षक मूल देखताह। सभा लेल एतबा पर्याप्त अछि।”

पद्मा ओहि पन्नापर लेखनक मूल भाषा, नकल बनबाक दिन आ उपयोगक सीमा लिखए कहलीह। एक प्रतिनिधि कहलक, “एहन पत्र सभ जनक सम्पत्ति बनि जायत तँ इतिहास नीक होएत।” अनुपमा पाछाँ हटलिह। “इतिहासक काज लेल जे पाँति चुनलहुँ, ओकर प्रति देब,” ओ कहलीह, “मुदा नानीक घरक निजी वचन आ दोसरक व्यक्तिगत बातपर हम एतय भीड़कें मालिक नहि बनौने छी। जकर पत्र हमर संरक्षणमे अछि, ओकर हर अक्षर हमरो निजी इच्छासँ अकेले नहि बेचि सकैत छी; पत्रमे दोसर लोकक जीवन सेहो अछि।”

संकेत पत्रक फोटो लेल कैमरा उठौलक, फेर अनुपमाक चेहरा देखि ओकरा नीचाँ रखलक। “एहि नकलक फोटो लेबाक अनुमति अछि?” अनुपमा उत्तर देलीह, “अहाँ उपयोग लिखू पहिने। मरम्मतक दू पाँति शोधक प्रतिमे चलत; हमर झोराक भीतरक बाँकी कागदक चित्र नहि। प्रचारक मंचपर हमरा परिवारक नाम छापब नहि।” संकेत अपन कापीमे ई शर्त लिखलक। तारा ध्यान देलीह जे एके पत्रक नकल देबाक सहमति आ ओकर फोटो दूर-दूर पसारबाक सहमति समान नहि।

सरिता पत्रमे नैराक छुअल पुरान मेजक गन्ध खोजए नहि लगलीह। हुनका याद आयल जे ओहि दिन नैरा अनुपमाकेँ अलग ठाम बैसए देनिहार छलीह। मुदा ओ ई नहि कहलीह जे नैरा अनुपमाक मन बुझि लेने छलीह। “ओ कागद बिना अनुमति नहि खोललनि,” सरिता कहलीह, “एतबे हम सुनलहुँ आ जकरा देखलहुँ तकरा कहि सकैत छी। ओ अहाँक चिट्ठीक सभ परिणाम जानैत छलीह—ई हम नहि कहब।” अनुपमा सिर हिलौलीह; हुनका एहि सीमित उत्तरमे सहारा भेटल।

तखने एक स्थानीय आयोजक रंगीन कागद पर बनल प्रस्ताव देखौलक। शीर्षक छल—‘नैरा: घाटक अमर रक्षक’। नीचाँ संकेतक एक पुरान तस्वीरक जगह छोड़ल छल, संगहि एक वाक्य—‘ओ सभ किछु पहिने सँ देखैत छलीह।’ आयोजकक स्वरमे उत्साह छल। “एहि शीर्षकसँ बाहरी सहयोग भेटत,” ओ कहलक। सरिता कागद अपन हाथमे लेलीह। किछु क्षण ओ केवल खाली चित्रक चौखट देखलीह। फेर कहलीह, “ओ हमर बेटी

छलीह, घाटक अमर रक्षक नहि। ओ जे नहि देखलनि, से नहि देखलनि। एहन नामपर चन्दा नहि उठाउ।”

आयोजक कहलक, “हम सम्मान करए चाहैत छी।” कबीर ओतहि ठाढ़ छलाह। “सम्मानक लेल झूठ बनाबए किएक चाही?” ओ पुछलनि। “ओ हमरा संग बहस करैत छलीह; कखनो हमरा बात अधेमे काटि देत छलीह। हमहुँ हुनका दुख देने होएब। अहाँ जँ लिखब जे ओ सभक मन सधनिहार छलीह तँ हम अपना स्मृतिकेँ कतय रखब?” आयोजकक उत्तर तुरन्त नहि भेटल। रुखसाना धीर स्वरमे कहलीह, “भोजक दानक पर्ची पर नेनासभक मृत्यु बिकाएब आवश्यक नहि।”

सरिता प्रस्ताव फाइलीह नहि। ओ कहलीह, “एहि कागदक त्रुटि लेखापंजीमे दर्ज करू। जे चन्दा एहन शीर्षक देखि आएल होएत, ओकर स्रोत आ शर्त जाँचू; जाहि लोककेँ झूठ कथा कहि रूपैया लेल गेल, ओकरा सही सूचना पहुँचाउ।” तारा प्रस्तावक खाली चित्र-चौखटक सामने ‘प्रकाशन-अनुमति नहि’ लिखि देलीह। कार्यक्रमक व्यय-पन्ना अलग राखल गेल, जाहिसँ कोनो आवश्यक घाट-मरम्मत केवल एक गलत प्रचारपत्र हटलासँ ठप्प नहि पड़य।

संकेत कने दूर जा कऽ कैमरा बन्द कएलक। ओकरा याद पड़ल जे नैरा एक दिन चित्रक कात लिखल नामक मात्रा सुधारलनि, मुदा ओहि दिन ओ स्वयं एक श्रमिकक पूरा नाम पूछब बिसरि गेल छल। बादमे जब ओ गलती पर आपत्ति उठल तखन नैरा क्षमा माँगने छलीह। संकेत ई घटना कहलक, तारा मुस्कुरेलीह। “हमरा ओहि दिनक दोसर हिस्सा याद अछि,” तारा कहलीह, “ओ तुरन्त नब फोटो नहि लेलक; पहिने काम रुकने समयक हिसाब पूछने छलीह।” दुनू स्मृति एक-दोसरकेँ काटैत नहि छल; एक घटना मे हुनका दुनूकेँ भिन्न दोष आ भिन्न सुधार देखाइत छल।

कबीर घाट सँ ऊपर चाय लेबए गेलाह। दुकानदार पूछलक, “आज सभ चुप किएक अछि?” कबीर कहलनि, “चुप नहि, कामक बीच छी।” दुकानदार नून कम पड़ल चिउराक कटोरी देलक आ हाँसि कहलक, “चायमे नून तऽ नहि!” कबीर पहिल बेर जोर सँ हँसलाह। हुनका नैरा संग भेल एक पुरान साधारण तकरार याद अएल, जेकरा दोहराबए उचित शब्द

हुनका लग नहि छल। ओ अपन ओहि हँसीकेँ स्मारकक मंचक भाषण नहि बनौलनि; एक व्यक्ति अपन अकेल दिनमे हँसि रहल छल।

चायसँ घुरैत ओ सरिताकेँ खाली पाथरक सीढ़ीपर बैसल देखलनि। “हमर पत्र एखनहुँ अनपठाओल अछि,” ओ कहला। सरिता हुनका दिस नहि तकलीह। “रहए दिअ,” ओ कहलीह। कबीर फेर कहलनि, “कखनो मन होइत अछि जे ओकरा पढ़ि सुनाबी, आ बुझी जे ओ की कहितथि।” सरिता उत्तर देलीह, “ओ उत्तर नहि दऽ सकैत छलीह। अहाँ लिखल बात अहाँक अछि; ओकर नामपर जवाब हम नहि बनायब।” कबीर अपन जेब थपथपौलनि, जतय ओहि दिन पत्र नहि छल।

सरिता अपन स्मृतिक दोसर बात कहलीह। “हम कखनो नैरासँ नाराज होइत रही। ओ अपन काममे लगि घरक काजक बेर भूलि जाइत छलीह। तखन हम कहैत रही—पहिने भातक देग देख। ओ उत्तर दैत छलीह जे देग ककरो नामपर अधिकार नहि लिखैत। हमरा तखन ओ उत्तर नीक नहि लगैत छल।” कबीर कहला, “आइ सुनैत नीक लगैत अछि?” सरिता कहलनि, “आइ सुनबाक लेल ओ नहि अछि। तें काल्हिक झगड़ा सेहो हमरा याद करबाक अधिकार अछि।”

दुपहरक नाप फेर शुरू भेल। घाटमे धोनाइक स्थायी बाट आ पूजा लेल अस्थायी सजावट एकै जगह चाहनिहार दू समूहक बीच मतभेद उठल। तारा पुरान नक्शा खोललीह। उर्मिला जखन जीवित छलीह तखन कपड़ाक गठरी लऽ बाट चलि सँकर ठाम देखौने छलीह—ओहि नापसँ मेल खाइत पुरान चिन्ह उपलब्ध छल। मुदा नव वर्षक माटि बदलल छल। गोमती कहलीह, “पुरान साक्षीकेँ सम्मान करब, मुदा आजुक पयरसँ फेर नापब।” दू मजदूर नब नाप लेलनि; सजावट दू पयर पाछाँ सरकाओल गेल।

एक सदस्य प्रस्ताव देलक जे उर्मिलाक नामपर घाटक एकटा हिस्सा स्थायी राखि देल जाए। हुनकर परिवारक प्रतिनिधि, जे आज कामक बीच आएल छलाह, कहलनि, “नाम रखबासँ आपत्ति नहि; मुदा रातिक धुलाईक जे देय बाकी अछि, तकर तारीख आ जिम्मेदार पंजीमे रहए।” पद्मा पहिनुक देय पन्ना देखौलीह। भुगतानक एक हिस्सा पहिने मिलल छल, शेष विवादित मदक सुनवाई बाकी छल। आजुक सामूहिक समारोह तकर न्यायिक

निपटारा नहि छल। प्रतिनिधि नामावलीक सावधानीपूर्वक शब्दक अनुमति देलनि, मुदा रकम माफ नहि कएलनि।

गीत शुरू होएबाक समय रुखसाना पूछलीह जे नैराक नाम गायकसभक सूचीमे जोड़ि देल जाए की। सरिता कहलीह, “जकर गीत ओ लिखलनि, ओकर प्रमाण होए तखन। आज जे गबैत छथि, हुनकर नाम आज लिखू।” फूलमती पमरिया अपन स्वीकृत पदक धुन उठौलीह। करीम डफालीक ताल आ घाट साफ करएबला स्त्रीसभक स्वर एक-दोसरसँ मिलि रहल छल, मुदा कोनो मरणोत्तर नाम झूठ सृजनक श्रेय बनि नहि उठल। गीतक बीच दू बच्चा ताल भुलि एक-दोसरकेँ देखे हँसि पड़ल।

अनुपमा अपन अनुमति-पत्रपर अन्तिम फेरबदल करए लगलीह। पहिल प्रारूपमे लिखल छल—‘साझा प्रति सार्वजनिक हितमे’। ओ ‘सार्वजनिक हित’क जगह तीन स्पष्ट प्रयोजन लिखबए चाहलीह: विद्यालयक मरम्मत-व्ययक इतिहास जाँच, स्रोतक भाषिक पाठ, आ सीमित अनुसन्धान-प्रति। कियो पत्रक पूरा फोटो प्रचारक जालस्थलपर नहि रखत; मूल ककरा लग अछि से संरक्षण-पंजीमे रहत; निजी पाँति दबा राखल जायत। “ई नियम बदलबाक आवश्यकता भेल तँ फेर हमरा पुछू,” ओ कहलीह। पद्मा तारीख लिखलीह, अनुपमा हस्ताक्षर कएलनि।

संकेत पुछलक, “जँ अनुमति-पत्रक एक प्रति हमरा लग, एक तारा लग, एक अनुपमा लग रहत, तखन कोन प्रति ठीक?” तारा उत्तर देलीह, “अहिले मूल सहमति-पत्रक सत्यापित नकल तीनू लग राखब। मुदा हर ठामक नव संशोधन कोना मेल खाएत, से अगिला बैसारमे तय करबाक अछि।” पद्मा एहि अपूर्ण प्रश्नकेँ छुपौलीह नहि। समुदायक बीच प्रति पसारब निजी पत्रक बन्द दरबज्जा खोलबाक अधिकार नहि छल, आ एकमे मात्र अभिलेख राखब फेर एकाधिकार बना सकैत छल।

घाटक ऊपरी चबूतरेपर एक युवा स्वयंसेवक छायाल झाड़क नीचाँ बैसि भाड़ाक हिसाब जोड़ैत छल। ओ सरितासँ कहलक, “अहाँक बेटी नहि रहलीह, तइयो अहाँ आज एतय आएल छी। बहुत साहस अछि।” सरिता ओकरा पानि देलीह। “हम एतय आएल छी कारण ई बाटपर लोक फिसलैत अछि,” ओ कहलीह, “आ कारण घरमे बैसलासँ नैरा घुरि नहि औतीह। अहाँ हमरा बहादुर कहब तऽ काल्हि हमरा रोएबाक ठाम कतय रहत?” युवक

अपन पन्ना बन्द कएलक। “हम गलत बुझलहुँ,” ओ कहलक। सरिता उत्तर देलीह,
“बुझबाक काज सभक बाकी रहैत अछि।”

साँझ होइत पानि कने नीचाँ गेल। सफाईक माटि अलग ढेरीमे राखल गेल, जकरा
किनार तकने बच्चे केँ कहि देल गेल जे ओ खेलक जगह नहि। आजुक घण्टाक हाजिरी
पढ़ल गेल; छुटल नाम लेल सुधारक समय घोषित भेल। उर्मिलाक पुरान मजदूरी आजुक
हाजिरीमे जोड़ल नहि गेल। अनुपमाक साझा पन्ना सीलबन्द लिफाफामे सार्वजनिक
उपयोगक शर्तसहित जमा भेल; निजी पत्र हुनका अपने घर घुरल। संकेत कैमराबाट केवल
अनुमति भेटल घाटक असुरक्षित ढलानक तस्वीर देलक।

लोक घुरए लागल तखन तारा पुरान समारोहक एक फोटो सरिताकेँ देखौलीह। ओकर
पाछू भीड़मे कियो नैरा अछि की नहि, स्पष्ट नहि छल। तारा कहलीह, “हमरो यादमे ओहि
दिन ओ एतय छलीह, मुदा फोटोमे चिन्हि नहि पाबैत छी।” सरिता तस्वीर दूरसँ देखलीह।
“तखन नैराक नाम नहि लिखू,” ओ उत्तर देलीह। “तोर याद तोर अपन अछि; एहन
फोटोमे जे स्पष्ट नहि, ओकरा साफ बनएबाक लेल हम अपना इच्छा नहि जोड़ब।” तारा
फोटो बन्द कएलीह। एहि बातसँ हुनकर स्मृति छोट नहि भेल।

कबीर घाट छोड़बाक पहिने बँचल बाँसक टुकड़ा उठौलनि। सरिता पुछलीह, “एकरा घर
लऽ जाएब?” “पाठशालाक मेजक पाया लेल ठीक होएत,” ओ कहल। संकेत हँसि
कहलक, “दुनू ठाम माप बराबर रहत?” कबीर बाँस फेर नापलनि। “नहि। फेर काटब,”
ओ कहल। एहि साधारण उत्तरपर तारा हँसलीह। अनुपमाक लिफाफा, उर्मिलाक बकाया
आ नैराक अनुपस्थिति अपन-अपन स्थानपर रहल; तथापि एक मेजक पाया सचमुच ठीक
होएबाक सम्भावना छल।

राति सरिता घर घुरलीह। नैराक कापी अपन सन्दूकमे बन्द छल; कबीरक अनपठाओल
पत्र हुनकर अपने लग अलग सुरक्षित छल; फोनक निजी सन्देशसभपर प्रकाशनक कोनो
नव अनुमति नहि बनल। ओ थारी धोएबासँ पहिने ओकर तलमे जमल माटि पानीसँ हटा
देलीह। घाटपर आज लोक उर्मिलाक बाट फेर नापने छलाह, अनुपमा पत्रक दू पाँति
बाँटलनि, चारि लोक नैराकेँ चारि तरहसँ स्मरण कएने छल। एहि सभमे नैराक मृत्यु

बदलल नहि छल। थारी धुलि गेल, ओ सुखए लेल रखलीह। खाली जगहकें ओ कोनो नव
नाम नहि देलीह।

अध्याय २१५ • वितरित अभिलेख

गोमती बेलदार पोखरिक कात राखल काठक पटरीपर उज्जर खडियासँ एक छोट रेखा खींचलीह। रेखा नापबाक छल, नाम लिखबाक नहि। ई २०४२क चैत्रक भोर छल; चारि वर्षमे चौठ बेर सामूहिक उराहि शुरू होए जा रहल छल। भोरुक हवा सँ पोखरिक पुरान पाँकक गन्ध उठैत छल; कोनो कोनमे मखानक सूखल डाँट अटकल छल। गोमती बाँसक छड़ी गाड़ि कऽ देखौलीह, “एहि किनारमे टोपरी भरि कऽ पाँक उठाएब, मुदा एतय पयर धसत। पहिने बाटक पाट बनाउ।” एक नव मजदूर पुछलक, “नामक सूची पहिने भरब कि पाट?” गोमती उत्तर देलीह, “जकर पयर फँसत ओकर नाम लिखलासँ पयर नहि बाँचत।”

पाठशालाक दुआरपर तारा तीन रंगक पन्ना लऽ ठाढ़ छलीह। खुलल हिसाब लेल उज्जर, अनुमतिप्राप्त जाँच लेल नील, निजी विवरण लेल मटिआ रंगक आवरण। संकेत कैमरा लऽ अएल तँ ओ पहिने पुछलक, “उज्जर पन्ना देखल जा सकत, तकर फोटो सेहो?” तारा कहलीह, “देखबाक अधिकार आ दूर पसारबाक अधिकार एके नहि। आइ जे नियम बनत, ओहिपर मतदान होएत; तावत् कैमरा केवल पोखरिक खराब किनार नापबाक लेल।” संकेत कैमरा अपन झोरामे रखलक। ओकरा पिछला सप्ताह अनुपमा सेनक पत्रक दू पाँति याद अएल; नकल देबाक अनुमति पूरे पत्रक प्रकाशन नहि छल।

सरिता छोट लोटामे पानि लऽ पहुँचल छलीह। नैराक कापी घरक सन्दूकमे बन्द छल; आइ ओकरा खोलबाक कोनो आवश्यकता नहि छल। पोखरिक काम शुरू करनिहार सभक लेल ओ पानि रखलीह, फेर अपन नाम कामक पंजीमे लिखेलीह। गोमती हँसलीह, “अहाँ अपन घण्टा सेहो गनाएब?” सरिता कहलीह, “जे घण्टा काज करब, तकर हिसाब राखब। मुदा अपने नाम लिखला मात्रसँ आज मजदूरी लेबाक निर्णय नहि भेल। पहिने कामक रूप आ दर तय हो।” हाजिरी-पन्नाक पहिल घर खाली रखल गेल, जाहिमे लिखल छल—कामक आरम्भक वास्तविक समय।

नगर कार्यालयसँ रमा कर्ण दू सूती फीतासँ बाँधल फाइल लऽ अएलीह। पुरान कागदक किनार पीयर छल, मुदा ऊपरक तारीख आ प्राप्ति-अंक पढ़ल जा सकैत छल। रमा फाइल खोलबाक पहिने कहलीह, “ई मूल सरकारी पंजी नहि। ई हमर तखनक लिखित आपत्ति,

ओकर प्राप्ति-प्रति आ सुधारक अनुरोधक प्रमाणित नकल थिक। मूल कागद कानून अनुसार कार्यालयमे रहत। हम ओहि ठामक रखवाली छोड़ि एहि ठाम दोसर मालिक नहि बना सकैत छी।” एक युवक तुरन्त कहलक, “तखन समुदाय लग सत्य कोना रहत?” रमा जवाब देलीह, “सत्य केवल अलमारीक चाभी नहि; मूल कतय अछि, कखन बदलल, के अनुमति देलक, आ बदलल पन्नाक पुरान रूप कतय बचल—ई सभ देखबाक बात चाही।”

रमाक फाइलमे ओहि वर्षक घटना लिखल छल जखन एक अधिकारीक निजी आग्रहपर सरिताक परिचय चुपचाप बदलएबाक दबाव आएल छल। रमा लिखित आदेश माँगि बिना हस्ताक्षर कोनो नब प्रविष्टि नहि कएने छलीह। आपत्तिक एक प्रति कार्यालयक मुहरसहित बचल छल; दोसर पर हुनकर हाथक टिप्पणी छल—‘मौखिक दबाव स्वीकार नहि’। ओ टिप्पणी पढ़ैत रमा क्षणभरि थमकलीह। “तखन हमरा डर लागल छल,” ओ कहलीह, “नौकरीक सेहो, आ एहि बातक सेहो जे हमर हाथसँ कोनो जीवित व्यक्तिक परिचय फेर बिगड़त। आइ एकरा वीरताक कथा नहि बनाउ। हमरा सहकर्मीक नाम बिना अनुमति एहि पन्नामे जोड़ल गेल तँ ओही पुरान दोष फेर होएत।”

सभाक कात ठाढ़ छपाइ-कम्पनीक प्रतिनिधि एक चमकदार प्रस्तावपत्र निकाललक। ओ कहलनि जे सभ प्रति एक सुरक्षित भण्डारमे रहत तँ फेर गुम नहि होएत; सदस्यकेँ मोबाइलपर प्रमाणपत्र तुरंत भेटत। “काल्हि नेटवर्क बन्द भेल तँ हमर मजदूरीक घण्टा के देखाओत?” ओ पुछलीह। प्रतिनिधि कहलनि, “कार्यालयसँ अनुरोध कएल जा सकत।” रमा फेर प्रश्न कएलीह, “आ जकरा शुल्क देबाक सामर्थ्य नहि, अथवा जे निजी परिचय कम्पनीकेँ नहि सौंपय चाहय, तकर पुरान पर्ची तक पहुँच बन्द होएत?” प्रतिनिधिक उत्तर प्रस्तावपत्रमे नहि छल। ओ कहलक जे मुख्य दफ्तरसँ पुछि सकैत अछि। प्रस्ताव तत्काल स्वीकृत नहि भेल।

बरकी पोखरिक तेसर किनारपर पहिल टोपरी उठतहि एक मजदूरक चप्पलक पट्टा टूटि गेल। सरिता ओकरा बैसए देलीह; गोमती दू लोककेँ सुरक्षित पाट पूरा करए पठौलीह। पाट बनला बिना द्रुत काम शुरू करबाक आग्रह करनिहार ठेकेदारक मुंशी नाराज भेल। “आइ देर भेल तँ पूरा कार्यक्रम पाछाँ खसकत,” ओ कहलक। गोमती उत्तर देलीह, “घण्टा

नापबाक घड़ी एतय चलत, ठेकेदारक मनमे नहि। सुरक्षा लेल रोकल समय अलग दर्ज होएत; मजदूरकेँ खाली प्रतीक्षामे ठाढ़ रखि अदृश्य नहि बनाउ।” तारा नील पन्नामे सुरक्षा-विरामक समय लिखलीह; सार्वजनिक पन्नामे केवल कुल विराम आ कारण रखल गेल।

दुपहरिसँ पहिने मजदूरसभक हाजिरी मिलाओल गेल। प्रत्येक व्यक्तिक अपने लग छोट क्रमाङ्कित पर्ची छल, जकर पाछाँ आरम्भक समय, विश्राम आ वास्तविक कामक अवधि लिखल जा रहल छल। खुलल फलकपर कामक टोली, कुल घण्टा, लागू दर आ भुगतानक देय राशि छल; निजी फोन, घरेलू पता अथवा बैंकक संख्या नहि। एक वृद्धा पुछलीह, “हम अपन नाम खुलल फलकपर चाहैत छी, तकरा रोकब किएक?” तारा उत्तर देलीह, “अहाँक नाम अहाँक अनुमति सँ रहि सकत। जकरा घरेलू हिंसाक डर अछि अथवा जे अपन ठाम सार्वजनिक नहि चाहैत, ओकर अधिकार सेहो समान।” वृद्धा अपन नाम छापबाक घरमे सहमति-चिह्न कएलीह, बगलमे बैसल युवती ओ घर खाली छोड़लीह। दुनू समान घण्टाक हकदार छलीह।

उराहिक कात माछ पकड़निहार रमणी बिन्द पानि फेंकबाक अस्थायी नाला देखलीह। “ई बाट सँ पाँक गेल तँ काल्हि माछक जाल अटकत,” ओ कहलीह। रमणी झट् उत्तर देलीह, “चारि बेर सफाई भेला सँ चारि बेर अलग पानि एके नहि भऽ गेल।” फेर स्थलपर नाप भेल, निकासीक दू ठाम बदलल गेल। सार्वजनिक कामक पन्नामे कारण लिखल गेल, मुदा रमणीक मायकेक निजी पत्र अथवा ओहिमे प्रयुक्त गाँगीक पुरान नाम एहि नाप-पत्रक प्रमाण नहि बनल। साक्षीक मर्यादा बचेला सँ आजुक निर्णय कमजोर नहि भेल।

पाठशालामे रमा अपन फाइलक तीन प्रति सामने रखलीह। पहिल कार्यालयक प्राप्ति-संख्या देखबैत छल, दोसर सरिताक पुरान आपत्तिक सार्वजनिक सार, तेसर रमा अपने लिखने अस्वीकारक मूल टिप्पणीक सीमित नकल। तारा प्रश्न कएलीह, “जँ बादमे कियो सार्वजनिक सार बदलि देत तँ कोना चिन्हब?” संकेत कहलक, “हरेक प्रतिपर संशोधनक तिथि, पुरान क्रमाङ्क आ नकल बनौनिहारक नाम राखू; दू ठाम अलग-अलग राखू। भिन्नता भेटत तँ मूल जारी करनिहारक पंजीसँ फेर मिलान।” पद्मा जोड़लीह, “आ जकर

आपत्ति-पत्र निजी अछि, ओकर मूल दिखाबए सँ पहिने ओ व्यक्ति क अनुमति चाही।
सत्यापनक नामपर सभक घरक दुआर नहि तोड़ब।”

एक स्वयंसेवक कहलक, “ई बहुत धीमा उपाय भेल। एकहि फाइल सँ काम सरल होइत।” “सरलता ककरा लेल?” ओ पूछलीह। “अधिकारी लेल जे बदलल प्रविष्टि पर अपन मोहर मारत? मजदूर लेल जे काल्हि गलत भुगतान देखत? एक कम्पनी लेल जे दोसरकेँ प्रति देबाक मूल्य तय करत?” ओ फेर सधल स्वरमे कहलीह, “तीन प्रति होएत तँ तीन भिन्न झूठक जोखिम सेहो अछि। तँ फरक चिन्हबाक नियम अनिवार्य। प्रतिक बहुतायत मात्र न्याय नहि; संशोधनक खुलल इतिहास चाही।”

तेसरे पहर एक मजदूर अपन पर्ची लऽ गोमती लग अएल। ओकर नाम गलत मात्रासँ चढ़ल छल, आ विश्रामक तीस मिनट कामक घण्टा सँ दू बेर काटल गेल छल। गोमती तुरन्त घण्टा बढ़ा देबाक बदला ओकर पर्ची, सहकर्मीक समय-नोट आ टोलीक फलक मिलौलीह। नाप सही भेल: एक बेरक विश्रामे छल। तारा सुधारक दोसर पाँति बनौलीह; पुरान पाँति काटि गायब नहि कएलीह। मजदूर अपन छोट पर्चीपर नब रकम पढ़लक। “पहिनुक गलतीक कागद बचल रहत?” ओ पूछलक। “हँ,” तारा कहलीह, “नहि तँ अहाँ काल्हि ककरा बुझाएब जे चूक भेल छल आ सुधरल कोना?”

रमाक भोरुक पन्ना पर एक प्रश्न एखन बाकी छल: जे अधिकारी मौखिक आदेश देने छल, ओकर परिचय गवाहक निजी टिप्पणीक भीतर छल। एक दल चाहैत छल जे ओ नाम आजुक सभा मे पढ़ल जाए। रमा स्पष्ट कहलीह, “जकरा विरुद्ध प्रमाणित प्रशासनिक जाँच चलि सकैत अछि, ओकर रेकॉर्ड सक्षम कार्यालयकेँ देब; भीड़क आरोपक पर्ची नहि बनायब। हमर अस्वीकारक लिखित प्रति सार्वजनिक हितक सीमित उपयोग लेल उपलब्ध अछि, मुदा एहिसँ दोषक पूरा निर्णय नहि निकलैत।” सरिता समर्थन कएलीह। हुनकर गलत मृत्यु-चिह्न आ रोकल श्रम-देयक जाँच अलग चलैत छल; आजुक मतदान ओकर स्थान पर अदालत नहि छल।

दुपहर बाद हवा पलटल। पोखरिक माटि ढोएनिहार दल पछिला बाटसँ घुरल तँ एक बच्चा रस्सी ओलाँधि भीतर प्रवेश करए लागल। रुहानी ओकरा हाँक दऽ रोकलीह, फेर ओकरा हाथ धऽ बाहर अनलीह। “एतय पाँक पर छल,” ओ कहलीह। बच्चा झुँझलाकऽ

पुछलक, “हमर नाम हाजिरीमे किएक नहि? हमहुँ दू टोपरी उठौने छी।” गोमती ओकरा दिस बैसि कहलीह, “तोहर काजक याद रखब; मुदा खतरनाक मजदूरी बच्चासँ कराएब गलती छल। तकरा नाम देलासँ गलती ठीक नहि। पढ़ाइक आ खेलक समय अलग सुरक्षित होएत।” जिनका कहला पर बच्चा टोपरी उठौने छल, हुनका सँ जवाब माँगल गेल। सुरक्षा-नियमक उल्लंघन दर्ज भेल, बच्चाक निजी परिचय खुलल फलकपर नहि।

ओहि उराहिक कतेको मास बाद, कार्तिकक लोकपाठ—खुला खाता—गीतक बैसारमे मतदानक तैयारी शुरू भेल। पद्मा प्रस्तावकेँ पाँच लम्बा भाषणमे नहि बदललीह; ओ तीन ठोस कागद देखौलीह—काजक खुलल हिसाब, निजी विवरणक बन्द आवरण, आ सुधारक क्रमांकित इतिहास। “कुन कागद कतय रहत?” एक वृद्ध पुछलनि। रमा उत्तर देलीह, “सरकारी मूल सक्षम कार्यालयमे; प्रमाणित सार्वजनिक प्रति पाठशाला, मजदूर समिति आ स्थानीय संग्रहमे। निजी सहमति-मूल जकरा अधिकार अछि तकरा लग अथवा ओकर चुनल संरक्षक लग। जँ सुधार होए तँ तीनू सार्वजनिक धारककेँ सूचित करब; पुरान रूपकेँ नष्ट नहि, चिन्हित करब।” एक युवती तुरन्त जोड़लीह, “आ जे अपना प्रति वापस लेबाक अनुमति चाहए?” पद्मा कहलीह, “अगिला प्रसार रोकब, उपलब्ध प्रतिक हिसाब देब, आ सार्वजनिक हितमे अनिवार्य कानूनी अभिलेखक अपवाद स्पष्ट बतायब।”

कम्पनीक प्रतिनिधि फेर ठाढ़ भेल। ओ पूछलक जे समुदाय अपन प्रतिक रखवालीक खर्च कतेक दिन उठा सकत। प्रश्न उचित छल। संकेत एहि बेर बिना उत्साहक भाषण देलनि। अलमारीक मरम्मत, नमीसँ बचाबाक कपड़ा आ प्रशिक्षित रखवालाक खर्च गनबाक छल। गोमती कहलीह, “ई सभ स्वयंसेवा मानि कऽ स्त्रीसभक खाली समयमे नहि धकेलू। रखवाली सेहो काम अछि।” तारा खर्चक अनुमान लिखलीह; आज पूर्ण सालक राशि जुटल नहि छल। पहिल तीन मासक खर्च खुलल खातासँ देबाक प्रस्ताव भेल, आगाँक निधिक फेर मतदान होएत।

दूटा अलग सहमति-पन्ना बनल। पहिल पर नागरिक अपन सार्वजनिक नाम, केवल क्रमाङ्क अथवा गोपनीय प्रविष्टिमे सँ एक चुनि सकैत छल। दोसर पर फोटो, कथा, गीत वा व्यक्तिगत बयानक उपयोगक सीमा। अनुपमा सेनक सीमित पत्र-नकलक उदाहरण पढ़ल गेल, मुदा हुनकर निजी बंगाली पत्र खोलल नहि गेल। कबीर सभा मे उपस्थित

छलाह; ओ स्पष्ट कहला, “नैराक फोन पर हमरा भावनात्मक नजदीकी अछि। एहि कारण ओकर निजी सन्देश सभकेँ देबाक अधिकार हमरा नहि भेटल।” कोनो प्रस्तावमे मृत बेटीकेँ सर्वज्ञ रक्षक कहबाक पाँति नहि रखल गेल। सरिता जमीन पर पड़ल सूखल पात हाथसँ हटौलीह।

आब मतदानक विधिपर मतभेद उठल। कियो हाथ उठबए चाहैत छल, मुदा किछु मजदूर ठेकेदारक सामने विरोध नहि कहि सकैत छल। गोमती कहलीह, “जेकर रोजी पर काल्हि बदला लेल जा सकैत अछि, ओकर हँ वा नहि सभक सामने किएक देखब?” अन्तमे पंजीक पात्र वयस्क सदस्यसभक गुप्त मत निर्धारित भेल; खुलल चर्चा आ लिखित अल्पमतक अधिकार अलग रहत। बालकसभ नियमपर अपन राय दऽ सकैत छल, मुदा हुनकर विचारकेँ वयस्कक मतदानक झूठ संख्या नहि बनाओल गेल। तारा मत-पेटीक दू मुहर सभक सामने देखौलीह।

उराहिक मजदूरसभमे एक स्त्रीक नाम पिछला वर्षक सार्वजनिक हाजिरीमे छल, मुदा एहि बेर ओ अपन कामक ठाम सार्वजनिक नहि करए चाहैत छलीह। एक ठेकेदार कहलक, “नाम छुपेलासँ झूठ घण्टा जोड़ल जा सकैत अछि।” गोमती कहलीह, “हमर टोली कामक समय देखत; देयक जाँचक अनुमति-पाओल सदस्य नाम मिलाओत। आम रास्ताक बोर्डपर नाम नहि लिखलासँ काम मेटि नहि जाइत।” स्त्री स्वयं अपन पर्चीपर क्रमाङ्क चिन्हि देलीह। अधिकारीक वैधानिक जाँचक पहुँचक सीमा अलग पन्नामे लिखल गेल।

मतगणना लेल दू सदस्य आ दू पर्यवेक्षक बैठलाह। मतक संख्या, अमान्य पर्चीक कारण आ असहमत मतक गणना सभक सामने पढ़ल गेल; ककरो व्यक्तिगत मत ककरो नामसँ नहि जोड़ल गेल। बहुमतसँ वितरित प्रतिक प्रस्ताव स्वीकृत भेल। असहमति रखने लोकक एक वाक्य—‘अनेक प्रति सँ गलती बढ़बाक डर’—कार्यवृत्तमे पूरा दर्ज भेल। पद्मा कहलीह, “असहमति मिटौल नहि गेल; एखन एहि डरक जाँच करबाक जिम्मेदारी नव नियमक अछि।” तारा नियमक पहिल तीन सत्यापित प्रति अलमारीक तीन भिन्न रखवालाकेँ देलीह। प्रत्येक पन्नापर प्राप्ति तिथि आ सीमा लिखल छल, मालिकक सर्वाधिकार नहि।

साँझक लगोलग चैत्रक चौठ उराहिक संशोधित हाजिरी फेर पढ़ल गेल। दू पर्चीक समय सुधरल, एक भुगतान-अंक अपूर्ण रहल, आ एक मजदूर नगदक बदला खातामे पैसा चाहैत छल। गोमती कुल घण्टा पढ़लीह; रमा कहलीह जे भुगतान आदेश जारी होएब आ रकम पहुँचब अलग बात अछि। जतय वास्तविक भुगतान भेल, ओतहि प्राप्तिक चिह्न लगल। जकर देय आज खातामे नहि पहुँचल, ओकर रकम ‘बाकी’मे रहल, कार्यक्रमक सफलता देखेबाक लेल ‘देल गेल’ नहि लिखल गेल। चैत्रमे पूरा पोखरि उराहल नहि छल; तखन नापल गेल सुरक्षित किनारक काजक अभिलेख आ बाँकी कामक जिम्मेदारी एखनहुँ सुरक्षित छल।

रमा अपन निजी अस्वीकृतिक पत्रक सार्वजनिक सारपर अन्तिम हस्ताक्षर कएलीह। ओहि सारमे ‘मौखिक दबाव स्वीकार नहि भेल’क तिथि, सम्बन्धित कार्यालय आ जाँचक प्राप्ति-संख्या छल; गवाहक संरक्षित परिचय अलग रहल। सार्वजनिक प्रतिक बगलमे संशोधनक इतिहास रखल गेल—ककरो नाम चुपचाप फेरि देलासँ काज नहि चलत। रमा कहलीह, “आज हमरा कागद बाँटला सँ पुरान आदेशक जाँच पूरा नहि भेल। मुदा काल्हि कियो कहत जे हम चुपचाप मानि लेने छलहुँ, तँ अपन लिखल अस्वीकारक अस्तित्व समुदाय जाँचि सकत।” सरिता रमाक हाथसँ पन्ना नहि खींचलीह; ओ सावधानीसँ ओकरा पढ़ि सुनलीह।

पाठशालाक बाहरक भित्तिपर नव सूची टाँगल गेल। ककरो नाम रहल, ककरो क्रमाङ्क; संगमे सभक लागू दर, कामक कुल घण्टा, सुधारक प्रक्रिया आ सार्वजनिक प्रतिक तीन ठामक सूचना। बच्चासभ सूची पढ़ैत छल। एक बालिका पुछलक, “तीन अलमारीमे रखल कागदसँ ककरो झूठ कहब बन्द भऽ जायत?” संकेत उत्तर देलक, “नहि। मुदा जँ एक अलमारीक पन्ना चुपचाप बदलल गेल तँ दोसरसँ तुलना करबाक बाट रहत।” बच्ची फेर पुछलक, “आ तीनू बदलि गेल?” तारा कहलीह, “तखन लोकक पर्ची, मूल दफ्तरक इतिहास आ गवाही सेहो जाँचब। कोनो व्यवस्था मनुष्यक सावधानीक बदला नहि।”

सरिता साँझक पानि घुरबए लगलीह। एक महिला पर्ची राखि कहलीह, “हमर नाम बाहर नहि अछि, मुदा घरमे ई पर्ची देखाएब।” सरिता पुछलीह, “घरमे ककरा?” महिला

हँसि कहलीह, “जे काल्हि कहत जे हम दिन भरि केवल पोखरिक तमाशा देखलहुँ।” दोसर स्त्री पुछलीह जे अगिला उराहिमे नापबाक दलमे हुनको सीखबाक अवसर भेटत की नहि। गोमती कहलीह, “आइक नाप देखलहुँ; अगिला बेर अहाँ छड़ी धरब, हम पन्ना मिलाएब।” छोट कामक जिम्मेदारी एक हाथसँ दोसर हाथमे गेल।

कबीर पाठशालाक मेजक डगमग पायामे बचल बाँसक टुकड़ा कसैत छलाह। तारा तीनू प्रतिक प्राप्ति-पत्र लऽ भीतर अएलीह। “एहि पन्नासँ नैराक निजी फोनक सन्देश सभ नहि खुलत,” ओ कबीरकँ कहलीह। “हम जनैत छी,” कबीर उत्तर देलनि। “आ ओकरा खोलबाक इच्छा कखनो होएत तँ?” तारा ठमकि गेलीह। कबीर खुदे कहलनि, “इच्छा सहमति नहि। ई अन्तर लिखित नियममे रहए दिअ।” ओ बाँस कने बेसी कसि देलनि, मेजक पाया टेढ़ भेल। दुनू हँसि पड़लाह; कबीर फेर खोलि बराबर कएलनि।

रातिक पहिल अन्हारमे रमा अलमारीक चाभी पाठशालाक एक युवककँ देबाक बदला तीन अलग प्राप्ति-पर्ची पर अलग संरक्षकक नाम लिखलीह। ककरो एक हाथमे सभ चाभी नहि गेल। मुदा मूल पंजीक अपूर्ण जाँच, पोखरिक बकाया मजदूरी, सरिताक पुरान रोकल देय आ निजी अभिलेखक भविष्यमे नब उपयोगक प्रश्न बाकी रहल। सरिता घुरबाक समय पोखरि दिस एक बेर तकलीह। पानिमे दिन भरिक हलचल थामि रहल छल; पुरान नापक बाँसक खूँटी कातमे बचल छल। ओ अपन खाली लोटा उठौलीह। घरमे भात चढ़ेबाक समय भऽ गेल छल, आ एहि दिनक मतसँ नैरा वापस नहि अएलीह।

अध्याय २१६ • कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

सरिता चूल्हाक मुँहमे दूटा सूखल काठी सरकौलीह। आगि एक बेर लाल भेल, फेर राखक नीचाँ लुका गेल। ओ फूँक मारबाक बदला चिमटासँ जड़ि हटौलीह। धुआँ आँखि दिस अएल तँ ओ आँचलसँ चेहरा झाँपि कने पछुआइलीह। आँगनक एक कात राखल खाली लोटा भरबाक छल। कार्तिकक साँझ गहीर भऽ रहल छल; पाठशालाक मतदान समाप्त भेल छल, मुदा घरमे भात एखन धरि चढ़ल नहि छल। सरिता चाउरक डिब्बा खोलि मुट्ठी भरि दाना थारीमे छिटकौलीह। एकटा करिया कंकड़ अलग कऽ राखलीह।

पहिने एहि थारीक कात नैरा बैसि दाना चुनबाक बहाना सँ चाउरक बीच अपन अँगुरी घुमबैत छल। ओ जल्दीमे दाना धरि कंकड़ एक संग फेंकि दैत छल, आ सरिता ओकरा फेर चुनबैत छलीह। आइ थारी खाली स्थान छोड़ने पसरल छल। सरिता दोसर थारी निकालबाक लेल हाथ बढ़ौलीह, फेर लोहाक पुरान डिब्बाक ढक्कन बन्द कएलीह। बेटी मरि गेल छल। एतबा बातकेँ बुझबाक लेल कोनो दार्शनिक पुस्तक, कोनो मृत्यु-पंजी, कोनो नव अभिलेख नहि चाही; मुदा एतबे बुझलासँ भात पाकि नहि जाइत छल।

बाहरसँ कबीरक आवाज अएल, “पानि हम भरि दियौ?” ओ पाठशालाक डगमग मेज ठीक कऽ लौटि रहल छलाह। सरिता बिना मुड़ने कहलीह, “कुआँक दोसर चरखी अटकि गेल अछि। घुमाउ तँ जतनसँ।” कबीर लोटा उठौलनि। चरखी घुमलासँ पुरान रस्सीक महीन किरकिराहट सुनायल। पानिक पहिल धार लोटाक किनारसँ छलकि माटि भिजौलक। कबीर ओकरा भरि भीतर रखलनि, मुदा नैराक नाम नहि लेलनि। दुनूक बीच चुप्पी एहन नहि छल जे किछु कहबाक निषेध हो; ओहि घड़ी जे काज छल, ओ पहिने करबाक छल।

सरिता चाउर धोइत छलीह तँ तारा आ संकेत दुआर पर पहुँचलाह। संकेतक हथेलीमे बाँसक दूटा छोट खूँटी छल, जे अलमारीक पाछाँ लगबाक छल। तारा एक मुड़ल कागद देखौलीह। “आजुक मतगणनाक सार्वजनिक प्रति तीनू ठाम पहुँचि गेल। मुदा श्रमक पुरान पन्नामे एक तिथि दोसर प्रतिसँ नहि मिलैत अछि। काल्हि सुधार-जाँचक समय तय करए चाहैत छी।” सरिता कागद नहि छीनलीह। “ककरो निजी नाम अछि?” ओ पूछलीह।

“नहि, केवल क्रमाङ्क आ तारीख,” तारा कहलीह। “तखन मेजपर राखू। भोजनक आगि देखैत-देखैत पन्ना पढ़ब, मुदा आइ राति ककरो बकाया देल गेल लिखि नहि देब।”

संकेत हँसबाक प्रयास केलक। “मतदान भऽ गेल, तकर बादो अहाँ हमरा पन्ना पर भरोसा नहि करैत छी?” सरिता कहलीह, “अहाँ पर भरोसा करैत छी, तें जाँच करैत छी। जकरा पर भरोसा नहि, ओकर कागद तऽ देखबो नहि चाहैत छलहुँ।” संकेतक हँसी आब साँच भेल। ओ बाँसक खूँटी दरबज्जाक पाछाँ राखलक। नव नियमक खुशीमे सबटा पुरान चिन्ता उठि गेल—एहन घोषणा ककरो मनमे नहि छल। मुदा तीनू बीच आज एतबा बदलल छल जे प्रश्न पुछनिहारकें सभासँ बाहर नहि करल गेल।

पानिक हाँड़ीमे चाउर खसल तँ बारीक फेन उठल। सरिता ढक्कन आधा छोड़ि देलीह। “तारा, तों खाएब?” तारा कहलीह, “हम घरमे कहि अएल छी जे देर होएत। मुदा भातक गन्ध सँ वचन कमजोर भऽ रहल अछि।” कबीर बाहरसँ उत्तर देलनि, “एहि घरमे वचन बदलल जा सकैत अछि, शर्त बस पहिने कहि देब।” एहि पर सरिता मुस्कौलीह। ओकर मुस्की छोट छल; ओहि मुस्कीमे नैराक वापसी नहि छल, आ न स्मृतिक विरुद्ध कोनो विद्रोह। ओ चूल्हाक आगि कने धीमा कएलीह जाहिसँ चाउर नीचाँ नहि लगय।

दुआरपर गोमती बेलदार पहुँचल छलीह। हाथक नखमे सुखायल पाँकक गाढ़ रंग एखनहुँ छल। “काल्हि बिहान पोखरिक निकासी फेर नापब,” ओ कहलीह। “आइ जे मजूरक पर्चीमे भिन्न तारीख अछि, ओकर दू साथी अलग-अलग समय जनबैत छथि। पर्ची सही करए सँ पहिने दुनूकें सुनब।” सरिता चूल्हाक बगलमे एकटा पीढ़ा सरकौलीह। गोमती बैसलीह, मुदा अपन झोरामे राखल कामक खाता नहि खोललीह। “आज एतय घण्टा गनबाक लेल नहि अएल छी,” ओ कहलीह, “पानि पीबाक लेल अएल छी।”

सरिता गोमतीकें भरल गिलास देलीह। गोमती एक घूँट पीबि कहलीह, “कामक हिसाबमे हम सभ बराबर घण्टा लिखबाक सीखि रहल छी। घरक काममे के गनत? अहाँ चाउर चुनलहुँ, आगि सुलगेलहुँ, पानि गरम कएलहुँ। एहि मेहनति पर ककरो मुहर नहि।” सरिता उत्तर देलीह, “मुहर देबासँ पहिने ई सोचू जे एतय रोज भात बनएत के? हम अकेले सदिखन नहि।” तारा तुरन्त कटोरी खोजए उठलीह। कबीर थारी पखारबाक बात कहला।

संकेत पुछलक, “हम की करब?” गोमती कहलीह, “तों नेना सभजक गिनती कर—
कतेक थारी चाही।”

एतबा सामान्य हँसीक बीच दूरसँ नदीक कातक आवाज सुनायल। भरपूर वर्षाक समय
गेल छल, तैयो पानि अपन धारा बदलैत किछु काठक टुकड़ा किनार लऽ अबैत छल।
तिलवाहक ओ पारक बस्तीमे रातिक पहिल चूल्हा जलि रहल छल। घाटक सुरक्षित
पटरीक एक हिस्सा उर्मिलाक जमानाक नापसँ बनल छल; एक हिस्सा एहि वर्ष फेर
नापल गेल। ओकर परिवारक शेष रात्रिक मजदूरीक दाबी अलग पन्नामे रहि गेल छल।
पटरीपर लोक चलि सकैत छल, मुदा ओहि सुविधासँ उर्मिलाक मृत्यु अथवा अपूर्ण देयक
हिसाब बन्द नहि भेल।

रुहानी छोट डिब्बामे नमक आ दूटा हरिअर मरिच लऽ अएलीह। “आश्रयक कुकुर आइ
दुपहरि आधा रोटी खा लेलक,” ओ कहलीह। “पयर एखन कमजोर अछि; जावेद ओकरा
घसीटि तमाशा देखबए नहि देत।” सरिता पुछलीह, “जावेदक कार्यक्रम?” रुहानी
कहलीह, “काल्हि दू बच्चा परछाई देखबाक माँग कएने अछि। टिकटसँ किराया पूरा नहि
होएत; कलाकारक देय अलग लिखल अछि।” संकेत जोड़लक, “ओ जे बाँसक कठपुतली
बनौने छल, ओकर कान एकटा बेसी पैघ अछि।” रुहानी हँसलीह, “तें बच्चासभ ओकरा
सबसँ बेशी पसिन करैत अछि।”

भातक भाप खिड़कीपर जमि पानिक बारीक बूँद बनि गेल। सरिता ओहि बूँदकेँ अँगुरीसँ
पोंछि कऽ खिड़की खोललीह। बाहर रातिक आकाशक कोनो अन्त नहि देखाइत छल;
ओहिसँ हजारो वर्षक ग्रह-तारा आ असंख्य जीवनक कल्पना भऽ सकैत छल। मुदा
खिड़कीक चौखटपर बूँद आबो छल, चूल्हामे आगि आबो जलैत छल, आ नैरा एखनहुँ नहि
छल। असीम आकाशक नाम लऽ एहि घरक रिक्त आसन भरल नहि जा सकैत छल।
सरिता खिड़की खुलले छोड़ि देलीह, जाहिसँ धुआँ बाहर निकलि सकय।

मैथिली मिश्र दुआर पर अएलीह तँ सब कियो कने सिमटि बैसल। हुनकर हाथमे नव
पुस्तकक परिचय-पन्नाक स्वीकृत प्रति छल। ओ सरिताकेँ देबाक लेल हाथ बढ़ौलनि, फेर
ठमकि गेलीह। “एखन खायबाक समय अछि,” ओ कहलीह। सरिता उत्तर देलीह, “तखन
कागद ओतय राखि दिअ। शब्द भागि नहि जाएत।” मैथिली पीढ़ापर बैसि पाछाँक ठाम

देखलीह, जतय पहिने नैरा एकटा छोट गाछक डाली सुखबैत छल। ओ कहलीह, “हम जे गलती लिखने छी, ओकरा छपेलासँ गलतीक लागत पूरा चुकैत नहि।” सरिता कहलीह, “लागतक हिसाब खुलल रहत। आइ भोजनमे ओहि वाक्यकेँ फेर दस बेर नहि सुनब।”

पद्मा पाठशालासँ अएलीह तँ हुनकर हाथमे एकटा छोट काठक पट्टी छल। ओ पट्टीपर चारि शब्द लिखल छल—प्रत्यक्ष, श्रुत, अनुमान, कल्पना। “बच्चासभ एहि पर फेर बहस कएने अछि,” ओ कहलीह। “एक कहैत अछि, जे किछु आँखि देखत ओ सभ प्रत्यक्ष। दोसर पुछैत अछि, अन्हर लोकक प्रत्यक्ष की?” गोमती कहलनि, “हमर हाथ पाँकक गहिराइ जनैत अछि; आँखि मात्रसँ कतय बुझल जाएत?” पद्मा पट्टी उलटि रखलीह। “काल्हि पाठशालामे एहि प्रश्नसँ आरम्भ करब,” ओ कहलीह। कोनो पुरान ग्रन्थक नाम सँ बच्चाक प्रश्न बन्द नहि भेल।

कबीर एक थारीक किनार अँगुरीसँ टटोलैत कहलनि, “ई थारी नैराक छल?” सरिता ओकरा देखलीह। “एहि घरमे ककर थारी सदा एकटा रहल?” ओ कहलीह। “कखनो ओ एहि पर खएने, कखनो तौँ, कखनो बाहरसँ आएल रोगी। मुदा ओ अपन कटोरीक एक कोन सँ दाल चाटि लेबाक आदति रखैत छल।” कबीर हँसि देलनि, फेर ओहि हँसीक बाद दीर्घ चुप्पी आयल। हुनकर झोरामे ‘निजी—अनपठाओल’ चिह्नित पत्र अखनो छल। ओ पत्र आज ककरो सुनबाक वस्तु नहि छल।

अचानक बाहरसँ दूटा बच्चा भीतर झाँकलक। एकटा पुछलक, “काल्हि पाठशाला खुलत?” तारा कहलीह, “खुलत। किएक?” बालिका उत्तर देलक, “हम सभ नव अलमारीक चाभी देखए चाहैत छी।” संकेत कहलक, “सभ चाभी एक ठाम नहि अछि।” बालिका नाक सिकोड़ि पुछलक, “तखन कियो चाभी हेरौलक तँ?” पद्मा कहलीह, “दुआर खोलबाक जिम्मेदारीक नाम आ दोसर प्रति कतय अछि, से सीखब। चाभीक गिनतीक संग पुस्तक पढ़बो।” बच्चासभ ठठाकऽ हँसल। हुनका लेल न्यायक पहिल पाठ कोनो भारी भाषण नहि, काल्हिक खुलबाक समय छल।

गोमती एकटा कागद फेर निकाललीह। ओहिमे मजदूरक क्रमाङ्क छल, नाम नहि। “बात ई अछि,” ओ कहलीह, “मतदानक सार्वजनिक प्रति मे राशि एके अछि, मुदा एक रखवालाक नकलमे भुगतानक घरपर गलतीसँ चिह्न पड़ि गेल। हम देखलहुँ तखने बुझलहुँ।

मूल भुगतानक प्रमाण एखन नहि पहुँचल।” तारा तुरन्त उठए लगलीह। सरिता हाथसँ रोकलीह। “आइ राति नीक सँ नोट लिखू। तीनू प्रति पर काल्हि सुधार-पत्र पहुँचत; जकरा पैसा नहि भेटल, ओकरा ‘भुगतान भेल’ नहि कहब। मुदा एखन खायब।” गोमती पर्चीक पाछाँ समय लिखलीह; कामक निर्णय छोट, स्पष्ट आ अपूर्ण छल।

कबीर पुछलनि, “एकहि गलत चिह्न लेल एतेक लोककेँ काल्हि जुटबए पड़त?” रमा कर्ण, जे एखन दरबज्जा धरि पहुँचल छलीह, उत्तर देलीह, “जकर देय ओकरा लेल ई एकटा चिह्न नहि, पूरा दिनक भोजन भऽ सकैत अछि। आ एक गलत प्रति ठीके कऽ देलासँ दोसरमे पुरान गलती रहि गेल तँ अगिला अधिकारी फेर ओही पढ़त।” ओ भीतर नहि अएलीह, केवल अपन बहीमे काल्हिक जाँचक समय लिखि देलीह। सरिता आग्रह कएलीह, “अहाँओ भात खाउ।” रमा कहलीह, “घरमे हमरा लेल प्रतीक्षा अछि। हम काल्हि अएब।” हुनका जाइ देल गेल; उपकारक नामपर ककरो समय छीनल नहि गेल।

दुआर बाहर छोट हवा चलल। चूल्हाक ज्वाला एक पल लेल लम्ब भेल, आ भित्तिपर बैसल लोकसभक छाया कखनो पैघ, कखनो छोट भऽ गेल। जावेदक परछाई-नाटकक याद अएल। संकेत हँसैत कहलक, “देखू, हम सभ कतेक पैघ होइत छी, जखन चिराग कने नीचाँ राखल जाइत अछि।” गोमती उत्तर देलीह, “छाया पैघ भेला सँ थारीमे भात बेसी नहि होएत।” रुहानी कहलीह, “मुदा हँसी बढ़ि सकैत अछि।” एहि छोट तर्कमे ककरो हार नहि छल।

सरिता पहिल देगची खोललीह। भात नीकसँ पकने छल, मुदा तलछटमे कने दाना चिपकल। ओ लकड़ीक चम्मचसँ किनार छोड़ौलीह। नैरा एहन चिपकल दाना लऽ अपन लेल खुरचन बनबैत छल—ई स्मृति अचानक आयल। सरिता चम्मच रोकलीह। कबीर हुनकर हाथ देखैत छलाह, मुदा किछु नहि पुछलनि। सरिता फेर चम्मच चलौलीह। खुरचन एकटा छोट कटोरीमे रखलीह; ओ कटोरी ककरो नामपर आरक्षित नहि भेल। जे चाहत, खा लेत। अनुपस्थित व्यक्तिक स्मृति जीवित लोकक भूखक विरुद्ध नियम नहि बनल।

मैथिली अपन पुस्तक-पन्ना सम्हारैत कहलीह, “अध्यापकक कमरा मे एक प्रश्न बाकी अछि। शास्त्रक कठिन शब्द बच्चासभकेँ बुझाएबाक लेल हम उदाहरण बदलि सकैत छी की?” पद्मा कहलीह, “उदाहरण तऽ बदलि चुकल अछि। आब देखू जे बच्चाक आपत्ति

पुस्तकक अगिला संस्करणमे स्थान पबैत अछि की नहि।” सरिता सुनैत छलीह। वाचस्पतिक भामती, उदयनक पूर्वपक्ष आ गङ्गेशक प्रमाण-विचार हुनकर लेल सभ प्रश्नक एकटा उत्तर नहि बनल छल। मुदा एतेक भेल जे विदेहपुरक पाठशालामे ककरो प्रश्न ओकर जन्म अथवा पेशाक कारण बाहर नहि फेंकल जाइत छल।

गोमती भातक पहिल ग्रास खाइत कहलीह, “एहि बेर नमक कने कम अछि।” सरिता आँखि ऊपर उठौलीह। “तँ थारीमे नमक राखल अछि।” गोमती फुसफुसा कऽ कहलीह, “हमरा आलोचनाक अधिकार भेटल अछि, तखन नमक खुद उठेबाक दायित्व सेहो?” सभ हँसि पड़ल। ओहि हँसीमे वर्षक बाढ़, हाजिरीक गलती, अदालतक प्रतीक्षा अथवा कोनो मृतकक अभाव भेटल नहि। हँसी केवल एतबा छूट छल जे जीवित लोक भोजन खाइत काल अपना मुँह सँ एकटा हलुक वाक्य निकालि सकय।

सरिता सभक थारीमे दोसर बेर भात देलीह। कबीर कहला, “अहाँ बैठू। हम देब।” ओ चम्मच हुनकर हाथमे देलीह। कबीर पहिने रुहानीक थारीमे बेसी परसि देलनि; रुहानी कहलीह, “आधा वापस राखू, हमरा एतबे चाही।” कबीर बिना नाराज भेल आधा चाउर देगचीमे नहि, अलग स्वच्छ कटोरीमे रखलनि, जकरा बादमे खाएब। सरिता हँसलीह। भोजन साझा करबाक अर्थ सभकेँ एके मात्रा थोपब नहि; अपन भूख कहबाक अधिकार सेहो छल। ओ पहिल बेर पीढ़ापर बैसि अपन थारी सामने रखलीह।

ओहि घड़ी सरिताकेँ अपन जीवनक पहिल मृत्यु-सूचना याद अएल, जखन जीवित रहितो कागदमे हुनकर नामक आगे मृत लिखल गेल छल। ओ कागद बदलबाक लम्ब संघर्षक भीतर नैरा हुनका संग कतेक बेर धैर्य खोएने छल, ई सेहो याद अएल। अन्ततः जकर जीवन पंजीमे बचल, ओकर बेटी देहसँ नहि बचल। एहि उलटफेरकेँ कियो न्यायपूर्ण सममिति नहि कहि सकैत छल। सरिता अपन थारीक गरमाहट हथेलीपर अनुभव कएलीह। जीवित होएबाक प्रमाण आज ओकरा लेल भातक भाप छल, मुदा ओ प्रमाण नैराक जीवित होएबाक दावा नहि छल।

रुहानी भोजन समाप्त कऽ उठलीह। आश्रयमे दवाइक समय होएब छल। सरिता पुछलीह, “आरो कने भात लऽ जाउ?” रुहानी कहलीह, “जतबा चाही ओतबा। बाँकी एतय राखू। काल्हि कियो बिना खाए अएत तँ काम लागत।” ओ छोट डिब्बामे भात

लेलीह, ओकर ढक्कन ठीक सँ बन्द कएलीह। जावेदक घायल कुकुर लेल दवा मिलबाक बात कहि दुआर पार कएलीह। कोनो देवता ओकरा रोकि पुरस्कार नहि देलक; कोनो नब संकट ओकर बाट रोकेबाक लेल आकाशसँ नहि खसल। ओ दवा देबाक लेल चलि गेलीह।

तारा पाठशाला दिस घुरबाक पहिने दरबज्जाक चौखटपर रुकलीह। “नैराक कापी ओहिने बन्द अछि?” ओ धीरेसँ पुछलीह। सरिता उत्तर देलीह, “हँ। जतबा सार्वजनिक करबाक अनुमति छल, ओ अलग राखल अछि। बाकी ओकर अपन।” तारा कहलीह, “हमरा ओकरा संग एक प्रश्नक उत्तर पूरा करबाक छल।” सरिता पुछलीह, “प्रश्न की छल?” तारा कनेक सोचलीह, “ओ कहैत छल जे जकरा नाम सूचीमे नहि, ओकरा हम कोना सुनब?” सरिता उत्तर देलीह, “जे जीवित अछि ओकरा सँ पुछब। जे नहि अछि, ओकर लिखल-बाँचल बातकँ ओकर सीमा सहित पढ़ब। आ जकरा सँ कहियो नहि पुछि सकलहुँ, ओ रिक्तता स्वीकार करब।”

तारा बाहर गेलीह। सरिता ओहि प्रश्नक उत्तर कहि देने छलीह, मुदा नैराक संग फेर बैसि चर्चा करबाक सम्भावना खुलल नहि छल। ओ कापीक सन्दूक दिस नहि गेलीह। सभ राति शोकक वस्तु खोलब आवश्यक नहि, आ नहि खोललासँ शोक कम साँच होइत अछि। कबीर थारी पखारि रहल छलाह। ओ पुछलनि, “ई कटोरी कतय रखब?” सरिता कहलीह, “ओहिपारक रैक पर। काल्हि फेर चाही।” दैनिक वस्तुक अपना स्थान छल; नैराक देह लेल कोनो स्थान शेष नहि छल जाहिसँ ओ आवाज दऽ घुरि अएत।

खिड़कीसँ तिलवाहक अन्हार पानि देखाइत छल। नदीक जलक कतेको बूँद भाप बनि ऊपर जा रहल छल, कतेको माटि सँ छनैत, कतेको दूर दोसर धारमे मिलैत। एहि रूपान्तरणक बात बच्चासभ कक्षा मे काल्हि पढ़त। सरिता जनैत छलीह जे प्रकृतिक एहि चक्रक उपमा नैराक मृत्युक समाधान नहि। जल रूप बदलैत अछि; मुइल बेटी फेर ओही आवाज, ओही देह, ओही असहमति लऽ नहि घुरैत अछि। विश्वक विस्तारक सामने एक लोकक हानि छोट नहि होइत अछि। ओ केवल एक लोकक हानि रहि जाइत अछि— अपूरणीय।

कबीर पखारल थारी उलटि सुखेबाक लेल रखलनि। “हम चलब?” ओ पुछलनि। सरिता कहलीह, “अहाँक मन होए तँ बैसू, नहि तँ घुरू। रस्ता एखन भीजल अछि; देखिकऽ जाएब।” कबीर बैसि गेलाह। हुनका लग आज कोनो पत्रक अन्तिम वाक्य नहि छल। ओ अपन मायक, सुभद्राक, नैराक आ एहि घरक अलग-अलग सम्बन्धक बारेमे सोचि सकैत छलाह, मुदा एक साँझमे जन्मक अपूर्ण प्रमाण पूरा करबाक दबाव नहि छल। सरिता सेहो कबीरक निर्णय हुनका बदलामे नहि लेलनि।

सरिता बचल भात ढँकि देलीह। देगची धरिक धातु गरम छल, तँ ओ पुरान कपड़ाक टुकड़ा मोड़ि पकड़लीह। कबीर दुआरक किवाड़ आधा बन्द कएले छलाह, जाहिसँ हवा आबि सकय। सरिता देखलीह जे थारीक कात एकटा चाउरक दाना खसल अछि। ओ दाना उठाकऽ चूल्हाक राखमे नहि फेंकलीह; छोट बटकीमे रखलीह। नैराक खाली जगह ओहि दानासँ नहि भरल। सरिता अपन थारी उठौलीह, कबीरकेँ कने भात आरो परोसलीह, आ खिड़कीक बाहर बहैत नदीक स्वर सुनैत स्वयं भोजन करए लगलीह।

मैथिली कादम्बरी

कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक

रामायणम्

महाभारतम्

न्यायकुसुमाञ्जलिः

भामती

तत्त्वचिन्तामणिः

विदेह

प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका



www.videha.co.in



videha-ejournal.github.io/videha



प्रथम संस्करण २०१९

गजेन्द्र ठाकुर

